Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

30 29 152/-
9974
श्री देवी भागवत

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

# देवीभागवतम्

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

9978

# अथ श्रीमद्देवीभागवतं सटीकं समाहात्म्यम्।

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

# श्रीमद्देवीभागवतस्यसटीकस्यानुक्रमणिका ।


अध्यायः पत्रम्

**देवीभागवतमाहात्म्यानुक्रमणिका ।**

१ स्कन्दपुराणीयमानसखण्डोक्तं श्री देवीभागवतमाहात्म्यम्. तत्र सूत शौनकादिसंवादे देवीभागवतश्रवण प्रसंगादितिहासकथनपुरःसरं देवीभागवतमाहात्म्यवर्णनम्. श्लो०५०–१

२ कृष्णप्रात्यर्थं वसुदेवेन देवीभागवतनवाहपारायणश्रवणकृतम्,तत्प्रभावेण तस्य जांबवद्बिलप्रविष्टस्य पुनः प्राप्तिस्तदारभ्य देवीभागवतनवाहपारायणप्रवृत्तिः श्लो० ८२ २

३ स्कन्दागस्त्यसंवादः, तत्र स्कंदेन देवीभागवतमाहात्म्यकथनप्रस्तावे श्राद्धदेवमनुवृत्तान्तवर्णनम्. श्राद्धदेवेन पुत्रेच्छया यज्ञकरणम्. तत्पत्न्या कन्येच्छया होतुः संकल्पकल्पनायां प्रवर्तनम्. होतुःसंकल्पवैषम्येण कन्योत्पत्तिः मुनितपःप्रभावादिलाकन्यायाः पुरुषत्वे सुद्युम्ननामकरणम्, सुद्युम्नस्येलावृत्तप्रवेशात्स्त्रीत्वप्राप्तिः, तस्य पुरुषत्वप्राप्तये वसिष्ठेन शिवप्रार्थनम्, शिवप्रसादात्तस्य मासांतरितपुंस्त्वप्राप्तिः ततश्च भगवतीदेवीस्तुत्या देव्याः सुप्रसन्नता, देव्याज्ञया वसिष्ठेन सुद्युम्नाय देव्याराधनपुरःसरं देवीभागवतपुराणनवाहश्रावणम्. तत्प्रभावेण च सुद्युम्नस्याखण्डपुरुषत्वप्राप्तिः ५८ ... .... ४

४ देवीभागवतमाहात्म्यप्रसंगेन ऋतवाङ्मुनीतिहासवर्णनम्. तस्य मूर्खकुपुत्रप्राप्त्यातिविषण्णस्य गर्गवाक्येन रेवतीनक्षत्रशापपुरःसरमंबिकादेव्याराधनात्पुत्रपाण्डित्यादिसुखावाप्तिः, ऋषिशापात्कुमुदाचले पतितस्य रेवतीनक्षत्रस्य तेजसः सकाशात्कन्यकोत्पत्तिः, प्रमुंचमहर्षिणा तस्या रेवतीति नामकरण पुरःसरं पोषणम्.रेवत्या दुर्दमराज्ञा सह विवाहः दुर्दमस्य राज्ञो महर्षिवाक्याद्देव्याराधनाद्देवीभागवत नवाहपारायणाच्च रैवतनामक मनुपुत्रोत्पत्तिपूर्वकं सौख्यलाभ वर्णनम्. श्लो० ९१ ... ... ५

५ श्रीमद्देवीभागवतमहापुराणश्रवण सविस्तरविधिवर्णनम्. श्लो० १०२–६

**प्रथमस्कन्धस्य ।**

श्रीदेवीभागवतस्यमहापुराणत्वादि सिद्धान्तनिर्णयः .... .... १

१ ग्रंथारम्भमङ्गलम् ऋषीणांपुराणविषयःप्रश्नः ... .... .... ६

२ ग्रंथसंख्याविषयश्च .... .... ८

३ ससंख्यकापुराणाख्यातत्तद्युगीयव्यासानुकथनं च ... .... १०

४ देवीसर्वोत्तमेतिकथनंप्रसंगतःशुकजन्मच .... .... ... ११

५ देव्यामहोत्कर्षः .... ... १३

६ मधुकैटभयोर्युद्धोद्योगः ... १७

७ ब्रह्मणामधुकैटभभीतेनपरांबिकायाः स्तुतिः .... .... ... .... १९

८ आराध्यनिर्णयः .... .... .... २१

९ देवीप्रसादान्मधुकैटभयोर्हरिणावधः २२

१० शिवस्यवरदानम् .... .... २४

११ बुधोत्पत्तिः .... .... २५

१२ पुरूरवसउत्पत्तिः .... .... २७

१३ पुरूरवसउर्वश्याश्चचरितम् ... २९

१४ शुकस्योत्पत्तिः ... .... २९

१५ शुकवैराग्यम् ... .. ३१

१६ शुकायैतत्पुराणोपदेशः .... ३३


CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN




| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १७ जनकस्यपरीक्षार्थं शुकस्य मिथिलागमनम् | ३५ |
| १८ शुकायजनकोपदेशः | ३६ |
| १९ शुकस्यविवाहादिकम् | ३८ |
| २० शुकनिर्गमनोत्तरं व्यासकृत्योपवर्णनम् | ४० |

## द्वितीयस्कंधस्य ।

| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ व्यासजन्मवृत्तान्तवर्णनम् | २ |
| २ पराशराद्दाशकन्योदरेव्यासस्यजन्म | २ |
| ३ शेतनोःसत्यवत्यागंगयाचसहविवाहः | ४ |
| ४ वसूनामुत्पत्तिः | ५ |
| ५ शंतनुनासत्यवत्यावरणम् | ७ |
| ६ व्यासात्पुत्रत्रयोत्पत्तिः पांडवोत्पत्तिश्च | ९ |
| ७ पांडवानांकथानकं मृतानां दर्शनं च | ११ |
| ८ यदुकुलस्य नाशःउत्तरासूनोर्वृत्तंच | १२ |
| ९ रुरुपुरावृत्तकथनपूर्वकोगुप्तगृहेराज्ञो वासः | १४ |
| १० तक्षकद्विजयोः संभाषणंतक्षकेणराज्ञोदर्शनंच | १५ |
| ११ सर्पसत्रायवद्धपरिकरस्यजनमेजयस्यास्तीकेननिवारणम् | १७ |
| १२ आस्तीकस्योद्भवोभागवतमाहात्म्यंच | १८ |

## तृतीयस्कंधस्य ।

| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ भुवनेश्वरीनिर्णयः | २ |
| २ विमानेनब्रह्मादीनांगतिः | ३ |
| ३ विमानस्थैर्हरादिभिर्देवीदर्शनम् | ४ |
| ४ विष्णुनाकृतंदेवीस्तोत्रम् | ६ |
| ५ तदूर्ध्वंहरस्तुतिर्ब्रह्मस्तुतिश्च | ७ |
| ६ ब्रह्मणेश्रीदेव्याउपदेशः | १० |
| ७ तत्त्वनिरूपणम् | १४ |
| ८ गुणानांरूपसंस्थानादि | १६ |
| ९ पुनरपिगुणानांलक्षणमधिकृत्यनारदप्रश्नः | १७ |
| १० सत्यव्रतकथा | १९ |
| ११ वाग्बीजोच्चारणात्सत्यव्रतस्यसिद्धिलाभः | २० |
| १२ अंबायज्ञविधिः | २२ |
| १३ अंबिकामखस्यविष्णुनानुष्ठानम् | २४ |
| १४ राजप्रश्नोत्तरंवैभववर्णनंच | २६ |
| १५ युधाजिद्वीरसेनयोर्दौहित्रार्थयुद्धम् | २७ |
| १६ युधाजितःसुदर्शनाजिघांसयाभरद्वाजाश्रमंप्रतिगमनम् | २८ |
| १७ विश्वामित्रकथोत्तरं राजपुत्रस्यकामबीजप्राप्तिः | ३० |
| १८ काशीराजस्यस्वसुताविवाहोद्योगः | ३१ |
| १९ सुदर्शनेनसहराज्ञां स्वयंवरागमनम् | ३२ |
| २० राजसंवादानिवृत्तिपूर्वकंकन्याबोधः | ३४ |
| २१ राज्ञांकोलाहलेकन्यासंमतस्यराज्ञःस्थानम् | ३५ |
| २२ सुदर्शनविवाहःसुबाहोःकन्यायाविवाहश्च | ३७ |
| २३ महारणेशत्रूणांदेव्याव्यापादनम् | ३८ |
| २४ देवीमहिमाकाश्यांदुर्गावासश्च | ४० |
| २५ अंबिकातोषणंतत्पुरेदेवीस्थापनंच | ४१ |
| २६ नवरात्रविधेर्नृपायव्यासेनकथनम् | ४२ |
| २७ कुमारिकाकथनम् | ४४ |
| २८ रामायणकथाप्रश्नः | ४६ |
| २९ रामशोकः | ४७ |
| ३० नारदेनव्रतकथनम् | ४८ |

## चतुर्थस्कंधस्य ।

| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ कृष्णावतारप्रश्नः | २ |
| २ कर्मणोजन्मादिकारणत्वनिरूपणम् | ३ |
| ३ आदितेःशापकथनम् | ५ |
| ४ अधर्मेजगतःस्थितिः | ६ |
| ५ नारायणकथा | ८ |
| ६ नराग्रजेनोर्वशीसृष्टिः | ९ |
| ७ अहंकारावर्तनम् | ११ |
| ८ प्रह्लादनारायणयोःसमागमः | १२ |
| ९ प्रह्लादनारायणयोर्युद्धम् | १३ |
| १० हरयेभृगुणाशापदानम् | १४ |
| ११ शुक्रस्यमंत्रलाभार्थंगमनंशुक्रमातुर्वधश्च भृगुणाशुक्रमातुरुज्जीवनम् | १६ |
| १२ जयंत्याःशुक्रसेवार्थंप्रेषणम् | १७ |
| १३ शुक्ररूपेणदेवानांगुरुणादैत्यवंचना | १८ |
| १४ दैत्यानांशुक्रसंप्राप्तिः | २० |
| १५ देवदानवयोर्युद्धशांतिः | २१ |
| १६ हरेर्नानावताराः | २३ |
| १७ सुरांगनानांनारायणाश्रमेगमनम् | २४ |




CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN


| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १८ दुष्टराजभाराक्रांतायामेदिन्याब्रह्मा-णंप्रतिगमनम् | २५ |
| १९ देवैःशक्तिस्तवनम् | २६ |
| २० वासुदेवांशावतारकथाः | २८ |
| २१ देवक्याःसप्तानांपुत्राणांवधः | ३० |
| २२ देवानामंशावतरणम् | ३१ |
| २३ कृष्णजन्मकथनम् | ३३ |
| २४ कृष्णकथाः | ३४ |
| २५ पराशक्तेःसर्वज्ञत्वकथनम् | ३५ |
| **पंचमस्कंधस्य ।** | |
| १ विष्णोरपेक्षयारुद्रस्यश्रेष्ठत्वम् | १ |
| २ देवीमाहात्म्यवर्णनंमहिषोत्पत्तिः | ४ |
| ३ देवेंद्रेणसहसमरोद्योगः | ५ |
| ४ देवानांसंसदिविमर्शः | ६ |
| ५ देवसेनापराजयः | ७ |
| ६ देवदानवयुद्धम् | ८ |
| ७ पराभूतानांदेवानांकैलासगमनम् | १० |
| ८ जगदंबायाः पलाशसमिधांज्वालना-योत्पत्तिकथनम् | ११ |
| ९ देवैर्महायुधैर्देव्यर्चनम् | १३ |
| १० रक्तदूतसंवादकीर्तनम् | १४ |
| ११ महिषासुरसंसदिविमृश्यानाम्नोदूत-स्यप्रेषणम् | १६ |
| १२ ताम्रस्यागमनोत्तरंबाष्कलदुर्मुखयोः प्रेषणम् | १७ |
| १३ बाष्कलदुर्मुखयोर्वधः | १९ |
| १४ ताम्रचिक्षुरयोर्देव्यावधः | २० |
| १५ महारणेऽसिलोमादीनांनिधनम् | २१ |
| १६ महिषासुरस्यदेव्यासंवादः | २२ |
| १७ मंदोदर्याःकथानकम् | २४ |
| १८ महिषस्यवधः | २६ |
| १९ देवैःकृतामहादेवीस्तुतिः | २७ |
| २० अंतर्धानोत्तरंवृत्तकथनम् | ३० |
| २१ शुंभासुरकथा | ३२ |
| २२ परादेव्याःसुरकार्यार्थंप्रादुर्भावः | ३३ |
| २३ कौशिकीतिप्रसिद्धायादेव्यागिरौप्रा दुर्भावः | ३५ |
| २४ दूतसंवादकीर्तनम् | ३६ |
| २५ धूम्रलोचनवधः | ३७ |
| २६ चंडमुंडयोःश्रीदेव्यासहयुद्धम् | ३९ |
| २७ रक्तबीजयुद्धम् | ४० |
| २८ रक्तबीजयुद्धस्यविस्तारः | ४२ |
| २९ रक्तबीजवधःशुंभस्ययुद्धोद्योगः | ४३ |
| ३० निशुंभवधः | ४४ |
| ३१ शुंभासुरवधाश्रिताकथा | ४६ |
| ३२ राजवैश्ययोश्चरित्रत्रयसेवकयोर्वार्ता | ४८ |
| ३३ भुवनसुंदर्याराज्ञेकथनम् | ४९ |
| ३४ राज्ञेतापसोपदेशः | ५१ |
| ३५ राजवैश्ययोर्देव्याःप्रत्यक्षदर्शनम् | ५२ |
| **षष्ठस्कंधस्य ।** | |
| १ वृत्रदैत्यवधकथारंभः | १ |
| २ त्रिशिरोवधवर्णनम् | ३ |
| ३ पित्राज्ञयावृत्रस्यतपोर्थंवनगमनम् | ४ |
| ४ वृत्रेणवरगर्वेणपराभूतानांदेवानांशं-करसमीपेगमनम् | ६ |
| ५ देवीस्तुत्यादेवैर्वरप्रापणम् | ७ |
| ६ वृत्रदैत्यवधाश्रिताकथा | ९ |
| ७ वासवस्यगुप्तवासोनहुषस्यचेंद्रप-देभिषेकः | ११ |
| ८ नहुषेणप्रार्थितायाःशच्याश्चिता दे-वीप्रसादतस्तस्याइंद्रदर्शनम् | १२ |
| ९ नहुषस्याधःपातः | १४ |
| १० त्रिविधस्यकर्मणोरूपकथनम् | १५ |
| ११ युगोद्भवानांधर्माणांकथनंसदसद्धर्म-विनिर्णयश्च | १७ |
| १२ आडीबकमहायुद्धस्यतीर्थयात्राप्रसंग-तउपवर्णनम् | १८ |
| १३ शुनःशेपकथांतेयुद्धस्यस्मरणम् | २० |
| १४ वसिष्ठस्यमित्रावरुणापत्यत्वविस्तरः | २१ |
| १५ निमेर्देहांतरेगतिःहैहयानांकथा | २३ |
| १६ हैहयेनभार्गवाणांवधः | २५ |
| १७ देवीकृपयाभृगुवंशस्थितिः | २६ |
| १८ हैहयस्यकथा | २७ |
| १९ हरेरश्विन्यांजन्म | २८ |
| २० हयीजातस्यहरेःकथानकम् | ३० |
| २१ एकवीराभिषेचनोर्ध्ववृत्तकथनम् | ३१ |
| २२ एकावल्याःकथानकम् | ३२ |
| २३ हैहयभूभृतःकालकेतुनामहायुद्धम् | ३४ |
| २४ विक्षेपशक्तिकथनम् | ३५ |
| २५ व्यासेनस्वमोहोपपादनम् | ३७ |


CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN




| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| २६ नारदेनापितथाकरणम् | ३८ |
| २७ नारदस्यविवाहः | ३९ |
| २८ पुनरपितस्यैवविस्तारः | ४० |
| २९ स्त्रीभावंगतस्यनारदस्यपुनःपुरुषत्वप्राप्तिः | ४२ |
| ३० हरिणामहामायाप्रभावकथनम् | ४३ |
| ३१ भगवतीध्यानादिकम् | ४५ |

**सप्तमस्कंधस्य ।**

| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ सूर्यसोमोद्भवानांकथारंभः | २ |
| २ तदन्वयस्यविस्तारः | २ |
| ३ सुकन्यकायाश्चयवनायप्रदानम् | ४ |
| ४ सुकन्यादेवभिषजोःसंवादः | ५ |
| ५ रविपुत्रप्रसादजा च्यवनस्ययुवावस्था | ६ |
| ६ शर्यातेर्यज्ञकरणम् | ८ |
| ७ तत्राश्विनोः सोमपानम् | ९ |
| ८ तद्वंशकथनम् | १० |
| ९ ककुत्स्थादीनामुत्पत्तिः | ११ |
| १० सत्यव्रतकथा | १३ |
| ११ त्रिशंकोःकथानकम् | १४ |
| १२ त्रिशंकोःस्वर्गवासः | १५ |
| १३ हरिश्चंद्रेनृपेसतित्रिशंकोर्विश्वामित्रेणसमागमः | १७ |
| १४ हरिश्चंद्रकथा | १८ |
| १५ राज्ञःपुत्रोत्सवः | १९ |
| १६ शुनःशेपवधाश्रयाकथा | २० |
| १७ विश्वामित्रेणशुनःशेपस्यमोचनम् | २२ |
| १८ हरिश्चंद्रेण विश्वामित्रवैरम् | २३ |
| १९ हरिश्चंद्रस्यराज्यविध्वंसः | २४ |
| २० नृपस्यदक्षिणादानयत्नः | २६ |
| २१ तत्कृतःशोकः | २७ |
| २२ हरिश्चंद्रेणात्मविक्रयः | २७ |
| २३ चांडालेनहरिश्चंद्रक्रयः | २९ |
| २४ हरिश्चंद्रस्यचांडालगृहेवस्थानम् | ३० |
| २५ भूभृतःपुत्रभार्याकथा | ३१ |
| २६ पत्नीमभिज्ञायहरिश्चंद्रस्यशोकः | ३२ |
| २७ हरिश्चंद्रस्यस्वर्गवासः | ३४ |
| २८ शताक्षीमहिमा | ३५ |
| २९ राजवार्तायाःप्रश्नः | ३७ |
| ३० गौरीजन्म नानापीडोद्भवश्च | ३९ |
| ३१ पार्वत्याहिमालयाज्जन्म | ४१ |
| ३२ आत्मतत्त्वनिरूपणम् | ४३ |
| ३३ विश्वरूपदर्शनम् | ४६ |
| ३४ ज्ञानस्यमोक्षार्थत्वम् | ४८ |
| ३५ मंत्रसिद्धेःसाधनम् | ५० |
| ३६ ब्रह्मतत्त्वम् | ५२ |
| ३७ भक्तिमहिमा | ५४ |
| ३८ देव्यामहोत्सवव्रतानिस्थानानिच | ५५ |
| ३९ भगवतीपूजनम् | ५६ |
| ४० ब्रह्मपूजाविधानम् | ५८ |

**अष्टमस्कन्धस्य ।**

| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ मनवेदेव्यावरदानम् | २ |
| २ वराहेणधरोद्धरणम् | ३ |
| ३ मनुवंशवर्णनम् | ४ |
| ४ प्रियव्रतकथानकम् | ४ |
| ५ भूमंडलस्यविस्तारः | ५ |
| ६ देवीवर्णनंदेव्युपास्तिश्च | ६ |
| ७ मूलादूर्ध्वमहार्यवर्णनम् | ७ |
| ८ इलावृत्तवर्णनम् | ८ |
| ९ वर्षांतरगतसेव्यसेवकत्वकथनम् | ९ |
| १० तत्रसेव्यसेवकरूपाणांवर्णनम् | १० |
| ११ वर्षांतरेक्रमप्राप्तासेव्यसेवकता | ११ |
| १२ द्वीपांतरसमाचारः | १३ |
| १३ शिष्टद्वीपसमाचारः | १४ |
| १४ लोकालोकगिरिव्यवस्था | १४ |
| १५ रवेर्गमनमांद्यादिप्रकाराः | १५ |
| १६ सोमादीनांगत्यनुसारेणविविधंफलम् | १७ |
| १७ ध्रुवमंडलसंस्थानम् | १८ |
| १८ राहुमंडलंचंद्रसूर्योपरागश्च | १८ |
| १९ तलादेर्वर्णनम् | १९ |
| २० तलातलस्थितिः | २० |
| २१ नरकस्वरूपम् | २१ |
| २२ पातकोपपादनम् | २२ |
| २३ शिष्टानांनरकाणां वर्णनम् | २३ |
| २४ देव्याराधनम् | २४ |

**नवमस्कन्धस्य ।**

| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ संक्षेपेणशक्तिवर्णनम् | १ |
| २ पंचप्रकृतिसंभवः | ७ |
| ३ देवतादिसृष्टिः | १० |
| ४ सरस्वतीस्तोत्रपूजादि | १२ |




CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN


| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| ५ धर्मात्मजेननारदायसरस्वतीमहास्तोत्रकथनम् .... ... .... | १४ |
| ६ लक्ष्मीगंगाभारतीनांजन्मपृथ्वीलोके .... ... ... ... | १५ |
| ७ तासांशापोद्धारप्रकारः .... ... | १७ |
| ८ गंगादीनांसमुत्पत्तिःकलौवर्तनंच | १८ |
| ९ शक्त्युत्पत्तिप्रसंगतोभूमिशक्तेःसमुत्पत्तिः ... ... ... | २१ |
| १० धरादेव्याअपराधेकृतेसतिनरकादिफलप्राप्तिकथनम् ... ... .... | २३ |
| ११ गंगोत्पत्तिः ... ... .... | २४ |
| १२ राधाकृष्णांगसंभवायागंगायागोलोकेसमुत्पत्तिः .... .... .... | २५ |
| १३ जाह्नवीनारायणप्रियाजातेतिकथनम् | २७ |
| १४ गंगाविष्ण्वोःपरस्परसंबंधकरणम् | ३० |
| १५ तुलस्युपाख्यानप्रश्नः .... .... | ३१ |
| १६ महालक्ष्म्याराजगृहेजन्म .... .... | ३२ |
| १७ धर्मध्वजसुतायास्तुलस्याःकथा .... | ३३ |
| १८ शंखचूडेनतुलस्याःसंगतिःसंवादश्च | ३४ |
| १९ तयोर्विवाहानंतरंदेवानांवैकुंठगमनम् | ३६ |
| २० शंखचूडस्यदेवैःसहसंग्रामः ... | ३८ |
| २१ शंखचूडमहेशयोर्युद्धम् ... ... | ४० |
| २२ युद्धारंभः .... .... .... ... | ४२ |
| २३ जनार्दनेनशंखचूडस्यकवचहरणम् | ४३ |
| २४ तुलसीसंगवर्णनंतन्माहात्म्यंच ... | ४४ |
| २५ महामंत्रसहितंतुलसीपूजनम् ... | ४६ |
| २६ सावित्र्याख्यानम् .... .... | ४७ |
| २७ तस्याराजोदरेजन्म .... .... | ४९ |
| २८ अध्यात्मप्रश्नः ... ... .... | ५० |
| २९ दानधर्मफलम् .... ... ... | ५१ |
| ३० नानादानफलम् ... ... .... | ५३ |
| ३१ सावित्र्यैमूलशक्तिमहामंत्रदानम् ... | ५६ |
| ३२ पातकानांफलानि .... .... | ५६ |
| ३३ कुंडेषुयेपतंतितेषांलक्षणम् .... | ५७ |
| ३४ अवशिष्टानांकुंडानांकथनम् ... | ६० |
| ३५ पुनरपिशिष्टानांकुंडानांकथनम् .... | ६३ |
| ३६ देवीभक्त्यायमपुरीत्रयनाशकथनम् | ६४ |
| ३७ कुंडानांलक्षणम् ... .... | ६५ |
| ३८ देवीमहोत्कर्षः ... .... | ६८ |
| ३९ महालक्ष्म्याख्यानम् .... .... | ७१ |
| ४० लक्ष्मीजन्मादेर्नारदायकथनम् .... | ७१ |
| ४१ शक्रस्यब्रह्मलोकंप्रतिगमनम् ... | ७३ |
| ४२ महालक्ष्म्यर्चनक्रमादि ... ... | ७५ |
| ४३ स्वाहाशक्तेरुपाख्यानम् .... ... | ७६ |
| ४४ स्वधायाःसमुपाख्यानम् ... ... | ७७ |
| ४५ दक्षिणायाउपाख्यानम् .... ... | ७८ |
| ४६ षष्ठीदेव्याउपाख्यानम् .... ... | ८० |
| ४७ मंगलचंडच्याःकथा .... .... | ८२ |
| ४८ मनसायाःकथास्तोत्रादि.... ... | ८३ |
| ४९ सुरभ्याख्यानम् .... .... .... | ८६ |
| ५० राधायादुर्गायाश्चचरित्रम् .... | ८६ |


## दशमस्कंधस्य ।


| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ मनोःस्वायंभुवस्याख्यानम् .... | २ |
| २ भगवत्याविंध्याद्रिगमनम् .... .... | २ |
| ३ विंध्येनभानुमार्गनिरोधः .... .... | २ |
| ४ वृषध्वजस्तुतिस्तस्मैवृत्तांतकथनंच | ३ |
| ५ महाविष्णुस्तोत्रम् ... .... | ३ |
| ६ अगस्त्येनदेवीप्रार्थनातोविंध्याद्रेर्वृद्धिकुंठनम् .... ... .... | ४ |
| ७ मुनिनाविंध्यवृद्धिकुंठनम्.... .... | ५ |
| ८ स्वारोचिषस्यमनोःकथा ... .... | ६ |
| ९ चाक्षुषस्यमनोःकथा .... ... | ६ |
| १० सावर्णेर्मनोःकथा ... ... | ७ |
| ११ महाकालीचरितम् .... ... | ७ |
| १२ महालक्ष्मीमहासरस्वत्योश्चरितम् | ८ |
| १३ नवमादिमनूनांचरित्रवर्णनम् .... | १० |


## एकादशस्कंधस्य ।


| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ प्रातःकृत्यम् .... .... ... | २ |
| २ शौचादिविधिः .... .... ... | ४ |
| ३ स्नानादिविधिःरुद्राक्षधारणमहिमाच | ५ |
| ४ रुद्राक्षाणांबहुविधत्वकथनम् ... | ६ |
| ५ जपमालाविधानम् .... .... | ७ |
| ६ रुद्राक्षमहिमा .... .... .... | ८ |
| ७ एकवक्त्रादिरुद्राक्षाणांवर्णनम् .... | ९ |
| ८ भूतशुद्धिः.... ... ... | ९ |
| ९ शिरोव्रतविधानम् ... .... | १० |
| १० गौणभस्मादिवर्णनम् ... .... | १२ |
| ११ तस्यत्रिविधत्वंमाहात्म्यंच .... | १३ |
| १२ भस्मधारणविस्तरः .... ... | १३ |


CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN




| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १३ भस्मनोमहिमा .... ... | १४ |
| १४ विभूतिधारणमाहात्म्यम् .... | १५ |
| १५ त्रिपुंड्रोर्ध्वपुंड्रयोर्महिमा .... | १६ |
| १६ संध्योपासनम् ... .... | १९ |
| १७ संध्यादिकृत्यम् ... ... | २२ |
| १८ पूर्णोपचारादिकथनम् .... | २३ |
| १९ मध्याह्नसंध्याकरणम् ... .... | २५ |
| २० ब्रह्मयज्ञादिकम् ... .... | २५ |
| २१ गायत्रीपुरश्चरणम् ... .... | २७ |
| २२ वैश्वदेवादिकम् ... .... | २८ |
| २३भोजनान्तेकरणीयंप्रकृच्छ्रादिलक्षणंच | २९ |
| २४ काम्यकर्मसंग्रहणंप्रायश्चित्तविधानंच | ३१ |

द्वादशस्कंधस्य ।

| अध्यायः | पत्रम् |
|---|---|
| १ गायत्र्याऋष्यादिकथनम् ... | १ |
| २ वर्णानांशक्त्यादि .... ... | २ |
| ३ जगन्मातुःकवचम् .... ... | ३ |
| ४ गायत्रीहृदयम् .... ... | ३ |
| ५ गायत्रीस्तोत्रम् .... .... | ४ |
| ६ गायत्रीनामसहस्रम् .... ... | ५ |
| ७ दीक्षाविधिः .... ... | ९ |
| ८ केनोपनिषत्कथा ... ... | १३ |
| ९ गौतमशापेनब्राह्मणानामन्यदेवतोपासनश्रद्धा ... .... .... | १७ |
| १० द्वीपवर्णनम् .... .... | १९ |
| ११ पद्मरागादिनिर्मितप्रकारवर्णनम् ... | २२ |
| १२ चिंतामणिगृहवर्णनम् ... ... | २५ |
| १३ जनमेजयेनदेवीमखकरणम् .... | २७ |
| १४ उपसंहारःपुराणफलदर्शनंच ... | २७ |


## इति श्रीमद्देवीभागवतस्यसटीकस्यानुक्रमणिका समाप्ता ।



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवत महात्म्यं प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशोविजयते ॥ सृष्टौयासर्गरूपाजगदवनविधौपालिनीयाचरौद्रीसंहारेचापियस्याजगदिदमखिलंक्रीडनंयापराख्या ॥ पश्यन्तीमध्यमाथोतदनुभगवती वैखरीवर्णरूपासास्मद्वाचं प्रसन्नाविधिहरिगिरिशाराधितालंकरोतु ॥ १ ॥ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीरयेत्॥२॥ ऋषयऊचुः ॥सूतजीवसमावह्वीर्यस्त्वंश्रावयसीहनः ॥ कथामनोहराःपुण्याव्यासशिष्यमहामते ॥ ३ ॥ सर्वपापहरंपुण्यंविष्णोश्चरितमद्भुतम् ॥ अवतारकथो पेतमस्माभिर्भक्तितः श्रुतम् ॥ ४ ॥ शिवस्यचरितंदिव्यंभस्मरुद्राक्षयोस्तथा ॥ सेतिहासंचमाहात्म्यंश्रुतंतवमुखाम्बुजात् ॥ ५ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामः पावनात्पावनम्परम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदंनृणामनायासेनसर्वशः ॥६॥ तत्त्वंब्रूहिमहाभागयेनसिद्ध्यन्तिमानवाः॥ कलावपिपरंत्वत्तोनविघ्नःसंशयच्छिदम् ॥७॥ सूतउवाच ॥ साधुपृष्टंमहाभागालोकानांहितकाम्यया ॥ सर्वशास्त्रस्ययत्सारंतद्वोवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ८ ॥ तावद्गर्जन्तितीर्थानिपुराणानिव्रतानिच ॥ यावन्न श्रूयतेसम्यग्देवीभागवतंनरैः ॥९॥ तावत्पापाटवीनृणांक्लेशदाऽदभ्रकण्टका॥यावन्नपरशुःप्राप्तोदेवीभागवताभिधः ॥१०॥तावत्क्लेशावहंनृणामुपसर्गमहातमः॥ यावन्नैवोदयंप्राप्तोदेवीभागवतोष्णगुः ॥ ११ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सूतसूतमहाभागवदनोवदतांवर ॥ कीदृशंतत्पुराणंहिविधिस्तच्छ्रवणेचकः ॥ १२ ॥ कतिभिर्वासरैरेतच्छ्रोतव्यंकिंचपूजनम् ॥ कैर्मानवैःश्रुतंपूर्वकान्कान्कामानवाप्नुयुः ॥ १३ ॥ सूतउवाच ॥ विष्णोरंशोमुनिर्जातस्सत्यवत्यांपराशरात् ॥ विभज्यवेदांश्चतुरश्शिष्यानध्यापयत्पुरा ॥ १४ ॥ व्रात्यानांद्विजबन्धूनांवेदेष्वनधिकारिणाम् ॥ स्त्रीणांदुर्मेधसांनृणां धर्मज्ञानंकथंभवेत् ॥ १५ ॥ विचार्यैतत्तमनसाभगवान्बादरायणः ॥ पुराणसंहितांदध्यौतेषांधर्मविधित्सया ॥ १६ ॥ अष्टादशपुराणानिसकृत्वाभगवान्मुनिः ॥ मामेवाध्यापयामास भारताख्यानमेवच ॥ १७ ॥ देवीभागवतंतत्रपुराणंभोगमोक्षदम् ॥ स्वयंतुश्रावयामासजनमेजयभूपतिम् ॥ १८ ॥ पूर्वमस्यपिताराजापरीक्षित्त क्षकाहिना ॥ संदष्टस्तस्यसंशुद्ध्यैराज्ञाभागवतंश्रुतम् ॥ १९ ॥ नवभिर्दिवसैःश्रीमद्वेदव्यासमुखाम्बुजात् ॥ त्रैलोक्यमातरंदेवींपूजयित्वाविधानतः ॥ २० ॥ नवाहयज्ञेसम्पूर्णेपरीक्षिदपिभूपतिः ॥ दिव्यरूपधरोदेव्यास्सालोक्यंतत्क्षणादगात् ॥ २१ ॥ पितुर्दिव्यांगतिंराजाविलोक्यजनमेजयः ॥ व्यासंमुनिंसम भ्यर्च्यपरांमुदमवापह ॥ २२ ॥ अष्टादशपुराणानांमध्येसर्वोत्तमंपरम् ॥ देवीभागवतंनामधर्मकामार्थमोक्षदम् ॥ २३ ॥ येशृण्वंतिसदाभक्त्यादे व्याभागवतींकथाम् ॥ तेषांसिद्धिर्नदूरस्थातस्मात्सेव्यासदानृभिः ॥ २४ ॥ दिनमर्द्धंतदर्द्धंवामुहूर्त्तंक्षणमेववा ॥ येशृण्वन्तिनराभक्त्यानतेषांदुर्गतिः क्वचित् ॥ २५ ॥ सर्वयज्ञेषुतीर्थेषुसर्वदानेषुयत्फलम् ॥ सकृत्पुराणश्रवणात्तत्फलंलभतेनरः ॥ २६ ॥ कृतादौबहवोधर्माःकलौधर्मस्तुकेवलम् ॥ पुराण श्रवणादन्योविद्यतेनापरोनृणाम् ॥ २७ ॥ धर्माचारविहीनानांकलावल्पायुषांनृणाम् ॥ व्यासोहितायविदधेपुराणाख्यंसुधारसम् ॥ २८ ॥ सुधांपिबेन्नैकए

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





वनरःस्यादजरामरः ॥ देव्याःकथामृतंकुर्यात्कुलमेवाजरामरम् ॥ २९ ॥ मासानांनियमोनात्रादिनानांनियमोपिन ॥ सदासेव्यंसदासेव्यंदेवीभागवतंनरैः ॥ ॥ ३० ॥ आश्विनेमधुमासेवातपोमासेशुचौतथा ॥ चतुर्षुनवरात्रेषुविशेषात्फलदायकम् ॥ ३१ ॥ अतोनवाहयज्ञोयंसर्वस्मात्पुण्यकर्मणः ॥ फलाधिकप्रदानेनप्रोक्तःपुण्यप्रदोनृणाम् ॥ ३२ ॥ येदुर्हृदःपापरताविमुढामित्रद्रुहोवेदविनिंदकाश्च ॥ हिंसारतानास्तिकमार्गसक्तानवाहयज्ञेनपुनंतितेकलौ ॥ ३३ ॥ परस्वदाराहरणेतिलुब्धायेवैनराःकल्मषभारभाजः ॥ गोदेवताब्राह्मणभक्तिहीनानवाहयज्ञेनभवंतिशुद्धाः ॥ ३४ ॥ तपोभिरुग्रैर्व्रततीर्थसेवनैर्दानैरनेकैर्नियमैर्मखैश्च ॥ हुतैर्जपैर्यच्चफलंनलभ्यतेनवाहयज्ञेनतदाप्यतेनृणाम् ॥ ३५ ॥ तथानगंगानगयानकाशीननैमिषंनोमथुरानपुष्करम् ॥ पुनातिसद्योवदरीवनंनोयथाहिदेवीमखएषविप्राः ॥ ३६ ॥ अतोभागवतंदेव्याःपुराणंपरतःपरम् ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणामुत्तमंसाधनंमतम् ॥ ३७ ॥ आश्विनस्यसितेपक्षेकन्याराशिगतेरवौ ॥ महाष्टम्यांसमभ्यर्च्यहैमसिंहासनस्थितम् ॥ ३८ ॥ देवीप्रीतिप्रदंभक्त्याश्रीभागवतपुस्तकम् ॥ दद्याद्विप्रायोग्यायसदेव्याःपदवींलभेत् ॥ ३९ ॥ देवीभागवतस्यापिश्लोकंश्लोकार्द्धमेववा ॥ भक्त्यायश्चपठेन्नित्यंसदेव्याःप्रीतिभाग्भवेत् ॥ ४० ॥ उपसर्गभयंघोरंमहामारीसमुद्भवम् ॥ उत्पातानखिलांश्चापिहंतिश्रवणमात्रतः ॥ ४१ ॥ बालग्रहकृतंयच्चभूतप्रेतकृतंभयम् ॥ देवीभागवतस्यास्यश्रवणाद्यातिदूरतः ॥ ॥ ४२ ॥ यस्तुभागवतंदेव्याः पठेद्भक्त्याशृणोतिवा ॥ धर्ममर्थंचकामंचमोक्षंचलभतेनरः ॥ ४३ ॥ श्रवणाद्वसुदेवोस्यप्रसेनान्वेषणेगतम् ॥ चिरायितंप्रियंपुत्रंकृष्णंलब्ध्वामुमोदह ॥४४॥ यएतांशृणुयाद्भक्त्याश्रीमद्भागवतींकथाम् ॥ भुक्तिंमुक्तिंसलभतेभक्त्यायश्चपठेदिमाम् ॥ ४५ ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंदरिद्रोधनवान्भवेत् ॥ रोगीरोगात्प्रमुच्येतश्रुत्वाभागवतामृतम् ॥ ४६ ॥ वंध्यावाकाकवंध्यावामृतवत्साचयांगना ॥ देवीभागवतंश्रुत्वालभेत्पुत्रंचिरायुषम् ॥ ४७ ॥ पूजितंयद्गृहेनित्यंश्रीभागवतपुस्तकम् ॥ तद्गृहंतीर्थभूतंहिवसतांपापनाशकम्॥४८॥अष्टम्यांवाचतुर्दश्यांनवम्यांभक्तिसंयुतः ॥ यःपठेच्छृणुयाद्वापिससिद्धिंलभतेपराम् ॥ ४९ ॥ पठन्द्विजोवेदविदग्रणीर्भवेद्बाहुप्रजातोधरणीपतिःस्यात् ॥ वैश्यःपठन्वित्तसमृद्धिमेतिशूद्रोपिशृण्वन्स्वकुलोत्तमस्स्यात् ॥ ५० ॥ ॥ इतिश्रीस्कन्दपुराणेमानसखण्डेदेवीभागवतमाहात्म्येप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ऋषयऊचुः ॥ ॥ वसुदेवोमहाभागःकथंपुत्रमवाप्तवान् ॥ प्रसेनःकुत्रकृष्णेनभ्रमतान्वेषितःकथम् ॥ १ ॥ विधिनाकेनकस्माच्चदेवीभागवतंश्रुतम् ॥ वसुदेवेनसुमतेवदसूतकथामिमाम् ॥ २ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ सत्राजिद्भोजवंशीयोद्वारवत्यांसुखंवसन् ॥ सूर्यस्याराधनेयत्तोभक्तश्चपरमस्सखा ॥ ३ ॥ अथकालेनकियताप्रसन्नस्सविताभवत् ॥ स्वलोकंदर्शयामासतद्भक्त्याप्रणयेनच ॥ ४ ॥ तस्मैप्रीतश्चभगवान्स्यमंतकमणिंददौ ॥ सतंबिभ्रन्मणिंकण्ठेद्वारकामाजगामह ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दृष्ट्वातंतेजसाभ्रांतामत्वादित्यंपुरौकसः ॥ कृष्णमूचुस्समभ्येत्यसुधर्मायामवस्थितम् ॥ ६ ॥ एषआयातिसवितादिदृक्षुस्त्वांजगत्पते ॥ श्रुत्वाकृष्णस्तु
तद्वाचंप्रहस्योवाचसंसदि ॥ ७ ॥ सवितानैषभोबालाःसत्राजिन्मणिनाज्वलन् ॥ स्यमन्तकेनचायातिभास्वद्दत्तेनभास्वता ॥ ८ ॥ अथविप्रान्समाहूय
स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ॥ प्रावेशयत्समभ्यर्च्यसत्राजित्स्वगृहेमणिम् ॥ ९ ॥ नतत्रमारीदुर्भिक्षंनोपसर्गभयंक्वचित् ॥ यत्रास्तेसमणिर्नित्यमष्टभारसुवर्णदः
॥ १० ॥ अथसत्राजितोभ्राताप्रसेनोनामकर्हिचित् ॥ कण्ठेबध्वामणिंसद्योहयमारुह्यसैंधवम् ॥ ११ ॥ मृगयार्थंवनंयातस्तमद्राक्षीन्मृगाधिपः॥प्रसेनंसहयंह
त्वासिंहोजग्राहतंमणिम् ॥ १२ ॥ जाम्बवानृक्षराजोथदृष्ट्वामणिधरंहरिम् ॥ हत्वाचतंबिलद्वारिमणिंजग्राहवीर्यवान् ॥ १३ ॥ सतंमणिंस्वपुत्रायक्रीड
नार्थमदात्प्रभुः ॥ अथचिक्रीडबालोपिमणिंसंप्राप्यभास्वरम् ॥१४॥ प्रसेनेऽनागतेचाथसत्राजित्पर्यतप्यत ॥ नजानेकेनानिहतःप्रसेनोमणिमिच्छता॥१५ ॥
अथलोकमुखोद्गीर्णाकिंवदन्तीपुरेभवत् ॥ कृष्णेननिहतोनूनंप्रसेनोमणिलिप्सुना ॥ १६ ॥ सतंशुश्रावकृष्णोपिदुर्यशोलिप्तमात्मनि ॥ मार्ष्टुतत्तस्यपदवींपुरौ
कोभिस्सहागमत् ॥ १७ ॥ गत्वासविपिनेपश्यत्प्रसेनंहरिणाहतम् ॥ ययौमृगेन्द्रमन्विष्यन्नसृग्बिद्धंकिताध्वना ॥ १८ ॥ अथकृष्णोहतंसिंहंबिलद्वारि
विलोक्यच ॥ उवाचभगवान्वाचंकृपयापुरवासिनः ॥ १९ ॥ तिष्ठध्वंयूयमत्रैवयावदागमनंमम ॥ प्रविशामिबिलंत्वेनन्मणिहारकलब्धये ॥ २० ॥
तथेत्युक्त्वातुतेतस्थुस्तत्रैवद्वारकौकसः॥जगामांतर्बिलंकृष्णोयत्रजाम्बवतोगृहम्॥२१॥ऋक्षराजसुतंदृष्ट्वाकृष्णोमणिधरंतदा ॥ हर्तुमैच्छन्मणिंतावद्धात्रीचु
क्रोशभीतवत् ॥२२॥ श्रुत्वाधात्रीरवंसद्यःसमागत्यर्क्षराट्तदा ॥ युयुधेस्वामिनासाकमविश्रममहर्निशम् ॥२३॥ एवंत्रिनवरात्रंतुमहद्युद्धमभूत्तयोः ॥ कृष्णा
गमंप्रतीक्षंस्तेतस्थुर्द्वारिपुरौकसः ॥२४॥ द्वादशाहंततोभीत्याप्रतिजग्मुर्निजालयम् ॥ तत्रतेकथयामासुर्वृत्तांतंसर्वमादितः ॥२५॥ सत्राजितंशपंतस्तेसर्वेशो
काकुलाभृशम् ॥ वसुदेवोमहाभागःश्रुत्वापुत्रस्यतांकथाम् ॥ २६ ॥ मुमोहसपरीवारस्तदापरमयाशुचा ॥ चिन्तयामासबहुधाकथंश्रेयोभवेन्मम ॥ २७ ॥
अथाजगामभगवान्देवर्षिर्ब्रह्मलोकतः ॥ उत्थायतंप्रणम्यासौवसुदेवोभ्यपूजयत् ॥ २८ ॥ नारदोनामयंपृष्ट्वावसुदेवंमहामतिम् ॥ पप्रच्छचयदुश्रेष्ठंकिंचितय
सितद्वद ॥ २९ ॥ वसुदेवउवाच ॥ पुत्रोमेऽतिप्रियःकृष्णःप्रसेनान्वेषणायतु ॥ पौरैस्साकंवनंगत्वानिहतंतंतदैक्षत ॥ ३० ॥ प्रसेनघातकंदृष्ट्वाबिलद्वारेमृतं
हरिम् ॥ द्वारिपौरानधिष्ठायबिलांतर्गतवान्स्वयम् ॥ ३१ ॥ बहवोदिवसायातानायात्यद्यापिमेसुतः ॥ अतश्शोचामितद्बूहियेनलप्स्येसुतंमुने ॥ ३२ ॥ नारद
उवाच ॥ पुत्रप्राप्त्यैयदुश्रेष्ठदेवीमाराधयांबिकाम् ॥ तस्याआराधनेनैवसद्यःश्रेयोह्यवाप्स्यसि ॥३३॥ वसुदेवउवाच ॥ भगवन्काहिसादेवीकिंप्रभावामहेश्वरी॥
कथमाराधनंतस्यादेवर्षेकृपयावद ॥ ३४ ॥ नारदउवाच ॥ वसुदेवमहाभागशृणुसंक्षेपतोमम ॥ देव्यामाहात्म्यमतुलंकोवक्तुंविस्तरात्क्षमः ॥ ३५ ॥ या

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





साभगवतीनित्यासच्चिदानन्दरूपिणी ॥ परात्परतरादेवीययाव्याप्तमिदंजगत् ॥ ३६ ॥ यदाराधनतोब्रह्मासृजतीदंचराचरम् ॥ यांचस्तुत्वाविनिर्मुक्तोमधु
कैटभजाद्भयात् ॥ ३७ ॥ विष्णुर्यत्कृपयाविश्वंबिभर्तिभगवानिदम् ॥ रुद्रस्संहरतेयस्याः कृपापांगनिरीक्षणात् ॥ ३८ ॥ संसारबंधहेतुर्यासैवमुक्तिप्रदा
यिनी ॥ साविद्यापरमादेवीसैवसर्वेश्वरेश्वरी ॥ ३९ ॥ नवरात्रविधानेनसम्पूज्यजगदंबिकाम् ॥ नवाहोभिः पुराणंचदेव्याभागवतंशृणु ॥ ४० ॥ यस्यश्रवण
मात्रेणसद्यःपुत्रमवाप्स्यसि ॥ भुक्तिर्मुक्तिर्नदूरस्थापठतांशृण्वतांनृणाम् ॥ ४१ ॥ इत्युक्तोनारदेनासौवसुदेवःप्रणम्यतम् ॥ उवाचपरयाप्रीत्यानारदंमुनिस
त्तमम् ॥ ४२ ॥ वसुदेवउवाच ॥ भगवंस्तववाक्येनसंस्मृतंवृत्तमात्मनः ॥ श्रूयतांतच्चवक्ष्यामिदेवीमाहात्म्यसंभवम् ॥ ४३ ॥ पुरानभोगिराकंसोदेव
क्यष्टमगर्भतः ॥ ज्ञात्वात्ममृत्युंपापोमांसभार्यंन्यरुणद्भिया ॥ ४४ ॥ कारागारेहमवसंदेवक्यासहभार्यया ॥ जातंजातंसमवधीत्पुत्रंकंसोपिपापकृत् ॥
॥ ४५ ॥ षट्पुत्रानिहतास्तेनतदाशोकाकुलाभृशम् ॥ अतप्यद्देवकीदेवीनक्तंदिवमनिन्दिता ॥ ४६ ॥ तदाहंगर्गमाहूयमुनिंनत्वाभिपूज्यच ॥ निवेद्यदेवकी
दुःखमवोचंपुत्रकाम्यया ॥ ४७ ॥ भगवन्करुणासिन्धोयादवानांगुरुर्भवान् ॥ आयुष्मत्पुत्रसंप्राप्तिसाधनंवदमेमुने ॥४८॥ ततोगर्गः प्रसन्नात्मामामुवाचदया
निधिः॥गर्गउवाच ॥ ॥ वसुदेवमहाभागशृणुतत्साधनम्परम्॥४९॥यासाभगवतीदुर्गाभक्तदुर्गतिहारिणी॥तामाराधयकल्याणींसद्यःश्रेयोह्यवाप्स्यसि॥५०॥
यदाराधनतस्सर्वेसर्वान्कामानवाप्नुयुः ॥ नकिंचिदुर्लभंलोकेदुर्गार्चनवतांनृणाम् ॥ ५१ ॥ इत्युक्तोहंमुदायुक्तःसभार्योमुनिपुंगवम् ॥ प्रणम्यपरयाभक्त्या
प्रावोचंविहितांजलिः ॥ ५२ ॥ वसुदेवउवाच ॥ यद्यस्तिभगवन्प्रीतिर्मयितेकरुणानिधे ॥ तदागुरोमदर्थंत्वंसमाराधयचण्डिकाम् ॥ ५३ ॥ निरुद्धःकंस
गेहेहंनकिंचित्कर्तुमुत्सहे ॥ अतस्त्वमेवदुःखाब्धेर्मामुद्धरमहामते ॥ ५४ ॥ इत्युक्तस्तुमयाप्रीतःप्रोवाचमुनिपुंगवः ॥ वसुदेवतवप्रीत्याकरिष्यामिहितंतव
॥ ५५ ॥ अथगर्गमुनिःप्रीत्यामयासंप्रार्थितोगमत् ॥ आरिराधयिषुर्दुर्गांविंध्याद्रिंब्राह्मणैस्सह ॥ ५६ ॥ तत्रगत्वाजगद्धात्रींभक्ताभीष्टप्रदायिनीम् ॥ आरा
धयामासमुनिर्जपपाठग्ररायणः ॥ ५७ ॥ ततस्समाप्तेनियमेवागुवाचाशरीरिणी ॥ प्रसन्नाहंमुनेकार्यसिद्धिस्तवभविष्यति ॥ ५८ ॥ भूभारहरणार्थायाम
यासंप्रेरितोहरिः ॥ वसुदेवस्यदेवक्यांस्वांशेनावतरिष्यति ॥ ५९ ॥ कंसभीत्यातमादायबालमानकदुंदुभिः ॥ प्रापयिष्यतिसद्यस्तुगोकुलेनन्दवेश्मनि ॥
॥ ६० ॥ यशोदातनयांनीत्वास्वगृहेकंसभूभुजे ॥ दास्यत्यथचतांहंतुंकंसआक्षेप्स्यतिक्षितौ ॥ ६१ ॥ सातद्धस्ताद्विनिर्गत्यसद्योदिव्यवपुर्द्धरा ॥ मदंश
भूताविंध्याद्रौकरिष्यतिजगद्धितम् ॥ ६२ ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वाप्रणम्यजगदंबिकाम् ॥ गर्गोमुनिःप्रसन्नात्मामथुरामगमत्पुरीम् ॥ ६३ ॥ वरदानंमहादेव्याग
र्गाचार्यमुखादहम् ॥ श्रुत्वासभार्यस्संप्रीतः परांमुदमथागमम् ॥ ६४ ॥ तदारभ्यपरंजानेदेवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ अधुनापिहिदेवर्षेश्रुतंतवमुखांबुजात



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६५ ॥ अतोभागवतंदेव्यास्त्वमेवश्रावयप्रभो ॥ मद्भाग्यादेवदेवर्षेसंप्राप्तोसिदयानिधे ॥ ६६ ॥ वसुदेववचःश्रुत्वानारदःप्रीतमानसः ॥ सुदिनेशुभनक्षत्रेकथारंभमथाकरोत् ॥ ६७ ॥ कथाविघ्नविघातार्थंद्विजाजेपुर्नवाक्षरम् ॥ मार्कण्डेयपुराणोक्तंपेठुर्देव्याः स्तवंतथा ॥६८॥ प्रथमस्कंधमारभ्यश्रीनारदमुखोद्गतम्॥शुश्राववसुदेवश्चभक्त्याभागवतामृतम्॥६९॥नवमेह्निकथापूर्तौपुस्तकंवाचकंतथा॥प्रसन्नः पूजयामासवसुदेवोमहामनाः ॥७०॥ अथतत्रविलस्यांतःकृष्णजांववतोर्मृधे ॥ कृष्णमुष्टिविनिष्पातश्चथांगोजांववानभूत् ॥ ७१ ॥ अथागतस्मृतिस्सोपिभगवंतंप्रणम्यच ॥ उवाचपरयाभक्त्यास्वापराधंक्षमापयन् ॥ ७२ ॥ ज्ञातोसिरघुवर्यस्त्वंयद्रोषात्सरितांपतिः ॥ क्षोभंजगामलंकाचरावणः सानुगोहतः ॥ ७३ ॥ सएवासिभवान्कृष्णमद्दौरात्म्यंक्षमस्वभोः ॥ ब्रूहियत्करणीयंमेभृत्योहंतवसर्वथा ॥ ७४ ॥ श्रुत्वाजांबवतोवाचमब्रवीज्जगदीश्वरः ॥ मणिहेतोरिहप्राप्तावयमृक्षपतेबिलम् ॥ ७५ ॥ ऋक्षराजस्ततःप्रीत्याकन्यांजाम्बवतींनिजाम् ॥ ददौकृष्णायसंपूज्यस्यमंतकमणिंतथा ॥ ७६ ॥ सतांपत्नींसमादायमणिंकंठेतथादधत् ॥ अभिमंत्र्यर्क्षराजश्चप्रतस्थेद्वारकांप्रति ॥ ७७ ॥ कथासमाप्तिदिवसेवसुदेवउदारधीः ॥ ब्राह्मणान्भोजयामासदक्षिणाभिरतोषयत् ॥ ७८ ॥ आशीर्वाचंप्रयुंजानाद्विजायत्समयेहरिः ॥ आजगामक्षणेतस्मिन्पत्न्यासहमणिंदधत् ॥ ७९ ॥ भार्ययासहितंकृष्णंवसुदेवपुरोगमाः ॥ दृष्ट्वाहर्षाश्रुपूर्णाक्षास्समवापुः परांमुदम् ॥ ८० ॥ देवर्षिर्नारदश्चाथकृष्णागमनहर्षितः ॥ आमंत्र्यवसुदेवंचकृष्णंब्रह्मसभांययौ ॥ ८१ ॥ हरिचरितमिदंयत्कीर्तितंदुर्यशोघ्नंपठतिविमलभक्त्याशुद्धचित्तःशृणोति ॥ सभवतिसुखपूर्णःसर्वदासिद्धिकामोजगतिचवपुषोन्तेमुक्तिमार्गंलभेच्च ॥ ८२ ॥ ॥ इतिश्रीस्कन्दपुराणेमानसखण्डेश्रीदेवीभागवतमाहात्म्येद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ अथेतिहासमन्यच्चशृणुध्वंमुनिसत्तमाः ॥ देवीभागवतस्यास्यमाहात्म्यंयत्रगीयते ॥ १ ॥ एकदाकुंभयोनिस्तुलोपामुद्रापतिर्मुनिः ॥ गत्वाकुमारमभ्यर्च्यपप्रच्छविविधाः कथाः ॥ २ ॥ सतस्मैभगवान्स्कन्दःकथयामासभूरिशः ॥ दानतीर्थव्रतादीनांमाहात्म्योपचिताःकथाः ॥ ३ ॥ वाराणस्याश्चमाहात्म्यंमणिकर्णीभवंतथा ॥ गंगायाश्चापितीर्थानांवर्णितंबहुविस्तरम् ॥ ४ ॥ श्रुत्वाथसमुनिः प्रीतः कुमारंभूरिवर्चसम् ॥ पुनःपप्रच्छलोकानांहितार्थंकुंभसंभवः ॥ ५ ॥ अगस्त्यउवाच ॥ भगवंस्तारकारातेदेवीभागवतस्यतु ॥ माहात्म्यंश्रवणेतस्यविधिंचापिवदप्रभो ॥ ६ ॥ देवीभागवतंनामपुराणंपरमोत्तमम् ॥ त्रैलोक्यजननीसाक्षाद्गीयतेयत्रशाश्वती ॥ ७ ॥ स्कंदउवाच ॥ श्रीभागवतमाहात्म्यंकोवक्तुंविस्तरात्क्षमः ॥ शृणुसंक्षेपतोब्रह्मन्कथयिष्यामिसांप्रतम् ॥ ८ ॥ यानित्यासच्चिदानन्दरूपिणीजगदम्बिका ॥ साक्षात्समाश्रितायत्रभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥९॥ अतस्तद्वाङ्मयीमूर्तिर्देवीभागवतंमुने ॥ पठनाच्छ्रवणाद्यस्यनकिंचिदिहदुर्लभम् ॥ १० ॥ आसीद्विवस्वतः पुत्रः श्राद्धदेवइतिश्रुतः ॥ सोऽनपत्योकरोदिष्टिंवसिष्ठानुमतो

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नृपः ॥ ११ ॥ होतारंप्रार्थयामासश्रद्धाथदयितामनोः ॥ कन्याभवतुमेब्रह्मंस्तथोपायोविधीयताम् ॥ १२ ॥ मनसाचिंतयन्होताकन्यामेवाजुहोद्धविः ॥ ततस्तद्व्यभिचारेणकन्येलानामचाभवत् ॥ १३ ॥ अथराजासुतांदृष्ट्वाप्रोवाचविमनागुरुम् ॥ कथंसंकल्पवैषम्यमिहजातंप्रभोतव ॥ १४ ॥ तच्छ्रुत्वा समुनिर्दध्यौज्ञात्वाहोतुर्व्यतिक्रमम् ॥ ईश्वरंशरणंयातइलायाःपुंस्त्वकाम्यया ॥ १५ ॥ मुनेस्तपःप्रभावाच्चपरेशानुग्रहात्तथा ॥ पश्यतांसर्वलोकाना मिलापुरुषतामगात् ॥ १६ ॥ गुरुणाकृतसंस्कारःसुद्युम्नोथमनोस्सुतः ॥ निधिर्वभूवविद्यानांसरितामिवसागरः ॥ १७ ॥ अथकालेनसुद्युम्नस्तारुण्यंसम वाप्यच ॥ मृगयार्थंवनंयातोहयमारुह्यसैन्धवम् ॥ १८ ॥ वनाद्वनांतरंगच्छन्बहुवभ्रामसानुगः ॥ दैवादधस्ताद्धेमाद्रेस्सकुमारोवनंययौ ॥ १९ ॥ कस्मिं श्चित्समयेयत्रभार्ययापर्णयासह ॥ अरमद्देवदेवस्तुशंकरोभगवान्मुदा ॥ २० ॥ तदातुमुनयस्तत्रशिवदर्शनलालसाः ॥ आजग्मुरथतान्दृष्ट्वागिरिजाव्रीडि ताभवत्॥२१॥रममाणौतुतौदृष्ट्वागिरिशौसंशितव्रताः॥निवृत्तामुनयोजग्मुर्वैकुण्ठनिलयंतदा ॥ २२ ॥ प्रियायाःप्रियमन्विच्छंश्छिद्रोरण्यंशशापह॥अद्यारभ्य विशेद्योत्रपुमान्योपिद्भवेदिति ॥२३॥ ततआरभ्यतंदेशंपुरुषावर्जयंतिहि॥तत्रप्रविष्टःसुद्युम्नोवभूवप्रमदोत्तमा॥२४॥स्त्रीभूताननुगानश्वंवडवांवीक्ष्यविस्मितः॥ अथसासुन्दरीयोषाविचचारवनेवने ॥ २५ ॥ एकदासाजगामाथबुधस्याश्रमसन्निधौ ॥ दृष्ट्वातांचारुसर्वांगींपीनोन्नतपयोधराम् ॥ २६ ॥ बिंबोष्ठींकुन्द दशनांसुमुखीमुत्पलेक्षणाम् ॥ अनंगशरविद्धांगश्चकमेभगवान्बुधः ॥ २७ ॥ सापितंचकमेसुभ्रूःकुमारंसोमनंदनम् ॥ ततस्तस्याश्रमेवात्सीद्रममाणाबुधे नसा ॥ २८ ॥ अथकालेनकियतापुरूरवसमात्मजम् ॥ सतस्यांजनयामासमित्रावरुणसंभव ॥ २९ ॥ अथवर्षेषुयातेषुकदाचित्साबुधाश्रमे ॥ स्मृत्वा स्वंपूर्ववृत्तांतंदुःखितानिर्जगामह ॥ ३० ॥ गुरोरथाश्रमंगत्वावासिष्ठस्यप्रणम्यतम् ॥ निवेद्यवृत्तंशरणंययौपुंस्त्वमभीप्सती ॥ ३१ ॥ वसिष्ठोज्ञातवृत्तांतो गत्वाकैलासपर्वतम् ॥ संपूज्यशंभुंतुष्टावभक्त्यापरमयायुतः ॥ ३२ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ नमोनमःशिवायास्तुशंकरायकपर्दिने ॥ गिरिजार्द्धांगदेहायनम स्तेचंद्रमौलये॥३३॥मृडायसुखदात्रेतेनमःकैलासवासिने ॥ नीलकण्ठायभक्तानांभुक्तिमुक्तिप्रदायिने ॥ ३४ ॥ शिवायशिवरूपायप्रपन्नभयहारिणे ॥ नमो वृषभवाहायशरण्यायपरात्मने ॥ ३५ ॥ ब्रह्मविष्ण्वीशरूपायसर्गस्थितिलयेषुच ॥ नमोदेवाधिदेवायवरदायपुरारये ॥ ३६ ॥ यज्ञरूपाययजतांफल दात्रेनमोनमः ॥ गंगाधरायसूर्येन्दुशिखिनेत्रायतेनमः ॥ ३७ ॥ एवंस्तुतस्सभगवान्प्रादुरासीज्जगत्पतिः ॥ वृषारूढोम्बिकोपेतःकोटिसूर्यसमप्रभः ॥ ॥ ३८ ॥ रजताचलसंकाशस्त्रिणेत्रश्चंद्रशेखरः ॥ प्रणतंपरितुष्टात्माप्रोवाचमुनिसत्तमम् ॥ ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वरंवरयविप्रर्षेयत्तेमनसिवर्तते ॥ इत्यु क्तस्तंप्रणम्येलापुँस्त्वमभ्यर्थयन्मुनिः ॥ ४० ॥ अथप्रसन्नोभगवानुवाचमुनिसत्तमम् ॥ मासंपुमान्सभवितामासंनारीभविष्यति ॥ ४१ ॥ इतिप्राप्यवरं



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

शंभोर्महर्षिर्जगदम्बिकाम् ॥ वरदानोन्मुखींदेवींप्रणनाममहेश्वरीम् ॥ ४२ ॥ कोटिचंद्रकलाकान्तिसुस्मितांपरिपूज्यच ॥ तुष्टावभक्त्यासततमिलायाः पुंस्त्वकाम्यया ॥ ४३ ॥ जयदेविमहादेविभक्तानुग्रहकारिणि ॥ जयसर्वसुराराध्येजयानन्तगुणालये ॥ ४४ ॥ नमोनमस्तेदेवेशिशरणागतवत्सले ॥ जयदुर्गेदुःखहंत्रिदुष्टदैत्यनिषूदिनि ॥ ४५ ॥ भक्तिगम्येमहामायेनमस्तेजगदम्बिके ॥ संसारसागरोत्तारपोतीभूतपदाम्बुजे ॥ ४६ ॥ ब्रह्मादयोपिविबुधास्त्वत्पादांबुजसेवया ॥ विश्वसर्गस्थितिलयप्रभुत्वंसमवाप्नुयुः ॥ ४७ ॥ प्रसन्नाभवदेवेशिचतुर्वर्गप्रदायिनि ॥ कस्त्वांस्तोतुंक्षमोदेविकेवलंप्रणतोस्म्यहम् ॥ ४८ ॥ एवंस्तुताभगवतीदुर्गानारायणीपरा ॥ भक्त्यावसिष्ठमुनिनाप्रसन्नातत्क्षणादभूत् ॥ ४९ ॥ तदोवाचमहादेवीप्रणतार्तिहरीमुनिम् ॥ सुद्युम्नभवनंगत्वाकुरुभक्त्यामदर्चनम् ॥ ५० ॥ सुद्युम्नंश्रावयप्रीत्यापुराणंमत्प्रियंकरम् ॥ देवीभागवतंनामनवाहोभिर्द्विजोत्तम ॥ ५१ ॥ श्रवणादेवसततंपुंस्त्वमस्यभविष्यति ॥ इत्युक्त्वाचतिरोधानंगच्छतःस्मशिवेश्वरौ ॥ ५२ ॥ वसिष्ठस्तांदिशंनत्वासमागत्याश्रमंनिजम् ॥ समाहूयचसुद्युम्नंदेव्याराधनमादिशत् ॥५३॥ आश्विनस्यसितेपक्षेसंपूज्यजगदंबिकाम् ॥ नवरात्रविधानेनश्रावयामासभूपतिम् ॥ ५४ ॥ श्रुत्वाभक्त्यापिसुद्युम्नःश्रीमद्भागवतामृतम् ॥ प्रणम्याभ्यर्च्यचगुरुंलेभेपुँस्त्वंनिरंतरम् ॥ ५५ ॥ राज्यासनेऽभिषिक्तस्तुवसिष्ठेनमहर्षिणा ॥ भुवंशशासधर्मेणप्रजाश्चैवानुरंजयन् ॥ ५६ ॥ ईजेचविविधैर्यज्ञैःसंपूर्णवरदक्षिणैः ॥ पुत्रेषुराज्यंसंदिश्यप्रापदेव्याःसलोकताम् ॥ ५७॥ इतिकथितमशेषंसेतिहासंचविप्रायदिपठतिसुभक्त्यामानवोवाशृणोति ॥ सइहसकलकामान्प्राप्यदेव्याःप्रसादात्परममृतमथान्तेयातिदेव्यास्सलोकम्॥५८॥ ॥इतिश्रीस्कंदपुराणेमानसखण्डेदेवीभागवतमाहात्म्येतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ सूतउवाच ॥ इतिश्रुत्वाकथांदिव्यांविचित्रांकुंभसंभवः ॥ शुश्रूषुःपुनराहेदंविशाखंविनयान्वितः ॥ १ ॥ अगस्त्यउवाच ॥ देवसेनापतेदेवविचित्रेयंश्रुताकथा ॥ पुनरन्यच्चमाहात्म्यंवदभागवतस्यमे ॥ २ ॥ स्कंदउवाच ॥ मित्रावरुणसंभूतमुनेशृणुकथामिमाम् ॥ यत्रैकदेशमहिमाप्रोक्तोभागवतस्यतु ॥ ३ ॥ वर्ण्यतेधर्मविस्तारोगायत्रीमधिकृत्यच ॥ गायत्र्यामहिमायत्रतद्भागवतमिष्यते॥४॥भगवत्याइदंयस्मात्तस्माद्भागवतंविदुः॥ब्रह्मविष्णुशिवाराध्यापराभगवतीहिसा॥५॥ऋतवागितिविख्यातोमुनिरासीन्महामतिः॥तस्यपुत्रोभवत्कालेगण्डान्तेपौष्णभान्तिमे ॥ ६ ॥ सतस्यजातकर्मादिक्रियाश्चक्रेयथाविधि॥चूडोपनयनादींश्चसंस्कारानपिसोकरोत्॥७॥यतआरभ्यजातोसौपुत्रस्तस्यमहात्मनः॥ ततएवाथसमुनिश्शोकरोगाकुलोभवत् ॥८॥ रोषलोभपरीतात्मातथामातापितस्यच ॥ बहुरोगार्दितानित्यंशुचादुःखीकृताभृशम्॥९॥ऋतवाक्समुनिश्चिन्तामवापभृशदुःखितः ॥ किमेतत्कारणंजातंपुत्रोमेत्यंतदुर्मतिः॥१०॥कस्यचिन्मुनिपुत्रस्यबलात्पत्नींजहारच ॥ मेनेशिक्षांपितुर्नासौनचमातुर्विमूढधीः ॥ ११ ॥ ततोविषण्णचित्तस्तुऋतवागब्रवीदिदम् ॥ अपुत्रतावरंनृणांनकदाचित्कु

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पुत्रता ॥ १२ ॥ पितॄन्कुपुत्रःस्वर्याताञ्निरयेपातयत्यपि ॥ यावज्जीवन्त्सदापित्रोःकेवलंदुःखदायकः ॥ १३ ॥ पित्रोर्दुःखायधिग्जन्मकुपुत्रस्यचपापिनः ॥
सुहृदांनोपकारायनापकारायवैरिणाम् ॥ १४ ॥ धन्यास्तेमानवालोकेसुपुत्रोयद्गृहेस्थितः ॥ परोपकारशीलश्चपितुर्मातुःसुखावहः ॥ १५ ॥ कुपुत्रेणकु
लंनष्टंकुपुत्रेणहतंयशः ॥ कुपुत्रेणेहचामुत्रदुःखंनिरययातनाः ॥ १६ ॥ कुपुत्रेणान्वयोनष्टोजन्मनष्टंकुभार्यया ॥ कुभोजनेनदिवसःकुमित्रेणसुखंकुतः ॥
॥ १७ ॥ स्कन्दउवाच ॥ एवंदुष्टस्यपुत्रस्यदुष्टैराचरणैर्मुनिः ॥ तप्यमानोनिशंकालेगत्वागर्गमपृच्छत ॥१८॥ ऋतवागुवाच ॥ भगवंस्त्वामहंप्रष्टुमिच्छा
मिवदतत्प्रभो ॥ ज्योतिश्शास्त्रस्यचाचार्यपुत्रदौःशील्यकारणम् ॥ १९ ॥ गुरुशुश्रूषयावेदाअधीताविधिवन्मया ॥ ब्रह्मचारिव्रतंतीर्त्वाविवाहोविधिवत्कृ
तः ॥ २० ॥ भार्ययासहगार्हस्थ्यधर्मश्चानुष्ठितोनिशम् ॥ पंचयज्ञविधानंचमयाकारियथाविधि ॥ २१ ॥ नरकाद्बिभ्यताविप्रनतुकामसुखेच्छया ॥ ग
र्भाधानंचविधिवत्पुत्रप्राप्त्यैमयाकृतम् ॥ २२ ॥ पुत्रोयंममदोषेणमातुर्दोषेणवामुने ॥ जातोदुःखावहःपित्रोर्दुःशीलोबंधुशोकदः ॥ २३ ॥ एतन्नि
शम्यवचनंगर्गाचार्योमुनेस्तदा ॥ विचार्यसर्वंतद्धेतुंज्योतिर्विद्वाचमब्रवीत् ॥ २४ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ मुनेनैवापराधस्तेनमातुर्नकुलस्यच ॥ रे
वत्यंतंतुगण्डान्तंपुत्रदौःशील्यकारणम् ॥ २५ ॥ दुष्टेकालेयतोजन्मपुत्रस्यतवभोमुने ॥ तेनैवतवदुःखायनान्योहेतुर्मनागपि ॥ २६ ॥ तद्दुः
खशांतयेब्रह्मञ्जगतांमातरंशिवाम् ॥ समाराधययत्नेनदुर्गांदुर्गतिनाशिनीम् ॥ २७ ॥ गर्गस्यवचनंश्रुत्वाऋतवाक्क्रोधमूर्च्छितः ॥ रेवतींतुशशापासौ
व्योम्नःपततुरेवती ॥ २८ ॥ दत्तेशापेतुतेनाथपूष्णोभंचपपातखात् ॥ कुमुदाद्रौभासमानंसर्वलोकस्यपश्यतः ॥ २९ ॥ ख्यातोरैवतकश्चाभूत्त
त्पातात्कुमुदाचलः ॥ अतीवरमणीयश्चततःप्रभृतिसोप्यभूत् ॥ ३० ॥ दत्त्वाशापंचरेवत्यैगर्गोक्तविधिनामुनिः ॥ समाराध्यांबिकांदेवींसुखसौभाग्य
भागभूत् ॥ ३१ ॥ स्कन्दउवाच ॥ रेवत्यृक्षस्ययत्तेजस्तस्माज्जातातुकन्यका ॥ रूपेणाप्रतिमालोकेद्वितीयाश्रीरिवाभवत् ॥ ३२ ॥ अथतांप्रमुचः
कन्यांरेवतीकांतिसंभवाम् ॥ दृष्ट्वानामचकारास्यारेवतीतिमुदामुनिः ॥३३॥ निन्येथस्वाश्रमेचैनांपोषयामासधर्मतः॥ब्रह्मर्षिःप्रमुचोनामकुमुदाद्रौसुतामिव ॥
॥ ३४ ॥ अथकालेनचप्रौढांदृष्ट्वातांरूपशालिनीम् ॥ समुनिश्चिन्तयामासकोस्यायोग्योवरोभवेत् ॥ ३५ ॥ बहुधान्वेषयंस्तस्यानाससादोचि
तंपतिम् ॥ ततोग्निशालांसंविश्यमुनिस्तुष्टावपावकम् ॥ ३६ ॥ कन्यावरंतदाशंसत्प्रीतस्तमापिहव्यवाट् ॥ धर्मिष्ठोबलवान्वीरःप्रियवागपराजितः॥
॥ ३७ ॥ दुर्दमोभविताभर्तामुनेऽस्याःपृथिवीपतिः ॥ इतिश्रुत्वावचोवह्नेःप्रसन्नोभून्मुनिस्तदा ॥ ३८ ॥ दैवादाखेटकव्याजात्तत्क्षणादागतोनृपः ॥ दुर्द
मोनाममेधावीतस्याश्रमपदंमुनेः ॥ ३९ ॥ पुत्रोविक्रमशीलस्यबलवान्वीर्यवत्तरः ॥ कालिंदीजठरेजातःप्रियव्रतकुलोद्भवः ॥ ४० ॥ मुनेराश्रममाविश्य



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तमदृष्ट्वामहामुनिम् ॥ आमंत्र्यतांप्रियेचेतिरेवतींपृष्टवान्नृपः ॥ ४१ ॥ राजोवाच ॥ महर्षिर्भगवानस्मादाश्रमात्क्वगतःप्रिये ॥ तत्पादौद्रष्टुमिच्छामिवदक
ल्याणितत्त्वतः ॥ ४२ ॥ कन्योवाच ॥ अग्निशालामुपगतोमहाराजमहामुनिः ॥ निश्चक्रामाश्रमात्तूर्णंराजाप्याकर्ण्यतद्वचः ॥ ४३ ॥ अथाग्निशालाद्वार
स्थंराजानंदुर्दमंमुनिः ॥ राजलक्षणसंयुक्तमपश्यत्प्रश्रयानतम् ॥ ४४ ॥ प्रणनामचतंराजामुनिःशिष्यमुवाचह ॥ गौतमानीयतामर्घ्यमर्घ्ययोग्योस्तिभूप
तिः ॥ ४५ ॥ आगतश्चिरकालेनजामातेतिविशेषतः ॥ इत्युक्त्वार्घ्यंददौतस्मैसोपिजग्राहाचिन्तयन् ॥ ४६ ॥ मुनिरासनमासीनंगृहीतार्घ्यंचभूपतिम् ॥
आशीर्भिरभिनंद्याथकुशलंचाप्यपृच्छत ॥ ४७ ॥ अयितेऽनामयंराजन्बलेकोशेसुहृत्सुच ॥ भृत्येऽमात्येपुरेदेशेतथात्मनिजनाधिप ॥ ४८ ॥ भार्या
स्तिततेकुशलिनीयतःसात्रैवतिष्ठति ॥ अतोनपृच्छाम्यस्यास्तेचान्यासांकुशलंवद ॥ ४९ ॥ राजोवाच ॥ भगवंस्त्वत्प्रसादेनसर्वत्रानामयंमम ॥ एतत्कौ
तूहलंब्रह्मन्मद्भार्याकात्रविद्यते ॥ ५० ॥ ऋषिरुवाच ॥ रेवतीनामतेभार्यारूपेणाप्रतिमाभुवि ॥ विद्यतेऽत्रकथंपत्नींतांनवेत्सिमहीपते ॥ ५१ ॥ राजोवाच ॥
सुभद्राद्यास्तुयाभार्याममसन्तिगृहेविभो ॥ जानामितास्तुभगवन्नैवजानामिरेवतीम् ॥ ५२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ प्रियेतिसांप्रतंराजंस्त्वयोक्तायामहामते ॥
साविस्मृताक्षणादेवयातेश्लाघ्यतमाप्रिया ॥ ५३ ॥ राजोवाच ॥ त्वयोक्तंयन्मृषातन्नोतथैवामंत्रितामया ॥ मुनेदुष्टोनमेभावोकोपंमाकर्तुमर्हसि ॥ ५४ ॥
ऋषिरुवाच ॥ राजन्नुक्तंत्वयासत्यंनभावोदूषितस्तव ॥ वह्निनाप्रेरितेनेत्थंभवताव्याहृतंवचः ॥ ५५ ॥ अद्यपृष्टोमयावह्निःकोऽस्याभर्त्ताभविष्यति ॥
तेनोक्तंदुर्दमोराजाभवितास्याःपतिर्ध्रुवम् ॥ ५६ ॥ तदादत्स्वमयादत्तामिमांकन्यांमहीपते ॥ प्रियेत्यामंत्रितापूर्वमाविचारंकुरुष्वभो ॥ ५७ ॥ श्रुत्वैत
त्सोऽभवत्तूष्णींचिंतयन्मुनिभाषितम् ॥ वैवाहिकंविधिंतस्यमुनिःकर्तुंसमुद्यतः ॥ ५८ ॥ अथोद्यतंविवाहायदृष्ट्वाकन्याब्रवीन्मुनिम् ॥ रेवत्यृक्षेविवाहोमेता
तकर्तुंत्वमर्हसि ॥ ५९ ॥ ऋषिरुवाच ॥ वत्सेविवाहयोग्यानिसंत्यन्यर्क्षाणि भूरिशः ॥ रेवत्यांकथमुद्वाहःपौष्णभंनदिविस्थितम् ॥ ६० ॥ कन्योवाच ॥
रेवत्यृक्षंविनाकालोममोद्वाहोचितोनहि ॥ अतःसंप्रार्थयाम्येतद्विवाहंपौष्णभेकुरु ॥ ६१ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ऋतवाङ्मुनिनापूर्वंरेवतीभंनिपातितम्॥भान्तरे
चेन्नतेप्रीतिर्विवाहःस्यात्कथंतव ॥ ६२ ॥ कन्योवाच ॥ तपः किंतप्तवानेकोऋतवागेवकेवलम् ॥ भवताकिंतपोनेदृक्तप्तंवाक्कायमानसैः ॥ ६३ ॥
जगत्स्रष्टुंसमर्थस्त्वंवेद्मचहंतेतपोबलम् ॥ रेवत्यृक्षंदिविस्थाप्यममोद्वाहंपितः कुरु ॥ ६४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवंभवतुभद्रंतेयथैवत्वंब्रवीषिमाम् ॥ त्वत्कृते
सोममार्गेहंस्थापयाम्यद्यपौष्णभम् ॥ ६५ ॥ स्कन्दउवाच ॥ एवमुक्त्वामुनिस्तूर्णंपौष्णभंस्वतपोबलात् ॥ यथापूर्वंतथाचक्रेसोममार्गेघटोद्भव ॥ ६६ ॥
रेवतीनाम्निनक्षत्रेविवाहविधिनामुनिः ॥ रेवतींप्रददौराज्ञेदुर्दमायमहात्मने ॥ ६७ ॥ कृत्वाविवाहंकन्यायामुनीराजानमब्रवीत् ॥ किंतेऽभिलषितंवीरवदत

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





त्पूरयाम्यहम् ॥ ६८ ॥ राजोवाच ॥ मनोःस्वायंभुवस्याहंवंशेजातोस्म्यहंमुने ॥ मन्वंतराधिपंपुत्रंत्वत्प्रसादाच्चकामये ॥ ६९ ॥ मुनिरुवाच ॥ यद्येषाकाम
नातेस्तिदेव्याआराधनंकुरु ॥ भविष्यत्येवतेपुत्रोमनुर्मन्वंतराधिपः ॥ ७० ॥ देवीभागवतंनामपुराणंयत्तुपंचमम् ॥ पंचकृत्वस्तुतच्छ्रुत्वालप्स्यसेभि
मतंसुतम् ॥ ७१ ॥ रेवत्यांरैवतोनामपंचमोभवितामनुः ॥ वेदविच्छास्त्रतत्वज्ञोधर्मवानपराजितः ॥ ७२ ॥ इत्युक्तोमुनिनाराजाप्रणम्यमुदितोमुनिम् ॥
भार्ययासहमेधावीजगामनगरंनिजम् ॥ ७३ ॥ पितृपैतामहंराज्यंचकारसमहामतिः ॥ पालयामासधर्मात्माप्रजाःपुत्रानिवौरसान् ॥ ७४ ॥ एकदालोम
शोनाममहात्मामुनिरागतः ॥ प्रणिपत्यतमभ्यर्च्यप्रांजलिश्चाब्रवीन्नृपः ॥ ७५ ॥ राजोवाच ॥ भगवंस्त्वत्प्रसादेनश्रोतुमिच्छामिभोमुने ॥ देवीभागवतंनाम
पुराणंपुत्रलिप्सया ॥ ७६ ॥ श्रुत्वावाचंप्रजाभर्तुः प्रीतःप्रोवाचलोमशः ॥ धन्योसिराजंस्तेभक्तिर्जातात्रैलोक्यमातरि ॥ ७७ ॥ सुरासुरनराराध्यायापराज
गदम्बिका ॥ तस्यांचेद्भक्तिरुत्पन्नाकार्यसिद्धिर्भविष्यति ॥ ७८ ॥ अतस्त्वांश्रावयिष्यामिश्रीमद्भागवतंनृप ॥ यस्यश्रवणमात्रेणनकिंचिदपिदुर्लभम् ॥
॥ ७९ ॥ इत्युक्त्वासुदिनेब्रह्मन्कथारंभमथाकरोत् ॥ पंचकृत्वस्सशुश्रावविधिवद्भार्ययासह ॥ ८० ॥ समाप्तिदिवसेराजापुराणंचमुनिंतथा ॥ पूजयामास
धर्मात्मामुदापरमयायुतः ॥ ८१ ॥ हुत्वानवार्णमंत्रेणभोजयित्वाकुमारिकाः ॥ वाडवांश्चसपत्नीकान्दक्षिणाभिरतोषयत् ॥ ८२ ॥ अथकालेनकियता
भगवत्याःप्रसादतः ॥ गर्भन्दधारसाराज्ञीलोककल्याणकारकम् ॥ ८३ ॥ पुण्येथसमयेप्राप्तेग्रहैःसुस्थानसंगतैः ॥ सर्वमंगलसंपन्नेरेवतीसुषुवेसुतम् ॥ ८४ ॥
श्रुत्वापुत्रस्यजननंस्नात्वाराजामुदान्वितः ॥ ससुवर्णांभसाचक्रेजातकर्म्मादिकाःक्रियाः ॥ ८५ ॥ यथाविधिचदानानिदत्त्वाविप्रानतोषयत् ॥ कृतोपनयनं
राजासांगान्वेदानपाठयत् ॥ ८६ ॥ सर्वविद्यानिधिर्जातोधर्मिष्ठोस्त्रविदांवरः ॥ धर्मस्यवक्ताकर्ताचरैवतोनामवीर्यवान् ॥ ८७ ॥ नियुक्तवानथब्रह्मारैवतं
मानवेपदे ॥ मन्वंतराधिपःश्रीमान्गांशशाससधर्मतः ॥ ८८ ॥ इत्थंदेव्याःप्रभावोयंसंक्षेपेणोपवर्णितः ॥ पुराणस्यचमाहात्म्यंकोवक्तुंविस्तरात्क्षमः ॥ ८९ ॥
सूतउवाच ॥ कुंभयोनिस्तुमाहात्म्यंविधिंभागवतस्यच ॥ श्रुत्वाकुमारंचाभ्यर्च्यस्वाश्रमंपुनराययौ ॥ ९० ॥ इदंमयाभागवतस्यविप्रामाहात्म्यमुक्तंभवतां
समक्षम् ॥ शृणोतिभक्त्यापठतीहभोगान्भुक्त्वाखिलान्मुक्तिमुपैतिचांते ॥ ९१ ॥ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेमानसखण्डेश्रीदेवीभागवतमाहात्म्येचतुर्थोऽध्यायः
॥ ४ ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सूतसूतमहाभागश्रुतंमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामःपुराणश्रवणेविधिम् ॥ १ ॥ सूतउवाच ॥ श्रूयतांमुनयस्सर्वे
पुराणश्रवणेविधिम् ॥ नराणांशृण्वतांयेनसिद्धिःस्यात्सार्वकामिकी ॥ २ ॥ आदौदैवज्ञमाहूयमुहूर्त्तंकल्पयेत्सुधीः ॥ आरभ्यशुचिमासंतुमासषट्कंशुभावहम् ॥ ३ ॥
हस्ताश्विमूलपुष्पर्क्षेब्रह्ममैत्रेन्दुवैष्णवे ॥ सत्तिथौशुभवारेचपुराणश्रवणंशुभम् ॥ ४ ॥ गुरुभाद्रेद४वेदा४ ब्ज१शरां५गा६ ब्धि४गुणाः ३क्रमात् ॥ धर्मातिरिंदिरा



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

प्राप्तिःकथासिद्धिःपरंसुखम् ॥ ५ ॥ पीडाथभूपतिभयंज्ञानप्राप्तिःक्रमात्फलम् ॥ पुराणश्रवणेचक्रंशोधयेच्छिवभाषितम् ॥ ६ ॥ अथवाप्रीतयेदेव्यानवरात्रचतुष्टये ॥ शृणुयादन्यमासेपितिथिवारर्क्षशोधिते ॥ ७ ॥ संभारंयादृशंकार्यंविवाहादौचतादृशम् ॥ नवाहयज्ञेचाप्यस्मिन्विधेयंयत्नतोबुधैः ॥ ८ ॥ सहायावहवःकार्यादंभलोभविवर्जिताः ॥ चतुराश्चवदान्याश्चदेवीभक्तिपरानराः ॥ ९ ॥ प्रेष्यायत्नेनवार्त्तेयंदेशेदेशेजनेजने ॥ आगन्तव्यमिहावश्यंकथादेव्याभविष्यति ॥ १० ॥ सौराश्चगाणपत्याश्चशैवाश्शाक्ताश्चवैष्णवाः ॥ सर्वेषामपिसेव्येयंयतोदेवास्सशक्तयः ॥ ११ ॥ श्रीमद्देवीभागवतपीयूषरसलोलुपैः ॥ आगंतव्यंविशेषेणकथार्थंप्रेमतत्परैः ॥ १२ ॥ ब्राह्मणाद्याश्चयेवर्णाः स्त्रियश्चाश्रमिणस्तथा ॥ सकामाश्चापिनिष्कामाःपातव्यंतैःकथामृतम् ॥ १३ ॥ नावकाशःकदाचित्स्यान्नवाहश्रवणेपितैः ॥ आगंतव्यंयथाकालंयज्ञेपुण्याक्षणस्थितिः ॥ १४ ॥ विनयेनैवकर्त्तव्यमेवमाकारणंनृणाम् ॥ आगतानांच कर्त्तव्यंवासंस्थानंयथोचितम् ॥ १५ ॥ कथास्थानंप्रकर्त्तव्यंभूमौमार्जनपूर्वकम् ॥ लेपनंगोमयेनाथविशालायांमनोरमम् ॥ १६ ॥ कार्यस्तुमण्डपोरम्योरंभास्तंभोपशोभितः ॥ वितानमुपरिष्टात्तुपताकाध्वजराजितः ॥ १७ ॥ वक्तुश्चैवासनंदिव्यंसुखास्तरणसंयुतम् ॥ रचितव्यंप्रयत्नेनप्राङ्मुखंवाद्युदङ्मुखम् ॥ १८ ॥ यथोचितानिकुर्वीतश्रोतॄणामासनानिच ॥ नृणांचैवाथनारीणांकथाश्रवणहेतवे ॥ १९ ॥ वाग्मीदांतश्चशास्त्रज्ञोदेव्याराधनतत्परः ॥ दयालुर्निस्पृहोदक्षोधीरोवक्तोत्तमोमतः ॥ २० ॥ ब्रह्मण्योदेवताभक्तःकथारसपरायणः ॥ उदारोऽलोलुपोनम्रःश्रोताहिंसादिवर्जितः ॥ २१ ॥ पाखण्डनिरतोलुब्धःस्त्रैणोधर्मध्वजस्तथा ॥ निष्ठुरःक्रोधनोवक्तादेवीयज्ञेनशस्यते ॥ २२ ॥ संशयच्छेदनायैकःपण्डितश्चतथागुणः ॥ श्रोतृबोधकृदव्यग्रःकार्य्योवक्तुस्सहायकृत् ॥ २३ ॥ मुहूर्त्तदिवसादर्वाग्वक्तृश्रोत्रादिभिर्जनैः ॥ कर्त्तव्यंक्षौरकर्मादितोनियमकल्पनम् ॥ २४ ॥ अरुणोदयवेलायांस्नायाच्छौचंविधायच ॥ संध्यांतर्पणकार्यंचानित्यंसंक्षेपतश्चरेत् ॥ २५ ॥ कथाश्रवणयोग्यत्वसिद्धयेगाश्चदापयेत् ॥ समस्तविघ्नहर्तारमादौगणपतिंयजेत् ॥ २६ ॥ कलशांश्चापिसंस्थाप्यपूजयेत्तत्रदिग्धवान् ॥ वटुकंक्षेत्रपालंचयोगिनीर्मातृकास्तथा ॥ २७ ॥ तुलसींचापिसंपूज्यग्रहान्विष्णुंचशंकरम् ॥ नवाक्षरेणमनुनापूजयेज्जगदम्बिकाम् ॥ २८ ॥ सर्वोपचारैस्संपूज्यश्रीभागवतपुस्तकम् ॥ श्रीदेव्यावाङ्मयींमूर्तिंयथावच्छोभनाक्षरम् ॥ २९ ॥ कथाविघ्नोपशांत्यर्थंवृणुयात्पंचवाडवान् ॥ जाप्योनवार्णमंत्रस्तैःपाठ्यस्सप्तशतीस्तवः ॥ ३० ॥ प्रदक्षिणनमस्कारान्कृत्वांतेस्तुतिमाचरेत् ॥ कात्यायनिमहामायेभवानिभुवनेश्वरि ॥ ३१ ॥ संसारसागरेमग्नंमामुद्धरकृपामये ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाराध्येप्रसीदजगदंबिके ॥ ३२ ॥ मनोभिलषितंदेवीवरंदेहिनमोस्तुते ॥ इतिसंप्रार्थ्यशृणुयात्कथांनियतमानसः ॥ ३३ ॥ वक्तारंचापिसंपूज्यव्यासबुद्ध्यायतात्मवान् ॥ माल्यालंकारवस्त्राद्यैस्संभूष्यप्रा

२

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





र्थयेच्चतम् ॥ ३४ ॥ सर्वशास्त्रेतिहासज्ञव्यासरूपनमोस्तुते ॥ कथाचंद्रोदयेनांतस्तमस्तोमंनिराकुरु ॥ ३५ ॥ तदग्रेतुनवाहान्तंकर्त्तव्या नियमास्तदा ॥ विप्रादीनुपवेश्यादौसंपूज्योपविशेत्स्वयम् ॥ ३६ ॥ श्रोतव्यंसावधानेनचतुर्वर्गफलाप्तये ॥ गृहपुत्रकलत्राप्तधनाचिंतामपास्यच ॥ ३७ ॥ सूर्योदयंसमारभ्यकिंचित्सूर्येऽवशेषिते ॥ मुहूर्त्तमात्रोविश्राम्यमध्याह्नेवाचयेत्सुधीः ॥ ३८ ॥ मलमूत्रजयायैषांलघुभोजनमिष्यते हविष्यान्नंवरंभोज्यंसकृदेवकथार्थिना ॥ ३९ ॥ अथवास्यात्फलाहारीपयोभुग्वाघृताशनः ॥ यथास्यान्नकथाविघ्नस्तथाकार्यंविचक्षणैः ॥ ४० ॥ कथा श्रवणनिष्ठानांवक्ष्यामिनियमंद्विजाः ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानांमध्येयेभेददर्शिनः ॥ ४१ ॥ देवीभक्तिविहीनायेपाखण्डाहिंसकाःखलाः ॥ विप्रद्रुहोनास्तिका येनतेयोग्याःकथाश्रवे ॥ ४२ ॥ ब्रह्मस्वहरणेलुब्धाःपरदारधनेषुच ॥ देवस्वहरणेतेषांनाधिकारःकथाश्रवे ॥४३॥ ब्रह्मचारीचभूशायीसत्यवक्ताजितेंद्रियः॥ कथासमाप्तौभुंजीतपत्रावल्यांयतात्मवान् ॥ ४४ ॥ वृंताकंचकलिंन्दंचतैलंचद्विदलंमधु ॥ दग्धमन्नंपर्युषितंभावदुष्टंत्यजेद्व्रती ॥ ४५ ॥ आमिषंच मसूरान्नमुदक्याद्दष्टमेवच ॥ रसोनंमूलकंहिंगुंपलांडुंगृंजनंतथा ॥ ४६ ॥ कूष्मांडंनालिकाशाकंनभुंजीतकथाव्रती ॥ कामंक्रोधंमदंलोभंदंभंमानंचवर्जये त् ॥ ४७ ॥ विप्रध्रुक्पतितव्रात्यश्वपाकयवनांत्यजैः ॥ उदक्ययावेदवाह्यैर्नवदेद्यःकथाव्रती ॥ ४८ ॥ वेदगोगुरुविप्राणांस्त्रीराज्ञांमहतांतथा ॥ देवानां देवभक्तानांनिंदांशृणुयादपि ॥ ४९ ॥ विनयंचार्जवंशौचंदयांचमितभाषणम् ॥ उदारंमानसंचैवकुर्याद्व्रस्तुकथाव्रती ॥ ५० ॥ श्वित्रीकुष्ठीक्षयीरु ग्णोभाग्यहीनश्चपापकृत् ॥ दरिद्रश्चानपत्यश्चभक्त्येमांशृणुयात्कथाम् ॥ ५१ ॥ वंध्यावाकाकवंध्यावादुर्भगावामृतार्भका ॥ पतद्भर्भागनायाताभिःश्रोव्या तथाकथा ॥ ५२ ॥ धर्मार्थकाममोक्षांश्चयोवांछतिविनाश्रमम् ॥ भगवत्याभागवतंश्रोतव्यंतेनयत्नतः ॥ ५३ ॥ कथादिनानिचैतानिनवयज्ञैःसमानि हि ॥ तेषुदत्तंहुतंजप्तमनन्तफलदंभवेत् ॥ ५४ ॥ एवंव्रतंनवाहंतुकृत्वोद्यापनमाचरेत् ॥ महाष्टमीव्रतेयद्वत्तथाकार्यंफलेप्सुभिः ॥ ५५ ॥ निष्कामाःश्रवणे नैवपूतामुक्तिंव्रजन्तिहि ॥ भोगमोक्षप्रदानृणांयतोभगवतीपरा ॥ ५६ ॥ पुस्तकस्यचवक्तुश्चपूजाकार्यातुनित्यशः ॥ वक्त्रादत्तंप्रसादंतुगृह्णीयाद्भक्तिपूर्वक म् ॥ ५७ ॥ कुमारीःपूजयेन्नित्यंभोजयेत्प्रार्थयेच्चयः ॥ सुवासिनीश्चविप्रांश्चतस्यसिद्धिर्नसंशयः ॥ ५८ ॥ गायत्र्यानामसाहस्रंसमाप्तावथवापठेत् ॥ विष्णोर्नामसहस्रंचसर्वदोषोपशान्तये ॥ ५९ ॥ यस्यस्मृत्याचनामोक्त्यातपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनंसम्पूर्णतांयातितस्माद्विष्णुंचकीर्तयेत् ॥ ६० ॥ देव्यासप्तशतीमंत्रैःसमाप्तौहोममाचरेत् ॥ देवीमाहात्म्यमूलेननवार्णमनुनाथवा ॥ ६१ ॥ गायत्र्यात्वथवाहोमःपायसेनससर्पिषा ॥ यतोभागवतंत्वेतद्गा यत्रीमयमीरितम् ॥ ६२ ॥ वाचकंतोषयेत्सम्यग्वस्त्रभूषाधनादिभिः ॥ प्रसन्नेवाचकेसर्वाःप्रसन्नास्तस्यदेवताः ॥ ६३ ॥ ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्यादक्षिणा



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

भिश्चतोषयेत् ॥ पृथिव्यांदेवरूपास्तेतुष्टेष्वेष्वीप्सितंफलम् ॥ ६४ ॥ सुवासिनीःकुमारीश्चदेवीभक्त्याचभोजयेत् ॥ ताभ्योपिदक्षिणांदत्त्वाप्रार्थये त्सिद्धिमात्मनः ॥ ६५ ॥ दद्याद्दानानिचान्यानिसुवर्णगाःपयस्विनीः ॥ हयानिभान्मेदिनींचतस्यस्यादक्षयंफलम् ॥ ६६ ॥ देवीभागदतंचैतल्लिखितंशो भनाक्षरम् ॥ हेमसिंहासनेस्थाप्यपट्टवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ ६७ ॥ अष्टम्यांवानवम्यांचवाचकायार्चितायच ॥ दद्यात्सभोगान्भुक्त्वेहदुर्लभंमोक्षमाप्नुयात् ॥६८॥ दरिद्रोदुर्बलोबालस्तरुणोजरठोपिवा ॥ पुराणवेत्तावंद्यःस्यात्पूज्योमान्यश्चसर्वदा ॥ ६९ ॥ सन्तिलोकस्यबहवोगुरवोगुणजन्मतः ॥ सर्वेषामपितेषांच पुराणज्ञःपरोगुरुः ॥ ७० ॥ पौराणिकोब्राह्मणस्तुव्यासासनसमाश्रितः ॥ असमाप्तेप्रसंगेतुनमस्कुर्यान्नकस्यचित् ॥ ७१ ॥ पौराणिकींकथां दिव्यांयेपिशृण्वंत्यभक्तितः ॥ तेषांपुण्यफलंनास्तिदुःखदारिद्र्यभागिनाम् ॥ ७२ ॥ असंपूज्यपुराणंतुताम्बूलकुसुमादिभिः ॥ येशृण्वंतिकथांदेव्यास्तेदरि द्राभवंतिहि ॥ ७३ ॥ कीर्त्यमानांकथांत्यक्त्वायेव्रजंत्यन्यतोनराः ॥ भोगान्तरेप्रणश्यंतितेषांदाराश्चसम्पदः ॥ ७४ ॥ येचतुंगासनारूढाःकथांशृण्वंति दांभिकाः ॥ तेवायसाभवंत्यत्रभुक्त्वानिरययातनाः ॥७५॥ येचाल्पासनसंस्थाश्चयेवीरासनसंस्थिताः ॥ शृण्वंतिचकथांदिव्यांतेस्युरर्जुनशाखिनः ॥७६॥ कथायांकीर्त्यमानायांयेवदंतिदुरुत्तरम् ॥ रासभास्तेभवंतीहकृकलासास्ततःपरम् ॥ ७७ ॥ निंदंतियेपुराणज्ञान्कथांवापापहारिणीम् ॥ तेतुजन्मशतंदुष्टाः शुनकाःस्युर्नसंशयः ॥ ७८ ॥ येशृण्वंतिकथांवक्तुःसमानासनसंस्थिताः॥ गुरुतल्पसमंपापंलभतेनरकालयाः ॥ ७९ ॥ येचाप्रणम्यशृण्वंतितेभवंतिविष द्रुमाः॥शयानायेपिशृण्वंतिभवंत्यजगराहयः ॥ ८० ॥ येकदाचनपौराणींनशृण्वंतिकथांनराः ॥ तेघोरंनरकंभुक्त्वाभवन्तिवनसूकराः ॥ ८१ ॥ येकथांनानु मोदंतेविघ्नंकुर्वन्तियेशठाः ॥ कोट्यब्दंनिरयंभुक्त्वाभवन्तिग्रामसूकराः ॥८२॥ आसनंभाजनंद्रव्यंफलंवस्त्राणिकम्बलम् ॥ पुराणज्ञाययच्छन्तितेव्रजन्तिहरेः पदम् ॥८३ ॥ पुराणपुस्तकस्यापियेपट्टंवसनंनवम् ॥ प्रयच्छन्तिशुभंसूत्रंतेनरास्सुखभागिनः ॥ ८४ ॥ पुराणानांतुसर्वेषांश्रवणाद्यत्फलंलभेत् ॥ तस्मा च्छतगुणंपुण्यंदेवीभागवताल्लभेत् ॥ ८५ ॥ यथासरित्सुप्रवरागंगादेवेषुशंकरः ॥ काव्येरामायणंयद्वज्ज्योतिष्मत्सुयथारविः ॥ ८६ ॥ आह्लादकानां चन्द्रश्चधनानांचयथायशः ॥ क्षमावतांयथाभूमिर्गांभीर्येसागरोयथा ॥ ८७ ॥ मंत्राणांचैवसावित्रीपापनाशेहरिस्मृतिः ॥ अष्टादशपुराणानांदेवीभागवतंत था ॥ ८८ ॥ येनकेनाप्युपायेननवकृत्वःशृणोतिचेत् ॥ नशक्यंतत्फलंवक्तुंजीवन्मुक्तस्सएवहि ॥ ८९ ॥ राजशत्रुभयेप्राप्तेमहामारीभयेतथा ॥ दुर्भिक्षेराष्ट्र भंगेचतच्छांत्यैशृणुयादिदम् ॥ ९० ॥ भूतप्रेतविनाशायराज्यलाभायशत्रुतः ॥ पुत्रलाभायशृणुयाद्देवीभागवतंद्विजाः ॥ ९१ ॥ श्रीमद्भागवतंयस्तुपठेद्वा शृणुयादपि ॥ श्लोकार्द्धंश्लोकपादंवासयातिपरमांगतिम् ॥ ९२ ॥ भगवत्याःस्वयंदेव्याःश्लोकार्द्धेनप्रकाशितम् ॥ शिष्यप्रशिष्यद्वारेणतदेवविपुलीकृतम् ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ९३ ॥ नगायत्र्याःपरोधर्मोनगायत्र्याःपरन्तपः ॥ नगायत्र्याःसमोदेवोनगायत्र्याःपरोमनुः ॥ ९४ ॥ गातारंत्रायतेयस्माद्गायत्रीतेनसोच्यते ॥ सात्रभावगतेदेवीसरहस्याप्रतिष्ठिता ॥ ९५ ॥ अतोभागवतस्यास्यदेव्याःप्रीतिकरस्यच ॥ महांत्यपिपुराणानिकलांनार्हन्तिषोडशीम् ॥ ९६ ॥ श्रीमद्भागवतंपुराणममलंयद्ब्राह्मणानांधनंधर्मोधर्मसुतेनयत्रगदितोनारायणेनामलः ॥ गायत्र्याश्चरहस्यमत्रचमणिद्वीपश्चसंवर्णितःश्रीदेव्याहिमभूभृतेभगवतीगीताचगीतास्वयम्॥९७॥तस्मान्नास्यपुराणस्यलोकेन्यत्सदृशम्परम् ॥ अतस्सदैवसंसेव्यंदेवीभागवतंद्विजाः ॥ ९८ ॥ यस्याःप्रभावमखिलंनहिवेदधातानोवाहरिर्नगिरिशोनहिचाप्यनन्तः ॥ अंशांशकाअपिचतेकिमुतान्यदेवास्तस्यैनमोस्तुसततंजगदम्बिकायै ॥ ९९ ॥ यत्पादपंकजरजस्समवाप्यविश्वंब्रह्मासृजत्यनुदिनंचविभर्तिविष्णुः ॥ रुद्रश्चसंहरतिनेतरथासमर्थास्तस्यैनमोस्तुसततंजगदम्बिकायै ॥ १०० ॥ सुधाकूपारान्तस्त्रिदशतरुवाटीविलसितेमणिद्वीपेचिन्तामणिमयगृहेचित्ररुचिरे ॥ विराजन्तीमम्बांपरशिवहृदिस्मेरवदनांनरोध्यात्वाभोगंभजतिखलुमोक्षंचलभते ॥ १०१ ॥ ब्रह्मेशाच्युतशक्राद्यैर्महर्षिभिरुपासिता ॥ जगतांश्रेयसेसास्तुमणिद्वीपाधिदेवता ॥ १०२ ॥ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेमानसखण्डेदेवीभागवतमाहात्म्ये श्रवणविधिवर्णनंनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ समाप्तमिदंस्कान्दीयंमाहात्म्यम् ॥ वेदांगाग्निकुशैलशैलशिखिनांमूलेतुसंवत्सरेराधेमासिचमेचकेहरितिथौसप्तार्चिषोवासरे ॥ माहात्म्यंजगदम्बिकांघ्रियुगलंनत्वाम्बिकाप्रीतयेपूर्तिंरामपदेननीतममलंस्कान्दीयमेतच्छुभम् ॥ १ ॥ गोमतीसौम्यपुलिनेग्रामेखानीपुरेङ्कितम् ॥ श्रीभागवतमाहात्म्यंनगव्योमेभभूशके ॥ २ ॥ श्रीभगवतीमणिद्वीपाधिदेवताजगदम्बिकाविजयते ॥ शुभमस्तु ॥



---

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५७.



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवतमाहात्म्यं समाप्तम् ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे प्रथमस्कन्धः प्रारभ्यते ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः॥श्रीदक्षिणामूर्तिगुरुभ्यो नमः ॥ मतौ या तिष्ठंती भवति च मतेरंतरतरा न किंचिज्जानाति स्वयमपि मतिर्यामविषयम्॥मतिर्यस्या देहः स्वयमपि मतिं प्रेरयति या नभो
ह्लेखायै सकलनिगमोत्तंसमणये॥१॥तरुणेंदुमौलितरुणीमरुणां करुणारसेन परिपूर्णाम्॥वंदे समंदहसितामंकुशपाशौवराभयेदधतीम्॥२॥नमः श्रीशंकराचार्यपादाब्जायोपकारिणे ॥
यस्य प्रत्युपकाराय नम इत्येव केवलम् ॥३॥श्रीमल्लक्ष्मवतीं लक्ष्मीं मातरं देशिकोत्तमाम्॥पितरं रंगनाथाख्यंदेशिकोत्तममाश्रये॥ ४ ॥काशीनाथं गुरुं नत्वा श्रीधराख्यं गुरुं तथा ॥
अन्ये च संति गुरवस्तान्सर्वानभिवाद्य च ॥५॥ रत्नजीप्रेरितेनैव पुराणान्यवलोक्य च ॥ शैवोपनामकेनैव नीलकंठेन केनचित् ॥ ६ ॥ देवीभागवतस्यास्य व्याख्यानरहितस्य च ॥ व्या
ख्यानं क्रियते सम्यक्तिलकाख्यंमहत्तरम् ॥७॥तत्र तावत्पुराणेषु भागवतद्वयं प्रसिद्धम्–एकंमहापुराणांतर्गतमपरमुपपुराणांतर्गतम्॥लोकेप्युपलंभोद्वयोर्देवीभागवतनाम्ना विष्णुभागवत
नाम्ना चास्त्येव॥तत्रैकं महापुराणांतर्गतमन्यदुपपुराणांतर्गतमित्यपि निर्विवादमेव॥तथापि किं देवीभागवतं महापुराणमन्यदुपपुराणमथवा विष्णुभागवतं महापुराणमन्यदुपपुराणमिति
संशये–केचिद्विष्णुभागवतमेव महापुराणमिति वदंति–केचिद्देवीभागवतमेव महापुराणमिति वदंति॥तत्र प्रथमपक्षैकदेशिनःकेचिदुपपुराणेषु द्वितीयं भागवतं नास्त्येव महापुराणेष्वेवैकं
भागवतं प्रसिद्धं ॥ तच्च विष्णुभागवतमेव न देवीभागवतं॥देवीभागवतं तु निर्मूलमेवेतिवदंति॥द्वितीयपक्षैकदेशिनोपि विष्णुभागवतं बोपदेवकृतमिति वदंति॥वस्तुतस्तूभयोरपिपुराणयोः
पुराणमतभेदेन महापुराणत्वमुपपुराणत्वं च॥ननु महापुराणेष्वेवैकं भागवतं प्रसिद्धं–न तूपपुराणेषु द्वितीयमस्तीति चेन्न ॥ कूर्मगरुडपाद्मादिषूपपुराणेषु द्वितीयस्य स्पष्टंपरिगणनात् ॥
तथाहि हेमाद्रौ दानप्रस्तावे कूर्मपुराणेऽष्टादशपुराणान्युक्त्वा–अन्यान्युपपुराणानि मुनिभिःकथितानि तु॥आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतःपरमित्यादि॥पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवताह्व
यमिति॥तथा गारुडे तत्त्वरहस्ये द्वितीयांशे धर्मकांडे प्रथमाध्याये प्रथमतो महापुराणानां सात्त्विकादिभेदेन विभागमुक्त्वा लघुपुराणानां सात्त्विकादिभेदेन विभागप्रदर्शनपरे ग्रंथेप्युक्तं ॥
पुराणं भागवतं दौर्गं नंदिप्रोक्तं तथैव च॥पाशुपत्यं रैणुकं च भैरवं च तथैव चेति॥तथा तत्पूर्वमपि–विष्णुधर्मोत्तरे चैव तत्र भागवतं तथेति।तंत्रंभागवतंतथेतिपाठेपि तंत्रंशास्त्रमित्यर्थः।ताद्वि
शेषणेन चोत्तमत्वं सूचितं ॥ तथा पाद्मे शकुनपरीक्षायां–ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च मार्तंडं नारदेरितमित्यादि ॥तथैव गदितं राम पुराणं कापिलं तथा॥वाराहं ब्रह्मवैवर्तं शकुनेषु प्रशस्यते॥शैवं
भागवतं दौर्गं भविष्योत्तरमेव चेति॥तथा पाद्मे भागवतमाहात्म्ये एकोनविंशेऽध्याये उपपुराणेषु–शैवमादिपुराणं च देवीभागवतं तथेति॥तथा मधुसूदनसरस्वतीकृतसर्वशास्त्रार्थसंग्रहेप्युप
पुराणमध्ये भागवतं परिगणितम्॥नागोजिभट्टादिभिश्च धर्मशास्त्रग्रंथेष्वेवमन्यैरपि निबंधकारैरिति॥ननु देवीभागवतस्य–तत्र भागवतं पुण्यं पंचमं वेदसंमितम्–इति प्रथमाध्यायस्थस्ववचने
नाऽष्टादशमहापुराणेषु पंचममिदं पुराणमिति स्वस्य महापुराणत्वं बोधयतः कथमन्यपुराणमुपपुराणत्वं बोधयेन्नह्येवं क्वचिद्दृष्टचरमिति चेन्न॥नारदीयशिववायव्यादित्यपुराणानां स्वमुखेना
न्यमुखेनवामहापुराणत्वेन ज्ञायमानानामन्यपुराणैरुपपुराणत्वस्यव्यवस्थापनात्॥पुराणमतभेदेनैकस्यापि पुराणस्यमहापुराणत्वोपपुराणत्वसिद्ध्यातद्विरोधाभावात् ।पुराणभेदेनमतभेदस्तु
बहुशःप्रसिद्धः–वैष्णवपुराणेषु सात्त्विकत्व शवपुराणेषु तामसत्वं वैष्णवपुराणमतेन शैवपुराणेषुसात्त्विकत्वं वैष्णवपुराणेषु तामसत्वम्॥दशशैवपुराणानि सात्त्विकानि विदुर्बुधाः॥तामसानि
च चत्वारिवैष्णवानि प्रचक्षते–इतिस्कांदे शैवपुराणमतेनेत्येवंप्रकारेणेति॥तथाहि॥नारदीयस्य पुराणस्य स्वांतर्गतमहापुराणग्रंथसूच्या स्वमुखेनैव स्वात्मनो महापुराणत्वं बोधयतः–मद्वयं
भद्वयं चैव त्रयं वचतुष्टयम्॥आलिंपाग्निपुराणानि कूस्कंगारुडमेवच–इतिवचनेन वक्ष्यमाणमुद्गलपुराणवचनेनचमहापुराणबहिर्भूतत्वं बोध्यते॥आलिंपाग्नीत्यत्राशब्देनादित्यपुराणस्य तथा
शैवपुराणस्य स्वमुखेन स्वस्य महापुराणत्वं बोधयतो मद्वयं भद्वयमित्येव वचनं तद्बहिर्भूतत्वं बोधयति॥ननुवायव्यं पुराणमेव शैवंशिवप्रतिपादकत्वात्तस्य च वचतुष्टयपदेन संग्रहात्तदुदाहरणं
न संभवतीति चेन्न॥मुद्गलपुराणे–ब्राह्मं च वैष्णवं पाद्मं शैवं भागवतं तथा॥भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं मार्कंडेयं च वामनम्॥आग्नेयं वायवं मात्स्यमिति वचनेन शैववायव्यपुराणयोः परस्परं पृथ

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





क्त्वेनपरिगणनात्॥तथा वायव्यपुराणस्य स्ववचनेन स्वस्य महापुराणत्वं बोधयतो वक्ष्यमाणशैवपुराणवचनं महापुराणबहिर्भूतत्वं बोधयति ॥ तथादित्यपुराणस्याप्यालिंपाग्निपुराणानीति क्वचित्पुराणसंमतपाठेन महापुराणत्वम्॥अनापलिंगकूस्कारूयमिति क्वचित्पुराणसंमतपाठेन महापुराणबहिर्भूतत्वं–यथा चैतेषां चतुर्णां क्वचित्पुराणेषु महापुराणत्वेन क्वचिच्चोपपुराणत्वेन ग्रहणम्॥तथा देवीभागवतस्यापि भविष्यतीति को विरोधःमतभेदेनोभयोरपि वचनयोः प्रमाणत्वात्॥ननु अन्यान्युपपुराणानि मुनिभिः कथितानि त्वित्यादिवचनैरुपपुराणानि व्यासान्यमूनिकृतान्येव संति–देवीभागवतं तु व्यासकृतमेवेति–तस्यकथमुपपुराणेष्वंतर्भाव इति चेन्न॥नारदशैववायव्यादित्यपुराणेषु व्यासकृतत्वोपि कस्याचित्पुराणस्यमते उपपुराणत्वदर्शनात्तादृश नियमस्यास्वीकारात्।प्रायशस्तथा सत्त्वाभिप्रायेण तु तद्वचनम्॥इत्थं भागवतद्वयस्य महापुराणमध्ये उपपुराणमध्ये च सत्त्वसिद्धौ कस्य पुराणस्य मते किंभागवतं महापुराणांतर्गतमिति चेदुच्यते॥शैवपुराणमते मात्स्यपुराणमते च देवीभागवतमेव महापुराणमिति॥तथाहि शैवपुराणे उत्तरखंडे मध्यमेश्वरमाहात्म्ये शिवालब्धवरेण व्यासेन महापुराणानि प्रणीतानीत्युक्त्यनंतरं तेषां नामान्यष्टादशोक्त्वा तेषां योगरूढानां नाम्नां निवचनं तत्रैव कृतम् ॥तद्यथा–यत्र वक्ता स्वयं तंडे ब्रह्मा साक्षाच्चतुर्मुखः ॥ तस्माद्ब्राह्मं समाख्यातं पुराणं प्रथमं मुने ॥ तंडे इति मुनिसंबोधनम् ॥ पद्मकल्पस्य माहात्म्यं तत्र यस्मादुदाहृतम् ॥ तस्मात्पाद्मंसमाख्यातं पुराणं च द्वितीयकम् ॥ पराशरकृतं यत्तु पुराणं विष्णुबोधकम् ॥ तदेव व्यासकथितं पुत्रपित्रोरभेदतः॥ यत्र पूर्वोत्तरे खंडे शिवस्य चरितं बहु ॥ शैवमेतत्पुराणं हि पुराणज्ञा वदंति च ॥ भगवत्याश्च दुर्गायाश्चरितं यत्र विद्यते॥तत्तु भागवतं प्रोक्तं न तु देवीपुराणकम् ॥नारदोक्तं पुराणंतु नारदीयं प्रचक्षते॥यत्र वक्ताभवत्तंडे मार्कंडेयो महामुनिः॥मार्कंडेयपुराणं हि तदाख्यातं च सप्तमम्॥अग्नियोगात्तदाग्नेयं भविष्योक्तेर्भविष्यकम् ॥ विवर्तनाद्ब्रह्मणस्तु ब्रह्मवैवर्तमुच्यते ॥ लिंगस्यचरितोक्तेश्चपुराणं लैंगमुच्यते ॥ वराहस्य च वाराहं पुराणं द्वादशं मुने ॥ यत्र स्कंदः स्वयं श्रोता वक्ता साक्षान्महेश्वरः ॥ तत्तु स्कांदं समाख्यातं वामनस्य तु वामनम् ॥ कौर्मं कूर्मस्य चरितं मात्स्यं मत्स्यस्य कीर्तितम् ॥ गरुडस्तु स्वयं वक्ता यत्तद्गारुडसंज्ञकम् ॥ब्रह्मांडचरितोक्तत्वाद्ब्रह्मांडं परिकीर्तितमिति ॥ अत्र क्वचिद्वक्तृसंबंधः क्वचिच्छ्रोतृसंबंधः क्वचित्प्रतिपाद्यमुख्यदेवताचरितसंबंधः प्रवृत्तिनिमित्तमिति स्पष्टमेव दर्शितम् ॥ तत्र भागवतनाम्नो निर्वचनवाक्यमेत–भगवत्याश्च दुर्गायाश्चरितं यत्र विद्यते॥ तत्तु भागवतं प्रोक्तं न तु देवीपुराणकमिति। अनेन च वाक्येन भगवत्या इदं भागवतमिति व्युत्पत्त्या ग्रंथप्रतिपाद्यमुख्यदेवताचरितसंबंधः प्रवृत्तिनिमित्तमिति स्पष्टमेव दर्शितम्॥का सा भगवतीत्यपेक्षायामाह॥दुर्गाया इति॥तत्तु भागवतं–तुशब्दो निश्चयार्थकः–तदेव भागवतपदवाच्यं प्रोक्तमित्यर्थः॥न तु पुराणांतरमतप्राप्तं विष्णुभागवतं महापुराणांतर्गतं भागवतमित्यर्थ इति शैवपुराणेन स्वमतं प्रदर्शितम् ॥ कश्चिदेतत्पुराणांतरमतेनोपपुराणं जानीयात्तत्राह॥न तु देवीपुराणकमिति।अत्र कप्रत्ययोल्पार्थकः॥अल्पे इति सूत्रात्।पुराणकमल्पं पुराणमिति यावत्॥देव्याःपुराणकं देवीपुराणकम् ॥यदिदमुक्तं तद्देव्या उपपुराणन्नैवास्तीत्यर्थः ॥ अनेन च वाक्येनान्यस्य महापुराणत्वनिषेधेन स्वाभिप्रेतस्य चोपपुराणत्वनिषेधेन श्रीमद्देवीभागवतस्यैव महापुराणत्वं बोधयति व्यासः ॥ मुख्यत्वेन भगवतीचरितप्रतिपादकस्य महापुराणमध्ये कस्याचित्पुराणस्यान्यस्याभावात् ॥ ननु नारदादिपुराणवचनबलाद्विष्णुभागवतस्य महापुराणांतर्गतत्वे निर्विघ्नं निश्चितेतद्बलाद्भागवतद्वयस्य मतभेदेन महापुराणत्वकल्पनापेक्षया यत्किंचिद्भगवतीचरितस्यास्मिन्वचने ग्रहणेनानेन वचनेन विष्णुभागवतनाम्न एव निरुक्तिः कृतेति कुतो न कल्प्यते ॥ वर्तते च तत्र विष्णुभागवते दशमस्कंधे किंचिद्विंध्यवासिन्याश्चरितमिति चेन्न॥तथासति मुनेर्विष्णुभागवतविषय एव तात्पर्यसत्त्वे भगवत इदं भागवतमित्येव व्युत्पत्तिं कुर्यात्–नाहि केनचिन्मुनेः शिरसि भारः स्थापितो यत्स्वाभिप्रेतां युक्तियुक्तां निरुक्तिं त्यक्त्वा निष्प्रयोजनोऽनभिप्रेतां निरुक्तिं करोति ॥ किंच सर्वत्रैतद्वचनप्रकरणे॥ यत्र पूर्वोत्तरे खंडे शिवस्य चरितं बहु । शैवमेतत्पुराणं हि पुराणज्ञा वदंति चेति वचनैर्बहुचरितमुख्यचरितसंबंधरूपप्रवृत्तिनिमित्तस्यैवाभिप्रेतत्वं मुनेरवसीयते ॥ मतभेदेन पुराणभेदकल्पना तु नात्रैव नवीनास्ति ॥ पूर्वोक्तयुक्त्या नारदशैववाय



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga,KN

व्यादित्यपुराणेष्वन्यत्रापि सत्त्वात् ॥ अस्तु वा गौरवं न हि तद्भयान्मुनेस्तात्पर्यमन्यथा कर्तुं कश्चिदीष्टे ॥ तस्मात्पूर्वोक्तं तात्पर्यं विहायान्यतात्पर्येणान्यार्थकरणं महासाहसमेव ॥ ननु लक्षणवाक्यमेतत् ॥ ततश्च दुर्गाचरितं यत्र वर्ततेतद्भागवतमित्यर्थः ॥ तच्च न देवीभागवतं भवितुमर्हति ॥ तस्य तल्लक्षणलक्ष्यत्वेन तु देवीपुराणकमिति निषेधविषयत्वेन निषेध विध्योः समानविषयत्वापत्तेः ॥ किं तु विष्णुभागवतमेव ॥ ननु तथाप्येतल्लक्षणमन्यपुराणेष्वतिप्रसक्तमिति चेन्न ॥ यथा वृत्रासुरवधलक्षणमन्यपुराणेषु प्रसक्तमपि यथालक्षण त्वेन गृहीतं तद्वदत्रापि सत्त्वादिति चेन्न ॥ पूर्वोक्तनिरुक्तिवचनप्रकरणस्थत्वाविरोधात् ॥ किंच लक्षणवाक्यमेतदिति पक्षेप्येतस्य लक्षणस्य महापुराणोद्देशेनैव सत्त्वादुपपु राणेष्वस्य प्रसक्त्यभावाद्देवीपुराणकालिकापुराणयोरुपपुराणत्वस्य निश्चितत्वात्तत्रैतल्लक्षणस्य प्रसक्तिरेव नास्तीति न तु देवीपुराणकमिति निषेधो व्यर्थ एव स्यात् ॥ तस्मादेतद्वच नस्य पूर्वोक्त एवार्थः ॥ किंच लक्षणवाक्यमेतदितिपक्षे यत्किंचिच्चरितं गृह्यते उत यावच्चरितम् । यत्किंचिच्चरितस्य सर्वमहापुराणेषु सत्त्वाद्देवीपुराणमात्रनिषेधेन न निर्वाहः ॥ तस्मा द्देवीपुराणस्यैव निषेधस्वारस्याद्यावच्चरितं मुख्यत्वेन भगवतीचरित्रमेव ग्राह्यं ॥ तदा तव नाभीष्टार्थसिद्धिः॥मुख्यत्वेन विष्णुभागवते दुर्गाचरितस्याभावान्ममैव त्वभीष्टार्थसिद्धिः ॥निषेध विध्योः समानविषयकत्वरूपं दूषणं तु नैव संभवति॥प्रकरणबलात्तात्पर्यं निश्चिते तद्विषयं विहायैव निषेधप्रवृत्तेः॥वृत्रासुरवधोपेतत्वलक्षणं तु गायत्र्यारंभविशिष्टमिति न तदतिप्रसक्तम्।त स्मात्पूर्वोक्त एव तद्वचनार्थ इति तद्वचनाद्देवीभागवतं महापुराणं न तु विष्णुभागवतमिति शिवपुराणमतम्॥अत्र च नियमद्वयस्य पूर्वोक्तस्य सत्त्वाद्विष्णुभागवतविषये तथा नियमद्वयाभावा दिदं शिवपुराणमतमेव मुख्यमन्यपुराणमतं त्वेकदेशीति नियमद्वयप्रदर्शकव्यासवाक्येन स्पष्टमेव बोधितमिति सुधियो विभावयंतु॥किंच–शैवमादिपुराणंच देवीभागवतं तथा इति पाद्मवच नसंवादितया–नवरात्रे तु देवेशि दौर्गं भागवतं पठेत्॥जपेत्सप्तशतीं चंडीं नियमेन समाहितः इति दुर्गातरंगिणीधृतयामलवचनेन तथा देवीभागवतं नित्यं पठेद्भक्त्यासमाहितः ॥ नवरात्रे विशेषेण श्रीदेवीप्रीतये मुदेति महेशठक्कुरकृतदुर्गाप्रदीपधृतदेवीयामलवचनेन च सप्रमाणस्य देवीभागवतस्य सर्वथोपपुराणमध्ये एव निवेशात्–तत्र भागवतं पुण्यं पंचमं वेदसंमितमिति प्र थमस्कंधस्थस्य महापुराणेषु पंचममिदं पुराणमित्यर्थकस्य देवीभागवतोक्तवचनस्य निरालंबनत्वादप्रामाण्यापत्तेः॥मन्मतेतुतस्यावषयलाभान्नाप्रामाण्यम् तद्वचनप्रामाण्यादपि देवीभागवतमे वमहापुराणमिति ॥ किंच हैमाद्रौ कालिकापुराणे–यदिदं कालिकाख्यं तन्मूलं भागवतं स्मृतमिति वचनं तदाप देवीभागवतस्यैव महापुराणत्वं बोधयति ॥ तथाहि ॥ अष्टादशभ्यस्तु पृथक् पुराणं यत्प्रदृश्यते॥विजानीध्वं द्विजश्रेष्ठास्तथा तेभ्यो विनिगतामिति मात्स्यवचनेनोपपुराणानां महापुराणमूलकत्वनियमादिदं कालिकापुराणं किंपुराणमूलकमित्याकांक्षायां तस्या निवर्तकमिदं वाक्यं विषयत्वेन कालिकाख्यं पुराणं तन्मूलं भागवतं विदुरिति हि तस्यार्थो निबंधकारैर्दर्शितः॥यथान्यान्युपपुराणान्येकैकस्मान्महापुराणान्निर्गतानि तद्वदिदं भागवतादुत्प न्नमिति यावत्॥तच्च भागवतं नवैष्णवं तन्मूलं भवितुमर्हति॥देव्युपपुराणस्य देवीपुराणमूलकत्वे एव सामंजस्यात्॥शैवोपपुराणानां शैवेभ्य एव वैष्णवोपपुराणानां वैष्णवेभ्य एवोत्पत्तिदर्श- नादिति देवीभागवतमेव तन्मूलमिति तस्य महापुराणत्वं सिद्धम्॥यत्र तु क्वचित्क्वचिन्महापुराणमूलकत्वमप्रसिद्धं तत्र यथायोग्यमनुमेयमिति॥किंचादित्यपुराणदृष्ट्याऽपि देवीभागवतमेव महापुराणम्॥तथाहि॥आदित्यपुराणे रक्तासुरवधप्रस्तावे–या जघ्ने माहिषं दैत्यं क्रूरं वृत्रासुरं तथा॥साद्य रक्तासुरं हत्वा स्वाराज्यं ते प्रदास्यतीति वचनात्॥अनेन वचनेन देवीभागवते स्वसंमतिर्दर्शिता॥न हि देवीभागवतातिरिक्तसर्वपुराणेषु देवीकृतो वृत्रासुरवधः क्वचिदप्यस्ति॥इंद्रकृतस्यैव तस्य सत्त्वात्केवलं देवीभागवत एव देवीकृतः सोऽस्ति॥ तद्ग्रहणेन तु देवी- भागवते स्वसंमतिर्दर्शितेति युक्तमेव॥अनंतरं च–तत्रैव पुराणदानप्रस्तावे॥ददाति सूर्यभक्ताय यस्तु भागवतं द्विजाः॥सर्वपापविनिर्मुक्तःसर्वव्याधिविवर्जितः॥जीवेद्वर्षशतं साग्रमंते वैवस्वतं पदमिति पठितम्॥अत्र च स्वसंमतं भागवतमेव ग्रहीतुमुचितम्॥किंचेदं वचनं देवीभागवतपक्षे एव स्वरसतः संगच्छते॥प्रथमश्लोके एकादशद्वादशस्कंधयोश्च सविस्तरं गायत्रीविधानसह-

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





स्वनामादेःकथनात्सूर्यस्य गायत्री देवतात्वात् ॥ तद्भागवतपक्षे तु वैकुंठं गच्छेदित्येव वदेदिति॥किंच यत्राधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्मविस्तरः ॥ वृत्रासुरवधोपेतं तद्भागवतमिष्यत इति मात्स्यवचनमपि देवीभागवतस्यैव महापुराणत्वं बोधयति ॥ वेदे त्रिपदा गायत्रीति गायत्रीलक्षणं श्रूयते॥तेन च त्रिपाच्छंदोधिकृत्य यत्र धर्मविस्तरो वर्ण्यतेतद्भागवतमिति तदर्थः ॥ त्रिपाच्छंदश्च देवीभागवते प्रथमश्लोके–सर्वचैतन्यरूपां तामाद्यां विद्यां च धीमहि॥बुद्धिं या नः प्रचोदयादिति श्रूयते ॥न विष्णुभागवते तच्छंदोस्ति मुख्यार्थसंभवे गायत्रीपदस्य लक्षणया धीमहीत्यर्थकरणेन विष्णुभागवतपरत्वकल्पनमस्य वचनस्य तु साहसमेव ॥क्वचित्पुराणेषु यादि तादृशान्येव विष्णुभागवतपराणि वचनानि संति॥तत्र गत्यंतराभावादस्तु लक्षणा॥ उदासीने मात्स्यवाक्ये तु मुख्यविषयसंभवेसाऽनुचिता॥यद्यप्याधुनिकपुस्तकेषु क्वचिच्चतुश्चरणश्लोकोऽपिदृश्यते ॥ तथापि सप्तशत्यांगुप्तवतीटीककारादिभिस्त्रिपाच्छ्लोकस्यैव व्याख्यातत्वेन स एव सांप्रदायिकः पाठ इति बोध्यम्॥यत्तु गायत्र्यथश्च विष्णुध्यानं न तु शिवशक्तिसूर्यादिध्यानमित्युक्तं तत्तु नास्तिकत्वमूलकमेव॥मैत्रायणीयानां 'भर्गो वै रुद्र' इति श्रुतौ प्रपंचसारादिसर्वतंत्रेषु पुराणादिषु च शिवसूर्यशक्त्यादिरूपार्थस्योक्तत्वाच्च ॥ तदुदाहृतमाग्नेयवाक्यं तु विरोधित्वनपेक्षं स्यादसति ह्यनुमानामिति न्यायात्स्तावकमेवेति ॥ किंचहयग्रीवब्रह्मविद्या यत्र वृत्रवधस्तथा॥गायत्र्या च समारंभस्तद्वै भागवतं विदुरिति पुराणांतरवाक्यमपि देवीभागवतस्यैव महापुराणत्वबोधकम्॥तथाहि॥हयग्रीवनामासुरो देवीभागवते प्रथमस्कंधे प्रसिद्धः तेनोपासिता ब्रह्मप्रतिपादिका विद्या स्त्रीदेवत्यो मंत्रः ॥ सा विद्या यत्र वर्तते तद्भागवतमित्यर्थः॥स दैत्यस्तदुपासिता विद्या चेत्युभयमपि तत्रैव प्रथमस्कंधे दर्शितम्–जपन्नेकाक्षरं मंत्रं मायाबीजात्मकं ममेत्यादिना॥ननु विष्णुभागवते पंचमस्कंधेऽपि हयग्रीवमंत्रस्य सत्त्वादिदं वचनमुभयभागवतसाधारणमिति चेन्न॥नारदीये शारदातिलकादिनिबंधेषु च मंत्राःपुंदेवताःप्रोक्ता विद्याःस्त्रीदेवताःस्मृताः–इत्यादिवचनैःस्त्रीदेवत्यमंत्रेष्वेव विद्यापदप्रयोगो न पुंदेवत्यमंत्रेष्विति प्रतिपादनात् ॥ क्वचित्पुंदेवत्यमंत्रे तथा प्रयोगस्तु गौणः॥न च गौणार्थमादाय तद्वचनस्य विष्णुभागवतपरत्वं कल्पितुमुचितम्॥लक्षणारूपदोषापत्तेः॥तस्मान्न तद्वचनमुभयसाधारणमिति देवीभागवतस्यैव महापुराणत्वं बोधयति॥किंच सारस्वतस्य कल्पस्येति मात्स्यवचनादपि देवीभागवतमेव महापुराणम् ॥ अत्र ह्येवं प्रकरणशुद्धिः–ऋषय ऊचुः–पुराणसंख्यामाचक्ष्व सूत विस्तरतः क्रमादिति मुनिप्रश्नोत्तरं ब्रह्मणाऽभिहितं पूर्वं यत्तद्ब्राह्मं पद्मकल्पवृत्तांताश्रयं पाद्मं वराहकल्पवृत्तांताश्रयं वैष्णवं श्वेतकल्पवृत्तांताश्रयं वायवीयमित्येवंतत्तत्कल्पवृत्तांताश्रयाणिपुराणान्युक्त्वा तदुत्तरयत्राधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्मविस्तरः ॥ वृत्रासुरवधोपेतं तद्भागवतमिष्यत इति॥सारस्वतस्य कल्पस्य मध्ये येस्युर्नरामराः॥तद्वृत्तांतोद्भवं लोके तद्भागवतमिष्यते इत्युक्त्वा ततोऽन्यान्यपि महापुराणान्येव तत्तत्कल्पवृत्तांताश्रयाणि दर्शितानि॥पश्चादुपपुराणकथनार्थमुपभेदान्प्रवक्ष्यामीतिप्रतिज्ञाय पद्मपुराणान्नारसिंहं निर्गतमेवं नंदिसांबादित्यसंज्ञकान्युक्त्वा अन्योपपुराणान्यपि महापुराणेभ्य एव निर्गतानीति॥अष्टादशभ्यस्तु पृथक् पुराणं यत्प्रदृश्यते॥विजानीध्वं द्विजश्रेष्ठास्तदातेभ्यो विनिर्गतमिति वचनेन सूतऋषिरुक्तवान्॥ततः–सगश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वंतराणिचेत्यादिना पुराणलक्षणान्युक्त्वासात्त्विकेपुचकल्पेषुमाहात्म्यमधिकं हरेः॥राजसेषुच कल्पेषु माहात्म्यंब्रह्मणोविदुः॥तद्वदग्नेश्च माहात्म्यं तामसेषु शिवस्य च॥संकीर्णषु सरस्वत्याःपितॄणां च निगद्यतेइतिवचनेन पुराणप्रतिपाद्यहरिब्रह्माग्निहरसरस्वतीपितॄणांमाहात्म्यसंबंधात्कल्पानांसात्त्विकराजसतामसत्वसंकीर्णत्वभेदैश्चातुर्विध्यमुक्तवानिति॥तत्र कल्पानांतत्तद्देवतासंबंधज्ञानंतुतत्तत्कल्पाश्रिततत्तत्पुराणप्रतिपाद्यमुख्यदेवताज्ञाने नैवबोध्यम्॥अन्यप्रकारस्य क्वचिदपि पुराणेष्वनुपलंभात्ततत्रैवं सतिसारस्वतस्य कल्पस्य मध्ये ये स्युर्नरामराः॥तद्वृत्तांतोद्भवं लोके तद्भागवतमिष्यते इति वचनं भागवतस्य लक्षणप्रतिपादकं प्रतिपादितम् ॥ तदर्थस्तु यथा गारुडकल्प इत्यत्र गरुडस्यायं गारुडःयथावा वाराहकल्प इत्यत्र वराहस्यायंवाराह इति व्युत्पत्तिः प्रसिद्धातद्वदेव सरस्वत्या अयं सारस्वतइतिविग्रहः॥सरस्वत्यास्तथाकल्पो गौरीकल्पस्तथैव चेति कल्पनामसु सरस्वतीकल्पत्वेनैव कथितत्वाच्च॥मत्स्यपुराणे उपांत्याध्यायेसंकीर्णेषु सरस्वत्याःपितॄणां कल्प उच्यते इति वचनेनतथैवोक्तत्वाच्च।ब्रह्मवि



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ष्णुरुद्राणां कल्पवद्गौरीलक्ष्म्योःकल्पवच्च सरस्वतीकल्पस्यार्थप्राप्तत्वाच्च।तादृशसारस्वतकल्पसंबंधिनो ये देवमनुष्यास्तद्वृत्तांतस्योद्भव उत्पत्तिर्यस्मात्तत्पुराणं भागवतं विदुः॥तद्वृत्तांतप्रदर्शकं यत्पुराणं तद्भागवतसंज्ञकमितियावत् ॥ अत्र च तत्तद्देवतानामाविर्भावाश्रया ये ये कल्पास्ते तत्तन्नाम्नाव्यवह्रियंते ॥ एतच्च तत्तन्नामककल्पाश्रितेषु पुराणेषु तत्तद्देवताया एव मुख्यत्वेनोत्पत्ति प्रदर्शकवाक्यैर्लक्ष्मीकल्पादिकल्पाश्रितकूर्मपुराणादिषुसर्वत्र प्रसिद्धमेव॥तथाच मुख्यत्वेन सरस्वत्या आविर्भावप्रतिपादकं पुराणं यत्तद्भागवतमित्यतिरहस्यार्थः॥तत्र सारस्वतकल्प इति पदे नैव कल्पस्य सरस्वतीसंबंधे बोधिते तस्य संकीर्णत्वं संकीर्णेषु सरस्वत्या इतिवचनेनेश्वरप्रेरणां विनाऽपि गृहागतमेव॥अस्मिंश्च वचने भागवतपदेन विष्णुभागवतस्य ग्रहणं वंध्यापुत्रोपमेमेव। तत्र मुख्यत्वेन सरस्वत्याविर्भावस्यासत्त्वात्॥विष्णुभागवते द्वितीयस्कंधे पाद्मं कल्पमथो शृणु इति वचनेन स्वमुखेनैव स्वस्य पाद्मकल्पकथाश्रयत्वस्योक्तत्वात्॥तद्विरोधाच्च॥न च पाद्मकल्प एव सारस्वतः—सरस्वान्समुद्रस्तस्माज्जातं कमलं सारस्वतं तस्य कल्प इति व्युत्पत्त्येति वाच्यम्॥पद्मकल्पस्य वृत्तांतं तत्र यस्मादुदाहृतम्॥तस्मात्पाद्मं समाख्यातमिति पूर्वोदाहृतशिवपुराण वचनेन—एतदेव यदा पद्ममभूद्धैरण्मयं जगत्॥तद्वृत्तांताश्रयं तद्वत्पाद्ममित्युच्यते बुधैः॥पाद्मं तत्पंचपंचाशत्सहस्राणीहकथ्यते इति मत्स्यपुराणवचनेन—सारस्वतस्य कल्पस्य मध्येये स्युर्नराम राः इति वचनेन च पाद्मकल्पसारस्वतकल्पयोःपृथक्कथाकथनात्॥किंच सारस्वतकल्पपाद्मकल्पयोरेकत्वे पद्मकल्पस्य प्रतिपादकंपुराणद्वयं पाद्मं भागवतं चेत्येव वदेत्॥किंच पद्मकल्पस्यवृत्ता न्तमित्यत्राभिव्यक्तपदार्था ये स्वतंत्रा लोकविश्रुता इतिन्यायेन पूर्वबुद्ध्यारूढं प्रसिद्धंपाद्मशब्दं विहायाप्रसिद्धंसारस्वतशब्दं पाद्मशब्दस्य वाचकंकृत्वासारस्वतपदघटितकल्पने प्रयोजनाभा वः।किंच सरस्वत्यास्त था कल्प इत्यादेःपूर्वोक्तस्य सारस्वतपदनिरुक्त्यर्थकस्य वचनसमूहस्य विरोधश्च॥न च पाद्मकल्पसारस्वतकल्पयोःपृथक्त्वे त्रिंशत्कल्पेषु मत्स्यपुराणांतिमाध्याये कीर्तितेषु सारस्वतपदेन पाद्मस्य ग्रहणं न स्यादिति वाच्यम्॥प्रभासखंडे त्रिंशत्कल्पेषु विष्णुजकल्पार्चिषकल्पसुपुमानकल्पानां ग्रहणेऽपि तेषां कल्पानां यथा मात्स्यांतिमाध्याये न ग्रहणंतथा पाद्मस्यापि न ग्रहणमित्यस्य तुल्यत्वात्॥यदि तेषां पर्यायत्वेन कुत्रचिदंतर्भावः क्रियते तर्ह्यस्यापि कुत्रचिदंतर्भावोऽस्तु॥अत एव विष्णुभागवतस्य प्रबंधटीकाकारेण पितृकल्पे एव पूर्वा र्धांते पद्मस्योद्भवात्पितृकल्पपदेन पाद्मसंग्रहो वेदितव्य इत्युक्तम्॥पुराणकल्पकथनप्रस्तावे सारस्वतकल्पपाद्मकल्पयोःपृथक्त्वकरणेनसारस्वतपदेन पाद्मस्य सर्वथा न ग्रहणम्॥वस्तुतस्तु— त्रिंशत्कल्पा ब्रह्मणस्त्रिंशत्तिथ्यात्मकाःत्रिंशत्तिथीषुप्रतिपदादिषूत्पद्यंते॥भूःभुवःसुवःभूर्भुवःसुवइत्यादयस्त्रयस्त्रिंशत्कल्पाः॥पाद्मादयश्चक्षुषुराणोक्तादिनकल्पा ब्रह्मणःप्रतिदिवसेषूत्पद्यन्त इति दिनकल्पतिथिकल्पानां सुतरां भेदात्तिथिकल्पेषु दिनकल्पानांपाद्मादीनां न ग्रहणमिति सिद्धांतः।यत्तु विष्णुभागवतस्यारंभतःपाद्मकल्पकथाश्रयत्वेऽपि कृष्णजन्मखण्डस्यैव सारस्वतक ल्पभवत्वेन तस्य च दशमस्कंधे सत्त्वात्—सारस्वतस्य कल्पस्य मध्ये ये स्युर्नरामरा इति वचनस्य विष्णुभागवतं विषयोऽस्तीत्याहुः ॥तदसत् ॥ कृष्णजन्मखंडस्य सारस्वतकल्पभवत्वप्रति पादकानां वचनानां निर्मूलत्वात्समूलत्वेऽपि यस्मिन्पुराणे यस्य कल्पस्य प्रथमतःप्रतिपादनं तत्कल्पप्रतिपादकमेव तत्पुराणमिति नियमः॥सर्वपुराणेषु तथादृष्टत्वात्—तथा कृष्णजन्म खंडस्य दशमस्कंधे विद्यमानत्वेऽपि प्रथमतस्तत्कथाया अभावात्पाद्मकल्पकथायाः प्रथमतो विद्यमानत्वस्य स्वेनैवोक्तत्वाच्च—न सारस्वतस्य कल्पस्येति वचनस्य विष्णुभागवतं विषयः ॥ किंच कृष्णजन्मखंडस्य यथा दशमस्कंधे कथनं तथा सर्वपुराणेषु तत्कथनं वर्तत एवेति सर्वपुराणानां तद्वचनविषयत्वं स्यात्।तथा च सर्वपुराणानि भागवतपदवाच्यानि स्युस्तस्मात्सारस्व तकल्पस्य यत्र प्रथमतः प्रतिपादनं स एव तद्वचनस्य विषयो वक्तव्यः॥तादृशं च देवीभागवतमेवास्तीति देवीभागवतमेव तद्विषयो वक्तव्य इति ॥ किंच शिवपुराणे उमासंहितायां ब्रह्म णा संस्तुता सेयं मधुकैटभनाशने॥महाविद्या जगद्धात्री सर्वविद्याधिदेवता॥द्वादश्यां फाल्गुनस्यैव शुक्लायां समभून्नृपेति वचनात्फाल्गुनशुक्लद्वादश्यांदेव्या उद्भवस्तद्दिने एव सारस्वतकल्पो द्भवस्तदुक्तं हेमाद्रौ कल्पश्राद्धकरणे नागरखंडे—सारस्वतस्तु द्वादश्यां शुक्लायां फाल्गुनस्य चेति॥तथाच सरस्वत्याः कल्प इत्यर्थकस्य सारस्वतस्य कल्पस्य मध्ये ये स्युर्नरामरा इतिव

४

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





चनस्य सर्वथा देवीभागवतमेव विषयो न विष्णुभागवतमिति बोध्यम्॥किं च तस्य ग्रहणे तस्य हरिमाहात्म्यप्रतिपादकत्वात् तदाश्रितकल्पस्य सात्त्विकत्वमेवायास्यति ॥ सात्त्विकेष्वथ कल्पेषु माहात्म्यमधिकं हरेरिति वचनात्॥ततश्च संकीर्णेषु सरस्वत्या इति वचनेन सारस्वतकल्प इति नाम्ना च पारमहंस्यसामग्र्येव कर्तव्या स्यात्। अतो विष्णुभागवतं विहाय देवीभागवतमेवास्य वचनस्य विषयोऽनिच्छतापि वक्तव्यः।तस्मात् सारस्वतस्य कल्पस्येति वचनाद्देवीभागवतमेव महापुराणम् ॥ अस्ति चात्र सरस्वत्याविर्भावप्रतिपादकं वचनम्॥तदुक्तं देवीभागवते प्रथमस्कंधे॥तस्यास्तु सात्त्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा ॥ महालक्ष्मीःसरस्वती महाकालीति ताश्रयः॥तासां तिसृणां शक्तीनां देहांगीकारलक्षणः ॥ सृष्ट्यथ च समाख्यातः सर्गः शास्त्रविशारदैरिति॥अंबरीष शुकप्रोक्तं नित्यं भागवतं शृण्विति वचनमपिशुकाय प्रोक्तमितिव्युत्पत्त्या देवीभागवतपरमपि संगच्छते॥भवति हि देवीभागवतं शुकायैवप्रोक्तं व्यासेनेति॥किंच अष्टादशपुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः॥भारताख्यानमखिलं चक्रे तदुपबृंहणमिति मात्स्यवचनमपि देवीभागवतस्यैव महापुराणत्वं बोधयति॥अष्टादशपुराणोत्तरं भारतस्य जातत्वात् ॥ भारतोत्तरं च विष्णुभागवतस्य जातत्वात्॥भारतोत्तरकालं निर्विण्णो व्यासश्चकारेति विष्णुभागवते एवोक्तत्वात्॥ननु वेदशाखाःपुराणानि वेदांतं भारतं तथा॥कृत्वा संमोहसंमूढोऽभवं राजन्मनस्यपीति देवीभागवते तृतीयस्कंधे एवोक्तत्वात्तत्रापि स विरोधस्तदवस्थ एवेतिचेन्न ॥ मन्मते तदानीं ग्रंथो नैव जातः किंतु जनमेजयं प्रति एवं वक्तास्मीति ज्ञानचक्षुषा ज्ञात्वा भारतात्पूर्वमेव देवीभागवतं कृतमित्यर्थस्य कल्पनात्॥त्वन्मते तु तथाकल्पयितुं न शक्यते॥चतुःश्लोकीभागवतोपदेशस्य जायमानत्वात्॥उपदेशात्पूर्वं तज्ज्ञानाभावस्यावश्यं कल्पनीयत्वात॥ यदि तत्रापि पूर्वं व्यासस्य ज्ञानमस्तीति स्वीक्रयते तदा वक्ष्यमाणः सर्वोप्यर्थवादः स्यात्॥ततश्चग्रंथसारस्यभंगप्रसंग इत्यास्तां तावत् ॥वस्तुतस्तु वेदशाखाःपुराणानीति पाठोऽसंगतइति वक्ष्यते तृतीयस्कंधे तदा न कोऽपि विरोधः॥यत्तु पाद्मे भागवतमाहात्म्ये श्रीमद्भागवतकथाश्रवणाय समागतानां परिगणनप्रसंगे वेदांतानि च वेदाश्च मंत्रास्तंत्राणि संहिताः॥दशसप्त पुराणानि षट्छास्त्राणि समाययु रित्युक्तम्॥तत्रव्यासकृतपुराणानामष्टादशत्वादष्टादशेति वक्तव्ये सप्तदशत्वोक्तिः श्रीमद्भागवतस्याष्टादशत्वं गमयति । तस्याष्टादशानंतर्गतत्वेदेवीभागवतस्याष्टादशांतर्गतत्वे वाऽष्टादशानां श्रोतृत्वसंभवेनं श्रोतुमागतानां पुराणानामष्टादशत्वानुक्तेर्निर्बीजत्वप्रसंगात्॥एवं पाद्मे–दशसप्त पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः॥नाप्तवान्मनसा तोषं भारतेनापि भामिनि॥चकारसंहितामेतां श्रीमद्भागवतीं परामिति सप्तदशत्वोक्तिः श्रीमद्भागवतस्यैवैतांसंहितामिति निर्दिष्टस्याष्टादशत्वं गमयति॥देवीभागवतस्याष्टादशत्वेऽष्टादशपुराणानीत्यनुक्तेः निर्बीजत्वप्रसंगादित्याहुः॥तदसत् ॥ तेषामेव वचनैर्विष्णुभागवतस्याष्टादशपुराणांतर्गतत्वंन सिध्यति॥किंतु देवीभागवतस्यैवेतिवार्धुषिकत्वं कुर्वाणोमूलमेवाविनाशितवानितिन्यायआगतः॥तथा हि॥भारतंव्यासमुखाच्छ्रुत्वातत्र संदिहानःक्रौष्टुकिर्माकण्डेयं प्रत्यागत्य संदेहंपृष्टवान्।तस्मै मार्कंडेयो माकण्डेयपुराणमुक्तवान्।तदुक्तं मार्कंडेयपुराणे–तदिदं भारताख्यानं बह्वर्थ श्रुतिविस्तरम् तत्त्वतो ज्ञातुकामोऽहं भगवंतमुपस्थित इति॥तथाच भारतोत्तरं मार्कंडेयपुराणमभवत्॥तथैव त्वदुक्तरीत्यैव विष्णुभागवतमपि॥तथाच भारतात्पूर्वषोडशपुराणान्येव सिद्धानि ॥ तथाच पूर्वोक्तवचनमध्ये षोडशेत्येव वक्तव्ये सप्तदशेत्युक्तत्वात्॥देवीभागवतमेव महापुराणमन्यथा सप्तदशत्वपूर्त्तेर्नस्यात्॥तस्मात्तद्वचनप्रामाण्याद्देवीभागवतमेव महापुराणमिति सिध्यति न तुविष्णुभागवतम्॥भारतात्पूर्वं सप्तदश मदीयभागवतसाहितानिमार्कंडेयमष्टादशमुभयमतासिद्ध मेव।विष्णुभागवतस्यभारतोत्तरं जायमानत्वेनतन्मध्येतस्यावस्थानस्थलाभावादित्येवंलापनेनापि दोषाभावादिति सुधियो विभावयंतु॥यत्तु किंच पाद्मे–वैष्णवं नारदीयं च तथा भागवतं शुभम्॥गारुडं च तथा पाद्मं वाराहं शुभदर्शने॥सात्त्विकानि पुराणानि विज्ञेयानि शुभानि वै इत्युक्त्या च भागवतस्य सात्विकत्वमुक्तम्॥सात्विकेषु पुराणेष्विति कौर्मोक्त्याच सात्विकपुराणानां विष्णुपरत्वमुक्तम्॥अतोविष्णुपरमेव भागवतमष्टादशपुराणांतर्गतं न तु देवीभागवतमिति ॥अपिच स्कान्देप्रभासखंडे–चतुर्भिर्भगवान्विष्णुर्द्वाभ्यां ब्रह्मा तथा रविः॥अष्टादशपुराणेषु शेषेषु भगवान्भव इत्युक्तम्॥स्कांदे सौरसंहितायां च–कथ्यते दशभिर्विप्राःपुराणैःपरमेश्वरः॥चतुर्भिर्भग



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वान्विष्णुर्द्वाभ्यां ब्रह्मा प्रकीर्तितः॥ एकेनाग्निस्तथैकेन भगवांश्चंडभास्कर इत्युक्तम्॥ अतोपि विष्णुभागवतमष्टादशांतर्गतं नत्वन्यदित्याहु स्तदसत्॥ त्वन्मते मात्स्योक्तसात्त्विकराजसतामससं कीर्णपुराणेषु मध्ये त्रयाणां व्यवस्था पूर्ववचनैस्त्वयोक्ता ॥ संकीर्णपुराणानां तु नोक्ता॥ तेषां केषु पुराणेष्वंतर्भाव इति वद॥ करिष्यामि कुत्रचिदिति चेन्मन्मतेऽपि श्रीभगवत्या विष्णुशक्ति त्वाभिमानेन मंत्राधिष्ठात्रीं देवतां वेदमानो दुर्गां दुर्बोधध्वांतभानुं गुरुं चेति श्रीक्रमदीपिकोक्तप्रकारेणविष्णुमंत्राणांदुगाया अधिष्ठातृत्वेन तयोरैक्याद्वा तत्प्रतिपादकभागवतस्य वैष्णवेष्वेवां तर्भावात् ॥ अत एव–हरिर्द्वाभ्यां रविर्द्वाभ्यां द्वाभ्यां चंडीविनायकौ॥ द्वाभ्यां ब्रह्मा समाख्यातः शेषेषु भगवाञ्छिवः इति वचनं संगच्छते ॥ वस्तुतस्तु द्वयोरपि भागवतयोरस्मन्मते प्रमाण त्वाद् विष्णुभागवतपक्षपातिनां वचनानामस्माकं विरोधाभावेन तल्लापने प्रयोजनाभाव एव ॥ तथाच नारदीयादिपुराणमतेन श्रीविष्णुभागवतं महापुराणं तद्वचनानि प्रसिद्धान्येवेति न लि खितानि ॥ देवीभागवतं तु तन्मते उपपुराणम्॥ शैवमात्स्यपुराणादिमते तु देवीभागवतं महापुराणं विष्णुभागवतमर्थादुपपुराणमिति सिद्धम्॥ अत्र केचिद्देवीभागवतसंमतित्वेन देवीयामल तंत्रस्थं–श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं वेदसंमितम् ॥ परीक्षितायोपदिष्टं सत्यवत्यंगजन्मना ॥ यत्र देव्यवताराश्च बहवः प्रतिपादिता इति॥ तथा–इदं रहस्यं चरितं राधोपासनमुत्तमम् ॥ व्या साय मम भक्ताय प्रोक्तं पूर्वं मयाऽद्रिजे ॥ मत्तो रहस्यं ज्ञात्वव राधामाहात्म्यमुत्तमम् ॥ एतस्य विस्तरं चक्रे श्रीमद्भागवते तथा ॥ नारदे ब्रह्मवैवर्ते लोकानां हितकाम्ययेति सौभाग्यकल्पल तायां संहारभैरवतंत्रस्थं वचनं लिखंति॥ तत्र परे विवदंते॥ तदुभयमपि गौरवभियान लिख्यत इति॥ तत्रैतस्य सप्रमाणस्य देवीभागवतस्य क्वचित्क्वचिद्द्राविडगौडसंप्रदायपाठभेदेन द्वैविध्येऽपि गौडपाठस्य समंजसत्वात्तमालंब्यैव यथामति व्याख्यायत॥ तत्र तावद्भगवत्युपासनायां केचिद्भान्ता वदंति–मायारूपाया भगवत्याउपासना शास्त्रेषूक्ता॥ तथाच मायाया मिथ्यात्वान्मुक्तौ त स्या अनन्वयाच्चाश्रद्धेयेयमुपासनेति॥ ननु नेयं भ्रांतिःतापनीये 'माया वाएषा नारसिंही सवामिदं सृजति सर्वमिदंरक्षति सर्वमिदं संहरति तस्मान्मायामेतांशक्तिविद्याच एतां मायांशक्तिं वेद समृ त्युंजयतिसपाप्मानं तरतिसोऽमृतत्वंच गच्छति महतीं श्रियमश्नुत' इतिश्रुतौ मायांशक्तिं वेदोपास्ते समृत्युं जयतीतिकथनेन तथा त्वंवैष्णवीशक्तिरनंतवीर्या विश्वस्य बीजंपरमासिमाया॥ स म्मोहितं देवि समस्तमेतदिति स्मृतिभिर्विष्णोःशक्तेर्जडायामायाया एवोपास्यत्वकीर्तनादितिचेन्न॥ देव्यथर्वशिरसि–'सर्वेवैदेवा देवीमुपतस्थुःकासि त्वं महादेवी साब्रवीदहं ब्रह्मरूपिणी। मत्तः प्रकृति पुरुषात्मकं जगद्' इति–तथा भुवनेश्वर्युपनिषदि–'अथातोंबोपनिषदं व्याख्यास्यामोऽथह्येनांब्रह्मरंध्रे ब्रह्मरूपिणीमाप्नोति' इति. तथा 'भुवनाधीश्वरी तुर्यातीता विश्वमोहिनी' इति. तथा भावनोपनिषदि–'स्वात्मैवललिता' इतिश्रुतिभि–स्तथात्रिपुरातापनीयसुंदरीतापनीयादिषु 'परोरजसेसावदोम्' इतिगायत्रीचतुर्थचरणप्रतिपाद्यब्रह्मवाचकत्वेनह्रींकारबीजस्यकथनेनह्रींकार बीजस्य ब्रह्मदेवतात्वप्रतिपादकश्रुत्याच–तथा कालीतारोपनिषदादिश्रुतिभिस्तथास्मृतिभिश्चब्रह्मरूपिण्याभगवत्या एवोपासनाकथनात्॥ तथाहि स्मृतयः–सूतसंहितायांपंचमाध्याये–अतः संसारनाशाय ताक्षिणीमात्मरूपिणीम्॥ आराधयेत्परांशक्तिं प्रपंचोल्लासवर्जिताम्॥ स्कांदे वेदारण्येश्वरमाहात्म्ये॥ परातुसच्चिदानंदरूपिणी जगदंबिका॥ सैवाधिष्ठानरूपा स्याज्जगद्भांतेश्चि दात्मनोति॥ कूर्मपुराणे द्वादशाऽध्याये–एतत्प्रदर्शितंविप्रा देव्यामाहात्म्यमुत्तमम्॥ सर्ववेदांतवेदेषु निश्चितं ब्रह्मवादिभिः॥ एकं सर्वगतं सूक्ष्मं कूटस्थमचलं ध्रुवम्॥ योगिनस्तत्प्रपश्यंति महादे व्याः परं पदमिति॥ परात्परतरं तत्त्वं शाश्वतं शिवमच्युतम् ॥ अनंतं प्रकृतौ लीनं देव्यास्तत्परमं पदमिति ॥ शुभ्रं निरंजनं शुद्धं निर्गुणं दैन्यवर्जितम् ॥ आत्मोपलब्धिविषयं देव्यास्तत्प रमं पदमिति॥ हालास्येश्वरमाहात्म्येमायाबीजार्थप्रस्तावे–सत्स्वरूपःसदाकारो हकारोधर्मतत्परः॥ चिदाकारःशिवाकारो रेफःसर्वार्थसिद्धिदः॥ आनंदरूपयोरैक्यादीकारःसवकामदः॥ बिंदुना दौ तदंतस्थौ भवेतांमोक्षदावुभौ॥ सच्चिदानंदरूपं तु प्रोक्तं बीजं मनीषिभिः॥ सच्चिदानंदरूपं यत्परं ब्रह्म तदेवहीति॥ देवीभागवते–निर्गुणासगुणाचेति द्विधाप्रोक्ता मनीषिभिः॥ सगुणारागिभिः सेव्या निर्गुणा तु विरागिभिरिति॥ ब्रह्मांडपुराणे ललितोपाख्याने–चितिस्तत्पदलक्ष्यार्था चिदेकरसरूपिणी ॥ इत्यादयोऽष्टादशपुराणेषूपपुराणेषु च देव्याःपरब्रह्मत्वप्रतिपादकस्मृतयो द्रष्ट

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





व्याः॥ननु तर्हि षोडशीग्रहणाग्रहणयोःक्रियाविषयत्वात्तत्र शाखाभेदेन विकल्पसंभवेऽपि वस्तुस्वरूपस्यैकविधत्वात्तत्र विकल्पासंभवेन भगवतीस्वरूपस्य मायास्वरूपत्वप्रतिपादकश्रुत्या सह भगवत्या ब्रह्मरूपत्वप्रतिपादकश्रुतेर्विरोध इति चेन्न॥मायाया वेदांतेषु मिथ्यात्वान्मिथ्यापदार्थस्याधिष्ठाने कल्पितत्वात्तस्याधिष्ठानसत्तातिरिक्तसत्ताभावान्मायायामधिष्ठानसत्ताप्रवेशान्मायास्वरूपोपासनायामपि सत्तास्वरूपब्रह्मण एवोपासना संभवतीत्याशयेन मायास्वरूपत्वप्रतिपादनेऽपिविरोधाभावात्॥यथा ब्रह्मण उपासनायामपि नकेवलं ब्रह्मणोग्रहणं किंतु शक्तिविशिष्टस्यैव॥शक्तेस्तदतिरेकेणाभावात्।केवलस्योपासनाऽसंभवाच्चतथा मायोपासनाऽसंभवाच्च॥तथा मायोपासनायामपि नकेवलमायाया अवस्थानमस्ति॥येनकेवलाया उपासनंसंभवेत्॥किंतु ब्रह्माधिष्ठानयुताया एवावस्थानमिति॥भगवत्या मायारूपत्वप्रतिपादनेऽपि फलतोब्रह्मस्वरूपमेव भगवत्याःसिध्यतीतिश्रुत्योःपरस्परं विरोधाभावात् ॥तदुक्तं पावकस्योष्णतेवेयमुष्णांशोरिव दीधितिः॥चंद्रस्य चंद्रिकवेयं शिवस्य सहजा ध्रुवेति॥तथा स्वपदास्वशिरश्छायां यद्वलंघितुमीहते॥पादोद्देशे शिरो न स्यात्तथेयं वैदवी कलेति॥तथाच यथाग्नौ होमेऽग्निशक्त्यां होमोऽर्थसिद्धःएवमग्निशक्त्यां होमेऽपि वह्नौ होमोऽर्थसिद्धःतद्वन्मायाया भगवतीत्वेऽपि ब्रह्मण एव भगवतीत्वं सिद्धमितितस्यैवोपासनायां ग्रहणम्।मायाया मिथ्यात्वप्रतिपादकेषुवाक्येषु तु ब्रह्मणोमिथ्यात्वाभावात्केवलमायाया एव ग्रहणम्॥तस्या मिथ्यात्वेऽपि तदधिष्ठानस्य सत्यत्वात्॥उपासकस्योपास्यमायापदार्थांतर्गतस्य ब्रह्मांशस्य मोक्षदशायामनुस्यूतत्वान्नमुक्तावुपास्यस्वरूपत्यागः॥अत एवांतर्यामिब्राह्मणे' पृथिव्यादिमायांतानांपदाथानां यः पृथिव्यां तिष्ठन्यं पृथिवी न वेदयस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवीमंतरोयमयाति' इत्यादिनांऽतर्यामिचेतनसंबंधेनैव देवतात्वमुपवर्णितम् ॥ तथाच 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'इति श्रुतिरप्यनुगृहीता भवतीत्येतत्सर्वमभिप्रेत्य सूतसंहितायामुक्तं–चिन्मात्राश्रयमायायाः शक्त्याकारे द्विजोत्तमाः ॥ अनुप्रविष्टा या संविन्निर्विकल्पा स्वयंप्रभा॥सदाकारा सदानंदा संसारोच्छेदकारिणी॥सा शिवा परमा देवी शिवाभिन्ना शिवंकरीति॥यद्वाभगवतीस्वरूपप्रतिपादकवाक्येषुये मायाशक्तिकलादिशब्दास्ते लक्षणयामायाविशिष्टशक्तिविशिष्टकलाविशिष्टब्रह्मबोधकाः॥तथा च मायाविशिष्टं शक्तिविशिष्टंयद्ब्रह्म तद्भगवतीपदवाच्यमिति फलितोर्थः॥एतेन क्षुधारूपेण संस्थिता निद्रारूपेण स्मृतिरूपेणेत्यादि केवलशक्तिवाचकपदानि व्याख्यातानि ॥ तैः पदैस्तत्तच्छक्तिविशिष्टब्रह्मण एव सर्वत्र ग्रहणात् ॥ अयमेवार्थःकालोत्तरे उक्तः ॥ तथाच कालोत्तरे शिवंप्रति देवीप्रश्नवाक्यं–भगवन्देवदेवेश मिथ्यामायेति विश्रुता॥तस्याःकथमुपास्यत्वं भवेन्मुक्तावनन्वयात्॥श्रद्धा न जायते क्वापि मिथ्यावस्तुनि कुत्रचित्॥देव्या उपासना चेयं श्रुतामायाश्रिता प्रभो॥संशयं छिंधि देवेश रहस्यं वद मे प्रभो ॥ इति श्रुत्वावचो देव्या भगवांश्चंद्रशेखरः॥उवाच वचनं दिव्यं सर्वलोकहितप्रदम्॥नाहंसुमुखि मायाया उपास्यत्वं ब्रुवे क्वचित्॥मायाधिष्ठानचैतन्यमुपास्यत्वेन कीर्तितम्॥मायाशक्त्यादिशब्दाश्चविशिष्टस्यैव लक्षकाः॥तस्मान्मायादिशब्दैस्तुब्रह्मैवोपास्यमुच्यत इति॥अत्रपूर्वार्द्धेनमायाधिष्ठानचैतन्यमित्यनेन प्रथमपक्षउक्तःमायाशक्त्यादीत्यनेनोत्तरार्द्धेनद्वितीयःपक्षउपपादितः।एतदभिप्रायेणैव ब्रह्मांडपुराणेमायावाचकस्यैव ह्रींकारस्य मायाविशिष्टब्रह्मवाचकत्वमुक्तं–शक्त्याक्षराणि शेषाणिह्रींकार उभयात्मकइति॥उभयात्मकःशिवशक्त्यात्मकइत्यर्थः॥किंचमायायाःकेवलायाउपास्यत्वंवदन्वादीभ्रांतःप्रष्टव्यः–जडाया उपास्यत्वेतत्तद्देवताविग्रहाणांप्राणेंद्रियमनआत्मजीवादिमत्त्वं कथंभवेत्॥द्विविधं हि भगवतीरूपंस्थूलंसूक्ष्मंच॥तत्रसूक्ष्मंमुख्यंस्थूलंतुतत्तदुपासकानांदर्शनादिव्यवहारार्थंतत्तदुपासकैरुपासितम्॥सूक्ष्मरूपमेवस्थूलंरूपंगृह्णाति॥तत्रैवंसति सूक्ष्मरूपे चैतन्याननुप्रवेशेतद्गृहीते स्थूलरूपेपिचैतन्यस्याननुप्रवेशेन तत्तद्देवतानां प्राणनसंभाषणादिव्यवहारोच्छेद एव स्यात्।तस्मादनिच्छयाऽपि चैतन्यविशिष्टाया एव तत्तच्छक्तेरुपास्यत्वं वक्तव्यमिति॥नन्वेवं चेत्किमर्थं मायादिशब्दैर्व्यवहारो भगवत्याःशास्त्रे क्रियते लक्षणादिदोषाभावाय स्पष्टप्रतिपत्तये ब्रह्मादिशब्दैरेव कुतो न व्यवहारःक्रियत इति चेच्छृणु॥चतुर्व्यूहात्मकं हि ब्रह्मणो रूपम्–विराड्हिरण्यगर्भाव्याकृतब्रह्मरूपम्॥तत्र देव्युपासनाव्यूहांतर्गतस्य कस्य पदार्थस्येति शंकायां–विराड्हिरण्यगर्भाव्याकृतानां तदधिष्ठातॄणां ब्रह्मविष्णुरुद्राणां च॥ मैत्रायणीयश्रुतौ–एकैकं गुणमयत्वेन कीर्तनाद्गुणत्रयसाम्यावस्थाया मायायाःप्रकृत्या



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दिशब्दवाच्यत्वेन तस्याश्चतुरीयब्रह्माश्रितत्वेन शास्त्रेषूक्तत्वात्॥तदेवमायाविशिष्टं तुरीयं ब्रह्मैव भगवत्युपासनायांग्राह्यमिति बृहदर्थप्रदर्शनार्थं तथा मायादिशब्दैर्व्यवहारस्यसत्त्वात्॥तथाच मैत्रायणीयश्रुतिः–'तमोवा इदमेकमग्र आसीत्तत्परेस्यात्तत्परेणोरितंविषमत्वंप्रयात्येतद्वैरजस्तद्रजःखल्वीरितं विषमत्वं प्रयात्येतद्वैसत्त्वस्यरूपम्'इति॥अनेनवाक्येन मायायास्तमःशब्दिताया परेण ब्रह्मणा नित्यसंबंधप्रदर्शनेन जगत्कारणरूपं साम्यावस्थात्मकं प्रदर्शितम्॥अग्रे'तस्यैतास्तनवोऽथ योह खलु वा वास्य तामसोंशोऽसौ योयं रुद्रो यो ह खलु वा वास्य राजसोंशोऽसौ ब्रह्मा योह खलु वा वास्य सात्विकोंशोऽसौ विष्णुः'इति गुणत्रयोपाधित्वं ब्रह्मविष्णुरुद्राणां प्रतिपादितम्॥तथा पुराणादिषुच–सत्वं रजस्तम इात प्रकृतेर्गुणास्तैर्युक्तःपरःपुरुष एक इहास्य धत्ते॥सृष्ट्यादये हरिवि रिंचिहरेति संज्ञाः श्रेयांसि तत्र खलु सत्त्वतनोर्नृणांस्युरित्यादिसर्वपुराणेषु ब्रह्मविष्णुरुद्राणामेकैकगुणवत्त्वमेव प्रतिपादितम्॥ नाहि मायाप्रकृतिशक्त्यादिशब्दवाच्यं वस्तु ब्रह्मातिरिक्ताश्रयकंभवति॥येन मायादिशब्दैरुपास्यं वस्तु मायाविशिष्टब्रह्मातिरिक्तं भवेत्किंतु मायाविशिष्टब्रह्मरूपमेवेति॥तैःशब्दैरुपास्यवस्तुनि प्रतिपादिते मायाविशिष्टब्रह्मरूपमेव भगवतीरूपमुपास्यं भवेदिति बोधनार्थमेव मायादिशब्दैर्भगवत्या उपासनकथनमिति॥ननु–तर्हि त्वंवैष्णवीशक्तिरनंतवीर्येत्यत्रापि मायाशब्दोब्रह्मविशिष्टमायावाचकःस्यात्॥न चेष्टापत्तिः॥ तत्र केवलाया मायाया एव विवक्षितत वादितिचेन्न ॥ नह्यस्माभिःसर्वत्र मायाशब्देन मायाविशिष्टं ब्रह्मैव ग्राह्यमिति शपथः क्रियते येनातिप्रसंगःस्यात् ॥ किंतु क्वचित्संबंधिशब्दसमाभिव्याहारे केवलमायाया ग्रहणं यथात्रैव तथा नाशप्रकरणे केवलमायाया ग्रहणम्॥तथा सृष्टिस्थलेऽपि मन्मायाशक्तिसंकृप्तं जगत्सर्वं चराचरम्॥सापि मत्तः पृथग्विप्रा नास्त्येव परमार्थत इत्यादौ॥उपासनास्थले तु तद्विशिष्टब्रह्मणो ग्रहणमिति यथायथमूहनाज्ज्ञेयमिति॥तथाच त्वंवैष्णवीशक्तिरित्यादौ त्वमधिष्ठानब्रह्मरूपिणी सती वैष्णवी या मायाशक्तिरस्ति तद्रूपिण्यसीत्यर्थः॥ तेन च ब्रह्मरूपत्वमेव भगवत्याः प्रतिपादितम्॥एवमन्यत्राप्यूह्यम्॥यद्वा ब्रह्मणो जगत्कारणस्योभयात्मकत्वात्क्वाचिन्मायोपसर्जनब्रह्मण उपासनं तत्र शक्तिः सहायभूता इदं च मतं शिव पुराणादिषु स्पष्टे–तस्मात्सहतया देवं हृदि पश्यंति ये शिवम्॥ तेषां शाश्वतिकी शांतिर्नेतरेषां कदाचनेत्यादिवचननिचयैः ॥ क्वाचिच्च ब्रह्मोपसर्जनमायाया उपासनं तत्र भगवतीविषये ब्रह्मोपसर्जनमायाया एवोपासनमितिदर्शयितुं मायाशक्त्यादिशब्दैःशास्त्रे भगवत्या व्यवहारःक्रियत इति॥इदंच मतं सर्वतंत्राभिमतं पुराणाभिमतंच ॥शिवेन सहितांदेवींभावयेद्भुवनेश्वरीमिति भुवनेश्वरीपारिजातादिवचननिचयात्॥तदुक्तं कूर्मपुराणे–अस्यास्त्वनादिसंसिद्धमैश्वर्यमतुलं महत्॥तत्संबंधादनंतैषा रुद्रेण परमात्मनेत्यादीनि वचनानि देवीभागवतादिसर्वपुराणेषु द्रष्टव्यानि॥उभयपक्षेऽपि ब्रह्मणश्चिदंश उपासनायामागतएवेतिन मुक्तावुपास्यस्वरूपानन्वायित्वरूपं दूषणंनवाऽश्रद्धेयतेति॥इत्थं भगवत्युपासनायाः स्वरूपेनिर्णीते ब्रह्माविष्णुरुद्रशक्त्युपासनासुकस्योपासना वरिष्ठेत्यस्य विचारःक्रियते–तत्र सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति सामानाधिकरण्येन सर्वपदार्थमात्रस्य ब्रह्मरूपत्वेपि भक्तानां चेतसोवलंबाय परमेश्वरेण मलिनशुद्धतरशुद्धतमा विभूतयःशुद्धितारतम्येन कल्पिताः॥ताश्च गीतादिशास्त्रेषुविभूत्यध्याये छांदोग्यादिषुचप्राणोब्रह्मआदित्यो ब्रह्ममनोब्रह्मेत्यादिवाक्यैःप्रदर्शिताः॥तत्रचसर्वविभूतिषु ब्रह्मणःसमानत्वेनावस्थानेऽपियथापात्रमणिकृपाणदर्पणादिषु शुद्धितारतेम्यन प्रतिबिंबफलनस्यापि तारतम्यमेवंविभूतिषुचशुद्धितारतम्येनैव ब्रह्मणःप्रसादकरणतारतम्यं प्रतिबिंबफलनतारतम्यंचेति याभिर्याभिर्विभूतिभिर्यथा यथा प्रतिबिंबफलनप्रसादकरणस्य च तारतम्यं च भवति तथातथा तस्या विभूतेरुत्कृष्टत्वमुत्कृष्टतरत्वमित्याद्व्यवहारः सर्वशास्त्रप्रसिद्धो निर्विवादस्तथाच सति ब्रह्माविष्णुरुद्राणामेकैकगुणोपाधित्वेनैकैकगुणापेक्षयासाम्यावस्थायास्तत्तद्गुणमूलभूतायाआधिक्येनैकैकगुणोपाधिब्रह्माविष्णुरुद्रापेक्षयासाम्यावस्थोपाधिकायाभगवत्याएवोपासनसंर्वोत्कृष्टमूसाम्यावस्थायाः सर्वकारणभूतायाःसर्वोत्कृष्टत्वात्॥किंच प्रथमतो ब्रह्मणि माया तस्या ब्रह्मणा अव्यवहितःसंबंधः॥तदुत्तरं गुणानामुद्भवान्मायाद्वारकःसंबंधो गुणानामितिसाम्यावस्थायामव्यवहितःसंबंधो ब्रह्मण इति ॥ सैवोपासना मुख्या सर्वोत्कृष्टा च ॥ अत एव सूतसाहंतादिषु रीतिरियमुक्ता–परतत्त्वप्रकाशस्तु रुद्रस्यैव महत्तरः॥ ब्रह्माविष्ण्वादिदेवाना न तथा मुनिगंपुवा इत्यादि ॥ रुद्र

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कथंचित् कायार्थं मनुते रुद्ररूपताम् ॥ न तथा देवताः सर्वाः परिस्फूर्त्यल्पतावलादिति सूतगीतासु ॥ ननु ब्रह्मविष्णुरुद्राणामेकैकगुणोपाधित्वे सर्वसंमते कथं साम्यावस्थात्मकत्वेनापि तेषांपुराणादिषूपवर्णनमितिचेन्न ॥ तदंतर्गतब्रह्मणि एव साम्यावस्थात्मकत्वेन तदभेदात्तेषामपि तदात्मकत्वकथनमित्याशयात्॥अत एव तापनीये नृसिंहस्यसत्त्वोपहिताविष्णोरवतारत्वे सर्वश्रुतिपुराणानिश्चिते सत्यपि साम्यावस्थात्मकत्वेन वर्णनं संगच्छते॥तस्मान्मायाशक्त्याख्यब्रह्मरूपभगवत्युपासनैव मुख्या सर्वोत्कृष्टा चेति॥सैव सर्वकामार्थिभिर्मुमुक्षुभिश्चोत्कृष्टवस्तूपासनेच्छुभिरांश्रयणीयेत्यर्थात्प्राप्तमपि पुराणांतरवचनैः स्पष्टमुपपाद्यते ॥ तदुक्तं देवीमाहात्म्ये–ब्रह्मविद्या जगद्धात्री सर्वेषां जननी तथा ॥ यया सर्वमिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम्॥सैव सेव्या च पूज्या च नान्यद्वै देवतांतरमिति ॥ तथा तंत्रेषु॥एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्॥भुक्त्वा भोगान्यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥यो न पूजयते नित्यं चंडिकां भक्तवत्सलाम् ॥ भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरीति॥अनेन वचनेन भगवत्युपासनायाःसंध्यादिकर्मवन्नित्यत्वं नित्यपदोच्चारणेन स्पष्टमेव बोधितम् ॥तथापुराणांतरे–आराध्या परमा शक्तिः सर्वैरपि सुरासुरैः ॥ मातुः परतरं किंचिदधिकं भुवनत्रये इति॥तथा–ॐकारं पितृरूपेण गायत्रीं मातरं तथा ॥ पितरौ यो न जानाति स विप्रस्त्वन्यरेतज इति ॥ तथाकालोत्तरे ॥ धिग् धिग् धिग् धिक् च तज्जन्म यो न पूजयते शिवाम् ॥ जननीं सर्वजगतः करुणारससागरामित्यादिपुराणेषु तंत्रेषु च बहूनि वचनानि द्रष्टव्यानि ॥ विस्तरस्तु मत्कृतशक्तितत्त्वविमर्शिन्यां द्रष्टव्यः ॥अयं चोपोद्घातोक्तार्थोऽस्माभिर्देवीभागवतस्थितौ सप्तशत्यंगषट्कव्याख्याने चोक्तः॥तस्या भगवत्याः पुराणस्य देवीभागवतस्य समंजसगौडपाठानुरोधेन व्याख्यानं यथामतिप्रारभ्यते ॥ ॥तत्र

**ॐसर्वचैतन्यरूपांतामाद्यांविद्यांचधीमहि ॥ बुद्धिंयानःप्रचोदयात् ॥ १ ॥ शौनकउवाच ॥**

**सूतसूतमहाभागधन्योऽसिपुरुषर्षभ ॥ यदधीतास्त्वयासम्यक्पुराणसंहिताःशुभाः ॥ २ ॥**

तु प्रथमेऽध्याये पंचविंशतिपद्यैकैः ॥ पुराणविषयः प्रश्न ऋषीणां समुदीर्यते॥१॥तत्रादौ भगवान् बादरायणो ग्रंथप्रतिपाद्यदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षणं मंगलमाचरति॥सर्वचैतन्यरूपामिति॥ चैतन्यमित्यत्र स्वार्थेष्यञ् ॥ चैतन्यमात्मेति शिवसूत्रे तथादर्शनात्॥ तथाच चेतनात्मरूपामित्यर्थः ॥ ननु तथापि तस्य निष्क्रियत्वात् प्रचोदयादिति प्रेरणाकर्तृत्वप्रतिपादनमनन्वितं भवतीत्याशंकायामाह ॥ आद्यां चेति ॥ आद्यामनादिभूतां विद्यां ब्रह्मविषयकशुद्धसत्त्वांतर्मुखप्रतिबिंबविशिष्टवृत्तिरूपां यां तापनीयास्तुरीयोपाधिमाहुः ॥ एकैव शक्तिरंतर्मुखतया विलसंती विद्यातत्त्वरूपिणी तदुपाधिक आत्मा तुरीय इत्युच्यते ॥ बहिर्मुखतया विलसंत्यविद्यातत्त्वरूपिणी तदुपाधिक आत्मा प्राज्ञ इत्युच्यते इति तेषां सिद्धांतः॥ चकारःसमुच्चयार्थः॥आत्मरूपां तां प्रसिद्धाम् आद्यां विद्यां च॥आद्यपदस्य देहलीदीपकन्यायेनोभयत्रान्वयः ॥तामाद्यां विद्यां च धीमहि ध्यायामः॥ध्यानविषयत्वमुभयोर्मिलित्वैव–नतु प्रत्येकम् समुच्चयार्थकचकारात्॥ तथाच मायाविशिष्टब्रह्मण एव ध्यानविषयत्वात्तस्य च शबलत्वेन निष्क्रियत्वाभावात् नः प्रचोदयादिति प्रेरणकर्तृत्वमनान्वितमितिबोध्यम् ॥ यैतादृशी सेयं ध्याता भगवती मायाविशिष्टब्रह्मरूपिणी नोऽस्माकं बुद्धिं ध्यानं कर्तुं प्रचोदयात् प्रेरयेत्॥प्रार्थनायांलिङ्॥तेन चनिरंतरमस्मच्चेतोवृत्तयस्तदासक्ता भवंत्वित्यर्थः॥गायत्र्या अंतर्यामिब्रह्मप्रतिपादकत्वस्य सर्ववेदसंमतत्वेन गायत्रीपदगायत्रीछंदोघटितमंगलाचरणेनैतद्भागवतप्रतिपाद्यमपि वस्तु मायाविशिष्टांतर्यामिब्रह्मरूपमिति बोधितम्॥यथाचायमर्थस्तथोपोद्घाते एव दर्शितमग्रे च तत्र तत्र दर्शयिष्यामः॥ तथाच तद्भक्तस्तद्गुणशुश्रूषुराधिकारी ॥ फलं च ज्ञानप्राप्त्यामोक्ष इत्यग्रे दर्शयिष्यति ॥१॥ इत्थंमंगलाचरणंनिर्विघ्नतयाग्रंथसमाप्तिफलकंकृत्वाप्रश्नमुत्थापयति ॥ शौनकइति ॥ सूतेति॥वीप्साअतिशयप्रेमविषयत्वप्रदर्शनार्था ॥ धन्यत्वेहेतुमाह ॥ यदधीताइति ॥ अत्यंतदुर्लभमेवपुराणसंहिताध्ययनंयस्मात्त्वयासंपादितंतत स्मात्त्वंधन्यएवेत्यर्थः ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कास्ताःसंहितास्तत्राऽऽह॥अष्टादशेति॥अष्टादशपुराणान्येवपुराणसंहिताइत्यर्थः॥३॥पंचलक्षणेति ॥ तानिचवक्ष्यमाणानि ॥ सरहस्यानीति ॥ नानामंत्रविधानशक्तिपातप्रकारप्रतिपादनादिरहस्यार्थसहितानीत्यर्थः ॥ ननुतेनोक्तानिमयाश्रुतानि।परंतुतदर्थोममनासिनागतइतिचेत्तत्राऽऽह॥त्वयाज्ञातानीति॥यदितवयोग्यतानस्यात्तर्हिव्यासोनैववदेत्॥यस्मात्तेनोक्तानितस्मात्त्वयाज्ञातान्येवेतिनिश्चीयतइतिभावः॥४॥एतादृशस्यतवास्माकंचसमागमः एतादृशपुण्यक्षेत्रेदुर्लभएव॥तथाऽऽपियदस्माभिरनेकजन्मसुपुण्यमाचरितंतद्योगादेवसमागमःसुलभोजातइत्याह ॥अस्माकमिति॥विश्वसनंतन्नामकंतद्द्युत्पत्तिश्चान्यत्रोक्ता—मुनिविश्रामदेशोयस्तत्तुविश्वसनंस्मृतमिति॥५॥अस्त्वेतत्तथाऽपिभवतांकिमभिलषणीयमितिचेत्तत्राऽऽह ॥ समाजोयमिति ॥६॥ दीर्घायुर्भवेति॥अनेनगुरावतिभक्तिःस्वस्मिंश्चातिशयेनशुश्रूषावर्ततइतिबोधितम् ॥ब्रह्मसंमितं वेदसंमितम्।वेदार्थस्यैवप्रतिपादकमित्यर्थः॥नह्यन्यथावेदसंमितत्वंसंभवति ॥७॥श्रोत्रेंद्रियेति॥

अष्टादशपुराणानिकृष्णेनमुनिनाऽनघ ॥ कथितानिसुदिव्यानिपठितानित्वयाऽनघ ॥ ३ ॥ पंचलक्षणयुक्तानिसरहस्यानिमानद ॥ त्वयाज्ञातानिसर्वाणिव्यासात्सत्यवतीसुतात् ॥ ४ ॥ अस्माकंपुण्ययोगेनप्राप्तस्त्वंक्षेत्रमुत्तमम् ॥ दिव्यंविश्वसनंपुण्यंकलिदोषविवर्जितम् ॥ ५ ॥ समाजोऽयंमुनीनांहि श्रोतुकामोऽस्तिपुण्यदाम् ॥ पुराणसंहितां सूतब्रूहित्वंनः समाहितः ॥ ६ ॥ दीर्घायुर्भवसर्वज्ञतापत्रयविवर्जितः ॥ कथयाद्यमहाभागपुराणंब्रह्मसंमितम् ॥ ७ ॥ श्रोत्रेन्द्रिययुताः सूतनराःस्वादविचक्षणाः ॥ नशृण्वंतिपुराणानिवंचितावाविधिनाहिते ॥ ८ ॥ यथाजिह्वेन्द्रियाह्लादःषड्रसैःसंप्रपद्यते ॥ तथाश्रोत्रेंद्रियाह्लादोवचोभिःसुधियांस्मृतः ॥ ९ ॥ अश्रोत्राःफणिनःकामंमुह्यंतिहिनभोगुणैः ॥ सकर्णायेनशृण्वंतितेप्यकर्णाःकथंनच ॥ १० ॥ अतःसर्वेद्विजाःसौम्यश्रोतुकामाःसमाहिताः ॥ वर्ततेनैमिषारण्येक्षेत्रेकलिभयार्दिताः ॥ ११ ॥ येनकेनाप्युपायेनकालातिवाहनंस्मृतम् ॥ व्यसनैरिहमूर्खाणांबुधानांशास्त्रचिंतनैः ॥ १२ ॥ शास्त्राण्यपिविचित्राणिजल्पवादयुतानिच ॥ (त्रिविधानिपुराणानिशास्त्राणिविविधानिच ॥ वितंडाच्छलयुक्तानिगर्वामर्षकराणिच ॥) नानार्थवादयुक्तानिहेतुमंतिबृहंतिच ॥ १३ ॥

स्वादविचक्षणाःस्वादग्रहणपंडिताःसंतःश्रोत्रेंद्रिययुताःसंतोयदिपुराणानिनशृण्वंतितर्हितेसर्वसामग्रीसत्त्वेऽपिविधिनादैवेनैववंचिताहतभाग्याइत्यर्थः ॥एतेनस्वस्यश्रवणेऽत्यादरवत्वंसूचितम् ॥ ८॥ तदेवदृष्टांतेनस्पष्टयति ॥यथेति ॥९॥ अश्रोत्राइति॥कामंयथेच्छास्यात्तथानभोगुणैःशब्दैःशब्दस्याकाशगुणत्वात्॥अश्रोत्राअपिफणिनोदुष्टजातयोऽपिमुह्यंति।सकर्णाःसंतोयेपुराणानिनशृण्वंतितेकथमकर्णावधिराएवनभवंति ॥ चकारएवकारार्थोऽकर्णाइत्यत्रयोज्यः॥वधिराएवतेइत्यर्थः ॥१०॥ यस्मादेवंतस्मात्किंतदाह ॥ अतइति ॥११ ॥ ननुसर्वेऽपिजनाःपुराणश्रवणंविनाकालंक्षपयंत्येव॥तथाभवंतोऽपिकुतोनकुर्वंतितत्राऽऽह॥येनकेनेति॥मूर्खाणां केनाप्युपायेनशब्दस्पर्शादिविषयसंबंधेनयद्यपिकालातिवाहनंकालातिक्रमणंस्मृतमनुभूतम् तथामूर्खाणांयद्यपिव्यसनैर्दुराचारैःकालातिवाहनंस्मृतम्॥तथापिबुधानांनतथारीतिः॥किंत्वन्यैवेत्याह ॥ बुधानामिति॥तथाचमहतांरीतिरेवाश्रयणीयेतिभावः ॥१२॥ ननुबुधान्यायशास्त्रादिचिंतनैरपिकालंक्षपयंति। तदेवभवद्भिःकुतोनाद्रियतेतत्राऽऽह॥ शास्त्राण्यपीति ॥ नानार्थवादस्तावकानिवाक्यानिहेतूपन्यासवंति ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तत्रनतानिसर्वाणिसमानि किंतु सात्विकादिभेदेनाभिन्नानीत्याह ॥सात्विकंतत्रेति॥हेतुनाहेतूपन्यासेनवादेनजल्पवितंडादिनाभियंत्रितंयुक्तं नब्रह्मादिविचारयुक्तम्॥ततस्तामसत्वमेवतस्ययुक्तमितिभावः॥अतस्तामसंशास्त्रविदोनबुधाःकिंत्वबुधाएवेत्यर्थः॥१४॥ननुतथापियत्किंचित्पुराणंश्रूयतांतत्राह ॥तथैवेति॥यथाशास्त्राणित्रिगुणानितथैवेत्यर्थः॥त्रिगुणानिगुणत्रयात्मकब्रह्मविष्ण्वादिप्रतिपादकत्वात्त्रिगुणानि॥१५॥ननुविष्णुप्रतिपादकंपुराणंसात्विकमस्तितदेवश्रूयतांतत्राऽऽह तत्रभागवतमिति ॥गुणत्रयोपाधिहरिहराद्यपेक्षयाऽपिगुणत्रयसाम्यावस्थोपाधिसहितायाभगवत्याउत्कृष्टत्वात्तस्याएवपुराणंभागवतंवद नान्यदुत्कृष्टपक्षपातित्वात्सर्वेषामित्यर्थः॥पंचममिति॥ब्राह्मंपाद्मंवैष्णवंचशैवंभागवतंशुभमितिश्लोकेपंचमामित्यर्थः ॥अयंचश्लोकःपुराणान्तरेमहापुराणगणनाय ामुक्तः॥अतएवैतस्यभागवतस्यमहापुराणत्वमितिपूर्वमुक्तंनाविस्मर्तव्यम्॥कथितमिति॥पुराणांतरश्रवणप्रसंगेइत्यर्थः ॥ १६ ॥ यदिकाथितंतर्हितदेवकिमितिपुनःपृच्छ्यतेतत्राऽऽह॥उद्देशमात्रेणेति॥सामान्यतोभागवतंपुराणमस्तीत्येतादृशमेवनाममात्रेणोक्तंनतुसाविस्तरमित्यर्थः॥१७॥तदेवाऽऽह॥विस्तरेणेति॥१८॥नन्वन्यंप्रतिकुतोनपृच्छ्यतेतत्राऽऽ

सात्विकंतत्रवेदांतंमीमांसाराजसंमतम् ॥ तामसंन्यायशास्त्रंचहेतुवादाभियंत्रितम् ॥ १४ ॥ तथैवचपुराणानित्रिगुणानिकथानकैः ॥ कथितानित्वयासौम्यपंचलक्षणवंतिच ॥ १५ ॥ तत्रभागवतंपुण्यंपंचमंवेदसंमितम् ॥ कथितंयत्त्वयापूर्वंसर्वलक्षणसंयुतम् ॥ १६ ॥ उद्देशमात्रेणतदाकीर्तितंपरमाद्भुतम् ॥ मुक्तिप्रदंमुमुक्षूणांकामदंधर्मदंतथा ॥ १७ ॥ विस्तरेणतदाख्याहिपुराणोत्तममादरात् ॥ श्रोतुकामाद्विजाःसर्वेदिव्यंभागवतंशुभम् ॥ १८ ॥ त्वंतुजानासिधर्मज्ञपौराणींसंहितांकिल ॥ कृष्णोक्तांगुरुभक्तत्वात्सम्यक्सत्त्वगुणाश्रयः ॥ १९ ॥ श्रुतान्यन्यानिसर्वज्ञत्वन्मुखान्निःसृतानिच ॥ नैवतृप्तिंव्रजामोऽद्यसुधापानेऽमरायथा ॥ २० ॥ धिक्सुधांपिबतांसूतमुक्तिर्नैवकदाचन ॥ पिबन्भागवतंसद्योनरोमुच्येतसंकटात् ॥ २१ ॥ सुधापाननिमित्तंयत्कृतायज्ञाःसहस्रशः ॥ नशांतिमधिगच्छामः सूतसर्वात्मनावयम् ॥ २२ ॥ मखानांहिफलंस्वर्गःस्वर्गात्प्रच्यवनंपुनः ॥ एवंसंसारचक्रेऽस्मिन्भ्रमणंचनिरंतरम् ॥ २३ ॥

ह॥त्वंत्विति॥त्वमेवजानासिनान्यइत्यर्थः॥तत्रहेतुः—गुरुभक्तत्वादिति॥१९॥नन्वन्यानिपुराणानिश्रुतान्येवसंतितैरेवतृप्तिःकर्तव्येतिचेत्तत्राऽऽह॥श्रुतानीति॥तत्रदृष्टांतः॥सुधापानेइति॥२०॥ननुभागवतश्रवणात्किंचिदपूर्वमुत्पद्यते॥ततश्चस्वर्गादिलोकोभवतीत्येवमभिप्रायेणपृच्छ्यतेचेत्तत्फलंयज्ञादिभिरपिसेत्स्यत्येवेतिचेत्तत्राऽऽह॥धिक्सुधामिति॥संकटात्संसाररूपात् ॥ नहिकर्मणामुक्तिर्भवति।तस्याअविद्यानाशप्रयुक्तत्वात्॥अविद्यानाशस्यसाक्षात्कारजन्यत्वात् ॥ नाहिकर्मणाक्वचिदपिरज्जुसर्पादावविद्यानाशोदृष्टः ॥तस्मात्कर्मणानैवसंसारनिवृत्तिर्भवति॥ अतएवनकर्मणानप्रजयाधननेत्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुरितिश्रुतिःकर्मणांमोक्षफलवत्वंवारयति॥किंतुस्वर्गादिषुसुधापानमेवकर्मफलम्॥तच्चातिनिंद्यमेवमोक्षापेक्षया ॥ अथचभागवतंकर्णपुटेनापिवंस्तच्छ्रवणजन्यात्मज्ञानेनाविद्यानाशेसतितज्जन्यसंसारान्मुच्यते॥अतोज्ञानमेवोत्कृष्टंनकर्मेत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिःज्ञानादेवहिकैवल्यमिति ॥२१॥ यदिकर्मभ्योमोक्षःस्यात्तर्हिसकिमेकेनकर्मणोतानेककर्मभिः—अनेककर्मभिश्चैतेषांसंख्यानियमाभावादव्यवस्थैव॥एकेनकर्मणाचेदस्माभिर्वहवोयज्ञाःकृताः।अद्यापिमोक्षोनैवजात स्ततस्तदपिनसंभवतीत्याह ॥सुधापाननिमित्तमिति॥शांतिंमोक्षम्॥२२॥तर्हिकिंकर्मभिर्भवतीत्यत्राऽऽह ॥ मखानामिति ॥ २३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

विनाज्ञानेनेति॥ज्ञानादेवहिकेवल्यमितिश्रुतेः॥कायचक्रइत्यनेनघटीयंत्रवदस्मान्निर्गमनंनैवसंभवतीतिदर्शितम्॥२४॥भागवतमेवसंसारनाशकंततस्तदेववदेत्याह अतइति॥सर्वरसोपेतंभक्तिज्ञानैवराग्यरसोपेतंमुमुक्षूणांसदाप्रियमित्यनेनमुमुक्षवोत्राधिकारिणइतिदर्शितम्॥२५ ॥इतिश्रीशैवोपनामकलक्ष्मीगर्भजरंगभट्टसुतनीलकंठभट्टकृतेदेवीभागवतस्याभिनवव्याख्यानेतिलकाभिधेप्रथमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः॥१॥अध्यायेतुद्वितीयेस्मिन्ग्रंथसंख्यायथार्थतः॥विषयश्चोच्यतेसम्यक्चत्वारिंशत्सुपद्यकैः ॥२॥यथाभवतांधन्यतांमत्समागमेनपुराणश्रवणादेवंममापिधन्यताऽस्तियुष्मत्समागमेनमन्मुखाद्भागवतस्यानिःसारणादित्याह॥सूतउवाच–धन्योऽस्मीति।अनेनगुरुर्निरभिमानीग्रंथप्रतिपादनश्रद्धावान्दयालुश्चापेक्षितइतिबोधितम् ॥१॥२॥ग्रंथंवक्तुंग्रंथप्रतिपाद्यदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षणंमंगलमाचरतिसूतःनत्वेति।तत्पदपंकजम्।तस्यावेदशास्त्रप्रसिद्धायाभगवत्याःपदपंकजंपदकमलमित्यर्थः॥भगवतीनाम्नेति ॥भगवतीपदघटितभागवतनाम्नेत्यर्थः ॥ तेनचभगवत्याइदंभागवतमितिव्युत्पत्तिर्दर्शिता ॥ देवीभागवतमित्यत्रतुशिवस्यभगवतोभक्तइत्यर्थेशिवभागवतइतिप्रयोगवत्साधुत्वम्।देव्याभगवत्याभक्तिरस्येत्यर्थेदेवीपदंतुभगवतइदंभागवतमितिव्युत्पत्तिभ्रमनिरासाय ॥३॥इत्थंसगुणमूर्तेःपदस्मरणरूपंमंगलंकृत्वामायाविशिष्टब्रह्मरूपसूक्ष्मरूपस्यश्रुतिप्रतिपाद्यस्यभागद्वयसहितस्यसत्त्वात्तत्रैकभागस्यमायारूपस्य

विनाज्ञानेनसर्वज्ञैर्नैवमुक्तिःकदाचन॥भ्रमतांकालचक्रेत्रनराणांत्रिगुणात्मके ॥२४॥ अतःसर्वरसोपेतंपुण्यंभागवतंवद ॥ पावनंमुक्तिदंगुह्यंमुमुक्षूणांसदाप्रियम् ॥ २५ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेअष्टादशसहस्र्यांसंहितायांप्रथमस्कन्धेशौनकप्रश्नोनामप्रथमोऽध्यायः॥१॥श्रीसूतउवाच॥ धन्योऽहमतिभाग्योऽहंपावितोऽहंमहात्मभिः ॥ यत्पृष्टंसुमहत्पुण्यंपुराणंवेदविश्रुतम् ॥ १ ॥ तदहंसंप्रवक्ष्यामिसर्वश्रुत्यर्थसंमतम् ॥ रहस्यंसर्वशास्त्राणामागमानामनुत्तमम् ॥ २ ॥ नत्वातत्पदपंकजंसुललितंमुक्तिप्रदंयोगिनांब्रह्माद्यैरपिसेवितंस्तुतिपरैर्ध्येयंमुनीन्द्रैःसदा ॥ वक्ष्याम्यद्यसविस्तरंबहुरसंश्रीमत्पुराणोत्तमंभक्त्यासर्वरसालयंभगवतीनाम्नाप्रसिद्धंद्विजाः ॥ ३ ॥ याविद्येत्यभिधीयतेश्रुतिपथेशक्तिःसदाऽऽद्यापरासर्वज्ञाभवबंधछित्तिनिपुणासर्वाशयेसंस्थिता ॥ दुर्ज्ञेयासुदुरात्मभिश्चमुनिभिर्ध्यानास्पदंप्रापिताप्रत्यक्षाभवतीहसाभगवतीसिद्धिप्रदास्यात्सदा ॥ ४ ॥ सृष्ट्वाऽखिलंजगदिदंसदसत्स्वरूपंशक्त्यास्वयात्रिगुणयापरिपातिविश्वम् ॥ संहृत्यकल्पसमयेरमतेतथैकातांसर्वविश्वजननींमनसास्मरामि ॥ ५ ॥

स्मरणरूपंमंगलमाचरतियाविद्येति॥विद्यांतर्मुखसाध्यावस्थारूपिणीशक्तिर्नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनततत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते ॥परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयते स्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाचेतिश्वेताश्वतरश्रुतिप्रसिद्धा इच्छाशक्तिरुमाकुमारीतिशिवसूत्रप्रसिद्धाच॥दुरात्मभिर्दुर्विज्ञेयाध्यानास्पदंप्रापितार्थात्सुयोगिभिरितिशेषः॥याध्यानास्पदंप्रापितासतीप्रत्यक्षाभवतिनान्योपायैःसासदाममबुद्धिप्रदास्यादितिप्रार्थनायांलिङ्॥ध्यानयोगश्चपराशक्तिसाक्षात्कारहेतुःश्वेताश्वतरेउक्तः॥तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढामिति ॥४ ॥अथद्वितीयब्रह्मरूप भागरूपिण्या भगवत्याःस्मृतिरूपंमंगलमाचरति॥सृष्ट्वेति॥यास्वयास्वकीययात्रिगुणयागुणत्रयविशिष्टयाशक्त्याऽखिलमिदंजगत्सदसत्स्वरूपंव्यवहारदृष्ट्यासत्परमार्थदर्शनेनासत्तदात्मकंसृष्ट्वातद्विश्वंपा ति॥पुनःकल्पसमयेकल्पांतसमयेतद्विश्वंतथापूर्ववत्सृष्टिस्थितिवत्संहृत्यएका एकमेवाद्वितीयंब्रह्मनेहनानासितकिंचनेतिश्रुतिप्रतिपाद्यात्मरूपिणीरमतेक्रीडते स्वास्मिन्नेवस्वरूपेतांसर्वविश्वजननीं मनसास्मरामि ॥ अत्रपूर्ववाक्येनकेवलशक्तिवर्णनेनोत्तरवाक्येनतच्छक्त्याश्रयब्रह्मात्मकभगवतीवर्णनेनदेवीभागवतप्रतिपाद्यंभगवतरूपंमायाशबलब्रह्मात्मकमवेनकेवलमायाशक्तिरूपामि तिबोधितम् ॥अयमेवार्थःसर्वचैतन्यरूपांतामितिप्रथमश्लोकेउक्तः।उपोद्घातेचास्माभिरुक्तः।अग्रेचतत्रतत्रमूलकारएवदर्शयिष्यति ॥ ५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तत्रशंकते ॥ब्रह्मेति॥नन्वखिलमेतद्ब्रह्मासृजतीतिप्रसिद्धंलोकेवेदविद्भिःपौराणिकैश्चतदेवकथितम्॥तथाचकथंभगवतीसृजतीतिपूर्वमुक्तमितिचेत्तत्रसमाधत्ते॥विष्णोस्त्विति॥यैःपौराणिकैर्ब्रह्मासृजतीत्युक्तंतैरेवपौराणिकैर्विष्णोरेवनाभिकमलेकिलनिश्चयेनतस्यजन्मोक्तम् ॥तथाचतस्यजन्मवत्त्वात्पराधीनत्वंपराधीनत्वेचसतिब्रह्मास्वतंत्रोनाहिनैवसृजते किंतुपराधीनतया ॥तथाच यद्भगवत्यधीनतयासृजतेसैवभगवतीमुख्यत्वेनजगत्स्रष्ट्रीत्यर्थः॥६॥ननुब्रह्मणोजन्माविष्णुनाभिकमलेतथाचविष्णोरेवजगत्स्रष्टृत्वमस्त्विवतिचेत्तत्राहविष्णुस्त्विति॥ईतिकालेप्रलयकालेविष्णुस्तुशेषशयनेस्वपिति तन्नाभिकमलेखलुतस्यब्रह्मणोजन्म ॥अत्रास्मिन्प्रलयकालेसहस्रमौलिःशेषअधारतांगतोविष्णुः। तथाचास्याधारेणास्थितस्याविष्णोःपरतंत्रत्वात्तादृशपारतंत्र्यविशिष्टो भगवान्मुरारिर्विष्णुःकथंजगत्स्रष्टृत्वेनसंबोध्यतांगच्छेन्नकथमपीत्यर्थः॥७॥ननुविष्णोराधारःसमुद्रःसएवजगत्स्रष्टास्त्विवतिचेत्तत्राह॥एकार्णवस्येति ॥ एकार्णवोहिजलात्मकस्तच्चजलंरसरूपमेवरसस्यचपात्रंविनाकाचित्कदापिनहिस्थितिरस्ति ॥एवंपात्रस्याप्यन्याधारस्तस्याप्यन्याधारइतियासर्वरूपविषयेकिलशक्तिरूपास्वतंत्रासर्वाधारशक्तिरूपासैवजगत्स्रष्ट्रीतितांसर्वभूतजननींशरणंगतोस्मि॥अतएवपीठपूजादिषुआधारशक्तेरेवसर्वाधारत्वंप्रतिपादितमितिभावः॥८॥इदानींचरित्रत्रयेप्रथमचरित्रदेवतांमहाकालींस्मरति॥योगनिद्रेति ॥ योगनिद्रयामीलितेअक्षिणी

ब्रह्मासृजत्यखिलमेतदितिप्रसिद्धंपौराणिकैश्चकथितंखलुवेदविद्भिः ॥ विष्णोस्तुनाभिकमलेकिलतस्यजन्मतैरुक्तमेवसृजतेनहिसस्वतंत्रः ॥ ६ ॥ विष्णुस्तुशेषशयनेस्वपितीतिकालेतन्नाभिपद्ममुकुलेखलुतस्यजन्म ॥ आधारतांकिलगतोऽत्रसहस्रमौलिःसंबोध्यतांसभगवान्हिकथंमुरारिः ॥ ७ ॥ एकार्णवस्यसलिलंरसरूपमेवपात्रंविनानहिरसस्थितिरस्तिकाचित् ॥ यासर्वभूतविषयेकिलशक्तिरूपातांसर्वभूतजननींशरणंगतोऽस्मि ॥ ८ ॥ योगनिद्रामीलिताक्षंविष्णुंदृष्ट्वांबुजेस्थितः ॥ अजस्तुष्टावयांदेवींतामहंशरणंव्रजे ॥ ९ ॥ तांध्यात्वासगुणांमायांमुक्तिदांनिर्गुणांतथा ॥ वक्ष्येपुराणमखिलंशृण्वंतुमुनयस्त्विह ॥ १० ॥ पुराणमुत्तमंपुण्यंश्रीमद्भागवताभिधम् ॥ अष्टादशसहस्राणिश्लोकास्तत्रतुसंस्कृताः ॥ ११ ॥ स्कंधाद्वादशचैवात्रकृष्णेनविहिताःशुभाः ॥ त्रिशतंपूर्णमध्यायाअष्टादशयुताः स्मृताः ॥ १२ ॥ विंशतिःप्रथमेतत्रद्वितीयेद्वादशवैतु ॥ त्रिंशच्चैवतृतीयेतुचतुर्थेपंचविंशतिः ॥ १३ ॥

यस्यसयोगनिद्रामीलिताक्षस्तम्॥अक्ष्णोर्दर्शनादित्यच॥९॥एवंसगुणांनिर्गुणांचगुणसाम्यावस्थात्मिकांमायांध्यात्वापुराणंवक्ष्येइतिप्रतिजानाति॥तामिति॥सगुणांएकैकगुणविशिष्टमहाकाल्यादिरूपाम्॥निर्गुणांगुणत्रयसाम्यावस्थारूपाम्॥साम्यावस्थाश्रयब्रह्मणोग्रहणंतुनिर्गुणापदेनजातम्॥शक्तिशक्तिमतोरभेदात्॥ततस्तस्यपुनर्नोपादानम् ॥१० ॥ अष्टादशसहस्राणिश्लोकाइति॥अनुष्टुप्छंदस्कामहाच्छंदस्कावासर्वेमिलिताःश्लोकाः॥तत्रभागवते अष्टादशसहस्राणिसंतीतिग्रंथसंख्योक्ता॥११॥स्कंधसंख्यामाह स्कंधाइति॥अध्यायसंख्यामाह॥त्रिशतमिति॥त्रिशतमध्यायास्त्रिशतसंख्याकाअध्यायाअष्टादशयुताःपरिकीर्तिताइत्यर्थः॥अष्टादशाध्यायोत्तरत्रिशताध्यायाःसंतीत्यर्थः॥द्वात्रिंशत्त्रिशतंपूर्णमध्यायास्तुप्रकीर्तिताइतिप्रवादस्तुविष्णुभागवतविषयकइतिबोध्यम्॥१२॥प्रतिस्कंधमध्यायसंख्यामाह ॥ विंशतिरिति॥प्रथमस्कंधेविंशतिरध्यायः॥द्वितीयेरविसंख्याः॥तृतीयेतितिथिसंख्याः॥चतुर्थेपंचाधिकविंशतिसंख्याकाः ॥१३॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पंचमेपंचाधिकतिथिसंख्याकाः ॥ षष्ठेएकाधिकतिथिसंख्याः॥ सप्तमेचत्वारिंशत्संख्याकाः ॥१४॥ अष्टमेचतुर्विंशतिसंख्याकाः॥नवमेपंचाशत्संख्याकाः॥दशमेत्रयोदशसंख्याकाः ॥१५॥
एकादशस्कंधेतत्त्वसंख्याकाः॥द्वादशेचतुर्दशैवाध्यायाः॥१६॥एवमिति॥इयमध्यायसंख्योक्ता॥याग्रंथसंख्याअष्टादशसहस्री सातुपूर्वंपरिकीर्तितेत्यर्थः ॥१७॥ इदानींसर्वपुराणसामान्यलक्ष
णमुक्तातल्लक्षणं देवीभागवतेऽस्तीतिवदति॥सर्गश्चेति॥इदंसर्वपुराणसामान्यलक्षणम्॥१८॥अत्रदेवीभागवतेसर्गशब्देनकस्यसर्गोऽभिधीयेततत्राऽह॥निर्गुणेति॥सच्चिदानंदब्रह्मरूपिणीयाभ
गवतीत्यर्थः॥१९॥ तस्यास्त्विति॥तस्यायासात्त्विकीशक्तिस्तथाराजसीतथातामसीचयाशक्तिस्तच्छक्तिविशिष्टंयत्परंब्रह्मेत्यर्थः॥तत्महालक्ष्म्यादयोयाःप्रसिद्धाःस्त्रियस्ताःस्त्रियोभवंति॥सा
म्यावस्थात्मकब्रह्म रूपिणीमूलदेवतातत्तदेकैकगुणविशिष्टब्रह्मरूपिण्योमहालक्ष्म्यादयोदेवताइतिभावः॥अतएवपुराणागमादिष्वासांसच्चिदानंदत्वमुक्तंनतुकेवलजडशक्तिरूपत्वम् ॥ २०॥
तासामिति।सृष्ट्यर्थंजगत्सर्जनाययस्तासांतिसृणांशक्तीनांदेहांगीकारोदेहधारणंतल्लक्षणोयःसर्गःसोऽत्रशास्त्रविशारदैःपंडितैःसर्गशब्देनसमाख्यातइत्यर्थः ॥अस्मिन्पुराणेसर्गशब्देनायमेवगृ

पंचत्रिंशत्तथाऽध्यायाःपंचमेपरिकीर्तिताः ॥ एकत्रिंशत्तथाषष्ठेचत्वारिंशच्चसप्तमे ॥ १४ ॥ अष्टमेतत्त्वसख्याश्चपंचाशन्नवमेतथा ॥ त्रयोदशतुसंप्रोक्ता
दशमेमुनिनाकिल ॥ १५ ॥ तथाचैकादशस्कंधेचतुर्विंशतिरीरिताः ॥ चतुर्दशैवचाध्यायाद्वादशेमुनिसत्तमाः ॥ १६ ॥ एवंसंख्यासमाख्यातापुराणे
ऽस्मिन्महात्मना ॥ अष्टादशसहस्रीयासंख्याचपरिकीर्त्तिता ॥ १७ ॥ सर्गश्चप्रतिसर्गश्चवंशोमन्वंतराणिच ॥ वंशानुचरितंचैवपुराणंपंचलक्षणम् ॥१८॥
निर्गुणायासदानित्याव्यापिकाविकृताशिवा ॥ योगगम्याऽखिलाधारातुरीयायाचसंस्थिता ॥ १९ ॥ तस्यास्तुसात्त्विकीशक्तीराजसीतामसीतथा ॥
महालक्ष्मीःसरस्वतीमहाकालीतिताःस्त्रियः ॥ २० ॥ तासांतिसृणांशक्तीनांदेहांगीकारलक्षणः ॥ सृष्ट्यर्थंचसमाख्यातःसर्गःशास्त्रविशारदैः ॥ २१ ॥
हरिद्रुहिणरुद्राणांसमुत्पत्तिस्ततःस्मृता ॥ पालनोत्पत्तिनाशार्थंप्रतिसर्गःस्मृतोहिसः ॥२२॥ सोमसूर्योद्भवानांचराज्ञांवंशप्रकीर्तनम् ॥ हिरण्यकशिप्वा
दीनांवंशास्तेपरिकीर्तिताः ॥ ॥ २३ ॥ स्वायंभुवमुखानांचमनूनांपरिवर्णनम् ॥ कालसंख्यातथातेषांतत्तन्मन्वंतराणिच ॥ २४ ॥

ह्यतइत्यर्थः॥महाकाल्यादीनामुत्पत्तिःप्रथमस्कंधेपंचमस्कंधेच॥२१॥प्रतिसर्गमाह॥हरीति॥अस्मिन्पुराणेप्रतिसर्गशब्देनायमेवगृह्यतइत्यर्थः ॥ प्रतिसर्गोनामानुसर्गोब्रह्मादीनामनंतरोत्पत्ति
रूपइत्यर्थः।तदुक्तंपुराणांतरे॥प्रतिसगानुसगश्चप्रलयश्चप्रकीर्तितइति॥तत्रगुणत्रयरूपशक्तीनामुत्पत्तिस्तासांपरिणामश्चब्रह्मादिरूपेणनानाविधाहंकारादिरूपेणचतृतीयस्कंधे त्वंचवेधाःशि
वस्त्वेतेदेवामद्भूणसंभवाइत्यनेनोक्तः॥संक्षेपेणप्रलयरूपेप्रतिसर्गोपिनवमस्कंधेसर्वेषांप्रकृतौलयरूपउक्तः॥२२॥सोमेति॥तेषांयद्वंशप्रकीर्तनंसवंशोऽत्रवंशशब्देनगृह्यतइतिभावः॥वंशास्तेइति।
तेऽपिवंशशब्देनगृह्यंतइत्यथः॥सोमवंशस्तुसोमात्पुरूरवःपर्यंतंप्रथमस्कंधेउक्तः॥सूर्यवंशस्तु वैवस्वतमनुमारभ्यहरिश्चंद्रपर्यंतंसप्तमस्कंधेसंक्षेपेणोक्तः॥तदुभयवंशीयान्यराज्ञांकथातुदेवीकथायां
विक्षेपबाहुल्यप्रसंगभियानोक्तेतिवोध्यम् ॥तदुक्तंसप्तमस्कंधे॥इत्येवंसूर्यवंश्यानांराज्ञांवंशप्रकीर्तनम् ॥सोमवंशोद्भवानांचवर्णनीयंमयाकियदिति ॥ २३॥स्वायंभुवेति॥तत्तन्मन्वंतराणिचेति॥
तान्यत्रमन्वंतरशब्देनोच्यंतइत्यर्थः॥मन्वंतरकथातुदशमस्कंधेऽभिहितातेषांवंशानुचरितमपितत्रैव ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तेषांवंशोति तदत्रवंशानुचरितमित्यर्थः॥भवंतीति॥सर्वाणिपुराणानीत्यर्थः ॥ यद्यप्यत्रसकलजगत्सृष्टिरपितृतीयस्कंधादिष्वभिहितातथापिभगवतीवर्णनेएवास्यग्रंथस्यतात्पर्यंनसृष्ट्यादिवर्णनइतिबोधयितुंमहालक्ष्म्यादीनामवतारएवसृष्टिशब्देनोक्तइतिबोध्यम् ॥२५॥भारतमपिपंचलक्षणवदेवेत्याह ॥सपादेति॥पंचमंवेदचतुष्टयापेक्षयापंचममितिहासपदवाच्यमित्यर्थः ॥ तथापंचलक्षणवदेव॥२६॥भवंतीतिवहुवचनाकांक्षितानिपुराणानिकतिसंख्यानिसंतीतिपृच्छतिशौनकः॥कतीति॥२७॥युष्माकंवैराग्यंनास्तिकथंवक्तव्यंतत्राऽऽह॥कलिकालेति॥तेनवैराग्यमस्तीत्युक्तंभवति॥पुण्योदेशोनास्तीतिचेत्तत्राह॥नैमिशेति॥कथंतस्यपुण्यदेशत्वंतत्राऽऽह॥ब्रह्मणेति॥२८॥२९॥३०॥ तस्यब्रह्मणस्तत्कथानककंथारूपंवचनंश्रुत्वातच्चक्रंगृहीत्वेत्यन्वयः॥चालय

तेषांवंशानुकथनंवंशानुचरितंस्मृतम् ॥ पंचलक्षणयुक्तानिभवंतिमुनिसत्तमाः ॥ २५ ॥ सपादलक्षंचतथाभारतंमुनिनाकृतम् । इतिहासइतिप्रोक्तंपंचमंवेदसंमतम् ॥ २६ ॥ शौनकउवाच ॥ कानितानिपुराणानिब्रूहिसूतसविस्तरम् ॥ कतिसंख्यानिसर्वज्ञश्रोतुकामावयंत्विह ॥ २७ ॥ कलिकालविभीताःस्मोनैमिशारण्यवासिनः ॥ ब्रह्मणाऽत्रसमादिष्टाश्चक्रंदत्त्वामनोमयम् ॥ २८ ॥ कथितंतेननःसर्वान्गच्छंत्वेतस्यपृष्ठतः ॥ नेमिःसंशीर्यतेयत्रसदेशःपावनःस्मृतः ॥ २९ ॥ कलेस्तत्रप्रवेशोनकदाचित्संभविष्यति ॥ तावत्तिष्ठंतुतत्रैवयावत्सत्ययुगंपुनः ॥ ३० ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यगृहीत्वातत्कथानकम् ॥ चालयन्निर्गतस्तूर्णंसर्वदेशदिदृक्षया ॥ ३१ ॥ प्रेत्यात्रचालयंश्चक्रंनेमिःशीर्णोत्रपश्यतः ॥ तेनेदंनैमिशंप्रोक्तंक्षेत्रंपरमपावनम् ॥ ३२ ॥ कलिप्रवेशोनैवात्रतस्मात्स्थानंकृतंमया ॥ मुनिभिःसिद्धसंघैश्चकलिभीतैर्महात्मभिः ॥३३॥ पशुहीनाःकृतायज्ञाःपुरोडाशादिभिःकिल॥कालातिवाहनंकार्यंयावत्सत्ययुगागमः ॥ ३४ ॥ भाग्ययोगेनसंप्राप्तःसूतत्वंचात्रसर्वथा ॥ कथयाद्यपुराणंहिपावनंब्रह्मसंमतम् ॥ ३५ ॥ सूतशुश्रूषवःसर्वेवक्तात्वंमतिमानथ ॥ निर्व्यापारावयंनूनमेकचित्तास्तथैवच ॥ ३६ ॥ त्वंसूतभवदीर्घायुस्तापत्रयविवर्जितः ॥ कथयाद्यपुराणंहिपुण्यंभागवतंशिवम् ॥ ३७ ॥ यत्रधर्मार्थकामानांवर्णनंविधिपूर्वकम् ॥ विद्यांप्राप्यतयामोक्षःकथितोमुनिनाकिल ॥ ३८ ॥ द्वैपायनेनमुनिनाकथितंयच्चपावनम् ॥ नतृप्यामोवयंसूतकथांश्रुत्वामनोरमाम् ॥ ३९ ॥ सकलगुणगणानामेकपात्रंपवित्रमाखिलभुवनमातुर्नाट्यवद्यद्विचित्रम् ॥ निखिलमलगणानांनाशकृत्कामकंदंप्रकटयभगवत्यानामयुक्तंपुराणम् ॥ ४० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

न्निति ॥ अर्थाच्चक्रम् ॥३१॥३२॥३३॥युष्माकंसात्विकेकर्मणिश्रद्धानास्तीतिचेत्तत्राऽऽह पशुहीनाइति॥यज्ञाःदर्शपूर्णमासादयोयेपुरोडाशसाध्याःपशुरहिताश्चतएवप्रायःकृतास्तेनकदाचित्पशुसहितयज्ञकरणेऽपिनसात्विकत्वहानिःअवश्यपशुसाध्येऽस्ययागस्यब्राह्मणेनावश्यकर्तव्यत्वात् ॥ युष्माकमवकाशोनास्तीतिचेत्तत्राऽऽह कालातिवाहनमिति ॥ ३४ ॥ पुराणंहीति ॥ नाममात्रेणैवतानिपुराणान्युक्त्वा मुख्याविषयंभागवतंवदेत्यर्थः ॥ ३५॥३६॥३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ सकलेति ॥ अखिलभुवनमातुर्भगवत्यानाट्यमस्तियस्मिन्नाट्यवद्यच्चविचित्रम्॥ भगवत्यानामेतिभगवतीपदघटितमित्यर्थः ॥ ४० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

त्रिचत्वारिंशच्छ्लोकैस्तुपुराणाख्याससंख्यका॥तत्तद्युगीयव्यासाश्चकथ्यंतेऽस्मिंस्तृतीयके ॥१॥ शृण्वंत्विति॥१॥मद्वयमिति॥मशब्देनमकाराद्यक्षरयुक्तंपुराणंगृह्यते॥तस्यद्वयमृतथाचमार्कंयंमात्स्यमितिचसिद्धम्॥एवंसर्वत्रव्याख्येयम्॥अस्मिन्पद्येऽष्टादशपुराणानामाद्यक्षरग्रहणेनसंग्रहःकृतः॥२॥अधुनातानिपुराणानिनाम्नासंख्ययाचपृथक्पृथगाह॥चतुर्दशेति ॥ ग्रहसहस्रंनवसहस्रम्॥३॥४॥५॥६॥वायव्यमिति॥यस्यसंख्येतिशेषः॥यस्यसंख्याषट्छतानि॥अथचसंख्यातःसंख्ययाचतुर्विंशतिः॥चतुर्विंशतिसंख्याकानिसहस्राणियानिसाचसंख्येत्यर्थः॥७॥८॥९॥१०॥११॥पुराणेति॥पुराणनामानितत्संख्याचमयाप्रोक्तेतिशेषः ॥१२॥१३॥१४॥१५॥भागवतमिति॥लोकेदेवीभागवताविष्णुभागवतनाम्नाभागवतद्वयस्यैवप्रसिद्धत्वेनदेवीभागवतस्यपंच

सूतउवाच ॥ शृण्वंतुसंप्रवक्ष्यामिपुराणानिमुनीश्वराः ॥ यथाश्रुतानितत्त्वेनव्यासात्सत्यवतीसुतात् ॥ १ ॥ मद्वयंभद्वयंचैवब्रत्रयंवचतुष्टयम् ॥ अनापलिंगकूस्कानिपुराणानिपृथक्पृथक् ॥२॥ चतुर्दशसहस्रंचमात्स्यमाद्यंप्रकीर्तितम् ॥ तथाग्रहसहस्रंतुमार्कंडेयंमहाद्भुतम् ॥ ३ ॥ चतुर्दशसहस्राणितथापंचशतानिच ॥ भविष्यंपरिसंख्यातंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ४ ॥ अष्टादशसहस्रंवैपुण्यंभागवतंकिल ॥ तथाचाऽयुतसंख्याकंपुराणंब्राह्मसंज्ञकम्॥५॥द्वादशैवसहस्राणिब्रह्मांडंचशताधिकम् ॥ तथाष्टादशसाहस्रंब्रह्मवैवर्तमेवच ॥ ६ ॥ अयुतंवामनाख्यंचवायव्यंषट्छतानिच ॥ चतुर्विंशतिसंख्यातःसहस्राणितुशौनक ॥ ७ ॥ त्रयोविंशतिसाहस्रंवैष्णवंपरमाद्भुतम् ॥ चतुर्विंशतिसाहस्रंवाराहंपरमाद्भुतम् ॥ ८ ॥ षोडशैवसहस्राणिपुराणंचाग्निसंज्ञितम् ॥ पंचविंशतिसाहस्रंनारदंपरमंमतम् ॥ ९ ॥ पञ्चपञ्चाशत्सहस्रंपाद्माख्यंविपुलंमतम्॥एकादशसहस्राणिलिंगाख्यंचातिविस्तृतम्॥१०॥एकोनविंशत्साहस्रंगारुडंहरिभाषितम् ॥ सप्तदशसहस्रंचपुराणंकूर्मभाषितम्॥११॥एकाशीतिसहस्राणिस्कंदाख्यंपरमाद्भुतम्॥पुराणाख्याचसंख्याचविस्तरेणमयानघाः ॥ १२ ॥ तथैवोपपुराणानिशृण्वंतुऋषिसत्तमाः ॥ सनत्कुमारंप्रथमंनारसिंहंततःपरम् ॥ १३ ॥ नारदीयंशिवंचैवदौर्वाससमनुत्तमम् ॥ कापिलंमानवंचैवतथाचौशनसंस्मृतम् ॥ १४ ॥ वारुणंकालिकाख्यंचसांबंनंदिकृतंशुभम् ॥ सौरंपाराशरप्रोक्तमादित्यंचातिविस्तरम् ॥ १५ ॥ माहेश्वरंभागवतंवासिष्ठंचसविस्तरम् ॥ एतान्युपपुराणानिकथितानिमहात्मभिः ॥ १६ ॥ अष्टादशपुराणानिकृत्वासत्यवतीसुतः ॥ भारताख्यानमतुलंचक्रेतदुपबृंहितम् ॥ १७ ॥

मंवेदसंमितमितिवचनेस्वेनैवस्वस्यमहापुराणत्वस्यनिश्चितत्वेनार्थादुपपुराणेषुभागवतपदेनविष्णुभागवतस्यैवग्रहणम्॥१६॥भारतात्पूर्वमेवमहापुराणानिकृतानीत्याहअष्टादशेति॥ यद्यप्यत्रोपपुराणकथनोत्तरमेवेदंवचनंपठितंतथापिपुराणांतरेअष्टादशमहापुराणोत्तरमेवभारतस्योत्पत्तेरुक्तत्वादत्रापिअष्टादशपुराणपदेनमहापुराणानामेवग्रहणम् ॥तथाचाष्टादशमहापुराणानिकृत्वाभारताख्यानंव्यासश्चक्रेइत्यर्थः॥तदुपबृंहितंतैःपुराणैर्भारताख्यानमुपबृंहितंवर्द्धितमित्यर्थः॥अयंभावःअष्टादशपुराणानिव्यासेनप्रथमतःकृत्वातत्रत्यंसारांशंप्रगृह्यभारतंप्रणीतम्॥तथाचभारतापेक्षयाभारतोक्तार्थस्याष्टादशसुविस्तृतत्वेनतदुपबृंहितत्वमव्याहतमेवेति॥एतद्वचनादपिदेवीभागवतमेवमहापुराणम् ॥ विष्णुभागतस्यभारतोत्तरंजायमानत्वस्यभारतोत्तरंनिर्विण्णोव्यासश्चकारेतिविष्णुभागतवचनेनैववोधितत्वाद्भारतात्पूर्वंविद्यमानेषुमहापुराणेषुविष्णुभागवतस्यप्रवेशाभावात् ॥ ननुमार्कंडेयपुराणेप्रथमेऽध्यायेउक्तं–भारतंव्याससुखाच्छ्रुत्वातत्रसंदिहानःक्रौ



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ष्टुकिर्मार्कण्डेयंप्रत्यागत्य तत्रत्यंसंदेहंपृष्टवांन्।तत्संदेहनिवृत्त्यर्थंमार्कंडेयोमार्कंडेयपुराणमुक्तवानिति ॥ तथाचमार्कंडेयपुराणंभारतोत्तरंजातमितिनिश्चीयते।ततश्चभारतात्पूर्वंसप्तदशपुराणा न्येवसंतीतिअष्टादशपुराणानिकृत्वेतिवचनमसंगतमेवेतिचेन्न॥प्रथमतःकथामात्रंव्यासमुखाच्छ्रुतंनतुग्रंथरूपम्॥दंतकथामात्रश्रवणेनैवजातसंदेहःक्रोष्टुकिर्मार्कंडेयंप्रत्यागत्यसंदेहंपृष्टवानिति मार्कंडेयपुराणाभिप्रायः॥अष्टादशपुराणग्रंथंतदुत्तरंकृत्वाभारतग्रंथःकृतइति॥अष्टादशपुराणानिकृत्वेतिवचनाभिप्रायकल्पनेनविरोधाभावादिति ॥ १७॥नन्वेतानिपुराणानिकस्मिन्युगेजातं तेतत्रा ऽऽइमन्वतंरेष्विति॥युगानामेकसप्तत्यामन्वंतरमिहोच्यते॥तेचमनवश्चतुर्दश ॥तथाचप्रतिमन्वंतरंद्वापरेद्वापरेयुगेकरुणानिधिर्व्यासःकेवलंधर्मबुद्ध्यैवपुराणविभागंप्रादुष्करोति॥ १८॥

मन्वंतरेषुसर्वेषुद्वापरेद्वापरेयुगे ॥ प्रादुःकरोतिधर्मार्थीपुराणानियथाविधि ॥ १८ ॥ द्वापरेद्वापरेविष्णुर्व्यासरूपेणसर्वदा ॥ वेदमेकंसबहुधाकुरुतेहितका म्यया ॥ १९ ॥ अल्पायुषोल्पबुद्धींश्च विप्राञ्ज्ञात्वाकलावथ ॥ पुराणसंहितांपुण्यांकुरुतेऽसौयुगेयुगे ॥ २० ॥ स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनांनवेदश्रवणंमतम् ॥ तेषामेवहितार्थायपुराणानिकृतानिच ॥ २१ ॥ मन्वंतरेसप्तमेऽत्रशुभेवैवस्वताभिधे ॥ अष्टाविंशतिमेप्राप्तेद्वापरेमुनिसत्तमाः ॥ २२ ॥ व्यासःसत्यवती सूनुर्गुरुर्मेधर्मवित्तमः ॥ एकोनत्रिंशत्संप्राप्तेद्रौणिर्व्यासोभविष्यति ॥ २३ ॥ अतीतास्तुतथाव्यासाःसप्तविंशतिरेवच ॥ पुराणसंहितास्तैस्तुकथितास्तुयु गेयुगे ॥ २४ ॥ ऋषयऊचुः ॥ ब्रूहिसूतमहाभागव्यासाःपूर्वयुगोद्भवाः ॥ वक्तारस्तुपुराणानांद्वापरेद्वापरेयुगे ॥ २५ ॥ सूतउवाच ॥ द्वापरेप्रथमेव्यस्ताः स्वयंवेदाःस्वयंभुवा॥प्रजापतिर्द्वितीयेतुद्वापरेव्यासकार्यकृत् ॥२६॥ तृतीयेचोशनाव्यासश्चतुर्थेतुबृहस्पतिः॥पंचमेसविताव्यासःषष्ठेमृत्युस्तदापरे॥२७॥ मघवासप्तमेप्राप्तेवसिष्ठस्त्वष्टमेस्मृतः ॥ सारस्वतस्तुनवमेत्रिधामादशमेतथा ॥ २८ ॥ एकादशेऽथत्रिवृषोभरद्वाजस्ततःपरम् ॥ त्रयोदशेचांतरिक्षोधर्म श्चापिचतुर्दशे ॥ २९ ॥ त्रय्यारुणिःपंचदशेषोडशेतुधनंजयः ॥ मेधातिथिःसप्तदशेव्रतीह्यष्टादशेतथा ॥३०॥ अत्रिरेकोनविंशेऽथगौतमस्तुततःपरम् ॥ उत्तमश्चैकविंशेऽथहर्यात्मापरिकीर्तितः ॥ ३१ ॥ वेनोवाजश्रवाश्चैवसोमोऽमुष्यायणस्तथा ॥ तृणबिंदुस्तथाव्यासोभार्गवस्तुततःपरम् ॥ ३२ ॥

व्यासोविष्णुरेववेदविभागंचकरोतीत्याह॥द्वापरेइति॥१९॥२०॥२१॥अष्टाविंशतितमेयुगेसत्यवतीसूनुर्ममगुरुर्व्यासोऽभवत्॥अनंतरेयुगेद्रौणिरश्वत्थामाभविष्यतीत्यन्वयः ॥ २२ ॥२३ ॥ अतीताइति॥ अष्टाविंशतितमयुगस्थाद्व्यासात्पूर्वंसप्तविंशतिर्व्यासाजाताइत्यर्थः॥२४॥व्यासनामानिपृच्छंति ॥ऋषयइति॥ब्रूहिसूतेति ॥ कूर्मपुराणेतुएकादशेतुनहुषःशततेजास्ततःपरम् ॥ त्रयोदशेतथाधर्मस्तुरुक्षुस्तुचतुर्दशे॥त्रय्यारुणिःपंचदशेषोडशेतुधनंजयः ॥ कृतंजयःसप्तदशेह्यष्टादशऋतंजयः ॥ ततोव्यासोभरद्वाजस्तस्मादूर्द्धंतुगौतमः॥वाजश्रवाश्चैकविंशेतस्माच्छुष्मा यणःपरः।तृणबिंदुस्त्रयोविंशेवाल्मीकिस्तुततःपरम्॥पंचविंशेतथाशक्तिःषड्विंशेतुपराशरः॥सप्तविंशेतथाव्यासोजातूकर्ण्योमहामुनिः ॥अष्टाविंशेस्मृतोव्यासःपराशरसुतःपरः—इत्यन्यथाव्या साउक्ताः॥कल्पभेदेनतुव्यवस्था॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९ ॥३० ॥ ३१ ॥ उत्तमोहर्यात्माचैकएवएकविंशेअयंजातः॥द्वाविंशेवेनोवाजश्रवाः ॥ त्रयोविंशेसोमोऽमुष्यायणः॥चतुर्विंशेतृण बिंदुः ॥ ततोभार्गवः ॥ ३२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ततःशक्तिस्ततोजातुकर्ण्यस्ततःकृष्णद्वैपायनः॥३३॥३४॥३५॥व्यासेनेति॥इदंपुराणंव्यासेनप्रथमतःकृत्वापश्चादिदमत्यंतंशुभमितिविज्ञायज्ञात्वायस्मैकस्मैनोक्तम् ।कुतःसर्वोत्कृष्टत्वात् ॥ किंतु अयोनिजःपुत्रःकीदृशो महात्मासर्वोत्तमगुणवान्॥अरणिसंभवोऽयोनिजश्चवैराग्ययुक्तश्चतस्मैपाठितम्॥तस्मादिदंसर्वोत्तममित्यत्रकः संदेहः ॥३६॥ ननुतवापिव्यासेनोक्तमस्तीति श्रुत्वे त्राऽऽह श्रुतमिति॥व्यासेनैतादृशंपुराणंमांवक्तव्यमितिममभाग्यंकास्ति॥किंतु मुख्यत्वेनशुकायोक्तम्।मयातुतत्सहाध्यायित्वेनश्रुतमिति ॥ननुतत्सहाध्यायित्वंतवतस्यव्यासस्येष्टमितिचेत्त त्राऽह॥प्रसादादिति॥एतत्सहाध्यायित्वंमयामहतायत्नेनप्रसादादेवलब्धंनतुसहजतयेतिभावः॥ननुतथाऽपिप्रसादयोग्यस्तुत्वमसितत्राऽऽह॥करुणानिधेश्चेति॥नाहंयोग्यःकिंतु गुरुरेवकरुणा निधिरतस्तत्प्रसादप्राप्तसहाध्यायित्वेनमयेदंभागवतंव्यासमुखाच्छ्रुतमितिभावः॥३७॥तत्रापिप्रष्टाशुकएवाऽहंतु श्रोतैवकेवलमित्याह॥सुतेनेति॥सुतेनपुत्रेणशुकेनेत्यर्थः ॥३८॥महत्त्वंपुराण

ततःशक्तिर्जातुकर्ण्यःकृष्णद्वैपायनस्ततः ॥ अष्टाविंशतिसंख्येयंकथितायामयाश्रुता ॥ ३३ ॥ कृष्णद्वैपायनात्प्रोक्तंपुराणंचमयाश्रुतम् ॥ श्रीमद्भागवतं पुण्यंसर्वदुःखौघनाशनम् ॥ ३४ ॥ कामदंमोक्षदंचैववेदार्थपरिबृंहितम् ॥ सर्वागमरसारामंमुमुक्षूणांसदाप्रियम् ॥ ३५ ॥ व्यासेनकृत्वाऽतिशुभंपुराणं शुकायपुत्रायमहात्मनेयत् ॥ वैराग्ययुक्तायचपाठितंवैविज्ञायचैवारणिसंभवाय ॥ ३६ ॥ श्रुतंमयातत्रतथागृहीतंयथार्थवद्व्यासमुखान्मुनींद्राः ॥ पुराणगुह्यंसकलंसमेतंगुरोः प्रसादात्करुणानिधेश्च ॥ ३७ ॥ सुतेनपृष्टःसकलंजगादद्वैपायनस्तत्रपुराणगुह्यम् ॥ अयोनिजेनाद्भुतबुद्धिनावैश्रुतंमयातत्रम हाप्रभावम् ॥३८॥ श्रीमद्भागवमतामरांघ्रिपफलास्वादादरःसत्तमाःसंसारार्णवदुर्विगाह्यसलिलंसंतर्तुकामःशुकः ॥ नानाख्यानरसालयंश्रुतिपुटैःप्रेम्णा ऽशृणोदद्भुतंतच्छ्रुत्वानविमुच्यतेकलिभयादेवंविधःकःक्षितौ ॥ ३९ ॥ पापीयानपिवेदधर्मरहितःस्वाचारहीनाशयोव्याजेनापिशृणोतियःपरमिदंश्रीमत्पु राणोत्तमम् ॥ भुक्त्वाभोगकलापमत्रविपुलंदेहावसानेऽचलंयोगिप्राप्यमवाप्नुयाद्भगवतीनामांकितंसुंदरम् ॥ ४० ॥ यानिर्गुणाहरिहरादिभिरप्यलभ्या विद्यासतांप्रियतमाऽथसमाधिगम्या ॥ सातस्यचित्तकुहरेप्रकरोतिभावंयःसंशृणोतिसततंतुसतीपुराणम् ॥ ४१ ॥

स्यवर्णयति॥श्रीमद्भागवतेति॥अयमापिशुकः॥हेसत्तमाइतिऋषिसंबोधनम्॥संसारार्णवस्यदुर्विगाह्यंयत्सलिलं तत्संतर्तुकामःसन्अमरांघ्रिपःकल्पतरुर्वेदरूपस्तस्यफलंश्रीमद्भागवतात्मकंतद मरांघ्रिपफलंयत्तस्यस्वादेआदरोयस्यैतादृशःसन्नानाख्यानमेवरसस्तस्यालयंपुराणमिदमद्भुतंप्रेम्णाश्रुतिपुटैःकर्णपुटैरशृणोत्॥एतादृशंमहाभागवतंश्रुत्वाकलिभयान्नमुच्यतेएवंविधःपुरुषःक्षि तौकोऽस्तिनकोपीत्यर्थः॥३९॥ननुशुकादयोमहांतोभागवतश्रवणेनमुक्ताभवंतु।पापिनस्तुकथंमुक्ताःस्युरितिचेत्तत्राऽऽह॥पापीयानपीति ॥ अतिशयेनपापवानपिपुनश्चवेदोक्तधर्मरहितोऽपित थास्वाचारेणहीनआशयोंतःकरणंयस्य आचारसंस्कारहीनांतःकरणवानपीत्यर्थः॥एतादृशोऽपिसन्पुनर्व्याजेनापिकपटेनापियोभगवतीनामांकितंभगवतीपदघटितंसुंदरमिदंप्रकृतंश्रीमत्पुरा णोत्तमंशृणोतिसोऽप्यत्रभोगकलापंविपुलंभुक्त्वादेहावसानेनिश्चलंकूटस्थंश्रेष्ठपदंयोगिभिःप्राप्यंगच्छतीत्यर्थः ॥तदुक्तं॥शिवापदाराधनतत्पराणांभोगश्चमोक्षश्चकरस्थएवेति॥४०॥ननुज्ञानं विनानमोक्षइतिसिद्धांतः।तथाचैतस्यज्ञानाभावेनकेवलपुराणश्रवणमात्रेणकथंमोक्षउक्तइतिचेत्तत्राऽऽहयानिर्गुणेति॥निर्गुणाब्रह्मरूपिणीहरिहरादिभिर्महद्भिरप्यलभ्याविद्याविषयःसतांज्ञानि

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नांप्रियतमा अथापिसमाधिनानिर्विकल्पसमाधिनैवगम्याज्ञेया एतादृशीयासर्वोत्कृष्टाभगवतीब्रह्मरूपिणीसातस्यपुरुषस्याचित्तकुहरेभावंस्थितिंकरोति ॥ कस्यपुरुषस्य॥यःपुरुषःसततंसतीपुराणंसतोदेवीतस्याःपुराणंतुसंशृणोतितस्यपुरुषस्येत्यर्थः॥एतद्भागवतश्रवणेनाचिद्रूपिण्यादेव्याअनुभवस्ततश्चभोगमोक्षौजायेते॥ततश्चसर्वोत्तममेतद्भागवतमितिभावः॥४१॥इदानींसूतोजनानाक्रोशति ॥संप्राप्येति॥यःपुरुषोमानुषभवंमनुष्यजातौजन्मसंप्राप्यकीदृशंजन्मसकलानिसशक्तिकान्यंगानितुविकलानितद्युक्तम्॥तथावाचकंपुराणवक्तारमपिसंप्राप्ययो मूढोभवार्णवजलस्योत्तरणार्थंपोतंपोतभूतंसुखदं मोक्षसुखदंपुराणंदेवीभागवताख्येनशृणोतिसविधिनादैवेनवंचितोहतभाग्यइत्यर्थः ॥४२॥ यःपुरुषोमानुषत्वेमनुष्यजातौकर्णयुगलंप्राप्यरागीसन्परापवादान्सततंशृणोति सःसर्वार्थदंपुरुषार्थचतुष्टयप्रदंरसनिधिंरसोवैसइतिश्रुतिप्रतिपादितोरसआत्मातस्यनिधिंस्थानभूतंपुराणंदेवीभागवताख्यंनष्टोमंदबुद्धिःकुतोनशृणुतेइत्याक्रोशतिसूतः॥४३॥

संप्राप्यमानुषभवंसकलांगयुक्तंपोतंभवार्णवजलोत्तरणायकामम् ॥ संप्राप्यवाचकमहोनशृणोतिमूढःसोवंचितोऽत्रविधिनासुखदंपुराणम् ॥ ४२ ॥ यः प्राप्यकर्णयुगलंपटुमानुषत्वेरागीशृणोतिसततंचपरापवादान् ॥ सर्वार्थदंरसनिधिंविमलंपुराणंनष्टःकुतोनशृणुतेभुविमंदबुद्धिः ॥ ४३ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सौम्यव्यासस्यभार्यायांकस्यांजातःसुतःशुकः ॥ कथंवाकीदृशोयेनपठितेयंसुसंहिता॥ १ ॥ अयोनिजस्त्वयाप्रोक्तस्तथाचाऽरणिजःशुकः ॥ संदेहोस्तिमहांस्तत्रकथयाद्यमाहामते ॥ २ ॥ गर्भयोगीश्रुतःपूर्वंशुकोनाममहातपाः ॥ कथंचपठितंतेनपुराणंबहुविस्तरम् ॥ ३ ॥ सूतउवाच ॥ पुरासरस्वतीतीरेव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ आश्रमेकलविंकौतुदृष्ट्वाविस्मयमागतः ॥ ४ ॥ जातमात्रंशिशुंनीडेमुक्तमंडान्मनोहरम् ॥ ताम्रास्यंशुभसर्वांगंपिच्छांकुरविवर्जितम् ॥ ५ ॥ तौतुभक्ष्यार्थमत्यंतंरतौश्रमपरायणौ ॥ शिशोश्चंचूपुटेभक्ष्यंक्षिपंतौचपुनःपुनः ॥ ६ ॥ अंगेनांगानिबालस्यघर्षयंतौमुदान्वितौ ॥ चुंबंतौचमुखंप्रेम्णाकलविंकौशिशोःशुभम् ॥ ७ ॥ वीक्ष्यप्रेमाद्भुतंतत्रबालेचटकयोस्तदा ॥ व्यासश्चिंतातुरःकामंमनसासमचिंतयत् ॥ ८ ॥

इतिश्रीदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधेप्रथमस्कंधेतृतीयोध्यायः॥३॥पंचषष्टिश्लोकवर्यैर्देवीसर्वोत्तमेतिच ॥ शुकजन्मप्रसंगेनभण्यतेऽस्मिंश्चतुर्थके॥१॥तत्रपूर्वाध्यायेविज्ञायचैवारणिसंभवायचेत्युक्तंतत्प्रश्नबीजमुपलभ्यमुनयःपृच्छंति॥सौम्येति॥हेसौम्यसूत कस्यांव्यासभार्यायांशुकःसुतःपुत्रोजातइत्येकःप्रश्नः।कथंकेनप्रकारेणजातइतिद्वितीयः।किंचकीदृशःकीदृग्गुणवानितितृतीयः॥येनैतादृशीसुसंहितापठितासनसाधारणगुणइत्यर्थः१ननुशुकोऽरणिसंभूतोऽस्तीतिमयोक्तमूततश्चीयंप्रश्नोघटनांप्रांचतीतिचेत्सत्यम्॥तदेवतुसंदेहास्पदमरणौवीर्यपातासंभवादित्याह॥अयोनिजइति॥अयोनिजःकुतोयतोऽरणिसंभवस्ततः॥२॥किंच गर्भयोगीनइति॥नहियोगिनःकृतकृत्यज्ञानार्थमस्यपुराणाद्यपेक्षाऽस्तीत्यभिप्रायेणाऽऽह॥कथंचेति ॥ ३ ॥ इतिऋषिप्रश्नत्रयमुपलभ्याऽऽह॥पुरासरस्वतीतीरइति॥अनेनचाऽयोनिजइत्येवपक्षंस्थापयति॥गर्भयोगित्वंतस्या।वास्तवंनभवति ॥किंतु स्तावकत्वंनोक्तंदेवीभागवतश्रवणोत्तरमेवतुतस्ययोगित्वंवक्ष्यतीतिभावः॥कलविंकौचटकौ॥४॥विस्मयकारणमाह॥जातमात्रमिति ॥५॥६॥७॥मनुष्यव्यवहारतुल्यःपक्षिव्यवहारइत्याश्चर्यहेतुः॥काममिति॥कामंयथेष्टंमनसासमचिंतयत् विचारितवान्॥८॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

विचारमेवाह॥तिरश्चामिति॥मनुष्यास्तुपुत्रोऽस्माकंसेवाकरिष्यतीतिसेवाफलेच्छयापुत्रेप्रेमकुर्वंतितत्रकिंचित्रंतदभावेपिपक्षिषुप्रेमदर्शनादितिभावः ॥९॥ पक्षिषुपुत्रकर्तृकसेवायाअसंभावनां दर्शयति॥किमेताविति॥वध्वाःस्नुषायाः ॥१०॥११॥१२॥१३॥ एवंसेवाऽसंभावनायामपिपुत्रेप्रेमकुर्वंतितस्मात्पुत्रःसंसारेऽधिकइतिभावः॥तदेवाह संसारेइति ॥ १४ ॥ शास्त्रमप्येवमेवाहे त्याह॥ अपुत्रस्येति॥पुत्रादन्यतरत्भिन्नम्॥१५॥१६॥दृश्यतइति॥इदंनाऽनुमानेनसाध्यतेपुत्रस्यावश्यकत्वं किंतुम् समक्षंप्रत्यक्षमेवदृश्यते ॥ यथाप्रत्यक्षंप्रमाणमत्रवर्ततेतथाऽऽप्तवाक्यमपिव

तिरश्चामपियत्प्रेमपुत्रेसमभिलक्ष्यते ॥ किंचित्रंयन्मनुष्याणांसेवाफलमभीप्सताम् ॥ ९ ॥ किमेतौचटकौचास्यविवाहंसुखसाधनम् ॥ विरच्यसुखिनौ स्यातांदृष्ट्वावध्वामुखंशुभम् ॥ १० ॥ अथवावार्धकेप्राप्तेपरिचर्याकरिष्यति ॥ पुत्रःपरमधर्मिष्ठःपुण्यार्थंकलविंकयोः ॥ ११ ॥ अर्जयित्वाऽथवाद्रव्यंपि तरौतर्पयिष्यति ॥ अथवाप्रेतकार्याणिकरिष्यतियथाविधि ॥ १२ ॥ अथवाकिंगयाश्राद्धंगत्वासंवितरिष्यति॥ नीलोत्सर्गंचविधिवत्प्रकरिष्यतिवालकः ॥ १३ ॥ संसारेऽत्रसमाख्यातंसुखानामुत्तमंसुखम् ॥ पुत्रगात्रपरिष्वंगोलालनंचविशेषतः ॥ १४ ॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तिस्वर्गोनैवचनैवच ॥ पुत्रा दन्यतरन्नास्तिपरलोकस्यसाधनम् ॥ १५ ॥ मन्वादिभिश्चमुनिभिर्धर्मशास्त्रेषुभाषितम् ॥ पुत्रवान्स्वर्गमाप्नोतिनापुत्रस्तुकथंचन ॥ १६ ॥ दृश्यतेऽत्र समक्षंतन्नानुमानेनसाध्यते ॥ पुत्रवान्मुच्यतेपापादाप्तवाक्यंचशाश्वतम् ॥ १७ ॥ आतुरोमृत्युकालेऽपिभूमिशय्यागतोनरः ॥ करोतिमनसाचिंतांदुःखि तःपुत्रवर्जितः ॥ १८ ॥ धनंमेविपुलंगेहेपात्राणिविविधानिच ॥ मंदिरंसुंदरंचैतत्कोऽस्यस्वामीभविष्यति ॥ १९ ॥ मृत्युकालेमनस्तस्यदुःखेनभ्रमते यतः ॥ अतोऽस्यदुर्गतिर्नूनंभ्रांतचित्तस्यसर्वथा ॥ २० ॥ एवंबहुविधांचिंतांकृत्वासत्यवतीसुतः ॥ निःश्वस्यबहुधाचोष्णंविमनाःसंबभूवह ॥ २१ ॥ विचार्यमनसाऽत्यर्थंकृत्वामनसिनिश्चयम् ॥ जगामचतपस्तप्तुंमेरुपर्वतसंनिधौ ॥ २२ ॥ मनसाचिंतयामासकंदेवंसमुपास्महे ॥ वरप्रदाननिपुणंवांछि तार्थप्रदंतथा ॥ २३ ॥ विष्णुंरुद्रंसुरेंद्रंवाब्रह्माणंवादिवाकरम् ॥ गणेशंकार्तिकेयंचपावकंवरुणंतथा ॥ २४ ॥ एवंचिंतयतस्तस्यनारदोमुनिसत्तमः ॥ यदृच्छयासमायातोवीणापाणिःसमाहितः ॥ २५ ॥ तंदृष्ट्वापरमप्रीतोव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ कृत्वाऽर्घ्यमासनंदत्त्वापप्रच्छकुशलंमुनिम् ॥ २६ ॥ श्रु त्वाऽथकुशलप्रश्नंपप्रच्छमुनिसत्तमः ॥ चिंतातुरोऽसिकस्मात्त्वंद्वैपायनवदस्वमे ॥ २७ ॥

र्ततएवेत्याह॥पुत्रवानिति॥पापात्सर्वक्लेशरूपात्॥इतिशाश्वतंचिरंतनमाप्तवाक्यवंतत इत्यर्थः ॥१७॥ यदुक्तंप्रत्यक्षंतन्निदर्शयति आतुरइति ॥ १८ ॥१९॥२० ॥ एवमिति॥बहुविधांचिंतां विचारेव्यासःकृत्वातस्यपुत्राभावादुष्णंसंतापयुक्तंस्यथायात्तथाबहुधाऽनेकप्रकारैर्विश्वस्यविमनाःसंबभूवह ॥२१॥ ततःपुत्रोत्पत्तिरीश्वरानुग्रहंविनानभवतिपरमेश्वरानुग्रहश्चतपोविनानभवती त्यर्थमतिशयेमनसाविचिंत्यतपसिनिश्चयंकृत्वाजगाम ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ त्वन्नाभीति ॥ अहंसर्वजगत्कर्तात्वत्पुत्रस्ततस्त्वत्तःकोऽन्योप्यधिकस्तथापित्वं ध्यायसितस्मादस्त्यन्योधिकोदेवस्तंदेवंहेमापते लक्ष्मीपतेमांब्रूहीत्यर्थः ॥ ३८ ॥ तदेवोपपादयति ॥ जानाम्यहमिति ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ तथाप्येतेब्रह्मविष्ण्वादयोदृश्याःपरिच्छिन्नाः कार्यरूपाःशक्त्याकृताइत्यत्रतर्कोऽनुमानंवेदपारगैःपुरुषैर्वेदार्थानुसारेणक्रियते ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ तत्कर्मकरणेइति ॥ अयंभावः ब्रह्मविष्ण्वादयःकस्मादुत्पन्नाइतिजिज्ञासायांवेदरसिकाःपुरुषाःप्रथमतो मायांतुप्रकृतिंविद्या

व्यासउवाच ॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तिनसुखंमानसेततः ॥ तदर्थंदुःखितश्चाहंचिंतयामिपुनःपुनः ॥ २८ ॥ तपसातोषयाम्यद्यकंदेवंवांछितार्थदम् ॥ इति चिंतातुरोस्म्यद्यत्वामहंशरणंगतः ॥ २९ ॥ सर्वज्ञोऽसिमहर्षेत्वंकथयाऽऽशुकृपानिधे ॥ कंदेवंशरणंयामियोमेपुत्रंप्रदास्यति ॥ ३० ॥ सूतउवाच ॥ इतिव्यासेनपृष्टस्तुनारदोवेदविन्मुनिः ॥ उवाचपरयाप्रीत्याकृष्णंप्रतिमहामनाः ॥ ३१ ॥ नारदउवाच ॥ पाराशर्यमहाभागयत्त्वंपृच्छसिमामिह ॥ तमेवार्थंपुरापृष्टःपित्रामेमधुसूदनः ॥ ३२ ॥ ध्यानस्थंचहरिंदृष्ट्वापितामेविस्मयंगतः ॥ पर्यपृच्छतदेवेशंश्रीनाथंजगतःपतिम् ॥ ३३ ॥ कौस्तुभोद्भासितंदिव्यंशंखचक्रगदाधरम् ॥ पीतांबरंचतुर्बाहुंश्रीवत्सांकितवक्षसम् ॥ ३४ ॥ कारणंसर्वलोकानांदेवदेवंजगद्गुरुम् ॥ वासुदेवंजगन्नाथंतप्यमानंमहत्तपः ॥ ३५ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ देवदेवजगन्नाथभूतभव्यभवत्प्रभो ॥ तपश्चरसिकस्मात्त्वंकिंध्यायसिजनार्दन ॥ ३६ ॥ विस्मयोऽयंममात्यर्थंत्वंसर्वजगतांप्रभुः ॥ ध्यानयुक्तोसिदेवेशकिंचचित्रमतःपरम् ॥ ३७ ॥ त्वन्नाभिकमलाज्जातःकर्ताऽहमखिलस्यह ॥ त्वत्तःकोप्यधिकोस्त्यत्रतंदेवंब्रूहिमापते ॥ ३८ ॥ जानाम्यहंजगन्नाथत्वमादिःसर्वकारणम् ॥ कर्तापालयिताहर्तासमर्थःसर्वकार्यकृत् ॥ ३९ ॥ इच्छयातेमहाराजसृजाम्याहमिदंजगत् ॥ हरःसंहरतेकालेसोपितेवचनेसदा ॥ ४० ॥ सूर्योभ्रमतिचाकाशे वायुर्वातिशुभाशुभः ॥ अग्निस्तपतिपर्जन्योवर्षतीशत्वदाज्ञया ॥ ४१ ॥ त्वंतुध्यायसिकंदेवंसंशयोऽयंमहान्मम ॥ त्वत्तः परंनपश्यामिदेवंवैभुवनत्रये ॥ ४२ ॥ कृपांकृत्वावदस्वाद्यभक्तोऽस्मितवसुव्रत ॥ महतां नैवगोप्यंहिप्रायःकिंचिदितिस्मृतिः ॥ ४३ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यहरिराहप्रजापतिम् ॥ शृणुष्वैकमनाब्रह्मंस्त्वांब्रवीमिमनोगतम् ॥ ४४ ॥ यद्यपित्वांशिवंमांचस्थितिसृष्ट्यंतकारणम् ॥ तेजानंतिजनाःसर्वेसदेवासुरमानुषाः ॥ ४५ ॥ स्रष्टात्वंपालकश्चाहंहरः संहारकारकः ॥ कृताःशक्त्येतिसंतर्कःक्रियतेवेदपारगैः ॥ ४६ ॥ जगत्संजननेशक्तिस्त्वयितिष्ठतिराजसी ॥ सात्त्विकीमयिरुद्रेचतामसीपरिकीर्तिता ॥ ४७ ॥ तयाविरहितस्त्वंनतत्कर्मकरणेप्रभुः ॥ नाहंपालयितुंशक्तःसंहर्तुंनापिशंकरः ॥ ४८ ॥

न्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥ तयोर्विभूतिलेशोवैजगदेतच्चराचरम् ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते ॥ परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाचेति ॥ मायावाएष नारसिंहीसर्वमिदंसृजति सर्वमिदंरक्षतिसर्वमिदंसंहरति तस्मान्मायामेतांशक्तिंविद्यादित्यादिश्रुतीःपर्यालोचयंति ॥ ततस्तदर्थानुसारेणैवानुमानंकल्पयंति ॥ तच्चेत्थम् ॥ योयोव्यवहारः सशक्तिपूर्वः व्यवहारत्वात् प्राकृतपुरुषव्यवहारवदित्यनुमानंकल्पयंतितत्रास्माकंजन्मादिव्यवहारस्तथाजन्मोत्तरंजगत्सर्जनादिव्यवहारश्चशक्तिपूर्वकएवेतीनीश्चिन्वंति ॥ व्यतिरेकंचपश्यंति



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

नहिशक्तिरहितःस्पंदितुमपिसमर्थःकश्चिदिति तस्माच्छुत्यनुमानाभ्यामस्माकंशक्तिपूर्वकत्वंनिश्चितम्॥तस्मात्पराशक्तिजन्याएववयमिति॥४८॥यतएवंतस्माद्वयंसर्वेतदधीनाइत्याहतदधानी इति॥प्रत्यक्षेचपरोक्षेचेति॥ अस्माकंप्रत्यक्षेव्यवहारेपरोक्षेचव्यवहारेपराधीनत्वंस्पष्टमेव ॥ तत्रदृष्टांतमुदाहरणंशृणु॥४९॥स्वपिमीति ॥ प्रलयकालीनव्यवहारस्यब्रह्मणादृश्यमानत्वाभावेन परोक्षत्वंप्रलयकालेचतदधीनःशक्त्यधीनएवस्वपिमि ॥ तथैवकालेसृष्टिकालेसदोत्तिष्ठेउत्तिष्ठामि तदधीनःसन्नित्यर्थः॥स्वापजागरयोःक्षणमेकमपिन्यूनाधिकंकर्तुंमयानशक्यतेतस्मात्परतंत्र एवाहमस्मीतिभावः॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥तदेति॥प्रथमतोमधुकैटभयुद्धसमयेमद्बलंनष्टंअनंतरंतौदेव्याविमोहितौमायिचबलंतद्धननयोग्यंदेव्यास्थापितम्॥ तदासर्वप्रपंचस्यमद्बलस्य चकारणंभगवतीरूपंनकिंत्वयाज्ञातमस्ति॥ततःपुनःकिंपृच्छसीत्यर्थः॥५५॥यदिच्छेति ॥ यस्याभगवत्याइच्छयाप्रथमतःस्त्रीरूपेणस्थितोमणिद्वीपेऽनंतरमहंपुरुषोभूत्वामहार्णवेचरामिवसा

तदधीनावयंसर्वेवर्तामःसततंविभो ॥ प्रत्यक्षेचपरोक्षेचदृष्टांतंशृणुसुव्रत॥४९॥शेषेस्वपिमिपर्यंकेपरतंत्रोनसंशयः ॥ तदधीनःसदोत्तिष्ठेकालेकालवशंगतः ॥५०॥तपश्चरामिसततंतदधीनोऽस्म्यहंसदा॥कदाचित्सहलक्ष्म्याचविहरामियथासुखम्॥५१॥कदाचिद्दानवैःसार्द्धंसंग्रामंप्रकरोम्यहम्॥दारुणंदेहदमनंस र्वलोकभयंकरम्॥५२॥प्रत्यक्षंतवधर्मज्ञतस्मिन्नेकार्णवेपुरा॥पंचवर्षसहस्राणिबाहुयुद्धंमयाकृतम् ॥५३॥ तौकर्णमलजौदुष्टौदानवौमदगर्वितौ ॥ देवदेव्याः प्रसादेननिहतौमधुकैटभौ॥५४॥तदात्वयानकिंज्ञातंकारणंतुपरात्परम्॥शक्तिरूपंमहाभागकिंपृच्छसिपुनःपुनः ॥ ५५ ॥ यदिच्छापुरुषोभूत्वाविचरामि महार्णवे॥कच्छपःकोलसिंहश्चवामनश्चयुगेयुगे॥५६॥नकस्यापिप्रियोलोकेतिर्यग्योनिषुसंभवः॥नाऽभवंस्वेच्छयावामवराहादिषुयोनिषु ॥५७॥ विहायल क्ष्म्यासहसंविहारंकोयातिमत्स्यादिषुहीनयोनिषु॥शय्यांचमुक्त्वागरुडासनस्थःकरोतियुद्धंविपुलंस्वतंत्रः ॥५८ ॥ पुरापुरस्तेऽजशिरोमदीयंगतंधनुर्ज्या स्खलनात्कचापि॥त्वयातदावाजिशिरोगृहीत्वासंयोजितंशिल्पिवरेणभूयः ॥ ५९ ॥ हयाननोऽहंपरिकीर्तितश्चप्रत्यक्षमेतत्तवलोककर्तः ॥ विडंबनेयंकि ललोकमध्येकथंभवेदात्मपरोयदिस्याम् ॥ ६० ॥ तस्मान्नाहंस्वतंत्रोऽस्मिशक्त्यधीनोऽस्मिसर्वथा ॥ तामेवशक्तिंसततंध्यायामिचनिरंतरम् ॥ ६१ ॥

मितस्मात्तदधीनएवाहमस्मीतिभावः इयंकथावक्ष्यमाणा॥कोलेतिप्रथमांतंलुप्तविभक्तिकम्॥जातइतिशेषः ॥५६॥ नाभवामिति॥तस्मात्स्वेच्छयावामाःकुटिलायावराहादियोनयस्तासुनाभवं नासं किंतु पराधीनएवसन्नभवमित्यर्थः॥५७॥किंचयदिममस्वातंत्र्यंस्यात्तदानीचयोनिषुममजन्मनैवस्यान्नाहिलोकेकश्चनस्वतंत्रोहीनयोनिषुजन्मवाञ्छतीत्याह विहायेति ॥५८॥ अन्यच्च ममपराधीनतायाःप्रत्यक्षमुदाहरणमुच्यते पुरेति॥ हेअज तेतवपुरोग्रदेशेमदीयंशिरोधनुषोज्यायामौर्व्याःस्खलनात्त्रोटनात्कचापिकस्मिन्नपिदेशेगतंपुरापूर्वंतदावाजिशिरोऽश्वशिरोगृहीत्वा शिल्पिवरेणत्वष्ट्रात्वयासंयोजितंत्वदाज्ञयात्वष्ट्रासंयोजितमित्यर्थः॥तथाचाहंकथंसर्वेश्वरःस्वतंत्रोभवामिनहीश्वरस्येदृशीदशाजायतेतस्मात्परतंत्रएवाहमस्मीतिभावः ॥५९॥हयाननोहमिति॥ तदाहंहयाननोहयग्रीवनाम्नाइतिपरिकीर्तितः ॥ इदंहेलोककर्तःलोकोत्पादकब्रह्मंस्तवप्रत्यक्षमेवास्तियदिपुनरात्मपरःस्वतंत्रोहंस्यांभवेयंतदेयंविडंबनालोकमध्येकथंभवेन्नकथमपीत्यर्थः तस्मा दपिपराधीनएवाहमस्मीतिजानीहीतिभावः॥६०॥तदेवाहतस्मादिति ॥ शेषंस्पष्टम् ॥ यत्पृष्टंकंध्यायसीतितस्योत्तरमाह तामेवशक्तिमिति॥शक्तिमितिसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मरूपिणीं

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



देवीमित्यर्थः॥६१॥६२॥६३॥६४॥अत्रक्वचित्पुस्तकेषुशेषेस्वापिमिपर्यंकेइत्यतःपूर्वं ममभार्यावरारोहामहालक्ष्मीरितिश्रुतेत्यादिपंचश्लोकाःसन्ति॥अग्रेचहयाननोहंपरिकीर्तितश्चेतिश्लोकोत्तरंतस्मान्नाहंस्वतंत्रोस्मीत्यादिपंचश्लोकानसंति तत्पक्षेतेषांतदुक्तार्थस्याध्याहारःकर्तव्यःस्यादिति ॥६५॥॥ इतिश्रीदेवीभागवतव्याख्यायांतिलकाभिधायांप्रथमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥४॥ द्वादशाधिकपद्यैस्तुशतसंख्यैर्हयास्ययोः ॥ कथयातुमहादेव्यामहोत्कर्षोनिगद्यते॥१॥हयग्रीवरूपंप्रश्नबीजमुपलभ्यकथाप्रसंगमध्येएवऋषयःपृच्छंति सूतेति ॥१॥ सर्वकर्तेति॥यंवेदोपिस्तौ

नातःपरतरंकिंचिज्जानामिकमलोद्भव ॥ नारदउवाच ॥ इत्युक्तंविष्णुनातेनपद्मयोनेस्तुसन्निधौ ॥ ६२ ॥ तेनचाप्यहमुक्तोऽस्मितथैवमुनिपुंगव ॥ तस्मात्त्वमपिकल्याणपुरुषार्थाप्तिहेतवे ॥ ६३ ॥ असंशयंहृदंभोजेभजदेवीपदांबुजम् ॥ सर्वदास्यतिसादेवीयद्यदिष्टंभवेत्तव ॥ ६४ ॥ सूतउवाच ॥ नारदेनैवमुक्तस्तुव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ देवीपादाब्जनिष्णातस्तपसेप्रययौगिरौ ॥ ६५ ॥ इतिश्रीदेवीभा०म०प्रथमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सूताऽस्माकंमनःकामंमग्नंसंशयसागरे ॥ यथोक्तंमहदाश्चर्यंजगद्विस्मयकारकम् ॥१॥ यन्मूर्द्धामाधवस्यापिगतोदेहात्पुनःपरम् ॥ हयग्रीवस्ततोजातःसर्वकर्ताजनार्दनः ॥ २ ॥ वेदोऽपिस्तौतियंदेवंदेवाःसर्वेयदाश्रयाः ॥ आदिदेवोजगन्नाथःसर्वकारणकारणः ॥ ३ ॥ तस्यापिवदनंछिन्नंदैवयोगात्कथंतदा ॥ तत्सर्वंकथयाऽऽशुत्वंविस्तरेणमहामते ॥ ४ ॥ सूतउवाच॥ शृण्वंतुमुनयःसर्वेसावधानाःसमंततः ॥ चरितंदेवदेवस्यविष्णोःपरमतेजसः ॥ ५ ॥ कदाचिद्दारुणंयुद्धंकृत्वादेवःसनातनः ॥ दशवर्षसहस्राणिपरिश्रांतोजनार्दनः ॥ ६ ॥ समेदेशेशुभेस्थानेकृत्वापद्मासनंविभुः ॥ अवलंब्यधनुःसज्यंकंठदेशेधरास्थितम् ॥ ७ ॥ दत्त्वाभारंधनुष्कोट्यांनिद्रामापरमापतिः ॥ श्रांतत्वाद्दैवयोगाच्चजातस्तत्रातिनिद्रितः ॥ ८॥ तदाकालेनकियतादेवाःसर्वेसवासवाः ॥ ब्रह्मेशसहिताःसर्वेयज्ञंकर्तुंसमुद्यताः ॥ ९ ॥ गताःसर्वेऽथवैकुंठंद्रष्टुंदेवंजनार्दनम् ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थंमखानामधिपंप्रभुम् ॥ १० ॥ अदृष्ट्वातंतदातत्रज्ञानदृष्ट्याविलोक्यते ॥ यत्राऽऽस्तेभगवान्विष्णुर्जग्मुस्तत्रतदासुराः ॥ ११ ॥ ददृशुस्तेतदेशानंयोगनिद्रावशंगतम् ॥ विचेतनंविभुंविष्णुंतत्राऽऽसांचक्रिरेसुराः ॥ १२ ॥ स्थितेषुसर्वदेवेषुनिद्रासुप्तेजगत्पतौ ॥ चिंतामापुःसुराःसर्वेब्रह्मरुद्रपुरोगमाः ॥ १३ ॥ तानुवाचततःशक्रःकिंकर्तव्यंसुरोत्तमाः ॥ निद्राभंगःकथंकार्यश्चितयंतुसुरोत्तमाः ॥ १४ ॥ तमुवाचतदाशंभुर्निद्राभंगेऽस्तिदूषणम् ॥ कार्यंचैवप्रकर्तव्यंयज्ञस्यसुरसत्तमाः ॥ १५ ॥

तियश्चसर्वकर्तातस्यापिहयग्रीवत्वंप्राप्तमित्याश्चर्यंकथंनभवेदितिभावः ॥२॥३॥४॥५॥ युद्धमिति॥दैत्यैःसमंदारुणंक्रूरम्॥६॥शुभेस्थानेइति ॥ वैकुंठेदेवाः प्रत्यहमागत्यनिद्राभंगंकरिष्यंतीतिदेवभीत्यावैकुंठंत्यक्त्वाक्वचिदेकांतस्थानइत्यर्थः ॥ धनुःसज्यमिति ॥ वक्रीभूतंधरास्थितंतद्धनुःकंठदेशेअवलंब्ययोगिजनवत्कंठदेशंतद्धनुषोद्वितीयकोट्यांस्थापयित्वेत्यर्थः ॥ ७ ॥ दत्त्वेति ॥ सर्वशरीरस्यभारंतस्यांधनुष्कोट्यांस्थापयित्वेत्यर्थः ॥ दैवयोगाच्चेति ॥ ईश्वरस्यश्रांतत्वंनिद्रावशगत्वमनुचितमपिदैवयोगात्प्रारब्धयोगादागतमित्यर्थः ॥ तथाचतादृशानामपिप्रारब्धाधीनत्वम् ॥ ततश्चपराधीनत्वमस्तीतिध्वनितम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वम्रीकीटविशेषः यस्यभाषायांवालवीतिनाम॥इयंचाख्यायिकाशतपथब्राह्मणेचतुर्दशेकांडेप्रवर्ग्यारंभेऽभिहिता ॥ सयःसविष्णुर्यज्ञः सयःसयज्ञोसौसआदित्यस्तद्वेदंयशोविष्णुर्नशशाकसंये तुंतदिदमप्येतर्हिनैवसर्वेइवयशःशक्नोतिसंयंतुंसतिसुवन्वमादायापचक्रामसधनुरात्न्यांशिरउपस्तंभ्यतस्थौतंदेवा अनाभिधृष्णुवंतःसमंतंपारिण्यविशंतताहवम्र्यऊचुः । इमावैवम्र्योयदुपदीका योस्यज्यामप्यघ्नात्किमस्मैप्रयच्छेमेत्यादिना ॥ वम्रीतथोपदीकाचेतिहेमचंद्रकोशश्च ॥ ननुनिद्राभंगजदोषाभावार्थंयदिकीटविशेषउत्पादितस्तर्हितद्वारानिद्राभंगेकृतेपि निद्राभंगजदोषोदेवानांतदवस्थएवेतिचेन्न कार्यंचैवप्रकर्तव्यंयज्ञस्यसुरसत्तमाइतिपूर्ववचनेनयज्ञार्थंदोषकरणेपिप्रत्यवायाभावात् ॥ तर्हिकिमर्थंकीटउत्पादितःस्वेनैवकुतोननिद्राभंगःकृतइतिच

उत्पादितातदावम्रीब्रह्मणापरमेष्ठिना ॥ तयाभक्षयितुंतत्रधनुषोग्रंधरास्थितम् ॥ १६ ॥ भक्षितेऽग्रेतदाऽनिम्नंगमिष्यतिशरासनम् ॥ तदानिद्राविमुक्तो ऽसौदेवदेवोभविष्यति ॥ १७ ॥ देवकार्यंतदासर्वंभविष्यतिनसंशयः ॥ सवम्रींसंदिदेशाऽथदेवदेवःसनातनः ॥ १८ ॥ तमुवाचतदावम्रीदेवदेवस्यमाप तेः ॥ निद्राभंगःकथंकार्योदेवस्यजगतांगुरोः ॥ १९ ॥ निद्राभंगःकथाच्छेदोदंपत्योःप्रीतिभेदनम् ॥ शिशुमातृविभेदश्चब्रह्महत्यासमंस्मृतम् ॥ २० ॥ तत्कथंदेवदेवस्यकरोमिसुखनाशनम् ॥ किंफलंभक्षणाद्देवयेनपापंकरोम्यहम् ॥ २१ ॥ सर्वःस्वार्थवशोलोकःकुरुतेपातकंकिल ॥ तस्मादहंकरिष्यामि स्वार्थमेवप्रभक्षणम् ॥ २२ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ तवभागंकरिष्यामोमखमध्येयथाशृणु ॥ तेनत्वंकुरुकार्यंनोविष्णुंबोधयमाचिरम् ॥ २३ ॥ होमकर्मणिपार्श्वे चहविर्दानात्पतिष्यति ॥ तंतेभागंविजानीहिकुरुकार्यंत्वरान्विता ॥२४॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्ताब्रह्मणावम्रीधनुषोऽग्रंत्वरान्विता॥चखादसंस्थितंभूमौवि मुक्ताज्यातदाभवत् ॥२५॥प्रत्यंचायांविमुक्तायांमुक्ताकोटिस्तथोत्तरा॥शब्दःसमभवद्घोरस्तेनत्रस्ताःसुरास्तदा ॥२६॥ ब्रह्मांडंक्षुभितंसर्ववसुधाकंपिता तदा ॥ समुद्राश्चसमुद्विग्नास्त्रेसुश्चजलजंतवः ॥ २७ ॥ ववुर्वातास्तथाचोग्राःपर्वताश्चचकंपिरे ॥ उल्कापातामहोत्पातावभूवुर्दुःखशंसिनः ॥ २८ ॥ दिशोघोरतराश्चाऽऽसन्सूर्योप्यस्तंगतोऽभवत् ॥ चिंतामापुःसुराःसर्वेकिंभविष्यतिदुर्दिने ॥ २९ ॥ एवंचिंतयतांतेषांमूर्धाविष्णोःसकुंडलः ॥ गतःसमुकुटःक्वापिदेवदेवस्यतापसाः ॥ ३० ॥

दुच्यते ॥ साक्षान्निद्राभंगेविष्णुकोपस्यसंभावनास्तिकीटद्वाराभंगेतुतथातास्तीत्याशयात्॥१६ ॥ ननुकीटद्वाराकथंनिद्राभंगोभविष्यतितत्रयुक्तिमाह भक्षितेऽग्रेइति अनिम्नमितिच्छेदः ॥ अधःकोट्यांभक्षितायांप्रत्यंचायांमुक्तायांद्वितीयाकोटिरूर्ध्वंगमिष्यतितदाधिकस्पर्शेनानिद्राभंगोभविष्यतीतिभावः ॥१७ ॥ १८ ॥ निद्राभंगइति ॥ यद्यपिभवतांयज्ञार्थंनिद्राभंगकरणे पिदोषोनतथाऽपिममयज्ञाधिकारित्वाभावात्सममास्त्येवेतिभावः ॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥ पार्श्वेकुंडाद्बहिः पार्श्वे देशेइत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५॥२६॥२७॥२८॥अस्तंगतोऽभवदितिनि ष्प्रभोजातइत्यर्थः ॥ २९ ॥ एवंचिंतयतांतेषामिति ॥ अत्रपुरोदेशेइतिशेषः ॥ ३० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



ननुयस्मिन्क्षणेप्रत्यंचामुक्तावस्मिन्नेवक्षणेमूर्धाछिन्नइतियुक्तिमत्॥अत्रतुप्रथमतःकियत्कालपर्यंतमुत्पाताजातास्ततोमूर्धाछिन्नइत्युक्तमितियुक्तिविरोधइतिचेन्न ॥ मूर्धच्छेदोत्तरमेवोत्पाताय द्यापिजातास्तथाप्युत्पातकोलाहलव्याकुलतयादेवैर्मूर्धच्छेदोनज्ञातइतितदभिप्रायेणतथोक्तिः॥तदेवस्पष्टयतिअंधकारइति॥शांतेतूत्पातेपूर्वंछिन्नमपिशिरोऽनंतरंदृष्टशातेइत्यर्थः ॥३१॥३२॥ वैशसंदुःखम्॥३३॥३४॥दैवैरिति॥अस्माभिःस्वहस्तेनैवायंविघ्नः कृतइतिभावः॥३५॥३६॥३७॥नचैषेति ॥ मायामायेशंनकदापिमोहयति किंत्वन्यमेवेतिभावः॥इयमुक्तिस्त्वद्यापिसर्वेश्व

अंधकारे तदाघोरेशांतेब्रह्महरौतदा ॥ शिरोहीनंशरीरंतुदृष्टशातेविलक्षणम् ॥ ३१ ॥ दृष्ट्वाकबंधंविष्णोस्तेविस्मिताःसुरसत्तमाः ॥ चिंतासागरमग्नाश्च रुरुदुःशोककर्शिताः ॥ ३२ ॥ हानाथकिंप्रभोजातमत्यद्भुतममानुषम् ॥ वैशसंसर्वदेवानांदेवदेवसनातन ॥३३॥ मायेयंकस्यदेवस्यययातेऽद्यशिरोहृत म् ॥ अच्छेद्यस्त्वमभेद्योऽसिअप्रदाह्योऽसिसर्वदा ॥ ३४ ॥ एवंगतेत्वयिविभोमरिष्यंतिचदेवताः ॥ कीदृशस्त्वयिनःस्नेहःस्वार्थेनैवरुदामहे ॥ ३५ ॥ नायंविघ्नःकृतोदैत्यैर्नयक्षैर्नचराक्षसैः ॥ देवैरेवकृतःकस्यदूषणंचरमापते ॥ ३६ ॥ पराधीनाःसुराःसर्वेकिंकुर्मःक्वव्रजामच ॥ शरणंनैवदेवेशसुराणांमूढ चेतसाम् ॥ ३७ ॥ नचैषासात्त्विकीमायाराजसीनचतामसी ॥ ययाछिन्नंशिरस्तेऽद्यमायेशस्यजगद्गुरोः ॥ ३८ ॥ क्रंदमानांस्तदादृष्ट्वादेवाञ्छिवपुरो गमान् ॥ बृहस्पतिस्तदोवाचशमयन्वेदवित्तमः ॥ ३९ ॥ रुदितेनमहाभागाःक्रंदितेनतथापिकिम् ॥ उपायश्चात्रकर्तव्यःसर्वथाबुद्धिगोचरः ॥ ४० ॥दैवं पुरुषकारश्चदेवेशसदृशावुभौ ॥ उपायश्चविधातव्योदैवात्फलतिसर्वथा ॥ ४१ ॥इंद्रउवाच ॥ दैवमेवपरंमन्येधिक्पौरुषमनर्थकम् ॥ विष्णोरपिशिरश्छि न्नंसुराणांचैवपश्यताम् ॥ ४२ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकालेनापादितंचयत् ॥ शुभंवाप्यशुभंवापिदैवंकोऽतिक्रमेत्पुनः ॥ ४३ ॥ देहवान्सुख दुःखानांभोक्तानैवाऽत्रसंशयः ॥ यथाकालवशात्कृत्तंशिरोमेशंभुनापुरा ॥ ४४ ॥ तथैवलिंगपातश्चमहादेवस्यशापतः ॥ तथैवाद्यहरेर्मूर्धापतितोलवणांभसि ॥४५॥सहस्रभगसंप्राप्तिर्दुःखंचैवशचीपतेः॥स्वर्गाद्भ्रंशस्तथावासःकमलेमानसेसरे॥४६॥एतेदुःखस्यभोक्तारःकेनदुःखंनभुज्यते ॥ संसारेऽस्मिन्महाभागा स्तस्माच्छोकंत्यजंतुवै॥४७॥चिंतयंतुमहामायांविद्यादेवींसनातनीम्॥साविधास्यतिनःकार्यंनिर्गुणाप्रकृतिःपरा॥ ४८ ॥ ब्रह्मविद्यांजगद्धात्रींसर्वेषांजननीं तथा ॥ ययासर्वमिदंव्याप्तंत्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ ४९ ॥ सूतउवाच॥इत्युक्त्वावैसुरान्वेधानिगमानादिदेशह॥देहयुक्तान्स्थितानग्रेसुरकार्यार्थसिद्धये ॥५०॥

र्याभगवत्यामहिमानमज्ञात्वाविष्णोर्मायेशत्वंज्ञात्वास्थितानामितिबोध्यम्॥अस्मिन्सिद्धान्तेतुविष्णोर्मायेशत्वाभावाद्देव्या एवमायेशत्वात्॥३८।३९।४०॥४१॥इंद्रस्तुसंतापेनबृहस्पतिमतं खंडयति दैवमेवेति॥४२॥४३॥कृत्तंछिन्नंनखेनेतिशेषः॥४४॥४५॥वासःकमलेइति॥इंद्रस्यैवेत्यर्थः ॥ ४६॥४७॥अनेकोदाहरणैर्ब्रह्मविष्णुरुद्रादिसर्वदेवानामनीश्वरत्वमल्पज्ञत्वंपराधीनत्वंमा यामोहितत्वंचोपपाद्यअनंतरविघ्ननिवारणार्थंसर्वस्वकार्यसिद्ध्यर्थंसर्वैश्वर्याःसर्वज्ञायाःस्वतंत्रायामायेशायाभगवत्याआराधनाकर्तव्येत्याह चिंतयंत्विति ॥४८॥४९॥५०॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ब्रह्मविद्यामिति॥अत्रसर्वत्रमयोक्तोपोद्घातरीत्याब्रह्मविद्यामायादिशब्दामायाविशिष्टब्रह्मवाचकाइतिनाविस्मर्तव्यम्॥ यथागजशरीरेप्रविष्टस्यचैतन्यस्यगजेतिसंज्ञातथाप्रथमंमायाशरीरेप्रविष्टस्यचैतन्यस्यमायाशक्तिरितिसंज्ञाप्रथमा ततोविद्यादिशरीरेप्रविष्टस्यविद्यादिसंज्ञा ॥५१॥५२॥५३॥ निर्गुणेइत्यनेनब्रह्मरूपिणीमहामायेइत्यनेनब्रह्मैकदेशशक्तिरूपिणीफलतोमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीतिफलितम् ॥ अत्रसर्वत्रदेवीस्तोत्रेषुपुराणतंत्रोक्तेषुदेव्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपत्वाद्धेतोःक्वचिद्ब्रह्मत्वेनवर्णनंक्वचिन्मायात्वेनवर्णनमुभयमापिसंगच्छतेइतिबोध्यम् ॥५४॥ उद्गीथइति ॥ उद्गीथेप्रणवेअर्धमात्राबिंद्वर्धचंद्ररूपिणीयासात्वमसि ॥ वाच्यवाचकयोरभेदादर्धमात्रात्मकत्वमुक्तमितिबोध्यम् ॥ तत्रार्धमात्रापरंपदमितिवचनादर्धमात्रावाच्यत्वेनब्रह्मप्रतिपादितम्॥तादृशार्धमात्रात्मकत्वोक्त्याचब्रह्मरूपत्वंभगवत्याःस्पष्टमेवोक्तम्॥तदुक्तंमार्कंडेयपुराणे॥अर्धमात्रास्थितानित्यायानुच्चार्याविशेषतइति ॥५५॥ त्वांसंस्तुमइति ॥ हेअंबत्वांसंस्तुमःकीदृशींभुवनत्रयस्यसंविधानमुत्पादनंतत्रदक्षांकुशलां वरेण्यांश्रेष्ठांवाग्बीजंवाग्भवोमंत्रस्तत्रयोवासस्तस्मिन्निपुणांपंडितांनिरंतरंवाग्भवबीजोपासकैस्तत्रबीजेप्रतिबिंबतत्वेनदृश्यत्वात्त

ब्रह्मोवाच ॥ स्तुवंतुपरमांदेवींब्रह्मविद्यांसनातनीम् ॥ गूढांगींचमहामायांसर्वकार्यार्थसाधनीम् ॥ ५१ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यवेदाःसर्वांगसुंदराः ॥ तुष्टुवुर्ज्ञानगम्यांतांमहामायांजगत्स्थिताम् ॥ ५२ ॥ वेदाऊचुः ॥ नमोदेविमहामायेविश्वोत्पत्तिकरेशिवे ॥ निर्गुणेसर्वभूतेशिमातःशंकरकामदे ॥ ५३ ॥ त्वंभूमिःसर्वभूतानांप्राणःप्राणवतांतथा ॥ धीःश्रीःकांतिःक्षमाशांतिःश्रद्धामेधाधृतिःस्मृतिः ॥ ५४ ॥ त्वमुद्गीथेऽर्धमात्राऽसिगायत्रीव्याहृतिस्तथा ॥ जयाचविजयाधात्रीलज्जाकीर्तिःस्पृहादया ॥ ५५ ॥ त्वांसंस्तुमोंऽबभुवनत्रयसंविधानदक्षांदयारसयुतांजननींजनानाम् ॥ विद्यांशिवांसकललोकहितांवरेण्यांवाग्बीजवासनिपुणांभवनाशकर्त्रीम् ॥ ५६ ॥ ब्रह्माहरःशौरिसहस्रनेत्रवाग्वह्निसूर्याभुवनाधिनाथाः ॥ तेत्वत्कृताःसंतिततोनमुख्यामातायतस्त्वंस्थिरजंगमानाम् ॥ ५७ ॥ सकलभुवनमेतत्कर्तुकामायदात्वंसृजसिजननिदेवान्विष्णुरुद्राजमुख्यान् ॥ स्थितिलयजननंतैःकारयस्येकरूपानखलुतवकथंचिद्देविसंसारलेशः ॥ ५८ ॥

द्वीजोपासकानांझटित्यनुभवाच्च तत्रावश्यंवासोविद्यतइतिजायतइतिभावः॥भवनाशकर्त्रींज्ञानप्रदानेनेतिभावः॥५६॥ननुब्रह्मादयःसंतितेकिमितिस्वकार्यार्थंनस्तूयंतेतत्राऽऽह ब्रह्मेति॥ब्रह्मातथाहरःतथाशौरिश्चसहस्रनेत्रश्चवाक्चसरस्वतीचवह्निश्चसूर्यश्चेतियेभुवनाधिनाथाःसंतितेत्वत्कृतास्त्वयोत्पादिताः॥कस्मादितिचेद्यतस्त्वंस्थिरजंगमानांमाता तस्मात्त्वयैवोत्पादितास्ततस्तस्माद्धेतोस्तेनमुख्याअतोमास्माभिस्तेस्तूयंतइत्यर्थः॥नहिमुख्यपक्षपातंविहायाऽमुख्यपक्षपातंकश्चित्करोतीतिभावः॥५७॥ नन्वहमेवजगत्स्रष्टीतिचेत्तस्मिञ्जगतिनीचोच्चप्राणिकल्पनयावैषम्यनैर्घृण्येममस्यातामितिचेत्तत्राऽऽहसकलभुवनमिति॥हेजननिसकलभुवनमेतद्यदाकर्तुकामात्वमसितदाविष्णुरुद्राजमुख्यान्विष्णवादिप्रभृतीन्सृजसिसृष्टैश्चतैःस्थितिलयजननं॥समाहारद्वंद्वःसृष्टिस्थितिसंहारान्कारयसि।कथमेकरूपाईषदपिविकाराभावात्॥अविकृतरूपेत्यर्थः॥अतेनवैषम्यनैर्घृण्यदोषप्रसक्तिस्तवेतिभावः॥यथाराजास्वसेवकैःस्वस्वकर्मानुरूपेक्रियमाणेकर्मणिनवैषम्यनैर्घृण्येप्राप्नोतितद्वत्॥ननुकथंममाविकृतरूपत्वमितिचेत्तत्राह।नखल्विति ॥ हेदेवि तवकथंचित्केनापिप्रकारेणसंसारलेशःसंसारगंधोनखल्वास्तिनैवास्तीत्यतोऽविकृतरूपत्वंतवनिर्विघ्नम

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





स्त्येवेतिभावः॥तथाचश्रुतिः॥असंगोह्ययंपुरुषोऽसंगोनहिसज्जतइति ॥५८॥ किंचहेमातःत्वांसंस्तुमइतिप्रतिज्ञामात्रमस्माभिःकृतंस्तुतिंकर्तुमंवलोक्यतेचेत्कथमपिकर्तुंनशक्यतइत्याह नतेरूप मिति॥हेमातस्तेरूपंसगुणंवानिर्गुणंवावेत्तुंज्ञातुंसकलभुवनेद्वैतप्रपंचेकोपिपुरुषोनिपुणःसमर्थोनास्ति॥तथाचश्रुतिः॥यस्याःस्वरूपंब्रह्मादयोनविजानंतितस्मादुच्यतेअज्ञेयेति ॥ कोऽद्धावेदक इहप्रवोचत्कुतआजाताकुतइयंविसृष्टिः॥अर्वाग्देवाअस्यविसर्जनेनाथाकोवेदयतआवभूवेति॥यतोवाचोनिवर्तंते अप्राप्यमनसासहेतिच ॥अस्त्वेतत्तवरूपंदुर्ज्ञेयंदूरंतवनाम्नांसंख्यामपिकथितुं कथयितुमिहयोग्यःपुरुषोनास्तियथायंदृष्टांतः॥कोसौयथाअल्पंस्वल्पंकीलालंवापीसरोवरस्थंजलंतत्कलयितुमुल्लंघयितुमशक्तोयोनरःऋतमतिःसत्यमतिःप्रामाणिकइत्यर्थः॥ सकथंपारावारः सरित्पतिस्तस्याकलनमुल्लंघनंतत्रचतुरःस्यात्समर्थःस्यान्नकथमपीत्यर्थः ॥ तद्वदेवपरिच्छिन्नानांनाम्नामंतंनयोवेदसत्रिपादस्यामृतंदिवीतिश्रुतिप्रतिपाद्यमनंतंरूपंकथंजानीयान्नकथमपी त्यर्थः॥तथाचनामरूपज्ञानाभावात्कथंस्तवःसंभवेदितिभावः ॥५९॥ नाभून्ममरूपज्ञानंमाभूच्चममनामसंख्याज्ञानंतथापिसृष्ट्यादिकर्तृत्वादिगुणजालमेवगृहीत्वाकुतःस्तवोनसंभवेदितिचेत्त त्राऽऽह नदेवानामिति॥हेभगवति देवानांमध्येतवानंतविभवमनंतवैभवमेकोपिदेवोनजानाति॥तवजगत्सर्जनादिवैभवंकोपिनजानातीत्यर्थः॥कुतइतिचेत्तत्राऽऽह त्वमिह भुवनैकासीति ॥ त्वमिह संसारेभुवनातन्नाम्नीभुवनेश्वरीनाम्नीजननीजगज्जनयित्रीएकाऽसहायाऽसि॥एकैवसर्वत्रवर्तसेतस्मादेकेति॥एकमेवाद्वितीयंब्रह्म॥नेहनानास्तिकिंचनेतिश्रुतिभ्याम्॥इत्थमेकासत्यपिसकलंविश्वं

**नतेरूपंवेत्तुंसकलभुवनेकोऽपिनिपुणोननाम्नांसंख्यांतेकथितुमिहयोग्योऽस्तिपुरुषः ॥ यदल्पंकीलालंकलयितुमशक्तःसतुनरःकथंपारावाराकलनचतु रःस्याद्दृतमतिः ॥ ५९ ॥ नदेवानांमध्येभगवतितवानंतविभवंविजानात्येकोऽपित्वमिहभुवनैकासिजननी ॥ कथंमिथ्याविश्वंसकलमपिचैकारचयसिप्र माणंत्वेतस्मिन्निगमवचनंदेविविहितम् ॥ ६० ॥ निरीहैवासित्वंनिखिलजगतांकारणमहोचरित्रंतेचित्रंभगवतिमनोनोव्यथयति ॥ कथंकारंवाच्यःसक लनिगमागोचरगुणप्रभावःस्वंयस्मात्स्वयमपिनजानासिपरमम् ॥ ६१ ॥**

मिथ्याकथंरचयसिनतद्बुद्धिगम्यमस्ति॥तथाचजगत्सर्जनसामग्रीज्ञानाभावेनैवंजगत्सृजसीतिस्तोतुंनशक्यतइतिभावः॥ननुमिथ्याजगदहंसृजामीत्यत्रकिंप्रमाणंतत्राऽऽह प्रमाणंत्विति ॥ तथा चश्रुतिः॥त्रयमेतत्स्वप्नंसुषुप्तंमायामात्रमिति॥तुच्छेनाभ्वपिहितंयदासीदिति॥६०॥नन्वहमेकैवजगद्रचयामीतिचेत्संकल्पविकल्पविशिष्टत्वेनममविकारित्वंस्यात्तथाऽहमेवविविधरूपेतिममपरि णामित्वंचस्यात्तथाजगद्रचनाक्रियायाइच्छापूर्वकत्वान्ममापीच्छावत्त्वेनित्यतृप्तत्वनित्यानंदतयोर्मयिभंगश्चस्यात्तत्राऽऽह निरीहैवासित्वमिति॥हेभगवतित्वंनिरीहैवानिरिच्छैवाविकृतरूपैवासि श्रुतिप्रतिपाद्याविकृतरूपस्यकेनाप्यपलपितुमशक्यत्वात्॥अस्तुतर्हिममाविकृतरूपत्वंजगत्कारणत्वमसंभवान्मास्तु॥नह्यविकृतोविकाराभाववान्कश्चित्किंचिदपिकर्तुंशक्नोति॥पाषाणादिष्व दर्शनादितिचेत्तत्राऽऽहनिखिलजगतामिति॥हेभगवति यद्यपित्वंनिरीहाऽसितथापिनिखिलजगतांकारणमपित्वमेवासि॥अविकृतरूपस्यैवब्रह्मणोनासदासीन्नोसदासीत्तदानींनासीद्रजोनोव्यो मापरोयत्॥तुच्छेनाभ्वपिहितंयदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम् ॥ कामस्तदग्रेसमवर्ततधीत्यादिश्रुतिभिर्जगत्कारणत्वस्याप्युक्तत्वेनतस्यापिजगत्कारणत्वस्यत्वय्यपलपितुमशक्यत्वात् ॥ ननुतर्हिमय्यरूपेद्वितीयेसक्रियत्वमक्रियत्वंचतमःप्रकाशवद्विरुद्धंधर्मद्वयंकथंसंभवेदितिचेत्तत्राऽऽह चरित्रंतेचित्रमिति ॥ हेमातर्यद्यपिविरुद्धधर्मद्वयवत्त्वमेकस्यनसंभवतितथापिश्रुत्याविरुद्धधर्म द्वयस्यापिप्रतिपादनात्तस्याप्यपलापानर्हत्वात्तदपित्वय्याद्वितीयेब्रह्मणिसंभवत्येव॥कथमेकत्राद्वितीयेविरुद्धधर्मद्वयवत्त्वंसंभवेदितिचेत्तेइदंचित्रं विचित्रंचरित्रमेवनोमनोव्यथयतिमोहयति ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

नैतदस्मद्बुद्धिगम्यमित्यर्थः ॥ इदमनिर्वचनीयमेवास्तीतिभावः ॥ यतइदमनिर्वचनीयंततःसकलनिगमानामगोचरागुणायस्यप्रभावस्यसतेप्रभावःपामरैरस्माभिःकथंकारंवाच्योनकथमपीत्यर्थः ॥ हेमातर्वयंनजानीमइति तावद्दूरंतिष्ठतु यस्मात्स्वयमपित्वंस्वंस्वकीयमनिर्वचनीयप्रभावंपरममुत्कृष्टंनजानासि ॥ तदान्यःकथंजानीयात् नकथमपीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ योऽस्याध्यक्षःपरमेव्योमन् ॥ सोऽंगवेदयदिवानवेदेति ॥ अयंभावः ॥ विरुद्धयोरेकत्रसहावस्थानासंभवरूपंयद्दूषणमुद्भावितंतत्रकिंसत्ययोरेकत्रावस्थानासंभवः आहोस्वित्सत्यमिथ्यापदार्थयोरेकत्रावस्थानासंभवः ॥ आद्यपक्षेतुनास्मात्सिद्धांतोदूषणविषयः ॥ नह्यस्माभिर्विरुद्धयोःसत्ययोरेकत्रावस्थानंमन्यते ब्रह्मणः सत्यत्वाज्जगतश्चमिथ्यात्वाद् ॥ द्वितीयपक्षेतुसत्यमिथ्यापदार्थयोरज्जुसर्पादौसहावस्थानस्यदृष्टत्वान्नाविरोधः ॥ तथाचब्रह्मणःपरमार्थनिष्क्रियत्वेऽपरिणामित्वेसत्यपिअनिर्वचनीयमिथ्याशक्तियोगादसत्पदार्थाध्यासोजगत्सर्जनादिकंचसर्वंभविष्यतीतिसर्वमनवद्यमिति ॥ ६१ ॥ नन्वस्त्वेतद्यद्भवद्भिः प्रार्थ्यतेतत्प्रार्थ्यतामितिचेत्तत्राह । नाकिंजानासित्वामिति ॥ हेजननियदर्थमस्माभिर्भवतीप्रार्थ्यतेतन्मधुजितोविष्णोर्मौलिपतनंसर्वज्ञत्वंनजानासिकिंकिमस्माभिस्तद्वक्तव्यंसर्वज्ञायास्तवाग्रे ॥ सत्यंजानामिततः किमुच्यतइतिचेज्ज्ञात्वापिमौलिपतनंयद्युपेक्षसेतत्रकिंकारणमेतस्यस्वशक्त्याभिमानोजातः ततस्तस्यमधुजितःशक्तिंमौलिपतनंज्ञात्वाविविदिषासिकिंज्ञातुमिच्छसिकिम् ॥ इदमप्यनुचितंत्वत्प्रसादादेवानेनमधुदैत्योजितस्ततस्तस्याल्पशक्तिपरीक्षाभवादृशाद्रष्टुमनुचितैवेतिमधुजित्पदे

**नकिंजानासित्वंजननिमधुजिन्मौलिपतनंशिवेकिंवाज्ञात्वाविविदिषसिशक्तिंमधुजितः ॥ हरेःकिंवामातर्दुरिततातिरेषाबलवतीभवत्याःपादाब्जेभजननिपुणेक्वास्तिदुरितम् ॥ ६२ ॥ उपेक्षाकिंचेयंतवसुरसमूहेतिविषमाहरेर्मूर्ध्नोनाशोमतामिहमहाश्चर्यजनकम् ॥ महद्दुःखंमातस्त्वमसिजननच्छेदकुशलानजानीमोमौलेर्विघटनविलंबः कथमभूत् ॥ ६३ ॥ ज्ञात्वादोषंसकलसुरतापादितंदेविचित्तेकिंवाविष्णावमरजनितंदुष्कृतंपातितंते ॥ विष्णोर्वाकिंसमरजनितःकोपिगर्वोतिवेगाच्छेत्तुंमातस्तवविलसितंनैवविघ्नोऽत्रभावम् ॥ ६४ ॥**

नवोधितम्॥ननुनैतत्कारणमन्यदेवकिंचित्कारणमस्तीतिचेत्तत्किंहरेर्दुरिततातिःपातकसंततिर्बलवतीप्राप्तातद्रूपमस्त्युतान्यत्॥यदिप्रथमपक्षस्तर्हिसोपिनसंभवति॥यतोभवत्याः पादाब्जेयद्भजनंतस्मिन्निपुणेप्रवीणेविष्णौदुरितंक्वास्तिदेवीभक्तेपातकसंभावनास्वप्नेपिनास्ति ॥ तदुक्तं॥छित्त्वाभित्त्वाचभूतानिहत्वासर्वमिदंजगत्॥देवींनमतिभक्त्यायोनसपापैःप्रलिप्यतइति ॥ ६२ ॥ अन्यत्कारणंचेत्तर्हिकिंदेवेषूपेक्षावाहरेर्मस्तकपतनेविलक्षणस्वरूपदर्शनचमत्कारोवेत्याह।उपेक्षेति॥इयंसुरसमूहेयातवोपेक्षाऽतिविषमाकर्तुमयोग्यासाकिंकारणम् ॥ यद्वाहरेर्मूर्ध्नोमस्तकस्यनाशःसएवेदमाश्चर्यजनकंकारणंवामतम्॥विच्छिन्नशिरस्कपुरुषदर्शनेचमत्कारात्॥इतिकारणद्वयंसंभाव्यखंडयति ॥महद्दुःखमिति॥यदीदंकारणद्वयंतदामहदेवदुःखमस्माकंनिरालंबनत्वापातात्॥अस्माकंसर्वोप्याश्रयस्तवैवत्वंयदीत्थंकरोषितर्हिवयंमृताएवेतिभावः ॥ तस्मादिदमपिकारणद्वयंसंभाव्येव ॥ किंचहेमातस्त्वंजननरूपंयन्महद्दुःखंतच्छेदेकुशलासीतिवेदसिद्धांतस्तदाविष्णोर्मौलेर्विघटनंसंयोजनंतस्मिन्विलंबः कथमभूदितिनजानीमस्तदपेक्षयाकिमत्रभारोधिकोऽस्ति ॥ त्वयैतादृशसमयेक्षणमात्रमपिविलंबोनकर्तुंयोग्यइतिभावः ॥ ६३ ॥ अथानेकानिकारणानिसंभावयंति॥ज्ञात्वेति॥हेदेविसकलसुराणांसमूहःसकलसुरता तयासंपादितंनानाप्रकारकं दोषंज्ञात्वातस्यादुःखजननायइदंशिरश्छेदनं कृतंत्वया॥राजनाशेप्रजानांदुःखसंभवात् ॥ किंवाप्रजाकृतंपापंराजनीतिन्यायेनामरजनितंदुष्कृतंविष्णौदेवराजेविद्यमानंतेत्वयापातितं॥किंवाविष्णोःसमरजनितोयःकोप्यनिर्वचनीयोऽतिगर्वोऽस्तितंवाछेत्तुंतवैतद्विलसितमिति ॥ अत्रैतद्विषयेतेभावंनैवविघ्नो मूढत्वात ॥ ६४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किंवादैत्यैःसमरेयुद्धेदेवैर्विजितैस्तीर्थदेशेसुरम्येघोरंतपस्तत्त्वाभवत्याःसकाशाद्वरंलब्धवद्भिरिदंविष्णुशीर्षमंतर्धानंतिरोधानंगमितंप्रापितम् ॥ यद्वाहेभवानि विगतशिरसंवासुदेवंद्रष्टुंतवायंविनोदोवा॥ ६५ ॥ सिंधोःपुत्र्यांलक्ष्म्यांहेआद्येत्वंरोषितासिरुष्टासिकिम् ॥ कस्मादपराधादेनांनाथहीनांगतधवांप्रेक्षसे ॥ नैतत्तवोचितम् ॥ लक्ष्मीस्तुनान्याकाचिदस्ति किंतुतवस्वांशजैव ॥ तस्मात्तेत्वयास्वांशजातायालक्ष्म्याअपराधःक्षंतव्यः ॥ अथचैनंविष्णुमुत्थाप्यमांलक्ष्मींमोदितांहर्षितांकुरुष्व ॥ ६६ ॥ किंचयद्यद्रोषकारणंमनसित्वयाज्ञातमस्तितत्रसर्वत्रक्षमांविधायवयमनुग्रहणीयाइत्याह ॥ एतेइति ॥ हेभगवति तवजगत्कार्येषुसृष्ट्यादिषुमुख्याअधिकारिणस्त्वांसततंनमंति त्वदनुग्रहादेवप्रथितप्रभावाःसंति ॥ अतस्तदभिमानमंगीकृत्यसकला

किंवादैत्यैःसमरविजितैस्तीर्थदेशेसुरम्येघोरंतप्त्वाभगवतिवरंलब्धवद्भिर्भवत्याः ॥ अंतर्धानंगमितमधुनाविष्णुशीर्षंभवानिद्रष्टुंकिंवाविगतशिरसंवासुदेवंविनोदः ॥ ६५ ॥ सिंधोःपुत्र्यांरोषिताकिंत्वमाद्येकस्मादेनांप्रेक्षसेनाथहीनाम् ॥ क्षंतव्यस्तेस्वांशजातापराधोव्युत्थाप्यैनंमोदितांमांकुरुष्व ॥ ६६ ॥ एतेसुरास्त्वांसततंनमंतिकार्येषुमुख्याःप्रथितप्रभावाः॥शोकार्णवात्तारयदेविदेवानुत्थाप्यदेवंसकलाधिनाथम् ॥ ६७ ॥ मूर्धागतःक्वांवहरेर्नविघ्नोनान्योस्त्युपायःखलुजीवनेऽद्य ॥ यथासुधाजीवनकर्मदक्षातथाजगज्जीवितदाऽसिदेवि ॥ ६८ ॥ सूतउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीगुणातीतामहेश्वरी ॥ प्रसन्नापरमामायावेदैःसांगैश्चसामगैः ॥ ६९ ॥ तानुवाचतदावाणीचाकाशस्थाशरीरिणी ॥ देवान्प्रतिसुखैःशब्दैर्जनानंदकरीशुभा ॥ ७० ॥ माकुरुध्वंसुराश्चिंतांस्वस्थास्तिष्ठंतुचाऽमराः ॥ स्तुताऽहंनिगमैःकामंसंतुष्टाऽस्मिनसंशयः ॥ ७१ ॥ यःपुमान्मानुषेलोकेस्तौत्येतांमामकींस्तुतिम् ॥ पठिष्यतिसदाभक्त्यासर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ७२ ॥ शृणोतिवास्तोत्रमिदंमदीयंभक्त्यात्रिकालंसततंनरोयः ॥ विमुक्तदुःखःसभवेत्सुखीचवेदोक्तमेतन्ननुवेदतुल्यम् ॥ ७३ ॥ शृण्वंतुकारणंचाद्ययद्गतंवदनंहरेः ॥ अकारणंकथंकार्यंसंसारेऽत्रभविष्यति ॥ ७४ ॥ उदधेस्तनयांविष्णुःसंस्थितामंतिकेप्रियाम् ॥ जहासवदनंवीक्ष्यतस्यास्तत्रमनोरमम् ॥ ७५ ॥ तयाज्ञातंहरिर्नूनंकथंमांहसतिप्रभुः ॥ विरूपंहरिणादृष्टंमुखंमेकेनहेतुना ॥ ७६ ॥ विनापिकारणेनाऽद्यकथंहास्यस्यसंभवः ॥ सपत्नीवकृतातेनमन्येऽन्यावरवर्णिनी ॥ ७७ ॥

धिनाथंदेवमुत्थाप्य हेदेवि शोकार्णवात्तारयदेवान् ॥ ६७ ॥ हेअम्ब हरेर्मूर्धाक्वगतइत्येवंप्रथमंवयंनविघ्नः दूरतस्तु तंमूर्धानमानीयदेहेसंयोजनमिति ॥ विष्णोस्त्वांविनान्योप्युपायोजीवनायनास्ति अस्मिन्संकटेयथादेवानांसुधाऽमृतंजीवनरूपेकर्मणिदक्षा ॥ तथाहेदेवि जगतोद्वैतप्रपंचस्यजीवितदाजीवनदात्वमेवासि अतोयथेच्छसितथाकुर्वितिभावः ॥ ६८ ॥ सामगैः सामगायकैः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४॥ मनोरमामिति ॥ धन्यमस्यामुखमित्यभिप्रायेणनिर्व्याजंजहासेत्यर्थः ॥ ७५ ॥ हसतीति ॥ कपटेनहसतीतितयाज्ञातामित्यर्थः ॥ विरूपमिति ॥ अद्यावध्यनेनमन्मुखेनकदापिविरूपतादृष्टानचहास्यंकृतम् ॥ अद्यकेनकारणेनविरूपतादृष्टाहास्यंचानेनकृतमित्यर्थः ॥ ७६ ॥ ननुविरूपतानैवदृष्टाकेवलंहास्यमेवकृतमितिचेत्तत्राऽऽह विनापीति ॥ निष्कारणंहास्यंनैवभवतीत्यर्थः ॥ विरूपताकारणंहास्येऽस्तीतियथातार्कितंतथाकारणांतरमपितर्कयाति सपत्नीवेति ॥ ७७ ॥ ॥ छ ॥ ॥छ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ततः कोपयुतेति॥तमोगुणेति॥ननुमहालक्ष्म्याःसात्त्विकत्वात्तमोगुणत्वमप्रसिद्धंतत्राऽऽह।तामसीति॥तस्मिन्नेवकालेतामसीशक्तिर्देहेसमाविशत् नतुपूर्वमित्यर्थः ॥ ७८॥ किंकारणमितिचे त्तत्राऽऽह।केनचित्कालेति॥विपरीतकालयोगेनेत्यर्थः॥परिणामस्तुतस्यशुभएवास्तीत्याह।देवकार्यार्थेति।देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थंचेत्यर्थः ॥ ७९॥८० ॥ शापदानेकारणांतरमाह।स्त्रीस्वभावादि ति॥अविवेकतएवप्रायःस्त्रीणांप्रवृत्तेः॥भावित्वादवश्यंभावित्वात्॥कालयोगात्सांप्रतंविपरीतकालागमनात् ॥८१॥ स्वहस्तेनकथंवैधव्यंसंपादितमितिचेद्वैधव्यापेक्षयासपत्नीसंभवदुःखस्यासो ढव्यत्वादित्याह।सपत्नीति॥८२॥स्त्रीणांदोषाःस्वभावजाइति॥तामसस्त्रीणांतमोगुणादेतेदोषाःस्वभावजाइत्यर्थः॥तेनसात्त्विकस्त्रीणामुत्तमागुणाभवंतीतिबोध्यम् ॥ यद्यपिलक्ष्म्याःसात्त्वि

ततःकोपयुताजातामहालक्ष्मीस्तमोगुणा ॥ तामसीतुतदाशक्तिस्तस्यादेहेसमाविशत् ॥ ७८ ॥ केनचित्कालयोगेनदेवकार्यार्थसिद्धये ॥ प्रविष्टातामसी शक्तिस्तस्यादेहेऽतिदारुणा ॥ ७९ ॥ तामस्याविष्टदेहासाचुकोपातिशयंतदा ॥ शनकैःसमुवाचेदमिदंपततुतेशिरः ॥ ८० ॥ स्त्रीस्वभावाच्चभावित्वा त्कालयोगाद्विनिर्गतः ॥ अविचार्यतदादत्तःशापःस्वसुखनाशनः ॥ ८१ ॥ सपत्नीसंभवंदुःखंवैधव्यादधिकंत्विति ॥ विचिंत्यमनसेत्युक्तंतामसीशक्ति योगतः ॥ ८२ ॥ अनृतंसाहसंमायामूर्खत्वमतिलोभता ॥ अशौचंनिर्दयत्वंचस्त्रीणांदोषाःस्वभावजाः ॥ ८३ ॥ सशीर्षवासुदेवंतंकरोम्यद्ययथापुरा ॥ शिरोऽस्यशापयोगेननिमग्नंलवणांबुधौ ॥ ८४ ॥ अन्यच्चकारणंकिंचिद्वर्ततेसुरसत्तमाः ॥ भवतांचमहत्कार्यंभविष्यतिनसंशयः ॥ ८५ ॥ पुरादैत्योमहा बाहुर्हयग्रीवोऽतिविश्रुतः ॥ तपश्चक्रेसरस्वत्यास्तीरेपरमदारुणम् ॥ ८६ ॥ जपन्नेकाक्षरंमंत्रंमायाबीजात्मकंमम ॥ निराहारोजितात्माचसर्वभोगविवर्जि तः ॥ ८७ ॥ ध्यायन्मांतामसींशक्तिंसर्वभूषणभूषिताम् ॥ एवंवर्षसहस्रंचतपश्चक्रेऽतिदारुणम् ॥८८॥ तदाहंतामसंरूपंकृत्वातत्रसमागता॥दर्शनेपुरतस्त स्यध्यातंतत्तेनयादृशम् ॥ ८९ ॥ सिंहोपरिस्थितातत्रतमवोचंदयान्विता ॥ वरंब्रूहिमहाभागददामितवसुव्रत ॥ ९० ॥ इतिश्रुत्वावचोदेव्यादानवःप्रेमपू रितः ॥ प्रदक्षिणांप्रणामंचचकारत्वरितस्तदा ॥ ९१ ॥ दृष्ट्वारूपंमदीयंसप्रेमोत्फुल्लविलोचनः ॥ हर्षाश्रुपूर्णनयनस्तुष्टावसचमांतदा ॥ ९२ ॥ हयग्रीव उवाच ॥ नमोदेव्यैमहामायेसृष्टिस्थित्यन्तकारिणि ॥ भक्तानुग्रहचतुरेकामदेमोक्षदेशिवे ॥ ९३ ॥ धरांबुतेजःपवनखपंचानांचकारणम् ॥ त्वंगंधरसरू पाणांकारणंस्पर्शशब्दयोः ॥ ९४ ॥

कत्वमस्तितथाप्यागंतुकतामसीशक्तियोगादित्थंजातमितिभावः॥८३॥८४॥देवकार्यार्थसिद्ध्येइतियदुक्तंतदेवाऽऽह।अन्यच्चेति॥८५॥८६॥जपन्नेकाक्षरमिति ॥ अनेनचमायाबीजंभगवत्या मायाशबलब्रह्मरूपिण्यामुख्यमस्तीतरमंत्रापेक्षयेतिबोधितम्॥यथाचतारादिमंत्राःसामान्यब्रह्मवाचकाः॥इदंतंत्रविदांस्पष्टम्॥तस्मान्मायाबीजमेवमुख्यंशाक्तंरूपम्॥ एतदेवबोधयितुमत्रममे त्युक्तम्॥८७॥ध्यायन्मांतामसींशक्तिमिति॥यद्यपिमायाबीजस्यमायाशबलब्रह्मैवार्थोनतामसीशक्तिः तथाप्येतस्यमंत्रस्यसर्वात्मकत्वाद्दैत्यस्यचतामसत्वात्तामसींशक्तिमेवध्यात्वामायाबी जमेवजजापेत्यर्थः॥८८॥तामसंरूपमिति॥यद्यप्यहंसाम्प्रावस्थमायाशबलब्रह्मरूपिणीमायाबीजवाच्यातथापितस्यध्यानानुरोधेनैवमयापितामसंरूपंधृतमित्यर्थः॥तदेवस्पष्टयति। ध्यातंतत्ते नयादृशमिति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ धरांबुतेजइति ॥ धरापृथ्वीअंबुजलंतेजोऽग्निःपवनोवायुःखमाकाशएतेपञ्चपदार्थास्तेषांकारणम् ॥ ९४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥९५॥९६॥ ९७॥९८॥ ९९॥ हयग्रीवाच्चेति॥ हयग्रीवोजगतीतलेनैवास्तितथाचतस्मान्मृत्युर्याचितोपिनैवभविष्यतीतिगूढोऽभिसंधिर्दैत्यस्य ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ सपीडयतीति ॥ सदुष्टात्मापीडयिष्यतीत्यर्थः ॥ नतुयथाश्रुतोवर्तमानार्थःकर्तव्यःतथासतितस्मिन्दुष्टेदैत्येसतिदेवानांयज्ञादिकंतादृशदुष्टदैत्यपीडापरिज्ञानाभावश्चासंगतएवस्यात्भविष्यद्दैत्यकथाकथनेतु

घ्राणंचरसनाचक्षुस्त्वक्छ्रोत्रमिंद्रियाणिच ॥ कर्मेंद्रियाणिचान्यानित्वत्तःसर्वंमहेश्वरि ॥ ९५ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ किंतेऽभीष्टंवरंब्रूहिवांछितंयद्ददामितत् ॥ परितुष्टाऽस्मिभक्त्यातेतपसाचाऽद्भुतेनच ॥ ९६ ॥ हयग्रीवउवाच ॥ यथामेमरणंमातर्नभवेत्तत्तथाकुरु ॥ भवेयममरोयोगीतथाऽजेयःसुरासुरैः॥ ९७ ॥ देव्युवाच ॥ जातस्यहिध्रुवंमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ मर्यादाचेदृशीलोकेभवेच्चकथमन्यथा ॥ ९८ ॥ एवंत्वंनिश्चयंकृत्वामरणेराक्षसोत्तम ॥ वरवरय चेष्टंतेविचार्यमनसाकिल ॥ ९९ ॥ हयग्रीवउवाच ॥ हयग्रीवाच्चमेमृत्युर्नान्यस्माज्जगदंबिके ॥ इतिमेवांछितंकामंपूरयस्वमनोगतम् ॥ १०० ॥ देव्युवाच ॥ गृहंगच्छमहाभागकुरुराज्यंयथासुखम् ॥ हयग्रीवादृतेमृत्युर्नतेनूनंभविष्यति ॥ १ ॥ इतिदत्त्वावरंतस्माअंतर्धानंगतातदा ॥ मुदंपरमिकां प्राप्यसोपिस्वभवनंगतः ॥ २ ॥ सपीडयतिदुष्टात्मामुनीन्वेदांश्चसर्वशः ॥ नकोपिविद्यतेतस्यहंताऽद्यभुवनत्रये ॥ ३ ॥ तस्माच्छीर्षंहयस्यास्यसमुद्धृत्यमनोहरम् ॥ देहेऽत्रविशिरोविष्णोस्त्वष्टासंयोजयिष्यति ॥ ४ ॥ हयग्रीवोऽथभगवान्हनिष्यतितमासुरम् ॥ पापिष्ठंदानवंक्रूरंदेवानांहितकाम्यया ॥ ॥ ५ ॥ सूतउवाच ॥ एवंसुरांस्तदाभाष्यशर्वाणीविररामह ॥ देवास्तदातिसंतुष्टास्तमूचुर्देवशिल्पिनम् ॥ ६ ॥ देवाऊचुः ॥ कुरुकार्यंसुराणांवैविष्णोः शीर्षाभियोजनम् ॥ दानवप्रवरंदैत्यंहयग्रीवोहनिष्यति ॥ ७ ॥ सूतउवाच ॥ इतिश्रुत्वावचस्तेषांत्वष्टाचातित्वरान्वितः ॥ वाजिशीर्षंचकर्ताशुखड्गेन सुरसन्निधौ ॥ ८ ॥ विष्णोःशरीरेतेनाऽऽशुयोजितंवाजिमस्तकम् ॥ हयग्रीवोहरिर्जातोमहामायाप्रसादतः ॥ ९ ॥ कियतातेनकालेनदानवोमददर्पितः ॥ निहतस्तरसासंख्येदेवानांरिपुरोजसा ॥ ११० ॥ यइदंशुभमाख्यानंशृण्वंतिभुविमानवाः ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तास्तेभवंतिनसंशयः ॥१११॥ महामायाचरित्रंचपवित्रंपापनाशनम् ॥ पठतांशृण्वतांचैवसर्वसंपत्तिकारकम् ॥ ११२ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेहयग्रीवावतारकथनंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सौम्ययच्चत्वयाप्रोक्तंशौरेर्युद्धंमहार्णवे ॥ मधुकैटभयोःसार्धंपंचवर्षसहस्रकम् ॥ १ ॥

नकोपिदोषः॥३॥विशिरोविष्णोःविगतशिरस्कविष्णोर्देहेइत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ कियतेति॥एतत्कालादूर्ध्वंबहुकालेनदैत्यो (मददर्पितो) जातस्तेनदेवाउपद्रुताः ॥ ततो हयग्रीवेणनाशितइतिबोध्यम् ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ चतुर्भिराधिकैश्चत्वारिंशच्छ्लोकैरतःपरम् ॥मधुकैटभयोर्युद्धाद्योगःसम्यगुदीयते ॥ १ ॥ तत्रचतुर्थेऽध्यायेमधुकैटभाभ्यांसहपंचवर्षसहस्राणिबाहुयुद्धंमयाकृतामितिभगवतोपवर्णितंतत्प्रश्नबीजमुपलभ्यऋषयःपृच्छंति । सौम्ययच्चेति ॥ १ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कस्मादिति ॥ कस्मादुत्पन्नावित्यर्थः ॥ २ ॥ कथंतावसुराविति ॥ दानवापेक्षयाऽसुरावतिक्रूरौ ॥ इमौत्वसुरावेवनदानवौ ॥ दनोरनुत्पन्नत्वात्तथापिदानवसदृशत्वाद्दानवावित्युक्तम् ॥ ३॥४॥ ॥ ५ ॥ ६ ॥ इतःपरंपुराणवक्तुरुत्साहायश्रोतारःस्वोत्साहंप्रकटयंति।नतेषामिति ॥ ७ ॥ मृगाद्याइति।मृगाद्याअपिपशवइत्यर्थः ॥ तद्वत्फणिनोपीत्यर्थः॥८॥श्रवणदर्शनेइति ॥ पंचेंद्रियाणां मध्येश्रवणेंद्रियंदर्शनेंद्रियंचशुभंकल्याणकरमित्यर्थः ॥ तदेवाह।श्रवणादिति ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ सात्त्विकश्रवणस्यापित्रिविधंभेदमाह। सात्त्विकमिति ॥ १२ ॥ १३ ॥ राजसंश्रवण

कस्मात्तौदानवौजातौतस्मिन्नेकार्णवेजले ॥ महावीर्यौदुराधर्षौदेवैरपिसुदुर्जयौ ॥ २ ॥ कथंतावसुरौजातौकथंचहरिणाहतौ ॥ तदाचक्ष्वमहाप्राज्ञचरितं परमाद्भुतम् ॥ ३ ॥ श्रोतुकामावयंसर्वेत्वंवक्ताचबहुश्रुतः ॥ दैवाच्चात्रैवसंजातःसंयोगश्चतथावयोः ॥ ४ ॥ मूर्खेणसहसंयोगोविषादपिसुदुर्जरः ॥ विज्ञेनसहसंयोगःसुधारससमःस्मृतः ॥ ५ ॥ जीवंतिपशवःसर्वेखादंतिमेहयंतिच ॥ जानंतिविषयाकारंव्यवायसुखमद्भुतम् ॥ ६ ॥ नतेषांसदसज्ज्ञानंविवेकोनचमोक्षदः ॥ पशुभिस्तेसमाज्ञेयायेषांनश्रवणादरः ॥ ७ ॥ मृगाद्याःपशवःकेचिज्जानंतिश्रावणंसुखम् ॥ अश्रोत्राःफणिनश्चैवमुमुहुर्नादपानतः ॥ ८ ॥ पंचानामिंद्रियाणांवैशुभेश्रवणदर्शने ॥ श्रवणाद्वस्तुविज्ञानंदर्शनाच्चित्तरंजनम् ॥ ९ ॥ श्रवणंत्रिविधंप्रोक्तंसात्त्विकंराजसंतथा ॥ तामसंच महाभागाःसुज्ञोक्तंनिश्चयान्वितम् ॥ १० ॥ सात्त्विकंवेदशास्त्रादिसाहित्यंचैवराजसम् ॥ तामसंयुद्धवार्ताचपरदोषप्रकाशनम् ॥ ११ ॥ सात्त्विकंत्रिविधं प्रोक्तंप्रज्ञावद्भिश्चपंडितैः ॥ उत्तमंमध्यमंचैवतथैवाधममित्युत ॥ १२ ॥ उत्तमंमोक्षफलदंस्वर्गदंमध्यमंतथा ॥ अधमंभोगदंप्रोक्तंनिर्णीयविदितंबुधैः ॥ १३ ॥ साहित्यंचैवत्रिविधंस्वीयायांचोत्तमंस्मृतम् ॥ मध्यमंवारयोषायांपरोढायांतथाऽधमम् ॥ १४ ॥ तामसंत्रिविधंज्ञेयंविद्वद्भिःशास्त्रदर्शिभिः ॥ आततायिनि युद्धंयत्तदुत्तममुदाहृतम् ॥ १५ ॥ मध्यमंचापिविद्वेषात्पांडवानांयथारिभिः ॥ अधमंनिर्निमित्तंतुविवादेकलहेतथा ॥ १६ ॥ तदत्रश्रवणंमुख्यंपुराणस्यमहामते ॥ बुद्धिप्रवर्धनंपुण्यंततःपापप्रणाशनम् ॥ १७ ॥ तदाख्याहिमहाबुद्धेकथांपौराणिकींशुभाम् ॥ श्रुतांद्वैपायनात्पूर्वंसर्वार्थस्यप्रसाधिनीम् ॥ १८ ॥ सूतउवाच ॥ यूयंधन्यामहाभागाधन्योऽहंपृथिवीतले ॥ येषांश्रवणबुद्धिश्चममापिकथनेकिल ॥ १९ ॥ पुराचैकार्णवेजातेविलीनेभुवनत्रये ॥ शेषपर्यंकसुप्तेचदेवदेवेजनार्दने ॥ २० ॥ विष्णुकर्णमलोद्भूतौदानवौमधुकैटभौ ॥ महाबलौचतौदैत्यौविवृद्धौसागरेजले ॥ २१ ॥

मापित्रिविधमाह ॥ नवरसात्मकःशृंगारइत्यर्थः । उत्तममिति ॥ परस्त्रीगमनजन्यदोषाभावात् ॥ मध्यममिति ॥ तत्रस्वल्पदोषात् ॥ अधममिति ॥ दोषबहुत्वात् ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ १६ ॥ तदत्रश्रवणंमुख्यमिति । सात्त्विकश्रवणभेदत्रयमध्येऽपिमुख्यंप्रथमंमोक्षप्रदम् ॥ यदुक्तंसात्त्विकंश्रवणंतदात्मकंपुराणश्रवणमस्तीत्यर्थः ॥ बुद्धिप्रवर्धनमिति॥सूक्ष्मात्मरूपवस्तुविषयकबुद्धेःप्रवर्धनंकारणमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ पुरेति ॥ अवांतरप्रलयेइत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २२॥भ्रातराविवेति ॥ एकोदरजन्यत्वाभावान्नमुख्यौभ्रातरौकिंतुपरस्परप्रेम्णाभ्रातृतुल्यावित्यर्थः ॥ तौचिंतामवापतुर्विचारंचक्रतुरित्यर्थः ॥ तमेवविचारमाह। नाकारणमिति ॥ कारणंविनाकार्यंनैव भवतीत्यर्थः॥२३॥२४॥केनसृष्टामिति निमित्तकारणप्रश्नः।कथंजातमित्युपादानकारणप्रश्नः॥जलेस्थिताविति ॥ अत्रकथमितिशेषः ॥ २५ ॥ आवांवेति ॥ अत्राप्युभयकारणप्रश्नः ॥ २६ ॥ २७ ॥ शक्तिर्महाबलेति। सर्वेपिजलेनिमज्जंतिवयंतुननिमग्नास्तत्रकारणंकाश्चिच्छक्तिविशेषःकल्प्यः॥ तथाचएकत्रव्याप्त्याबाधकाभावेनान्यत्रापितादृशशक्तेरेवका

क्रीडमानौस्थितौतत्रविचरतावितस्ततः ॥ तावेकदामहाकायौक्रीडासक्तौमहार्णवे ॥ २२ ॥ चिंतामवापतुश्चित्तेभ्रातराविवसंस्थितौ ॥ नाकारणंभवेत्कार्यंसर्वत्रैषापरंपरा ॥ २३ ॥ आधेयंतुविनाधारंनतिष्ठतिकथंचन ॥ आधाराधेयभावस्तुभातिनोचित्तगोचरः ॥ २४ ॥ क्वतिष्ठतिजलंचेदंसुखरूपंसुविस्तरम् ॥ केनसृष्टंकथंजातंमग्नावावांजलेस्थितौ ॥ २५ ॥ आवांवाकथमुत्पन्नौकेनवोत्पादितावुभौ ॥ पितरौकेतिविज्ञानंनास्तिकामंतथावयोः ॥ २६ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ एवंकामयमानौतौजग्मतुर्नविनिश्चयम् ॥ उवाचकैटभस्तत्रमधुंपार्श्वेस्थितंजले ॥ २७ ॥ कैटभउवाच ॥ मधोवामत्रसलिलेस्थातुंशक्तिर्महाबला ॥ वर्ततेभ्रातरचलाकारणंसाहिमेमता ॥ २८ ॥ तयाततमिदंतोयंतदाधारंचतिष्ठति ॥ साएवपरमादेवीकारणंचतथावयोः ॥ २९ ॥ एवंविबुध्यमानौतौचिंताविष्टौयदाऽसुरौ ॥ तदाकाशेश्रुतंताभ्यांवाग्बीजंसुमनोहरम् ॥ ३० ॥ गृहीतंचततस्ताभ्यांतस्याभ्यासोदृढःकृतः ॥ तदासौदामनीदृष्टाताभ्यांखेचोत्थिताशुभा ॥ ३१ ॥ ताभ्यांविचारितंतत्रमंत्रोयंनात्रसंशयः ॥ तथाध्यानमिदंदृष्टंगगनेसगुणंकिल ॥ ३२ ॥ निराहारौजितात्मानौतन्मनस्कौसमाहितौ ॥ बभूवतुर्विचिंत्यैवंजपध्यानपरायणौ ॥ ३३ ॥ एवंवर्षसहस्रंतुताभ्यांतप्तंमहत्तपः ॥ प्रसन्नापरमाशक्तिर्जातासापरमातयोः ॥ ॥ ३४ ॥ खिन्नौतौदानवौदृष्ट्वातपसेकृतनिश्चयौ ॥ तयोरनुग्रहार्थायवागुवाचाशरीरिणी ॥ ३५ ॥ वरंवांवांछितंदैत्यौब्रूतंपरमसंमतम् ॥ ददामिपरितुष्टास्मियुवयोस्तपसाकिल ॥ ३६ ॥ सूतउवाच ॥ इतिश्रुत्वातुतांवाणींदानवावूचतुस्तदा ॥ स्वेच्छयामरणंदेविवरंनौदेहिसुव्रते ॥ ३७ ॥ वागुवाच ॥ वांछितंमरणंदैत्यौभवेद्वांमत्प्रसादतः ॥ अजेयौदेवदैत्यैश्चभ्रातरौनात्रसंशयः ॥ ३८ ॥ सूतउवाच ॥ इतिदत्तवरौदेव्यादानवौमददर्पितौ ॥ चक्रतुःसागरेक्रीडांयादोगणसमन्वितौ ॥ ३९ ॥ कालेनकियताविप्रादानवाभ्यांयदृच्छया ॥ दृष्टःप्रजापतिर्ब्रह्मापद्मासनगतःप्रभुः ॥ ४० ॥

रणत्वकल्पनेननिर्वाहेकारणांतरगवेषणोपयोगाभावात्सैवशक्तिरस्माकमपिकारणमितिभावः ॥ २८ ॥ तदेवस्पष्टयति। तयाततमिति ॥ २९ ॥ ३० ॥ गृहीतमिति ॥ उपदेशतयास्वीकृतमित्यर्थः ॥ अभ्यासोजपरूपः। सौदामनीति ॥ जप्तोमंत्रएवतेजोरूपेणदृष्टिगोचरोऽभूदित्यर्थः ॥ ३१ ॥ ध्यानमिति ॥ पाशांकुशपुस्तकाक्षमालाधरंसरस्वतीध्यानमित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ वांछितमिति ॥ स्वेच्छयेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४१ ॥ यदिनिर्बलस्तार्हिशुभमासनामिदंकातिदूरामित्यर्थः॥४२॥४३॥४४॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥ ॥पंचाशद्भिरतःश्लोकैःपद्मजस्तुपरांविकाम्॥मधुकैटभ योर्भीत्यातुष्टावेतिनिगद्यते ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥ नूनंशक्तिसमाक्रांतइति ॥यद्ययंस्वतंत्रःस्यात्तर्हिजागृयादेव नचजागर्ति तस्मा

दृष्ट्वातुमुदितावास्तांयुद्धकामौमहाबलौ ॥ तमूचतुस्तदातत्रयुद्धंनौदेहिसुव्रत ॥ ४१ ॥ नोचेत्पद्मंपरित्यज्यथेष्टंगच्छमाचिरम् ॥ यदित्वंनिर्बलश्चा सिक्रयोग्यंशुभमासनम् ॥ ४२ ॥ वीरभोग्यमिदंस्थानंकातरोसित्यजाऽऽशुवै ॥ तयोरितिवचःश्रुत्वाचिंतामापप्रजापतिः ॥ ४३ ॥ दृष्ट्वाचबलिनौवी रौकिंकरोमीतितापसः ॥ चिंताविष्टस्तदातस्थौचिंतयन्मनसातदा ॥ ४४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ तौवीक्ष्यबलिनौब्रह्मातदोपायानचिंतयत् ॥ सामदानभिदादींश्चयुद्धांतान्सर्वतंत्रवित् ॥ १ ॥ नजानेऽहंबलंनूनमेतयोर्वायथातथम् ॥ अज्ञातेतुबलेकामंनैवयुद्धंप्रशस्यते ॥ २ ॥ स्तुतिंकरोमिचेदद्यदुष्टयोर्मदमत्तयोः ॥ प्रकाशितंभवेन्नूनंनिर्बलत्वंमयास्वयम् ॥ ३ ॥ वधिष्यतितदैकोपि निर्बलत्वेप्रकाशिते ॥ दानंनैवाद्ययोग्यंवाभेदःकार्योमयाकथम् ॥ ४ ॥ विष्णुंप्रबोधयाम्यद्यशेषेसुप्तंजनार्दनम् ॥ चतुर्भुजंमहावीर्यंदुःखहासभविष्य ति ॥ ५ ॥ इतिसंचिंत्यमनसापद्मनालगतोऽब्जजः ॥ जगामशरणंविष्णुंमनसादुःखनाशकम् ॥ ६ ॥ तुष्टाववोधनार्थंतंशुभैःसंबोधनैर्हरिम् ॥ नारा यणंजगन्नाथंनिस्पंदंयोगनिद्रया ॥ ७ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ दीननाथहरेविष्णोवामनोत्तिष्ठमाधव ॥ भक्तार्तिहृद्धृषीकेशसर्वावासजगत्पते ॥ ८ ॥ अंतर्यामि न्नमेयात्मन्वासुदेवजगत्पते ॥ दुष्टारिनाशनैकाग्रचित्तचक्रगदाधर ॥ ९ ॥ सर्वज्ञसर्वलोकेशसर्वशक्तिसमन्वित ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठदेवेशदुःखनाशनपाहि माम् ॥ १० ॥ विश्वंभरविशालाक्षपुण्यश्रवणकीर्तन ॥ जगद्योनेनिराकारसर्गस्थित्यंतकारक ॥ ११ ॥ इमौदैत्यौमहाराजहंतुकामौमदोद्धतौ ॥ नजा नास्यखिलाधारकथंमांसंकटेगतम् ॥ १२ ॥ उपेक्षसेऽतिदुःखार्तंयदिमांशरणंगतम् ॥ पालकत्वंमहाविष्णोनिराधारंभवेत्ततः ॥ १३ ॥ एवंस्तुतोपि भगवान्नबुबोधयदाहरिः ॥ योगनिद्रासमाक्रांतस्तदाब्रह्माद्यचिंतयत् ॥ १४ ॥ नूनंशक्तिसमाक्रांतोविष्णुर्निद्रावशंगतः ॥ जजागारनधर्मात्माकिंक रोम्यद्यदुःखितः ॥ १५ ॥ हंतुकामावुभौप्राप्तौदानवौमदगर्वितौ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिनास्तिमेशरणंक्वचित् ॥ १६ ॥ इतिसंचिंत्यमनसानिश्च यंप्रतिपद्यच ॥ तुष्टावयोगनिद्रांतामेकाग्रहृदयस्थितः ॥ १७ ॥

त्परवशएवायंनमुख्यईश्वरःपरश्चात्राविलक्षणशक्तिरूपःकल्प्यः॥सर्वत्रकारणापरिज्ञानेशक्तेरेवकारणत्वस्यकल्पनादितिनिश्चयेनायंशक्तिसमाक्रांतइत्यर्थः ॥१५॥१६॥ निश्चयंप्रतिपद्यचेति परशक्त्यैवायंवशीकृतइतिनिश्चयंकृत्वातामेवपरांशक्तियोगनिद्रारूपांयोगनिद्राविशिष्टचैतन्यरूपांतुष्टावेत्यर्थः।नह्यन्यथाचैतन्यसत्तांविहाययोगनिद्रायाःस्वतःसत्तासंभवतितस्याःसदसद्विल

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





क्षणत्वात्॥१७॥तदेवाह।विचार्येति॥१८॥१९॥२०॥२१॥सिंधुजायाइति॥सिंधुजालक्ष्मीस्तस्याअपियदायंवशेवर्तते तदायोगनिद्रावशेवर्ततेइत्यत्रकिमाश्चर्यमितिभावः ॥२२॥ वशेप्यस्या इति॥केषामप्यस्माकंनस्वातंत्र्यम्॥अभीष्टोद्योगेनानभीष्टस्यजायमानत्वात्॥२३॥२४॥घटयिष्यतीति॥युद्धेउद्योगंकरिष्यतीत्यर्थः ॥२५॥२६॥सकलवेदवचोभिरिति॥अजामेकांलोहितशु क्लकृष्णांबह्वींप्रजांजनयंतींसरूपामिति॥मायावाएषानारसिंहीसर्वमिदंसृजति सर्वमिदंरक्षति सर्वमिदंसंहरतितस्मान्मायामेतांशक्तिंविद्यादिति॥सर्वेवैदेवादेवीमुपतस्थुः ॥ कासित्वंमहादेवि ॥ साब्रवीदहंब्रह्मरूपिणीमत्तःप्रकृतिपुरुषात्मकंजगदित्यादिवेदवाक्यैरित्यर्थः॥प्रत्यक्षमप्यत्रप्रमाणमित्याह।यद्विष्णोरपीति ॥ सकलदेववरोविवेकवानपिविष्णुर्यद्यस्मान्निद्रावशंगमितःप्रापित

विचार्यमनसाप्येवंशक्तिर्मेरक्षणेक्षमा ॥ ययाह्यचेतनोविष्णुःकृतोस्तिरस्पंदवर्जितः ॥ १८ ॥ व्यसुर्यथानजानातिगुणाञ्छब्दादिकानिह ॥ तथाहरिर्नजानातिनिद्रामीलितलोचनः ॥ १९ ॥ नजहातियतोनिद्रांबहुधासंस्तुतोप्यसौ ॥ मन्येनास्यवशेनिद्रानिद्रयायंवशीकृतः ॥ २० ॥ योयस्यवशमापन्नःसतस्यकिंकरःकिल ॥ तस्माच्चयोगनिद्रेयंस्वामिनीमापतेर्हरेः ॥ २१ ॥ सिंधुजायाअपिवशेययास्वामीवशीकृतः ॥ नूनंजगदिदंसर्वंभगवत्यावशीकृतम् ॥ २२ ॥ अहंविष्णुस्तथाशंभुःसावित्रीचरमाप्युमा ॥ सर्वेवयंवशेप्यस्यानात्रकिंचिद्विचारणा ॥ २३ ॥ हरिरप्यवशःशेतेयथाऽन्यःप्राकृतोजनः ॥ ययाभिभूतःकावार्ताकिलान्येषांमहात्मनाम् ॥ २४ ॥ स्तौम्यद्ययोगनिद्रांवैययामुक्तोजनार्दनः ॥ घटयिष्यतियुद्धेचवासुदेवःसनातनः ॥ २५ ॥ इतिकृत्वामतिंब्रह्मापद्मनालास्थितस्तदा ॥ तुष्टावयोगनिद्रांतांविष्णोरंगेषुसंस्थिताम् ॥ २६ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ देवित्वमस्यजगतःकिलकारणंहिज्ञातंमयासकलवेदवचोभिरंब ॥ यद्विष्णुरप्यखिललोकविवेककर्तानिद्रावशंचगमितः पुरुषोत्तमोऽद्य ॥ २७ ॥ कोवेदतेजननिमोहविलासलीलांमूढोस्म्यहंहरिरयंविवशश्चशेते ॥ ईदृक्तयासकलभूतमनोनिवासेविद्वत्तमोविबुधकोटिषुनिर्गुणायाः ॥ २८ ॥ सांख्यावदंतिपुरुषंप्रकृतिंचयांतांचैतन्यभावरहितांजगतश्चकर्त्रीम् ॥ किंतादृशाऽसिकथमत्रजगन्निवासश्चैतन्यताविरहितोविहितस्त्वयाऽद्य ॥ २९ ॥

स्त्वया॥तस्मात्तवकारणतायांकःसंदेहइत्यर्थः ॥२७॥ कोवेदेति॥हेजननिसकलभूतमनोनिवासेंऽतर्यामिरूपिणियस्मात्कारणादहंविष्णुःशिवश्चैतेवयंसर्वेदेववरिष्ठाःस्मोऽथापिअहंमूढोऽधुनैवास्मिविष्णुश्चत्वदधीनःशेते॥वयमेतादृशाअपितवमोहस्यविलासरूपांलीलांनजानीमो मोहितत्वात् ॥ तस्मादस्मदपेक्षयाविबुधकोटिषुमध्येविद्वत्तमःपंडितोनिर्गुणायास्तवमोहविलासलीलामीदृक्तयाकोवेदनकोपीत्यर्थः॥२८॥ननुसांख्यामांजडेतिवदंतितदाजडायाममप्रार्थनेकिंफलमितिचेत्तत्राह।सांख्याइति॥चैतन्यभावश्चैतन्यसत्तातद्रहितामित्यर्थः॥त्रिगुणंप्रधानंस्वतंत्रंजडामितितेषांसिद्धांतः ॥ यद्यपितेवदंतितथापित्वंकिंतादृशासिनैवतादृश्यसीत्यर्थः ॥ कुतइतिचेत् यदित्वंजडापरतंत्रातदासर्वेश्वरोविष्णुस्त्वयाचैतन्यताविरहितःकथंविहितः ॥ नहींद्रजालमिन्द्रजालकर्तुर्व्यामोहकंनवांधकारःप्रकाशनाशकरः ॥ तस्मात्त्वंनजडापरतंत्रावाकिंतुब्रह्मविष्ण्वाद्युत्पादकमायाविशिष्टस्वतंत्रचैतन्यरूपेत्यर्थः ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ननुतर्हितेसांख्याःकिमितितथावर्णयंतीतिचेत्तवस्वरूपापरिज्ञानादित्याह । नाव्यमिति ॥ यांमुनिगणाःसंध्येतिनामपरिकल्प्यगुणांस्तादृशानेवोत्तमान्परिकल्प्यनियतंत्रिकालंध्यायंतिसाहे भवानित्वंसगुणागुणत्रयविशिष्टाविविधप्रकारमनेकप्रकारंनाव्यंतनोषि यथाजडाद्गोमयादेरपिवृश्चिकादीनामुत्पत्तिः॥ तथाचेतनात्पुरुषादेरपिजडानांकेशनखादीनामुत्पत्तिस्तदनुभूयकोपि पुरुषोजडाद्वाचेतनाद्वाजगद्भवतीतिनिश्चयमप्राप्यतवयत्कृत्यंजगत्सर्जनादिकंतस्यविधानंकारणंतस्मिन्योगःसंबंधस्तवचैतन्यरूपस्यास्तितंयोगंनवेत्तिनजानाति मोहितत्वात् । अतोऽन्यथा वर्णनंकुर्वंतीतिभावः ॥ ३० ॥ किंचसर्वत्रबुद्ध्यादिरूपात्वमेवासितस्माद्यस्मिन्पुरुषेयथाबुद्ध्यादिरूपेणातिष्ठसितथासव्यवहारंकरोतिनतस्यापराधःकश्चिदस्तीत्याह । बुद्धिर्हीति ॥ बोध करणाज्ञानकरणा ॥ ३१ ॥ ननुयथातेषांमतान्यययथार्थानितथातवापिमतंकिंनस्यादितिचेत्तत्राऽह । नातःपरमिति ॥ यद्यस्मादिहदुःखगतिंगतेनदुःखमार्गप्राप्तेनमयानिद्रालुतांवितरतास्वी कुर्वताहरिणाहेतुनात्वंमायाशवलब्रह्मरूपासर्वजगतांजननीतिसत्यंदृष्टंप्रत्यक्षंदृष्टम् ॥ अतःपरमस्मादधिकंवितर्कशतैरनेकावितर्कैर्निष्पन्नंप्रमाणमनुमानादिकंनप्राप्तं तस्मात्प्रत्यक्षस्यप्रबल

नाव्यंतनोषिसगुणाविविधप्रकारंनोवेत्तिकोपितवकृत्यविधानयोगम् ॥ ध्यायंतियांमुनिगणानियतंत्रिकालंसंध्येतिनामपरिकल्प्यगुणान्भवानि ॥ ३० ॥ बुद्धिर्हिबोधकरणाजगतांसदात्वंश्रीश्चासिदेविसततंसुखदासुराणाम् ॥ कीर्तिस्तथामतिधृतीकिलकांतिरेवश्रद्धारतिश्चसकलेषुजनेषुमातः ॥ ३१ ॥ नातः परंकिलवितर्कशतैःप्रमाणंप्राप्तंमयायदिहदुःखगतिंगतेन ॥ त्वंचात्रसर्वजगतांजननीतिसत्यंनिद्रालुतांवितरताहरिणाऽत्रदृष्टम् ॥ ३२ ॥ त्वंदेविवेदविदुषा मपिदुर्विभाव्यावेदोपिनूनमखिलार्थतयानवेद ॥ यस्मात्त्वदुद्भवमसौश्रुतिराप्नुवानाप्रत्यक्षमेवसकलंतवकार्यमेतत् ॥ ३३ ॥ कस्तेचरित्रमखिलंभुविवेद धीमान्नाहंहरिर्नचभवोनसुरास्तथान्ये ॥ ज्ञातुंक्षमाश्चमुनयोनममात्मजाश्चदुर्वाच्यएवमहिमातवसर्वलोके ॥ ३४ ॥ यज्ञेषुदेवियदिनामनतेवदंतिस्वाहेति वेदविदुपोहवनेकृतेपि ॥ नप्राप्नुवंतिसततंमखभागधेयंदेवास्त्वमेवविबुधेष्वपिवृत्तिदासि ॥ ३५ ॥ त्रातावयंभगवतिप्रथमंत्वयावैदेवारिसंभवभयादधुना तथैव ॥ भीतोस्मिदेविवरदेशरणंगतोस्मिघोरंनिरीक्ष्यमधुनासहकैटभंच ॥ ३६ ॥

त्वान्मन्मतमेवमुख्यंनह्यन्यथासर्वेश्वरोजडयास्वतंत्रयाबद्धःस्यादिति ॥ ३२ ॥ अहमेवजानामिनान्योजानातीतिमयाभक्तिवशेनोच्यते वस्तुतस्तुतवरूपंवेदाअपिनजानांति। तत्रममकाकथे त्याह त्वंदेवीति ॥ यतोवेदोपिनूनमखिलार्थतयाऽखिलरूपेणसर्वस्वरूपेणनवेदेत्यर्थः ॥ कुतोनवेदेतिचेत्तत्राह यस्मात्कारणाच्छ्रुतिस्त्वदुद्भवंत्वत्तउद्भवंजन्मआप्नुवानाप्राप्तवतीत्यनंतरंजाय मानाकथंत्वद्रूपंजानीयान्नकथमपीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ अर्वाग्देवाअस्यावसर्जनेनाथाः कोवेदयतआबभूवेति ॥ यतोवाचोनिवर्तंतेअप्राप्यमनसासहेति ॥ ननुश्रुतिर्देवीतउद्भूतेत्यत्रार्कि प्रमाणंतत्राऽऽह । प्रत्यक्षमेवेति ॥ सर्वद्वैतजातंत्वत्तएवोद्भूतंततस्तदंतःपातिनोवेदाःकिंत्वत्तोनोद्भूताअपितूद्भूताइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः वेदोहमवेदोहमितिदेव्यथर्वशिरासि ॥ अस्यमहतोभूत स्यनिःश्वसितमेतद्यदृग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदोऽथर्ववेदइत्यादि ॥ ३३ ॥ वेदाअपिनजानांतितदान्यःकोवेदेत्याह।कस्तेचरित्रमिति ॥ ३४ ॥ अधुनादेवानांजीवनंतवैकदेशस्वाहाशक्त्यधीनामि त्याह । यज्ञेष्विति ॥ ३५ ॥ त्रातावयमिति ॥ पूर्वकल्पेरक्षिताइत्यर्थः ॥ मधुकैटभयुद्धस्यब्रह्मोत्पत्तिसमयेजायमानत्वादेतयोःपूर्वमन्यदेत्यस्याश्रुतत्वाच्च ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३७ ॥ यदिमादेच्छयैवसर्वंजायतेतर्हिसर्वेजनामांकुतोनभजंतितत्राह।जानंतियेनतवेति॥हेदेवि तवप्रभावंयेनजानंतितेऽन्यान्भजंति॥ तेमूढाचित्ताएवततस्तैरनादृतेपिवस्तुनिनाहिबुद्धिमता मेनादरोभवति ॥ अहंतुप्रमाणतस्त्वामेवसर्वोत्कृष्टांजानामि ॥ किंतत्रप्रमाणंतदाह यद्विष्णुरपीति ॥ बुद्धिमंतस्त्वांभजंत्येवेतिभावः ॥ ३८ ॥ सिंधूद्भवालक्ष्मीरपित्वयावशीकृतंनवो धयितुंशक्ता ॥ किंचसापित्वयावशीकृतैवयतःसाविष्णोःशक्तिरस्तिततएवसानबुबुधेबोधंप्राप्तवती ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ सृष्ट्वेति ॥ नाशितुमिच्छानास्तिचेन्मौनंपरि

नोवेत्तिविष्णुरधुनाममदुःखमेतज्जानेत्वयात्मविवशीकृतदेहयष्टिः ॥ मुंचादिदेवमथवाजहिदानवेंद्रौयद्रोचतेतवकुरुष्वमहानुभावे ॥ ३७ ॥ जानंतियेनत वदेविपरंप्रभावंध्यायंतितेहरिहरावपिमंदचित्ताः ॥ ज्ञातंमयाद्यजननिप्रकटंप्रमाणंयद्विष्णुरप्यतितरांविवशोऽथशेते ॥ ३८ ॥ सिंधूद्भवापिनहरिंप्रतिवो धितुंवैशक्तापतिंतववशानुगमद्यशक्त्या ॥ मन्येत्वयाभगवतिप्रसभंरमापिप्रस्वापितानबुबुधेविवशीकृतेव ॥ ३९ ॥ धन्यास्तएवभुविभक्तिपरास्तवांघ्रौ त्यक्त्वान्यदेवभजनंत्वयिलीनभावाः ॥ कुर्वंतिदेविभजनंसकलंनिकामंज्ञात्वासमस्तजननींकिलकामधेनुम् ॥ ४० ॥ धीकांतिकीर्तिशुभवृत्तिगुणादयस्ते विष्णोर्गणास्तुपरिहृत्यगताःक्वचाऽद्य ॥ वंदीकृतोहरिरसौननुनिद्रयाऽत्रशक्त्यातवैवभगवत्यतिमानवत्याः ॥ ४१ ॥ त्वंशक्तिरेवजगतामखिलप्रभावात्व न्निर्मितंचसकलंखलुभावमात्रम् ॥ त्वंक्रीडसेनिजविनिर्मितमोहजालेनाद्येयथाविहरतेस्वकृतेनटोवै ॥ ४२ ॥ विष्णुस्त्वयाप्रकटितःप्रथमंयुगादौदत्ताचश क्तिरमलाखलुपालनाय ॥ त्रातंचसर्वमखिलंविवशीकृतोद्ययद्रोचतेतवतथाऽवकरोषिनूनम् ॥ ४३ ॥ सृष्ट्वात्रमांभगवतिप्रविनाशितुंचेन्नेच्छास्तितेकुरुद यांपरिहृत्यमौनम् ॥ कस्मादिमौप्रकटितौकिलकालरूपौयद्वाभवानिहसितुंनुकिमिच्छसेमाम् ॥ ४४ ॥ ज्ञातंमयातवविचेष्टितमद्भुतंवैकृत्वाखिलंजगदि दंरमसेस्वतंत्रा ॥ लीनंकरोषिसकलंकिलमांतथैवहंतुंत्वमिच्छसिभवानिकिमत्रचित्रम् ॥ ४५ ॥ कामंकुरुष्ववधमद्यममैवमातर्दुःखंनमेमरणजंजगदंबिके त्र ॥ कर्तात्वयैवविहितःप्रथमंसचायंदैत्याहतोथमृतइत्ययशो गरिष्ठम् ॥ ४६ ॥ उत्तिष्ठदेविकुरुरूपमिहाद्भुतंत्वंमांवात्विमौजहियथेच्छसिबालललिले ॥ नोचेत्प्रबोधयहरिंनिहनेदिमौयस्त्वत्साध्यमेतदखिलंकिलकार्यजातम् ॥ ४७ ॥

हृत्यदयांकुर्वित्यन्वयः ॥ इमौदैत्यौकस्मात्कारणात्प्रकटितौइतिनजानेइतिशेषः ॥ स्वयमेवोत्प्रेक्षते । यद्वेति ॥ मांहसितुंकिमिच्छसेततएतावुत्पादितौवा ॥ ४४ ॥ यदिमांहंतुमेतावुत्पादितौ तर्हिमहान्प्रतापस्तवमशकवधेगजस्येवेत्याह।ज्ञातमिति ॥ ४५ ॥ किंचकाममिति ॥ यदिममवधार्थमेवोत्पादितावेतौतर्हिमातरद्यैवकामंयथेष्टममवधंकुरुष्वमेमरणजंदुःखंनैवास्ति किंतुत्वयैवयः प्रथमंजगतःकर्ताविहितोथसएवायंदैत्याहतोमृतइदंगरिष्ठमयशस्तवभवति इदमेवमहद्दुःखकरमितिभावः ॥ ४६ ॥ उत्तिष्ठेति ॥ हेदेविबालललिलेकोमलललिलेउत्तिष्ठ इहाद्भुतंरूपंभयंकररूपंकुरु॥ कृत्वाचमद्वधेच्छायद्यस्तितर्हिस्वहस्तेनैवमद्वधंकुरुनदैत्यहस्तेनाथवाइमौदैत्यौवाजाहि ॥ उभयमपिनकरोषिचेद्धरिंप्रबोधयसइमौनिहनेदिदंसर्वकार्यजातंतवसाध्यंभवति ॥ ४७ ॥ ॥ छ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तामसीनिद्राभिमानिनीत्यर्थः॥तदुक्तंशिवपुराणेउमासंहितायाम्॥ब्रह्मणासंस्तुतासेयंमधुकैटभनाशने ॥ महाविद्याजगन्मातासर्वविद्याधिदेवता॥द्वादश्यांफाल्गुनस्यैवशुक्लायांसमभून्नृपेति ॥ अस्यामेवतिथौ सारस्वतस्तुद्वादश्यांशुक्लायांफाल्गुनस्यच॥कल्पःसमभवदितिहेमाद्रिधृतनागरखंडवचनात्सारस्वतस्यकल्पस्योत्पत्तिःसएवसरस्वत्याअयमितिव्युत्पत्त्यासारस्वतकल्पप्रादुर्भावोव्यासेनात्रस्पष्टीकृतोवेदितव्यइति॥४८॥४९॥विस्पंदितशरीरःकंपितशरीरः॥५०॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहा०प्रथमस्कंधेसप्तमोऽध्यायः॥७॥पंचाशत्पद्यकैरेकोत्तरैःसंरंभतोधुना॥अध्यायेत्वष्टमेप्रोक्तःसम्यगाराध्यानिर्णयः ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेपरशक्त्याविष्णुःसर्वेश्वरोपिविवशीकृतइतिश्रुत्वाऋषयःपृच्छंति संदेहोत्रेति ॥ अत्रसंदेहशब्दोलक्षणयाऽऽश्चर्यपरस्तदेवाहवेदेति॥१॥२॥

॥ सूतउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीतामसीतत्रवेधसा ॥ निःसृत्यहरिदेहात्तुसंस्थितापार्श्वतस्तदा ॥ ४८ ॥ त्यक्तांऽगानिचसर्वाणिविष्णोरतुलतेजसः ॥ निर्गतायोगनिद्रासानाशायचतयोस्तदा ॥ ४९ ॥ विस्पंदितशरीरोसौयदाजातोजनार्दनः ॥ धातापरमिकांप्राप्तोमुदंदृष्ट्वाहरिंततः ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेविष्णुप्रबोधोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ छ ॥ ऋषयऊचुः ॥ संदेहोत्रमहाभागकथायांतुमहाद्भुतः ॥ वेदशास्त्रपुराणैश्चनिश्चितंतुसदाबुधैः ॥ १ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चत्रयोदेवाःसनातनाः ॥ नातःपरतरंकिंचिद्ब्रह्मांडेऽस्मिन्महामते ॥ २ ॥ ब्रह्मासृजतिलोकान्वैविष्णुःपात्यखिलंजगत् ॥ रुद्रःसंहरतेकालेत्रयएतेऽत्रकारणम् ॥ ३ ॥ एकामूर्तिस्त्रयोदेवाब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ रजःसत्त्वतमोभिश्चसंयुताःकार्यकारकाः ॥ ४ ॥ तेषांमध्येहरिःश्रेष्ठोमाधवःपुरुषोत्तमः ॥ आदिदेवोजगन्नाथःसमर्थःसर्वकर्मसु ॥ ५ ॥ नान्यःकोपिसमर्थोस्तिविष्णोरतुलतेजसः ॥ सकथंस्वापितःस्वामीविवशोयोगमायया ॥ ६ ॥ क्वगतंतस्यविज्ञानंजीवतश्चेष्टितंकुतः ॥ संदेहोऽयंमहाभागकथयस्वयथाशुभम् ॥ ७ ॥ कासाशक्तिःपुराप्रोक्तायथाविष्णुर्जितःप्रभुः ॥ कुतोजाताकथंशक्ताकाशक्तिर्वदसुव्रत ॥८॥ यस्तुसर्वेश्वरोविष्णुर्वासुदेवोजगद्गुरुः ॥ परमात्मापरानंदःसच्चिदानंदविग्रहः ॥९॥ सर्वकृत्सर्वभृत्स्रष्टाविरजःसर्वगःशुचिः ॥ सकथंनिद्रयानीतःपरतंत्रःपरात्परः ॥ १० ॥ एतदाश्चर्यभूतोहिसंदेहोनःपरंतप ॥ छिंधिज्ञानासिनासूतव्यासशिष्यमहामते ॥ ११ ॥ सूतउवाच ॥ कःसंदेहंछिनत्त्येनंत्रैलोक्येसचराचरे ॥ मुह्यंतिमुनयःकामंब्रह्मपुत्राःसनातनाः ॥ १२ ॥

त्रयएतेत्रेति॥सर्वदेवमध्येएतद्देवत्रयमेवमुख्यंकारणंचसर्वस्येदमेवेत्यर्थः॥३॥तेषामभेदमाहएकामूर्तिरिति ॥ तेषांगुणभेदमाहरजइति॥४॥त्रयाणांमध्येविष्णुरेवमुख्यइत्याह तेषामिति॥५॥इत्थंसर्ववरिष्ठोपियोगमाययाकथंस्वापितःकथंवासविवशःपराधीनोजातः॥६॥जीवतस्तस्यविज्ञानंचेष्टितंचकुतोहेतोःक्वगतमित्यन्वयः॥संदेहोयमाश्चर्यमिदमित्यर्थः॥ एतादृशस्येयंदशाश्चर्यजनिकैव।अतोयथाशुभंस्यात्तथाकथयेत्यर्थः॥७॥कासेति॥साशक्तिःकीदृशीत्यर्थः।कुतोजातेति॥कस्मात्कारणाज्जातेत्यर्थः॥कथंविष्णुंजेतुंशक्तासमर्थेत्यर्थः॥ काशक्तिरिति तस्याःशक्तेःकाशक्तिरस्तिययाशक्तयायुतास्वयंशक्तिर्विष्णुंवशीकरोति॥८॥पुनराश्चर्यमुपपादयतियस्त्विति॥९॥नीतइति।स्वाधीनतामितिशेषः॥१०॥आश्चर्यभूतइति।आश्चर्यात्मकःसंदेहइत्यर्थः ११।१२॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नारदइतिपूर्वान्वयि ॥१३॥१४॥ तेसर्वेइति॥देवाद्याइत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतरेनैयायिकैकदेशिनइत्यर्थः ॥ २४ ॥ सप्तेति ॥ पूर्वा
क्तानिपंचसाक्षिरूपंषष्ठमैतिह्यंसप्तममितिसप्तप्रमाणानि ॥ एतैरिति॥एतैरनेकधाभेदभिन्नैःप्रमाणैर्दुर्ज्ञेयंयत्परंब्रह्मतदेवपरमंमुख्यंजगत्कारणमस्तीतिवेदांताआहुरितिशेषः ॥२५॥ एवमेतानिस
र्वमतानिवेदेएवसंतितत्रकिंमतंमुख्यमितिविमर्शोदुर्घटएवतथापियत्रश्रुतिवाक्यानांपरस्परंविरोधस्तत्रोपक्रमोपसंहारादिलिंगैः श्रुतितात्पर्यंनिर्णीयतात्पर्यवतीश्रुतिःप्रबलेतिसिद्धांतउत्तरमीमां

नारदःकपिलश्चैवप्रश्नेऽस्मिन्मुनिसत्तमाः ॥ किंब्रवीमिमहाभागादुर्घटेऽस्मिन्विमर्शने ॥ १३ ॥ देवेषुविष्णुःकथितःसर्वगस्सर्वपालकः ॥ यतोविराडिदं
सर्वमुत्पन्नंसचराचरम् ॥१४॥ तेसर्वेसमुपासंतेनत्वादेवंपरात्परम् ॥ नारायणंहृषीकेशंवासुदेवंजनार्दनम् ॥ १५ ॥ तथाकेचिन्महादेवंशंकरंशशिशेखर
म् ॥ त्रिनेत्रंपंचवक्त्रंचशूलपाणिंवृषध्वजम् ॥ १६ ॥ तथावेदेषुसर्वेषुगीतंनाम्नात्रियंबकम् ॥ कपर्दिनंपंचवक्त्रंगौरीदेहार्धधारिणम् ॥ १७ ॥ कैलासवासनि
रतंसर्वशक्तिसमन्वितम् ॥ भूतवृंदयुतंदेवंदक्षयज्ञविघातकम् ॥ १८ ॥ तथासूर्यंवेदविदःसायंप्रातर्दिनेदिने ॥ मध्याह्नेतुमहाभागाःस्तुवंतिविविधैःस्तवैः ॥
॥ १९ ॥ तथावेदेषुसर्वेषुसूर्योपासनमुत्तमम् ॥ परमात्मेतिविख्यातंनामतस्यमहात्मनः ॥ २० ॥ अग्निःसर्वत्रवेदेषुसंस्तुतोवेदवित्तमैः ॥ इंद्रश्चापित्रिलो
केशोवरुणश्चतथापरः ॥ २१ ॥ यथागंगाप्रवाहैश्चबहुभिःपरिवर्तते ॥ तथैवसर्वदेवेषुविष्णुःप्रोक्तोमहर्षिभिः ॥ २२ ॥ त्रीण्येवहिप्रमाणानिपठितानि
सुपंडितैः ॥ प्रत्यक्षंचानुमानंचशाब्दंचैवतृतीयकम् ॥ २३ ॥ चत्वार्येवेतरेप्राहुरुपमानयुतानिच ॥ अर्थापत्तियुतान्यन्येपंचप्राहुर्महाधियः॥२४॥सप्तपौ
राणिकाश्चैवप्रवदंतिमनीषिणः॥एतैःप्रमाणैर्दुर्ज्ञेयंयद्ब्रह्मपरमंचतत् ॥ २५ ॥ वितर्कश्चात्रकर्तव्योबुद्ध्याचैवागमेनच ॥ निश्चयात्मिकयायुक्त्याविचार्यच
पुनःपुनः ॥२६॥ प्रत्यक्षतस्तुविज्ञानंचिंत्यंमतिमतासदा ॥ दृष्टांतेनापिसततंशिष्टमार्गानुसारिणा॥२७॥विद्वांसोपिवदंत्येवंपुराणैःपरिगीयते॥द्रुहिणेसृष्टि
शक्तिश्चहरौपालनशक्तिता ॥ २८ ॥ हरेसंहारशक्तिश्चसूर्येशक्तिःप्रकाशिका ॥ धराधरणशक्तिश्चशेषेकूर्मेतथैवच॥२९॥साऽऽद्याशक्तिःपरिणतासर्वस्मि
न्याप्रतिष्ठिता ॥ दाहशक्तिस्तथावह्नौसमीरेप्रेरणात्मिका ॥ ३० ॥ शिवोपिशवतांयातिकुंडलिन्याविवर्जितः ॥ शक्तिहीनस्तुयःकश्चिदसमर्थःस्मृतो
बुधैः ॥ ३१ ॥ एवंसर्वत्रभूतेषुस्थावरेषुचरेषुच ॥ ब्रह्मादिस्तंबपर्यंतंब्रह्मांडेऽस्मिन्महातपाः ॥ ३२ ॥

सायामुक्तः॥ननुतेनासिद्धांतेनब्रह्मैवजगत्कारणमितिसिद्ध्यतीतिचेत्तत्रानुमानेनागमेनश्रुतिवाक्येनचतद्ब्रह्मकिंसशक्तिकंजगत्कारणमुतशक्तिरहितमितिविचारःकर्तव्यइत्याह।वितर्कइति। अनु
मानमित्यथः।बुद्ध्येत्यस्यार्थोनिश्चयात्मिकयायुक्त्येति ॥२६॥ प्रत्यक्षतइति ॥ किंचमतिमताप्रत्यक्षतोयद्विज्ञानंतदपिचिंत्यंग्राह्यंप्रमाणत्वेनेत्यर्थः ॥ शिष्टमार्गःशिष्टाचारस्तदनुसारिणादृष्टांते
नव्याप्तिग्राहकेणापिसततमनुमेयमितिशेषः ॥२७॥ तमेवदृष्टांतमाह विद्वांसोपीति ॥ किंतद्गीयतेतदाह । द्रुहिणेइति ॥ इत्थमनेकदृष्टांतैर्वस्तुमात्रेशक्तिमत्त्वव्याप्तिर्ग्राह्येतिभावः ॥ २८ ॥ २९ ॥
साद्येति ॥ यासर्वस्मिन्नाद्याशक्तिरस्तिसाशक्तिःपरिणतातत्तच्छक्तिरूपेणेत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तथेति ॥विद्वांसोवदंतीत्यन्वयः॥ ३३ ॥एवमिति॥यथाअत्रसर्वपदार्थत्वावच्छेदेनशक्तिमत्त्वव्याप्तिर्गृहीतातथाब्रह्मणोपिपदार्थत्वावच्छिन्नत्वेनशक्तिरस्ति ॥ साचशक्तिःसामर्थ्यरूपानस्वाश्रयाद्भिन्नाभासते अग्निशक्त्यादावदृष्टत्वात्॥किंत्वभिन्नैव तदेवदर्शयितुमेषसर्वगताशक्तिःसाब्रह्मेतिविविच्यते इत्यनेनस्वाश्रयाभेदएवोक्तः ॥तथाचश्रुतिप्रतिपाद्यंब्रह्म मायावाएषानारसिंहीतिनतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेपरास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयते इत्यादिश्रुतिभिरनुमानादिभिश्चसशक्तिकमेवजगत्कारणमितितदेवोपास्यमितिभावः॥एतेनकासाशक्तिरित्यस्योत्तरंब्रह्मसामर्थ्यरूपाशक्तिरस्तीतिबोधितम्॥सोपास्येति॥यतोब्रह्मभिन्नानशक्तिस्ततस्तस्याभजनेग्निशक्त्यांहोमेग्नौहोमस्यार्थसिद्धत्ववद्ब्रह्मणउपासनंजातमेवेतिसर्वेषांकारणभूतासैवशक्तिःसाम्यावस्थात्मिकोपास्ये

शक्तिहीनंतुनिंद्यंस्याद्वस्तुमात्रंचराचरम् ॥ अशक्तःशत्रुविजयेगमनेभोजनेतथा ॥ ३३ ॥ एवंसर्वगताशक्तिःसाब्रह्मेतिविविच्यते ॥ सोपास्याविविधैः सम्यग्विचार्यासुधियासदा ॥ ३४ ॥ विष्णौचसात्त्विकीशक्तिस्तयाहीनोप्यकर्मकृत् ॥ द्रुहिणेराजसीशक्तिर्यथाहीनोह्यसृष्टिकृत् ॥ ३५ ॥ शिवेचतामसीशक्तिस्तयासंहारकारकः ॥ इत्यूह्यंमनसासर्वंविचार्यचपुनःपुनः ॥ ३६ ॥ शक्तिःकरोतिब्रह्मांडंसावैपालयतेऽखिलम् ॥ इच्छयासंहरत्येषाजगदेतच्चराचरम् ॥ ३७ ॥ नविष्णुर्नहरःशक्रोनब्रह्मानचपावकः ॥ नसूर्योवरुणःशक्तःस्वेस्वेकार्येकथंचन ॥ ३८ ॥ तयायुक्ताहिकुर्वंतिस्वानिकार्याणितेसुराः ॥ सैवकारणकार्येषुप्रत्यक्षेणावगम्यते ॥ ३९ ॥ सगुणानिर्गुणासातुद्विधाप्रोक्तामनीषिभिः ॥ सगुणारागिभिःसेव्यानिर्गुणातुविरागिभिः ॥ ४० ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांस्वामिनीसानिराकुला ॥ ददातिवांछितान्कामान्पूजिताविधिपूर्वकम् ॥ ४१ ॥ नजानंतिजनामूढास्तांसदामाययावृताः ॥ जानंतोपिनराःकेचिन्मोहयंतिपरानपि ॥ ४२ ॥ पंडिताःस्वोदरार्थंवैपाखंडानिपृथक्पृथक् ॥ प्रवर्तयंतिकलिनाप्रेरितामंदचेतसः ॥ ४३ ॥ कलावस्मिन्महाभागानानाभेदसमुत्थिताः ॥ नान्येयुगेतथाधर्मावेदबाह्याःकथंचन ॥ ४४ ॥ विष्णुश्चरत्यसावुग्रंतपोवर्षाण्यनेकशः ॥ ब्रह्माहरस्त्रयोदेवाध्यायंतःकमपिध्रुवम् ॥ ४५ ॥ कामयानाःसदाकामंतेत्रयःसर्वदैवहि ॥ यजंतियज्ञान्विविधान्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ४६ ॥ तेवैशक्तिंपरांदेवींब्रह्माख्यांपरमात्मिकाम् ॥ ध्यायंतिमनसानित्यंनित्यांमत्वासनातनीम् ॥ ४७ ॥ तस्माच्छक्तिःसदासेव्याविद्वद्भिःकृतनिश्चयैः ॥ निश्चयःसर्वशास्त्राणांज्ञातव्योमुनिसत्तमाः ॥ ४८ ॥ कृष्णाच्छ्रुतंमयाचैतत्तेनज्ञातंतुनारदात् ॥ पितुःसकाशात्तेनापिब्रह्मणाविष्णुवाक्यतः ॥ ४९ ॥

त्यर्थः॥३४॥ब्रह्मविष्णुरुद्रादिषुप्रसिद्धेष्वन्वयव्यतिरेकंदर्शयंस्तेषामेकैकगुणवत्तयान्यूनत्वेननोपासनार्हत्वं श्रीभगवत्यपेक्षयेतिदर्शयति।विष्णौचेति ॥३५॥३६॥कुतोजातेत्यस्योत्तरमाह। शक्तिःकरोतीति॥यासर्वस्यकर्त्रीसाकस्मादुत्पद्येतानवस्थाप्रसंगादितिभावः॥अतएवशक्तिःशक्त्यंतरकल्पनमप्यनुचितमित्यर्थाद्बोध्यम्॥३७॥३८॥३९॥सगुणेति॥एकैकगुणविशिष्टेत्यर्थः। निर्गुणासाम्यावस्थोपाधिकब्रह्मरूपेत्यर्थः॥४०॥४१॥४२॥४३॥ ४४ ॥ ४५॥ यदिब्रह्मादयोमुख्यास्तर्हितेऽन्यंकिमितिभजेयुर्भजंतिचतस्मान्नतेमुख्याःकिंतुपराशक्तिरेवेतिभावः ॥४६॥ परंब्रह्मैवतस्यारूपंनान्यदस्तीत्यभिप्रायेणब्रह्मात्मिकामित्युक्तम् ॥ स्पष्टीकृतंचैतदस्माभिरुपोद्घाते ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

७

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





यथागजशरीरेप्रविष्टस्यचैतन्यस्यगजइतिव्यवहारस्तथाप्रथमतोमायाशरीरेप्रविष्टस्यचैतन्यस्यमायाशक्तिरितिव्यवहारस्तदनंतरंगुणोत्पादादेकैकगुणविशिष्टमायाशबलब्रह्मणएवब्रह्माविष्णु रुद्रइत्यादिव्यवहारस्तथाचसर्वकारणंब्रह्ममायाशक्तिसहितमेवभवतीतिमायाशक्तिर्देवीभगवतीत्यादिमुख्यशब्दैरेवोपास्येत्याह।शक्तिरेवेति ॥५०॥५१॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कं

नश्रोतव्यंनमंतव्यमन्येषांवचनंबुधैः ॥ शक्तिरेवसदासेव्याविद्वद्भिःकृतनिश्चयैः ॥ ५० ॥ प्रत्यक्षमपिद्रष्टव्यमशक्तस्यविचेष्टितम् ॥ अतःसर्वेषुभूतेषुज्ञात व्याशक्तिरेवहि ॥ ५१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ यदाविनिर्गतानिद्रादेहात्तस्यजगद्गुरोः ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ १ ॥ निःसृत्यगगनेतस्थौतामसीशक्तिरुत्तमा ॥ उदतिष्ठज्जगन्नाथोजृंभमाणःपुनःपुनः ॥ २ ॥ तदाऽपश्य त्स्थितंतत्रभयत्रस्तंप्रजापतिम् ॥ उवाचचमहातेजामेघगंभीरयागिरा ॥ ३ ॥ विष्णुरुवाच ॥ किमागतोसिभगवंस्तपस्त्यक्त्वाऽत्रपद्मज॥ कस्माच्चितातु रोसित्वंभयाकुलितमानसः ॥ ४ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वत्कर्णमलजौदेवदैत्यौचमधुकैटभौ ॥ हंतुंमांसमपायातौघोररूपौमहाबलौ ॥ ५ ॥ भयात्तयोःसमाया तस्त्वत्समीपंजगत्पते ॥ त्राहिमांवासुदेवाद्यभयत्रस्तंविचेतसम् ॥ ६ ॥ विष्णुरुवाच ॥ तिष्ठाद्यनिर्भयोजातस्तौहनिष्याम्यहंकिल ॥ युद्धायाजग्मतुर्मूढौ मत्समीपंगतायुषौ ॥ ७ ॥ सूतउवाच ॥ एवंवदतिदेवेशेदानवौतौमहाबलौ ॥ विचिन्वानावजंचोभौसंप्राप्तौमदगर्वितौ ॥ ८॥ निराधारौजलेतत्रसंस्थि तौविगतज्वरौ ॥ तावूचतुर्मदोन्मत्तौब्रह्माणंमुनिसत्तमाः ॥ ९ ॥ पलायित्वासमायातःसन्निधावस्यकिंततः ॥ युद्धंकुरुहनिष्यावःपश्यतोस्यैवसन्नि धौ ॥ १० ॥ पश्चादेनंहनिष्यावःसर्पभोगोपरिस्थितम् ॥ त्वमद्यकुरुसंग्रामंदासोस्मीतिचवावद ॥ ११ ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंविष्णुस्तावुवा चजनार्दनः ॥ कुरुतांसमरंकामंमयादानवपुंगवौ ॥ ॥ १२ ॥ हरिष्यामिमदंचाहंयुवयोर्मत्तयोःकिल ॥ आगच्छतंमहाभागौश्रद्धाचेद्वांमहाबलौ ॥ १३ ॥ सूतउवाच ॥ श्रुत्वातद्वचनंचोभौक्रोधव्याकुललोचनौ ॥ निराधारौजलस्थौचयुद्धोद्युक्तौबभूवतुः ॥ १४ ॥ मधुश्चकुपितस्तत्रहरिणासहसंयुगम् ॥ क र्तुंप्रचलितस्तूर्णंकैटभस्तुतथास्थितः ॥ १५॥बाहुयुद्धंतयोरासीन्मल्लयोरिवमत्तयोः॥श्रांतेमधौकैटभस्तुसंग्राममकरोत्तदा ॥ १६ ॥ पुनर्मधुःकैटभश्चयुयुधा तेपुनःपुनः॥बाहुयुद्धेनरागांधौविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ १७ ॥ प्रेक्षकस्तुतदाब्रह्मादेवीचैवांतरिक्षगा ॥ नमम्लतुस्तदातौतुविष्णुस्तुम्लानिमाप्तवान् ॥ १८॥

धेऽष्टमोऽध्यायः॥८॥सप्ताशीतिमहाश्लोकैर्मधुकैटभयोर्वधः॥देवीप्रसादाद्धरिणाकृतइत्येतदुच्यते ॥ १ ॥ मधुकैटभवधकथायांप्रसंगागतंविचारंसमाप्यपुनस्तामेवकथामुत्थापयतिसूतः।यदा विनिर्गतेति॥यदादेहात्सानिद्रानिद्राभिमानिनीदेवतानिर्गतातदासानिद्राभिमानिनीमहाकालीतामसीशक्तिर्गगनेमूर्तिमतीतस्थौतयोर्दैत्ययोर्मोहार्थम् ॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥ ७ ॥ ८ ॥९॥ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ नमम्लतुर्नम्लानौबभूवतुः ॥ १८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ विश्रमणंविश्रामः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

पंचवर्षसहस्राणियदाजातानियुद्धचता ॥ हरिणाचिंतितंतत्रकारणंमरणेतयोः ॥ १९ ॥ पंचवर्षसहस्राणिमयायुद्धंकृतंकिल ॥ नश्रांतौदानवौघोरौश्रां
तोऽहंचैतदद्भुतम् ॥ २० ॥ क्वगतंमेबलंशौर्यंकस्माच्चेमावनामयौ ॥ किमत्रकारणंचिंत्यंविचार्यमनसात्विह ॥ २१ ॥ इतिचिंतापरंदृष्ट्वाहरिंहर्षपराबु
भौ ॥ ऊचतुस्तौमदोन्मत्तौमेघगंभीरनिःस्वनौ ॥ २२ ॥ तवनोचेद्बलंविष्णोयदिश्रांतोसियद्धतः ॥ ब्रूहिदासोस्मिवांनूनंकृत्वाशिरसिचांजलिम् ॥ २३ ॥
नचेद्युद्धंकुरुष्वाद्यसमर्थोसिमहामते ॥ हत्वात्वांनिहनिष्यावःपुरुषंचचतुर्मुखम् ॥ २४ ॥ सूतउवाच ॥ श्रुत्वातद्भाषितंविष्णुस्तयोस्तस्मिन्महोद
धौ ॥ उवाचवचनंश्लक्ष्णंसामपूर्वंमहामनाः ॥ २५ ॥ हरिरुवाच ॥ श्रांतेभीतेत्यक्तशस्त्रेपतितेबालकेतथा ॥ प्रहरंतिनवीरास्तेधर्मएषसनातनः ॥ २६ ॥
पंचवर्षसहस्राणिकृतंयुद्धंमयात्विह ॥ एकोहंभ्रातरौवांचबलिनौसदृशौतथा॥२७॥कृतंविश्रमणंमध्येयुवाभ्यांचपुनःपुनः ॥ तथाविश्रमणंकृत्वायुध्येहंनात्र
संशयः ॥ २८ ॥ तिष्ठतांहियुवांतावद्बलवंतौमदोत्कटौ ॥ विश्रम्याहंकरिष्यामियुद्धंवान्यायमार्गतः ॥ २९ ॥ सूतउवाच ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यवि
श्रब्धौदानवोत्तमौ ॥ संस्थितौदूरतस्तत्रसंग्रामेकृतनिश्चयौ ॥ ३० ॥ अतिदूरेचतौदृष्ट्वावासुदेवश्चतुर्भुजः ॥ दध्यौचमनसातत्रकारणंमरणेतयोः ॥३१॥
चिंतनाज्ज्ञानमुत्पन्नंदेवीदत्तवरावुभौ ॥ कामंवांछितमरणौनमम्लतुरतस्त्विमौ॥३२॥वृथामयाकृतंयद्धंश्रमोयंमेवृथागतः ॥ करोमिचकथंयुद्धमेवंज्ञात्वा
विनिश्चयम् ॥ ३३ ॥ अकृतेचतथायुद्धेकथमेतौगमिष्यतः ॥ विनाशंदुःखदौनित्यंदानवौवरदर्पितौ ॥३४॥ भगवत्यावरोदत्तस्तयासोपिचदुर्घटः॥मरणं
चेच्छयाकामंदुःखितोपिनवांछति ॥ ३५ ॥ रोगग्रस्तोपिदीनोपिनमुमूर्षतिकश्चन ॥ कथंचेमौमदोन्मत्तौमर्तुकामौभविष्यतः ॥३६॥नन्वद्यशरणंयामिवि
द्यांशक्तिंसुकामदाम् ॥ विनातयानसिध्यंतिकामाःसम्यक्प्रसन्नया॥३७॥एवंसंचिंत्यमानस्तुगगनेसंस्थितांशिवाम्॥अपश्यद्भगवान्विष्णुर्योगनिद्रांमनोह
राम्॥३८॥कृतांजलिरमेयात्मातांचतुष्टावयोगवित्॥विनाशार्थंतयोस्तत्रवरदांभुवनेश्वरीम्॥३९॥विष्णुरुवाच॥नमोदेविमहामायेसृष्टिसंहारकारिणि ॥
अनादिनिधनेचंडिभुक्तिमुक्तिप्रदेशिवे॥४०॥नतेरूपंविजानामिसगुणंनिर्गुणंतथा ॥ चरित्राणिकुतोदेविसंख्यातीतानियानिते॥४१॥अनुभूतोमयातेऽद्यप्र
भावश्चातिदुर्घटः ॥ यदहंनिद्रयालीनःसंजातोस्मिविचेतनः॥४२॥ब्रह्मणाचातियत्नेनबोधितोपिपुनःपुनः ॥ नप्रबुद्धःसर्वथाहंसंकोचितषडिंद्रियः ॥ ४३ ॥

वरदांभुवनेश्वरीमिति ॥ यद्यपिसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीभुवनेश्वरीनतामसीशक्तिस्तथापिसाम्यावस्थात्मकभुवनेश्वर्येवतमोगुणयुक्तासतीमहाकालीपदवाच्येतितामस्यामहाका
ल्याश्रीभुवनेश्वर्याअभेदस्यसत्त्वात्तामस्याःशक्तेर्भुवनेश्वरीतिनाम्नाव्यवहारःकृतः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ वक्रयादृशेतिकटाक्षेणेत्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ पुरावैइति ॥ दानववैरिणामयापुरावहवोदैत्याजिताइति

अचेतनत्वंसंप्राप्तःप्रभावात्तवचांबिके ॥ त्वयामुक्तःप्रबुद्धोहंयुद्धंचबहुधाकृतम् ॥ ४४ ॥ श्रांतोहंनचतौश्रांतौत्वयादत्तवरौवरौ ॥ ब्रह्माणंहंतुमायातौदान वौमदगर्वितौ ॥ ४५ ॥ आहूतौचमयाकामंद्वंद्वयुद्धायमानदे ॥ कृतंयुद्धंमहाघोरंमयाताभ्यांमहार्णवे ॥ ४६ ॥ मरणेवरदानंतेततोज्ञातंमहाद्भुतम् ॥ ज्ञा त्वाहंशरणंप्राप्तस्त्वामद्यशरणप्रदाम् ॥ ४७ ॥ साहाय्यंकुरुमेमातःखिन्नोहंयुद्धकर्मणा ॥ दृप्तौतौवरदानेनतवदेवार्तिनाशने ॥ ४८ ॥ हंतुंमामुद्यतौपा पौकिंकरोमिक्रयामिच ॥ इत्युक्तासातदादेवीस्मितपूर्वमुवाचह ॥ ४९ ॥ प्रणमंतंजगन्नाथंवासुदेवंसनातनम् ॥ देवदेवहरेविष्णोकुरुयुद्धंपुनःस्वयम् ॥ ॥ ५० ॥ वंचयित्वात्विमौशूरौहंतव्यौचविमोहितौ ॥ मोहयिष्याम्यहंनूनंदानवौवक्रयादृशा ॥ ५१ ॥ जहिनारायणाशुत्वंममायाविमोहितौ ॥ सू तउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंविष्णुस्तस्याःप्रीतिरसान्वितम् ॥ ५२ ॥ संग्रामस्थलमासाद्यतस्थौतत्रमहार्णवे ॥ तदायातौचतौधीरौयुद्धकामौमहाबलौ ॥ ॥ ५३ ॥ वीक्ष्यविष्णुंस्थितंतत्रहर्षयुक्तौबभूवतुः ॥ तिष्ठतिष्ठमहाकामकुरुयुद्धंचतुर्भुज ॥ ५४ ॥ दैवाधीनौविदित्वाद्यनूनंजयपराजयौ ॥ सबलोजय माप्नोतिदैवाज्जयतिदुर्बलः ॥ ५५ ॥ सर्वथैवनकर्तव्यौहर्षशोकौमहात्मना ॥ पुरावैवहवोदैत्याजितादानववैरिणा ॥ ५६ ॥ अधुनाचानयोःसार्धंयुध्य मानःपराजितः ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्तातौमहाबाहूयुद्धायसमुपस्थितौ ॥ ५७ ॥ वीक्ष्यविष्णुर्जघानाशुमुष्टिनाऽद्भुतकर्मणा ॥ तावप्यतिबलोन्मत्तौ जघ्नतुर्मुष्टिनाहरिम् ॥ ५८ ॥ एवंपरस्परंजातंयुद्धंपरमदारुणम् ॥ युध्यमानौमहावीर्यौदृष्ट्वानारायणस्तदा ॥ ५९ ॥ अपश्यत्संमुखंदेव्याःकृत्वादी नांदृशंहरिः ॥ सूतउवाच ॥ तंवीक्ष्यतादृशंविष्णुंकरुणारससंयुतम् ॥ ६० ॥ जहासातीवताम्राक्षीवीक्षमाणातदासुरौ ॥ तौजघानकटाक्षैश्चकामबाणै रिवापरैः ॥ ६१ ॥ मंदस्मितयुतैःकामप्रेमभावयुतैरनु ॥ दृष्ट्वामुमुहतुःपापौदेव्यावक्रविलोकनम् ॥ ६२ ॥ विशेषमितिमन्वानौकामबाणाति पीडितौ ॥ वीक्षमाणौस्थितौतत्रतांदेवींविशदप्रभाम् ॥ ६३ ॥ हरिणापिचतद्दृष्टंदेव्यास्तत्रचिकीर्षितम् ॥ मोहितौतौपरिज्ञायभगवान्कार्यवित्तमः ॥ ६४ ॥ उवाचतौहसंश्लक्ष्णंमेघगंभीरयागिरा ॥ वरंवरयतांवीरौयुवयोर्योभिवांछितः ॥ ६५ ॥ ददामिपरमप्रीतोयुद्धेनयुवयोःकिल ॥ दानवावह वोदृष्टायुध्यमानामयापुरा ॥ ६६ ॥ युवयोःसदृशःकोपिनदृष्टोनचवैश्रुतः ॥ तस्मात्तुष्टोस्मिकामंवैनिस्तुलेनबलेनच ॥ ६७ ॥ भ्रात्रोश्चवांछितंकामं प्रयच्छामिमहाबलौ ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंविष्णोःसाभिमानौस्मरातुरौ ॥ ६८ ॥

हर्षोनकर्तव्यः ॥ अधुनाचानयोर्मधुकैटभयोःसार्धंयुध्यमानःपराजितइतिशोकोपिनकर्तव्यः ॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥६९॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥ निर्जलंजलरहितंस्थलमित्यर्थः ॥७८॥७९॥८०॥८१॥ ८२॥८३ ॥ मेदिनीति ॥ मधुकैटभवधेजातेपश्चाद्वराहेणयदापृथिव्युद्धृतातदा सामेदोयुक्ताजातेति ॥ मेदोस्तियस्याभितिव्युत्पत्तेर्मेदिनीतिनामजातमित्यर्थः॥८४॥महाविद्येति ॥ यस्मात्कारणात्सर्वश्रुतिप्रतिपाद्यसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मरूपाभगवतीसर्वकारण

वीक्षमाणौमहामायांजगदानंदकारिणीम् ॥ तमूचतुश्चकामार्तौविष्णुंकमललोचनौ ॥ ६९ ॥ हरेनयाचकावावांत्वंकिंदातुमिहेच्छसि ॥ ददावतुभ्यंदेवेश दातारौनौनयाचकौ ॥ ७० ॥ प्रार्थयत्वंहृषीकेशमनोभिलषितंवरम् ॥ तुष्टौस्वस्तवयुद्धेनवासुदेवाद्भुतेनच॥७१॥तयोस्तद्वचनंश्रुत्वाप्रत्युवाचजनार्दनः॥ भवेतामद्यमेतुष्टौममवध्यावुभावपि ॥ ७२ ॥ सूतउवाच॥तच्छ्रुत्वावचनंविष्णोर्दानवौचातिविस्मितौ ॥ वंचितावितिमन्वानौतस्थतुःशोकसंयुतौ ॥७३॥ विचार्यमनसातौतुदानवौविष्णुमूचतुः ॥ प्रेक्ष्यसर्वंजलमयंभूमिंस्थलविवर्जिताम् ॥७४॥ हरेयोयंवरोदत्तस्त्वयापूर्वंजनार्दन ॥ सत्यवागसिदेवेशदेहितंवां छितंवरम् ॥७५॥ निर्जलेविपुलेदेशेहनस्वमधुसूदन ॥ वध्यावावांतुभवतःसत्यवाग्भवमाधव ॥७६॥ स्मृत्वाचक्रंतदाविष्णुस्तावुवाचहसन्हरिः ॥ हन्म्य द्यवांमहाभागौनिर्जलेविपुलेस्थले ॥ ७७ ॥ इत्युक्त्वादेवदेवेशऊरूकृत्वाऽतिविस्तरौ ॥ दर्शयामासतौतत्रनिर्जलंचजलोपरि ॥ ७८ ॥ नास्त्यत्रदानवौवा रिशिरसीमुंचतामिह ॥ सत्यवागहमद्यैवभविष्यामिचवांतथा ॥ ७९ ॥ तदाकर्ण्यवचस्तथ्यंविचिंत्यमनसाचतौ ॥ वर्धयामासतुर्देहंयोजनानांसहस्रकम् ॥ ८० ॥ भगवान्द्विगुणंचक्रेजघनंविस्मितौतदा ॥ शीर्षेसंदधतांतत्रजघनेपरमाद्भुते ॥८१॥ रथांगेनतदाछिन्नेविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ जघनोपरिवेगेनप्र कृष्टेशिरसीतयोः ॥ ८२ ॥ गतप्राणौतदाजातौदानवौमधुकैटभौ ॥ सागरःसकलोव्याप्तस्तदावैमेदसातयोः ॥ ८३ ॥ मेदिनीतिततोजातंनामपृथ्व्याःसमं ततः ॥ अभक्ष्यामृत्तिकातेनकारणेनमुनीश्वराः ॥ ८४ ॥ इतिवःकथितंसर्वंयत्पृष्टोऽस्मिमुनिश्चितम् ॥ महाविद्यामहामायासेवनीयासदाबुधैः ॥ ८५ ॥ आराध्यापरमाशक्तिः सर्वैरपिसुरासुरैः ॥ नातःपरतरंकिंचिदधिकंभुवनत्रये ॥८६॥ सत्यंसत्यंपुनःसत्यंवेदशास्त्रार्थनिर्णयः ॥ पूजनीयापराशक्तिर्निर्गुणा सगुणाऽथवा ॥ ८७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सूतपूर्वंत्वयाप्रोक्तंव्यासेनामिततेजसा ॥ कृत्वापुराणमखिलंशुकायाध्यापितंशुभम् ॥ १ ॥ व्यासेनतुतपस्तप्त्वाकथमुत्पादितःशुकः ॥ विस्तरंब्रूहिसकलंयच्छ्रुतंकृष्णतस्त्वया ॥ २ ॥

कारणाएकैकगुणोपाधिब्रह्माद्यपेक्षयासर्वोत्कृष्टा ततःसैवोपास्याध्येयाज्ञेयाचेतिभावः॥८५॥८६॥८७॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥९॥ षट्त्रिंशत्पद्यकैःसार्धैर्वरदा नंशिवस्यच ॥ व्यासायपुत्रविषयंजातमित्येतदीर्यते ॥ १ ॥ पूर्वंव्यासेपुत्रलाभार्थमनुष्ठानाचिकीर्षयापर्वतंगतेसतिकस्यदेवस्याऽऽराधनाकर्तव्येतिजिज्ञासायांसत्यां नारदसमागमेजातेनारदे नब्रह्मविष्णुसंवादमुखेनभगवत्येवसर्वोत्कृष्टाआराध्येतिस्थापितंमध्येप्रसंगागताःकथाःसमापिताः॥ भगवत्याआराधनेनकथंपुत्रोत्पत्तिर्जातेतित्वद्याप्यवशिष्टंतद्दषयःपृच्छंति । सूतेति ॥१॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कृष्णतोवेदव्यासात् ॥२॥ ३ ॥ तपश्चचारेति ॥ शक्तिरेवाऽऽराध्येतिनारदाच्छ्रुत्वातस्यावाग्भवंवीजंनारदेनोपदिष्टंगृहीत्वातज्जपंस्तपश्चचारेत्यर्थः ॥४॥५॥ जपकालेएतादृशींभावनांकृतवा
नित्याह।अग्नेर्भूमेरिति॥वीर्येणशक्त्येत्यर्थः॥संमितस्तुल्यः॥६॥आतिष्ठादिति॥तपइतिशेषः॥यद्यपिव्यासेननारदमुखाद्भगवतींसर्वोत्कृष्टांश्रुत्वापराशक्तेरेवध्यानंकृतंतथापिशक्तेर्ध्यानेकृतेशिव

सूतउवाच ॥ प्रवक्ष्यामिशुकोत्पत्तिंव्यासात्सत्यवतीसुतात् ॥ यथोत्पन्नःशुकःसाक्षाद्योगिनांप्रवरोमुनिः ॥ ३ ॥ मेरुशृंगेमहारम्येव्यासःसत्यवतीसुतः ॥
तपश्चचारसोत्युग्रंपुत्रार्थंकृतनिश्चयः ॥ ४ ॥ जपन्नेकाक्षरंमंत्रंवाग्वीजंनारदाच्छ्रुतम् ॥ ध्यायन्परांमहामायांपुत्रकामस्तपोनिधिः ॥ ५ ॥ अग्नेर्भूमेस्तथा
वायोरंतरिक्षस्यचाप्ययम् ॥ वीर्येणसंमितःपुत्रोममभूयादितिस्मह ॥ ६ ॥ अतिष्ठत्सगताहारःशतसंवत्सरंप्रभुः ॥ आराधयन्महादेवंतथैवचसदाशिवाम्
॥ ७ ॥शक्तिःसर्वत्रपूज्येतिविचार्यचपुनःपुनः ॥ अशक्तोनिंद्यतेलोकेशक्तस्तुपरिपूज्यते ॥ ८ ॥ यत्रपर्वतशृंगेवैकर्णिकारवनाद्भुते ॥ क्रीडंतिदेवताःसर्वेमु
नयश्चतपोधिकाः॥९॥ आदित्यावसवोरुद्रामरुतश्चाश्विनौतथा ॥ वसंतिमुनयोयत्रयेचान्येब्रह्मवित्तमाः ॥ १० ॥ तत्रहेमगिरेःशृंगेसंगीतध्वनिनादिते ॥
तपश्चचारधर्मात्माव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ ११ ॥ ततोऽस्यतेजसाव्याप्तंविश्वंसर्वंचराचरम् ॥ अग्निवर्णाजटाजाताःपाराशर्यस्यधीमतः ॥१२॥ ततोस्यते
जआलक्ष्यभयमापशचीपतिः ॥ तुरासाहंतदादृष्ट्वाभयत्रस्तंश्रमातुरम् ॥ १३ ॥ उवाचभगवान्रुद्रोमघवंतंतथास्थितम् ॥ शंकरउवाच ॥ कथमिंद्राद्यभी
तोऽसिकिंदुःखंतेसुरेश्वर ॥१४॥ अमर्षोनैवकर्तव्यस्तापसेषुकदाचन ॥ तपश्चरंतिमुनयोज्ञात्वामांशक्तिसंयुतम् ॥ १५ ॥ नत्वेतेऽहितमिच्छंतितापसाः
सर्वथैवहि ॥ इत्युक्तवचनःशक्रस्तमुवाचवृषध्वजम् ॥ १६ ॥ कस्मात्तपस्यतिव्यासःकोऽर्थस्तस्यमनोगतः ॥ शिवउवाच ॥ पाराशर्यस्तुपुत्रार्थीतपश्चर
तिदुश्चरम्॥१७॥पूर्णेवर्षशतंजातंददाम्यद्यसुतंशुभम् ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्त्वावासवंरुद्रोदययामुदिताननः ॥ १८ ॥ गत्वाऋषिसमीपंतुतमुवाचजद्गुरुः॥
उत्तिष्ठवासवीपुत्रपुत्रस्तेभविताशुभः ॥१९॥ सर्वतेजोमयोज्ञानीकीर्तिकर्तातवाऽनघ ॥ अखिलस्यजनस्याऽत्रवल्लभस्तेसुतःसदा ॥ २० ॥ भविष्यतिगुणैः
पूर्णःसात्त्विकैःसत्यविक्रमः ॥ सूतउवाच ॥ तदाऽऽकर्ण्यवचःश्लक्ष्णंकृष्णद्वैपायनस्तदा ॥ २१ ॥ शूलपाणिंनमस्कृत्यजगामाश्रममात्मनः॥सगत्वाऽऽ
श्रममेवाऽऽशुवहुवर्षश्रमातुरः ॥२२॥ अरणीसहितंगुह्यंममंथाग्निंचिकीर्षया ॥ मंथनंकुर्वतस्तस्यचित्तेचिंताभरस्तदा ॥ २३ ॥ प्रादुर्बभूवसहसासुतोत्पत्तौ
महात्मनः ॥ मंथानारणिसंयोगान्मंथनाच्चसमुद्भवः ॥ २४ ॥ पावकस्ययथातद्वत्कथंमेस्यात्सुखोद्भवः ॥ पुत्रारणिस्तुयाख्यातासाममाद्यनविद्यते॥२५॥

स्यध्यानंजातमेवेत्यभिप्रायेणआराधयन्महादेवामित्युक्तम्॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥अहितमितिच्छेदः॥ अहितंनेच्छंतीत्यर्थः ॥ इत्युक्तंवचनंयस्मैसइत्युक्तवचनःशक्र
॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ गुह्यंगुप्तमग्निंममंथेत्यन्वयः ॥ २३ ॥ मंथानोमंथनदंडः ॥ २४ ॥ पुत्रारणिःपुत्रजननीकामिनीममनास्ति ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ धृतव्रतइति ॥ धृतव्रतोपिपंचवाणेनपरीतांगोविद्धांगआसीदित्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ हासमेवाह।तपस्तप्त्वेति ॥ ३३ ॥ यदिस्यादतुलमिति॥इयमप्स राभोगंदत्त्वागामिष्यतिनत्वनयागृहस्थाश्रमजन्यंसुखंस्यादितिभावः ॥ ३४ ॥ गृहस्थाश्रमसंभूतंपुण्यमितिशेषः ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेदशमोध्यायः ॥ १० ॥ ॥ षडशी

तरुणीरूपसंपन्नाकुलोत्पन्नापतिव्रता ॥ कथंकरोमिकांतांचपादयोः शृंखलासमाम् ॥ २६ ॥ पुत्रोत्पादनदक्षांचपातिव्रत्येसदास्थिताम् ॥ पतिव्रतापिद क्षापिरूपवत्यपिकामिनी ॥ २७ ॥ सदाबंधनरूपाचस्वेच्छासुखविधायिनी ॥ शिवोपिवर्ततेनित्यंकामिनीपाशसंयुतः ॥ २८ ॥ कथंकरोम्यहंचात्रदुर्घ टंचगृहाश्रमम् ॥ एवंचिंतयतस्तस्यघृताचीदिव्यरूपिणी ॥ २९ ॥ प्राप्तादृष्टिपथंतत्रसमीपेगगनेस्थिता ॥ तांदृष्ट्वाचपलापांगींसमीपस्थांवराप्सराम् ॥ ॥ ३० ॥ पंचवाणपरीतांगस्तूर्णमासीद्धृतव्रतः ॥ चिंतयामासचतदाकिंकरोम्यद्यसंकटे ॥ ३१ ॥ धर्मस्यपुरतःप्राप्तेकामभावेदुरासदे ॥ अंगीकरोमिय द्येनांवंचनार्थमिहागताम् ॥ ३२ ॥ हसिष्यंतिमहात्मानस्तापसामांतुविह्वलम् ॥ तपस्तप्त्वामहाघोरंपूर्णंवर्षशतंत्विह ॥ ३३ ॥ दृष्ट्वाप्सरांचविवशःक थंजातोमहातपाः ॥ कामंनिंदापिभवतुयदिस्यादतुलंसुखम् ॥ ३४ ॥ गृहस्थाश्रमसंभूतंसुखदंपुत्रकामदम् ॥ स्वर्गदंचतथाप्रोक्तंज्ञानिनांमोक्षदंतथा ॥ ॥ ३५ ॥ नभविष्यतितन्नूनमनयादेवकन्यया ॥ नारदाच्चमयापूर्वंश्रुतमस्तिकथानकम् ॥ ३६ ॥ यथोर्वशीवशोराजापराभूतः पुरूरवाः ॥ ॥ इतिश्रीदे वीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ कोसौपुरूरवाराजाकोर्वशीदेवकन्यका ॥ कथंकष्टंचसंप्राप्तंतेनराज्ञाम हात्मना ॥ १ ॥ सर्वंकथानकंब्रूहिलोमहर्षणजाऽधुना ॥ श्रोतुकामावयंसर्वेत्वन्मुखाब्जच्युतंरसम् ॥ २ ॥ अमृतादपिमिष्टातेवाणीसूतरसात्मिका ॥ न तृप्यामोवयंसर्वेसुधयाचयथाऽमराः ॥३॥ सूतउवाच ॥ शृणुध्वंमुनयः सर्वेकथांदिव्यांमनोरमाम् ॥ वक्ष्याम्यहंयथाबुद्ध्याश्रुतांव्यासवरोत्तमात् ॥ ४ ॥ गुरोस्तुदयिताभार्यातारानामेतिविश्रुता॥रूपयौवनयुक्तासाचार्वंगीमदविह्वला ॥ ५ ॥ गतैकदाविधोर्धामयजमानस्यभामिनी ॥ दृष्टाचशशिनाऽत्यर्थं रूपयौवनशालिनी ॥ ६ ॥ कामातुरस्तदाजातः शशीशशिमुखींप्रति ॥ सापिवीक्ष्यविधुंकामंजातामदनपीडिता ॥ ७ ॥ तावन्योन्यंप्रेमयुक्तौस्मरार्तौ च बभूवतुः ॥ ताराशशीमदोन्मत्तौकामबाणप्रपीडितौ ॥८॥ रेमातेमदमत्तौतौपरस्परस्पृहान्वितौ ॥ दिनानिकतिचित्तत्रजातानिरममाणयोः ॥ ९ ॥ बृ हस्पतिस्तुदुःखार्तस्तारामानयितुंगृहम् ॥ प्रेषयामासशिष्यंतुनायातासावशीकृता ॥ १० ॥

तिमहाश्लोकैर्बुधोत्पत्तिस्तुकथ्यते ॥ कामबाणैस्तुविद्धत्वंमहतांयत्रभण्यते ॥१॥ पूर्वाध्यायेयथोर्वशीवशोराजापराभूतःपुरूरवाइत्युक्तंतत्रकोसौपुरूरवाःकथमुत्पन्नइतिऋषयःपृच्छंतिं।कोसा विति ॥ कष्टंक्लेशः ॥ १ ॥ २ ॥ नतृप्यामइति ॥ तयेतिशेषः ॥ ३ ॥ यथाश्रुतांतथेतिशेषः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥११॥१२॥१३॥तवदेवगुरुश्चाहमिति ॥ हेदेव तवाहंगुरुरस्मीत्यन्वयः ॥ किंरक्षितेति ॥ किमर्थंरक्षितेत्यर्थः ॥१४॥१५॥ १६ ॥ नोचेद्वक्ष्यामीति॥शापमितिशेषः॥१७॥१८॥ क्रोधात्तेत्वि ति ॥ ब्राह्मणाःक्रोधादेवदुराराध्याअपूज्याभवंतीत्यर्थः ॥ अथक्रोधवर्जिताधर्मशास्त्रज्ञाःपूजार्हाभवंति॥एतेयेपूजार्हाउक्तास्ततस्तेभ्योन्यथान्यप्रकारेणयेक्रोधयुक्तास्तेपूजायांवर्जनीयाइतिशा

पुनःपुनर्यदाशिष्यंपरावर्ततचंद्रमाः ॥ बृहस्पतिस्तदाक्रुद्धोजगामस्वयमेवहि ॥ ११ ॥ गत्वासोमगृहंतत्रवाचस्पतिरुदारधीः ॥ उवाचशशिनंक्रुद्धःस्मय मानंमदान्वितम् ॥ १२ ॥ किंकृतंकिलशीतांशोकर्मधर्मविगर्हितम् ॥ रक्षितामममभार्येयंसुंदरीकेनहेतुना ॥ १३ ॥ तवदेवगुरुश्चाहंयजमानोसिसर्वथा ॥ गुरुभार्याकथंमूढभुक्ताकिंरक्षिताऽथवा ॥ १४ ॥ ब्रह्महाहेमहारीचसुरापोगुरुतल्पगः ॥ महापातकिनोह्येतेतत्संसर्गीचपंचमः ॥ १५ ॥ महापातकयुक्त स्त्वंदुराचारोतिगर्हितः ॥ नदेवसदनार्होसियदिभुक्तेयमंगना ॥१६॥ मुंचेमामसितापांगींनयामिसदनंमम ॥ नोचेद्वक्ष्यामिदुष्टात्मन्गुरुदारापहारिणम् ॥ ॥ १७ ॥ इत्येवंभाषमाणंतमुवाचरोहिणीपतिः ॥ गुरुंक्रोधसमायुक्तंकांताविरहदुःखितम् ॥ १८ ॥ इंदुरुवाच ॥ क्रोधात्तेतुदुराराध्याब्राह्मणाःक्रोध वर्जिताः ॥ पूजार्हाधर्मशास्त्रज्ञावर्जनीयास्ततोऽन्यथा ॥ १९ ॥ आगमिष्यतिसाकामंगृहंतेवरवर्णिनी ॥ अत्रैवसंस्थितावालाकातेहानिरिहानघ ॥ ॥ २० ॥ इच्छयासंस्थिताचात्रसुखकामार्थिनीहिसा ॥ दिनानिकतिचित्स्थित्वास्वेच्छयाचागमिष्यति ॥ २१ ॥ त्वयैवोदाहृतंपूर्वंधर्मशास्त्रमतंतथा ॥ नस्त्रीदुष्यतिचारेणनविप्रोवेदकर्मणा ॥ २२ ॥ इत्युक्तःशशिनातत्रगुरुरत्यंतदुःखितः ॥ जगामस्वगृहंतूर्णंचिंताविष्टःस्मरातुरः ॥२३॥ दिनानिकतिचि त्तत्रस्थित्वाचिंतातुरोगुरुः ॥ ययावथगृहंतस्यत्वरितश्चौषधीपतेः ॥ २४ ॥ स्थितःक्षत्रानिषिद्धोसौद्वारदेशेरुषान्वितः ॥ नाजगामशशीतत्रचुकोपाति बृहस्पतिः ॥ २५ ॥ अयंमेशिष्यतांयातोगुरुपत्नींतुमातरम् ॥ जग्राहबलतोऽधर्मीशिक्षणीयोमयाऽधुना ॥ २६ ॥ उवाचवाचंकोपात्तुद्वारदेशेस्थितो बहिः ॥ किंशेषेभुवनेमंदपापाचारसुराधम ॥ २७ ॥ देहिमेकामिनींशीघ्रंनोचेच्छापंददाम्यहम् ॥ करोमिभस्मसाद्भूनंनददासिप्रियांमम ॥ २८ ॥ सू तउवाच ॥ क्रूराणिचैवमादीनिभाषणानिबृहस्पतेः ॥ श्रुत्वाद्विजपतिःशीघ्रंनिर्गतःसदनाद्बहिः ॥ २९ ॥ तमुवाचहसन्सोमःकिमिदंबहुभाषसे ॥ नतेयो ग्यासितापांगीसर्वलक्षणसंयुता ॥ ३० ॥ कुरूपांचस्वसदृशींगृहाणान्यांस्त्रियंद्विज ॥ भिक्षुकस्यगृहेयोग्यानेदृशीवरवर्णिनी ॥ ३१ ॥

स्त्रमर्यादा ॥अतस्त्वंगुरोक्रोधंविहायपूज्योभव नतुतमालंब्यापूज्योभवेतिभावः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ पातकेकृतेपिचारेणरजःसंचारेणरजोदर्शनेनस्त्रीनदुष्यतीतित्वयावार्हस्पत्यमतेउक्तमिति भावः॥तदुक्तम् ॥प्रायश्चित्तंभवेत्स्त्रीणांयन्मासेरजसश्च्युतिरिति ॥२२॥२३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ शीघ्रंनिर्गतइति ॥ तस्यनिराशाकरणंविनाशांतिर्नभविष्यतीतिमत्वानिराश करणार्थंशीघ्रंनिर्गतइत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥३२॥३३॥कामार्तस्येति॥यद्यपिकामार्तानामिंद्रप्रभृतीनांगौतमादिशापबाधाजातैवतथापिकामार्तस्येतीयमुक्तिः यथा मदकरमदिराक्षीनीविमोक्षोहिमोक्षइतितद्वद्बोध्या ॥३४॥ शशिनाचे

रतिःस्वसदृशेकांतेनार्याःकिलनिगद्यते ॥ त्वंनजानासिमंदात्मन्कामशास्त्रविनिर्णयम् ॥ ३२ ॥ यथेष्टंगच्छदुर्बुद्धेनाहंदास्यामिकामिनीम् ॥ यच्छक्यं कुरुतत्कामंनदेयावरवर्णिनी ॥ ३३ ॥ कामार्तस्यचतेशापोनमांबाधितुमर्हति ॥ नाहंददेगुरोकांतांयथेच्छसितथाकुरु ॥ ३४ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्तःशशिनाचेज्यश्चितामापरुषान्वितः ॥ जगामतरसासद्मक्रोधयुक्तःशचीपतेः ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वाशतक्रतुस्तत्रगुरुंदुःखातुरंस्थितम् ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैः पूजयित्वासुसंस्थितः ॥ ३६ ॥ पप्रच्छपरमोदारस्तंतथावस्थितंगुरुम् ॥ कांचितातेमहाभागशोकार्तोसिमहामुने ॥ ३७ ॥ केनापमानितोसित्वंममराज्येगुरुश्चमे ॥ त्वदधीनमिदंसर्वंसैन्यंलोकाधिपैःसह ॥ ३८ ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथाशंभुर्येचान्येदेवसत्तमाः ॥ करिष्यंतिचसाहाय्यंकांचितावदसांप्रतम् ॥ ॥ ३९ ॥ गुरुरुवाच ॥ शशिनाऽपहृताभार्यातारामममसुलोचना ॥ नददातिसदुष्टात्माप्रार्थितोपिपुनःपुनः ॥ ४० ॥ किंकरोमिसुरेशानत्वमेवशरणं मम ॥ साहाय्यंकुरुदेवेशदुःखितोस्मिशतक्रतो ॥ ४१ ॥ इंद्रउवाच ॥ माशोकंकुरुधर्मज्ञदासोस्मितवसुव्रत ॥ आनयिष्माम्यहंनूनंभार्यांतवमहामते ॥ ४२ ॥ प्रेषितेचेन्मयादूतेनदास्यतिमदाकुलः ॥ ततोयुद्धंकरिष्यामिदेवसैन्यैः समावृतः ॥ ४३ ॥ इत्याश्वास्यगुरुंशक्रोदूतंवक्तुंविचक्षणम् ॥ प्रेषयामाससोमायवार्तांशंसिनमद्भुतम् ॥ ४४ ॥ सगत्वाशशिलोकंतुत्वरितःसुविचक्षणः ॥ उवाचवचनेनैववचनंरोहिणीपतिम् ॥ ४५ ॥ प्रेषितोहंमहाभागशक्रेणत्वांविवक्षया ॥ कथितंप्रभुणायच्चतद्ब्रवीमिमहामते ॥ ४६ ॥ धर्मज्ञोसिमहाभागनीतिंजानासिसुव्रत ॥ अत्रिःपितातेधर्मात्मागर्हिंद्यंकर्तुमर्हसि ॥ ४७ ॥ भार्यारक्ष्यासर्वभूतैर्यथाशक्तिह्यतंद्रितैः ॥ तदर्थेकलहःकामंभवितानात्रसंशयः ॥४८॥ यथातवतथातस्ययत्नःस्याद्दाररक्षणे ॥ आत्मवत्सर्वभूतानिचिंतयत्वंसुधानिधे॥४९॥अष्टाविंशतिसंख्यास्तेकामिन्योदक्षजाःशुभाः ॥ गुरुपत्नींकथंभोक्तुंत्वमिच्छसिसुधानिधे॥५०॥ स्वर्गेसदावसंत्येतामेनकाद्यामनोरमाः ॥ भुंक्ष्व ताःस्वेच्छयाकामंमुंचपत्नींगुरोरपि॥५१॥ईश्वरायदिकुर्वंतिजुगुप्सितमहंतया ॥ अज्ञास्तदनुवर्तंतेतदाधर्मक्षयोभवेत् ॥५२॥ तस्मान्मुंचमहाभागगुरोःपत्नींमनोरमाम् ॥ कलहस्त्वन्निमित्तोद्यसुराणांनभवेद्यथा ॥ ५३ ॥ सूतउवाच ॥ सोमःशक्रवचःश्रुत्वाकिंचित्क्रोधसमाकुलः ॥ भंग्याप्रतिवचःप्राहशक्रदूतंतदाशशी ॥ ५४ ॥ इंदुरुवाच ॥ धर्मज्ञोसिमहाबाहोदेवानामधिपःस्वयम् ॥ पुरोधापिचतेतादृग्युवयोःसदृशीमतिः ॥ ५५ ॥

ज्यइति॥ईज्योगुरुः॥शचीपतेःसद्मगृहम्॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥रोहिणीपतिंचंद्रम् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ कलहोवाक्चर्चा ॥ ४८ ॥ यथातवेति ॥ यथातवदाररक्षणेस्त्रीरक्षणेयत्नस्तथैवतस्यगुरोःस्यादित्यर्थः॥४९॥५०॥५१॥जुगुप्सितमहंतयेति॥अहंकारेणेत्यर्थः॥५२॥५३॥भंग्यास्तुतिनिंदाफलकाधिकार्थवादरूपया ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



परोपदेशेकुशलाइति॥स्वस्मिन्नहल्याजारत्वंकथंनजानासीत्यर्थः॥५६॥बार्हस्पत्यप्रणीतमिति॥तस्मिञ्छास्त्रेस्त्रियंकामयानांभजन्नदुष्यतीत्युक्तंततोममकोविरोधः ॥५७॥ स्वकीयमिति ॥ बलिनांप्रबलानांसर्वंकृताकृतरूपंस्वकीयमेवस्वेनकृतमुत्तममेवभवति॥दुर्बलानांतुकृतमपिनोत्तमंभवतीतिलोकरीतिरियंदर्शिता॥ किंचममभार्यांदेहीतिवदन्बृहस्पतिःकथंनलज्जते तस्याःमय्य नुरक्तत्वेनमदीयत्वादित्याह।स्वीयाचेति॥यद्वा प्रबलानांसर्वंवस्तुस्वकीयमेवभवतिपरस्यवस्तुनोहरणेसामर्थ्यात्॥दुर्बलानांतुनाकिंचन।स्वकीयमपिपरकीयंभवतीत्यर्थः॥तथाचममप्रबलत्वान्म

परोपदेशेकुशलाभवंतिबहवोजनाः ॥ दुर्लभस्तुस्वयंकर्तांप्राप्तेकर्मणिसर्वदा ॥ ५६ ॥ बार्हस्पत्यप्रणीतंचशास्त्रंगृह्णंतिमानवाः ॥ कोविरोधोत्रदेवेशकाम यानांभजन्स्त्रियम् ॥ ५७ ॥ स्वकीयंबलिनांसर्वंदुर्बलानांनकिंचन ॥ स्वीयाचपरकीयाचभ्रमोयंमंदचेतसाम् ॥ ५८ ॥ तारामय्यनुरक्ताचयथानतुतथा गुरौ ॥ अनुरक्ताकथंत्याज्याधर्मतोन्यायतस्तथा ॥ ५९ ॥ गृहारंभस्तुरक्तायांविरक्तायांकथंभवेत् ॥ विरक्तेयंतदाजाताचकमेऽनुजकामिनीम् ॥ ६० ॥ नदास्येहंवरारोहांगच्छदूतवदस्वयम्॥ईश्वरोसिसहस्राक्षयदिच्छसिकुरुष्वतत् ॥ ६१ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्तःशशिनादूतःप्रययौशक्रसन्निधिम् ॥ इंद्रा याऽऽचष्टतत्सर्वंयदुक्तंशीतरश्मिना ॥ ६२ ॥ तुराषाडपितच्छ्रुत्वाक्रोधयुक्तोबभूवह ॥ सेनोद्योगंतथाचक्रेसाहाय्यार्थंगुरोर्विभुः ॥ ६३ ॥ शुक्रस्तुविग्रहं श्रुत्वागुरुद्वेषात्ततोययौ ॥ माददस्वेतितंवाक्यमुवाचशशिनंप्रति ॥ ६४ ॥ साहाय्यंतेकरिष्यामिमंत्रशक्त्यामहामते ॥ भवितायदिसंग्रामस्तवचेंद्रेणमा रिष ॥ ६५ ॥ शंकरस्तुतदाकर्ण्यगुरुदाराभिमर्शनम् ॥ गुरुशत्रुंभृगुंमत्वासाहाय्यमकरोत्तदा ॥ ६६ ॥ संग्रामस्तुतदावृत्तोदेवदानवयोर्द्रुतम् ॥ बहूनि तत्रवर्षाणितारकासुरवत्किल ॥ ६७ ॥ देवासुरकृतंयुद्धंदृष्ट्वातत्रपितामहः ॥ हंसारूढोजगामाशुतंदेशंक्लेशशांतये ॥ ६८ ॥ राकापतिंतदाप्राहमुंचभा र्यांगुरोरिति ॥ नोचेद्विष्णुंसमाहूयकरिष्यामितुसंक्षयम् ॥ ६९ ॥ भृगुंनिवारयामासब्रह्मालोकपितामहः ॥ किमन्यायमतिर्जातासंगदोषान्महामते ॥ ॥ ७० ॥ निषेधयामासततोभृगुस्तंचौषधीपतिम् ॥ मुंचभार्यांगुरोरद्यपित्राऽहंप्रेषितस्तव ॥ ७१ ॥ सूतउवाच ॥ द्विजराजस्तुतच्छ्रुत्वाभृगोर्वचनमद्भुतम् ॥ ददावतत्प्रियांभार्यांगुरोर्गर्भवतींशुभाम् ॥ ७२ ॥ प्राप्यकांतांगुरुर्हृष्टःस्वगृहंमुदितोययौ ॥ ततोदेवास्ततोदैत्याययुःस्वान्स्वान्गृहान्प्रति ॥ ७३ ॥

मैवसावर्ततइतिभावः ॥ ज्ञानदृष्टिमवलंब्यवदति।स्वीयाचेति ॥ ज्ञानिनस्तुममसर्वंस्वकीयमेवभवतीतिभावः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ चकमेऽनुजकामिनीमनीमिति ॥ यदानुजकामिनींकनिष्ठबंधुकामिनीं संवर्तभार्यांबृहस्पतिश्चकमेतदाप्रभृतीयंविरक्ताजातेतिकथापाद्मेप्रसिद्धा ॥ यद्वाऽनुजेतिप्रथमांतंलुप्तविभक्तिकम् ॥ तथाचाऽनुजंःसन्कनिष्ठबंधुःसन्नपिबृहस्पतिःकामिनींज्येष्ठबंधोरुतथ्यस्य कामिनींममताभिधांचकमेभुक्तवानित्यर्थः ॥ तदाप्रभृतिविरक्ताजातेतिकथामहाभारतेप्रसिद्धा ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ साहाय्यंमंत्रादिभिर्बृहस्पतेःशंकरोऽकरो दित्यर्थः ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ किमन्यायमतिर्जातेति ॥ तवेतिशेषः ॥ ७० ॥ ओषधीपतिंचंद्रम्॥पित्राहंप्रेषितस्तवेति ॥ तवपित्राऽत्रिणेत्यर्थः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ त्रिपंचाश त्पद्यवर्यैरुत्पन्नस्तुपुरूरवाः ॥ देवीप्रसादान्मुक्ताभूदिलेत्येवंहिकथ्यते ॥ १ ॥ ऋषिभिःपुरूरवसोवृत्तांतप्रश्नेकृतेकोसौपुरूरवाइत्याकांक्षानिवृत्त्यर्थंसोमवंशोद्भवराज्ञांकथास्मिन्पुराणेक्वचिदपि

ब्रह्मास्वसदनंप्राप्तःकैलासंचापिशंकरः ॥ बृहस्पतिस्तुसंतुष्टःप्राप्यभार्यांमनोरमाम्॥७४॥ततःकालेनकियतातारांऽसूतसुतंशुभम् ॥ सुदिनेशुभनक्षत्रेता रापतिसमंगुणैः॥७५॥दृष्ट्वापुत्रंगुरुर्जातंचकारविधिपूर्वकम् ॥ जातकर्मादिकंसर्वंप्रहृष्टेनांतरात्मना ॥७६॥ श्रुतंचंद्रमसाजन्मपुत्रस्यमुनिसत्तमाः ॥ दूतंच प्रेषयामासगुरुंप्रतिमहामतिः॥७७॥नचायंतवपुत्रोस्तिममवीर्यसमुद्भवः ॥ कथंत्वंकृतवान्कामंजातकर्मादिकंविधिम्॥ ७८ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यदूतस्य चबृहस्पतिः ॥ उवाचममपुत्रोमेसदृशोनात्रसंशयः॥७९॥पुनर्विवादःसंजातोमिलितादेवदानवाः ॥ युद्धार्थमागतास्तेषांसमाजःसमजायत ॥८०॥ तत्राऽऽ गतःस्वयंब्रह्माशांतिकामःप्रजापतिः ॥ निवारयामासमुखेसंस्थितान्युद्धदुर्मदान् ॥ ८१ ॥ तारांपप्रच्छधर्मात्माकस्यायंतनयःशुभे ॥ सत्यंवदवरा रोहेयथाक्लेशःप्रशाम्यति ॥ ८२ ॥ तमुवाचाऽसितापांगीलज्जमानाप्यधोमुखी ॥ चंद्रस्येतिशनैरंतर्जगामवरवर्णिनी ॥ ८३ ॥ जग्राहतंसुतंसोमःप्रहृष्टेनांत रात्मना ॥ नामचक्रेबुधइतिजगामस्वगृहंपुनः ॥ ८४ ॥ ययौब्रह्मास्वकंधामसर्वेदेवाःसवासवाः ॥ यथागतंगतंसर्वैःसर्वशःप्रेक्षकैर्जनैः ॥ ८५ ॥ कथितेयं बुधोत्पत्तिर्गुरुक्षेत्रेचसोमतः ॥ यथाश्रुतामयापूर्वंव्यासात्सत्यवतीसुतात् ॥ ८६ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेबुधोत्पत्तिर्नामएकादशो ध्यायः ॥ ११ ॥ सूतउवाच ॥ ततःपुरूरवाजज्ञेइलायांकथयामिवः ॥ बुधपुत्रोऽतिधर्मात्मायज्ञकृद्दानतत्परः ॥ १ ॥ सुद्युम्नोनामभूपालःसत्यवादीजि तेंद्रियः ॥ सैंधवंहयमारुह्यचचारमृगयांवने ॥ २ ॥ युतःकतिपयामात्यैर्दंशितश्चारुकुंडलः ॥ धनुराजगवंबद्धाबाणसंधंतथाऽद्भुतम् ॥ ३ ॥ सभ्रमंस्त द्वनोद्देशेहन्यमानोरुरून्मृगान् ॥ शशांश्चसूकरांश्चैवखड्गांश्चगवयांस्तथा ॥ ४ ॥ शरभान्महिषांश्चैवसामरान्वनकुक्कुटान् ॥ निघ्नन्मेध्यान्पशूंत्राजा कुमारवनमाविशत् ॥ ५ ॥ मेरोरधस्तलेदिव्यंमंदारद्रुमराजितम् ॥ अशोकलतिकाकीर्णंबकुलैरधिवासितम् ॥ ६ ॥ सालैस्तालैस्तमालैश्चचंपकैःपनसै स्तथा ॥ आम्रैर्नीपैर्मधूकैश्चमाधवीमंडपावृतम् ॥ ७ ॥ दाडिमैर्नारिकेलैश्चकदलीखंडमंडितम् ॥ यूथिकामालतीकुंदपुष्पवल्लीसमावृतम् ॥ ८ ॥

अवश्यंवक्तव्येतिपुरूरवसःप्रसंगेनवक्तव्यापिसोमाद्बुधोत्पत्तिरुक्ता ॥ ततःपुरूरवसउत्पत्तिमाह ततःपुरूरवाइति ॥ ततोबुधोत्पत्त्यनंतरंपुरूरवाइलायांकामिन्यांजज्ञेप्रादुर्भूतः बुधपुत्रो बुधादिलायामुत्पन्नइत्यर्थः ॥ १ ॥ कासाविलेत्याकांक्षायांतदुत्पत्तिंकथयति सुद्युम्नोनामेति॥ अयंसुद्युम्नोवैवस्वतमनोःपुत्रइतिविष्णुभागवते॥सैंधवंसिंधुदेशोद्भवम्॥ २॥३॥४ ॥ मेध्यान् यज्ञियान् ॥ ५ ॥ ६ ॥ माधवीवासंती ॥ वासंतीमाधवीलतेतिवचनात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कीचकध्वनिनादितमिति॥वेणवःकीचकास्तेस्युर्येस्वनंत्यनिलोद्धताइतिकोशात्कीचकावेणवः॥९॥१०॥११॥१२॥यामियास्यामीत्यर्थः॥१३॥१४॥किंकृतंकोवाऽपराधःकृतइत्यर्थः॥१५॥
॥१६॥१७॥ भर्तूरममाणाइतिरोरीतिलोपेद्रलोपेइतिदीर्घः॥१८॥पर्यधात्परिधानंकृतवती॥१९॥प्रसंगंप्रवृत्तिंक्रीडायाम्॥२०॥ह्रीयुतांलज्जायुक्ताम्॥ सुखंतेइति॥तेयथासुखंस्यात्तथाप्रकरो

हंसकारंडवाकीर्णंकीचकध्वनिनादितम् ॥ भ्रमरालिरुतारामंवनंसर्वसुखावहम् ॥ ९ ॥ दृष्ट्वाप्रमुदितोराजासुद्युम्नःसेवकैर्वृतः ॥ वृक्षान्सुपुष्पितान्वीक्ष्यकोकिलारावमंडितान् ॥ १० ॥ प्रविष्टस्तत्रराजर्षिःस्त्रीत्वमापक्षणात्ततः ॥ अश्वोपिवडवाजातश्चिंताविष्टःसभूपतिः ॥ ११ ॥ किमेतदितिचिंतार्तश्चिंत्यमानःपुनःपुनः ॥ दुःखंबहुतरंप्राप्तःसुद्युम्नोलज्जयान्वितः ॥ १२ ॥ किंकरोमिकथंयामिगृहंस्त्रीभावसंयुतः ॥ कथंराज्यंकरिष्यामिकेनवावंचितोह्यहम् ॥ ॥ १३ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सूताश्चर्यमिदंप्रोक्तंत्वयायल्लोमहर्षण ॥ सुद्युम्नःस्त्रीत्वमापन्नोभूपतिर्देवसन्निभः ॥ १४ ॥ किंतत्कारणमाचक्ष्ववनेतत्रमनोहरे ॥ किंकृतंतेनराज्ञाचविस्तरंवदसुव्रत ॥ १५ ॥ सूतउवाच ॥ एकदागिरिशंद्रष्टुमृषयःसनकादयः ॥ दिशोवितिमिराभासाकुर्वंतःसमुपागमन् ॥ १६ ॥ तस्मिंश्चसमयेतत्रशंकरःप्रमदायुतः ॥ क्रीडासक्तोमहादेवोविवस्त्राकामिनीशिवा ॥ १७ ॥ उत्संगेसंस्थिताभर्तूरममाणामनोरमा ॥ तान्विलोक्यांबिकादेवीविवस्त्राव्रीडिताभृशम् ॥ १८ ॥ भर्तुरंकात्समुत्थायवस्त्रमादायपर्यधात् ॥ लज्जाविष्टास्थितातत्रवेपमानातिमानिनी ॥ १९ ॥ ऋषयोपितयोर्वीक्ष्यप्रसंगंरममाणयोः ॥ परिवृत्त्यययुस्तूर्णंनरनारायणाश्रमम् ॥ २० ॥ ह्रीयुतांकामिनींवीक्ष्यप्रोवाचभगवान्हरः ॥ कथंलज्जातुरासित्वंसुखंतेप्रकरोम्यहम् ॥ २१ ॥ अद्यप्रभृतियोमोहात्पुमान्कोपिवरानने ॥ वनंचप्रविशेदेतत्सवैयोषिद्भविष्यति ॥ २२ ॥ इतिशप्तंवनंतेनयेजानंतिजनाःक्वचित् ॥ वर्जयंतीहतेकामंवनंदोषसमृद्धिमत् ॥ २३ ॥ सुद्युम्नस्तुतदज्ञानात्प्रविष्टःसचिवैःसह ॥ तथैवस्त्रीत्वमापन्नस्तैःसहेतिनसंशयः ॥ २४ ॥ चिंताविष्टःसराजर्षिर्नजगामगृहंह्रिया ॥ विचचारबहिस्तस्माद्वनदेशादितस्ततः ॥ २५ ॥ इलेतिनामसंप्राप्तंस्त्रीत्वेतेनमहात्मना ॥ विचरंस्तत्रसंप्राप्तोबुधःसोमसुतोयुवा ॥ २६ ॥ स्त्रीभिःपरिवृतांतांतुदृष्ट्वाकांतांमनोरमाम् ॥ हावभावकलायुक्तांचकमेभगवान्बुधः ॥ २७ ॥ सापितंचकमेकांतंबुधंसोमसुतंपतिम् ॥ संयोगस्तत्रसंजातस्तयोःप्रेम्णापरस्परम् ॥ २८ ॥ सतस्यांजनयामासपुरूरवसमात्मजम् ॥ २९ ॥ साप्रासूतसुतंबालाचिंताविष्टावनेस्थिता॥सस्मारस्वकुलाचार्यंवसिष्ठंमुनिसत्तमम् ॥ ३० ॥ सतदाऽस्यदशांदृष्ट्वासुद्युम्नस्यकृपान्वितः ॥ अतोषयन्महादेवंशंकरंलोकशंकरम् ॥ ३१ ॥

मीत्यर्थः॥२१॥मोहान्मोहादपीत्यर्थः॥२२॥२३॥तैःसहेति॥यैःसचिवैःसहतद्वनंगतस्तैःसहैवस्त्रीत्वंप्राप्तइत्यर्थः॥२४॥२५॥स्त्रीत्वेइति॥स्त्रीत्वेप्राप्तेसतिइलेतिनामप्राप्तमित्यन्वयः॥ निकटस्थमंत्रिभिरिलेतिनामस्थापितमित्यर्थः॥ईडस्तुतावित्यस्यरूपम्॥इलास्तुत्याडलयोरभेदः॥ह्रस्वपाठस्तुसंज्ञाशब्दत्वाज्जातः॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥सतदाऽस्येति॥सुद्युम्नस्येत्यर्थः॥३१॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥३२॥ऋतांकुर्वन्निति ॥ अयंस्त्रीत्वंप्राप्स्यतीतिवाक्यंममामिथ्यानैवभवेदथापितवप्रार्थनानुरोधेनमासंपुमान्भविष्यतिपुनर्मासंस्त्रीभविष्यतिपुनर्मासंपुरुषइत्युवाचेत्यर्थः॥३३॥३४॥ हर्म्येषु गृहाभ्यंतरेचेत्यर्थः ॥ नाभ्यनंदन्आसांप्रजानांस्त्रीरूपोराजेतिलोकानिंदयेतिभावः ॥ ३५ ॥ नृपतिःसुद्युम्नोराज्यंप्रतिष्ठांतन्नामकंपुरंचदत्वेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥४१॥ कोवेत्तीति ॥ एतदखिलंतवैश्वर्यमादृशेकृपणेदयांचेयत्तयाकोवेत्तिनकोपीत्यर्थः॥विस्मयोमेइति॥अहोभगवत्यांकियदैश्वर्यंतिष्ठतिकियतीचपामरेदयास्तीति ॥४२॥कुतआश्चर्यमितिचेत्तत्राह शंभुरिति ॥ एतेमहाप्रभाववंतोऽपितवप्रभावंनजानंतितदाऽगुणोगुणशून्योमनुष्यःकथंबुद्ध्येत्जानीयान्नकथमपीत्यर्थः ॥ यतोनजानातिततएवाश्चर्यमितिभावः ॥ ४३ ॥ विष्णुर्जानातीतिचे

तस्मैसभगवांस्तुष्टःप्रददौवांछितंवरम् ॥ वसिष्ठःप्रार्थयामासपुंस्त्वंराज्ञःप्रियस्यच ॥ ३२ ॥ शंकरस्तुनिजांवाचमृतांकुर्वन्नुवाचह ॥ मासंपुमांस्तुभवितामासंस्त्रीभूपतिःकिल ॥ ३३ ॥ इत्थंप्राप्यवरंराजाजगामस्वगृहंपुनः ॥ चक्रेराज्यंसधर्मात्मावसिष्ठस्याप्यनुग्रहात् ॥ ३४ ॥ स्त्रीत्वेतिष्ठतिहर्म्येषुपुंस्त्वेराज्यंप्रशास्तिच ॥ प्रजास्तस्मिन्समुद्विग्नानाभ्यनंदन्महीपतिम् ॥ ३५ ॥ कालेतुयौवनंप्राप्तःपुत्रःपुरूरवास्तदा ॥ प्रतिष्ठांनृपतिस्तस्मैदत्त्वाराज्यंवनंययौ ॥ ३६ ॥ गत्वातस्मिन्वनेरम्येनानाद्रुमसमाकुले ॥ नारदान्मंत्रमासाद्यनवाक्षरमनुत्तमम् ॥ ३७ ॥ जजापमंत्रमत्यर्थंप्रेमपूरितमानसः ॥ परितुष्टातदादेवीसगुणातारिणीशिवा ॥ ३८ ॥ सिंहारूढास्थिताचाग्रेदिव्यरूपामनोरमा ॥ वारुणीपानसंमत्तामदाघूर्णितलोचना ॥ ३९ ॥ दृष्ट्वातांदिव्यरूपांचप्रेमाकुलितलोचनः ॥ प्रणम्यशिरसाप्रीत्यातुष्टावजगदंबिकाम् ॥ ४० ॥ ॥ इलोवाच ॥ दिव्यंचतेभगवतिप्रथितंस्वरूपंदृष्टंमयासकललोकहितानुरूपम्॥वंदेत्वदंघ्रिकमलंसुरसंघसेव्यंकामप्रदंजननिचापिविमुक्तिदंच ॥४१॥ कोवेत्तितेऽबभुविमर्त्यतनुर्नकामंमुह्यंतियत्रमुनयश्चसुराश्चसर्वे॥ ऐश्वर्यमेतदखिलंकृपणेदयांचदृष्ट्वैवदेविसकलंकिलविस्मयोमे ॥ ४२ ॥ शंभुर्हरिःकमलजोमघवारविश्ववित्तेशवह्निवरुणाःपवनश्चसोमः ॥ जानंतिनैववसवोपिहितेप्रभावंबुध्येत्कथंतवगुणानगुणोमनुष्यः ॥ ४३ ॥ जानातिविष्णुरमितद्युतिरंबसाक्षात्त्वांसात्त्विकींमुदधिजांसकलार्थदांच ॥ कोराजसींहरउमांकिलतामसींत्वांवेदांविकेनतुपुनःखलुनिर्गुणांत्वाम् ॥ ४४ ॥ क्वाहंसुमंदमतिरप्रतिमःप्रभावःक्वायंतवातिनिपुणोमयिसुप्रसादः ॥जानेभवानिचरितंकरुणासमेतंयत्सेवकांश्चदयसेत्वयिभावयुक्तान् ॥ ४५ ॥

त्तत्राहजानातीति ॥ सत्यंविष्णुर्जानाति किंतु सात्त्विकींशक्तिंलक्ष्मीरूपामेवकेवलंजानाति ॥ नसाम्यावस्थात्मिकांतुरीयांनिर्गुणाम् ॥ तथाकोब्रह्माराजसींशक्तिमेवकेवलंजानाति॥तथाहरउमांतामसींमेवकेवलंजानाति नतुपुनर्निर्गुणाम् ॥ एकैकशक्तिज्ञातारएवैतेनतुरीयरूपनिर्गुणज्ञातारइत्यर्थः ॥४४॥ एतादृशीत्वंसर्वोत्कृष्टापिस्वभक्तस्यातिसुलभासीत्याह क्वाहमिति ॥ हेमातरहंसुमंदमतिःक्वतथातवायंमयिसुप्रसादःक्व अतिदूरमित्यर्थः ॥ तथापिमादृशानपिसेवकांस्त्वयिभावयुक्तान्यद्यस्मात्कारणाद्दयसेदयांकरोषि तस्मात्स्वभक्तविषयेतवचरितंकरुणासमेतमस्तीतिजानेनिश्चिनोमि ॥ ततःस्वभक्तस्यातिसुलभासीतिसत्यमेवेतिभावः ॥ ४५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ७ ॥ ॥

८

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



तवैकैकशक्तेरपिप्रभावज्ञाब्रह्मादयोनसंतिकिंपुनस्तवमूलशक्तेरित्याह वृत्तइति ॥ वनजं जीवनंभुवनंवनमितिकोशाद्वनंजलंतस्माज्जातंवनजंकमलंवनजस्येशास्वामिनीकमलवासिनीत्यर्थः॥तया परशक्त्यंशभूतयावृत्तोऽपिधातूनामनेकार्थत्वात्विवाहितोपिमधुसूदनश्चमधुदैत्यनाशकोपिमहापराक्रमवान्विष्णुर्मुदंहर्षंकृत्वानैवाचरतिव्यवहरति॥अहमेतस्यानयोग्योस्मीत्यभिप्रायेणलक्ष्मीं प्राप्यापिनहर्षेणव्यवहरतीत्यर्थः ॥ अतएवससर्वदाध्यानस्थएवभवतीतिभावः॥नन्वेवंचेत्किमितिपरयालक्ष्म्यास्वपादसंवाहनंकारयतीतिचेत्तत्राह पादौतवादिपुरुषइति॥ नस्वपादसंवाहनमा दिपुरुषःकारयति॥किंतुलोकोद्धारार्थंतवपावकेनशुद्धिंकारकेणकरेणहस्तेननिजौपादौशुभौपवित्रौकरोतिच॥तथाच विष्णुरेकशक्तिप्रभावज्ञोऽपिनभवतिकुतःपुनर्मूलशक्तेःप्रभावज्ञइत्यर्थः ४६ तवोत्कृष्टत्वादेववक्ष्यमाणंसंभवतीत्युत्प्रेक्षते वांछत्यहोइति ॥ अशोकवृक्षस्यहिस्वभावःपादताडनेनआत्मानंवर्धयतीतितथाचस्ववर्धनार्थंपादताडनंसइच्छतीत्युच्यते तथाचतादृशाशोकइवा तिकामंयथेष्टंयथास्यात्तथाप्रमुदितोहर्षितोविष्णुःपुरुषस्तवपादाहतिंत्वत्कृतपादताडनंवांछतितदिदमहोआश्चर्यमित्यर्थः ॥ तांचपादाहतिंसकलदेवनुतंस्मरार्तपतिंपादेप्रणतंचदृष्ट्वारुषिताकु

वृत्तस्त्वयाहरिरसौवनजेशयापिनैवाचरत्यपिमुदंमधुसूदनश्च ॥ पादौतवादिपुरुषःकिलपावकेनकृत्वाकरोतिचकरेणशुभौपवित्रौ ॥ ४६ ॥ वांछत्यहोहरि रशोकइवातिकामंपादाहतिंप्रमुदितःपुरुषःपुराणः ॥ तांत्वंकरोषिरुषिताप्रणतंचपादेदृष्ट्वापतिंसकलदेवनुतंस्मरार्तम् ॥ ४७ ॥ वक्षःस्थलेवससिदेविसदैव तस्यपर्यंकवत्सुचरितेविपुलेऽतिशांते ॥ सौदामनीवसुघनेसुविभूषितेचकिंतेनवाहनमसौजगदीश्वरोपि ॥ ४८ ॥ त्वंचेज्जहासिमधुसूदनमंबकोपान्नैवार्चि तोपिसभवेत्किलशक्तिहीनः ॥ प्रत्यक्षमेवपुरुषंस्वजनास्त्यजंतिशांतंश्रियोज्झितमतीवगुणैर्वियुक्तम् ॥ ४९ ॥ ब्रह्मादयःसुरगणानतुकिंयुवत्योयेत्वत्पदां बुजमहर्निशमाश्रयंति ॥ मन्येत्वयैवविहिताःखलुतेपुमांसःकिंवर्णयामितवशक्तिमनंतवीर्ये ॥ ५० ॥ त्वंनाऽपुमान्नचपुमानितिमेविकल्पोयाकाऽसिदेवि सगुणाननुनिर्गुणावा ॥ तांत्वांनमामिसततंकिलभावयुक्तोवांछामिभक्तिमचलांत्वयिमातरंते ॥ ५१ ॥

पितात्वंकरोषितदेतत्तवोत्कृष्टत्वाभावेनसंगच्छतइतिभावः ॥ ४७ ॥ किंचवक्षःस्थलइति ॥ हेदेवितस्यविष्णोर्वक्षःस्थलेपर्यंकवत्सदैववससि । कीदृशी घनेमेघेकृष्णवर्णेसौदामनीविद्युल्लतेव॥ तेनकिंतद्धृदयेवासेनासौजगदीश्वरोपितेतववाहनंनजातःकिंजातएवेतितवैकदेशशक्तेरेवंमहिमाकिंपुनस्तवमूलप्रकृतेरितिभावः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ननुत्वंयुवतीभावंगतोसिततस्त्वंममानुग्रहयोग्यो नासीतिचेत्तत्राह ब्रह्मादयइति ॥ येत्वत्पादांबुजमहर्निशमाश्रयंतितेब्रह्मादयःकिंयुवत्योनजाताःकिंतुकदाचिन्मणिद्वीपेगताःसंतोजाताएव ॥ तथाचतेयथात्वदनुग्रहयोग्याएवमहमप्यस्मी तिभावः ॥ मन्येत्वयैवेति ॥ सांप्रतंपुमांसोपितेत्वयैवकृताःएवंयदिमांकरोषिपुमांसंतर्हिकिमहंनस्यांकिंतुभविष्याम्येव ॥ ननुकिंमयियुवत्याःपुरुषत्वप्रदायिकाशक्तिरस्तितत्राह किंव र्णयामीति ॥ हेअनंतवीर्येतवशक्तिमहंपामरःकिंवर्णयामियावेदानामप्यविषयाइत्यर्थः ॥ ५० ॥ त्वंनापुमानिति ॥ अपुमानितिच्छेदः ॥ नचपुमान्साम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मणिलिंगत्रया भावात् ॥ इतिमेविकल्पोवितर्कोमनसिवर्ततएव ॥ तर्हिकथंभजनंक्रियतेगुणज्ञानाभावादितिचेत्तत्राऽऽह याकाऽसीति ॥ गुणज्ञानाभावेप्येवंरीत्याऽपिकिंभजनंनसंभवतीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः॥ अस्तीत्येवोपलब्धव्यइत्यतोहेदेवित्वांतादृशींतांनमामिभावोभक्तिस्तद्युक्तः ॥ किंचांतेऽचलांभक्तिंवांछामिनान्यत्किंचिदिति ॥ ५१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सायुज्यमात्मनीति॥देवीतुष्टासतीज्ञानप्रदानेनाऽत्मनिब्रह्मरूपेसायुज्यमैक्यंददौ देवीप्रसादादात्मानुभवेनब्रह्मरूपोऽभवदित्यर्थः ॥५२॥५३॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेद्वादशो ध्यायः॥१२॥ ॥ ॥ चतुस्त्रिंशच्छ्लोकवर्यैःपुरूरवसउत्तमम् ॥ उर्वश्याश्चरितंचैववैराग्यार्थमिहोच्यते ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ मंत्रःसुगुप्तइति ॥ तस्यराज्ञोमंत्रोगुप्तोऽन्यैरविदितआसीत् ॥ पर त्रपरमंत्रेतुतस्यराज्ञोऽभिज्ञताऽऽसीदेतादृशश्चतुरइत्यर्थः ॥३॥४॥५॥६॥७॥ समयंसंकेतमेवाह एतावुरणकाविति ॥ उरणकौमेषौमयात्वन्निकटेन्यस्तौएतौरक्षस्व ॥ ८ ॥ घृतमिति ॥ किं

॥ सूतउवाच ॥ इतिस्तुत्वामहीपालोजगामशरणंतदा ॥ परितुष्टाददौदेवीतत्रसायुज्यमात्मनि ॥ ५२ ॥ सुद्युम्नस्तुततःप्रापपदंपरमकंस्थिरम् ॥ त स्यादेव्याःप्रसादेनमुनीनामपिदुर्लभम् ॥ ५३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेसुद्युम्नस्तुतिर्नामद्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥ सूतउवाच ॥ सुद्युम्नेतुदिवंयातेराज्यंचक्रेपुरूरवाः ॥ सगुणश्चसुरूपश्चप्रजारंजनतत्परः ॥ १ ॥ प्रतिष्टानेपुरेरम्येराज्यंसर्वनमस्कृतम् ॥ चकारसर्वधर्मज्ञःप्रजारक्षणत त्परः ॥ २ ॥ मंत्रःसुगुप्तस्तस्याऽऽसीत्परत्राभिज्ञतातथा ॥ सदैवोत्साहशक्तिश्चप्रभुशक्तिस्तथोत्तमा ॥ ३ ॥ सामदानादयःसर्वेवशगास्तस्यभूपतेः ॥ वर्णाश्रमान्स्वधर्मस्थान्कुर्वन्राज्यंशशासह ॥ ४ ॥ यज्ञांश्चविविधांश्चक्रेसराजाबहुदक्षिणान् ॥ दानानिचविचित्राणिददावथनराधिपः ॥ ५ ॥ तस्यरू पगुणौदार्यशीलद्रविणविक्रमान् ॥ श्रुत्वोर्वशीवशीभूताचकमेतंनराधिपम् ॥ ६ ॥ ब्रह्मशापाभितप्तासामानुषंलोकमास्थिता ॥ गुणिनंतंनृपंमत्वावरया मासमानिनी ॥ ७ ॥ समयंचेदृशंकृत्वास्थितातत्रवरांगना ॥ एतावुरणकौराजन्न्यस्तौरक्षस्वमानद ॥ ८ ॥ घृतंमेभक्षणंनित्यंनान्यत्किंचिन्नृपाशन म् ॥ नेक्षेत्वांचमहाराजनग्नमन्यत्रमैथुनात् ॥ ९ ॥ भाषाबंधस्त्वयंराजन्यदिभग्नोभविष्यति ॥ तदात्यक्ष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥ १० ॥ अंगीकृतंचतद्राज्ञाकामिन्याभाषितंतुयत् ॥ स्थिताभाषेणबंधेनशापानुग्रहकाम्यया ॥ ११ ॥ रेमेतदासभूपालोलीनोवर्षगणान्बहून् ॥ धर्मकर्मादि कंत्यक्त्वाचोर्वश्यामदमोहितः ॥ १२ ॥ एकचित्तस्तुसंजातस्तन्मनस्कोमहीपतिः ॥ नशशाकतयाहीनःक्षणमप्यतिमोहितः ॥ १३ ॥ एवंवर्षगणांते तुस्वर्गस्थःपाकशासनः ॥ उर्वशींनागतांदृष्ट्वागंधर्वानाहदेवराट् ॥ १४ ॥ उर्वशीमानयध्वंभो गंधर्वाःसर्वएवहि ॥ हृत्वोरणौगृहात्तस्यभूपतेःसमयेकिल ॥ १५ ॥ उर्वशीरहितंस्थानंमदीयंनातिशोभते ॥ येनकेनाप्युपायेनतामानयतकामिनीम् ॥ १६ ॥

चहेनृपमेममभक्षणंघृतमेवनान्यत्किंचित्किंचान्यत्रमैथुनात्त्वांनग्नंनेक्षेनपश्येहमिति॥ यदिमत्प्रतिज्ञात्रयंत्वयानिर्वाह्यतेतर्हित्वन्निकटेअहंस्थास्यामिनोचेद्गमिष्यामीति॥घृतंमेभक्षणमिति॥अमृतं वाआज्यमितिश्रुतेःदेवानांचामृताशित्वात् ॥ ९ ॥ १० ॥ शापानुग्रहकाम्ययेति ॥ शापमोक्षकामनयेत्यर्थः ॥ ११ ॥ लीनोन्तर्गृहेस्थितइत्यर्थः ॥ १२ ॥ नशशाकेति ॥ तयाहीनो ऽवस्थातुं न समर्थोबभूव ॥ १३ ॥ १४ ॥ समयेतेनाज्ञातकालइत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥१७॥चक्रंदतुराह्वानंरोदनंवाचक्रतुः॥१८॥समयोयमिति॥मया यःसमयःकृतःसनष्टइतिशेषः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥अनागसमनपराधिनंनत्यक्तुमर्हसीत्यन्वयः॥२८॥कुतइतिचेत्तत्राह सदेहइति॥यद्यस्माद्धेतोःसदेहोयःपूर्वंत्वयाऽतिप्रेम्णाभुक्तःसोयंदेहोत्रपतति॥त्वयादूरदेशंहृतस्त्वदुद्देशेनदूरदेशंप्राप्तोतिकोमलइतिकृत्वा ॥ किंचहेवरोरुएनंदेहं काकावृकाःखादंति ॥ वर्तमानसामीप्येलट् ॥ त्वयात्यक्तंमृतमधुनैवभक्षयिष्यंतीत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ वेदेविस्तरितमितिबह्वचिमामृथाइतिसूक्तेनेत्यर्थः । स्त्री

इत्युक्तास्तेऽथगंधर्वाविश्वावसुपुरोगमाः ॥ ततोगत्वामहागाढतमसिप्रत्युपस्थिते ॥ १७ ॥ जघ्नुस्तावुरणौदेवारममाणंविलोक्यतम् ॥ चक्रंदतुस्तदातौतुह्रियमाणौविहायसा ॥ १८ ॥ उर्वशीतदुपाकर्ण्यक्रंदितंसुतयोरिव ॥ कुपितोवाचराजानंसमयोऽयंकृतोमया ॥ १९ ॥ नष्टाऽहंतवविश्वासाद्धृतौचोरैर्ममोरणौ ॥ राजन्पुत्रसमावेतौत्वंकिंशेषेस्त्रियासमः ॥ २० ॥ हतास्म्यहंकुनाथेननपुंसावीरमानिना ॥ उरणौमेगतौचाद्यसदाप्राणप्रियौमम ॥ ॥ २१ ॥ एवंविलप्यमानांतांदृष्ट्वाराजाविमोहितः ॥ नग्नएवययौतूर्णंपृष्ठतःपृथिवीपतिः ॥ २२ ॥ विद्युत्प्रकाशितातत्रगंधर्वैर्नृपवेश्मनि ॥ नग्नभूतस्तयादृष्टोभूपतिर्गंतुकामया ॥ २३ ॥ त्यक्त्वोरणौगताःसर्वेगंधर्वाःपथिपार्थिवः ॥ नग्नोजग्राहतौश्रांतोजगामस्वगृहंप्रति ॥ २४ ॥ तदोर्वशींगतांदृष्ट्वाविललापातिदुःखितः ॥ नग्नंवीक्ष्यपतिंनारीगतासावरवर्णिनी ॥ २५ ॥ क्रंदन्सदेशदेशेषुबभ्रामनृपतिःस्वयम् ॥ तच्चित्तोविह्वलःशोचन्विवशःकाममोहितः॥२६॥भ्रमन्वैसकलांपृथ्वींकुरुक्षेत्रेददर्शताम् ॥ दृष्ट्वासंहृष्टवदनःप्राहसूक्तंनृपोत्तमः ॥ २७ ॥ अयेजायेतिष्ठतिष्ठघोरेनत्यक्तुमर्हसि ॥ मांत्वंत्वन्मानसंकांतंवशगंचाप्यनागसम् ॥ २८ ॥ सदेहोयंपतत्यत्रदेविदूरंहृतस्त्वया ॥खादंत्येनंवृकाःकाकास्त्वयात्यक्तंवरोरुयत् ॥ २९ ॥ एवंविलपमानंतंराजानंप्राहचोर्वशी ॥ दुःखितंकृपणंश्रांतंकामार्तंविवशंभृशम् ॥ ३० ॥ उर्वश्युवाच ॥ मूर्खोसिनृपशार्दूलज्ञानंकुत्रगतंतव ॥ क्वापिसख्यंनचस्त्रीणांवृकाणामिवपार्थिव ॥ ३१ ॥ नविश्वासोहिकर्तव्यःस्त्रीषुचौरेषुपार्थिवैः ॥ गृहंगच्छसुखंभुंक्ष्वमाविषादेमनःकृथाः ॥ ३२ ॥ इत्येवंबोधितोराजानविवेदातिमोहितः॥दुःखंचपरमंप्राप्तःस्वैरिणीस्नेहयंत्रितः ॥ ३३ ॥ सूतउवाच ॥ इतिसर्वंसमाख्यातमुर्वशीचरितंमहत् ॥ वेदेविस्तरितंचैतत्संक्षेपात्कथितंमया ॥ ३४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ श्रीसूतउवाच ॥ दृष्ट्वातामसितापांगींव्यासश्चिंतापरोऽभवत् ॥ किंकरोमिनमेयोग्यादेवकन्येयमप्सराः ॥ १ ॥ एवंचिंतयमानंतुदृष्ट्वाव्यासंतदाप्सराः ॥ भयभीताहिसंजाताशापंमांविसृजेदयम् ॥ २ ॥

संगिनामित्थंगतिर्भवतितस्मात्स्त्रीसंगःसर्वथाश्रीभगवत्युपासकैस्त्याज्यइत्यवांतरतात्पर्यम् ॥३४॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेत्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ सप्ततिश्लोकवर्यैस्तुशुकस्योत्पत्तिरीर्यते॥यत्रधर्मोगृहस्थानांकर्तव्यत्वेनचोच्यते॥१॥दृष्टांतत्वेनोपात्तांपुरूरवःकथांसमाप्यप्रकृतांशुकोत्पत्तिंकथयति॥दृष्ट्वेति॥नमेयोग्येति॥गृहस्थाश्रमयोग्यानेत्यर्थः॥यतोप्सराइयंभवति ॥ १ ॥ मांप्रतिशापमयंविसृजेदितिहेतोःसाप्सराभयभीताअभवदित्याह ॥ भयभीतेति ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

शुकीति ॥ कीरांगनारूपमित्यर्थः ॥ विस्मयमिति ॥ अहोअधुनैवेयंविलक्षणाकामिनीकथंशुकीजातेतिविस्मयइत्यर्थः ॥ ३ ॥ दर्शनादेवेति ॥ अप्सरोरूपदर्शनादेवेत्यर्थः ॥ विस्मितं प्रफुल्लंजातं ॥ विस्मितःप्रफुल्लः ॥ ४ ॥ निगृह्णन्मानसमिति ॥ निरुद्धंकुर्वन्नपिनियंतुंनशशाकेत्यर्थः ॥ प्रसृतमिति ॥ विषयेषुव्यापृतमित्यर्थः ॥ ५ ॥ नैवाविधृतामिति ॥ नविधृतांनिरुद्धमभवदितिशेषः ॥ ६ ॥ ७ ॥ सोविचिंत्येति ॥ अविचिंत्येतिच्छेदः ॥ नगणयित्वेत्यर्थः ॥ ननुवीर्यपातानंतरंप्रायश्चित्तंकृत्वैवमंथनंकर्तव्यंतत्कथमाविचिंत्येत्युक्तामितिचेन्न ॥ यतो यज्ञेकर्मणियज्ञांगवैकल्येएवप्रायश्चित्तंनान्यथेतिमन्यतेमुनिः ॥ यद्वाऽरण्यांपतितंवीर्यमविचिंत्याऽज्ञायेत्यर्थः ॥ वीर्यपातानंतरंप्रायश्चित्तंकृत्वैवमंथनंकृतंपरंत्वरण्यांपतितमित्येवनज्ञातामि

साकृत्वाऽऽथशुकीरूपंनिर्गताभयविह्वला ॥ कृष्णस्तुविस्मयंप्राप्तोविहंगींतांविलोकयन् ॥ ३ ॥ कामस्तुदेहेव्यासस्यदर्शनादेवसंगतः ॥ मनोऽतिविस्मितंजातंसर्वगात्रेषुविस्मितः ॥ ४ ॥ सतुधैर्येणमहतानिगृह्णन्मानसंमुनिः ॥ नशशाकनियंतुंचसव्यासःप्रसृतंमनः ॥ ५ ॥ बहुशोगृह्यमाणंचघृताच्यामोहितंमनः ॥ भावित्वान्नैवविधृतंव्यासस्यामिततेजसः ॥ ६ ॥ मंथनंकुर्वतस्तस्यमुनेरग्निचिकीर्षया ॥ अरण्यामेवसहसातस्यशुक्रमथापतत् ॥ ७ ॥ सोऽविचिंत्यतथापातंममंथारणिमेवच ॥ तस्माच्छुकःसमुद्भूतोव्यासाकृतिमनोहरः ॥ ८ ॥ विस्मयंजनयन्बालःसंजातस्तदरण्यजः ॥ यथाऽध्वरेसमिद्धोग्निर्भातिहव्येनदीप्तिमान् ॥ ९ ॥ व्यासस्तुसुतमालोक्यविस्मयंपरमंगतः ॥ किमेतदितिसंचिंत्यवरदानाच्छिवस्यवै ॥ १० ॥ तेजोरूपीशुकोजातोप्यरणीगर्भसंभवः ॥ द्वितीयोग्निरिवात्यर्थंदीप्यमानःस्वतेजसा ॥ ११ ॥ विलोकयामासतदाव्यासस्तुमुदितंसुतम् ॥ दिव्येनतेजसायुक्तंगार्हपत्यमिवापरम् ॥ १२ ॥ गंगांतःस्नापयामाससमागत्यगिरेस्तदा ॥ पुष्पवृष्टिस्तुखाज्जाताशिशोरुपरितापसाः ॥ १३ ॥ जातकर्मादिकंचक्रेव्यासस्तस्यमहात्मनः ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ १४ ॥ जगुर्गंधर्वपतयोमुदितास्तेदिदृक्षवः ॥ विश्वावसुर्नारदश्चतुंबुरुःशुकसंभवे ॥ १५ ॥ तुष्टुवुर्मुदिताःसर्वेदेवाविद्याधरास्तथा ॥ दृष्ट्वाव्याससुतंदिव्यमरणीगर्भसंभवम् ॥ १६ ॥ अंतरिक्षात्पपातोर्व्यांदंडःकृष्णाजिनंशुभम् ॥ कमंडलुस्तथादिव्यःशुकस्यार्थेद्विजोत्तमाः ॥ १७ ॥ सद्यःसववृधेबालोजातमात्रोतिदीप्तिमान् ॥ तस्योपनयनंचक्रेव्यासोविद्याविधानवित् ॥ १८ ॥ उत्पन्नमात्रंतंवेदाःसरहस्याःससंग्रहाः ॥ उपतस्थुर्महात्मानंयथास्यपितरंतथा ॥ १९ ॥ यतोदृष्टंशुकीरूपंघृताच्याःसंभवेतदा ॥ शुकेतिनामपुत्रस्यचकारमुनिसत्तमाः ॥ २० ॥

त्यर्थकल्पनात् ॥ व्यासाकृतिश्चासौमनोहरश्चेतिसमस्तम् ॥ ८ ॥ अरण्यजः ॥ अरण्यकाष्ठजइत्यर्थः ॥ शम्याअरण्यकाष्ठत्वात् ॥ यथाध्वरेइति ॥ तथायंदीप्तिमानितिशेषः ॥ ९ ॥ किमेतदिति ॥ कामिन्यभावेकथंपुत्रोत्पत्तिरितिविचिंत्यचिंतांकृत्वाशिवस्यवरदानादेतदभवदितितर्कयामासेतिशेषः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ खादाकाशात् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ उपतस्थुर्मनसिस्फुरणंप्राप्नुवन्नित्यर्थः ॥ १९ ॥ घृताच्याः संभवेतदेति ॥ घृताच्याःशुकीरूपंसंभवेशुकोत्पत्तिसमयेदृष्टं यतोयस्मात्कारणात् ॥ तस्मादेवतदा तस्मिन्काले ॥ शुकेतिसंधिरार्षः ॥ शुकइतिनामचकारेत्यर्थः ॥ यदुद्देशेनवीर्यंपतितंसातस्यमातेतिशुकीमातास्येतिशुकनामकरणतात्पर्यम् ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ घ्राणंमूर्ध्नीति ॥ मस्तकावघ्राणंकृतवानित्यर्थः ॥ २४ ॥ आश्वास्येति ॥ पुत्राध्ययनंश्रुत्वासम्यक्कृत्वयाऽध्ययनंकृतमित्याश्वास्येत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ अभ्याशेसमीपे ॥ ३२ ॥ तत्त्वेनपरमार्थदृष्ट्येत्यर्थः ॥ पूर्वोक्तंतुत्वयालौकिकदृष्ट्योक्तमितिभावः ॥ ३३ ॥ परमार्थदृष्ट्यैवेदमुक्तमित्याभिप्राये

बृहस्पतिमुपाध्यायंकृत्वाव्याससुतस्तदा ॥ व्रतानिब्रह्मचर्यस्यचकारविधिपूर्वकम् ॥ २१ ॥ सोऽधीत्यनिखिलान्वेदान्सरहस्यान्ससंग्रहान् ॥ धर्मशास्त्राणिसर्वाणिकृत्वागुरुकुलेशुकः ॥ २२ ॥ गुरवेदक्षिणांदत्वासमावृत्तोमुनिस्तदा ॥ आजगामपितुःपार्श्वेकृष्णद्वैपायनस्यच ॥ २३ ॥ दृष्ट्वाव्यासःशुकंप्राप्तंप्रेम्णोत्थायससंभ्रमः ॥ आलिलिंगमुहुर्घ्राणंमूर्ध्नितस्यचकारह ॥ २४ ॥ पप्रच्छकुशलंव्यासस्तथाचाध्ययनंशुचिः ॥ आश्वास्यस्थापयामासशुकंतत्राऽऽश्रमेशुभे ॥ २५ ॥ दारकर्मततोव्यासःशुकस्यपर्यचिंतयत् ॥ कन्यांमुनिसुतांकांतामपृच्छदतिवेगवान् ॥ २६ ॥ शुकंप्राहसुतंव्यासोवेदोऽधीतस्त्वयाऽनघ ॥ धर्मशास्त्राणिसर्वाणिकुरुभार्यांमहामते ॥ २७ ॥ गार्हस्थ्यंचसमासाद्ययजदेवान्पितॄनथ ॥ ऋणान्मोचयमांपुत्रप्राप्यदारान्मनोरमान् ॥ २८ ॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तिस्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्मात्पुत्रमहाभागकुरुष्वाद्यगृहाश्रमम् ॥ २९ ॥ कृत्वागृहाश्रमंपुत्रसुखिनंकुरुमांशुक ॥ आशामेमहतीपुत्रपूरयस्वमहामते ॥ ३० ॥ तपस्तप्त्वामहाघोरंप्राप्तोऽसित्वमयोनिजः ॥ देवरूपीमहाप्राज्ञपाहिमांपितरंशुक ॥ ३१ ॥ सूतउवाच ॥ इतिवादिनमभ्याशेप्राप्तःप्राहशुकस्तदा ॥ विरक्तःसोऽतिरक्तंतंसाक्षात्पितरमात्मनः ॥ ३२ ॥ शुकउवाच ॥ किंत्वंवदसिधर्मज्ञवेदव्यासमहामते ॥ तत्त्वेनशाधिशिष्यंमांत्वदाज्ञांकरवाण्यलम् ॥ ३३ ॥ व्यासउवाच ॥ त्वदर्थेयत्तपस्तप्तंमयापुत्रशतंसमाः ॥ प्राप्तस्त्वंचातिदुःखेनशिवस्याऽऽराधनेनच ॥ ॥ ३४ ॥ ददामितववित्तंतुप्रार्थयित्वाऽथभूपतिम् ॥ सुखंभुंक्ष्वमहाप्राज्ञप्राप्ययौवनमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ शुकउवाच ॥ किंसुखंमानुषेलोकेब्रूहितातनिरामयम् ॥ दुःखविद्धंसुखंप्राज्ञानवदंतिसुखंकिल ॥ ३६ ॥ स्त्रियंकृत्वामहाभागभवामितद्वशानुगः ॥ सुखंकिंपरतंत्रस्यस्त्रीजितस्यविशेषतः ॥ ३७ ॥ कदाचिदपिमुच्येतलोहकाष्ठादियंत्रितः ॥ पुत्रदारैर्निबद्धस्तुनविमुच्येतकर्हिचित् ॥ ३८ ॥ विण्मूत्रसंभवोदेहोनारीणांतन्मयस्तथा ॥ कःप्रीतिंतत्रविप्रेंद्रविबुधःकर्तुमिच्छति ॥ ३९ ॥ अयोनिजोऽहंविप्रर्षेयोनौमेकीदृशीमतिः ॥ नवांछाम्यहमग्रेपियोनावेवसमुद्भवम् ॥ ४० ॥ विट्सुखंकिमुवांछामित्यक्त्वात्मसुखमद्भुतम् ॥ आत्मारामश्चभूयोऽपिनभवत्यतिलोलुपः ॥ ४१ ॥ प्रथमंपठितावेदामयाविस्तारिताश्चते ॥ हिंसामयास्तेपठिताःकर्ममार्गप्रवर्तकाः ॥ ४२ ॥

णव्यासआह ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ निरामयम् ॥ दुःखेनासंभिन्नमित्यर्थः ॥ दुःखविद्धंतुसुखंनैवसुखंभवतीतिपंडितावदंतीत्याह दुःखविद्धमिति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ विस्तारिताविचारिताइत्यर्थः ॥ तत्रापिनशांतिर्लब्धातेषांहिंसामयत्वादित्याह हिंसेति ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ कृत्वेति ॥ एतत्रासादेवबृहस्पतिंप्रणम्य ज्ञानप्राप्त्यर्थत्वत्समीपमागतोस्मीत्यर्थः ॥ ४५ ॥ नभचक्रवत्नक्षत्रचक्रवदित्यर्थः ॥ ४६ ॥ निजतत्त्वविचारणादितिल्यब्लोपेपंचमी॥
तंविहायेत्यर्थः॥मूढानांसुखबुद्धिःसंसारेत्वकिंचित्करेत्याह मूढानामिति॥४७॥सधर्माइति।श्वाश्वसूकरैःसधर्माः समानधर्मवंतइत्यथः।समासांतविधेरनित्यत्वात्धर्मादनिच्केवलादित्यनिजभावः
॥ ४८ ॥ मानुष्यमिति ॥ एतादृशोयदिवध्येततर्हिमोक्षोच्छेदएवस्यादितिभावः ॥ ४९॥५०॥ तर्हिकःपंडितस्तत्राह नबाध्यतइति कूटस्थवस्त्वनुभवेनगुणत्रयासंबद्धइत्यर्थः ॥ ५१ ॥ भव

बृहस्पतिर्गुरुःप्राप्तःसोऽपिमग्नोगृहार्णवे ॥ अविद्याग्रस्तहृदयःकथंतारयितुंक्षमः ॥ ४३ ॥ रोगग्रस्तोयथावैद्यःपररोगचिकित्सकः ॥ तथागुरुर्मुमुक्षोर्मे
गृहस्थोऽयंविडंबना ॥ ४४ ॥ कृत्वाप्रणामंगुरवेत्वत्समीपमुपागतः ॥ त्राहिमांतत्त्वबोधेनभीतंसंसारसर्पतः ॥४५॥ संसारेऽस्मिन्महाघोरेभ्रमणंनभचक्र
वत् ॥ नचविश्रमणंक्वापिसूर्यस्येवदिवानिशि ॥ ४६ ॥ किंसुखंतातसंसारेनिजतत्त्वविचारणात् ॥ मूढानांसुखबुद्धिस्तुविट्सुकीटसुखंयथा ॥ ४७ ॥
अधीत्यवेदशास्त्राणिसंसारेरागिणश्चये ॥ तेभ्यःपरोनमूर्खोऽस्तिसधर्माःश्वाश्वसूकरैः॥४८॥मानुष्यंदुर्लभंप्राप्यवेदशास्त्राण्यधीत्यच ॥ बध्यतेयदिसंसारे
कोविमुच्येतमानवः ॥ ४९ ॥ नातः परतरंलोकेक्वचिदाश्चर्यमद्भुतम् ॥ पुत्रदारगृहासक्तःपंडितःपरिगीयते ॥५०॥ नबाध्यतेयःसंसारेनरोमायागुणैस्त्रि
भिः ॥ सविद्वान्सचमेधावीशास्त्रपारंगतोहिसः ॥ ५१ ॥ किंवृथाऽध्ययनेनात्रदृढबंधकरेणच ॥ पठितव्यंतदेवाशुमोचयेद्भवबंधनात् ॥ ५२ ॥ गृह्णाति
पुरुषंयस्माद्गृहंतेनप्रकीर्तितम् ॥ क्वसुखंबंधनागारेतेनभीतोऽस्म्यहंपितः ॥ ५३ ॥ येऽबुधामंदमतयोविधिनामुषिताश्चये ॥ तेप्राप्यमानुषंजन्मपुनर्बं
धंविशंत्युत ॥ ५४ ॥ व्यासउवाच ॥ नगृहंबंधनागारंबंधनेनचकारणम् ॥ मनसायोविनिर्मुक्तोगृहस्थोपिविमुच्यते ॥ ५५ ॥ न्यायागतधनःकुर्वन्वदो
क्तंविधिवत्क्रमात् ॥ गृहस्थोपिविमुच्येतश्राद्धकृत्सत्यवाक्शुचिः ॥ ५६ ॥ ब्रह्मचारीयतिश्चैववानप्रस्थोव्रतास्थितः ॥ गृहस्थंसमुपासंतेमध्याह्नातिक्रमे
सदा ॥ ५७ ॥ श्रद्धयाचान्नदानेनवाचासूनृतयातथा ॥ उपकुर्वंतिधर्मस्थागृहाश्रमनिवासिनः॥५८॥गृहाश्रमात्परोधर्मोनदृष्टोनचवैश्रुतः ॥ वसिष्ठादिभि
राचार्यैर्ज्ञानिभिःसमुपाश्रितः ॥ ५९ ॥ किमसाध्यंमहाभागवेदोक्तानिचकुर्वतः ॥ स्वर्गमोक्षंचसज्जन्मयद्यद्वांछतितद्भवेत् ॥ ६० ॥ आश्रमादाश्रमंगच्छे
दितिधर्मविदोविदुः॥तस्मादग्निंसमाधायकुरुकर्माण्यतंद्रितः॥६१॥देवान्पितॄन्मनुष्यांश्चसंतर्प्यविधिवत्सुत ॥ पुत्रमुत्पाद्यधर्मज्ञसंयोज्यचगृहाश्रमे॥६२॥

बंधनादत्रयदितिशेषः ॥ ५२ ॥ गृह्णातीति ॥ बध्नातीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ व्यासस्तुकुटुंबेशुचौदेशेस्वाध्यायमधीयानोधार्मिकान्विदधदित्यादिछांदोग्यश्रुतिमनुसृत्यगृहस्थाश्रमंश्रेष्ठत्वेनकथ
यति।।नगृहंबंधनागारमिति॥नहिजडंगृहंपुरुषंबध्नातिनचान्यद्बंधनेकारणमस्तिकिंतुमनसआसक्तिमात्रंकारणंतांविहायसंसारंकुर्वाणोमुच्यतएवेत्यर्थः॥५५॥५६॥ ब्रह्मचारीति ॥ गृहस्थाश्र
मेवसंस्तेभ्योभैक्ष्यंदत्त्वातत्पुण्यभागीभवतीत्यर्थः ॥ ५७ ॥ उपकुर्वंतीति ॥ पुण्यादिदानेनेत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥६३॥६४॥६५॥६६॥६७॥६८॥६९॥७०॥ एतद्ग्रंथस्यावांतरतात्पर्यंतुज्ञानाधिकारप्राप्तिपर्यंतंकर्ममार्गोनिष्कामतयाऽऽश्रयितव्यइति ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधे चतुर्दशोध्यायः ॥१४॥ सप्तषष्टिश्लोकवर्यैःशुकवैराग्यमुच्यते ॥ श्रीदेव्याचोपदेशश्चहरयेकृतउच्यते॥१॥पितुर्वाक्यंश्रुत्वाशुकउवाच नाहमिति ॥ गृहंजायासंबंधंगृहस्थाश्रमंवावागुरामृगबंधि

त्यक्त्वागृहंवनंगत्वाकर्तासिव्रतमुत्तमम्॥वानप्रस्थाश्रमंकृत्वासंन्यासंचततःपरम् ॥ ६३ ॥ इंद्रियाणिमहाभागमादकानिसुनिश्चितम् ॥ अदारस्यदुरंतानि पंचैवमनसासह॥६४॥तस्माद्दारान्प्रकुर्वीततज्जयायमहामते॥वार्धकेतपआतिष्ठेदितिशास्त्रोदितंवचः ॥ ६५ ॥ विश्वामित्रोमहाभागतपःकृत्वाऽतिदुश्चर म् ॥ त्रीणिवर्षसहस्राणिनिराहारोजितेंद्रियः ॥ ६६ ॥ मोहितश्चमहातेजावनेमेनकयास्थितः॥शकुंतलासमुत्पन्नापुत्रीतद्वीर्यजाशुभा ॥६७॥ दृष्ट्वादाशसु तांकालींपितामम्मपराशरः ॥ कामबाणार्दितःकन्यांतांजग्राहोडुपेस्थितः ॥६८॥ ब्रह्मापिस्वसुतांदृष्ट्वापंचबाणप्रपीडितः ॥ धावमानश्चरुद्रेणमूर्छितश्चनि वारितः ॥६९॥ तस्मात्त्वमपिकल्याणकुरुमेवचनंहितम् ॥ कुलजांकन्यकांवृत्वावेदमार्गंसमाश्रय ॥ ७० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०प्रथमस्कंधेचतुर्दशो ध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ नाहंगृहंकरिष्यामिदुःखदंसर्वदापितः ॥ वागुरासदृशंनित्यंबंधनंसर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥ धनचिंतातुराणांहिक्वसुखं तातदृश्यते ॥ स्वजनैःखलुपीड्यंतेनिर्धनालोलुपाजनाः ॥ २ ॥ इंद्रोऽपिनसुखीतादृग्यादृशोभिक्षुनिःस्पृहः ॥ कोऽन्यःस्यादिहसंसारेत्रिलोकीविभवेसति ॥ ३ ॥ तपंततापसंदृष्ट्वामववादुःखितोभवन् ॥ विघ्नान्बहुविधानस्यकरोतिचदिवस्पतिः ॥ ४ ॥ ब्रह्माऽपिनसुखीविष्णुर्लक्ष्मींप्राप्यमनोरमाम् ॥ खेदंप्रा प्नोतिसततंसंग्रामैरसुरैःसह ॥ ५ ॥ करोतिविपुलान्यत्नांस्तपश्चरतिदुश्चरम् ॥ रमापतिरपिश्रीमान्कस्यास्तिविपुलंसुखम् ॥ ६ ॥ शंकरोऽपिसदादुःखीभ वत्येवचवेद्म्यहम् ॥ तपश्चर्याप्रकुर्वाणोदैत्ययुद्धकरःसदा ॥ ७ ॥ कदाचिन्नसुखीशेतेधनवानपिलोलुपः ॥ निर्धनस्तुकथंतातसुखंप्राप्नोतिमानवः ॥ ८ ॥ जानन्नपिमहाभागपुत्रंवावीर्यसंभवम् ॥ नियोक्ष्यसिमहाघोरेसंसारेदुःखदेसदा ॥९॥ जन्मदुःखंजरादुःखंदुःखंचमरणेतथा ॥ गर्भवासेपुनर्दुःखंविष्ठामूत्रमये पितः ॥ १० ॥ तस्मादतिशयंदुःखंतृष्णालोभसमुद्भवम् ॥ याञ्चायांपरमंदुःखंमरणादपिमानद ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहधनाविप्रानबुद्धिबलजीवनाः॥पराशाप रमंदुःखंमरणंचदिनेदिने॥१२॥पठित्वासकलान्वेदाञ्छास्त्राणिचसमंततः॥गत्वाचधनिनांकार्यास्तुतिःसर्वात्मनाबुधैः ॥ १३ ॥ एकोदरस्यकाचिंतापत्रमू लफलादिभिः ॥ येनकेनाप्युपायेनसंतुष्टयाचप्रपूर्यते ॥ १४ ॥ भार्यापुत्रास्तथापौत्राःकुटुंबेविपुलेसति ॥ पूरणार्थमहद्दुःखंक्वसुखंपितरद्भुतम् ॥१५॥

नीरज्जुस्तत्सदृशंबंधकम् ॥ १ ॥ २ ॥ त्रिलोकीविभवेसतिइंद्रोऽपिनसुखीत्यन्वयः॥३॥ इंद्रदुःखंकथयति तपंतामिति॥भवन्निति शत्रंतंव्याससंबोधनम्॥४॥५॥६॥७॥८॥ जानन्नपीति ॥ इत्थं जानन्नपिमामौरसंपुत्रंकथमेवंनियोजयसीत्यर्थः ॥ ९॥१०॥११ ॥ मरणंचेति ॥ अपमानएवमरणंप्रतिदिनम् ॥१२ ॥ १३ ॥ विरक्तस्यनैवदुःखमित्याह एकोदरस्येति ॥ १४ ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १६ ॥ प्रारब्धंसंचितंवर्तमानंचत्रिविधंकर्ममूलजमविद्याजन्यंयथानश्येदित्यन्वयः ॥ १७ ॥ १८ ॥ भोगैर्वीर्यंहराति ॥ पूर्णधनंमनश्चकुटिलभाषणैः॥स्तेनश्चोरः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ अश्रूणिनेत्रजलानि ॥ वेपथुःकंपः ॥ २२ ॥ २३ ॥ वेदसंमितंवेदवत्प्रमाणवाक्यम् ॥ २४ ॥ काचसेति ॥ काप्यनिर्वचनीयेत्यर्थः ॥ किंस्विदितिवितर्के ॥ दुष्करादुष्करयत्नसाध्येत्यर्थः

योगशास्त्रंवदममज्ञानशास्त्रंसुखाकरम् ॥ कर्मकांडेऽखिलेतातनरमेऽहंकदाचन ॥ १६ ॥ वदकर्मक्षयोपायंप्रारब्धंसंचितंतथा ॥ वर्तमानंयथानश्येत्रिविधंकर्ममूलजम् ॥ १७ ॥ जलूकेवसदानारीरुधिरंपिवतीतिवै ॥ मूर्खस्तुनविजानातिमोहितोभावचेष्टितैः ॥ १८ ॥ भोगैर्वीर्यंधनंपूर्णमनःकुटिलभाषणैः ॥ कांताहरतिसर्वस्वंकःस्तेनस्तादृशोऽपरः ॥ १९ ॥ निद्रासुखविनाशार्थंमूर्खस्तुदारसंग्रहम् ॥ करोतिवंचितोधात्राद्दुःखायनसुखायच ॥ २० ॥ सूतउवाच ॥ एवंविधानिवाक्यानिश्रुत्वाव्यासःशुकस्यच ॥ संप्रापमहतींचिंतांकिंकरोमीत्यसंशयम् ॥ २१ ॥ तस्यसुस्रुवुरश्रूणिलोचनाद्दुःखजानिच ॥ वेपथुश्चशरीरेऽभूद्ग्लानिंप्रापमनस्तथा ॥ २२ ॥ शोचंतंपितरंदृष्ट्वादीनंशोकपरिप्लुतम् ॥ उवाचपितरंव्यासंविस्मयोत्फुल्ललोचनः ॥ २३ ॥ अहोमायाबलंचोग्रंयन्मोहयतिपंडितम् ॥ वेदांतस्यचकर्तारंसर्वज्ञंवेदसंमितम् ॥ २४ ॥ नजानेकाचसामायाकिंस्वित्साऽतीवदुष्करा॥यामोहयतिविद्वांसंव्यासंसत्यवतीसुतम् ॥२५॥ पुराणानांचवक्ताचानिर्माताभारतस्यच॥विभागकर्तावेदानांसोऽपिमोहमुपागतः ॥ २६॥ तांयामिशरणंदेवींयामोहयतिवैजगत्॥ब्रह्मविष्णुहरादींश्चकथाऽन्येषांचकीदृशी ॥ २७ ॥ कोप्यस्तित्रिषुलोकेषुयोनमुह्यतिमायया ॥ यन्मोहंगमिताःपूर्वंब्रह्मविष्णुहरादयः ॥ २८ ॥ अहोबलमहोवीर्यंदेव्याखलुविनिर्मितम् ॥ माययैववशंनीतःसर्वज्ञईश्वरःप्रभुः ॥ २९ ॥ विष्ण्वंशसंभवोव्यासइतिपौराणिकाजगुः ॥ सोऽपिमोहार्णवेमग्नोभग्नपोतोवणिग्यथा ॥ ३० ॥ अश्रुपातंकरोत्यद्यविवशःप्राकृतोयथा ॥ अहोमायाबलंचैतद्दुस्त्यजंपंडितैरपि ॥ ३१ ॥ कोऽयंकोऽहंकथंचेहकीदृशोऽयंभ्रमःकिल ॥ पंचभूतात्मकेदेहेपितापुत्रेतिवासना ॥ ३२ ॥ बलिष्ठाखलुमायेयंमायिनामपिमोहिनी ॥ यथाऽभिभूतःकृष्णोऽपिकरोतिरोदनंद्विजः॥ ॥ ३३ ॥ सूतउवाच ॥ तांनत्वामनसादेवींसर्वकारणकारणम् ॥ जननींसर्वदेवानांब्रह्मादीनांतथेश्वरीम् ॥ ३४ ॥ पितरंप्राहदीनंतंशोकार्णवपरिप्लुतम् ॥ अरणीसंभवोव्यासंहेतुमद्वचनंशुभम् ॥ ३५ ॥ पाराशर्यमहाभागसर्वेषांबोधदःस्वयम् ॥ किंशोकंकुरुषेस्वामिन्यथाऽज्ञःप्राकृतोनरः ॥ ३६ ॥

॥ २५ ॥ २६ ॥ व्यासशांत्यर्थंदेवींप्रार्थयति॥तांयामीति ॥ अंतर्यामिरूपिणीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ ईश्वरोविष्णुः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ कोऽयमिति ॥ अयंव्यासोममकःनकोपितथाऽहंशुकएतस्यकःनकोप्यथापिकीदृशोऽयंभ्रमएतस्यममगृहस्थाश्रमेणकल्याणंभवतिवति॥कथंचेहपंचभूतात्मकेमेदेहेपितापुत्रइत्येवंरूपावासनाआश्चर्यमेतादित्यर्थः॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





विभ्रमोऽयंमहात्मनीति ॥ कथमितिशेषः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ पुत्रोऽहंकिंकरोमीति ॥ ममोपयोगःकइत्यर्थः ॥ ननुपितुःपरलोकक्रियार्थंपुत्रोऽपेक्षितइतिचेन्न ॥ तद्वचनस्यकर्मठश्रद्धाजा ड्याभिप्रायकत्वात्॥अतएवब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेदितिसंन्यासोब्रह्मचारिणामुक्तइतिभावः॥४०॥ अजीगर्तेनब्राह्मणेनातएवस्वपुत्रोद्रव्यंगृहीत्वाहरिश्चंद्रायपश्वर्थंसमर्पितइत्याह अजीगर्तेनेति ॥ तस्माद्द्रव्यमेवसुखदंनपुत्रादिकमित्यर्थः॥इयंकथासप्तमस्कंधेवक्ष्यमाणाऽस्ति॥४१॥४२॥दैवज्ञइति ॥दैवस्यसूक्ष्मत्वात्सूक्ष्मज्ञइत्यर्थः ॥४३।४४॥वृद्धगामिनीवृद्धाश्रयिण्यपीयंमतिरित्यर्थः ४५ ॥४६॥चतुर्थाश्रमयोग्यस्यशुकपुत्रस्यैतद्भागवतोपदेशादन्योऽपियोविरक्तःपुत्रसदृशःप्रियश्चतस्माएवैतद्भागवतंवक्तव्यंनान्यस्माइतिसूचितम्॥ब्रह्मसंमितंवेदसंमितम् ॥४७॥ भूषणंमुख्यंसा

अद्याहंतवपुत्रोऽस्मिनजानेपूर्वजन्मनि ॥ कोऽहंकस्त्वंमहाभागविभ्रमोऽयंमहात्मनि ॥ ३७ ॥ कुरुधैर्यंप्रबुध्यस्वमाविषादेमनःकृथाः ॥ मोहजाल मिमंमत्वामुंचशोकंमहामते ॥ ३८ ॥ क्षुधानिवृत्तिर्भक्ष्येणनपुत्रदर्शनेनच ॥ पिपासाजलपानेनयातिनैवात्मजेक्षणात् ॥ ३९ ॥ घ्राणंसुखंसुगंधेनक र्णजंश्रवणेनच ॥ स्त्रीसुखंतुस्त्रियानूनंपुत्रोऽहंकिंकरोमिते ॥ ४० ॥ अजीगर्तेनपुत्रोऽपिहरिश्चंद्रायभूभुजे ॥ पशुकामाययज्ञार्थंदत्तोमौल्येनसर्वथा ॥ ॥ ४१ ॥ सुखानांसाधनंद्रव्यंधनात्सुखसमुच्चयः ॥ धनमर्जयलोभश्चेत्पुत्रोऽहंकिंकरोम्यहम् ॥ ४२ ॥ मांप्रबोधयबुद्ध्यात्वंदैवज्ञोसिमहामते ॥ यथा मुच्येयमत्यंतंगर्भवासभयान्मुने ॥ ४३ ॥ दुर्लभंमानुषंजन्मकर्मभूमाविहानघ ॥ तत्रापिब्राह्मणत्वंवैदुर्लभंचोत्तमेकुले ॥ ४४ ॥ बद्धोऽहमितिमेबुद्धि र्नापसर्पतिचित्ततः ॥ संसारवासनाजालेनिविष्टावृद्धगामिनी ॥ ४५ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्तस्तुतदाव्यासःपुत्रेणामितबुद्धिना ॥ प्रत्युवाचशुकंशां तंचतुर्थाश्रममानसम् ॥ ४६ ॥ व्यासउवाच ॥ पठपुत्रमहाभागमयाभागवतंकृतम् ॥ शुभंनचातिविस्तीर्णंपुराणंब्रह्मसंमितम् ॥ ४७ ॥ स्कंधाद्वा दशतत्रैवपंचलक्षणसंयुतम् ॥ सर्वेषांचपुराणानांभूषणंममसंमतम् ॥ ४८ ॥ सदसज्ज्ञानविज्ञानंश्रुतमात्रेणजायते ॥ येनभागवतेनेहतत्पठत्वंमहाम ते ॥ ४९ ॥ वटपत्रशयानायविष्णवेबालरूपिणे ॥ केनास्मिबालभावेननिर्मितोऽहंचिदात्मना ॥ ५० ॥ किमर्थंकेनद्रव्येणकथंजानामिचाखिलम् ॥ इत्येवंचिंत्यमानायमुकुंदायमहात्मने ॥ ५१ ॥

म्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मप्रतिपादकत्वादेतस्यसर्वपुराणश्रेष्ठत्वंयुक्तमेव ॥ अन्यपुराणानांतुसाम्यावस्थमायाजन्यैकैकसत्वादिगुणोपाधिहरिहरब्रह्मादिकप्रतिपादकत्वान्नमुख्यत्वमितिभावः ॥४८॥सदसज्ज्ञानविज्ञानमितिं॥येनश्रुतमात्रेणसत्ब्रह्मजगदसदेतयोःसदसतोर्ब्रह्मजगतोःसत्त्वेनासत्त्वेनचज्ञानंपरोक्षज्ञानंविज्ञानमपरोक्षज्ञानंचजायतइत्यर्थः ॥४९॥ इदंभागवतंकेनकस्माउप दिष्टमितिचेत्तत्राऽऽह॥वटपत्रइति॥कथंभूताय केनकारणेनाहंबालभावेनस्थितोस्मिकिंचकेनचिदात्मनाकेनचेतनेनपुरुषेणाहंनिर्मितोस्मि ॥५०॥ किमर्थंकस्मैप्रयोजनायचनिर्मितोस्मिकेनद्रव्ये णपृथिव्यादिद्रव्यमध्येकेनद्रव्येणाहंनिर्मितोस्मि॥किंचेदमखिलंसर्वमहंकथंजानामिज्ञास्यामीत्येवंप्रकारेणचिंतयतेइत्यर्थः ॥ ५१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एतत्सर्वंशंकानिवृत्त्यर्थंसर्वार्थंदंवाक्यंभगवत्याश्लोकार्धेनमोक्तम्॥किंतत्॥सर्वंखलुइदंजगदहमेवसनातनमस्मि॥बाधायांसामानाधिकरण्येनसर्वंदृश्यमात्रंमिथ्यारूपंनास्ति ॥ किंतुअहंसनातनब्रह्मरूपाकालत्रयाबाध्यासच्चिदानंदरूपिण्यहमेवास्मि॥अनेनवाक्येनसर्वंखल्विदंब्रह्मेतिवाक्यस्यार्थउक्तः॥ ननुमिथ्याजगतोभावेऽपिचेतनांतरसंभावनास्यात्तदर्थंनेहनानास्तिकिंचनेत्यस्यार्थमुपदिशतिनान्यदस्तिसनातनमिति॥मत्तोऽन्यद्भिन्नंसनातनंद्वितीयंचेतनमपिनास्ति।तथाचसर्वदृश्यनिषेधेनचेतनांतरनिषेधेनचैकमेवाद्वितीयंब्रह्मेतिमहावाक्यार्थउपदिष्टोभवति॥तेनचत्वयाय

श्लोकार्धेनतयाप्रोक्तंभगवत्याऽखिलार्थदम् ॥ सर्वंखल्विदमेवाहंनान्यदस्तिसनातनम् ॥ ५२ ॥ तद्वचोविष्णुनापूर्वंसंविज्ञातंमनस्यपि ॥ केनोक्तावागियंसत्याचिंतयामासचेतसा ॥ ५३ ॥ कथंवोऽग्रिप्रवक्तारंस्त्रीपुंसौवानपुंसकम् ॥ इतिचिंताप्रपन्नेनधृतंभागवतंहृदि ॥ ५४ ॥ पुनःपुनःकृतोच्चारस्तस्मिन्नेवास्तचेतसा ॥ वटपत्रेशयानःसन्नभूच्चिंतासमन्वितः ॥ ५५ ॥ तदाशांताभगवतीप्रादुरासचतुर्भुजा ॥ शंखचक्रगदापद्मवरायुधधराशिवा ॥ ५६ ॥ दिव्यांबरधरादेवीदिव्यभूषणभूषिता ॥ संयुतासदृशीभिश्चसखीभिःस्वविभूतिभिः ॥ ५७ ॥ प्रादुर्बभूवतस्याग्रेविष्णोरमिततेजसः ॥ मंदहास्यंप्रयुंजाना महालक्ष्मीःशुभानना ॥ ५८ ॥ सूतउवाच ॥ तांतथासंस्थितांदृष्ट्वाहृदयेकमलेक्षणः ॥ विस्मितःसलिलेतस्मिन्निराधारांमनोरमाम् ॥ ५९ ॥ रतिर्भूतिस्तथाबुद्धिर्मतिःकीर्तिःस्मृतिर्धृतिः ॥ श्रद्धामेधास्वधास्वाहाक्षुधानिद्रादयागतिः ॥ ६० ॥ तुष्टिःपुष्टिःक्षमालज्जाजृंभातंद्राश्चशक्तयः ॥ संस्थिताःसर्वतःपार्श्वेमहादेव्याःपृथक्पृथक् ॥ ६१ ॥ वरायुधधराःसर्वानानाभूषणभूषिताः ॥ मंदारमालाकुलितामुक्ताहारविराजिताः ॥ ६२ ॥ तांदृष्ट्वाताश्चसंवीक्ष्य तस्मिन्नेकार्णवेजले ॥ विस्मयाविष्टहृदयःसंबभूवजनार्दनः ॥ ६३ ॥ चिंतयामाससर्वात्मादृष्टमायोतिविस्मितः ॥ कुतोभूताःस्त्रियःसर्वाःकुतोऽहंवटतल्पगः ॥ ६४ ॥ अस्मिन्नेकार्णवेघोरेन्यग्रोधःकथमुत्थितः ॥ केनाहंस्थापितोऽस्म्यत्रशिशुंकृत्वाशुभाकृतिः ॥ ६५ ॥ ममेयंजननीनोवामाया वाकापिदुर्घटा ॥ दर्शनंकेनचित्त्वद्यदत्तंवाकेनहेतुना ॥ ६६ ॥ किंमयाचात्रवक्तव्यंगंतव्यंवानवाक्वचित् ॥ मौनमास्थायतिष्ठेयंबालभावादतंद्रितः ॥ ॥ ६७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

द्यच्चिंत्यतेतस्यसर्वस्यकारणंसाच्चिदानंदरूपिण्यद्वितीयानिर्वचनीयशक्तिमत्यहमेवभगवत्यस्तीत्युपदिष्टंभवति ॥ ५२ ॥ तद्वचइति ॥ संविज्ञातंविधृतामित्यर्थः ॥ ५३ ॥ भागवतमर्धश्लोकरूपं तद्धृतंहृदितस्यजपंचकारेत्यर्थः॥५४॥अस्तचेतसास्थापितचेतसा॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥तांलक्ष्मींताश्चपारिवारशक्तीश्च ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥देवींदृश्यमानामुत्प्रेक्षते ममेयंजननीति॥दर्शनंकेनचिदिति॥केनचिदनिर्वचनीयेनदेवताविशेषेणवाकेनापिहेतुनाकारणेनदर्शनमद्यदत्तंवा ॥ ६६ ॥ अत्रनिश्चयाभावेकिंवामयावक्तव्यम्॥क्वचिद्वादेशेमयागंतव्यंनवागंतव्यमितिकिमप्यहंनजानेकेवलंबालभावादतंद्रितोमौनमास्थायाश्रित्यातिष्ठेयमित्येवंमयास्मिन्समयेकर्तव्यंनान्यादितिभावः॥६७॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेपंचदशोध्यायः १५॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एकषष्टिश्लोकवर्यैर्देवीभाषणपूर्वकम् ॥ उपदिष्टंशुकायैतत्पुराणमितिचोच्यते ॥ १ ॥ किंविस्मितोह्यसीति ॥ यद्यहंनवीनात्वदपरिचितादेवीवामायावास्याम् ॥ तदातवविस्मयोयुक्तोनचत थास्ति किंतु तवैवशक्तिरस्मीतिभावः ॥ १ ॥ ननुतर्हिमयाकुतोनस्मर्यतइतिचेत्तत्राह महाशक्त्याइति ॥ महाशक्तिर्मायाशवलब्रह्मरूपिणीतस्याःप्रभावेणावरणरूपेणत्वंमांविस्मृतवान्अतो मांनस्मरसि ॥ ननुममाधुनैवजन्मतथाचतवममचसंबंधोनैवकदापिजातस्ततःकथमुच्यतेविस्मृतवानसीतिचेत्तत्राह पुरेति ॥ पुरापूर्वेप्रभवेसृष्टौतथापूर्वेप्रलयेजातेत्वंपुनःपुनर्भूत्वाभूत्वाउत्पद्यो त्पद्यतिष्ठसीतिशेषः ॥ तथाचतस्मिंस्तस्मिञ्जन्मन्यहंत्वच्छक्तिरभवंतांमांनजानासीत्यतोविस्मृतवानित्युक्तंसत्यमेवेतिभावः ॥ २ ॥ ननुकासामहाशक्तिस्तत्राह निर्गुणेति ॥ साम्यावस्थो पाधिकेत्यर्थः ॥ तर्ह्यहंकस्तत्राह सगुणस्त्वमिति ॥ तर्हित्वंकासितत्राह तथाप्यहमिति ॥ यथात्वंसगुणस्तथैवाहंसगुणास्मीत्यर्थः ॥ तवकोसौगुणस्तत्राह सात्त्विकीति॥सात्त्विकीपराशक्ति

व्यासउवाच ॥ दृष्ट्वातंविस्मितंदेवंशयानंवटपत्रके॥उवाचसस्मितंवाक्यंविष्णोकिंविस्मितोह्यसि ॥१॥ महाशक्त्याःप्रभावेणत्वंमांविस्मृतवान्पुरा ॥ प्रभवे प्रलयेजातेभूत्वाभूत्वापुनःपुनः॥२॥निर्गुणासापराशक्तिःसगुणस्त्वंतथाप्यहम् ॥ सात्त्विकीकिलयाशक्तिस्तांशक्तिंविद्धिमामिकाम् ॥३॥ त्वन्नाभिकमला द्ब्रह्माभविष्यतिप्रजापतिः ॥ सकर्तासर्वलोकस्यरजोगुणसमन्वितः ॥४॥ सतदातपआस्थायप्राप्यशक्तिमनुत्तमाम् ॥ रजसारक्तवर्णंचकरिष्यतिजगत्त्रयम्॥ ॥५॥सगुणान्पंचभूतांश्चसमुत्पाद्यमहामतिः ॥ इंद्रियाणींद्रियेशांश्चमनःपूर्वान्समंततः॥६॥करिष्यतिततःसर्गंतेनकर्तासउच्यते॥विश्वस्यास्यमहाभागत्वं वैपालयितातथा ॥ ७ ॥ तद्भ्रुवोर्मध्यदेशाच्चक्रोधाद्रुद्रोभविष्यति॥तपःकृत्वामहाघोरंप्राप्यशक्तिंतुतामसीम्॥८॥कल्पांतेसोपिसंहर्ताभविष्यतिमहामते ॥ ते नाहंत्वामुपायास्तासात्त्विकींत्वमवेहिमाम्॥९॥स्थास्येहंत्वत्समीपस्थासदाहंमधुसूदन॥हृदयेतेकृतावासाभवामिसततंकिल ॥१०॥ विष्णुरुवाच ॥ श्लोक स्यार्धंमयापूर्वंश्रुतंदेविस्फुटाक्षरम्॥तत्केनोक्तंवरारोहेरहस्यंपरमंशिवम्॥११॥तन्मेब्रूहिवरारोहेसंशयोयंवरानने ॥निर्धनोहियथाद्रव्यंतत्स्मरामिपुनःपुनः ॥१२॥व्यासउवाच ॥ विष्णोस्तद्वचनंश्रुत्वामहालक्ष्मीःस्मिताननाउवाचपरयाप्रीत्यावचनंचारुहासिनी॥१३॥महालक्ष्मीरुवाच॥ शृणुशौरेवचोमह्यंस गुणाऽहंचतुर्भुजा॥मांजानासिनजानासिनिर्गुणांसगुणालयाम् ॥१४॥ त्वंजानीहिमहाभागतयातत्प्रकटीकृतम्॥पुण्यंभागवतंविद्धिवेदसारंशुभावहम् ॥१५॥

स्तांमामिकांमत्संबंधिनींविद्धिसत्वगुणात्मिकाहमित्यर्थः॥३॥किमर्थमुत्पादितोस्मीत्यस्योत्तरमाह त्वन्नाभीति॥४॥५॥ सगुणान्गुणसहितान्पंचभूतानित्यर्थः॥पुंलिंगमार्षम् ॥ ६ ॥ ७॥८॥ तेनेति॥सृष्ट्यादिनिमित्तेन॥९॥१०॥तत्केनोक्तमिति॥अत्रययोक्तंश्लोकार्धंसामूर्तिर्विष्णुनादृष्टाअस्तिअतएवतृतीयस्कंधेमाणिद्वीपाधिवासिनींदृष्ट्वाविष्णुनोक्तम् ॥ गायंतीदोलयंतीचबालभा वान्मयेक्षितेति॥तस्मात्केनोक्तमित्यत्रययाश्लोकार्धमुक्तंसातदर्थमुक्त्वातिरोहितासाकाभवतीकिंतत्त्वाभवतीतितस्याःस्वरूपनिर्धारणार्थोयंप्रश्नइतिमंतव्यम् ॥११॥१२॥१३॥१४ ॥ यांनिर्गु णांगुणत्रयोपचयापचयरहितसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणींनजानासित्वंतयामूलदेव्याभुवनेश्वर्यातत्प्रकटीकृतमित्याह तयातत्प्रकटीकृतामिति ॥ भागवतमितिभगवत्यामायोपाधिकब्र ह्मरूपिण्याःप्रतिपादकमर्धश्लोकात्मकंसूत्रभूतमेवसर्वं वेदसारंसर्वंखल्विदंब्रह्मनेहनानास्तिकिंचनेतिसर्ववेदतात्पर्यार्थप्रतिपादकवाक्यार्थाभिलापकंपुराणंमंत्ररूपंप्रकटीकृतंविद्धि ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तन्वेतादृशंरहस्यंभुवनेश्वर्यापामरायवालकायमह्यंकिमित्युपदिष्टमितिचेत्तत्राह कृपांचेति ॥ नान्यदत्रकारणंपश्यामिकेवलंभगवतीकृपैवात्रकारणंमन्ये॥ ययास्वमुखेनैवातिरहस्यमुक्तम्॥१६॥ महाविद्याश्रीभुवनेश्वरीतयाप्रकाशितम् ॥ १७ ॥ इदंयदित्वयानुभूयतेतदातःपरंकिमपिवेदितव्यमवशिष्टंनैवास्ति ॥ वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यमिति ॥ब्रह्मैवेदममृतंपुरस्ताद्ब्रह्मपश्चाद्दक्षिणतश्चोत्तरेण ॥ अधश्चोर्ध्वंचप्रसृतंब्रह्मैवेदंविश्वंवरिष्ठमित्यादिश्रुतिभिःसर्वकारणज्ञानेनकार्यमात्रज्ञानस्यप्रतिज्ञानात्॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥ २३॥ क्रियाकारणोति ॥ कार्य

कृपांचमहतींमन्येदेव्याःशत्रुनिषूदन ॥ ययाप्रोक्तंपरंगुह्यंहितायतवसुव्रत ॥ १६ ॥ रक्षणीयंसदाचित्तेनविस्मार्यंकदाचन ॥ सारंहिसर्वशास्त्राणांमहाविद्याप्रकाशितम् ॥ १७ ॥ नातःपरंवेदितव्यंवर्ततेभुवनत्रये ॥ प्रियोसिखलुदेव्यास्त्वंतेनतेव्याहृतंवचः ॥ १८ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिश्रुत्वावचोदेव्यामहालक्ष्म्याश्चतुर्भुजः ॥ दधारहृदयेनित्यंमत्वामंत्रमनुत्तमम् ॥ १९ ॥ कालेनकियतातत्रतन्नाभिकमलोद्भवः ॥ ब्रह्मादैत्यभयात्रस्तोजगामशरणंहरेः ॥ २० ॥ ततःकृत्वामहायुद्धंहत्वातौमधुकैटभौ ॥ जजापभगवान्विष्णुःश्लोकार्धंविंशदाक्षरम् ॥ २१ ॥ जपंतंवासुदेवंचदृष्ट्वादेवःप्रजापतिः ॥ पप्रच्छपरमप्रीतःकंजजःकमलापतिम् ॥ २२ ॥ किंत्वंजपसिदेवेशत्वत्तःकोप्याधिकोस्तिवै ॥ यत्स्मृत्वापुंडरीकाक्षप्रीतोसिजगदीश्वर ॥ २३ ॥ हरिरुवाच ॥ मयित्वयिचयाशक्तिःक्रियाकारणलक्षणा ॥ विचारयमहाभागयासाभगवतीशिवा ॥ २४ ॥ यस्याऽधारेजगत्सर्वंतिष्ठत्यत्रमहार्णवे ॥ साकारायामहाशक्तिरमेयाचसनातनी ॥ २५ ॥ ययाविसृज्यतेविश्वंजगदेतच्चराचरम् ॥ सैषाप्रसन्नावरदानृणांभवतिमुक्तये ॥ २६ ॥ साविद्यापरमामुक्तेर्हेतुभूतासनातनी ॥ संसारबंधहेतुश्चसैवसर्वेश्वरेश्वरी ॥ २७ ॥ अहंत्वमखिलंविश्वंतस्याश्चिच्छक्तिसंभवम् ॥ विद्धिब्रह्मन्नसंदेहःकर्तव्यःसर्वदाऽनघ ॥ २८ ॥ श्लोकार्धेनतयाप्रोक्तंतद्वैभागवतंकिल ॥ विस्तरोभवितातस्यद्वापरादौयुगेतथा ॥ २९ ॥ व्यासउवाच ॥ ब्रह्मणासंगृहीतंचविष्णोस्तुनाभिपंकजे ॥ नारदायचतेनोक्तंपुत्रायामितबुद्धये ॥३०॥ नारदेनतथामह्यंदत्तंहिमुनिनापुरा॥मयाकृतमिदंपूर्णंद्वादशस्कंधविस्तरम् ॥३१॥तत्पठस्वमहाभागपुराणंब्रह्मसंमितम् ॥पंचलक्षणयुक्तंचदेव्याश्चरितमुत्तमम् ॥ ३२ ॥ तत्त्वज्ञानरसोपेतंसर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥ धर्मशास्त्रसमंपुण्यंवेदार्थेनोपबृंहितम्॥३३॥वृत्रासुरवधोपेतंनानाख्यानकथायुतम्॥ब्रह्मविद्यानिधानंतुसंसारार्णवतारकम् ॥३४॥ गृहाणत्वंमहाभागयोग्योसिमतिमत्तरः॥पुण्यंभागवतंनामपुराणंपुरुषर्षभ ॥ ३५ ॥

कारणलक्षणेतितात्पर्यम्॥२४॥सासर्वाधिष्ठानकूटस्थब्रह्मरूपिण्यस्तीत्याह यस्याधारेइति॥अत्रसंधिरार्षःयस्याआधारेइतितुच्छेदः॥ अभेदेभेदमारोप्ययस्याधारेइत्युक्तम् ॥ यदात्मकेआधारेइतितुरहस्यम्।महार्णवेमहार्णवसदृशेगंभीरे अगाधेआधारइत्यन्वयः॥२५॥२६॥२७॥२८॥विस्तरइति॥व्यासकृतविस्तरइत्यर्थः॥तथायुगेकृतयुगेहिरण्यगर्भकृतविस्तरइत्यर्थः॥ द्वादशस्कंधेहिरण्यगर्भकृतविस्तरस्यवक्ष्यमाणत्वात्॥२९॥३०॥पूर्णमिति॥ब्रह्मणाशतकोटिविस्तरंकृत्वानारदायोपदिष्टंतेनमह्यमुपदिष्टंतस्यसारांशंगृहीत्वामयाद्वादशस्कंधपरिमितंपूर्णंकृतमित्यर्थः ॥ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

९

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३६ ॥ ३७ ॥ शिष्योयमिति ॥ सूतइत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ नलेभेशर्मकर्मात्मेति ॥ ननुसर्वक्लेशशांत्यर्थंभागवतंप्रणीतंतच्छ्रुत्वापियदिनशांतिस्तदाभागवत प्रणयनंव्यर्थमेव ॥ किंच शुकोपिमहान्विरक्तःकर्मानासक्तमतिरतएवगृहस्थाश्रमानाकांक्षीतिपूर्वमुक्तंतच्छांत्यर्थंचभागवतंप्रणीततत्कथमत्रोच्यतेनलेभेशर्मकर्मात्मेतिचेत्सत्यं नात्रकर्मा त्मेत्यनेनकर्मासक्तमतिरित्यर्थः ॥ किंतु गृहस्थाश्रमिणांकर्मिणांसंसर्गाद्यज्ञोपवीतशिखासूत्रसंबंधाच्चकर्मण्यासक्त्यभावेपिसंन्यासाश्रमंविनाकर्मत्यक्तुंनशक्यतइतिकर्मात्मेत्युक्तम् ॥ तथा चायमर्थः॥ श्रीमद्देवीभागवतप्रतिपाद्योर्थःसंन्यासाश्रमंविनाचित्तविक्षेपादिनानानुभावितुंशक्यते॥ ततश्चकथंममसंन्यासाश्रमपुरःसरंतदनुभवःस्यादितिचिंतयानलेभेशर्मकर्मात्मेत्युक्तमितिन

अष्टादशसहस्राणांश्लोकानांकुरुसंग्रहम् ॥ अज्ञाननाशनंदिव्यंज्ञानभास्करबोधकम् ॥ ३६ ॥ सुखदंशांतिदंधन्यंदीर्घायुष्यकरंशिवम् ॥ शृण्वतांपठतांचेदंपुत्रपौत्रविवर्धनम् ॥ ३७ ॥ शिष्योऽयंममधर्मात्मालोमहर्षणसंभवः ॥ पठिष्यतित्वयासार्धंपुराणींसंहितांशुभाम् ॥ ३८ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्तंतेनपुत्रायमह्यंचकथितंकिल ॥ मयागृहीतंतत्सर्वंपुराणंचातिविस्तरम् ॥ ३९ ॥ शुकोऽधीत्यपुराणंतुस्थितोव्यासाश्रमेशुभे ॥ नलेभेशर्मकर्मात्माब्रह्मात्मजइवापरः ॥ ४० ॥ एकांतसेवीविकलःसशून्यइवलक्ष्यते ॥ नात्यंतभोजनासक्तोनोपवासरतस्तथा ॥ ४१ ॥ चिंताविष्टंशुकंदृष्ट्वाव्यासःप्राहसुतंप्रति॥किंपुत्रचिंत्यतेनित्यंकस्माद्व्यग्रोसिमानद ॥४२॥ आस्सेध्यानपरोनित्यमृणग्रस्तइवाधनः ॥ काचिंतावर्ततेपुत्रमयितातेतुतिष्ठति ॥४३॥ सुखंभुंक्ष्वयथाकामंमुंचशोकंमनोगतम् ॥ ज्ञानंचिंतयशास्त्रोक्तंविज्ञानेचमतिंकुरु ॥ ४४ ॥ नचेन्मनसितेशांतिर्वचसाममसुव्रत ॥ गच्छत्वंमिथिलांपुत्रपालितांजनकेनह ॥ ४५ ॥ सतेमोहंमहाभागनाशयिष्यतिभूपतिः ॥ जनकोनामधर्मात्माविदेहःसत्यसागरः ॥ ४६ ॥ तंगत्वानृपतिंपुत्रसंदेहंस्वंनिवर्तय ॥ वर्णाश्रमाणांधर्मांस्त्वंपृच्छपुत्रयथातथम् ॥ ४७ ॥ जीवन्मुक्तःसराजर्षिर्ब्रह्मज्ञानमतिःशुचिः ॥ तथ्यवक्तातिशांतश्चयोगीयोगप्रियःसदा ॥ ४८ ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यव्यासस्यामिततेजसः ॥ प्रत्युवाचमहातेजाःशुकश्चारणिसंभवः ॥ ४९ ॥ दंभोयंकिलधर्मात्मन्भातिचित्तेममाधुना ॥ जीवन्मुक्तोविदेहश्चराज्यंशास्तिमुदान्वितः ॥ ५० ॥ वंध्यापुत्रइवाभातिराजासौजनकःपितः ॥ कुर्वन्राज्यंविदेहःकिंसंदेहोयंममाद्भुतः ॥ ५१ ॥ द्रष्टुमिच्छाम्यहंभूपंविदेहंनृपसत्तमम् ॥ कथंतिष्ठतिसंसारेपद्मपत्रमिवांभसि ॥ ५२ ॥ संदेहोयंमहांस्तातविदेहेपरिवर्तते ॥ मोक्षःकिंवदतांश्रेष्ठसौगतानामिवापरः ॥ ५३ ॥

कश्चिद्दोषगंधोपीति ॥४०॥तदेवाह एकांतसेवीति॥विकलःसशून्यइवेति॥संन्यासातिरिक्ताश्रमेसुखलेशाभावाद्युक्तमेवविकलत्वम् ॥ ४१ ॥ चिंत्यतइतिकर्मणिप्रयोगः ॥४२॥४३॥ शास्त्रोक्तंभागवतोक्तम्॥विज्ञानेतद्भागवतोक्तार्थानुभवे॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥जीवन्मुक्तोविदेहश्चेति॥ यदिजीवन्मुक्तोस्तितर्हिकामक्रोधाद्यभावात्कथंराज्यंशास्तियदितत्सत्त्वाद्राज्यंशास्तितर्हिजीवन्मुक्तःकथं तमःप्रकाशवद्विरुद्धस्वभावत्वादुभयोर्व्यवहारयोरित्यर्थः ॥५०॥५१॥ ५२ ॥ अस्मिन्पक्षेदेहपातएवमोक्षःसौगतानामस्तितद्वदयंमोक्षःसंपन्नःयावज्जीवंराज्यंकृत्वाऽऽमानुभवाभावेपिमोक्षःसिध्यतीत्याह मोक्षःकिमिति ॥ ५३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ननुज्ञानिनांभुक्तमप्यभुक्तंकृतमप्यकृतमस्तीतिनदोषइतिचेत्तत्राऽऽहकथंभुक्तमिति ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ भुंक्तेभोगानन्यथाकथंभोगःस्यादितिभावः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥
इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ षट्षष्टिश्लोकवर्यैस्तुजनकस्यपरीक्षणम् ॥ मिथिलायांगतःकर्तुंशुकइत्येतदीर्यते ॥ १ ॥ इत्युक्तेति ॥ १ ॥ २ ॥

कथंभुक्तमभुक्तंस्यादकृतंचकृतंकथम् ॥ व्यवहारःकथंत्याज्यइंद्रियाणांमहामते ॥ ५४ ॥ मातापुत्रस्तथाभार्याभगिनीकुलटातथा ॥ भेदाभेदःकथंन स्याद्यद्येतन्मुक्तताकथम् ॥ ५५ ॥ कटुक्षारंतथातीक्ष्णंकषायंमिष्टमेवच ॥ रसनायदिजानातिभुंक्तेभोगाननुत्तमान् ॥ ५६ ॥ शीतोष्णसुखदुःखादिप रिज्ञानंयदाभवेत् ॥ मुक्तताकीदृशीतातसंदेहोयंममाद्भुतः ॥ ५७ ॥ शत्रुमित्रपरिज्ञानंवैरंप्रीतिकरंसदा ॥ व्यवहारेपरेतिष्ठन्कथंनकुरुतेनृपः ॥ ५८ ॥ चौरंवातापसंवापिसमानंमन्यतेकथम् ॥ असमायदिबुद्धिःस्यान्मुक्ततातर्हिकीदृशी ॥ ५९ ॥ दृष्टपूर्वोनमेकश्चिज्जीवन्मुक्तश्चभूपतिः ॥ शंकेयंमहतीता तगृहेमुक्तःकथंनृपः ॥ ६० ॥ दिदृक्षामहतीजाताश्रुत्वातंभूपतिंतथा ॥ संदेहविनिवृत्त्यर्थंगच्छामिमिथिलांप्रति ॥ ६१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापु राणेप्रथमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ छ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्त्वापितरंपुत्रःपादयोःपतितःशुकः ॥ बद्धांजलिरुवाचेदंगंतुकामोमहामनाः ॥ ॥ १ ॥ आपृच्छेत्वांमहाभाग्यग्राह्यंतेवचनंमया ॥ विदेहान्द्रष्टुमिच्छामिपालिताञ्जनकेनतु ॥ २ ॥ विनादंडंकथंराज्यंकरोतिजनकःकिल ॥ धर्मेनवर्तते लोकोदंडश्चेन्नभवेद्यदि ॥ ३ ॥ धर्मस्यकारणंदंडोमन्वादिप्रहितःसदा ॥ सकथंवर्ततेतातसंशयोयंमहान्मम ॥ ४ ॥ मममातात्वियंवंध्यातद्भ्रातिविचेष्टि तम् ॥ पृच्छामित्वांमहाभागगच्छामिचपरंतप॥५॥सूतउवाच॥तंदृष्ट्वागंतुकामंचशुकंसत्यवतीसुतः ॥ आलिंग्योवाचपुत्रंतंज्ञानिनंनिःस्पृहं दृढम् ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ स्वस्त्यस्तुशुकदीर्घायुर्भवपुत्रमहामते ॥ सत्यांवाचंप्रदत्त्वामेगच्छतातयथासुखम् ॥ ७ ॥ आगंतव्यंपुनर्गत्वाममाश्रममनुत्तमम् ॥ न कुत्रापिचगंतव्यंत्वयापुत्रकथंचन ॥ ८ ॥ सुखंजीवामिपुत्राहंदृष्ट्वातेमुखपंकजम् ॥ अपश्यन्दुःखमाप्नोमिप्राणस्त्वमसिमेसुत ॥ ९ ॥ दृष्ट्वात्वंजनकंपुत्रसं देहंविनिवर्त्यच ॥ अत्राऽऽगत्यसुखंतिष्ठवेदाध्ययनतत्परः ॥ १० ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्तःसोभिवाद्यार्यंकृत्वाचैवप्रदक्षिणाम् ॥ चलितस्तरसातीवध नुर्मुक्तःशरोयथा ॥ ११ ॥ संपश्यन्विविधान्देशाँल्लोकांश्चवित्तधर्मिणः ॥ वनानिपादपांश्चैवक्षेत्राणिफलितानिच ॥ १२ ॥ तापसांस्तप्यमानांश्चया जकान्दीक्षयान्वितान् ॥ योगाभ्यासरतान्योगिवानप्रस्थान्वनौकसः ॥ १३ ॥

वर्ततइतिवर्तेतेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ मममातेति ॥ यदिमातावंध्यातदावक्तुरभावादिदंवाक्यमेवनस्यात्तद्दंडोयदिनस्यात्तर्हिधर्मएवनस्यात् ॥ यदिपुनर्दंडोस्तितदाशमाद्यभावात्ज्ञानमे वनस्यादितिभावः॥५॥६॥सत्यांवाचंपुनरागमिष्यामीत्येवंरूपाम्॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥योगिवानप्रस्थानितिसमस्तम् ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥१४॥१५॥मध्येमिथिलामध्ये ॥१६॥ क्षत्ताद्वारपालः ॥१७॥ निःसृत्येति॥मौनमास्थायद्वारदेशंमुक्त्वाद्वारस्याग्रेतस्थौइत्यर्थः॥१८॥चलनंचेति ॥ आगमनमित्यर्थः॥१९॥२०॥ ततो यथेष्टंगच्छेत्यर्थः॥२१॥यदर्थमिति॥मन्मतेत्वयंज्ञानीनास्थितः॥किंतुपित्रायंज्ञानीनिश्चितस्तत्राश्चर्यंममजातमितिद्रष्टुमागतः ॥ सज्ञानप्रकाशस्तस्यानुभूतोमयायन्मादृशानांप्रवेशाभावइतिभा

शैवान्पाशुपतांश्चैवसौराञ्छाक्तांश्चवैष्णवान् ॥ वीक्ष्यनानाविधान्धर्मांञ्जगामातिस्मयन्मुनिः ॥ १४ ॥ वर्षद्वयेनमेरुंचसमुल्लंघ्यमहामतिः ॥ हिमाचलंचवर्षेणजगाममिथिलांप्रति ॥ १५ ॥ प्रविष्टोमिथिलांमध्येपश्यन्सर्वर्द्धिमुत्तमाम् ॥ प्रजाश्चसुखिताःसर्वाःसदाचाराःसुसंस्थिताः ॥ १६ ॥ क्षत्रानिवारितस्तत्रकस्त्वमत्रसमागतः ॥ किंतेकार्यंवदस्वेतिपृष्टस्तेननचाऽब्रवीत् ॥१७॥ निःसृत्यनगरद्वारात्स्थितःस्थाणुरिवाचलः ॥विस्मितोतिहसंस्तस्थौवचोनोवाचकिंचन॥१८॥प्रतीहारउवाच॥ब्रूहिमूकोसिकिंब्रह्मन्किमर्थंत्वमिहागतः ॥ चलनंचविनाकार्यंनभवेदितिमेमतिः ॥१९॥ राजाज्ञयाप्रवेष्टव्यंनगरेऽस्मिन्सदाद्विज ॥ अज्ञातकुलशीलस्यप्रवेशोनात्रसर्वथा ॥ २० ॥ तेजस्वीभासिनूनंत्वंब्राह्मणोवेदवित्तमः ॥ कुलंकार्यंचमेब्रूहियथेष्टंगच्छमानद ॥ ॥ २१ ॥ शुकउवाच ॥ यदर्थमागतोस्म्यत्रतत्प्राप्तंवचनात्तव ॥ विदेहनगरंद्रष्टुंप्रवेशोयत्रदुर्लभः ॥ २२ ॥ मोहोयंममदुर्बुद्धेःसमुल्लंघ्यागिरिद्वयम् ॥ राजानंद्रष्टुकामोहंपर्यटन्समुपागतः ॥ २३ ॥ वंचितोहंस्वयंपित्रादूषणंकस्यदीयते ॥ भ्रामितोहंमहाभागकर्मणावामहीतले ॥ २४ ॥ धनाशापुरुषस्येहपरिभ्रमणकारणम् ॥ सामेनास्तितथाप्यत्रसंप्राप्तोस्मिभ्रमात्किल ॥ २५ ॥ निराशस्यसुखंनित्यंयदिमोहेनमज्जति ॥ निराशोहंमहाभागमग्नोस्मिन्मोहसागरे ॥ २६ ॥ क्वमेरुर्मिथिलाक्वेयंपद्भ्यांचसमुपागतः ॥ परिभ्रमफलंकिंमेवंचितोविधिनाकिल ॥ २७ ॥ प्रारब्धंकिलभोक्तव्यंशुभंवाप्यथवाशुभम् ॥ उद्यमस्तद्वशोनित्यंकारयत्येवसर्वथा ॥ २८ ॥ नतीर्थंनचवेदोत्रयदर्थमिहमेश्रमः ॥ अप्रवेशःपुरेजातोविदेहोनामभूपतिः ॥ २९ ॥ इत्युक्त्वाविरामाशुमौनीभूतइवास्थितः ॥ ज्ञातोहिप्रतिहारेणज्ञानीकश्चिद्द्विजोत्तमः ॥ ३० ॥ सामपूर्वमुवाचासौतंक्षत्तासंस्थितंमुनिम् ॥ गच्छभोयत्रतेकार्यंयथेष्टंद्विजसत्तम ॥ ३१ ॥ अपराधोममब्रह्मन्यन्निवारितवानहम् ॥ तत्क्षंतव्यंमहाभागविमुक्तानांक्षमाबलम् ॥ ३२ ॥ शुकउवाच ॥ किंतेत्रदूषणंक्षत्तःपरतंत्रोसिसर्वदा ॥ प्रभुकार्यंप्रकर्तव्यंसेवकेनयथोचितम् ॥ ३३ ॥

वः॥२२॥२३॥२४॥२५॥मोहसागरेइति॥अतोमयादुःखंप्राप्तंनतत्रान्यापराधइत्यर्थः॥ २६ ॥ २७ ॥ नन्वेवंक्लेशंभुक्त्वानिरर्थकःकिमर्थमागतस्त्वमितिचेत्तत्राह प्रारब्धमिति ॥ अवश्यंप्रारब्धंकर्मभोक्तव्यम् उद्यमउद्योगस्तुतद्वशोनित्यंवर्तते तमितिशेषोत्रकर्तव्यः॥ तमुद्योगंतत्प्रारब्धंसर्वथाकारयतिव्यापारम्॥उद्योगोयत्नोव्यापारंकरोतितेनोद्योगेनप्रारब्धंकर्मकारयतिनतत्रमदधीनताकाचिदस्तीतिभावः॥हृक्रोरन्यतरस्यामितिद्विकर्मत्वम्॥२८॥विदेहोनामभूपतिरिति॥यत्रेतिशेषः॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥३४॥३५॥प्रतीहारस्त्वयंज्ञानीवाज्ञानीवेतिबुभुत्सयाअप्रकृतमेवपृच्छति किंसुखमिति॥शुभमिच्छताकार्यंकर्तव्यंकिम् ॥ ३६ ॥ द्वैविध्यमिति॥यतोद्विविधोजनस्ततोद्वैविध्यंसर्वत्रवर्तते ॥ द्वैविध्यमेवाह रागीचैवविरागीचेति॥किंजात्यानयोर्भेदोनेत्याह तयोश्चित्तमिति॥चित्तद्वैविध्यादेवरागिविरागिद्वैविध्यंनस्वतइतिभावः ॥३७॥ तत्रविरागिणोंतर्भेदमाह विरागीत्रिविधइति ॥ ज्ञातःलोकैरेतस्यवैराग्यंस्पष्टमेवज्ञायतइतितीव्रवैराग्यवान्ज्ञातइत्युच्यते ॥अज्ञातश्चमंदवैराग्यवाँल्लोकैरज्ञातवैराग्यवान् ॥मध्यमस्तुलोकैःकिंचिज्ज्ञातवैराग्यवान्॥रागिणोप्यवांतरभेदमाह ॥ रागीत्विति॥३८॥मतिजंशास्त्राविरुद्धमयुक्तमतिरहितंमत्यातर्कितविषयमेकम्॥शास्त्रविषयकंचातुर्यंद्वितीयम्॥शिष्टलौकिकव्यवहारविषयकंतृतीयम् ॥ तच्चाशिष्टव्यवहारविषयकमितिफलि

नभूपदूषणंचात्रयदहंरक्षितस्त्वया ॥ चोरशत्रुपरिज्ञानंकर्तव्यंसर्वथाबुधैः ॥ ३४॥ ममैवसर्वथादोषोयदहंसमुपागतः॥गमनंपरगेहेयल्लघुतायाश्चकारणम्॥ ॥ ३५ ॥ प्रतीहारउवाच ॥ किंसुखंद्विजकिंदुःखंकिंकार्यंशुभमिच्छता ॥ कःशत्रुर्हितकर्ताकोब्रूहिसर्वंममाद्यवै ॥ ३६ ॥ शुकउवाच ॥ द्वैविध्यंसर्वलोकेषुसर्वत्रद्विविधोजनः ॥ रागीचैवविरागीचतयोश्चित्तंद्विधापुनः ॥ ३७ ॥ विरागीत्रिविधःकामंज्ञातोज्ञातश्चमध्यमः ॥ रागीचद्विविधःप्रोक्तोमूर्खश्चचतुरस्तथा ॥ ३८ ॥ चातुर्यंद्विविधंप्रोक्तंशास्त्रजंमतिजंतथा ॥ मतिस्तुद्विविधालोकेयुक्तायुक्तेतिसर्वथा ॥ ३९ ॥ प्रतीहारउवाच ॥ यदुक्तंभवताविद्वन्नार्थज्ञोहंद्विजोत्तम ॥ तत्सर्वंविस्तरेणाद्ययथार्थंवदसत्तम ॥ ४० ॥ शुकउवाच ॥ रागोयस्यास्तिसंसारेसरागीत्युच्यतेध्रुवम् ॥ दुःखंबहुविधंतस्यसुखंचविविधंपुनः ॥ ४१ ॥ धनंप्राप्यसुतान्दारान्मानंचविजयंतथा ॥ तदप्राप्यमहद्दुःखंभवत्येवक्षणेक्षणे ॥ ४२ ॥ कार्यंतस्यसुखोपायःकर्तव्यंसुखसाधनम् ॥ तस्यारातिःसविज्ञेयःसुखविघ्नंकरोतियः ॥ ४३ ॥ सुखोत्पादयितामित्रंरागयुक्तस्यसर्वदा ॥ चतुरोनैवमुह्येतमूर्खःसर्वत्रमुह्यति ॥ ४४ ॥ विरक्तस्याऽऽत्मरक्तस्यसुखमेकांतसेवनम् ॥ आत्मानुचिंतनंचैववेदांतस्यचचिंतनम्॥४५॥दुःखंतदेतत्सर्वंहिसंसारकथनादिकम् ॥ शत्रवोबहवस्तस्यविज्ञस्यशुभमिच्छतः ॥४६॥ कामःक्रोधःप्रमादश्चशत्रवोविविधाःस्मृताः ॥ बंधुःसंतोषएवास्यनान्योस्तिभुवनत्रये ॥४७॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यमत्वातंज्ञानिनं द्विजम् ॥ क्षत्ताप्रवेशयामासकक्षांचातिमनोरमाम् ॥ ४८ ॥ नगरंवीक्षमाणःसंस्त्रैविध्यजनसंकुलम् ॥ नानाविपणिद्रव्याढ्यंक्रयविक्रयकारकम्॥४९॥

तोर्थः॥३९॥४०॥४१॥धनंप्राप्येति॥एतेनकिंसुखंकिंदुःखमित्यस्योत्तरमुक्तंभवति॥४२॥किंकार्यमित्यस्योत्तरमाह कार्यंतस्येति॥येनसुखंभवतिसउपायःकर्तव्यः ॥ कःशत्रुरित्यस्योत्तरमाह तस्यारातिरिति॥४३॥ननुसुखदुःखकार्यशत्रुमित्राणिमूर्खचतुरयोःसमानि तदामूर्खचतुरयोःकोभेदस्तत्राह चतुरोनैवमुह्येत्वोति ॥ शास्त्रावलोकनजज्ञानयुक्तायुक्तमत्योःसत्त्वान्नतस्यमोहोमूर्खस्यतुसोस्तीतितयोर्भेदः॥४४॥इत्थंरागिद्वैविध्यंतत्सुखदुःखकार्यशत्रुमित्राण्युपपाद्यात्रिविधविरागिणोपिसुखदुःखकार्यशत्रुमित्राण्युपपादयति॥विरक्तस्येति॥ आत्मानुचिंतनंचैवेत्यादिःकार्यनिर्देशः॥४५॥दुःखंतदेतादितिदुःखानिर्देशः॥शत्रवोबहवइतिशत्रुनिर्देशः॥४६॥बंधुःसंतोषइतिमित्रनिर्देशः॥एतेनज्ञानलाभायहेयोपादेयमुक्तंभवति ॥ रागिणोव्यवहारस्यहेयत्वात्विरक्तव्यवहारस्योपादेयत्वादिति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ तत्स्थजनस्यक्रयविक्रयकारकत्वेपिनगरस्यतदभेदात्क्रयविक्रयकारकत्वमुक्तम् ॥ यथाग्रामःकरोतीति ॥ ४९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥६४॥६५॥ ६६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

रागद्वेषयुतंकामलोभमोहाकुलंतथा ॥ विवदत्सुजनाकीर्णंवसुपूर्णंमहत्तरम् ॥ ५० ॥ पश्यन्सत्रिविधाँल्लोकान्प्रासरद्राजमंदिरम् ॥ प्राप्तःपरमतेजस्वी द्वितीयइवभास्करः ॥ ५१ ॥ निवारितश्चतत्रैवप्रतीहारेणकाष्ठवत् ॥ तत्रैवचस्थितोद्वारिमोक्षमेवानुचिंतयन् ॥ ५२ ॥ छायायामातपेचैवसमदर्शीमहातपाः ॥ ध्यानंकृत्वातथैकांतेस्थितःस्थाणुरिवाचलः ॥५३॥ तंमुहूर्तादुपागत्यराज्ञोमात्यःकृतांजलिः ॥ प्रावेशयत्ततःकक्षांद्वितीयांराजवेश्मनः ॥ ५४ ॥ तत्रदिव्यंमनोरम्यंपुष्पितंदिव्यपादपम् ॥ तद्वनंदर्शयित्वातुकृत्वाचातिथिसत्क्रियाम् ॥ ५५ ॥ वारमुख्याःस्त्रियस्तत्रराजसेवापरायणाः ॥ गीतवादित्रकुशलाःकामशास्त्रविशारदाः ॥ ५६ ॥ ताआदिश्यचसेवार्थंशुकस्यमंत्रिसत्तमः ॥ निर्गतःसदनात्तस्माद्व्यासपुत्रःस्थितस्तदा ॥ ५७ ॥ पूजितःपरयाभक्त्याताभिःस्त्रीभिर्यथाविधि ॥ देशकालोपपन्नेननानान्नेनातितोषितः ॥ ५८ ॥ ततोंतःपुरवासिन्यस्तस्यांतःपुरकाननम् ॥ रम्यंसंदर्शयामासुरंगनाःकाममोहिताः ॥ ५९ ॥ सयुवारूपवान्कांतोमृदुभाषीमनोरमः ॥ दृष्ट्वातामुमुहुःसर्वास्तंचकाममिवापरम् ॥ ६० ॥ जितेंद्रियंमुनिंमत्वासर्वाःपर्यचरंस्तदा ॥ आरणेयस्तुशुद्धात्मामातृभावमकल्पयत् ॥ ६१ ॥ आत्मारामोजितक्रोधोनहृष्यतिनतप्यति ॥ पश्यंस्तासांविकारांश्चस्वस्थएवसतस्थिवान् ॥ ६२ ॥ तस्मैशय्यांसुरम्यांचददुर्नार्यःसुसंस्कृताम् ॥ परार्ध्यास्तरणोपेतांनानोपस्करसंवृताम् ॥ ६३ ॥ सकृत्वापादशौचंचकुशपाणिरतंद्रितः ॥ उपास्यपश्चिमांसंध्यांध्यानमेवान्वपद्यत ॥ ६४ ॥ याममेकंस्थितोध्यानेसुष्वापतदनंतरम् ॥ सुप्त्वायामद्वयंतत्रचोदतिष्ठत्ततःशुकः ॥ ६५ ॥ पाश्चात्त्यंयामिनीयामंध्यानमेवान्वपद्यत ॥ स्नात्वाप्रातःक्रियाःकृत्वापुनरास्तेसमाहितः ॥ ६६ ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ ॥ १७ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ श्रुत्वातमागतंराजामंत्रिभिःसहितःशुचिः ॥ पुरःपुरोहितंकृत्वागुरुपुत्रंसमभ्ययात् ॥ १ ॥ कृत्वार्हणांनृपःसम्यग्दत्तासनमनुत्तमम् ॥ पप्रच्छकुशलंगांचविनिवेद्यपयस्विनीम् ॥२॥ सचतांनृपपूजांवैप्रत्यगृह्णाद्यथाविधि ॥ पप्रच्छकुशलंराज्ञेस्वंनिवेद्यनिरामयम् ॥ ३ ॥ कृत्वाकुशलसंप्रश्नमुपविष्टंसुखासने ॥ शुकंव्याससुतंशांतंपर्यपृच्छतपार्थिवः ॥ ४ ॥ किंनिमित्तंमहाभागनिःस्पृहस्यचमांप्रति ॥ जातंह्यागमनंब्रूहिकार्यंतन्मुनिसत्तम ॥ ५ ॥ शुकउवाच ॥ व्यासेनोक्तोमहाराजकुरुदारपरिग्रहम् ॥ सर्वेषामाश्रमाणांचगृहस्थाश्रमउत्तमः ॥ ६ ॥ मयानांगीकृतंवाक्यंमत्वावंधंगुरोरपि ॥ नबंधोस्तीतितेनोक्तोनाहंतत्कृतवान्पुनः ॥ ७ ॥ इतिसंदिग्धमनसंमत्वामांमुनिसत्तमः ॥ उवाचवचनंतथ्यंमिथिलांगच्छमाशुचः ॥ ८ ॥

अर्धाधिकैकषष्ट्यातुजनकेनमहात्मना ॥ वैराग्यादुपदेशश्चशुकायकृतउच्यते ॥ १ ॥ पुरोग्रदेशेपुरोहितंकृत्वा॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥गुरोःपितुरपिमयानांगीकृतमित्यन्वयः ॥ ७ ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥९॥१०॥११॥पृच्छेत्यस्योत्तरश्लोकस्थसंदेहपदेनान्वयः॥तस्यजनकस्यवचःश्रुत्वामामेहि तरसावेगेनत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ तपस्तीर्थेति ॥ यद्यपिदेवीभागवतश्रवणेनायंतृप्तएवास्तित थाप्युपदेशार्थमागतइतिगुरुंप्रतिस्वज्ञानमाच्छाद्यैवमुच्यतइतिवोध्यम्॥१४॥१५॥१६॥नान्यवृत्तिः॥नान्यप्राप्तयजनयाजनादिवृत्तिः ॥१७॥१८॥१९॥२०॥ अष्टचत्वारिंशत्निषेकादिस्म शानांताः ॥ २१ ॥ २२ ॥ शुकस्तुस्वाभिप्रेतंमुख्यंपृच्छति उत्पन्नइति ॥ हृदिवुद्धौवैराग्येउत्पन्नेज्ञानंपरोक्षज्ञानंविज्ञानमपरोक्षज्ञानंतयोःसंभवेप्राप्तौसत्यांकिमवश्यमाश्र

याज्योस्तिजनकस्तत्रजीवन्मुक्तोनराधिपः ॥ विदेहोलोकविदितःपातिराज्यमकंटकम् ॥ ९ ॥ कुर्वन्राज्यंतथाराजामायापाशैर्नबध्यते ॥ त्वंविभेषिकथं पुत्रवनवृत्तिःपरंतप ॥ १० ॥ पश्यतंनृपशार्दूलंत्यजमोहंमनोगतम् ॥ कुरुदारान्महाभागपृच्छवाभूपतिंचतम् ॥ ११ ॥ संदेहंतेमनोजातंकथयिष्य तिपार्थिवः ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यमामेहितरसासुत ॥ १२ ॥ संप्रोक्तोहंमहाराजत्वत्पुरेचतदाज्ञया ॥ मोक्षकामोस्मिराजेंद्रब्रूहिकृत्यंममानघ ॥ १३ ॥ तपस्तीर्थव्रतेज्याश्चस्वाध्यायस्तीर्थसेवनम् ॥ ज्ञानंवावदराजेंद्रमोक्षंप्रतिचकारणम् ॥ १४ ॥ जनकउवाच ॥ शृणुविप्रेणकर्तव्यंमोक्षमार्गाश्रितेनयत् ॥ उपनीतोवसेदादौवेदाभ्यासायवैगुरौ ॥ १५ ॥ अधीत्यवेदवेदांतान्दत्त्वाचगुरुदक्षिणाम् ॥ समावृत्तस्तुगार्हस्थ्येसदारोनिवसेन्मुनिः ॥ १६ ॥ ना न्यवृत्तिस्तुसंतोषीनिराशीगतकल्मषः ॥ अग्निहोत्रादिकर्माणिकुर्वाणःसत्यवाक्छुचिः ॥ १७ ॥ पुत्रंपौत्रंसमासाद्यवानप्रस्थाश्रमेवसेत् ॥ तपसाषड्रिपू ञ्जित्वाभार्यांपुत्रेनिवेश्यच ॥ १८ ॥ सर्वानग्नीन्यथान्यायमात्मन्यारोप्यधर्मवित् ॥ वसेत्तुर्याश्रमेश्रांतःशुद्धेवैराग्यसंभवे ॥ १९ ॥ विरक्तस्याधिकारो स्तिसंन्यासेनान्यथाक्वचित् ॥ वेदवाक्यमिदंतथ्यंनान्यथेतिमतिर्मम ॥ २० ॥ शुकाष्टचत्वारिंशद्भैसंस्कारावेदबोधिताः ॥ चत्वारिंशद्गृहस्थस्यप्रोक्तास्त त्रमहात्मभिः ॥ २१ ॥ अष्टौचमुक्तिकामस्यप्रोक्ताःशमदमादयः ॥ आश्रमादाश्रमंगच्छेदितिशिष्टानुशासनम् ॥ २२ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ उत्पन्नेहृदि वैराग्येज्ञानविज्ञानसंभवे ॥ अवश्यमेववस्तव्यमाश्रमेषुवनेषुवा ॥ २३ ॥ जनकउवाच ॥ इंद्रियाणिबलिष्ठानिननियुक्तानिमानद ॥ अपक्वस्यप्रकुर्वंतिवि कारांस्तानेकशः ॥ २४ ॥ भोजनेच्छांसुखेच्छांचशय्येच्छामात्मजस्यच ॥ यतीभूत्वाकथंकुर्याद्विकारेसमुपस्थिते ॥ २५ ॥

मेपुगृहस्थाश्रमादिष्वेववस्तव्यमाहोस्विद्वनेषुवावस्तव्यमित्यर्थः ॥ अयंभावः॥ममश्रीदेवीभागवतश्रवणेनानुभवस्तुजातस्ततस्तस्यैवपरिशीलनार्थंगृहस्थाश्रमेविक्षेपवाहुल्याद्वैराग्यातिशयेन चित्तंवनंगंतुमुत्सुकंभवति पितुस्तुमतंगृहस्थाश्रमेएवप्रथमतःपरिशीलनंकृत्वापश्चाद्वानप्रस्थाश्रमंकृत्वापश्चात्संन्यासंकृत्वावनंगंतव्यमितितन्निर्णयार्थमहमत्रागतोस्मिततस्तन्निर्णयंवदेति २३ जनकस्तुक्रमेणाश्रमादाश्रमांतरंगच्छेन्नसहसेतिव्यासपक्षमेवानुभवोपपत्तिभ्यांस्थापयति इंद्रियाणीति॥बलिष्ठानीति॥अपक्वदशायांकोमलवैराग्येणयद्यपींद्रियजयोजातइतिप्रतिभाति तथा पिनतत्रविश्वासआस्थेयः॥कालांतरेतस्यैवपुरुषस्यवासनावशादन्यथाव्यवहारस्यदृश्यमानत्वादितिभावः॥२४॥विकारेसमुपस्थितइति॥ वासनावशादितिभावः॥आत्मजस्यचपुत्रस्यचेच्छा

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मितिशेषः॥२५॥अतःआश्रमक्रमआस्थेयःपक्ववैराग्यपर्यंतमित्याह दुर्जरमिति॥२६॥तदतिक्रमेदोषमाह ऊर्ध्वंसुप्तइति ॥ननुकदाचिदिंद्रियप्राबल्यात्संन्यासस्यैवंरीत्याभ्रंशेपिपुनःप्रायश्चित्तादिनाशुद्धिर्भविष्यति॥यदितुभ्रंशोनस्यात्तर्हिकृतार्थतैवेतिचेत्तत्राह परिव्रज्येति॥प्रायश्चित्ताद्यभावादितिभावः॥२७॥तस्मात्संन्यासेत्वरानविधेयेत्याह यथापिपीलिकेति॥२८॥विहंगइति॥विघ्नशंकामुदस्यविहंगोयातिपरंतुश्रांतोभवतित्वरयागमनात्॥२९॥३०॥ननुगृहस्थाश्रमेविक्षेपबाहुल्यमितिचेत्तत्राह गृहस्थाश्रमेति॥रागद्वेषौवियुज्यउदासीनोभवेदित्यर्थः ॥३१॥३२॥ एवंविधःकोमुक्तइतिचेत्तत्राह पश्याहमिति ॥३३॥ भुंजानइति॥ यथाहमुदासीनवदासीनोरागद्वेषादिरहितोभगवतीप्रीत्यर्थंसर्वाणिकर्माणिकुर्वन् जीवन्मुक्तःसन्देहांतेमुक्तोभविष्यामितथात्वमपिसदाचारंकुर्वन्मुक्तोभवेत्यर्थः॥३४॥ ज्ञानमुपदिशति कथ्यतइति॥यत्खलुजडंजगत् अविद्यादिकंदृश्यंकथ्यतेतेनपरमार्थतोदृश्यमात्मतत्त्वंकुतःकेनहेतुनाबध्यतेनकेनापीत्यर्थः ॥तत्सिद्धेरदृश्या

दुर्जरंवासनाजालंनशांतिमुपयातिवै ॥ अतस्तच्छमनार्थायक्रमेणचपरित्यजेत् ॥ २६ ॥ ऊर्ध्वंसुप्तःपतत्येवनशयानःपतत्यधः ॥ परिव्रज्यपरिभ्रष्टोनमार्गेलभतेपुनः ॥ २७ ॥ यथापिपीलिकामूलाच्छाखायामधिरोहति ॥ शनैःशनैःफलंयातिसुखेनपदगामिनी ॥ २८ ॥ विहंगस्तरसायातिविघ्नशंकामुदस्यवै ॥ श्रांतोभवतिविश्रम्यसुखंयातिपिपीलिका ॥ २९ ॥ मनस्तुप्रबलंकाममजेयमकृतात्मभिः ॥ अतःक्रमेणजेतव्यमाश्रमानुक्रमेणच ॥ ३० ॥ गृहस्थाश्रमसंस्थोपिशांतःसुमतिरात्मवान् ॥ नचहृष्येन्नचतपेल्लाभालाभेसमोभवेत् ॥ ३१ ॥ विहितंकर्मकुर्वाणस्त्यजंश्चितान्वितंचयत् ॥ आत्मलाभेनसंतुष्टोमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ३२ ॥ पश्याहंराज्यसंस्थोपिजीवन्मुक्तोयथानघ ॥ विचरामियथाकामंनमेकिंचित्प्रजायते ॥ ३३ ॥ भुंजानोविविधान्भोगान्कुर्वन्कार्याण्यनेकशः ॥ भविष्यामियथाहंत्वंतथामुक्तोभवानघ ॥ ३४ ॥ कथ्यतेखलुयद्दृश्यमदृश्यंबध्यतेकुतः॥दृश्यानिपंचभूतानिगुणास्तेषांतथापुनः ॥ ३५ ॥ आत्मगम्योनुमानेनप्रत्यक्षोनकदाचन ॥ सकथंबध्यतेब्रह्मन्निर्विकारोनिरंजनः ॥ ३६ ॥ मनस्तुसुखदुःखानांमहतांकारणंद्विज ॥ जातेतुनिर्मलेह्यस्मिन्सर्वंभवतिनिर्मलम् ॥ ३७ ॥ भ्रमन्सर्वेषुतीर्थेषुस्नात्वास्नात्वापुनःपुनः ॥ निर्मलंनमनोयावत्तावत्सर्वंनिरर्थकम् ॥ ३८ ॥

धीनत्वात्॥नहिदीपभानुप्रभयाप्रकाशिताघटादयोदीपभानूप्रतिवध्नंति॥तत्रदृश्यादृश्यशब्दार्थमाह दृश्यानीति॥इदमुपलक्षणमविद्यादेः ॥३५॥ आत्मातुअनुमानेनगम्योज्ञेयोऽतएवादृश्योनप्रत्यक्षःसर्वसाक्षित्वात्॥साक्षिप्रकाशरूपआत्माइतिफलितम्॥किंचनिर्विकारोनिरंजनश्च॥इदमुपलक्षणमसंगित्वादिधर्माणाम्॥३६॥ननुतर्हिबंधःकेनहेतुनानुभूयतइतिचेत्तत्राऽऽह मनस्त्विति ॥ अविद्याजन्यांतःकरणावच्छिन्नोजीवोमनोवृत्त्यास्वाविद्ययास्वकूटस्थमात्मानमज्ञात्वाबुद्ध्याद्यध्यासेनबुद्ध्यादिनिष्ठधर्मांश्छत्रिन्यायेनकर्तृत्वभोक्तृत्वमुक्तत्वादीनात्मन्यातिदिशतितेनचसुखदुःखादीन्बुद्धिनिष्ठानात्मन्यारोपयति॥तस्मान्मनएवकारणंसुखदुःखानांनान्यदितिभावः ॥ जातेत्विति॥कर्मोपासनादिभिर्भगवतीप्रीत्यर्थमाचारितैःश्रवणमनननिदिध्यासनादिभिश्चात्मानुभवेनाविद्यानाशेनमनसिनिर्मलेऽविद्यारहितेजातेसर्वंनिर्मलमेवभवतिनिःशंकमेवभवति ॥ नतुपूर्ववन्मोहावृतंततश्चनदुःखादिकमनुभवतीत्यर्थः ॥ ३७ ॥ हेशुकेदंरहस्यंसर्वप्राणिभिरवश्यमाश्रयितव्यम् इदमनाश्रित्यसर्वंकृतमप्यकृतमेवभवतीत्याह भ्रमन्निति ॥ ३८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३९ ॥ ४० ॥ द्वैतदर्शनात् ॥ द्वैतदर्शनंविहायैकात्मत्वेलब्धेकथंभेदःसंभवेत्नकथमपीत्यर्थः ॥ ४१॥ संसारेवर्तमानाअविद्यावस्थायांवर्तमानाभेदबुद्धिःजीवब्रह्मभेदबुद्धिःप्रवर्ततेउत्पद्यत इत्यर्थः ॥ ४२ ॥ कस्मादुत्पद्यतइतिचेत्तत्राऽऽह अविद्येयमिति ॥ अविद्याकारणमस्यइत्यर्थः ॥ तन्निवर्तकंतन्नाशकंविद्याचविद्यैवब्रह्मविषयिणीनिर्विकल्पकवृत्तिरेवनान्यत् ॥ अतोविच क्षणैस्तेएवविद्याविद्येज्ञातव्ये पुरुषार्थहेतुत्वात् ॥ ४३ ॥ नन्वविद्यानाशेपिविद्यायाःसत्त्वाद्द्वैतंतदवस्थमेवेतिकथंभवताऽद्वैतंप्रतिपाद्यतेचेत्तत्राऽऽह विनातपमिति ॥ छायायाःसुखमातपंविना

नदेहोनचजीवात्मानेंद्रियाणिपरंतप ॥ मनएवमनुष्याणांकारणंबंधमोक्षयोः ॥ ३९ ॥ शुद्धोमुक्तःसदैवात्मानबैवध्येतकर्हिचित् ॥ बंधमोक्षौमनःसंस्थौ तस्मिञ्छांतेप्रशाम्यति ॥ ४० ॥ शत्रुर्मित्रमुदासीनोभेदाःसर्वेमनोगताः ॥ एकात्मत्वेकथंभेदःसंभवेद्द्वैतदर्शनात् ॥ ४१ ॥ जीवोब्रह्मसदैवाहंनात्रकार्याविचारणा ॥ भेदबुद्धिस्तुसंसारेवर्तमानाप्रवर्तते ॥ ४२ ॥ अविद्येयंमहाभागविद्याचतन्निवर्तनम् ॥ विद्याविद्येचविज्ञेयेसर्वदैवविचक्षणैः ॥ ४३ ॥ विनाऽऽतपंहिछायायाज्ञायतेचकथंसुखम् ॥ अविद्ययाविनातद्वत्कथंविद्यांचवेत्तिवै ॥ ४४ ॥ गुणागुणेषुवर्ततेभूतानिचतथैवच ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेषुकोदोषस्तत्रचाऽऽत्मनः ॥ ४५ ॥ मर्यादासर्वरक्षार्थंकृतावेदेषुसर्वशः ॥ अन्यथाधर्मनाशःस्यात्सौगतानामिवानघ ॥ ४६ ॥ धर्मनाशेविनष्टःस्याद्वर्णाचारोऽतिवर्तितः ॥ अतोवेदप्रदिष्टेनमार्गेणगच्छतांशुभम् ॥ ४७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ संदेहोवर्ततेराजन्नानिवर्ततिमेक्वचित् ॥ भवताकथितंयत्तच्छृण्वतोमेनराधिप ॥ ४८ ॥ वेदधर्मेषुहिंसास्यादधर्मबहुलाहिंसा ॥ कथंमुक्तिप्रदोधर्मोवेदोक्तोवतभूपते ॥ ४९ ॥ प्रत्यक्षेणत्वनाचारःसोमपानंनराधिप ॥ पशूनांहिंसनंतद्वद्भक्षणंचामिषस्यच ॥ ५० ॥ सौत्रामणौतथाप्रोक्तःप्रत्यक्षेणसुराग्रहः ॥ द्यूतक्रीडातथाप्रोक्ताव्रतानिविविधानिच ॥ ५१ ॥ श्रूयतेस्मपुराह्यासीच्छशबिंदुर्नृपोत्तमः ॥ यज्वाधर्मपरोनित्यंवदान्यःसत्यसागरः ॥ ५२ ॥ गोप्ताचधर्मसेतूनांशास्ताचोत्पथगामिनाम् ॥ यज्ञाश्चविहितास्तेनबहवोभूरिदक्षिणाः ॥५३॥ चर्मणां पर्वतोजातोविंध्याचलसमःपुनः॥मेघांबुप्लावनाज्जातानदीचर्मण्वतीशुभा ॥५४॥ सोपिराजादिवंयातःकीर्तिरस्याचलाभुवि ॥ एवंधर्मेषुवेदेषुनमेबुद्धिःप्रवर्तते ॥ ५५ ॥ स्त्रीसंगेनसदाभोगेसुखमाप्नोतिमानवः ॥ अलाभेदुःखमत्यंतंजीवन्मुक्तःकथंभवेत् ॥ ५६ ॥

कथंज्ञायतेतथाऽविद्ययाविनाकथंविद्यांवेत्तिनकथमपीत्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ अविद्याकार्यमेवविद्यातयाचविद्ययाऽविद्यानाशेसतिकतकरजोन्यायेनाविद्यासहितास्वयमपिविद्यानश्यतिततश्चनद्वैतापत्तिरिति ॥४४॥ ज्ञानमुपसंहरति॥गुणागुणेष्विति ॥ कोदोषइति ॥ असंगत्वादित्यर्थः॥४५॥ यद्यप्येवंवर्ततेतथापिमहद्भिर्लोकसंग्रहार्थंवेदमर्यादावश्यंपालनीयेत्यभिप्रायेणाऽऽहमर्यादेति ॥ ४६॥ ४७॥ ४८ ॥ संदेहमेवाऽऽह वेदधर्मेष्विति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ व्रतानीति ॥ ब्रह्मचारिपुंश्चल्योर्मैथुनादीनि ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ नमेबुद्धिःप्रवर्तते ॥ स्वर्गाद्यनित्यफलकत्वाद्वेदोक्तकर्मणइतिभावः ॥ ५५ ॥ किंचत्वयाजीवन्मुक्ततोक्तातत्रापिसंदेहोस्तीत्याह स्त्रीसंगेचेति ॥ ५६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





साहिंसेति॥अहिंसेतिच्छेदः॥अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्रतीर्थेभ्यइतिश्रुतेः॥उपाधियोगतइति ॥ रागरूपोपाधिनाकृतातुहिंसैवभवति॥५७॥५८॥अहिंसांचेति॥आर्द्रेधनोपाधिनावन्हेःसधूमत्वम् अन्यथानिर्धूमत्वंतथारागाद्युपाधिनापश्चालंभस्यहिंसात्वमन्यथाहिंसात्वाभावइति ॥५९॥रागादिरहितकर्मणःईश्वरप्रसादरहितफलाभावात्कृतमपिकर्माकृतमेवभवति पुनःकुतस्तस्यहिंसादि दोषदुष्टत्वमित्याह अरागेणचेति॥६०॥गृहस्थानांत्विति॥रागिणामित्यर्थः॥६१॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ ॥अर्धाधिकाष्टपंचाशच्छ्लोकैर्जनकवाक्यतः॥ शांतस्यशुकदेवस्यविवाहादिकमुच्यते॥१॥पूर्वाध्यायेनिःस्पृहस्यारागिणोदेवेश्वरप्रीत्यर्थंक्रियमाणेवैदिकेकर्मणिहिंसानभवतीत्युक्तंतत्रनिःस्पृहत्वमेवाऽऽक्षिपति संदेहोयमिति॥नहिजलमध्येवि

जनकउवाच ॥ हिंसायज्ञेषुप्रत्यक्षासाऽहिंसापरिकीर्तिता ॥ उपाधियोगतोहिंसानान्यथेतिविनिर्णयः ॥ ५७ ॥ यथाचेंधनसंयोगादग्नौधूमःप्रवर्तते ॥ तद्वियोगात्तथातस्मिन्निर्धूमत्वंविभातिवै ॥ ५८ ॥ अहिंसांचतथाविद्धिवेदोक्तांमुनिसत्तम ॥ रागिणांसापिहिंसैवनिःस्पृहाणांनसामता ॥ ५९ ॥ अरागेनचयत्कर्मतथाऽहंकारवर्जितम् ॥ अकृतंवेदविद्वांसःप्रवदंतिमनीषिणः ॥ ६० ॥ गृहस्थानांतुहिंसैवयायज्ञेद्विजसत्तम ॥ अरागेणचयत्कर्मतथाऽहंकारवर्जितम् ॥ ६१ ॥ साऽहिंसैवमहाभागमुमुक्षूणांजितात्मनाम् ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ संदेहोऽयंमहाराजवर्ततेहृदयेमम ॥ मायामध्येवर्तमानः सकथंनिःस्पृहोभवेत् ॥ १ ॥ शास्त्रज्ञानंचसंप्राप्यनित्यानित्यविचारणम् ॥ त्यजतेनमनोमोहंसकथंमुच्यतेनरः ॥ २ ॥ अंतर्गतंतमश्छेत्तुंशास्त्राद्बोधोहिनक्षमः ॥ यथाननश्यतितमःकृतयादीपवार्तया ॥ ३ ॥ अद्रोहःसर्वभूतेषु कर्तव्यःसर्वदाबुधैः ॥ सकथंराजशार्दूलगृहस्थस्यभवेत्तथा ॥ ४ ॥ वित्तैषणानतेशांतातथाराज्यसुखैषणा ॥ जयैषणाचसंग्रामेजीवन्मुक्तःकथंभवेः ॥ ॥ ५ ॥ चोरेषुचौरबुद्धिस्तेसाधुबुद्धिस्तुतापसे ॥ स्वपरत्वंतवाप्यस्तिविदेहस्त्वंकथंनृप ॥ ६ ॥ कटुतीक्ष्णकषायाम्लरसान्वेत्सिशुभाशुभान् ॥ शुभेपुरमतेचित्तंनाशुभेषुतथानृप ॥ ७ ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिश्चतवराजन्भवंतिहि ॥ अवस्थास्तुयथाकालंतुरीयातुकथंनृप ॥ ८ ॥ पदात्यश्वरथेभाश्चसर्वे वैवशगामम ॥ स्वाम्यहंचैवसर्वेषांमन्यसेत्वंनमन्यसे ॥ ९ ॥

द्यमानोजलेनासंबद्धोभवति॥एवंमायायांविद्यमानोमायागुणैःकथमसंबद्धःस्यादितिभावः॥१॥ ननुवेदांतशास्त्रश्रवणजन्यबोधेनविवेकोजागरूकएवेतिनिःस्पृहतास्यादितिचेत्तत्राहशास्त्रज्ञानंचेति ॥ ज्ञानंसंप्राप्ययावद्योगादिकंनसाधितंतावन्मनोमोहंनत्यजते ॥ आत्मनेपदमार्षम् ॥ शास्त्रजन्यबोधस्यपरोक्षत्वादित्यभिमानः॥ तथाचकेवलशास्त्रजन्यबोधेननकथंचिन्निःस्पृहतासंभवति॥ततश्चसंसारेविद्यमानोनरःकथंमुच्यतेनकथमपीत्यर्थः॥तस्मात्संसारंविहाययोगादिनिष्ठोभवेदित्येषसिद्धांतइतितात्पर्यम्॥२॥अंतर्गतमिति।अविद्यारूपमंतर्गतंतमोनशास्त्रजन्यपरोक्षज्ञानेननश्यति॥किंतुयोगजन्यज्ञानभास्करोदयेनैवेत्यर्थः॥३॥४॥स्वयंचत्वंजीवन्मुक्तोस्मीतिवदसितदपिनसांप्रतमित्याह वित्तैषणेति॥बोधविरुद्धधर्माणांदर्शनाद्बोधाभावएवनिश्चीयतइत्यर्थः॥ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ मन्यसेत्वमुतनमन्यसेइतिवदेत्यर्थः ॥ ९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

समदृक्केति ॥ मालासर्पादिभेदबुद्धेःसत्त्वात्कत्वंसमदृगसीत्यर्थः ॥ १० ॥ विमुक्तस्यत्वेतानिलक्षणानिदृश्यंतइत्याह विमुक्तस्त्विति ॥ ११ ॥ स्वाभिप्रायमाह नमेऽद्येति ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ त्वंदांभिकोविमुक्तोभासीत्याह चिंत्यसेइति ॥ १५ ॥ १६ ॥ एतादृशामहांतोपिजगतोसत्यतांजानंतोपिमुह्यंतितदातवकाकथाजीवन्मुक्ततायाइत्याह वैखानसा यइति ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ नह्येवंविधेआचरणेजीवन्मुक्ततासंभवति ॥ नचजीवन्मुक्ततायांसत्यामेतादृशाचरणसंभवस्तस्मान्नामतएवाविदेहान

मिष्टमत्सिसदाराजन्मुदितोविमनास्तथा ॥ मालायांचतथासर्पेसमदृक्कनृपोत्तम ॥ १० ॥ विमुक्तस्तुभवेद्राजन्समलोष्टाश्मकांचनः ॥ एकात्मबुद्धिः सर्वत्रहितकृत्सर्वजंतुषु ॥ ११ ॥ नमेऽद्यरमतेचित्तंगृहदारादिषुक्वचित् ॥ एकाकीनिःस्पृहोऽत्यर्थंचरेयमितिमेमतिः ॥ १२ ॥ निःसंगोनिर्ममःशांतःपत्र मूलफलाशनः ॥ मृगवद्विचरिष्यामिनिर्द्वंद्वोनिष्परिग्रहः ॥ १३ ॥ किंमेगृहेणवित्तेनभार्ययाचसुरूपया ॥ विरागमनसःकामंगुणातीतस्यपार्थिव ॥१४॥ चिंत्यसेविविधाकारंनानारागसमाकुलम् ॥ दंभोऽयंकिलतेभातिविमुक्तोस्मीतिभाषसे ॥ १५ ॥ कदाचिच्छत्रुजाचिंताधनजाचकदाचन ॥ कदाचि त्सैन्यजाचिंतानिश्चिंतोसिकदानृप ॥ १६ ॥ वैखानसायेमुनयोमिताहाराजितव्रताः ॥ तेपिमुह्यंतिसंसारेजानंतोपिह्यसत्यताम् ॥ १७ ॥ तववंशसमु त्थानांविदेहाइतिभूपते ॥ कुटिलंनामजानीहिनान्यथेतिकदाचन ॥ १८ ॥ विद्याधरोयथामूर्खोजन्मांधस्तुदिवाकरः ॥ लक्ष्मीधरोदरिद्रश्चनामतेषां निरर्थकम् ॥ १९ ॥ तववंशोद्भवायेयेश्रुताःपूर्वेमयानृपाः ॥ विदेहाइतिविख्यातानामतःकर्मतोनते ॥ २० ॥ निमिनामाभवद्राजापूर्वंतवकुलेनृप ॥ य ज्ञार्थंसतुराजर्षिर्वसिष्ठंस्वगुरुंमुनिम् ॥ २१ ॥ निमंत्रयामासतदातमुवाचनृपंमुनिः ॥ निमंत्रितोस्मियज्ञार्थंदेवेंद्रेणाधुनाकिल ॥ २२ ॥ कृत्वातस्यमखं पूर्णंकरिष्यामितवापिवै ॥ तावत्कुरुष्वराजेंद्रसंभारंतुशनैःशनैः ॥ २३ ॥ इत्युक्त्वानिर्ययौसोथमहेंद्रयजनेमुनिः ॥ निमिरन्यंगुरुंकृत्वाचकारमखमुत्तमम् ॥ २४ ॥ तच्छ्रुत्वाकुपितोऽत्यर्थंवसिष्ठोनृपतिंपुनः ॥ शशापचपतत्वद्यदेहस्तेगुरुलोपक ॥ २५ ॥ राजापितंशशापाथतवापिचपतत्वयम् ॥ अन्योन्य शापात्पतितौतावेवचमयाश्रुतम् ॥२६॥ विदेहेनचराजेंद्रकथंशप्तोगुरुःस्वयम् ॥ विनोदइवमेचित्तेविभातिनृपसत्तम॥२७॥जनकउवाच॥सत्यमुक्तंत्वया नात्रमिथ्याकिंचिदिदंमतम्॥तथापिशृणुविप्रेंद्रगुरुर्ममसुपूजितः॥२८॥पितुःसंगंपरित्यज्यत्वंवनंगंतुमिच्छसि॥मृगैःसहसुसंबंधोभवितातेनसंशयः॥२९॥

त्वर्थतइत्यर्थः॥२७॥शुकवाक्यंश्रुत्वा जनकउवाच सत्यमुक्तमिति॥त्वयायदुच्यतेतत्साधनंसत्यमेवाऽस्मद्गुरोर्व्यासस्यममचेष्टमेवतत्॥विवादस्त्वयमेवत्वयोच्यते ॥ वनंगतेसतिविक्षेपाभावः संभवतिअस्माभिरुच्यते॥गुणागुणेषुवर्ततइतिनिश्चयेनात्रैववसतोगृहेष्वेवसाधनादिकंकुर्वतोविक्षेपाभावोभवतीति ॥ तत्रतथापिशृणुहेविप्रेन्द्रशुकममसुपूजितोव्यासोगुरुर्यदाहतदेवसत्यमि तिशेषः॥२८॥कुतइतिचेत्त्वन्मतेदोषस्यसत्त्वादित्याह पितुःसंगमिति॥ पितुःसंगत्रासेनवनंगतस्यमृगसंगःपंचमहाभूतसंगस्त्वपरिहार्यएवेतिनिःसंगतावनंगतस्यापिदुर्लभाऽऽहारादिचिंताप्यु

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





भयत्राप्यपरिहार्याएवेति॥तत्रापिचित्तसमाधानविवेकादिकमपेक्षितमेवेतिगृहस्थाश्रमत्यागेवीजाभावः ॥ किंचलोकसंग्रहार्थंकर्मकुर्वतःसकललोककल्याणकरत्वंगृहस्थाश्रमएवसंभवति ॥ अपरिपक्वकषायस्यपक्वताप्यस्मिन्नेवाश्रमेभवति॥ततोगृहस्थाश्रमेएवापरिपक्वकषायेनस्थातव्यम् ॥अतएवास्मत्पूर्वजैरेतदभिप्रायेणैवजीवन्मुक्तत्वसिद्धौसत्यामपिव्यवहारःकृतइतिनत्वदुद्भावितानिदूषणानिमत्पूर्वजेषुसंतियस्तुपरिपक्वकषायःसतुनैवविधेःकिंकरोनचससंदेहंकरोतित्वंतुसंदेहमग्नोस्यतःपित्रोक्तमेवकुरुतवापरिपक्वकषायत्वादितिसप्तश्लोकानांसंपिंडितोर्थः ॥ २९ । ॥३०॥३१॥विकल्पोपहतस्त्वमितिविवेकाभावात्॥अतएवात्रागतोसि॥अतोगृहस्थाश्रमेएवसम्यक्निश्चयंसंपाद्यानंतरंसंन्यासंकुर्वित्यर्थः॥३२॥३३॥३४॥२५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०

महाभूतानिसर्वत्रनिःसंगःक्वभविष्यसि ॥ आहारार्थंसदाचिंतानिश्चिंतःस्याःकदामुने ॥ ३० ॥ दंडाजिनकृताचिंतायथातववनेपिच ॥ तथैवराज्यचिंतामेचिंतयानस्यवानवा ॥ ३१ ॥ विकल्पोपहतस्त्वंवैदूरदेशमुपागतः ॥ नमेविकल्पसंदेहोनिर्विकल्पोस्मिसर्वथा ॥ ३२ ॥ सुखंस्वपिमिविप्राहंसुखंभुंजामिसर्वदा ॥ नबद्धोस्मीतिबुद्ध्याहंसर्वदैवसुखीमुने ॥ ३३ ॥ त्वंतुदुःखीसदैवासिबद्धोहमितिशंकया ॥ इतिशंकांपरित्यज्यसुखीभवसमाहितः ॥ ३४ ॥ देहोयंममबंधोऽयंनममेतिचमुक्तता ॥ तथाधनंगृहंराज्यंनममेतिचनिश्चयः ॥ ३५ ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यशुकःप्रीतमनाभवत् ॥ आपृच्छ्यतंजगामाऽऽशुव्यासस्याश्रममुत्तमम् ॥ ३६ ॥ आगच्छंतंसुतंदृष्ट्वाव्यासोपिसुखमाप्तवान् ॥ आलिंग्याघ्रायमूर्धानंपप्रच्छकुशलंपुनः ॥ ३७ ॥ स्थितस्तत्राऽऽश्रमेरम्येपितुःपार्श्वेसमाहितः ॥ वेदाध्ययनसंपन्नःसर्वशास्त्रविशारदः ॥ ३८ ॥ जनकस्यदशांदृष्ट्वाराज्यस्थस्यमहात्मनः ॥ सनिर्वृतिंपरांप्राप्यपितुराश्रमसंस्थितः ॥ ३९ ॥ पितृणांसुभगाकन्यापीवरीनामसुंदरी ॥ शुकश्चकारपत्नींतांयोगमार्गस्थितोपिहि ॥ ४० ॥ सतस्यांजनयामासपुत्रांश्चतुरएवहि ॥ कृष्णंगौरप्रभंचैवभूरिंदेवश्रुतंतथा ॥ ४१ ॥ कन्यांकीर्तिंसमुत्पाद्यव्यासपुत्रःप्रतापवान् ॥ ददौविभ्राजपुत्रायत्वणुहायमहात्मने ॥ ४२ ॥ अणुहस्यसुतःश्रीमान्ब्रह्मदत्तःप्रतापवान् ॥ ब्रह्मज्ञःपृथिवीपालःशुककन्यासमुद्भवः ॥ ४३ ॥ कालेनकियतातत्रनारदस्योपदेशतः ॥ ज्ञानंपरमकंप्राप्ययोगमार्गमनुत्तमम् ॥ ४४ ॥ पुत्रेराज्यंनिधायाथगतोबदरिकाश्रमम् ॥ मायाबीजोपदेशेनतस्यज्ञानंनिरर्गलम् ॥ ४५ ॥ नारदस्यप्रसादेनजातंसद्योविमुक्तिदम् ॥ कैलासशिखरेरम्येत्यक्त्वासंगंपितुःशुकः ॥ ४६ ॥ ध्यानमास्थायविपुलंस्थितःसंगपराङ्मुखः ॥ उत्पपातगिरेःशृंगात्सिद्धिंचपरमांगतः ॥ ४७ ॥

चतुरएवहीति॥कृष्णनामाएकःगौरप्रभोद्वितीयःभूरिस्तृतीयःदेवश्रुतश्चतुर्थः ॥ कूर्मपुराणेतुपंचपुत्राउक्ताः ॥ शुकस्याप्यभवन्पुत्राःपंचात्यंततपस्विनः ॥ भूरिश्रवाःप्रभुःशंभुःकृष्णोगौरश्चपंचमः॥कन्याकीर्तिमतोचैवेति॥४१॥कीर्तिनाम्नींकन्याम्॥विभ्राजराज्ञःपुत्रोअणुहनामा॥४२॥ब्रह्मदत्तनामकःशुकदौहित्रः ॥४३॥४४॥नारदेनमायाबीजस्यभुवनेश्वरीमंत्रस्योपदेशःकृतस्तेनप्रभावेणश्रीप्रसादात्तस्यज्ञानमभवत् ॥ ४५ ॥ शुककथामाह कैलासेति ॥ ४६ ॥ ध्यानमास्थायेति ॥ गृहस्थाश्रमेएवकर्मोपासनायोगादिभिःपक्वकषायेजातेसतीतिशेषः॥सिद्धिंचेति॥अणिमादिकांसिद्धिंप्राप्तइत्यर्थः ॥ ४७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

महातेजाःसदेहएवेतोनिर्गतः सूर्यवद्विरराजाकाशे गिरेःशृंगंद्विधाजातमिति॥महापुरुषावियोगेनेत्यर्थः॥४८॥यथावायुरितिसूत्रात्मेत्यर्थः ॥४९॥५०॥५१ ॥ सर्वभूतगतइति ॥ अनेनचवाक्ये नशुकआकाशंप्रतिगतोव्यष्टिदेहंसमष्टौविलाप्यव्यापकरूपेणस्थितइत्यवगम्यते॥प्रतिशब्दमिति॥तवममचात्मरूपेणाभेदएवास्तिकिमितिमदर्थंशोकःक्रियतइत्येवंप्रतिशब्दइत्यर्थः ॥ ५२॥ ॥५३॥५४॥परमांगतिंब्रह्मरूपत्वम्॥अशोकंब्रह्मविजानतात्वयाब्रह्मरूपेणस्थितस्यशुकस्यस्वस्यचभेदाभावेनतन्नाशतद्वियोगशंकयावाशोकोनकर्तव्यइत्याहतस्येति॥५५॥५६॥छायामिति ॥ पुत्रसमानाकृतिम्॥५७॥५८॥५९॥ श्रीदेवीभागवतश्रवणेनशुकस्यैतत्फलंजातमएतादृशोयंश्रीदेवीभागवतश्रवणमाहिमेत्यवांतरतात्पर्यम् ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेप्रथमस्कंधे

आकाशगोमहातेजाविरराजयथारविः ॥ गिरेःशृंगंद्विधाजातंशुकस्योत्पतनेतदा ॥ ४८ ॥ उत्पाताबहवोजाताःशुकश्चाऽऽकाशगोऽभवत् ॥ अंतरिक्षे यथावायुःस्तूयमानःसुरर्षिभिः ॥ ४९ ॥ तेजसातिविराजन्वैद्वितीयइवभास्करः ॥ व्यासस्तुविरहाक्रांतःक्रंदन्पुत्रेतिचाऽसकृत् ॥ ५० ॥ गिरेःशृंगेगत स्तत्रशुकोयत्रस्थितोऽभवत् ॥ क्रंदमानंतदादीनंव्यासंमत्वाश्रमाकुलम् ॥ ५१ ॥ सर्वभूतगतःसाक्षीप्रतिशब्दमदात्तदा ॥ तत्राद्यापिगिरेःशृंगेप्रतिश ब्दःस्फुटोभवत् ॥ ५२ ॥ रुदंतंतंसमालक्ष्यव्यासंशोकसमन्वितम् ॥ पुत्रपुत्रेतिभाषंतंविरहेणपरिप्लुतम् ॥ ५३ ॥ शिवस्तत्रसमागत्यपाराशर्यमबोधय त् ॥ व्यासशोकंमाकुरुत्वंपुत्रस्तेयोगवित्तमः ॥ ५४ ॥ परमांगतिमापन्नोदुर्लभांचाकृतात्मभिः ॥ तस्यशोकोनकर्तव्यस्त्वयाशोकंविजानता ॥ ५५ ॥ कीर्तिस्तेविपुलाजातातेनपुत्रेणचानघ॥व्यासउवाच॥नशोकोयातिदेवेशकिंकरोमिजगत्पते॥५६॥अतृप्तेलोचनेमेऽद्यपुत्रदर्शनलालसे ॥ महादेवउवाच ॥ छायांद्रक्ष्यसिपुत्रस्यपार्श्वस्थांसुमनोहराम् ॥५७॥तांवीक्ष्यमुनिशार्दूलशोकंजहिपरंतप॥सूतउवाच॥तदाददर्शव्यासस्तुछायांपुत्रस्यसुप्रभाम् ॥ ५८ ॥ दत्त्वावरंहरस्तस्मैतत्रैवांतरधीयत ॥ अंतर्हितेमहादेवेव्यासःस्वाश्रममभ्यगात् ॥ ५९ ॥ शुकस्यविरहेणापितप्तःपरमदुःखितः ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम हापुराणेप्रथमस्कंधेएकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ शुकस्तुपरमांसिद्धिमाप्तवान्देवसत्तमः ॥ किंचकारततोव्यासस्त न्नोब्रूहिसविस्तरम् ॥ १ ॥ सूतउवाच ॥ शिष्याव्यासस्ययेप्यासन्वेदाभ्यासपरायणाः ॥ आज्ञामादायतेसर्वेगताःपूर्वमहीतले ॥ २ ॥ असितोदेवलश्चैव वैशंपायनएवच ॥ जैमिनिश्चसुमंतुश्चगताःसर्वेतपोधनाः ॥३॥ तानेतान्वीक्ष्यपुत्रंचलोकांतरितमप्युत॥व्यासःशोकसमाक्रांतोगमनायाकरोन्मतिम्॥४॥

एकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥ ॥छ॥ ॥ चतुःसप्ततिपद्यैस्तुशुकनिर्गमनोत्तरम्॥व्यासश्चकारयत्कृत्यंतत्समासेनकथ्यते ॥ १॥ एतावत्पर्यंतंकथंशुकेनपुराणमधीतमितिप्रथमप्रश्न स्योत्तरंदत्तंमध्येप्रसंगागताःकथाश्चोक्ताइदानींश्रीदेवीभागवतप्रतिपादकाचार्यस्यव्यासस्यगुरोःकथांगुरुभक्ताऋषयःपृच्छंति शुकस्त्विति॥तन्नोब्रूहीति।यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनइतिश्रुतेरस्मभ्यंश्रीगुरोःकथांब्रूहीत्यभिप्रायः ॥१॥२॥३॥ पूर्वंशिष्याआज्ञामादायगतास्तज्जन्यंदुःखंजातमेवाचार्यस्य परंतुशुकदेवसुखेनतन्नष्टंशुकदेव निर्गमनेतुतदुभयमप्येकवारमेवदुःखंप्रादुर्भूतमित्याह व्यासःशोकसमाक्रांतइति॥एतादृशमहानुभावानामपिसंसारजन्यक्लेशसंभवान्नसंसारेआसक्तोभवेत्किंतु तस्माद्विरज्येबैवेतितुरहस्यम् ४॥

१०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मुक्तामिति॥व्यासस्यपुलिनेजन्मोत्तरंव्यासंगृहीत्वागतेनपराशरेणमुक्तापिव्यासेनमुक्ताजातैवेत्यभिप्रायेणेयमुक्तिः॥५॥६॥७॥दाशराजोपीति ॥ सचसत्यवत्याःपिता ॥ ८ ॥ ९ ॥१०॥ सरस्वत्याइति॥तत्प्रार्थनोत्तरंतस्ययथायोग्यमुत्तरंदत्त्वासरस्वतीतीरेतपश्चर्यार्थमाश्रमंचकारेत्यर्थः॥११॥शंतनोःसकाशादित्यर्थः॥मत्वेति॥ममभ्रातरौसुखिनौस्तइतिमत्वा ॥ १२ ॥प्रथम श्चित्रांगदः॥१३॥द्वितीयोविचित्रवीर्यः॥१४॥तयोःपूर्वंगंगातोराज्ञःशंतनोःसकाशात्प्रथमतःपुत्रोगांगेयनामकोजातःअनंतरंसत्यवत्यांपुत्रद्वयंजातम् ॥ १५॥१६॥१७॥ भीष्मइति ॥ तस्य

सस्मारमनसाव्यासस्तांनिषादसुतांशुभाम् ॥ मातरंजाह्नवीतीरेमुक्तांशोकसमन्विताम् ॥ ५ ॥ स्मृत्वासत्यवतींव्यासस्त्यक्त्वातंपर्वतोत्तमम् ॥ आजगा ममहातेजाजन्मस्थानंस्वकंमुनिः ॥ ६ ॥ द्वीपंप्राप्याथपप्रच्छकगतासावरानना ॥ निषादास्तंसमाचख्युर्दत्ताराज्ञेतुकन्यका ॥ ७ ॥ दाशराजोपिसंपू ज्यव्यासंप्रीतिपुरःसरम् ॥ स्वागतेनाभिसत्कृत्यप्रोवाचविहितांजलिः ॥ ८ ॥ दाशराजउवाच ॥ अद्यमेसफलंजन्मपावितंनःकुलंमुने ॥ देवानामपिदु र्दर्शंयज्जातंतवदर्शनम् ॥९॥ यदर्थमागतोसित्वंतद्ब्रूहिद्विजसत्तम ॥ अपिदाराधनंपुत्रास्त्वदायत्तमिदंविभो ॥१०॥ सरस्वत्यास्तटेरम्येचकाराऽऽश्रममंड लम् ॥ व्यासस्तपःसमायुक्तस्तत्रैवाससमाहितः ॥ ११ ॥ सत्यवत्याःसुतौजातौशंतनोरमितद्युतेः ॥ मत्वातौभ्रातरौव्यासःसुखमापवनेस्थितः ॥ १२ ॥ चित्रांगदःप्रथमजोरूपवाञ्छत्रुतापनः ॥ बभूवनृपतेःपुत्रःसर्वलक्षणसंयुतः ॥ १३ ॥ विचित्रवीर्यनामासौद्वितीयःसमजायत ॥ सोपिसर्वगुणोपेतःशं तनोःसुखवर्धनः॥१४॥गांगेयःप्रथमस्तस्यमहावीरोबलाधिपः ॥ तथैवतौसुतौजातौसत्यवत्यांमहाबलौ ॥ १५ ॥ शंतनुस्तान्सुतान्वीक्ष्यसर्वलक्षणसंयुता न् ॥ अमंस्ताजय्यमात्मानंदेवादीनांमहामनाः ॥ १६ ॥ अथकालेनकियताशंतनुःकालपर्ययात् ॥ तत्याजदेहंधर्मात्मादेहीजीर्णमिवांबरम् ॥ १७ ॥ का लधर्मगतेराज्ञिभीष्मश्चक्रेविधानतः ॥ प्रेतकार्याणिसर्वाणिदानानिविविधानिच ॥ १८ ॥ चित्रांगदंततोराज्येस्थापयामासवीर्यवान् ॥ स्वयंनकृतवा न्राज्यंतस्माद्देवव्रतोभवत् ॥ १९ ॥ चित्रांगदस्तुवीर्येणप्रमत्तःपरदुःखदः ॥ बभूवबलवान्वीरःसत्यवत्यात्मजःशुचिः ॥ २० ॥ अथैकदामहाबाहुःसै न्येनमहतावृतः ॥ प्रचचारवनोद्देशान्पश्यन्वध्यान्मृगान्बहून् ॥ २१॥ चित्रांगदस्तुगंधर्वोदृष्ट्वातंमार्गगंनृपम् ॥ उत्ततारांतिकंभूमेर्विमानवरमास्थितः ॥ ॥ २२ ॥ तत्राभूच्चमहद्युद्धंतयोःसदृशवीर्ययोः ॥ कुरुक्षेत्रेमहास्थानेत्रीणिवर्षाणितापसाः ॥ २३ ॥ इंद्रलोकमवापाशुगंधर्वेणहतोरणे ॥ भीष्मःश्रुत्वा चकराऽऽशुतस्यौर्ध्वदेहिकंतदा ॥ २४ ॥ गांगेयःकृतशोकस्तुमंत्रिभिःपरिवारितः ॥ विचित्रवीर्यनामानंराज्येशंचचकारह ॥ २५ ॥

ज्येष्ठपुत्रत्वात्पितृकार्येऽधिकारः॥१८॥चित्रांगदमिति॥पितरिमृतेस्वस्यराज्याधिकारसत्त्वेपिपितरंप्रतिनाहंराज्यंविवाहंवाकरिष्यामित्वंसत्यवतींवृणुइतिसत्यवतीविवाहसमयेप्रतिज्ञातत्वाच्चि त्रांगदंसत्यवतीज्येष्ठपुत्रमेवराज्येस्थापयामास॥तादृशसत्यरूपस्यदेवानांव्रतस्यपरिपालनाद्देवव्रतनामाऽभवत् ॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥विचित्रवीर्यनामानमितिद्वितीयंपुत्रम्॥२५॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥२६॥अतिसंतुष्टेति॥चित्रांगदेहतेभीष्मस्यराज्याधिकारसत्त्वेपिमत्पुत्रायैवराज्यंदत्तामितिहेतोरित्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥३४॥ तायदेति॥तास्तिस्रः

मंत्रिभिर्बोधितापश्चाद्गुरुभिश्चमहात्मभिः ॥ स्वपुत्रंराज्यगंदृष्ट्वापुत्रशोकहतापिच ॥ २६ ॥ सत्यवत्यतिसंतुष्टावभूववरवर्णिनी ॥ व्यासोपिभ्रातरंश्रुत्वा राजानंमुदितोऽभवत् ॥ २७ ॥ यौवनंपरमंप्राप्तःसत्यवत्याःसुतःशुभः ॥ चकारचिंतांभीष्मोपिविवाहार्थंकनीयसः ॥ २८ ॥ काशिराजसुतास्तिस्रःसर्वलक्षणसंयुताः ॥ तेनराज्ञाविवाहार्थंस्थापिताश्चस्वयंवरे ॥ २९ ॥ राजानोराजपुत्राश्चसमाहूताःसहस्रशः ॥ इच्छास्वयंवरार्थंवैपूज्यमानाःसमागताः ॥ ३० ॥ तत्रभीष्मोमहातेजास्ताजहारबलेनवै ॥ निर्मथ्यराजकंसर्वंरथेनैकेनवीर्यवान् ॥ ३१ ॥ सजित्वापार्थिवान्सर्वांस्ताश्चादायमहारथः ॥ बाहुवीर्येणतेजस्वीह्यासासादगजाह्वयम् ॥ ३२ ॥ मातृवद्भगिनीवच्चपुत्रीवच्चिंतयन्किल ॥ तिस्रःसमानयामासकन्यकावामलोचनाः ॥ ३३॥ सत्यवत्यैनिवेद्याशुद्विजानाहूयसत्वरः ॥ दैवज्ञान्वेदविदुषःपर्यपृच्छच्छुभंदिनम् ॥ ३४ ॥ कृत्वाविवाहसंभारंयदावैभ्रातरंनिजम् ॥ विचित्रवीर्यंधर्मिष्ठंविवाहयतितायदा ॥ ३५ ॥ तदाज्येष्ठाप्युवाचेदंकन्यकाजाह्नवीसुतम् ॥ लज्जमानासितापांगीतिसृणांचारुलोचना ॥ ३६ ॥ गंगापुत्रकुरुश्रेष्ठधर्मज्ञकुलदीपक ॥ मयास्वयंवरेशाल्वोवृतोऽस्तिमनसानृपः ॥ ३७ ॥ वृताऽहंतेनराज्ञावैचित्तेप्रेमसमाकुले ॥ यथायोग्यंकुरुष्वाद्यकुलस्यास्यपरंतप ॥ ३८ ॥ तेनाहंवृतपूर्वास्मित्वंचधर्मभृतांवरः ॥ बलवानसिगांगेययथेच्छसितथाकुरु ॥३९ ॥ सूतउवाच ॥ एवमुक्तस्तयातत्रकन्ययाकुरुनंदनः ॥ अपृच्छद्ब्राह्मणान्वृद्धान्मातरंसचिवांस्तथा ॥ ४० ॥ सर्वेषांमतमाज्ञायगांगेयोधर्मवित्तमः ॥ गच्छेतिकन्यकांप्राहयथारुचिवरानने ॥ ४१ ॥ विसर्जिताथसातेनगताशाल्वनिकेतनम् ॥ उवाचतंवरारोहाराजानंमनसेप्सितम् ॥४२॥ विनिर्मुक्तास्मिभीष्मेणत्वन्मनस्केतिधर्मतः ॥ आगताऽस्मिमहाराजगृहाणाद्यकरंमम ॥ ४३ ॥ धर्मपत्नीतवात्यंतंभवामिनृपसत्तम ॥ चिंतितोऽसिमयापूर्वंत्वयाहंनात्रसंशयः ॥ ४४ ॥शाल्वउवाच ॥ गृहीतात्वंवरारोहेभीष्मेणपश्यतोमम ॥ रथेसंस्थापितातेननग्रहीष्येकरंतव ॥ ४५ ॥ परोच्छिष्टांचकःकन्यांगृह्णातिमतिमान्नरः ॥ अतोहंनग्रहीष्यामित्यक्तांभीष्मेणमातृवत्॥४६॥रुदतीविलपंतीसात्यक्तातेनमहात्मना ॥ पुनर्भीष्मंसमागत्यरुदतीचेदमब्रवीत् ॥ ४७ ॥ शाल्वोमुक्तांत्वयावीरनगृह्णातिगृहाणमाम् ॥ धर्मज्ञोसिमहाभागमरिष्याम्यन्यथाह्यहम्॥४८॥भीष्मउवाच ॥ अन्यचित्तांकथंत्वांवैगृह्णामिवरवर्णिनि ॥ पितरंस्वंवरारोहेव्रजशीघ्रंनिराकुला॥४९॥तथोक्तासातुभीष्मेणजगामवनमेवहि ॥५०॥ तपश्चकारविजनेतीर्थेपरमपावने ॥ ५० ॥ कन्याः ॥ तिसृणांमध्येज्येष्ठेत्यर्थः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४॥४५॥४६॥४७॥

मुक्तांत्वयेति ॥ प्रथमतोहस्तेनसंस्पृश्यरथेस्थापितांपश्चान्मुक्तामित्यर्थः॥ततस्त्वन्निमित्तंममजन्मव्यर्थंभवतीति॥त्वंमांगृहाणेत्यभिप्रायः॥४८॥अन्यचित्तामन्यासक्तामित्यर्थः ॥४९॥५०॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





राज्ञोविचित्रवीर्यस्य ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ नालसाद्धिसुखमिति । अराजकेसमुत्पन्नेअलसात्सुखंनैवास्तिआलस्यंनैवकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ५८ ॥ क्षेत्रज मिति ॥ विचित्रवीर्यस्यक्षेत्रेऽन्यस्मात्पुरुषाज्जातमित्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६०॥ पौत्रमिति ॥ तवपौत्रस्तमित्यर्थः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ असूतांधमिति ॥ व्यासते

द्वेभार्येचातिरूपाढ्येतस्यराज्ञोबभूवतुः ॥ अंबालिकाचांबिकाचकाशिराजसुतेशुभे ॥५१॥ राजाविचित्रवीर्योऽसौताभ्यांसहमहाबलः ॥ रेमेनानाविहा रैश्चगृहेचोपवनेतथा ॥५२॥ वर्षाणिनवराजेंद्रःकुर्वन्क्रीडांमनोरमाम् ॥ प्रापाऽसौमरणंभूयोगृहीतोराजयक्ष्मणा ॥ ५३ ॥ मृतेपुत्रेतिदुःखार्ताजातासत्य वतीतदा ॥ कारयामासपुत्रस्यप्रेतकार्याणिमंत्रिभिः ॥ ५४ ॥ भीष्ममाहतदैकांतेवचनंचातिदुःखिता ॥ राज्यंकुरुमहाभागपितुस्तेशंतनोःसुत ॥ ५५ ॥ भ्रातुर्भार्यांगृहाणत्वंवंशंचपरिरक्षय ॥ यथाननाशमायातिययातेर्वंशइत्युत ॥ ५६ ॥ भीष्मउवाच ॥ प्रतिज्ञामेश्रुतामातःपित्रर्थेयामयाकृता ॥ नाहंराज्यं करिष्यामिनचाहंदारसंग्रहम् ॥ ५७ ॥ सूतउवाच॥तदाचिंतातुराजाताकथंवंशोभवेदिति ॥ नालसाद्धिसुखंमह्यंसमुत्पन्नेह्यराजके॥ ५८ ॥ गांगेयस्तामुवा चेदंमाचिंतांकुरुभामिनि ॥ पुत्रंविचित्रवीर्यस्यक्षेत्रजंचोपपादय ॥ ५९ ॥ कुलीनंद्विजमाहूयवध्वासहनियोजय ॥ नात्रदोषोस्तिवेदेऽपिकुलरक्षाविधौकि ल ॥६०॥ पौत्रंचैवंसमुत्पाद्यराज्यंदेहिशुचिस्मिते ॥ अहंचपालयिष्यामितस्यशासनमेवहि ॥ ६१ ॥तच्छ्रुत्वावचनंतस्यकानीनंस्वसुतंमुनिम् ॥ जगा ममनसाव्यासंद्वैपायनमकल्मषम् ॥ ६२ ॥ स्मृतमात्रस्ततोव्यासआजगामसतापसः ॥ कृत्वाप्रणामंमात्रेऽथसंस्थितोदीप्तिमान्मुनिः ॥ ६३ ॥ भीष्मेणपू जितःकामंसत्यवत्याचमानितः॥तस्थौतत्रमहातेजाविधूमोग्निरिवापरः ॥ ६४ ॥ तमुवाचमुनिंमातापुत्रमुत्पादयाधुना ॥ क्षेत्रेविचित्रवीर्यस्यसुंदरंतववीर्यजम् ॥ ६५ ॥ व्यासःश्रुत्वावचोमातुराप्तवाक्यममन्यत ॥ ओमित्युक्त्वास्थितस्तत्रऋतुकालमचिंतयत् ॥ ६६ ॥ अंबिकाचयदास्नातानारीऋतुमतीतदा ॥ संगंप्राप्यमुनेःपुत्रमसूतांधंमहाबलम् ॥ ६७ ॥ जन्मांधंचसुतंवीक्ष्यदुःखितासत्यवत्यपि ॥ द्वितीयांचवधूमाहपुत्रमुत्पादयाशुवै ॥ ६८ ॥ ऋतुकालेऽथ संप्राप्तेव्यासेनसहसंगता ॥ तथाचांबालिकारात्रौगर्भंनारीदधारसा ॥ ६९ ॥ सोपिपांडुःसुतोजातोराज्ययोग्योनसंमतः ॥ पुत्रार्थंप्रेरयामासवर्षांतेचपुनर्व धूम् ॥ ७० ॥ आहूयचततोव्यासंसंप्रार्थ्यमुनिसत्तमम् ॥ प्रेषयामासरात्रौसाशयनागारमुत्तमम् ॥ ७१ ॥ नगताचवधूस्तत्रप्रेष्यासंप्रेषितातया ॥ तस्यांचविदुरोजातोदास्यांधर्मांशतःशुभः ॥ ७२ ॥ एवंव्यासेनतेपुत्राधृतराष्ट्रादयस्त्रयः ॥ उत्पादितामहावीरावंशरक्षणहेतवे ॥ ७३ ॥

जसानिमीलितनेत्रागर्भंदधारतस्मात् ॥ इदमन्यपुराणेस्पष्टम् ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ पांडुःसुतइति ॥ व्यासतेजसाऊष्मणादग्धास्यामितिहेतोःस्वशरीरंचंदनेनोपलिप्यसंगंकृतवती तस्मात् ॥ इदमप्यन्यत्रस्पष्टम् ॥ ७० ॥ ७१ ॥ नगताचेतितत्तेजःसहनशक्त्यभावादितिभावः ॥ ७२ ॥ ७३॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इत्थमनेनग्रंथसंदर्भेणास्मिन्संसारेमहतामप्येवंदशाजायतेतस्मात्संसाराद्विरज्यश्रीभगवत्युपासनयातज्ज्ञानेनचसंसारंनिरस्यमुक्तोभवेदितिबोधितम् ॥७४॥श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्म

एतद्वःसर्वमाख्यातंतस्यवंशसमुद्भवम् ॥ व्यासेनरक्षितोवंशोभ्रातृधर्मविदाऽनघाः ॥ ७४ ॥ इतिश्रीदेवीभागव
तेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांप्रथमस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वेदाष्टेंदुक्षितिमितैःसार्धैः ( ११८४ ॥ ) श्लोकैःसविस्तरम् ॥ देवीभागवतस्यास्यप्रथमस्कंधईरितः ॥ १ ॥

जः सुधीः॥श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः॥१॥देवीभागवतस्यास्यव्याख्यानरहितस्यच॥तिलकाख्यांमहाव्याख्यांसम्यग्यःकृतवाञ्छुभाम्॥ स्कंधस्तुप्रथमस्तस्याःसमाप्तोऽभूच्छुभा
र्थदः॥२॥इतिश्रीमच्छैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भजनीलकंठभट्टकृतेदेवीभागवतव्याख्यांनेतिलकाभिधानेप्रथमस्कंधेविंशोऽध्यायः॥२०॥स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥

---

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८.

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे द्वितीयस्कंधः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ जीवायदंशभूतायस्यावेदाभवंतिनिःश्वसितम्॥तामेतांचिद्रूपांमायाशक्तेःपराश्रयांवंदे ॥१॥ अथाष्टचत्वारिंशद्भिःश्लोकैर्व्यासस्य धीमतः ॥ जन्मोच्यतेयत्रदेव्यामाहिमाऽतीवभासते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेपराशरसुतस्यव्यासस्यमाताशंतनोःपत्नीतिविरुद्धंश्रुत्वाऽश्चर्यंवंतऋषयःपृच्छंतिआश्चर्यकरमेतत्तइति॥गर्भहेतुकामिति अस्पष्टकारणमित्यर्थः ॥ १ ॥ तमेवसंदेहमाह माताव्यासस्येति ॥ २ ॥ सतीस्वभवनेस्थितेतिपराशरपत्नीपतिव्रताकथंशंतनुनाराज्ञाविवाहितेतिविरुद्धंभातीत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥परमांश क्तिसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीम् ॥ यदाहगीतासु अपरेयमितस्त्वन्यांविद्धिमेप्रकृतिंपराम्॥जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगदितिसैवादिशक्तिः॥६॥यस्योच्चारणेति॥यस्यवाग्भव

॥ ऋषयऊचुः ॥ ॥ आश्चर्यकरमेतत्तेवचनंगर्भहेतुकम् ॥ संदेहोऽत्रसमुत्पन्नःसर्वेषांनस्तपस्विनाम् ॥ १ ॥ माताव्यासस्यमेधाविन्नाम्नासत्यवती तिच ॥ विवाहितापुराज्ञाताराज्ञाशंतनुनायथा ॥ २ ॥ तस्याःपुत्रःकथंव्यासःसतीस्वभवनेस्थिता ॥ ईदृशीसाकथंराज्ञापुनःशंतनुनावृता ॥ ३ ॥ तस्यांपुत्रावुभौजातौतत्त्वंकथयसुव्रत ॥ विस्तरेणमहाभागकथांपरमपावनीम् ॥ ४ ॥ उत्पत्तिंवेदव्यासस्यसत्यवत्यास्तथापुनः ॥ श्रोतुकामाःपुनः सर्वेऋषयःसंशितव्रताः ॥ ५ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ प्रणम्यपरमांशक्तिंचतुर्वर्गप्रदायिनीम् ॥ आदिशक्तिंवदिष्यामिकथांपौराणिकींशुभाम् ॥ ६ ॥ यस्योच्चारणमात्रेणसिद्धिर्भवतिशाश्वती ॥ व्याजेनापिहिबीजस्यवाग्भवस्यविशेषतः ॥ ७ ॥ सम्यक्सर्वात्मनासर्वैःसर्वकामार्थसिद्धये ॥ स्मर्तव्यास र्वथादेवीवांछितार्थप्रदायिनी ॥ ८ ॥ राजोपरिचरोनामधार्मिकःसत्यसंगरः ॥ चेदिदेशपतिःश्रीमान्बभूवद्विजपूजकः ९ ॥ तपसातस्यतुष्टेनविमा नंस्फाटिकंशुभम् ॥ दत्तमिंद्रेणतत्तस्मैसुंदरंप्रियकाम्यया ॥ १० ॥ तेनारूढस्तुसर्वत्रयातिदिव्येनभूपतिः ॥ नभूमावुपरिस्थोऽसौतेनोपरिचरोवसुः ॥ ११ ॥ विख्यातःसर्वलोकेषुधर्मनित्यःसभूपतिः ॥ तस्यभार्यावरारोहागिरिकानामसुंदरी ॥ १२ ॥ पुत्राश्चास्यमहावीर्याःपंचासन्नमितौजसः ॥ पृथग्देशेषुराजानःस्थापितास्तेनभूभुजा ॥ १३ ॥ वसोस्तुपत्नीगिरिकाकामान्कालेन्यवेदयत् ॥ ऋतुकालमनुप्राप्तास्नातापुंसवनेशुचिः ॥ १४ ॥ त दहःपितरश्चैनमूचुर्जहिमृगानिति ॥ तच्छ्रुत्वाचिंतयामासभार्यामृतुमतींतथा ॥ १५ ॥ पितृवाक्यंगुरुंमत्वाकर्तव्यमितिनिश्चितम् ॥ चचारमृगयांरा जागिरिकांमनसास्मरन् ॥ १६ ॥

स्यबीजस्यव्याजेनकपटेनाप्युच्चारणेनासिद्धिर्मोक्षोज्ञानंवाभवति ॥ तेनवाग्भवबीजेनस्मर्तव्यायाभगवतीवांछितार्थप्रदायिनीदेवीतांप्रणम्येत्यन्वयः ॥७॥८ ॥ कथामाह राजोपरिचरइति॥ विमानेनोर्ध्वनिरंतरंगमनादुपरिचरनामकत्वम् ॥ ९ ॥ १० ॥ तेनविमानेनयातीत्यन्वयः ॥ नभूमाविति ॥ भूमिगमनंतेनत्यक्तमितिभावः॥११॥१२॥१३॥ वसोरुपरिचरस्यपत्नीकामान् स्वमनोरथान्पुत्रविषयान्॥१४॥तदहरिति॥यस्मिन्दिनेऽद्यऋतुकालोऽस्तीतिगिरिकयापत्न्योक्तं॥तस्मिन्नेवदिनेपितरआहुरस्मच्छ्राद्धार्थमृगान्जहीति ॥१५॥तत्रोभयोर्वाक्ययोरगमनगमन प्रयोजकयोर्विरोधेऽपिपितृवाक्यंगमनप्रयोजकंगमनाभावप्रयोजकस्त्रीवाक्यतोगुरुंश्रेष्ठंनिश्चितंमत्वाकर्तव्यंतदेवेतिनिश्चित्येतिशेषः॥चचारगतवान्॥गुरुमित्यत्रविभक्तिलोपाभावआर्षः १६॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १७ ॥ समाक्षिपत्स्थापितवान्॥१८॥१९॥२०॥कालंनक्षत्रानुरूपंयोग्यम् ॥ २१ ॥ पार्श्वस्थंपालितंश्येनमित्यर्थः ॥ अतएवतस्यभाषाज्ञानात्तंप्रत्युवाचेतिसंगच्छते ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥२४॥२५॥२६॥२७॥एतस्मिन्नेवसमयेतयोर्युद्धसमये॥अधोभूमौजातंवृत्तमाह काचिदिति ॥ समनुप्राप्तंयमुनातीरेइत्यर्थः ॥ २८ ॥ चचारजलेइत्यर्थाज्ज्ञेयम् ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

वनेस्थितःसराजर्षिश्चित्तेसस्मारभामिनीम् ॥ अतीवरूपसंपन्नांसाक्षाच्छ्रियमिवापराम् ॥ १७ ॥ तस्यरेतःप्रचस्कंदस्मरतस्तांचकामिनीम् ॥ वटपत्रे तुतद्राजास्कन्नमात्रंसमाक्षिपत् ॥ १८ ॥ इदंवृथापरिस्कन्नंरेतोवैनभवेत्कथम् ॥ ऋतुकालंचविज्ञायमतिंचक्रेनृपस्तदा ॥ १९ ॥ अमोघंसर्वथावीर्यम मचैतन्नसंशयः ॥ प्रियायैप्रेषयाम्येतदितिबुद्धिमकल्पयत् ॥ २० ॥ शुक्रप्रस्थापनेकालंमहिष्याःप्रसमीक्ष्यसः ॥ अभिमंत्र्याथतद्वीर्यंवटपर्णपुटेकृतम् ॥ २१ ॥ पार्श्वस्थंश्येनमाभाष्यराजोवाचद्विजंप्रति ॥ गृहाणेदंमहाभागगच्छशीघ्रंगृहंमम ॥ २२ ॥ मत्प्रियार्थमिदंसौम्यगृहीत्वात्वंगृहंनय ॥ गिरि कायैप्रयच्छाशुतस्यास्त्वार्तवमद्यवै ॥ २३ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्त्वाप्रददौपर्णंश्येनायनृपसत्तमः ॥ सगृहीत्वोत्पपाताशुगगनंगतिवित्तमः ॥ २४ ॥ गच्छंतंगगनंश्येनंधृत्वाचंचुपुटेपुटम् ॥ तमपश्यदथाऽऽयांतंखगंश्येनस्तथाऽपरः ॥ २५ ॥ आमिषंसतुविज्ञायशीघ्रमभ्यद्रवत्खगम् ॥ तुंडयुद्धमथाऽका शेतावुभौसंप्रचक्रतुः ॥ २६ ॥ युद्ध्यतोरपतद्रेतस्तच्चापियमुनांभसि ॥ खगौतौनिर्गतौकामंपुटकेपतितेतदा ॥ २७ ॥ एतस्मिन्समयेकाचिदद्रिकानाम चाप्सराः ॥ ब्राह्मणंसमनुप्राप्तंसंध्यावंदनतत्परम् ॥ २८ ॥ कुर्वतीजलकेलिंसाजलेमग्नाचचारसा ॥ जग्राहचरणंनारीद्विजस्यवरवर्णिनी ॥ २९ ॥ प्रा णायामपरःसोऽथदृष्ट्वातांकामचारिणीम् ॥ शशापभवमत्सीत्वंध्यानविघ्नकरीयतः ॥ ३० ॥ साशप्ताविप्रमुख्येनबभूवयमुनाचरी ॥ शफरीरूपसंपन्ना ह्यद्रिकाचवराप्सराः ॥ ३१ ॥ श्येनपादपरिभ्रष्टंतच्छुक्रमथवासवी ॥ जग्राहतरसाऽभ्येत्यसाऽद्रिकामत्स्यरूपिणी ॥ ३२ ॥ अथकालेनकियतामत्सीं तांमत्स्यजीवनः ॥ संप्राप्तेदशमेमासिववंधतांमनोरमाम् ॥ ३३ ॥ उदरंविददाराशुसतस्यामत्स्यजीवनः ॥ युग्मंविनिःसृतंतस्मादुदरान्मानुषाकृति ॥ ॥ ३४ ॥ बालःकुमारःसुभगस्तथाकन्याशुभानना ॥ दृष्ट्वाऽऽश्चर्यमिदंसोऽथविस्मयंपरमंगतः ॥ ३५ ॥ राज्ञेनिवेदयामासपुत्रौद्वौतुझषोद्भवौ ॥ रा जाऽपिविस्मयाविष्टःसुतंजग्राहतंशुभम् ॥ ३६ ॥ समत्स्योनामराजाऽसौधार्मिकःसत्यसंगरः ॥ वसुपुत्रोमहातेजाःपित्रातुल्यपराक्रमः ॥ ३७ ॥

तस्याःशफरीरूपप्राप्तिसमयोऽथश्येनपादपरिभ्रष्टवीर्यपातसमयएकएवजातस्ततस्तद्वीर्यंसाजग्राहेत्याह श्येनेति ॥ ३२ ॥ दशमेमासिगर्भस्येत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ राज्ञेतद्देश स्थायराज्ञेउपरिचराय ॥ यस्यवीर्यमस्तितस्मैराज्ञेइतिफलितम् ॥ सुतंजग्राहेति ॥ स्ववीर्यजंपुत्रंस्वसमानाकारत्वेनज्ञात्वास्वयंजग्राहेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कालिकेति ॥ वसुनोपरिचरेणराज्ञाकालिकानाम्नीकन्यकातुयेनाऽऽनीतातस्मैजलजीविनेदत्ता ॥ लब्धनिधेरर्धभागस्यराज्ञोऽधिकारादवशिष्टार्धस्ययेनलब्धस्तस्याधिकारात् ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ अर्धाधिकैकपंचाशच्छ्लोकैरथपराशरात् ॥ दाशकन्योदरेजन्मवेदव्यासस्यकथ्यते ॥ १ ॥ एवंव्यासमातुर्जन्मोक्त्वापराशरप्रसंगमाह एकदेति ॥ १ ॥ २ ॥ दाशोनिषादः ॥ मत्स्यगंधामिति ॥ उपमानाच्चेतीत्वाभावश्छां

कालिकावसुनादत्तातस्साजलजीविने ॥ नाम्नाकालीतिविख्यातातथामत्स्योदरीतिच ॥ ३८ ॥ मत्स्यगंधेतिनाम्नावैगुणेनसमजायत ॥ विवर्धमानादाशस्यगृहेसावासवीशुभा ॥ ३९ ॥ ऋशषऊचुः ॥ अद्रिकामुनिनाशप्तामत्सीजातावराप्सराः ॥ विदारिताचदाशेनमृताचभक्षितापुनः ॥ ४० ॥ किंवभूवपुनस्तस्याअप्सरायावदस्वतत् ॥ शापस्यांतंकथंसूतकथंस्वर्गमवापसा ॥ ४१ ॥ सूतउवाच ॥ शप्तायदासामुनिनाविस्मितासंबभूवह ॥ स्तुतिंचकारविप्रस्यदीनेवरुदतीतदा ॥ ४२ ॥ दयावान्ब्राह्मणःप्राहतांतदारुदतींस्त्रियम् ॥ माशोकंकुरुकल्याणिशापांतंतेवदाम्यहम् ॥ ४३ ॥ मत्क्रोधशापयोगेनमत्स्ययोनिंगताशुभे ॥ मानुषौजनयित्वात्वंशापमोक्षमवाप्स्यसि ॥ ४४ ॥ इत्युक्तातेनसाप्रापमत्स्यदेहंनदीजले ॥ बालकौजनयित्वासामृतामुक्ताचशापतः ॥ ४५ ॥ संत्यज्यरूपंमत्स्यस्यदिव्यरूपमवाप्यच ॥ जगामामरमार्गंचशापांतेवरवर्णिनी ॥ ४६ ॥ एवंजातावरापुत्रीमत्स्यगंधावरानना ॥ पुत्रीचपाल्यमानासादाशगेहेव्यवर्धत ॥ ४७ ॥ मत्स्यगंधातदाजाताकिशोरीचातिसुप्रभा ॥ तस्यकार्याणिकुर्वाणावासवीचातिसुप्रभा ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेमस्त्यगंधोत्पत्तिर्नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ एकदातीर्थयात्रायांव्रजन्पाराशरोमुनिः ॥ आजगाममहातेजाःकालिंद्यास्तटमुत्तमम् ॥ १ ॥ निषादमाहधर्मात्माकुर्वंतंभोजनंतदा ॥ प्रापयस्वपरंपारंकालिंद्याउडुपेनमाम् ॥ २ ॥ दाशःश्रुत्वामुनेर्वाक्यंकुर्वाणोभोजनंतटे ॥ उवाचतांसुतांबालांमत्स्यगंधांमनोरमाम् ॥ ३ ॥ उडुपेनमुनिंबालेपरंपारंनयस्वह ॥ गंतुकामोऽस्तिधर्मात्मातापसोऽयंशुचिस्मिते ॥ ४ ॥ इत्युक्तासातदापित्रामत्स्यगंधाऽथवासवी ॥ उडुपेमुनिमासीनंसंवाहयतिभामिनी ॥ ५ ॥ व्रजन्सूर्यसुतातोयेभावित्वाद्दैवयोगतः ॥ कामार्तस्तुमुनिर्जातोदृष्ट्वातांचारुलोचनाम् ॥ ६ ॥ ग्रहीतुकामःसमुनिर्दृष्ट्वाव्यंजितयौवनाम् ॥ दक्षिणेनकरेणैनामस्पृशद्दक्षिणेकरे ॥ ७ ॥ तमुवाचासितापांगीस्मितपूर्वमिदंवचः ॥ कुलस्यसदृशंवःकिंश्रुतस्यतपसश्चकिम् ॥ ८ ॥ त्वंवैवसिष्ठदायादःकुलशीलसमन्वितः ॥ किंचिकीर्षसिधर्मज्ञमन्मथेनप्रपीडितः ॥ ९ ॥

दसः ॥ ३ ॥ ४ ॥ वासवीवसुराजस्यरुयपत्यंवासवी ॥ ५ ॥ ६ ॥ ग्रहीतुकामोभोक्तुकामः ॥ ७ ॥ स्मितपूर्वमिति ॥ अनेनसाप्यंतःकामातुराऽऽसीदितिबोधितम् ॥ स्त्रीजातित्वात्तुशृंगारवर्धनार्थमुपहासंकरोति कुलस्यसदृशमिति ॥ वःऋषीणांकुलस्यश्रुतस्याधीतस्यतपसश्चकिमिदंसदृशंभवति योग्यंभवति युष्माकंकिंनीचपरस्त्रीगमनादिकंधर्मोऽस्तीत्यभिप्रायः ॥ ८ ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥१०॥११॥१२॥इत्थंमंदहासपूर्वकनिषेधेनातिकामातुरंवीक्ष्यमनसिविचारयामासेत्याह अहोइति ॥ अयंद्विजोमांग्रहीष्यन्मंदबुद्धिस्तब्धबुद्धिर्जातःप्रथमंकामेनतदुत्तरंमांहस्तेइतिशेषः ॥ हस्तेगृहीत्वाजलेशृंगाररसेमग्नएवास्यमनोयतःपंचबाणेनकामेनातिविद्धंततोव्याकुलंजातमस्मिन्समये ॥ अस्यप्रतीपंविरुद्धंकर्तुंनकोपिसमर्थःशापभयादितिविचारयामास ॥१३॥विचार्याकिं कृतवतीतदाह इतिसंचिंत्येति॥परंपारंनयामीति॥तत्रगत्वायदिच्छसितत्कुर्वित्यर्थः ॥ १४ ॥ सिंधोर्नद्याः ॥ १५ ॥ वेपमानेति ॥ कामातुरोऽपिमुनिर्ममदौर्गंध्यमनुभूयमध्येएवमांत्यक्ष्यती

दुर्लभंमानुषंजन्मभुविब्राह्मणसत्तम ॥ तत्रापिदुर्लभंमन्येब्राह्मणत्वंविशेषतः ॥ १० ॥ कुलेनशीलेनतथाश्रुतेनाद्विजोत्तमस्त्वंकिलधर्मविच्च ॥ अनार्यभावंकथमागतोऽसिविप्रेंद्रमांवीक्ष्यचमीनगन्धाम् ॥ ११ ॥ मदीयेशरीरेद्विजामोघबुद्धेशुभंकिंसमालोक्यपाणिंग्रहीतुम् ॥ समीपंसमायासिकामातुरस्त्वं कथंनाभिजानासिधर्मंस्वकीयम् ॥ १२ ॥ अहोमंदबुद्धिर्द्विजोऽयंग्रहीष्यञ्जलेमग्नएवाद्यमांवैगृहीत्वा ॥ मनोव्याकुलंपंचबाणातिविद्धंनकोपीहशक्तः प्रतीपंहिकर्तुम् ॥ १३ ॥ इतिसंचिंत्यसाबालातमुवाचमहामुनिम् ॥ धैर्यंकुरुमहाभागपरंपारंनयामिवै ॥ १४ ॥ सूतउवाच ॥ पराशरस्तुत च्छ्रुत्वावचनंहितपूर्वकम् ॥ करंत्यक्त्वास्थितस्तत्रसिंधोःपारंगतःपुनः ॥ १५ ॥ मत्स्यगंधांप्रजग्राहमुनिःकामातुरस्तदा ॥ वेपमानातुसाकन्यातमुवाच पुरःस्थितम् ॥ १६ ॥ दुर्गंधाऽहंमुनिश्रेष्ठकथंत्वंनोपशंकसे ॥ समानरूपयोःकामसंयोगस्तुसुखावहः ॥ १७ ॥ इत्युक्तेनतुसाकन्याक्षणमात्रेणभामिनी ॥ कृतायोजनगंधातुसुरूपाचवरानना ॥ १८ ॥ मृगनाभिसुगंधांतांकृत्वाकांतांमनोहराम् ॥ जग्राहदक्षिणेपाणौमुनिर्मन्मथपीडितः ॥ १९ ॥ ग्रहीतुकामंतंप्राहनाभ्रासत्यवतीशुभा ॥ मुनेपश्यतिलोकोऽयंपिताचैवतटस्थितः ॥ २० ॥ पशुधर्मोनमेप्रीतिंजनयत्यतिदारुणः ॥ प्रतीक्षस्वमुनिश्रेष्ठ यावद्भवतियामिनी ॥ २१ ॥ रात्रौव्यवायउद्दिष्टोदिवानमनुजस्यहि ॥ दिवासंगेमहान्दोषःपश्यंतिकिलमानवाः ॥ २२ ॥ कामंयच्छमहाबुद्धेलोक निंदादुरासदा ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यायुक्तमुक्तमुदारधीः ॥ २३ ॥ नीहारंकल्पयामासशीघ्रंपुण्यबलेनवै ॥ नीहारेचसमुत्पन्नेतटेऽतितमसायुते ॥ २४ ॥ कामिनीतंमुनिंप्राहमृदुपूर्वमिदंवचः ॥ कन्याऽहंद्विजशार्दूलभुक्त्वागंतासिकामतः ॥ २५ ॥ अमोघवीर्यस्त्वंब्रह्मन्कागतिर्मेभवेदिति ॥ पितरंकिंब्रवीम्यद्यसगर्भांचेद्भवाम्यहम् ॥२६॥ त्वंगमिष्यसिभुक्त्वामांकिंकरोमिवदस्वतत् ॥ ॥ पराशरउवाच ॥ ॥ कांतेऽद्यमत्प्रियंकृत्वाकन्यैवत्वंभविष्यसि॥२७॥

तिभीत्यावेपमानास्वदोषंस्वमुखेनवर्णयति॥तस्यमुनेःप्रियत्वेनस्वीकारार्थं ॥ स्त्रीणांस्वभावएवायम् ॥ १६ ॥ किमुवाचतदाह दुर्गंधाऽहमिति॥१७॥१८॥मृगनाभिशब्देनकस्तूरी ॥ १९॥ ॥२०॥पशुधर्मोमैथुनधर्मः॥इदंवाक्यंमुनेःकामोद्दीपनार्थम्॥किंचाधुनाकालोऽपिनास्तीत्याह प्रतीक्षस्वेति॥२१॥महान्दोषइति॥प्राणंवाएतेप्रस्कंदंतियेदिवारत्यासंयुज्यंतइतिप्रश्नोपनिषच्छ्रुतेर्दिवासंगेमहान्दोषः ॥ किंचमानवाअपिपश्यंतीतिलोकनिंदाचास्तीतिभावः ॥ २२ ॥ २३ ॥ नीहारंभाषायांधुवाराइतिप्रसिद्धम् ॥ श्रुत्युक्तदोषस्तुतपोबलेनशमयिष्यामीतिमुनेरभिप्रायः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥२८॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ भागकर्तावेदविभागकर्ता॥३५॥३६॥३७॥३८॥ दर्शयिष्यामिवैस्मृतइति॥अहंत्वयास्मृतोनिजंरूपंदर्शयिष्यामीत्यर्थः ॥ ३९ ॥

वृणीष्वचवरंभीरुयंत्वमिच्छसिभामिनि ॥ ॥ सत्यवत्युवाच ॥ ॥ यथामेपितरौलोकेनजानीतोहिमानद ॥ २८ ॥ कन्याव्रतंनमेहन्यात्तथाकुरुद्वि
जोत्तम ॥ पुत्रश्चत्वत्समःकामंभवेदद्भुतवीर्यवान् ॥ २९ ॥ गंधोऽयंसर्वदामेस्याद्यौवनंचनवंनवम् ॥ ॥ पराशरउवाच ॥ ॥ शृणुसुंदरिपुत्रस्तेवि
ष्ण्वंशसंभवःशुचिः ॥ ३० ॥ भविष्यतिचविख्यातस्त्रैलोक्येवरवर्णिनि ॥ केनचित्कारणेनाहंजातःकामातुरस्त्वयि ॥ ३१ ॥ कदापिचनसंमोहोभूत
पूर्वोवरानने ॥ दृष्ट्वाचाप्सरसांरूपंसदाऽहंधैर्यमावहम् ॥ ३२ ॥ दैवयोगेनवीक्ष्यत्वांकामस्यवशगोऽभवम् ॥ तत्किंचित्कारणंविद्धिदैवंहिदुरतिक्रमम्
॥ ३३ ॥ दृष्ट्वाऽहंचातिदुर्गंधांत्वांकथंमोहमाप्नुयाम् ॥ पुराणकर्तापुत्रस्तेभविष्यतिवरानने ॥ ३४ ॥ वेदविद्भागकर्ताचख्यातश्चभुवनत्रये ॥ ॥ सूत
उवाच ॥ ॥ इत्युक्तातांवशंयातांभुक्त्वासमुनिसत्तमः ॥ ३५ ॥ जगामतरसास्नात्वाकालिंदीसलिलेमुनिः ॥ साऽपिसत्यवतीजातासद्योगर्भवतीसती
॥ ३६ ॥ सुषुवेयमुनाद्वीपेपुत्रंकाममिवापरम् ॥ जातमात्रस्तुतेजस्वीतामुवाचस्वमातरम् ॥ ३७ ॥ तपस्येवमनःकृत्वाविविशेचातिवीर्यवान् ॥ गच्छ
मातर्यथाकामंगच्छाम्यहमतःपरम् ॥ ३८ ॥ तपःकर्तुंमहाभागेदर्शयिष्यामिवैस्मृतः ॥ मातर्यदाभवेत्कार्यंतवकिंचिदनुत्तमम् ॥ ३९ ॥ स्मर्तव्योऽहं
तदाशीघ्रमागमिष्यामिभामिनि ॥ स्वस्तितेऽस्तुगमिष्यामित्यक्त्वाचिंतांसुखंवस ॥ ४० ॥ इत्युक्त्वानिर्ययौव्यासःसाऽपिपित्रंतिकंगता ॥ द्वीपेन्यस्त
स्तयावालस्तस्माद्द्वैपायनोऽभवत् ॥ ४१ ॥ जातमात्रोजगामाशुवृद्धिंविष्ण्वंशयोगतः ॥ तीर्थंतीर्थंकृतस्नानश्चचारतपउत्तमम् ॥ ४२ ॥ एवंद्वैपायनो
जज्ञेसत्यवत्यांपराशरात् ॥ चकारवेदशाखाश्चप्राप्तंज्ञात्वाकलेर्युगम् ॥ ४३ ॥ वेदविस्तारकरणाद्व्यासनामाऽभवन्मुनिः ॥ पुराणसंहिताश्चक्रेमहाभारत
मुत्तमम् ॥ ४४ ॥ शिष्यानध्यापयामासवेदान्कृत्वाविभागशः ॥ सुमंतुंजैमिनिंपैलंवैशंपायनमेवच ॥ ४५ ॥ असितंदेवलंचैवशुकंचैवस्वमात्मजम् ॥
॥ सूतउवाच ॥ ॥ एतच्चकथितंसर्वंकारणंमुनिसत्तमाः ॥ ४६ ॥ सत्यवत्याःसुतस्यापिसमुत्पत्तिस्तथाशुभा ॥ संशयोऽत्रनकर्तव्यःसंभवेमुनिसत्त
माः ॥ ४७ ॥ महतांचरितेचैवगुणाग्राह्यामुनेरिति ॥ कारणाच्चसमुत्पत्तिःसत्यवत्याझषोदरे ॥ ४८ ॥ पराशरेणसंयोगःपुनःशंतनुनातथा ॥ अन्यथा
तुमुनेश्चित्तंकथंकामाकुलंभवेत् ॥ ४९ ॥ अनार्यजुष्टंधर्मज्ञःकृतवान्सकथंमुनिः ॥ सकारणेयमुत्पत्तिःकथिताऽऽश्चर्यकारिणी ॥ ५० ॥ ॥ ॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३॥ वेदविस्तारोविभागपूर्वकोविस्तारस्तस्यकरणाद्व्यासनामाभवत् ॥ तदुक्तंसूतसंहितायाम्॥व्यस्तवेदतयाव्यासइतिलोकेश्रुतोमुनिरिति ॥ ४४ ॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥५१॥एतावताग्रंथेनसत्यवतीपराशरस्यविवाहितास्त्रीनास्तीत्युक्तम्॥तथाचसाशंतनुनाविवाहितेतिनविरुद्धमितिभावः॥५२॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकोद्वितीयस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥
अर्धाधिकैकोनषष्टिश्लोकैःशंतनुनातथा॥सत्यवत्याविवाहश्चगंगायाश्चोपवर्ण्यते॥१॥यद्यपिसत्यवतीपराशरपत्नीनास्तिततश्चसाशंतनुनावृतेतियुक्तमेव तथापिनिषादपुत्रीसाकथंराज्ञावृतेति
शंकाऽवशिष्टैवेतिमुनयःपृच्छंति।उत्पत्तिस्त्विति ॥१॥२॥३॥४॥ प्रथमापत्नीकाशंतनोरभूदितिद्वितीयःप्रश्नः ॥ यस्यांभीष्मउत्पन्नः सभीष्मोवसोरंशःकथमितितृतीयःप्रश्नः ॥ ५ ॥ ६ ॥

श्रुत्वापापाच्चनिर्मुक्तोनरोभवतिसर्वथा ॥ यएतच्छुभमाख्यानंशृणोतिश्रुतिमान्नरः ॥ ५१ ॥ नदुर्गतिमवाप्नोतिसुखीभवतिसर्वदा ॥ ५२ ॥ इतिश्री देवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांद्वितीयस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ उत्पत्तिस्तुत्वयाप्रोक्ताव्यासस्यामिततेजसः ॥ सत्यवत्यास्तथासूतविस्तरेणत्वयाऽनघ ॥ १ ॥ तथाप्येकस्तुसंदेहश्चित्तेऽस्माकंसुसंस्थितः ॥ ननिवर्ततिधर्मज्ञकथितेनत्वयाऽनघ ॥ २ ॥ माता व्यासस्ययाप्रोक्तानाम्नासत्यवतीशुभा ॥ साकथंनृपतिंप्राप्ताशंतनुंधर्मवित्तमम् ॥ ३ ॥ निषादपुत्रींसकथंवृतवान्नृपतिःस्वयम् ॥ धर्मिष्ठःपौरवोराजाकुलहीनामसंवृताम् ॥ ४ ॥ शंतनोःप्रथमापत्नीकाह्यभूत्कथयाऽधुना ॥ भीष्मःपुत्रोऽथमेधावीवसोरंशःकथंपुनः ॥ ५ ॥ त्वयाप्रोक्तंपुरासूतराजाचित्रांगदःकृतः ॥ सत्यवत्याःसुतोवीरोभीष्मेणामिततेजसा ॥ ६ ॥ चित्रांगदेहतेवीरेकृतस्तदनुजस्तथा ॥ विचित्रवीर्यनामाऽसौसत्यवत्याःसुतोनृपः ॥ ७ ॥ ज्येष्ठेभीष्मेस्थितेपूर्वंधर्मिष्ठेरूपवत्यपि ॥ कृतवान्सकथंराज्यंस्थापितस्तेनजानता ॥ ८ ॥ मृतेविचित्रवीर्येतुसत्यवत्यातिदुःखिता ॥ वधूभ्यांगोलकौपुत्रौजनयामाससाकथम् ॥ ९ ॥ कथंराज्यंनभीष्मायददौसावरवर्णिनी ॥ नकृतस्तुकथंतेनवीरेणदारसंग्रहः ॥ १० ॥ अधर्मस्तुकृतःकस्माद्व्यासेनामिततेजसा ॥ ज्येष्ठेनभ्रातृभार्यायांपुत्रावुत्पादिताविति ॥ ११ ॥ पुराणकर्ताधर्मात्मासकथंकृतवान्मुनिः ॥ सेवनंपरदाराणांभ्रातुश्चैवविशेषतः ॥ १२ ॥ जुगुप्सितमिदंकर्मसकथंकृतवान्मुनिः ॥ शिष्टाचारःकथंसूतवेदानुमितिकारकः ॥ १३ ॥ व्यासशिष्योऽसिमेधाविन्संदेहंछेत्तुमर्हसि ॥ श्रोतुकामावयंसर्वेधर्मक्षेत्रेकृतक्षणाः ॥ १४ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ इक्ष्वाकुवंशप्रभवोमहाभिषइतिस्मृतः ॥ सत्यवान्धर्मशीलश्चचक्रवर्तीनृपोत्तमः ॥ १५ ॥ अश्वमेधसहस्रेणवाजपेयशतेनच ॥ तोषयामासदेवेंद्रंस्वर्गंप्रापमहामतिः ॥ १६ ॥

॥ ७ ॥ ज्येष्ठेभीष्मेस्थितेसातिकनिष्ठःकथंराज्यंप्राप्तवानितिचतुर्थःप्रश्नः ॥ ८ ॥ कुलीनानांकुलेमृतेभर्तरिविचित्रवीर्येऽन्यस्मात्पुरुषाद्वेदव्यासात्कथंगोलकावुत्पादिताविति पंचमःप्रश्नः
॥ ९ ॥ भीष्मेणवीर्यवताकथंनाविवाहःकृतइतितस्मैराज्यंचमात्राकथंनदत्तमितिषष्ठसप्तमौप्रश्नौ ॥ १० ॥ व्यासोऽपिधर्मात्माकथंभ्रातुर्विचित्रवीर्यस्यभार्यायांपुत्रावुत्पादितवानित्यष्टमःप्रश्नः
॥ ११ ॥ भ्रातुश्चैवदाराणामितिशेषः ॥ १२ ॥ शिष्टाचारेणहिश्रुतिरनुमीयते ॥ सकिंशिष्टाचारएतादृशइतिनवमःप्रश्नः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ प्रतीपामिति ॥ प्रतीपराजोदरेजन्मग्राह्यमितिचिंतयामासेत्यर्थः ॥ इत्थंमहाभिषस्यराज्ञःशंतनुरूपेणावतरणमुक्त्वागंगायाअव

एकदाब्रह्मसदनंगतोराजामहाभिषः ॥ सुराःसर्वेसमाजग्मुःसेवनार्थंप्रजापतिम् ॥ १७ ॥ गंगामहानदीतत्रसंस्थितासेवितुंविभुम् ॥ तस्यावासःसमुद्धूतं मारुतेनतरस्विना ॥ १८ ॥ अधोमुखाःसुराःसर्वेनविलोक्यैवतांस्थिताः ॥ राजामहाभिषस्तांतुनिःशंकःसमपश्यत ॥ १९ ॥ साऽपितंप्रेमसंयुक्तंनृपं ज्ञातवतीनदी ॥ दृष्ट्वातौप्रेमसंयुक्तौनिर्लज्जौकाममोहितौ ॥ २० ॥ ब्रह्माचुकोपतौतूर्णंशशापचरुषान्वितः ॥ मर्त्यलोकेषुभूपालजन्मप्राप्यपुनर्दिवम् ॥ २१ ॥ पुण्येनमहताविष्टस्त्वमवाप्स्यसिसर्वथा ॥ गंगांतथोक्तवान्ब्रह्मावीक्ष्यप्रेमवतींनृपे ॥ २२ ॥ विमनस्कौतुतौतूर्णंनिःसृतौब्रह्मणोंऽतिकात् ॥ सनृपांश्चितयित्वाऽथभूलोंकेधर्मतत्परान् ॥ २३ ॥ प्रतीपंचिंतयामासपितरंपुरुवंशजम् ॥ एतस्मिन्समयेचाष्टौवसवःस्त्रीसमन्विताः ॥ २४ ॥ वसिष्ठस्याऽऽश्रमंप्राप्तारममाणायदृच्छया ॥ पृथ्वादीनांवसूनांचमध्येकोऽपिवसूत्तमः ॥ २५ ॥ द्यौर्नामातस्यभार्याऽथनंदिनींगांददर्शह ॥ दृष्ट्वापतिंसाप प्रच्छकस्येयंधेनुरुत्तमा ॥ २६ ॥ द्यौस्तामाहवसिष्ठस्यगौरियंशृणुसुंदरि ॥ दुग्धमस्याःपिबेद्यस्तुनारीवापुरुषोऽथवा ॥ २७ ॥ अयुतायुर्भवेन्नूनंस दैवाऽगतयौवनः ॥ तच्छ्रुत्वासुंदरीप्राहमृत्युलोकेऽस्तिमेसखी ॥ २८ ॥ उशीनरस्यराजर्षेःपुत्रीपरमशोभना ॥ तस्याहेतोर्महाभागसवत्सांगांपयस्विनीम् ॥ २९ ॥ आनयस्वाऽऽश्रमश्रेष्ठंनंदिनींकामदांशुभाम् ॥ यावदस्याःपयःपीत्वासखीममसदैवहि ॥ ३० ॥ मानुषेषुभवेदेकाजरारोगविवर्जिता ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्याद्यौर्जहारचनंदिनीम् ॥ ३१ ॥ अवमन्यमुनिंदांतंपृथ्वाद्यैःसहितोऽनघः ॥ हृतायामथनंदिन्यांवसिष्ठस्तुमहातपाः ॥ ३२ ॥ आजगामाऽऽश्रमपदंफलान्यादायसत्वरः॥नापश्यतयदाधेनुंसवत्सांस्वाश्रमेमुनिः ॥ ३३ ॥ मृगयामासतेजस्वीगह्वरेषुवनेष्वपि ॥ नासादितायदा धेनुश्चुकोपातिशयंमुनिः ॥ ३४ ॥ वारुणिश्चापिविज्ञायध्यानेनवसुभिर्हृताम् ॥ वसुभिर्मेहृताधेनुर्यस्मान्मामवमन्यवै ॥ ३५ ॥ तस्मात्सर्वेजनिष्यंति मानुषेषुनसंशयः ॥ एवंशशापधर्मात्मावसूंस्तान्वारुणिःस्वयम् ॥ ३६ ॥ श्रुत्वाविमनसःसर्वेप्रययुर्दुःखिताश्चते ॥ शप्ताःस्मइतिजानंतऋषिंतमुपचक्रमुः॥३७॥ प्रसादयंतस्तमृषिंवसवःशरणंगताः ॥ मुनिस्तानाहधर्मात्मावसून्दीनान्पुरःस्थितान् ॥ ३८ ॥ अनुसंवत्सरंसर्वेशापमोक्षमवाप्स्यथ ॥ येनेयं विहृताधेनुर्नंदिनीममवत्सला ॥ ३९ ॥तस्माद्द्यौर्मानुषेदेहेदीर्घकालंवसिष्यति ॥ तेशप्ताःपथिगच्छंतींगंगांदृष्ट्वासरिद्वराम् ॥ ४० ॥

तरणप्रकारंतस्याउदरेवसूनामवतारप्रकारंचाह । एतस्मिन्समयेइति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ वारुणिर्वसिष्ठः ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ अनुसंवत्सरामिति ॥ युष्माकंजन्मनोयः संवत्सरस्तत्पूर्तेः पश्चादित्यर्थः ॥ जन्मसंवत्सरमध्येएवजन्ममरणेभविष्यतइत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥४१॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ प्रतीपस्त्विति ॥ यदास्तुतिंचक्रेतदेत्यर्थः ॥ वरवर्णिनीवरार्थिनीगंगा ॥ ४७ ॥ दक्षिणेशुभेइति ॥ इदंकन्यायाःस्थानंकामातुरात्वंकथमाश्रितवत्यसीत्यर्थः ॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२ ॥ ५३ ॥ वयास्विनितरुणे ॥ ५४ ॥ वृत्तांतंकाचित्स्त्रीसमागत्यममदक्षिणोरौस्थिता॥ कामातुरांतांसमीक्ष्यमयानिर्भर्त्सितासापुनःप्रार्थितव

ऊचुस्तांप्रणताःसर्वेशप्तांचिंतातुरांनदीम् ॥ भविष्यामोवयंदेविकथंदेवाःसुधाशनाः ॥ ४१ ॥ मानुषाणांचजठरेचिंतेयंमहतीहिनः ॥ तस्मात्त्वंमानुषीभूत्वाजनयास्मान्सरिद्वरे ॥ ४२ ॥ शंतनुर्नामराजर्षिस्तस्यभार्याभवानघे ॥ जाताञ्जाताञ्जलेचास्मान्निक्षिपस्वसुरापगे ॥ ४३ ॥ एवंशापविनिर्मोक्षोभवितानात्रसंशयः ॥ तथेत्युक्त्वाश्चतेसर्वेजग्मुर्लोकंस्वकंपुनः ॥ ४४ ॥ गंगाऽपिनिर्गतादेवीचिंत्यमानापुनःपुनः ॥ महाभिषोनृपोजातःप्रतीपस्यसुतस्तदा ॥ ४५ ॥ शंतनुर्नामराजर्षिर्धर्मात्मासत्यसंगरः ॥ प्रतीपस्तुस्तुतिंचक्रेसूर्यस्यामिततेजसः ॥ ४६ ॥ तदाचसलिलात्तस्मान्निःसृतावरवर्णिनी॥दक्षिणंशालसंकाशमूरुंभेजेशुभानना ॥ ४७ ॥ अंकेस्थितांस्त्रियंचाहमापृष्ट्वार्किवरानने ॥ ममोरावास्थिताऽसित्वंकिमर्थंदक्षिणेशुभे ॥ ४८ ॥ सातमाहवरारोहायदर्थंराजसत्तम ॥ स्थिताऽस्म्यंकेकुरुश्रेष्ठकामयानांभजस्वमाम् ॥ ४९ ॥ तामवोचदथोराजारूपयौवनशालिनीम् ॥ नाहंपरास्त्रियंकामाद्गच्छेयंवरवर्णिनीम् ॥ ५० ॥ स्थितादक्षिणमूरुंमेत्वमाश्लिष्यचभामिनि ॥ अपत्यानांस्नुषाणांचस्थानंविद्धिशुचिस्मिते ॥ ५१ ॥ स्नुषामेभवकल्याणिजातेपुत्रेऽतिवांच्छिते ॥ भविष्यतिचमेपुत्रस्तवपुण्यान्नसंशयः ॥ ५२ ॥ तथेत्युक्त्वागतासावैकामिनीदिव्यदर्शना ॥ राजाचापिगृहंप्राप्तश्चिंतयंस्तांस्त्रियंपुनः ॥ ५३ ॥ ततःकालेनकियताजातेपुत्रेवयस्विनि ॥ वनंजिगमिषूराजापुत्रंवृत्तांतमूचिवान् ॥ ५४ ॥ वृत्तांतंकथयित्वातुपुनरूचेनिजंसुतम् ॥ यदिप्रयातिसावालात्वांवनेचारुहासिनी॥ ५५ ॥ कामयानावरारोहातांभजेथामनोरमाम् ॥ नप्रष्टव्यात्वयाकाऽसिमन्नियोगान्नराधिप ॥ ५६ ॥ धर्मपत्नींचतांकृत्वाभवितात्वंसुखीकिल ॥ सूतउवाच ॥ एवंसंदिश्यतंपुत्रंभूपतिःप्रीतमानसः ॥ ५७ ॥ दत्वाराज्यश्रियंसर्वांवनंराजाविवेशह ॥ तत्रापिचतपस्तप्त्वासमाराध्यपरांविकाम् ॥ ५८ ॥ जगामस्वर्गंराजाऽसौदेहंत्यक्त्वास्वतेजसा ॥ राज्यंप्रापमहातेजाःशंतनुः सार्वभौमिकम् ॥ ५९ ॥ प्रजांवैपालयामासधर्मदंडोमहीपतिः ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ प्रतीपेऽथदिवंयातेशंतनुःसत्यविक्रमः ॥ बभूवमृगयाशीलोनिघ्नन्व्याघ्रान्मृगान्नृपः ॥ १ ॥ सकदाचिद्वनेघोरेगंगातीरेचरन्नृपः ॥ ददर्शमृगशावाक्षींसुंदरींचारुभूषणाम् ॥ २ ॥

तीमयाप्रोक्ताममभविष्यतःसुतस्यपत्नीभवेतिसातदुपश्रुत्यगतेति॥५५॥भजेथाइति॥ममसत्यवाक्यपालनार्थमित्यर्थः॥५६॥५७॥परांविकांसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीम् ॥५८॥ ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेतृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ एकोनसप्ततिश्लोकैर्गंगयासहशंतनोः॥विवाहःकथ्यतेतत्रवसूनांजन्मचोच्यते ॥ १ ॥ प्रतीपस्यभगवतीप्रसादादुत्तमपदप्राप्त्युत्तरंजातंवृत्तांतमाह । प्रतीपेऽथेति॥१॥ २ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

मग्नोमग्नचित्तइत्यर्थः॥३॥व्याप्तचित्तस्तस्यांमग्नचित्तइत्यर्थः॥४॥महाभिषमिति॥तस्यादेवतात्वाद्दिव्यज्ञानेनायंब्रह्मसभायांदृष्टोमहाभिषराजाभवतीतिमत्वेत्यर्थः॥५॥६॥ अप्सरापीतिटावंत त्वंछांदसम् ॥ ७ ॥ ८ ॥ राजातांनाभिजानातीति ॥ दिव्यज्ञानाभावादितिभावः ॥ ९ ॥ १० ॥ भावित्वादिति ॥ स्त्रीजातेरवश्यंपातिरपेक्षितएवेतिहेतोर्योवाकोवाऽपिपातिरपेक्षि तएवतत्रापिसदृशोमनोनुरूपोयदिलब्धस्तार्हितंकानवांछतिसर्वाऽपिवांछत्येवेत्यर्थः ॥ ११ ॥ वाग्बंधेनपणेन ॥ समयंपणम् ॥ १२ ॥ तथाप्रियम्॥अप्रियमितिच्छेदः ॥ १३ ॥ तदेति ॥

दृष्ट्वातांनृपतिर्मग्नःपित्रोक्तेयंवरानना ॥ रूपयौवनसंपन्नासाक्षाल्लक्ष्मीरिवापरा ॥ ३ ॥ पिबन्मुखांबुजंतस्यानतृप्तिमगमन्नृपः ॥ हृष्टरोमाभवत्तत्रव्याप्तचि त्तइवानघ ॥ ४ ॥ महाभिषंसाऽपिमत्वाप्रेमयुक्तावभूवह ॥ किंचिन्मंदस्मितंकृत्वातस्थावग्रेनृपस्यच ॥५॥ वीक्ष्यतामसितापांगींराजाप्रीतमनाभृशम् ॥ उवाचमधुरंवाक्यंसांत्वयञ्छ्लक्ष्णयागिरा ॥ ६ ॥ देवीवात्वंचवामोरुमानुषीवावरानने ॥ गंधर्वीवाथयक्षीवानागकन्याऽप्सराऽपिवा ॥ ७ ॥ यासिकाऽसि वरारोहेभार्यामेभवसुंदरि ॥ प्रेमयुक्तस्मितैवत्वंधर्मपत्नीभवाद्यमे ॥ ८ ॥ सूतउवाच ॥ राजातांनाभिजानातिगंगेयमितिनिश्चितम् ॥ महाभिषंसमुत्पन्नंनृ पंजानातिजाह्नवी ॥ ९ ॥ पूर्वप्रेमसमायोगाच्छ्रुत्वावाचंनृपस्यताम् ॥ उवाचनारीराजानंस्मितपूर्वमिदंवचः ॥ १० ॥ स्त्र्युवाच ॥ जानामित्वांनृपश्रेष्ठ प्रतीपतनयंशुभम् ॥ कानवांछतिचार्वंगीभावित्वात्सदृशंपतिम् ॥ ११ ॥ वाग्बंधेननृपश्रेष्ठचरिष्यामिपतिंकिल ॥ शृणुमेसमयंराजन्वृणोमित्वांनृपो त्तम ॥ १२ ॥ यच्चकुर्यामहंकार्यंशुभंवायदिवाशुभम् ॥ ननिषेध्यात्वयाराजन्नवक्तव्यंतथाऽप्रियम् ॥ १३ ॥ यदाचत्वंनृपश्रेष्ठनकरिष्यसिमेवचः ॥ तदामुक्तागमिष्यामियथेष्टंदेशमारिष ॥ १४ ॥ स्मृत्वाजन्मवसूनांसाप्रार्थनापूर्वकंहृदि ॥ महाभिषस्यप्रेमाथविचिंत्यैवचजाह्नवी ॥१५॥ तथेत्युक्ताऽथ सादेवीचकारनृपतिंपतिम् ॥ एवंवृतानृपेणाथगंगामानुषरूपिणी ॥ १६ ॥ नृपस्यमंदिरंप्राप्तासुभगावरवर्णिनी ॥ नृपतिस्तांसमासाद्यचिक्रीडोपवने शुभे ॥ १७ ॥ साऽपितंरमयामासभावज्ञावैवरांगना ॥ नबुबोधनृपःक्रीडन्गतान्वर्षगणानथ ॥ १८ ॥ सतयामृगशावाक्ष्याशच्याशतक्रतुर्यथा ॥ सासर्वगुणसंपन्नासोऽपिकामाविचक्षणः ॥ १९ ॥ रेमातेमंदिरेदिव्येरमानारायणाविव ॥ एवंगच्छतिकालेसादधारनृपतेस्तदा ॥ २० ॥ गर्भंगंगावसुं पुत्रंसुषुवेचारुलोचना ॥ जातमात्रंसुतंवारिचिक्षेपैवंद्वितीयके ॥ २१ ॥ तृतीयेथचतुर्थेऽथपंचमेषष्ठएवच ॥ सप्तमेवाहतेपुत्रेराजाचिंतापरोऽभवत् ॥२२॥ किंकरोम्यद्यवंशोमेकथंस्यात्सुस्थिरोभुवि ॥ सप्तपुत्राहतानूनमनयापापरूपया ॥ २३ ॥

तदात्वांमुक्त्वात्यक्त्वायथेष्टंदेशंगमिष्यामीत्यर्थः॥यथेष्टंदेशमारिषेत्यत्रदेशपदोत्तरविभक्तिलोपश्छांदसः॥१४॥स्मृत्वेति॥इत्थंकार्यद्वयहेतोर्जाह्नवीशंतनोःपत्नीजातेतिशेषः॥१५॥यद्वा पणं श्रुत्वाराज्ञातथास्त्वित्यंगीकृतपणाजाह्नवीकार्यद्वयहेतोर्नृपतिंपतिंचकारेत्यन्वयः ॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ तंदृष्ट्वेति ॥ तंद्यौर्नामानमित्यर्थः ॥ पतन्पदेनमस्कुर्वन्नित्यर्थः ॥ २८ ॥ पुषामिपोषयामीत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥पापकराणां पापिनामित्यर्थः ॥३४॥३५॥३६॥ पुत्रकामोति॥हेराजन्पुत्रकामाऽहंपुत्रंगृहीत्वागमिष्यामिवनेचैनंपुत्रंपालयामिपालयिष्यामि ॥ इहैवकुतोनपाल्यतेइतिचेद्गतःसमयोयोमयापणःकृतःसनष्ट

निवारयामियदिमांत्यक्त्वायास्यतिसर्वथा ॥ अष्टमोऽयंसुसंप्राप्तोगर्भोमेमनसीप्सितः ॥ २४ ॥ नवारयामिचेदद्यसर्वथेयंजलेक्षिपेत् ॥ भवितावानवाचाग्रेसंशयोयंममाद्भुतः ॥ २५ ॥ संभवेऽपिचदुष्टेयंरक्षयेद्वानरक्षयेत् ॥ एवंसंशयितेकार्येकिंकर्तव्यंमयाऽधुना ॥ २६ ॥ वंशस्यरक्षणार्थंहियत्नःकार्यःपरोमया ॥ ततःकालेयदाजातःपुत्रोऽयमष्टमोवसुः ॥ २७ ॥ मुनेर्धेनहृताधेनुर्नंदिनीस्त्रीजितेनहि ॥ तंदृष्ट्वानृपतिःपुत्रंतामुवाचपतन्पदे ॥ २८ ॥ दासोऽस्मितवतन्वंगिप्रार्थयामिशुचिस्मिते ॥ पुत्रमेकंपुषाम्यद्यदेहिजीवंतमद्यमे ॥ २९ ॥ हिंसिताःसप्तपुत्रामेकरभोरुत्वयाशुभाः ॥ अष्टमंरक्षसुश्रोणिपतामितवपादयोः ॥ ३० ॥ अन्यद्वैप्रार्थितंतेऽद्यददाम्यथचदुर्लभम् ॥ वंशोमेरक्षणीयोऽद्यत्वयापरमशोभने ॥ ३१ ॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तिस्वर्गेवेदविदोविदुः ॥ तस्मादद्यवरारोहेप्रार्थयाम्यष्टमंसुतम् ॥ ३२ ॥ इत्युक्तापिगृहीत्वातंयदागंतुंसमुत्सुका ॥ तदाऽपिकुपितोराजातामुवाचातिदुःखितः ॥ ३३ ॥ पापिष्ठेकिंकरोम्यद्यनिरयान्नबिभेषिकिम् ॥ काऽसिपापकराणांत्वंपुत्रीपापरतासदा ॥ ३४ ॥ यथेच्छंगच्छवातिष्ठपुत्रोमेस्थीयतामिह ॥ किंकरोमित्वयापापेवंशांतकरयाऽनया ॥ ३५ ॥ एवंवदतिभूपालेसागृहीत्वासुतंशिशुम् ॥ गच्छंतीवचनंकोपसंयुतातमुवाचह ॥ ३६ ॥ पुत्रकामासुतंत्वेनंपालयामिवनेगतः ॥ समयोमेगमिष्यामिवचनंह्यन्यथाकृतम् ॥ ३७ ॥ गंगांमांवैविजानीहिदेवकार्यार्थमागताम् ॥ वसवस्तुपुराशप्तावसिष्ठेनमहात्मना ॥ ॥ ३८ ॥ व्रजंतुमानृपींयोनिंस्थितांचिंतातुरास्तुमाम् ॥ दृष्ट्वेदंप्रार्थयामासुर्जननीनोभवानघे ॥ ३९ ॥ तेभ्योदत्त्वावरंजातापत्नीतेनृपसत्तम ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थंजानीहिसंभवोमम ॥ ४० ॥ सप्ततेवसवःपुत्रामुक्ताःशापाद्दषेस्तुते ॥ कियंतंकालमेकोऽयंतवपुत्रोभविष्यति ॥ ४१ ॥ गंगादत्तमिमंपुत्रंगृहाणशंतनोस्वयम् ॥ वसुदेवंविदित्वैनंसुखंभुंक्ष्वसुतोद्भवम् ॥ ४२ ॥ गांगेयोऽयंमहाभागभविष्यतिबलाधिकः ॥ अद्यतत्रनयाम्येनंयत्रत्वंवैमयावृतः ॥ ४३ ॥ दास्यामियौवनप्राप्तंपालयित्वामहीपते ॥ नमातृरहितःपुत्रोजीवेन्नचसुखीभवेत् ॥ ४४ ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेगंगातंगृहीत्वाचबालकम् ॥ राजाचातीवदुःखार्तःसंस्थितोनिजमंदिरे ॥ ४५ ॥ भार्याविरहजंदुःखंतथापुत्रस्यचाद्भुतम् ॥ सर्वदाचिंतयन्नास्तेराज्यंकुर्वन्महीपतिः ॥ ४६ ॥

इतिहेतोःकुतोनष्टइतिचेन्ममवचनंपूर्वोक्तंत्वयाअन्यथाकृतमितिहेतोः॥३७॥तत्रपुत्रंपालयिष्यसीत्यत्रकिंप्रमाणमितिचेदहंगंगाऽस्मिततोमद्वचनंसत्यंजानीहीत्यभिप्रायेणाऽऽह गंगामिति ॥ तर्हित्वंममपत्नीकुतोजातातथापुत्राश्चत्वयाकथंहिंसिताइतिचेत्तत्राऽऽह ॥ वसवस्त्विति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥कोऽयमिति ॥ अयंबालोममसुतोऽन्योवाकश्चनास्तीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३॥

एवंगच्छतिकालेऽथनृपतिर्मृगयांगतः ॥ निघ्नन्मृगगणान्बाणैर्महिषान्सूकरानपि ॥ ४७ ॥ गंगातीरमनुप्राप्तःसराजाशंतनुस्तदा ॥ नदींस्तोकजलांदृष्ट्वा विस्मितःसमहीपतिः ॥ ४८ ॥ तत्रापश्यत्कुमारंतंमुंचंतंविशिखान्बहून् ॥ आकृष्यचमहाचापंक्रीडंतंसरितस्तटे ॥ ४९ ॥ तंवीक्ष्यविस्मितोराजानस्म जानातिकिंचन ॥ नोपलेभेस्मृतिंभूपःपुत्रोऽयंममवानवा ॥ ५९ ॥ दृष्ट्वाप्यमानुषंकर्मबाणेषुलघुहस्तताम् ॥ विद्यांवाऽप्रतिमांरूपंतस्यवैस्मरसन्निभ म् ॥ ५१ ॥ पप्रच्छविस्मितोराजाकस्यपुत्रोऽसिचानघ ॥ नोवाचकिंचिद्धीरोऽसौमुंचञ्छिलीमुखानथ ॥ ५२ ॥ अंतर्धानगतःसोऽथराजाचिंतातुरोऽ भवत् ॥ कोऽयंममसुतोबालःकिंकरोमित्रजामिकम् ॥ ५३ ॥ गंगांतुष्टावभूपालःस्थितस्तत्रसमाहितः ॥ दर्शनंसाददौचाथचारुरूपायथापुरा ॥ ५४ ॥ दृष्ट्वातांचारुसर्वांगींबभाषेनृपतिःस्वयम् ॥ कोऽयंगंगेगतोबालोममत्वंदर्शयाधुना ॥ ५५ ॥ ॥ गंगोवाच ॥ ॥ पुत्रोऽयंतवराजेंद्ररक्षितश्चाष्टमोवसुः॥ ददामितवहस्तेतुगांगेयोऽयंमहातपाः ॥ ५६ ॥ कीर्तिकर्ताकुलस्यास्यभवितातवसुव्रतः ॥ पाठितस्त्वखिलान्वेदान्धनुर्वेदंचशाश्वतम् ॥ ५७ ॥ वसिष्ठस्याऽऽश्रमेदिव्येसंस्थितोऽयंसुतस्तव ॥ सर्वविद्याविधानज्ञःसर्वार्थकुशलःशुचिः ॥ ५८ ॥ यद्वेदजामदग्न्योऽसौतद्वेदायं सुतस्तव ॥ गृहाणगच्छरा जेंद्रसुखीभवनराधिप ॥ ५९ ॥ इत्युक्त्वांऽतर्दधेगंगादत्त्वापुत्रंनृपायवै ॥ नृपतिस्तुमुदायुक्तोबभूवातिसुखान्वितः ॥ ६० ॥ समालिंग्यसुतंराजास माघ्रायचमस्तकम् ॥ समारोप्यरथेपुत्रंस्वपुरंसप्रचक्रमे ॥ ६१ ॥ गत्वागजाह्वयंराजाचकारोत्सवमुत्तमम् ॥ दैवज्ञंचसमाहूयपप्रच्छचशुभंदिनम् ॥६२॥ समाहूयप्रजाःसर्वाःसचिवान्सर्वशःशुभान् ॥ यौवराज्येऽथगांगेयंस्थापयामासपार्थिवः ॥ ६३ ॥ कृत्वातंयुवराजानंपुत्रंसर्वगुणान्वितम् ॥ सुखमा ससधर्मात्मानसस्मारचजाह्नवीम् ॥ ६४ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ एतद्वःकथितंसर्वंकारणंवसुशापजम् ॥ गांगेयस्यतथोत्पत्तिंजाह्नव्याःसंभवंतथा ॥ ६५ ॥ गंगावतरणंपुण्यंवसूनांसंभवंतथा ॥ यःशृणोतिनरःपापान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ६६ ॥ पुण्यंपवित्रमाख्यानंकथितंमुनिसत्तमाः ॥ यथाम याश्रुतंव्यासात्पुराणंवेदसंमितम् ॥ ६७ ॥ श्रीमद्भागवतंपुण्यंनानाख्यानकथान्वितम् ॥ द्वैपायनमुखोद्भूतंपंचलक्षणसंयुतम् ॥ ६८ ॥ शृण्वतांस र्वपापघ्नंशुभदंसुखदंतथा ॥ इतिहासमिमंपुण्यंकीर्तितंमुनिसत्तमाः ॥ ६९ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

नसस्मारेति ॥ पुत्रसुखेनजाह्नवीविरहजदुःखस्यनाशात्तांनसस्मारेत्यर्थः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एकोनषष्टिश्लोकैस्तुसत्यवत्यातिसुंदरी ॥ वृताशंतनुनाराज्ञाकथेयंसम्यगीर्यते ॥ १ ॥ गंगयासहशंतनोर्विवाहादिकंश्रुत्वासत्यवतीविवाहकथांपृच्छंति।वसूनामिति ॥१॥२॥३॥४॥ पुत्रेण सहभीष्मेणसह ॥ कुमारेणस्कंदेन॥५॥सकदाचिदिति ॥ प्रथमंवनंप्राप्तःपश्चाद्वनमध्यस्थांसरिद्वारांकालिंदींयमुनांप्राप्तइत्यर्थः ॥६॥ अनिर्देश्यंनिर्णेतुमशक्यंतस्यगंधस्यप्रभवमुत्पत्तिस्थानम्

॥ ऋषयऊचुः ॥ वसूनांसंभवःसूतकथितःशापकारणात् ॥ गांगेयस्यतथोत्पत्तिःकथितालोमहर्षणे ॥ १ ॥ माताव्यासस्यधर्मज्ञनाम्नासत्यवतीसती ॥ कथंशंतनुनाप्राप्ताभार्यागंधवतीशुभा ॥ २ ॥ तन्ममाचक्ष्वविस्तारंदाशपुत्रीकथंवृता ॥ राज्ञाधर्मवरिष्ठेनसंशयंछिंधिसुव्रत ॥ ३ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ शंतनुर्नामराजर्षिर्मृगयानिरतःसदा ॥ वनंजगामनिघ्नन्वैमृगांश्चमहिषान्बहून् ॥ ४ ॥ चत्वार्येवतुवर्षाणिपुत्रेणसहभूपतिः ॥ रममाणःसुखंप्रापकुमारेणयथाहरः ॥ ५ ॥ एकदाविक्षिपन्बाणान्विनिघ्नन्खड्गसूकरान् ॥ सकदाचिद्वनंप्राप्तःकालिंदींसरितांवराम् ॥६॥ महीपतिरनिर्देश्यमाजिघ्रद्गंधमुत्तमम्॥ तस्यप्रभवमन्विच्छन्संचचारवनंतदा ॥ ७ ॥ नमंदारस्यगंधोऽयंमृगनाभिमदस्यन ॥ चंपकस्यनमालत्यानकेतक्यामनोहरः ॥ ८ ॥ नचानुभूतपूर्वोऽयंवातिगंधवहःशुभः ॥ कुतोऽयमेतिवायुर्वैममघ्राणविमोहनः ॥ ९ ॥ इतिसंचिंत्यमानोऽसौबभ्रामवनमंडलम् ॥ मोहितोगंधलोभेनशंतनुःपवनानुगः ॥ १० ॥ सददर्शनदीतीरेसंस्थितांचारुदर्शनाम् ॥ शृंगारसहितांकांतांसुस्थितांमलिनांबराम् ॥ ११ ॥ दृष्ट्वतामसितापांगींविस्मितःसमहीपतिः ॥ अस्यादेहस्यगंधोऽयमितिसंजातनिश्चयः ॥ १२ ॥ तद्द्भुतंरूपमतीवसुंदरंतथैवगंधोऽखिललोकसंमतः ॥ वयश्चतादृङ्नवयौवनंशुभंदृष्ट्वैवराजाकिलविस्मितोऽभवत् ॥ १३ ॥ केयंकुतोवासमुपागताऽधुनादेवांगनावाकिमुमानुषीवा ॥ गंधर्वपुत्रीकिलनागकन्याजानेकथंगंधवतींनुकामिनीम् ॥ १४ ॥ संचिंत्यचैवंमनसानृपोऽसौननिश्चयंप्रापयदाततःस्वयम् ॥ गंगांस्मरन्कामवशंगतोऽथपप्रच्छकांतांतटसंस्थितांच ॥ १५ ॥ काऽसिप्रियेकस्यसुताऽसिकस्मादिहस्थितात्वंविजनेवरोरु ॥ एकाकिनीकिंवदचारुनेत्रेविवाहितावानविवाहिताऽसि ॥ १६ ॥ संजातकामोऽहमरालनेत्रेत्वांवीक्ष्यकांतांचमनोरमांच ॥ ब्रूहिप्रियेयाऽसिचिकीर्षसित्वंकिंचेतिसर्वंममविस्तरेण ॥ १७ ॥ इत्येवमुक्तासुदतीनृपेणप्रोवाचतंसस्मितमंबुजेक्षणा ॥ दाशस्यपुत्रींत्वमवेहिराजन्कन्यांपितुःशासनसंस्थितांच ॥ १८ ॥ तरीमिमांधर्मनिमित्तमेवसंवाहयामीहजलेनृपेंद्र ॥ पितागृहेमेऽद्यगतोऽस्तिकामंसत्यंब्रवीम्यर्थपतेतवाग्रे ॥ १९ ॥

॥ ७ ॥ ८ ॥ गंधवहोवायुः ॥ ९ ॥ पवनानुगःपवनमनुलक्षीकृत्यगंता ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ गंगांस्मरन् कामवशंगतःकामेनरूढचित्तःसन्ययागंगयाऽहंत्यक्तःसैवगंगाकिंनस्यादितितांगंगांस्मरन्पप्रच्छेत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ अरालनेत्रेकुटिलनेत्रे ॥ १७ ॥ १८ ॥ धर्मनिमित्तमेवेति ॥ अस्माकंदाशानामयंधर्मोऽस्तीतितन्निमित्तमित्यर्थः ॥१९॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २० ॥ २१ ॥ विवशंकामाधीनमितियावत्॥२२॥अतिधैर्यमिति ॥ अनेनसाऽपिकामातुराजातेतिबोधितम् ॥२३॥ यदात्थराजन्निति ॥ हेराजन्यत्तवाभिलषितंतदेतन्ममाप्यभिलषित मित्यर्थः ॥ २४ ॥ नस्वैरिणीनकुलटाऽहमस्मिअपितुकुलीनस्यदाशस्यपुत्री ॥ २५ ॥ननुत्वत्पितापृष्टव्यइत्यवकाशःकामांधस्यममनैवास्तीतिचेत्तत्राऽह । मनोभवइति॥यथामांपुनर्नवयौव नांमनोभवोदुनोतिक्लेशयतितथानृपत्वांकिंदुनोति नैवदुनोति ॥ पुरुषापेक्षयाअष्टगुणितकामस्यस्त्रीषुसत्त्वात् ॥ तथाप्यहंयथाधैर्येणनविव्हलाऽस्मि ॥ एवंत्वयातत्रापिकामोद्भवेऽपिधृतिःकु

इत्येवमुक्त्वाविररामबालाकामातुरस्तांनृपतिर्बभाषे ॥ कुरुप्रवीरंकुरुमांपतिंत्वंवृथानगच्छेन्ननुयौवनंते ॥ २० ॥ नचास्तिपत्नीममवैद्वितीयात्वंधर्मपत्नी भवमेमृगाक्षि ॥ दासोऽस्मितेऽहंवशगःसदैवमनोभवस्तापयतिप्रियेमाम् ॥ २१ ॥ गताप्रियामांपरिहृत्यकांतानान्यावृताऽहंविधुरोऽस्मिकांते ॥ त्वां वीक्ष्यसर्वावयवातिरम्यांमनोहिजातंविवशंमदीयम् ॥ २२ ॥ श्रुत्वामृतास्वादरसंनृपस्यवचोऽतिरम्यंखलुदाशकन्या ॥ उवाचतंसात्त्विकभावयुक्ताकृ त्वाऽतिधैर्यंनृपतिंसुगंधा ॥ २३ ॥ यदात्थराजन्मयितत्तथैवमन्येऽहमेतत्तुयथावचस्ते ॥ नास्मिस्वतंत्रात्वमवेहिकामंदातापितामेऽर्थयतंत्वमाशु ॥ ॥ २४ ॥ नस्वैरिणीहास्म्यपिदाशपुत्रीपितुर्वशेऽहंसततंचरामि ॥ सचेद्ददातिप्रथितःपितामेगृहाणपाणिंवशगाऽस्मितेऽहम् ॥ २५ ॥ मनोभवस्त्वां नृपकिंदुनोतियथापुनर्मानवयौवनांच ॥ दुनोतितत्रापिहिरक्षणीयाधृतिःकुलाचारपरंपरासु ॥ २६ ॥ सूतउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यानृपतिःकाम मोहितः ॥ गतोदाशपतेर्गेहंतस्यायाचनहेतवे ॥ २७ ॥ दृष्ट्वानृपतिमायांतंदाशोऽतिविस्मयंगतः ॥ प्रणामंनृपतेःकृत्वाकृतांजलिरभाषत ॥ २८ ॥ दाशउवाच ॥ दासोऽस्मितवभूपालकृतार्थोऽहंतवाऽऽगमे ॥ आज्ञांदेहिमहाराजयदर्थमिहचागमः ॥ २९ ॥ राजोवाच ॥ धर्मपत्नींकरिष्यामिसु तामेतांतवानघ ॥ त्वयाचेद्दीयतेमह्यंसत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ ३० ॥ दाशउवाच ॥ कन्यारत्नंमदीयंचेद्यत्त्वंप्रार्थयसेनृप ॥ दातव्यंतुप्रदास्यामिनत्वदेयंक दाचन ॥ ३१ ॥ तस्याःपुत्रोमहाराजत्वदंतेपृथिवीपतिः ॥ सर्वथाचाभिषेक्तव्योनान्यःपुत्रस्तवेतिवै ॥ ३२ ॥ सूतउवाच ॥ श्रुत्वावाक्यंतुदाशस्यरा जाचिंतातुरोऽभवत् ॥ गांगेयंमनसाकृत्वानोवाचनृपतिस्तदा ॥ ३३ ॥ कामातुरोगृहंप्राप्तश्चिंताविष्टोमहीपतिः ॥ नसस्रौबुभुजेनाथनसुष्वापगृहंगतः ॥ ३४ ॥ चिंतातुरंतुतंदृष्ट्वापुत्रोदेवव्रतस्तदा ॥ गत्वाऽपृच्छन्महीपालंतदसंतोषकारणम् ॥ ३५ ॥

लाचारपरंपरासुयोग्यारक्षणीयेत्यर्थः ॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥ प्रार्थयसेचेदित्यन्वयः॥दातव्यंत्ववश्यंदातव्यमेवास्ति तद्वस्तुनगृहेस्थाप्नीयं त्वादृशोयदिप्रार्थयतेतदाऽवश्यंदास्यामि ॥३१॥पुत्रस्तवेतिवैइति॥इतियादितवेष्टंतदादास्यामीत्यर्थः ॥३२॥ गांगेयंमनसाराज्याधिपंकृत्वाप्रत्युत्तरंनोवाच ॥ गांगेयसदृशेपुत्रेसतिकथमेतस्याःपुत्रायराज्यंदेयमितिभावः ॥ ३३ ॥ तस्याःपुत्रायराज्यदानेऽनिष्टेऽपिसात्विष्टैवेत्याह । कामातुरइति ॥ ३४ ॥ देवव्रतोभीष्मः ॥ ३५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

n: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivar

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३६ ॥ दुःखंपितुरितिशेषः॥योदुःखंपितुर्ननाशयतिसपुत्रऋणंप्राग्जन्मनिगृहीतंपित्रातद्गृहीतुमागतोऽस्तीति धिक्तादृशंपुत्रमित्यर्थः ॥३७॥ ३८ ॥ सुतोहरिश्चंद्रेति ॥ दासार्पितोलक्षण यादासत्वेनार्पितइत्यर्थः॥इयंकथासप्तमस्कंधेवक्ष्यमाणा॥ ३९ ॥तथाऽजीगर्तस्येति॥इयमपिकथासप्तमस्कंधेवक्ष्यमाणा॥गाधिसुतेनविश्वामित्रेण ॥४०॥ पित्राज्ञयेति॥गुरोरनुज्ञागुरोःपितुर्ज

दुर्जयःकोऽस्तिशत्रुस्तेकरोमिवशगंतव ॥ काचिंतानृपशार्दूलसत्यंवदनृपोत्तम ॥ ३६ ॥ किंतेनजातेनसुतेनराजन्दुःखंनजानातिननाशयेद्यः ॥ ऋणं गृहीतुंसमुपागतोऽसौप्राग्जन्मजंनात्रविचारणाऽस्ति ॥ ३७ ॥ विमुच्यराज्यंरघुनन्दनोऽपितातज्ञयादाशरथिस्तुरामः ॥ वनंगतौलक्ष्मणजानकीभ्यां सहैवशैलंकिलचित्रकूटम् ॥ ३८ ॥ सुतोहरिश्चंद्रनृपस्यराजन्योरोहितश्चेतिप्रसिद्धनामा ॥ क्रीतोऽथपित्राविपणोद्यतश्चदासार्पितोविप्रगृहेतुनूनम् ॥३९॥ तथाऽजिगर्तस्यसुतोवरिष्ठोनाम्नाशुनःशेपइतिप्रसिद्धः ॥ क्रीतस्तुपित्राप्यथयूपबद्धःसंमोचितोगाधिसुतेनपश्चात् ॥ ४० ॥ पित्राज्ञयाजामदग्न्येनपू र्वंछिन्नंशिरोमातुरितिप्रसिद्धम् ॥ अकार्यमप्याचरितंचतेनगुरोरनुज्ञाचगरीयसीकृता ॥४१॥ इदंशरीरंतवभूपतेनक्षमोऽस्मिनूनंवदकिंकरोम्यहम् ॥ नशो चनीयंमयिवर्तमानेप्यसाध्यमर्थंप्रतिपादयाम्यदः ॥४२॥ प्रब्रूहिराजंस्तवकाऽस्तिचिंतानिवारयाम्यद्यधनुर्गृहीत्वा ॥ देहेनमेचेच्चरितार्थतावाभवत्वमोघा भवताश्चिकीर्षा ॥ ४३ ॥ धिक्तंसुतंयःपितुरीप्सितार्थंक्षमोऽपिसन्नप्रतिपादयेद्यः ॥ जातेनकिंतेनसुतेनकामंपितुर्नचिंतांहिसमुद्धरेद्यः ॥ ४४ ॥ सूतउ वाच ॥ निशम्येतिवचस्तस्यपुत्रस्यशंतनुर्नृपः ॥ लज्जमानस्तुमनसातमाहत्वरितंसुतम् ॥ ४५ ॥ राजोवाच ॥ चिंतामेमहतीपुत्रयस्त्वमेकोऽसिमेसुतः॥ शूरोऽतिबलवान्मानीसंग्रामेष्वपराङ्मुखः ॥ ४६ ॥ एकापत्यस्यमेतातवृथेदंजीवितंकिल ॥ मृतेत्वयिमृधेक्वापिकिंकरोमिनिराश्रयः॥४७॥एषामेमहती चिंतातेनाद्यदुःखितोस्म्यहम् ॥ नान्याचिंताऽस्तिमेपुत्रयांतवाग्रेवदाम्यहम् ॥ ४८ ॥ सूतउवाच ॥ तदाऽऽकर्ण्याथगांगेयोमंत्रिवृद्धानपृच्छत ॥ नमांव दतिभूपालोलज्जयाऽद्यपरिप्लुतः ॥ ४९ ॥ वित्तवार्तानृपस्याद्यपृष्ट्वायूयंविनिश्चयात् ॥ सत्यंब्रुवंतुमांसर्वंतत्करोमिनिराकुलः ॥ ५० ॥ तच्छ्रुत्वातेनृपं गत्वासंविज्ञायचकारणम् ॥ शशंसुर्विदितार्थस्तुगांगेयस्तदचिंतयत् ॥ ५१ ॥ सहितस्तैर्जगामाऽऽशुदाशस्यसदनंतदा ॥ प्रेमपूर्वमुवाचेदंविनम्रो जाह्नवी सुतः ॥ ५२ ॥ गांगेयउवाच ॥ पित्रेदेहिसुतांतेऽद्यप्रार्थयामिसुमध्यमाम् ॥ मातामेऽस्तुसुतेयंतेदासोऽस्म्यस्याःपरंतप ॥ ५३ ॥

मदग्नेरित्यर्थः ॥ ४१ ॥ नक्षमोऽस्मिनूनमिति ॥ यद्यपिकिमपिभवत्प्रियंकर्तुंनक्षमःसमर्थोऽस्मितथाप्यहंकिंकरोमीतिवद मयाकिंकर्तव्यमितिवदेत्यर्थः ॥ अदःइदमित्यर्थः ॥४२॥देहेनेति ॥ यदिकार्यकरणे ममदेहःपततितदादेहेनचरितार्थताममजाता ममदेहःसार्थकोजातः॥अथवाकार्यंजातंतदाभवताश्चिकीर्षाअमोघासफलाजाता उभयतोऽपिफलमेवाऽस्तीत्यर्थः ॥४३॥ समुद्धरे न्नाशयेत् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ मृधेयुद्धेऽकस्मात् ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ वित्तेति॥यूयंपृष्ट्वानृपस्यवार्तांवित्तजानीत ॥ ५० ॥ विदितार्थोज्ञातार्थः॥५१॥५२॥५३॥ ॥ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥५४॥५५॥सत्यंवाक्यमिति ॥ त्वंयद्यपिसत्यवाक्यतयाराज्यंनकरिष्यसि तथापित्वत्सुतस्तुबलाद्राज्यंगृण्हीयान्ममदौहित्रस्येत्यर्थः॥५६॥मयाविवाहेकृतेसत्येतद्भयम् ॥ ततोविवाहमेवा हंनकरिष्यामीतिभीष्मंभयंकरंव्रतंमयाकृतमितिजानीहि ॥ ५७ ॥ झषजीवकोमत्स्यजीवनोदाशराजः ॥ ५८ ॥ ननुव्यासमाताअन्यस्त्रीकथंतेनविवाहितेतिचेत्तत्राऽऽह नजानातीति ॥ तदु दरेव्यासस्यजन्मराजानजानाति॥कन्यैवेयमितिनिश्चितमातिरित्यर्थः॥एतेनधर्मज्ञेनराज्ञाकथंदाशकन्याऽन्यस्त्रीविवाहितेतिदूषणंनिरस्तम्॥कामातुरत्वाच्चाऽश्लाघ्यमप्याचरितमहोभगवत्याअं तर्यामिरूपिण्याअयंमहिमा यदकार्यमपिमहद्भिःकारयति कारयित्वाचस्वोपासनाबलेनसर्वान्महीकरोतीति॥अतएववक्ष्यतिसप्तमस्कंधे ॥सोमसूर्योद्भवाराजानःसर्वेशक्त्युपासनयामहत्त्वंप्राप्ता इति॥५९॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेपंचमोऽध्यायः॥५॥ ॥ ॥ ॥ एकसप्ततिपद्यैस्तुव्यासात्पुत्रत्रयोद्भवः॥पांडवानांतथोत्पत्तिःसंक्षेपादिहकथ्यते॥१॥तृतीयाऽध्यायेये

दाशउवाच ॥ त्वंगृहाणमहाभागपत्नींकुरुनृपात्मज ॥ पुत्रोऽस्यानभवेद्राजावर्तमानेत्वयीतिवै ॥ ५४ ॥ गांगेयउवाच ॥ मातेयंममदाशेयीराज्यंनै वकरोम्यहम् ॥ पुत्रोऽस्याःसर्वथाराज्यंकरिष्यतिनसंशयः ॥ ५५ ॥ दाशउवाच ॥ सत्यंवाक्यंमयाज्ञातंपुत्रस्तेबलवान्भवेत् ॥ सोऽपिराज्यंबला न्नूनंगृह्णीयादितिनिश्चयः ॥ ५६ ॥ गांगेयउवाच ॥ नदारसंग्रहंनूनंकरिष्यामिहिसर्वथा ॥ सत्यंमेवचनंतातमयाभीष्मंव्रतंकृतम् ॥ ५७ ॥ सूतउ वाच ॥ एवंकृतांप्रतिज्ञांतुनिशम्यझषजीवकः॥ददौसत्यवतींतस्मैराज्ञेसर्वांगशोभनाम् ॥ ५८ ॥ अनेनविधिनातेनवृतासत्यवतीप्रिया ॥ नजानाति परंजन्मव्यासस्यनृपसत्तमः ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ एवंसत्यवतीतेन वृताशंतनुनाकिल ॥ द्वौपुत्रौचतथाजातौमृतौकालवशादपि ॥ १ ॥ व्यासवीर्यात्तुसंजातोधृतराष्ट्रोऽथएवच ॥ मुनिंदृष्ट्वाऽथकामिन्यानेत्रसंमीलनेकृ ते ॥ २ ॥ श्वेतरूपायतोजातादृष्ट्वाव्यासंनृपात्मजा ॥ व्यासकोपात्समुत्पन्नःपांडुस्तेननसंशयः ॥ ३ ॥ संतोषितस्तयाव्यासोदास्याकामकलाविदा ॥ विदुरस्तुसमुत्पन्नोधर्मांशःसत्यवाक्शुचिः ॥ ४ ॥

प्रश्नाःकृतास्तेषांसर्वेषामुत्तरमेतत्पर्यंतंदत्तम्॥कथंगोलकावुत्पादिताविति शंकाकेवलमवशिष्टातदर्थमाहएवंसत्यवतीति।द्वौपुत्रौचित्रांगदविचित्रवीर्यौ। वंशाभावेगोलकावप्युत्पादनीयाविति वे दाज्ञयागोलकौवंशसंरक्षणार्थमुत्पादितावित्याह।कालवशादपीति॥इदमुत्तरान्वय्यपि॥यतोवंशोच्छेदकालःसमागतस्तद्वशादेवेत्यर्थः॥एतेनधार्मिकेणव्यासेनकथंभ्रातृभार्यागमनंकृतमितिशं कानिरस्ता॥वंशोच्छेदप्राप्तावेतादृशकर्मकरणेवेदाज्ञायाःसत्त्वादिति॥इदंकलियुगातिरिक्तपरम्॥१॥अंधत्वेनिमित्तमाह। मुनिंदृष्ट्वेति॥जटिलव्यासंदृष्ट्वातत्रानुरागाभावेनस्त्रियानेत्रनिमीलनेकृते सतितन्निमित्तवशादंधोजातइत्यर्थः॥२॥श्वेतरूपेति॥मुनिंदृष्ट्वातत्रानुरागाभावान्निर्लाभाश्वेताजातेतिहेतोःस्वस्मिन्ननुरागाभावाद्व्यासस्यकोपउत्पन्नस्तस्माद्धेतोःपुत्रःपांडुःश्वेतउत्पन्नः ॥३॥ यदापुनर्वर्षातेविचित्रवीर्यपत्नीप्रेषितासानगतातयास्वकीयादासीप्रेषिताशृंगारादिरसैःकामकलाविदाकामशास्त्राभिज्ञयादास्याव्यासःसंतोषितस्तत्संतोषवशात्सम्यक्पुत्रोविदुरउत्पन्नः॥४॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रथमाऽध्यायमारभ्यैतावत्पर्यंतमृषिभिर्ययैंप्रश्नाःकृतास्तेषामुत्तरमेतत्पर्यंतंसूतेनक्रमेणदत्तामितःपरमपृष्टमप्यृषिभिःपांडवाख्यानंजनमेजयपर्यंतंसूतेनकथ्यते ॥ तत्प्रयोजनंत्वग्रेजनमेजयायस्व पूर्वजदुर्गतिगतपांडवोद्धारार्थंव्यासोदेवीभागवतंकथयामासेतिवक्तव्यमस्ति ॥ तत्रकेपांडवाःकिंचतैर्दुरितमाचरितंकोजनमेजयइत्याकांक्षास्यात्तन्निवृत्त्यर्थंप्रकृतमपृष्टमप्याख्यानंपांडवानां वक्तुमारभते।राज्येसंस्थापितइति।।ननु शुकायभागवतोपदेशसमयेजनमेजयोत्पत्त्यभावेनजनमेजयायोपदिष्टंभागवतामितिकथाशुकोपदिष्टभागवतेऽसंगतेतिचेन्न॥व्यासस्यसर्वज्ञत्वेनजनमेजयं

राज्येसंस्थापितःपांडुःकनीयानपिमंत्रिभिः ॥ अंधत्वाद्धृतराष्ट्रोऽसौनाधिकारेनियोजितः ॥ ५ ॥ भीष्मस्यानुमतेराज्यंप्राप्तःपांडुर्महाबलः ॥ विदुरोप्यथमेधावीमंत्रकार्येनियोजितः ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्रस्यद्वेभार्येगांधारीसौबलीस्मृता ॥ द्वितीयाचतथावैश्यागार्हस्थ्येषुप्रतिष्ठिता ॥ ७ ॥ पांडोरपितथापत्न्यौद्वेप्रोक्तेवेदवादिभिः ॥ शौरसेनीतथाकुंतीमाद्रीचमद्रदेशजा ॥ ८ ॥ गांधारीसुषुवेपुत्रशतंपरमशोभनम् ॥ वैश्याप्येकंसुतंकांतंयुयुत्सुंसुषुवेप्रियम् ॥ ९ ॥ कुंतीतुप्रथमंकन्यासूर्यात्कर्णमनोहरम् ॥ सुषुवेपितृगेहस्थापश्चात्पांडुपरिग्रहः ॥ १० ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ ॥ किमेतत्सूतचित्रंत्वंभाषसेमुनिसत्तम ॥ जनितश्चसुतःपूर्वंपांडुनासाविवाहिता ॥ ११ ॥ सूर्यात्कर्णःकथंजातःकन्यायांवदविस्तरात् ॥ कन्याकथंपुनर्जातापांडुनासाविवाहिता ॥ १२ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ शूरसेनसुताकुंतीबालभावेयदाद्विजाः ॥ कुंतिभोजेनराज्ञातुप्रार्थिताकन्यकाशुभा ॥ १३ ॥ कुंतिभोजेनसाबालापुत्रीतुपरिकल्पिता ॥ सेवनार्थंतुदीप्तस्यविहिताचारुहासिनी ॥ १४ ॥ दुर्वासास्तुमुनिः प्राप्तश्चातुर्मास्येस्थितौद्विजः परिचर्याकृताकुंत्यामुनिस्तोषंजगामह ॥ १५ ॥ ददौमंत्रंशुभंतस्यैयेनाहूतःसुरःस्वयम् ॥ समायातितथाकामंपूरयिष्यतिवांछितम् ॥ १६ ॥ गतेमुनौततःकुंतीनिश्चयार्थंगृहेस्थिता ॥ चिंतयामासमनसाकंसुरंसमचिंतये ॥ १७ ॥ उदितश्चतदाभानुस्तयादृष्टोदिवाकरः ॥ मंत्रोच्चारंतथाकृत्वाचाहूतस्तिग्मगुस्तदा ॥ १८ ॥ मंडलान्मानुषंरूपंकृत्वासर्वातिपेशलम् ॥ अवातरत्तदाकाशात्समीपेतत्रमंदिरे ॥ १९ ॥

प्रत्येवंवक्तास्मीत्यभिप्रायेणपूर्वमेवग्रंथंभविष्याख्यानघटितंकृत्वाशुकायोपदिदेशेतिकल्पनात् ॥ ५ ॥ ६ ॥ सौबलीसुबलस्यापत्यंकन्या ॥ ७ ॥ शूरसेनस्यापत्यंकन्याशौरसेनी ॥ मद्रदेशजामद्रदेशराजजेत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ जनितउत्पादितः ॥ विवाहितायाःपुनर्विवाहोऽसंगतइत्यर्थः ॥ ११ ॥ पित्रायदिसानविवाहितातर्हिसूर्यात्कर्णःकथमुत्पन्नःकन्यावस्थायांव्यभिचारेणोत्पत्तौतुपुनःकन्याकथंजाता कन्यात्वाभावेपांडुनाकथंसाविवाहितेत्याह।सूर्यात्कर्णइति ॥ १२ ॥ यदेति ॥ बाल्यभावेयदास्थिताकुंतीतदाकुंतिभोजेनराज्ञाममकन्यानास्तिभवत्कन्याममास्त्विवतिप्रार्थितःशूरसेनस्तस्मैकन्यांदत्तवानित्यर्थः॥१३॥दीप्तस्याग्निहोत्रस्थितस्याग्नेः॥१४॥१५॥ येनमंत्रेणसुरोवायोवाकोवासमायातिसमायास्यति ॥१६॥१७॥१८॥ पेशलंसुंदरम् ॥ १९ ॥ ॥ ॥

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

रजोदोषंप्राप्तारजस्वलाजातेत्यर्थः॥२०॥सुप्रीताऽस्मि त्वंगच्छ॥ममत्वद्दर्शनातिरिक्तंप्रयोजनांतरंनास्तीत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ नदुर्वाच्यादुर्वाक्याविषयानास्मियतोऽहंकुलकन्याऽस्मि ॥ २४ ॥ वाच्यतांनिंद्यताम्॥२५॥२६॥२७॥२८॥एकाधात्रीवेदनान्योजनः॥२९॥३०॥३१॥ कांचितामिति ॥ अहंत्वदाज्ञाधारिकास्थिताऽस्मियद्यत्त्वयाज्ञाप्यतेतत्सर्वंक्रियतेततःकांचि

दृष्ट्वादेवंसमायांतंकुंतीभानुंसुविस्मिता ॥ वेपमानारजोदोषंप्राप्तासद्यस्तुभामिनी ॥ २० ॥ कृतांजलिःस्थितासूर्यंबभाषेचारुलोचना ॥ सुप्रीतादर्शनेना द्यगच्छत्वंनिजमंडलम् ॥ २१ ॥ ॥ सूर्यउवाच ॥ ॥ आहूतोऽस्मिकथंकुंतित्वयामंत्रबलेनवै ॥ नमांभजसिकस्मात्त्वंसमाहूयपुरोगतम् ॥ २२ ॥ कामार्तोऽस्म्यसितापांगिभजमांभावसंयुतम् ॥ मंत्रेणाधीनतांप्राप्तंक्रीडितुंनयमामिति ॥ २३ ॥ ॥ कुंत्युवाच ॥ ॥ कन्याऽस्म्यहंतुधर्मज्ञसर्वसा क्षिन्नमाम्यहम् ॥ तवाप्यहंनदुर्वाच्याकुलकन्याऽस्मिसुव्रत ॥ २४ ॥ ॥ सूर्यउवाच ॥ ॥ लज्जामेमहतीचाद्ययदिगच्छाम्यहंवृथा ॥ वाच्यतांसर्व देवानांयास्याम्यत्रनसंशयः ॥ २५ ॥ शप्स्यामितंद्विजंचाऽद्ययेनमंत्रःसमर्पितः ॥ त्वांचापिसुभृशंकुंतिनोचेन्मांत्वंभजिष्यसि ॥ २६ ॥ कन्याधर्मः स्थिरस्तेस्यान्नज्ञास्यंतिजनाः किल ॥ मत्समस्तुतथापुत्रोभवितातेवरानने ॥ २७ ॥ इत्युक्तातरणिःकुंतींतन्मनस्कांसुलज्जिताम् ॥ भुक्त्वाजगामदेवेशो वरंदत्त्वाऽतिवांछितम् ॥ २८ ॥ गर्भंदधारसुश्रोणीसुगुप्तेमंदिरेस्थिता ॥ धात्रीवेदप्रियाचैकानमातानजनस्तथा ॥ २९ ॥ गुप्तःसद्मनिपुत्रस्तुजातश्चा तिमनोहरः ॥ कवचेनातिरम्येणकुंडलाभ्यांसमन्वितः ॥ ३० ॥ द्वितीयइवसूर्यस्तुकुमारइवचापरः ॥ करेकृत्वाऽथधात्रेयीतामुवाचसुलज्जिताम् ॥ ॥ ३१ ॥ कांचिंतांकरभोरुत्वमाधत्सेऽद्यस्थिताऽस्म्यहम् ॥ मंजूषायांसुतंकुंतीमुंचंतीवाक्यमब्रवीत् ॥ ३२ ॥ किंकरोमिसुतार्ताऽहंत्यजेत्वांप्राणवल्ल भम् ॥ मंदभाग्यात्यजामित्वांसर्वलक्षणसंयुतम् ॥ ३३ ॥ पातुत्वांसगुणागुणाभगवतीसर्वेश्वरीचांबिकास्तन्यंसैवददातुविश्वजननीकात्यायनीकामदा ॥ द्रक्ष्येऽहंमुखपंकजंसुललितंप्राणप्रियार्हंकदात्यक्त्वात्वांविजनेवनेरविसुतंदुष्टायथास्वैरिणी ॥ ३४ ॥ पूर्वस्मिन्नपिजन्मनित्रिजगतांमातानचाराधिता नध्यातंपदपंकजंसुखकरंदेव्याःशिवायाश्चिरम्॥तेनाहंसुतदुर्भगाऽस्मिसततंत्यक्त्वापुनस्त्वांवनेतप्स्यामिप्रियपातकंस्मृतवतीबुद्ध्याकृतंयत्स्वयम् ३५॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्त्वातंसुतंकुंतीमंजूषायांधृतंकिल ॥ धात्रीहस्तेददौभीताजनदर्शनतस्तथा॥३६॥स्नात्वात्रस्तातदाकुंतीपितृवेश्मन्युवाससा ॥ मंजूषाव हमानाचप्राप्ताह्यधिरथेनवै ॥ ३७ ॥ राधासूतस्यभार्यावैतयाऽसौप्रार्थितःसुतः ॥ कर्णोऽभूद्बलवान्वीरः पालितःसूतसद्मनि ॥ ३८ ॥

तामाधत्सेधारयसिनैतादृशीचिंताऽस्तीत्यर्थः॥ततोमंजूषायांस्थापितंपुत्रंनद्यांत्यक्तुमिच्छंतीकुंतीप्राहेत्यर्थः॥३२॥३३॥सर्वेश्वरीभगवतीस्मृत्वाऽऽशिषोददाति पातुत्वामिति॥ अधुनात्वांत्य क्त्वातवमुखपंकजंकदाद्रक्ष्येइत्यन्वयः॥३४॥सुतप्रियेतिसंबोधनद्वयम् ॥ ३५ ॥ धात्रीहस्तेइति॥गंगायांत्यक्तुंददौ ॥३६॥३७॥ अधिरथस्यसूतस्यभार्याराधातयासुतःप्रार्थितःपुत्रत्वेनस्वी कृतइत्यर्थः ॥ ३८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ अंशजःस्ववीर्यजः॥पुत्रिकापुत्रःकन्यापुत्रः अस्यांजायमानःपुत्रोममेतिसंकेतितः॥क्षेत्रजः यस्तल्पजःप्रमीतस्य क्लीबस्यव्याधितस्यवा॥स्वधर्मेणनियुक्तायांसपुत्रःक्षेत्रजःस्मृतइतिमनुः॥गोलकइत्येकः॥स्वक्षेत्रेस्वस्त्रियांमृतेभर्तरिजायमानोगोलकः ॥ अमृतेजारजःकुंडः ॥ सहोढजस्तुगर्भेस्थितोगर्भिण्यां

कुंतीविवाहिताकन्यापांडुनासास्वयंवरे ॥ माद्रीचैवापराभार्यामद्रराजसुताशुभा ॥ ३९ ॥ मृगयारममाणस्तुवनेपांडुर्महाबलः ॥ जघानमृगबुद्ध्यातु रममाणंमुनिंवने ॥ ४० ॥ शप्तस्तेनतदापांडुर्मुनिनाकुपितेनच ॥ स्त्रीसंगंयदिकर्तासितदातेमरणंध्रुवम् ॥ ४१ ॥ इतिशप्तस्तुमुनिनापांडुःशोकसम न्वितः ॥ त्यक्त्वाराज्यंवनेवासंचकारभृशदुःखितः ॥ ४२ ॥ कुंतीमाद्रीचभार्येद्वेजग्मतुःसहसंगते ॥ सेवनार्थंसतीधर्मंसंश्रितेमुनिसत्तमाः ॥ ४३ ॥ गं गातीरेस्थितःपांडुर्मुनीनामाश्रमेषुच ॥ शृण्वानोधर्मशास्त्राणिचकारदुश्चरंतपः ॥ ४४ ॥ कथायांवर्तमानायांकदाचिद्धर्मसंश्रितम् ॥ अशृणोद्वचनंरा जासुपृष्टंमुनिभाषितम् ॥ ४५ ॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तिस्वर्गेगंतुंपरंतप ॥ येनकेनाप्युपायेनपुत्रस्यजननंचरेत् ॥ ४६ ॥ अंशजःपुत्रिकापुत्रःक्षेत्रजोगोल कस्तथा ॥ कुंडःसहोढःकानीनःक्रीतःप्राप्तस्तथावने ॥ ४७ ॥ ॥ दत्तःकेनापिचाशक्तौधनग्राहिसुताःस्मृताः ॥ उत्तरोत्तरतःपुत्रानिकृष्टाइतिनिश्चयः ॥ ४८ ॥ इत्याकर्ण्यतदाप्राहकुंतींकमललोचनाम् ॥ सुतमुत्पादयाशुत्वंमुनिंगत्वातपोन्वितम् ॥ ४९ ॥ ममाऽऽज्ञयानदोषस्तेपुराराज्ञामहात्मना ॥ वसिष्ठाज्जनितःपुत्रःसौदासेनेतिमेश्रुतम् ॥५०॥ तंकुंतीवचनंप्राहममममंत्रोऽस्तिकामदः ॥ दत्तोदुर्वाससापूर्वंसिद्धिदःसर्वथाप्रभो ॥५१॥ निमंत्रयेऽहंयंदेवंमं त्रेणानेनपार्थिव ॥ आगच्छेत्सर्वथासोवैममपार्श्वेनियंत्रितः ॥५२॥ भर्तुर्वाक्येनसातत्रस्मृत्वाधर्मसुरोत्तमम् ॥ संगम्यसुषुवेपुत्रंप्रथमंचयुधिष्ठिरम् ॥५३॥ वायोर्वृकोदरंपुत्रंजिष्णुंचैवशतक्रतोः ॥ वर्षेवर्षेत्रयःपुत्राःकुंत्याजातामहाबलाः ॥ ५४ ॥ माद्रीप्राहपतिंपांडुंपुत्रंमेकुरुसत्तम ॥ किंकरोमिमहाराजदुः खंनाशयमेप्रभो ॥५५॥ प्रार्थितापतिनाकुंतीददौमंत्रंदयान्विता ॥ एकपुत्रप्रबंधेनमाद्रीपतिमतेस्थिता ॥५६॥ स्मृत्वातदाश्विनौदेवौमद्रराजसुतासुतौ॥ नकुलःसहदेवश्चसुषुवेवरवर्णिनी ॥५७॥ एवंतेपांडवाःपंचक्षेत्रोत्पन्नाःसुरात्मजाः॥वर्षवर्षांतरेजातावनेतास्मिन्द्विजोत्तमाः॥५८॥एकस्मिन्समयेपांडुर्माद्रींदृ ष्ट्वाऽथनिर्जने॥आश्रमेचातिकामार्तोजग्राहाऽऽगतवैशसः ॥५९॥ मामामामेतिबहुधानिषिद्धोऽपितयाभृशं ॥ आलिलिंगप्रियांदैवात्पपातधरणीतले॥६०॥

परिणीतायांयःपरिणीतःसवोढुःपुत्रः॥कानीनःपितृवेश्मनिकन्यातुयंपुत्रंजनयेद्रहः॥तंकानीनंवदेन्नाम्नेति॥क्रीतोमौल्येनगृहीतः॥ वनेप्राप्तश्च ॥ ४७ ॥ अशक्तौपुत्रपालनासामर्थ्येकेनापिद त्तः॥एतेधनग्राहिसुताभवंति॥४८॥४९॥५०॥५१॥सोवैइत्यत्रसंधिरार्षः॥५२॥संगम्यामिथुनीभूय॥५३॥५४॥पुत्रंमेइति॥देहीतिशेषः ॥ कुरुसत्तमेतिसंबोधनम् ॥ यद्वापुत्रंमेकुरु हेसत्तमे तिसंबोधनम्॥५५॥एकपुत्रप्रबंधेनएकपुत्रोद्देशेन ॥ ५६ ॥ तदनंतरंमाद्रीअश्विनीकुमारौस्मृत्वामद्रराजसुतासानकुलःसहदेवश्चेत्येतौसुतौसुषुवेइतिसंबंधः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ आगतवैशसः प्राप्तमरणः ॥ ५९ ॥ ६० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥६६॥पांडोःशापंसमाज्ञायकस्येमेपुत्राइतिसर्वेपप्रच्छुः॥६७॥६८॥तैःसुरैर्नोऽस्माकंदेवानांसुताइतिकथितम् ॥६९॥वधूंकुंतींच ॥ अर्थतोयथायोग्यं धनादिभिः॥७०॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेषष्ठोध्यायः॥६॥७॥अष्टषष्टिश्लोकवर्यैःपांडवानांकथानकम्॥मृतानांदर्शनंदेवीप्रसादादिहकथ्यते ॥१॥पंचानामिति॥१॥जिष्णुनार्जु

यथावृक्षगतावल्लीछिन्नेपततिवैद्रुमे ॥ तथासापतिताबालाकुर्वतीरोदनंबहु ॥ ६१ ॥ प्रत्यागतातदाकुंतीरुदतीबालकास्तथा ॥ मुनयश्चमहाभागाःश्रुत्वाकोलाहलंतदा ॥ ६२ ॥ मृतःपांडुस्तदासर्वेमुनयः संशितव्रताः ॥ सहाग्निभिर्विधिंकृत्वागंगातीरेतदादहन् ॥ ६३ ॥ चक्रेसहैवगमनंमाद्रीदत्त्वासुतौशिशू ॥ कुंत्यैधर्मपुरस्कृत्यसतीनांसत्यकामतः ॥ ६४ ॥ जलदानादिकंकृत्वामुनयस्तत्रवासिनः ॥ पंचपुत्रयुतांकुंतीमनयन्हस्तिनापुरम् ॥ ६५ ॥ तांप्राप्तांचसमाज्ञायगांगेयोविदुरस्तथा ॥ नागराधृतराष्ट्रस्यसर्वेतत्रसमाययुः ॥ ६६ ॥ पप्रच्छुश्चजनाःसर्वेकस्यपुत्रावरानने ॥ पांडोःशापंसमाज्ञायकुंतीदुःखान्वितातदा ॥ ६७ ॥ तानुवाचसुराणांवैपुत्राःकुरुकुलोद्भवाः॥विश्वासार्थंसमाहूताःकुंत्यासर्वेसुरास्तदा ॥ ६८ ॥ आगत्यखेतदातैस्तुकथितंनःसुताःकिल ॥ भीष्मेणसत्कृतंवाक्यंदेवानांसत्कृताःसुताः ॥ ६९ ॥ गतानागपुरंसर्वेतानादायसुतान्वधूम् ॥ भीष्मादयःप्रीतचित्ताःपालयामासुरर्थतः ॥ ७० ॥ एवंपार्थाःसमुत्पन्नागांगेयेनाथपालिताः ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ पंचानांद्रौपदीभार्यासामान्यासापतिव्रता ॥ पंचपुत्रास्तुतस्याःस्युर्भर्तृभ्योऽतीवसुंदराः ॥ १ ॥ अर्जुनस्यतथाभार्याकृष्णस्यभगिनीशुभा ॥ सुभद्रायाहृतापूर्वंजिष्णुनाहरिसंमते ॥ २ ॥ तस्यांजातोमहावीरोनिहतोऽसौरणाजिरे ॥ अभिमन्युर्हतास्तत्रद्रौपद्याश्चसुताः किल ॥ ३ ॥ अभिमन्योर्वराभार्यावैराटीचातिसुंदरा ॥ कुलांतेसुषुवेपुत्रंमृतोवाणाग्निनाशिशुः ॥ ४ ॥ जीवितःसतुकृष्णेनभागिनेयसुतःस्वयम् ॥ द्रौणिवाणाग्निनिर्दग्धःप्रतापेनाद्भुतेनच ॥ ५ ॥ परिक्षीणेषुवंशेषुजातोयस्माद्वरःसुतः ॥ तस्मात्परिक्षितोनामविख्यातःपृथिवीतले ॥ ६ ॥ निहतेषुचपुत्रेषुधृतराष्ट्रोऽतिदुःखितः ॥ तस्थौपांडवराज्येचभीमवाग्बाणपीडितः ॥ ७ ॥ गांधारीचतथाऽतिष्ठत्पुत्रशोकातुराभृशम् ॥ सेवांतयोर्दिवारात्रंचकारार्तोयुधिष्ठिरः ॥ ८ ॥ विदुरोऽप्यतिधर्मात्माप्रज्ञानेत्रमवोधयत् ॥ युधिष्ठिरस्यानुमतेभ्रातृपार्श्वेव्यतिष्ठत ॥ ९ ॥ धर्मपुत्रोऽपिधर्मात्माचकारसेवनंपितुः ॥ पुत्रशोकोद्भवंदुःखंतस्याविस्मारयन्निव ॥ १० ॥ यथाशृणोतिवृद्धोऽसौतथाभीमोऽतिरोषितः ॥ वाग्बाणेनाहनत्तंतुश्रावयन्संस्थिताञ्जनान् ॥ ११ ॥

नेनहरिसंमतेसति॥कृष्णानुमतेनेत्यर्थः॥२॥३॥वैराटीविराटकन्याउत्तराकुलांतेकुलक्षयेसति॥सपुत्रोगर्भएवाश्वत्थामबाणाग्निनामृतः ॥४॥पुनर्द्रौणिरश्वत्थामातस्यबाणाग्निनिर्दग्धोभागिनेयोभागिन्याअपत्यंभागिनेयोऽभिमन्युस्तस्य सुतोऽद्भुतप्रतापेनकृष्णेनजीवितइत्यन्वयः॥५॥तस्यपुत्रस्यजीवितस्यपरिक्षितनामाकिन्निमित्तंतत्राह परिक्षीणोष्विति॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १२ ॥ १३ ॥ धर्मात्माधर्मराजः ॥ १४ ॥ धर्मजंयमधर्माज्जातंयुधिष्ठिरम् ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ निर्वापकामिनेपुत्रपिंडप्रदानकामवते ॥ २० ॥ मारुतिर्भीमसेनः ॥ २१ ॥ अंधोऽप्येतादृशदुष्टोधृतराष्ट्रोऽपीत्यर्थः ॥ २२ ॥ दुरात्मनादुःशासनेन ॥ सभायामितिशेषः ॥ २३ ॥ २४ ॥ मागधंजरासंधंहत्वालब्धयशाअहंविराटस्यसूपकारोऽभूवमेतादृशःक्षयःकथंस्यात्त्वंज्येष्ठोदेविताद्यूतव्यसनीनचेदित्यर्थः ॥ २५ ॥ वासवात्मजोदेवेंद्रजः ॥ २६ ॥ २७ ॥ दृष्ट्वेति ॥ अर्जुनस्यमूर्ध्निकृतांवेणींलोचनेकज्जलंचदृष्ट्वादुःखितस्यममतदासुखं

मयापुत्राहताःसर्वेदुष्टस्यांधस्यतेरणे ॥ दुःशासनस्यरुधिरंपीतंहृद्यंतथाभृशम् ॥ १२ ॥ भुनक्तिपिंडमंधोऽयंमयादत्तंगतत्रपः ॥ ध्वांक्षवद्वाश्ववच्चापिवृथाजीवत्यसौजनः ॥ १३ ॥ एवंविधानिरूक्षाणिश्रावयत्यनुवासरम्॥आश्वासयतिधर्मात्मामूर्खोऽयमितिचब्रुवन् ॥ १४ ॥ अष्टादशैववर्षाणिस्थित्वातत्रैवदुःखितः ॥ धृतराष्ट्रोवनेयानंप्रार्थयामासधर्मजम् ॥ १५ ॥ अयाचतधर्मपुत्रंधृतराष्ट्रोमहीपतिः ॥ पुत्रेभ्योऽहंददाम्यद्यनिर्वापंविधिपूर्वकम् ॥ १६ ॥ वृकोदरेणसर्वेषांकृतमत्रौर्ध्वदेहिकं ॥ नकृतंममपुत्राणांपूर्ववैरमनुस्मरन् ॥ १७ ॥ ददासिचेद्धनंमह्यंकृत्वाचैवौर्ध्वदेहिकम् ॥ गमिष्येऽहंवनंतप्तुंतपःस्वर्गफलप्रदम् ॥ १८ ॥ एकांतेविदुरेणोक्तोराजाधर्मसुतःशुचिः ॥ धनंदातुंमनश्चक्रेधृतराष्ट्रायचार्थिने ॥ १९ ॥ समाहूयनिजान्सर्वानुवाचपृथिवीपतिः ॥ धनंदास्येमहाभागाःपित्रेनिर्वापकामिने ॥ २० ॥ तच्छ्रुत्वावचनंभ्रातुर्ज्येष्ठस्यामिततेजसः ॥ संग्रहेऽस्यमहाबाहुर्मारुतिःकुपितोब्रवीत् ॥ २१ ॥ धनंदेयंमहाभागदुर्योधनहितायकिम् ॥ अंधोऽपिसुखमाप्नोतिमूर्खत्वंकिमतःपरम् ॥ २२ ॥ तवदुर्मंत्रितेनाथदुःखंप्राप्तावनेवयम् ॥ द्रौपदीचमहाभागासमानीतादुरात्मना ॥ २३ ॥ विराटभवनेवासःप्रसादात्तवसुव्रत ॥ दासत्वंचकृतंसर्वैर्मत्स्यस्यामितविक्रमैः ॥ २४ ॥ देवितात्वंनचेज्ज्येष्ठःप्रभवेत्संक्षयःकथम् ॥ सूपकारोविराटस्यहत्वाऽभूवंतुमागधम् ॥ २५ ॥ बृहन्नलाकथंजिष्णुर्भवेद्बालस्यनर्तकः ॥ कृत्वावेषंमहाबाहुर्योषायावासवात्मजः ॥ २६ ॥ गांडीवशोभितौहस्तौकृतौकंकणशोभितौ ॥ मानुषंचवपुःप्राप्यकिंदुःखंस्यादतःपरम् ॥ २७ ॥ दृष्ट्वावेणींकृतांमूर्ध्निकज्जलंलोचनेतथा ॥ असिंगृहीत्वातरसाच्छेद्म्यहंनान्यथासुखम् ॥२८॥ अपृष्ट्वाचमहीपालंनिक्षिप्तोऽग्निर्मयागृहे ॥ दग्धुकामश्चपापात्मानिर्दग्धोसौपुरोजनः ॥ २९ ॥ कीचकानिहताःसर्वेत्वामपृष्ट्वाजनाधिप॥नतथानिहताःसर्वेसभार्याधृतराष्ट्रजाः ॥ ३० ॥मूर्खत्वंतवराजेंद्रगंधर्वेभ्यश्चमोचिताः ॥ दुर्योधनादयःकामंशत्रवोनिगडीकृताः ॥३१॥

स्याद्यद्यहंधृतराष्ट्रमसिंगृहीत्वातरसावेगेनमस्तकेछेद्मिछेत्स्यामिनान्यथेत्यर्थः ॥ २८ ॥ अपृष्ट्वाभीष्मादिभिरविचार्येत्यर्थः ॥ येनदुष्टेनमयागृहेमयासुरविद्यानिर्मितेलाक्षागृहेऽग्निर्निक्षिप्तः निर्दग्धोसौदुष्टात्माऽस्मद्दैवेनैवकेवलंनत्वस्माकंरक्षकःकाश्चिदासीदेतादृशंमहद्दुःखमस्माभिस्त्वत्प्रसादादेवलब्धामितिभावः ॥ २९ ॥ नतथेति ॥ अयंमनसिखेदोऽद्यापिवर्ततइत्यर्थः ॥३०॥ गंधर्वेणनिगडीकृतावद्धादुर्योधनादयःशत्रवस्त्वयामोचिताइदंतवमूर्खत्वमेव ॥ एतादृशेषुदयानैवविधेयेत्यर्थः ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३२ ॥ त्रिभिरर्जुननकुलसहदेवैः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ शूरसेनसुताकुंती ॥ ३६ ॥ ययुरिति ॥ तान्वनंप्रेषयित्वा ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ यदायाताहितापसाधृतराष्ट्रादियस्तदातेभ्य

दुर्योधनहितायाऽद्यधनंदातुंत्वामिच्छसि ॥ नाहंददेमहीपालसर्वथाप्रेरितस्त्वया ॥ ३२ ॥ इत्युक्त्वानिर्गतेभीमेत्रिभिःपरिवृतोनृपः ॥ ददौवित्तंसुबहुलं धृतराष्ट्रायधर्मजः ॥ ३३ ॥ कारयामासविधिवत्पुत्राणांचौर्ध्वदेहिकम् ॥ ददौदानानिविप्रेभ्योधृतराष्ट्रोंऽबिकासुतः ॥३४॥ कृत्वौर्ध्वदेहिकंसर्वंगांधारी सहितोनृपः ॥ प्रविवेशवनंतूर्णंकुंत्याचविदुरेणच ॥ ३५ ॥ संजयेनपरिज्ञातोनिर्गतोऽसौमहामतिः ॥ पुत्रैर्निवार्यमाणाऽपिशूरसेनसुतागता ॥ ३६ ॥ विलपन्भीमसेनोऽपितथाऽन्येचापिकौरवाः ॥ गंगातीरात्परावृत्त्यययुःसर्वेगजाह्वयम् ॥ ३७ ॥ तेगत्वाजाह्नवीतीरेशतयूपाश्रमंशुभम् ॥ कृत्वा तृणैःकुटींतत्रतपस्तेपुःसमाहिताः ॥ ३८ ॥ गतान्यब्दानिषट्तेषांयदायाताहितापसाः ॥ युधिष्ठिरस्तुविरहादनुजानिदमब्रवीत् ॥ ३९ ॥ स्वप्नेद्द ष्टामयाकुंतीदुर्बलावनसंस्थिता ॥ मनोमेजायतेद्रष्टुंमातरंपितरौतथा ॥ ४० ॥ विदुरंचमहात्मानंसंजयंचमहामतिम् ॥ रोचतेयदिवःसर्वान्व्रजामइति मेमतिः ॥ ४१ ॥ ततस्तेभ्रातरःसर्वेसुभद्राद्रौपदीतथा ॥ वैराटीचमहाभागातथानागरिकोजनः ॥ ४२ ॥ प्राप्ताःसर्वजनैःसार्धंपांडवादर्शनोत्सुकाः ॥ शतयूपाश्रमंप्राप्यददृशुःसर्वएवते ॥ ४३ ॥ विदुरोनयदादृष्टोधर्मस्तंपृष्टवांस्तदा ॥ क्वास्तेसविदुरोधीमांस्तमुवाचांबिकासुतः ॥ ४४ ॥ विरक्तश्चरतेक्ष त्तानिरीहोनिष्परिग्रहः ॥ कुत्राप्येकांतसंवासीध्यायतेंऽतःसनातनम् ॥ ४५ ॥ गंगांगच्छन्द्वितीयेह्निवनेराजायुधिष्ठिरः ॥ ददर्शविदुरंक्षामंतपसासंशित व्रतम् ॥ ४६ ॥ दृष्ट्वोवाचमहीपालोवंदेऽहंत्वांयुधिष्ठिरः ॥ तस्थौश्रुत्वाचविदुरःस्थाणुभूतइवानघः ॥ ४७ ॥ क्षणेनविदुरस्यास्यान्निःसृतंतेजअद्भुतम् ॥ लीनंयुधिष्ठिरस्यास्येधर्मांशत्वात्परस्परम् ॥ ४८ ॥ क्षत्ताजहौतदाप्राणाञ्छुशोचाऽतियुधिष्ठिरः॥दाहार्थंतस्यदेहस्यकृतवानुद्यमंनृपः ॥ ४९ ॥ शृण्व तस्तुतदाराज्ञोवागुवाचाशरीरिणी ॥ विरक्तोऽयंनदाहार्होयथेष्टंगच्छभूपते ॥ ५० ॥ श्रुत्वातेभ्रातरःसर्वेसस्त्रुर्गंगाजलेऽमले ॥ गत्वानिवेदयामासुर्धृतराष्ट्रा यविस्तरात् ॥५१॥ स्थितास्तत्राऽऽश्रमेसर्वेपांडवानागरैःसह ॥ तत्रसत्यवतीसूनुर्नारदश्चसमागतः ॥५२॥ मुनयोऽन्येमहात्मानश्चाऽऽगताधर्मनंदनम् ॥ कुंतीप्राहतदाव्यासंसंस्थितंशुभदर्शनम् ॥ ५३ ॥ कृष्णकर्णस्तुपुत्रोमेजातमात्रस्तुवीक्षितः ॥ मनोमेतप्यतेसर्वंदर्शयस्वतपोधन ॥ ५४ ॥ समर्थो ऽसिमहाभागकुरुमेवांछितंप्रभो ॥ गांधार्युवाच ॥दुर्योधनरणेगच्छद्वीक्षितोनमयासुने ॥ ५५ ॥

इत्यर्थः ॥३९ ॥ मातरंकुंतीम् ॥ पितरौधृतराष्ट्रगांधार्यावि ति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अंबिकासुतोधृतराष्ट्रः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ तेजअद्भुतमित्यार्षम् ॥ धर्मां शत्वादुभयोर्यमधर्मजन्यत्वात् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ विरक्तोज्ञानीत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ हेकृष्ण कृष्णद्वैपायनेत्यर्थः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥५६॥५७॥सनातनींनित्यांदेवींसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणींभुवनेश्वरीमित्यर्थः ॥५८॥५९॥ पुरुषारामांपुरुषाश्रयांचैतन्याऽभिन्नामित्यर्थः ॥६०॥६१॥६२॥ साम्यावस्थांवर्णयति। इममिति॥इमंजीवलोकंजीवसमुदायंचित्तेहिरण्यगर्भात्मकेसमष्टौसमाधायसंस्थाप्यतदेकतांनीत्वेत्यर्थः ॥ तंलिंगकोशंचसमष्टिलिंगशरीरात्मकंहिरण्यगर्भंचेत्यर्थः ॥ तंहिरण्यगर्भंगुणैः पृथगभिन्नैःसत्त्वादिभिश्चसहितंसमाधौसाम्यावस्थात्मकेसुषुप्तिद्वारानीत्वास्थितात्वंकल्पकालंयावत्कल्पस्यपरिमाणंतावंतंकालंस्वतंत्रासतीनयासितस्मिन्समयेविवेकंगतोज्ञानवान्वेत्तातवको

तंदर्शयमुनिश्रेष्ठपुत्रंमेत्वंसहानुजम् ॥ सुभद्रोवाच ॥ अभिमन्युंमहावीरंप्राणादप्यधिकंप्रियम् ॥ ५६ ॥ द्रष्टुकामाऽस्मिसर्वज्ञदर्शयाद्यतपोधन ॥ सूत उवाच ॥ एवंविधानिवाक्यानिश्रुत्वासत्यवतीसुतः ॥ ५७ ॥ प्राणायामंततःकृत्वादध्यौदेवींसनातनीम् ॥ संध्याकालेऽथसंप्राप्तेगंगायांमुनिसत्तमः ॥ ॥ ५८ ॥ सर्वांस्तांश्चसमाहूययुधिष्ठिरपुरोगमान् ॥ तुष्टावविश्वजननींस्नात्वापुण्यसरिज्जले ॥ ५९ ॥ प्रकृतिंपुरुषारामांसगुणांनिर्गुणांतथा ॥ देवदेवींब्रह्मरूपांमणिद्वीपाधिवासिनीम् ॥ ६० ॥ यदानवेधानचविष्णुरीश्वरोनवासवोनैवजलाधिपस्तथा ॥ नवित्तपोनैवयमश्चपावकस्तदाऽसिदेवित्वमहंनमामिताम् ॥ ६१ ॥ जलंनवायुर्नधरानचांबरंगुणानतेषांचनचेंद्रियाण्यहम् ॥ मनोनबुद्धिर्नचतिग्मगुःशशीतदाऽसिदेवित्वमहंनमामिताम् ॥ ६२ ॥ इमंजीवलोकंसमाधायचित्तेगुणैर्लिंगकोशंचनीत्वासमाधौ ॥ स्थिताकल्पकालंनयस्याऽऽत्मतंत्रानकोप्यस्तिवेत्ताविवेकंगतोऽपि ॥ ६३ ॥ प्रार्थयत्येषमांलोकोमृतानांदर्शनंपुनः॥नाहंक्षमोऽस्मिमातस्त्वंदर्शयाऽऽशुजनान्मृतान् ॥ ६४ ॥ सूतउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीमायाश्रीभुवनेश्वरी ॥ स्वर्गादाहूयसर्वान्वैदर्शयामासपार्थिवान् ॥ ६५ ॥ दृष्ट्वाकुंतीचगांधारीसुभद्राचविराटजा ॥ पांडवामुमुदुःसर्वेवीक्ष्यप्रत्यागतान्स्वकान् ॥ ६६ ॥ पुनर्विसर्जितास्तेनव्यासेनामिततेजसा ॥ स्मृत्वादेवींमहामायामिंद्रजालमिवोद्यतम् ॥ ६७ ॥ तदापृष्ट्वाययुःसर्वेपांडवामुनयस्तथा ॥ राजानागपुरंप्राप्तःकुर्वन्व्यासकथांपथि ॥ ६८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ततोदिनेतृतीयेचधृतराष्ट्रःसभूपतिः ॥ दावाग्निनावनेदग्धःसभार्यःकुंतिसंयुतः ॥ १ ॥ संजयस्तीर्थयात्रायांगतस्त्यक्त्वामहीपतिम् ॥ श्रुत्वायुधिष्ठिरोराजानारदाद्दुःखमाप्तवान् ॥ २ ॥

ऽपिनास्त्येतादृशीत्वंसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीसर्वोत्तरेत्यर्थः॥यावान्प्रपंचस्यकालस्तावानेवप्रलयस्यापीतितुपुराणेप्रसिद्धम्॥६३॥६४॥६५ ॥ ६६ ॥६७॥ इंद्रजालमित्यनेनजगतोमिथ्यात्वप्रतिपादनान्मिथ्याभूतसंसारादेतादृशानामीश्वरानुगृहीतानामपीदृशीदशाजायतइतिविरक्तोभूत्वाभगवतीस्वरूपंमोक्षार्थंविचिंतयेदित्यवांतरतात्पर्यम् ॥ व्यासकथांव्यासंश्रीभुवनेश्वर्यनुग्रहकथाम्॥६८॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेसप्तमोऽध्यायः॥७॥पंचाशत्पद्यकैरेकेनोनैर्नष्टंहरेःकुलम् ॥ कीर्तयित्वोत्तरासूनोर्वृत्तंचपरिगीयते ॥ १ ॥ ततइति ॥ पांडवानांहस्तिनापुरागमनोत्तरम्॥१॥नारदाच्छ्रुत्वेत्यन्वयः॥२॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

षट्त्रिंशेथेति॥कौरवाणांक्षयादनंतरंषट्त्रिंशेवर्षेगतेसत्यथप्रभासेयादवाइत्यन्वयः॥३॥पश्यतोरामकृष्णयोरित्यनेनेश्वरयोरपिभावित्वस्यापरिहरकत्वमुक्तंभवति ॥४॥ एवंरामकृष्णयोरपिदु
र्दशांदर्शयति देहंतत्याजेति॥५॥श्रीभुवनेश्वरींचित्तेकृत्वेत्यन्वयः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ निष्क्रामयज्जनमिति ॥ वासुदेवेनस्वशक्त्यातत्पुरंसमुद्रमध्येनिर्मितंतस्मिन्नीश्वरेगतेसतीश्वरेणस्वश

षट्त्रिंशेऽथगतेवर्षेकौरवाणांक्षयात्पुनः ॥ प्रभासेयादवाः सर्वेविप्रशापात्क्षयंगताः ॥ ३ ॥ तेपीत्वामदिरांमत्ताःकृत्वायुद्धंपरस्परम् ॥ क्षयंप्राप्तामहात्मा
नःपश्यतोरामकृष्णयोः ॥ ४ ॥ देहंतत्याजरामस्तुकृष्णःकमललोचनः ॥ व्याधबाणहतःशापंपालयन्भगवान्हरिः ॥ ५ ॥ वसुदेवस्तुतच्छ्रुत्वादेह
त्यागंहरेरथ ॥ जहौप्राणाञ्छुचीन्कृत्वाचित्तेश्रीभुवनेश्वरीम् ॥ ६ ॥ अर्जुनस्तुततोगत्वाप्रभासेचातिदुःखितः ॥ संस्कारंतत्रसर्वेषांयथायोग्यंचकारह
॥ ७ ॥ समीक्ष्याथहरेर्देहंकृत्वाकाष्ठस्यसंचयम् ॥ अष्टाभिःसहपत्नीभिर्दाहयामासपार्थिवः ॥ ८ ॥ देहंरामस्यरेवत्यासहदग्ध्वाविभावसौ ॥ अर्जुनोद्वार
कामेत्यपुरान्निष्क्रामयज्जनम् ॥९॥ पुरीसावासुदेवस्यप्लावितोदधिनाततः ॥ अर्जुनःसर्वलोकान्वैगृहीत्वानिर्गतस्तदा ॥ १० ॥ कृष्णपत्न्यस्तदामार्गे
चौराभीरैश्चलुंठिताः ॥ धनंसर्वंगृहीतंचनिस्तेजाश्चार्जुनोऽभवत् ॥ ११ ॥ इंद्रप्रस्थेसमागम्यवज्रोराजाकृतस्तदा ॥ अनिरुद्धसुतोनाम्नापार्थेनामिततेज
सा ॥ १२ ॥ व्यासायकथितंदुःखंतेनोक्तोऽसौमहारथः ॥ पुनर्यदाहरिस्त्वंचभविताऽसिमहामते ॥ १३ ॥ तदातेजस्तवात्युग्रंभविष्यतिपुनर्युगे ॥ त
च्छ्रुत्वावचनंपार्थोगत्वानागपुरेऽर्जुनः ॥ १४ ॥ दुःखितोधर्मराजानंवृत्तांतंसर्वमब्रवीत् ॥ देहत्यागंहरेःश्रुत्वायादवानांक्षयंतथा ॥ १५ ॥ गमनायम
तिंचक्रेराजाहैमाचलंप्रति ॥ षट्त्रिंशद्वार्षिकंराज्येस्थापयित्वोत्तरासुतम् ॥ १६ ॥ निर्जगामवनंराजाद्रौपद्याभ्रातृभिःसह ॥ षट्त्रिंशच्चैववर्षाणिकृत्वा
राज्यंगजाह्वये ॥ १७ ॥ गत्वाहिमाचलेषट्तेजहुःप्राणान्पृथासुताः ॥ परीक्षिदपिराजर्षिःप्रजाःसर्वाःसुधार्मिकः ॥ १८ ॥ अपालयच्चराजेंद्रःषष्टिव
र्षाण्यतंद्रितः ॥ बभूवमृगयाशीलोजगामचवनंमहत् ॥१९॥ विद्धंमृगंविचिन्वानोमध्याह्नेभूपतिः स्वयम् ॥ तृषितश्चपरिश्रांतःक्षुधितश्चोत्तरासुतः॥२०॥
राजाघर्मेणसंतप्तोददर्शमुनिमंतिके ॥ ध्यानेस्थितंमुनिंराजाजलंपप्रच्छचाऽऽतुरः ॥ २१ ॥ नोवाचकिंचिन्मौनस्थश्चुकोपनृपतिस्तदा ॥ मृतंसर्पंतदाऽऽ
दायधनुष्कोट्याचतृषातुरः ॥ २२ ॥ कलिनाऽऽविष्टचित्तस्तुकंठेतस्यन्यवेशयत् ॥ आरोपितेतथासर्पेनोवाचमुनिसत्तमः ॥ २३ ॥

त्तयपकर्षान्निश्चयेनसमुद्रोनगरींप्लावयिष्यतीतिभयेननिष्क्रामयान्निष्कासितवानित्यर्थः॥९॥१०॥११॥इंद्रप्रस्थेइति॥अनिरुद्धसुतोवज्रनामायादवानांराजाकृतः ॥ १२ ॥ कथितं दुःखमि
ति॥ममहतीशक्तिःकगतेतिदुःखंकथितमित्यन्वयः ॥ १३ ॥ पुनर्युगेइति ॥ अधुनाशक्तिर्हरिणाऽपहृतासापुनर्हरेरवतारेजातेतवापिचावतारेजातेआयास्यतिनमध्ये ॥ १४ ॥ १५ ॥
उत्तरासुतंपरीक्षितम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ घर्मेणोष्णजन्यजलेन ॥ २१ ॥ तृषातुरस्तृषापीडितः ॥ २२ ॥ आरोपितेऽपीत्यर्थः ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





गविजातस्तन्नामकइत्यर्थः॥२४॥महाशाक्तइति॥पराशक्तेरुपासकइत्यर्थः॥तत्पुत्रंयस्यकंठेसर्पआरोपितस्तस्यपुत्रमित्यर्थः॥२५॥लंभितःस्थापितः ॥२६॥२७।२८॥२९॥ममद्वेषान्ममापरा धादित्यर्थः॥३०॥३१॥३२॥विज्ञोपायेनाभिज्ञकृतोपायेनदुर्लभाअप्यर्थाःसिध्यंतीत्यर्थः॥दुर्विदोऽचिंत्याइत्यर्थः ॥३३॥३४॥ भवितव्येनविश्वासःकार्योभवितव्यमाश्रित्यैवानिरुद्योगेनस्था तव्यमितिन॥किंतूद्योगोऽपिकर्तव्यइत्यर्थः॥३५॥अयंसर्पदष्टोऽनेनप्रत्यक्षंजीवितइतिप्रत्यक्षंदृष्टांतंप्रथमंपश्यंतुमयोच्यमानमालोचयंतु ॥ तंतथाविधंनिश्चित्यादिविपृथिव्यांवायःकोऽपिपुरुषो

नचचालसमाधिस्थोराजाऽपिस्वगृहंगतः ॥ तस्यपुत्रोऽतितेजस्वीगविजातोमहातपाः ॥ २४ ॥ महाशाक्तोऽथशुश्रावक्रीडमानोवनांतिके ॥ मित्राण्या हुश्चतत्पुत्रंपितुःकंठेतवाधुना ॥ २५ ॥ लंभितोऽस्तिमृतःसर्पःकेनापीतिमुनीश्वर ॥ तेषांतद्वचनंश्रुत्वाचुकोपातिशयंतदा ॥ २६ ॥ शशापनृपतिंक्रु द्धोगृहीत्वाऽऽशुकरेजलम् ॥ पितुःकंठेऽद्यमेयेनविनिक्षिप्तोमृतोरगः ॥ २७ ॥ तक्षकःसप्तरात्रेणतंदशेत्पापपूरुषम् ॥ मुनेःशिष्योऽथराजानंसमुपेत्यगृहे स्थितम् ॥ २८ ॥ शापंनिवेदयामाससमुनिपुत्रेणचार्पितम् ॥ अभिमन्युसुतःश्रुत्वाशापंदत्तंद्विजेनवै ॥ २९ ॥ अनिवार्यंचविज्ञायमंत्रिवृद्धानुवाचह ॥ शप्तोऽहंद्विजरूपेणममद्वेषादसंशयम् ॥ ३० ॥ किंविधेयंमयामात्याउपायाश्चिंत्यतामिह ॥ मृत्युःकिलानिवार्योसौवदंतिवेदवादिनः ॥ ३१ ॥ यत्नस्त थाऽपिशास्त्रोक्तःकर्तव्यःसर्वथाबुधैः ॥ उपायवादिनःकेचित्प्रवदंतिमनीषिणः ॥ ३२ ॥ विज्ञोपायेनसिध्यंतिकार्याणिनेतरस्यच ॥ मणिमंत्रौषधीनांवै प्रभावाःखलुदुर्विदः ॥ ३३ ॥ नभवेदितिकिंतैस्तुमणिमद्भिःसुसाधितैः ॥ सर्पदष्टापुराभार्यामुनेःसंजीविताभृता ॥ ३४ ॥ दत्त्वाऽर्धमायुषस्तेनमुनिनासा वराप्सरा ॥ भवितव्येनविश्वासःकर्तव्यःसर्वथाबुधैः ॥ ३५ ॥ प्रत्यक्षंतत्रदृष्टांतंपश्यंतुसचिवाःकिल ॥ दिविकोऽपिपृथिव्यांवादृश्यतेपुरुषःक्वचित् ॥ ॥ ३६ ॥ दैवेमतिंसमाधाययस्तिष्ठेत्तुनिरुद्यमः ॥ विरक्तस्तुयतिर्भूत्वाभिक्षार्थंयातिसर्वथा ॥ ३७ ॥ गृहस्थानांगृहेकाममाहूतोवाऽथवाऽन्यथा ॥ यद्द च्छयोपपन्नंचक्षिप्तंकेनापिवामुखे ॥ ३८ ॥ उद्यमेनविनाचास्यादुदरेसंविशेत्कथम् ॥ प्रयत्नश्चोद्यमेकार्योयदासिद्धिंनयातिचेत् ॥ ३९ ॥ तदादैवंस्थि तंचेतिचित्तमालंबयेद्बुधः ॥ मंत्रिणऊचुः ॥ कोमुनिर्येनदत्त्वाऽर्धमायुषोजीविताप्रिया ॥ ४० ॥

विद्यतेक्वचित्सआनेयइतिशेषः॥३६॥ननुदैवंप्रारब्धमेवमुख्यमितिकेचिद्वदंतितत्राहादैवेमतिमिति ॥ एतादृशोनिरुद्यमस्तुपुरुषोविरक्तोदैवेप्रारब्धेनिश्चयात्मिकांमतिंकृत्वायस्तिष्ठतिसयतिर्भू त्वाभिक्षार्थंगृहस्थानांगृहंयाति ॥ नतुगृहस्थाश्रमेतिष्ठति अतोममगृहस्थाश्रमिणोनतन्मतंयुक्तमितिभावः ॥३७॥ उद्योगस्तुतदाश्रमेप्यपेक्षितोऽन्यथाऽनिर्वाहादितितन्मतेऽपिदूषणमस्त्येवे त्याह।गृहस्थानामिति । आहूतोऽथवानाहूतोवायद्गच्छतिगृहस्थानांगृहंप्रतियातिःसउद्योगेनैवगच्छतिनतुकेवलदैवेनतथायद्दच्छयोपात्तंकेनापिमुखेनिक्षिप्तमन्नमुद्योगेनविनायत्नंविनाकथमुदरे संविशेत्नकथमपीत्यर्थः ॥ तस्माद्विरक्तोप्युद्योगप्रधानएवेतिभावः ॥ ३८ ॥ तदेवाऽऽह।उद्यमेनेति ॥ ३९ ॥ यदोद्यमेकृतेऽपिकार्यंनसिध्यतितदादैवंप्रबलमितिनिश्चयःकर्तव्योनतुततःपूर्व मित्याह । तदादैवंस्थितंचेति ॥ ४० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥४१॥सुंदरीति॥शर्यातेःसुकन्याशोभनाकन्याच्यवनस्यसुंदरीपत्नीआसीदित्यर्थः ॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥ प्रमद्वरामिति॥ तदर्थस्तुमहाभारते प्रमदाभ्योवरासातुसत्त्वरूपागुणा न्विता॥ततःप्रमद्वरेत्यस्यानामचक्रेमहानृषिरिति॥४८॥४९॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥ ॥ अर्धाधिकैकपंचाशत्पद्यैर्वृत्तंरुरोःपुरः॥कीर्तयित्वागुप्तगेहेराज्ञो

कथंमृतामहाराजतन्नोब्रूहिसविस्तरम् ॥ राजोवाच ॥ भृगोर्भार्यावरारोहापुलोमानामसुंदरी ॥ ४१ ॥ तस्यांतुच्यवनोनाममुनिर्जातोऽतिविश्रुतः ॥ च्यवनस्यचशर्यातेःसुकन्यानामसुंदरी ॥ ४२ ॥ तस्यांजज्ञेसुतःश्रीमान्प्रमतिर्नामविश्रुतः ॥ प्रमतेस्तुप्रियाभार्याप्रतापीनामविश्रुता ॥ ४३ ॥ रुरुर्नामसुतोजातस्तथापरमतापसः ॥ तस्मिंश्चसमयेकश्चित्स्थूलकेशश्चविश्रुतः ॥ ४४ ॥ बभूवतपसायुक्तोधर्मात्मासत्यसंमतः ॥ एतस्मिन्नंतरेमान्यामेनकाचवराप्सराः ॥ ४५ ॥ क्रीडांचक्रेनदीतीरेसर्वलोकातिसुंदरी ॥ गर्भंविश्वावसोःप्राप्यनिर्गतावरवर्णिनी ॥ ४६ ॥ स्थूलकेशाश्रमेगत्वाविससर्जवराप्सराः ॥ कन्यकांचनदीतीरेत्रिषुलोकेषुसुंदरीम् ॥ ४७ ॥ दृष्ट्वाऽनाथांतदाकन्यांजग्राहमुनिसत्तमः ॥ पुपोषस्थूलकेशस्तुनाम्नाचक्रेप्रमद्वराम् ॥ ४८ ॥ साकालेयौवनंप्राप्तासर्वलक्षणसंयुता ॥ रुरुर्दृष्ट्वाऽथतांबालांकामबाणार्दितोह्यभूत् ॥ ४९ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ छ ॥ परीक्षिदुवाच ॥ कामार्तःसमुनिर्गत्वारुरुःस्वमुनोनिजाश्रमे ॥ पितापप्रच्छदीनंतंकिंरुरोविमनाअसि ॥ १ ॥ सतमाहातिकामार्तःस्थूलकेशस्यचाऽऽश्रमे ॥ कन्याप्रमद्वरानामसामेभार्याभवेदिति ॥ २ ॥ सगत्वाप्रमतिस्तूर्णंस्थूलकेशं महामुनिम् ॥ प्रमुह्यसुमुखंकृत्वाययाचेतांवराननाम् ॥ ३ ॥ ददौवाचंस्थूलकेशःप्रदास्यामिशुभेऽहनि ॥ विवाहार्थंचसंभारंरचयामासतुर्वने ॥ ४ ॥ प्रमतिःस्थूलकेशश्चविवाहार्थंसमुद्यतौ ॥ बभूवतुर्महात्मानौसमीपस्थौतपोवने ॥ ५ ॥ तस्मिन्नवसरेकन्यारममाणागृहांगणे ॥ प्रसुप्तंपन्नगंपादेनास्पृशच्चारुलोचना ॥ ६ ॥ दष्टातुपन्नगेनाथसामारवरांगना ॥ कोलाहलस्तदाजातोमृतांदृष्ट्वाप्रमद्वराम् ॥ ७ ॥ मिलितामुनयःसर्वेचुक्रुशुःशोकसंयुताः ॥ भूमौतांपतितांदृष्ट्वापितातस्याऽतिदुःखितः ॥ ॥ ८ ॥ रुरोदविगतप्राणांदीप्यमानांसुतेजसा ॥ रुरुःश्रुत्वातदाक्रंदन्दर्शनार्थंसमागतः ॥ ९ ॥ ददर्शपतितांतत्रसजीवामिवकामिनीम् ॥ रुदंतंस्थूलकेशंचदृष्ट्वाऽन्यान्नृपिसत्तमान् ॥ १० ॥ रुरुःस्थानाद्बहिर्गत्वारुरोदविरहाकुलः ॥ अहोदैवेनसर्पोऽयंप्रेषितःपरमाद्भुतः ॥ ११ ॥ ममशर्मविघातायदुःखहेतुरयंकिल ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिमृतामेप्राणवल्लभा ॥ १२ ॥

वासस्तथोच्यते॥१॥कामार्तःकामपीडितःसन्॥विमनाःखिन्नः॥१॥२॥प्रमतिःपिता प्रमुह्यस्वभाषणेनमोहयित्वाऽतिसंकटेनसुमुखंप्रसन्नम् ॥३॥ शुभेऽहनिप्रदास्यामीतिवाचमित्यर्थः ॥ततोवाक्यनिश्चयोत्तरंसंभारंसामग्रीमुभावपिसंबंधिनौरचयामासतुः॥४॥समीपस्थौदूरदेशादागत्यसमीपदेशस्थौ॥५॥६॥७॥८॥९॥सजीवामिवेति॥मृताऽपितेजस्विनीत्यर्थः ॥१०॥११॥१२॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ सुखंतर्हीति ॥ अनयाविनेतिशेषः ॥ अतःप्रपतामीत्यर्थः ॥ वर्तमानसामीप्येलट् ॥ पतिष्यामीतितुफलितम् ॥१६ ॥ इत्थंप्रथमतोमरणनिश्चयंकृत्वापुनर्मनसाविचार्योपायंचिंतयामासेतिवक्ष्यमाणेनान्वयः ॥ १७ ॥ १८ ॥ दैवोविधिः॥ पुंलिंगमार्षम् ॥ १९ ॥ सर्वोलोकःशत्रुलोकः यदर्थंप्राणोदेयस्तस्याःस्त्रियाः परलोकेकउपकारःस्यादित्याह।उपकारइति

नवैजीवितुमिच्छामिवियुक्तःप्रिययाऽनया ॥ नालिंगितावरारोहानमयाचुंबितामुखे ॥ १३ ॥ नपाणिग्रहणंप्राप्तंमंदभाग्येनसर्वथा ॥ लाजाहोमस्तथा चाग्नौनकृतस्त्वनयासह ॥ १४ ॥ मानुष्यंधिगिदंकामंगच्छंत्वद्यममासवः ॥ दुःखितस्यनवामृत्युर्वांछितःसमुपैतिहि ॥ १५ ॥ सुखंतर्हिकथंदिव्यमाप्यतेभुविवांछितम् ॥ प्रपतामिह्नदेघोरेपावकेप्रपताम्यहम् ॥ १६ ॥ विषमद्मिगलेपाशंकृत्वाप्राणांस्त्यजाम्यहम् ॥ विलप्यैवंरुरुस्तत्रविचार्यमनसा पुनः ॥ १७ ॥ उपायंचिंतयामासस्थितस्तस्मिन्नदीतटे ॥ मरणात्किंफलंमेस्यादात्महत्यादुरत्यया ॥ १८॥ दुःखितश्चपितामेस्याज्जननीचातिदुःखिता ॥ दैवस्तुष्टोभवेत्कामंदृष्ट्वामांत्यक्तजीवितम् ॥ १९ ॥ सर्वःप्रमुदितश्चस्यान्मत्क्षयेनात्रसंशयः ॥ उपकारःप्रियायाःकःपरलोकेभवेदपि ॥ २० ॥ मृतेमय्यात्मघातेनविरहात्पीडितेऽपिच ॥ परलोकेप्रियासाऽपिनमेस्यादात्मघातिनः ॥ २१ ॥ एतदर्थंमृतेदोषामयिनैवाऽमृतेपुनः ॥ विमृश्यैवंरुरुस्तत्र स्नात्वाऽचम्यशुचिःस्थितः ॥ २२ ॥ अब्रवीद्वचनंकृत्वाजलंपाणावसौमुनिः ॥ यन्मयासुकृतंकिंचित्कृतंदेवाऽर्चनादिकम् ॥ २३ ॥ गुरवःपूजिताभक्त्याहुतंजप्तंतपःकृतम् ॥ अधीतास्त्वखिलावेदागायत्रीसंस्मृतायदि ॥ २४ ॥ रविराराधितस्तेनसंजीवतुममप्रिया ॥ यदिजीवेन्नमेकांतात्यजेप्राणानहंततः ॥ २५ ॥ इत्युक्त्वातज्जलंभूमौचिक्षेपाऽऽराध्यदेवताः ॥ राजोवाच ॥ एवंविलपतस्तस्यभार्ययादुःखितस्यच ॥ २६ ॥ देवदूतस्तदाऽभ्येत्यवाक्यमाहरुरुंततः ॥ देवदूतउवाच ॥ माकार्षीःसाहसंब्रह्मन्कथंजीवेन्मृताप्रिया ॥ २७ ॥ गतायुरेषासुश्रोणीगंधर्वाप्सरसोःसुता ॥ अन्यांकामयचार्वंगींमृतेयंचाविवाहिता ॥ २८ ॥ किंरोदिषिसुदुर्बुद्धेकाप्रीतिस्तेऽनयासह ॥ रुरुरुवाच ॥ देवदूतनचान्यांवैवरिष्याम्यहमंगनाम् ॥ २९ ॥ यदिजीवेन्नजीवेद्वामर्तव्यंचाऽधुनामया ॥ राजोवाच ॥ विदित्वेतिहठंतस्यदेवदूतोमुदान्वितः ॥ ३० ॥ उवाचवचनंतथ्यंसत्यंचाऽतिमनोहरम् ॥ उपायंशृणुविप्रेंद्रविहितंयत्सुरैःपुरा ॥ ३१ ॥ आयुषोऽर्धप्रदानेनजीवयाशुप्रमद्वराम् ॥ रुरुरुवाच ॥ आयुषोऽर्धंप्रयच्छामिकन्यायैनाऽत्रसंशयः ॥ ३२ ॥

॥ २० ॥ ननुतद्वासनयामरणेपरलोकेसाप्राप्स्यतितत्राह। मृतेमय्याऽऽत्मेति ॥ आत्मघातव्यतिरिक्तस्यतदर्थंकर्माचरितवतस्तद्वासनयातत्फलंभवति नात्मघातिनस्तस्यत्वेतदर्थमेतन्मृताप्रियाप्रयोजनायाऽधोगतेरेवश्रवणादित्यर्थः ॥ २१ ॥ तस्मान्मयिमृतेदोषाएवभवेयुर्नाऽमृते ॥ २२ ॥२३॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ देवदूतइति ॥ सर्वपुण्यकर्मणःशपथेकृतेसतिदेवेनेश्वरेणबोधनार्थंप्रेषितोदूतोऽयंदेवदूतइतिबोध्यम् ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

स्वर्गलोकात्समागतइत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ प्रेषयामासेति ॥ येनमुनिनाशापोदत्तस्तंमुनिंप्रतिसेवकस्यममप्रसादार्थंपुनःपुनः क्षमस्वेतिप्रार्थयितुंगौरमुखंमुनिंप्रेषयामासेत्यन्वयः ॥ ४३ ॥ ब्राह्मणानिति ॥ इतस्ततोयत्रकुत्रचिद्विद्यमानान्सिद्धमंत्रज्ञान् रक्षणार्थमानिनायेत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ वातोऽपीति ॥ विनिवा

अद्यप्रत्यावृतप्राणाप्रोत्तिष्ठतुममप्रिया ॥ विश्वावसुस्तदातत्रविमानेनसमागतः ॥ ३३ ॥ ज्ञात्वापुत्रींमृतांचाशुस्वर्गलोकात्प्रमद्वराम् ॥ ततोगंधर्वराजश्चदेवदूतश्चसत्तमः ॥ ३४ ॥ धर्मराजमुपेत्येदंवचनंप्रत्यभाषताम् ॥ धर्मराजरुरोःपत्नीसुताविश्वावसोस्तथा ॥ ३५ ॥ मृताप्रमद्वराकन्यादष्टासर्पेणचाऽधुना ॥ सारुरोरायुषोऽर्धेनमर्तुकामस्यसूर्यज ॥ ३६ ॥ समुत्तिष्ठतुतन्वंगीव्रतचर्याप्रभावतः ॥ धर्मउवाच ॥ विश्वावसुसुतांकन्यांदेवदूतयदीच्छसि ॥ ॥ ३७ ॥ उत्तिष्ठत्वायुषोऽर्धेनरुरुंगत्वात्वमर्पय ॥ राजोवाच ॥ एवमुक्तस्ततोगत्वाजीवयित्वाप्रमद्वराम् ॥ ३८ ॥ रुरोःसमर्पयामासदेवदूतस्त्वरान्वितः ॥ ततःशुभेऽह्निविधिनारुरुणाऽपिविवाहिता ॥ ३९ ॥ इत्थंचोपाययोगेनमृताप्युज्जीवितातदा ॥ उपायस्तुप्रकर्तव्यःसर्वथाशास्त्रसंमतः ॥ ४० ॥ मणिमंत्रौषधीभिश्चविधिवत्प्राणरक्षणे ॥ इत्युक्त्वासचिवान्राजाकल्पयित्वासुरक्षकान् ॥ ४१ ॥ कारयित्वाऽथप्रासादंसप्तभूमिकमुत्तमम् ॥ आरुरोहोत्तरासूनुःसचिवैःसहतत्क्षणम् ॥ ४२ ॥ मणिमंत्रधराःशूराःस्थापितास्तत्ररक्षणे ॥ प्रेषयामासभूपालोमुनिंगौरमुखंततः ॥ ४३ ॥ प्रसादार्थंसेवकस्यक्षमस्वेतिपुनःपुनः ॥ ब्राह्मणान्सिद्धमंत्रज्ञान्रक्षणार्थमितस्ततः ॥ ४४ ॥ मंत्रिपुत्रःस्थितस्तत्रस्थापयामासदंतिनः ॥ नकश्चिदारुहेत्तत्रप्रासादेचाऽतिरक्षिते ॥ ४५ ॥ वातोऽपिनचरेत्तत्रप्रवेशेविनिवार्यते ॥ भक्ष्यभोज्यादिकंराजातत्रस्थश्चचकारसः ॥ ४६ ॥ स्नानसंध्यादिकंकर्मतत्रैवविनिवर्त्यच ॥ राजाकार्याणिसर्वाणितत्रस्थश्चाऽकरोन्नृपः ॥ ४७ ॥ मंत्रिभिःसहसंमंत्र्यगणयन्दिवसानपि ॥ कश्चिच्चकश्यपोनामब्राह्मणोमंत्रिसत्तमः ॥ ४८ ॥ शुश्रावचतथाशापंप्राप्तंराज्ञामहात्मना ॥ सधनार्थीद्विजश्रेष्ठःकश्यपःसमचिंतयत् ॥ ४९ ॥ व्रजामितत्रयत्राऽऽस्तेशप्तोराजाद्विजेनह ॥ इतिकृत्वामतिंविप्रःस्वगृहान्निःसृतःपथि ॥ ५० ॥ कश्यपोमंत्रविद्विद्वान्धनार्थीमुनिसत्तमः ॥ ५१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ तस्मिन्नेवदिनेनाम्नातक्षकस्तंनृपोत्तमम् ॥ शप्तंज्ञात्वागृहात्तूर्णंनिःसृतःपुरुषोत्तमः ॥ १ ॥ वृद्धब्राह्मणवेषेणतक्षकःपथिनिर्गतः ॥ अपश्यत्कश्यपंमार्गेव्रजंतंनृपतिंप्रति ॥ २ ॥ तमपृच्छत्पन्नगोऽसौब्राह्मणंमंत्रवादिनम् ॥ क्वभवांस्त्वरितोयातिकिंचकार्यंचिकीर्षति ॥ ३ ॥ ॥ ॥

र्यतेसेवकैरन्यस्यप्रवेशेतत्रकावार्तेतिभावः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ इतिदेवीभागवततिलके द्वितीयस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ७ ॥ ॥ अष्टाधिकैःषष्टिपद्यैस्तक्षकद्विजयोःकथाम् ॥ समाप्यतक्षकेणाथोराजामृतइतीर्यते ॥ १ ॥ तस्मिन्नेवदिनेइति ॥ यस्मिन्दिनेकश्यपोगृहान्निर्गतस्तस्मिन्नेवेत्यर्थः॥ पुरुषोत्तमःपुरुषाकृतिः सन् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अपज्वरंशांतम् ॥४॥ जीवितव्येआयुष्येसति ॥ तदभावेब्रह्मणाऽपिजीवयितुमशक्यत्वादिति॥५॥अहंसइति ॥ यस्यविषंनाशयितुमिच्छसिसोऽहंतक्षकोऽस्मिराजानमधुनैवधक्ष्यामिभस्म सात्करिष्यामि ॥६॥ असंदेहंमृतशरीरम् ॥७॥८॥न्यग्रोधंवटम् ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ नगंवृक्षम् ॥१४॥ किमर्थमिति ॥ किंधनलोभार्थमित्थंप्रयासंकरोषि अथवा प्रति

कश्यपउवाच ॥ परिक्षितंनृपश्रेष्ठंतक्षकश्चप्रधक्ष्यति ॥ तत्राऽहंत्वरितोयामिनृपंकर्तुमपज्वरम् ॥ ४ ॥ मंत्रोऽस्तिममविप्रेंद्रविषनाशकरः किल ॥ जीवयिष्याम्यहंतंवैजीवितव्येऽधुनाकिल ॥ ५ ॥ तक्षकउवाच ॥ अहंसपन्नगोब्रह्मंस्तंधक्ष्यामिमहीपतिम् ॥ निवर्तस्वनशक्तस्त्वंमयादष्टंचिकित्सितुम् ॥ ॥ ६ ॥ कश्यपउवाच ॥ अहंदष्टंत्वयासर्पनृपंशप्तंद्विजेनवै ॥ जीवयिष्याम्यसंदेहंकामंमंत्रबलेनवै ॥ ७ ॥ तक्षकउवाच ॥ यदित्वंजीवितुंयासिमयादष्टंनृपोत्तमम् ॥ मंत्रशक्तिबलंविप्रदर्शयत्वंममाऽनघ ॥ ८ ॥ धक्ष्याम्येनंचन्यग्रोधंविषदंष्ट्राभिरद्यवै ॥ कश्यपउवाच ॥ जीवयिष्येत्वयादष्टंदग्धंवापन्नगोत्तम ॥ ९ ॥ सूतउवाच ॥ अदशत्पन्नगोवृक्षंभस्मसाच्चचकारतम् ॥ उवाचकश्यपंभूयोजीवयैनंद्विजोत्तम ॥ १० ॥ दष्ट्वाभस्मीकृतंवृक्षंपन्नगेनविषाऽग्निना ॥ सर्वंभस्मसमाहृत्यकश्यपोवाक्यमब्रवीत् ॥ ११ ॥ पश्यमंत्रबलंमेऽद्यन्यग्रोधंपन्नगोत्तम ॥ जीवयाम्यद्यवृक्षंवैपश्यतस्तेमहाविष ॥ १२ ॥ इत्युक्त्वाजलमादायकश्यपोमंत्रवित्तमः ॥ सिषेचभस्मराशिंतंमंत्रितेनैववारिणा ॥ १३ ॥ तद्वारिसेचनाज्जातोन्यग्रोधःपूर्ववच्छुभः ॥ विस्मयंतक्षकःप्राप्तो दृष्ट्वातंजीवितंनगम् ॥ १४ ॥ तमाहकश्यपंनागःकिमर्थंतेपरिश्रमः ॥ संपादयामितंकामंब्रूहिवाऽडववांछितम् ॥ १५ ॥ कश्यपउवाच ॥ वित्तार्थीनृपतिंमत्वाशप्तंपन्नगनिःसृतः ॥ गृहादहंचोपकर्तुंविद्ययानृपसत्तमम् ॥ १६ ॥ तक्षकउवाच ॥ वित्तंगृहाणविप्रेंद्रयावदिच्छसिपार्थिवात् ॥ ददामिस्वगृहंयाहिसकामोहंभवाम्यतः ॥ १७ ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यकश्यपःपरमार्थवित् ॥ चिंतयामासमनसाकिंकरोमिपुनःपुनः ॥ १८ ॥ धनंगृहीत्वास्वगृहंप्रयामियद्यहंपुनः ॥ भविष्यतिनमेकीर्तिर्लोकेलोभसमाश्रयात् ॥ १९ ॥ जीवितेऽथनृपश्रेष्ठकीर्तिःस्यादचलामम ॥ धनप्राप्तिश्चबहुधाभवेत्पुण्यंचजीवनात् ॥ २० ॥ रक्षणीयंयशःकामंधिग्धनंयशसाविना ॥ सर्वस्वंरघुणापूर्वंदत्तंविप्रायकीर्त्तये ॥ २१ ॥ हरिश्चंद्रेणकर्णेनकीर्त्यर्थंबहुविस्तरम् ॥ उपेक्षेयंकथंभूपंदह्यमानंविषाऽग्निना ॥ २२ ॥ जीवितेऽद्यमयाराज्ञिसुखंसर्वजनस्यच ॥ अराजकेप्रजानाशोभवितानाऽत्रसंशयः ॥ २३ ॥

र्थमित्यर्थः ॥ १५ ॥ हेपन्नगनृपतिंशप्तंमत्वाविद्ययासंजीविन्यानृपसत्तममुपकर्तुंवित्तार्थंचगृहादहंनिःसृतइत्यन्वयः॥ १६ ॥ सकामोऽहमिति ॥ अतस्तवगमनादहंसकामः पूर्णकामोभवामिभविष्यामीत्यर्थः ॥१७॥१८॥ राजानंनगत्वातक्षकान्मध्येएवधनग्रहणेधनंतुलब्धंपरंतुराजसंजीवनजन्यामहतीकीर्तिर्नस्यात् ॥१९॥ गमनेतुफलत्रयंभविष्यतीत्याह । जीवितेऽथेति॥२०॥ ॥ २१ ॥ उपेक्षेयंकथमुपेक्षांकुर्यामहम् ॥ २२ ॥ मयाधार्मिकेराज्ञिजीवितेसर्वजनसुखंस्यादित्यपिमहाफलम् ॥ अजीवितेतुदोषप्राप्तिश्चफलम् ॥ २३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अहोधनलोभेनदुष्टेनाऽनेनधार्मिकोराजानरक्षितःप्रजाश्चनाशिताइत्यपकीर्तिःस्यादित्यर्थः ॥ २४॥ इतिविचार्याऽधुनामयाकिंकर्तव्यमितिनिश्चेतुंयोगजज्ञानेनध्यानंकृतवांस्तस्मिंश्चध्यानेगता युषंनृपतिंज्ञातवान्॥२५॥२६॥२७॥२८॥ विप्रशापभयाकुलइति ॥ यदिराजामयानदृश्यतेतदाराजशापदाताब्राह्मणोमांशपेदितिभयाकुलइत्यर्थः॥योगेनकेनोपायेनेत्यर्थः ॥ २९॥३०॥ ॥ ३१ ॥३२॥३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ मृत्युंगतंनष्टमितिजानन् ॥ जीवनेमतिंबुद्धिमास्थायेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ भवेदिति इतिहेतोरित्यर्थः ॥ ३७ ॥ इतियद्येतस्यमनसिनोचेत्तर्हिमृत्युविधिमा

प्रजानाशस्यपापंमेभविष्यतिमृतेनृपे ॥ अपकीर्तिश्चलोकेषुधनलोभाद्भविष्यति ॥ २४ ॥ इतिसंचिंत्यमनसाध्यानंकृत्वासकश्यपः ॥ गतायुषंचनृप तिंज्ञातवान्बुद्धिमत्तरः ॥ २५ ॥ आपन्नमृत्युंराजानंज्ञात्वाध्यानेनकश्यपः ॥ गृहंययौसधर्मात्माधनमादायतक्षकात् ॥ २६ ॥ निवर्त्यकश्यपंसर्पःसप्त मेदिवसेनृपम् ॥ हंतुकामोजगामाऽऽशुनगरंनागसाह्वयम् ॥ २७॥ शुश्रावनगरस्यांतेप्रासादस्थंपरिक्षितम् ॥ मणिमंत्रौषधैःकामंरक्ष्यमाणमतंद्रितम् ॥ ॥ २८ ॥ चिंताविष्टस्तदानागोविप्रशापभयाकुलः ॥ चिंतयामासयोगेनप्रविशेयंगृहंकथम् ॥ २९ ॥ वंचयामिकथंचैनंराजानंपापकारिणम् ॥ विप्रशा पाद्धतंमूढंविप्रपीडाकरंशठम् ॥ ३० ॥ पांडवानांकुलेजातःकोऽपिनैतादृशोभवेत् ॥ तापसस्यगलेयेनमृतःसर्पोनिवेशितः ॥ ३१ ॥ कृत्वाविगर्हितंकर्म जानन्कालगतिंनृपः ॥ रक्षकान्भवनेकृत्वाप्रासादमभिगम्यच ॥ ३२ ॥ मृत्युंवंचयतेराजावर्ततेऽद्यनिराकुलः ॥ तंकथंधक्षयिष्यामिविप्रवाक्येनचोदि तः ॥ ३३ ॥ नजानातिचमंदात्मामरणेह्यनिवर्तनम् ॥ तेनासौरक्षकान्स्थाप्यसौधारूढोऽद्यमोदते ॥ ३४ ॥ यदिवैविहितोमृत्युर्दैवेनामिततेजसा ॥ सकथंप रिवर्तेतकृतैर्यत्नैस्तुकोटिभिः ॥३५॥ पांडवस्यचदायादोजानन्मृत्युंगतंनृपः ॥ जीवनेमतिमास्थायस्थितःस्थानेनिराकुलः ॥३६॥दानपुण्यादिकंराजाक र्तुमर्हतिसर्वथा ॥ धर्मेणहन्यतेव्याधिर्येनाऽऽयुःशाश्वतंभवेत् ॥ ३७ ॥ नोचेन्मृत्युविधिंकृत्वास्नानदानादिकाःक्रियाः ॥ मरणंस्वर्गलोकायनरकायाऽन्यथा भवेत्॥३८॥द्विजपीडाकृतंपापंपृथग्वाऽस्यचभूपतेः ॥ विप्रशापस्तथाघोरआसन्नेमरणेकिल ॥ ३९ ॥ नकोऽपिब्राह्मणःपार्श्वेयएवंप्रतिबोधयेत्॥विधसाविहि तोमृत्युरनिवार्यस्तुसर्वथा॥४०॥इतिसंचिंत्यसर्पोऽसौस्वान्नागान्निकटेस्थितान् ॥ कृत्वातापसवेषांस्तान्प्राहिणोत्सुभुजंगमान्॥४१॥ फलमूलादिकंगृह्यरा ज्ञेनागोऽथतक्षकः॥स्वयंचकीटरूपेणफलमध्येससारह॥४२॥निर्गतास्तेतदानागाःफलान्यादायसत्वराः ॥ तेराजभवनंप्राप्यस्थिताःप्रासादसन्निधौ॥४३॥

सन्नमृत्योर्योविधिस्तंकृत्वास्नानदानादिक्रियाःकृत्वास्वर्गलोकायस्वर्गलोकंगंतुंमरणंप्रतीक्षते॥अन्यथास्नानादिक्रियाऽभावेमरणंनरकायभवेदितिभयान्नचतथायंकरोतितस्मान्मृत्युंजितवानह मितिजानातीत्यर्थः॥३८॥द्विजपीडाकृतंपापमस्यजातंतथाविप्रशापोऽपिजातस्तावुभावप्यासन्नमरणेएवभवतोनान्यथातस्मादयमासन्नमरणइत्यर्थः ॥इदंस्वयंनजानात्येतादृशोमूढोऽयमिति भावः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ गृह्णेतिल्यबंतमार्षंसंगृह्णेत्यर्थः ॥ ससारगतवान् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ राज्ञःअसंदर्शनमितिच्छेदः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ किंकार्यमितिपृच्छध्वं प्रातरागमनंयुष्माकंभवत्वितिशेषः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥५६॥५७॥५८॥ ५९ ॥ नमेभयमिति ॥ सप्तमदिवसस्याऽस्तंगतेसवितरितक्षकस्याभावेनतक्षकविषजन्यमरणभयस्यगतत्वादितिभावः ॥६०॥अथब्राह्मणशापसार्थक्यायग्रीवायामेनंकीटं

रक्षकास्तापसान्दृष्ट्वापप्रच्छुस्तच्चिकीर्षितम् ॥ ऊचुस्तेभूपतिंद्रष्टुंप्राप्ताःस्मोऽद्यतपोवनात् ॥ ४४ ॥ अभिमन्युसुतंवीरंकुलार्कंचारुदर्शनम् ॥ परिवर्धयितुंप्राप्तामंत्रैराथर्वणैस्तथा ॥ ४५ ॥ निवेदयध्वंराजानंदर्शनार्थागतान्मुनीन् ॥ कृत्वाऽभिषेकान्यास्यामोदत्त्वामिष्टफलानिच ॥ ४६ ॥ भारतानांकुलेकाऽपिनदृष्टाद्वाररक्षकाः ॥ नश्रुतंतापसानांतुराज्ञोऽसंदर्शनंकिल ॥ ४७ ॥ आरोहामोवयंतत्रयत्रराजापरिक्षितः ॥ आशीर्भिर्वर्धयित्वैनंदत्ताज्ञाःप्रव्रजामहे ॥ ४८ ॥ सूतउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तेषांतापसानांतुरक्षकाः ॥ प्रत्यूचुस्तान्द्विजान्मत्वानिदेशंभूपतेर्यथा ॥ ४९ ॥ नाद्यवोदर्शनंविप्राराज्ञःस्यादितिनोमतिः ॥ श्वःसर्वतापसैरत्रत्वागंतव्यंनृपालये ॥ ५० ॥ अनारोहस्तुप्रासादोविप्राणांमुनिसत्तमाः ॥ विप्रशापभयाद्राज्ञाविहितोऽस्तिनसंशयः ॥ ॥ ५१ ॥ तदोचुस्तानथोविप्राःफलमूलजलानिच ॥ विप्राशिषश्चराज्ञेऽथग्राहयंतुसुरक्षकाः ॥ ५२ ॥ तेगत्वानृपतिंप्रोचुस्तापसानागताञ्जनाः ॥ राजोवाचाऽऽनयध्वंवैफलमूलादिकंचयत् ॥ ५३ ॥ पृच्छध्वंतापसान्कार्यंप्रातरागमनंपुनः ॥ प्रणामंकथयध्वंमेनाद्यसंदर्शनंमम ॥ ५४ ॥ तेगत्वाऽथसमादायफलमूलादिकंचयत् ॥ राज्ञेसमर्पयामासुर्बहुमानपुरःसरम् ॥ ५५ ॥ गतेषुतेषुनागेषुविप्रवेषाऽऽवृतेषुच ॥ फलान्यादायराजाऽसौसचिवानिदमब्रवीत् ॥ ५६ ॥ सुहृदोभक्षयंत्वद्यफलान्येतानिसर्वशः ॥ अद्यहंचैकमेतद्वैफलंविप्रार्पितंमहत् ॥ ५७ ॥ इत्युक्त्वातत्फलंदत्वासुहृद्भ्यश्चोत्तरासुतः॥करेकृत्वाफलंपक्वंददारनृपतिःस्वयम् ॥ ५८ ॥ विदारितंफलंराज्ञातत्रकृमिरभूदणुः ॥ सकृष्णनयनस्ताम्रोदृष्टोभूपतिनास्वयम् ॥ ५९ ॥ तंदृष्ट्वानृपतिःप्राहसचिवान्विस्मितानथ ॥ अस्तमभ्येतिसवितावाविषादद्यनमेभयम् ॥ ६० ॥ अंगीकरोमितंशापंकृमिकोमांदशत्वयम् ॥ एवमुक्त्वासराजेंद्रोग्रीवायांसंन्यवेशयत् ॥ ६१ ॥ अस्तंयातेदिवानाथेधृतःकंठेऽथकीटकः ॥ तक्षकस्तुतदाजातःकालरूपोभयानकः ॥६२॥ राजासंवेष्टितस्तेनदष्टश्चापिमहीपतिः ॥ मंत्रिणोविस्मयंप्राप्तारुरुदुर्भृशदुःखिताः ॥६३॥ घोररूपमहिंवीक्ष्यदुद्रुवुस्तेभयार्दिताः ॥ चुक्रुशूरक्षकाःसर्वेहाहाकारोमहानभूत् ॥ ६४ ॥ वेष्टितोभोगिभोगेनविनष्टबहुपौरुषः ॥ नोवाचनृपतिःकिंचिन्नचचालोत्तरासुतः ॥ ६५ ॥

स्थापयामिसचमांदशतुतेनदष्टेसतितक्षकसदृशकीटदंशनेनापियथाकथंचिद्ब्राह्मणवाक्यस्यार्थक्यंभविष्यतीत्यभिप्रायेणाह अंगीकरोमीति॥ब्राह्मणवाक्यनैरर्थक्याऽभावायेत्यर्थः॥६१॥ अस्तंयातेइति॥अस्तगमनसमयेएवेतिभावः॥तथाचदिवैवमरणेनब्राह्मणशापोयथार्थोजातइतिबोध्यम्॥अंगीकरोमीत्यनेनराज्ञउन्मादश्चध्वनितः ॥६२॥६३॥६४॥नचचालधैर्यादितिशेषः॥६५॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥६६॥६७॥६८॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥१०॥ सार्धपंचाधिकैःषष्टिपद्यैश्चजनमेजयः ॥ सर्पसत्रेकृतोद्योगआस्तीकेनानिवारितः ॥१॥ गतप्राणमिति॥१॥ प्रथमंदुर्मरणेनमृतस्यामंत्रकंदाहमाह गंगातीरेइति॥ पश्चात्पालाशविधिनाअगुरुचंदनकाष्ठयुक्तायांचितायामध्यरोपयन्स्थापितवंतइत्यर्थः॥२॥तत्रपालाशविधौहेतुमाह दुर्मरेणेति॥मरणंमरोदुर्मरोदुर्मृतिस्तेनमृतस्यौर्ध्वदेहिकाःक्रियाःसमंत्रकाश्चक्रुरित्यर्थः ॥ ३॥४॥५॥६॥ ७ ॥ ददौविद्यांगायत्रींक्षत्रियजातेस्तस्मिन्कालेव्रतबंधस्यसत्त्वात् ॥ ८ ॥ ९ ॥ तथावेदेस्वशाखायाम्।

उत्थिताऽग्निशिखाघोराविषजातक्षकाननात् ॥ प्रजज्वालनृपंत्वाऽऽशुगतप्राणंचकारह ॥ ६६ ॥ हत्वाऽऽशुजीवितंराज्ञस्तक्षकोगगनेगतः ॥ जगद्दग्धंतु कुर्वाणंददृशुस्तंजनाइह ॥ ६७ ॥ सपपातगतप्राणोराजादग्धइवद्रुमः ॥ चुक्रुशुश्चजनाःसर्वेमृतंदृष्ट्वानराधिपम् ॥ ६८ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेपरिक्षिन्मरणंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ छ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ गतप्राणंतुराजानंबालंपुत्रंसमीक्ष्यच ॥ चक्रुश्चमंत्रिणःसर्वे परलोकस्यसत्क्रियाः ॥ १ ॥ गंगातीरेदग्धदेहंभस्मप्रायंमहीपतिम् ॥ अगुरुभिश्चाभियुक्तायांचितायामध्यरोपयन् ॥ २ ॥ दुर्मरेणमृतस्यास्यचक्रुश्चैवौर्ध्वदेहिकीम् ॥ क्रियांपुरोहितास्तस्यवेदमंत्रैर्विधानतः ॥ ३ ॥ ददुर्दानानिविप्रेभ्योगाःसुवर्णयथोचितम् ॥ अन्नंबहुविधंतत्रवस्त्राणिविविधानिच ॥ ॥ ४ ॥ सुमुहूर्तेसुतंबालंप्रजानांप्रीतिवर्धनम् ॥ सिंहासनेशुभेतत्रमंत्रिणःसंन्यवेशयन् ॥ ५ ॥ पौरजानपदालोकाश्चक्रुस्तंनृपतिंशिशुम् ॥ जनमेजयनामानंराजलक्षणसंयुतम् ॥ ६ ॥ धात्रेयीशिक्षयामासराजचिह्नानिसर्वशः ॥ दिनेदिनेवर्धमानःसबभूवमहामतिः ॥ ७ ॥ प्राप्तेचैकादशेवर्षेतस्मैकुलपुरोहितः ॥ यथोचितांददौविद्यांजग्राहसयथोचिताम् ॥ ८ ॥ धनुर्वेदंकृपःपूर्णददावस्मैसुसंस्कृतम् ॥ अर्जुनाययथाद्रोणःकर्णायभार्गवोयथा ॥ ९ ॥ संप्राप्तविद्योबलवान्बभूवदुरतिक्रमः ॥ धनुर्वेदेतथावेदेपारगःपरमार्थवित् ॥ १० ॥ धर्मशास्त्रार्थकुशलःसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ चकारराज्यंधर्मात्मा पुराधर्मसुतोयथा ॥ ११ ॥ ततःसुवर्णवर्माक्षोराजाकाशिपतिःकिल ॥ वपुष्टमांशुभांकन्यांददौपारिक्षितायच ॥ १२ ॥ सतांप्राप्याऽसितापांगींमुमुदे जनमेजयः ॥ काशिराजसुतांकांतांप्राप्यराजायथापुरा ॥ १३ ॥ विचित्रवीर्योमुमुदेसुभद्रांचयथाऽर्जुनः ॥ विजहारमहीपालोवनेषूपवनेषुच ॥ १४ ॥ तयाकमलपत्राक्ष्याशच्याशतक्रतुर्यथा ॥ प्रजास्तस्यसुसंतुष्टाबभूवुःसुखलालिताः ॥ १५ ॥ मंत्रिणःकर्मकुशलाश्चक्रुःकार्याणिसर्वशः ॥ एतस्मिन्नेव कालेतुमुनिरुत्तंकनामकः ॥ १६ ॥ तक्षकेणपरिक्लिष्टोहस्तिनापुरमभ्यगात् ॥ वैरस्याऽपचितिंकोस्यप्रकुर्यादितिचिंतयन् ॥ १७ ॥

॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ तक्षकेणपारीक्लिष्टइति ॥ वैरस्यतक्षकेणकृतस्याऽपचितिंप्रतिक्रियामुत्तंकस्यगुरोःपत्न्याराजपत्नीकुंडलाऽऽनयनार्थमुत्तंकेप्रेषितेसचोत्तंकोराजपत्नींप्रार्थयित्वातयादत्तेकुंडलेसंगृह्यमार्गमध्येकचित्सरसिकुंडलेतीरेस्थापयित्वास्नानार्थमुत्ततार तस्मिन्नेवसमयेतक्षकोप्यागत्यकुंडलेऽपहृतवाननंतरंमहतायासेनतेकुंडलेउत्तंकेनलब्धेतद्दिनात्तक्षकेणसहोत्तंकस्यवैरमासीदितिकथामहाभारतेप्रसिद्धा ॥ १७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





परिक्षितसुतोजनमेजयःकुर्यादितिमत्वातंनृपंसमुपागतःसन्बभाषेइतिशेषः ॥१८॥१९॥ अतंत्रज्ञमशास्त्रज्ञंनहिशास्त्रज्ञःसन्पितृशत्रोःक्षयंनकुर्यादित्यर्थः॥किंवैरमिति ॥ यद्भवतावैरमुच्यते तत्किमितिवद नतन्मयाज्ञातमस्तीत्यर्थः॥नकिंप्रतिकृतमिति॥वैरंज्ञात्वामयानतत्प्रतिकृतमितिनैवास्तीत्यर्थः।तथास्तिचेत्तदपिवदेत्यर्थः ॥२०॥करोमिकरिष्यामि॥वर्तमानसामीप्येलट्॥२१॥ ॥२२॥२३॥ शापेनमृतस्यदोषस्तक्षकेणैवसंभवतीत्यर्थः॥२४॥ब्राह्मणशापात्तक्षकेणदंशःकर्तव्यः॥संजीवयिताकश्यपोब्राह्मणोधनंदत्त्वाकिमितिनिवारितः॥नचतदभावेतस्यकाचित्क्षतिर

परिक्षितसुतंमत्वातंनृपंसमुपागतः ॥ कार्याऽकार्यंनजानासिसमयेनृपसत्तम ॥ १८ ॥ अकर्तव्यंकरोष्यद्यकर्तव्यंनकरोषिवै ॥ किंत्वांसंप्रार्थयाम्यद्यगतामर्षंनिरुद्यमम् ॥ १९ ॥ अवैरज्ञमतंत्रज्ञंबालचेष्टासमन्वितम् ॥ जनमेजयउवाच ॥ किंवैरंनमयाज्ञातंनकिंप्रतिकृतंमया ॥ २० ॥ तद्वदत्वंमहाभागकरोमियदनंतरम् ॥ उत्तंकउवाच ॥ पितातेनिहतोभूपतक्षकेणदुरात्मना ॥ २१ ॥ मंत्रिणस्त्वंसमाहूयपृच्छस्वपितृनाशनम् ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजापप्रच्छमंत्रिसत्तमान् ॥ २२ ॥ ऊचुस्तेद्विजशापेनदष्टःसर्पेणवैमृतः ॥ जनमेजयउवाच ॥ शापोऽत्रकारणंराज्ञःशप्तस्यमुनिनाकिल ॥२३॥ तक्षकस्यतुकोदोषोब्रूहिमेमुनिसत्तम ॥ उत्तंकउवाच ॥ तक्षकेणधनंदत्त्वाकश्यपःसन्निवारितः ॥ २४ ॥ नसकिंतक्षकोवैरीपितृहातवभूपते ॥ भार्यारुरोःपुराभूपदष्टासर्पेणसामृता ॥ २५ ॥ अविवाहितातुमुनिनाजीविताचपुनःप्रिया ॥ रुरुणाऽपिकृतातत्रप्रतिज्ञाचातिदारुणा ॥ २६ ॥ यंयंसर्पंप्रपश्यामितंतंहन्म्यायुधेनवै ॥ एवंकृत्वाप्रतिज्ञांसशस्त्रपाणीरुरुस्तदा ॥ २७॥ व्यचरत्पृथिवींराजन्निघ्नन्सर्पान्यतस्ततः ॥ एकदासवनेघोरंडुंडुभंजरसान्वितम्॥ ॥ २८ ॥ अपश्यद्दंडमुद्यम्यहंतुंतंसमुपाययौ ॥ अभ्यहन्रुषितोविप्रस्तमुवाचाथडुंडुभः ॥२९॥ नाऽपराध्नोमितेविप्रकस्मान्मामभिहंसिवै ॥ रुरुरुवाच॥ प्राणप्रियामेदयितादष्टासर्पेणसामृता ॥ ३० ॥ प्रतिज्ञेयंतदासर्पदुःखितेनमयाकृता ॥ डुंडुभउवाच ॥ नाहंदशामितेऽन्येवैयेदशंतिभुजंगमाः ॥३१॥ शरीरसमयोगेननमांहिंसितुमर्हसि॥उत्तंकउवाच॥श्रुत्वातांमानुषींवाणींसर्पेणोक्तांमनोहराम् ॥३२॥ रुरुःपप्रच्छकोऽसित्वंकस्माडुंडुभतांगतः॥सर्पउवाच ॥ ब्राह्मणोऽहंपुराविप्रसखामेखगमाऽभिधः॥३३॥विप्रोधर्मभृतांश्रेष्ठःसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ समयावंचितोमौर्ख्यात्सर्पंकृत्वाचतार्णकम् ॥३४॥ भयंचप्रापितोऽत्यर्थमग्निहोत्रगृहेस्थितः॥तेनभीतेनशप्तोऽहंविह्वलेनाऽतिवेपिना॥३५॥भवसर्पोमंदबुद्धेयेनाहंधर्षितस्त्वया॥मयाप्रसादितोऽत्यर्थंसर्पेणाऽसौद्विजोत्तमः॥३६

भूत्तस्मात्सएवतस्यापराधइत्यर्थः ॥ इत्थमपराधेसतक्षकोवैरीतवपितृहानकिमितिवदेत्याह नसकिमिति ॥ नन्वेतादृशापराधिनःशिक्षाकेनकृतेतिचेत्तत्राऽऽह भार्येति ॥ २५ ॥ २६ ॥ हन्मिहानिष्यामीत्यर्थः ॥ २७ ॥ डुंडुभमजगरम् ॥ २८ ॥ २९ ॥ तेतुभ्यंनापराध्नोमिद्रोहंकरोमि ॥ ३० ॥ इयमिति ॥ सर्पजातिर्हंतव्येत्येवंरूपेत्यर्थः ॥ दंशकसर्पविषयेसाप्रतिज्ञातवास्तिनाहंदंशकइत्याह नाहमिति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ खगमःखेचरइत्यन्वर्थनामा ॥ ३३ ॥ तार्णकंतृणनिर्मितंसर्पंकृत्वावंचितः ॥ ३४ ॥ भयाभयंप्रापितइतितात्पर्यम् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ यज्ञादन्यत्रदयाकर्तव्या ॥यज्ञेतुहिंसैवकर्तव्या ॥ नसायाज्ञिकीहिंसाहिंसाभवति अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्रतीर्थेभ्यइतिश्रुतेरित्याह ॥ यज्ञादन्यत्रेति ॥४०॥ एवंप्रकारेण रुरुणाबालास्त्रीमृतासंजीविताऽऽयुषोऽर्धदानेनततोविवाहिताच ॥ पुनरनंतरंपूर्ववैरमनुस्मरन्सर्पाणांतेनकदनंनाशनंकृतम् ॥ ततः शापांतंकृत्वाहिंसनंपरित्यक्तमित्यन्वयः ॥ ४१ ॥ त्वंतुवैर

मामुवाचाथतत्क्रोधात्किंचिच्छांतिमवाप्यच ॥ रुरुस्तेमोचिताशापस्यास्यसर्पभविष्यति ॥ ३७ ॥ प्रमतेस्तुसुतोनूनमितिमांसोऽब्रवीद्वचः ॥ सोऽहं सर्पोरुरुस्त्वंचशृणुमेपरमंवचः ॥ ३८ ॥ अहिंसापरमोधर्मोविप्राणांनात्रसंशयः ॥ दयासर्वत्रकर्तव्याब्राह्मणेनविजानता ॥ ३९ ॥ यज्ञादन्यत्रविप्रेंद्र नहिंसायाज्ञिकीमता ॥ उत्तंकउवाच ॥ सर्पयोनेर्विनिर्मुक्तोब्राह्मणोऽसौरुरुस्ततः ॥ ४० ॥ कृत्वातस्यचशापांतंपरित्यक्तंचहिंसनम् ॥ विवाहितातेन बालामृतासंजीवितापुनः ॥ ४१ ॥ कदनंसर्वसर्पाणांकृतंवैरमनुस्मरन् ॥ त्वंतुवैरंसमुत्सृज्यवर्तसेपन्नगेष्वथ ॥ ४२ ॥ विमन्युर्भरतश्रेष्ठपितृघातकरेषु वै ॥ अंतरिक्षेमृतस्तातःस्नानदानविवर्जितः ॥ ४३ ॥ तस्योद्धारंचराजेंद्रकुरुहत्वाऽथपन्नगान् ॥ पितुर्वैरंनजानातिजीवन्नेवमृतोहिसः ॥ ४४ ॥ दुर्ग तिस्तेपितुस्तावद्यावत्तान्नहनिष्यसि ॥ अंवामखमिषंकृत्वाकुरुयज्ञंनृपोत्तम ॥ ४५ ॥ सर्पसत्रंमहाराजपितुर्वैरमनुस्मरन् ॥ सूतउवाच ॥ इतितस्य वचःश्रुत्वाराजाजन्मेजयस्तदा ॥ ४६ ॥ नेत्राभ्यामश्रुपातंचचकारातीवदुःखितः ॥ धिङ्मामस्तुसुदुर्बुद्धेर्वृथामानकरस्यवै ॥ ४७ ॥ पितायस्यग तिंघोरांप्राप्तःपन्नगपीडितः ॥ अद्याहंमखमारभ्यकरोम्यपचितिंपितुः ॥ ४८ ॥ हत्वासर्पानसंदिग्धोदीप्यमानेविभावसौ ॥ आहूयमंत्रिणःसर्वान्राजा वचनमब्रवीत् ॥ ४९ ॥ कुर्वंतुयज्ञसंभारंयथाऽर्हंमंत्रिसत्तमाः ॥ गंगातीरेशुभांभूमिंमापयित्वाद्विजोत्तमैः ॥ ५० ॥ कुर्वंतुमंडपंस्वस्थाःशतस्तंभंमनो हरम् ॥ वेदीयज्ञस्यकर्तव्याममाद्यसचिवाःखलु ॥ ५१ ॥ तदंगत्वेविधेयोवैसर्पसत्रःसुविस्तरः ॥ तक्षकस्तुपशुस्तत्रहोतोत्तंकोमहामुनिः ॥ ५२ ॥ शीघ्रमाहूयतांविप्राःसर्वज्ञावेदपारगाः ॥ सूतउवाच ॥ मंत्रिणस्तुतदाचक्रुर्भूपवाक्यैर्विचक्षणाः ॥ ५३ ॥ यज्ञस्यसर्वसंभारंवेदियज्ञस्यविस्तृताम् ॥ हव नेवर्तमानेतुसर्पाणांतक्षकोगतः ॥ ५४ ॥ इंद्रंप्रतिभयार्तोऽहंत्राहिमामितिचाब्रवीत् ॥ भयभीतंसमाश्वास्यस्वासनेसंनिवेश्यच ॥ ५५ ॥ ददावभयमत्यर्थं निर्भयोभवपन्नग ॥ तमिंद्रशरणंज्ञात्वामुनिर्दत्ताभयंतथा ॥ ५६ ॥

मिति ॥ इदमाश्चर्यममभातीत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३॥४४॥ यावत्तान्नहनिष्यसीतिस्वशत्रुनाशनेतस्यवासनायाअवशिष्टत्वात्तयावासनयादुर्गतिर्युक्तैव ॥ अंवामखोवक्ष्यमाणोनवरात्रोत्सवः ॥ ॥ ४५ ॥ जन्मेजयइति ॥ जन्मनैवातिशुद्धेनशत्रूनेजितवान्यतः ॥ एजृकंपनेधातोर्हिजन्मेजयइतिश्रुतः इतिवचनात् ॥ शकंध्वादित्वात्पररूपेजन्मेजयइत्यपिसाधु ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ॥४९॥ मापयित्वेति परिच्छिद्येत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ तदंगत्वेसतितादृशवेद्याद्यंगत्वेसतिसर्पसत्रोविधेयोनाऽन्यथेत्यर्थः ॥ पुंस्त्वमार्षम् ॥ ५२ ॥ ५३॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





उत्तंकोह्वयत्आहूतवान्सेंद्रंतक्षकंप्रथमतःपुरोनुवाक्यादिभिर्निमंत्रणंकृत्वेत्यर्थः ॥ ५७ ॥५८॥ वांछितैरिति॥वांछितंवृष्णिवत्युक्तवानित्यर्थः ॥ ५९ ॥६०॥ वैशंपायनइति प्रथमांतंछांदसत्वाल्लु प्तविभक्त्यंतम् ॥ ६१ ॥ भारतश्रवणेनापिशांतिर्नजातेतिव्यासंपप्रच्छेत्याह।व्यासमिति ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ संग्रामेमहतिरणे॥रणेसामान्ये ॥६४॥ मरणंमेपितुर्नाऽभूदितिगृहेवाविधिपूर्वकामि त्यनेनान्वेति ॥ ६५ ॥ दुर्गतिंगतइति ॥ परिक्षितोदुर्गतिश्चमहाभारतेप्युक्ता ॥ अपृच्छत्सतदाराजामंत्रिणस्तान्सुदुःखितः ॥ उत्तंकस्यैवसान्निध्येपितुःस्वर्गगतिंप्रतीति ॥

उत्तंकोह्वयदुद्विग्नःसेंद्रंकृत्वानिमंत्रणम् ॥ स्मृतस्तदातक्षकेणयायावरकुलोद्भवः ॥ ५७ ॥ आस्तीकोनामधर्मात्माजरत्कारुसुतोमुनिः ॥ तत्रागत्यमुने र्बालस्तुष्टावजनमेजयम् ॥ ५८ ॥ राजातमर्चयामासदृष्ट्वाबालंसुपंडितम् ॥ अर्चयित्वानृपस्तंतुछंदयामासवांछितैः ॥ ५९ ॥ सतुवव्रेमहाभागयज्ञो ऽयंविरमत्विति ॥ सत्यवद्भोनृपस्तेनप्रार्थितश्चपुनस्तथा ॥ ६० ॥ होमंनिवर्तयामाससर्पाणांमुनिवाक्यतः ॥ भारतंश्रावयामासवैशंपायनविस्तरात् ॥ ॥ ६१ ॥ श्रुत्वाऽपिनृपतिःकामंनशांतिमभिजग्मिवान् ॥ व्यासंपप्रच्छभूपालोममशांतिःकथंभवेत् ॥ ६२ ॥ मनोऽतिदह्यतेकामंकिंकरोमिवदस्वमे ॥ पितामेदुर्भगस्यैवंमृतःपार्थसुतात्मजः ॥ ६३ ॥ क्षत्रियाणांमहाभागसंग्रामेमरणंवरम् ॥ रणेवामरणंव्यासगृहेवाविधिपूर्वकम् ॥ ६४ ॥ मरणंनपि तुमेंऽभूदंतरिक्षेमृतोऽवशः ॥ शांत्युपायंवदस्वात्रत्वंचसत्यवतीसुत ॥ ६५ ॥ यथास्वर्गंव्रजेदाशुपितामेदुर्गतिंगतः ॥ इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणेद्वितीयस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ उवाचवचनंतत्रस भायांनृपतिंचतम् ॥ १ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिपुराणंगुह्यमद्भुतम् ॥ पुण्यंभागवतंनामनानाख्यानयुतंशिवम् ॥ २ ॥ अध्यापितंम यापूर्वंशुकायात्मसुतायवै ॥ श्रावयामिनृपत्वांहिरहस्यंपरमंमम ॥ ३ ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांकारणंश्रवणात्किल ॥ शुभदंसुखदंनित्यंसर्वागमसमु द्धृतम् ॥ ४ ॥ जनमेजयउवाच ॥ आस्तीकोऽयंसुतःकस्यविघ्नार्थंकथमागतः ॥ प्रयोजनंकिमत्रास्यसर्पाणांरक्षणेप्रभो ॥ ५ ॥ कथयैतन्महाभागवि स्तरेणकथानकम् ॥ पुराणंचतथासर्वंविस्तराद्वदसुव्रत ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ जरत्कारुर्मुनिःशांतोनचकारगृहाश्रमम् ॥ तेनदृष्टावनेगर्तेलंबमानाः स्वपूर्वजाः ॥ ७ ॥ ततस्तमाहुःकुरुपुत्रदारान्यथाचनःस्यात्परमाहितृप्तिः ॥ स्वर्गंव्रजामःखलुदुःखमुक्तावयंसदाचारयुतेसुतेवै ॥ ८ ॥

इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वितीयस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ चतुःषष्टिश्लोकवर्यैरास्तीकस्यसमुद्भवः ॥ श्रीमद्भागवतस्यापिमाहात्म्यमतिकथ्यते ॥ १ ॥ तच्छ्रुत्वेति ॥ भारता दिश्रवणेनममचित्तशांतिर्नजातेतिममपितादुर्गतिंगतइतिचजन्मेजयवाक्यंश्रुत्वेत्यर्थः ॥१॥२॥३॥ श्रवणात्कारणमित्यन्वयः ॥ सर्वागमसमुद्धृतं सर्ववेदेभ्यःसारंगृहीत्वाकृतमित्यर्थः ॥४॥ विघ्नार्थंसर्पसत्रविघ्नार्थम् ॥ ५ ॥ इदंप्रथमतउक्त्वाऽनंतरंसर्वं पुराणंवदेत्यर्थः ॥ ६॥ स्वपूर्वजाःस्ववंशजाः ॥७॥ ततस्तमाहुरिति ॥ तंजरत्कारुंतत्पितरआहुःयेनदारकरणेननोऽस्माकंतृप्तिः स्यात्तथाकुर्वित्यर्थः । तथाचत्वयिसुतेसतिवयंस्वर्गंव्रजामस्तथाकुर्वित्यर्थः ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इत्थंपूर्वजवाक्यंश्रुत्वाजरत्कारुस्तानाह । सतानिति॥ समानांनाम्नासमानांयस्याःकन्यायानाममनामचसमानमेकमस्तिपुनरयाचितांमयाप्रार्थितांपुनरतिवशानुगामातिवश्यामेतादृशींकन्यां यद्यहंलभेप्राप्नुयांतर्हिगृहारंभंविवाहंकरोमिकरिष्यामीत्यर्थः॥९॥अग्नौपतंत्विति मात्राशप्ताइत्यर्थः॥१०॥तत्रकामाताकथंवाशप्ताइतिसर्ववृत्तांतमाह।कश्यपस्येति ॥ऊचतुर्वक्ष्यमाणम् ॥११॥ किंतत्तदाह । तंदृष्ट्वेति ॥१२॥ १३ ॥ दासीभावायेति । यस्याःपराभवःसातस्यादासीतिदासीभवनायदिव्यंपणंकुर्वित्यर्थः ॥ १४ ॥ वालानश्वस्यकेशान् ॥ श्यामान्स्वकृष्णशरीरवेष्टनेन

सतानुवाचाथलभेसमानामयाचितांचातिवशानुगांच ॥ तदागृहारंभमहंकरोमिब्रवीमितथ्यंममपूर्वजावै ॥ ९ ॥ इत्युक्ताताञ्जरत्कारुर्गतस्तीर्थान्प्रतिद्विजः ॥ तदैवपन्नगाःशप्तामात्राऽग्नौनिपतंत्विति ॥ १० ॥ कश्यपस्यमुनेःपत्न्यौकद्रूश्चविनतातथा ॥ दृष्ट्वाऽऽदित्यरथेचाश्वमूचतुश्चपरस्परम् ॥ ११ ॥ तंदृष्ट्वाचतदाकद्रूर्विनतामिदमब्रवीत् ॥ किंवर्णोऽयंहयोभद्रेसत्यंप्रब्रूहिमाचिरम् ॥ १२ ॥ विनतोवाच ॥ श्वेतएवाश्वराजोऽयंकिंवात्वंमन्यसेशुभे ॥ ब्रूहिवर्णंत्वमप्यस्यततस्तुविपणावहे ॥ १३ ॥ कद्रूरुवाच ॥ कृष्णवर्णमहंमन्येहयमेनंशुचिस्मिते ॥ एहिसार्धंमयादिव्यंदासीभावायभामिनि ॥ १४ ॥ सूतउवाच ॥ कद्रूश्चस्वसुतानाहसर्वान्सर्पान्वशेस्थितान् ॥ वालाञ्छयामान्प्रकुर्वंतुयावंतोऽश्वशरीरके॥१५॥नेतिकेचनतत्राहुस्तानथाऽसौशशापह॥जनमेजयस्ययज्ञेवैगमिष्यथहुताशनम् ॥ १६ ॥ अन्येचकुर्हयं सर्पाःकर्बुरंवर्णभोगकैः ॥ वेष्टयित्वाऽस्यपुच्छंतुमातुःप्रियचिकीर्षया॥ १७॥भगिन्यौचसुसंयुक्तेगत्वादृशतुर्हयम् ॥ कर्बुरंतंहयंदृष्ट्वाविनताचातिदुःखिता ॥ १८ ॥ तदाऽऽजगामगरुडःसुतस्तस्यामहाबलः ॥ सदृष्ट्वामातरंदीनामपृच्छत्पन्नगाशनः ॥ १९ ॥ मातःकथंसुदीनाऽसिरुदितेवविभासिमे ॥ जीवमानेमयिसुतेतथाऽन्येरविसारथौ ॥ २० ॥ दुःखिताऽसिततोवांधिग्जीवितंचारुलोचने ॥ किंजातेनसुतेनाथयदिमातासुदुःखिता ॥ २१ ॥ शंसमेकारणंमातःकरोमिविगतज्वराम् ॥ विनतोवाच ॥ सपत्न्यादास्यहंपुत्रकिंब्रवीमिवृथाक्षता॥२२॥ वहमांसाब्रवीत्यद्यतेनाऽस्मिदुःखितासुत ॥ गरुडउवाच ॥ वहिष्येऽहंतत्रकिलयत्रसागंतुमुत्सुका ॥ २३ ॥ माशोकंकुरुकल्याणिनिश्चितां त्वांकरोम्यहम् ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तासागतापार्श्वंकद्रोश्चविनतातदा ॥ २४ ॥ दासीभावमपाकर्तुंगरुडोऽपिमहाबलः ॥ उवाहतांसपुत्रांवैसिंधोःपारंजगामह ॥ २५ ॥ गत्वातांगरुडःप्राहब्रूहिमातर्नमोस्तुते ॥ कथंमुच्येतमेमातादासीभावादसंशयम् ॥ २६ ॥

॥ १५ ॥ गमिष्यथपतथेत्यर्थः ॥ १६ ॥ कर्बुरंवहुलकृष्णवर्णकम् ॥ वर्णभोगकैर्नानावर्णविशिष्टस्वशरीरैः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ रविसारथिररुणः ॥ २० ॥ वांगरुडाऽरुणयोः ॥ २१ ॥ वृथाक्षताव्यर्थखंडिताऽहंसपत्न्यादासीजातातततो दासीभावादधिकंदुःखंकिंब्रवीमि ॥ वृथाकृतेत्यपिपाठः ॥ २२ ॥ वहमामिति ॥ स्वस्कंधेमांस्थापयित्वायत्रदेशेगंतुमिच्छामितंदेशंमांवहप्रापयेत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ कथंमुच्येततद्वदेत्यर्थः ॥ २६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥२७॥२८॥२९॥ संजहाराऽपहृतवानित्यर्थः॥यदासर्पाःस्नातुंस्नानंकर्तुंगतास्तदेत्यर्थः॥विपतेःपक्षिराजस्य ॥३०॥लीढाअमृतकुंभस्थानस्थितानांकुशानाममृतद्रवयुक्तत्वबुद्ध्याआस्वादिता जिह्वया ततःकुशानांतीक्ष्णाग्रत्वान्मध्येजिह्वाःस्फालिताः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ महामुनिरस्तीतिशेषः ॥ सनामिकांसमाननामिकांजरत्कारुनामिकामित्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

कद्रूरुवाच ॥ अमृतंदेवलोकात्त्वंबलादानीयमेसुतान् ॥ समर्पयसुताऽद्याऽऽशुमातरंमोचयाऽबलाम् ॥ २७ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तःप्रययौशीघ्रमिंद्रलोकंमहाबलः ॥ कृत्वायुद्धंजहाराऽऽशुसुधाकुंभंखगोत्तमः ॥ २८ ॥ समानीयाऽमृतंमात्रेवैनतेयःसमर्पयत् ॥ मोचिताविनतातेनदासीभावादसंशयम् ॥ ॥ २९ ॥ अमृतंसंजहारेंद्रःस्नातुंसर्पायदागताः ॥ दासीभावाद्विनिर्मुक्ताविनताविपतेर्बलात् ॥ ३० ॥ तत्राऽऽस्तीर्णाःकुशास्तैस्तुलीढाःपन्नगनायकैः ॥ द्विजिह्वास्तेसुसंपन्नाःकुशाग्रस्पर्शमात्रतः ॥ ३१ ॥ मात्राशताश्चयेनागावासुकिप्रमुखाःशुचा ॥ ब्रह्माणंशरणंगत्वातेहोचुः शापजंभयम् ॥ ३२ ॥ तानाहभगवान्ब्रह्माजरत्कारुर्महामुनिः ॥ वासुकेर्भगिनींतस्मैअर्पयध्वंसनामिकाम् ॥ ३३ ॥ तस्यांयोजायतेपुत्रःसवस्त्राताभविष्यति ॥ आस्तीकइतिनामाऽसौभवितानाऽत्रसंशयः ॥ ३४ ॥ वासुकिस्तुतदाकर्ण्यवचनंब्रह्मणःशिवम् ॥ वनंगत्वासुतांतस्मैददौविनयपूर्वकम् ॥ ३५ ॥ सनामांतांमुनिर्ज्ञात्वाजरत्कारुरुवाचतम् ॥ अप्रियंमेयदाकुर्यात्तदातांसंत्यजाम्यहम् ॥ ३६ ॥ वाग्बंधंतादृशंकृत्वामुनिर्जग्राहतांस्वयम् ॥ दत्त्वाचवासुकिः कामंभवनंस्वंजगामह ॥ ॥ ३७ ॥ कृत्वापर्णकुटींशुभ्रांजरत्कारुर्महावने ॥ तयासहसुखंप्रापरममाणःपरंतप ॥ ३८ ॥ एकदाभोजनंकृत्वासुप्तोऽसौमुनिसत्तमः ॥ भगिनीवासुकेस्तत्रसंस्थितावरवर्णिनी ॥ ३९ ॥ नसंबोधयितव्योऽहंत्वयाकांतेकथंचन ॥ इत्युक्त्वातुगतोनिद्रांमुनिस्तांसुदतींतदा ॥४०॥ रविरस्तगिरिंप्राप्तःसंध्याकालउपस्थिते ॥ किंकरोमिनमेशांतिस्त्यजेन्मांबोधितःपुनः ॥ ४१ ॥ धर्मलोपभयाद्भीताजरत्कारुरचिंतयत् ॥ नोचेत्प्रबोधयाम्येनंसंध्याकालोवृथाव्रजेत् ॥ ४२ ॥ धर्मनाशाद्धरंत्यागस्तथाऽपिमरणंध्रुवम् ॥ धर्महानिर्नराणांहिनरकायभवेत्पुनः ॥ ४३ ॥ इतिसंचिंत्यसाबालातंमुनिंप्रत्यबोधयत् ॥ संध्याकालोऽपिसंजातउत्तिष्ठोत्तिष्ठसुव्रत ॥ ४४ ॥ उत्थितोऽसौमुनिःकोपात्तामुवाचव्रजाम्यहम् ॥ त्वंतुभ्रातृगृहंयाहिनिद्राविच्छेदकारिणि ॥ ४५ ॥ वेपमानाऽब्रवीद्वाक्यमित्युक्तामुनिनातदा ॥ भ्रात्रादत्तायदर्थंतत्कथंस्यादमितप्रभ ॥४६॥ मुनिःप्राहजरत्कारुंतदस्तीतिनिराकुलः ॥ गतासामुनिनात्यक्तावासुकेःसदनंतदा ॥ ४७ ॥ पृष्टाभ्रात्राऽब्रवीद्वाक्यंयथोक्तंपतिनातदा ॥ अस्तीत्युक्त्वाचहित्वामांगतोऽसौमुनिसत्तमः ॥ ४८ ॥

तंवासुकिम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ जरत्कारुर्जरत्कारुमुनेःपत्नी ॥ ४२॥ धर्मनाशापेक्षयाममत्यागंकरिष्यति अथवाममरणंस्यादिदंवरंनतुधर्मनाशइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ तदस्तीतितवभ्रातुर्यइष्टःपुत्रःसतवगर्भेऽस्तीत्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ भव्यंकृतंसम्यक्कृतमित्यर्थः ॥५२॥ यत्त्वयोक्तंभारतंसकलंश्रुतंदानानिनानाविधानिदत्तानितथाऽपिमेचित्तशांतिर्नजाता नवापितुःस्वर्गोऽभूदिति तत्तथैवाऽस्तीत्याह। भारतंसकलमिति ॥ ५३ ॥ अद्याऽप्येभिःकर्मभिरपित्वयानकुलंपावितम् ॥ अतोमयायदुच्यतेत्वत्कल्याणार्थंतच्छृण्वित्यभिप्रायः ॥५४॥ तत्किंतदाह। देव्याश्चाऽऽयतनमिति ॥ तदुक्तंशिवपुराणे योदेवींस्थापयेत्स्कंदप्रासादेभक्तिभावतः ॥ त्रैलोक्यंस्थापितंतेनयतःसर्वमयीशिवा ॥ नानेनसदृशोधर्मोदेवीस्थापनकर्मणा ॥ तुष्टायांखलुतस्यांतुसंतुष्टंभुवनत्रयम् ॥ यःकरोतिनरोभक्त्यादेवीप्रासादमद्भुतम्॥सकोटिकुलमुद्धृत्यमणिद्वीपेविराजते॥कुलकोटिसमायुक्तोदेवीलोकेवसेन्नरः॥ज्ञानंदिव्यंपरंप्राप्यकैवल्यंमोक्षमाप्नुयात्॥इत्यादिवचनानिपुराणांतरेष्वपिद्रष्टव्यानि ॥५५॥

वासुकिस्तुतदाकर्ण्यसत्यवाग्मुनिरित्युत ॥ विश्वासंचपरंकृत्वाभगिनींतांसमाश्रयत् ॥ ४९ ॥ ततःकालेनकियताजातोऽसौमुनिबालकः ॥ आस्तीक इतिनामाऽसौविख्यातःकुरुसत्तम ॥ ५० ॥ तेनाऽयंरक्षितोयज्ञस्तवपार्थिवसत्तम ॥ मातृपक्षस्यरक्षार्थंमुनिनाभावितात्मना ॥ ५१ ॥ भव्यंकृतं महाराजमानितोऽयंत्वयामुनिः ॥ यायावरकुलोत्पन्नोवासुकेर्भगिनीसुतः ॥ ५२ ॥ स्वस्तितेऽस्तुमहाबाहोभारतंसकलंश्रुतम् ॥ दानानिबहुदत्तानिपूजितामुनयस्तथा ॥ ५३ ॥ कृतेनसुकृतेनापिनपितास्वर्गतिंगतः ॥ पावितंनकुलंकृत्स्नंत्वयाभूपतिसत्तम ॥ ५४ ॥ देव्याश्चाऽऽयतनंभूपविस्तीर्णंकुरुभक्तितः ॥ येनवैसकलासिद्धिस्तवस्याज्जनमेजय ॥ ५५ ॥ पूजितापरयाभक्त्याशिवासकलदासदा ॥ कुलवृद्धिंकरोत्येवराज्यंचसुस्थिरंसदा ॥ ५६ ॥ देवीमखंविधानेनकृत्वापार्थिवसत्तम ॥ श्रीमद्भागवतंनामपुराणंपरमंशृणु ॥ ५७ ॥ त्वामहंश्रावयिष्यामिकथांपरमपावनीम् ॥ संसारतारिणींदिव्यां नानारससमाहृताम् ॥ ५८ ॥ नश्रोतव्यंपरंचास्मात्पुराणाद्विद्यतेभुवि ॥ नाराध्यंविद्यतेराजन्देवीपादांबुजादृते ॥ ५९ ॥ तेसभाग्याःकृतप्रज्ञाधन्यास्तेनृपसत्तम ॥ येषांचित्तेसदादेवीवसतिप्रेमसंकुले ॥ ६० ॥ सुदुःखितास्तेदृश्यंतेभुविभारतभारते ॥ नाराधितामहामायायैर्जनैश्चसदांऽबिका ॥ ६१ ॥ ब्रह्मादयःसुराः सर्वेयदाराधनतत्पराः ॥ वर्ततेसर्वदाराजंस्तांनसेवेतकोजनः ॥ ६२ ॥

राज्यंचकारान्मोक्षंच॥५६॥देवीमखंनवरात्रोत्सवादिकंज्योतिष्टोमादिकंकोटिहोमादिकंचदेवीप्रीत्यर्थंकृतंदेवीमखशब्देनोच्यते ॥तंदेवीमखंकृत्वाश्रीदेवीभागवतंशृणु ॥अनेनवचनेननवरात्रोत्सवेदेवीभागवतपारायणविधिःप्रदर्शितः॥अतोऽवश्यंनवरात्रचतुष्टयेदेवीभागवतपारायणंकर्तव्यंश्रोतव्यंच ॥५७॥ किंफलंतच्छ्रवणेनेतिचेत्संसारतारिणीमिति ॥केवलंदेवीभागवतश्रवणेनैवदेवीप्रसादेजातेसंसारान्मुक्तोभवतीतिमहाफलंश्रवणेनेतिभावः॥५८॥अस्मात्पुराणादधिकंसमंवाऽन्यत्पुराणंश्रोतव्यंनैवभुविविद्यते ॥ अस्यपुराणस्यसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मप्रतिपादकत्वादन्येषांचपुराणानामेकैकसत्त्वादिगुणोपाधिहरिहरब्रह्मादिप्रतिपादकत्वात ॥ अतएवसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिण्याभगवत्याएकैकसत्त्वादिगुणोपाधिहरिहराद्यपेक्षयासर्वोत्कृष्टत्वादेवदेवीपादांबुजादृतेआराध्यंनैवास्ति तदेवसर्वैराराध्यमितिभावः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ मनुष्यैर्भगवतीसर्वदाऽऽराध्येत्यत्रकिंवक्तव्यमितिकैमुतिकन्यायेनाऽऽह । ब्रह्मादयइति ॥६२॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





विष्णवेयदनुत्तममिति॥पूर्वोक्तार्धश्लोकात्मकंयद्भागवतंसाक्षाद्भगवत्यास्वमुखेनैवविष्णवेउपदिष्टंयस्मात्तस्मादनेनसदृशंमहाफलंकिमन्यत्स्यान्नकिमपीतिभावः ॥६३॥ यदुक्तंममचित्तशांतिर्नजातापितॄणामुद्धारोऽपिनजातइति तत्राऽऽहातेनश्रुतेनेति ॥६४॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्यास्यव्याख्यान

यइदंशृणुयान्नित्यंसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ भगवत्यासमाख्यातंविष्णवेयदनुत्तमम् ॥ ६३ ॥ तेनश्रुतेनतेराजंश्चित्तशांतिर्भविष्यति ॥ पितॄणांचाऽक्षयःस्वर्गःपुराणश्रवणाद्भवेत् ॥ ६४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेश्रोतृप्रवक्तृप्रसंगोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥ २ ॥

द्वाविंशत्यधिकसंख्यैःपद्यैःसप्तशतैःशुभैः ॥ श्रीमद्व्यासमुखोद्गीतैर्द्वितीयस्कंधईरितः ॥ १ ॥

रहितस्यच ॥ तिलकाख्यांमहाव्याख्यांसम्यग्यःकृतवाञ्छुभाम् ॥ २ ॥ स्कंधोद्वितीयस्तस्यास्तुसमासोऽभूच्छुभार्थदः ॥ इति श्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजश्रीलक्ष्मीगर्भसंभवनीलकंठकृते देवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधेद्वितीयस्कंधेद्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीमहालक्ष्मीःप्रसन्नाऽस्तु ॥

---

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८.



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे द्वितीयस्कंधः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे तृतीयस्कन्धः प्रारभ्यते ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ पाशांकुशवराभीतिधरांदेवींचिदात्मिकाम्॥ वंदेसमंदहसितांमणिद्वीपाधिवासिनीम्॥ १॥पंचाशत्पद्यकैरर्धश्लोकोनैर्भुवनेश्वरीम्॥सम्यक्पृष्टवतेराज्ञेनिर्णयःसम्यगुच्यते ॥२॥सर्वैर्भगवत्येवाराध्यापूज्याचेतिव्यासवाक्यंश्रुत्वाजनमेजयःपृच्छति ।भगवन्निति॥यज्ञंयजनीयंपूज्यमित्यर्थः।अंबाभिधमंबासंज्ञकंतत्त्वमित्यर्थः॥यत्त्वयाप्रोक्तं तत्रकासाअंबा किंस्वरूपा कथंकेनप्रकारेणोत्पन्ना कुत्रकस्मिन्देशेकालेवाउत्पन्ना कस्मात्कारणादुत्पन्ना किंगुणाकिंगुणवतीसाच॥१॥तस्यादेव्यामखोयज्ञोयत्त्वयाप्रोक्तःसकीदृशस्तस्यमखस्यस्वरूपंकीदृशं तथाविधानंचकीदृशं तत्सर्वंविधिवद्ब्रूहि यतस्त्वंसर्वज्ञोसि ॥ २ ॥ यथोक्तंयादृशंपृष्टंमयातत्सर्वं त्वंवेत्सि ॥ ३ ॥ ४ ॥ ते किंस्वतंत्राआहोस्वित्परतंत्राइत्यपिपाराशर्यवद ॥ ५ ॥ मृत्युधर्मा

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ ॥ भगवन्भवताप्रोक्तंयज्ञमंबाभिधंमहत् ॥ साकाकथंसमुत्पन्नाकुत्रकस्माच्चकिंगुणा ॥ १ ॥ कीदृशश्चमखस्तस्याःस्वरूपंकीदृशंतथा ॥ विधानंविधिवद्ब्रूहिसर्वज्ञोसिदयानिधे ॥२ ॥ ब्रह्माण्डस्यतथोत्पत्तिंवदविस्तरतस्तथा ॥ यथोक्तंयादृशंब्रह्मन्नखिलंवेत्सिभूसुर ॥ ३ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चत्रयोदेवामयाश्रुताः॥सृष्टिपालनसंहारकारकाःसगुणास्त्वमी ॥४॥ स्वतंत्रास्तेमहात्मानःपाराशर्यवदस्वमे॥आहोस्वित्परतंत्रास्तेश्रोतुमिच्छामिसांप्रतम् ॥५॥ मृत्युधर्माश्चतेनोवासच्चिदानंदरूपिणः ॥ अधिभूतादिभिर्युक्तानवादुःखैस्त्रिधात्मकैः ॥ ६ ॥ कालस्यवशगानोवातेसुरेंद्रामहाबलाः॥कथंतेवैसमुत्पन्नाःकस्मादितिचसंशयः॥७॥हर्षशोकयुतास्तेवैनिद्रालस्यसमन्विताः ॥ सप्तधातुमयास्तेषांदेहाःकिंवान्यथामुने ॥८॥ कैर्द्रव्यैर्निर्मितास्तेवैकैर्गुणैरिंद्रियैस्तथा॥भोगश्चकीदृशस्तेषांप्रमाणमायुषस्तथा॥९॥निवासस्थानमप्येषांविभूतिंचवदस्वमे ॥ श्रोतुमिच्छाम्यहंब्रह्मन्विस्तरेणकथामिमाम् ॥१०॥ व्यासउवाच॥दुर्गमःप्रश्नभारोयंकृतोराजंस्त्वयाऽधुना॥ब्रह्मादीनांसमुत्पत्तिःकस्मादितिमहामते॥११॥ एतदेवमयापूर्वंपृष्टोऽसौनारदोमुनिः॥विस्मितःप्रत्युवाचेदमुत्थितःशृणुभूपते॥१२॥कस्मिंश्चसमयेचाहंगंगातीरेस्थितंमुनिम् ॥ अपश्यंनारदंशांतंसर्वज्ञंवेदवित्तमम्॥१३॥दृष्ट्वाऽहंमुदितोगत्वापादयोरपतंमुनेः॥तेनाज्ञप्तःसमीपेऽस्यसंविष्टश्चवरासने॥१४॥श्रुत्वाकुशलवार्तांवैतमपृच्छंविधेःसुतम्॥निविष्टंजाह्नवीतीरेनिर्जनेसूक्ष्मवालुके ॥१५॥

जीवावा आहोस्वित्सच्चिदानंदरूपिणस्ते ब्रह्मादयः ॥ तथाधिभौतिकाधिदैविकाध्यात्मिकैस्त्रिधात्मकैस्त्रिविधैर्दुःखैस्तेयुक्ताअथवानयुक्ताः ॥ ६ ॥ इतिचसंशयोस्तीतिशेषः ॥ ७ ॥ हर्षशोकयुतास्तेसंति ॥ किमन्यथावेतिपादत्रयेणसंबध्यते ॥ ८ ॥ कैर्द्रव्यैरिति ॥ तेषांदेहाःपांचभौतिकाउतन ॥ ९ ॥ १० ॥ ब्रह्मादीनामिति ॥ इदमुपलक्षणंजनमेजयेनकृतानांसर्वेषांप्रश्नानाम् ॥ ११ ॥ एतदेवेति ॥ ननुजनमेजयेनप्रश्नाअन्यविधाःकृताः व्यासस्यनारदंप्रतिप्रश्नास्त्वन्यविधाः संति तत्कथमुच्यते एतदेवमयेतिचेन्न ॥ एतदेवेत्यस्यैतत्सदृशमित्यर्थात् ॥ येत्वयाप्रश्नाःकृतास्तत्सदृशाएवप्रश्नामयानारदंप्रतिकृतास्तेषांप्रश्नानांप्रत्युत्तरंनारदोदत्तवांस्तेनैवत्वत्प्रश्नानांसमाधानंभविष्यति ॥ नत्वत्प्रश्नानांपृथक्प्रतिवचनंदेयंभवतीतिभावः ॥ अतएवजनमेजयेनकृतप्रश्नानांप्रत्येकंप्रतिवचनंव्यासोनदत्तवानितिबोध्यम् ॥ उत्थितआविर्भूतोमदग्रेप्रकटीभूतः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १६ ॥ १७ ॥ विरोधोयमिति ॥ कृतिजन्यत्वाभावेकार्यत्वमेवनस्यादितिविरोधः ॥ १८ ॥ १९ ॥ याविकल्पकोटीस्ताअहमुक्तवानित्याह ॥ ब्रुवंतिशंकरमिति॥२०॥२१॥२२॥२३॥

मुनेऽतिविततस्यास्यब्रह्मांडस्यमहामते ॥ कःकर्तापरमःप्रोक्तस्तन्मेब्रूहिविधानतः॥१६॥कस्मादेतत्समुत्पन्नंब्रह्मांडंमुनिसत्तम ॥ अनित्यंवातथानित्यं तदाचक्ष्वद्विजोत्तम ॥१७॥एककर्तृकमेतद्वावहुकर्तृकमन्यथा ॥ अकर्तृकंनकार्यस्याद्विरोधोऽयंविभातिमे ॥ १८ ॥ इतिसंदेहसंदोहेमग्नंमांतारयाधुना ॥ विकल्पकोटीःकुर्वाणंसंसारेस्मिन्प्रविस्तरे ॥१९॥ ब्रुवंतिशंकरंकेचिन्मत्वाकारणकारणम् ॥ सदाशिवंमहादेवंप्रलयोत्पत्तिवर्जितम् ॥२०॥आत्मारामंसुरेशंचत्रिगुणंनिर्मलंहरम् ॥ संसारतारकंनित्यंसृष्टिस्थित्यंतकारणम् ॥ २१ ॥ अन्येविष्णुंस्तुवंत्येनंसर्वेषांप्रभुमीश्वरम् ॥ परमात्मानमव्यक्तंसर्वशक्तिसमन्वितम् ॥ २२ ॥ भुक्तिदंमुक्तिदंशांतंसर्वादिंसर्वतोमुखम्॥व्यापकंविश्वशरणमनादिनिधनंहरिम् ॥ २३ ॥ धातारंचतथाचान्येब्रुवंतिसृष्टिकारणम्॥तमेव सर्ववेत्तारंसर्वभूतप्रवर्तकम् ॥२४॥ चतुर्मुखंसुरेशानंनाभिपद्मभवंविभुम् ॥ स्रष्टारंसर्वलोकानांसत्यलोकनिवासिनम् ॥ २५ ॥ दिनेशंप्रवदंत्यन्येसर्वेशंवेदवादिनः ॥ स्तुवंतिचैवगायंतिसायंप्रातरतंद्रिताः ॥ २६ ॥ यजंतिचतथायज्ञेवासवंचशतक्रतुम् ॥ सहस्राक्षंदेवदेवंसर्वेषांप्रभुमुल्वणम् ॥ २७ ॥ यज्ञाधीशंसुराधीशंत्रिलोकेशंशचीपतिम् ॥ यज्ञानांचैवभोक्तारंसोमपंसोमपप्रियम् ॥ २८ ॥ वरुणंचतथासोमंपावकंपवनं तथा॥यमंकुबेरंधनदंगणाधीशंतथापरे ॥ २९ ॥ हेरंबंगजवक्त्रंचसर्वकार्यप्रसाधकम् ॥ स्मरणात्सिद्धिदंकार्यकामदंकामगंपरम् ॥३०॥भवानींकेचनाचार्याःप्रवदंत्यखिलार्थदाम् ॥ आदिमायां महाशक्तिंप्रकृतिंपुरुषानुगाम् ॥३१॥ब्रह्मैकतासमापन्नांसृष्टिस्थित्यंतकारिणीम् ॥ मातरंसर्वभूतानांदेवतानांतथैवच ॥ ३२ ॥ अनादिनिधनांपूर्णांव्यापिकांसर्वजंतुषु ॥ ईश्वरींसर्वलोकानांनिर्गुणांसगुणांशिवाम् ॥ ३३ ॥ वैष्णवींशांकरींब्राह्मींवासवींवारुणींतथा ॥ वाराहींनारसिंहींचमहालक्ष्मींतथाऽद्भुताम् ॥ ३४ ॥ वेदमातरमेकांचविद्यांभवतरोःस्थिराम् ॥ सर्वदुःखनिहंत्रींचस्मरणात्सर्वकामदाम् ॥ ३५ ॥ मोक्षदांचमुमुक्षूणांकामदांचफलार्थिनाम् ॥ त्रिगुणातीतरूपांचगुणविस्तारकारकाम् ॥ ३६ ॥ निर्गुणांसगुणांतस्मात्तांध्यायंतिफलार्थिनः ॥ निरंजनंनिराकारंनिर्लेपंनिर्गुणंकिल ॥ ३७ ॥ अरूपंव्यापकंब्रह्मप्रवदंतिमुनीश्वराः ॥ वेदोपनिषदिप्रोक्तस्तेजोमयइतिक्वचित् ॥ ३८ ॥ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्रनयनस्तथा ॥ सहस्रकरकर्णश्चसहस्रास्यः सहस्रपात् ॥ ३९ ॥ विष्णोःपादमथाकाशंपरमंसमुदाहृतम् ॥ विराजंविरजंशांतंप्रवदंतिमनीषिणः ॥ ४० ॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ वेदांतिमतमाह । निरंजनमिति॥३७॥ ३८ ॥ विराट्स्वरूपवादिमतमाह॥सहस्रशीर्षेति ॥ ३९ ॥ ४० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अनेकेश्वरवादिमतमाह । नैकोपीति॥गृहप्रासादादिविचित्रंकार्यमनेककर्तृकंदृष्टंतथे दंजगत्कार्यमप्यनेककर्तृकमेवेतिभावः॥४१॥अनीश्वरंस्वभावादेवेदंजगदभूदितिकेषांचिन्मतमाह॥अनीश्वर मिति॥तन्मतसाधकमाह ॥नकदापीशजन्यमिति ॥ यदीदंजगदीशजन्यंस्यात्तदाऽचिंतितमनिर्वचनीयंकिमितिस्यान्नहिकुलालकर्तृकोघटोऽनिर्वचनीयोस्ति तस्मादचिंतितत्वादनिर्वचनीय त्वात्स्वभावादेवजन्यंनत्वीशजन्यमित्यर्थः ॥ ४२ ॥ सांख्यमतंप्राह ॥ अकर्तेति ॥ तथाचसेति कर्त्रीत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ यत्रकल्याणंतिष्ठतितत्रधर्मोऽपितिष्ठतिधर्मस्यक ल्याणंचिह्नंज्ञेयमितिचेत्तत्राह । देवाःसत्त्वगुणोत्पन्नाइति ॥४६॥ धार्मिष्ठानांदेवानांममवंशजानांपांडवानांचधर्मिष्ठत्वेऽप्यकल्याणोपहतत्वाद्यत्रकल्याणंतत्रधर्मस्तिष्ठतीत्यत्रव्याप्त्यभावान्नधर्म

पुरुषोत्तमंतथाचान्येप्रवदंतिपुराविदः ॥ नैकोपीतिवदंत्यन्येप्रभुरीशःकदाचन ॥ ४१ ॥ अनीश्वरमिदंसर्वंब्रह्मांडमितिकेचन ॥ नकदापीशजन्यंयज्ज गदेतदचिंतितम् ॥ ४२ ॥ सदैवेदमनीशंचस्वभावोत्थंसदेदृशम् ॥ अकर्तासौपुमान्प्रोक्तःप्रकृतिस्तुतथाचसा ॥४३॥ एवंवदंतिसांख्याश्चमुनयःकपिला दयः ॥ एतेसंदेहसंदोहाःप्रभवंतितथाऽपरे ॥ ४४ ॥ विकल्पोपहतंचेतःकिंकरोमिमुनीश्वर ॥ धर्माधर्मविवक्षायांनमनोमेस्थिरंभवेत् ॥ ४५ ॥ कोधर्मः कीदृशोऽधर्मश्चिह्नंनैवोपलभ्यते ॥ देवाःसत्त्वगुणोत्पन्नाःसत्यधर्मव्यवस्थिताः ॥४६ ॥ पीड्यंतेदानवैःपापैःकुत्रधर्मव्यवस्थितिः ॥ धर्मस्थिताःसदाचाराः पांडवाममवंशजाः ॥ ४७ ॥ दुःखंबहुविधंप्राप्तास्तत्रधर्मस्यकास्थितिः ॥ अतोमेहृदयंतातवेपतेऽतीवसंशये ॥ ४८ ॥ कुरुमेऽसंशयंचेतःसमर्थोऽसिमहा मुने ॥ त्राहिसंसारवार्धेस्त्वंज्ञानपोतेनमांमुने ॥ ४९ ॥ मज्जंतंचोत्पततंचमग्नंमोहजलाविले ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांतृतीयस्कंधेजनमेजयप्रश्नेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ यत्त्वयाचमहाबाहोपृष्टोऽहंकुरुसत्तम ॥ तान्प्रश्नान्नारदःप्राहमयापृष्टोमुनी श्वरः ॥ १ ॥ नारदउवाच ॥ व्यासकिंतेब्रवीम्यद्यपुराऽयंसंशयोमम ॥ उत्पन्नोहृदयेऽत्यर्थंसंदेहासारपीडितः ॥ २ ॥ गत्वाऽहंपितरंस्थानेब्रह्माणममितौ जसम् ॥ अपृच्छंयत्त्वयापृष्टंव्यासाद्यप्रश्नमुत्तमम् ॥ ३ ॥ पितःकुतःसमुत्पन्नंब्रह्मांडमखिलंविभो ॥ भवत्कृतेनवासम्यक्किंवाविष्णुकृतंत्विदम् ॥ ४ ॥

चिह्नंज्ञातुंशक्यतइतिभावः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥५०॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ चत्वारिंशच्छ्लोकवर्यैरर्धश्लोकाधिकैरथ॥विमानेनगतिर्ब्रह्मादीनामि हतुकथ्यते ॥ १ ॥ यत्त्वयेति ॥ हेमहाबाहोयत्त्वयाऽहंपृष्टोयान्यान्प्रश्नांस्त्वंमांप्रत्यकार्षीस्तान्सर्वान्प्रश्नान्मुनीश्वरोनारदोमयापृष्टोनारदंप्रतितान्सर्वान्प्रश्नानन्यांश्चप्रश्नान्कृतवानित्य र्थः ॥ अत्रव्यासउवाचेत्यतउत्तरंयत्त्वयाचेत्यतःपूर्वमेकादशश्लोकादाक्षिणात्यपाठेसंतिपरंतुसोऽपपाठः ॥ संगत्यग्रहात्पुनरुक्तिदोषाच्चगौडपाठेप्राचीनपुस्तकेषुचतेषामनुपलंभाच्च ॥ १ ॥ ततस्तदुत्तरंनारदःकिमुवाचतदाह ॥ व्यासकिंतेइति ॥ संदेहासारेणसंदेहधारासंपातेन ॥ २ ॥ अद्ययत्त्वयापृष्टंतंप्रश्नमपृच्छमित्यन्वयः ॥ अद्ययस्त्वयापृष्टःप्रश्नस्तथाविधमन्यंप्रश्नं ब्रह्माणंप्रत्यहंकृतवांस्तत्प्रत्युत्तरंयदेवब्रह्माप्राहतदेवत्वत्प्रश्नानांप्रतिवचनंभविष्यतीतिभावः ॥ ३ ॥ भवत्कृतेनभवद्व्यापारेणेत्यर्थः ॥ अस्योत्पन्नमितिशेषः ॥ ४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





आराधनीयःपूज्यःसर्वदेवेषूत्कृष्टःसर्वोत्कृष्टश्चकः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥९॥ १०॥ हेसूत त्वयाकृतंदुर्बोधंप्रश्नंकिंब्रवीमियदिविष्णोरपिनिश्चयाद्वक्तुमशक्यंभवतीत्यन्वयः ॥११॥एतस्यज्ञातारा गीवहिर्मुखःकोपिनास्तिकिंतुयोंतर्मुखोज्ञानीसएवजानाति ॥ तथाचश्रुतिः तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढामिति ॥ १२ ॥ तत्रविष्ण्वादिभिरप्यज्ञेयत्वेपूर्वकथामाह ॥ एकार्णवेइति ॥ नष्टेस्थावरजंगमेसतिप्रलयकालेऽनंतरमात्मनआकाशःसंभूतइत्येवंरीत्याभूतमात्रेपंचमहाभूतमात्रेऽन्यपदार्थरहितेउत्पन्नेसति तदानीमहंकमलाज्जज्ञेउत्पन्नः ॥ १३ ॥ १४ ॥

रुद्रकृतंवाविश्वात्मन्ब्रूहिसत्यंजगत्पते ॥ आराधनीयःकःकामंसर्वोत्कृष्टश्चकःप्रभुः ॥ ५ ॥ तत्सर्ववदमेब्रह्मन्संदेहांश्छिंधिचानघ ॥ निमग्नोह्यस्मिसंसारे दुःखरूपेऽनृतोपमे ॥ ६ ॥ संदेहांदोलितंचेतोनप्रशाम्यतिकुत्रचित् ॥ नतीर्थेषुनदेवेषुसाधनेष्वितरेषुच ॥ ७ ॥ अविज्ञायपरंतत्त्वंकुतःशांतिःपरंतप ॥ विकीर्णंबहुधाचित्तंनैकत्रस्थिरतांव्रजेत् ॥८॥ कंस्मरामियजेकंवाकंव्रजाम्यर्चयामिकम् ॥ स्तौमिकंनाभिजानामिदेवंसर्वेश्वरेश्वरम् ॥ ९ ॥ ततोमांप्रत्युवाचेदंब्रह्मालोकपितामहः ॥ मयासत्यवतीसूनोकृतेप्रश्नेसुदुस्तरे ॥ १० ॥ ब्रह्मोवाच ॥ किंब्रवीमिसुताद्याहंदुर्बोधंप्रश्नमुत्तमम् ॥ त्वयाशक्यंमहाभागविष्णोरपिसुनिश्चयात् ॥ ११ ॥ रागीकोऽपिनजानातिसंसारेऽस्मिन्महामते ॥ विरक्तश्चविजानातिनिरीहोयोविमत्सरः ॥ १२ ॥ एकार्णवेपुराजातेनष्टेस्थावरजंगमे ॥ भूतमात्रेसमुत्पन्नेसंज्ञेकमलादहम् ॥ १३ ॥ नापश्यंतरणिंसोमंनवृक्षान्नचपर्वतान् ॥ कर्णिकायांसमाविष्टश्चिंतामकरवंतदा ॥ १४ ॥ कस्मादहंसमुद्भूतःसलिलेऽस्मिन्महार्णवे ॥ कोमेत्राताप्रभुःकर्तासंहर्तावायुगात्यये ॥ १५ ॥ नचभूर्विद्यतेस्पष्टायदाधारंजलंत्विदम् ॥ पंकजंकथमुत्पन्नंप्रसिद्धंरूढियोगयोः ॥ १६ ॥ पश्याम्यद्यास्यपंकंतंमूलंवैपंकजस्यच ॥ भविष्यतिधरातत्रमूलंनास्त्यत्रसंशयः ॥ १७ ॥ उत्तरन्सलिलेतत्रयावद्वर्षसहस्रकम् ॥ अन्वेषमाणोधरणींनावापंतांयदातदा ॥ १८ ॥ तपस्तपेतिचाकाशेवागभूदशरीरिणी ॥ ततोमयातपस्तप्तंपद्मेवर्षसहस्रकम् ॥ १९ ॥ सृजेतिपुनरुद्भूतावाणीतत्रश्रुतामया॥विमूढोहंतदाकर्ण्यकंसृजामिकरोमिकिम् ॥२०॥ तदादैत्यावतिप्राप्तौदारुणौमधुकैटभौ ॥ताभ्यांविभीषितश्चाहंयुद्धायमकरालये ॥ २१ ॥ ततोऽहंनालमालंब्यवारिमध्यमवातरम् ॥ तदातत्रमयादृष्टःपुरुषःपरमाद्भुतः ॥ २२ ॥ मेघश्यामशरीरस्तुपीतवासाश्चतुर्भुजः ॥ शेषशायीजगन्नाथोवनमालाविभूषितः ॥ २३ ॥ शंखचक्रगदापद्माद्यायुधैःसुविराजितः ॥ तमद्राक्षंमहाविष्णुंशेषपर्यंकशायिनम् ॥ २४ ॥ योगनिद्रासमाक्रांतमविस्पंदिनमच्युतम् ॥ शयानंतंसमालोक्यभोगिभोगोपरिस्थितम् ॥ २५ ॥

॥ १५ ॥ पंकजंहिपंकाज्जातम् ॥ पंकस्त्वत्रनास्तिततःपंकजंकथमुत्पन्नम् ॥ १६ ॥ मादृश्यतामत्रपंकस्तथापिकार्येणपंकजेनकारणस्यपंकस्यानुमानादस्त्येव ॥ सकुत्रचिदितिनिश्चित्यतंपंकंपश्यामीतिनिश्चयंकृतवानित्याह । पश्यामीति ॥ पंकस्यापिधरामूलंसापितत्रस्यादितिपंकान्वेषणेनधराऽपिप्राप्ताभवेदितिभावः ॥ १७॥ नावापं तांधरणींतंपंकंचनावापंनप्राप्तवानहम् ॥ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ युद्धाययुद्धंकर्तुम् ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥२६॥२७॥२८॥ तदाविलोकितौदेव्याकटाक्षेणप्रथमंविलोकितौततोविमोहितौततोहरिणानिपातिताविति पूर्ववृत्तांतःस्मारितः॥२९॥रुद्रस्तत्रैवसंप्राप्तइतिवचनेनायंरुद्रोब्रह्मललाटादुत्पन्ना द्वक्ष्यमाणाद्रुद्रादन्यएवेतिनिःसंशयमेववोध्यते ॥ अतएवकूर्मपुराणादिपुराणेषुब्रह्मविष्णुरुद्रात्मकत्रिमूर्तिरहितस्तुरीयोरुद्रोस्तीत्युक्तम् ॥ एतावांस्तुविशेषः ॥ क्वचित्पुराणेषुब्रह्मललाटोद्भ

चिंताममाद्भुताजाताकिंकरोमीतिनारद ॥ मयास्मृतातदादेवीस्तुतानिद्रास्वरूपिणी ॥ २६ ॥ देहान्निर्गत्यसादेवीगगनेसंस्थिताशिवा ॥ अवितर्क्यशरीरासादिव्याभरणमंडिता ॥ २७ ॥ विष्णोर्देहंविहायाशुविरराजनभःस्थिता ॥ उदतिष्ठदमेयात्मातयामुक्तोजनार्दनः ॥ २८ ॥ पंचवर्षसहस्राणिकृतवान्युद्धमुत्तमम् ॥ तदाविलोकितौदैत्यौहरिणाविनिपातितौ ॥ २९ ॥ उत्संगंविमलंकृत्वातत्रैवनिहतौचतौ ॥ रुद्रस्तत्रैवसंप्राप्तोयत्राऽऽवांसंस्थितावुभौ ॥ ॥ ३० ॥ त्रिभिःसंवीक्षितास्माभिःस्वस्थादेवीमनोहरा ॥ संस्तुतापरमाशक्तिरुवाचास्मानवस्थितान् ॥ ३१ ॥ कृपावलोकनैःकृत्वापावनैर्मुदितानथ ॥ देव्युवाच ॥ काजेशाःस्वानिकार्याणिकुरुध्वंसमतंद्रिताः ॥ ३२ ॥ सृष्टिस्थितिविशिष्टानिहतावेतौमहासुरौ ॥ कृत्वास्वानिनिकेतानिवसध्वंविगतज्वराः ॥ ३३ ॥ प्रजाश्चतुर्विधाःसर्वाःसृजध्वंस्वविभूतिभिः ॥ ब्रह्मोवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्याःपेशलंसुखदंमृदु ॥३४॥ अब्रूमतामशक्ताःस्मकथंकुर्मस्त्विमाःप्रजाः ॥ नमहीविततामातःसर्वत्रविततंजलम् ॥ ३५ ॥ नभूतानिगुणाश्चापितन्मात्राणींद्रियाणिच ॥ तदाकर्ण्यवचोस्माकंशिवाजातास्मितानना ॥ ॥ ३६ ॥ झटित्येवागतंतत्रविमानंगगनाच्छुभम् ॥ सोवाचास्मिन्सुराःकामंविशध्वंगतसाध्वसाः ॥ ३७ ॥ विमानेब्रह्मविष्ण्वीशादर्शयाम्यद्यचाद्भुतम् ॥ तन्निशम्यवचस्तस्याओमित्युक्त्वापुनर्वयम् ॥ ३८ ॥ समारुह्योपविष्टाःस्मोविमानेरत्नमंडिते ॥ मुक्तादामसुसंवीतेकिंकिणीजालशब्दिते ॥ ३९ ॥ सुरसद्मनिभेरम्येत्रयस्तत्राविशंकिताः ॥ सोपविष्टांस्ततोदृष्ट्वादेव्यस्मान्विजितेंद्रियान् ॥ ४० ॥ स्वशक्त्यातद्विमानंवैनोदयामासचांबरे ॥ ४१ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेअष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांतृतीयस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ विमानंतन्मनोवेगंयत्रस्थानांतरेगतम् ॥ नजलंतत्रपश्यामोविस्मिताःस्मोवयंतदा ॥ १ ॥ वृक्षाःसर्वफलारम्याःकोकिलारावमंडिताः ॥ महीमहीधराःकामंवनान्युपवनानिच ॥ २ ॥ नार्यश्चपुरुषाश्चैवपशवश्चसरिद्वराः ॥ वाप्यःकूपास्तडागाश्चपल्वलानिचनिर्झराः ॥ ३ ॥

वस्यमूर्तित्रयांतर्गतत्वमस्यतुरीयत्वंक्वचित्त्वस्यैवमूर्तित्रयांतर्गतस्यब्रह्मललाटोद्भवस्यतुनतुरीयत्वंनापितृतीयत्वमिति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ विशिष्टानि सृष्टिस्थितिसंहाररूपाणीत्यर्थः ॥ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ गतसाध्वसागतभयाः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ सप्तषष्टिश्लोकवर्यैर्विमानस्थाहरादयः ॥ ददृशुस्तेदेवदेवीमितिसम्यगिहोच्यते ॥ १ ॥ विमानस्यांबरगमनानंतरंजातंवृत्तमाह । विमानंतन्मनोवेगमिति ॥ १ ॥ २ ॥ निर्झरागिरिप्रस्रवणानि ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ४ ॥ स्वर्गोयमित्यस्माकंप्रत्यभिज्ञाजाता परंतुसस्वर्गोयमस्मत्सृष्टिस्थस्वर्गापेक्षयाऽन्यःकेननिर्मितइत्यद्भुतमाश्चर्यंतदाजातम् ॥ ५ ॥ तत्रयदाविमानमागतंतस्मिन्समयेतत्स्वर्गस्थोदेवराजोमृगयांकर्तुंबहिर्निर्गतःसोस्माभिर्दृष्टः ॥ तस्मिन्नेवस्थलेस्थितैरस्माभिःपूर्वदृष्टायांऽविकासाऽपिविमानोपरिस्थितादृष्टा ॥ ६ ॥ मृगयांकर्तुंगतमित्यनेनस्वर्गाद्बहुदूरंयदाविमानंस्थितंतत्कालिकोवृत्तांतएतत्पर्यंतमुपपादितोऽथयदामुहूर्तांतरेणविमानंस्वर्गनिकटेगतंतत्कालिकंवृत्तांतमाह ।क्षणाच्चचालेति ॥ देशेचान्यइति ॥ स्वर्गनिकटेदेशइत्यर्थः ॥ ७॥ सुरभिः स्थितादृष्टेत्यर्थः ॥

पुरतोनगरंरम्यंदिव्यप्राकारमंडितम् ॥ यज्ञशालासमायुक्तंनानाहर्म्यविराजितम् ॥ ४ ॥ प्रत्यभिज्ञातदाजाताप्यस्माकंप्रेक्ष्यतत्पुरम् ॥ स्वर्गोयमितिकेनासौनिर्मितोस्तिततदाद्भुतम् ॥ ५ ॥ राजानंदेवसंकाशंव्रजंतंमृगयांवने ॥ अस्माभिःसंस्थितादृष्टाविमानोपरिचांबिका ॥ ६ ॥ क्षणाच्चचालगगनेविमानंपवनेरितम् ॥ मुहूर्ताद्धाततःप्राप्तंदेशेचान्येमनोहरे ॥ ७ ॥ नंदनंचवनंतत्रदृष्टमस्माभिरुत्तमम् ॥ पारिजाततरुच्छायासंश्रितासुरभिःस्थिता ॥ ८ ॥ चतुर्दंतोगजस्तस्याःसमीपेसमवस्थितः ॥ अप्सरसांतत्रवृंदानिमेनकाप्रभृतीनिच ॥ ९ ॥ क्रीडंतिविविधैर्भावैर्गाननृत्यसमन्वितैः ॥ गंधर्वाःशतशस्तत्रयक्षाविद्याधरास्तथा ॥ १० ॥ मंदारवाटिकामध्येगायंतिचरमंतिच ॥ दृष्टःशतक्रतुस्तत्रपौलोम्यासहितःप्रभुः ॥११॥ वयंतुविस्मिताश्चास्मदृष्ट्वात्रैविष्टपंतदा ॥ यादःपतिंकुबेरंचयमंसूर्यंविभावसुम् ॥ १२ ॥ विलोक्यविस्मिताश्चास्मवयंतत्रसुरान्स्थितान् ॥ तदाविनिर्गतोराजापुरात्तस्मात्सुमंडितात् ॥ १३ ॥ देवराजइवाक्षोभ्योनरवाह्यावनौस्थितः ॥ विमानस्थावयंतच्चचचालतरसागतम् ॥१४॥ ब्रह्मलोकंतदादिव्यंसर्वदेवनमस्कृतम् ॥ तत्रब्रह्माणमालोक्यविस्मितौहरकेशवौ ॥ १५ ॥ सभायांतत्रवेदाश्चसर्वेसांगाःस्वरूपिणः ॥ सागराःसरितश्चैवपर्वताःपन्नगोरगाः ॥ १६ ॥ मामूचतुश्चतुर्वक्त्रकोऽयंब्रह्मासनातनः ॥ ताववोचमहंनैवजानेसृष्टिपतिंपतिम् ॥ १७ ॥ कोऽहंकोऽयंकिमर्थंवाभ्रमोऽयंममचेश्वरौ ॥ क्षणादथविमानंतच्चचालाशुमनोजवम् ॥ १८ ॥ कैलासशिखरेप्राप्तंरम्येयक्षगणान्विते ॥ मंदारवाटिकारम्येकीरकोकिलकूजिते ॥ १९ ॥ वीणामुरजवाद्यैश्चनादितेसुखदेशिवे ॥ यदाप्राप्तंविमानंतत्तैदेवसदनाच्छुभात् ॥ २० ॥ निर्गतोभगवाञ्छंभुर्वृषारूढस्त्रिलोचनः ॥ पंचाननोदशभुजःकृतसोमार्धशेखरः ॥ २१ ॥ व्याघ्रचर्मपरीधानोगजचर्मोत्तरीयकः ॥ पार्ष्णिरक्षौमहावीरौगजाननषडाननौ ॥ २२ ॥ शिवेनसहपुत्रौद्वौव्रजमानौविरेजतुः ॥ नंदिप्रभृतयःसर्वेगणपाश्चवराश्चते ॥ २३ ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ रमंतिचेति ॥ तेचदृष्टाइत्यर्थः ॥ इंद्रासनेइंद्रोऽपिदृष्टइत्याह । शतक्रतुरिति ॥ मृगयांकृत्वागतः स्वासनेस्थितोदृष्टइत्यर्थः ॥ ११॥ यादःपतिंवरुणम् ॥१२॥ विस्मिता इति । अस्मत्सृष्टिस्थदेवतापेक्षयाऽन्यएतेकस्मादागताइतिविस्मिताइत्यर्थः॥तस्मिन्नेवसमयेयःसिंहासनेस्थितइंद्रोदृष्टःसतस्मात्पुरान्निर्गतोदेवराजः॥इवशब्दोनिश्चयार्थकःदेवराजएवनरवाह्यांयावनिःशिविकारूपातस्यांस्थितोदृष्टः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

शंकरमिति ॥ एतच्छंकराद्विमानस्थाच्छंकरादन्यमित्यर्थः ॥ २४ ॥ मातृभिः सहितंशंकरमित्यन्वयः ॥ २५ ॥ २६ ॥ सदनाग्रेइति ॥ यद्वैकुंठस्थितोविष्णुस्तद्वैकुंठसदनाग्रेइत्यर्थः ॥ ययौ प्राप्तवान् ॥ इमेब्रह्मादयोऽन्यब्रह्मांडस्थाएतैर्दृष्टाइतिबोध्यम् ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मंदारपारिजातेति ॥ अतिशोभितोमणिद्वीपदेशइतिशेषः ॥ अतएवाग्रेतस्मिन्द्वीपइत्युक्तंसंगच्छते ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ शिवाकारःपर्यंकः ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वराःपर्यंकखुराः सदाशिवस्तुफलकस्यानीयः ततःशिवाकारोजातः ॥ इदंसप्तमस्कंधेस्पष्टम् ॥ अत्रमणिद्वीपस्थानंब्रह्मांडाद्बहिरस्तीतिद्वादशस्कंधेवक्ष्यते ॥ सुमेरुमध्यशृंगेभवतीतितुब्रह्मांडपुराणेललितोपाख्यानेस्पष्टम् ॥ तत्परिमाणंतद्वर्णनंचतत्रैवस्पष्टम् ॥ दुर्वासःकृतेस्तवरत्नेशिवरहस्येद्वितीयांशेच ॥ ३५ ॥ रत्नाऽल

जयशब्दंप्रयुंजानाव्रजंतिशिवपृष्ठगाः ॥ तंवीक्ष्यशंकरंचान्यंविस्मितास्तत्रनारद ॥ २४ ॥ मातृभिःसंशयाविष्टस्तत्राहंन्यवसंमुने ॥ क्षणात्तस्माद्गिरेःशृंगाद्विमानंवातरंहसा ॥ २५ ॥ वैकुंठसदनंप्राप्तंरमारमणमंदिरम् ॥ असंभाव्याविभूतिश्चतत्रदृष्टामयासुत ॥ २६ ॥ विसिष्मियेतदाविष्णुर्दृष्ट्वातत्पुरमुत्तमम् ॥ सदनाग्रेययौतावद्धरिःकमललोचनः ॥ २७ ॥ अतसीकुसुमाभासःपीतवासाश्चतुर्भुजः ॥ द्विजराजाधिरूढश्चदिव्याभरणभूषितः ॥ २८ ॥ वीज्यमानस्तदालक्ष्म्याकामिन्याचामरैःशुभैः ॥ तंवीक्ष्यविस्मिताःसर्वेवयंविष्णुंसनातनम् ॥ २९ ॥ परस्परंनिरीक्षंतःस्थितास्तस्मिन्वरासने ॥ ततश्चचालतरसाविमानंवातरंहसा ॥ ३० ॥ सुधासमुद्रःसंप्राप्तोमिष्टवारिमहोर्मिमान् ॥ यादोगणसमाकीर्णश्चलद्वीचिविराजितः ॥ ३१ ॥ मंदारपारिजाताद्यैःपादपैरतिशोभितः ॥ नानास्तरणसंयुक्तोनानाचित्रविचित्रितः ॥ ३२ ॥ मुक्तादामपरिक्लिष्टोनानादामविराजितः ॥ अशोकवकुलाख्यैश्चवृक्षैःकुरुवकादिभिः ॥ ३३ ॥ संवृतःसर्वतःसौम्यैःकेतकीचंपकैर्वृतः ॥ कोकिलारावसंघुष्टोदिव्यगंधसमन्वितः ॥ ३४ ॥ द्विरेफातिरणत्कारैरंजितःपरमाद्भुतः ॥ तस्मिन्द्वीपेशिवाकारःपर्यंकःसुमनोहरः ॥ ३५ ॥ रत्नालिखचितोऽत्यर्थंनानारत्नविराजितः ॥ दृष्टोऽस्माभिर्विमानस्थैर्दूरतःपरिमंडितः ॥ ३६ ॥ नानास्तरणसंछन्नइंद्रचापसमन्वितः ॥ पर्यंकप्रवरेतस्मिन्नुपविष्टावरांगना ॥ ३७ ॥ रक्तमाल्यांबरधरारक्तगंधानुलेपना ॥ सुरक्तनयनाकांताविद्युत्कोटिसमप्रभा ॥ ३८ ॥ सुचारुवदनारक्तदंतच्छदविराजिता ॥ रमाकोट्यधिकाकांत्यासूर्यबिंबनिभाखिला ॥ ३९ ॥ वरपाशांकुशाभीष्टधराश्रीभुवनेश्वरी ॥ अदृष्टपूर्वादृष्टासासुंदरीस्मितभूषणा ॥ ४० ॥

योरत्नभ्रमराः ॥ ३६ ॥ इंद्रचापसमन्वितःइंद्रचापवदनेकवर्णविशिष्टमणिसमन्वितइत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ वरपाशांकुशेति ॥ आयुधस्थानानिवामाधःकरमारभ्यदक्षिणाधःकरपर्यंतम् ॥ तदुक्तंमहासंमोहनेतंत्रे ॥ दक्षिणेचांकुशंदद्याद्वामेपाशंप्रदापयेत् ॥ अभयंदक्षिणेदद्याद्वरंवामेप्रदापयेदिति ॥ दशपटल्यामपिभुवनेशीध्याने दक्षेंऽकुशाभयेप्रोक्तेवामेपाशमथेष्टदमिति ॥ इष्टदंवरम् ॥ आयुधार्थस्तुप्रपंचसारेभुवनेश्वरीपटलेश्रीमच्छंकरभगवत्पादैर्विस्तरेणोपपादितइतिततएवावधार्यः ॥ भुवनेश्वरीसर्वभुवनेश्वरीत्यर्थः ॥ भुवनेश्वरीपदनिरुक्तिस्तुभुवनेश्वरीपारिजातेभुवनेश्वरीहृदयेदक्षिणामूर्तिसंहितायांच ॥ इदंचध्यानंदेव्यथर्वशिरसि हृत्पुंडरीकमध्यस्थांप्रातःसूर्यसमप्रभाम् ॥ पाशांकुशधरांसौम्यांवरदाभयहस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रांरक्तवसनांभक्तकामदुघांभजेइत्युक्तम् ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ह्रींकारजपनिष्ठैस्त्विति॥यदापक्षिगणोपिह्रींकारंजपतितदाऽन्येजपंतिह्रींकारबीजमित्यत्रकिंवक्तव्यम्॥४१॥उद्यत्पीनेति॥स्तनद्वयेनकमलकुड्मलेजितेइत्यर्थः॥४२॥४३॥कनच्छ्रीचक्रताटं
केति॥कनतीदीप्यमानेयेश्रीचक्राकारेत्रिपुरसुंदरीचक्राकारेताटंकेरत्नकुंडलेताभ्यांविटंकंसुंदरंवदनारविंदंयस्याःसा॥हृल्लेखाभुवनेशीति॥ हृल्लेखापदव्युत्पत्तिस्तुभुवनेश्वरीरहस्येउक्ता॥हृदि
लेखेवजागर्तिप्राणशक्तिरियंपरा॥हृल्लेखाकथ्यतेतस्मादिति॥त्रिपुरतापनीयश्रुतिरापि॥ हृदयागारवासिनीहृल्लेखेति॥भुवनेशीपदव्युत्पत्तिस्तुभुवनेशीपारिजातेभुवनेशीहृदयेदक्षिणामूर्तिसंहि
तायांच॥व्योमबीजेमहेशानिकैलासादिप्रतिष्ठितम्॥वह्निबीजात्सुवर्णादिनिष्पन्नंबहुधाप्रिये॥तेनायंवर्ततेलोकोभूमंडलसमस्थितः। दुर्यस्वरेणपातालेशेषरूपेणधार्यते॥महाभूमंडलंतस्मात्पाता
लस्याऽपिनायिका॥अतएवमहेशानिभुवनेशीतिकथ्यते॥बिंदुचंद्रामृतंदेविप्लावयंतीजगत्त्रयम्॥द्रवरूपाभवेत्तस्मात्सृजंतीचार्धमात्रया॥अतएवमहेशानीभुवनेशीतिकथ्यतइति॥भुवनेश्वर्युपनिष
दिभुवनाधीश्वरीतुर्यातीताविश्वविमोहिनीति ॥ मंत्रार्थस्तुहालास्यमाहात्म्येउक्तः॥सचोपोद्घातेएवदर्शितः॥४४॥हृल्लेखाद्याअमरकन्याः॥४५॥अनंगकुसुमाद्याश्चयंत्रावरणदेवताः॥इदमुप

ह्रींकारजपनिष्ठैस्तुपक्षिवृंदैर्निषेविता ॥ अरुणाकरुणामूर्तिःकुमारीनवयौवना ॥ ४१ ॥ सर्वशृंगारवेषाढ्यामंदस्मितमुखांबुजा ॥ उद्यत्पीनकुचद्वंद्वनि
र्जितांभोजकुड्मला ॥ ४२ ॥ नानामणिगणाकीर्णभूषणैरुपशोभिता ॥ कनकांगदकेयूरकिरीटपरिशोभिता ॥ ४३ ॥ कनच्छ्रीचक्रताटंकविटंकवदनां
बुजा ॥ हृल्लेखाभुवनेशीतिनामजापपरायणैः ॥ ४४ ॥ सखीवृंदैःस्तुतानित्यंभुवनेशीमहेश्वरी ॥ हृल्लेखाद्याभिरमरकन्याभिःपरिवेष्टिता ॥ ४५ ॥ अनं
गकुसुमाद्याभिर्देवीभिः परिवेष्टिता ॥ देवीषट्कोणमध्यस्थायंत्रराजोपरिस्थिता ॥ ४६ ॥ दृष्ट्वातांविस्मिताःसर्वेवयंतत्रस्थिताभवन् ॥ केयंकांताच
किंनामनजानीमोऽत्रसंस्थिता ॥ ४७ ॥ सहस्रनयनारामासहस्रकरसंयुता ॥ सहस्रवदनारम्याभातिदूरादसंशयम् ॥ ४८ ॥ नाप्सरानापिगंधर्वीनेयंदेवां
गनाकिल ॥ इतिसंशयमापन्नास्तत्रनारदसंस्थिताः ॥ ४९ ॥ तदाऽसौभगवान्विष्णुर्दृष्ट्वातांचारुहासिनीम् ॥ उवाचांवांस्वविज्ञानात्कृत्वामनसिनिश्चय
म् ॥ ५० ॥ एषाभगवतीदेवीसर्वेषांकारणंहिनः ॥ महाविद्यामहामायापूर्णाप्रकृतिरव्यया ॥ ५१ ॥

लक्षणंसेवार्थमागतानामन्यदेवतानामपि॥तदुक्तंब्रह्मांडपुराणे॥सेवार्थमागतास्तत्रब्रह्माणीब्रह्मकोटयः ॥ लक्ष्मीनारायणानांचकोटयः समुपागताः ॥ गौरीकोटिसहस्राणांरुद्राणामपिकोटय
इति॥यंत्रमाह ॥ देवीषट्कोणेति ॥ षड्गुणितयंत्रमध्यस्थेत्यर्थः॥तच्चयंत्रप्रपंचसारेस्पष्टम् ॥ यद्वा पद्ममष्टदलंवाह्येवृतंषोडशभिर्दलैः॥ विलिखेत्कर्णिकामध्येषट्कोणमतिसुंदरमितिशारदो
क्तंग्राह्यम् ॥४६॥४७॥ इतियावच्चतुर्भुजांपश्यंतितावदेवसैवमूर्तिर्विराड्रूपेणदृश्यमानाऽभवादित्याह ॥ सहस्रनयनारामेति ॥ विराट्स्वरूपंदेव्यास्तुसप्तमस्कंधेस्पष्टम् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ स्वावि
ज्ञानात्स्वकीयस्मरणात् ॥५०॥एषेति॥यन्नोऽस्माकंकारणंसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपंतादिदंतर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नामरूपाभ्यांव्याक्रियतइत्यादिश्रुतिप्रतिपाद्यंमायावाएषानारसिंहीसर्व
मिदंसृजतिसर्वमिदंरक्षतिसर्वमिदंसंहरतितस्मान्मायामेतांशक्तिंविद्यादिति॥अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां नतस्यकार्यंकरणंचेत्यादिश्रुतिप्रतिपाद्यंच ॥ तदेषाभगवतीतस्यैवमुख्यामूर्तिरिय
मितिभावः॥परंब्रह्मैवसर्वकारणमायाशबलितंभक्तानुग्रहार्थमिदंरूपंदधारेत्यर्थः ॥ ५१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इच्छेति ॥ इच्छाशक्तिरुमाकुमारीतिशिवसूत्रप्रतिपाद्या ॥ तत्किंजडा नेत्याह। नित्यानित्यस्वरूपिणीति ॥ नित्यंब्रह्मानित्यंमायातदुभयरूपिणी॥मायाशबलब्रह्मरूपिणीत्यर्थः॥तथाच भगवत्याउभयात्मकत्वात्कदाचिद्ब्रह्मरूपेणैववर्णनकदाचिऽत्तच्छक्तिरूपेणैववर्णनंमितीच्छाशक्तिरूपत्वेनवर्णनेनवर्णनेपिदोषाभावः ॥ तथाचस्मृतिः ॥ ह्रींकारउभयात्मकइति ॥ शिव शक्त्यात्मकइत्यर्थः । ह्रींब्रह्मेतिश्रुतेश्च ॥ ५२ ॥ वेदगर्भावेदजनयित्री ॥ अस्यमहतोभूतस्यानिःश्वसितमेतद्यदृग्वेदइत्यादिश्रुतेः ॥ ममैवाज्ञापराशक्तिर्वेदसंज्ञापुरातनी॥ऋग्यजुःसामरूपेण सर्गादौसंप्रवर्ततेइतिकूर्मपुराणेद्वादशाध्यायेश्रीभगवत्युक्तेश्च ॥ ५३ ॥ कारणस्वरूपंभगवत्याविशदयति ॥ एषासंहृत्येति ॥ सर्वजीवानामिति ॥ व्यष्टिलिंगशरीराणितद्वासनाश्चसमष्टौ

दुर्ज्ञेयाऽल्पधियांदेवीयोगगम्यादुराशया ॥ इच्छापरात्मनःकामंनित्यानित्यस्वरूपिणी ॥५२॥ दुराराध्याऽल्पभाग्यैश्चदेवीविश्वेश्वरीशिवा ॥ वेदगर्भाविशालाक्षीसर्वेषामादिरीश्वरी ॥ ५३ ॥ एषासंहृत्यसकलंविश्वंक्रीडतिसंक्षये ॥ लिंगानिसर्वजीवानांस्वशरीरेनिवेश्यच ॥ ५४ ॥ सर्वबीजमयीह्येषाराजतेसांप्रतंसुरौ ॥ विभूतयःस्थिताःपार्श्वेपश्यतांकोटिशःक्रमात् ॥ ५५ ॥ दिव्याभरणभूषाढ्यादिव्यगंधानुलेपनाः॥परिचर्यापराःसर्वाःपश्यतांब्रह्मशंकरौ ॥ ॥ ५६ ॥ धन्यावयंमहाभागाःकृत्यकृत्याःस्मसांप्रतम् ॥ यदत्रदर्शनंप्राप्ताभगवत्याःस्वयंत्विदम् ॥ ५७ ॥ तपस्ततंपुरायत्नात्तस्येदंफलमुत्तमम्॥अन्यथादर्शनंकुत्रभवेदस्माकमादरात् ॥५८॥ पश्यंतिपुण्यपुंजायेयेवदान्यास्तपस्विनः ॥ रागिणोनैवपश्यंतिदेवींभगवतींशिवाम् ॥ ५९ ॥ मूलप्रकृतिरेवैषासदापुरुषसंगता ॥ ब्रह्मांडंदर्शयत्येषाकृत्वावैपरमात्मने ॥ ६० ॥ द्रष्टाऽसौदृश्यमखिलंब्रह्मांडंदेवतास्सुरौ ॥ तस्यैषाकारणंसर्वामायासर्वेश्वरीशिवा ॥ ॥ ६१ ॥ काहंवाकसुराःसर्वेरमाद्याःसुरयोषितः ॥ लक्षांशेनतुलामस्यानभवामःकथंचन ॥ ६२ ॥ सैषावरांगनानामयादृष्टावैमहार्णवे ॥ बालभावेमहादेवीदोलयंतीवमांमुदा ॥ ६३ ॥ शयानंवटपत्रेचपर्यंकेसुस्थिरेदृढे ॥ पादांगुष्ठंकरेकृत्वानिवेश्यमुखपंकजे ॥ ६४ ॥ लेलिहंतंचक्रीडंतमनेकैर्बालचेष्टितैः ॥ रममाणंकोमलांगंवटपुत्रपुटेस्थितम् ॥६५॥ गायंतीदोलयंतीचबालभावान्मयिस्थिते ॥ सेयंमुनिश्चितंज्ञानंजातंमेदर्शनादिव ॥६६॥ कामंनोजननीसैषाशृणुतंप्रवदाम्यहम् ॥ अनुभूतंमयापूर्वंप्रत्यभिज्ञासमुत्थिता ॥६७॥ इतिश्रीदेवीभा० म० अष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सूत्रात्मानिस्थापयित्वातत्समष्टिलिंगशरीरंसवासनंस्वशरीरेप्रलयकालेसंनिवेश्यस्थापयित्वाएकाकिनीक्रीडाति ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ मूलप्रकृतिरेवैषेति ॥ एवंवर्णनंजडशक्तिरूपत्वेनाक्रियते ॥ भुवनेश्वर्याजडाजडरूपत्वेनाविद्यमानत्वात् ॥ ६० ॥ द्रष्टाऽसौजीवोदृश्यमिदंसर्वंविश्वंतस्योभयविधस्याप्येषैवकारणम् ॥ यथासुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिंगाइतिश्रुतेर्जीवविश्वविभागस्यकारणब्रह्माधीनत्वात् ॥ ६१ ॥६२॥ सैषेति ॥ अनयैवममार्धश्लोकात्मकभागवतस्यरहस्यभूतस्योपदेशः कृतइत्यस्यामूर्तिदर्शनेनममप्रत्यभिज्ञासमुत्थिता ॥ तस्यश्लोकार्धस्यार्थस्तु ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्माहमेवेति ॥ तस्माद्यामयादृष्टासैवेयंसाचसर्वकारणत्वंस्वस्याह ॥ तस्मादियंसर्वकारणमेवेतिभावः ॥ ननुकस्यामवस्थायामियंत्वयादृष्टातत्राह ॥ बालभावेइति ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलके तृ० स्कं० तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एकोनपंचाशत्पद्यैःस्त्रीभावगमनोत्तरम् ॥ विष्णुनाऽथकृतंस्तोत्रंश्रीदेव्याइतिकथ्यते ॥ १ ॥ श्रीदेवीदर्शनोत्तरंब्रह्मादीनांवृत्तमाह । इत्युक्त्वेति ॥ इतिपूर्वोक्तांबालावस्थाकथांब्रह्मणेविष्णुरुक्त्वापुनर्ब्रह्माणंविष्णुराह ॥ १ ॥ २ ॥ तत्रस्थायद्देशेवारयिष्यंतितस्मिन्नेवदेशेस्थिताःस्तुतिंकरिष्यामस्तावतादयार्द्रासर्वज्ञादेवीज्ञास्यत्यस्माकंस्तुतिंकृपांचकरिष्यतीत्यर्थः ॥ ३ ॥ नारदंप्रतिब्रह्माऽऽह ॥ इत्युक्तेइति ॥ हरिवाक्यंश्रुत्वाअहंहरश्चोभौप्रमुदितौजातौनिकटेश्रीदेवीसमीपेगमनायतदाहरिंप्रत्योमित्यंगीकारवाक्यमुक्त्वास्थितौ ॥ ४ ॥ ततःसर्वेवयंविमाना

ब्रह्मोवाच ॥ इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुःपुनराहजनार्दनः ॥ वयंगच्छेमपार्श्वेऽस्याःप्रणमंतःपुनःपुनः ॥ १ ॥ सेयंवरामहामायादास्यत्येषावरान्हिनः ॥ स्तुवामःसंनिधिंप्राप्यनिर्भयाश्चरणांतिके ॥ २ ॥ यदिनोवारयिष्यंतिद्वारस्थाःपरिचारकाः ॥ पठिष्यामश्चतत्रस्थाःस्तुतिंदेव्याःसमाहिताः ॥ ३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इत्युक्तेहरिणावाक्येसुप्रहृष्टौसुसंस्थितौ ॥ जातौप्रमुदितौकामंनिकटेगमनायच ॥ ४ ॥ ओमित्युक्त्वाहरिंसर्वेविमानात्त्वरितास्त्रयः ॥ उत्तीर्यनिर्गताद्वारिशंकमानामनस्यलम् ॥ ५ ॥ द्वारस्थान्वीक्ष्यतान्सर्वान्देवीभगवतीतदा ॥ स्मितंकृत्वाचकाराशुतांस्त्रीन्स्त्रीरूपधारिणः ॥ ६ ॥ वयंयुवतयोजाताःसुरूपाश्चारुभूषणाः ॥ विस्मयंपरमंप्राप्तागतास्तत्संनिधिंपुनः ॥७॥ सादृष्ट्वानःस्थितांस्तत्रस्त्रीरूरूपांश्चरणांतिके ॥ व्यलोकयतचार्वंगीप्रेमसंपूर्णयादृशा ॥ ८ ॥ प्रणम्यतांमहादेवींपुरतःसंस्थितावयम् ॥ परस्परंलोकयंतःस्त्रीरूपाश्चारुभूषणाः ॥ ९ ॥ पादपीठंप्रेक्षमाणानानामणिविभूषितम् ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशंस्थितास्तत्रवयंत्रयः ॥ १० ॥ काश्चिद्रक्तांबरास्तत्रसहचर्यःसहस्रशः ॥ काश्चिन्नीलांबरानार्यस्तथापीतांबराःशुभाः ॥ ११ ॥ देव्यःसर्वाःशुभाकाराविचित्रांबरभूषणाः ॥ विरेजुःपार्श्वतस्तस्याः परिचर्यापराःकिल ॥ १२ ॥ जगुश्चननृतुश्चान्याःपर्युपासंततास्त्रियः ॥ वीणामारुतवाद्यानिवादयंत्योमुदान्विताः ॥ १३ ॥ शृणुनारदवक्ष्यामियद्दृष्टंतत्रचाद्भुतम् ॥ नखदर्पणमध्येवैदेव्याश्चरणपंकजे ॥ १४ ॥ ब्रह्मांडमखिलंसर्वंतत्रस्थावरजंगमम् ॥ अहंविष्णुश्चरुद्रश्चवायुरग्निर्यमोरविः ॥ १५ ॥ वरुणःशीतगुस्त्वष्टाकुबेरःपाकशासनः ॥ पर्वताःसागरानद्योगंधर्वाप्सरसस्तथा ॥ १६ ॥ विश्वावसुश्चित्रकेतुःश्वेतश्चित्रांगदस्तथा ॥ नारदस्तुंबरुश्चैवहाहाहूहूस्तथैवच ॥ १७ ॥ अश्विनौवसवःसाध्याःसिद्धाश्चपितरस्तथा ॥ नागाःशेषादयःसर्वेकिन्नरोरगराक्षसाः ॥ १८ ॥ वैकुंठोब्रह्मलोकश्चकैलासःपर्वतोत्तमः ॥ सर्वंतदखिलंदृष्टंनखमध्यस्थितंचन ॥ १९ ॥

दुत्तीर्यतत्रगताइत्याह ॥ ओमित्युक्त्वेति ॥ ५ ॥ स्त्रीरूपधारिणइति ॥ तेवयंत्रयःस्त्रीरूपाजाताइत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ पादपीठंसिंहासनम् ॥ अनेनदासमर्यादावोधिता ॥ यद्दासेनस्वामिमुखनिरीक्षणंनविधेयंकिंतुपादयोरेवदृष्टिःस्थापनीयेति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ मारुतवाद्यंवेण्वादिकम् ॥ १३ ॥ तद्दत्तरंश्रीभुवनेश्वर्याःस्वपादनखमध्येएवानेककोटिब्रह्मांडानिदर्शितानीत्याह ॥ शृणुनारदेति ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ चनेत्यव्ययमप्यर्थकं नखमध्यस्थितमपीत्यर्थः ॥ १९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २० ॥ २१ ॥ इतिदर्शनेनेयमेवसर्वकारणमित्यस्माकंनिश्चयोजातइत्याह ॥ विश्वस्यमातरामिति ॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७ ॥ संसारारणयेसंसारयोनये ॥ पंचकृत्यविधात्र्यै ॥ पंचविधंतत्कृत्यंसृष्टिस्थितिसंहृतितिरोभावाः॥तद्वदनुग्रहकरणंप्रोक्तंसततोदितस्यास्येतिवचनोक्तानिपंचकृत्यानितेषांविधात्रीकर्त्री ॥२८॥ सर्वाधिष्ठानरूपायेसर्वंविवर्तरूपंमिथ्याजगत्तदधिष्ठानाविकृतब्रह्मरूपायैइत्यर्थः॥तथाचब्रह्मांडपुराणेमिथ्याजगदधिष्ठानेति॥कूटस्थायैदेहद्वयाधिष्ठानंकूटवन्निर्विकारंचैतन्यंकूटस्थंतद्रूपायै॥ अर्धमात्रार्थःपरंब्रह्म॥अर्धमात्रात्मिकादेवीब्रह्मानंदैकविग्रहा ॥ भुवनाधीश्वरीतुर्यातीताविश्वविमोहिनीतिश्रुतेः॥अकारोभगवान्ब्रह्माउकारोविष्णुरुच्यते ॥ मकारोभगवान्रुद्रअर्धमात्रापरंपदम्॥अर्धमात्रास्थितानित्येतिस्मृतेश्च ॥ तद्रूपिण्यै॥ हृल्लेखायैप्रत्यगात्मभूतायै ॥२९॥ इत्थंनिर्गुणब्रह्मरूपत्वेनवर्णयित्वाकारणब्रह्मत्वेनस्तौति॥ज्ञातमिति ॥ त्वयिसन्निविष्टंस्थितमित्यर्थः ॥ तेब्रह्मरूपिण्याअस्यजगतःकरणेयाशक्तिर्मायाख्या

मज्जन्मपंकजंतत्रस्थितोऽहंचतुराननः ॥ शेषशायीजगन्नाथस्तथाचमधुकैटभौ ॥ २० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंदृष्टंमयातत्रपादपद्मनखेस्थितम् ॥ विस्मितोऽहंततोवीक्ष्यकिमेतदितिशंकितः ॥ २१ ॥ विष्णुश्चविस्मयाविष्टःशंकरश्चतथास्थितः॥तांतदामेनिरेदेवींवयंविश्वस्यमातरम् ॥२२॥ ततोवर्षशतंपूर्णंव्यतिक्रांतंप्रपश्यतः ॥ सुधामयेशिवेद्वीपेविहारंविविधंतदा॥२३॥सख्यइवतदातत्रमेनिरेऽस्मानवस्थितान् ॥ देव्यःप्रमुदिताकारानानाभरणमंडिताः ॥ २४ ॥ वयमप्यतिरम्यत्वाद्वभूविमविमोहिताः ॥ प्रहृष्टमनसःसर्वेपश्यन्भावान्मनोरमान् ॥ २५ ॥ एकदातांमहादेवींदेवींश्रीभुवनेश्वरीम् ॥ तुष्टावभगवान्विष्णुर्युवतीभावसंस्थितः॥२६॥श्रीभगवानुवाच ॥ नमोदेव्यैप्रकृत्यैचविधात्र्यैसततंनमः ॥ कल्याण्यैकामदायैचवृद्ध्यैसिद्ध्यैनमोनमः॥२७॥सच्चिदानंदरूपिण्यैसंसारारणयेनमः ॥ पंचकृत्यविधात्र्यैतेभुवनेश्यैनमोनमः ॥२८॥ सर्वाधिष्ठानरूपायैकूटस्थायैनमोनमः॥अर्धमात्रार्थभूतायैहृल्लेखायैनमोनमः ॥ २९ ॥ ज्ञातंमयाऽखिलमिदंत्वयिसन्निविष्टंत्वत्तोऽस्यसंभवलयावपिमातरद्य॥शक्तिश्चतेऽस्यकरणेविततप्रभावाज्ञाताऽधुनासकललोकमयीतिनूनम् ॥ ३० ॥ विस्तार्यसर्वमखिलंसदसद्विकारंसंदर्शयस्यविकलंपुरुषायकाले ॥ तत्त्वैश्चषोडशभिरेवचसप्तभिश्चभासींद्रजालमिवनःकिलरंजनाय ॥ ३१॥ नत्वामृतेकिमपिवस्तुगतंविभातिव्याप्यैवसर्वमखिलंत्वमवस्थिताऽसि ॥ शक्तिंविनाव्यवहृतौपुरुषोप्यशक्तोवंभण्यतेजननिबुद्धिमताजनेन ॥ ३२ ॥

सकललोकमयीतिप्रसिद्धाऽस्तिसाज्ञातामया॥नखदर्पणमध्येऽनेकब्रह्मांडदर्शनात्॥सर्वंखल्विदमेवाहंनान्यदस्तिसनातनमितिभगवत्युक्तेश्च॥तस्मात्सर्वकारणभूतात्वमेवासीतिभावः ॥ ३०॥ इत्थंकारणब्रह्मरूपिणींवर्णयित्वामायाशक्तिमात्रांवर्णयति॥विस्तार्येति॥सत्आकाशवायुरूपममूर्तंभूतद्वयम् ॥ असत्तेजोजलभूमिरूपंमूर्तंभूतत्रयम् ॥तयोर्विकारंतत्परिणामरूपंसर्वंजगत्विस्तार्यपुरुषायचेतनायभोक्त्रेदर्शयसि॥किमर्थंरंजनायतस्यनानाप्रकारैर्भोगंकर्तुमित्यर्थः ॥ एतादृशी षोडशभिस्तत्त्वैःसांख्योक्तैस्तद्रूपैःपरिणता तथासप्तभिश्चमहदाद्यैस्तत्त्वैस्तद्रूपैःपरिणतात्वंनोऽस्माकमिंद्रजालमिवविलक्षणाभासि॥अनिर्वचनीयेत्यर्थः॥यदाहुःसांख्याः॥मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याःप्रकृतिविकृतयःसप्त॥षोडशकस्तुविकारइति ॥३१॥ त्वामृतेकिमपिवस्तुनैवास्तीतिव्याप्तिमाह ॥ नत्वामिति ॥ यद्वस्तुभासतेतन्नामरूपविशिष्टमेवभासते तच्चनामरूपंत्वद्रूपमेवततस्तवव्याप्तिरव्याहतेतिभावः ॥ ३२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रीणासीति ॥ इदंविश्वंप्रकटीकरोष्युत्पादयसितथाप्रीणासिअंतर्भावितण्यर्थात्तोषयसितेनत्वंकरुणावत्यसीतिभाति ॥ प्रलयकालेसर्वमत्सिभक्षयसितेनचक्रूरेतिभासीतितेवैभवस्यैश्वर्यस्यच रितंकोवेदनकोपीत्यर्थः ॥ ३३ ॥ अस्त्वन्यत्रकथंचिदस्मासुतु त्वमतिकरुणावत्यसीतिनिदर्शनमाह ॥ त्रातावयामिति॥रक्षिता मधुकैटभाभ्यांसकाशात् ॥ सुखस्यभवनेमणिद्वीपेनीताआनीताः परमांचकोटिंनीताःप्रापिताः ॥ यद्यस्मात्तवमहाप्रभावंदर्शनंजातंतस्मादित्यर्थः॥नह्येतत्करुणामंतरासंभवतितस्मादस्मासुकरुणावत्येवेतिभावः॥३४॥नाहंभवइति॥यानीहनखदर्पणेदृष्टानिभुव नानितादृशान्यन्यानिकानिकतिसंख्यानितवास्मिन्प्रभावेचरितेरचनाकलापरूपेसंतितानिकोवेद नकोपीत्यर्थः ॥ ३५ ॥ अस्माभिरिति ॥ यथास्मिन्भुवनेअस्माभिर्ब्रह्मादयोदृष्टाःसंतित

प्रीणासिविश्वमखिलंसततंप्रभावैःस्वैस्तेजसाचसकलंप्रकटीकरोषि ॥ अत्स्येवदेवितरसाकिलकल्पकालेकोवेददेविचरितंतववैभवस्य ॥ ३३ ॥ त्रातावयं जननितेमधुकैटभाभ्यांलोकाश्चतेसुविततःखलुदर्शितावै ॥ नीताःसुखस्यभवनेपरमांचकोटिंयद्दर्शनंतवभवानिमहाप्रभावम् ॥ ३४ ॥ नाहंभवोनच विरिंचिविवेदमातःकोऽन्योहिवेत्तिचरितंतवदुर्विभाव्यम् ॥ कानीहसंतिभुवनानिमहाप्रभावेह्यस्मिन्भवानिचरितेरचनाकलापे ॥ ३५ ॥ अस्माभिरत्र भुवनेहरिरन्यएवदृष्टःशिवःकमलजःप्रथितप्रभावः ॥ अन्येषुदेविभुवनेषुनसंतिकिंतेकिंविद्मदेविविततंतवसुप्रभावम् ॥ ३६ ॥ याचेंऽबतेंऽघ्रिकमलंप्रणि पत्यकामंचित्तेसदावसतुरूपमिदंतवैतत् ॥ नामापिवक्त्रकुहरेसततंतवैवसंदर्शनंतवपदांबुजयोःसदैव ॥ ३७ ॥ भृत्योऽयमस्तिसततंमयिभावनीयंत्वांस्वा मिनीतिमनसाननुचिंतयामि ॥ एषावयोरविरताकिलदेविभूयाद्व्याप्तिःसदैवजननीसुतयोरिवार्ये ॥ ३८ ॥ त्वंवेत्सिसर्वमखिलंभुवनप्रपंचंसर्वज्ञतापरिस माप्तिनितांतभूमिः ॥ किंपामरेणजगदंबनिवेदनीयंयद्युक्तमाचरभवानितवेंगितंस्यात् ॥ ३९ ॥ ब्रह्मासृजत्यवतिविष्णुरुमापतिश्चसंहारकारकइयंतुजने प्रसिद्धिः ॥ किंसत्यमेतदपिदेवितवेच्छयावैकर्तुंक्षमावयमजेतवशक्तियुक्ताः ॥ ४० ॥ धात्रीधराधरसुतेनजगद्बिभर्तिआधारशक्तिरखिलंतववैबिभर्ति ॥ सूर्योऽपिभातिवरदेप्रभयायुतस्तेत्वंसर्वमेतदखिलंविरजाविभासि ॥ ४१ ॥ ब्रह्माहमीश्वरवरःकिलतेप्रभावात्सर्वेवयंजनियुतानयदातुनित्याः ॥ केऽन्ये सुराःशतमखप्रमुखाश्चनित्यानित्यात्वमेवजननीप्रकृतिःपुराणा ॥ ४२ ॥

थाऽन्येषुभुवनेषुकिंनसंतिसंत्येव ॥ कथमिदंभविष्यतीतिचेत्तववैभवस्यचरितंकोवेदनकोऽपीत्यर्थः ॥ तववैभवेनसंभविष्यतीतिभावः ॥ ३६॥३७॥ जननीसुतयोर्मातापुत्रयोरिवव्याप्तिःसंबंधः स्वस्वामिभावःसदैवभूयात् ॥३८॥ यतःसर्वज्ञतायाःपरिसमाप्तिर्नितांतभूमिश्चरमभूमिस्त्वमसि॥इंगितमभिप्रेतम् ॥ ३९ ॥ किंसत्यमेतन्नसत्यमित्यर्थः ॥ यतस्तवेच्छयातवशक्तियुक्तावयंकर्तुं क्षमानान्यथातस्मादित्यर्थः ॥४०॥ त्वंप्रथमतोविरजानिर्गुणात्मरूपिणीविभासिपश्चात्तेप्रभयायुतःसूर्योविभाति ॥ तथाचश्रुतिः तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभातीति॥४१॥ तेप्रभावात्तवशक्तेर्वयंसर्वेजनिमंतोजन्मवन्तोननित्यास्ततोऽन्योस्मदपेक्षयाजन्मवान्नकोनित्यःस्यात्नकोपीत्यर्थः ॥ किंतुत्वमेवनित्येत्यर्थः ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

त्वंचेदिति ॥ यदिपुरुषंपुराणंत्वंदयसेदयांकरोषिब्रह्माकारमनोवृत्तिरूपब्रह्मविद्याप्रदानेनतदासस्वरूपंजानीयादितिशेषः ॥ इदंतवसन्निधिगोऽहंजानेनिश्चिनोमि॥अन्यथाविद्यावत्त्वेनानेकाहं कारादिधर्मवांस्तमःप्रकृतिर्मूढप्रकृतिरेवस्यात् विभुरहमनादिरहमनीहोऽहमीशोऽहमित्यादयोऽहंकारधर्मास्तद्वान्स्यात्सपुरुषस्तथानंक्ष्यत्येवेतिभावः ॥ ४३॥४४ ॥ सुरपूर्वजानांदेवादिजीवा नामपिसंजीवनायरक्षणायमोक्षायचाम्नायरूपःशास्त्ररूपोऽन्नसत्रस्थानीयोनिगमएवविहितोभवत्यैतादृशीत्वंदयावत्यसीत्यर्थः ॥ ४५ ॥ मोक्षार्थमेवेति ॥ समुद्रतरंगवदनादिनिधनस्यब्रह्मणो येंऽशाजीवभावंगतास्तेषांमोक्षप्राप्त्यर्थमेवस्वप्रयोजनाभावेऽपिप्रपंचंकष्टेनरचयस्येतादृश्यतिदयावत्यसीतिभावः ॥४६॥ जीवोयदेति ॥ यदाजीवः ॥ कृत्यंकर्तृत्वादिकंतवैवत्वत्कर्तृकमेवपरि वेत्तिजानातिनस्वकर्तृकम्॥स्वयंत्वसंगोदासीनएवाहमितिविवेकतोजानाति॥तथाअखिलमतत्त्वमेवसंहरसीत्यपिप्रसिद्धंजानाति ॥तदात्वंजीवस्यासंगत्वादिज्ञानस्यसत्त्वाद्विरमसेउपशमंप्राप्नो

त्वंचेद्भवानिदयसेपुरुषंपुराणंजानेऽहमद्यतवसंनिधिगःसदैव ॥ नोचेदहंविभुरनादिरनीहईशोविश्वात्मधीरितितमःप्रकृतिः सदैव ॥ ४३ ॥ विद्यात्वमेवन नुबुद्धिमतांनराणांशक्तिस्त्वमेवकिलशक्तिमतांसदैव ॥ त्वंकीर्तिकांतिकमलामलतुष्टिरूपामुक्तिप्रदाविरतिरेवमनुष्यलोके ॥ ४४ ॥गायत्र्यसिप्रथमवेदक लात्वमेवस्वाहास्वधाभगवतीसगुणार्धमात्रा ॥ आम्नायएवविहितोनिगमोभवत्यासंजीवनायसततंसुरपूर्वजानाम् ॥ ४५ ॥ मोक्षार्थमेवरचयस्यखिलंप्र पंचंतेषांगताःखलुयतोननुजीवभावम् ॥ अंशाअनादिनिधनस्यकिलानघस्यपूर्णार्णवस्यविततारियथातरंगाः ॥ ४६ ॥ जीवोयदातुपरिवेत्तितवैवकृत्यं त्वंसंहरस्यखिलमेतदितिप्रसिद्धम् ॥ नाट्यंनटेनरचितंवितथेंऽतरंगेकार्येकृतेविरमसेप्रथितप्रभावा ॥ ४७ ॥ त्रातात्वमेवममसोहमयाद्भवाब्धेस्त्वामंबिके सततमेमिमहार्तिदेच ॥ रागादिभिर्विरचितेवितथेकिलांतेमामेवपाहिबहुदुःखकरेचकाले ॥ ४८ ॥ नमोदेविमहाविद्येनमामिचरणौतव ॥ सदाज्ञानप्रका शंमेदेहिसर्वार्थदेशिवे ॥ ४९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांतृतीयस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इत्यु क्त्वाविरतेविष्णौदेवदेवेजनार्दने ॥ उवाचशंकरःशर्वःप्रणतःपुरतःस्थितः ॥ १ ॥ शिवउवाच ॥ यदिहरिस्तवदेविविभावजस्तदनुपद्मजएवतवोद्भवः ॥ किमहमत्रतवापिनसद्गुणः सकललोकविधौचतुराशिवे ॥ २ ॥

षिस्वकृत्यात्॥तत्रदृष्टांतोयथावितथेमिथ्यारूपेंऽतरंगेऽतिरहस्येचमत्काररूपेकार्येकृतेनटेनरचितंनाट्यंयथाविरमतितथेत्यर्थः॥४७॥त्रातात्वमेवेति॥ मोहमयाद्भवाब्धेःसकाशान्ममत्रातात्वमे वनाऽन्यः॥एमिअस्यशरणमितिशेषः॥महार्तिदेचेत्युत्तरेणकालेइत्यनेनान्वेति ॥ अंतकालेनाशकालेइत्यर्थः॥४८॥४९॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः॥४॥चत्वारिंश त्पद्यकैस्तुषट्पद्यैरधिकैरथ ॥ हरस्तुत्युत्तरंब्रह्मस्तुतिरत्रापिवर्ण्यते ॥ १ ॥ ब्रह्मानारदंप्रत्याह ॥ इत्युक्त्वेति ॥ १ ॥ यदीति ॥ हेदेवियदिहरिस्तवविभावजःपराक्रमाज्जातस्तर्हितदनुतस्य विष्णोरनुपश्चाज्जायमानःपद्मजोब्रह्मापितवोद्भवस्त्वज्जन्यएव ॥ यदैवमस्तिततत्राहंसद्गुणस्तमोगुणवान्तवत्वज्जन्योनकिमपितुत्वज्जन्यएव ॥ गुणत्रयस्यत्वत्संबंधित्वादस्माकंचतदात्म कत्वात् ॥ यतस्त्वंसकललोकविधानेचतुरासि ततोऽस्माकंजननंत्वयाकथंकृतमित्यत्राकिमाश्चर्यम् ॥ २ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





त्वमसीति॥वह्निगुणस्वरूपताप्रतिपादनंवन्हिस्वरूपताप्रतिपादनस्याप्युपलक्षणम्॥करणानिज्ञानेंद्रियकर्मेंद्रियाणि॥अथअहंकृतिरहंकारः॥शकंध्वादित्वात्पररूपम् ॥३॥ नचविदंतीति॥येनि खिलंजगद्विष्णुहरब्रह्मकृतमित्यन्यथावदंतितेनशास्त्रसिद्धांतंविदंतिजानंति॥यतस्तेत्रयस्तवकृतास्त्वयाकृताएवजगद्विरचयंति॥तस्मात्त्वमेवसकलजगत्कर्त्रीतिसिद्धांतइत्यर्थः ॥४॥ननुपंचमहा भूतैरेवजगदुत्पद्यतांनेश्वरस्योपयोगइतिचेत्तत्राह अवनीति॥ यदिपंचभूतैर्विषयसहितैःगुणसहितैःशब्दस्पर्शादिसहितैश्चजगद्भवेदितिमतंतदातद्भूतपंचकंतवकलांचिदंशरूपामृतेकथंस्फुटंभवेत् तस्यभूतपंचकस्यदृश्यत्वेनकार्यत्वात्कार्यस्यकर्त्रपेक्षत्वात्काश्चिच्चेतनःकर्ताऽपेक्षितएवेतित्वमेवजगत्कर्त्रीतिभावः ॥५॥ एकोहंबहुस्यांप्रजायेय इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयतइतिश्रुतिरेकैवत्वमनेक रूपाभवसीत्याह॥भवसीति॥विविधवेषैर्येविलासाःक्रीडास्तासुकुतूहलैराश्चर्यैरमसेक्रीडसेविरमसेक्रीडानंतरंप्रलयकालेविरामंचप्राप्नोषि॥तथाचव्याससूत्रम्॥लोकवत्तुलीलाकैवल्यमिति ६॥

त्वमसिभूःसलिलंपवनस्तथाखमपिवह्निगुणश्चतथापुनः ॥ जननितानिपुनःकरणानिचत्वमसिबुद्धिमनोप्यथहंकृतिः ॥ ३ ॥ नचविदंतिवदंतिचयेऽन्यथा हरिहराजकृतंनिखिलंजगत् ॥ तवकृतास्त्रयएवसदैवतेविरचयंतिजगत्सचराचरम् ॥ ४ ॥ अवनिवायुखवह्निजलादिभिःसविषयैःसगुणैश्चजगद्भवेत् ॥ यदितदाकथमद्यचतत्स्फुटंप्रभवतीतितवांबकलामृते ॥ ५ ॥ भवसिसर्वमिदंसचराचरंत्वमजविष्णुशिवाकृतिकल्पितम् ॥ विविधवेषविलासकुतू हलैर्विरमसेरमसेंऽवयथारुचि ॥ ६ ॥ सकललोकसिसृक्षुरहंहरिःकमलभूश्चभवामयदांऽबिके ॥ तवपदांबुजपांसुपरिग्रहंसमधिगम्यतदाननच क्रिम ॥ ७ ॥ यदिदयार्द्रमनानसदांबिकेकथमहंविहितश्चतमोगुणः ॥ कमलजश्चरजोगुणसंभवःसुविहितःकिमुसत्त्वगुणोहरिः ॥ ८ ॥ यदिनतेविष मामतिरंबिकेकथमिदंबहुधाविहितंजगत् ॥ सचिवभूपतिभृत्यजनावृतंबहुधनैरधनैश्चसमाकुलम् ॥९॥ तवगुणास्त्रयएवसदाक्षमाःप्रकटनावनसंहरणेषुवै॥ हरिहरद्रुहिणाश्चक्रमात्त्वयाविरचितास्त्रिजगतांकिलकारणम् ॥ १० ॥

अस्मासुयत्कर्तृत्वंतत्तुत्वत्सृष्टपदार्थेष्वेवाकारांतरोत्पादकत्वंघटंप्रतिकुलालस्येवेत्याह॥सकललोकेति॥एतेवयंभवामजगत्कर्तारोभवाम ॥ कदा॥यदात्वत्पदरजोभूजलादिकंसमधिगम्यप्राप्य तस्याकारविशेषंचक्रिमकृतवंतस्तदेत्यर्थः॥इतिपूर्वकल्पीयकथास्मारिता॥७॥यदिदयार्द्रेति॥यदिदेवित्वंदयावतीनासि ॥ तदाप्रलयकालेसुषुप्तिमूर्च्छागतेभ्योऽस्मभ्यंतत्तद्गुणोपाधिकंज्ञानयो ग्यंदेहंकोदद्याद्यतोदेहोदत्तस्तस्माद्दयावतीत्वात्तवमय्यपिदयांकुर्वितिभावः॥८॥ननुममसर्वेप्राणिनःसमाएवेतिकथंतान्विहायत्वदुपर्येवदयाकर्तव्येतिचेत्तत्राह॥यदिनतेइति ॥ यदितवविषमा मतिर्नास्तिकिंतुसमैवतर्हिसर्वेप्राणिनःसमदुःखसुखाः किमितिनकृताविषमाश्चकृतास्तत्तत्प्राणिकृतकर्मवशात्तस्मात्तवापिजगत्कर्मवशाद्विषमामतिरस्त्येवेतिमय्यपिभक्तिप्रेमयुक्तेदयांकुर्वितिभावः॥९॥ननुयुष्मत्पूर्वंजगन्मयाकेनसाधनेननिर्मितंतत्राह॥तवगुणाइति॥तवगुणत्रयमेवजगत्कर्तुंसमर्थमित्यर्थः॥तर्हिभवंतःकथंजगतांकारणमितिचेत्तत्राह ॥ हरिहरेति॥ त्वत्सृष्टपदार्थानां पंचमहाभूतानामाकारविशेषरूपाणांत्रिजगतांकारणंवयंत्वयारचिताः ॥ त्वत्सृष्टपदार्थेष्वहंकारादिषुजगदाकारविशेषोत्पादकत्वमेवास्माकंकारणत्वंनततोऽतिरिक्तमित्यर्थः ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यदित्वद्गुणानांकर्तृत्वंनस्यात्तदाह॥ परिचितानीति॥मयाहरिणाचविमानगतेनकमलजेनचएतैरस्माभिःपथिगतानिनवानिभुवनानिदृष्टानितानिकेनकृतानीतिकथय॥नह्यस्माकंतत्कर्तृत्वंकिंतु त्वद्गुणानामेवेतिभावः ॥ ११ ॥ तस्मात्त्वमेवजगत्स्रष्ट्रीत्याह ॥ सृजसीति ॥ कथंजगदेकाकिनी सृजसीतितवलीलांनविद्मइतिभावः॥ १२॥ भगवतीसान्निध्यंप्रार्थयते॥जननीति ॥१३॥ ॥ १४ ॥ १५॥ परिचितंसेवितम् ॥१६ ॥ १७॥ एतादृशंत्वत्पदांबुजंयेनभजंतितेहतभाग्याइत्याह॥तपसीति॥ विभवेऐश्वर्येतपोरूपेसत्यपिपराभवोमोक्षात्सकाशात्परिकल्पितोजातस्तेषा

परिचितानिमयाहरिणातथाकमलजेनंविमानगतेनवै ॥ पथिगतैर्भुवनानिकृतानिवाकथयकेनभवानिनवानिच ॥ ११ ॥ सृजसिपासिजगज्जगदंविकेस्व कलयाकियदिच्छसिनाशितुम् ॥ रमयसेस्वपतिंपुरुषंसदातवगतिंनहिविद्मवयंशिवे ॥ १२ ॥ जननिदेहिपदांबुजसेवनंयुवतिभावगतानपिनःसदा ॥ पुरुषतामधिगम्यपदांबुजाद्विरहिताःक्कलभेमसुखंस्फुटम् ॥ १३ ॥ नरुचिरस्तिममांबपदांबुजंतवविहायशिवेभुवनेष्वलम् ॥ निवसितुंनरदेहमवाप्यच त्रिभुवनस्यपतित्वमवाप्यवै ॥ १४ ॥ सुदतिनास्तिमनागपिमेरतिर्युवतिभावमवाप्यतवांतिके ॥ पुरुषताक्कसुखायभवत्यलंतवपदंनयदीक्षणगोचरः ॥ ॥ १५ ॥ त्रिभुवनेषुभवत्वियमंबिकेममसदैवहिकीर्तिरनाविला ॥ युवतिभावमवाप्यपदांबुजंपरिचितंतवसंसृतिनाशनम् ॥ १६ ॥ भुविविहायतवां तिकसेवनंकइहवांछतिराज्यमकंटकम् ॥ त्रुटिरसौकिलयातियुगात्मतांननिकटंयदितेंऽघ्रिसरोरुहम् ॥ १७ ॥ तपसियेनिरतामुनयोऽमलास्तवविहाय पदांबुजपूजनम् ॥ जननितेविधिनाकिलवंचिताःपरिभवोविभवेपरिकल्पितः ॥ १८ ॥ नतपसानदमेनसमाधिनानचतथाविहितैःक्रतुभिर्यथा ॥ तव पदाब्जपरागनिषेवणाद्भवतिमुक्तिरजेभवसागरात् ॥ १९ ॥ कुरुदयांदयसेयदिदेविमांकथयमंत्रमनाविलमद्भुतम् ॥ समभवंप्रजपन्सुखितोह्यहंसुविशदंच नवार्णमनुत्तमम् ॥ २० ॥ प्रथमजन्मनिचाधिगतोमयातदधुनानविभातिनवाक्षरः ॥ कथयमांमनुमद्यभवार्णवाज्जननितारयतारयतारके ॥२१॥ ब्रह्मोवा च ॥ इत्युक्तासातदादेवीशिवेनाद्भुततेजसा ॥ उच्चचारांबिकामंत्रंप्रस्फुटंचनवाक्षरम् ॥ २२ ॥ तंगृहीत्वामहादेवःपरांमुदमवापह ॥ प्रणम्यचरणौदेव्या स्तत्रैवावस्थितःशिवः ॥ २३ ॥ जपन्नवाक्षरंमंत्रंकामदंमोक्षदंतथा ॥ बीजयुक्तंशुभोच्चारंशंकरस्तास्थिवांस्तदा ॥ २४ ॥

मित्यर्थः ॥ १८ ॥ तस्मान्नतपसेति॥नकर्मणानप्रजयाधनेनत्यागेनैकेअमृतत्वमानशुरित्यादिश्रुतेः ॥ अहमेवस्वयमिदंवदामिजुष्टंदेवैमिरुतमानुषेभिः॥यंकामयेतंतमुग्रंकृणोमितंब्रह्माणंतमृषिं तंसुमेधामितिश्रुतेश्च ॥ तवपदाब्जनिषेवणाद्यथामुक्तिःसाचझटितिभवतितथानकुत्रापीतिभावः॥१९॥प्रजपन्सुखितःसमभवमित्यन्वयः॥२०॥ननुनवार्णमंत्रोस्तीत्येवप्रथमतस्त्वयाकथंज्ञात मितिचेत्तत्राह ॥ प्रथमजन्मनीति ॥ पूर्वजन्मनिमयागुरोःसकाशादधिगतःप्राप्तःस्थितः ॥ सइहजन्मन्यधुनानविभातिविस्मृतत्वात्तथापिसंस्कारस्तुतिष्ठतितस्मात्स्मरणंजातमितिभावः ॥ नवाक्षरइति ॥ नवार्णश्चंडिकामंत्रइत्यर्थः ॥ तद्विधानंचनवमस्कंधांतिमाध्यायेवक्ष्यति ॥ अनेनचब्रह्मादीनांजीवत्वंस्पष्टमेवोक्तम् ॥२१॥२२॥२३॥ बीजयुक्तंवाक्काममायायुक्तम् ॥ २४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २५ ॥ नवेदाइति ॥ वेदास्त्वामेवंसर्वज्ञत्वादिविशिष्टांकलयितुंज्ञातुंपटवोनासन्इतिन किंतर्हिपटवएव ॥ यतस्त्वांसकलजनधात्रीमविकलांक्षुद्रकर्मणियज्ञादिषुनोचुस्तदेतत्त्वन्माहिमज्ञाना भावेसंभवतिकिं नैवसंभवाति तस्माज्जानतएवते ॥ ननुतर्हिसर्वथानजानंतिमामतोनोचुरित्येवकिंनस्यात्तत्राह ॥ स्वाहाभूतेति ॥ यदित्वांसर्वथानजानंतितर्हित्वदेकदेशभूतशक्तिःस्वाहाभूता कथं सकलमखहोमेषुविहितातैस्तस्माज्जानतएवते ॥ अतएवतवर्वेदैकवेद्यत्वमस्त्येव ॥ यतस्त्वंक्षुद्रकर्मणिनविहिताततएवत्वंसर्वज्ञासर्वोत्तराजाता नत्विंद्रादिक्षुद्रदेवगणपंक्तिस्थाजातेतिभावः ॥ २६ ॥ भक्त्यभिनिवेशात्स्वधन्यतांवर्णयति कर्ताहमितिश्लोकद्वयेन ॥ कर्ताहंधन्योस्मीत्याद्येतादृशाभिमानेनकेवलगर्वाभिनिवेशान्मोहसागरेमग्नःस्थितः विलक्षणगुणाभावेऽभिमानस्य मूर्खधर्मत्वात् ॥२७॥यद्यप्येतावत्कालपर्यंतमेतादृशःस्थितस्तथाप्यद्याहंधन्योऽस्मीतिवक्ता॥यथार्थवादनिपुणोयथार्थवक्ताजातोस्मिमहागुणलाभात्॥कोसौमहागुणस्तत्राह ॥तवपादपंकज

तंतथाऽवस्थितंदृष्ट्वाशंकरंलोकशंकरम् ॥ अवोचंतांमहामायांसंस्थितोऽहंपदांतिके ॥ २५ ॥ नवेदास्त्वामेवंकलयितुमिहासन्नपटवोयतस्तेनोचुस्त्वांस कलजनधात्रीमविकलाम् ॥ स्वाहाभूतादेवीसकलमखहोमेषुविहितातदात्वंसर्वज्ञाजननिखलुजातात्रिभुवने ॥ २६ ॥ कर्ताऽहंप्रकरोमिसर्वमखिलंब्रह्मांड मत्यद्भुतंकोऽन्योस्तीहचराचरेत्रिभुवनेमत्तःसमर्थःपुमान् ॥ धन्योस्म्यत्रनसंशयःकिलयदाब्रह्मास्मिलोकातिगोमग्नोऽहंभवसागरेप्रविततेगर्वाभिवेशादिति ॥ २७॥ अद्याहंतवपादपंकजपरागादानगर्वेणवैधन्योऽस्मीतियथार्थवादनिपुणोजातःप्रसादाच्चते ॥ याचेत्वांभवभीतिनाशचतुरांमुक्तिप्रदांचेश्वरींहित्वामो हकृतंमहार्तिनिगडंत्वद्भक्तियुक्तंकुरु ॥२८॥ अतोऽहंचजातोविमुक्तःकथंस्यांसरोजादमेयात्त्वदाविष्कृताद्वै॥तवाज्ञाकरःकिंकरोऽस्मीतिनूनंशिवेपाहिमांमो हमग्नंभवाब्धौ ॥ २९ ॥ नजानंतियेमानवास्तेवदंतिप्रभुंमांतवाद्यंचरित्रंपवित्रम्॥यजंतीहयेयाजकाःस्वर्गकामानतेतेप्रभावंविदंत्येवकामम् ॥ ३० ॥ त्व यानिर्मितोऽहंविधित्वेविहारंविकर्तुंचतुर्धाविधायादिसर्गम् ॥ अहंवेद्मिकोऽन्योविवेदादिमायेक्षमस्वापराधंत्वहंकारजंमे ॥ ३१ ॥

परागस्यादानंग्रहणंतस्ययोगर्वःसएवमहान्गुणस्तेन॥अनेनचभक्तिनिर्भरोदर्शितः ॥यतएतादृशीभक्तिर्निर्गुणस्यापिदुराचारवतोमहत्त्वप्रदा तस्मान्महार्तिनिगडंहित्वात्वद्भक्तियुक्तंकुरुइत्येव प्रार्थनाममेतिभावः ॥ २८॥ अतइति॥हेशिवेत्वदाविष्कृतात्सरोजादहंजातःकथंमुक्तःस्यामितिचिंतयायुक्तस्तवाज्ञाकरःकिंकरोस्मीतिनूनंमांनिश्चित्यभवाब्धौमोहेनाविवेकेनमग्नंमामतोभक्ति प्रदानेनपाहिरक्षय ॥ २९ ॥ येतवाद्यंपवित्रंचरित्रंजगत्सर्जनादिरूपंनजानंतितेमांप्रभुंवदंति ॥ तथायेयाजकाःस्वर्गकामास्तेपितेप्रभावंनजानंति॥यतोमोक्षार्थंत्वामनाराध्यस्वर्गार्थमिंद्रादिदे वानेवयथेष्टंयजंतिमोहिताएवतवमाययैतेइतिभावः ॥ तदुक्तंब्रह्मांडपुराणे॥अश्रुतासःश्रुतासश्चयज्वानोयेप्ययज्वनः॥स्वर्यंतोनाप्यपेक्षंतेइंद्रमाग्निंचयेविदुः ॥ सिकताइवसंयंतिरश्मिभिःसमुदी रिताः॥अस्माल्लोकादमुष्माच्चेत्याहचारण्यकश्रुतिरिति ॥ ३० ॥ त्वयेति ॥ विहारंसंसारसर्जनादिरूपंविशेषेणकर्तुमहंविधित्वेविधित्वपदव्यांत्वयानिर्मितउत्पादितःसन्नप्यादिसर्गंचतुर्धाऽ ऽजस्वेदजजरायुजोद्भिज्जादिरूपेणाविधायाहंकारादहमेववेद्मिसर्वं मत्तःकोन्योविवेदेतिवृत्तिमान्जातस्तदहंकारजमपराधंक्षमस्व॥नाहित्वयानिर्मितस्यैवमपराधोयुक्तइतिभावः ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रमामिति॥मिषेणापिव्याजेनापियन्नामश्रीदेव्याःसमुच्चारितंजातुकदाचिदपिननिरंतरंतथापितन्नामोच्चारितंमोक्षप्रदंभवति ॥ इत्थंसतिमोक्षार्थंयेऽष्टांगयोगादिसाधनश्रमंकुर्वंतितेमूढाएव ॥ तदुक्तंमहाकालसंहितायाम् ॥ सहेलंवासलीलंवायस्याःस्मरणमात्रतः॥करामलकवन्मुक्तिस्तांनसेवेतकोजनइति॥३२॥विचारेपरेइति।यथायोगिनोमूढाएवंसांख्याअपिमूढाएवेत्याह ॥विचारे इति ॥ तत्त्वसंख्याविधानेतत्त्वसंख्याविधानवतिविचारेपदेस्थानेमोहिताएतेभवाब्धौकिंनमूढाअपितुमूढाएव॥यतःसंसारमुक्तिप्रदात्वमेवासि ततस्त्वन्नामविहायतस्मिन्पदेमोहितामूढाः कथं नस्युरित्यर्थः॥३३॥अस्तुमूढानामियंवार्तापूर्णाज्ञानिनस्तुत्वयिप्रेम्णोऽतिशयात्त्वन्नामकदापिनत्यजंतीत्याह॥परंतत्त्वेति ॥आद्यैर्हरिहरादिभिर्जनैर्यैःपरंतत्त्वज्ञानमनुभूतंतेऽपिकिंनिमेषार्धमापि

श्रमंयेऽष्टधायोगमार्गेप्रवृत्ताःप्रकुर्वंतिमूढाःसमाधौस्थितावै ॥ नजानंतितेनाममोक्षप्रदंवासमुच्चारितंजातुमातर्मिषेण ॥ ३२ ॥ विचारेपरेतत्त्वसंख्याविधानेपदेमोहितानामतेसंविहाय ॥ नकिंतेविमूढाभवाब्धौभवानित्वमेवासिसंसारमुक्तिप्रदावै ॥ ३३ ॥ परंतत्त्वविज्ञानमाद्यैर्जनैर्यैरजेचानुभूतंत्यजंत्येव तेकिम् ॥ निमेषार्धमात्रंपवित्रंचरित्रंशिवाचांबिकाशक्तिरीशेतिनाम ॥ ३४ ॥ नकिंत्वंसमर्थोऽसिविश्वंविधातुंदृशैवाशुसर्वंचतुर्धाविभक्तम् ॥ विनोदार्थमेवं विधिंमांविधायादिसर्गेकिलेदंकरोषीतिकामम् ॥ ३५ ॥ हरिःपालकःकिंत्वयाऽसौमधोर्वातथाकैटभाद्रक्षितःसिंधुमध्ये ॥ हरःसंहृतःकिंत्वयासौनकाले कथंमेभ्रुवोर्मध्यदेशात्सजातः ॥ ३६ ॥ नतेजन्मकुत्रापिदृष्टंश्रुतंवाकुतःसंभवस्तेनकोपीहवेद ॥ किलाद्यासिशक्तिस्त्वमेकाभवानिस्वतंत्रैःसमस्तैरतोवो धिताऽसि ॥ ३७ ॥ त्वयासंयुतोऽहंविकर्तुंसमर्थोहरिस्त्रातुमंबत्वयासंयुतश्च ॥ हरःसंप्रहर्तुंत्वयैवेहयुक्तःक्षमानाद्यसर्वैत्वयाविप्रयुक्ताः ॥ ३८ ॥ यथा ऽहंहरिःशंकरःकिंतथाऽन्येनजातानसंतीहनोवाभविष्यन् ॥ नमुह्यांतिकेऽस्मिंस्तवात्यंतचित्रेविनोदेविवादास्पदेऽल्पाशयानाम् ॥ ३९ ॥ अकर्तागुणस्प ष्टएवाद्यदेवोनिरीहोनुपाधिःसदेवाकलश्च ॥ तथापीश्वरस्तेवितीर्णेविनोदंसुसंपश्यतीत्याहुरेवंविधिज्ञाः ॥ ४० ॥

शिवाचांबिकाशक्तिरीशेतिनामत्यजंतिनैवत्यजंतीत्यर्थः॥तदुक्तंभुवनेशीसंहितायाम्॥आत्मानुभूतिनिष्णाताद्वैतभावाविवर्जिताः॥तेऽपिप्रेम्णाभजंत्येनामित्थंसर्वोत्तमाशिवेति॥ ३४ ॥ ३५॥ हरिःपालकइति॥यःसिंधुमध्येत्वयामधोर्वाकैटभाद्वारक्षितोहरिरसौजगतःपालकःकिंभवतिनैवभवतीत्यर्थः॥यःस्वरक्षणेसमर्थोनसकथमन्यपालनेसमर्थःस्यादितिभावः ॥तथासर्वसंहारकोयदि हरस्तर्हित्वयासौकिंकालेप्रलयकालेसंहृतोनाशितः यदिननाशितस्तर्हिकथंमेभ्रुवोर्मध्यदेशात्सजातस्तस्मात्सोऽपिसर्वसंहारकोन ॥ नहिसर्वसंहारकमन्यःसंहरेत्तस्मान्मुख्यासृष्टिस्थितिसंहार कर्त्रीत्वमेवासीतिभावः॥३६॥स्वतंत्रैर्वेदैरित्यर्थः॥३७॥त्वयाविप्रयुक्ताविप्रयुक्ताःक्षमानेत्यन्वयः॥३८॥अल्पाशयानामल्पबुद्धीनांविवादास्पदेसद्व ऽसद्वेत्यादिविकल्पास्पदे ॥ ३९ ॥ निर्गुणोऽ पीश्वरस्तवविनोदंसंपश्यतीतिविधिज्ञाःशास्त्रज्ञावदंतीत्यन्वयः॥एतादृशीत्वंमहाचमत्कारकर्त्री॥यस्याश्चमत्कृतिंनिरीहोऽपीश्वरोवेदितुमिच्छतीति ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





इत्थंदेवींस्तुत्वास्वमनासिस्थितांशंकांदूरीकर्तुंपृच्छति ॥ दृष्टादृष्टविभेदेऽस्मिन्निति ॥ दृष्टादृष्टयोर्मूर्तामूर्तयोर्विभेदोयस्मिन्संसारेदृश्यादृश्यराशिद्वयात्मकेइत्यर्थः ॥ तस्मिन्संसारेत्वत्तःप्रागाधारभूतस्तवपरःपुमान्भवति ॥ अधाराधेययोःपूर्वापरीभावस्यलोकदृष्ट्योक्तत्वात् ॥ नतुवास्तविकःपूर्वापरीभावः उभयोरप्यनादित्वस्यवेदसिद्धत्वात् ॥ तथाचैकात्वंसचैकइतितत्त्वद्वयंसिद्धम् ॥ अनेनतत्त्वद्वयेनैवसर्वप्रपंचनिर्वाहेतृतीयस्योपयोगाभावान्नान्यःकोपितृतीयोस्ति ॥ इत्थंप्रमेयेपदार्थेश्रुत्यायुक्त्यालाघवेनचविचारितेपदार्थद्वयमेवासिध्यति ॥ अविचारितेतुमतांतरेऽनेकानितत्त्वानिजातान्येवेतितदुपयोगाभावः ॥ ४१ ॥ तत्रैकमेवाद्वितीयंब्रह्म नेहनानास्तिकिंचनेतिश्रुतिवाक्यंकदापिमिथ्यानैवकल्पनीयम् ॥ सर्वप्रमाणमूर्धन्यत्वात् ॥ तत्रैवंसतिपदा

दृष्टादृष्टविभेदेऽस्मिन्प्राक्त्वत्तोवैपुमान्परः ॥ नान्यःकोऽपितृतीयोऽस्तिप्रमेयेसुविचारिते ॥ ४१ ॥ नामिथ्यावेदवाक्यंवैकल्पनीयंकदाचन ॥ विरोधोऽयंमयाऽत्यंतंहृदयेतुविशंकितः ॥ ४२ ॥ एकमेवाद्वितीयंयद्ब्रह्मवेदावदंतिवै ॥ सार्किंत्वंवाप्यसौवार्किंसंदेहंविनिवर्तय ॥ ४३ ॥ निःसंशयंनमेचेतःप्रभवत्यविशंकितम् ॥ द्वित्वैकत्वविचारेऽस्मिन्निमग्नंक्षुल्लकंमनः ॥ ४४ ॥ स्वमुखेनापिसंदेहंछेत्तुमर्हसिमामकम् ॥ पुण्ययोगाच्चमेप्राप्तासंगतिस्तवपादयोः ॥ ४५ ॥ पुमानसित्वंस्त्रीवाऽसिविदावस्तरतोमम ॥ ज्ञात्वाऽहंपरमांशक्तिंमुक्तःस्यांभवसागरात् ॥ ४६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां तृतीयस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥५॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इतिपृष्टामयादेवीविनयावनतेनच ॥ उवाचवचनंश्लक्ष्णमाद्याभगवतीहिसा ॥१॥

र्थद्वयमनुभवेनभासतेश्रुतिस्त्वद्वैतंवक्ति ॥ तस्माच्छ्रुत्यनुभवयोर्महान्विरोधोमयाहृदयेविशंकितस्तर्कितइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ तत्रश्रुतिप्रामाण्यादात्मव्यतिरिक्तस्यमिथ्यात्वंवक्तव्यंतदाकिंत्वमात्मरूपास्युतासौपुरुषइतिसंदेहंविनिवर्तय ॥ मिथ्यापदार्थभजनेश्रद्धायाअजायमानत्वादितिनिर्णयआवश्यकइतिभावः ॥ ४३ ॥ द्वित्वैकत्वेति ॥ द्वैतंसत्यंवाऽद्वैतंसत्यंवेतिविचारेइत्यर्थः ॥ ४४ ॥ स्वमुखेनापिस्वमुखेनैवेत्यर्थः ॥ बहुपुण्ययोगेनतवपादयोःसंगतिर्लब्धाऽस्तिततएतादृशंरहस्यमेवप्रष्टव्यमितिभावः ॥ ४५ ॥ येनज्ञानेनत्वांपरमांशक्तिंज्ञात्वाभवसागरान्मुक्तःस्यामित्यर्थः ॥ ॥ ४६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ छ ॥ पंचाशीतिमहापद्यैरर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ श्रीदेव्याउपदेशश्चब्रह्मणेकृतईर्यते ॥ १ ॥ ब्रह्मप्रश्नोत्तरंश्रीदेवीनिजरूपोपदेशंचकारेत्याह ॥ इतिपृष्टेति ॥ १ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सदैकत्वमिति ॥ यत्त्वयोक्तमद्वैतंसत्यंचेद्वैतस्यमिथ्यात्वाद्वैतांतर्गतएवमायादिपदार्थःसंभवतीतिमिथ्यापदार्थभजनेश्रद्धानजायतइतित्वंब्रह्मरूपिण्यसिवाततोभिन्नाऽसिचेति तत्रैतदुच्यते ॥ स त्यमद्वैतमेवतथाप्यद्वैतरूपाद्ब्रह्मणोनाहंभिन्नाऽस्मिशक्तेश्चशक्ताव्यतिरेकात्॥अग्न्यादिशक्तीनामग्नेर्व्यतिरेकेणादर्शनात्॥द्विविधंहिशक्तिरूपंकार्यंकारणंच ॥तत्रकार्यरूपमावरणविक्षेपादिरूपं तत्तुशक्तिमद्रूपात्पृथगेवभासते॥अहमज्ञोहंसुखीदुःखीचेत्याद्यनुभवात् ॥ अग्निरूपाद्भिन्नत्वेनभासमानदाहस्फोटादिशक्तिकार्यवत् ॥ यच्चकारणभूतंमहामायारूपंनतच्छक्तिमतोब्रह्मणःपृथगव भासतेअग्नेर्दाहादिकार्यभिन्नदाहादिकार्यजनकशक्तेर्भेदेनादर्शनात्स्वात्मन्यावरणविक्षेपभिन्नावरणविक्षेपजनकमहामायाशक्तेरनुभवाच्च ॥तस्याःसद्भावेतर्हिकिंप्रमाणमितिचेत्तदावरणविक्षेपरू पकार्यान्यथानुपपत्तिःश्रुत्यादिकंचेतिब्रूमः॥तत्रैवंसति यथाग्नौहोमेग्निशक्त्योर्होमोऽर्थसिद्धोयथावाऽग्निशक्तौहोमेऽग्नौहोमोऽर्थसिद्धएवंब्रह्मोपासनायामपिममोपासनार्थादेवसिद्धाममोपासनाया मपिब्रह्मोपासनार्थादेवसिद्धा॥तथाचोभयत्रमायोपासनायांब्रह्मोपासनायांचमायाविशिष्टब्रह्मरूपमेवोपास्यंभवति॥तथाचममोभयात्मकत्वादेकस्यभागस्यमायारूपस्यममिथ्यात्वेऽपिद्वितीयभागस्यब्रह्मरूपस्यममसत्यत्वान्नाद्वैतश्रुतिविरोधोनवोपासनायामश्रद्धास्यात्॥अयंतुभ्रमःसर्वेषाम् ॥ मायोपासनामायायाएवब्रह्मोपासनाब्रह्मणएवेति॥तस्मात्केवलमायायाःकारणभूताया

देव्युवाच ॥ सदैकत्वंनभेदोऽस्तिसर्वदैवममास्यच ॥ योऽसौसाहमहंयोऽसौभेदोऽस्तिमतिविभ्रमात् ॥ २ ॥ आवयोरंतरंसूक्ष्मंयोवेदमतिमान्हिसः ॥ विमुक्तःसतुसंसारान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ३ ॥ एकमेवाद्वितीयंवैब्रह्मनित्यंसनातनम् ॥ द्वैतभावंपुनर्यातिकालउत्पित्सुसंज्ञके ॥ ४ ॥ यथादीपस्तथोपाधेर्योगात्संजायतेद्विधा ॥ छायेवादर्शमध्येवाप्रतिबिंबंतथाऽऽवयोः ॥ ५ ॥

ब्रह्मानधिष्ठितायाउपास्यत्वासंभवेनमायाविशिष्टंब्रह्मैवसर्वेषामुपास्यमिति ॥ तदेवचममसुख्यंस्वरूपमितिनकश्चिद्दोषलेशइति ॥ इदंसर्वमुपोद्घातेएवस्पष्टीकृतंतदेतत्सर्वंमनसिनिधायश्रीदेव्युवाच ॥ सदैकत्वमिति॥ तदुक्तं पावकस्योष्णतेवेयमुष्णांशोरिवदीधितिः ॥ चंद्रस्यचंद्रिकेवेयंशिवस्यसहजाध्रुवेति ॥ योऽसौपरमात्मासएवाहमस्मि अहंयास्मिसएवयोऽसौपरमात्मासोऽस्ति ॥ शक्तिशक्तिमतोरभेदात्॥मतिविभ्रमादिति ॥ शक्तिःशक्तिमतोभिन्नेतिभेदोभ्रममूलकएवेत्यर्थः ॥२॥ आवयोःशक्तिशक्तिमतोरंतरंभेदः ॥ कार्यरूपेणशक्तिःशक्ताद्भिन्नेतिरूपस्तंयोवेदअर्थात्कारणशक्तिरूपस्यब्रह्मणासहाऽभेदंयोवेद सपुरुषोमायाशक्तिज्ञानसमयेएवतदाभिन्नब्रह्मज्ञानवान्सन्ज्ञानसमयेएवविमुक्तःसन्नपिदेहांतेसंसारान्मुच्यते॥विदेहकैवल्यंप्राप्नोतीत्यर्थः॥ यद्वाऽऽवयोरंतरंनाम्नैवभेदोनस्वरूपतोभेदस्तंयोवेदेतिसमानार्थम् ॥३॥ यद्येकमेवब्रह्मतर्हीदंद्वैतंकस्मादागतमितिचेत्तत्राह ॥ एकमेवेति ॥कालेउत्पित्सुसंज्ञकेउत्पादनेच्छावातिकालेसृष्टिकालेइत्यर्थः ॥ ४ ॥ यथादीपइति॥यथादीपएकःसन्नप्युपाधियोगादनेकधाभवति ॥ तथामायातत्कार्योपाधिभेदादात्मैकोऽपिद्विधाऽनेकदृश्यादृश्यकोटिभेदेनद्विधाभवति॥ यथामुखमेकमप्युपाविदर्पणभेदात्प्रतिबिंबरूपेणबहुधाभवतियथावापुरुषस्यछायोपाधिभेदादनेकधाभवति तथैवावयोःप्रतिबिंबंमायाकार्यांतःकरणरूपोपाधिष्वनेकधाभवति ॥ ५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किमर्थमयंभेदोभवतितत्राह ॥ सर्गार्थमिति ॥ अयंभावः ॥ नियतकालपरिपाकानांकर्मणांमध्येपरिपक्वानामुपभोगेनक्षयादितरेषांचापरिपक्वानांभोगासंभवेनतदर्थायाःसृष्टेरनुपयोगात्प्राकृतः प्रलयो भवति तस्मिन्प्रलयेसर्वंजगद्बीजरूपेणमायायांलीनंभवति मायाचग्रस्तसमस्तप्रपंचाब्रह्माभेदेनातिष्ठति ॥ तदानिस्तरंगसमुद्रकल्पंब्रह्मनिरीहंतथैवतिष्ठति यदधिकृत्योच्यते॥ नासदासीन्नोसदासीत्तदानींनासीद्रजोनोव्योमापरोयदित्यादि तुच्छयेनाभ्वपिहितामित्यंतम् ॥ परिपक्वेषुतुकर्मसुतत्तत्कालकर्मवशात्क्षेत्रस्थंबीजंयथोच्छूनंभवति तथैवाद्वैतंनिरीहंब्रह्मापि कालकर्मवशादुच्छूनंभवति ॥ पश्चादंकुरस्ततःशाखास्ताभ्यःपत्राणि ततःपुष्पं ततःफलमेवमेवक्षेत्रबीजवदत्रापिमायाबीजादंकुरादिकंजायते ॥ सचोच्छूनतादिपरिणामोमायायाएवन ब्रह्मणस्तस्यनिरवयवत्वान्मायायाश्चसावयवत्वात्परिणामेसावयवस्तुनएवापेक्षणात् ॥ ब्रह्मतुविवर्तोपादानं तद्विनामायायाःसत्तास्फूर्त्योरभावेनपरिणामायोगात् ॥ तथाचमायायांतत्का

भेदउत्पत्तिकालेवैसर्गार्थंप्रभवत्यज ॥ दृश्यादृश्यविभेदोऽयंद्वैविध्येसतिसर्वथा ॥ ६ ॥ नाहंस्त्रीनपुमांश्चाहंनक्लीबंसर्गसंक्षये॥सर्गेसतिविभेदःस्यात्कल्पितोऽयंधियापुनः ॥ ७ ॥ अहंबुद्धिरहंश्रीश्चधृतिःकीर्त्तिः स्मृतिस्तथा ॥ श्रद्धामेधादयालज्जाक्षुधातृष्णातथाक्षमा॥८॥ कांतिःशांतिःपिपासाचनिद्रातंद्राजराऽजरा ॥ विद्याविद्यास्पृहावांछाशक्तिश्चाशक्तिरेवच ॥ ९ ॥ वसामज्जाचत्वक्चाहंदृष्टिर्वागनृतानृता ॥ परामध्याचपश्यंतीनाड्योऽहंविविधाश्चयाः ॥ ॥ १० ॥ किंनाहंपश्यसंसारेमद्वियुक्तंकिमस्तिहि ॥ सर्वमेवाहमित्येवंनिश्चयंविद्धिपद्मज ॥ ११ ॥ एतैर्मानिश्चितैरूपैर्विहीनंकिंवदस्वमे ॥ तस्मादहंविधेचास्मिन्सर्गेवैवितताऽभवम् ॥ १२ ॥ नूनंसर्वेषुदेवेषुनानानामधराह्यहम् ॥ भवामिशक्तिरूपेणकरोमिचपराक्रमम् ॥ १३ ॥ गौरीब्राह्मीतथारौद्रीवाराहीवैष्णवीशिवा ॥ वारुणीचाथकौबेरीनारसिंहीचवासवी ॥ १४ ॥ उत्पन्नेषुसमस्तेषुकार्येषुप्रविशामितान् ॥ करोमिसर्वकार्याणिनिमित्तंतंविधायहं ॥ १५ ॥ जलेशीतंतथावह्नावौष्ण्यंज्योतिर्दिवाकरे ॥ निशानाथेहिमाकामंप्रभवामियथातथा ॥ १६ ॥ मयात्यक्तंविधेनूनंस्पंदितंनक्षमंभवेत्॥जीवन्मातंचसंसारेनिश्चयोऽयंब्रुवेत्वयि ॥ १७ ॥ अशक्तःशंकरोहंतुंदैत्यान्किलमयोज्झितः ॥ शक्तिहीनंनरंब्रूतेलोकश्चैवातिदुर्बलम् ॥ १८ ॥

येचब्रह्मणोनुस्यूतत्वाद्यावंतोमायाभेदास्तावंतएवब्रह्मणोभेदाःसर्गार्थंजाताइति॥यदैवंजातंतदाद्वैविध्येसतिदृश्यादृश्यभेदोऽपिसर्वथाजातः ।६।तथाचाहंमायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्येवनपुंसकरूपाक्लीबरूपावानस्त्रीरूपेत्याह॥नाहंस्त्रीति॥सर्वसंक्षयेप्रलयेइदंकिंनपिनास्तिअहंपुरुषोवास्त्रीवेति पुनःसर्गेसतिजीवानुग्रहार्थमयंभेदोमयाधियास्ववृत्त्यात्मिकयाकल्पितः ॥ ७॥ भेदानामानंत्येप्युदाहरणार्थंकांश्चिद्भेदानाह ॥ अहंबुद्धिरिति॥८॥९॥१०॥सर्वमेवाहमिति एकोहंबहुस्यांप्रजायेय इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयतइतिश्रुतेर्मायाविशिष्टंब्रह्मैवसर्वाकारेणभासतइतिमद्वियुक्तंवस्तुकिमस्ति नैवास्तीत्यर्थः ॥ यदिस्यातर्हितद्वंध्यापुत्रोपममसदेवस्यादिति ॥ ११ ॥ विततावाव्यापिका ॥१२॥१३॥ १४ ॥ प्रविशामितानिति ॥ तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशदितिश्रुतेः ॥ तान्पदार्थानित्यर्थः॥अनेनचांतर्यामित्वंभगवत्यास्वस्योक्तम्॥निमित्तंतमिति॥सकरोतीतितंपुरुषंनिमित्तमात्रंविधायाहमेवसर्वंकरोमीत्यर्थः॥१५॥ हिमाशीतलाचंद्रिकेत्यर्थः ॥१६॥ ।१७॥१८॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ यदिच्छामीति ॥ यद्यदिच्छामितत्तत्सर्वंस्वातंत्र्येणकरोमिनमत्तोन्यः कोप्यस्तीत्यर्थः ॥ २५ ॥ ननुयादित्वमेव सर्वस्वरूपातार्हितवानेरंतरंविद्यमानत्वात्सर्वप्रपंचस्यापिविद्यमानताऽस्त्येवेति जगन्मयोत्पाद्यतेइतितत्रवचनंनसंगच्छेत ॥ अथवयदित्वत्सकाशात्त्वत्तोऽतिरिक्तमेवजगदपूर्वमुत्पद्यतइतिमतम् तदात्वंसर्वरूपासीतिवचनंनसंगच्छेतेतिशंकांनिराकर्तुमाह ॥ तत्त्वानांचैवेति ॥ हेब्रह्मन्सर्वेषांतत्त्वानामसतांभावसंदेहउत्पत्तिसंदेहःकदापिनैवकर्तव्यः ॥ असतउत्पत्त्याद्याश्रयत्वायोगात् ॥ नह्यसन्वंध्यापुत्रउत्पत्त्याद्याश्रयोभवति ॥ किंतुसद्रूपेणसतांविद्यमानानामेवतत्त्वानामुत्पत्तिरितिजानीहि ॥ २६ ॥ ननुतर्हिसतांविद्यमानानांतत्त्वानामुत्पत्त्याद्याश्रयत्वमपिनसंभवतीतिचेदाविर्भावतिरोभावावेवसत्कार्यवादेउत्पत्तिप्रलयौनान्यावित्याह ॥ कदाचिदिति ॥ यथाविद्यमानस्यैवघटस्यमृत्पिंडेष्वभावःप्रागभावआविर्भावजनकः ॥ यथावाकपालेषुघटादेर्विद्यमानस्यैवा

रुद्रहीनंविष्णुहीनंनवदंतिजनाःकिल ॥ शक्तिहीनंयथासर्वेप्रवदंतिनराधमम् ॥ १९ ॥ पतितःस्खलितोभीतःशांतःशत्रुवशंगतः ॥ अशक्तःप्रोच्यतेलोकेनारुद्रःकोपिकथ्यते ॥ २० ॥ तद्विद्धिकारणंशक्तिर्यथात्वंचसिसृक्षसि ॥ भविताचयदायुक्तःशक्त्याकर्तातदाऽखिलम् ॥ २१ ॥ तथाहरिस्तथाशंभुस्तथेंद्रोऽथविभावसुः ॥ शशीसूर्योयमस्त्वष्टावरुणःपवनस्तथा ॥ २२ ॥ धरास्थिरातदाधर्तुंशक्तियुक्तायदाभवेत् ॥ अन्यथाचेदशक्तास्यात्परमाणोश्चधारणे ॥ २३ ॥ तथाशेषस्तथाकूर्मोयेऽन्येसर्वेचदिग्गजाः ॥ मद्युक्तावैसमर्थाश्चस्वानिकार्याणिसाधितुम् ॥ २४ ॥ जलंपिबामिसकलंसंहरामिविभावसुम् ॥ पवनंस्तंभयाम्यद्ययदिच्छामितथाचरम् ॥ २५ ॥ तत्त्वानांचैवसर्वेषांकदापिकमलोद्भव ॥ असतांभावसंदेहः कर्तव्योनकदाचन ॥ २६ ॥ कदाचित्प्रागभावःस्यात्प्रध्वंसाभावएववा ॥ मृत्पिंडेषुकपालेषुघटाभावोयथातथा ॥ २७ ॥ अद्यात्रपृथिवीनास्तिक्वगतेतिविचारणे ॥ संजाताइतिविज्ञेयाअस्यास्तुपरमाणवः ॥ २८ ॥ शाश्वतंक्षणिकंशून्यंनित्यानित्यंसकर्तृकम् ॥ अहंकाराग्रिमंचैवसप्तभेदैर्विवक्षितम् ॥ २९ ॥ गृहाणाजमहत्तत्त्वमहंकारस्तदुद्भवः ॥ ततःसर्वाणिभूतानिरचयस्वयथापुरा ॥ ३० ॥ व्रजंतुस्वानिधिष्ण्यानिविरच्यनिवसंतुवः ॥ स्वानिस्वानिचकार्याणिकुर्वंतुदैवभाविताः ॥ ३१ ॥

भावःप्रध्वंसाभावस्तिरोभावजनकः ॥ तथैवकारणात्मनाविद्यमानानांतत्त्वानामाविर्भावतिरोभावावेवोत्पत्तिप्रलयौनान्यावितिनसत्कारणवादेसर्वात्मत्वमव्याहतमितिभावः ॥ २७ ॥ अत्रसत्कार्यवादेऽनुभवमाह ॥ अद्यात्रेति ॥ अद्यात्रपृथिवीघटरूपानास्तिध्वंसेसतिसाक्वगतेतिविचारणेसति लोकाअस्याघटरूपायाःपृथिव्याःपरमाणवोजाताइतिवदंति ॥ तथाचपरमाणुरूपेणघटस्यविद्यमानताऽस्त्येवेतिलोकसिद्धएवसत्कार्यवादइति ॥ २८ ॥ इत्थंभगवत्युपदिश्याज्ञापयति ॥ शाश्वतमिति ॥ शाश्वतमित्यादिपरस्परविरुद्धविशेषणैर्महत्तत्त्वस्यापिमायाजन्यत्वादनिर्वचनीयत्वंसूचितम् ॥ अहंकारस्याग्रेप्रथमतोभवंसप्तभेदैर्महदाद्याःप्रकृतिविकृतयःसप्तेत्येवंरूपैर्भेदैर्विवक्षितम् ॥ महत्तत्त्वादेरन्येषांतत्वानांसत्त्वात्स्वस्यापिस्वांतर्भावविवक्षयासप्ततोक्तिः ॥ २९ ॥ ३० ॥ इतःपरमस्मात्स्थानाद्भवंतोव्रजंतुनिर्गत्यचेदंकुर्वंत्वित्याह ॥ व्रजंत्विति ॥ दैवभाविताः प्रारब्धेनोत्पादिताः ॥ ३१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ बीजान्महत्तत्त्वात् ॥३५॥ तस्मिन्बीजेकिंकिमस्तितत्राह॥लिंगेति॥लिंगशरीराणिकर्मजीवसहितानिसंतितानियथापुरापूर्ववत्पृथक्कुरु॥३६॥सामग्र्यंतरमाह ॥ कालकर्मस्वभावाख्यैःकारणैरिति ॥ एभिःकारणैःस्वभावभूताःस्वगुणाःसत्त्वादयःशब्दादयश्चतैश्चयुक्तंपूर्ववत्कुर्वित्यर्थः ॥ योयस्यगुणोयद्यस्यप्रारब्धंयोयस्यफलभोगस्यकालोयोयस्यस्व

गृहाणेमांविधेशक्तिंसुरूपांचारुहासिनीम् ॥ महासरस्वतींनाम्नारजोगुणयुतांवराम् ॥ ३२ ॥ श्वेतांवरधरांदिव्यांदिव्यभूषणभूषिताम् ॥ वरासनसमारूढांक्रीडार्थंसहचारिणीम् ॥ ३३ ॥ एषासहचरीनित्यंभविष्यतिवरांगना ॥ माऽवमंस्थाविभूतिंमेमत्वापूज्यतमांप्रियाम् ॥ ३४ ॥ गच्छत्वमनयासार्धंसत्यलोकंवताशुवै ॥ बीजाच्चतुर्विधंसर्वंसमुत्पादयसांप्रतम् ॥ ३५ ॥ लिंगकोशाश्चजीवैस्तैःसहिताःकर्मभिस्तथा ॥ वर्ततेसंस्थिताःकालेतान्कुरुत्वंयथापुरा ॥ ३६ ॥ कालकर्मस्वभावाख्यैःकारणैःसकलंजगत् ॥ स्वभावस्वगुणैर्युक्तंपूर्ववत्सचराचरम् ॥ ३७ ॥ माननीयस्त्वयाविष्णुःपूजनीयश्चसर्वदा ॥ सत्त्वगुणप्रधानत्वादधिकःसर्वतःसदा ॥ ३८ ॥ यदायदाहिकार्यंवोभविष्यतिदुरत्ययम् ॥ करिष्यतिपृथिव्यांवैअवतारंतदाहरिः ॥ ३९ ॥ तिर्यग्योनावथान्यत्रमानुषींतनुमाश्रितः ॥ दानवानांविनाशंवैकरिष्यतिजनार्दनः ॥ ४० ॥ भवोऽयंतेसहायश्चभविष्यतिमहाबलः ॥ समुत्पाद्यसुरान्सर्वान्विहरस्वयथासुखम् ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्यानानायज्ञैःसदक्षिणैः ॥ यजिष्यंतिविधानेनसर्वान्वःसुसमाहिताः ॥ ४२ ॥ मन्नामोच्चारणात्सर्वेमखेषुसकलेषुच ॥ सदातृप्ताश्चसंतुष्टाभविष्यध्वंसुराःकिल ॥ ४३ ॥ शिवश्चमाननीयोवैसर्वथायत्तमोगुणः ॥ यज्ञकार्येषुसर्वेषुपूजनीयःप्रयत्नतः ॥ ४४ ॥ यदापुनःसुराणांवैभयंदैत्याद्भविष्यति ॥ शक्तयोमेतदोत्पन्नाहरिष्यंतिसुविग्रहाः ॥ ४५ ॥ वाराहीवैष्णवीगौरीनारसिंहीसदाशिवा ॥ एताश्चान्याश्चकार्याणिकुरुत्वंकमलोद्भव ॥ ४६ ॥ नवाक्षरमिममंत्रंबीजध्यानयुतंसदा ॥ जपन्सर्वाणिकार्याणिकुरुत्वंकमलोद्भव ॥ ४७ ॥ मंत्राणामुत्तमोऽयंवैत्वंजानीहिमहामते ॥ हृदयेतेसदाधार्यःसर्वकामार्थसिद्धये ॥ ४८ ॥ इत्युक्त्वामांजगन्माताहरिंप्राहशुचिस्मिता ॥ विष्णोव्रजगृहाणेमांमहालक्ष्मींमनोहराम्॥४९॥सदावक्षःस्थलेस्थानेभवितानात्रसंशयः ॥ क्रीडार्थंतेमयादत्ताशक्तिःसर्वार्थदाशिवा॥५०॥त्वयेयंनावमंतव्यामाननीयाचसर्वदा ॥ लक्ष्मीनारायणाख्योऽयंयोगोवैविहितोमया ॥ ५१ ॥ जीवनार्थंकृतायज्ञादेवानांसर्वथामया ॥ अविरोधेनसंगेनवर्तितव्यंत्रिभिःसदा ॥ ५२ ॥ त्वंचवेधाःशिवस्त्वेतेदेवामद्गुणसंभवाः॥मान्याःपूज्याश्चसर्वेषांभविष्यंतिनसंशयः॥५३॥येविभेदंकरिष्यंतिमानवामूढचेतसः॥निरयंतेगमिष्यंतिविभेदान्नात्रसंशयः ॥ ५४ ॥

भावभूतोगुणस्तस्मिन्कालेतादृशकर्मगुणानुरोधेनतादृशंफलंदेयमित्यर्थः॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥मन्नामस्वाहेति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ एताश्चान्याश्चेत्यस्यहरिष्यंतीतिपूर्वेणान्वयः ॥४६॥ नवाक्षरमिममंत्रमिति॥सचदुर्गायानवार्णःप्रसिद्धः॥एतद्विधानंनवमस्कंधांतिमाध्यायेवक्ष्यति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५५ ॥ अपरोगुणभेदोऽस्तीति ॥ यूयंतत्तत्कार्येषुतत्तद्गुणयुक्ताभवितारः ॥ अन्यकार्येषुत्वन्यगुणयुक्ताइतिगुणत्रयात्मकत्वमेवसर्वेषामितिभावः ॥ ५६ ॥ यदायोगुणोमुख्यस्तदाऽन्यौ गुणौगौणत्वेएवास्थितौस्याताम् ॥५७॥५८॥ वाग्बीजंकामराजंचेति॥अयंचत्र्यक्षरोभुवनेशीमन्त्रोभुवनेशीसंहितायांप्रसिद्धः॥ ध्यानपूजादियंत्रादिकंचतत्रैवस्पष्टम् ॥ ५९ ॥ ६० ॥ विहारः क्रीडाजगत्सर्जनादिरूपा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ उद्गीथेनेति ॥ प्रणवेनसंयुक्तोऽयंमंत्रोजप्यइत्यर्थः ॥ तथाच प्रणवादिचतुरक्षरोमंत्रः [illegible] ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

योहरिःसशिवःसाक्षाद्यःशिवःसस्वयंहरिः ॥ एतयोर्भेदमातिष्ठन्नरकायभवेन्नरः ॥ ५५ ॥ तथैवद्रुहिणोज्ञेयोनात्रकार्याविचारणा॥अपरोगुणभेदोऽस्तिशृणु विष्णोब्रवीमिते ॥ ५६ ॥ मुख्यःसत्त्वगुणस्तेऽस्तुपरमात्मविचिंतने ॥ गौणत्वेऽपिपरौख्यातौरजोगुणतमोगुणौ ॥५७॥ लक्ष्म्यासहविकारेषुनानाभेदेषुस र्वदा ॥ रजोगुणयुतोभूत्वाविहरस्वानयासह ॥ ५८ ॥ वाग्बीजंकामराजंचमायाबीजंतृतीयकम् ॥ मंत्रोऽयंत्वंरमाकांतमद्दत्तःपरमार्थदः ॥ ५९ ॥ गृहीत्वा जपतंनित्यंविहरस्वयथासुखम् ॥ नतेमृत्युभयंविष्णोनकालप्रभवंभयम् ॥६०॥ यावदेषविहारोमेभविष्यतिसुनिश्चयः ॥ संहरिष्याम्यहंसर्वंयदाविश्वंच राचरम् ॥ ६१ ॥ भवंतोऽपितदानूनंमयिलीनाभविष्यथ ॥ स्मर्तव्योऽयंसदामंत्रःकामदोमोक्षदस्तथा ॥ ६२ ॥ उद्गीथेनचसंयुक्तःकर्तव्यःशुभमिच्छता ॥ कारयित्वाथवैकुंठंवस्तव्यंपुरुषोत्तम ॥ ६३ ॥ विहरस्वयथाकामंचिंतयन्मांसनातनीम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इत्युक्त्वावासुदेवंसात्रिगुणाप्रकृतिःपरा ॥ ६४ ॥ निर्गुणाशंकरंदेवमवोचदमृतंवचः ॥ देव्युवाच ॥ गृहाणहरगौरींत्वंमहाकालींमनोहराम् ॥ ६५ ॥ कैलासंकारयित्वाचविहरस्वंयथासुखम् ॥ मुख्यस्त मोगुणस्तेऽस्तुगौणौसत्त्वरजोगुणौ ॥ ६६॥ विहरासुरनाशार्थंरजोगुणतमोगुणौ ॥ तपस्तप्तंतथाकर्तुंस्मरणंपरमात्मनः ॥ ६७ ॥ शर्वसत्त्वगुणःशतो गृहीतव्यःसदाऽनघ ॥ सर्वथात्रिगुणायूयंसृष्टिस्थित्यंतकारकाः ॥ ६८ ॥ एभिर्विहीनंसंसारेवस्तुनैवात्रकुत्रचित् ॥ वस्तुमात्रंतुयद्दृश्यंसंसारेत्रिगुणंहित त् ॥ ६९ ॥ दृश्यंचनिर्गुणंलोकेनभूतंनोभविष्यति ॥ निर्गुणःपरमात्माऽसौनतुदृश्यःकदाचन ॥ ७० ॥ सगुणानिर्गुणाचाहंसमयेशंकरोत्तमा ॥ सदाऽहं कारणंशंभोनचकार्यंकदाचन ॥ ७१ ॥ सगुणाकारणत्वाद्वैनिर्गुणापुरुषांतिके ॥ महत्तत्त्वमहंकारोगुणाःशब्दादयस्तथा ॥ ७२ ॥

॥ ६९ ॥ ७० ॥ समयइति ॥ सृष्ट्यादिसमयेसगुणासमाधिसमयेनिर्गुणा ॥ सदाऽहमिति ॥ अहंहेशंभोकार्यंकदापिनास्मिममानादिसिद्धत्वेनोत्पत्त्यभावात्किंतुसर्वकारणरूपैवास्मीत्यर्थः ॥ ननुनिर्गुणायास्तवकारणत्वमपिकथमितिचेत्तत्राह ॥ सगुणेति ॥ नममसदानिर्गुणत्वं किंतुपरमात्माभिन्नांतर्हितगुणत्रयसाम्यावस्थायामुद्भूतगुणाभावेननिर्गुणाऽहम् ॥ सृष्ट्यादिदशायांतु सगुणैवास्मि ॥ ततश्चकारणत्वंनविरुध्यतइतिभावः ॥ ७१ ॥ कारणत्वंविशदयति । महत्तत्त्वमिति ॥ शब्दादयःशब्दस्पर्शादयोगुणाइत्यर्थः ॥ ७२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५५ ॥ अपरोगुणभेदोऽस्तीति ॥ यूयंतत्तत्कार्येषुतत्तद्गुणयुक्ताभवितारः ॥ अन्यकार्येषुत्वन्यगुणयुक्ताइतिगुणत्रयात्मकत्वमेवसर्वेषामितिभावः ॥ ५६ ॥ यदायोगुणोमुख्यस्तदाऽन्यौ गुणौगौणत्वेएवास्थितौस्याताम् ॥५७॥५८॥ वाग्बीजंकामराजंचेति॥अयंचत्र्यक्षरोभुवनेशीमन्त्रोभुवनेशीसंहितायांप्रसिद्धः ॥ ध्यानपूजादियंत्रादिकंचतत्रैवस्पष्टम् ॥ ५९ ॥ ६० ॥ विहारः क्रीडाजगत्सर्जनादिरूपा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ उद्गीथेनेति ॥ प्रणवेनसंयुक्तोऽयंमंत्रोजप्यइत्यर्थः ॥ तथाच प्रणवादिचतुरक्षरोमंत्रःसंपन्नः ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

योहरिःसशिवःसाक्षाद्यःशिवःसस्वयंहरिः ॥ एतयोर्भेदमातिष्ठन्नरकायभवेन्नरः ॥ ५५ ॥ तथैवद्रुहिणोज्ञेयोनात्रकार्याविचारणा॥अपरोगुणभेदोऽस्तिशृणु विष्णोब्रवीमिते ॥ ५६ ॥ मुख्यःसत्त्वगुणस्तेऽस्तुपरमात्मविचिंतने ॥ गौणत्वेऽपिपरौख्यातौरजोगुणतमोगुणौ ॥५७॥ लक्ष्म्यासहविकारेषुनानाभेदेषुस र्वदा ॥ रजोगुणयुतोभूत्वाविहरस्वानयासह ॥ ५८ ॥ वाग्बीजंकामराजंचमायाबीजंतृतीयकम् ॥ मंत्रोऽयंत्वंरमाकांतमद्दत्तःपरमार्थदः ॥ ५९ ॥ गृहीत्वा जपतंनित्यंविहरस्वयथासुखम् ॥ नतेमृत्युभयंविष्णोनकालप्रभवंभयम् ॥६०॥ यावदेषविहारोमेभविष्यतिसुनिश्चयः ॥ संहरिष्याम्यहंसर्वंयदाविश्वंच राचरम् ॥ ६१ ॥ भवंतोऽपितदानूनंमयिलीनाभविष्यथ ॥ स्मर्तव्योऽयंसदामंत्रःकामदोमोक्षदस्तथा ॥ ६२ ॥ उद्गीथेनचसंयुक्तःकर्तव्यःशुभमिच्छता ॥ कारयित्वाथवैकुंठंवस्तव्यंपुरुषोत्तम ॥ ६३ ॥ विहरस्वयथाकामंचिंतयन्मांसनातनीम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इत्युक्त्वावासुदेवंसात्रिगुणाप्रकृतिःपरा ॥ ६४ ॥ निर्गुणाशंकरंदेवमवोचदमृतंवचः ॥ देव्युवाच ॥ गृहाणहरगौरींत्वंमहाकालींमनोहराम् ॥ ६५ ॥ कैलासंकारयित्वाचविहरस्वयथासुखम् ॥ मुख्यस्त मोगुणस्तेऽस्तुगौणौसत्त्वरजोगुणौ ॥ ६६॥ विहरासुरनाशार्थंरजोगुणतमोगुणौ ॥ तपस्तप्तंतथाकर्तुंस्मरणंपरमात्मनः ॥ ६७ ॥ शर्वसत्त्वगुणःशतो गृहीतव्यःसदाऽनघ ॥ सर्वथात्रिगुणायूयंसृष्टिस्थित्यंतकारकाः ॥ ६८ ॥ एभिर्विहीनंसंसारेवस्तुनैवात्रकुत्रचित् ॥ वस्तुमात्रंतुयद्दृश्यंसंसारेत्रिगुणंहित त् ॥ ६९ ॥ दृश्यंचनिर्गुणंलोकेनभूतंनोभविष्यति ॥ निर्गुणःपरमात्माऽसौनतुदृश्यःकदाचन ॥ ७० ॥ सगुणानिर्गुणाचाहंसमयेशंकरोत्तमा ॥ सदाऽहं कारणंशंभोनचकार्यंकदाचन ॥ ७१ ॥ सगुणाकारणत्वाद्वैनिर्गुणापुरुषांतिके ॥ महत्तत्त्वमहंकारोगुणाःशब्दादयस्तथा ॥ ७२ ॥

॥ ६९ ॥ ७० ॥ समयइति ॥ सृष्ट्यादिसमयेसगुणासमाधिसमयेनिर्गुणा ॥ सदाऽहमिति ॥ अहंहेशंभोकार्यंकदापिनास्मिममानादिसिद्धत्वेनोत्पत्त्यभावात्किंतुसर्वकारणरूपैवास्मीत्यर्थः ॥ ननुनिर्गुणायास्तवकारणत्वमपिकथमितिचेत्तत्राह ॥ सगुणेति ॥ नममसदानिर्गुणत्वं किंतुपरमात्माभिन्नांतर्हितगुणत्रयसाम्यावस्थायामुद्भूतगुणाभावेननिर्गुणाऽहम् ॥ सृष्ट्यादिदशायांतु सगुणैवास्मि ॥ ततश्चकारणत्वंनविरुध्यतइतिभावः ॥ ७१ ॥ कारणत्वंविशदयति । महत्तत्त्वमिति ॥ शब्दादयःशब्दस्पर्शादयोगुणाइत्यर्थः ॥ ७२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कार्यकारणरूपेणेति ॥ पूर्वपूर्वस्यकारणत्वमुत्तरोत्तरस्यकार्यत्वंतद्रूपेणसंसरंतेपरिणमंत्यहर्निशंनकदाचिद्विरामोस्ति ॥ तत्रमहत्तत्वमव्यक्तात्केनक्रमेणोत्पद्यतेतत्राह ॥ सदुद्भूतस्त्वहंकार इति ॥ अहंकारोद्विविधः ॥ एकःपराहंतारूपोद्वितीयोमहत्तत्त्वादुत्पन्नः ॥ पराहंतारूपश्चबृहदारण्यकेसोवेदहंब्रह्मास्मीतिवृत्तिरूपउक्तः ॥ तथाचसृष्टिसमयेयःप्रथमोभावोव्यक्तस्यपरावाणीरूपोयमहमस्मीत्युत्पन्नःपराहंतारूपःसोहंकारःसदुद्भूतः ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीदित्यत्रोक्तात्सतउत्पन्नइत्यर्थः ॥ तेनहेतुनाऽहमव्यक्तरूपाकारणंपराहंतारूपाहंकारस्येत्यर्थः ॥ ७३ ॥ सचपराहंतारूपोऽहंकारोऽपिमत्कार्यभूतोगुणत्रयात्मकःप्रतिष्ठितोऽस्ति ॥ सर्वस्यैवपदार्थजातस्यगुणत्रयात्मकत्वात् ॥ तथाचाव्यक्तात्प्रथमंपराहंतारूपोऽहंकारउत्पन्नस्ततोहंकारान्महत्तत्त्वमुत्पन्नमित्याह ॥ अहंकारान्महत्तत्त्वमिति ॥ बुद्धिःसमष्टिबुद्धिरित्यर्थः ॥ एतेनसांख्योक्तंमहत्तत्वमनाश्रितंभवति ॥ ७४ ॥ तन्महत्तत्वंहिकार्यम् अहंकारोहिपराहंतारूपस्तस्यमहत्तत्वस्यकारणमित्यर्थः ॥ तस्मादहंकारोद्वितीयउत्पन्नस्तस्मादहंकारात्तन्मात्रापरपर्यायाणिसूक्ष्मभूतान्युत्पन्नानि ॥ द्वितीयाहंकारस्योत्पत्तिरनेनवाक्येनार्थाद्बोधिता ॥ ७५ ॥ कारणंपंचभूतानांतानीति ॥ तानिसूक्ष्मभूतानिपंचीकृतानांपंचभूतानांकारणंभवंति॥अपंचीकृतभूतेभ्यःपंचीकृतपंचमहाभूतोत्पत्तिर्भवतीत्यर्थः ॥ सर्वप्रपंचस्यसमुद्भवेउत्पत्तिसमये॥तत्रपंचभूतानां

कार्यकारणरूपेणसंसरंतेत्वहर्निशम् ॥ सदुद्भूतस्त्वहंकारस्तेनाहंकारणंशिवा ॥ ७३ ॥ अहंकारश्चमेकार्यंत्रिगुणोऽसौप्रतिष्ठितः ॥ अहंकारान्महत्तत्त्वंबुद्धिःसापरिकीर्तिता ॥ ७४ ॥ महत्तत्त्वंहिकार्यस्यादहंकारोहिकारणम् ॥ तन्मात्राणित्वहंकारादुत्पद्यंतेसदैवहि ॥ ७५ ॥ कारणंपंचभूतानांतानिसर्वसमुद्भवे ॥ कर्मेंद्रियाणिपंचैवपंचज्ञानेंद्रियाणिच ॥ ७६ ॥ महाभूतानिपंचैवमनःषोडशमेवच ॥ कार्यंचकारणंचैवगणोऽयंषोडशात्मकः ॥ ७७ ॥ परमात्मापुमानाद्योनकार्यंनचकारणम् ॥ एवंसमुद्भवःशंभोसर्वेषामादिसंभवे ॥ ७८ ॥ संक्षेपेणमयाप्रोक्तस्तवतत्रसमुद्भवः ॥ व्रजंत्वद्यविमानेनकार्यार्थंममसत्तमाः ॥ ७९ ॥ स्मरणाद्दर्शनंतुभ्यंदास्येऽहंविषमेस्थिते ॥ स्मर्तव्याऽहंसदादेवाःपरमात्मासनातनः ॥ ८० ॥

सात्त्विकांशेभ्यःपंचज्ञानेंद्रियाणिभवंति॥पंचभूतानांराजसांशेभ्यःकर्मेंद्रियाणिभवंति॥मनस्तुपंचभूतानांमिलितसात्त्विकांशेभ्योभवति तथाप्राणोऽपिपंचभूतानांमिलितराजसांशेभ्योभवति७६ तत्रकर्मेंद्रियाणिपंचपंचज्ञानेंद्रियाणिपंचभूतानिमनश्चषोडशमित्येवंकार्यमिंद्रियरूपंकारणंमहाभूतरूपंमिलित्वाऽयंगुणसमुदायःषोडशात्मकोभवति॥यदधिकृत्योच्यतेषोडशकस्तुविकारइति ॥ ७७ ॥ एवमष्टौप्रकृतयःषोडशविकाराश्चोक्ताः॥सोऽयंसर्वोऽपिपरिणामोमायायाएवनपरमात्मनइत्याह॥परमात्मेति ॥ परमात्मानकस्यचित्कार्यम् ॥ नकस्यापिकारणमुपादानंभवति ॥ किंतुविवर्तकारणमेवभवतीत्यर्थः ॥ एवंसमुद्भवइति ॥ आदिसंभवेआदिसर्गेईश्वरकृतसृष्टौसर्वेषामुद्भवोमत्तःसकाशादेवंभवतीतिसंक्षेपेणात्रोक्तमित्यर्थः ॥ ७८ ॥ पूर्वोक्तं श्रीदेव्यादत्तंमहत्तत्वंगृहीत्वाचतुर्मुखादिभिःक्रियमाणाव्यष्टिदेहादिसृष्टिर्जीवसृष्टिः॥इत्थंमहासृष्टिंव्यष्टिसृष्टिंचोक्त्वाऽनंतरमाह ॥ व्रजंत्विति ॥ ७९ ॥ विषमेसंकटे ॥ इदानीमुपासनास्वरूपमाह॥स्मर्तव्याऽहमिति॥परमात्मोपासनायामपिनकेवलंपरमात्मास्मर्तव्योमायायास्तदभिन्नायाताद्विशक्तिवत्त्यक्तुमशक्यत्वात्तथाशक्त्युपासनायामपिनकेवलाशक्तिःस्मर्तव्या परमात्मनस्तदभिन्नस्यवह्निवत्त्यक्तुमशक्यत्वात्तस्मान्मायाविशिष्टंब्रह्मैवोभयत्रदेवतेतिब्रह्मोपासकैः शक्त्युपासकैश्चतदेवोपास्यंध्येयंज्ञेयंचेति ॥ ८० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तदभिप्रायेणाह ॥ उभयोरिति ॥ सर्वचेदमुपोद्घातेस्पष्टम् ॥ ८१ ॥ मह्यंदत्वेतिशेषः ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेषष्ठोऽध्यायः॥६॥ ॥द्विपंचाशत्पद्यकैस्तुप्रोक्तंतत्वस्वरूपकम् ॥ गुणानांभेदसंस्थानैःसाधिदैवमथोच्यते ॥ १ ॥ तास्तादेव्यआवरणदेवताः ॥ १ ॥ २ ॥ अच्युतिर्नाशरहितः ॥ दृष्टश्चैवेति ॥ स्वनेत्रेणदृष्टोऽनुभूतश्चस्यात्तंयथादृष्टंयथानुभूतंचवद ॥ ३ ॥ यथात्रिगुणास्थलरूपाशक्तिर्मणिद्वीपेकरचरणादिविशिष्टादृष्टा तथानिर्गुणाऽपिदृष्टास्यात्तथाचसानिर्गुणाकीदृशीतितस्याअपिस्वरूपंब्रूहि ॥

उभयोःस्मरणादेवकार्यसिद्धिरसंशयम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इत्युक्त्वाविससर्जास्मान्दत्त्वाशक्तीःसुसंस्कृतान् ॥ ८१ ॥ विष्णवेऽथमहालक्ष्मींमहाकालींशिवायच ॥ महासरस्वतींमह्यंस्थानात्तस्माद्विसर्जिताः ॥ ८२ ॥ स्थलांतरंसमासाद्यतेजाताःपुरुषावयम् ॥ चिंतयंतःस्वरूपंतत्प्रभावंपरमाद्भुतम् ॥ ॥ ८३ ॥ विमानंतत्समासाद्यसंरूढास्तत्रवैत्रयः ॥ नद्वीपोऽसौनसादेवीसुधासिंधुस्तथैवच ॥ पुनर्दृष्टंविमानंवैतत्रास्माभिर्नचान्यथा ॥ ८४ ॥ आसाद्यतस्मिन्विततेविमानेप्राप्तावयंपंकजसन्निधौच ॥ महार्णवेयत्रहतौदुरत्ययौमुरारिणातौमधुकैटभाख्यौ ॥ ८५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ एवंप्रभावासादेवीमयादृष्टाऽथविष्णुना ॥ शिवेनापिमहाभागतास्तादेव्यःपृथक्पृथक् ॥ १ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यपितुर्वाक्यंनारदोमुनिसत्तमः ॥ पप्रच्छपरमप्रीतःप्रजापतिमिदंवचः ॥ २ ॥ नारदउवाच ॥ पुमानाद्योविनाशीयोनिर्गुणोऽच्युतिरव्ययः ॥ दृष्टश्चैवानुभूतश्चतद्वदस्वापितामह ॥ ३ ॥ त्रिगुणावीक्षिताशक्तिर्निर्गुणाकीदृशीपितः ॥ तस्याःस्वरूपंमेब्रूहिपुरुषस्यचपद्मज ॥ ४ ॥ यदर्थंचमयातप्तंश्वेतद्वीपेमहातपः ॥ दृष्टाःसिद्धामहात्मानस्तापसागतमन्यवः ॥ ५ ॥ परमात्मानसंप्राप्तोमयाऽसौदृष्टिगोचरः ॥ पुनःपुनस्तपस्तीव्रंकृतंतत्रप्रजापते ॥ ६ ॥ भवतासगुणाशक्तिर्दृष्टातातमनोरमा ॥ निर्गुणानिर्गुणश्चैवकीदृशौतौवदस्वमे ॥ ७ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिपृष्टःपितातेननारदेनप्रजापतिः ॥ उवाचवचनंतथ्यंस्मितपूर्वंपितामहः ॥ ८ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ निर्गुणस्यमुनेरूपंनभवेद्दृष्टिगोचरम् ॥ दृश्यंचनश्वरंयस्मादरूपंदृश्यतेकथम् ॥ ९ ॥ निर्गुणादुर्गमाशक्तिर्निर्गुणश्चतथापुमान् ॥ ज्ञानगम्यौमुनीनांतुभावनीयौतथापुनः ॥ १० ॥ अनादिनिधनौविद्धिसदाप्रकृतिपूरुषौ ॥ विश्वासेनाभिगम्यौतौनाविश्वासेनकर्हिचित् ॥ ११ ॥ चैतन्यंसर्वभूतेषुयत्तद्विद्धिपरात्मकम् ॥ तेजःसर्वत्रगंनित्यंनानाभावेषुनारद ॥ १२ ॥

॥ ४ ॥ एतत्परमात्मदेव्यादर्शनार्थंबहुतपस्तप्तंतथापितौनलब्धावित्याह ॥ यदर्थमिति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ दृश्यंचनश्वरमिति ॥ यस्माद्धेतोर्यद्दृश्यंतत्तन्नश्वरमितिव्याप्तिस्तस्मात्परमात्मनोनश्वरत्वाभावान्नदृश्यत्वंदृश्यत्वेनश्वरत्वंस्यादेवेत्यर्थः ॥ एतेनप्रथमाध्यायोक्तस्यसाकाकथमुत्पन्नेतिजनमेजयप्रश्नस्योत्तरंव्यासेननारदब्रह्मसंवादमुखेनोक्तमितिबोध्यम् ॥ ९ ॥ ॥१०॥ विश्वासेनेति ॥ अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेनचोभयोरितिश्रुत्यनुभवविश्वासेनैवज्ञेयावित्यर्थः॥११॥तत्रतयोर्व्यापकत्वमाह ॥ चैतन्यमिति ॥ नानाभावेषु नानाजीवेषु॥१२॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





यथाचैतन्यंव्यापकंतथातांतदभिन्नांशक्तिमपिव्यापिकांविद्धितस्मादुभावपिव्यापकौ ॥ ताभ्यांविहीनमिति ॥ तथाचश्रुतिः मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥ तयोर्विभूतिलेशोवैज गदेतच्चराचरमिति ॥ १३ ॥ ताविति ॥ तौचपृथङ्नोपास्यौकिंतुमिश्रीभूतावेवोपास्यौ ॥ तयोर्निरंतरंमिश्रीभूतयोरेवसत्त्वात्पृथक्त्वेनैकस्याप्यवस्थानाभावादितिभावः ॥ अतएवशास्त्रेदे व्याउपासनायोक्तासाजडायामिथ्याभूतायाउक्तेतिनभ्रमितव्यम् ॥ तथाचमायाविशिष्टंब्रह्मैवदेवीपदवाच्यंमायापदशक्त्यादिपदवाच्यमितिसिद्धांतः ॥ स्पष्टंचेदमुपोद्घाते ॥ १४ ॥ तदेव स्पष्टयति।याशक्तिरिति ॥ अंतरंभेदः ॥ सूक्ष्ममपिनवेद ॥१५॥ यावत्पर्यंतंसत्वादिशुद्धयावैराग्यंनास्तितावत्पर्यंतंसर्वशास्त्राण्यप्यधीत्यतयोःपरमात्मदेव्योर्नाममात्रकृतंसूक्ष्ममंतरंभेदंनजा नाति किंतुस्वरूपतएवमूढोभेदंजानाति ॥ विरक्तःसत्वशुद्धस्तु तयोःस्वरूपतोभेदंनैवजानातीतिभावः ॥ १६ ॥ ननुतद्वैराग्यंकुतोदुर्लभमितिचेत्तत्राऽऽह । अहंकारेति ॥ सर्वंविश्वंदेहादिष्व

तंचतांचमहाभागव्यापकौविद्धिसर्वगौ ॥ ताभ्यांविहीनंसंसारेनकिंचिद्वस्तुविद्यते ॥१३॥ तौविचिंत्यौसदादेहेमिश्रीभूतौसदाऽव्ययौ ॥ एकरूपौचिदात्मा नौनिर्गुणौनिर्मलावुभौ ॥ १४ ॥ याशक्तिःपरमात्माऽसौयोऽसौसापरमामता ॥ अंतरंनैतयोःकोऽपिसूक्ष्मंवेदचनारद ॥ १५ ॥ अधीत्यसर्वशास्त्राणिवे दान्सांगांश्चनारद ॥ नजानातितयोःसूक्ष्ममंतरंविरतिंविना ॥१६॥ अहंकारकृतंसर्वंविश्वंस्थावरजंगमम् ॥ कथंतद्रहितंपुत्रभवेत्कल्पशतैरपि ॥ १७ ॥ निर्गुणंसगुणःपुत्रकथंपश्यतिचक्षुषा ॥ सगुणंचमहाबुद्धेचेतसासंविचारय ॥ १८ ॥ पित्तेनाच्छादिताजिह्वाचक्षुश्चमुनिसत्तम ॥ कटुपित्तंविजानातिरसंरू पंनतत्तथा ॥ १९ ॥ गुणैःसमावृतंचेतःकथंजानातिनिर्गुणम् ॥ अहंकारोद्भवंतच्चतद्विहीनंकथंभवेत् ॥ २० ॥ यावन्नगुणविच्छेदस्तावत्तद्दर्शनंकुतः॥तंप श्यतितदाचित्तेयदाऽहंकारवर्जितः ॥२१॥ नारदउवाच ॥ स्वरूपंदेवदेवेशत्रयाणामेवविस्तरात् ॥ गुणानांयत्स्वरूपोऽस्तिह्यहंकारस्त्रिरूपकः॥२२॥ सा त्त्विकोराजसश्चैवतामसश्चतथापरः॥विभेदेनस्वरूपाणिवदस्वपुरुषोत्तम ॥ २३ ॥ यज्ज्ञात्वाविप्रमुच्येऽहंज्ञानंतद्वदमेप्रभो॥गुणानांलक्षणान्येववितानि विभागशः॥२४॥ब्रह्मोवाच॥त्रयाणांशक्तयस्तिस्रस्तद्ब्रवीमितवानघ॥ज्ञानशक्तिःक्रियाशक्तिरर्थशक्तिस्तथापरा ॥२५॥ सात्त्विकस्यज्ञानशक्तीराजसस्य क्रियात्मिका॥द्रव्यशक्तिस्तामसस्यतिस्रश्चकथितास्तव॥२६॥तेषांकार्याणिवक्ष्यामिशृणुनारदतत्त्वतः॥तामस्याद्रव्यशक्तेश्चशब्दस्पर्शसमुद्भवः॥२७॥

हंकारेणव्याप्तंताद्विश्वंकल्पशतैरपिकथंतद्रहितंस्यान्नचतत्सत्त्वेवैराग्यंभवति ततोवैराग्यंदुर्लभमिति ॥ १७ ॥ तस्मान्निर्गुणंपरमात्मानंस्वयंसगुणोऽहंकारादिविशिष्टःपुरुषःकथंचक्षुषापश्यति नकथमपीत्यर्थः ॥ तस्माद्योग्यताभावात्सगुणमेवाधिकारप्राप्तिपर्यंतंचेतसासंविचारयोपास्व ॥१८॥ दृष्टांतमाह ॥ पित्तेनेति ॥ रसंरूपंनेति ॥ यथार्थरसंयथार्थरूपंनजानातीत्यर्थः ॥ १९ ॥ दार्ष्टांतिकमाह।गुणैरिति ॥ तद्विहीनंगुणविहीनम् ॥ अहंकारस्यगुणत्रयात्मकत्वेनतदुद्भूतस्यचेतसस्तन्मयत्वेनकथंतस्यचेतसोगुणरहितत्वंस्यादित्यर्थः ॥ २० ॥ नयावद्गुणविच्छेदस्ताव त्तयोःपरमात्मदेव्योर्दर्शनाशाऽपिनास्तीत्याह।यावन्नेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ त्रयाणामहंकाराणाम् ॥ तिस्रःशक्तयः॥ज्ञानजनिकाशक्तिःसात्विकस्य क्रियाजनिकाशक्तीराज सस्य पृथिव्याद्यर्थरूपकार्यजनिकाशक्तिस्तामसस्येत्याह ॥ त्रयाणामिति ॥ २५ ॥ २६ ॥ तामस्याइतितामसाहंकारसंबंधिद्रव्यजनकशक्तेःसकाशाच्छब्दादिगुणानामुत्पत्तिः ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एतेभ्योगुणेभ्यःशब्दैकगुणमाकाशमित्यादिक्रमेणसूक्ष्माणितन्मात्रापरपर्यायाणिपंचभूतान्युत्पद्यंतइत्याह ॥ शब्दैकगुणमिति ॥ २८ ॥ २९ ॥ पुनर्वक्ष्यमाणरीत्यापंचीकरणेकृतेसति द्रव्यशक्तियुततामसाहंकारानुवृत्तियुक्तोब्रह्मांडसर्गोजायतइत्याह॥दशैतानीति ॥ ३० ॥ राजसाहंकारसंबंधिक्रियाजनकशक्तेःकार्याण्याह॥राजस्याइति ॥ पंचज्ञानेंद्रियाणिपंचकर्मेन्द्रिया णिपंचप्राणाश्चोत्पद्यंतइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ साधनानिकिलेति ॥ साधनानिकरणसंज्ञकानींद्रियाण्येतानीत्यर्थः ॥ किंचक्रियाशक्तियुक्तत्वात्क्रियाशक्तिमयानि॥एतेषांसर्वेषा मुपादानंविवर्तोपादानंतुचिदनुवृत्तिश्चिदेववर्ततइत्यर्थः ॥ यद्वाउपादानंसमवायिकारणंतुचिदनुवृत्तिश्चितोनुवृत्तिरनुस्यूतता यस्यांमायायांसामायोच्यतइत्यर्थः ॥ मायैवसर्वेषांपरिणामोपा दानमित्यर्थः॥३४॥समुद्भवाअर्शआद्यजंतम्॥सात्विकादहंकारादधिष्ठातृदेवतादिशोवायुश्चेतिवक्ष्यमाणाउत्पन्नाइत्यर्थः ॥ ३५ ॥ अत्रज्ञानेन्द्रियाधिष्ठातृदेवताकथंनकर्मेन्द्रियाधिष्ठातृदेवता नामुपलक्षणम् ॥ वैकारिकादहंकाराद्वयोरप्युत्पन्नत्वात् ॥ चंद्रोब्रह्मेतिचतुष्टयंतुवृत्तिभेदेनचतुर्धाभिन्नस्यांतःकरणस्याधिष्ठात्रितिबोध्यम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ वृत्तिभेदेनैवमनसश्चतुष्टयात्मक त्वंनस्वरूपतः ॥ स्वरूपतस्त्वेकत्वमेवेति ॥ पंचज्ञानेंद्रियाणिपंचकर्मेंद्रियाणिपंचइतिपंचदशवस्तूनिएकेनमनसायुक्तानिषोडशविकारिगणितानिषोडशैवभवंति नत्वधिकानीतिप्राणः ॥

रूपंरसश्चगंधश्चतन्मात्राणिप्रचक्षते ॥ शब्दैकगुणमाकाशंवायुःस्पर्शगुणस्तथा ॥ २८ ॥ सुरूपैकगुणोऽग्निश्चजलंरसगुणात्मकम् ॥ पृथ्वीगंधगुणाज्ञेया सूक्ष्माण्येतानिनारद ॥ २९ ॥ दशैतानिमिलित्वातुद्रव्यशक्तियुतानिवै ॥ तामसाहंकारजःस्यात्सर्गस्तदनुवृत्तिकः ॥ ३० ॥ राजस्याश्चक्रियाशक्तेरु त्पन्नानिशृणुष्वमे ॥ श्रोत्रंत्वग्रसनाचक्षुर्घ्राणंचैवचपंचमम् ॥ ३१ ॥ ज्ञानेंद्रियाणिचैतानितथाकर्मेंद्रियाणिच ॥ वाक्पाणिपादपायुश्चगुह्यांतानिचपंच वै ॥ ३२ ॥ प्राणोऽपानश्चव्यानश्चसमानोदानवायवः ॥ पंचदशमिलित्वैवराजसःसर्गउच्यते ॥ ३३ ॥ साधनानिकिलैतानिक्रियाशक्तिमयानिच ॥ उपादानंकिलैतेषांचिदनुवृत्तिरुच्यते ॥ ३४ ॥ ज्ञानशक्तिसमायुक्ताःसात्विकाच्चसमुद्भवाः ॥ दिशोवायुश्चसूर्यश्चवरुणश्चाश्विनावपि ॥ ३५ ॥ ज्ञानेंद्रि याणांपंचानांपंचाधिष्ठातृदेवताः ॥ चंद्रोब्रह्मातथारुद्रःक्षेत्रज्ञश्चचतुर्थकः ॥ ३६ ॥ इत्यंतःकरणाख्यस्यबुद्ध्यादेश्चाधिदैवतम् ॥ चत्वार्येवतथाप्रोक्ताःकि लाधिष्ठातृदेवताः ॥ ३७ ॥ मनसासहचैतानिनूनंपंचदशैवतु ॥ सात्त्विकस्यतुसर्गोऽयंसात्त्विकाख्यःप्रकीर्तितः ॥ ३८ ॥ स्थूलसूक्ष्मादिभेदेनद्वेरूपेप रमात्मनः ॥ ज्ञानरूपंनिराकारंनिदानंतत्प्रचक्षते ॥ ३९ ॥

तदुक्तं मूलभूतात्ततोव्यक्ताद्विकृतात्परवस्तुनः ॥ आसीत्किलमहत्तत्त्वंगुणांतःकरणात्मकम्॥अभूत्तस्मादहंकारस्त्रिविधःसृष्टिभेदतः ॥ वैकारिकस्तैजसश्चतामसश्चेत्यहंत्रिधा ॥ वैकारिकादहं काराद्देवावैकारिकादश॥दिग्वातार्कप्रचेतोश्विवह्नींद्रोपेंद्रमित्रकाः ॥ तैजसादिंद्रियाण्यासंस्तन्मात्राक्रमयोगतः ॥ भूतादिकादहंकारात्पंचभूतानिजाज्ञिरइतिशारदायाम् ॥ अत्रेंद्रियसृष्टिविषये पंचभूतसृष्टिविषयेचशैवसांख्यवेदांतिनांपरस्परंबहुविरोधोदृश्यतेतथापिसृष्टेर्मायिकत्वेनामिथ्यात्वात्तत्रादराभावेनयथाकथंचिदिंद्रजालवद्दृश्यमानस्यनिरुक्तिर्मूढजनबुद्धिशंकानिवारणार्थंकां चिदपिप्रक्रियामाश्रित्यकर्तव्येत्यभिप्रायेणग्रंथकृदुक्तासृष्टिर्मतांतरविरुद्धेतिनमंतव्यमिति ॥ ३८ ॥ इत्थंतत्त्वसृष्टिमुपपाद्योपासनार्थंमायाशक्तिविशिष्टब्रह्मणोभगवतोपदवाच्यस्याद्वि विधंरूपमाह । स्थूलसूक्ष्मादिभेदेनेति ॥ निदानमिति ॥ ज्ञानरूपंसर्वाधिष्ठानंनिदानंविवर्तादिकारणमित्यर्थः ॥ ३९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तत्तूत्तमाधिकारिज्ञानगम्यमेवनतुमध्यमाधिकारिध्यानगम्यम् ॥ ततोमध्यमाधिकारिणउपासनार्थंद्वितीयंस्थूलरूपमस्तीत्याह।साधकस्येति ॥ सूक्ष्ममेवेति ॥ मायाशक्तेरूपद्वयमंतमुखव हिर्मुखरूपभेदेन ॥ तत्रांतर्मुखंरूपंतुपराहंतारूपमुत्तमाधिकारिज्ञानविषयोवहिर्मुखंरूपंतुतदपेक्षयास्थूलंभवति ततोवहिर्मुखमायाशक्त्याकाराविशिष्टंब्रह्मरूपंमध्यमाधिकारिभिरुपास्यमित्य र्थः ॥ अक्षरार्थस्तु पुरुषस्यपरमात्मनोलिंगदेहापेक्षयासूक्ष्ममेवेदंवहिर्मुखमायाकाररूपमंतर्मुखमायाकारापेक्षयातुस्थूलंशरीरंप्रकीर्तितंततस्तदुपास्यमित्यर्थः ॥ ४० ॥ ममचेति ॥ ममच यच्छरीरंसूत्रंसूत्रसंज्ञकंतदपिपरमात्मनः स्थूलंशरीरमित्यभिधीयते ॥ ततस्तद्विशिष्टःपरमात्माप्युपास्यइत्यर्थः ॥ अथस्थूलतमंविराट्शरीरमाह स्थूलंशरीरमिति ॥ ४१ ॥ प्रथमस्योत्प त्तिमाह। शृण्विति ॥ ४२ ॥ तान्येवेति ॥ तान्येवसूक्ष्मभूतानीश्वरेणपंचीकृत्यपंचभूतसमुद्भवःकृतइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ प्रथमंरसतन्मात्रामितिरसतन्मात्रांमनस्युपादायनिश्चित्यतद्द्वेधाकल्प येदितिशेषः ॥ अनंतरंयथातत्स्थूलमुदकंभवतितथाकल्पयेत् ॥ ४४ ॥ कयाकल्पनयातथाभवतितत्स्वयमेवाह।शिष्टानामिति ॥ यथारसतन्मात्राद्विधाकृतातथाऽवशिष्टाभूततन्मात्राअपि

साधकस्यतुध्यानादौस्थूलरूपंप्रचक्षते॥ शरीरंसूक्ष्ममेवेदंपुरुषस्यप्रकीर्तितम् ॥ ४० ॥ ममचैवशरीरंवैसूत्रमित्यभिधीयते ॥ स्थूलंशरीरंवक्ष्यामिब्रह्म णःपरमात्मनः ॥ ४१ ॥ शृणुनारदयत्नेनयच्छ्रुत्वाविप्रमुच्यते ॥ तन्मात्राणिपुरोक्तानिभूतसूक्ष्माणियानिवै ॥ ४२ ॥ पंचीकृत्यतुतान्येवपंचभूतसमु द्भवः ॥ पंचीकरणभेदोऽयंशृणुसंवदतःकिल ॥ ४३ ॥ प्रथमंरसतन्मात्रामुपादायमनस्यपि ॥ कल्पयेच्चतथातद्वैयथाभवतिचोदकम् ॥ ४४ ॥ शिष्टा नांचैवभूतानामंशान्कृत्वापृथक्पृथक् ॥ उदकेमिश्रयेच्चांशान्कृतेरसमयेततः ॥ ४५ ॥ तदाभूतविभागेचचैतन्येचप्रवेशिते ॥ चैतन्यस्यप्रवेशात्तुतदा ऽहमितिसंशयः ॥ ४६ ॥ प्रतीयमानेतेनैवविशेषेणाभिमानतः ॥ आदिनारायणोदेवोभगवानितिचोच्यते ॥ ४७ ॥ घनीभूतेऽथभूतानांविभागेस्पष्टतां गते ॥ वृद्धिंप्राप्यगुणैश्चेत्थमेकैकगुणवृद्धितः ॥ ४८ ॥ आकाशस्यगुणश्चैकःशब्दएवनचापरः ॥ शब्दस्पर्शौचवायोश्चद्वौगुणौपरिकीर्तितौ ॥ ४९ ॥ अग्नेःशब्दश्चस्पर्शश्चरूपमेतेत्रयोगुणाः ॥ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसाश्चत्वारोवैजलस्यच ॥ ५० ॥

द्विधाकर्तव्याः ॥ तत्रसर्वेष्वर्धभागस्तथैवस्थापनीयोऽवशिष्टार्धभागस्यांशान्पृथक्पृथक्चतुर्धाकृत्वास्वस्वार्धभागरहितेऽर्धभागेतानंशान्मेलयेत् ॥ तथाचरसतन्मात्रार्धभागेउदकेरसतन्मा त्रातिरिक्तभूततन्मात्रार्धभागचतुःखंडान्मिश्रयेन्मेलयेदेवंकृतेरसमयेस्थूलजलेजातइत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ततोऽनंतरमेवमेवतदाभूतविभागेइतरेषांचतुर्णांभूतानांपंचीकरणेनविभागेजातेतस्मिन् पंचीकृतपंचभूतात्मकेऽधिष्ठानतयाचैतन्यस्यप्रवेशेजातेऽपिप्रतिबिंबतयाप्रवेशउच्यते चैतन्येचप्रवेशितइति ॥ तस्यप्रतिबिंबरूपचैतन्यस्यप्रवेशात्पंचभूतात्मकेदेहेअहमितिसंशयस्तादात्म्य रूपःसंशयोमनोवृत्तिरूपउत्पद्यते॥तस्यदेहेऽहमितितादात्म्यमुत्पद्यतइतिफलितम्॥४६॥तत्स्थूलदेहाभिमानविशिष्टंचैतन्यंवैश्वानरइत्यादिनारायणइत्यादिसंज्ञाभिरुच्यते ॥४७॥ पंचीकृत पंचभूतानांगुणवृद्ध्यास्वरूपमाह।घनीभूतइति ॥ घनीभूतेपंचीकरणेनदृढीभूतेसति विभागेआकाशादिरूपेणविभागेस्पष्टतांगतेसति पूर्वोक्तरसतन्मात्रागुणैःकारणभूतैर्वृद्धिंप्राप्यकारणगुणाः कार्यगुणानारभंतइतिन्यायाद्गुणवृद्धिंप्राप्यैकैकगुणवृद्धितोयुक्तान्येकैकभूतानिभवंतीत्यर्थः॥४८॥कयाकयागुणवृद्ध्याकिंकिंभूतंयुक्तमस्तितत्राम्नानिर्दिशति। आकाशस्येति ॥४९॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एवमिति। एवंपंचीकृतभूतात्मकमेवब्रह्मांडमुत्पद्यतइत्यर्थः ॥ ५१ ॥ सर्वेजीवाइति ॥ एतेसर्वेजीवामिलित्वैवसर्वजीवाविद्याभिरेवब्रह्मांडस्योत्पत्तिरित्यर्थः ॥ जीवाविद्याभिरेवब्रह्मांडंकाल्पित स्वकर्मफलभोगार्थमितिभावः ॥ नत्वीश्वरस्यतत्कल्पनेकिंचित्फलमस्ति ॥ किंबहुनेश्वरोऽपिजीवाविद्याभिरेवकल्पितइतिरहस्यम् ॥ कतिजीवाःसंतितत्राह ।चतुरशीतीति॥तदेतत्स्थूलतमंरू पमप्युपास्यम् ॥ तथाचएतावतासर्वग्रंथेनसर्वामहासृष्टिरीश्वरकर्तृकाजीवसृष्टिश्चोपपादिता तस्यांसृष्टौविद्यमानजीवानामुत्तमाधिकारिणांज्ञानघनंतुरीयंप्रणवमायाबीजवाच्यंब्रह्मज्ञेयमुक्तम् ॥ मध्यमाधिकारिणांतुस्थूलसूक्ष्मकारणदेहावच्छिन्नंब्रह्मवैश्वानरसूत्रहिरण्यगर्भाव्याकृतसंज्ञकंव्यष्टौविश्वतैजसप्राज्ञसंज्ञकंप्रणवमायाबीजावयववर्णत्रयवाच्यमुपास्यमुक्तंभवति ॥ चतुष्पादे वचब्रह्ममांडूक्यादिषुप्रतिपादितंतद्वाचकावर्णाश्चप्रतिपादिताइतिबोध्यम् ॥ ५२ ॥ इतिश्रीदेवीभा० तृ० सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ एकाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथचतुर्मुखः ॥ गुणानां

स्पर्शशब्दरसारूपंगंधश्चपृथिवीगुणाः ॥ एवंमिलितयोगैश्चब्रह्मांडोत्पत्तिरुच्यते ॥ ५१ ॥ सर्वेजीवामिलित्वैवब्रह्मांडांशसमुद्भवाः ॥ चतुरशीतिलक्षाश्चप्रो क्तावैजीवजातयः ॥ ५२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सर्गोऽयंकथितस्तातयत्पृष्टोऽहंत्वयाऽधुना ॥ गुणानांरूपसंस्थांवैशृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ १ ॥ सत्त्वंप्रीत्यात्मकंज्ञेयंसुखात्प्रीतिसमुद्भवः ॥ आर्जवंचतथासत्यंशौचंश्रद्धाक्षमाधृतिः॥ २ ॥ अनुकंपात थालज्जाशांतिःसंतोषएवच ॥ एतैःसत्वप्रतीतिश्चजायतेनिश्चलासदा ॥ ३ ॥ श्वेतवर्णंतथासत्त्वंधर्मेप्रीतिकरंसदा ॥ सच्छ्रद्धोत्पादकंनित्यमसच्छ्रद्धानिवा रकम् ॥ ४ ॥ सात्त्विकीराजसीचैवतामसीचतथापरा॥श्रद्धातुत्रिविधाप्रोक्तामुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥५॥रक्तवर्णंरजःप्रोक्तमप्रीतिकरमद्भुतम्॥अप्रीतिर्दुःख योगत्वाद्भवत्येवसुनिश्चिता ॥ ६॥ प्रद्वेषोऽथतथाद्रोहोमत्सरःस्तंभएवच ॥ उत्कंठाचतथानिद्राश्रद्धातत्रचराजसी॥७॥मानोदमस्तथागर्वोरजसाकिलजा यते॥प्रत्येतव्यंरजस्त्वेतैर्लक्षणैश्चविचक्षणैः॥८॥कृष्णवर्णंतमःप्रोक्तंमोहनंचविषादकृत्॥आलस्यंचतथाज्ञानंनिद्रादैन्यंभयंतथा ॥ ९ ॥ विवादश्चैवकार्पण्यं कौटिल्यंरोषएवच॥वैषम्यंवातिनास्तिक्यंपरदोषानुदर्शनम्॥१०॥प्रत्येतव्यंतमस्त्वेतैर्लक्षणैःसर्वथाबुधैः॥तामस्याश्रद्धयायुक्तंपरतापोपपादकम्॥११॥

रूपसंस्थांवैकथयामासविस्तरात ॥ १ ॥ सर्गोयमिति ॥ दृश्यमात्रस्यसर्गइत्यर्थः ॥ १ ॥ गुणानांमुमुक्षुभिर्हेयोपादेयत्वज्ञानार्थंस्वरूपंकार्यंचाह। प्रीत्यात्मकमिति ॥ सत्त्वाद्धिसर्वत्रसुखं भवात ॥ सुखेजातेसर्वपदार्थस्यसुखदत्वात्तत्रप्रीतिरुत्पद्यते ॥ तस्माद्धेतोःसत्त्वंप्रीत्यात्मकमित्यर्थः ॥ २ ॥ एतैर्लक्षणैःसत्त्वकार्यभूतैःकारणस्यसत्त्वस्यप्रतीतिर्निश्चयोजायतेमयिसत्त्वंनि श्चलमुत्पन्नमिति ॥ ३ ॥ सत्त्वस्यकार्यांतराण्यप्याह।श्वेतवर्णमिति ॥ ४ ॥ ननुश्रद्धाकिमनेकविधाऽस्तियस्मादत्रोच्यतेऽसच्छ्रद्धानिवारकमितिचेदस्त्येवेत्याह।सात्त्विकीति ॥ सात्त्विक्य तिरिक्तासतीश्रद्धेत्यर्थः ॥ ५ ॥ अप्रीतिकरमिति ॥ रजोहिदुःखप्रदंसर्वत्रदुःखेजातेसर्वपदार्थेष्वप्रीतिर्जायतइत्यप्रीतिकरमुच्यते ॥ तदेवाह। अप्रीतिरिति ॥ ६ ॥ ७ ॥ रजसेति ॥ रजः कार्याण्येतानीत्यर्थः ॥ प्रत्येतव्यमिति॥एतैर्लक्षणैरजःकार्यभूतैर्मयिकारणभूतोरजोगुणोऽस्तीतिज्ञेयमित्यर्थः ॥८ ॥ ९ ॥ १०॥ परतापोपपादकमितिपूर्वान्वयितमोगुणलक्षणम् ॥११॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किमर्थमेतानिलक्षणान्युक्तानितत्राह । सत्त्वंप्रकाशयितव्यमिति ॥ सत्त्ववृद्धिर्यथाभवतितथाकर्तव्यमित्यर्थः ॥ नहितत्सत्त्वलक्षणज्ञानमंतरासंभवति ॥ हेयोपादेययोःस्वरूपज्ञानस्यापेक्षि तत्वादितिभावः ॥ १२ ॥ अन्योन्येति ॥ एतेऽन्योन्याभिभवात्परस्पराभिभवात्विरुध्यंतीतिस्वभावएषाम् ॥ ततश्चसत्त्वस्थैर्येणेतरयोराभिभवःकर्तव्यइतिभावः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ मयेत्युक्तंवचोज्ञात्वेत्यन्वयः ॥ ज्ञातंतदनुभूतमिति ॥ हेमहामतेश्रवणाद्दर्शनाच्चैवसपादितत्कालमेवफलेसातियत्परिज्ञातंफलजनकत्वेनपरिज्ञातंतदेवज्ञातंश्रुतमनुभूतंचभवति ॥ यत्तुसंस्कारा नुभवात्संस्कारजन्यस्मरणाज्ज्ञातंतत्रतत्कालेतत्पदार्थस्यानुभवाभावेफलस्याभावान्नतज्ज्ञानंजायते ॥ नहिगंगातीरेआम्राद्दृष्टाइतिस्मरणेनकिंचित्फलमस्तितदुत्तरंतदनुभवस्यैवसफलत्वात॥

सत्त्वंप्रकाशयितव्यंनियंतव्यंरजःसदा ॥संहर्तव्यंतमःकामंजनेनशुभमिच्छता ॥१२॥ अन्योन्याभिभवाच्चैतेविरुध्यंतिपरस्परम् ॥ तथाऽन्योन्याश्रयाःसर्वे नतिष्ठंतिनिराश्रयाः ॥ १३ ॥ सत्त्वंनकेवलंक्वापिनरजोनतमस्तथा ॥ मिलिताश्चसदासर्वेतेनान्योन्याश्रयाःस्मृताः ॥ १४ ॥ अन्योन्यमिथुनाश्चैवविस्तारं कथयाम्यहम् ॥ शृणुनारदयज्ज्ञात्वामुच्यतेभवबंधनात्॥१५॥संदेहोऽत्रनकर्तव्योज्ञात्वेत्युक्तंमयावचः॥ज्ञातंतदनुभूतंयत्परिज्ञातंफलेसति ॥ १६ ॥ श्रव णाद्दर्शनाच्चैवसपद्येवमहामते ॥ संस्कारानुभवाच्चैवपरिज्ञातंनजायते ॥१७॥ श्रुतंतीर्थंपवित्रंचश्रद्धोत्पन्नाचराजसी ॥ निर्गतस्तत्रतीर्थेवैदृष्टंचैवयथाश्रुतम् ॥१८॥स्नातस्तत्रकृतंकृत्यंदत्तंदानंचराजसम्॥स्थितस्तत्रकियत्कालंरजोगुणसमावृतः॥१९॥रागद्वेषान्निर्मुक्तःकामक्रोधसमावृतः॥पुनरेवगृहंप्राप्तोयथा पूर्वंतथास्थितः ॥ २० ॥ श्रुतंचनानुभूतंवैतेनतीर्थंमुनीश्वर ॥ नप्राप्तंचफलंयस्मादश्रुतंविद्धिनारद ॥ २१ ॥ निष्पापत्वंबलंविद्धितीर्थस्यमुनिसत्तम ॥ कूपेःफलंयथालोकेनिष्पन्नान्नस्यभक्षणम् ॥ २२ ॥ पापदेहविकारायेकामक्रोधादयःपरे ॥ लोभोमोहस्तथातृष्णाद्वेषोरागस्तथामदः ॥ २३ ॥ असूये र्ष्याक्षमाशांतिःपापान्येतानिनारद ॥ ननिर्गतानिदेहात्तुतावत्पापयुतोनरः ॥ २४ ॥ कृतेतीर्थेयदैतानिदेहान्निर्गतानिचेत् ॥ निष्फलःश्रमएवैकःकर्ष कस्ययथातथा ॥ २५ ॥ श्रमेणापीडितंक्षेत्रंकृष्टाभूमिःसुदुर्घटा ॥ उप्तंबीजंमहार्घंचहितावृत्तिरुदाहृता ॥ २६ ॥ अहोरात्रंपरिक्लिष्टोरक्षणार्थंफलोत्सुकः ॥ कालेसुप्तस्तुहेमंतेवनेव्याघ्रादिभिर्भृशम् ॥ २७ ॥ भक्षितंशलभैःसर्वंनिराशश्चकृतःपुनः ॥ तद्वत्तीर्थश्रमःपुत्रकष्टदोनफलप्रदः ॥ २८ ॥

तथाचयत्रकर्माणिफलंनदृश्यतेतत्कृतमकृतमेव ॥ तादृशं च राजसंतामसंवाकर्मभवतीतिभावः ॥ १६ ॥ १७ ॥ तदेवाह श्रुतमिति ॥ राजसीति ॥ फलंभवतुवा मावा लोकागच्छंति मयापिगंतव्यमित्येवंरूपेत्यर्थः ॥ राजसंफलंभवतुवामावेत्युक्तरूपम् ॥१८॥१९॥२०॥ तत्रफलाभावात्तत्तीर्थंतेननश्रुतंनाप्यनुभूतमित्यर्थः॥२१॥किंतत्रतीर्थस्यफलंतत्राह।निष्पापत्वमिति ॥२२॥ननुपापस्यामूर्तत्वात्पापंनगतमितिकथंज्ञायतइतिचेत्पापकार्याणांकामादीनांदृश्यमानत्वेतेनकार्येणकारणस्यपापस्यानुमानादित्याह । पापदेहविकाराइति॥२३॥२४॥२५॥आपीडि तंआसमंताद्रुद्धम्॥महार्घममूल्यंबीजमित्यर्थः॥हितावृत्तिरियंवृत्तिर्हिताकल्याणकरीउदाहृतायद्यपितथापिफलाभावेनिराशःकृतइत्यर्थः ॥२६॥२७॥दार्ष्टांतिकेयोजयति।तद्वदिति ॥२८॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एकैकस्यकारणवशादुत्कटत्वेजातेऽन्ययोरभिभवोभवतीत्याह। सत्त्वमिति ॥ शास्त्रंविवेकशास्त्रंवेदांतस्तद्दर्शनंसत्त्वोद्रेककारणमुक्तम् ॥ तेनदर्शनेनतामसार्थेषुराजसेषुचवैराग्यंफलम् ॥२९॥ तत्सत्त्वंप्रसह्यबलात्कारेण ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ विवृद्धसत्त्वस्यलक्षणमाह। यदासत्त्वमिति ॥ ३३ ॥ नचान्यथारजस्तमःसमुद्भूतंबाह्यार्थंनगृह्णातीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ मोक्षार्थीसन्नराजसे

सत्त्वंसमुत्कटंजातंप्रवृद्धंशास्त्रदर्शनात् ॥ वैराग्यंतत्फलंजातंतामसार्थेषुनारद ॥ २९ ॥ प्रसह्याभिभवत्येवतद्रजस्तमसीउभे ॥ रजःसमुत्कटंजातंप्रवृत्तं लोभयोगतः ॥ ३० ॥ तत्तथाभिभवत्येवतमःसत्त्वेतथाउभे ॥ तमस्तथोत्कटंभूत्वाप्रवृद्धंमोहयोगतः ॥ ३१ ॥ तत्सत्त्वरजसीचोभेसंगम्याभिभवत्यपि ॥ विस्तरंकथयाम्यद्ययथाभिभवतीतिवै ॥ ३२ ॥ यदासत्त्वंप्रवृद्धंवैमतिर्धर्मेस्थितातदा ॥ नचिंतयतिबाह्यार्थंरजस्तमःसमुद्भवम् ॥ ३३ ॥ अर्थसत्त्वस मुद्भूतंगृह्णातिचनचान्यथा ॥ अनायासकृतंचार्थंधर्मंयज्ञंचवांछति ॥ ३४ ॥ सात्त्विकेष्वेवभोगेषुकामंवैकुरुतेतदा ॥ राजसेषुनमोक्षार्थीतामसेषुपुनःकु तः ॥ ३५ ॥ एवंजित्वारजःपूर्वंततश्चतमसोजयः ॥ सत्त्वंचकेवलंपुत्रतदाभवतिनिर्मलम् ॥ ३६ ॥ यदारजःप्रवृद्धंवैत्यक्त्वाधर्मान्सनातनान् ॥ अन्य थाकुरुतेधर्माञ्छ्रद्धांप्राप्यतुराजसीम् ॥ ३७ ॥ राजसादर्थसंवृद्धिस्तथाभोगस्तुराजसः ॥ सत्त्वंविनिर्गतंतेनतमसश्चापिनिग्रहः ॥ ३८ ॥ यदातमोवि वृद्धंस्यादुत्कटंसंवभूवह ॥ तदावेदेनविश्वासोधर्मशास्त्रेतथैवच ॥ ३९ ॥ श्रद्धांचतामसींप्राप्यकरोतिचधनात्ययम् ॥ द्रोहंसर्वत्रकुरुतेनशांतिमधिगच्छ ति ॥ ४० ॥ जित्वासत्त्वंरजश्चैवक्रोधनोदुर्मतिःशठः ॥ वर्ततेकामचारेणभावेषुविततेषुच ॥ ४१ ॥ एकंसत्त्वंनभवतिरजश्चैकंतमस्तथा ॥ सहैवाश्रित्य वर्ततेगुणामिथुनधर्मिणः ॥ ४२ ॥ रजोविनानसत्त्वंस्याद्रजःसत्त्वंविनाक्वचित् ॥ तमोविनानचैवैतेवर्ततेपुरुषर्षभ ॥ ४३ ॥ तमस्ताभ्यांविहीनंतुकेव लंनकदाचन ॥ सर्वेमिथुनधर्माणोगुणाःकार्यांतरेषुवै ॥ ४४ ॥ अन्योन्यसंश्रिताःसर्वेतिष्ठंतिनवियोजिताः ॥ अन्योन्यजनकाश्चैवयतःप्रसवधर्मिणः ॥ ॥ ४५ ॥ सत्वंकदाचिच्चरजस्तमसीजनयत्युत ॥ कदाचित्तुरजःसत्त्वतमसीजनयत्यपि ॥४६॥ कदाचित्तुतमःसत्त्वरजसीजनयत्युभे ॥ जनयंत्येवम न्योन्यंमृत्पिंडश्चवटंयथा ॥ ४७ ॥ बुद्धिस्थास्तेगुणाःकामान्बोधयंतिपरस्परम् ॥ देवदत्तविष्णुमित्रयज्ञदत्तादयोयथा ॥४८॥ यथास्त्रीपुरुषश्चैव मिथुनौचपरस्परम् ॥ तथागुणाःसमायांतियुग्मभावंपरस्परम् ॥ ४९ ॥

पुतामसेषुचकामंकुरुतइत्यथः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥ परस्परजनकत्वमुपपादयतिसत्वंकदाचिच्चेति ॥४६॥४७॥ कस्मिन्स्थलेस्थि तागुणाइत्थंकार्यंकुर्वंतितत्राह। बुद्धिस्थाइति ॥ यथाएकैकोत्कटत्वेप्येकैकंस्वकार्यंचोक्तंकुर्वंतितथामिथुनीभूयाप्युभयगुणकंकार्यमुत्पादयंतीतिदृष्टांतमुखेनाह। देवदत्तेति। यथादेवदत्तादय स्त्रयोमिलित्वाकार्यंकुर्वंतियथावास्त्रीपुरुषौमिथुनीभूयकार्यमुत्पादयतस्तथेत्यर्थः ॥ ४८ ॥ युग्मभावंमिथुनीभावंपरस्परंयांतीत्यर्थः ॥ ४९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तदेवदर्शयति।रजसोमिथुनेसत्त्वमिति ॥ रजःसत्त्वरूपमेकंमिथुनमित्यर्थः ॥ एवमन्यदप्यूह्यम् ॥ यथारजसोमिथुनेसत्त्वंगौणंस्त्रीस्थानापन्नंयथावासत्वस्यमिथुनेरजोगौणंस्त्रीस्थानापन्नंतथैव सत्त्वतमोमिथुनंरजस्तमोमिथुनमित्याह।उभेतेसत्त्वरजसीइति ॥ सत्वस्यमिथुनेतमस्तमसोमिथुनेसत्त्वंतथारजसोमिथुनेतमस्तमसोमिथुनेरजइत्यर्थः ॥ एकंप्रधानंपुरुषभावापन्नमितरद्गौणंस्त्री भावापन्नमित्यर्थः ॥ एतेषांमिथुनानांबुद्धौवर्तमानतोत्पद्यमानोभयात्मककार्येणप्रत्येतव्या ॥ ५० ॥ ५१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ अष्टाधिकैस्तुचत्वा रिंशत्पद्यैर्नारदेनच ॥ गुणानांलक्षणंपृष्टंपुनरेवोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ मुमुक्षुभिर्गुणानांहेयोपादेयत्वज्ञानार्थंस्वरूपंकार्यंचपुनराह ॥ गुणानामिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सत्वंतुकेवलमिति ॥ एकैकगुणोऽन्यगुणासहायःकुत्रापिनतिष्ठति ॥ तेषांगुणानांपरस्परंमिश्रीभावात्तुमिश्रत्वमेवसर्वदाऽस्ति ॥ ५ ॥ मिश्रीभावादेवगुणानांसुखदुःखमोहात्मकत्वंभवतिनान्यथेतिदृष्टांतमुखेनाह॥ यथाकाचिदिति ॥ ६ ॥ ७ ॥ यथैकैवस्त्रीसुखदुःखमोहात्मिकाव्यक्तिभेदेनभिन्नंप्रतिकालभेदेनवाएकांव्यक्तिंप्रतिभवतितथैवसत्वंभवतीत्याह । एवंसत्वेनेति॥ स्त्रीत्वमापादितेनेतिस्त्रीस्थाना

रजसोमिथुनेसत्त्वंसत्त्वस्यमिथुनेरजः ॥ उभेतेसत्त्वरजसीतमसोमिथुनेविदुः ॥५०॥ नारदउवाच ॥ इत्येतत्कथितंपित्रागुणरूपमनुत्तमम् ॥ श्रुत्वाप्येत त्सएवाहंततोऽपृच्छंपितामहम् ॥५१॥इतिश्रीदेवीभा ० म ० तृ ० अष्टमोऽध्यायः ॥८॥ ॥नारदउवाच॥गुणानांलक्षणंतातभवताकथितंकिल ॥नतृप्तो ऽस्मिपिबन्मिष्टंत्वन्मुखात्प्रच्युतंरसम् ॥१॥ गुणानांतुपरिज्ञानंयथावदनुवर्णय ॥ येनाहंपरमांशांतिमधिगच्छामिचेतसि ॥२॥ व्यासउवाच ॥ इतिपृष्टस्तु पुत्रेणनारदेनमहात्मना॥उवाचचजगत्कर्तारजोगुणसमुद्भवः ॥३॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिगुणानांपरिवर्णनम् ॥ सम्यङ्नाहंविजानामियथामतिव दामिते॥४॥सत्त्वंतुकेवलंनैवकुत्रापिपरिलक्ष्यते॥ मिश्रीभावात्तुतेषांवैमिश्रत्वंप्रतिभातिवै ॥ ५ ॥ यथाकाचिद्वरानारीसर्वभूषणभूषिता ॥ हावभावयुता कामंभर्तृप्रीतिकरीभवेत् ॥ ६ ॥ मातापित्रोस्तथासैववंधुवर्गस्यप्रीतिदा ॥ दुःखंमोहंसपत्नीषुजनयत्यपिसैवहि ॥७॥ एवंसत्त्वेनतेनैवस्त्रीत्वमापादितेनच ॥ रजसस्तमसश्चैवजनितावृत्तिरन्यथा॥८॥रजसास्त्रीकृतेनैवंतमसाचतथापुनः॥अन्योन्यस्यसमायोगादन्यथाप्रतिभातिवै ॥९॥ अवस्थानात्स्वभावेषुनवै जात्यंतराणिच ॥ लक्ष्यंतेविपरीतानियोगान्नारदकुत्रचित् ॥ १० ॥ यथारूपवतीनारीयौवनेनविभूषिता ॥ लज्जामाधुर्ययुक्ताचतथाविनयसंयुता ॥११॥

पन्नमित्यर्थः ॥ तेनसत्वेनकस्यचित्पुरुषस्यसुखजनिकावृत्तिर्जनिताभवति ॥ तस्यैवपुरुषस्यकालांतरेऽन्यथादुःखमोहात्मिकरजसःसंबंधिनीतमसोवासंबधिनीवृत्तिर्जनिताभवति ॥८॥ एवं रजोयदास्त्रीकृतंस्त्रीभावापन्नंतथातमोयदास्त्रीभावापन्नंस्त्रीस्थानत्वेनकल्पितंतदातेनरजसातमसावादुःखात्मिकामोहात्मिकावाकस्यचित्पुरुषस्यवृत्तिर्जनिताभवतितस्यैवपुरुषस्यकालांतरेसु खवृत्तिरुत्पाद्यते॥ नचैतद्गुणानामन्यगुणसहायताभावेसंभवति तस्मान्मिश्रीभूताएवगुणाइतिज्ञेयमित्याह॥ अन्योन्यस्येति ॥९॥ अवस्थानात्स्वभावेष्विति ॥ यदिगुणाएकैकाएवस्युर्न मिश्रीभूतास्तदातेषांस्वभावेष्ववस्थानादेकरूपैववृत्तिःस्यान्नजात्यंतराणिस्युः लक्ष्यंतेतुविपरीतानिजात्यंतराणि॥कदाचित्सुखात्मकंकदाचिद्दुःखात्मकंकदाचिन्मोहात्मकमितितस्मान्मिश्री भूताएवगुणाइतिभावः ॥१०॥ यथारूपवतीत्यारभ्यचौरैरुपद्रुतेतिपर्यंतंपाठःपुनरुक्तार्थकोऽपिदृष्टांतदार्ष्टांतिकयोरुपसंहारार्थमितिबोध्यम् ॥ ११ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १२ ॥ १३ ॥ दृष्टांतांतरमाह । चौरैरिति ॥ सेनाराजसेना ॥ १४ ॥ जनयंतिएतेदृष्टांतार्थायथातथागुणाःविपरीतप्रतीतिंजनयंतीत्यर्थः ॥ यथेति ॥ दुर्दिनंमेघच्छन्नोदिवसः॥१५॥ तमोरूपंनिविडांधकारप्रायम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ प्रोषितभर्तृकाणांविरहिणीनांकामिनीनाम् ॥ स्वभावस्थाइति ॥ एतेयथादृष्टांताएवमेतेगुणाःस्वभावस्थाअन्यगुणसाहाय्येनाविपरीताभांतितस्मान्मिश्रीभूताएवेतिभावः ॥ १९ ॥ सत्त्वादिगुणोद्रेकेसतिजायमानानिलक्षणान्याह । लक्षणानीति ॥ २० ॥ लघुस्वरूपमाह । यदांऽगानीति ॥ लघून्येवनभारवंति ॥ तान्राजसांस्तामसान्वाविषयान्नगृह्णातीत्यर्थः ॥ २१ ॥ जृंभामिति ॥ जृंभांस्तंभंशरीरगुरुतांतंद्रांचयदापश्यतितदाचलंरजःसमुत्कटंजातमित्यन्वयः ॥२२॥ तमोलक्षणमाह।कलिमिति॥

कामशास्त्रविधिज्ञाचधर्मशास्त्रेऽपिसंमता ॥ भर्तुःप्रीतिकरीभूत्वासपत्नीनांचदुःखदा ॥ १२ ॥ मोहदुःखस्वभावस्थासत्त्वस्थेत्युच्यतेजनैः ॥ तथासत्त्वंविकुर्वाणमन्यभावंविभातिवै ॥ १३ ॥ चौरैरुपद्रुतानांहिसाधूनांसुखदाभवेत् ॥ दुःखामूढाचदस्यूनांसैवसेनातथागुणा ॥ १४ ॥ विपरीतप्रतीतिंवैजनयंतिस्वभावतः ॥ यथाचदुर्दिनंजातंमहामेघघनावृतम् ॥ १५ ॥ विद्युत्स्तनितसंयुक्तंतिमिरेणावगुंठितम् ॥ सिंचद्भूमिंप्रवर्षद्भैतमोरूपमुदाहृतम्॥१६॥ यदेतत्कर्षकाणांवैतदेवातीवदुर्दिनम् ॥ वीजोपस्करयुक्तानांसुखदंप्रभवत्युत ॥ १७ ॥ अप्रच्छन्नगृहाणांचदुर्भगानांविशेषतः ॥ तृणकाष्ठगृहीतानांदुःखदंगृहमेधिनाम् ॥ १८ ॥ प्रोषितभर्तृकाणांवैमोहदंप्रवदंत्यपि ॥ स्वभावस्थागुणाःसर्वेविपरीताविभांतिवै ॥ १९ ॥ लक्षणानिपुनस्तेषांशृणुपुत्रब्रवीम्यहम् ॥ लघुप्रकाशकंसत्त्वंनिर्मलंविशदंसदा ॥ २० ॥ यदांऽगानिलघून्येवनेत्रादीनींद्रियाणिच ॥ निर्मलंचतथाचेतोगृह्णातिविषयान्नतान् ॥ २१ ॥ तदासत्त्वंशरीरंवैमंतव्यंचसमुत्कटम् ॥ जृंभांस्तंभंचतंद्रांचचलंचैवरजःपुनः ॥ २२ ॥ यदातदुत्कटंजातंदेहेयस्यचकस्यचित् ॥ कलिंमृगयतेकर्तुंगंतुंग्रामांतरंतथा ॥ २३ ॥ चलचित्तश्चसोऽत्यर्थंविवादेचोद्यतस्तथा ॥ गुरुमावरणंकामंतमोभवतितद्यदा ॥ २४ ॥ तदांऽगानिगुरूण्याशुप्रभवंत्यावृतानिच॥ इंद्रियाणिमनःशून्यंनिद्रांनैवाभिवांछति ॥ २५ ॥ गुणानांलक्षणान्येवंविज्ञेयानीहनारद ॥ नारदउवाच ॥ विभिन्नलक्षणाःप्रोक्ताःपितामहगुणास्त्रयः ॥ २६ ॥ कथमेकत्रसंस्थानेकार्यंकुर्वंतिशाश्वतम् ॥ परस्परंमिलित्वाहिविभिन्नाःशत्रवःकिल ॥ २७ ॥ एकत्रस्थाःकथंकार्यंकुर्वंतीतिवदस्वमे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणुपुत्रप्रवक्ष्यामिगुणास्तेदीपवृत्तयः ॥ २८ ॥ प्रदीपश्चयथाकार्यंप्रकरोत्यर्थदर्शनम् ॥ वर्तिस्तैलंयथार्चिश्चविरुद्धाश्चपरस्परम् ॥ २९ ॥

कलिःकलहः ॥ एतानिलक्षणानियदाभवंतितदातत्तमउत्कटंजातमितिज्ञेयमित्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ गुरुमावरणमित्यस्यार्थमाह । तदांगानीति ॥ आवृतानितमसेत्यर्थः ॥ शून्यंज्ञानशून्यम् ॥२५॥ मिश्रीभूतागुणाःकार्यंकुर्वंतीतिश्रुत्वानारदःशंकते । विभिन्नेति ॥ यथाशत्रवोमिलिताःकार्यंनकुर्वंति तथागुणाःपरस्परंशत्रवःसंतःकथंमिलित्वाकार्यंकुर्वंतीत्यर्थः ॥२६॥ ॥ २७ ॥ दीपवृत्तयइति ॥ तथाचयथादीपवर्तिकातैलानिपरस्परविरुद्धान्यपिमिलित्वाघटार्थप्रकाशनमेकंकुर्वंतितद्वद्गुणाअपीतिभावः ॥ २८ ॥ २९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥३०॥ इत्थमेतावत्पर्यंतंब्रह्मणानारदंप्रत्युक्तंनारदोव्यासंप्रत्युक्तवानित्याह।एवंप्रकृतिजाइति॥अत्रनारदउवाचेत्यनेनैवब्रह्मनारदसंवादसमाप्तेःसिद्धत्वात्तापुराणेनोक्तेतिवोध्यम् ॥ ३१ ॥ तेवैविश्वस्यकारणंतेवैप्रकृतिसंबंधिनोगुणाएवनान्योविश्वस्यकारणमित्यर्थः ॥ इत्युक्तमिति ॥ हेराजन्जनमेजय यत्त्वयापृष्टंतदेवोद्दिश्यमयापृष्टोनारदोमांप्रत्येवमुक्तवानित्यर्थः ॥ ३२ ॥ इत्थंसंवादश्रवणेनजनमेजयस्यसर्वप्रश्नसमाधानेजातेऽपिसंवादनिर्गलितार्थनिगमनस्थानीयंव्यासआह आराध्येति ॥ हेराजन्यतोययादेव्यासर्वमिदंव्याप्तंयाचजगत्सृष्टिस्थितिक्षयातिरोधानानुग्रहपंचकृत्यकर्त्रीउत्पत्तिस्थितिक्षयरहितागुणत्रयसमुद्भूतपंचभूतसमुद्भूतदेहवतामेकैकगुणाभिमानिब्रह्मादिजीवानां सृष्टिस्थितिक्षयकारिणीसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीश्रीदेवीहेयगुणांस्तत्कार्याणिचज्ञात्वाकर्मोपासनादिभिर्वेदांतशास्त्रश्रवणादिभिश्चहेयगुणांस्तत्कार्याणिचनिरुध्यग्राह्यंसत्वगुणंतत्कार्याणिचज्ञात्वातंसंपाद्यसत्वगुणोद्रेकेणयुक्तेनपुरुषेणसैवसर्वो

विरुद्धंहितथातैलमग्निनासहसंगतम् ॥ तैलंवर्तिविरोध्येवपावकोऽपिपरस्परम् ॥ ३० ॥ एकत्रस्थाःपदार्थानांप्रकुर्वंतिप्रदर्शनम् ॥ नारदउवाच ॥ एवंप्रकृतिजाःप्रोक्तागुणाःसत्यवतीसुत ॥ ३१ ॥ विश्वस्यकारणंतेवैमयापूर्वंयथाश्रुतम् ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तंनारदेनाथममसर्वंसविस्तरम् ॥ ३२ ॥ गुणानांलक्षणंसर्वंकार्यंचैवविभागशः ॥ आराध्यापरमाशक्तिर्ययासर्वमिदंततम् ॥३३॥ सगुणानिर्गुणाचैवकार्यभेदेसदैवहि ॥ अकर्तापुरुषःपूर्णोनिरीहःपरमोऽव्ययः ॥ ३४ ॥ करोत्येषामहामायाविश्वंसदसदात्मकम्॥ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रःसूर्यश्चंद्रःशचीपतिः ॥ ३५ ॥ अश्विनौवसवस्त्वष्टाकुबेरोयादसांपतिः ॥ वह्निर्वायुस्तथापूषासेनानीश्चविनायकः ॥३६॥ सर्वेशक्तियुताःशक्ताःकर्तुंकार्याणिस्वानिच ॥ अन्यथातेप्यशक्तावैप्रस्पंदितुमनीश्वराः॥३७॥ साचैवकारणंराजञ्जगतःपरमेश्वरी ॥ समाराधयतांभूपकुरुयज्ञंजनाधिप ॥ ३८ ॥ पूजनंपरयाभक्त्यातस्याएवविधानतः ॥ महालक्ष्मीर्महाकालीतथामहासरस्वती ॥ ३९ ॥ ईश्वरीसर्वभूतानांसर्वकारणकारणम् ॥ सर्वकामार्थदाशांतासुखसेव्यादयान्विता ॥४०॥ नामोच्चारणमात्रेणवांछितार्थफलप्रदा॥देवैराराधितापूर्वंब्रह्मविष्णुमहेश्वरैः ॥ ४१ ॥ मोक्षकामैश्चविविधैस्तापसैर्विजितात्मभिः ॥ अस्पष्टमपियन्नामप्रसंगेनापिभाषितम् ॥ ४२ ॥ ददातिवांछितानर्थान्दुर्लभानपिसर्वथा ॥ ऐऐइतिभयार्तेनदृष्ट्वाव्याघ्रादिकंवने ॥ ४३ ॥ विंदुहीनमपीत्युक्तंवांछितंप्रददातिवै ॥ तत्रसत्यव्रतस्यैवदृष्टांतोनृपसत्तम ॥ ४४ ॥

त्कृष्टादेवीसर्ववेदांततात्पर्यभूमिराराध्याज्ञेयाचमोक्षकामेनेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ कार्यभेदेमोक्षरूपेकार्येब्रह्माभिन्नानिर्गुणाआराध्यातदन्यकामेतुसगुणागुणविशिष्टेयमेवमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीश्रीदेवीजगत्कर्त्री नकेवलंब्रह्मनवाब्रह्मादयोदेवाइत्याह ॥ अकर्तेति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ साचैवकारणमिति ॥ यानिमयानारदंप्रतिजगत्कारणानिशंकितानितानितानिसर्वाणिनस्वस्वशक्तिंविहायजगत्कर्तुंसमर्थानितस्मात्साशक्तिरेवजगत्कारणंसैवसर्वोत्कृष्टाध्येयाज्ञेयाचेतिममनारदस्यसंवादेनारदस्यब्रह्मणश्चसंवादेनिर्णीतामित्यर्थः ॥ यज्ञमंत्रामखमित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ अस्पष्टंयथावद्वर्णरहितमित्यर्थः ॥ प्रसंगेनापिदेवतानामबुद्धिरहितेनापिपुरुषेणान्यप्रसंगेनापीत्यर्थः ॥ ४२ ॥ इतरदेवतास्त्वाराधनेनैवयत्किंचित्फलंददति ॥ इयंतुअशुद्धनामोच्चारणेप्रसंगेनापिकृतेपुरुषार्थचतुष्टयंददातीतिकथंनसर्वैःसेव्येतिभावः ॥ तदुदाहरणमाह ॥ ऐ ऐ इति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

प्रत्यक्षएवेति ॥ अस्माकंमुनीनांभगवतीनाममहिमस्वरूपंनानाप्रकारकजातसिद्धिभिर्वारंवारंप्रत्यक्षमेवास्ति नसंशयोस्माकंतत्रेतिभावः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ अक्षरमिति ॥ ऐकाराक्षरमित्यर्थः ॥ ४७ ॥ हेराजन्नेतादृशीदयार्द्राभगवतीसर्वोत्कृष्टाभक्तकामकल्पद्रुमाऽस्तीतिसैवाराध्येतिभावः ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ पंचषष्टिश्लोकवर्यैर्वाग्बीजमहिमामहान् ॥ सत्यव्रतकथायोगात्प्रोच्यतेभक्तिकारकः ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायांतेप्रश्नबीजमुपलभ्यकोऽसौसत्यव्रतःकथंतेनप्रसंगेनास्पष्टनामोच्चारणंकृतंकाचतेन सिद्धिर्जातेतिपरमभावुकोराजापृच्छति । कोसाविति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ आराधनीयतमःसर्वोत्कृष्टःपूज्यतमश्चेत्यर्थः ॥ ११॥१२ ॥ १३ ॥

प्रत्यक्षएवचास्माकंमुनीनांभावितात्मनाम् ॥ ब्राह्मणानांसमाजेषुतस्योदाहरणंबुधैः ॥४५॥ कथ्यमानंमयाराजञ्च्छ्रुतंसर्वंसविस्तरम् ॥ अनक्षरोमहामूर्खोनाम्नासत्यव्रतोद्विजः ॥ ४६ ॥ श्रुत्वाऽक्षरंकोलमुखात्समुच्चार्यस्वयंततः ॥ बिंदुहीनंप्रसंगेनजातोऽसौविबुधोत्तमः ॥ ४७ ॥ ऐकारोच्चारणाद्देवीतुष्टाभगवतीतदा ॥ चकारकविराजंतंदयार्द्रापरमेश्वरी ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ छ ॥ जनमेजयउवाच ॥ कोऽसौसत्यव्रतोनामब्राह्मणोद्विजसत्तमः ॥ कस्मिन्देशेसमुत्पन्नःकीदृशश्चवदस्वमे ॥ १ ॥ कथंतेनश्रुतःशब्दःकथमुच्चारितःपुनः ॥ सिद्धिश्चकीदृशीजातातस्यविप्रस्यतत्क्षणात् ॥ २ ॥ कथंतुष्टाभवानीसासर्वज्ञासर्वसंस्थिता ॥ विस्तरेणवदस्वाद्यकथामेतांमनोरमाम् ॥ ३ ॥ सूतउवाच ॥ इतिपृष्टस्तदाराज्ञाव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ उवाचपरमोदारंवचनंरसवच्छुचि ॥ ४ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिकथांपौराणिकींशुभाम् ॥ श्रुतामुनिसमाजेषुमयापूर्वंकुरूद्वह ॥ ५ ॥ एकदाऽहंकुरुश्रेष्ठकुर्वंस्तीर्थाटनंशुचि ॥ संप्राप्तोनैमिषारण्यंपावनंमुनिसेवितम् ॥ ६ ॥ प्रणम्याहंमुनीन्सर्वान्स्थितस्तत्रवराश्रमे ॥ विधिपुत्रास्तुयत्रासञ्जीवन्मुक्तामहाव्रताः ॥ ७ ॥ कथाप्रसंगएवासीत्तत्रविप्रसमागमे ॥ जमदग्निस्तुपप्रच्छमुनीनेवंसमास्थितः ॥ ८ ॥ जमदग्निरुवाच ॥ संदेहोऽस्तिमहाभागाममचेतसितापसाः ॥ समाजेषुमुनीनांवैनिःसंदेहोभवाम्यहम् ॥ ९ ॥ ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रोमघवावरुणोऽनलः ॥ कुबेरःपवनस्त्वष्टासेनानीश्चगणाधिपः ॥१०॥ सूर्योऽश्विनौभगःपूषानिशानाथोग्रहास्तथा ॥ आराधनीयतमःकोऽत्रवांछितार्थफलप्रदः॥ ॥ ११ ॥ सुखसेव्यश्चसततंचाशुतोषश्चमानदाः ॥ ब्रुवंतुमुनयःशीघ्रंसर्वज्ञाःसंशितव्रताः ॥ १२ ॥ एवंप्रश्नेकृतेतत्रलोमशोवाक्यमब्रवीत् ॥ जमदग्नेशृणुष्वैतद्यत्पृष्टंवैत्वयाऽधुना ॥ १३ ॥ सेवनीयतमाशक्तिःसर्वेषांशुभमिच्छताम् ॥ पराप्रकृतिराद्याचसर्वगासर्वदाशिवा ॥ १४ ॥

पराप्रकृतिःसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणी ॥ तदुक्तंगीतासु ॥ भूमिरापोऽनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच ॥ अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥ अपरेयमितस्त्वन्यांविद्धिमेप्रकृतिंपराम् ॥ जीवरूपांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगदिति ॥ जीवरूपांचैतन्यरूपाम् ॥ तथासूतसंहितायां ॥ चिन्मात्राश्रयमायायाःशक्त्याकारोद्विजोत्तमाः ॥ अनुप्रविष्टायासंविन्निर्विकल्पास्वयंप्रभा ॥ सदाकारासदानंदासंसारोच्छेदकारिणी ॥ साशिवापरमादेवीशिवाभिन्नाशिवंकरीति ॥ शिवाभिन्नाब्रह्माभिन्नेत्यर्थः ॥ जगदंकुररूपिण्याशक्त्यायदवच्छिन्नंचैतन्यंसामूलप्रकृतिःपराशक्तिरितिचोच्यतेइतितट्टीकायांमाधवः ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





संसारवृक्षस्यमूलंमूलभूतेत्यर्थः ॥ सेवितासतीवरदानार्थंसदैवाऽऽर्द्रचित्तायाभवतीत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ यथाप्राप्तंफलमित्यर्थः ॥ १७ ॥ पुत्रायपुत्रार्थम् ॥ १८ ॥ तमसानाम्नीनदीत
त्तीरम् ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ काम्यकर्मभ्रंशेकाम्यसिद्धिर्नस्यादितिभावः ॥ संजातेप्राप्ते ॥ २५ ॥ शब्दविवर्जितोमूकः ॥२६॥ सर्वप्राणिशरीरेश्वासोच्छ्वासः

देवानांजननीसैवब्रह्मादीनांमहात्मनाम् ॥ आदिप्रकृतिर्मूलंसासंसारपादपस्यवै ॥ १५ ॥ स्मृताचोच्चारितादेवीददातिकिलवांछितम् ॥ सर्वदैवाऽऽर्द्रचित्ता
सावरदानायसेविता ॥ १६ ॥ इतिहासंप्रवक्ष्यामिशृण्वंतुमुनयःशुभम् ॥ अक्षरोच्चारणादेवयथाप्राप्तंद्विजेनवै ॥ १७ ॥ कोसलेषुद्विजःकश्चिद्देवदत्तेतिविश्रु
तः ॥ अनपत्यश्चकारेष्टिंपुत्रायविधिपूर्वकम् ॥ १८ ॥ तमसातीरमास्थायकृत्वामंडपमुत्तमम् ॥ द्विजानाहूयवेदज्ञान्सत्रकर्मविशारदान् ॥ १९ ॥ कृत्वा
वेदिंविधानेनस्थापयित्वाविभावसून् ॥ पुत्रेष्टिंविधिवत्तत्रचकारद्विजसत्तमः ॥ २० ॥ ब्रह्माणंकल्पयामाससुहोत्रंमुनिसत्तमम् ॥ अध्वर्युयाज्ञवल्क्यंचहो
तारंचबृहस्पतिम् ॥ २१ ॥ प्रस्तोतारंतथापैलमुद्गातारंचगोभिलम्॥सभ्यानन्यान्मुनीन्कृत्वाविधिवत्प्रददौवसु ॥ २२ ॥ उद्गातासामगःश्रेष्ठःसप्तस्वरस
मन्वितम् ॥ रथंतरमगायत्तुस्वरितेनसमन्वितम् ॥२३॥ तदाऽस्यस्वरभंगोऽभूत्कृतेश्वासेमुहुर्मुहुः ॥ देवदत्तश्चुकोपाऽऽशुगोभिलंप्रत्युवाचह ॥२४॥ मूर्खो
ऽसिमुनिमुख्याद्यस्वरभंगस्त्वयाकृतः ॥ काम्यकर्मणिसंजातेपुत्रार्थंयजतश्चमे ॥ २५ ॥ गोभिलस्तुतदोवाचदेवदत्तंसुकोपितः॥मूर्खस्तेभवितापुत्रःशठः
शब्दविवर्जितः ॥ २६ ॥ सर्वप्राणिशरीरेतुश्वासोच्छ्वासःसुदुर्ग्रहः ॥ नमेऽत्रदूषणंकिंचित्स्वरभंगेमहामते ॥२७॥तच्छ्रुत्वावचनंतस्यगोभिलस्यमहात्मनः
॥ शापाद्भीतोदेवदत्तस्तमुवाचातिदुःखितः ॥ २८ ॥ कथंक्रुद्धोऽसिविप्रेंद्रवृथामयिनिरागसि ॥ अक्रोधनाहिमुनयोभवंतिसुखदाःसदा ॥२९॥ स्वल्पेऽपरा
धेविप्रेंद्रकथंशप्तस्त्वयाह्यहम् ॥ अपुत्रोहंसुततःप्राक्तापयुक्तःपुनःकृतः ॥ ३० ॥ मूर्खपुत्रादपुत्रत्वंवरंवेदविदोविदुः॥तथाऽपिब्राह्मणोमूर्खःसर्वेषांनिंद्यएव
हि ॥३१॥ पशुवच्छूद्रवच्चैवनयोग्यःसर्वकर्मसु॥किंकरोमीहमूर्खेणपुत्रेणद्विजसत्तम ॥३२॥ यथाशूद्रस्तथामूर्खोब्राह्मणोनात्रसंशयः ॥ नपूजार्होनदानार्हो
निंद्यश्चसर्वकर्मसु ॥ ३३ ॥ देशेवैवसमानश्चब्राह्मणोवेदवर्जितः ॥ करदःशूद्रवच्चैवमंतव्यःसचभूभुजा॥३४॥नासनेपितृकार्येषुदेवकार्येषुसद्विजः ॥ मूर्खःस
मुपवेश्यश्चकार्यस्यफलमिच्छता ॥ ३५ ॥ राज्ञाशूद्रसमोज्ञेयोनयोज्यःसर्वकर्मसु ॥ कर्षकस्तुद्विजःकार्योब्राह्मणोवेदवर्जितः ॥३६॥ विनाविप्रेणकर्तव्यंश्रा
द्धंकुशचटेनवै॥नतुविप्रेणमूर्खेणश्राद्धंकार्यंकदाचन ॥ ३७ ॥ आहारादधिकंचान्नंनदातव्यमपंडिते ॥ दातानरकमाप्नोतिगृहीतातुविशेषतः ॥ ३८ ॥

सुदुर्ग्रहःस्वाधीनोनास्तितथाचमदपराधाभावेदुर्वाक्यंवदतस्तवपुत्रस्तथैवस्यादिति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ तदुक्तंवरंपुत्रादपुत्रत्वंमूर्खश्चेद्भवितासुतइति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥
देशेवसमानोवासंकुर्वाणः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

देशेऽबुधाइतिच्छेदः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ असतामिति ॥ यथापिचुमंदोनिंबःफलाढ्योपिकाकैरेवोपभुज्यतेसयथाऽसतांकाकानामुपकारायतथेत्यर्थः॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥क

धिग्राज्यंतस्यराज्ञोवैयस्यदेशेऽबुधाजनाः ॥ पूज्यंतेब्राह्मणामूर्खादानमानादिकैरपि ॥ ३९ ॥ आसनेपूजनेदानेयत्रभेदोनचाण्वपि ॥ मूर्खपंडितयोर्भेदो ज्ञातव्योविबुधेनवै ॥ ४० ॥ मूर्खायत्रसुगर्विष्ठादानमानपरिग्रहैः ॥ तस्मिन्देशेनवस्तव्यंपंडितेनकथंचन ॥ ४१ ॥ असतामुपकारायदुर्जनानांविभूत यः ॥ पिचुमंदःफलाढ्योऽपिकाकैरेवोपभुज्यते ॥ ४२ ॥ भुक्त्वान्नंवेदविद्विप्रोवेदाभ्यासंकरोतिवै ॥ क्रीडंतिपूर्वजास्तस्यस्वर्गेप्रमुदिताःकिल ॥ ४३ ॥ गोभिलातःकिमुक्तंवैत्वयावेदविदुत्तम ॥ संसारेमूर्खपुत्रत्वंमरणादतिगर्हितम् ॥ ४४ ॥ कृपांकुरुमहाभागशापस्यानुग्रहंप्रति ॥ दीनोद्धारणशक्तोऽसि पतामितवपादयोः ॥ ४५ ॥ लोमशउवाच ॥ इत्युक्त्वादेवदत्तस्तुपतितस्तस्यपादयोः ॥ स्तुवन्दीनहृदत्यर्थंकृपणःसाश्रुलोचनः ॥ ४६ ॥ गोभिल स्तुतदातत्रदृष्ट्वातंदीनचेतसम् ॥ क्षणकोपामहांतोवैपापिष्ठाःकल्पकोपनाः ॥ ४७ ॥ जलंस्वभावतःशीतंपावकातपयोगतः ॥ उष्णंभवतितच्छीघ्रंतद्वि नाशिशिरंभवेत् ॥ ४८ ॥ दयावान्गोभिलस्त्वाहदेवदत्तंसुदुःखितम् ॥ मूर्खोभूत्वासुतस्तेवैविद्वानपिभविष्यति ॥ ४९ ॥ इतिदत्तवरः सोऽथमुदितो भूद्विजर्षभः ॥ इष्टिंसमाप्यविप्रान्वैविससर्जयथाविधि ॥ ५० ॥ कालेनकियतातस्यभार्यारूपवतीसती ॥ गर्भंदधारकालेसारोहिणीरोहिणीसमा॥५१॥ गर्भाधानादिकंकर्मचकारविधिवद्द्विजः ॥ पुंसवनविधानंचशृंगारकरणंतथा॥५२॥सीमंतोन्नयनंचैवकृतंवेदविधानतः ॥ ददौदानानिमुदितोमत्वेष्टिंसफलां तथा ॥ ५३ ॥ शुभेह्निसुषुवेपुत्रंरोहिणीरोहिणीयुते ॥ दिनेलग्नेशुभेऽत्यर्थंजातकर्मचकारसः ॥ ५४ ॥ पुत्रदर्शनकंकृत्वानामकर्मचकारच ॥ उतथ्यइ तिपुत्रस्यकृतंनामपुराविदा ॥ ५५ ॥ सचाष्टमेतथावर्षेशुभेवैशुभवासरे ॥ तस्योपनयनंकर्मचकारविधिवत्पिता ॥ ५६ ॥ वेदमध्यापयामासगुरुस्तंवै व्रतेस्थितम् ॥ नोच्चचारतथोतथ्यःसंस्थितोमुग्धवत्तदा ॥ ५७ ॥ बहुधापाठितःपित्रानदधारमतिंशठः ॥ मूढवत्तिष्ठतेऽत्यर्थंतंशुशोचपितातदा ॥ ॥ ५८ ॥ एवंकुर्वन्सदाऽभ्यासंजातोद्वादशवार्षिकः ॥ नवेदविधिवत्कर्तुंसंध्यावंदनकंविधिम् ॥ ५९ ॥ मूर्खोऽभूदतिलोकेषुगतावार्ताऽतिविस्तरम् ॥ ब्राह्मणेषुचसर्वेषुतापसेष्वितरेषुच ॥ ६० ॥ जहासलोकस्तंविप्रंयत्रतत्रगतंवने ॥ पितामातानिनिंदाथमूर्खंतमतिभर्त्सयन् ॥ ६१ ॥ निंदितोऽथजनैः कामंपितृभ्यामथबांधवैः ॥ वैराग्यमगमद्विप्रोजगामवनमप्यसौ ॥ ६२ ॥ अंधोवरस्तथापंगुर्नमूर्खस्तुवरःसुतः ॥ इत्युक्तोऽसौपितृभ्यां वैविवेशकाननं प्रति ॥ ६३ ॥ गंगातीरेशुभेस्थानेकृत्वोटजमनुत्तमम् ॥ वन्यांवृत्तिंचसंकल्प्यस्थितस्तत्रसमाहितः ॥ ६४ ॥

ल्पकोपनाःबहुकालपर्यंतंकोपवंतः ॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥ उटजंकुटीम् ॥वन्यांवृत्तिंफलमूलाशनरूपाम् ॥ ६४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ अष्टपंचाशद्भिरेवपद्यैःसत्यव्रतस्यह ॥ वाग्बीजोच्चारणात्सिद्धिर्जातेतिपरिगीयते ॥ १ ॥ वनंगतस्योतथ्यस्यवृत्तमाहलोमशः । नवेदेति ॥ १ ॥ कारणंसर्वेश्वरंचनवेद ॥ २ ॥ ३ ॥४॥ तर्हितत्रकिमकरोत्तत्राह । सोऽकरोदिति ॥५॥ ६ ॥ सत्यमेवतपोयस्यससत्यतपाअयंचऋषिः सत्यइति सत्यतपारायीतरइतितैत्तिरीयश्रुतिप्रसिद्धः ॥ ७ ॥ नाहितंकस्यचित्कुर्यादिति ॥ जानातीतिशेषः ॥ चिंतयन्नितीति ॥ इतिवक्ष्यमाणप्रकारेण ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ अदुग्धदोहेदोहने

नियमंचपरंकृत्वानासत्यंप्रब्रवीम्यहम् ॥ स्थितस्तत्राश्रमेरम्येब्रह्मचर्यव्रतोहिसः॥६५॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

॥ लोमशउवाच ॥ नवेदाध्ययनंकिंचिज्जानातिनजपंतथा ॥ ध्यानंनदेवतानांचनचैवाराधनंतथा॥ १ ॥ नासनंवेदविप्रोसौप्राणायामंतथापुनः ॥ प्रत्याहारंतुनोवेदभूतशुद्धिंचकारणम् ॥२॥ नमंत्रंकीलकंजाप्यंगायत्रींचनवेदसः ॥ शौचंस्नानविधिंचैवतथाऽऽचमनकंपुनः ॥ ३ ॥ प्राणाग्निहोत्रंनोवेदबलिदानंनचातिथिम् ॥ नसंध्यांसमिधोहोमंविवेदचतथामुनिः॥४॥सोऽकरोत्प्रातरुत्थाययत्किंचिद्दंतधावनम् ॥ स्नानंचशूद्रवत्तत्रगंगायांमंत्रवर्जितम् ॥५॥ फलान्यादायवन्यानिमध्याह्नेऽपियदृच्छया॥भक्ष्याभक्ष्यपरिज्ञानंनजानातिशठस्तथा ॥ ६ ॥ सत्यंब्रूतेस्थितस्तत्रनानृतंवदतेपुनः॥जनैःसत्यतपानामकृतमस्याद्विजस्यवै॥७॥नाहितंकस्यचित्कुर्यान्नतथाऽविहितंक्वचित् ॥ सुखंस्वपितितत्रैवनिर्भयश्चितयन्निति ॥ ८ ॥ कदामेमरणंभाविदुःखंजीवामिकानने ॥ जीवितंधिक्चमूर्खस्यतरसामरणंध्रुवम्॥९॥दैवेनाहंकृतोमूर्खोनान्योऽत्रकारणंमम ॥ प्राप्यचैवोत्तमंजन्मवृथाजातंममाधुना ॥ १० ॥ यथावंध्यासुरूपाचयथावानिष्फलोद्रुमः ॥ अदुग्धदोहाधेनुश्चतथाऽहंनिष्फलःकृतः ॥ ११ ॥ किंनुनिंदाम्यहंदैवंनूनंकर्ममयेदृशम् ॥ नदत्तंपुस्तकंकृत्वाब्राह्मणायमहात्मने ॥१२॥ नवैविद्यामयादत्तापूर्वजन्मनिनिर्मला ॥ तेनाहंकर्मयोगेनशठोऽस्मिचद्विजाधमः ॥ १३ ॥ नचतीर्थेतपस्तप्तंसेवितानचसाधवः ॥ नद्विजाःपूजिताद्रव्यैस्तेनजातोऽस्मिदुष्टधीः ॥ १४ ॥ वर्ततेमुनिपुत्राश्चवेदशास्त्रार्थपारगाः ॥ अहंसुमूढःसंजातोदैवयोगेनकेनचित् ॥ १५ ॥ नजानामितपस्तप्तुंकिंकरोमिसुसाधनम् ॥ मिथ्याऽयंमेऽत्रसंकल्पोनमेभाग्यंशुभंकिल ॥ १६ ॥ दैवमेवपरंमन्येधिक्पौरुषमनर्थकम् ॥ वृथाश्रमकृतंकार्यंदैवाद्भवतिसर्वथा ॥ १७ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चशक्राद्याःकिलदेवताः ॥ कालस्यवशगाःसर्वेकालोहिदुरतिक्रमः ॥ १८ ॥ एवंविधान्वितर्कांस्तुकुर्वाणोऽहर्निशंद्विजः ॥ स्थितस्तत्राश्रमेतीरेजाह्नव्याःपावनेस्थले ॥ १९ ॥ विरक्तःसतुसंजातःस्थितस्तत्राऽऽश्रमेद्विजः ॥ कालातिवाहनंशांतश्चकारविजनेवने ॥ २० ॥

यस्याःसा ॥ ११ ॥ किंन्विति ॥ दैवंविधिंकिन्तुकिमर्थंनिंदामि यतोममकर्मैवेदृशंभवतिविधेःकर्मानुरूपमेवफलदातृत्वात् ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ इदंनमयाकृतमितिसंकल्पःपश्चात्तापोऽपिमिथ्यैवयतोभाग्यंमेशुभंनास्ति ततःपश्चात्तापेऽपिनसत्कर्मभवितुमर्हतीति ॥ १६ ॥ वृथेति ॥ श्रमेणपौरुषेणकृतंकार्यंदैवात्सर्वथावृथाभवति ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २१ ॥ सत्यंवदतीतिव्रतमित्यन्वयः ॥ अतएवसत्यतपाइतिनामजातमित्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ कोलोवराहः ॥ २४ ॥ २५ ॥ सारस्वतंबीजमिति ॥ ऐऐइतिशब्दंचकारेत्यर्थः ॥ स्वभावएवायंमनुष्याणांदुःखातुरंदृष्ट्वाऐऐइतिशब्दउच्चारणीयइति ॥ २६ ॥ नज्ञातवानिति ॥ मयायदुच्चारितंतद्बीजमस्तीतिनज्ञातवान् ॥ अथचतंसूकरंदृष्ट्वाशोकेममज्जच ॥ २७ ॥ निकुंजेनिविडवृक्षदेशेप्रविलीयादृश्योभूत्वा ॥ २८ ॥ ततइति ॥ सूकरेआश्रमंप्रविश्यानंतरंनिविडवनेगतेसतिततोऽनंतरमेवाकरणांतंकृष्टं करणंश्रोत्रेंद्रियंतत्पर्यंतकृष्टंचापंदधानइत्यर्थः ॥

एवंस्थितस्यतुवनेविमलोदकेवैवर्षाणितत्रनवपंचगतानिकामम् ॥ नाराधनंनचजपंनविवेदमंत्रंकालातिवाहनमसौकृतवान्वनेवै ॥२१॥ जानातितस्यविततं व्रतमेवलोकःसत्यंवदत्यपिमुनिःकिलनामजातम् ॥ जातंयशश्चसकलेषुजनेषुकामंसत्यव्रतोऽयमनिशंनमृषाभिभाषी ॥२२॥ तत्रैकदातुमृगयांरममाणएव प्राप्तोनिषादनिशठोधृतचापबाणः ॥ क्रीडन्वनेऽतिविपुलेयमतुल्यदेहःक्रूराकृतिर्हननकर्मणिचातिदक्षः॥२३॥तेनातिकृष्टेनशरेणविद्धःकोलःकिरातेनधनुर्धरेण ॥ पलायमानोभयविह्वलश्चमुनेःसमीपंविद्रुतोजगाम ॥ २४॥ विकंपमानोरुधिरार्द्रदेहोयदाजगामाश्रममंडलंवै ॥ कोलस्तदातीवदयार्द्रभावंप्राप्तोमुनिस्तत्रसमीक्ष्यदीनम् ॥ २५॥ अग्रेव्रजंतंरुधिरार्द्रदेहंदृष्ट्वामुनिःसूकरमाशुविद्धम् ॥ दयाभिवेशादतिकंपमानःसारस्वतंबीजमथोच्चचार ॥ २६ ॥ अज्ञातपूर्वंचतथाश्रुतंचदैवान्मुखेवैसमुपागतंच ॥ नज्ञातवान्बीजमसौविमूढोममज्जशोकेसमुनिर्महात्मा ॥ २७ ॥ कोलःप्रविश्याऽऽश्रममंडलंतद्गतोनिकुंजेप्रविलीयगूढम् ॥ अप्राप्तमार्गोदृढनिर्विण्णचेताःप्रवेपमानःशरपीडितत्वात् ॥ २८ ॥ ततःक्षणादाकरणांतकृष्टंचापंदधानोऽतिकरालदेहः ॥ प्राप्तस्तदंतेसचमृग्यमाणोनिषादराजःकिलकालएव ॥ २९ ॥ दृष्ट्वामुनिंतत्रकुशासनेस्थितंनाम्नातुसत्यव्रतमद्वितीयम् ॥ व्याधःप्रणम्यप्रमुखेस्थितोऽसौपप्रच्छकोलःक्वगतोद्विजेश ॥ ३० ॥ जानामितेऽहंसुव्रतंप्रसिद्धंतेनाद्यपृच्छेममबाणविद्धः ॥ क्षुधार्दितंमेसकलंकुटुंबंबिभर्तुकामःकिलआगतोऽस्मि ॥३१॥ वृत्तिर्ममैषाविहितावधात्रानान्याऽस्तिविप्रेंद्रऋतंब्रवीमि ॥ भर्तव्यमेवेहकुटुंबमंजसाकेनाप्युपायेनशुभाशुभेन ॥ ३२ ॥ सत्यंब्रवीत्वद्यसत्यव्रतोऽसिक्षुधातुरोवर्ततेपोष्यवर्गः ॥ क्वासौगतःसूकरोबाणविद्धःपृच्छाम्यहंवाडवब्रूहितूर्णम् ॥ ३३ ॥ तेनेतिपृष्टःसमुनिर्महात्मावितर्कमग्नःप्रवभूवकामम् ॥ सत्यव्रतंमेऽद्यभवेन्नभग्नंनदृष्टइत्युच्चरितेनकिंवै ॥ ३४ ॥ गतोऽत्रकोलःशरविद्धदेहःकथंब्रवीम्यद्यमृषाऽमृषावा ॥ क्षुधार्दितोऽयंपरिपृच्छतीवदृष्ट्वाहनिष्यत्यपिसूकरंवै ॥ ३५ ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ किलआगतोऽस्मीत्यत्रसंध्यभावआर्षः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ सत्यमिति ॥ भवान्सत्यंब्रवीतु ॥ ३३ ॥ वितर्कमग्नःसंदेहमग्नः ॥ संदेहमेवाऽऽह । सत्यमिति ॥ नदृष्टइत्युच्चरितेममसत्यव्रतंभग्नंनभवेत्किम् अपितुभवेदेव ॥ ३४ ॥ अतोगतःकोलःशरविद्धदेहइत्यमृषासत्यंवक्तव्यामितिचेत्तत्राऽऽह।कथंब्रवीमीति ॥ हिंसादोषभयादापिसत्यंकथंब्रवीमीति ॥ ततउभयतोदोषान्मृषावाऽमृषाकथंब्रवीमीति ॥ कथंब्रवीमीतिवाक्यस्य देहलीदीपकन्यायेनान्वयः ॥ सत्येउक्तेऽयंहनिष्यत्येवेत्याह ॥ क्षुधार्दितइति ॥ ३५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सत्यंनसत्यमिति ॥ येनसत्यभाषणेनहिंसाभवति तत्सत्यंसत्यंनभवति किंतुदयान्वितंदययाऽन्यकल्याणार्थंप्रयुज्यमानमप्यनृतंसत्यमेवभवति ॥ ३६ ॥ यद्यप्यन्यकल्याणार्थमनृतमपि सत्यंतथाचममानृतकथनेऽत्रदोषोनास्तिततथाप्युभयंसंरक्षितंस्याच्चेत्सर्वतोवरमितिमनसिविचारयन्नाह । हितंकथंस्यादिति ॥ उभयोर्विरुद्धयोःप्रसंगेममहितंकथंस्यात्तस्योत्तरंचमयाकिंवक्तव्यंयेनममवचोमृषानस्यादितिविचारयन्सन्हेवाडवहेजमदग्ने धर्मसंकटेयथोचितंवचनंवक्तुंनप्रापनसमर्थोबभूव ॥ ३७ ॥ बाणाहतमिति ॥ हेजमदग्ने अस्मिन्समयेनिजबीजतोनिजबीजवाग्भवबीजोच्चारतोदेवीप्रसन्नासतीविद्यांब्रह्मविद्यांदुरापांददौतस्मैसत्यव्रताय ॥ ययाविद्ययाबाणाहतंदयान्वितंकोलंवीक्ष्यतदंतेविचारांतेतेनसत्यव्रतेनवचःसमुदाहृतम् ॥ यद्वायद्वचःऐऐइति समुदाहृतंतेनवचसेत्यन्वयः ॥ ३८ ॥ तदेवाऽऽह । बीजोच्चारणेति ॥३९॥ ४० ॥ यदुक्तंत्वयावराहःकेनमार्गेणगतइतितत्रदर्शनवदनयोरेककर्तृत्वेएवेदंसंभवति नचदर्शनवदनकर्तृत्वमेकस्यास्तिकिंतुभिन्नस्यैवेत्याह । यापश्यतीति ॥ याअनश्नन्नन्योअभिचाकशीतिश्रुतिप्रतिपाद्यासर्वसाक्षिणीसापश्यति ॥ तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभातीतिश्रुत्यासर्वप्रकाशकत्वस्यचितिशक्तेरेवप्रतिपादनात्॥तथाचसापश्यतिसायापश्यतिनसाब्रूते वदनकर्तृत्वंबुद्धेरेवनचितिशक्तेः॥याब्रूतेबुद्धिर्नसापश्यतिनविषयंप्रकाशयति॥तस्याःजडत्वात्॥ननुसत्यानृतेमि

सत्यंनसत्यंखलुयत्रहिंसादयान्वितंचानृतमेवसत्यम्॥हितंनराणांभवतीहयेनतदेवसत्यंनतथाऽन्यथैव ॥ ३६॥ हितंकथंस्यादुभयोर्विरुद्धयोस्तदुत्तरंकिंनयथामृषावचः ॥ विचारयन्वाडवधर्मसंकटेनप्रापवक्तुंवचनंयथोचितम् ॥ ३७ ॥ बाणाहतंवीक्ष्यदयान्वितंचकोलंतदंतेसमुदाहृतंवचः ॥ तेनप्रसन्नानिजबीशतःशिवाविद्यांदुरापांप्रददौचतस्मै ॥ ३८ ॥ बीजोच्चारणतोदेव्याविद्याप्रस्फुरिताऽखिला ॥ वाल्मीकेश्चयथापूर्वंतथासह्यभवत्कविः ॥ ३९॥ तमुवाचद्विजोव्याधंसंमुखस्थंधनुर्धरम् ॥ सत्यकामस्तुधर्मात्माश्लोकमेकंदयापरः॥ ४० ॥ यापश्यतिनसाब्रूतेयाब्रूतेसानपश्यति॥अहोव्याधस्वकार्यार्थिन्किंपृच्छसिपुनःपुनः॥४१॥इत्युक्तस्तुतदातेनगतोऽसौपशुहापुनः ॥ निराशःसूकरेतस्मिन्परावृत्तोनिजालये॥४२॥ब्राह्मणस्तुकविर्जातःप्राचेतसइवापरः॥ प्रसिद्धःसर्वलोकेषुनाम्नासत्यव्रतोद्विजः॥४३॥सारस्वतंततोबीजंजजापविधिपूर्वकम् ॥ पंडितश्चातिविख्यातोद्विजोऽसौधरणीतले ॥४४॥ प्रतिपर्वसुगायंतिब्राह्मणायद्यशःसदा॥आख्यानंचातिविस्तीर्णंस्तुवंतिमुनयःकिल॥४५॥तच्छ्रुत्वासदनंतस्यसमागम्यतदाश्रमे॥येनत्यक्तःपुरातेनगृहंनीतोऽतिमानितः॥४६॥

थुनीकृत्यययथालोकेचितिशक्तिजडशक्त्योरेकत्वमाध्यासिकंस्वीकृत्ययएवपश्यतिसएवब्रूतेइतिव्यवहारोदृश्यतेतथाभवताव्यवहारःकुतोनाक्रियतइतिचेदध्यासकारणस्याविद्यारूपस्यमय्यभावादित्यभिप्रायः ॥ इत्थंसत्यहोव्याधस्वकार्यार्थिन्मांप्रतिपुनःपुनःकिंपृच्छसिनैतत्प्रष्टुंयोग्यमित्यर्थः ॥ ४१ ॥ परावृत्तइति ॥ अयंज्ञानीवर्ततेपूज्योनातिशयप्रश्नार्होऽयमितिमत्वापरावृत्तइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ प्रचेतावरुणःसचश्रुतिसिद्धोज्ञानी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ अत्रत्यमेवसत्यव्रतमुनेराख्यानंलघुस्तवेश्रीमदाचार्यैरपिसंगृहीतम् ॥ दृष्ट्वासंभ्रमकारिवस्तुसहसाऐऐइतिव्याहृतंयेनाकृतवशादपीहवरदेविंदुंविनाप्यक्षरम् ॥ तस्यापिध्रुवमेवदेवितरसाजातेतवानुग्रहेवाचःसूक्तिसुधारसद्रवमुचोनिर्यंतिवक्त्रांबुजात् ॥ यन्नित्येतवकामराजमपरंमंत्राक्षरंनिष्कलंतत्सारस्वतमित्यवैतिविरलःकश्चिज्जनश्चेद्भुवि ॥ आख्यानंप्रतिपर्वसत्यतपसोयत्कीर्तयंतोद्विजाःप्रारंभेप्रणवास्पदप्रणयतांनीत्वोच्चरंतिस्फुटमिति ॥ तथापृथ्वीधराचार्यैरपि ऋक्सामयोर्यजुषिसंधिवशादुदीर्णंबीजंसरस्वतिसकृत्तवयेजपंति ॥ तेसत्यवाक्यमुनिवद्विदितत्रयीकाआथर्वणादिकमवाप्यसुखभवंतीति ॥ येनत्यक्तस्तेनपित्रेत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एतादृशमहाफलदात्रीयत्किंचिन्निमेषेणस्मृताभगवतीतस्मादन्यदेवतांविहायेयमेवाऽऽराध्येत्याह। तस्मादिति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ तेनकारणेनकामदेतिलोकेकीर्त्यते ॥ ४९ ॥ सुखिनोजना न्दृष्ट्वैतैर्भगवत्याराधिताऽस्तीत्यनुमानंकर्त्तव्यम् ॥ दुःखिनोदृष्ट्वायतएतेदुःखिनस्तस्मादेतैर्भगवतीनाराधितेत्यनुमानंकर्तव्यमितिसमुदायार्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इतिदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ ॥ सप्ताशीतिमहापद्यैरंबायज्ञविधिर्महान् ॥ यथावत्प्रोच्यतेयेनमुक्तोभवतिमानवः ॥ १ ॥

तस्माद्राजन्सदासेव्यापूजनीयाचभक्तितः ॥ आदिशक्तिःपरादेवीजगतांकारणंहिसा ॥ ४७ ॥ तस्यायज्ञंमहाराजकुरुवेदविधानतः ॥ सर्वकामप्रदंनित्यं निश्चयंकथितंपुरा ॥ ४८ ॥ स्मृतासंपूजिताभक्त्याध्याताचोच्चारितास्तुता ॥ ददातिवांछितानर्थान्कामदातेनकीर्त्यते ॥ ४९ ॥ अनुमानमिदंराजन्कर्त व्यंसर्वथाबुधैः ॥ दृष्ट्वारोगयुतान्दीनान्क्षुधितान्निर्धनाञ्छठान् ॥ ५० ॥ जनानार्तांस्तथामूर्खान्पीडितान्वैरिभिःसदा ॥ दासानाज्ञाकरान्क्षुद्रान्विकला न्विह्वलानथ ॥ ५१ ॥ अतृप्तान्भोजनेभोगेसदार्तानजितेंद्रियान् ॥ तृष्णाधिकानशक्तांश्चसदाधिपरिपीडितान् ॥ ५२ ॥ तथाविभवसंपन्नान्पुत्रपौत्रवि वर्धनान् ॥ पुष्टदेहांश्चसंभोगैःसंयुतान्वेदवादिनः ॥ ५३ ॥ राजलक्ष्म्यायुताञ्छूरान्वशीकृतजनानथ ॥ स्वजनैरवियुक्तांश्चसर्वलक्षणलक्षितान् ॥ ५४ ॥ व्यतिरेकान्वयाभ्यांचविचेतव्यंविचक्षणैः ॥ एभिर्नपूजितादेवीसर्वार्थफलदाशिवा ॥ ५५ ॥ समाराधिताचतथानृभिरेभिःसदांऽबिका ॥ यतोऽमीसुखि नःसर्वेसंसारेऽस्मिन्नसंशयः ॥ ५६ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिराजञ्छ्रुतंतत्रमयामुनिसमागमे ॥ लोमशस्यमुखात्कामंदेवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ५७ ॥ इ तिसंचिंत्यराजेंद्रकर्तव्यंचसदाऽर्चनम् ॥ भक्त्यापरमयादेव्याःप्रीत्याचपुरुषर्षभ ॥५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेएकादशोध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ ॥ राजोवाच ॥ वदयज्ञविधिंसम्यग्देव्यास्तस्याःसमंततः ॥ श्रुत्वाकरोम्यहंस्वामिन्यथाशक्तिह्यतंद्रितः ॥ १ ॥ पूजाविधिंच मंत्रांश्चहोमद्रव्यमसंशयम्॥ब्राह्मणाःकतिसंख्याश्चदक्षिणाश्चतथापुनः॥२॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिदेव्यायज्ञंविधानतः॥त्रिविधंतुसदाज्ञेयंवि धिदृष्टेनकर्मणा ॥ ३ ॥ सात्त्विकंराजसंचैवतामसंचतथापरम् ॥ मुनीनांसात्विकंप्रोक्तंनृपाणांराजसंस्मृतम् ॥ ४ ॥ तामसंराक्षसानांवैज्ञानिनांतुगुणो ज्झितम् ॥ विमुक्तानांज्ञानमयंविस्तरात्प्रब्रवीमिते ॥ ५ ॥ देशःकालस्तथाद्रव्यंमंत्राश्चब्राह्मणास्तथा ॥ श्रद्धाचसात्विकीयत्रतंयज्ञंसात्त्विकंविदुः ॥६॥

पूर्वाध्यायांतेअंबायज्ञस्यमहाफलत्वंश्रुत्वातद्यज्ञविधिंराजापृच्छति । वदयज्ञेति ॥ १ ॥ २ ॥ त्रिविधमिति ॥ सर्वकर्मविधिदृष्टेनकर्मणाऽनुष्ठानेन त्रिविधंज्ञेयमित्यर्थः ॥ ३ ॥ त्रैविध्यमाह। सात्त्विकमिति ॥ ४ ॥ ज्ञानिनांविमुक्तानांगुणोज्झितंज्ञानमयमित्यर्थः ॥ ५ ॥ तत्रसात्विकस्वरूपमाह । देशइति ॥ सात्विकोदेशोवाराणस्यादिः कालउत्तरायणादिः ॥ द्रव्यंन्यायार्जि तम् ॥ मंत्रावैदिकाः ॥ ब्राह्मणाःश्रोत्रियाः ॥ श्रद्धाऽऽस्तिक्यबुद्धिःसात्विकीविषयसौंदर्यजनितरागाद्यकलुषिता ॥ ६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ यद्येतादृशीसामग्रीनास्तितर्हितत्रतत्कर्मणःफलंनैवभवति ॥ तत्रदृष्टांतमाह। प्रत्यक्षंतवेति ॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५ ॥ १६ ॥ किमत्रेति ॥ परमेश्वरेकेशवेस त्यपिधर्ममूर्त्तौयुधिष्ठिरेसत्यपितादृशयज्ञोत्तरमेतादृशोमहाननर्थोजातस्तस्मात्तत्रधर्मवैगुण्यंजातमितिकिमत्रचिंतनीयंविचारणीयम् ॥ जातमेवधर्मवैगुण्यमित्येवनिश्चेतव्यमित्यर्थः ॥ १७ ॥ ननुधर्मवैगुण्यंतत्रनजातंकिंतुतेषांपांडवानांभवितव्यंप्रारब्धंतथैवास्थितमतस्तथाफलंजातामितिचेत्तत्राऽऽह भवितव्यमितिप्रोक्तेइति ॥ यदिप्रारब्धमेवमुख्यंनपुरुषार्थइतिमतंस्वीक्रियतेतदाऽऽ गमोनुष्ठानप्रतिपादकोव्यर्थएवस्यात् ॥ यथाप्रारब्धंस्यात्तथाभविष्यत्यागमस्तत्रकिंकरिष्यतीति ॥ १८ ॥ वचनेवेदवचनेफलप्रतिपादकेसत्यपितत्रविश्वासःकस्यापिनस्यात् ॥ यद्यस्माकं

द्रव्यशुद्धिःक्रियाशुद्धिर्मंत्रशुद्धिश्चभूमिप ॥ भवेद्यदितदापूर्णफलंभवतिनान्यथा ॥७॥ अन्यायोपार्जितेनैवद्रव्येणसुकृतंकृतम् ॥ नकीर्तिरिहलोकेचपरलो केनतत्फलम् ॥८॥ तस्मान्न्यायार्जितेनैवकर्तव्यंसुकृतंसदा ॥ यशसेपरलोकायभवत्येवसुखायच ॥९॥ प्रत्यक्षंतवराजेंद्रपांडवैस्तुमखःकृतः॥राजसूयःक्र तुवरःसमाप्तवरदक्षिणः ॥ १० ॥ यत्रसाक्षाद्धरिःकृष्णोयादवेंद्रोमहामनाः ॥ ब्राह्मणाःपूर्णविद्याश्चभारद्वाजादयस्तथा ॥ ११ ॥ कृत्वायज्ञंसुसंपूर्णमासमात्रेण पांडवैः॥प्राप्तंमहत्तरंकष्टंवनवासश्चदारुणः ॥ १२ ॥ पीडनंचैवपांचाल्यास्तथाद्यूतेपराजयः ॥ वनवासोमहत्कष्टंक्रगतंमखजंफलम् ॥ १३ ॥ दासत्वंचविरा टस्यकृतंसर्वैर्महात्मभिः ॥ कीचकेनपरिक्लिष्टाद्रौपदीचप्रमद्वरा ॥ १४ ॥ आशीर्वादाद्द्विजातीनांक्रगताःशुद्धचेतसाम्॥भक्तिर्वावासुदेवस्यक्रगतातत्रसंकटे ॥ १५ ॥ नरक्षितातदावालाकेनापिद्रुपदात्मजा ॥ प्राप्तकेशग्रहाकालेसाध्वीचवरवर्णिनी ॥ १६ ॥ किमत्रचिंतनीयंवैधर्मवैगुण्यकारणम् ॥ केशवेसतिदेवे शेधर्मपुत्रेयुधिष्ठिरे ॥ १७ ॥ भवितव्यमितिप्रोक्तेनिष्फलःस्यात्तदागमः ॥ वेदमंत्रास्तथाऽन्येवैवितथाःस्युरसंशयम् ॥ १८ ॥ साधनंनिष्फलंसर्वमुपायश्च निरर्थकः ॥ भवितव्यंभवत्येववचनेप्रतिपादके ॥ १९ ॥ आगमोप्यर्थवादःस्यात्क्रियाःसर्वानिरर्थकाः ॥ स्वर्गार्थंचतपोव्यर्थंवर्णधर्मश्चवैतथा॥२०॥सर्वप्र माणंव्यर्थंस्याद्भवितव्येकृतेहृदि ॥ उभयंचापिमंतव्यंदैवंचोपायएवच ॥२१॥ कृतेकर्मणिचेत्सिद्धिर्विपरीतायदाभवेत् ॥ वैगुण्यंकल्पनीयंस्यात्प्राज्ञैःपंडि तमौलिभिः ॥ २२ ॥ तत्कर्मबहुधाप्रोक्तंविद्वद्भिःकर्मकारिभिः ॥ कर्तृभेदान्मंत्रभेदाद्द्रव्यभेदात्तथापुनः ॥ २३ ॥ यथामघवतापूर्वंविश्वरूपोवृतोगुरुः ॥ वि परीतंकृतंतेनकर्ममातृहितायवै ॥ २४ ॥ देवेभ्योदानवेभ्यस्तुस्वस्तीत्युक्त्वापुनः पुनः ॥ असुरामातृपक्षीयाःकृतंतेषांचरक्षणम् ॥ २५ ॥

प्रारब्धंस्यात्तदाऽनुष्ठानमंतराऽपितत्कार्यंभविष्यति नोचेदनुष्ठानेकृतेऽपिनभविष्यतीति ॥ भवितव्यंभवत्येववचनेप्रतिपादकेसत्यपिकिंफलमित्यक्षरार्थः ॥ १९ ॥ ननुतर्हिफलप्रतिपादक वेदःकिमर्थमितिचेत्सोऽपित्वन्मतेऽर्थवादःस्यादित्याह । आगमोऽपीति ॥ एतानिसर्वाणिदूषणानित्वन्मतेस्युरित्यर्थः ॥ भवितव्यमेवमुख्यमितिमतेहृदिकृतेसति ॥ २० ॥ उभयमिति ॥ तस्माद्दैवंपुरुषकारश्चेत्युभयंफलसिद्धिप्रतिकारणमितिवक्तव्यम् ॥ ततश्चपुरुषव्यापारेव्यंगमेवफलंभवतीतिसिद्धम् ॥ २१ ॥ तदेवाऽऽह । कृतेकर्मणीति ॥ २२ ॥ २३ ॥ अत्रानेकोदाहर णान्याह । यथेति ॥ मातृहिताय मातृपक्षीयदैत्यहितायेत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तस्यविश्वरूपस्य ॥ २६ ॥ वैगुण्येसतिविपरीतंफलंभवतीत्युक्त्वानोचेद्वैगुण्यंतदाधिकंफलंभवतीत्याह । नोचेदिति ॥ कर्मवैगुण्यंनचेदित्यर्थः ॥ २७ ॥ भारद्वाजोद्रोणः ॥ पुत्रोऽपिलब्धा द्रौपद्यप्यधिकालब्धा ॥ २८ ॥ पुरेति ॥ एकपुत्रार्थंकृतेयत्नेचत्वारःपुत्राउत्पन्नाइत्यर्थः ॥ २९ ॥ उपसंहरतिअतइति॥३०॥३१॥३२॥किंतत्रवैगुण्यंपांडवानांमखेजातमितिचेत्तत्राऽऽह। कुद्रव्येति ॥ अनेकराजवधपूर्वकंसंपादितत्वात्कुद्रव्यत्वंधनस्येत्यर्थः ॥ ३३ ॥ तस्माद्दुर्लभःसात्त्विकोयज्ञोऽस्तिसचवैखानसादिसात्त्विकमुनीनामेवसंभवतिनान्यस्येत्याह ॥ सात्त्विक

दैत्यान्दृष्ट्वाऽतिसंपुष्टांश्चुकोपमघवातदा ॥ शिरांसितस्यवज्रेणचिच्छेदतरसाहरिः ॥ २६ ॥ क्रियावैगुण्यमत्रैवंकर्तृभेदादसंशयम् ॥ नोचेत्पंचालराजेन रोषेणापिकृताक्रिया ॥२७॥ भारद्वाजविनाशायपुत्रस्योत्पादनायच ॥ धृष्टद्युम्नःसमुत्पन्नोवेदिमध्याच्चद्रौपदी ॥२८॥ पुरादशरथेनापिपुत्रेष्टिस्तुकृतायदा ॥ अपुत्रस्यसुतास्तस्यचत्वारःसंप्रजज्ञिरे ॥ २९ ॥ अतःक्रियाकृतायुक्त्यासिद्धिदासर्वथाभवेत् ॥ अयुक्त्याविपरीतास्यात्सर्वथानृपसत्तम ॥३०॥ पांडवा नांयथायज्ञेकिंचिद्वैगुण्ययोगतः ॥ विपरीतंफलंप्राप्तंनिर्जितास्तेदुरोदरे ॥ ३१ ॥ सत्यवादीतथाराजन्धर्मपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ द्रौपदीचतथासाध्वीतथाऽन्येप्य नुजाःशुभाः ॥३२॥ कुद्रव्ययोगाद्वैगुण्यंसमुत्पन्नंमखेऽथवा ॥ साभिमानैःकृताद्वापिदूषणंसमुपस्थितम् ॥ ३३ ॥ सात्त्विकस्तुमहाराजदुर्लभोवैमखःस्मृतः ॥ वैखानसमुनीनांहिविहितोऽसौमहामखः ॥३४॥ सात्त्विकंभोजनंयैवैनित्यंकुर्वंतितापसाः ॥ न्यायार्जितंचवन्यंचतथाऋष्यंसुसंस्कृतम् ॥ ३५ ॥ पुरोडा शपरानित्यंवियूपामंत्रपूर्वकाः ॥ श्रद्धाधिकामखाराजन्सात्त्विकाःपरमाःस्मृताः ॥ ३६ ॥ राजसाद्रव्यबहुलाःसयूपाश्चसुसंस्कृताः ॥ क्षत्रियाणांविशांचैव साभिमानाश्चवैमखाः ॥ ३७ ॥ तामसादानवानांवैसक्रोधामदवर्धकाः ॥ सामर्षाःसंस्कृताःक्रूरामखाःप्रोक्तामहात्मभिः ॥ ३८ ॥ मुनीनांमोक्षकामानांविरक्ता नांमहात्मनाम् ॥ मानसस्तुस्मृतोयागःसर्वसाधनसंयुतः ॥३९॥ अन्येषुसर्वयज्ञेषुकिंचिन्न्यूनंभवेदपि॥द्रव्येणश्रद्धयावाऽपिक्रिययाब्राह्मणैस्तथा॥४०॥दे शकालपृथग्द्रव्यसाधनैःसकलैस्तथा ॥ नान्योभवतिपूर्णोवैयथाभवतिमानसः ॥४१॥ प्रथमंतुमनःशोध्यंकर्तव्यंगुणवर्जितम् ॥ शुद्धेमनसिदेहोवैशुद्धएव नसंशयः ॥ ४२ ॥ इंद्रियार्थपरित्यक्तंयदाजातंमनःशुचि ॥ तदातस्यमखस्यासौप्रभवेदधिकारवान् ॥ ४३ ॥ तदाऽसौमंडपंकृत्वाबहुयोजनविस्तृतम् ॥ स्तंभैश्चविपुलैःश्लक्ष्णैर्यज्ञियद्रुमसंभवैः ॥ ४४ ॥ वेदिंचविशदांतत्रमनसापरिकल्पयेत् ॥ अग्नयोऽपितथास्थाप्याविधिवन्मनसाकिल ॥ ४५ ॥

स्त्विति ॥ ३४ ॥ ऋष्यमृऋषिभ्योहितम् ॥ ३५ ॥ वियूपाःपशुबंधनस्तंभरहिताइत्यर्थः ॥ अपशुकायज्ञाइतितात्पर्यम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ तत्रसात्त्विकदेवीमखोऽपिबाह्याभ्यंतर भेदेनद्विविधः ॥ बाह्यस्तुवैदिकमंत्रादिपूर्वोक्तसात्त्विकसाधननिर्वृत्तोगृहस्थानांस्वकल्याणार्थिनामाभ्यंतरस्तुमोक्षकामानामित्याह। मुनीनामिति ॥ ३९ ॥ मानसमंबायज्ञंस्तौति । अन्ये ष्विति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ मानसांबायज्ञस्याधिकारिणमाह । प्रथमंत्विति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ मंडपंमानसम् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तथैवमानसमेव ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ वायुष्वेवाग्निभावनाकार्येत्याह । पावकाइति ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ उदानःसभ्यः ॥ आषउकारलोपः ॥ निर्गुणंदोषरहितमित्यर्थः ॥ ५० ॥ मनएवेति॥ संकल्पविकल्पात्मकमित्यर्थः ॥ तथैवतदिति ॥ तदहंकारवृत्तिविशिष्टंमनएवयजमानइत्यर्थः ॥५१॥ निर्गुणाशक्तिरिति ॥ साम्यावस्थमायारूपिणीफलदात्रीयाशक्तिःसाचदेवतेत्यर्थः॥ तथाच साम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीभगवतीदेवतेतिफलितम् ॥ ५२ ॥ तदुद्देशेनमायाविशिष्टब्रह्मरूपभगवत्युद्देशेनद्रव्यंमनसाकल्पितंयत्स्यात्तदिदंद्रव्यमेतावदाहुतिकमेतैर्मंत्रैरेतेष्वग्निषुमयाहूयतेइतिभावनामयएवहोमोभगवतीप्रीत्यर्थंकर्तव्यइतिमानसिकहोमोत्तरंपश्चान्निजंचित्तंनिरालंबंनिराश्रयंनिर्विषयंकृत्वाकुंडलीमुखमार्गेणसुषुम्नारंध्रेणतान्प्राणाग्नीन्ब्रह्मणिभगवतीपदवाच्येहुनेद्विलापयेत् ॥ ५३ ॥ इत्थंप्राणलयेजातेसंकल्पविकल्पावपिमनसोऽनायासेनलीनौभवतएवप्राणमनसोर्दुग्धांबुवन्मिलितत्वात् ॥ तदुक्तम् ॥ दुग्धांबुवत्संमिलितावुभौतौतु

ब्राह्मणानांचवरणंतथैवप्रतिपाद्यच ॥ ब्रह्माऽध्वर्युस्तथाहोताप्रस्तोताविधिपूर्वकम् ॥ ४६ ॥ उद्गाताप्रतिहर्ताचसभ्याश्चान्येयथाविधि ॥ पूजनीयाःप्रयत्नेनमनसैवद्विजोत्तमाः ॥ ४७ ॥ प्राणोऽपानस्तथाव्यानःसमानोदानएवच॥पावकाःपंचएवैतेस्थाप्यावेद्यांविधानतः ॥ ४८ ॥ गार्हपत्यस्तदाप्राणोऽपानश्चाहवनीयकः ॥ दक्षिणाग्निस्तथाव्यानःसमानश्चावसथ्यकः ॥४९॥ सभ्योदानःस्मृताह्येतेपावकाःपरमोत्कटाः॥द्रव्यंचमनसाभाव्यंनिर्गुणंपरमंशुचि ॥ ॥ ५० ॥ मनएवतदाहोतायजमानस्तथैवतत् ॥ यज्ञाधिदेवताब्रह्मनिर्गुणंचसनातनम् ॥ ५१ ॥ फलदानिर्गुणाशक्तिःसदानिर्वेददाशिवा ॥ ब्रह्मविद्याऽखिलाधाराव्याप्यसर्वत्रसंस्थिता ॥ ५२ ॥ तदुद्देशेनतद्द्रव्यंहुनेत्प्राणाग्निषुद्विजः ॥ पश्चाच्चित्तंनिरालंबंकृत्वाप्राणानपिप्रभो ॥ ५३ ॥ कुंडलीमुखमार्गेणहुनेद्ब्रह्मणिशाश्वते ॥ स्वानुभूत्यास्वयंसाक्षात्स्वात्मभूतांमहेश्वरीम् ॥५४॥ समाधिनैवयोगेनध्यायेच्चेतस्यनाकुलः ॥ सर्वभूतस्थमात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि ॥ ५५ ॥ यदापश्यतिभूतात्मातदापश्यतितांशिवाम् ॥ दृष्ट्वातांब्रह्मविद्भूयात्सच्चिदानंदरूपिणीम् ॥५६॥ तदामायादिकंसर्वंदग्धंभवतिभूमिप ॥ प्रारब्धकर्ममात्रंतुयावद्देहंचतिष्ठति ॥ ५७ ॥ जीवन्मुक्तस्तदाजातोमृतोमोक्षमवाप्नुयात् ॥ कृतकृत्योभवेत्तातयोभजेज्जगदंबिकाम् ॥ ५८ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनध्येयाश्रीभुवनेश्वरी ॥ श्रोतव्याचैवमंतव्यागुरुवाक्यानुसारतः ॥ ५९ ॥

ल्यक्रियौमानसमारुतौतौ ॥ तत्रैकनाशादपरस्यनाशस्तत्रैकवृत्तेरपरप्रवृत्तिरिति ॥ इत्थंप्राणलयेसंकल्पविकल्पलयेचसमाधिर्भवति ॥ तस्मिन्समाधौस्वात्मभूतांमहेश्वरींस्वाभिन्नांभगवतींनिर्विकल्पचेतसिध्यायेत् ॥ ५४ ॥ इत्थंध्यायतोयदैवंज्ञानंभवतितदाऽऽत्मस्वरूपभगवत्याःसाक्षात्कारोजातइतिज्ञेयमित्याह । सर्वभूतस्थमात्मानमिति ॥ सर्वभूतेष्वधिष्ठानतयास्थितमात्मानंयदाऽनुभवतिसर्वभूतानिचरज्जुसर्पवन्मयिकल्पितानीतियदापश्यति तदाभगवतीसाक्षात्कारोजातइतिबोध्यमित्यर्थः ॥ ५५ ॥ इत्थमात्मरूपिण्याभगवत्याःसाक्षात्कारेजातेसनरोब्रह्मविद्भूयात् ॥ आत्मनोब्रह्मणश्चैकत्वात् ॥ ५६ ॥ इत्थंयदाभगवत्याःसाक्षात्कारोभवतितदामायाविद्याद्यंधकाररूपसकलसंसारकारणंदग्धंभवतीत्याह । तदामायादिकमिति ॥ तर्हिदेहःकथंतिष्ठतीतिचेत्प्रारब्धकर्मशेषादित्याह । प्रारब्धकर्ममात्रंत्विति ॥ तस्यमुक्तेषुवत्स्ववेगसमाप्तिंविनापतनाभावात् ॥ ५७ ॥ तावताज्ञानेनजीवन्मुक्तःसन्मृतोमोक्षमवाप्नुयात् तत्रनसंदेहइत्याह । जीवन्मुक्तइति ॥ ५८ ॥ श्रोतव्याचसैवेत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ॥ छ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥६०॥क्षयोन्मुखत्वमेवाऽऽह। अग्निष्टोमेनेति ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥६४॥६५॥६६॥ देवीबीजंमायाबीजंतद्विधानज्ञाः॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ कपूणानिकुत्सितानि ॥

राजन्नेवंकृतोयज्ञोमोक्षदोनात्रसंशयः ॥ अन्येयज्ञाःसकामास्तुप्रभवंतिक्षयोन्मुखाः ॥ ६० ॥ अग्निष्टोमेनविधिवत्स्वर्गकामोयजेदिति ॥ वेदानुशासनंचैतत्प्रवदंतिमनीषिणः ॥ ६१ ॥ क्षीणेपुण्येमृत्युलोकंविशंतिचयथामति ॥ तस्मात्तुमानसःश्रेष्ठोयज्ञोप्यक्षयएवसः ॥ ६२ ॥ नराज्ञासाधितुंयोग्योमखोसौजयमिच्छता ॥ तामसस्तुकृतःपूर्वंसर्पयज्ञस्त्वयाऽधुना ॥ ६३ ॥ वैरंनिर्वाहितंराजंस्तक्षकस्यदुरात्मनः ॥ यत्कृतेनिहताःसर्पास्त्वयाऽग्नौकोटिशःपरे ॥ ६४ ॥ देवीयज्ञंकुरुष्वाद्यविततंविधिपूर्वकम् ॥ विष्णुनायःकृतःपूर्वंसृष्ट्यादौनृपसत्तम ॥ ६५ ॥ तथात्वंकुरुराजेंद्रविधिंतेप्रब्रवीम्यहम् ॥ ब्राह्मणाःसंतिराजेंद्रविधिज्ञावेदवित्तमाः ॥ ६६ ॥ देवीबीजविधानज्ञामंत्रमार्गविचक्षणाः ॥ याजकास्तेभविष्यंतियजमानस्त्वमेवहि ॥ ६७ ॥ कृत्वायज्ञंविधानेनदत्त्वापुण्यंमखार्जितम् ॥ समुद्धरमहाराजपितरंदुर्गतिंगतम् ॥ ६८ ॥ विप्रावमानजंपापंदुर्घटंनरकप्रदम् ॥ तथैवशापजोदोषःप्राप्तःपित्रातवाऽनघ ॥ ६९ ॥ तथादुर्मरणंप्राप्तंसर्पदंशेनभूभुजा ॥ अंतरालेतथामृत्युर्नभूमौकुशसंस्तरे ॥ ७० ॥ नसंग्रामेनगंगायांस्नानदानादिवर्जितम् ॥ मरणंतेपितुस्तत्रसौधेजातंकुरूद्वह ॥ ७१ ॥ कपूणानिचसर्वाणिनरकस्यनृपोत्तम ॥ तत्रैकंकारणंतस्यनजातंचातिदुर्लभम् ॥ ७२ ॥ यत्रयत्रस्थितःप्राणीज्ञात्वाकालंसमागतम् ॥ साधनानामभावेऽपिह्यवशश्चातिसंकटे ॥ ७३ ॥ यदानिर्वेदमायातिमनसानिर्मलेनवै ॥ पंचभूतात्मकोदेहोममकिंचात्रदुःखदम् ॥ ७४ ॥ पतत्वद्ययथाकामंमुक्तोऽहंनिर्गुणोव्ययः ॥ नाज्ञात्मकानितत्त्वानितत्रकापरिदेवना ॥ ७५ ॥ ब्रह्मैवाहंनसंसारोसदामुक्तःसनातनः ॥ देहेनममसंबंधःकर्मणाप्रतिपादितः ॥ ७६ ॥ तानिसर्वाणिभुक्तानिशुभानिचेतराणिच ॥ मनुष्यदेहयोगेनसुखदुःखानुसाधनात् ॥ ७७ ॥ विमुक्तोऽतिभयाद्घोरादस्मात्संसारसंकटात् ॥ इत्येवंचिंत्यमानस्तुस्नानदानविवर्जितः ॥७८॥ मरणंचेदवाप्नोतिसमुच्येज्जन्मदुःखतः ॥ एषाकाष्ठापराप्रोक्तायोगिनामपिदुर्लभा ॥ ७९ ॥ पितातेनृपशार्दूलश्रुत्वाशापंद्विजोदितम् ॥ देहेममत्वंकृतवान्नानिर्वेदमवाप्तवान् ॥ ८० ॥ नीरोगोममदेहोऽयंराज्यंनिहतकंटकम् ॥ कथंजीवाम्यहंकाममंत्रज्ञानानयंतुवै ॥ ८१ ॥ औषधंमणिमंत्रेचयंत्रंपरमकंतथा ॥ आरोहणंतथासौधेकृतवान्नृपतिस्तदा ॥ ८२ ॥

इमानिसर्वाणिदुष्टसाधनानिसंतिचेत्संतु यद्येकंसाधनंस्यात्तर्हिमनुष्योमुक्तएव तदपिसाधनंतस्यनजातमितिप्राह।तत्रैकंकारणमिति ॥७२॥ किंतन्मोक्षकारणंतदाह । यत्रयत्रस्थितइति ॥ यत्रकुत्रापिस्थितइत्यर्थः॥७३॥ममकिंचात्रदुःखदमिति॥देहातिरिक्तोऽहमस्मि॥ममदुःखदंकिमत्रास्तिनकिमपीत्यर्थः॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥७९॥निर्वेदंवैराग्यम् ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





दैवंप्रारब्धंमुख्यंमत्वावैराग्यमास्थायनस्थितइत्यर्थः ॥८३॥ अहिनासर्पेणहतः ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥८७॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ अध धिकैरष्टपंचाशत्पद्यैरंबिकामखः ॥ विष्णुनाचकृतःस्वार्थमितिसम्यगिहोच्यते ॥१॥ पूर्वाध्यायांतेविष्णुनादेवीमखःकृतइतिश्रुत्वापरमभावुकोजनमेजयःपृच्छति। हरिणात्विति ॥ पितामा

नस्नानंनकृतंदानंनदेव्याःस्मरणंकृतम् ॥ नभूमौशयनंचैवदैवंमत्वापरंतथा ॥ ८३ ॥ मग्नोमोहार्णवेघोरेमृतःसौधेऽहिनाहतः ॥ कृत्वापापंकलेर्योगात्तापस स्यावमानजम् ॥ ८४ ॥ अवश्यमेवनरकएतैराचरणैर्भवेत् ॥ तस्मात्तंपितरंपापात्समुद्धरनृपोत्तम ॥ ८५ ॥ सूतउवाच ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यव्यास स्यामिततेजसः ॥ साश्रुकंठोऽतिदुःखार्तोबभूवजनमेजयः ॥ ८६ ॥ धिगिदंजीवितंमेऽद्यपितामेनरकेस्थितः ॥ तत्करोमियथैवाद्यस्वर्गंयात्युत्तरासुतः ॥ ८७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ छ राजोवाच ॥ हरिणातुकथंयज्ञःकृतःपूर्वंपितामह ॥ जगत्का रणरूपेणविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ १ ॥ केसहायास्तुतत्राऽऽसन्ब्राह्मणाःकेमहामते ॥ ऋत्विजोवेदतत्त्वज्ञास्तन्मेब्रूहिपरंतप ॥ २ ॥ पश्चात्करोम्यहंयज्ञं विधिदृष्टेनकर्मणा ॥ श्रुत्वाविष्णुकृतंयागमंबिकायाःसमाहितः ॥ ३ ॥ व्यासउवाच ॥ राजञ्छृणुमहाभागविस्तरंपरमाद्भुतम् ॥ यथाभगवतायज्ञःकृ तश्चविधिपूर्वकः ॥ ४ ॥ विसर्जितायदादेव्यादत्त्वाशक्तीश्चतास्त्रयः ॥ काजेशाःपुरुषाजाताविमानवरमास्थिताः ॥ ५ ॥ प्राप्तामहार्णवंघोरंत्रयस्तेविबु धोत्तमाः ॥ चक्रुःस्थानानिवासार्थंसमुत्पाद्यधरांस्थिताः ॥ ६ ॥ आधारशक्तिरचलामुक्तादेव्यास्वयंततः ॥ तदाधारास्थिताजाताधरामेदःसमन्विता ॥ ॥ ७ ॥ मधुकैटभयोर्मेदःसंयोगान्मेदिनीस्मृता ॥ धारणाच्चधराप्रोक्तापृथ्वीविस्तारयोगतः ॥ ८ ॥ महीचापिमहीयस्त्वाद्धृतासाशेषमस्तके ॥ गिरय श्चकृताःसर्वेधारणार्थंप्रविस्तराः ॥ ९ ॥ लोहकीलंयथाकाष्ठेतथातेगिरयःकृताः ॥ महीधरामहाराजप्रोच्यंतेविबुधैर्जनैः ॥ १० ॥ जातरूपमयोमेरुर्बहु योजनविस्तरः ॥ कृतोमणिमयैःशृंगैःशोभितःपरमाद्भुतः॥११॥मरीचिर्नारदोऽत्रिश्चपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः ॥ दक्षोवसिष्ठइत्येतेब्रह्मणःप्रथिताःसुताः॥१२॥ मरीचेःकश्यपोजातोदक्षकन्यास्त्रयोदश ॥ताभ्योदेवाश्चदैत्याश्चसमुत्पन्नाह्यनेकशः॥१३॥ततस्तुकाश्यपीसृष्टिःप्रवृत्ताचातिविस्तरा ॥ मनुष्यपशुसर्पादि जातिभेदैरनेकधा ॥१४॥ ब्रह्मणश्चार्धदेहात्तुमनुःस्वायंभुवोऽभवत् ॥ शतरूपातथानारीसंजातावामभागतः॥१५॥प्रियव्रतोत्तानपादौसुतौतस्यावभूवतुः॥ तिस्रःकन्यावरारोहाह्यभवन्नतिसुंदराः ॥ १६ ॥ एवंसृष्टिंसमुत्पाद्यभगवान्कमलोद्भवः ॥ चकारब्रह्मलोकंचमेरुशृंगेमनोहरम् ॥ १७ ॥ ॥ छ ॥

हहेपूर्वजव्यास ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ कदायज्ञःकृतइत्याशंकांनिवर्तयन्प्रथमंतत्समयमाह । विसर्जिताइति ॥ यदामणिद्वीपाधिवासिन्याभुवनेश्वर्याशक्तीर्दत्वातेत्रयोब्रह्मादयोविसर्जि तास्तदनंतरंतेत्रयोयुवतीभावंविहायपुरुषाजाताः ॥ तदनंतरमितिसर्वत्रयोज्यम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ दक्षकन्यास्त्रयोदशकश्यपस्यस्त्रियस्ताभ्योदेवादै त्याश्चोत्पन्नाः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ अतिसुंदराःकन्याः ॥ १६ ॥ १७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

रमारमणंरमाक्रीडास्थानंवैकुंठम् ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ इत्थमेतावत्पर्यंतंब्रह्मविष्णुरुद्रानस्वतंत्राःकिंतुपरशक्त्यधीनाःपराशक्तेरुत्पन्नत्वान्मृत्युधर्माणस्तापत्रययुक्ताः पांचभौतिकदेहवंतोयावत्कल्पपर्यंतमायुष्यवंतोवैकुंठब्रह्मलोककैलासवासिनइतिप्रथमाध्यायोक्तप्रश्नस्योत्तरमुक्तंभवत्रिब्रह्मांडोत्पत्तिकथनेनचतत्प्रश्नस्याप्युत्तरंनिरूपितम्अंवायज्ञविषयप्रश्नस्योत्तरंकिंचित्पूर्वंदत्तमग्रेचदास्यतीतिबोध्यम् ॥ एतावत्पर्यंतंपूर्वंजातेकथितेसत्यनंतरंजातंवृत्तमाह॥एकस्मिन्समयइति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

वैकुंठंभगवान्विष्णूरमारमणमुत्तमम् ॥ क्रीडास्थानंसुरम्यंचसर्वलोकोपरिस्थितम् ॥१८॥ शिवोऽपिपरमंस्थानंकैलासाख्यंचकारह ॥ समासाद्यभूतगणंविजहारयथारुचि ॥ १९ ॥ स्वर्गस्त्रिविष्टपोमेरुशिखरोपरिकल्पितः ॥ तच्चस्थानंसुरेंद्रस्यनानारत्नविराजितम् ॥२०॥ समुद्रमथनात्प्राप्तःपारिजातस्तरूत्तमः ॥ चतुर्दंतस्तथानागःकामधेनुश्चकामदा ॥ २१ ॥ उच्चैःश्रवास्तथाऽश्वोवैरंभाद्यप्सरसस्तथा ॥ इंद्रेणोपात्तमखिलंजातंवैस्वर्गभूषणम् ॥२२॥ धन्वंतरिश्चंद्रमाश्चसागराच्चसमुद्भवौ ॥ स्वर्गेस्थितौविराजेतेदेवौबहुगणैर्वृतौ॥२३॥एवंसृष्टिःसमुत्पन्नात्रिविधानृपसत्तम॥ देवतिर्यङ्मनुष्यादिभेदैर्विविधकल्पिता ॥ २४ ॥ अंडजाःस्वेदजाश्चैवचोद्भिज्जाश्चजरायुजाः ॥ चतुर्भेदैःसमुत्पन्नाजीवाःकर्मयुताःकिल ॥ २५ ॥ एवंसृष्टिसमासाद्यब्रह्मविष्णुमहेश्वराः॥विहारंस्वेषुस्थानेषुचक्रुःसर्वेयथेप्सितम् ॥२६॥ एवंप्रवर्तितेसर्गेभगवान्प्रभुरच्युतः ॥ महालक्ष्म्यासमंतत्रचिक्रीडभुवनेस्वके॥२७॥ एकस्मिन्समयेविष्णुर्वैकुंठेसंस्थितःपुरा॥सुधासिंधुस्थितंद्वीपंसस्मारमणिमंडितम् ॥२८॥ यत्रदृष्ट्वामहामायांमंत्रश्चासादितःशुभः॥स्मृत्वातांपरमांशक्तिंस्त्रीभावंगमितोयया ॥२९॥ यज्ञंकर्तुमनश्चक्रेअंबिकायारमापतिः ॥ उत्तीर्यभुवनात्तस्मात्समाहूयमहेश्वरम् ॥३०॥ ब्रह्माणंवरुणंशक्रंकुबेरंपावकंयमम् ॥ वसिष्ठंकश्यपंदक्षंवामदेवंबृहस्पतिम् ॥ ३१ ॥ संभारंकल्पयामासयज्ञार्थंचातिविस्तरम् ॥ महाविभवसंयुक्तंसात्त्विकंचमनोहरम् ॥ ३२ ॥ मंडपंविततंतत्रकारयामासशिल्पिभिः ॥ ऋत्विजोवरयामाससप्तविंशतिसुव्रतान् ॥ ३३ ॥ चितिंचकारयामासवेदीश्चैवसुविस्तराः ॥ प्रजेपुर्ब्राह्मणामंत्रान्देव्याबीजसमन्वितान् ॥ ३४ ॥ जुहुवुस्तेहविःकामंविधिवत्परिकल्पिते ॥ कृतेतुविततेहोमेवागुवाचाशरीरिणी ॥ ३५ ॥ विष्णुंतदासमाभाष्यसुस्वरामधुराक्षरा ॥ विष्णोत्वंभवदेवानांहरेश्रेष्ठतमःसदा ॥ ३६ ॥ मान्यश्चपूजनीयश्चसमर्थश्चसुरेष्वपि ॥ सर्वेत्वामर्चयिष्यंतिब्रह्माद्याश्चसवासवाः ॥ ३७ ॥

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ देव्याबीजंमायाबीजंहृल्लेखाशक्तिदेव्याख्याइतिमंत्रकोशात् ॥ मायाबीजस्यनामानिमालिनीशिववल्लरी ॥ वातावर्तिःकलावाणीबीजंशक्तिश्चकुंडलीतिमंत्रकोशाच्च तेनसमन्वितान् ॥ ३४ ॥ जुहुवुरिति ॥ तेब्राह्मणाविधिवत्परिकल्पितेवन्हौयथेष्टंहविरष्टद्रव्यरूपंजुहुवुःकोटिहोमादिकंचक्रुरित्यर्थः ॥ तदुक्तंभुवनेश्वरीसंहितायाम् ॥ अश्वत्थोदुंबरप्लक्षन्यग्रोधसमिधस्तिलाः ॥ सिद्धार्थपायसाज्यानिद्रव्याण्यष्टौविदुर्बुधाः ॥ यथेष्टसंख्यापूर्तिरेकैकद्रव्येणयथाविभागंकृत्वाकर्तव्या द्रव्यन्यूनतायामंतिमद्रव्यावृत्तिराधिक्येऽतिमद्रव्याहुतिद्वयंत्रयंवाएकीकृत्यैकैकमंत्रेणहोमः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रभविष्यंतीति ॥ त्वयीतिशेषः ॥ भक्त्यातत्सहितामानवाइत्यन्वयः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ अतएवदेवीप्रसादाद्विष्णोरधिकालोकेप्रसिद्धिः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

प्रभविष्यंतिभोभक्त्यामानवाभुविसर्वतः ॥ वरदस्त्वंचसर्वेषांभवितामानवेषुवै ॥ ३८ ॥ कामदःसर्वदेवानांपरमःपरमेश्वरः ॥ सर्वयज्ञेषुमुख्यस्त्वंपूज्यः सर्वैश्चयाज्ञिकैः ॥ ३९ ॥ त्वांजनाःपूजयिष्यंतिवरदस्त्वंभविष्यसि ॥ श्रयिष्यंतिचदेवास्त्वांदानवैरतिपीडिताः ॥ ४० ॥ शरणस्त्वंचसर्वेषांभवितापुरुषोत्तम ॥ पुराणेषुचसर्वेषुवेदेषुविततेषुच ॥ ४१ ॥ त्वंवैपूज्यतमःकामंकीर्तिस्तवभविष्यति ॥ यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभूतले॥४२॥तदांऽशेनावतीर्याशुकर्तव्यंधर्मरक्षणम् ॥ अवताराःसुविख्याताःपृथिव्यांतवभागशः ॥ ४३ ॥ भविष्यंतिधरायांवैमाननीयामहात्मनाम् ॥ अवतारेषुसर्वेषुनानायोनिषुमाधव ॥ ४४ ॥ विख्यातःसर्वलोकेषुभवितामधुसूदन ॥ अवतारेषुसर्वेषुशक्तिस्तेसहचारिणी ॥ ४५ ॥ भविष्यतिममांशेनसर्वकार्यप्रसाधिनी ॥ वाराहीनारसिंहीचनानाभेदैरनेकधा ॥ ४६ ॥ नानायुधाःशुभाकाराःसर्वाभरणमंडिताः ॥ ताभिर्युक्तःसदाविष्णोसुरकार्याणिमाधव ॥ ४७ ॥ साधयिष्यसितत्सर्वंमद्दत्तवरदानतः ॥ तास्त्वयानावमंतव्याःसर्वदागर्वलेशतः ॥ ४८ ॥ पूजनीयाःप्रयत्नेनमाननीयाश्चसर्वथा ॥ नूनंताभारतेखंडेशक्तयःसर्वकामदाः ॥ ४९ ॥ भविष्यंतिमनुष्याणांपूजिताःप्रतिमासुच ॥ तासांतवचदेवेशकीर्तिःस्यादखिलेष्वपि ॥ ५० ॥ द्वीपेषुसप्तस्वपिचविख्याताभुविमंडले ॥ ताश्चत्वांवैमहाभागमानवाभुविमंडले ॥ ५१ ॥ अर्चयिष्यंतिवांछार्थंसकामाःसततंहरे ॥ अर्चासुचोपहारैश्चनानाभावसमन्विताः ॥ ५२ ॥ पूजयिष्यंतिवेदोक्तैर्मंत्रैर्नामजपैस्तथा ॥ महिमातवभूर्लोकेस्वर्गेचमधुसूदन ॥५३॥ पूजनाद्देवदेवेशवृद्धिमेष्यतिमानवैः ॥ व्यासउवाच ॥ इतिदत्त्वावरान्वाणीविरामखसंभवा ॥ ५४ ॥ भगवानपिप्रीतात्माह्यभवच्छ्रवणादिव ॥ समाप्यविधिवद्यज्ञंभगवान्हरिरीश्वरः ॥५५॥ विसर्जयित्वातान्देवान्ब्रह्मपुत्रान्मुनीनथ ॥ जगामानुचरैःसार्धंवैकुंठंगरुडध्वजः ॥ ५६ ॥ स्वानिस्वानिचधिष्ण्यानिपुनःसर्वेसुरास्ततः ॥ मुनयोविस्मितावार्तांकुर्वंतस्तेपरस्परम्॥५७॥ययुःप्रमुदिताःकामंस्वाश्रमान्पावनानथ ॥ ५८ ॥ श्रुत्वावाणींपरमविशदांव्योमजांश्रोत्ररम्यांसर्वेषांवैप्रकृतिविषयेभक्तिभावश्चजातः ॥ चक्रुःसर्वेद्विजमुनिगणाःपूजनंभक्तियुक्तास्तस्याःकामंनिखिलफलदंचागमोक्तंमुनींद्राः॥५९॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ छ ॥

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ महिमेति ॥ एवंतवमहिमाभविष्यतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ खसंभवाआकाशजन्या ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ प्रकृतिविषयेमूलप्रकृतौ ॥ तस्याःप्रकृतेर्भुवनेश्वर्याः ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

त्रिपंचाशत्पद्यकैस्तुराजप्रश्नोत्तरंततःवैभवंप्रोच्यतेसम्यग्यथावद्भुवनेशितुः ॥ १ ॥ विष्णुकृतमंबायज्ञंश्रुत्वापुनर्भगवतीमहिम्नोवुभुत्सुर्जनमेजयःपृच्छति ॥ श्रुतइति॥१॥२॥३॥४॥५॥धर्म

जनमेजयउवाच ॥ श्रुतोवैहरिणाकृतोयज्ञोविस्तरतोद्विज ॥ महिमानंतथांऽबायावदविस्तरतोमम ॥ १ ॥ श्रुत्वादेव्याश्चरित्रंवैकुर्वेमखमनुत्तमम् ॥ प्रसा
दात्तवविप्रेंद्रभविष्यामिचपावनः॥२॥व्यासउवाच॥शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिदेव्याश्चरितमुत्तमम् ॥ इतिहासंपुराणंचकथयामिसुविस्तरम् ॥ ३ ॥ कोसलेषुनृ
पश्रेष्ठःसूर्यवंशसमुद्भवः ॥ पुष्पपुत्रोमहातेजाध्रुवसंधिरितिस्मृतः ॥ ४ ॥ धर्मात्मासत्यसंधश्चवर्णाश्रमहितेरतः ॥ अयोध्यायांसमृद्धायांराज्यंचक्रेशुचिव्र
तः ॥५॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चान्येतथाद्विजाः ॥ स्वांस्वांवृत्तिंसमास्थायतद्राज्येधर्मतोऽभवन् ॥ ६॥ नचौराःपिशुनाधूर्तास्तस्यराज्येचकुत्रचि
त् ॥ दंभाःकृतघ्नामूर्खाश्चवसंतिकिलमानवाः ॥ ७ ॥ एवंवैवर्तमानस्यनृपस्यकुरुसत्तम ॥ द्वेपत्न्यौरूपसंपन्नेह्यासतुःकामभोगदे ॥८॥ मनोरमाधर्मपत्नी
सुरूपाऽतिविचक्षणा ॥ लीलावतीद्वितीयाचसाऽपिरूपगुणान्विता ॥ ९ ॥ विजहारसपत्नीभ्यांगृहेषूपवनेषुच ॥ क्रीडागिरौदीर्घिकासुसौधेषुविविधेषुच
॥ १० ॥ मनोरमाशुभेकालेसुषुवेपुत्रमुत्तमम् ॥ सुदर्शनाभिधंपुत्रंराजलक्षणसंयुतम् ॥ ११ ॥ लीलावत्यपितत्पत्नीमासेनैकेनभामिनी ॥ सुषुवेसुंदरंपुत्रं
शुभेपक्षेदिनेतथा ॥ १२ ॥ चकारनृपतिस्तत्रजातकर्मादिकंद्वयोः ॥ ददौदानानिविप्रेभ्यःपुत्रजन्मप्रमोदितः ॥ १३ ॥ प्रीतिंतयोःसमांराजाचकारसुतयो
र्नृप ॥ नृपश्चकारसौहार्दंष्वंतरंनकदाचन ॥ १४ ॥ चूडाकर्मतयोश्चक्रेविधिनानृपसत्तमः ॥ यथाविभवमेवासौप्रीतियुक्तःपरंतपः ॥ १५ ॥ कृतचूडौसु
तौकामंजह्रतुर्नृपतेर्मनः ॥ क्रीडमानावुभौकांतौलोकानामनुरंजकौ ॥ १६ ॥ तयोःसुदर्शनोज्येष्ठोलीलावत्याःसुतःशुभः ॥ शत्रुजित्संज्ञकःकामंचाटुवा
क्योवभूवह ॥ १७ ॥ नृपतेःप्रीतिजनकोमंजुवाक्चारुदर्शनः ॥ प्रजानांवल्लभःसोऽभूत्तथामंत्रिजनस्यवै ॥ १८ ॥ यथातस्मिन्नृपःप्रीतिंचकारगुणयोग
तः ॥ मंदभाग्यान्मंदभावोनतथावैसुदर्शने ॥ १९ ॥ एवंगच्छतिकालेतुध्रुवसंधिर्नृपोत्तमः ॥ जगामवनमध्येऽसौमृगयाभिरतःसदा ॥ २० ॥ निघ्नन्मृ
गान्रुरून्कंबून्सूकरान्गवयाञ्छशान् ॥ महिषाञ्छरभान्खड्गांश्चिक्रीडनृपतिर्वने ॥ २१ ॥ क्रीडमानेनृपेतत्रवनेघोरेऽतिदारुणे ॥ उदतिष्ठन्निकुंजात्तुसिंहः
परमकोपनः ॥२२॥ राज्ञाशिलीमुखेनादौविद्धःक्रोधवशंगतः ॥ दृष्ट्वाऽग्रेनृपतिंसिंहोननादमेघनिःस्वनः ॥ २३ ॥ कृत्वाचोर्ध्वंसलांगूलंप्रसारितबृहत्सटः
॥ हंतुंनृपतिमाकाशादुत्पपातातिकोपनः ॥ २४ ॥ नृपतिस्तरसावीक्ष्यदधारासिंकरेतदा ॥ वामेचर्मसमादायस्थितःसिंहइवापरः ॥ २५ ॥

तोधर्मेणयुक्ताअभवन्नित्यर्थः ॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥ मंदभाग्यादिति ॥ सुदर्शनस्यमंदभाग्यात्तस्मिन्सुदर्शनेमंदभावोनृपतिर्यथाशत्रुजितिप्रीतिं
चकारतथासुदर्शनेप्रीतिंनचकारेत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ कंबूनिति ॥ कंबूःशंखेस्त्रियांपुंसिशंबूकेवलयेगजइतिमेदिनीकोशाद्गजानित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ सोऽपिराजाऽपि ॥ तत्राऽऽगत्य सिंहेनेतिशेषः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ साध्वससंस्थितौ भयसंस्थि

सेवकास्तस्ययेसर्वेतेऽपिबाणान्पृथक्पृथक् ॥ अमुंचन्कुपिताःकामंसिंहोपरिरुषान्विताः ॥ २६ ॥ हाहाकारोमहानासीत्संप्रहारश्चदारुणः ॥ उत्पपात ततःसिंहोनृपस्योपरिदारुणः ॥ २७ ॥ तंपतंतंसमालोक्यखड्गेनाभ्यहनन्नृपः ॥ सोऽपिक्रूरैर्नखाग्रैश्चतत्राऽऽगत्यविदारितः ॥२८॥ सनखैराहतोराजापपातचममारवै ॥ चुक्रुशुःसैनिकास्तेतुनिर्जघ्नुर्विशिखैस्तदा ॥ २९ ॥ मृतःसिंहोऽपितत्रैवभूपतिश्चतथामृतः ॥ सैनिकैर्मंत्रिमुख्याश्चतत्राऽऽगत्यनिवेदिताः ॥ ३० ॥ परलोकगतंभूपंश्रुत्वातेमंत्रिसत्तमाः ॥ संस्कारंकारयामासुर्गत्वातत्रवनांतिके ॥ ३१ ॥ परलोकक्रियांसर्वांवसिष्ठोविधिपूर्वकम् ॥ कारयामासतत्रैवंपरलोकसुखावहम् ॥ ३२ ॥ प्रजाःप्रकृतयश्चैववसिष्ठश्चमहामुनिः ॥ सुदर्शनंनृपंकर्तुंमंत्रंचक्रुःपरस्परम् ॥ ३३ ॥ धर्मपत्नीसुतःशांतःपुरुषश्चसुलक्षणः ॥ अयंनृपासनार्हश्चह्यब्रुवन्मंत्रिसत्तमाः ॥ ३४ ॥ वसिष्ठोऽपितथैवाऽऽहयोग्योऽयंनृपतेःसुतः ॥ बालोऽपिधर्मवान्राजानृपासनमिहार्हति ॥ ३५ ॥ कृतेमंत्रेमंत्रिवृद्धैर्युधाजिन्नामपार्थिवः ॥ तत्राऽऽजगामतरसाश्रुत्वातूज्जयिनीपतिः ॥ ३६ ॥ मृतंजामातरंश्रुत्वालीलावत्याःपितातदा ॥ तत्राऽऽजगामत्वरितोदौहित्रप्रियकाम्यया ॥ ३७ ॥ वीरसेनस्तथाऽऽयातःसुदर्शनहितेच्छया ॥ कलिंगाधिपतिश्चैवमनोरमापितानृपः ॥३८॥ उभौतौसैन्यसंयुक्तौनृपौसाध्वससंस्थितौ ॥ चक्रतुर्मंत्रिमुख्यैस्तैर्मंत्रंराज्यस्यकारणात् ॥ ३९ ॥ युधाजित्तुतदापृच्छज्ज्येष्ठःकःसुतयोर्द्वयोः ॥ राज्यंप्राप्नोतिज्येष्ठोवैनकनीयान्कदाचन ॥ ४० ॥ वीरसेनोऽपितत्राऽऽहधर्मपत्नीसुतःकिल ॥ राज्यार्हःसयथाराजञ्छास्त्रज्ञेभ्योमयाश्रुतम् ॥ ४१ ॥ युधाजित्पुनराहेदंज्येष्ठोऽयंचयथागुणैः ॥ राजलक्षणसंयुक्तोनतथाऽयंसुदर्शनः ॥ ४२ ॥ विवादोऽत्रसुसंपन्नोनृपयोस्तत्रलुब्धयोः ॥ कःसंदेहमपाकर्तुंक्षमःस्यादतिसंकटे ॥ ४३ ॥ युधाजिन्मंत्रिणःप्राह यूयंस्वार्थपराःकिल ॥ सुदर्शनंनृपंकृत्वाधनंभोक्तुंकिलेच्छथ ॥ ४४ ॥ युष्माकंतुविचारोऽयंमयाज्ञातस्तथेंगितैः ॥ शत्रुजित्सबलस्तस्मात्संमतोवोनृपासने ॥४५॥ मयिजीवतिकःकुर्यात्कनीयांसंनृपंकिल ॥ त्यक्त्वाज्येष्ठंगुणार्हंचसेनयाचसमन्वितम् ॥४६॥ नूनंयुद्धंकरिष्यामितस्मिन्खड्गस्यमेदिनी ॥धारयाचद्विधाभूयाद्युष्माकंतत्रकाकथा ॥४७॥ वीरसेनस्तुतच्छ्रुत्वायुधाजितमभाषत ॥ बालौद्वौसदृशप्रज्ञौकोभेदोऽत्रविचक्षण ॥४८॥ एवंविवदमानौतौसंस्थितौनृपतीसदा ॥ प्रजाश्चऋषयश्चैववभूवुर्व्यग्रमानसाः ॥ ४९ ॥ समाजग्मुश्चसामंताःससैन्याःक्लेशतत्पराः ॥ विग्रहंचाभिकांक्षंतःपरस्परमतंद्रिताः ॥ ५० ॥

तौभयंकरावित्यर्थः ॥ ३९ ॥ ज्येष्ठःकइति ॥ यद्यपिवयसाज्येष्ठःसुदर्शनस्तथाऽपिगुणेनज्येष्ठःशत्रुजिदेवभवतीतियुधाजितोऽभिप्रायः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ तस्मात्सुदर्शनात्सबलोधर्मपत्नीजन्यत्वाच्छत्रुजिदेवनृपासनेसंमतोनान्यइत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५१ ॥ ५२ ॥५३॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥ ॥ एकषष्टिश्लोकवर्यैर्युधाजिद्वीरसेनयोः ॥ दौहित्रार्थमहायुद्धमभूदितितुवर्ण्यते ॥१॥ तौयुधाजिद्वीरसेनौयुद्धकामौजातौतदुत्तरंसंग्रामःप्रवृत्तइत्याह।संयुगेचसतीति ॥ आहवाययुद्धार्थसंगृहीतशस्त्रयोःसंग्रामेसतिविमर्दःसंघर्षोबभूव ॥ १ ॥ पृथुलबाहुःपुष्टबाहुश्चासौयुधाजिच्चेतिकर्मधारयः॥ ससमरेसंस्थितः ॥ २ ॥ ३ ॥४॥ तंयुधाजितंतंनैवयुधाजितैवअसौवीरसेनः ॥ ५ ॥ पिशितंमांसम् ॥ विहगवृंदैः पक्षिवृंदैः॥६॥ क्षतजंरक्तंतस्यसिंधुर्नदीउवाहनिर्गतागजवीरतुरंगमानांवृंदेभ्यःसमुदायेभ्यः ॥ कीदृशी॥रविजःसूर्यजोयमस्तस्यलोकस्यमार्गेभवायावैतरणीनदीसापापात्मनांपापिनांयथानयनमार्गगतात्रासावहातद्वदित्यर्थः॥७॥ कीर्णानीति ॥ भिन्नंनाशितंप्रवाह

निषादाह्वाययुस्तत्रशृंगवेरपुराश्रयाः ॥ राजद्रव्यमुपाहर्तुमृतंश्रुत्वामहीपतिम् ॥ ५१ ॥ पुत्रौचबालकौश्रुत्वाविग्रहंचपरस्परम् ॥ चौरास्तत्रसमाजग्मुर्देशदेशांतरादपि ॥ ५२ ॥ संमर्दस्तत्रसंजातःकलहेसमुपस्थिते ॥ युधाजिद्वीरसेनश्चयुद्धकामौबभूवतुः ॥ ५३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ संयुगेचसतितत्रभूपयोराहवायसमुपात्तशस्त्रयोः ॥ क्रोधलोभवशयोःसमंततःसंबभूवतुमुलस्तुविमर्दः ॥ १ ॥ संस्थितःससमरेधृतचापःपार्थिवःपृथुलबाहुयुधाजित् ॥ संयुतःस्वबलवाहनादिकैराहवायकृतनिश्चयोनृपः ॥ २ ॥ वीरसेनइहसैन्यसंयुतःक्षात्रधर्ममनुसृत्यसंगरे ॥ पुत्रिकात्मजहितायपार्थिवःसंस्थितःसुरपतेःसमतेजाः ॥ ३ ॥ सबाणवृष्टिंविससर्जपार्थिवोयुधाजितंवीक्ष्यरणेस्थितंच ॥ गिरिंतडित्वानिवतोयवृष्टिभिःक्रोधान्वितःसत्यपराक्रमोऽसौ ॥ ४ ॥ तंवीरसेनोविशिखैःशिलाशितैःसमावृणोदाशुगमैरजिह्मगैः ॥ चिच्छेदबाणैश्चशिलीमुखानसौतैनैवमुक्तानतिवेगपातिनः ॥५॥ गजरथतुरगाणांसंबभूवातियुद्धंसुरनरमुनिसंघैर्वीक्षितंचातिघोरम् ॥ विततविहगवृंदैरावृतंव्योमसद्यःपिशितमशितुकामैःकाकगृध्रादिभिश्च ॥ ६ ॥ तत्राद्भुताक्षतजसिंधुरुवाहघोरावृंदेभ्यएवगजवीरतुरंगमानाम् ॥ त्रासावहानयनमार्गगतानराणांपापात्मनांरविजमार्गभवेवकामम् ॥ ७ ॥ कीर्णानिभिन्नपुलिनेनरमस्तकानिकेशावृतानिचविभांतियथैवसिंधौ ॥ तुंबीफलानिविहितानिविहर्तुकामैर्बालैर्यथारविसुताप्रभवैश्चनूनम् ॥ ८ ॥ वीरंमृतंभुविगतंपतितंरथाद्वैगृध्रःपलार्थमुपरिभ्रमतीतिमन्ये ॥ जीवोप्यसौनिजशरीरमवेक्ष्यकांतंकांक्षत्यहोऽतिविवशोऽपिपुनःप्रवेष्टुम्॥९॥आजौहतोऽपिनृवरःसुविमानरूढःस्वांकेस्थितांसुरवधूंप्रवदत्यभीष्टम्॥ पश्याधुनाममशरीरमिदंपृथिव्यांबाणाहतंनिपतितंकरभोरुकांतम्॥१०॥

वेगेनपुलिनंतटंयेनतस्मिन्प्रवाहेरक्तमयेकेशावृतानिनरमस्तकानियोधमस्तकानिकीर्णानिविक्षिप्तानिकथंविभांति यथारविसुतायमुनातत्तीरप्रभवैर्विहर्तुकामैर्बालैस्तुंबीफलानिसिंधौयमुनायांविहितानिस्थापितानितथैवतद्वादित्यर्थः ॥ ८ ॥ वीरमिति। मृतंवीरंदृष्ट्वातस्योपरिगृध्रोभ्रमतियत्तदहमसौजीवोनिजशरीरंकांतंरणेपतितंपुनःप्रवेष्टुंकांक्षतीच्छतीतिमन्ये ॥ ९ ॥ तस्मिन्धारातीर्थेमृतानांवृत्तमाह । आजाविति ॥ आजौयुद्धे ॥ सुरवधूंस्वर्वेश्याम् ॥ १० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तद्वदेवान्यस्यवृत्तमाह । एकोहतइति ॥ देवांगनांस्वर्वेश्यांसमधिगम्यप्राप्यतयायुतोविमानेयावत्तिष्ठतितावदेवतस्यमृतदेहस्यप्रियास्त्रीहुतवहेऽग्नौसतीभूत्वादेहंसमर्प्यपत्यासहस्वदेहंदग्ध्वादि व्यदेहाभूत्वासबलास्वकीयातस्यैवस्त्रीकांतंस्वपतिंजग्राहेत्यर्थः ॥ ११ ॥ तस्मिन्युद्धेमृतानामन्यमपिचमत्कारमाह । युद्धेमृताविति ॥ अत्रयौभटौपरस्परंयुद्धंकृत्वादिवंगतौतौतत्राप्येकाया प्सराःसमानपुण्यसाध्यातदर्थंतत्रापिकलहाकुलौभूत्वासंजघ्नतुरितिचमत्कारः ॥ १२ ॥ कश्चिदिति ॥ कश्चिद्युवायुद्धेमृतःसुरांगनांस्वापेक्षयाऽधिकगुणवतींप्राप्यसामयिगुणाभावाद्विरज्ये

एकोहतस्तुरिपुणैवगतोंऽतरिक्षंदेवांगनांसमधिगम्ययुतोविमाने ॥ तावत्प्रियाहुतवहेसुसमर्प्यदेहंजग्राहकांतमबलासबलास्वकीया ॥ ११ ॥ युद्धेमृतौ चसुभटौदिविसंगतौतावन्योन्यशस्त्रनिहतौसहसंप्रयातौ ॥ तत्रैवजघ्नतुरलंपरमाहितास्त्रावेकाप्सरोर्थविहतौकलहाकुलौच ॥ १२ ॥ कश्चिद्युवासमधिग म्यसुरांगनांवैरूपाधिकांगुणवतींकिलभक्तियुक्तः ॥ स्वीयान्गुणान्प्रविततान्प्रवदंस्तदाऽसौतांप्रेमदामनुचकारचयोगयुक्तः॥१३॥भौमंरजोऽतिविततंदिवि संस्थितंचरात्रिंचकारतरणिंचसमावृणोद्यत् ॥ मग्नंतदेवरुधिरांबुनिधावकस्मात्प्रादुर्बभूवरविरप्यतिकांतियुक्तः ॥१४॥ कश्चिद्धतस्तुगगनंकिलदेवकन्यां संप्राप्यचारुवदनांकिलभक्तियुक्ताम् ॥ नांगीचकारचतुरोव्रतनाशभीतोयास्यत्ययंममवृथाह्यनुकूलशब्दः॥१५॥संग्रामेसंवृतेतत्रयुधाजित्पृथिवीपतिः ॥ जघानवीरसेनंतंबाणैस्तीव्रैःसुदारुणैः ॥ १६ ॥ निहतःसपपातोर्व्यांछिन्नमूर्धामहीपतिः ॥ प्रभग्नंतद्बलंसर्वंनिर्गतंचचतुर्दिशम् ॥ १७ ॥ मनोरमाहतं श्रुत्वापितरंरणमूर्धनि ॥ भयत्रस्ताऽथसंजातापितुर्वैरमनुस्मरन् ॥ १८ ॥ हनिष्यतियुधाजिद्वैपुत्रंममदुराशयः ॥ राज्यलोभेनपापात्मासेतिचिंतापरा ऽभवत् ॥ १९ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिपितामेनिहतोरणे ॥ भर्ताचापिमृतोऽद्यैवपुत्रोऽयंममबालकः ॥ २० ॥ लोभोऽतीवचपापिष्ठस्तेनकोनवशीकृतः॥ किंनकुर्यात्तदाविष्टःपापंपार्थिवसत्तमः ॥ २१ ॥ पितरंमातरंभ्रातॄन्गुरून्स्वजनबांधवान् ॥ हंतिलोभसमाविष्टोजनोनात्रविचारणा ॥ २२ ॥ अभक्ष्य भक्षणंलोभादगम्यागमनंतथा ॥ करोतिकिलतृष्णार्तोधर्मत्यागंतथापुनः ॥ २३ ॥ नसहायोऽस्तिमेकश्चिन्नगरेऽत्रमहाबलः ॥ यदाधोरस्थिताचाहंपा लयामिसुतंशुभम् ॥ २४ ॥ हतेपुत्रेनृपेणाद्यकिंकरिष्याम्यहंपुनः ॥ नमेत्राताऽस्तिभुवनेयेनाहंसुस्थिताह्यहम् ॥ २५ ॥

तेतिभियायथासास्वस्मिन्प्रेमदाऽनुकूलगुणदर्शनेनभविष्यतितथास्वीयान्गुणान्प्रवदन्सन्तांप्रेमदामुद्दिश्यानुचकारतद्गुणानुरूपमेवानुकरणंकृतवानित्यर्थः ॥ योगयुक्तःप्रेमयुक्तः ॥१३॥ भौमंरजइति ॥ यद्युद्धसमयेसेनयोःसंमर्दादुत्थितंभौमंरजोदिविगतंतरणिंसूर्यंसमावृणोद्यच्चदिवसेऽपिरात्रिंचकारतद्रजोयुद्धमध्येऽकस्मादनायासेनरुधिरांबुनिधौरक्तसमुद्रेमग्नंयदाभवत्तदाऽ तिकांतियुक्तोरविरपिसहसाप्रादुर्बभूवेत्याश्चर्यमेवंमहाभयंकरंयुद्धमभूदितितात्पर्यम् ॥ १४ ॥ कश्चिदिति ॥ अनुकूलःशब्दःअयंब्रह्मचारीत्यनुकूलशब्दोयोग्यःशब्दोवृथास्यादितिभिये त्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ पालयामिपालयिष्यामि ॥ २४ ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २६ ॥ २७ ॥ एवमनर्थाः पूर्वंवहवोजाताइत्याह ॥ श्रूयतेहीति ॥ २८ ॥ अल्पकमल्पं पविंवज्रम् ॥ २९ ॥ कथांतरमाह । सपत्न्याइति ॥ गर्भनाशार्थं गर्भनाशरूपमर्थमुद्दिश्येत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ अवशाःनस्वाधीनाः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ वाराणस्यावनेइत्यन्वयः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ नगरान्निर्गमनोपायमाह । युधाजिद्दर्शनोत्कं

सापिवैरयुताकामंसपत्नीसर्वदाभवेत् ॥ लीलावतीनमेपुत्रेभविष्यतिदयावती ॥ २६ ॥ युधाजितिसमायातेनमेनिःसरणंभवेत् ॥ ज्ञात्वावालंसुतंसोऽद्य कारागारंनयिष्यति ॥ २७ ॥ श्रूयतेहिपुरेंद्रेणमातुर्गर्भगतःशिशुः ॥ कृंतितःसप्तधापश्चात्कृतास्तेसप्तसप्तधा ॥ २८ ॥ प्रविश्यचोदरंमातुःकरेकृत्वाऽल्प कंपविम् ॥ एकोनपंचाशदपितेभवन्मरुतोदिवि ॥ २९ ॥ सपत्न्यैगरलंदत्तंसपत्न्यानृपभार्यया ॥ गर्भनाशार्थमुद्दिश्यपुरैतद्वैमयाश्रुतम् ॥ ३० ॥ जात स्तुवालकःपश्चाद्देहेविषयुतःकिल ॥ तेनासौसगरोनामविख्यातोभुविमंडले ॥ ३१ ॥ जीवमानोऽथभर्त्तावैकैकेय्यानृपभार्यया ॥ रामःप्रव्राजितोज्येष्ठो मृतोदशरथोनृपः ॥ ३२ ॥ मंत्रिणस्त्ववशाःकामंयेमेपुत्रंसुदर्शनम् ॥ राजानंकर्तुकामावैयुधाजिद्वशगाश्चते ॥ ३३ ॥ नमेभ्रातातथाशूरोयोमेवंधात्प्रमो चयेत् ॥ महत्कष्टंचसंप्राप्तंमयावैदैवयोगतः ॥ ३४ ॥ उद्यमःसर्वथाकार्यःसिद्धिर्दैवाद्धिजायते ॥ उपायंपुत्ररक्षार्थंकरोम्यद्यत्वरान्विता ॥ ३५ ॥ इतिसं चिंत्यसावालाविदल्लंचातिमानिनम् ॥ निपुणंसर्वकार्येषुचिंत्यंमंत्रिवरोत्तमम् ॥ ३६ ॥ समाहूयतमेकांतेप्रोवाचबहुदुःखिता ॥ गृहीत्वावालकंहस्तेरुद तीदीनमानसा ॥ ३७ ॥ पितामेनिहतः संख्येपुत्रोऽयंबालकस्तथा ॥ युधाजिद्बलवान्राजाकिंविधेयंवदस्वमे ॥ ३८॥ तामुवाचविदल्लोऽसौनात्रस्थातव्य मेवच ॥ गमिष्यामोवनेकामंवाराणस्याःपुनःकिल ॥ ३९ ॥ तत्रमेमातुलःश्रीमान्वर्ततेबलवत्तरः ॥ सुबाहुरितिविख्यातोरक्षितासभविष्यति ॥ ४० ॥ युधाजिद्दर्शनोत्कंठमनसानगराद्बहिः ॥ निर्गत्यरथमारुह्यगंतव्यंनात्रसंशयः ॥ ४१ ॥ इत्युक्तातेनसाराज्ञीगत्वालीलावतींप्रति ॥ उवाचपितरंद्रष्टुंगच्छा म्यद्यसुलोचने ॥ ४२ ॥ इत्युक्त्वारथमारुह्यसैरंध्रीसंयुतातदा ॥ विदल्लेनचसंयुक्तानिःसृतानगराद्बहिः ॥ ४३ ॥ त्रस्ताह्यार्ताऽतिकृपणापितुःशोकस माकुला ॥ दृष्ट्वायुधाजितंभूपंपितरंगतजीवितम् ॥ ४४ ॥ संस्कार्यचत्वरायुक्तावेपमानाभयाकुला ॥ दिनद्वयेनसंप्राप्ताराज्ञीभागीरथीतटम् ॥ ४५ ॥ निषादैर्लुंठितातत्रगृहीतंसकलंवसु ॥ रथंचापिगृहीत्वातेनिर्गतादस्यवःशठाः ॥ ४६ ॥ रुदतीसुतमादायचारुवस्त्रामनोरमा ॥ निर्ययौजाह्नवीतीरेसैरं ध्रीकरलंविता ॥ ४७ ॥ आरुह्यचभयाच्छीघ्रमुडुपंसाभयाकुला ॥ तीर्त्वाभागीरथींपुण्यांययौत्रिकूटपर्वतम् ॥ ४८ ॥

ठेति ॥ युधाजिद्राजस्यदर्शनोत्कंठचेतसामयादर्शनार्थंराज्ञोगम्यतइत्यभिप्रायंबहिर्दर्शयित्वेत्यर्थः ॥ ४१ ॥ पितरंयुधाजितम् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ पितरंगतजीवितमिति ॥ वीरसेनंचपितरं संस्कार्येत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ त्रिकूटपर्वतंचित्रकूटम् ॥ ४८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४९ ॥ कस्यपरिग्रहः कस्यस्त्रीत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ विदल्लंस्वमंत्रिणंवक्तुंसमादिशदाज्ञापितवती ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ सैरंध्री

भारद्वाजाश्रमंप्राप्तात्वरयाचभयाकुला ॥ संवीक्ष्यतापसांस्तत्रसंजातानिर्भयातदा ॥ ४९ ॥ मुनिनासाततःपृष्टाकाऽसिकस्यपरिग्रहः ॥ कष्टेनात्रकथंप्राप्तासत्यंब्रूहिशुचिस्मिते ॥ ५० ॥ देवीवामानुषीवाऽसिबालपुत्रावनेकथम् ॥ राज्यभ्रष्टेववामोरुभासित्वंकमलेक्षणे ॥ ५१ ॥ एवंसामुनिनापृष्टानोवाचवरवर्णिनी ॥ रुदतीदुःखसंतप्ताविदल्लंचसमादिशत् ॥ ५२ ॥ विदल्लस्तमुवाचेदंध्रुवसंधिर्नृपोत्तमः ॥ तस्यभार्याधर्मपत्नीनाम्नाचेयंमनोरमा ॥ ५३ ॥ सिंहेननिहतोराजासूर्यवंशीमहाबलः ॥ पुत्रोऽयंनृपतेस्तस्यनाम्नाचैवसुदर्शनः ॥ ५४ ॥ अस्याःपिताऽतिधर्मात्मादौहित्रार्थेमृतोरणे ॥ युधाजिद्भयसंत्रस्तासंप्राप्ताविजनेवने ॥ ५५ ॥ त्वामेवशरणंप्राप्तावालपुत्रानृपात्मजा ॥ त्राताभवमहाभागत्वमस्यामुनिसत्तम ॥ ५६ ॥ आर्तस्यरक्षणेपुण्यंयज्ञाधिकमुदाहृतम् ॥ भयत्रस्तस्यदीनस्यविशेषफलदंस्मृतम् ॥ ५७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ निर्भयावसकल्याणिपुत्रंपालयसुव्रते ॥ नतेभयंविशालाक्षिकर्तव्यंशत्रुसंभवम् ॥ ॥ ५८ ॥ पालयस्वसुतंकांतंराजातेऽयंभविष्यति ॥ नात्रदुःखंतथाशोकःकदाचित्संभविष्यति ॥ ५९ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तामुनिनाराज्ञीस्वस्थासासंवभूवह ॥ उटजेमुनिनादत्तेवीतशोकातदाऽवसत् ॥ ६० ॥ सैरंध्रीसहितातत्रविदल्लेनचसंयुता ॥ सुदर्शनंपालयानान्यवसत्सामनोरमा ॥ ६१ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ युधाजित्त्वथसंग्रामाद्गत्वाऽयोध्यांमहाबलः ॥ मनोरमांचपप्रच्छसुदर्शनजिघांसया ॥ १ ॥ सेवकान्प्रेषयामासक्वगतेतिमुहुर्वदन् ॥ शुभेदिनेऽथदौहित्रंस्थापयामासचासने ॥ २ ॥ मंत्रिभिश्चवसिष्ठेनमंत्रैराथर्वणैःशुभैः ॥ अभिषिक्तश्चसंपूर्णैःकलशैर्जलपूरितैः ॥ ३ ॥ भेरीशंखनिनादैश्चतूर्याणांचाथनिःस्वनैः ॥ उत्सवस्तुनगर्यांवैसंवभूवकुरूद्वह ॥ ४ ॥ विप्राणांवेदपाठैश्चवंदिनांस्तुतिभिस्तथा ॥ अयोध्यामुदितेवासीज्जयशब्दैःसुमंगलैः ॥ ५ ॥ हृष्टपुष्टजनाकीर्णास्तुतिवादित्रनिःस्वना ॥ नवेतस्मिन्महीपालेपूर्वभौनूतनेवसा ॥ ६ ॥ केचित्साधुजनायेवैचक्रुःशोकंगृहेस्थिताः ॥ सुदर्शनंविचिंत्याद्यक्वगतोऽसौनृपात्मजः ॥ ७ ॥ मनोरमाऽतिसाध्वीसाक्वगतासुतसंयुता ॥ पिताऽस्यानिहतःसंख्येराज्यलोभेनवैरिणा ॥ ८ ॥ इत्येवंचिंत्यमानास्तेसाधवःसमबुद्धयः ॥ अतिष्ठन्दुःखितास्तत्रशत्रुजिद्वशवर्तिनः ॥ ९ ॥ युधाजिदपिदौहित्रंस्थापयित्वाविधानतः ॥ राज्यंचमंत्रिसात्कृत्वाचलितःस्वांपुरींप्रति ॥ १० ॥

सहितातत्रविदल्लेनचसंयुता ॥ ६१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ षष्टिश्लोकैर्युधाजित्तुसुदर्शनजिघांसया ॥ भारद्वाजाश्रमंप्राप्तइतिसम्यगिहोच्यते ॥ ॥ १ ॥ भारद्वाजाश्रमेमनोरमायांगतायामनंतरंजातंवृत्तमाह । युधाजित्त्वथेति ॥ मनोरमांचकारात्तत्पुत्रंच ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ पूर्नगरीनूतनेववभौ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ११ ॥ बलाभिधंनिषादाधिपतिंशृंगवेरपुराधिपंदुर्दर्शाख्यंपुरस्कृत्यराजाऽगादित्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

श्रुत्वासुदर्शनंतत्रमुनीनामाश्रमेस्थितम् ॥ हंतुकामोजगामाऽऽशुचित्रकूटंसपर्वतम् ॥ ११ ॥ निषादाधिपतिंशूरंपुरस्कृत्यबलाभिधम् ॥ दुर्दर्शाख्यमगादाशुशृंगवेरपुराधिपम् ॥ १२ ॥ श्रुत्वामनोरमातत्रबभूवातिसुदुःखिता ॥ आगच्छंतंबालपुत्राभयार्तासैन्यसंयुतम् ॥ १३ ॥ तमुवाचातिशोकार्तामुनिंसाश्रुविलोचना ॥ किंकरोमिक्वगच्छामियुधाजित्समुपस्थितः ॥ १४ ॥ पितामेनिहतोऽनेनदौहित्रोभूपतिःकृतः ॥ सुतंमेहंतुकामोऽत्रसमायातिबलान्वितः ॥ १५ ॥ पुराश्रुतंमयास्वामिन्पांडवावैवनेस्थिताः ॥ मुनीनामाश्रमेपुण्येपांचाल्यासहितास्तदा ॥ १६ ॥ गतास्तेमृगयांपार्थाभ्रातरःपंचएवते ॥ द्रौपदीसंस्थितातत्रमुनीनामाश्रमेशुभे ॥ १७॥ धौम्योऽत्रिर्गालवःपैलोजावालिर्गौतमोभृगुः ॥ च्यवनश्चात्रिगोत्रश्चकण्वश्चैवजतुःक्रतुः ॥ १८ ॥ वीतिहोत्रःसुमंतुश्चयज्ञदत्तोऽथवत्सलः ॥ राशासनःकहोडश्चयवक्रीर्यज्ञकृत्क्रतुः ॥१९॥ एतेचान्येचमुनयोभारद्वाजादयःशुभाः ॥ वेदपाठयुताःसर्वेसंस्थिताश्चाश्रमेस्थिताः ॥ २० ॥ दासीभिःसहितातत्रयाज्ञसेनीस्थितामुने ॥ आश्रमेचारुसर्वांगीनिर्भयामुनिसंवृते ॥ २१ ॥ पार्थामृगानुगास्तावत्प्रयाताश्चवनाद्वनम् ॥ धनुर्बाणधरावीराःपंचैवशत्रुतापनाः ॥२२॥ तावत्सिंधुपतिःश्रीमान्मार्गस्थोबलसंयुतः ॥ आगतश्चाश्रमाभ्याशेश्रुत्वातुनिगमध्वनिम् ॥ २३ ॥ श्रुत्वावेदध्वनिंराजामुनीनांभावितात्मनाम् ॥ उत्ततारस्थात्तूर्णंदर्शनाकांक्षयानृपः ॥ २४ ॥ यदानिरगमत्तत्रभृत्यद्वयसमन्वितः ॥ वेदपाठयुतान्वीक्ष्यमुनीनुद्यमसंस्थितः॥२५॥कृतांजलिपुटःस्वामिन्संस्थितोऽथजयद्रथः ॥ आश्रमेमुनिभिर्जुष्टेभूपतिःसंविवेशह ॥ २६ ॥ तत्रोपविष्टंराजानंद्रष्टुकामाःस्त्रियस्तदा ॥ आययुर्मुनिभार्याश्चकोऽयमित्यब्रुवन्नृपम् ॥२७॥ तासांमध्येवरारोहायाज्ञसेनीसमागता ॥ जयद्रथेनदृष्टासारूपेणश्रीरिवापरा ॥ २८ ॥ तांविलोक्यासितापांगींदेवकन्यामिवापराम् ॥ पप्रच्छनृपतिर्धौम्यंकेयंश्यामावरानना ॥ २९ ॥ भार्याकस्यसुताकस्यनाम्नाकावरवर्णिनी ॥ रूपलावण्यसंयुक्ताशचीवसुधांगता ॥ ३० ॥ वर्बूलवनमध्यस्थालवंगलतिकायथा ॥ राक्षसीवृंदगानूनंरंभेवाऽऽभातिभामिनी ॥ ३१ ॥ सत्यंवदमहाभागकस्येयंवल्लभाऽबला ॥ राजपत्नीवचाभातिनैषामुनिवधूर्द्विज ॥ ३२ ॥ धौम्यउवाच ॥ पांडवानांप्रियाभार्याद्रौपदीशुभलक्षणा ॥ पांचालीसिंधुराजेंद्रवसत्यत्रवराश्रमे ॥३३॥ जयद्रथउवाच ॥ क्वगताःपांडवाःपंचशूराःसंप्रतिविश्रुताः ॥ वसंत्यत्रवनेवीरावीतशोकामहाबलाः ॥ ३४ ॥ धौम्यउवाच ॥ मृगयार्थंगताःपंचपांडवारथसंस्थिताः ॥ आगमिष्यंतिमध्याह्नेमृगानादायपार्थिवाः ॥ ३५ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यउदतिष्ठदसौनृपः ॥ द्रौपदीसन्निधौगत्वाप्रणम्येदमुवाचह ॥ ३६ ॥

॥ २५ ॥ स्वामिन्हेभारद्वाज ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ वर्बूलाःकंटकवृक्षाः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ प्रपतंतिनरकेइतिशेषः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ सर्वोव्यवहारोलोभमूलकएवेतिदर्शयति । अन्यस्यानीयतेइति ॥ तेदेवाअन्यस्यपुरुषस्यवित्तमानीयतेभ्यःप्रयच्छंति मनीषितंधनंवाणिज्यादिव्यवहारेणवातस्माद्देवाअपिपरस्वादानतत्पराएवेत्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ग्रहणकालइति ॥

कुशलंतेवरारोहेकगताःपतयश्चते ॥ एकादशगतान्यद्यवर्षाणिचवनेकिल ॥ ३७ ॥ द्रौपदीतुतदोवाचस्वस्तितेऽस्तुनृपात्मज ॥ विश्रमस्वाश्रमाभ्याशे क्षणादायांतिपांडवाः ॥ ३८ ॥ एवंब्रुवंत्यांतस्यांतुलोभाविष्टःसभूपतिः ॥ जहारद्रौपदींवीरोऽनादृत्यमुनिसत्तमान् ॥ ३९ ॥ कस्यचिन्नैवविश्वासःकर्तव्यःसर्वथाबुधैः ॥ कुर्वन्दुःखमवाप्नोतिदृष्टांतस्त्वत्रवैबलिः ॥ ४० ॥ वैरोचनसुतःश्रीमान्धर्मिष्ठःसत्यसंगरः ॥ यज्ञकर्ताचदाताचशरण्यःसाधुसंमतः ॥ ॥ ४१ ॥ नाधर्मेनिरतःक्वापिप्रह्लादस्यचपौत्रकः ॥ एकोनशतयज्ञान्वैसचकारसदक्षिणान् ॥ ४२ ॥ सत्त्वमूर्तिःसदाविष्णुःसेव्यःसयोगिनामपि ॥ निर्विकारोऽपिभगवान्देवकार्यार्थसिद्धये ॥ ४३ ॥ कश्यपाच्चसमुद्भूतोविष्णुःकपटवामनः ॥ राज्यंछलेनहृतवान्महींचैवससागराम् ॥ ४४ ॥ सोऽभवत्सत्यवाग्राजाबलिर्वैरोचनिस्तदा ॥ कपटंकृतवान्विष्णुरिंद्रार्थेतुमयाश्रुतम् ॥ ४५ ॥ अन्यःकिंनकरोत्येवंकृतंवैसत्त्वमूर्तिना ॥ वामनंरूपमास्थाययज्ञपातंचिकीर्षता ॥ ४६ ॥ नचविश्वसितव्यंवैकदाचित्केनचित्तथा ॥ लोभश्चेतसिचेत्स्वामिन्कीदृक्पापकृतंभयम् ॥ ४७ ॥ लोभाहताःप्रकुर्वंतिपापानिप्राणिनःकिल ॥ परलोकाद्भयंनास्तिकस्यचित्कर्हिचिन्मुने ॥४८॥ मनसाकर्मणावाचापरस्वादानहेतुतः ॥ प्रपतंतिनराःसम्यग्लोभोपहतचेतसः ॥ ४९॥ देवानाराध्यसततंवांछंतिचधनंनराः ॥ नदेवास्तत्करेकृत्वासमर्थादातुमंजसा ॥ ५० ॥ अन्यस्यानीयतेवित्तंप्रयच्छंतिमनीषितम् ॥ वाणिज्येनाथदानेनचौर्येणापिबलेनवा ॥ ५१ ॥ विक्रयार्थंगृहीत्वाचधान्यवस्त्रादिकंबहु ॥ देवानर्चयतेवैश्योमहर्द्धिर्मेभवेदिति ॥५२॥ नात्रकिंपरवित्तेच्छावाणिज्येनपरंतप ॥ ग्रहणकालेतुसंप्राप्तेमहर्घंचापिकांक्षति ॥ ५३ ॥ एवंहिप्राणिनःसर्वेपरस्वादानतत्पराः ॥ वर्ततेसततंब्रह्मन्विश्वासःकीदृशःपुनः ॥ ५४॥ वृथातीर्थंवृथादानंवृथाऽध्ययनमेवच ॥ लोभमोहवृतानांवैकृतंतदकृतंभवेत् ॥५५॥ तस्मादेनंमहाभागविसर्जयगृहंप्रति ॥ सपुत्राऽहंवसिष्यामिजानकीवद्द्विजोत्तम॥५६॥इत्युक्तोऽसौमुनिस्तावद्गत्वायुधाजितंनृपम् ॥ उवाचवचनंराज्ञेभारद्वाजःप्रतापवान् ॥ ५७॥ गच्छराजन्यथाकामंस्वपुरंनृपसत्तम ॥ नेयंमनोरमाऽभ्येतिबालपुत्रासुदुःखिता ॥ ५८॥ युधाजिदुवाच ॥ मुनेमुंचहठंसौम्यविसर्जयमनोरमाम् ॥ नचयास्याम्यहंमुक्तानेष्याम्यद्यबलात्पुनः ॥ ५९ ॥ ऋषिरुवाच॥ नयस्वयदिशक्तिस्तेबलेनाद्यममाश्रमात् ॥ विश्वामित्रोयथाधेनुंवसिष्ठस्यमुनेःपुरा॥६०॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेषोडशोऽध्यायः॥१६॥

यस्माद्यावत्परिमितंवार्धुषिकंग्राह्यंतस्मात्तदपेक्षयाऽधिकंकांक्षति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ विश्वामित्रइति ॥ सयथानीतवांस्तथात्वंनय ॥ तस्यगतिवत्तवापिगतिर्भविष्यतीतितात्पर्यम् ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुविश्वामित्रकथोत्तरम् ॥ कामवीजस्यसंप्राप्तीराजपुत्रस्यकथ्यते ॥ १ ॥ मुनिवाक्यश्रवणोत्तरंराजायत्कृतवांस्तदाह । इत्याकर्ण्येति ॥ अवनीपतिर्युधाजित् ॥ १ ॥ स्व मतमाह । नयामिनेष्यामि ॥२॥ ३ ॥ हन्मिहनिष्यामि ॥ ४ ॥ यतामियत्नंकरिष्यामि ॥ ५ ॥ राज्ञोमतस्यश्रवणानंतरंमंत्रीमुनिनाविश्वामित्रस्यदृष्टांतउक्तस्तदभिप्रायमुपवर्ण्यराजानं साहसान्निवारयतीत्याहसाह । सामिति ॥६॥ दृष्टांतमुपपादयन्दृष्टांतोक्तेरभिप्रायमाह । पुरेति ॥ गाधिराजस्यसुतः ॥७॥ मुनिनावसिष्ठेन ॥ ८ ॥ ९ ॥ नंदिन्यासादितंनंदिन्याकामधु

व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यमुनेस्तत्रावनीपतिः॥ मंत्रिवृद्धंसमाहूयपप्रच्छतमतंद्रितः ॥ १ ॥ किंकर्तव्यंसुबुद्धेऽत्रमयाऽद्यवदसुव्रत ॥ बलान्न यामितांकामंसपुत्रांचसुभाषिणीम् ॥ २ ॥ रिपुरल्पोपिनोपेक्ष्यःसर्वथाशुभमिच्छता ॥ राजयक्ष्मेवसंवृद्धोमृत्यवेपरिकल्पयेत् ॥ ३ ॥ नात्रसैन्यंनयो द्धाऽस्तियोमामत्रनिवारयेत् ॥ गृहीत्वाहन्मितंतत्रदौहित्रस्यरिपुंकिल ॥ ४ ॥ निष्कंटकंभवेद्राज्यंयताम्यद्यबलादहम् ॥ हतेसुदर्शनेनूनंनिर्भयोऽसौभवे दिति ॥५॥ प्रधानउवाच ॥ साहसंनहिकर्तव्यंश्रुतंराजन्मुनेर्वचः ॥ विश्वामित्रस्यदृष्टांतःकथितस्तेनमारिष ॥ ६ ॥ पुरागाधिसुतःश्रीमान्विश्वामित्रोऽति विश्रुतः ॥ विचरन्सनृपश्रेष्ठोवसिष्ठाश्रममभ्यगात् ॥ ७ ॥ नमस्कृत्यचतंराजाविश्वामित्रःप्रतापवान् ॥ उपविष्टोनृपश्रेष्ठोमुनिनादत्तविष्टरः ॥ ८ ॥ निमंत्रि तोवसिष्ठेनभोजनायमहात्मना ॥ ससैन्यश्चस्थितोराजागाधिपुत्रोमहायशाः ॥ ९ ॥ नंदिन्याऽऽसादितंसर्वंभक्ष्यभोज्यादिकंचयत् ॥ भुक्त्वाराजाससैन्यश्च वांछितंतत्रभोजनम् ॥ १० ॥ प्रतापंतंचनंदिन्याःपरिज्ञायसपार्थिवः ॥ ययाचेनंदिनींराजावसिष्ठंमुनिसत्तमम् ॥ ११ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ मुनेधेनुसहस्रं तेघटोघ्नीनांददाम्यहम् ॥ नंदिनींदेहिमेधेनुंप्रार्थयामिपरंतप ॥ १२ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ होमधेनुरियंराजन्नददामिकथंचन ॥ सहस्रंचापिधेनूनांतवेदंतवतिष्ठ तु ॥ १३ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ अयुतंवाऽथलक्षंवाददामिमनसेप्सितम् ॥ देहिमेनंदिनींसाधोग्रहीष्यामिबलादथ ॥ १४ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ कामंगृहाण नृपतेबलादद्ययथारुचि ॥ नाहंददामितेराजन्स्वेच्छयानंदिनींगृहात् ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वानृपतिर्भृत्यानादिदेशमहाबलान् ॥ नयध्वंनंदिनींधेनुंबलदर्पसुसं स्थिताः ॥१६॥ तेभृत्याजगृहुर्धेनुंहठादाक्रम्ययंत्रिताम् ॥ वेपमानामुनिंप्राहसुरभिःसाश्रुलोचना ॥ १७ ॥ मुनेत्यजसिमांकस्मात्कर्षयंतिसुयंत्रिताम् ॥ मुनि स्तांप्रत्युवाचेदंत्यजेनाहंसुदुग्धदे ॥ १८ ॥ बलान्नयतिराजाऽसौपूजितोऽद्यमयाशुभे ॥ किंकरोमिनचेच्छामित्यक्तुंत्वांमनसाकिल ॥ १९ ॥ इत्युक्तामुनिनाधेनुः क्रोधयुक्तावभूवह ॥ हंभारवंचकाराशुक्रूरशब्दंसुदारुणम् ॥ २० ॥ उद्गतास्तत्रदेहात्तुदैत्याघोरतरास्तदा ॥ सायुधास्तिष्ठतिष्ठेतिब्रुवंतःकवचावृताः ॥२१॥

कन्ययास्वस्तनेभ्योनिष्कास्यदत्तंवांछितंयस्ययदपेक्षितंतत् ॥ १० ॥ ११ ॥ घटोघ्नीनांघटवद्दुधोयासांगवांतासांबहुदुग्धवतीनामितितात्पर्यम् ॥ १२ ॥ नददामिनदास्यामि तवेदंतवैवति ष्ठतु ॥ १३ ॥ १४ ॥ गृहान्निष्कास्येत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ [illegible] ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ हंभेतिगवांशब्दस्यानुकरणम् ॥ २० ॥ २१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ तथाहेराजन्मुनिनादृष्टांतोदत्तोऽयंतस्येदंतात्पर्यं त्वयाऽपिसाहसंक्रियतेचेत्तवापितथैवावस्थाभविष्यतीति यस्मादेवंतस्मादित्याह । तस्मादिति ॥ २५ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ उपचयंवृद्धिम् ॥ ३३ ॥ एकस्मिन्निति ॥ कस्मिंश्चित्समयेविदल्लंमंत्रिणंमुनिपुत्रोहास्यवशात्क्लीवेतिनाम्नाऽमंत्रयत् ॥ ३४ ॥ सुदर्शन

सैन्यंसर्वंहतंतैस्तुनंदिनीप्रतिमोचिता ॥ एकाकीनिर्गतोराजाविश्वामित्रोऽतिदुःखितः ॥ २२ ॥ हंतपापोऽतिदीनात्मानिंदन्क्षात्रबलंमहत् ॥ ब्राह्मंबलंदुराराध्यंमत्वातपसिसंस्थितः ॥ २३ ॥ तप्त्वावहूनिवर्षाणितपोघोरंमहावने ॥ ऋषित्वंप्रापगाधेयस्त्यक्त्वाक्षात्रंविधिंपुनः ॥ २४ ॥ तस्मात्त्वमपिराजेंद्रमाकृथावैरमद्भुतम् ॥ कुलनाशकरंनूनंतापसैःसहसंयुगम् ॥ २५ ॥ मुनिवर्यंव्रजाद्यत्वंसमाश्वास्यतपोनिधिम् ॥ सुदर्शनोऽपिराजेंद्रतिष्ठत्वत्रयथासुखम्॥२६॥ बालोऽयंनिर्धनःकिंतेकरिष्यतिनृपाहितम् ॥ वृथातेवैरभावोऽयमनाथेदुर्बलेशिशौ ॥ २७ ॥ दयासर्वत्रकर्तव्यादैवाधीनमिदंजगत् ॥ ईर्ष्ययाकिंनृपश्रेष्ठयद्भाव्यंतद्भविष्यति ॥ २८ ॥ वज्रंतृणायतेराजन्दैवयोगान्नसंशयः ॥ तृणंवज्रायतेक्वापिसमयेदैवयोगतः ॥२९॥ शशकोहंतिशार्दूलंमशकोवैयथागजम् ॥ साहसंमुंचमेधाविन्कुरुमेवचनंहितम् ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्ययुधाजिन्नृपसत्तमः ॥ प्रणम्यतंमुनिंमूर्ध्नाजगामस्वपुरंनृपः ॥ ३१ ॥ मनोरमाऽपिस्वस्थाभूदाश्रमेतत्रसंस्थिता ॥ पालयामासपुत्रंतंसुदर्शनमृतव्रतम् ॥ ३२ ॥ दिनेदिनेकुमारोऽसौजगामोपचयंततः ॥ मुनिबालगतःक्रीडन्निर्भयःसर्वतःशुभः ॥ ३३ ॥ एकस्मिन्समयेतत्रविदल्लंसमुपागतम् ॥ क्लीवेतिमुनिपुत्रस्तमामंत्रयत्तदंतिके ॥३४॥ सुदर्शनस्तुतच्छ्रुत्वादधारैकाक्षरंस्फुटम् ॥ अनुस्वारायुतंतच्चप्रोवाचातिपुनःपुनः ॥ ३५ ॥ बीजंवैकामराजाख्यंगृहीतंमनसातदा ॥ जजापबालकोऽत्यर्थंधृत्वाचेतसिसादरम् ॥ ३६ ॥ भावियोगान्महाराजकामराजाख्यमद्भुतम् ॥ स्वभावेनैवतेनेत्थंगृहीतंबालकेनवै ॥ ३७॥ तदाऽसौपंचमेवर्षेप्राप्यमंत्रमनुत्तमम् ॥ ऋषिच्छंदोविहीनंचध्यानन्यासविवर्जितम् ॥ ३८ ॥ व्रजपन्मनसानित्यंक्रीडत्यपिस्वपित्यपि ॥ विसस्मारनतंमंत्रंज्ञात्वासारमितिस्वयम् ॥३९॥ वर्षेचैकादशेप्राप्तेकुमारोऽसौनृपात्मजः ॥ मुनिनाचोपनीतोऽथवेदमध्यापितस्तथा ॥ ४० ॥ धनुर्वेदंतथासांगंनीतिशास्त्रंविधानतः ॥ अभ्यस्ताः सकलाविद्यास्तेनमंत्रबलादिव॥४१॥ कदाचित्सोऽपिप्रत्यक्षंदेवीरूपंददर्शह ॥ रक्तांबरंरक्तवर्णंरक्तसर्वांगभूषणम् ॥ ४२ ॥ गरुडेवाहनेसंस्थांवैष्णवींशक्तिमद्भुताम् ॥ दृष्ट्वाप्रसन्नवदनःसबभूवनृपात्मजः ॥ ४३ ॥ वनेतस्मिन्स्थितः सोऽथसर्वविद्यार्थतत्त्ववित् ॥ मातरंसेवमानस्तुविजहारनदीतटे ॥ ४४ ॥

स्त्विति ॥ तद्वाक्यंसुदर्शनःश्रुत्वातस्यनाम्नआद्यमेकाक्षरंप्रारब्धवशादनुस्वारायुतमनुस्वारेणाविहीनमपिचित्तेदधारस्थापयामास पुनःपुनःप्रोवाचजजापचेत्यर्थः ॥ तेनबकारेउक्तेप्युपांशूच्चारणाद्ककारमश्रुत्वाक्लीत्येवनामचमत्कृतमस्तीत्यभिप्रायेणजजापेत्यर्थः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ वरंवरययत्तवेष्टंतद्वरयप्रार्थय ॥ अथचममभक्तःसुदर्शनस्तवकामप्रदःपतिरस्तुमेवचनात् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४॥५५॥५६॥५७॥
॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ कौतुकात्सर्वगुणानामेकमाकरंद्रष्टुंतेनैवविधात्रैकस्मिन्सुदर्शनेसर्वेगुणानिहिताइत्यहंमन्ये ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इतिश्रीभागवततिलकेतृ०सप्तदशोऽध्यायः॥१७॥ ॥

शरासनंचसंप्राप्तंविशिखाश्चशिलाशिताः ॥ तूणीरंकवचंतस्मैदत्तंचांबिकयावने ॥४५॥ एतस्मिन्समयेपुत्रीकाशीराजस्यसुप्रिया॥नाम्नाशशिकलादिव्या
सर्वलक्षणसंयुता ॥ ४६ ॥ शुश्रावनृपपुत्रंतंवनस्थंचसुदर्शनम् ॥ सर्वलक्षणसंपन्नंशूरंकाममिवापरम् ॥ ४७ ॥ वंदीजनमुखाच्छ्रुत्वाराजपुत्रंसुसंमतम् ॥
चकमेमनसातंवैवरंवरयितुंधिया॥४८॥स्वप्नेतस्याःसमागम्यजगदंबानिशांतरे ॥ उवाचवचनंचेदंसमाश्वास्यसुसंस्थिता॥४९॥वरंवरयसुश्रोणिममभक्तः
सुदर्शनः॥सर्वकामप्रदस्तेऽस्तुवचनान्ममभामिनि ॥५०॥ एवंशशिकलादृष्ट्वास्वप्नेरूपंमनोहरम्॥अंबायावचनंस्मृत्वाजहर्षभृशमानिनी॥५१॥उत्थितासा
मुदायुक्तापृष्टामात्रापुनःपुनः॥प्रमोदेकारणंबालानोवाचातित्रपान्विता ॥५२॥ जहासमुदमापन्नास्मृत्वास्वप्नंमुहुर्मुहुः ॥ सखींप्राहतदाऽन्यांवैस्वप्नवृत्तंसवि
स्तरम्॥५३॥कदाचित्साविहारार्थमवापोपवनंशुभम्॥सखीयुक्ताविशालाक्षीचंपकैरुपशोभितम् ॥५४॥ पुष्पाणिचिन्वतीबालाचंपकाधःस्थिताऽबला ॥
अपश्यद्ब्राह्मणंमार्गेआगच्छंतंत्वरान्वितम्॥५५॥तंप्रणम्यद्विजंश्यामाबभाषेमधुरंवचः॥कुतोदेशान्महाभागकृतमागमनंत्वया ॥५६॥ द्विजउवाच ॥ भार
द्वाजाश्रमाद्बालेनूनमागमनंमम ॥ जातंवैकार्ययोगेनकिंपृच्छसिवदस्वमे ॥५७॥शशिकलोवाच ॥ तत्राश्रमेमहाभागवर्णनीयंकिमस्तिवै॥लोकातिगंविशे
षेणप्रेक्षणीयतमंकिल ॥ ५८ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ध्रुवसंधिसुतःश्रीमानास्तेसुदर्शनोनृपः ॥ यथार्थनामासुश्रोणिवर्ततेपुरुषोत्तमः ॥ ५९ ॥ तस्यलोचनम
त्यंतंनिष्फलंप्रतिभातिमे ॥ येनदृष्टोनवामोरुकुमारस्तुसुदर्शनः ॥६०॥ एकत्रनिहिताधात्रागुणाःसर्वेसिसृक्षुणा ॥ गुणानामाकरंद्रष्टुंमन्येतेनैवकौतुकात्
॥ ६१ ॥ तवयोग्यःकुमारोऽसौभर्ताभवितुमर्हति ॥ योगोऽयंविहितोप्यासीन्मणिकांचनयोरिव ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधे
सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वातद्वचनंश्यामाप्रेमयुक्तावभूवह ॥ प्रतस्थेब्राह्मणस्तस्मात्स्थानादुक्त्वासमाहितः ॥ १ ॥
सातुपूर्वानुरागाद्वैमग्नाप्रेम्णाऽतिचंचला ॥ कामबाणहतेवासगतेतस्मिन्द्विजोत्तमे ॥ २ ॥ अथकामार्दिताप्राहसखींछंदोनुवर्तिनीम् ॥ विकारश्चसमुत्पन्नो
देहेयच्छ्रवणादनु ॥ ३ ॥ अज्ञातरसविज्ञानंकुमारंकुलसंभवम् ॥ दुनोतिमदनःपापःकिंकरोमिक्वयामिच ॥ ४ ॥

पंचाधिकैश्चपंचाशत्पद्मैरथनिजांसुताम् ॥ विवाहयितुमुद्युक्तःकाशीराजइतीर्यते ॥ १ ॥ इत्थंशशिकलांसुदर्शनसमाचारंब्राह्मणउक्त्वागतवानित्याह। श्रुत्वेति ॥ १ ॥ २ ॥ यच्छ्रवणादनु
देहेविकारउत्पन्नइतिसखींप्राहेत्यन्वयः ॥ ३ ॥ अज्ञातंरसविज्ञानंयस्य ॥ एतस्यशृंगाररसविज्ञानंलोकैर्नज्ञातमित्यर्थः॥ अधुनैवसंप्राप्तयौवनइत्यर्थः ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५ ॥ ६ ॥ शंकल्याणंहर्म्येगृहेनवनेऽपिनदीर्घिकायांवाप्यामपिन ॥ ७ ॥ नप्रीणयंतिएतेउपचाराइत्यर्थः ॥ ८ ॥ शठइत्यनेनातिप्रेमविरहाकुलचित्तत्वंसूचितम् ॥ प्रयामियास्यामि परंतुकुललज्जायाः सकाशाद्भीतास्मि तथाऽपिपितुःपरतंत्राऽस्मिततोनमयागंतुंशक्यतइतिभावः ॥ ९ ॥ यद्यद्यमेसुदर्शनेनैवविवाहंकरिष्यतितर्हिसुदर्शनायराजपुत्रायकाममैथुनंदास्यामि ॥ १० ॥ संत्यन्यइति ॥ नमेतेमताइतिशेषः ॥ ११ ॥ १२ ॥ तस्याश्चित्तेसुसंस्थितइतिइयंयाचित्तस्यैवंस्थितिःसावाग्बीजस्यजपंकरोतियाशशिकलातज्जपाद्यासिद्धिस्तस्याःसकाशा

स्वप्नेषुवामयादृष्टःपंचवाणइवापरः ॥ तपतेमेमनोऽत्यर्थंविरहाकुलितंमृदु ॥ ५ ॥ चंदनंदेहलग्नंमेविषवद्भातिभामिनि ॥ स्रगियंसर्पवच्चैवचंद्रपादाश्चवह्निवत् ॥ ६ ॥ नचहर्म्येवनेशंमेदीर्घिकायांनपर्वते ॥ नदिवानिशायांवानसुखंसुखसाधनैः ॥ ७ ॥ नशय्यानचतांबूलंनगीतंनचवादनम् ॥ प्रीणयंतिमनोमेऽद्यनतृप्तेममलोचने॥८॥प्रयाम्यद्यवनेतत्रयत्रासौवर्ततेशठः ॥ भीतास्मिकुललज्जायाःपरतंत्रापितुस्तथा ॥ ९ ॥ स्वयंवरंपितामेऽद्यनकरोतिकरोमिकिम् ॥ दास्यामिराजपुत्रायकामंसुदर्शनायवै ॥ १० ॥ संत्यन्येपृथिवीपालाःशतशःसंभृतर्द्धयः ॥ रमणीयानमेतेऽद्यराज्यहीनोप्यसौमतः ॥ ११ ॥ व्यासउवाच ॥ एकाकीनिर्धनश्चैववलहीनःसुदर्शनः॥वनवासीफलाहारस्तस्याश्चित्तेसुसंस्थितः॥१२॥वाग्बीजस्यजपात्सिद्धिस्तस्याएषाप्युपस्थिता ॥ सोऽपिध्यानपरोऽत्यंतंजजापमंत्रमुत्तमम् ॥ १३ ॥ स्वप्नेपश्यत्यसौदेवींविष्णुमायामखंडिताम् ॥ विश्वमातरमव्यक्तांसर्वसंपत्करांबिकाम् ॥ १४ ॥ शृंगवेरपुराध्यक्षोनिषादःसमुपेत्यतम् ॥ ददौरथवरंतस्मैसर्वोपस्करसंयुतम् ॥ १५ ॥ चतुर्भिस्तुरगैर्युक्तंपताकावरमंडितम् ॥ जैत्रंराजसुतंज्ञात्वाददौचोपायनंतदा ॥१६॥ सोऽपिजग्राहतंप्रीत्यामित्रत्वेनसुसंस्थितम् ॥ वन्यैर्मूलफलैःसम्यगर्चयामासशंबरम् ॥ १७ ॥ कृतातिथ्येगतेतस्मिन्निषादाधिपतौतदा ॥ मुनयःप्रीतियुक्तास्तेतमूचुस्तापसामिथः॥१८॥राजपुत्रध्रुवंराज्यंप्राप्स्यसित्वंचसर्वथा॥स्वल्पैरहोभिरव्यग्रःप्रतापान्नात्रसंशयः॥१९॥प्रसन्नातेऽबिकादेवीवरदाविश्वमोहिनी ॥ सहायस्तुसुसंपन्नोनचिंतांकुरुसुव्रत ॥ २० ॥ मनोरमांतथोचुस्तेमुनयःसांशितव्रताः॥पुत्रस्तेऽद्यधराधीशोभविष्यतिशुचिस्मिते ॥ ॥२१॥सातानुवाचतन्वंगीवचनंवोऽस्तुसत्फलम्॥दासोऽयंभवतांविप्राःकिंचित्रंसदुपासनात् ॥२२॥ नसैन्यंसचिवाःकोशोनसहायश्चकश्चन॥केनयोगेनपुत्रोमेराज्यंप्राप्तुमिहार्हति॥२३॥आशीर्वादैश्चवोनूनंपुत्रोऽयंमेमहीपतिः॥भविष्यतिनसंदेहोभवंतोमंत्रवित्तमाः ॥ २४ ॥ व्यासउवाच॥रथारूढःसमेधावीयत्रयातिसुदर्शनः॥अक्षौहिणीसमावृतइवाऽऽभातिसतेजसा ॥ २५ ॥ प्रतापोमंत्रबीजस्यनान्यःकश्चनभूपते ॥ एवंवैजपतस्तस्यप्रीतियुक्तस्यसर्वथा ॥२६॥

देवोपस्थिता ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ जैत्रंजयकारिणम् ॥ १६ ॥ तंरथमुपायनभूतंजग्राहमित्रत्वेनस्थितंशंबरंनिषादमर्चयामास ॥ १७ ॥ तंराजपुत्रम् ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ अन्यत्साधनंमत्पुत्रस्यराज्यप्राप्तौनदृश्यतेभवतामाशीर्वादैरेवकेवलंभवेत् ॥ २४ ॥ रथारूढइति ॥ एकएवसन्नक्षौहिणीसमावृतइवभाति ॥ २५ ॥ कुतएवमितिचेन्मंत्रमहिमाऽयमित्याह। प्रतापइति ॥ एवंवैएवंफलंजातमित्यर्थः ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

गुरोर्मंत्रमप्राप्यजपतएवंसिद्धिरनुभूतायस्तुसद्गुरोर्बीजंकामराजाख्यमद्भुतंसंप्राप्यजपेत्ससर्वान्कामानवाप्नुयादित्याह । संप्राप्येति ॥ २७ ॥ प्रसंगाज्जनमेजयायश्रीदेवीमहिमानमनुवदति व्यासः। नतदस्तीति ॥ शिवायाःसकाशादित्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ बुद्धिःकीर्तिरिति॥इत्यादिरूपैःसर्वेषांकल्याणकर्त्रीप्रत्यक्षंस्पष्टमेवविभासते ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ सुदर्शनेनेति ॥ तस्मात्तस्य कथमेवंफलंनस्यादित्याभिप्रायः ॥ ३५ ॥ ब्रह्मेति ॥ ब्रह्मरूपिण्याःसंविदएवदेवीपदवाच्यत्वमितिभावः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ सर्वेवैदेवादेवीमुपतस्थुःकासित्वं

संप्राप्यसद्गुरोर्बीजंकामराजाख्यमद्भुतम् ॥ जपेद्यस्तुशुचिःशांतःसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ २७॥ नतदस्तिपृथिव्यांवादिविवाऽपिसुदुर्लभम् ॥ प्रसन्नायाः शिवायाश्चयदप्राप्यंनृपोत्तम ॥२८॥ तेमंदास्तेऽतिदुर्भाग्यारोगैस्तेसमभिद्रुताः ॥ येषांचित्तेनविश्वासोभवेदंबार्चनादिषु॥ २९॥ यामातासर्वदेवानांयु गादौपरिकीर्तिता॥आदिमातेतिविख्यातानाम्नातेनकुरूद्वह ॥३०॥ बुद्धिःकीर्तिर्धृतिर्लक्ष्मीःशक्तिःश्रद्धामतिःस्मृतिः॥ सर्वेषांप्राणिनांसावैप्रत्यक्षंवैविभास ते ॥ ३१ ॥ नजानंतिनरायेवैमोहितामाययाकिल ॥ नभजंतिकुतर्कज्ञादेवींविश्वेश्वरींशिवाम् ॥ ३२॥ ब्रह्माविष्णुस्तथाशंभुर्वासवोवरुणोयमः ॥ वायुर ग्निःकुबेरश्चत्वष्टापूषाश्विनौभगः॥३३॥आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवामरुद्गणाः ॥ सर्वेध्यायंतितांदेवींसृष्टिस्थित्यंतकारिणीम् ॥३४॥ कोनसेवेतविद्वान्वै तांशक्तिंपरमात्मिकाम् ॥ सुदर्शनेनसाज्ञातादेवीसर्वार्थदाशिवा ॥ ३५ ॥ ब्रह्मैवसाऽतिदुष्प्रापाविद्याऽविद्यास्वरूपिणी॥योगगम्यापराशक्तिर्मुमुक्षूणांचव ल्लभा ॥ ३६ ॥ परमात्मस्वरूपंकोवेत्तुमर्हतितांविना ॥ यासृष्टिंत्रिविधांकृत्वादर्शयत्यखिलात्मने ॥३७॥ सुदर्शनस्तुतांदेवींमनसापरिचिंतयन् ॥ राज्य लाभात्परंप्राप्यसुखंवैकाननेस्थितः ॥३८॥ साऽपिचंद्रकलाऽत्यर्थंकामबाणप्रपीडिता ॥ नानोपचारैरनिशंदधारदुःखितंवपुः ॥ ३९ ॥ तावत्तस्याःपि ताज्ञात्वाकन्यांपुत्रवरार्थिनीम् ॥ सुबाहुःकारयामासस्वयंवरमतंद्रितः ॥ ४० ॥ स्वयंवरस्तुत्रिविधोविद्वद्भिःपरिकीर्तितः ॥ राज्ञांविवाहयोग्योवैनान्येषां कथितःकिल ॥४१॥ इच्छास्वयंवरश्चैकोद्वितीयश्चपणाभिधः ॥ यथारामेणभग्नंवैत्र्यंबकस्यशरासनम्॥४२॥तृतीयःशौर्यशुल्कश्चशूराणांपरिकीर्तितः॥ इच्छास्वयंवरंतत्रचकारनृपसत्तमः ॥ ४३ ॥ शिल्पिभिःकारितामंचाःशुभैरास्तरणैर्युताः॥ ततश्चविविधाकाराःसुकृताःसभ्यमंडपाः ॥४४॥ एवंकृतेऽतिसं भारेविवाहार्थंसुविस्तरे॥ सखींशशिकलाप्राहदुःखिताचारुलोचना॥४५॥इदंमेमातरंब्रूहित्वमेकांतेवचोमम॥ मयावृतःपतिश्चित्तेध्रुवसंधिसुतःशुभः॥४६॥

महादेवीसाब्रवीदहंब्रह्मरूपिणीमत्तःप्रकृतिपुरुषात्मकंजगदिति ॥ मुमुक्षूणांचवल्लभेति ॥ मुमुक्षवोहिसर्वंविहायमहाप्रेम्णास्वात्मरूपांसंविदमेवपरिशीलयंतितस्मात्तेषांप्रियेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ मायाविशिष्टंब्रह्मैवदेवी तत्रब्रह्मभागरूपेणवर्णनंकृत्वामायाभागरूपेणापिवर्णयतिपरमात्मस्वरूपमिति ॥ सर्वपुराणतंत्रादिषुवेदेषुचेत्थमेवरीतिः ॥ देव्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपत्वात्क्वचिन्मा यौपसर्जनब्रह्मरूपत्वेनवर्णनंक्वचिद्ब्रह्मोपसर्जनमायारूपत्वेनवर्णनमितीदंचास्माभिरसकृदुक्तंनाविस्मर्तव्यम् ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ शौर्यशुल्कश्चशौर्यशुल्कंयस्मि न्सइत्यर्थः ॥ यस्यशौर्यंवर्ततेतेनसर्वान्राज्ञोजित्वाकन्याहरणीयेति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ सूनृतमित्यपिपाठः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ब्रहीति ॥ अस्मिन्स्वयंवरेस्थितिमंतःप्रतिष्ठिताराजानआगमिष्यंतितस्मादेतादृशंसर्वेषांविप्रियंवाक्यंकदापित्वयानवक्तव्यमितिशेषः। इतिपुत्रींब्रूहीति ॥५५॥ इतिश्रीदे० तृ० अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुसुदर्शनयुतानृपाः ॥ स्वयंवरेसमाजग्मुरितिसम्यक्कथोच्यते॥१॥

नान्यंवरंवरिष्यामितमृतेवैसुदर्शनम् ॥ समेभर्तानृपसुतोभगवत्याप्रतिष्ठितः ॥ ४७ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तासासखीगत्वामातरंप्राहसत्वरा ॥ वैदर्भीविजनेवाक्यंमधुरंमंजुभाषिणी ॥ ४८ ॥ पुत्रीतेदुःखिताप्राहसाध्वित्वांमन्मुखेनयत् ॥ शृणुत्वंकुरुकल्याणितद्धितंत्वरिताऽधुना ॥ ४९ ॥ भारद्वाजाश्रमेपुण्येध्रुवसंधिसुतोऽस्तियः ॥ समेभर्तावृतश्चित्तेनान्यंभूपंवृणोम्यहम् ॥ ५० ॥ व्यासउवाच ॥ राज्ञीतद्वचनंश्रुत्वास्वपतौगृहमागते ॥ निवेदयामासतदापुत्रीवाक्यंयथातथम् ॥ ५१ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजाविस्मितःप्रहसन्मुहुः ॥ भार्यामुवाचवैदर्भींसुबाहुस्तुऋतंवचः ॥ ५२ ॥ सुध्रुजानासिबालोऽसौराज्यान्निष्कासितोवने ॥ एकाकीसहमात्रावैवसतेनिर्जनेवने ॥ ५३ ॥ तत्कृतेनिहतोराजावीरसेनोयुधाजिता ॥ सकथंनिर्धनोभर्तायोग्यःस्याच्चारुलोचने ॥ ५४ ॥ ब्रूहिपुत्रींततोवाक्यंकदाचिदपिविप्रियम् ॥ आगमिष्यंतिराजानःस्थितिमंतः स्वयंवरे ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ भर्त्रासाऽभिहितावालांपुत्रींकृत्वांऽकसंस्थिताम् ॥ उवाचवचनंश्लक्ष्णंसमाश्वास्यशुचिस्मिताम् ॥ १ ॥ किंवृथासुदतित्वंहिविप्रियंममभाषसे ॥ पितातेदुःखमाप्नोतिवाक्येनानेनसुव्रते ॥ २ ॥ सुदर्शनोऽतिदुर्भाग्योराज्यभ्रष्टोनिराश्रयः ॥ बलकोशविहीनश्चपरित्यक्तस्तुबांधवैः ॥ ३ ॥ मात्रासहवनंप्राप्तःफलमूलाशनःकृशः ॥ नतेयोग्योवरोऽयंवैवनवासीचदुर्भगः ॥ ४ ॥ राजपुत्राःकृतप्रज्ञारूपवंतःसुसंमताः ॥ तवार्हाःपुत्रिसंत्यन्येराजचिह्नैरलंकृताः ॥ ५ ॥भ्राताऽस्यवर्ततेकांतःसराज्यंकोसलेषुवै ॥करोतिरूपसंपन्नःसर्वलक्षणसंयुतः ॥ ६ ॥ अन्यच्चकारणंसुभ्रुशृणुयच्चमयाश्रुतम् ॥ युधाजित्सततंतस्यवधकामोऽस्तिभूमिपः ॥७॥ दौहित्रःस्थापितस्तेनराज्येकृत्वाऽतिसंगरम् ॥ वीरसेनंनृपंहत्वासंमंत्र्यसाचिवैःसह ॥ ८ ॥ भारद्वाजाश्रमंप्राप्तंहंतुकामःसुदर्शनम् ॥ मुनिनावारितःपश्चाज्जगामनिजमंदिरम् ॥ ९ ॥ शशिकलोवाच ॥ मातर्ममेप्सितःकामेवनस्थोऽपिनृपात्मजः ॥ शर्यातिवचनेनैवसुकन्याचपतिव्रता ॥ १० ॥ च्यवनंचयथाप्राप्यपतिशुश्रूषणेरता ॥ भर्तृशुश्रूषणंस्त्रीणांस्वर्गदंमोक्षदंतथा ॥ ११ ॥

भर्त्रासेति ॥ साराजपत्नीभर्त्राराज्ञेत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ राजचिह्नैश्छत्रचामरादिभिः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ अतिसंगरमतिसंग्रामम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ एवंमातुर्वचनंवाक्यंसुदर्शनप्रत्याख्यानाभिप्रायकंश्रुत्वाशशिकलोवाच। मातर्ममेप्सितइति ॥ कामेमन्मनोरथविषये ॥ तत्रदृष्टांतमाह। शर्यातीति ॥ १० ॥ यथेति ॥ यथाशर्यातेराज्ञोवचनेनसुकन्यानाम्नीशर्यातिसुताच्यवनंवृद्धंपतिंप्राप्यपतिशुश्रूषणंरतातथैवममराज्यादिलोभोनास्तिकिंतुभर्तृशुश्रूषणमेवाभिलाषितंतत्तुममसुदर्शनेपत्यावस्त्येवेतिभावः ॥ भर्तृशुश्रूषणमेवस्त्रीणांपरोधर्मइत्याह ॥ भर्त्रीति ॥ ११ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

किंचसुदर्शनाविषयेममभगवत्याआज्ञाप्यस्तीत्याह ॥ भगवत्येति ॥ समादिष्टंतंसुदर्शनंवरंपतिमृतेइत्यन्वयः ॥ १२॥ संश्रयामिसंश्रयिष्याभि ॥ १३ ॥ प्रत्यादिष्टाप्रत्याख्याता ॥ १४ ॥ अस्मिन्समयेशशिकलायत्कृतवतीतदाह ॥ विवाहस्येति॥ १५॥ १६॥ मदर्थेनमत्प्रयोजनेनस्वयंवरःसंभृतःसंपादितः॥ १७॥ १८॥ हेसुरोपमत्वंभगवत्यास्वप्नेसमादिष्टोदर्शितआज्ञप्तोमयाचित्तेवृतइत्यन्वयः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ वक्तव्योऽसाविति ॥ हेब्रह्मन्मद्वाक्यान्नृपात्मजःसुदर्शनस्त्वयैवंवक्तव्यः ॥ २३ ॥ २४ ॥ तत्रशशिकलायद्देशेतत्रप्रत्यागतः ॥ २५ ॥ मुनिना

अकैतवकृतंनूनंसुखदंभवतिस्त्रियाः ॥ भगवत्यासमादिष्टंस्वप्नेवरमनुत्तमम् ॥ १२॥ तमृतेऽहंकथंचान्यंसंश्रयामिनृपात्मजम् ॥ मच्चित्तभित्तौलिखितोभगवत्यासुदर्शनः ॥ १३ ॥ तंविहायप्रियंकांतंकरिष्येऽहंनचापरम् ॥ व्यासउवाच ॥ प्रत्यादिष्टाऽथवैदर्भीतयाबहुनिदर्शनैः ॥ १४ ॥ भर्तारंसर्वमाचष्टपुत्र्योक्तंवचनंभृशम् ॥ विवाहस्यदिनादर्वागाप्तंश्रुतसमन्वितम् ॥ १५ ॥ द्विजंशशिकलातत्रप्रेषयामाससत्वरम् ॥ यथानवेदमेतातस्तथागच्छसुदर्शनम् ॥ १६ ॥ भारद्वाजाश्रमेब्रूहिमद्वाक्यात्तरसाविभो ॥ पित्रामेसंभृतःकामंमदर्थेनस्वयंवरः ॥ १७ ॥ आगमिष्यंतिराजानोबलयुक्ताह्यनेकशः ॥ मयात्वंवैवृताश्चित्तेसर्वथाप्रीतिपूर्वकम् ॥ १८ ॥ भगवत्यासमादिष्टःस्वप्नेममसुरोपम ॥ विषमाग्निहुताशेवाप्रपतामिप्रदीपिते ॥ १९॥ वरयेत्वदृतेनान्यंपितृभ्यांप्रेरिताऽपिवा ॥ मनसाकर्मणावाचासंवृतस्त्वंमयावरः ॥ २० ॥ भगवत्याःप्रसादेनशर्मावाभ्यांभविष्यति ॥ आगंतव्यंत्वयाऽत्रैवदैवंकृत्वापरंबलम् ॥ २१ ॥ यदधीनंजगत्सर्वंवर्ततेसचराचरम् ॥ भगवत्यायदादिष्टंनतन्मिथ्याभविष्यति ॥ २२ ॥ यद्वशेदेवताःसर्वावर्त्ततेशंकरादयः ॥ वक्तव्योऽसौत्वयाब्रह्मन्नेकांतेवैनृपात्मजः ॥ २३ ॥ यथाभवतिमेकार्यंतत्कर्तव्यंत्वयाऽनघ ॥ इत्युक्त्वादक्षिणांदत्त्वामुनिर्व्यापारितस्तया ॥ २४ ॥ गत्वासर्वंनिवेद्याशुतत्रप्रत्यागतोद्विजः ॥ सुदर्शनस्तुतज्ज्ञात्वानिश्चयंगमनेतदा ॥ २५ ॥ चकारमुनिनातेनप्रेरितःपरमादरात् ॥ व्यासउवाच ॥ गमनायोद्यतंपुत्रंतमुवाचमनोरमा ॥ २६ ॥ वेपमानाऽतिदुःखार्ताजातत्रासाऽश्रुलोचना ॥ कुत्रगच्छसितत्राद्यसमाजेभूभृतांकिल ॥ २७ ॥ एकाकीकृतवैरश्चकिंविचिंत्यस्वयंवरे ॥ युधाजिद्धंतुकामस्त्वांसमेष्यतिमहीपतिः॥ २८॥ नतेऽन्योस्तिसहायश्चतस्मान्मात्रजपुत्रक॥ एकपुत्राऽतिदीनाऽस्मितवाऽऽधारानिराश्रया ॥२९॥ नार्हसित्वंमहाभागनिराशांकर्तुमद्यमाम् ॥ पितामेनिहतोयेनसोऽपितत्राऽऽगतोनृपः ॥ ३० ॥ एकाकिनंगतंतत्रयुधाजित्त्वांहनिष्यति ॥ सुदर्शनउवाच ॥ भवितव्यंभवत्येवनात्रकार्याविचारणा ॥ ३१ ॥ आदेशाच्चजगन्मातुर्गच्छाम्यद्यस्वयंवरे ॥ माशोकंकुरुकल्याणिक्षत्रियाऽसिवरानने ॥ ३२ ॥ नबिभेमिप्रसादेनभगवत्यानिरंतरम् ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वारथमारुह्यगंतुकामंसुदर्शनम् ॥ ३३ ॥ दृष्ट्वामनोरमापुत्रमाशीर्भिश्चात्यमोदयत् ॥ अग्रतस्तेंऽबिकापातुपार्वतीपातुपृष्ठतः ॥ ३४ ॥

भारद्वाजेनप्रेरितोगमनेनिश्चयंचकार ॥ २६ ॥ २७ ॥ किंविचिंत्येति ॥ किमाश्रयंविचिंत्यस्वयंवरेगच्छसीत्यन्वयः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ आदेशादाज्ञया ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ अग्रतोंऽबिकापातु ॥ तेतवाग्रतोऽग्रदेशेस्थितांऽबिकात्वांपात्वित्यर्थः ॥ उत्तरत्राप्येवमेवार्थः ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३५ ॥ ३६ ॥ गिरिसंबंधिनोयेदुर्गास्तेषु॥पूर्वोक्तादुर्गास्तुस्थलदुर्गाः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥४२॥ राघवःरघुकुलोत्पन्नःसुदर्शनः ॥४३॥४४॥ दौहित्रेणशत्रुजिता ॥
॥४५॥४६॥ कामरूंदेशंपातीतिकामरूपः॥४७॥४८॥४९॥५०॥ किंनुसांप्रतमिति॥युधाजित्प्रमुखास्त्रिषष्ट्यक्षौहिणीसहिताःप्राणहारकाःशत्रवःसर्वेसमागताः॥अस्मिन्समाजेएकाकिनआ

(पार्वतीपार्श्वयोःपातुशिवासर्वत्रसांप्रतम्)॥ वाराहीविषमेमार्गेदुर्गादुर्गेषुकर्हिचित् ॥ कालिकाकलहेघोरेपातुत्वांपरमेश्वरी ॥ ३५ ॥ मंडपेतत्रमातंगी तथासौम्यास्वयंवरे ॥ भवानीभूपमध्येतुपातुत्वांभवमोचनी ॥ ३६ ॥ गिरिजागिरिदुर्गेषुचामुंडाचत्वरेषुच ॥ कामगाकाननेष्वेवंरक्षतुत्वांसनातनी ॥३७॥ विवादेवैष्णवीशक्तिरवतात्त्वांरघूद्वह ॥ भैरवीचरणेसौम्यशत्रूणांवसमागमे ॥ ३८ ॥ सर्वदासर्वदेशेषुपातुत्वांभुवनेश्वरी ॥ महामायाजगद्धात्रीसच्चिदानंदरूपिणी ॥ ३९ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वातंतदामातावेपमानाभयाकुला ॥ उवाचाहंत्वयासार्धमागमिष्यामिसर्वथा ॥ ४० ॥ निमिषार्धंविनात्वांवैनाहंस्थातुमिहोत्सहे ॥ सहैवनयमांवत्सयत्रतेगमनेमतिः ॥४१॥ इत्युक्त्वानिःसृतामाताधात्रेयीसंयुतातदा ॥ विप्रैर्दत्ताशिषः सर्वेनिर्ययुर्हर्षसंयुताः ॥४२॥ वाराणस्यांततःप्राप्तोरथेनैकेनराघवः ॥ ज्ञातः सुबाहुनातत्रपूजितश्चार्हणादिभिः ॥४३॥ निवेशार्थंगृहंदत्तमन्नपानादिकंतथा ॥ सेवकंसमनुज्ञाप्यपरिचर्यार्थमेवच ॥ ४४ ॥ मिलितास्त्वथराजानोनानादेशाधिपाःकिल॥युधाजिदपिसंप्राप्तोदौहित्रेणसमन्वितः ॥४५॥ करूषाधिपतिश्चैवतथामद्रेश्वरोनृपः॥सिंधुराजस्तथावीरोयोद्धामाहिष्मतीपतिः॥४६॥पांचालःपर्वतीयश्चकामरूपोऽतिवीर्यवान् ॥ कार्णाटश्चोलदेशीयोवैदर्भश्चमहाबलः ॥ ४७ ॥ अक्षौहिणीत्रिषष्टिश्चमिलितासंख्ययातदा॥वेष्टितानगरीसातुसैन्यैःसर्वत्रसंस्थितैः॥४८॥एतेचान्येचबहवःस्वयंवरदिदृक्षया॥मिलितास्तत्रराजानोवरवारणसंयुताः ॥४९॥ अन्योन्यंनृपपुत्रास्तइत्यूचुर्मिलितास्तदा ॥ सुदर्शनोनृपसुतोह्यागतोऽस्तिनिराकुलः ॥ ५० ॥ एकाकीरथमारुह्यमात्रासहमहामतिः ॥ विवाहार्थमिहाऽऽयातःकाकुत्स्थःकिंनुसांप्रतम् ॥ ५१ ॥ एतान्राजसुतांस्त्यक्त्वाससैन्यान्सायुधानथ ॥ किमेनंराजपुत्रीसावरिष्यतिमहाभुजम् ॥ ५२ ॥ युधाजिदथराजेशस्तानुवाचमहीपतीन् ॥ अहमेनंहनिष्यामिकन्याऽर्थेनात्रसंशयः ॥ ५३ ॥ केरलाधिपतिःप्राहतंतदानीतिसत्तमः ॥ नात्रयुद्धंप्रकर्तव्यंराजन्निच्छास्वयंवरे ॥ ५४ ॥ बलेनहरणंनास्तिनात्रशुल्कस्वयंवरः ॥ कन्येच्छयाऽत्रवरणंविवादःकीदृशस्त्विह ॥ ५५ ॥ अन्यायेनत्वयापूर्वमसौराज्यात्प्रवासितः ॥ दौहित्रायार्पितंराज्यंबलवन्नृपसत्तम ॥ ५६ ॥

गमनंकिंनुसांप्रतंयोग्यंनयोग्यमितितात्पर्यम्॥५१॥५२॥५३॥नीतिसत्तमोनीतिज्ञः॥इच्छास्वयंवरेकन्यायायस्मिन्निच्छाभवतिसतयावरणीयइतिमर्यादायाःसत्त्वान्नात्रयुद्धंकर्तव्यमित्यर्थः५४ बलेनेति॥अस्मिन्निच्छास्वयंवरेबलेनहरणंनास्तिततत्तुशौर्यशुल्केएववर्ततेनात्रसशुल्कोस्तिकिंतर्हितत्राऽऽह॥कन्येच्छयेति५५किंचास्यापराधाभावेनकथमेनंहनिष्यसीत्याह॥अन्यायेनेति ५६



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५७ ॥ जगत्पतिःपरमेश्वरोऽस्त्येवशास्ताकश्चिद्विलक्षणः॥५८॥५९॥कथंतंनवरिष्यतीति॥यदिकन्यायाइच्छाऽस्तितर्हितंकथंनवरिष्यति यदिनास्तितर्हितवविवादेना पिकिंफलम्॥कन्येच्छायाःस्वतंत्रत्वात् ॥ ६० ॥ कंवासांप्रतंस्वीकरिष्यतितंस्वीकरोतु ॥६१॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभा० तृतीयस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ एकसप्ततिपद्यैस्तुराज्ञांतत्रपरस्परम् ॥ संवादंतुविनिर्वर्त्यकन्यावोधउदीर्यते ॥ १ ॥ केरलाधिपतिवाक्यानंतरंयुवाजिद्वाक्यमाहेत्याह ॥ इतिवादिनीति ॥महाभागहेजनमेजय॥१॥नीतिरियमति॥इयंनीतिःकिमित्यर्थः॥२॥अयंन्यायस्तवैवरोचते नान्यस्येत्याह॥३॥असांप्रतंतवमतमित्याह । भागमिति ॥ सिंहस्यभागंगोमायुःशृगालःकथंभोक्तुमर्हतिनकथमपीत्यर्थः ॥४॥५॥ यदुक्तमिच्छास्वयंवरइतितत्राऽऽह॥बलं

काकुत्स्थोऽयंमहाभागकोसलाधिपतेःसुतः ॥ कथमेनंराजपुत्रंहनिष्यसिनिरागसम् ॥ ५७ ॥ लप्स्यसेतत्फलंनूनमनयस्यनृपोत्तम ॥ शास्ताऽस्तिकश्चिदायुष्माञ्जगतोऽस्यजगत्पतिः ॥ ५८ ॥ धर्मोजयतिनाधर्मःसत्यंजयतिनानृतम् ॥ माऽनयंकुरुराजेंद्रत्यजपापमतिंकिल ॥ ५९ ॥ दौहित्रस्तवसंप्राप्तःसोऽपिरूपसमन्वितः ॥ राज्ययुक्तस्तथाश्रीमान्कथंतंनवरिष्यति ॥ ६० ॥ अन्येराजसुताःकामंवर्ततेबलवत्तराः ॥ कन्यास्वयंवरेकन्यास्वीकरिष्यतिसांप्रतम् ॥ ६१ ॥ वृतेतथाविवादःकःप्रवदंतुमहीभुजः ॥ परस्परंविरोधोऽत्रनकर्तव्योविजानता ॥ ६२ ॥ ॥ इतिश्रीदे०म०तृ०एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिवादिनिभूपालेकेरलाधिपतौतदा ॥ प्रत्युवाचमहाभागयुधाजिदपिपार्थिवः ॥ १ ॥ नीतिरियंमहीपालयद्ब्रवीतिभवानिह ॥ समाजेपार्थिवानांवैसत्यवाग्विजितेंद्रियः ॥ २ ॥ योग्येषुवर्तमानेषुकन्यारत्नंकुलोद्वह ॥ अयोग्योऽर्हतिभूपालन्यायोऽयंतवरोचते ॥ ३ ॥ भागंसिंहस्यगोमायुर्भोक्तुमर्हतिवाकथम् ॥ तथासुदर्शनोऽयंवैकन्यारत्नंकिमर्हति ॥ ४ ॥ बलंवेदोहिविप्राणांभूभुजांचापजंबलम् ॥ किमन्यायंमहाराजब्रवीम्यहमिहाधुना ॥ ५ ॥ बलंशुल्कंयथाराज्ञांविवाहेपरिकीर्तितम् ॥ बलवानेवगृह्णातुनाबलस्तुकदाचन ॥ ६ ॥ तस्मात्कन्यांपणंकृत्वानीतिरत्रविधीयताम् ॥ अन्यथाकलहःकामंभविष्यतिमहीभुजाम् ॥ ७ ॥ एवंविवादेसंवृत्तेराज्ञांतत्रपरस्परम् ॥ आहूतस्तुसभामध्येसुबाहुर्नृपसत्तमः ॥ ॥ ८ ॥ समाहूयनृपाःसर्वेतमूचुस्तत्त्वदर्शिनः ॥ राजन्नीतिस्त्वयाकार्याविवाहेऽत्रसमाहिता ॥ ९ ॥ किंतेचिकीर्षितंराजंस्तद्वदस्वसमाहितः ॥ पुत्र्याःप्रदानंकस्मैतेरोचतेनृपचेतसि ॥ १० ॥ सुबाहुरुवाच ॥ पुत्र्यामेमनसाकामंवृतःकिलसुदर्शनः ॥ मयानिवारिताऽत्यर्थंनसाप्रत्येतिमेवचः ॥ ११ ॥

शुल्कमिति॥निर्बलराजानांसस्वयंवरोवीर्यवतांराज्ञांतुबलमेवशुल्कंपरिकीर्तितम्॥शुल्कंवरादिदेयेस्याद्वरादर्थग्रहेस्त्रियामितिमेदिनीकोशाच्छुल्कंवरादर्थग्रहरूपंपरिकीर्तितंनान्यत्॥तस्यशुल्कविवाहरूपस्यस्पष्टंरूपमाह । बलवानेवेति॥ यतोराज्ञांबलमेवशुल्कंतस्मात्कन्यांबलवानेवगृह्णात्वबलस्तुकदाचनकदापिनगृह्णात्वितिपणंकृत्वाऽत्रविवाहेनीतिर्ममाभिलषितोऽयंन्यायोविधीयतांक्रियताम्॥अस्वीकारेदोषमाह॥ अन्यथेति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ राजन्निति ॥ पणरूपापूर्वोक्ताराजभिर्निश्चितानीतिर्न्यायस्त्वयाकार्याऽत्रस्वयंवरेत्यस्मदभिलषितमस्तीत्यर्थः ॥९॥ तवयच्चिकीर्षितंतत्तुत्वमपिवदेत्याह ।किंतेइति॥त्वयापणस्तुनकृतोऽथविवाहार्थंप्रवृत्तोसि॥तस्मात्पुत्र्याःप्रदानंकस्मैतेरोचतेतद्वदेत्यर्थः॥१०॥कामंयथेष्टंसुदर्शनोवृतः॥प्रत्येतिस्वीकरोति ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सुतायामनोमेवशेनास्तीत्यर्थः ॥ तथायथातस्याःकन्यायाअभिप्रायस्तथैवसुदर्शनोप्यनाहूतोमयाऽत्रप्राप्तः ॥ तेनजानामिनूनंकन्ययैवायमाहूतइति ॥१२॥ सुबाहुवचनंश्रुत्वाकेनाहूतस्त्वंकिमर्थमत्रागतोऽसीत्यभिप्रायेणसुदर्शनंपप्रच्छुरित्याह । संपन्नभूभुजइति॥शिष्टाभूभुजइत्यर्थः॥ १३ ॥१४॥१५॥१६॥१७॥ त्वयिसैन्यविहीनेदृष्टेसत्यस्माभिर्दयावशाद्याथातथ्यम् । अर्शआद्यजंतम् ॥ याथातथ्यविशिष्टंवाक्यंसत्यंवाक्यमुदाहृतमुक्तंतदुत्तरंगच्छाथवातिष्ठयथेष्टंस्यात्तथाकुर्वित्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ केनाहूतःकिमर्थमागतोसीत्यस्योत्तरमाह । अत्रेति ॥ नकेना

किंकरोमिसुतायामेनवशेवर्ततेमनः ॥ सुदर्शनस्तथैकाकीसंप्राप्तोऽस्तिनिराकुलः ॥१२॥ व्यासउवाच ॥ संपन्नभूभुजःसर्वेसमाहूयसुदर्शनम् ॥ ऊचुःसमागतंशांतमेकाकिनमतंद्रिताः ॥ १३ ॥ राजपुत्रमहाभागकेनाहूतोऽसिसुव्रत ॥ एकाकीयःसमायातःसमाजेभूभृतामिह ॥ १४ ॥ नवैसैन्यंनसचिवानकोशोनबृहद्बलम् ॥ किमर्थंचसमायातस्तत्त्वंब्रूहिमहामते ॥ १५ ॥ युद्धकामानृपतयोवर्ततेऽत्रसमागमे ॥ कन्यार्थंसैन्यसंपन्नाःकिंत्वंकर्तुमिहेच्छसि ॥ ॥१६॥भ्रातातेसुबलःशूरःसंप्राप्तोऽस्तिजिघृक्षया ॥ युधाजिच्चमहाबाहुःसाहाय्यंकर्तुमागतः ॥ १७ ॥ गच्छवातिष्ठराजेंद्रयाथातथ्यमुदाहृतम् ॥ त्वयिसैन्यविहीनेचयथेष्टंकुरुसुव्रत ॥ १८ ॥ सुदर्शनउवाच ॥ नबलंनसहायोमेनकोशोदुर्गसंश्रयः ॥ नमित्राणिनसौहार्दीननृपारक्षकामम ॥१९॥ अत्रस्वयंवरंश्रुत्वाद्रष्टुकामइहागतः ॥ स्वप्नेदेव्याप्रेरितोऽस्मिभगवत्यानसंशयः ॥ २० ॥ नान्यच्चिकीर्षितंमेऽद्यमामाहजगदीश्वरी ॥ तयायद्विहितंतच्चभविताऽद्यनसंशयः ॥ २१ ॥ नशत्रुरस्तिसंसारेकोऽप्यत्रजगतीश्वराः ॥ सर्वत्रपश्यतोमेऽद्यभवानींजगदंबिकाम् ॥२२॥ यःकरिष्यतिशत्रुत्वंमयासहनृपात्मजाः ॥ शास्तातस्यमहाविद्यानाहंजानामिशत्रुताम् ॥ २३ ॥ यद्भावितद्वैभवितानान्यथानृपसत्तमाः ॥ काचिंताह्यत्रकर्तव्यादैवाधीनोऽस्मिसर्वदा ॥ २४ ॥ देवभूतमनुष्येषुसर्वभूतेषुसर्वदा ॥ सर्वेषांतत्कृताशक्तिर्नान्यथानृपसत्तमाः॥ २५ ॥ सायंचिकीर्षतेभूपंतंकरोतिनृपाधिपाः॥निर्धनंवानरंकामंकाचिंतावैतदामम ॥ २६ ॥ तामृतेपरमांशक्तिंब्रह्मविष्णुहरादयः ॥ नशक्ताःस्पंदितुंदेवाःकाचिंतामेतदानृपाः ॥ २७ ॥ अशक्तोवासशक्तोवायादृशस्तादृशस्त्वहम् ॥ तदाज्ञयानृपाऽद्यैवसंप्राप्तोऽस्मिस्वयंवरे ॥ २८ ॥ सायदिच्छतितत्कुर्यान्ममकिंचिंतनेनवै ॥ नात्रशंकाप्रकर्तव्यासत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥ २९ ॥

प्याहूतःकिंतुभगवतीप्रेरणयैवस्वयंवरंद्रष्टुमागतोऽस्मीतिभावः॥२०॥ किंत्वंकर्तुमिहेच्छसीत्यस्योत्तरमाह। नान्यदिति ॥ मांजगदीश्वरीयदाह त्वयातत्रगंतव्यमितितस्मात्तद्वाक्यपरिपालनादन्यन्ममचिकीर्षितंनास्त्येव ॥ युद्धंभविष्यतितदातवकाऽवस्थेतिचेत्तत्राऽह । तयेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ तामृतेइति ॥ तदुक्तंसूतसंहितायांयज्ञवैभवखंडेत्रयोदशाऽध्याये ॥ यस्तुब्रह्मत्वमापन्नःशिवोयोमुनिसत्तमाः ॥ सातस्यापिभवेच्छक्तिस्तयाहीनोनिरर्थकः ॥ यस्तुविष्णुत्वमापन्नःशिवोयोमुनिसत्तमाः ॥ सातस्यापिभवेच्छक्तिस्तयाहीनोनिरर्थकः ॥ यस्तुरुद्रत्वमापन्नःशिवोयोमुनिसत्तमाः ॥ सातस्यापिभवेच्छक्तिस्तयाहीनोनिरर्थकइति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ त्वत्कृतेनत्वदाचरणेनदयादिष्टाप्रेरितातस्मात्त्वांवयंब्रवीमोब्रूमोनान्यथेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ नकेवलंकर्मवशगः किंतुकालकर्मस्वभाववशग

जयेपराजयेलज्जानमेऽत्राण्वपिपार्थिवाः॥भगवत्यास्तुलज्जाऽस्तितदधीनोऽस्मिसर्वदा ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यतदाकर्ण्यवचनंराजसत्तमाः॥ ऊचुः परस्परंप्रेक्ष्यनिश्चयज्ञानराधिपाः ॥ ३१ ॥ सत्यमुक्तंत्वयासाधोनमिथ्याकर्हिचिद्भवेत् ॥ तथाप्युज्जयनीनाथस्त्वांहंतुंपरिकांक्षति ॥ ३२ ॥ त्वत्कृतेनदयादिष्टात्वांब्रवीमोमहामते ॥ यद्युक्तंतत्त्वयाकार्यंविचार्यमनसाऽनघ ॥ ३३ ॥ सुदर्शनउवाच ॥ सत्यमुक्तंभवद्भिश्चकृपावद्भिःसुहृज्जनैः ॥ किंब्रवीमिपुनर्वाक्यमुक्त्वानृपतिसत्तमाः ॥ ३४ ॥नमृत्युःकेनचिद्भाव्यःकस्यचिद्वाकदाचन ॥ दैवाधीनमिदंसर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ ३५ ॥ स्ववशोऽयंनजीवोऽस्तिस्वकर्मवशगःसदा ॥ तत्कर्मत्रिविधंप्रोक्तंविद्वद्भिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ३६ ॥ संचितंवर्तमानंचप्रारब्धंचतृतीयकम् ॥ कालकर्मस्वभावैश्चततंसर्वमिदंजगत् ॥ ३७ ॥ नदेवोमानुषंहंतुंशक्तःकालागमंविना ॥ हतंनिमित्तमात्रेणहंतिकालःसनातनः ॥ ३८ ॥ यथापितामेनिहतःसिंहेनामित्रकर्षणः ॥ तथामातामहोप्येवंयुद्धेयुधाजिताहतः ॥ ३९ ॥ यत्नकोटिंप्रकुर्वाणोहन्यतेदैवयोगतः ॥ जीवेद्वर्षसहस्राणिरक्षणेनविनानरः ॥ ४० ॥ नाहंबिभेमिधर्मिष्ठाःकदाचिच्चयुधाजितः ॥ दैवमेवपरंमत्वासुस्थितोऽस्मिसदानृपाः ॥ ४१ ॥ स्मरणंसततंनित्यंभगवत्याःकरोम्यहम् ॥ विश्वस्यजननीदेवीकल्याणंसाकरिष्यति ॥ ४२ ॥ पूर्वार्जितंहिभोक्तव्यंशुभंवाप्यशुभंतथा ॥ स्वकृतस्यचभोगेनकीदृक्छोकोविजानताम् ॥ ४३ ॥ स्वकर्मफलयोगेनप्राप्यदुःखमचेतनः ॥ निमित्तकारणेवैरंकरोत्यल्पमतिःकिल ॥ ४४ ॥ नतथाऽहंविजानामिवैरंशोकंभयंतथा ॥ निःशंकमिहसंप्राप्तःसमाजेभूभृतामिह ॥ ४५ ॥ एकाकीद्रष्टुकामोऽहंस्वयंवरमनुत्तमम् ॥ भविष्यतिचयद्भाव्यंप्राप्तोऽस्मिचंडिकाऽऽज्ञया ॥४६॥ भगवत्याःप्रमाणंमेनान्यंजानामिसंयतः ॥ तत्कृतंचसुखंदुःखंभविष्यतिचनान्यथा ॥ ४७ ॥ युधाजित्सुखमाप्नोतुनमेवैरंनृपोत्तमाः ॥ यःकरिष्यतिमेवैरंसप्राप्स्यतिफलंतथा ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तास्तेतथातेनसंतुष्टाभूभुजःस्थिताः ॥ सोऽपिस्वमाश्रमंप्राप्यसुस्थितःसंवभूवह ॥ ४९ ॥ अपरेऽह्निशुभेकालेनृपाःसंमंत्रिताःकिल ॥ सुबाहुनानृपेणाथरुचिरेवैस्वमंडपे ॥ ५० ॥ दिव्यास्तरणयुक्तेषुमंचेषुरचितेषुच ॥ उपविष्टाश्चराजानःशुभालंकरणैर्युताः ॥ ५१ ॥ दिव्यवेषधराःकामंविमानेष्वमराइव ॥ दीप्यमानाःस्थितास्तत्रस्वयंवरदिदृक्षया॥५२॥इतिचिंतापराःसर्वेकदासाप्यागमिष्यति ॥ भाग्यवंतंनृपश्रेष्ठंश्रुतपुण्यंवरिष्यति॥५३॥

श्रेत्याह । कालेति ॥ स्वभावोमूलभूताप्रकृतिः ॥ ततंव्याप्तंतद्वशगमित्यर्थः ॥३७॥ तदेवोपपादयति । नदेवइति॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥ अचेतनोबुद्धिरहितोमूढः॥निमित्तकारणेदुःखस्येत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ एकाकीत्यादिपूर्वान्वयि ॥ ४६ ॥ भगवत्यावाक्यमितिशेषः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ श्रुतपुण्यंकंवरिष्यतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ सिंधुसुतालक्ष्मीः ॥ चिंतापरांभगवतीध्यानपराम् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ अन्याव्यभिचारिण्यः ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ संकल्पयंतीति ॥ मांद ष्ट्रियंमेभवतादितितेसंकल्पयंति ॥ भवतादित्याशीर्लोटितातङ् ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ कुर्वेइति ॥ वारस्त्रियाकथंकृतंकुर्वेइत्यर्थः ॥ ६७ ॥ ननुवृद्धसंप्रदायएवमेवास्तिसचत्वयाप्या श्रयणीयइतिचेत्तत्राऽऽह । वृद्धैरिति ॥६८॥ तत्रदोषमाह । सामान्येति ॥ यथाकाचित्सामान्यास्त्रीप्रथमंसभायांगत्वामनतिबहुपुरुषसंघंसंकल्पितंकृत्वापश्चात्स्वभाग्येलिखितमेकमेववृणोति

यदासुदर्शनंदैवात्स्रजासंभूषयेदिह ॥ विवादोवैनृपाणांचभवितानात्रसंशयः ॥ ५४ ॥ इत्येवंचिंत्यमानास्तेभूपामंचेषुसंस्थिताः ॥ वादित्रघोषःसुमहा नुत्थितोनृपमंडपे ॥ ५५ ॥ अथकाशीपतिःप्राहसुतांस्नातांस्वलंकृताम् ॥ मधूकमालासंयुक्तांक्षौमवासोविभूषिताम् ॥ ५६ ॥ विवाहोपस्करैर्युक्तांदि व्यांसिंधुसुतोपमाम् ॥ चिंतापरांसुवसनांस्मितपूर्वमिदंवचः ॥ ५७ ॥ उत्तिष्ठपुत्रिसुनसेकरेधृत्वाशुभांस्रजम् ॥ व्रजमंडपमध्येऽद्यसमाजंपश्यभूभुजा म् ॥ ५८ ॥ गुणवान्रूपसंपन्नःकुलीनश्चनृपोत्तमः ॥ तवचित्तेवसेद्यस्तुतंवृणुष्वसुमध्यमे ॥ ५९ ॥ देशदेशाधिपाःसर्वेमंचेषुरचितेषुच ॥ संविष्टाःप श्यतन्वंगिवरयस्वयथारुचि ॥ ६० ॥ व्यासउवाच ॥ तंतथाभाषमाणंवैपितरंमितभाषिणी ॥ उवाचवचनंबालाललितंधर्मसंयुतम् ॥ ६१ ॥ शशिकलो वाच ॥ नाहंदृष्टिपथेराज्ञांगमिष्यामिपितःकिल ॥ कामुकानांनरेशानांगच्छंत्यन्याश्चयोषितः ॥ ६२ ॥ धर्मशास्त्रेश्रुतंतातमयेदंवचनंकिल ॥ एकएव वरोनार्यानिरीक्ष्यःस्यान्नचापरः ॥ ६३ ॥ सतीत्वंनिर्गतंतस्यायाप्रयातिबहूनथ ॥ संकल्पयंतितेसर्वेदृष्ट्वामेभवतात्विति ॥ ६४ ॥ स्वयंवरेस्रजंधृत्वा यदागच्छतिमंडपे ॥ सामान्यासातदाजाताकुलटेवापरावधूः ॥ ६५ ॥ वारस्त्रीविपणेगत्वायथावीक्ष्यनरान्स्थितान् ॥ गुणागुणपरिज्ञानंकरोतिनिज मानसे ॥ ६६ ॥ नैकभावायथावेश्यावृथापश्यतिकामुकम् ॥ तथाऽहंमंडपेगत्वाकुर्वेवारस्त्रियाकृतम् ॥ ६७ ॥ वृद्धैरेतैःकृतंधर्मंनकरिष्यामिसांप्रतम् ॥ पत्नीव्रतंतथाकामंचरिष्येऽहंधृतव्रता ॥ ६८ ॥ सामान्याप्रथमंगत्वाकृत्वासंकल्पितंबहु ॥ वृणोतिचैकंतद्वद्वैवृणोमिकथमद्यवै ॥ ६९ ॥ सुदर्शनोमया पूर्ववृतःसर्वात्मनापितः ॥ तमृतेनान्यथाकर्तुमिच्छामिनृपसत्तम ॥ ७० ॥ विवाहविधिनादेहिकन्यादानंशुभेदिने ॥ सुदर्शनायनृपतेयदीच्छसिशुभं मम ॥ ७१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ सुबाहुरपितच्छ्रुत्वायुक्तमुक्तंतयातदा ॥ चिंता विष्टोबभूवाशुकिंकर्तव्यमितःपरम् ॥ १ ॥ संगताःपृथिवीपालाःससैन्याःसपरिग्रहाः ॥ उपविष्टाश्चमंचेषुयोद्धुकामामहाबलाः ॥ २ ॥

तथासामान्यावत्कथमद्यपुरुषंवृणोम्यहंपतिव्रतासतीत्यर्थः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ अर्धाधिकैःषष्टिपद्यैराज्ञांकोलाह लेसति ॥ कन्यायाःसंमतौराजास्थितइत्येतदुच्यते ॥ १ ॥ कन्यावाक्योत्तरंचिंताग्रस्तोराजायच्चकारतदुच्यते । सुबाहुरपीति ॥ कन्ययातुसम्यगुक्तंपरंतुमयाकिंकर्तव्यमितिचिंताविष्टोबभूवेत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

नायातीति ॥ इतीतिशेषः ॥ ३ ॥ प्रत्यादिष्टुंप्रत्याख्यातुम् ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ मात्राजनन्या ॥ ७ ॥ वःसदनानियूयंव्रजंत्वित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ खेदिताताडितासतीयदिम्रियेतेत्य
र्थः ॥ १० ॥ किमेतयेति । एतयादुष्टयामंदभाग्ययाभवतांकिंफलंभविष्यतियदर्थमेतावानाग्रहोभवद्भिःक्रियते ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ अवमान्येति ॥ पुत्रींदातुंकिमि

यदिब्रवीमितान्सर्वान्सुतानायातिसांप्रतम् ॥ तथाऽपिकोपसंयुक्ताहन्युर्मांदुष्टबुद्धयः ॥ ३ ॥ नमेसैन्यबलंतादृङ्नदुर्गबलमद्भुतम् ॥ येनाहंनृपतीन्सर्वा
न्प्रत्यादेष्टुमिहोत्सहे ॥ ४ ॥ सुदर्शनस्तथैकाकीह्यसहायोऽधनःशिशुः ॥ किंकर्तव्यंनिमग्नोऽहंसर्वथादुःखसागरे ॥ ५ ॥ इतिचिंतापरोराजाजगामनृप
सन्निधौ ॥ प्रणम्यतानुवाचाथप्रश्रयावनतोनृपः ॥ ६ ॥ किंकर्तव्यंनृपाःकामंनैतिमेमंडपेसुता ॥ बहुशःप्रेर्यमाणाऽपिसामात्राऽपिमयाऽपिच ॥ ७ ॥ मू
र्धापतामिपादेषुराज्ञांदासोऽस्मिसांप्रतम् ॥ पूजादिकंगृहीत्वाऽद्यव्रजंतुसदनानिवः ॥ ८ ॥ ददामिबहुरत्नानिवस्त्राणिचगजान्रथान् ॥ गृहीत्वाऽद्यकृपां
कृत्वाव्रजंतुभवनान्युत ॥ ९ ॥ नवशेमेसुतावालायदिम्रियेतखेदिता ॥ तदामेस्यान्महद्दुःखंतेनचिंतातुरोऽस्म्यहम् ॥ १० ॥ भवंतःकरुणावंतोमहा
भाग्यामहौजसः ॥ किमेतयादुहित्रामेमंदयादुर्विनीतया ॥ ११ ॥ अनुग्राह्योऽस्मिवःकामंदासोऽहमितिसर्वथा ॥ सुतासुतेवमंतव्याभवद्भिःसर्वथामम
॥ १२ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वासुबाहुवचनंनोचुःकेचनभूमिपाः ॥ युधाजित्क्रोधताम्राक्षस्तमुवाचरुषान्वितः ॥ १३ ॥ राजन्मूर्खोऽसिकिंब्रूषेकृत्वाकार्यं
सुनिंदितम् ॥ स्वयंवरःकथंमोहाद्रचितःसंशयेसति ॥ १४ ॥ मिलिताभूभुजःसर्वेत्वयाऽऽहूताःस्वयंवरे ॥ कथमद्यनृपागंतुंयोग्यास्तेस्वगृहान्प्रति॥१५॥
अवमान्यनृपान्त्सर्वांस्त्वंकिंसुदर्शनायवै ॥ दातुमिच्छसिपुत्रींचकिमनार्यमतःपरम् ॥ १६ ॥ विचार्यपुरुषेणादौकार्यंवैशुभमिच्छता ॥ आरब्धव्यंत्वया
तत्तुकृतंराजन्नजानता ॥ १७ ॥ एतान्विहायनृपतीन्बलवाहनसंयुतान् ॥ वरंसुदर्शनंकर्तुंकथमिच्छसिसांप्रतम् ॥ १८ ॥ अहंत्वांहन्मिपापिष्ठंतथापश्चा
त्सुदर्शनम् ॥ दौहित्रायाद्यमेकन्यांदास्यामीतिविनिश्चयः ॥ १९ ॥ मयितिष्ठतिकोऽन्योऽस्तियःकन्यांहर्तुमिच्छति ॥ सुदर्शनःकियानद्यनिर्धनोनिर्ब
लःशिशुः ॥ २० ॥ भारद्वाजाश्रमेपूर्वंमुक्तोमुनिकृतेमया ॥ नाऽद्याहंमोचयिष्यामिसर्वथाजीवितंशिशोः ॥ २१ ॥ तस्माद्विचार्यसम्यक्त्वंपुत्र्याचभार्य
यासह ॥ दौहित्रायप्रियांकन्यांदेहिमेसुभ्रुवंकिल ॥ २२ ॥ संबंधीभवदत्त्वात्वंपुत्रीमेतांमनोरमाम् ॥ उच्चाश्रयःप्रकर्तव्यःसर्वदाशुभमिच्छता ॥ २३ ॥
सुदर्शनायदत्त्वात्वंपुत्रींप्राणप्रियांशुभाम् ॥ एकाकिनेऽप्यराज्यायकिंसुखंप्राप्तुमिच्छसि ॥ २४ ॥

च्छसि ॥ यदीच्छसितर्ह्यतोऽस्मात्परमधिकमनार्यमश्लाघ्यंकिमस्ति ॥ महानपराधस्तवतदेत्यर्थः ॥ १६ ॥ विचार्येति ॥ शुभमिच्छतापुरुषेणाऽऽदौकार्यंसाध्यमसाध्यंवेतिविचार्यपश्चाद्दा
रब्धव्यम् ॥ त्वयातुराजन्नजानतातत्कार्यंकृतमतःफलंभविष्यतीत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ दौहित्रायैवेमांकन्यांदास्यामीतिमेविनिश्चयोऽस्ति ॥ १९ ॥ २० ॥ मुनिकृतेमुनिसंकोचार्थम्
॥ २१ ॥ २२ ॥ संबंधीभवेति ॥ ममेतिशेषः ॥ २३ ॥ २४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥२५॥२६॥बहुयदित्वयाप्रार्थ्यतेतर्हीदंस्वीकरोमीत्याह। सुदर्शनमृतइति ॥ सुदर्शनंविहाययंवाकंवानृपतिमियंकन्यावरिष्यतितदाऽसौविग्रहोनस्यात्तदातवेप्सितोविवाहोऽस्तुनोचेन्नेतिभावः ॥ २७ ॥ विरोधःकीदृशइति ॥ विरोधःकिंविषयइत्यर्थः ॥ स्वयमेववदतिएनंवृणोद्यदीति ॥ एनंसुदर्शनमियंकन्यायदिवृणोद्वृणुयात्तर्हितद्विषयेविरोधोनान्यराजविषयइत्यर्थः ॥ २८ ॥

"कुलंवित्तंबलंरूपंराज्यंदुर्गसुहृज्जनम् ॥ दृष्ट्वाकन्याप्रदातव्यानान्यथासुखमृच्छति ॥ १ ॥" परिचिंतयधर्मंत्वंराज्यनीतिंचशाश्वतीम् ॥ कुरुकार्यं यथायोग्यंमाकृथामतिमन्यथा ॥ २५ ॥ सुहृदसिममात्यर्थंहितंतेप्रब्रवीम्यहम् ॥ समानयसुतांराजन्मंडपेतांसखीवृताम् ॥ २६ ॥ सुदर्शनमृतेचेयंव रिष्यतियदाप्यसौ ॥ विग्रहोमेतदानस्याद्विवाहोऽस्तुतवेप्सितः ॥ २७ ॥ अन्येनृपतयःसर्वेकुलीनाःसबलाःसमाः ॥ विरोधःकीदृशस्त्वेनंवृणोद्यदिनृ पोत्तम ॥ २८ ॥ अन्यथाऽहंहरिष्येऽद्यबलात्कन्यामिमांशुभाम् ॥ माविरोधंसुदुःसाध्यंगच्छपार्थिवसत्तम ॥ २९ ॥ व्यासउवाच ॥ युधाजितासमा दिष्टःसुबाहुःशोकसंयुतः ॥ निःश्वसन्भवनंगत्वाभार्यांप्राहशुचावृतः ॥ ३० ॥ पुत्रींब्रूहिसुधर्मज्ञेकलहेसमुपस्थिते ॥ किंकर्तव्यंमयाशक्यंत्वद्वशोऽस्मि सुलोचने ॥ ३१ ॥ व्यासउवाच ॥ साश्रुत्वापतिवाक्यंतुगत्वाप्राहसुतांतिकम् ॥ वत्सेराजातिदुःखार्तःपितातेऽद्यापिवर्तते ॥ ३२ ॥ त्वदर्थेविग्रहः कामंसमुत्पन्नोऽद्यभूभृताम् ॥ अन्यंवरयसुश्रोणिसुदर्शनमृतेनृपम् ॥ ३३ ॥ यदिसुदर्शनंवत्सेहठात्त्वंवैवरिष्यसि ॥ युधाजित्त्वांचमांचैवहनिष्यतिब लान्वितः ॥ ३४ ॥ सुदर्शनंचराजाऽसौबलमत्तःप्रतापवान् ॥ द्वितीयस्तेपतिःपश्चाद्भविताकलहेसति ॥ ३५ ॥ तस्मात्सुदर्शनंत्यक्त्वावरयान्यंनृपो त्तमम् ॥ सुखमिच्छसिचेन्मह्यंतुभ्यंवामृगलोचने ॥ इतिमात्राबोधितांतांपश्चाद्राजाप्यबोधयत् ॥ ३६ ॥ उभयोर्वचनंश्रुत्वानिर्भयोवाचकन्यका ॥ कन्योवाच ॥ सत्यमुक्तंनृपश्रेष्ठजानासिचव्रतंमम ॥ ३७ ॥ नान्यंवृणोमिभूपालंसुदर्शनमृतेक्वचित् ॥ बिभेषियदिराजेंद्रनृपेभ्यःकिलकातरः ॥ ३८ ॥ सुदर्शनायदत्त्वामांविसर्जयपुराद्बहिः ॥ समांरथेसमारोप्यनिर्गमिष्यतितेपुरात् ॥ ३९ ॥ भवितव्यंतुपश्चाद्वैभविष्यतिनचान्यथा ॥ नात्रचिंतात्वयाका र्याभवितव्येनृपोत्तम ॥ ४० ॥ यद्भावितद्भवत्येवसर्वथात्रनसंशयः ॥ राजोवाच ॥ नपुत्रिसाहसंकार्यंमतिमद्भिःकदाचन ॥ ४१ ॥ बहुभिर्नविरोद्धव्य मितिवेदविदोविदुः ॥ विस्रक्ष्यामिकथंकन्यांदत्वाराजसुतायच ॥ ४२ ॥ राजानोवैरसंयुक्ताःकिंनकुर्युरसांप्रतम् ॥ यदितेरोचतेवत्सेपणंसंविदधाम्यह म् ॥ ४३ ॥ जनकेनयथापूर्वंकृतःसीतास्वयंवरे ॥ शैवंधनुर्यथातेनधृतंकृत्वापणंतथा ॥ ४४ ॥

अन्यथेति ॥ यदिसुदर्शनायदास्यसीत्यर्थः ॥ अतोनिरर्थकंमयासहविरोधंदुःसाध्यंमागच्छमात्रजेत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ पुत्रींब्रूहीति ॥ एतादृशेकलहेजातेप्राप्तेमयाशक्यंयत्किंकर्तव्यं तस्मात्त्वद्वशोऽस्मितवयद्युक्तंभासतेतथाकुर्वितिपुत्रींब्रूहीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पणेकृतेकलहोनभविष्य तीत्याह । यदितइति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४५ ॥ कामंपणम् ॥ ४६ ॥४७॥४८॥ ४९ ॥सर्वेषामिति ॥ येयेपणंसाधयिष्यंतितेषांसर्वेषांवशगाभविष्यामीत्यर्थः ॥ नह्येकेनैवपणःसाधनीयइतिपणसमयेनियमःक्रियतेकिंतुसमुदायो द्देशेनेति॥५०॥ एतदेवाऽह।एकःपालयितेति॥त्रिभिर्यदिवाद्वाभ्यांवापणःसाध्यतेतदैकाकन्याकस्यभविष्यतीतिविवादेसमुपस्थितेकिंकर्तव्यम् ॥ नकश्चिदत्रोपायोविद्यतेतस्माद्वाभ्यांत्रिभ्यो

तथाऽहमपितन्वंगिकरोम्यद्यदुरासदम् ॥ विवादोयेनराज्ञांवैकृतेसतिशमंव्रजेत् ॥ ४५ ॥ पालयिष्यतियःकामंसतेभर्ताभविष्यति ॥ सुदर्शनस्तथा न्योवायःकश्चिद्बलवत्तरः ॥ ४६ ॥ पालयित्वापणंत्वांवैवरयिष्यतिसर्वथा ॥ एवंकृतेनृपाणांतुविवादःशमितोभवेत् ॥ ४७ ॥ सुखेनाहंविवाहंतेकरि ष्यामिततःपरम् ॥ कन्योवाच ॥ संदेहेनैवमज्जामिमूर्खकृत्यमिदंयतः ॥ ४८ ॥ मयासुदर्शनःपूर्वंधृतश्चेतसिनान्यथा ॥ कारणंपुण्यपापानांमनएवमही पते ॥ ४९ ॥ मनसाविधृतंत्यक्त्वाकथमन्यंवृणेपितः ॥ कृतेपणेमहाराजसर्वेषांवशगाह्यहम् ॥ ५० ॥ एकःपालयिताद्वौवावहवोवाभवंतिचेत् ॥ किंकर्त व्यंतदातातविवादेसमुपस्थिते ॥ ५१ ॥ संशयाधिष्ठितेकार्येमतिंनाहंकरोम्यतः ॥ मार्चितांकुरुराजेंद्रदेहिसुदर्शनायमाम् ॥ ५२ ॥ विवाहंविधिनाकृ त्वाशंविधास्यतिचंडिका ॥ यन्नामकीर्तनादेवदुःखौघोविलयंव्रजेत् ॥ ५३ ॥ तांस्मृत्वापरमांशक्तिंकुरुकार्यमतंद्रितः ॥ गत्वावदनृपेभ्यस्त्वंकृतांजलिपु टोऽद्यवै ॥ ५४ ॥ आगंतव्यंचश्वःसर्वैरिहभूपैःस्वयंवरे ॥ इत्युक्त्वात्वंविसृज्याशुसर्वंनृपतिमंडलम् ॥ ५५ ॥ विवाहंकुरुरात्रौमेवेदोक्तविधिनानृप ॥ पारिवर्हंयथायोग्यंदत्वातस्मैविसर्जय ॥ ५६ ॥ गमिष्यतिगृहीत्वामांध्रुवसंधिसुतःकिल ॥ कदाचित्तेनृपाःक्रुद्धाःसंग्रामंकर्तुमुद्यताः ॥ ५७ ॥ भविष्यं तितदादेवीसाहाय्यंनःकरिष्यति ॥ सोऽपिराजसुतैस्तैस्तुसंग्रामंसंविधास्यति ॥ ५८ ॥ दैवान्मृधेमृतेतस्मिन्मरिष्याम्यहमप्युत ॥ स्वस्तितेस्तुगृहेति ष्ठदत्वामांसहसैन्यकः ॥ ५९ ॥ एकैवाहंगमिष्यामितेनसार्धंरिरंसया ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वाराजाऽसौकृतनिश्चयः ॥ ६० ॥ मतिंच क्रेतथाकर्तुंविश्वासंप्रतिपद्यच ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वासुतावाक्यमनिंदितात्मा नृपांश्चगत्वानृपतिर्जगाद ॥ व्रजंतुकामंशिविराणिभूपाःश्वोवाविवाहंकिलसंविधास्ये ॥ १ ॥ भक्ष्याणिपेयानिमयाऽर्पितानिगृह्णंतुसर्वेमयिसुप्रसन्नाः ॥ श्वोभाविकार्यंकिलमंडपेऽत्रसमेत्यसर्वैरिहसंविधेयम् ॥ २ ॥

वासाकन्यादेयेतिप्रसंगः स्यात्ततश्चमहाननर्थः पणेकृतेसतिभविष्यतीत्यर्थः ॥ ५१ ॥ संशयाधिष्ठितेसंशयविषयइत्यर्थः।अयंवापतिरयंवापतिरितिपतिविषयेसंशयेकुलटावदहंगतिंनकरो मिपतिव्रता सतीतिभावः ॥ ५२ ॥ विवाहंविधिनाकृत्वासुदर्शनायमांदेहीतिपूर्वेणान्वयः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृती यस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ अष्टाधिकैश्चचत्वारिंशत्पद्यैरथवर्ण्यते ॥ सुदर्शनविवाहश्चसुबाहोश्चैवकन्यया ॥१॥ कन्यावाक्यंश्रुत्वायच्चकारराजातदाह ।श्रुत्वेति ॥ कामंयथेष्टम् ॥ श्वोवाश्व एव ॥ १ ॥ कार्यंविवाहरूपम् ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नयिष्येआनयिष्ये ॥३॥ नविग्रहइति ॥ विग्रहोनयुक्तइतिशेषः ॥ प्रातरिहसुतामानयिष्ये ॥ अधुनातांकृपांविधाययथेष्टंनृपागच्छंतु ॥४॥ कथंश्वोविवाहंकरिष्यसीतिचेत्तत्राऽऽह । इच्छापणंवेति ॥ इच्छापणंवाशौर्यपणंवायथाभवतांमनीषितंवर्ततेतथाचित्तेपणंपरिचिंत्येत्यर्थः ॥ ५ ॥ अवितथंसत्यंनगरस्यपार्श्वेआसमंताद्रक्षांविधायकदाचिद्राजाछलंविधास्यतीतिशंकया

नायातिपुत्रीकिलमंडपेऽद्यकरोमिकिंभूपतयोऽत्रकामम् ॥ प्रातःसमाश्वास्यसुतांनयिष्येगच्छंतुतस्माच्छिविराणिभूपाः ॥ ३ ॥ नविग्रहोबुद्धिमतां निजाश्रितेकृपाविधेयासततंह्यपत्ये ॥ विधायतांप्रातरिहानयिष्येसुतांतुगच्छंतुनृपायथेष्टम् ॥ ४ ॥ इच्छापणंवापरिचिंत्यचित्तेप्रातःकरिष्याम्यथसंविवाहम् ॥ सर्वैःसमेत्यात्रनृपैःसमेतैःस्वयंवरःसर्वमतेनकार्यः ॥ ५ ॥ श्रुत्वानृपास्तेऽवितथंविदित्वावचोययुःस्वानिनिकेतनानि ॥ विधायपार्श्वे नगरस्यरक्षांचक्रुःक्रियामध्यदिनोदिताश्च ॥ ६ ॥ सुबाहुरप्यार्यजनैःसमेतश्चकारकार्याणिविवाहकाले ॥ पुत्रींसमाहूयगृहेसुगुप्तेपुरोहितैर्वेदविदांवरिष्ठैः ॥ ७ ॥ स्नानादिकंकर्मवरस्यकृत्वाविवाहभूषाकरणंतथैव ॥ आनाय्यवेदीरचितेगृहेवैतस्यार्हणांभूमिपतिश्चकार ॥ ८ ॥ सविष्टरंचाचमनीयमर्घ्यंवस्त्रद्वयं गामथकुंडलेद्वे ॥ समर्प्यतस्मैविधिवन्नरेंद्रऐच्छत्सुतादानमहीनसत्त्वः ॥ ९ ॥ सोप्यग्रहीत्सर्वमदीनचेताःशशामचिंताऽथमनोरमायाः ॥ कन्यांसुकेशींनिधिकन्यकासमांमेनेतदाऽऽत्मानमनुत्तमांच ॥ १० ॥ सुपूजितंभूषणवस्त्रदानैर्वरोत्तमंतंसचिवास्तदानीम् ॥ निन्युश्चतेकौतुकमंडपांतर्मुदान्वितावीतभयाश्चसर्वे ॥ ११ ॥ समाप्तभूषांविधिवद्विधिज्ञाःस्त्रियश्चतांराजसुतांसुयाने ॥ आरोप्यनिन्युर्वरसंनिधानंचतुष्कयुक्तेकिलमंडपेवै ॥ १२ ॥ अग्निंसमाधायपुरोहितःसहुत्वायथावच्चतदंतराले॥ आह्वाययत्तौकृतकौतुकौतुवधूवरौप्रेमयुतौनिकामम्॥१३॥लाजाविसर्गंविधिवद्विधायकृत्वाहुताशस्यप्रदक्षिणांच॥ तौचक्रतुस्तत्रयथोचितंतत्सर्वंविधानंकुलगोत्रजातम् ॥ १४ ॥ शतद्वयंचाश्वयुजांरथानांसुभूषितंचापिशरौघसंयुतम् ॥ ददौनृपेंद्रस्तुसुदर्शनायसुपूजितंपारिवर्हंविवाहे ॥ १५ ॥ मदोत्कटान्हेमविभूषितांश्चगजान्गिरेःशृंगसमानदेहान् ॥ शतंसपादंनृपसूनवेऽसौददावथप्रेमयुतोनृपेंद्रः ॥ १६ ॥ दासीशतंकांचनभूषितंचकरेणुकानांचशतंसुचारु॥समर्पयामासवरायराजाविवाहकालेमुदितोऽनुवेलम् ॥१७॥अदात्पुनर्दाससहस्रमेकंसर्वायुधैःसंभृतभूषितंच ॥ रत्नानिवासांसियथोचितानिदिव्यानिचित्राणितथाऽऽविकानि॥१८॥ददौपुनर्वासगृहाणितस्मैरम्याणिदीर्घाणिविचित्रितानि ॥ सिंधूद्भवानांतुरगोत्तमानामदात्सहस्रद्वितयंसुरम्यम् ॥१९॥ क्रमेलकानांचशतत्रयंवैप्रत्यादिशद्भारभृतांसुचारु ॥ शतद्वयंवैशकटोत्तमानांतस्मैददौधान्यरसैःप्रपूरितम् ॥ २० ॥

॥ ६ ॥ आर्यजनैःपुरोहितादिभिः ॥ ७ ॥ तस्यजामातुः ॥ अर्हणांपूजाम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ मनोरमायाश्चिंताममपुत्रायकन्यांदास्यतिवानदास्यतीतिसाशशाम ॥ निधिकन्यकासमांकुबेरकन्यकासमांमेने ॥ आत्मानंत्वनुत्तममल्पंकन्यापेक्षयामेने महतांविवाहेएषैवरीतिः ॥ १० ॥ ११ ॥ चतुष्कयुक्तेवेदीयुक्तेइत्यर्थः ॥ १२ ॥ आह्वाययत्पित्रादिनेत्यर्थः ॥१३॥ लाजाविसर्गंलाजाहोमम् ॥ १४ ॥ १५ ॥ सपादंपंचविंशत्यधिकंशतमित्यर्थः ॥१६॥ करेणुकानांशतम् ॥ १७ ॥ संभृतभूषितमितिकर्मधारयः ॥ आविकानिऊर्णावस्त्राणि ॥ ॥ १८ ॥ १९ ॥ क्रमेलकानामुष्ट्राणांच ॥ २० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इत्थंपारिवर्हवरायदत्वावरमातरंतोषयति । मनोरमामिति ॥ २१ ॥ हेभूपतेकुलस्यवृद्धिरप्यस्त्वित्यर्थः ॥ ममदुर्भगायाः सूनवेत्वयाकन्यादत्तातत्तस्तवकल्याणंभवत्वस्माच्चाधिकंनकिंचिन्ममाभिलषणीयमस्ति ॥ २२ ॥ अथास्मिन्समयेतवमहत्तरास्तुतिःकर्तव्यापरंतुसास्तुतिःस्तुतिविषयस्यपरकीयत्वेस्तुतिंकर्तुंवंदिजनवत्कविताशक्तिमत्त्वेएवसंभवातिनचात्रैतदुभयमस्तितवस्वजनत्वान्ममचकुलीनायावंदिजनत्वाभावादित्याह । नवंदिपुत्रीति ॥ २३ ॥ पूज्यस्यसुता ॥२४॥ कथंभूतायममसुतायतत्राऽऽह । वनाधिवासायेति ॥ २५ ॥ बलेबलवतीत्यर्थः ॥ हेभूपमेर्थहीनेसुतेनकोपिदद्यादित्यन्वयः ॥ २६ ॥ २७ ॥ निशम्येति ॥ राज्यंत्वंगृहाणाहंतुतवसेनाधिपतिर्भवामिभविष्यामीत्यर्थः ॥ २८ ॥ वनेऽथवापुरेसवासोमेनमान्योऽस्ति ॥

मनोरमांराजसुतांप्रणम्यजगादवाक्यंविहितांजलिःपुरः ॥ दासोऽस्मितेराजसुतेवरिष्ठतद्ब्रूहियत्स्यात्तुमनोगतंते ॥२१॥ तंचारुवाक्यंनिजगादसाऽपिस्वस्त्यस्तुतेभूपकुलस्यवृद्धिः॥संमानिताऽहंममसूनवेत्वयादत्तायतोरत्नवरास्वकन्या ॥ २२ ॥ नवंदिपुत्रीनृपमागधीवास्तौमीहकिंत्वांस्वजनंमहत्तरम् ॥ सुमेरुतुल्यस्तुकृतःसुतोऽद्यमेसंबंधिनाभूपतिनोत्तमेन॥२३॥अहोऽतिचित्रंनृपतेश्चरित्रंपरंपवित्रंतवकिंवदामि ॥ यद्भ्रष्टराज्यायसुतायमेऽद्यदत्तात्वयापूज्यसुतावरिष्ठा ॥ २४ ॥ वनाधिवासायकिलाधनायपित्राविहीनायविसैन्यकाय ॥ सर्वानिमान्भूमिपतीन्विहायफलाशनायार्थविवर्जिताय ॥ २५ ॥ समानवित्तेऽथकुलेबलेचददातिपुत्रींनृपतिश्चभूयः ॥ नकोऽपिमेभूपसुतेऽर्थहीनेगुणान्वितांरूपवतींचदद्यात्॥२६॥ वैरंतुसर्वैःसहसंविधायनृपैर्वरिष्ठैर्बलसंयुतैश्च ॥ सुदर्शनायाथसुताऽर्पितामेकिंवर्णयेधैर्यमिदंत्वदीयम् ॥ २७ ॥ निशम्यवाक्यानिनृपःप्रहृष्टःकृतांजलिर्वाक्यमुवाचभूयः ॥ गृहाणराज्यंममसुप्रसिद्धंभवामिसेनापतिरद्यचाहम् ॥ २८ ॥ नोचेत्तदर्धंप्रतिगृह्यचात्रसुतान्वितांराज्यफलानिभुंक्ष्व ॥ विहायवाराणसिकानिवासंवनेपुरेवासमतोनमेऽस्ति ॥ २९ ॥ नृपास्तुसंत्येवरुषान्वितावैगत्वाकरिष्येप्रथमंतुसांत्वनम् ॥ ततःपरंद्वावपरावुपायौनोचेत्ततोयुद्धमहंकरिष्ये ॥३०॥ जयाजयौदैववशौतथाऽपिधर्मेजयोनैवकृतेप्यधर्मे ॥ तेषांकिलाधर्मवतांनृपाणांकथंभविष्यत्यनुचिंतितंवै ॥ ३१ ॥ आकर्ण्यतद्भाषितमर्थवच्चजगादवाक्यंहितकारकंतम् ॥ मनोरमामानमवाप्यतस्मात्सर्वात्मनामोदयुताप्रसन्ना ॥ ३२ ॥ राजञ्छिवंतेऽस्तुकुरुष्वराज्यंत्यक्त्वाभयंत्वंस्वसुतैःसमेतः ॥ सुतोऽपिमेनूनमवाप्यराज्यंसाकेतपुर्याप्रचरिष्यतीह ॥ ३३ ॥ विसर्जयास्मान्निजसद्मगंतुंशिवंभवानीतवसंविधास्यति ॥ नकाऽपिचिंतामममभूपवर्ततेसंचिंतयंत्याःपरमांबिकांवै ॥ ३४ ॥

एतादृशक्षेत्रवासंविहायनान्यत्रगंतव्यमित्यर्थः ॥ २९ ॥ कुपितनृपभयंत्वयानैवकर्तव्यमित्याह । नृपास्त्विति ॥ द्वावपरावुपायौदानभेदौतैस्त्रिभिस्तेषांसांत्वनंजातंचेद्वरम् ॥ नोचेद्युद्धमहंकरिष्येत्वयानभीतिःकर्त्तव्येत्यर्थः ॥ ३० ॥ ननुयुद्धेतवपराजयेममभयंतदवस्थमेवेतिचेत्तत्राऽऽह । जयाजयाविति ॥ यद्यपितौदैववशौतथाऽपियतोधर्मस्ततोजयइतिनियमाद्धर्मेमयैतादृशेकृतेजयएवममभविष्यति ॥ अधर्मेपिअधर्मेतुकृतेनैवजयस्तस्मात्तेषामनुचिंतितमभिलषितंकथंभवेन्नकथमपीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ राज्यमवाप्येति ॥ अनंतकोटिब्रह्मांडनायिकाश्रीभुवनेश्वरीभगवतीप्रसादादितिरहस्यम् । साकेतपुर्यामयोध्यायाम् ॥ ३३ ॥ तदेवाह । विसर्जयेति ॥ परमांबिकांसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





दोषागतेति ॥ एवंवदतोःसंबंधिनोर्भाषणैरेवदोषारात्रिर्गताऽनंतरंप्रातःकृतंविवाहंनृपाःसमधिगम्यज्ञात्वानगरबाह्यगतास्तथावक्ष्यमाणप्रकारेणोचुः ॥ ३५ ॥ अद्यैवेति ॥ अस्मत्प्रतारणं कर्तारंसुबाहुंतंबालंसुदर्शनंचहत्वातांकन्यांलक्ष्मींराज्ञोलक्ष्मींचगृह्णीमोयद्येतन्नक्रियतेतर्हिलज्जामवाप्यनिजगृहंकथंव्रजेम ॥ ३६ ॥ विवाहनिश्चयःकथंभवताज्ञातइतिचेत्तत्रोचुः ॥ शृण्वंत्विति ॥ मृदंगशब्दामधुराअपिनिजबाहुल्यात्क्रूराञ्छंखस्वनानभिभवंतिएतैर्लक्षणैर्विवाहःकृतइतिमन्यामहे ॥ ३७ ॥ करपीडनंकन्याकरग्रहणंचकारअंतर्भावितणिजर्थत्वात्कारयामासेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हेनृपतेस्वगृहंव्रजेत्येवास्माकंप्रार्थनाभवतोन्यत्सर्वमेवास्माभिर्लब्धंपूर्णकामावयंजाताइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ सुकृतंकृतंहेराजंस्त्वयासुकृतंपुण्यं

दोषागताविविधवाक्यपदैरसालैरन्योन्यभाषणपदैरमृतोपमैश्च ॥ प्रातर्नृपाःसमधिगम्यकृतंविवाहंरोषान्वितानगरबाह्यगतास्तथोचुः ॥ ३५ ॥ अद्यैवतं नृपकलंकधरंचहत्वाबालंतथैवकिलतंनविवाहयोग्यम् ॥ गृह्णीमतांशशिकलांनृपतेश्चलक्ष्मींलज्जामवाप्यनिजसद्मकथंव्रजेम ॥ ३६ ॥ शृण्वंतुतूर्यनिनदान्किलवाद्यमानाञ्छंखस्वनानभिभवंतिमृदंगशब्दाः ॥ गीतध्वनिंचविविधंनिगमस्वनंचमन्यामहेनृपतिनाऽत्रकृतोविवाहः ॥ ३७ ॥ अस्मान्प्रतार्य वचनैर्विधिवच्चकारवैवाहिकेनविधिनाकरपीडनंवै ॥ कर्तव्यमद्यकिमहोप्रविचिंतयंतुभूपाःपरस्परमतिंचसमर्थयंतु ॥ ३८ ॥ एवंवदत्सुनृपतिष्वथकन्यकायाःकृत्वाविवाहविधिमप्रतिमप्रभावः ॥ भूपान्निमंत्रयितुमाशुजगामराजाकाशीपतिःस्वसुहृदैःप्रथितप्रभावैः ॥ ३९ ॥ आगच्छंतंचतंदृष्ट्वानृपाःकाशीपतिंतदा ॥ नोचुःकिंचिदपिक्रोधान्मौनमाधायसंस्थिताः ॥ ४० ॥ सगत्वाप्रणिपत्याऽऽहकृतांजलिरभाषत ॥ आगंतव्यंनृपैःसर्वैर्भोजनार्थंगृहेमम ॥ ॥ ४१ ॥ कन्ययाऽसौवृतोभूपःकिंकरोमिहिताहितम् ॥ भवद्भिस्तुशमःकार्योमहांतोहिदयालवः ॥ ४२ ॥ तन्निशम्यवचस्तस्यनृपाःक्रोधपरिप्लुताः ॥ प्रत्यूचुर्भुक्तमस्माभिःस्वगृहंनृपतेव्रज ॥४३॥ कुरुकार्याण्यशेषाणियथेष्टंसुकृतंकृतम्॥नृपाःसर्वेप्रयांत्वद्यस्वानिस्वानिगृहाणिवै ॥४४॥ सुबाहुरपितच्छ्रुत्वाजगामशंकितोगृहम् ॥ किंकरिष्यंतिसंविग्नाःक्रोधयुक्तानृपोत्तमाः ॥ ४५ ॥ गतेतस्मिन्महीपालाश्चक्रुश्चसमयंपुनः ॥ रुद्धामार्गंग्रहीष्यामःकन्यांहत्वासुदर्शनम् ॥ ४६ ॥ केचनोचुःकिमस्माकंहंततेननृपेणवै ॥ दृष्ट्वातुकौतुकंसर्वेगमिष्यामोयथागतम् ॥ ४७ ॥ इत्युक्तातेनृपाःसर्वेमार्गमाक्रम्यसंस्थिताः ॥ चकारोत्तरकार्याणिसुबाहुःस्वगृहंगतः ॥४८॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०तृ०द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥ ॥ व्यासउवाच ॥ तस्मैगौरवभोज्यानिविधायविधिवत्तदा ॥ वासराणिचषड्राजाभोजयामासभक्तितः ॥ १ ॥ एवंविवाहकार्याणिकृत्वासर्वाणिपार्थिवः ॥ पारिबर्हंप्रदत्त्वाऽथमंत्रयन्सचिवैःसह॥२॥

कृतंसम्यक्संपादितम् ॥ अस्मदवज्ञयेत्यर्थः ॥ इत्थंराजानमुक्त्वापरस्परंवदंतिनृपाइति ॥४४॥ तच्छ्रुत्वास्तुतिनिंदाफलकंवाक्यंश्रुत्वानेमेसांत्वनयोग्याइतिमत्वैतेसंविग्नादुःखेनक्रोधयुक्ताःकिंकरिष्यंतीतिनजानेइतिशंकितोगृहंजगाम ॥ ४५ ॥ समयंसंकेतम् ॥ ४६ ॥ केचनोचुरिति ॥ उदासीनाइत्यर्थः ॥ ४७ ॥ उत्तरकार्याणिवरवधूप्रस्थापनविषयाणि ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ पंचाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथमहारणे ॥ शत्रवोनिहतादेव्येत्येवमर्थोऽत्रवर्ण्यते ॥ १ ॥ तस्मैइति ॥ गौरवभोज्यानगौरवेणमानेनभोज्यानिमानपुरःसरंभोज्यानीत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

मार्गरोधनंकृतंराजभिरितिशेषः ॥ ३ ॥४॥ भारद्वाजाश्रममिति ॥ भारद्वाजमुनेराज्ञयावयमत्रागताः पुनस्तमृषिंद्रष्टुंभारद्वाजाश्रमंगत्वास्थास्यामःपश्चादस्माभिस्तास्मिन्नाश्रमेस्थेयमुतस्वगृहे स्थेयमितिविचारःकर्तव्योनमध्येइतिभावः ॥ ५ ॥ इदमुत्तरंपूर्वराज्ञामद्गृहेस्थेयमित्युक्तंतस्येतिबोध्यम् ॥ ६ ॥ सोऽपिसुदर्शनोऽपि ॥ ७ ॥ अनुपश्चान्नृपोत्तमः सुबाहुः ॥ वृतोविवाहितः॥

दूतैस्तुकथितंश्रुत्वामार्गसंरोधनंकृतम् ॥ बभूवविमनाराजासुबाहुरमितद्युतिः ॥ ३ ॥ सुदर्शनस्तदोवाचश्वशुरंसंशितव्रतः ॥ अस्मान्विसर्जयाशुत्वंगमिष्यामोह्यशंकिताः ॥ ४ ॥ भारद्वाजाश्रमंपुण्यंगत्वातत्रसमाहिताः ॥ निवासायविचारोवैकर्तव्यःसर्वथानृप ॥ ५ ॥ नृपेभ्यश्चनकर्तव्यंभयंकिंचित्त्वयाऽनघ ॥ जगन्माताभवानीमेसाहाय्यंवैकरिष्यति ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ तस्येतिमतमाज्ञायजामातुर्नृपसत्तमः ॥ विससर्जधनंदत्त्वाप्रतस्थेसोऽपिसत्वरः ॥ ॥ ७ ॥ बलेनमहताविष्टोययावनुनृपोत्तमः ॥ सुदर्शनोवृतस्तत्रचचालपथिनिर्भयः ॥ ८ ॥ रथैःपरिवृतःशूरःसदारोरथसंस्थितः ॥ गच्छन्ददर्शसैन्यानि नृपाणांरघुनंदनः ॥ ९ ॥ सुबाहुरपितान्वीक्ष्यचिंताविष्टोबभूवह ॥ विधिवत्सशिवांचित्तेजगामशरणंमुदा ॥ १० ॥ जजापेकाक्षरंमंत्रंकामराजमनुत्तमम् ॥ निर्भयोवीतशोकश्चपत्न्यासहनवोढया ॥ ११ ॥ ततःसर्वेमहीपालाःकृत्वाकोलाहलंतदा ॥ उत्थिताःसैन्यसंयुक्ताहर्तुकामास्तुकन्यकाम् ॥ १२ ॥ काशीराजस्तुतान्दृष्ट्वाहंतुकामोबभूवह॥निवारितस्तदाऽत्यर्थंराघवेणजिगीषता ॥ १३॥ तत्रापिनेदुःशंखाश्चभेर्यश्चानकदुंदुभिः ॥ सुबाहोश्चनृपाणांचपरस्परजिघांसताम् ॥ १४ ॥ शत्रुजित्तुसुसंवृत्तःस्थितस्तत्रजिघांसया ॥ युधाजित्तत्सहायार्थंसन्नद्धःप्रबभूवह ॥ १५ ॥ केचिच्चप्रेक्षकास्तस्यसहानीकैःस्थितास्तदा ॥ युधाजिदग्रतोगत्त्वासुदर्शनमुपस्थितः ॥१६॥ शत्रुजित्तेनसहितोहंतुंभ्रातरमानुजः ॥ परस्परंतेबाणौघैस्ततक्षुःक्रोधमूर्छिताः ॥ १७ ॥ संमर्दःसुमहांस्तत्रसंप्रवृत्तःसुमार्गणैः ॥ काशीपतिस्तदातूर्णंसैन्येनबहुनावृतः ॥ १८ ॥ साहाय्यार्थंजगामाशुजामातरमनिंदितम् ॥ एवंप्रवृत्तेसंग्रामेदारुणेलोमहर्षणे ॥ १९ ॥ प्रादुर्बभूवसहसादेवीसिंहोपरिस्थिता ॥ नानायुधधरारम्यावरभूषणभूषिता ॥ २० ॥ दिव्यांबरपरीधानामंदारस्रक्सुसंयुता ॥ तांदृष्ट्वातेऽथभूपालाविस्मयंपरमंगताः ॥ २१ ॥ केयंसिंहसमारूढाकुतोवेतिसमुत्थिता ॥ सुदर्शनस्तुतांवीक्ष्यसुबाहुमितिचाब्रवीत् ॥ २२ ॥ पश्यराजन्महादेवीमागतांदिव्यदर्शनाम् ॥ अनुग्रहायमेनूनंप्रादुर्भूतादयान्विता ॥ २३ ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ सुदर्शनःशिवांशरणंजगामपत्न्यासहनिर्भयोजातोमंत्रजपप्रभावादित्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ राघवेणसुदर्शनेन ॥ १३ ॥ परस्परजिघांसतांराज्ञांशंखाभेर्यश्चनेदुरित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ अग्रतःसर्वसैन्यस्यतुसुदर्शनमुपस्थितः प्राप्तस्तेनयुधाजितासहितः शत्रुजिच्चोपस्थितइतिपूर्वेणान्वयः ॥ १६ ॥ किमर्थंभ्रातरंसुदर्शनंहंतुम् ॥ अनुजएवानुजः ॥ प्रज्ञादित्वादण् ॥ ततक्षुश्चिच्छिदुस्तेत्रयः ॥ १७॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ विस्मयमेवाऽऽह । केयमिति ॥ २२ ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २४ ॥ तस्यादर्शनेनमुदितावित्यन्वयः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ केसरिणाआदत्तांगृहीताम् ॥ आदत्तामितिच्छेदः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ कर्मारेण लोहकारेणपरिमार्जितांस्तीक्ष्णीकृतान् ॥३५॥ सुदर्शनंहंतुकामःसुदर्शनस्यैवोपरीत्यर्थः ॥३६॥३७॥ तत्रसंप्राप्ताजगदंबिकातुमुलंयुद्धंचकारेत्यन्वयः ॥ यद्यपिपामरेषुमनुष्येषुभगवत्याः शस्त्रधारणमनुचितंतथापिभक्तवात्सल्यादनुचितमपिकर्मभगवतीकरोतीत्यनेनबोधितम् ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ मातुलस्यापीति ॥ मातुलभागिनेयौसुबाहोराज्ञः ॥ तौचयुधाजित्पक्षपातिनौ

निर्भयोऽहंमहाराजजातोस्मिनिर्भयादपि ॥ सुदर्शनःसुबाहुश्चतामालोक्यवराननाम् ॥ २४ ॥ प्रणामंचक्रतुस्तस्यामुदितौदर्शनेनच ॥ ननादचतथा सिंहोगजास्त्रस्ताश्चकंपिरे ॥ २५ ॥ ववुर्वातामहाघोरादिशश्चाऽऽसन्सुदारुणाः ॥ सुदर्शनस्तदाप्राहनिजंसेनापतिंप्रति ॥ २६ ॥ मार्गेव्रजत्वंतरसाभू पालायत्रसंस्थिताः ॥ किंकरिष्यंतिराजानःकुपितादुष्टचेतसः ॥ २७ ॥ शरणार्थंचसंप्राप्तादेवीभगवतीहिनः ॥ निरातंकैश्चगंतव्यंमार्गेऽस्मिन्भूपसंकु ले ॥ २८ ॥ स्मृतामयामहादेवीरक्षणार्थमुपागता ॥ तच्छ्रुत्वावचनंसेनापतिस्तेनपथाऽव्रजत् ॥ २९ ॥ युधाजित्तुसुसंक्रुद्धस्तानुवाचमहीपतीन् ॥ किंस्थिताभयसंत्रस्तानिघ्नंतुकन्यंकान्वितम् ॥ ३० ॥ अवमन्यचनःसर्वान्बलहीनोबलाधिकान् ॥ कन्यांगृहीत्वासंयातिनिर्भयस्तरसाशिशुः ॥ ३१ ॥ किंभीताःकामिनींवीक्ष्यसिंहोपरिसुसंस्थिताम् ॥ नोपेक्ष्योहिमहाभागाहंतव्योऽत्रसमाहितैः ॥ ३२ ॥ हत्वैनंसंग्रहीष्यामःकन्यांचारुविभूष णाम् ॥ नायंकेसरिणाऽऽदत्तांछेत्तुमर्हतिजंबुकः ॥ ३३ ॥ इत्युक्त्वासैन्यसंयुक्तःशत्रुजित्सहितस्तदा ॥ योद्धुकामःसुसंप्राप्तोयुधाजित्क्रोधसंवृतः ॥ ३४ ॥ मुमोचविशिखांस्तूर्णंसमपुंखाञ्छिलाशितान् ॥ धनुराकृष्यकर्णांतंकर्मारपरिमार्जितान् ॥ ३५ ॥ हंतुकामःसुदुर्मेधाःसुदर्शनमथोपरि ॥ सुदर्शनस्तु तान्बाणैश्चिच्छेदापततःक्षणात् ॥ ३६ ॥ एवंयुद्धेप्रवृत्तेथचुकोपचंडिकाभृशम् ॥ दुर्गादेवीमुमोचाथबाणान्युधाजितंप्रति ॥ ३७ ॥ नानारूपातदाजा तानानाशस्त्रधराशिवा ॥ संप्राप्तातुमुलंतत्रचकारजगदंबिका ॥ ३८ ॥ शत्रुजिन्निहतस्तत्रयुधाजिदपिपार्थिवः ॥ पतितौतौरथाभ्यांतुजयशब्दस्तदा ऽभवत् ॥ ३९ ॥ विस्मयंपरमंप्राप्ताभूपाःसर्वेविलोक्यतान् ॥ निधनंमातुलस्यापिभागिनेयस्यसंयुगे ॥ ४० ॥ सुबाहुरपितद्दृष्ट्वानिधनंसंयुगेतयोः ॥ तुष्टावपरमप्रीतोदुर्गांदुर्गतिनाशिनीम् ॥ ४१ ॥ सुबाहुरुवाच ॥ नमोदेव्यैजगद्धात्र्यैशिवायैसततंनमः ॥ दुर्गायैभगवत्यैतेकामदायैनमोनमः ॥ ४२ ॥ नमःशिवायैशांत्यैतेविद्यायैमोक्षदेनमः ॥ विश्वव्याप्त्यैजगन्मातर्जगद्धात्र्यैनमःशिवे ॥ ४३ ॥ नाहंगतिंतवधियापरिचिंतयन्वैजानामिदेविसगुणःकिलनि र्गुणायाः ॥ किंस्तौमिविश्वजननिप्रकटप्रभावांभक्तार्तिनाशनपरांपरमांचशक्तिम् ॥ ४४ ॥

स्थितौ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ नाहमिति ॥ अहंसगुणोगुणत्रयबद्धात्ममतिर्धियातवनिर्गुणायाःसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिण्यागतिंपराक्रमंव्याप्तिंवापरिचिंतयन्वाङ्मनस योरविषयत्वान्नजानामि ॥ तदाकिंस्तौमि स्तुतिविषयस्यैवज्ञानाभावात् ॥ ४४ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

त्वांस्तौमीति॥यतस्त्वं सर्वमनोनियंत्रीततस्त्वांकिंस्तौमि मनसोविषयत्वाभावादितिभावः॥किंस्तूयतइति॥सर्वव्यापकमात्मरूपंकिंस्तूयतेनस्तुयते॥मनोविषयत्वाभावात्॥ तथैवतदात्माभिन्न त्वांमनोविषयत्वाभावात्किंस्तौमिनकिमपीत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ब्रह्माहरश्चेति ॥ एतादृशाब्रह्मादयोमहांतोऽनिशंस्तुवंतोऽपितवगुणानामंतंनगताः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ यस्याःस्वरूपंब्रह्माद योनविजानंतितस्मादुच्यतेऽज्ञेयायस्याअंतोनविद्यतेतस्मादुच्यतेऽनंतेति ॥ यदेत्थमस्तितदाहमप्रसिद्धोगुणैःसत्त्वादिभिर्बद्धोविभेदमतिर्जीवब्रह्मभेदमतिरज्ञस्तवचरित्रंवक्तुंक्वकस्मिन्कालेक्षमो नकस्मिन्नपीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ममचित्तशुद्ध्यभावाद्यद्यपिभवत्यादर्शनयोग्यतानास्तितथाऽपिभवच्चरणकमलनिमग्नांतःकरणानांसतांसंगत्याकःकामोनसिध्येदपितुसिध्यत्येवेत्याह । सत्संग तिरिति ॥ सत्संगतिःकामंमनोरथंकथंनकरोतिसंपादयति अपितुकरोत्येव ॥ भगवत्याःस्वस्मिन्भक्तिंकुर्वाणापेक्षयास्वभक्तेभक्तिंकुर्वाणेऽधिकप्रेमयुक्तत्वात् ॥ तदुक्तंदेवीपुराणे ॥ मद्भक्त्य

वाग्देवतात्वमसिसर्वगतैवबुद्धिर्विद्यामतिश्चगतिरप्यसिसर्वजंतोः ॥ त्वांस्तौमिकिंत्वमसिसर्वमनोनियंत्रीकिंस्तूयतेहिसततंखलुचात्मरूपम् ॥ ४५ ॥ ब्रह्मा हरश्चहरिरप्यनिशंस्तुवंतोनांतंगताःसुरवराःकिलतेगुणानाम् ॥ क्वाहंविभेदमतिरंवगुणैर्वृतोवैवक्तुंक्षमस्तवचरित्रमहोऽप्रसिद्धः ॥ ४६ ॥ सत्संगतिःकथमहो नकरोतिकामंप्रासंगिकापिविहिताखलुचित्तशुद्धिः ॥ जामातुरस्यविहितेनसमागमेनप्राप्तंमयाऽद्भुतमिदंतवदर्शनंवै ॥ ४७ ॥ ब्रह्माऽपिवांछतिसदैवहरो हरिश्चसेंद्राःसुराश्चमुनयोविदितार्थतत्त्वाः ॥ यद्दर्शनंजननितेऽद्यमयादुरापंप्राप्तंविनादमशमादिसमाधिभिश्च ॥ ४८ ॥ क्वाहंसुमंदमतिराशुतवावलोकंक्वे दंभवानिभवभेषजमद्वितीयम् ॥ ज्ञाताऽसिदेविसततंकिलभावयुक्ताभक्तानुकंपनपरामरवर्गपूज्या ॥ ४९ ॥ किंवर्णयामितवदेविचरित्रमेतद्यद्रक्षितोऽ स्तिविषमेऽत्रसुदर्शनोऽयम् ॥ शत्रूहतौसुबलिनौतरसात्वयायद्भक्तानुकंपिचरितंपरमंपवित्रम् ॥ ५० ॥ नाश्चर्यमेतदितिदेविविचारितेऽर्थेत्वंपासिसर्व मखिलंस्थिरजंगमंवै ॥ त्रातस्त्वयाचविनिहत्यरिपुर्दयातःसंरक्षितोऽयमधुनाध्रुवसंधिसूनुः ॥ ५१ ॥ भक्तस्यसेवनपरस्ययशोऽतिदीप्तंकर्तुंभवानिरचितं चरितंत्वयैतत् ॥ नोचेत्कथंसुपरिगृह्यसुतांमदीयांयुद्धेभवेत्कुशलवाननवद्यशीलः ॥ ५२ ॥ शक्ताऽसिजन्ममरणादिभयान्विहंतुंकिंचित्रमत्रकिलभक्तजन स्यकामम् ॥ त्वंगीयसेजननिभक्तजनैरपारात्वंपापपुण्यरहितासगुणागुणाच ॥ ५३ ॥ त्वद्दर्शनादहमहोसुकृतीकृतार्थोजातोऽस्मिदेविभुवनेश्वरिधन्यज न्मा ॥ बीजंनतेनभजनंकिलवेद्मिमातर्ज्ञातस्तवाद्यमहिमाप्रकटप्रभावः ॥ ५४ ॥

पेक्षयाभक्तेममभक्तिस्तुसिद्धिदेति ॥ ननुचित्तशुद्धिंविनाकथंमद्दर्शनार्हतेतिचेत्साचित्तशुद्धिर्भवद्भक्तदर्शनप्रसंगेनानायासेनापिविहिताभवतिकृताभवति ॥ एतादृशोभवद्भक्तदर्शनमहिमेति भावः ॥ कोऽसौममभक्तस्तवैतादृशोमिलितइतिचेदस्यजामातुःसुदर्शनस्यतवभक्तस्ययद्दैवेनाविहितेनसमागमेनचप्राप्तंमयाऽद्भुतमिदंतवदर्शनंवै ॥ ४७ ॥ इदानींस्वस्यधन्यतांवर्णयति । ब्रह्मा ऽपीति ॥ शमदमादिसमाधिभिर्विनापि प्राप्तं ततोमत्समोन्यःकोवाधन्योऽस्तीतिभावः ॥ ४८ ॥ ज्ञाताऽसीति ॥ अथापिमयाज्ञाताऽसिदृष्टाऽसिततोमदन्यःकोस्तिधन्यः ॥ कथंभूतात्वं भा वयुक्तभक्तेष्वनुकंपनपरा ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ कामंमनोरथंकर्तुंशक्ताऽसीतिकिंचित्रमित्यन्वयः ॥ अतएवत्वंभक्तैर्गीयसे ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ पंचाशद्भिस्तथाश्लोकैःश्रीदेवीमहिमोच्यते ॥ दुर्गादेव्यानिवासश्चकाश्यांकृतइतीर्यते ॥ १ ॥ तस्याइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ त्वंपराशक्तिर्दुर्गादेवीतिनाम्नासंस्थिताभवेतिशेषः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ अथोइत्योकारांतोनिपातः ॥ १२ ॥ भक्तानुकंपीति ॥

व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीप्रसन्नवदनाशिवा ॥ उवाचतंनृपंदेवीवरंवरयसुव्रत ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ तस्यास्तद्वचनंश्रुत्वाभवान्याःसनृपोत्तमः ॥ प्रोवाचवचनंतत्रसुबाहुर्भक्तिसंयुतः ॥ १ ॥ सुबाहुरुवाच ॥ एकतोदेवलोकस्यराज्यंभूमंडलस्यच ॥ एकतोदर्शनंतेवैनचतुल्यंकदाचन ॥ २ ॥ दर्शनात्सदृशंकिंचित्त्रिषुलोकेषुनास्तिमे ॥ कंवरंदेवियाचेऽहंकृतार्थोऽस्मिधरातले ॥ ३ ॥ एतदिच्छाम्यहंमातर्याचितुंवांछितंवरम् ॥ तवभक्तिःसदामेऽस्तुनिश्चलाह्यनपायिनी ॥ ४ ॥ नगरेऽत्रत्वयामातःस्थातव्यंममसर्वदा ॥ दुर्गादेवीतिनाम्नावैत्वंशक्तिरिहसंस्थिता ॥ ५ ॥ रक्षात्वयाचकर्तव्यासर्वदानगरस्यह ॥ यथासुदर्शनस्त्रातोरिपुसंघादनामयः ॥ ६ ॥ तथाऽत्ररक्षाकर्तव्यावाराणस्यास्त्वयांबिके ॥ यावत्पुरीभवेद्भूमौसुप्रतिष्ठासुसंस्थिता ॥ ७ ॥ तावत्त्वयाऽत्रस्थातव्यंदुर्गेदेविकृपानिधे ॥ वरोऽयंममतेदेयःकिमन्यत्प्रार्थयाम्यहम् ॥ ८ ॥ विविधान्सकलान्कामान्देहिमेविद्विषोजहि ॥ अभद्राणांविनाशंचकुरुलोकस्यसर्वदा ॥ ९ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंप्रार्थितादेवीदुर्गादुर्गार्तिनाशिनी ॥ तमुवाचनृपंतत्रस्तुत्वावैसंस्थितंपुरः ॥ १० ॥ दुर्गोवाच ॥ राजन्सदानिवासोमेमुक्तिपुर्योभविष्यति ॥ रक्षार्थंसर्वलोकानांयावत्तिष्ठतिमेदिनी ॥ ११ ॥ अथोसुदर्शनस्तत्रसमागम्यमुदान्वितः ॥ प्रणम्यपरयाभक्त्यातुष्टावजगदंबिकाम् ॥ १२ ॥ अहोकृपातेकथयाम्यहंकिंत्रातस्त्वयायत्किलभक्तिहीनः ॥ भक्तानुकंपीसकलोजनोऽस्तिविमुक्तभक्तेरवनंव्रतंते ॥ १३ ॥ त्वंदेविसर्वंसृजसिप्रपंचंश्रुतंमयापालयसिस्वसृष्टम् ॥ त्वमत्तिसंहारपरेचकालेनतेऽत्रचित्रंममरक्षणंवै ॥ १४ ॥ करोमिकिंतेवददेविकार्यंकवात्रजामीत्यनुमोदयाशु ॥ कार्येविमूढोस्मितवाऽऽज्ञयाहंगच्छामितिष्ठेविहरामिमातः ॥ १५ ॥ व्यासउवाच ॥ तंतथाभाषमाणंतुदेवीप्राहदयान्विता ॥ गच्छायोध्यांमहाभागकुरुराज्यंकुलोचितम् ॥ १६ ॥ स्मरणीयासदाऽहंतेपूजनीयाप्रयत्नतः ॥ शंविधास्याम्यहंनित्यंराज्येतेनृपसत्तम ॥ १७ ॥ अष्टम्यांचचतुर्दश्यांनवम्यांचविशेषतः ॥ ममपूजाप्रकर्तव्यावलिदानविधानतः ॥ १८ ॥ अर्चामदीयानगरेस्थापनीयात्वयाऽनघ ॥ पूजनीयाप्रयत्नेनत्रिकालंभक्तिपूर्वकम् ॥ १९ ॥ शरत्कालेमहापूजाकर्तव्याममसर्वदा ॥ नवरात्रविधानेनभक्तिभावयुतेनच ॥ २० ॥ चैत्रेऽश्विनेतथाऽऽषाढेमाघेकार्योमहोत्सवः ॥ नवरात्रेमहाराजपूजाकार्याविशेषतः ॥ २१ ॥

सकलोऽपिजनोदेवादिलोकोभक्तानुकंप्यस्तिविमुक्तभक्तेर्भक्तिरहितस्यपुरुषस्यत्ववनंनकोपिकरोतितेतवव्रतंतुतादृशभक्तिरहितस्यपुरुषस्याप्यवनंकर्त्तव्यमिति॥ १३ ॥ १४ ॥करोमीति ॥ किंतेकार्यंमयाकर्तव्यमितिवदेत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ अर्चाप्रतिमा ॥ १९ ॥ २० ॥ चैत्रेमाघेऽश्विने आषाढे नवरात्रेइत्यन्वयः ॥ इतिनवरात्रचतुष्टयेपीत्यर्थः ॥२१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

बुधैर्महोत्सवपूजाकार्येत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ अयोध्याधिपतिंसुदर्शनम् ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ त्वत्कृतेत्वदर्थम् ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ भवत्वंनौश्चेति ॥ त्वंसंसारेसंसार रूपेसमुद्रेनौर्भवनौकाभवास्मांस्तारयितुम् ॥ यतःसाधवोऽतिदयापराभवंति ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ चतुर्व्यूहात्मकंहिभगवत्याःस्वरूपंक्रमेणदर्शयति ॥ सर्वस्याऽद्येति ॥ एकापाल यित्रीसात्त्विकीमहालक्ष्मीर्विष्णुशक्तिःसर्वप्रपंचस्याद्येयम् ॥ द्वितीयातुसृजतेयारजोरूपासत्त्वरूपाचपालनेइति पुनरुक्तिरनुवादरूपा ॥ संहारेतमोरूपायासेयंतृतीयाशक्तिः ॥ एतासांनामा निप्रथमस्कंधएवोक्तानि ॥ तस्यास्तुसात्त्विकीशक्तीराजसीतामसीतथा ॥ महालक्ष्मीःसरस्वतीमहाकालीतिताःस्त्रियइति ॥ ननुरहस्येतुसत्त्वाख्येनातिशुद्धेनगुणेनेंदुप्रभांदधावितिवचनेन

कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांममभक्तिसमन्वितैः ॥ कर्तव्यानृपशार्दूलतथाऽष्टम्यांसदाबुधैः ॥ २२ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वांतर्हितादेवीदुर्गादुर्गार्तिनाशिनी ॥ नतासुदर्शनेनाथस्तुताचबहुविस्तरम् ॥ २३ ॥ अंतर्हितांतुतांदृष्ट्वाराजानःसर्वएवते ॥ प्रणेमुस्तंसमागम्ययथाशक्रंसुरास्तथा ॥ २४ ॥ सुबाहुरपितं नत्वास्थितश्चाग्रेमुदान्वितः ॥ ऊचुःसर्वेमहीपालाअयोध्याधिपतिंतदा ॥ २५ ॥ त्वमस्माकंप्रभुःशास्तासेवकास्तेवयंसदा ॥ कुरुराज्यमयोध्यायांपाल यास्माद्नृपोत्तम ॥ २६ ॥ त्वत्प्रसादान्महाराजदृष्टाविश्वेश्वरीशिवा ॥ आदिशक्तिर्भवानीसाचतुर्वर्गफलप्रदा ॥ २७ ॥ धन्यस्त्वंकृतकृत्योऽसिबहुपु ण्योधरातले ॥ यस्माच्चत्वत्कृतेदेवीप्रादुर्भूतासनातनी ॥ २८ ॥ नजानीमोवयंसर्वेप्रभावंनृपसत्तम ॥ चंडिकायास्तमोयुक्तामाययामोहिताःसदा ॥२९॥ धनदारसुतानांचचिंतनेऽभिरताःसदा ॥ मग्नामहार्णवेघोरेकामक्रोधझषाकुले ॥ ३० ॥ पृच्छामस्त्वांमहाभागसर्वज्ञोऽसिमहामते ॥ केयंशक्तिःकुतो जातातिकिंप्रभावावदस्वतत् ॥ ३१ ॥ भवत्वंनौश्चसंसारेसाधवोऽतिदयापराः ॥ तस्मान्नोवदकाकुत्स्थदेवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ३२ ॥ यत्प्रभावाचसादेवी यत्स्वरूपायदुद्भवा ॥ तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामस्त्वंब्रूहिनृवरोत्तम ॥ ३३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिपृष्टस्तदातैस्तुध्रुवसंधिसुतोनृपः ॥ विचिंत्यमनसादेवींता नुवाचमुदान्वितः ॥ ३४ ॥ सुदर्शनउवाच ॥ किंब्रवीमिमहीपालास्तस्याश्चरितमुत्तमम् ॥ ब्रह्मादयोनजानंतिसेशाःसुरगणास्तथा ॥ ३५ ॥ सर्वस्या ऽऽद्यामहालक्ष्मीर्वरेण्याशक्तिरुत्तमा ॥ सात्त्विकीयंमहीपालजगत्पालनतत्परा ॥ ३६ ॥ सृजतेयारजोरूपासत्त्वरूपाचपालने ॥ संहारेचतमोरूपात्रिगु णासासदामता ॥ ३७ ॥ निर्गुणापरमाशक्तिःसर्वकामफलप्रदा ॥ सर्वेषांकारणंसाहिब्रह्मादीनांनृपोत्तमाः ॥ ३८ ॥

महालक्ष्मीरजोगुणासरस्वतीसत्त्वगुणोतिलभ्यतइतिचेन्न ॥ कल्पभेदेनगुणभेदव्यवस्थायाःसुस्थत्वात् ॥ एतासांशक्तीनांशक्तस्वरूपाव्यतिरेकाद्ब्रह्माश्रयंविहायावस्थानासंभवेनतद्गुणाविशि ष्टंब्रह्मैवमहालक्ष्म्यादिनामकामितिबोध्यम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ निर्गुणेति ॥ अथयागुणत्रयकारणभूतासाम्यावस्थात्मिकासानिर्गुणा ॥ तस्याअपिपराशक्तित्वेनब्रह्माश्रयंविनावस्थानासंभवे नसाम्यावस्थमायोपाधिकंब्रह्मैवपराशक्तिर्मायाभुवनेश्वरीशब्दवाच्यंभवति ॥ सर्वंचेदमुपोद्घातेस्पष्टम् ॥ तत्रनिर्गुणासर्वेषांकारणमित्याह ॥ सर्वेषांकारणंसाहीति ॥ सर्वकारणस्यानव स्थाभियाकस्मादप्युत्पत्त्यभावेनानित्यत्वमुक्तंतेनचकेयंशक्तिःकुतोजातेत्यस्योत्तरंदत्तंभवति ॥ ३८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





रूपचतुष्टयमध्येप्याह । निर्गुणेति ॥ अयोगिभिरितिच्छेदः ॥ अयोगिभिर्निर्विकल्पसमाधिरहितैर्निर्गुणाज्ञातुमशक्यायोगिबुद्धिगम्यैवसेत्यर्थः ॥ तथाचश्वेताश्वतरेतेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढामिति ॥ मध्यमाधिकारिणांयोगिनांतुसगुणामहालक्ष्म्यादिरूपाचिंतनीयेत्यर्थः ॥ तद्वारामूलमकृतेरेवसर्वत्रोपास्यत्वमितिरहस्यम् ॥ सर्वंचेदंमत्कृतशक्तितत्त्वविमर्शिन्यांस्पष्टम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ प्रकृतयोऽयोध्यावासिनोमहाजनाः ॥४८॥४९॥ सुमनसैःपुष्पैः ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभा

निर्गुणासर्वथाज्ञातुमशक्यायोगिभिर्नृपाः ॥ सगुणासुखसेव्यासाचिंतनीयासदाबुधैः ॥ ३९ ॥ राजानऊचुः ॥ बालएववनंप्राप्तस्त्वंतुनूनंभयातुरः ॥ कथंज्ञातात्वयादेवीपरमाशक्तिरुत्तमा ॥ ४० ॥ उपासिताकथंचैवपूजिताचकथंनृप ॥ याप्रसन्नातुसाहाय्यंचकारत्वरयान्विता ॥४१॥ सुदर्शनउवाच ॥ बालभावान्मयाप्राप्तंबीजंतस्याःसुसंमतम् ॥ स्मरामिप्रजपन्नित्यंकामबीजाभिधंनृपाः ॥ ४२ ॥ ऋषिभिःकथ्यमानासामयाज्ञातांऽबिकाशिवा ॥ स्मरामितांदिवारात्रंभक्त्यापरमयापराम् ॥ ४३ ॥ व्यासउवाच ॥ तन्निशम्यवचस्तस्यराजानोभक्तितत्पराः ॥ तांमत्वापरमांशक्तिंनिर्ययुःस्वगृहान्प्रति ॥ ॥ ४४ ॥ सुबाहुरगमत्काश्यांतमापृच्छ्यसुदर्शनम् ॥ सुदर्शनोऽपिधर्मात्मानिर्जगामसुकोसलान् ॥ ४५ ॥ मंत्रिणस्तुनृपंश्रुत्वाहतंशत्रुजितंमृधे ॥ जितंसुदर्शनंचैववभूवुःप्रेमसंयुताः ॥ ४६ ॥ आगच्छंतंनृपंश्रुत्वातंसाकेतनिवासिनः ॥ उपायनान्युपादायप्रययुःसंमुखेजनाः ॥ ४७ ॥ तथाप्रकृतयःसर्वेनानोपायनपाणयः ॥ ध्रुवसंधिसुतंमत्वामुदिताःप्रययुःप्रजाः ॥ ४८ ॥ स्त्रियोपसंयुतःसोऽथप्राप्यायोध्यांसुदर्शनः ॥ संमान्यसर्वलोकांश्चययौराजानिवेशनम् ॥ ४९ ॥ वंदिभिःस्तूयमानस्तुवंद्यमानश्चमंत्रिभिः ॥ कन्याभिःकीर्यमाणश्चलाजैःसुमनसैस्तथा ॥५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ गत्वाऽयोध्यांनृपश्रेष्ठोगृहंराज्ञःसुहृद्वृतः ॥ शत्रुजिन्मातरंप्राहप्रणम्यशोकसंकुलाम् ॥ १ ॥ मातर्नतेमयापुत्रःसंग्रामेनिहतःकिल ॥ नपितातेयुधाजिच्चशपेतेचरणौतथा ॥ २ ॥ दुर्गयातौहतौसंख्येनापराधोममात्रवै ॥ अवश्यंभाविभावेषुप्रतीकारोनविद्यते ॥ ३ ॥ नशोकोऽत्रत्वयाकार्योमृतपुत्रस्यमानिनि ॥ स्वकर्मवशगोजीवोभुंक्तेभोगान्सुखासुखान् ॥४॥ दासोऽस्मितवभोमातर्यथाममममनोरमा ॥ तथात्वमपिधर्मज्ञेनभेदोऽस्तिमनागपि ॥ ५ ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ तस्मान्नशोचितव्यंतेसुखेदुःखेकदाचन ॥ ६ ॥ दुःखेदुःखाधिकान्पश्येत्सुखेपश्येत्सुखाधिकम् ॥ आत्मानंशोकहर्षाभ्यांशत्रुभ्यामिवनार्पयेत् ॥ ७ ॥

गवततिलकेतृतीयस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ षट्श्लोकैरधिकैश्चत्वारिंशत्पद्यैर्निजांबिकाम् ॥ तोषयित्वापुरेदेवीस्थापितेत्युच्यतेपरा ॥ १ ॥ सुदर्शनस्यायोध्यागमनोत्तरंकृत्यमाह । गत्वेति ॥ १ ॥ २ ॥ संख्येयुद्धे ॥ ३ ॥ सुखासुखानित्यर्शआद्यजंतम् ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

आत्माधीनमंतःकरणाधीनं न नात्मानंनांतःकरणंशोषयेत् ॥ ८ ॥ दारुमयीपुत्तली ॥ नटादीनामित्यस्यवशगोतिशेषः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ तदाशी राजभोगाशी ॥ १६ ॥ यथाननरकंव्रजेत्तथाधर्माचरणंकर्तव्यमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ लीलावतीतुतवनापराधःकिंतुममैवेत्याह । सापराधाऽस्मीति ॥ २१ ॥ नसुतंशत्रु

दैवाधीनमिदंसर्वंनात्माधीनंकदाचन ॥ नशोकेनतदाऽऽत्मानंशोषयेन्मतिमान्नरः ॥ ८ ॥ यथादारुमयीयोषानटादीनांप्रचेष्टते ॥ तथास्वकर्मवश गोदेहीसर्वत्रवर्तते ॥ ९ ॥ अहंवनगतोमातर्नाभवंदुःखमानसः ॥ चिंतयन्स्वकृतंकर्मभोक्तव्यमितिवेद्मिच ॥ १० ॥ मृतोमातामहोऽत्रैवविधुरा जननीमम ॥ भयातुरागृहीत्वामांनिर्ययौगहनंवनम् ॥ ११ ॥ लुंठितातस्करैर्मार्गेवस्त्रहीनातथाकृता ॥ पाथेयंचहृतंसर्वंबालपुत्रानिराश्रया ॥ १२ ॥ मातागृहीत्वामांप्राप्ताभारद्वाजाश्रमंप्रति ॥ विदल्लोऽयंसमायातस्तथाधात्रेयिकाऽबला ॥ १३ ॥ मुनिभिर्मुनिपत्नीभिर्दयायुक्तैःसमंततः ॥ पोषि ताःफलनीवारैर्वयंतत्रस्थिताह्यमी ॥ १४ ॥ दुःखंनमेतदाह्यासीत्सुखंनाद्यधनागमे ॥ नवैरंनचमात्सर्यंममचित्तेतुकर्हिचित् ॥ १५ ॥ नीवारभक्ष णंश्रेष्ठंराजभोगात्परंतपे ॥ तदाशीनरकंयातिननीवाराशनःक्वचित् ॥ १६ ॥ धर्मस्याचरणंकार्यंपुरुषेणविजानता ॥ संजित्येंद्रियवर्गंवैयथाननरकंव्रजेत् ॥ १७ ॥ मानुष्यंदुर्लभंमातःखंडेऽस्मिन्भारतेशुभे ॥ आहारादिसुखंनूनंभवेत्सर्वासुयोनिषु ॥ १८ ॥ प्राप्यतंमानुषंदेहंकर्तव्यंधर्मसाधनम् ॥ स्वर्ग मोक्षप्रदंनृणांदुर्लभंचान्ययोनिषु ॥ १९ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तासातदातेनलीलावत्यतिलज्जिता ॥ पुत्रशोकंपरित्यज्यतमाहाश्रुविलोचना ॥ २० ॥ सापराधाऽस्मिपुत्राहंकृतापित्रायुधाजिता ॥ हत्वामातामहंतेऽत्रहृतंराज्यंतुयेनवै ॥ २१ ॥ नतंवारयितुंशक्तातदाऽहंनसुतंमम ॥ यत्कृतंकर्मतेनैवनाप राधोस्तिमेसुत ॥ २२ ॥ तौमृतौस्वकृतेनैवकारणंत्वंतयोर्नच ॥ नाहंशोचामितंपुत्रंसदाशोचामितत्कृतम् ॥ २३ ॥ पुत्रत्वमसिकल्याणभगिनीमेमनो रमा ॥ नक्रोधोनचशोकोमेत्वयिपुत्रमनागपि ॥ २४ ॥ कुरुराज्यंमहाभागप्रजाःपालयसुव्रत ॥ भगवत्याःप्रसादेनप्राप्तमेतदकंटकम् ॥ २५ ॥ तदाक र्ण्यवचोमातुर्नत्वातांनृपनंदनः ॥ जगामभुवनंरम्यंयत्रपूर्वंमनोरमा ॥ २६ ॥ न्यवसत्तत्रगत्वातुसर्वानाहूयमंत्रिणः ॥ दैवज्ञानथपप्रच्छमुहूर्तंदिवसंशु भम् ॥ २७ ॥ सिंहासनंतथाहैमंकारयित्वामनोहरम् ॥ सिंहासनेस्थितांदेवींपूजयिष्येसदाप्यहम् ॥ २८ ॥ स्थापयित्वाऽऽसनेदेवींधर्मार्थकाममोक्षदा म् ॥ राज्यंपश्चात्करिष्यामियथारामादिभिःकृतम् ॥ २९ ॥ पूजनीयासदादेवीसर्वैर्नागरिकैर्जनैः ॥ माननीयाशिवाशक्तिःसर्वकामार्थसिद्धिदा ॥ ३० ॥

जितंवारयितुंशक्ताऽहंतदातस्यमत्पित्रधीनत्वादितिभावः ॥ यत्कृतमिति ॥ यद्यद्दुष्टंकर्मकृतंतत्तत्सर्वंतेनैवयुधाजिताकृतम् ॥२२॥ त्वंतयोर्मरणेकारणंनैवासि ॥ २३ ॥ २४ ॥२५॥२६॥ ॥ २७ ॥ कस्मैप्रयोजनायमुहूर्तप्रश्नइतिचेत्तत्राह ॥ सिंहासनंतथाहैममिति ॥ देवीस्थापनार्थमित्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ अथमंत्रिणआज्ञापयति ॥ पूजनीयेति ॥ ३० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥३१॥३२॥ प्रासादेमतिमान्देव्याइति ॥ मूर्तिमितिशेषः ॥ पूर्वंसामान्यतःस्थापनमुक्तमत्रतुक्रमेणोतिनपुनरुक्तिः ॥ ३३ ॥ ३४॥३५॥ कृत्वेति ॥ कृत्वाविख्यातोबभूवेत्यन्वयः ॥आंबिकाचदेवीविख्याताबभूवेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥

इत्युक्तामंत्रिणस्तेतुचक्रुर्वैराजशासनम् ॥ प्रासादंकारयामासुःशिल्पिभिःसुमनोरमम् ॥ ३१ ॥ प्रतिमांकारयित्वाऽथमुहूर्तेऽथशुभेदिने ॥ द्विजानाहूयवेदज्ञान्स्थापयामासभूपतिः ॥ ३२ ॥ हवनंविधिवत्कृत्वापूजयित्वाऽथदेवताम् ॥ प्रासादेमतिमान्देव्याःस्थापयामासभूमिपः ॥ ३३ ॥ उत्सवस्तत्रसंवृत्तोवादित्राणांचनिःस्वनैः ॥ ब्राह्मणानांवेदघोषैर्गानैस्तुविविधैर्नृप ॥ ३४ ॥ व्यासउवाच ॥ प्रतिष्ठाप्यशिवांदेवींविधिवद्वेदवादिभिः ॥ पूजांनानाविधांराजाचकारातिविधानतः ॥ ३५ ॥ कृत्वापूजाविधिंराजाराज्यंप्राप्यस्वपैतृकम् ॥ विख्यातश्चांबिकादेवीकोसलेषुबभूवह ॥ ३६ ॥ राज्यंप्राप्यनृपःसर्वसामंतकनृपानथ ॥ वशेचक्रेऽतिधर्मिष्ठान्सद्धर्मविजयीनृपः ॥ ३७ ॥ यथारामःस्वराज्येऽभूद्दिलीपस्यरघुर्यथा ॥ प्रजानांवैसुखंतद्वन्मर्यादाऽपितथाऽभवत् ॥३८॥ धर्मोवर्णाश्रमाणांचचतुष्पादभवत्तथा ॥ नाधर्मेरमतेचित्तंकेषामपिमहीतले ॥ ३९ ॥ ग्रामेग्रामेचप्रासादांश्चक्रुःसर्वेजनाधिपाः ॥ देव्याःपूजातदाप्रीत्याकोसलेषुप्रवर्तिता ॥ ४० ॥ सुबाहुरपिकाश्यांतुदुर्गायाःप्रतिमांशुभाम् ॥ कारयित्वाचप्रसादंस्थापयामासभक्तितः ॥ ४१ ॥ तत्रतस्याजनाःसर्वेप्रेमभक्तिपरायणाः ॥ पूजांचक्रुर्विधानेनयथाविश्वेश्वरस्यह ॥ ४२ ॥ विख्यातासावभूवाथदुर्गादेवीधरातले ॥ देशेदेशेमहाराजतस्याभक्तिर्व्यवर्धत ॥ ॥ ४३ ॥ सर्वत्रभारतेलोकेसर्ववर्णेषुसर्वथा ॥ भजनीयाभवानीतुसर्वेषामभवत्तदा ॥ ४४ ॥ शक्तिभक्तिरताःसर्वेमानिनश्चाभवन्नृप ॥ आगमोक्तैरथस्तोत्रैर्जपध्यानपरायणाः ॥ ४५ ॥ नवरात्रेषुसर्वेषुचक्रुःसर्वेविधानतः ॥ अर्चनंहवनंयागंदेव्याभक्तिपराजनाः ॥ ४६ ॥ इतिश्रीदे०महापुराणेतृतीयस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ नवरात्रेतुसंप्राप्तेकिंकर्तव्यंद्विजोत्तम ॥ विधानंविधिवद्ब्रूहिशरत्कालेविशेषतः ॥ १ ॥ किंफलंखलुकस्तत्रविधिःकार्योमहामते ॥ एतद्विस्तरतोब्रूहिकृपयाद्विजसत्तम ॥ २ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिनवरात्रव्रतंशुभम् ॥ शरत्कालेविशेषेणकर्तव्यंविधिपूर्वकम् ॥ ३ ॥ वसंतेचप्रकर्तव्यंतथैवप्रेमपूर्वकम् ॥ द्वावृतूयमदंष्ट्राख्यौनूनंसर्वजनेषुवै ॥ ४ ॥ शरद्वसंतनामानौदुर्गमौप्राणिनामिह ॥ तस्माद्यत्नादिदंकार्यंसर्वत्रशुभमिच्छता ॥ ५ ॥ द्वावेवसुमहाघोरावृतूरोगकरौनृणाम् ॥ वसंतशरदावेवजननाशकरावुभौ ॥ ६ ॥

द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुनवरात्रविधिंनृपः ॥ पप्रच्छतस्मैप्रोवाचव्यासइत्येतदुच्यते ॥ १ ॥ नवरात्रोत्सवःकर्तव्यइतिपूर्वाध्यायांतेउक्तंतस्यविधिंजनमेजयःपृच्छति ॥ नवरात्रेतुसंप्राप्तइति ॥१॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ ऋतुद्वयेकिमित्यवश्यंकर्तव्यंतत्राह । द्वावृतूइति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ अमावास्यांचेति ॥ पूर्वद्युरमावास्यायांपूजासामग्रीसंपादनीयेत्यर्थः ॥ एकभुक्तंत्विति ॥ अमावास्यामेकवारंभोजनंहविष्याशनरूपंकार्यम्॥८॥अमावास्यायामेवमंडपादिकंकाय कर्तव्यामित्याह मंडपस्त्विति ॥ शुभेस्थलेइत्यनेनभूशोधनादिकमुक्तंभवति ॥ समेस्थलेनिम्नोन्नतरहितेप्राचीसाधनयुतेइत्यर्थः ॥ हस्तषोडशेति ॥ तदुक्तंशारदायाम् ॥ पंचभिःसप्तभिर्हस्तैर्नवभिर्वामितांतरम् ॥ षोडशस्तंभसंयुक्तंचत्वारस्तेषुमध्यगाइति ॥ तत्रसप्तभिर्नवभिर्हस्तैर्मिलित्वाषोडशहस्ताःसंपन्नाः ॥ इदंचोत्तममानम् ॥९॥ १० ॥ ११ ॥ अमावास्यायामेवरात्रा वृत्विङ्निमंत्रणंकार्यमित्याह । रात्राविति ॥ १२ ॥ १३ ॥ मधुपूर्वकंमधुपर्कपूर्वकामित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ विप्रैःसंतोषितैःकार्यंनिजंसंपूर्णंभवेन्नान्यथातस्मात्तेषांसंतोषःकार्यइत्यर्थः ॥ देव्याःपाठेसप्तशत्याख्यस्तोत्रपाठेकर्तव्येदेवीभागवतपाठेकर्तव्येचेत्यर्थः ॥ तदुक्तंदुर्गातरंगिण्यांयामले ॥ नवरात्रेतुदेवेशिदौर्गंभागवतंपठेत् ॥ जपेत्सप्तशतींचंडींनियमेनसमाहितइति ॥

तस्मात्तत्रप्रकर्तव्यंचंडिकापूजनंबुधैः ॥ चैत्रेऽश्विनेशुभेमासेभक्तिपूर्वेनराधिप ॥ ७ ॥ अमावास्यांचसंप्राप्यसंभारंकल्पयेच्छुभम् ॥ हविष्यंचाशनंकार्य मेकभुक्तंतुतद्दिने ॥ ८ ॥ मंडपस्तुप्रकर्तव्यःसमेदेशेशुभेस्थले ॥ हस्तषोडशमानेनस्तंभध्वजसमन्वितः ॥ ९ ॥ गौरमृद्गोमयाभ्यांचलेपनंकारयेत्ततः ॥ तन्मध्येवेदिकाशुभ्राकर्तव्याचसमास्थिरा ॥ १० ॥ चतुर्हस्ताचहस्तोच्छ्रापीठार्थंस्थानमुत्तमम् ॥ तोरणानिविचित्राणिवितानंचप्रकल्पयेत् ॥ ११ ॥ रात्रौद्विजानथामंत्र्यदेवीतत्त्वविशारदान् ॥ आचारनिरतान्दांतान्वेदवेदांगपारगान् ॥ १२ ॥ प्रतिपद्दिवसेकार्यंप्रातःस्नानंविधानतः ॥ नद्यांनदेतडागेवा वाप्यांकूपेगृहेऽथवा ॥ १३ ॥ प्रातर्नित्यंपुरःकृत्वाद्विजानांवरणंततः ॥ अर्घ्यपाद्यादिकंसर्वंकर्तव्यंमधुपूर्वकम् ॥ १४ ॥ वस्त्रालंकरणादीनिदेयानिचस्व शक्तितः ॥ वित्तशाठ्यंनकर्तव्यंविभवेसतिकर्हिचित् ॥ १५ ॥ विप्रैःसंतोषितैःकार्यंसंपूर्णंसर्वथाभवेत् ॥ नवपंचत्रयश्चैकोदेव्याःपाठेद्विजाःस्मृताः ॥१६॥ वरयेद्ब्राह्मणंशांतंपारायणकृतेतदा ॥ स्वस्तिवाचनकंकार्यंवेदमंत्रविधानतः ॥ १७ ॥ वेद्यांसिंहासनंस्थाप्यक्षौमवस्त्रसमन्वितम् ॥ तत्रस्थाप्यांऽबिकादेवी चतुर्हस्तायुधान्विता ॥ १८ ॥ रत्नभूषणसंयुक्तामुक्ताहारविराजिता ॥ दिव्यांबरधरासौम्यासर्वलक्षणसंयुता ॥ १९ ॥ शंखचक्रगदापद्मधरासिंहेस्थिता शिवा ॥ अष्टादशभुजावाऽपिप्रतिष्ठाप्यासनातनी ॥ २० ॥ अर्चाभावेतथायंत्रंनवार्णमंत्रसंयुतम् ॥ स्थापयेत्पीठपूजार्थंकलशंतत्रपार्श्वतः ॥ २१ ॥

महेशठक्कुरकृतदुर्गाप्रदीपेदेवीयामलेच ॥ देवीभागवतंभक्त्यापठेन्नित्यमतंद्रितः॥नवरात्रेविशेषेणश्रीदेवीप्रीतयेमुदेति ॥ द्विजाःस्मृताःशक्त्यनुसारेणलघुगुर्वनुष्ठानानुसारेणच ॥१६॥ एकब्रा ह्मणपक्षेआह । वरयेदिति ॥ तत्राऽऽदौस्वस्तिवाचनंकार्यमित्याह ॥१७॥ तदनंतरंदेवीस्थापनमाह । वेद्यामिति ॥१८॥ १९ ॥ अष्टादशभुजावाप्रतिमाकार्या ॥ तद्ध्यानंत्वक्षस्रक्परशूगदे पुकुलिशमित्यादिकंप्राधानिकरहस्याज्ज्ञेयम् ॥२०॥अर्चाभावेप्रतिमायाअप्यभावेतस्मिन्सिंहासनेनवार्णमंत्रसंयुतंमध्येलिखितंनवार्णमंत्रेणसंयुतंप्रत्यासत्त्यानवार्णमंत्रस्यैवयंत्रंस्थापयेदित्य र्थः।तद्यंत्रंतदावरणदेवताश्चमंत्रमहोदध्यादिग्रंथेषुस्पष्टाः ॥ स्थापयेदिति ॥ तत्रवेद्यांपार्श्वतःसिंहासनस्यदक्षिणभागेकलशंकलशस्थापनविधानेनस्थापयेत्॥सचविधिर्ग्रंथांतरेस्पष्टएव ॥क्वचि त्सिंहासनस्याग्रेऽपिकलशस्थापनमुक्तम्॥ननुस्थानद्वयेदेवीस्थापनस्यकिंप्रयोजनमितिचेन्न॥ सिंहासनेनित्यपूजामूर्तेः स्थापनस्यकलशेतुनैमित्तिकनवरात्रपूजार्थंदेव्याःस्थापनस्याभिहितत्वा त्तथाचकलशेएवप्राणादिस्थापनंसिंहासनस्थमूर्तौतुपूर्वंजातमेवेतिनतत्रतद्विधेयम् ॥ तदुक्तंदेवीपुराणे॥ नित्यपूजाकृतेरग्रेकलशंस्थापयेत्ततइतिनित्यपूजाकृतेर्नित्यपूजामूर्तेरित्यर्थः ॥२१॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कलशस्थापनप्रकारमाह। पंचपल्लवेति ॥ २२ ॥ पार्श्वेस्वस्येतिशेषः ॥२३॥ नंदायांहस्तनक्षत्रयुतानंदाप्रतिपत्तिथिस्तस्यांपूजनंसर्वोत्तममित्यर्थः ॥२४॥ नियमंसंकल्पम् ॥ तत्स्वरूपमाह । उपवासेनेति ॥ २५ ॥ २६ ॥ उपवासाद्यशक्तावाह । यथाशक्तीति ॥ २७ ॥ करजंपुष्पजातिविशेषः ॥२८॥ ब्रह्मकापुष्पैर्ब्राह्मीपुष्पैरित्यर्थः ॥२९॥३०॥ पूर्णफलैः विल्वफलैः॥३१॥ मांसाशनंयेकुर्वंतीति॥यद्यपिमांसाशनंब्राह्मणैरपिक्रियतेतथाऽपिब्राह्मणस्यकालिकापुराणादिषुसाक्षाद्बलिदानस्यनिषेधकथनात्क्षत्रियविषयकएवायंविधिरितिबोध्यम्॥तथाचशारदायाम्। ब्राह्मणोनियतःशुद्धःसात्त्विकंबलिमाहरेदिति ॥ तथा हिंसायुक्तोबलिस्त्वाद्यवर्णाहित्वाप्रशस्यतेइति ॥ आद्यवर्णब्राह्मणवर्णाहित्वात्यक्त्वेत्यर्थः ॥ तथाकालिकापुराणे ॥ सिंहव्याघ्रादि कंदत्वाचात्मवध्यामवाप्नुयात् ॥ मद्यंदत्वाब्राह्मणस्तुब्राह्मण्यादेवहीयते ॥ अवश्यंविहितोयत्रबलिस्तत्रद्विजःपुनः ॥ पिष्टेनाऽपिघृतेनापिनिर्मितंतुसमर्पयेदिति ॥ छांदोग्यश्रुतिरपि ॥

पंचपल्लवसंयुक्तंवेदमंत्रैःसुसंस्कृतम् ॥ सुतीर्थजलसंपूर्णंहेमरत्नैःसमन्वितम् ॥ २२ ॥ पार्श्वेपूजार्थसंभारान्परिकल्प्यसमंततः ॥ गीतवादित्रनिर्घोषान्का रयेन्मंगलायवै ॥ २३ ॥ तिथौहस्तान्वितायांचनंदायांपूजनंवरम् ॥ प्रथमेदिवसेराजन्विधिवत्कामदंनृणाम् ॥ २४ ॥ नियमंप्रथमंकृत्वापश्चात्पूजांस माचरेत् ॥ उपवासेननक्तेनचैकभक्तेनवापुनः ॥ २५ ॥ करिष्यामिव्रतंमातर्नवरात्रमनुत्तमम् ॥ साहाय्यंकुरुमेदेविजगदंबममाखिलम् ॥ २६ ॥ य थाशक्तिप्रकर्तव्योनियमोव्रतहेतवे ॥ पश्चात्पूजाप्रकर्तव्याविधिवन्मंत्रपूर्वकम् ॥ २७ ॥ चंदनागुरुकर्पूरैःकुसुमैश्चसुगंधिभिः ॥ मंदारकरजाशोकचंप कैःकरवीरकैः ॥ २८ ॥ मालतीब्रह्मकापुष्पैस्तथाविल्वदलैःशुभैः ॥ पूजयेज्जगतांधात्रींधूपैर्दीपैर्विधानतः ॥ २९ ॥ फलैर्नानाविधैरर्घ्यंप्रदातव्यंचतत्र वै ॥ नारिकेलैर्मातुलिंगैर्दाडिमीकदलीफलैः ॥ ३० ॥ नारंगैःपनसैश्चैवतथापूर्णफलैःशुभैः ॥ अन्नदानंप्रकर्तव्यंभक्तिपूर्वंनराधिप ॥ ३१ ॥ मांसाशनं येकुर्वंतितैःकार्यंपशुहिंसनम् ॥ महिषाजवराहाणांबलिदानंविशिष्यते ॥ ३२ ॥ देव्यग्रेनिहतायांतिपशवःस्वर्गमव्ययम् ॥ नहिंसापशुजातत्रनिघ्नतां तत्कृतेऽनघ ॥ ३३ ॥ अहिंसायाज्ञिकीप्रोक्तासर्वशास्त्रविनिर्णये ॥ देवतार्थेविसृष्टानांपशूनांस्वर्गतिर्ध्रुवा ॥ ३४ ॥ होमार्थंचैवकर्तव्यंकुंडंचैवत्रिकोण कम् ॥ स्थंडिलंवाप्रकर्तव्यंत्रिकोणंमानतःशुभम् ॥ ३५ ॥ त्रिकालंपूजनंनित्यंनानाद्रव्यैर्मनोहरैः ॥ गीतवादित्रनृत्यैश्चकर्तव्यश्चमहोत्सवः ॥ ३६ ॥ नित्यंभूमौचशयनंकुमारीणांचपूजनम् ॥ वस्त्रालंकरणैर्दिव्यैर्भोजनैश्चसुधामयैः ॥ ३७ ॥

अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्रतीर्थेभ्यइति नहिंस्यात्सर्वभूतानीत्यपि ॥ ३२ ॥ ननुदेव्यतिरिक्तदेवतासुशास्त्रेबलिदानमनुक्त्वादेव्युपासनायामेवकिमितिबलिदानंशास्त्रेषूक्तमितिचेदत्रसमाहितं दुर्गाप्रदीपेयामले ॥ ब्रह्मविद्याजीवदशानिहंत्रीतिश्रुतौश्रुतंतत्तस्मात्कारणाद्देव्याबलिदानंप्रियंमतमिति ॥ यतःकारणाद्देवीब्रह्मविद्याधिष्ठात्रीभवतिब्रह्मविद्यायाश्चस्वभावोजीवदशानाश यितव्येतितस्माद्देव्याःप्रियोबलिर्भवतीतितदर्थः ॥ ३३ ॥ नहिंसापशुजातत्रेति ॥ अहिंसायाज्ञिकीप्रोक्तेतिचक्षत्रियोद्देशेनैवतस्यचित्तेजायमानहिंसाशंकानिवृत्त्यर्थंनब्राह्मणोद्देशेनेतिबो ध्यम् ॥ ३४ ॥ मानतइति ॥ होमानुसारेणैकहस्तादिदशहस्तांतमानतइत्यर्थः ॥ तदुक्तंशारदायाम् ॥ दशहस्तांतमन्येषामिति ॥ मुष्टिमात्रमितंकुंडंशतार्धेसंप्रचक्षते ॥ शतहोमेऽरत्नि मात्रमित्यादि ॥ अत्रहोमस्तुतत्तत्कल्पोक्तएवग्राह्योयोयत्रोक्तोनित्यनैमित्तिककाम्यभेदेन ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ सुधामयैरमृतमयैर्मिष्टैरित्यर्थः ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कुमारीपूजनपक्षानाह ॥ एकैकामिति ॥ प्रत्यहमेकैकामित्येकःपक्षः ॥ एकैकवृद्ध्येतितुद्वितीयः ॥ द्विगुणत्रिगुणवृद्ध्येतितुतृतीयचतुर्थपक्षौ॥प्रत्येकंप्रत्यहंनवकंचवानवनवकुमारीणांपूजनमित्युत्तमः पक्षः ॥ ३८ ॥ शक्तिमखेंऽवायज्ञे ॥ ३९ ॥ एकवर्षानकर्तव्येति ॥ तत्रहेतुर्यतःसागंधादिभोगानामज्ञाततः ॥४० ॥ द्विवर्षादिदशवर्षांतानांपूज्यानांकुमारीणांनामानितत्पूजाफलंतासांपूजामंत्राश्चोच्यंते ॥ कुमारिकातुसेति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ नकर्तव्यापूजार्थंनकर्तव्येत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ श्रीमंत्रयुक्तै

एकैकांपूजयेन्नित्यमेकवृद्ध्यातथापुनः ॥ द्विगुणंत्रिगुणंवाऽपिप्रत्येकंनवकंचवा ॥ ३८॥ विभवस्यानुसारेणकर्तव्यंपूजनंकिल ॥ वित्तशाठ्यंनकर्तव्यंराजञ्छक्तिमखेसदा ॥ ३९ ॥ एकवर्षानकर्तव्याकन्यापूजाविधौनृप ॥ परमज्ञातुभोगानांगंधादीनांचबालिका ॥ ४० ॥ कुमारिकातुसाप्रोक्ताद्विवर्षायाभवेदिह ॥ त्रिमूर्तिश्चत्रिवर्षाचकल्याणीचतुरब्दिका ॥ ४१ ॥ रोहिणीपंचवर्षाचषड्वर्षाकालिकास्मृता ॥ चंडिकासप्तवर्षास्यादष्टवर्षाचशांभवी ॥४२॥ नववर्षाभवेद्दुर्गासुभद्रादशवार्षिकी ॥ अतऊर्ध्वंनकर्तव्यासर्वकार्यविगर्हिता ॥ ४३ ॥ एभिश्चनामभिःपूजाकर्तव्याविधिसंयुता ॥ तासांफलानिवक्ष्यामिनवानांपूजनेसदा ॥ ४४ ॥ कुमारीपूजिताकुर्याद्दुःखदारिद्र्यनाशनम् ॥ शत्रुक्षयंधनायुष्यंबलवृद्धिंकरोतिवै ॥४५॥ त्रिमूर्तिपूजनादायुस्त्रिवर्गस्यफलंभवेत् ॥ धनधान्यागमश्चैवपुत्रपौत्रादिवृद्धयः ॥ ४६ ॥ विद्यार्थीविजयार्थीचराज्यार्थीयश्चपार्थिवः ॥ सुखार्थीपूजयेन्नूनंकल्याणींसर्वकामदाम् ॥ ४७ ॥ कालिकांशत्रुनाशार्थंपूजयेद्भक्तिपूर्वकम् ॥ ऐश्वर्यधनकामश्चचंडिकांपरिपूजयेत् ॥ ४८ ॥ पूजयेच्छांभवींनित्यंनृपसंमोहनायच ॥ दुःखदारिद्र्यनाशायसंग्रामेविजयायच ॥४९॥ क्रूरशत्रुविनाशार्थंतथोग्रकर्मसाधने॥दुर्गांचपूजयेद्भक्त्यापरलोकसुखायच ॥५०॥ वांच्छितार्थस्यसिद्ध्यर्थंसुभद्रांपूजयेत्सदा॥ रोहिणींरोगनाशायपूजयेद्विधिवन्नरः ॥ ५१॥ श्रीरस्त्वितिचमंत्रेणपूजयेद्भक्तितत्परः ॥ श्रीयुक्तमंत्रैरथवाबीजमंत्रैरथापिवा॥५२॥कुमारस्यचतत्त्वानियासृजत्यपिलीलया ॥ कादीनपिचदेवांस्तान्कुमारींपूजयाम्यहम् ॥५३॥ सत्त्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्यातैर्हिनानास्वरूपिणी ॥ त्रिकालव्यापिनीशक्तिस्त्रिमूर्तिंपूजयाम्यहम् ॥ ५४ ॥ कल्याणकारिणीनित्यंभक्तानांपूजिताऽनिशम् ॥ पूजयामिचतांभक्त्याकल्याणींसर्वकामदाम् ॥ ५५ ॥ रोहयंतीचबीजानिप्राग्जन्मसंचितानिवै ॥ यादेवीसर्वभूतानांरोहिणींपूजयाम्यहम् ॥ ५६ ॥ कालीकालयतेसर्वंब्रह्मांडंसचराचरम् ॥ कल्पांतसमयेयातांकालिकांपूजयाम्यहम् ॥ ॥ ५७ ॥ चंडिकांचंडरूपांचचंडमुंडविनाशिनीम् ॥ तांचंडपापहरिणींचंडिकांपूजयाम्यहम् ॥ ५८ ॥

रन्यैर्मंत्रैर्वा॥५२॥तान्मंत्रानेवाऽऽह । कुमारस्यचेति॥कुमारस्यबालकस्यस्कंदस्यवातत्त्वानिरहस्यभूतानिवस्तूनियासृजतीत्यर्थः॥कादीन्ब्रह्मादीनपिदेवान् ॥५३॥ सत्त्वादिभिःसत्त्वादिगुणैस्त्रिमूर्तिर्महालक्ष्म्यादिरूपिणी॥तैःसत्वादिगुणैरेवनानारूपिणीप्रस्ताररीत्यात्रिकालव्यापिनीकालत्रयाबाध्याचिद्रूपिणी ॥५४॥५५॥रोहयंतीअंकुरीभूतानिकुर्वंती ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अकारणादिति ॥ यस्याःसमुत्पत्तिर्यन्मयैर्यैर्यत्स्वरूपैर्वेदैरकारणादेवपरिकीर्तिता ॥ यस्याआविर्भावोऽकारणादेवभवति ॥ स्वस्मादेवस्वयमाविर्भवतिनान्यतइत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ नवरात्रपूजाक्रमस्त्वनुष्ठानग्रंथादवसेयः ॥ गौरवादत्रनलिख्यते ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ सप्ताधिकैस्तुपंचाशत्पद्यैरथ कुमारिकाः ॥ कथयित्वावर्जनीयामाहात्म्यमपिचोच्यते ॥ १ ॥ वर्जनीयाःकुमारिकाआह । हीनांगीमिति ॥ न्यूनांगीमित्यर्थः ॥ गंधेनदुर्गंधेनस्फुरितंयुक्तमतएवहीनमंगंयस्यास्ताम् ॥ विशालं वेःशालच्छंकटचौ ॥ विशालकुलसंभवादुष्टकुलसंभवामित्यर्थः ॥ १ ॥ रक्तपुष्पादिनांऽकितांरक्तपुष्पंस्त्रीरजआदियौवनचिह्नंतेनान्विताम् ॥ २ ॥ क्षामांकृशाम् ॥ गर्भसमुद्भू

अकारणात्समुत्पत्तिर्यन्मयैःपरिकीर्तिता ॥ यस्यास्तांसुखदांदेवींशांभवींपूजयाम्यहम् ॥ ५९ ॥ दुर्गात्रायतिभक्तंयासदादुर्गार्तिनाशिनी ॥ दुर्ज्ञेयासर्वदेवानांतांदुर्गांपूजयाम्यहम् ॥ ६० ॥ सुभद्राणिचभक्तानांकुरुतेपूजितासदा ॥ अभद्रनाशिनींदेवींसुभद्रांपूजयाम्यहम् ॥ ६१ ॥ एभिर्मंत्रैःपूजनीयाःकन्यकाःसर्वदाबुधैः ॥ वस्त्रालंकरणैर्माल्यैर्गंधैरुच्चावचैरपि ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवी०म०तृतीयस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ हीनांगींवर्जयेत्कन्यांकुष्ठयुक्तांव्रणांकिताम् ॥ गंधस्फुरितहीनांगींविशालकुलसंभवाम् ॥ १ ॥ जात्यंधांकेकरांकाणींकुरूपांबहुरोमशाम् ॥ संत्यजेद्रोगिणींकन्यांरक्तपुष्पादिनांऽकिताम् ॥ २ ॥ क्षामांगर्भसमुद्भूतांगोलकांकन्यकोद्भवाम् ॥ वर्जनीयाःसदाचैताःसर्वपूजादिकर्मसु ॥ ३ ॥ अरोगिणींसुरूपांगींसुंदरींव्रणवर्जिताम् ॥ एकवंशसमुद्भूतांकन्यांसम्यक्प्रपूजयेत् ॥ ४ ॥ ब्राह्मणीसर्वकार्येषुजयार्थेनृपवंशजा ॥ लाभार्थेवैश्यवंशोत्थामतावाशूद्रवंशजा ॥ ॥ ५ ॥ ब्राह्मणैर्ब्रह्मजाःपूज्याराजन्यैर्ब्रह्मवंशजाः ॥ वैश्यैस्त्रिवर्गजाःपूज्याश्चतस्रःपादसंभवैः ॥ ६ ॥ कारुभिश्चैववंशोत्थायथायोग्यंप्रपूजयेत् ॥ नवरात्रविधानेनभक्तिपूर्वंसदैवहि ॥ ७ ॥ अशक्तोनियतंपूजांकर्तुंचेन्नवरात्रके ॥ अष्टम्यांचविशेषेणकर्तव्यंपूजनंसदा ॥ ८ ॥ पुराऽष्टम्यांभद्रकालीदक्षयज्ञविनाशिनी ॥ प्रादुर्भूतामहाघोरायोगिनीकोटिभिःसह ॥ ९ ॥ अतोऽष्टम्यांविशेषेणकर्तव्यंपूजनंसदा ॥ नानाविधोपहारैश्चगंधमाल्यानुलेपनैः ॥ १० ॥ पायसैरामिषैर्होमैर्ब्राह्मणानांचभोजनैः ॥ फलपुष्पोपहारैश्चतोषयेज्जगदंबिकाम् ॥ ११ ॥ उपवासेह्यशक्तानांनवरात्रव्रतेपुनः ॥ उपोषणत्रयंप्रोक्तंयथोक्तफलदंनृप ॥ १२ ॥ सप्तम्यांचतथाऽष्टम्यांनवम्यांभक्तिभावतः ॥ त्रिरात्रकरणात्सर्वंफलंभवतिपूजनात् ॥ १३ ॥

तामतिबालामेकदिनादिजाताम् ॥ गोलकांमृतभर्तृमातृजातांविधवाजन्यामित्यर्थः ॥ कन्यकोद्भवामविवाहितकन्याजन्याम् ॥ ३ ॥ एकवंशसमुद्भूतामजारजामित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ पादसंभवैःशूद्रैश्चतस्रोवर्णचतुष्टयजन्याःकन्याःपूज्याइत्यर्थः ॥ ६ ॥ कारुभिरिति ॥ कारुर्विश्वकर्मणिनात्रिषुकारकशिल्पिनोरितिमेदिनीकोशात्कारुभिःशिल्पिभिःस्वस्ववंशोत्थाः पूज्याः ॥ शूद्रापेक्षयैतेष्वयंविशेषः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ अतइति ॥ तदुक्तमीशानसंहितायाम् ॥ एकादशीकोटिसहस्रतुल्याजन्माष्टमीपर्वतराजपुत्र्याः ॥ ततोऽपिशुक्लागणिताशतेनपराशरव्यासवसिष्ठमुख्यैरिति ॥ १० ॥ आमिषैर्मांसैः ॥ इदंक्षत्रियादिपरम् ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

विप्राणांचैवभोजनैरेतैःसर्वैर्व्रतंसंपूर्णंभवतीत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ इयंविधवाव्रतंनकृतवतीत्यनुमाऽनुमितिःकर्तव्येत्यर्थः ॥ यतइयंविधवाजातातइतिभावः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ सर्वार्थानांसमाप्तिःसमवाप्तिःप्राप्तिस्तयानंदिताइत्यर्थः ॥ २४ ॥ स्वाहेति ॥ स्वाहास्वधानामरूपौयोमनुस्तत्प्रभावैर्मुदाहर्षेणहरंतिवदंति ॥ यन्नामयुग्मं स्वाहास्वधेत्येवंरूपंश्रुतिभिर्वेदमंत्रांतेइत्यर्थः ॥ यतस्तृप्यंतिततोयज्ञेषुश्राद्धेषुचवेदमंत्रांतेस्वाहास्वधेतिप्रयुंजतइत्यर्थः ॥ २५ ॥ व्यासोजनाञ्छोचति । यस्येच्छयेति ॥२६॥ नैकोऽस्तीति ॥

पूजाभिश्चैवहोमैश्चकुमारीपूजनैस्तथा ॥ संपूर्णतद्व्रतंप्रोक्तंविप्राणांचैवभोजनैः ॥ १४ ॥ व्रतानियानिचान्यानिदानानिविविधानिच ॥ नवरात्रव्रतस्यास्य नैवतुल्यानिभूतले ॥ १५ ॥ धनधान्यप्रदंनित्यंसुखसंतानवृद्धिदम् ॥ आयुरारोग्यदंचैवस्वर्गदंमोक्षदंतथा ॥ १६ ॥ विद्यार्थीवाधनार्थीवापुत्रार्थीवाभवेन्नरः ॥ तेनेदंविधिवत्कार्यंव्रतंसौभाग्यदंशिवम् ॥ १७ ॥ विद्यार्थीसर्वविद्यांवैप्राप्नोतिव्रतसाधनात् ॥ राज्यभ्रष्टोनृपोराज्यंसमवाप्नोतिसर्वथा ॥ १८ ॥ पूर्वजन्मनियैर्नूनंनकृतंव्रतमुत्तमम् ॥ तेव्याधिनोदरिद्राश्चभवंतिपुत्रवर्जिताः ॥ १९ ॥ वंध्याचयाभवेन्नारीविधवाधनवर्जिता ॥ अनुमातत्रकर्तव्यानेयंकृतवतीव्रतम् ॥ २० ॥ नवरात्रव्रतंप्रोक्तंनकृतंयेनभूतले ॥ सकथंविभवंप्राप्यमोदतेचतथादिवि ॥ २१ ॥ रक्तचंदनसंमिश्रैःकोमलैर्बिल्वपत्रकैः ॥ भवानीपूजितायेनसभवेन्नृपतिःक्षितौ ॥ २२ ॥ नाराधितायेनशिवासनातनीदुःखार्तिहासिद्धिकरीजगद्धरा ॥ दुःखावृतःशत्रुयुतश्चभूतलेनूनंदरिद्रोभवतीहमानवः ॥ २३ ॥ यांविष्णुरिंद्रोहरपद्मजौतथावह्निःकुबेरोवरुणोदिवाकरः ॥ ध्यायंतिसर्वार्थसमाप्तिनंदितास्तांकिंमनुष्यानभजंतिचंडिकाम् ॥ २४ ॥ स्वाहास्वधानाममनुप्रभावैस्तृप्यंतिदेवाःपितरस्तथैव॥यज्ञेषुसर्वेषुमुदाहरंतियन्नामयुग्मंश्रुतिभिर्मुनींद्राः ॥ २५ ॥ यस्येच्छयासृजतिविश्वमिदंप्रजेशोनानावतारकलनंकुरुतेहरिश्च ॥ नूनंकरोतिजगतःकिलभस्मशंभुस्तांशर्मदांनभजतेनुकथंमनुष्यः ॥ २६ ॥ नैकोऽस्तिसर्वभवनेषुतयाविहीनोदेवोनरोऽथविहगःकिलपन्नगोवा ॥ गंधर्वराक्षसपिशाचनगेषुनूनंयःस्पंदितुंभवतिशक्तियुतोयथेच्छम् ॥ २७ ॥ तांनसेवेतकश्चंडींसर्वकामार्थदांशिवाम् ॥ व्रतंतस्यानकःकुर्याद्वांछन्नर्थचतुष्टयम् ॥२८॥ महापातकसंयुक्तोनवरात्रव्रतंचरेत् ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योनात्रकार्याविचारणा ॥२९॥ पुराकश्चिद्वणिक्छीनोधनहीनःसुदुःखितः ॥ कुटुंबीचाभवत्कश्चित्कोसलेनृपसत्तम ॥ ३० ॥ अपत्यानिबहून्यस्याभवन्क्षुत्पीडितानिच ॥ भक्ष्यंकिंचित्तुसायाह्नेप्रापुस्तस्यचबालकाः ॥३१॥

तयाशक्त्याविहीनःसन्यथेच्छंस्पंदितुंशक्तियुतःसामर्थ्ययुतोभवतिएतादृशोनैकोप्यस्तीत्यर्थः ॥ २७ ॥ अर्थचतुष्टयंधर्मार्थकाममोक्षरूपंवांछन्नित्यर्थः ॥ २८ ॥ मुच्यतइति ॥ तदुक्तमुमासंहितायाम् ॥ प्रायश्चित्तंनपापानांयेषांतेषांतुनाशने ॥ प्रायश्चित्तमिदंप्रोक्तंजगदंबापदस्मृतिः ॥ स्मरणेनैवदुर्गायानिमिषार्धेनयत्फलम् ॥ नतद्वक्तुंसमर्थोऽस्तिशिवोवर्षशतैरपि ॥ विष्णुनामसहस्रेभ्यःशिवनामविशिष्यते ॥ शिवनामसहस्रेभ्योदेवीनामविशिष्यते ॥ ससाधकोमहाज्ञानीयश्चदुर्गापदानुगः ॥ नचभुक्तिर्नवामुक्तिर्नगतिर्नगनंदिनि ॥ विनादुर्गांजगद्धात्रींनिष्फलंजीवनंभवेदिति । चरमेजन्मनिपरंश्रीदेवीभक्तिमान्भवेदिति ॥ २९ ॥ शीनोदुःखी ॥ ३० ॥ सायाह्नेकिंचित्प्रापुर्नाःपरिमितमित्यर्थः ॥ ३१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





भुंक्तेस्मेति ॥ बुभुक्षितःपरस्यकार्यकर्ताऽसावपिसायाह्नेएवभुंक्तेस्मेत्यन्वयः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ मयाविसर्जितोयतोरुदन्बालोगेहाद्गतोऽतइत्यन्वयः

भुंक्तेस्मकार्यकर्ताऽसौपरस्याथबुभुक्षितः ॥ कुटुंबभरणंतत्रचकारातिनिराकुलः ॥ ३२ ॥ सदाधर्मरतःशांतःसदाचारश्चसत्यवाक् ॥ अक्रोधनश्चधृतिमान्निर्मदश्चानसूयकः ॥ ३३ ॥ संपूज्यदेवतानित्यंपितॄनप्यतिथींस्तथा ॥ भुंजानेपोष्यवर्गेऽथकृतवान्भोजनंवणिक् ॥ ३४ ॥ एवंगच्छतिकालेवैसुशीलोनामतोगुणैः ॥ दारिद्र्यार्तोद्विजंशांतंपप्रच्छातिबुभुक्षितः ॥ ३५ ॥ सुशीलउवाच ॥ भोभूदेवकृपांकृत्वावदस्वाद्यमहामते ॥ कथंदारिद्र्यनाशःस्यादितिमेनिश्चयेनवै ॥ ३६ ॥ धनेषणामेनैवास्तिधनीस्यामितिमानद ॥ कुटुंबभरणार्थंवैपृच्छामित्वांद्विजोत्तम ॥ ३७ ॥ पुत्रीसुतस्तुमेबालोभक्षार्थीरोदतेभृशम् ॥ तावन्मात्रंगृहेनान्नंमुष्टिमेकांददाम्यहम् ॥ ३८ ॥ विसर्जितोयतोगेहाद्गतोबालोरुदन्मया ॥ अतोमेदह्यतेऽत्यर्थंकिंकरोमिधनंविना ॥ ३९ ॥ विवाहोऽस्तिसुतायामेनास्तिवित्तंकरोमिकिम् ॥ दशवर्षाधिकायास्तुदानकालोऽपियात्यलम् ॥ ४० ॥ तेनशोचामिविप्रेंद्रसर्वज्ञोऽसिदयानिधे ॥ तपोदानंव्रतंकिंचिद्ब्रूहिमंत्रजपंतथा ॥ ४१ ॥ येनाहंपोष्यवर्गस्यकरोमिद्विजपोषणम् ॥ तावन्मेस्याद्धनप्राप्तिर्नाधिकंप्रार्थयेकिल ॥ ४२ ॥ त्वत्प्रसादात्कुटुंबंमेसुखितंप्रभवेदिह ॥ तत्कुरुष्वमहाभागज्ञानेनपरिचिंत्यच ॥ ४३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिपृष्टस्तथातेनब्राह्मणःसंशितव्रतः ॥ उवाचपरमप्रीतस्तंवैश्यंनृपसत्तम ॥ ४४ ॥ वैश्यवर्यकुरुष्वाद्यनवरात्रव्रतंशुभम् ॥ पूजनंभगवत्याश्चहवनंभोजनंतथा ॥ ४५ ॥ वेदपारायणंशक्तिजपहोमादिकंतथा ॥ कुरुष्वाद्ययथाशक्तितवकार्यंभविष्यति ॥ ४६ ॥ एतस्मादपरंकिंचिद्व्रतंनास्तिधरातले ॥ नवरात्राभिधंवैश्यपावनंसुखदंतथा ॥ ४७ ॥ ज्ञानदंमोक्षदंचैवसुखसंतानवर्धनम् ॥ शत्रुनाशकरंकामंनवरात्रव्रतंसदा ॥ ४८ ॥ राज्यभ्रष्टेनरामेणसीताविरहितेनच ॥ किष्किंधायांव्रतंचैतत्कृतंदुःखातुरेणवै ॥४९॥ प्रतप्तेनापिरामेणसीताविरहवह्निना ॥ विधिवत्पूजितादेवीनवरात्रव्रतेनवै ॥ ५० ॥ तेनप्राप्ताऽथवैदेहीकृत्वासेतुंमहार्णवे ॥ हत्वामंदोदरीनाथंकुंभकर्णंमहाबलम् ॥ ५१ ॥ मेघनादंसुतंहत्वाकृत्वाभूपंविभीषणम् ॥ पश्चादयोध्यामागत्यप्राप्तंराज्यमकंटकम् ॥ ५२ ॥ नवरात्रव्रतस्यास्यप्रभावेनविशांवर ॥ सुखंभूमितलेप्राप्तंरामेणामिततेजसा ॥ ५३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिविप्रवचःश्रुत्वासवैश्यस्तंद्विजंगुरुम् ॥ कृत्वाजग्राहसन्मंत्रंमायाबीजाभिधंनृप॥५४॥ जजापपरयाभक्त्यानवरात्रमतंद्रितः ॥ नानाविधोपहारैश्चपूजयामाससादरम् ॥ ५५ ॥ नवसंवत्सरंचैवमायाबीजपरायणः ॥ नवमेवत्सरांतेतुमहाष्टम्यांमहेश्वरी ॥ ५६ ॥ अर्धरात्रेतुसंजातेप्रत्यक्षंदर्शनंददौ ॥ नानावरप्रदानैश्चकृतकृत्यंचकारतम् ॥५७॥ इतिश्रीदे० म० तृतीयस्कंधेसप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ मायाबीजाभिधंभुवनेश्वरीमंत्रमित्यर्थः॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एकोनसप्ततिश्लोकैर्नवरात्रप्रसंगतः ॥ रामायणकथाराज्ञापृष्टाव्यासेनचोच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेराज्यभ्रष्टेनरामेणनवरात्रव्रतंकृतंतेनतत्कल्याणंजातमितिवर्णितंतत्प्रश्नबीजमुपलभ्य राजापृच्छतिकथंरामेणतच्चीर्णमिति ॥ १ ॥ सूर्यवंशेवरउत्कृष्टः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ कौशिकेनविश्वामित्रेण ॥ रघुनंदनोदशरथः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ मारीचसुबाहूदैत्यौ

जनमेजयउवाच ॥ कथंरामेणतच्चीर्णव्रतंदेव्याःसुखप्रदम् ॥ राज्यभ्रष्टःकथंसोऽथकथंसीताहृतापुनः ॥ १ ॥ व्यासउवाच ॥ राजादशरथःश्रीमानयोध्याधिपतिःपुरा ॥ सूर्यवंशवरश्चासीद्देवब्राह्मणपूजकः ॥ २ ॥ चत्वारोजज्ञिरेतस्यपुत्रालोकेषुविश्रुताः ॥ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नाभरतश्चेतिनामतः ॥ ३ ॥ राज्ञःप्रियकराःसर्वेसदृशागुणरूपतः ॥ कौसल्यायाःसुतोरामःकैकेय्याभरतःस्मृतः ॥ ४ ॥ सुमित्रातनयौजातौयमलौद्वौमनोहरौ ॥ तेजातावैकिशोराश्चधनुर्बाणधराःकिल ॥ ५ ॥ सूनवःकृतसंस्काराभूपतेःसुखवर्धकाः ॥ कौशिकेनतदाऽऽगत्यप्रार्थितोरघुनंदनः ॥ ६ ॥ राघवंमखरक्षार्थंसूनुंषोडशवार्षिकम् ॥ तस्मैसोऽयंददौरामंकौशिकायसलक्ष्मणम् ॥ ७ ॥ तौसमेत्यमुनिंमार्गेजग्मतुश्चारुदर्शनौ ॥ ताटकानिहतामार्गेराक्षसीघोरदर्शना ॥ ८ ॥ रामेणैकेनबाणेनमुनीनांदुःखदासदा ॥ यज्ञरक्षाकृतातत्रसुबाहुर्निहतःशठः ॥ ९ ॥ मारीचोऽथमृतप्रायोनिक्षिप्तोबाणवेगतः ॥ एवंकृत्वामहत्कर्मयज्ञस्यपरिरक्षणम् ॥ १० ॥ गतास्तेमिथिलांसर्वेरामलक्ष्मणकौशिकाः ॥ अहल्यामोचिताशापान्निष्पापासाकृताऽबला ॥ ११ ॥ विदेहनगरेतौतुजग्मतुर्मुनिनासह ॥ बभंजशिवचापंचजनकेनपणीकृतम् ॥ १२ ॥ उपयेमेततःसीतांजानकींचरमांशजाम् ॥ लक्ष्मणायददौराजापुत्रीमेकांतथोर्मिलाम् ॥ १३ ॥ कुशध्वजसुतेकन्येप्रापतुर्भ्रातरावुभौ ॥ तथाभरतशत्रुघ्नौसुशीलौशुभलक्षणौ ॥ १४ ॥ एवंदारक्रियास्तेषांभ्रातॄणांचाभवन्नृप ॥ चतुर्णांमिथिलायांतुयथाविधिविधानतः ॥ १५ ॥ राज्ययोग्यंसुतंदृष्ट्वाराजादशरथस्तदा ॥ राघवायधुरंदातुंमनश्चक्रेनिजायवै ॥ १६ ॥ संभारंविहितंदृष्ट्वाकैकेयीपूर्वकल्पितौ ॥ वरौसंप्रार्थयामासभर्तारंवशवर्तिनम् ॥ १७ ॥ राज्यंसुतायचैकेनभरतायमहात्मने ॥ रामायवनवासंचचतुर्दशसमास्तथा ॥ १८ ॥ रामस्तुवचनात्तस्याःसीतालक्ष्मणसंयुतः ॥ जगामदंडकारण्यंराक्षसैरुपसेवितम् ॥ १९ ॥ राजादशरथःपुत्रविरहेणप्रपीडितः ॥ जहौप्राणानमेयात्मापूर्वशापमनुस्मरन् ॥ २० ॥ भरतःपितरंदृष्ट्वामृतंमातृकृतेनवै ॥ राज्यमृद्धंनजग्राहभ्रातुःप्रियचिकीर्षया ॥ २१ ॥ पंचवट्यांवसन्रामोरावणावरजांवने ॥ शूर्पणखांविरूपांवैचकारातिस्मरातुराम् ॥ २२ ॥ खरादयस्तुतांदृष्ट्वाछिन्ननासांनिशाचराः॥चक्रुःसंग्राममतुलंरामेणामिततेजसा ॥ २३ ॥ सजघानखरादींश्चदैत्यानतिबलान्वितान् ॥ मुनीनांहितमन्विच्छन्रामःसत्यपराक्रमः ॥ २४ ॥ गत्वाशूर्पणखालंकांखरदूषणघातनम् ॥ दूषिताकथयामासरावणायचराघवात् ॥२५॥

॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ उपयेमेविवाहंकृतवान्स्वीकृतवानितिवा ॥ १३ ॥ कुशध्वजोजनकबंधुः ॥ १४ ॥ १५ ॥ धुरंराज्यभारम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ एकेनवरेणभरतायराज्यंद्वितीयेनवरेणार्थाद्रामायवनवासंवव्रेइत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २६ ॥ कृत्वेति ॥ सीताप्रलोभनप्रयोजनायतंहेममृगंकृत्वासीतांनेतुमित्यन्वयः ॥ रामंदूरदेशंनेतुमितिवा ॥ २७ ॥ २८ ॥२९॥ ३०॥ सारंगोमृगरूपःपशुः ॥३१॥३२॥ समारीचोमृगरूपस्तेनरामेणानिहतोऽतिवलाच्चुक्रोश॥३३॥३४॥ ३५ ॥ रामवधादपीति ॥ रामवधेजातेऽपित्वामसहायामाश्रमेमुक्त्वाऽहंनगच्छे ॥ आत्मनेपदमार्षम् ॥ किंपुनःरामेजीवतिसतीत्यर्थः

सोऽपिश्रुत्वाविनाशंतंजातःक्रोधवशःखलः ॥ जगामरथमारुह्यमारीचस्याऽऽश्रमंतदा ॥ २६ ॥ कृत्वाहेममृगंनेतुंप्रेषयामासरावणः ॥ सीताप्रलोभनार्थायमायाविनमसंभवम् ॥ २७ ॥ सोऽथहेममृगोभूत्वासीतादृष्टिपथंगतः ॥ मायावीचातिचित्रांगश्चरन्प्रवलमंतिके ॥ २८ ॥ तंदृष्ट्वाजानकीप्राह राघवंदैवनोदिता ॥ चर्मानयस्वकांतेतिस्वाधीनपतिकायथा ॥ ॥ २९ ॥ अविचार्याथरामोऽपितत्रसंस्थाप्यलक्ष्मणम् ॥ सशरंधनुरादाययौमृगपदानुगः ॥ ३० ॥ सारंगोऽपिहरिंदृष्ट्वामायाकोटिविशारदः ॥ दृश्यादृश्योवभूवाथजगामचवनांतरम् ॥ ३१ ॥ मत्वाहस्तगतंरामःक्रोधाकृष्टधनुःपुनः ॥ जघानचातितीक्ष्णेनशरेणकृत्रिममृगम् ॥ ३२ ॥ सहतोतिवलात्तेनचुक्रोशभृशदुःखितः ॥ हालक्ष्मणहतोऽस्मीतिमायावीनश्वरःखलः ॥ ३३ ॥ सशब्दस्तुमुलस्तावज्जानक्यासंश्रुतस्तदा ॥ राघवस्येतिसामत्वादीनादेवरमब्रवीत् ॥ ३४ ॥ गच्छलक्ष्मणतूर्णंत्वंहतोऽसौरघुनंदनः ॥ त्वामाह्वयतिसौमित्रेसाहाय्यंकुरुसत्वरम् ॥ ३५ ॥ तत्राऽऽहलक्ष्मणःसीतामंवरामवधादपि ॥ नाहंगच्छेऽद्यमुक्त्वात्वामसहायामिहाश्रमे ॥ ३६ ॥ आज्ञामेराघवस्यात्रतिष्ठेतिजनकात्मजे ॥ तदतिक्रमभीतोऽहंनत्यजामितवांतिकम् ॥ ३७ ॥ हतंवैराघवंदृष्ट्वावनेमायाविनाकिल ॥ त्यक्त्वात्वांनाधिगच्छामिपदमेकंशुचिस्मिते ॥ ३८ ॥ कुरुधैर्यंनमन्येऽद्यरामंहंतुंक्षमंक्षितौ ॥ नाहंत्यक्त्वागमिष्यामिविलंघ्यरामभाषितम् ॥ ३९ ॥ व्यासउवाच ॥ रुदतीसुदतीप्राहतंतदाविधिनोदिता ॥ अक्रूरावचनंक्रूरंलक्ष्मणंशुभलक्षणम् ॥ ४० ॥ अहंजानामिसौमित्रेसानुरागंचमांप्रति ॥ प्रेरितंभरतेनैवमदर्थमिहसंगतम् ॥ ४१ ॥ नाहंतथाविधानारीस्वैरिणीकुहकाधम ॥ मृतेरामेपतिंत्वांनकर्तुमिच्छामिकामतः ॥ ४२ ॥ नागमिष्यतिचेद्रामोजीवितंसंत्यजाम्यहम् ॥ विनातेननजीवामिविधुरादुःखिताभृशम् ॥ ४३ ॥ गच्छवातिष्ठसौमित्रेनजानेऽहंतवेप्सितम् ॥ क्वगतंतेऽत्रसौहार्दंज्येष्ठेधर्मरतेकिल ॥ ४४ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यालक्ष्मणोदीनमानसः ॥ प्रोवाचरुद्धकंठस्तुतांतदाजनकात्मजाम् ॥ ४५ ॥ किमात्थक्षितिजेवाक्यंमयिक्रूरतरंकिल ॥ किंवदस्यत्यनिष्टंतेभाविजानेधियाह्यहम् ॥ ४६ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ हतंवैइति ॥ यदावधेजातेऽपिनगमिष्यामितदाहतमेवदूरदेशंप्रतिमायाविनोतिज्ञात्वाकथंगमिष्यामीतिभावः ॥ यद्वाराघवसदृशंपराक्रमिणंमायाविनाकेनचिद्दैत्येनदृष्टोपद्रवयुक्तेतादृशेदेशेत्वांत्यक्त्वापदमेकमपिनाधिगच्छामिनगमिष्यामीत्यर्थः ॥ ३८॥ रामंहंतुंक्षितौक्षमःसमर्थस्तंनमन्येनैवतादृशोस्तीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ मदर्थंमत्प्राप्त्यर्थम् ॥ ४१ ॥ हेकुहकहेअधम ॥ स्वैरिणीकुलटा ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ किंवदसीति ॥ एतादृशवदनेनतेऽत्यनिष्टंभाविभवतीत्यहंधियाजानेजानामि ॥ ४६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अग्रजस्यरामस्यचिह्नांकितौपादौभूम्यांपश्यंस्तेनमार्गेणययावित्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ सौधार्हासौधयुक्तमहागृहेवस्तुमर्हा ॥ ५२ ॥ दिव्यंदिष्टचेति ॥ मंदोदर्याः

इत्युक्त्वानिर्ययौवीरस्तांत्यक्त्वाप्ररुदन्भृशम् ॥ अग्रजस्यययौपश्यञ्छोकार्तःपृथिवीपते ॥ ४७ ॥ गतेऽथलक्ष्मणेतत्रराक्षसःकपटाकृतिः ॥ भिक्षुवेषंततः कृत्वाप्रविवेशतदाश्रमे ॥ ४८ ॥ जानकीतंयतिंमत्वादत्वार्घंवन्यमादरात् ॥ भैक्ष्यंसमर्पयामासरावणायदुरात्मने ॥ ४९ ॥ तांपप्रच्छसदुष्टात्मानम्रपूर्वंमृदुस्वरम् ॥ काऽसिपद्मपलाशाक्षिवनेचैकाकिनीप्रिये ॥ ५० ॥ पिताकस्तेऽथवामोरुभ्राताकःकःपतिस्तव ॥ मूढेवैकाकिनीचात्रस्थिताऽसिवरवर्णिनि ॥ ५१ ॥ निर्जनेविपिनेकिंत्वंसौधार्हात्वमसिप्रिये ॥ उटजेमुनिपत्नीवदेवकन्यासमप्रभा ॥ ५२ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वाप्रत्युवाचविदेहजा॥दिव्यंदिष्टचायतिंज्ञात्वामंदोदर्याः पतिंतदा ॥ ५३ ॥ राजादशरथःश्रीमांश्चत्वारस्तस्यवैसुताः ॥ तेषांज्येष्ठःपतिर्मेऽस्तिरामनामेतिविश्रुतः ॥ ५४ ॥ विवासितोऽथकैकेय्याकृतेभूपतिनावरे ॥ चतुर्दशसमारामोवसतेऽत्रसलक्ष्मणः ॥ ५५ ॥ जनकस्यसुताचाहंसीतानाम्नीतिविश्रुता ॥ भंक्त्वाशैवंधनुःकामं रामेणाहंविवाहिता ॥ ५६ ॥ रामबाहुबलेनात्रवसामोनिर्भयावने ॥ कांचनंमृगमालोक्यहंतुंमेनिर्गतःपतिः ॥ ५७ ॥ लक्ष्मणोऽपिपुनःश्रुत्वारवंभ्रातुर्गतोऽधुना ॥ तयोर्बाहुबलादत्रनिर्भयाऽहंवसामिवै ॥ ५८ ॥ मयेदंकथितंसर्ववृत्तांतंवनवासके ॥ तेऽत्रागत्यार्हणांतेवैकरिष्यंतियथाविधि ॥ ५९ ॥ यतिर्विष्णुस्वरूपोऽसितस्मात्त्वंपूजितोमया ॥ आश्रमोविपिनेघोरेकृतोऽस्तिरक्षसांकुले ॥ ६० ॥ तस्मात्त्वांपरिपृच्छामिसत्यंब्रूहिममाग्रतः ॥ कोऽसित्रिदंडिरूपेणविपिनेत्वंसमागतः ॥ ६१ ॥ रावणउवाच ॥ लंकेशोऽहंमरालाक्षिश्रीमान्मंदोदरीपतिः ॥ त्वत्कृतेतुकृतंरूपंमयेत्थंशोभनाकृते ॥ ६२ ॥ आगतोऽहंवरारोहेभगिन्याप्रेरितोऽत्रवै ॥ जनस्थानेहतौश्रुत्वाभ्रातरौखरदूषणौ ॥ ६३ ॥ अंगीकुरुनृपंमांत्वंत्यक्त्वातंमानुषंपतिम् ॥ हृतराज्यंगतश्रीकंनिर्बलंवनवासिनम् ॥ ६४ ॥ पट्टराज्ञीभवत्वंमेमंदोदर्युपरिस्फुटम् ॥ दासोऽस्मितवतन्वंगिस्वामिनीभवभामिनि ॥ ६५ ॥ जेताऽहंलोकपालानांपतामितवपादयोः ॥ करंगृहाणमेऽद्यत्वंसनाथंकुरुजानकि ॥ ६६ ॥ पितातेयाचितःपूर्वंमयावैत्वत्कृतेऽबले ॥ जनकोमामुवाचेत्थंपणबंधोमयाकृतः ॥ ६७ ॥ रुद्रचापभयान्नाहंसंप्राप्तस्तुस्वयंवरे ॥ मनोमेसंस्थितंतावन्निमग्नंविरहातुरम् ॥ ६८ ॥ वनेऽत्रसंस्थितांश्रुत्वापूर्वानुरागमोहितः ॥ आगतोऽस्म्यसितापांगिसफलंकुरुमेश्रमम् ॥ ६९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेतृतीयस्कंधेअष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

पतिंरावणंदिष्टचाप्रारब्धवशेनयतिंदिव्यंज्ञात्वा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ रुद्रचापभयादिति ॥ ममाऽऽराध्योयोरुद्रस्तस्यचापभंगेमयाकृतेतस्यावमानोभविष्यतीतिहेतोर्मयास्वयंवरेनागतंनपुनर्ममबलंनास्तीतिभावः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेतृतीयस्कंधेऽष्टाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पंचाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैःसीताहृतेःपरम् ॥ रामःशोकंचकारेतिभण्यतेविस्तरादिह ॥ १ ॥ रावणवाक्यश्रवणोत्तरंयज्जातंतदाह । तदाकर्ण्येति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ वह्निसन्निधावाग्नेहोत्रसंबंधिगार्हपत्यसंनिधौ ॥ लोकान्दुःखादिनारावयतिसलोकरावणः ॥ ४ ॥ निजंराक्षसरूपम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ तंजटायुषंहत्वातांजानकींचगृहीत्वागतइत्यन्वयः ॥ लंकायामित्यस्योत्तरेणान्वयः ॥ दुरात्मनालंकायामशोकवनिकायांकुररीवक्रंदतीस्थापितेत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ हेअनुजलक्ष्मणासमंविषमम् ॥ १० ॥ श्रुत्वेति ॥ पापस्यदुष्टस्यमारीचेःस्वनंश्रुत्वामियामेकाकिनींहित्वाकिमर्थंत्वमिहागतइतीदंराघवोऽब्रवीत् ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ पातितस्तेनेतिशेषः ॥ १५ ॥ १६ ॥ तस्यकवंधस्य ॥ हरिणावानरेणसुग्रीवेण ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

॥ व्यासउवाच ॥ तदाकर्ण्यवचोदुष्टंजानकीभयविह्वला ॥ वेपमानास्थिरंकृत्वामनोवाचमुवाचह ॥ १ ॥ पौलस्त्यकिमसद्वाक्यंत्वमात्थस्मरमोहितः ॥ नाहंवैस्वैरिणीकिंतुजनकस्यकुलोद्भवा ॥ २ ॥ गच्छलंकांदशास्यत्वंरामस्त्वांवैहनिष्यति ॥ मत्कृतेमरणंतत्रभविष्यतिनसंशयः ॥३॥ इत्युक्त्वापर्णशालायांगतासावह्निसन्निधौ ॥ गच्छगच्छेतिवदतीरावणंलोकरावणम् ॥ ४ ॥ सोऽथकृत्वानिजंरूपंजगामोटजमंतिकम् ॥ बलाज्जग्राहतांबालांरुदतींभयविह्वलाम् ॥ ५ ॥ रामरामेतिक्रंदंतींलक्ष्मणेतिमुहुर्मुहुः ॥ गृहीत्वानिर्गतःपापोरथमारोप्यसत्वरः ॥ ६ ॥ गच्छन्नरुणपुत्रेणमार्गेरुद्धोजटायुषा ॥ संग्रामोऽभून्महारौद्रस्तयोस्तत्रवनांतरे ॥ ७ ॥ हत्वातंतांगृहीत्वाचगतोऽसौराक्षसाधिपः ॥ लंकायांक्रंदतीतातकुररीवदुरात्मना ॥ ८ ॥ अशोकवनिकायांसास्थापिताराक्षसीयुता ॥ स्ववृत्तान्नैवचलितासामदानादिभिःकिल ॥ ९ ॥ रामोऽपितंमृगंहत्वाजगामाऽऽदायनिर्वृतः ॥ आयांतंलक्ष्मणंवीक्ष्यकिंकृतंतेऽनुजासमम् ॥१०॥ एकाकिनींप्रियांहित्वाकिमर्थंत्वमिहागतः ॥ श्रुत्वास्वनंतुपापस्यराघवस्त्वब्रवीदिदम् ॥ ११ ॥ सौमित्रिस्त्वब्रवीद्वाक्यंसीतावाग्बाणताडितः ॥ प्रभोऽत्राहंसमायातःकालयोगान्नसंशयः ॥ १२ ॥ तदातौपर्णशालायांगत्वावीक्ष्यातिदुःखितौ ॥ जानक्यन्वेषणेयत्नमुभौकर्तुंसमुद्यतौ ॥ १३ ॥ मार्गमाणौतुसंप्राप्तौयत्रासौपातितःखगः ॥ जटायुःप्राणशेषस्तुपतितःपृथिवीतले ॥ १४ ॥ तेनोक्तंरावणेनाद्यहृताऽसौजनकात्मजा ॥ मयानिरुद्धःपापात्मापातितोऽहंमृधेपुनः ॥ १५ ॥ इत्युक्त्वाऽसौगतप्राणःसंस्कृतोराघवेणवै ॥ कृत्वौर्ध्वदैहिकंरामलक्ष्मणौनिर्गतौततः ॥ १६ ॥ कवंधंघातयित्वासौशापाच्चामोचयत्प्रभुः॥वचनात्तस्यहरिणासख्यंचक्रेऽथराघवः ॥१७॥ हत्वाचवालिनंवीरंकिष्किंधाराज्यमुत्तमम् ॥ सुग्रीवायददौरामःकृतसंख्यायकार्यतः ॥१८॥ तत्रैववार्षिकान्मासांस्तस्थौलक्ष्मणसंयुतः॥चिंतयञ्जानकींचित्तेदशाननहृतांप्रियाम्॥१९॥लक्ष्मणंप्राहरामस्तुसीताविरहपीडितः ॥सौमित्रेकैकयसुताजातापूर्णमनोरथा॥२०॥नप्राप्ताजानकीनूनंनाहंजीवामितांविना॥नागमिष्याम्ययोध्यायामृतेजनकनंदिनीम् ॥२१॥ गतंराज्यंवनेवासोमृतस्तातोहृताप्रिया॥पीडयन्मांसदुष्टात्मादैवोग्रेकिंकरिष्यति॥२२॥दुर्ज्ञेयंभवितव्यंहिप्राणिनांभरतानुज॥आवयोःकागतिस्तातभविष्यतिसुदुःखदा ॥२३॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ कथंदुःखंभविष्यतीत्यनुभविष्यतीत्यर्थः ॥ तन्नवेद्म्यहमितिशेषः ॥३१॥३२॥ नियंतृत्वेरावणेननियंतृत्वेस्वीकृतेसतीत्यर्थः॥नियं

प्राप्यजन्ममनोर्वंशेराजपुत्रावुभौकिल ॥ वनेऽतिदुःखभोक्तारौजातौपूर्वकृतेनच ॥ २४ ॥ त्यक्त्वात्वमपिभोगांस्तुमयासहविनिर्गतः ॥ दैवयोगाच्चसौमित्रे भुंक्ष्वदुःखंदुरत्ययम् ॥ २५ ॥ नकोप्यस्मत्कुलेपूर्वमत्समोदुःखभाङ्नरः ॥ अकिंचनोऽक्षमःक्लिष्टोनभूतोनभविष्यति ॥ २६ ॥ किंकरोम्यद्यसौमित्रेमग्नो ऽस्मिदुःखसागरे ॥ नचास्तितरणोपायोह्यसहायस्यमेकिल ॥ २७ ॥ नवित्तंनबलंवीरत्वमेकःसहचारकः ॥ कोपंकस्मिन्करोम्यद्यभोगेऽस्मिन्स्वकृते नुज ॥ २८ ॥ गतंहस्तगतंराज्यंक्षणादिंद्रसभोपमम् ॥ वनेवासस्तुसंप्राप्तःकोवेदविधिनिर्मितम् ॥२९॥ बालभावाच्चवैदेहीचलिताचावयोःसह ॥ नीता दैवेनदुष्टेनश्यामादुःखतरांदशाम् ॥ ३० ॥ लंकेशस्यगृहेश्यामाकथंदुःखंभविष्यति ॥ पतिव्रतासुशीलाचमायिप्रीतियुताभृशम् ॥ ३१ ॥ नचलक्ष्मणवै देहीसातस्यवशगाभवेत् ॥ स्वैरिणीववरारोहाकथंस्याज्जनकात्मजा ॥ ३२ ॥ त्यजेत्प्राणान्नियंतृत्वेमैथिलीभरतानुज ॥ नरावणस्यवशगाभवेदितिसुनि श्चितम् ॥ ३३ ॥ मृताचेज्जानकीवीरप्राणांस्त्यक्ष्याम्यसंशयम् ॥ मृताचेदसितापांगीकिंमेदेहेनलक्ष्मण ॥ ३४ ॥ एवंविलपमानंतंरामंकमललोचनम् ॥ लक्ष्मणःप्राहधर्मात्मासांत्वयन्नृतयागिरा ॥ ३५ ॥ धैर्यंकुरुमहाबाहोत्यक्त्वाकातरतामिह ॥ आनयिष्यामिवैदेहींहत्वातंराक्षसाधमम् ॥ ३६ ॥ आपदि संपदितुल्याधैर्याद्भवंतितेधीराः ॥ अल्पधियस्तुनिमग्नाःकष्टेभवंतिविभवेऽपि ॥ ३७ ॥ संयोगोविप्रयोगश्चदैवाधीनावुभावपि ॥ शोकस्तुकीदृशस्तत्रदेहे नाऽऽत्मनिचक्वचित् ॥ ३८ ॥ राज्याद्यथावनेवासोवैदेह्याहरणंयथा ॥ तथाकालेसमीचीनेसंयोगोऽपिभविष्यति ॥ ३९ ॥ प्राप्तव्यंसुखदुःखानांभोगान्नि र्वर्तनंक्वचित् ॥ नान्यथाजानकीजानेतस्माच्छोकंत्यजाधुना ॥४०॥ वानराःसंतिभूयांसोगमिष्यंतिचतुर्दिशम् ॥ शुद्धिंजनकनंदिन्याआनयिष्यंतितेकिल ॥ ४१ ॥ ज्ञात्वामार्गस्थितिंतत्रगत्वाकृत्वापराक्रमम् ॥ हत्वातंपापकर्माणमानयिष्यामिमैथिलीम् ॥ ४२ ॥ ससैन्यंभरतंवाऽपिसमाहूयसहानुजम् ॥ हनि ष्यामोवयंशत्रुंकिंशोचसिवृथाग्रज ॥४३॥ रघुणैकरथेनैवजिताःसर्वादिशःपुरा॥तद्वंशजःकथंशोकंकर्तुमर्हसिराघव॥४४॥एकोऽहंसकलाञ्जेतुंसमर्थोऽस्मि सुरासुरान्॥किंपुनःससहायोवैरावणंकुलपांसनम्॥४५॥जनकंवासमानीयसाहाय्येरघुनंदन॥हनिष्यामिदुराचारंरावणंसुरकंटकम्॥४६॥ सुखस्याऽऽनंत रंदुःखंदुःखस्याऽनंतरंसुखम्॥चक्रनेमिरिवैकंतन्नभवेद्रघुनंदन॥४७॥मनोऽतिकातरंयस्यसुखदुःखसमुद्भवे॥सशोकसागरेमग्नोनसुखीस्यात्कदाचन ॥४८॥

तृत्वंस्वीकृत्ययदिबलात्कारंकुर्यादितितात्पर्यम् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ आपदिसंपदीति ॥ आपदिसत्यांसंपदिसत्यामित्यर्थः ॥ तुल्याःसमचित्ताइत्यर्थः ॥ निमग्नाःकष्टेइति ॥ अल्पधियस्तुविभवेऽपिसतिकष्टेनिमग्नाभवंति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४९ ॥ अज्ञातवासंकृतवानितिशेषः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ अत्यर्थमतिशयितम् ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदे० तृतीयस्कंधएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ त्रिषष्टि श्लोकवर्यैस्तुनारदोव्रतमाहहि ॥ रामश्चकारतच्चापिसम्यगेतदिहोच्यते ॥ १ ॥ लक्ष्मणभाषणानंतरंजायमानंकृत्यमाह ॥ एवंताविति ॥ संविदंविचारम् ॥ १ ॥ तंराममुपतस्थिवान् ॥ ॥ २ ॥ रामस्तंदृष्ट्वोत्थायवृषंश्रेष्ठमासनंददौ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ कबरंकेशपाशम् ॥ १० ॥ संस्पर्शदूषितंपरस्पर्शदूषितंदेहंत्यक्तुमिच्छंतीत्यन्वयः ॥ ११ ॥

इंद्रेणव्यसनंप्राप्तंपुरावैरघुनंदन ॥ नहुषःस्थापितोदेवैःसर्वैर्मघवतःपदे ॥ ४९ ॥ स्थितःपंकजमध्येचवहुवर्षगणानपि ॥ अज्ञातवासंमघवाभीतस्त्यक्त्वानिजं पदम् ॥ ५० ॥ पुनःप्राप्तंनिजस्थानंकालेविपरिवर्तिते ॥ नहुषःपतितोभूमौशापादजगराकृतिः ॥ ५१ ॥ इंद्राणींकामयानस्तुब्राह्मणानवमन्यच ॥ अग स्तिकोपात्संजातःसर्पदेहोमहीपतिः ॥ ५२ ॥ तस्माच्छोकोनकर्तव्योव्यसनेसतिराघव ॥ उद्यमेचित्तमास्थायस्थातव्यंवैविपश्चिता ॥ ५३ ॥ सर्वज्ञोऽसि महाभागसमर्थोऽसिजगत्पते ॥ किंप्राकृतइवात्यर्थंकुरुषेशोकमात्मनि ॥ ५४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिलक्ष्मणवाक्येनबोधितोरघुनंदनः ॥ त्यक्त्वाशोकं तथाऽत्यर्थंवभूवविगतज्वरः ॥ ५५ ॥ ॥ इतिश्रीदे० म० तृ० एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंतौसंविदंकृत्वायावत्तूष्णींव भूवतुः ॥ आजगामतदाऽऽकाशान्नारदोभगवानृषिः ॥ १ ॥ रणयन्महतींवीणांस्वरग्रामविभूषिताम् ॥ गायन्बृहद्रथंसामतदातमुपतस्थिवान् ॥ २ ॥ दृष्ट्वातंरामउत्थायददावथवृषंशुभम् ॥ आसनंचार्घपाद्यंचकृतवानमितद्युतिः ॥ ३ ॥ पूजांपरमिकांकृत्वाकृतांजलिरुपस्थितः ॥ उपविष्टःसमीपेतुकृता ज्ञोमुनिनाहरिः ॥ ४ ॥ उपविष्टंतदारामंसानुजंदुःखमानसम् ॥ पप्रच्छनारदःप्रीत्याकुशलंमुनिसत्तमः ॥ ५ ॥ कथंराघवशोकार्तोयथावैप्राकृतोनरः ॥ हृतां सीतांचजानामिरावणेनदुरात्मना ॥ ६ ॥ सुरसद्मगतश्चाहंश्रुतवाञ्जनकात्मजाम् ॥ पौलस्त्येनहृतांमोहान्मरणंस्वमजानता ॥ ७ ॥ तवजन्मचकाकु त्स्थपौलस्त्यनिधनायवै ॥ मैथिलीहरणंजातमेतदर्थंनराधिप ॥ ८ ॥ पूर्वजन्मनिवैदेहीमुनिपुत्रीतपस्विनी ॥ रावणेनवनेदृष्टातपस्यंतीशुचिस्मिता ॥ ॥ ९ ॥ प्रार्थितारावणेनासौभवभार्येतिराघव ॥ तिरस्कृतस्तयाऽसौवैजग्राहकबरंबलात् ॥ १० ॥ शशापतत्क्षणंरामरावणंतापसीभृशम् ॥ कुपितात्यक्तु मिच्छंतीदेहंसंस्पर्शदूषितम् ॥ ११ ॥ दुरात्मंस्तवनाशार्थंभविष्यामिधरातले ॥ अयोनिजावरानारीत्यक्त्वादेहंजहावपि ॥ १२ ॥ सेयंरमांशसंभूतागृ हीतातेनरक्षसा ॥ विनाशार्थंकुलस्यैवव्यालीस्रगिवसंभ्रमात् ॥ १३ ॥ तवजन्मचकाकुत्स्थतस्यनाशायचामरैः ॥ प्रार्थितस्यहरेरंशादजवंशेप्यजन्मनः ॥ १४ ॥ कुरुधैर्यंमहाबाहोतत्रसावर्ततेवशा ॥ सतीधर्मरतासीतात्वांध्यायंतीदिवानिशम् ॥ १५ ॥

॥ १२ ॥ व्यालीस्रगिवेति ॥ संभ्रमाद्व्यालीस्रगिवस्रग्बुद्ध्यामालाबुद्ध्यागृहीताव्यालीवसर्पिणीवेत्यर्थः ॥ रमायाःशापेनपूर्वजन्मनिमुनिपुत्रीत्वंजातंतत्कथातुस्कांदेप्रसिद्धा सैवद्वितीयजन्मनिसीताऽभवत् ॥ १३ ॥ अजोनामरघुपुत्रस्तस्यवंशे ॥ १४ ॥ यतएतादृशःपरमेश्वरस्त्वंसीताचपरमेश्वर्यंशभूताततःकुरुधैर्यमित्याह । कुरुधैर्यमिति ॥ त्वांध्यायंतीत्यनेनपातिव्रत्यभंगोनजातइतिबोधितम् ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

उदरक्षुधयापीडितासतीरावणस्यवश्याभविष्यतीतिचेत्तत्राऽह ॥ कामधेनुपयइति ॥ १६ ॥ १७ ॥ अस्त्वेतत्तस्याःपातिव्रत्यंयदिसाप्राप्स्यातितार्हितदुपयोगायनोचेन्ममाकिंफलंतस्योत चेत्तत्राऽऽह । उपायमिति ॥१८॥ १९ ॥ विशंसितैःशस्तैः ॥ दशांशंहवनंजपदशांशमित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ मधुनाशायेति ॥ यद्यपितस्मिन्समयेव्रतंक र्तुमवकाशोनजातोनिद्रोत्तरमव्यवहितकालेएवयुद्धस्यजायमानत्वात् तथापिममजयोभवत्वहंव्रतंकरिष्यामीतितस्मिन्समयेसंकल्पानंतरंकृतमित्यत्रतात्पर्याद् ॥ २६ ॥ २७ ॥ प्रश्नचतु ष्टयस्यक्रमेणोत्तरमाह।शृणुरामेति॥हेरामयानित्याकालत्रयावाध्या आद्यासर्वादिकारणभूताब्रह्मरूपायाचसनातन्यनादिसिद्धाशक्तिर्जडरूपामायाख्यावह्नौवह्निशक्तिवद्ब्रह्मणिस्थिता ॥एतदु भयात्मकमायाविशिष्टंब्रह्मरूपंतत्त्वंसादेवीदेवीपदवाच्यंभवति ॥ यथागजशरीरेप्रविष्टंचैतन्यंगजनामकंभवति ॥ तथाजगत्कारणमायाशरीरेप्रविष्टंप्रथमतश्चैतन्यंमुख्यतयामायाशक्तिप्रकृति संज्ञकंभवतिअतएवसर्वोत्कृष्टंप्रथमंदेवीतत्त्वंभवतितदनंतरंदेवीतत्त्वमेवतत्तद्गुणोपाधिषुप्रविष्टंब्रह्मविष्ण्वादिसंज्ञांभजतेतदेवपंचतन्मात्रासुप्रविष्टंतथामहाभूतेषुप्रविष्टंतत्तत्संज्ञांभजतेइतिदेवीरूप मेवसर्वमितिसर्ववेदासिद्धांतोजागर्ति नपुनर्वैष्णवशैवमतापभ्रंशाः ॥ कीदृशीसा यापूजितासतीदुःखनाशिनीजननमरणादिसर्वसंसारदुःखनाशिनीसर्वकामप्रदाधर्मकामार्थमोक्षप्रदाभवति ॥

कामधेनुपयःपात्रेकृत्वामघवतास्वयम् ॥ पानार्थंप्रेषितंतस्याःपीतंचैवामृतंतथा ॥ १६ ॥ सुरभीदुग्धपानात्साक्षुत्तृड्दुःखविवर्जिता ॥ जाताकमलपत्रा क्षीवर्ततेवीक्षितामया ॥ १७ ॥ उपायंकथयाम्यद्यतस्यनाशायराघव ॥ व्रतंकुरुष्वश्रद्धावानाश्विनेमासिसांप्रतम् ॥ १८ ॥ नवरात्रोपवासंचभगवत्याःप्र पूजनम् ॥ सर्वसिद्धिकरंरामजपहोमविधानतः ॥ १९ ॥ मेध्यैश्चपशुभिर्देव्यावलिंदत्वाविशंसितैः ॥ दशांशंहवनंकृत्वासुशक्तस्त्वंभविष्यसि ॥ २० ॥ वि ष्णुनाचरितंपूर्वंमहादेवेनब्रह्मणा ॥ तथामघवताचीर्णंस्वर्गमध्यस्थितेनवै ॥ २१ ॥ सुखिनारामकर्तव्यंनवरात्रव्रतंशुभम् ॥ विशेषेणचकर्तव्यंपुंसाकष्टग तेनवै ॥ २२ ॥ विश्वामित्रेणकाकुत्स्थकृतमेतन्नसंशयः ॥ भृगुणाऽथवसिष्ठेनकश्यपेनतथैवच ॥ २३ ॥ गुरुणाहृतदारेणकृतमेतन्महाव्रतम् ॥ तस्मात्त्वं कुरुराजेंद्ररावणस्यवधायच ॥ २४ ॥ इंद्रेणवृत्रनाशायकृतंव्रतमनुत्तमम् ॥ त्रिपुरस्यविनाशायशिवेनापिपुराकृतम् ॥ २५ ॥ हरिणामधुनाशायकृतंमेरो महामते ॥ विधिवत्कुरुकाकुत्स्थव्रतमेतदतंद्रितः ॥ २६ ॥ श्रीरामउवाच ॥ कादेवीकिंप्रभावासाकुतोजाताकिमाह्वया ॥ व्रतंकिंविधिवद्ब्रूहिसर्वज्ञोऽसिद यानिधे ॥ २७ ॥ नारदउवाच ॥ शृणुरामसदानित्याशक्तिराद्यासनातनी ॥ सर्वकामप्रदादेवीपूजिताद्दुःखनाशिनी ॥ २८ ॥

एतेनकादेवीतिरामप्रश्नस्योत्तरंदत्तंभवति ॥ इदंभगवत्याःस्वरूपंबृहदारण्यकेगार्गिब्राह्मणेस्पष्टम् ॥ तत्रहि पृथिव्यादिकंकस्मिन्नोतंप्रोतंचेतिगार्ग्याप्रथमेप्रश्नेकृतेयाज्ञवल्क्येनपराका शशब्दितायांचिदंबरशक्तौमायायामोतंप्रोतंचेत्युत्तरितेपुनःसाचिदंबरशक्तिःपराकाशशब्दितामायाकस्मिन्नोताचप्रोताचेत्यभिप्रायेणसाहोवाच ॥ यदूर्ध्वंयाज्ञवल्क्यादिवोयद्वाक्पृथि व्यांयदंतरा द्यावापृथिवीइमेयद्भूतंचभवच्चभविष्यच्चेत्याचक्षतेकस्मिन्नेवतदोतंचप्रोतंचेतिगार्ग्याप्रश्नेकृतेब्रह्मण्येवसाशक्तिरोताचप्रोताचेत्यभिप्रायेणयाज्ञवल्क्यःसहोवाचयदूर्ध्वंगार्गिदिवोयद वाक्पृथिवीइमेयद्भूतंचभवच्चेत्याचक्षते ॥ आकाशएवतदोतंचप्रोतंचेतिकस्मिन्वाऽऽकाशओतश्चप्रोतश्चेतिसहोवाचएतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंत्यस्थूलमनण्वह्रस्वमित्यादिनोत्तरंदत्त वान् ॥ तेनचग्रंथेनेदमेवभगवतीस्वरूपंप्रतिपादितंभवतिस्पष्टीकृतंचैतदस्माभिर्बृहदारण्यकटीकायांनीलकंठ्यामितीहोपरम्यते ॥ अथकिंप्रभावासेतिपृष्टस्योत्तरमाह । कारणमिति ॥ सर्वजंतूनामितीदंसर्वजडाजडप्रपंचस्योपलक्षणम् ॥ तथाचसर्वकर्तृत्वमेवास्याःप्रभावइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तथाक्षरात्संभवतीहविश्वमिति ॥ मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहे श्वरम् ॥ तयोर्विभूतिलेशोवैजगदेतच्चराचरमिति ॥ २८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अधुनाकुतोजातेतिपृष्टस्योत्तरमाह । तस्याः शक्तिंविनेति ॥ तस्याब्रह्मरूपिण्याभगवत्याःसंविदःशक्तिर्मायाख्यातांविनाकोऽपिप्राणीस्पंदितुंचलितुंक्षमःसमर्थोनैवभवेत् ॥ २९ ॥ किंच विष्णोरिति ॥ विष्ण्वादीनांशक्तित्रयमपिसैवेत्यर्थः ॥ कासातत्राऽऽह । अन्याशक्तिरिति ॥ पराशिवायात्वन्याशक्तिःपरब्रह्मशक्तिःसैवविष्ण्वादिशक्तित्रयरूपिणीत्यर्थः ॥ ३० ॥ किंवहु नायच्चकिंचिदिति ॥ यदैतादृशोयदीयायाःशक्तेर्महिमातदातादृशशक्तिमत्याब्रह्मरूपिण्याभगवत्याउत्पत्तिःकुतोभवेन्नकुतोऽपीत्यर्थः ॥ नहिसर्वकारणस्योत्पत्तिःकस्मादपिसंभवत्यनवस्था पातादितिभावः ॥ ३१ ॥ सर्वादित्वमेववर्णयन्नुत्पत्तिराहित्यंद्रढयति । नब्रह्मेति ॥ ३२ ॥ यदासर्वाभावस्तदासाप्रकृतिःपूर्णापुरुषेणपरचिद्रूपेणसंयुतानिर्गुणासाम्यावस्थारूपायुगादौवि हरति ॥ ३३ ॥ साभूत्वेति ॥ सैवपश्चात्सगुणागुणत्रयसंभिन्नाभूत्वातत्तद्गुणोपाधिभिःपूर्वंब्रह्मादीन्संसृज्योत्पादयित्वातेभ्यःशक्तीश्चदत्त्वाभुवनत्रयंकरोति ॥ ३४ ॥ तांज्ञात्वेति ॥ तांब्रह्म

कारणंसर्वजंतूनांब्रह्मादीनांरघूद्वह ॥ तस्याःशक्तिंविनाकोऽपिस्पंदितुंनक्षमोभवेत् ॥ २९ ॥ विष्णोःपालनशक्तिःसाकर्तृशक्तिःपितुर्मम ॥ रुद्रस्यनाश शक्तिःसात्वन्यशक्तिःपराशिवा ॥३०॥ यच्चकिंचित्क्वचिद्वस्तुसदसद्भुवनत्रये ॥ तस्यसर्वस्ययाशक्तिस्तदुत्पत्तिःकुतोभवेत् ॥ ३१ ॥ नब्रह्मानयदाविष्णु र्नरुद्रोनदिवाकरः ॥ नचेंद्राद्याःसुराःसर्वेनधरानधराधराः ॥ ३२ ॥ तदासाप्रकृतिःपूर्णापुरुषेणपरेणवै ॥ संयुताविहरत्येवयुगादौनिर्गुणाशिवा ॥ ३३ ॥ साभूत्वासगुणापश्चात्करोतिभुवनत्रयम् ॥ पूर्वंसंसृज्यब्रह्मादीन्दत्त्वाशक्तीश्चसर्वशः ॥ ३४ ॥ तांज्ञात्वामुच्यतेजंतुर्जन्मसंसारबंधनात् ॥ साविद्यापर माज्ञेयावेदाद्यावेदकारिणी ॥ ३५ ॥ असंख्यातानिनामानितस्याब्रह्मादिभिःकिल ॥ गुणकर्मविधानैस्तुकल्पितानिचकिंब्रुवे ॥ ३६ ॥ अकारादिक्ष कारांतैःस्वरैर्वर्णैस्तुयोजितैः ॥ असंख्येयानिनामानिभवंतिरघुनंदन ॥ ३७ ॥ रामउवाच ॥ विधिंमेब्रूहिविप्रर्षेव्रतस्यास्यसमासतः ॥ करोम्यद्यैवश्रद्धा वाञ्छ्रीदेव्याःपूजनंतथा ॥ ३८ ॥ नारदउवाच ॥ पीठंकृत्वासमेस्थानेसंस्थाप्यजगदंबिकाम् ॥ उपवासान्नवैवत्वंकुरुरामविधानतः ॥ ३९ ॥ आचा र्योऽहंभविष्यामिकर्मण्यस्मिन्महीपते ॥ देवकार्यविधानार्थमुत्साहंप्रकरोम्यहम् ॥ ४० ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंसत्यंमत्वारामःप्रतापवान् ॥ का रयित्वाशुभंपीठंस्थापयित्वांऽबिकांशिवाम् ॥ ४१ ॥ विधिवत्पूजनंतस्याश्चकारव्रतवान्हरिः ॥ संप्राप्तेचाश्विनेमासितस्मिन्गिरिवरेतदा ॥ ४२ ॥

रूपिणींज्ञात्वानिर्विकल्पचेतसास्वाभेदेनसाक्षात्कृत्यजंतुर्जीवोजन्मादिरूपसंसाररूपबंधनान्मुच्यते ॥ तथाचश्रुतिः ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति ॥ साविद्येति ॥ परमायाविद्यानिर्विकल्पवृत्ति रूपासाभगवतीब्रह्मरूपिणीज्ञेया ॥ ब्रह्मणोविद्याशरीरत्वात् ॥ तदुक्तं शक्तिःशरीरमधिदैवतमंतरात्माज्ञानंक्रियाःकरणमासनजालमिच्छा ॥ ऐश्वर्यमायतनमावरणानिचत्वंकिंतन्नयद्भव सिदेविशशांकमौलेः ॥ एतादृश्याभगवत्याश्चिद्रूपिण्याउत्पत्तिर्मनसापिनसंभाव्येत्यर्थः ॥ ३५ ॥ अथकिमाह्वयेतिपृष्टस्योत्तरमाह ॥ असंख्यातानीति ॥ हेरामश्रीभगवत्यानामैकमस्ती तिचेन्मयावक्तव्यंकिंतुयावंतःपदार्थास्तेसर्वेभगवतीरूपाः ॥ एकैवसर्वत्रवर्ततेतस्मादुच्यतेएकेतिश्रुतेः ॥ एकोहंबहुस्यांप्रजायेयेतिश्रुतेः ॥ तथाचयावंतःपदार्थास्तेषांगुणकर्मभेदेनविधानेन ब्रह्मादिभिरसंख्येयानिनामानिकल्पितानियदेत्थंरामवर्ततेतदेदंनामभवतीदंनेतिकथंब्रुवेतस्मात्सर्वाणिनामान्यस्याएवभवंतीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तन्नामरूपाभ्यामेवव्याक्रियतइति ॥ ॥ ३६ ॥ तदेवस्पष्टयति । अकारादिक्षकारांतैरिति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ अकूपारःसमुद्रः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ द्विजेद्विजाधिकरणे ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इत्युक्तेति ॥ इतिवरंदत्वेत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ नतुल्यानीति ॥ तानिपुराणान्येकैकगुणोपाधिब्रह्मविष्णवादिप्रतिपादकानीदंतुदेवीभागवतंतद्गुणमूलभूतसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपपराशक्तिप्रतिपादकमतोनैतत्तुल्यानितानिपुराणानीतिभावः ॥ ६३ ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोऽभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्या

उपवासपरोरामःकृतवान्व्रतमुत्तमम् ॥ होमंचविधिवत्तत्रबलिदानंचपूजनम् ॥४३॥ भ्रातरौचक्रतुःप्रेम्णाव्रतंनारदसंमतम् ॥ अष्टम्यांमध्यरात्रेतुदेवीभगवतीहिसा ॥ ४४ ॥ सिंहारूढाददौतत्रदर्शनंप्रतिपूजिता ॥ गिरिशृंगेस्थितोवाचराघवंसानुजंगिरा ॥४५॥ मेघगंभीरयाचेदंभक्तिभावेनतोषिता ॥ देव्युवाच ॥ रामराममहाबाहोतुष्टास्म्यद्यव्रतेनते ॥ ४६ ॥ प्रार्थयस्ववरंकामंयत्तेमनसिवर्तते ॥ नारायणांशसंभूतस्त्वंवंशेमानवेऽनघे ॥४७॥ रावणस्यवधायैवप्रार्थितस्त्वमरैरसि ॥ पुरामत्स्यतनुंकृत्वाहत्वाघोरंचराक्षसम् ॥ ४८ ॥ त्वयावैरक्षितावेदाःसुराणांहितमिच्छता ॥ भूत्वाकच्छपरूपस्तुधृतवान्मंदरगिरिम् ॥ ४९ ॥ अकूपारंप्रमंथानंकृत्वादेवानपोषयः ॥ कोलरूपंपुराकृत्वादशनाग्रेणमेदिनीम् ॥ ५० ॥ धृतवानसियद्रामहिरण्याक्षंजघानच ॥ नारसिंहींतनुंकृत्वाहिरण्यकशिपुंपुरा ॥ ५१ ॥ प्रह्लादंरामरक्षित्वाहतवानसिराघव ॥ वामनंवपुरास्थायपुराछलितवान्बलिम् ॥ ५२ ॥ भूत्वेंद्रस्यानुजःकामंदेवकार्यप्रसाधकः ॥ जमदग्निसुतस्त्वंमेविष्णोरंशेनसंगतः ॥ ५३ ॥ कृत्वांऽतंक्षत्रियाणांतुदानंभूमेरदाद्द्विजे ॥ तथेदानींतुकाकुत्स्थजातोदशरथात्मजः ॥ ५४ ॥ प्रार्थितस्तुसुरैःसर्वैरावणेनातिपीडितैः ॥ कपयस्तेसहायावैदेवांशावलवत्तराः ॥५५॥ भविष्यंतिनरव्याघ्रमच्छक्तिसंयुताह्यमी ॥ शेषांशोप्यनुजस्तेऽयंरावणात्मजनाशकः ॥ ५६ ॥ भविष्यतिनसंदेहःकर्तव्योऽत्रत्वयानघ ॥ वसंतेसेवनंकार्यंत्वयातत्रातिश्रद्धया ॥ ५७ ॥ हत्वाऽथरावणंपापंकुरुराज्यंयथासुखम् ॥ एकादशसहस्राणिवर्षाणिपृथिवीतले ॥५८॥ कृत्वाराज्यंरघुश्रेष्ठगंतासित्रिदिवंपुनः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वांऽतर्दधेदेवीरामस्तुप्रीतमानसः ॥ ५९ ॥ समाप्यतद्व्रतंचक्रेप्रयाणंदशमीदिने ॥ विजयापूजनंकृत्वादत्त्वादानान्यननेकशः ॥६०॥ कपिपतिबलयुक्तःसानुजःश्रीपतिश्चप्रकटपरमशक्त्याप्रेरितःपूर्णकामः ॥ उदधितटगतोसौसेतुबंधंविधायात्यहनदमरशत्रुंरावणंगीतकीर्तिः ॥६१॥ यःशृणोतिनरोभक्त्यादेव्याश्चरितमुत्तमम् ॥ सभुक्त्वाविपुलान्भोगान्प्राप्नोतिपरमंपदम् ॥ ६२ ॥ संत्यन्यानिपुराणानिविस्ताराणिबहूनिच ॥ श्रीमद्भागवतस्यास्यनतुल्यानीतिमेमतिः ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांतृतीयस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ छ ॥

देव्याभागवतस्यास्यतृतीयस्कंधविस्तरम् ॥ सार्धैःषडब्धिशैलेंदु १७४६ ॥ पद्यैर्व्यासोव्यरीरचत् ॥

स्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ तिलकाख्यांमहाव्याख्यांसम्यग्यःकृतवाञ्छुभाम् ॥ २ ॥ तृतीयस्कंधएतस्याःसमाप्तोभूच्छुभार्थदः॥तेनतुष्यतुसादेवीसच्चिदानंदरूपिणी ॥ ३ ॥ इतिश्रीश्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजश्रीलक्ष्मीगर्भजनीलकंठकृतेदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधेतृतीयस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ श्रीजगदंबार्पणमस्तु ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे तृतीयस्कन्धः संपूर्णः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे चतुर्थस्कन्धः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ यदुन्मेषनिमेषाभ्यांजगतःप्रलयोद्भवौ ॥ वंदेतांभुवनेशानींसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ १ ॥ अष्टाधिकैश्चचत्वारिंशद्भिःपद्यैरनंतरम् ॥ कृष्णाऽवतारसंप्रश्नोराज्ञाकृतउदीर्यते ॥ १ ॥ पूर्वाऽध्यायांतेरामाऽवतारपर्यंतमवताराःश्रीभगवत्यधीनास्तयायथायथाप्रेर्यंते तथातथातेकुर्वंतीत्युक्तंनतुकृष्णाऽवतारस्तदधीनउक्तः ॥ तथाचतस्येश्वरशक्तियुक्तत्वेनतस्य दुर्दशातदाश्रितानांयादवानांपांडवानांदुर्दशाकिमितिजातेत्याभिप्रायेण ॥ किंचजगतःकारणंश्रीभुवनेश्वरीभगवतीमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीतिसर्ववेदसिद्धं तस्याश्चवैषम्यनैर्घृण्यराहित्येनो च्चावचसृष्टिकल्पनंकिंनिमित्तमभवदितितन्निमित्तपरिचयार्थंचजनमेजयःपृच्छति । वासवेयमुनिश्रेष्ठेति ॥ वासव्याःसुगंधायाःअपत्यंवासवेयः ॥ स्त्रीभ्योढागितिढक् ॥ हेव्यास ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ आगोऽपराधः ॥ येनापराधेनकारागारेबद्धस्तादृशमागःकिंकृतवानित्यर्थः ॥ ४ ॥ ययातेःकुलमुत्तममेवतदुद्भवेनाऽपिकंसेनकुलीनेनेत्यर्थः ॥ ५ ॥ गतोजन्मांतरमिति ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ जनमेजयउवाच ॥ ॥ वासवेयमुनिश्रेष्ठसर्वज्ञानानिधेऽनघ॥प्रष्टुमिच्छाम्यहंस्वामिन्नस्माकंकुलवर्धन ॥१॥ शूरसेनसुतःश्रीमान्वसुदेवःप्रतापवान् ॥ श्रुतंमयाहरिर्यस्यपुत्रभावमवाप्तवान् ॥ २ ॥ देवानामपिपूज्योऽभून्नाम्नाचाऽऽनकदुंदुभिः ॥ कारागारेकथंबद्धःकंसस्यधर्मतत्परः॥ ३ ॥ देवक्याभार्ययासार्धंकिमागःकृतवानसौ ॥ देवक्याबालषट्कस्यविनाशश्चकृतःपुनः ॥ ४ ॥ तेनकंसेनकस्माद्वैययातिकुलजेनच ॥ कारागारेकथंजन्मवासुदेवस्यवैहरेः ॥५॥ गोकुलेचकथंनीतोभगवान्सात्वतांपतिः॥ गतोजन्मांतरंकस्मात्पितरौनिगडेस्थितौ ॥६॥ देवकीवसुदेवौचकृष्णस्याऽमिततेजसः॥ कथंनमोचितौवृद्धौपितरौहरिणाऽमुना ॥ ७ ॥ जगत्कर्तुंसमर्थेनस्थितेनजनकोदरे॥ प्राक्तनंकिंतयोःकर्मदुर्विज्ञेयंमहात्मभिः ॥ ८॥ जन्मवैवासुदेवस्ययत्राऽऽसीत्परमात्मनः ॥ केतेपुत्राश्चकावालायाकंसेनविपोथिता ॥ ९ ॥ शिलायांनिर्गताव्योम्निजातात्वष्टभुजापुनः ॥ गार्हस्थ्यंचहरेर्ब्रूहिबहुभार्यस्यचानघ ॥ १० ॥ कार्याणितत्रतान्येवदेहत्यागंचतस्यवै ॥ किंवदंत्याश्रुतंयत्तन्मनोमोहयतीवमे ॥ ११ ॥ चरितंवासुदेवस्यत्वमाख्याहियथातथम् ॥ नरनारायणौदेवौपुराणावृषिसत्तमौ ॥ १२ ॥ धर्मपुत्रौमहात्मानौतपश्चेरतुरुत्तमम् ॥ यौमुनीबहुवर्षाणिपुण्येबदरिकाश्रमे ॥ १३ ॥ निराहारौजिताऽऽत्मानौनिःस्पृहौजितषड्गुणौ ॥ विष्णोरंशौजगत्स्थेम्नेतपश्चेरतुरुत्तमम् ॥ १४ ॥ तयोरंशावतारौहिजिष्णुकृष्णौमहाबलौ ॥ प्रसिद्धौमुनिभिःप्रोक्तौसर्वज्ञैर्नारदादिभिः ॥ १५ ॥ विद्यमानशरीरौतौकथंदेहांतरंगतौ ॥ नरनारायणौदेवौपुनःकृष्णार्जुनौकथम् ॥ १६ ॥

क्षत्रियवंशजःसन्गोपालवंशजत्वविशिष्टंलोकदृष्ट्याजन्मांतरंकस्माद्गतइत्यर्थः ॥ पितरावित्यस्योत्तरत्रान्वयः ॥६॥ ७ ॥ ननुप्राक्तनकर्मवशात्तौबद्धौतत्रहरिःकिंकरिष्यतीतिचेत्तत्राऽऽह ॥ प्राक्तनंकिमिति ॥ यत्रपरमात्मनोजन्माऽभवत्तत्रप्राक्तनंकिमवशिष्टम् ॥ यन्महात्मभिरपिदुर्ज्ञेयम् ॥ नहितास्मिन्सतिपरमेश्वरस्यजन्मस्यादितिभावः ॥ ८ ॥ किंचकेतेपुत्राइति ॥ शिलायांयेविपोथिताइतिशेषः ॥ तेकेपूर्वजन्मनिस्थिताइत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ किंवदंत्याजनश्रुत्यामनोमोहयतीवेति क्वचिदीश्वरवच्चरितेनक्वचिज्जीववच्चरितेनकिमयमीश्वरोवाजीवोवेतिमनसोमोहोभवतीत्यर्थः ॥११॥ किंचनरनारायणाविति ॥१२॥१३॥ जितषड्गुणौजितकामक्रोधादिषट्कौजगत्स्थेम्नेजगत्कल्याणाय ॥१४॥१५॥ विद्यमानशरीरौताविति ॥ पूर्वदेहंपरित्यज्यैवदेहान्तरगमनंसंभवतिनचतदिहास्ति ॥ तथाचकथंतयोर्देहांतरगमनमित्यर्थः ॥ १६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किंच यौचक्रतुरिति ॥ मुक्त्यर्थंतपस्यतोर्देहांतरगमनफलंविरुद्धंकथमभूदितिप्रश्नार्थः ॥ १७ ॥ यद्यत्तपसायद्यत्फलंभवातितदाह । शूद्रइति ॥ १८ ॥ एवंनियमेसातिनरनारायणयोर्ब्राह्मण योर्ज्ञानिनोर्विपरीतंक्षत्रियजन्मफलंकथमभूदित्याह । विपरीतमिति ॥१९॥ विपरीतफलकारणंतर्कयति। केनताविति ॥ २० ॥ किंचयादवानामिति ॥ सकथंजातइतिवदेतिशेषः॥२१॥ कृष्णस्यापीति ॥ गांधार्याःशापेनेश्वरस्यापिकृष्णस्यकुलक्षयःकथंजातइत्यपिवदेत्यर्थः ॥ २२ ॥ वासुदेवेवर्तमानेपुत्रस्यहरणंकथंकृतमित्यन्वयः ॥ २३ ॥ किंचतेनकृतंहरणंवासुदेवेन दिव्यचक्षुषाकथंनज्ञातम् । यदर्थंमहामोहेनिमग्नइत्याह । नज्ञातमिति ॥२४॥ किंचयत्पत्न्यइति ॥ २५ ॥ स्वर्गतेवैकुंठंगते ॥ २६ ॥ किंच विष्णोरिति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥३०॥

यौचक्रतुस्तपश्चोग्रंमुक्त्यर्थंमुनिसत्तमौ ॥ तौकथंप्रापतुर्देहौप्राप्तयोगौमहातपौ ॥ १७ ॥ शूद्रःस्वधर्मनिष्ठस्तुदेहांतेक्षत्रियस्तुसः ॥ शुभाऽऽचारोमृतोयो वैसशूद्रोब्राह्मणोभवेत् ॥ १८ ॥ ब्राह्मणोनिःस्पृहःशांतोभवरोगाद्विमुच्यते ॥ विपरीतमिदंभातिनरनारायणौचतौ ॥ १९ ॥ तपसाशोषितात्मानौक्षत्रि यौतौबभूवतुः ॥ केनतौकर्मणाशांतौजातौशापेनवापुनः ॥ २० ॥ ब्राह्मणौक्षत्रियौजातौकारणंतन्मुनेवद ॥ यादवानांविनाशश्चब्रह्मशापादितिश्रुतः ॥ ॥ २१ ॥ कृष्णस्याऽपिहिगांधार्याःशापेनैवकुलक्षयः ॥ प्रद्युम्नहरणंचैवशंबरेणकथंकृतम् ॥ २२ ॥ वर्तमानेवासुदेवेदेवदेवेजनार्दने ॥ पुत्रस्यसूतिकागेहा द्धरणंचाऽतिदुर्घटम् ॥ २३ ॥ द्वारकादुर्गमध्याद्वैहरिवेश्माद्धुरत्ययात् ॥ नज्ञातंवासुदेवेनतत्कथंदिव्यचक्षुषा ॥ २४ ॥ संदेहोऽयंमहान्ब्रह्मन्निःसंदेहंकुरु प्रभो ॥ यत्पत्न्योवासुदेवस्यदस्युभिर्लुंठिताहृताः ॥ २५ ॥ स्वर्गतेदेवदेवेतुतत्कथंमुनिसत्तम ॥ संशयोजायतेब्रह्मंश्चित्तांदोलनकारकः ॥ २६ ॥ विष्णो रंशःसमुद्भूतःशौरिर्भूभारहारकृत् ॥ सकथंमथुराराज्यंभयात्त्यक्त्वाजनार्दनः ॥ २७ ॥ द्वारवत्यांगतःसाधोससैन्यःससुहृद्गणः ॥ अवतारोहरेःप्रोक्तोभूभा रहरणायवै ॥ २८ ॥ पापात्मनांविनाशायधर्मसंस्थापनायच ॥ तत्कथंवासुदेवेनचौरास्तेननिपातिताः ॥ २९ ॥ यैर्हृतावासुदेवस्यपत्न्यःसंलुंठिताश्च ताः ॥ स्तेनास्तेकिंनविज्ञाताःसर्वज्ञेनसतापुनः ॥ ३० ॥ भीष्मद्रोणवधः कामंभूभारहरणेमतः ॥ अविताश्चमहात्मानःपांडवाधर्मतत्पराः ॥३१॥ कृष्ण भक्ताःसदाचारायुधिष्ठिरपुरोगमाः ॥ तेकृत्वाराजसूयंचयज्ञराजंविधानतः ॥ ३२ ॥ दक्षिणाविविधादत्त्वाब्राह्मणेभ्योऽतिभावतः ॥ पांडुपुत्रास्तुदेवांशावासु देवाश्रितामुने ॥ ३३ ॥ घोरंदुःखंकथंप्राप्ताःक्वगतंसुकृतंचतत् ॥ किंतत्पापंमहारौद्रंयेनतेपीडिताःसदा ॥ ३४ ॥

भीष्मद्रोणादयोधर्मात्मानोऽपिभूभारकारकाइतिज्ञात्वातेषांवधस्तस्यमतइष्टोजातस्तथासतितेषांस्तेनानांकथंतेनवधोनकृतइतिवदेत्यभिप्रायः ॥ ३१ ॥ किंचकृष्णभक्ताइति ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ क्वगतंसुकृतंचतदिति ॥ ननुपूर्वमेवोक्तंराजसूयःसांगोयज्ञोनजातइतितत्कथमत्रशंक्यते क्वगतंसुकृतंचतदितिचेन्न ॥ एतादृशवासुदेवादिसर्वज्ञपुरुषसान्निध्येकथंसांगोयज्ञोनजात इत्यत्रैवप्रश्नतात्पर्यात् ॥ तदेवाह । किंतत्पापमिति ॥ येनपापेनसांगोयज्ञोनजातइतिकृत्वादुःखेनपीडितास्तत्पापंकिमित्यर्थः ॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

किंचद्रौपदीति ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ किंचराजसूयमिति ॥ ४० ॥ ममपूर्वजाःपूर्वजन्मकृतपापेनदुःखंप्राप्ताइतिवक्तव्यं तदपिनसंभवति ॥ देवांशानांतेषांपूर्वजन्माभावाद्देवानांचपरमेश्वराधिकारिपुरुषत्वात्पापसंभावनाऽभावस्तथाचदेवांशानांतेषांकथंदुःखसंभवइत्ययंसंशयोमेवर्ततइत्यर्थः ॥ ४१ ॥ किंचसदाचारैस्त्विति ॥ नश्वरंमिथ्याजगज्ज्ञानानैर्ज्ञानवद्भिःसदाचारैःकथंहताइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ किंचप्रेरिताइति ॥ वासुदेवेनेश्वरेणकथंपापेप्रेरिताइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ लोभेनयोधान्नहत्वानविनाश्यभिक्षाटनादिनाजीविनंवरम् ॥ नतुलोभेनयोधान्हत्वाराज्यभोगोवरइत्यर्थः ॥ ४४ ॥ किंचविच्छिन्नस्त्विति ॥ ४५ ॥ त्वादृशमहानुभावादुत्पन्नेवंशेजायमानःसविराटतनयाउत्तरातस्याःसुतःपरिक्षित्तापसस्यगलेसर्पंकथंन्यस्त

द्रौपदीचमहाभागावेदीमध्यात्समुत्थिता ॥ रमांशजाचसाध्वीचकृष्णभक्तियुतातथा ॥ ३५ ॥ साकथंदुःखमतुलंप्रापघोरंपुनःपुनः ॥ दुःशासनेनसाकेशेगृहीतापीडिताभृशम् ॥ ३६ ॥ रजस्वलासभायांतुनीताभीतैकवाससा ॥ विराटनगरेदासीजातामत्स्यस्यसापुनः ॥ ३७ ॥ धर्षिताकीचकेनाथरुदतीकुररीयथा ॥ हृताजयद्रथेनाऽथक्रंदमानाऽतिदुःखिता ॥ ३८ ॥ मोचितापांडवैःपश्चाद्बलवद्भिर्महात्मभिः ॥ पूर्वजन्मकृतंपापंकितद्येनचपीडिताः ॥ ॥ ३९ ॥ दुःखान्यनेकान्याप्तास्तेकथयाऽद्यमहामते ॥ राजसूयंक्रतुवरंकृत्वातेममपूर्वजाः ॥४०॥ दुःखंमहत्तरंप्राप्ताःपूर्वजन्मकृतेनवै ॥ देवांशानांकथंतेषांसंशयोऽयंमहान्हिमे ॥ ४१ ॥ सदाचारैस्तुकौंतेयैर्भीष्मद्रोणादयोहताः ॥ छलेनधनलोभार्थंजानानैर्नश्वरंजगत् ॥ ४२ ॥ प्रेरितावासुदेवेनपापेघोरेमहात्मना ॥ कुलंक्षयितवंतस्तेहरिणापरमात्मना ॥ ४३ ॥ वरंभिक्षाटनंसाधोर्नीवारैर्जीवनंवरम् ॥ योधान्नहत्वालोभेनशिल्पेनजीवनंवरम् ॥ ४४ ॥ विच्छिन्नस्तुत्वयावंशोरक्षितोमुनिसत्तम ॥ समुत्पाद्यसुतानाऽऽशुगोलकाञ्छत्रुनाशनान् ॥ ४५ ॥ सोऽल्पेनैवतुकालेनविराटतनयासुतः ॥ तापसस्यगलेसर्पन्यस्तवान्कथमद्भुतम् ॥ ४६ ॥ नकोऽपिब्राह्मणंद्वेष्टिक्षत्रियस्यकुलोद्भवः ॥ तापसंमौनसंयुक्तंपित्राकिंतत्कृतंमुने ॥ ४७ ॥ एतैरन्यैश्चसंदेहैर्विकलंमेमनोऽधुना ॥ स्थिरंकुरुपितःसाधोसर्वज्ञोऽसिदयानिधे ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदे० चतुर्थस्कंधेजनमेजयप्रश्नोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूतउवाच ॥ एवंपृष्टःपुराणज्ञोव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ परिक्षितसुतंशांतंततोवैजनमेजयम् ॥ १ ॥ उवाचसंशयच्छेत्तृवाक्यंवाक्यविशारदः ॥ व्यासउवाच ॥ राजन्किमेतद्वक्तव्यंकर्मणांगहनागतिः ॥ २ ॥ दुर्ज्ञेयाकिलदेवानांमानवानांचकाकथा ॥ यदासमुत्थितंचैतद्ब्रह्मांडंत्रिगुणात्मकम् ॥ ३ ॥

वानित्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ इतिश्रीदे०चतुर्थस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ षष्टिश्लोकैर्विचित्रस्यप्रपंचस्यचकारणम् ॥ देवादीनांचसर्वेषांकर्मैवेत्येतदुच्यते ॥ १ ॥ इत्थंजनमेजयेनानेकविधान्कृतान्प्रश्नान् श्रुत्वा तेषांसर्वेषांप्रश्नानांसमाधानंप्रपंचस्यदेवादीनांचकर्माधीनत्वमिति व्यासउवाचेतिशौनकादीन्प्रतिसूतआह । एवंपृष्टःपुराणज्ञइति ॥ १ ॥ किमुवाचतदाह। राजन्किमिति ॥ एतत्त्वयापृष्टंकिंवक्तव्यंयतोदेवानामपिकर्मणांगहनाकष्टागतिर्दुर्ज्ञेयाभवति ॥ यदादेवादीनामपिकर्मणैवंगतिस्तदामानवानांकाकथा ॥ तस्मात्किंवक्तव्यमित्यर्थः ॥ २ ॥ कर्माधीनत्वमेवसर्वेषामाह यदेति अत्रतदेतिशेषः ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कर्मबीजसमुद्भवाःकर्मरूपकारणजन्याः ॥ ४ ॥ देहसंयोगोऽयंत्रिविधकर्मरहितःकदापिनतिष्ठति ॥ ५ ॥ तत्रकर्माणित्रिविधानिसंतीत्याह । शुभाशुभैरिति ॥ शुभानिसात्त्विकानि ॥ अशुभानितामसानि ॥ मिश्राणिराजसानि तेषांस्वरूपंचतृतीयस्कंधेसत्त्वादिगुणनिरूपणप्रकरणेस्पष्टीकृतम् ॥ ६ ॥ तानिचप्रत्येकंत्रिविधानीत्याह । संचितानीति ॥ एवं कर्मणांत्रैविध्यंभवतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ यद्यपिब्रह्मादयईश्वराःसंतितथाऽपितेकर्मणैवेश्वराजाताइतिकर्मवश्यत्वंतेषामस्त्येवेत्याह । ब्रह्मादीनामिति ॥ पूर्वजन्मनिकश्चिद्विद्यमानोजीवःकर्मोपासनाऽतिशयेनहिरण्यगर्भोभवति ॥ सोविभेत्सनैवरेमेइतिबृहदारण्यकश्रुतेः ॥ कर्मभिर्बद्धएवसपूर्वजन्मकृतश्रवणादिसाधनसंस्कारवशादेवहिरण्यगर्भजन्मनिज्ञानवांश्चभवतीत्येतदपिबृहदारण्यकएवोक्तम् ॥ कर्माधीनस्यतस्यहिरण्यगर्भस्येवावताराएतेब्रह्मविष्णुहरादयइतिहिरण्यगर्भःसमवर्तताग्रेइत्यादिश्रुत्योक्तम् ॥ तथाच कर्माधीनहिरण्यगर्भोशत्वाद्ब्रह्मादीनामपिकर्माधीनत्वंभवत्येवेतिभावः ॥८॥ दैवाधीनाःकर्माधीनाइत्यर्थः ॥ ९ ॥ देवानांमानवानांचतिरश्चांसर्वेषामपिकर्माधीनत्वस्यतुल्यत्वादित्याह देवानामिति ॥ १० ॥ पूर्ववैरानुयोगेनेत्यर्धपूर्वान्वयि ॥ ११ ॥ कर्माधीनत्वंनि

कर्मणैवसमुत्पत्तिःसर्वेषांनात्रसंशयः ॥ अनादिनिधनाजीवाःकर्मबीजसमुद्भवाः ॥ ४ ॥ नानायोनिषुजायंतेम्रियंतेचपुनःपुनः ॥ कर्मणारहितोदेहसंयोगोनकदाचन ॥ ५ ॥ शुभाशुभैस्तथामिश्रैःकर्मभिर्वेष्टितंत्विदम् ॥ त्रिविधानिहितान्याहुर्बुधास्तत्त्वविदश्चये ॥ ६ ॥ संचितानिभविष्याणिप्रारब्धानितथापुनः ॥ वर्तमानानिदेहेऽस्मिंस्त्रैविध्यंकर्मणांकिल ॥ ७ ॥ ब्रह्मादीनांचसर्वेषांतद्वशत्वंनराधिप ॥ सुखदुःखजरामृत्युहर्षशोकादयस्तथा ॥ ८ ॥ कामक्रोधौचलोभश्चसर्वेदेहगतागुणाः ॥ दैवाधीनाश्चसर्वेषांप्रभवंतिनराधिप ॥ ९ ॥ रागद्वेषादयोभावाःस्वर्गेपिप्रभवंतिहि ॥ देवानांमानवानांचतिरश्चांचतथापुनः ॥ १० ॥ विकाराःसर्वएवैतेदेहेनसहसंगताः ॥ पूर्ववैरानुयोगेनस्नेहयोगेनवैपुनः ॥ ११ ॥ उत्पत्तिःसर्वजंतूनांविनाकर्मनविद्यते ॥ कर्मणाभ्रमतेसूर्यःशशांकःक्षयरोगवान् ॥ १२ ॥ कपालीचतथारुद्रःकर्मणैवनसंशयः ॥ अनादिनिधनंचैतत्कारणंकर्मसंभवे ॥ १३ ॥ तेनेहशाश्वतंसर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ नित्यानित्यविचारेऽत्रनिमग्नामुनयःसदा ॥ १४ ॥ नजानंतिकिमेतद्वैनित्यंवाऽनित्यमेवच ॥ मायायांविद्यमानायांजगन्नित्यंप्रतीयते ॥ १५ ॥ कार्याभावःकथंवाच्यःकारणेसतिसर्वथा ॥ मायानित्याकारणंचसर्वेषांसर्वदाकिल ॥ १६ ॥

गमयति । उत्पत्तिरिति ॥ १२ ॥ ननुकस्मादेतादृशंदुर्घटंकर्मोत्पन्नमितिचेत्तत्राह । अनादीति ॥ बीजांकुरवदेतस्याऽनादित्वादनादित्वम् ॥ अनिधनत्वंतुमोक्षपर्यंतावस्थानात् ॥ तदेतादृशकर्मसंभवेसर्वस्योत्पत्तौकारणंभवतीत्यर्थः ॥ तेनकारणेनसर्वंजगच्छाश्वतंप्रवाहरूपेणनित्यंभवतीत्यर्थः ॥ तथाचकैवल्यश्रुतिः पुनश्चजन्मांतरकर्मयोगात्सएवजीवःस्वापितिप्रबुद्धइति कर्मणएवकारणत्वंदर्शयति ॥ तथाचनैतादृशंकर्मकस्मादप्युत्पन्नंभवितुमर्हतीत्यर्थः ॥ अतएवाहुः । जीवईशोविशुद्धाचित्तथाजीवेशयोर्भिदा । अविद्याताच्चितोर्भेदः षडस्माकमनादयइति ॥१३ ॥ इत्थंकर्मसद्भावेआगमंप्रदर्श्याऽर्थापत्तिमप्याह । नित्यानित्येति ॥ इदंजगन्नित्यं प्रलयरहितमाहोस्विदनित्यंप्रलयसहितंभवतिइतिविचारेसदामुनयोनिमग्नाः॥१४॥ कुतोनिमग्नास्तत्राऽऽह । नजानंतीति ॥ यतोनित्यंवाऽनित्यंवेतिनजानंतिततोनिमग्नाइत्यर्थः ॥ ननुजगन्नश्वरंभाति ततोनित्यकोटिःकथमुत्थितेतिचेदनुमित्येत्याह । मायायामिति ॥ करणस्यनित्यत्वेकार्यमपिसदेवस्यादित्यर्थः॥ १५॥तदेवाह।कार्याभावइति॥अतोहेतोर्नित्यत्वकोटिःसमुत्थितेत्यर्थः॥ननुमायैवाऽनित्यास्यादितिचेन्नेत्याह ।मायानित्येति ॥ मोक्षपर्यंतंनित्येत्यर्थः ॥ १६॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तर्हिप्रत्यक्षोपलभ्यमानस्यजगतोनश्वरत्वस्यकागतिरितिचेत्तदन्यथाऽनुपपत्त्याकर्मरूपवीजस्यसहकारिकारणस्याऽनित्यत्वंकल्पनीयमित्याह ।कर्मवीजंततोऽनित्यमिति ॥ अनित्यंकर्मवीजे सहकारिकारणंवुद्धौचिंतनीयमित्यर्थः ॥ तस्माज्जगतउत्पत्तिप्रलयान्यथाऽनुपपत्त्यापिकर्मसद्भावःसिद्धइतिभावः ॥ तस्मिंश्चानित्येकर्मणिस्वीकृतेयदाप्रारब्धंकर्मोत्तिष्ठातितदामाया विसृजति यदाप्रारब्धंसर्वप्राणिनांनश्यति तदाकारणभूतायामायायानित्यत्वेऽपिसहकारिकारणस्यकर्मणोऽभावाज्जगतःप्रलयोभवतीतिसर्वसमंजसम् ॥ १७ ॥ यदिकर्मनियंत्रितं

कर्मवीजंततोनित्यंचिंतनीयंसदावुधैः ॥ भ्रमत्येवजगत्सर्वंराजन्कर्मनियंत्रितम् ॥ १७ ॥ नानायोनिषुराजेंद्रनानाधर्ममयेषुच ॥ इच्छयाचभवेज्जन्मविष्णोरामिततेजसः ॥१८॥ युगेयुगेष्वनेकासुनीचयोनिषुतत्कथम् ॥ त्यक्त्वावैकुंठसंवासंसुखभोगाननेकशः ॥१९॥ विण्मूत्रमंदिरेवासंसंत्रस्तःकोऽभिवांछति ॥ पुष्पावचयलीलाचजलकेलिःसुखासनम् ॥२०॥ त्यक्त्वागर्भगृहेवासंकोऽभिवांछतिवुद्धिमान्॥तूलिकांमृदुसंयुक्तांदिव्यांशय्यांविनिर्मिताम् ॥२१॥ त्यक्त्वाऽधोमुखवासंचकोऽभिवांछतिपंडितः ॥ गीतंनृत्यंचवाद्यंचनानाभावसमन्वितम् ॥ २२ ॥ मुक्त्वाकोनरकेवासंमनसाऽपिविचिंतयेत् ॥ सिंधुजाद्भुतभावानांरसंत्यक्त्वासुदुस्त्यजम् ॥२३॥ विण्मूत्ररसपानंचकइच्छेन्मतिमान्नरः ॥ गर्भवासात्परोनास्तिनरकोभुवनत्रये॥२४॥ तद्भीताश्चप्रकुर्वंतिमुनयोदुस्तरंतपः ॥ हित्वाभोगंचराज्यंचवनेयांतिमनस्विनः ॥ २५ ॥ यद्भीतास्तुविमूढात्माकस्तंसेवितुमिच्छति॥गर्भेतुदंतिकृमयोजठराग्निस्तपत्यधः॥२६॥ वपासंवेष्टनंक्रूरंकिंसुखंतत्रभूपते ॥ वरंकारागृहेवासोवंधनंनिर्गडैर्वरम् ॥ २७ ॥ अल्पमात्रंक्षणंनैवगर्भवासःक्वचिच्छुभः ॥ गर्भवासेमहद्दुःखंदशमासनिवासनम् ॥ २८ ॥ तथानिःसरणेदुःखंयोनियंत्रेऽतिदारुणे ॥ वालभावेतथादुःखंमूकाज्ञभावसंयुतम् ॥२९॥ क्षुत्तृडावेदनाशक्तःपरतंत्रोऽतिकातरः ॥ क्षुधितेरुदितेवालेमाताचिंतातुरातदा ॥ ३० ॥ भेषजंपातुमिच्छंतीज्ञात्वाव्याधिव्यथांदृढाम् ॥ नानाविधानिदुःखानिवालभावेभवंतिवै ॥ ३१ ॥ किंसुखंविवुधादृष्ट्वाजन्मवांछंतिचेच्छया ॥ संग्राममरैःसार्धंसुखंत्यक्त्वानिरंतरम् ॥३२॥ कर्तुमिच्छेच्चकोमूढःश्रमदंसुखनाशनम् ॥ सर्वथैवनृपश्रेष्ठसर्वेब्रह्मादयःसुराः ॥ ३३ ॥ कृतकर्मविपाकेनप्राप्नुवंतिसुखाऽसुखे ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाऽशुभम् ॥ देहवद्भिर्नृभिर्देवैस्तिर्यग्भिश्चनृपोत्तम ॥ ॥ ३४ ॥ तपसादानयज्ञैश्चमानवश्चेंद्रतांव्रजेत् ॥ क्षीणेपुण्येऽथशक्रोऽपिपतत्येवनसंशयः ॥ ३५ ॥

जगन्नस्यात्तदेश्वराणांकथमेतादृशीगतिर्भवेदित्याह।नानायोनिष्विति ॥इच्छयायदिनानायोनिषुअधर्ममयेषुदेशेषुजन्मनस्यात्तदादेवादीनांकर्मनियंत्रितत्वंनस्यान्नचेच्छयाकश्चनदुःखेषुपतति तस्माद्देवादीनामपिकर्मनियंत्रितत्वमेवेतिभावः ॥ १८ ॥ इच्छयादेवादीनांनानाजन्मभोक्तृत्वमितिवक्तारमुपहसति ॥ युगेयुगेष्विति ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ अधोमुखवासंवाल्यावस्थायांगर्भवा ॥२२॥२३॥२४॥२५॥ यद्भीतास्त्विति पूर्वेणान्वयः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३६ ॥ ३७ ॥ रथचक्रवत्परिवर्तनमित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥४०॥ इत्थंसर्वप्रपंचस्यसामान्यतःकर्मजन्यत्वमुपपादितम् ॥ अयंभावः । सच्चिदानंदरूपिण्याभगवत्यानित्यतृप्तायाजगत्कल्पनेनकिंचित्फलमस्ति किंतुनानाकर्मभिर्बद्धाःप्राणिनोजगत्सर्जनाऽभावेविषयाभावाद्भोगासंभवेनतथैववद्धाःस्युरितितेषांभोगेनकर्मक्षयार्थंस्वप्रयोजनाभावेऽपिकेवलंप्राणिदयामवलंब्यैवभगवत्याजगत्सर्जनेप्रवृत्तिः ॥ तत्रयथायथायस्यकर्मवर्ततेतथातथातस्यफलंदेयमिति नभगवत्यावैषम्यनैर्घृण्यदोषप्रसक्तिः ॥ नचप्रपंचेसतिकर्मोद्भवस्तस्मिन्सतितन्निमित्तःप्रपंचइत्यन्योन्याश्रयोवैषम्यनैर्घृण्यदोषप्रसक्तिश्चतदवस्थैवेतिचेन्न ॥ बीजांकुरवत्कर्मणांप्रपंचस्यचानादित्वात् ॥ यदाहुःजीवईशोविशुद्धाचित्तथाजीवेशयोर्भिदा। अविद्याचितोर्भेदःषडस्माकमनादयइति ॥ अतएववृहदारण्यके पूर्वजन्मनिकृतकर्मोपासनस्ययजमानस्यहिरण्यगर्भपदप्राप्तौसत्यांकर्मबद्धत्वादेवेश्वरस्याऽपिहिरण्यगर्भस्यभयारत्यादिकंसोबिभेत्सनैवरेमेइत्यादिनोक्तम् ॥

रामावतारयोगेनदेवावानरतांगताः ॥ तथाकृष्णसहायार्थंदेवायादवतांगताः ॥ ३६ ॥ एवंयुगेयुगेविष्णुरवताराननेकशः ॥ करोतिधर्मरक्षार्थंब्रह्मणाप्रेरितोभृशम् ॥ ३७ ॥ पुनःपुनर्हरेरेवंनानायोनिषुपार्थिव ॥ अवताराभवंत्यन्येरथचक्रवदद्भुताः ॥ ३८ ॥ दैत्यानांहननंकर्मकर्तव्यंहरिणास्वयम् ॥ अंशांशेनपृथिव्यांवैकृत्वाजन्ममहात्मना ॥ ३९ ॥ तदहंसंप्रवक्ष्यामिकृष्णजन्मकथांशुभाम् ॥ सएवभगवान्विष्णुरवतीर्णोयदोःकुले ॥ ४० ॥ कश्यपस्यमुनेरंशोवसुदेवःप्रतापवान् ॥ गोवृत्तिरभवद्राजन्पूर्वशापानुभावतः ॥ ४१ ॥ कश्यपस्यचद्वेपत्न्यौशापादत्रमहीतले ॥ अदितिःसुरसाचैवमासतुःपृथिवीपते ॥ ॥ ४२ ॥ देवकीरोहिणीचोभेभगिन्यौभरतर्षभ ॥ वरुणेनमहाञ्छापोदत्तःकोपादितिश्रुतम् ॥ ४३ ॥ राजोवाच ॥ किंकृतंकश्यपेनाऽऽगोयेनशप्तोमहानृषिः ॥ सभार्यःसकथंजातस्तद्वदस्वमहामते ॥ ४४ ॥ कथंचभगवान्विष्णुस्तत्रजातोऽस्तिगोकुले ॥ वासौवैकुंठनिलयेरमापतिरखंडितः ॥ ४५ ॥ निदेशात्कस्यभगवान्वर्ततेप्रभुरव्ययः ॥ नारायणःसुरश्रेष्ठोयुगादिःसर्वधारकः ॥४६॥ सकथंसदनंत्यक्त्वाकर्मवानिवमानुषे ॥ करोतिजननंकस्मादत्रमेसंशयोमहान् ॥ ४७ ॥ प्राप्यमानुषदेहंतुकरोतिचविडंबनम् ॥ भावान्नानाविधांस्तत्रमानुषेदुष्टजन्मनि ॥ ४८ ॥ कामःक्रोधोऽमर्षशोकौवैरंप्रीतिश्चकर्हिचित् ॥ सुखंदुःखंभयंनृणांदैन्यमार्जवमेवच ॥ ४९ ॥ दुष्कृतंसुकृतंचैववचनंहननंतथा॥पोषणंचलनंतापोविमर्शश्चविकत्थनम् ॥ ५० ॥ लोभोदंभस्तथामोहःकपटंशोचनंतथा ॥ एतेचान्येतथाभावामानुष्येसंभवंतिहि ॥ ५१ ॥

अनंतरंचसोवेदाहंब्रह्मास्मि इत्यनेनतत्त्वज्ञानमप्युक्तम् ॥ यदाहिरण्यगर्भस्यापिकर्मबद्धत्वंतदातदवतारेषुहरिब्रह्मादिषुतदवतारावतारेषुरामकृष्णादिषुकर्मबद्धत्वेकाकथेति ॥ अधुनाशापादिविशेषकर्मबद्धत्वंचवदन्पूर्वप्रश्नानामुत्तरमप्याह । कश्यपस्यमुनेरंशइति ॥ गोवृत्तिःपशुपालवृत्तिः ॥ ४१ ॥ कश्यपस्यऋषेःपत्न्यावदितिःसुरसाचेत्येवंनाम्नावभूवतुस्तेवरुणशापादेवकीरोहिण्यौजातेइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ येनशप्तइति ॥ येनागसाऽपराधेनसभार्यःसऋषिःकथंशप्तोजातइत्यन्वयः ॥ ४४ ॥ गोकुलेवैकुंठापेक्षयाऽतिनिकृष्टे ॥ ४५ ॥ कस्यनिदेशादाज्ञयैतादृशोवर्ततेभवतीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ दुष्टत्वमेवोपपादयति कामःक्रोधइति ॥ ४९ ॥ वचनंविश्वासभाषणम् ॥ विमर्शोविचारः ॥ विकत्थनंवल्गनम् ॥५०॥५१॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ एवमिदंसर्वमनुभूतमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ रक्षागृहेकारागृहे ॥ ५८ ॥ ५९॥ नह्येतत्स्वेच्छयाकश्चित्करोतिकिंत्वन्याऽधीनतयैवेत्याह । स्वेच्छयेति ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ सार्धपंचाऽधिकैःपंचाशद्भिःपद्यैरनंतरम् ॥ अदितेःशापकथनंविस्तरादिहवर्ण्यते ॥ १ ॥ देवकीकेनशापेनजाते तिराज्ञापृष्टेव्यासउवाच । कारणानीति ॥ मुख्यंकारणंतुकर्मैत्युक्तमवांतरकारणानितुवहूनिसंतीत्यर्थः ॥ नहरेर्देवक्याएवकिंतुसर्वेषांदेवानामवतारेष्वित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ धेनुमितिजात्ये

सकथंभगवान्विष्णुस्त्यक्त्वासुखमनश्वरम् ॥ करोतिमानुषंजन्मभावैरेतैरभिद्रुतम् ॥ ५२ ॥ किंसुखंमानुषंप्राप्यभुविजन्ममुनीश्वर ॥ किंनिमित्तंहरिः साक्षाद्गर्भवासंकरोतिवै ॥ ५३ ॥ गर्भदुःखंजन्मदुःखंवालभावेतथापुनः ॥ यौवनेकामजंदुःखंगार्हस्थ्येऽतिमहत्तरम् ॥ ५४ ॥ दुःखान्येतान्यवाप्नोतिमानुषेद्विजसत्तम ॥ कथंसभगवान्विष्णुरवतारान्पुनःपुनः ॥ ५५ ॥ प्राप्यरामाऽवतारंहिहरिणाब्रह्मयोनिना ॥ दुःखंमहत्तरंप्राप्तंवनवासेऽतिदारुणे ॥ ५६ ॥ सीताविरहजंदुःखंसंग्रामश्चपुनःपुनः ॥ कांतात्यागोऽप्यनेनैवमनुभूतोमहात्मना ॥ ५७ ॥ तथाकृष्णाऽवतारेऽपिजन्मरक्षागृहेपुनः ॥ गोकुलेगमनंचैव गवांचारणमित्युत ॥ ५८ ॥ कंसस्यहननंकष्टाद्द्वारकागमनंपुनः ॥ नानासंसारदुःखानिभुक्तवान्भगवान्कथम् ॥ ५९ ॥ स्वेच्छयाकःप्रतीक्षेतमुक्तोदुःखानिज्ञानवान् ॥ संशयंछिंधिसर्वज्ञममचित्तप्रशांतये ॥ ६० ॥ इतिश्रीदे०महापुराणेचतुर्थस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ कारणानिवहून्यत्राप्यवतारेहरेःकिल ॥ सर्वेषांचैवदेवानामंशाऽवतरणेष्वपि ॥ १ ॥ वसुदेवावतारस्यकारणंशृणुतत्त्वतः ॥ देवक्याश्चैवरोहिण्याअवतारस्य कारणम् ॥ २ ॥ एकदाकश्यपःश्रीमान्यज्ञार्थंधेनुमाहरत् ॥ याचितोऽयंबहुविधंनददौधेनुमुत्तमाम् ॥ ३ ॥ वरुणस्तुततोगत्वाब्रह्माणंजगतःप्रभुम् ॥ प्रणम्योवाचदीनात्मास्वदुःखंविनयान्वितः ॥ ४ ॥ किंकरोमिमहाभागमत्तोऽसौनददातिगाम् ॥ शापोमयाविसृष्टोऽस्मैगोपालोभवमानुषे ॥ ५ ॥ भार्येद्वेअपितत्रैवभवेतांचातिदुःखिते ॥ यतोवत्सारुदंत्यत्रमातृहीनाःसुदुःखिताः ॥ ६ ॥ मृतवत्सादितिस्तस्माद्भविष्यतिधरातले ॥ कारागारनिवासाचतेनापिबहुदुःखिता ॥ ७ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्ययादोनाथस्यपद्मभूः ॥ समाहूयमुनिंतत्रतमुवाचप्रजापतिः ॥ ८ ॥ कस्मात्त्वयामहाभागलोकपालस्यधेनवः ॥ हृताःपुनर्नदत्ताश्चकिमन्यायंकरोषिवै ॥ ९ ॥ जानन्न्यायंमहाभागपरवित्तापहारणम् ॥ कृतवान्कथमन्यायंसर्वज्ञोऽसिमहामते ॥ ॥ १० ॥ अहोलोभस्यमहिमामहतोऽपिनमुंचति ॥ लोभंनरकदंनूनंपापाकरमसंमतम् ॥ ११ ॥

कवचनम् उत्तरत्रधेनवइतिवचनात् ॥ वरुणस्यसंबंधिनीमाहरदाहृतवान् ॥ वरुणेनस्वधेन्वर्थेयाचमानोऽपिकश्यपोनददावित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ मत्तउन्मत्तःअतोमयाशापोविसृष्टः ॥ ५ ॥ तत्रैवमानुषेएव ॥ वत्सारुदंतित्वयाऽऽदत्तानांगवामित्यर्थः ॥ ६ ॥ तस्मात् तेनकारणेनेत्यर्थः ॥ तेनापितेनैवकारणेनइतिशापेदत्तेऽपिनददातीत्याश्चर्यंब्रह्माणंप्रत्युक्तवानितिभावः ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ अहोलोभस्येति ॥ योलोभोमहतोऽपीतिद्वितीयाबहुवचनम् ॥ तानपिनमुंचतीत्यर्थः ॥ लोभंनरकदमित्यस्योत्तरत्रतमित्यनेनाऽन्वयः ॥ ११ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १२ ॥ १३ ॥ अमेध्यवरइतिच्छेदः। यतोदुरात्मनाकृतस्नेहस्ततोदुराचारइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥१७॥ अदितेःशापांतरमप्याह। तथेति ॥१८॥ शोकस्त्विति ॥अस्मिन्विषयेमम

कश्यपोऽपिनतंत्यक्तुंसमर्थःकिंकरोम्यहम् ॥ सर्वदैवाधिकस्तस्माल्लोभोवैकलितोमया ॥ १२ ॥ धन्यास्तेमुनयःशांताजितोयैर्लोभएवच ॥ वैखानसैःशम परैःप्रतिग्रहपराङ्मुखैः ॥ १३ ॥ संसारेबलवाञ्छत्रुर्लोभोऽमेध्यवरःसदा ॥ कश्यपोऽपिदुराचारःकृतस्नेहोदुरात्मना ॥ १४ ॥ ब्रह्मापितंशशापाऽथक श्यपंमुनिसत्तमम् ॥ मर्यादारक्षणार्थंहिपौत्रंपरमवल्लभम् ॥ १५ ॥ अंशेनत्वंपृथिव्यांवैप्राप्यजन्मयदोःकुले ॥ भार्याभ्यांसंयुतस्तत्रगोपालत्वंकरिष्यसि ॥ १६ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंशप्तःकश्यपोऽसौवरुणेनचब्रह्मणा ॥ अंशावतरणार्थायभूभारहरणायच ॥ १७॥ तथादित्याऽदितिःशप्ताशोकसंतप्तयाभृश म् ॥ जाताजाताविनश्येरंस्तवपुत्रास्तुसप्तवै ॥१८॥ जनमेजयउवाच ॥ कस्मादित्याचभगिनीशप्तेंद्रजननीमुने ॥ कारणंवदशापेचशोकस्तुमुनिसत्तम॥ ॥ १९ ॥ सूतउवाच ॥ पारिक्षितेनपृष्टस्तुव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ राजानंप्रत्युवाचेदंकारणंसुसमाहितः ॥ २० ॥ व्यासउवाच ॥ राजन्दक्षसुतेद्वेतुदिति श्चाऽदितिरुत्तमे ॥ कश्यपस्यप्रियेभार्येबभूवतुरुरुक्रमे ॥ २१ ॥ अदित्यामघवापुत्रोयथाऽभूदतिवीर्यवान् ॥ तदातुतादृशंपुत्रंचकमेदितिरोजसा ॥२२॥ पतिमाहाऽसितापांगीपुत्रंमेदोहिमानद ॥ इंद्रतुल्यबलंवीरंधर्मिष्ठंवीर्यवत्तमम् ॥ २३ ॥ तामुवाचमुनिःकांतेस्वस्थाभवमयोदिते ॥ व्रतांतेभवितातुभ्यंश तक्रतुसमःसुतः ॥ २४ ॥ सातथेतिप्रतिश्रुत्यचकारव्रतमुत्तमम् ॥ निषिक्तंमुनिनागर्भंबिभ्राणासुमनोहरम् ॥ २५ ॥ भूमौचकारशयनंपयोव्रतपरायणा॥ पवित्राधारणायुक्ताबभूववरवर्णिनी ॥ २६ ॥ एवंजातःसुसंपूर्णोयदागर्भोऽतिवीर्यवान् ॥ शुभ्रांशुमतिदीप्तांगींदितिंदृष्ट्वातुदुःखिता ॥ २७ ॥ मघवत्सदृशः पुत्रोभविष्यतिमहाबलः ॥ दित्यास्तदाममसुतस्तेजोहीनोभवेत्किल ॥ २८ ॥ इतिचिंतापरापुत्रमिंद्रंचोवाचमानिनी ॥ शत्रुस्तेऽद्यसमुत्पन्नोदितिगर्भे ऽतिवीर्यवान् ॥ २९ ॥ उपायंकुरुनाशायशत्रोरद्यविचिंत्यच ॥ उत्पत्तिरेवहंतव्यादित्यागर्भस्यशोभन ॥३०॥ वीक्ष्यतामसितापांगींसपत्नीभावमास्थिता म् ॥ दुनोतिहृदयेचिंतासुखमर्मविनाशिनी ॥ ३१ ॥ राजयक्ष्मेवसंवृद्धोनष्टोनैवभवेद्रिपुः ॥ तस्मादंकुरितंहन्याद्बुद्धिमानहितंकिल ॥ ३२ ॥ लोहशंकु रिवक्षिप्तोगर्भोवैहृदयेमम ॥ येनकेनाऽप्युपायेनपातयाद्यशतक्रतो ॥ ३३ ॥ सामदामबलेनापिहिंसनीयस्त्वयासुतः ॥ दित्यागर्भोमहाभागममचेदिच्छ सिप्रियम् ॥ ३४ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वामातृवचःशक्रोविचिंत्यमनसाततः ॥ जगामापरमातुःससमीपममराधिपः ॥ ३५ ॥

शोकोभवतीत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ मयोदितंयद्व्रतंतस्यांतेइत्यर्थः ॥ तस्याःकिंचित्पुत्रजनकंव्रतमुक्तमितितात्पर्यम् ॥२४॥२५॥२६॥ शुभ्रांशुंश्वेतवर्णां गर्भिणी स्वभावत्वाच्छुक्लवर्णस्य ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ अहितंशत्रुम् ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३६ ॥ ३७॥ ३८ ॥ अदित्याममममात्रासहतवभेदःकिमपिमेनास्तीत्यर्थः॥ ३९॥ ४० ॥ ४१ ॥ पविनायकःपविधारकः॥४२॥ मघवानमुमिति ॥ मघवाबहुलमितिसिद्धम् ॥ अमुंबालम् ॥ ४३ ॥ सप्तधेति ॥ सप्तशकलेषुमध्येएकैकंशकलंसप्तधासप्तधाकृत्वेत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ मरीचिनंदनःकश्यपः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ मघवत्सखाः ॥ राजाहःसखि

ववंदेविनयात्पादौदित्याःपापमतिर्नृप ॥ प्रोवाचविनयेनाऽसौमधुरंविषगर्भितम् ॥ ३६ ॥ इंद्रउवाच ॥ मातस्त्वंव्रतयुक्ताऽसिक्षीणदेहाऽतिदुर्बला ॥ सेवार्थमिहसंप्राप्तःकिंकर्तव्यंवदस्वमे ॥३७॥ पादसंवाहनंतेऽहंकरिष्यामिपतिव्रते ॥ गुरुशुश्रूषणात्पुण्यंलभतेगतिमक्षयाम् ॥३८ ॥ नमेकिमपिभेदोऽस्तितथादित्याशपेकिल ॥ इत्युक्त्वाचरणौस्पृष्ट्वासंवाहनपरोऽभवत् ॥३९॥ संवाहनसुखंप्राप्यनिद्रामापसुलोचना॥श्रांताव्रतकृशासुप्ताविश्वस्तापरमासती ॥ ॥ ४० ॥ तांनिद्रावशमापन्नांविलोक्यप्राविशत्तनुम् ॥ रूपंकृत्वाऽतिसूक्ष्मंचशस्त्रपाणिःसमाहितः॥४१॥उदरंप्रविवेशाऽऽशुतस्यायोगबलेनवै ॥ गर्भंचकर्तवज्रेणसप्तधापविनायकः ॥ ४२ ॥ रुरोदचतदाबालोवज्रेणाभिहतस्तथा ॥ मारुदेतिशनैर्वाक्यमुवाचमघवानमुम् ॥४३॥ शकलानिपुनःसप्तसप्तधाकर्तितानिच ॥ तदाचैकोनपंचाशन्मरुतश्चाभवन्नृप ॥४४॥ तदाप्रबुद्धासुदतीज्ञात्वागर्भंतथाकृतम् ॥ इंद्रेणच्छलरूपेणचुकोपभृशदुःखिता ॥ ४५ ॥ भगिनीकृतंतुसाबुद्ध्वाशशापकुपितातदा ॥ अदितिंमघवंतंचसत्यव्रतपरायणा॥४६॥यथामेकर्तितोगर्भस्तवपुत्रेणछद्मना ॥ तथातन्नाशमायातुराज्यंत्रिभुवनस्यतु ॥ ४७ ॥ यथागुप्तेनपापेनममगर्भोनिपातितः ॥ अदित्यापापचारिण्यायथामेघातितःसुतः॥४८॥तस्याःपुत्रास्तुनश्यंतुजाताजाताःपुनःपुनः ॥ कारागारेवसत्वेषापुत्रशोकातुराभृशम् ॥ ४९ ॥ अन्यजन्मनिचाऽप्येवंमृतापत्याभविष्यति ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युत्सृष्टंतदाश्रुत्वाशापंमरीचिनंदनः ॥ ॥ ५० ॥ उवाचप्रणयोपेतोवचनंशमयन्निव ॥ माकोपंकुरुकल्याणिपुत्रास्तेबलवत्तराः ॥ ५१ ॥ भविष्यंतिसुराःसर्वेमरुतोमघवत्सखाः ॥ शापोऽयंतववामोरुत्वष्टाविंशेऽथद्वापरे ॥ ५२ ॥ अंशेनमानुषंजन्मप्राप्यभोक्ष्यतिभामिनी ॥ वरुणेनाऽपिदत्तोऽस्तिशापःसंतापितेनच ॥५३ ॥ उभयोःशापयोगेनमानुषीयंभविष्यति ॥ व्यासउवाच ॥ पतिनाऽऽश्वासितादेवीसंतुष्टासाऽभवत्तदा ॥ ५४ ॥ नोवाचविप्रियंकिंचित्ततःसावरवर्णिनी ॥ इतितेकथितंराजन्पूर्वशापस्यकारणम् ॥ ५५ ॥ अदितिर्देवकीजातास्वांशेननृपसत्तम ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ छ ॥

राजोवाच॥ विस्मितोऽस्मिमहाभागश्रुत्वाऽऽख्यानंमहामते ॥ संसारोऽयंपापरूपःकथंमुच्येतबंधनात् ॥ १ ॥

भ्यष्टजितिटच्समासांतः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ इयमदितिः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ अर्धाधिकैर्द्विपंचाशत्पद्यैरथनिरंतरम् ॥ अधर्मेचस्थितंसर्वंजगदित्येतदीर्यते ॥१॥ पूर्वाध्यायेइंद्रादीनामपिमहतांगर्भहननाद्यधर्माचरणंदृष्ट्वाविस्मितोराजापृच्छति। विस्मितोस्मीति ॥ अयंपापरूपःसंसारः॥अस्माद्बंधनात्संसाररूपान्मनुष्यःकथंमुच्येत ॥ नास्मान्मोचनाशाभवतीत्यर्थः ॥ १ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कुतइतिचेत्तत्राऽऽह। कश्यपस्यापीति ॥ दायादःपुत्रःउत्तमकुलोत्पन्नोऽपीत्यर्थः ॥ त्रैलोक्याधिपत्येऽपिजुगुप्सितंकर्मकृतवांस्तदाऽन्यःकोनकुर्याज्जुगुप्सितंनिंद्यंकर्म॥ सर्वोऽपिकुर्यादेव॥ ततश्चसंसारान्मोक्षोदुर्लभइतिभावः ॥ २ ॥ किंतज्जुगुप्सितंकर्मकृतवांस्तत्राऽऽह । गर्भेप्रविश्येति ॥ शपथंकृत्वाहननंकृतवानित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ नकेवलंसएवकृतवान्किंत्वन्येऽपिधर्मात्मानोमत्पितामहादयोऽपिदुष्टंकर्मगुरुज्येष्ठवधादिकंकृतवंतस्तदेतदाश्चर्यमित्याह । पितामहामइति ॥ ५ ॥ तथान्येऽपीत्याह । भीष्मोद्रोणइति ॥ वासुदेवेनविरुद्धधर्मेणगुरुज्येष्ठवधादिरूपेणनोदिताःप्रेरिताः ॥ नहीश्वरस्याधर्मेप्रेरकत्वंयुक्तम् ॥ ६ ॥ तदेवाऽऽह । असारतामिति ॥ नहिसंसारेऽसारतांजानतांतदाग्रहेणाऽधर्माचरणंसांप्रतम् ॥ ७ ॥ एतादृशानांयदेत्थमाचरणंतदाधर्मस्याऽवस्थानेकाआस्थाकाश्रद्धानकाऽपीत्यर्थः ॥ किंचप्रमाणभूतंवस्तुकिमस्तिविनिश्चितम् ॥ नकिमपीत्यर्थः ॥ धर्मस्याचरणेएतेधर्मात्मानःप्रमाणमितिस्थितम् ॥ यदात्वेतएवाऽधर्माचरणवंतस्तदाप्रमाणंकिमवशिष्टंनकिमपीत्यर्थः ॥ धर्मस्याऽऽचरणेएतादृशंकथानकंश्रुत्वाचलचित्तोऽस्मीत्याह । चलचित्तोऽस्मीति ॥८॥ किंचाऽऽगमोप्युच्छिन्नः ॥ एतादृशाचरण

कश्यपस्याऽपिदायादस्त्रिलोकीविभवेसति ॥ कृतवानीदृशंकर्मकोनकुर्याज्जुगुप्सितम् ॥ २॥ गर्भेप्रविश्यबालस्यहननंदारुणंकिल ॥ सेवामिषेणमातुश्चकृत्वाशपथमद्भुतम् ॥ ३ ॥ शास्ताधर्मस्यगोप्ताचत्रिलोक्याःपतिरप्युत ॥ कृतवानीदृशंकर्मकोनकुर्यादसांप्रतम् ॥ ४ ॥ पितामहामेसंग्रामेकुरुक्षेत्रेऽतिदारुणम् ॥ कृतवंतस्तथाऽऽश्चर्यंदुष्टंकर्मजगद्गुरो ॥ ५ ॥ भीष्मोद्रोणःकृपःकर्णोधर्मांशोऽपियुधिष्ठिरः॥ सर्वेविरुद्धधर्मेणवासुदेवेननोदिताः ॥ ६ ॥ असारतांविजानंतःसंसारस्यसुमेधसः ॥ देवांशाश्चकथंचक्रुर्निंदितंधर्मतत्पराः ॥७॥ काऽऽस्थाधर्मस्यविप्रेंद्रप्रमाणंकिंविनिश्चितम् ॥ चलचित्तोऽस्मिसंजातःश्रुत्वाचैतत्कथानकम् ॥ ८ ॥ आप्तवाक्यंप्रमाणंचेदाप्तःकःपरदेहवान् ॥ पुरुषोविषयासक्तोरागीभवतिसर्वथा ॥९॥ रागोद्वेषोभवेन्नूनमर्थनाशादसंशयम्॥ द्वेषादसत्यवचनंवक्तव्यंस्वार्थसिद्धये ॥ १० ॥ जरासंधविघातार्थंहरिणासत्त्वमूर्तिना ॥ छलेनरचितंरूपंब्राह्मणस्यविजानता ॥ ११ ॥ तदाप्तःकःप्रमाणंकिंसत्त्वमूर्तिरपीदृशः ॥ अर्जुनोऽपितथैवाऽत्रकार्येयज्ञविनिर्मिते ॥ १२ ॥ कीदृशोऽयंकृतोयज्ञःकिमर्थंशमवर्जितः ॥ परलोकपदार्थंवायशसेवाऽन्यथाकिल ॥ १३ ॥ धर्मस्यप्रथमःपादःसत्यमेतच्छ्रुतेर्वचः ॥ द्वितीयस्तुतथाशौचंदयापादस्तृतीयकः ॥ १४ ॥

वतामाप्तत्वाभावादाप्तवाक्यमागमइत्यस्यविषयाभावादित्याह । आप्तवाक्यमिति ॥ आप्तःकःनकोप्यस्तीत्यर्थः ॥ योयोहिपरदेहवानुत्कृष्टदेहवान् देहतादात्म्यवानित्यर्थः ॥ ससर्वोऽपिपुरुषोविषयासक्तोरागीसर्वथाभवति ॥ ततोनाप्तोऽस्तीत्यर्थः ॥ ९॥ तदेवाऽऽह। रागोद्वेषइति ॥ यतःसर्वस्यपुरुषस्याऽर्थनाशाद्वेषोभवेदेवासंशयम् ॥ द्वेषाच्चस्वार्थसिद्धयेअसत्यवचनंवक्तव्यमेवेतिनियमस्ततोनाप्तोऽस्तीत्यर्थः ॥ आप्तोहिहितकारीयथार्थवक्ता ॥ यदातुसर्वेस्वहितकारिणःस्वहितार्थमनर्थमप्याचरंतितदाऽऽप्तःकतिष्ठतीत्यर्थः ॥ १० ॥ आप्ताऽसंभवमेवाऽऽह । जरासंधेति ॥ ११ ॥ अत्यंतसात्त्विकविष्णोरपिस्वहितार्थच्छलकर्तृत्वादाप्तत्वाभावोयथातथाअर्जुनोऽपियज्ञरूपेविनिर्मितेउत्पादितेकार्येछलकारीभवतितस्मादाप्तोनास्तीत्यर्थः ॥ १२ ॥ कथमर्जुनस्यछलकारित्वंतदाह । कीदृशोऽयमिति ॥ यत्रशिशुपालवधादिरूपोऽनर्थोजातःसयज्ञःकीदृशः॥ सात्त्विकोवाराजसोवाकृतः ॥ सचशमवर्जितःकिमर्थंकृतःनहिकिमत्रच्छलंनास्तीतिसचपरलोकार्थंवायशसेवाऽन्यथाऽन्यफलार्थंवाकृतःस्यादित्यर्थः ॥ १३ ॥ तदपिफलंनसंभवतीत्याह । धर्मस्यप्रथमःपादइति ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तैःपादैः ॥ १५ ॥ धर्महीनमिति ॥ तथाच पांडवैःसत्यदयादिविवर्जितैःकृतंयज्ञरूपंकर्मकथंतत्फलदंभवेन्नकथमपीत्यर्थः ॥ तस्मात्सोऽपिदांभिकोयज्ञस्ततस्तत्कर्तारःकथमाप्ताभवेयुरित्यर्थः ॥ १६ ॥ किंचछलार्थंचेति ॥ यदाविष्णुरपिछलार्थंवामनोऽभूत्तदाऽऽप्तःकोऽवशिष्टइतिभावः ॥ किंवामनेनकृतमितिचेत्तत्राऽऽह । येनेति ॥ १७ ॥ १८ ॥ संत्वेतेछलिनस्तत्रमम जातामाशंकांप्रथमंवदपश्चान्मयापृष्टस्यार्थस्योत्तरंवदेत्यभिप्रायेणाऽऽह । जितंकेनेति ॥ हेकृष्णव्यास॥तयोर्मध्येबलिनावाजितंवामनेनवाजितंचानयोर्मध्येकउत्कृष्टइत्यर्थः॥१९ ॥ २० ॥ बलिरेवस्वसत्यान्नचलितइतिसएवविष्णोरधिकइतिप्रतिभाति ॥ तथाचेश्वरस्याऽऽप्तत्वभंगश्छलकर्तृत्वाच्चेतिगूढोऽभिसंधिर्नृपस्येतिराजवाक्यंश्रुत्वाराजाऽभिप्रेतमेवव्यासआह। जितंवैबलिनेति ॥ भूमिंदास्यामीतिप्रतिज्ञातस्यसत्यस्यपरिपालनात् ॥ तदेवाऽऽह। दत्तेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ सत्यंस्तौति ॥ सत्यादन्यतरादिति ॥ २३ ॥ २४ ॥ तस्मादिति ॥ तयामाययाच्छल

दानंपादश्चतुर्थश्चपुराणज्ञावदंतिवै ॥ तैर्विहीनःकथंधर्मस्तिष्ठेदिहसुसंमतः ॥१५॥ धर्महीनंकृतंकर्मकथंतत्फलदंभवेत् ॥ धर्मेस्थिरामतिः क्वापिनकस्यापिप्रतीयते ॥ १६ ॥ छलार्थंचयदाविष्णुर्वामनोऽभूज्जगत्प्रभुः ॥ येनवामनरूपेणवंचितोऽसौबलिर्नृपः ॥ १७॥ विहर्ताशतयज्ञस्यवेदाऽज्ञापरिपालकः ॥ धर्मिष्ठोदानशीलश्चसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ १८ ॥ स्थानात्प्रभ्रंशितोऽकस्माद्विष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ जितंकेनतयोःकृष्णबलिनावामनेनवा ॥ १९ ॥ छलकर्मविदाचाऽयंसंदेहोऽत्रमहान्मम ॥ वंचयित्वावंचितेनसत्यंवदद्विजोत्तम ॥ २० ॥ पुराणकर्तात्वमसिधर्मज्ञश्चमहामतिः ॥ व्यासउवाच ॥ जितंवैबलिनाराजन्दत्तायेनचमेदिनी ॥ २१ ॥ त्रिविक्रमोऽपिनाम्नायःप्रथितोवामनोऽभवत् ॥ छलनार्थमिदंराजन्वामनत्वंनराधिप ॥ २२ ॥ संप्राप्तंहरिणाभूयोद्वारपालत्वमेवच ॥ सत्यादन्यतरन्नास्तिमूलंधर्मस्यपार्थिव ॥ २३ ॥ दुःसाध्यंदेहिनाराजन्सत्यंसर्वात्मनाकिल ॥ मायाबलवतीभूपत्रिगुणावहुरूपिणी ॥ २४ ॥ ययेदंनिर्मितंविश्वंगुणैःशबलितंत्रिभिः ॥ तस्माच्छलवतासत्यंकुतोऽविद्धंभवेन्नृप ॥ २५ ॥ मिश्रेणजनितश्चैवस्थितिरेषासनातनी ॥ वैखानसाश्चमुनयोनिःसंगानिष्प्रतिग्रहाः ॥ २६ ॥ सत्ययुक्ताभवंत्यत्रवीतरागागततृषः ॥ दृष्टांतदर्शनार्थायनिर्मितास्तेचतादृशाः ॥ २७ ॥ अन्यत्सर्वंशबलितंगुणैरेभिस्त्रिभिर्नृप ॥ नैकंवाक्यंपुराणेषुवेदेषुनृपसत्तम ॥ २८ ॥

वतापुरुषेणसत्यंकुतोऽविद्धमनाश्रितंभवेन्नकुतोऽपीत्यर्थः ॥ अविद्धमितिच्छेदः ॥ २५ ॥ मिश्रेणेति ॥ प्रायोऽयंजनोमिश्रेणरजोगुणेनजनितोनिर्मितः ॥ तथाचैतादृशस्यरजोगुणयुक्तस्यसत्यंदुर्लभमेवभवति ॥ यद्यपिराजन्माययाकलुषितःसर्वजनोभवतिः तथापितयैवमाययाछलरहिताअपिप्राणिनःसत्यपरिपालकावैखानसाद्यामुनयोदृष्टांतप्रदर्शनायकल्पितास्तथाचतादृशमायाविशिष्टपरमेश्वरस्यभगवतपिदवाच्यस्याऽऽप्तत्वंभविष्यतितस्यावाचोवेदरूपायाआप्तवाक्यत्वंतस्यप्रामाण्यंचभविष्यतीतिनकाऽपिचिंताऽस्तीतितात्पर्येणाऽऽह । वैखानसाश्चमुनयइति ॥ २६ ॥ २७ ॥ अन्यदिति ॥ तादृशऋषिभ्योऽन्यज्जीवजातमित्यर्थः ॥ नैकंवाक्यमिति ॥ यतःसर्वस्यजीवजातस्यगुणमिश्रितत्वम् ॥ ततएवतेषांमतेनाऽर्थस्यभिन्नत्वात्तदनुभवानुवादिनांपुराणानांस्मृतीनांवेदेष्वपितदनुभवानुवादस्यार्थवादभागेसत्त्वाद्वेदवाक्यानांचनैकंवाक्यंकिंतुभिन्नंभिन्नमेवप्रतिभातीत्यर्थः ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तदेवाऽह । सगुणइति ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ सानुक्रीडतीति ॥ समायातैःसहानुक्रीडतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥ कार्यकारणभावमाह । असत्यइति ॥ कार्यवान्कार्येच्छावान्पुरुषःप्रथममसत्योभवत्यसत्येनापिकार्यसंपादयिष्यामीत्यसत्याभिसंधिमान्भवतीत्यर्थः ॥ ३४॥ ३५ ॥ विभवेसतीति ॥एतादृशाऽसत्यादिस्वीकारेणाऽपिकार्यसिद्धौसत्यामहंकारोभवतिततोमोहो मोहान्मरणंनाशोभवतीत्यर्थः ॥ अन्यान्यपिमोहकार्याण्याह संकल्पाइति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ येऽपियज्ञादिकर्तारस्तेऽपिमायाजन्याहंकारेणयुक्ताःकुर्वंतीतितेमायावशगाएवेत्याह।

धर्मशास्त्रेषुचांगेषुसगुणैराचितेष्विह ॥ सगुणःसगुणंकुर्यान्निर्गुणोनकरोतिवै ॥ २९ ॥ गुणास्तेमिश्रिताःसर्वेनपृथग्भावसंगताः ॥ निर्व्यलीकेस्थिरेधर्मेमतिःकस्यापिनस्थिरा ॥ ३० ॥ भवोद्भवेमहाराजमाययामोहितस्यवै ॥ इंद्रियाणिप्रमाथीनितदासक्तंमनस्तथा ॥ ३१ ॥ करोतिविविधान्भावान्गुणैस्तैःप्रेरितोभृशम् ॥ ब्रह्मादिस्तंबपर्यंताःप्राणिनः स्थिरजंगमाः ॥ ३२ ॥ सर्वेमायावशाराजन्साऽनुक्रीडतितैरिह ॥ सर्वान्वैमोहयत्येषाविकुर्वत्यनिशंजगत् ॥ ३३ ॥ असत्योजायतेराजन्कार्यवान्प्रथमंनरः ॥ इंद्रियार्थांश्चितयानोनप्राप्नोतियदानरः ॥३४॥ तदर्थंछलमादत्तेछलात्पापेप्रवर्तते॥ कामःक्रोधश्चलोभश्चवैरिणोवलवत्तराः ॥ ३५ ॥ कृताकृतंनजानंतिप्राणिनस्तद्वशंगताः ॥ विभवेसत्यहंकारःप्रबलःप्रभवत्यपि ॥ ३६ ॥ अहंकाराद्भवेन्मोहोमोहान्मरणमेवच ॥ संकल्पावहवस्तत्रविकल्पाःप्रभवंतिच ॥ ३७ ॥ ईर्ष्यासूयातथाद्वेषःप्रादुर्भवतिचेतसि ॥ आशातृष्णातथादैन्यंदंभोऽधर्ममतिस्तथा ॥ ३८ ॥ प्राणिनांप्रभवंत्येतेभावामोहसमुद्भवाः ॥ यज्ञदानानितीर्थानिव्रतानिनियमास्तथा ॥ ३९ ॥ अहंकाराभिभूतस्तुकरोतिपुरुषोऽन्वहम् ॥ अहंभावकृतंसर्वंप्रभवेद्वैनशौचवत् ॥ ४० ॥ रागलोभात्कृतंकर्मसर्वांगंशुद्धिवर्जितम् ॥ प्रथमंद्रव्यशुद्धिश्चद्रष्टव्याविबुधैःकिल ॥ ४१ ॥ अद्रोहेणार्जितंद्रव्यंप्रशस्तंधर्मकर्मणि ॥ द्रोहार्जितेनद्रव्येणयत्करोतिशुभंनरः ॥ ४२ ॥ विपरीतंभवेत्तत्तुफलकालेनृपोत्तम ॥ मनोऽतिनिर्मलंह्यस्यससम्यक्फलभाग्भवेत् ॥ ४३ ॥ तस्मिन्विकारयुक्तेतुनयथार्थफलंलभेत् ॥ कर्तारःकर्मणांसर्वेआचार्यऋत्विजादयः ॥ ४४ ॥ स्युस्तेविशुद्धमनसस्तदापूर्णंभवेत्फलम् ॥ दशकालक्रियाद्रव्यकर्तॄणांशुद्धतायदि ॥ ४५ ॥ मंत्राणांचतदापूर्णंकर्मणांफलमश्नुते ॥ शत्रूणांनाशमुद्दिश्यस्ववृद्धिंपरमांतथा ॥ ४६॥ करोतिसुकृतंतद्वद्विपरीतंभवेत्किल ॥ स्वार्थसक्तःपुमान्नित्यंनजानातिशुभाऽशुभम् ॥ ४७ ॥ दैवाऽधीनःसदाकुर्य्यात्पापमेवनसत्कृतम् ॥ प्राजापत्याःसुराःसर्वेह्यसुराश्चतदुद्भवाः ॥४८॥

यज्ञदानानीति ॥ ३९ ॥ सचाहंकारोमहादुष्टइतिवैराग्यार्थमाह । अहंभावकृतमिति ॥ शौचवच्छुद्धिमन्नेत्यर्थः ॥४०॥रागलोभादिति ॥ सर्वांगमपिकर्मरागलोभात्कृतंशुद्धिवर्जितंभवति॥ ततोऽहंकारवद्रागलोभावपित्याज्याविति भावः ॥ अतोऽहंकारंरागलोभौविहायप्रथमंद्रव्यशुद्धिर्द्रष्टव्येत्याह । प्रथममिति॥४१॥४२॥मनःशुद्धिफलमाह । मनोऽतिनिर्मलमिति॥४३॥कर्मशुद्धिमाह । कर्तारइति॥४४॥४५॥तच्चकर्मपरनाशायनकर्तव्यमित्याह । शत्रूणामिति॥४६॥स्वार्थमपिनकर्मकुर्यात्किंत्वीश्वराराधनबुद्ध्यैवेत्याह । स्वार्थसक्तइति ॥स्वार्थकरणेदोषमुद्भावयतिनजानातीति ॥ ४७ ॥ दैवाधीनःप्रारब्धाधीनःसत्कृतंपुण्यम् ॥ ४८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

परस्परेति ॥ यतःस्वार्थपरास्ततइत्यर्थः ॥ मानुषारजोद्भवाइत्यन्वयः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ तस्माद्देवादिभिर्ममपूर्वजादिभिश्चकथंपापंकृतमितिशंकावसरएवनास्ति ॥ मायां तःपातित्वात्सर्वस्यजीवजातस्यमायाप्रेरणयैवाऽऽचरणादतःसंसारनाशायमायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्येवभगवत्याराध्येतिभावः॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥४॥७॥ एकाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैश्चनिखिलंजगत् ॥ माययाऽऽवृतमित्युक्त्वानारायणकथोच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाऽध्यायांतेरागद्वेषविहीनस्तुसकथंजायतेनृपेत्युक्तंतदेवविशदयति । अथकिमिति ॥ कश्चिदिति।शुद्धसत्त्वइत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ देवाःसेर्ष्याइत्युक्तंतत्रोदाहरणमाह। द्रोहपरेजनेद्रोहपरोभवेदितिसमानतासाम्यतासर्वत्रवर्तते॥अद्रौहिणिशांतेतुविद्वेषोयःसाखलतादुष्टता साक्वचिदेवास्तिनसर्वत्रेत्यर्थः ॥ ४ ॥ इंद्रोदेवराजोऽपिसंस्तांखलतांस्वीकृतवांस्ततःपरंकिमवशिष्टमित्याह । यःकश्चिदिति ॥ तापसोद्रोहाभाववांस्तस्मिञ्जपविघ्नकर्तृताखलतेंद्रस्य ॥ ५ ॥ नन्वेवंचेत्कथंधर्मस्थितिःस्यादितिचेत्तत्राऽऽह । सतामिति ॥ सर्वयुगेषुत्रिविधानराःसंतिसाधवोऽसाधवोमध्यमाश्च ॥ तत्रसतांसर्वयुगंसत्ययुगमेव ॥ असतांसर्वयुगंकलिरेव ॥ यस्मि

सर्वेतेस्वार्थनिरताःपरस्परविरोधिनः ॥ सत्त्वोद्भवाःसुराःसर्वेप्युक्तावेदेषुमानुषाः ॥ ४९ ॥ रजोद्भवास्तामसास्तुतिर्यंचःपरिकीर्तिताः ॥ सत्त्वोद्भवानांतै र्वैरंपरस्परमनारतम् ॥५०॥ तिरश्चामत्रकिंचित्रंजातिवैरसमुद्भवे ॥ सदाद्रोहपरादेवास्तपोविघ्नकरास्तथा ॥ ५१ ॥ असंतुष्टाद्वेषपराःपरस्परविरोधिनः ॥ अहंकारसमुद्भूतःसंसारोऽयंयतोनृप ॥ ५२ ॥ रागद्वेषविहीनस्तुसकथंजायतेनृप ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ अथकिंबहुनोक्तेनसंसारेऽस्मिन्नृपोत्तम ॥ धर्मात्माद्रोहबुद्धिस्तुकश्चिद्भवतिकर्हिचित् ॥ १ ॥ रागद्वेषावृतंविश्वंसर्वंस्थावरजंगमम् ॥ आद्येयुगेऽपिराजेंद्रकिमद्यकलिदूषिते ॥ २ ॥ देवाःसेर्ष्याश्चसद्रोहाश्छलकर्मरताःसदा ॥ मानुषाणांतिरश्चांचकावार्तानृपगण्यते ॥ ३ ॥ द्रोहपरेद्रोहप रोभवेदितिसमानता ॥ अद्रोहिणितथाशांतेविद्वेषःखलतास्मृता ॥ ४ ॥ यःकश्चित्तापसःशांतोजपध्यानपरायणः ॥ भवेत्तस्यजपेविघ्नकर्तावैमघवापरम् ॥५॥ सतांसत्ययुगंसाक्षात्सर्वदैवाऽसतांकलिः ॥ मध्यमोमध्यमानांतुक्रियायोगौयुगेस्मृतौ ॥६॥ कश्चित्कदाचिद्भवतिसत्यधर्मानुवर्तकः ॥ अन्यथाऽन्य युगानांवैसर्वेधर्मपरायणाः ॥ ७ ॥ वासनाकारणंराजन्सर्वत्रधर्मसंस्थितौ ॥ तस्यांवैमलिनायांतुधर्मोऽपिमलिनोभवेत् ॥ ८ ॥ मलिनावासनासत्यंवि नाशायेतिसर्वथा ॥ ब्रह्मणोहृदयाज्जातःपुत्रोधर्मइतिस्मृतः ॥ ९ ॥

न्युगेक्रियायोगौव्यवस्थितौसमध्यमःकालोद्वापरत्रेतात्मकोमध्यमानांभवति ॥ तथाच येसाधवोमध्यमाश्चतदाश्रयेणधर्मःस्थास्यतीतिभावः ॥ ६ ॥ ननुतर्हिसाधवोनैवसंतीतिकथंपूर्वमुक्त मितिचेद्बहवोनसंतीत्यभिप्रायेणेत्याह । कश्चित्कदाचिदिति ॥ अन्यथाबहवस्त्वन्ययुगानांयेधर्मास्तत्परायणाःसर्वेभवंतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ननुकिमितिबहवस्तथाभवंतिसर्वेऽपिसत्य भाजःसाधवःकुतोनभवंतीतिचेत्तत्राह । वासनेति ॥ शुद्धवासनानांपुण्यसाध्यत्वादल्पत्वम् ॥ मलिनवासनानांस्वभावत्वाद्बहुत्वम् ॥ तथाचवासनाबहुत्वात्तादृशानामपिबहुत्वमि त्यर्थः ॥ ८ ॥ यद्यपिबहुत्वंतेषांतथाऽपिमलिनावासनाविनाशायैवभवंतीतिनिश्चित्यतासामाचरणंकदापिनकुर्यादितिभावः ॥ इत्थमेतत्पर्यंतंकिमर्थंशापोजातो देवकीवसुदेवयोः कथंकृष्णेंद्रप्रभृतयोदेवाश्छलेनाऽधर्माचरणवंतः पांडवादयश्चकथमधर्मशीलाइत्यस्योत्तरंदत्तमधुनानरनारायणयोर्मुक्त्यर्थंतपःकुर्वतोः कथंदेहांतरप्राप्तिर्मनुष्यदेहेनेतिप्रश्नस्योत्तरमाह । ब्रह्म णोहृदयादिति ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ प्रालेयाद्रिंहिमालयम् ॥ १३ ॥ तत्परंब्रह्मगायत्रीसंज्ञकमित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ कुतश्चिताकिंचकल्पितवांस्तदुभयमप्याह। किंकर्तव्यमिति ॥१७॥ आसनंममेतिशेषः ॥ विघ्नइति ॥ कामंक्रोधंवोत्पाद्ययेनविघ्नेनतपोनभवेत्सतादृशोविघ्नःकथंकर्तव्यइत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ दातुंयातोस्म्यहंऋषी ॥ हेऋषी

ब्राह्मणःसत्यसंपन्नोवेदधर्मरतःसदा॥दक्षस्यदुहितारोहिवृतादशमहात्मना॥१०॥विवाहविधिनासम्यङ्मुनिनागृहधर्मिणा॥तास्वजीजनयत्पुत्रान्धर्मःसत्यवतांवरः ॥ ११ ॥ हरिंकृष्णंनरंचैवतथानारायणंनृप ॥ योगाभ्यासरतोनित्यंहरिःकृष्णोबभूवह ॥ १२ ॥ नरनारायणौचैवचेरतुस्तपउत्तमम् ॥ प्रालेयाद्रिंसमागत्यतीर्थेबदरिकाश्रमे ॥ १३ ॥ तपस्विषुधुरीणौतौपुराणौमुनिसत्तमौ ॥ गृणंतौतत्परंब्रह्मगंगायाविपुलेतटे ॥ १४ ॥ हरेरंशौस्थितौतत्रनरनारायणावृषी ॥ पूर्णंवर्षसहस्रंतुचक्रातेतपउत्तमम् ॥ १५ ॥ तापितंचजगत्सर्वंतपसासचराचरम् ॥ नरनारायणाभ्यांचशक्रःक्षोभंतदाययौ ॥ १६ ॥ चिंताविष्टःसहस्राक्षोमनसासमकल्पयत् ॥ किंकर्तव्यंधर्मपुत्रौतापसौध्यानसंयुतौ ॥ १७ ॥ सिद्धार्थौसुभृशंश्रेष्ठमासनंनग्रहीष्यतः ॥ विघ्नःकथंप्रकर्तव्यस्तपोयेनभवेन्नहि ॥ १८ ॥ उत्पाद्यकामंक्रोधंचलोभंवाऽप्यतिदारुणम् ॥ इत्युद्दिश्यसहस्राक्षःसमारुह्यगजोत्तमम् ॥ १९ ॥ विघ्नकामस्तुतरसाजगामगंधमादनम् ॥ गत्वातत्राऽश्रमेपुण्येतावपश्यच्छतक्रतुः ॥ २० ॥ तपसादीप्तदेहौतुभास्कराविवचोदितौ ॥ ब्रह्मविष्णूकिमेतौवैप्रकटौवाविभावसू ॥ २१ ॥ धर्मपुत्रावृषीऐतौतपसाकिंकरिष्यतः ॥ इतिसंचिंत्यतौदृष्ट्वातदोवाचशचीपतिः ॥ २२ ॥ किंवांकार्यंमहाभागौब्रूतंधर्मसुतौकिल ॥ ददामिवांवरंश्रेष्ठंदातुंयातोऽस्म्यहंऋषी ॥ २३ ॥ अदेयमपिदास्यामितुष्टोस्मितपसाकिल ॥ व्यासउवाच ॥ एवंपुनःपुनःशक्रस्तावुवाचपुरःस्थितः ॥ २४ ॥ नोचतुस्तावृषीध्यानसंस्थितौदृढचेतसौ ॥ ततोवैमोहिनींमायांचकारभयदांवृषः ॥ २५ ॥ वृकान्सिंहांश्चव्याघ्रांश्चसमुत्पाद्याऽबिभीषयत् ॥ वर्षंवातंतथावह्निंसमुत्पाद्यपुनःपुनः ॥ २६ ॥ भीषयामासतौशक्रोमायांकृत्वाविमोहिनीम् ॥ भयतोऽपिवशंनीतौनतौधर्मसुतौमुनी ॥ २७ ॥ नरनारायणौदृष्ट्वाशक्रःस्वभवनंगतः ॥ वरदानेप्रलुब्धौननभीतौवह्निवायुतः ॥ २८ ॥ व्याघ्रसिंहादिभिःक्रांतौचलितौनाश्रमात्स्वकात् ॥ नतयोर्ध्यानभंगंवैकर्तुंकोऽपिक्षमोऽभवत्॥२९॥ इंद्रोऽपिसदनंगत्वाचिंतयामासदुःखितः ॥ चलितौभयलोभाभ्यांनेमौमुनिवरोत्तमौ ॥ ३० ॥ चिंतयंतौमहाविद्यामादिशक्तिंसनातनीम् ॥ ईश्वरींसर्वलोकानांपरांप्रकृतिमद्भुताम्॥३१॥ध्यायतांकःक्षमोलोकेबहुमायाविदप्युत॥यन्मूलाःसकलामायादेवासुरकृताःकिल ॥ ३२ ॥

तंवरंदातुंयातःप्राप्तोऽस्मीत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ वृषइंद्रः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ नाश्रमात्स्वकादाश्रमनिमित्ततपसोनचलितावित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ कुतोनचलितौतत्रनिमित्तमाह । चिंतयंताविति ॥ महाविद्यांश्रीभुवनेश्वरींपरांप्रकृतिंसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीम्॥ विद्धिमेप्रकृतिंपराम्॥जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगदितिगीतोक्ताम्॥३१॥ बहुमायावित्सोपीत्यर्थः ॥ ध्यायतांमनोवशयितुमितिशेषः ॥ यन्मूलाइति ॥ यत्पराशक्तिमूलाःसकलादेवासुरकृतमायाभवंतीतितांपरांशक्तिमितिपूर्वेणान्वयः ॥ ३२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तेकथंबाधितुमिति ॥ अन्येनबाधितुमित्यर्थः ॥ येगतकल्मषाध्यायंतितेइत्यन्वयः ॥ तृतीयस्कंधोक्तंभुवनेश्वरीमंत्रमाह । वाग्बीजमिति ॥ ३३ ॥ बाधितुंकोऽपिनक्षमइति ॥ तदुक्तंमुड मालायाम् ॥ पार्वतीचरणद्वंद्वभजनात्किंकरोभवेत् ॥ स्वर्गभोगश्चमोक्षश्चशाक्तानांनभवेत्किमु ॥ शाक्तानांचैवनिंदांयेकुर्वंतिहिनराऽधमाः ॥ तेषांलोहितपानंवैकुर्वंतिभैरवीगणाः ॥ भैर वाश्चैवभैरव्यःसदाहिंसंतिपामरान् ॥ शाक्तान्हिंसंतिनिंदंतिगर्जंतिबहुजल्पकाः ॥ छिनत्तितेषांदेवेशीशिरांसिहरवल्लभेति ॥ प्रतिक्रियांपरिहारम् ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ हेमन्मथ

तेकथंबाधितुंशक्ताध्यायंतिगतकल्मषाः ॥ वाग्बीजंकामबीजंचमायाबीजंतथैवच ॥ ३३ ॥ चित्तेयस्यभवेत्तंतुबाधितुंकोऽपिनक्षमः ॥ माययामोहितः शक्रोभूयस्तस्यप्रतिक्रियाम् ॥ ३४ ॥ कर्तुंकामवसंतौतुसमाहूयाऽब्रवीद्वचः ॥ मनोभववसंतेनरत्यायुक्तोव्रजाधुना ॥३५॥ अप्सरोभिःसमायुक्तस्तर सागंधमादनम् ॥ नरनारायणौतत्रपुराणावृषिसत्तमौ ॥ ३६ ॥ कुरुतस्तपएकांतेस्थितौबदरिकाऽऽश्रमे ॥ गत्वातत्रसमीपेतुतयोर्मन्मथमार्गणैः ॥ ३७ ॥ चित्तंकामातुरंकार्यंकुरुकार्यंममाऽधुना ॥ मोहयित्वोच्चाटयित्वाविशिखैस्ताडयाऽऽशुच ॥ ३८ ॥ वशीकुरुमहाभागमुनीधर्मसुतावपि ॥ कोह्यस्मिन्सर्व संसारेदेवोदैत्योऽथमानवः ॥ ३९ ॥ यस्तेबाणवशंप्राप्तोनयातिभृशताडितः ॥ ब्रह्माऽऽहंगिरिजानाथश्चंद्रोवह्निर्विमोहितः ॥ ४० ॥ गणनाकाऽनयोःकाम त्वद्बाणानांपराक्रमे ॥ वारांगनागणोऽयंतेसहायार्थंमयेरितः ॥ ४१ ॥ आगमिष्यतितत्रैवरंभादीनांमनोरमः ॥ एकातिलोत्तमारंभाकार्यंसाधयितुंक्षमा ॥ ४२ ॥ त्वमेवैकःक्षमःकामंमिलितैःकस्तुसंशयः ॥ कुरुकार्यंमहाभागददामितववांच्छितम् ॥ ४३ ॥ प्रलोभितौमयाऽत्यर्थंवरदानैस्तपस्विनौ ॥ स्था नान्नचलितौशांतौवृथाऽयंमेगतःश्रमः ॥ ४४ ॥ तथावैमाययाकृत्वाभीषितौतापसौभृशम् ॥ तथाऽपिनोत्थितौस्थानाद्देहरक्षापरौनतौ ॥ ४५ ॥ व्यास उवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाशक्रंप्राहमनोभवः ॥ वासवाऽद्यकरिष्यामिकार्यंतेमनसेप्सितम् ॥ ४६ ॥ यदिविष्णुंमहेशंवाब्रह्माणंवादिवाकरम् ॥ ध्यायं तौतौतदाऽस्माकंभवितारौवशौमुनी ॥ ४७ ॥ देवीभक्तंवशीकर्तुंनाऽहंशक्तःकथंचन ॥ कामराजंमहाबीजंचिंतयंतंमनस्यलम् ॥ ४८ ॥ तांदेवींचेन्महा शक्तिंसंश्रितौभक्तिभावतः ॥ नतदाममबाणानांगोचरौतापसौकिल ॥ ४९ ॥ इंद्रउवाच ॥ गच्छत्वंचमहाभागसर्वैस्तत्रसमुद्यतैः ॥ कार्यंममाऽतिदुःसा ध्यंकर्ताहितमनुत्तमम् ॥ ५० ॥ व्यासउवाच ॥ इतितेनसमादिष्टाययुःसर्वेसमुद्यताः ॥ यत्रतौधर्मपुत्रौद्वौतेपातेदुष्करंतपः ॥ ५१ ॥ इतिश्रीदेवीभाग वतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

मार्गणैः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ नयातीति ॥ मोहमितिशेषः ॥ ४० ॥ वारांगनेतिपृथक् ॥ वारांगनानामित्यर्थः ॥ छांदसःपूर्वसवर्णः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ तववांछितंतुभ्यंददामीत्यर्थः ॥ ४३ ॥ तौनसामान्यावित्याह । प्रलोभिताविति ॥ ४४ ॥ माययाकृत्वाभयमितिशेषः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ गच्छत्वंचेति ॥ तौपराशक्तिदेवीभक्तौवर्तेतेतत्रसंदे होनास्तितथाऽपित्वयत्नंतुकुरु यदग्रेभविष्यतितद्भवत्वित्यर्थः ॥ सर्वैःसमुद्यतैःसहेत्यर्थः ॥ ५० ॥५१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अर्धाधिकैरष्टपंचाशद्भिःपद्यैर्नराग्रजः ॥ उर्वशींससृजेचेतिकथेयंसमुदीर्यते ॥१॥ पूर्वाध्यायांतेवसंतागमनमुपवर्णितम्॥ तदनंतरंजातंवृत्तमाह । प्रथमंतत्रेति ॥ तेनवसंतागमनेनपुष्पिताः पादपावृक्षाःबभुःशोभिताइत्यर्थः ॥ द्विरेफालिविराजिताःभ्रमरपंक्तिविराजिताः ॥ १ ॥ २ ॥ नगोत्तमान्बृहद्वृक्षान् ॥ ३ ॥ ४ ॥ प्रमाथीनिबलवंति अस्वाधीनानीत्यर्थः ॥ ५ ॥ पूरयन्पंचमार्गणान्पंचबाणान्पूर्णान्व्यापकान्कुर्वन्नित्यर्थः ॥ पंचबाणैःसर्वांस्ताडयन्निति भावः ॥ ६ ॥ ७ ॥ भ्रमराऽऽलिर्भ्रमरपंक्तिः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ इतिमनसिऋतुकालविपर्यासंचिंतयित्वानारायणउवाचयत्तदाह।पश्येति ॥१२॥भीममातंगंशीतभयप्रदाननेनभीमंभयंकरंमातंगंगजंशिशिरऋतुरूपंपलाशकुसुमात्मकैःस्वस्यखरैःकठिनैर्नखैर्दारयन्प्राप्तोवसंतकेसरी

व्यासउवाच॥प्रथमंतत्रसंप्राप्तोवसंतःपर्वतोत्तमे ॥ पुष्पिताःपादपाःसर्वेद्विरेफालिविराजिताः ॥ १ ॥ आम्राश्चबकुलारम्यास्तिलकाःकिंशुकाःशुभाः ॥ सालास्तालास्तमालाश्चमधूकाःपुष्पिताबभुः ॥ २ ॥ बभूवुःकोकिलाऽऽलापावृक्षाग्रेषुमनोहराः ॥ बह्वयोऽपिपुष्पिताःसर्वाआलिलिंगुर्नगोत्तमान् ॥ ॥ ३ ॥ प्राणिनःस्वासुभार्यासुप्रेमयुक्ताःस्मराऽऽतुराः ॥ बभूवुश्चातिमत्ताश्चक्रीडासक्ताःपरस्परम् ॥ ४ ॥ ववुर्मंदाःसुगंधाश्चसुस्पर्शादक्षिणाऽनिलाः ॥ इंद्रियाणिप्रमाथीनिमुनीनामपिचाऽभवन् ॥ ५ ॥ रतियुक्तस्ततःकामःपूरयन्पंचमार्गणान् ॥ चकारत्वरितस्तत्रवासंबदरिकाऽऽश्रमे ॥ ६ ॥ रंभातिलोत्तमाद्याश्चगत्वातत्रवराऽश्रमे ॥ गानंचक्रुःसुगीतज्ञाःस्वरतानसमन्वितम् ॥ ७ ॥ तच्छ्रुत्वामधुरोद्गीतंकोकिलानांचकूजितम् ॥ भ्रमरालिविरावंचप्रबुद्धौतौमुनीश्वरौ ॥ ८ ॥ ऋतुराजमकालेतुदृष्ट्वातौपुष्पितंवनम् ॥ जातौचिंतापरौतत्रनरनारायणावृषी ॥ ९ ॥ किमद्यशिशिरापायःसंवृतःसमयंविना ॥ प्राणिनोविह्वलाःसर्वेलक्ष्यंतेऽतिस्मराऽऽतुराः ॥१०॥ कालधर्मविपर्यासःकथमद्यदुरासदः ॥ नरंनारायणःप्राहविस्मयोत्फुल्ललोचनः ॥ ११ ॥ नारायण उवाच ॥ पश्यभ्रातरिमेवृक्षाःपुष्पिताःप्रतिभांतिवै ॥ कोकिलाऽऽलापसंघुष्टाभ्रमरालिविराजिताः ॥ १२ ॥ शिशिरंभीममातंगंदारयन्स्वखरैर्नखैः ॥ वसंतकेसरीप्राप्तःपलाशकुसुमैर्मुने ॥ १३ ॥ रक्ताऽशोककरातन्वीदेवर्षेकिंशुकांघ्रिका ॥ नीलाऽशोककचाश्यामाविकासिकमलाऽऽनना ॥ १४ ॥ नीलेंदीवरनेत्रासाबिल्ववृक्षफलस्तनी ॥ प्रोत्फुल्लकुंदरदनामंजरीकर्णशोभिता ॥ १५॥ बंधुजीवाऽधराशुभ्रासिंधुवारनखाद्भुता॥ पुंस्कोकिलस्वरापुण्याकदंबवसनाशुभा ॥ १६ ॥ बर्हिवृंदकलापाचसारसस्वननूपुरा ॥ वासंतीबद्धरशनामत्तहंसगतिस्तथा ॥ १७ ॥

वसंतरूपःसिंहोवर्ततइत्यर्थः ॥१३॥ नकेवलंस्वयमेवप्राप्तःकिंतुलक्ष्मीनृसिंहवत्तस्ययाशक्तिर्वसंतलक्ष्मीःसाऽपिप्राप्तेतिवदन्वसंतलक्ष्मींवर्णयति।रक्ताशोकेति ॥ रक्तोनवीनपल्लवयोगाद्योऽशोकवृक्षःसएवकरौयस्याःसा ॥ किंशुकःपुष्पितपलाशवृक्षःसएवांघ्रीचरणौयस्याः ॥ नीलोयोऽशोकोहरितपल्लवयोगात्सएवकचाःकेशायस्याः ॥१४॥ बिल्ववृक्षफलान्येवस्तनौयस्याःमंजर्यएवकर्णौयस्याः॥१५॥सिंधुवारमेवनखानियस्याः ॥ १६ ॥ बर्हिवृंदोमयूरवृंदःसएवकलापोभूषणंयस्याः ॥ सारसः पुष्करावस्तुसारसइतिकोशः तस्यस्वनएवनूपुरेयस्याः ॥ वासंतीमाधवीलता तद्रूपाबद्धारशनाकटिसूत्रंययासा ॥ चलंतोयेमत्ताहंसास्तएवगतिर्यस्याः ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कदंबवृक्षाधोयेपुत्रजीवावृक्षास्तएवकदंबवृक्षरूपंयत्पूर्वोक्तमंशुकंवस्त्रंतस्मिन्न्यस्ताक्षिप्ताआच्छादितायारोमराजीरोमपंक्तिस्तयाविराजिता ॥ कदंबवृक्षाणांवस्त्रत्वकल्पनात्तदधःस्थितपुत्रजीवानांरोमराजिकल्पनेतिबोध्यम् ॥१८॥१९॥ तपिभंगायतपिस्तपिक्रिया तपश्चर्येत्यर्थः । तस्याभंगाय ॥२०॥ ऋतुराडिति ॥ अन्यथामदुक्तार्थाऽभावेऽकालेसमयाभावेऽपिऋतुराड्संतः कथंप्रीतिंजनयेन्नकथमपीत्यर्थः ॥ असुरशत्रुणेंद्रेण ॥२१॥२२॥ विप्राग्र्येद्विजश्रेष्ठे ॥२३॥२४॥२५॥२६॥ विद्युन्मालाचसाचांबुजाक्षीचेति ॥ क्वचित्तुविद्युन्मालांबुजाक्ष्यौचेतिपाठस्तदा

पुत्रजीवांशुकन्यस्तरोमराजिविराजिता॥वसंतलक्ष्मीःसंप्राप्ताब्रह्मन्बदरिकाश्रमे॥१८॥अकालेकिमियंप्राप्ताविस्मयोऽयंममाऽधुना ॥तपोविघ्नकरानूनंदेवर्षे परिचिंतय ॥ १९ ॥ श्रूयतेसुरनारीणांगानंध्यानविनाशनम् ॥ आवयोस्तपिभंगायकृतंमघवताकिल ॥ २० ॥ ऋतुराडन्यथाकालेप्रीतिंसंजनयेत्कथम् ॥ विघ्नोऽयंविहितोभातिभीतेनाऽसुरशत्रुणा ॥ २१ ॥ वाताःसुगंधाःशीताश्चसमायांतिमनोहराः ॥ नान्यत्कारणमस्तीहशतक्रतुकृतिंविना ॥ २२ ॥ इति ब्रुवतिविप्राऽग्र्येदेवेनारायणेविभौ ॥ सर्वेदृष्टिपथंप्राप्तामन्मथप्रमुखास्तदा ॥ २३ ॥ ददर्शभगवान्सर्वान्नरोनारायणस्तथा ॥ विस्मयाऽऽविष्टमनसौबभूवतुरुभावपि ॥ २४ ॥ मन्मथंमेनकांचैवरंभांचैवतिलोत्तमाम् ॥ पुष्पगंधांसुकेशींचमहाश्वेतांमनोरमाम् ॥ २५ ॥ प्रमद्वरांघृताचींचगीतज्ञांचारुहासिनीम् ॥ चंद्रप्रभांचसोमांचकोकिलाऽऽलापमंडिताम् ॥ २६ ॥ विद्युन्मालांबुजाक्षींचतथाकांचनमालिनीम् ॥ एताश्चान्यावरारोहादृष्टास्ताभ्यांतदांऽतिके॥२७॥ तासांद्व्यष्टसहस्राणिपंचाशदधिकानिच ॥ वीक्ष्यतौविस्मितौजातौकामसैन्यंसुविस्तरम् ॥ २८ ॥ प्रणम्याऽग्रेस्थिताःसर्वादेववारांगनास्तदा ॥ दिव्याऽऽभरणभूषाढ्यादिव्यमाल्योपशोभिताः ॥ २९ ॥ जगुश्छलेनताःसर्वाःपृथिव्यामतिदुर्लभम् ॥ तत्तथाऽवस्थितंदिव्यंमन्मथादिविवर्धनम् ॥ ३० ॥शुश्रावभगवान्विष्णुर्नरोनारायणस्तदा ॥ श्रुत्वाप्रोवाचतास्तत्रप्रीत्यानारायणोमुनिः ॥ ३१ ॥ आस्यतांसुखमत्रैवकरोम्यातिथ्यमद्भुतम् ॥ भवंत्योऽतिथिधर्मेणप्राप्ताःस्वर्गात्सुमध्यमाः ॥ ३२ ॥ व्यासउवाच ॥ साभिमानस्तुसंजातस्तदानारायणोमुनिः ॥ इंद्रेणप्रेषितानूनंतथाविघ्नचिकीर्षया ॥ ३३ ॥ वराक्यःकाइमाःसर्वाःसृजाम्यद्यनवाःकिल ॥ एताभ्योदिव्यरूपाश्चदर्शयामितपोबलम् ॥ ३४ ॥ इतिसंचिंत्यमनसाकरेणोरुंप्रताड्यवै ॥ तरसोत्पादयामासनारींसर्वांगसुंदरीम् ॥ ३५ ॥ नारायणोरुसंभूताद्युर्वशीतिततःशुभा ॥ ददृशुस्ताःस्थितास्तत्रविस्मयंपरमंययुः ॥ ३६ ॥ तासांचपरिचर्यार्थंतावतीश्चातिसुंदरीः ॥ प्रादुश्चकारतरसातदामुनिरसंभ्रमः ॥ ३७ ॥

स्त्रीद्वयम् ॥२७॥२८॥ देववारांगनाअप्सरसः॥२९॥ यथाशास्त्रेणोक्तंतथाऽवस्थितमित्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ अभिमानस्वरूपमाह । वराक्यइति ॥ ३४ ॥ इतिसंचिंत्येति । तरसावेगेनोरुंकरेणप्रताड्यसर्वांगसुंदरींनारीमुत्पादयामास ॥ ३५ ॥ नारायणेति ॥ हियतोनारायणोरुसंभूताततस्तस्माद्धेतोरुर्वशीतिनाम्नाऽभवदित्यर्थः ॥ ऊरुमश्नात्याश्रयन्युत्पत्तिस्थानत्वेनेत्युर्वशीतिव्युत्पत्तेः ॥ पृषोदरादित्वं ह्रस्वत्वम् ॥ ददृशुरिति ॥ ताइंद्रेणप्रेषितास्तामुर्वशींददृशुःदृष्ट्वापरमंविस्मयंययुःप्रापुः ॥३६॥ तासांचेतिइंद्रप्रेषितानांस्त्रीणांपरिचर्यार्थंतावतीःपंचाशदधिकषोडशसहस्रसंख्याकाअतिसुंदरीस्ताभ्योऽप्यतिसुंदरीः ॥ ३७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रणेमुरिति ॥ तानारायणोत्पन्नाःस्त्रियोऽजलिंकृत्वापुरःस्थितास्तौमुनीनरनारायणौप्रणेमुरित्यर्थः ॥ ३८ ॥ तदनंतरमिंद्रप्रेषिताःस्तुतिंचक्रुरित्याह । तांवीक्ष्येति ॥ अन्यान्प्रविमोहयंत्योऽपिदेवानांविभ्रमकरींस्वस्यापिमोहकरींतपसोविभूतिंदृष्ट्वातौनरनारायणौप्रत्यूचुः ॥ कथंभूतारोमोद्गमेनरोमांचोद्गमेनचार्व्यःसुंदरानिजांगवल्ल्योनिजांगलतायासांताः ॥ ३९ ॥ कुर्युः कथमिति ॥ हेदेवौवयंबालामूढाभवतांतपसोमहत्त्वंतथैवधैर्यमनसोप्यविषयमभिवीक्ष्यस्तुतिंकथंकुर्युर्नकथमपीत्यर्थः ॥ अस्मत्कटाक्षएवकज्जलरूपविषेणदिग्धोयुक्तःशरस्तेनदग्धःकोवापृथिव्यांनभवति अपितुसर्वोभवत्येव ॥ तत्रतस्मिन्सत्यपिभवतांमनसोव्यथाविकारोनेतिपरमाश्चर्यंभवतामितिभावः ॥ ४० ॥ अतएवयुवांनसाधारणौकिंतुपरमेश्वरस्यांशभूतावेवेत्यस्माभिर्ज्ञातावित्याहुः । ज्ञाताविति ॥ नरहरेर्विष्णोः ॥ हेभगवंतौकपटेनाऽऽगतानामप्यस्माकंकोवाभाग्योदयोजातोयेनभवद्दर्शनमस्माभिर्लब्धामित्याहुःसेवानिमित्तमिति ॥ नोऽस्माकंगमनमा

गायंत्यश्चहसंत्यश्चनानोपायनपाणयः ॥ प्रणेमुस्तामुनीसर्वाःस्थिताःकृत्वांऽजलिंपुरः ॥ ३८ ॥ तांवीक्ष्यविभ्रमकरींतपसोविभूतिंदेवांगनाहिमुमुहुःप्रविमोहयंत्यः ॥ ऊचुश्चतौप्रमुदिताऽऽननपद्मशोभारोमोद्गमोल्लसितचारुनिजांगवल्ल्यः ॥ ३९ ॥ कुर्युःकथंस्तुतिमहोतपसोमहत्त्वंधैर्यंतथैवभवतामभिवीक्ष्यबालाः ॥ अस्मत्कटाक्षविषदिग्धशरेणदग्धः कोवानतत्रभवतांमनसोव्यथान ॥ ४० ॥ ज्ञातौयुवांनरहरेःपरमांशभूतौदेवौमुनीशमदमादिनिधीसदैव ॥ सेवानिमित्तमिहनोगमनंनकामंकार्यंहरेःशतमखस्यविधातुमेव ॥४१॥ भाग्येनकेनयुवयोःकिलदर्शनंनःसंपादितंनविदितंखलुसंचितंतत् ॥ चित्तंक्षमंनिजजनेविहितंयुवाभ्यामस्मद्विधेकिलकृतागसितापमुक्तम् ॥ ४२ ॥ कुर्वंतिनैवविबुधास्तपसोव्ययंवैशापेनतुच्छफलदेनमहानुभावाः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्थंनिशम्यवचनंसुरकामिनीनांतावूचतुर्मुनिवरौविनयानतानाम् ॥ ४३ ॥ प्रीतौप्रसन्नवदनौजितकामलोभौधर्मात्मजौनिजतपोरुचिशोभितांगौ ॥ नरनारायणावूचतुः ॥ ब्रुवंतुवांछितान्कामान्ददावस्तुष्टमानसौ ॥ ४४ ॥ यांतुस्वर्गंगृहीत्वेमामुर्वशींचारुलोचनाम् ॥ उपायनमियंबालागच्छत्वद्यमनोहरा ॥ ४५ ॥ दत्ताऽऽवाभ्यांमघवतःप्रीणनायोरुसंभवा ॥ स्वस्त्यस्तुसर्वदेवेभ्योयथेष्टंप्रव्रजंतुच ॥ ४६ ॥ "नकस्यापितपोविघ्नंप्रकर्तव्यमतःपरम्" ॥ देव्यऊचुः ॥ क्वगच्छामोमहाभागप्राप्तास्तेपादपंकजम् ॥ नारायणसुरश्रेष्ठभक्त्यापरमयामुदा ॥ ४७ ॥ वांछितंचेद्वरंनाथददासिमधुसूदन ॥ तुष्टःकमलपत्राक्षब्रवीमोमनसेप्सितम् ॥ ४८ ॥ पतिस्त्वंभवदेवेशवरमेनंपरंतप ॥ भवामःप्रीतियुक्तास्त्वांसेवितुंजगदीश्वर ॥ ४९ ॥

गमनमिहभवत्सेवानिमित्तंनकिंतुकामंयथेच्छंहरेरिंद्रस्यशतमखस्यकार्यंभवत्तपोविघातरूपंविधातुंकर्तुमेव ॥ ४१ ॥ तादृशदुष्टानामस्माकंयुवयोर्दर्शनंकेनभाग्येनसंपादितंतत्संचितंभाग्यंखलुनविदितमस्माभिः ॥ किंचाऽस्मद्विधेऽस्मत्सदृशेनिजजनेकृतागसिकृताऽपराधेचित्तंक्षमंशापादिकर्तुंसमर्थमपियुवाभ्यांतापमुक्तंसंतापरहितंकृतम् ॥ अहोऽतिधन्याभवतांक्षमेतिभावः ॥४२ ॥ इयंचरीतिर्भवद्विधानांमहानुभावानांकेनाभिप्रायेणेतितमभिप्रायमाह ॥ कुर्वंतीति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ इयंबालाराजानमिंद्रंप्रत्युपायनंगच्छतु ॥ ४५ ॥ आवाभ्यांनरनारायणाभ्याम् ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५० ॥ त्वयापंचाशदधिकषोडशसहस्रास्त्रिय उत्पादितास्ताःस्वर्गंगच्छंतु ॥ तावत्संख्याका एववयमत्रस्थास्यामइतिभावः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेचतुर्थस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ छ ॥ ॥ पंचाधिकैश्चपंचाशद्भिःपद्यैःसमनंतरम् ॥ अहंकारावृतंविश्वंवैराग्यार्थमिहोच्यते ॥ १ ॥ रमस्वाऽत्रशुभे
स्थानेप्राप्यसर्वाःसुरांगनाइत्यप्सरसांप्रार्थनांश्रुत्वानारायणोविचारंकृतवानित्याह । इत्याकर्ण्येति ॥ विमर्शंविचारम् ॥ १ ॥ इतिविचारंकृत्वाप्रथमतइदंसंकटंकस्मान्मूलादुत्पन्नमितितन्मू
लंशोधितवानित्याह । अहंकारादिदंप्राप्तमिति ॥ २ ॥ ननुकुतोधर्मविनाशस्यमूलमहंकारइतिचेत्तत्राऽऽह । मूलमिति ॥ यतःसंसारवृक्षस्यमूलमहंकारस्ततस्तस्मिन्संसारेयद्यद्भवतिशुभंवाऽ
शुभंवातस्यसर्वस्यमूलमहंकारएवेत्यर्थः ॥ काएतावराक्योऽहमेतदपेक्षयाऽप्यतिसुंदरीरुत्पादयिष्यामीत्यहंकारस्वरूपंतुपूर्वमुक्तमेवाऽत्राऽहंकारपदेनस्मारितं पुनःस्वयमेववदति । दृष्ट्वेति ॥ ३ ॥

त्वयाचोत्पादितानार्यःसंत्यन्याश्चारुलोचनाः ॥ उर्वश्याद्यास्तथायांतुस्वर्गंवैभवदाज्ञया ॥ ५० ॥ स्त्रीणांषोडशसाहस्रंतिष्ठत्वत्रशतार्धकम् ॥ सेवांतेऽत्रकरि
ष्यामोयुवयोस्तापसोत्तमौ ॥ ५१ ॥ वांछितंदेहिदेवेशसत्यवाग्भवमाधव ॥ आशाभंगोहिनारीणांहिंसनंपरिकीर्तितम् ॥ ५२ ॥ कामार्तानांचमुनिभिर्धर्म
ज्ञैस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ भाग्ययोगादिहप्राप्ताःस्वर्गात्प्रेमपरिप्लुताः ॥ ५३ ॥ त्यक्तुंनार्हसिदेवेशसमर्थोऽसिजगत्पते ॥ नारायणउवाच ॥ पूर्णंवर्षसहस्रंतुतपस्तप्तंम
याऽत्रवै ॥ ५४ ॥ जितेंद्रियेणचार्वंग्यःकथंभंगंकरोम्यतः ॥ नेच्छाकामेसुखेकाचित्सुखधर्मविनाशके ॥ ५५ ॥ पशूनामपिसाधर्म्येरमेतमतिमान्कथम् ॥ अप्स
रसऊचुः ॥ शब्दादीनांचपंचानांमध्येस्पर्शसुखंवरम् ॥ ५६ ॥ आनंदरसमूलंवैनान्यदस्तिसुखंकिल ॥ अतोऽस्माकंमहाराजवचनंकुरुसर्वथा ॥ ५७ ॥ निर्भ
रंसुखमासाद्यचरस्वर्गंधमादने ॥ यदिवांछसिनाकंत्वंनाऽधिकोगंधमादनात् ॥ ५८ ॥ रमस्वाऽत्रशुभेस्थानेप्राप्यसर्वाःसुरांगनाः ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागव
तेमहापुराणेचतुर्थस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तासांधर्मपुत्रःप्रतापवान् ॥ विमर्शमकरोच्चित्तेकिंकर्तव्यंमयाऽधुना ॥ १ ॥
"हास्योऽहंमुनिवृन्देषुभविष्याम्यद्यसंगमात् ॥" अहंकारादिदंप्राप्तंदुःखंनाऽत्रविचारणा ॥ मूलंधर्मविनाशस्यप्रथमंयदहंकृतिः ॥ २ ॥ मूलंसंसारवृक्षस्य
यतःप्रोक्तोमहात्मभिः ॥ दृष्ट्वामौनंसमाधायनस्थितोऽहंसमागतम् ॥ ३ ॥ वारांगनागणंजुष्टंतेनाऽऽसंदुःखभाजनम् ॥ उत्पादितास्तथानार्योमयाधर्मव्य
येनवै ॥ ४ ॥ तास्तुमांबाधितुंवृत्ताः कामार्ताःप्रमदोत्तमाः ॥ ऊर्णनाभिरिवाद्याऽहंजालेनस्वकृतेनवै ॥ ५ ॥ बद्धोऽस्मिसुदृढेनाऽत्रकिंकर्तव्यमितःपरम् ॥
यदिचिंतांसमुत्सृज्यसंत्यजाम्यबलाइमाः ॥ ६ ॥ शप्त्वाभ्रष्टाव्रजिष्यंतिसर्वाभग्नमनोरथाः ॥ मुक्तोऽहंसंचरिष्यामिविजनेपरमंतपः ॥ ७ ॥

वारांगनागणंजुष्टमत्रसमागतंदृष्ट्वाऽहंमौनंसमाधायनस्थितःकिंतुतेनसाकंभाषणादिकंकृतंतेनाहंदुःखभाजनंजातः ॥ किंचधर्मस्यतपसोव्ययोऽपिजातस्तपोबलात्तासामुत्पादनेनेत्याह ॥
उत्पादिताइति ॥ ४ ॥ तासामुत्पत्त्यैवस्वर्गस्यनिर्वाहोजातइतिमत्वाताःस्वर्गस्थादेवांगनामांबाधितुंप्रवृत्ताःयद्यहंकारमवलंब्यतानोत्पादिताःस्युस्तदाऽयंप्रसंगःकिमित्युपस्थितःस्यात् ॥
तस्मादूर्णनाभिरिवलूताकीटइवस्वकृतेनैवजालेनाऽहंबद्धइत्यर्थः ॥ ५ ॥ इतिमनसिस्वापराधंविनिश्चित्याऽतःपरंकिंकर्तव्यमितिविचारयामासेत्याह । किंकर्तव्यमितःपरमिति ॥ ततएकमुपा
यंविचारितवानित्याह । यदीति ॥ यदीमास्त्यजामितर्हिशापंदत्वागमिष्यंति ॥ तथाप्याभिर्मुक्तोऽहंतपःसंचरिष्यामीतिमहत्फलंभविष्यतीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





इतिविचार्यतस्यैवनिश्चयःकृतइत्याह । तस्मात्क्रोधमिति ॥ ८ ॥ इतिनिश्चित्यमनसापुनर्नारायणोविमर्शमकरोदित्याह । विमर्शमिति ॥ कीदृशोविमर्शइत्याह । द्वितीयोऽयमिति ॥ एकोऽहंकारशत्रुरवलंबितस्तस्येदंफलंजातम् ॥ पुनर्द्वितीयस्यक्रोधस्याऽवलंबेबहुदुःखमेवभविष्यतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ तस्यदुष्टत्वमेवाऽऽह । कामादिति ॥ १० ॥ दीर्घिकांनदीम् ॥११ ॥ १२ ॥

तस्मात्क्रोधंसमुत्पाद्यत्यक्ष्यामिसुंदरीगणम् ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यमनसामुनिर्नारायणस्तदा ॥८॥ विमर्शमकरोच्चित्तेसुखोत्पादनसाधने ॥ द्वितीयोऽयंमहाशत्रुःक्रोधःसंतापकारकः ॥ ९ ॥ कामादप्यधिकोलोकेलोभादपिचदारुणः ॥ क्रोधाभिभूतःकुरुतेहिंसांप्राणविघातिनीम् ॥ १० ॥ दुःखदांसर्वभूतानांनरकाराममदीर्घिकाम् ॥ यथाऽग्निर्घर्षणाज्जातःपादपंप्रदहेत्तथा ॥ ११ ॥ देहोत्पन्नस्तथाक्रोधोदेहंदहतिदारुणः ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यमानंतंभ्रातरंदीनमानसम् ॥ १२ ॥ उवाचवचनंतथ्यंनरोधर्मसुतोऽनुजः ॥ नरउवाच ॥ नारायणमहाभागकोपंयच्छमहामते ॥ १३ ॥ शांतंभावंसमाश्रित्यनाशयाऽहंकृतिंपराम् ॥ पुराऽहंकारदोषेणतपोनष्टंकिलाऽऽवयोः ॥ १४ ॥ संग्रामश्चाभवत्ताभ्यांभावाभ्यामसुरेणह ॥ दिव्यवर्षसहस्रंतुप्रह्लादेनमहाऽद्भुतम् ॥१५॥ दुःखंबहुतरंप्राप्तंतत्राऽऽवाभ्यांसुरोत्तम ॥ तस्मात्क्रोधंपरित्यज्यशांतोभवमुनीश्वर ॥१६॥ "शांतत्वंतपसोमूलंमुनिभिःपरिकीर्तितम्॥" व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाशांतोऽभूद्धर्मनंदनः ॥ जनमेजयउवाच ॥ संशयोऽयंमुनिश्रेष्ठप्रह्लादेनमहात्मना ॥ १७ ॥ विष्णुभक्तेनशांतेनकथंयुद्धंकृतंपुरा ॥ कृतवंतौकथंयुद्धंनरनारायणावृषी ॥ १८ ॥ तापसौधर्मपुत्रौद्वौसुशांतमानसावुभौ ॥ समागमःकथंजातस्तयोर्दैत्यसुतस्यच ॥ १९ ॥ संग्रामस्तुकथंताभ्यांकृतस्तेनमहात्मना ॥ प्रह्लादोऽप्यतिधर्मात्माज्ञानवान्विष्णुतत्परः ॥ २० ॥ नरनारायणौतद्वत्तापसौसत्त्वसंस्थितौ ॥ तेनताभ्यांसमुद्भूतंवैरंयदिपरस्परम् ॥ २१ ॥ तदातपसिधर्मेचश्रमएवहिकेवलम् ॥ क्रजपःक्रतपश्चर्यापुरासत्ययुगेपिच ॥ २२ ॥ तादृशैर्नजितंचित्तंक्रोधाऽहंकारसंवृतम् ॥ नक्रोधोनचमात्सर्यमहंकारांकुरंविना ॥ २३ ॥ अहंकारात्समुत्पन्नाःकामक्रोधादयःकिल ॥ वर्षकोटिसहस्रंतुतपःकृत्वाऽतिदारुणम् ॥ २४ ॥ अहंकारांकुरेजातेव्यर्थंभवतिसर्वथा ॥ यथासूर्योदयेजातेतमोरूपंनतिष्ठति ॥ २५ ॥ अहंकारांकुरस्याऽग्रेतथापुण्यंनतिष्ठति ॥ प्रह्लादोऽपिमहाभागहरिणासमयुध्यत ॥ २६ ॥ तदाव्यर्थंकृतंसर्वंसुकृतंकिलभूतले ॥ नरनारायणौशांतौविहायपरमंतपः ॥२७॥ कृतवंतौयदायुद्धंक्रशमःसुकृतंपुनः॥ईदृग्भ्यांसत्त्वयुक्ताभ्यामजेयायद्यहंकृतिः ॥ २८ ॥ मादृशानांचकावार्तामुनेऽहंकारसंक्षये ॥ अहंकारपरित्यक्तःकोऽप्यस्तिभुवनत्रये ॥ २९ ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ ताभ्यांभावाभ्यामहंकारक्रोधाभ्याम् ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ कथमिति ॥ सोऽपिप्रह्लादः शांतस्तावपिनरनारायणौशांतौतथाचक्रोधाहंकारयोरभावात्कथंयुद्धमित्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ कोऽप्यस्तिभुवनत्रये ॥ एतादृशायदाऽहंकारयुक्तास्तदाऽहंकारविनिर्मुक्तःकोऽप्यस्तिनकोऽपीत्यर्थः ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

निगडैःशृंखलाभिः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ मीमांसकानामिति ॥ कर्मैवप्रधानंसर्वैःकर्तव्यम् ॥ नतुब्रह्मज्ञानादिकमास्तिसंभवतिवेतिमतम् ॥ ३३ ॥ इत्थंजनमेजयेनाऽहंकारमयत्वंसर्वस्योक्तं तदेवव्यासःस्थापयति । कार्यमिति ॥ अहंकारस्यसर्वंकार्यंतत्कारणादहंकारात्कथंभिन्नंभवति नहिकटकंकुंडलंवासुवर्णाद्भिन्नंभवति ॥ किंतु सुवर्णसदृशंसुवर्णमेवभवतितद्वदित्यर्थः ॥ ३४ ॥ तदेवाऽऽह। अहंकारोद्भवमिति ॥ ३५ ॥ पटस्तंतुवशस्तंत्वनतिरिक्तोयथातथातद्वियुक्तमहंकारवियुक्तंकथंचराचरंभवेन्नकथमपीत्यर्थः ॥ यद्यप्यहंकारावृतमेवसर्वंभवतितथाऽपिमायागुणैस्त्रिभिर्महत्तत्त्वादिकैःसर्वंरचितम् ॥ तथाचमायामयत्वात्सर्वंमिथ्याभवतीतिज्ञानिनांकापरिदेवनाखेदोनकापीत्यर्थः ॥ ३६ ॥ पुनरहंकारावृतत्वंस्थापयति। ब्रह्माविष्णुरिति

नभूतोभवितानैवयस्त्यक्तस्तेनसर्वथा ॥ मुच्यतेलोहनिगडैर्बद्धःकाष्ठमयैस्तथा ॥ ३० ॥ अहंकारनिबद्धस्तुनकदाचिद्विमुच्यते॥अहंकाराऽऽवृतंसर्वंजगत्स्थावरजंगमम्॥३१॥भ्रमत्येवहिसंसारेविष्ठामूत्रप्रदूषिते ॥ ब्रह्मज्ञानंकुतस्तावत्संसारेमोहसंवृते ॥ ३२॥ मतंमीमांसकानांवैसंमतंभातिसुव्रत ॥ महांतोऽपिसदायुक्ताःकामक्रोधादिभिर्मुने ॥ ३३ ॥ मादृशानांकलावस्मिन्काकथामुनिसत्तम ॥ व्यासउवाच ॥ कार्यंवैकारणाद्भिन्नंकथंभवतिभारत॥३४॥कटकंकुंडलंचैवसुवर्णसदृशंभवेत् ॥ अहंकारोद्भवंसर्वंब्रह्मांडंसचराचरम् ॥ ३५ ॥ पटस्तंतुवशःप्रोक्तस्तद्वियुक्तःकथंभवेत्॥मायागुणैस्त्रिभिःसर्वंरचितंस्थिरजंगमम् ॥ ३६ ॥ सतृणंस्तंबपर्यंतंकातत्रपरिदेवना ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रस्तेचाऽहंकारमोहिताः ॥ ३७ ॥ भ्रमंत्यस्मिन्महागाधेसंसारेनृपसत्तम॥वसिष्ठनारदाद्याश्चमुनयोज्ञानिनःपरम् ॥ ३८ ॥ तेऽभिभूताःसंसरंतिसंसारेऽस्मिन्पुनःपुनः ॥ नकोप्यस्तिनृपश्रेष्ठत्रिषुलोकेषुदेहभृत् ॥ ३९॥ एभिर्मायागुणैर्मुक्तःशांतआत्मसुखेस्थितः ॥ कामक्रोधौतथालोभोमोहोऽहंकारसंभवः ॥ ४० ॥ नमुंचंतिनरंसर्वेदेहवंतंनृपोत्तम ॥ अधीत्यवेदशास्त्राणिपुराणानिविचिंत्यच ॥ ४१ ॥ कृत्वातीर्थाऽटनंदानंध्यानंचैवसुराऽर्चनम्॥करोतिविषयासक्तःसर्वकर्मचचौरवत् ॥ ४२ ॥ विचारयतिनोपूर्वंकाममोहमदान्वितः ॥ कृतेयुगेऽपित्रेतायांद्वापरेकुरुनंदन ॥ ४३ ॥ विद्धोऽत्राऽस्तिचधर्मोऽपिकाकथाऽद्यकलौपुनः ॥ स्पर्धासदैवसद्रोहालोभामर्षौचसर्वदा ॥ ४४ ॥ एवंविधोस्तिसंसारोनाऽत्रकार्याविचारणा ॥ साधवोविरलालोकेभवंतिगतमत्सराः ॥ ४५ ॥ जितक्रोधाजितामर्षादृष्टांतार्थेव्यवस्थिताः ॥ राजोवाच ॥ तेधन्याःकृतपुण्यास्तेमदमोहविवर्जिताः ॥ ४६ ॥ जितेंद्रियाःसदाचाराजितंतैर्भुवनत्रयम् ॥ दुनोमिपातकंस्मृत्वापितुर्ममहात्मनः ॥ ४७ ॥

॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ शांतेपरमात्मसुखेस्थितइत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ कृत्वेति ॥ शास्त्राण्यप्यधीत्यतीर्थाटनादिकंचकृत्वायस्याऽहंकारस्ययोगाद्विषयासक्तःसन्सर्वंकर्मकरोतिचौरवद्दांभिकःस्वांतस्थितदुर्गुणापहारकः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ विद्धोऽत्राऽस्तीति ॥ अत्रकृतादिषुयत्रकलौस्पर्धाद्रोहलोभादयःसंतितत्रकाकथेत्यर्थः ॥ ४४ ॥ एवंविधोऽस्तीति ॥ यथात्वयाज्ञातोऽहंकारमयःसंसारस्तथैवाऽस्तिनतत्रसंदेहइत्यर्थः ॥ तर्हिसाधवोनैवसंतीतिचेन्नतथावक्तव्यं श्रीभगवत्यनुग्रहवंतोऽहंकारादिबाधारहिताविरलाःसंत्येववैखानसादयःपूर्वमुक्ताद्दृष्टांतदर्शनार्थमित्याह। साधवइति ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ सर्वप्रपंचस्याऽहंकारबाधापीडितत्वोक्त्याऽहंकारस्यचमायाजन्यत्वोक्त्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपभगवत्याआराधनयाऽहंकारादिबाधारहितोभवतीतिमुनेर्गूढोभिसंधिः ॥ हेमुनेएवंविधसंसाराऽवस्थांदृष्ट्वामत्पित्रादीनांचाचरणंममाचरणंचदृष्ट्वाकथमस्माकंगतिर्भविष्यतीतिभियाचित्तेऽहंदुनोमिखेदंप्राप्नोमीत्याह । दुनोमीति ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ममाऽऽग्रतोमत्संमुखम् ॥ ४८ ॥४९॥ अस्त्वेतद्दुःखकरंकियानस्यखेदःकर्तव्यः ॥ प्रकृतांयुद्धकथांविस्तराद्वर्णयेत्याह । कथंयुद्धमिति ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ प्रधनंयुद्धम्॥५४॥ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ अर्धाधिकैःसप्तचत्वारिंशच्छ्लोकैरतःपरम् ॥ प्रह्लादनारायणयोःसमागमउदीर्यते ॥ १ ॥ १ ॥ राजाऽपिकिंचिद्यत्पृष्टवानितितदभिप्रायमाह । जनमेजयोऽपीति ॥ वैराटीविराटतनयोत्तरातस्याःसुतःपरिक्षित्तस्यचित्तंदुश्चरितंदुराचारंमत्वेत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ तेनतस्येति ॥ तेनपितृत्राणेनतस्यपितृ

कृतस्तपस्विनःकंठेमृतसर्पोह्यवंविना ॥ अतस्तस्यमुनिश्रेष्ठभवितार्किंममाग्रतः ॥ ४८ ॥ नजानेबुद्धिसंमोहात्किंवाकार्यंभविष्यति ॥ मधुपश्यतिमूढात्माप्रपातंनैवपश्यति ॥ ४९ ॥ करोतिनिंदितंकर्मनरकान्नबिभेतिच ॥ कथंयुद्धंपुरावृत्तंविस्तरात्तद्वदस्वमे ॥५०॥ प्रह्लादेनयथाचोग्रंनरनारायणस्यवै ॥ प्रह्लादस्तुकथंयातःपातालात्तद्वदस्वमे ॥ ५१ ॥ सारस्वतेमहातीर्थेपुण्येबदरिकाश्रमे ॥ नरनारायणौशांतौतापसौमुनिसत्तमौ ॥ ५२ ॥ कृतवंतौतथायुद्धंहेतुनाकेनमानद ॥ वैरंभवतिवित्तार्थंदारार्थंवापरस्परम् ॥ ५३ ॥ एषणारहितौकस्माच्चक्रतुःप्रधनंमहत् ॥ प्रह्लादोऽपिचधर्मात्माज्ञात्वादेवौसनातनौ ॥ ॥ ५४ ॥ कृतवान्सकथंयुद्धंनरनारायणौमुनी ॥ एतद्विस्तरतोब्रह्मञ्छ्रोतुमिच्छामिकारणम् ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ इतिपृष्टस्तदाविप्रोराज्ञापारिक्षितेनवै ॥ उवाचविस्तरात्सर्वंव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ १ ॥ जनमेजयोऽपिधर्मात्मानिर्वेदंपरमंगतः ॥ चित्तंदुश्चरितंमत्वावैराटीतनयस्यवै ॥ २ ॥ तस्यैवोद्धरणार्थायचकारसततंमनः ॥ विप्रावमानपापेनयमलोकंगतस्यवै ॥ ३ ॥ पुन्नामनरकाद्यस्मात्त्रायतेपितरंस्वकम् ॥ पुत्रेतिनामसार्थंस्यात्तेनतस्यमुनीश्वराः ॥ ४ ॥ सर्पदष्टंनृपंश्रुत्वाहम्योंपरिमृतंतथा ॥ विप्रशापादौत्तरेयंस्नानदानविवर्जितम्॥ ॥ ५ ॥ पितुर्गतिंनिशम्याऽसौनिर्वेदंगतवान्नृपः ॥ पारिक्षितोमहाभागः संतप्तोभयविह्वलः ॥ ६ ॥ पप्रच्छाऽथमुनिंव्यासंगृहागतमनिंदितः॥नरनारायणस्येमांकथांपरमविस्तृताम् ॥ ७ ॥ व्यासउवाच ॥ सयदानिहतोरौद्रोहिरण्यकशिपुर्नृप ॥ अभिषिक्तस्तदाराज्येप्रह्लादोनामतत्सुतः ॥ ८ ॥ तस्मिञ्छासतिदैत्येंद्रेदेवब्राह्मणपूजके ॥ मखैर्भूम्यांनृपतयोयजंतःश्रद्धयान्विताः॥९॥ ब्राह्मणाश्चतपोधर्मतीर्थयात्राश्चकुर्वते ॥ वैश्याश्चस्वस्ववृत्तिस्थाःशूद्राःशुश्रूषणेरताः ॥ १० ॥ नृसिंहेनचपातालेस्थापितःसोऽथदैत्यराट् ॥ राज्यंचकारतत्रैवप्रजापालनतत्परः ॥ ११ ॥ कदाचिद्भृगुपुत्रोऽथच्यवनाख्योमहातपाः ॥ जगाम नर्मदांस्नातुंतीर्थंवैव्याहृतीश्वरम् ॥ १२ ॥ रेवांमहानदींदृष्ट्वाततस्तस्यामवातरत् ॥ उत्तरंतंप्रजग्राहनागोविषभयंकरः ॥ १३ ॥

त्राणकर्तुःपुत्रेतिनामसार्थकमन्वर्थकंस्यान्नाऽन्यथेत्यर्थः ॥ ४ ॥ औत्तरेयमुत्तरायाअपत्यम् ॥ स्त्रीभ्योढगितिढक् ॥५॥ पितुर्गतिमिति॥इतिपूर्वश्लोकोक्तप्रकारेणपितुर्दुर्गतिंश्रुत्वेत्यर्थः ॥ महाभारतेऽपिपरिक्षिद्राजस्यदुर्गतिरुक्ता ॥ तद्वचनंच अपृच्छत्सतदाराजामंत्रिणस्तान्सुदुःखितः ॥ उत्तंकस्यैवसान्निध्येपितुःस्वर्गगतिंप्रतीति ॥ ६ ॥ ७ ॥ तत्प्रश्नोत्तरंव्यासोयदुक्तवांस्तदाह । सयदेति ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ व्याहृतीश्वरंव्याहृतीश्वरसंबंधितीर्थम् ॥ १२ ॥ तस्यांस्नानार्थमवातरत् ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ किंमेमघवतेति ॥ यदहंप्रेषितोदूतकार्यंकुर्वाणस्तवनगरेप्राप्तवानितिमघवतेंद्रेणममकार्यंकिमस्तिनकिमपीत्यर्थः ॥ २१ ॥ तर्हि

गृहीतोभयभीतस्तुपातालेमुनिसत्तमः ॥ सस्मारमनसाविष्णुंदेवदेवंजनार्दनम् ॥ १४ ॥ संस्मृतेपुंडरीकाक्षेनिर्विषोऽभून्महोरगः ॥ नप्रापच्यवनोदुःखं नीयमानोरसातलम् ॥ १५ ॥ द्विजिह्वेनमुनिस्त्यक्तोनिर्विण्णेनाऽतिशंकिना ॥ मांशपेतमुनिःक्रुद्धस्तापसोऽयंमहानिति ॥ १६ ॥ चचारनागकन्याभिः पूजितोमुनिसत्तमः ॥ विवेशाप्यथनागानांदानवानांमहत्पुरम् ॥१७॥ कदाचिद्भृगुपुत्रंतंविचरंतंपुरोत्तमे ॥ ददर्शदैत्यराजोऽसौप्रह्लादोधर्मवत्सलः॥ १८॥ दृष्ट्वातंपूजयामासमुनिंदैत्यपतिस्तदा ॥ पप्रच्छकारणंकिंतेपातालागमनेवद ॥१९॥ प्रेषितोऽसिकिमिंद्रेणसत्यंब्रूहिद्विजोत्तम ॥ दैत्यविद्वेषयुक्तेनममराज्य दिदृक्षया ॥ २० ॥ च्यवनउवाच ॥ किंमेमघवताराजन्यदहंप्रेषितःपुनः ॥ दूतकार्यंप्रकुर्वाणःप्राप्तवान्नगरेतव ॥ २१ ॥ विद्धिमांभृगुपुत्रंतंस्वनेत्रंधर्मतत्प रम् ॥ माशंकांकुरुदैत्येंद्रवासवप्रेषितस्यवै ॥ २२ ॥ स्नानार्थंनर्मदांप्राप्तःपुण्यतीर्थेनृपोत्तम ॥ नद्यामेवावतीर्णोऽहंगृहीतश्चमहाऽहिना ॥ २३ ॥ जातोऽसौ निर्विषःसर्पोविष्णोःसंस्मरणादिव ॥ मुक्तोऽहंतेननागेनप्रभावात्स्मरणस्यवै ॥ २४ ॥ अत्राऽऽगतेनराजेंद्रमयाऽऽप्तंतवदर्शनम् ॥ विष्णुभक्तोऽसिदैत्येंद्रतद्भ क्तंमांविचिंतय ॥ २५ ॥ व्यासउवाच ॥ तन्निशम्यवचःश्लक्ष्णंहिरण्यकशिपोःसुतः ॥ पप्रच्छपरयाप्रीत्यातीर्थानिविविधानिच ॥ २६ ॥ प्रह्लादउवाच ॥ पृथिव्यांकानितीर्थानिपुण्यानिमुनिसत्तम ॥ पातालेचतथाऽऽकाशेतानिनोवदविस्तरात् ॥ २७ ॥ च्यवनउवाच ॥ मनोवाक्कायशुद्धानांराजंस्तीर्थंपदेप दे ॥ तथामलिनचित्तानांगंगापिकीकटाऽधिका ॥ २८ ॥ प्रथमंचेन्मनःशुद्धंजातंपापविवर्जितम् ॥ तदातीर्थानिसर्वाणिपावनानिभवंतिवै ॥ २९ ॥ गंगा तीरेहिसर्वत्रवसंतिनगराणिच ॥ व्रजाश्चैवाकराग्रामाःसर्वेखेटास्तथापरे ॥ ३० ॥ निषादानांनिवासाश्चकैवर्तानांतथापरे ॥ हूणवंगखसानांचम्लेच्छानां दैत्यसत्तम ॥ ३१ ॥ पिबंतिसर्वदागांगंजलंब्रह्मोपमंसदा ॥ स्नानंकुर्वंतिदैत्येंद्रत्रिकालंस्वेच्छयाजनाः ॥ ३२ ॥ तत्रैकोऽपिविशुद्धात्मानभवत्येवमारिष ॥ किंफलंतर्हितीर्थस्यविषयोपहतात्मसु ॥ ३३ ॥ कारणंमनएवाऽत्रनान्यद्राजन्विचिंतय ॥ मनःशुद्धिःप्रकर्तव्यासततंशुद्धिमिच्छता ॥ ३४ ॥ तीर्थवासी महापापीभवेत्तत्रान्यवंचनात् ॥ तत्रैवाऽऽचरितंपापमानंत्यायप्रकल्पते ॥ ३५ ॥ यथेंद्रवारुणंपक्वंमिष्टंनैवोपजायते ॥ भावदुष्टस्तथातीर्थेकोटिस्नातोनशु ध्यति ॥ ३६ ॥ प्रथमंमनसःशुद्धिःकर्तव्याशुभमिच्छता ॥ शुद्धेमनसिद्रव्यस्यशुद्धिर्भवतिनान्यथा ॥ ३७ ॥

किमर्थमागतस्तत्राऽऽह । विद्धीति ॥ स्वनेत्रंज्ञानचक्षुषम् ॥ २२ ॥ २३ ॥२४ ॥ तद्भक्तमिति ॥ अयंशाक्तोऽपीतिसप्तमस्कंधेवक्ष्यति ॥२५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ कीकटाधिकाकीकटदेशापे क्षयाऽधिका ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ कोटिस्नातःकोटिवारंस्नातइतिमध्यमपदलोपीसमासः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ अर्धाधिकैःपंचपंचाशद्भिःपद्यैरनंतरम् ॥ प्रह्लादनारायणयोर्युद्धमेवाऽनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ प्रहादस्यसरस्वतीतीर्थप्राप्त्युत्तरंजातंवृत्तमाह। कुर्वंस्तीर्थविधिमिति ॥ १ ॥ अपरानुत्कृष्टान्नानाजातीयकान्भल्लत्वादिजातिसंभिन्नान्

तथैवाऽऽचारशुद्धिःस्यात्ततस्तीर्थेप्रसिध्यति ॥ अन्यथातुकृतंसर्वंव्यर्थंभवतितत्क्षणात् ॥३८॥ "हीनवर्णस्यसंसर्गंतीर्थेगत्वासदात्यजेत्" ॥भूतानुकंपनंचैवकर्तव्यंकर्मणाधिया॥यदिपृच्छसिराजेंद्रतीर्थंवक्ष्याम्यनुत्तमम्॥३९॥प्रथमंनैमिषंपुण्यंचक्रतीर्थंचपुष्करम् ॥ अन्येषांचैवतीर्थानांसंख्यानास्तिमहीतले ॥४०॥पावनानिचस्थानानिबहूनिनृपसत्तम ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजानैमिषंगंतुमुद्यतः॥ ४१॥नोदयामासदैत्यान्वैहर्षनिर्भरमानसः ॥ प्रह्लादउवाच ॥ उत्तिष्ठंतुमहाभागागमिष्यामोऽद्यनैमिषम्॥४२॥द्रक्ष्यामःपुंडरीकाक्षंपीतवाससमच्युतम्॥व्यासउवाच ॥ इत्युक्ताविष्णुभक्तेनसर्वेतेदानवास्तदा॥४३॥तेनैवसहपातालान्निर्ययुःपरयामुदा॥तेसमेत्यचदैतेयादानवाश्चमहाबलाः ॥४४ ॥नैमिषारण्यमासाद्यस्नानंचक्रुर्मुदान्विताः ॥ प्रह्लादस्तत्रतीर्थेषुचरन्दैत्यैःसमन्वितः॥४५॥सरस्वतींमहापुण्यांददर्शविमलोदकाम्॥तीर्थेतत्रनृपश्रेष्ठप्रह्लादस्यमहात्मनः॥४६॥मनःप्रसन्नंसंजातंस्नात्वासारस्वतेजले ॥ विधिवत्तत्रदैत्येंद्रःस्नानदानादिकंशुभे ॥४७॥ चकारातिप्रसन्नात्मातीर्थेपरमपावने ॥ इति श्रीदे०भा०म०चतुर्थस्कंधेऽष्टमोध्यायः॥८॥ ॥व्यासउवाच॥कुर्वंस्तीर्थविधिंतत्रहिरण्यकशिपोःसुतः ॥ न्यग्रोधंसुमहच्छायमपश्यत्पुरतस्तदा ॥१॥ ददर्शबाणानपरान्नानाजातीयकांस्तदा॥गृध्रपक्षयुतांस्तीव्राञ्छिलाधौतान्महोज्वलान् ॥ २ ॥ चिंतयामासमनसायस्येमेविशिखास्त्विह ॥ ऋषीणामाश्रमेपुण्येतीर्थेपरमपावने ॥ ३ ॥ एवंचिंतयताऽनेनकृष्णाजिनधरौमुनी ॥ समुन्नतजटाभारौदृष्टौधर्मसुतौतदा ॥४॥तयोरग्रेधृतेशुभ्रेधनुषीलक्षणान्विते ॥ शार्ङ्गंमाजगवंचैवतथाऽक्षय्यौमहेषुधी ॥ ५ ॥ ध्यानस्थौतौमहाभागौनरनारायणावृषी ॥ दृष्ट्वाधर्मसुतौतत्रदैत्यानामधिपस्तदा ॥६॥ क्रोधरक्तेक्षणस्तौतुप्रोवाचाऽसुरपालकः ॥ किंभवद्भ्यांसमारब्धोदंभोधर्मविनाशनः ॥७॥नश्रुतंनैवदृष्टंहिसंसारेऽस्मिन्कदाऽपिहि॥तपसश्चरणंतीव्रंतथाचापस्यधारणम् ॥८॥ विरोधोऽयंयुगेचाऽऽद्येकथंयुक्तंकलिप्रियम् ॥ ब्राह्मणस्यतपोयुक्तंतत्रकिंचापधारणम् ॥९॥ क्वजटाधारणंदेहेक्वेषुधीचविडंबनौ॥धर्मस्याऽऽचरणंयुक्तंयुवयोर्दिव्यभावयोः ॥१०॥व्यासउवाच॥इतितस्यवचःश्रुत्वानरःप्रोवाचभारत॥कातेचिंताऽत्रदैत्येंद्रवृथातपसिचाऽऽवयोः॥११॥सामर्थ्येसतियःकुर्यात्तत्संपद्येततस्यहि ॥ आवांकार्यद्वयेमंदसमर्थौलोकविश्रुतौ ॥ १२ ॥

॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ आजगवंपिनाकः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ विरोधोऽयमिति ॥ तपश्चरणचापधारणयोर्ब्राह्मणक्षत्रियधर्मत्वादेकत्राऽवस्थानेविरोधइत्यर्थः ॥ अस्त्वेतत्कलिप्रियंकलौयोग्यमेतदनुष्ठानमस्मिन्नाऽऽद्येसत्ययुगेतुकथंयुक्तमित्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ विरोधोऽयमित्युक्तंतत्रकिमधिकाराभावाद्वासामर्थ्याभावाद्वा ॥ नाद्यः ॥ उभयोरप्युभयत्राधिकारात् ॥ नद्वितीयः ॥ यत्रसामर्थ्याभावस्तत्रतथाऽस्तु नाऽत्रतथाऽस्तीत्याह । सामर्थ्येसतीति ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ समीक्ष्येति ॥ नरःस्वसृष्टान्स्वेनत्यक्तान्बाणांश्छिन्नान्समीक्ष्येत्यन्वयः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

युद्धेतपसिसामर्थ्यंत्वंपुनःकिंकरिष्यसि ॥गच्छमार्गेयथाकामंकस्मादत्रविकत्थसे ॥ १३ ॥ ब्राह्मंतेजोदुराराध्यंनत्वंवेदविमोहितः ॥ विप्रचर्चानकर्तव्या प्राणिभिःसुखमीप्सुभिः ॥ १४ ॥ प्रह्लादउवाच ॥ तापसौमंदबुद्धीस्थोमृषावांगर्वमोहितौ ॥ मयितिष्ठतिदैत्येंद्रेधर्मसेतुप्रवर्तके ॥ १५ ॥ नयुक्तमेतत्तीर्थेऽस्मिन्नधर्माऽऽचरणंपुनः ॥ काशक्तिस्तवयुद्धेऽस्तिदर्शयाऽद्यतपोधन ॥ १६ ॥ व्यासउवाच॥ तदाऽऽकर्ण्यवचस्तस्यनरस्तंप्रत्युवाचह ॥ युध्यस्वाऽद्य मयासार्धंयदितेमतिरीदृशी ॥ १७ ॥ अद्यतेस्फोटयिष्यामिमूर्धानमसुराधम ॥ "युद्धेश्रद्धानतेपश्चाद्भविष्यतिकदाचन" ॥ व्यासउवाच ॥ तन्निशम्यव चस्तस्यदैत्येंद्रःकुपितस्तदा ॥ १८ ॥ प्रह्लादोबलवानत्रप्रतिज्ञामारुरोहसः ॥ येनकेनाप्युपायेनजेष्यामितावुभावपि ॥१९॥ नरनारायणौदांतावृषीता पसमन्वितौ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वावचनंदैत्यःप्रतिगृह्यशरासनम्॥२०॥आकृष्यतरसाचापंज्याशब्दंचचकारह ॥ नरोपिधनुरादायशरांस्तीव्राञ्छि लाशितान् ॥ २१ ॥ मुमोचबहुशःक्रोधात्प्रह्लादोपरिपार्थिव ॥२२॥ तान्दैत्यराजस्तपनीयपुंखैश्चिच्छेदबाणैस्तरसासमेत्य ॥ समीक्ष्यछिन्नांश्चनरःस्वसृ ष्टानन्यान्मुमोचाऽऽशुरुषान्वितोवै ॥ २३ ॥ दैत्याऽधिपस्तानपितीव्रवेगैश्छित्त्वाजघानोरसितंमुनींद्रम् ॥ नरोऽपितंपंचभिराशुगैश्चक्रुद्धोहनद्दैत्यपतिंबा हुदेशे ॥ २४ ॥ सेंद्राःसुरास्तत्रतयोर्हियुद्धंद्रष्टुंविमानैर्गगनस्थिताश्च ॥ नरस्यवीर्यंयुधिसंस्थितस्यतेतुष्टुवुर्दैत्यपतेश्चभूयः ॥२५॥ववर्षदैत्याधिपआत्तचा पःशिलीमुखानंबुधरोयथाऽपः ॥ आदायशार्ङ्गंधनुरप्रमेयंमुमोचबाणाञ्छितहेमपुंखान् ॥ २६ ॥ बभूवयुद्धंतुमुलंतयोस्तुजयैषिणोःपार्थिवदेवदैत्ययोः ॥ ववर्षुराकाशपथेस्थितास्तेपुष्पाणिदिव्यानिप्रहृष्टचित्ताः ॥२७॥चुकोपदैत्याधिपतिर्हरौसमुमोचबाणानतितीव्रवेगान् ॥ चिच्छेदतान्धर्मसुतःसुतीक्ष्णैर्ध नुर्विमुक्तैर्विशिखैस्तदाऽऽशु ॥ २८॥ ततोनारायणंबाणैःप्रह्लादश्चाऽतिकर्षितैः ॥ ववर्षसुस्थितंवीरंधर्मपुत्रंसनातनम् ॥ नारायणोऽपितंवेगान्मुक्तैर्बाणैःशि लाशितैः ॥२९॥ तुतोदाऽतीवपुरतोदैत्यानामधिपंस्थितम् ॥ सन्निपातोऽभवेत्तत्रदिदृक्षूणांबभूवह ॥३०॥ देवानांदानवानांचकुर्वतांजयघोषणम्॥ उभयोः शरवर्षेणच्छादितेगगनेतदा॥३१॥दिवाऽपिरात्रिसदृशंबभूवतिमिरंमहत् ॥ ऊचुःपरस्परंदेवादैत्याश्चातीवविस्मिताः ॥३२॥ अदृष्टपूर्वंयुद्धंवैवर्ततेऽद्यसुदा रुणम् ॥ देवर्षयोऽथगंधर्वायक्षकिन्नरपन्नगाः॥३३॥विद्याधराश्चारणाश्चविस्मयंपरमंययुः॥नारदःपर्वतश्चैवप्रेक्षणार्थंस्थितौमुनी ॥३४॥ नारदःपर्वतंप्राहने दृशंचाभवत्पुरा॥तारकासुरयुद्धंचतथावृत्रासुरस्यच॥३५॥मधुकैटभयोर्युद्धंहरिणाचेदृशंकृतम् ॥ प्रह्लादःप्रबलःशूरोयस्मान्नारायणेनच ॥ ३६ ॥

अस्मिन्नेवसमयेनारायणोऽपिधनुरादाययुद्धार्थंप्रवृत्तइत्याह । आदायेति ॥ २६ ॥ हरौनारायणे ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ नेदृशमित्यस्य तारकासुरयुद्धमित्यनेनान्वयः ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ आजगामजगादचप्रह्लादंप्रतिभाषितवानित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ सुराणांसुरैःसाकमित्यर्थः ॥ मयाशतंसमाःशतसंवत्सरंसंग्रामःकृतएतादृशेनशूरेणमयाकस्माद्धेतोर्नजिताविति महान्विस्मयइत्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवत

करोतिसदृशंयुद्धंसिद्धेनाऽद्भुतकर्मणा ॥ व्यासउवाच ॥ दिनेदिनेतथारात्रौकृत्वाकृत्वापुनःपुनः ॥ ३७ ॥ चक्रतुःपरमंयुद्धंतौतदादैत्यतापसौ ॥ नारायणस्तुचिच्छेदप्रह्लादस्यशरासनम् ॥ ३८ ॥ तरसैकेनबाणेनसचाऽन्यद्धनुराददे ॥ नारायणस्तुतरसामुक्त्वाऽन्यंचशिलीमुखम् ॥ ३९ ॥ तदैवमध्यतश्चापंचिच्छेदलघुहस्तकः ॥ छिन्नंछिन्नंपुनर्दैत्योधनुरन्यत्समाददे ॥ ४० ॥ नारायणस्तुचिच्छेदविशिखैराशुकोपितः ॥ छिन्नेधनुषिदैत्येंद्रःपरिघंसुसमाददे॥ ॥ ४१ ॥ जघानधर्मजंतूर्णंबाहोर्मध्येऽतिकोपनः ॥ तमायांतंसबलवान्मार्गणैर्नवभिर्मुनिः ॥ ४२ ॥ चिच्छेदपरिघंघोरंदशभिस्तमताडयत् ॥ गदामादायदैत्येंद्रःसर्वायसमयींदृढाम् ॥ ४३ ॥ जानुदेशेजघानाऽऽशुदेवंनारायणंरुषा ॥ गदयाचापिगिरिवत्संस्थितःस्थिरमानसः ॥ ४४ ॥ धर्मपुत्रोऽतिबलवान्मुमोचाऽऽशुशिलीमुखान् ॥ गदांचिच्छेदभगवांस्तदादैत्यपतेर्दृढाम् ॥ ४५ ॥ विस्मयंपरमंजग्मुःप्रेक्षकागगनेस्थिताः ॥ सतुशक्तिंसमादायप्रह्लादःपरवीरहा ॥ ४६ ॥ चिक्षेपतरसाक्रुद्धोबलान्नारायणोरसि ॥ तामापतंतींसंवीक्ष्यबाणैनैकेनलीलया ॥ ४७ ॥ सप्तधाकृतवानाशुसप्तभिस्तंजघानह ॥ दिव्यवर्षसहस्रंतुतद्युद्धंपरमंतयोः ॥ ४८ ॥ जातंविस्मयदंराजन्सर्वेषांतत्रचाश्रमे ॥ तदाजगामतरसापीतवासाश्चतुर्भुजः ॥ ४९ ॥ प्रह्लादस्याऽऽश्रमंतत्रजगादचगदाधरः ॥ चतुर्भुजोरमाकांतोरथांगदरपद्मभृत् ॥ ५० ॥ दृष्ट्वातमागतंतत्रहिरण्यकशिपोःसुतः ॥ प्रणम्यपरयाभक्त्याप्रांजलिःप्रत्युवाचह ॥ प्रह्लादउवाच ॥ देवदेवजगन्नाथभक्तवत्सलमाधव ॥ ५१ ॥ कथंनजितवानाजावहमेतौतपस्विनौ ॥ संग्रामस्तुमयादेवकृतःपूर्णशतंसमाः ॥ ५२ ॥ सुराणांनजितौकस्मादितिमेविस्मयोमहान् ॥ विष्णुरुवाच ॥ सिद्धाविमौमदंशौचविस्मयःकोऽत्रमारिष ॥ ५३ ॥ तापसौनजितात्मानौनरनारायणौजितौ ॥ गच्छत्वंवितलंराजन्कुरुभक्तिंममाऽचलाम् ॥ ५४ ॥ नाऽऽभ्यांकुरुविरोधंत्वंतापसाभ्यांमहामते ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याऽऽज्ञप्तोदैत्यराजोनिर्ययावसुरैःसह ॥ ५५ ॥ नरनारायणौभूयस्तपोयुक्तौबभूवतुः ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ संदेहोऽयंमहानत्रपाराशर्यकथानके ॥ नरनारायणौशांतौवैष्णवांशौतपोधनौ ॥१॥ तीर्थाश्रयौसत्त्वयुक्तौवन्याशनपरौसदा ॥ धर्मपुत्रौमहात्मानौतापसौसत्यसंस्थितौ ॥ २ ॥ कथंरागसमायुक्तौजातौयुद्धेपरस्परम् ॥ संग्रामंचक्रतुःकस्मात्त्यक्त्वातपिमनुत्तमाम् ॥ ३ ॥

तिलकेचतुर्थस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ पंचाशद्भिरथश्लोकैर्हरयेभृगुणापुनः ॥ शापोदत्तोयतःकृष्णोजातइत्येतदीर्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायस्थकथांश्रुत्वासंभावितमेतदितिपुनःपुनर्विमृश्यसंशयवान्पृच्छतिजनमेजयःसंदेहोयमिति ॥ १ ॥ २ ॥ तपिंतपिक्रियाम् ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वर्षशतमिति ॥ अत्रतथोत्तरत्रयुद्धस्यशतसंवत्सरपरिमाणकत्वोक्त्यापूर्वत्रदिव्यंसहस्रंत्वित्यत्रसहस्रशब्दोऽनेकपर्यायोबहूनामनुरोधस्यन्याय्यत्वात् ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८॥९॥१०॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ कृष्ण हेकृष्णद्वैपायनतत्रैवंसतिकारणांतराऽभावाद्युद्धंकृतंतत्केवलमहंकारेणैवकृतमितिनिश्चीयते तदप्यतिदोषकरम् ॥ अहंकारेणकृतस्याऽतिदोषाधायकत्वात् ॥ किंतत्रप्रमाणमितिचेत्तत्राऽऽह । श्रुतोमयेति ॥ १४॥ १५ ॥ कीदृशोऽहंकारस्तस्येतिचेतत्राऽऽह । शब्दोच्चारणमात्रेणेति ॥ मयाज्योतिष्टोमःकृतोमयाऽश्वमेधःकृतइतिसाभिनिवेशं

प्रह्लादेनसमंपूर्णंदिव्यवर्षशतंकिल ॥ हित्वाशांतिसुखंयुद्धंकृतवंतौकथंमुनी ॥ ४ ॥ कथंतौचक्रतुर्युद्धंप्रह्लादेनसमंमुनी ॥ कथयस्वमहाभागकारणंविग्रहस्यवै ॥५॥ "कामिनीकनकंकार्यंकारणंविग्रहस्यवै ॥" युद्धबुद्धिःकथंजातातयोश्चतद्विरक्तयोः ॥ तथाविधंतपस्तप्तंताभ्यांचकेनहेतुना॥६॥मोहार्थंसुखभोगार्थंस्वर्गार्थंवापरंतप ॥ कृतमत्युत्कटंताभ्यांतपःसर्वफलप्रदम् ॥७॥ मुनिभ्यांशांतचित्ताभ्यांप्राप्तंकिंफलमद्भुतम् ॥ तपसापीडितोदेहःसंग्रामेणपुनःपुनः ॥ ८ ॥ दिव्यवर्षशतंपूर्णंश्रमेणपरिपीडितौ ॥ नराज्यार्थंधनेवाऽपिनदारेषुगृहेषुच ॥ ९ ॥ किमर्थंतुकृतंयुद्धंताभ्यांतेनमहात्मना ॥ निरीहःपुरुषःकस्मात्प्रकुर्याद्युद्धमीदृशम् ॥ १० ॥ दुःखदंसर्वथादेहेजानन्धर्मसनातनम् ॥ सुबुद्धिःसुखदानीहकर्माणिकुरुतेसदा ॥ ११ ॥ नदुःखदानिधर्मज्ञास्थितिरेषासनातनी ॥ धर्मपुत्रौहरेरंशौसर्वज्ञौसर्वभूषितौ॥१२॥कृतवंतौकथंयुद्धंदुःखंधर्मविनाशकम्॥त्यक्त्वाततःसमाधीतंसुखारामंमहत्फलम् ॥१३॥ संयुगंदारुणंकृष्णनैवमूर्खोऽपिवांछति ॥ श्रुतोमयाययातिस्तुच्युतःस्वर्गान्महीपतिः ॥ १४ ॥ अहंकारभवात्पापात्पातितःपृथिवीतले ॥ यज्ञकृद्दानकर्ताचधार्मिकःपृथिवीपतिः ॥ १५ ॥ शब्दोच्चारणमात्रेणपातितोवज्रपाणिना ॥ अहंकारमृतेयुद्धंनभवत्येवनिश्चयः ॥१६॥ किंफलंतस्ययुद्धस्यमुनेःपुण्यविनाशनम् ॥ व्यासउवाच ॥ राजन्संसारमूलंहित्रिविधःपरिकीर्तितः ॥ १७ ॥ अहंकारस्तुसर्वज्ञैर्मुनिभिर्धर्मनिश्चये ॥ सकथंमुनिनात्यक्तुंयोग्योदेहभृताकिल ॥ ॥ १८ ॥ कारणेनविनाकार्यंनभवत्येवनिश्चयः ॥ तपोदानंतथायज्ञाःसात्त्विकात्प्रभवंतिते ॥ १९ ॥ राजसाद्वामहाभागतामसात्कलहस्तथा ॥ क्रियास्वल्पाऽपिराजेंद्रनाऽहंकारंविनाक्वचित् ॥ २० ॥ शुभावाऽप्यशुभावाऽपिप्रभवत्यपिनिश्चयः ॥ अहंकाराद्बंधकारीनान्योऽस्तिजगतीतले ॥ २१ ॥ तेनेदंरचितंविश्वंकथंतद्रहितंभवेत् ॥ ब्रह्मारुद्रस्तथाविष्णुरहंकारयुतास्त्वमी ॥ २२ ॥ अन्येषांचैवकावार्तामुनीनांवसुधाधिप ॥ अहंकाराऽऽवृतंविश्वंभ्रमतीदंचराचरम् ॥ २३ ॥ पुनर्जन्मपुनर्मृत्युःसर्वकर्मवशाऽनुगम् ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याणांसंसारेऽस्मिन्महीपते ॥ २४ ॥

कर्मणामभिलापःकृतस्तादृशशब्दोच्चारणमात्रेणैवेत्यर्थः ॥ ननुतेनययातिनाहंऽकारःकृतोऽस्तुनरनारायणाभ्यांत्वहंकारोनकृतइतिचेत्तत्राऽऽह । अहंकारमृतइति ॥ निश्चयइत्यत्रइतीतिशेषः॥ ॥ १६ ॥ किंचकिंफलमिति ॥ तपोबलेनकृतेयुद्धेपुण्यविनाशस्यस्पष्टत्वात् ॥ त्रिविधःसात्विकादिभेदेन ॥ १७ ॥ १८ ॥ कारणेनविनेति ॥ कारणेनाऽहंकारेणविनारहितंकार्यंजगद्रूपंनैवभवतीतिनिश्चयस्तस्माद्राजंस्त्वयायद्विनिश्चितमहंकारमृतेयुद्धंनभवत्येवनिश्चयइतितत्सम्यगेवेतिभावः ॥ यद्यच्चेष्टितंतत्सर्वमहंकारेणैवेत्याह । तपोदानमिति ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





भ्रमणंसर्वदास्मृतमिति ॥ अहंकारेणैवेत्यर्थः ॥ विष्णोरप्यवताराणामिति ॥अहंकाराऽभिनिवेशादेवविष्णोरवतारायेजातास्तेषांसंख्यामित्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

रथांगवदसर्वार्थंभ्रमणंसर्वदास्मृतम् ॥ विष्णोरप्यवताराणांसंख्यांजानातिकःपुमान् ॥ २५ ॥ विततेऽस्मिंस्तुसंसारउत्तमाधमयोनिषु ॥ नारायणोहरिः साक्षान्मात्स्यंवपुरुपाश्रितः ॥ २६ ॥ कामठंसौकरंचैवनारसिंहंचवामनम् ॥ युगेयुगेजगन्नाथोवासुदेवोजनार्दनः ॥ २७ ॥ अवतारानसंख्यातान्करोति विधियंत्रितः ॥ वैवस्वतेमहाराजसप्तमेभगवान्हरिः ॥ २८ ॥ मन्वंतरेऽवतारान्वैचक्रेताञ्छृणुतत्त्वतः ॥ भृगुशापान्महाराजविष्णुर्देववरःप्रभुः ॥ २९ ॥ अवताराननेकांस्तुकृतवानखिलेश्वरः ॥ राजोवाच ॥ संदेहोऽयंमहाभागहृदयेममजायते ॥ ३० ॥ भृगुणाभगवान्विष्णुःकथंशप्तःपितामह ॥ हरिणाच मुनेस्तस्यविप्रियंकिंकृतंमुने ॥ ३१ ॥ यद्द्रोषाद्भृगुणाशप्तोविष्णुर्देवनमस्कृतः ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिभृगोःशापस्यकारणम् ॥ ३२ ॥ पुराकश्यपदायादोहिरण्यकशिपुर्नृपः ॥ यदातदासुरैःसार्धंकृतंसंख्यंपरस्परम् ॥ ३३ ॥ कृतेसंख्येजगत्सर्वंव्याकुलंसमजायत ॥ हतेतस्मिन्नृपेराजाप्र ह्लादःसमजायत ॥ ३४ ॥ देवान्सपीडयामासप्रह्लादःशत्रुकर्षणः ॥ संग्रामोह्यभवद्घोरःशक्रप्रह्लादयोस्तदा ॥ ३५ ॥ पूर्णेवर्षशतंराजँल्लोकविस्मयकार कम् ॥ देवैर्युद्धंकृतंचोग्रंप्रह्लादस्तुपराजितः ॥ ३६ ॥ निर्वेदंपरमंप्राप्तोज्ञात्वाधर्मंसनातनम् ॥ विरोचनसुतंराज्येप्रतिष्ठाप्यबलिंनृप ॥ ३७ ॥ जगामस तपस्तप्तुंपर्वतेगंधमादने ॥ प्राप्यराज्यंबलिःश्रीमान्सुरैर्वैरंचकारह ॥ ३८ ॥ ततःपरस्परंयुद्धंजातंपरमदारुणम् ॥ ततःसुरैर्जितादैत्याइंद्रेणाऽमिततेजसा ॥ ३९ ॥ विष्णुनाचसहायेनराज्यभ्रष्टाःकृतानृप ॥ ततःपराजितादैत्याःकाव्यस्यशरणंगताः ॥ ४० ॥ किंत्वंनकुरुषेब्रह्मन्साहाय्यंनःप्रतापवान् ॥ स्था तुंनशक्नुमोह्यत्रप्रविशामोरसातलम् ॥ ४१ ॥ यदित्वंनसहायोऽसित्रातुंमंत्रविदुत्तमः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तःसोऽब्रवीद्दैत्यान्काव्यःकारुणिकोमुनिः ॥ ४२ ॥ माभैष्टधारयिष्यामितेजसास्वेनभोःसुराः ॥ मंत्रैस्तथौषधीभिश्चसाहाय्यंवःसदैवहि ॥ ४३ ॥ करिष्यामिकृतोत्साहाभवंतुविगतज्वराः ॥ व्या सउवाच ॥ततस्तेनिर्भयाजातादैत्याः काव्यस्यसंश्रयात् ॥४४॥ देवैःश्रुतस्तुवृत्तांतःसर्वश्चारमुखात्किल ॥ तत्रसंमंत्र्यतेदेवाःशक्रेणचपरस्परम् ॥४५॥ मंत्रंचक्रुःसुसंविग्नाःकाव्यमंत्रप्रभावतः ॥ योद्धुंगच्छामहेतूर्णंयावन्नच्यावयंतिवै ॥ ४६ ॥ प्रसह्यहत्वाशिष्टांस्तुपातालंप्रापयामहे ॥ दैत्याञ्जग्मुस्ततोदेवाः संरुष्टाःशस्त्रपाणयः ॥ ४७ ॥ जग्मुस्तान्विष्णुसहितादानवान्हरिणोदिताः ॥ वध्यमानास्तुतेदैत्याःसंत्रस्ताभयपीडिताः ॥ ४८ ॥ काव्यस्यशरणंजग्मू रक्षरक्षेतिचाऽब्रुवन् ॥ ताञ्छुक्रःपीडितान्दृष्ट्वादेवैर्दैत्यान्महाबलान् ॥ ४९ ॥

प्रश्नबीजमुपलभ्यराजोवाच । संदेहोऽयमिति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ यदेति ॥ अभवदितिशेषः ॥ संख्यंयुद्धम् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ यावन्नच्यावयंतिवैइति ॥ यावद्दैत्यामंत्रबलेनास्मान्नस्वस्थानाच्च्यावयंतितावदित्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तान्प्रययुःकिलेति ॥ तान्दैत्यानित्यर्थः ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ सप्ताधिकैश्चपंचाशत्पद्यैःशुक्रऋषेरथ ॥ मंत्रलाभार्थगमनकथासम्य गिहोच्यते ॥ १ ॥ एवंकाव्यमंत्रसामर्थ्यवशाद्देवेषुगतेषुततोदैत्यानाहूयकाव्यउवाचेत्याह । तथाऽऽगतेष्विति ॥ १ ॥ २ ॥ नचाऽन्यथेत्युक्तमित्यर्थः ॥ ३ ॥ तस्मान्नैतयाविद्ययाऽनया सामग्र्यातेषांपराजयोभविष्यतीत्यभिप्रायेणाह ।नमेमंत्रबलमिति ॥ सुरानथसुरानपिजेतुंसमर्थाइत्यन्वयः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ इतिदैत्यवाक्यंश्रुत्वाशुक्रआह । यावदहमिति

माभैष्टेतिवचःप्राहमंत्रौषधबलाद्विभुः ॥ दृष्ट्वाकाव्यंसुराःसर्वेत्यक्त्वातान्प्रययुःकिल ॥ ५० ॥ ॥ इतिश्रीदे०म० चतुर्थस्कंधेदशमोऽध्यायः॥१०॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ तथागतेषुदेवेषुकाव्यस्तान्प्रत्युवाचह ॥ ब्रह्मणापूर्वमुक्तंयच्छृणुध्वंदानवोत्तमाः ॥ १ ॥ विष्णुर्दैत्यवधेयुक्तोहनिष्यतिजनार्दनः ॥ वाराहरूपंसंस्थायहिरण्याक्षोयथाहतः ॥ २ ॥ यथानृसिंहरूपेणहिरण्यकशिपुर्हतः ॥ तथासर्वान्कृतोत्साहोहनिष्यतिनचाऽन्यथा ॥ ३ ॥ नमेमंत्रबलं सम्यक्प्रतिभातियथाहरिम् ॥ जेतुंयूयंसमर्थाःस्ममयात्राताःसुरानथ ॥ ४ ॥ तस्मात्कालंप्रतीक्षध्वंकियंतंदानवोत्तमाः ॥ अहमद्यमहादेवंमंत्रार्थंप्रव्रजा मिवै ॥ ५ ॥ प्राप्यमंत्रान्महादेवादागमिष्यामिसांप्रतम् ॥ युष्मभ्यंतान्प्रदास्यामियथार्थंदानवोत्तमाः ॥ ६ ॥ दैत्याऊचुः ॥ पराजिताःकथंस्थातुंपृथि व्यांमुनिसत्तम ॥ शक्ताभवामोप्यबलास्तावत्कालंप्रतीक्षितुम् ॥ ७॥ निहताबलिनःसर्वेकेचिच्छिष्टाश्चदानवाः ॥ नाऽद्ययुक्ताश्चसंग्रामेस्थातुमेवंसुखा वहाः ॥ ८ ॥ शुक्रउवाच ॥ यावदहंमंत्रविद्यामानयिष्यामिशंकरात् ॥ तावद्भवद्भिःस्थातव्यंतपोयुक्तैःशमान्वितैः ॥ ९ ॥ सामदानादयःप्रोक्ताविद्वद्भिःस मयोचिताः॥देशंकालंबलंवीरैर्ज्ञात्वाशक्तिबलंबुधैः ॥१०॥ सेवाऽथसमयेकार्याशत्रूणांशुभकाम्यया॥स्वशक्त्युपचयेकालेहंतव्यास्तेमनीषिभिः ॥११॥त दद्यविनयंकृत्वासामपूर्वंछलेनवै ॥ तिष्ठध्वंस्वनिकेतेषुमदागमनकांक्षया ॥ १२ ॥ प्राप्यमंत्रान्महादेवादागमिष्यामिदानवाः ॥ युध्यामहेपुनर्देवान्मांत्रमा स्थायवैबलम् ॥ १३ ॥ इत्युक्त्वाऽथभृगुस्तेभ्योजगामकृतनिश्चयः ॥ महादेवंमहाराजमंत्रार्थंमुनिसत्तमः ॥ १४ ॥ दानवाःप्रेषयामासुःप्रह्लादंसुरसन्नि धौ ॥ सत्यवादिनमव्यग्रंसुराणांप्रत्ययप्रदम् ॥ १५ ॥ प्रह्लादस्तुसुरान्प्राहप्रश्रयावनतोनृपः ॥ असुरैःसहितस्तत्रवचनंनम्रतायुतम् ॥ १६ ॥ न्यस्तशस्त्रा वयंसर्वेनिःसन्नाहास्तथैवच ॥ देवास्तपश्चरिष्यामःसंवृतावल्कलैर्युताः ॥ १७ ॥ प्रह्लादस्यवचःश्रुत्वासत्याऽभिव्याहृतंतुतत् ॥ ततोदेवान्यवर्तंतविज्व रामुदिताश्चते ॥ १८ ॥ न्यस्तशस्त्रेषुदैत्येषुविनिवृत्तास्तदासुराः ॥ विश्रब्धाःस्वगृहान्गत्वाक्रीडासक्ताःसुसंस्थिताः ॥ १९ ॥

॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ मांत्रंमंत्रजन्यंबलमास्थायाऽऽश्रित्येत्यर्थः ॥ १३ ॥ भृगुर्भृगुपुत्रःशुक्रइत्यर्थः ॥ १४ ॥ काव्येगतेदेवाआगत्याऽस्मान्नाशयिष्यंतीतिभियासामार्थंप्रह्लादं प्रेषयामासुरित्याह । दानवाइति ॥ १५ ॥ नम्रतायुतंनम्रमित्यर्थः ॥ १६ ॥ निःसन्नाहायुद्धार्थंनिरुद्योगाःअतोयुष्माभिर्वैरंविहायदयाविधेयेत्यर्थः ॥ १७ ॥ सत्यमभिव्याहृतंभाषणं प्रह्लादस्यतच्छ्रुत्वादेवान्यवर्ततयुद्धादितिशेषः ॥ मुदिताश्चाभवन्नित्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तपिसंयुताःतपःक्रियायुक्ताः ॥ २० ॥ २१ ॥ असुराणांजयायचेति ॥ प्रभुःशुक्राचार्यउवाचेतिशेषः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ अवाक्शिराःसन्कणधूमंयदिपास्यसी त्यर्थः ॥ एतद्व्रतंकठिनमयंनकरिष्यति ततोमंत्रानपिनदास्यामीतिभावः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ मंत्रतत्पराविचारनिष्ठाः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ उत्पेतुर्देवान्प्रत्याजग्मुः ॥

दैत्यादंभंसमालंब्यतापसास्तपिसंयुताः ॥ कश्यपस्याऽऽश्रमेवासंचक्रुःकाव्याऽऽगमेच्छया ॥ २० ॥ काव्योगत्वाऽथकैलासंमहादेवंप्रणम्यच ॥ उवाच विभुनापृष्टःकिंतेकार्यमितिप्रभुः ॥ २१ ॥ मंत्रानिच्छाम्यहंदेवयेनसंतिबृहस्पतौ ॥ पराजयायदेवानामसुराणांजयायच ॥ २२ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यसर्वज्ञःशंकरःशिवः ॥ चिंतयामासमनसाकिंकर्तव्यमतःपरम्॥२३॥सुरेषुद्रोहबुद्ध्याऽसौमंत्रार्थमिहसांप्रतम् ॥प्राप्तःकाव्योगुरुस्तेषांदैत्या नांविजयायच ॥ २४ ॥ रक्षणीयामयादेवाइतिसंचिंत्यशंकरः ॥ दुष्करंव्रतमत्युग्रंतमुवाचमहेश्वरः ॥२५॥ पूर्णेवर्षसहस्रेतुकणधूममवाक्छिराः ॥ यदिपा स्यसिभद्रंतेततोमंत्रानवाप्स्यसि ॥ २६ ॥ इत्युक्तोऽसौप्रणम्येशंवाढमित्यब्रवीद्वचः॥व्रतंचराम्यहंदेवत्वयाऽऽज्ञप्तःसुरेश्वर॥२७॥व्यासउवाच ॥इत्युक्त्वा शंकरंकाव्यश्चकारव्रतमुत्तमम् ॥ धूमपानरतःशांतोमंत्रार्थकृतनिश्चयः ॥ २८ ॥ ततोदेवाःपरिज्ञात्वाकाव्यंव्रतरतंतदा ॥दैत्यान्दंभरतांश्चैववभूवुर्मंत्रतत्प राः ॥ २९ ॥ विचार्यमनसासर्वेसंग्रामायोद्यतानृप ॥ ययुर्धृतायुधास्तत्रयत्रतेदानवोत्तमाः ॥३०॥ तानागतान्समीक्ष्याऽथसायुधान्दंशितांस्तथा ॥ आ संस्तेभयसंविग्नादैत्यादेवान्समंततः॥३१॥उत्पेतुःसहसातेवैसन्नद्धान्भयकर्शिताः॥अब्रुवन्वचनंतथ्यंतेदेवान्बलदर्पितान् ॥ ३२ ॥ न्यस्तशस्त्रेभयवतिआ चार्येव्रतमास्थिते॥दत्त्वाभयंपुरादेवाःसंप्राप्तानोजिघांसया॥३३॥सत्यंवःक्वगतंदेवाधर्मश्चश्रुतिनोदितः॥न्यस्तशस्त्रानहंतव्याभीताश्चशरणंगताः ॥ ३४ ॥ देवाऊचुः॥भवद्भिःप्रेषितःकाव्योमंत्रार्थंकुहकेनच ॥ तपोज्ञानंहियुष्माकंतेनयुध्यामएवहि ॥३६॥ सज्जाभवंतुयुद्धायसंरब्धाःशस्त्रपाणयः ॥ शत्रुश्छिद्रेण हंतव्यएषधर्मःसनातनः॥३६॥व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंदैत्याविचार्यचपरस्परम्॥पलायनपराः सर्वेनिर्गताभयविह्वलाः॥३७॥शरणंदानवाजग्मुर्भी तास्तेकाव्यमातरम्॥दृष्ट्वातानतिसंतप्तानभयंचददावथ॥३८॥काव्यमातोवाच ॥नभेतव्यंनभेतव्यंभयंत्यजतदानवाः ॥ मत्सन्निधौवर्तमानान्नभीर्भवितुम र्हति॥३९॥तच्छ्रुत्वावचनंदैत्याःस्थितास्तत्रगतव्यथाः ॥ निरायुधाह्यसंभ्रांतास्तत्राऽऽश्रमवरेऽसुराः॥४०॥देवास्तान्विद्रुतान्वीक्ष्यदानवांस्तेपदानुगाः ॥ अभिजग्मुःप्रसह्यैतानविचार्यबलाबलम्॥४१॥तत्राऽऽगताःसुराःसर्वेहंतुंदैत्यान्समुद्यताः ॥ वारिताःकाव्यमात्राऽपिजघ्नुस्तानाश्रमस्थितान् ॥ ४२॥

सन्नद्धाञ्छस्त्रास्त्रैर्युक्तान् ॥ ३२ ॥ न्यस्तशस्त्रेइति ॥ एतेषुपुराप्रथममभयंदत्त्वापुनर्जिघांसयानोऽस्मान्प्राप्ताइदंकिमित्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ कुहकेनकपटेनतेनहेतुनाभवतांत पोदुष्टभावेनवर्ततइत्यस्माभिर्ज्ञातंतेनकारणेनदुष्टान्प्रतिदुष्टाभूत्वायुध्यामो युद्धंकुर्मइत्यर्थः ॥ ३५ ॥ ३६॥३७॥३९॥४०॥ पदंपदपद्धतिमनुलक्ष्यलक्षीकृत्यगच्छंतोऽभिजग्मुः ॥४१॥४२॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सनिद्रान्निद्रायुक्तानित्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ हेइंद्र मांप्रविश त्वामहमन्यत्रनयेप्रापयामिभद्रंतेऽस्तु तवेत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ योगविद्ययातस्यायोगजशक्त्या ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ अभिभूतोऽशक्तः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ एकोनषष्टिश्लोकैस्तु

हन्यमानान्सुरैर्दृष्ट्वाकाव्यमाताऽतिवेपिता ॥ उवाचसर्वान्सनिद्रांस्तपसावैकरोम्यहम् ॥ ४३ ॥ इत्युक्त्वाप्रेरितानिद्रातानागत्यपपातच ॥ सेंद्रानिद्राव शंयातादेवामूकवदास्थिताः ॥४४॥ इंद्रंनिद्राजितंदृष्ट्वादीनंविष्णुरभाषत ॥ मांत्वंप्रविशभद्रंतेनयेत्वांचसुरोत्तम ॥ ४५ ॥ एवमुक्तस्ततोविष्णुंप्रविवेशपु रंदरः॥निर्भयोगतनिद्रश्चवभूवहरिरक्षितः ॥ ४६॥ रक्षितंहरिणादृष्ट्वाशक्रंतत्रगतव्यथम् ॥ काव्यमातातत:क्रुद्धावचनंचेदमब्रवीत् ॥ ४७ ॥ मघवंस्त्वां भक्षयामिसविष्णुंवैतपोबलात् ॥ पश्यतांसर्वदेवानामीदृशंमेतपोबलम् ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच॥इत्युक्तौतुतयादेवौविष्णिवद्रौयोगविद्यया ॥ अभिभूतौ महात्मानौस्तब्धौतौसंबभूवतुः ॥ ४९ ॥ विस्मितास्तुतदादेवादृष्ट्वातावतिबाधितौ ॥ चक्रुःकिलकिलाशब्दंततस्तेदीनमानसाः ॥ ५० ॥ क्रोशमानान्सु रान्दृष्ट्वाविष्णुंप्राहशचीपतिः ॥ विशेषेणाऽभिभूतोऽस्मित्वत्तोऽहंमधुसूदन ॥ ५१ ॥ जह्येनांतरसाविष्णोयावन्नौनदहेत्प्रभो ॥ तपसादर्पितांदुष्टांमाविचा रयमाधव ॥ ५२ ॥ इत्युक्तोभगवान्विष्णुःशक्रेणप्रार्थितेनच ॥ चक्रंसस्मारतरसाघृणांत्यक्त्वाऽथमाधवः ॥ ५३ ॥ स्मृतमात्रंतुसंप्राप्तंचक्रंविष्णुवशा नुगम् ॥ दधारचकरेक्रुद्धोवधार्थंशक्रनोदितः ॥ ५४ ॥ गृहीत्वातत्करेचक्रंशिरश्चिच्छेदरंहसा ॥ हतांदृष्ट्वातुतांशक्रोमुदितश्चाभवत्तदा ॥ ५५ ॥ देवाश्चा ऽतीवसंतुष्टाहरिंजयजयेतिच॥तुष्टुवुर्मुदिताःसर्वेसंजाताविगतज्वराः ॥ ५६ ॥ इंद्राविष्णूतुसंजातौतत्क्षणाद्धृदयव्यथौ ॥ स्त्रीवधाच्छंकमानौतुभृगोःशापं दुरत्ययम् ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेएकादशोध्यायः ॥ ११ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ तंदृष्ट्वातुवधंघोरंचुक्रोधभगवान्भृगुः ॥ वेपमानोऽतिदुःखार्तःप्रोवाचमधुसूदनम् ॥ १ ॥ भृगुरुवाच ॥ अकृतंतेकृतंविष्णोजानन्पापंमहामते ॥ वधोऽयंविप्रजातायामनसाकर्तुमक्षमः ॥ २ ॥ आख्यातस्त्वंसत्वगुणःस्मृतोब्रह्माचराजसः ॥ तथाऽसौतामसःशंभुर्विपरीतंकथंस्मृतम् ॥३॥ तामसस्त्वंकथंजातःकृतंकर्मातिनिंदितम् ॥ अवध्यास्त्रीत्व याविष्णोहताकस्मान्निरागसा ॥ ४ ॥ शपामित्वांदुराचारंकिमन्यत्प्रकरोमिते ॥ विधुरोऽहंकृतःपापत्वयाऽहंशक्रकारणात् ॥ ५ ॥ नशपेऽहंतथाशक्रंश पेत्वांमधुसूदन ॥ सदाछलपरोऽसित्वंकीटयोनिर्दुराशयः ॥ ६ ॥ येचत्वांसात्विकंप्राहुस्तेमूर्खामुनयःकिल ॥ तामसस्त्वंदुराचारःप्रत्यक्षंमेजनार्दन ॥ ॥ ७ ॥ अवतारामृत्युलोकेसंतुमच्छापसंभवाः ॥ प्रायोगर्भभवंदुःखंभुंक्ष्वपापाज्जनार्दन ॥ ८ ॥

विष्णोःशापादनंतरम् ॥ प्रेषिताशुक्रसेवार्थंजयंतीतिनिगद्यते ॥ १ ॥ भृगुपत्नीवधानंतरंजातंकृत्यमाह । तंदृष्ट्वेति ॥१॥ अकृतमिति ॥ तेत्वया । कृतमकार्यंकृतमित्यर्थः ॥ विप्रजातायां विप्रकन्यायाअयंवधोमनसापिकर्तुमक्षमःसत्वयासाक्षात्कृतइत्यर्थः ॥ २ ॥ कथंस्मृतंकथंजातमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ कीटयोनिःकृष्णसर्पइत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





यत्पृष्टंभृगुशापःकथंजातइतिसाकथाऽत्रसमापितातदुपसंहरति । ततस्तेनाथेति ॥ धर्मेनष्टेसतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ अद्यत्वामितिवाक्यंबौद्धस्त्रीविषयंप्रत्यक्षायास्तुमृतत्वादित्युक्तामनसिसंकल्पंकरोति । यदीति ॥ १२ ॥ यदिसत्यमिति ॥ यदिचाऽहंसत्यंब्रवीमितेनसत्येनतेनधर्माचरणेनचेयंजीवेदितिमनसिसंकल्पंकृत्वादेवान्वदति । पश्यंत्विति ॥ १३ ॥१४ ॥

व्यासउवाच ॥ ततस्तेनाऽथशापेननष्टेधर्मेपुनःपुनः ॥ लोकस्यचहितार्थायजायतेमानुषेष्विह ॥ ९ ॥ राजोवाच ॥ भृगुभार्याहतातत्रचक्रेणामिततेजसा ॥ गार्हस्थ्यंचपुनस्तस्यकथंजातंमहात्मनः ॥ १० ॥ व्यासउवाच ॥ इतिशप्त्वाहरिंरोषात्तदादायशिरस्त्वरन् ॥ कायेसंयोज्यतरसाभृगुःप्रोवाचकार्यवित् ॥ ११ ॥ अद्यत्वांविष्णुनादेविहतांसंजीवयाम्यहम् ॥ यदिकृत्स्नोमयाधर्मोज्ञायतेचरितोऽपिवा ॥ १२ ॥ तेनसत्येनजीवेतयदिसत्यंब्रवीम्यहम् ॥ पश्यंतुदेवताःसर्वाममतेजोबलंमहत् ॥ १३ ॥ अद्भिस्तांप्रोक्ष्यशीताभिर्जीवयामितपोबलात् ॥ सत्यंशौचंतथावेदायदिमेतपसोबलम् ॥ १४ ॥ व्यासउवाच ॥ अद्भिःसंप्रोक्षितादेवीसद्यःसंजीवितातदा ॥ ॥ उत्थितापरमप्रीताभृगोर्भार्याशुचिस्मिता ॥ १५ ॥ ततस्तांसर्वभूतानिदृष्ट्वासुप्तोत्थितामिव ॥ साधुसाध्वितितंतांतुतुष्टुवुःसर्वतोदिशम् ॥ १६ ॥ एवंसंजीवितातेनभृगुणावरवर्णिनी ॥ विस्मयंपरमंजग्मुर्देवाःसेंद्राविलोक्यतत् ॥ १७ ॥ इंद्रःसुरानथोवाचमुनिनाजीवितासती ॥ काव्यस्तप्त्वातपोघोरंकिंकरिष्यतिमंत्रवित् ॥१८॥ व्यासउवाच ॥ गतानिद्रासुरेन्द्रस्यदेहेऽक्षेममभून्नृप ॥ स्मृत्वाकाव्यस्यवृत्तांतंमंत्रार्थमतिदारुणम् ॥ १९ ॥ विमृश्यमनसाशक्रोजयंतींस्वसुतांतदा ॥ उवाचकन्यांचार्वंगींस्मितपूर्वमिदंवचः ॥ २० ॥ गच्छपुत्रिमयादत्ताकाव्यायत्वंतपस्विने ॥ समाराधयतन्वंगिमत्कृतेतंवशंकुरु ॥ २१ ॥ उपचारैर्मुनिंतैस्तैःसमाराध्यमनःप्रियैः ॥ भयंमेतरसागत्वाहरतत्रवराश्रमे ॥ २२ ॥ सापितुर्वचनंश्रुत्वातत्राऽगच्छन्मनोरमा ॥ तमपश्यद्विशालाक्षीपिबंतंधूममाश्रमे ॥ २३ ॥ तस्यदेहंसमालोक्यस्मृत्वावाक्यंपितुस्तदा ॥ कदलीदलमादायवीजयामासतंमुनिम् ॥ २४ ॥ निर्मलंशीतलंवारिसमानीयसुवासितम् ॥ पानायकल्पयामासभक्त्यापरमयालघु ॥ २५ ॥ छायांवस्त्राऽऽतपत्रेणभास्करेमध्यगेसति॥रचयामासतन्वंगीस्वयंधर्मेस्थितासती ॥ २६ ॥ फलान्यानीयदिव्यानिपक्वानिमधुराणिच ॥ मुमोचाग्रेमुनेस्तस्यभक्ष्यार्थंविहितानिच ॥ २७॥ कुशाःप्रादेशमात्राहिहरिताःशुकसन्निभाः ॥ दधाराऽग्रेऽथपुष्पाणिनित्यकर्मसमृद्धये ॥ २८ ॥ निद्रार्थंकल्पयामाससंस्तरंपल्लवान्वितम् ॥ तस्मिन्मुनौचाऽऽदरस्थाचकारव्यजनंशनैः ॥ २९ ॥ हावभावादिकंकिंचिद्विकारजननंचतत् ॥ नचकारजयंतीसाशापभीतामुनेस्तदा ॥ ३० ॥

॥ १५ ॥ तंभृगुम् ॥ तांतत्पत्नीम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ किंकरिष्यतीति ॥ प्रथमतोऽस्मत्क्रोधेनैवगतस्ततोमातृवधंश्रुत्वाद्विगुणितक्रोधेनकिंकरिष्यतिनजानेइत्यर्थः ॥ १८ ॥ अक्षेममिति च्छेदः ॥ मंत्रार्थंमंत्रप्राप्त्यर्थमतिदारुणमधोमुखतयाधूम्रपानादिकम् ॥१९॥२०॥२१॥ तत्रगत्वामेभयंहरेत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ यच्चकिंचिदिति ॥ हेब्रह्मन् यच्चकिंचिदपिवस्तुविद्यतेलोके यच्चत्वंप्रतिपश्यसिचक्षुषा यच्चकस्याचित्कस्याऽपिवाच्यंवचनविषयो न तस्यसर्वस्याभिभावकत्वेनयुक्तस्त्वंभविष्यसीत्यर्थः ॥ सर्वजेताभविष्यसीतितात्पर्यम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ जयंतस्याऽवरजाकनिष्ठभगिनी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

स्तुतिंचकारतन्वंगीगीर्भिस्तस्यमहात्मनः॥सुभाषिण्यनुकूलाभिःप्रीतिकर्त्रीभिरप्युत ॥३१॥ प्रबुद्धेजलमादायदधाराचमनायच ॥ मनोनुकूलंसततंकुर्वतीव्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ इंद्रोऽपिसेवकांस्तत्रप्रेषयामासचातुरः ॥ प्रवृत्तिंज्ञातुकामोवैमुनेस्तस्यजितात्मनः ॥३३॥ एवंबहूनिवर्षाणिपरिचर्यापराभवत् ॥ निर्विकाराजितक्रोधाब्रह्मचर्यपरासती ॥३४॥ पूर्णेवर्षसहस्रेतुपरितुष्टोमहेश्वरः॥ वरेणच्छंदयामासकाव्यंप्रीतमनाहरः ॥३५॥ ईश्वरउवाच ॥ यच्चकिंचिदपिब्रह्मन्विद्यतेभृगुनंदन ॥ प्रतिपश्यसियत्सर्वंयच्चवाच्यंनकस्यचित् ॥३६॥ सर्वाभिभावकत्वेनभविष्यसिनसंशयः ॥ अवध्यःसर्वभूतानांप्रजेशश्चद्विजोत्तमः ॥३७॥ व्यासउवाच ॥ एवंदत्त्वावराञ्छंभुस्तत्रैवांतरधीयत ॥ काव्यस्तामथसंवीक्ष्यजयंतींवाक्यमब्रवीत् ॥३८॥ काऽसिकस्याऽसिसुश्रोणिब्रूहिकिंतेचिकीर्षितम् ॥ किमर्थमिहसंप्राप्ताकार्यंवदवरोरुमे ॥ ३९ ॥ किंवांछसिकरोम्यद्यदुष्करंचेत्सुलोचने ॥ प्रीतोऽस्मित्वकृतेनाऽद्यवरंवरयसुव्रते ॥ ४० ॥ ततःसातुमुनिंप्राहजयंतीमुदिताननाः ॥ चिकीर्षितंमेभगवंस्तपसाज्ञातुमर्हसि ॥ ४१ ॥ काव्यउवाच ॥ ज्ञातंमयातथाऽपित्वंब्रूहियन्मनसेप्सितम् ॥ करोमिसर्वथाभद्रंप्रीतोऽस्मिपरिचर्यया ॥ ४२ ॥ जयंत्युवाच ॥ शक्रस्याऽहंसुताब्रह्मन्पित्रातुभ्यंसमर्पिता ॥ जयंतीनामतश्चाऽहंजयंताऽवरजामुने ॥४३॥ सकामाऽस्मित्वयिविभोवांछितंकुरुमेऽधुना ॥ रंस्येत्वयामहाभागधर्मतःप्रीतिपूर्वकम् ॥ ४४ ॥ शुक्रउवाच ॥ मयासहत्वंसुश्रोणिदशवर्षाणिभामिनि ॥ सर्वैर्भूतैरदृश्याचरमस्वेहयदृच्छया ॥ ४५ ॥ व्यासउवाच ॥ एवमुक्त्वागृहंगत्वाजयंत्याःपाणिमुद्वहन् ॥ तयासहावसद्देव्यादशवर्षाणिभार्गवः ॥ ४६ ॥ अदृश्यःसर्वभूतानांमाययासंवृतःप्रभुः ॥ दैत्यास्तमागतंश्रुत्वाकृतार्थंमंत्रसंयुतम् ॥ ४७ ॥ अभिजग्मुर्गृहेतस्यमुदितास्तेदिदृक्षवः ॥ नापश्यन्रममाणंतेजयंत्यासहसंयुतम् ॥ ४८ ॥ तदाविमनसःसर्वेजाताभग्नोद्यमाश्चते ॥ चिंतापराऽतिदीनाश्चवीक्षमाणाः पुनःपुनः ॥ ४९ ॥ अदृष्ट्वातंतुसंवृतंप्रतिजग्मुर्यथागतम् ॥ स्वगृहान्दैत्यवर्यास्तेचिंताविष्टाभयाऽऽतुराः ॥ ५० ॥ रममाणंतथाज्ञात्वाशक्रःप्रोवाचतंगुरुम् ॥ बृहस्पतिंमहाभागंकिंकर्तव्यमितःपरम् ॥ ॥ ५१ ॥ गच्छाऽद्यदानवान्ब्रह्मन्माययात्वंप्रलोभय ॥ अस्माकंकुरुकार्यंत्वंबुद्ध्यासंचिंत्यमानद ॥ ५२ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंकाव्यंरममाणंसुसंवृतम् ॥ ज्ञात्वातद्रूपमास्थायदैत्यान्प्रतिययौगुरुः ॥ ५३ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ चिंतापराश्चतेऽतिदीनाश्चेत्यर्थः ॥ ४९ ॥ संवृतंमाययाआच्छन्नम् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ सुसंवृतंमाययाआच्छन्नं तद्रूपंशुक्राचार्यरूपमास्थायाऽऽश्रित्येत्यर्थः ॥ ५३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ विद्यांप्राप्तांसदाशिवादित्यर्थात् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ छ ॥ द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुदेवानांगुरुणातथा ॥ शुक्ररूपेणतेदैत्यावंचिताइतिकथ्यते ॥ १ ॥ इत्थंदेवगुरुणाशुक्राचार्यरूपेणदैत्येषुसंतोषितेषुतदनंतरंजातंवृत्तंपृच्छति । किंकृतमिति ॥ भृगुरूपेणलक्षणयाभृगुपुत्ररूपेणेत्यर्थः ॥ छलेनकपटेनदैत्यानांसंबंधिपौरोहित्येनयुक्तेनेतिशेषः ॥ १ ॥ इत्येकंप्रश्नंकृत्वाद्वितीयंप्रश्नमाह । गुरुःसुराणामिति ॥ नहिमुनेश्छलकर्तृत्वंयुक्तमितिभावः ॥ २ ॥ धर्मशास्त्रेष्विति ॥ येनसत्येनपरमात्मापरंब्रह्मलभ्यतेप्राप्यते ॥ तथाचश्रुतिः ॥ सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषआत्मेति ॥ ३ ॥४ ॥ ननुलोभार्थमसत्यवक्ताजातइतिचेत्तत्राऽऽह । आहारादधिकमिति ॥

गत्वातत्राऽतिभक्त्याऽसौदानवान्समुपाऽऽह्वयत् ॥ आगतास्तेऽसुराःसर्वेददृशुःकाव्यमग्रतः ॥ ५४ ॥ प्रणम्यसंस्थिताःसर्वेकाव्यंमत्वाऽतिमोहिताः ॥ न विदुस्तेगुरोर्मायांकाव्यरूपविभाविनीम् ॥ ५५ ॥ तानुवाचगुरुःकाव्यरूपःप्रच्छन्नमायया ॥ स्वागतंममयाज्यानांप्राप्तोऽहंवोहितायवै ॥ ५६ ॥ अहंवो बोधयिष्यामिविद्यांप्राप्तामममायया ॥ तपसातोषितःशंभुर्युष्मत्कल्याणहेतवे ॥ ५७ ॥ तच्छ्रुत्वाप्रीतमनसोजातास्तेदानवोत्तमाः ॥ कृतकार्यंगुरुंमत्वाजह्रुस्तेविमोहिताः ॥ ५८ ॥ प्रणेमुस्तेमुदायुक्तानिरातंकागतव्यथाः ॥ देवेभ्यश्चभयंत्यक्त्वातस्थुःसर्वेनिरामयाः ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ छ ॥ राजोवाच ॥ किंकृतंगुरुणापश्चाद्भृगुरूपेणवर्तता ॥ छलेनैवहिदैत्यानांपौरोहित्येनधीमता ॥ १ ॥ गुरुःसुराणामनिशंसर्वविद्यानिधिस्तथा ॥ सुतोंऽगिरसएवाऽसौसकथंछलकृन्मुनिः ॥ २ ॥ धर्मशास्त्रेषुसर्वेषुसत्यंधर्मस्यकारणम् ॥ कथितंमुनिभिर्येनपरमात्माऽपिलभ्यते ॥ ३ ॥ वाचस्पतिस्तथामिथ्यावक्ताचेद्दानवान्प्रति ॥ कःसत्यवक्तासंसारेभविष्यतिगृहाश्रमी ॥ ४ ॥ आहारादधिकंभोज्यंब्रह्मांडविभवेऽपिन ॥ तदर्थंमुनयोमिथ्याप्रवर्ततेकथंमुने ॥ ५ ॥ शब्दप्रमाणमुच्छेदंशिष्टाभावेगतंनकिम् ॥ छलकर्मप्रवृत्तेवाऽविगीतत्वंगुरौकथम् ॥ ६ ॥ देवाःसत्त्वसमुद्भूताराजसामानवाःस्मृताः ॥ तिर्यंचस्तामसाःप्रोक्ताउत्पत्तौमुनिभिःकिल ॥ ७ ॥ अमराणांगुरुःसाक्षान्मिथ्यावादीस्वयंयदि ॥ तदाकःसत्यवक्तास्याद्राजसस्तामसःपुनः ॥ ८ ॥ क्वस्थितिस्तस्यधर्मस्यसंदेहोऽयंममाऽऽत्मनः ॥ कागतिःसर्वजंतूनांमिथ्याभूतेजगत्त्रये ॥ ९ ॥ हरिर्ब्रह्माशचीकांतस्तथाऽन्येसुरसत्तमाः॥सर्वेछलविधौदक्षामनुष्याणांचकाकथा ॥ १० ॥ कामक्रोधाभिसंतप्तालोभोपहतचेतसः॥छलेदक्षाःसुराःसर्वेमुनयश्चतपोधनाः॥११॥वसिष्ठोवामदेवश्चविश्वामित्रोगुरुस्तथा॥एतेपापरताःकात्रगतिर्धर्मस्यमानद॥१२॥इंद्रोग्निश्चंद्रमावेधाःपरदाराभिलंपटाः॥आर्यत्वंभुवनेष्वेषुस्थितंकुत्रमुनेवद॥१३॥

अतिलोभेनबहुतरेधनेसंपादितेऽपि आहारादधिकमन्नंकेऽपिनभोक्ष्यंति ॥ आहारपरिपूर्तिपर्यंतंतुप्रारब्धंदास्यत्येवेतिज्ञात्वाकिमर्थंव्यर्थायुःक्षपणार्थंलोभंकुर्वंतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ किंचाविगीतशिष्टाहितकारिणोह्याप्तास्तेषांवाक्यंप्रमाणमित्याप्तवाक्यमागमइत्यस्यार्थः ॥ तत्रमहतांसर्वेषामेवमाचरणेक्वाविगीतत्वमनिंदितत्वंतिष्ठतितदभावेक्वाप्तस्तदभावेशब्दप्रमाणमुच्छेदंनाशंप्रतिकथंनगतमित्याह । शब्दप्रमाणमिति ॥ अविगीतत्वमिति ॥ अविगीतत्वाभावेनिंदितत्वाभावेशिष्टत्वस्याप्यभावोयतोऽविगीतत्वस्यैवशिष्टत्वात् ॥ ६ ॥ तदुच्छेदमेवद्रढयति । देवाःसत्त्वसमुद्भूताइति ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ आर्यत्वंशिष्टत्वम् ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १४ ॥ इतिजनमेजयवाक्यंश्रुत्वाव्यासस्तदुक्तमेवस्थापयति । किंविष्णुरिति ॥ विष्णुर्वास्तुब्रह्मावास्तु योयोदेहवान्सपूर्वोक्तदोषरूपविकारैर्युक्तएवभवतिनाऽन्यथेत्यन्वयः ॥ १५ ॥ चातुर्यादिति ॥ धौर्त्यादित्यर्थः ॥ १६ ॥ कथंधौर्त्यादितिज्ञातमितिचेत्तत्राह । संप्राप्तेइति ॥ संकटस्यप्रसंगेतस्यधौर्त्यंवहिर्निःसरतीत्यर्थः ॥ दृष्टाश्चैवंबहुविधाःपरोपदेशेचतुराः स्वयमेकांतेकामिनीकज्जलविषदिग्धकटाक्षशरेणताडितामोहिताजाताएवेतिभावः ॥ इदंराजन्नाश्चर्यंकिंतुस्वभावएवसर्वेषामित्याह । कारणाद्रहितमिति ॥ गुणत्रयंहिसर्वेषांकारणम् ॥ तस्यगुणत्रय

वचनंकस्यमंतव्यमुपदेशाधियाऽनघ ॥ सर्वेलोभाऽभिभूतास्तेदेवाश्चमुनयस्तदा ॥ १४ ॥ व्यासउवाच ॥ किंविष्णुःकिंशिवोब्रह्मामघवाकिंबृहस्पतिः ॥ देहवान्प्रभवत्येवविकारैःसंयुतस्तदा ॥१५॥ रागीविष्णुःशिवोरागीब्रह्माऽपिरागसंयुतः ॥ "रागवान्किमकृत्यंवैनकरोतिनराधिप ॥" रागवानपिचातुर्याद्विदेहइवलक्ष्यते ॥ १६ ॥ संप्राप्तेसंकटेसोऽपिगुणैःसंबाध्यतेकिल ॥ कारणाद्रहितंकार्यंकथंभवितुमर्हति ॥ १७ ॥ ब्रह्मादीनांचसर्वेषांगुणाएवहिकारणम् ॥ पंचविंशत्समुद्भूतादेहास्तेषांनचान्यथा ॥ १८ ॥ कालेमरणधर्मास्तेसंदेहःकोऽत्रतेनृप ॥ परोपदेशेविस्पष्टंशिष्टाःसर्वेभवंतिच ॥१९॥ विद्युतिर्ह्यविशेषेणस्वकार्येसमुपस्थिते ॥ कामःक्रोधस्तथालोभद्रोहाऽहंकारमत्सराः ॥ २० ॥ देहवान्कःपरित्यक्तुमीशोभवतितान्पुनः ॥ संसारोऽयंमहाराजसदैवैवंविधःस्मृतः ॥ २१ ॥ नाऽन्यथाप्रभवत्येवशुभाऽशुभमयःकिल ॥ कदाचिद्भगवान्विष्णुस्तपश्चरतिदारुणम् ॥ २२ ॥ कदाचिद्विविधान्यज्ञान्वितनोतिसुराधिपः ॥ कदाचित्तुरमारंगरंजितःपरमेश्वरः ॥ २३ ॥ रमतेकिलवैकुंठेतद्वशस्तरुणोविभुः ॥ कदाचिद्दानवैःसार्धंयुद्धंपरमदारुणम् ॥ २४ ॥ करोतिकरुणासिंधुस्तद्बाणाऽऽपीडितोभृशम् ॥ कदाचिज्जयमाप्नोतिदैवात्सोऽपिपराजयम् ॥ २५ ॥ सुखदुःखाऽभिभूतोऽसौभवत्येवनसंशयः ॥ शेषेशेतेकदाचिद्वैयोगनिद्रासमावृतः ॥ २६ ॥ कालेजागर्तिविश्वात्मास्वभावप्रतिबोधितः ॥ शर्वोब्रह्माहरिश्चैतइंद्राद्यायेसुरास्तथा ॥ २७ ॥ मुनयश्चविनिर्माणैःस्वायुषोविचरंतिहि ॥ निशाऽवसानेसंजातेजगत्स्थावरजंगमम् ॥२८॥ म्रियतेनात्रसंदेहोनृपकिंचित्कदाऽपिच ॥ स्वायुषोंऽतेपद्मजाद्याःक्षयमृच्छंतिपार्थिव ॥२९॥ प्रभवंतिपुनर्विष्णुहरशक्रादयःसुराः ॥ तस्मात्कामादिकान्भावान्देहवान्प्रतिपद्यते ॥३०॥ नाऽत्रतेविस्मयःकार्यःकदाचिदपिपार्थिव ॥ संसारोऽयंतुसंदिग्धःकामक्रोधादिभिर्नृप ॥ ३१ ॥ दुर्लभस्तद्विनिर्मुक्तःपुरुषःपरमार्थवित् ॥ योविभेतीहसंसारेसदारान्नकरोत्यपि ॥ ३२ ॥ विमुक्तःसर्वसंगेभ्योविचरत्यविशंकितः ॥ तस्माद्बृहस्पतेर्भार्याशशिनालंभितापुनः ॥ ३३ ॥

स्यप्रारब्धवशतउपचयाऽपचयेसतिक्वचित्कदाचित्कस्यचिदपिविषयाऽऽचरणंभवत्येव नहिकारणाद्रहितंकार्यंकदापितिष्ठतीत्यर्थः ॥ १७ ॥ पंचविंशत्समुद्भूताआर्षप्रयोगः ॥ पंचविंशतितत्वसमुद्भूताइत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ विप्लुतिरिति ॥ स्वकार्येप्राप्तेसर्वेषांविप्लुतिःस्वभावच्युतिर्भवतीत्यर्थः ॥ अनुपदमेवैतद्व्याख्यातम् ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ कालवशेनगुणव्यत्ययमेवदेवादिषुदर्शयति । कदाचिदिति ॥ रमारंगेणरंजितइत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ संदिग्धःसम्यग्दिग्धोयुक्तः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ तस्मादिति ॥ गुणत्रयवद्धत्वादित्यर्थः । लंभितोपभुक्तेत्यर्थः ॥ ३३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





भ्रातुर्यवीयसइति ॥ उतथ्योज्येष्ठोबृहस्पतिर्मध्यमआनर्तःकनिष्ठस्तस्यभार्यागुरुणालंभिताभुक्तेत्यर्थः ॥ ३४ ॥ गार्हस्थ्यंसंसारासक्तिमित्यर्थः ॥ नहिसंसारासक्तःसन्संसारान्मुक्तोभवेत्तस्मात्संसारासक्तिंविहायसंसारनाशायोद्योगःकर्तव्यइत्यर्थः ॥ तथाचयेसंसारासक्तिरहितास्तएवाऽऽप्ताइति नाप्तवाक्यप्रमाणोच्छेदरूपंदूषणंतवेतिभावः ॥ ननुसंसारासक्तिराहित्यंतेन संसारनाशश्चाऽत्यंतासंभाव्येवस्वभावभूतगुणानांनाशाऽसंभवादितिचेद्यस्यागुणैरयंबद्धस्तस्याएवोपासनयासर्वंभविष्यतीत्याह । तस्मात्सर्वप्रयत्नेनेति ॥ हित्वेति । वैराग्यमवलंब्येत्यर्थः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ विमृद्योपमृद्यनाशयित्वेत्यर्थः ॥ ३७ ॥ नान्यःपंथाइति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ नान्यःपंथाविद्यतेऽयनायेति ॥ ३८ ॥ कोऽन्योऽस्तीति ॥ यासर्वकर्त्रीसायादिदयांनकरोतितदातदिच्छामुल्लंघ्याऽन्यःकःसमर्थोऽस्तिसर्वेषांतदधीनत्वादितिभावः ॥ ३९ ॥ सेविताति । यैरित्यर्थः ॥ ४० ॥ निःश्रेणिकाग्रादिति । निःश्रेणिकासोपानपंक्तिस्तस्याअग्रंप्राप्यतस्मादधःपतिताइत्येवजानीमहइत्यर्थः ॥ तदुक्तम् आसाद्यजन्ममनुजेषुचिराद्दुरापंतत्रापिपाटवमवाप्यनिजेंद्रियाणाम् ॥ नाभ्यर्चयंतिजगतांजनयित्रियेत्वांनिःश्रेणिकाग्रमधिरुह्यपुनःपतंतीति ॥

गुरुणालंभिताभार्यातथाभ्रातुर्यवीयसः ॥ एवंसंसारचक्रेऽस्मिन्रागलोभादिभिर्वृतः ॥ ३४ ॥ गार्हस्थ्यंचसमास्थायकथंमुक्तोभवेन्नरः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनहित्वासंसारसारताम् ॥ ३५ ॥ आराधयेन्महेशानींसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ तन्मायागुणतश्छन्नंजगदेतच्चराचरम् ॥ ३६ ॥ भ्रमत्युन्मत्तवत्सर्वंमदिरामत्तवन्नृप ॥ तस्याआराधनेनैवगुणान्सर्वान्विमृद्यच ॥ ३७ ॥ मुक्तिंभजेतमतिमान्नान्यःपंथास्त्वितःपरः ॥ आराधितामहेशानीनयावत्कुरुतेकृपाम् ॥ ३८ ॥ तावद्भवेत्सुखंकस्मात्कोन्योऽस्तिदययायुतः ॥ करुणासागरामेतांभजेत्तस्मादमायया ॥ ३९ ॥ यस्यास्तुभजनेनैवजीवन्मुक्तत्वमश्नुते ॥ मानुष्यंदुर्लभंप्राप्यसेवितानमहेश्वरी ॥ ४० ॥ निःश्रेणिकाग्रात्पतिताअधइत्येवविद्महे ॥ अहंकाराऽऽवृतंविश्वंगुणत्रयसमन्वितम् ॥ ४१ ॥ असत्येनाऽपिसंबद्धंमुच्यतेकथमन्यथा ॥ हित्वासर्वंततःसर्वैःसेव्याभुवनेश्वरी ॥ ४२ ॥ राजोवाच ॥ किंकृतंगुरुणातत्रकाव्यरूपधरेणच ॥ कदाशुक्रःसमायातस्तन्मेब्रूहिपितामह ॥ ४३ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामियत्कृतंगुरुणातदा ॥ कृत्वाकाव्यस्वरूपंचप्रच्छन्नेनमहात्मना ॥ ४४ ॥ गुरुणाबोधितादैत्यामत्वाकाव्यंस्वकंगुरुम् ॥ विश्वासंपरमंकृत्वाबभूवुस्तन्मयास्तदा ॥ ४५ ॥ विद्यार्थंशरणंप्राप्ताभृगुंमत्वाऽतिमोहिताः ॥ गुरुणाविप्रलब्धास्तेलोभात्कोवानमुह्यति ॥ ४६ ॥ दशवर्षात्मकेकालेसंपूर्णसमयेतदा ॥ जयंत्यासहक्रीडित्वाकाव्योयाज्यानचिंतयत् ॥४७॥ आशयाममार्गतेपश्यंतःसंस्थिताःकिल ॥ गत्वातान्वैप्रपश्येऽहंयाज्यानतिभयातुरान् ॥ ४८ ॥ मादेवेभ्योभयंतेषांमद्भक्तानांभवेदिति ॥ संचिंत्यबुद्धिमास्थायजयंतींप्रत्युवाचह ॥ ४९ ॥

अहंकारावृताइति ॥ यस्यामायाजन्यगुणत्रयेणतज्जन्याऽहंकारेणतज्जन्यासत्यादिदोषेणसंबद्धंजगद्भवतितस्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्याभगवत्याआराधनेनैवसर्वंगलितंनष्टंभविष्यतीतिसैवसच्चिदानंदरूपिणीभुवनेश्वरीसर्वैराराध्येतिभावः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इत्थंजनमेजयस्यधर्मात्मनोधर्मनाशसंदर्शनक्षुभितेंद्रियांतःकरणस्यभगवत्याराधनावलंबेनस्वास्थ्यमभिधायाऽवस्थितंमुनिंप्रतितत्स्वास्थ्यश्रवणसमुद्यदानंदोजनमेजयःपुनःप्रकृतामेवकथांपृच्छति । किंकृतमिति ॥ हेपितामहश्रेष्ठ ॥ ४३ ॥४४॥ तन्मयास्तत्परायणाः ॥ ४५ ॥ भृगुंभृगुपुत्रंधियेत्यर्थः ॥ ॥ ४६ ॥ एतत्पर्यंतंगुरुवृत्तांतंवर्णयित्वाकाव्यवृत्तांतंवर्णयति । दशवर्षात्मकेकालेइति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

उपसंयांतिशरणंगच्छंति ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ स्वेनबृहस्पतिनाकृतंप्रणीतंजैनंधर्मंजैनशास्त्रंतान्दैत्यांश्छलेनबोधयंतामित्यर्थः ॥ ५४ ॥ बृहस्पतिमतमाह । भोदेवरिपवइति ॥ आततायिनोऽपि अहंतव्याइतिच्छेदः ॥ नहंतव्याइत्यर्थः ॥ ५५ ॥ वेदोक्ताऽपिहिंसानकर्तव्येत्याह द्विजैरिति ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ अर्धाऽधिकैःसप्तपंचाशद्भिःपद्यैरनंतरम् ॥ दैत्यानांशुक्रसंप्राप्तिर्वंचितानामिहोच्यते ॥ १ ॥ दैत्याऽध्ययनंबृहस्पतिकर्तृकंश्रुत्वादैत्या

देवानेवोपसंयांतिपुत्रामेचारुलोचने ॥ समयस्तेऽद्यसंपूर्णोजातोऽयंदशवार्षिकः ॥ ५० ॥ तस्माद्गच्छाम्यहंदेविद्रष्टुंयाज्यान्सुमध्यमे ॥ पुनरेवाऽऽगमिष्यामितवांतिकमनुद्रुतः ॥ ५१ ॥ तथेतितमुवाचाऽथजयंतीधर्मवित्तमा ॥ यथेष्टंगच्छधर्मज्ञनतेधर्मविलोपये ॥ ५२ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंकाव्योजगामत्वरितस्ततः ॥ अपश्यद्दानवानांसपाश्वेवाचस्पतिंतदा ॥ ५३ ॥ छद्मरूपधरंसौम्यंबोधयंतंछलेनतान् ॥ जैनंधर्मकृतंस्वेनयज्ञनिंदापरंतथा ॥ ५४ ॥ भोदेवरिपवःसत्यंब्रवीमिभवतांहितम् ॥ अहिंसापरमोधर्मोऽहंतव्याह्याततायिनः ॥ ५५ ॥ द्विजैर्भोगरतैर्वेदेदर्शितंहिंसनंपशोः ॥ जिह्वास्वादपरैःकामर्महिंसैवपरामता ॥ ५६ ॥ एवंविधानिवाक्यानिवेदशास्त्रपराणिच ॥ ब्रुवाणंगुरुमाकर्ण्यविस्मितोऽसौभृगोःसुतः ॥ ५७ ॥ चिंतयामासमनसाममद्वेष्योगुरुःकिल ॥ वंचिताःकिलधूर्तेनयाज्यामेनाऽत्रसंशयः ॥ ५८ ॥ धिग्लोभंपापबीजंवैनरकद्वारमूर्जितम् ॥ गुरुरप्यनृतंब्रूतेप्रेरितोयेनपाप्मना ॥ ५९ ॥ प्रमाणंवचनंयस्यसोऽपिपाखंडधारकः ॥ गुरुःसुराणांसर्वेषांधर्मशास्त्रप्रवर्तकः ॥ ६० ॥ किंकिंनलभतेलोभान्मलिनीकृतमानसः ॥ अन्योऽपिगुरुरप्येवंजातःपाखंडपंडितः ॥ ६१ ॥ शैलूषवेष्टितंसर्वंपरिगृह्यद्विजोत्तमः ॥ वंचयत्यतिसंमूढान्दैत्यान्याज्यान्ममाऽप्यसौ ॥ ६२ ॥ ॥ इतिश्रीदे०म०चतुर्थस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यमनसातानुवाचहसन्निव ॥ वंचितामत्स्वरूपेणदैत्याःकिंगुरुणाकिल ॥ १ ॥ अहंकाव्योगुरुश्चाऽयंदेवकार्यप्रसाधकः ॥ अनेनवंचितायूयंमद्याज्यानाऽत्रसंशयः ॥ २ ॥ माश्रद्धध्वंवचोऽस्याऽऽर्यादांभिकोऽयंमदाकृतिः ॥ अनुगच्छतमांयाज्यास्त्यजतैनंबृहस्पतिम् ॥ ३ ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यदृष्ट्वातौसदृशौपुनः ॥ विस्मयंपरमंजग्मुःकाव्योयमितिनिश्चिताः ॥ ४ ॥ सतान्वीक्ष्यसुसंभ्रांतान्गुरुर्वाक्यमुवाचह ॥ गुरुर्वोवंचयत्येवमद्रूपोऽयंबृहस्पतिः ॥ ५ ॥ प्राप्तोवंचयितुंयुष्मान्देवकार्यार्थसिद्धये ॥ माविश्वासंवचस्यस्यकुरुध्वंदैत्यसत्तमाः ॥ ६ ॥ प्राप्ताविद्यामयाशंभोर्युष्मानध्यापयामिताम् ॥ देवेभ्योविजयंनूनंकरिष्यामिनसंशयः ॥ ७ ॥ इतिश्रुत्वागुरोर्वाक्यंकाव्यरूपधरस्यते ॥ विश्वासंपरमंजग्मुःकाव्योऽयमितिनिश्चयात् ॥ ८ ॥ काव्येनबहुधातत्रबोधिताःकिलदानवाः ॥ बुबुधुर्नगुरोर्मायामोहिताःकालपर्ययात् ॥ ९ ॥

न्प्रतिशुक्रउवाचेत्याह । इतिसंचिंत्यमनसेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सतानिति ॥ सुसंभ्रांतान्मोहितान्मद्रूपेणाऽयंबृहस्पतिर्वोयुष्मान्वंचयति वंचयिष्यतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ काव्येनवास्तविकेन ॥ कालपर्ययात्कालवैपरीत्येनगुरोर्बृहस्पतेर्माययामोहिताइत्यर्थः ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १० ॥ ११ ॥ तंगुरुंबृहस्पतिंशुक्राचार्यरूपेणजगृहुः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ततःशप्तानिति ॥ भार्गवेणशप्तान्दैत्याञ्ज्ञात्वाक्रुद्धोऽयंशुक्रोदैत्याञ्छिवात्प्राप्तान्मंत्रा

एवंतेनिश्चयंकृत्वाततोभार्गवमब्रुवन् ॥ अयंगुरुर्नोधर्मात्माबुद्धिदश्चहितेरतः ॥ १० ॥ दशवर्षाणिसततमयंनःशास्तिभार्गवः ॥ गच्छत्वंकुहकोभासिनाऽस्माकंगुरुरप्युत ॥ ११ ॥ इत्युक्त्वाभार्गवंमूढानिर्भर्त्स्यचपुनःपुनः ॥ जगृहुस्तंगुरुंप्रीत्याप्रणिपत्याऽभिवाद्यच ॥१२॥ काव्यस्तुतन्मयान्दृष्ट्वाचुकोपाऽथशशापच ॥ दैत्यान्विबोधितान्मत्वागुरुणाचातिवंचितान् ॥ १३ ॥ यस्मान्मयाबोधितावैगृह्णीयुर्नचमेवचः ॥ तस्मात्प्रनष्टसंज्ञावैपराभवमवाप्स्यथ ॥ ॥ १४ ॥ मदवज्ञाफलंकामंस्वल्पेकालेह्यवाप्स्यथ ॥ तदाऽस्यकपटंसर्वंपरिज्ञातंभविष्यति ॥ १५ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाऽसौजगामाऽऽशुभार्गवः क्रोधसंयुतः ॥ बृहस्पतिर्मुदंप्राप्यतस्थौतत्रसमाहितः ॥ १६ ॥ ततःशप्तान्गुरुर्ज्ञात्वादैत्यांस्तान्भार्गवेणहि ॥ जगामतरसात्यक्त्वास्वरूपंस्वंविधायच॥ ॥ १७ ॥ गत्वोवाचतदाशक्रंकृतंकार्यंमयाध्रुवम् ॥ शप्ताःशुक्रेणतेदैत्यामयात्यक्ताःपुनःकिल॥१८॥निराधाराःकृतानूनंयतध्वंसुरसत्तमाः॥संग्रामार्थंमहाभागशापदग्धामयाकृताः ॥ १९ ॥ इतिश्रुत्वागुरोर्वाक्यंमघवामुदमाप्तवान् ॥ जहृषुश्चसुराःसर्वेप्रतिपूज्यबृहस्पतिम् ॥ २०॥ संग्रामायमतिंचक्रुःसंविचार्यमिथःपुनः ॥ निर्ययुर्मिलिताःसर्वेदानवाऽभिमुखाःसुराः ॥ २१ ॥ सुरान्समुद्यताञ्ज्ञात्वाकृतोद्योगान्महाबलान् ॥ अंतर्हितंगुरुंचैवबभूवुश्चिंतयाऽन्विताः ॥ २२ ॥ परस्परमथोचुस्तेमोहितास्तस्यमायया ॥ संप्रसाद्योमहात्माचयातोऽसौरुष्टमानसः ॥ २३ ॥ वंचयित्वागतःपापोगुरुःकपटपंडितः ॥ भ्रातृस्त्रीलंभनःप्रायोमलिनोंऽतर्बहिःशुचिः ॥ २४ ॥ किंकुर्मःक्वचगच्छामःकथंकाव्यंप्रकोपितम् ॥ कुर्वीमहिसहायार्थंप्रसन्नंहृष्टमानसम् ॥ २५ ॥ इतिसंचिंत्यतेसर्वेमिलिताभयकंपिताः ॥ प्रह्लादंपुरतःकृत्वाजग्मुस्तेभार्गवंपुनः ॥ २६ ॥ प्रणेमुश्चरणौतस्यमुनेर्मौनभृतस्तदा ॥ भार्गवस्तानुवाचाथरोषसंरक्तलोचनः ॥ २७ ॥ मयाप्रबोधितायूयंमोहितागुरुमायया ॥ नगृहीतंवचोयोग्यंतदायाज्याहितंशुचि ॥ २८ ॥ तदाऽवगणितश्चाऽहंभवद्भिस्तद्वशंगतैः ॥ प्राप्तंनूनंमदोन्मत्तैर्ममाऽवमानजंफलम् ॥ २९ ॥ तत्रगच्छतसद्भ्रष्टायत्रासौकपटाकृतिः ॥ वंचकःसुरकार्यार्थीनाऽहंतद्वद्धिवंचकः ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ एवंब्रुवंतंशुक्रंतुवाक्यंसंदिग्धयागिरा ॥ प्रह्लादस्तंतदोवाचगृहीत्वाचरणौततः ॥ ३१ ॥ प्रह्लादउवाच ॥ भार्गतवाऽद्यसमायातान्याज्यानस्मांस्तथाऽऽतुरान् ॥ त्यक्तुंनार्हसिसर्वज्ञत्वद्धितांस्तनयान्हिनः ॥ ३२ ॥ गतेत्वयितुमंत्रार्थंशैलूषेणदुरात्मना ॥ त्वद्वेषमधुराऽऽलापैर्वयंतेनप्रवंचिताः ॥ ३३ ॥ अज्ञानकृतदोषेणनैवकुप्यतिशांतिमान् ॥ सर्वज्ञस्त्वंविजानासिचित्तंनःप्रवणंत्वयि ॥ ३४ ॥

त्रोपदेक्ष्यतीतिकृतकार्योऽहमितिमत्वाजगामेत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ अंतर्मलिनःकपटी ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ हेयाज्याः ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ शैलुषेणत्वद्वेषधारिणाबृहस्पतिना ॥ ३३ ॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ अद्येति ॥ यद्यप्यहंमहादेवात्प्राप्तमंत्रस्तथाऽपिभवतामयंपराजयकालोस्त्यतःकालयोगाद्देवैर्जिताःसंतःसकृदेकवारंपाता लंप्रतिपत्स्यथ गमिष्यथेत्यर्थः ॥ ४३ ॥ तदेवस्पष्टमाह प्राप्तःपर्यायकालइति ॥ व्यत्ययकालइत्यर्थः ॥ ४४ ॥ मूर्धनिदेवानाक्रम्यतेषांमस्तकेचरणंदत्त्वेत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ इदं

ज्ञात्वानस्तपसाभावंत्यजकोपंमहामते ॥ ब्रुवंतिमुनयःसर्वेक्षणकोपाहिसाधवः ॥ ३५ ॥ जलंस्वभावतःशीतंवह्न्यातपसमागमात् ॥ भवत्युष्णंवियोगा च्चशीतत्वमनुगच्छति ॥३६॥क्रोधश्चांडालरूपोवैत्यक्तव्यःसर्वथाबुधैः॥ तस्माद्रोषंपरित्यज्यप्रसादंकुरुसुव्रत॥३७॥ यदिनत्यजसिक्रोधंत्यजस्यस्मान्सु दुःखितान् ॥ त्वयात्यक्तामहाभागगमिष्यामोरसातलम् ॥ ३८ ॥ व्यासउवाच ॥ प्रह्लादस्यवचःश्रुत्वाभार्गवोज्ञानचक्षुषा ॥ विलोक्यसुमनाभूत्वातानु वाचहसन्निव ॥३९॥नभेतव्यंनगंतव्यंदानवावारसातलम् ॥ रक्षयिष्यामिवोयाज्यान्मंत्रैरवितथैःकिल॥४०॥ हितंसत्यंब्रवीम्यद्यशृणुध्वंतत्तुनिश्चयम् ॥ वचनंममधर्मज्ञाःश्रुतंयद्ब्रह्मणःपुरा ॥४१॥ अवश्यंभाविनोभावाःप्रभवंतिशुभाऽशुभाः ॥ दैवंनचाऽन्यथाकर्तुंक्षमःकोऽपिधरातले ॥ ४२ ॥ अद्यमंदबलायू यंकालयोगादसंशयम् ॥ देवैर्जिताःसकृच्चाऽपिपातालंप्रतिपत्स्यथ ॥४३॥ प्राप्तःपर्यायकालोवइतिब्रह्माऽभ्यभाषत ॥ भुक्तंराज्यंभवद्भिश्चपूर्णंसर्वंसमृद्धि मत् ॥४४॥ युगानिदशपूर्णानिदेवानाक्रम्यमूर्धनि ॥ दैवयोगाच्चयुष्माभिर्भुक्तंत्रैलोक्यमूर्जितम् ॥ ४५ ॥ सावर्णिकेमनौराज्यंपुनस्तत्तुभविष्यति ॥ पौत्र स्त्रैलोक्यविजयीराज्यंप्राप्स्यतितेबलिः॥४६॥यदावामनरूपेणहृतंदेवेनविष्णुना ॥ तदैवचभवत्पौत्रःप्रोक्तोदेवेनजिष्णुना ॥ ४७ ॥ हृतंयेनबलेराज्यंदेव वांछार्थसिद्धये ॥ त्वमिंद्रोभविताचाग्रेस्थितेसावर्णिकेमनौ ॥ ४८ ॥ भार्गवउवाच ॥ इत्युक्तोहरिणापौत्रस्तवप्रह्लादसांप्रतम् ॥ अदृश्यःसर्वभूतानांगुप्तश्च रतिभीतवत् ॥४९॥ एकदावासवेनासौबलिर्गर्दभरूपभाक् ॥ शून्येगृहेस्थितःकामंभयभीतःशतक्रतोः ॥५०॥पृष्टश्चबहुधातेनवासवेनबलिस्तदा ॥ कि मर्थंगार्दभंरूपंकृतवान्दैत्यपुंगव॥५१॥भोक्तात्वंसर्वलोकस्यदैत्यानांचप्रशासिता ॥ "नलज्जाखररूपेणतवराक्षससत्तम ॥ " तस्यतद्वचनंश्रुत्वादैत्यराजो बलिस्तदा॥५२॥प्रोवाचवचनंशक्रंकोऽत्रशोकःशतक्रतो ॥ यथाविष्णुर्महातेजामत्स्यकच्छपतांगतः ॥५३॥ तथाऽहंखररूपेणसंस्थितःकालयोगतः ॥ यथात्वंकमलेलीनःसंस्थितोब्रह्महत्यया ॥५४॥ पीडितश्चतथाह्यद्यस्थितोऽहंखररूपधृक् ॥ दैवाधीनस्यकिंदुःखंकिंसुखंपाकशासन ॥५५॥ कालःकरो तिवैनूनंयदिच्छतियथातथा ॥ भार्गवउवाच ॥ ॥ इतितौबलिदेवेशौकृत्वासंविदमुत्तमाम् ॥५६॥ प्रबोधंप्रापतुःकामंयथास्थानंचजग्मतुः ॥ इत्येतत्तेसमा ख्यातामयादैवबलिष्ठता ॥५७॥ दैवाऽऽधीनंजगत्सर्वंसदेवासुरमानुषम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ छ ॥

वामनरूपेणहरिणाऽपिपूर्वमुक्तमस्तीत्याह । यदेति ॥ हृतमिति ॥ राज्यमित्यर्थः ॥ ४७ ॥४८ ॥ पौत्रस्तवेति ॥ बलिरित्यर्थः ॥ इतिवामनवाक्यम् ॥ तवपौत्रोबलिःश्रुत्वाभीतवत्सर्व भूतानामदृश्यःसन्गुप्तश्चरतीत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अर्धश्लोकाऽधिकैरेकसप्ततिश्लोकवर्यकैः ॥ देवदानवयोर्युद्धशांतिर्देव्याकृतोच्यते ॥ १ ॥ युद्धेयुष्माभिःकृतेऽपिजयोनभविष्यति ॥ किंतुपराजयएवेतिभार्गववाक्यंश्रुत्वाप्रह्लादोदैत्यानुवाचेत्याह। इतितस्येति॥१॥२॥दैवंकिमिति ॥ अनुकूलंप्रतिकूलंवेत्यर्थः ॥ ३ ॥ यत्त्वयोक्तंदैवंप्रतिकूलंवर्ततेजयोनभविष्यतीतितदेतद्भाषणंनिरुद्यमानांपौरुषहीनानांभवति पराक्रमवद्भिस्तुपौरुषमेवप्रधानतयामंतव्यमदृष्टंतुकवावर्ततेकिंदृष्टंवर्ततेकेनवानिर्मितमिति केनदृष्टंनैवाऽदृष्टमस्तीतिभावः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ भवत्अभवदित्यर्थः ॥ आगमशास्त्रस्यानित्यत्वादागमाऽभावः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ शक्तिदर्शननायिकेइति ॥ शैवशाक्तसौरगाणेशवैष्णवनास्तिकमतप्रतिपादकानिषड्दर्शनानिसंति ॥ तत्रशक्तिदर्शनस्यनायिकातन्मतस्यमुख्यत्वेनप्रतिपाद्याश्रीभुवनेश्वरीदेवताऽस्तीतितदेतत्षड्दर्शनपूजायांस्पष्टं तदभिप्रायेणोच्यते । शक्तिदर्शननायिकेइति ॥ दशतत्त्वात्मिकेमातरिति ॥ शैवशाक्तसौरवैष्णवत्रैपुरादिमतभेदेनतत्त्वान्यनेकानिसंति ॥ तत्रशक्तिदर्शनमतेश्रीभुवनेश्वर्यादशतत्त्वानिसंति ॥ क्वचिन्नवतत्त्वान्यपि ॥ तदुक्तंशारदायाम् ॥ निवृत्त्याद्याःकलाःपंचततोविंदुःकलापुनः ॥ नादः

॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाभार्गवस्यमहात्मनः ॥ प्रह्लादस्तुसुसंहृष्टोबभूवनृपनंदनः ॥१॥ ज्ञात्वादैवंबलिष्ठंचप्रह्लादस्तानुवाचह ॥ कृतेऽपियुद्धेनजयोभविष्यतिकदाचन ॥२॥ तदातेजयिनःप्रोचुर्दानवामदगर्विताः॥संग्रामस्तुप्रकर्तव्योदैवंकिंनविदामहे ॥ ३ ॥ निरुद्यमानांदैवंहिप्रधानमसुराऽधिप ॥ केनदृष्टंक्वादृष्टंकीदृशंकेननिर्मितम्॥४॥तस्माद्युद्धंकरिष्यामोबलमास्थायसांप्रतम्॥भवाग्रेदैत्यवर्यत्वंसर्वज्ञोऽसिमहामते ॥५॥ इत्युक्तस्तैस्तदाराजन्प्रह्लादःप्रवलारिहा॥सेनानीश्चतदाभूत्वादेवान्युद्धेसमाह्वयत् ॥ ६ ॥ तेऽपितत्रासुरान्दृष्ट्वासंग्रामेसमुपस्थितान् ॥ सर्वेसंभृतसंभारादेवास्तान्समयोधयन् ॥७॥संग्रामस्तुतदाघोरःशक्रप्रह्लादयोर्भवत् ॥ पूर्णेवर्षशतंतत्रमुनीनांविस्मयावहः ॥८॥ वर्तमानेमहायुद्धेशुक्रेणप्रतिपालिताः ॥ जयमापुस्तदादैत्याःप्रह्लादप्रमुखानृप॥९॥तदैवेंद्रोगुरोर्वाक्यात्सर्वदुःखविनाशिनीम्॥सस्मारमनसादेवींमुक्तिदांपरमांशिवाम्॥१०॥इंद्रउवाच॥जयदेविमहामायेशूलधारिणिचांबिके॥शंखचक्रगदापद्मखड्गहस्तेऽभयप्रदे॥११॥नमस्तेभुवनेशानिशक्तिदर्शननायिके॥दशतत्त्वात्मिकेमातर्महाबिंदुस्वरूपिणि ॥१२॥ महाकुंडलिनीरूपेसच्चिदानंदरूपिणि ॥ प्राणाऽग्निहोत्रविद्येतेनमोदीपशिखात्मिके ॥१३॥ पंचकोशांतरगतेपुच्छब्रह्मस्वरूपिणि ॥ आनंदकलिकेमातःसर्वोपनिषदर्चिते ॥१४॥मातःप्रसादसुमुखीभवहीनसत्त्वांस्त्रायस्वनोजननिदैत्यपराजितान्वै ॥ त्वंदेविनःशरणदाभुवनेप्रमाणाशक्ताऽसिदुःखशमनेऽखिलवीर्ययुक्ते ॥१५॥

शक्तिःसदापूर्वःशिवश्चप्रकृतेर्विंदुरिति ॥ तत्वशब्देनसर्वप्रपंचस्ययत्रांतर्भावस्तत्तत्त्वमुच्यते ॥ तथाच तदभिप्रायेणोच्यते दशतत्त्वात्मिकेमातरिति ॥ महाबिंदुस्वरूपिणि सितशोणबिंदुयुगलमिश्रणाज्जायमानोमिश्रबिंदुर्महाबिंदुरितिकामकलारहस्येस्पष्टम् ॥ तद्व्याख्यायांचाऽस्माभिर्विशदीकृतं तदभिप्रायेणोच्यतेमहाबिंदुस्वरूपिणीति ॥ साम्यावस्थमायाविशिष्टब्रह्ममहाबिंदुस्तत्स्वरूपिणी ॥ १२ ॥ प्राणाऽग्निहोत्रविद्येतइति ॥ प्राणाऽग्निहोत्रप्रपंचयागाख्यौद्वौयागौतयोर्द्वयोरपिदेवताभुवनेश्वरी ॥ तदेतत्तंत्रेषुस्पष्टं तदभिप्रायेणोच्यते प्राणाग्निहोत्रविद्येति ॥ तद्देवतेत्यर्थः ॥ नमोदीपशिखात्मिकेइति ॥ दीपशिखावन्हिशिखातदात्मिकेइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिःतस्यमध्येवह्निशिखाअणीयोर्ध्वाव्यवस्थिता ॥ नीलतोयदमध्यस्थाविद्युल्लेखेवभास्वरेति ॥ १३ ॥ पुच्छब्रह्मस्वरूपिणीति ॥ ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठेतिवाक्योक्ताऽऽनंदमयकोशपुच्छभूतब्रह्मरूपिणीत्यर्थः ॥ सर्वोपनिषदर्चितेइति ॥ सर्वेवेदायत्पदमामनंतितपांसिसर्वाणीतिश्रुतेः ॥ १४ ॥ हीनसत्त्वान्हीनपराक्रमान् ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दुःखान्वितेति ॥ अन्येयेनध्यायंतितेदुःखान्विताश्चतेअविगतशोकभयाश्चेतिकर्मधारयः ॥ तथाभवंति मोक्षार्थिनोयेध्यायंतीत्यनुषंगः ॥ १६ ॥ त्वंदेविविश्वेति ॥ आर्तिहरःप्रतापोय स्याः ॥ सत्त्वगुणंविनारक्षणाऽभावस्तमोगुणंविनासंहाराऽभावोमातुस्तुपुत्रविषयेसत्त्वगुणएवाऽस्तितवतुजगज्जनन्याजगतोरक्षणान्मारणाच्चोभयगुणवत्त्वमस्तीतितवैतादृशविलक्षणचरितं

ध्यायंतियेऽपिसुखिनोनितरांभवंतिदुःखान्विताविगतशोकभयास्तथाऽन्ये ॥ मोक्षाऽर्थिनोविगतमानविमुक्तसंगाःसंसारवारिधिजलंप्रतरंतिसंतः॥ १६ ॥ त्वंदेविविश्वजननिप्रथितप्रभावासंरक्षणार्थमुदिताऽऽर्तिहरप्रतापा ॥ संहर्तुमेतदखिलंकिलकालरूपाकोवेत्तितेऽवचरितंननुमंदबुद्धिः ॥ १७ ॥ ब्रह्माहरश्च हरिदश्वरथोहरिश्चइंद्रोयमोऽथवरुणोऽग्निसमीरणौच ॥ ज्ञातुंक्षमानमुनयोऽपिमहानुभावायस्याःप्रभावमतुलंनिगमाऽऽगमाश्च ॥ १८ ॥ धन्यास्तएवत वभक्तिपरामहांतःसंसारदुःखरहिताःसुखसिंधुमग्नाः ॥ येभक्तिभावरहितानकदापिदुःखांभोधिंजनिक्षयतरंगमुमेतरंति ॥ १९ ॥ येवीज्यमानाःसितचा मरैश्चक्रीडंतिधन्याःशिविकाधिरूढाः ॥ तैःपूजितात्वंकिलपूर्वदेहेनानोपहारैरितिचिंतयामि ॥ २० ॥ येपूज्यमानावरवारणस्थाविलासिनीवृंदविलासयु क्ताः ॥ सामंतकैश्चोपनतैर्व्रजंतिमन्येहितैस्त्वंकिलपूजिताऽसि ॥ २१ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतामघवतादेवीविश्वेश्वरीतदा ॥ प्रादुर्बभूवतरसासिंहारू ढाचतुर्भुजा ॥ २२ ॥ शंखचक्रगदापद्मान्बिभ्रतीचारुलोचना ॥ रक्तांबरधरादेवीदिव्यमाल्यविभूषणा ॥ २३ ॥ तानुवाचसुरान्देवीप्रसन्नवदनागिरा ॥ भयंत्यजंतुभोदेवाःशंविधास्येकिलाऽधुना ॥ २४ ॥ इत्युक्त्वासातदादेवीसिंहाऽऽरूढाऽतिसुंदरी ॥ जगामतरसातत्रयत्रदैत्यामदान्विताः ॥ २५ ॥ प्रह्ला दप्रमुखाःसर्वेदृष्ट्वादेवींपुरःस्थिताम् ॥ ऊचुःपरस्परंभीताःकिंकर्तव्यमितस्तदा ॥२६॥ देवंनारायणंचाऽत्रसंप्राप्ताचंडिकाकिल ॥ महिषांतकरीनूनंचंडमुं डविनाशिनी ॥२७॥ निहनिष्यतिनःसर्वानंबिकानाऽत्रसंशयः ॥ वक्रदृष्ट्याययापूर्वंनिहतौमधुकैटभौ ॥ २८ ॥ एवंचिंताऽऽतुरान्वीक्ष्यप्रह्लादस्तानु वाचह ॥ योद्धव्यंनाऽथगंतव्यंपलाय्यदानवोत्तमाः ॥ २९ ॥ नमुचिस्तानुवाचाऽथपलायनपरानिह ॥ हनिष्यतिजगन्मातारुषिताकिलहेतिभिः॥३०॥ तथाकुरुमहाभागयथादुःखंनजायते ॥ व्रजामोऽद्यैवपातालंतांस्तुत्वातदनुज्ञया ॥३१॥ प्रह्लादउवाच॥ स्तौमिदेवींमहामायांसृष्टिस्थित्यंतकारिणीम्॥स र्वेषांजननींशक्तिंभक्तानामभयंकरीम् ॥ ३२ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाविष्णुभक्तस्तुप्रह्लादःपरमार्थवित्॥तुष्टावजगतांधात्रींकृतांजलिपुटस्तदा॥३३॥

कोवेदनकोपीत्यर्थः॥१७॥माभून्मच्चरितंमंदबुद्धीनांविषयःसुबुद्धीनांतुविषयःस्यादितिचेत्तत्राऽह । ब्रह्माहरश्चेति॥एतेमहांतोऽपिनजानंतितदैतदपेक्षयाऽधिकबुद्धिमंतःकेसंति॥तस्मादेतद्विषये सर्वएवमंदबुद्धयइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः यतोवाचोनिवर्तंतइति ॥ १८ ॥ धन्याइति ॥ येभक्तिरहितास्ते जनिक्षयतरंगवंतंदुःखांभोधिं हेउमे नकदापितरंति ॥१९॥२०॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ नयोद्धव्यं किंतुपलाय्यगंतव्यमित्यन्वयः ॥ २९ ॥ ३० ॥ दैत्यान्प्रत्युक्त्वाप्रह्लादंप्रत्याह । महाभागेति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मालासर्पवदिति ॥ मालायांयथासर्पभ्रमस्तद्वच्चराचरंयस्यांभातितस्यैसर्वाधिष्ठानब्रह्मरूपायैन्हींकारमूर्तयेश्रीभुवनेश्वर्यैनमोस्त्वित्यर्थः ॥ ३४ ॥ अन्येब्रह्मविष्ण्वादयः ॥ ३५ ॥ सर्वेषामिति ॥ देवादीनांदैत्यादीनांचेत्यर्थः ॥ तदास्वेनकृतेषुदेवेषुदैत्येषुकोभेदः ॥ भेदोनाऽपेक्षितइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ नतथेति ॥ त्वयिसर्वसमुद्भवेसर्व

मालासर्पवदाभातियस्यांसर्वंचराचरम् ॥ सर्वाधिष्ठानरूपायैतस्यैह्रींमूर्तयेनमः ॥ ३४ ॥ त्वत्तःसर्वमिदंविश्वंस्थावरंजंगमंतथा ॥ अन्येनिमित्तमात्रास्तेकर्तारस्तवनिर्मिताः ॥ ३५ ॥ नमोदेविमहामायेसर्वेषांजननीस्मृता ॥ कोभेदस्तवदेवेषुदैत्येषुस्वकृतेषुच ॥३६॥ मातुःपुत्रेषुकोभेदोऽप्यशुभेषुशुभेषुच ॥ तथैवदेवेष्वस्मासुनकर्तव्यस्त्वयाऽधुना ॥ ३७ ॥ यादृशास्तादृशामातःसुतास्तेदानवाःकिल॥यतस्त्वंविश्वजननीपुराणेषुप्रकीर्तिता ॥३८॥ तेऽपिस्वार्थपरानूनंतथैववयमप्युत ॥ नांतरंदैत्यसुरयोर्भेदोऽयंमोहसंभवः ॥ ३९ ॥ धनदारादिभोगेषुवयंसक्तादिवानिशम् ॥ तथैवदेवादेवेशिकोभेदोऽसुरदेवयोः ॥ ४० ॥ तेपिकश्यपदायादावयंतत्संभवाःकिल ॥ कुतोविरोधसंभूतिर्जातामातस्तवाऽधुना ॥ ४१ ॥ नतथाविहितंमातस्त्वयिसर्वसमुद्भवे ॥ साम्यतैव त्वयास्थाप्यादेवेष्वस्मासुचैवहि ॥ ४२ ॥ गुणव्यतिकरात्सर्वेसमुत्पन्नाःसुराऽसुराः ॥ गुणान्विताभवेयुस्तेकथंदेहभृतोऽमराः ॥ ४३ ॥ कामःक्रोधश्चलोभश्चसर्वदेहेषुसंस्थिताः ॥ वर्ततेसर्वदातस्मात्कोऽविरोधीभवेज्जनः ॥ ४४ ॥ त्वयामिथोविरोधोऽयंकल्पितःकिलकौतुकात् ॥ मन्यामहेविभेदेननूनंयुद्धदिदृक्षया ॥ ४५ ॥ अन्यथाखलुभ्रातॄणांविरोधःकीदृशोऽनघे ॥ त्वंचेन्नेच्छसिचामुंडेवीक्षितुंकलहंकिल॥४६॥जानामिधर्मंधर्मज्ञेवेद्मिचाऽहंशतक्रतुम् ॥ तथाऽपिकलहोऽस्माकंभोगार्थंदेविसर्वदा॥४७॥एकःकोऽपिनशास्ताऽस्तिसंसारेत्वांविनांऽबिके ॥ स्पृहावतस्तुकःकर्तुंक्षमतेवचनंबुधः ॥४८॥ देवाऽसुरैरयंसिंधुर्मथितःसमयेक्वचित् ॥ विष्णुनाविहितोभेदःसुधारत्नच्छलेनवै ॥४९॥ त्वयाऽसौकल्पितःशौरिःपालकत्वेजगद्गुरुः ॥ तेनलक्ष्मीःस्वयंलोभाद्गृहीताऽमरसुंदरी ॥ ५० ॥ ऐरावतस्तथेंद्रेणपारिजातोऽथकामधुक् ॥ उच्चैःश्रवाःसुरैःसर्वंगृहीतंवैष्णवेच्छया॥५१॥अनयंतादृशंकृत्वाजातादेवास्तुसाधवः ॥ "अन्यायिनःसुरानूनंपश्यत्वंधर्मलक्षणम् ॥" संस्थापिताःसुरानूनंविष्णुनाबहुमानिना ॥ ५२ ॥ नूनंदैत्याःपराभूवन्पश्यत्वंधर्मलक्षणम् ॥ क्वधर्मःकीदृशोधर्मःक्वकार्यंक्वचसाधुता ॥ ५३ ॥ कथयामिचकस्याऽग्रेसिद्धंमैमांसिकंमतम् ॥ तार्किकायुक्तिवादज्ञाविधिज्ञावेदवादकाः ॥ ५४ ॥ उक्ताःसकर्तृकंविश्वंविवदंतेजडात्मकाः ॥ कर्ताभवतिचेदस्मिन्संसारेविततेकिल ॥ ५५ ॥

कारणेनतथाविरोधकर्तृत्वंविहितंशास्त्रेणेत्यर्थः ॥ तर्हिकिंतत्राऽऽह । साम्यतैवेति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ कःअविरोधीतिच्छेदः ॥ तवगुणमहिमाएवाऽयंयाद्विरोधकर्तृत्वमितिभावः ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ संस्थापिताः ॥ स्वस्थानेष्वितिशेषः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ मैमांसिकमिति ॥ निरीश्वरंमतमित्यर्थः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

क्रोधेनाऽह । वेदेनैकमतिरिति ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ शप्तोगर्भगतोबालइति ॥ अयंभावः ॥ बृहस्पतिनाकनिष्ठबंधोरानर्तस्यकामिनीभुक्ता ॥ चकाराज्ज्येष्ठबंधोरुतथ्यस्यका मिनीममतानाम्नीगर्भवतीबलाद्भुक्ता ॥ तत्रयदातांबलान्मैथुनार्थंजग्राह तदागर्भस्थबालउवाचाऽत्रस्थलमतिसंकुचितंद्वितीयोगर्भोनस्थास्यति ततोमैथुनंमाकुर्विंतितदगणयित्वातथैवमै थुनंकृतवांस्तद्वीर्यगर्भस्थबालःपदाघातेनबहिश्चिक्षेप ततःक्रुद्धोबृहस्पतिस्त्वमंधोभवेतिगर्भस्थबालकंशशापेतिभारतेइयंकथाप्रसिद्धा ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

विरोधःकीदृशस्तत्रचैककर्मणिवैमिथः ॥ वेदेनैकमतिःकस्माच्छास्त्रेष्वपितथापुनः ॥५६॥ नैकवाक्यंवचस्तेषामपिवेदविदांपुनः ॥ यतःस्वार्थपरंसर्वंजग त्स्थावरजंगमम् ॥ ५७ ॥ निःस्पृहःकोऽपिसंसारेनभवेन्नभविष्यति ॥ शशिनाऽथगुरोर्भार्याहृताज्ञात्वाबलादपि ॥ ५८ ॥ गौतमस्यतथेंद्रेणजानताधर्म निश्चयम् ॥ गुरुणाऽनुजभार्याचभुक्तागर्भवतीबलात् ॥ ५९ ॥ शप्तोगर्भगतोबालःकृतश्चांधस्तथापुनः ॥ विष्णुनाचशिराश्छिन्नंराहोश्चक्रेणवैबलात् ॥ ॥ ६० ॥ अपराधंविनाकामंतदासत्त्ववतांबिके ॥ पौत्रोधर्मवतांशूरःसत्यव्रतपरायणः ॥ ६१ ॥ यज्वादानपतिःशांतःसर्वज्ञःसर्वपूजकः ॥ कृत्वाऽथवाम नंरूपंहरिणाछलवेदिना ॥ ६२ ॥ वंचितोऽसौबलिःसर्वंहृतंराज्यंपुराकिल ॥ तथाऽपिदेवान्धर्मस्थान्प्रवदंतिमनीषिणः ॥ ६३ ॥ वदंतिचाटुवादांश्चधर्म वादाञ्जयंगताः ॥ एवंज्ञात्वाजगन्मातर्यथेच्छसितथाकुरु ॥ ६४ ॥ शरणादानवाःसर्वेजहिवारक्षवापुनः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ सर्वेगच्छतपातालंतत्रवासंय थेप्सितम् ॥ ६५ ॥ कुरुध्वंदानवाःसर्वेनिर्भयागतमन्यवः ॥ कालःप्रतीक्ष्योयुष्माभिःकारणंसशुभेऽशुभे ॥ ६६ ॥ सुनिर्वेदपराणांहिसुखंसर्वत्रसर्वदा ॥ त्रैलोक्यस्यचराज्येऽपिनसुखंलोभचेतसाम् ॥ ६७ ॥ कृतेऽपिनसुखंपूर्णंसस्पृहाणांफलैरपि ॥ तस्मात्त्यक्त्वामहीमेतांप्रयांत्वद्यमहीतलम् ॥ ६८ ॥ म माऽऽज्ञांपुरतःकृत्वासर्वेविगतकल्मषाः ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंदेव्यास्तथेत्युक्त्वारसातलम् ॥ ६९ ॥ प्रणम्यदानवाःसर्वेगताःशक्त्याऽभिरक्षि ताः ॥ अंतर्दधेततोदेवीदेवाःस्वभुवनंगताः ॥ ७० ॥ त्यक्त्वावैरंस्थिताःसर्वेतेतदादेवदानवाः ॥ एतदाख्यानमखिलंयःशृणोतिवदत्यथ ॥७१॥ सर्वदुः खविनिर्मुक्तःप्रयातिपदमुत्तमम् ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ भृगुशापान्मुनि श्रेष्ठहरेरद्भुतकर्मणः ॥ अवताराःकथंजाताःकस्मिन्मन्वंतरेविभो॥१॥विस्तराद्वदधर्मज्ञअवतारकथांहरेः ॥ पापनाशकरींब्रह्मञ्छ्रुतांसर्वसुखावहाम् ॥२॥ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिअवतारान्हरेर्यथा ॥ यस्मिन्मन्वंतरेजातायुगेयस्मिन्नराधिप ॥ ३ ॥

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ कृतेऽपिकृतयुगेऽपिसस्पृहाणांनराणांफलैःप्राप्तैरपिनसुखमित्यन्वयः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेपंचदशोऽध्याय ॥ १५ ॥ ॥ सप्तविंशतिभिःश्लोकैःपरांवायाःपरेच्छया ॥ हरेर्नानाऽवतारास्तुजायंतइतिकथ्यते ॥ १ ॥ भृगुशापंसोपस्करंश्रुत्वाऽनंतरंतच्छापेनविष्णोरवताराःकस्मिन्कस्मिन्युगेकति जाताइतिपृच्छति । भृगुशापादिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४ ॥ चाक्षुषेमनुसंभवेचाक्षुषमन्वंतरे ॥ ५ ॥ अथेति ॥ द्वितीयेयुगेवैवस्वतेमन्वंतरे इत्यर्थः ॥ अत्रेःपुत्रत्वं हरिरगमत्सदत्तात्रेयाऽवतारइत्यर्थः ॥ ६ ॥ अत्रेर्भार्ययावृताःप्रार्थिताः ॥ ७ ॥ तदेवाऽऽह। अनसूयेति ॥ ८ ॥ ९ ॥ द्विधारूपोमनुष्यसिंहात्मकः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ एतेसर्वेऽप्यवताराःश्रीभगवतीच्छयैवजायंते तदधीनैवैतेषांचेष्टेत्याह। भवंतीति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ यस्यामायारूपायाउपाधितस्त्रिधाब्रह्मविष्णुरुद्रभेदेनसात्त्विकराजसतामसभेदेनवाभातिपरमात्मा सामा

येनरूपेणयत्कार्यंकृतंनारायणेनवै ॥तत्सर्वंनृपवक्ष्यामिसंक्षेपेणतवाऽधुना॥ ४ ॥ धर्मस्यैवाऽवतारोऽभूच्चाक्षुषेमनुसंभवे ॥ नरनारायणौधर्मपुत्रौख्यातौमहीतले ॥ ५ ॥ अथवैवस्वताख्येऽस्मिन्द्वितीयेतुयुगेपुनः ॥ दत्तात्रेयोऽवतारोऽत्रेःपुत्रत्वमगमद्धरिः ॥ ६ ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रस्त्रयोऽमीदेवसत्तमाः ॥ पुत्रत्वमगमन्देवास्तस्याऽत्रेर्भार्ययावृताः ॥ ७ ॥ अनसूयाऽत्रिपत्नीचसतीनामुत्तमासती ॥ ययासंप्रार्थितादेवाःपुत्रत्वमगमंस्त्रयः ॥ ८ ॥ ब्रह्माऽभूत्सोमरूपस्तुदत्तात्रेयोहरिःस्वयम् ॥ दुर्वासारुद्ररूपोऽसौपुत्रत्वंतेप्रपेदिरे ॥ ९ ॥ नृसिंहस्याऽवताररस्तुदेवकार्यार्थसिद्धये ॥ चतुर्थेतुयुगेजातोद्विधारूपोमनोहरः ॥ ॥ १० ॥ हिरण्यकशिपोःसम्यग्वधायभगवान्हरिः ॥ चक्रेरूपंनारसिंहंदेवानांविस्मयप्रदम् ॥ ११ ॥ बलेर्नियमनार्थायश्रेष्ठत्रेतायुगेतथा ॥ चकाररूपंभगवान्वामनंकश्यपान्मुनेः ॥ १२ ॥ छलयित्वामखेभूपंराज्यंतस्यजहारह ॥ पातालेस्थापयामासबलिंवामनरूपधृक् ॥ १३ ॥ युगेचैकोनविंशेऽथत्रेताख्येभगवान्हरिः ॥ जमदग्निसुतोजातोरामोनाममहाबलः ॥ १४ ॥ क्षत्रियांतकरःश्रीमान्सत्यवादीजितेंद्रियः ॥ दत्तवान्मेदिनींकृत्स्नांकश्यपायमहात्मने ॥१५॥ योवैपरशुरामाख्योहरेरद्भुतकर्मणः ॥ अवताररस्तुराजेंद्रकथितःपापनाशनः ॥ १६ ॥ त्रेतायुगेरघोर्वंशेरामोदशरथात्मजः ॥ नरनारायणांशौद्वौजातौभुविमहाबलौ ॥ १७ ॥ अष्टाविंशेयुगेशस्तौद्वापरेऽर्जुनशौरिणौ ॥ धराभाराऽवतारार्थंजातौकृष्णाऽर्जुनौभुवि ॥ १८ ॥ कृतवंतौमहायुद्धंकुरुक्षेत्रेऽतिदारुणम् ॥ एवंयुगेयुगेराजन्नवताराहरेःकिल ॥ १९ ॥ भवंतिबहवःकामंप्रकृतेरनुरूपतः ॥ प्रकृतेरखिलंसर्ववशमेतज्जगत्त्रयम् ॥ २० ॥ यथेच्छतितथैवेयंभ्रामयत्यनिशंजगत् ॥ पुरुषस्यप्रियार्थंसारचयत्यखिलंजगत् ॥ २१ ॥ सृष्ट्वापुराहिभगवाञ्जगदेतच्चराचरम् ॥ सर्वादिःसर्वगश्चाऽसौदुर्ज्ञेयःपरमोऽव्ययः ॥ २२ ॥ निरालंबोनिराकारोनिःस्पृहश्चपरात्परः ॥ उपाधितस्त्रिधाभातियस्याःसाप्रकृतिःपरा ॥ २३ ॥ उत्पत्तिकालयोगात्साभिन्नाभातिशिवातदा ॥ साविश्वंकुरुतेकामंसापालयतिकामदा ॥ २४ ॥ कल्पांतेसंहरत्येवत्रिरूपाविश्वमोहिनी ॥ तयायुक्तोऽसृजद्ब्रह्माविष्णुःपातितयाऽन्वितः ॥ २५ ॥ रुद्रःसंहरतेकामंतयासंमिलितःशिवः ॥ साचैवोत्पाद्यकाकुत्स्थंपुरावैनृपसत्तमम् ॥२६॥

याप्रकृतिशब्दवाच्येत्यर्थः ॥ २३ ॥ ननुसाकिंब्रह्मणोभिन्नानित्याह। उत्पत्तीति ॥ उत्पत्तिकालेयदासाबहिर्मुखतांप्रयाति तदासाभिन्नाभाति ॥ अंतर्मुखातुब्रह्माऽभिन्नैववर्ततइतिभावः ॥ साविश्वमिति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एवंपूर्वोक्तप्रकारेण ॥ २७ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलके चतुर्थस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ पंचाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथसुरांगनाः ॥ नारायणाश्रमेप्राप्ताः कथातासामिहोच्यते ॥ १ ॥ एतावत्पर्यंतंप्रासंगिकींकथांसमाप्यप्रकृतांनारायणाश्रमेप्राप्तानांवारांगनानांकथांपृच्छति । वारांगनाइति ॥ वारांगनाभिःस्मरातुराभिःप्रार्थितोनारायणस्तावारांगनाः शप्तुंप्रवृत्तो नरेणनिवारितइतिपूर्वमुक्तंतदनंतरंनारायणःकिंकृतवानितितद्ब्रूहीतिसमुदायार्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ आवाभ्यांनरनारायणाभ्याम् ॥ ९ ॥ १० ॥

कुत्रचित्स्थापयामासदानवानांजयायच ॥ एवमस्मिंश्चसंसारेसुखदुःखान्विताःकिल ॥ २७ ॥ भवंतिप्राणिनःसर्वेविधितंत्रनियंत्रिताः ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ ॥ वारांगनास्त्वयाख्यातानरनारायणाऽऽश्रमे ॥ एकंनारायणंशांतंकामयानाःस्मरातुराः ॥ १ ॥ शप्तुकामस्तदाजातोमुनिर्नारायणश्चताः ॥ निवारितोनरेणाऽथभ्रात्राधर्मविदानृप ॥ २ ॥ किंकृतंमुनिनातेनव्यसनेसमुपस्थिते ॥ ताभिःसंकल्पितेनाऽर्थकामार्थाभिर्भृशंमुने ॥ ३ ॥ शक्रेणोत्पादिताभिश्चबहुप्रार्थनयापुनः ॥ याचितेनविवाहार्थंकिंकृतंतेनजिष्णुना ॥ ४ ॥ इत्येतच्छ्रोतुमिच्छामिचरितंतस्यमोक्षदम् ॥ नारायणस्यमेब्रूहिविस्तरेणपितामह ॥५॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामियथातस्यमहात्मनः ॥ धर्मपुत्रस्यधर्मज्ञविस्तरेणवदामिते ॥ ६ ॥ शप्तुकामस्तुसंदृष्टोनरेणाऽथयदाहरिः ॥ वारितोऽसौसमाश्वास्यमुनिर्नारायणस्तदा ॥ ७ ॥ शांतकोपस्तदोवाच तास्तपस्वीमहामुनिः ॥ स्मितपूर्वमिदंवाक्यंमधुरंधर्मनंदनः ॥ ८ ॥ अस्मिञ्जन्मनिचार्वंग्यःकृतसंकल्पवानहम् ॥ आवाभ्यांचनकर्तव्यःसर्वथादारसंग्रहः ॥ ९ ॥ तस्माद्गच्छंतुत्रिदिवंकृपांकृत्वाममोपरि ॥ धर्मज्ञानप्रकुर्वंतिव्रतभंगंपरस्यवै ॥ १० ॥ शृंगारेऽस्मिन्रसेनूनंस्थायीभावोरतिःस्मृतः ॥ कथंकरोमिसंबंधंतदभावेसुलोचनाः ॥ ११ ॥ कारणेनविनाकार्यंनभवेदितिनिश्चयः ॥ कविभिःकथितंशास्त्रेस्थायीभावोरसःकिल ॥ १२ ॥ धन्यःसुचारुसर्वांगःसभाग्योऽहंधरातले ॥ प्रीतिपात्रंयतोजातोभवतीनामकृत्रिमम् ॥ १३ ॥ भवतीभिःकृपांकृत्वारक्षणीयंव्रतंमम ॥ भविष्यामिमहाभागाःपतिरप्यन्यजन्मनि ॥ १४ ॥ अष्टाविंशेविशालाक्ष्योद्वापरेऽस्मिन्धरातले ॥ देवानांकार्यसिद्ध्यर्थंप्रभविष्यामिसर्वथा ॥ १५ ॥ तदाभवत्योमद्दाराःप्राप्यजन्मपृथक्पृथक् ॥ भूपतीनांसुताभूत्वापत्नीभावंगमिष्यथ ॥ १६ ॥ इत्याश्वास्यहरिस्तास्तुप्रतिश्रुत्यपरिग्रहम् ॥ व्यसर्जयत्सभगवाञ्जग्मुश्चविगतज्वराः ॥ १७ ॥ एवंविसर्जितास्तेनगताःस्वर्गंतदांगनाः ॥ शक्रायकथयामासुःकारणंसकलंपुनः ॥ १८ ॥ आश्रुत्यमघवांस्ताभ्योवृत्तांतंतस्यविस्तरात् ॥ तुष्टावतंमहात्मानंनारीर्दृष्ट्वातथोर्वशीः ॥ १९ ॥

शृंगारेऽस्मिन्निति ॥ अस्मिञ्छृंगाररसेस्थायीभावोरससस्तुरतिरेव ॥ साचमयाब्रह्मचर्यव्रतधारणेनत्यक्ता ॥ ततोभवतीनां संबंधंकथंकरोमिकरिष्येइत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ उर्वशीरितिबहुवचनेनउर्वशीसदृशत्वात्पंचाशदधिकषोडशसहस्रपरिमितास्तासांपरिचर्यार्थंयाउत्पादिताःपूर्वमुक्तास्तागृह्यंते ॥ तथाचनारायणेनोत्पादितस्त्रीभिःसहोर्वशीस्वर्गंप्रतिप्रेषितेतिभावः ॥ १९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ अनार्येऽश्रेष्ठे ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ चौराणांनहृतःकथमिति ॥ एवंतादृशसामर्थ्यवतांचोराणांभारः

॥ इंद्रउवाच ॥ अहोधैर्यमुनेःकामंतथैवचतपोबलम् ॥ येनोर्वश्यःस्वतपसातादृग्रूपाःप्रकल्पिताः ॥ २० ॥ इतिस्तुत्वाप्रसन्नात्माबभूवसुरराट्ततः ॥ नारायणोऽपिधर्मात्मातपस्याभिरतोऽभवत् ॥ २१ ॥ इत्येतत्सर्वमाख्यातंमुनेर्वृत्तांतमद्भुतम् ॥ नारायणस्यसकलंनरस्यचमहामुने ॥२२॥ तौहिकृष्णार्जुनौधीरौभूभारहरणायच ॥ जातौतौभरतश्रेष्ठभृगोःशापवशादिह ॥२३॥ राजोवाच ॥ कृष्णाऽवतारचरितंविस्तरेणवदस्वमे ॥ संदेहोममचित्तेऽस्तितंनिवारयमानद ॥२४॥ ययोःपुत्रत्वमापन्नौहर्यनंतौमहाबलौ ॥ देवकीवसुदेवौतौदुःखभाजौकथंमुने ॥ २५ ॥ कंसेननिगडेबद्धौपीडितौबहुवत्सरान् ॥ ययोःपुत्रोहरिःसाक्षात्तपसातोषितोऽभवत् ॥ २६ ॥ जातोऽसौमथुरायांतुगोकुलेसकथंगतः ॥ कंसंहत्वाद्वारवत्यांनिवासंकृतवान्कथम् ॥ २७ ॥ पित्रादिसेवितंदेशंसमृद्धंपावनंकिल ॥ त्यक्त्वादेशांतरेऽनार्येगतवान्सकथंहरिः ॥ २८ ॥ कुलंचद्विजशापेनकथमुत्सादितंहरेः ॥ भाराऽवतारणंकृत्वावासुदेवःसनातनः ॥ २९ ॥ देहंमुमोचतरसाजगामचदिवंहरिः ॥ पापिष्ठानांचभारेणव्याकुलाऽभूच्चमेदिनी ॥ ३० ॥ तेहतावासुदेवेनपार्थेनामितकर्मणा ॥ लुंठितायैर्हरेःपत्न्यस्तेकथंननिपातिताः ॥ ३१ ॥ भीष्मोद्रोणस्तथाकर्णोबाह्लीकोप्यथपार्थिवः ॥ वैराटोऽथविकर्णश्चधृष्टद्युम्नश्चपार्थिवः ॥ ३२ ॥ सोमदत्तादयःसर्वेनिहताःसमरेनृप ॥ तेषामुत्तारितोभारश्चौराणांनहृतःकथम् ॥३३॥ कृष्णपत्न्यःकथंदुःखंप्राप्ताःप्रांतेपतिव्रताः ॥ संदेहोऽयंमुनिश्रेष्ठचित्तेमेपरिवर्तते ॥३४॥ वसुदेवस्तुधर्मात्मापुत्रदुःखेनतापितः॥त्यक्तवान्सकथंप्राणानपमृत्युंजगामह ॥३५॥ पांडवाधर्मसंयुक्ताःकृष्णेचनिरताःसदा ॥ तेकथंदुःखभोक्तारोह्यभवन्मुनिसत्तम ॥ ३६ ॥ द्रौपदीचमहाभागाकथंदुःखस्यभागिनी॥वेदीमध्याच्चसंजातालक्ष्म्यंशसंभवाकिल ॥३७॥ सभायांचसमानीतारजोदोषसमन्विता ॥ बालादुःशासनेनाऽथकेशग्रहणकर्शिता ॥३८॥ पीडितासिंधुराज्ञाऽथवनमध्यगतासती ॥ तथैवकीचकेनाऽपिपीडितारुदतीभृशम् ॥३९॥ पुत्राःपंचैवतस्यास्तुनिहताद्रौणिनागृहे॥सुभद्रायाःसुतोयुद्धेबालएवनिपातितः ॥ ४० ॥ तथाचदेवकीपुत्राःषट्कंसेननिषूदिताः ॥ समर्थेनाऽपिहरिणादैवंनकृतमन्यथा ॥४१॥ यादवानांतथाशापःप्रभासेनिधनंपुनः ॥ कुलक्षयस्तथातीव्रस्तत्पत्नीनांचलुंठनम् ॥४२॥ विष्णुनाचेश्वरेणापिसाक्षान्नारायणेनच॥ उग्रसेनस्यसेवावैदासवत्सततंकृता ॥४३॥ संदेहोऽयंमहाभागतत्रनारायणेमुनौ ॥ सर्वजंतुसमानत्वंव्यवहारेनिरंतरम् ॥ ४४ ॥ हर्षशोकादयोभावाःसर्वेषांसदृशाःकथम् ॥ ईश्वरस्यहरेर्जाताकथमप्यन्यथागतिः ॥ ४५ ॥

कथंनहृतः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ समर्थेनेश्वरेणहरिणैतेषांदैवमन्यथाकथंनकृतं नहीश्वरस्याकिंचिद्दुर्घटमस्तीतिभावः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ नरनारायणेपरमेश्वरेमुनौसर्वजंतुसमानत्वंसर्वजीवसमानत्वंकथमितिसंदेहः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ छ ॥ षष्टिश्लोकैर्दुष्टराजभराक्रांता तुमेदिनी ॥ ब्रह्माणंशरणंगत्वास्वदुःखंसान्यवेदयत् ॥ १ ॥ कृष्णावतारंवर्णयेतिराजवाक्यंश्रुत्वाव्यासआह । शृणुराजन्निति ॥ तत्रकृष्णावतारस्यकारणंनान्यदस्ति किंतुश्रीसच्चिदा

तस्माद्विस्तरतोब्रूहिकृष्णस्यचरितंमहत् ॥ अलौकिकेनहरिणाकृतंकर्ममहीतले ॥४६॥ हताआयुःक्षयेदैत्याःक्लेशेनमहतापुनः॥कैश्वर्यशक्तिःप्रथिताहरिणामुनिसत्तम ॥४७॥ रुक्मिणीहरणेनूनंगृहीत्वाऽथपलायनम् ॥ कृतंहिवासुदेवेनचौरवच्चरितंतदा ॥ ४८ ॥ मथुरामंडलंत्यक्त्वासमृद्धंकुलसंमतम्॥जरासंधभयात्तेनद्वारकागमनंकृतम् ॥ ४९ ॥ तदाकेनाऽपिनज्ञातोभगवान्हरिरीश्वरः ॥ किंचित्प्रब्रूहिमेब्रह्मन्कारणंव्रजगोपनम् ॥५०॥ एतेचान्येचबहवःसंदेहावासवीसुत ॥ नाशयाऽद्यमहाभागसर्वज्ञोऽसिद्विजोत्तम ॥ ५१ ॥ गोप्यस्तथैकःसंदेहोहृदयान्नानिवर्तते ॥ पांचाल्याःपंचभर्तृत्वंलोकेकिंनजुगुप्सितम् ॥ ५२ ॥ सदाचारंप्रमाणंहिप्रवदंतिमनीषिणः ॥ पशुधर्मःकथंतैस्तुसमर्थैरपिसंश्रितः ॥५३॥ भीष्मेणापिकृतंकिंवादेवरूपेणभूतले॥ गोलकौतौसमुत्पाद्ययत्तुवंशस्यरक्षणम् ॥५४॥ धिग्धर्मनिर्णयःकामंमुनिभिःपरिदर्शितः ॥ येनकेनाप्युपायेनपुत्रोत्पादनलक्षणः ॥५५॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिकृष्णस्यचरितंमहत्॥अवतारकारणंचैवदेव्याश्चरितमद्भुतम्॥१॥धरैकदाभराक्रांतारुदतीचातिकर्शिता ॥ गोरूपधारिणीदीनाभीताऽगच्छत्रिविष्टपम् ॥२॥ पृष्टाशक्रेणकिंतेऽद्यवर्ततेभयमित्यथ॥केनवैपीडिताऽसित्वंकिंतेदुःखंवसुंधरे ॥३॥ तच्छ्रुत्वेलातदोवाचशृणुदेवेशमेऽखिलम् ॥ दुःखंपृच्छसियत्त्वंमेभाराक्रांताऽस्मिमानद ॥ ४ ॥ जरासंधोमहापापीमागधेषुपतिर्मम॥ शिशुपालस्तथाचैद्यःकाशिराजःप्रतापवान् ॥५॥ रुक्मीचबलवान्कंसोनरकश्चमहाबलः॥शाल्वःसौभपतिःक्रूरःकेशीधेनुकवत्सकौ॥६॥ सर्वधर्मविहीनाश्चपरस्परविरोधिनः॥पापाचारामदोन्मत्ताःकालरूपाश्चपार्थिवाः॥७॥तैरहंपीडिताशक्रभाराक्रांताऽक्षमाविभो ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिचिंतामेमहतीस्थिता॥८॥ पीडिताऽहंवराहेणविष्णुनाप्रभविष्णुना॥ शक्रजानीहिहरिणादुःखाद्दुःखतरंगता॥९॥यतोऽहंदुष्टदैत्येनकश्यपस्याऽऽत्मजेनवै॥हृताऽहंहिरण्याक्षेणमग्नातस्मिन्महार्णवे॥१०॥तदासूकररूपेणविष्णुनानिहतोऽप्यसौ॥उद्धृताऽहंवराहेणस्थापिताहिस्थिराकृता ॥११॥ नोचेद्रसातलेस्वस्थास्थितास्यांसुखशायिनी॥नशक्ताऽस्म्यद्यदेवेशभारंवोढुंदुरात्मनाम् ॥१२॥ अग्रेदुष्टःसमायातिह्यष्टाविंशस्तथाकलिः ॥ तदाऽहंपीडिताशक्रगंताऽस्म्याऽऽशुरसातलम्॥१३॥

नंदरूपिण्याःसकलजगन्नियंत्र्याःसृष्ट्यादिपंचकृत्यविधायिन्याःसकलांतर्यामिन्याभगवत्यालीलयैवजगत्स्रष्टुंप्रवृत्तायाःप्रेरणैवकारणमित्यभिप्रायेणैवाऽऽह । अवतारकारणंचेति ॥ देव्याश्चरितंप्रेरणरूपम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ इलापृथ्वी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ पीडिताऽहंवराहेणेति ॥ यदिवराहेणाऽहंजलान्नोद्धृतास्यांतदाकिमित्येतादृशंदुःखंममभवेत्तस्मात्तेनैवाऽहंपीडितेत्यर्थः ॥ ९ ॥ तदेवाऽह । यतोऽहमिति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ हेभूर्हेधरणि ॥ १८ ॥ इतिब्रह्मवाक्यंश्रुत्वाधरोवाच । कलिरायातीति ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ तथेतिइंद्रंवादित्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ सुरश्रेष्ठेतींद्रंप्रति

तस्मात्त्वंदेवदेवेशदुःखरूपार्णवस्यच ॥ पारदोभवभारंमेहरपादौनमामिते ॥ १४ ॥ इंद्रउवाच ॥ इलेकिंतेकरोम्यद्यब्रह्माणंशरणंव्रज ॥ अहंतत्राऽऽगमिष्यामिसतेदुःखंहरिष्यति ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वात्वरितापृथ्वीब्रह्मलोकंगतातदा ॥ शक्रोऽपिपृष्ठतःप्राप्तःसर्वदेवपुरःसरः ॥ १६ ॥ सुरभीमागतांतत्रदृष्ट्वोवाच प्रजापतिः ॥ महींज्ञात्वामहाराजध्यानेनसमुपस्थिताम् ॥१७॥ कस्माद्रुदसिकल्याणिकिंतेदुःखंवदाऽधुना ॥ पीडिताऽसिचकेनत्वंपापाचारेणभूर्वद ॥ ॥ १८ ॥ धरोवाच ॥ कलिरायातिदुष्टोऽयंबिभेमितद्भयादहम् ॥ पापाचाराःप्रजास्तत्रभविष्यंतिजगत्पते ॥ १९ ॥ राजानश्चदुराचाराःपरस्परविरोधिनः ॥ चौरकर्मरताःसर्वेराक्षसाःपूर्णवैरिणः ॥ २० ॥ तान्हत्वानृपतीन्भारंहरमेऽद्यपितामह ॥ पीडिताऽस्मिमहाराजसैन्यभारेणभूभृताम् ॥ २१ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ नाऽहंशक्तस्तथादेविभारावतरणेतव ॥ गच्छावःसदनंविष्णोर्देवदेवस्यचक्रिणः ॥ २२ ॥ सतेभारापनोदंवैकरिष्यतिजनार्दनः ॥ पूर्वंमयापितेकार्यंचिंतितंसुविचार्यच ॥ २३ ॥ तत्रगच्छसुरश्रेष्ठयत्रदेवोजनार्दनः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वावेदकर्ताऽसौपुरस्कृत्यसुरांश्चगाम् ॥ २४ ॥ जगामाविष्णुसदनंहंसारूढश्चतुर्मुखः ॥ तुष्टाववेदवाक्यैश्चभक्तिप्रवणमानसः ॥ २५ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सहस्रशीर्षात्वमसिसहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ त्वंवेदपुरुषःपूर्वंदेवदेवःसनातनः ॥ २६ ॥ भूतपूर्वंभविष्यच्चवर्तमानंचयद्विभो ॥ अमरत्वंत्वयादत्तमस्माकंचरमापते ॥ २७ ॥ एतावान्महिमातेऽस्तिकोनवेत्तिजगत्त्रये ॥ त्वंकर्ताऽप्यविताहंतात्वंसर्वगतिरीश्वरः ॥ २८ ॥ व्यासउवाच ॥ इतीडितःप्रभुर्विष्णुःप्रसन्नोगरुडध्वजः ॥ दर्शनंचददौतेभ्योब्रह्मादिभ्योऽमलाशयः ॥ ॥ २९ ॥ पप्रच्छस्वागतंदेवान्प्रसन्नवदनोहरिः ॥ ततस्त्वागमनेतेषांकारणंचसविस्तरम् ॥ ३० ॥ तमुवाचाब्जजोनत्वाधरादुःखंचसंस्मरन् ॥ भाराऽवतरणंविष्णोकर्तव्यंतेजनार्दन ॥ ३१ ॥ भुविधृत्वाऽवतारंत्वंद्वापरांतेसमागते ॥ हत्वादुष्टान्नृपानुर्व्याहरभारंदयानिधे ॥ ३२ ॥ विष्णुरुवाच ॥ नाऽहंस्वतंत्रएवाऽत्रनब्रह्मानशिवस्तथा ॥ नेंद्रोऽग्निर्नयमस्त्वष्टानसूर्योवरुणस्तथा ॥ ३३ ॥ योगमायावशेसर्वमिदंस्थावरजंगमम् ॥ ब्रह्मादिस्तंबपर्यंतंग्रथितंगुणसूत्रतः ॥३४॥ यथासास्वेच्छयापूर्वंकर्तुमिच्छतिसुव्रत ॥ तथाकरोतिसुहितावयंसर्वेऽपितद्वशाः ॥ ३५ ॥ यद्यहंस्यांस्वतंत्रोवैचिंतयंतुधियाकिल ॥ कुतोऽभवंमत्स्यवपुःकच्छपोवामहार्णवे ॥ ३६ ॥ तिर्यग्योनिषुकोभोगःकाकीर्तिःकिंसुखंपुनः ॥ किंपुण्यंकिंफलंतत्रक्षुद्रयोनिगतस्यमे ॥ ३७ ॥

ब्रह्मणोवाक्यम् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ भूतपूर्वमिति ॥ पूर्वंभूतमित्यर्थः॥२७॥कोनवेत्ति कोऽपिनवेत्तीत्यर्थः॥२८॥२९॥ कारणंपप्रच्छेत्यन्वयः॥३०॥तेत्वयेत्यर्थः ॥३१॥३२॥३३॥ योगमायेति ॥ गुणत्रयजनकसाम्यावस्थामायांऽतर्मुखायोगमायेत्युच्यते ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ यद्यहमिति । नहिस्वतंत्रःकश्चित्स्वेच्छयादुःखांभोधौनिमज्जति ॥ ३६ ॥ ननुभोगाद्यर्थंत्वमवतारंगृहीतवानितिचेत्तत्राऽऽह । तिर्यग्योनिष्विति ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३८ ॥ क्षतजैरुधिरैः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ आखेटकं मृगहननादिरूपम् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ददात्येवमिति ॥ दैवमित्यनुषंगः ॥

कोलोवाऽथनृसिंहोवावामनोवाऽभवंकुतः ॥ जमदग्निसुतःकस्मात्संभवेयंपितामह ॥ ३८ ॥ नृशंसंवाकथंकर्मकृतवानस्मिभूतले ॥ क्षतजैस्तुह्रदान्सर्वा न्पूरयेयंकथंपुनः ॥ ३९ । तत्कथंजमदग्नेश्चपुत्रोभूत्वाद्विजोत्तमः ॥ क्षत्रियान्हतवानाजौनिर्दयोगर्भगानपि ॥ ४० ॥ रामोभूत्वाऽथदेवेंद्रप्राविशद्दंडकं वनम् ॥ पदातिश्चीरवासाश्चजटावल्कलवान्पुनः ॥ ४१ ॥ असहायोह्यपाथेयोभीषणेनिर्जनेवने ॥ कुर्वन्नाखेटकंतत्रव्यचरंविगतत्रपः ॥ ४२ ॥ नज्ञात वान्मृगंहैमंमाययापिहितस्तदा ॥ उटजेजानकींत्यक्त्वानिर्गतस्तत्पदानुगः ॥ ४३ ॥ लक्ष्मणोऽपिचतांत्यक्त्वानिर्गतोमत्पदानुगः ॥ वारितोऽपिमया ऽत्यर्थमोहितःप्राकृतैर्गुणैः ॥ ४४ ॥ भिक्षुरूपंततःकृत्वारावणःकपटाकृतिः ॥ जहारतरसारक्षोजानकींशोककर्शिताम् ॥४५॥ दुःखार्तेनमयातत्ररुदितंच वनेवने ॥ सुग्रीवेणचमित्रत्वंकृतंकार्यवशान्मया ॥ ४६ ॥ अन्यायेनहतोवालीशापाच्चैवनिवारितः ॥ सहायान्वानरान्कृत्वालंकायांचलितंपुनः ॥ ४७ ॥ बद्धोऽहंनागपाशैश्चलक्ष्मणश्चममानुजः ॥ विसंज्ञौपतितौदृष्ट्वावानराविस्मयंगताः ॥ ४८ ॥ गरुडेनतदाऽऽगत्यमोचितौभ्रातरौकिल ॥ चिंतामेमहतीजा तादैवंकिंवाकरिष्यति ॥४९॥ हृतंराज्यंवनेवासोमृतस्तातःप्रियाहृता ॥ युद्धंकष्टंददात्येवमग्रेकिंवाकरिष्यति ॥ ५० ॥ प्रथमंतुमहादुःखमराज्यस्यवना श्रयम् ॥ राजपुत्र्याऽन्वितस्यैवधनहीनस्यमेसुराः ॥ ५१ ॥ वराटिकाऽपिपित्रामेनदत्तावननिर्गमे ॥ पदातिरसहायोऽहंधनहीनश्चनिर्गतः ॥ ५२ ॥ च तुर्दशैववर्षाणिनीतानिचतदामया ॥ क्षात्रंधर्मंपरित्यज्यव्याधवृत्त्यामहावने ॥ ५३ ॥ दैवाद्युद्धेजयःप्राप्तोनिहतोऽसौमहासुरः ॥ आनीताचपुनःसीताप्रा प्ताऽयोध्यामयातथा ॥५४॥ वर्षाणिकतिचित्तत्रसुखंसंसारसंभवम् ॥ प्राप्तंराज्यंचसंपूर्णंकोसलानाधितिष्ठता ॥५५॥ पुरैवंवर्तमानेनप्राप्तराज्येनवैतदा ॥ लोकापवादभीतेनत्यक्तासीतावनेमया ॥ ५६ ॥ कांताविरहजंदुःखंपुनःप्राप्तंदुरासदम् ॥ पातालंसागतापश्चाद्धरांभित्त्वाधरात्मजा ॥ ५७ ॥ एवंरामाव तारेऽपिदुःखंप्राप्तंनिरंतरम् ॥ परतंत्रेणमेनूनंस्वतंत्रःकोभवेत्तदा ॥५८॥ पश्चात्कालवशात्प्राप्तःस्वर्गोमेभ्रातृभिःसह ॥ परतंत्रस्यकावार्तावक्तव्याविबुधेन वै ॥५९॥ परतंत्रोस्म्यहंनूनंपद्मयोनेनिशामय ॥ तथात्वमपिरुद्रश्चसर्वेचान्येसुरोत्तमाः॥६०॥इतिश्रीदे०महापुराणेचतुर्थस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

दैवंविधिर्ददातीत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ एवंरामावतारेइति ॥ इयंकथारामायणादिषुप्रसिद्धाऽस्तीतिनाविविच्यदर्शिता ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ नह्येतादृशींविडंब नांस्वतंत्रःकश्चित्स्वेच्छयास्वस्यकरोति ॥ तस्मादनेकदृष्टांतैरेवंविधैर्विजानीहि हेब्रह्मन्नहंपरतंत्रएवेतिसमुदायार्थः ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेचतुर्थ स्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ छ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अर्धाधिकैश्चषट्चत्वारिंशत्पद्यैर्हविर्भुजः ॥ विष्ण्वाज्ञयापराशक्तेःस्तुतिंचक्रुःसमाहिताः ॥ १ ॥ इत्युक्त्वेति ॥ हेब्रह्मन्नहमीश्वरइतिभ्रमस्तवास्तिनासौयुक्तइत्याह। यन्मायामोहितइति ॥ यन्मायामोहितोयद्यस्मात्परमात्मनोयामायाशक्तिस्तयामोहितःसर्वोजनस्तत्त्वंपरमात्मतत्त्वंनजानाति ॥ १ ॥ तयामाययाऽऽवृताआच्छादितावयम् ॥ तस्मात्तंजगद्गुरुंजगज्जनकंनस्मरामो मायाभ्रमणेनभ्रांताएवास्मेत्यर्थः ॥ ततश्चेतरजीववदस्माकंविद्यमानत्वान्नेश्वरत्वमितिभावः ॥ २ ॥ तदेवभ्रांतत्वंस्वस्याऽऽह। अहंविष्णुरिति ॥ ३ ॥ यन्मायेति ॥ यद्यस्मात्कारणादि त्यर्थः ॥ परवान्पराधीनइत्यर्थः ॥ तत्रदृष्टांतोयथादारुपांचालीकाष्ठपुत्तलीमायिकस्यवशेभवतितथाऽहंपराधीनोवर्तेइत्यर्थः ॥ ४ ॥ ननुसपरमात्माक्ववर्ततेकीदृशश्चाऽस्तीतिचेत्सव्यापकः सर्वत्रैवाऽस्तिसच्चिदानंदरूपः ॥ नचक्षुषासद्रष्टुंशक्योनिर्गुणत्वान्निरवयवत्वाच्च ॥ कथंतर्हितस्यध्यानादिकंकर्तव्यमितिचेत्तस्यपरमात्मनोयामुख्यामूर्तिस्तस्याध्यानेनैवेतिब्रूमः ॥ सामूर्तिः कथमस्तीतिचेत्तत्राऽऽह ।भवतापीति ॥ विभूतिर्मूर्तिरित्यर्थः ॥ तथाचयामणिद्वीपेपूर्वंभवतादृष्टाभगवतीसैवपरमात्मनोमुख्यमूर्तिरित्यर्थः ॥ ५ ॥ श्रुतानवचसाऽपिचेति ॥ यावत्पर्यंतंसा नदृष्टास्थितातावत्पर्यंतंवचसाऽपिनश्रुताऽतिरहस्यभूतेत्यर्थः ॥ भक्तानुग्रहार्थंपरमात्मनैवाकारविशेषोमायाविशिष्टब्रह्मणासंगृहीतइतितत्त्वम् ॥ मंदारविटपाःसंत्यस्मिन्निति व्युत्पत्त्याअर्श आद्यजंतोमंदारविटपशब्दः ॥ रासमंडलेरासःक्रीडाविशेषस्तस्यमंडलेस्थानेमणिद्वीपइत्यर्थः ॥ समाजेसर्वदेवतानामित्यर्थः ॥ ६ ॥ तस्मादिति ॥ यस्मादहंनेश्वरस्तस्मात्तामित्यर्थः ॥

॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुःपुनराहप्रजापतिम् ॥ यन्मायामोहितःसर्वस्तत्त्वंजानातिनोजनः॥१॥वयंमायावृताःकामंनस्मरामोजगद्गुरुम् ॥ परमंपुरुषंशांतंसच्चिदानंदमव्ययम् ॥२॥ अहंविष्णुरहंब्रह्माशिवोऽहमितिमोहिताः ॥ नजानीमोवयंधातःपरंवस्तुसनातनम् ॥ ३ ॥ यन्मायामोहितश्चाहं सदावर्तेपरात्मनः ॥ परवान्दारुपांचालीमायिकस्ययथावशे ॥ ४ ॥ भवताऽपितथादृष्टाविभूतिस्तस्यचाऽद्भुता ॥ कल्पाऽऽदौभवयुक्तेनमयाऽपिचसुधा र्णवे॥५॥मणिद्वीपेथमंदारविटपेरासमंडले॥समाजेतत्रसादृष्टाश्रुतानवचसापिच ॥६॥तस्मात्तांपरमांशक्तिंस्मरंत्वद्यसुराःशिवाम् ॥ सर्वकामप्रदांमायामा द्यांशक्तिंपरात्मनः ॥७॥ व्यासउवाच॥इत्युक्ताहरिणादेवाब्रह्माद्याभुवनेश्वरीम्॥सस्मरुर्मनसादेवींयोगमायांसनातनीम् ॥८॥स्मृतमात्रातदादेवीप्रत्यक्षंद र्शनंददौ ॥ पाशांकुशवराभीतिधरादेवीजपारुणा ॥ दृष्ट्वाप्रमुदितादेवास्तुष्टुवुस्तांसुदर्शनाम्॥९॥देवाऊचुः॥ऊर्णनाभाद्यथातंतुर्विस्फुलिंगाविभावसोः ॥ तथाजगद्यदेतस्यानिर्गतंतांनतावयम् ॥ १० ॥

आद्यांशक्तिंपरात्मनइति ॥ अत्रकेवलमायायाउपास्यत्वकथनेऽपितस्याब्रह्माश्रयंविहायाऽवस्थानाऽसंभवात्केवलायाग्रहणेऽपिमायाविशिष्टब्रह्मणएवग्रहणंभविष्यतीत्यभिप्रायेणक्वचित्केव लायाउपास्यत्वोक्तिरितिबोध्यम्॥स्पष्टीकृतंचैतदस्माभिःशक्तितत्त्वविमर्शिन्याम्॥सर्वथाऽपिब्रह्मोपासनाशक्तिसहितब्रह्मणएवयथातथाशक्त्युपासनाऽपिब्रह्मविशिष्टशक्तेरेवेतिनशक्त्युपास नायांब्रह्मांशत्यागइत्यसकृदावेदितमेवाधस्तात् ॥ मायाविशिष्टब्रह्मणएवभगवतीत्वात्तस्यचभागद्वयवत्त्वात्क्वचिद्ब्रह्मभागमादायवर्णनेक्वचिन्मायाभागमादायवर्णनेऽपिदोषाभावः ॥ अत एवसर्वत्रश्रुतिपुराणतंत्रादिषुक्वचिद्भगवत्याब्रह्मरूपत्वेनवर्णनंक्वचिन्मायारूपत्वेनवर्णनंसंगच्छते ॥ ७॥ भुवनेश्वरींमणिद्वीपेदृष्टांपरमात्मनोमूर्तिम् ॥ ८ ॥ पाशांकुशेति ॥ आयुधक्रमस्त्व स्माभिस्तृतीयस्कंधव्याख्यायामुक्तोवेदितव्यः ॥ ९ ॥ ऊर्णनाभादिति ॥ यथाऊर्णनाभात्कीटविशेषाच्चेतनादनायासेनतंतुर्जडोविजातीयउत्पद्यते ॥ यथावाविभावसोरग्नेरनायासेनसजा तीयाःस्फुलिंगाउत्पद्यंते ॥ तथाऽजगच्चेतनाऽचेतनात्मकमनायासेनतस्याभगवत्याःसकाशान्निर्गतंतांश्रीभुवनेश्वरींवयंनताःस्मेत्यर्थः ॥ तथाच श्रुतिः यथोर्णनाभिःसृजतेगृह्णतेचयथा पृथिव्यामोषधयःसंभवंति ॥ यथसतःपुरुषात्केशलोमानितथाऽक्षरात्संभवतीहविश्वमिति ॥ यथासुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिंगाःसहस्रशःप्रभवंतेसरूपाः ॥ तथाक्षराद्विविधाःसौम्यभावाः प्रजायंतेतत्रचैवाऽपियंतीतिच ॥१० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यन्मायेति ॥ यस्यामायाशक्त्याःसंक्लृप्तंसर्वंचराचरंजगद्भवतिस्वयंतुनिर्विकारैव ॥ तांचितंचिद्रूपांभुवनाधीशांभुवनेश्वरींकरुणार्णवांस्मरामः ॥ मायाशक्तीतिपदेनजगतोमिथ्यात्वंबोधितम् ॥ मायायामिथ्यात्वात् ॥ तथाचश्रुतिः ॥ त्रयमेतत्स्वप्नंसुषुप्तंमायामात्रंचिदेकरसोह्ययमात्मेति ॥ ११ ॥ यज्ज्ञानादिति ॥ यस्याभगवत्याज्ञानाद्भवनाशनंरज्जुज्ञानात्सर्पस्यनाशनमिवभवति तांसंविद्रूपांदेवींस्मरामः ॥ सास्मृतादेवीस्मरणेनिरंतरमस्माकंप्रचोदयात्प्रेरयतु ॥१२॥ अथदेव्यथर्वशिरसिस्थितांगायत्रींस्तोत्रप्रसंगेनाऽऽह । महालक्ष्म्यैचविद्महेइति ॥ अत्रपदद्वये चतुर्थीद्वितीयार्थेऽर्थस्तुस्पष्टएव ॥ १३ ॥ मह्याःपृथिव्याइत्यर्थः ॥ १४ ॥ यद्यंबुजाक्षिकमलाक्षि ॥ यदित्वंकदाचित्सुरान्देवान्नदयसेनदयांकरोषि तर्हितेरणमुखेशरैःप्रहर्तुंक्षमाःकिंनकथमपीत्यर्थः ॥ एतत्तवाऽनुग्रहंविनानक्षमाः कस्मिन्नपिकार्ये इत्येतत्त्वयैवगदितंबोधितम् ॥ ननुनिश्चयेन ॥ केनगदितमितिचेत्तत्राऽऽह । यक्षरूपंधृत्वेति ॥ अनेनचतलवकारोपनिषदुक्तकथास्मारिता॥तत्रहिदेवासुरसंग्रामेपरमेश्वरीप्रसादादेवदेवैर्जयेलब्धेतामगणय्याऽस्माकमेवाऽयंजयोस्माकमेवायंमहिमेत्यभिमानवंतोबभूवुः ॥ततस्तेषामभिमानखंडनपुरःसरमनुग्रहंकर्तुंयक्षरूपेणभगवतीप्रादुर्भूता ॥ ततःकिमिदंयक्षमस्तीतिपरीक्षार्थंप्रथममग्निर्गतः तमग्निंयक्षरूपाभगवत्युवाच कोऽसीति॥तामग्निराह॥ अग्निर्वाऽहमस्मिजातवेदावाअहमस्मीति ॥ ततोयक्षरूपिणी

यन्मायाशक्तिसंक्लृप्तंजगत्सर्वंचराचरम् ॥ तांचितंभुवनाधीशांस्मरामःकरुणार्णवाम् ॥ ११ ॥ यदज्ञानाद्भवोत्पत्तिर्यज्ज्ञानाद्भवनाशनम् ॥ संविद्रूपांचतांदेवींस्मरामःसाप्रचोदयात् ॥ १२ ॥ महालक्ष्म्यैचविद्महेसर्वशक्त्यैचधीमहि ॥ तन्नोदेवीप्रचोदयात् ॥ १३ ॥ मातर्नताःस्मभुवनार्तिहरेप्रसीदशंनोविधेहिकुरुकार्यमिदंदयार्द्रे ॥ भारंहरस्वविनिहत्यसुरारिवर्गंमह्यामहेश्वरिसतांकुरुशंभवानि ॥ १४ ॥ यद्यंबुजाक्षिदयसेनसुरान्कदाचित्किंतेक्षमारणमुखेऽसिशरैःप्रहर्तुम् ॥ एतत्त्वयैवगदितंननुयक्षरूपंधृत्वातृणंदहहुताशपदाभिलापैः ॥१५॥ कंसःकुजोऽथयवनेंद्रसुतश्चकेशीबाहद्रथोबकबकीखरशाल्वमुख्याः ॥ येऽन्येतथानृपतयोभुविसंतितांस्त्वंहत्वाहरस्वजगतोभरमाशुमातः ॥ १६ ॥ येविष्णुनाननिहताःकिलशंकरेणयेवाविगृह्यजलजाक्षिपुरंदरेण ॥ तेतेमुखंसुखकरंसुसमीक्षमाणास्संख्येशरैर्विनिहतानिजलीलयाते ॥ १७ ॥ शक्तिंविनाहरिहरप्रमुखाःसुराश्चनैवेश्वराविचलितुंतवदेवदेवि ॥ किंधारणाविरहितःप्रभुरप्यनंतोधर्तुंधरांचरजनीशकलावतंसे ॥ १८ ॥

प्रोवाचतस्मिंस्त्वयिकिंवीर्यमिति ॥ ततोऽग्निरुवाचइत्यपिइदंसर्वंदहेयं यदिदंपृथिव्यामिति॥ततोयक्षरूपंतस्मिंस्तृणंनिदधौ तस्याग्रेतृणंस्थापितवत् एतद्दहेतिचयक्षरूपमुवाच ॥ तत्तृणंदग्धुंजातवेदाःसर्वप्रकारेणोद्योगंकृतवांस्तथाऽपितत्तृणंदग्धुंनशशाकेत्येवंप्रकारेणवाग्विद्रयोरप्यभिमानखंडनोत्तरमुमारूपधारणेनतेषामनुग्रहःकृतइत्युक्तम् ॥ नह्येतत्तवानुग्रहंविनासंभवति ॥ तस्मादस्मासुतवदयाऽस्त्येवेतिभावः ॥ अक्षरार्थस्तुयक्षरूपंयजनीयरूपम् ॥ सर्वोत्तमतेजोमयरूपंधृत्वा हेहुताश तृणंदह इत्यादिपदाभिलापैःपदानामुच्चारणैर्गदितमित्यन्वयः ॥ स्पष्टीकृतंचैतदस्माभिःकेनोपनिषद्भाष्यटीकायांचंद्रिकाभिधानायाम् ॥ १५ ॥ कुजोभौमः ॥ यवनेंद्रसुतः कालीययवनः ॥ बकीपूतना ॥ खरःखराऽसुरः ॥ १६ ॥ कियांस्तवाऽनुग्रहोऽस्मासुवर्ततइतिकियद्वर्णनीयमित्याह । येविष्णुनाननिहताइति ॥ तेतेदैत्यास्तेतवसुखकरंमुखंसुसमीक्षमाणाःसंख्येयुद्धेलीलयात्वयाशरैर्विनिहताइत्यहोभगवत्याःसामर्थ्यमस्मासुचाव्याजकरुणेतिभावः ॥ १७ ॥ शक्तिंविनेति ॥ हेदेवदेवि हेरजनीशकलावतंसेचंद्रखंडमौले सर्वेसुरास्तवशक्तिंविनाचलितुमपिनेश्वराः ॥ नन्वनंतोधारणायुक्तोधरांविभर्तिनमच्छक्तियुक्तएवमन्येऽपि इतिचेत्सा धारणाकिंत्वच्छक्तेरन्याऽस्ति किंतुत्वच्छक्तिरेवेत्यभिप्रायेणाऽऽह। किंधारणाविरहितइति ॥ १८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





इत्थंदेवसंघस्तुत्युत्तरंपृथगिंद्रःस्तौति । वाचाविनेति ॥ हेभगवति वाचासरस्वत्याविनाविधिर्ब्रह्माविश्वंकर्तुमलंसमर्थोभवतीहकिमु नकिमपीत्यर्थः ॥ किंतुतेत्रयोऽपिप्रजेशास्ताभिःसरस्वती लक्ष्मीगौरीसंज्ञकाभिस्तवशक्तिभिर्युक्ताएवप्रभवःसमर्थाइत्यर्थः ॥१९॥ अथेंद्रस्तुत्यनंतरंविष्णुःस्तौति । कर्तुंप्रभुरिति ॥ जगत्कर्तुंप्रभुर्नद्रुहिणोनकदाचिदहंनापीश्वरःशिवस्तवकलारहित सन् ॥ किंच त्रिलोक्याःप्रभुत्वमपि कर्तुंनप्रभुरितिपूर्वानुषंगेणयोजनीयम् ॥ तथाविहर्तुंनाशितुमपिनप्रभुः ॥ किंतुहेसमस्तविभवेश्वरि ॥ नूनंनिश्चयेनत्वमेवभासि ॥ सर्वशक्त्यात्मनास र्वप्रभुत्वेनसर्वोत्कर्षेणेतिभावः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ यदुक्तंभवद्भिस्त्वयापूर्वंयथानिपातितादैत्यास्तथैवतेऽपिनाशयित

॥ इंद्रउवाच ॥ वाचाविनाविधिरलंभवतीहविश्वंकर्तुंहरिःकिमुरमारहितोऽथपातुम् ॥ संहर्तुमीशउमयोज्झितईश्वरःकिंतेताभिरेवसहिताःप्रभवःप्रजेशाः ॥ ॥ १९ ॥ विष्णुरुवाच ॥ कर्तुंप्रभुर्नद्रुहिणोनकदाचनाऽहंनाऽपीश्वरस्तवकलारहितस्त्रिलोक्याः ॥ कर्तुंप्रभुत्वमनघेऽत्रतथाविहर्तुंत्वंवैसमस्तविभवेश्वरिभा सिनूनम् ॥ २० ॥ व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीतानाहविबुधेश्वरान् ॥ किंतत्कार्यंवदंत्वद्यकरोमिविगतज्वराः ॥ २१ ॥ असाध्यमपिलोकेऽस्मिंस्त त्करोमिसुरेप्सितम् ॥ शंसंतुभवतांदुःखंधरायाश्चसुरोत्तमाः ॥ २२ ॥ देवाऊचुः ॥ वसुधेयंभराक्रांतासंप्राप्ताविबुधान्प्रति ॥ रुदतीवेपमानाचपीडिताद्दुष्ट भूभुजैः ॥ २३ ॥ भारापहरणंचास्याःकर्तव्यंभुवनेश्वरि ॥ देवानामीप्सितंकार्यमेतदेवाऽधुनाशिवे ॥ २४ ॥ घातितस्तुपुरामातस्त्वयामहिषरूपभृत् ॥ दानवोऽतिबलाक्रांतस्तत्सहायाश्चकोटिशः ॥ २५ ॥ तथाशुंभोनिशुंभश्चरक्तबीजस्तथापरः ॥ चंडमुंडौमहावीर्यौतथैवधूम्रलोचनः ॥ २६ ॥ दुर्मुखोदुः सहश्चैवकरालश्चातिवीर्यवान् ॥ अन्येचबहवःक्रूरास्त्वयैवचनिपातिताः ॥ २७ ॥ तथैवचसुरारींश्चजहिसर्वान्महीश्वरान् ॥ "भारंहरधरायाश्चदुर्धरंदुष्ट भूभुजाम् " ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तासातदादेवीदेवानाहांबिकाशिवा ॥ २८ ॥ संप्रहस्याऽसितापांगीमेघगंभीरयागिरा ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ मयेदंचिंति तंपूर्वमंशावतरणंसुराः ॥ २९ ॥ भारावतरणंचैवयथास्याद्दुष्टभूभुजाम् ॥ मयासर्वेनिहंतव्यादैत्येशायेमहीभुजः ॥ ३० ॥ मागधाद्यामहाभागाःस्वश क्त्यामंदतेजसः ॥ भवद्भिरपिस्वैरंशैरवतीर्यधरातले ॥ ३१ ॥ मच्छक्तियुक्तैःकर्तव्यंभाराऽवतरणंसुराः ॥ कश्यपोभार्ययासार्धंदिविजानांप्रजापतिः ॥३२॥ यादवानांकुले पूर्वंभविताऽऽनकदुंदुभिः ॥ तथैवभृगुशापाद्वैभगवान्विष्णुरव्ययः ॥ ३३ ॥ अंशेनभवितातत्रवसुदेवसुतोहरिः ॥ तदाऽहंप्रभविष्यामिय शोदायांचगोकुले ॥ ३४ ॥ कार्यंसर्वंकरिष्यामिसुराणांसुरसत्तमाः ॥ कारागारेगतंविष्णुंप्रापयिष्यामिगोकुले ॥ ३५ ॥ शेषंचदेवकीगर्भात्प्रापयिष्यामि रोहिणीम्॥ मच्छक्त्योपचितौतौचकर्तारौदुष्टसंक्षयम्॥३६॥दुष्टानांभूभुजांकामंद्वापरांतेसुनिश्चितम्॥ इंद्रांशोऽप्यर्जुनःसाक्षात्करिष्यतिबलक्षयम्॥३७॥

व्याइतितर्त्किनवीनमेतर्त्किंतुसर्वप्रपंचकृत्यंसृष्ट्यादिकंमदधीनमेव तस्मान्मदन्यःकोवानाशयितास्यादेतेषामतोमयैवैतेनिहंतव्याइत्यभिप्रायेणाऽऽह । मयासर्वेइति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ मदवतारात्पूर्वंप्रथमंयादवानांकुलेआनकदुंदुभिर्वसुदेवोभविताभवत्वित्यर्थः ॥ तथैवेति ॥ सयथाशापादंशेनभवितातथैवेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ उपचितौ ॥ ३६ ॥ भूभुजामिति क्विंतोऽयंशब्दः ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यमौयमलौनकुलसहदेवावित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ भगवतीवचनेनदुष्टनाशेविश्वस्ताः संतुष्टाबभूवुरित्यर्थः ॥ ४६ ॥ इतिश्रीदेवी० चतुर्थस्कंधेएकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥ सार्धाष्टाशीतिपद्यैस्तुदेवीमाहात्म्यवर्णनम् ॥ क्रियतेवासुदेवाद्याद्यवतारकथोच्यते ॥ १ ॥ इत्थंदेवादिष्ववतारसंकल्पंजातमभिधायपुनरवतार कथांप्रवर्तयति । शृणुभारतेति ॥ प्रभासेकुरुक्षेत्रेचयोगमाययाक्षपितंनाशनं सैन्यस्येत्यर्थः । तदपिशृण्वित्यर्थः ॥ क्षपितमित्यत्रभावेक्तः ॥ १ ॥ २ ॥ यद्यप्यवतारेकारणद्वयमुक्तंतथापि मुख्यंकारणं महामायेच्छैवशापस्तुगौणनिमित्तत्वेनमाययैवविहितइत्याह । क्षितिभारेति ॥ क्षितिभारसमुत्तारनिमित्तंयद्धरातलेविष्णोर्जन्मतद्रूपोयंयोगःसमाययैवविहितोनान्यत्कारणंतत्रे तिमेमतिःसिद्धांतः ॥ ३ ॥ ननुमायाकिमेतादृशीसर्वनियंत्रीवर्ततेययाविष्णोरपिजन्माऽऽपादितमितिचेद्वर्ततएवसर्वनियंत्रीत्याह । किंचित्रमिति ॥ यदाब्रह्मादीनंतर्यामिरूपेण नर्तयतित

धर्मांशोऽपिमहाराजोभविष्यतियुधिष्ठिरः ॥ वाय्वंशोभीमसेनश्चाऽश्विन्यंशौचयमावपि ॥ ३८ ॥ वसोरंशोऽथगांगेयःकरिष्यतिबलक्षयम् ॥ व्रजंतुचभ वंतोऽद्यधराभवतुसुस्थिरा ॥ ३९ ॥ भाराऽवतरणंनूनंकरिष्यामिसुरोत्तमाः ॥ कृत्वानिमित्तमात्रांस्तान्स्वशक्त्याऽहंनसंशयः ॥ ४० ॥ कुरुक्षेत्रेकरिष्या मिक्षत्रियाणांचसंक्षयम् ॥ असूयेर्ष्यामतिस्तृष्णाममताभिमतास्पृहा ॥ ४१ ॥ जिगीषामदनोमोहोदोषैर्नंक्ष्यंतियादवाः ॥ ब्राह्मणस्यचशापेनवंशनाशो भविष्यति ॥ ४२ ॥ भगवानपिशापेनत्यक्ष्यत्येतत्कलेवरम् ॥ भवंतोऽपिनिजांगैश्चसहायाःशार्ङ्गधन्वनः ॥ ४३ ॥ प्रभवंतुसनारीकामथुरायांचगोकुले ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वांऽतर्दधेदेवीयोगमायापरात्मनः ॥ ४४ ॥ सधरावैसुराःसर्वेजग्मुःस्वान्यालयानिच ॥ धराऽपिसुस्थिराजातातस्यावाक्येनतो षिता ॥ ४५ ॥ औषधीवीरुधोपेतावभूवजनमेजय ॥ प्रजाश्चसुखिनोजाताद्विजाश्चापुर्महोदयम् ॥ ४६ ॥ संतुष्टामुनयःसर्वेबभूवुर्धर्मतत्पराः ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुभारतवक्ष्यामिभाराऽवतरणंतथा ॥ कुरुक्षेत्रेप्रभासेच क्षपितंयोगमायया ॥ १ ॥ यदुवंशेसमुत्पत्तिर्विष्णोरमिततेजसः ॥ भृगुशापप्रतापेनमहामायाबलेनच ॥ २ ॥ क्षितिभारसमुत्तारनिमित्तमितिमेमतिः ॥ माययाविहितोयोगोविष्णोर्जन्मधरातले ॥ ३ ॥ किंचित्रंनृपदेवीसाब्रह्मविष्णुसुरानपि ॥ नर्तयत्यनिशंमायात्रिगुणानपरान्किमु ॥ ४ ॥ गर्भवासोद्भवंदुःखं विण्मूत्रस्नायुसंयुतम् ॥ विष्णोरापादितंसम्यग्ययाविगतलीलया ॥ ५ ॥ पुरारामाऽवतारेऽपिनिर्जरावानराःकृताः ॥ विदितंतेयथाविष्णुर्दुःखपाशेनमोहि तः ॥ ६ ॥ अहंममेतिपाशेनसुदृढेननराधिप ॥ योगिनोमुक्तसंगाश्चभुक्तिकामामुमुक्षवः ॥ ७ ॥

दापराञ्जीवान्नर्तयतीतिकिमुवक्तव्यमित्यर्थः ॥ ४ ॥ ययाविगतलीलयाप्रसिद्धलीलयाययेत्यर्थः ॥ दुःखस्यविण्मूत्रस्नायुसंयुतत्वमेकदेहाश्रितत्वेन ॥ ५ ॥ यथाविष्णोर्जन्ममानुषंमाय याऽऽपादितंतथापुरारामावतारेपिनिर्जरादेवावानराःकृताः ॥ किंचविष्णुर्देवोरामचंद्रोदुःखपाशेनमोहितःकृतएतदुभयमपितेविदितमस्त्येवनतद्वक्तव्यमस्तीत्याह । पुरेति ॥ ६ ॥ अहंममेति पाशेनसुदृढेनेत्येतद्दुःखपाशेनेत्यनेनान्वेति ॥ यतोमायाधीनंसर्वंतस्मात्तांमायामेवसर्वयोगिनः समुपासतइत्याह । योगिनइति ॥ मुक्तसंगास्त्यक्तसर्वैषणानकेवलंमुमुक्षवएवभगवतींसमाराध यंति ॥ किंतर्हिभुक्तिकामाभोगेच्छावंतोपीत्यर्थः ॥ तदुक्तं यत्राऽस्तिमोक्षोनहितत्रभोगोयत्रास्तिभोगोनहितत्रमोक्षः ॥ श्रीसुंदरीपादयुगार्चकानांभोगश्चमोक्षश्चकरस्थएवेति ॥ शिवपु राणेपि ॥ भोगमोक्षप्रदात्रीचशिवैवपरिकीर्तितेति ॥ ७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ननुयोगिनोप्येनांकिंसमाराधयंतीतिचेत्किमेतत्तवाऽऽश्चर्यंजातमेतादृशींकोनसेवेतेत्याह । यद्भक्तिलेशेति ॥ ८ ॥ भुवनेशीति ॥ यःकश्चनपुरुषोहिभुवनेशिमांपाहीतिविवक्षयायावद्भुवनेशीति संबोधनांतमुच्चारयतितावदेवभुवनेशीतिनामवक्त्रेउच्चारणकर्त्रेउच्चारणकालएवभुवनत्रयंददातिपरमेश्वरंकरोति ॥ ९ ॥ पश्चात्तेनपुरुषेणमांपाहीत्युक्तेत्रैलोक्यादधिकपदार्थस्यदेयस्याभावा त्तस्यभक्तस्यशिवाऋणीभवति॥एतादृशींभक्तकामदुघांभक्तफलप्रदानातुरांकोनसेवेतेत्यभिप्रायः ॥ नन्वेकस्याएववंधकत्वंमोचकत्वंकथंसंभवतीतिचेद्रूपभेदस्वीकारेणोभयस्यापिसंभवादि त्याह । विद्याऽविद्येति ॥ अविद्यायामंतरेवर्तमानाःस्वयंधीराःपंडितंमन्यमानाइतिश्रुतेःसंप्राप्याविद्यांगुरुवक्त्रगम्यामितिश्रुतेश्च ॥१०॥ यैतादृशीतदधीनंसर्ववर्ततइत्याह ब्रह्माविष्णुरिति॥

तामेवसमुपासंतेदेवींविश्वेश्वरींशिवाम् ॥ यद्भक्तिलेशलेशांशलेशलेशलवांशकम्॥८॥लब्ध्वामुक्तोभवेज्जंतुस्तांनसेवेतकोजनः ॥ भुवनेशीत्येववक्त्रेददाति भुवनत्रयम् ॥ ९ ॥ मांपाहीत्यस्यवचसोदेयाभावादृणान्विता ॥ विद्याऽविद्येतितस्याद्वेरूपेजानीहिपार्थिव ॥ १० ॥ विद्ययामुच्यतेजंतुर्बध्यतेऽविद्ययापु नः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चसर्वेतस्यावशानुगाः ॥११॥ अवताराःसर्वएवयंत्रिताइवदामभिः ॥ कदाचिच्चसुखंभुंक्तेवैकुंठेक्षीरसागरे ॥१२॥ कदाचित्कुरुतेयु द्धंदानवैर्बलवत्तरैः ॥ हरिःकदाचिद्यज्ञान्वैविततान्प्रकरोतिच ॥ १३ ॥ कदाचिच्चतपस्तीव्रंतीर्थेचरतिसुव्रत ॥ कदाचिच्छयनेशेतेयोगनिद्रामुपाश्रितः ॥ ॥१४॥ नस्वतंत्रःकदाचिच्चभगवान्मधुसूदनः ॥ तथाब्रह्मातथारुद्रस्तथेंद्रोवरुणोयमः ॥१५॥ कुबेरोऽग्नीरवींदूचतथाऽन्येसुरसत्तमाः ॥ मुनयःसनकाद्या श्चवसिष्ठाद्यास्तथाऽपरे ॥ १६ ॥ सर्वेऽवावशगानित्यंपांचालीवनरस्यच ॥ नसिप्रोतायथागावोविचरंतिवशानुगाः ॥ १७ ॥ तथैवदेवताःसर्वाःकालपाश नियंत्रिताः ॥ हर्षशोकादयोभावानिद्रातंद्रालसादयः ॥१८॥ सर्वेषांसर्वदाराजन्देहिनांदेहसंश्रिताः ॥ अमरानिर्जराःप्रोक्तादेवाश्चग्रंथकारकैः ॥ १९ ॥ अ भिधानतश्चार्थतोनतेनूनंतादृशाःक्वचित् ॥ उत्पत्तिस्थितिनाशाख्याभावायेषांनिरंतरम् ॥ २० ॥ अमरास्तेकथंवाच्यानिर्जराश्चकथंपुनः ॥ कथंदुःखा भिभूतावाजायंतेविबुधोत्तमाः ॥ २१ ॥ कथंदेवाश्चवक्तव्याव्यसनेक्रीडनंकथम् ॥ क्षणादुत्पत्तिनाशश्चदृश्यतेऽस्मिन्नसंशयः ॥ २२॥ जलजानांचकीटा नांमशकानांतथापुनः ॥ उपमानकथंचैषामायुर्षोऽतेमराःस्मृताः ॥२३॥ ततोवर्षायुषश्चापिशतवर्षायुषस्तथा ॥ मनुष्याह्यमरादेवास्तस्माद्ब्रह्मापरःस्मृ तः ॥ २४ ॥ रुद्रस्तथातथाविष्णुःक्रमशश्चभवंतिहि ॥ नश्यंतिक्रमशश्चैववर्धंतिचोत्तरोत्तरम् ॥ २५ ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ अभिधानइति ॥ निर्जरादेवाअभिधानतोनाम्नैवामरानत्वर्थतइत्यर्थः ॥ प्रलयकालेमरणात् ॥ तदेवाऽऽह । उत्पत्तीति ॥ २० ॥ २१ ॥ षड्भावविकाराणांदेहधर्मत्वादमरत्वंनिर्जरत्वंचयथानसंभवतितथादुःखेसतिक्रीडायाअसंभवाद्देवत्वमपिनसंभवतीत्याह । कथंदेवाश्चेति ॥ क्री डार्थकदिवुधातोरेतद्रूपम् ॥ २२ ॥ जलजानामिति ॥ यतोदेवाआयुर्षोऽतेऽमराःस्मृताः ॥ म्रियंतेइतिमराः ॥ तस्मान्म्रियमाणानांजलजकीटमशकानामुपमाकथमेषांनभवतिभवत्येवे त्यर्थः ॥ २३ ॥ ततोवर्षायुषश्चापीति ॥ ततोजन्मादिषड्भावविकाराद्यथामनुष्यावर्षायुषःकेचित्केचिच्छतवर्षायुषस्तथैवदेवाअमराअपिसंति यथायस्यतपश्चर्या ॥ तस्मान्मनुष्यामर संघाद्ब्रह्मापरोधिकायुष्यवान् ॥ २४ ॥ तथारुद्रस्तथाविष्णुरप्यधिकायुष्यवान् परंतुसर्वेऽपिक्रमशोभवंत्युत्पद्यंतेनश्यंतिचेतिषड्भावविकारवंतएवसर्वेइत्यर्थः ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तदेवाऽऽह ॥ नूनंदेहवतइति ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ सर्वेषांजन्मनाशौमायैवकरोति ॥ तत्रयस्ययथाकर्मतदनुरोधेनतस्यानीमित्तंकल्पायित्वातेनानीमित्तेननाशयातितस्माद्यन्नाशेयोनिमित्तं सतंघातयतिहंतीत्यर्थः ॥ स्वार्थेणिच् ॥ तद्यद्भगवतीजनितविधिनानिर्मितंतदन्यथानैवभवेत् ॥ २९ ॥ तत्तथैवेति ॥ विधिनिर्मितप्रकारेणैवेत्यर्थः ॥ ३० ॥ तद्वैरिसंभवाराहुसंभवेत्यर्थः

नूनंदेहवतोनाशोमृतस्योत्पत्तिरेवच ॥ चक्रवद्भ्रमणंराजन्सर्वेषांनाऽत्रसंशयः ॥ २६ ॥ मोहजालाऽऽवृतोजंतुर्मुच्यतेनकदाचन ॥ मायायांविद्यमानायां मोहजालंननश्यति ॥ २७ ॥ उत्पित्सुकालउत्पत्तिःसर्वेषांनृपजायते ॥ तथैवनाशःकल्पांतेब्रह्मादीनांयथाक्रमम् ॥ २८ ॥ निमित्तंयस्तुयन्नाशेसघातय तितंनृप ॥ नान्यथातद्भवेन्नूनंविधिनानिर्मितंतुयत् ॥ २९ ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखंवासुखमेववा ॥ तत्तथैवभवेत्कामंनान्यथेहविनिर्णयः ॥ ३० ॥ सर्वेषांसुखदौदेवौप्रत्यक्षौशशिभास्करौ ॥ ननश्यतितयोःपीडाक्वचित्तद्वैरिसंभवा ॥३१॥ भास्करस्यसुतोमंदःक्षयीचंद्रःकलंकवान् ॥ पश्यराजन्विधेःसू त्रंदुर्वारंमहतामपि ॥ ३२ ॥ वेदकर्ताजगद्धर्ताबुद्धिदस्तुचतुर्मुखः ॥ सोऽपिविक्लवतांप्राप्तोदृष्ट्वापुत्रींसरस्वतीम् ॥३३॥ शिवस्याऽपिमृताभार्यासतीदग्ध्वा कलेवरम् ॥ सोऽभवद्दुःखसंतप्तःकामार्तश्चजनार्तिहा ॥ ३४ ॥ कामाग्निदग्धदेहस्तुकालिंद्यांपतितःशिवः ॥ साऽपिश्यामजलाजातातन्निदाघवशान्नृप ॥ ॥ ३५ ॥ कामार्तोरममाणस्तुनग्नःसोऽपिभृगोर्वनम् ॥ गतःप्राप्तोऽथभृगुणाशप्तःकामातुरोभृशम् ॥ ३६ ॥ पतत्वद्यैवतेलिंगंनिर्लज्जेतिभृशंकिल ॥ पपौ चामृतवापींचदानवैर्निर्मितांमुदे ॥ ३७ ॥ इंद्रोऽपिचवृषोभूत्वावाहनत्वंगतःक्षितौ ॥ आद्यस्यसर्वलोकस्यविष्णोरेवविवेकिनः ॥ ३८ ॥ सर्वज्ञत्वंगतंकु त्रप्रभुशक्तिःकुतोगता ॥ यद्धेममृगविज्ञानंनज्ञातंहरिणाकिल॥३९॥राजन्मायावलंपश्यरामोहिकाममोहितः ॥ रामोविरहसंतप्तोरुरोदभृशमातुरः॥४०॥ योपृच्छत्पादपान्मूढःक्वगताजनकात्मजा ॥ भक्षितावाहताकेनरुदन्नुच्चतरंततः ॥४१॥ लक्ष्मणाऽहंमरिष्यामिकांताविरहदुःखितः ॥ त्वंचापिममदुःखेन मरिष्यसिवनेऽनुज ॥ ४२ ॥ आवयोर्मरणंज्ञात्वामातामममरिष्यति ॥ शत्रुघ्नोऽप्यतिदुःखार्तःकथंजीवितुमर्हति ॥ ४३ ॥ सुमित्राजीवितंजह्यात्पुत्रव्यस नकर्शिता ॥ पूर्णकामाऽथकैकेयीभवेत्पुत्रसमन्विता ॥ ४४ ॥ हासीतेक्वगताऽसित्वंमांविहायस्मरातुरा ॥ एह्येहिमृगशावाक्षिमांजीवयकृशोदरि ॥ ॥ ४५ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामित्वदधीनंचजीवितम् ॥ समाश्वासयदीनंमांप्रियंजनकनंदिनि ॥ ४६ ॥ एवंविलपतातेनरामेणाऽमिततेजसा ॥ वनेवने चभ्रमतानेक्षिताजनकात्मजा ॥ ४७ ॥

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ जनार्तिहाऽपिकामार्तोजातएतादृशोमहामायाप्रभावइतिभावः ॥ ३४ ॥ तन्निदाघवशात्तत्संतापवशादित्यर्थः ॥ संतापेनाऽपिश्यामवर्णत्वंकोपेनचास्यावदनंम षीवर्णमभूत्तदेत्यादौप्रसिद्धम् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ हेनिर्लज्ज तेलिंगमद्यैवपतत्विति भृशंशप्तइतिपूर्वेणान्वयः ॥ पपाविति ॥ शिवएवेत्यर्थः ॥ इयंकथाशिवपुराणेस्पष्टा ॥ ३७ ॥ विष्णोः सर्वज्ञत्वंयद्यस्तितर्हितत्कुत्रगतमित्यनेनान्वयः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इत्थंसर्वदेवानांनानाविधादुर्दशामाययैवतत्तदनादिकर्मयोगेनकृतेत्याह । किंब्रवीमीति ॥ एतेनाऽऽदौ अध्यायारंभमध्येवाजनमेजयेनदेवादीनामित्थंदशाकिमिति जाताइतियच्छंकितंतस्यसर्वस्याप्युत्तरमिदमुक्तमितिवेदितव्यम् ॥ तस्मादेतादृशानेकदुर्दशाप्रहाणायाऽऽदिशक्तिर्मायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीभगवतीसर्वप्रकारेणसर्वैराराध्येतिरहस्यम् ॥

शरण्यःसर्वलोकानांरामःकमललोचनः ॥ शरणंवानराणांसगतोमायाविमोहितः ॥ ४८ ॥ सहायान्वानरान्कृत्वाववंधवरुणालयम् ॥ जघानरावणंवीरं कुंभकर्णमहोदरम् ॥ ४९ ॥ आनीयचततःसीतांरामोदिव्यमकारयत् ॥ सर्वज्ञोऽपिहृतांमत्वारावणेनदुरात्मना ॥ ५० ॥ किंब्रवीमिमहाराजयोगमायाव लंमहत् ॥ ययाविश्वमिदंसर्वंभ्रामितंभ्रमतेकिल ॥ ५१ ॥ एवंनानाऽवतारेऽत्रविष्णुःशापवशंगतः ॥ करोतिविविधाश्चेष्टादैवाधीनःसदैवहि ॥ ५२ ॥ त वाऽहंकथयिष्यामिकृष्णस्याऽपिविचेष्टितम् ॥ प्रभवंमानुषेलोकेदेवकार्यार्थसिद्धये ॥ ५३ ॥ कालिंदीपुलिनेरम्येह्यासीन्मधुवनंपुरा ॥ लवणोमधुपुत्र स्तुतत्राऽसीद्दानवोबली ॥ ५४ ॥ द्विजानांदुःखदःपापोवरदानेनगर्वितः ॥ निहतोऽसौमहाभागलक्ष्मणस्यानुजेनवै ॥ ५५ ॥ शत्रुघ्नेनाथसंग्रामेतंनिह त्यमदोत्कटम् ॥ वासितामथुरानामपुरीपरमशोभना ॥ ५६ ॥ सतत्रपुष्कराक्षौद्वौपुत्रौशत्रुनिषूदनः ॥ निवेश्यराज्येमतिमान्कालेप्राप्तेदिवंगतः ॥ ५७ ॥ सूर्यवंशक्षयेतांतुयादवाःप्रतिपेदिरे ॥ मथुरांमुक्तिदांराजन्ययातितनयाःपुरा ॥ ५८ ॥ शूरसेनाभिधःशूरस्तत्राभून्मेदिनीपतिः ॥ माथुराञ्छूरसेनांश्चबुभुजे विषयान्नृप ॥ ५९ ॥ तत्रोत्पन्नःकश्यपांशःशापाच्चवरुणस्यवै ॥ वसुदेवोऽतिविख्यातःशूरसेनसुतस्तदा ॥ ६० ॥ वैश्यवृत्तिरतःसोऽभून्मृतेपितरिमाधवः ॥ उग्रसेनोवभूवाथकंसस्तस्याऽऽत्मजोमहान् ॥ ६१ ॥ अदितिर्देवकीजातादेवकस्यसुतातदा ॥ शापाद्वैवरुणस्याऽथकश्यपाऽनुगताकिल ॥ ६२ ॥ दत्तासाव सुदेवायदेवकेनमहात्मना ॥ विवाहेरचितेतत्रवागभूद्गगनेतदा ॥ ६३ ॥ कंसकंसमहाभागदेवकीगर्भसंभवः ॥ अष्टमस्तुसुतःश्रीमांस्तवहंताभविष्यति ॥ ६४ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंकंसोविस्मितोऽभून्महाबलः ॥ देववाचंतुतांमत्वासत्यांचिंतामवापसः ॥ ६५ ॥ किंकरोमीतिसंचिंत्यविमर्शमकरोत्तदा ॥ निहत्यैनांनमेमृत्यु र्भवेदद्यैवसत्वरम् ॥ ६६ ॥ उपायोनान्यथाचास्मिन्कार्येमृत्युभयावहे ॥ इयंपितृष्वसापूज्याकथंहन्मीत्यचिंतयत् ॥ ६७ ॥ पुनर्विचारयामासमरणंमेस्त्यहो स्वसा ॥ पापेनाऽपिप्रकर्तव्यादेहरक्षाविपश्चिता ॥ ६८ ॥ प्रायश्चित्तेनपापस्यशुद्धिर्भवतिसर्वदा ॥ प्राणरक्षाप्रकर्तव्याबुधैरप्येनसातथा ॥ ६९ ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ माधवोलक्ष्मीपतिः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ निहत्यैनांस्थितस्येतिशेषः ॥ ६६ ॥ इत्थं विमर्शप्रथमतःकृत्वापुनर्विचारांतरमकरोदित्याह । इयंपितृष्वसेति ॥ ममपितुःस्थानीयाद्देवकादुत्पन्नाममस्वसाभगिन्यस्तीत्यर्थः ॥ शाकपार्थिवादित्वात्साधुत्वम् ॥ ६७ ॥ इतिद्वितीय विचारोत्तरंतृतीयविचारंपुनरकरोदित्याह । पुनरिति ॥ यतोमेमरणंस्वसाभगिनीयंभवति ततोऽवश्यंहंतव्यैवेतिशेषः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥ भूतभाषितमात्रेणाकाशवाण्येत्यर्थः ॥७७॥ तवशत्रुणाऽस्यवसुदेवस्यवाशत्रुणांतर्हितेनोदितेतिकुतोनस्यादित्यर्थः ॥ ७८॥ वसुदेवस्यगृहस्यवसुदेवपत्न्याः ॥ ७९ ॥ ८० ॥ पितृष्वसेति ॥ पितृस्थानीयाद्देवकादुत्पन्नातवस्वसाभगिनीत्यर्थः ॥ पितृव्यभगिनीतिफलितम् ॥ मध्यमपदलोपीसमासः ॥ भवितव्यमिति ॥ यद्येतत्पु

विचिंत्यमनसाकंसःखड्गमादायसत्वरः ॥ जग्राहतांवरारोहांकेशेष्वाकृष्यपापकृत् ॥७०॥ कोशात्खड्गमुपाकृष्यहंतुकामोदुराशयः ॥ पश्यतांसर्वलोकानांनवोढांतांचकर्षह॥७१॥हन्यमानांचतांदृष्ट्वाहाहाकारोमहानभूत्॥वसुदेवानुगावीरायुद्धायोद्यतकार्मुकाः॥७२॥मुंचमुंचेतिप्रोचुस्तंतेतदाद्भुतसाहसाः॥ कृपयामोचयामासुर्देवकींदेवमातरम्॥७३॥तद्युद्धमभवद्घोरंधीराणांचपरस्परम् ॥ वसुदेवसहायानांकंसेनचमहात्मना ॥७४॥ वर्तमानेतथायुद्धेदारुणेलोमहर्षणे ॥ कंसंनिवारयामासुर्वृद्धायेयदुसत्तमाः ॥७५॥ पितृष्वसेयंतेवीरपूजनीयाचबालिशा ॥ नहंतव्यात्वयावीरविवाहोत्सवसंगमे ॥ ७६ ॥ स्त्रीहत्यादुःसहावीरकीर्तिघ्नीपापकृत्तमा ॥ भूतभाषितमात्रेणनकर्तव्याविजानता ॥ ७७॥ अंतर्हितेनकेनाऽपिशत्रुणातवचाऽस्यवा ॥ उदितेतिकुतोनस्याद्वागनर्थकरीविभो ॥७८॥ यशसस्तेविघातायवसुदेवगृहस्यच ॥ अरिणारचितावाणीगुणमायाविदानृप ॥ ७९ ॥ विभेषिवीरस्त्वंभूत्वाभूतभाषितभाषया ॥यशोमूलविघातार्थमुपायस्त्वरिणाकृतः ॥ ८० ॥ पितृष्वसानहंतव्याविवाहसमयेपुनः॥ भवितव्यंमहाराजभवेच्चकथमन्यथा ॥ ८१ ॥ एवंतैर्बोध्यमानोसौनिवृत्तोनाऽभवद्यदा ॥ तदातंवसुदेवोऽपिनीतिज्ञःप्रत्यभाषत ॥८२॥ कंससत्यंब्रवीम्यद्यसत्याधारंजगत्त्रयम् ॥ दास्यामिदेवकीपुत्रानुत्पन्नांस्तवसर्वशः ॥ ॥८३॥जातंजातंसुतंतुभ्यंनदास्यामियदिप्रभो ॥ कुंभीपाकेतदाघोरेपतंतुममपूर्वजाः ॥ ८४ ॥ श्रुत्वाऽथवचनंसत्यंपौरवायेपुरःस्थिताः ॥ ऊचुस्तेत्वरिताःकंसंसाधुसाधुपुनःपुनः ॥८५॥ नमिथ्याभाषतेक्वाऽपिवसुदेवोमहामनाः ॥ केशंमुंचमहाभागस्त्रीहत्यापातकंतथा ॥ ८६ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंप्रबोधितःकंसोयदुवृद्धैर्महात्मभिः॥क्रोधंत्यक्त्वास्थितस्तत्रसत्यवाक्याऽनुमोदितः ॥ ततोदुंदुभयोनेदुर्वादित्राणिचसस्वनुः ॥ ८७॥ "जयशब्दस्तुसर्वेषामुत्पन्नस्तत्रसंसदि ॥" प्रसाद्यकंसंप्रतिमोच्यदेवकींमहायशाःशूरसुतस्तदानीम् ॥ जगामगेहंस्वजनानुवृत्तोनवोढयावीतभयस्तरस्वी ॥ ८८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ अथकालेतुसंप्राप्तेदेवकीदेवरूपिणी ॥ गर्भंदधारविधिवद्वसुदेवेनसंगता ॥१॥ पूर्णेऽथदशमेमासेसुषुवेसुतमुत्तमम् ॥ रूपावयवसंपन्नंदेवकीप्रथमंयदा ॥ २ ॥

त्रसकाशात्तववधोदैवेननिश्चितःस्यात्तदाऽस्यावधेनकिंभविष्यतिकेनापिप्रकारेणतववधोभविष्यत्येव नहिभवितव्यंक्वचिदन्यथाभवतीत्यर्थः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिं०चतुर्थस्कंधे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ अर्धाधिकैश्चतुष्पंचाशद्भिःश्लोकैरनंतरम् ॥ देवकीतनयान्सप्तजघानेतिकथोच्यते ॥ १ ॥ विवाहोत्तरंगृहागमनेजातेऽनंतरंजातंवृत्तमाह ॥ अथेति ॥ वसुदेवेनसंगतामिथुनीभावंप्राप्ता ॥ १ ॥ २ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३ ॥ वरोरुसमयामिति ॥ हेमहाभागेमयाशपथेनयदात्वंमोचिता तदामयाकृतंस्वसुतार्पणेसमयंपणंजानासीत्यन्वयः ॥ ४ ॥ ततःकिमितिचेत्तत्राऽऽह। इमंपुत्रमिति ॥ हेसुकेशांतेशोभनकेशांतेततःपणसत्यतायै इमंपुत्रंतेभ्रातृसूनवे त्वत्पितृभ्रातुरुग्रसेनस्यसूनवे पुत्रायकंसायदास्यामीत्यर्थः ॥ नन्वेतत्त्वयादयालुनाकथंक्रियतइतिचेत्तत्राऽऽह। विचित्रकर्मणामिति ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ प्रारब्धकर्माधीनत्वान्मयैतत्क्रियतइत्याभिप्रायः ॥ ७ ॥ तत्रदैवंदेवकीशंकते। तीर्थैरिति ॥ यथातीर्थादिसेवनैरन्यत्पातकंनश्यतितथाप्रारब्धमपिनक्षयंयातिकिमित्यर्थः ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ १० ॥ यदितदुक्तप्रायश्चित्तैःप्रारब्धंननश्यतितदातेकिंविगीतवचनामिथ्यावचनाःसंतीत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ यदिप्रारब्धाधीनमेवसर्वंतदाआयुर्वेदमंत्रशास्त्रोक्ताउपायामिथ्यैवस्युः ॥ प्रारब्धानुकूलताभावेतैःकार्यस्याऽजायमानत्वात्सतिचानुकूलेप्रारब्धेतेनैवकार्यसिद्धौतेषामुपयोगाभावादितिभावः ॥ किंचैवंपूर्वोक्तप्रकारेणसर्वंदैवनिर्मितंप्रारब्धनिर्मितंचेत्सर्वो

तदाऽऽहवसुदेवस्तांसत्यवाक्यानुमोदितः ॥ भावित्वाच्चमहाभागोदेवकींदेवमातरम् ॥ ३ ॥ वरोरुसमयंमेत्वंजानासिस्वसुतार्पणे ॥ मोचितात्वंमहाभागेशपथेनमयातदा॥४॥इमंपुत्रंसुकेशांतेदास्यामिभ्रातृसूनवे॥"खलेकंसेविनाशार्थंदैवेकिंवाकरिष्यसि॥" विचित्रकर्मणांपाकोदुर्ज्ञेयोह्यकृतात्मभिः ॥ ५ ॥ सर्वेषांकिलजीवानांकालपाशानुवर्तिनाम् ॥ भोक्तव्यंस्वकृतंकर्मशुभंवायदिवाऽशुभम् ॥६॥ प्रारब्धंसर्वथैवाऽत्रजीवस्यविधिनिर्मितम् ॥ देवक्युवाच॥स्वामिन्पूर्वकृतंकर्मभोक्तव्यंसर्वथानृभिः ॥७॥ तीर्थैस्तपोभिर्दानैर्वाकिंनयातिक्षयंहितत् ॥ लिखितोधर्मशास्त्रेषुप्रायश्चित्तविधिर्नृप ॥ ८ ॥ पूर्वार्जितानांपापानांविनाशायमहात्मभिः॥ब्रह्महाहेमहारीचसुरापोगुरुतल्पगः ॥ ९ ॥ द्वादशाब्दव्रतेचीर्णेशुद्धियातियतस्ततः ॥ मन्वादिभिर्यथोद्दिष्टंप्रायश्चित्तंविधानतः ॥ १० ॥ तथाकृत्वानरःपापान्मुच्यतेवानवाऽनघ ॥ विगीतवचनास्तेकिंमुनयस्तत्त्वदर्शिनः॥११॥याज्ञवल्क्यादयःसर्वेधर्मशास्त्रप्रवर्तकाः॥ भवितव्यंभवत्येवयद्येवंनिश्चयःप्रभो ॥१२॥ आयुर्वेदःसमिथ्यैवमंत्रवादास्तथाऽखिलाः ॥ उद्यमस्तुवृथासर्वमेवंचेद्दैवनिर्मितम् ॥१३॥ भवितव्यंभवत्येवप्रवृत्तिस्तुनिरर्थिका ॥ अग्निष्टोमादिकंव्यर्थंनियतंस्वर्गसाधनम् ॥१४॥ यदातदाप्रमाणंहिवृथैवपरिभाषितम्॥वितथेतत्प्रमाणेतुधर्मोच्छेदःकुतोनहि॥१५॥उद्यमेचकृतेसिद्धिःप्रत्यक्षेणैवसाध्यते ॥ तस्मादत्रप्रकर्तव्यःप्रपंचश्चित्तकल्पितः ॥१६॥ यथायंबालकःक्षेमंप्राप्नोतिममपुत्रकः ॥ मिथ्यायदिप्रकर्तव्यंवचनंशुभमिच्छता ॥ १७ ॥ नतत्रदूषणंकिंचित्प्रवदंतिमनीषिणः ॥ वसुदेवउवाच ॥ निशामयमहाभागेसत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ १८ ॥

प्युद्यमोवृथैवस्यादित्याह। उद्यमस्त्विति ॥१३॥ १४ ॥ किंचप्रारब्धप्राबल्येस्वीक्रियमाणेप्रमाणंवेदरूपंपरमेश्वरेणवृथैवपरिभाषितंस्यात्पूर्वोक्तयुक्त्याप्रारब्धप्रातिकूल्येतेनवेदोक्तानुष्ठानेनफलाजननात्तदानुकूल्येतेनैवप्रजननात्तस्योपयोगाभावादित्याह। यदातदेति ॥ यदावेदस्यमिथ्यार्थवादित्वंतदाधर्मोच्छेदएवकुतोनस्यादित्याह। वितथेइति ॥१५॥ तस्मादुद्योगएवप्रधानोयतउद्योगेनैवसिद्धिर्घटादेःसस्यादेश्चदृश्यते ॥ नहिकुलालादयोहित्वोद्योगंप्रारब्धमेवाऽऽश्रित्यतिष्ठंतोघटादिसिद्धिंप्राप्नुवंतीत्याह। उद्यमेचकृतइति ॥ तस्मादिति ॥ यतउद्योगःप्रधानस्तस्मादत्रचित्तकल्पितःकश्चनप्रपंचउपायःकर्तव्यइत्यर्थः ॥ १६ ॥ ननुमयामिथ्याकथंकृत्वापुत्रःसंरक्षणीयइतिचेत्तत्राह। मिथ्येति ॥ यदिशब्दोप्यर्थकोनिपातानामनेकार्थत्वात् ॥ तथाचशुभंजीवरक्षणादिरूपमिच्छतापुरुषेणमिथ्यापिकर्तव्यमित्यर्थः ॥ जीवरक्षणार्थंमिथ्यावदनेपिदोषाभावइतिभावः ॥ १७ ॥ १८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यदुक्तमुद्योगःप्रधानइतितन्नसंभवति ॥ सर्वसामग्रीसमवधानेपिपुत्राद्युत्पत्त्यदर्शनात् ॥ तस्माद्दैवंप्रारब्धमेवमुख्यंफलसिद्धिंप्रति उद्योगस्तुसहायभूतएवसर्वत्रेत्याह । उद्यमस्तुप्रकर्तव्यइति ॥ यदुक्तंप्रायश्चित्तादिनाप्रारब्धंनंक्ष्यतिवाननंक्ष्यतीतितत्राह । त्रिविधानीहेति ॥ १९ ॥ संचितानीति ॥ एकासंचितकोटिरेकाप्रारब्धकोटिरेकावर्त्तमानकोटिरित्यर्थः ॥ २० ॥ कर्मणां स्वीकारेफलंजीवानामुच्चावचगतिरूपमस्तीत्याह । बीजभूतानीति ॥ २१ ॥ तदेवविशदयति । पूर्वदेहमिति ॥२२॥ २३ ॥ २४ ॥ कर्मभिरितिसंचितेभ्यःकर्मभ्यःपृथक्कृतैःपक्वैःकर्मभिरित्यर्थः ॥ २५ ॥ तंकालंतस्मिँल्लिंगदेहाविर्भावकालेइत्यर्थः ॥ योजयत्यर्थात्परमेश्वरः ॥ अतःकर्माणिप्राकृतानिसंचितानितथादेहेनानेनभाव्यानिवर्तमानानिचेत्यर्थः ॥ २६ ॥ तथाप्रार

उद्यमःखलुकर्तव्यःफलंदैववशानुगम् ॥ त्रिविधानीहकर्माणिसंसारेत्रपुराविदः ॥१९॥ प्रवदंतीहजीवानांपुराणेष्वागमेषुच ॥ संचितानिचजीर्णानिप्रारब्धानिसुमध्यमे ॥ २० ॥ वर्तमानानिवामोरुत्रिविधानीहदेहिनाम् ॥ शुभाऽशुभानिकर्माणिबीजभूतानियानिच ॥ २१ ॥ बहुजन्मसमुत्थानिकालेतिष्ठंतिसर्वथा ॥ पूर्वदेहंपरित्यज्यजीवःकर्मवशानुगः ॥ २२ ॥ स्वर्गेवानरकेवाऽपिप्राप्नोतिस्वकृतेनवै ॥ दिव्यंदेहंचसंप्राप्ययातनादेहमर्थजम् ॥ २३ ॥ भुनक्तिविविधान्भोगान्स्वर्गेवानरकेऽथवा ॥ भोगांतेचयदोत्पत्तेःसमयस्तस्यजायते ॥ २४ ॥ लिंगदेहेनसहितंजायतेजीवसंज्ञितम् ॥ तदैवसंचितेभ्यश्चकर्मभ्यःकर्मभिःपुनः ॥ २५ ॥ योजयत्येवतंकालंकर्माणिप्राकृतानिच ॥ देहेनानेनभाव्यानिशुभानिचाऽशुभानिच ॥ २६ ॥ प्रारब्धानिचजीवेनभोक्तव्यानिसुलोचने ॥ प्रायश्चित्ते ननश्यंतिवर्तमानानिभामिनि ॥२७॥ संचितानितथैवाऽऽशुयथार्थविहितेनच ॥ प्रारब्धकर्मणांभोगात्संक्षयोनान्यथाभवेत् ॥२८॥ तेनायंतेकुमारोवैदेयःकंसायसर्वथा ॥ नमिथ्यावचनंमेऽस्तिलोकनिंदाऽभिदूषितम् ॥ २९ ॥ अनित्येऽस्मिंस्तुसंसारेधर्मसारेमहात्मनाम् ॥ दैवाधीनंहिसर्वेषांमरणंजननंतथा ॥ ३० ॥ तस्माच्छोकोनकर्तव्योदेहिनाहिनिरर्थकः ॥ सत्यंयस्यगतंकांतेवृथातस्यैवजीवितम् ॥ ३१ ॥ इहलोकोगतोयस्मात्परलोकःकुतस्ततः ॥ अतोदेहिसुतंसुभ्रुकंसायप्रददाम्यहम् ॥ ३२ ॥ सत्यसंस्तरणाद्देविशुभमग्रेभविष्यति ॥ कर्तव्यंसुकृतंपुंभिःसुखेदुःखेसतिप्रिये॥३३॥ "सत्यसंरक्षणाद्देविशुभमेवभविष्यति ॥" व्यासउवाच ॥ इत्युक्तवतिकांतेसादेवकीशोकसंयुता ॥ ददौपुत्रंप्रसूतंचवेपमानामनस्विनी ॥ ३४ ॥ वसुदेवोपिधर्मात्माआदायस्वसुतंशिशुम् ॥ जगामकंससदनंमार्गेलोकैरभिष्टुतः ॥ ३५ ॥ लोकाऊचुः ॥ पश्यंतुवसुदेवंभोलोकाएवंमनस्विनम् ॥ स्ववाक्यमनुरुध्यैववालमादाययात्यसौ ॥ ३६ ॥ मृत्यवेदातुकामोऽद्यसत्यवागनसूयकः ॥ सफलंजीवितंचाऽस्यधर्मंपश्यंतुचाऽद्भुतम् ॥ ३७ ॥

ब्धानिचजीवेनात्रिविधानिभोक्तव्यान्येवेत्यर्थः ॥ प्रायश्चित्तेतुसर्वाणिननश्यंतिकिंतुकानिचिदेवेत्याह । प्रायश्चित्तेनेति ॥ २७ ॥ प्रारब्धानांतुभोगादेवक्षयइत्याह । प्रारब्धेति ॥ २८ ॥ तेनेति ॥ यतस्तस्यभोगेनैवक्षयस्तेनहेतुनातत्प्रारब्धक्षयायकुमारःकंसायसर्वथादेयइत्यर्थः ॥ यत्त्वयोक्तंजीवरक्षार्थंमिथ्याऽपिवक्तव्यमिति तत्परकीयविषयेजीवरक्षार्थंवक्तव्यंनस्वीयजीवरक्षार्थम् ॥ अन्यथास्वरक्षार्थंसर्वोऽपिमिथ्यावदतीतिकोऽपिसत्यत्यागेनदोषवान्नस्यात्तस्मान्नस्वकीयविषयेममवचनंमिथ्यास्तीत्याह । नमिथ्येति ॥ लोकनिंदयाऽभिदूषितंवचनमित्यन्वयः ॥ २९ ॥ इत्थंतस्याः शंकानिरासंकृत्वातदनुमत्यर्थेतांबोधयति । अनित्यइति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥४२॥ क्षेमंव्याहृतवानिति ॥ अयंबालोगृहंगच्छत्वितिक्षेमंकल्याणकरंवाक्यंनृपःकंसोव्याहृतवान्कथितवानित्यर्थः ॥४३ ॥४४॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ हेमपर्वतंसुमेरुम् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ संमेलनेति ॥ यदातेवैकत्रमिलितास्तदासर्वेपरस्परापेक्षयाअष्टमाएवेत्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभा०

यःपुत्रंयातिकंसायदा तुंकालात्मनेऽपिहि ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंस्तूयमानस्तुप्राप्तःकंसालयंनृप ॥ ३८॥ ददावस्मैकुमारंतंजातमात्रममानुषम् ॥ कंसो पिविस्मयंप्राप्तोदृष्ट्वाधैर्यंमहात्मनः ॥ ३९ ॥ गृहीत्वाबालकंप्राहस्मितपूर्वमिदंवचः ॥ धन्यस्त्वंशूरपुत्राऽद्यज्ञातःपुत्रसमर्पणात् ॥ ४० ॥ ममसृत्युर्नचायं वैगिराप्रोक्तस्तुचाऽष्टमः ॥ नहंतव्योमयाकामंबालोऽयंयातुतेगृहम् ॥ ४१ ॥ अष्टमस्तुप्रदातव्यस्त्वयापुत्रोमहामते ॥ इत्युक्त्वावसुदेवायददावाशुख लःशिशुम् ॥४२॥ गच्छत्वयंगृहेबालःक्षेमंव्याहृतवान्नृपः ॥ तमादायतदाशौरिर्जगामस्वगृहंमुदा ॥४३॥ कंसोऽपिसचिवानाऽऽहवृथाकिंघातयेशिशुम् ॥ अष्टमाद्देवकीपुत्रान्ममसृत्युरुदाहृतः ॥ ४४ ॥ अतःकिंप्रथमंबालंहत्वापापंकरोम्यहम् ॥ साधुसाध्वितितेप्युक्त्वासंस्थितामंत्रिसत्तमाः ॥४५॥ विसर्जि तास्तुकंसेनजग्मुस्तेस्वगृहान्प्रति ॥ गतेषुतेषुसंप्राप्तोनारदोमुनिसत्तमः ॥ ४६ ॥ अभ्युत्थानाऽर्घ्यपाद्यादिचकारोग्रसुतस्तदा ॥ पप्रच्छकुशलंराजात त्राऽऽगमनकारणम् ॥ ४७ ॥ नारदस्तंतदोवाचस्मितपूर्वमिदंवचः ॥ कंसकंसमहाभागगतोऽहंहेमपर्वतम् ॥ ४८ ॥ तत्रब्रह्मादयोदेवामंत्रंचक्रुःसमाहि ताः ॥ देवक्यांवसुदेवस्यभार्यायांसुरसत्तमः ॥ ४९ ॥ वधार्थंतवविष्णुश्चजन्मचाऽत्रकरिष्यति ॥ तत्कथंनहतःपुत्रस्त्वयानीतिंविजानता ॥ ५० ॥ कंस उवाच ॥ अष्टमंचहनिष्येऽहंमृत्युंमेदेवभाषितम् ॥ नारदउवाच ॥ नजानासिनृपश्रेष्ठराजनीतिंशुभाऽशुभम् ॥ ५१ ॥ मायाबलंचदेवानांनत्वंवेत्सिवदा मिकिम् ॥ रिपुरल्पोपिशूरेणनोपेक्ष्यःशुभमिच्छता ॥ ५२॥ संमेलनक्रियायांतुसर्वेतेह्यष्टमाःस्मृताः ॥ मूर्खस्त्वमरिसंत्यागःकृतोऽयंजानतात्वया॥५३॥ इत्युक्त्वाऽऽशुगतःश्रीमान्नारदोदेवदर्शनः ॥ गतेऽथनारदेकंसःसमाहूयाऽथबालकम् ॥ ५४ ॥ पाषाणेपोथयामाससुखंप्रापचमंदधीः ॥ ॥ इतिश्रीदे०म० च०एकविंशोध्यायः ॥ २१ ॥ जनमेजयउवाच ॥ किंकृतंपातकंतेनबालकेनपितामह ॥ योजातमात्रोनिहतस्तथातेनदुरात्मना ॥१॥ नारदोपिमुनिश्रे ष्ठोज्ञानवान्धर्मतत्परः ॥ कथमेवंविधंपापंकृतवान्ब्रह्मवित्तमः ॥ २ ॥ कर्ताकारयितापापेतुल्यपापौस्मृतौबुधैः ॥ सकथंप्रेरयामासमुनिःकंसंखलंतदा ॥ ॥ ३ ॥ संशयोऽयंमहान्मेत्रब्रूहिसर्वंसविस्तरम् ॥ येनकर्मविपाकेनबालकोनिधनंगतः ॥ ४ ॥ व्यासउवाच ॥ नारदःकौतुकप्रेक्षीसर्वदाकलहप्रियः ॥ देव कार्यार्थमागत्यसर्वमेतच्चकारह ॥ ५ ॥ नमिथ्याभाषणेबुद्धिर्मुनेस्तस्यकदाचन ॥ सत्यवक्तासुराणांसकर्तव्येनिरतःशुचिः ॥ ६ ॥

चतुर्थस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ द्व्यधिकैश्चैवपंचाशत्पद्यैरथधरातले ॥ केषामंशैर्नृपाजातास्तदेतत्सम्यगुच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायकथांश्रुत्वाजनमेजयःपृच्छति । किंकृत मिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ अवतारेपरेद्वितीयेजन्मनीत्यर्थः ॥ ज्ञानसंयुक्ताइतिदैत्यस्वभावंत्यक्त्वाज्ञानयुक्ताजाताइत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७॥१८॥
वरेणहेतुनेत्यर्थः ॥ युष्माभिर्हापितइति ॥ यतोयुष्माभिर्मयिस्नेहोहापितस्त्यक्तोमदाराधनंविहायमच्छत्रोर्ब्रह्मणोमहदाराधनंकुर्वद्भिस्ततोयुष्माञ्छत्रुभूतांस्त्यजामीत्यर्थः॥१९॥ यूयमिति॥
पातालेव्रजंत्वित्येकःशापः ॥ भुविषड्गर्भाभवतेतिद्वितीयः ॥ तस्यैवव्याख्यानंपातालेइति ॥२०॥ भुविकस्यागर्भेजन्मेतिचेत्तत्राह । ततस्त्विति ॥ पितावइति॥प्राग्जन्मस्थइत्यर्थः॥२१॥

एवंषड्बालकास्तेनजाताजातानिपातिताः ॥ षड्गर्भाःशापयोगेनसंभूयमरणंगताः॥७॥शृणुराजन्प्रवक्ष्यामितेषांशापस्यकारणम्॥स्वायंभुवेंऽतरेपुत्राम
रीचेःषण्महाबलाः ॥ ८ ॥ ऊर्णायांचैवभार्यायामासन्धर्मविचक्षणाः ॥ ब्रह्माणंजहसुर्वीक्ष्यसुतांयभितुमुद्यतम् ॥ ९ ॥ शशापतांस्तदाब्रह्मादैत्ययोनिंवि
शंत्वधः ॥ कालनेमिसुताजातास्तेषड्गर्भाविशांपते ॥ १० ॥ अवतारेपरेतेतुहिरण्यकशिपोःसुताः ॥ जातास्तेज्ञानसंयुक्ताःपूर्वशापभयान्नृप॥११॥ त
स्मिञ्जन्मनिशांताश्चतपश्चक्रुःसमाहिताः ॥ तेषांप्रीतोऽभवद्ब्रह्माषड्गर्भाणांवरान्ददौ ॥ १२ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शप्तायूयंमयापूर्वंक्रोधयुक्तेनपुत्रकाः ॥ तुष्टो
ऽस्मिवोमहाभागाब्रुवंतुवांछितंवरम् ॥ १३ ॥ व्यासउवाच ॥ तेतुश्रुत्वावचस्तस्यब्रह्मणःप्रीतमानसाः ॥ ब्रह्माणमब्रुवन्कामंसर्वेकार्यार्थतत्पराः ॥१४॥
॥ गर्भाऊचुः ॥ पितामहाऽद्यतुष्टोऽसिदेहिनोवांछितंवरम् ॥ अवध्यादैवतैःसर्वैर्मानवैश्चमहोरगैः ॥ १५ ॥ गंधर्वसिद्धपतिभिर्वधोमाभूत्पितामह ॥ व्यास
उवाच ॥ तानुवाचततोब्रह्मासर्वमेतद्भविष्यति ॥ १६ ॥ गच्छंतुवोमहाभागाःसत्यमेवनसंशयः ॥ दत्त्वावरंततोब्रह्मामुदितास्तेतदाऽभवन् ॥ १७ ॥ हि
रण्यकशिपुःक्रुद्धस्तानुवाचकुरूद्वह ॥ यस्माद्विहायमांपुत्रास्तोषितोवैपितामहः ॥ १८ ॥ वरेणप्रार्थितोऽत्यर्थंबलवंतोयतोऽभवन् ॥ युष्माभिर्हापितःस्ने
हस्ततोयुष्मांस्त्यजाम्यहम् ॥ १९ ॥ यूयंव्रजंतुपातालेषड्गर्भाविश्रुताभुवि ॥ पातालेनिद्रयाविष्टास्तिष्ठंतुबहुवत्सरान् ॥२०॥ ततस्तुदेवकीगर्भेवर्षेवर्षे
पुनःपुनः ॥ पितावःकालनेमिस्तुतत्रकंसोभविष्यति ॥२१॥ सएवजातमात्रान्वोवधिष्यतिसुदारुणः ॥ व्यासउवाच ॥ एवंशप्तास्तदातेनगर्भेजातान्पुनः
पुनः ॥ २२ ॥ जघानदेवकीपुत्रान्षड्गर्भाञ्छापनोदितः ॥ शेषांशःसप्तमस्तत्रदेवकीगर्भसंस्थितः ॥२३॥ विस्रंसितश्चगर्भोऽसौयोगेनयोगमायया॥नीत
श्चरोहिणीगर्भेकृत्वासंकर्षणंबलात् ॥ २४ ॥ पतितःपंचमेमासिलोकख्यातिंगतस्तदा ॥ कंसोऽपिज्ञातवांस्तत्रदेवकीगर्भपातनम् ॥ २५ ॥ मुदंप्रापसदु
ष्टात्माश्रुत्वावार्तांसुखावहाम् ॥ अष्टमेदेवकीगर्भेभगवान्सात्वतांपतिः ॥ २६ ॥ उवासदेवकार्यार्थंभाराऽवतरणायच ॥ राजोवाच ॥ वसुदेवःकश्यपांशः
शेषांशश्चतदाऽभवत् ॥२७॥ हरेरंशस्तथाप्रोक्तोभवतामुनिसत्तम ॥ अन्येचयेंऽशादेवानांतत्रजातास्तुतान्वद ॥ २८ ॥

॥ २२ ॥ जघानेति ॥ ब्रह्मणादत्तमवध्यत्वंतुहिरण्यकशिपुशापोत्तरंनक्षत्ररूपेणतेषामवस्थानरूपंपुराणांतरेषूक्तमितिबोध्यम् ॥ २३ ॥ २४ ॥ पतितइति ॥ गर्भइति शेषः ॥२५॥२६॥
॥ २७ ॥ विष्णुशेषकश्यपावतारान्राजाश्रुत्वाअन्यदेवांशावतारबुभुत्सयापृच्छति । अन्येचयेंऽशादेवानामिति ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ तत्सुतोऽश्वत्थामा ॥ ३४ ॥ आगमेपुराणशास्त्रेषुगंधर्वपतिराख्यातइत्यर्थः ॥ ३५ ॥ हंसनामाअरिष्टस्यअरिष्टनेमिदैत्यस्यसुतःपुत्रोधृतराष्ट्र इत्यर्थः ॥ ३६ ॥ तथापरइति ॥ मरुद्गणइत्यर्थः ॥ ३७ ॥ सोमप्रररुर्यादवः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अनुह्रादोदैत्यः ॥ लंबोदैत्यः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

भाराऽवतरणार्थंवैक्षितेः प्रार्थनयाऽनघ ॥ व्यासउवाच ॥ सुराणामसुराणांचयेयेंऽशाभुविविश्रुताः ॥ २९ ॥ तानहंसंप्रवक्ष्यामिसंक्षेपेणशृणुष्वतान् ॥ वसुदेवः कश्यपांशोदेवकीचतथाऽदितिः ॥ ३० ॥ बलदेवस्त्वनंतांशोवर्तमानेषुतेषुच ॥ योऽसौधर्मसुतःश्रीमान्नारायणइतिश्रुतः ॥ ३१ ॥ तस्यांशोवासुदेवस्तुविद्यमानेमुनौतदा ॥ नरस्तस्यानुजोयस्तुतस्यांशोर्जुनएवच ॥ ३२ ॥ युधिष्ठिरस्तुधर्मांशोवाय्वंशोभीमइत्युत ॥ अश्विन्यंशौततःप्रोक्तौमाद्रीपुत्रौमहाबलौ ॥ ॥ ३३ ॥ सूर्यांशःकर्णआख्यातोधर्मांशोविदुरःस्मृतः ॥ द्रोणोबृहस्पतेरंशस्तत्सुतस्तुशिवांशजः ॥ ३४ ॥ समुद्रःशंतनुःप्रोक्तोगंगाभार्यामताबुधैः ॥ देवकस्तु समाख्यातोगंधर्वपतिरागमे ॥ ३५ ॥ वसुर्भीष्मोविराटस्तुमरुद्गणइतिस्मृतः ॥ अरिष्टस्यसुतोहंसोधृतराष्ट्रःप्रकीर्तितः ॥ ३६ ॥ मरुद्गणःकृपःप्रोक्तःकृतवर्मा तथापरः ॥ दुर्योधनःकलेरंशःशकुनिंविद्धिद्वापरम् ॥ ३७ ॥ सोमपुत्रःसुवर्चाख्यःसोमप्रररुदाहृतः ॥ पावकांशोधृष्टद्युम्नःशिखंडीराक्षसस्तथा ॥ ३८ ॥ सनत्कुमारस्यांशस्तुप्रद्युम्नःपरिकीर्तितः ॥ द्रुपदोवरुणस्यांशोद्रौपदीचरमांशजा ॥ ३९ ॥ द्रौपदीतनयाःपंचविश्वेदेवांशजाःस्मृताः ॥ कुंतिःसिद्धिर्धृतिर्माद्रीमतिर्गांधारराजजा ॥ ४० ॥ कृष्णपत्न्यस्तथासर्वादेववारांगनाःस्मृताः ॥ राजानश्चतथासर्वेअसुराःशक्रनोदिताः ॥ ४१ ॥ हिरण्यकशिपोरंशःशिशुपालउदाहृतः ॥ विप्रचित्तिर्जरासंधःशल्यःप्रह्लादइत्यपि ॥ ४२ ॥ कालनेमिस्तथाकंसःकेशीहयशिरास्तथा ॥ अरिष्टोबलिपुत्रस्तुककुद्मीगोकुलेहतः ॥ ४३ ॥ अनुह्रादोधृष्टकेतुर्भगदत्तोऽथवाष्कलः ॥ लंबःप्रलंबसंजातःखरोऽसौधेनुकोऽभवत् ॥ ४४ ॥ वाराहश्चकिशोरश्चदैत्यौपरमदारुणौ ॥ मल्लौतावेवसंजातौख्यातौचाणूरमुष्टिकौ ॥ ४५ ॥ दितिपुत्रस्तथाऽरिष्टोगजःकुवलयाभिधः ॥ बलिपुत्रीबकीख्याताबकस्तदनुजःस्मृतः ॥ ४६ ॥ यमोरुद्रस्तथाकामःक्रोधश्चैवचतुर्थकः ॥ तेषामंशैस्तुसंजातोद्रोणपुत्रोमहाबलः ॥ ४७ ॥ अंशावतरणेपूर्वंदैतेयाराक्षसास्तथा ॥ जाताःसर्वेऽसुरांशास्तेक्षितिभारावतारणे ॥ ४८ ॥ एतेषांकथितंराजन्नंशावतरणंनृप ॥ सुराणांचासुराणांचपुराणेषुप्रकीर्तितम् ॥ ४९ ॥ यदाब्रह्मादयोदेवाःप्रार्थनार्थंहरिंगताः ॥ हरिणाचतदादत्तौकेशौखलुसिताऽसितौ ॥ ५० ॥ श्यामवर्णस्ततःकृष्णःश्वेतःसंकर्षणस्तथा ॥ भारावतारणार्थंतौजातौदेवांशसंभवौ ॥ ५१ ॥ अंशावतरणंचैतच्छृणोतिभक्तिभावतः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोमोदतेस्वजनैर्वृतः ॥ ५२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेद्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥

द्रोणपुत्रइति ॥ नकेवलंपूर्वमुक्तंशिवांशजएवेतिमंतव्यंकिंतुचतुर्णामयमंशइतिभावः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ सिताऽसिताविति ॥ तथाचकृष्णःपूर्वोक्तरीत्यानारायणस्याऽसितकेशस्यचावतारःबलरामस्तुशेषस्यसितकेशस्यचाऽवतारःअर्जुनस्तुनरस्यैव ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलके चतुर्थस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अर्धाधिकैर्द्विपंचाशत्पद्यैर्जन्मनिरूपणम् ॥ वासुदेवस्यतल्लीलाःकीर्त्यतेचततःपरम् ॥ १ ॥ हतेषुषट्स्विति ॥ औग्रसेनिनाकंसेन ॥ सप्तमेचगर्भेपतितेसति ॥ १ ॥ नारदस्यवचनान्मरणंस्वंविचिंतयन्नित्यन्वयः ॥ २ ॥ समयइति ॥ अवतारकालप्राप्तिसमयइत्यर्थः ॥ अंशेनवसुदेवेभक्षितान्नद्वाराऽऽगत्यतदनंतरंयथाक्रमंवीर्यद्वारादेवकीगर्भेप्रवेशमकरोदित्यर्थः ॥ ॥ ३ ॥ यथेच्छयास्वेच्छयानतुपरेच्छयेत्यर्थः ॥ तस्याभगवत्याःस्वतंत्रत्वात् ॥ ४ ॥ ५ ॥ रक्षार्थंतस्याइतिशेषः ॥ ६ ॥ पुत्रोत्पत्तिंचसंचिंत्येति ॥ कामिन्याःप्रेमतंतुनियंत्रितोबद्धः

॥ व्यासउवाच ॥ हतेषुषट्सुपुत्रेषुदेवक्याऔग्रसेनिना ॥ सप्तमेपतितेगर्भेवचनान्नारदस्यच ॥१॥ अष्टमस्यचगर्भस्यरक्षणार्थमतंद्रितः॥प्रयत्नमकरोद्राजामरणंस्वंविचिंतयन् ॥ २ ॥ समयेदेवकीगर्भेप्रवेशमकरोद्धरिः ॥ अंशेनवसुदेवेतुसमागत्ययथाक्रमम् ॥ ३ ॥ तदेयंयोगमायाचयशोदायांयथेच्छया ॥ प्रवेशमकरोद्देवीदेवकार्यार्थसिद्धये ॥ ४ ॥ रोहिण्यास्तनयोरामोगोकुलेसमजायत ॥ यतःकंसभयोद्विग्नासंस्थितासाचकामिनी ॥ ५ ॥ कारागारेततःकंसोदेवकींदेवसंस्तुताम् ॥ स्थापयामासरक्षार्थंसेवकान्समकल्पयत् ॥ ६ ॥ वसुदेवस्तुकामिन्याःप्रेमतंतुनियंत्रितः ॥ पुत्रोत्पत्तिंचसंचिंत्यप्रविष्टःसहभार्यया ॥७॥ देवकीगर्भगोविष्णुर्देवकार्यार्थसिद्धये ॥ संस्तुतोऽमरसंघैश्चव्यवर्धतयथाक्रमम् ॥८॥ संजातेदशमेतत्रमासेऽथश्रावणेशुभे ॥ प्राजापत्यर्क्षसंयुक्तेकृष्णपक्षेऽष्टमीदिने ॥ ९ ॥ कंसस्तुदानवान्सर्वानुवाचभयविह्वलः ॥ रक्षणीयाभवद्भिश्चदेवकीगर्भमंदिरे ॥ १० ॥ अष्टमोदेवकीगर्भःशत्रुर्मेप्रभविष्यति ॥ रक्षणीयःप्रयत्नेनमृत्युरूपःसबालकः ॥ ११ ॥ हत्वैनंबालकंदैत्याःसुखंस्वप्स्यामिमंदिरे ॥ निवृत्तिवर्जितेदुःखेनाशितेचाऽष्टमेसुते ॥१२॥ खड्गप्रासधराःसर्वेतिष्ठंतुधृतकार्मुकाः ॥ निद्रातंद्राविहीनाश्चसर्वत्रनिहितेक्षणाः ॥ १३ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्यादिश्याऽसुरगणान्कृशोऽतिभयविह्वलः ॥ मंदिरंस्वंजगामाऽऽशुनलेभेदानवःसुखम् ॥ १४ ॥ निशीथेदेवकीतत्रवसुदेवमुवाचह ॥ किंकरोमिमहाराजप्रसवावसरोमम ॥ १५ ॥ बहवोरक्षपालाश्चतिष्ठंत्यत्रभयानकाः ॥ नंदपत्न्यामयासार्धंकृतोऽस्तिसमयःपुरा ॥ १६ ॥ प्रेषितव्यस्त्वयापुत्रोमंदिरेममभामिनि ॥ पालयिष्याम्यहंतत्रतवाऽतिमनसाकिल ॥ १७ ॥ अपत्यंतेप्रदास्यामिकंसस्यप्रत्ययायवै ॥ किंकर्तव्यंप्रभोचाऽद्यविषमेसमुपस्थिते ॥ १८ ॥ व्यत्ययःसंततेःशौरेकथंकर्तुंक्षमोभवेः ॥ दूरेतिष्ठस्वकांताऽद्यलज्जामेऽद्यदुरत्यया ॥ ॥ १९ ॥ परावृत्त्यमुखंस्वामिन्नन्यथाकिंकरोम्यहम् ॥ इत्युक्तातंमहाभागंदेवकीदेवसंमतम् ॥ २० ॥ बालकंसुषुवेतत्रनिशीथेपरमाद्भुतम् ॥ तंदृष्ट्वाविस्मयंप्रापदेवकीबालकंशुभम् ॥ २१ ॥

स्वस्यपुत्रोत्पत्तिंसंचिंत्यस्वस्यपुत्रोत्पत्त्यर्थंभार्ययासहांतःपुरेप्रविष्टइत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्राजापत्यर्क्षंरोहिणीनक्षत्रम् ॥ ९ ॥ अष्टमीदिनेतस्याश्चेष्टयाप्रसवकालमालक्ष्यदानवान्कंसउवाचेत्याह। कंसस्त्विति ॥ १० ॥ ११ ॥ अष्टमेसुतेइति ॥ कथंभूतेसुतेदुःखरूपेइत्यर्थः ॥ कथंभूतेदुःखेनिवृत्तिवर्जितेनाशवर्जितेअतिशयितदुःखरूपेइत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ संततेर्व्यत्ययोव्यत्यासःकथंकर्तुंक्षमोभवेस्त्वमितिशेषः ॥ शौरेइतिसंबोधनम् ॥ १९ ॥ हेस्वामिन्मुखंपरावृत्यदूरेतिष्ठेतिपूर्वेणान्वयः ॥ २० ॥ २१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २२ ॥ २३ ॥ २४॥ २५ ॥ २६ ॥ २७॥ २८ ॥ तमादाययायावाशुइति ॥ ननु जातंजातंसुतंतुभ्यंनदास्यामियदिप्रभो ॥ कुंभीपाकेतदाघोरेपतंतुममपूर्वजाइतिवसुदेवेनप्रतिज्ञातत्वा त्स्वसत्यतापालनार्थंकंसायपुत्रःकथंनदत्तइतिचेन्न स्वसत्यत्वपालनापेक्षयासत्यसंकल्पस्याऽऽकाशवाणीरूपेणवदतोभगवतोवचनपालनस्याऽभ्यर्हितत्वात्पितॄणामुद्धारंतुभगवान्करिष्यती

पतिंप्राहमहाभागाहर्षोत्फुल्लकलेवरा ॥ पश्यपुत्रमुखंकांतदुर्लभंहितवप्रभो ॥ २२ ॥ अद्यैनंकालरूपोऽसौघातयिष्यतिभ्रातृजः ॥ वसुदेवस्तथेत्युक्त्वात मादायकरेसुतम् ॥ २३ ॥ अपश्यच्चाऽऽननंतस्यसुतस्याद्भुतकर्मणः ॥ वीक्ष्यपुत्रमुखंशौरिश्चिंताविष्टोबभूवह ॥ २४ ॥ किंकरोमिकथंनस्याद्दुःखमस्य कृतेमम ॥ एवंचिंताऽऽतुरेतस्मिन्वागुवाचाशरीरिणी ॥ २५ ॥ वसुदेवंसमाभाष्यगगनेविशदाक्षरा ॥ वसुदेवगृहीत्वैनंगोकुलंनयसत्वरः ॥ २६ ॥ रक्षपा लास्तथासर्वेमयानिद्राविमोहिताः ॥ विवृतानिकृतान्यष्टकपाटानिचशृंखलाः ॥ २७ ॥ मुक्त्वैनंनंदगेहेत्वंयोगमायांसमानय॥श्रुत्वैवंवसुदेवस्तुतस्मिन्का रागृहेगतः ॥ २८ ॥ विवृतंद्वारमालोक्यबभूवतरसानृप ॥ तमादाययायावाशुद्वारपालैरलक्षितः ॥ २९॥ कालिंदीतटमासाद्यपूरंदृष्ट्वासुनिश्चितम् ॥ तदै वकटिदघ्नीसावभूवाऽऽशुसरिद्वरा ॥ ३० ॥ योगमायाप्रभावेणतताराऽऽनकदुंदुभिः ॥ गत्वातुगोकुलंशौरिर्निशीथेनिर्जनेपथि ॥ ३१ ॥ नंदद्वारेस्थितः पश्यन्विभूतिंपशुसंज्ञिताम् ॥ तदैवतत्रसंजातायशोदागर्भसंभवा ॥ ३२ ॥ योगमायांशजादेवीत्रिगुणादिव्यरूपिणी ॥ जातांतांबालिकांदिव्यांगृहीत्वा करपंकजे ॥ ३३ ॥ तत्राऽऽगत्यददौदेवीसैरंध्रीरूपधारिणी ॥ वसुदेवःसुतंदत्त्वासैरंध्रीकरपंकजे ॥ ३४ ॥ तामादाययौशीघ्रंबालिकांमुदिताऽऽशयः ॥ कारागारेततोगत्वादेवक्याःशयनेसुताम् ॥ ३५ ॥ निक्षिप्यसंस्थितःपार्श्वेचिंताविष्टोभयाऽऽतुरः ॥ रुरोदसुस्वरंकन्यातदैवाऽऽगतसंज्ञकाः ॥ ३६ ॥ उत्त स्थुःसेवकाराज्ञःश्रुत्वातद्रुदितंनिशि ॥ तमूचुर्भूपतिंगत्वात्वरितास्तेतिविह्वलाः ॥३७॥ देवक्याश्चसुतोजातःशीघ्रमेहिमहामते ॥ तदाकर्ण्यवचस्तेषांशी घ्रंभोजपतिर्ययौ ॥ ३८ ॥ प्रावृतंद्वारमालोक्यवसुदेवमथाह्वयत् ॥ कंसउवाच ॥ सुतमानयदेवक्यावसुदेवमहामते ॥ ३९ ॥ मृत्युर्मेचाऽष्टमोगर्भस्तान्नि हन्मिरिपुंहरिम् ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वाकंसवचःशौरिर्भयत्रस्तविलोचनः ॥ ४० ॥ तामादायसुतांपाणौददौचाऽऽशुरुदन्निव ॥ दृष्ट्वाऽथदारिकांराजा विस्मयंपरमंगतः ॥४१॥ देववाणीवृथाजातानारदस्यचभाषितम् ॥ वसुदेवःकथंकुर्यादनृतंसंकटेस्थितः ॥४२॥ रक्षपालाश्चमेसर्वेसावधानानसंशयः ॥ कुतोऽत्रकन्यकाकामंकगतःससुतःकिल ॥ ४३ ॥ संदेहोऽत्रनकर्तव्यःकालस्यविषमागतिः ॥ इतिसंचिंत्यतांबालांगृहीत्वापादयोःखलः ॥ ४४ ॥

त्याशयात् ॥ २९ ॥ कटिदघ्नीकटिप्रमाणा ॥ प्रमाणेद्वयसजितिदघ्नच्प्रत्ययः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ पशुसंज्ञितांगवांविभूतिमित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ तत्रागत्येति ॥ देवकार्यार्थंसर्वेश्वरी देवीसैरंध्रीरूपधारिणीसतीतांबालांजातांकरपंकजेगृहीत्वातत्रवसुदेवसमीपआगत्यवसुदेवायददावित्यन्वयः ॥ वसुदेवोपिसुतंसैरंध्रीकरपंकजेदत्त्वातांबालिकामादाययायावित्यन्वयः॥३४॥ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ॥ इतिश्रीदे०भा०ति०चतु०त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुकाश्चित्कृष्णकथाःशुभाः ॥ कथ्यंतेमोहिताःसर्वेमाययेतिबुभुत्सया ॥ १ ॥ पूर्वाध्याये पूतनैषाव्रजत्वद्यबालघ्नीनंदगोकुलमित्युक्तम् तत्रगोकुलेकृष्णाविर्भावज्ञानंकंसस्यकथंजातमितिराज्ञोमनसिशंकास्यात्तन्निरासा

पोथयामासपाषाणेनिर्घृणःकुलपांसनः ॥ साकरान्निःसृतावालाययावाकाशमंडलम् ॥ ४५ ॥ दिव्यरूपातदाभूत्वातमुवाचमृदुस्वना ॥ किंमयाहतया पापजातस्तेबलवान्रिपुः ॥ ४६ ॥ हनिष्यतिदुराराध्यःसर्वथात्वांनराधमम् ॥ इत्युक्त्वासागताकन्यागगनंकामगाशिवा ॥४७॥ कंसस्तुविस्मयाऽऽविष्टोगतोनिजगृहंतदा ॥ आनाय्यदानवान्सर्वानिदंवचनमब्रवीत् ॥ ४८ ॥ बकधेनुकवत्सादीन्क्रोधाविष्टोभयाऽऽतुरः ॥ गच्छंतुदानवाःसर्वेममकार्यार्थसिद्धये ॥ ४९ ॥ जातमात्राश्चहंतव्यावालकायत्रकुत्रचित् ॥ पूतनैषाव्रजत्वद्यबालघ्नीनंदगोकुलम् ॥५०॥ जातमात्रान्विनिघ्नंतीशिशूंस्तत्रममाऽऽज्ञया ॥ धेनुकोवत्सकःकेशीप्रलंबोबकएवच ॥ ५१ ॥ सर्वेतिष्ठंतुतत्रैवममकार्यचिकीर्षया ॥ इत्याऽऽज्ञाप्याऽसुरान्कंसोययौनिजगृहंखलः ॥ ५२॥ चिंताविष्टोऽतिदीनात्माचिंतयित्वैवतंपुनः ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥ ॥ व्यासउवाच ॥ प्रातर्नंदगृहेजातःपुत्रजन्ममहोत्सवः ॥ किंवदंत्यथकंसेनश्रुताचारमुखादपि ॥ १ ॥ जानातिवसुदेवस्यदारास्तत्रवसंतिहि ॥ पशवोदासवर्गश्चसर्वेतेनंदगोकुले ॥ २॥ तेनशंकासमाविष्टोगोकुलंप्रतिभारत ॥ नारदेनाऽपितत्सर्वंकथितंकारणंपुरा ॥३॥ गोकुलेयेचनंदाद्यास्तत्पत्न्यश्चसुरांशजाः ॥ देवकीवसुदेवाद्याःसर्वेतेशत्रवःकिल ॥ ४ ॥ इतिनारदवाक्येनबोधितोऽसौकुलाऽधमः ॥ जातःकोपमनाराजन्कंसःपरमपापकृत् ॥ ५ ॥ पूतनानिहतातत्रकृष्णेनाऽमिततेजसा ॥ बकोवत्सासुरश्चाऽपिधेनुकश्चमहाबलः ॥ ६ ॥ प्रलंबोनिहतस्तेनतथागोवर्धनोधृतः ॥ श्रुत्वैतत्कर्मकंसस्तुमेनेमरणमात्मनः ॥ ७ ॥ तथाविनिहतःकेशीज्ञात्वाकंसोऽतिदुर्मनाः ॥ धनुर्यागमिषेणाऽऽशुतावानेतुंप्रचक्रमे ॥ ८ ॥ अक्रूरंप्रेषयामासक्रूरःपापमतिस्तदा ॥ आनेतुंरामकृष्णौचवधायाऽमितविक्रमौ ॥ ॥ ९ ॥ रथमारोप्यगोपालौगोकुलाद्गांदिनीसुतः ॥ आगतोमथुरायांतुकंसादेशेस्थितःकिल ॥ १० ॥ तावागत्यतदातत्रधनुर्भंगंचचक्रतुः ॥ हत्वाऽथरजकंकामंगजंचाणूरमुष्टिकम् ॥ ११ ॥ शलंचतोशलंचैवनिजघानहरिस्तदा ॥ जघानकंसंदेवेशःकेशेष्वाकृष्यलीलया ॥ १२ ॥ पितरौमोचयित्वाऽथगतदुःखौचकारह ॥ उग्रसेनायराज्यंतद्ददावरिनिषूदनः ॥ १३ ॥ वसुदेवस्तयोस्तत्रमौंजीबंधनपूर्वकम् ॥ कारयामासविधिवद्व्रतबंधंमहामनाः ॥ १४ ॥

र्थस्वयमेवव्यासआह । प्रातरिति ॥ किंवदंतीजनश्रुतिःसाश्रुताचारमुखादपिपुत्रोत्सवःश्रुतइत्यर्थः ॥ १ ॥ द्वितीयंज्ञानकारणमाह।जानातीति ॥ २ ॥ तेनकारणेनकंसोगोकुलंप्रतिकृष्णजन्मशंकयासमाविष्टोयुक्तोऽभवदित्यर्थः ॥ तृतीयंज्ञानकारणंप्राह । नारदेनेति ॥ कारणंज्ञानकारणमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ इत्थंगोकुलेकृष्णाविर्भावज्ञानकारणंकंसस्योपपाद्यकृष्णजन्मोत्तरंकृष्णवृत्तंकिंचिद्वर्णयति । पूतनेति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ गांदिनीसुतोऽक्रूरः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १५ ॥ १६ ॥ जामातृवधःकंसवधः ॥ १७ ॥ ससप्तेति ॥ कृष्णेनसंग्रामंसप्तदशवारमासाद्यकृत्वाजरासंधोमधुपुर्यांनिवासिनाकृष्णेनजितइत्यन्वयः॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥

उपनीतौतदातौतुगतौसांदीपनालयम् ॥ विद्याःसर्वाःसमभ्यस्यमथुरामागतौपुनः ॥१५॥ जातौद्वादशवर्षीयौकृतविद्यौमहाबलौ ॥ मथुरायांस्थितौवीरौ सुतावानकदुंदुभेः ॥ १६ ॥ मागधस्तुजरासंधोजामातृवधदुःखितः ॥ कृत्वासैन्यसमाजंसमथुरामागतःपुरीम् ॥१७॥ ससप्तदशवारंतुकृष्णेनकृतबुद्धिना ॥ जितःसंग्राममासाद्यमधुपुर्यांनिवासिना ॥१८॥ पश्चाच्चप्रेरितस्तेनसकालयवनाऽभिधः ॥ सर्वम्लेच्छाधिपःशूरोयादवानांभयंकरः ॥१९॥ श्रुत्वायवनमायांतंकृष्णःसर्वान्यदूत्तमान् ॥ आनाय्यचतथाराममुवाचमधुसूदनः ॥ २० ॥ भयंनोऽत्रसमुत्पन्नंजरासंधान्महाबलात् ॥ किंकर्तव्यंमहाभागायवनःसमुपैतिवै ॥ २१ ॥प्राणत्राणंप्रकर्तव्यंत्यक्त्वागेहंबलंधनम् ॥ सुखेनस्थीयतेयत्रसदेशःखलुपैतृकः ॥ २२ ॥ सदोद्वेगकरःकामंकिंकर्तव्यःकुलोचितः ॥ शैलसागरसान्निध्येस्थातव्यंसुखमिच्छता ॥२३॥ यत्रवैरिभयंनस्यात्स्थातव्यंतत्रपंडितैः ॥ शेषशय्यांसमाश्रित्यहरिःस्वपितिसागरे ॥ २४ ॥ तथैवचभयाद्भीतःकैलासेत्रिपुरार्दनः ॥ तस्मान्नाऽत्रैवस्थातव्यमस्माभिःशत्रुतापितैः ॥ २५ ॥ द्वारवत्यांगमिष्यामःसहिताःसर्वएववै ॥ कथितागरुडेनाऽद्यरम्याद्वारवतीपुरी ॥ २६ ॥ रेवताचलसांनिध्येसिंधुकूलेमनोहरा ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतथ्यंसर्वेयादवपुंगवाः ॥ २७ ॥ गमनायमतिंचक्रुःसकुटुंबाःसवाहनाः ॥ शकटानितथोष्ट्राश्चवाम्यश्चमहिषास्तथा ॥ २८ ॥ धनपूर्णानिकृत्वातेनिर्ययुर्नगराद्बहिः ॥ रामकृष्णौपुरस्कृत्यसर्वेतेसपरिच्छदाः॥२९॥अग्रेकृत्वाप्रजाःसर्वाश्चेलुःसर्वेयदूत्तमाः ॥ कतिचिद्दिवसैःप्रापुःपुरींद्वारवतींकिल ॥ ३० ॥ शिल्पिभिःकारयामासजीर्णोद्धारंहिमाधवः ॥ संस्थाप्ययादवांस्तत्रतावेतौबलकेशवौ ॥ ३१ ॥ तरसामथुरामेत्यसंस्थितौनिर्जनांपुरीम्॥ तदातत्रैवसंप्राप्तोबलवान्यवनाधिपः ॥ ३२ ॥ ज्ञात्वैनमागतंकृष्णोनिर्ययौनगराद्बहिः ॥ पदातिरग्रेतस्याऽभूद्यवनस्यजनार्दनः ॥ ३३ ॥ पीतांबरधरःश्रीमान्प्रहसन्मधुसूदनः ॥ तंदृष्ट्वापुरतोयांतंकृष्णंकमललोचनम् ॥ ३४ ॥ यवनोऽपिपदातिःसन्पृष्ठतोऽनुगतःखलः ॥ प्रसुप्तोयत्रराजर्षिर्मुचुकुंदोमहाबलः॥३५॥ प्रययौभगवांस्तत्रसकालयवनोहरिः ॥ तत्रैवांतर्दधेविष्णुर्मुचुकुंदंसमीक्ष्यच ॥३६॥ तत्रैवयवनःप्राप्तःसुप्तभूतमपश्यत ॥ मत्वातंवासुदेवंसपादेनाताडयन्नृपम् ॥३७॥ प्रबुद्धःक्रोधरक्ताक्षस्तंददाहमहाबलः॥ तंदग्ध्वामुचुकुंदोऽथददर्शकमलेक्षणम् ॥३८॥ वासुदेवंसुदेवेशंप्रणम्यप्रस्थितोवनम् ॥ जगामद्वारकांकृष्णोबलदेवसमन्वितः ॥ ३९ ॥ उग्रसेनंनृपंकृत्वाविजहारयथारुचि ॥ अहरद्रुक्मिणींकामंशिशुपालस्वयंवरात् ॥ ४० ॥ राक्षसेनविवाहेनचक्रेदारविधिंहरिः ॥ ततोजांबवतींसत्यांमित्रविंदांचभामिनीम् ॥ ४१ ॥

अतएवक्षीराब्धौकैलासेचहरिहरौस्थितावित्याह । शेषेति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ अहरदिति ॥ शिशुपालस्यस्वयंवराद्रुक्मिणीमहरत् ॥ ४० ॥ तदनंतरंराक्षसेनविवाहेनदारविधिंचक्रेहरिरित्यर्थः ॥ ४१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ वृत्रासुरादयइति ॥ ययावृत्रासुरादयोऽत्रादिपदेनरक्तासुरादयोगृह्यंते तेदैत्यालीलयैवहतास्तांदेवीमितिपूर्वेणान्वयः ॥४६॥४७॥ मातरिति ॥ मयानारायणसंज्ञकेन ॥ हेजननि सभक्तिभावस्तेत्वयाविस्मृतःकिम् ॥ ४८ ॥ दुष्टमनसाशत्रुणाअथवाकेनाचित्कौतुकान्मानापहारकरणायममाभिमानापहारणंकर्तुंसूतीगृहादपहृतइत्यर्थः ॥ उभयथाऽऽपिहेअंब भक्तजनस्यलज्जातवयुक्ताअपेक्षितेत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ममैवदोषात्प्रारब्धरूपादित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ नोवेद्म्यहमिति ॥ यदाहमेवसर्वेश्वरत्वेनाभिमतोनवेद्मितेचरितम् ॥ तदाल्पविदेवाल्पज्ञएवदेहीकोवेदनकोपीत्यर्थः ॥ हर्तापुत्रहरणकर्ताभटैर्नचवीक्षितइत्यर्थः ॥ इयंतवकल्पिताजवनिकामायांऽतर्धानपटोभवतीत्यर्थः ॥ ५२ ॥ केनापिप्रकारेणान्येनपुत्रोममनीतइतिनैवप्रतिभात्यथपुत्रस्तुनदृश्यतेतस्मात्तवैवेयंमायेतिभावः॥ नन्वेतादृशीमायामयाकदर्शिताऽस्तीतिचेद्बलदेवजन्मसमयइत्याह । चित्रमिति ॥ ममपुरतोममैवाग्रदेशेऽर्धसमयेदशमासा

कालिंदींलक्ष्मणांभद्रांतथानाग्नजितींशुभाम् ॥ पृथक्पृथक्समानीयाऽप्युपयेमेजनार्दनः ॥ ४२ ॥ अष्टावेवमहीपालपत्न्यःपरमशोभनाः ॥ प्रासूतरुक्मिणीपुत्रंप्रद्युम्नंचारुदर्शनम् ॥४३॥ जातकर्मादिकंतस्यचकारमधुसूदनः ॥ हृतोसौसूतिकागेहाच्छंबरेणबलीयसा ॥४४॥ नीतश्चस्वपुरींबालोमायावत्यैसमर्पितः ॥ वासुदेवोहृतंदृष्ट्वापुत्रंशोकसमन्वितः ॥ ४५ ॥ जगामशरणंदेवींभक्तियुक्तेनचेतसा ॥ वृत्रासुरादयोदैत्यालीलयैवययाहताः ॥ ४६ ॥ ततोऽसौयोगमायायाश्चकारपरमांस्तुतिम् ॥ वचोभिःपरमोदारैरक्षरैःस्तवनैःशुभैः ॥४७॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ मातर्मयातितपसापरितोषितात्वंप्राग्जन्मनिप्रसुमनादिभिरर्चिताऽसि ॥ धर्मात्मजेनबदरीवनखंडमध्येकिंविस्मृतोजननितेत्वयिभक्तिभावः॥४८॥ सूतीगृहादपहृतःकिमुबालकोमेकेनाऽपिदुष्टमनसाऽप्यथकौतुकाद्वा ॥ मानापहारकरणायममाद्यनूनंलज्जातवांबखलुभक्तजनस्ययुक्ता ॥ ४९ ॥ दुर्गोमहानतितरांनगरीसुगुप्तातत्राऽपिमेऽतिसदनंकिलमध्यभागे ॥ अंतःपुरेचपिहितंननुसूतिगेहंबालोहृतःखलुतथाऽपिममैवदोषात् ॥ ५० ॥ नाऽहंगतःपरपुरंनचयादवाश्चरक्षावतीचनगरीकिलवीरवर्यैः ॥ मायातवैवजननिप्रकटप्रभावामेबालकःपरिहृतःकुहकेनकेन ॥ ५१ ॥ नोवेद्म्यहंजननितेचरितंसुगुप्तंकोवेदमंदमतिरल्पविदेवदेही ॥ क्वाऽसौगतोममभटैर्नचवीक्षितोवाहर्ताऽविकेजवनिकातवकल्पितेयम्॥५२॥चित्रंनतेऽत्रपुरतोमममातृगर्भानीतस्त्वयाऽर्धसमयेकिलमाययाऽसौ ॥ यंरोहिणीहलधरंसुषुवेप्रसिद्धंदूरेस्थितापतिपरामिथुनंविनाऽपि॥५३॥सृष्टिंकरोषिजगतामनुपालनंचनाशंतथैवपुनरप्यनिशंगुणैस्त्वम् ॥कोवेदतेऽचरितंदुरितांतकारिप्रायेणसर्वमखिलंविहितंत्वयैतत् ॥ ५४ ॥ उत्पाद्यपुत्रजननप्रभवंप्रमोदंदत्त्वापुनर्विरहजंकिलदुःखभारम् ॥ त्वंक्रीडसेसुललितैःखलुतैर्विहारैर्नोचेत्कथंममसुतातिरतिर्वृथास्यात् ॥ ५५ ॥

त्मकजन्मसमयस्यार्धसमयेपंचमेमासिमातृगर्भाद्देवकीगर्भादसौपुत्रस्त्वयानीतः ॥ कोसाविति चेत्तत्राह । यंरोहिणीति ॥ असावित्यर्थः ॥ ननुदेवक्युदरान्मयानीतःपुत्रस्तदुदरेस्थापितइति कुतस्तस्याःपत्युःसकाशादेवपुत्रोजातइत्यस्त्विति चेत्तत्राऽऽह मिथुनंविनापीति ॥ पत्युर्वसुदेवस्यकारागृहेस्थितत्वेनततसंयोगासंभवेनपुत्रस्यतन्मिथुनजन्यत्वाभावात् ॥ ननुव्यभिचारेणैव पुत्रोजातोस्त्विति चेत्तत्राऽऽह।पतिपरेति ॥ पतिव्रतेत्यर्थः ॥ ततश्चनव्यभिचारसंभवः ॥ तथाचान्यस्याउदराद्गर्भापहरणकर्त्र्यास्तवसूतीगृहात्पुत्राहरणेनाचित्रं नाश्चर्यमित्यर्थः ॥ ५३ ॥ किंचजगत्सृष्टिस्थितिसंहारकर्त्र्यास्तवैतादृशकरणेकिंचित्रमित्याभिप्रायेणाऽऽह । सृष्टिंकरोषीति ॥ ५४ ॥ ५५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५६ ॥ सीमेति ॥ लोकेसुतजन्मसुखस्यसीमाभवतितदीयनाशःपुत्रस्यनाशोदुःखस्यसीमाभवति ॥ ततोमेप्रथमेपुत्रेनष्टेहृदयंस्फुटतीवद्विधाभवत्येवेत्यर्थः ॥ ५७ ॥ यज्ञंकरोमीति ॥ अंवायज्ञंकरिष्यामीत्यर्थः ॥ ॥ वर्तमानसामीप्येलट् ॥ पुत्रप्राप्त्युत्तरंत्वत्प्रीत्यर्थंनानायज्ञान्व्रताद्यनुष्ठानानिचकरिष्यामीत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेचतुर्थस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ अशीतिपद्यवर्यैस्तुकिंचिज्ज्ञत्वंहरादिषु ॥ प्रतिपाद्यपराशक्तेःसर्वेशत्वमुदीर्यते ॥ १ ॥ इत्थंपूर्वाध्यायांतेश्रीभगवतीप्रसादात्प्रद्युम्नप्राप्तिंकृष्णस्यश्रुत्वासंशयाविष्टोराजापृच्छाति । संदेहोमेमुनिश्रेष्ठेति ॥ ननुराज्ञाप्रथमस्कंधारंभेऽप्येतादृशाएवप्रश्नाःकृतामुनिनाचमायाधीनत्वाद्ब्रह्मादिदेवानांसंभवतिसर्वमेतादित्युत्तरंदत्तम् ॥ पुनर्द्वितीयवारंतृतीयवारंतथैवप्रश्नोराज्ञाकृतोमुनिनाचतथैवोत्तरमभिहितम् ॥ पुनरंतेतथैवप्रश्नोराज्ञाक्रियतेमुनिनाचतथैवोत्तरमभिधीयते ॥ तथाचैतादृशपुनरुक्तेर्दोषरूपायाःकिंप्रयोजनमितिचेन्न ॥ सर्वप्राणिजातस्याऽवांतरसृष्ट्यादिकर्तृषुब्रह्मादिषुश्रीभगवतीकल्पितसत्त्वाद्येकैकगुणोपाधिषु श्रीभगवत्यधीनेषुपरिच्छिन्नेषुअसर्वज्ञत्वात्सर्वशक्तिमत्सु श्रीभगवतीसृष्टसमष्टि

माताऽस्यरोदितिभृशंकुररीवबालादुःखंतनोतिममसन्निधिगासदैव ॥ कष्टंनवेत्सिललितेप्रमितप्रभावेमातस्त्वमेवशरणंभवपीडितानाम् ॥ ५६ ॥ सीमासुखस्यसुतजन्मतदीयनाशोदुःखस्यदेविभवनेविबुधावदंति ॥ तत्किंकरोमिजननिप्रथमेप्रनष्टेपुत्रेममाऽद्यहृदयंस्फुटतीवमातः ॥५७॥ यज्ञंकरोमितवतुष्टिकरंव्रतंवादैवंचपूजनमथाऽखिलदुःखहात्वम् ॥ मातःसुतोऽत्रयदिजीवतिदर्शयाऽऽशुत्वंवैक्षमासकलशोकविनाशनाय ॥ ५८ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीकृष्णेनाक्लिष्टकर्मणा ॥ प्रत्यक्षदर्शनाभूत्वातमुवाचजगद्गुरुम् ॥ ५९ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ शोकंमाकुरुदेवेशशापोऽयंतेपुरातनः॥तस्ययोगेनपुत्रस्तेशंबरेणहृतोबलात् ॥६०॥ अतस्तेषोडशेवर्षेहत्वातंशंबरंबलात् ॥ आगमिष्यतिपुत्रस्तेमत्प्रसादान्नसंशयः ॥ ६१ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वांऽतर्दधेदेवीचंडिकाचंडविक्रमा ॥ भगवानपिपुत्रस्यशोकंत्यक्त्वाऽभवत्सुखी ॥६२॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ राजोवाच ॥ संदेहोमेमुनिश्रेष्ठजायतेवचनात्तव ॥ वैष्णवांशेभगवतिदुःखोत्पत्तिंविलोक्यच ॥ १ ॥ नारायणांशसंभूतोवासुदेवःप्रतापवान् ॥ कथंससूतिकागाराद्धृतोबालोहरेरपि ॥ २ ॥ सुगुप्तनगरेरम्येगुप्तेऽथसूतिकागृहे ॥ प्रविश्यतेनदैत्येनगृहीतोऽसौकथंशिशुः ॥ ३ ॥ नज्ञातोवासुदेवेनचित्रमेतन्ममाद्भुतम् ॥ जायतेमहदाश्चर्यंचित्तेसत्यवतीसुत ॥ ४ ॥

प्रपंचेऽवांतरजीवव्यष्टिसृष्ट्यादिकर्तृत्वश्रवणाल्लोकानांसर्वज्ञत्वसर्वशक्तिमत्त्वसर्वेश्वरत्वभ्रमोबहुकालंप्रवृत्तोऽस्ति तदुच्छेदायपुनःपुनःसमानप्रश्नोत्तरयोःसत्त्वात् ॥ नहिबहुकालवासनावासितांतःकरणस्यसकृदुपदेशेनिर्वाहोऽस्ति ॥ राजातुपराशक्तिपरमभक्तोलोकानांतादृशवासनामुच्छेदयितुंप्रवृत्तोनकथंपुनःपुनस्तादृक्प्रश्नान्कुर्यादिति ॥ ननुकृष्णावतारकथाखंडितैवोक्ता ॥ तथारामावतारकथाऽपि ॥ साप्यनेकवारमुक्तेतिननिष्प्रयोजनमेतादृशंकथनंक्वचिदस्तीतिचेन्न ॥ तेषामसर्वज्ञतादिप्रतिपादनार्थंग्रंथस्यसत्त्वेनतत्कथाकथनेआसक्त्यभावबोधनार्थंतथाकथनात् ॥ नह्यत्रराज्ञोव्यासस्यवाकृष्णरामादिकथावर्णनेतात्पर्यमस्ति किंतुश्रीभगवतीगुणाऽनुवर्णनेएवतात्पर्यम् ॥ तस्याश्चसर्वज्ञत्वंसर्वोत्तमत्वंचप्रतिपादयितुंप्रवृत्तौतत्रयदितादितरत्रामकृष्णादिपुतत्सर्वज्ञत्वादिकंस्यात्तदाभगवत्यांस्थितंसर्वज्ञत्वादिकमाकुलंभवेत् अतस्तेषामत्रैवयत्किंचित्कथाप्रदर्शनेनासर्वज्ञतादिकंपरतंत्रत्वादिकंतेषांप्रतिपादयितुंतथाकथनात् ॥ तात्पर्यंतुश्रोतृवक्त्रोस्तेषामसर्वज्ञत्वादिकंप्रतिपाद्यसर्वज्ञत्वंसर्वेश्वरत्वंस्वतंत्रत्वंसर्वोत्तमत्वंचश्रीभगवत्यामेवाऽस्तीत्यत्रेति ॥ १ ॥ नारायणांशेति ॥ नारायणांशसंभूतोयस्तस्यहरेरित्यन्वयः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५ ॥ एतत्पर्यंतंकृष्णस्याऽसर्वज्ञत्वंपरतंत्रत्वंचप्रतिपादितंशंकित्राराज्ञाव्यासस्तुतदेवाऽसर्वज्ञत्वंपरतंत्रत्वंचतेषांस्थापयाति मायेति ॥ ६ ॥ नदेवानासुरास्तदेति ॥ तदामानुषभावप्राप्तिकालेनदेवानदेवस्वभावास्तिष्ठंति तथानासुरादैत्यस्वभावास्तिष्ठंतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ नकेवलंकृष्णाऽवतारएवासर्वज्ञत्वंपरतंत्रत्वंच किंतुरामाद्यवतारेऽपीत्याह । यथाहेमम्मृगमिति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ कुपितोरघुनंदनइति ॥ अनेनसाधनेनेत्थमग्रेभविष्यतीत्यज्ञात्वैवप्रारब्धवशेनैवेदंसर्वमकरोदितिभावः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

ब्रूहितत्कारणंब्रह्मन्नज्ञातंकेशवेनयत् ॥ हरणंतत्रसंस्थेनशिशोर्वासूतिकागृहात् ॥ ५ ॥ व्यासउवाच ॥ मायाबलवतीराजन्नराणांबुद्धिमोहिनी ॥ शांभवीविश्रुतालोकेकोवामोहंनगच्छति ॥ ६ ॥ मानुषंजन्मसंप्राप्यगुणाःसर्वेऽपिमानुषाः ॥ भवंतिदेहजाःकामंनदेवानाऽसुरास्तदा ॥ ७ ॥ क्षुत्तृण्निदाभयंतंद्राव्यामोहःशोकसंशयः ॥ हर्षश्चैवाऽभिमानश्चजरामरणमेवच ॥ ८ ॥ अज्ञानंग्लानिरप्रीतिरीर्ष्यासूयामदःश्रमः ॥ एतेदेहभवाभावाःप्रभवंतिनराधिप ॥ ॥ ९ ॥ यथाहेममृगंरामोनबुबोधपुरोगतम् ॥ जानक्याहरणंचैवटायुमरणंतथा ॥ १० ॥ अभिषेकदिनेरामोवनवासंनवेदच ॥ तथानज्ञातवान्रामःस्वशोकान्मरणंपितुः ॥ ११ ॥ अज्ञवद्विचचाराऽसौपश्यमानोवनेवने ॥ जानकींनविवेदाऽथरावणेनहृतांबलात् ॥ १२ ॥ सहायान्वानरान्कृत्वाहत्वाशक्रसुतंबलात् ॥ सागरेसेतुबंधंचकृत्वोत्तीर्यसरित्पतिम् ॥ १३ ॥ प्रेषयामाससर्वासुदिक्षुतान्कपिकुंजरान् ॥ संग्रामंकृतवान्घोरंदुःखंप्रापरणाऽजिरे ॥ १४ ॥ बंधनंनागपाशेनप्रापरामोमहाबलः ॥ गरुडान्मोक्षणंपश्चादन्वभूद्रघुनंदनः ॥ १५ ॥ अहनद्रावणंसंख्येकुंभकर्णमहाबलम् ॥ मेघनादंनिकुंभंचकुपितोरघुनंदनः ॥ १६ ॥ अदूष्यत्वंचजानक्यानविवेदजनार्दनः ॥ दिव्यंचकारयामासज्वलितेऽग्नौप्रवेशनम् ॥ १७ ॥ लोकाऽपवादाच्चपरंततस्तत्याजतांप्रियाम् ॥ अदूष्यांदूषितांमत्वासीतांदशरथात्मजः ॥ १८ ॥ नज्ञातौस्वसुतौतेनरामेणचकुशीलवौ ॥ मुनिनाकथितौतौतुतस्यपुत्रौमहाबलौ ॥ १९ ॥ पातालगमनंचैवजानक्याज्ञातवान्नच ॥ राघवःकोपसंयुक्तोभ्रातरंहंतुमुद्यतः ॥ २० ॥ कालस्याऽऽगमनंचैवनविवेदखरांतकः ॥ मानुषंदेहमाश्रित्यचक्रेमानुषचेष्टितम् ॥ ॥ २१ ॥ तथैवमानुषान्भावान्नाऽत्रकार्याविचारणा ॥ पूर्वंकंसभयात्प्राप्तोगोकुलेयदुनंदनः ॥ २२ ॥ जरासंधभयात्पश्चाद्द्वारवत्यांगतोहरिः ॥ अधर्मंकृतवान्कृष्णोरुक्मिण्याहरणंचयत् ॥ २३ ॥ शिशुपालहृतायाश्चजानन्धर्मंसनातनम् ॥ शुशोचबालकंकृष्णःशंबरेणहृतंबलात् ॥ २४ ॥ मुमोदजानन्पुत्रंतंहर्षशोकयुतस्ततः ॥ सत्यभामाऽऽज्ञयायत्तुयुयुधेस्वर्गतःकिल ॥ २५ ॥ इंद्रेणपादपार्थंतुस्त्रीजितत्वंप्रकाशयन् ॥ जहारकल्पवृक्षंयःपराभूयशतक्रतुम् ॥ २६ ॥ मानिनीमानरक्षार्थंहरिश्चित्रधरःप्रभुः ॥ बद्धावृक्षेहरिंसत्यानारदायददौपतिम् ॥ २७ ॥

॥ १९ ॥ २० ॥ खरांतकःखरदैत्यनाशनोरामोमानुषंदेहमाश्रित्यप्रारब्धकर्मयोगान्मानुषचेष्टितंचक्रेइत्यर्थः ॥ २१ ॥ रामावतारेदृष्टांतभूतेऽज्ञत्वमसर्वज्ञत्वंपरतंत्रत्वंचाऽऽचरणेनदर्शयित्वादार्ष्टांतिकेकृष्णावतारेदर्शयति पूर्वंकंसभयादिति ॥ २२ ॥ २३ ॥ धर्मंजानन्सञ्छिशुपालेनहृतायारुक्मिण्याइत्यन्वयः ॥ अनेनचाऽधर्मनिष्ठत्वंकृष्णस्यबोधितम् ॥ २४ ॥ स्वर्गतःस्वर्गेगतइत्यर्थः ॥ सार्वविभक्तिकस्तसिर्वा ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ पुरतोऽग्रेस्थितस्यशंभोःस्तुतिंचकारेत्यन्वयः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

दत्त्वाथकानकंकृष्णंमोचयामासभामिनी ॥ दृष्ट्वापुत्रान्पुरुगुणान्प्रद्युम्नप्रमुखानथ ॥ २८ ॥ कृष्णंजांबवतीदीनाययाचेसंततिंशुभाम् ॥ सययौपर्वतंकृ
ष्णस्तपस्याकृतनिश्चयः ॥ २९ ॥ उपमन्युर्मुनिर्यत्रशिवभक्तःपरंतपः ॥ उपमन्युंगुरुंकृत्वादीक्षांपाशुपतींहरिः ॥ ३० ॥ जग्राहपुत्रकामस्तुमुंडीदंडी
बभूवह ॥ उग्रंतत्रतपस्तेपेमासमेकंफलाशनः ॥ ३१ ॥ जजापशिवमंत्रंतुशिवध्यानपरोहरिः ॥ द्वितीयेतुजलाहारास्तिष्ठन्नेकपदाहरिः ॥ ३२ ॥ तृती
येवायुभक्षस्तुपादांगुष्ठाऽग्रसंस्थितः ॥ षष्ठेतुभगवान्रुद्रःप्रसन्नोभक्तिभावतः ॥ ३३ ॥ दर्शनंचददौतत्रसोमःसोमकलाधरः ॥ आजगामवृषारूढः सुरैरिं
द्रादिभिर्वृतः ॥ ३४ ॥ ब्रह्मविष्णुयुतःसाक्षाद्यक्षगंधर्वसेवितः ॥ संबोधयन्वासुदेवंशंकरस्तमुवाचह ॥ ३५ ॥ तुष्टोऽस्मिकृष्णतपसातवोग्रेणमहामते ॥
ददामिवांछितान्कामान्ब्रूहियादवनंदन ॥ ३६ ॥ मयिदृष्टेकामपूरेकामशेषोनसंभवेत् ॥ व्यासउवाच ॥ तंदृष्ट्वाशंकरंतुष्टंभगवान्देवकीसुतः ॥ ३७ ॥ पपा
तपादयोस्तस्यदंडवत्प्रेमसंयुतः ॥ स्तुतिंचकारदेवेशोमेघगंभीरयागिरा ॥ ३८ ॥ स्थितस्तुपुरतःशंभोर्वासुदेवःसनातनः॥कृष्णउवाच ॥ देवदेवजगन्नाथ
सर्वभूताऽऽर्तिनाशन ॥३९॥ विश्वयोनेसुरारिघ्नमस्त्रैलोक्यकारक॥नीलकंठनमस्तुभ्यंशूलिनेतेनमोनमः ॥ ४० ॥ शैलजावल्लभायाऽथयज्ञघ्नायनमो
स्तुते ॥ धन्योऽहंकृतकृत्योऽहंदर्शनात्तवसुव्रत ॥४१॥ जन्ममेसफलंजातंनत्वातेपादपंकजम् ॥ बद्धोऽहंस्त्रीमयैःपाशैःसंसारेऽस्मिञ्जगद्गुरो ॥४२॥ शरणं
तेऽद्यसंप्राप्तोरक्षणार्थंत्रिलोचन ॥ संप्राप्यमानुषंजन्मखिन्नोऽहंदुःखनाशन ॥ ४३ ॥ त्राहिमांशरणंप्राप्तंभवभीतंभवाऽधुना ॥ गर्भवासेमहद्दुःखंप्राप्तंमदन
दाहक ॥४४॥ जन्मतःकंसभयजमनुभूतंचगोकुले ॥ जातोऽहंनंदगोपालोवल्लवाज्ञाकरस्तथा ॥ ४५ ॥ गोरजःकीर्णकेशस्तुभ्रमन्वृंदावनेघने ॥ म्लेच्छ
राजभयत्रस्तोगतोद्वारवतींपुनः॥४६॥त्यक्त्वापित्र्यंशुभंदेशंमाथुरंदुर्लभंविभो ॥ ययातिशापबद्धेनतस्मैदत्तंभयाद्विभो ॥ ४७॥ राज्यंसुपुष्टमपिचधर्मर
क्षापरेणच ॥ उग्रसेनस्यदास्यत्वंकृतंवैसर्वदामया ॥ ४८ ॥ राजाऽसौयादवानांवैकृतोनःपूर्वजैःकिल ॥ गार्हस्थ्यंदुःखदंशंभोस्त्रीवश्यंधर्मखंडनम् ॥४९॥
पारतंत्र्यंसदावंधोमोक्षवार्ताऽत्रदुर्लभा ॥ रुक्मिण्यास्तनयान्दृष्ट्वाभार्याजांबवतीमम ॥ ५० ॥ प्रेरयामासपुत्रार्थंतपसेमदनांतक ॥ सकामेनमयातप्तंतपःपु
त्रार्थमद्यवै ॥ ५१ ॥ लज्जाभवतिदेवेशप्रार्थनायांजगद्गुरो ॥ कस्त्वामाराध्यदेवेशंमुक्तिदंभक्तवत्सलम् ॥५२॥ प्रसन्नंयाचतेमूढःफलंतुच्छंविनाशियत् ॥
सोऽयंमायाविमूढात्मायाचेपुत्रसुखंविभो ॥ ५३ ॥ कामिन्याप्रेरितःशंभोमुक्तिदंत्वांजगत्पते ॥ जानामिदुःखदंशंभोसंसारंदुःखसाधनम् ॥ ५४ ॥ अ
नित्यंनाशधर्माणंतथाऽपिविरतिर्नमे ॥ शापान्नारायणांशोऽहंजातोऽस्मिन्क्षितिमंडले ॥ ५५ ॥ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ एतावत्पर्यंतंकृष्णस्याऽल्पज्ञत्वंपरतंत्रत्वंस्त्रीजितत्वमनीश्वरत्वंमूढत्वंचोपपादितम् ॥ तदेवमुपसंहरञ्छ्री भगवत्याःसर्वज्ञत्वंसर्वोत्तमत्वंसर्वेश्वरत्वंसर्वाराध्यत्वंचश्रुत्याऽऽगमसिद्धमुपसंहरति । तस्मादिति ॥ यस्माद्धेतोरेतादृशीविडंबनैतादृशावताराणांभवति तस्माद्यद्यपिब्रह्मादयोऽस्मदपेक्षयाऽधी श्वराःपरमेश्वराःसंति ॥ ६६ ॥ तथाऽपिनसर्वापेक्षयापरमेश्वराः किंतुमायायाःकल्लोलास्तरंगास्तेषांवेगेनक्षुभितांतराःसंति ॥ यथाकाष्ठपुत्तलिकापुरुषाधीनातद्वदुपमायेषामेतादृशास्तद धीनामायाधीनाःसंति ॥ तस्मान्मुख्यासर्वापेक्षयासर्वेश्वरीसैवाऽस्तीतिभावः ॥ ६७ ॥ साचनस्वातंत्र्येणजगत्प्रेरयति किंतुप्राक्तनकर्माऽनुरोधेनाऽन्यथोच्चावचप्राणिकर्तृत्वेनवैषम्यनैर्घृण्ये

भोक्तुंबहुतरंदुःखंमायापाशेनयंत्रितः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तवंतंगोविंदंप्रत्युवाचमहेश्वरः ॥ ५६ ॥ बहवस्तेभविष्यंतिपुत्राःशत्रुनिषूदन ॥ स्त्रीणांषो डशसाहस्रंभविष्यतिशतार्धकम् ॥ ५७ ॥ तासुपुत्रादशदशभविष्यंतिमहाबलाः ॥ इत्युक्त्वोपररामाऽऽशुशंकरःप्रियदर्शनः ॥ ५८ ॥ उवाचगिरिजा देवीप्रणतंमधुसूदनम् ॥ कृष्णकृष्णमहाबाहोसंसारेऽस्मिन्नराधिप ॥ ५९ ॥ गृहस्थप्रवरोलोकेभविष्यतिभवानिह ॥ ततोवर्षशतांतेतुद्विजशापाज्जनार्द न ॥ ६० ॥ गांधार्याश्चतथाशापाद्भवितातेकुलक्षयः ॥ परस्परंनिहत्याऽजौपुत्रास्तेशापमोहिताः ॥ ६१ ॥ गमिष्यंतिक्षयंसर्वेयादवाश्चतथापरे ॥ सानु जस्त्वंतथादेहंत्यक्त्वायास्यसिवैदिवम् ॥६२॥ शोकस्तत्रनकर्तव्योभवितव्यंप्रतिप्रभो ॥ अवश्यंभाविभावानांप्रतीकारोनविद्यते ॥ ६३ ॥ तत्रशोको नकर्तव्योनूनंममममतंसदा ॥ अष्टावक्रस्यशापेनभार्यास्तेमधुसूदन ॥६४॥ चौरेभ्योग्रहणंकृष्णगमिष्यंतिमृतेत्वयि॥व्यासउवाच॥इत्युक्त्वाऽतर्दधेशंभुः सोमःससुरमंडलः ॥ ६५ ॥ उपमन्युंप्रणम्याऽथकृष्णोऽपिद्वारकांययौ ॥ तस्माद्ब्रह्मादयोराजन्संतियद्यप्यधीश्वराः ॥ ६६ ॥ तथापिमायाकल्लोलयोगसं क्षुभितांतराः ॥ तदधीनाःस्थिताः सर्वेकाष्ठपुत्तलिकोपमाः ॥ ६७ ॥ यथायथापूर्वभवंकर्मतेषांतथातथा ॥ प्रेरयत्यनिशंमायापरब्रह्मस्वरूपिणी ॥६८॥ नवैषम्यंननैर्घृण्यंभगवत्यांकदाचन ॥ केवलंजीवमोक्षार्थंयततेभुवनेश्वरी ॥ ६९ ॥ यदिसानैवसृज्येतजगदेतच्चराचरम् ॥ तदामायाविनाभूतंजडंस्यादेव नित्यशः ॥ ७० ॥ तस्मात्कारुण्यमाश्रित्यजगज्जीवादिकंचयत् ॥ करोतिसततंदेवीप्रेरयत्यनिशंचतत् ॥ ७१ ॥ तस्माद्ब्रह्मादिमोहेऽस्मिन्कर्तव्यःसंश योनहि ॥ मायांतःपातिनःसर्वेमायाधीनाःसुराऽसुराः ॥ ७२ ॥

स्यातामित्याह । यथायथेति ॥ मायापरब्रह्मस्वरूपिणीतिपदेनमायाविशिष्टब्रह्मस्वरूपिणीतिस्पष्टमेवोक्तम् ॥ ६८ ॥ यस्मादेवंतस्मान्नवैषम्यमिति यदितस्याःस्वातंत्र्येणेच्छानास्तितर्हि किमर्थमन्यकर्मानुरुध्यसाजगत्करोतीतिचेत्तत्राह । जीवमोक्षार्थमिति ॥ ६९ ॥ तदेवोपपादयति ॥ प्रलयकालेजगन्मायायांलीनंतथैवतिष्ठेन्नतुमुक्तंभवेत्तत्तत्कर्मानुरोधेन ॥ जगत्सर्जनेतु कर्मोपासनाकरणेनश्रवणमननादिनाचाऽऽत्मसाक्षात्कारेणजगन्मुक्तंभवेत्तस्मात्कारुण्यमवलंब्यस्वेच्छयाविहारेऽपिप्राणिमोक्षार्थंजगज्जीवादिकंकरोतिकर्मानुरोधेनतदेवप्रेरयतिचेतिभावः ॥ मायाविनाभूतंमायायांलीनमित्यर्थः ॥ जडंबुद्धिरहितमित्यर्थः ॥ ७० ॥७१ ॥ तस्माद्धेराजन्ब्रह्मादीनांकथंमोहोभवतीत्यादिपूर्वोक्तःसंशयस्त्वयानैवकर्तव्यइत्याह । तस्मादिति ॥ तत्रहे तुमाह । मायांतःपातिनइति ॥ ७२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



तर्हिस्वतंत्रः कोऽस्तीतिचेत्तत्राऽऽह । स्वतंत्रासैवदेवेशीति ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ आत्मरूपांहृदाज्ञात्वेति ॥ तथाचश्वेताश्वतरोपनिषदि तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवा त्मशक्तिस्वगुणैर्निगूढामिति ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ देवीलोकेपूर्वोक्तेमणिद्वीपे ॥ ८२ ॥ पुराणंपंचममिति ॥ ब्राह्मंपाद्मंवैष्णवंचशैवंभागवतंतथेति महापुराणसंग्रहवाक्ये



स्वतंत्रासैवदेवेशीस्वेच्छाचारविहारिणी ॥ तस्मात्सर्वात्मनाराजन्सेवनीयामहेश्वरी ॥ ७३ ॥ नातःपरतरंकिंचिदधिकंभुवनत्रये ॥ एतद्धिजन्मसाफल्यं पराशक्तेःपदस्मृतिः ॥ ७४ ॥ माभूत्तत्रकुलेजन्मयत्रदेवीनदैवतम् ॥ अहंदेवीनचान्योऽस्मिब्रह्मैवाऽहंनशोकभाक् ॥ ७५ ॥ इत्यभेदेनतांनित्यांचिंतये ज्जगदंबिकाम् ॥ ज्ञात्वागुरुमुखादेनांवेदांतश्रवणादिभिः ॥ ७६ ॥ नित्यमेकाग्रमनसाभावयेदात्मरूपिणीम् ॥ मुक्तोभवतितेनाऽऽशुनाऽन्यथाकर्मको टिभिः ॥ ७७ ॥ श्वेताश्वतरादयःसर्वेऋषयोनिर्मलाशयाः ॥ आत्मरूपांहृदाज्ञात्वाविमुक्ताभवबंधनात् ॥ ७८ ॥ ब्रह्मविष्ण्वादयस्तद्वद्गौरीलक्ष्म्यादय स्तथा ॥ तामेवसमुपासंतेसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ ७९ ॥ इतितेकथितंराजन्यद्यत्पृष्टंत्वयानघ ॥ प्रपंचतापत्रस्तेनकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ८० ॥ एत त्तेकथितंराजन्मयाख्यानमनुत्तमम् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंपुराणंपरमाद्भुतम् ॥ ८१ ॥ यइदंशृणुयान्नित्यंपुराणंवेदसंमितम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोदेवीलोके महीयते ॥ ८२ ॥ सूतउवाच ॥ एतन्मयाश्रुतंव्यासात्कथ्यमानंसविस्तरम् ॥ पुराणंपंचमंनूनंश्रीमद्भागवताऽभिधम् ॥ ८३ ॥ इति श्रीदेवीभागव ते महापुराणे चतुर्थस्कंधे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

अर्धाधिकैर्वसुविधुयुगविश्वंभरा ( १४१८ ) भिधैः ॥ पद्यैश्चतुर्थस्कंधोऽयंकथितोव्यासनिर्मितैः ॥

पुराणांतरेषुपंचमत्वेनगृहीतमित्यर्थः ॥ ८३ ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोऽभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्याऽस्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यांयःकृतवान्सम्यक्तिलकाख्यांशुभार्थदाम् ॥ २ ॥ चतुर्थस्कंधएतस्याःसमाप्तोऽभूच्छुभार्थदः ॥ प्रीयतांतेनमेदेवीभुवनेशीमहेश्वरी ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथां त्मजलक्ष्मीगर्भजनीलकंठविरचितेदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाऽभिधेचतुर्थस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ समाप्तोयंचतुर्थस्कंधः ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८.
शके १८२३, सन् १९०१ ई०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे चतुर्थस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे पञ्चमस्कन्धः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अजांदुस्तरसंसारसमुद्रपरिशोषिणीम् ॥ वंदेसमंदहसितांबालकोटिरविप्रभाम् ॥ १ ॥ चतुर्भिरधिकैःपंचाशद्भिःश्लोकैरथोत्तरम् ॥ विष्णोरपेक्षयारुद्रःश्रेष्ठइत्ये वकीर्त्यते ॥ २ ॥ पूर्वाध्यायांतेब्रह्मादीनांश्रीभगवत्यधीनत्वमल्पज्ञत्वंपरिच्छिन्नत्वंचोपपाद्यश्रीभगवत्याःश्रुत्यागमयुक्तिभिःस्वतंत्रत्वंसर्वज्ञत्वंसर्वेश्वरत्वंव्यापकत्वंसर्वकारणत्वंचो पपादितंतदुपपादनप्रसंगेशिवस्यसशक्तिकस्यकृष्णाऽऽराध्यत्वंप्रतिपादितंतत्रऋषयःसाशंकाःपृच्छंति । भवताकथितंसूतेति ॥ १ ॥ अविस्तरेणप्रोच्यमानेनःसंदेहोजायतइत्यन्वयः ॥ २ ॥ तपस्तप्तंपुत्रार्थंतस्मिंस्तपसिशिवस्याऽऽराधनंसर्वोत्तमत्वबुद्ध्याकृतमिदमेकम् ॥ ३ ॥ तथापूर्णायाव्यापिकायाजगन्मातुरंशभूतयापार्वत्यायद्वरप्रदानंकृतमिदंद्वितीयम् ॥ ॥ ४ ॥ तत्रईश्वरेणापीति ॥ ईश्वरेणकृष्णेनस्वतोन्यूनतारहितेनकुतस्तौशक्तिशिवौपूर्जितौकिंप्रयोजनंतस्यतयोःपूजनेतदेवंप्रकारेणसंशयोममभवतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ तत्रकृष्णे नशिवपूजनइत्यर्थः ॥ व्यासश्रुतंव्यासाच्छ्रुतंकारणमित्यर्थः ॥ ६ ॥ यथामांप्रतिभवद्भिःप्रश्नःकृतएवंव्यासंप्रत्यपिजनमेजयेनप्रश्नःकृतस्तत्रतेनयदुत्तरंदत्तंतदेवभवद्भिरुत्तरंबोध्यमि

ऋषयऊचुः ॥ भवताकथितंसूतमहदाऽऽख्यानमुत्तमम् ॥ कृष्णस्यचरितंदिव्यंसर्वपातकनाशनम् ॥ १ ॥ संदेहोऽत्रमहाभागवासुदेवकथानके ॥ जाय तेनःप्रोच्यमानेविस्तरेणमहामते ॥ २ ॥ वनेगत्वातपस्तप्तंवासुदेवेनदुष्करम् ॥ विष्णोरंशाऽवतारेणशिवस्याऽऽराधनंकृतम् ॥ ३ ॥ वरप्रदानंदेव्या चपार्वत्यायत्कृतंपुनः ॥ जगन्मातुश्चपूर्णायाःश्रीदेव्याअंशभूतया ॥ ४ ॥ ईश्वरेणाऽपिकृष्णेनकुतस्तौसंप्रपूजितौ ॥ न्यूनतावाकिमस्त्यस्यतदेवंसंशयो मम ॥ ५ ॥ सूतउवाच ॥ शृणुध्वंकारणंतत्रमयाव्यासश्रुतंचयत् ॥ प्रब्रवीमिमहाभागाःकथांकृष्णगुणान्विताम् ॥ ६ ॥ वृत्तांतंव्यासतःश्रुत्वावैराटी सुतजस्तदा ॥ पुनःपप्रच्छमेधावीसंदेहंपरमंगतः ॥ ७ ॥ जनमेजयउवाच ॥ सम्यक्सत्यवतीसूनोश्रुतंपरमकारणम् ॥ तथाऽपिमनसोवृत्तिःसंशयंनवि मुंचति ॥ ८ ॥ कृष्णेनाराधितःशंभुस्तपस्तप्त्वाऽतिदारुणम् ॥ विस्मयोऽयंमहाभागदेवदेवेनविष्णुना ॥९॥ यःसर्वात्माऽपिसर्वेशःसर्वसिद्धिप्रदःप्रभुः ॥ सकथंकृतवान्घोरंतपःप्राकृतवद्धरिः ॥ १० ॥ जगत्कर्तुंक्षमःकृष्णस्तथापालयितुंक्षमः ॥ संहर्तुमपिकस्मात्सदारुणंतपआचरत् ॥ ११ ॥ व्यासउवाच ॥ सत्यमुक्तंत्वयाराजन्वासुदेवोजनार्दनः ॥ क्षमःसर्वेषुकार्येषुदेवानांदैत्यसूदनः ॥ १२ ॥ तथाऽपिमानुषंदेहमाश्रितःपरमेश्वरः ॥ कृतवान्मानुषान्भावा न्वर्णाऽऽश्रमसमाश्रितान् ॥ १३ ॥ वृद्धानांपूजनंचैवगुरुपादाऽभिवंदनम् ॥ ब्राह्मणानांतथासेवादेवताराधनंतथा ॥ १४ ॥

त्याह । वृत्तांतमिति ॥ पूर्वोक्तंवृत्तांतम् कृष्णेनशिवशक्त्योराराधनाकृतेत्येवंरूपंवैराटीसुतजोवैराटीविराटस्यापत्यंकन्योत्तरातस्याःसुतःपरिक्षित्तस्माज्जातोजनमेजयइत्यर्थः ॥ ७ ॥ परमकारणमुत्कृष्टंकारणंमायाविशिष्टब्रह्मरूपंश्रीभगवतीपदवाच्यमित्यर्थः ॥ तच्छ्रुत्वाऽपिमनोवृत्तिः संशयंनविमुंचति ॥ ८ ॥ कोऽसौसंशयइतिचेत्तत्राह । कृष्णेनेति ॥ ९ ॥ १० ॥ तपआचरदिति ॥ सर्वेश्वरस्यविष्णोःशिवाऽऽराधनंनेदंयुक्तमित्यर्थः ॥ ११ ॥ व्यासोंगीकरोति । सत्यमिति ॥ देवानांकार्येषुक्षमःसमर्थइत्यर्थः ॥ १२ ॥ यद्यपीत्थमस्तितथाऽपिकार णद्वयसत्त्वात्तपश्चर्याशिवोद्देशेनतेनकृतेत्यभिप्रायेणकारणद्वयेप्रथमंकारणमाह । तथापीति ॥ मनुष्यदेहाऽपेक्षयाशिवादिदेवतादेहानामुत्कृष्टत्वान्मनुष्यदेहधारिभिःश्रीरामकृष्णादिभिर्ध र्ममार्गप्रवर्तकैःशिवादिपूजनेनकृतेवरिष्ठपक्षपातित्वात्सर्वेषांकेऽपिशिवादिपूजनंनकुर्युः ॥ अतःकृष्णादिभिःशिवादिपूजनंकृतमित्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १५ ॥ गुणमयेसत्त्वादिगुणनिर्मितेगुणवृत्तयोनियमेनभविष्यंत्येवेत्यर्थः ॥ १६ ॥ मनुष्यदेहसंबंधादज्ञत्वमप्यतएवागतामित्याह । सौवलीशापजादिति ॥ सौवलीगांधारी ॥ ब्राह्मणोऽष्टावक्रः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ इत्थंप्राकृतदृष्ट्याऽपिशिवाराधकत्वंकृष्णस्योपपाद्यपरमार्थदृष्ट्याविष्णोरपेक्षयाशिवएवोत्कृष्टइतिविष्णोरपिशिवाराधकत्वमस्ति ॥ किंपुनस्तदवतारा णांरामकृष्णादीनामित्यभिप्रायेणद्वितीयंकारणमाह । विष्णोरंशावतारेइति ॥ विष्णोरवतारोधर्मात्मजोनारायणस्तदवतारःकृष्णस्तस्मिन्शिवसेवनेकिंचित्रमित्यर्थः ॥ २० ॥ शिवस्यवि ष्णोरपेक्षयोत्कृष्टत्वंप्रतिपादयति । सहिसर्वेश्वरइति ॥ यतःसशिवःसुषुप्तस्थानंकारणदेहस्तस्यनाथोऽधिपतिस्तत्स्वरूपोऽतोलिंगसूक्ष्मदेहाऽभिमानिनस्तत्स्वरूपस्यविष्णोरपिकारणंजनकः शिवः ॥ कारणदेहस्याऽज्ञानरूपस्यलिंगदेहजनकत्वात् ॥ २१ ॥ यतोविष्णोरपिकारणंशिवोविष्णुनाचसर्वदापूजितस्ततोहि तदंशभूतास्तस्यविष्णोरंशभूतायेकृष्णरामाद्यास्तैःकथंनस शिवःपूज्यते अपितुसर्वथापूज्यतएवेत्यर्थः ॥ शिवस्यसुषुप्तस्थाननाथत्वमुपपादयति । अकारइति ॥ प्रणवेहिचत्वारोभागाअकारोकारमकारार्धमात्रारूपाः देहेऽपिचत्वारोभागाश्चतुष्पाद्ब्रह्म

शोकेशोकाऽभियोगश्चहर्षेहर्षसमुन्नतिः ॥ दैन्यंनानाऽपवादाश्चस्त्रीषुकामोपसेवनम् ॥१५॥ कामःक्रोधस्तथालोभःकालेकालेभवंतिहि ॥ तथागुणमयेदेहे निर्गुणत्वंकथंभवेत् ॥ १६ ॥ सौवलीशापजाद्दोषात्तथाब्राह्मणशापजात् ॥ निधनंयादवानांतुकृष्णदेहस्यमोचनम् ॥१७॥ हरणंलुंठनंतद्वत्तत्पत्नीनांनरा धिप॥अर्जुनस्याऽस्त्रमोक्षेचक्लीवत्वंतस्करेषुच ॥१८॥ अज्ञत्वंहरणेगेहात्तत्प्रद्युम्नाऽनिरुद्धयोः ॥ एवंमानुषदेहेऽस्मिन्मानुषंखलुचेष्टितम् ॥ १९ ॥ विष्णो रंशाऽवतारेऽस्मिन्नारायणमुनेस्तथा ॥ अंशजेवासुदेवेऽत्रकिंचित्रंशिवसेवने ॥२०॥ सहिसर्वेश्वरोदेवोविष्णोरपिचकारणम् ॥ सुषुप्तस्थाननाथःसविष्णुना चप्रपूजितः ॥२१॥ तदंशभूताःकृष्णाद्यास्तैःकथंनसपूज्यते ॥ अकारोभगवान्ब्रह्माप्युकारःस्याद्धरिःस्वयम् ॥ २२ ॥ मकारोभगवान्रुद्रोप्यर्धमात्रामहे श्वरी ॥ उत्तरोत्तरभावेनाऽप्युत्तमत्वंस्मृतंबुधैः ॥२३॥ अतःसर्वेषुशास्त्रेषुदेवीसर्वोत्तमास्मृता॥अर्धमात्रास्थितानित्यायानुच्चार्याऽविशेषतः ॥२४॥ विष्णो रप्यधिकोरुद्रोविष्णुस्तुब्रह्मणोऽधिकः ॥ तस्मान्नसंशयःकार्यःकृष्णेनशिवपूजने ॥ २५ ॥ इच्छयाब्रह्मणोवक्त्राद्वरदानार्थमुद्भवौ ॥ मूलरुद्रस्यांशभूतो रुद्रनामाद्वितीयकः ॥ २६ ॥

रूपाः स्थूलसूक्ष्मकारणतुरीयरूपाः तेचब्रह्मविष्णुरुद्रपरंब्रह्मपदवाच्यास्तापनीयादिषुप्रसिद्धास्तत्राकारोब्रह्मवाचकउकारोविष्णुवाचकोमकारोरुद्रवाचकोऽर्धमात्राचिद्रूपश्रीदेवीवाचिके त्यर्थः ॥ तुरीयेप्यंतर्मुखस्वाऽभिन्नमायायाःसत्त्वान्मायाविशिष्टब्रह्मरूपत्वंपूर्वंदेव्याउक्तंनविरुध्यते ॥ तुरीयस्यनित्यत्वमपिमायावैशिष्ट्येऽपिमायाकार्यत्वस्याऽभावाद्बोध्यम् ॥ मायारहि तंतुतुरीयाऽतीतमितिनृसिंहतापिन्यांस्पष्टम् ॥ २२ ॥ एतेषांचतुर्णांभागानामुत्तरोत्तरभावेनब्रह्माऽपेक्षयाविष्णुरुत्तमस्तदपेक्षयारुद्रस्तदपेक्षयाचिद्रूपासंविद्भगवतीउत्तमेत्येवंरीत्याउत्तमत्वं बुधैःस्मृतमित्यर्थः ॥ तथाचविष्णोरपेक्षयोत्तरस्थानस्थितरुद्रस्योत्तमत्वाद्विष्णुपूज्यत्वमव्याहतमितिभावः ॥ २३ ॥ यतएवमतआह । अतइति ॥ यतःसर्वापेक्षयोत्तरस्थानस्थिताचिद्रूपा भगवतीततोभगवत्येवसर्वशास्त्रेषूत्तमास्मृतेत्यर्थः ॥ साचनित्यात्रिकालाबाध्याऽस्तीत्याह । अर्धमात्रेति ॥ २४ ॥ विष्णोरपेक्षयारुद्रस्योत्तमत्वमुपसंहरति । विष्णोरप्यधिकइति ॥२५॥ ननुब्रह्मणउत्पन्नस्यरुद्रस्यकथंविष्णोरधिकत्वंतत्राह । इच्छयेति ॥ ब्रह्मणासृष्ट्यर्थंशिवस्याऽऽराधनाकृता ॥ तन्मनोरथपूर्त्यर्थंस्वेच्छयास्वांशेनशिवस्तस्माद्ब्रह्मणोवक्त्राद्वरदानार्थमुद्भावुत्प न्नोमूलरुद्रांशभूतोद्वितीयोरुद्रःसइत्यर्थः ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यःपुनर्मूलरुद्रांशभूतोब्रह्मणोललाटादुत्पन्नः सोऽपिसर्वेषांविष्णवादीनांपूज्योऽस्ति तदामूलरुद्रःसर्वेषांपूज्योऽस्तीत्यत्रकाकथेत्यर्थः ॥ शिवस्योत्तमत्वेहेत्वंतरमुपपादयति । देवीतत्त्वस्येति॥ देवीतत्त्वंसंवित्तत्त्वंतत्सान्निध्यंकारणदेहस्यतदभिमानिनोरुद्रस्यवर्तते ॥ विष्णोर्लिंगदेहाऽभिमानिनोर्लिंगदेहस्यचकारणदेहेनव्यवधानात्तद्द्वारासान्निध्यमितिविष्णोरपेक्षयारुद्रस्याऽऽधिक्यं निःसंशयमित्यर्थः ॥ इदंसर्वंसूतसंहितायांसौरसंहितायांचस्पष्टम्। परतत्त्वप्रकाशस्तुरुद्रस्यैवमहत्तरः ॥ नतथासर्वदेवानांसान्निध्याऽभावहेतुतइत्यादि ॥ विष्णोस्तुतत्त्वसंबंधोरुद्रद्वारकएव हीत्यादिनापुराणांतरेषुचस्पष्टमितिबोध्यम् ॥ २७ ॥ इत्थंविष्णोरपेक्षयाशिवस्योत्तमत्वंप्रतिपाद्यपुनःसर्वाऽपेक्षयाश्रीदेव्याउत्तमत्वंवर्णयति । अवताराइति ॥ २८ ॥ यानेत्रेति ॥ नेत्रो न्मीलनेनेत्यर्थः ॥ परिभूयमानान् नानावतारकलनेग्रहणेदुःखैःपरिभवंप्राप्यमाणानित्यर्थः ॥ २९ ॥ सूतीगृहात्प्रसवगृहाद्व्रजनंगोकुलंप्रतिकृष्णस्येत्यर्थः ॥ पशुपालराज्ञोनंदस्यभवनेसं गोपितोदैत्यादिभ्योरक्षितःश्रीकृष्णोऽनयैव ॥ भीतचित्तःश्रीकृष्णोननुनिश्चयेनश्रीद्वारकाप्रणयनेऽप्यनयैवदेव्याविनियोजितइत्यर्थः ॥ ३० ॥ निर्मायेति ॥ षोडशसहस्राधिकाः शतार्ध

सोऽपिपूज्योऽस्तिसर्वेषांमूलरुद्रस्यकाकथा ॥ देवीतत्वस्यसान्निध्यादुत्तमत्वंस्मृतंशिवे ॥ २७ ॥ अवताराहरेरेवंप्रभवंतियुगेयुगे ॥ योगमायाप्रभावेनना ऽत्रकार्याविचारणा ॥ २८ ॥ यानेत्रपक्ष्मपरिसंचलनेनसम्यग्विश्वंसृजत्यवतिहंतिनिगूढभावा ॥ सैषाकरोतिसततंद्रुहिणाऽच्युतेशान्नानाऽवतारकलनेपरि भूयमानान् ॥ २९ ॥ सूतीगृहाद्व्रजनमप्यनयानियुक्तंसंगोपितश्चभवनेपशुपालराज्ञः ॥ संप्रापितश्चमथुरांविनियोजितश्चश्रीद्वारकाप्रणयनेननुभीताचि त्तः ॥ ३० ॥ निर्मायषोडशसहस्रशतार्धकास्तानार्योऽष्टसंमततराःस्वकलासमुत्थाः ॥ तासांविलासवशगंतुविधायकामंदासीकृतोहिभगवाननयाप्य नंतः ॥ ३१ ॥ एकाऽपिबंधनविधौयुवतीसमर्थापुंसोयथासुदृढलोहमयंतुदाम ॥ किनामषोडशसहस्रशताऽर्धकाश्चतंस्वीकृतंशुकमिवाऽतिनिबंधयंति ॥ ३२ ॥ सात्राजितीवशगतेनमुदान्वितेनप्राप्तंसुरेंद्रभवनंहरिणातदानीम् ॥ कृत्वामृधंमघवताविहतस्तरूणामीशःप्रियासदनभूषणतांयआप ॥ ३३ ॥ योभीमजांहिहृतवाञ्छिशुपालकादींजित्वाविधिंनिखिलधर्मकृतंविधित्सुः ॥ जग्राहतांनिजबलेनचधर्मपत्नींकोऽसौविधिःपरकलत्रहृतौविजातः ॥ ३४ ॥

काःपंचाशत्संख्याकानार्योऽपिपंचाशदधिकषोडशसहस्रनार्योऽपिराजकन्यारूपाः स्वयमेवभगवतीनिर्मायतथास्वकलास्वशक्तिस्तस्याःसकाशात्समुत्थाअष्टाष्टसंख्याकानायिकाः स्वयमेवदे वीनिर्मायतासांविलासवशगंकृष्णंविधायाऽनयादेव्यालोकाभिमतोभगवान्कृष्णआसांस्त्रीणांदासीकृतइत्यर्थः ॥ सर्वंचेष्टितंश्रीभगवतीकृतमेवेतिभावः ॥ ३१ ॥ एकापीति ॥ लोहमयं दामशृंखला ॥ इत्थंस्त्रीबंधनेनाहिकश्चित्स्वतंत्रःपतेत् ॥ तस्मात्परांवाप्रेरितस्तदधीनएवकृष्णः सर्वंकरोतीत्यर्थः ॥ ३२ ॥ स्त्रीसंबंधादनेकदुःखानिकृष्णेनप्राप्तानितत्रकानिचिद्वर्णयति ॥ सात्राजितीति ॥ सत्राजितस्याऽपत्यंकन्यासत्यभामा ॥ तरूणामीशःपारिजातोयस्तरुःप्रियासदनभूषणतांसत्यभामागृहालंकारतांप्रापेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ कृष्णस्याऽधर्मकारित्वमुपपादय ति ॥ योभीमजामिति ॥ निखिलान्धर्मान्करोत्युत्पादयतियोविधिस्तांविधित्सुःकर्तुमिच्छुर्धर्मात्माऽपिभीमजांरुक्मिणींशिशुपालेनवृतां तत्पत्नींताञ्छिशुपालादींजित्वातांरुक्मिणीमन्यप त्नींस्वस्यधर्मपत्नीत्वेनजग्राहाऽसौपरकलत्रहृतौयोविधिर्जातःसकःधर्मोवाऽधर्मोवेतिभावः ॥ नह्येतादृशाऽधर्माचरणेस्त्रीजनितदुःखभोगेचस्वतंत्रःकश्चित्प्रवर्तेत तस्माच्छ्रीभगवत्यधीनएवसव व्यवहारःकृष्णरामादीनामितिभावः ॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ननुकेनप्रकृत्यंशेनवशीकृताःकृष्णादयोऽन्यथास्वदुःखजनकमप्यनिष्टाचरणंकुर्वंतीतिचेत्तत्राह । अहंकारवशइति ॥ प्रकृतिजन्याऽहंकारवशइत्यर्थः ॥ ३५ ॥ नकेवलंप्राणिचेष्टाएवाऽहंकारजन्याः किंतुसर्वःप्रपंचोऽपीत्याह । अहंकाराद्धीति ॥ प्रकृतिसंभवादहंकारादित्यर्थः ॥ उग्रादन्यथाकारिणः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ननुकुतएवमहंकारस्यव्याप्तिरितिचेत्कारणस्याऽऽहंकारस्यसर्वप्रपंचरूपकार्येऽनुगमादित्याह । कारणेनेति ॥ ४० ॥ दृष्टांतमाह । यथेति ॥ विष्णुरहंकारेणवशीकृतइत्यत्राऽर्थापत्तिमपिप्रमाणयति । विष्णुरिति ॥ ४१ ॥ कथंमयाजगत्पालितंस्यादितिचिंतायाआकारः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अहंकारस्यत्रैविध्यमाह । त्रिविधइति ॥ ४४ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादिदेहेषुविद्यमानःपुरुषोऽहंकारः सात्त्विकादिभेदेनत्रिविधइ

अहंकारवशः प्राणीकरोतिचशुभाऽशुभम् ॥ विमूढोमोहजालेनतत्कृतेनाऽतिपातिना ॥३५॥ अहंकाराद्धिसंजातमिदंस्थावरजंगमम् ॥ मूलाद्धरिहरादीनामुग्रात्प्रकृतिसंभवात् ॥ ३६ ॥ अहंकारपरित्यक्तोयदाभवतिपद्मजः ॥ तदाविमुक्तोभवतिनोचेत्संसारकर्मकृत् ॥३७॥ तन्मुक्तस्तुविमुक्तोहिबद्धस्तद्वशतांगतः ॥ ननारीनधनंगेहंनपुत्रानसहोदराः ॥ ३८॥ बंधनंप्राणिनांराजन्नहंकारस्तुबंधकः ॥ अहंकर्तामयाचेदंकृतंकार्यंबलीयसा ॥३९॥ करिष्यामिकरोम्येवंस्वयंबध्नातिप्राणभृत्॥कारणेनविनाकार्यंनसंभवतिकर्हिचित् ॥४०॥ यथानदृश्यतेजातोमृत्पिंडेनविनाघटः ॥ विष्णुःपालयिताविश्वस्याऽहंकारसमन्वितः ॥ ४१ ॥ अन्यथासर्वदाचिंतांबुधौमग्नःकथंभवेत् ॥ अहंकारविमुक्तस्तुयदाभवतिमानवः ॥ ४२ ॥ अवतारप्रवाहेषुकथंमज्जेच्छुभाशयः ॥ मोहमूलमहंकारःसंसारस्तत्समुद्भवः ॥ ४३ ॥ अहंकारविहीनानांनमोहोनचसंसृतिः ॥ त्रिविधःपुरुषःप्रोक्तःसात्त्विकोराजसस्तथा ॥ ४४ ॥ तामसस्तुमहाराजब्रह्मविष्णुशिवादिषु ॥ त्रिविधस्त्रिषुराजेंद्रकाऽजेशादिषुसर्वदा ॥ ४५ ॥ अहंकारःसदाप्रोक्तोमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ अहंकारेणतेनैवबद्धाएतेनसंशयः ॥ ४६ ॥ मायाविमोहितामंदाःप्रवदंतिमनीषिणः ॥ करोतिस्वेच्छयाविष्णुरवताराननेकशः ॥ ४७ ॥ मंदोऽपिदुःखगहनेगर्भवासेऽतिसंकटे ॥ नकरोतिमतिंविद्वान्कथंकुर्यात्सचक्रभृत् ॥ ४८ ॥ कौसल्यादेवकीगर्भेविष्ठामलसमाकुले ॥ स्वेच्छयाप्रवदंत्यद्धागतोहिमधुसूदनः ॥४९॥ वैकुंठसदनंत्यक्त्वागर्भवासेसुखंनुकिम् ॥ चिंताकोटिसमुत्थानेदुःखदेविषसंमिते ॥ ५० ॥ तपस्तप्त्वाक्रतून्कृत्वादत्वादानान्यनेकशः ॥ नवांछंतियतोलोकागर्भवासंसुदुःखदम् ॥ ५१ ॥ सकथंभगवान्विष्णुःस्ववशश्चेज्जनार्दनः ॥ गर्भवासरुचिर्भूयाद्भवेत्स्ववशतायदि ॥ ५२ ॥

त्यर्थः ॥ त्रिपुतेषुत्रिविधाऽहंकारस्तिष्ठतीत्याह । त्रिविधस्त्रिष्विति ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ननुविष्णोरहंकारवशत्वेनजीववज्जीवत्वमेवजातमितिलोकास्तमीश्वरमितिवदंतितत्राह मायाविमोहिता इति ॥ मनीषिणोऽपियेमायामोहितामंदास्ते विष्णुःस्वेच्छयाऽवतारान्करोतीतिवदंतिनत्वमोहिताः तेतुपरतंत्रएवविष्णुरस्तीतिवदंतीत्यर्थः ॥ ४७ ॥ तत्राऽर्थापत्तिंप्रमाणयति । मंदोऽपीति ॥ गर्भवासेमंदोऽपिमतिंनकरोतितदाचक्रभृत्स्वतंत्रईश्वरश्चेत्कथंकुर्यात्करोतिचतस्मान्नेश्वरःसइत्यर्थः ॥ ४८ ॥ वैष्णवाविष्णोर्गर्भवासगमनंस्वेच्छयेतिवदंति नतुपरेच्छयेत्याह । कौसल्येति ॥ ४९ ॥ तत्खंडयति । वैकुंठेति ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तस्माद्विष्णवादयःपराशक्तिवशाएवनस्वतंत्राः ॥ नकेवलंतएव किंतुसर्वप्रपंचोप्येवमेवेत्याह । जानीहित्वमिति ॥ ५३ ॥५४॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ ॥ १ ॥ पंचाशद्भिरथश्लोकैर्देवीमाहात्म्यवर्णने ॥ जनमेजयपृष्टासामहिषोत्पत्तिरुच्यते ॥ १ ॥ पूर्वस्कंधेश्रीभगवत्याएवसर्वोत्तमत्वंसर्वेशत्वंसर्वशक्तिचक्रवर्तित्वंसर्वव्यापकत्वंसर्वज्ञत्वंसर्वांतर्यामित्वंसकलकल्याणगुणरत्नाकरत्वंश्रुतिस्मृतियुक्तिभिरागमाऽनुभवेनचश्रुत्वापरमपराशक्तिभक्तोजनमेजयोराजापराशक्तिकृताऽवताराणामकलंकमहिमानंश्रोतुंपृच्छति । योगेश्वर्याः

जानीहित्वंमहाराजयोगमायावशेजगत् ॥ ब्रह्मादिस्तंबपर्यंतंदेवमानुषतिर्यगम् ॥ ५३ ॥ मायातंत्रीनिबद्धायेब्रह्मविष्णुहरादयः ॥ भ्रमंतिवंधमायां तिलीलयाचोर्णनाभिवत् ॥ ५४ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ राजोवाच ॥ योगेश्वर्याःप्रभावोऽयंकथित श्चातिविस्तरात् ॥ ब्रूहितच्चरितंस्वामिञ्छ्रोतुंकौतूहलंमम ॥ १ ॥ महादेवीप्रभावंवैश्रोतुंकोनाऽभिवांछति ॥ योजानातिजगत्सर्वंतदुत्पन्नंचराचरम् ॥ ॥ २ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिविस्तरेणमहामते ॥ श्रद्दधानायशांतायनब्रूयात्सतुमंदधीः ॥ ३ ॥ पुरायुद्धममूद्घोरंदेवदानवसेनयोः ॥ पृथिव्यांपृथिवीपालमहिषाख्येमहीपतौ ॥ ४ ॥ महिषोनामराजेंद्रचकारतपउत्तमम् ॥ गत्वाहेमगिरौचोग्रंदेवविस्मयकारकम् ॥ ५ ॥ वर्षाणामयुतंपूर्णं चिंतयन्हृदिदेवताम् ॥ तस्यतुष्टोमहाराजब्रह्मालोकपितामहः ॥ ६ ॥ तत्राऽऽगत्याऽब्रवीद्वाक्यंहंसारूढश्चतुर्मुखः ॥ वरंवरयधर्मात्मन्ददामितववांछितम् ॥ ७ ॥ महिषउवाच ॥ अमरत्वंदेवदेववांछामिद्रुहिणप्रभो ॥ यथामृत्युभयंनस्यात्तथाकुरुपितामह ॥ ८ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ उत्पन्नस्यध्रुवंमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ सर्वथामरणोत्पत्तीसर्वेषांप्राणिनांकिल ॥ ९ ॥ नाशःकालेनसर्वेषांप्राणिनांदैत्यपुंगव ॥ महामहीधराणांचसमुद्राणांचसर्वथा ॥ १० ॥ एकंस्थानंपरित्यज्यमरणस्यमहीपते ॥ प्रब्रूहितंवरंसाधोयस्तेमनसिवर्तते ॥११॥ महिषउवाच ॥ नदेवान्मानुषाद्दैत्यान्मरणंमेपितामह ॥ पुरुषान्नचमेमृत्युर्योषामांकाहनिष्यति ॥ १२ ॥ तस्मान्मेमरणंनूनंकामिन्याःकुरुपद्मज ॥ अवलाहंतमांहंतुंकथंशक्ताभविष्यति ॥ १३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ यदाकदाऽपिदैत्येंद्रनार्यास्तेमरणंध्रुवम् ॥ ननरेभ्योमहाभागमृतिस्तेमहिषाऽसुर ॥ १४ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंदत्त्वावरंतस्मैययौब्रह्मानिजाऽऽलयम् ॥ सोऽपिदैत्यवरःप्रापनिजंस्थानंमुदान्वितः ॥ १५ ॥

प्रभावोयमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ कदायुद्धमभूदितिचेत्तत्राह । पृथिव्यामिति ॥ महिषाख्येमहीपतौपृथिव्यांसतीत्यर्थः ॥४॥ महिषस्यदेवसेनयायुद्धेकस्मात्पराक्रमोजातइतिचेत्तत्राह । महिषोनामेति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ एकंमरणस्यस्थानंनिमित्तंपरित्यज्ययोयथेच्छंवरस्तंब्रूहीत्यर्थः ॥ ११ ॥ योषामांकाहनिष्यतिनहितस्याःशक्तिरस्तिमांहंतुंतस्मात्पुरुषान्मृत्युर्माऽस्तु योषितोमृत्युरस्तिचेदस्तु नममततोभयमस्तीत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ ननरेभ्यइति । पुंस्त्वविशिष्टेभ्योयत्किंचित्प्राणिभ्यइत्यर्थः ॥ नरपदस्यसर्वप्राण्युपलक्षार्थत्वात् ॥ १४ ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





माहिषंरूपंमहिषाकारंरूपमित्यर्थः ॥ महात्मनेत्यनेनाऽयंशिवाऽवतारइतिकालिकापुराणेउक्तं साकथास्मारिता ॥ तत्रहिरंभासुरतपस्ययाप्रसन्नस्यशिवस्यांशोयंजन्मत्रयेतत्सुतो महिषः ॥ सचतपसाममदेवीसायुज्यंभवत्वितिवरंप्रार्थितवानित्यादिकम् ॥ आदिसृष्टावुग्रचंडमूर्त्यात्वंनिहतःपुरा ॥ द्वितीयसृष्टौतुभवान्भद्रकाल्यामयाहतः ॥ दुर्गारूपेणाऽधुना त्वांहनिष्यामिसहानुगमित्युक्तम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ रसालवटोवटयक्षिणीस्थानंयक्षपुर्यामस्तीतिवटयक्षिणीविधानतंत्रेषुस्पष्टम् ॥ १९ ॥ तत्रकरंभोजलेमग्नस्तपश्चकार ॥ रंभस्तु पंचाग्निसाधनंचकार ॥ सरंभस्त्विति ॥ सप्तसिद्धोरंभइत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ सर्वलोकाऽभिवंदितइति ॥ शिवस्यांशइ

राजोवाच ॥ महिषःकस्यपुत्रोऽसौकथंजातोमहाबली ॥ कथंचमाहिषंरूपंप्राप्तंतेनमहात्मना ॥ १६ ॥ व्यासउवाच ॥ दनोःपुत्रौमहाराजविख्यातौक्षितिमंडले ॥ रंभश्चैवकरंभश्चद्वावास्तांदानवोत्तमौ ॥ १७ ॥ तावपुत्रौमहाराजपुत्रार्थंतेपतुस्तपः ॥ बहून्वर्षगणान्कामंपुण्येपंचनदेजले ॥ १८ ॥ करंभस्तुजलेमग्नश्चकारपरमंतपः ॥ वृक्षंरसालवटंप्राप्यसरंभोऽग्निमसेवत ॥ १९ ॥ पंचाग्निसाधनासक्तःसरंभस्तुयदाऽभवत् ॥ ज्ञात्वाशचीपतिर्दुःखमुद्ययौदानवौप्रति ॥ २० ॥ गत्वापंचनदेतत्रग्राहरूपंचकारह ॥ वासवस्तुकरंभंतंतदाजग्राहपादयोः ॥ २१ ॥ निजघानचतंदुष्टंकरंभंवृत्रसूदनः ॥ भ्रातरंनिहतंश्रुत्वारंभःकोपंपरंगतः ॥ २२ ॥ स्वशीर्षंपावकेहोतुमैच्छच्छित्त्वाकरेणह ॥ केशपाशेगृहीत्वाऽऽशुवामेनक्रोधसंयुतः ॥ २३ ॥ दक्षिणेनकरेणोग्रंगृहीत्वाखड्गमुत्तमम् ॥ छिनत्तिशीर्षंतत्तावद्वह्निनाप्रतिबोधितः ॥ २४ ॥ उक्तश्चदैत्यमूर्खोऽसिस्वशीर्षंछेत्तुमिच्छसि ॥ आत्महत्याऽतिदुःसाध्याकथंत्वंकर्तुमुद्यतः ॥ २५ ॥ वरंवरयभद्रंतेयस्तेमनसिवर्तते ॥ माम्रियस्वमृतेनाऽद्यकिंतेकार्यंभविष्यति ॥ २६ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंरंभःपावकस्यसुभाषितम् ॥ ततोब्रवीद्वचोरंभस्त्यक्त्वाकेशकलापकम् ॥ २७ ॥ यदितुष्टोऽसिदेवेशदेहिमेवांछितंवरम् ॥ त्रैलोक्यविजयीपुत्रःस्यान्नःपरबलाऽर्दनः ॥ २८ ॥ अजेयःसर्वथासस्याद्देवदानवमानवैः ॥ कामरूपीमहावीर्यःसर्वलोकाभिवंदितः ॥ २९ ॥ पावकस्तंतथेत्याहभविष्यतितवेप्सितम् ॥ पुत्रस्तवमहाभागमरणाद्विरमाऽधुना ॥ ३० ॥ यस्यांचित्तंतुरंभत्वंप्रमदायांकरिष्यसि ॥ तस्यांपुत्रोमहाभागभविष्यतिबलाऽधिकः ॥ ३१ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तोवह्निनारंभोवचनंचित्तरंजनम् ॥ श्रुत्वाप्रणम्यप्रययौवह्नितंदानवोत्तमः ॥ ३२ ॥ यक्षैःपरिवृतंस्थानंरमणीयंश्रियान्वितम् ॥ दृष्ट्वाचक्रेतदाभावंमहिष्यांदानवोत्तमः ॥ ३३ ॥ मत्तायांरूपपूर्णायांविहायाऽन्यांचयोषितम् ॥ सासमागाच्चतरसाकामयंतीमुदान्विता ॥ ३४ ॥ रंभोऽपिगमनंचक्रेभवितव्यप्रणोदितः ॥ सातुगर्भवतीजातामहिषीतस्यवीर्यतः ॥ ३५ ॥

त्यर्थः ॥ कालिकापुराणेमहिषस्यशिवांशस्यैवोक्तत्वात् ॥ नन्वग्निप्रतिशिवांशोममपुत्रोभवत्वितिप्रार्थनयाऽपिकथंशिवांशःपुत्रोभविष्यतिनह्यग्न्यधीनःशिवोऽस्तीतिचेन्न ॥ अग्निर्वैरुद्रइतिश्रुतेरग्नेःशिवस्वरूपत्वात्स्वप्रार्थनयैवस्वांशस्यजायमानत्वात् ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ननुराक्षसस्याऽपिनानाविधसुंदरीर्विहायपशुजातीयमहिषीगमनंकथंरुचिकरंजातमितिचेत्तत्राह । भवितव्येति ॥ ३५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ भर्तरिरंभसंज्ञकेमृतेसतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ तंमहिषंतयासहमैथुनार्थंधावमानम् ॥ ४२ ॥ हयाऽरिणामहिषेण ॥ शरेण यक्षक्षिप्तशरेण ॥ ४३ ॥ परमंप्रियंयक्षाणांमित्रवर्गांतर्गतमित्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ वार्यमाणाऽपीति ॥ गर्भिण्याःसतीगमनेनाऽधिकारइतिवार्यमाणाऽपिपतिवियोगदुःखमसहमानागर्भवत्येवविभावसुंप्रविवेश ॥ ॥ ४६ ॥ तस्मिन्नेवसमयेमहिष्यांमृतायांचितामध्याद्गर्भस्थितोमहिषोवहिःसमुत्तस्थौनिर्गतः ॥ तस्मिन्नेवसमयेमृतोरंभोऽपिपुत्रवात्सल्याद्रक्तबीजस्यरूपांतरंकृत्वानिर्गतः ॥ ४७ ॥ रक्तबीजोऽप्यसौजातइति ॥ असौरंभएवचितामध्याद्रूपांतरंकृत्वानिर्गतोरक्तबीजोजातः ॥ महिषासुरोऽपिपूर्वोक्तप्रकारेणैवंजातइत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिल

तांगृहीत्वाऽथपातालंप्रविवेशमनोहरम् ॥ महिषेभ्यश्चतांरक्षन्प्रियामनुमतांकिल ॥ ३६ ॥ कदाचिन्महिषश्चान्यःकामार्तस्तामुपाद्रवत् ॥ स्वयमागत्य तंहंतुंदानवःसमुपाद्रवत् ॥ ३७॥ स्वरक्षार्थंसमागम्यमहिषंसमताडयत् ॥ सोऽपितंनिजघानाऽऽशुशृंगाभ्यांकाममोहितः॥ ३८॥ ताडितस्तेनतीक्ष्णाभ्यां शृंगाभ्यांहृदयेभृशम्॥ भूमौपपाततरसाममारचविमूर्छितः॥ ३९॥ मृतेभर्तरिसादीनाभयार्ताविद्रुताभृशम्॥ सावेगात्तंवटंप्राप्ययक्षाणांशरणंगता॥४०॥ पृष्ठतस्तुगतस्तत्रमहिषःकामपीडितः ॥ कामयानस्तुतांकामीबलवीर्यमदोद्धतः॥ ४१॥ रुदतीसाभृशंदीनादृष्टायक्षैर्भयातुरा ॥ धावमानंचतंवीक्ष्ययक्षा स्त्रातुंसमाययुः ॥ ४२ ॥ युद्धंसमभवद्घोरंयक्षाणांचहयाऽरिणा ॥ शरेणताडितस्तूर्णंपपातधरणीतले ॥ ४३ ॥ मृतंरंभंसमानीययक्षास्तेपरमंप्रियम् ॥ चितायांरोपयामासुस्तस्यदेहस्यशुद्धये ॥ ४४ ॥ महिषीसापतिंदृष्ट्वाचितायांरोपितंतदा॥प्रवेष्टुंसामतिंचक्रेपतिनासहपावकम् ॥ ४५ ॥ वार्यमाणाऽपि यक्षैःसाप्रविवेशहुताशनम् ॥ ज्वालामालाकुलंसाध्वीपतिमादायवल्लभम् ॥ ४६ ॥ महिषस्तुचितामध्यात्समुत्तस्थौमहाबलः ॥ रंभोप्यन्यद्वपुःकृत्वानिः सृतःपुत्रवत्सलः ॥ ४७ ॥ रक्तबीजोऽप्यऽसौजातोमहिषोऽपिमहाबलः ॥ अभिषिक्तस्तुराज्येऽसौहयाऽरिरसुरोत्तमैः ॥ ४८ ॥ एवंसमाहिषोजातोरक्त बीजश्चवीर्यवान् ॥ अवध्यस्तुसुरैर्दैत्यैर्मानवैश्चनृपोत्तम ॥ ४९ ॥ इत्येतत्कथितंराजञ्जन्मतस्यमहात्मनः॥ वरप्रदानंचतथाप्रोक्तंसर्वंसविस्तरम्॥ ५० ॥ इति श्रीदेवीभागवतेम०पंचमस्कंधेमहिषाऽसुरोत्पत्तिर्नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंसमहिषोनामदानवोवरदर्पितः ॥ प्राप्यराज्यं जगत्सर्ववशेचक्रेमहाबलः॥१॥पृथिवींपालयामाससागरांतांभुजार्जिताम् ॥ एकच्छत्रांनिरातंकांवैरिवर्गविवर्जिताम्॥२॥ सेनानीश्चिक्षुरस्तस्यमहावीर्योम दोत्कटः॥ धनाध्यक्षस्तथाताम्रःसेनाऽयुतसमावृतः॥ ३॥ असिलोमातथोदर्कोविडालाख्यश्चबाष्कलः ॥ त्रिनेत्रोऽथतथाकालबंधकोबलदर्पितः ॥ ४ ॥

केपंचमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ त्रिपंचाशत्पद्यकैस्तुदेवेंद्रसमरोद्यतः ॥ महासुरःस्वसैन्यस्यसमुद्योगंचकारह ॥ १ ॥ पूर्वाऽध्यायेमहिषाऽसुरस्यबलाऽऽधिक्यकारणंतपस्या दिकमुपपाद्यतेनदेवेंद्रेणसाकंकथंयुद्धंकृतमित्याकांक्षायांयुद्धप्रसंगमुपपादयति। एवमिति ॥ १ ॥ २ ॥ सेनानीःसेनापतिःताम्रोदैत्यस्तुसेनाऽयुतसमावृतः॥ अत्राऽयुतशब्दोबह्वर्थकोबहुसे नावृतोधनाध्यक्षोभांडारगृहाधिपतिर्महिषासुरस्यासीदित्यर्थः ॥ ३ ॥ असिलोमादयोवांतरसेनापतयः ॥ ४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५ ॥ येवलोदग्रावलेनक्रूराः क्षात्रधर्मोयुद्धेचाप्यपलायनमित्यादिस्तास्मिन्येऽवस्थितास्तेनिहताइत्यर्थः ॥ येतुतदन्येतेतुकरदाःकृताइत्यर्थः ॥ ६ ॥ यज्ञभागसमर्पकायज्ञभागंमाहिषासुरायसमर्पयामासुरित्यर्थः ॥ महिषस्यक्षितिमंडलेएवंसर्वेब्राह्मणावशगाजाताइत्यन्वयः ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रणिधिमिति ॥ प्रसिद्धेभूषितेख्यातेप्रणिधिर्नानुचरेपरे ॥ इतिमेदिनीकोशात्प्रणिधिमनुचरम् ॥ हयाऽरिर्महिषासुरःशचीपतिंप्रतिप्रमत्तःप्रेषयामासेत्यर्थः ॥ कथंप्रेषयामासतदाह ॥ ससंदेशेति ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ पूर्वैरिति ॥ अस्माकंपूर्वैः पूर्वजैस्त्वंनिर्जितोऽसि ॥ तवपौरुषंकियद्वर्ततेतदहंजानामीत्यर्थः ॥ १३ ॥ अहल्याजारेति ॥ अहल्याजारेत्यनेनस्त्रीयोनिकुट्टनेएवतवपौरुषंनान्यत्रेतिबोधितम् ॥ व्रजवेतिराज्यंत्यक्त्वेत्यर्थः ॥

एतेसैन्ययुताःसर्वेदानवामेदिनींतदा ॥ आवृत्यसंस्थिताःकाममृद्धांसागरमेखलाम् ॥ ५ ॥ करदाश्चकृताःसर्वेभूमिपालाःपुरातनाः ॥ निहतायेवलोदग्राः क्षात्रधर्मव्यवस्थिताः ॥ ६ ॥ ब्राह्मणावशगाजातायज्ञभागसमर्पकाः ॥ महिषस्यमहाराजनिखिलेक्षितिमंडले ॥ ७ ॥ एकातपत्रंतद्राज्यंकृत्वासमहिषासुरः ॥ स्वर्गंजेतुंमनश्चक्रेवरदानेनगर्वितः ॥ ८ ॥ प्रणिधिंप्रेषयामासहयारिस्तुशचीपतिम् ॥ ससंदेशहरंशीघ्रमाहूयोवाचदैत्यराट् ॥ ९ ॥ गच्छवीरमहाबाहोदूतत्वंकुरुमेऽनघ ॥ ब्रूहिशक्रंदिवंगत्वानिःशंकःसुरसन्निधौ ॥ १० ॥ मुंचस्वर्गंसहस्राक्षयथेष्टंगच्छमाचिरम् ॥ सेवांवाकुरुदेवेशमहिषस्यमहात्मनः ॥ ११ ॥ सत्वांसंरक्षयेन्नूनंराजाशरणमागतम् ॥ तस्मात्त्वंशरणंयाहिमहिषस्यशचीपते ॥ १२ ॥ नोचेद्वज्रंगृहाणाऽऽशुयुद्धायवलसूदन ॥ पूर्वैर्जितोऽसिचाऽस्माकंजानामितवपौरुषम् ॥ १३ ॥ अहल्याजारविज्ञातंवलंतेसुरसंवप ॥ युध्यस्वव्रजवाकामंयत्रतेरमतेमनः ॥ १४ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यशक्रःक्रोधसमन्वितः ॥ उवाचतंनृपश्रेष्ठस्मितपूर्वंवचस्तदा ॥१५॥ नजानेऽहंसुमंदात्मन्यतस्त्वंमददर्पितः॥चिकित्सांसंकरिष्यामिरोगस्याऽस्यप्रभोस्तव ॥ १६ ॥ अतःपरंकरिष्यामिमूलस्याऽस्यनिमूलनम् ॥ गच्छदूततथाब्रूहितस्याऽग्रेममभाषितम् ॥ १७ ॥ शिष्टैर्दूतानहंतव्यास्तस्मात्त्वांविसृजाम्यहम् ॥ युद्धेच्छाचेत्समागच्छत्वरितोमहिषीसुत ॥ १८ ॥ हयारेत्वद्बलंज्ञातंतृणादस्त्वंजडाकृतिः ॥ शृंगयोस्तेकरिष्यामिसुदृढंचशरासनम् ॥१९॥ दर्पःशृंगबलात्तेऽस्तिविदितंकारणंमया ॥ विषाणेपरिच्छित्त्वातेसंहरिष्यामितद्बलम् ॥२०॥ यद्बलेनाऽतिपूर्णस्त्वंजातोऽसिबलदर्पितःकुशलस्त्वंतदाघातेनयुद्धेमहिषाऽधम ॥२१॥ व्यासउवाच॥इत्युक्तोऽसौसुरेंद्रेणसदूतस्त्वरितोगतः॥जगाममहिषंमत्तंप्रणम्यप्रत्युवाचह ॥२२॥ दूतउवाच ॥ राजन्देवाऽधिपःकामंनत्वांविगणयत्यसौ ॥ मन्यतेस्वबलंपूर्णंदेवसैन्यसमावृतः॥२३॥यदुक्तंतेनमूर्खेणकथमन्यद्ब्रवीम्यहम् ॥ प्रियंसत्यंचवक्तव्यंभृत्येनपुरतःप्रभोः ॥२४॥

इत्येवंवाक्यंब्रूहिशक्रंप्रतीतिदैत्यराडुवाच ॥ ततःसदूतोऽपिशक्रंप्रतिगत्वेत्थमुवाचेत्यर्थाद्बोध्यमुत्तरश्लोकानुरोधात् ॥ १४ ॥ तदाशक्रःकिमुवाचदूतंप्रतितदाह ॥ तच्छ्रुत्वेति ॥ १५ ॥ तवप्रभोःस्वामिनोमहिषाऽसुरस्याऽस्यमदरूपरोगस्यचिकित्सामौषधंसंकरिष्यामि ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ तृणादइतितृणभक्षणएवबलंनान्यत्रेतिभावः ॥ १९ ॥ २० ॥ तदाऽऽघातेशृंगाभ्यामाघातेएवकुशलोनयुद्धेइत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ यदुक्तमिति ॥ यत्तेनमूर्खेणेंद्रेणोक्तंतस्मादन्यदन्यथाकथंब्रवीमि ॥ कथंवक्तव्यमित्यर्थः ॥ कुतइतिचेत्तत्राह । प्रियंसत्यमिति ॥ इंद्रोक्तादन्यस्यभिन्नस्यकथनेसत्यबाधःस्यादितिभावः ॥ २४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तत्रनीतिशास्त्रंप्रमाणयति। प्रियंसत्यमिति ॥ २५॥ किंच ॥ सत्यंहित्वादेवराजेनाऽनुक्तमपिकेवलंप्रियंवाक्यंत्वत्संतोषार्थंवक्तव्यम् ॥ तथाऽपितदातवकार्यमिंद्रस्यानलाभोनभविष्यती त्याह। केवलमिति ॥ ननुतर्हिममकार्यार्थमिंद्रेणयत्परुषंवाक्यमुक्तंतदेववदेतिचेत्तत्राह । परुषंचेति ॥ प्रभोरग्रेशुभमिच्छतापुरुषेणपरुषंवाक्यमापिनवक्तव्यंमर्यादाऽभावप्रसंगादितिभावः ॥ २६ ॥ ननुभवतुममाऽमर्यादा तथाऽपियत्तेनोक्तंपरुषंवाक्यंसत्यंतदेववदेतिचेत्तत्राह ॥ यथारिपुमुखादिति ॥ कथंगिरइति ॥ अतिकठोरामयावक्तुमनर्हाअतिनीचावाचस्तेनोक्ता

प्रियंसत्यंचवक्तव्यंप्रभोरग्रेशुभेच्छुना ॥ इतिनीतिर्महाराजजागर्तिशुभकारिणी ॥२५॥ केवलंचेत्प्रियंब्रूयान्नतेकार्यंभविष्यति ॥ परुषंचनवक्तव्यंकदाचि च्छुभमिच्छता ॥ २६ ॥ यथारिपुमुखाद्वाचःप्रसरंतिविषोपमाः ॥ तथाभृत्यमुखान्नाथनिःसरंतिकथंगिरः ॥ २७ ॥ यादृशानीहवाक्यानितेनोक्तानि महीपते ॥ तादृशानिनमेजिह्वावक्तुमर्हतिकर्हिचित् ॥ २८ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यहेतुगर्भंतृणाशनः ॥ भृशंकोपपरीतात्मावभूवमहिषासु रः ॥ २९ ॥ समाहूयाऽब्रवीद्दैत्यान्क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ लांगूलंपृष्ठदेशेचकृत्वामूत्रंपरित्यजन् ॥३०॥ भोभोदैत्याःसुरेंद्रोऽसौयुद्धकामोऽस्तिसर्वथा ॥ वलोद्योगंकुरुध्वंवैजेतव्योऽसौसुराधमः ॥ ३१ ॥ मदग्रेकोभवेच्छूरःकोटिशश्चेत्तथाविधाः ॥ नविभेम्येकतःकामंहनिष्याम्यद्यसर्वथा ॥३२॥ शूरःशांते ष्वसौनूनंतपस्विषुवलाधिकः ॥ वलकर्ताहिकुहकोलंपटःपरदारहृत् ॥ ३३ ॥ अप्सरोवलसंमत्तस्तपोविघ्नकरःखलः ॥ छिद्रप्रहरणःपापोनित्यंविश्वासघा तकः ॥ ३४ ॥ नमुचिर्निहतोयेनकृत्वासंधिंदुरात्मना ॥ शपथान्विविधानादौकृत्वाभीतेनछद्मना ॥ ३५ ॥ विष्णुस्तुकपटाचार्यःकुहकःशपथाकरः ॥ नानारूपधरःकामंवलकृद्दंभपंडितः ॥ ३६ ॥ कृत्वाकोलाऽऽकृतिंयेनहिरण्याक्षोनिपातितः ॥ हिरण्यकशिपुर्येननृसिंहेनचघातितः ॥ ३७ ॥ नाऽहंतद्व शगोनूनंभवेयंदनुनंदनाः ॥ विश्वासंनैवगच्छामिदेवानांकुत्रकर्हिचित् ॥ ३८ ॥ किंकरिष्यतिमेविष्णुरिंद्रोवावलत्तरः ॥ रुद्रोवाऽपिनमेशक्तःप्रतिकर्तुर णांगणे ॥ ३९ ॥ त्रिविष्टपंग्रहीष्यामिजित्वेंद्रंवरुणंयमम् ॥ धनदंपावकंचैवचंद्रसूर्यौविजित्यच ॥ ४० ॥ यज्ञभागभुजःसर्वेभविष्यामोऽद्यसोमपाः ॥ जि त्वादेवसमूहंचविहरिष्यामिदानवैः ॥ ४१ ॥ नमेभयंसुरेभ्यश्चवरदानेनदानवाः ॥ मरणंननरेभ्यश्चनारीकिंमेकरिष्यति ॥ ४२ ॥ पातालपर्वतेभ्यश्चसमा हूयवरान्वरान् ॥ दानवान्ममसैन्येशान्कुर्वंतुत्वरिताश्चराः॥४३॥ एकोऽहंसर्वदेवेशान्विजेतुंदानवाःक्षमः ॥ शोभार्थंवःसमाहूयनयामिसुरसंगमे ॥ ४४ ॥

इत्यर्थः ॥ २७ ॥ तदेवस्पष्टमाह । यादृशानीहेति ॥ २८ ॥ २९ ॥ मूत्रंपरित्यजन्मूत्रयन्नित्यर्थः ॥ वृषभमहिषयोरयंस्वभावोदर्शितः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ शांतेषुसौम्येष्वसौशूरो नमादृशेष्वित्यर्थः ॥ तथातपस्विषुतपःकृशेषुवलाऽधिकोनमादृशेषु ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ प्रतिकर्तुंविपरीतंकर्तुम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हेचराः दूतास्तानाहूतान्दानवान्सैन्येशान्कुर्वंतुभवंतइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ वोयुष्मान्शोभार्थंयुद्धशोभार्थंसमाहूयनयामीत्यर्थः ॥ ४४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४५ ॥ ४६ ॥ जित्वेति ॥ येनकारणेनसुरालयंजित्वानंदनेविहरिष्याम्यहंतत्कुरुतेत्यर्थः ॥ मद्योगाद्यूयमपिसुखिनोभविष्यथेत्याह । मंदारकुसुमापीडाइति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९॥ नानाऽऽसवान्यनेकविधामदिराः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ यज्ञेऽस्माकंविजयार्थंकाम्याऽनुष्ठानरूपेयज्ञेइत्यर्थः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥

शृंगाभ्यांचखुराभ्यांचहनिष्येऽहंसुरान्किल ॥ नमेभयंसुरेभ्यश्चवरदानप्रभावतः॥४५॥अवध्योऽहंसुरगणैरसुरैर्मानवैस्तथा ॥ तस्मात्सज्जाभवंत्वद्यदेवलोकजयायवै॥४६॥जित्वासुरालयंदैत्याविहरिष्यामिनंदने॥मंदारकुसुमापीडादेवयोषित्समन्विताः ॥ ४७ ॥ कामधेनुपयोत्सिक्ताःसुधापानप्रमोदिताः ॥ देवगंधर्वगीतादिनृत्यलास्यसमन्विताः ॥ ४८ ॥ उर्वशीमेनकारंभाघृताचीचतिलोत्तमा॥प्रमद्वरामहासेनामिश्रकेशीमदोत्कटा ॥४९॥ विप्रचित्तिप्रभृतयो नृत्यगीतविशारदाः ॥ रंजयिष्यंतिवःसर्वान्नानाऽऽसवनिषेवणैः ॥५०॥ सर्वेसज्जाभवंत्वद्यरोचतांगमनंदिवि॥संग्रामार्थंसुरैःसार्धंकृत्वामंगलमुत्तमम् ॥५१॥ रक्षणार्थंचसर्वेषांभार्गवंमुनिसत्तमम् ॥ समाहूयचसंपूज्यस्थाप्ययज्ञेगुरुंपरम् ॥ ५२ ॥ व्यासउवाच॥इतिसंदिश्यदैत्येन्द्रान्महिषःपापधीस्तदा॥जगामत्वरितोराजन्भवनंस्वंमुदान्वितः॥५३॥इतिश्रीदेवीभागवतेम०पंचमस्कंधेभगवतीमाहात्म्येदैत्यसैन्योद्योगोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ गतेदूतेसुरेंद्रोऽपिसमाहूयसुरानथ ॥ यमवायुधनाध्यक्षवरुणानिदमूचिवान् ॥१॥ महिषोनामदैत्येंद्रोरंभपुत्रोमहाबलः ॥ वरदर्पमदोन्मत्तोमायाशतविचक्षणः॥२॥तस्यदूतोऽद्यसंप्राप्तःप्रेषितस्तेनभोःसुराः ॥ स्वर्गकामेनलुब्धेनमामुवाचेदृशंवचः॥३॥त्यजदेवालयंशक्रयथेच्छंव्रजवासव॥सेवांवाकुरुदैत्यस्यमहिषस्यमहात्मनः ॥४॥ दयावान्दानवेंद्रोऽसौसतेवृत्तिंविधास्यति॥नतेषुभृत्यभूतेषुनकुप्यतिकदाचन॥५॥नोचेद्युद्धायदेवेशसेनोद्योगंकुरुस्वयम् ॥ गतेमयिसदैत्येंद्रस्त्वरितःसमुपेष्यति ॥६॥ इत्युक्त्वासगतोदूतोदानवस्यदुरात्मनः ॥ किंकर्तव्यमतःकार्यंचिंतयध्वंसुरोत्तमाः ॥ ७ ॥ दुर्बलोऽपिनचोपेक्ष्यःशत्रुर्बलवतासुराः ॥ विशेषेणसदोद्योगीबलवान्बलदर्पितः॥८॥उद्यमःकिलकर्तव्योयथाबुद्धियथाबलम् ॥ दैवाऽधीनोभवेन्नूनंजयोवाऽथपराजयः ॥ ९ ॥ संधियोगोनचात्राऽस्तिखलेसंधिर्निरर्थकः ॥ सर्वथासाधुभिःकार्यंविचार्यचपुनःपुनः ॥ १० ॥ यानमप्यधुनानैवकर्तव्यंसहसापुनः ॥ प्रेक्षकाःप्रेषणीयाश्चशीघ्रगाःसुप्रवेशकाः ॥ ११ ॥ इंगितज्ञाश्चनिःसंगानिःस्पृहाःसत्यवादिनः ॥ सेनाऽभियोगंप्रस्थानंबलसंख्यांयथार्थतः ॥ १२ ॥ ॥ ॥

पंचाशद्भिरथश्लोकैर्विमर्शोदेवसंसदि ॥ बृहस्पतियुतैर्देवैःप्रारब्धइतिकीर्त्यते॥१॥दूतगमनानंतरंदेवलोकेजातंवृत्तमाह । गतेदूतइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥४॥ नतेषुनम्रेषु ॥५॥६॥७॥८॥९॥ संधियोगोमैत्रीयोगः यतोनिरर्थकःखलेसंधियोगस्ततःसर्वथासाधुभिर्भवद्भिः पुनःपुनर्विचार्यकर्तव्यमित्यन्वयः ॥ १० ॥ ननुसंधियोगाऽसंभवेयुद्धार्थंयानमेवतर्हिकर्तव्यमितिचेत्तस्याऽप्यधुनापरबलावेक्षणात्पूर्वंसमयोनाऽस्तीत्याह । यानमिति ॥ तर्ह्यधुनाकिंकर्तव्यमितिचेत्तत्रस्वाभिप्रायमाह । प्रेक्षकाइति ॥ ११ ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वीराणांचपरिज्ञानंकृत्वायांतुत्वरान्विताः ॥ ज्ञात्वादैत्यपतेस्तस्यसैन्यस्यचबलाबलम् ॥ १३ ॥ करिष्यामिततस्तूर्णंयानंवादुर्गसंग्रहम् ॥ "विचार्यखलु
कर्तव्यंकार्यंबुद्धिमतासदा ॥ "सहसाविहितंकार्यंदुःखदंसर्वथाभवेत्॥१४॥तस्माद्विमृश्यकर्तव्यंसुखदंसर्वथाबुधैः ॥ नाऽत्रभेदंविधिर्न्याय्योदानवेषुचसर्व
था ॥ १५ ॥ एकचित्तेषुकार्येऽस्मिंस्तस्माच्चारात्रजंतुवै ॥ ज्ञात्वाबलाबलंतेषांपश्चान्नीतिर्विचार्यच ॥ १६ ॥ विधेयाविधिवत्तज्ज्ञैस्तेषुकार्यपरेषुच ॥ अन्य
थाविहितंकार्यंविपरीतफलप्रदम् ॥१७॥ सर्वथातद्भवेन्नूनमज्ञातमौषधंयथा ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यतैःसर्वैःप्रणिधिंकार्यवेदिनम् ॥ १८॥ प्रेषयामा
सदेवेंद्रःपरिज्ञानायपार्थिवः ॥ दूतस्तुत्वरितोगत्वासमागम्यसुराधिपम्॥१९॥निवेदयामासतदासर्वसैन्यबलाबलम्॥ ज्ञात्वातद्बलमुद्योगंतुराषाडतिविस्मि
तः ॥ २० ॥ देवानचोदयत्तूर्णंसमाहूयपुरोहितम् ॥ मंत्रंमंत्रविदांश्रेष्ठंचकारत्रिदशेश्वरः ॥ २१ ॥ उवाचांगिरसश्रेष्ठंसमासीनंवरासने ॥ इंद्रउवाच ॥ भो
भोदेवगुरोविद्वन्किंकर्तव्यंवदस्वनः॥२२॥सर्वज्ञोऽसिसमुत्पन्नेकार्येत्वंगतिरद्यनः ॥ दानवोमाहिषोनाममहावीर्योमदान्वितः ॥ २३ ॥ योद्धुकामःसमायातिव
हुभिर्दानवैर्वृतः ॥ तत्रप्रतिक्रियाकार्यात्वयामंत्रविदाऽधुना ॥ २४ ॥ तेषांशुक्रस्तथात्वंमेविघ्नहर्तासुसंमतः ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंप्राहतुरासाहं
बृहस्पतिः ॥ २५ ॥ विचिंत्यमनसाकामंकार्यसाधनतत्परः॥गुरुरुवाच॥ स्वस्थोभवसुरेंद्रत्वंधैर्यमालंब्यमारिष ॥२६॥ व्यसनेचसमुत्पन्नेनत्याज्यंधैर्यमा
शुवै ॥ जयाऽजयौसुराध्यक्षदैवाधीनौसदैवहि॥२७॥स्थातव्यंधैर्यमालंब्यतस्माद्बुद्धिमतासदा ॥ भवितव्यंभवत्येवजानन्नेवशतक्रतो ॥ २८ ॥ उद्यमःसर्व
थाकार्योयथापौरुषमात्मनः ॥ मुनयोऽपिहिमुक्त्यर्थमुद्यमैकरताःसदा ॥ २९ ॥ दैवाधीनंचजानंतोयोगध्यानपरायणाः॥तस्मात्सदैवकर्तव्योव्यवहारोदि
तोद्यमः॥३०॥सुखंभवतुवामावादैवेकापरिदेवना ॥ विनापुरुषकारेणकदाचित्सिद्धिमाप्नुयात् ॥ ३१ ॥ अंधवत्पंगुवत्कामंनतथामुदमावहेत् ॥ कृतेपुरुष
कारेऽपियदिसिद्धिर्नजायते ॥ ३२ ॥ नतत्रदूषणंतस्यदैवाधीनेशरीरिणि ॥ कार्यसिद्धिर्नसैन्येऽस्तिनमंत्रेनचमंत्रणे॥३३॥नरथेनाऽऽयुधेनूनंदैवाधीनासुरा
धिप ॥ बलवान्क्लेशमाप्नोतिनिर्बलःसुखमश्नुते ॥३४॥ बुद्धिमान्क्षुधितःशेतेनिर्बुद्धिर्भोगवान्भवेत् ॥ कातरोजयमाप्नोतिशूरोयातिपराजयम् ॥ ३५ ॥ दैवा
ऽधीनेतुसंसारेकामंकापरिदेवना ॥ उद्यमेयोजयेन्नूनंभवितव्यंसुराधिप ॥ ३६ ॥ दुःखदेसुखदेवाऽपितत्रतौनविचिंतयेत् ॥ दुःखेदुःखाऽधिकान्पश्येत्सुखेप
श्येत्सुखाऽधिकान् ॥३७॥ आत्मानंहर्षशोकाभ्यांशत्रुभ्यामिवनार्पयेत् ॥ धैर्यमेवावगंतव्यंहर्षशोकोद्भवेबुधैः ॥ ३८ ॥ अधैर्याद्यादृशंदुःखंनतुधैर्यंऽस्ति
तादृशम् ॥ दुर्लभंसहनत्वंवैसमयेसुखदुःखयोः ॥ ३९ ॥ हर्षशोकोद्भवोयत्रनभवेद्बुद्धिनिश्चयात् ॥ किंदुःखंकस्यवादुःखंनिर्गुणोऽहंसदाऽव्ययः ॥४०॥

॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥प्रणिधिंदूतम्॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥तौदुःखसुखदौ॥३७॥३८॥३९॥४०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सप्तैकषोडशादिभ्यइति ॥ सप्तमहदाद्याः सप्तविकृतयः ॥ एकशब्देनमूलप्रकृतिः ॥ षोडशशब्देनषोडशविकाराः ॥ ४३ ॥ तदेवाह । प्रकृतिर्विकृतिर्नाऽहमिति॥४४॥ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ सप्ताऽधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथमहामृधे ॥ देवैःकृतोदैत्यसेनापराजयउ दीर्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायांतेकृतेयत्नेमहाराजभवितव्यंभविष्यतीति बृहस्पतिवाक्यंश्रुत्वादेवराजआहेत्याह । इतिश्रुत्वेति ॥ १ ॥ सोद्यमाःपराक्रमिणोनप्रशंसंतीत्यर्थः ॥ २ ॥ तदे

चतुर्विंशाऽतिरिक्तोऽस्मिकिंमेदुःखंसुखंचकिम् ॥ प्राणस्यक्षुत्पिपासेद्वेमनसःशोकमूर्च्छने ॥ ४१ ॥ जरामृत्यूशरीरस्यषडूर्मिरहितःशिवः ॥ शोकमोहौशरीरस्यगुणौकिंमेऽत्रचिंतने ॥ ४२ ॥ शरीरंनाहमथवातत्संबंधीनचाऽप्यहम् ॥ सप्तैकषोडशादिभ्योविभिन्नोऽहंसदासुखी ॥ ४३ ॥ प्रकृतिर्विकृतिर्नाऽहं किंमेदुःखंसदापुनः ॥ इतिमत्वासुरेशत्वंमनसाभवनिर्ममः ॥ ४४ ॥ उपायःप्रथमोऽयंतेदुःखनाशेशतक्रतो ॥ ममतापरमंदुःखंनिर्ममत्वंपरंसुखम् ॥ ४५ ॥ संतोषादपरंनाऽस्तिसुखस्थानंशचीपते ॥ अथवायदिनज्ञानंममत्वनाशनेकिल ॥ ४६ ॥ ततोविवेकःकर्तव्योभवितव्येसुराधिप ॥ प्रारब्धकर्मणांनाशोनाऽभोगाल्लक्ष्यतेकिल ॥४७॥ यद्भावितद्भवत्येवकाचिंतासुखदुःखयोः ॥ सुरैःसर्वैःसहायैर्वाबुद्ध्यावातवसत्तम ॥४८॥ सुखंक्षयायपुण्यस्यदुःखंपापस्यमारिष ॥ तस्मात्सुखक्षयेहर्षःकर्तव्यःसर्वथाबुधैः ॥ ४९ ॥ अथवामंत्रयित्वाऽद्यकुरुयत्नंयथाविधि ॥ कृतेयत्नेमहाराजभवितव्यंभविष्यति ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम० पंचमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥४॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिश्रुत्वासहस्राक्षःपुनराहबृहस्पतिम् ॥ युद्धोद्योगंकरिष्यामिहयारेर्नाशनायवै ॥ १ ॥ नोद्यमेनविनाराज्यंनसुखंनचवैयशः ॥ निरुद्यमंनशंसंतिकातरानचसोद्यमाः ॥ २ ॥ यतीनांभूषणंज्ञानंसंतोषोहिद्विजन्मनाम् ॥ उद्यमःशत्रुहननंभूषणंभूतिमिच्छताम् ॥ ३ ॥ उद्यमेनहतस्त्वाष्ट्रोनमुचिर्बलएवच ॥ तथैनंनिहनिष्यामिमहिषंमुनिसत्तम ॥ ४ ॥ बलंदेवगुरुस्त्वंमेवज्रमायुधमुत्तमम् ॥ सहायस्तुहरिर्नूनंतथोमापतिरव्ययः ॥ ५ ॥ रक्षोघ्नान्पठमेसाधोकरोम्यद्यसमुद्यमम् ॥ स्वसैन्याऽभिनिवेशंचमहिषंप्रतिमानद ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तोदेवराजेनवाचस्पतिरुवाचह ॥ सुरेंद्रंयुद्धसंरक्तंस्मितपूर्वंवचस्तदा ॥ ७ ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ प्रेरयामिनचाहंत्वांनचनिवारयाम्यहम् ॥ संदिग्धेत्रजयेकामंयुध्यतश्चपराजये ॥ ८ ॥ नतेत्रदूषणंकिंचिद्भवितव्येशचीपते ॥ सुखंवायदिवादुःखंविहितंचभविष्यति ॥ ९ ॥ नमयातत्परिज्ञातंभाविदुःखंसुखंतथा ॥ यद्भार्याहरणेप्राप्तंपुरावासवेवेत्सिहि ॥ १० ॥

वाह । यतीनामिति ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ केवलंरक्षोघ्नान्मंत्रान्पठमत्कल्याणार्थमन्यत्सर्वमहंकारिष्यामीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ युद्ध्यतोजयेपराजये वा संदिग्धेनचप्रेरयामीत्यन्वयः ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ नमयेति ॥ भवतांयुद्धेयद्भाविदुःखंसुखंवातन्मयानज्ञातं तज्ज्ञानंममनाऽस्तीत्यर्थः ॥ ननुत्वंभाविवेत्सीतिप्रसिद्धिः अतःकथमेवंवदसीतिचेत्तत्राह । यद्भार्याहरणेइति ॥ यदिममभाविज्ञानमस्तितदाममभार्यायांशशिनाहृतायांजायमानंदुःखंमयापूर्वंज्ञातमेवस्यात्तदुपायश्चमयाकृतएवस्यान्नचकृतस्तस्मान्ममभाविज्ञानंनाऽस्तीत्यर्थः ॥ ननुभाविज्ञानंतववर्ततएवतथाऽपितत्परिहारोवश्यंभावित्वात्त्वयानकृतइतिचेत्तदाभाविज्ञानंनिरर्थकमेव यद्भवितव्यंतद्भविष्यति ॥ कुरुयुद्धंत्वंममभाविज्ञानसमाचारस्यनप्रकृतेउपयोगइतिगूढोऽभिसंधिः ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ भीतभीतोऽस्मीति ॥ भीतादपिभीतोऽतिभीतइत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ हरीश्वराः

शशिनामेहृताभार्यामित्रेणाऽमित्रकर्शन ॥ स्वाऽऽश्रमस्थेनसंप्राप्तंदुःखंसर्वसुखाऽपहम् ॥ ११ ॥ बुद्धिमान्सर्वलोकेषुविदितोऽहंसुराऽधिप ॥ क्रमेगतात दाबुद्धिर्यदाभार्याहृतावलात् ॥ १२ ॥ तस्मादुपायःकर्तव्योबुद्धिमद्भिःसदानरैः ॥ कार्यसिद्धिःसदानूनंदैवाऽधीनासुराऽधिप ॥ १३ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वा वचनंसत्यंगुरोःसार्थंशचीपतिः ॥ ब्रह्माणंशरणंगत्वानत्वावचनमब्रवीत् ॥ १४ ॥ पितामहसुराऽध्यक्षदैत्योमहिषसंज्ञकः ॥ ग्रहीतुकामःस्वर्गंमेबलोद्योगंकरो त्यलम् ॥ १५ ॥ अन्येचदानवाःसर्वेतत्सैन्यंसमुपस्थिताः ॥ योद्धुकामामहावीर्याःसर्वेयुद्धविशारदाः ॥ १६ ॥ तेनाऽहंभीतभीतोऽस्मित्वत्सकाशमिहाऽऽ गतः ॥ सर्वज्ञोऽसिमहाप्राज्ञसाहाय्यंकर्तुमर्हसि ॥ १७ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ गच्छामःसर्वएवाऽद्यकैलासंत्वरितावयम् ॥ शंकरंपुरतःकृत्वाविष्णुंचबलिनांवर म् ॥ १८ ॥ ततोयुद्धंप्रकर्तव्यंसर्वैःसुरगणैःसह ॥ मिलित्वामंत्रमाधायदेशंकालंविचिंत्यच ॥ १९ ॥ बलाबलमविज्ञायविवेकमपहायच ॥ साहसंतुप्रकुर्वा णोनरःपतनमृच्छति ॥ २० ॥ व्यासउवाच ॥ तन्निशम्यसहस्राक्षःकैलासंनिर्जगामह ॥ ब्रह्माणंपुरतःकृत्वालोकपालसमन्वितः ॥ २१ ॥ तुष्टावशंकरंग त्वावेदमंत्रैर्महेश्वरम् ॥ प्रसन्नंपरतःकृत्वाययौविष्णुपुरंप्रति ॥ २२ ॥ स्तुत्वातंदेवदेवेशंकार्यंप्रोवाचचात्मनः ॥ महिषात्तद्भयंचोग्रंवरदानमदोद्धतात् ॥ २३ ॥ तदाकर्ण्यभयंतस्यविष्णुर्देवानुवाचह ॥ करिष्यामोवयंयुद्धंहनिष्यामस्तुदुर्जयम् ॥ २४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितेनिश्चयंकृत्वाब्रह्मविष्णुहरीश्वराः ॥ स्वा निस्वानिसमारुह्यवाहनानिययुःसुराः ॥ २५ ॥ ब्रह्माहंससमारूढोविष्णुर्गरुडवाहनः ॥ शंकरोवृषभारूढोवृत्रहागजसंस्थितः ॥ २६ ॥ मयूरवाहनःस्कंदो यमोमहिषवाहनः ॥ कृत्वासैन्यसमायोगंयावत्तेनिर्ययुःसुराः ॥ २७ ॥ तावद्दैत्यबलंप्राप्तंदृष्टंमहिषपालितम् ॥ तत्राभूत्तुमुलंयुद्धंदेवदानवसैन्ययोः ॥ २८ ॥ बाणैःखड्गैस्तथाप्रासैर्मुसलैश्चपरश्वधैः ॥ गदाभिःपट्टिशैःशूलैश्चक्रैश्चशक्तितोमरैः ॥ २९ ॥ मुद्गरैर्भिंदिपालैश्चहलैश्चैवाऽतिदारुणैः ॥ अन्यैश्चविविधैरस्त्रैर्निजघ्नुस्ते परस्परम् ॥ ३० ॥ सेनानीश्चिक्षुरस्तस्यगजारूढोमहाबलः ॥ मघवंतंपंचभिस्तैःसायकैःसमताडयत् ॥ ३१ ॥ तुरापाडपितांश्छित्त्वाबाणैर्बाणांस्त्वरान्वि तः ॥ हृदयेचार्धचंद्रेणताडयामासतंकृती ॥ ३२ ॥ बाणाऽऽहतस्तुसेनानीःप्रापमूर्च्छांगजोपरि ॥ करिणंवज्रघातेनसजघानकरेततः ॥ ३३ ॥ तद्वज्राभि हतोनागोभग्नःसैन्यंजगामह ॥ दृष्ट्वातंदैत्यराट्क्रुद्धोविडालाऽऽख्यमथाब्रवीत् ॥ ३४ ॥ गच्छवीरमहाबाहोजहींद्रंमदगर्वितम् ॥ वरुणादीन्परान्देवान्हत्वा ऽऽगच्छममांतिकम् ॥ ३५ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यविडालाऽऽख्योमहाबलः ॥ आरुह्यवारणंमत्तंजगामत्रिदशाऽधिपम् ॥ ३६ ॥

हरिःसूर्यः ईश्वरः शंकरः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ सइंद्रः करेशुंडादंडे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥३७॥३८॥ ३९ ॥ सतुच्छित्त्वेति। सएवेंद्रश्चापनिःसृतैःस्वशरैस्तूर्णंतस्यशरांश्छित्त्वातस्यदैत्यस्यगजंकरोपरिशुंडायांगदयाताडयामासेत्यन्वयः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥४४॥
जयंतंस्वपुत्रम् ॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥संग्रामांगणतःसंग्रामस्थलात् ॥५४॥५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वासवस्तंसमायांतंदृष्ट्वाक्रोधसमन्वितः ॥ जघानविशिखैस्तीक्ष्णैराशीविषसमप्रभैः ॥ ३७ ॥ सतुछित्त्वाशरांस्तूर्णंस्वशरैश्चापनिःसृतैः ॥ पंचाशद्भिर्जघानाऽऽशुवासवंचशिलीमुखैः ॥ ३८ ॥ तथेंद्रोऽपिचतान्बाणांश्छित्त्वाकोपसमन्वितः ॥ जघानविशिखैस्तीक्ष्णैराशीविषसमप्रभैः ॥ ३९ ॥ सतुछित्त्वाशरांस्तूर्णंस्वशरैश्चापनिःसृतैः ॥ गदयाताडयामासगजंतस्यकरोपरि ॥ ४० ॥ स्वकरेनिहतोनागश्चकाराऽर्तस्वरंमुहुः ॥ परिवृत्यजघानाऽऽशुदैत्यसैन्यंभयाऽऽतुरम् ॥४१॥ दानवस्तुगजंवीक्ष्यपरावृत्त्यगतंरणात् ॥ समाविश्यरथेरम्येजगामाऽऽशुसुरान्रणे ॥ ४२ ॥ तुराषाडपितंवीक्ष्यरथस्थंपुनरागतम् ॥ अहनद्विशिखैस्तीक्ष्णैराशीविषसमप्रभैः ॥ ४३ ॥ सोऽपिक्रुद्धश्चकारोग्रांबाणवृष्टिंमहाबलः ॥ बभूवतुमुलंयुद्धंतयोस्तत्रजयैषिणोः ॥ ४४ ॥ इंद्रस्तुबलिनंदृष्ट्वाकोपेनाऽऽकुलितेंद्रियः ॥ जयंतमग्रतःकृत्वायुयुधेतेनसंयुतः ॥ ४५ ॥ जयंतस्तुशितैर्बाणैस्तंजघानस्तनांतरे ॥ पंचभिःप्रबलाऽऽकृष्टैरसुरंमदगर्वितम् ॥ ॥ ४६ ॥ सबाणाऽभिहतस्तावन्निपपातरथोपरि ॥ अतिवाह्यरथंसूतोनिर्जगामरणाजिरात् ॥ ४७॥ तस्मिन्विनिर्गतेदैत्येविडालाऽऽख्येऽथमूर्छिते ॥ जयशब्दोमहानासीद्दुंदुभीनांचनिःस्वनः ॥ ४८ ॥ सुराःप्रमुदिताःसर्वेतुष्टुवुस्तंशचीपतिम् ॥ जगुर्गंधर्वपतयोननृतुश्चाऽऽप्सरोगणाः ॥ ४९ ॥ चुकोपमहिषःश्रुत्वाजयशब्दंसुरैःकृतम् ॥ प्रेषयामासतत्रैवताम्रंपरमदापहम् ॥ ५० ॥ ताम्रस्तुबहुभिःसार्धंसमागम्यरणाजिरे ॥ शरवृष्टिंचकाराशुतडित्वानिवसागरे ॥ ५१ ॥ वरुणःपाशमुद्यम्यजगामत्वरितस्तदा ॥ यमश्चमहिषारूढोदंडमादायनिर्ययौ ॥ ५२ ॥ तत्रयुद्धमभूद्घोरंदेवदानवयोर्मिथः ॥ बाणैःखड्गैश्चमुसलैःशक्तिभिश्चपरश्वधैः ॥ ५३ ॥ दंडेननिहतस्ताम्रोयमहस्तोद्यतेनच ॥ नचचालमहाबाहुःसंग्रामांगणतस्तदा ॥ ५४ ॥ चापमाकृष्यवेगेनमुक्त्वातीव्राञ्छिलीमुखान् ॥ इंद्रादीनहनत्तूर्णंताम्रस्तस्मिन्रणाजिरे ॥ ५५ ॥ तेऽपिदेवाःशरैर्दिव्यैर्निशितैश्चशिलाशितैः ॥ निजघ्नुर्दानवान्क्रुद्धास्तिष्ठतिष्ठेतिचुक्रुशुः ॥ ५६ ॥ निहतस्तैःसुरैर्दैत्योमूर्च्छामापरणांगणे ॥ हाहाकारोमहानासीद्दैत्यसैन्येभयाऽऽतुरे ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेदैत्यसैन्यपराजयोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ताम्रेऽथमूर्छितेदैत्येमहिषःक्रोधसंयुतः ॥ समुद्यम्यगदांगुर्वींदेवानुपजगामह ॥ १ ॥ तिष्ठंत्वद्यसुराःसर्वेहन्म्यहंगदयाकिल ॥ सर्वेबलिभुजःकामंबलहीनाःसदैवहि ॥ २ ॥ इत्युक्त्वाऽसौगजाऽऽरूढंसंप्राप्यमदगर्वितः ॥ जघानगदयातूर्णंबाहुमूलेमहाभुजः ॥ ३ ॥

अर्धाधिकैःपंचपंचाशद्भिःश्लोकैरनंतरम् ॥ देवदानवसैन्यस्ययुद्धंजातमुदीर्यते ॥ १ ॥ पूर्वाऽध्यायांतेताम्रेदैत्येमूर्छितेसतितदुत्तरंजातंवृत्तमाह। ताम्रेइति ॥ १ ॥ बलिभुजःकाकाः ॥ २ ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥४॥५॥६॥शांबरीलोकेसांबरीतिवदंति॥७॥८॥९॥१०॥११॥तत्राऽऽजग्मुश्चेति ॥ ननुपूर्वंब्रह्मादयोयुद्धार्थमागताइत्युक्तमेवपुनरत्राऽऽजग्मुरितिकथमुच्यतइतिचेदुच्यते ॥ आगताएवब्रह्मादयोदेवराजस्ययुद्ध्यमानस्यपृष्ठतोबहुदूरदेशेस्थितायदेंद्रस्यसंकटमुपस्थितंतदातेनस्मृताअग्रेआगताइत्यत्रतात्पर्यात्॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥वृकाइवसुवत्सकान्॥यथावृकाःसुवत्सा

सोऽपिवज्रेणघोरेणचिच्छेदाशुगदांचताम्॥ प्रहर्तुकामस्त्वरितोजगाममहिषंप्रति ॥ ४ ॥ हयारिरपिकोपेनखड्गमादायसुप्रभम्॥ ययाविंद्रंमहावीर्यंप्रहरिष्यन्निवांतिकम् ॥ ५ ॥ बभूवचतयोर्युद्धंसर्वलोकभयाऽऽवहम् ॥ आयुधैर्विविधैस्तत्रमुनिविस्मयकारकम् ॥ ६ ॥ चकाराऽऽशुतदादैत्योमायांमोहकरींकिल॥ शांबरींसर्वलोकघ्नींमुनीनामपिमोहिनीम्॥ ७॥ कोटिशोमहिषास्तत्रतद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ददृशुःसायुधाःसर्वेनिघ्नंतोदेववाहिनीम्॥ ८॥ मघवाविस्मितस्तत्रदृष्ट्वातांदैत्यनिर्मिताम्॥ बभूवातिभयोद्विग्नोमायांमोहकरींकिल॥ ९॥ वरुणोपिसुसंत्रस्तस्तथैवधननायकः॥ यमोहुताशनःसूर्यःशीतरश्मिर्भयातुरः ॥ १० ॥ पलायनपराःसर्वेबभूवुर्मोहिताःसुराः॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानांस्मरणंचक्रुरुद्यताः ॥ ११ ॥ तत्राजग्मुश्चकाजेशाःस्मृतमात्राःसुरोत्तमाः ॥ हंसतार्क्ष्यवृषारूढास्त्रातुकामावरायुधाः ॥ १२ ॥ शौरिस्तांमोहिनींदृष्ट्वासुदर्शनमथोज्ज्वलम्॥ मुमोचतत्तेजसैवमायासाविलयंगता ॥ १३ ॥ वीक्ष्यतान्महिषस्तत्रसृष्टिस्थित्यंतकारिणः॥ योद्धुकामःसमादायपरिघंसमुपाद्रवत् ॥ १४ ॥ महिषाख्योमहावीरःसेनानीश्चिक्षुरस्तथा ॥ उग्रास्यश्चोग्रवीर्यश्चदुद्रुवुर्युद्धकामुकाः ॥ १५ ॥ असिलोमात्रिनेत्रश्चबाष्कलोंधकएवच ॥ एतेचाऽन्येचबहवोयुद्धकामाविनिर्ययुः ॥ १६ ॥ सन्नद्धाधृतचापास्तेरथारूढामदोद्धताः ॥ परिवव्रुःसुरान्सर्वान्वृकाइवसुवत्सकान् ॥ १७ ॥ बाणवृष्टिंततश्चक्रुर्दानवामदगर्विताः ॥ सुराश्चाऽपितथाचक्रुःपरस्परजिघांसवः ॥ १८॥ अंधकोहरिमासाद्यपंचबाणाञ्छिलाशितान् ॥ मुमोचविषसंदिग्धान्कर्णाऽऽकृष्टान्महाबलान् ॥ १९ ॥ वासुदेवोऽप्यसंप्राप्तान्विशिखानाशुगैस्तदा ॥ चिच्छेदतान्पुनःपंचमुमोचरिपुनाशनः ॥ २० ॥ तयोःपरस्परंयुद्धंबभूवहरिदैत्ययोः ॥ बाणासिचक्रमुसलैर्गदाशक्तिपरश्वधैः ॥ २१ ॥ महेशांधकयोर्युद्धंतुमुलंलोमहर्षणम् ॥ पंचाशद्दिनपर्यंतंबभूवचपरस्परम् ॥ २२ ॥ इंद्रबाष्कलयोस्तद्वन्महिषासुररुद्रयोः ॥ यमत्रिनेत्रयोस्तद्वन्महाहनुधनेशयोः ॥ २३ ॥ असिलोमवरुणयोर्युद्धंपरमदारुणम् ॥ गरुडंगदयादैत्योजघानहरिवाहनम् ॥२४॥ सगदापातखिन्नांगोनिःश्वसन्नवतिष्ठत ॥ शौरिस्तंदक्षिणेनाऽऽशुहस्तेनपरिसांत्वयन् ॥२५॥ स्थिरंचकारदेवेशोवैनतेयंमहाबलम् ॥ समाकृष्यधनुःशार्ङ्गंमुमोचविशिखान्बहून् ॥ २६ ॥ अंधकोपरिकोपेनहंतुकामोजनार्दनः ॥ दानवोऽपिचतान्बाणांश्चिच्छेदस्वशरैःशितैः ॥ २७ ॥ पंचाशद्भिर्हरिंकोपाज्जघानचशिलाशितैः ॥ वासुदेवोऽपितांस्तूर्णंवंचयित्वाशरोत्तमान् ॥ २८ ॥

न्परिवव्रुस्तथेत्यर्थः।१७।१८।१९।२०।२१।२२।महेशांधकयोरिति॥अत्रमहेशोविष्णुः॥महिषासुररुद्रयोरित्यत्रतुरुद्रोमहादेवः॥यमत्रिनेत्रयोरित्यत्रतुत्रिनेत्रोदैत्यः॥२३।२४।२५।२६।२७।२८



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ पार्वतान्पर्वतसंबंधिनः ॥ ४९ ॥

चक्रंमुमोचवेगेनसहस्राऽरंसुदर्शनम् ॥ त्यक्तंसुदर्शनंदूरात्स्वचक्रेणन्यवारयत् ॥ २९ ॥ ननादचमहाराजदेवान्संमोहयन्निव ॥ दृष्ट्वातुविफलंजातंचक्रं देवस्यशार्ङ्गिणः ॥ ३० ॥ जग्मुःशोकंसुराःसर्वेजहर्षुर्दानवास्तथा ॥ वासुदेवोऽपितरसादृष्ट्वादेवाञ्छुचाऽऽवृतान् ॥ ३१ ॥ गदांकौमोदकींधृत्वादानवंस मुपाद्रवत् ॥ तंजघानातिवेगेनमूर्ध्निमायाविनंहरिः ॥ ३२ ॥ सगदाऽभिहतोभूमौनिपपाताऽतिमूर्च्छितः ॥ तंतथापतितंवीक्ष्यहयारिरातिकोपनः ॥३३॥ आजगामरमानाथंत्रासयन्नतिगर्जितैः ॥ वासुदेवोऽपितंदृष्ट्वासमायांतंक्रुधान्वितम् ॥ ३४ ॥ चापज्यानिनदंचोग्रंचकारंनंदयन्सुरान् ॥ शरवृष्टिंचकारा ऽऽशुभगवान्महिषोपरि ॥ ३५ ॥ सोऽपिचिच्छेदवाणौघैस्ताञ्छरान्गगनेरितान् ॥ तयोर्युद्धमभूद्राजन्परस्परभयावहम् ॥ ३६ ॥ गदयाताडयामा सकेशवोमस्तकोपरि ॥ सगदाभिहतोमूर्ध्निपपातोर्व्यांसुमूर्छितः ॥ ३७ ॥ हाहाकारोमहानासीत्सैन्येतस्यसुदारुणः ॥ सविहायव्यथांदैत्योमुहूर्तादु त्थितःपुनः ॥ ३८ ॥ गृहीत्वापरिघंशीर्षेजघानमधुसूदनम् ॥ परिघेणाऽऽहतस्तेनमूर्च्छामापजनार्दनः ॥३९॥ मूर्च्छितंतमुवाहाऽऽशुजगामगरुडोरणा त् ॥ परावृत्तेजगन्नाथेदेवाइंद्रपुरोगमाः ॥ ४० ॥ भयंप्रापुःसुदुःखार्ताश्चुक्रुशुश्चरणाजिरे ॥ क्रंदमानान्सुरान्वीक्ष्यशंकरःशूलभृत्तदा ॥ ४१ ॥ महिषंतर साऽभ्येत्यप्राहरद्रोषसंयुतः ॥ सोऽपिशक्तिंमुमोचाऽथशंकरस्योरसिस्फुटम् ॥ ४२ ॥ जगर्जसचदुष्टात्मावंचयित्वात्रिशूलकम् ॥ शंकरोऽपितदापीडां नप्रापोरसिताडितः ॥ ४३ ॥ तंजघानत्रिशूलेनकोपादरुणलोचनः ॥ संलग्नंशंकरंदृष्ट्वामहिषेणदुरात्मना ॥ ४४॥ आजगामहरिस्तावत्त्यक्त्वामूर्च्छांप्र हारजाम् ॥ महिषस्तुतदावीक्ष्यसंप्राप्तौहरिशंकरौ ॥४५॥ युद्धकामौमहावीर्यौचक्रशूलधरौवरौ ॥ कोपयुक्तोबभूवाऽसौदृष्ट्वातौसमुपागतौ ॥ ४६ ॥ जगा मसंमुखस्तावत्संग्रामार्थंमहाभुजः॥माहिषंवपुरास्थायधुन्वन्पुच्छंसमुत्कटम्॥४७॥चकारभैरवंनादंत्रासयन्नमरानपि॥धुन्वञ्छृंगेमहाकायोदारुणोजलदो यथा ॥ ४८ ॥ शृंगाभ्यांपार्वताञ्छृंगांश्चिक्षेपभृशमुत्कटान् ॥ दृष्ट्वातौतुमहावीर्यौदानवंदेवसत्तमौ ॥ ४९ ॥ चक्रतुर्बाणवृष्टिंचदानवोपरिदारुणाम्॥ कुर्वाणौबाणवृष्टिंतौदृष्ट्वाहरिहरौहरिः ॥ ५० ॥ चिक्षेपगिरिशृंगंतुपुच्छेनाऽऽवृत्यदारुणम् ॥ आपतंतंगिरिंवीक्ष्यभगवान्सात्वतांपतिः ॥ ५१ ॥ विशिखैः शतधाचक्रेचक्रेणाऽऽशुजघानतम् ॥ हरिचक्राऽऽहतःसंख्येमूर्च्छामापसदैत्यराट् ॥ ५२ ॥ उत्तस्थौचक्षणान्नूनंमानुषंवपुरास्थितः ॥ गदापाणिर्महाघोरो दानवःपर्वतोपमः ॥ ५३ ॥ मेघनादंननादोच्चैर्भीषयन्नमरानपि ॥ तच्छ्रुत्वाभगवान्विष्णुःपांचजन्यंसमुज्ज्वलम् ॥ ५४ ॥

हरिःहयारिरित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥५५॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेषष्ठोऽध्यायः॥६॥ एकोनषष्टिश्लोकैस्तुपराभूतास्तुनिर्जराः ॥ कैलासेगमनंचक्रुःशर्मदंशंकरंप्रति ॥ १ ॥ पूर्वाऽध्यायांतेऽसुरान्विषण्णानवलोक्य महिषोयच्चकारतदाह।असुरानिति॥१।२॥नखाघातेनभुजेभुजस्थलेविष्णुंजघानेत्यर्थः॥३।४॥शृंगीशृंगाभ्यामिति॥सिंहरूपंत्यक्त्वाशृंगीमहिषोभूत्वास्वशृंगाभ्यांहरिंन्यहनद्घातितवानित्य

पूरयामासतरसाशब्दंकर्तुंखरस्वरम् ॥ तेनशब्देनशंखस्यभयत्रस्ताश्चदानवाः ॥ ५५ ॥ बभूवुर्मुदितादेवाऋषयश्चतपोधनाः ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहा०पं०षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ असुरान्महिषोदृष्ट्वाविषण्णमनसस्तदा॥त्यक्त्वातन्माहिषंरूपंबभूवमृगराडसौ ॥१॥ कृत्वानादंमहाघोरंविस्तार्यचमहासटाम् ॥ पपातसुरसेनायांत्रासयन्नखदर्शनैः ॥ २ ॥ गरुडंचनखाऽऽघातैःकृत्वारुधिरविप्लुतम् ॥ जघानचभुजेविष्णुंनखाऽऽघातेनकेसरी ॥ ३ ॥ वासुदेवोऽऽपितंदृष्ट्वाचक्रमुद्यम्यवेगवान् ॥ हंतुकामोहरिःकाममवापाऽऽशुक्रुधान्वितः ॥४॥ यावद्धयरिपुंवेगाच्चक्रेणाभिजघानतम् ॥ तावत्सोऽतिबलःशृंगीशृंगाभ्यांन्यहनद्धरिम् ॥ ५ ॥ वासुदेवोविषाणाभ्यांताडितोरासिविह्वलः ॥ पलायनपरोवेगाज्जगामभुवनंनिजम् ॥ ६ ॥ गतंदृष्ट्वाहरिंकामंशंकरोपिभयान्वितः ॥ अवध्यंतंपरंमत्वाययौकैलासपर्वतम् ॥ ७ ॥ ब्रह्माऽपिचनिजंधामत्वरितःप्रययौभयात् ॥ मघवावज्रमालंब्यतस्थावाजौमहाबलः ॥ ८ ॥ वरुणःशक्तिमालंब्यधैर्यमालंब्यसंस्थितः ॥ यमोपिदंडमादाययत्तःसमरतत्परः ॥ ९ ॥ ततोयक्षाधिपःकामंबभूवरणतत्परः ॥ पावकःशक्तिमादायतत्राऽभूद्युद्धमानसः ॥ १० ॥ नक्षत्राधिपतिःसूर्यःसमवेतौस्थितावुभौ ॥ वीक्ष्यतंदानवश्रेष्ठंयुद्धायकृतनिश्चयौ ॥ ११ ॥ एतस्मिन्नंतरेक्रुद्धंदैत्यसैन्यंसमभ्यगात् ॥ विसृजन्बाणजालानिक्रूराहिसदृशानिच ॥ १२ ॥ कृत्वाहिमाहिषंरूपंभूपतिःसंस्थितस्तदा ॥ देवदानवयोधानांनिनादस्तुमुलोभवत्॥ ॥ १३ ॥ ज्याघातश्चतलाघातोमेघनादसमोभवत् ॥ संग्रामेसुमहाघोरेदेवदानवसेनयोः ॥ १४ ॥ शृंगाभ्यांपार्वताञ्छृंगांश्चिक्षेपचमहाबलः ॥ जघानसुरसंघांश्चदानवोमदगर्वितः ॥ १५ ॥ खुरघातैस्तथादेवान्पुच्छस्यभ्रमणेनच ॥ सजघानरुषाविष्टोमाहिषःपरमाऽद्भुतः ॥ १६ ॥ ततोदेवाःसगंधर्वाभयमाजग्मुरुद्यताः ॥ मघवामहिषंदृष्ट्वापलायनपरोऽभवत् ॥ १७ ॥ संगरंसंपरित्यज्यगतेशक्रेशचीपतौ ॥ यमोधनाधिपःपाशीजग्मुःसर्वेभयाऽऽतुराः ॥ ॥ १८ ॥ महिषोऽतिजयंमत्वाजगामस्वगृहंततः ॥ ऐरावतंगजंप्राप्यत्यक्तमिंद्रेणगच्छता ॥ १९ ॥ तथोच्चैःश्रवसंभानोःकामधेनुंपयस्विनीम् ॥स्वसैन्यसंवृतस्तूर्णंस्वर्गंगंतुंमनोदधे ॥ २० ॥ तरसादेवसदनंगत्वासमहिषासुरः ॥ जग्राहसुरराज्यंवैत्यक्तंदेवैर्भयाऽऽतुरैः ॥२१॥ इंद्राऽऽसनेतथारम्येदानवःसमुपाविशत् ॥ दानवान्स्थापयामासदेवानांस्थानकेषुसः ॥ २२ ॥ एवंवर्षशतंपूर्णंकृत्वायुद्धंसुदारुणम् ॥ अवापेंद्रपदंकामंदानवोमदगर्वितः ॥ २३ ॥

र्थः॥५॥भुवनंवैकुंठम्॥६॥७॥आजौयुद्धे॥८॥९॥१०॥नक्षत्राऽधिपतिश्चंद्रः॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥पयस्विनींकामदुघांत्यक्तांप्राप्येत्यन्वयः॥२०॥२१॥२२।२३

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २४ ॥ २५ ॥ स्वजैःस्वस्माद्ब्रह्मणोजातैर्मानसैः पुत्रैरित्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥ अंबुजन्मकमलंतस्मिंस्तस्माद्वाजन्मयस्येत्यर्थः ॥ २८ ॥ आतिदुःस्थान्दुष्टस्थानास्थितानित्यर्थः ॥२९॥

निर्जरानिर्गतानाकात्तेनसर्वेऽतिपीडिताः ॥ एवंबहूनिवर्षाणिबभ्रमुर्गिरिगह्वरे॥२४॥श्रांताःसर्वेतदाराजन्ब्रह्माणंशरणंययुः ॥ प्रजापतिंजगन्नाथंरजोरूपंचतुर्मुखम् ॥ २५ ॥ पद्मासनंवेदगर्भंसेवितंमुनिभिःस्वजैः ॥ मरीचिप्रमुखैःशांतैर्वेदवेदांगपारगैः ॥ २६ ॥ किन्नरैःसिद्धगंधर्वैश्चारणोरगपन्नगैः ॥ तुष्टुवुर्भयभीतास्तेदेवदेवंजगद्गुरुम् ॥ २७ ॥ देवाऊचुः ॥ धातःकिमेतदखिलाऽऽर्तिहरांबुजन्मजन्माऽभिवीक्ष्यनदयांकुरुषेसुरान्यत् ॥ संपीडितान्रणजितानसुराधिपेनस्थानच्युतान्गिरिगुहाकृतसन्निवासान् ॥ २८ ॥ पुत्रान्पिताकिमपराधशतैःसमेतान्संत्यज्यलोभरहितःकुरुतेऽतिदुःस्थान् ॥ यस्त्वंसुरांस्तवपदांबुजभक्तियुक्तान्दैत्याऽर्दितांश्चकृपणान्यदुपेक्षसेऽद्य ॥ २९ ॥ अमरभुवनराज्यंतेनभुक्तंनितांतंमखहविरपियोग्यंब्राह्मणैराददाति ॥ सुरतरुवरपुष्पंसेवतेऽसौदुरात्माजलनिधिनिधिभूतांगामसौसेवतेताम् ॥ ३० ॥ किंवागृणीमःसुरकार्यमद्भुतंजानासिदेवेशसुराऽरिचेष्टितम् ॥ ज्ञानेनसर्वंत्वमशेषकार्यवित्तस्मात्प्रभोतेप्रणताःस्मपादयोः ॥ ३१ ॥ यत्राऽपिकुत्राऽपिगतान्सुरानसौनानाचरित्रैःखलुपापमानसः ॥ पीडांकरोत्येवसदुष्टचेष्टितस्त्राताऽसिदेवेशविधेहिशंविभो ॥ ३२ ॥ नोचेद्भयंदावमहाऽग्निपीडिताःकंशांतिकर्तारमनंततेजसम् ॥ यामःप्रजेशंशरणंसुरेष्टंधातारमाद्यंपरिमुच्यकंशिवम् ॥ ३३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिस्तुत्वासुराःसर्वेप्रणेमुस्तंप्रजापतिम् ॥ बद्धांजलिपुटाःसर्वेविषण्णवदनाभृशम् ॥ ३४ ॥ तांस्तथापीडितान्दृष्ट्वातदालोकपितामहः ॥ उवाचश्लक्ष्णयावाचासुखंसंजनयन्निव ॥ ३५ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ किंकरोमिसुराःकामंदानवोवरदर्पितः ॥ स्त्रीवध्योऽसौनपुंवध्योविधेयंतत्रकिंपुनः ॥ ३६॥ व्रजामोऽद्यसुराःसर्वेकैलासंपर्वतोत्तमम् ॥ शंकरंपुरतःकृत्वासर्वकार्यविशारदम् ॥ ३७ ॥ ततोव्रजामवैकुंठंयत्रदेवोजनार्दनः ॥ मिलित्वादेवकार्यंचविमृशामोविशेषतः ॥ ३८ ॥ इत्युक्त्वाहंसमारुह्यब्रह्माकार्यसमुच्चये ॥ देवांश्चपृष्ठतःकृत्वाकैलासाभिमुखोययौ ॥ ३९ ॥ तावच्छिवोऽपितरसाज्ञात्वाध्यानेनपद्मजम् ॥ आगच्छंतंसुरैःसार्धंनिर्गतःस्वगृहाद्बहिः ॥ ४० ॥ दृष्ट्वापररस्परंतौतुकृताऽभिवादनौभृशम् ॥ प्रणतौचसुरैःसर्वैःसंतुष्टौसंबभूवतुः ॥ ४१॥ आसनानिपृथग्दत्वादेवेभ्योगिरिजापतिः ॥ उपविष्टेषुतेष्वेवनिषसादाऽऽसनेस्वके ॥ ४२ ॥ कृत्वातुकुशलप्रश्नंब्रह्माणंवृषभध्वजः ॥ पप्रच्छकारणंदेवान्कैलासाऽऽगमनेविभुः ॥ ४३ ॥ शिवउवाच ॥ किमत्राऽऽगमनंब्रह्मन्कृतंदेवैःसवासवैः ॥ भवताचमहाभागब्रूहितत्कारणंकिल ॥ ४४ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ महिषेणसुरेशानपीडिताःस्वर्निवासिनः ॥ भ्रमंतिगिरिदुर्गेषुभयत्रस्ताःसवासवाः ॥ ४५ ॥

जलनिधेर्निर्गतांनिधिभूतांगांकामधेनुम् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ शिवंमंगलम् ॥ कंब्रह्माणंपरिमुच्येत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ हेविभोब्रह्मन्पुरापूर्वमिदंकार्यमनर्थरूपंवरदानाद्भवतैवकृतम् ॥ नैतादृशोवरोदुष्टेभ्योदेयइतिभावः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ महाभागेसरस्वतीपार्वत्यौ ॥५२॥ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ प्रपंचेनकपटेनाऽपीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ शकुनानेवाह । ववुर्वाताइति ॥ ५८ ॥ शुभमिवशुभमेवाऽभवत् ॥ ५९ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंच

यज्ञभुग्महिषोजातस्तथाऽन्येसुरशत्रवः ॥ पीडितालोकपालाश्चत्वामद्यशरणंगताः ॥ ४६ ॥ मयातेभवनंशंभोप्रापिताःकार्यगौरवात् ॥ यद्युक्तंतद्विधत्स्वाद्यसुरकार्यंसुरेश्वर ॥ ४७ ॥ त्वयिभारोऽस्तिसर्वेषांदेवानांभूतभावन ॥ व्यासउवाच ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वाशंकरःप्रहसन्निदम् ॥ ४८ ॥ वचनंश्लक्ष्णयावाचाप्रोवाचपद्मजंप्रति ॥ शिवउवाच ॥ भवतैवकृतंकार्यंवरदानात्पुराविभो ॥ ४९ ॥ अनर्थदंचदेवानांकिंकर्तव्यमतःपरम् ॥ ईदृशोवलवाञ्छूरःसर्वदेवभयप्रदः ॥ ५० ॥ कासमर्थावरानारीतंहंतुंमददर्पितम् ॥ नमेभार्यानतेभार्यासंग्रामंगंतुमर्हति ॥ ५१ ॥ गत्वैवतेमहाभागेयुयुधातेकथंपुनः ॥ इंद्राणीचमहाभागनयुद्धकुशलाऽस्तिहि ॥ ५२ ॥ काऽन्याहंतुंसमर्थाऽस्तितंपापंमददर्पितम् ॥ ममेदंमतमद्यैवगत्वादेवंजनार्दनम् ॥ ५३ ॥ स्तुत्वातंदेवकार्यायप्रेरयामःसुसत्वरम् ॥ सोऽतिबुद्धिमतांश्रेष्ठोविष्णुःसर्वाऽर्थसाधने ॥ ५४ ॥ मिलित्वावासुदेवंवैकर्तव्यंकार्यचिंतनम् ॥ प्रपंचेनचबुद्ध्यासंविधास्यतिसाधनम् ॥ ५५ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिरुद्रवचःश्रुत्वाब्रह्माद्याःसुरसत्तमाः ॥ उत्थितास्तेतथेत्युक्त्वाशिवेनसहसत्वराः ॥ ५६ ॥ स्वकीयैर्वाहनैःसर्वेययुर्विष्णुपुरंप्रति ॥ मुद्रिताःशकुनान्दृष्ट्वाकार्यसिद्धिकराञ्छुभान् ॥ ५७ ॥ ववुर्वाताःशुभाःशांतासुगंधाःशुभशंसिनः ॥ पक्षिणश्चशिवावाचस्तत्रोचुःपथिसर्वशः ॥ ५८ ॥ निर्मलंचाऽभवद्व्योमदिशश्चविमलास्तथा ॥ गमनेतत्रदेवानांसर्वंशुभमिवाभवत् ॥ ५९ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ तरसातेऽथसंप्राप्यवैकुंठंविष्णुवल्लवम् ॥ ददृशुःसर्वशोभाढ्यंदिव्यगृहविराजितम् ॥ १ ॥ सरोवापीसरिद्भिश्चसंयुतंसुखदंशुभम् ॥ हंससारसचक्राह्वैःकूजद्भिश्चविराजितम् ॥ २ ॥ चंपकाऽशोककल्हारमंदारवकुलाऽऽवृतैः ॥ मल्लिकातिलकाऽऽम्रातयुतैःकुरवकादिभिः ॥ ३ ॥ कोकिलारावसन्नादैःशिखंडैर्नृत्यरंजितैः ॥ भ्रमरारावरम्यैश्चदिव्यैरुपवनैर्युतम् ॥ ४ ॥ सुनंदनंदनाद्यैश्चपार्षदैर्भक्तितत्परैः ॥ संस्तुवद्भिर्युतंभक्तैरनन्यभववृत्तिभिः ॥ ५ ॥ प्रासादैरत्नखचितैःकांचनैश्चित्रमंडितैः ॥ अभ्रंलिहैर्विराजद्भिःसंयुतंशुभसद्मकैः ॥ ६ ॥ गायद्भिर्देवगंधर्वैर्नृत्यद्भिरप्सरोगणैः ॥ रंजितंकिन्नरैःशश्वद्भक्तकंठैर्मनोहरैः ॥ ७ ॥ मुनिभिश्चतथाशांतैर्वेदपाठकृताऽऽदरैः ॥ स्तुवद्भिःश्रुतिसूक्तैश्चमंडितंसदनंहरेः ॥ ८ ॥

मस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ छ ॥ षट्सप्ततिश्लोकवर्यैर्जगदंबाज्वलन्महः ॥ पलाशसमिधोदग्धुमुत्पन्नमितिकीर्त्यते ॥ १ ॥ कैलासान्निर्गतादेवावैकुंठंददृशुरित्याह । तरसेति ॥ विष्णुवल्लवंविष्णुपालितम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तेदेवाविष्णुगृहंप्राप्यद्वारपालौजयविजयौप्रत्यूचुः ॥ ९ ॥ किमूचुस्तदाह । गत्वैकोपीति ॥ उभयोर्मध्येएकोगत्वासंगतान्द्वारस्थानस्मान्निवेदयतु ॥ १० ॥ समागतान्देवानुवाचेत्यर्थः ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ सुरान्प्रतीत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ हेनिर्जराःआसनेषुविशंतुवोयुष्माकंकुशलंकथयंतु ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

तेचविष्णुगृहंप्राप्यद्वारपालौशुभाऽऽकृती ॥ वीक्ष्योचुर्जयविजयौहेमयष्टिधरौस्थितौ ॥ ९ ॥ गत्वैकोऽप्युभयोर्मध्येनिवेदयतुसंगतान् ॥ द्वारस्थान्ब्रह्मरुद्रादीन्विष्णुदर्शनलालसान् ॥ १० ॥ व्यासउवाच ॥ विजयस्तद्वचःश्रुत्वागत्वाऽथविष्णुसन्निधौ ॥ सर्वान्समागतान्देवान्प्रणम्योवाचसत्वरः ॥ ११ ॥ विजयउवाच ॥ देवदेवमहाराजरमाकांतसुरारिहन् ॥ समागताःसुराःसर्वेद्वारितिष्ठंतिवैविभो ॥ १२ ॥ ब्रह्मारुद्रस्तथेंद्रश्चवरुणःपावकोयमः ॥ स्तुवंतिवेदवाक्यैस्त्वाममरादर्शनाऽर्थिनः ॥ १३ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंविष्णुर्विजयस्यरमापतिः ॥ निर्जगामगृहात्तूर्णंसुरान्समधिकोत्सवः ॥ १४ ॥ गत्वावीक्ष्यहरिर्देवान्द्वारस्थाञ्छ्रमकर्शितान् ॥ प्रीतिप्रवणयादृष्ट्याप्रीणयामासदुःखितान् ॥ १५ ॥ प्रणेमुस्तेसुराःसर्वेदेवदेवंजनार्दनम् ॥ तुष्टुवुश्चसुरारिघ्नंवाग्भिर्वेदविनिश्चितम् ॥ १६ ॥ देवाऊचुः ॥ देवदेवजगन्नाथसृष्टिस्थित्यंतकारक ॥ दयासिंधोमहाराजत्राहिनःशरणाऽऽगतान् ॥ १७ ॥ विष्णुरुवाच ॥ विशंतुनिर्जराःसर्वेकुशलंकथयंतुवः ॥ आसनेषुकिमर्थंवैमिलिताः समुपागताः ॥ १८ ॥ चिंताऽऽतुराःकथंजाताविषण्णादीनमानसाः ॥ ब्रह्मरुद्रेणसहिताःकार्यंप्रब्रूतसत्वरम् ॥ १९ ॥ देवाऊचुः ॥ महिषेणमहाराजपीडिताःपापकर्मणा ॥ असाध्येनाऽतिदुष्टेनवरदृप्तेनपापिना ॥ २० ॥ यज्ञभागानसौभुंक्तेब्राह्मणैःप्रतिपादितान् ॥ अमरागिरिदुर्गेषुभ्रमंतिचभयाऽऽतुराः ॥ २१ ॥ वरदानेनधातुःसदुर्जयोमधुसूदन ॥ तस्मात्त्वांशरणंप्राप्ताज्ञात्वातत्कार्यगौरवम् ॥ २२ ॥ समर्थोऽसिसमुद्धर्तुंदैत्यमायाविशारद ॥ कुरुकृष्णवधोपायंतस्यदानवमर्दन ॥ २३ ॥ धात्रातस्मैवरोदत्तोह्यवध्योऽसिनरैःकिल ॥ कास्त्रीत्वेवंविधावालायाहन्यात्तंशठंरणे ॥ २४ ॥ उमामावाशचीविद्याकासमर्थाऽस्यघातने ॥ महिषस्याऽतिदुष्टस्यवरदानबलादपि ॥ २५ ॥ विचिंत्यबुद्ध्यायत्सर्वंमरणस्याऽस्यकारणम् ॥ कुरुकार्यंचदेवानांभक्तवत्सलभूधर ॥ २६ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वातद्वचनंविष्णुस्तानुवाचहसन्निव ॥ युद्धंकृतंपुराऽस्माभिस्तथाऽपिनमृतोह्यसौ ॥ २७ ॥ अद्यसर्वसुराणांवैतेजोभीरूपसंपदा ॥ उत्पन्नाचेद्वरारोहासाहन्यात्तंरणेबलात् ॥ २८ ॥ हयारिंवरदृप्तंचमायाशतविशारदम् ॥ हंतुंयोग्याभवेन्नारीशक्त्यंशैर्निर्मिताहिनः ॥ २९ ॥

॥ २३ ॥ नरैः पुंव्यक्तिभिरित्यर्थः ॥ स्त्रीहानिष्यतीतिचेत्तत्राह । कास्त्रीत्वेवमिति ॥ २४ ॥ मावालक्ष्मीर्वा ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ अद्यसर्वेति ॥ तेजोभिः शक्त्यंशैरूपंश्वेतकृष्णादि ॥ तेनयदियुक्तावरारोहास्त्रीउत्पन्नास्यात्तदासातंदैत्यंहन्यादित्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

नन्वस्माकंशक्त्यंशैर्निर्मितानारीकथंस्यान्नह्यस्माकंतत्सामर्थ्यमस्तितत्राह।प्रार्थयंतुचेति॥यूयमपिस्वतेजोंशान्प्रार्थयंतु ॥तथाऽस्माकंस्त्रियश्चतथापुनःप्रार्थयंतु सर्वैःस्त्रीपुरुषैरपिपराशक्तिःप्रार्थनीयेतिभावः ॥ ययाप्रार्थनयोत्पन्नैस्तेजोंशैस्तेजोराशिःस्त्रीयथाभवेत्तथाप्रार्थयंत्वित्यर्थः॥३०॥३१॥एवंविधानारीयदापराशक्तिप्रसादाद्भविष्यतितदैनंहनिष्यतीत्याह।सर्वायुधेति ॥३२॥स्वयमेवोद्भवाविति।इत्थंपराशक्तिःसर्वैर्मिलित्वाप्रार्थनीयेतिसंकल्पंयावत्कुर्वंतितावत्तादृशसंकल्पेपराशक्तिरितिस्मरणमात्रेणैवभक्तकामदुघाभगवतीपराशक्तिरप्रार्थितापि वत्संप्रतिगौरिवस्वयमेव तत्तच्छक्त्यंशरूपैःपुरतःप्रादुर्बभूवेत्यहोभक्तवात्सल्यंभगवत्याइतिभावः॥तदुक्तंचतुर्थस्कंधे ॥भुवनेशीत्येववक्त्रेददातिभुवनत्रयम्॥मांपाहीतिवचोवक्त्रेदेयाऽभावादृणान्वितेति।व्याख्यातंचैतदस्माभिःपुरस्तादेव ॥३३॥ अयंचाऽवतारः पुराणांतरप्रसिद्धेकात्यायनाऽऽश्रमेकात्यायनाशिष्यस्त्रीरूपेणमाहियतंमाहिषंदृष्ट्वाकात्यायनः स्त्रीत्वांहनिष्यतीतिशप्तवानितितदाऽऽश्रमेएवरूपधा

प्रार्थयंतुचतेजोंशान्स्त्रियोऽस्माकंतथापुनः ॥ उत्पन्नैस्तैश्चतेजोंशैस्तेजोराशिर्भवेद्यथा ॥ ३० ॥ आयुधानिवयंदद्मःसर्वेरुद्रपुरोगमाः ॥ तस्यैसर्वाणिदिव्यानित्रिशूलादीनियानिच ॥ ३१ ॥ सर्वाऽऽयुधधरानारीसर्वतेजःसमन्विता ॥ हनिष्यतिदुरात्मानंतंपापंमदगर्वितम् ॥ ३२ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तवतिदेवेशेब्रह्मणोवदनात्ततः ॥ स्वयमेवोद्भवौतेजोराशिश्चातीवदुःसहः ॥ ३३ ॥ रक्तवर्णंशुभाकारंपद्मरागमणिप्रभम् ॥ किंचिच्छीतंतथाचोष्णंमरीचिजालमंडितम् ॥ ३४ ॥ निःसृतंहरिणादृष्टंहरेणचमहात्मना ॥ विस्मितौतौमहाराजवभूवतुरुरुक्रमौ ॥ ३५ ॥ शंकरस्यशरीरात्तुनिःसृतंमहदद्भुतम् ॥ रौप्यवर्णमभूत्तीव्रंदुर्दर्शंदारुणंमहत् ॥ ३६ ॥ भयंकरंचदैत्यानांदेवानांविस्मयप्रदम् ॥ घोररूपंगिरिप्रख्यंतमोगुणमिवाऽपरम् ॥ ३७ ॥ ततोविष्णुशरीरात्तुतेजोराशिमिवाऽपरम् ॥ नीलंतत्त्वगुणोपेतंप्रादुरासमहाद्युति ॥ ३८ ॥ ततश्चेंद्रशरीरात्तुचित्ररूपंदुरासदम् ॥ आविरासीत्सुसंवृत्तंतेजःसर्वगुणाऽऽत्मकम् ॥ ३९ ॥ कुबेरयमवह्नीनांशरीरेभ्यःसमंततः ॥ निश्चक्राममहत्तेजोवरुणस्यतथैवच ॥४०॥ अन्येषांचैवदेवानांशरीरेभ्योऽतिभास्वरम् ॥ निर्गतंतन्महातेजोराशिरासीन्महोज्वलः ॥ ४१ ॥ तंदृष्ट्वाविस्मिताःसर्वेदेवाविष्णुपुरोगमाः ॥ तेजोराशिंमहादिव्यंहिमाचलमिवाऽपरम् ॥ ४२ ॥ पश्यतांतत्रदेवानांतेजःपुंजसमुद्भवा ॥ बभूवातिवरानारीसुंदरीविस्मयप्रदा ॥४३॥ त्रिगुणासामहालक्ष्मीःसर्वदेवशरीरजा ॥ अष्टादशभुजारम्यात्रिवर्णाविश्वमोहिनी॥४४॥

रणमितिकालिकापुराणेस्पष्टम् ॥ आश्विनकृष्णचतुर्दश्यामयमवतारः ॥ तच्छुक्लाष्टम्यांतद्वधः नवम्यांपूजादशम्यांविसर्जनंकृतंदेवैरितिचतत्रोक्तम् ॥३४॥३५॥३६॥३७॥ नीलंसत्वगुणोपेतमिति ॥ ब्रह्मणः कोपेऽपिरजआधिक्येनाशिवस्यतमोगुणप्राधान्येनकोपेऽपितमोगुणस्याधिक्येनविष्णुकोपस्यपालनमूलकत्वेनसत्वाऽऽधिक्यवत्तयात्रिगुणाएषेतिध्वन्यते ॥ तदुक्तंवैकृतिकरहस्ये ॥ सर्वदेवशरीरेभ्योयाऽऽविर्भूतामहाप्रभा ॥ त्रिगुणासामहालक्ष्मीःसाक्षान्महिषमर्दिनीति । स्पष्टीकृतंचैतदस्माभिःसप्तशत्यंगषट्कव्याख्याने॥तत्राऽपिरजःसत्त्वयोराधिक्यम् । देवानांरजःसत्वमयत्वात् ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ तंतेजोराशिमित्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





श्वेताऽऽननेति ॥ शिवस्यश्वेतत्वात्तदंशजन्याऽऽननस्याऽपिश्वेतत्वम् ॥ यद्यपिनेत्रत्रयस्यवर्णत्रयत्वमग्रेवक्ष्यति ॥ तथाऽपिकज्जलाऽभिप्रायेणकृष्णनेत्रत्वमत्रोक्तमितिबोध्यम् ॥ एवंसर्व देवांशजावयवेषुतत्तद्देवरूपसदृशरूपवत्त्वंबोध्यम् ॥ तदुक्तंवैकृतिकरहस्ये ॥ श्वेताऽऽननानीलभुजासुश्वेतस्तनमंडला ॥ रक्तमध्यारक्तपादारक्तजंघोरुरुन्मदा ॥ सुचित्रजघनाचित्रमाल्यां बरविभूषणा ॥ चित्राऽनुलेपनाकांतिरूपसौभाग्यशालिनी॥एवंचरूपेणाऽपित्रिगुणात्मत्वंसूचितं स्वस्यचित्रत्वादेवचित्रमाल्यादिधारणम् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७॥ ४८॥४९॥५०॥५१॥

श्वेताऽऽननाकृष्णनेत्रासंरक्ताऽधरपल्लवा ॥ ताम्रपाणितलाकांतादिव्यभूषणभूषिता ॥ ४५ ॥ अष्टादशभुजादेवीसहस्रभुजमंडिता ॥ संभूताऽसुरनाशाय तेजोराशिसमुद्भवा ॥ ४६ ॥ जनमेजयउवाच ॥ कृष्णदेवमहाभागसर्वज्ञमुनिसत्तम ॥ विस्तरंब्रूहितस्यास्त्वंशरीरस्यसमुद्भवम् ॥४७॥ एकीभूतंचसर्वे षांतेजःकिंवापृथक्स्थितम् ॥ अंगानिचैवतस्यास्तुसर्वतेजोमयानिवा ॥ ४८ ॥ भिन्नभागविभागेनजातान्यंगानियानितु ॥ मुखनासाऽक्षिभेदेनसर्वत्रैकभ वानिच ॥ ४९ ॥ ब्रूहितद्विस्तरंव्यासशरीरांगसमुद्भवम् ॥ बभूवयस्यदेवस्यतेजसोंऽगंयदद्भुतम् ॥ ५० ॥ आयुधाऽऽभरणादीनिदत्तानियैर्यथायथा ॥ त त्सर्वंश्रोतुकामोऽस्मित्वन्मुखांबुजनिर्गतम् ॥ ५१ ॥ नहितृप्याम्यहंब्रह्मन्सुधामयरसंपिबन् ॥ चरितंचमहालक्ष्म्यास्त्वन्मुखांभोजनिःसृतम् ॥ ५२ ॥ सूतउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाराज्ञःसत्यवतीसुतः ॥ उवाचमधुरंवाक्यंप्रीणयन्निवभूपतिम् ॥ ५३ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्महाभागविस्तरेणब्रवी मिते ॥ यथामतिकुरुश्रेष्ठतस्यादेहसमुद्भवम् ॥ ५४ ॥ नब्रह्मानहरिःसाक्षान्नरुद्रोनचवासवः ॥ याथातथ्येनतद्रूपंवक्तुमीशःकदाचन ॥ ५५ ॥ कथंजाना म्यहंदेव्यायद्रूपंयादृशंयतः ॥ वाचारंभणमात्रंतदुत्पन्नेतिब्रवीमियत् ॥५६॥ सानित्यासर्वदैवास्तेदेवकार्यार्थसिद्धये ॥ नानारूपात्वेकरूपाजायतेकार्यगौ रवात् ॥ ५७ ॥ यथानटोरंगगतोनानारूपोभवत्यसौ ॥ एकरूपस्वभावोऽपिलोकरंजनहेतवे ॥ ५८ ॥ तथैषादेवकार्यार्थमरूपाऽपिस्वलीलया ॥ क रोतिबहुरूपाणिनिर्गुणासगुणानिच ॥५९॥ कार्यकर्माऽनुसारेणनामानिप्रभवंतिहि ॥ धात्वर्थगुणयुक्तानिगौणानिसुबहून्यपि ॥ ६० ॥ तद्वैबुद्ध्यनुसारेण प्रब्रवीमिनराधिप ॥ यथातेजःसमुद्भूतंरूपंतस्यामनोहरम् ॥६१॥ शंकरस्यचयत्तेजस्तेनतन्मुखपंकजम् ॥ श्वेतवर्णशुभाकारमजायतमहत्तरम् ॥ ६२॥ केशास्तस्यास्तथास्निग्धायाम्येनतेजसाऽभवन् ॥ वक्राऽग्राश्चाऽतिदीर्घावैमेघवर्णामनोहराः ॥ ६३ ॥

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ नब्रह्मानहरिरिति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ यस्याःस्वरूपंब्रह्मादयोनविजानंतितस्मादुच्यतेऽज्ञेयेति ॥ ५५ ॥५६॥५७॥५८॥ स्वलीलयेति ॥ तथाचव्याससूत्रम् ॥ लोकवत्तुलीलाकैवल्यमिति ॥ ५९ ॥ यथातस्याःकार्याऽनुसारेणरूपभेदएवंनानाकर्माचरणात्पाठकपाचकवद्धात्वर्थगुणयोगाद्गौणानिनामानिकालीतारासुंदरीभुवनेश्वरीदुर्गेत्यादिकानिप्रभ वंतीत्यर्थः॥अनेनचाऽनंतरूपत्वमनंतनामवत्त्वंचबोधितम् । तदुक्तम् ॥ असंख्येयानिनामानितस्याब्रह्मादिभिःसुरैः ॥ गुणकर्मविधानाद्यैःकल्पितानिचकिंब्रुवेइति ॥६०॥६१॥६२॥६३॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६४॥वक्रेस्निग्धेइतिद्विवचनंभ्रुवोर्विशेषणम्॥६५॥६६॥६७॥शिखरिणःसाग्रादंताःप्राजापत्येनतेजसादक्षादितेजसा ॥ तेनब्रह्मणस्तेजसापादावित्यनेननविरोधः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७०॥ ॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥इति श्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेऽष्टमोध्यायः ॥८॥ ॥ अर्धाऽधिकैःसप्तषष्टिपद्यैरथमहायुधैः॥अर्चितानिर्जरैर्देवीकथेयंसम्यगुच्यते॥१॥इत्थंविष्णुवाक्यश्रवणाऽनंतरंयद्देवैःकृतंतदुच्यते । देवाइति ॥१॥ क्षीरोदश्चांबरेइति ॥ अस्मिन्स्थलेसप्तशतीपाठव्याख्यातारोनानाविधमन्वयंकृत्वानानाविधमर्थंकल्पयंतितेचदेवीभागवतोक्तार्थेनविरुद्धाःसंतीत्यत्रोक्तार्थेनसप्तशतीपाठोक्तार्थेनचयथानविरोधस्तथाव्याख्यायते॥क्षीरोदइत्यारभ्यददावित्यंतमेकंवाक्यम्॥सप्तशत्यामपिक्षीरोदश्चामलंहारमजरेचतथांबरेइत्यंतमेकंवाक्यम्॥दत्तवा

नयनत्रितयंतस्याजज्ञेपावकतेजसा ॥ कृष्णंरक्तंतथाश्वेतंवर्णत्रयविभूषितम् ॥ ६४ ॥ वक्रेस्निग्धेकृष्णवर्णेसंध्ययोस्तेजसाभ्रुवौ ॥ जातेदेव्याःसुतेजस्केकामस्यधनुषीवते ॥ ६५ ॥ वायोश्चतेजसाशस्तौश्रवणौसंबभूवतुः ॥ नाऽतिदीर्घौनाऽतिह्रस्वौदोलाविवमनोभुवः ॥ ६६ ॥ तिलपुष्पसमाऽऽकारानासिकासुमनोहरा॥संजातास्निग्धवर्णावैधनदस्यचतेजसा॥६७॥दंताःशिखरिणःश्लक्ष्णाःकुंदाग्रसदृशाःसमाः ॥संजाताःसुप्रभाराजन्प्राजापत्येनतेजसा॥६८॥अधरश्चाऽतिरक्तोस्याःसंजातोरुणतेजसा ॥ उत्तरोष्ठस्तथारम्यःकार्तिकेयस्यतेजसा॥६९॥अष्टादशभुजाकारावाहवोविष्णुतेजसा ॥ वसूनांतेजसांगुल्योरक्तवर्णास्तथाऽभवन् ॥७०॥ सौम्येनतेजसाजातंस्तनयोर्युग्ममुत्तमम् ॥ ऐंद्रेणाऽस्यास्तथामध्यंजातंत्रिवलिसंयुतम् ॥७१॥ जंघोरूवरुणस्याऽथतेजसासंबभूवतुः ॥ नितंबःसतुसंजातोविपुलस्तेजसाभुवः ॥ ७२ ॥ एवंनारीशुभाकारासुरूपासुस्वराभृशम् ॥ समुत्पन्नातथाराजंस्तेजोराजिसमुद्भवा ॥ ७३ ॥ तांदृष्ट्वासुष्ठुसर्वांगींसुदतींचारुलोचनाम् ॥ मुदंप्रापुःसुराःसर्वेमहिषेणप्रपीडिताः ॥ ७४ ॥ विष्णुस्त्वाहसुरान्सर्वान्भूषणान्यायुधानिच ॥ प्रयच्छंतुशुभान्यस्यैदेवाःसर्वाणिसांप्रतम् ॥ ७५ ॥ स्वायुधेभ्यःसमुत्पाद्यतेजोयुक्तानिसत्वराः ॥ समर्पयंतुसर्वेऽद्यदेव्यैनानाऽऽयुधानिवै ॥७६॥ ॥ इतिश्रीदे०म०पंचमस्कंधेदेवीमाहात्म्येस्वरूपोद्भवोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ देवाविष्णुवचःश्रुत्वासर्वेप्रमुदितास्तदा ॥ ददुश्चभूषणान्याऽऽशुवस्त्राणिस्वायुधानिच ॥१॥ क्षीरोदश्चांबरेदिव्येरक्तेसूक्ष्मेतथाऽजरे ॥ निर्मलंचतथाहारंप्रीतस्तस्यैसुमंडितम् ॥२॥ ददौचूडामणिंदिव्यंसूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ कुंडलेचतथाशुभ्रेकटकानिभुजेषुवै ॥ ३ ॥ केयूरान्कंकणान्दिव्यान्नानारत्नविराजितान् ॥ ददौतस्यैविश्वकर्माप्रसन्नेंद्रियमानसः ॥ ४ ॥

नित्यस्यपूर्वश्लोकस्याऽनुवृत्तिः॥तेनोभयोरेकवाक्यता । अनंतरंचचूडामणिमित्यारभ्यतेजोवंतिचसर्वशइत्यंतमेकंवाक्यम्॥अत्रविश्वकर्मा कर्ता॥सप्तशत्यामपिचूडामणिमित्यारभ्याऽभेद्यंचदंशनमित्यंतमेकंवाक्यम्॥तत्राऽपिविश्वकर्माकर्ता॥तेनतयोर्वाक्ययोरप्येकवाक्यतेति॥ अम्लानपंकजांमालामित्यारभ्यवरुणःसंप्रयच्छतेत्यंतमेकंवाक्यम्॥वरुणःकर्ता॥सप्तशत्यामप्यम्लानपंकजामित्यारभ्यपंकजंचाऽतिशोभनमित्यंतमेकंवाक्यम् ॥ तत्रापिजलधिशब्देनवरुणएवकर्ताग्राह्यस्तेनतयोरप्येकवाक्यतेति ॥ अक्षरार्थस्तुव्याख्यायते ॥ क्षीरोदःसमुद्रोवस्त्रद्वयमेकंरत्नहारंचददावित्यर्थः ॥ २ ॥ चूडामणिंकुंडलेकटकानिकेयूरान्कंकणानिविश्वकर्माददौ ॥ नूपुरावापित्वष्टाविश्वकर्मैवददौ ॥ ग्रैवेयकमंगुलीयकरत्नान्यपिमहार्णवोमहार्णवसदृशागाधहृदयोविश्वकर्मैवददावित्यर्थः ॥ सप्तशत्यैकवाक्यत्वात् ॥ ३ ॥ ४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५ ॥ ६ ॥ वैजयंतींमालामुरासिशिरसिअम्लानपंकजांमालांवरुणोददावित्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ घंटाशतनिनादिनीमितिग दायाविशेषणम् ॥ अनेकघंटासंबद्धागदेत्यर्थः ॥ त्वष्टाविश्वकर्मागदामस्त्राणिकवचंचादादित्येकंवाक्यम् ॥ सप्तशतीपाठानुरोधात् ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ २४ ॥ पृथिव्यामिति ॥ पृथिव्यांयांतःस्थितापृथिव्यायानज्ञाता ॥ अविषयत्वात् ॥ यापृथिवींस्वकार्येयमयतिनियमयतितांपरांदेवतामीश्वरीमंतर्यामिरूपिणींवंदे ॥ तथाचां

नूपुरौसुस्वरौकांतौनिर्मलौरत्नभूषितौ॥ददौसूर्यप्रतीकाशौत्वष्टातस्यैसुपादयोः ॥५॥ तथाग्रैवेयकंरम्यंददौतस्यैमहार्णवः ॥ अंगुलीयकरत्नानितेजोवंतिच सर्वशः ॥६॥ अम्लानपंकजांमालांगंधाढ्यांभ्रमराऽनुगाम् ॥ तथैववैजयंतींचवरुणःसंप्रयच्छत ॥ ७॥ हिमवानथसंतुष्टोरत्नानिविविधानिच॥ददौचवाहनं सिंहंकनकाभंमनोहरम्॥८॥भूषणैर्भूषितादिव्यैःसारराजवराशुभा ॥ सिंहारूढावरारोहासर्वलक्षणसंयुता ॥ ९ ॥ विष्णुश्चक्रात्समुत्पाद्यददावस्यैरथांगक म् ॥ सहस्राऽरंसुदीप्तंचदेवाऽरिशिरसांहरम् ॥१०॥ स्वत्रिशूलात्समुत्पाद्यशंकरःशूलमुत्तमम् ॥ ददौदेव्यैसुरारीणांकृंतनंभयनाशनम् ॥११॥वरुणश्चप्रस न्नात्माददौशंखंसमुज्ज्वलम् ॥ घोषवंतंस्वशंखात्तुसमुत्पाद्यसुमंगलम् ॥१२॥ हुताशनस्तथाशक्तिंशतघ्नींसुमनोजवाम् ॥ प्रायच्छत्तुप्रसन्नात्मातस्यैदैत्य विनाशिनीम् ॥१३॥ इषुधिंबाणपूर्णंचचापंचाद्भुतदर्शनम् ॥ मारुतोदत्तवांस्तस्यैदुराकर्षंखरस्वरम्॥१४॥स्ववज्राद्वज्रमुत्पाद्यददाविंद्रोऽतिदारुणम् ॥ घं टामैरावताच्चूर्णसुशब्दांचाऽतिसुंदराम्॥१५॥ददौदंडंयमःकामंकालदंडसमुद्भवम्॥येनांतंसर्वभूतानामकरोत्कालआगते ॥१६॥ ब्रह्माकमंडलुंदिव्यंगंगावा रिप्रपूरितम्॥ददावस्यैमुदायुक्तोवरुणःपाशमेवच॥१७॥कालःखड्गंतथाचर्मप्रायच्छत्तुनराधिप॥परशुंविश्वकर्माचतीक्ष्णमस्यैददावथ॥१८॥धनदस्तुसुरा पूर्णपानपात्रंसुवर्णजम्॥पंकजंवरुणश्चादाद्देव्यैदिव्यंमनोहरम् ॥१९॥ गदांकौमोदकींत्वष्टाघंटाशतनिनादिनीम् ॥ अदात्तस्यैप्रसन्नात्मासुरशत्रुविनाशिनी म्॥२०॥अस्त्राण्यनेकरूपाणितथाऽभेद्यंचदंशनम्॥ददौत्वष्टाजगन्मात्रेनिजरश्मीन्दिवाकरः ॥२१॥सायुधांभूषणैर्युक्तांदृष्ट्वातेविस्मयंगताः ॥ तुष्टुवुस्तांसु रादेवींत्रैलोक्यमोहिनींशिवाम्॥२२॥देवाऊचुः॥नमःशिवायैकल्याण्यैशांत्यैपुष्ट्यैनमोनमः ॥ भगवत्यैनमोदेव्यैरुद्राण्यैसततंनमः॥२३॥कालरात्र्यैतथां बायैइंद्राण्यैतेनमोनमः॥सिद्ध्यैबुद्ध्यैतथावृद्ध्यैवैष्णव्यैतेनमोनमः ॥२४॥ पृथिव्यांयास्थितापृथ्व्यानज्ञातापृथिवींचया॥अंतःस्थितायमयतिवंदेतामी श्वरींपराम् ॥ २५ ॥ मायायांयास्थिताज्ञातामाययानचतामजाम् ॥ अंतःस्थिताप्रेरयतिप्रेरयित्रींनुमःशिवाम् ॥ २६ ॥

तर्यामिब्राह्मणंयःपृथिव्यांतिष्ठन्पृथिव्याआंतरोयंपृथिवीनवेद यस्यपृथिवीशरीरंयःपृथिवीमंतरोयमयतिसतआत्मांतर्याम्यमृतइति ॥ २५ ॥ मायायामिति ॥ यामायायांस्थितायामायया नचज्ञातातामजांमायांयांतःस्थिताप्रेरयतितांप्रेरयित्रींशिवांनुमइत्यर्थः। अत्रप्रत्याहारन्यायेनपृथिवीमाययोरंतर्यामिस्वरूपत्वस्यभगवत्याःप्रतिपादनेनसर्वप्रपंचांतर्यामित्वंभगवत्याःप्रतिपादि तंभवतीतिबोध्यम् ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २७ ॥ २८ ॥ त्वमेकेति ॥ कार्यस्यदेवादिप्रपंचस्यसर्वकारणभूतश्रीभगवत्यधीनत्वादितिभावः ॥ २९ ॥ ३० ॥ अद्यैवेति ॥ शीघ्रमित्यर्थः ॥ कालिकापुराणेचतुर्दश्यामवतीर्णयाभगवत्याऽष्टम्याकृतवधस्यकीर्तनात् ॥ ३१ ॥ हासकारणमाह । चित्रमेतच्चेति । एतादृशामहांतोऽपिब्रह्माद्याःकालवशान्महिषाऽसुराद्भयंप्राप्ताइत्यहोप्रारब्धमतीवाचित्रमस्तीतिभावः ॥

कल्याणंकुरुभोमातस्त्राहिनःशत्रुतापितान् ॥ जहिपापंहयाऽरिंत्वंतेजसास्वेनमोहितम् ॥ २७ ॥ खलंमायाविनंघोरंस्त्रीवध्यंवरदर्पितम् ॥ दुःखदंसर्वदेवानां नानारूपधरंशठम् ॥ २८ ॥ त्वमेकासर्वदेवानांशरणंभक्तवत्सले ॥ पीडितान्दानवेनाऽद्यत्राहिदेविनमोऽस्तुते ॥२९॥ व्यासउवाच ॥एवंस्तुतातदादेवीसुरैःसर्वसुखप्रदा ॥ तानुवाचमहादेवीस्मितपूर्वंशुभंवचः॥३०॥देव्युवाच ॥ भयंत्यजंतुगीर्वाणामहिषान्मंदचेतसः॥ हनिष्यामिरणेऽद्यैववरदृप्तंविमोहितम् ॥ ॥३१॥व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वासासुरान्देवीजहासातीवसुस्वरम्॥ चित्रमेतच्चसंसारेभ्रममोहयुतंजगत्॥३२॥ब्रह्मविष्णुमहेशाद्याःसेंद्राश्चाऽन्येसुरास्तथा॥ कंपयुक्ताभयत्रस्तावर्ततेमहिषात्किल ॥३३॥ अहोदैववलंघोरंदुर्जयंसुरसत्तमाः ॥ कालःकर्ताऽस्तिदुःखानांसुखानांप्रभुरीश्वरः ॥ ३४ ॥ सृष्टिपालनसंहारेसमर्थाअपितेयदा ॥मुह्यंतिक्लेशसंतप्तामहिषेणप्रपीडिताः॥३५॥इतिकृत्वास्मितदेवीसाऽट्टहासंचकारह॥ उच्चैःशब्दंमहाघोरंदानवानांभयप्रदम् ॥ ३६॥ चकंपेवसुधातत्रश्रुत्वातच्छब्दमद्भुतम् ॥ चेलुश्चपर्वताःसर्वेचुक्षोभाऽब्धिश्चवीर्यवान्॥३७॥मेरुश्चचालशब्देनदिशःसर्वाःप्रपूरिताः ॥ भयंजग्मुस्तदाश्रुत्वा दानवास्तंस्वनंमहत् ॥ ३८ ॥ जयपाहीतिदेवास्तामूचुःपरमहर्षिताः ॥ महिषोऽपिस्वनंश्रुत्वाचुकोपमदगर्वितः ॥ ३९ ॥ किमेतदितितान्दैत्यान्पप्रच्छ स्वनशंकितः ॥ गच्छंतुत्वरितादूताज्ञातुंशब्दसमुद्भवम् ॥ ४० ॥ कृतःकेनाऽयमत्युग्रःशब्दःकर्णव्यथाकरः ॥ देवोवादानवोवाऽपियोभवेत्स्वनकारकः॥ ॥ ४१ ॥ गृहीत्वातंदुरात्मानंमत्समीपंनयंत्विह ॥ हनिष्यामिदुराचारंगर्जंतंस्मयदुर्मदम् ॥ ४२ ॥ क्षीणायुष्यंमंदमतिंनयामियमसादनम् ॥ पराजिताःसुराःकामंनगर्जंतिभयाऽऽतुराः ॥४३॥ नाऽसुराममवश्यास्तेकस्येदंमूढचेष्टितम्॥त्वरितामामुपायांतुज्ञात्वाशब्दस्यकारणम् ॥ ४४ ॥ अहंगत्वाहनिष्यामितंपापंवितथश्रमम्॥व्यासउवाच॥इत्युक्तास्तेनतेदूतादेवींसर्वांगसुंदरीम् ॥४५॥ अष्टादशभुजांदिव्यांसर्वाभरणभूषिताम्॥सर्वलक्षणसंपन्नांवरायुधधरांशुभाम्॥४६॥दधतींचषकंहस्तेपिबंतींचमुहुर्मधु॥संवीक्ष्यभयभीतास्तेजग्मुस्त्रस्ताःसुशंकिताः॥४७॥सकाशेमहिषस्याऽऽशुतमूचुःस्वनकारणम् ॥ दूताऊचुः॥देवीदैत्येश्वरप्रौढादृश्यतेकाचिदंगना॥४८॥सर्वांगभूषणानारीसर्वरत्नोपशोभिता॥ नमानुषीनाऽसुरीसादिव्यरूपामनोहरा॥४९॥सिंहारूढाऽऽयुधधराचाऽष्टादशकरावरा॥सानादंकुरुतेनारीलक्ष्यतेमदगर्विता ॥५०॥सुरापानरताकामंजानीमोनसभर्तृका॥अंतरिक्षस्थितादेवास्तांस्तुवंतिमुदान्विताः ॥५१॥

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ५२ ॥ ५३ ॥ असंभाष्येति ॥ स्त्रीसंभाषणस्यवीराणामश्लाघ्यत्वादितिभावः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ अहत्वेति ॥ प्राणोनगच्छतीत्येवंशिक्षयित्वाऽऽनयेत्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ षट्षष्टिश्लोकवर्यैस्तुदूतसंवादकीर्तनम् ॥

जयेतिपाहिनश्चेतिजहिशत्रुमितिप्रभो ॥ नजानेकावरारोहाकस्यवासापरिग्रहः ॥ ५२ ॥ किमर्थमागताचाऽत्रकिंचिकीर्षतिसुंदरी ॥ द्रष्टुंनैवसमर्थाःस्म स्तत्तेजःपरिधर्षिताः ॥ ५३ ॥ शृंगारवीरहासाढ्यारौद्राऽद्भुतरसान्विता ॥ दृष्ट्वैवंविधांनारीमसंभाष्यसमागताः ॥ ५४ ॥ वयंत्वदाज्ञयाराजन्किंकर्तव्य मतःपरम् ॥ महिषउवाच ॥ गच्छवीरमयादिष्टोमंत्रिश्रेष्ठबलान्वितः ॥ ५५ ॥ सामादिभिरुपायैस्त्वंसमानयशुभाऽऽननाम् ॥ नाऽऽयातियदिसाना रीत्रिभिःसामादिभिस्त्विह ॥ ५६ ॥ अहत्वातांवरारोहांत्वमानयममांतिकम् ॥ करोमिपट्टमहिषींतामरालभ्रुवंमुदा ॥ ५७ ॥ प्रीतियुक्तासमायातिय दिसामृगलोचना ॥ रसभंगोयथानस्यात्तथाकुरुममेप्सितम् ॥ ५८ ॥ श्रवणान्मोहितोऽस्म्यद्यतस्यारूपस्यसंपदा ॥ व्यासउवाच ॥ महिषस्यवचः श्रुत्वापेशलंमंत्रिसत्तमः ॥ ५९ ॥ जगामतरसाकामंगजाऽश्वरथसंयुतः ॥ गत्वादूरतरंस्थित्वातामुवाचमनस्विनीम् ॥ ६० ॥ विनयाऽवनतःश्लक्ष्णंमंत्रीमधुर यागिरा ॥ प्रधानउवाच ॥ कासित्वंमधुराऽऽलापेकिमत्राऽऽगमनंकृतम् ॥ ६१ ॥ पृच्छतित्वांमहाभागेमन्मुखेनममप्रभुः ॥ सजेतासर्वदेवानामवध्यस्तुनरैः किल ॥ ६२ ॥ ब्रह्मणोवरदानेनगर्वितश्चारुलोचने ॥ दैत्येश्वरोऽसौबलवान्कामरूपधरःसदा ॥ ६३ ॥ श्रुत्वात्वांसमुपायातांचारुवेषांमनोहराम् ॥ द्रष्टु मिच्छतिराजामेमहिषोनामपार्थिवः ॥ ६४ ॥ मानुषंरूपमादायत्वत्समीपंसमेष्यति ॥ यथारुच्येतचार्वंगितथामन्यामहेवयम् ॥ ६५ ॥ तर्ह्येहिमृग शावाक्षिसमीपंतस्यधीमतः ॥ नोचेदिहानयाम्येनंराजानंभक्तितत्परम् ॥ ६६ ॥ तथाकरोमिदेवेशियथातेमनसेप्सितम् ॥ वशगोऽसौतवाऽत्यर्थंरूपसं श्रवणात्तव ॥ ६७ ॥ करभोरुवदाऽऽशुत्वंसंविधेयंमयातथा ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदेवीमहात्म्येनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ व्यास उवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाप्रहस्यप्रमदोत्तमा ॥ तमुवाचमहाराजमेघगंभीरयागिरा ॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ मंत्रिवर्यसुराणांवैजननींविद्धिमांकिल ॥ महालक्ष्मीमितिख्यातांसर्वदैत्यनिषूदिनीम् ॥ २ ॥ प्रार्थिताऽहंसुरैःसर्वैर्महिषस्यवधायच ॥ पीडितैर्दानवेंद्रेणयज्ञभागबहिष्कृतैः ॥ ३ ॥ तस्मादिहा ऽऽगताऽस्म्यद्यतद्वधार्थंकृतोद्यमा ॥ एकाकिनीनसैन्येनसंयुतामंत्रिसत्तम ॥ ४ ॥ यत्त्वयाऽहंसामपूर्वंकृत्वास्वागतमादरात् ॥ उक्तामधुरयावाचातेन तुष्टाऽस्मितेऽनघ ॥ ५ ॥ नोचेद्धन्मिदृशात्वांवैकालाग्निसमयाकिल ॥ कस्यप्रीतिकरंनस्यान्माधुर्यवचनंखलु ॥ ६ ॥

क्रियतेयत्रदोषास्तुदैत्यानांभांतिसर्वतः ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायांतेदूतवाक्यंश्रुत्वादेवीयदाहतदुच्यते । इतितस्येति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ कालाऽग्निसमयासदृशया ॥ ६ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

गच्छतमिति ॥ तंमहिषंप्रतिगच्छेत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥१३॥ यद्यस्मादित्यर्थः । स्त्रीवध्यत्वेऽवशिष्टेसतीतिशेषः ॥ तस्मिन्नवशिष्टेसतिब्रह्मणोवरोवर्ततइत्यत्र गर्वमाकुर्वित्यर्थः ॥ तर्हिकास्त्रीहनिष्यतीतिचेदहमेवहनिष्यामीत्याह । त्वयेति ॥ १४ ॥ कृताऽऽगसंत्वांहंतुंसमुपागतेत्यन्वयः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ स्त्रीसदृशमप्रौढम् ॥ १८ ॥

गच्छतंमहिषंपापवदमद्वचनादिदम् ॥ गच्छपातालमधुनाजीवितेच्छायदस्तिते ॥ ७ ॥ नोचेत्कृताऽऽगसंदुष्टंहनिष्यामिरणांगणे ॥ मद्बाणक्षुण्णदेहस्त्वं गंतासियमसादनम् ॥ ८ ॥ दयालुत्वंममेदंत्वंविदित्वागच्छसत्वरम् ॥ हतेत्वयिसुरामूढस्वर्गंप्राप्स्यंतिसत्वरम् ॥ ९ ॥ तस्माद्गच्छस्वत्यक्त्वैकोमेदिनींच ससागराम् ॥ पातालंतरसामंदयावद्बाणानमेऽपतन् ॥ १० ॥ युद्धेच्छाचेन्मनसितेतर्ह्येहित्वरितोऽसुर ॥ वीरैर्महाबलैःसर्वैर्नयामियमसादनम् ॥ ११ ॥ युगेयुगेमहामूढहतास्त्वत्सदृशाःकिल ॥ असंख्यातास्तथात्वांवैहनिष्यामिरणांगणे ॥ १२ ॥ साफल्यंकुरुशस्त्राणांधारणेतुश्रमोऽन्यथा ॥ तद्युद्धचस्व मयासार्धंसमरेस्मरपीडितः ॥ १३ ॥ मागर्वंकुरुदुष्टात्मन्यन्मेऽस्तिब्रह्मणोवरः ॥ स्त्रीवध्यत्वेत्वयामूढपीडिताःसुरसत्तमाः ॥ १४ ॥ कर्तव्यंवचनंधातु स्तेनाऽहंत्वामुपागता ॥ स्त्रीरूपमतुलंकृत्वासत्यंहंतुंकृताऽऽगसम् ॥ १५ ॥ यथेच्छंगच्छवामूढपातालंपन्नगाऽऽवृतम् ॥ हित्वाभूसुरसद्माऽद्यजीविते च्छायदस्तिते ॥ १६ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तःसततोदेव्यामंत्रिश्रेष्ठोबलान्वितः ॥ प्रत्युवाचनिशम्याऽसौवचनंहेतुगर्भितम् ॥ १७ ॥ देविस्त्रीसदृशं वाक्यंब्रूषेत्वंमदगर्विता ॥ क्वाऽसौक्वत्वंकथंयुद्धमसंभाव्यमिदंकिल ॥ १८ ॥ एकाकिनीपुनर्बालाप्रारब्धयौवनामृदुः ॥ महिषोऽसौमहाकायोदुर्विभा व्यंहिसंगतम् ॥ १९ ॥ सैन्यंबहुविधंतस्यहस्त्यश्वरथसंकुलम् ॥ पदातिगणसंविद्धंनानाऽऽयुधविराजितम् ॥ २० ॥ कःश्रमःकरिराजस्यमालतीपुष्प मर्दने ॥ मारणेतववामोरुमहिषस्यतथारणे ॥ २१ ॥ यदित्वांपरुषंवाक्यंब्रवीमिस्वल्पमप्यहम् ॥ शृंगारेताद्विरुद्धंहिरसभंगाद्बिभेम्यहम् ॥ २२ ॥ रा जाऽस्माकंसुररिपुर्वर्ततेत्वयिभक्तिमान् ॥ साममेवमयावाच्यंदानयुक्तंतथावचः ॥ २३ ॥ नोचेद्धन्म्यहमद्यैववाणेनत्वांमृषावदाम् ॥ मिथ्याऽभिमान चतुरांरूपयौवनगर्विताम् ॥ २४ ॥ स्वामीमेमोहितःश्रुत्वारूपंतेभुवनातिगम् ॥ तत्प्रियार्थंप्रियंकामंवक्तव्यंत्वायियन्मया ॥ २५ ॥ राज्यंतवधनंसर्वंदास स्तेमहिषःकिल ॥ कुरुभावंविशालाक्षित्यक्त्वारोषंमृतिप्रदम् ॥ २६ ॥ पतामिपादयोस्तेऽहंभक्तिभावेनभामिनि ॥ पट्टराज्ञीमहाराज्ञोभवशीघ्रंशुचिस्मिते ॥ २७ ॥ त्रैलोक्यविभवंसर्वंप्राप्स्यसित्वमनाविलम् ॥ सुखंसंसारजंसर्वंमहिषस्यपरिग्रहात् ॥ २८ ॥ देव्युवाच ॥ शृणुसाचिववक्ष्यामिवाक्यानांसा रमुत्तमम् ॥ शास्त्रदृष्टेनमार्गेणचातुर्यमनुचिंत्यच ॥ २९ ॥ महिषस्यप्रधानस्त्वंमयाज्ञातंधियाकिल ॥ पशुबुद्धिस्वभावोऽसिवचनात्तवसांप्रतम् ॥३०॥

॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ हियतःशृंगारेपरुषंवाक्यंविरुद्धंभवति ॥ ततोरसभंगाद्बिभेमि ॥ ततोनपरुषंवक्तुंशक्नोमीत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ सचि वएवसाचिवः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३१ ॥ यदुक्तंस्त्रीस्वभावेति ॥ यत्त्वयोक्तंमूढस्त्रीस्वभावासीतितत्रविचारयकिमहंपुमान्नास्मि तत्स्वभावापुरुषस्वभावाकिंपुमान्नाहं मायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्याममपुंप्रकृत्युभयात्मकत्वा त्पुरुषस्वभावत्वमस्त्येव॥ननुकिमर्थंतर्हिस्त्रीवेषोधृतइतिचेद्देवैर्महिषवधार्थंप्रार्थितास्त्रीवेषाऽभवमित्याह । अभवंस्त्रीवेषधारिणीति ॥ ३२ ॥ तदेवाह । याचितमिति ॥३३॥ ३४ ॥ ३५ ॥ यदुक्तमेकाकिनीतितत्रोत्तरमाह । विपरीतमिति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ किंचतवमहिषाऽसुरान्मममृत्युर्यदिकल्पितःस्यात्तर्हिसभविष्यत्येव तत्राऽहमेकाकिनीस्यामपिचेत्किंसैन्ययुताचेदपिकि

मंत्रिणस्त्वादृशायस्यसकथंबुद्धिमान्भवेत् ॥ उभयोःसदृशोयोगःकृतोयंऽविधिनाकिल ॥ ३१ ॥ यदुक्तंस्त्रीस्वभावाऽसितद्विचारयमूढकिम्॥पुमान्नाऽहंत त्स्वभावाऽभवंस्त्रीवेषधारिणी ॥३२॥ याचितंमरणंपूर्वंस्त्रियात्वत्प्रभुणायथा ॥ तस्मान्मन्येऽतिमूर्खोऽसौनवीररसवित्तमः॥३३॥ कामिन्यामरणंक्लीवरति दंशूरदुःखदम्॥प्रार्थितंप्रभुणातेनमहिषेणाऽऽत्मबुद्धिना ॥३४॥ तस्मात्स्त्रीरूपमाधायकार्यंकर्तुमुपागता॥कथंविभेमित्वद्वाक्यैर्धर्मशास्त्रविरोधकैः॥३५॥ विपरीतंयदादैवंतृणंवज्रसमंभवेत्॥विधिश्चेत्सुमुखःकामंकुलिशंतूलवत्तदा॥३६॥किंसैन्यैरायुधैःकिंवाप्रपंचैर्दुर्गसेवनैः ॥ मरणंसांप्रतंयस्यतस्यसैन्यैस्तुकिं फलम्॥३७॥यदाऽयंदेहसंबंधोजीवस्यकालयोगतः॥तदैवलिखितंसर्वंसुखंदुःखंतथामृतिः ॥३८॥ यस्ययेनप्रकारेणमरणंदैवनिर्मितम् ॥ तस्यतेनैवजायेत नाऽन्यथेतिविनिश्चयः॥३९॥ब्रह्मादीनांयथाकालेनाशोत्पत्तीविनिर्मिते॥तथैवभवतःकामंकिमन्येषांविचार्यते॥४०॥येमृत्युधर्मिणस्तेषांवरदानेनदर्पिताः॥ मरिष्यामोनमन्यंतेतेमूढामंदचेतसः॥४१॥तस्माद्गच्छनृपंब्रूहिवचनंममसत्वरम् ॥ यदाऽऽज्ञापयतेभूपस्तत्कर्तव्यंत्वयाकिल ॥४२॥ मघवास्वर्गमाप्नोतुदे वाःसंतुहविर्भुजः॥यूयंप्रयातपातालंयदिजीवितुमिच्छथ ॥४३॥ अन्यथाचेन्मतिर्मंदमहिषस्यदुरात्मनः ॥तद्युध्यस्वमयासार्धंमरणायकृताऽऽदरः॥४४॥ मन्यसेसंगरेभग्नादेवाविष्णुपुरोगमाः ॥ दैवंहिकारणंतत्रवरदानंप्रजापतेः॥४५॥व्यासउवाच ॥ इतिदेव्यावचःश्रुत्वाचिंतयामासदानवः ॥ किंकर्तव्यंमया युद्धंगंतव्यंवानृपंप्रति ॥ ४६ ॥ विवाहार्थमिहाऽऽज्ञप्तोराज्ञाकामाऽऽतुरेणवै ॥ तत्कथंविरसंकृत्वागच्छेयंनृपसन्निधौ ॥ ४७ ॥ इयंबुद्धिःसमीचीनायद्व्रजा मिकलिंविना ॥ यथाऽऽगतंतथाशीघ्रंराज्ञेसंवेदयाम्यहम् ॥ ४८ ॥ सप्रमाणंपुनःकार्येराजामतिमतांवरः ॥ करिष्यतिविचार्यैवसचिवैर्निपुणैःसह ॥ ४९ ॥ सहसानमयायुद्धंकर्तव्यमनयासह ॥ जयेपराजयेऽवापिभूपतेरप्रियंभवेत् ॥ ५० ॥ यदिमांसुंदरीहन्यादहंवाहन्मितांपुनः ॥ येनकेनाऽप्युपायेनसकुप्ये त्पार्थिवःकिल ॥ ५१ ॥ तस्मात्तत्रैवगत्वाऽहंबोधयिष्यामितंनृपम् ॥ यथाऽद्याऽभिहितंदेव्यायथारुचिकरोतुसः ॥ ५२ ॥

मित्याह । यदायमिति ॥ ३८ ॥३९॥ ननुमहिषासुरस्यवरोवर्त्ततेततस्तस्यमरणाभावात्कथंतंहनिष्यासित्वंतत्राह । ब्रह्मादीनामिति॥महिषाऽसुरबुद्ध्याह। भवतइति ॥४०॥ येमृत्युधर्मि णइति ॥ येमृत्युधर्मिणोदेवास्तेषांवरेणाऽमृताभवामइतियेजानंतितेमूढाइत्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ देव्याइत्यस्याऽ ग्रेतदनंतरमितिशेषः ॥ ५२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ छ ॥
सप्तषष्टिश्लोकवर्यैर्महिषासुरसंसदि ॥ विमृश्यताम्रदूतस्तुप्रेषितश्चेतिकीर्त्यते ॥ १ ॥ इत्थंपूर्वाऽध्यायांतेमंत्रिवर्यभाषणमुपन्यस्यतदुत्तरंजातंवृत्तमाह । इतितस्येति ॥ १ ॥ विश्रब्धंनिश्चितम् ॥ २ ॥ सामादिषूपायेषुकउपायइत्यर्थः ॥ ३ ॥ सत्यमिति ॥ वक्तव्यंहिद्विविधंसत्यंप्रियंचेत्यर्थः ॥ तयोर्मध्येएकंविबुधैर्हितकरंविचार्यकार्यंस्वीकार्यमित्यर्थः ॥ ४ ॥ किंतद्धितक

॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यमेधावीजगामनृपसन्निधौ ॥ प्रणम्यतमुवाचेदंकृतांजलिरमात्यजः ॥ ५३ ॥ मंत्र्युवाच ॥ राजन्देवीवरारोहासिंहस्योपरिसंस्थिता ॥ अष्टादशभुजारम्यावराऽऽयुधधरापरा ॥ ५४ ॥ सामयोक्तामहाराजमहिषंभजभामिनि ॥ महिषीभवराज्ञस्त्वंत्रैलोक्याऽधिपतेःप्रिया ॥ ५५ ॥ पट्टराज्ञीत्वमेवाऽस्यभवितानाऽत्रसंशयः ॥ सतवाऽऽज्ञाकरोजातोवशवर्तीभविष्यति ॥ ५६ ॥ त्रैलोक्यविभवंभुक्त्वाचिरकालंवरानने ॥ महिषंपतिमासाद्ययोषितांसुभगाभव ॥ ५७ ॥ इतिमद्वचनंश्रुत्वासास्मयावेशमोहिता ॥ मामुवाचविशालाक्षीस्मितपूर्वमिदंवचः ॥ ५८ ॥ महिषीगर्भसंभूतंपशूनामधमंकिल ॥ बलिंदास्याम्यहंदेव्यैसुराणांहितकाम्यया ॥ ५९ ॥ कामूढाकामिनीलोकेमहिषंवैपतिंभजेत् ॥ मादृशीमंदबुद्धेकिंपशुभावंभजेदिह॥६०॥महिषीमहिषंनाथंसशृंगाशृंगसंयुतम् ॥ कुरुतेक्रंदमानावैनाऽहंतत्सदृशीशठा ॥ ६१ ॥ करिष्येऽहंमृधेयुद्धंहनिष्येत्वांसुराऽप्रियम् ॥ गच्छवादुष्टपातालंजीवितेच्छायदस्तिते ॥ ६२ ॥ परुषंतुतयावाक्यमित्युक्तंनृपमत्तया ॥ तच्छ्रुत्वाऽहंसमायातःप्रतिचिंत्यपुनःपुनः ॥ ६३ ॥ रसभंगंविचिंत्यैवनयुद्धंतुमयाकृतम् ॥ आज्ञांविनातवात्यंतंकथंकुर्यांवृथोद्यमम् ॥ ६४ ॥ साऽतीवचबलोन्मत्तावर्ततेभूपभामिनी ॥ भवितव्यंनजानामिकिंवाभाविभविष्यति ॥ ६५ ॥ कार्येऽस्मिंस्त्वंप्रमाणंनोमंत्रोऽतीवदुरासदः ॥ युद्धंपलायनंश्रेयोनजानेऽहंविनिश्चयम् ॥६६॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहा०पंचमस्कंधेदशमोऽध्यायः॥१०॥
॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वामहिषोमदविह्वलः ॥ मंत्रिवृद्धान्समाहूयराजावचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ मंत्रिणःकिंचकर्तव्यंविश्रब्धंब्रूतमाचिरम् ॥ आगतादेवविहितामायेयंशांबरीवकिम् ॥ २ ॥ कार्येऽस्मिन्निपुणायूयमुपायेषुविचक्षणाः ॥ सामादिषुचकर्तव्यःकोऽत्रमह्यंब्रुवंतुच ॥ ३ ॥ मंत्रिणऊचुः ॥ सत्यंसदैववक्तव्यंप्रियंचनृपसत्तम ॥ कार्यंहितकरंनूनंविचार्यविबुधैःकिल ॥ ४ ॥ सत्यंचहितकृद्राजन्प्रियंचाऽहितकृद्भवेत् ॥ यथौषधंनृणांलोकेह्यप्रियंरोगनाशनम् ॥ ५ ॥ सत्यस्यश्रोतामंताचदुर्लभःपृथिवीपते ॥ वक्ताऽपिदुर्लभःकामंबहवश्चाटुभाषकाः ॥ ६ ॥

रंतत्स्वयमेवाऽऽहुः । सत्यंचेति ॥ प्रियंचाऽहितकृदिति॥सत्यमुच्यतेचेद्राज्ञःक्रोधोभविष्यतीतिभियाराज्ञोहितकरमपिसत्यंवाक्यंहित्वातन्मनोरंजनायाऽसत्यंकार्यनाशकरंचयान्मिष्टंतद्वक्तव्यंतदेतदत्रप्रियपदवाच्यंतच्चाऽहितकृदेवभवेत् ॥ तद्भिन्नमप्रियंसत्यंवाक्यंहितकृदितिभावः ॥ तत्रदृष्टांतमाह ॥ यथौषधमिति ॥ चाटुभाषकाःमनोनुकूलवक्तारः ॥ ५ ॥ ६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ दीनत्वेस्वीकृतेइत्यर्थः ॥ १३ ॥ यामिगच्छामीत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ हावोऽयमिति ॥ योरसवित्तमः सयोऽयंमानिनीनांहावस्तंवेत्ति ॥ वक्रोक्तिरिति ॥ कामिन्यावक्रोक्तिः ॥ प्रियंप्रतिपुरुषंप्रतिपरायणंभवति ॥ सुखाऽऽश्रयभूताभवति ॥ २० ॥ स्त्रियोहृद्यंनसर्वेजानंति किंतुकोऽपिच तुरः कामशास्त्रविचक्षणएवजानातीत्याह । वेत्तीति ॥ तर्हित्वमेवतद्धृदयवेत्ताऽसिततस्तद्वाक्यार्थंवर्णयेतिचेत्तदाह । यदुक्तमिति ॥ हेतुगर्भमिति ॥ कारणगर्भतात्पर्यांतरविशिष्टमित्यर्थः

कथंब्रूमोऽत्रनृपतेविचारेगहनेत्विह ॥ शुभंवाऽप्यशुभंवाऽपिकोवेत्तिभुवनत्रये ॥७॥ राजोवाच ॥ स्वस्वमत्यनुसारेणब्रुवंत्वद्यपृथक्पृथक् ॥ येषांहियादृशोभावस्तच्छ्रुत्वार्चितयाम्यहम् ॥ ८ ॥ बहूनांमतमाज्ञायविचार्यचपुनःपुनः ॥ यच्छ्रेयस्तद्धिकर्तव्यंकार्यंकार्यविचक्षणैः ॥९॥ व्यासउवाच ॥ तस्यैवंवचनंश्रुत्वाविरूपाक्षोमहाबलः ॥ उवाचतरसावाक्यंरंजयन्पथिवीपतिम् ॥ १० ॥ विरूपाक्षउवाच ॥ राजन्नारीवराकीयंसाब्रूतेमदगर्विता ॥ विभीषिकामात्रमिदंज्ञातव्यंवचनंत्वया ॥ ११ ॥ कोविभेतिस्त्रियोवाक्यैर्दुरुक्तैरणदुर्मदैः ॥ अनृतंसाहसंचेतिजानन्नारीविचेष्टितम् ॥ १२ ॥ जित्वात्रिभुवनंराजन्नद्यकांताभयेनवै ॥ दीनत्वेऽप्ययशोनूनंवीरस्यभुवनेभवेत् ॥ १३ ॥ तस्माद्याम्यहमेकाकीयुद्धायचंडिकांप्रति ॥ हनिष्येतांमहाराजनिर्भयोभवसांप्रतम् ॥ १४ ॥ सेनावृतोऽहंगत्वातांशस्त्रास्त्रैर्विविधैःकिल ॥ निषूदयामिदुर्मर्षांचंडिकांचंडविक्रमाम् ॥ १५ ॥ बद्धासर्पमयैःपाशैरानयिष्येतवांतिकम् ॥ वशगातुसदातेस्यात्पश्यराजन्बलंमम ॥ १६ ॥ व्यासउवाच ॥ विरूपाक्षवचःश्रुत्वादुर्धरोवाक्यमब्रवीत् ॥ सत्यमुक्तंवचोराजन्विरूपाक्षेणधीमता ॥ १७ ॥ ममाऽपिवचनंश्लक्ष्णंश्रोतव्यंधीमतात्वया ॥ कामातुरैषासुदतीलक्ष्यतेऽप्यनुमानतः ॥ १८ ॥ भवत्येवंविधाकामंनायिकारूपगर्विता ॥ भीषयित्वावरारोहात्वांवशेकर्तुमिच्छति ॥ १९ ॥ हावोऽयंमानिनीनांवैतंवेत्तिरसवित्तमः ॥ वक्रोक्तिरेषाकामिन्याःप्रियंप्रतिपरायणम् ॥ २० ॥ वेत्तिकोऽपिनरःकामंकामशास्त्रविचक्षणः ॥ यदुक्तंनामबाणैस्त्वांवधिष्येरणमूर्धनि ॥ २१ ॥ हेतुगर्भमिदंवाक्यंज्ञातव्यंहेतुवित्तमः ॥ बाणास्तुमानिनीनांवैकटाक्षाएवविश्रुताः ॥ २२ ॥ पुष्पांजलिमयाश्चान्येव्यंग्यानिवचनानिच ॥ काशक्तिरन्यबाणानांप्रेरणेत्वयिपार्थिव ॥ २३ ॥ तादृशीनांनसाशक्तिर्ब्रह्मविष्णुहरादिषु ॥ ययोक्तंनेत्रबाणैस्त्वांहनिष्येमंदपार्थिवम् ॥ २४ ॥ विपरीतंपरिज्ञातंतेनाऽरसविदाकिल ॥ पातयिष्यामिशय्यायांरणमय्यांपतितव ॥ २५ ॥

॥ २१ ॥ किंतत्तात्पर्यांतरंतदाह । बाणास्त्विति ॥ नप्रसिद्धाबाणाअत्राविवक्षिताः ॥ किंतु कटाक्षाः ॥ २२ ॥ पुष्पांजलिमयाइति ॥ यथाकटाक्षाःपूर्वोक्ताऽभिप्रायास्तथापुष्पांजलिमयाव्यंग्यवचनानिनर्मोक्तयश्च बाणाइत्यर्थः ॥ ननुमुख्यबाणाःकुतोनाऽत्रविवक्षिताइतिचेदसंभवान्नतेऽत्रविवक्षिताइत्याह । काशक्तिरिति ॥ २३ ॥ तादृशीनांशृंगारवतीनांस्त्रीणामन्यबाणानांप्रेरणेकाशक्तिः ॥ किंशब्दःक्षेपार्थः ॥ नैवशक्तिरित्यर्थः ॥ याशक्तिर्ब्रह्मविष्णुहरादिषुनास्तितस्माद्यत्तयोक्तंबाणैस्त्वांवधिष्येइतितस्याऽयमभिप्रायइत्याह ॥ २४ ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यच्चतयोक्तंतवपतिंमहिषासुरंरणेशय्यायांशय्यायांरणरूपायांपातयिष्यामीतितस्याऽयमभिप्रायइत्याह । विपरीतरतीति ॥ २६ ॥ यच्चतयोक्तंकरिष्येविगतप्राणमितितस्याऽयमभिप्राय इत्याह । वीर्यप्राणाइति ॥ तद्विहीनंवीर्यविहीनंकरिष्यामीत्येवतद्वचनार्थः ॥ एतादृशव्यंग्याधिक्येननर्मोक्त्याधिक्येनवाक्येनसात्युत्तमाकामिनीत्वांवरयतीतियन्मयोच्यतेतद्वैरसग्रंथविच क्षणैःशृंगारशास्त्रनिपुणैर्विचारतोज्ञेयं निश्चेतव्यमित्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तेनस्वप्नेनतदत्ययोयेनस्वप्नोदृष्टस्तद

विपरीतरतिक्रीडाभाषणंज्ञेयमेवतत् ॥ करिष्येविगतप्राणंयदुक्तंवचनंतया ॥२६॥ वीर्यप्राणाइतिप्रोक्तंतद्विहीनंनचाऽन्यथा ॥ व्यंग्याधिक्येनवाक्येनव रयत्युत्तमानृप ॥ २७ ॥ तद्वैविचारतोज्ञेयंरसग्रंथविचक्षणैः ॥ इतिज्ञात्वामहाराजकर्तव्यंरससंयुतम् ॥ २८ ॥ सामदानद्वयंतस्यानान्योपायोऽस्तिभूप ते ॥ रुष्टावागर्वितावाऽपिवशगामानिनीभवेत् ॥ २९ ॥ तादृशैर्मधुरैर्वाक्यैरानयिष्येतवांतिकम् ॥ किंवहूक्तेनमेराजन्कर्तव्यावशवर्तिनी ॥ ३० ॥ गत्वा मयाऽधुनैवेयंकिंकरीवसदैवते ॥ व्यासउवाच ॥ इत्थंनिशम्यतद्वाक्यंताम्रस्तत्वविचक्षणः ॥३१॥ उवाचवचनंराजन्निशामयमयोदितम् ॥ हेतुमद्धर्मसहि तंरसयुक्तंनयान्वितम् ॥ ३२ ॥ नैषाकामाऽऽतुरावालानानुरक्ताविचक्षणा ॥ व्यंग्यानिनैववाक्यानितयोक्तानितुमानद ॥ ३३ ॥ चित्रमत्रमहावाहोय देकावरवर्णिनी ॥ निरालंबासमायातिचित्ररूपामनोहरा ॥ ३४ ॥ अष्टादशभुजानारीनश्रुतानचवीक्षिता ॥ केनाऽपित्रिषुलोकेषुपराक्रमवतीशुभा ॥ ॥ ३५ ॥ आयुधान्यपितावंतिधृतानिवलवंतिच ॥ विपरीतमिदंमन्येसर्वंकालकृतंनृप ॥ ३६ ॥ स्वाप्नानिदुर्निमित्तानिमयादृष्टानिवैनिशि ॥ तेनजाना म्यहंनूनंवैशसंसमुपागतम् ॥ ३७ ॥ कृष्णांवरधरानारीरुदतीचगृहांगणे ॥ दृष्टास्वप्नेप्युषःकालेचिंतितव्यस्तदत्ययः ॥३८॥ विकृताःपक्षिणोरात्रौरोरु वंतिगृहेगृहे ॥ उत्पाताविविधाराजन्प्रभवंतिगृहेगृहे ॥ ३९ ॥ तेनजानाम्यहंनूनंकारणंकिंचिदेवहि ॥ यत्त्वांप्रार्थयतेवालायुद्धायकृतनिश्चया ॥ ४० ॥ नैषाऽस्तिमानुषीनोवागांधर्वीनतथाऽऽसुरी ॥ देवैःकृतेयंज्ञातव्यामायामोहकरीविभो॥४१॥कातरत्वंनकर्तव्यंममैतन्मतमित्यलम् ॥ कर्तव्यंसर्वथायुद्धं यद्भाव्यंतद्भविष्यति॥४२॥कोवेददैवकर्तव्यंशुभंवाऽप्यशुभंतथा॥अवलंब्यधियाधैर्यस्थातव्यंवैविचक्षणैः ॥४३॥ जीवितंमरणंपुंसां दैवाधीनंनराधिप॥को पिनैवान्यथाकर्तुंसमर्थोभुवनत्रये॥४४॥महिषउवाच॥गच्छताम्रमहाभागयुद्धायकृतनिश्चयः॥तामानयवरारोहांजित्वाधर्मेणमानिनीम्॥४५॥नभवेद्वशगा नारीसंग्रामेयदिसातव॥हंतव्यानान्यथाकामंमाननीयाप्रयत्नतः॥४६॥वीरस्त्वमसिसर्वज्ञकामशास्त्रविशारदः॥येनकेनाप्युपायेनजेतव्यावरवर्णिनी॥४७॥

त्ययोध्वंसोनियतंचिंतितव्यइत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ तेनेति ॥ तेनदुःस्वप्नादिनाकिंचिदन्यदेवकारणमस्माकंमरणरूपमस्याअवतारस्यजानामिअनुमिनोमीत्यर्थः ॥ किंचप्रत्यक्षतोपीदं निश्चीयतइत्याह ॥ यत्त्वामिति ॥ ४० ॥ नन्वनयाकथंममवधोभविष्यतीतितत्राह । नैषास्तीति ॥ विलक्षणशक्तिमत्त्वाद्भविष्यतीत्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५॥ हंतव्या नान्यथेति ॥ यदिसंग्रामेनवशगातदाहंतव्या यद्यन्यथावशगास्यात्तदानहंतव्या किंतुकामंयथेष्टंमाननीयेत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



त्वरन्वीरमहावाहोसैन्येनमहतावृतः ॥ तत्रगत्वात्वयाज्ञेयाविचार्यचपुनःपुनः ॥ ४८ ॥ किमर्थमागताचेयंज्ञातव्यंतद्धिकारणम् ॥ कामाद्वावैरभावाच्च मायाकस्येयमित्युत ॥ ४९ ॥ आदौतन्निश्चयंकृत्वाज्ञातव्यंतच्चिकीर्षितम् ॥ पश्चाद्युद्धंप्रकर्तव्यंयथायोग्यंयथाबलम् ॥५० ॥ कातरत्वंनकर्तव्यंनिर्दयत्वंतथानच ॥ यादृशंहिमनस्तस्याःकर्तव्यंतादृशंत्वया ॥ ५१ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितद्भाषितंश्रुत्वाताम्रःकालवशंगतः ॥ निर्गतःसैन्यसंयुक्तःप्रणम्यमहिषंनृपम् ॥ ५२ ॥ गच्छन्मार्गेदुरात्माऽसौशकुनान्वीक्ष्यदारुणान् ॥ विस्मयंचभयंप्रापयममार्गप्रदर्शकान् ॥ ५३ ॥ सगत्वातांसमालोक्यदेवींसिंहोपरिस्थिताम् ॥ स्तूयमानांसुरैःसर्वैःसर्वायुधविभूषिताम् ॥ ५४ ॥ तामुवाचविनीतःसन्वाक्यंमधुरयागिरा ॥ सामभावंसमाश्रित्यविनयाऽवनतःस्थितः ॥ ५५ ॥ देविदैत्येश्वरःशृंगीत्वद्रूपगुणमोहितः ॥ स्पृहांकरोतिमहिषस्त्वत्पाणिग्रहणायच ॥ ५६ ॥ भावंकुरुविशालाक्षितस्मिन्नमरदुर्जये ॥ पतितंप्राप्यमृद्धंगिनंदनेविहराऽद्भुते ॥ ५७ ॥ सर्वांगसुंदरंदेहंप्राप्यसर्वसुखाऽऽस्पदम् ॥ सुखंसर्वात्मनाग्राह्यंदुःखंहेयमितिस्थितिः ॥ ५८ ॥ करभोरुकिमर्थंतेगृहीतान्यायुधान्यलम् ॥ पुष्पकंदुकयोग्यास्तेकराःकमलकोमलाः ॥ ५९ ॥ भ्रूचापेविद्यमानेऽपिधनुषाकिंप्रयोजनम् ॥ कटाक्षाविशिखाःसंतिकिंवाणैर्निष्प्रयोजनैः ॥ ६० ॥ संसारेदुःखदंयुद्धंनकर्तव्यंविजानता ॥ लोभाऽऽसक्ताःप्रकुर्वंतिसंग्रामंचपरस्परम् ॥ ६१ ॥ पुष्पैरपिनयोद्धव्यंकिंपुनर्निशितैःशरैः ॥ भेदनंनिजगात्राणांकस्यतज्जायतेमुदे ॥ ६२ ॥ तस्मात्त्वमपितन्वंगिप्रसादंकर्तुमर्हसि ॥ भर्तारंभजमेनाथंदेवदानवपूजितम् ॥ ६३ ॥ सतेऽत्रवांछितंसर्वंकरिष्यतिमनोरथम् ॥ त्वंपट्टमहिषीराज्ञः सर्वथानाऽत्रसंशयः ॥ ६४ ॥ वचनंकुरुमेदेविप्राप्स्यसेसुखमुत्तमम् ॥ संग्रामेजयसंदेहःकष्टंप्राप्यनसंशयः ॥ ६५ ॥ जानासिराजनीतिंत्वंयथावद्वरवर्णिनि ॥ भुंक्ष्वराज्यसुखंपूर्णंवर्षाणामयुताऽयुतम् ॥ ६६ ॥ पुत्रस्तेभविताकांतःसोऽपिराजाभविष्यति ॥ यौवनेक्रीडयित्वांतेवार्धक्येसुखमाप्स्यसि ॥ ६७ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेदेवीमाहात्म्येएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ तन्निशम्यवचस्तस्यताम्रस्यजगदंबिका ॥ मेघगंभीरयावाचाहसंतीतमुवाचह ॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ गच्छताम्रपतिंब्रूहिमुमूर्षुंमंदचेतसम् ॥ महिषंचाऽतिकामार्तंमूढंज्ञानविवर्जितम् ॥ २ ॥ यथातेमहिषीमाताप्रौढायवसभक्षिणी ॥ नाऽहंतथाशृंगवतीलंबपुच्छामहोदरी ॥ ३ ॥

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेएकादशोध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ पंचषष्टिश्लोकवर्यैस्ताम्रस्याऽऽगमनोत्तरम् ॥ दैत्यौचप्रेषितौतेनश्रुतौबाष्कलदुर्मुखौ ॥ १ ॥ ताम्रवाक्यश्रवणोत्तरंजगदंबिकायदाहतदुच्यते । तन्निशम्येति ॥ १ ॥ २ ॥ यवसंतृणम् ॥ यथात्वंतथात्वज्जातीयानाऽहं यन्मामाभिकांक्षसीतिभावः ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

किंचनकामयेऽहमिति ॥ ४ ॥ ५ ॥ निःस्पृहःस्थिरइतिभगवत्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपत्वेनपुंप्रकृत्युभयात्मकत्वात्स्वस्यकेवलमायास्वरूपत्वाऽभिमानेनेयमुक्तिरितिबोध्यम् ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रबुध्येति ॥ इत्थंप्रबुध्य युध्यतामित्यर्थः ॥ जलवाहकम् जलवाहकत्वेनमहिषःप्रसिद्धोऽस्तीत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ यत्त्वयोक्तंमहिषेणसंबंधेसुखंभविष्यतीतितत्राह । कामं

नकामयेऽहंदेवेशंनैवविष्णुंनशंकरम् ॥ धनदंवरुणंनैवब्रह्माणंनचपावकम् ॥ ४ ॥ एतान्देवगणान्हित्वापशुंकेनगुणेनवै ॥ वृणोम्यहंवृथालोकेगर्हणामे भवेदिति ॥ ५ ॥ नाऽहंपतिंवरानारीवर्ततेमेपतिःप्रभुः ॥ सर्वकर्तासर्वसाक्षीह्यकर्तानिःस्पृहःस्थिरः ॥ ६ ॥ निर्गुणोनिर्ममोऽनंतोनिराऽऽलंबोनिराश्रयः ॥ सर्वज्ञःसर्वगःसाक्षीपूर्णःपूर्णाशयःशिवः ॥ ७ ॥ सर्वावासःक्षमःशांतःसर्वदृक्सर्वभावनः ॥ तंत्यक्त्वामहिषंमंदंकथंसेवितुमुत्सहे ॥ ८ ॥ प्रबुध्ययुध्यतांका मंकरोमियमवाहनम् ॥ अथवामनुजानांवैकरिष्येजलवाहकम् ॥ ९ ॥ जीवितेच्छाऽस्तिचेत्पापगच्छपातालमाशुवै ॥ समस्तैर्दानवैर्युक्तस्त्वन्यथाहन्मि संगरे ॥ १० ॥ कामंसदृशयोर्योगःसंसारेसुखदोभवेत् ॥ अन्यथादुःखदोभूयादज्ञानाद्यदिकल्पितः ॥ ११ ॥ मूर्खस्त्वमसियद्रूपेपतिंमेभजभामिनि ॥ क्वाऽहंक्वमहिषःशृंगीसंबंधःकीदृशोद्वयोः ॥ १२ ॥ गच्छयुध्यस्ववाकामंहनिष्येऽहंसबांधवम् ॥ यज्ञभागंदेवलोकंनोचेत्त्यक्त्वासुखीभव ॥ १३ ॥ व्या सउवाच ॥ इत्युक्त्वासातदादेवीजगर्जभृशमद्भुतम् ॥ कल्पांतसदृशंनादंचक्रेदैत्यभयावहम् ॥ १४ ॥ चकंपेवसुधाचेलुस्तेनशब्देनभूधराः ॥ गर्भाश्चदैत्य पत्नीनांसस्रंसुर्गर्जितस्वनात् ॥ १५ ॥ ताम्रःश्रुत्वाचतंशब्दंभयत्रस्तमनास्तदा ॥ पलायनंततःकृत्वाजगाममहिषांतिकम् ॥ १६ ॥ नगरेतस्ययेदैत्यास्ते पिचिंतामवाप्नुवन् ॥ बधिरीकृतकर्णाश्चपलायनपरानृप ॥ १७ ॥ तदाक्रोधेनासिंहोऽपिननादभृशमुत्सटः ॥ तेननादेनदैतेयाभयंजग्मुरपिस्फुटम् ॥ १८ ॥ ताम्रंसमागतंदृष्ट्वाहयारिरपिमोहितः ॥ चिंतयामाससचिवैःकिंकर्तव्यमतःपरम् ॥ १९ ॥ दुर्गग्रहोवाकर्तव्योयुद्धंनिर्गत्यवापुनः ॥ पलायनेकृतेश्रेयोभवे द्वादानवोत्तमाः ॥ २० ॥ बुद्धिमंतोदुराधर्षाःसर्वेशास्त्रविशारदाः ॥ मंत्रःखलुप्रकर्तव्यःसुगुप्तःकार्यसिद्धये ॥ २१ ॥ मंत्रमूलंस्मृतंराज्यंयदिसस्यात्सुरक्षि तः ॥ मंत्रिभिश्चसदाचारैर्विधेयःसर्वथाबुधैः ॥ २२ ॥ मंत्रभेदेविनाशःस्याद्राज्यस्यभूपतेस्तथा ॥ तस्माद्भेदभयाद्गुप्तःकर्तव्योभूतिमिच्छता ॥ २३ ॥ तदत्रमंत्रिभिर्वाच्यंवचनंहेतुमद्धितम् ॥ कालदेशाऽनुसारेणविचिंत्यनीतिनिर्णयम् ॥ २४ ॥ यायोषाऽत्रसमायाताप्रबलादेवनिर्मिता ॥ एकाकिनीनिरालं बाकारणंताद्विचिंत्यताम् ॥ २५ ॥ युद्धंप्रार्थयतेबालाकिमाश्चर्यमतःपरम् ॥ श्रेयोऽत्रविपरीतंवाकोवेत्तिभुवनत्रये ॥ २६ ॥ नबहूनांजयोऽप्यस्तिनैकस्य चपराजयः ॥ दैवाऽधीनौसदाज्ञेयौयुद्धेजयपराजयौ ॥ २७ ॥ उपायवादिनःप्राहुर्दैवंकिंकेनवीक्षितम् ॥ अदृष्टमितियन्नामप्रवदंतिमनीषिणः ॥ २८ ॥

सदृशयोरिति ॥ ११ ॥ तदेवोपपादयति । मूर्खस्त्वमसीति ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ भूतिमिच्छतामंत्रोगुप्तःकर्तव्य इत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ राजन्निति ॥ इयंकस्यपत्नीकिमर्थमत्राऽऽगतेतिप्रथमंज्ञातव्या ततःपश्चाद्विचारःकर्तव्यइत्यर्थः ॥ ॥ ३२ ॥ ननुतवमनसिकेयमस्तीत्यागतंतत्राह । मरणंतेइति ॥ स्त्रियाःसकाशात्तेमरणंसुरैःसर्वात्मनापरिज्ञायेत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ रसस्यशृंगाररस

तत्सत्त्वेऽपिप्रमाणंकिंकातराशाऽवलंबनम् ॥ नसमर्थजनानांहिदैवंकुत्राऽपिलक्ष्यते ॥ २९ ॥ उद्यमोदैवमेतौहिशूरकातरयोर्मतम् ॥ विचिंत्याऽद्यधियासर्वं कर्तव्यंकार्यमादरात् ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ इतिराज्ञोवचःश्रुत्वाहेतुगर्भंमहायशाः ॥ बिडालाख्योमहाराजमित्युवाचकृतांजलिः ॥ ३१ ॥ राजन्नेषा विशालाक्षीज्ञातव्यायत्नतःपुनः ॥ किमर्थमिहसंप्राप्ताकुतःकस्यपरिग्रहः ॥ ३२ ॥ मरणंतेपरिज्ञायस्त्रियाःसर्वात्मनासुरैः ॥ प्रेषितापद्मपत्राक्षीसमुत्पाद्य स्वतेजसा ॥ ३३ ॥ तेऽपिछन्नाःस्थिताःखेऽत्रसर्वेयुद्धदिदृक्षवः ॥ समयेऽस्याःसहायास्तेभविष्यंतियुयुत्सवः ॥ ३४ ॥ पुरतःकामिनींकृत्वातेवैविष्णुपुरो गमाः ॥ वधिष्यंतिचनःसर्वान्सात्वांयुद्धेहनिष्यति ॥ ३५ ॥ एतच्चिकीर्षितंतेषांमयाज्ञातंनराधिप ॥ भवितव्यस्यनज्ञानंवर्ततेममसर्वथा ॥ ३६ ॥ योद्ध व्यंनत्वयाऽद्येतिनाऽहंवक्तुंक्षमःप्रभो ॥ प्रमाणंत्वंमहाराजकार्येऽत्रदेवनिर्मिते ॥ ३७ ॥ त्वदर्थेऽस्माभिरनिशंमर्तव्यंकार्यगौरवात् ॥ विहर्तव्यंत्वयासार्धमे षधर्मोऽनुजीविनाम् ॥ ३८ ॥ विचारोऽत्रमहानस्तियदेकाकामिनीनृप ॥ युद्धंप्रार्थयतेऽस्माभिःससैन्यैर्बलदर्पितैः ॥ ३९ ॥ दुर्मुखउवाच ॥ राजन्युद्धेज योनोऽद्यभवितावेद्म्यहंकिल ॥ पलायनंनकर्तव्यंयशोहानिकरंनृणाम् ॥ ४० ॥ इंद्रादीनांसंयुगेऽपिनकृतंयज्जुगुप्सितम् ॥ एकाकिनींस्त्रियंप्राप्यकोहि कुर्यात्पलायनम् ॥ ४१ ॥ तस्माद्युद्धंप्रकर्तव्यंमरणंवारणेजयः ॥ यद्भावितद्भवत्येवकाऽत्रचिंताविपश्यतः ॥ ४२ ॥ मरणेऽत्रयशःप्राप्तिर्जीवनेचतथासुखम् ॥ उभयंमनसाकृत्वाकर्तव्यंयुद्धमद्यवै ॥ ४३ ॥ पलायनेयशोहानिर्मरणंचाऽऽयुषःक्षये ॥ तस्माच्छोकोनकर्तव्योजीवितेमरणेवृथा ॥ ४४ ॥ व्यासउवाच ॥ दुर्मुखस्यवचःश्रुत्वावाष्कलोवाक्यमब्रवीत् ॥ प्रणतःप्रांजलिर्भूत्वाराजानंवाक्यकोविदः ॥ ४५ ॥ वाष्कलउवाच ॥ राजंश्चैतानकर्त्तव्याकार्येऽस्मिन्का तराऽप्रिये ॥ अहमेकोहनिष्यामिचंडींचंचललोचनाम् ॥ ४६ ॥ उत्साहस्तुप्रकर्तव्यःस्थायीभावोरसस्यच ॥ भयानकोभवेद्वैरीवीरस्यनृपसत्तम ॥ ४७ ॥ तस्मात्त्यक्त्वाभयंभूपकरिष्येयुद्धमद्भुतम् ॥ नयिष्यामिनरेंद्राऽहंचंडिकांयमसादनम् ॥ ४८ ॥ नबिभेमियमादिंद्रात्कुबेराद्वरुणादपि ॥ वायोर्वह्नेस्तथावि ष्णोःशंकराच्छशिनोरवेः ॥ ४९ ॥ एकाकिनीतथानारीकिंपुनर्मदगर्विता ॥ अहंतांनिहनिष्यामिविशिखैश्चशिलाशितैः ॥ ५० ॥

स्यस्थायीभावोनाम ॥ विभावेनाऽनुभावेनव्यक्तःसंचारिणातथा ॥ रसतामेतिरत्यादिःस्थायीभावःसचेतसइत्युक्तलक्षणश्चेतसश्चमत्कारः ॥ यद्यपिरसएवस्थायीभावोनरसस्यसंबंधीतथा पिरसस्येतिषष्ठीराहोःशिरइतिवज्ज्ञेया ॥ यद्वा रसस्यचित्तस्येत्यर्थोवा ॥ वैरिवीररसस्यतुभयानकोभावोवैरीत्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ भीषयंतिप्रभुंसदेति ॥ तस्मात्त्वांयेमंत्रिणोभीषयंतितेशत्रुपक्षीयास्तवनाशकराइतिभावः ॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ ॥ पंचाशच्छ्लोकवर्यैस्तुयुद्धावाष्कलदुर्मुखौ ॥ यमलोकंगतावेत

पश्यबाहुबलंमेऽद्यविहरस्वयथासुखम् ॥ भवताऽत्रनगंतव्यंसंग्रामेप्यनयासमम् ॥५१॥ व्यासउवाच ॥ एवंब्रुवतिराजेंद्रेबाष्कलेमदगर्विते ॥ प्रणम्यनृपतिंत त्रदुर्धरोवाक्यमब्रवीत् ॥ ५२ ॥ दुर्धरउवाच ॥ महिषाऽहंविजेष्यामिदेवींदेवविनिर्मिताम् ॥ अष्टादशभुजांरम्यांकारणाच्चसमागताम् ॥ ५३ ॥ राजन्भी षयितुंत्वांवैमायैषानिर्मितासुरैः ॥ विभीषिकेयंविज्ञायत्यजमोहंमनोगतम् ॥ ५४ ॥ राजनीतिरियंराजन्मंत्रिकृत्यंतथाशृणु ॥ सात्त्विकाराजसाःकेचित्ता मसाश्चतथापरे ॥५५॥ मंत्रिणस्त्रिविधालोकेभवंतिदानवाऽधिप ॥ सात्त्विकाःप्रभुकार्याणिसाधयंतिस्वशक्तिभिः ॥ ५६ ॥ आत्मकृत्यंप्रकुर्वंतिस्वामिका र्याऽविरोधतः ॥ एकचित्ताधर्मपरामंत्रशास्त्रविशारदाः ॥ ५७ ॥ राजसाभिन्नचित्ताश्चस्वकार्यनिरताःसदा ॥ कदाचित्स्वामिकार्यंतेप्रकुर्वंतियदृच्छया ॥ ॥ ५८ ॥ तामसालोभनिरताःस्वकार्यनिरताःसदा ॥ प्रभुकार्यंविनाश्यैवस्वकार्यंसाधयंतिते ॥ ५९ ॥ समयेतेविभिद्यंतेपरैस्तुपरिवंचिताः ॥ स्वच्छिद्रं शत्रुपक्षीयान्निर्दिशंतिगृहस्थिताः ॥ ६० ॥ कार्यभेदकरानित्यंकोशगुप्ताऽसिवत्सदा ॥ संग्रामेऽथसमुत्पन्नेभीषयंतिप्रभुंसदा ॥ ६१ ॥ विश्वासस्तुनकर्तव्य स्तेषांराजन्कदाचन ॥ विश्वासेकार्यहानिःस्यान्मंत्रहानिःसदैवहि ॥ ६२ ॥ खलाःकिंकिंनकुर्वंतिविश्वस्तालोभतत्पराः ॥ तामसाःपापनिरताबुद्धिहीनाः शठास्तथा ॥ ६३ ॥ तस्मात्कार्यंकरिष्यामिगत्वाऽहंरणमस्तके ॥ चिंतात्वयानकर्तव्यासर्वथानृपसत्तम ॥ ६४ ॥ गृहीत्वातांदुराचारामागमिष्यामिस त्वरः ॥ पश्यमेऽद्यबलंधैर्यंप्रभुकार्यंस्वशक्तितः ॥ ६५ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कं०द्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इ त्युक्त्वातौमहाबाहूदैत्यौबाष्कलदुर्मुखौ ॥ जग्मतुर्मदादिग्धांगौसर्वशस्त्राऽस्त्रकोविदौ ॥१॥ तौगत्वासमरेदेवीमूचतुर्वचनंतदा ॥ दानवौचमदोन्मत्तौमेघगंभी रयागिरा ॥ २ ॥ देविदेवाजितायेनमहिषेणमहात्मना ॥ वरयत्वंवरारोहेसर्वदैत्याऽधिपंनृपम् ॥३॥ सकृत्वामानुषंरूपंसर्वलक्षणसंयुतम् ॥ भूषितंभूषणैर्दिव्यै स्त्वामेष्यतिरहःकिल ॥४॥ त्रैलोक्यविभवंकामंत्वमेष्यसिशुचिस्मिते ॥ महिषेपरमंभावंकुरुकांतेमनोगतम् ॥५॥ कृत्वापतिंमहावीरंसंसारसुखमद्भुतम् ॥ त्वंप्राप्स्यसिपिकाऽऽलापेयोषितांखलुवांछितम् ॥६॥ श्रीदेव्युवाच ॥ जाल्मत्वंकिंविजानासिनारीयंकाममोहिता ॥ मंदबुद्धिबलात्यर्थंभजेयंमहिषंशठम् ॥७॥

दुच्यतेऽसुरनायकौ ॥ १ ॥ राजाऽऽज्ञांपूर्वाध्यायांतोक्तांपरिगृह्यबाष्कलदुर्मुखौनिर्गतावित्याह । इत्युक्त्वेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ संसारसुखंविषयसुखम् ॥६॥ जाल्मेति ॥ हेजाल्मत्वंकाममोहितानारीयंभवतिइतिकिंमांजानासि ॥ यद्यस्मात्तथाविधाऽहंमहिषंशठंभजेयमित्यर्थः ॥ ७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किंतुकुलांगनाऽहमस्मि ॥ तथाचकुलांगनानामिदंवृत्तमस्तीत्याह । कुलशीलगुणैस्तुल्यमिति ॥ रूपचातुर्यबुद्ध्यादिभिरधिकमित्यर्थः ॥ स्वस्माद्रूपचातुर्यबुद्ध्यादिभिरधिकमपीत्यर्थः ॥ ॥ ८ ॥ ९ ॥ गच्छतमितिलोट्मध्यमपुरुषद्विवचनांतं तथैव वदतमित्यपि ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

कुलशीलगुणैस्तुल्यंतंभजंतिकुलस्त्रियः ॥ अधिकंरूपचातुर्यबुद्धिशीलक्षमादिभिः ॥ ८ ॥ कानुकामाऽऽतुरानारीभजेच्चपशुरूपिणम् ॥ पशूनामधमंनूनंमहिषंदेवरूपिणी ॥ ९ ॥ गच्छतंमहिषंतूर्णंभूपंबाष्कलदुर्मदौ ॥ वदतंतद्वचोदैत्यंगजतुल्यंविषाणिनम् ॥ १० ॥ पातालंगच्छवाऽभ्येत्यसंग्रामंकुरुवामया ॥ रणेजातेसहस्राक्षोनिर्भयःस्यादितिध्रुवम् ॥ ११ ॥ हत्वाऽहंत्वांगमिष्यामिनाऽन्यथागमनंमम॥इत्थंज्ञात्वासुदुर्बुद्धेयथेच्छासितथाकुरु॥१२॥ मामनिर्जित्यभूभागेनस्थानंतेकदाचन ॥ भविष्यतिचतुष्पादादिविवागिरिकंदरे ॥ १३ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तौतौतयादैत्यौकोपाऽऽकुलितलोचनौ ॥ धनुर्बाणधरौवीरौयुद्धकामौबभूवतुः ॥ १४ ॥ कृत्वासुविपुलंनादंदेवीसानिर्भयास्थिता॥ उभौचचक्रतुस्तीव्रांबाणवृष्टिंकुरूद्वह ॥ १५ ॥ भगवत्यपिबाणौघान्मुमोचदानवौप्रति ॥ कृत्वाऽतिमधुरंनादंदेवकार्यार्थसिद्धये ॥ १६ ॥ तयोस्तुबाष्कलस्तूर्णंसंमुखोभूद्रणांगणे ॥ दुर्मुखःप्रेक्षकस्तत्रदेवीमभिमुखःस्थितः ॥ १७ ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंदेवीबाष्कलयोस्तदा ॥ बाणाऽसिपरिघाऽऽघातैर्भयदंमंदचेतसाम् ॥ १८ ॥ ततःक्रुद्धाजगन्माताहत्वातंयुद्धदुर्मदम्॥ जघानपंचभिर्बाणैःकर्णाऽऽकृष्टैःशिलाशितैः ॥ १९ ॥ दानवोऽपिशरान्देव्याश्चिच्छेदनिशितैःशरैः ॥ सप्तभिस्ताडयामासदेवींसिंहोपरिस्थिताम् ॥२०॥ साऽपितंदशभिस्तीक्ष्णैःसुपीतैःसायकैःखलम् ॥ जघानतच्छरांश्छित्त्वाजहासचमुहुर्मुहुः ॥ २१ ॥ अर्धचंद्रेणबाणेनचिच्छेदचशरासनम् ॥ बाष्कलोऽपिगदांगृह्यदेवींहंतुमुपाययौ ॥ २२ ॥ आगच्छंतंगदापाणिंदानवंमदगर्वितम् ॥ चंडिकास्वगदापातैःपातयामासभूतले ॥ २३ ॥ बाष्कलःपतितोभूमौमुहूर्तादुत्थितःपुनः ॥ चिक्षेपचगदांसोऽपिचंडिकांचंडविक्रमः ॥ २४ ॥ तमागच्छंतमालोक्यदेवीशूलेनवक्षसि ॥ जघानबाष्कलंक्रुद्धापपातचममारसः ॥ २५ ॥ पतितेबाष्कलेसैन्यंभग्नंतस्यदुरात्मनः ॥ जयेतिचमुदादेवाश्चुक्रुशुर्गगनेस्थिताः ॥ २६ ॥ तस्मिंश्चनिहतेदैत्येदुर्मुखोऽतिबलान्वितः ॥ आजगामरणेदेवींक्रोधसंरक्तलोचनः ॥ २७ ॥ तिष्ठतिष्ठाबलेसोऽपिभाषमाणःपुनःपुनः ॥ धनुर्बाणधरःश्रीमान्रथस्थःकवचाऽऽवृतः ॥ २८ ॥ तमागच्छंतमालोक्यदेवीशंखमवादयत् ॥ कोपयंतीदानवंतंज्याघोषंचचकारह ॥ २९ ॥ सोऽपिबाणान्मुमोचाऽऽशुतीक्ष्णानाशीविषोपमान् ॥ स्वबाणैस्तान्महामायाचिच्छेदचननादच ॥ ३० ॥ तयोःपरस्परंयुद्धंबभूवतुमुलंनृप ॥ बाणशक्तिगदाघातैर्मुसलैस्तोमरैस्तथा ॥ ३१ ॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ तिष्ठतिष्ठेतिभाषमाणइत्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३२ ॥ यथेति ॥ वैतरणीसंतरणायेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ गोमायुःशृगालः सारमेयःश्वा ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥ मौलिमत्किरीटवदित्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ षट्पंचाशन्महापद्मैर्दैत्यौतौताम्रचिक्षुरौ ॥

रणभूमौतदाजातारुधिरौघवहानदी ॥ पतितानितदातीरेशिरांसिप्रवभुस्तदा ॥ ३२॥ यथासंतरणार्थाययमकिंकरनायकैः ॥ तुंबीफलानिनीतानिनवशिक्षापरैर्मुदा ॥३३॥ रणभूमिस्तदाघोराबभूवाऽतीवदुर्गमा॥शरीरैःपतितैर्भूमौखाद्यमानैर्वृकादिभिः ॥३४॥गोमायुसारमेयाश्चकाकाःकंकाअयोमुखाः ॥ गृध्राःश्येनाश्चखादंतिशरीराणिदुरात्मनाम् ॥३५॥ववौवायुश्चदुर्गंधोमृतानांदेहसंगतः॥अभूत्किलकिलाशब्दःखगानांपलभक्षिणाम् ॥३६॥ तदाचुकोपदुष्टात्मादुर्मुखःकालमोहितः ॥ देवीमुवाचगर्वेणकृत्वाचोर्ध्वंकरंशुभम्॥३७॥ गच्छचंडिहनिष्यामित्वामद्यैवसुबालिशे ॥ दैत्यंवाभजवामोरुमाहिषंमदगर्वितम् ॥३८॥ देव्युवाच ॥ आसन्नमरणःकामंप्रलपस्यद्यमोहितः ॥ अद्यैवत्वांहनिष्यामियथाऽयंबाष्कलोहतः॥३९॥गच्छवातिष्ठवामंदमरणंयदिरोचते॥ हत्वात्वांवैवधिष्यामिबालिशंमाहिषीसुतम् ॥४०॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यादुर्मुखोमर्तुमुद्यतः ॥ मुमोचबाणवृष्टिंतुचंडिकांप्रतिदारुणाम् ॥ ४१ ॥ साऽपितांतरसाछित्त्वाबाणवृष्टिंशितैःशरैः ॥ जघानदानवंक्रुद्धावृत्रंवज्रधरोयथा॥४२॥तयोःपरस्परंयुद्धंसंजातंचाऽतिकर्कशम्॥ भयदंकातराणांचशूराणांबलवर्धनम् ॥४३॥ देवीचिच्छेदतरसाधनुस्तस्यकरेस्थितम् ॥ तथैवपंचभिर्बाणैर्वभंजरथमुत्तमम् ॥४४॥ रथेभग्नेमहाबाहुःपदातिर्दुर्मुखस्तदा ॥ गदांगृहीत्वादुर्धर्षोजगामचंडिकांप्रति ॥ ४५ ॥ चकारसगदाघातंसिंहमौलौमहाबलात् ॥ नचचालहरिःस्थानात्ताडितोऽपिमहाबलः ॥४६॥ अंबिकातंसमालोक्यगदापाणिंपुरःस्थितम् ॥ खड्गेनाशितधारेणशिरश्चिच्छेदमौलिमत् ॥ ४७ ॥ छिन्नेचमस्तकेभूमौपपातदुर्मुखोमृतः ॥ जयशब्दंतदाचक्रुर्मुदितानिर्जराभृशम् ॥४८॥ तुष्टुवुस्तांतदादेवींदुर्मुखेनिहतेऽमराः ॥ पुष्पवृष्टिंतथाचक्रुर्जयशब्दंनभःस्थिताः॥४९॥ऋषयःसिद्धगंधर्वाःसविद्याधरकिन्नराः ॥ जह्रुषुस्तंहतंदृष्ट्वादानवंरणमस्तके ॥५० ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ दुर्मुखंनिहतंश्रुत्वामाहिषःक्रोधमूर्छितः ॥ उवाचदानवान्सर्वान्किंजातमितिचाऽसकृत् ॥१॥ निहतौदानवौशूरौरणेदुर्मुखबाष्कलौ ॥ तन्व्यातत्परमाश्चर्यंपश्यंतुदैवचेष्टितम् ॥२॥ कालोहिबलवान्कर्तासततंसुखदुःखयोः ॥ नराणांपरतंत्राणांपुण्यपापाऽनुयोगतः ॥ ३ ॥ निहतौदानवश्रेष्ठौकिंकर्तव्यमतःपरम् ॥ ब्रुवंतुमिलिताःसर्वेयद्युक्तंकार्यसंकटे ॥ ४ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंब्रुवतिराजेंद्रमहिषेऽतिबलाऽन्विते ॥ चिक्षुराख्यस्तुसेनानीस्तमुवाचमहारथः ॥ ५ ॥

महामृधेहतौदेव्याकथेयंसमुदीर्यते ॥ १ ॥ दुर्मुखवधोत्तरंजातंवृत्तमाह । दुर्मुखमिति ॥ १ ॥ दैवचेष्टितंप्रारब्धचेष्टितामित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ दुनोतिखेदयतीत्यर्थः ॥ १६ ॥ ननुयुद्धेक्षत्रियायशःप्राप्नुवंतितद्वदहमपिप्राप्स्यामीतिचेत्तेषामपिधिक्कारएवाऽ

राजन्नहंहनिष्यामिकाचिंतास्त्रीविहिंसने ॥ इत्युक्त्वास्वबलैर्युक्तःप्रययौरथसंयुतः ॥ ६ ॥ द्वितीयंपार्ष्णिरक्षंतुकृत्वाताम्रंमहाबलम् । महतासैन्यघोषेणपूरयन्गगनंदिशः ॥ ७ ॥ तमागच्छंतमालोक्यदेवीभगवतीशिवा ॥ चकारशंखज्याघोषंघंटानादंमहाऽद्भुतम् ॥ ८॥ तत्रसुस्तेनशब्देनतेचसर्वेसुरारयः ॥ किमेतदितिभाषंतोदुद्रुवुर्भयकंपिताः ॥ ९ ॥ चिक्षुराख्यस्तुतान्दृष्ट्वापलायनपरायणान् ॥ उवाचाऽतीवसंक्रुद्धःकिंभयंवःसमागतम् ॥ १० ॥ अद्यैवाऽहंहनिष्यामिबाणैर्बालांमदोन्नताम् ॥ तिष्ठंत्वत्रभयंत्यक्त्वादैत्याःसमरमूर्धनि ॥ ११ ॥ इत्युक्त्वादानवश्रेष्ठश्चापपाणिर्बलान्वितः ॥ आगत्यसंगरेदेवीमित्युवाचगतव्यथः ॥ १२ ॥ किंगर्जसिविशालाक्षिभीषयन्कातरान्नरान् ॥ नाऽहंबिभेमितन्वंगिश्रुत्वातेऽद्यविचेष्टितम् ॥ १३ ॥ स्त्रीवधेदूषणंज्ञात्वातथैवाऽकीर्तिसंभवम् ॥ उपेक्षांकुरुतेचित्तंमदीयंवामलोचने ॥ १४ ॥ स्त्रीणांयुद्धंकटाक्षैश्चतथाहावैश्चसुंदरि ॥ नशस्त्रैर्विहितंक्वापित्वादृशीनांकदाचन ॥ १५ ॥ पुष्पैरपिनयोद्धव्यंकिंपुनर्निशितैःशरैः ॥ भवादृशीनांदेहेषुदुनोतिमालतीदलम् ॥ १६ ॥ धिग्जन्ममानुषेलोकेक्षात्रधर्माऽनुजीविनाम् ॥ लालितोऽयंप्रियोदेहःकृंतनीयःशितैःशरैः ॥ १७ ॥ तैलाभ्यंगैःपुष्पवातैस्तथामिष्टान्नभोजनैः ॥ पोषितोऽयंप्रियोदेहोघातनीयःपरेषुभिः ॥१८॥ देहंछित्त्वाऽसिधाराभिर्धनभृज्जायतेनरः ॥ धिग्धनंदुःखदंपूर्वंपश्चात्किंसुखदंभवेत् ॥१९॥ त्वमप्यज्ञैववामोरुयुद्धमाकांक्षसेयतः ॥ सुखंसंभोगजंत्यक्त्वाकंगुणंवेत्सिसंगरे ॥२०॥ खड्गपातंगदाघातंभेदनंचशिलीमुखैः ॥ मरणांतेतुसंस्कारोगोमायुमुखकर्षणम् ॥२१॥ तस्यैवकविभिर्धूर्तैःकृतंचाऽतीवशंसनम् ॥ रणेमृतानांस्वःप्राप्तिरर्थवादोऽस्तिकेवलः ॥ २२ ॥ तस्माद्गच्छवरारोहेयत्रतेरमतेमनः ॥ भजवाभूपतिंनाथंहयारिंसुरमर्दनम् ॥ २३ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंब्रुवाणंतंदैत्यंप्रोवाच जगदंबिका ॥ किंमृषाभाषसेमूढबुद्धिमानिवपंडितः॥२४॥नीतिशास्त्रंनजानासिविद्यांचान्वीक्षिकींतथा ॥ नसेवितास्त्वयावृद्धानधर्मेमतिरस्तिते ॥२५॥ मूर्खसेवापरोयस्मात्तस्मात्त्वंमूर्खएवहि ॥ राजधर्मंनजानासिकिंब्रवीषिममाऽग्रतः ॥२६॥ संग्रामेमहिषंहत्वाकृत्वारुधिरकर्दमम् ॥ यशःस्तंभंस्थिरंकृत्वागमिष्यामियथासुखम् ॥ २७ ॥ देवानांदुःखदातारंदानवंमदगर्वितम् ॥ हनिष्येऽहंदुराचारंयुद्धंकुरुस्थिरोभव ॥२८॥ जीवितेच्छाऽस्तिचेन्मूढमहिषस्य तथातव ॥ तदागच्छंतुपातालंदानवाःसर्वएवते ॥ २९ ॥ मुमूर्षायदिवाश्चित्तेयुद्धंकुर्वंतुसत्वराः ॥ सर्वानेववधिष्यामिनिश्चयोऽयंममाऽधुना ॥ ३० ॥

स्तीत्याह । धिग्जन्मेति ॥ येषांधर्मोलालितोऽयंप्रियोदेहःशरैःकृंतनीयइति ॥१७॥ तदेवस्पष्टयति । तैलाभ्यंगैरिति ॥१८॥१९॥२०॥ प्रत्युतदुर्गुणाएवरणेसंतीत्याह । खड्गपातमिति ॥२१॥ननुतर्हिदुर्गुणवतोरणस्यकिमर्थंकविभिःप्रशंसनंकृतमितिचेद्धूर्तकाविभिस्तत्कृतमप्रामाणिकमेवेत्याह । तस्यैवेति॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥२९॥३०॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ रथात्स्वरथात्स्ववाहनात्सिंहादित्यर्थः ॥ ३३ ॥ रथोपस्थइवरथोपर्येवेत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ किंभवद्भिरिति ॥ भवद्भिरागतैःकिंफलंभवतांपतिरेवकुतोना याति ॥ समहिषोगृहेस्थित्वाकिंजीवनोद्यमंकरोति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ वसंतेचकिंशुकाइवरणेराक्षसाइत्यन्वयः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यादानवोबलदर्पितः ॥ मुमोचबाणवृष्टिंतांघनवृष्टिमिवाऽपराम् ॥ ३१ ॥ चिच्छेदतस्यसाबाणान्स्वबाणैर्निशितैस्त दा ॥ जघानतंतथाघोरैराशीविषसमैःशरैः ॥ ३२ ॥ युद्धंपरस्परंतत्रबभूवविस्मयप्रदम् ॥ गदयाघातयामासतंरथाज्जगदंबिका ॥ ३३ ॥ मूर्च्छांप्राप सदुष्टात्मागदयाऽभिहतोभृशम् ॥ मुहूर्तद्वयमात्रंतुरथोपस्थइवाऽचलः ॥ ३४ ॥ तंतथामूर्च्छितंदृष्ट्वाताम्रःपरबलाऽर्दनः ॥ आजगामरणेयोद्धुंचंडिकां प्रतिचापलात् ॥ ३५ ॥ आगच्छंतंतुतंवीक्ष्यहसंतीप्राहचंडिका ॥ एह्येहिदानवश्रेष्ठयमलोकंनयाम्यहम् ॥ ३६ ॥ किंभवद्भिःसमायातैरबलैश्चगतायु षः ॥ महिषःकिंगृहेमूढःकरोतिजीवनोद्यमम् ॥ ३७ ॥ किंभवद्भिर्हतैर्मदैर्ममाऽपिविफलःश्रमः ॥ अहतेमहिषेपापेसुरशत्रौदुरात्मनि ॥ ३८ ॥ तस्मा द्यूयंगृहंगत्वामहिषंप्रेषयंत्विह ॥ पश्येन्मांसोऽपिमंदात्मायादृशींतादृशींस्थिताम् ॥ ३९ ॥ ताम्रस्तद्वचनंश्रुत्वाबाणवृष्टिंचकारह ॥ चंडिकांप्रतिकोपेनक र्णाऽऽकृष्टशरासनः ॥ ४० ॥ भगवत्यपिताम्राक्षीसमाकृष्यशरासनम् ॥ बाणान्मुमोचतरसाहंतुकामासुराऽहितम् ॥४१॥ चिक्षुराख्योऽपिबलवान्मूर्च्छां त्यक्त्वोत्थितःपुनः ॥ गृहीत्वासशरंचापंतस्थौतत्संमुखःक्षणात् ॥ ४२ ॥ चिक्षुराख्यश्चताम्रश्चद्वावप्यतिबलोत्कटौ ॥ युयुधातेमहावीरौसहदेव्यारणां गणे ॥ ४३ ॥ कुपिताचमहामायाववर्षशरसंततिम् ॥ चकारदानवान्सर्वान्बाणक्षततनुच्छदान् ॥ ४४ ॥ असुराःक्रोधसंमूढाबभूवुःशरताडिताः ॥ चिक्षिपुःशरजालानिदेवींप्रतिरुषान्विताः ॥ ४५ ॥ बभुस्तेराक्षसास्तत्रकिंशुकाइवपुष्पिणः ॥ शिलीमुखक्षताःसर्वेवसंतेचवनेरणे ॥ ४६ ॥ बभूवतुमुलं युद्धंताम्रेणसहसंयुगे ॥ विस्मयंपरमंजग्मुर्देवायेप्रेक्षकाःस्थिताः॥४७॥ताम्रोमुसलमादायलोहजंदारुणंदृढम्॥जघानमस्तकेसिंहंजहासचननर्दच ॥ ४८॥ नर्दमानंतदातंतुदृष्ट्वादेवीरुषान्विता ॥ खड्गेनशितधारेणशिरश्चिच्छेदसत्वरा ॥ ४९ ॥ छिन्नेशिरसिताम्रस्तुविशीर्णोमुसलीबली ॥ बभ्रामक्षणमात्रंतुपपात रणमस्तके ॥ ५० ॥ पतितंताम्रमालोक्यचिक्षुराख्योमहाबलः ॥ खड्गमादायतरसादुद्रावचंडिकांप्रति ॥ ५१ ॥ भगवत्यपितंदृष्ट्वाखड्गपाणिमुपागतम्॥ दानवंपंचभिर्बाणैर्जघानतरसारणे ॥ ५२ ॥ एकेनपतितंखड्गंद्वितीयेनतुतत्करः ॥ कंठाच्चमस्तकंतस्यकृंतितंचाऽपरैःशरैः ॥ ५३ ॥ एवंतौनिहतौक्रूरौरा क्षसौरणदुर्मदौ ॥ भग्नंसैन्यंतयोस्तूर्णंदिक्षुसंत्रस्तमानसम्॥५४॥ देवाश्चमुदिताःसर्वेदृष्ट्वातौनिहतौरणे ॥ पुष्पवृष्टिंमुदाचक्रुर्जयशब्दंनभःस्थिताः॥५५॥

॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ पंचबाणानांविभागमाह । एकेनेति ॥ अपरैःशरैरवशिष्टैस्त्रिभिरित्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ सप्ताऽधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथमहारणे ॥ असिलोमादयःसर्वेनिहताइतिकीर्त्यते ॥ १ ॥ इत्थं पूर्वाध्यायांतेताम्रचिक्षुरयोर्वधानंतरंवृत्तमाह । ताविति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ दुःखसंतापेत्युत्तरान्वायि ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ तद्भोगजंनाशात्मकमनित्यं त्याज्यमित्यन्वयः ॥ तस्मात्त्वमपिब्रह्मज्ञानंसंपाद्यसुखीभवयुद्धादुपरमंकुर्वितिभावः ॥ ननुसौगतानांमतेपरलोकएवनास्तिदूरतोब्रह्मज्ञानं ॥ तथाचतन्मतेयुद्धसंभवोऽस्तीतिचेत्तत्राह । सौग

ऋषयोदेवगंधर्वावैतालाःसिद्धचारणाः ॥ ऊचुस्तेजयदेवीतिचांबिकेतिपुनःपुनः ॥५६॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ तौतयानिहतौश्रुत्वामहिषोविस्मयान्वितः ॥ प्रेषयामासदैतेयांस्तद्वधार्थंमहाबलान् ॥ १ ॥ असिलोमविडालाख्यप्रमुखान्युद्धदुर्मदान् ॥ सैन्येनमहतायुक्तान्सायुधान्सपरिच्छदान् ॥ २ ॥ तेतत्रददृशुर्देवींसिंहस्योपरिसंस्थिताम् ॥ अष्टादशभुजांदिव्यांखड्गखेटकधारिणीम् ॥ ३ ॥ असिलोमाऽग्रतोगत्वातामुवाचहसन्निव ॥ विनयावनतःशांतोदेवींदैत्यवधोद्यताम् ॥ ४ ॥ असिलोमोवाच ॥ देविब्रूहिवचःसत्यंकिमर्थमिहसुंदरि ॥ आगताऽसिकिमर्थंवाहंसिदैत्यान्निरागसः ॥५॥ कारणंकथयाऽद्यत्वंत्वयासंधिंकरोम्यहम् ॥ कांचनंमणिरत्नानिभाजनानिवराणिच ॥ ॥ ६ ॥ यानीच्छसिवरारोहेगृहीत्वागच्छमाचिरम् ॥ किमर्थंयुद्धकामाऽसिदुःखसंतापवर्धनम् ॥ ७ ॥ कथयंतिमहात्मानोयुद्धंसर्वसुखाऽपहम् ॥ कोमलेतीवतेदेहेपुष्पघाताऽसहेभृशम् ॥ ८ ॥ किमर्थंशस्त्रसंपातान्सहसीतिविसिस्मिये ॥ चातुर्यस्यफलंशांतिःसततंसुखसेवनम् ॥ ९ ॥ तत्किमर्थंदुःखहेतुंसंग्रामंकर्तुमिच्छसि ॥ संसारेऽत्रसुखंग्राह्यंदुःखंहेयमितिस्थितिः ॥ १० ॥ तत्सुखंद्विविधंप्रोक्तंनित्यानित्यप्रभेदतः ॥ आत्मज्ञानंसुखंनित्यमनित्यंभोगजंस्मृतम् ॥ ११ ॥ नाशात्मकंतुतत्त्याज्यंवेदशास्त्रार्थचिंतकैः ॥ सौगतानांमतंचेत्त्वंस्वीकरोषिवरानने ॥ १२ ॥ तथाऽपियौवनंप्राप्यभुंक्ष्वभोगाननुत्तमान् ॥ परलोकस्यसंदेहोयदितेऽस्तिकृशोदरि ॥ १३ ॥ स्वर्गभोगपरानित्यंभवभामिनिभूतले ॥ अनित्यंयौवनंदेहेज्ञात्वेतिसुकृतंचरेत् ॥ १४ ॥ परोपतापनंकार्यंवर्जनीयंसदाबुधैः ॥ अविरोधेनकर्तव्यंधर्मार्थकामसेवनम् ॥ १५ ॥ तस्मात्त्वमपिकल्याणिमतिंधर्मेसदाकुरु ॥ अपराधंविनादैत्यान्कस्मान्मारयसेंऽबिके ॥ १६ ॥ दयाधर्मोऽस्यदेहोऽस्तिसत्येप्राणाः प्रकीर्तिताः ॥ तस्माद्दयातथासत्यंरक्षणीयंसदाबुधैः ॥ १७ ॥

तानामिति ॥ १२ ॥ तन्मतेपिपरलोकभयाऽभावात्विषयसुखमेवभोक्तव्यमित्यायातीत्याह । तथापीति ॥ ननुममनवेदांतिमतं नाऽपिसौगतं किंतु मीमांसकमतम् ॥ तथाचतन्मतेपरलोकस्यसत्त्वाद्युद्धंपरलोकप्राप्त्यर्थमावश्यकामितिचेत्तत्राह । परलोकस्येति ॥ १३ ॥ तन्मतेस्वर्गसुखस्यसर्वोत्तमत्वात्तत्प्राप्त्यर्थं कर्मादिकंकुर्वित्यर्थः ॥१४॥ १५ ॥१६॥ दयाधर्मोस्येति ॥ अस्यपुरुषस्यदेहोदयाधर्मोदयैवधर्मोयस्यसदयाधर्मस्तथाऽस्ति॥अथचाऽस्यपुरुषस्यप्राणाःसत्येप्रतिष्ठिताः सत्येनैवप्राणानांरक्षणात्॥तस्माद्दयासत्यंचरक्षणीयमित्याह । तस्मादिति॥१७॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १८ ॥ १९ ॥ यतःसाक्षिरूपिणीततइत्यर्थः ॥ २० ॥ साधुरक्षणमित्येतदुत्तरान्वयि ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ एवंगतेएवंप्राप्तेइत्यर्थः

कारणंवदसुश्रोणिदानवानांवधेतव ॥ देव्युवाच ॥ त्वयापृष्टंमहाबाहोकिमर्थमिहचागता ॥ १८ ॥ तदहंसंप्रवक्ष्यामिहननेचप्रयोजनम् ॥ विचरामिसदादैत्यसर्वलोकेषुसर्वदा ॥ १९ ॥ न्यायान्यायौचभूतानांपश्यंतीसाक्षिरूपिणी ॥ नमेकदाऽपिभोगेच्छानलोभोनचवैरिता ॥ २० ॥ धर्मार्थंविचराम्यत्रसंसारे साधुरक्षणम् ॥ व्रतमेतत्तुनियतंपालयामिनिजंसदा ॥२१॥ साधूनांरक्षणंकार्यंहंतव्यायेऽप्यसाधवः ॥ वेदसंरक्षणंकार्यमवतारैरनेकशः ॥२२॥ युगेयुगेतानेवाऽहमवतारान्विभर्मिच ॥ महिषस्तुदुराचारोदेवान्वैहंतुमुद्यतः ॥ २३ ॥ ज्ञात्वाऽहंतद्वधार्थंभोःप्राप्ताऽस्मिराक्षसाऽधुना ॥ तंहनिष्येदुराचारंसुरशत्रुंमहाबलम् ॥ २४ ॥ गच्छवातिष्ठकामंत्वंसत्यमेतदुदाहृतम् ॥ ब्रूहिवातंदुरात्मानंराजानंमहिषीसुतम् ॥ २५ ॥ किमन्यान्प्रेषयस्यत्रस्वयंयुद्धंकुरुष्वह ॥ संधिश्चेत्कर्तुमिच्छाऽस्तिराज्ञस्तवमयासह ॥ २६ ॥ सर्वेगच्छंतुपातालंवैरंत्यक्त्वायथासुखम् ॥ देवद्रव्यंतुयत्किंचिद्धृतंजित्वारणेसुरान् ॥२७॥ तद्दत्वायांतुपातालंप्रह्लादोयत्रतिष्ठति ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंदेव्याअसिलोमापुरःस्थितः ॥ २८ ॥ बिडालाख्यंमहावीरंपप्रच्छप्रीतिपूर्वकम् ॥ असिलोमोवाच ॥ श्रुतंतेऽद्यबिडालाख्यभवान्याकथितंचयत् ॥ २९ ॥ एवंगतेकिंकर्तव्योविग्रहःसंधिरेववा ॥ बिडालाख्यउवाच ॥ नसंधिकामोऽस्तिनृपोऽभिमानी युद्धेचमृत्युंनियतंहिजानन् ॥३०॥ दृष्ट्वाहतान्प्रेरयतेतथाऽस्मान्दैवंहिकोऽतिक्रमितुंसमर्थः ॥ "दुःसाध्यएवास्तिवहसेवकानांधर्मःसदामानविवर्जितानाम् ॥ आज्ञापराणांवशवर्तिकानांपांचालिकानामिवसूत्रभेदात् ॥" गत्वाकथंतस्यपुरस्त्वयाचमयाऽपिवक्तव्यमिदंकठोरम् ॥ ३१ ॥ गच्छंतुपातालमितश्चसर्वेदत्वाऽथरत्नानिधनंसुराणाम् ॥ "प्रियंहिवक्तव्यमसत्यमेवनचप्रियंस्याद्धितकृत्तुभाषितम् ॥ सत्यंप्रियंनोभवतीहकामंमौनंततोबुद्धिमतांप्रतिष्ठितम्" ॥ नफल्गुवाक्यैःप्रतिबोधनीयोराजातुवीरैरितिनीतिशास्त्रम् ॥३२॥ ननूनंतत्रगंतव्यंहितंवावक्तुमादरात् ॥ प्रष्टुंवाऽपिगतेराजाकोपयुक्तोभविष्यति ॥ ३३ ॥ इतिसंचिंत्यकर्तव्यंयुद्धंप्राणस्यसंशये ॥ स्वामिकार्यपरंमत्वामरणंतृणवत्तथा ॥ ३४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यतौवीरौसंस्थितौयुद्धतत्परौ ॥ धनुर्बाणधरौतत्रसन्नद्धौरथसंगतौ ॥ ३५ ॥ प्रथमंतुबिडालाख्यःसप्तबाणान्मुमोचह ॥ असिलोमास्थितोदूरेप्रेक्षकःपरमाऽस्त्रवित् ॥ ३६ ॥ चिच्छेदतांस्तथाप्राप्तानंविकास्वशरैःशरान् ॥ बिडालाख्यंत्रिभिर्बाणैर्जघानचशिलाशितैः ॥ ३७ ॥ प्राप्यबाणव्यथांदैत्यःपपातसमरांगणे ॥ मूर्छितोऽथममाराऽऽशुदानवोदैवयोगतः ॥ ३८ ॥ बिडालाख्यंहतंदृष्ट्वारणेशक्तिशरोत्करैः ॥ असिलोमाधनुष्पाणिःसंस्थितोयुद्धतत्परः ॥ ३९ ॥

॥ ३० ॥ ३१ ॥ किंतत्कठोरंवाक्यंतदाह । गच्छंत्विति ॥एतादृशफल्गुवाक्येनराजाकदाऽपिनबोधनीयोवीरैरेतादृशंनीतिशास्त्रमप्यस्तीत्याह । नफल्गुवाक्यैरिति ॥३२॥३३ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ हतशेषादैत्याराजानंप्रतिगत्वाकिमूचुस्तदाह । असिलोमेति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेपं० पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ छ ॥ अर्धाधिकैःपंचषष्टिपद्यैरथसविस्तरम् महिषासुरसंवादोदिव्याजातउदीर्यते ॥ १ ॥

ऊर्ध्वंसव्यंकरंकृत्वातामुवाचमितंवचः ॥ देविजानामिमरणंदानवानांदुरात्मनाम् ॥ ४० ॥ तथाऽपियुद्धंकर्तव्यंपराधीनेनवैमया ॥ महिषोमंदबुद्धिश्चन जानातिप्रियाऽप्रिये ॥४१॥ तदग्रेनैववक्तव्यंहितंचैवाऽप्रियंमया ॥ मर्तव्यंवीरधर्मेणशुभंवाऽऽप्यशुभंभवेत् ॥ ४२ ॥ दैवमेवपरंमन्येधिक्पौरुषमनर्थकम् ॥ पतंतिदानवास्तूर्णंतववाणहताभुवि ॥ ४३ ॥ इत्युक्त्वाशरवृष्टिंसचकारदानवोत्तमः ॥ देवीचिच्छेदतान्बाणैरप्राप्तांस्तुनिजांतिके ॥४४॥ अन्यैर्विव्या धतंतूर्णमसिलोमानमाशुगैः ॥ वीक्षिताऽमरसंघैश्चकोपपूर्णाननातदा ॥ ४५ ॥ शुशुभेदानवःकामंबाणैर्विद्धतनुःकिल ॥ स्रवद्रुधिरधारःसप्रफुल्लःकिंशु कोयथा ॥ ४६ ॥ असिलोमागदांगुर्वींलौहीमुद्यम्यवेगतः ॥ दुद्रावचंडिकांकोपात्सिंहंमूर्ध्निजघानह ॥ ४७ ॥ सिंहोऽपिनखराघातैस्तंददारभुजांतरे ॥ अगणय्यगदाघातंकृतंतेनबलीयसा ॥ ४८ ॥ उत्पत्यतरसादैत्योगदापाणिःसुदारुणः ॥ सिंहमूर्ध्निसमारुह्यजघानगदयांबिकाम् ॥ ४९ ॥ कृतंतेनप्रहारं तुवंचयित्वाविशांपते ॥ खड्गेनशितधारेणशिरश्चिच्छेदकंठतः ॥ ५० ॥ छिन्नेशिरसिदैत्येंद्रःपपाततरसाक्षितौ ॥ हाहाकारोमहानासीत्सैन्येतस्यदुरा त्मनः ॥ ५१ ॥ जयदेवीतिदेवास्तांतुष्टुवुर्जगदंबिकाम् ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्जगुश्चनृपाकिन्नराः ॥ ५२ ॥ निहतौदानवौवीक्ष्यपतितौचरणांगणे ॥ निहताः सैनिकाःसर्वेतत्रकेसरिणाबलात् ॥ ५३ ॥ भक्षिताश्चतथाकेचिन्निःशेषंतद्रणंकृतम् ॥ भग्नाःकेचिद्गतामंदामहिषंप्रतिदुःखिताः ॥ ५४ ॥ चुक्रुशूरुरुदुश्चै वत्राहित्राहीतिभाषणैः ॥ असिलोमाविडालाख्यौनिहतौनृपसत्तम ॥ ५५ ॥ अन्येयेसैनिकाराजन्सिंहेनभक्षिताश्चते ॥ एवंब्रुवंतोराजानंतदाचक्रुश्चवैश सम् ॥ ५६ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतेषांमहिषोदुर्मनास्तदा ॥ बभूवचिंताकुलितोविमनादुःखसंयुतः ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेपंच दशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ तेषांतद्वचनंश्रुत्वाक्रोधयुक्तोनराधिपः ॥ दारुकंप्राहतरसारथमानयमेद्रुतम् ॥ १ ॥ सहस्रखरसंयुक्तं पताकाध्वजभूषितम् ॥ आयुधैःसंयुतंशुभ्रंसुचक्रंचारुकूबरम् ॥ २ ॥ सूतोऽपिरथमानीयतमुवाचत्वरान्वितः ॥ राजन्रथोऽयमानीतोद्वारितिष्ठतिभू षितः ॥ ३ ॥ सर्वायुधसमायुक्तोवरास्तरणसंयुतः ॥ आनीतंतंरथंज्ञात्वादानवेंद्रोमहाबलः ॥ ४ ॥ मानुषंदेहमास्थायसंग्रामेगंतुमुद्यतः ॥ विचार्य मनसाचेतिदेवीमांप्रेक्ष्यदुर्मुखम् ॥ ५ ॥ शृंगिणंमहिषंनूनंविमनासाभविष्यति ॥ नारीणांचप्रियंरूपंतथाचातुर्यमित्यपि ॥ ६ ॥

पूर्वाऽध्यायांतिहतशेषादैत्यास्त्राहित्राहीतिभाषणैराजानंप्रतिगत्वारुरुदुरित्युक्तंतदुत्तरंजातंवृत्तमाह । तेषामिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ महिषदेहंत्यक्त्वामानुषदेहधारणेकारणमाह । विचार्येति ॥ मांशृंगिणंमहिषंदृष्ट्वादेवीविमनाभाविष्यतीतिमनसाविचार्येत्यन्वयः ॥ ५ ॥ तमेवविचारमाह । नारीणामिति ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ किंचममापिमहिषदेहस्यनास्यांविजातीयायांसुखंस्याद्विषयसुखस्यसजातीयएवविद्यमानत्वात् ॥ तस्मात्तस्याःप्रीत्यर्थंमदर्थंचमनुष्यरूपमेवमयाधार्यमित्याह । ममापीति ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ पुष्पवाणोमदनः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ संयोगजंपदार्थसंबंधजन्यमित्यर्थः ॥ असंयोगेपदार्थसंबंधाऽभावेसुखंतुनैवभवतीत्यर्थः ॥ तानिति ॥ संयोगस्य तान्भेदान्ब्रवीमीत्यन्वयः ॥ १५ ॥ भेदानांत्रैविध्यमाह सुप्रीतीति ॥ केचित्संयोगाःप्रीत्युत्थाःप्रीतिःप्रेमतद्धेतुकाएव ॥ नान्यत्कारणांतरंलोभादिकंविद्यते ॥ यथा मातापित्रोःपुत्रेण संयोगःप्रेमनिमित्तएव तादृशसंयोगस्यसुखजनकत्वमक्षतमेव तादृशाः केचित्संयोगाइत्यर्थः ॥ तथाकेचिद्धेतूत्थालोभादिरूपहेतुजन्यायथाभ्रातुःसंयोगःसचमामुपकरिष्यतीतिलोभमूल कएव ॥ तस्मात्तादृशाःसंयोगाहेतूत्थाइत्युच्यंते ॥ तथास्वभावोत्थाःस्वभावेनप्रसंगेनैवजायमानाःकेचित्संयोगायथापांथानां ॥ नहितेषांसंयोगेप्रीतिर्वालोभोवाकारणंसंभवतिकिंतुस्वभाव एव । तथाचतादृशाःसंयोगाःस्वभावोत्थाइत्युच्यंतेइत्यर्थः ॥ तत्रप्रीत्युत्थानामुदाहरणमाह । तत्रप्रीतिभवानिति ॥१६॥ मातापित्रोःपुत्रेणसंयोगःप्रीतिजन्यःप्रथमः ॥ सचतादृशप्रीति

तस्माद्रूपंचचातुर्यंकृत्वायास्यामितांप्रति ॥ यथामांवीक्ष्यसाबालाप्रेमयुक्ताभविष्यति ॥ ७ ॥ ममाऽपिचतदैवस्यात्सुखंनान्यस्वरूपतः ॥ इतिसंचिंत्यमनसादानवेंद्रोमहाबलः ॥ ८ ॥ त्यक्त्वातन्माहिषंरूपंबभूवपुरुषःशुभः ॥ सर्वायुधधरःश्रीमांश्चारुभूषणभूषितः ॥ ९ ॥ दिव्यांबरधरःकांतःपुष्पवाणइवापरः ॥ रथोपविष्टःकेयूरस्रग्वीबाणधनुर्धरः ॥ १० ॥ सेनापरिवृतोदेवींजगाममदगर्वितः ॥ मनोज्ञंरूपमास्थायमानिनीनांमनोहरम् ॥ ११ ॥ तमागतंसमालोक्यदैत्यानामधिपंतदा ॥ बहुभिःसंवृतंवीरैर्देवीशंखमवादयत् ॥ १२ ॥ सशंखनिनदंश्रुत्वाजनविस्मयकारकम् ॥ समीपमेत्यदेव्यास्तुतामुवाचहसन्निव ॥ १३ ॥ देविसंसारचक्रेऽस्मिन्वर्तमानोजनःकिल ॥ नरोवाऽथतथानारीसुखंवांछतिसर्वथा ॥ १४ ॥ सुखंसंयोगजंनृणां नासंयोगेभवेदिह ॥ संयोगोबहुधाभिन्नस्तान्ब्रवीमिशृणुष्वह ॥ १५ ॥ भेदान्सुप्रीतिहेतूत्थान्स्वभावोत्थाननेकशः ॥ तत्रप्रीतिभवानादौकथयामियथामति ॥ १६ ॥ मातापित्रोस्तुपुत्रेणसंयोगस्तूत्तमःस्मृतः ॥ भ्रातुर्भ्रात्रातथायोगःकारणान्मध्यमोमतः ॥ १७ ॥ उत्तमस्यसुखस्यैवदातृत्वादुत्तमः स्मृतः ॥ तस्मादल्पसुखस्यैवप्रदातृत्वाच्चमध्यमः ॥ १८ ॥ नाविकानांतुसंयोगःस्मृतःस्वाभाविकोबुधैः ॥ विविधावृतचित्तानांप्रसंगपरिवर्तिनाम् ॥ १९ ॥

जन्यःसंयोगउत्तमएवोत्तमसुखजनकत्वात् ॥ पुत्ररूपप्रियपदार्थदर्शनमात्रेणैवतत्रनिरतिशयसुखस्योद्भवात् ॥ हेतूत्थानामुदाहरणमाह । भ्रातुर्भ्रात्रेति॥कारणादिति । भ्रातुर्भ्रात्रायःसंयोगः सउपकारमूलकःसुखजनकोनदर्शनमात्रेणयथापितापुत्रयोः ॥ सचसंयोगोमध्यमः ॥ भ्रात्रोपकारेकृतेतत्संयोगस्यपूर्वापेक्षयाऽल्पसुखजनकत्वादित्यर्थः ॥ १७ ॥ अनयोःसंयोगयोः कुतोमध्यमोत्तमत्वंतदाह ॥ उत्तमस्यसुखस्येति ॥ बहुसुखदातृत्वादुत्तमत्वमित्यर्थः ॥ तस्मादल्पसुखस्यैवेति ॥ तस्मात्पूर्वसुखापेक्षयाऽल्पसुखप्रदातृत्वान्मध्यमत्वमित्यर्थः ॥ १८ ॥ स्वभावोत्थसंयोगस्यस्वरूपंतत्कानिष्ठत्वंचाह । नाविकानामिति॥ नावाचरंतितेनाविकाः पांथाइत्यर्थः । तेषांविविधावृतचित्तानामनेकदेशेष्वनेककार्यार्थंव्याकुलचित्तानांप्रसंगपरिवर्तिनां कार्यांतरप्रसंगेनैकत्रमिलितानांयःसंयोगःसस्वाभाविकइत्यर्थः ॥ १९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सत्वत्यल्पसुखदातृत्वात्कनिष्ठइत्याह । अत्यल्पेति ॥ संत्येतेयोगास्त्रिविधाः अल्पमध्यमोत्तमसुखप्रदत्वात्त्रिप्रकारास्तथाऽपिनतेष्वत्युत्तमसुखदातृत्वादत्युत्तमःसंयोगोऽस्ति ॥ सतु भिन्नएवतेभ्योस्तीत्याह । अत्युत्तमस्तुसंयोगइति ॥ यःसोत्युत्तमःसंयोगःसएवसंसारेऽत्युत्तमसुखप्रदइत्यर्थः ॥२०॥ सकोऽसाविति चेत्तत्राह । नारीपुरुषयोरिति ॥ २१ ॥ कुतस्तस्याऽत्युत्तमत्वंतत्राह । अत्युत्तमसुखस्यैवेति ॥ तथाविधोत्युत्तमइत्यर्थः ॥ चातुर्यरूपेति ॥ २२ ॥ चातुर्यादिभिः परस्परसमुत्कर्षोऽन्योन्यसमुत्कर्षोहियतःपरस्परंकथ्यते स्त्रीचातुर्यादिगुणैः पुरुषंवर्णयति पुरुषश्चातुर्यादिगुणैःस्त्रियंवर्णयति ॥ तस्मात्सोत्युत्तमएवाऽत्रसंयोगइत्यर्थः ॥ एतावत्पर्यंतसंयोगस्वरूपविभागकथनस्यप्रयोजनमाह । तंचेदिति ॥ २३ ॥ कथंवीरत्वंतवे

अत्यल्पसुखदातृत्वात्कनिष्ठोऽयंस्मृतोबुधैः ॥ अत्युत्तमस्तुसंयोगःसंसारेसुखदःसदा ॥ २० ॥ नारीपुरुषयोःकांतेसमानवयसोःसदा ॥ संयोगोयःसमाख्यातःसएवाऽत्युत्तमःस्मृतः ॥ २१ ॥ अत्युत्तमसुखस्यैवदातृत्वात्सतथाविधः ॥ चातुर्यरूपवेषाद्यैःकुलशीलगुणैस्तथा ॥ २२ ॥ परस्परसमुत्कर्षःकथ्यतेहिपरस्परम् ॥ तंचेत्करोषिसंयोगंवीरेणचमयासह ॥२३॥ अत्युत्तमसुखस्यैवप्राप्तिःस्यात्तेनसंशयः ॥ नानाविधानिरूपाणिकरोमिस्वेच्छयाप्रिये॥ ॥ २४ ॥ इंद्रादयःसुराःसर्वेसंग्रामेविजितामया ॥ रत्नानियानिदिव्यानिभवनेऽस्मिन्ममाधुना ॥ २५ ॥ भुंक्ष्वत्वंतानिसर्वाणियथेष्टंदेहिवायथा ॥ पट्टराज्ञीभवाद्यत्वंदासोऽस्मितवसुंदरि ॥ २६ ॥ वैरंत्यजेऽहंदेवैस्तुतववाक्यान्नसंशयः ॥ यथात्वंसुखमाप्नोषितथाऽहंकरवाणिवै ॥ २७ ॥ आज्ञापयविशालाक्षितथाहंप्रकरोम्यथ ॥ चित्तंमेतवरूपेणमोहितंचारुभाषिणि ॥२८॥ आतुरोऽस्मिवरारोहेप्राप्तस्तेशरणंकिल ॥ प्रपन्नंपाहिरंभोरुकामबाणैःप्रपीडितम् ॥ ॥ २९ ॥ धर्माणामुत्तमोधर्मःशरणागतरक्षणम् ॥ त्वदीयोस्म्यसितापांगिसेवकोहंकृशोदरि ॥ ३० ॥ मरणांतंवचःसत्यंनाऽन्यथाप्रकरोम्यहम् ॥ पादौनतोऽस्मितन्वंगित्यक्त्वानानायुधानिते ॥ ३१ ॥ दयांकुरुविशालाक्षितप्तोऽस्मिकाममार्गणैः ॥ जन्मप्रभृतिचार्वंगिदैन्यंनाचरितंमया ॥ ३२ ॥ ब्रह्मादीनीश्वरान्प्राप्यत्वयितद्विदधाम्यहम् ॥ चरितंममजानंतिरणेब्रह्मादयःसुराः ॥ ३३ ॥ सोऽप्यहंतवदासोऽस्मिममन्मुखंदृश्यभामिनि ॥ व्यासउवाच ॥ इतिब्रुवाणंतंदैत्यंदेवीभगवतीहिसा ॥ ३४ ॥ प्रहस्यसस्मितंवाक्यमुवाचवरवर्णिनी ॥ देव्युवाच ॥ नाहंपुरुषमिच्छामिपरमंपुरुषंविना ॥ ३५॥ तस्यचेच्छास्म्यहंदैत्यसृजामिसकलंजगत् ॥ समांपश्यतिविश्वात्मातस्याहंप्रकृतिःशिवा ॥ ३६ ॥

तिचेत्तत्राह । नानाविधानीति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ मरणांतमिति ॥ तेवचोमरणांतंमरणपर्यंतमन्यथानकरोमिनकरिष्यामिसत्यमेतज्जानीहीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ नाऽहंपुरुषमिच्छामीति ॥ अत्रभगवत्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपत्वात्पुंप्रकृत्युभयात्मकत्वोपिस्वस्यप्रकृतिरूपत्वाभिमानमाश्रित्यभगवत्येदमुच्यतेऽलंकारार्थमितिबोध्यम् ॥३५॥इच्छास्म्यहमिति ॥ परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाचेतिश्रुत्युक्तबलशब्देदितेत्यर्थः॥इच्छाशक्तिरुमाकुमारीतिशिवसूत्रोदिताचेत्यर्थः॥३६॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

चैतन्यंप्रतिबिंबरूपमित्यर्थः॥तस्यप्रतिबिंबस्यसंयोगादहंजडाऽपिसचेतनाऽस्मीत्यर्थः॥३७॥नन्वन्यसंबंधात्कथमन्यस्यचेतनत्वमिति चेत्तद्दृष्टांतवशात्संभवतीत्याह।अयस्कांतस्येति॥तथा चनाऽहंप्राकृतांगनाऽस्मि यन्मांत्वमित्थंभाषसे किंतुसर्वेश्वर्यहमस्मीतिभावः ॥ ननुतथापितवग्राम्यसुखेच्छाऽस्तिवानवेतिचेत्तत्राह । नग्राम्येति ॥ ममसर्वेश्वरत्वान्नकाचित्पीडास्तीतिभावः ॥ ३८ ॥ यद्वाहंपंडितइतिमदग्रेस्त्वचातुर्यंदर्शयसितत्रनत्वंपंडितः । किंतुमूर्खएवासीत्याह । मूर्खस्त्वमसीति ॥ तत्रहेतुमाह । यत्स्त्रीसंगमिति ॥ तस्यदुष्टत्वमाह नरस्येति ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥४३॥ एतादृशंमृदुवचनंनत्वद्भयान्मयोच्यतेकिंतुत्वयावचनसौहृदमेतावत्पर्यंतंदर्शितंतद्वशादित्याह। सत्यंब्रवीमीति ॥ अतोजीवन्सन्गच्छयथासुखंनयुद्धंकुर्विति

तत्सान्निध्यवशादेवचैतन्यंमयिशाश्वतम् ॥ जडाऽहंतस्यसंयोगात्प्रभवामिसचेतना ॥ ३७ ॥ अयस्कांतस्यसान्निध्यादयसश्चेतनायथा ॥ नग्राम्यसुखवांछामेकदाचिदपिजायते ॥ ३८ ॥ मूर्खस्त्वमसिमंदात्मन्यत्स्त्रीसंगंचिकीर्षसि ॥ नरस्यबंधनार्थायशृंखलास्त्रीप्रकीर्तिता ॥ ३९ ॥ लोहबद्धोऽपिमुच्येतस्त्रीबद्धोनैवमुच्यते ॥ किमिच्छसिचमंदात्मन्मूत्रागारस्यसेवनम् ॥ ४० ॥ शमंकुरुसुखायत्वंशमात्सुखमवाप्स्यसि ॥ नारीसंगेमहद्दुःखंजानन्किंत्वंविमुह्यसि ॥ ४१ ॥ त्यजवैरंसुरैःसार्धंयथेष्टंविचराऽवनौ ॥ पातालंगच्छवाकामंजीवितेच्छायदस्तिते ॥ ४२ ॥ अथवाकुरुसंग्रामंबलवत्यस्मिसांप्रतम् ॥ प्रेषिताऽहंसुरैःसर्वैस्तवनाशायदानव ॥ ४३ ॥ सत्यंब्रवीमियेनाद्यत्वयावचनसौहृदम् ॥ दर्शितंतेनतुष्टाऽस्मिजीवन्गच्छयथासुखम् ॥४४॥ सतांसप्तपदीमैत्रीतेनमुंचामिजीवितम् ॥ मरणेच्छाऽस्तिचेद्युद्धंकुरुवीरयथासुखम् ॥ ४५ ॥ हनिष्यामिमहाबाहोत्वामहंनात्रसंशयः ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वादानवःकाममोहितः ॥ ४६ ॥ उवाचश्लक्ष्णयावाचामधुरंवचनंततः ॥ बिभेम्यहंवरारोहेत्वांप्रहर्तुंवरानने ॥ ४७ ॥ कोमलांचारुसर्वांगींनारींनरविमोहिनीम् ॥ जित्वाहरिहरादींश्चलोकपालांश्चसर्वशः ॥ ४८ ॥ किंत्वयासहयुद्धंमेयुक्तंकमललोचने ॥ रोचतेयदिचार्वंगिविवाहंकुरुमांभज ॥ ४९ ॥ नोचेद्गच्छयथेष्टंतेदेशंयस्मात्समागता ॥ नाहंत्वांप्रहरिष्यामियतोमैत्रीकृतात्वया ॥ ५० ॥ हितमुक्तंशुभंवाक्यंतस्माद्गच्छयथासुखम् ॥ काशोभामेभवेदंतेहत्वात्वांचारुलोचनाम् ॥ ५१ ॥ स्त्रीहत्याबालहत्याचब्रह्महत्यादुरत्यया ॥ गृहीत्वात्वांगृहंनूनंगच्छाम्यद्यवरानने ॥ ५२ ॥ तथाऽपिमेफलंनस्याद्बलाद्भोगसुखंकुतः ॥ प्रब्रवीमिसुकेशित्वांविनयाऽवनतोयतः ॥ ५३ ॥

भावः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ त्वयावारंवारंयुद्धंकुर्वित्युच्यतेतत्रनतेयुद्धादहंबिभेमिकिंतुकोमलांगीकथंहंतव्येतिभयादित्याह। बिभेम्यहमिति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ केवलंशोभाऽभावएवन किंतु स्त्रीहत्याऽपितवहननेभविष्यतीत्याह ! स्त्रीहत्येति ॥ बलात्कारेणत्वांनेष्यामीत्यपिसामर्थ्यमधिवर्तते तथापितत्रबलात्कारेणभोगेसुखाऽसंभवान्नतत्क्रियतइत्याह । गृहीत्वात्वामिति ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





यतइति ॥ यतः पुरुषस्यसुखंकांतामुखांबुजादृतेनस्यात् तस्मात्तथैवनारीणामपिपुरुषंविनानस्यात्तुल्यन्यायत्वादुभयोरित्यर्थः ॥ ५४ ॥ संयोगेइति ॥ इदंकिंनजानासीतिशेषः ॥ क तासीति ॥ ५५ ॥ इदं पुरुषंसंगविषयंचातुर्यंतवकिंनाऽस्तीत्यर्थः ॥ कांतायाइदंचातुर्यमवश्यमपेक्षितमितिभावः ॥ ननुविषयोनकर्तव्यइतिमांप्रतिकेनचिदुक्तमस्तीत्यतआह । तवोपदिष्ट मिति ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ शच्याशतमखस्तथेति ॥ तथाऽहमपित्वयाशोभांप्राप्स्यामीतिशेषः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ अथवामेऽहितैरिति ॥ अथवामेममाऽहितैःशत्र

पुरुषस्यसुखंनस्यादृतेकांतामुखांबुजात् ॥ तत्तथैवहिनारीणांनस्याच्चपुरुषंविना ॥५४॥ संयोगेसुखसंभूतिर्वियोगेदुःखसंभवः ॥ कांतासिरूपसंपन्नासर्वा ऽऽभूरणभूषिता ॥ ५५ ॥ चातुर्यंत्वयिकिंनास्तियतोमांनभजस्यहो ॥ तवोपदिष्टंकेनेदंभोगानांपरिवर्जनम् ॥ ५६ ॥ वंचिताऽसिप्रियालापैर्वैरिणाकेन चित्त्विह ॥ मुंचाग्रहमिमंकांतेकुरुकार्यंसुशोभनम् ॥ ५७ ॥ सुखंतवममाऽपिस्याद्विवाहेविहितेकिल ॥ विष्णुर्लक्ष्म्यासहाभातिसावित्र्याचसहा त्ममूः ॥ ५८ ॥ रुद्रोभातिचपार्वत्याशच्याशतमखस्तथा ॥ कानारीपतिहीनाचसुखंप्राप्नोतिशाश्वतम् ॥५९॥ येनत्वमसितापांगिनकरोषिपतिंशुभम्॥ कामःक्वाद्यगतःकांतेयस्त्वांबाणैःसुकोमलैः ॥ ६० ॥ मादनैःपंचभिःकामंनताडयतिमंदधीः ॥ मन्येऽहमिवकामोऽपिदयावांस्त्वयिसुंदरि ॥ ६१ ॥ अव लेतिचमन्वानोनप्रेरयतिमार्गणान् ॥ मनोभवस्यवैरंवाकिमप्यस्तिमयासह ॥ ६२ ॥ तेनचत्वय्यरालाक्षिनमुंचतिशिलीमुखान् ॥ अथवामेऽहितैर्देवैर्वा रितोऽसौझषध्वजः ॥६३॥ सुखविध्वंसिभिस्तेनत्वयिनप्रहरत्यपि ॥ त्यक्त्वामांमृगशावाक्षिपश्चात्तापंकरिष्यसि॥६४॥मंदोदरीवतन्वंगिपरित्यज्यशुभं नृपम् ॥ अनुकूलंपतिंपश्चात्साचकारशठंपतिम् ॥६५॥ कामार्ताचयदाजातामोहेनव्याकुलांतरा ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपं०देवीचरित्रेषोडशो ऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ व्यासउवाच॥इतिश्रुत्वावचस्तस्यदेवीपप्रच्छदानवम् ॥ कासामंदोदरीनारीकोऽसौत्यक्तोनृपस्तया ॥ १ ॥ शठःकोवानृपःपश्चा त्तन्मेब्रूहिकथानकम् ॥ विस्तरेणयथाप्राप्तंदुःखंवनितयापुनः ॥ २ ॥ महिषउवाच ॥ सिंहलोनामदेशोऽस्तिविख्यातःपृथिवीतले ॥ धनपादपसंयुक्तो धनधान्यसमृद्धिमान् ॥ ३ ॥ चंद्रसेनाऽभिधस्तत्रराजाधर्मपरायणः ॥ न्यायदंडधरःशांतःप्रजापालनतत्परः ॥ ४ ॥ सत्यवादीमृदुःशूरस्तितिक्षुर्नीति सागरः ॥ शास्त्रवित्सर्वधर्मज्ञोधनुर्वेदेऽतिनिष्ठितः ॥ ५ ॥ तस्यभार्यावरारोहासुंदरीसुभगाशुभा ॥ सदाचाराऽतिसुमुखीपतिभक्तिपरायणा ॥ ६ ॥

भिर्देवैर्मम सुखविध्वंसिभिरयंझषध्वजोवारितःकिमित्यर्थः ॥ तेनकारणेनाऽसौत्वयिनप्रहरतीत्यर्थः ॥६३॥६४॥ मंदोदरीवपश्चात्तापमित्यन्वयः॥सातन्वंगीअनुकूलपतिंपरित्यज्यपश्चाच्छठंप तिंचकार ॥ कदायदाकामार्ताजातापश्चात्पूर्वपत्यलाभेनपश्चात्तापंप्राप्तातदेत्यर्थः ॥ ६५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेपंचमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ छ ॥ एकषष्टिश्लोकवर्यै र्मंदोदर्याःकथानकम् ॥ देवीबोधायदैत्येनकथ्यतेचेतिकथ्यते ॥ १ ॥ मंदोदरीदृष्टांतंश्रुत्वालीलावशाद्देवीपृच्छतीत्याह इतिश्रुत्वेति ॥ १ ॥ वनितयामंदोदर्या ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ उत्तानचरणोह्युत्तानपादः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ परो

नाम्नागुणवतीकांतासर्वलक्षणसंयुता ॥ सुषुवेप्रथमेगर्भेपुत्रींसाचातिसुंदरीम् ॥ ७ ॥ पिताचातीवसंतुष्टःपुत्रींप्राप्यमनोरमाम् ॥ मंदोदरीतिनामा स्याःपिताचक्रेमुदान्वितः ॥ ८ ॥ इंदोःकलेवचात्यर्थंववृधेसादिनेदिने ॥ दशवर्षायदाजाताकन्याचातिमनोहरा ॥ ९ ॥ वरार्थंनृपतिश्चिंतामवापचदिने दिने ॥ मद्रदेशाधिपःशूरःसुधन्वानामपार्थिवः ॥ १० ॥ तस्यपुत्रोऽतिमेधावीकंबुग्रीवोऽतिविश्रुतः ॥ ब्राह्मणैःकथितोराज्ञेसयुक्तोऽस्यावरःशुभः ॥ ॥ ११ ॥ सर्वलक्षणसंपन्नःसर्वविद्यार्थपारगः ॥ राज्ञापृष्टातदाराज्ञीनाम्नागुणवतीप्रिया ॥ १२ ॥ कंबुग्रीवायकन्यांस्वांदास्यामिवरवर्णिनीम् ॥ सातुप त्युर्वचःश्रुत्वापुत्रींपप्रच्छसादरम् ॥ १३ ॥ विवाहंतेपिताकर्तुंकंबुग्रीवेणवांछति ॥ तच्छ्रुत्वामातरंप्राहवाक्यंमंदोदरीतदा ॥ १४ ॥ नाऽहंपतिंकरिष्या मिनेच्छामेऽस्तिपरिग्रहे ॥ कौमारंव्रतमास्थायकालंनेष्यामिसर्वथा ॥ १५ ॥ स्वातंत्र्येणचरिष्यामितपस्तीव्रंसदैवहि ॥ पारतंत्र्यंपरंदुःखंमातःसं सारसागरे ॥ १६ ॥ स्वातंत्र्यान्मोक्षमित्याहुःपंडिताःशास्त्रकोविदाः ॥ तस्मान्मुक्ताभविष्यामिपत्यामेनप्रयोजनम् ॥ १७ ॥ विवाहेवर्तमानेतुपावकस्य चसन्निधौ ॥ वक्तव्यंवचनंसम्यक्त्वदधीनाऽस्मिसर्वदा ॥ १८ ॥ श्वश्रूदेवरवर्गाणांदासीत्वंश्वशुरालये ॥ पतिचित्ताऽनुवर्तित्वंदुःखाद्दुःखतरंस्मृतम् ॥ ॥ १९ ॥ कदाचित्पतिरन्यांवाकामिनींचभजेद्यदि ॥ तदामहत्तरंदुःखंसपत्नीसंभवंभवेत् ॥ २० ॥ तदेर्ष्याजायतेपत्यौक्लेशश्चाऽपिभवेदथ ॥ संसारेक्कसु खंमातर्नारीणांचविशेषतः ॥ २१ ॥ स्वभावात्परतंत्राणांसंसारेस्वप्नधर्मिणि ॥ श्रुतंमयापुरामातरुत्तानचरणात्मजः ॥ २२ ॥ उत्तमःसर्वधर्मज्ञोध्रुवा दवरजोनृपः ॥ पत्नींधर्मपरांसाध्वींपतिभक्तिपरायणाम् ॥ २३ ॥ अपराधंविनाकांतांत्यक्तवान्विपिनेप्रियाम् ॥ एवंविधानिदुःखानिविद्यमानेतुभर्तरि ॥ ॥ २४ ॥ कालयोगान्मृतेतस्मिन्नारीस्यादुःखभाजनम् ॥ वैधव्यंपरमंदुःखंशोकसंतापकारकम् ॥ २५ ॥ परोषितपतित्वेऽपिदुःखंस्यादधिकंगृहे ॥ मद नाऽग्निविदग्धायाःकिंसुखंपतिसंगजम् ॥ २६ ॥ तस्मात्पतिर्नकर्तव्यःसर्वथेतिमतिर्मम ॥ एवंप्रोक्तातदामातापतिंप्राहनृपात्मजा ॥ २७ ॥ नचवांछति भर्तारंकौमारव्रतधारिणी ॥ व्रतजाप्यपरानित्यंसंसाराद्विमुखीसदा ॥ २८ ॥ नकांक्षतिपतिंकर्तुंबहुदोषविचक्षणा ॥ भार्यायाभाषितंश्रुत्वातथैवसंस्थि तोनृपः ॥ २९ ॥ विवाहोनकृतःपुत्र्याज्ञात्वाभावविवर्जिताम् ॥ वर्तमानागृहेष्वेवंपित्रामात्राचरक्षिता ॥ ३० ॥ यौवनस्यांकुराजातानारीणांकामदीप काः ॥ तथाऽपिसावयस्याभिःप्रेरिताऽपिपुनःपुनः ॥ ३१ ॥ चकमेनपतिंकर्तुंज्ञानार्थपदभाषिणी ॥ एकदोद्यानदेशेसाविहर्तुंबहुपादपे ॥ ३२ ॥ जगा मसुमुखीप्रेम्णासैरंध्रीगणसेविता ॥ रेमेकृशोदरीतत्रापश्यत्कुसुमितालताः ॥ ३३ ॥

पितेदेशांतरगतेइत्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ प्रसाधिकांकुट्टिनीमित्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

पुष्पाणिचिन्वतीरम्यावयस्याभिःसमावृता ॥ कोसलाधिपतिस्तत्रमार्गेदैववशात्तदा ॥ ३४ ॥ आजगाममहावीरोवीरसेनोऽतिविश्रुतः ॥ एकाकीरथमारूढःकतिचित्सेवकैर्वृतः ॥३५॥ सैन्यंचपृष्ठतस्तस्यसमायातिशनैःशनैः ॥ दृष्टस्तस्यावयस्यातुदूरतःपार्थिवस्तदा ॥ ३६ ॥ मंदोदर्यैतथाप्रोक्तंसमायातिनरःपथि ॥ रथारूढोमहाबाहूरूपवान्मदनोऽपरः ॥ ३७ ॥ मन्येऽहंनृपतिःकश्चित्प्राप्तोभाग्यवशादिह ॥ एवंब्रुवत्यांतत्राऽसौकोसलेंद्रःसमागतः ॥ ३८ ॥ दृष्ट्वातामसितापांगींविस्मयंप्रापभूपतिः ॥ उत्तीर्यसरथात्तूर्णंपप्रच्छपरिचारिकाम् ॥ ३९ ॥ केयंबालाविशालाक्षीकस्यपुत्रीवदाऽऽशुमे ॥ एवंपृष्टातुसैरंध्रीतमुवाचशुचिस्मिता ॥ ४० ॥ प्रथमंब्रूहिमेवीरपृच्छामित्वांसुलोचन ॥ कोऽसित्वंकिमिहाऽऽयातःकिंकार्यंवदसांप्रतम् ॥ ४१ ॥ इतिपृष्टस्तुसैरंध्र्यातामुवाचमहीपतिः ॥ कोसलोनामदेशोऽस्तिपृथिव्यांपरमाद्भुतः ॥ ४२ ॥ तस्यपालयिताचाहंवीरसेनाऽभिधःप्रिये ॥ वाहिनीपृष्ठतःकामंसमायातिचतुर्विधा ॥ ४३ ॥ मार्गभ्रमादिहप्राप्तंविद्धिमांकोसलाधिपम् ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ चंद्रसेनसुताराजन्नाम्नामंदोदरीकिल ॥ ४४ ॥ उद्यानेरंतुकामेयंप्राप्ताकमललोचना ॥ श्रुत्वातद्भाषितंराजाप्रत्युवाचप्रसाधिकाम् ॥ ४५ ॥ सैरंध्रिचतुराऽसित्वंराजपुत्रींप्रबोधय ॥ ककुत्स्थवंशजश्चाऽहंराजाऽस्मिचारुलोचने ॥ ४६ ॥ गांधर्वेणविवाहेनपतिंमांकुरुकामिनि ॥ नमेभार्याऽस्तिसुश्रोणिवयसोद्भुतयौवनाम् ॥ ४७ ॥ वांछामिरूपसंपन्नांसुकुलांकामिनींकिल ॥ अथवातेपितामह्यंविधिनादातुमर्हति ॥ ४८ ॥ अनुकूलपतिश्चाऽहंभविष्यामिनसंशयः ॥ महिषउवाच ॥ इत्याऽऽकर्ण्यवचस्तस्यसैरंध्रीप्राहतांतदा ॥ ४९ ॥ प्रहस्यमधुरंवाक्यंकामशास्त्रविशारदा॥ मंदोदरिनृपःप्राप्तःसूर्यवंशसमुद्भवः ॥५०॥ रूपवान्बलवान्कांतोवयसात्वत्समःपुनः ॥ प्रीतिमान्नृपतिर्जातस्त्वयिसुंदरिसर्वथा ॥ ५१ ॥ पितापितेविशालाक्षिपरितप्यतिसर्वथा ॥ विवाहकालंतेज्ञात्वात्वांचवैराग्यसंयुताम् ॥ ५२ ॥ इत्याहाऽस्मान्सनृपतिर्विनिःश्वस्यपुनःपुनः ॥ पुत्रींप्रबोधयंत्वेतांसैरंध्र्यःसेवनेरताः ॥ ५३ ॥ वक्तुंशक्तावयंनत्वांहठधर्मरतांपुनः ॥ भर्तुःशुश्रूषणंस्त्रीणांपरोधर्मोऽब्रवीन्मनुः ॥ ५४ ॥ भर्तारंसेवमानावैनारीस्वर्गमवाप्नुयात् ॥ तस्मात्कुरुविशालाक्षिविवाहंविधिपूर्वकम् ॥ ५५ ॥ मंदोदर्युवाच ॥ नाऽहंपतिंकरिष्यामिचरिष्येतपमद्भुतम् ॥ निवारयनृपंबालेकिंमांपश्यतिनिस्त्रपः ॥ ५६ ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ दुर्जयोदेविकामोऽसौकालस्तुदुरतिक्रमः ॥ तस्मान्मेवचनंपथ्यंकर्तुमर्हसिसुंदरि ॥ ५७ ॥ अन्यथाव्यसनंनूनमापतेदितिनिश्चयः ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वाकन्योवाचाथतांसखीम् ॥ ५८ ॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ तपंतुतपसासहेतिद्विरूपकोशः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ ॥ सप्ततिश्लोकवर्यैस्तुमंदोदर्याःकथानकम् ॥ समाप्यमहिषस्याऽपिवधएवाऽत्रकथ्य ॥ १ ॥ तस्मिन्राजनिगतेऽनंतरंजातंवृत्तमाह । तस्यास्तुभगिनीति ॥ तस्यामंदोदर्याः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ विटंधूर्तं ॥ सामंदोदरी ॥ ४ ॥ मद्राधिपंमद्रराजानम् ॥ ५ ॥ तत्परस्तद्

यद्यद्भवेत्तद्भवतुदैवयोगादसंशयम् ॥ नविवाहंकरिष्येऽहंसर्वथापरिचारिके ॥५९॥ महिषउवाच ॥ इतितस्यास्तुनिर्बंधंज्ञात्वाप्राहनृपंपुनः ॥ गच्छराजन्य थाकामंनेयमिच्छतिसत्पतिम् ॥ ६० ॥ नृपस्तुतद्वचःश्रुत्वानिर्गतःसहसेनया ॥ कोशलान्विमनाभूत्वाकामिनींप्रतिनिःस्पृहः ॥ ६१ ॥ इतिश्रीदेवीभाग वतेमहापुराणेपंचमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ छ ॥ महिषउवाच ॥ तस्यास्तुभगिनीकन्यानाम्नाचेंदुमतीशुभा ॥ विवाहयोग्यासंजातासुरूपाऽव रजायदा ॥ १ ॥ तस्याविवाहःसंवृत्तःसंजातश्चस्वयंवरः ॥ राजानोबहुदेशीयाःसंगतास्तत्रमंडपे ॥ २ ॥ तयावृतोनृपःकश्चिद्बलवान्नृपसंयुतः ॥ कुलशी लसमायुक्तःसर्वलक्षणसंयुतः ॥ ३ ॥ तदाकामातुराजाताविटंवीक्ष्यनृपंतुसा ॥ चकमेदैवयोगात्तुशठंचातुर्यभूषितम् ॥ ४ ॥ पितरंप्राहतन्वंगीविवाहं कुरुमेपितः ॥ इच्छामेऽद्यसमुद्भूताद्दाम्नाद्राधिपंत्विह ॥ ५ ॥ चंद्रसेनोऽपितच्छ्रुत्वापुत्र्यायद्भाषितंरहः ॥ प्रसन्नेनैवमनसातत्कार्येतत्परोऽभवत् ॥६॥ त माहूयनृपंगेहेविवाहविधिनाददौ॥ कन्यांमंदोदरींतस्मैपारिबर्हंतथाबहु ॥ ७ ॥ चारुदेष्णोपितांप्राप्यसुंदरींमुदितोऽभवत् ॥ जगामस्वगृहंतुष्टोराजाऽपि सहितः स्त्रिया ॥ ८ ॥ रेमेनृपतिशार्दूलःकामिन्याबहुवासरान् ॥ कदाचिद्दासपत्न्यासरममाणोरहःकिल ॥ ९ ॥ सैरंध्र्याकथितंतस्यैतयादृष्टःपतिस्तथा॥उ पालंभंददौतस्मैस्मितपूर्वंरुषान्विता ॥१०॥ कदाचिदपिसामान्यांरहोरूपवतींनृपः ॥ क्रीडयल्लालयन्दृष्टःखेदंप्रापतदैवसा ॥ ११ ॥ नज्ञातोऽयंशठःपूर्वंय दादृष्टःस्वयंवरे ॥ किंकृतंतुमयामोहाद्वंचिताऽहंनृपेणह ॥ १२ ॥ किंकरोम्यद्यसंतापंनिर्लज्जेनिर्घृणेशठे ॥ काप्रीतिरीदृशेपत्यौधिगद्यममजीवितम्॥१३॥ अद्यप्रभृतिसंसारेसुखंत्यक्तंमयाखलु ॥ पतिसंभोगजंसर्वंसंतोषोऽद्यमयाकृतः ॥ १४ ॥ अकर्तव्यंकृतंकार्यंतज्जातंदुःखदंमम ॥ देहत्यागःक्रियतेचेद्ध त्याऽतीवदुरत्यया ॥ १५ ॥ पितृगेहंव्रजाम्याशुतत्राऽपिनसुखंभवेत् ॥ हास्ययोग्यासखीनांतुभवेयंनाऽत्रसंशयः ॥ १६ ॥ तस्मादत्रैवसंवासोवैराग्य युतयामया ॥ कर्तव्यःकालयोगेनत्यक्त्वाकामसुखंपुनः ॥ १७ ॥ महिषउवाच ॥ इतिसंचिंत्यसानारीदुःखशोकपरायणा ॥ स्थितापतिगृहंत्यक्त्वासु खंसंसारजंततः ॥ १८ ॥ तस्मात्त्वमपिकल्याणिमामनादृत्यभूपतिम् ॥ अन्यंकापुरुषंमंदंकामार्तासंश्रयिष्यसि ॥ १९ ॥

द्योगवान् ॥ ६ ॥ तंमद्राधिपम् ॥ ७ ॥ चारुदेष्णोराजामद्राधिपस्तांप्राप्यतयास्त्रियासहितइत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ पति गृहंपतिशयनाऽऽगारमित्यर्थः ॥ संसारजंसुखंचहित्वेत्यर्थः ॥ १८ ॥ तस्मादिति ॥ मंदोदरीवत्त्वमपीत्यर्थः ॥ कापुरुषंकुत्सितपुरुषम् ॥ १९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २० ॥ इत्थंविनोदार्थंमंदोदरीकथाभगवत्यापृष्टासाश्रुताऽधुनाविनोदंविहाययथार्थंभाषणमाह । मंदात्मन्निति ॥ अहंनप्राकृताऽस्मि किंतुसर्वेश्वरी ॥२१॥ किमर्थंतर्हिअत्राऽऽगतासीति चेत्तत्राह । यदायदेति ॥ २२ ॥ तदेवस्पष्टयति । अरूपायाइति ॥ अजन्मायाश्चेत्यत्रडाबुभाभ्यामन्यतरस्यामितिडाप् ॥२३॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

वचनंकुरुमेतथ्यंनारीणांपरमंहितम् ॥ अकृत्वापरमंशोकंलप्स्यसेनाऽत्रसंशयः ॥ २० ॥ देव्युवाच ॥ मंदात्मन्गच्छपातालंयुद्धंवाकुरुसांप्रतम् ॥ हत्वा त्वामसुरान्सर्वान्गमिष्यामियथासुखम् ॥ २१ ॥ यदायदाहिसाधूनांदुःखंभवतिदानव ॥ तदातेषांचरक्षार्थंदेहंसंधारयाम्यहम् ॥ २२ ॥ अरूपायाश्चमे रूपमजन्मायाश्चजन्मच ॥ सुराणांरक्षणार्थायविद्धिदैत्यविनिश्चितम् ॥ २३ ॥ सत्यंब्रवीमिजानीहिप्रार्थिताऽहंसुरैःकिल ॥ त्वद्वधार्थंहयारेत्वांहत्वास्था स्यामिनिश्चला ॥ २४ ॥ तस्माद्युध्यस्ववागच्छपातालमसुरालयम् ॥ सर्वथात्वांहनिष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥२५॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तःसतया देव्याधनुरादायदानवः ॥ युद्धकामःस्थितस्तत्रसंग्रामांगणभूमिषु ॥२६॥ मुमोचतरसाबाणान्कर्णाऽऽकृष्टाञ्छिलाशितान् ॥ देवीचिच्छेदतान्बाणैःक्रोधा न्मुक्तैरयोमुखैः ॥ २७ ॥ तयोःपरस्परंयुद्धंसंबभूवभयप्रदम् ॥ देवानांदानवानांचपरस्परजयैषिणाम् ॥२८॥ मध्येदुर्धरआगत्यमुमोचचशिलीमुखान् ॥ देवींप्रतिविषासक्तान्कोपयन्नतिदारुणान् ॥ २९ ॥ ततोभगवतीक्रुद्धातंजघानशितैःशरैः ॥ दुर्धरस्तुपपातोर्व्यांगतासुर्गिरिशृंगवत् ॥ ३० ॥ तंतथानिहतं दृष्ट्वात्रिनेत्रःपरमाऽस्त्रवित् ॥ आगत्यसप्तभिर्बाणैर्जघानपरमेश्वरीम् ॥ ३१ ॥ अनागतांस्तुचिच्छेददेवीतान्विशिखैःशरान् ॥ त्रिशूलेनत्रिनेत्रंतुजघानजग दंबिका ॥ ३२ ॥ अंधकस्त्वाजगामाशुहतंदृष्ट्वात्रिलोचनम् ॥ गदयालोहमय्याऽऽशुसिंहंविव्याधमस्तके ॥ ३३ ॥ सिंहस्तुनखघातेनतंहत्वाबलवत्त रम् ॥ चखादतरसामांसमंधकस्यरुषान्वितः ॥ ३४ ॥ तान्रणेनिहतान्वीक्ष्यदानवोविस्मयंगतः ॥ चिक्षेपतरसाबाणानतितीक्ष्णाञ्छिलाशितान् ॥३५॥ द्विधाचक्रेशरान्देवीतानप्राप्ताञ्छिलीमुखैः ॥ गदयाताडयामासदैत्यंवक्षसिचांबिका ॥ ३६ ॥ सगदाऽभिहतोमूर्छामवापाऽमरबाधकः ॥ विषह्यपीडांपा पात्मापुनरागत्यसत्वरः ॥ ३७ ॥ जघानगदयासिंहंमूर्ध्निक्रोधसमन्वितः ॥ सिंहोऽपिनखघातेनतंददारमहाऽसुरम् ॥ ३८ ॥ विहायपौरुषंरूपंसोऽपिसिंहो बभूवह ॥ नखैर्विदारयामासदेवीसिंहंमदोत्कटम् ॥३९॥ तंचकेसरिणंवीक्ष्यदेवीक्रुद्धाह्ययोमुखैः ॥ शरैरवाकिरत्तीक्ष्णैःक्रूरैराशीविषैरिव॥४०॥ त्यक्त्वा सहरिरूपंतुगजोभूत्वामदस्रवः ॥ शैलशृंगंकरेकृत्वाचिक्षेपचंडिकांप्रति ॥ ४१ ॥ आगच्छंतंगिरेःशृंगंदेवीबाणैःशिलाशितैः ॥ चकारतिलशःखंडाञ्जहा सजगदंबिका ॥ ४२ ॥ उत्पत्यचतदासिंहस्तस्यमूर्ध्निव्यवस्थितः ॥ नखैर्विदारयामासमहिषंगजरूपिणम् ॥ ४३ ॥

त्रिनेत्रोदैत्यः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥३३॥३४॥ दानवोविस्मयंगतःसचमहिषासुरः ॥ ३५ ॥ दैत्यंवक्षसीति ॥ महिषाऽसुरमित्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ करेकृत्वेति ॥ शुंडायांगृहीत्वेत्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अष्टापदीति ॥ अष्टापदीचंद्रमल्लाशरभेकर्कटेपुमानितिमेदिनीकोशादष्टापदीशरभः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ तयोर्देव्यष्टापदिनोः पुनस्तद्रूपंविहायमाहिषंरूपमास्थायशृंगाभ्यांप्राहरत् ॥ ४६ ॥

विहायगजरूपंचबभूवाऽष्टापदीतथा ॥ हंतुकामोहरिंकोपाद्दारुणोबलवत्तरः ॥ ४४ ॥ तंवीक्ष्यशरभंदेवीखड्गेनचरुषान्विता ॥ उत्तमांगेजघानाऽऽशुसो ऽपितांप्राहरत्तदा ॥ ४५ ॥ तयोःपरस्परंयुद्धंबभूवातिभयप्रदम् ॥ माहिषंरूपमास्थायशृंगाभ्यांप्राहरत्तदा ॥ ४६ ॥ पुच्छप्रभ्रमणेनाशुशृंगाऽऽघा तैर्महासुरः ॥ ताडयामासतन्वंगींघोररूपोभयानकः ॥ ४७ ॥ पुच्छेनपर्वताञ्छृंगेगृहीत्वाभ्रामयन्बलात् ॥ प्रेषयामासपापात्माप्रहसन्परयामुदा ॥ ४८ ॥ तामुवाचबलोन्मत्तस्तिष्ठदेविरणांगणे ॥ अद्याहंत्वांहनिष्यामिरूपयौवनभूषिताम् ॥ ४९ ॥ मूर्खाऽसिमदमत्ताऽद्ययन्मयासहसंगरम् ॥ करोषिमोहि ताऽतीवमृषाबलवतीखरा ॥ ५० ॥ हत्वात्वांनिहनिष्यामिदेवान्कपटपंडितान् ॥ येनारींपुरतःकृत्वाजेतुमिच्छंतिमांशठाः ॥ ५१ ॥ देव्युवाच ॥ मा गर्वंकुरुमंदात्मंस्तिष्ठतिष्ठरणांगणे ॥ करिष्यामिनिरातंकान्हत्वात्वांसुरसत्तमान् ॥ ५२ ॥ पीत्वाऽद्यमाधवींमिष्टांशातयामिरणेऽधम ॥ देवानांदुःखदंपा पंमुनीनांभयकारकम् ॥ ५३ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाचषकंहैमंगृहीत्वासुरयायुतम् ॥ पपौपुनःपुनःक्रोधाद्धंतुकामामहासुरम् ॥ ५४ ॥ पीत्वा द्राक्षासमंमिष्टंशूलमादायसत्वरा ॥ दुद्रावदानवंदेवीहर्षयन्देवतागणान् ॥ ५५ ॥ देवास्तांतुष्टुवुःप्रेम्णाचक्रुःकुसुमवर्षणम् ॥ जयजीवेतितेप्रोचुर्दुंदुभीनां चनिःस्वनैः ॥ ५६ ॥ ऋषयःसिद्धगंधर्वाःपिशाचोरगचारणाः ॥ किन्नराःप्रेक्ष्यसंग्रामंमुदितागगनेस्थिताः ॥ ५७ ॥ सोऽपिनानाविधान्देहान्कृत्वाकृत्वा पुनःपुनः ॥ मायामयाञ्जघानाजौदेवींकपटपंडितः ॥ ५८ ॥ चंडिकाऽपिचतंपापंत्रिशूलेनबलाद्धृदि ॥ ताडयामासतीक्ष्णेनक्रोधादरुणलोचना ॥ ५९ ॥ ताडितोऽसौपपातोर्व्यांमूर्च्छामापमुहूर्तकम् ॥ पुनरुत्थायचामुंडांपद्भ्यांविगादताडयत् ॥ ६० ॥ विनिहत्यपदाघातैर्जहासचमुहुर्मुहुः ॥ रुरावदारुणंश ब्दंदेवानांभयकारकम् ॥ ६१ ॥ ततोदेवीसहस्रारंसुनाभंचक्रमुत्तमम् ॥ करेकृत्वाजगादोच्चैःसंस्थितंमहिषासुरम् ॥ ६२ ॥ पश्यचक्रंमदांधाऽद्यतवकं ठनिकृंतनम् ॥ क्षणमात्रंस्थिरोभूत्वायमलोकंव्रजाऽधुना ॥६३॥ इत्युक्त्वादारुणंचक्रंमुमोचजगदंबिका ॥ शिरश्छिन्नंरथांगेनदानवस्यतदारणे ॥६४॥ सुस्रावरुधिरंचोष्णंकंठनालाद्गिरेर्यथा ॥ गैरिकाद्यरुणंप्रौढंप्रवाहमिवनैर्झरम् ॥ ६५ ॥ कबंधस्तस्यदैत्यस्यभ्रमन्वैपतितःक्षितौ ॥ जयशब्दश्चदेवानां बभूवसुखवर्धनः ॥ ६६ ॥ सिंहस्त्वतिबलस्तत्रपलायनपरानथ ॥ दानवान्भक्षयामासक्षुधार्तइवसंगरे ॥ ६७ ॥

॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ माधवींसुराम् ॥ ५३ ॥ हंतुकामांमहाऽसुरमित्यस्याऽयमभिप्रायः ॥ महिषाऽसुरस्यकालिकापुराणोक्तरीत्याशिवांशत्वात्तस्यचबुद्धिपुरः सरंहननाऽयोग्यत्वादेवंमदिरांपीत्वातद्बधार्थंदेव्यामदांधत्वंस्वीकृतमिति ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ननुमहिषवधोमार्कंडेयपुराणेऽन्यथोक्तोदेवीभागवतेचाऽन्यथोक्तस्तत्राऽयुक्तम् ॥ पुराकल्पेयथावृत्तंप्रतिकल्पंतथैवच ॥ प्रवर्ततेस्वयंदेवीदैत्यानांनाशनायवै ॥ तथैवजा
यतेयुद्धंतथैवत्रिदशांगमइतिरामवृत्तांतवर्णनेकालिकापुराणादितिचेन्न ॥ तत्रवचनेप्रायशइत्यध्याहारेणदोषाऽभावात् ॥ अतएवहरिवंशादिषूत्पत्तिक्रमभेदोऽपिनदोषाधायकइति ॥ ७० ॥
इति श्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ ॥ अर्धाऽधिकैस्त्रिचत्वारिंशत्सुपद्यैरनंतरम् ॥ देवैःकृतामहादेव्याःस्तुतिरित्येतदुच्यते ॥ १ ॥ स्तोतुकामादे
वाआगत्यकिंचक्रुस्तदुच्यते । अथेति ॥ १ ॥ तत्रप्रथमतः सृष्टिस्थितिसंहारकर्तृत्वेनसर्वेश्वरत्वंभगवत्याःसहेतुकंवर्णयंति । ब्रह्मेति ॥ हेभगवतियस्माद्ब्रह्मातवैवशक्त्यायुक्तोजगत्सृजति ॥
तथाविष्णुरिदंजगदवतिपालयति ॥ तथांतकालेप्रलयकालेतवैवशक्त्यायुक्तोमहेशःशिवोजगत्संहरते ॥ यस्माच्चतयाशक्त्याविहीनास्तेब्रह्मादयोजगत्सृष्टिस्थितिनाशेषुनेशानसमर्थास्तस्मा
दन्वयव्यतिरेकात्त्वमेवजगतःस्थितिनाशकर्त्री ॥ इदंसृष्टिकर्तृत्वस्याप्युपलक्षणम् ॥ त्वमेवसर्वेश्वरीतिभावः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ काऽसित्वंमहादेवि ॥ साब्रवीदहंब्रह्मरूपिणी मत्तःप्रकृति
पुरुषात्मकंजगत् ॥ मायावाएषानारसिंहीसर्वमिदंसृजति सर्वमिदंरक्षति सर्वमिदंसंहरतीत्यादिः ॥ सूतसंहितायांच ॥ यस्तुब्रह्मत्वमापन्नःशिवोयोमुनिसत्तमाः ॥ सातस्याऽपिभवेच्छक्ति
स्तयाहीनोनिरर्थकः ॥ यस्तुविष्णुत्वमापन्नःशिवोयोमुनिसत्तमाः ॥ सातस्याऽपिभवेच्छक्तिस्तयाहीनोनिरर्थकः ॥ यस्तुरुद्रत्वमापन्नःशिवोयोमुनिसत्तमाः ॥ सातस्याऽपिभवेच्छक्तिस्त

मृतेचंमहिषेक्रूरेदानवाभयपीडिताः ॥ मृतशेषाश्चयेकेचित्पातालंतेययुर्नृप ॥६८॥ आनंदंपरमंजग्मुर्देवास्तस्मिन्निपातिते ॥ मुनयोमानवाश्चैवयेचान्येसा
धवःक्षितौ ॥ ६९ ॥ चंडिकाऽपिरणंत्यक्त्वाशुभेदेशेऽथसंस्थिता ॥ देवास्तत्राऽऽययुःशीघ्रंस्तोतुकामाःसुखप्रदाम् ॥ ७० ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुरा
णेपंचमस्कंधेमहिषाऽसुरवधोनामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥छ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ अथप्रमुदिताःसर्वेदेवाइंद्रपुरोगमाः ॥ महिषंनिहतंदृष्ट्वातुष्टुवुर्जगदंबि
काम् ॥ १ ॥ देवाऊचुः ॥ ब्रह्मासृजत्यवतिविष्णुरिदंमहेशःशक्त्यातवैवहरतेननुचांतकाले ॥ ईशानतेऽपिचभवंतितयाविहीनास्तस्मात्त्वमेवजगतःस्थिति
नाशकर्त्री ॥ २ ॥ कीर्तिर्मतिःस्मृतिगतीकरुणादयात्वंश्रद्धाधृतिश्चवसुधाकमलाजयाच ॥ पुष्टिःकलाऽथविजयागिरिजाजयात्वंतुष्टिःप्रमात्वमसिबुद्धिरुमा
रमाच ॥३॥ विद्याक्षमाजगतिकांतिरपीहमेधासर्वत्वमेवविदिताभुवनत्रयेऽस्मिन्॥आभिर्विनातवतुशक्तिभिराशुकर्तुंकोवाक्षमःसकललोकनिवासभूमे ॥४॥
त्वंधारणाननुनचेदसिकूर्मनागौधर्तुंक्षमौकथमिलामपितौभवेताम् ॥ पृथ्वीनचेत्त्वमसिवागगनेकथंस्थास्यत्येतदंबनिखिलंबहुभारयुक्तम् ॥ ५ ॥

याहीनोनिरर्थकइति ॥ २ ॥ यस्मात्त्वंमहाकारणस्वरूपातस्मात्सर्वकार्यरूपाऽपिजातैव ॥ कार्यस्यकारणानन्यत्वादितिवदन्मुख्यानिरूपाणिविभूतिस्थानापन्नान्युपासनार्थमनुवदति ।
कीर्तिरिति ॥ स्मृतिगतीइतिद्वंद्वः ॥ अजपाजपामंत्ररूपेत्यर्थः ॥ गिरिजारुद्रशक्तिः ॥ उमाईश्वरशक्तिः ॥ ३ ॥ किंपुनरेतावत्स्वरूपैवाऽहमस्मीतिचेत्तत्राह । सर्वत्वमेवविदितेति ॥ सर्व
कारणरूपायास्तवकार्यमात्रस्वरूपत्वात्सर्वात्मकत्वमस्त्येवेत्यर्थः । ननुतदैतच्छक्तिस्वरूपत्वमेवप्रथमतःकिमितिप्रतिपादितामितिचेदाभिर्विनाव्यवहारस्याऽसंभवादासांमुख्यत्वेनोपासकानां
विभूतिस्वरूपप्रदर्शनार्थंप्रतिपादितामित्यभिप्रायेणाह । आभिर्विनेति ॥ कर्तुंव्यवहारमित्यर्थः ॥ सकललोकनिवासभूमेइतिदेवीसंबोधनम् ॥ सर्वाऽधिष्ठानरूपिणीत्यर्थः ॥ ४ ॥ अधुना
धारणाशक्तिरूपांविभूतिंवर्णयति। त्वंधारणाननुनचेदिति ॥ हेभगवतित्वंधारणाशक्तिरूपाननुनिश्चयेननचेदसितदाकूर्मनागाविलांपृथ्वींधर्तुंकथंक्षमौभवेतांनकथमपीत्यर्थः ॥ तथात्वंपृथ्वी
नचेदसितदैतज्जगद्बहुभारयुक्तंगगनेंतरिक्षेकथंस्थास्यति ॥ नकथमपीत्यर्थः ॥ तथाचसर्वाधारशक्तिरूपात्वमसीतिभावः॥ तथाचश्रुतिः ॥ अहंरुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुतविश्वदेवैः।
अहंमित्रावरुणोभाविभर्मीत्यादिः ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इत्थंसर्वेश्वर्यात्वयिसत्यांयेऽन्येऽन्यदेवताउपासते ॥ तेतवमायागुणैर्विमूढाएवेत्याह । येवास्तुवंतीति ॥ वाशब्दस्त्वर्थकः ॥ येतुमनुजाअमरांश्चतुर्मुखविष्णुरुद्रांस्तथाशुभ्रांशुश्चंद्रस्तत्प्रभृतीन्स्तुवंति ॥ तेतवमायागुणैर्विमूढाएवमोहिताएव ॥ नस्वोपास्यदेवतांकल्याणदायिनींमुख्यत्वेनाराध्यांजानंतीतिभावः ॥ किंत्वांशक्तिरूपामृतेविहायकार्येकार्यविषयेतेदेवाःप्रभवंति समर्थाभवंति ॥ यतोमूढैराराध्यंते किंतुनैवभवंति त्वच्छक्तियुक्ताएवतेभक्तकार्यंकर्तुंक्षमास्ततस्त्वामेवकुतोनभजंतीतिभावः ॥ तदुक्तंशिवपुराणेउमासंहितायाम् ॥ येनस्तुवंतिदेवेशींसर्वकारणकारणाम् ॥ मायागुणैर्मोहिताःस्युर्हतभाग्यानसंशयइति ॥ ६ ॥ एवमन्यदेवतोपासकोपहासंकृत्वाश्रोत्रियोपहासमाह । येजुह्वतिप्रविततइति ॥ हेभगवति अथानंतरंयप्रविततेविस्तृतेयज्ञे सुरानिंद्रादीन्देवान्समधिकृत्योद्दिश्यसमृद्धंविपुलंहविर्जुह्वतितेऽपिअल्पधियएव ॥ यतस्तस्मिन्यज्ञेत्वंस्वाहारूपानचेदसिनप्रयुज्यसेचेत्तदातेदेवाअद्धासाक्षान्नद्धुतंहविरापुःप्राप्नुयुः किं नैवप्राप्नुयुः ॥ ततस्त्वदधीनमेवतेषांजीवितमिति ॥ ततस्तस्माद्धेतोस्त्वामेवमूढाःकिंनयजंतिकुतोनयजंतीत्यर्थः ॥ यतोनयजंतिततोऽल्पधियएवतेइतिभावः ॥ तथाचब्रह्मांडपुराणे लालितोपाख्याने ॥ अश्रुतासःश्रुतासश्चयज्वानोयेऽप्ययज्वनः ॥ स्वर्यंतोनापेक्षंतेइंद्रमग्निंचयेविदुः ॥ सिकताइवसंयांतिराश्मिभिःसमुदीरिताः ॥ अस्माल्लोकादमुष्माच्चेत्याहचारण्यकश्रु

येवास्तुवंतिमनुजाअमरान्विमूढामायागुणैस्तवचतुर्मुखविष्णुरुद्रान् ॥ शुभ्रांशुवह्नियमवायुगणेशमुख्यान्किंत्वामृतेजननितेप्रभवंतिकार्ये ॥ ॥ ६ ॥ येजुह्वतिप्रविततेऽल्पधियोंवयज्ञेवह्नौसुरान्समधिकृत्यहविःसमृद्धम् ॥ स्वाहानचेत्त्वमसितेकथमापुरद्धात्वामेवकिंनहियजंतिततोहिमूढाः ॥ ७ ॥ भोगप्रदाऽसिभवतीहचराचराणांस्वांशैर्ददासिखलुजीवनमेवनित्यम् ॥ स्वीयान्सुराञ्जननिपोषयसीहयद्वत्तद्वत्परानपिचपालयसीति हेतोः ॥ ८ ॥ मातःस्वयंविरचितान्विपिनेविनोदाद्ध्यान्पलाशरहितांश्चकटूंश्चवृक्षान् ॥ नोच्छेदयंतिपुरुषानिपुणाःकथंचित्तस्मात्त्वमप्यतितरांपरिपासिदैत्यान् ॥ ९ ॥

तिरिति ॥ काठकेपि ॥ प्लवाह्येतेदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्मेति ॥ ७ ॥ ननुतेषांदेवानांभोगप्रदत्वाल्लोकास्तानेवभजंतीतिचेत्तत्राह । भोगप्रदासीति ॥ हेभगवतिभवतित्वमेवचराचराणांभोगप्रदासि ॥ यतःस्वांशैःसप्तप्रकृतिविकृतिरूपैः ॥ षोडशविकारैश्चनित्यंप्राणिनांजीवनंप्राणनंददासिप्रारब्धकर्मभोगार्थम् ॥ नहितद्विरहितानांजीवहीनानांप्रारब्धभोगःसंभवति तस्मात्प्रारब्धकर्मभोगानुसारेणजीवनदातृत्वात्त्वमेवभोगप्रदासीत्यर्थः ॥ तत्रहेतुमप्याह । स्वीयानिति ॥ यथास्वीयान्सुरान्पोषयसि ॥ इहप्रपंचेतद्वत्परानसुरानपिभोगजीवितदानेनाऽपिपालयसीतिहेतोस्त्वमेवभोगप्रदासीत्यर्थः ॥ नहिपूर्वोक्तदेवानांभोगप्रदत्वेतेदेवाःस्वशत्रुभ्योदैत्येभ्योऽपिभोगंददतीतियुज्यते ॥ दैत्यभोगप्रणाशार्थमेवतेषामुद्योगात्तस्मात्तद्देवेभ्योव्यतिरिक्तात्वमेवभोगप्रदासीतिभावः ॥ ८ ॥ ननुदुष्टान्दैत्यान्किमित्यहंपालयामीतिचेत्तत्राह । मातःस्वयमिति ॥ हेभगवतिमातर्यस्मात्कारणाद्विपिनेऽरण्येविनोदाल्लीलयावंध्यानफलान्पलाशरहितान्पत्ररहितान् कटूंश्चवृक्षान्स्वयंविरचितानुत्पादितान्निपुणाःपंडिताःपुरुषानोच्छेदयंतिकथंचित्कथमपि ॥ तस्मात्त्वमपितद्वद्देवतेषांनिकृष्टकर्मभिस्तानुत्पाद्यदैत्यान्नोच्छेदयासि किंतुपालयस्येवेत्यर्थः ॥ तदुक्तं विषवृक्षोपिसंवर्ध्यस्वयंछेत्तुमसांप्रतमिति ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नन्वेवंचेत्तेषामुच्छेदोऽनुचितएवेतिकथंमयातेनिरंतरंहन्यंतेइतिचेत्तत्राह । यत्त्वंतुहंसीति ॥ हेभगवति त्वंकरुणारसमाददानैवदेहांतरेपिस्वर्गादिष्वपिदेवांगनानांसुरतरूपासुकेलिषुक्रीडा सुमतिर्येषामरातीनांशत्रूणांतानरातीन्शरैरणमूर्ध्निहंसि यत्तत्तेचरित्रमिदमनुचितंन । किंत्वीप्सितपूरणायतेषांमनोरथपूरणायैव नद्वेषार्थमित्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ यद्यहंदेवानांभोगेच्छून्दैत्यान्नहनिष्यामितदातेषांकथंतद्भोगसिद्धिः ॥ नहितेतामसप्रकृतयोयागादिभिःस्वर्गंगमिष्यंति ॥ नचतद्विनातत्सुखंप्राप्स्यंति तस्मादेतान्मच्छस्त्रपूतान्कृत्वास्वर्गंप्रापयिष्यामीतिमनीषयातेषांकल्याणार्थमेववधोनान्यप्रयोजनइति ॥ तदुक्तम् ॥ लालनेताडनेमातुर्नाऽकारुण्यंयथाऽर्भके ॥ तद्वदेवमहेशस्यनियंतुर्गुणदोषयोरिति ॥ १० ॥ ननुस्वर्गसुखार्थमेवयदितानहंहन्मितर्हितावन्मात्रंकार्यंममेच्छयाऽपिभवितुमर्हति॥ममेच्छयैवसर्वसृष्टेर्जातत्वात्तथाचकिमर्थंदैत्यवधफल्गुकार्यार्थमवतारग्रहणमितिचेत्तत्राह । चित्रंत्वमीइति॥ हेजननियेषांकृतेयेषांदैत्यानामर्थेतेतवदेहनिबंधनंदेहग्रहणंभवति॥ तेदनुजादैत्यास्त्वच्चिंतितेनत्वदिच्छयाअसुभिःप्राणैरहितानसंतीतियत्तच्चित्रमेवाऽऽश्चर्यमेवत्वदिच्छयैवतेषांमरणंस्वर्गप्राप्तिश्चाऽनायासेनैवापेक्षिता ॥ नतुतदर्थमवताराऽपेक्षाऽस्ति ॥ तदेतत्कुतोनजातमित्याश्चर्यमेवाऽस्माकंभाति ॥ तर्हिममाऽवतारग्रहणेकोहेतुर्भवद्भिर्योजितइतिचेत्क्रीडारसएवाऽत्रहेतुर्नान्यतरः ॥ स्वार्थेतरप् ॥

**यत्त्वंतुहंसिरणमूर्ध्निशरैररातीन्देवांगनासुरतकेलिमतीन्विदित्वा ॥ देहांतरेऽपिकरुणारसमाददानातत्तेचरित्रमिदमीप्सितपूरणाय ॥ १० ॥ चित्रंत्वमीयदसुभीरहितानसंतित्वच्चिंतितेनदनुजाःप्रथितप्रभावाः ॥ येषांकृतेजननिदेहनिबंधनंतेक्रीडारसस्तवनचाऽन्यतरोऽत्रहेतुः ॥ ११ ॥ प्राप्तेकलावहहदुष्टतरेचकालेनत्वांभजंतिमनुजाननुवंचितास्ते ॥ धूर्तैःपुराणचतुरैर्हरिशंकराणांसेवापराश्चविहितास्तवनिर्मितानाम् ॥ १२ ॥ ज्ञात्वासुरांस्तववशानसुरार्दितांश्चयेवैभजंतिभुविभावयुताविभग्नान् ॥ धृत्वाकरेसुविमलंखलुदीपकंतेकूपेपतंतिमनुजाविजलेऽतिघोरे ॥ १३ ॥ विद्यात्वमेवसुखदाऽसुखदाऽप्यविद्यामातस्त्वमेवजननार्तिहरानराणाम् ॥ मोक्षार्थिभिस्तुकलिताकिलमंदधीभिर्नाऽऽराधिताजननिभोगपरैस्तथाऽज्ञैः ॥ १४ ॥ ब्रह्माहरश्चहरिरप्यनिशंशरण्यंपादांबुजंतवभजंतिसुरास्तथान्ये ॥ तद्वैनयेऽल्पमतयोमनसाभजंतिभ्रांताःपतंतिसततंभवसागरेते ॥ १५ ॥**

नान्यइत्यर्थः ॥ अवतारंगृहीत्वानानालीलाः कर्तव्यास्तल्लीलाकीर्तनेनश्रवणेनच भक्तिवृद्धिःपवित्रताचभविष्यतीतिक्रीडारसएवाऽत्रहेतुरितिभावः ॥ तदुक्तंशिवपुराणेउमासंहितायाम् यदिच्छावैभवंसर्वंतस्यादेहग्रहःस्मृतः ॥ लीलयासाऽपिभक्तानांगुणवर्णनहेतवे ॥ साऽपिलीलाऽपीत्यर्थः ॥ देहग्रहोऽवतारः ॥ ११ ॥ एवमेतादृशवैभवांत्वांजनानभजंतियतोधूर्तैस्तेवंचिताइतिजनानाक्रोशति। प्राप्तेकलाविति ॥ दुष्टेकलौप्राप्तेसतिसाधनांतररहितस्याऽतिपापिनोऽपि स्मरणमात्रेणचतुर्विधपुरुषार्थदांत्वांभगवतींयेनभजंतिते धूर्तैः पुराणचतुरैर्ननुनिश्चयेनवंचिताः ॥ वंचयित्वाचतवनिर्मितानांत्वयोत्पादितानांहरिशंकरादीनांसर्वापराश्चविहिता इत्यहहाहोलोकस्यभाग्यमित्थमस्तीतिभावः ॥ १२ ॥ पुनरपिजनानाक्रोशति । ज्ञात्वेति ॥ तववशांस्त्वदधीनानसुरार्दितान्दैत्यपीडितान्विभग्नान्खंडिताभिमानान् एतादृशान्देवान्ज्ञात्वाऽपियेभजंतीत्यन्वयः ॥ दीपकंदीपमित्यर्थः ॥ अन्योऽर्थःस्पष्टः ॥ तदुक्तमुमासंहितायाम् ॥ नभजंतिमहादेवींकरुणारससागराम् ॥ अंधकूपेपतंत्येतेघोरेसंसाररूपिणीति ॥ १३ ॥ ननुतर्हिकैरहमाराधिताऽस्मीतिचेत्तत्राहुः । विद्यात्वमेवेति ॥ असुखदाअविद्याऽपिहेमातस्त्वमेवनराणांजननाऽऽर्तिहराऽपित्वमेव ॥ सर्वस्वरूपात्वमेवाऽसीत्यर्थः ॥ सैतादृशीत्वंमोक्षार्थिभिर्मुनिभिः कलिताऽसिआराधितासि ॥ अज्ञैर्नाऽऽराधितासीत्यार्थिकार्यकथनम् ॥१४॥ तर्हियेमांनभजंतितेषांकागतिर्भवतीतिचेत्तत्राह। ब्रह्माहरश्चेति ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पुनर्जनानाक्रोशति । चंडीति ॥ चडिकोपइतिधातोश्चंडीतिरूपंनिष्पन्नम् ॥ सकलजगद्भयंकरंब्रह्ममायाविशिष्टंचंडीपदवाच्यम् ॥ ब्रह्मणोभयंकरत्वंच भीषास्माद्वातःपवतइतिश्रुतौ ॥ महद्भयंवज्रमुद्यतमितिश्रुतौकंपनादित्यधिकरणेचवर्णितम्॥ त्वदंघ्रिजलजंतवांघ्रिकमलंतस्मादुत्थितंरजःपंचमहाभूतरूपम्।अन्यःस्पष्टोर्थः॥१६॥इयंयायथाकथंचिदस्माभिःस्तुतिःक्रियतेसासतीवाऽसतीवेतिनवयंविद्मोयतोवाग्देवतयात्वयायथामुखेस्थितयाप्रेर्यतेतथाकुर्मइत्याह । वाग्देवतेति ॥ हेदेविसुराऽसुराणांवाग्देवतात्वमसि ॥ कुतइतिचेद्यस्मात्तेषांमुखेयदैवयदाऽपित्वंचेन्नैववससिवासंनैवकरोषितदातेऽमरवराउपलक्षणतयादैत्याअपिवक्तुंशक्तानैवप्रभवंतितस्मादित्यर्थः ॥ केयंव्याप्तिर्गृहीतेतिचेद्यस्मान्मनुजास्तद्विहीनावाग्देवताविहीनामूकामुखेसत्यापिनैवब्रुवंतिवदंति तस्मात्तत्रगृहीताव्याप्तिरितिभावः ॥१७॥ अधुनादेवतासुप्रत्येकंदोषंदर्शयंस्तद्भक्तानुपहसति ॥ शप्तोहरिरिति ॥ हेजननिकुपितेनभृगुणाहरिःशप्तस्तुशप्तएवकामंयथेच्छंमीनोबभूव ॥तथाकमठःकूर्मः ॥ तथासूकरस्तुवराहोपि ॥ पश्चादनंतरंनृसिंहइतिएवंप्रकारेण यश्छलकृद्वामनोपिबभूवेतिपराधीनायेऽवतारास्तान्सेवतांपुरुषाणांमृतिभयंकिंनस्यादपितुस्यादेवयेशापदग्धाःस्वस्यकल्याणंकर्तुंनशक्नुवंतितैःपरस्यकल्याणंकथंक्रियेतइतिभावः॥१८॥शंभोःपपातेति॥यस्यशंभोःसतीवियोगादरण्यगतस्यभृगोःशापाल्लिंगंपतितामिदंपुराणादिषुप्रसिद्धम् ॥स्वलिंगपालनेपियोनसमर्थस्तंशिवंयेभजंतितेषामिहपरत्र वा कथंसुखंभूयान्नकथमपीत्यर्थः ॥ १९ ॥ योभूद्गजाननेति ॥ हेमातः महेशाच्छिवादभूत्कोसौ गजाननश्चाऽसौगणाधिपतिश्चतंशिवपुत्रंयेभजंतितेनरावितथप्रपन्नाअकल्याणकरेदेवकल्याणकरत्वदेवबुद्धिमापन्नाभ्रांताएव ॥ शिवाराधनेतुकल्याणंनैवजायते ॥ कुतःपुनस्तत्पुत्राराधनेनेतिभावः॥किमर्थमेतादृशंभवतीति

चंडित्वदंघ्रिजलजोत्थरजःप्रसादैर्ब्रह्माकरोतिसकलंभुवनंभवादौ ॥ शौरिश्चपातिखलुसंहरतेहरस्तुत्वांसेवतेनमनुजस्त्वितहदुर्भगोऽसौ ॥ १६ ॥ वाग्देवतात्वमसिदेविसुराऽसुराणांवक्तुंनतेऽमरवराःप्रभवंतिशक्ताः ॥ त्वंचेन्मुखेवससिनैवयदैवतेषांयस्माद्भवंतिमनुजानहितद्विहीनाः ॥ १७ ॥ शप्तोहरिस्तुभृगुणाकुपितेनकामंमीनोबभूवकमठःखलुसूकरस्तु ॥ पश्चान्नृसिंहइतियश्छलकृद्धरायांतान्सेवतांजननिमृत्युभयंनकिंस्यात् ॥ १८ ॥ शंभोःपपातभुविलिंगमिदंप्रसिद्धंशापेनतेनचभृगोर्विपिनेगतस्य ॥ तंयेनराभुविभजंतिकपालिनंतुतेषांसुखंकथमिहाऽपिपरत्रमातः ॥ १९ ॥ योभूद्गजाननगणाऽधिपतिर्महेशात्तंयेभजंतिमनुजावितथप्रपन्नाः ॥ जानंतितेनसकलार्थफलप्रदात्रींत्वांदेविविश्वजननींसुखसेवनीयाम् ॥ २० ॥ चित्रंत्वयाऽरिजनताऽपिदयार्द्रभावाद्धत्वारणेशितशरैर्गमिताद्युलोकम् ॥ नोचेत्स्वकर्मनिचितेनिरयेनितांतंदुःखाऽतिदुःखगतिमापदमापतेत्सा ॥ २१ ॥

चेत्तत्राह । जानंतितेनेति ॥ सुखसेवनीयांस्मरणमात्रेणापिचतुर्विधपुरुषार्थदांविश्वमातरंनजानंतीतिहेतोः नहिताद्दशज्ञानेसतिउत्कृष्टपक्षपातंविहायानिकृष्टपक्षपातंकश्चित्करोति ॥ तस्मात्तेमूढत्वात्तथाकुर्वंतीतिभावः ॥ तदुक्तंशिवपुराणेउमासंहितायाम् ॥ गंगांविहायतृप्त्यर्थंमरुवारियथाव्रजेत् ॥ विहायदेवींतद्भिन्नंतथादेवांतरंव्रजेदिति ॥ यस्याःस्मरणमात्रेणपुरुषार्थचतुष्टयम् ॥ अनायासेनलभतेकस्त्यजेत्तांनरोत्तमः ॥ इति ॥ सूतसंहितायामपि ॥ करुणासागरामेतांयःपूजयतिशांकरीम् ॥ किंनसिध्यतितस्येष्टंतस्याएवप्रसादतइति ॥ २० ॥ श्रीदेवींसंतोषयितुंकांचिच्चमत्कारवार्ताकुर्वंति । चित्रमिति ॥ हेदेवि चित्रमयमेकोविलक्षणश्चमत्कारइत्यर्थः ॥ कोसावितिचेच्छृणु त्वयारिजनतापिशत्रुसमूहोपिदयार्द्रभावान्निशितशरैरणेहत्वाद्युलोकंस्वर्गलोकंगमिताप्रापितेति ॥ नहिदयायांसत्यांदयाविषयस्यवधःसंभवति ॥ नचशत्रुविषयेकस्याऽपिदयोद्भवोभवति ॥ तस्मादिदमुभयमपिविद्यमानमाश्चर्यमेव ॥ ननुकिमर्थमयातेषांदेत्यानामुपरिआश्चर्यकारणभूतादयासंपादितेतिचेत्तत्राह । नोचेत्स्वकर्मेति ॥ स्वस्यासुरसमूहस्ययत्तामसंकर्मतेननिचितेसंपादितेनिरयेनरकेनितांतमत्यंतंयथास्यात्तथादुःखापेक्षयाप्यतिदुःखस्यगतिःप्राप्तिस्तद्रूपामापदंनोचेद्यदिदयानक्रियतेचेत्तदाऽऽपतेत्प्राप्नुयात्साऽरिजनतेतिहेतोरित्यर्थः॥असुरयोनिष्वपियदैतादृशीदयातदाभक्तेषुकियतीस्यादितिनविद्मइतिगूढोऽभिसंधिः। निरतिशयदयावत्त्वमनेनवर्णितम् ॥ २१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



ननुवीराणांपराक्रमवर्णनएवसंतोषोभवतिततोभवद्भिर्ममपराक्रमःकुतोनवर्ण्यतेतत्राह । ब्रह्माहरश्चेति ॥ गर्वभावादहंकारावृतत्वात्तादृशाःपरिच्छिन्नाब्रह्मादयोऽपितवप्रभावंनजानंतियदात दातवाऽमितप्रभावैरतुलप्रभावैर्गुणैःसत्त्वादिभिःसंमोहिताःकेऽन्येअस्मदादयःप्रभावंविदितुंसमर्थाभवंति । नकेपीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ यस्याःस्वरूपंब्रह्मादयोनविजानंतितस्मादुच्यतेऽ ज्ञेयेति ॥ २२ ॥ ननुयथामत्प्रभावस्तथामत्स्वरूपमपिकेनापिनज्ञायतेचेत्कथमुच्यतेभगवत्याराधनान्मुक्तोभवतीति ॥ नहिप्रभावस्वरूपज्ञानंविनाराधनंसंभवतीतिचेत्तत्राह । क्लिश्यंतितेऽ पीति ॥ हेमातः येमुनयस्तवरूपंदुर्विभाव्यामितिमत्वातवपादांबुजंनहिभजंति ॥ अथचदृश्यमानसूर्याग्निसेवनपराअग्निहोत्रादिकर्मनिष्णाताभवंतितेविमूढाचित्ताः ॥ क्लिश्यंत्येवक्लेशंप्राप्नुवं त्येव ॥ यतःश्रुतिशतैःसर्ववेदैरपिप्रतिपादितमतएववेदसारंपरमार्थतत्त्वंतैर्नज्ञातंततइत्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ नहिब्रह्मरूपिण्याभगवत्यारूपंकेनाचिदुपलभ्यतेस्पष्टतया ॥ किंतु अस्तीत्येवो पलब्धव्यस्तत्त्वभावेनचोभयोः ॥ अस्तीत्येवोपलब्धस्यतत्त्वभावःप्रसीदति॥इतिश्रुत्युक्तरीत्यातथानेतिनेतीतिप्रतिपादितरीत्याचानिषेधावधिभूताकाचिदस्तिभगवतीतिसत्तामात्रोपलब्ध्यै वतदाराधनस्यसंभवात् ॥ तत्रक्लेशंमन्वानायेतांसच्चिदानंदरूपिणींनभजंतितेक्लिश्यंतीतियुक्तमेवेति ॥ तथाश्रुतिः ॥ योवोएतदक्षरमविदित्वागार्गिअस्मिँल्लोकेजुहोति ददातितपस्यत्यपि वहूनिवर्षसहस्राण्यंतवानेवाऽस्यलोकोभवतीति ॥ २३ ॥ ननुतर्हिसर्वोत्कृष्टांसुलभांसर्वफलदांममोपासनांकिमितिमूढाःपरित्यजंतिव्यर्थमितिचेत्तत्राह । मन्येइति ॥ हेमातस्तवगुणाःसत्त्वा दयोहिस्वबुद्धिरचितैः पुरुषबुद्धिरचितैर्विविधाऽगमैर्नानातंत्रैर्मोहकैर्हेतुभिर्लोकान्विष्णवीशभास्करगणेशदेवतापरान्ततत्तत्प्राणिप्रारब्धवशेनतत्तद्देवतोपासकान्विधायतवभक्तिभावात्विमुखा न्कुर्वंतीतिमन्येहं तत्तस्माद्धेतोस्तवोपासनांपरित्यजंतिसस्वभावइत्यर्थः ॥ २४ ॥ ननुमद्गुणैरेवतेषांबुद्धिर्विपरीतामयैवंकृतेतिभवताकथंज्ञायतइतितत्रोच्यते कुर्वंतियेतवेति ॥ हेविके

**ब्रह्माहरश्चहरिरप्युतगर्वभावाज्जानंतितेऽपिविबुधानतवप्रभावम् ॥ केऽन्येभवंतिमनुजाविदितुंसमर्थाःसंमोहितास्तवगुणैरमितप्रभावैः ॥ २२ ॥ क्लिश्यंतितेऽपिमुनयस्तवदुर्विभाव्यंपादांबुजंनहिभजंतिविमूढचित्ताः ॥ सूर्याग्निसेवनपराःपरमार्थतत्त्वंज्ञातंनतैःश्रुतिशतैरपिवेदसारम् ॥ २३ ॥ मन्येगुणास्तवभुविप्र थितप्रभावाःकुर्वंतियेहिविमुखान्ननुभक्तिभावात् ॥ लोकान्स्वबुद्धिरचितैर्विविधाऽऽगमश्चविष्ण्वीशभास्करगणेशपरान्विधाय ॥ २४ ॥ कुर्वंतियेतवपदाद्वि मुखान्नराग्र्यान्स्वोक्तागमैर्हरिहरार्चनभक्तियोगैः ॥ तेषांनकुप्यसिदयांकुरुषेऽविकेत्वंतान्मोहमंत्रनिपुणान्प्रथयस्यलंच ॥ २५ ॥ तुर्येयुगेभवतिचाऽतिबलंगु णस्यतुर्यस्यतेनमथितान्यसदागमानि ॥ त्वांगोपयंतिनिपुणाःकवयःकलौवैत्वत्कल्पितान्सुरगणानपिसंस्तुवंति ॥ २६ ॥**

मातर्येपुरुषाःस्वोक्तागमैःपुरुषप्रणीतागमैःकथंभूतैर्हरिहरार्चनभक्तियोगैर्हरिहरार्चनभक्तिप्रतिपादकैस्तादृशागमैस्तदुपदेशैरित्यर्थः॥नराग्र्यान्ब्राह्मणान्तवपदाद्विमुखान्कुर्वंतितेषाम् । संबं धसामान्येषष्ठी । तान्नकुप्यसीत्यर्थः॥ किंच ॥ तेषुदयांचकुरुषे ॥ किंच ॥ तान्मोहमंत्रनिपुणान्वश्याकर्षणादिमंत्रनिष्णातानलंपूर्णंप्रथयसिविस्तारयसि॥धनादिनावंशवृद्ध्यादिनाचे त्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ यदित्वदन्यदेवतोपासनातवेष्टानाऽस्तितर्हितद्देवतोपासकानांतद्देवतामंत्रागमोपदेष्टॄणांचकल्याणंकथंकरोषिनाशयोग्याहिते ॥ करोषिचकल्याणंयत्किंचित्क्षुल्ल कफलप्रदानेन ॥ तस्मादपितवाभिमतमेवेतिज्ञायते ॥ तस्मात्त्वयैवस्वगुणैःप्रारब्धवशात्तेषांविपरीताबुद्धिःकृतेतिनिश्चीयतइति ॥ २५ ॥ ननुयद्यहमेवस्वगुणैस्तेषांविपरीतबुद्धिंकरोमित र्हिसत्ययुगेऽपितथाविधाःकुतोनसंतिसर्वेमदाराधकाएवकुतःसंतीतिचेत्तत्राह । तुर्येयुगेइति ॥ तुर्येसत्ययुगेतुर्यगुणस्याऽतिशुद्धसत्त्वगुणस्यामिश्रितस्यगुणत्रयापेक्षयातुर्यत्वात् ॥ तस्यतुर्य गुणस्याऽतिबलंप्राबल्यंभवति ॥ तेनहेतुनासत्ययुगेऽसदागमान्यसच्छास्त्राणिमथितान्युन्मथितानिभवंति ॥ कलौतुतुर्यगुणस्याऽभावाद्गुणत्रयस्याऽतिप्रबलत्वात्कवयोनिपुणाःकवित्वा भिमानिनस्त्वांगोपयंतिनोपासतेमंदभाग्यत्वादथचत्वत्कल्पितान्हरिब्रह्मादीन्सुरान्संस्तुवंतिभजंतेइत्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ सत्ययुगेसर्वेउत्तमप्रारब्धवंतःपुण्यजनाःसंति ततस्त्वयात स्मिन्युगेसुखदायकःसत्त्वगुणएवस्थापितस्तदनुगुणास्वोपासनाचस्थापिता ॥ कलियुगेतुदुष्टप्रारब्धत्वात्तेदुःखदायकागुणास्त्वयास्थापितास्तद्गुणानुरोधेनचस्वाऽतिरिक्तदेवानामल्पफ लदानांचोपासनास्थापितेतितस्मिन्युगेसर्वेत्वदाराधकाःसंति ॥ नान्यदेवताराधकाइति ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अस्त्वियंपामराणांकथात्वदुपासकास्तुधन्याएवेत्याह । ध्यायंतीति ॥ तदुक्तमुमासंहितायाम् ॥ तेधन्याःकृतकृत्याःस्युर्धन्यास्तेषांप्रसूःकुलम् ॥ येषांचित्तंभवेल्लीनंश्रीदेव्यांपरसंविदीति॥ ॥ २७ ॥ अधुनामायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्याभगवत्याःपुंप्रकृत्यात्मकत्वात्केवलप्रकृतिरूपत्वेनापितांवर्णयति । चिच्छक्तिरिति ॥ चिच्छक्तिशब्देनचैतन्यमुच्यते ॥ तदुक्तंसंक्षेपशारीरके ॥ चिच्छक्तिःपरमेश्वरस्यविमलाचैतन्यमेवोच्यतइति ॥ हेमातः साचिच्छक्तिःपरमात्मन्यस्तितेनकारणेनसोपिपरमात्माव्यक्तोनामरूपात्मकोभवतितथाजगत्सुविदितःप्रसिद्धस्तथाभवकृत्य कर्ता प्रपंचसृष्टिस्थितिसंहृतिकर्ताभवति ॥ कःपुरुषोस्मात्परमात्मनोन्यस्त्वद्विरहितः स्वशक्त्यैवाऽमुष्मिन्प्रपंचेकर्तुंविहर्तुंतथासंचलितुंप्रभवति नकोऽपीत्यर्थः ॥ यद्यस्तितर्हितत्रापित्वं शक्तिरूपाभवस्येव ॥ एतादृशीत्वंसकलकारणामहनीयेतिभावः ॥ तदुक्तंदक्षिणामूर्तिसंहितायाम् ॥ शक्त्याविनाशिवेसूक्ष्मेनामधामनविद्यतइति ॥ २८ ॥ ननुमाभूच्चिच्छक्तिस्तत्त्वान्ये वचतुर्विंशतिसंख्यानिमहदादीनिजगत्करिष्यंतीतिचेत्तत्राह । तत्त्वानीति ॥ चिद्विरहितानिचिच्छक्तिविरहितानीत्यर्थः ॥ तान्यपिजडत्वान्नजगत्कर्तुंफलंप्रदातुंवासमर्थानीत्यर्थस्तथैवेंद्रि

ध्यायंतिमुक्तिफलदांभुवियोगसिद्धांविद्यांपरांचमुनयोऽतिविशुद्धसत्त्वाः ॥ तेनाप्नुवंतिजननीजठरेतुदुःखंधन्यास्तएवमनुजास्त्वयियेविलीनाः ॥ २७ ॥
चिच्छक्तिरस्तिपरमात्मनितेनसोपिव्यक्तोजगत्सुविदितोभवकृत्यकर्ता ॥ कोन्यस्त्वयाविरहितःप्रभवत्यमुष्मिन्कर्तुंविहर्तुमपिसंचलितुंस्वशक्त्या ॥२८॥
तत्त्वानिचिद्विरहितानिजगद्विधातुंकिंवाक्षमाणिजगदंबयतोजडानि ॥ किंचेंद्रियाणिगुणकर्मयुतानिसंतिदेवित्वयाविरहितानिफलंप्रदातुम् ॥ २९ ॥
देवामखेष्वपिहुतंमुनिभिःस्वभागंगृह्णीयुरंबविधिवत्प्रतिपादितंकिम् ॥ स्वाहानचेत्त्वमसितत्रनिमित्तभूतातस्मात्त्वमेवननुपालयसीवविश्वम् ॥ ३० ॥
सर्वंत्वयेदमखिलंविहितंभवादौत्वंपासिवैहरिहरप्रमुखान्दिगीशान् ॥ कालेऽसिविश्वमपितेचरितंभवाद्यंजानंतिनैवमनुजाःकनुमंदभाग्याः ॥ ३१ ॥ ह
त्वाऽसुरंमहिषरूपधरंमहोग्रंमातस्त्वयासुरगणःकिलरक्षितोऽयम् ॥ कांतेस्तुतिंजननिमंदधियोविदामोवेदागतिंतवयथार्थतयानजग्मुः ॥ ३२ ॥ कार्यं
कृतंजगतिनोयदसौदुरात्मावैरीहतोभुवनकंटकदुर्विभाव्यः ॥ कीर्तिःकृताननुजगत्सुकृपाविधेयाप्यस्मांश्चपाहिजननिप्रथितप्रभावे ॥ ३३ ॥ व्यासउ
वाच ॥ एवंस्तुतासुरैर्देवीतानुवाचमृदुस्वरा ॥ अन्यत्कार्यंचदुःसाध्यंब्रुवंतुसुरसत्तमाः ॥ ३४ ॥

याण्यपीतिसंपिंडितोर्थः ॥ २९ ॥ अस्माकंदेवानांतुसर्वभावेनत्वमेवपालयित्र्यसीत्याह । देवामखेष्वपीति ॥ हेंऽवत्वंचेत्स्वाहारूपातत्रयज्ञेषुनिमित्तभूतासाधनभूतानाऽसितार्हेमुनिभिर्विधि वत्प्रतिपादितंमखेषुहुतंस्वभागंकिंदेवागृह्णीयुर्नगृह्णीयुरित्यर्थः ॥ यस्मादेवंतस्मात्त्वमेवदेवान्पालयसिदेवेषुपालितेषुदेवपालितंविश्वंत्वयैवपालितंभवतीत्यर्थः ॥ ३० ॥ हेभगवति वयंस्तु तिंकर्तुंप्रवृत्ताएवकेवलंनस्तुतिंकर्तुंयोग्यास्तवसकलकारणायामनोवाचामगोचरत्वात्तवचरितस्यब्रह्मादिबुद्धीनामप्यविषयत्वादित्याह । सर्वंत्वयेदमिति ॥ मनुजाइत्युपलक्षणंदेवानाम् ॥ ३१ ॥ नकेवलंब्रह्मादयएवत्वांनजानंतीति किंतुवेदाअपितवगतिंयथार्थतयानजानंति तदा कां तेस्तुतिंकर्तुं वयंजानीमइत्याह । हत्वासुरमिति ॥ यथार्थतयायाथातथ्येननजग्मुःनप्रापुः तथाचश्रुतिः ॥ यतोवाचोनिवर्त्तंतइति ॥ ३२ ॥ अधुनाऽवतारंगृहीत्वादेव्याकृतमुपकारंवर्णयंति । कार्यंकृतमिति ॥ भुवनकंटकश्चासौदुर्विभाव्यश्चेतिकर्मधारयः ॥ कृपाविधेयाजगत्सु हेजननि प्रथितप्रभावात्वमस्मांश्चपाहीत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ अपराधसहस्रोति ॥ सर्वनिजजनेषुसत्स्वपिपुत्रापराधंनिर्व्याजवृत्त्यामातैवसहतेनान्यइतिज्ञात्वा सर्वजगद्योनिंमातरंसर्वजगतोदेवींकुतोजनानभजंते कुतःस्वकल्याणात्प्रच्यवंतेइतिजनानाक्रोशति ॥ तथाचव्याससूत्रम् ॥ योनिश्चगीयतइति ॥ ३८ ॥ नकेवलंभगवत्याजगद्योनित्वंकिंतुसर्वजीवसखित्वमप्यस्तीतिवक्तुंद्वासुपर्णेतिश्रुतिमर्थतः पठति ॥ द्वौसुपर्णाविति ॥ अस्मिन्देहरूपे वृक्षेद्वौसुपर्णौपक्षिसदृशौद्वौजीवपरमात्मानौस्तः ॥ तयोर्निरंतरंसख्यमास्तिकदाप्युभयोर्वियोगाऽभावात् एवंरीत्यानयोस्तृतीयःसखानैवाऽस्ति ॥ यएतस्यजीवस्याऽपराधंसहेतइत्यर्थः ॥ ३९ ॥ यस्मादेवंतस्माज्जीवःस्वसखायंपरमेश्वरींभगवतींपरसंविदंहित्वाकिंनुकरिष्यतिस्वकल्याणं नहिशत्रुतःकल्याणंसंभवति ॥ नवागत्यंतरम

यदायदाहिदेवानांकार्यंस्यादतिदुर्घटम्॥स्मर्तव्याऽहंतदाशीघ्रंनाशयिष्यामिचाऽऽपदम्॥३५॥ देवाऊचुः ॥ सर्वंकृतंत्वयादेविकार्यंनःखलुसांप्रतम् ॥ यदयंनिहतःशत्रुरस्माकंमहिषासुरः ॥३६॥ स्मरिष्यामोयथातेंवसदैवपदपंकजम् ॥ तथाकुरुजगन्मातर्भीतिंक्तत्वय्यप्यचंचलाम् ॥३७॥ अपराधसहस्राणिमातैवसहतेसदा ॥ इतिज्ञात्वाजगद्योनिंननभजंतेकुतोजनाः ॥ ३८ ॥ द्वौसुपर्णौतुदेहेस्मिंस्तयोःसख्यंनिरंतरम् ॥ नान्यःसखातृतीयोस्तियोपराधंसहेतहि ॥ ॥३९॥तस्माज्जीवःसखायंत्वांहित्वाकिंनुकरिष्यति ॥ पापात्मामंदभाग्योऽसौसुरमानुषयोनिषु॥४०॥ प्राप्यदेहंसुदुष्प्रापंनस्मरेत्त्वांनराधमः ॥ मनसाकर्मणावाचाब्रूमःसत्यंपुनःपुनः ॥४१॥ सुखेवाप्यथवादुःखेत्वंनःशरणमद्भुतम् ॥ पाहिनःसततंदेविसर्वैस्तववरायुधैः ॥४२॥ अन्यथाशरणंनास्तित्वत्पदांबुजरेणुतः ॥ व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतासुरैर्देवीतत्रैवांतरधीयत ॥ ४३ ॥ विस्मयंपरमंजग्मुर्देवास्तांवीक्ष्यनिर्गताम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥ जनमेजयउवाच॥अथाऽद्भुतंवीक्ष्यमुनेप्रभावंदेव्याजगच्छांतिकरंवरंच ॥ नतृप्तिरस्तिद्विजवर्यशृण्वतःकथाऽमृतंतेमुखपद्मजातम्॥१॥अंतर्हितायांचतदाभवान्यांचक्रुश्चकिंदेवपुरोगमास्ते॥दिव्याश्चरित्रंपरमंपवित्रंदुराऽऽपमेवाल्पपुण्यैर्नराणाम् ॥ २ ॥ कस्तृप्तिमाप्नोतिकथाऽमृतेनभिन्नोऽल्पभाग्यात्पटुकर्णरंध्रः ॥ पीतेनयेनाऽमरतांप्रयातिधिक्तान्नरान्येनापिवंतिसादरम् ॥ ३ ॥ लीलाचरित्रंजगदंबिकायारक्षान्वितंदेवमहामुनीनाम् ॥ संसारवार्धेस्तरणंनराणांकथंकृतज्ञाहिपरित्यजेयुः॥४॥मुक्ताश्चयेचैवमुमुक्षवश्चसंसारिणोरोगयुताश्चकेचित् ॥ तेषांसदाश्रोत्रपुटैश्चपेयंसर्वार्थदंवेदविदोवदंति ॥ ५ ॥ तथाविशेषेणमुनेनृपाणांधर्मार्थकामेषुसदारतानाम् ॥ मुक्ताश्चयस्मात्खलुतत्पिबंतिकथंनपेयंरहितैश्चतेभ्यः ॥ ६ ॥

स्तीत्यर्थः ॥ तस्मादियमेवभगवतीपितृमातृसखिस्थानासर्वैर्जीवैराराध्येतिभावः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ द्वासुपर्णासयुजासखायेति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ पंचाशद्भिरथश्लोकैरंतर्धानोत्तरंतुयत् ॥ अभूद्वृत्तंजगत्क्षेमतदत्रैवोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ श्रीदेव्याअंतर्धानोत्तरंजनमेजयःपृच्छति । अथेति॥ अद्भुतप्रभावंवीक्ष्यतत्कथामृतंशृण्वतोमेतृप्तिर्नास्तीत्यन्वयः ॥ १ ॥ नराणांमध्येऽल्पपुण्यैरित्यन्वयः ॥ तद्दुरापमेवश्रुत्वेतिशेषः ॥ २ ॥ तच्छ्रुत्वाअल्पभाग्याद्भिन्नःकस्तृप्तिमाप्नोतीत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ तेभ्योमुक्तेभ्योरहितैरित्यन्वयः ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इत्येवमनुमेयमित्यन्वयः ॥ ७ ॥ ८ ॥ उदरमेवौदरंतत्पूर्तिमात्रमपिनैवाऽऽप्नुवंतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ भगवत्याआराधनादेवैहिकंपारलौकिकंसुखंधर्मार्थकाममोक्षरूपंचसिद्ध्यतीतिप्रकरणार्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ कथितमिति ॥ तेत्वयांतर्धानंगतेत्युक्तंतत्रांतर्धानोत्तरंसाभुवनेश्वरीस्वर्गेवामृत्युलोकेवाकसंस्थितेतिवदेत्यर्थः ॥ १४ ॥ लयंगतेति ॥ तस्मिन्नेवस्थलेलयंगतास्थूलशरीरस्थभूम्यादिक्रमेणस्वात्मनिलीनावेत्यर्थः ॥ हेमशैलेसुमेरौवा ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ मायाशक्तिः ॥ मायाशक्तिविशिष्टब्रह्मरूपिणीभगवतीश्रीभुवनेश्वरी

यैःपूजितापूर्वभवेभवानीसत्कुंदपुष्पैरथचंपकैश्च ॥ बैल्वैर्दलैस्तेभुविभोगयुक्तानृपाभवंतीत्यनुमेयमेवम् ॥ ७ ॥ येभक्तिहीनाःसमवाप्यदेहंतंमानुषंभारतभूमिभागे॥यैर्नार्चितातेधनधान्यहीनारोगान्विताःसंततिवर्जिताश्च ॥ ८ ॥ भ्रमंतिनित्यंकिलदासभूताआज्ञाकराःकेवलभारवाहाः ॥ दिवानिशंस्वार्थपराःकदाऽपिनैवाप्नुवंत्यौदरपूर्तिमात्रम् ॥ ९ ॥ अंधाश्चमूकाबधिराश्चखंजाःकुष्ठान्वितायेभुविदुःखभाजः ॥ तत्रानुमानंकविभिर्विधेयंनाराधितातैःसततंभवानी ॥ १० ॥ येराजभोगान्वितऋद्धिपूर्णाःसेव्यमानाबहुभिर्मनुष्यैः ॥ दृश्यंतियेवाविभवैःसमेतास्तैःपूजितांवेत्यनुमेयमेव ॥ ११ ॥ तस्मात्सत्यवतीसूनोदेव्याश्चरितमुत्तमम् ॥ कथयस्वकृपांकृत्वादयावानसिसांप्रतम् ॥ १२ ॥ हत्वातंमहिषंपापंस्तुतासंपूजितासुरैः ॥ क्वगतासामहालक्ष्मीःसर्वतेजःसमुद्भवा ॥ १३ ॥ कथितंतेमहाभागगतांतर्धानमाशुसा ॥ स्वर्गेवामृत्युलोकेवासंस्थिताभुवनेश्वरी ॥ १४ ॥ लयंगतावातत्रैववैकुंठेवासमाश्रिता ॥ अथवाहेमशैलेसातत्त्वतोमेवदाऽधुना ॥ १५ ॥ व्यासउवाच ॥ पूर्वंमयातेकथितंमणिद्वीपंमनोहरम् ॥ क्रीडास्थानंसदादेव्यावल्लभंपरमंस्मृतम् ॥ १६ ॥ यत्रब्रह्माहरिःस्थाणुःस्त्रीभावंतेप्रपेदिरे ॥ पुरुषत्वंपुनःप्राप्यस्वानिकार्याणिचक्रिरे ॥ १७॥ यःसुधासिंधुमध्येऽस्तिद्वीपः परमशोभनः ॥ नानारूपैःसदातत्रविहारंकुरुतेंबिका ॥ १८ ॥ स्तुतासंपूजितादेवैःसातत्रैवगताशिवा ॥ यत्रसंक्रीडतेनित्यंमायाशक्तिःसनातनी ॥ १९ ॥ देवास्तांनिर्गतांवीक्ष्यदेवींसर्वेश्वरींतथा ॥ रविवंशोद्भवंचक्रुर्भूमिपालंमहाबलम् ॥ २० ॥ अयोध्याऽधिपतिंवीरंशत्रुघ्नंनामपार्थिवम् ॥ सर्वलक्षणसंपन्नंमहिषस्याऽऽसनेशुभे ॥ २१ ॥ दत्त्वाराज्यंतदातस्मैदेवाइंद्रपुरोगमाः ॥ स्वकीयैर्वाहनैःसर्वेजग्मुःस्वान्यालयानिते ॥ २२ ॥ गतेषुतेषुदेवेषुपृथिव्यांपृथिवीपते ॥ धर्मराज्यंबभूवाऽथप्रजाश्चसुखितास्तथा ॥ २३ ॥ पर्जन्यःकालवर्षीचधराधान्यगुणाऽऽवृता ॥ पादपाःफलपुष्पाढ्याबभूवुःसुखदाःसदा ॥ २४ ॥ गावश्चक्षीरसंपन्नाघटोध्यःकामदानृणाम् ॥ नद्यःसुमार्गगाःस्वच्छाःशीतोदाःखगसंयुताः ॥ २५ ॥ ब्राह्मणावेदतत्त्वाश्चयज्ञकर्मरतास्तथा ॥ क्षत्रियाधर्मसंयुक्तादानाऽध्ययनतत्पराः ॥ २६ ॥ शस्त्रविद्यारतानित्यंप्रजारक्षणतत्पराः ॥ न्यायदंडधराःसर्वेराजानः शमसंयुताः ॥ २७ ॥

यत्रमणिद्वीपेवर्ततेतत्रतदंशभूतासागतेत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ घटवदूधोयासांताघटोध्यः । ऊधसोनङित्यानङादेशेबहुव्रीहेरूधसोङीषिति ङीष् ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



अविरोधस्तुभूतानांसर्वेषांसंबभूवह ॥ आकराधनदातॄणांव्रजागोयूथसंयुताः ॥ २८ ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चनृपसत्तम॥देवीभक्तिपराःसर्वेसं बभूवुर्धरातले ॥ २९ ॥ सर्वत्रयज्ञयूपाश्चमंडपाश्चमनोहराः ॥मखैःपूर्णाधराश्चासन्ब्राह्मणैःक्षत्रियैःकृतैः ॥ ३० ॥ पातिव्रतधरानार्यःसुशीलाःसत्यसं युताः ॥ पितृभक्तिपराःपुत्राआसन्धर्मपरायणाः ॥ ३१ ॥ नपाखंडंनवाऽधर्मःकुत्राऽपिपृथिवीतले ॥ वेदवादाःशास्त्रवादानान्येवादास्तथाऽभवन् ॥ ॥ ३२ ॥ कलहोनैवकेषांचिन्नदैन्यंनाऽशुभामतिः ॥ सर्वत्रसुखिनोलोकाःकालेचमरणंतथा ॥ ३३ ॥ सुहृदांनवियोगश्चनापदश्चकदाचन ॥ नाऽना वृष्टिर्नदुर्भिक्षंनमारीदुःखदानृणाम् ॥ ३४ ॥ नरोगोनचमात्सर्यंनविरोधःपरस्परम् ॥ सर्वत्रसुखसंपन्नानरानार्यःसुखान्विताः ॥ ३५ ॥ क्रीडंतिमानवाः सर्वेस्वर्गेदेवगणाइव ॥ नचौरानैवपाखंडावंचकादंभकास्तथा ॥ ३६ ॥ पिशुनालंपटाःस्तब्धानबभूवुस्तदानृप ॥ नवेदद्वेषिणःपापामानवाःपृथिवीप ते ॥ ३७ ॥ सर्वधर्मरतानित्यंद्विजसेवापरायणाः ॥ त्रिधात्वात्सृष्टिधर्मस्यत्रिविधाब्राह्मणास्ततः ॥ ३८ ॥ सात्त्विकाराजसाश्चैवतामसाश्चतथापरे ॥ स र्वेवेदविदोदक्षाःसात्त्विकाःसत्त्ववृत्तयः ॥ ३९ ॥ प्रतिग्रहविहीनाश्चदयादमपरायणाः ॥ यज्ञांस्तेसात्त्विकैरन्नैःकुर्वाणाधर्मतत्पराः ॥ ४० ॥पुरोडाशवि धानैश्चपशुभिर्नकदाचन ॥ दानमध्ययनंचैवयजनंतुतृतीयकम् ॥ ४१ ॥ त्रिकर्मरसिकास्तेवैसात्विकाब्राह्मणानृप ॥ राजसावेदविद्वांसःक्षत्रियाणांपुरो हिताः ॥ ४२ ॥ षट्कर्मनिरताःसर्वेविधिवन्मांसभक्षकाः ॥ यजनंयाजनंदानंतथैवचप्रतिग्रहः ॥ ४३ ॥ अध्ययनंतुवेदानांतथैवाऽध्यापनंतुषट् ॥ तामसाःक्रोधसंयुक्तारागद्वेषपराःपुनः ॥ ४४ ॥ राज्ञांकर्मकरानित्यंकिंचिदध्ययनेरताः ॥ महिषेनिहतेसर्वेसुखिनोवेदतत्पराः ॥ ४५ ॥ बभूवुर्व्रतनि ष्णातादानधर्मपरास्तथा ॥ क्षत्रियाःपालनेयुक्तावैश्यावणिजवृत्तयः ॥ ४६ ॥ कृषिवाणिज्यगोरक्षाकुसीदवृत्तयःपरे ॥ एवंप्रमुदितोलोकोमहिषेविनिपा तिते ॥ ४७ ॥ अनुद्वेगःप्रजानांवैसंबभूवधनाऽऽगमः ॥ बहुक्षीराःशुभागावोनद्यश्चैवबहूदकाः ॥ ४८ ॥ वृक्षाबहुफलाश्चाऽऽसन्मानवारोगवर्जिताः ॥ ना ऽऽधयोनेतयःक्वाऽपिप्रजानांदुःखदायकाः ॥ ४९ ॥ ननिधनमुपयांतिप्राणिनस्तेऽप्यकालेसकलविभवयुक्तारोगहीनाःसदैव ॥ निगमविहितधर्मेतत्परा श्चंडिकायाश्चरणसरसिजानांसेवनेदक्षचित्ताः ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अर्धाधिकैःषष्टिपद्यैःशुंभासुरकथोच्यते ॥ स्वस्थानाच्चामरादीनांच्यवनंसम्यगीर्यते ॥ १ ॥ देव्याश्चरित्रमेकमुक्त्वापुनरपिदेव्याश्चरित्रंद्वितीयंव्यासःकथयति । शृणुराजन्निति ॥१॥२॥ ॥ ३ ॥ परिचरैःसेवकैःसहहतावित्यन्वयः ॥४॥५॥६॥ हेमाचलेशुभेइत्यंतंसूत्ररूपेणचरित्रमुक्तंतद्व्याख्यानायराजापृच्छति । कावेताविति ॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥ वरटापतिंहंसम् ॥

व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिदेव्याश्चरितमुत्तमम् ॥ सुखदंसर्वजंतूनांसर्वपापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ यथाशुंभोनिशुंभश्चभ्रातरौबलवत्तरौ ॥ बभूवतुर्महावीराववध्यौपुरुषैःकिल ॥ २ ॥ बहुसेनावृतौशूरौदेवानांदुःखदौसदा ॥ दुराचारौमदोत्सिक्तौबहुदानवसंयुतौ ॥ ३ ॥ हतावंबिकयातौतुसंग्रामेऽतीवदारुणे ॥ देवानांचहितार्थायसर्वैःपरिचरैःसह ॥ ४ ॥ चंडमुंडौमहाबाहूरक्तबीजोऽतिदारुणः ॥ धूम्रलोचननामाचनिहतास्तेरणांगणे ॥ ५ ॥ तान्निहत्यसुराणांसाजहारभयमुत्तमम् ॥ स्तुतासंपूजितादेवैर्गिरौहेमाऽचलेशुभे ॥ ६ ॥ राजोवाच ॥ कावेतावसुरावादौकथंतौबलिनांवरौ ॥ केनसंस्थापितौचेहस्त्रीवध्यत्वंकुतोगतौ ॥ ७ ॥ तपसावरदानेनकस्यजातौमहाबलौ ॥ कथंचनिहतौसर्वंकथयस्वसविस्तरम् ॥ ८ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्कथांदिव्यांसर्वपापप्रणाशिनीम् ॥ देव्याश्चरितसंयुक्तांसर्वार्थफलदांशुभाम् ॥ ९ ॥ पुराशुंभनिशुंभौद्वावसुरौभूमिमंडले ॥ पातालतश्चसंप्राप्तौभ्रातरौशुभदर्शनौ ॥ १० ॥ तौप्राप्तयौवनौचैवचेरतुस्तपउत्तमम् ॥ अन्नोदकंपरित्यज्यपुष्करेलोकपावने ॥ ११ ॥ वर्षाणामयुतंयावद्योगविद्यापरायणौ ॥ एकत्रैवाऽऽसनंकृत्वातेपातेपरमंतपः ॥ १२ ॥ तयोस्तुष्टोऽभवद्ब्रह्मासर्वलोकपितामहः ॥ तत्राऽऽगतश्चभगवानारुह्यवरटापतिम् ॥ १३ ॥ तावुभौचजगत्स्रष्टादृष्ट्वाध्यानपरौस्थितौ॥उत्तिष्ठतंमहाभागौतुष्टोऽहंतपसाकिल ॥ १४ ॥ वांच्छितंवावरंकामंददामि ब्रुवतामिह ॥ कामदोऽहंसमायातोदृष्ट्वावांतपसोबलम् ॥ १५ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यप्रबुद्धौतौसमाहितौ ॥ प्रदक्षिणक्रियांकृत्वाप्रणामंचक्रतुस्तदा ॥ १६॥ दंडवत्प्रणिपातंचकृत्वातौदुर्बलाकृती ॥ ऊचतुर्मधुरांवाचंदीनौगद्गदयागिरा ॥ १७ ॥ देवदेवदयासिंधोभक्तानामभयप्रद ॥ अमरत्वंचनौब्रह्मन्देहितुष्टोऽसिचेद्विभो ॥ १८ ॥ मरणादपरंकिंचिद्भयंनाऽस्तिधरातले॥ तस्माद्भयाच्चसंत्रस्तौयुष्माकंशरणंगतौ ॥ १९ ॥ त्राहित्वंदेवदेवेशजगत्कर्तःक्षमानिधे ॥ परिस्फोटयविश्वात्मन्सद्योमरणजंभयम् ॥ २० ॥ ब्रह्मोवाच ॥ किमिदंप्रार्थनीयंवोविपरीतंतुसर्वथा ॥ अदेयंसर्वथासर्वैःसर्वेभ्योभुवनत्रये ॥ २१ ॥ जातस्यहिध्रुवंमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ मर्यादाविहितालोकेपूर्वंविश्वकृताकिल ॥ २२ ॥ मर्तव्यंसर्वथासर्वैःप्राणिभिर्नात्रसंशयः ॥ अन्यंप्रार्थयतांकामंददामियच्चवांछितम् ॥ ॥ २३ ॥ व्यासउवाच ॥ तदाकर्ण्यवचस्तस्यसुविमृश्यचदानवौ ॥ ऊचतुःप्रणिपत्याऽथब्रह्माणंपुरतःस्थितम् ॥ २४ ॥

॥१३॥१४॥तपसोबलमिति ॥ इतिब्रह्मोवाचेतिशेषः॥ १५ ॥ १६ ॥१७॥१८॥१९॥ २० ॥ वोयुष्माकमिदंप्रार्थनीयंसर्वथाविपरीतंकिंविपरीतमेवकथमित्यर्थः ॥ विपरीतत्वंमेवाह ॥ अदेयमिति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ संगतःस्थितः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ पालादि

पुरुषैरमराद्यैश्चमानवैर्मृगपक्षिभिः ॥ अवध्यत्वंकृपासिंधोदेहिनौवांछितंवरम् ॥ २५ ॥ नारीबलवतीकाऽस्तियानौनाशंकरिष्यति ॥ नबिभीवःस्त्रियः कामंत्रैलोक्येसचराचरे ॥ २६ ॥ अवध्यौभ्रातरौस्यातांनरेभ्यःपंकजोद्भव ॥ भयंनस्त्रीजनेभ्यश्चस्वभावादबलाहिसा ॥ २७ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिश्रुत्वातयोर्वाक्यंप्रददौवांछितंवरम् ॥ ब्रह्माप्रसन्नमनसाजगामाथस्वमालयम् ॥ २८ ॥ गतेऽथभवनेतस्मिन्दानवौस्वगृहंगतौ ॥ भृगुंपुरोहितंकृत्वाचक्रतुःपूजनंतदा ॥ २९ ॥ शुभेदिनेसुनक्षत्रेजातरूपमयंशुभम् ॥ कृत्वासिंहासनंदिव्यंराज्यार्थंप्रददौमुनिः ॥ ३० ॥ शुंभायज्येष्ठभूतायददौराज्यासनंशुभम् ॥ सेवनार्थंतदैवाशुसंप्राप्तादानवोत्तमाः ॥ ३१ ॥ चंडमुंडौमहावीरौभ्रातरौबलदर्पितौ ॥ संप्राप्तौसैन्यसंयुक्तौरथवाजिगजान्वितौ ॥ ३२ ॥ धूम्रलोचननामाचतद्रूपश्चंडविक्रमः ॥ शुंभंचभूपतिंश्रुत्वातदाऽगाद्बलसंयुतः ॥३३॥ रक्तबीजस्तथाशूरोवरदानबलाधिकः ॥ अक्षौहिणीभ्यांसंयुक्तस्तत्रैवागत्यसंगतः ॥ ३४ ॥ तस्यैकंकारणंराजन्संग्रामेयुध्यतःसदा ॥ देहाद्रुधिरसंपातस्तस्यशस्त्राहतस्यच ॥ ३५ ॥ जायतेचयदाभूमावुत्पद्यंतेह्यनेकशः॥तादृशाःपुरुषाःक्रूरावहवःशस्त्रपाणयः ॥ ३६ ॥ संभवंतितदाकारास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ युद्धंपुनस्तेकुर्वंतिपुरुषारक्तसंभवाः ॥३७॥ अतःसोऽपिमहावीर्यःसंग्रामेऽतीवदुर्जयः ॥ अवध्यःसर्वभूतानांरक्तबीजोमहासुरः ॥ ३८ ॥ अन्येचबहवःशूराश्चतुरंगसमन्विताः ॥ शुंभंचनृपतिंमत्वाबभूवुस्तस्यसेवकाः ॥ ३९ ॥ असंख्यातातदाजातासेनाशुंभनिशुंभयोः ॥ पृथिव्याःसकलंराज्यंगृहीतंबलवत्तया ॥ ४० ॥ सेनायोगंतदाकृत्वानिशुंभःपरवीरहा ॥ जगामतरसास्वर्गेशचीपतिजयायच ॥४१॥ चकाराऽसौमहायुद्धंलोकपालैःसमंततः ॥ वृत्रहावज्रपातेनताडयामासवक्षसि ॥४२॥ सवज्राऽभिहतोभूमौपपातदानवाऽनुजः ॥ भग्नंबलंतदातस्यानिशुंभस्यमहात्मनः ॥४३॥ भ्रातरंमूर्च्छितंश्रुत्वाशुंभःपरबलार्दनः ॥ तत्राऽऽगत्यसुरान्सर्वांस्ताडयामाससायकैः ॥४४॥ कृतंयुद्धंमहत्तेनशुंभेनाक्लिष्टकर्मणा ॥ निर्जितास्तुसुराःसर्वेसेंद्राःपालाश्चसर्वशः ॥ ४५ ॥ ऐंद्रंपदंतदातेनगृहीतंबलवत्तया ॥ कल्पपादपसंयुक्तंकामधेनुसमन्वितम् ॥ ४६ ॥ त्रैलोक्यंयज्ञभागाश्चहृतास्तेनमहात्मना ॥ नंदनंचवनंप्राप्यमुदितोभून्महासुरः ॥ ४७ ॥ सुधायाश्चैवपानेनसुखमापमहाऽसुरः ॥ कुबेरंसचनिर्जित्यतस्यराज्यंचकारह ॥४८॥ अधिकारंतथाभानोःशशिनश्चचकारह॥यमंचैवविनिर्जित्यजग्राहतत्पदंतथा ॥४९॥ वरुणस्यतथाराज्यंचकारवह्निकर्मच॥वायोःकार्यंनिशुंभश्चचकारस्वबलान्वितः ॥ ५० ॥ ततोदेवाविनिर्धूताहृतराज्याहृताश्रियः ॥ संत्यज्यनंदनंसर्वेनिर्ययुर्गिरिगह्वरे ॥ ५१ ॥

क्पाला इंद्रसहिताः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८॥ ५९ ॥ ६० ॥६१॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ छ ॥ ॥ सप्ताधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथसुरैः स्तुता ॥ प्रादुर्भूतापरादेवीदेवकार्यार्थमुच्यते ॥ १ ॥ देवपराजयोत्तरंजातंवृत्तमाह । पराजिताइति ॥ १ ॥ गुरुंबृहस्पतिम् ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ हे आंगिरस अंगिरोगो

हृताधिकारास्तेसर्वेबभ्रमुर्विजनेवने ॥ निरालंबानिराधारानिस्तेजस्कानिरायुधाः ॥ ५२ ॥ विचेरुरमराःसर्वेपर्वतानांगुहासुच ॥ उद्यानेषुचशून्येषुन दीनांगह्वरेषुच ॥ ५३ ॥ नप्रापुस्तेसुखंक्वाऽपिस्थानभ्रष्टाविचेतसः ॥ लोकपालामहाराजदैवाधीनंसुखंकिल ॥ ५४ ॥ बलवंतोमहाभागाबहुज्ञाध नसंयुताः ॥ कालेदुःखंतथादैन्यमाप्नुवंतिनराऽधिप ॥ ५५ ॥ चित्रमेतन्महाराजकालस्यैवविचेष्टितम् ॥ यःकरोतिनरंताबद्राजानंभिक्षुकंततः ॥ ५६॥ दातारंयाचकंचैवबलवंतंतथाबलम् ॥ पंडितंविकलंकामंशूरंचाऽतीवकातरम् ॥ ५७ ॥ मखानांचशतंकृत्वाप्राप्येंद्रासनमुत्तमम् ॥ पुनर्दुःखंपरंप्राप्तं कालस्यगतिरीदृशी ॥ ५८ ॥ कालःकरोतिधर्मिष्ठंपुरुषंज्ञानसंयुतम् ॥ तमेवाऽतीवपापिष्ठंज्ञानलेशविवर्जितम् ॥ ५९ ॥ नविस्मयोऽत्रकर्तव्यःसर्वथा कालचेष्टिते ॥ ब्रह्मविष्णुहरादीनामपीदृक्कष्टचेष्टितम् ॥ ६० ॥ विष्णुर्जननमाप्नोतिसूकरादिषुयोनिषु ॥ हरःकपालीसंजातःकालेनैवबलीयसा ॥६१॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेभगवतीमाहात्म्येएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ पराजिताःसुराःसर्वेराज्यंशुंभः शशासह ॥ एवंवर्षसहस्रंतुजगामनृपसत्तम ॥ १ ॥ भ्रष्टराज्यास्ततोदेवाश्चिंतामापुःसुदुस्तराम् ॥ गुरुंदुःखातुरास्तेतुपप्रच्छुरिदमादृताः ॥ २ ॥ किं कर्तव्यंगुरोब्रूहिसर्वज्ञस्त्वंमहामुनिः ॥ उपायोऽस्तिमहाभागदुःखस्यविनिवृत्तये॥३॥उपचारपरानूनंवेदमंत्राःसहस्रशः ॥ वांछितार्थकरानूनंसूत्रैःसंलक्षि ताःकिल ॥ ४ ॥ इष्टयोविविधाःप्रोक्ताःसर्वकामफलप्रदाः ॥ ताःकुरुष्वमुनेनूनंत्वंजानासिचतत्क्रियाः ॥ ५ ॥ विधिःशत्रुविनाशाययथोद्दिष्टःसदागमे ॥ तंकुरुष्वाऽद्यविधिवद्यथानोदुःखसंक्षयः ॥ ६ ॥ भवेदांगिरसाऽद्यैवतथात्वंकर्तुमर्हसि ॥ दानवानांविनाशायअभिचारंयथामति ॥७॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ सर्वेमंत्राश्चवेदोक्तादैवाधीनफलाश्चते ॥ नस्वतंत्राःसुराधीशतथैकांतफलप्रदाः ॥ ८ ॥ मंत्राणांदेवतायूयंतेतुदुःखैकभाजनम् ॥ जाताःस्मकालयोगेन किंकरोमिप्रसाधनम् ॥ ९ ॥ इंद्राग्निवरुणादीनांयजनंयज्ञकर्मसु ॥ तेयूयंविपदंप्राप्ताःकरिष्यंतिकिमिष्टयः ॥ १० ॥ अवश्यंभाविभावानांप्रतीकारोनवि द्यते ॥ उपायस्त्वथकर्तव्यइतिशिष्टानुशासनम् ॥ ११ ॥ दैवंहिबलवत्केचित्प्रवदंतिमनीषिणः ॥ उपायवादिनोदैवंप्रवदंतिनिरर्थकम् ॥ १२ ॥ दैवं चैवाऽप्युपायश्चद्वावेवाऽभिमतौनृणाम् ॥ केवलंदैवमाश्रित्यनस्थातव्यंकदाचन ॥ १३ ॥

त्रोद्भव ॥ ७ ॥ एकांतफलप्रदाःनियमेनफलप्रदाः ॥ ८ ॥ ९ ॥ तदाइष्टयःकिंकरिष्यंतीत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ ननुदैवमेवप्रबलंचेदुपायःकिमितिकर्तव्यइतिचेत्तत्राह । दैवमिति ॥१२॥ सिद्धांतस्त्वयमस्तीत्याह । दैवंचैवाप्युपायश्चेति ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ अनुष्ठानेमुख्योमंत्रःकोवाऽस्तीतिचेत्तत्राह। मायाबीजेति ॥ सचमायाविशिष्टब्रह्मणोवाचकः॥ ह्रींकारउभयात्मकइतिब्रह्मांडपुराणात् ॥ तथा चमायाविशिष्टब्रह्मवाचकभुवनेश्वरीमंत्रेणसामायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीभुवनेश्वरीदेवताऽऽराध्येत्यर्थः ॥ तत्पुरश्चरणेमायाबीजपुरश्चरणेरताः आसक्ताइत्यर्थः ॥ तत्संख्याचशारदायाम् ॥ प्रजपेन्मंत्रविन्मंत्रंद्वात्रिंशल्लक्षमानतः ॥ त्रिःस्वादुयुक्तैर्जुहुयादष्टद्रव्यैर्दशांशतइति ॥ दक्षिणामूर्तिसंहितायांतु ॥ रविलक्षंजपेद्विद्यामितिद्वादशलक्षात्मकंपुरश्चरणमुक्तम् ॥ हालास्यमाहात्म्येतु ॥ एकलक्षजपेनैवसालोक्यं स्याद्विलक्षतः ॥ सामीप्यंचैवसायुज्यंचतुर्लक्षजपात्सुते ॥ इत्यनेनलक्षचतुष्टयात्मकमपिपुरश्चरणमभिहितम् ॥ १९ ॥२० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

उपायःसर्वथाकार्योविचार्यस्वधियापुनः ॥ तस्माद्ब्रवीमिवःसर्वान्संविचार्यपुनःपुनः ॥ १४ ॥ पुराभगवतीतुष्टाजघानमहिषासुरम् ॥ युष्माभिस्तुस्तुतादेवीवरदानंददावथ ॥ १५ ॥ आपदंनाशयिष्यामिसंस्मृतावःसदैवहि ॥ यदायदावोदेवेशाआपदोदैवसंभवाः ॥ १६ ॥ प्रभवंतितदाकामंस्मर्तव्याहंसुरैःसदा ॥ स्मृताहंनाशयिष्यामियुष्माकंपरमापदः ॥ १७ ॥ तस्माद्धिमाचलेगत्वापर्वतेसुमनोहरे ॥ आराधनंचंडिकायाःकुरुध्वंप्रेमपूर्वकम् ॥ ॥ १८ ॥ मायाबीजविधानज्ञास्तत्पुरश्चरणेरताः ॥ जानाम्यहंयोगबलात्प्रसन्नासाभविष्यति ॥ १९ ॥ दुःखस्यांतोऽद्ययुष्माकंदृश्यतेनाऽत्रसंशयः ॥ तस्मिंश्चैलेसदादेवीतिष्ठतीतिमयाश्रुतम् ॥ २० ॥ स्तुतासंपूजितासद्योवांछितार्थान्प्रदास्यति ॥ निश्चयंपरमंकृत्वागच्छध्वंवैहिमालयम् ॥ २१ ॥ सुराःसर्वाणिकार्याणिसावःकामंविधास्यति ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादेवास्तेप्रययुर्गिरिम् ॥ २२ ॥ हिमालयंमहाराजदेवीध्यानपरायणाः ॥ मायाबीजंहृदानित्यंजपंतःसर्वएवहि ॥ २३ ॥ नमश्चक्रुर्महामायांभक्तानामभयप्रदाम् ॥ तुष्टुवुःस्तोत्रमंत्रैश्चभक्त्यापरमयायुताः ॥ २४ ॥ नमोदेविविश्वेश्वरिप्राणनाथेसदानंदरूपेसुरानंददेते ॥ नमोदानवांतप्रदेमानवानामनेकार्थदेभक्तिगम्यस्वरूपे ॥ २५ ॥ नतेनामसंख्यांनतेरूपमीदृक्तथाकोऽपिवेदादिदेवादिरूपे ॥ त्वमेवाऽसिसर्वेषुशक्तिस्वरूपाप्रजासृष्टिसंहारकालेसदैव ॥ २६ ॥ स्मृतिस्त्वंधृतिस्त्वंत्वमेवाऽसिबुद्धिर्जरापुष्टितुष्टीधृतिःकांतिशांती ॥ सुविद्यासुलक्ष्मीर्गतिःकीर्तिमेधेत्वमेवाऽसिविश्वस्यबीजंपुराणम् ॥ २७ ॥ यदायैःस्वरूपैःकरोषीहकार्यंसुराणांचतेभ्योनमामोऽद्यशांत्यै ॥ क्षमायोगनिद्रादयात्वंविवक्षास्थितासर्वभूतेषुशस्तैःस्वरूपैः ॥ २८ ॥ कृतंकार्यमादौत्वयायत्सुराणांहतोऽसौमहारिर्मदांधोहयारिः ॥ दयातेसदासर्वदेवेषुदेविप्रसिद्धापुराणेषुवेदेषुगीता ॥ २९ ॥

महामायांमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणींभुवनेश्वरीमित्यर्थः ॥ २४ ॥ तेतुभ्यमित्यर्थः ॥ सदानंदरूपेब्रह्मरूपेइत्यर्थः ॥ २५ ॥ आदिदेवोहिरण्यगर्भस्तदादयोयेदेवास्तत्स्वरूपे ॥ हिरण्यगर्भः समवर्ततायेइतिश्रुतेः ॥ २६ ॥ कांतिशांतीतिद्वंद्वः ॥ तथाकीर्तिमेधेइत्यत्रापि ॥ विश्वस्यबीजंमायाविशिष्टब्रह्मरूपमव्यक्तम् ॥ २७ ॥ तेभ्योरूपेभ्यइत्यर्थः ॥ शांत्यैकल्याणार्थमित्यर्थः ॥ तान्येवरूपाण्याह ।क्षमायोगनिद्रेति ॥ २८ ॥ कृतंकार्यमिति ॥ यद्यस्मात्कारणात्त्वयायत्कार्यमादौकृतं किंतत्सुराणांमहारिःशत्रुर्हयारिर्महिषासुरस्त्वयाहतइति तस्मात्कारणात्सर्वदेवेषुतेदयासदाप्रसिद्धा ॥ सादयावेदेषुपुराणेषुचगीता वर्णितेत्यर्थः ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इयंयादयात्वयाकृताऽत्रकिंचित्रं । मातुःस्वभावएवाऽयंयत्पुत्रेषुदयाकर्तव्येत्याह । किमत्राऽस्तीति ॥ यतस्त्वंसुराणांजनित्रीसहायाचाऽसिततःएकचित्तेनाऽस्माकंसमग्रंसर्वंकार्यंकुरुष्व नपुनर्महिषवधःकृतइतितावन्मात्रेणसंतोषंकुर्वित्यर्थः ॥ ३० ॥ एतेषांस्तुतिभक्तिश्रद्धादिकंदृष्ट्वाऽहंकार्यंकरिष्यामीत्याशांमाकुरु अस्माकंतज्ज्ञानाऽभावादित्याह । नवातेइति ॥ तेगुणाना मियत्तांतथातवस्वरूपंचनजानीमहेवयं येनस्तुतिंकर्तुंसमर्थाभवेम ॥ तर्हिकिमर्थमयाऽनुग्रहःकर्तव्यइतिचेत्तत्राह । कृपापात्रमिति ॥ ३१ ॥ नन्वत्रमहान्श्रमोभवतिततोनाऽहमेतत्कार्यंकरि ष्यामीतिचेत्तत्राह । विनाबाणपातैरिति ॥ अनायासेनैवेच्छामात्रेणैवसकलजगत्सर्जनवद्रिपून्हंतुंत्वंशक्तासमर्थाऽसि ॥ किमर्थंतर्हिमयादैत्यनाशार्थमवताराधृताइतिचेल्लोकैरवतारचेष्टावर्ण नंकर्तव्यंतेनचतस्यकल्याणंभावितव्यमितिलोकोपकारायैवाऽवतारलीलाइत्याह । तथापीति ॥३२॥ नन्विदंवाक्यंयोजगत्कर्तास्तितंप्रतिवक्तव्यंनाहंतथाविधाऽस्मीतिचेत्तत्राह। इदंशाश्वत मिति ॥ मूढालोकाअपिइदंजगच्छाश्वतंनैवजानंतिजननमरणादिपरिणामवत्त्वात् ॥ तथाचजगतःकार्यत्वमुत्पत्त्याश्रयत्वात्सिद्धं तच्चकार्यंकारणंविनानैवसंभवेत् ॥ वानिश्चयेन तच्चकारणं नकेवलआत्मा निर्विकारत्वात् ॥ नकेवलंजडम् ॥ तस्यनानाविधनियतभोगवज्जगज्जनकत्वाऽसंभवात् ॥ अतोऽन्यथाऽनुपपत्तिरूपानुमानेनमायाविशिष्टचेतनब्रह्मरूपिणीत्वमेवजगत्का

किमत्राऽस्तिचित्रंयदंबासुतंस्वंमुदापालयेत्पोषयेत्सम्यगेव ॥ यतस्त्वंजनित्रीसुराणांसहायाकुरुष्वैकचित्तेनकार्यंसमग्रम् ॥ ३० ॥ नवातेगुणानामिय त्तास्वरूपंवयंदेविजानीमहेविश्ववंद्ये ॥ कृपापात्रमित्येवमत्वातथाऽस्मान्भयेभ्यःसदापाहिपातुंसमर्थे ॥ ३१ ॥ विनाबाणपातैर्विनामुष्टिघातैर्विनाशूल खड्गैर्विनाशक्तिदंडैः ॥ रिपून्हंतुमेवाऽसिशक्ताविनोदात्तथाऽपीहलोकोपकारायलीला ॥ ३२ ॥ इदंशाश्वतंनैवजानंतिमूढानकार्यंविनाकारणंसंभवेद्वा ॥ वयंतर्कयामोऽनुमानंप्रमाणंत्वमेवाऽसिकर्ताऽस्यविश्वस्यचेति ॥ ३३ ॥ अजःसृष्टिकर्तामुकुंदोऽविताऽयंहरोनाशकृद्वैपुराणेप्रसिद्धः ॥ नकिंत्वत्प्रसूतास्त्रय स्तेयुगादौत्वमेवाऽसिसर्वस्यतेनैवमाता ॥ ३४ ॥ त्रिभिस्त्वंपुराराधितादेविदत्तात्वयाशाक्तिरुग्राचतेभ्यःसमग्रा ॥ त्वयासंयुतास्तेप्रकुर्वंतिकामंजगत्पाल नोत्पत्तिसंहारमेव ॥ ३५ ॥ तेकिंनमंदमतयोयतयोविमूढास्त्वांयेनविश्वजननींसमुपाश्रयंति ॥ विद्यांपरांसकलकामफलप्रदांतांमुक्तिप्रदांविबुधवृंदसुवं दितांघ्रिम् ॥ ३६ ॥ येवैष्णवाःपाशुपताश्चसौरादंभास्तएवप्रतिभांतिनूनम् ॥ ध्यायंतिनत्वांकमलांचलज्जांकांतिंस्थितिंकीर्तिमथाऽपिपुष्टिम् ॥ ३७ ॥ हरिहरादिभिरप्यथसेवितात्वमिहदेववरैरसुरैस्तथा ॥ भुविभजंतिनयेऽल्पधियोनराजननितेविधिनाखलुवंचिताः ॥ ३८ ॥

रणमितिवयंकल्पयामइत्यर्थः ॥ ३३ ॥ नन्वहंजगत्कर्त्रीचेत्कथंब्रह्मादयःसृष्ट्यादिकर्तारइतिप्रसिद्धमितिचेत्तत्राह । अजःसृष्टिकर्तेति ॥ अवितेतिच्छेदः ॥ सत्यंतेजगत्कर्तारःपरंतुतेदेहव त्त्वादुत्पत्तिमंतएव ॥ तथाचतेषामपिकार्यत्वात्तत्रापिकारणापेक्षायांत्वमेवसर्वकारणंपर्यवस्यसीतिभावः ॥ तथाचश्रुतिर्मैत्रायणीयानाम् ॥ तमोवाइदमेकमेवासतत्परेस्यात्तत्परेणेरितंविष मत्वंप्रयातियदेतद्रजइत्यारभ्य ब्रह्मादीनांमायाविशिष्टब्रह्मणएवोत्पत्तिःप्रतिपादितेति ॥ ३४ ॥ तदेवस्पष्टयति। त्रिभिस्त्वमिति ॥३५॥ इत्थंयात्वंसर्वेश्वरीत्वांयेनभजंतितेमूढाएवेत्याह । तेकिंनेति ॥ यतयस्तेपीत्यर्थः ॥ तथायेवैष्णवाद्यास्तेऽपिदंभादांभिकाएवमूढाएवेत्याह । येवैष्णवाइति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ननुकिमितितेमूढाइतिचेत्तेवैष्णवाद्यायान्विष्णवादिदेवान्भजं तितेदेवाअपियांदेवतांपराशक्तिंभजंतितामभजंतस्तेकथंनमूढाइत्याह ॥ हरिहरादिभिरपीति ॥ नहिराजसेवकसेवनकर्ताराजानंभजतिमुख्यत्वेन ॥ नतेकेवलंमूढा अपितुविधिनावंचिता अपीत्याह । विधिनेति ॥ ३८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कथंहरिहरादयोभजंतीतितत्स्वरूपमाह। जलधिजेति ॥ जलधिजारमा ॥ जतु लाक्षा ॥ स्पष्टमन्यत् ॥ ३९ ॥ एतादृशाब्रह्मादयोमहांतोऽपियदात्वांभजंतितदापरस्यकाकथेत्याह। किम परस्यनरस्येति ॥ येत्यक्तैषणाज्ञानिनस्तेऽपित्वदंशभूतांदयांक्षमांचभजंतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ येंत्वांनभजंतितेषांगतिरीदृशीभवतीत्याह ॥ देवित्वदंघ्रीति ॥ भजने न रताइत्यन्वयः ॥ ४१ ॥

जलधिजापदपंकजरंजनंजतुरसेनकरोतिहरिःस्वयम्॥त्रिनयनोऽपिधराधरजांघ्रिपंकजपरागनिषेवणतत्परः॥३९॥किमपरस्यनरस्यकथानकैस्तवपदाब्ज युगंनभजंतिके ॥ विगतरागगृहाश्चदयांक्षमांकृतधियोमुनयोपिभजंतिते ॥ ४० ॥ देवित्वदंघ्रिभजनेनजनारतायेसंसारकूपपतिताःपतिताःकिलामी ॥ तेकुष्ठगुल्मशिरआधियुताभवंतिदारिद्र्यदैन्यसहितारहिताःसुखौघैः ॥ ४१ ॥ येकाष्ठभारवहनेयवसावहारेकार्येभवंतिनिपुणाधनदारहीनाः ॥ जानीम हेऽल्पमतिभिर्भवदंघ्रिसेवापूर्वेभवेजननितैर्नकृताकदाऽपि ॥ ४२ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतासुरैःसर्वैरंबिकाकरुणान्विता ॥ प्रादुर्बभूवतरसारूपयौव नसंयुता ॥ ४३ ॥ दिव्यांबरधरादेवीदिव्यभूषणभूषिता ॥ दिव्यमाल्यसमायुक्तादिव्यचंदनचर्चिता ॥ ४४ ॥ जगन्मोहनलावण्यासर्वलक्षणलक्षिता ॥ अद्वितीयस्वरूपासादेवानांदर्शनंगता ॥ ४५ ॥ जाह्नव्यांस्नातुकामासानिर्गतागिरिगह्वरात् ॥ दिव्यरूपधरादेवीविश्वमोहनमोहिनी ॥ ४६ ॥ देवा न्स्तुतिपरानाहमेघगंभीरयागिरा ॥ प्रेमपूर्वंस्मितंकृत्वाकोकिलामंजुवादिनी ॥ ४७ ॥ देव्युवाच ॥ भोभोःसुरवराःकाऽत्रभवद्भिःस्तूयतेभृशम् ॥ किम र्थंब्रूतवःकार्यंचिंताविष्टाःकुतःपुनः ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वाभाषितंतस्यामोहितारूपसंपदा ॥ प्रेमपूर्वंहृदुत्साहास्तामूचुःसुरसत्तमाः ॥ ४९ ॥ देवाऊचुः ॥ देविस्तुमस्त्वांविश्वेशिप्रणताःस्मकृपार्णवे ॥ पाहिनःसर्वदुःखेभ्यःसंविग्नान्दैत्यतापितान् ॥ ५० ॥ पुरात्वयामहादेविनिहत्यासुरकंटकम् ॥ महिषंनोवरोदत्तःस्मर्तव्याऽहंसदाऽऽपदि ॥ ५१ ॥ स्मरणाद्दैत्यजांपीडांनाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ तेनत्वंसंस्मृतादेविनूनमस्माभिरित्यपि ॥ ५२ ॥ अ द्यशुंभनिशुंभौद्वावसुरौघोरदर्शनौ ॥ उत्पन्नौविघ्नकर्तारावहन्यौपुरुषैःकिल ॥ ५३ ॥ रक्तबीजश्चबलवांश्चंडमुंडौतथाऽसुरौ ॥ एतैरन्यैश्चदेवानांहृतंराज्यं महाबलैः ॥ ५४ ॥ गतिरन्यानचास्माकंत्वमेवाऽसिमहाबले ॥ कुरुकार्यंसुराणांवैदुःखितानांसुमध्यमे ॥ ५५ ॥ देवास्त्वदंघ्रिभजनेनिरताःसदैवतेदा नवैरतिबलैर्विपदंसुनीताः ॥ तान्देविदुःखरहितान्कुरुभक्तियुक्तान्मातस्त्वमेवशरणंभवदुःखितानाम् ॥ ५६ ॥ सकलभुवनरक्षादेविकार्यात्वयाऽद्य स्वकृतमितिविदित्वाविश्वमेतद्युगादौ ॥ जननिजगतिपीडांदानवादर्पयुक्ताःस्वबलमदसमेतास्तेप्रकुर्वंतिमातः ॥ ५७ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापु राणेपंचमस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

यवसंतृणंतस्याऽवहारोभक्षणम् ॥ स्पष्टमन्यत् ॥४२॥४३॥४४॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७॥ इति श्रीदेवीभागवताति लकेपंचमस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अर्धाऽधिकैश्चषट्षष्टिश्लोकैरथसुरैःस्तुता ॥ कौशिकीतिगिरौतत्रप्रादुर्भूतेतिचोच्यते ॥ १ ॥ देववाक्यश्रवणोत्तरंपार्वतीयत्कृत्यंचकारतदाह । एवंस्तुतेति ॥ १ ॥ कौशिकीति ॥ कोशान्निर्गताकौशिकी ॥ तदुक्तम् ॥ शरीरकोशाद्यत्तस्याःपार्वत्यानिःसृतांबिका ॥ कौशिकीतिसमस्तेषुततोलोकेषुगीयतइति ॥ पृषोदरादित्वात्साधुत्वम् ॥ तदुक्तंवैकृतिकरहस्ये॥गौरी देहसमुद्भूतायासत्त्वैकगुणाश्रया ॥ साक्षात्सरस्वतीप्रोक्ताशुंभासुरनिबर्हिणी ॥ दधौचाष्टभुजाबाणमुसलेशूलचक्रभृत् ॥ शंखंघंटांलांगलंचकार्मुकंवसुधाधिप ॥ एषासंपूजिताभक्त्यासर्वज्ञ त्वंप्रयच्छतीति ॥ २ ॥ निःसृतायामिति ॥ पार्वत्यास्तनुव्यत्ययाच्छरीरपरिणामात्तस्यांकौशिक्यांनिःसृतायांनिर्गतायांसत्यां सासैवकौशिकीअथानंतरंकृष्णरूपासंजाता तदासाकृष्ण

॥ व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीदैवतैःशत्रुतापितैः ॥ स्वशरीरात्परंरूपंप्रादुर्भूतंचकारह ॥ १ ॥ पार्वत्यास्तुशरीराद्वैनिःसृताचांबिकायदा ॥ कौशिकीतिसमस्तेषुततोलोकेषुपठ्यते ॥ २ ॥ निःसृतायांतुतस्यांसापार्वतीतनुव्यत्ययात् ॥ कृष्णरूपाऽथसंजाताकालिकासाप्रकीर्तिता ॥ ३ ॥ मषीवर्णामहाघोरादैत्यानांभयवर्धिनी ॥ कालरात्रीतिसाप्रोक्तासर्वकामफलप्रदा ॥ ४ ॥ अंबिकायाःपरंरूपंविरराजमनोहरम् ॥ सर्वभूषणसंयुक्तंलावण्यगुणसंयुतम् ॥ ५ ॥ ततोंबिकातदादेवानित्युवाचहसास्मिता ॥ तिष्ठंतुनिर्भयायूयंहरिष्यामिरिपूनिह ॥ ६ ॥ कार्यंवःसर्वथाकार्यंविहरिष्याम्यहंरणे ॥ निशुंभादीन्वधिष्यामियुष्माकंसुखहेतवे ॥ ७ ॥ इत्युक्त्वासातदादेवीसिंहारूढामदोत्कटा ॥ कालिकांपार्श्वतःकृत्वाजगामनगरेरिपोः ॥ ८ ॥ सागत्वोपवनेतस्थावंबिकाकालिकान्विता ॥ जगावथकलंतत्रजगन्मोहनमोहनम् ॥ ९ ॥ श्रुत्वातन्मधुरंगानंमोहमीयुःखगामृगाः ॥ मुदंचपरमांप्रापुरमरागगनेस्थिताः ॥ १० ॥ तस्मिन्नवसरेतत्रदानवौशुंभसेवकौ ॥ चंडमुंडाभिधौघोरौरममाणौयदृच्छया ॥ ११॥ आगतौदृदृशातेतुतांतदादिव्यरूपिणीम् ॥ अंबिकांगानसंयुक्तांकालिकांपुरतःस्थिताम् ॥ १२ ॥ दृष्ट्वातांदिव्यरूपांचदानवौविस्मयान्वितौ ॥ जग्मतुस्तरसापार्श्वंशुंभस्यनृपसत्तम ॥१३॥ तौगत्वातौसमासीनंदैत्यानामधिपंगृहे ॥ ऊचतुर्मधुरांवाणींप्रणम्यशिरसानृपम् ॥ १४ ॥ राजन्हिमालयात्कामंकामिनीकाममोहिनी ॥ संप्राप्तासिंहमारूढासर्वलक्षणसंयुता ॥ १५ ॥ नेदृशींदेवलोकेऽस्तिनगंधर्वपुरेतथा ॥ नदृष्टानश्रुताक्वाऽपिपृथिव्यांप्रमदोत्तमा ॥१६॥ गानंचतादृशंराजन्करोतिजनरंजनम् ॥ मृगास्तिष्ठंतितत्पार्श्वेमधुरस्वरमोहिताः ॥१७॥ ज्ञायतांकस्यपुत्रीयंकिमर्थमिहचागता ॥ गृह्यतांराजशार्दूलतवयोग्याऽस्तिकामिनी ॥१८॥ ज्ञात्वानयगृहेभार्यांकुरुकल्याणलोचनाम् ॥ निश्चितंनास्तिसंसारेनारीत्वेवंविधाकिल॥१९॥देवानांसर्वरत्नानिगृहीतानित्वयानृप॥कस्मान्नेमांवरारोहांप्रगृह्णासिनृपोत्तम ॥२०॥

वर्णत्वात्कालिकेतिप्रकीर्तितेत्यर्थः ॥ ३ ॥ तस्याध्यानमाह मषीवर्णेति ॥ इयमेवकालरात्रिरित्यर्थः ॥ ४ ॥ अंबिकायाइति । यस्याःशरीरात्कौशिक्युत्पन्नातस्याःपार्वत्याइत्यर्थः ॥५॥ ततोंबिकापार्वतीत्यर्थः ॥६॥७॥ कालिकांस्वशरीरान्निर्गतांकौशिकीमित्यर्थः ॥ ८ ॥ जगन्मोहनस्यकामस्यापिमोहनंमोहकारकं कलंमधुरंजगौ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ संसारेनिश्चितंनास्तीत्यन्वयः ॥ १९ ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २१ ॥ वैधसंब्रह्मणःसंबंधीत्यर्थः ॥ मरालोहंसः ॥ त्वयाआत्तंगृहीतामित्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५॥२६॥२७॥ त्वयाऽऽत्तानि त्वयागृहीतानि ॥ कांतारत्नंस्त्रीरत्नम् ॥२८॥
॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ रसाऽऽभासः ॥ भेदेकपटस्यावश्यंजायमानत्वात्कपटंविनाभेदासंभवात्सातितस्मिन्कपटेरसाऽऽभासएवभवतीत्यर्थः ॥ निग्रहेदंडे ॥ ३४॥३५॥

इंद्रस्यैरावतःश्रीमान्पारिजाततरुस्तथा ॥ गृहीतोऽश्वःसप्तमुखस्त्वयानृपबलात्किल ॥ २१ ॥ विमानंवैधसंदिव्यंमरालध्वजसंयुतम् ॥ त्वयाऽऽत्तंरत्नभूतंतद्बलेननृपचाद्भुतम् ॥ २२ ॥ कुबेरस्यनिधिःपद्मस्त्वयाराजन्समाहृतः ॥ छत्रंजलपतेःशुभ्रंगृहीतंतत्त्वयाबलात् ॥ २३ ॥ पाशश्चाऽपिनिशुंभेनभ्रात्रातवनृपोत्तम ॥ गृहीतोस्तिहठात्कामंवरुणस्यजितस्यच ॥ २४ ॥ अम्लानपंकजांतुभ्यंमालांजलनिधिर्ददौ ॥ भयात्तवमहाराजरत्नानिविविधानिच ॥ २५ ॥ मृत्योःशक्तिर्यमस्याऽपिदंडःपरमदारुणः ॥ त्वयाजित्वाहृतः कामंकिमन्यद्वर्ण्यतेनृप ॥ २६ ॥ कामधेनुर्गृहीताऽद्यवर्ततेसागरोद्भवा ॥ मेनकाद्यावशेराजंस्तवतिष्ठंतिचाऽप्सराः ॥ २७ ॥ एवंसर्वाणिरत्नानित्वयाऽऽत्तानिबलादपि ॥ कस्मान्नगृह्यतेकांतारत्नमेषावरांगना ॥ २८ ॥ सर्वाणितेगृहस्थानिरत्नानिविशदान्यथ ॥ अनयासंभविष्यंतिरत्नभूतानिभूपते ॥ २९ ॥ त्रिषुलोकेषुदैत्येंद्रनेदृशीवर्ततेप्रिया ॥ तस्मात्तामानयाऽऽशुत्वंकुरुभार्यांमनोहराम् ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ इतिश्रुत्वातयोर्वाक्यंमधुरंमधुराक्षरम् ॥ प्रसन्नवदनःप्राहसुग्रीवंसन्निधौस्थितम् ॥ ३१ ॥ गच्छसुग्रीवदूतत्वंकुरुकार्यंविचक्षण ॥ वक्तव्यंचतथातत्रयथाऽभ्येतिकृशोदरी ॥ ३२ ॥ उपायौद्वौप्रयोक्तव्यौकांतासुसुविचक्षणैः ॥ सामदानाविति प्राहुःशृंगाररसकोविदाः ॥ ॥ ३३ ॥ भेदेप्रयुज्यमानेऽऽपिरसाऽभासस्तुजायते ॥ निग्रहेरसभंगःस्यात्तस्मात्तौदूषितौबुधैः ॥ ३४ ॥ सामदानमुखैर्वाक्यैःश्लक्ष्णैर्नर्मयुतैस्तथा ॥कानयातिवशेदूतकामिनीकामपीडिता ॥ ३५ ॥ व्यासउवाच ॥ सुग्रीवस्तुवचःश्रुत्वाशुंभोक्तंसुप्रियंपटु ॥ जगामतरसातत्रयत्राऽऽस्तेजगदंबिका ॥ ३६ ॥ सोऽपश्यत्सुमुखींकांतांसिंहस्योपरिसंस्थिताम् ॥ प्रणम्यमधुरंवाक्यमुवाचजगदंबिकाम् ॥ ३७ ॥ दूतउवाच ॥ वरोरुत्रिदशारातिःशुंभःसर्वांगसुंदरः ॥ त्रैलोक्याऽधिपतिःशूरःसर्वजिद्राजतेनृपः ॥ ३८ ॥ तेनाऽहंप्रेषितःकामंत्वत्सकाशंमहात्मना ॥ त्वद्रूपश्रवणासक्तचित्तेनातिविदूयता ॥ ३९ ॥ वचनंतस्यतन्वंगिशृणुप्रेमपुरःसरम् ॥ प्रणिपत्ययथाप्राहदैत्यानामधिपस्त्वयि ॥ ४० ॥ देवामयाजिताःसर्वेत्रैलोक्याधिपतिस्त्वऽहम् ॥ यज्ञभागानऽहंकांतेगृह्णामीहस्थितःसदा ॥ ४१ ॥ हृतसाराकृतानूनंद्यौर्मयारत्नवर्जिता ॥ यानिरत्नानिदेवानांतानिचाऽऽहृतवानहम् ॥ ४२ ॥ भोक्ताऽहंसर्वरत्नानांत्रिषुलोकेषुभामिनि ॥ वशाऽनुगाःसुराःसर्वेममदैत्याश्चमानवाः ॥ ४३ ॥ त्वद्गुणैःकर्णमागत्यप्रविश्यहृदयांतरम् ॥ त्वदधीनःकृतःकामंकिंकरोस्मिकरोमिकिम् ॥ ४४ ॥ त्वमाज्ञापयरंभोरुतत्करोमिवशाऽनुगः ॥ दासोऽहंतवचार्वंगिरक्षमांकामबाणतः ॥ ४५ ॥
॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ द्वात्रिंशल्लक्षणानिकाशीखंडेएकादशाध्याये ॥ पंचसूक्ष्मःपंचदीर्घःसप्तरक्तःषडुन्नतः ॥ त्रिपृथुर्लघुगंभीरोद्वात्रिंशल्लक्षणास्त्विति ॥ त्रिलघुस्त्रिगंभीरइत्यर्थः ॥ एतद्व्याख्याऽपितत्रैवस्पष्टा ॥ महाभारतेचप्रसिद्धानि ॥ ५३ ॥ स्वस्यशोभायाअधिकवृद्ध्यर्थम् ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

भजमांत्वंमरालाक्षितवाधीनंस्मराऽऽकुलम् ॥ त्रैलोक्यस्वामिनीभूत्वाभुंक्ष्वभोगाननुत्तमान् ॥ ४६ ॥ तवचाऽज्ञाकरःकांतेभवाभिमरणावधि ॥ अवध्योऽस्मिवरारोहेसदेवासुरमानुषैः ॥ ४७ ॥ सदासौभाग्यसंयुक्ताभविष्यसिवरानने॥यत्रतेरमतेचित्तंतत्रक्रीडस्वसुंदरि ॥ ४८ ॥ ॥ इतितस्यवचश्चित्तेविम्रश्यमदमंथरे ॥ वक्तव्यंयद्भवेत्प्रेम्णातद्ब्रूहिमधुरंवचः ॥ ४९ ॥ शुंभायचंचलापांगितद्ब्रवीम्यहमाशुवै ॥ व्यासउवाच ॥ तद्दूतवचनंश्रुत्वास्मितंकृत्वासुपेशलम् ॥ ५० ॥ तंप्राहमधुरांवाचंदेवीदेवार्थसाधिका ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ जानाम्यहंनिशुंभंचशुंभंचाऽतिबलंनृपम् ॥ ५१ ॥ जेतारंसर्वदेवानांहंतारंचैवविद्विषाम् ॥ राशिंसर्वगुणानांचभोक्तारंसर्वसंपदाम् ॥ ५२ ॥ दातारंचाऽतिशूरंचसुंदरंमन्मथाकृतिम् ॥ द्वात्रिंशल्लक्षणैर्युक्तमवध्यंसुरमानुषैः ॥ ५३ ॥ ज्ञात्वासमागतास्म्यत्रद्रष्टुकामामहाऽसुरम् ॥ रत्नंकनकमायातिस्वशोभाधिकवृद्धये ॥ ५४ ॥ तत्राऽहंस्वपतिंद्रष्टुंदूरादेवाऽऽगताऽस्मिवै ॥ दृष्टामयासुराःसर्वेमानवाभुविमानदाः ॥ ५५ ॥ गंधर्वाराक्षसाश्चाऽन्येयेचाऽतिप्रियदर्शनाः ॥ सर्वेशुंभभयाद्भीतावेपमानाविचेतसः ॥ ५६ ॥ श्रुत्वाशुंभगुणानत्रप्राप्तास्म्यद्यदिदृक्षया ॥ गच्छदूतमहाभागब्रूहिशुंभंमहाबलम् ॥ ५७ ॥ निर्जनेश्लक्ष्णयावाचावचनंवचनान्मम ॥ त्वांज्ञात्वाबलिनांश्रेष्ठंसुंदराणांचसुंदरम् ॥ ५८ ॥ दातारंगुणिनंशूरंसर्वविद्याविशारदम् ॥ जेतारंसर्वदेवानांदक्षंचोग्रंकुलोत्तरम् ॥ ५९ ॥ भोक्तारंसर्वरत्नानांस्वाधीनंस्वबलोन्नतम् ॥ पतिकामास्म्यहंसत्यंतवयोग्यानराधिप ॥ ६० ॥ स्वेच्छयानगरेतेऽत्रसमायातामहामते ॥ ममाऽस्तिकारणंकिंचिद्विवाहेराक्षसोत्तम ॥ ६१ ॥ बालभावाद्धृतंकिंचित्कृतंराजन्मयापुरा ॥ क्रीडंत्याचवयस्याभिःसहैकांतेयदृच्छया ॥ ६२ ॥ स्वदेहबलदर्पेणसखीनांपुरतोरहः ॥ मत्समानबलःशूरोरणेमांजेष्यतिस्फुटम् ॥ ६३ ॥ तंवरिष्याम्यहंकामंज्ञात्वातस्यबलाऽबलम् ॥ जहसुर्वचनंश्रुत्वासख्योविस्मितमानसाः ॥ ६४ ॥ किमेतयाकृतंक्रूरंव्रतमद्भुतमाशुवै ॥ तस्मात्त्वमपिराजेंद्रज्ञात्वामेहीदृशंबलम् ॥ ६५ ॥ जित्वामांस्वबलेनाऽत्रवांछितंकुरुचात्मनः ॥ त्वंवातवाऽनुजोभ्रातासमेत्यसमरांगणे ॥ ॥ ६६ ॥ जित्वामांसमरेणाऽत्रविवाहंकुरुसुंदर ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापु०पंचमस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अर्धाऽधिकैःषष्टिपद्यैर्दूतसंवादकीर्तनम् ॥ क्रियतेयत्रदैत्यानांकामार्थमरणंस्मृतम् ॥ १ ॥ तस्मात्परस्त्रियंनैवकामयेन्मतिमान्नरः ॥ इतिदर्शयितुंकामवर्णनंसम्यगीर्यते ॥ २ ॥ देवी वाक्यश्रवणोत्तरंदूतोयदाहतद्ब्रवीति । देव्याइति ॥ १ ॥ २ ॥ युधिसांप्रतंयुद्धेयोग्येत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ तेतवकेशेषुअथवातेदैत्याइत्यर्थः ॥ ९ ॥ १०॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ सत्यंप्रियंचवक्तव्यमिति ॥ प्रभोरग्रेसत्यंप्रियंचवाक्यंवक्तव्यमितिहिनीतिशास्त्रंवर्तते ॥ तेनहेतुनाहेरा

॥ व्यासउवाच ॥ देव्यास्तद्वचनंश्रुत्वासदूतःप्राहविस्मितः ॥ किंब्रूषेरुचिरापांगिस्त्रीस्वभावाद्धिसाहसात् ॥१॥ इंद्राद्यानिर्जितायेनदेवादैत्यास्तथाऽपरे ॥ तंकथंसमरेदेविजेतुमिच्छसिभामिनि ॥२॥ त्रैलोक्येतादृशोनास्तियःशुंभंसमरेजयेत्॥कात्वंकमलपत्राक्षितस्याग्रेयुधिसांप्रतम् ॥ ३ ॥ अविचार्यनवक्तव्यं वचनंक्वाऽपिसुंदरि ॥ बलंस्वपरयोर्ज्ञात्वावक्तव्यंसमयोचितम् ॥ ४ ॥ त्रैलोक्याधिपतिःशुंभस्तवरूपेणमोहितः ॥ त्वांचप्रार्थयतेराजाकुरुतस्येप्सितंप्रिये ॥५॥त्यक्त्वामूर्खस्वभावंत्वंसंमान्यवचनंमम॥भजशुंभंनिशुंभंवाहितमेतद्ब्रवीमिते ॥६॥ शृंगारःसर्वथासर्वैःप्राणिभिःपरयामुदा॥सेवनीयोबुद्धिमद्भिर्नवाना मुत्तमोयतः॥७॥नागमिष्यसिचेद्बालेसक्रुद्धःपृथिवीपतिः ॥ अन्यानाज्ञाकरान्प्रेष्यबलान्नेष्यतिसांप्रतम् ॥ ८ ॥ केशेष्वाकृष्यतेनूनंदानवाबलदर्पिताः॥त्वां नयिष्यंतिवामोरुतरसाशुंभसन्निधौ ॥ ९ ॥ स्वलज्जांरक्षतन्वंगिसाहसंसर्वथात्यज ॥ मानितागच्छतत्पार्श्वेमानपात्रंयतोऽसिवै ॥ १० ॥ क्वयुद्धंनिशितैर्बाणैः क्वसुखंरतिसंगजम् ॥ साराऽसारंपरिच्छिद्यकुरुमेवचनंपटु ॥११॥ भजशुंभंनिशुंभंवालब्धासिपरमंशुभम् ॥ देव्युवाच ॥ सत्यंदूतमहाभागप्रवक्तुंनिपुणोह्यसि ॥१२॥ निशुंभशुंभौजानामिबलवंताविति ध्रुवम् ॥ प्रतिज्ञामेकृतावाल्यादन्यथासाकथंभवेत् ॥१३॥ तस्माद्ब्रूहिनिशुंभंचशुंभंवाबलवत्तरम् ॥ विना युद्धंनमेभर्ताभविताकोऽपिसौष्ठवात् ॥ १४ ॥ जित्वामांतरसाकामंकरंगृह्णातुसांप्रतम् ॥ युद्धेच्छयासमायातांविद्धिमामबलांनृप ॥ १५ ॥ युद्धंदेहिसम र्थोऽसिवीरधर्मंसमाचर ॥ विभेषिममशूलाच्चेत्पातालंगच्छमाचिरम् ॥१६॥त्रिदिवंचधरांत्यक्त्वाजीवितेच्छायदस्तिते ॥ इतिदूतवदाऽऽशुत्वंगत्वास्वपति मादरात् ॥ १७ ॥ सविचार्ययथायुक्तंकरिष्यतिमहाबलः ॥ संसारेदूतधर्मोऽयंयत्सत्यंभाषणंकिल ॥ १८ ॥ शत्रौपत्यौचधर्मज्ञतथात्वंकुरुमाचिरम् ॥ व्यासउवाच ॥ अथतद्वचनंश्रुत्वानीतिमद्बलसंयुतम् ॥ १९ ॥ हेतुयुक्तंप्रगल्भंचविस्मितःप्रययौतदा ॥ गत्वादैत्यपतिंदूतोविचार्यचपुनःपुनः ॥ २० ॥ प्रणम्यपादयोःप्रह्वःप्रत्युवाचनृपंचतम् ॥ राजनीतिकरंवाक्यंमृदुपूर्वंप्रियंवचः ॥२१॥ दूतउवाच ॥ सत्यंप्रियंचवक्तव्यंतेनाचिंतापरोह्यहम् ॥ सत्यंप्रियंच राजेंद्रवचनंदुर्लभंकिल ॥ २२ ॥ अप्रियंवदतांकामंराजाकुप्यतिसर्वथा ॥ साक्षात्कुतःसमायाताकस्यवाकिंबलाऽबला ॥ २३ ॥

जन्नहंचिंतापरोऽस्मीत्यर्थः ॥ कुतश्चितापरइतिचेत्तत्राह । सत्यंप्रियंचेति ॥ यदिसत्यमुच्यतेतर्हितत्कर्णकठोरत्वादप्रियमेवभवति॥यदितुयथामनोरंजनंभवतितथावक्तव्यंतर्हिकार्यहानिः॥ अतोहिसत्यप्रियात्मकंवाक्यंदुर्लभमित्यर्थः ॥ २२ ॥ अथराजकार्याऽनुरोधेनसत्यमेववक्तव्यंतदातस्यकर्णकठोरत्वाद्राजासर्वथाकुप्यतीत्यर्थः ॥ एतादृशमतिकठोरंवक्तुमयोग्यंतयोदाहृत मितिभावः ॥ अवलाकिंबलेत्यन्वयः ॥ २३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदंकिंचिदपिज्ञानगोचरंनभवति ॥ मयाकिंवक्तव्यमित्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ यद्रोचतेतवेतिशेषः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

नज्ञानगोचरंकिंचित्किंब्रवीमिविचेष्टितम् ॥ युद्धकामामयादृष्टागर्विताकटुभाषिणी ॥ २४ ॥ तयायत्कथितंसम्यक्तच्छृणुष्वमहामते ॥ मयाबाल्यात्प्रतिज्ञेयंकृतापूर्वविनोदतः ॥ २५ ॥ सखीनांपुरतःकामंविवाहंप्रतिसर्वथा ॥ योमांयुद्धेजयेदद्धादर्पंचविधुनोतिवै ॥ २६ ॥ तंवरिष्याम्यहंकामंपतिंसमबलंकिल ॥ नमेप्रतिज्ञामिथ्यासाकर्तव्यानृपसत्तम ॥२७॥ तस्माद्युद्धचस्वधर्मज्ञजित्वामांस्ववशंकुरु ॥ तयेतिव्याहृतंवाक्यंश्रुत्वाऽहंसमुपागतः ॥२८॥ यथेच्छसिमहाराजतथाकुरुतवप्रियम् ॥ सायुद्धार्थंकृतमतिःसायुधासिंहगामिनी ॥ २९ ॥ निश्चलावर्ततेभूपयद्योग्यंतद्विधीयताम् ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यसुग्रीवस्यनराधिपः ॥ ३० ॥ पप्रच्छभ्रातरंशूरंसमीपस्थंमहाबलम् ॥ शुंभउवाच ॥ भ्रातःकिमत्रकर्तव्यंब्रूहिसत्यंमहामते ॥ ३१ ॥ नार्यैकायोद्धुकामाऽस्तिसमाह्वयतिसांप्रतम् ॥ अहंगच्छामिसंग्रामेत्वंवागच्छबलान्वितः ॥ ३२ ॥ यद्रोचतेनिशुंभाऽद्यतत्कर्तव्यंमयाकिल ॥ निशुंभउवाच ॥ नमयानत्वयावीरगंतव्यंरणमूर्धनि ॥३३॥ प्रेषयस्वमहाराजत्वरितंधूम्रलोचनम्॥ सगत्वातांरणेजित्वागृहीत्वाचारुलोचनाम् ॥३४॥ आगमिष्यतिशुंभाऽत्रविवाहःसंविधीयताम्॥व्यासउवाच॥तन्निशम्यवचस्तस्यशुंभोभ्रातुःकनीयसः ॥३५॥ कोपात्संप्रेषयामासपार्श्वस्थंधूम्रलोचनम्॥शुंभउवाच ॥ धूम्रलोचनगच्छाऽऽशुसैन्येनमहताऽऽवृतः ॥ ३६ ॥ गृहीत्वाऽऽनयतांमुग्धांस्ववीर्यमदमोहिताम् ॥ देवोवादानवोवाऽपिमनुष्योवामहाबलः ॥ ३७ ॥ तत्पार्ष्णिग्राहतांप्राप्तोहंतव्यस्तरसात्वया ॥ तत्पार्श्ववर्तिनींकालींहत्वासंगृह्यतांपुनः ॥ ३८ ॥ शीघ्रमत्रसमागच्छकृत्वाकार्यमनुत्तमम् ॥ रक्षणीयात्वयासाध्वीमुंचंतीमृदुमार्गणान् ॥ ३९ ॥ यत्नेनमहतावीरमृदुदेहाकृशोदरी ॥ तत्सहायाश्चहंतव्यायेरणेशस्त्रपाणयः ॥ ४० ॥ सर्वथासानहंतव्यारक्षणीयाप्रयत्नतः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्यादिष्टस्तदाराज्ञातरसाधूम्रलोचनः ॥४१॥ प्रणम्यशुंभंसैन्येनवृतःशीघ्रंययौरणे ॥ असाधूनांसहस्राणांषष्ट्यातेषांवृतस्तथा ॥ ४२ ॥ सददर्शततोदेवींरम्योपवनसंस्थिताम् ॥ दृष्ट्वातांमृगशावाक्षींविनयेनसमन्वितः ॥ ४३ ॥ उवाचवचनंश्लक्ष्णंहेतुमद्रसभूषितम् ॥ शृणुदेविमहाभागेशुंभस्त्वद्विरहाऽऽतुरः ॥ ४४ ॥ दूतंप्रेषितवान्पार्श्वेतवनीतिविशारदः ॥ रसभंगभयोद्विग्नःसामपूर्वंत्वयिस्वयम् ॥ ४५ ॥ तेनाऽऽगत्यवचःप्रोक्तंविपरीतंवरा नने ॥ वचसातेनमेभर्ताचिंताविष्टमनानृपः ॥ ४६ ॥ बभूवरसमार्गज्ञेशुंभःकामविमोहितः ॥ दूतेनतेननज्ञातंहेतुगर्भंवचस्तव ॥ ४७ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ रक्षणीया नहंतव्येत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ असाधूनांदैत्यानामित्यर्थः ॥ तदुक्तम् ॥वृतःषष्ट्यासहस्राणामसुराणांद्रुतंययाविति मार्कंडेयपुराणे ॥ षष्ट्यासहस्राऽसुरैःसहितइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ रम्योपवनसंस्थितांददर्शेत्यन्वयः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ तेनदूतेनवचस्त्वदुक्तमित्यर्थः ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





यदुक्तंत्वयाकठिनंगूढतात्पर्यंवचोवाक्यमित्यर्थः ॥ नज्ञातइति ॥ तवाऽभिप्रेतःसंग्रामस्तेनमूढेननज्ञातइत्यर्थः ॥ ४८ ॥ कोसौद्विविधःसंग्रामस्तदाह । रतिजोऽथोत्साहजश्चेति ॥ पात्रभेद माह । रतिजस्त्वयीति ॥४९॥ इदंतवाऽभिप्रेतमहंजानामिनपूर्वंप्रेषितोमूढोदूतइत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ तस्मादहंपूर्वापेक्षयाचतुरोस्मिवचनंममशृण्वित्याह । चतुरासीति ॥ ५२ ॥५३॥ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ सीधुसेकेनस्वमुखमदिरासेकेनबकुलवृक्षं तथा कुरुबकवृक्षंविकासितमिवराजानंपादघातेनविकासितम् ॥ विकसितमशोकमशोकवृक्षं

योमांजयतिसंग्रामेयदुक्तंकठिनंवचः ॥ नज्ञातस्तेनसंग्रामोद्विविधःखलुमानिनि ॥ ४८ ॥ रतिजोऽथोत्साहजश्चपात्रभेदेविवक्षितः ॥ रतिजस्त्वयिवामोरुशत्रोरुत्साहजःस्मृतः ॥ ४९ ॥ सुखदःप्रथमःकांतेदुःखदश्चाऽरिजःस्मृतः ॥ जानाम्यहंवरारोहेभवत्यामानसंकिल ॥ ५० ॥ रतिसंग्रामभावस्तेहृदये परिवर्तते ॥ इतितज्ज्ञंविदित्वामांत्वत्सकाशंनराऽधिपः ॥ ५१ ॥ प्रेषयामासशुंभोऽद्यबलेनमहताऽऽवृतम् ॥ चतुराऽसिमहाभागेशृणुमेवचनंमृदु ॥ ॥ ५२ ॥ भजशुंभंत्रिलोकेशंदेवदर्पनिबर्हणम् ॥ पट्टराज्ञीप्रियाभूत्वाभुंक्ष्वभोगाननुत्तमान् ॥ ५३ ॥ जेष्यतित्वांमहाबाहुःशुंभःकामबलार्थवित् ॥ विचित्रान्कुरुहावांस्त्वंसोऽपिभावान्करिष्यति ॥ ५४ ॥ भविष्यतिकालिकेयंतत्रवैनर्मसाक्षिणी ॥ एवंसंगरयोगेनपतिमैपरमार्थवित् ॥ ५५ ॥ जित्वात्वांसुखशय्यायांपरिश्रांतांकरिष्यति ॥ रक्तदेहांनखाघातैर्दंतैश्चखंडिताधराम् ॥ ५६ ॥ स्वेदक्लिन्नांप्रभग्नांत्वांसंविधास्यतिभूपतिः ॥ भवितामानसःकामोरतिसंग्रामजस्तव ॥ ५७ ॥ दर्शनाद्वशएवाऽऽस्तेशुंभःसर्वात्मनाप्रिये ॥ वचनंकुरुमेपथ्यंहितकृच्चाऽपिपेशलम् ॥ ५८ ॥ भजशुंभंगणाध्यक्षंमाननीयातिमानिनी ॥ मंदभाग्याश्चतेनूनंह्यस्त्रयुद्धप्रियाश्चये ॥ ५९ ॥ नतदर्हासिकांतेत्वंसदासुरतवल्लभे ॥ अशोकंकुरुराजानंपादघातविकासितम् ॥६०॥ बकुलंसीधुसेकेनतथाकुरुबकंकुरु ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कन्धेदेवीमाहात्म्येचतुर्विंशोध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाविररामाऽसौवचनंधूम्रलोचनः ॥ प्रत्युवाचतदाकालीप्रहस्यललितंवचः ॥ १ ॥ विदूषकोऽसिजाल्मत्वंशैलूषइवभाषसे ॥ वृथामनोरथांश्चित्तेकरोषिमधुरंवदन् ॥ २ ॥ बलवान्बलसंयुक्तःप्रेषितोऽसिदुरात्मना ॥ कुरुयुद्धंवृथावादंमुंचमूढमतेऽधुना ॥ ३ ॥ हत्वाशुंभंनिशुंभंचत्वदन्यान्वाबलाऽधिकान् ॥ देवीक्रुद्धाशराऽऽघातैर्व्रजिष्यतिनिजालयम् ॥ ४ ॥ क्वाऽसौमंदमतिःशुंभःक्वाविश्वविमोहिनी ॥ अयुक्तःखलुसंसारेविवाहविधिरेतयोः ॥ ५ ॥

कुर्वित्यर्थः ॥ पादघातेनाशोकवृक्षस्यसीधुसेकेनबकुलकुरुबकयोर्वृद्धेर्लोकप्रसिद्धत्वात् ॥ ६० ॥ ॥ छ ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ षष्टिश्लोकैर्महादेव्याहतोऽसौधूम्रलोचनः ॥ विचारःशुंभसदसिजातइत्यपिकीर्त्यते ॥ १ ॥ धूम्रलोचनवाक्यविरामोत्तरंजातंवृत्तमाह । इत्युक्त्वाविररामेति ॥ कालीकौशिकी ॥ १ ॥ विदूषकोऽसीति ॥ विदूषकश्चाटुवटौपरनिंदाकरेऽपिचेतिमेदिनी ॥ शैलूषोनटः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ आजौयुद्धे ॥ एनांसुंदरीमंबिकाम् ॥ अहंराजानंप्रतीत्यन्वयः ॥ ९ ॥ तर्हिकार्यंकुतोनकरोषिचेत्तत्राह। रसभंगेति ॥ १० ॥ नाऽयंधर्मोमुखेनवल्गनरूपः ॥ ११॥
॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ खरान्रथवाहान्रासभान् ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ यदेति ॥ यदायस्मिन्कालेक्षिपतेत्यजतितस्मिन्नेवकालेसांबिकायस्याः

सिंहीकिंत्वतिकामार्ताजंबुकंकुरुतेपतिम् ॥ करिणीगर्दभंवापिगवयंसुराभिःकिमु ॥ ६ ॥ गच्छशुंभंनिशुंभंचवदसत्यंवचोमम ॥ कुरुयुद्धंनचेद्याहिपाता
लंतरसाऽधुना ॥ ७ ॥ व्यासउवाच ॥ कालिकायावचःश्रुत्वासदैत्योधूम्रलोचनः ॥ तामुवाचमहाभागक्रोधसंरक्तलोचनः ॥ ८॥ दुर्दर्शैत्वांनिहत्याऽऽजौ
सिंहंचमदगर्वितम् ॥ गृहीत्वैनांगमिष्यामिराजानंप्रत्यहंकिल ॥ ९ ॥ रसभंगभयात्कालिविभेमित्विहसांप्रतम् ॥ नोचेत्त्वांनिशितैर्बाणैर्हन्म्यद्यकलहप्रि
ये ॥ १० ॥ कालिकोवाच ॥ किंविकत्थसिमंदात्मन्नायंधर्मोधनुष्मताम् ॥ स्वशक्त्यामुंचविशिखान्गंतासियमसंसदि ॥ ११ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छु
त्वावचनंदैत्यःसंगृह्यकार्मुकंदृढम् ॥ कालिकांतांशराऽऽसारैर्ववर्षाऽतिशिलाशितैः ॥ १२ ॥ देवास्तुप्रेक्षकास्तत्रविमानवरसंस्थिताः ॥ तांस्तुवंतोजयेत्यू
चुर्देवींशक्रपुरोगमाः ॥ १३ ॥ तयोः परस्परंयुद्धंप्रवृत्तंचाऽतिदारुणम् ॥ बाणखड्गगदाशक्तिमुसलादिभिरुत्कटम् ॥ १४ ॥ कालिकाबाणपातैस्तुहत्वापू
र्वंखरानथ ॥ बभंजतद्रथंव्यूढंजहासचमुहुर्मुहुः ॥ १५ ॥ सचाऽन्यंरथमारूढःकोपेनप्रज्वलन्निव ॥ बाणवृष्टिंचकारोग्रांकालिकोपरिभारत ॥ १६ ॥ सा
ऽपिचिच्छेदतरसातस्यबाणानसंगतान् ॥ मुमोचाऽन्यानुग्रवेगान्दानवोपरिकालिका ॥ १७ ॥ तैर्बाणैर्निहतास्तस्यपार्ष्णिग्राहाःसहस्रशः ॥ बभंजचरथं
वेगात्सूतंहत्वाखरानपि ॥ १८ ॥ चिच्छेदतद्धनुःसद्योबाणैरुरगसन्निभैः ॥ मुदंचक्रेसुराणांसाशंखनादंतथाऽकरोत् ॥ १९ ॥ विरथःपरिघंगृह्यसर्वलोहम
यंदृढम् ॥ आजगामरथोपस्थंकुपितोधूम्रलोचनः ॥ २० ॥ वाचानिर्भर्त्सयन्कालींकरालःकालसन्निभः॥अद्यैवत्वांहनिष्यामिकुरूपेपिंगलोचने ॥ २१ ॥
इत्युक्त्वासहसाऽऽगत्यपरिघंक्षिपतेयदा ॥ हुंकारेणैवतंभस्मचकारतरसांबिका ॥ २२ ॥ दृष्ट्वाभस्मीकृतंदैत्यंसैनिकाभयविह्वलाः॥चक्रुःपलायनंसद्योहा
तातेत्यब्रुवन्पथि ॥ २३ ॥ देवास्तंनिहतंदृष्ट्वादानवंधूम्रलोचनम् ॥ मुमुचुःपुष्पवृष्टिंतेमुदितागगनेस्थिताः ॥२४॥ रणभूमिस्तदाराजन्दारुणासमपद्यत ॥
निहतैर्दानवैरश्वैःखरैश्चवारणैस्तथा ॥ २५ ॥ गृध्राःकाकावटाःश्येनावरफाजंबुकास्तथा ॥ ननृतुश्चुक्रुशुःप्रेतान्पतितान्रणभूमिषु ॥ २६ ॥

शरीरात्कौशिकीनिर्गतासासुंदरी अंबिकाहुंकारेणैवहुंकारोच्चारणेनैवतंभस्मचकार ॥ काष्ठंभस्मचकारेतिवत्प्रयोगः ॥ तथाचांबिकयासहुंकारेणनाशितोनतुकालिकया ॥ तदुक्तंमार्कंडेय
पुराणे ॥ हुंकारेणैवतंभस्मसाचकारांबिकाततइति ॥ २२ ॥ पथि हातातेत्यब्रुवन्नित्यन्वयः ॥ २३ ॥ २४ ॥ निहतैर्निर्गतप्राणैर्दानवादिभिर्दारुणा भयंकरासमपद्यतेत्यन्वयः ॥ २५ ॥
वटावरफाः ॥ वटवरफशब्देनपिशाचविशेषाः ॥ तदुक्तंशूलिनीमंत्रविधाने ॥ सहस्रंप्रजपेन्मंत्रंशूलिन्यायंस्पृशन्नरः ॥ वटाश्चवरफाश्चैवनस्पृशांतिकदाच नेति ॥ चुक्रुशुःकोलाहलंचक्रुः ॥
रणभूमिषुप्रेतान्पतितान्दृष्ट्वेतिशेषः ॥ २६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ यदासर्वेतेनकेसरिणानिपातिताः ॥ यदाचरथाभग्नाबाणपातैर्हयाश्चविनाशितास्तदागगनस्थाइत्यन्वयः ॥ ३४ ॥ भग्नंबलंधूम्रलोचनंपातितंचदृष्ट्वाऽस्माभिर्जयोनैवभवेत्तवेतिनिश्चयःकृतइत्यन्वयः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ संधिर्मैत्री ॥ विग्रहःशत्रुत्वम् ॥ स्थानमुदासीनतयाऽवस्थानम् ॥ निर्याणंपला

अंबिकातद्रणस्थानंत्यक्त्वादूरंस्थलांतरे ॥ गत्वाचकारचाऽप्युग्रंशंखनादंभयप्रदम्॥२७॥तंश्रुत्वादरशब्दंतुशुंभःसद्मनिसंस्थितः ॥ दृष्ट्वाऽथदानवान्भग्नानागतान्रुधिरोक्षितान् ॥ २८ ॥ छिन्नपादकराक्षांश्चमंचकारोपितानपि॥भग्नपृष्ठकटिग्रीवान्क्रंदमाननेकशः ॥२९॥ वीक्ष्यशुंभोनिशुंभश्चक्रगतोधूम्रलोचनः ॥ कथंभग्नाःसमायातानाऽऽनीताकिंवरानना ॥ ३० ॥ सैन्यंकुत्रगतंमंदाःकथयंतुयथोचितम् ॥ कस्याऽयंशंखनादोऽद्यश्रूयतेभयवर्धनः ॥ ॥३१॥गणाऊचुः ॥ बलंचपातितंसर्वंनिहतोधूम्रलोचनः ॥ कृतंकालिकयाकर्मरणभूमावमानुषम् ॥ ३२ ॥ शंखनादोंबिकायास्तुगगनंव्याप्यराजते ॥ हर्षदःसुरसंघानांदानवानांचशोककृत् ॥ ३३ ॥ यदानिपातिताःसर्वेतेनकेसरिणाविभो ॥ रथाभग्नाहयाश्चैवबाणपातैर्विनाशिताः ॥ ३४ ॥ गगनस्थाःसुराश्चक्रुःपुष्पवृष्टिंमुदान्विताः ॥ दृष्ट्वाभग्नंबलंसर्वंपातितंधूम्रलोचनम् ॥ ३५ ॥ निश्चयस्तुकृतोऽस्माभिर्जयोनैवभवेदिति ॥ विचारंकुरुराजेंद्रमंत्रिभिर्मंत्रवित्तमैः ॥३६॥ विस्मयोऽयंमहाराजयदेकाजगदंबिका ॥ भवद्भिःसहयुद्धायसंस्थितासैन्यवर्जिता ॥३७॥ निर्भयैकाकिनीबालासिंहारूढामदोत्कटा ॥ चित्रमेतन्महाराजभासतेऽद्भुतमंजसा ॥ ३८ ॥ संधिर्वाविग्रहोवाऽद्यस्थानंनिर्याणमेवच ॥ मंत्रयित्वामहाराजकुरुकार्ययथारुचि ॥ ३९ ॥ तत्सन्निधौबलंनाऽस्तितथाऽपिशत्रुतापन ॥ पार्ष्णिग्राहाःसुराःसर्वेभविष्यंतिकिलाऽऽपदि ॥ ४० ॥ समयेतत्समीपस्थौज्ञातौचहरिशंकरौ ॥ लोकपालाःसमीपेऽद्यवर्ततेगगनेस्थिताः ॥ ४१ ॥ रक्षोगणाश्चगंधर्वाःकिन्नरामानुषास्तथा ॥ तत्सहायाश्चमंतव्यःसमयेसुरतापन ॥ ४२ ॥ अस्माकंमतिमानेनज्ञायतेसर्वथेदृशम् ॥ अंबिकायाःसहायाऽऽज्ञात्तत्कार्याज्ञानकाचन ॥४३॥ एकानाशयितुंशक्ताजगत्सर्वंचराचरम् ॥ काकथादानवानांतुसर्वेषामितिनिश्चयः ॥४४॥ इतिज्ञात्वामहाभागयथारुचितथाकुरु ॥ हितंसत्यंमितंवाक्यंवक्तव्यमनुयायिभिः ॥ ४५ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतेषांशुंभःपरबलार्दनः ॥ कनीयांसंसमानीयपप्रच्छरहसिस्थितः ॥ ४६ ॥ भ्रातःकालिकयाऽद्यैवनिहतोधूम्रलोचनः ॥ बलंचशातितंसर्वंगणाभग्नाःसमागताः ॥ ४७ ॥ अंबिकाशंखनादंवैकरोतिमदगर्विता ॥ ज्ञानिनांचैवदुर्ज्ञेयागतिःकालस्यसर्वथा ॥ ४८ ॥ तृणंवज्रायतेनूनंवज्रंचैवतृणायते ॥ बलवान्बलहीनःस्याद्दैवस्यगतिरीदृशी ॥ ४९ ॥ पृच्छामित्वांमहाभागकिंकर्तव्यमितःपरम् ॥ अभोग्याचांबिकानूनंकारणादत्रवागता ॥ ५० ॥

यनम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ समयेइति ॥ तावपिहरिशंकरौसमयेसहायौभविष्यतइतिशेषः ॥ ४१ ॥ रक्षोगणाःभूतगणाः ॥ ४२ ॥ वस्तुतस्तस्याःसहायापेक्षैवनास्तीत्याह । अंबिकायाइति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ अभोग्येति ॥ अस्मात्कारणात्पराभवरूपादत्रसमागतांबिकानूनमभोग्यानसेवनीयेतियुक्तं पलायनंवायुक्तंयुद्धंवायुक्तमित्यन्वयः ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ अन्यथेति ॥ बलवद्दैवादहमेवमरिष्यामिचेदित्यर्थः ॥ तदेतिशेषः ॥ तस्यमृतेमयीत्यत्राऽन्वयः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ तामबलांकालिकांहंतुमित्यर्थः ॥ ५८ ॥ गृहीत्वेति ॥ कालिकांनिहत्याऽथतामंबिकांगृहीत्वेत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ ॥ अर्धाऽधिकैः

युक्तंपलायनंवीरयुद्धंवावदसत्वरम् ॥ लघुंज्येष्ठंविजानामित्वामहंकार्यसंकटे ॥ ५१ ॥ निशुंभउवाच ॥ नवापलायनंयुक्तंनदुर्गग्रहणंतथा ॥ युद्धमेव परंश्रेयःसर्वथैवाऽनयाऽनघ ॥ ५२ ॥ ससैन्योऽहंगमिष्यामिरणेतुप्रवराश्रितः ॥ हत्वातामागमिष्यामितरसात्वबलामिमाम् ॥ ५३ ॥ अथवाबलवद्दैवादन्यथाचेद्भविष्यति ॥ मृतेमयित्वयाकार्यंविमृश्यचपुनःपुनः ॥ ५४ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाशुंभःप्रोवाचचाऽनुजम् ॥ तिष्ठत्वंचंडमुंडौद्वौगच्छेतांबलसंयुतौ ॥ ५५ ॥ शस्त्रकग्रहणायाऽत्रनयुक्तंगजमोचनम् ॥ चंडमुंडौमहावीरौतांहंतुंसर्वथाक्षमौ ॥ ५६ ॥ इत्युक्त्वाभ्रातरंशुंभंसंभाष्यचमहाबलौ ॥ उवाचवचनंराजाचंडमुंडौपुरःस्थितौ ॥ ५७ ॥ गच्छतंचंडमुंडौद्वौस्वसैन्यपरिवारितौ ॥ हंतुंतामबलांशीघ्रंनिर्लज्जांमदगर्विताम् ॥ ५८ ॥ गृहीत्वाऽथनिहत्याऽऽजौकालिकांपिंगलोचनाम् ॥ आगम्यतांमहाभागौकृत्वाकार्यंमहत्तरम् ॥ ५९ ॥ सानाऽऽयातिगृहीताऽपिगर्विताचांबिकायदि ॥ तदाबाणैर्महातीक्ष्णैर्हंतव्याऽऽहवमंडिता ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपं० पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याज्ञप्तौतदावीरौचंडमुंडौमहाबलौ ॥ जग्मतुस्तरसैवाऽऽजौसैन्येनमहताऽन्वितौ ॥ १ ॥ दृष्ट्वातत्रस्थितांदेवींदेवानांहितकारिणीम् ॥ ऊचतुस्तौमहावीर्यौतदासामान्वितंवचः ॥ ॥ २ ॥ बालेत्वंकिंनजानासिशुंभंसुरबलार्दनम् ॥ निशुंभंचमहावीर्यंतुराषाड्विजयोद्धतम् ॥ ३ ॥ त्वमेकासिवरारोहेकालिकासिंहसंयुता ॥ जेतुमिच्छसिदुर्बुद्धेशुंभंसर्वबलान्वितम् ॥ ४ ॥ मतिदःकोऽपितेनाऽस्तिनारीवाऽपिनरोऽपिवा ॥ देवास्त्वांप्रेरयंत्येवविनाशायतवैवते ॥ ५ ॥ विमृश्यकुरुतन्वंगिकार्यंस्वपरयोर्बलम् ॥ अष्टादशभुजत्वात्त्वंगर्वंचकुरुषेमृषा ॥ ६ ॥ किंभुजैर्बहुभिर्व्यर्थैरायुधैःकिंश्रमप्रदैः॥शुंभस्याऽग्रेसुराणांवैजेतुःसमरशालिनः॥७॥ ऐरावतकरच्छेत्तुर्दैतिदारणकारिणः ॥ जयिनःसुरसंघानांकार्यंकुरुमनोगतम् ॥ ८ ॥ वृथागर्वायसेकांतेकुरुमेवचनंप्रियम् ॥ हितंतवविशालाक्षिसुखदंदुःखनाशनम् ॥ ९ ॥ दुःखदानिचकार्याणित्याज्यानिदूरतोबुधैः ॥ सुखदानिचसेव्यानिशास्त्रतत्त्वविशारदैः ॥ १० ॥ चतुरासिपिकालापेपश्यशुंभबलंमहत् ॥ प्रत्यक्षंसुरसंघानांमर्दनेनमहोदयम् ॥ ११ ॥ प्रत्यक्षंचपरित्यज्यवृथैवाऽनुमितिःकिल ॥ संदेहसहितेकार्येनविपश्चित्प्रवर्तते ॥ १२ ॥

पंचषष्टिपद्यैरयभयंकरम् ॥ युद्धंसमभवद्घोरंश्रीदेव्याश्चंडमुंडयोः ॥ १ ॥ चंडमुंडाऽऽज्ञाऽनंतरंजातंवृत्तमाह । इत्याऽऽज्ञप्ताविति ॥ १ ॥ २ ॥ तुराषाडिंद्रस्तस्यविजयेनोद्धतमुन्मत्तम् ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ स्वपरयोर्बलंविमृश्यविचार्यकार्यंकुर्वित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ वृथैवाऽनुमितिः ॥ देवबलमपिमहोदयंबलत्वाद्दैत्यबलवदित्यनुमितिःवृथैवतत्रदैत्यसंबंधित्वस्योपाधित्वादित्यर्थः ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥१३॥तवदुःखायदेवानांशिक्षाभवतिस्वार्थस्यचसाधिकाभवतीदंकथंत्वयानज्ञातमित्यर्थः ॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥ वस्तुतःपत्यपेक्षाममनास्तीत्याह । नमेइति॥स्वामिनीसर्वेश्वरी

शत्रुःसुराणांपरमःशुंभःसमरदुर्जयः ॥ तस्मात्त्वांप्रेरयंत्यत्रदेवादैत्येशपीडिताः ॥१३॥ तस्मात्तद्वचनैःस्निग्धैर्वंचिताऽसिशुचिस्मिते ॥ दुःखायतवदेवानां शिक्षास्वार्थस्यसाधिका ॥ १४ ॥ कार्यमित्रंपरिक्षिप्यधर्ममित्रंसमाश्रयेत् ॥ देवाःस्वार्थपराःकामंत्वामहंसत्यमब्रुवम् ॥ १५ ॥ भजशुंभंसुरेशानंजेतारं भुवनेश्वरम् ॥ चतुरंसुंदरंशूरंकामशास्त्रविशारदम् ॥ १६ ॥ ऐश्वर्यंसर्वलोकानांप्राप्स्यसेशुंभशासनात् ॥ निश्चयंपरमंकृत्वाभर्तारंभजशोभनम् ॥१७॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाचंडस्यजगदंबिका ॥ मेघगम्भीरनिनदंजगर्जपुनरब्रवीत् ॥ १८ ॥ गच्छजाल्ममृषाकिंत्वंभाषसेवंचकंवचः॥ त्यक्त्वा हरिहरादींश्चशुंभंकस्माद्भजेपतिम् ॥ १९ ॥ नमेकश्चित्पतिःकार्योनकार्यपतिनासह ॥ स्वामिनीसर्वभूतानामहमेवनिशामय ॥ २० ॥ शुंभामेबहवो दृष्टानिशुंभाश्चसहस्रशः ॥ घातिताश्चमयापूर्वंशतशोदैत्यदानवाः ॥ २१ ॥ ममाऽग्रेदेववृंदानिविनष्टानियुगेयुगे ॥ नाशंयास्यंतिदैत्यानांयूथानिपुनर द्यवै ॥ २२ ॥ कालएवाऽऽगतोस्त्यत्रदैत्यसंहारकारकः ॥ वृथात्वंकुरुषेयत्नंरक्षणायाऽऽत्मसंततेः ॥ २३ ॥ कुरुयुद्धंवीरधर्मरक्षायैत्वंमहामते ॥ मरणं भाविदुस्त्याज्यंयशोरक्ष्यंमहात्मभिः ॥ २४ ॥ किंतेकार्यंनिशुंभेनशुंभेनचदुरात्मना ॥ वीरधर्मपरंप्राप्यगच्छस्वर्गंसुरालयम् ॥ २५ ॥ शुंभोनिशुंभश्चै वाऽन्येयेचाऽत्रतवबांधवाः ॥ सर्वेतवाऽनुगाःपश्चादागमिष्यंतिसांप्रतम् ॥ २६ ॥ क्रमशःसर्वदैत्यानांकरिष्याम्यद्यसंक्षयम् ॥ विषादंत्यजमंदात्मन्कुरु युद्धंविशांपते ॥ २७ ॥ त्वामहंनिहनिष्यामिभ्रातरंतवसांप्रतम् ॥ ततःशुंभंनिशुंभंचरक्तबीजंमदोत्कटम् ॥ २८ ॥ अन्यांश्चदानवान्सर्वान्हत्वाऽहंसम रांगणे ॥ गमिष्यामियथास्थानंतिष्ठवागच्छवाद्रुतम् ॥ २९ ॥ गृहाणाऽस्त्रंवृथापुष्टकुरुयुद्धंमयाऽधुना ॥ किंजल्पसिमृषावाक्यंसर्वथाकातरप्रियम् ॥ ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ तयेत्थंप्रेरितौदैत्यौचंडमुंडौक्रुधाऽन्वितौ ॥ ज्याशब्दंतरसाघोरंचक्रतुर्बलदर्पितौ ॥ ३१ ॥ सापिशंखस्वनंचक्रेपूरयंतीदिशोद श ॥ सिंहोपिकुपितस्तावन्नादंसमकरोद्बली ॥ ३२ ॥ तेननादेनशक्राद्याजहर्षुरमरास्तदा ॥ मुनयोयक्षगंधर्वाः सिद्धाःसाध्याश्चकिन्नराः ॥३३॥ युद्धंपर स्परंतत्रजातंकातरभीतिदम् ॥ चंडिकाचण्डयोस्तीव्रंबाणखड्गगदादिभिः ॥ ३४॥ चंडमुक्ताञ्छरान्देवीचिच्छेदनिशितैःशरैः ॥ मुमोचपुनरुग्रासाचंडि कापन्नगानिव ॥ ३५ ॥ गगनंछादितंतत्रसंग्रामेविशिखैस्तदा ॥ शलभैरिवमेघांतेकर्षकाणांभयप्रदैः ॥ ३६ ॥ मुंडोपिसैनिकैःसार्धंपपाततरसारणे ॥ मु मोचबाणवृष्टिंवैक्रुद्धःपरमदारुणः ॥ ३७ ॥ बाणजालंमहद्दृष्ट्वाक्रुद्धातत्रांबिकाभृशम् ॥ कोपेनवदनंतस्यावभूवघनसन्निभम् ॥ ३८ ॥

त्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ कर्षकाणांक्षेत्रकर्षकाणांभयप्रदैर्धान्यादिभक्षणेनभयदायकैः शलभैरिव ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ घनसन्निभंकृष्णवर्णम् ॥ ३८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ललाटफलकादंविकायाललाटदेशादित्यर्थः ॥ ३९ ॥ शुष्कानिर्जलायावापीगंभीरातयासममंतर्गतगर्तवदुदरंयस्याः॥अतिक्षुधितेति तात्पर्यम् ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ अतिभैरवंयथास्यात्तथाचर्वयतिवर्तमानसामीप्येभूतेलट् ॥ चचर्वेत्यर्थः ॥ ४५ ॥ अनंतरैर्व्यवधानरहितैः ॥ ४६ ॥ चंडकरच्छायंसूर्यसदृशम् ॥ चक्रधरोविष्णुस्तदायुधंसुदर्शनम् ॥लक्षण यातद्वदित्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ मंत्रैरभिमंत्रिताईषिकाःशलाकाः ॥ ईषिकास्त्रम् ॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥ यज्ञेपशुवधस्यापेक्षितत्वाद्रणयज्ञेत्वदुद्देशे

कदलीपुष्पनेत्रंचभृकुटीकुटिलंतदा ॥ निष्क्रांताचतदाकालीललाटफलकाद्भुतम् ॥ ३९ ॥ व्याघ्रचर्मांबराक्रूरागजचर्मोत्तरीयका ॥ मुंडमालाधराघोराशुष्कवापीसमोदरा ॥ ४० ॥ खड्गपाशधराऽतीवभीषणाभयदायिनी ॥ खट्वांगधारिणीरौद्राकालरात्रिरिवाऽपरा ॥ ४१ ॥ विस्तीर्णवदनाजिह्वांचालयंतीमुहुर्मुहुः ॥ विस्तारजघनावेगाज्जघानाऽसुरसैनिकान् ॥ ४२ ॥ करेकृत्वामहावीरांस्तरसासारुषान्विता ॥ मुखेचिक्षेपदैतेयान्पिपेषदशनैःशनैः ॥ ॥ ४३ ॥ गजान्घंटान्वितान्हस्तेगृहीत्वानिदधौमुखे ॥ सारोहान्भक्षयित्वाजौसाट्टहासंचकारह ॥ ४४ ॥ तथैवतुरगानुष्ट्रांस्तथासारथिभिःसह ॥ निक्षिप्यवक्त्रेदशनैश्चर्वयंत्यतिभैरवम् ॥ ४५ ॥ हन्यमानंबलंप्रेक्ष्यचंडमुंडौमहासुरौ ॥ छादयामासतुर्देवींबाणाऽऽसारैरनंतरैः ॥ ४६ ॥ चंडश्चंडकरच्छायंचक्रंचक्रधराऽऽयुधम् ॥ चिक्षेपतरसादेवींननादचमुहुर्मुहुः ॥ ४७॥ नदंतंवीक्ष्यतंकालीरथांगंचरविप्रभम् ॥ बाणेनैकेनचिच्छेदसुप्रभंतत्सुदर्शनम् ॥४८॥ तंजघानशरैस्तीक्ष्णैश्चंडंचंडीशिलाशितैः ॥ मूर्छितोऽसौपपातोर्व्यांदेवीबाणार्दितोभृशम् ॥ ४९ ॥ पतितंभ्रातरंवीक्ष्यमुंडोदुःखार्दितस्तदा ॥ चकारशरवृष्टिंचकालिकोपरिकोपतः ॥ ५० ॥ चंडिकामुंडनिर्मुक्तांशरवृष्टिंसुदारुणाम् ॥ ईषिकास्त्रैर्बलान्मुक्तैश्चकारातिलशःक्षणात् ॥५१॥ अर्धचंद्रेणबाणेनताडयामासतंपुनः ॥ पतितोऽसौमहावीर्योमेदिन्यांमदवर्जितः ॥ ५२ ॥ हाहाकारोमहानासीद्दानवानांबलेतदा ॥ जहर्षुरमराःसर्वेगगनस्थागतव्यथाः ॥ ॥ ५३ ॥ विहायमूर्च्छांचंडस्तुसंगृह्यमहतींगदाम् ॥ तरसाताडयामासकालिकांदक्षिणेभुजे ॥ ५४ ॥ वंचयित्वागदाघातंतंबबंधमहासुरम् ॥ तरसाबाणपाशेनमंत्रमुक्तेनकालिका ॥५५॥ उत्थितस्तुतदामुंडोबद्धंदृष्ट्वानुजंबलात् ॥ आजगामसुसन्नद्धःशक्तिंकृत्वाकरेदृढाम् ॥ ५६ ॥ आगच्छंतंतदाकालीदानवंवीक्ष्यसत्वरम् ॥ बबंधतरसातंतुद्वितीयंभ्रातरंभृशम् ॥ ५७ ॥ गृहीत्वातौमहावीर्यौचंडमुंडौशशाविव ॥ कुर्वतीविपुलंहासमाजगामांबिकांप्रति ॥ ॥ ५८ ॥ आगत्यतामथोवाचगृहाणेमौपशूप्रिये ॥ रणयज्ञार्थमानीतौदानवौरणदुर्जयौ ॥ ५९ ॥ तावानीतौतदावीक्ष्यचंडिकातौवृकाविव ॥ अंबिकाकालिकांप्राहमाधुरीसंयुतंवचः ॥ ६० ॥ वधंमाकुरुमामुंचचतुरासिरणप्रिये ॥ देवानांकार्यसंसिद्धिःकर्तव्यातरसात्वया ॥ ६१ ॥

नेमौपशूमयानीतावित्याह ॥ रणयज्ञार्थमिति ॥५९॥६०॥ वधंमाकुर्विति ॥ वधंहिंसांमाकुरु तर्हि किंमोचनीयौतत्राह । मामुंचेति ॥ तर्हिबद्ध्वास्थापनीयौतत्राह । चतुरासीति ॥ हेरणाप्रियेचतुरासित्वंमद्वाक्ययोरर्थंविचार्यदेवानांकार्यसिद्धिस्तरसाकर्तव्यात्वयेत्यर्थः ॥ रणेयज्ञबुद्ध्याऽनयोःपशुबुद्ध्याचहननेयागीयहिंसायाहिंसात्वाऽभावाद्बंधोऽपिनभविष्यति ॥ मोचनमपिनभविष्यति ॥ देवानांकार्यसिद्धिश्चभविष्यतीतितदभिप्रायइति ॥ ६१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कालिकादेवींप्राहेत्याह। इतितस्याइति ॥ ६२ ॥ महत्कार्येदेव्यर्थंबलिदानंकर्तव्यमितिदेव्यभिप्रायंज्ञात्वाकालिकयाऽग्रेमहादैत्यवधादिमहाकार्यसिद्ध्यर्थंपशुबुद्ध्या श्रीदेव्यग्रेतोहताविति गूढोऽभिसंधिः ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ अत्रयद्यंबिकाशब्देनकौशिकीमातागृह्यते तदांबिकायाललाटफलकान्निःसृतायाःकाल्याश्चंडमुंडौनिहत्याऽऽगतायाअंबिकयैवचामुंडेतिनामकरणंकृतमित्यर्थःसंपद्यते ॥ यदित्वंबिकाशब्देनकौशिक्येवगृह्यते तदाकौशिकीललाटफलकान्निःसृतायाः काल्याश्चंडमुंडौनिहत्यागतायाः कौशिक्यैवचामुंडेतिनामकरणंकृतमित्यर्थः संपद्यते ॥ मार्कंडेयपुराणेप्युभयपक्षौसंभवतः ॥ प्रांचस्तुद्वितीयपक्षमेवसप्तशतीव्याख्यायांसमाश्रयंति ॥ परंत्वंबिकाशब्दस्यकौशिकीजनन्यांशक्तेःपूर्वमुभयपुराणयोरुक्तत्वात्सैवाऽत्रग्राह्या युक्तत्वादितिप्रथमपक्षएवज्यायानितिममप्रतिभाति ॥ चामुंडेति ॥ पृषोदरादित्वात्साधुः ॥ इतश्रीदे० पं० चंडमुंडवधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ ॥ अर्धाऽधिकैस्त्रिष

व्यासउवाच ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वाकालिकाप्राहतांपुनः ॥ युद्धयज्ञेऽतिविख्यातेखड्गयूपेप्रतिष्ठिते ॥ ६२ ॥ आलंभंचकरिष्यामियथाहिंसानजायते ॥ इत्युक्त्वासातदादेवीखड्गेनशिरसीतयोः ॥ ६३ ॥ चकर्ततरसाकालीपपौचरुधिरंमुदा ॥ एवंदैत्यौहतौदृष्ट्वामुदितोवाचचांबिका ॥६४॥ कृतंकार्यसुराणांतेददाम्यद्यवरंशुभम् ॥ चंडमुंडौहतौयस्मात्तस्मात्तेनामकालिके ॥ ६५ ॥ चामुंडेतिसुविख्यातंभविष्यतिधरातले ॥ इतिश्रीदे०म०पंचमस्कंधे चंडमुंडवधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ हतौतौदानवौदृष्ट्वाहतशेषाश्चसैनिकाः ॥ पलायनंततःकृत्वाजग्मुःसर्वेनृपंप्रति ॥ १ ॥ भिन्नांगाविशिखैःकेचित्केचिच्छिन्नकरास्तथा॥ रुधिरस्रावदेहाश्चरुदंतोऽभिययुःपुरे॥२॥ गत्वादैत्यपतिंसर्वेचक्रुर्बुंबारवंमुहुः॥रक्षरक्षमहाराजभक्षयत्यद्यकालिका ॥ ३ ॥ तयाहतौमहावीरौचंडमुंडौसुरार्दनौ ॥ भक्षिताःसैनिकाःसर्वेवयंभग्नाभयाऽऽतुराः ॥ ४ ॥ भीतिदंचरणस्थानंकृतंकालिकयाप्रभो ॥पातितैर्गजवीराश्वैर्दासेरकपदातिभिः ॥ ५ ॥ शोणितौघवहाकुल्याकृतामांसाऽतिकर्दमा ॥ केशशैवलिनीभग्नरथचक्रविराजिता ॥६॥ छिन्नबाह्वादिमत्स्याढ्याशीर्षतुंबीफलान्विता ॥ भयदाकातराणांवैसुराणांमोदवर्धिनी ॥ ७ ॥ कुलंरक्षमहाराजपातालंगच्छसत्वरम् ॥ क्रुद्धादेवीक्षयंसद्यःकरिष्यतिनसंशयः ॥८॥ सिंहोऽपिभक्षयत्याजौदानवान्दनुजेश्वर ॥ तथैवकालिकादेवीहंतिबाणैरनेकधा॥ ९ ॥ तस्मात्त्वमपिराजेंद्रमरणायमृषामतिम् ॥ करोषिसहितोभ्रात्राशुंभेनकुपिताशयः ॥ १० ॥ किंकरिष्यतिनार्येषाक्रूराकुलविनाशिनी ॥ यस्याहेतोर्महाराजहंतुमिच्छसिबांधवान् ॥ ११ ॥ दैवाधीनौमहाराजलोकेजयपराजयौ ॥ अल्पार्थायमहद्दुःखंबुद्धिमान्नप्रकल्पयेत् ॥ १२ ॥ चित्रंपश्यविधेःकर्मयदधीनंजगत्प्रभो ॥ निहताराक्षसाःसर्वेस्त्रियापश्यैकयानया ॥ १३ ॥

ष्ट्यात्मपद्यैरथसविस्तरम् ॥ रक्तबीजाऽसुरस्याऽत्रयुद्धंसम्यगिहोच्यते ॥ १ ॥ चंडमुंडवधोत्तरंजातंवृत्तमाह। हतौताविति ॥ १ ॥ २ ॥ बुंबारवमितिहस्तमुखसंयोगेनाक्रियमाणःशब्दोबुंबारवः ॥ कस्मिंश्चिदनर्थेसंप्राप्तेएवतंशब्दंलोकाःकुर्वंति ॥ ३ ॥ ४ ॥ दासेरकपदातिभिरिति ॥ दासेरकस्तुकरभेदासीपुत्रेचधीवरेइतिमेदिनी ॥ दासेरकाश्चपदातयश्चेतिद्वंद्वःकर्मधारयोवा ॥ दासेरकाउष्ट्रावा ॥ ५ ॥ कुल्यानदी ॥ शोणितमेवजलंतस्यप्रापिकामांसमेवातिशयितःकर्दमोयस्यां केशरूपशैवालवतीभग्नारथास्तेषांचक्रैरावर्तस्थानापन्नैर्विराजिता ॥ ६ ॥ छिन्नायेबाहुपादास्तएवमत्स्यास्तैर्युक्ता ॥ शीर्षाण्येवतुंबीफलानितद्युक्ता ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ किंकरिष्यतीति ॥ किंमनयाफलमित्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सुसंभ्रमआश्चर्यम् ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ जीविताशायुष्माकंबलीयस्यस्तीत्यर्थः ॥ २६ ॥ ममदैवाधीनत्वानिश्चयात्सानास्तीत्याह । दैवाधीनमिति ॥२७॥२८॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इत्थंकालवशत्वेसर्वेषांसमानेयथातेयुद्धंचंतितथाहमपीत्याह । तथाहमपीति ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

जेतात्वंलोकपालानांसैन्ययुक्तोहिसांप्रतम् ॥ एकाप्रार्थयतेबालायुद्धायेतिसुसंभ्रमः ॥१४॥ पुरात्वयातपस्तप्तंपुष्करेदेवतायने॥वरदानायसंप्राप्तोब्रह्मालोकपितामहः ॥ १५ ॥ धात्रोक्तस्त्वंमहाराजवरंवरयसुव्रत ॥ तदात्वयामरत्वंचप्रार्थितंब्रह्मणःकिल ॥१६॥ देवदैत्यमनुष्येभ्योनभवेन्मरणंमम॥सर्पकिन्नरयक्षेभ्यःपुंलिंगवाचकादपि ॥ १७ ॥ तस्मात्त्वांहंतुकामेषाप्राप्तायोषिद्वराप्रभो ॥ युद्धंमाकुरुराजेंद्रविचार्यैवंधियाऽधुना ॥ १८॥ देवीह्येषामहामायाप्रकृतिःपरमामता ॥ कल्पांतकालेराजेंद्रसर्वसंहारकारिणी ॥ १९ ॥ उत्पादयित्रीलोकानांदेवानामीश्वरीशुभा ॥ त्रिगुणातामसीदेवीसर्वशक्तिसमन्विता॥ ॥ २० ॥ अजय्याचाक्षयानित्यासर्वज्ञाचसदोदिता ॥ वेदमाताचगायत्रीसंध्यासर्वसुरालया ॥ २१ ॥ निर्गुणासगुणासिद्धासर्वसिद्धिप्रदाऽव्यया ॥ आनंदाऽऽनंददागौरीदेवानामभयप्रदा ॥ २२ ॥ एवंज्ञात्वामहाराजवैरभावंत्यजाऽनया ॥ शरणंव्रजराजेंद्रदेवीत्वांपालयिष्यति ॥२३॥ आज्ञाकरोभवैतस्याःसंजीवयनिजंकुलम् ॥ हतशेषाश्चयेदैत्यास्तेभवंतुचिरायुषः ॥२४॥व्यासउवाच॥इतितेषांवचःश्रुत्वाशुंभःसुरबलार्दनः॥उवाचवचनंतथ्यंवीरवर्यगुणान्वितम्॥२५॥शुंभउवाच ॥ मौनंकुर्वंतुभोमंदायूयंभग्नारणाजिरात्॥शीघ्रंगच्छतपातालंजीविताशाबलीयसी ॥ २६ ॥ दैवाधीनंजगत्सर्वंकाचिंताव्रजयेमम ॥ देवास्तथैवब्रह्माद्यादैवाधीनावयंयथा ॥ २७ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रोयंयमोग्निर्वरुणस्तथा ॥ सूर्यश्चंद्रस्तथाशक्रःसर्वेदैववशाःकिल ॥२८॥काचिंतातर्हिमेमंदायद्भावितद्भविष्यति ॥ उद्यमस्तादृशोभूयाद्यादृशीभवितव्यता॥२९॥सर्वथैवंविचार्यैवनशोचंतिबुधाःक्वचित्॥ स्वधर्मंनत्यजंतीहज्ञानिनोमरणाद्भयात् ॥३०॥सुखंदुःखंतथैवायुर्जीवितंमरणंनृणाम् ॥ कालेभवतिसंप्राप्तेसर्वथादैवनिर्मितम् ॥ ३१ ॥ ब्रह्मापततिकालेस्वेविष्णुश्चपार्वतीपतिः॥ नाशंगच्छन्त्यायुषोंतेसर्वेदेवाःसवासवाः ॥ ३२ ॥ तथाऽहमपिकालस्यवशगःसर्वथाऽधुना ॥ नाशंजयंवागंतास्मिस्वधर्मपरिपालनात् ॥ ३३ ॥आहूतोप्यनयाकामंयुद्धायाऽबलयाकिल ॥ कथंपलायनपरोजीवेयंशरदांशतम् ॥ ३४ ॥ करिष्याम्यद्यसंग्रामंयद्भावितद्भवत्विह ॥ जयोवामरणंवाऽपिस्वीकरोमियथातथा ॥ ३५ ॥ दैवंमिथ्येतिविद्वांसोवदंत्युद्यमवादिनः ॥ युक्तियुक्तंवचस्तेषांयेजानंत्यभिभाषितम् ॥ ३६ ॥ उद्यमेनविनाकामंनसिध्यंतिमनोरथाः ॥ कातराएवजल्पंतियद्भाव्यंतद्भविष्यति ॥ ३७ ॥

दैवाधीनत्वपक्षेऽपीदमुत्तरंमयादत्तम् ॥ उद्यमाधीनत्वपक्षेतुसर्वथायोद्धव्यमित्येवायातीत्याह । दैवंमिथ्येति ॥ तेषांवचोयुक्तियुक्तम् इत्थंयेमिभाषितंशास्त्रंजानंतितेवदंतीत्यर्थः ॥ ३६ ॥ तत्र युक्तिमाह । उद्यमेनविनेति ॥ तद्भविष्यतीति ॥ अत्रेतिशेषः ॥ ३७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तस्यसत्त्वेकिमिति ॥ तस्यादृष्टस्यसत्त्वेकिंप्रमाणंनप्रमाणमस्तीत्यर्थः ॥ अदृश्यमदृष्टंकथंदृश्यते तस्मादृदृश्यत्वाऽभावान्नप्रत्यक्षंप्रमाणमदृष्टसत्त्वेइत्यर्थः ॥ ३८ ॥ तस्मादृदृष्टाऽभावादवलंबंविनैवाश्रयंविनैवैषाचित्तस्यधारणास्थापनादुःखेदुःखविषये ॥ ३९ ॥ चक्रीति ॥ वर्तुलंपाषाणद्वयंपिष्टसाधनंचक्रीपदवाच्यं ॥ लोकेचक्कीतिवदंति ॥ ४० ॥ ननूद्यमेकृतेऽपिकचित्कार्यंनभवतितस्मादुद्योगोप्यकिंचित्करः किंतुदैवमेवप्रधानमितिचेत्तत्राह। कदाचिदिति ॥ कार्यानुरूपोद्योगेभवत्येवकार्यम् ॥ कार्यबाहुल्येउद्योगन्यूनतायांनकार्यंभवतीतिनतन्निर्वाहार्थमदृष्टाऽपेक्षास्तीत्यर्थः ॥ ४१ ॥ प्रत्यक्षप्रमाणाऽभावेऽप्यागमस्याऽदृष्टविषयेप्रामाण्यमस्त्येवेतिचेद्वेदप्रामाण्यवादिनस्तान्प्रतीत्थंवक्तव्यम् ॥ नवयंतादृशाः ॥ किंतु प्रत्यक्षमेकेचार्वाकाइति नास्तिकमतावलंबिनइत्याह । देशंकालंचेति ॥ देशकालावप्युद्योगस्यसामग्रीभूतेकल्प्येतेइतिभावः ॥ कोभवतामाचार्यइतिचेत्तत्राह । बृहस्पतीति ॥ बार्हस्पत्यंशास्त्रमित्यर्थः

अदृष्टंबलवन्मूढाःप्रवदंतिनपंडिताः ॥ प्रमाणंतस्यसत्त्वेकिमदृश्यंदृश्यतेकथम् ॥३८॥ अदृष्टंकाऽपिदृष्टंस्यादेषामूर्खविभीषिका ॥ अविलंबंविनैवैषादुःखेचित्तस्यधारणा ॥ ३९ ॥ चक्रीसमीपेसंविष्टासंस्थितापिष्टकारिणी ॥ उद्यमेनविनापिष्टंनभवत्येवसर्वथा ॥४०॥ उद्यमेचकृतेकार्यंसिद्धिंयात्येवसर्वथा ॥ कदाचित्तस्यन्यूनत्वेकार्यंनैवभवेदपि ॥ ४१॥ देशंकालंचविज्ञायस्वबलंशत्रुजंबलम् ॥ कृतंकार्यंभवत्येवबृहस्पतिवचोयथा ॥४२॥ व्यासउवाच ॥ इतिनिश्चित्यदैत्येंद्रोरक्तबीजंमहाऽसुरम् ॥ प्रेषयामाससंग्रामेसैन्येनमहतावृतम् ॥ ४३॥ शुंभउवाच ॥ रक्तबीजमहाबाहोगच्छत्वंसमरांगणे ॥ कुरुयुद्धंमहाभागयथातेबलमाहितम् ॥ ४४ ॥ रक्तबीजउवाच ॥ महाराजनतेकार्याचिंतास्वल्पतरापिवा ॥ अहमेनांहनिष्यामिकरिष्यामिवशेतव ॥४५॥ पश्यमेयुद्धचातुर्यंकेयंबालासुरप्रिया ॥ दासींतेहंकरिष्यामिजित्वेमांसमरेबलात् ॥४६॥ व्यासउवाच॥ इत्याभाष्यकुरुश्रेष्ठरक्तबीजोमहासुरः ॥ जगामरथमारुह्यस्वसैन्यपरिवारितः॥४७॥हस्त्यश्वरथपादातवृंदैश्चपरिवेष्टितः ॥ निर्जगामरथारूढोदेवींशैलोपरिस्थिताम् ॥४८ ॥ तमागतंसमालोक्यदेवीशंखमवादयत्॥ भयदंसर्वदैत्यानांदेवानांमोदवर्धनम्॥४९॥श्रुत्वाशंखस्वनंचोग्रंरक्तबीजोतिवेगवान् ॥ गत्वासमीपेचामुंडांबभाषेवचनंमृदु॥५०॥ रक्तबीजउवाच॥बालेकिंमांभीषयसिमत्वात्वंकातरंकिल ॥ शंखनादेनतन्वंगिवेत्सिकिंधूम्रलोचनम् ॥ ५१ ॥ रक्तबीजोस्मिनाम्नाऽहंत्वत्सकाशमिहागतः ॥ युद्धेच्छाचेत्पिकालापेसज्जाभवभयंनमे॥५२॥पश्याऽद्यमेबलंकांतेदृष्टायेकातरास्त्वया ॥ नाऽहंपंक्तिगतस्तेषांकुरुयुद्धंयथेच्छसि ॥ ५३ ॥ वृद्धाश्चसेविताःपूर्वंनीतिशास्त्रंश्रुतंत्वया ॥ पठितंचार्थविज्ञानंविद्वद्गोष्ठीकृताऽथवा ॥ ५४ ॥ साहित्यतंत्रविज्ञानंचेदस्तितवसुंदरि ॥ शृणुमेवचनंपथ्यंतथ्यंप्रमितिबृंहितम् ॥ ५५ ॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अयंरक्तबीजोमहिषाऽसुरस्योत्पत्तिसमयेचितामध्यान्निर्गतोदेहांतरेणरंभासुरएवेतिपूर्वमुक्तम् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ शैलोपरिस्थितामिति ॥ यद्यपिदेवीशुंभस्योपवनेस्थितेतिपूर्वमुक्तंतथाऽपिचंडमुंडवधानंतरंसर्वदैत्यानांवधेविस्तीर्णस्थलस्यापेक्षितत्वाल्लोकासंकुलितोविस्तीर्णेदेशेहिमालयेगतवतीभगवतीतिवा शैलोपर्येवतस्योपवनमासीदितिवाबोध्यम् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ परंतुयत्किंचिन्मयोच्यतेतच्छ्रुत्वापश्चाद्युद्धंकुर्वित्याह । वृद्धाश्चेति ॥ सर्वेषांवाक्यानांचेदस्तीयनेनान्वयः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

रसानामिति ॥ विद्वत्सभासुशृंगाररसःशांतिरसश्चेतिद्वावेवमुख्यत्वेनगणितौ ॥ ५६ ॥ नृपभावेसंसारासक्तिरूपेनृपस्वभावेइत्यर्थः ॥ अस्मिन्रसेकेसक्ताइतिचेत्तत्राह ॥ विष्णुर्लक्ष्म्या इति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ शांतिरसेकेसक्ताइतिचेद्धतभाग्याइत्याह । अप्राप्तभोगविभवाइति ॥ ५९ ॥ ६० ॥ येकुत्राऽप्युपयोगिनोनसंत्यंधपंगुमूढादयस्तेशांतिरसेनिमग्नाइत्यर्थः ॥ किंच ज्ञानंभवतिचेत्साऽपिशांतिः शांतिरसोस्तु तदेवतुसर्वथादुर्लभमित्याह । क्वज्ञानमिति ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ चामुंडाललाटान्निःसृताकालिकाकोशान्निर्गता ॥ अंबिकातयोर्जननी ॥ ॥ इतिश्रीदे०पंचमस्कंधेसप्तविंशोध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुरक्तबीजासुरेणह ॥ देव्यासहमहायुद्धमभूदितिचवर्ण्यते ॥ १ ॥ रक्तबीजवाक्यंश्रुत्वादेवीयदाहतदुच्यते ।

रसानांचनवानांवैद्वावेवमुख्यतांगतौ ॥ शृंगारकःशांतिरसोविद्वज्जनसभासुच ॥ ५६ ॥ तयोःशृंगारएवादौनृपभावेप्रतिष्ठितः ॥ विष्णुर्लक्ष्म्यासहाऽऽस्ते वैसावित्र्याचतुराननः ॥५७॥ शच्येंद्रःशैलसुतयाशंकरःसहशेरते ॥ वल्ल्यावृक्षोमृगोमृग्याकपोत्याचकपोतकः ॥५८॥ एवंसर्वेप्राणभृतःसंयोगरसिका भृशम् ॥ अप्राप्तभोगविभवायेचाऽन्येकातरानराः ॥ ५९ ॥ भवंतियतयस्तेवैमूढादैवेनवंचिताः ॥ असंसाररसज्ञास्तेवंचितावंचनापरैः ॥ ६० ॥ मधुरा लापनिपुणैरताःशांतिरसेहिते ॥ क्वज्ञानंक्वचवैराग्यंवर्तमानेमनोभवे ॥ ६१ ॥ लोभेक्रोधेचदुर्धर्षेमोहेमतिविनाशके ॥ तस्मात्त्वमपिकल्याणिकुरुकांतं मनोहरम् ॥ ६२ ॥ शुंभंसुराणांजेतारंनिशुंभंवामहाबलम् ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वारक्तबीजोऽसौविररामपुरःस्थितः ॥ ६३ ॥ श्रुत्वाजहासचामुंडाका लिकाचांबिकातथा ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ कृत्वाहास्यंततोदेवीतमुवाचविशांपते ॥ मेघगंभीरयावाचायुक्तियुक्तमिदंवचः ॥ १ ॥ पूर्वमेवमयाप्रोक्तंमंदात्मन्किंविकत्थसे ॥ दूतस्याऽग्रेयथायोग्यंवचनंहितसंयुतम् ॥ २ ॥ सदृशोममरूपेणब लेनविभवेनच ॥ त्रिलोक्यांयदिकोऽपिस्यात्तंपतिंप्रवृणोम्यहम् ॥ ३ ॥ ब्रूहिशुंभंनिशुंभंचप्रतिज्ञामेपुराकृता ॥ तस्माद्युद्धंचस्वजित्वामांविवाहंविधिवत्कु रु ॥ ४ ॥ त्वंवैतदाऽऽज्ञयाप्राप्तस्तस्यकार्यार्थसिद्धये ॥ संग्रामंकुरुपातालंगच्छवापतिनासह ॥ ५ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंदेव्याःसदैत्योऽमर्षपू रितः ॥ मुमोचतरसाबाणान्सिंहस्योपरिदारुणान् ॥ ६ ॥ अंबिकाताञ्छरान्वीक्ष्यगगनेपन्नगोपमान् ॥ चिच्छेदसायकैस्तीक्ष्णैर्लघुहस्ततयाक्षणात् ॥ ७ ॥ अन्यैर्जघानविशिखैरक्तबीजंमहासुरम् ॥ अंबिकाचापनिर्मुक्तैःकर्णाकृष्टैःशिलाशितैः ॥ ८ ॥ देवीबाणहतःपापोमूर्च्छामापरथोपरि ॥ पतितेर क्तबीजेतुहाहाकारोमहानभूत् ॥ ९ ॥ सैनिकाश्चुक्रुशुःसर्वेहताःस्मइतिचाऽब्रुवन् ॥ ततोबुंबारवंश्रुत्वाशुंभःपरमदारुणम् ॥ १० ॥

कृत्वाहास्यामिति ॥ १ ॥ पूर्वमेवेति ॥ हेमंदात्मन्पूर्वंप्रेषितस्यदूतस्याऽग्रेयथायोग्यंहितसंयुतंवचनंमयापूर्वमेवप्रोक्तंपुनस्त्वंकिमर्थंविकत्थसइत्यन्वयः ॥ २ ॥ तत्किमुक्तमितिचेत्तदाह । सदृशोममेति ॥ प्रवृणोमिवर्तमानसामीप्येभविष्यतिलट् वरिष्यामीत्यर्थः ॥ ३ ॥ इतिप्रतिज्ञेत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ अन्यैरिति । स्थूलाग्रैरित्यर्थः ॥ ८ ॥ तेनचरक्तंननिर्गतं मूर्च्छाचजातेत्युभयंयुक्तमेव ॥ ९ ॥ १० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ कालीविस्तारिताननासतीतेननादेनयुक्ताजाता ॥ तथातेषांनादंस्व मुखेनाऽकरोदित्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ आयतेविस्तीर्णे ॥ १७ ॥ १८ ॥ वरट



उद्योगंसर्वसैन्यानांदैत्यानामादिदेशह ॥ शुंभउवाच ॥ निर्यांतुदानवाःसर्वेकांबोजाःस्वबलैर्वृताः ॥ ११ ॥ अन्येऽप्यतिबलाःशूराःकालकेयाविशेषतः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याज्ञप्तंबलंसर्वंशुंभेनचचतुर्विधम् ॥ १२ ॥ निर्जगाममदाविष्टंदेवीसमरमंडले ॥ तमागतंसमालोक्यचंडिकादानवंबलम् ॥ १३ ॥ घंटानादंचकाराशुभीषणंभयदंमुहुः ॥ ज्यास्वनंशंखनादंचचकारजगदंबिका ॥ १४ ॥ तेननादेनसाजाताकालीविस्तारिताननाना ॥ श्रुत्वातन्निनदंघोरंसिंहोदेव्याश्चवाहनम् ॥ १५ ॥ जगर्जसोऽपिबलवाञ्जनयन्भयमद्भुतम् ॥ तन्निनादमुपश्रुत्यदानवाःक्रोधमूर्च्छिताः ॥ १६ ॥ सर्वेचिक्षिपुरस्त्राणिदेवींप्रतिमहाबलाः ॥ तस्मिन्नेवाऽऽयतेयुद्धेदारुणेलोमहर्षणे ॥ १७ ॥ ब्रह्मादीनांचदेवानांशक्तयश्चंडिकांययुः ॥ यस्यदेवस्ययद्रूपंयथाभूषणवाहनम् ॥ ॥ १८ ॥ तादृग्रूपास्तदादेव्यःप्रययुःसमरांगणे ॥ ब्रह्माणीवरटारूढासाक्षसूत्रकमंडलुः ॥ १९ ॥ आगताब्रह्मणःशक्तिर्ब्रह्माणीतिप्रतिश्रुता ॥ वैष्णवीगरुडारूढाशंखचक्रगदाधरा ॥ २० ॥ पद्महस्तासमायातापीतांबरविभूषिता ॥ शांकरीतुवृषारूढात्रिशूलवरधारिणी ॥ २१ ॥ अर्धचंद्रधरादेवीतथाऽहिवलयाशिवा ॥ कौमारीशिखिसंरूढाशक्तिहस्तावरानना ॥ २२ ॥ युद्धकामासमायाताकार्तिकेयस्वरूपिणी ॥ इंद्राणीसुमुखवदनासुश्वेतगजवाहना ॥ २३ ॥ वज्रहस्तातिरोषाढ्यासंग्रामाभिमुखीययौ ॥ वाराहीसूकराकाराप्रौढप्रेतासनामता ॥ २४ ॥ नारसिंहीनृसिंहस्यबिभ्रतीसदृशंवपुः ॥ याम्याचमहिषारूढादंडहस्ताभयप्रदा ॥ २५ ॥ समायाताऽथसंग्रामेयमरूपाशुचिस्मिता ॥ तथैववारुणीशक्तिःकौबेरीचमदोत्कटा ॥ २६ ॥ एवंविधास्तथाकाराययुःस्वस्वबलैर्वृताः ॥ आगतास्ताःसमालोक्यदेवीमुदमवापच ॥ २७ ॥ स्वस्थामुमुदिरेदेवादैत्याश्चभयमाययुः ॥ ताभिःपरिवृतस्तत्रशंकरोलोकशंकरः ॥ २८ ॥ समागम्यचसंग्रामेचंडिकामित्युवाचह ॥ हन्यंतामसुराःशीघ्रंदेवानांकार्यसिद्धये ॥२९॥ निशुंभंचैवशुंभंचयेचाऽन्येदानवाःस्थिताः॥ हत्वादैत्यबलंसर्वंकृत्वाचनिर्भयंजगत् ॥ ३० ॥ स्वानिस्वानिचधिष्ण्यानिसमागच्छंतुशक्तयः ॥ देवायज्ञभुजःसंतुब्राह्मणायजनेरताः ॥ ३१ ॥ प्राणिनःसंतुसंतुष्टाःसर्वेस्थावरजंगमाः ॥ शमंयांतुतथोत्पाताईतयश्चतथापुनः ॥ ३२ ॥ घनाःकालेप्रवर्षंतुकृषिर्बहुफलातथा ॥ व्यासउवाच ॥ एवंब्रुवतिदेवेशेशंकरेलोकशंकरे ॥ ३३ ॥

हंसः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ शिखिसंरूढामयूरारूढेत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ तथाऽऽकाराः यस्यदेवस्ययाशक्तिस्तस्यदेवस्ययआकारस्तथाऽऽकारोयासांता इत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ येचाऽन्येदानवाःस्थितास्तान् दैत्यबलंचसर्वंहत्वेत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अतिविशिष्टतेजसःकौशिक्याःसविधेस्वयंगंतुमशक्तास्तादेवशक्तीरीशानोदेव्यैदर्शयित्वाकौशिक्याःस्वशक्तेः पार्वत्याः सकाशात्प्रादुर्भूतत्वेनधृष्टतयाईशानएवतथोक्तवानितिभावः ॥ स्वस्याऽपिसहायप्रदर्शनेनेषद्दुष्टाभगवतीतस्योत्तरंनाऽऽह किंतुतस्याःसकाशादुत्पन्नाकाचिच्छक्तिरित्याह। चंडिकायाःशरीरात्त्विति ॥ शिवाशतनिनादिनीशतशब्दोनंतवाची ॥ शिवानांशते

चंडिकायाःशरीरात्तुनिर्गताशक्तिरद्भुता ॥ भीषणाऽतिप्रचंडाचाशिवाशतनिनादिनी ॥ ३४ ॥ घोररूपाऽथपंचास्यमित्युवाचस्मिताननां॥देवदेवव्रजाशुत्वं दैत्यानामधिपंप्रति ॥३५॥ दूतत्वंकुरुकामारेब्रूहिशुंभंस्मराकुलम्॥निशुंभंचमदोत्सिक्तंवचनान्ममशंकर ॥३६॥ मुक्त्वात्रिविष्टपंयातयूयंपातालमाशुवै॥ देवाःस्वर्गेसुखंयांतुतुराषाट्स्वासनंशुभम् ॥३७॥ प्राप्नोतुत्रिदिवंस्थानंयज्ञभागांश्चदेवताः ॥ जीवितेच्छाचयुष्माकंयदिस्यात्तुमहत्तरा ॥३८॥ तर्हिगच्छतपातालंतरसायत्रदानवाः ॥ अथवाबलमास्थाययुद्धेच्छामरणायचेत् ॥ ३९ ॥ तदाऽगच्छंतुतृप्यंतुमच्छिवाःपिशितेनवः ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वा वचनंतस्याःशूलपाणिस्त्वरान्वितः ॥ ४० ॥ गत्वाऽऽहदैत्यराजानंशुंभंसदसिसंस्थितम् ॥ शिवउवाच ॥ राजन्दूतोहमंबायास्त्रिपुरांतकरोहरः ॥४१॥त्वत्सकाशमिहाऽऽयातोहितंकर्तुंतवाऽखिलम् ॥ त्यक्त्वास्वर्गंतथाभूमिंयूयंगच्छतसत्वरम्॥४२॥पातालंयत्रप्रह्लादोबलिश्चबलिनांवरः ॥ अथवामरणेच्छाचेत्तर्ह्याऽऽगच्छेतसत्वरम् ॥ ४३ ॥ संग्रामेवोहनिष्यामिसर्वानेवाहमाशुवै ॥ इत्युवाचमहाराज्ञीयुष्मत्कल्याणहेतवे ॥ ४४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिदैत्यवरान्देवीवाक्यममृतसन्निभम् ॥ हितकृच्छ्रावयित्वासप्रत्यायातश्चशूलभृत् ॥४५॥ ययासौप्रेरितःशंभुर्दूतत्वेदानवान्प्रति ॥ शिवदूतीतिविख्याताजाता त्रिभुवनेखिले ॥ ४६ ॥ तेऽपिश्रुत्वावचोदेव्याःशंकरोक्तंतुदुष्करम् ॥ युद्धायनिर्ययुःशीघ्रंदंशिताःशस्त्रपाणयः ॥४७॥ तरसारणमागत्यचंडिकांप्रतिदानवाः॥निर्जघ्नुश्चशरैस्तीक्ष्णैःकर्णाकृष्टैःशिलाशितैः॥४८॥ कालिकाशूलपातैस्तान्गदाशक्तिविदारितान् ॥ कुर्वतीव्यचरत्तत्रभक्षयंतीचदानवान्॥४९॥ कमंडलुजलाक्षेपगतप्राणान्महाबलान् ॥ ब्रह्माणीचाऽकरोत्तत्रदानवान्समरांगणे ॥ ५० ॥ माहेश्वरीवृषारूढात्रिशूलेनाऽतिरंहसा ॥ जघानदानवान्संख्येपातयामासभूतले ॥ ५१ ॥ वैष्णवीचक्रपातेनगदापातेनदानवान् ॥ गतप्राणांश्चकाराऽऽशुचोत्तमांगविवर्जितान् ॥ ५२ ॥ ऐंद्रीवज्रप्रहारेणपातयामासभूतले ॥ ऐरावतकराघातपीडितान्दैत्यपुंगवान् ॥ ५३ ॥ वाराहीतुंडघातेनदंष्ट्राग्रपातनेनच ॥ जघानक्रोधसंयुक्ताशतशोदैत्यदानवान् ॥ ५४ ॥ नारसिंहीनखैस्तीव्रैर्दारितान्दैत्यपुंगवान् ॥ भक्षयंतीचचाराऽऽजौननादचमुहुर्मुहुः ॥ ५५ ॥

ननिनादिनीतिविग्रहः ॥ निनददनंतशिवावृतेत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ मच्छिवाः ॥ यामयासहनिनदंत्यःप्रादुर्भूताः ॥ पिशितंमांसम् ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ इत्युवाचमहाराज्ञीति ॥ त्यक्त्वास्वर्गमित्यारभ्याशुवै एतत्पर्यंतमितिशब्दार्थः ॥ ४४ ॥ देवीवाक्यंदेव्यावाक्यंहितकृदमृतसन्निभंश्रावयित्वाशूलभृच्छिवःप्रत्यायात इत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ययेति ॥ कौशिकीतउद्भूतयेत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ षष्टिश्लोकैरक्तबीजवधाख्यानंसविस्तरम् ॥ कीर्तयित्वाऽथशुंभस्ययुद्धायोद्योगईर्यते ॥ १ ॥ रक्तबीजस्यप्रभावंवर्णयति । वरदानमिदंतस्येति ॥ शिवेनाऽर्पितंरंभासुरएवाऽग्निमध्यान्निर्गतोरक्तबीजोजातइतिमाहिषासुरोत्पत्तौपूर्वमुक्तं सएव

शिवदूतीसाट्टहासैःपातयामासभूतले ॥ तांश्चखादाऽथचामुंडाकालिकाचत्वरान्विता ॥५६॥ शिखिसंस्थाचकौमारीकर्णाकृष्टैःशिलाशितैः ॥ निजघानरणेशत्रून्देवानांचहितायवै॥५७॥वारुणीपाशसंबद्धान्दैत्यान्समरमस्तके ॥ पातयामासतत्पृष्ठेमूर्च्छितान्गतचेतनान् ॥ ५८ ॥ एवंमातृगणेनाऽऽजावतिवीर्यपराक्रमम् ॥ मर्दितंदानवंसैन्यंपलायनपरंह्यभूत् ॥५९॥ बुंबारवस्तुसुमहानभूत्तत्रबलार्णवे॥पुष्पवृष्टिंतदादेवाश्चक्रुर्देव्यागणोपरि ॥६०॥ तच्छ्रुत्वानिनदंघोरंजयशब्दंचदानवाः ॥ रक्तबीजश्चुकोपाशुदृष्ट्वादैत्यान्पलायितान् ॥६१॥ गर्जमानांस्तथादेवान्वीक्ष्यदैत्योमहाबलः॥रक्तबीजस्तुतेजस्वीरणमभ्याययौतदा ॥६२॥ सायुधोरथसंविष्टःकुर्वञ्ज्याशब्दमद्भुतम् ॥आजगामतदादेवींक्रोधरक्तेक्षणोद्यतः॥६३॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥२८॥ ॥ व्यासउवाच ॥ वरदानमिदंतस्यदानवस्याशिवार्पितम् ॥ अत्यद्भुततरंराजञ्छृणुतत्प्रब्रवीम्यहम् ॥१॥तस्यदेहाद्रक्तबिंदुर्यदापततिभूतले ॥ समुत्पतंतिदैतेयास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥२॥ असंख्यातामहावीर्यादानवारक्तसंभवाः ॥ प्रभवंतिवितिरुद्रेणदत्तोस्त्यत्यद्भुतोवरः॥३॥सतेनवरदानेनदर्पितःक्रोधसंयुतः ॥ अभ्यगात्तरसासंख्येहंतुंदेवींसकालिकाम्॥४॥सदृष्ट्वावैष्णवींशक्तिंगरुडोपरिसंस्थिताम्॥शक्त्याजघानदैत्येंद्रस्तांवैकमललोचनाम् ॥५॥ गदयावारयामासशक्तिःसाशक्तिसंयुता॥अताडयच्चचक्रेणरक्तबीजंमहासुरम् ॥६॥ रथांगाहतदेहात्तुबहुसुस्रावशोणितम्॥वज्राहतगिरेःशृंगान्निर्झराइवगैरिकाः॥७॥यत्रयत्रयदाभूमौपतंतिरक्तबिंदवः॥समुत्तस्थुस्तदाकाराःपुरुषाश्चसहस्रशः ॥८॥ ऐंद्रीतमसुरंघोरंवज्रेणाभिजघानच॥रक्तबीजंक्रुधाविष्टानिःससारचशोणितम् ॥ ९ ॥ ततस्तत्क्षतजाज्जातारक्तबीजाह्यनेकशः ॥ तद्वीर्याश्चतदाकाराःसायुधायुद्धदुर्मदाः॥१०॥ब्रह्माणीब्रह्मदंडेनकुपिताह्यहनद्भृशम् ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेनदारयामासदानवम् ॥ ११ ॥ नारसिंहीनखाघातैस्तंविव्याधमहासुरम् ॥ अहनत्तुंडघातेनक्रुद्धातंराक्षसाधमम् ॥ १२ ॥ कौमारीचतथाशक्त्यावक्षस्येनमताडयत् ॥ सोऽपिक्रुद्धःशरासारैर्विभेदनिशितैश्चताः ॥ १३ ॥ गदाशक्तिप्रहारैस्तुमातृःसर्वाःपृथक्पृथक् ॥ शक्तयस्तंशराघातैर्विविधुस्तत्प्रकोपिताः ॥ १४ ॥ तस्यशस्त्राणिचिच्छेदचंडिकास्वशरैःशितैः ॥ जघानाऽन्यैश्चविशिखैस्तंदेवीकुपिताभृशम् ॥ १५ ॥ तस्यदेहाच्चसुस्रावरुधिरंबहुधातुयत् ॥ तस्मात्तत्सदृशाःशूराःप्रादुरासन्सहस्रशः ॥ १६ ॥

श्चात्तपस्ययाशिवाद्वरंलब्धवानित्याह । अत्यद्भुततरमिति ॥ तद्वरदानमत्यद्भुततरंनैतत्सदृशमन्यत्रक्वापिदृष्टमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥६॥७॥८॥९॥ क्षतजाद्रुधिरात् ॥१०॥ ॥ ११ ॥ तुंडघातेनवाराहीदेव्यहनत् ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ आगमिष्यतीतिआगमिष्यतिचेदित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ दानवान्भक्षयंतीरणेचरत्रजेत्यर्थः ॥ अहंदैत्यान्हनिष्यामित्वंतान्हतान्भक्षयेत्यर्थः ॥ २४ ॥ किंच तथेतितद्रुधिरस्यपानमपितथाकुरुयथाभूम्यांबिंदुमात्रमापिलेशमात्रमपिसांप्रतंनपतेदित्यर्थः ॥ २५ ॥ किमनेनभविष्यतीतिचेत्तत्राह। भक्ष्यमाणाइति ॥ २६ ॥ घातयि

रक्तबीजैर्जगद्व्याप्तंरुधिरौघसमुद्भवैः ॥ सन्नद्धैःसायुधैःकामंकुर्वद्भिर्युद्धमद्भुतम् ॥ १७ ॥ प्रहरंतश्चतान्दृष्ट्वारक्तबीजाननेकशः ॥ भयभीताःसुरास्त्रेसुर्विषण्णाःशोककर्शिताः ॥ १८ ॥ कथमद्यक्षयंदैत्यागमिष्यंतिसहस्रशः ॥ महाकायामहावीर्यादानवारक्तसंभवाः ॥ १९ ॥ एकैवचंडिकाऽत्राऽस्तितथाकालीचमातरः ॥ एताभिर्दानवाःसर्वेजेतव्याःकष्टमेवतत् ॥ २० ॥ निशुंभोवाऽथशुंभोवासहसाबलसंवृतः ॥ आगमिष्यतिसंग्रामेततोनर्थोमहान्भवेत् ॥ ॥ २१ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंदेवाभयोद्विग्नाश्चिंतामापुर्महत्तराम् ॥ यदातदांबिकाप्राहकालींकमललोचनाम् ॥ २२ ॥ चामुंडेकुरुविस्तीर्णंवदनंत्वरिताभृशम् ॥ मच्छस्त्रपातसंभूतंरुधिरंपिबसत्वरा॥२३॥भक्षयंतीचररणेदानवानद्यकामतः ॥ हनिष्यामिशरैस्तीक्ष्णैर्गदासिमुसलैस्तथा ॥ २४॥ तथाकुरुविशालाक्षिपानंतद्रुधिरस्यच ॥ बिंदुमात्रंयथाभूम्यांनपतेदपिसांप्रतम् ॥२५॥ भक्ष्यमाणास्तदादैत्यानचोत्पत्स्यंतिचाऽपरे ॥ एवमेषांक्षयोनूनंभविष्यतिनचाऽन्यथा ॥ २६ ॥ घातयिष्याम्यहंदैत्यंत्वंभक्षयचसत्वरा ॥ पिबंतीक्षतजंसर्वंयतमानाऽरिसंक्षये ॥ २७ ॥ इत्थंदैत्यक्षयंकृत्वादत्त्वाराज्यंसुरालयम् ॥ इंद्रायसुस्थिरंसर्वंगमिष्यामोयथासुखम् ॥ २८ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तांबिकयादेवीचामुंडाचंडविक्रमा ॥ पपौचक्षतजंसर्वंरक्तबीजशरीरजम् ॥ ॥ २९ ॥ अंबिकातंजघानाऽऽशुखड्गेनमुसलेनच ॥ चखाददेहशकलांश्चामुंडातान्कृशोदरी ॥ ३० ॥ सोऽपिक्रुद्धोगदाघातैश्चामुंडांसमघातयत् ॥ तथापिसापपावाशुक्षतजंतमभक्षयत् ॥ ३१ ॥ येऽन्येरुधिरजाः क्रूररक्तबीजामहाबलाः ॥ तेऽपिनिष्पातिताःसर्वेभक्षितागतशोणिताः ॥ ३२ ॥ कृत्रिमाभक्षिताःसर्वेयस्तुस्वाभाविकोऽसुरः ॥ सोऽपिप्रपातितोहत्वाखड्गेनाऽतिविखंडितः ॥ ३३ ॥ रक्तबीजेहतेरौद्रेयेचान्येदानवारणे ॥ पलायनंततःकृत्वागतास्तेभयकंपिताः ॥ ३४ ॥ हाहेतिविब्रुवंतस्तेशुंभंप्रोचुःसुविह्वलाः ॥ रुधिरारक्तदेहाश्चविगतास्त्राविचेतसः ॥ ३५ ॥ राजन्नंबिकयारक्तबीजोऽसौविनिपातितः ॥ चामुंडातस्यदेहात्तुपपौसर्वंचशोणितम् ॥ ३६ ॥ येचाऽन्येदानवाःशूरावाहनेनाऽतिरंहसा ॥ सिंहेननिहताःसर्वेकाल्याचभक्षिताःपरे ॥ ३७ ॥ वयंत्वांकथितुंराजन्नागतायुद्धचेष्टितम् ॥ चरितंचतथादेव्याःसंग्रामेपरमाद्भुतम् ॥ ३८ ॥ अजेयेयंमहाराजसर्वथादैत्यदानवैः ॥ गंधर्वाऽसुरयक्षैश्चपन्नगोरगराक्षसैः ॥ ३९ ॥ अन्यास्तत्रागतादेव्यइंद्राणीप्रमुखाभृशम् ॥ युध्यमानामहाराजवाहनैरायुधैर्युताः ॥ ४० ॥

ष्याम्यहमितिपूर्वानुवादंकृत्वाग्रेकर्तव्यमाह । घातयिष्यामीति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ तान्स्वकीयान्सर्वान्निहत्यविपुलंयशोयुद्धमरणजंहित्वास्वप्राणत्राणायगच्छामिगमिष्यामिकिमित्यर्थः ॥ ५१ ॥ मरणंत्विति ॥ प्राणिनांकालकल्पितंमरणमनिवार्यमेव यदाजन्मगृहीतंतदैवतद्भयमुपात्तंततस्तद्भयाद्दुर्लभंयशःकस्त्यजेन्नकोपीत्यर्थः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

ताभिःसर्वंहतंसैन्यंदानवानांवरायुधैः ॥ रक्तबीजोऽपिराजेंद्रतरसाविनिपातितः ॥ ४१ ॥ एकापिदुःसहादेवीकिंपुनस्ताभिरन्विता ॥ सिंहोऽपिहंतिसंग्रामे राक्षसानमितप्रभः ॥ ४२॥ अतोविचार्यसचिवैर्यद्युक्तंतद्विधीयताम् ॥ नवैरमनयायुक्तंसंधिरेवसुखप्रदः ॥४३॥ आश्चर्यमेतदखिलंयन्नारीहंतिराक्षसान् ॥ रक्तबीजोऽपिनिहतःपीतंतस्याऽपिशोणितम् ॥ ४४ ॥ अन्येनिपातितादैत्याःसंग्रामेंबिकयानृप ॥ चामुंडयाचमांसैवैभक्षितंसकलंरणे ॥४५॥ वरंपातालगमनंतस्याःसेवाऽथवावरा॥नतुयुद्धंमहाराजकार्यमंबिकयासह ॥४६॥ ननारीप्राकृताह्येषादेवकार्यार्थसाधिनी॥मायेयंप्रबलादेवीक्षपयंतीयमुत्थिता ॥ ४७ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितेषांवचस्तथ्यंश्रुत्वाकालविमोहितः॥मुमूर्षुःप्रत्युवाचेदंशुंभःप्रस्फुरिताधरः ॥ ४८॥ शुंभउवाच ॥ यूयंगच्छतपातालंशरणंवाभयातुराः॥हनिष्याम्यहमद्यैवतांचताश्चसमुद्यतः ॥ ४९ ॥ जित्वासर्वान्सुरानाजौकृत्वाराज्यंसुपुष्कलम् ॥ कथंनारीभयोद्विग्नःपातालंप्रविशाम्यहम् ॥ ५०॥ निहत्यपार्षदान्सर्वान्रक्तबीजमुखान्रणे ॥ प्राणत्राणायगच्छामिहित्वाकिंविपुलंयशः ॥ ५१ ॥ मरणंत्वनिवार्यंवैप्राणिनांकालकल्पितम् ॥ तद्भयंजन्मनोपात्तंत्यजेत्कोदुर्लभंयशः ॥५२॥ निशुंभाहंगमिष्यामिरथारूढोरणाजिरे॥ हत्वातामागमिष्यामिनागमिष्यामिचाऽन्यथा ॥५३॥ त्वंतुसेनायुतोवीरपार्ष्णिग्राहोभवस्वमे ॥ तरसातांशरैस्तीक्ष्णैर्नारींनययमालये ॥५४॥ निशुंभउवाच ॥ अहमद्यहनिष्यामिगत्वादुष्टांचकालिकाम् ॥ आगमिष्याम्यहंशीघ्रंगृहीत्वातामथांबिकाम् ॥५५॥ माचिंतांकुरुराजेंद्रवराकायास्तुकारणे॥कैषाबालाक्रमेबाहुवीर्यंविश्ववशंकरम् ॥५६॥ त्यक्त्वार्तिंविपुलांभ्रातर्भुंक्ष्वभोगाननुत्तमान् ॥ आनयिष्याम्यहंकामंमानिनींमानसंयुताम् ॥५७॥ मयितिष्ठतितेराजन्नयुक्तंगमनंरणे ॥ गत्वाऽहमानयिष्यामितवाऽर्थेवैजयाश्रियम् ॥ ५८ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाभ्रातरंज्येष्ठंकनीयान्बलगर्वितः ॥ रथमास्थायविपुलंसन्नद्धःस्वबलावृतः ॥५९॥ जगामतरसातूर्णंसंगरेकृतमंगलः॥संस्तुतोबंदिसूतैश्चसायुधःसपरिष्करः ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ व्यासउवाच ॥ निशुंभोनिश्चयंकृत्वामरणायजयायवा ॥ सोद्यमःसबलःशूरोरणेदेवीमुपाययौ ॥ १ ॥ तमाजगामशुंभोपिस्वबलेनसमावृतः ॥ प्रेक्षकोभूद्रणेराजासंग्रामरसपंडितः ॥ २ ॥

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ ॥ ॥ चतुःषष्टिमहापद्यैर्निशुंभवधउच्यते ॥ यत्रदेव्यादानवानांपराक्रमउदीर्यते ॥ १ ॥ निशुंभेनयुद्धार्थंकृतनिश्चयानंतरंजातंवृत्तमाह । निशुंभइति ॥ १ ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अभ्रपटलावृताइत्यनेनदेव्युपरिच्छायार्थमभ्रपटलमागतमितिबोधितम् ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ रक्तबीजस्याऽत्ययोध्वंसः ॥ मममाययामोहितावित्यनेनस्वस्यब्रह्मत्वम् ॥ स्वमायाश क्तेरतिशयितोमहिमाऽस्तीतिचबोधितम् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ गाहयामासप्रविवेशइत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

गगनेसंस्थितादेवास्तदाभ्रपटलावृताः ॥ दिदृक्षवस्तुसंग्रामेसेंद्रायक्षगणास्तथा ॥ ३ ॥ निशुंभोऽथरणेगत्वाधनुरादायशार्ङ्गकम् ॥ चकारशरवृष्टिंसभी षयञ्जगदंबिकाम् ॥ ४ ॥ मुंचंतंशरजालानिनिशुंभंचंडिकारणे ॥ वीक्ष्याऽऽदायधनुःश्रेष्ठंजहाससुस्वरंमुहुः ॥ ५ ॥ उवाचकालिकांदेवीपश्यमूर्खत्वमेत योः ॥ मरणायागतौकालिमत्समीपमिहाऽधुना ॥ ६ ॥ दृष्ट्वादैत्यवधंघोरंरक्तबीजात्ययंतथा ॥ जयाशांकुरुतस्त्वेतौमोहितौममममायया ॥ ७ ॥ आशा बलवतीह्येषानजहातिनरंक्वचित् ॥ भग्नंहतबलंनष्टंगतपक्षंविचेतनम् ॥ ८ ॥ आशापाशनिबद्धौद्वौयुद्धायसमुपागतौ ॥ निहंतव्यौमयाकालिरणेशुंभ निशुंभकौ ॥ ९ ॥ आसन्नमरणावेतौसंप्राप्तौदैवमोहितौ ॥ पश्यतांसर्वदेवानांहनिष्याम्यहमद्यतौ ॥ १० ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाकालिकांचंडीकर्णा कृष्टशरोत्करैः ॥ छादयामासतरसानिशुंभंपुरतःस्थितम् ॥ ११ ॥ दानवोऽपिशरांस्तस्याश्चिच्छेदनिशितैःशरैः ॥ तयोःपरस्परंयुद्धंबभूवाऽतिभयानक म् ॥ १२ ॥ केसरीकेशजालानिधुन्वानःसैन्यसागरम् ॥ गाहयामासबलवान्सरसींवारणोयथा ॥ १३ ॥ नखैर्दंतप्रहारैस्तुदानवान्पुरतःस्थितान् ॥ च खादचविशीर्णांगान्गजानिवमदोत्कटान् ॥ १४ ॥ एवंविमथ्यमानेतुसैन्येकेसरिणातदा ॥ अभ्यधावन्निशुंभोऽथविकृष्टवरकार्मुकः ॥ १५ ॥ अन्येऽपि क्रुद्धादैत्येंद्रादेवींहंतुमुपाययुः ॥ संदष्टदंतरसनारक्तनेत्राह्यनेकशः ॥ १६ ॥ तत्राजगामतरसाशुंभःसैन्यसमावृतः ॥ निहत्यकालिकांकोपाद्ग्रहीतुंजगदंबिका म् ॥ १७ ॥ तत्राऽगत्यददर्शाऽऽजावंबिकांचपुरःस्थिताम् ॥ रौद्ररसयुतांकांतांशृंगाररससंयुताम् ॥ १८ ॥ तांवीक्ष्यविपुलापांगींत्रैलोक्यवरसुंदरीम् ॥ सुर क्तनयनांरम्यांक्रोधरक्तेक्षणांतथा ॥ १९ ॥ विवाहेच्छांपरित्यज्यजयाशांदूरतस्तथा ॥ मरणेनिश्चयंकृत्वातस्थावाहितकार्मुकः ॥ २० ॥ तंतथादानवंदेवीस्मितपू र्वमिदंवचः ॥ बभाषेशृण्वतांतेषांदैत्यानांरणमस्तके ॥ २१ ॥ गच्छध्वंपामरायूयंपातालंवाजलार्णवम् ॥ जीविताशांस्थिरांकृत्वात्यक्त्वाऽत्रैवायुधानिच ॥ २२ ॥ अथवामच्छराघातहतप्राणारणाजिरे ॥ प्राप्यस्वर्गसुखंसर्वेक्रीडंतुविगतज्वराः ॥ २३ ॥ कातरत्वंचशूरत्वंनभवत्येवसर्वथा ॥ ददाम्यभयदानंवैयांतुसर्वेयथा सुखम् ॥ २४ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यानिशुंभोमदगर्वितः ॥ निशितंखड्गमादायचर्मचैवाऽष्टचंद्रकम् ॥ २५ ॥ धावमानस्तुतरसाऽसिनासिंहंम दोत्कटम् ॥ जघानाऽतिबलान्मूर्ध्निभ्रामयञ्जगदंबिकाम् ॥ २६ ॥ ततोदेवीस्वगदयावंचयित्वासिपातनम् ॥ ताडयामासतंबाहोर्मूलेपरशुनातदा ॥ २७ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ धावमानइति ॥ असिनामूर्ध्निसिंहंजघानजगदंबिकांचजघानेत्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २८ ॥ निशुंभंहंतुमिच्छतियासेत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ पलादामांसाशिनः ॥ सारमेयाःश्वानः ॥ ३१ ॥ असुरवर्ष्मकैरसुरशरीरैः ॥ गजाश्वदेहसंकुलारणभूरित्यन्वयः ॥ ३२ ॥

खड्गेननिहतःसोऽपिबाहुमूलेमहामदः ॥ संस्तभ्यवेदनांभूयोजघानचंडिकांतदा ॥ २८ ॥ साऽपिघंटास्वनंघोरंचकारभयदंनृणाम् ॥ पपौपुनःपुनःपानं निशुंभंहंतुमिच्छती ॥ २९ ॥ एवंपरस्परंयुद्धंबभूवाऽतिभयप्रदम् ॥ देवानांदानवानांचपरस्परजयैषिणाम् ॥ ३० ॥ पलादाःपक्षिणःक्रूराःसारमेयाश्चजंबुकाः ॥ ननृतुश्चाऽतिसंतुष्टागृध्राःकंकाश्चवायसाः ॥ ३१ ॥ रणभूर्भातिभूयिष्ठपतिताऽसुरवर्ष्मकैः ॥ रुधिरस्रावसंयुक्तैर्गजाश्वदेहसंकुला ॥ ३२ ॥ पतितान्दानवान्दृष्ट्वानिशुंभोऽतिरुषान्वितः ॥ प्रययौचंडिकांतूर्णंगदामादायदारुणाम् ॥ ३३ ॥ सिंहंजघानगदयामस्तकेमदगर्वितः ॥ प्रहृत्यचास्मितंकृत्वापुनर्देवीमताडयत् ॥ ३४ ॥ साऽपितंकुपिताऽतीवनिशुंभंपुरतःस्थितम् ॥ प्रहरंतंसमीक्ष्याऽथदेवीवचनमब्रवीत् ॥ ३५ ॥ देव्युवाच ॥ तिष्ठमंदमतेतावद्यावत्खड्गमिदंतव ॥ ग्रीवायांप्रेरयाम्यस्माद्गंतासियमसादनम् ॥ ३६ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वातरसादेवीकृपाणेनसमाहिता ॥ चिच्छेदमस्तकंतस्यनिशुंभस्याऽथचंडिका ॥ ३७ ॥ सच्छिन्नमस्तकोदेव्याकबंधोऽतीवदारुणः ॥ बभ्रामचगदापाणिस्त्रासयन्देवतागणान् ॥३८॥ देवीतस्यशितैर्बाणैश्चिच्छेदचरणौकरौ ॥ पपातोर्व्यांततःपापीगतासुःपर्वतोपमः ॥ ३९ ॥ तस्मिन्निपतितेदैत्येनिशुंभेभीमविक्रमे ॥ हाहाकारोमहानासीत्तत्सैन्येभयकंपिते ॥४०॥त्यक्त्वाऽऽयुधानिसर्वाणिसैनिकाःक्षतजाऽऽप्लुताः ॥ जग्मुर्दुद्रुवारवंसर्वेकुर्वाणाराजमंदिरम् ॥४१॥ तानागतान्सुसंप्रेक्ष्यशुंभःशत्रुनिषूदनः ॥ पप्रच्छकनिशुंभोऽसौकथंभग्नाःपलायिताः ॥ ४२ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञस्तेप्रोचुःप्रणताभृशम् ॥ राजंस्तेनिहतोभ्राताशेतेसमरमूर्धनि ॥ ४३ ॥ तयानिपातिताःशूरायेचतेऽप्यनुजाऽनुगाः ॥ वयंत्वांकथितुंसर्ववृत्तांतंसमुपागताः ॥ ४४ ॥ निशुंभोनिहतस्तत्रतयाचंडिकयाधुना ॥ नहियुद्धस्यकालोऽद्यतवराजन्रणांगणे ॥४५॥ देवकार्यंसमुद्दिश्यकाऽपीयंपरमांगना ॥ हंतुंदैत्यकुलंनूनंप्राप्तेतिपरिचिंतय ॥४६॥ नैषाप्राकृतयोषैवदेवीशक्तिरनुत्तमा ॥ अचिंत्यचरिताकाऽपिदुर्ज्ञेयादेवतैरपि ॥४७॥ नानारूपधरातीवमायामूलविशारदा ॥ विचित्रभूषणादेवीसर्वायुधधराशुभा ॥४८॥ गहनागूढचरिताकालरात्रिरिवापरा ॥ अपारपारगापूर्णासर्वलक्षणसंयुता॥४९॥अंतरिक्षस्थितादेवास्तांस्तुवंत्यकुतोभयाः ॥देवकार्यंचकुर्वाणांश्रीदेवींपरमाद्भुताम् ॥५०॥ पलायनंपरोधर्मःसर्वथादेहरक्षणम् ॥ रक्षितेकिलदेहेस्मिन्कालेस्मत्सुखतांगते॥५१॥संग्रामेविजयोराजन्भवितातेनसंशयः ॥ कालःकरोतिबलिनंसमयेनिर्बलंक्वचित् ॥५२॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ततोयमसादनंगंतासीत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ परमांगनासर्वकारणभूतासंविद्रूपिणीश्रीभगवत्यस्तीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ततश्चाऽधुनेदंकर्तव्यमित्याह । पलायनंपरोधर्मइति ॥ कालेऽस्मत्सुखतांगतेऽनुकूलेआगतेइत्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ अवलयेतिच्छेदः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ इत्थंज्ञात्वायदिच्छसितत्कुर्वित्याह । यथातेइति ॥ नाऽत्रहेतुरिति ॥ हेतुःसुखहेतुरनुकूलोनास्ती त्यर्थः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ एकोनसप्ततिश्लोकैःशुंभासुरवधाश्रिता ॥ कथाप्रारभ्यतेदेव्याजगतो मंगलंकृतम् ॥ १ ॥ निशुंभवधानंतरंजातंकृत्यमाह । इतितेषामिति ॥ १ ॥ दुर्वाच्यंकर्मकृत्वाऽहंजीवितुमुत्सहेकिमित्यर्थः॥ दुर्वाच्यंकर्मस्वयमेवाह । निहत्येति॥विचरामिकिंविचरिष्या

तंपुनःसवलंकृत्वाजयायोपदधातिहि ॥ दातारंयाचकंकालःकरोतिसमयेक्वचित् ॥५३॥ भिक्षुकंधनदातारंकरोतिसमयांतरे ॥ विष्णुःकालवशेनूनंब्रह्मा वापार्वतीपतिः ॥ ५४ ॥ इंद्राद्यानिर्जराःसर्वेकालएवप्रभुःस्वयम् ॥ तस्मात्कालंप्रतीक्षस्वविपरीतंतवाऽधुना ॥ ५५ ॥ संमुखोदेवतानांचदैत्यानांनाशहे तुकः ॥ एकैवचगतिर्नास्तिकालस्यकिलभूपते ॥ ५६ ॥ नानारूपधराऽप्यस्तिज्ञातव्यंतस्यचेष्टितम्॥कदाचित्संभवोनृणांकदाचित्प्रलयस्तथा॥५७॥ उत्पत्तिहेतुःकालोऽन्यःक्षयहेतुस्तथाऽपरः ॥ प्रत्यक्षंतेमहाराजदेव्याःसर्वेसवासवाः ॥ ५८ ॥ करदास्तेकृताःपूर्वंकालेनसंमुखेनच ॥ तेनैवविमुखेनाऽद्यब लिनोऽबलयाऽसुराः ॥ ५९ ॥ निहतानितरांकालःकरोतिचशुभाशुभम् ॥ नैवात्रकारणंकालीनैवदेवाःसनातनाः ॥ ६० ॥ यथातेरोचतेराजंस्तथाकुरु विमृश्यच ॥ कालोऽयंनाऽत्रहेतुस्तेदानवानांतथापुनः ॥ ६१ ॥ त्वदग्रतोगतःशक्रोभग्नःसंख्येनिरायुधः ॥ तथाविष्णुस्तथारुद्रोवरुणोधनदोयमः ॥ ॥ ६२ ॥ तथात्वमपिराजेंद्रवीक्ष्यकालवशंजगत् ॥ पातालंगच्छतरसाजीवन्भद्रमवाप्स्यसि ॥ ६३ ॥ मृतेत्वयिमहाराजशत्रवस्तेमुदान्विताः ॥ मंग लानिप्रगायंतोविचरिष्यंतिसर्वतः ॥ ६४ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिते षांवचःश्रुत्वाशुंभोदैत्यपतिस्तथा ॥ उवाचसैनिकानाशुकोपाकुलितलोचनः ॥१॥ शुंभउवाच ॥ जाल्माःकिंब्रूतदुर्वाच्यंकृत्वाजीवितुमुत्सहे ॥ निहत्यस चिवान्भ्रातॄन्निर्लज्जोविचरामिकिम् ॥२॥ कालःकर्ताशुभानांवाऽशुभानांबलवत्तरः ॥ कांचितामममदुर्वारेतस्मिन्नीशेऽप्यरूपके ॥३॥ यद्भवतितद्भवतुयत्क रोतिकरोतुतत् ॥ नमेचिंताऽस्तिकुत्राऽपिमरणाज्जीवनात्तथा ॥ ४ ॥ सकालोऽप्यन्यथाकर्तुंभावितोनेशतेक्वचित् ॥ नवर्षतिचपर्जन्यःश्रावणेमासिसर्व था ॥ ५ ॥ कदाचिन्मार्गशीर्षेवापौषेमाघेऽथफाल्गुने ॥ अकालेवर्षतीवाऽऽशुतस्मान्मुख्योनचास्त्ययम् ॥ ६ ॥

मिकिमित्यर्थः ॥ २ ॥ किंचममयदिमरणकालःसमागतःस्यात्तदाकुत्राऽपिमायिगतेसकिंमांत्यक्ष्यतीतिवदन्कालस्यमहिमानमाह । कालःकर्तेति ॥ अरूपकेरूपरहितेतस्मिन्नीशेसतीत्यर्थः ॥ ३ ॥४॥ ननुकालस्यैवाऽऽराधनंकर्तव्यंतेनसनबाधिष्यतइतिचेत्तत्राह । सकालोऽपीति ॥ भावितआराधितोऽपिदैवापेक्षयाऽन्यथाकर्तुंकचित्कचिदपिनेशतेनसमर्थोभवतीत्यर्थः ॥ तस्मा त्कालापेक्षयाऽपिदैवमेवमुख्यमितिभावः ॥ कालस्यैवमुख्यत्वेतत्तत्कालिकंकार्यंतत्तत्कालेकुतोनस्यात्तस्मान्नकालोमुख्यइत्याह । नवर्षतिचेति ॥ ५ ॥ ६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कस्तर्हिमुख्यइतिचेत्तत्राह । कालोनिमित्तमात्रंत्विति ॥ ७ ॥ ननुत्वयापूर्वंजैनमतमाश्रित्यप्रत्यक्षमेकेचार्वाकाइतिबार्हस्पत्यशास्त्रावलंबेनदैवंवेदसिद्धंखंडयित्वापौरुषमेवकार्यसाधकंसाधितमधुनातुकथंदैवंकार्यसाधकमुच्यतइतिचेत्तत्राह । दैवमेवपरमिति॥पौरुषेसत्यपिकार्यस्याऽजातत्वादनर्थकंकार्यसाधकंपौरुषंधिगित्यर्थः॥ अनेककार्यकारणभावप्रतिबध्यप्रतिबंधकभावकल्पनापेक्षयावेदप्रमाणसिद्धंदैवमेवपरंमुख्यंकार्यसाधकंमन्येइत्यर्थः ॥ तस्मात्सर्वस्यदैवाधीनत्वाद्यद्भविष्यतितद्भवतु ॥ मयायोद्धव्यमेवेतिभावः ॥ किंचलोकदृष्ट्याऽप्यधुनाजीविताशाकिंचित्करेत्याह । जेतेति ॥ ८ ॥ करोमिकिं करिष्यामिकिमित्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ तुहिनाऽचलेहिमाचले ॥ निशुंभयुद्धसमयेयुद्धंविहायगृहंगतः

कालोनिमित्तमात्रंतुदैवंहिबलवत्तरम् ॥ दैवेननिर्मितंसर्वंनाऽन्यथाभवतीत्यदः ॥ ७ ॥ दैवमेवपरंमन्येधिक्पौरुषमनर्थकम् ॥ जेतायःसर्वदेवानांनिशुंभोऽप्यनयाहतः ॥ ८ ॥ रक्तबीजोमहाशूरःसोऽपिनाशंगतोयदा ॥ तदाऽहंकीर्तिमुत्सृज्यजीवताशांकरोमिकिम् ॥ ९ ॥ प्राप्तेकालेस्वयंब्रह्मापरार्धद्वयसंमिते ॥ निधनंयातितरसाजगत्कर्तास्वयंप्रभुः ॥ १० ॥ चतुर्युगसहस्रंतुब्रह्मणोदिवसेकिल ॥ पतंतिभवनात्पंचनवचेंद्रास्तथापुनः॥११॥ तथैवद्विगुणेविष्णुर्मरणायोपकल्पते ॥ तथैवद्विगुणेकालेशंकरः शांतिमेतिच ॥ १२ ॥ काचिंतामरणेमूढानिश्चलेदैवनिर्मिते ॥ महीमहीधराणांचनाशःसूर्यशशांकयोः ॥ १३ ॥ जातस्यहिध्रुवंमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ अध्रुवेऽस्मिञ्छरीरेतुरक्षणीयंयशःस्थिरम् ॥ १४ ॥ रथोमेकल्प्यतांशीघ्रंगमिष्यामिरणाजिरे ॥ जयोवामरणंवापिभवत्वद्यैवदैवतः ॥ १५ ॥ इत्युक्त्वासैनिकाञ्छुंभोरथमास्थायसत्वरः ॥ प्रययावंबिकायत्रसंस्थितातुहिमाचले ॥ १६ ॥ सैन्यंप्रचलितंतस्यसंगेतत्रचतुर्विधम् ॥ हस्त्यश्वरथपादातिसंयुतंसायुधंबहु ॥ १७ ॥ तत्रगत्वाऽचलेशुंभःसंस्थितांजगदंबिकाम् ॥ त्रैलोक्यमोहिनींकांतामपश्यत्सिंहवाहिनीम् ॥ १८ ॥ सर्वाभरणभूषाढ्यांसर्वलक्षणसंवृताम् ॥ स्तूयमानांसुरैःखस्थैर्गंधर्वयक्षकिन्नरैः ॥ १९ ॥ पुष्पैश्चपूज्यमानांचमंदारपादपोद्भवैः ॥ कुर्वाणांशंखनिनदंघंटानादंमनोहरम् ॥ २० ॥ दृष्ट्वातांमोहमगमच्छुंभःकामविमोहितः ॥ पंचबाणाऽऽहतःकामंमनसासमचिंतयत् ॥ २१ ॥ अहोरूपमिदंसम्यगहोचातुर्यमद्भुतम् ॥ सौकुमार्यंचधैर्यंचपरस्परविरोधियत् ॥ २२ ॥ सुकुमाराऽतितन्वंगीसद्यःप्रकटयौवना ॥ चित्रमेतदसौबालाकामभावविवर्जिता ॥ २३॥ कामकांतासमारूपेसर्वलक्षणलक्षिता ॥ अंबिकेयंकिमेतत्तुहंतिसर्वान्महाबलान् ॥ २४ ॥ उपायःकोऽत्रकर्तव्योयेनमेवशगाभवेत् ॥ नमंत्रावामरालाक्षीसाधनेसन्निधौमम ॥ २५ ॥ सर्वमंत्रमयीह्येषामोहिनीमदगर्विता ॥ सुंदरीयंकथंमेस्याद्वशगावरवर्णिनी ॥ २६ ॥

पुनःप्रययौगतवानित्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ धैर्ययुद्धधैर्यम् ॥ २२ ॥ २३ ॥ कामकांतारतिस्तत्समा ॥ रूपेणरतिसदृशीत्यर्थः ॥ अतिलावण्यवतीशृंगारंनिजकर्मविहायसर्वान्महाबलान्हंति वीरकर्मकरोतिकिमेतादित्यर्थः ॥ २४ ॥ ममसन्निधौमरालाक्षीहंसलोचना तस्याःसाधनेवशीकारेसमर्थामंत्राआपिनसंतीत्यर्थः॥२५ ॥किंचसर्वमंत्रमयीयमस्तीतिनकश्चिन्मंत्रएतांवशीकुर्यादित्यभिप्रायेणाह। सर्वमंत्रमयीति ॥ हियतःसर्वमोहिनी ततःसर्वमंत्रमयीत्यर्थः ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥२७॥ विषमेसंकटे ॥ अत्रस्त्रीकृतंस्त्रीहस्तेनकृतंजातंमरणंचमरणमपिनोत्तमंयतस्तद्यशोपहृत्यशोहारकमेववर्ततइत्यर्थः॥२८॥तदेवस्पष्टयति । मरणमिति ॥२९॥ अबलेतिच्छेदः॥३०॥ वृथेति ॥ सांप्रतमास्मिन्कालेकिंयोज्यानि किमर्थंयोज्यानि नायंकालःसामवाक्यानामितिभावः॥ तदेवाह।हननायेति॥३१॥नदानैरिति ॥ यतोनानाशस्त्रविभूषितासर्वसाधनसंपादनेसमर्था ततोयत्किंचिद्धनदानैर्नचालयितुंयोग्याऽस्तीत्यर्थः ॥ भेदस्त्विति ॥ यतःसर्वेदेवाअस्यावशाअनुगाः ॥ सेवकाश्चसंतिततोभेदोऽप्यत्रविफलइत्यर्थः ॥ ३२ ॥ यथाविधियथादैवम् ॥३३॥

पातालगमनंमेऽद्यनयुक्तंसमरांगणात् ॥ सामदानविभेदैश्चनेयंसाध्यामहाबला ॥ २७ ॥ किंकर्तव्यंक्वगंतव्यंविषमेसमुपस्थिते ॥ मरणंनोत्तमंचाऽत्रस्त्री कृतंतुयशोपहृत् ॥ २८ ॥ मरणंऋषिभिःप्रोक्तंसंगरेमंगलास्पदम् ॥ यत्तत्समानबलयोर्योधयोर्युध्यतोःकिल ॥ २९ ॥ प्राप्तेयंदैवरचितानारीनरशतोत्त मा ॥ नाशायाऽस्मत्कुलस्येहसर्वथाऽतिबलाबला ॥ ३० ॥ वृथाकिंसामवाक्यानिमयायोज्यानिसांप्रतम् ॥ हननायागताह्येषाकिंतुसाम्नाप्रसीदति ॥ ॥ ३१ ॥ नदानैश्चालितुंयोग्यानानाशस्त्रविभूषिता ॥ भेदस्तुविकलःकामंसर्वदेववशानुगा ॥ ३२ ॥ तस्मात्तुमरणंश्रेयोनसंग्रामेपलायनम् ॥ जयोवा मरणंवाऽद्यभवत्येवयथाविधि ॥ ३३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यमनसाशुंभःसत्त्वाश्रितोभवत् ॥ युद्धायसुस्थिरोभूत्वातामुवाचपुरःस्थिताम् ॥ ॥ ३४ ॥ देवियुध्यस्वकांतेऽद्यवृथाऽयंतेपरिश्रमः ॥ मूर्खाऽसिकिलनारीणांनाऽयंधर्मःकदाचन ॥ ३५ ॥ नारीणांलोचनेबाणाभ्रुवावेवशरासनम् ॥ हा वभावास्तुशस्त्राणिपुमाँल्लक्ष्यंविचक्षणः ॥ ३६ ॥ सन्नाहश्चांगरागोऽत्ररथश्चाऽपिमनोरथः ॥ मंदप्रजल्पितंभेरीशब्दोनाऽन्यःकदाचन॥३७॥ अन्यास्त्रधा रणंस्त्रीणांविडंबनमसंशयम् ॥ लज्जैवभूषणंकांतेनचधार्ष्ट्यंकदाचन ॥३८॥ युध्यमानावरानारीकर्कशेवाऽभिदृश्यते ॥ स्तनौसंगोपनीयौवाधनुषःकर्षणे कथम् ॥ ३९ ॥ क्रमंदगमनंकुत्रगदामादायधावनम् ॥ बुद्धिदाकालिकातेऽत्रचामुंडापरनायिका ॥ ४०॥ चंडिकामंत्रमध्यस्थालालनेऽसुस्वराशिवा ॥ वाहनंमृगराडास्तेसर्वसत्त्वभयंकरः ॥४१॥ वीणानादंपरित्यज्यघंटानादंकरोषियत् ॥ रूपयौवनयोःसर्वविरोधिवरवर्णिनि ॥ ४२ ॥ यदितेसंगरेच्छास्ति कुरूपाभवभामिनि ॥ लंबोष्ठीकुनखीक्रूराध्वांक्षवर्णाविलोचना ॥ ४३ ॥ लंबपादाकुदंतीचमार्जारनयनाकृतिः ॥ ईदृशंरूपमास्थायतिष्ठयुद्धेस्थिराभव ॥ ४४ ॥ कर्कशंवचनंब्रूहिततोयुद्धंकरोम्यहम् ॥ ईदृशींसुदतींदृष्ट्वानमेपाणिःप्रसीदति ॥ ४५ ॥ हंतुंत्वांमृगशावाक्षिकामकांतोपमेमृधे ॥ व्यासउवाच॥ इतिब्रुवाणंकामार्तंवीक्ष्यतंजगदंबिका ॥ ४६ ॥ स्मितपूर्वमिदंवाक्यमुवाचभरतोत्तम ॥ देव्युवाच ॥ किंविषीदसिमंदात्मन्कामबाणविमोहित ॥ ४७ ॥

सत्त्वाश्रितोधैर्याश्रितः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ सन्नाहउद्योगः ॥ अंगरागोहरिचंदनादि ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ चामुंडापरनायिकापरोऽन्योनायकोयस्याःसापरनायिका चतुरान परनायिकाअचतुरेत्यर्थः ॥ ४० ॥ मंत्रमध्यस्थामंत्रदात्रीलालनेपिअसुस्वराकठोरस्वरानह्येतादृशयालालनंसंभवतीत्यर्थः ॥ अतएनांविहायमन्निकटेआगच्छेतिभावः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ विलोचनांधा ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ कामकांतारतिः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रेक्षिकाहमिति। यदिमयिप्रहारंकर्तुंतवहस्तोनप्रसीदति तर्हियथा त्वंयुद्धार्थंकुरूपांलंवोष्टीमित्यादिलक्षणांप्रार्थयसितथाकालिकेयमस्तितयैवयुद्धंकुरु ॥ अहंकेवलंप्रेक्षिकाऽस्मि भवामि ॥ ततोनमयिप्रहारापेक्षेत्यर्थः ॥ अथवाचामुंडयाललाटादुद्भूततयाकुरुयुद्धम् ॥ एतेकौशिकीचामुंडेतवरणांगणेयोग्येभवतइत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ दारु

प्रेक्षिकाऽहंस्थितामूढकुरुकालिकयामृधम् ॥ चामुंडयावाकुर्वेतेतवयोग्येरणांगणे ॥ ४८ ॥ प्रहरस्वयथाकामंनाऽहंत्वांयोद्धुमुत्सहे ॥ इत्युक्त्वाकालिकांप्राहदेवीमधुरयागिरा ॥ ४९ ॥ जह्येनंकालिकेक्रूरेकुरूपप्रियमाहवे ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्ताकालिकाकालप्रेरिताकालरूपिणी ॥ ५० ॥ गदांप्रगृह्यतरसातस्थावाजौकृतोद्यमा ॥ तयोःपरस्परंयुद्धंबभूवाऽतिभयानकम् ॥ ५१ ॥ पश्यतांसर्वदेवानांमुनीनांचमहात्मनाम् ॥ गदामुद्यम्यशुंभोऽथजघानकालिकांरणे ॥ ५२ ॥ कालिकादैत्यराजानंगदयान्यहनद्भृशम् ॥ बभंजाऽस्यरथंचंडीगदयाकनकोज्वलम् ॥ ५३ ॥ खरान्हत्वाजघानाऽऽशुदारुकंदारुणस्वना ॥ सपदातिर्गदांगुर्वींसमादायक्रुधान्वितः ॥ ५४ ॥ कालिकाभुजयोर्मध्येप्रहसन्नहनत्तदा ॥ वंचयित्वागदापातंखड्गमादायसत्त्वरा ॥ ५५ ॥ चिच्छेदाऽस्यभुजंसव्यंसायुधंचंदनार्चितम् ॥ सच्छिन्नबाहुर्विरथोगदापाणिःपरिष्कृतः ॥ ५६ ॥ रुधिरेणसमागम्यकालिकामहनत्तदा ॥ कालीचकरवालेनभुजंतस्याऽथदक्षिणम् ॥ ५७ ॥ चिच्छेदप्रहसंतीसासगदंकिलसांगदम् ॥ कर्तुंपादप्रहारंसकुपितःप्रययौजवात् ॥ ५८ ॥ कालीचिच्छेदचरणौखड्गेनाऽस्यत्वरान्विता ॥ सच्छिन्नकरपादोऽपितिष्ठतिष्ठेतिचब्रुवन् ॥ ५९ ॥ धावमानोययावाशुकालिकांभीषयन्निव ॥ तमागच्छंतमालोक्यकालिकाकमलोपमम् ॥ ६० ॥ चकर्तमस्तकंकंठाद्रुधिरौघवहंभृशम् ॥ छिन्नेऽसौमस्तकेभूमौपपातगिरिसन्निभः ॥ ६१ ॥ प्राणाविनिर्ययुस्तस्यदेहादुत्क्रम्यसत्वरम् ॥ गतासुंपतितंदैत्यंदृष्ट्वादेवाःसवासवाः ॥ ६२ ॥ तुष्टुवुस्तांतदादेवींचामुंडांकालिकांतथा ॥ ववुर्वाताःशिवास्तत्रदिशश्चविमलाभृशम् ॥ ६३ ॥ बभूवुश्चाऽग्नयोहोमेप्रदक्षिणशिखाःशुभाः ॥ हतशेषाश्चयेदैत्याःप्रणम्यजगदंबिकाम् ॥ ६४ ॥ त्यक्त्वाऽऽयुधानितेसर्वेपातालंप्रययुर्नृप ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंदेव्याश्चरितमुत्तमम् ॥ ६५ ॥ शुंभादीनांवधंचैवसुराणांरक्षणंतथा ॥ एतदाख्यानकंसर्वेपठंतिभुविमानवाः ॥ ६६ ॥ शृण्वंतिचसदाभक्त्यातेकृतार्थाभवंतिहि ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रान्निर्धनश्चधनंबहु ॥ ६७ ॥ रोगीचमुच्यतेरोगात्सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ शत्रुतोनभयंतस्ययइदंचरितंशुभम् ॥ शृणोतिपठतेनित्यंमुक्तिमाञ्जायतेनरः ॥ ॥ ६८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेशुंभवधोनामएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

कंसारथिम् ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ अत्रदेवस्तुत्युत्तरंभगवत्यावरदानं तस्याश्चांतर्धानमनुक्तमपिमार्कंडेयपुराणादवसेयम् ॥ ६८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेएकत्रिंशोध्यायः ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुचरित्रत्रयसेवकौ ॥ राजवैश्यौप्रसिद्धौयौतयोर्वार्तातुकथ्यते ॥ १ ॥ अत्रपूर्वाध्यायेचरित्रत्रयपाठस्यतच्छ्रवणस्यचसर्वकामप्रदत्वंमोक्षप्रदत्वंचाभिहितम् ॥ तत्रचरित्रत्रयपाठेनश्रवणेनवाकस्यासिद्धिर्जातेतिभक्तिमान्राजापृच्छति महिमावर्णितःसम्यगिति ॥ केनचाराधितेति ॥ ननुभगवत्याःसर्वेब्रह्मादयोदेवाःसर्वेदेवर्षयःसर्वेराजर्षयःसर्वेब्रह्मर्षयोगौरीलक्ष्म्यादिमहादेवताश्चकिंबहुनाप्राणिजातंसर्वमाराधकमस्तिसुखमात्रंभगवत्याराधनेनैवभवतीतितदाराधनफलंमोक्षकाममुनिभिराराधनान्मोक्षफलंचपूर्वमुक्तमेवेतिचेत्तत्राह । चरित्रत्रययोगतइति ॥ सत्यम् ॥ पूर्वमुक्तंतथापिभगवत्याराधनमनेकमंत्रजपध्यानसमाधिपूजास्तोत्रपाठैरनेकविधंभवति ॥ तत्रचरित्रत्रयस्यक्रमाच्चरित्रत्रयपाठेनश्रवणेनवाकस्यासिद्धिर्जातेतिविशेषेणचरित्रत्रयमात्रपाठश्रवणफलंकस्यजातमितिमयापृच्छ्यतइतिभावः ॥ चरित्रत्रययोगतः केनाराधितेत्यन्वयः ॥ १ ॥ केनप्राप्तंफलमिति ॥ अत्रापिचरित्रत्रययोगतइत्यनुषंजनीयम् ॥२॥ किंचोपासनाविधिमपिब्रूहीत्याह । उपासनेति ॥ ३ ॥ ४ ॥ स्वारोचिषेंतरेइति ॥ स्वारोचिषाविकारोपलक्षितेद्वितीयमन्वंतरेइत्यर्थः ॥ पूर्वमितिकथाकालापेक्षया ॥ ५ ॥ ६ ॥ अवि

जनमेजयउवाच ॥ महिमावर्ण्यतेसम्यक्चंडिकायास्त्वयामुने ॥ केनचाराधितापूर्वंचरित्रत्रययोगतः ॥१॥ प्रसन्नाकस्यवरदाकेनप्राप्तंफलंमहत् ॥आराध्यकामदांदेवींकथयस्वकृपानिधे ॥ २ ॥ उपासनाविधिंब्रह्मंस्तथापूजाविधिंवद ॥विस्तरेणमहाभागहोमस्यचविधिंपुनः ॥ ३ ॥ सूतउवाच॥इतिभूपवचःश्रुत्वाप्रीतःसत्यवतीसुतः ॥ प्रत्युवाचनृपंकृष्णोमहामायाप्रपूजनम् ॥४॥ व्यासउवाच ॥ स्वारोचिषेंतरेपूर्वंसुरथोनामपार्थिवः ॥ बभूवपरमोदारःप्रजापालनतत्परः॥५॥सत्यवादीकर्मपरोब्राह्मणानांचपूजकः॥गुरुभक्तिरतोनित्यंस्वदारगमनेरतः॥६॥दानशीलोऽविरोधीचधनुर्वेदैकपारगः॥ एवंपालयतोराज्यंम्लेच्छाःपर्वतवासिनः॥७॥बलाच्छत्रुत्वमापन्नाःसैन्यंकृत्वाचतुर्विधम्॥हस्त्यश्वरथपादातिसहितास्तेमदोत्कटाः ॥८॥ कोलाविध्वंसिनःप्राप्तापृथ्वीग्रहणतत्पराः ॥ सुरथःसैन्यमादायसंमुखःसमपद्यत॥९॥युद्धंसमभवद्घोरंतस्यतैरतिदारुणैः॥ म्लेच्छानांतुबलंस्वल्पंराज्ञस्तद्बलमद्भुतम् ॥१०॥ तथापितैर्जितोयुद्धेदैवाद्राजापराजितः ॥ भग्नश्चस्वपुरंप्राप्तःसुरक्षंदुर्गमंडितम् ॥ ११ ॥ चिंतयामासमेधावीराजानीतिविचक्षणः ॥ प्रधानान्विमनादृष्ट्वाशत्रुपक्षसमाश्रितान् ॥ १२ ॥ स्थानंगृहीत्वाविपुलंपरिखादुर्गमंडितम् ॥ कालप्रतीक्षाकर्तव्याकिंवायुद्धंवरंमतम् ॥ १३ ॥ मंत्रिणःशत्रुवशगामंत्रयोग्यानतेकिल ॥ किंकरोमीतिमनसाभूपतिःसमचिंतयत् ॥ १४ ॥ कदाचित्तेगृहीत्वामांपापाचाराःपराश्रिताः ॥ शत्रुभ्योऽथप्रदास्यंतितदाकिंवाभविष्यति ॥ १५ ॥

रोधीतिच्छेदः ॥ कस्यापिनशत्रुरित्यर्थः ॥ म्लेच्छाःपर्वतवासिनइति ॥ यद्यपिध्रुवस्यपौत्रोनंदिरुन्नामकोमुख्यत्वेनयुद्धार्थमागतइतिप्रकृतिखंडेउक्तं तथापितेनस्वसहायार्थंम्लेच्छाआनीताइतिबोध्यम् ॥ अतएवतेषांशत्रुत्वाभावेपिसाहाय्यार्थमागतत्वाद्बलाच्छत्रुत्वमापन्नाइत्युक्तम् ॥ ७ ॥ बलाच्छत्रुत्वमिति ॥ अनेनाकृतेपिशत्रुत्वेइत्यर्थः ॥ ८ ॥ कोलाविध्वंसिनइतिकोलाशब्दोनामैकदेशेननामग्रहणमितिन्यायात्कोलाहलवाचकः ॥ तथाचकोलाहलेनान्यायेनैवशत्रुराज्यविध्वंसनशीलानतुयुद्धनीत्यवलंबिनइत्यर्थः ॥ तथात्वेराज्ञातेजिताएवस्युरितिभावः ॥ यद्वाकोलाशब्देनराज्ञोनगरीतिब्रह्मवैवर्तेप्रकृतिखंडेदुर्गोपाख्यानेउक्तम् ॥ तस्याःकोलानगर्याविध्वंसिनइतिवा ॥ ९ ॥ १० ॥ पराजितइति ॥ दैवयोगादन्यायिनांयुद्धप्रसंगेन्यायवान्राजाकथमन्यायंकुर्यादितिपराजितइत्यर्थः ॥ ११ ॥ विमनाःसन्प्रधानान्दृष्ट्वेत्यन्वयः ॥ १२ ॥ चिंतामेवाह । स्थानंगृहीत्वेति ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ सुमेधसस्तापसस्य तन्नामकस्यमुनेरित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ सालच्छायासुसालवृक्षच्छायासु ॥ २६ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ २९ ॥ वृसीमासनम् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ शत्रुभ्योमेभयंघोरंवर्ततइत्येकंवाक्यम् ॥ प्राप्तोस्म्यद्यतवांतिकंमांत्रायस्वेत्यन्वयः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

पापबुद्धिषुविश्वासोनकर्तव्यःकदाचन ॥ किंनतेवैप्रकुर्वंतियेलोभवशगानराः ॥१६॥ भ्रातरंपितरंमित्रंसुहृदंबांधवंतथा ॥ गुरुंपूज्यंद्विजंद्वेष्टिलोभाविष्टःसदानरः ॥ १७ ॥ तस्मान्मयानकर्तव्योविश्वासःसर्वथाऽधुना ॥ मंत्रिवर्गेऽतिपापिष्ठेशत्रुपक्षसमाश्रिते ॥ १८ ॥ इतिसंचिंत्यमनसाराजापरमदुर्मनाः॥एकाकीहयमारुह्यनिर्जगामपुरात्ततः ॥ १९ ॥ असहायोऽथनिर्गत्यगहनंवनमाश्रितः ॥ चिंतयामासमेधावीक्वगंतव्यंमयापुनः ॥ २० ॥ योजनत्रयमात्रेतुमुनेराश्रममुत्तमम् ॥ ज्ञात्वाजगामभूपालस्तापसस्यसुमेधसः ॥ २१ ॥ बहुवृक्षसमायुक्तंनदीपुलिनसंश्रितम् ॥ निर्वैरश्वापदाकीर्णंकोकिलारावमंडितम् ॥ २२ ॥ शिष्याध्ययनशब्दाढ्यंमृगयूथशतावृतम् ॥ नीवारान्नसुपक्वाढ्यंसुपुष्पफलपादपम् ॥ २३ ॥ होमधूमसुगंधेनप्रीतिदंप्राणिनांसदा ॥ वेदध्वनिसमाक्रांतंस्वर्गादपिमनोहरम् ॥ २४ ॥ दृष्ट्वातमाश्रमंराजाबभूवाऽसौमुदान्वितः ॥ भयंत्यक्त्वामतिंचक्रेविश्रामायद्विजाश्रमे ॥ २५ ॥ आसज्यपादपेऽश्वंतुजगामविनयान्वितः ॥ दृष्ट्वातंमुनिमासीनंसालच्छायासुसंश्रितम् ॥२६॥ मृगाजिनासनंशांतंतपसातिकृशंऋजुम् ॥ अध्यापयंतंशिष्यांश्चवेदशास्त्रार्थदर्शिनम् ॥२७॥ रहितंक्रोधलोभाद्यैर्द्वंद्वातीतंविमत्सरम्॥आत्मज्ञानरतंसत्यवादिनंशमसंयुतम् ॥२८॥ तंवीक्ष्यभूपतिर्भूमौपपातदंडवत्तदा ॥ तदग्रेश्रुजलापूर्णनयनःप्रेमसंयुतः ॥२९॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रंतेतमुवाचतदामुनिः॥ शिष्योददौवृसींतस्मैगुरुणानोदितस्तदा॥३०॥उत्थायनृपतिस्तस्यांसमासीनस्तदाज्ञया ॥ अर्घ्यपाद्यार्हणंचक्रेसुमेधाविधिपूर्वकम् ॥ ३१ ॥ पप्रच्छाऽत्रकुतःप्राप्तःकस्त्वंचिंतापरःकथम्॥कथयस्वयथाकामंसंवृतंकारणंत्विह ॥ ॥ ३२ ॥ किमागमनकृत्यंतेब्रूहिकार्यमनोगतम् ॥ करिष्येवांछितंकाममसाध्यमपियत्तव ॥ ३३ ॥ राजोवाच ॥ सुरथोनामराजाऽहंशत्रुभिश्चपराजितः॥ त्यक्त्वाराज्यंगृहंभार्यामहंतेशरणंगतः ॥ ३४ ॥ यदाज्ञापयसेब्रह्मंस्तदहंभक्तितत्परः॥करिष्यामिनमेत्रातात्वदन्यःपृथिवीतले॥३५॥ शत्रुभ्योमेभयंघोरंप्राप्तोऽस्म्यद्यतवांतिकम् ॥ त्रायस्वमुनिशार्दूलशरणागतवत्सल ॥ ३६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ निर्भयंवसराजेंद्रनाऽत्रतेशत्रवःकिल॥ आगमिष्यंतिबलिनोनिश्चयंतपसोबलात् ॥ ३७ ॥ नाऽत्रहिंसाप्रकर्तव्यावनवृत्त्यानृपोत्तम ॥ कर्तव्यंजीवनंशस्तैर्नीवारफलमूलकैः ॥ ३८ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वानिर्भयःसनृपस्तदा ॥ उवासाऽऽश्रमएवाऽसौफलमूलाशनःशुचिः ॥ ३९ ॥ कदाचित्सनृपस्तत्रवृक्षच्छायांसमाश्रितः ॥ चिंतयामासचिंतार्तोगृहएवगताशयः ॥ ४० ॥ राज्यंमेशत्रुभिःप्राप्तंम्लेच्छैःपापरतैःसदा ॥ संपीडिताःस्युर्लोकास्तैर्दुराचारैर्गतत्रपैः ॥ ४१ ॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ गृहेगताशयोगतचित्तः ॥ ४० ॥ ४१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ भुजिष्यावेश्या ॥ ४४ ॥ म्लेच्छाःपापबुद्धयोमंत्रिणोऽपिमेपापबुद्धयएव ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ कोसिकाजातिस्तेइत्यर्थः ॥ ४७ ॥ कुतःकस्मादेशादित्यर्थः । कोसिकिनामतेइत्यर्थः ॥ कस्मात्कारणादित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ येदुःखदास्तेसुहृदःकुतःनैवसुहृदइत्यर्थः

गजाश्चतुरगाःसर्वेदुर्बलाभक्ष्यवर्जिताः ॥ जाताःस्युर्नाऽत्रसंदेहःशत्रुणापरिपीडिताः ॥ ४२ ॥ सेवकाममसर्वेतेशत्रूणांवशवर्तिनः ॥ दुःखिताएवजाताःस्युःपालितायेमयापुरा ॥ ४३ ॥ धनंमेसुदुराचारैरसद्व्ययपरैःपरैः ॥ द्यूतासवभुजिष्यादिस्थानेस्यात्प्रापितंकिल ॥ ४४ ॥ कोशक्षयंकरिष्यंतिव्यसनैःपापबुद्धयः ॥ नपात्रदाननिपुणाम्लेच्छास्तेमंत्रिणोऽपिमे ॥ ४५ ॥ इतिचिंतापरोराजावृक्षमूलस्थितोयदा ॥ तदाजगामवैश्यस्तुकश्चिदार्तिपरस्तथा॥ ॥ ४६ ॥ नृपेणपुरतोदृष्टःपार्श्वेतत्रोपवेशितः ॥ पप्रच्छतंनृपःकोऽसिकुतएवाऽऽगतोवनम् ॥४७॥ कोऽसिकस्माच्चदीनोऽऽसिहरिणःशोकपीडितः ॥ ब्रूहिसत्यंमहाभागमैत्रीसात्तपदीमता ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञस्तमुवाचविशोत्तमः ॥ उपविश्यस्थिरोभूत्वामत्वासाधुसमागमम् ॥ ॥ ४९ ॥ वैश्यउवाच ॥ मित्राऽहंवैश्यजातीयःसमाधिर्नामविश्रुतः ॥ धनवान्धर्मनिपुणःसत्यवागनसूयकः ॥ ५० ॥ पुत्रदारैर्निरस्तोऽहंधनलुब्धैरसाधुभिः ॥ "कृपणेतिमिषंकृत्वात्यक्त्वामायांसुदुस्त्यजाम्॥" स्वजनेनचसंत्यक्तःप्राप्तोऽस्मिवनमाशुवै ॥ ५१ ॥ कोऽसित्वंभाग्यवान्भासिकथयस्वप्रियाऽधुना ॥ राजोवाच ॥ सुरथोनामराजाऽहंदस्युभिःपीडितोऽभवम् ॥ ५२ ॥ प्राप्तोऽस्मिगतराज्योऽत्रमंत्रिभिःपरिवंचितः ॥ दिष्ट्यात्वमत्रमित्रंमेमिलितोऽसिविशोत्तम ॥५३॥ सुखेनविहरिष्यावोवनेऽत्रशुभपादपे ॥ शोकंत्यजमहाबुद्धेस्वस्थोभवविशोत्तम ॥ ५४ ॥ "अत्रैवचयथाकामंसुखंतिष्ठमयासह ॥" वैश्यउवाच ॥ कुटुंबंमेनिरालंबंमयाहीनंसुदुःखितम् ॥ भविष्यतिचचिंतार्तंव्याधिशोकोपतापितम् ॥ ५५ ॥ भार्यादेहेसुखंनोवापुत्रदेहेनवासुखम् ॥ इतिचिंतातुरंचेतोनमेशाम्यतिभूमिप ॥५६॥ कदाद्रक्ष्येसुतंभार्यांगृहंस्वजनमेवच ॥ स्वस्थंनमन्मनोराजन्गृहचिंताकुलंभृशम् ॥ ५७ ॥ राजोवाच ॥ यैर्निरस्तोऽसिपुत्राद्यैरसद्वृत्तैःसुबालिशैः ॥ तान्दृष्ट्वाकिंसुखंतेऽद्यभविष्यतिमहामते ॥५८॥ हितकारीवरःशत्रुर्दुःखदाःसुहृदःकुतः ॥तस्मात्स्थिरंमनःकृत्वाविहरस्वमयासह ॥५९॥ वैश्यउवाच ॥ मनोमेनस्थिरंराजन्भवत्यद्यसुदुःखितम्॥ चिंतयाऽत्रकुटुंबस्यदुस्त्यजस्यदुरात्मभिः ॥ ६० ॥ राजोवाच ॥ ममाऽपिराज्यजंदुःखंदुनोतिकिलमानसम् ॥ पृच्छावोद्यमुनिंशांतंशोकनाशनमौषधम् ॥ ६१ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिकृत्वामतिंतौतुराजावैश्यश्चजग्मतुः ॥ मुनिंतौविनयोपेतौप्रष्टुंशोकस्यकारणम् ॥ ६२ ॥ गत्वातंप्रणिपत्याहराजाऋषिमनुत्तमम् ॥ आसीनंसम्यगासीनःशांतंशांतिमुपागतः ॥ ६३ ॥

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ अर्धाऽधिकैःपंचषष्टिपद्यैर्माहात्म्यमुच्यते ॥ श्रीमद्भुवनसुंदर्याराज्ञेपृष्टवतेऽधुना ॥ १ ॥ मुनिंप्रतिराजागत्वाकिंचकारतदाह । मुनेर्वैश्योऽयमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ मानसोमोहोनैवापसरातितत्कारणंकिमित्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ कारणंबंधमोक्षयोरिति ॥ बंधमोक्षयोःकारणेकथितेतदंतर्गतस्यमोहस्याऽपितदेवकारणमित्यर्थात्कथितंभवतीतिभावः ॥ ९ ॥ महामायेति ॥ गुणत्रयसाम्यावस्थात्मिकामूलप्रकृतिर्यामहामायेतिव्याख्यातासासर्वेषांप्राणिनांबंधमोक्षयोःकारणमित्यर्थः ॥ ब्रह्मादयोऽपितदधीनाःसंतीत्याह । ब्रह्माविष्णुरिति ॥१०॥ ॥ ११ ॥ मायाधीनाश्चेति ॥ नह्यद्वैतेब्रह्मणिमायांविनाकश्चित्पदार्थोभासते ॥ ततोमायाधीनमेवसर्वमित्यर्थः ॥ ननुकर्त्रधीनंकार्यंभवितुमर्हतिनतुमायाधीनमितिचेत्सैवकर्त्र्यस्तिनाऽन्यः

राजोवाच ॥ मुनेर्वैश्योऽयमधुनावनेमेमित्रतांगतः ॥ पुत्रदारैर्निरस्तोऽयंप्राप्तोऽत्रममसंगमम् ॥ १ ॥ " कुटुंबविरहेणाऽसौदुःखितोऽतीवदुर्मनाः ॥ नशांतिमुपयात्येषतथाऽपिममसांप्रतम् ॥ गतराज्यस्यदुःखेनशोकार्तोऽस्मिममहामते ॥ " निष्कारणंचमेचिंताहृदयान्ननिवर्तते ॥ हयामेदुर्बलाःस्युःकिंगजाःशत्रुवशंगताः ॥ २ ॥ भृत्यवर्गस्तथादुःखीजातःस्यात्तुमयाविना ॥ कोशक्षयंकरिष्यंतिरिपवोऽतिबलात्क्षणात् ॥३ ॥ इत्येवंचिंतयानस्यनमेनिद्रातनौसुखम् ॥ जानामीदंजगन्मिथ्यास्वप्नवत्सर्वमेवहि ॥ ४ ॥ जानतोऽपिमनोभ्रांतंनस्थिरंभवतिप्रभो ॥ कोऽहंकेऽश्वागजाःकेमीनतेमेचसहोदराः ॥ ५ ॥ नपुत्रानचमित्राणियेषांदुःखंदुनोतिमाम् ॥ भ्रमोऽयमितिजानामितथापिममममानसः ॥ ६ ॥ मोहोनैवाऽपसरतिकिंतत्कारणमद्भुतम् ॥ स्वामिंस्त्वमसिसर्वज्ञःसर्वसंशयनाशकृत् ॥ ७ ॥ कारणंब्रूहिमोहस्यममाऽस्यचदयानिधे ॥ व्यासउवाच ॥ इतिपृष्टस्तदाराज्ञासुमेधामुनिसत्तमः ॥ ८ ॥ तमुवाचपरंज्ञानंशोकमोहविनाशनम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिकारणंबंधमोक्षयोः ॥ ९ ॥ महामायेतिविख्यातासर्वेषांप्राणिनामिह ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथेशानस्तुराषाड्वरुणोनिलः ॥ १० ॥ सर्वेदेवामनुष्याश्चगंधर्वोरगराक्षसाः ॥ वृक्षाश्चविविधावल्ल्यःपशवोमृगपक्षिणः ॥ ११ ॥ मायाधीनाश्चतेसर्वेभाजनंबंधमोक्षयोः ॥ तयासृष्टामिदंसर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ १२ ॥ तद्वशेवर्ततेनूनंमोहजालेनयंत्रितम् ॥ त्वंकियान्मानुषेष्वेकःक्षत्रियोरजसाऽऽविलः ॥ १३ ॥ ज्ञानिनामपिचेतांसिमोहयत्यनिशंहिसा ॥ ब्रह्मेशवासुदेवाद्याज्ञानेसत्यपिशेषतः ॥ १४ ॥ तेऽपिरागवशाल्लोकेभ्रमंतिपरिमोहिताः ॥ पुरासत्ययुगेराजन्विष्णुर्नारायणःस्वयम् ॥ १५ ॥ श्वेतद्वीपंसमासाद्यचकारविपुलंतपः ॥ वर्षाणामयुतंयावद्ब्रह्मविद्याप्रसक्तये ॥ १६ ॥

कर्तास्तीत्याह । तयेति ॥ १२ ॥ यदैवंसर्वंमायामोहजालेनयंत्रितम् ॥ तदात्वंपामरःकथमहंमोहजालेनयंत्रितइतिकिमाश्चर्यंकरोषीत्याह।त्वंकियानिति ॥१३ ॥ ननुममब्रह्मज्ञानंवर्ततेततःकुतोनमोहोनष्टइतिचेत्तत्राह । ज्ञानिनामपीति ॥ तदुक्तंमार्कंडेयपुराणे ॥ ज्ञानिनामपिचेतांसिदेवीभगवतीहिसा ॥ बलादाकृष्यमोहायमहामायाप्रयच्छतीति ॥ ननुकेषांज्ञानिनांतयाचित्तानिमोहितानीतिचेत्तत्राह । ब्रह्मेशेति ॥ ननुब्रह्मज्ञानेनतेषांमायाकार्यस्यमोहस्यकुतोननाशसंभवइतिचेत्तत्राह । शेषतइति॥प्रारब्धकर्मभोगपर्यंतंमायाशेषस्यविद्यमानत्वात्तस्माच्छेषादेवमोहःसंभविष्यतीतिभावः ॥१४॥ ननुब्रह्मादीनांमोहःकदादृष्टइतिचेद्बहुवारंदृष्टोऽस्तितत्रैकमुदाहरणमुच्यतइत्याह । पुरासत्ययुगेइति ॥१५॥ ब्रह्मविद्याप्रसक्तयेतस्याःस्थिरतायैइत्यर्थः॥ अनश्वरसुखायनित्यानंदस्याखंडितप्राप्त्यर्थंजीवन्मुक्तिदशासिद्ध्यर्थमितियावत् ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ कस्त्वंकस्त्वमितिपितृपुत्रत्वज्ञानमेवप्रथमतोमोहेननष्टम् ॥ इदमेवप्रथमंमोहस्वरूपमितिभावः ॥ २० ॥ द्वितीयंमोहमाह । ब्रह्माप्रोवाचेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ अद्यैवेति ॥ समीपकालेइत्यर्थः ॥ नत्वद्यैववर्षाणामयुतंतपश्चरणात् ॥ दानवाभ्यांमधुकैटभाभ्याम् ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मातुंपरि

अनश्वरसुखायाऽसौचिंतयानस्ततःपरम् ॥ एकस्मिन्निर्जनेदेशेब्रह्माऽपिपरमाद्भुते ॥१७॥ स्थितस्तपसिराजेंद्रमोहस्यविनिवृत्तये ॥ कदाचिद्वासुदेवोऽसौ स्थलांतरमतिर्हरिः ॥ १८ ॥ तस्माद्देशात्समुत्थायजगामाऽन्यद्दिदृक्षया ॥ चतुर्मुखोऽपिराजेंद्रतथैवनिःसृतःस्थलात् ॥ १९ ॥ मिलितौमार्गमध्येतुचतुर्मुखचतुर्भुजौ ॥ अन्योन्यंपृष्टवंतौतौकस्त्वंकस्त्वमितिस्मह ॥ २० ॥ ब्रह्माप्रोवाचतंदेवंकर्ताऽहंजगतःकिल ॥ विष्णुस्तमाहभोमूर्खजगत्कर्ताऽहमच्युतः ॥ २१ ॥ त्वंकियान्बलहीनोऽसिरजोगुणसमाश्रितः ॥ सत्त्वाश्रितंहिमांविद्धिवासुदेवंसनातनम् ॥ २२ ॥ मयात्वंरक्षितोऽद्यैवकृत्वायुद्धंसुदारुणम् ॥ शरणंमेसमायातोदानवाभ्यांप्रपीडितः ॥ २३ ॥ मयातौनिहतौकामंदानवौमधुकैटभौ ॥ कथंगर्वायसेमंदमोहोऽयंत्यजसांप्रतम् ॥ २४ ॥ नमत्तोऽप्यधिकःकश्चित्संसारेऽस्मिन्प्रसारिते ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवंप्रवदमानौतौब्रह्मविष्णूपरस्परम् ॥ २५ ॥ स्फुरदोष्ठौवेपमानौलोहिताक्षौबभूवतुः ॥ प्रादुर्बभूवसहसातयोर्विवदमानयोः ॥२६॥ मध्येलिंगंसुधाश्वेतंविपुलंदीर्घमद्भुतम् ॥ आकाशेतरसातत्रवागुवाचाऽशरीरिणी॥२७॥ तौसंबोध्यमहाभागौविवदंतौपरस्परम् ॥ ब्रह्मन्विष्णोविवादंमाकुरुतांवांपरस्परम् ॥२८॥ लिंगस्यास्यपरंपारमधस्तादुपरिध्रुवम् ॥ योयातियुवयोर्मध्येसश्रेष्ठोवांसदैवहि ॥ २९ ॥ एकःप्रयातुपातालमाकाशमपरोऽधुना ॥ प्रमाणंमेवचःकार्यंत्यक्त्वावादंनिरर्थकम् ॥ ३० ॥ मध्यस्थःसर्वदाकार्योविवादेऽस्मिन्द्वयोरिह ॥ ऋषिरुवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंदिव्यंसज्जीभूतौकृतोद्यमौ ॥ ३१ ॥ जग्मतुर्मातुमग्रस्थंलिंगमद्भुतदर्शनम् ॥ पातालमगमद्विष्णुर्ब्रह्माप्याकाशमेवच ॥ ३२ ॥ परिमातुंमहालिंगंस्वमहत्त्वविवृद्धये ॥ विष्णुर्गत्वाकियद्देशंश्रांतःसर्वात्मनायतः ॥ ३३ ॥ नप्रापांतंसलिंगस्यपरिवृत्त्यययौस्थलम् ॥ ब्रह्मागच्छत्ततश्चोर्ध्वंपतितंकेतकीदलम् ॥३४॥ शिवस्यमस्तकात्प्राप्यपरावृत्तोमुदावृतः ॥ आगत्यतरसाब्रह्माविष्णवेकेतकीदलम् ॥३५॥ दर्शयित्वाचवितथमुवाचमदमोहितः॥लिंगस्यमस्तकादेतद्गृहीतंकेतकीदलम्॥३६॥अभिज्ञानायचाऽऽनीतंतवचित्तप्रशांतये ॥ श्रुत्वातद्ब्रह्मणोवाक्यंदृष्ट्वाचकेतकीदलम् ॥३७॥ हरिस्तंप्रत्युवाचेदंसाक्षीकःकथयाऽधुना ॥ यथार्थवादीमेधावीसदाचारःशुचिःसमः ॥ ३८ ॥ साक्षीभवतिसर्वत्रविवादेसमुपस्थिते ॥ ब्रह्मोवाच ॥ दूरदेशात्समायातिसाक्षीकःसमयेऽधुना ॥ ३९ ॥ यत्सत्यंतद्वचःसेयंकेतकीकथयिष्यति ॥ इत्युक्त्वाप्रेरितातत्रब्रह्मणाकेतकीस्फुटम् ॥ ४० ॥

च्छेत्तुम् ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ शिवस्यमस्तकात्पतितामित्यन्वयः ॥ ३५ ॥ वितथमनृतम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ दूरदेशादिति ॥ अस्मिन्समयेदूरदेशांद्यास्मिन्स्थलेशिवमस्तकंदृष्टंतस्माद्देशात्कःसाक्षीसमायाति नकोपीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ अस्यशिवलिंगमस्तकस्य ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ तस्मादित्येवंनिदर्शनात् ज्ञानिनोपिमोहिताएवमहामायर्येत्याह । ज्ञानिनाम पीति ॥ ५१ ॥ नकेवलंमोहकर्त्री ॥ किंतुज्ञानदावंधमोक्षदाऽपिसैवेत्याह । ययेति॥आत्मनोनिर्विकारस्यैकविधत्वात्तदतिरिक्तस्यसर्वस्यवेद्यजातस्यमायामयत्वादितिभावः ॥५२॥ इत्थं पराशक्तेर्महिमानंश्रुत्वाराजापृच्छति । भगवन्निति ॥ तस्यामेमह्यंरूपंब्रूहितथावलंब्रूहितस्याउत्पत्तेः कारणंतत्स्थानंचब्रूहीत्यर्थः ॥५३॥ तत्रतृतीयप्रश्नसमाधानमाह । नचोत्पत्तिरिति ॥ तत्रहेतुमाह। अनादित्वादिति॥तथाचोत्पत्तेरभावादुत्पत्तिकारणस्याभावइत्यर्थः ॥ ५४ ॥ नित्यैवेति ॥ आमोक्षपर्यंतंविद्यमानत्वादित्यर्थः ॥ बलमाह । कारणानांचकारणंनिरतिशयपरा

वचनंप्राहतरसाशार्ङ्गिणंप्रत्यबोधयत् ॥ शिवमूर्ध्निस्थितांब्रह्मागृहीत्वामांसमागतः ॥ ४१ ॥ संदेहोऽत्रनकर्तव्यस्त्वयाविष्णोकदाचन ॥ ममवाक्यंप्र माणंहिब्रह्मापारंगतोऽस्यह ॥ ४२ ॥ गृहीत्वामांसमायातःशिवभक्तैःसमर्पिताम् ॥ केतक्यावचनंश्रुत्वाहरिराहस्मयन्निव ॥ ४३ ॥ महादेवःप्रमाणंमेय द्यसौवचनंवदेत् ॥ ऋषिरुवाच ॥ तदाऽऽकर्ण्यहरेर्वाक्यंमहादेवःसनातनः ॥ ४४ ॥ कुपितःकेतकींप्राहमिथ्यावादिनिमावद ॥ गच्छतोमध्यतःप्राप्ता पतितामस्तकान्मम ॥४५॥ मिथ्याभिभाषिणीत्यक्तामयात्वंसर्वदैवहि ॥ ब्रह्मालज्जापरोभूत्वाननाममधुसूदनम् ॥ ४६ ॥ शिवेनकेतकीत्यक्तातद्दि नात्कुसुमेषुवै ॥ एवंमायाबलंविद्धिज्ञानिनामपिमोहदम् ॥ ४७ ॥ अन्येषांप्राणिनांराजन्कावार्ताविभ्रमंप्रति ॥ देवानांकार्यसिद्ध्यर्थंसर्वदैवरमापतिः ॥ ॥ ४८ ॥ दैत्यान्वंचयतेचाऽऽशुत्यक्त्वापापभयंहरिः ॥ अवतारकरोद्देवोनानायोनिषुमाधवः ॥ ४९ ॥ त्यक्त्वानंदसुखंदैत्ययुद्धंचैवाऽकरोद्विभुः ॥ नूनं मायाबलंचैतन्माधवेऽपिजगद्गुरौ ॥ ५० ॥ सर्वज्ञेदेवकार्यांशेकावार्ताऽन्यस्यभूपते ॥ ज्ञानिनामपिचेतांसिपरमाप्रकृतिःकिल ॥ ५१ ॥ बलादाकृष्य मोहायप्रयच्छतिमहीपते ॥ ययाव्याप्तमिदंसर्वंभगवत्याचराचरम् ॥ ५२ ॥ मोहदाज्ञानदासैववंधमोक्षप्रदासदा ॥ राजोवाच ॥ भगवन्ब्रूहिमेतस्याः स्वरूपंबलमुत्तमम् ॥ ५३ ॥ उत्पत्तिकारणंवापिस्थानंपरमकंचयत् ॥ ऋषिरुवाच ॥ नचोत्पत्तिरनादित्वान्नृपतस्याःकदाचन ॥ ५४ ॥ नित्यैवसा परादेवीकारणानांचकारणम् ॥ वर्ततेसर्वभूतेषुशक्तिःसर्वात्मनानृप ॥ ५५ ॥ शववच्छक्तिहीनस्तुप्राणीभवतिसर्वथा ॥ चिच्छक्तिःसर्वभूतेषुरूपंतस्या स्तदेवहि ॥ ५६ ॥ आविर्भावतिरोभावौदेवानांकार्यसिद्धये ॥ यदास्तुवंतितां देवामनुजाश्चविशांपते ॥ ५७ ॥ प्रादुर्भवतिभूतानांदुःखनाशायचांबि का ॥ नानारूपधरादेवीनानाशक्तिसमन्विता ॥ ५८ ॥

क्रमवतीसर्वजनकत्वरूपमेवबलमस्याइत्यर्थः ॥ स्थानमाह। वर्ततेइति ॥ सर्वपदार्थेषुशक्तिर्विद्यमानत्वात्सर्वमस्याःस्थानंभवतिसर्वव्यापिनीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ तत्रव्यतिरेकमाह।शववादिति॥ रूपमाह । चिच्छक्तिरिति ॥ यतइयंसर्वव्यापकस्यचितोब्रह्मणइयंशक्तिस्ततोऽस्यारूपंतदेवब्रह्मैवचनाऽन्यत् ॥ नह्यग्निशक्तेराग्निभिन्नंरूपंदृश्यते किंत्वग्निरेव ॥ तद्वदियमपिब्रह्माभिन्नत्वात ब्रह्मरूपैवेत्यर्थः ॥ तयाचमायोपासनायांमायाविशिष्टब्रह्मरूपमेवोपास्यम् तदेवभगवतीरूपामितिफलितम् ॥ स्फुटीकृतंचैतदस्माभिः सप्तशत्यंगषट्कव्याख्यानेउपोद्घातेच ॥ ५६ ॥ ननुदेवैःस्तुतासतीउत्पन्नेतिव्यवहारः किमभिप्रायकइतिचेदाविर्भावतिरोभावमूलकइत्याह । आविर्भावेति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५९ ॥ नकालेति ॥ दैवस्यकालस्यचतस्याःसकाशादेवोत्पन्नत्वादित्यर्थः ॥ अकर्तेति ॥ अकर्ता आत्माद्रष्टातदतिरिक्तंसर्वंदृश्यंतस्यसर्वस्यजननीतस्मात्स्वतंत्रेत्यर्थः ॥ ६० ॥ सद सदात्मिका ॥ सत्कारणमसत्कार्यंतदात्मिका अस्याःपुरुषरंजनार्थायात्मरंजनार्थायैवस्वेच्छयाजगत्कारणत्वंनतुपराधीनतयेत्यर्थः ॥ ६१ ॥ यदारंजनादुपरतातदेयमेवसंहरतीत्याह रंजितेइति ॥ ननुब्रह्मादयःसृष्टिस्थितिसंहृतिकर्तारइतिलोकेप्रवादःकथमितिचेदज्ञानमूलकइत्याह । तयेति ॥ ६२ ॥ कल्पिताइति ॥ राजाज्ञयाप्रधानस्यव्यवहारवदत्रापिभगवत्याः शक्त्या तेषांव्यवहारइतिभगवत्येवसृष्ट्यादिकर्त्रीतिभावः ॥ ६३ ॥ अतएवतेब्रह्मादयोदेवास्तांध्यायंतीत्याह । तेतामिति ॥ ६४ ॥ नांतंजानामीति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ यस्याअंतोनावि द्यतेतस्मादुच्यतेऽनंतेति ॥ मायास्वरूपंतन्महिमाचनृसिंहोत्तरतापनीयेमायाचतमोरूपानुभूतेरित्यादिग्रंथेनाविशेषतःस्पष्टीकृतस्तद्भाष्येचव्याख्यातस्ततएवाऽवधार्यः ॥ ६५ ॥ ॥

आविर्भवतिकार्यार्थंस्वेच्छयापरमेश्वरी ॥ दैवाधीनानसादेवीयथासर्वेसुरानृप ॥ ५९ ॥ नकालवशगानित्यंपुरुषार्थप्रवर्तिनी ॥ अकर्तापुरुषोद्रष्टादृश्यंस र्वमिदंजगत् ॥ ६० ॥ दृश्यस्यजननीसैवदेवीसदसदात्मिका ॥ पुरुषंरंजयत्येकाकृत्वाब्रह्मांडनाटकम् ॥६१॥ रंजितेपुरुषेसर्वंसंहरत्यतिरंहसा ॥ तयानि मित्तभूतास्तेब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ६२ ॥ कल्पिताःस्वस्वकार्येषुप्रेरितालीलयात्वमी ॥ स्वांशंतेषुसमारोप्यकृतास्तेबलवत्तराः ॥६३॥ दत्ताश्चशक्तय स्तेभ्योगीर्लक्ष्मीर्गिरिजातथा ॥ तेतांध्यायंतिदेवेशाःपूजयंतिपरांमुदा ॥ ६४ ॥ ज्ञात्वासर्वेश्वरींशक्तिंसृष्टिस्थितिविनाशिनीम् ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंदेवी माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ६५ ॥ ममबुद्ध्यनुसारेणनांतंजानामिभूपते ॥ इति श्रीदेवीभागवते म०पंचमस्कंधे त्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥ राजोवाच ॥ भगवन्ब्रूहिमेसम्यक्तस्याआराधनेविधिम् ॥ पूजाविधिंचमंत्रांश्चतथाहोमविधिंवद ॥ १ ॥ ऋषिरुवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामितस्याःपूजाविधिंशुभम् ॥ कामदंमोक्षदंनृणांज्ञानदंदुःखनाशनम् ॥ २ ॥ आदौस्नानविधिंकृत्वाशुचिःशुक्लांबरोनरः ॥ आचम्यप्रयतःकृत्वाशुभमायतनंनिजम् ॥ ३ ॥ ततोऽबलि तभूम्यांतुसंस्थाप्याऽऽसनमुत्तमम् ॥ तत्रोपविश्यविधिवत्त्रिराचम्यमुदान्वितः ॥ ४ ॥ पूजाद्रव्यंसुसंस्थाप्ययथाशक्त्यनुसारतः ॥ प्राणायामंततःकृत्वा भूतशुद्धिंविधायच ॥ ५ ॥ कुर्यात्प्राणप्रतिष्ठांतुसंभारंप्रोक्ष्यमंत्रतः ॥ कालज्ञानंततःकृत्वान्यासंकुर्याद्यथाविधि ॥ ६ ॥ शुभेताम्रमयेपात्रेचंदनेनासि तेनच ॥ षट्कोणंविलिखेद्यंत्रंचाऽष्टकोणंततोबहिः ॥ ७ ॥

इति श्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ चतुर्भिरधिकैश्चत्वारिंशत्पद्यैःसमर्चनम् ॥ परांवायाःपृष्टवतेराज्ञेप्रोवाचतापसः ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेभगवतीस्वरूपंमहत्त्वं चतस्याः सर्वोत्तरंश्रुत्वातत्पूजनादिकंबुभुत्सुराजापृच्छाति । भगवन्निति ॥ १ ॥ पूजाविधेःफलमाह । कामदमिति ॥२॥ स्नानाविधिंवैदिकंतांत्रिकंचकृत्वाऽर्थाद्वैदिकसंध्यां मंत्रसंध्यांचकृ त्वेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ भूतशुद्धिंविधायचेति ॥ भुवंजलेजलंवह्नौवह्निंवायौनभस्यमुम् ॥ विलाप्यखमहंकारेमहत्तत्वेप्यहंकृतिम् ॥ महांतंप्रकृतौमायामात्मनिप्रविलापयेदित्यादिशरीरोत्प त्तिपर्यंतंविधायेत्यर्थः ॥ ५ ॥ प्राणप्रतिष्ठांत्विति ॥ तुशब्दश्चार्थस्तेनमातृकान्यासांतंकर्मकृत्वेत्यर्थः ॥ मंत्रतः जप्यमानमंत्रस्याऽस्त्रमंत्रेणेत्यर्थः ॥ केवलंफडितिमंत्रेणवा ॥ कालज्ञानं अद्येत्यादिसंकल्पविधिस्तंकृत्वा ॥ न्यासंमातृकान्यासादिनिजमंत्रन्यासांतंकृत्वा निजदेहेधर्मादिभिःपीठंकल्पयित्वातत्रांतरपूजांकृत्वाबाह्यपूजामारभेदित्यनुक्तमप्यर्थाद्बोध्यम् ॥ ६ ॥ बाह्यपूजायांयंत्रमाह । शुभेइति ॥ चकारेणाऽष्टगंधेनवा ॥ अष्टकोणमष्टपत्रंचकाराद्भूपुरमपिविलिखेदित्यर्थः ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नवाक्षरस्यमंत्रस्येति ॥ देव्यग्रपत्रमारभ्याष्टपत्रेष्वष्टावक्षराणिलिखित्वानवममक्षरंमध्येकर्णिकायांदेव्यग्रेलिखेदित्यर्थः ॥ कृत्वेति । प्राणप्रतिष्ठामंत्रेणेत्यर्थः ॥ वेदोक्तांवेदमंत्रेणवेत्यर्थः ॥ तत्रमध्येआधारशक्त्यादिपीठमंत्रांतंसंपूज्यदेवीमावाह्यतांमूलमंत्रेणाऽऽसनाद्युपचारैःपूजयित्वाषट्कोणेषुषडंगानिमंत्रस्यपूजयेत् ॥ तत्रक्रमस्तुशारदायामुक्तः ॥ अग्निनैर्ऋत्यवायव्यमध्ये दिक्ष्वंगपूजनमितिनवस्वक्षरेषुशैलपुत्र्याद्यानवदुर्गाःपूजयेत् ॥ भूपुरेष्विंद्रादीन्वज्रादींश्चपूजयेदितियंत्रपूजाप्रकारः ॥ ८ ॥ यंत्राऽभावेप्रतिमांवाभगवत्याधातुनिर्मितांकुर्यादित्याह । अर्चां वेति ॥ प्रतिमांवेत्यर्थः ॥ धातवींसुवर्णादिधातुनिर्मितांशिवोदितैःयामलादितंत्रोक्तैः ॥ तेचमंत्राः प्रपंचसारविवरणेस्पष्टाः ॥ मूलमंत्रेणवापूजाकर्तव्या ॥ पूजामुपसंहरति । पूजनमिति ॥ ९ ॥ कृत्वावेति ॥ वाशब्देनवैदिकमंत्रैर्वापूजांकृत्वेत्यर्थः ॥ जपेदिति ॥ पूजानंतरमृष्यादिन्यासपूर्वकंध्यात्वाजपेदित्यर्थः ॥ १० ॥ तत्रजपोद्विविधः ॥ नित्यःपौरश्चरणिकश्चेति ॥ तत्रनित्यजपेनित्यहोमविधिस्तंत्रांतरोक्तउपसंहर्तव्यः ॥ नैमित्तिकेतुपुरश्चरणेदशांशमित्याह । होमदशांशतइति ॥ होमद्रव्यंतुतत्तत्कल्पोक्तमेव ॥ ११ ॥ इत्थंजपंसमाप्यदेव्यग्रेचरित्र

नवाक्षरस्यमंत्रस्यबीजानिविलिखेत्ततः ॥ कृत्वायंत्रप्रतिष्ठांचवेदोक्तांसंविधायच ॥८॥ अर्चांवाधातवींकुर्यात्पूजामंत्रैःशिवोदितैः ॥ पूजनंपृथिवीपाल भगवत्याःप्रयत्नतः ॥ ९ ॥ कृत्वावाविधिवत्पूजामागमोक्तांसमाहितः ॥ जपेन्नवाक्षरंमंत्रंसततंध्यानपूर्वकम् ॥ १० ॥ होमंदशांशतःकुर्याद्दशांशेनचत र्पणम् ॥ भोजनंब्राह्मणानांचतद्दशांशेनकारयेत् ॥ ११ ॥ चरित्रत्रयपाठंचनित्यंकुर्याद्विसर्जयेत् ॥ नवरात्रव्रतंचैवविधेयंविधिपूर्वकम् ॥ १२ ॥ आ श्विनेचतथाचैत्रेशुक्लपक्षेनराधिप ॥ नवरात्रोपवासोवैकर्तव्यःशुभमिच्छता ॥ १३ ॥ होमःसुविपुलःकार्योजप्यमंत्रैःसुपायसैः ॥ शर्कराघृतमिश्रैश्चमधु युक्तैःसुसंस्कृतैः ॥ १४ ॥ छागमांसेनवाकार्योबिल्वपत्रैस्तथाशुभैः ॥ हयारिकुसुमैरक्तैस्तिलैर्वाशर्करायुतैः ॥ १५ ॥ अष्टम्यांचचतुर्दश्यांनवम्यांचवि शेषतः ॥ कर्तव्यंपूजनंदेव्याब्राह्मणानांचभोजनम् ॥ १६ ॥ निर्धनोधनमाप्नोतिरोगीरोगात्प्रमुच्यते ॥ अपुत्रोलभतेपुत्राञ्छुभांश्चवशवर्तिनः ॥ १७ ॥ राज्यभ्रष्टोनृपोराज्यंप्राप्नोतिसार्वभौमिकम् ॥ शत्रुभिःपीडितोहंतिरिपुंमायाप्रसादतः ॥ १८ ॥ विद्यार्थीपूजनंयस्तुकरोतिनियतेंद्रियः ॥ अनवद्यांशुभां विद्यांविंदतेनाऽत्रसंशयः ॥ १९ ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवाभक्तिसंयुतः ॥ पूजयेज्जगतांधात्रींससर्वसुखभाग्भवेत् ॥ २० ॥ नवरात्रव्रतंकुर्यान्नरना रीगणश्चयः ॥ वांछितंफलमाप्नोतिसर्वदाभक्तितत्परः ॥ २१ ॥ आश्विनेशुक्लपक्षेतुनवरात्रव्रतंशुभम् ॥ करोतिभावसंयुक्तःसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥२२॥ विधिवन्मंडलंकृत्वापूजास्थानंप्रकल्पयेत् ॥ कलशंस्थापयेत्तत्रवेदमंत्रविधानतः ॥ २३ ॥

त्रयपाठंकुर्यादित्याह । चरित्रत्रयमिति ॥ पाठेचरित्रत्रयंतुयद्यपिदेवीभागवतेऽस्मिन्स्कंधेचरित्रद्वयंप्रथमस्कंधेप्रथमचरित्रमास्तितथावामनपुराणेप्यस्ति तथापिमार्कंडेयपुराणोक्तमेवसंक्षिप्त त्वात्ग्राह्यम् ॥ सचपाठोनित्यः ॥ ततःपाठानंतरंदेवींविसर्जयेदित्यर्थः ॥ अथाऽऽवश्यंकर्तव्यंनित्यंनवरात्रव्रतमाह । नवरात्रव्रतंचैवेति ॥ १२ ॥ तत्कालमाह । आश्विनेइति ॥ १३ ॥ जप्यमंत्रैर्यस्यमंत्रस्यजपःक्रियतेतन्मंत्रैः ॥ अनेकमंत्रापेक्षयाबहुवचनम् ॥ सुसंस्कृतैरित्यंतमेकमेवपायसंद्रव्यम् ॥ आहुतिबाहुल्यापेक्षयाबहुवचनम् ॥१४॥ छागमांसेनवेति ॥ इदंक्षत्रिय परम् ॥ कालिकापुराणादिषुवैदिकस्यब्राह्मणस्यतत्राधिकाराऽनुक्तत्वात् ॥१५॥ अष्टम्यादितिथिषुतुविशेषपूजापिनियमेनकर्तव्येत्याह । अष्टम्यामिति ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ नवरात्रविधिमाह । विधिवदिति ॥ मंडलंक्षेत्रमृत्तिकयाचतुरस्रमित्यर्थः ॥ २३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यंत्रंपूर्वोक्तंपार्श्वतःकलशस्यसमंततोमूलमंत्रेणयवान्विकिरेदित्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ कन्यकाविधिस्तन्मंत्राश्चतृतीयस्कंधेउक्ताः ॥ २८ ॥ २९ ॥ होमंपूर्वोक्तद्रव्यैः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ परमंस्थानंमणिद्वीपंदेवीलोकम् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ देवीलोकेमणिद्वीपे ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ इति

यंत्रंसुरुचिरंकृत्वास्थापयेत्कलशोपरि ॥ वापयित्वायवांश्चारून्पार्श्वतःपरिवर्तितान् ॥ २४ ॥ कृत्वोपरिवितानंचपुष्पमालासमावृतम् ॥ धूपदीपसुसं युक्तंकर्तव्यंचंडिकागृहम् ॥ २५ ॥ त्रिकालंतत्रकर्तव्यापूजाशक्त्यनुसारतः ॥ वित्तशाठ्यंनकर्तव्यंचंडिकायाश्चपूजने ॥२६ ॥ धूपैर्दीपैःसुनैवेद्यैःफलपु ष्पैरनेकशः ॥ गीतवाद्यैःस्तोत्रपाठैर्वेदपारायणैस्तथा ॥ २७ ॥ उत्सवस्तत्रकर्तव्योनानावादित्रसंयुतैः ॥ कन्यकानांपूजनंचविधेयंविधिपूर्वकम् ॥२८॥ चंदनैर्भूषणैर्वस्त्रैर्भक्ष्यैश्चविविधैस्तथा ॥ सुगंधतैलमाल्यैश्चमनसोरुचिकारकैः ॥ २९ ॥ एवंसंपूजनंकृत्वाहोमंमंत्रविधानतः ॥ अष्टम्यांवानवम्यांवाकार येद्विधिपूर्वकम् ॥ ३० ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्पारणंदशमीदिने ॥ कर्तव्यंशक्तितोदानंदेयंभक्तिपरैर्नृपैः ॥ ३१ ॥ एवंयःकुरुतेभक्त्यानवरात्रव्रतंन रः ॥ नारीवासधवाभक्त्याविधवावापतिव्रता ॥३२॥ इहलोकेसुखंभोगान्प्राप्नोतिमनसेप्सितान् ॥ देहांतेपरमंस्थानंप्राप्नोतिव्रततत्परः ॥ ३३ ॥ जन्मां तरेंबिकाभक्तिर्भवत्यव्यभिचारिणी ॥ जन्मोत्तमकुलेप्राप्यसदाचारोभवेद्धिसः ॥ ३४ ॥ नवरात्रव्रतंप्रोक्तंव्रतानामुत्तमंव्रतम् ॥ आराधनंशिवायास्तुसर्व सौख्यकरंपरम् ॥ ३५ ॥ अनेनविधिनाराजन्समाराधयचंडिकाम् ॥ जित्वारिपूनस्खलितंराज्यंप्राप्स्यस्यनुत्तमम् ॥ ३६ ॥ सुखंचपरमंभूपदेहेऽस्मि न्स्वगृहेपुनः ॥ पुत्रदारान्समासाद्यलप्स्यसेनाऽत्रसंशयः ॥३७॥ वैश्योत्तमत्वमेवाऽद्यसमाराधयकामदाम् ॥ देवींविश्वेश्वरींमायांसृष्टिसंहारकारिणीम् ॥ ॥ ३८ ॥ स्वजनानांचमान्यस्त्वंभविष्यसिगृहेगतः ॥ सुखंसांसारिकंप्राप्ययथाभिलषितंपुनः ॥ ३९ ॥ देवीलोकेशुभेवासोभवितातेनसंशयः ॥ नाऽऽरा धिताभगवतीयैस्तेनरकभागिनः ॥ ४० ॥ इहलोकेऽतिदुःखार्तानानारोगैःप्रपीडिताः ॥ भवंतिमानवाराजञ्छत्रुभिश्चपराजिताः ॥ ४१ ॥ निष्कलत्राह्य पुत्राश्चतृष्णार्ताःस्तब्धबुद्धयः ॥ बिल्वीदलैःकरवीरैःशतपत्रैश्चचंपकैः ॥ ४२ ॥ अर्चिताजगतांधात्रीयैस्तेऽतीवविलासिनः॥ भवंतिकृतपुण्यास्तेशक्तिभ क्तिपरायणाः ॥ ४३ ॥ धनविभवसुखाढ्यामानवामानवंतःसकलगुणगणानांभाजनंभारतीशाः ॥ निगमपठितमंत्रैःपूजितायैर्भवानीनृपतितिलकमुख्या स्तेभवंतीहलोके ॥ ४४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेपंचमस्कंधेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादुःखितौ वैश्यपार्थिवौ ॥ प्रणिपत्यमुनिंप्रीत्याप्रश्रयावनतौभृशम् ॥ १ ॥ हर्षेणोत्फुल्लनयनावूचतुर्वाक्यकोविदौ ॥ कृतांजलिपुटौशांतौभक्तिप्रवणचेतसौ ॥ २ ॥

श्रीदेवीभागवततिलकेपंचमस्कंधेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ अर्धाऽधिकैश्चतुःपंचाशत्पद्यैरथभूपतिः ॥ वैश्यश्चदेव्याः प्रत्यक्षंदर्शनंप्रापतुर्भृशम् ॥ १ ॥ देवीपूजाविधिंराजावैश्यश्चश्रु त्वामंत्रोपदेशार्थमुभौप्रार्थयेतेइत्याह । इतितस्येति ॥ १ ॥ २ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ भवार्णवेमग्नावित्यर्थः ॥ मंत्रदानेनपारंनयेत्यन्वयः ॥ १० ॥ मंत्रंगृहीत्वाकिंकरिष्यतइतिचेत्तत्राह ॥ तपःकृत्वेति ॥ सुखप्रदांभगवतींसमाराध्येत्यर्थः ॥ ततोदर्शनंतस्याःप्राप्यनिजमंदिरंयास्यावइत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ गुरुदैवतौमंत्रस्यऋषिच्छंदोदैवतंबीजशक्तयश्चार्थात्प्रापेत्यर्थः ॥ अनंतरंमुनिंसंमंत्र्यतदनुज्ञांगृही

भगवन्पावितावद्यशांतौदीनौशुचान्वितौ ॥ तवसूक्तसरस्वत्यागंगयेवभगीरथः ॥ ३ ॥ साधवःसंभवंतीहपरोपकृतितत्पराः ॥ अकृत्रिमगुणारामाःसुखदाः सर्वदेहिनाम् ॥ ४ ॥ पूर्वपुण्यप्रसंगेनप्राप्तोऽयमाश्रमःशुभः ॥ तवाऽऽवाभ्यांमहाभागमहादुःखविनाशकः ॥ ५ ॥ भवंतिमानवाभूमौबहवःस्वार्थतत्पराः ॥ परार्थसाधनेदक्षाःकेचित्क्वापिभवादृशाः ॥ ६ ॥ दुःखितोऽहंमुनिश्रेष्ठवैश्योऽयंचाऽतिदुःखितः ॥ उभौसंसारसंतप्तौतवाऽऽश्रमपदेमुदा ॥ ७ ॥ दर्शनादेवहेविद्वन्गतंदुःखमिहाऽऽवयोः ॥ देहजंमानसंवाक्यश्रवणादेवसांप्रतम् ॥ ८ ॥ धन्यावावांकृतकृत्यौजातौसूक्तिसुधारसात् ॥ पावितौभवताब्रह्मन्कृपयाकरुणार्णव ॥ ९ ॥ गृहाणाऽस्मत्करौसाधोनयपारंभवार्णवे ॥ मग्नौश्रांताविति ज्ञात्वामंत्रदानेनसांप्रतम् ॥ १० ॥ तपःकृत्वाऽतिविपुलंसमाराध्यसुखप्रदाम् ॥ संप्राप्यदर्शनंभूयोयास्यावोनिजमंदिरम् ॥ ११ ॥ वदनात्तवसंप्राप्यदेवीमंत्रंनवाक्षरम् ॥ स्मरणंचकरिष्यावोनिराहारौधृतव्रतौ ॥ १२ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचोदितस्ताभ्यांसुमेधामुनिसत्तमः ॥ ददौमंत्रंशुभंताभ्यांध्यानबीजपुरःसरम् ॥ १३ ॥ तौचप्राप्यमुनेर्मंत्रंसंमंत्र्यगुरुदैवतौ ॥ जग्मतुर्वैश्यराजानौनदीतीरमनुत्तमम् ॥ १४ ॥ एकांतेविजनेस्थानेकृत्वासनपरिग्रहम् ॥ उपविष्टौस्थिरप्रज्ञौतावतीवकृशोदरौ ॥ १५ ॥ मंत्रजाप्यरतौशांतौचरित्रत्रयपाठकौ ॥ निन्यतुर्मासमेकंतुतत्रध्यानपरायणौ ॥ १६ ॥ तयोर्मासव्रतेनैवजाताप्रीतिरनुत्तमा ॥ पादांबुजेभवान्यास्तुस्थिराबुद्धिस्तथाप्यलम् ॥ १७ ॥ कदाचित्पादयोर्गत्वामुनेस्तस्यमहात्मनः ॥ कृतप्रणामावागत्यतस्थतुश्चकुशासने ॥ १८ ॥ नान्यकार्यपरौक्वापिबभूवतुःकदाचन ॥ देवीध्यानपरौनित्यंजपमंत्ररतौसदा ॥ १९ ॥ एवंजातेतदापूर्णेतत्रसंवत्सरेनृप ॥ बभूवतुःफलाहारंत्यक्त्वापर्णाशनौनृप ॥ २० ॥ वर्षमेकंतपस्तत्रचक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ शुष्कपर्णाशनौदांतौजपध्यानपरायणौ ॥ २१ ॥ पूर्णेवर्षद्वयेजातेकदाचिद्दर्शनंचतौ ॥ प्रापतुःस्वप्नमध्येतुभगवत्यामनोहरम् ॥ २२ ॥ रक्तांबरधरांदेवींचारुभूषणभूषिताम् ॥ कदाचिन्नृपतिःस्वप्नेऽप्यपश्यज्जगदंबिकाम् ॥ २३ ॥ वीक्ष्यस्वप्नेचतौदेवींप्रीतियुक्तौबभूवतुः ॥ जलाहारैस्तृतीयेतुस्थितौसंवत्सरेतुतौ ॥ २४ ॥ एवंवर्षत्रयंकृत्वातस्तौवैश्यपार्थिवौ ॥ चक्रतुस्तौतदाचिंतांचित्तेदर्शनलालसौ ॥ २५ ॥ प्रत्यक्षदर्शनंदेव्यानप्राप्तंशांतिदंनृणाम् ॥ देहत्यागंकरिष्यावोदुःखितौभृशमातुरौ ॥ २६ ॥

त्वाजग्मतुरित्यन्वयः ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ दिनमध्येगुरोर्दर्शनंग्राह्यमितिनियमात्तावन्मात्रकालएवजपध्यानविरामोनान्यकालेइत्याभिप्रायेणाह । कदाचिदिति ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ दर्शनलालसौप्रत्यक्षदर्शनलालसौ ॥ २५ ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २७ ॥ २८ ॥ रुधिरेणेति ॥ अयंमांसहोमोबलिदानंस्वगात्ररुधिरेणचेतिद्वयंब्राह्मणाऽतिरिक्तविषयमितिकालिकापुराणादिषुस्पष्टम् ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ सूर्याज्जन्मसंप्राप्यसावर्णिर्मनुर्भवितेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ निहतारणेइति ॥ अस्माभिर्युद्धंकृत्वातेरणेनिहताइत्यर्थः ॥ ४३ ॥

इतिसंचिंत्यमनसाराजाकुंडंचकारह ॥ त्रिकोणंसुस्थिरंसौम्यंहस्तमात्रप्रमाणतः ॥ २७ ॥ संस्थाप्यपावकंराजातथावैश्योऽतिभक्तिमान् ॥ जुहावाऽसौनिजंमांसंछित्त्वाछित्त्वापुनःपुनः ॥ २८ ॥ तथावैश्योऽपिदीप्तेग्नौस्वमांसंप्राक्षिपत्तदा ॥ रुधिरेणबलिंचाऽस्यैददतुस्तौकृतोद्यमौ ॥ २९ ॥ तदाभगवतीदत्त्वाप्रत्यक्षंदर्शनंतयोः ॥ प्राहप्रीतिभरोद्भ्रांतौदृष्ट्वातौदुःखितौभृशम् ॥ ३० ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वरंवरयभोराजन्यत्तेमनसिवांछितम् ॥ तुष्टाऽहंतपसातेऽद्यभक्तोऽसित्वंमतोमम ॥ ३१ ॥ वैश्यंप्राहतदादेवीप्रसन्नाऽहंमहामते ॥ किंतेऽभीष्टंददाम्यद्यप्रार्थयाऽऽशुमनोगतम् ॥ ३२ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजातामुवाचमुदान्वितः ॥ देहिमेऽद्यनिजंराज्यंहतशत्रुबलंबलात् ॥ ३३ ॥ तमुवाचतदादेवीगच्छराजन्निजंगृहम् ॥ शत्रवःक्षीणसत्त्वास्तेगमिष्यंतिपराजिताः ॥ ३४ ॥ मंत्रिणस्तेसमागम्यतेपतिष्यंतिपादयोः ॥ कुरुराज्यंमहाभागनगरेस्वंयथासुखम् ॥ ३५ ॥ कृत्वाराज्यंसुविपुलंवर्षाणामयुतंनृप ॥ देहांतेजन्मसंप्राप्यसूर्याच्चभवितामनुः ॥ ३६ ॥ व्यासउवाच ॥ वैश्यस्तामप्युवाचेदंकृतांजलिपुटःशुचिः ॥ नमेगृहेणकार्यंवैनपुत्रेणधनेनवा ॥ ३७ ॥ सर्वबंधकरंमातःस्वप्नवन्नश्वरंस्फुटम् ॥ ज्ञानंमेदेहिविशदंमोक्षदंबंधनाशनम् ॥ ३८ ॥ असारेऽस्मिंश्चसंसारेमूढामज्जंतिपामराः ॥ पंडिताःसंतरंतीहतस्मान्नेच्छंतिसंसृतिम् ॥ ३९ ॥ व्यासउवाच ॥ तदाऽऽकर्ण्यमहामायावैश्यंप्राहपुरःस्थितम् ॥ वैश्यवर्यतवज्ञानंभविष्यतिनसंशयः ॥ ४० ॥ इतिदत्वावरंताभ्यांतत्रैवांतरधीयत ॥ अदर्शनंगतायांतुराजातंमुनिसत्तमम् ॥ ४१ ॥ प्रणम्यहयमारुह्यगमनायमनोदधे ॥ तदैवतस्यसचिवास्तत्राऽऽगत्यनृपंप्रजाः ॥ ॥४२॥ प्रणेमुर्विनयोपेतास्तमूचुःप्रांजलिस्थिताः ॥ राजंस्तेशत्रवःसर्वेपापाच्चनिहतारणे ॥ ४३ ॥ राज्यंनिष्कंटकंभूपकुरुष्वपुरमास्थितः ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजानत्वातंमुनिसत्तमम् ॥ ४४ ॥ आपृच्छ्यनिर्ययौतत्रमंत्रिभिःपरिवारितः ॥ संप्राप्यचनिजंराज्यंदारान्स्वजनबांधवान् ॥ ४५ ॥ बुभुजेपृथिवींसर्वांततःसागरमेखलाम् ॥ वैश्योऽपिज्ञानमासाद्यमुक्तसंगःसमंततः ॥ ४६ ॥ कालाऽतिवाहनंतत्रमुक्तबंधश्चकारह ॥ तीर्थेषुविचरन्गायन्भगवत्यागुणानथ ॥ ४७ ॥ एतत्तेकथितंदेव्याश्चरितंपरमाद्भुतम् ॥ आराधनफलप्राप्तिर्यथावद्भूपवैश्ययोः ॥४८॥ दैत्यानांहननंप्रोक्तंप्रादुर्भावस्तथाशुभः ॥ एवंप्रभावासादेवीभक्तानामभयप्रदा ॥ ४९ ॥ यःशृणोतिनरोनित्यमेतदाख्यानमुत्तमम् ॥ सप्राप्नोतिनरःसत्यंसंसारसुखमद्भुतम् ॥ ५० ॥

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ आराधनेति ॥ चरित्रत्रयेणाराधनेनेत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ५१ ॥ ५२ ॥ संहितांसंहितैकदेशंपंचमस्कंधमित्यर्थः ॥५३॥ तदेवाह । चरितंचंडिकायास्त्विति ॥५४॥ ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनील



ज्ञानदंमोक्षदंचैवकीर्तिदंसुखदंतथा ॥ पावनंश्रवणान्नूनमेतदाख्यानमद्भुतम् ॥ ५१ ॥ अखिलार्थप्रदंनॄणांसर्वधर्मसमावृतम् ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणां कारणंपरमंमतम् ॥ ५२ ॥ सूतउवाच ॥ जनमेजयेनराज्ञाऽसौपृष्टःसत्यवतीसुतः ॥ उवाचसंहितांदिव्यांव्यासःसर्वार्थतत्त्ववित् ॥ ५३ ॥ चरितंचं डिकायास्तुशुंभदैत्यवधाश्रितम् ॥ कथयामासभगवान्कृष्णःकारुणिकोमुनिः ॥ ५४ ॥ इति वःकथितः सारःपुराणानांमुनीश्वराः ॥ ॥ इतिश्रीदेवी भागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपंचमस्कंधेपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

व्योमांकाभ्रद्विसंख्यातैः २०९० श्लोकैर्व्यासेनधीमता ॥ देवीभागवतस्याऽस्यपंचमस्कंधईरितः ॥



कंठोऽभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्याऽस्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ तिलकाख्यांमहाव्याख्यांसम्यग्यःकृतवाञ्छुभाम् ॥ २ ॥ पंचमस्कंधएतस्याःसमाप्तोभूच्छुभार्थदः ॥ प्रीयतांतेन मेदेवीभुवनेशीमहेश्वरी ॥३॥ इति श्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजश्रीलक्ष्मीगर्भजनीलकंठकृतेदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधेपंचमस्कंधेपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥३५॥ स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८,
शके १८२३, सन् १९०१ ई०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे पञ्चमस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे षष्ठस्कन्धः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दरांदोलितदीर्घाक्षींशृंगाररसवारिधिम् ॥ कुलीनांकलयेकांचित्कामिनींकाममंजरीम् ॥१॥ षष्टिश्लोकैर्वृत्रदैत्यवधोदेव्याकथंकृतः ॥ इत्याशंक्यकथातस्यविस्तरे
णोपवर्ण्यते ॥ २ ॥ तत्रप्रथमतः स्वभक्तिप्रदर्शनेनश्रोतारोमुनयोवक्तारंसूतमुत्साहयंति । सूतसूतेति ॥ द्विरुक्तिरादरार्था ॥ द्वैपायनेति ॥ द्वैपायनेनकृतमुत्पादितंत्वन्मुखान्निःसृतामि
त्यर्थः ॥ १ ॥ वेदेपीति ॥ वह्वृचब्राह्मणेऽपीत्यर्थः ॥ २ ॥ संख्ये युद्धे ॥ ३ ॥ ब्रह्मयोनिर्ब्राह्मणः ॥ ४ ॥ सात्त्विकानांदेवानामेतत्क्रूरकर्माऽनुचितमित्याह । देवाइति ॥ ५ ॥ इत्यं
देवानांसात्विकत्वेसतिक्रूरकर्मकरणेमहान्विरोधइत्याह । विरोधोऽत्रेति छलेनेति ॥ नहिसात्विकेषुछलसंभवस्तस्यरजोगुणादुत्पत्तेरितिभावः ॥ ६ ॥ किंचसात्विकस्येंद्रस्यप्रेरयिताविष्णु
स्तुमहासात्विकस्तेनकथंप्रेरितः ॥ क्रूरकर्मणिस्वयमपिकपटेनवज्रमध्येकथंप्रविष्टइत्याह । विष्णुरिति ॥ पविर्वज्रम् ॥ ७ ॥ किंच विश्वासघातोऽप्यनुचितःकथंकृतइत्याह । संधिमिति ॥

ऋषयऊचुः॥ सूतसूतमहाभागमिष्टंतेवचनामृतम्॥नतृप्ताःस्मोवयंपीत्वाद्वैपायनकृतंशुभम् ॥१॥ पुनस्त्वांप्रष्टुमिच्छामःकथांपौराणिकींशुभाम्॥वेदेपिक
थितांरम्यांप्रसिद्धांपापनाशिनीम् ॥२॥ वृत्रासुरइतिख्यातोवीर्यवांस्त्वष्टुरात्मजः॥सकथंनिहतःसंख्येवासवेनमहात्मना ॥३॥ त्वष्टावैसुरपक्षीयस्तत्पुत्रोब
लवत्तरः॥शक्रेणघातितःकस्माद्ब्रह्मयोनिर्महाबलः ॥४॥ देवाःसत्त्वगुणोत्पन्नामानुषाराजसाःस्मृताः॥तिर्यञ्चस्तामसाःप्रोक्ताःपुराणागमवादिभिः॥५॥विरो
धोऽत्रमहान्भातिनूनंशतमखेनह॥छलेनबलवान्वृत्रःशक्रेणविनिपातितः ॥६॥ विष्णुःप्रेरयितातत्रसतुसत्त्वधरःपरः ॥ प्रविष्टःपविमध्येसछद्मनाभगवान्प्र
भुः ॥७॥ संधिंविधायसह्येवंमंत्रितोऽसौमहाबलः॥हरिभ्यांसत्यमुत्सृज्यजलफेनेनशातितः ॥८॥ कृतमिंद्रेणहरिणाकिमेतत्सूतसाहसम्॥महांतोपिचमोहेन
वंचिताःपापबुद्धयः ॥ ९ ॥ अन्यायवर्तिनोऽत्यर्थंभवंतिसुरसत्तमाः ॥ सदाचारेणयुक्तेनदेवाःशिष्टत्वमागताः ॥ १० ॥ एवंविशिष्टधर्मेणशिष्टत्वंकीदृशं
पुनः ॥ हत्वावृत्रंतुविश्वस्तंशक्रेणच्छद्मनापुनः ॥ ११ ॥ प्राप्तंपापफलंनोवाब्रह्महत्यासमुद्भवम् ॥ किंचत्वयापुराप्रोक्तंवृत्रासुरवधःकृतः ॥ १२ ॥ श्रीदे
व्याइतितच्चाऽपिचित्तंमोहयतीहनः ॥ सूतउवाच ॥ शृण्वंतुमुनयोवृत्तंवृत्रासुरवधाश्रयम् ॥ १३ ॥ यथेंद्रेणचसंप्राप्तंदुःखंहत्यासमुद्भवम् ॥ एवमेवपुरापृष्टो
व्यासःसत्यवतीसुतः ॥ १४ ॥ पारिक्षितेनराज्ञाऽपिसयदाहचतद्ब्रुवे ॥ जनमेजयउवाच ॥ कथंवृत्रासुरःपूर्वंहतोमघवतामुने ॥ १५ ॥

संधिर्मैत्री ॥ सत्यंसत्यवाक्यंनाऽहंहनिष्यामीत्येवंरूपम् ॥ शातितोनाशितः ॥ ८ ॥ ९ ॥ सदाचारेति ॥ युक्तेनशास्त्रानुमतेनसदाचारेणदेवाःशिष्टत्वमागताःप्राप्ताइत्यर्थः ॥ १० ॥
एवमिति ॥ एवंविशिष्टेनैतादृशेनधर्मेणाऽऽचारेणतेषांदेवानांकीदृशंपुनःशिष्टत्वं नकथमपीत्यर्थः ॥ ११ ॥ किंचैतादृशब्रह्महत्यायाः फलंतेनेंद्रेणप्राप्तमथवानेत्ययमपिप्रश्नोस्तीत्याह ।
प्राप्तमिति ॥ प्रश्नान्तरमप्याह ॥ किंचेति ॥ यत्त्वयापुराचतुर्थस्कंधेप्रोक्तं श्रीदेव्यावृत्रासुरवधःकृतइति तच्चापितदुक्तमपिनोस्मान्मोहयति वृत्रासुरवधः किंदेव्याकृतआहोस्विदिंद्रेणकृत
इत्यविवेकमुत्पादयतीत्यर्थः ॥ तदुक्तंचतुर्थस्कंधेचतुर्विंशाध्याये ॥ वृत्रासुरादयोदैत्यालीलयैवययाहताइति ॥ तथाऽऽदित्यपुराणेपि ॥ याजघ्नेमहिषंदैत्यंक्रूरंवृत्रासुरंतथा ॥ साद्यरक्ता
सुरंहत्वास्वराज्यंतेमदास्यतीति ॥ १२ ॥ इत्यनेकान्मुनिप्रश्नान्श्रुत्वासूतआह । शृण्वंत्विति ॥ १३ ॥ १४ ॥ सयदाहेति ॥ सव्यासस्तंराजानंयदाहतदेवाऽहंब्रुवे कथयामीत्यर्थः ॥
राजप्रश्नमाह । कथमिति । विष्णुसहायमासाद्यवृत्रासुरःपूर्वंकथंकेनप्रकारेणमघवताहतइत्येकःप्रश्नः ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





द्वितीयंप्रश्नमाह । कथंचेति ॥ योमघवतानिहतइत्युक्तः सकथंदेव्यानिहतः ॥ केनचहेतुनाकारणेनदेव्यानिहतइतितृतीयःप्रश्नः ॥ १६ ॥ कथमेकवधइति ॥ द्वाभ्यांसमर्थाभ्यामेकस्यवधः कथंकृतइत्याश्चर्यंप्रतिभातीत्यर्थः ॥ यद्यपिद्वाभ्यामेकस्यवधोनाश्चर्यभूतस्तथापिश्रुताविंद्रेणकृतइत्युक्तम् ॥ पुराणेषुतुदेवीकृतइत्युच्यतइत्याश्चर्यमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ पीत्वाऽमृतमिति ॥ अमृतंपीत्वातत्स्वादंजानंतोऽपिदेववराः पानेसुधापानेवितृष्णाभवंति ॥ त्वंत्वेतावत्पर्यंतंश्रुत्वाऽपिनावितृष्णोभवसीतिधन्योसीतिभावः ॥१९॥ तदेवाह । दिनेदिनेतइति ॥ इदमेवश्रोतुर्युक्तम् ॥ तदैववक्ताऽपिवक्तुंप्रसीदतीत्याह । श्रोतेति ॥२०॥ युद्धमिति ॥ वेदेवह्वृचब्राह्मणे ॥ तथैवलब्धम् ॥ यथाकर्मदुर्घटंकृतंतथैवदुःखमपिलब्धमित्यर्थः ॥ २१ ॥ यत्त्वयोक्तंसात्त्विकेनवासवेनक्रूरकर्मकथंकृतामितितत्राह ॥ चित्रंकिमत्रेति ॥ येमुनयोदेहदुःखप्रत्यक्षमनुभवंतोऽतएवपापाद्भीतास्तेऽपिमायामोहिताःसंतोनिंद्यंकर्मचक्रुर्बहवः ॥ तदानित्यंदुःखासंस्पृष्टंस्वर्गसुखंमदांधादेवाअनुभवंतःकथंनमाययामोहिताः ॥ तथाचमाययामोहितत्वादिंद्रहरिभ्यांछद्मनाविनिहतस्त्रिशिराअग्रेवक्ष्यमाणोब्राह्मणस्तथावृत्रोदैत्योविनिहतोऽत्रकिंचित्रम् ॥

सहायंविष्णुमासाद्यछद्मनासात्त्विकेनह ॥ कथंचदेव्यानिहतोदैत्योऽसौकेनहेतुना ॥ १६ ॥ कथमेकवधोद्वाभ्यांकृतःस्यान्मुनिपुंगव ॥ तदेतच्छ्रोतुमिच्छामिपरंकौतूहलंहिमे ॥ १७ ॥ महतांचरितंशृण्वन्कोविरज्येतमानवः ॥ कथयांवावैभवंत्वंवृत्रासुरवधाश्रितम् ॥ १८ ॥ व्यासउवाच ॥ धन्योऽसिराजंस्तवबुद्धिरीदृशीजातापुराणश्रवणेऽतिसादरा ॥ पीत्वाऽमृतंदेववरास्तुसर्वथापानेवितृष्णाःप्रभवंतिवैपुनः ॥ १९ ॥ दिनेदिनेतेऽधिकभक्तिभावःकथासुराजन्महनीयकीर्तेः ॥ श्रोतायदैकप्रवणःशृणोतिवक्तातदाप्रीतमनाब्रवीति ॥ २० ॥ युद्धंपुरावासववृत्रयोर्यद्वेदेप्रसिद्धंचतथापुराणे ॥ दुःखंसुरेंद्रेणतथैवलब्धंहत्वारिपुंत्वाष्ट्रमपापमेव ॥ २१ ॥ चित्रंकिमत्रनृपतेहरिवज्रभृद्भ्यांयच्छद्मनाविनिहतस्त्रिशिरोऽथवृत्रः ॥ मायाबलेनमुनयोऽपिविमोहितास्तेचक्रुश्चनिंद्यमनिशंकिलपापभीताः ॥ २२ ॥ विष्णुःसदैवकपटेनजघानदैत्यान्सत्त्वात्ममूर्तिरपिमोहमवाप्यकामम् ॥ कोन्योऽस्तितांभगवतींमनसापिजेतुंशक्तःसमस्तजनमोहकरींभवानीम् ॥ २३ ॥ मत्स्यादियोनिषुसहस्रयुगेषुसद्यःसाक्षाद्भवत्यपिययाविनियोजितोऽत्र ॥ नारायणोनरसखोभगवाननंतःकार्यंकरोतिविहिताविहितंकदाचित् ॥ २४ ॥ देहंधनंगृहमिदंस्वजनामदीयंपुत्राःकलत्रमितिमोहमुपेत्यसर्वः ॥ पुण्यंकरोत्यथचपापचयंकरोतिमायागुणैरतिबलैर्विकलीकृतोयत् ॥ २५ ॥ नजातुमोहंक्षपितुंनरःक्षमःकश्चिद्भवेद्भूपपरावरार्थवित् ॥ विमोहितस्तैस्त्रिभिरेवमूलतोवशीकृतात्माजगतीतलेभृशम् ॥ ॥ २६ ॥ अथतौमाययाविष्णुवासवौमोहितौभृशम् ॥ जघ्नतुश्छद्मनावृत्रंस्वार्थसाधनतत्परौ ॥ २७ ॥

नकिमपीत्यर्थः ॥ मायामोहिताःसर्वंकुर्वंतीतिभावः ॥ २२ ॥ तर्किविष्णुरपिमायावशएवेतिचेदस्त्येवेत्याह । विष्णुःसदैवेति ॥ कपटेनेति ॥ नैतन्मायामोहितत्वाभावेसंभवतीतिभावः ॥ यदाविष्णुरपिमायांजेतुमसमर्थस्तदातदन्यःकःसमर्थःस्यादित्याह । कोन्योऽस्तीति ॥ २३ ॥ तदेवमायामोहितत्वंसर्वेषांविशदयति मत्स्यादीति ॥ ययाविनियोजितइति॥माययेतिशेषः ॥ २४ ॥ यद्यस्मान्मायागुणैर्विकलीकृतोमोहितइत्यर्थः ॥ अद्वैतब्रह्मणिद्वैतस्यमायाकल्पितत्वान्मायाधीनंसर्वेषांहिताहितकर्तृत्वमुक्तंयुक्तमेव ॥ २५ ॥ परावरार्थवित् ॥ परोर्थः कारणम् ॥ अवरोर्थः कार्यं तयोर्विदपीत्यर्थः ॥ मूलतआदितः ॥ २६ ॥ यतएवमतआह । अथेति ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

प्रश्नसमाधानमुपसंहृत्यकथारंभंप्रतिजानीते ॥ तदहमिति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ पादपाग्रेपादयोर्निवेशनंतथाचाधोमुखताफलिता ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

तदहंसंप्रवक्ष्यामिवृत्तांतमवनीपते ॥ कारणंपूर्ववैरस्यवृत्रवासवयोर्मिथः ॥ २८ ॥ त्वष्टाप्रजापतिर्ह्यासीद्देवश्रेष्ठोमहातपाः ॥ देवानांकार्यकर्ताचनिपुणोब्राह्मणप्रियः ॥ २९ ॥ सपुत्रंवैत्रिशिरसमिंद्रद्वेषात्किलाऽसृजत् ॥ विश्वरूपेतिविख्यातंनाम्नारूपेणमोहनम् ॥ ३० ॥ त्रिभिःसवदनैःश्रेष्ठैर्व्यरोचतमनोहरैः ॥ त्रिभिर्भिन्नानिकार्याणिमुखैःसमकरोन्मुनिः ॥ ३१ ॥ वेदानेकेनसोधीतेसुरांचैकेनसोऽपिबत् ॥ तृतीयेनदिशःसर्वायुगपच्चनिरीक्षते ॥ ३२ ॥ त्रिशिराभोगमुत्सृज्यतपश्चक्रेसुदुष्करम् ॥ तपस्वीसमृदुर्दांतोधर्ममेवसमाश्रितः ॥ ३३ ॥ पंचाग्निसाधनंकालेपादपाग्रेनिवेशनम् ॥ जलमध्येनिवासंचहेमंतेशिशिरेतथा ॥ ३४ ॥ निराहारोजितात्माऽसौत्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ तपश्चचारमेधावीदुष्करंमंदबुद्धिभिः ॥ ३५ ॥ तंचदृष्ट्वातपस्यंतंखेदमापशचीपतिः ॥ विषादमगमत्तत्रशक्रोऽयंमास्मभूदिति ॥ ३६ ॥ दृष्ट्वातस्यतपोवीर्यंसत्यंचामिततेजसः ॥ चिंतांचमहतींप्रापह्यनिशंपाकशासनः ॥ ३७ ॥ विवर्धमानस्त्रिशिरामामयंशातयिष्यति ॥ नोपेक्ष्यःसर्वथाशत्रुर्वर्धमानबलोबुधैः ॥ ३८ ॥ तस्मादुपायःकर्तव्यस्तपोनाशायसांप्रतम् ॥ कामस्तुतपसांशत्रुःकामान्नश्यतिवैतपः ॥ ३९ ॥ तथैवाऽद्यप्रकर्तव्यंभोगासक्तोभवेद्यथा ॥ इतिसंचिंत्यमनसाबुद्धिमान्बलमर्दनः ॥ ४० ॥ आज्ञापयत्सोप्सरसस्त्वष्टृपुत्रप्रलोभने ॥ उर्वशींमेनकांरंभांघृताचींचतिलोत्तमाम् ॥ ४१ ॥ समाहूयाऽब्रवीच्छक्रस्तास्तदारूपगर्विताः ॥ प्रियंकुरुध्वंमेसर्वाःकार्येऽद्यसमुपस्थिते ॥ ४२ ॥ यत्तोमेद्यमहाञ्छत्रुस्तपस्तपतिदुर्जयः ॥ कार्यंकुरुतगच्छध्वंप्रलोभयतमाचिरम् ॥ ४३ ॥ शृंगारवेषैर्विविधैर्हावैर्देहसमुद्भवैः ॥ प्रलोभयतभद्रंवःशमयध्वंज्वरंमम ॥ ४४ ॥ अस्वस्थोऽहंमहाभागास्तस्यज्ञात्वातपोबलम् ॥ बलवानासनंमेऽद्यग्रहीष्यत्यविलंबितः ॥ ४५ ॥ भयंमेसमुपायातंक्षिप्रंनाशयताऽबलाः ॥ उपकुर्वंतुसहिताःकार्येऽद्यसमुपस्थिते ॥ ४६ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंनार्यऊचुस्तंप्रणताःपुरः ॥ माभयंकुरुदेवेशयतिष्यामःप्रलोभने ॥ ४७ ॥ यथानस्याद्भयंतस्मात्तथाकार्यंमहाद्युते ॥ नृत्यगीतविहारैश्चमुनेस्तस्यप्रलोभने ॥ ४८ ॥ कटाक्षैरंगभेदैश्चमोहयित्वामुनिंविभो ॥ लोलुपंवशमस्माकंकरिष्यामोनियंत्रितम् ॥ ४९ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याभाष्यहरिंनार्योययुस्त्रिशिरसोंतिकम् ॥ कुर्वंत्योविविधान्भावान्कामशास्त्रोचितानपि ॥ ५० ॥ गायंत्यस्तालभेदैस्तानृत्यंत्यःपुरतोमुनेः ॥ तंप्रलोभयितुंचक्रुर्नानाभावान्वरांगनाः ॥ ५१ ॥ नाऽपश्यत्सतपोराशिरंगनानांविडंबनम् ॥ इंद्रियाणिवशेकृत्वामूकांधवधिरःस्थितः ॥ ५२ ॥ दिनानिकतिचित्तस्थुर्नार्यस्तस्याऽऽश्रमेवरे ॥ कुर्वंत्योगाननृत्यादिप्रपंचानतिमोहदान् ॥ ५३ ॥

॥ ३७ ॥ शातयिष्यतिनाशयिष्यति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ यत्तइति ॥ संयत्तइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ मूकांधवधिरइवास्थितः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ दिष्ट्येति ॥ अस्मद्भाग्येनेत्यर्थः ॥ नशप्ताइतियत्तद्दिष्ट्येत्यन्वयः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ छ ॥ ॥ त्रिपंचाशत्पद्यवर्यैस्त्रिशिरोवधवर्णनम् ॥ कृत्वावृत्रासुरोत्पत्तिर्विस्तरेणोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेपापबुद्धितद्वधायचकारेत्युक्तंतदुत्तरंजातंवृत्तमाह । अथेति ॥ सइंद्रः लोभ

नचचालयदाकामंध्यानाच्चत्रिशिरामुनिः ॥ परावृत्त्यतदादेव्यःपुनःशक्रमुपस्थिताः ॥ ५४ ॥ कृतांजलिपुटाःसर्वादेवराजमथाऽब्रुवन् ॥ श्रांतादीनाभयत्रस्ताविवर्णवदनाभृशम् ॥ ५५ ॥ देवदेवमहाराजयत्नश्चपरमःकृतः ॥ नसशक्योदुराधर्षोधैर्याच्चालयितुंविभो ॥ ५६ ॥ उपायोऽन्यःप्रकर्तव्यःसर्वथापाकशासन ॥ नाऽस्माकंबलमेतस्मिंस्तापसेविजितेंद्रिये ॥५७॥ दिष्ट्यावयंनशप्ताःस्मयदनेनमहात्मना॥ मुनिनावह्नितुल्येनतपसाद्योतितेनहि॥५८॥ विसृज्याऽप्सरसःशक्रश्चितयामासमंदधीः ॥ तस्यैवचवधोपायंपापबुद्धिरसांप्रतम् ॥ ५९ ॥ विसृज्यलोकलज्जांसतथापापभयंभृशम् ॥ चकारपापबुद्धिंतुतद्वधायमहीपते ॥६०॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ अथसलोभमुपेत्यसुराधिपःसमधिगम्यगजासनसंस्थितः ॥ त्रिशिरसंप्रतिदुष्टमतिस्तदामुनिमपश्यदमेयपराक्रमम् ॥१॥ तमभिवीक्ष्यदृढासनसंस्थितंजितगिरंसुसमाधिवशंगतम् ॥ रविविभावसुसन्निभमोजसासुरपतिःपरमापदमभ्यगात् ॥ २ ॥ कथमसौविनिहंतुमहोमयामुनिरपापमतिःकिलसंमतः ॥ रिपुरयंसुसमिद्धतपोबलःकथमुपेक्ष्यइहाऽऽसनकामुकः ॥ ३ ॥ इतिविचिंत्यपविंपरमायुधंप्रतिमुमोचमुनिंतपसिस्थितम् ॥ शशिदिवाकरसन्निभमाशुगंत्रिशिरसंसुरसंघपतिःस्वयम् ॥ ४ ॥ तदभिघातहतःसधरातलेकिलपपातममारचतापसः ॥ शिखरिणःशिखरंकुलिशार्दितंनिपतितंभुविवाऽद्भुतदर्शनम् ॥५॥ तंनिहत्यमुदमापसुरेशश्चुक्रुशुश्चमुनयस्तुसंस्थिताः ॥ हाहतेतिभृशमार्तनिःस्वनाःकिंकृतंशतमखेनपापिना ॥ ६ ॥ विनापराधंतपसांनिधिर्हतःशचीपतिःपापमतिर्दुरात्मा ॥ फलंकिलाऽयंतरसाकृतस्यप्राप्नोतुपापीहननोद्भवस्य ॥ ७ ॥ तंनिहत्यतरसासुरराजोनिर्जगामनिजमंदिरमाशु ॥ सहतोऽपिविरराजमहात्माजीवमानइवतेजसांनिधिः॥ ॥ ८ ॥ तंदृष्ट्वापतितंभूमौजीवंतमिववृत्रहा ॥ चिंतामापाऽतिखिन्नांगःकिंवाजीवेदयंपुनः ॥ ९ ॥ विमृश्यमनसाऽतीवतक्षाणंपुरतःस्थितम् ॥ मघवावीक्ष्यतंप्राहस्वकार्यसदृशंवचः ॥ १० ॥ तक्षंश्छिंधिशिरांस्यस्यकुरुष्ववचनंमम ॥ माजीवतुमहातेजाभातिजीवन्निवस्वयम् ॥ ११ ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यतक्षोवाचविगर्हयन् ॥ तक्षोवाच ॥ महास्कंधोभृशंभातिपरशुर्नतरिष्यति ॥ १२ ॥

मुपेत्यप्राप्यत्रिशिरसंप्रतिसमधिगम्यगत्वातंमुनिमपश्यदित्यन्वयः ॥ १ ॥ परमापदंखेदम् ॥ २ ॥ आसनकामुकःमदीयासनेच्छावान्कथमुपेक्ष्यइत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ वाद्भुतदर्शनामित्यत्रवाशब्दइवार्थकोभुविनिपतितामिवेत्येवंयोज्यः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ सहतोपीति ॥ हतोमृतोपिजीवमानइवजीववादिवविरराज ॥ यतस्तेजसांनिधिरित्यर्थः ॥ ८ ॥ किंवेति किंमूर्च्छांप्राप्तोयंपुनर्जीवेदित्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ महास्कंधइति ॥ स्कंधःकंठोमहागजवदच्छेद्योभाति ॥ अत्रममपरशुश्छेदनास्त्रंनतरिष्यति कार्यंकर्तुंसमर्थोनभविष्यतीत्यर्थः ॥१२॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ तंविनेति ॥ लोभविषयकवस्तुप्राप्तिंविनेत्यर्थः ॥ १९ ॥ पशोर्यच्छिरोऽस्तिसतेभागोभविष्यति अमंत्रकमपितंभागंगृहीत्वासंतुष्टोभवे त्यर्थः ॥ शुल्केनमौल्येन ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ येनमुखेनसर्वादिशः पिबन्निवभक्षयन्निवेक्षतेतस्मादन्नादनान्मुखात्तित्तिरानिःसृताइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ यत्सो

ततोनाहंकरिष्यामिकार्यमेतद्विगर्हितम् ॥ त्वयावैनिंदितंकर्मकृतंसाद्भिर्विगर्हितम् ॥ १३ ॥अहंविभेमिपापाद्वैमृतस्यैवचमारणे ॥ मृतोयंमुनिरस्त्येवाशिर सःकृंतनेनकिम्॥ १४॥भयंकिंतेऽत्रसंजातंपाकशासनकथ्यताम् ॥ इंद्रउवाच ॥ सजीवइवदेहोऽयमाभातिविशदाकृतिः ॥ १५ ॥तस्माद्बिभेमिमाजीवेन्मु निःशत्रुरयंमम ॥ तक्षोवाच ॥ नाऽत्रकिंत्रपसेविद्वन्क्रूरेणाऽनेनकर्मणा ॥१६॥ ऋषिपुत्रमिमंहत्वाब्रह्महत्याभयंनकिम् ॥ इंद्रउवाच ॥ प्रायश्चित्तंकरिष्या मिपश्चात्पापक्षयायवै ॥१७॥शत्रुस्तुसर्वथावध्यश्छलेनाऽपिमहामते ॥ तक्षोवाच ॥ त्वंलोभाभिहतःपापंकरोषिमघवन्निह ॥ १८ ॥ तंविनाऽहंकथंपापंक रोमिवदमेविभो ॥ इंद्रउवाच ॥ मखेषुखलुभागंतेकरिष्यामिसदैवहि ॥ १९ ॥ शिरःपशोस्तुतेभागंयज्ञेदास्यंतिमानवाः ॥ शुल्केनाऽनेनछिंधित्वंशिरां स्यस्यकुरुप्रियम् ॥२०॥ व्यासउवाच ॥ एतच्छ्रुत्वामहेंद्रस्यवचस्तक्षामुदान्वितः ॥ कुठारेणशिरांस्यस्यचकर्तसुदृढेनहि॥२१॥छिन्नानित्रीणिशीर्षाणि पतितानियदाभुवि ॥ तेभ्यस्तुपक्षिणःक्षिप्रंविनिष्पेतुःसहस्रशः॥२२॥ कलविंकास्तित्तिरयस्तथैवचकपिंजलाः॥ पृथक्पृथग्विनिष्पेतुर्मुखतस्तरसातदा ॥ २३ ॥ येनवेदानधीतेस्मसोमंचपिबतेतथा ॥ तस्माद्वक्त्रात्किलोत्पेतुःसद्यएवकपिंजलाः॥२४॥येनसर्वादिशःकामंपिबन्निवनिरीक्षते ॥ तस्मात्तुतित्ति रास्तत्रनिःसृतास्तिग्मतेजसः ॥२५॥ यत्सुरापंतुतद्वक्त्रंतस्मात्तुचटकाःकिल ॥ विनिष्पेतुस्त्रिशिरसएवंतेविहगानृप॥२६॥एवंविनिःसृतान्दृष्ट्वातेभ्यःशक्र स्तदांडजान्॥मुमोदमनसाराजञ्जगामत्रिदिवंपुनः ॥२७॥ गतेशक्रेतुतक्षाऽपिस्वगृहंतरसाययौ ॥ यज्ञभागंपरंलब्ध्वामुदमापमहीपते ॥२८ ॥ इंद्रोऽथस्व गृहंगत्वाहत्वाशत्रुंमहाबलम् ॥ मेनेकृतार्थमात्मानंब्रह्महत्यामचिंतयन् ॥ २९ ॥ तंश्रुत्वानिहतंत्वष्टापुत्रंपरमधार्मिकम् ॥ चुकोपाऽतीवमनसावचनंचेदम ब्रवीत् ॥३०॥ अनागसंमुनिंयस्मात्पुत्रंनिहतवान्मम ॥ तस्मादुत्पादयिष्यामितद्वधार्थंसुतंपुनः ॥ ३१ ॥ सुराःपश्यंतुमेवीर्यंतपसश्चबलंतथा॥जानातुसर्वं पापात्मास्वकृतस्यफलंमहत् ॥३२॥ इत्युक्त्वाऽग्निंजुहावाऽथमंत्रैराथर्वणोदितैः ॥ पुत्रस्योत्पादनार्थायत्वष्टाक्रोधसमाकुलः॥३३॥ कृतेहोमेऽष्टरात्रंतुसं दीप्ताच्चविभावसोः ॥ प्रादुर्बभूवतरसापुरुषःपावकोपमः ॥३४॥ तंदृष्ट्वाऽग्रेसुतंत्वष्टातेजोबलसमन्वितम् ॥ वेगात्प्रकटितंवह्नेर्दीप्यमानमिवानलम् ॥३५॥ उवाचवचनंत्वष्टासुतंवीक्ष्यपुरःस्थितम् ॥ इंद्रशत्रोविवर्धस्वप्रतापात्तपसोमम ॥ ३६ ॥

मपानमासीत्सकपिंजलोभवद्यत्सुरापानंसकलविंकोयदन्नादनंसातित्तिरीरिति ॥ २५ ॥ चटकाःकलविंकाः ॥ २६ ॥ मुमोदेति ॥ त्रिशिरामृतइतिनिश्चयेन ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ अष्टरात्रमभिचारहोमेकृतेसतीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३७ ॥ ३८ ॥ नामकंममनामकरणंकुर्वित्यर्थः ॥ ३९ ॥ तेनपुत्रेण जातेनकिंफलम् नाकिमापि ॥ यस्यपुत्रस्यपितादुःखितोभवति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ हन्मींद्रमिति इंद्रंहन्मिहनिष्या
मियमंवाऽन्यद्वादेवतांतरंहन्मिहनिष्यामीत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ वृजिनात्रायतइतिवृत्रःपृषोदरादित्वाज्जिनशब्दस्यतकारादेशः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ चकारउत्पा

इत्युक्तेवचनेत्वष्ट्राक्रोधप्रज्वलितेनच ॥ सोऽवर्धतदिवंस्तब्ध्वावैश्वानरसमद्युतिः ॥ ३७ ॥ जातःसपर्वताकारःकालमृत्युसमःस्वराट् ॥ किंकरोमीतितंप्राह
पितरंपरमातुरम् ॥ ३८ ॥ कुरुमेनामकंनाथकार्यंकथयसुव्रत ॥ चिंतातुरोऽसिकस्मात्त्वंब्रूहिमेशोककारणम् ॥ ३९ ॥ नाशयाम्यद्यतेशोकमितिमेव्रतमा
हितम् ॥ तेनजातेनकिंभूयःपिताभवतिदुःखितः ॥ ४० ॥ पिबामिसागरंसद्यश्चूर्णयामिधराधरान् ॥ उद्यंतंवारयाम्यद्यतरणिंतिग्मतेजसम् ॥ ४१ ॥ ह
न्मींद्रंससुरंसद्योयमंवादेवतांतरम् ॥ क्षिपामिसागरेसर्वान्समुत्पाट्यचमेदिनीम् ॥ ४२ ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यत्वष्टापुत्रस्यपेशलम् ॥ प्रत्युवाचाऽतिमुदि
तस्तंसुतंपर्वतोपमम् ॥ ४३ ॥ वृजिनात्रातुमधुनायस्माच्छक्तोऽसिपुत्रक ॥ तस्माद्वृत्रइतिख्यातंतवनामभविष्यति ॥ ४४ ॥ भ्रातातवमहाभागत्रिशिरा
नामतापसः ॥ त्रीणितस्यचशीर्षाणिह्यभवन्वीर्यवंतिच ॥ ४५ ॥ वेदवेदांगतत्त्वज्ञःसर्वविद्याविशारदः ॥ संस्थितस्तपसिप्रायस्त्रिलोकीविस्मयप्रदे ॥४६॥
शक्रेणतुहतःसोऽद्यवज्रघातेनसांप्रतम् ॥ विनाऽपराधंसहसाछिन्नानिमस्तकानिच ॥ ४७ ॥ तस्मात्त्वंपुरुषव्याघ्रजहिशक्रंकृतागसम् ॥ ब्रह्महत्यायुतंपा
पंनिस्त्रपंदुर्मतिंशठम् ॥ ४८ ॥ इत्युक्त्वाचतदात्वष्टापुत्रशोकसमाकुलः ॥ आयुधानिचदिव्यानिचकारविविधानिच ॥ ४९ ॥ ददावस्मैसहस्राक्षवधाय
प्रबलानिच ॥ खड्गशूलगदाशक्तितोमरप्रमुखानिवै ॥ ५० ॥ शार्ङ्गंधनुस्तथाबाणंपरिघंपट्टिशंतथा ॥ चक्रंदिव्यंसहस्रारंसुदर्शनसमप्रभम् ॥ ५१ ॥ तूणी
रौचाक्षयौदिव्यौकवचंचाऽतिसुंदरम् ॥ रथंमेघप्रतीकाशंदृढंभारसहंजवम् ॥ ५२ ॥ युद्धोपकरणंसर्वंकृत्वापुत्रायपार्थिव ॥ दत्त्वाऽसौप्रेरयामासत्वष्टा
क्रोधसमन्वितः ॥ ५३ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ कृतस्वस्त्ययनोवृत्रोब्राह्मणैर्वेद
पारगैः ॥ निर्जगामरथारूढोहंतुंशक्रंमहाबलः ॥ १ ॥ तदैवराक्षसाःक्रूराःपुरादेवपराजिताः ॥ समाजग्मुश्चसेवार्थंवृत्रंज्ञात्वामहाबलम् ॥ २ ॥ इंद्रदूतास्तु
तंदृष्ट्वायुद्धायतुसमागतम् ॥ वेगादागत्यवृत्तांतंशशंसुस्तस्यचेष्टितम् ॥ ३ ॥ दूताऊचुः॥स्वामिञ्छीघ्रमिहाऽऽयातिवृत्रोनामरिपुस्तव ॥ बलवान्स्यंदने
रूढस्त्वष्ट्राचोत्पादितःकिल ॥ ४ ॥ अभिचारेणनाशार्थंतवक्रोधान्वितेनवै ॥ पुत्राघाताभितप्तेनदुःसहोराक्षसैर्युतः ॥ ५ ॥ यत्नंकुरुमहाभागशीघ्रमा
यातिसांप्रतम् ॥ मेरुमंदरसंकाशोघोरशब्दोऽतिदारुणः ॥ ६ ॥

दितवान् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ षष्टिश्लोकैर्देवसेनापराजयकथोत्तरम् ॥ पित्राज्ञयातपस्यार्थंवृत्रो
गतउदीर्यते ॥ १ ॥ त्वष्टुःप्रेरणोत्तरंजातंवृत्तमाह । कृतस्वस्त्ययनइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ तवनाशार्थमित्यन्वयः ॥ ५ ॥ ६ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ दिविउत्पाताभवंति भूम्यंतरिक्षजाश्चोत्पाताभवंतीत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ अलकाःकेशाःखतःआकाशतःपतंति ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ अत्युग्रेति ॥ यतःसत्वरंफलंभवतिततोविचार्यकर्तव्यामित्यन्वयः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ देवेंद्रेति ॥ हेदेवेंद्र प्रलयंकुर्वन्नागच्छति ॥

एतस्मिन्नंतरेतत्रभीतादेवगणाभृशम् ॥ आगत्योचुःसुरपतिंशृण्वंतंदूतभाषितम् ॥ ७ ॥ गणाऊचुः ॥ मघवन्दुर्निमित्तानिभवंतित्रिदशालये ॥ वहूनिभयशंसीनिपक्षिणांविरुतानिच ॥ ८ ॥ काकगृध्रास्तथाश्येनाःकंकाद्यादारुणाःखगाः ॥ रुदंतिविकृतैःशब्दैरुत्कारैर्भवनोपरि ॥ ९ ॥ चीचीकूचीतिनिनदान्कुर्वंतिविहगाभृशम् ॥ वाहनानांचनेत्रेभ्योजलधाराःपतंत्यधः ॥ १० ॥ श्रूयतेतिमहाञ्छब्दोरुदतीनांनिशासुच ॥ राक्षसीनांमहाभागभवनोपरिदारुणः ॥ ११ ॥ प्रपतंतिध्वजास्तूर्णंविनावातेनमानद ॥ प्रभवंतिमहोत्पातादिविभूम्यंतरिक्षजाः ॥ १२ ॥ कृष्णांबरधरानार्योभ्रमंतिचगृहेगृहे ॥ यांतुयांतुगृहात्तूर्णंब्रुवंत्योविकृताननाः ॥१३॥ रात्रौस्वप्नेषुकांतानांसुप्तानांनिजमंदिरे ॥ केशाँल्लुनंतिराक्षस्योभीषयंत्योभृशातुराः ॥ १४ ॥ एवंविधानिदेवेशभूकंपोल्कादयस्तथा ॥ गोमायवोरुदंतिस्मनिशायांभवनांगणे ॥ १५ ॥ सरटानांचजालानिप्रभवंतिगृहेगृहे ॥ अंगप्रस्फुरणादीनिदुर्निमित्तानिसर्वशः ॥ १६ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वाचिंतामापसुरेश्वरः ॥ बृहस्पतिंसमाहूयपप्रच्छचमनोगतम् ॥ १७ ॥ इंद्रउवाच ॥ ब्रह्मन्किमुतघोराणिनिमित्तानिभवंतिवै ॥ वाताश्चदारुणावांतिप्रपतंत्यलकाःखतः ॥ १८ ॥ सर्वज्ञोऽसिमहाभागसमर्थोविघ्ननाशने ॥ बुद्धिमाञ्छास्त्रतत्त्वज्ञोदेवतानांगुरुस्तथा ॥ १९ ॥ कुरुशांतिंविधानज्ञशत्रुक्षयविधायिनीम् ॥ यथामेनभवेद्दुःखंतथाकार्यंविधीयताम् ॥ २० ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ किंकरोमिसहस्राक्षत्वयाऽद्यदुष्कृतंकृतम् ॥ अनागसंमुनिंहत्वाकिंफलंसमुपार्जितम् ॥ २१ ॥ अत्युग्रंपुण्यपापानांफलंभवतिसत्वरम् ॥ विचार्यखलुकर्तव्यंकार्यंतद्भूतिमिच्छता ॥ २२ ॥ परोपतापनंकर्मनकर्तव्यंकदाचन ॥ नसुखंविंदतेप्राणीपरपीडापरायणः ॥ २३ ॥ मोहाल्लोभाद्ब्रह्महत्याकृताशक्रत्वयाऽधुना ॥ तस्यपापस्यसहसाफलमेतदुपागतम् ॥ २४ ॥ अवध्यःसर्वदेवानांजातोऽसौवृत्रसंज्ञकः ॥ हंतुंत्वांससमायातिदानवैर्बहुभिर्वृतः ॥ २५ ॥ आयुधानिचसर्वाणिवज्रतुल्यानिवासव ॥ त्वष्ट्रादत्तानिदिव्यानिगृहीत्वासमुपस्थितः ॥ २६ ॥ समागच्छतिदुर्धर्षोरथारूढःप्रतापवान् ॥ देवेंद्रप्रलयंकुर्वन्नास्यमृत्युर्भविष्यति ॥ ॥ २७ ॥ कोलाहलस्तदाजातस्तथाब्रुवतिवाक्पतौ ॥ गंधर्वाःकिन्नरायक्षामुनयश्चतपोधनाः ॥ २८॥ सदनानिविहायैवाऽमराःसर्वेपलायिताः ॥ तद्दृष्ट्वामहदाश्चर्यंशक्रश्चितापरायणः ॥ २९ ॥ आज्ञापयामासतदासेनोद्योगायसेवकान् ॥ आनयध्वंवसून्रुद्रानश्विनौचादिवाकरान् ॥ ३० ॥

अस्यमृत्युर्नैवभविष्यति ॥ तादृशपराक्रमवतःपुरुषस्याऽभावादितिभावः ॥ २७ ॥ गंधर्वाइत्यस्यपलायिताइत्यन्वयः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ मानुषेणेतिमनुष्याणांशतवर्षपरिमितकालपर्यंतमित्यर्थः ॥ ३७ ॥ बभूवेतिअस्यसंग्रामइत्यनेनान्वयः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ मृग



पूषणंचभगंवायुंकुबेरंवरुणंयमम् ॥ विमानेषुसमारुह्यसायुधाःसुरसत्तमाः ॥ ३१ ॥ समागच्छंतुतरसाशत्रुरायातिसांप्रतम् ॥ इत्याज्ञाप्यसुरपतिःसमारुह्यगजोत्तमम् ॥३२॥ बृहस्पतिंपुरोधायनिर्गतोनिजमंदिरात् ॥ तथैवत्रिदशाःसर्वेस्वंस्वंवाहनमास्थिताः॥३३॥युद्धायकृतसंकल्पानिर्ययुःशस्त्रपाणयः ॥ वृत्रोऽथदानवैर्युक्तःसंप्राप्तोमानसोत्तरम् ॥ ३४ ॥ पर्वतंदेवतावासंरम्यंपादपशोभितम् ॥ इंद्रोप्यागत्यसंग्रामंचकारमानसोत्तरे ॥ ३५ ॥ पर्वतेदेवतायुक्तो वाचस्पतिपुरःसरः ॥ तत्राऽभूद्दारुणंयुद्धंवृत्रवासवयोस्तदा ॥३६॥ गदासिपरिघैःपाशैर्बाणैःशक्तिपरश्वधैः ॥ मानुषेणप्रमाणेनसंग्रामःशरदांशतम्॥३७॥ बभूवभयदोनृणामृषीणांभावितात्मनाम् ॥ वरुणःप्रथमंभग्नस्ततोवायुगणःकिल ॥ ३८ ॥ यमोविभावसुःशक्रःसर्वेतेनिर्गतारणात् ॥ पलायनपरान्दृष्ट्वादेवानिंद्रपुरोगमान् ॥ ३९ ॥ वृत्रोऽपिपितरंप्रागादाश्रमस्थंमुदान्वितम् ॥ प्रणम्यप्राहत्वष्टारंपितुःकार्यंमयाकृतम् ॥ ४० ॥ देवाविनिर्जिताःसर्वेसेंद्राःसमरसंस्थिताः ॥ विद्रुतास्तेगताःस्थानंयथासिंहान्मृगागजाः॥४१॥इंद्रःपदातिरगमन्मयाऽऽनीतोगजोत्तमः ॥ ऐरावतोयंभगवन्गृहाणद्विरदोत्तमम् ॥ ४२॥ नहतास्तेमयातस्मादयुक्तंभीतमारणम् ॥ आज्ञापयपुनस्तातकिंकरोमितवेप्सितम् ॥४३ ॥ निर्जरानिर्गताःसर्वेभयभीताःश्रमातुराः ॥ इंद्रोऽप्यैरावतंत्यक्त्वाभयभीतःपलायितः ॥ ४४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिपुत्रवचःश्रुत्वात्वष्टाप्राहमुदान्वितः ॥ पुत्रवानद्यजातोऽस्मिसफलंममजीवितम् ॥ ४५ ॥ त्वयाऽहंपावितःपुत्रगतोमेमानसोज्वरः ॥ निश्चलंमेमनोजातंदृष्ट्वावीर्यंतवाऽद्भुतम् ॥ ४६ ॥ शृणुवक्ष्याम्यहंपुत्रहितंतेऽद्यनिशामय ॥ तपःकुरुमहाभागसावधानःस्थिरासनः ॥४७॥ विश्वासोनैवकर्तव्यःकेषांचित्पाकशासनः ॥ शत्रुस्तेछलकर्ताऽस्तिनानाभेदविशारदः ॥ ४८ ॥ तपसाप्राप्यतेलक्ष्मीस्तपसाराज्यमुत्तमम् ॥ तपसाबलवृद्धिःस्यात्संग्रामेविजयस्तथा ॥ ४९ ॥ आराध्यद्रुहिणंदेवंलब्ध्वावरमनुत्तमम् ॥ जहिशक्रंदुराचारंब्रह्महत्यासमावृतम्॥५०॥ सावधानःस्थिरोभूत्वाधातारंभजशंकरम् ॥ वांछितंसवरंदद्यात्संतुष्टश्चतुराननः ॥ ५१ ॥ तोषयित्वाविश्वयोनिंब्रह्माणमामितौजसम् ॥ अविनाशित्वमासाद्यजहिशक्रंकृतागसम् ॥ ५२ ॥ वैरंमनसिमेपुत्रवर्ततेसुतघातजम् ॥ नशांतिमनुगच्छामिनस्वपामिसुखेनह ॥ ५३ ॥ तापसोमेहतःपुत्रोनिरागाःपाप्मनायतः॥नविंदामिसुखंवृत्रत्वंमामुद्धरदुःखितम्॥५४॥व्यासउवाच॥तदाकर्ण्यपितुर्वाक्यंवृत्रःक्रोधयुतस्तदा॥आज्ञामादायचपितुर्जगामतपसेमुदा ॥५५॥

गजाःयथासिंहाद्विद्रुताइत्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुवृत्रेणवरगर्वतः ॥ देवाःसर्वेपराभूताःशंकरंशरणंययुः ॥ १ ॥ तपोविघ्नकरगंधर्वगमनोत्तरंजातंवृत्तमाह । निर्गताइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ योगकलनांध्यानविधिम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ वेत्सिभावमिति ॥ यद्यपित्वंममभावमभिप्रायंसर्वज्ञत्वाद्वेत्सितथा

गंधमादनमासाद्यपुण्यांदेवधुनींशुभाम् ॥ स्नात्वाकुशासनंकृत्वासंस्थितश्चस्थिरासनः ॥ ५६ ॥ त्यक्त्वान्नंवारिपानंचयोगाभ्यासपरायणः ॥ ध्यायन्विश्वसृजंचित्तेसोपविष्टःस्थिरासने ॥ ५७ ॥ मघवातंतपस्यंतंज्ञात्वाचिंतातुरोह्यभूत् ॥ गंधर्वान्प्रेषयामासविघ्नार्थंपाकशासनः ॥५८॥ यक्षांश्चपन्नगान्सर्पान्किन्नरानमितौजसः ॥ विद्याधरानप्सरसोदेवदूतानेकशः ॥५९॥ उपायास्तैःकृताःसम्यक्तपोविघ्नायमायिभिः ॥ नचचालततोध्यानात्त्वाष्ट्रःपरमतापसः ॥ ६० ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ निर्गतास्तेपरावृत्तास्तपोविघ्नकराःसुराः ॥ निराशाःकार्यसंसिद्ध्यैतंदृष्ट्वादृढचेतसम् ॥ १ ॥ जातेवर्षशतेपूर्णेब्रह्मालोकपितामहः ॥ तत्राऽऽजगामतरसाहंसारूढश्चतुर्मुखः ॥ २ ॥ आगत्यतमुवाचेदंत्वष्टृपुत्रसुखीभव ॥ त्यक्त्वाध्यानंवरंब्रूहिददामितववांच्छितम् ॥ ३ ॥ तपसातेऽद्यतुष्टोऽस्मित्वांदृष्ट्वाचाऽतिकर्शितम् ॥ वरंवरयभद्रंतेमनोभिलषितंतव ॥४॥ व्यासउवाच ॥ वृत्रस्तदाऽतिविशदांपुरतोनिशम्यवाचंसुधासमरसांजगदेककर्तुः ॥ संत्यज्ययोगकलनांसहसोदतिष्ठत्संजातहर्षनयनाश्रुकलाकलापः ॥५॥ पादौप्रणम्यशिरसाप्रणयाद्विधातुर्बद्धांजलिःपुरतएवसमाससाद ॥ प्रोवाचतंसुवरदंतपसाप्रपन्नंप्रेम्णाऽतिगद्गदगिराविनयेननम्रः ॥ ६ ॥ प्राप्तंमयासकलदेवपदंप्रभोऽद्ययद्दर्शनंतवसुदुर्लभमाशुजातम् ॥ वाञ्छाऽस्तिनाथमनसिप्रवणेदुरापांप्रब्रवीमिकमलासनवेत्सिभावम् ॥७॥ मृत्युश्चमाभवतुमेकिलेहकाष्ठशुष्कार्द्रवंशनिचयैरपरैश्चशस्त्रैः ॥ वृद्धिंप्रयातुममवीर्यमतीवयुद्धेयस्माद्भवामिसबलैरमरैरजेयः ॥८॥ व्यासउवाच ॥ इत्थंसंप्रार्थितोब्रह्मातमाहप्रहसन्निव ॥ उत्तिष्ठगच्छभद्रंतेवांछितंसफलंसदा ॥९॥ नशुष्केणनचाऽर्द्रेणनपाषाणेनदारुणा ॥ भविष्यतिचतेमृत्युरितिसत्यंब्रवीम्यहम् ॥१०॥ इतिदत्त्वावरंब्रह्माजगामभुवनंपरम् ॥ वृत्रस्तुतंवरंलब्ध्वामुदितःस्वगृहंययौ ॥११॥ शशंसपितुरग्रेतद्वरदानंमहामतिः ॥ त्वष्टातुमुदितःप्राप्तंपुत्रंप्राप्तवरंतदा ॥ १२ ॥ स्वस्तितेस्तुमहाभागजहिशक्रंरिपुंमम ॥ हत्वागच्छत्रिशिरसोहंतारंपापसंयुतम् ॥ १३॥ भवत्वंत्रिदशाधीशःसंप्राप्यविजयंरणे ॥ ममार्धिंछिंधिविपुलंपुत्रनाशसमुद्भवम् ॥१४॥ जीवतोवाक्यकरणात्क्षयोहेभूरिभोजनात् ॥ गयायांपिंडदानाच्चत्रिभिःपुत्रस्यपुत्रता ॥१५॥ तस्मात्पुत्रममाऽत्यर्थंदुःखंनाशितुमर्हसि ॥ त्रिशिराममचित्तात्तुनाऽपसर्पतिकर्हिचित् ॥ १६ ॥ सुशीलःसत्यवादीचतापसोवेदवित्तमः ॥ अपराधंविनातेननिहतःपापबुद्धिना ॥ १७ ॥

पीत्यर्थः ॥ ७ ॥ वंशनिचयैःवंशावेणवस्तेषांकाष्ठत्वेऽपिपृथगुपादानंगोवलीवर्दन्यायेन ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ त्रिशिरसोर्हंतारमिंद्रम् ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ पापबुद्धिनेति ॥ इतिपुत्रंप्राहेतिशेषः ॥ १७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ गृध्रव्यूहंगृध्रपक्ष्याकारसेनानिवेशम् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ अपावृत्यकवचवस्त्राद्यावरणरहितंकृत्वेत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥

व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वावृत्रःपरमदुर्जयः ॥ रथमारुह्यतरसानिर्जगामपितुर्गृहात् ॥ १८ ॥ रणदुंदुभिनिर्घोषंशंखनादंमहाबलम् ॥ कारयित्वा प्रयाणंसचकारमदगर्वितः ॥ १९ ॥ निर्ययौनयसंयुक्तःसेवकानितिसंवदन् ॥ हत्वाशक्रंग्रहीष्यामिसुरराज्यमकंटकम् ॥ २० ॥ इत्युक्त्वानिर्जगामाऽऽशु स्वसैन्यपरिवारितः॥महतासैन्यनादेनभीषयन्नमरावतीम्॥२१॥तमागच्छंतमाज्ञायतुराषाडपिसत्वरः॥ सेनोद्योगंभयत्रस्तःकारयामासभारत ॥ २२ ॥ सर्वानाहूयतरसालोकपालानरिंदमः ॥ युद्धार्थंप्रेरयन्सर्वान्व्यरोचतमहाद्युतिः ॥ २३ ॥ गृध्रव्यूहंततःकृत्वासंस्थितःपाकशासनः ॥ तत्राऽऽजगामवेगा त्तुवृत्रःपरबलार्दनः ॥ २४ ॥ देवदानवयोस्तावत्संग्रामस्तुमुलोऽभवत् ॥ वृत्रवासवयोःसंख्येमनसाविजयैषिणोः ॥ २५ ॥ एवंपरस्परंयुद्धेसंदीप्तेभयदेभृ शम् ॥ आकूतंदेवताःप्रापुर्दैत्याश्चपरमांमुदम् ॥ २६ ॥ तोमरैर्भिंदिपालैश्चखड्गैःपरशुपट्टिशैः॥ जघ्नुःपरस्परंदेवदैत्याःस्वस्ववरायुधैः ॥२७॥एवंयुद्धेवर्त मानेदारुणेलोमहर्षणे ॥ शक्रंजग्राहसहसावृत्रःक्रोधसमन्वितः ॥ २८ ॥ अपावृत्यमुखेक्षिप्त्वास्थितोवृत्रःशतक्रतुम् ॥ मुदितोभून्महाराजपूर्ववैरमनुस्मर न् ॥ २९ ॥ शक्रेग्रस्तेऽथवृत्रेणसंभ्रांतानिर्जरास्तदा ॥ चुक्रुशुःपरमार्तास्तेहाशक्रेतिमुहुर्मुहुः ॥ ३० ॥ अपावृतंमुखेशक्रंज्ञात्वासर्वेदिवौकसः॥बृहस्पतिं प्रणम्योचुर्दीनाव्यथितचेतसः ॥३१॥ किंकर्तव्यंद्विजश्रेष्ठत्वमस्माकंगुरुःपरः ॥ शक्रोग्रस्तस्तुवृत्रेणरक्षितोदेवतांतरैः ॥३२॥ विनाशक्रेणकिंकुर्मःसर्वेहीं नपराक्रमाः ॥ अभिचारंकुरुविभोसत्वरःशक्रमुक्तये ॥३३॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ किंकर्तव्यंसुराःक्षिप्तोमुखमध्येऽस्तिवासवः ॥ वृत्रेणोत्सादितोजीवन्नस्ति कोष्ठांतरेरिपोः ॥ ३४ ॥ व्यासउवाच ॥ देवाश्चितातुराःसर्वेतुरासाहंतथाकृतम् ॥ दृष्ट्वाविमृश्यतरसाचक्रुर्यत्नंविमुक्तये ॥३५॥ असृजंतमहासत्वांजृंभि कांरिपुनाशिनीम् ॥ ततोविजृंभमाणःसव्यावृतास्योबभूवह ॥ ३६ ॥ विजृंभमाणस्यततोवृत्रस्याऽऽस्यादवापतत् ॥ स्वान्यंगान्यपिसंक्षिप्यनिष्क्रांतोब लसूदनः ॥३७॥ ततःप्रभृतिलोकेषुजृंभिकाप्राणिसंस्थिता ॥ जहृषुश्चसुराःसर्वेशक्रंदृष्ट्वाविनिर्गतम् ॥ ३८ ॥ ततःप्रववृतेयुद्धंतयोर्लोकभयप्रदम् ॥ व र्षाणामयुतंयावद्दारुणंलोमहर्षणम् ॥ ३९ ॥ एकतश्चसुराःसर्वेयुद्धायसमुपस्थिताः ॥ एकतोबलवांस्त्वाष्ट्रःसंग्रामेसमवर्तत ॥४०॥ यदाव्यवर्धतरणेवृत्रो वरमदावृतः ॥ पराजितस्तदाशक्रस्तेजसातस्यधर्षितः ॥ ४१ ॥ विव्यथेमघवायुद्धेततःप्राप्यपराजयम् ॥ विषादमगमन्देवादृष्ट्वाशक्रंपराजितम् ॥४२॥ जग्मुस्त्यक्त्वारणंसर्वेदेवाइंद्रपुरोगमाः ॥ गृहीतंदेवसदनंवृत्रेणागत्यरंहसा ॥ ४३ ॥

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ जीवन्नस्तीति ॥ जीवतोनिष्कासनोपायःप्रथमतःकर्तव्यस्तदनंतरमभिचाराचिकीर्षेतिबृहस्पतेरभिप्रायः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ यज्ञभागात्सुरालयाच्चपरिभ्रष्टाइत्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ हरेःक्षयंस्थानम् ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ क्षयेस्थाने ॥ भक्तवत्सलत्वंतुचेतनत्वारोपेण ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभा० तिलकेषष्ठस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ एकोनषष्टिश्लोकैस्तुदेवाःसर्वेसवासवाः ॥ देवींस्तुत्वावरं

देवोद्यानानिसर्वाणिभुंक्तेऽसौदानवोबलात् ॥ ऐरावतोऽपिदैत्येनगृहीतोऽसौगजोत्तमः ॥ ४४ ॥ विमानानिचसर्वाणिगृहीतानिविशांपते ॥ उच्चैःश्रवाहयवरोजातस्तस्यवशेतदा ॥ ४५ ॥ कामधेनुःपारिजातोगणश्चाप्सरसांतथा ॥ गृहीतंरत्नमात्रंतुतेनत्वष्टृसुतेनह ॥४६॥ स्थानभ्रष्टाःसुराःसर्वेगिरिदुर्गेषुसंस्थिताः ॥ दुःखमापुःपरिभ्रष्टायज्ञभागात्सुरालयात् ॥ ४७ ॥ वृत्रःसुरपदंप्राप्यबभूवमदगर्वितः ॥ त्वष्टाऽतीवसुखंप्राप्यमुमोदसुतसंयुतः ॥ ४८ ॥ अमंत्रयन्हितंदेवामुनिभिःसहभारत ॥ किंकर्तव्यमितिप्राप्तेविचिंत्यभयमोहिताः ॥ ४९ ॥ जग्मुःकैलासमचलंसुराःशक्रसमन्विताः ॥ महादेवंप्रणम्योचुःप्रह्वाःप्रांजलयोभृशम् ॥ ५० ॥ देवदेवमहादेवकृपासिंधोमहेश्वर ॥ रक्षाऽस्मान्भयभीतांस्तुवृत्रेणाऽतिपराजितान् ॥ ५१ ॥ गृहीतंदेवसदनंतेनदेववलीयसा ॥ किंकर्तव्यमतःशंभोब्रूहिसत्यंशिवाऽद्यनः ॥ ५२ ॥ किंकुर्मःक्वचगच्छामःस्थानभ्रष्टामहेश्वर ॥ दुःखस्यनाऽधिगच्छामोविनाशोपायमीश्वर॥५३॥ साहाय्यंकुरुभूतेशव्यथिताःस्मकृपानिधे॥वृत्रंजहिमदोत्सिक्तंवरदानबलाद्विभो ॥ ५४ ॥ शिवउवाच ॥ ब्रह्माणंपुरतःकृत्वावयंसर्वेहरेःक्षयम् ॥ गत्वासमेत्यतंविष्णुंचिंतयामोवधोद्यमम् ॥ ५५ ॥ सशक्तश्चछलज्ञश्चबलवान्बुद्धिमत्तरः ॥ शरण्यश्चदयाब्धिश्चवासुदेवोजनार्दनः ॥ ५६ ॥ विनातंदेवदेवेशंनार्थसिद्धिर्भविष्यति ॥ तस्मात्तत्रचगंतव्यंसर्वकार्यार्थसिद्धये ॥५७॥ व्यासउवाच ॥ इतिसंचिंत्यतेसर्वेब्रह्माशक्रःसशंकरः ॥ जग्मुर्विष्णोःक्षयंदेवाःशरण्यंभक्तवत्सलम् ॥ ५८ ॥ गत्वाविष्णुपदंदेवास्तुष्टुवुःपरमेश्वरम् ॥ हरिंपुरुषसूक्तेनवेदोक्तेनजगद्गुरुम् ॥ ५९ ॥ प्रत्यक्षोभूज्जगन्नाथस्तेषांसकमलापतिः ॥ संमान्यचसुरान्सर्वानित्युवाचपुरःस्थितः ॥ ६० ॥ किमागताःस्मलोकेशाहरब्रह्मसमन्विताः॥कारणंकथयध्वंवःसर्वेषांसुरसत्तमाः॥६१॥ व्यासउवाच॥ इतिश्रुत्वाहरेर्वाक्यंनोचुर्देवारमापतिम् ॥ चिंताविष्टाःस्थिताःप्रायःसर्वेप्रांजलयस्तथा ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०षष्ठस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ ॥ व्यासउवाच ॥ तथाचिंतातुरान्वीक्ष्यसर्वान्सर्वार्थतत्त्ववित् ॥ प्राहप्रेमभरोद्भ्रांतान्माधवोमेदिनीपते ॥ १॥ विष्णुरुवाच ॥ किंमौनमाश्रितायूयंब्रुवंतुकारणंसुराः ॥ सदसद्वाऽपियच्छ्रुत्वायतिष्येतन्निवारणे ॥२॥ देवाऊचुः ॥ किमज्ञातंतवविभोत्रिषुलोकेषुवर्तते ॥ सर्ववेदभवान्कार्यंकिंपृच्छसिपुनःपुनः ॥३॥ त्वयापूर्वंबलिर्बद्धःशक्रोदेवाधिपःकृतः॥वामनंवपुरास्थायक्रांतंत्रिभुवनंपदैः ॥४॥ अमृतंत्वाहृतंविष्णोदैत्याश्चविनिपातिताः॥त्वंप्रभुःसर्वदेवानांसर्वापद्विनिवारणे ॥ ५ ॥

प्रापुरितिसम्यगिहोच्यते ॥ १ ॥ मौनमाश्रितेषुदेवेष्वनंतरंजातंवृत्तमाह । तथेति ॥ १ ॥ सदसद्वापीति ॥ सत्कारणंवाअस्तुअसत्कारणंवाऽस्तु तद्ब्रुवंत्वित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६ ॥ ७ ॥ सामादयःसामदानभेददंडाः ॥ तेसर्वेयथायोग्यंकेचित्सुहृत्सुकेचिद्दुर्हृदेषुविशेषतःकर्त्तव्याइत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ विनासामेति ॥ सामविनाप्रतारणंविना यतो ब्रह्मदत्तवरेणाऽसौदृप्तस्तस्माद्भेददंडयोरत्राऽसंभवात्सामप्रतारणंविनादुःसाध्योऽयमित्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ संगम्येति ॥ तत्रसंगम्यगत्वायथासवक्ष्यतिसमयंसंकेतम् ॥ तेनसंकेतेनशपथान्कृत्वातंविश्वास्यतेनमित्रत्वंचसमाधायहंतव्यइत्यर्थः ॥ १३ ॥ अहंतुकिंकरिष्यामितत्राह । अदृश्यइति ॥१४॥ अत्रत्वरानकर्तव्या ॥ आयुषःक्षयएवमरणंभवतिनान्यथा ॥ आयुस्तुतस्याऽद्यापिवर्ततेइत्याह । समयंचेति ॥ समयंकालम् ॥ १५ ॥ इंद्रेणसह वृत्रासुरस्यमित्रत्वमित्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ नचाऽन्यथेति ॥ एतदुक्तप्रकारादन्यःप्रकारस्तस्यमरणेनास्तीत्यर्थः ॥ ननुवासवोविश्वासघातंनकुर्यात्तदाकथमस्माकंकार्यंभविष्यतितत्राह । विश्वस्तमिति ॥ मयाबोधितइतिशेषः ॥ १८ ॥ किंचात्रदुष्टशत्रुविषयेसदोषोपिनास्तीत्याह । नदोषइति ॥

विष्णुरुवाच ॥ नभेतव्यंसुरवरावेद्म्युपायंसुसंमतम् ॥ तद्वधायप्रवक्ष्यामियेनसौख्यंभविष्यति ॥ ६ ॥ अवश्यंकरणीयंमेभवतांहितमात्मना ॥ बुद्ध्याबलेनचार्थेनयेनकेनच्छलेनवा ॥७॥ उपायाःखलुचत्वारःकथितास्तत्त्वदर्शिभिः ॥ सामादयःसुहृत्स्वेवदुर्हृदेषुविशेषतः ॥ ८ ॥ ब्रह्मणाऽस्यवरोदत्तस्तपसाराधितेनच ॥ दुर्जयत्वंचसंप्राप्तंवरदानप्रभावतः ॥ ९ ॥ अजेयःसर्वभूतानांत्वष्ट्रासमुपपादितः ॥ ततोबलेनवृद्धिंसप्राप्तःपरपुरंजयः ॥ १० ॥ दुःसाध्योऽसौसुराःशत्रुर्विनासामप्रतारणम् ॥ प्रलोभ्यवशमानेयोहंतव्यस्तुततःपरम् ॥ ११ ॥ गच्छध्वंसर्वगंधर्वायत्राऽसौबलवत्तरः ॥ सामतस्यप्रयुंजध्वंततएनंविजेष्यथ ॥ १२ ॥ संगम्यशपथान्कृत्वाविश्वास्यसमयेनहि ॥ मित्रत्वंचसमाधायहंतव्यःप्रबलोरिपुः ॥ १३ ॥ अदृश्यःसंप्रवेक्ष्यामिवज्रमस्यवरायुधम् ॥ साहाय्यंचकरिष्यामिशक्रस्याऽहंसुरोत्तमाः ॥ १४ ॥ समयंचप्रतीक्षध्वंसर्वथैवाऽऽयुषःक्षये ॥ मरणंविबुधास्तस्यनाऽन्यथासंभविष्यति ॥ १५ ॥ गच्छध्वमृषिभिःसार्धंगंधर्वाःकपटावृताः ॥ इंद्रेणसहमित्रत्वंकुरुध्वंवाक्यदानतः ॥ १६ ॥ यथासयातिविश्वासंतथाकार्यंप्रतारणम् ॥ गुप्तोऽहंसंप्रवेक्ष्यामिपार्विंसंछादितंदृढम् ॥ १७ ॥ विश्वस्तंमघवाशत्रुंहनिष्यतिनचाऽन्यथा ॥ विश्वासस्यकृतेपापंकृत्वाशक्रस्तुपृष्ठतः ॥ १८ ॥ मत्सहायोऽथवज्रेणशातयिष्यतिपापिनम् ॥ नदोषोऽत्रशठेशत्रौशाठ्यमेवप्रकुर्वतः ॥ १९ ॥ नाऽन्यथाबलवान्वध्यःशूरधर्मेणजायते ॥ वामनंरूपमाधायमयाऽयंवंचितोबलिः ॥ २० ॥ कृत्वाचमोहिनीवेषंदैत्याःसर्वेऽपिवंचिताः ॥ भवंतःसहिताःसर्वेदेवींभगवतींशिवाम् ॥ २१ ॥

शठंप्रतिशाठ्यंकुर्यादितिन्यायादित्यर्थः ॥ १९ ॥ किंचयदिपापभियाशाठ्यंनक्रियते तदाऽन्यप्रकारेणशूरधर्मेणाऽयंवध्योनैवभवतीत्याह । नान्यथेति ॥ मयाऽप्येवंबहुविधंकपटंसंकटेप्राप्तेकृतमित्याह । वामनमिति ॥२०॥ किंचाऽयंसर्वोऽपिसत्योवामिथ्यावाप्रकारस्तदैवसिध्येद्यादिपरमेश्वर्याजगदंबाया.प्रसादःस्यात्तस्मात्सैवमुख्यत्वेनाराधनीयेत्याह । भवंतइति ॥ भगवतींऐश्वर्यस्यसमग्रस्यधर्मस्ययशसःश्रियः ॥ ज्ञानवैराग्ययोश्चापिषण्णांभगइतींगनेतिश्लोकोक्तषड्भगरूपैश्वर्यवतीम् ॥ यद्वा ॥ भगंमायासमाख्यातायोनिःसर्वस्यसायतः ॥ तद्वतीतितदीशानीनाम्नाभगवतीस्मृतेतिशिवपुराणांतर्गतोमासंहितोक्तेः ॥ सर्वकारणत्वाद्योनिस्थानापन्नामायाशक्तिस्तस्याःस्वामिनीत्वात्तद्वितीयासच्चिदानंदरूपिणीदेवीसाभगवतीपदेनोच्यते ॥ तांभगवतींशिवांमंगलरूपांतद्दात्रींवा ॥ यद्वाशिवामेतामुमामेनांजडशक्तितथैवचेतिसूतसंहितोक्तरीत्यासंविद्रूपामितिवा ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २२ ॥ किंचनिरंतरमस्मामिःसर्वैःसैवाऽऽराध्यते ॥ ततोऽस्मिन्संकटेतांविहायकमन्यंशरणंव्रजेमेत्याभिप्रायेणाह । वंदामहेइति ॥ सात्त्विकींशुद्धसत्वात्मकमायोपाधिविशिष्टांप्रकृतिम् ॥ प्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टांतानुपरोधादितिब्रह्मसूत्रप्रतिपाद्यांसर्वकारणांचिद्रूपांभगवतीमित्यर्थः ॥ देवींस्वप्रकाशाम् ॥ तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभातीतिश्रुतेः ॥ सिद्धिदांमोक्षदांकामदामैहिकपारलौकिककामदाम् ॥ काम्यांसर्वैरभिलषणीयाम् ॥ २३ ॥ ननुतदाराधनेकिंसाक्षाद्धनिष्यतिनेत्याह । मोहिनीति ॥ २४ ॥ ननुतयामोहितोऽपिनसमरिष्यति शस्त्रादिनातस्य मृतेरभावादितिचेत्तत्राह । प्रसन्नायामिति ॥ सर्वंयथासशस्त्रादिरहितोपायेनमरिष्यतितथातत्सर्वंसाध्यंभविष्यति ॥ २५ ॥ तदप्रसन्नतायांतुसर्वंदुर्लभमेवेत्याह । नोचेदिति ॥ ननुसर्वोत्तमासाकिमर्थमस्मदर्थंक्लेशमाश्रयिष्यतीतिचेन्नत्राह । अंतर्यामीति ॥ सवदातयांतर्यामिरूपिण्यासर्वंक्लेशाआश्रिताएवसंति ॥ नतेनाविनाआश्रयितव्याइत्यर्थः ॥ यद्वा ननुसर्वो

गच्छध्वंशरणंभावैःस्तोत्रमंत्रैःसुरोत्तमाः ॥ साहाय्यंसायोगमायाभवतांसंविधास्यति ॥ २२ ॥ वंदामहेसदादेवींसात्त्विकींप्रकृतिंपराम् ॥ सिद्धिदांकामदांकामांदुरापामकृतात्मभिः ॥ २३ ॥ इंद्रोऽपितांसमाराध्यहनिष्यतिरिपुंरणे ॥ मोहिनीसामहामायामोहयिष्यतिदानवम् ॥ २४ ॥ मोहितोमाययावृत्रःसुखसाध्योभविष्यति ॥ प्रसन्नायांपरांवायांसर्वंसाध्यंभविष्यति ॥ २५ ॥ नोचेन्मनोरथावाप्तिर्नकस्याऽपिभविष्यति ॥ अंतर्यामिस्वरूपाप्तासर्वकारणकारणा ॥ २६ ॥ तस्मात्तांविश्वजननींप्रकृतिंपरमादृताः ॥ भजध्वंसात्त्विकैर्भावैःशत्रुनाशायसत्तमाः ॥ २७ ॥ पुरामयाऽपिसंग्रामंकृत्वापरमदारुणम् ॥ पंचवर्षसहस्राणिनिहतौमधुकैटभौ ॥ २८ ॥ स्तुतामयातदात्यर्थंप्रसन्नाप्रकृतिःपरा ॥ मोहितौतौतदादैत्यौछलेनचमयाहतौ ॥ २९ ॥ विप्रलब्धौमहाबाहूदानवौमदगर्वितौ ॥ तथाकुरुध्वंप्रकृतेर्भजनंभावसंयुताः ॥ ३० ॥ सर्वथाकार्यसिद्धिंसाकरिष्यतिसुरोत्तमाः ॥ एवंतेदत्तमतयोविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ ३१ ॥ जग्मुस्तेमेरुशिखरंमंदारद्रुममंडितम् ॥ एकांतेसंस्थितादेवाःकृत्वाध्यानंजपंतपः ॥ ३२ ॥ तुष्टुवुर्जगतांधात्रींसृष्टिसंहारकारिणीम् ॥ भक्तकामदुघामंबांसंसारक्लेशनाशिनीम् ॥ ३३ ॥ देवाऊचुः ॥ देविप्रसीदपरिपाहिसुरान्प्रतप्तान्वृत्रासुरेणसमरेपरिपीडितांश्च ॥ दीनार्तिनाशनपरेपरमार्थतत्त्वेप्राप्तांस्त्वदंघ्रिकमलंशरणंसदैव ॥ ३४ ॥ त्वंसर्वविश्वजननीपरिपालयाऽस्मान्पुत्रानिवाऽतिपतितान्रिपुसंकटेऽस्मिन् ॥ मातर्नतेऽस्त्यविदितंभुवनत्रयेऽपिकस्मादुपेक्षसिसुरानसुरप्रतप्तान् ॥ ३५ ॥ त्रैलोक्यमेतदखिलंविहितंत्वयैवब्रह्माहरिःपशुपतिस्तववासनोत्थाः ॥ कुर्वंतिकार्यमखिलंस्ववशानतेतेभ्रूभंगचालनवशाद्विहरंतिकामम् ॥ ३६ ॥

त्तमासाकिमर्थमस्माकमुपायंवक्ष्यतीतिचेत्तत्राह । अंतर्यामीति॥सर्वोत्तमायाएवतस्याः अंतर्यामिरूपत्वाद्यद्यच्चेष्टितंतत्सर्वंतत्प्रेरणयैवभवतीतिसाप्रार्थितासतीयथाकार्यंभविष्यतितथैवप्रेरयिष्यतीतिभावः ॥ सर्वेषांकारणंमाया तस्याअपिकारणाविवर्ताधिष्ठानरूपा ॥ यद्यपिमायायाअनादित्वंतथाऽपितद्वृत्तेरुत्पन्नत्वात्तदभिप्रायेणेयमुक्तिरितिबोध्यम् ॥ २६ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ प्रतप्तान्संसारतापेन ॥ परमार्थसत्यंयत्तत्त्वंब्रह्मरूपंतत्स्वरूपे हेभगवतित्वदंघ्रिकमलंशरणमाश्रयंप्राप्तानित्यन्वयः ॥ ३४ ॥ उपेक्षसीतिपरस्मैपदमार्षम् ॥ ३५ ॥ अस्मिन्संकटेब्रह्मादयःकिमितिनप्रार्थ्यंतेतत्राह । त्रैलोक्यमिति ॥ अस्वतंत्रप्रार्थनयाकिंफलंभविष्यतीतिभावः ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किंचाऽस्मत्प्रार्थनयैववयंत्वयापालनीयाइतिन किंतुस्वकल्पितरीतिपरिपालनार्थमपिवयंत्वयारक्षणीयाइत्याह। मातासुतानिति ॥ मातापरिभवात्सुतान्पालयतीतिरीतिर्मर्यादात्वयैवयुगादौरचिता ॥ अज्ञेषुपशुष्वपिदर्शनात् ॥ वयंतुनिरपराधाएव ॥ ततःहेकरुणारसाब्धेकुतोऽस्मान्सुतान्मातृभूतासतीनपालयसीत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ननुयूयंसापराधामद्दत्तलक्ष्मीमदांधाःसंतोनमांभजथेतिततोमन्नेत्रकटाक्षविषयानभवथेतिचेत्तत्राह नूनमिति ॥ ममांघ्रेर्भजनेनाप्तंप्राप्तंपदमिंद्रादिस्थानंयैस्तेयूयंविभवेसतिस्थानप्राप्तौसत्यांसुखस्यभोगेलुब्धाआसक्ताः ॥ नचैषेति ॥ अस्त्वेवंरीतिरन्यत्र ॥ सुतेसुतविषयेजननकर्तरिजनन्यांचनैषारीतिःकुत्राऽपिदृष्टा ॥ पुत्रापराधाःसर्वेऽपिमात्रासोढव्याएवेतिभावः ॥ ३८ ॥ किंचनाऽयंदोषोऽस्माकंत्वयामोहेनाऽऽच्छादितंसर्वंयथायथायस्मिन्कार्येप्रेरयसितथाकुर्मइत्याह। दोषोननइति ॥ ततोनिरपराधिषुदयाऽवश्यंविधेयेतिभावः ॥ ३९ ॥ किंचवयमपराधिनोनाऽधुनैवकिंतुपूर्वमपिस्थितास्तत्रपूर्वंयथाऽस्मदपराधानविगणय्ययथामहिषाद्यादैत्याहतास्तथाऽधुनाऽपिवृत्रंकुतोननाशयसीत्याह। पूर्वंत्वयेति ॥ विधुनोषिनाशयासि ॥ ४० ॥ ४१ ॥ त्वदन्यःकोप्यस्मान्रक्षेदित्याशामनसापि

मातासुतान्परिभवात्परिपातिदीनात्रीतिस्त्वयैवरचिताप्रकटापराधान् ॥ कस्मान्नपालयसिदेविविनापराधानस्मांस्त्वदंघ्रिशरणान्करुणारसाब्धे ॥ ३७ ॥ नूनंमदंघ्रिभजनाप्तपदाःकिलैतेभक्तिंविहायविभवेसुखभोगलुब्धाः ॥ नेमेकटाक्षविषयाइतिचेन्नचैषारीतिःसुतेजननकर्तरिचाऽपिदृष्टा ॥ ३८ ॥ दोषोननोऽत्रजननिप्रतिभातिचित्तेयत्तेविहायभजनंविभवेनिमग्नाः ॥ मोहस्त्वयाविरचितःप्रभवत्यसौनस्तस्मात्स्वभावकरुणेदयसेकथंन ॥ ३९ ॥ पूर्वंत्वयाजननिदैत्यपतिर्बलिष्ठोव्यापादितोमहिषरूपधरःकिलाऽऽजौ ॥ अस्मत्कृतेसकललोकभयावहोऽसौवृत्रंकथंनभयदंविधुनोषिमातः ॥ ४० ॥ शुंभस्तथाऽतिबलवाननुजोनिशुंभस्तौभ्रातरौतदनुगानिहताहतौच ॥ वृत्रंतथाजहिखलंप्रबलंदयार्द्रेमत्तंविमोहयतथानभवेद्यथाऽसौ ॥ ४१ ॥ त्वंपालयाऽद्यविबुधानसुरेणमातःसंतापितानतितरांभयविह्वलांश्च ॥ नाऽन्योऽस्तिकोऽपिभुवनेषुसुरार्तिहंतायःक्लेशजालमखिलंनिदहेत्स्वशक्त्या ॥ ४२ ॥ वृत्रेदयातवयदिप्रथिता तथापिजह्येनमाशुजनदुःखकरंखलंच ॥ पापात्समुद्धरभवानिशरैःपुनानानोचेत्प्रयास्यतितमोननुदुष्टबुद्धिः ॥ ४३ ॥ तेप्रापिताःसुरवनंविबुधारयोयेहत्वारणेऽपिविशिखैःकिलपावितास्ते ॥ त्रातानकिंनिरयपातभयाद्दयार्द्रेयच्छत्रवोऽपिनहिकिंविनिहंसिवृत्रम् ॥ ४४ ॥ जानीमहेरिपुरसौतवसेवकोनप्रायेणपीडयतिनःकिलपापबुद्धिः ॥ यस्तावकस्त्विहभवेदमरानसौकिंत्वत्पादपंकजरतान्ननुपीडयेद्वा ॥ ४५ ॥

नत्वयाकर्तव्येत्याह। त्वंपालयाद्येति ॥ स्वशक्त्याऽस्माकंक्लेशजालंनिदहेदेतादृशोनैवास्तीत्यर्थः ॥ सर्वेषांक्लेशनाशकावयंदेवाः अस्मत्क्लेशस्यनिवारकःकोऽन्यःस्यादितिभावः ॥ ४२ ॥ ननुयथाभवतांमाताऽस्मितथादैत्यानामपिभवामिततश्चकथंमयाजनन्यातेहन्तव्याइतिचेत्तत्राह। वृत्रेदयेति ॥ दुष्टबुद्धिर्दुराचारःसयदित्वयानहन्यतेतदास्वपापात्तमोनरकंप्रयास्यातिततस्तत्कल्याणार्थमेवतंजहीतिभावः ॥ ४३ ॥ ननुमच्छस्त्रपूताःकेस्वर्गंगताइतिचेत्तत्राह। तेप्रापिताइति ॥ सुरवनंनंदनं येयेत्वयाहताः शत्रवोभवंतितेतेसर्वेऽपिनप्रापिताःकिम् अपितुप्रापितापव ॥ तथानरकपातभयात्त्रताःकिम् अपितुत्राताएव ॥ ततोवृत्रं किंकुतोनविनिहंसीत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ननुसममभक्तोऽस्तिततःकथंहंतव्यइतिचेत्सतवभक्तोनैवाऽस्ति यदितवभक्तःस्यात्तदात्वत्पादाब्जभजनरतानस्मान्कथंपीडयेदित्याह। जानीमहेइति॥तवभक्तस्तुसर्वत्रदेवीबुद्धिमाश्रितोभवति॥नचतथाविधः किंचित्पीडयति॥यतोऽयंपीडयतितस्मान्नतवभक्तइतिभावः॥४५॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अथतवपूजयातवसंतोषउत्पादनीयइतिचेदस्माकंनिकटे कःपदार्थःपूजायोग्योस्ति येनत्वंसंतुष्यसि योस्तिसत्वद्रूपस्तवैवाऽस्तिततोनास्माकंपूजायोग्यता ॥ किंतुकेवलंनमस्कारेणैवसं तुष्टाभवेत्यभिप्रायेणाह । कुर्मःकथमिति ॥ मंत्रावयंपूजाकर्तारः चकारादन्यदपिपूजायोग्यंग्राह्यम् ॥ तत्सर्वंपरशक्तिरूपमित्यर्थः ॥४६॥ अथभगवत्युपासकानांधन्यतांवर्णयति । धन्या स्तएवेति ॥ पोतंनौकाम् ॥ ४७ ॥ येयाज्ञिकाइति ॥ स्वाहास्वधोच्चारणकर्तारस्तेऽपिधन्याइत्यर्थः ॥ ४८ ॥ विभवमिति ॥ मेधादिकंसर्वंविभवमैश्वर्यंकृत्वोत्पाद्यभजतांकृपयातेभ्योद दासितदैवेत्यन्वयः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ पाशांकुशवराभीतिभिर्लसद्युक्तंबाहुचतुष्टयंयस्याःसा ॥ तत्राभीतिरभयमुद्रा ॥ तत्रायुधक्रमस्तुदशपटल्यामुक्तः ॥ दक्षेऽकुशाभयेप्रोक्तेवामेपाशम थेष्टदमिति ॥ रणच्छब्दायमानंयत्किंकिणिकानांक्षुद्रघंटिकानांजालंतद्युक्तरसनयाकांच्यावद्धासत्कटिर्यस्याःसा ॥ ५१ ॥ कलकंठीकोकिलातद्वत्मधुरोरवःशब्दोयस्याःकांतादीप्ताः

कुर्मःकथंजननिपूजनमद्यतेंबपुष्पादिकंतवविनिर्मितमेवयस्मात् ॥ मंत्रावयंचसकलंपरशक्तिरूपंतस्माद्भवानिचरणेप्रणताःस्मनूनम् ॥ ४६ ॥ धन्यास्तए वमनुजाहिभजंतिभक्त्यापादांबुजंतवभवाब्धिजलेषुपोतम् ॥ यंयोगिनोऽपिमनसाततंस्मरंतिमोक्षार्थिनोविगतरागविकारमोहाः ॥ ४७ ॥ येयाज्ञिकाः सकलवेदविदोऽपिनूनंत्वांसंस्मरंतिसततंकिलहोमकाले ॥ स्वाहांतुतृप्तिजननीमसुरेश्वराणांभूयःस्वधांपितृगणस्यचतृप्तिहेतुम् ॥ ४८ ॥ मेधाऽसिकांतिर सिशांतिरपिप्रसिद्धाबुद्धिस्त्वमेवविशदार्थकरीनराणाम् ॥ सर्वंत्वमेवविभवंभुवनत्रयेऽस्मिन्कृत्वाददासिभजतांकृपयासदैव ॥ ४९ ॥ व्यासउवाच ॥ एवं स्तुतासुरैर्देवीप्रत्यक्षासाऽभवत्तदा ॥ चारुरूपधरातन्वीसर्वाभरणभूषिता ॥५०॥ पाशांकुशवराभीतिलसद्बाहुचतुष्टया ॥ रणत्किंकिणिकाजालरशनाव द्धसत्कटिः ॥ ५१ ॥ कलकंठीरवाकांताक्वणत्कंकणनूपुरा ॥ चंद्रखंडसमावद्धरत्नमौलिविराजिता ॥ ५२ ॥ मंदस्मिताऽरविंदास्यानेत्रत्रयविभूषिता ॥ पारिजातप्रसूनाच्छनालवर्णसमप्रभा ॥ ५३ ॥ रक्तांबरपरीधानारक्तचंदनचर्चिता ॥ प्रसादसुमुखीदेवीकरुणारससागरा ॥ ५४ ॥ सर्वशृंगारवेषाढ्यासर्व द्वैताराणिःपरा ॥ सर्वज्ञासर्वकर्त्रीचसर्वाधिष्ठानरूपिणी ॥५५॥ सर्ववेदांतसंसिद्धासच्चिदानंदरूपिणी ॥ प्रणेमुस्तांसमालोक्यसुरादेवींपुरःस्थिताम् ॥५६॥ तानाहप्रणतानंबाकिंवःकार्यंब्रुवंतुमाम् ॥ देवाऊचुः ॥ मोहयैनंरिपुंवृत्रंदेवानामतिदुःखदम् ॥ ५७ ॥ यथाविश्वसतेदेवांस्तथाकुरुविमोहितम् ॥ आयुधेचब लंदेहिहतःस्याद्येनवारिपुः ॥५८॥ व्यासउवाच ॥ तथेत्युक्त्वाभगवतीतत्रैवांतरधीयत ॥ स्वानिस्वानिनिकेतानिजग्मुर्देवामुदान्विताः ॥५९॥ ॥इतिश्रीदे० भा० म० षष्ठस्कंधेदेवीमाहात्म्येपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

क्वणंतःशब्दायमानाःकंकणनूपुरायस्याःसा ॥ चंद्रखंडेनाऽर्धचंद्रेणसमावद्धोरत्नमौलीरत्नमुकुटस्तेनाविराजिता ॥ ५२ ॥ मंदस्मितमीषद्धास्यंतेनयुक्तमरविंदसदृशमास्यमाननंयस्याः ॥ पारिजातवृक्षस्ययत्प्रसूनंपुष्पंतस्ययदच्छंनालंतस्ययोवर्णोरक्तस्तेनसमाप्रभायस्याःसारक्तवर्णेत्यर्थः ॥ ५३ ॥ प्रसादेनप्रसन्नतयासुमुखी ॥ ५४ ॥ सर्वशृंगारयुक्तवेषेणाढ्यायुक्ता शृंगारमूर्तिरित्यर्थः ॥ सर्वंयद्द्वैतमात्मातिरिक्तंपदार्थजातंतस्याऽराणिरुत्पादिका ॥ अतएवसर्वज्ञासर्वकर्त्रीचतथासर्वविवर्ताधिष्ठानंब्रह्मतद्रूपिणीच ॥ ५५ ॥ सर्ववेदांताउपनिषद्भागास्तैः संसिद्धातदेकप्रतिपाद्येत्यर्थः ॥ ५६ ॥ वोयत्कार्यंतन्मांब्रुवंत्वित्यन्वयः ॥ ब्रूधातोर्द्विकर्मकत्वात् ॥ ५७ ॥ यथादेवान्विश्वसतेदेवेषुयथाविश्वसेत्तथाविमोहितंकुर्वित्यर्थः ॥ किंचायुधंपि बलंदेहियेनबलेनरिपुर्हतःस्यादित्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इ०श्रीदे०ति०षष्ठस्कंधे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अथषष्टिश्लोकवर्यैर्वृत्रदैत्यवधाश्रिता ॥ कथाप्रारभ्यतेयत्रदेव्यास्तुमहिमास्मृतः ॥ १ ॥ देव्यंतर्धानानंतरंजातंवृत्तांतमाह । एवंप्राप्तेति ॥ १ ॥ विष्णुनापूर्वमुक्तं प्रथमतःसाम्नाविश्वासः कर्तव्यस्ततोविश्वस्तोहंतव्यइति तत्सामार्थमृषयस्तंवृत्रंप्रत्यागत्योचुरित्याह । ऋषयोऽथेति ॥ २ ॥ ३ ॥ सौख्यविघातकंस्वशत्रोर्नाशचिंतयादग्धचित्तत्वात् ॥ ४ ॥ तदेवोपपादयाति। युवयोरिति ॥ ५ ॥ यद्यस्मात्कारणाद्वयोःपरस्परंवैरिजन्यंभयंभवतितस्मादित्यर्थः ॥ ६ ॥ स्थितिर्मर्यादा ॥ ७ ॥ संग्रामरसिकाः युद्धंप्रशंसंतीत्युत्तरेणान्वयः ॥ पंडिताःशृंगारचतु

व्यासउवाच ॥ एवंप्राप्तवरादेवाऋषयश्चतपोधनाः ॥ "जग्मुःसर्वेचसंमंत्र्यवृत्रस्याश्रममुत्तमम्॥" ददृशुस्तत्रतंवृत्रंज्वलंतमिवतेजसा ॥१॥ धक्ष्यंतमिवलोकांस्त्रीन्यसंतमिवचाऽमरान् ॥ ऋषयोऽथततोऽभ्येत्यवृत्रमूचुःप्रियंवचः॥२॥देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थंसामयुक्तंरसात्मकम् ॥ ऋषयऊचुः ॥ वृत्रवृत्रमहाभाग सर्वलोकभयंकर ॥ ३ ॥ व्याप्तंत्वयैतत्सकलंब्रह्मांडमखिलंकिल ॥ शक्रेणतववैरंयत्तत्तुसौख्यविघातकम् ॥४ ॥ युवयोर्दुःखदंकामंचिंतावृद्धिकरंपरम् ॥ नत्वंस्वपिषिसंतुष्टोनचाऽपिमघवातथा॥५॥सुखंस्वपितिचिंतार्तोद्वयोर्यद्वैरिजंभयम्॥युवयोर्युध्यतोःकालोव्यतीतस्तुमहानिह ॥ ६ ॥ पीडयंतेचप्रजाः सर्वाःसदेवासुरमानवाः ॥ संसारेऽत्रसुखंग्राह्यंदुःखंहेयमितिस्थितिः ॥७॥ नसुखंकृतवैरस्यभवतीतिविनिर्णयः॥संग्रामरसिकाःशूराःप्रशंसंतिनपंडिताः॥ ॥८॥युद्धंशृंगारचतुराइंद्रियार्थविघातकम् ॥ पुष्पैरपिनयोद्धव्यंकिंपुनर्निशितैःशरैः ॥ ९ ॥ युद्धेविजयसंदेहोनिश्चयंबाणताडनम् ॥ दैवाधीनमिदंविश्वं तथाजयपराजयौ ॥ १० ॥ दैवाधीनाविति ज्ञात्वानयोद्धव्यंकदाचन ॥ कालेऽथभोजनंस्नानंशय्यायांशयनंतथा ॥ ११ ॥ परिचर्यापराभार्यासंसारेसुख साधनम् ॥ किंसुखंयुध्यतःसंख्येबाणवृष्टिभयंकरे ॥ १२ ॥ खड्गपातातिरौद्रेचतथाऽरातिसुखप्रदे ॥ संग्रामेमरणात्स्वर्गसुखप्राप्तिरितिस्फुटम् ॥१३ ॥ प्रलोभनपरंवाक्यंनोदनार्थंनिरर्थकम् ॥ छित्त्वादेहंव्यथांप्राप्यशृगालकरटादिभिः ॥ १४ ॥ पश्चात्स्वर्गसुखावाप्तिंकोवावांछतिमंदधीः ॥ सख्यंभवतुते वृत्रशक्रेणसहनित्यदा ॥ १५ ॥ अवाप्स्यसिसुखंत्वंचशक्रश्चाऽपिनिरंतरम् ॥ वयंचतापसाःसर्वेगंधर्वाश्चनिजाश्रमे ॥ १६॥ सुखवासंगमिष्यामःशांतेवैरेऽधुनैववाम् ॥ संग्रामेयुवयोर्धीरवर्तमानेदिवानिशम् ॥ १७ ॥ पीडयंतेमुनयःसर्वेगंधर्वाःकिन्नरानराः ॥ सर्वेषांशांतिकामानांसख्यमिच्छामहेवयम् ॥ १८ ॥ मुनयस्त्वंचशक्रश्चप्राप्नुवंतुसुखंकिल ॥ मध्यस्थाश्चवयंवृत्रयुवयोःसख्यकारणे ॥ १९ ॥

रास्तुयुद्धंनशंसंतियतस्तदिंद्रियार्थविघातकंभवतीत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ विजयार्थंयुद्धंचेत्तत्रापिसंदेहएवेत्याह । युद्धइति ॥ बाणताडनंतज्जन्यंदुःखंतुनिश्चितमेवभवतिनतत्रसंदेहइत्यर्थः ॥ कुतोविजयसंदेहइतिचेत्तत्राह । दैवाधीनमिति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ अरातेःसुखप्रदेस्वमरणात्संग्राममरणात्स्वर्गोभवत्येवसुनिश्चितमितिवचनात्स्वर्गफलार्थंयुद्धंयुक्तमितिचेत्तत्राह । संग्रामइति ॥ १३ ॥ युद्धेनोदनार्थंप्रेरणार्थमर्थवादः सनतुतत्रतात्पर्यमित्यर्थः ॥ छित्त्वेति ॥ कोनामपुरुषोबाणव्यथांप्राप्य शृगालकरटादिभिः देहंछित्त्वा पश्चात्स्वर्गसुखावाप्तिंवांछति नकोऽपीतिभावः ॥ यद्वा शृगालकरटादिभिर्देहंभक्षयित्वेतिशेषः ॥ १४ ॥ यतएवंततःसख्यं भवत्विति ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ सर्वेषांशांतिकामानांसौख्यायेति शेषः ॥ १८ ॥ १९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ननुभवंतोपितत्पक्षीयास्ततःभवतांकोविश्वासस्तत्राह ॥ शपथमिति ॥ तदेवविशदयति। शक्रस्त्विति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ समूलोहवाएषपरिशुष्यतियोऽनृतमभिवदतीतिप्रश्नोपनिषदिश्रुतेः। सत्यभयंसर्वेषामस्तीतिभावः ॥ ततः किंतत्राह। तस्मादिति ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ यूयंसाधवश्छलकारणंछलंचनविदुरतःसख्यार्थंभवद्भिःप्रार्थ्यते तथापिनायंसख्ययोग्यइतिनीतिशास्त्रवचनमाह। वैरेइति ॥ कृतवैरेशत्रौ शठकपटवति स्तब्धेबुद्धिरहिते कामुकेविषयिणि गतत्विषिअपगतकीर्त्तौ ॥ २६ ॥ निर्लज्जेसख्यंनकर्तव्यमितिनीतिरित्यर्थः ॥

शपथंकारयित्वाऽत्रयोजयामोमिथःप्रियम् ॥ शक्रस्तुशपथान्कृत्वायथोक्तांश्चतवाऽग्रतः ॥ २० ॥ चित्तंतेप्रीतिसंयुक्तंकरिष्यतितुसांप्रतम् ॥ सत्याधारा धरानूनंसत्येनचदिवाकरः ॥२१॥ तपत्ययंयथाकालंवायुःसत्येनवात्यथ ॥ उदन्वानपिमर्यादांसत्येनैवनमुंचति ॥२२॥ तस्मात्सत्येनसख्यंवांभवत्वद्य यथासुखम् ॥ एकत्रशयनंक्रीडाजलकेलिःसुखासनम्॥२३॥युवाभ्यांसर्वथाकार्यंकर्तव्यंसख्यमेत्यच ॥ व्यासउवाच ॥ महर्षिवचनंश्रुत्वातानुवाचमहा मतिः॥२४॥अवश्यंभगवंतोमेमाननीयास्तपस्विनः॥भवंतोमुनयःक्वाऽपिनमिथ्यावादिनोभृशम्॥२५॥सदाचाराःसुशांताश्चनविदुश्छलकारणम्॥ कृतवै रेशठेस्तब्धेकामुकेचगतत्विषि ॥२६॥ निर्लज्जेनैवकर्तव्यंसख्यंमतिमतासदा ॥ निर्लज्जोऽयंदुराचारोब्रह्महालंपटःशठः ॥२७॥ नविश्वासस्तुकर्तव्यः सर्वथैवेदृशेजने ॥ भवंतोनिपुणाःसर्वेनद्रोहमतयःसदा ॥ २८ ॥ अनभिज्ञास्तुशांतत्वाच्चित्तानामतिवादिनाम् ॥ मुनयऊचुः ॥ जंतुःकृतस्यभोक्तावै शुभस्यत्वशुभस्यच ॥ २९॥ द्रोहंकृत्वाकुतःशांतिमाप्नुयान्नष्टचेतनः ॥ ॥ विश्वासघातकर्तारोनरकंयांतिनिश्चयम्॥३०॥दुःखंचसमवाप्नोतिनूनंविश्वास घातकः ॥ निष्कृतिर्ब्रह्महंतॄणांसुरापानांचनिष्कृतिः ॥ ३१ ॥ विश्वासघातिनांनैवमित्रद्रोहकृतामपि ॥ समयंब्रूहिसर्वज्ञयथातेचेतसिध्रुवम् ॥ ३२ ॥ ते नैवसमयेनाद्यसंधिःस्यादुभयोःकिल ॥ वृत्रउवाच ॥ नशुष्केणनचार्द्रेणनाश्मनानचदारुणा ॥ ३३ ॥ नवज्रेणमहाभागनदिवानिशिनैवच ॥ वध्योभवेयं विप्रेंद्राःशक्रस्यसहदैवतैः॥३४॥एवंमेरोचतेसंधिःशक्रेणसहनान्यथा ॥व्यासउवाच॥ ऋषयस्तंतदाप्राहुर्बाढमित्येवचादृताः॥३५॥समयंश्रावयामासुस्त त्रानीयसुरेश्वरम्॥इंद्रोपिशपथांस्तत्रचकारविगतज्वरः॥३६॥साक्षिणंपावकंकृत्वामुनीनांसन्निधौकिल॥वृत्रस्तुवचनैस्तस्यविश्वासमगमत्तदा॥३७॥बभूव मित्रवच्छक्रेसहचर्यापरायणः॥कदाचिन्नंदनेचोभौकदाचिद्गंधमादने॥३८॥कदाचिदुदधेस्तीरेमोदमानौविचेरतुः॥एवंकृतेचसंधानेवृत्रःप्रमुदितोभवत्॥३९॥

एतेषांमध्येकोसौवासवइतिचेत्तत्राह। निर्लज्जोयमिति ॥ सर्वदुर्गुणवानितिभावः ॥ २७ ॥ २८ ॥ यूयंसाधवोऽतिवादिनांकपटिनांचेतसामनभिज्ञाअतोभवद्भिःप्रार्थ्यते ॥ परंतुदुष्टमध्यस्थ ताभवद्भिर्नस्वीकार्येत्यभिप्रायेणाह। अनभिज्ञाइति ॥ मुनयस्तुयद्येतादृशंशपथंकृत्वाविश्वासघातंकरिष्यतितर्हितस्यफलंभोक्ष्यतीत्यभिप्रायेणाहुः। जंतुःकृतस्येति ॥ २९ ॥ ३० ॥ ब्रह्महंतॄणांतथासुरापानांचनिष्कृतिरस्तीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ अतःसर्वथाऽस्मद्वचनात्त्वयासख्यंकर्तव्यमितिभावः ॥ समयमिति। परंतुतत्रसमयंसंकेतमेतादृशंभवद्भिःस्वीक्रियतेचे न्मयासख्यंक्रियतइत्येवंरूपंब्रूहि ॥ तेनैवसमयेनशपथोत्तरमुभयोःसंधिर्मैत्रीस्यादित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ एवमितिएवंसमयः ॥ शपथेनक्रियेतचेन्मेममसंधीरोचतइत्यर्थः ॥ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





रंध्रान्वेषीसंकेतातिरिक्तमरणोपायोरंध्रंतदन्वेषी ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ सप्तकृत्वः सप्तकृत्वइति ॥ सप्तकृत्वोयथास्यात्तथाप्रथमंगर्भच्छेदंचकार पश्चा देकैकमवयवंसप्तकृत्वश्चकार तेनचैकोनपंचाशन्मरुतोनिष्पन्नाइतिपुराणांतरेस्पष्टम् ॥ अनातुरोमनसिपापभयरहितः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ कदाचिदिति ॥ सवासवः ॥ ४९ ॥ वरदान मिति ॥ दिवानिशिचमरणंनास्तीयंतुसंध्याभवत्यस्यांमारणेनवरदानंमिथ्यानभवतीत्यर्थः ॥ महात्मनांब्रह्मादीनां वरदानमित्यन्वयः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ कथंहन्यामिति॥

शक्रोऽपिवधकामस्तुतदुपायानचिंतयत् ॥ रंध्रान्वेषीसमुद्विग्नस्तदासीन्मघवाभृशम् ॥ ४० ॥ एवंचिंतयतस्तस्यकालःसमभिवर्तत ॥ विश्वासंपरमंप्राप वृत्रःशक्रेऽतिदारुणे ॥ ४१ ॥ एवंकतिचिदब्दानिगतानिसमयेकृते ॥ वृत्रस्यमरणोपायान्मनसींद्रोप्यचिंतयत् ॥४२॥ त्वष्टैकदासुतंप्राहविश्वस्तंपाकशा सने ॥ पुत्रवृत्रमहाभागशृणुमेवचनंहितम्॥४३॥नविश्वासस्तुकर्तव्यःकृतवैरेकथंचन ॥ मघवाकृतवैरस्तेसदाऽसूयापरःपरैः ॥ ४४ ॥ लोभान्मत्तोद्वेषर तःपरदुःखोत्सवान्वितः ॥ परदारलंपटःसपापबुद्धिःप्रतारकः॥४५॥रंध्रान्वेषीद्रोहपरोमायावीमदगर्वितः ॥ यःप्रविश्योदरेमातुर्गर्भच्छेदंचकारह ॥४६ ॥ सप्तकृत्वःसप्तकृत्वःक्रंदमानमनातुरः॥तस्मात्पुत्रनकर्तव्योविश्वासस्तुकथंचन ॥४७॥ कृतपापस्यकालज्ञापुनःपुत्रप्रकुर्वतः ॥ व्यासउवाच ॥ एवंप्रबो धितःपित्रावचनैर्हेतुसंयुतैः ॥ ४८ ॥ नबुबोधतदावृत्रआसन्नमरणःकिल ॥ सकदाचित्समुद्रांतेतमपश्यन्महासुरम् ॥ ४९ ॥संध्याकालउपावृत्तेमुहूर्तेऽती वदारुणे ॥ ततःसंचिंत्यमघवावरदानंमहात्मनाम् ॥ ५० ॥ संध्येयंवर्ततेरौद्रानरात्रिर्दिवसोनच ॥ हंतव्योऽयंमयाचाऽद्यबलेनैवनसंशयः ॥ ५१ ॥ एका कीविजनेचाऽत्रसंप्राप्तःसमयोचितः ॥ एवंविचार्यमनसासस्मारहरिमव्ययम् ॥ ५२ ॥ तत्राऽऽजगामभगवानदृश्यःपुरुषोत्तमः ॥ वज्रमध्येप्रविश्याऽसौसं स्थितोभगवान्हरिः ॥५३॥ इंद्रोबुद्धिंचकाराऽऽशुतदावृत्रवधंप्रति ॥ इतिसंचिंत्यमनसाकथंहन्यांरिपुंरणे ॥ ५४ ॥ अजेयंसर्वथासर्वदेवैश्चदानवैस्तथा ॥ यदिवृत्रंनहन्म्यद्यवंचयित्वामहाबलम् ॥ ५५ ॥ नश्रेयोममनूनंस्यात्सर्वथारिपुरक्षणात् ॥ अपांफेनंतदापश्यत्समुद्रेपर्वतोपमम् ॥ ५६ ॥ नाऽयंशुष्को नचार्द्रोऽयंनचशस्त्रमिदंतथा ॥ अपांफेनंतदाशक्रोजग्राहकिललीलया ॥५७॥ परांशक्तिंचसस्मारभक्त्यापरमयायुतः ॥ स्मृतमात्रातदादेवीस्वांशंफेने न्यधापयत् ॥ ५८ ॥ वज्रंतदावृतंतत्रचकारहरिसंयुतम् ॥ फेनावृतंपवितत्रशक्रश्चिक्षेपतंप्रति ॥ ५९ ॥ सहसानिपपाताऽशुवज्राहतइवाचलः ॥ वासव स्तुप्रहृष्टात्मावभूवनिहतेतदा ॥ ६० ॥ ऋषयश्चमहेंद्रंतमस्तुवन्विविधैःस्तवैः ॥ हतशत्रुःप्रहृष्टात्मावासवःसहदैवतैः ॥६१॥देवींसंपूजयामासयत्प्रसादा द्धतोरिपुः ॥ प्रसादयामासतदास्तोत्रैर्नानाविधैरपि ॥ ६२ ॥

मनसासंचिंत्येत्यन्वयः ॥ ५४ ॥ ननुसंकटेनमारणापेक्षयानहंतव्यएवेतिचेत्तत्राह । यदिवृत्रमिति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ स्वांशंपराशक्त्यंशंयेनसदैत्योनंक्ष्यतितथांशंदेवीतास्मिन्फेनेन्य धापयत् स्थापितवतीत्यर्थः ॥ तेनचाऽतिकोमलोऽपिफेनपिंडोवज्रादप्यधिकोजातइतिभावः ॥ ५८ ॥ तदावृतंफेनावृतम् ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ननुयोविष्णुःपूर्वंवज्रंप्रविश्यसहायोजातःसकथमिंद्रस्यतदनंतरंसंकटेसहायोनजातस्तत्राह । नचापदीति ॥ दैवे ऽनुकूलेसर्वेसहायाभवंतिप्रतिकूलेतुनकोऽपिकस्याऽस्तीत्यर्थः ॥ २१ ॥ तदेवाह। दैवेइति ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ दैवेप्रतिकूलेयेतदीयाःस्थितास्तएवतमिंद्रंशेपुरित्याह । शेपुरिति ॥ किं

त्वष्टातुनिहतंश्रुत्वापुत्रमिंद्रेणभारत ॥ रुरोददुःखसंतप्तोनिर्वेदमगमत्पुनः ॥ १२ ॥ यत्राऽसौपतितस्तत्रगत्वावीक्ष्यतथागतम् ॥ संस्कारंकारयामासविधिवत्पारलौकिकम् ॥ १३ ॥ स्नात्वाऽस्यसलिलंदत्वाकृत्वाचैवौर्ध्वदेहिकम् ॥ शशापेंद्रंसशोकार्तःपापिष्ठंमित्रघातकम् ॥ १४ ॥ यथामेनिहतःपुत्रःप्रलोभ्यशपथैर्भृशम् ॥ तथेंद्रोपिमहद्दुःखंप्राप्नोतुविधिनिर्मितम् ॥ १५ ॥ इतिशप्त्वासुरेशानंत्वष्टातापसमन्वितः ॥ मेरोःशिखरमास्थायतपस्तेपेसुदुष्करम् ॥ १६ ॥ जनमेजयउवाच ॥ हत्वात्वाष्ट्रंसुरेशोऽथकामवस्थामवाप्तवान् ॥ सुखंवादुःखमेवाऽग्रेतन्मेब्रूहिपितामह ॥ १७ ॥ व्यासउवाच ॥ किंपृच्छसिमहाभाग संदेहःकीदृशस्तव ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाऽशुभम् ॥ १८ ॥ बलिष्ठैर्दुर्बलैर्वाऽपिस्वल्पंवाबहुवाकृतम् ॥ सर्वथैवहिभोक्तव्यंसदेवासुरमानुषैः ॥ ॥ १९ ॥ शक्रायेत्थंमतिर्दत्ताहारिणावृत्रघातिने ॥ प्रविष्टोऽथपविंविष्णुःसहायःप्रत्यपद्यत ॥ २० ॥ नचाऽऽपदिसहायोभूद्वासुदेवःकथंचन ॥ समयेस्वजनःसर्वःसंसारेऽस्मिन्नराधिप ॥ २१ ॥ दैवेविमुखतांप्राप्तेनकोऽप्यस्तिसहायवान् ॥ पितामातातथाभार्याभ्रातावाऽथसहोदरः ॥ २२ ॥ सेवकोवाऽपिमित्रंवापुत्रश्चैवतथौरसः ॥ प्रतिकूलेगतेदैवेनकोऽप्येतिसहायताम् ॥ २३ ॥ भोक्तापापस्यपुण्यस्यकर्ताभवतिसर्वथा ॥ वृत्रंहत्वागताःसर्वेनिस्तेजस्कःशचीपतिः ॥ २४ ॥ शेपुस्तंत्रिदशाः सर्वेब्रह्महेत्यब्रुवञ्छनैः ॥ कोनामशपथान्कृत्वासत्यंदत्वावचःपुनः ॥ २५ ॥ जिवांसतिसुविश्वस्तंमुनिंमित्रत्वमागतम् ॥ देवगोष्ठ्यांसुरोद्यानेगंधर्वाणांसमागमे ॥ २६ ॥ सर्वत्रैवकथातस्यविस्तारमगमत्किल ॥ किंकृतंदुष्कृतंकर्मशक्रेणाऽद्यजिघांसता ॥ २७ ॥ वृत्रंछलेनविश्वस्तंमुनिभिश्चप्रतारितम् ॥ वेदप्रमाणमुत्सृज्यस्वीकृतंसौगतंमतम् ॥ २८ ॥ यदयंनिहतःशत्रुर्वंचयित्वाऽतिसाहसात् ॥ कोनामवचनंदत्त्वाविपरीतमथाऽऽचरेत् ॥ २९ ॥ विनाशक्रंहरिंवाऽपियथाऽर्यविनिपातितः ॥ एवंविधाःकथाश्चाऽन्याःसमाजेष्वभवन्भृशम् ॥ ३० ॥ शुश्रावेंद्रोऽपिविविधाःस्वकीर्तेर्हानिकारकाः ॥ यस्यकीर्तिर्हतालोकेधिक्तस्यैवकुजीवितम् ॥ ३१ ॥ यंदृष्ट्वापथिगच्छंतंशत्रुःस्मेरमुखोभवेत् ॥ इंद्रद्युम्नोऽपिराजर्षिःपतितःकीर्तिसंक्षयात् ॥ ३२ ॥ स्वर्गादकृतपापोऽसौपापकृत्किंनपात्यते ॥ स्वल्पेऽपराधेऽपिनृपोययातिःपतितःकिल ॥ ३३ ॥

चाऽयंब्रह्महेतिशनैःपरस्परंनिंदांचक्रुरित्याह । ब्रह्महेति ॥ किंचसर्वत्रतत्तत्स्थलेषुनानाविधावार्ताश्चाऽभवन्नित्याह । कोनामेति ॥ २५ ॥ देवगोष्ठ्यांदेवस्थाने ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ यथाऽयंविनिपातितस्तथाविपरीतंकर्महरिंशक्रंविनाकोनामाऽऽचरेत्इतिपूर्वेणान्वयः ॥ नकोपीत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ इंद्रद्युम्नोपीति ॥ पुण्यवानपिकीर्तिसंक्षयात्पतितःकिंपुनर्मादृशःपापीत्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

देवोद्यानेनंदनवनेहरिरिंद्रः ॥ पराशक्तेः प्रासादंमहांतमकरोदित्यर्थः ॥ तस्मिन्प्रासादेपद्मरागमणेररुणवर्णरत्नस्यनिर्मितांश्रीभुवनेश्वर्यामूर्तिंपूर्वंयथादर्शनंजातंतथाकृत्वास्थापयामासे त्यर्थः ॥ ६३ ॥ तदाप्रभृतितस्मात्कालादारभ्यश्रीदेवीभुवनेश्वरीदेवानांकुलदैवतंवंशपरंपरोपास्यमिष्टदैवतमभूदित्यर्थः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ इत्थमिति ॥ इत्थंपूर्वोक्तप्रकारेणयतो वृत्रनामकोदैत्यः पराशक्तेःप्रवेशःसंचरणंतद्युक्तफेनतः फेनपिंडेनशक्रेणसहसाहतस्तस्मात् किंचतयापरशक्त्याकृतोयोदैत्यस्यमोहोदेवमैत्रीकरणेअविवेकस्तस्माच्चेत्यर्थः ॥ ६७ ॥ ततो वृत्रेति ॥ ततस्तस्मात्कारणाद्देवीवृत्रासुरनिहंत्रीतिलोकेषुगीयते ॥ तथामधुकैटभवधोविष्णुनाकृतोऽपिदेवीप्रसादमंतरातस्याऽजायमानत्वाद्देवीकृतइत्युच्यतेतद्वादितिभावः ॥ ६८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अर्धोनयात्रिषष्ट्यातुयुतैःपद्यैरनंतरम् ॥ गुप्तवासोवासवस्यनहुषस्याऽभिषेचनम् ॥ १ ॥ वृत्रवधानंतरंजातंवृत्त

देवोद्यानेपराशक्तेःप्रासादमकरोद्धरिः ॥ पद्मरागमयींमूर्तिंस्थापयामासवासवः ॥ ६३ ॥ त्रिकालंमहतींपूजांचक्रुःसर्वेऽपिनिर्जराः ॥ तदाप्रभृतिदेवानांश्री देवीकुलदैवतम् ॥ ६४ ॥ विष्णुंत्रिभुवनश्रेष्ठंपूजयामासवासवः ॥ ततोहतेमहावीर्येवृत्रेदेवभयंकरे ॥ ६५ ॥ प्रववौचशिवोवायुर्जहृषुर्देवतास्तथा ॥ हते तस्मिन्सगंधर्वायक्षराक्षसकिन्नराः ॥ ६६ ॥ इत्थंवृत्रःपराशक्तिप्रवेशयुतफेनतः ॥ तयाकृतविमोहाच्चशक्रेणसहसाहतः ॥६७॥ ततोवृत्रनिहंत्रीतिदेवीलो केषुगीयते ॥ शक्रेणनिहतत्वाच्चशक्रेणहतउच्यते ॥ ६८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणे षष्ठस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच अथतंपतितंदृष्ट्वाविष्णुर्विष्णुपुरींययौ ॥ मनसाशंकमानस्तुतस्यहत्याकृतंभयम् ॥ १ ॥ इंद्रोऽपिभयसंत्रस्तोययाविंद्रपुरींततः ॥ मुनयोभयसंविग्नाह्यभ वन्निहतेरिपौ ॥ २ ॥ किमस्माभिःकृतंपापंयदसौवंचितःकिल ॥ मुनिशब्दोवृथाजातःसुरेशस्यचसंगमात् ॥ ३ ॥ अस्माकंवचनाद्वृत्रोविश्वासमगमत्कि ल ॥ विश्वासघातिनःसंगाद्वयंविश्वासघातकाः ॥ ४ ॥ धिगियंममतापापमूलमेवमनर्थकृत् ॥ यदस्माभिश्छलंकृत्वाशपथैर्वंचितोऽसुरः ॥ ५ ॥ मंत्रकृद्बु द्धिदाताचप्रेरकःपापकारिणाम् ॥ पापभाक्सभवेन्नूनंपक्षकर्तातथैवच ॥ ६ ॥ विष्णुनाऽपिकृतंपापंयत्साहाय्यमवाप्तवान् ॥ वज्रंप्रविश्ययेनाऽसौपातितः सत्त्वमूर्तिना ॥ ७ ॥ नूनंस्वार्थपरःप्राणीनपापात्त्रासमश्नुते ॥ हरिणाहरिसंगेनसर्वथादुष्कृतंकृतम् ॥ ८ ॥ द्वावेवस्तःपदार्थानांद्वावेवनिधनंगतौ ॥ प्रथम श्चतुरीयश्चयौत्रिलोक्यांतुदुर्लभौ॥९॥अर्थकामौप्रशस्तौद्वौसर्वेषांसंमतौप्रियौ ॥ धर्मधर्मेतिवाग्वादोदंभोऽयंमहतामपि ॥ १० ॥ मुनयोऽपिमनस्तापमेवं कृत्वापुनःपुनः ॥ जग्मुःस्वानाश्रमानेवविमनस्काहतोद्यमाः ॥ ११ ॥

माह। अथतमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ हरिणाविष्णुनाहरिसंगेनेंद्रसंगेन ॥ ८ ॥ द्वावेवस्तइति ॥ पदार्थानांधर्मार्थकाममोक्षरूपाणांमध्येद्वावेवपदार्थौवक्ष्यमाणौ विद्यमानौस्तः ॥ द्वावेवचनिधनंनाशंगतौ ॥ ननुकौतौनिधनंगतौतत्राह । प्रथमश्चतुरीयश्चेति ॥ धर्ममोक्षावित्यर्थः ॥ यौत्रिलोक्यांदुर्लभौतौधर्ममोक्षौसर्वथास्मिन्समयेउच्छिन्नावित्यर्थः ॥ ९ ॥ कौविद्यमानौस्तस्तत्राह । अर्थकामाविति ॥ सर्वेर्थकामपरायणाजाताइत्यर्थः ॥ ननुनधर्मोऽद्याप्युच्छिन्नोयतोलोकेधर्मःकर्तव्योऽयंधर्मोऽयंधर्मइतिवदंतीतिचेत्तत्राह। धर्मधर्मेति॥ वाग्वादोवाचाकेवलंभाषणमेवोर्वारितंनधर्मस्वरूपंकुत्राऽपिदृश्यतइत्यर्थः ॥ ननुसवाग्वादःकिमर्थमितिचेद्दंभार्थमित्याह । दंभोऽयमिति ॥ लोकैर्धार्मिकाएतेरामकृष्णपंडिताइत्येवंवक्तव्यमे तदर्थमित्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदंकथाद्वयंमहाभारतेप्रसिद्धम् ॥ भृगुपत्नीति ॥ इयंचकथाऽत्रैवचतुर्थस्कंधेप्रसिद्धा ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

नृपःकर्कटतांप्राप्तोयुगानष्टादशैवतु ॥ भृगुपत्नीशिरश्छेदाद्भगवान्हरिरच्युतः ॥ ३४ ॥ ब्रह्मशापात्पशोर्योनौसंजातोमकरादिषु ॥ विष्णुश्चवामनोभूत्वा याचनार्थंबलेर्गृहे ॥ ३५ ॥ गतःकिमपरंदुःखंप्राप्नोतिदुष्कृतीनरः ॥ रामोऽपिवनवासेषुसीताविरहजंबहु ॥ ३६ ॥ दुःखंचप्राप्तवान्घोरंभृगुशापेनभारत ॥ तथेंद्रोऽपिब्रह्महत्याकृतंप्राप्यमहद्भयम् ॥ ३७ ॥ नस्वास्थ्यंप्रापगेहेऽसौसर्वसिद्धिसमन्विते ॥ पौलोमीतंसभाहीनंदृष्ट्वाप्रोवाचवासवम् ॥ ३८ ॥ निःश्वसंतंभयत्रस्तंनष्टसंज्ञंविचेतनम् ॥ किंप्रभोऽद्यभयार्तोऽसिमृतस्तेदारुणोरिपुः ॥ ३९ ॥ काचिंतावर्ततेकांततवशत्रुनिषूदन॥कस्माच्छोचसिलोकेशनिःश्वसन्प्राकृतोयथा ॥ ४० ॥ नाऽन्योऽस्तिबलवाञ्छत्रुर्येनचिंतापरोभवान् ॥ इंद्रउवाच ॥ नाऽरातिर्बलवान्मेऽस्तिनशांतिर्नसुखंतथा ॥ ४१ ॥ ब्रह्महत्याभयाद्राज्ञिबिभेमिसततंगृहे ॥ नंदनंनसुखाकारंनाऽमृतंनगृहंवनम् ॥ ४२ ॥ गंधर्वाणांतथागेयंनृत्यमप्सरसांपुनः ॥ नत्वंसुखकरानारीनानाचसुरयोषितः ॥ ४३ ॥ नतथाकामधेनुश्चदेववृक्षःसुखप्रदः ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिक्वशर्ममममजायते ॥ ४४ ॥ इतिचिंतापरःकांतेनलभेसुखमात्मनि ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वावचनंशक्रःप्रियांपरमकातराम् ॥ ४५ ॥ निर्जगामगृहान्मंदोमानसंसरउत्तमम् ॥ पद्मनालेप्रविष्टोसौभयार्तःशोककर्षितः ॥ ४६ ॥ नप्रज्ञायतदेवेंद्रस्त्वभिभूतश्चकल्मषैः ॥ प्रतिच्छन्नोवसत्यप्सुचेष्टमानइवोरगः ॥४७॥ असहायस्तुराषाडैचिंतार्तोविकलेंद्रियः॥ततःप्रनष्टेदेवेंद्रेब्रह्महत्याभयार्दिते ॥४८॥ सुराश्चितातुराश्चासन्नुत्पाताश्चाऽभवन्नथ॥ऋषयःसिद्धगंधर्वाभयार्ताश्चाऽभवन्भृशम् ॥ ४९ ॥ अराजकंजगत्सर्वमभिभूतमुपद्रवैः ॥ अवर्षणंतदाजातंपृथिवीक्षीणवैभवा ॥ ५० ॥ विच्छिन्नस्रोतसोनद्यःसरांस्यनुदकानिवै ॥ एवंत्वराजकेजातेदेवतामुनयस्तथा ॥ ५१ ॥ विचार्यनहुषंचक्रुःशक्रंसर्वेदिवौकसः ॥ संप्राप्यनहुषोराजाधर्मिष्ठोऽपिरजोबलात् ॥ ५२ ॥ बभूवविषयासक्तःपंचबाणशराहतः ॥ अप्सरोभिर्वृतःक्रीडन्देवोद्यानेषुभारत ॥ ॥५३॥ शक्रपत्नीगुणाञ्छ्रुत्वाचकमेतांसपार्थिवः ॥ ऋषीनाहकिमिंद्राणीनोपगच्छतिमांकिल ॥ ५४ ॥ भवद्भिश्चामरैःसर्वैःकृतोऽहंवासवस्त्विह ॥ प्रेषयध्वंसुराःकामंसेवार्थंममवैशचीम् ॥ ५५ ॥ प्रियंचेन्ममकर्तव्यंसर्वथामुनयोऽमराः ॥ अहमिंद्रोऽद्यदेवानांलोकानांचतथेश्वरः ॥ ५६ ॥ आगच्छतुशचीमद्यक्षिप्रमद्यनिवेशनम् ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादेवादेवर्षयस्तथा ॥५७॥ गत्वाचिंतातुराःप्रोचुःपौलोमींप्रणतास्ततः ॥ इंद्रपत्निदुराचारोनहुषस्त्वामिहेच्छति ॥ ५८ ॥ कुपितोऽस्मानुवाचेदंप्रेषयध्वंशचीमिह ॥ किंकुर्मस्तदधीनाःस्मयेनेंद्रोऽयंकृतःकिल ॥ ५९ ॥

॥ ४७ ॥ तुराषाडिंद्रः ऐत् अगच्छत् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ अर्धाधिकैकसप्तत्याश्लोकानांनहुषेनृपे ॥ शच्यासक्तमतौसातुदेवींचित्तेचकारह ॥ देवीप्रसादत श्चेंद्रंददर्शचशचीततः ॥ १ ॥ बृहस्पतिनाऽभयेदत्तेतदुत्तरंजातंवृत्तमाह । नहुषइति ॥ आंगिरसंबृहस्पतिम् ॥१॥ इतीत्यस्याहेत्यनेनान्वयः ॥ कुतोहंतव्यइत्यत्रहेतुमाह । गृहेमूढस्तांरक्ष

तच्छ्रुत्वादुर्मनादेवीबृहस्पतिमुवाचह ॥ रक्षमांनहुषाद्ब्रह्मंस्तवाऽस्मिशरणंगता ॥ ६० ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ नभेतव्यंत्वयादेविनहुषात्पापमोहितात् ॥ नत्वांदास्याम्यहंवत्सेत्यक्त्वाधर्मसनातनम् ॥ ६१ ॥ शरणागतमार्तंचयोददातिनराधमः ॥ सएवनरकंयातियावदाभूतसंप्लवम् ॥ ६२ ॥ स्वस्थाभवपृथुश्रोणिनत्यक्ष्येत्वांकदाचन ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंन्धेवृत्रवधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ नहुषस्त्वथतांश्रुत्वागुरोस्तुशरणंगताम् ॥ चुक्रोधस्मरबाणार्तस्तमांगिरसमाशुवै ॥ १ ॥ देवानाहांगिरासूनुर्हंतव्योऽयंमयाकिल ॥ इतींद्राणींगृहेमूढोरक्षतीतिमयाश्रुतम् ॥ २ ॥ इतितंकुपितंदृष्ट्वादेवाःसर्षिपुरोगमाः ॥ अब्रुवन्नहुषंघोरंसामपूर्वंवचस्तदा ॥ ३ ॥ क्रोधंसंहरराजेंद्रत्यजपापमतिंप्रभो ॥ निंदंतिधर्मशास्त्रेषुपरदाराभिमर्शनम् ॥ ४ ॥ शक्रपत्नीसदासाध्वीजीवमानेपतौपुनः ॥ कथमन्यंपतिंकुर्यात्सुभगाऽतिपतिव्रता ॥ ५ ॥ त्रिलोकीशस्त्वमधुनाशास्ताधर्मस्यवैविभो ॥ त्वादृशोऽधर्ममातिष्ठेत्तदानश्येत्प्रजाध्रुवम् ॥ ६ ॥ सर्वथाप्रभुणाकार्यंशिष्टाचारस्यरक्षणम् ॥ वारमुख्याश्चशतशोवर्ततेऽत्रशचीसमाः ॥ ७ ॥ रतिस्तुकारणंप्रोक्तंशृंगारस्यमहात्मभिः ॥ रसहानिर्बलात्कारेकृतेसतितुजायते ॥ ८ ॥ उभयोःसदृशंप्रेमयदिपार्थिवसत्तम ॥ तदावैसुखसंपत्तिरुभयोरुपजायते ॥ ९ ॥ तस्माद्भावमिमंमुंचपरदाराभिमर्शने ॥ सद्भावंकुरुदेवेंद्रपदंप्राप्तोस्यनुत्तमम् ॥ १० ॥ ऋद्धिक्षयस्तुपापेनपुण्येनाऽतिविवर्धनम् ॥ तस्मात्पापंपरित्यज्यसन्मतिंकुरुपार्थिव ॥ ११ ॥ नहुषउवाच ॥ गौतमस्ययदाभुक्तादाराःशक्रेणदेवताः ॥ वाचस्पतेस्तुसोमेनक्वयूयंसंस्थितास्तदा ॥१२॥ परोपदेशेकुशलाःप्रभवंतिनराःकिल ॥ कर्ताचैवोपदेष्टाचदुर्लभःपुरुषोभवेत् ॥१३॥ मामागच्छतुसादेवीहितंस्याद्द्रुतंहिवः ॥ एतस्याःपरमंदेवाःसुखमेवंभविष्यति ॥१४॥ अन्यथानहितुष्येऽहंसत्यमेतद्ब्रवीमिवः ॥ विनयाद्बाबलाद्वाऽपितामाशुप्रापयंत्विह ॥१५॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादेवाश्चमुनयस्तथा ॥ तमूचुश्चाऽतिसंत्रस्तानहुषंमदनातुरम् ॥१६॥ इंद्राणीमानयिष्यामःसामपूर्वंतवांतिकम् ॥ इत्युक्त्वातेतदाजग्मुर्बृहस्पतिनिकेतनम् ॥ १७ ॥ व्यासउवाच ॥ तेगत्वांगिरसःपुत्रंप्रोचुःप्रांजलयःसुराः ॥ जानीमःशरणंप्राप्तामिंद्राणींतववेश्मनि ॥ १८ ॥ सादेयानहुषायाऽद्यवासवोऽसौकृतोयतः ॥ वृणोत्वियंवरारोहापतित्वेवरवर्णिनी ॥ १९ ॥

तीति ॥ इतिहेतोरितिशेषः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रजाध्रुवमिति ॥ यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनइतिन्यायात्त्वंदेवराजोऽपिसन्परदारलंपटश्चेत्सर्वेऽपिपरदारलंपटाभवेयुरित्यर्थः ॥ ॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥ देवताइतिसंबोधनांतम् ॥ सोमेनचंद्रेणतुवाचस्पतेर्गुरोर्दाराभुक्ताइत्यन्वयः । तदायूयंधर्मज्ञाःक्वस्थितास्तस्मिन्समयेतयोरुपदेशःकिमितिभवद्भिर्नकृतइतिभावः ॥ ॥ १२ ॥ १३ ॥ एतस्याइंद्राण्याःसुखमित्यन्वयः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ अंगिरसःपुत्रंबृहस्पतिम् ॥ १८ ॥ १९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २० ॥ २१ ॥ कोऽसावुपायःकर्तव्यइतिचेत्तमुपायंस्वयमेवाह ॥ तत्रगत्वेति ॥ पतिमिंद्रंमृतंज्ञात्वाभजेभजिष्ये ॥ वर्तमानसामीप्येभविष्यतिलट् ॥ इतिसमयंकरोत्वित्यर्थः ॥ २२॥ मेमत्स्वामिनींद्रेइत्यन्वयः । ननुपतिर्मृतइतिज्ञानंकथंभविष्यतीतिचेन्मयाऽन्वेषणार्थंगंतव्यंतदाभविष्यतीत्याशयेनाह । अन्वेषणार्थमिति ॥२३॥२४॥ इंद्रपत्न्यासहिताइत्यन्वयः ॥२५॥ कृत्रिमवासवोनहुषः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ मेहृदिस्थितः ॥ संदेहस्तस्यनिर्णयंयावत्कुर्वेइत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

बृहस्पतिःसुरानाहतच्छ्रुत्वादारुणंवचः ॥ नाऽहंत्यक्ष्येतुपौलोमींसतींचशरणागताम् ॥ २० ॥ देवाऊचुः ॥ उपायोऽन्यःप्रकर्तव्योयेनसोऽद्यप्रसीदति ॥ अन्यथाकोपसंयुक्तोदुराराध्योभविष्यति ॥ २१ ॥ गुरुरुवाच ॥ तत्रगत्वाशचीभूपंप्रलोभ्यवचसाभृशम् ॥ करोतुसमयंबालापतिंज्ञात्वामृतंभजे ॥२२॥ इंद्रेजीवतिमेकांतेकथमन्यंकरोम्यहम् ॥ अन्वेषणार्थंगंतव्यंमयातस्यमहात्मनः ॥ २३ ॥ इतिसासमयंकृत्वावंचयित्वाचभूपतिम् ॥ भर्तुरानयनेयत्नंक रोतुममवाक्यतः ॥ २४ ॥ इतिसंचिंत्यतेसर्वेबृहस्पतिपुरोगमाः ॥ नहुषंसहिताजग्मुरिंद्रपत्न्यादिवौकसः ॥ २५ ॥ तानागतान्समीक्ष्याऽहतदाकृत्रिम वासवः ॥ जहर्षचमुदायुक्तस्तांवीक्ष्यमुदितोऽब्रवीत् ॥२६॥ अद्याऽस्मिवासवःकांतेभजमांचारुलोचने॥पतित्वेसर्वलोकस्यपूज्योऽहंविहितःसुरैः ॥२७॥ इत्युक्तासानृपंप्राहवेपमानात्रपायुता ॥ वरमिच्छाम्यहंराजंस्त्वत्तःप्राप्तुंसुरेश्वर ॥ २८ ॥ किंचित्कालंप्रतीक्षस्वयावत्कुर्वेविनिर्णयम् ॥ इंद्रोऽस्तीतिनवा ऽस्तीतिसंदेहोमेहृदिस्थितः ॥२९॥ ततस्त्वांसमुपस्थास्येकृत्वानिश्चयमात्मनि ॥ तावत्क्षमस्वराजेंद्रसत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥३०॥ नहिविज्ञायतेशक्रोनष्टः किंवाक्वगतः ॥ एवमुक्तःसइंद्राण्यानहुषःप्रीतिमानभूत् ॥ ३१ ॥ व्यसर्जयत्सतांदेवींतथेत्युक्त्वामुदान्वितः ॥ साविसृष्टानृपेणाऽऽशुगत्वाप्राहसुरान्स ती॥ ३२ ॥इंद्रस्याऽऽगमनेयत्नंकुरुताऽद्यकृतोद्यमाः ॥ श्रुत्वातद्वचनंदेवाइंद्राण्यारसवच्छुचि॥ ३३॥ मंत्रयामासुरेकाग्राःशक्रार्थंनृपसत्तम ॥ तेगत्वावै ष्णवंधामतुष्टुवुःपरमेश्वरम् ॥ ३४ ॥ आदिदेवंजगन्नाथंशरणागतवत्सलम् ॥ ऊचुश्चैनंसमुद्विग्नावाक्यंवाक्यविशारदाः ॥ ३५ ॥ देवदेवःसुरपतिर्ब्रह्महत्या प्रपीडितः ॥ अदृश्यःसर्वभूतानांक्वापितिष्ठतिवासवः ॥ ३६ ॥ त्वद्धियानिहतेविप्रेब्रह्महत्यावृतःप्रभो ॥ त्वंगतिस्तस्यभगवन्नस्माकंचतथैवहि ॥ ३७ ॥ त्राहिनःपरमापन्नान्मोक्षंतस्यविनिर्दिश ॥ देवानांवचनंश्रुत्वाकातरंविष्णुरब्रवीत् ॥ ३८ ॥ यजतामश्वमेधेनशक्रपापनिवृत्तये ॥ पुण्येनहयमेधेनपावि तःपाकशासनः ॥ ३९ ॥ पुनरेष्यतिदेवानामिंद्रत्वमकुतोभयः॥हयमेधेनसंतुष्टादेवीश्रीजगदंबिका ॥ ४० ॥ ब्रह्महत्यादिपापानिनाशयिष्यत्यसंशयम्॥ यस्याःस्मरणमात्रेणपापजालंविनश्यति ॥ ४१ ॥ किंपुनर्वाजिमेधेनतत्प्रीत्यर्थंकृतेनच ॥ इंद्राणीकुरुतान्नित्यंभगवत्याःप्रपूजनम् ॥ ४२ ॥

॥ ३९ ॥ हयमेधःकिंदेवतोद्देशेनकर्तव्यस्तत्राह । हयमेधेनसंतुष्टेति ॥ श्रीदेवीप्रीत्यर्थमश्वमेधःकर्तव्यइत्यर्थः ॥४०॥ कैमुतिकन्यायेनाह । यस्याःस्मरणमात्रेणेति ॥ ४१ ॥ इतींद्रकर्तव्य मुक्त्वाशचीकर्तव्यमाह । इंद्राणीति ॥ कुरुतान्नित्यमिति ॥ ४२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४३ ॥ एनसापापेन ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ जग्मुस्तंदेशमितिपूर्वंदेवैर्ज्ञातएवदेशोनहुषभयान्नप्रकटीकृतोऽथवातस्मिन्समयेबहुतरंशोधंकृत्वातंदेशंजग्मुरितिवाऽर्थःकर्तव्यः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ कालाकांक्षीउदयकालंप्रतीक्षमाणोनहुषभयाद्यस्मिन्स्थलेऽश्वमेधःकृतस्तत्स्थलंपरित्यज्यदेवानामप्यगोचरेकचिज्जलेपद्मनालेकस्मिंश्चिद्वचातिष्ठत्र स्थितवानित्यर्थः ॥ अतएवस वासवइंद्राण्यानज्ञातइतिवक्ष्यमाणग्रंथेननविरोधः ॥ अन्यथादेवैर्ज्ञातत्वादिंद्राण्याज्ञातएवेतितद्विरोधःस्यादेवेति ॥४९॥ स्थानेस्वस्थानेदेवागताइत्यर्थः ॥५०॥ किमदृश्यइति । यज्ञकाले प्रकटोजातःपुनःकथमदृश्योजातइत्यर्थः॥५१॥५२॥केवलंदर्शनेनाऽपिकिंफलम् यदितस्यराज्यप्राप्तिर्नस्यात्तस्मात्तस्यराज्यप्राप्त्युपायमपिवदेत्यभिप्रायंशच्याजानन्नाह । आराधितेति॥ पातयिष्यतीति ॥ ततइंद्रस्यराज्यप्राप्तिर्भविष्यतीत्यर्थः ॥५३॥ पुलोमतनयाशचीगुरोःसकाशात्ससाधनंमंत्रंसिद्धिसाधनसहितंमंत्रंविधिवद्दीक्षयोक्तविधिनाजग्राहेत्यर्थः ॥ साधनंतुऋष्या

आराधनंशिवायास्तुसुखकारिभविष्यति ॥ नहुषोऽपिजगन्मातुर्मायया मोहितःकिल ॥ ४३ ॥ विनाशंस्वकृतेनाऽऽशुगमिष्यत्येनसासुराः ॥ पावितश्चा ऽश्वमेधेनतुराषाडपिवैभवम् ॥ ४४ ॥ प्राप्स्यत्यचिरकालेनस्वमासनमनुत्तमम् ॥ तेतुश्रुत्वाशुभांवाणींविष्णोरमिततेजसः ॥४५॥ जग्मुस्तंदेशमनिशं यत्राऽऽस्तेपाकशासनः ॥ तमाश्वास्यसुराःशक्रंबृहस्पतिपुरोगमाः ॥ ४६ ॥ कारयामासुरखिलंहयमेधंमहाक्रतुम् ॥ विभज्यब्रह्महत्यांतुवृक्षेषुचनदीषुच ॥ ४७ ॥ पर्वतेषुपृथिव्यांचस्त्रीषुचैवाऽक्षिपद्विभुः ॥ तांविसृज्यचभूतेषुविपापःपाकशासनः ॥ ४८ ॥ विज्वरःसमभूद्भूयःकालाकांक्षीस्थितोजले ॥ अदृ श्यःसर्वभूतानांपद्मनालेव्यतिष्ठत ॥ ४९ ॥ देवास्तुनिर्गताःस्थानेकृत्वाकार्यंतदद्भुतम् ॥ पौलोमीतुगुरुंप्राहदुःखिताविरहाकुला ॥ ५० ॥ कृतयज्ञोऽपि मेभर्ताकिमदृश्यःपुरंदरः ॥ कथंद्रक्ष्येप्रियंस्वामिंस्तमुपायंवदस्वमे ॥५१॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ त्वमाराधयपौलोमिदेवींभगवतींशिवाम् ॥ दर्शयिष्यतितेनाथंदेवीविगतकल्मषम् ॥ ५२ ॥ आराधिताजगद्धात्रीनहुषंवारयिष्यति ॥ मोहयित्वानृपंस्थानात्पातयिष्यतिचांबिका ॥ ५३ ॥ इत्युक्तासातदातेनपु लोमतनयानृप ॥ जग्राहमंत्रंविधिवद्गुरोर्देव्याःससाधनम् ॥ ५४ ॥ विद्यांप्राप्यगुरोर्देवींदेवींश्रीभुवनेश्वरीम् ॥ सम्यगाराधयामासबलिपुष्पार्चनैःशुभैः ॥ ५५ ॥ त्यक्तान्यभोगसंभारातापसीवेषधारिणी ॥ चकारपूजनंदेव्याःप्रियदर्शनलालसा ॥ ५६ ॥ कालेनकियतातुष्टाप्रत्यक्षंदर्शनंददौ॥ सौम्यरूपध रादेवीवरदाहंसवाहिनी ॥ ५७ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशाचंद्रकोटिसुशीतला ॥ विद्युत्कोटिसमानाभाचतुर्वेदसमन्विता ॥ ५८ ॥

दिन्यासादिपुरश्चरणांतंमंत्रकल्पोक्तंग्राह्यम् ॥ ५४ ॥ कोऽसौमंत्रोगृहीतइतिचेत्तत्राह। विद्यामिति ॥ श्रीभुवनेश्वरींमहाविद्यांप्राप्येत्यन्वयः ॥ हृल्लेखात्मकश्रीभुवनेश्वरीमंत्रंप्राप्येत्यर्थः ॥ अयंचमंत्रःसर्वमंत्रोत्तमोत्तमः ॥ मुख्यत्वेनमायाविशिष्टब्रह्मप्रतिपादकत्वादतएवैतन्मंत्रस्यैवमायाबीजशक्तिबीजप्रकृतिबीजदेवीप्रणवेत्यादयःसंज्ञाः ॥ स्पष्टीकृतंचैतद्विस्तरेणसप्रमाणम स्माभिः शक्तितत्त्वविमर्शिन्याम् ॥ मंत्रशास्त्रविदांवैदिकानामुपनिषद्रागविदांचस्पष्टमेवैतत् ॥ ५५ ॥ त्यक्तेति ॥ पुरश्चरणोक्तव्रतपराभूत्वेत्यर्थः ॥ ५६ ॥ हंसवाहिनीत्यनेनभुवनेश्वर्या हंसोवाहनमस्तीतिबोधितम् ॥ ५७ ॥ कोटिसूर्येत्यादिनातेजोवत्त्वातिशयोद्योतितः ॥ चतुर्वेदसमन्वितेति ॥ चतुर्दिक्षुविद्यमानैश्चतुर्भिर्वेदैःस्तुतिंकुर्वद्भिःसमन्विता वेदचतुष्टयप्रतिपाद्ये तितेनबोधितम् ॥ ५८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पाशांकुशेति ॥ आयुधध्यानंपूर्वमुक्तंनविस्मर्तव्यम् ॥ आयुधार्थस्तुश्रीमच्छंकराचार्यैःप्रपंचसारेभुवनेश्वरीपटलेउक्तः धातूद्वौस्तोरक्षणव्यापकार्थावित्यादिग्रंथेनसततएवावगंतव्योनेहावि तन्यते ॥ आपादेति ॥ मुक्ताफलानांवैजयंतीमालेत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ सौम्यानंतेति ॥ सौम्याःशांतिदांत्यादयोयेऽनंतरसामोक्षदायकास्तैर्युक्तंपरिपूर्णस्तनद्वयंतेनविराजिताआतिपुष्ट स्तनयोरुत्प्रेक्षेयम् ॥ ६१ ॥ कूटस्थाक्षरंब्रह्म तद्रूपिणी ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ शक्रपत्नीमुत्साहयति । वरदाऽहंसमायातेति ॥ ६४ ॥ अनेककोटीति ॥ तदुक्तमुमासंहितायांशिवपुराणे ॥ वक्तुंशक्यंनतत्पुण्यंयेनदेवीप्रदृश्यतइति ॥ इत्युक्तेति ॥ देव्याउक्तासाशक्रपत्नीपुरोऽग्रदेशेप्रणतासतीतांदेवींभगवतीमाहेत्यन्वयः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ तांशक्र

पाशांकुशाभयवरान्दधतीनिजबाहुभिः ॥ आपादलंबिनींस्वच्छांमुक्तामालांचबिभ्रती ॥ ५९ ॥ प्रसन्नस्मेरवदनालोचनत्रयभूषिता ॥ आब्रह्मकीटजन नीकरुणामृतसागरा ॥ ६० ॥ अनंतकोटिब्रह्मांडनायिकापरमेश्वरी ॥ सौम्यानंतरसैर्युक्तस्तनद्वयविराजिता ॥ ६१ ॥ सर्वेश्वरीचसर्वज्ञाकूटस्थाक्षररूपि णी ॥ तामुवाचप्रसन्नासाशक्रपत्नींकृतोद्यमाम् ॥ ६२ ॥ मेघगंभीरशब्देनमुदमाददतीभृशम् ॥ देव्युवाच ॥ वरंवरयसुश्रोणिवांछितंशक्रवल्लभे ॥ ६३ ॥ ददाम्यद्यप्रसन्नास्मिपूजितासुभृशंत्वया ॥ वरदाऽहंसमायातादर्शनंसहजंनमे ॥ ६४ ॥ अनेककोटिजन्मोत्थपुण्यपुंजैर्हिलभ्यते ॥ इत्युक्तासातदादेवींता माहप्रणतापुरः ॥ ६५ ॥ शक्रपत्नीभगवतींप्रसन्नांपरमेश्वरीम् ॥ वांछामिदर्शनंमातःपत्युःपरमदुर्लभम् ॥६६॥ नहुषाद्भयनाशंचस्वपदप्रापणंतथा ॥ दे व्युवाच ॥ गच्छत्वमनयादूत्यासार्द्धंश्रीमानसंसरः ॥ ६७ ॥ यत्रमेमूर्तिरचलाविश्वकामाभिधामता ॥ तत्रपश्यसिशक्रंत्वंदुःखितंभयविह्वलम् ॥ ६८ ॥ मोहयिष्यामिराजानंकालेनकियतापुनः ॥ स्वस्थाभवविशालाक्षिकरोमितवचोप्सितम् ॥ ६९ ॥ भ्रंशयिष्यामिभूपालंमोहितंत्रिदशासनात् ॥ व्यासउ वाच ॥ देवीदूतीतांगृहीत्वाशक्रपत्नींत्वरान्विता ॥ ७० ॥ प्रापयामाससान्निध्यंस्वपत्युःपरमेश्वरीम् ॥ सादृष्ट्वातंपतिंबालासुरेशंगुप्तसंस्थितम् ॥ ७१ ॥ मुदिताभूद्भरंवीक्ष्यबहुकालाभिवांछितम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेशक्रदर्शनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ छ ॥ व्यासउवाच ॥ तां वीक्ष्यविपुलापांगींरहःशोकसमन्विताम् ॥ आखंडलःप्रियांभार्यांविस्मितश्चाऽब्रवीत्तदा ॥ १ ॥ कथमत्राऽगताकांतेकथंज्ञातस्त्वयाह्यहम् ॥ दुर्ज्ञेयःसर्व भूतानांसंस्थितोऽस्मिशुभानने ॥ २ ॥ शच्युवाच ॥ देवदेव्याःप्रसादेनज्ञातोऽस्यद्यभवानिह ॥ पुनस्तस्याःप्रसादेनप्राप्तास्मित्वांदिवस्पते ॥ ३ ॥ नहुषोनामराजर्षिःस्थापितोभवदासने ॥ त्रिदशैर्मुनिभिश्चैवसमांबाधतिनित्यशः ॥ ४ ॥ पतिंमांकुरुचार्वंगितुरासाहंसुराधिपम् ॥ एवंवदतिमांपाप्मा किंकरोमिबलार्दन ॥ ५ ॥ इंद्रउवाच ॥ कालाकांक्षीवरारोहेसंस्थितोऽस्मियदृच्छया ॥ तथात्वमपिकल्याणिसुस्थिरंस्वमनःकुरु ॥ ६ ॥

पत्नींसादेव्यादत्तादूतीगृहीत्वास्वपत्युःसान्निध्यंप्रापयामासेत्यन्वयः ॥७०॥ अत्रस्वशब्देनशचीविवक्षिता । परमेश्वरीमिति शक्रपत्नीविशेषणम् ॥ ७१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठ स्कंधेष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ सप्तषष्टिश्लोकवर्यैर्जगदंबाप्रसादतः ॥ नहुषस्याप्यधःपातोविस्तरेणोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ इंद्रदर्शनेशच्याकृतेसतितदुत्तरंजातंवृत्तमाह । तांवीक्ष्येति ॥ १ ॥ २ ॥ प्राप्तास्मीति ॥ तस्याएवप्रसादेनतवदर्शनमधुनाजातंपुनस्तस्याएवप्रसादेनत्वांप्राप्तास्मिप्राप्स्यामीत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ परेणेति ॥ कामेनभिन्नंसंभिन्नंचित्तंयस्याअतिचंचलानारीकोटिभिरुपायैः ॥ परेणाऽन्येनरक्षितापतिव्रतानैवभवेदित्यन्वयः ॥१४॥ किंतुतत्राह । शीलमेवेति ॥ तस्याःशीलंस्वभावोवासनात्मकस्तांरक्षतीत्यर्थः ॥ शीलंसद्वासनामास्थाय ॥ १५ ॥ नहुषबाधापरिहारोपायमाह ॥ यदात्वामिति ॥ खलोदुष्टः ॥ १६ ॥

व्यासउवाच ॥ इत्युक्तातेनसादेवीपतिनाऽतिप्रशंसिना ॥ निःश्वसंत्याहतंशक्रंवेपमानाऽतिदुःखिता ॥ ७ ॥ कथंतिष्ठेमहाभागपापात्मामांवशानुगाम् ॥ करिष्यतिमदोन्मत्तोवरदानेनगर्वितः ॥८॥देवाश्चमुनयःसर्वेमामूचुस्तद्भयाकुलाः ॥ तंभजस्ववरारोहेदेवराजंस्मरातुरम् ॥ ९ ॥ बृहस्पतिस्तुशत्रुघ्नवाडवोवलवर्जितः ॥ कथंमांरक्षितुंशक्तोभवेद्देवानुगःसदा ॥ १० ॥ तस्माच्चिंताऽस्तिमहतीनार्यहंवशवर्तिनी ॥ अनाथाकिंकरिष्यामिविपरीतेविधौविभो ॥ ॥ ११ ॥ नार्यस्म्यहंनकुलटात्वाच्चित्ताऽतिपतिव्रता ॥ नास्तिमेशरणंतत्रयोमांरक्षतिदुःखिताम् ॥ १२ ॥ इंद्रउवाच ॥ उपायंप्रब्रवीम्यद्यतंकुरुष्ववरानने ॥ शीलंतेदुःस्थितेकालेपरित्रातंभविष्यति ॥ १३ ॥ परेणरक्षितानारीनभवेच्चपतिव्रता ॥ उपायैःकोटिभिःकामभिन्नचित्ताऽतिचंचला ॥ १४ ॥ शीलमेवहिनारीणांसदारक्षतिपापतः ॥ तस्मात्त्वंशीलमास्थायस्थिराभवशुचिस्मिते ॥ १५ ॥ यदात्वांनहुषोराजाबलादाकर्षयेत्खलः ॥ तदात्वंसमयंकृत्वागुप्तंवंचयभूपतिम् ॥ १६ ॥ एकांतेतत्समीपेत्वंगत्वावदमदालसे ॥ ऋषियानेनदिव्येनमामुपैहिजगत्पते ॥ १७ ॥ एवंतववशेप्रीताभविष्यामीतिमेव्रतम् ॥ इतितंवदसुश्रोणितदातुपरिमोहितः ॥ १८ ॥ कामांधःसमुनीन्यानेयोजयिष्यतिपार्थिवः ॥ अवश्यंतापसोभूपंशापदग्धंकरिष्यति ॥ १९ ॥ साहाय्यंजगदंबातेकरिष्यतिनसंशयः ॥ जगदंबापदस्मर्तुःसंकटंनकदाचन ॥२०॥ यदिजायेततच्चाऽपिज्ञेयंतत्स्वस्तयेकिल ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनमणिद्वीपाधिवासिनीम् ॥ २१ ॥ भजत्वंभुवनेशानींगुरुवाक्यानुसारतः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याख्याताशचीतेनजगामनहुषंप्रति ॥ २२ ॥ तथेत्युक्त्वाऽतिविश्वस्ताभाविकार्येकृतोद्यमा ॥ नहुषस्तांसमालोक्यमुदितोवाक्यमब्रवीत् ॥ २३ ॥ स्वागतंसत्यवचनैस्त्वदधीनोस्मिकामिनि ॥ दासोऽहंतवसत्येनपालितंवचनंत्वया ॥२४॥ यदागतासमीपेमेतुष्टोस्मिमितभाषिणि ॥ नचव्रीडात्वयाकार्याभक्तंमांभजसुस्मिते ॥२५॥ कार्यंवदविशालाक्षिकरिष्यामितवप्रियम् ॥ शच्युवाच ॥ सर्वंकृतंत्वयाकार्यंममकृत्रिमवासव ॥ २६ ॥ मनोरथोऽस्तिमेदेवशृणुचित्तेऽधुनाविभो ॥ वांछितंकुरुकल्याणत्वद्वशाऽहमतःपरम् ॥२७॥ ब्रवीमिमानसोत्साहंत्वंतंकर्तुमिहाऽर्हसि ॥ कार्यंत्वंब्रूहिचंद्रास्येकरोमितववांछितम् ॥ २८ ॥

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ यदिजायेतेति ॥ यदिकदाचिद्दुःखंजायेततदाज्ञेयंतद्दुःखंममस्वस्तयेकल्याणायभवति अग्रेमहत्कल्याणंभवतीतिज्ञेयमित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ तथेत्युक्त्वेति ॥ यथेंद्रेणोक्तंतथैवोक्त्वास्थितेतिशेषः ॥ इतिशब्दएवार्थकः ॥ तथैवोक्तेतिपाठःसुगमः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥२९॥ तवयत्प्रियंतत्करोमिकरिष्यामीत्येवंविषयं शपथं कुर्वित्यर्थः ॥३०॥ मेवांछितेकृतेसतीत्यन्वयः ॥३१॥३२॥ ३३॥ वरटापतिर्हंसः ॥ ३४ ॥३५॥ ३६ ॥ सर्वाधिकस्यतवसर्वोत्तमम्मृषिवाहनमेवोचितमित्याह। सर्वदेवाधिकंत्वामिति ॥३७॥३८॥ महादेव्यावरदानसमयेयदुक्तंनहुषंमोहयिष्यामीतितन्मोहनमस्मिन्समयेकृतमित्याह। मोहितस्त्विति ॥ महादेव्याकृते

अलभ्यमपिदास्यामितुभ्यंसुभ्रुवदस्वमाम् ॥ शच्युवाच ॥ कथंब्रवीमिराजेंद्रप्रत्ययोनास्तिमेतव ॥२९॥ शपथंकुरुराजेंद्रयत्करोमिप्रियंतव ॥ राजानः सत्यवचसोदुर्लभाएवभूतले ॥ ३० ॥ पश्चाद्ब्रवीम्यहंराजञ्ज्ञात्वासत्येनयंत्रितम् ॥ कृतेचेद्वांछितेभूपसदातेवशवर्तिनी ॥ ३१ ॥ भविष्यामितुराषाडैस त्यमेतद्वचोमम ॥ नहुषउवाच ॥ अवश्यमेवकर्तव्यंवचनंतवसुंदरि ॥ ३२ ॥ शपामिसुकृतेनाऽहंयज्ञदानकृतेनवै ॥ शच्युवाच॥इंद्रस्यहरयोवाहागजश्चै वरथस्तथा ॥ ३३ ॥ गरुडोवासुदेवस्ययमस्यमहिषस्तथा ॥ वृषभःशंकरस्याऽपिब्रह्मणोवरटापतिः ॥ ३४॥ मयूरःकार्तिकेयस्यगजास्यस्यतुमूषकः॥ इच्छाम्यहमपूर्वंवैवाहनंतेसुराधिप ॥ ३५ ॥ यन्नविष्णोर्नरुद्रस्यनाऽसुराणांनरक्षसाम् ॥ वहंतुत्वांमहाराजमुनयःसंशितव्रताः ॥ ३६ ॥ सर्वेशिविकया राजन्नेतद्धिममवांछितम् ॥ सर्वदेवाधिकंत्वांवैजानामिवसुधाधिप ॥ ३७ ॥ तेनततेजसोवृद्धिंवांछाम्यहमतंद्रिता ॥ व्यासउवाच ॥ तस्यास्तद्वचनंश्रुत्वा प्रहस्यज्ञानदुर्बलः ॥ ३८ ॥ मोहितस्तुमहादेव्याकृतमोहनतत्क्षणम् ॥ उवाचवचनंभूपःसंस्तुवन्वासवप्रियाम् ॥ ३९ ॥ नहुषउवाच ॥ सत्यमुक्तंत्वया तन्विवाहनंरुचिरंमम ॥ करिष्यामिसुकेशांतेवचनंतवसर्वथा ॥ ४० ॥ नह्यल्पवीर्योभवतियोवाहान्कुरुतेमुनीन् ॥ अहमारुह्ययानेनत्वामेष्यामिशुचि स्मिते ॥ ४१ ॥ सप्तर्षयोमांवक्ष्यंतिसर्वेदेवर्षयस्तथा ॥ समर्थंत्रिषुलोकेषुज्ञात्वामांतपसाऽधिकम् ॥ ४२ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वातांसुसंतुष्टोविससर्जहरिप्रियाम् ॥ मुनीनाहूयसर्वांस्तानित्युवाचस्मरान्वितः ॥ ४३ ॥ नहुषउवाच ॥ अहमिंद्रोऽद्यभोविप्राःसर्वशक्तिसमन्वितः ॥ कार्यमत्रप्रकुर्वंतुभवंतो विगतस्मयाः ॥ ४४ ॥ इंद्रासनंमयाप्राप्तंनेंद्राणीमामुपैतिच ॥ आकारिताचमांब्रूतेप्रेमपूर्वमिदंवचः ॥ ४५ ॥ मुनियानेनदेवेंद्रमामुपैहिसुराधिप ॥ देवदेवमहाराजमत्प्रियंकुरुमानद ॥४६॥ एतत्कार्यमुनिश्रेष्ठाममाऽत्यंतंदुरासदम्॥ भवद्भिस्तुप्रकर्तव्यंसर्वथैवदयालुभिः॥४७॥मनोदहतिमेकामःशक्रपत्न्यां प्रवर्तितम् ॥ भवंतःशरणंमेऽद्यकुरुध्वंकार्यमद्भुतम् ॥ ४८ ॥ अगस्तिप्रमुखास्तस्यश्रुत्वावाक्यमसत्करम् ॥ अंगीचक्रुश्चभावित्वात्कृपयापरमर्षयः ॥ ॥ ४९ ॥ अंगीकृतेऽथतद्वाक्येमुनिभिस्तत्वदर्शिभिः ॥ मुदंप्रापनृपःकामंपौलोमीकृतमानसः ॥ ५० ॥

नोत्पादितेनमोहेनेत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ नह्यल्पेति ॥ हियतोयोमुनीन्वाहान्कुरुतेसोल्पवीर्योनभवति ॥ तस्मात्तेनवाहनेनममतेजसोवृद्धिर्भविष्यतीतियत्त्वयोक्तंतत्सत्यमेवेतिभावः ॥ ४१ ॥ यदाहमनेनयानेनाऽऽगमिष्यामितदामांसप्तर्षयएवंवक्ष्यंतीत्याह। सप्तर्षयइति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५१ ॥ मुनिमस्तकंपादेनाऽस्पृशत् ॥ अगस्तिंतचकशयाताडयामासेत्यन्वयः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ तंमुनिसत्तममगस्तिंस्तुत्वास्तोत्रेणसंतोष्येत्यर्थः ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ तथाचयथेंद्रेणदुष्टंकर्मकृतंतथातेनतस्यफलमापिभुक्तमेवेतिभावः ॥ ६७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ छ ॥ एकाऽधिकैस्तुचत्वारिंशत्पद्यैस्त्रिविधस्यह ॥ कर्मणोरूपकथनंजंतुर्येनतुबुद्ध्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायांतेअवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभमित्युक्तम् तत्रेंद्रेण

आरुह्यशिविकांरम्यांसंस्थितस्त्वरयान्वितः ॥ वाहान्कृत्वामुनीन्दिव्यान्सर्पसर्पेतिचाब्रवीत् ॥ ५१ ॥ कामार्तःसोऽस्पृशन्मूढःपादेनमुनिमस्तकम् ॥ अगस्तितापसश्रेष्ठंलोपामुद्रापतिंतदा ॥ ५२ ॥ वातापिभक्षकर्तारंसमुद्रस्याऽपिशोषकम् ॥ कशयाताडयामासपंचबाणशराहतः ॥ ५३ ॥ इंद्राणीहृतचित्तोऽसौसर्पेतिप्रब्रुवन्मुनिम् ॥ तंशशापमुनिःक्रुद्धःकशाघातमनुस्मरन् ॥ ५४ ॥ सर्पोभवदुराचारवनेघोरवपुर्महान् ॥ बहुवर्षसहस्राणियत्रक्लेशोमहान्भवेत् ॥ ५५ ॥ विचरिष्यसिवीर्येणपुनःस्वर्गमवाप्स्यसि ॥ दृष्ट्वायुधिष्ठिरंनामतवमोक्षोभविष्यति ॥ ५६ ॥ प्रश्नानामुत्तरंश्रुत्वाधर्मपुत्रमुखात्ततः ॥ व्यासउवाच ॥ एवंशप्तःसराजर्षिःस्तुत्वातंमुनिसत्तमम् ॥ ५७ ॥ स्वर्गात्पपातसहसासर्परूपधरोऽभवत् ॥ बृहस्पतिस्ततोगत्वातरसामानसंप्रति ॥ ५८ ॥ इंद्रायसर्ववृत्तांतंकथयामासविस्तरात् ॥ तच्छ्रुत्वामघवाराज्ञःस्वर्गात्प्रच्यवनादिकम् ॥५९॥ मुदितोऽभून्महाराजःस्थितस्तत्रैववासवः॥देवाश्चमुनयोदृष्ट्वानहुषंपतितंभुवि॥६०॥जग्मुःसर्वेऽपितत्रैवयत्रेंद्रःसरसिस्थितः ॥ तमाश्वास्यसुराःसर्वेमुनिभिःसहितास्तदा ॥ ६१ ॥ स्वर्गेसमानयामासुर्मानपूर्वंशचीपतिम् ॥ समागतंततःशक्रंसर्वेतेमुनयःसुराः ॥ ६२ ॥ स्थापयित्वाऽऽसनेपश्चादभिषेकंदधुःशिवम् ॥ इंद्रोऽपिस्वासनंप्राप्यशच्यासहसुरालये ॥ ६३ ॥ चिक्रीडनंदनेरम्येकाननेप्रेमयुक्तया ॥ व्यासउवाच ॥ एवमिंद्रेणसंप्राप्तंदुःखंपरमदारुणम् ॥ ६४ ॥ हत्वासुरंकामरूपंविश्वरूपंमहामुनिम् ॥ पुनर्देव्याःप्रसादेनस्वस्थानंप्राप्तवान्नृप ॥ ६५ ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंवृत्रासुरवधाश्रयम् ॥ यत्पृष्टोऽहंत्वयाराजन्कथानकमनुत्तमम् ॥ ६६ ॥ यादृशंकुरुतेकर्मतादृशंफलमाप्नुयात् ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ ६७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेवृत्रवधोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ छ ॥ जनमेजयउवाच ॥ कथितंचरितंब्रह्मञ्छक्रस्याऽद्भुतकर्मणः ॥ स्थानभ्रंशस्तथादुःखप्राप्तिरुक्ताविशेषतः ॥ १ ॥ यत्रदेवाधिदेव्याश्चमहिमाऽतीववर्णितः॥ संदेहोऽत्रममाऽप्यस्तियच्छक्रोपिमहातपाः ॥ २ ॥ देवाधिपत्यमासाद्यदुःखहंदुःखमन्वभूत् ॥ मखानांतुशतंकृत्वाप्राप्तंस्थानमनुत्तमम् ॥ ३ ॥

शताश्वमेधात्मकंसर्वोत्तमंशुभकर्मैवाऽऽचरितंकिमितितस्याऽकल्याणंजातमितिपृच्छतिकथितंचरितमिति ॥ अद्भुतकर्मणः अद्भुतंब्रह्मवध्यारूपंकर्मयस्यतस्यशक्रस्येत्यन्वयः ॥ तस्यकर्मणः फलमपिस्थानभ्रंशोदुःखप्राप्तिश्चोक्ता ॥१॥ परंतुतत्रसंदेहोवर्ततइत्याह। संदेहोऽत्रेति ॥ कोऽसौतदाह। यच्छक्रोऽपीति ॥२॥ दुःखहंतृदेवाधिपत्यामिंद्रत्वंप्राप्याऽपिदुःखमन्वभूदित्यर्थः॥ ॥ तदेवस्पष्टयति। मखानामिति ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यस्मादेवंविधःसंदेहोभवतितस्मात्तस्यसंदेहस्यनाशकंकिमर्थंदुःखमभूत्तस्यचकारणमेतत्सर्वंसमाचक्ष्वकथय ॥ ४ ॥ ५ ॥ संदेहापनोदनामिति ॥ अयंभावः ॥ शताश्वमेधानांफलंस्वर्गःनचस स्वर्गोमध्येएवशताश्वमेधकर्मजन्यपुण्यनाशमंतरानष्टोभवितुमर्हतिदृढतरकारणस्यविद्यमानत्वात् ॥ ननुमध्येततोऽपिदृढतरस्यकारणस्यब्रह्मवध्यारूपस्यजातत्वात्तस्यफलंदुःखंमध्येएवजात मितिचेदेतादृशपुण्यकर्तुर्दुष्टेकर्मणिब्रह्मवध्यारूपेएवकथंप्रवृत्तिरितिसंदेहोजागरूकएवेति ॥ ६ ॥ ७ ॥ तत्रप्रथमतःकर्मत्रैविध्यंवर्णयाति । कर्मणस्त्विति ॥ त्रैविध्यमेवाह । संचितंवर्तमानं चेति ॥८॥ तत्रसंचितस्वरूपमाह।अनेकेति ॥ तदपिसंचितंत्रिविधमस्तीत्याह । सात्त्विकामिति ॥९॥ ननुतत्संचितंकर्मबहुकालव्यवधानेननष्टमेवजातंस्यादितिचेन्नेत्याह । अवश्यमिति॥ ननुतन्नष्टंकिंतुनिजरूपेणास्थितमास्ते तत्सुकृतदुष्कृतात्मकंकालांतरेऽवश्यमेवभोक्तव्यमित्यर्थः ॥१०॥ तदेवस्पष्टयति । जन्मजन्मनीति ॥११॥ संचितस्वरूपमुपपाद्यवर्तमानस्वरूपमाह । क्रियमाणमिति ॥ तस्यैवविशेषेणस्वरूपमाह । देहंप्राप्येति ॥ अस्मिन्देहेअधुनायत्क्रियतेतदित्यर्थः ॥१२॥ प्रारब्धस्वरूपमाह । संचितानामिति॥संचितानांकर्मणांमध्यात्कानिचित्त्यक्ता

देवेशत्वंचसंप्राप्यभ्रष्टःस्थानादसौकथम् ॥ एतत्सर्वंसमाचक्ष्वकारणंकरुणानिधे ॥ ४ ॥ सर्वज्ञोऽसिमुनिश्रेष्ठपुराणानांप्रवर्तकः ॥ नाऽवाच्यंमहतांकिंचि च्छिष्येचश्रद्धयाऽन्विते ॥५॥ तस्मात्कुरुमहाभागमत्संदेहापनोदनम् ॥ सूतउवाच ॥ इतिपृष्टःसराज्ञावैतदासत्यवतीसुतः॥६॥तमाहाऽतिप्रसन्नात्मायथा नुक्रममुत्तरम् ॥ व्यासउवाच ॥ निबोधनृपतिश्रेष्ठकारणंपरमाद्भुतम् ॥७॥ कर्मणस्तुत्रिधाप्रोक्तागतिस्तत्त्वविदांवरैः ॥ संचितंवर्तमानंचप्रारब्धमितिभेद तः ॥ ८ ॥ अनेकजन्मसंजातंप्राक्तनंसंचितंस्मृतम् ॥ सात्त्विकंराजसंकर्मतामसंत्रिविधंपुनः ॥९॥ शुभंवाऽप्यशुभंभूपसंचितंबहुकालिकम्॥अवश्यमेवभो क्तव्यंसुकृतंदुष्कृतंतथा ॥ १० ॥ जन्मजन्मनिजीवानांसंचितानांचकर्मणाम् ॥ निःशेषस्तुक्षयोनाऽभूत्कल्पकोटिशतैरपि ॥११॥ क्रियमाणंचयत्कर्म वर्तमानंतदुच्यते ॥ देहंप्राप्यशुभंवाऽपिह्यशुभंवासमाचरेत् ॥ १२ ॥ संचितानांपुनर्मध्यात्समाहृत्यकियान्किल ॥ देहारंभेचसमयेकालःप्रेरयतीवतत् ॥ ॥ १३ ॥ प्रारब्धंकर्मविज्ञेयंभोगात्तस्यक्षयःस्मृतः ॥ प्राणिभिःखलुभोक्तव्यंप्रारब्धंनाऽत्रसंशयः ॥ १४ ॥ पुराकृतानिराजेंद्रह्यशुभानिशुभानिच ॥ अव श्यमेवकर्माणिभोक्तव्यानीतिनिश्चयः ॥ १५ ॥ देवैर्मनुष्यैरसुरैर्यक्षगन्धर्वकिन्नरैः ॥ कर्मैवहिमहाराजदेहारंभस्यकारणम् ॥ १६॥ कर्मक्षयेजन्मनाशःप्रा णिनांनाऽत्रसंशयः ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रइंद्राद्याश्चसुरास्तथा ॥ १७ ॥ दानवायक्षगंधर्वाःसर्वेकर्मवशाःकिल ॥ अन्यथादेहसंबंधःकथंभवतिभूपते॥१८॥

निकर्माणिसमाहृत्यकियान्कालोदेहारंभसमयेतदारंभावच्छिन्नेकालेतानिकर्माणिप्रेरयतिफलदानाथप्रारब्धंकर्मविज्ञेयमित्यर्थः ॥१३॥ तस्यप्रारब्धकर्मणोभोगादेवक्षयइत्याह । भोगादिति ॥१४॥ एवंक्रमेणसर्वाणिसंचितानिभोक्तव्यानीत्याह । पुराकृतानीति ॥१५॥ कैर्भोक्तव्यानितत्राह । देवैरिति ॥ संचितकर्माभावेदेहारंभएवनस्यात्तस्माद्देवादीनांदेहप्राप्त्यासंचितकर्मते षामप्यनुमीयतइत्यभिप्रायेणकर्मदेहयोःकार्यकारणभावउच्यते कर्मैवहिमहाराजेति ॥ तथाचबृहदारण्यकेश्रुतिः ॥ तदेवयत्तत्सहकर्मणैतिलिंगंमनोयत्रनिषिक्तमस्येति ॥ कैवल्योप निषदि ॥ पुनश्चजन्मांतरकर्मयोगात्सएवजीवःस्वपितिप्रबुद्धइति ॥ १६ ॥ एवंकर्मणोदेहकारणत्वंप्रसाध्यब्रह्मादीनामपिदेहवत्त्वात्कर्माधीनत्वमस्तीत्याह ॥ ब्रह्मेति ॥ १७ ॥ तत्र प्रमाणमाह अन्यथेति ॥ १८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कारणंयस्त्वित्यस्यार्थस्यपूर्वेणदेहसंबंधइत्यनेनान्वयः ॥ देहिनःसुखदुःखयोर्भोगस्यकारणंयस्तुदेहसंबंधःसोऽन्यथाब्रह्मादीनांकर्मानधीनत्वेननकथंस्यादितिविशिष्टोन्वयः ॥ इत्थंकर्मणांत्रैविध्यमुपपाद्ययद्राज्ञापृष्टंदेवेशत्वंचसंप्राप्यभ्रष्टःस्थानादसौकथमितितत्समाधानमाह । तस्मादिति ॥ कर्मणांमध्येकस्यचित्कर्मणःकालेनपरिपाकवशाद्वेगःसमायातीत्यन्वयः ॥ १९ ॥ तत्प्रारब्धेति ॥ यस्यवेगःसमायातितदेवप्रारब्धंतत्प्रारब्धवशाद्यथापुण्यंकरोतितथापापमपिकरोतीत्यन्वयः ॥ तथायथापुण्येनप्रारब्धेनपुण्यकर्मकृत्वैंद्रंपदंलब्धम् ॥ तथापापेनप्रारब्धेनब्रह्महत्यांकृत्वास्थानभ्रंशोपींद्रस्यजातइतिनशंकावसरइतिभावः ॥ २० ॥ नकेवलमिंद्रएवकर्मवशगइत्याश्चर्यंकर्तव्यं किंतुनारायणादयःसर्वेऽपिकर्मवशगाइत्याह ॥ तथानारायणइति ॥ धर्मजाविति ॥ देवांशयोरपिकर्माधीनत्वमस्त्येवेत्यर्थः ॥ २१ ॥ नारायणांशावित्यत्रकिंप्रमाणंतत्राह । पुराणपीठिकेयमिति ॥ पुराणक्रमएवाऽत्रप्रमाणमित्यर्थः ॥ २२ ॥ तत्रैवप्रमाणांतरं

कारणंयस्तुभोगस्यदेहिनःसुखदुःखयोः ॥ तस्मादनेकजन्मोत्थसंचितानांचकर्मणाम् ॥१९॥ मध्येवेगःसमायातिकस्यचित्कालपाकतः ॥ तत्प्रारब्धवशात्पुण्यंकरोतिचयथातथा ॥ २० ॥ पापंकरोतिमनुजस्तथादेवादयोऽपिच ॥ तथानारायणोराजन्नरश्चधर्मजावुभौ ॥२१॥ जातौकृष्णार्जुनौकाममंशौनारायणस्यतौ ॥ पुराणपीठिकेयंवैमुनिभिःपरिकीर्तिता ॥ २२ ॥ देवांशःसतुविज्ञेयोयोभवेद्विभवाधिकः ॥ नाऽनृषिःकुरुतेकाव्यंनाऽरुद्रोरुद्रमर्चते ॥ ॥ २३ ॥ नाऽदेवांशोददात्यन्नंनाऽविष्णुःपृथिवीपतिः ॥ इंद्रादग्नेर्यमाद्विष्णोर्धनदादितिभूपते ॥२४॥ प्रभुत्वंचप्रभावंचकोपंचैवपराक्रमम् ॥ आदायक्रियतेनूनंशरीरमितिनिश्चयः ॥ २५ ॥ यःकश्चिद्बलवाँल्लोकेभाग्यवानथभोगवान् ॥ विद्यावान्दानवान्वाऽपिसदेवांशःप्रपठ्यते ॥ २६ ॥ तथैवैतेसमाख्याताःपांडवाःपृथिवीपते ॥देवांशोवासुदेवोऽपिनारायणसमद्युतिः ॥ २७ ॥ शरीरंप्राणिनांनूनंभाजनंसुखदुःखयोः ॥ शरीरीप्राप्नुयात्कामंसुखंदुःखमनंतरम् ॥२८॥ देहीनास्तिवशःकोपिदैवाधीनःसदैवहि॥ जननंमरणंदुःखंसुखंप्राप्नोतिचावशः ॥ २९ ॥ पांडवास्तेवनेजाताःप्राप्तास्तुस्वगृहंपुनः ॥ स्वबाहुबलतःपश्चाद्राजसूयंक्रतूत्तमम् ॥३०॥वनवासंपुनःप्राप्तावहुदुःखकरंपरम्॥अर्जुनेनतपस्तप्तंदुष्करंह्यजितेंद्रियैः ॥ ३१॥ संतुष्टैस्तुसुरैर्दत्तंवरदानंपुनःशुभम् ॥ नरदेहकृतंपुण्यंक्वगतंवनवासजम् ॥ ३२ ॥ नरदेहेतपस्तप्तंचोग्रेबदरिकाश्रमे ॥नार्जुनस्यशरीरेतत्फलदंसंबभूवह॥३३॥प्राणिनांदेहसंबंधेगहनाकर्मणोगतिः ॥ दुर्ज्ञेयासर्वथादेवैर्मानवानांतुकाकथा॥३४॥वासुदेवोऽपिसंजातःकारागारेऽतिसंकटे ॥ नीतोऽसौवसुदेवेननंदगोपस्यगोकुलम्॥३५॥एकादशैववर्षाणिसंस्थितस्तत्रभारत॥पुनःसमथुरांगत्वाजघानोग्रसुतंबलात्॥३६॥मोचयामासपितरौबंधनाद्भृशदुःखितौ॥उग्रसेनंचराजानंचकारमथुरापुरे ३७॥

वचनमाह । देवांशइति ॥ अर्चतेइत्यार्षःप्रयोगः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ इत्थंदेवानांकर्मवशत्वमुपपाद्यसर्वप्राणिनांकर्मवशत्वमुपपादयति ॥ शरीरीति ॥ २८ ॥ २९॥ दैवाधीनत्वेनिदर्शनंपांडवानामाह। पांडवाइति ॥ स्वबाहुबलेनराजसूयःक्रतूत्तमस्तैःकृतइतिशेषः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ क्वगतमिति ॥ एतादृशपुण्यकर्मवंतोऽपिदैवाधीनत्वाद्दुःखंप्राप्ताइतिभावः ॥ ३२ ॥ तदेवस्पष्टयति । नरदेहइति ॥ फलदंनसंबभूवेत्यर्थः ॥ यतोनतादृशपुण्यानुरूपंफलंदृश्यतेऽर्जुनस्येतिभावः ॥३३॥ तस्मादाह । प्राणिनामिति ॥३४॥ वासुदेवस्याऽपिकर्माधीनत्वमाह । वासुदेवोऽपीति ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥३८॥३९॥४०॥४१॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥१०॥ ॥ अर्धाधिकैःपंचषष्टिश्लोकैर्धर्मायुगोद्भवाः ॥ कथ्यंतेयत्रसदसद्धर्मस्यचविनिर्णयः ॥१॥ पूर्वाध्यायांते वासुदेवकथांश्रुत्वातत्रसंदिहानोराजापृच्छति।भारावतारेति॥ कृष्णयोरिति ॥ अर्जुनस्याऽपिहरेरंशत्वाभिप्रायेणाह।कृष्णत्वव्यवहारोबलरामस्यवाहरेःश्वेतकेशोद्भवत्वात्कृष्णत्वव्यवहारः ॥ तथाचकृष्णयोरित्यस्यकृष्णार्जुनयोरित्यर्थः ॥ कृष्णबलरामयोरित्यर्थोवा ॥ संशयउक्तविषयइतिशेषः ॥ १ ॥ अवतारकथांसंक्षेपेणवर्णयति ॥ पृथिवीति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ कियानिति।दुष्टान्सर्वान्ज्ञात्वातांश्चहत्वाभारःकियानुत्तारितोनकिमपीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ननुभीष्मादीन्निहत्यभारउत्तारितएवनेतिकथमुच्यतेतत्राह । हतोभीष्मइति ॥ एतेएकैकशएवहताइत्यर्थः ॥ ७ ॥ तर्ह्यवशिष्टाःकेतत्राह । यैर्लुंठितंधनमिति ॥ एतेसर्वेदुष्टाअवशिष्टाएवेत्यर्थः ॥८॥ भारावतारणमिति ॥ भारावतारप्रतिज्ञांकृत्वाऽवतारोगृहीतस्तत्रसर्वदुष्टानामवशिष्टत्वादव

जगामद्वारवत्यांसम्लेच्छराजभयात्पुनः ॥ सर्वंभाविवशात्कृष्णःकृतवान्पौरुषंमहत् ॥ ३८ ॥ कृत्वाकार्याण्यनेकानिद्वारवत्यांजनार्दनः ॥ देहंत्यक्त्वाप्रभासेतुसकुटुंबोदिवंगतः ॥ ३९ ॥ पुत्राःपौत्राश्चसुहृदोभ्रातरोजामयस्तथा ॥ प्रभासेयादवाःसर्वेविप्रशापात्क्षयंगताः ॥ ४० ॥ एवंतेकथिताराजन्कर्मणोगहनागतिः ॥ वासुदेवोऽपिव्याधस्यबाणेननिधनंगतः ॥ ४१॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ जनमेजयउवाच॥ भारावतरणार्थायकथितंजन्मकृष्णयोः ॥ संशयोऽयंद्विजश्रेष्ठहृदयेममतिष्ठति ॥ १ ॥ पृथिवीगोस्वरूपेणब्रह्माणंशरणंगता ॥ द्वापरांऽतेतिदीनाऽऽर्तागुरुभारप्रपीडिता ॥ २ ॥ वेधसाप्रार्थितोविष्णुःकमलापतिरीश्वरः ॥ भूभारोत्तरणार्थायसाधूनांरक्षणायच ॥ ३ ॥ भगवान्भारतेखंडेदेवैःसहजनार्दनः ॥ अवतारंगृहाणाशुवसुदेवगृहेविभो ॥ ४ ॥ एवंसंप्रार्थितोधात्राभगवान्देवकीसुतः ॥ बभूवसहरामेणभूभारोत्तरणायवै ॥ ५ ॥ कियानुत्तारितोभारोहत्वादुष्टाननेकशः ॥ ज्ञात्वासर्वान्दुराचारान्पापबुद्धिनृपानिह ॥ ६ ॥ हतोभीष्मोहतोद्रोणोविराटोद्रुपदस्तथा ॥ बाह्लीकःसोमदत्तश्चकर्णोवैकर्तनस्तथा ॥ ७ ॥ यैर्लुंठितंधनंसर्वंहृताश्चहरियोषितः ॥ कथंननाशितादुष्टायेस्थिताःपृथिवीतले ॥८॥ आभीराश्चशकाम्लेच्छानिषादाःकोटिशस्तथा ॥ भारावतरणंकिंतत्कृतंकृष्णेनधीमता ॥ ९ ॥ संदेहोऽयंमहाभागननिवर्ततिचित्ततः ॥ कलावस्मिन्प्रजाःसर्वाःपश्यतःपापनिश्चयाः ॥ १० ॥ व्यासउवाच ॥राजन्यस्मिन्युगेयादृक्प्रजाभवतिकालतः ॥ नाऽन्यथातद्भवेन्नूनंयुगधर्मोऽत्रकारणम् ॥ ११ ॥ येधर्मरसिकाजीवास्तेवैसत्ययुगेऽभवन् ॥ धर्मार्थरसिकायेतुतेवैत्रेतायुगेऽभवन् ॥ १२ ॥ धर्मार्थकामरसिकाद्वापरेचाऽभवन्युगे ॥ अर्थकामपराःसर्वेकलावस्मिन्भवंतिहि ॥ १३ ॥ युगधर्मस्तुराजेंद्रनयातिव्यत्ययंपुनः ॥ कालःकर्तास्तिधर्मस्यह्यधर्मस्यचवैपुनः ॥ १४ ॥

तारंगृहीत्वाभारावतरणंकिंकृतंनकिमपीत्यर्थः ॥ ९ ॥ पश्यतः रामकृष्णौकथंनताःप्रजानाशितवंताविति शेषः ॥ १० ॥ समाधत्ते । राजन्निति ॥ अयंभावः ॥ दुष्टाचाराद्विविधाःपुरुषाः एकेयुगधर्मेणदुष्टाचाराःपरेवेदधर्मोच्छेदार्थमवतीर्णादैत्यादुराचाराः ॥ तत्रावतारंगृहीत्वायेवेदधर्मोच्छेदंकर्तुंक्षत्रियगृहेऽवतीर्णादैत्यकुलेवायेवतीर्णादैत्यास्तएवनाशितानतुकालस्वभावेनदुराचारास्तेननाशितास्तेषांनाशनेसर्वेऽपिकलिस्वभावदुष्टाःसंतीतिसर्वेषांमारणप्रसंगेनप्रजोच्छेदएवस्यादिति ॥ नान्यथातद्भवेदिति ॥ नतानाशयितुंशक्यंतइत्यर्थः॥ ११॥तानेवयुगधर्मानुपपादयति । येधर्मरसिकाइति ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रसंगागतमाह । वैराग्यार्थं येतुसत्ययुगेइति ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ तद्युगस्थारजकादयोनीचाअपिधर्मतःस्वधर्माचरणात्स्वर्गंयांतीत्यन्वयः ॥ २२ ॥ कलावस्मिन्निति ॥ अस्मिन्कलौयेपापाचारास्तेनरकंयांतीत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ व्यत्ययोभवेदिति ॥ सत्ययुगेपापंकेचित्कुर्वंति कलियुगेपिकेचित्पुण्यंकुर्वंतीत्येवंरूपइत्यर्थः ॥ व्यत्ययांतरमप्याह । कलौयेसाधवइति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ युगधर्मामयाप्रोच्यंतेतान्सावधानतयासमाचर नोचेद्युगधर्मानुरोधेनबुद्धेर्भ्रंशःस्यात्कस्य

॥ राजोवाच ॥ येतुसत्ययुगेजीवाभवंतिधर्मतत्पराः ॥ कुत्रतेऽद्यमहाभागतिष्ठंतिपुण्यभागिनः ॥ १५ ॥ त्रेतायुगेद्वापरेवायेदानव्रतकारकाः॥वर्तंतेमुनयःश्रेष्ठकुत्रब्रूहिपितामह ॥ १६ ॥ कलावद्यदुराचारायेऽत्रसंतिगतत्रपाः ॥ आद्येयुगेकधास्यंतिपापिष्ठादेवनिंदकाः ॥ १७ ॥ एतत्सर्वंसमाचक्ष्वविस्तरेण महामते ॥ सर्वथाश्रोतुकामोऽस्मियदेतद्धर्मनिर्णयम् ॥ १८ ॥ व्यासउवाच ॥ येवैकृतयुगेराजन्संभवंतीहमानवाः ॥ कृत्वातेपुण्यकर्माणिदेवलोकान्व्रजंतिवै ॥ १९ ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चनृपसत्तम ॥ स्वधर्मनिरतायांतिलोकान्कर्मजितान्किल ॥ २० ॥ सत्यंदयातथादानंस्वदारगमनंतथा ॥ अद्रोहःसर्वभूतेषुसमतासर्वजंतुषु ॥ २१ ॥ एतत्साधारणंधर्मंकृत्वासत्ययुगेपुनः ॥ स्वर्गंयांतीतरेवर्णाधर्मतोरजकादयः ॥ २२ ॥ तथात्रेतायुगेराजन्द्वापरेऽथयुगेतथा ॥ कलावस्मिन्युगेपापानरकंयांतिमानवाः ॥ २३ ॥ तावत्तिष्ठंतितेतत्रयावत्स्याद्युगपर्ययः ॥ पुनश्चमानुषेलोकेभवंतिभुविमानवाः ॥२४॥ यदासत्ययुगस्यादिःकलेरंतश्चपार्थिव ॥ तदास्वर्गात्पुण्यकृतोजायंतेकिलमानवाः ॥२५॥ यदाकलियुगस्यादिर्द्वापरस्यक्षयस्तथा ॥ नरकात्पापिनःसर्वे भवंतिभुविमानवाः ॥ २६ ॥ एवंकालसमाचारोनाऽन्यथाऽभूत्कदाचन ॥ तस्मात्कलिरसत्कर्तातस्मिंस्तुतादृशीप्रजा ॥२७॥ कदाचिद्दैवयोगात्तुप्राणिनांव्यत्ययोभवेत् ॥ कलौयेसाधवःकेचिद्द्वापरेसंभवंतिते ॥२८॥ तथात्रेतायुगेकेचित्केचित्सत्ययुगेतथा ॥ दुष्टाःसत्ययुगेयेतुतेभवंतिकलावपि ॥ २९ ॥ कृतकर्मप्रभावेणप्राप्नुवंत्यसुखानिच ॥ पुनश्चतादृशंकर्मकुर्वंतियुगभावतः ॥ ३० ॥ जनमेजयउवाच ॥ युगधर्मान्महाभागब्रूहिसर्वानशेषतः ॥ यस्मिन्वैयादृशोधर्मोज्ञातुमिच्छामितंतथा ॥ ३१ ॥ व्यासउवाच ॥ निबोधनृपशार्दूलदृष्टांतंतेब्रवीम्यहम् ॥ साधूनामपिचेतांसियुगभावाद्भ्रमंतिहि ॥ ३२ ॥ पितुर्यथातेराजेंद्रबुद्धिर्विप्रावहेलने ॥ कृतावैकलिनाराजन्धर्मज्ञस्यमहात्मनः ॥ ३३ ॥ अन्यथाक्षत्रियोराजाययातिकुलसंभवः ॥ तापसस्यगलेसर्पंमृतंकस्मादयोजयत् ॥ ३४ ॥ सर्वंयुगबलंराजन्वेदितव्यंविजानता ॥ प्रयत्नेनहिकर्तव्यंधर्मकर्मविशेषतः ॥ ३५ ॥ नूनंसत्ययुगेराजन्ब्राह्मणावेदपारगाः ॥ पराशक्त्यर्चनरतादेवीदर्शनलालसाः ॥ ३६ ॥

बुद्धेर्भ्रंशोजातइतिचेच्छृणुतंदृष्टांतमित्यभिप्रायेणाह । निबोधेति ॥ हिनिश्चयेन साधूनामपिचेतांसियुगभावात्युगप्रभावात्भ्रमंतिमोहंप्राप्नुवंति तत्रवक्ष्यमाणंदृष्टांतंनिबोधशृण्वित्यर्थः ॥ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ यस्मादेवंतस्मादाह । प्रयत्नेनेति ॥ सावधानेनचेतसेत्यर्थः ॥ ३५ ॥ अथयुगधर्मानाह । नूनमिति ॥ पराशक्त्यर्चनंपूजाजपध्यानादितास्मिन्रताः ॥ ३६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

गायत्र्या सक्ताः ॥ प्रणवासक्ताश्चेत्यर्थः ॥ मायाबीजंभुवनेश्वरीमंत्रस्तस्यैकजापिनोमुख्यत्वेनजपशीलाः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ परांबापूजनेति ॥ परेयुगेसत्येसर्वेपिवर्णाः परांबापूजनासक्ताभवंतीत्यर्थः ॥ ४१ ॥ प्रसंगेनावांतरंकलौकंचिद्विशेषमाह । पूर्वंयेराक्षसाइति ॥ तेऽपिकलियुगेधर्मनाशार्थंब्राह्मणाभवंतीत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ कामचारायथेष्टाचारवत्यः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ननुयदिधर्मःश्रेष्ठस्तर्हिकिमितिकलौधर्मनाचरंतितत्राह । आहारशुद्ध्येति ॥ ५० ॥ शुद्धेचित्तइति । आहारशुद्ध्यासत्त्व

गायत्रीप्रणवासक्तागायत्रीध्यानकारिणः ॥ गायत्रीजपसंसक्तामायाबीजैकजापिनः ॥ ३७ ॥ ग्रामेग्रामेपरांबायाःप्रासादकरणोत्सुकाः ॥ स्वकर्मनिरताःसर्वेसत्यशौचदयान्विताः ॥ ३८ ॥ त्रय्युक्तकर्मनिरतास्तत्त्वज्ञानविशारदाः ॥ अभवन्क्षत्रियास्तत्रप्रजाभरणतत्पराः ॥ ३९ ॥ वैश्यास्तुकृषिवाणिज्यगोसेवानिरतास्तथा ॥ शूद्रा सेवापरास्तत्रपुण्येसत्ययुगेनृप ॥ ४० ॥ परांबापूजनासक्ताःसर्वेवर्णाःपरेयुगे ॥ तथात्रेतायुगेकिंचिन्न्यूनाधर्मस्यसंस्थितिः ॥ ४१ ॥ द्वापरेचविशेषेणन्यूनासत्ययुगस्थितिः ॥ पूर्वंयेराक्षसाराजंस्तेकलौब्राह्मणाःस्मृताः ॥ ४२ ॥ पाखंडनिरताःप्रायोभवंतिजनवंचकाः ॥ असत्यवादिनःसर्वेवेदधर्मविवर्जिताः ॥ ४३ ॥ दांभिकालोकचतुरामानिनोवेदवर्जिताः ॥ शूद्रसेवापराःकेचिन्नानाधर्मप्रवर्तकाः ॥ ४४ ॥ वेदनिंदाकराःक्रूराधर्मभ्रष्टातिवादुकाः ॥ यथायथाकलिर्वृद्धिंयातिराजंस्तथातथा ॥ ४५ ॥ धर्मस्यसत्यमूलस्यक्षयःसर्वात्मनाभवेत् ॥ तथैवक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चधर्मवर्जिताः ॥ ४६ ॥ असत्यवादिनःपापास्तथावर्णेतराःकलौ ॥ शूद्रधर्मरताविप्राःप्रतिग्रहपरायणाः ॥ ४७ ॥ भविष्यंतिकलौराजन्युगेवृद्धिंगताःकिल ॥ कामचाराःस्त्रियःकामलोभमोहसमन्विताः ॥ ४८ ॥ पापामिथ्याभिवादिन्यःसदाक्लेशरतानृप ॥ स्वभर्तृवंचकानित्यंधर्मभाषणपंडिताः ॥ ४९ ॥ भवंत्येवंविधानार्यःपापिष्ठाश्चकलौयुगे ॥ आहारशुद्ध्यानृपतेचित्तशुद्धिस्तुजायते ॥ ५० ॥ शुद्धेचित्तेप्रकाशःस्याद्धर्मस्यनृपसत्तम ॥ वृत्तसंकरदोषेणजायतेधर्मसंकरः ॥ ५१ ॥ धर्मस्यसंकरेजातेनूनंस्याद्वर्णसंकरः ॥ एवंकलियुगेभूपसर्वधर्मविवर्जिते ॥ ५२ ॥ स्ववर्णधर्मवार्तैषानकुत्राऽप्युपलभ्यते ॥ महांतोऽपिचधर्मज्ञाअधर्मंकुर्वतेनृप ॥ ५३ ॥ कलिस्वभावएवैषपरिहार्योनकेनचित् ॥ तस्मादत्रमनुष्याणांस्वभावात्पापकारिणाम् ॥ ५४ ॥ निष्कृतिर्नहिराजेंद्रसामान्योपायतोभवेत् ॥ जनमेजयउवाच ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञसर्वशास्त्रविशारद ॥ ५५ ॥ कलावधर्मबहुलेनराणांकागतिर्भवेत् ॥ यद्यस्तितदुपायश्चेद्दययातंवदस्वमे ॥ ५६ ॥ व्यासउवाच ॥ एकएव महाराजतत्रोपायोऽस्तिनाऽपरः ॥ सर्वदोषनिरासार्थंध्यायेद्देवीपदांबुजम् ॥ ५७ ॥

शुद्धिस्तच्छुद्धौधर्मप्रकाशस्तथाचकलावाहारशुद्ध्याद्यभावान्नधर्मबुद्धिर्जायतइत्यर्थः ॥ तथाचछांदोग्यश्रुतिः ॥ आहारशुद्ध्यासत्त्वशुद्धिस्तच्छुद्धौध्रुवास्मृतिरिति ॥ धर्मबुद्ध्यभावेकोदोषस्तत्राह वृत्तसंकरेति ॥ वृत्तंवर्णाश्रमाचारस्तत्संकरदोषेणधर्मसंकरोभवतीत्यर्थः ॥ ब्राह्मणाचरणंशूद्रेणशूद्राचरणंब्राह्मणेनकृतंचेद्धर्मसंकरोभवत्येवेतिभावः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ पापानिष्कृत्युपायंराजापृच्छति ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञेति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ देवीपदांबुजंमायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्यादेव्याःपदांबुजमित्यर्थः ॥ ५७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नसंत्यघानीति ॥ देव्यानाम्निपापदाहेपापदाहविषयेयावतीशक्तिरस्तितावंत्यघानिपापानिनैवसंतीत्यर्थः ॥ यस्मादेवंतस्मात्कलियुगाद्भीतिर्भयंकुतोभवति ॥ कलियुगभये नकिंचित्कारणमस्तीत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ नामस्मरणंचरेत्कुर्यादित्यर्थः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इदानींसर्वेप्राणिनः पराशक्तिमंत्रमजपाख्यंनिरंतरंजपंतिजन्मनआरभ्यमरणपर्यंतम् तथाप्ययंमंत्रोऽस्तीतिमायाकृतमोहेननजानंति ततोनमुक्ताभवंतीत्याह । मायायावैभवमिति ॥ जनानाक्रोशति । अजपांनामगायत्रीमिति ॥ तदुक्तम् ॥ अजपांनामगायत्रींजीवोजपतिनित्यशः ॥ अजपांजपतोनित्यंपुनर्जन्मनविद्यतइति।अजपामंत्रविधानंतुदक्षिणामूर्तिसंहितायांस्पष्टम् ॥६३॥यथाऽजपांसर्वेजपंतितथैवगायत्रीमपिसर्वेब्राह्मणाजपांति तथापितस्यामहिमानंनजानंतिततो

नसंत्यघानितावंतियावतीशक्तिरस्तिहि ॥ नाम्निदेव्याःपापदाहेतस्माद्भीतिःकुतोनृप ॥५८॥ अवशेनाऽपियन्नामलीलयोच्चारितंयदि ॥ किंकिंददातितज्ज्ञातुंसमर्थानहरादयः ॥ ५९ ॥ प्रायश्चित्तंतुपापानांश्रीदेवीनामसंस्मृतिः ॥ तस्मात्कलिभयाद्राजन्पुण्यक्षेत्रेवसन्नरः ॥ ६० ॥ निरंतरंपरांवायानामसंस्मरणंचरेत् ॥ छित्त्वाभित्त्वाचभूतानिहत्वासर्वमिदंजगत् ॥ ६१ ॥ देवींनमतिभक्त्यायोनसपापैर्विलिप्यते ॥ रहस्यंसर्वशास्त्राणांमयाराजन्नुदीरितम् ॥ ॥ ६२ ॥ विमृश्यैतदशेषेणभजदेवीपदांबुजम् ॥ अजपांनामगायत्रींजपंतिनिखिलाजनाः ॥ ६३ ॥ महिमानंनजानंतिमायायावैभवंमहत् ॥ गायत्रींब्राह्मणाःसर्वेजपंतिहृदयांतरे ॥ ६४ ॥ महिमानंनजानंतिमायायावैभवंमहत् ॥ एतत्सर्वंसमाख्यातंयत्पृष्टंतत्त्वयानृप ॥ ६५ ॥ युगधर्मव्यवस्थायांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ ॥ राजोवाच ॥ तीर्थानिभुविपुण्यानिब्रूहिमेमुनिसत्तम ॥ गम्यानिमानवैर्दैवैःक्षेत्राणिसरितस्तथा ॥ १ ॥ फलंचयादृशंयत्रतीर्थेषुस्नानदानतः ॥ विधिंतुतीर्थयात्रायांनियमांश्चविशेषतः ॥ २ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामितीर्थानिविविधानिच ॥ येषुतीर्थेषुदेवीनांप्रशस्तान्यायनानिच ॥ ३ ॥ नदीनांजाह्नवीश्रेष्ठायमुनाचसरस्वती ॥ नर्मदागंडकीसिंधुर्गोमतीतमसातथा॥४॥कावेरीचंद्रभागाचपुण्यावेत्रवतीशुभा ॥ चर्मण्वतीचसरयूस्तापीसाभ्रमतीतथा॥५॥एताश्चकथिताराजन्नन्याश्चशतशःपुनः॥ तासांसमुद्रगाःपुण्याःस्वल्पपुण्याह्यनब्धिगाः ॥ ६ ॥ समुद्रगानांताःपुण्याःसर्वदौघवहास्तुयाः ॥ मासद्वयंश्रावणादौताश्चसर्वारजस्वलाः ॥ ७ ॥

नमुक्ताभवंतीत्याह ॥ गायत्रीमिति ॥ गायत्रीमहिमातुसर्वत्रैवप्रसिद्धः ॥ उपपादितश्चाऽस्माभिर्बृहदारण्यकटीकायांसप्तमाध्यायइति ॥६४॥६५॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ ॥ चतुःसप्ततिपद्यैस्तुतीर्थयात्राप्रसंगतः ॥ आर्डीबकंमहायुद्धंविस्तरेणोपवर्ण्यते ॥१॥ पूर्वाध्यायांते तस्मात्कलिभयाद्राजन्पुण्यक्षेत्रेवसन्नरः॥ निरंतरंपरांवायानामसंस्मरणंचरेदित्युक्तम् ॥ तत्रकानितानिपुण्यक्षेत्राणीतिराजापृच्छति ॥ तीर्थानिभुवीति ॥ १ ॥ विशेषतोब्रूहीत्यन्वयः ॥ २ ॥ येषुतीर्थेषुदेवीनांललितादेवीनांप्रशस्तान्यायनानिस्थानानिविद्यंतेतानीत्यर्थः ॥ अयनमेवायनम् ॥ ३ ॥ तमसानदी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ सर्वदौघवहास्तुयाइति ॥ असमुद्रगासु समुद्रगाःश्रेष्ठाः समुद्रगास्वपिसर्वदाजलवहाः श्रेष्ठाः ॥ ताःसर्वदाजलवहाःश्रावणादौश्रावणभाद्रपदयोरादौमासद्वयंसर्वारजस्वलाःप्रोक्ताइत्यर्थः ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ग्राम्यवारिवहाइति ॥ ग्रामोपयोगिजलवहाः ॥ नसमुद्रगामिन्यइत्यर्थः ॥ क्षेत्राण्याह । पुष्करमिति ॥ ८ ॥ ९ ॥ शैलानाह । श्रीशैलश्चेति ॥ सरोवराण्याह। सरांसीति॥१०॥११॥ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ एष्विति ॥ सर्वेष्वेषुस्थानेषुदेवीस्थानानिसंतीत्यर्थः ॥१५॥ अग्रेसप्तमस्कंधेकानिचिद्देवीस्थानानिकथयिष्यामीत्यर्थः ॥ तीर्थादिषुनियमानाह । तीर्थानीति॥ हेनृप तीर्थानिदानानिव्रतानिमखास्तपांसिसर्वाणिद्रव्यशुद्धिक्रियाशुद्धिमनःशुद्धिसापेक्षाणितदपेक्षयाफलदानिभवंतिनस्वतइत्यर्थः ॥ अतस्तीर्थादिषुवसञ्छुद्धित्रयंसंपादयेदितितात्प

भवंतिवृष्टियोगेनग्राम्यवारिवहास्तथा ॥ पुष्करंचकुरुक्षेत्रंधर्मारण्यंसुपावनम् ॥ ८॥ प्रभासंचप्रयागंचनैमिषारण्यमेवच ॥ विश्रुतंचार्बुदारण्यंशैलाश्चपावनास्तथा ॥९॥ श्रीशैलश्चसुमेरुश्चपर्वतोगंधमादनः ॥ सरांसिचैवपुण्यानिमानसंसर्वविश्रुतम् ॥ १० ॥ तथाबिंदुसरःश्रेष्ठमच्छोदंनामपावनम् ॥ आश्रमास्तुतथापुण्यामुनीनांभावितात्मनाम् ॥ ११ ॥ विश्रुतस्तुसदापुण्यःख्यातोबदरिकाश्रमः ॥ नरनारायणौयत्रतेपातेतौमुनीतपः ॥ १२ ॥ वामनाश्रमआख्यातःशतयूपाश्रमस्तथा ॥ येनयत्रतपस्तप्तंतस्यनाम्नाऽतिविश्रुतः ॥ १३ ॥ एवंपुण्यानिस्थानानिह्यसंख्यातानिभूतले ॥ मुनिभिःपरिगीतानि पावनानिमहीपते ॥ १४ ॥ एषुस्थानेषुसर्वत्रदेवीस्थानानिभूपते ॥ दर्शनात्पापहारीणिवसंतिनियमेनच ॥ १५ ॥ कथयिष्यामितान्यग्रेप्रसंगेनचकानिचित् ॥ तीर्थानिनृपदानानिव्रतानिचमखास्तथा ॥ १६ ॥ तपांसिपुण्यकर्माणिसापेक्षाणिमहीपते ॥ द्रव्यशुद्धिंक्रियाशुद्धिंमनःशुद्धिमपेक्ष्यच ॥ १७ ॥ पावनानिहितीर्थानितपांसिचव्रतानिच ॥ कदाचिद्द्रव्यशुद्धिःस्यात्क्रियाशुद्धिःकदाचन ॥ १८॥ दुर्लभामनसःशुद्धिःसर्वेषांसर्वदानृप ॥ मनस्तुचंचलंराजन्ननेकविषयाश्रितम् ॥ १९ ॥ कथंशुद्धंभवेद्राजन्नानाभावसमाश्रितम् ॥ कामक्रोधौतथालोभोह्यहंकारोमदस्तथा ॥२०॥ सर्वविघ्नकराह्येतेतपस्तीर्थव्रतेषुच ॥ अहिंसासत्यमस्तेयंशौचमिंद्रियनिग्रहः ॥ २१ ॥ स्वधर्मपालनंराजन्सर्वतीर्थफलप्रदम् ॥ नित्यकर्मपरित्यागान्मार्गेसंसर्गदोषतः ॥ २२ ॥ व्यर्थंतीर्थाधिगमनंपापमेवाऽवशिष्यते ॥ क्षालयंतिहितीर्थानिसर्वथादेहजंमलम् ॥ २३ ॥ मानसंक्षालितुंतानिनसमर्थानिवैनृप ॥ शक्तानियदिचेत्तानिगंगातीरनिवासिनः ॥ २४ ॥ मुनयोद्रोहसंयुक्ताःकथंस्युर्भावितेश्वराः ॥ वसिष्ठसदृशाःप्रह्वाविश्वामित्रादयःकिल ॥२५॥ रागद्वेषरताःसर्वेकामक्रोधाकुलाःसदा ॥ चित्तशुद्धिमयंतीर्थंगंगादिभ्योऽतिपावनम् ॥ २६ ॥ यदिस्याद्दैवयोगेनक्षालयत्यांतरंमलम् ॥ विशेषेणतुसत्संगोज्ञाननिष्ठस्यभूपते ॥ २७ ॥ नवेदानचशास्त्राणिनव्रतानितपांसिन ॥ नमखानचदानानिचित्तशुद्धेस्तुकारणम् ॥ २८ ॥

र्यम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ तत्रद्रव्यशुद्धिः क्रियाशुद्धिः कदाचित्सिध्येत् मनःशुद्धिस्तुसर्वथादुःसाध्येत्याह ॥ कदाचिदिति ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ देहजंमलमिति ॥ तीर्थानिदेहमलमेवक्षालयंति नतुमानसंमलमित्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ननुयदितीर्थादिसेवनान्नचित्तशुद्धिस्तर्हिसाकस्माद्भवतितत्राह। यदिस्यादिति ॥ हेभूपते यदिदैवयोगेनज्ञाननिष्ठस्यसत्संगोविशेषेणनिरंतरंस्यात्तदासएवसत्संगःआंतरंमलंमानसंमलंक्षालयति नान्यइत्यर्थः ॥ यदिदैवयोगेनेत्यनेनसत्संगस्यातिदुर्लभत्वंबोधितम् ॥ २७ ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तथाचकलिभयार्दितस्तृतीयचतुर्थस्कंधयोः प्रतिपादितांद्रव्यशुद्धिंक्रियाशुद्धिंचसंपाद्यपुण्यक्षेत्रेवसन्ज्ञाननिष्ठसत्समागमेनशास्त्रश्रवणादिनामानसींशुद्धिंवैराग्यादिनासंपाद्यदेवीनामानिगृण्ह न्श्रीदेवीसमाराधनपरोभवेदितिसर्वप्रकरणार्थः ॥ अत्रद्रव्यक्रियाचित्तशुद्धीनांमध्येसर्वेषांव्रतनियमानामंतर्भावमभिप्रेत्यराज्ञापृष्टाआपितीर्थव्रतनियमानोक्ताइतिबोध्यम् ॥ तत्रचित्त शुद्धिरतिदुर्लभेतिदर्शयितुंवसिष्ठविश्वामित्रयोःकथांप्रस्तौति । वसिष्ठोब्रह्मणइति ॥ गंगातीरस्थितोऽपिरागद्वेषान्वितश्चित्तशुद्धिरहितइत्यर्थः॥ एतादृशानांमहतामपियतोनचित्तशुद्धिस्ततः सादुर्लभैवेतिभावः ॥ २९ ॥ रागद्वेषान्वितत्वेकिंप्रमाणमितिचेद्युद्धमेवप्रमाणमित्याह। आडीबकमिति ॥ आडिश्चबकश्चयोर्द्वारौयस्मिन्युद्धेतद्युद्धमाडीबकम् ॥ आडिःशरारिः ॥ शरा

वसिष्ठोब्रह्मणःपुत्रोवेदविद्याविशारदः ॥ रागद्वेषान्वितःकामंगंगातीरसमाश्रितः ॥ २९ ॥ आडीबकंमहायुद्धंविश्वामित्रवसिष्ठयोः ॥ जातंनिरर्थकंद्वेषाद्देवा नांविस्मयप्रदम् ॥ ३० ॥ विश्वामित्रोबकस्तत्रजातःपरमतापसः ॥ शप्तःसतुवसिष्ठेनहरिश्चंद्रस्यकारणात् ॥ ३१ ॥ कौशिकेनवसिष्ठोऽपिशप्त्वाऽऽडीदेह भाक्कृतः ॥ शापादाडीबकौजातौतौमुनीविशदप्रभौ ॥ ३२ ॥ निवासंप्रापतुस्तीरेसरसोमानसस्यच ॥ चक्रतुर्दारुणंयुद्धंनखचंचुप्रताडनैः ॥३३॥वर्षाणा मयुतंयावत्तावृषीरोषसंयुतौ ॥ युयुधातेमदोन्मत्तौसिंहाविवपरस्परम् ॥ ३४ ॥ राजोवाच ॥ कथंतौमुनिशार्दूलौतापसौधर्मतत्परौ ॥ परस्परंवैरपरौसंजा तौकेनहेतुना ॥ ३५ ॥ शापंपरस्परंकेनकारणेनमहामती ॥ दत्तवंतौमिथःक्लेशकारकौदुःखदौनृणाम् ॥ ३६ ॥ व्यासउवाच ॥ हरिश्चंद्रोनृपश्रेष्ठस्त्रिशंकु तनयःपुरा ॥ बभूवरविवंशीयोरामचंद्रस्यपूर्वजः ॥ ३७ ॥ अनपत्यःसराजर्षिर्वरुणायमहाक्रतुम् ॥ प्रतिजज्ञेपुत्रकामोनरमेधंदुरासदम् ॥ ३८ ॥ वरुण स्तस्यसंतुष्टोयज्ञस्यनियमेकृते ॥ दधारगर्भंराज्ञस्तुभार्यापरमसुंदरी ॥३९॥ राजाबभूवसंतुष्टोदृष्ट्वाभार्यासदोहदाम् ॥ चकारविधिवत्कर्मगर्भसंस्कारकार कम् ॥ ४० ॥ सुषुवेतनयंनारीसर्वलक्षणसंयुतम् ॥ मुदंप्रापनृपस्तत्रपुत्रेजातेविशांपते ॥ ४१ ॥ कृतवाञ्जातकर्मादिसंस्कारविधिमुत्तमम् ॥ ददौहिरण्यं गादोग्ध्रीर्ब्राह्मणेभ्योविशेषतः ॥ ४२ ॥ जन्मोत्सवेऽतिसंवृत्तेगेहेवैयादसांपतिः ॥ आजगाममहाराजविप्रवेषधरस्तथा ॥ ४३ ॥ पूजितःपार्थिवेनाऽथद त्वाविधिवदासनम् ॥ कार्येपृष्टेब्रवीद्वाक्यंवरुणोऽस्मीतिभूपतिम् ॥ ४४ ॥ कुरुयज्ञंसुतंकृत्वापशुंपरमपावनम् ॥ सत्यवाग्भवराजेंद्रसंकल्पस्तुत्वयाकृतः ॥ ४५ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजाविह्वलोऽतिव्यथाकुलः ॥ संस्तभ्याऽऽधिनृपःप्राहवरुणंसत्कृतांजलिः ॥ ४६ ॥ स्वामिन्करोमितंयज्ञंसर्वथाविधिपूर्वकम् ॥ मयातेयत्प्रतिज्ञातंभवामिसत्यवागहम् ॥४७॥ पूर्णेमासेविशुद्ध्येतधर्मपत्नीसुरोत्तम ॥ विशुद्धायांतुभार्यायांकर्तव्यःसपशुर्मखः ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तेवचनेराज्ञावरुणःस्वगृहंगतः ॥ राजाबभूवसंतुष्टःकिंचिच्चिंतातुरस्तथा ॥ ४९ ॥

रिराटिराडिश्चेतिकोशः ॥ आडीबकमित्यत्राऽन्येषामपीतिपूर्वपदस्यदीर्घः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ प्रतिजज्ञइति ॥ ममपुत्रोभवतुतेनपुत्रेण नरमेधंमहाक्रतुंहेवरुणत्वत्प्रीत्यर्थंकरिष्यामीतिप्रतिज्ञांकृतवानित्यर्थः ॥ ३८ ॥ दधारगर्भमिति ॥ तेनवरुणसंतोषेणेतिशेषः ॥ ३९ ॥४०॥४१॥ दोग्ध्रीर्दुग्धवतीः ॥ ४२ ॥ यादसांपतिर्व रुणः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ भवामिभविष्यामीत्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥५३॥५४॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ कृत्वेति ॥ समयमितिशेषः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥६९॥

पूर्णेमासिपुनःपाशीपरीक्षार्थंनृपालये ॥ आजगामद्विजोभूत्वासुवेषःसुष्ठुभाषकः ॥ ५० ॥ कृतार्हणंसुखासीनंभूपतिस्तंसुरोत्तमम् ॥ उवाचविनयोपेतोहेतुगर्भंवचस्तदा ॥ ५१ ॥ असंस्कृतंसुतंस्वामिन्यूपेवध्नामितंकथम् ॥ संस्कृत्यक्षत्रियंकृत्वायजेऽहंयज्ञमुत्तमम् ॥ ५२ ॥ दयसेयदिदेवत्वंज्ञात्वादीनंस्वसेवकम् ॥ असंस्कृतस्यबालस्यनाऽधिकारोऽस्तिकुत्रचित् ॥५३॥ वरुणउवाच ॥ प्रतारयसिराजेंद्रकृत्वासमयमग्रतः ॥ दुस्त्यजस्तवजानामिसुतस्नेहोह्यपुत्रिणः ॥ ५४ ॥ गृहंव्रजामिभूपालवचनात्तवकोमलात् ॥ कियत्कालंप्रतीक्ष्याहमागमिष्यामितेगृहम् ॥ ५५ ॥ भवितव्यंत्वयाताततदासत्यवचोन्वितम् ॥ अन्यथात्वयिमुंचामिकोपंशापसमन्वितम् ॥ ५६ ॥ राजोवाच ॥ समावर्तनकर्मांतेसर्वथायादसांपते ॥ कृत्वापुत्रंपशुंयज्ञेयजिष्येविधिपूर्वकम् ॥ ५७ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञोवरुणःप्रीतमानसः ॥ तथेत्युक्त्वाययौतूर्णंनृपस्तुसुस्थितोऽभवत् ॥ ५८ ॥ रोहिताख्यइतिख्यातःसुतस्तस्यविवृद्धिमान् ॥ संजातश्चतुरःसर्वविद्यानांचविशारदः ॥ ५९ ॥ यज्ञस्यकारणंयेनज्ञातंसर्वंसविस्तरम् ॥ भयभीतस्ततःसोऽपिमत्वामरणमात्मनः ॥ ६० ॥ कृत्वापलायनंवीरोगतोसौगिरिगह्वरे ॥ अगम्येनृपतिस्थानेस्थितस्तत्रभयातुरः ॥ ६१ ॥ प्राप्तेकालेऽथवरुणोयज्ञार्थीनृपतेर्गृहम् ॥ गत्वातमाहभूपालंकुरुयज्ञंविशांपते ॥ ६२ ॥ प्रम्लानवदनोराजातमाहव्यथितेंद्रियः ॥ किंकरोमिगतःक्वाऽपिसुतोमेसुरसत्तम ॥ ६३ ॥ श्रुत्वातद्वचनंराज्ञःकुपितोयादसांपतिः ॥ शशापतंनृपंकोपादसत्यवादिनंभृशम् ॥ ६४ ॥ जलोदराभिधोव्याधिर्देहेभवतुतेनृप ॥ यतःप्रतारितश्चाऽहंकृत्वाकपटपंडित ॥ ॥ ६५ ॥ इतिशप्त्वाययौधामस्वकंपाशधरस्तदा ॥ राजाचिंतातुरस्तस्थौभवनेव्याधिपीडितः ॥ ६६ ॥ यदाऽतिव्याधितोराजारोगेणशापजेनह ॥ तदाशुश्रावपुत्रोऽपिपितरंव्याधिपीडितम् ॥ ६७ ॥ पांथिकःप्राहपुत्रंहिपितातेभृशदुःखितः ॥ जलोदरविकारेणशापजेननृपात्मज ॥ ६८ ॥ विनष्टंजीवितंतेऽद्यवृथाजातस्यदुर्मते ॥ यत्त्यक्त्वापितरंदुःस्थंप्राप्तोऽसिगिरिगह्वरम् ॥६९॥ किमनेनशरीरेणप्राप्तंतेजन्मनःफलम् ॥ देहदंदुःखितंकृत्वास्थितोऽस्यत्रसुताधम ॥ ७० ॥ प्राणास्त्याज्याःपितुःकार्येसत्पुत्रेणेतिनिश्चयः ॥ त्वदर्थेदुःखितोराजाक्रंदतिव्याधिपीडितः ॥ ७१ ॥ व्यासउवाच ॥ तदाकर्ण्यवचस्तथ्यंपांथिकाद्धर्मसंयुतम् ॥ यदाचक्रेमनोगंतुंद्रष्टुंतातंव्यथातुरम् ॥ ७२ ॥ तदाविप्रवपुर्भूत्वावासवस्तमुपागमत् ॥ रहःप्राहहितंवाक्यंदयावानिवभारत ॥ ॥ ७३ ॥ मूर्खोसिराजपुत्रत्वंगमनायमतिंवृथा ॥ करोषिपितरंत्वद्यनजानासिव्यथायुतम् ॥ ७४ ॥ इतिश्रीदे॰भा॰महापु॰षष्ठस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

देहदंपितरमित्यर्थः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





चतुर्भिराधिकैःपंचाशद्भिःपद्यैरनन्तरम् ॥ शुनःशेपकथांतेचयुद्धमाडीवकंस्मृतम् ॥ १ ॥ पितुर्गृहेगम्यतेचेत्पितातवनरमेधंत्वत्पशुंकंकरिष्यतितस्मान्मागमस्तत्रेत्यभिप्रायेणपितुर्वृत्तांत मिंद्रोबोधयति । साहसमिति ॥ प्रियंपुत्रंपशुंकृत्वाकथितोवेदेपूक्तोमखोनरमेधोवरुणायपूर्वंप्रतिज्ञातइतियत्तद्राजासाहसंकृतवानित्यर्थः ॥ १ ॥ ततःकिंतत्राह । गतेत्वयीति ॥ अघृण इतिच्छेदः ॥ व्यथातुरःपीडितः ॥ २ ॥ स्थितस्तत्रैवेति ॥ पितृगृहंनगतइत्यर्थः ॥ मायेशीमायास्वामिनीभगवतीब्रह्मचिद्रूपिणीतस्यामाययामोहितइत्यर्थः ॥३॥४॥५॥६॥ त्रयोदश

॥ इंद्रउवाच ॥ साहसंकृतवान्राजापूर्वंयत्कथितोमखः ॥ वरुणायप्रतिज्ञातःपुत्रंकृत्वापशुंप्रियम् ॥ १ ॥ गतेत्वयिपितापुत्रंबद्धायूपेऽघृणःपुनः ॥ पशुं कृत्वामहाबुद्धेवाधिष्यतिव्यथातुरः ॥ २ ॥ इत्थंनिषिद्धस्तत्पुत्रःशक्रेणाऽमिततेजसा ॥ स्थितस्तत्रैवमायेशीमाययामोहितोभृशम् ॥ ३ ॥ यदापुनःपुनः श्रुत्वापितरंरोगपीडितम् ॥ गमनायमतिंचक्रेतदेंद्रःप्रत्यषेधयत् ॥४॥ हरिश्चंद्रोऽतिदुःखार्तःपप्रच्छगुरुमंतिके ॥ स्थितंवसिष्ठमेकांतेसर्वज्ञंहिततत्परम् ॥ ॥ ५ ॥ राजोवाच ॥ भगवन्किंकरोम्यद्यकातरोऽस्मिव्यथाकुलः ॥ त्राहिमांदुःखमनसंमहाव्याधिभयातुरम् ॥ ६ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ शृणुराजन्नुपायो ऽस्तिरोगनाशंप्रतिस्तुतः ॥ त्रयोदशविधाःपुत्राःकथिताधर्मसंग्रहे॥७॥तस्मात्क्रीतंसुतंकृत्वायजस्वमखमुत्तमम् ॥ द्रव्यंदत्वायथोद्दिष्टमानयस्वद्विजोत्त मम् ॥ ८ ॥ एवंकृतेमखेभूपरोगनाशोभविष्यति ॥ वरुणोऽपिप्रसन्नात्माभविष्यतियथासुखम् ॥ ९ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाराजाप्रोवाच मंत्रिणम् ॥ अन्वेषयमहाबुद्धेविषयेष्वतियत्नतः ॥ १० ॥ कदाचित्कोऽपिलोभार्थीददातिस्वसुतंपिता ॥ समानयधनंदत्त्वायावत्प्रार्थयतेऽप्यसौ ॥११॥ सर्वथैवसमानेयोयज्ञार्थेद्विजबालकः ॥ नकार्याकृपणाबुद्धिस्त्वयामत्कार्यहेतवे ॥ १२ ॥ प्रार्थनीयस्त्वयापुत्रःकस्यचिद्द्विजवादिनः॥द्रव्येणदेहियज्ञार्थं कर्तव्योऽसौपशुःकिल ॥१३॥ इतिसंचोदितस्तेनसचिवःकार्यहेतवे ॥ अन्वेषयामासपुरेग्रामेग्रामेगृहेगृहे ॥ १४ ॥ एवमन्वेषतस्तस्यविषयेकश्चिदातु रः ॥ निर्धनस्त्रिसुतश्चासीदजीगर्तेतिनामतः ॥ १५ ॥ तस्यपुत्रंशुनःशेपंमध्यमंमंत्रिसत्तमः ॥ आनयामासदत्वार्थंप्रार्थितंयद्धनंतदा ॥ १६ ॥ समानीय शुनःशेपंसचिवःकार्यतत्परः ॥ राज्ञेनिवेदयामासपशुयोग्यंद्विजात्मजम् ॥ १७ ॥ राजाऽतिमुदितस्तेनविप्रानानीयसर्वतः ॥ कारयामाससंभारान्यज्ञार्थं वेदवित्तमान् ॥ १८ ॥ प्रारब्धेतुमखेतत्रविश्वामित्रोमहामुनिः ॥ बद्धंदृष्ट्वाशुनःशेपंनिषिषेधनृपंतदा ॥ १९ ॥ राजन्मासाहसंकार्षीर्मुंचैनंद्विजबालकम् ॥ प्रार्थयाम्यहमायुष्मन्सुखंतेऽद्यभविष्यति ॥ २० ॥ क्रंदत्ययंशुनःशेपःकरुणामांदुनोत्यपि ॥ दयावान्भवराजेंद्रकुरुमेवचनंनृप ॥ २१ ॥

विधाइति॥औरसक्षेत्रजदत्त्रिमकृत्रिमादयोमनुस्मृतिप्रसिद्धाः ॥ धर्मसंग्रहेधर्मशास्त्रे ॥७॥ ८ ॥ ९ ॥ विषयेषुदेशेषु ॥ १० ॥ असौपितायावद्धनंप्रार्थयतेतावद्दत्वेत्यन्वयः ॥११॥१२ ॥ द्विजवादिनःब्राह्मणस्येत्यर्थः ॥ प्रार्थनास्वरूपमाह । द्रव्येणदेहीति ॥ इतिप्रार्थनीयइतिशेषः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २२ ॥ तंद्विजसुतंस्वदेहसंरक्षार्थंहंसीदमनुचितमितिभावः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ पाशधरस्यवरुणस्य ॥ २६ ॥ प्लुतस्वरेणाऽऽक्रोशेनजजापेत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ मृतेर्मरणान्मोचितंमुक्तंकृतवानित्यर्थः ॥ २९ ॥ गाधिजोविश्वामित्रः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ राज्यमद्भुतमितिइयंकथाविस्तरेणसप्तमस्कंधेवक्ष्यते ॥३२॥३३॥३४॥जाल्ममूर्खं॥३५॥३६॥३७॥ नीडंपक्षिगृ

परदेहस्यरक्षायैस्वदेहंयेदयापराः ॥ ददतिक्षत्रियाःपूर्वंस्वर्गकामाःशुचिव्रताः ॥ २२ ॥ तंस्वदेहस्यरक्षार्थंहंसिद्विजसुतंबलात् ॥ पापंमाकुरुराजेंद्रदयावान्भववालके ॥ २३ ॥ सर्वेषांसदृशीप्रीतिर्देहेवेत्सिस्वयंनृप ॥ मुंचैनंबालकंतस्मात्प्रमाणंयदिमेवचः ॥ २४ ॥ व्यासउवाच ॥ अनादृत्यचतद्वाक्यंराजा दुःखातुरोभृशम् ॥ नमुमोचमुनिस्तस्मैचुकोपाऽतीवतापसः ॥ २५ ॥ उपदेशंददौतस्मैशुनःशेपायकौशिकः ॥ मंत्रंपाशधरस्याऽथदयावान्वेदवित्तमः॥ ॥२६॥ शुनःशेपोऽपितंमंत्रमसकृद्बधकर्शितः ॥ प्लुतस्वरेणचुक्रोशसंस्मरन्वरुणंभृशम् ॥२७॥ स्तुवंतंमुनिपुत्रंतंज्ञात्वावैयादसांपतिः॥तत्राऽऽगत्यशुनःशेपंमुमोचकरुणार्णवः ॥ २८ ॥ रोगहीनंनृपंकृत्वावरुणःस्वगृहंययौ ॥ विश्वामित्रस्तुतंपुत्रंकृतवान्मोचितंमृतेः ॥ २९ ॥ नकृतंवचनंराज्ञाकौशिकस्यमहात्मनः ॥ रोषंदधारमनसाराजोपरिसगाधिजः ॥ ३० ॥ एकस्मिन्समयेराजाहयारूढोवनंगतः ॥ सूकरंहंतुकामस्तुमध्याह्नेकौशिकीतटे ॥ ३१ ॥ वृद्धब्राह्मणवेषेणविश्वामित्रेणवंचितः ॥ सर्वस्वंप्रार्थितंतस्यगृहीतंराज्यमद्भुतम् ॥ ३२ ॥ पीडितोऽसौहरिश्चंद्रोयजमानोयतोभृशम् ॥ वसिष्ठःकौशिकंप्राहवनेप्राप्तंयदृच्छया ॥ ३३ ॥ क्षत्रियाधमदुर्बुद्धेवृथाब्राह्मणवेषभृत् ॥ बकधर्मवृथाकिंत्वंगर्ववहसिदांभिक ॥ ३४ ॥ कस्मात्त्वयानृपश्रेष्ठोयजमानोममाप्यसौ ॥ अपराधंविनाजाल्मगमितोदुःखमद्भुतम् ॥ ३५ ॥ बकध्यानपरोयस्मात्तस्मात्त्वंवैबकोभव ॥ इतिशप्तोवसिष्ठेनकौशिकःप्राहतंपुनः ॥ ३६ ॥ त्वमप्याडिर्भवाऽऽयुष्मन्बकोऽहंयावदेवहि ॥ व्यासउवाच ॥ एवंपरस्परंदत्वाशापंतौक्रोधपीडितौ ॥ ३७ ॥ अंडजौतरसाजातौसरस्याडीबकौमुनी ॥ एकस्मिन्पादपेनीडंकृत्वाऽसौबकरूपभाक् ॥३८॥ विश्वामित्रःस्थितस्तत्रदिव्येसरसिमानसे ॥ अन्यस्मिन्पादपेकृत्वावासिष्ठोनीडमुत्तमम् ॥ ३९ ॥ आडीरूपधरस्तस्थावन्योन्यंद्वेषतत्परौ ॥ दिनेदिनेतौसंग्रामंचक्रतुःक्रोधसंयुतौ ॥ ४० ॥ दुःखदंसर्वलोकानांक्रंदमानावुभौभृशम् ॥ चंचुपक्षप्रहारैस्तुनखाघातैःपरस्परम् ॥ ४१ ॥ जघ्नतूरुधिराक्लिन्नौपुष्पिताविवकिंशुकौ ॥ एवंबहूनिवर्षाणिपक्षिरूपधरौमुनी ॥ ४२ ॥ स्थितौतत्रमहाराजशापपाशेनयंत्रितौ ॥ राजोवाच ॥ कथंमुक्तौमुनिश्रेष्ठौशापाद्वसिष्ठकौशिकौ ॥ ४३ ॥ तन्ममाचक्ष्वविप्रर्षेपरंकौतूहलंहिमे ॥ व्यासउवाच ॥ युध्यमानावुभौदृष्ट्वाब्रह्मालोकपितामहः ॥ ४४ ॥ तत्राऽऽजगामाऽनिमिषैर्वृतःसर्वैर्दयापरैः ॥ तावाश्वास्यजगत्कर्तायुद्धतोविनिवार्यच ॥ ४५ ॥ शापंसंमोचयामासतयोःक्षिप्तंपरस्परम् ॥ ततोजग्मुःसुराःसर्वेस्वानिधिष्ण्यानिपद्मभूः ॥ ४६ ॥

म् ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ अनिमिषैर्देवगणैः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४७ ॥ मैत्रावरुणिनाशांतेनवसिष्ठेनापीत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ चित्तशुद्धेर्दौर्लभ्यदर्शनार्थमियंकथादृष्टांतार्थंगृहीतातामुपसंहरति । तस्माद्राजन्निति ॥ ५० ॥ निरर्थकमित्यस्योत्तरत्रान्वयः ॥ ५१ ॥ एतादृशीदुर्लभाचित्तशुद्धिःकथंसाधनीयेतिचेत्तत्राह । वासनारहितमिति ॥ सत्संगंपूर्वोक्तंकृत्वावेदांतश्रवणादिनाचित्तंवासनारहितंयदाभवतितदातच्छुद्धमितिकथ्यते तथाकृत्वातीर्थादिषुवसेदित्यर्थः ॥ किंकुर्वन्वसेत्तत्राह । देवीपूजनतत्परइति ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ एवंकुर्वतःकिंफलंभवतितत्राह । एवंत्विति ॥ मुच्यतेश्रीभगवत्यनुग्रहेणज्ञानप्राप्तिद्वारेणेत्यर्थः ॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेत्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ एकोनसप्ततिश्लोकैर्वसिष्ठस्यतुशापतः ॥ मैत्रावरुणिताजातासाकथाप्रोच्यतेऽधुना ॥ १ ॥ वसिष्ठस्य पूर्वाध्यायेमैत्रावरुणिरितिनामोक्तंतत्रकेनप्रवृत्तिनिमित्तेनतन्नामजातमितिराजापृच्छति । मैत्रावरुणिरित्युक्तमिति ॥ यदिमित्रावरुणयोरपत्यमित्यर्थः तर्हिब्रह्मणस्तनुजस्यतन्नामकथं

सत्यलोकंजगामाशुहंसारूढःप्रतापवान् ॥ विश्वामित्रोऽप्यगात्तूर्णंवसिष्ठःस्वाश्रमंगतः ॥ ४७ ॥ मिथःस्नेहंततःकृत्वाप्रजापत्युपदेशतः ॥ मैत्रावरुणिनाप्येवंकृतंयुद्धमकारणम् ॥ ४८ ॥ कौशिकेनसमंभूपदुःखदंचपरस्परम् ॥ कोनाममानवोलोकेदेवोवादानवोऽपिवा ॥ ४९ ॥ अहंकारजयंकृत्वासर्वदासुखभाग्भवेत् ॥ तस्माद्राजंश्चित्तशुद्धिर्महतामपिदुर्लभा ॥ ५० ॥ यत्नेनसाधनीयासातद्विहीनंनिरर्थकम् ॥ तीर्थदानतपःसत्यंयत्किंचिद्धर्मसाधनम् ॥ ॥ ५१ ॥ "श्रद्धात्रिविधाप्रोक्तासात्त्विकीराजसीतथा ॥ तामसीसर्वदेहेषुदेहिनांधर्मकर्मसु ॥ १ ॥ सात्त्विकीदुर्लभालोकेयथोक्तफलदासदा ॥ तदर्धफलदाप्रोक्ताराजसीविधिसंयुता ॥ २ ॥ तामसीत्वफलाराजन्नतुकीर्तिकरीपुनः ॥ कामक्रोधाभिभूतानांजनानांनृपसत्तम ॥३॥" वासनारहितंकृत्वातच्चित्तंश्रवणादिना ॥ तीर्थादिषुवसेन्नित्यंदेवीपूजनतत्परः ॥५२॥ देवीनामानिवचसागृह्णंस्तस्यागुणान्स्तुवन् ॥ ध्यायंस्तस्याःपदांभोजंकलिदोषभयार्दितः॥५३॥ एवंतुकुर्वतस्तस्यनकदाचित्कलेर्भयम् ॥ अनायासेनसंसारान्मुच्यतेपातकीजनः ॥५४॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥ जनमेजयउवाच ॥ मैत्रावरुणिरित्युक्तंनामतस्यमुनेःकथम् ॥ वसिष्ठस्यमहाभागब्रह्मणस्तनुजस्यह ॥ १ ॥ किमसौकर्मतोनामप्राप्तवान्गुणतस्तथा ॥ ब्रूहिमेवदतांश्रेष्ठकरणंतस्यनामजम् ॥ २ ॥ व्यासउवाच ॥ निबोधनृपतिश्रेष्ठवसिष्ठोब्रह्मणःसुतः ॥ निमिशापात्तनुंत्यक्त्वापुनर्जातोमहाद्युतिः ॥ ३ ॥ मित्रावरुणयोर्यस्मात्तस्मात्तन्नामविश्रुतम् ॥ मैत्रावरुणिरित्यस्मिँल्लोकेसर्वत्रपार्थिव ॥४॥ राजोवाच ॥ कस्माच्छप्तःसधर्मात्माराज्ञाब्रह्मात्मजोमुनिः ॥ चित्रमेतन्मुनिंलग्नोराज्ञःशापोऽतिदारुणः ॥ ५ ॥ अनागसंमुनिंराजाकिमसौशप्तवान्मुने ॥ कारणंवदधर्मज्ञतस्यशापस्यमूलतः ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ कारणंतुमयाप्रोक्तंतवपूर्वंविनिश्चितम् ॥ संसारोऽयंत्रिभिर्व्याप्तोराजन्मायागुणैःकिल ॥ ७ ॥

जातमित्यर्थः ॥ १ ॥ तस्मात्किमसाविति ॥ असौवसिष्ठःकिंतयोर्मित्रावरुणयोःकर्मतस्तन्नामप्राप्तवानथवागुणतइत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ यस्मान्मित्रावरुणयोरपत्यामितिशेषस्तस्मादित्यन्वयः ॥ ४ ॥ चित्रमेतदिति ॥ राज्ञःशापोमुनिंलग्नःप्राप्तएतदप्याश्चर्यमित्यर्थः ॥ ५ ॥ किमसौकिमर्थमित्यर्थः ॥ मूलतआदितः ॥ ६ ॥ पूर्वमितितृतीयचतुर्थस्कंधयोरित्यर्थः ॥ मायागुणैरिति ॥ मायामयःसर्वःप्रपंचोमायायास्त्रिभिर्गुणैःसर्वदाव्याप्तः ॥ तेचगुणाःसर्वदोपचयापचयाविशिष्टाः ॥ तथाचयदासत्वगुणोपचयस्तदानीचाऽप्युत्तमंकर्मकुर्वंति ॥ यदारजस्तमोगुणोपचयस्तदामहांतोऽपिनीचंकर्मकुर्वंतीतिमहांतंप्रतिकथंशापोदत्तइत्याश्चर्यंनकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तदेवस्पष्टयति । धर्मंकरोत्विति ॥ ननुतेसर्वेधर्मकर्तारःसात्त्विकाःप्रतिभांतितत्राह । सर्वेषांत्विति ॥ नोज्ज्वलंनसात्त्विकंतद्धर्मादिकमित्यर्थः ॥८॥ ९ ॥ १० ॥ विधेर्बलात्प्रारब्धप्रेरितत मोगुणवलादित्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ नन्वेतादृशामहांतःकिमितिगुणत्रयवेगदमनंनाचरंतितत्राह । पराशक्तिप्रभावोयमिति ॥ तर्हिकोऽपिमुक्तोनस्यादितिचेत्तत्राह । यस्यानुग्रहमिति॥ ॥ १३ ॥ वंधमोक्षादिकंसर्वंतादिच्छयाभवतीत्याह । महांतोऽपीति ॥ अद्यापितेस्वसेवार्थंब्रह्मादयोमहांतोऽपिस्थापिताःनमोचिताः ॥ अथचपामराअपिसत्यव्रतादयस्तृतीयस्कंधोक्तप्रका रेणमोचिताः ॥ अत्रमहाराज्ञ्याःपराशक्तेरिच्छैवकारणंनान्यादित्यर्थः ॥ १४ ॥ ननुतर्हिस्वतंत्रायास्तस्याःपरमेश्वर्यामनसिकिमस्तितत्राह ॥ तस्यास्त्विति ॥ तर्हिकिंकर्तव्यमितिचेत्त द्भयंमाकार्षीर्यतोभक्तवश्याभगवतीतिनिश्चितंभवति ततोनकिंचिद्भयमस्तीत्यभिप्रायेणाह । तथापीति ॥ १५ ॥ यस्मादेवंतस्मादिति ॥ दोषनिर्मूलनायगुणत्रयोच्छेदायेत्यर्थः ॥ परंतु

धर्मंकरोतुभूपालश्चरंतुतापसास्तपः ॥ सर्वेषांतुगुणैर्विद्धंनोज्ज्वलंतद्भवेदिह ॥८॥ कामक्रोधाभिभूताश्चराजानोमुनयस्तथा ॥ लोभाहंकारसंयुक्ताश्चरंति दुश्चरंतपः ॥ ९ ॥ यजंतिक्षत्रियाराजन्नजोगुणसमावृताः ॥ ब्राह्मणास्तुतथाराजन्नकोऽपिसत्त्वसंयुतः ॥ १० ॥ ऋषिणाऽसौनिमिःशप्तस्तेनशप्तोमुनिःपु नः ॥ दुःखाद्दुःखतरंप्राप्तावुभावपिविधेर्बलात् ॥ ११ ॥ द्रव्यशुद्धिःक्रियाशुद्धिर्मनसःशुद्धिरुज्ज्वला ॥ दुर्लभाप्राणिनांभूपसंसारेत्रिगुणात्मके ॥ १२ ॥ पराशक्तिप्रभावोऽयंनोल्लंघ्यःकेनचित्क्वचित् ॥ यस्याऽनुग्रहमिच्छेत्सामोचयत्येवतंक्षणात् ॥ १३ ॥ महांतोऽपिनमुच्यंतेहरिब्रह्महरादयः ॥ पामराअपि मुच्यंतेयथासत्यव्रतादयः ॥ १४ ॥ तस्यास्तुहृदयंकोऽपिनवेत्तिभुवनत्रये ॥ तथापिभक्तवश्येयंभवत्येवसुनिश्चितम् ॥ १५ ॥ तस्मात्तद्भक्तिरास्थेयादो षनिर्मूलनायच ॥ रागदंभादियुक्ताचेत्साभक्तिर्नाशिनीभवेत् ॥ १६॥ इक्ष्वाकुकुलसंभूतोनिमिर्नामनराधिपः ॥ रूपवान्गुणसंपन्नोधर्मज्ञोलोकरंजकः॥१७॥ सत्यवादीदानपरोयाजकोज्ञानवाञ्छुचिः ॥ द्वादशस्तनयोधीमान्प्रजापालनतत्परः ॥ १८ ॥ पुरंनिवेशयामासगौतमाश्रमसन्निधौ ॥ जयंतुपुरसंज्ञंतुब्रा ह्मणानांहितायसः॥ १९॥बुद्धिस्तस्यसमुत्पन्नायजेयमितिराजसी॥ यज्ञेनबहुकालेनदक्षिणासंयुतेनच॥२०॥इक्ष्वाकुंपितरंदृष्ट्वायज्ञकार्यायपार्थिव॥कारया माससंभारंयथोद्दिष्टंमहात्मभिः॥२१॥भृगुमंगिरसंचैववामदेवंचगौतमम्॥ वसिष्ठंचपुलस्त्यंचऋचीकंपुलहंक्रतुम् ॥ २२ ॥ मुनीनामंत्रयामाससर्वज्ञान्वेदपा रगान्॥यज्ञविद्याप्रवीणांश्चतापसान्वेदवित्तमान् ॥२३॥राजासंभृतसंभारःसंपूज्यगुरुमात्मनः॥वसिष्ठंप्राहधर्मज्ञोविनयेनसमन्वितः ॥२४॥ यजेयंमुनिशार्दू लयाजयस्वकृपानिधे ॥ गुरुस्त्वंसर्ववेत्तासिकार्यमेकुरुसांप्रतम् ॥ २५॥ यज्ञोपकरणंसर्वंसमानीतंसुसंस्कृतम्॥ पंचवर्षसहस्रंतुदीक्षांकर्तुंमतिश्चमे ॥२६॥ यस्मिन्यज्ञेसमाराध्यादेवीश्रीजगदंबिका ॥ तत्प्रीत्यर्थमहंयज्ञंकरोमिविधिपूर्वकम् ॥ २७ ॥

साभक्तिर्निर्व्याजाचेत्कल्याणकरीनोचेदनर्थकरीत्याह । रागदंभादीति ॥ इदंनिर्व्याजभक्तेरावश्यकत्वद्योतनार्थंविभीषिकामात्रम् ॥ वस्तुतस्तुसहेलंवासलीलंवायस्याःस्मरणमात्रतः ॥ सिद्ध्योष्टौकरस्थाःस्युरंतेमुक्तिश्चशाश्वतीत्यादिवचनैर्यथाकथांचिदपिदेव्याभक्तिःसिद्धिदायिनीतिबोध्यम् ॥ १६ ॥ अथकथांप्रस्तौति । इक्ष्वाक्विति ॥ १७ ॥ इक्ष्वाकोर्द्वादशस्तनयो निमिः ॥ १८ ॥ ब्राह्मणानामग्रहारंजयंतुपुरसंज्ञकंनिवेशयामासेत्यन्वयः ॥ १९ ॥ २० ॥ इक्ष्वाकुंपितरंदृष्ट्वातदनुज्ञामादायेतिशेषः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ किंदेवतोद्देशेनयज्ञइतिचेत्तत्राह । यस्मिन्यज्ञेइति ॥ श्रीदेवीप्रीत्यर्थंयज्ञःक्रियतइत्यर्थः ॥ २७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ २८ ॥ इंद्रोऽपिदेवीमखंकर्तुमुद्युक्तोमयादीक्षांगमितः प्रापितोऽस्ति ॥ तथाचमध्येआगमनंममनसंभवतित्वंतद्यज्ञसमाप्त्युत्तरंप्रारंभंकुर्वित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ प्रतिपालयकालमिति शेषः ॥ ३१ ॥ पालयामिकथंकथंपालयिष्यामीत्यर्थः ॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥ हेपितर्मेजन

तच्छ्रुत्वाऽसौनिमेर्वाक्यंवसिष्ठःप्राहभूपतिम् ॥ इंद्रेणाऽहंवृतःपूर्वंयज्ञार्थंनृपसत्तम ॥ २८॥ पराशक्तिमखंकर्तुमुद्युक्तःपाकशासनः ॥ सदीक्षांगमितोदेवः पंचवर्षशतात्मिकाम् ॥ २९ ॥ तस्मात्त्वमंतरंतावत्प्रतिपालयपार्थिव ॥ इंद्रयज्ञेसमाप्तेऽत्रकृत्वाकार्यंदिवस्पतेः ॥ ३० ॥ आगमिष्याम्यहंराजंस्तावत्त्वं प्रतिपालय ॥ ॥ राजोवाच ॥ मयानिमंत्रिताश्चान्येमुनयोयज्ञकारणात् ॥ ३१ ॥ संभाराःसंभृताःसर्वेपालयामिकथंगुरो ॥ इक्ष्वाकूणांकुलेब्रह्मन्गुरुस्त्वंवेदवित्तमः ॥३२॥ कथंत्यक्त्वाऽद्यमेकार्यमुद्यतोगंतुमाशुवै ॥ नतेयुक्तंद्विजश्रेष्ठयदुत्सृज्यमखंमम ॥ ३३ ॥ गंतासिधनलोभेनलोभाकुलितचेतनः॥ निवारितोऽपिराज्ञासजगामेंद्रमखंगुरुः ॥ ३४ ॥ राजाऽपिविमनाभूत्वागौतमंप्रत्यपूजयत् ॥ इयाजहिमवत्पार्श्वेसागरस्यसमीपतः ॥ ३५ ॥ दक्षिणाबहुलादत्ताविप्रेभ्योमखकर्मणि ॥ निमिनापंचसाहस्रीदीक्षातत्रकृतानृप ॥ ३६ ॥ ऋत्विजःपूजिताःकामंधनैर्गोभिर्मुदायुताः ॥ शक्रयज्ञेसमाप्तेतुपंचवर्षशतात्मके ॥ ३७ ॥ आजगामवसिष्ठस्तुराज्ञःसत्रदिदृक्षया ॥ आगत्यसंस्थितस्तत्रदर्शनार्थंनृपस्यच ॥ ३८ ॥ तदाराजाप्रसुप्तस्तुनिद्रयाऽपहृतोभृशम्॥नासौप्रबोधितोभृत्यैर्नागतस्तुमुनिंनृपः ॥ ३९ ॥ वसिष्ठस्यततोमन्युःप्रादुर्भूतोऽवमानतः ॥ अदर्शनान्निमेस्तत्रचुकोपमुनिसत्तमः ॥ ४० ॥ शापंचदत्तवांस्तस्मैराज्ञेमन्युवशंगतः ॥ यस्मात्त्वंमांगुरुंत्यक्त्वाकृत्वान्यंगुरुमात्मनः ॥४१॥ दीक्षितोसिबलान्मंदमामवज्ञायपार्थिव ॥ वारितोऽपिमयातस्माद्विदेहस्त्वंभविष्यसि ॥ ४२ ॥ पतत्विदंशरीरंतेविदेहोभवभूपते ॥ व्यासउवाच ॥ इतितद्व्याहृतंश्रुत्वाराज्ञस्तुपरिचारकाः ॥ ४३ ॥ सद्यःप्रबोधयामासुर्मुनिमाहुःप्रकोपितम् ॥ कुपितंतंसमागत्यराजाविगतकल्मषः ॥४४॥ उवाचवचनंश्लक्ष्णंहेतुगर्भंचयुक्तिमत् ॥ ममदोषोनधर्मज्ञगतस्त्वंतृष्णयाकुलः ॥४५॥ हित्वामांयजमानंवैप्रार्थितोऽपिमयाभृशम् ॥ नलज्जसेद्विजश्रेष्ठकृत्वाकर्मजुगुप्सितम् ॥ ४६ ॥ संतोषेब्राह्मणश्रेष्ठजानन्धर्मस्यनिश्चयम् ॥ पुत्रोऽसिब्रह्मणःसाक्षाद्देवदेवांगवित्तमः ॥ ४७ ॥ नवेत्सिविप्रधर्मस्यगतिंसूक्ष्मांदुरत्ययाम् ॥ आत्मदोषंमयिज्ञात्वामृषामांशप्तुमिच्छसि ॥ ४८ ॥ त्याज्यस्तुसुजनैःक्रोधश्चंडालादधिकोयतः ॥ वृथाक्रोधपरीतेनमयिशापःप्रपातितः ॥ ४९ ॥ तवाऽपिचपतत्वद्यदेहोयंक्रोधसंयुतः ॥ एवंशप्तोमुनीराज्ञाराजाचमुनिनातथा ॥ ५० ॥ परस्परंप्राप्यशापंदुःखितौतौबभूवतुः ॥ वसिष्ठस्त्वतिचिंतार्तोब्रह्माणंशरणंगतः ॥ ५१ ॥ निवेदयामासतथाशापंभूपकृतंमहत् ॥ वसिष्ठउवाच ॥ राज्ञाशप्तोऽस्मिदेहोऽयंपतत्वद्यतवेतिवै ॥ ५२ ॥ किंकरोमिपितःप्राप्तंकष्टंकायप्रपातजम् ॥ अन्यदेहसमुत्पत्तौजनकंवदसांप्रतम्॥५३॥

कंवदकस्योदरेमयाजन्मग्राह्यम् ॥ ५३ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

किंच ॥ तथामेइति ॥ तथातद्वदेवमेदेहसंयोगः पूर्ववत्समपद्यतांप्राप्नुयात् ॥ यदाकारोऽयंदेहस्तदाकारएवद्वितीयोदेहोभवत्वित्यर्थः ॥ तथयादृशंज्ञानमस्मिन्देहेऽस्तितादृशमेवतस्मिन्देहेप्यस्त्वित्यर्थः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ जीवांशेनलिंगदेहेनविवेशेत्यन्वयः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ तौमित्रावरुणौ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥६७॥ तेवंशस्यसुखार्थंपालयामासेतिराजानंप्रतिव्यासोक्तिः ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥ त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुनिमेर्देहांतरेगतिम् ॥ मोक्त्वा

तथामेदेहसंयोगःपूर्ववत्समपद्यताम् ॥ यादृशंज्ञानमेतस्मिन्देहेतत्राऽस्तुतत्पितः ॥ ५४ ॥ समर्थोऽसिमहाराजप्रसादंकर्तुमर्हसि ॥ वसिष्ठस्यवचःश्रुत्वाब्रह्माप्रोवाचतंसुतम् ॥५५॥ मित्रावरुणयोस्तेजस्त्वंप्रविश्यस्थिरोभव ॥ तस्मादयोनिजःकालेभवितात्वंनसंशयः ॥५६॥ पुनर्देहंसमासाद्यधर्मयुक्तोभविष्यसि ॥ भूतात्मावेदवित्कामंसर्वज्ञःसर्वपूजितः ॥५७॥ एवमुक्तस्तदापित्राप्रययौवरुणालयम् ॥ कृत्वाप्रदक्षिणंप्रीत्याप्रणम्यचपितामहम् ॥ ५८ ॥ विवेशसतयोर्देहेमित्रावरुणयोःकिल ॥ जीवांशेनवसिष्ठोऽथत्यक्त्वादेहमनुत्तमम् ॥५९॥ कदाचित्पूर्वशीराजन्नागतावरुणालयम् ॥ यदृच्छयावरारोहासखीगणसमावृता ॥ ६० ॥ दृष्ट्वातामप्सरांदिव्यांरूपयौवनसंयुताम् ॥ जातौकामातुरौदेवौतदातामूचतुर्नृप ॥ ६१ ॥ विवशौचारुसर्वांगींदेवकन्यांमनोरमाम् ॥ आवांत्वमनवद्यांगिवरयस्वसमाकुलौ ॥ ६२ ॥ विहरस्वयथाकामंस्थानेऽस्मिन्वरवर्णिनि ॥ तथोक्तासाततोदेवीताभ्यांतत्रस्थितावशा ॥ ६३ ॥ कृत्वाभावंस्थिरंदेवीमित्रावरुणयोर्गृहे ॥ सागृहीत्वातयोर्भावंसंस्थिताचारुदर्शना ॥ ६४ ॥ तयोस्तुपतितंवीर्यंकुंभेदैवादनावृते ॥ तस्माज्जातौमुनीराजन्द्वावेवाऽतिमनोहरौ ॥ ६५ ॥ अगस्तिःप्रथमस्तत्रवसिष्ठश्चाऽपरस्तथा ॥ मित्रावरुणयोर्वीर्यात्तापसावृषिसत्तमौ ॥ ६६ ॥ प्रथमस्तुवनंप्राप्तोबालएवमहातपाः ॥ इक्ष्वाकुस्तुवसिष्ठंतंबालंवव्रेपुरोहितम् ॥ ६७ ॥ वंशस्याऽस्यसुखार्थंतेपालयामासपार्थिव ॥ विशेषेणमुनिंज्ञात्वाप्रीत्यायुक्तोबभूवह ॥ ६८ ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंवसिष्ठस्यचकारणम् ॥ शापाद्देहांतरप्राप्तिर्मित्रावरुणयोःकुले ॥ ६९ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ देहप्राप्तिर्वसिष्ठस्यकथिताभवताकिल ॥ निमिःकथंपुनर्देहंप्राप्तवानितिमेवद ॥ १ ॥ व्यासउवाच ॥ वसिष्ठेनचसंप्राप्तःपुनर्देहोनराधिप ॥ निमिनानतथाप्राप्तोदेहःशापादनंतरम् ॥ २ ॥ यदाशप्तोवसिष्ठेनतदातेब्राह्मणाःक्रतौ ॥ ऋत्विजोयेवृताराज्ञातेसर्वेसमचिंतयन् ॥ ३ ॥ किंकर्तव्यमहोऽस्माभिःशापदग्धोमहीपतिः ॥ अस्मिन्यज्ञेत्वसंपूर्णेदीक्षायुक्तश्चधार्मिकः ॥ ४ ॥ किंकर्तव्यंकार्यमेतद्विपरीतमभूत्किल ॥ अवश्यंभाविभावत्वादशक्ताःस्मनिवारणे ॥ ५ ॥

राज्ञांहैहयानांकथाप्रारभ्यतेऽधुना॥१॥ पूर्वाध्यायेवसिष्ठदेहप्राप्तिकथांश्रुत्वानिमेर्देहांतरप्राप्तिंपृच्छतिदेहप्राप्तिरिति॥१॥नतथेति ॥ वसिष्ठवत्स्थूलदेहोनप्राप्तइत्यर्थः॥२॥तर्हिकीदृशंदेहंप्राप्तवानितिचेत्तत्रकथाप्रस्तूयते । यदेति ॥ ३ ॥ अस्मिन्यज्ञेत्वसंपूर्णइति॥ अद्यापियज्ञोनसंपूर्णोदीक्षायुक्तश्चराजामध्येएवाधुनामरिष्यतिततश्चकिंकर्तव्यमितिचिंतांचक्रुरित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तदनंतरंमंत्रशक्त्यातस्यलिंगदेहंतस्मिन्नेवदेहे यज्ञसमाप्तिपर्यंतंस्तंभयामासुरित्याह ॥ मंत्रैर्बहुविधैरिति ॥ किंचिच्छ्वसनेति ॥ यथाश्वासोच्छ्वाससंयुक्तंकिंचित्स्यात्तथेत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ देवायज्ञेहविषासंतुष्टाइंद्रादयः ॥ ८ ॥ विज्ञप्ताइति ॥ एतादृशीराज्ञोवस्थाजातेतिमुनिभिर्बोधिताइत्यर्थः ॥ तेविज्ञप्तादेवानिर्विण्णात्मानंखिन्नात्मानंराजानमब्रुवन्नित्यर्थः ॥ ९ ॥ यज्ञेनाऽनेनाऽपूर्वेकृतेसतिदिव्यंजन्मविधीयतेप्राप्यतेइत्यर्थः ॥ अतोदेवदेहंनृदेहंवायत्तेमनसिवांछितंभवतितंदेहंवरयेत्यर्थः ॥ १० ॥ दृप्तइति॥ यथातेपुरोधाउपाध्यायोवसिष्ठस्त्वच्छापात्पूर्वदेहंत्यक्त्वायथासुखंमृत्युलोकेएवतद्देहसदृशद्वितीयदेहधारणंकृत्वादृप्तोगर्वितस्तिष्ठति तथातवाऽपेक्षितंचेत्तदपिवरयेत्यर्थः ॥ निमेरात्मेति ॥ अनेनचराजावसिष्ठशापेनदेहाभिमानंत्यक्त्वागंतु

मंत्रैर्बहुविधैर्देहंतदातस्यमहात्मनः ॥ रक्षितंधारयामासुःकिंचिच्छ्वसनसंयुतम् ॥ ६ ॥ गंधैर्माल्यैश्चविविधैःपूज्यमानंमुहुर्मुहुः ॥ मंत्रशक्त्याप्रतिष्टभ्यनिर्विकारंसुपूजितम् ॥ ७ ॥ समाप्तेचक्रतौतत्रदेवाःसर्वेसमागताः॥ऋत्विग्भिस्तुस्तुताःसर्वेसुप्रीताश्चाऽभवन्नृप ॥ ८ ॥ विज्ञप्तामुनिभिःस्तोत्रैर्निर्विण्णात्मानमब्रुवन् ॥ प्रसन्नाःस्ममहीपालवरंवरयसुव्रत ॥ ९ ॥ यज्ञेनाऽनेनराजर्षेवरंजन्मविधीयते ॥ देवदेहंनृदेहंवायत्तेमनसिवांछितम् ॥ १० ॥ दृप्तःकामंपुरोधास्तेमृत्युलोकेयथासुखम् ॥ एवमुक्तोनिमेरात्मासंतुष्टस्तानुवाचह ॥ ११ ॥ नदेहेममवांछाऽस्तिसर्वदैवविनश्वरे ॥ वासोमेसर्वसत्त्वानांदृष्टावस्तुसुरोत्तमाः ॥ १२ ॥ नेत्रेषुसर्वभूतानांवायुभूतश्चराम्यहम् ॥ एवमुक्ताःसुरास्तत्रनिमेरात्मानमब्रुवन् ॥ १३ ॥ प्रार्थयत्वंमहाराजदेवींसर्वेश्वरींशिवाम् ॥ मखेनाऽनेनसंतुष्टासातेऽभीष्टंविधास्यति ॥ १४ ॥ सदेवैरेवमुक्तस्तुप्रार्थयामासदेवताम् ॥ स्तोत्रैर्नानाविधैर्दिव्यैर्भक्त्यागद्गदयागिरा ॥१५ ॥ प्रसन्नासातदादेवीप्रत्यक्षंदर्शनंददौ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशंरूपंलावण्यदीपितम् ॥ १६ ॥ दृष्ट्वाप्रमुदिताःसर्वेकृतकृत्याश्चचेतसि ॥ प्रसन्नायांदेवतायांराजावव्रेवरंनृप ॥ १७॥ ज्ञानंतद्विमलंदेहियेनमोक्षोभवेदपि ॥ नेत्रेषुसर्वभूतानांनिवासोमेभवेदिति ॥ १८ ॥ ततःप्रसन्नादेवेशीप्रोवाचजगदंबिका ॥ ज्ञानंतेविमलंभूयात्प्रारब्धस्याऽवशेषतः ॥ १९ ॥ नेत्रेषुसर्वभूतानांनिवासोपिभविष्यति ॥ निमिषंयांतिचक्षूंषित्वत्कृतेनैवदेहिनाम् ॥२०॥ तववासात्सानिमिषामानवाःपशवस्तथा ॥ पतंगाश्चभविष्यंतिपुनश्चाऽनिमिषाःसुराः ॥ २१ ॥ इतिदत्त्वावरंतस्मैतदाश्रीवरदेवता ॥ आमंत्र्यचमुनीन्सर्वांस्तत्रैवांतर्हिताऽभवत् ॥ २२ ॥

कामोब्राह्मणैर्मंत्रबलेनस्तंभितस्तद्देहाभिमानंत्यक्त्वालिंगात्माभिमानेनस्थितइतिबोधितम् ॥ ११ ॥ सर्वसत्त्वानांसर्वजीवानांदृष्टौममवासोभवत्वित्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ एतत्त्वयाप्रार्थितंदातुमस्माकंशक्तिर्नास्तिपरतंत्राणांयस्मिन्यस्मिन्कार्येवयंभगवत्यानियुक्तास्तदेवकर्तुंशक्नुमोयदितवतथेच्छाऽस्तितर्हिभगवतींमेवप्रार्थयेत्याहुः। प्रार्थयत्वमिति ॥१४॥ देवतांसच्चिदानंदरूपिणींभगवतीम् ॥ १५ ॥ रूपमिति ॥ तृतीयस्कंधोक्तप्रकारकम् ॥ १६ ॥१७॥ राज्ञाप्रथमंज्ञानंयाचितमित्याह । ज्ञानंतदिति ॥ किंचयावत्प्रारब्धंकर्मनभुक्तंतावन्नेत्रेषुवासोभवत्वितिद्वितीयंवरंवव्रेइत्याह । नेत्रेष्विति ॥ १८ ॥ १९ ॥ निवासोवायुरूपेणेत्यर्थः ॥ २० ॥ सनिमिषानेत्रनिमीलनवंतइत्यर्थः ॥ निमीलनादेर्वायुकार्यत्वादितिभावः ॥ पुनश्चाऽनिमिषाइति ॥ येसनिमिषास्तएवाऽनिमिषाअपिभविष्यंति ॥ तववायुरूपस्यनिवासादित्यर्थः। अनिमिषाउन्मीलनवंतइत्यर्थः ॥ नकेवलंमानवाएवएतादृशाःकिंतुसुराअपिइत्याह ॥ सुराइति॥२१॥२२॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

समाहरन्मंथनार्थंगृहीतवंतः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ मिथिरिति ॥ पृषोदरादित्वात्साधुत्वम् ॥ अनेनकारणेनजनकनामाऽभवदित्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१॥

अंतर्हितायांदेव्यांतुमुनयस्तत्रसंस्थिताः ॥ विचिंत्यविधिवत्सर्वेनिमेर्देहंसमाहरन् ॥२३॥ अरणितत्रसंस्थाप्यममंथुर्मंत्रवत्तदा ॥ मंत्रहोमैर्महात्मानःपुत्रहेतोर्निमेरथ ॥ २४ ॥ अरण्यांमथ्यमानायांपुत्रःप्रादुरभूत्तदा ॥ सर्वलक्षणसंपन्नःसाक्षान्निमिरिवाऽपरः ॥ २५ ॥ अरण्यामथनाज्जातस्तस्मान्मिथिरितिस्मृतः ॥ येनाऽयंजनकाज्जातस्तेनाऽसौजनकोभवत् ॥ २६ ॥ विदेहस्तुनिमिर्जातोयस्मात्तस्मात्तदन्वये ॥ समुद्भूतास्तुराजानोविदेहाइतिकीर्तिताः ॥२७॥ एवंनिमिसुतोराजाप्रथितोजनकोऽभवत् ॥ नगरीनिर्मितातेनगंगातीरेमनोहरा ॥ २८ ॥ मिथिलेतिसुविख्यातागोपुराट्टालसंयुता ॥ धनधान्यसमायुक्ताहट्टशालाविराजिता ॥ २९ ॥ वंशेऽस्मिन्येऽपिराजानस्तेसर्वेजनकास्तथा ॥ विख्याताज्ञानिनः सर्वेविदेहाःपरिकीर्तिताः ॥ ३० ॥ एतत्तेकथितंराजन्निमेराख्यानमुत्तमम् ॥ शापाद्यस्यविदेहत्वंविस्तरादुदितंमया ॥ ३१ ॥ राजोवाच ॥ भगवन्भवताप्रोक्तंनिमिशापस्यकारणम् ॥ श्रुत्वासंदेहमापन्नंमनोमेऽतीवचंचलम् ॥ ३२ ॥ वसिष्ठोब्राह्मणःश्रेष्ठोराज्ञश्चैवपुरोहितः ॥ पुत्रःपंकजयोनेस्तुराज्ञाशप्तःकथंमुनिः ॥ ३३ ॥ गुरुंचब्राह्मणंज्ञात्वानिमिनानकृताक्षमा ॥ यज्ञकर्मशुभंकृत्वाकथंक्रोधमुपागतः ॥३४॥ ज्ञात्वाधर्मस्यविज्ञानंकथमिक्ष्वाकुसंभवः ॥ क्रोधस्यवशमापन्नः शप्तवान्ब्राह्मणंगुरुम् ॥३५॥ व्यास उवाच ॥ क्षमाऽतिदुर्लभाराजन्प्राणिभिराजितात्मभिः ॥ क्षमावान्दुर्लभोलोकेसुसमर्थोविशेषतः ॥ ३६ ॥ सर्वसंगपरित्यागीमुनिर्भवतुतापसः ॥ निद्राक्षुधोर्विजेताचयोगाभ्यासेसुनिष्ठितः ॥ ३७ ॥ कामःक्रोधस्तथालोभोह्यहंकारश्चतुर्थकः ॥ दुर्ज्ञेयादेहमध्यस्थारिपवस्तेनसर्वथा ॥ ३८ ॥ नभूतपूर्वःसंसारेनचैववर्ततेऽधुना ॥ भवितानपुमान्कश्चिद्योजयेतारिपूनिमान् ॥ ३९ ॥ नस्वर्गेनचभूलोकेब्रह्मलोकेहरेःपदे ॥ कैलासेनेदृशःकश्चिद्योजयेतारिपूनिमान् ॥ ४० ॥ मुनयोब्रह्मपुत्राश्चतथाऽन्येतापसोत्तमाः ॥ तेऽपिगुणत्रयाविद्धाःकिंपुनर्मानवाभुवि ॥ ४१ ॥ कपिलःसांख्यवेत्ताचयोगाभ्यासरतःशुचिः ॥ तेनापिदैवयोगाद्धिप्रदग्धाःसगरात्मजाः ॥४२॥ तस्माद्राजन्नहंकारात्संजातंभुवनत्रयम् ॥ कार्यकारणभावात्तुतद्धियुक्तंकथंभवेत् ॥ ४३ ॥ ब्रह्मागुणत्रयाविष्टोविष्णुश्चैवाऽथशंकरः ॥ प्रभवंतिशरीरेषुतेषांभावाःपृथक्पृथक् ॥ ४४ ॥ मानवानांचकावार्तासत्त्वैकांतव्यवस्थितौ ॥ गुणानांसंकरोराजन्सर्वत्रसमवस्थितः ॥ ४५ ॥ कदाचित्सत्त्ववृद्धिःस्यात्कदाचिद्रजसःकिल ॥ कदाचित्तमसोवृद्धिःसमभावःकदाचन ॥ ४६ ॥

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तेनाऽपिपुरुषेणदेहमध्यस्थाएतेरिपवोदुर्ज्ञेयाइत्यर्थः ॥ जेतुमशक्याइतितात्पर्यम् ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ सत्त्वैकांतव्यवस्थितौसत्त्वस्यनिरंतरमवस्थितावित्यर्थः ॥ सर्वत्रदेवादिसर्वप्राणिमात्रदेहेष्वित्यर्थः ॥ ४५ ॥ समभावःसाम्यावस्थानकस्याऽपीत्यर्थः ॥ ४६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एकंपरमात्मानमेकांमायांचहित्वासर्वेगुणत्रयेणवद्धाइत्याह । निर्गुणइति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ तयोरैक्यमिति ॥ चंद्रचंद्रिकयोरिववह्निदाहकतयोरिवेतिभावः ॥ नहिशक्तिमतःशक्तिःक्वचित्पृथगुपलभ्यतइति ॥ साचशक्तिर्यदांतर्मुखातिष्ठतितदाब्रह्माभेदेनभासते ॥ यदापुनर्बहिर्मुखातिष्ठतितदाचैतन्यात्पृथग्भासते ॥ तथाचाभिन्नंतद्वपुरित्यनेनांतर्मुखशक्तिविशिष्टमभिन्नब्रह्ममायारूपमुक्तंभवतितद्वपुर्ज्ञात्वासर्वदोषादविद्यारूपाद्गुणत्रयादिरूपान्मुच्यतइत्यर्थः ॥ ४९ ॥ अयमेवसर्ववेदसिद्धांतइत्याह । तज्ज्ञानादेवेति॥तथाचश्रुतिः ॥ तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढामितिश्वेताश्वतरे ॥ तदुक्तमुमासंहितायाम् ॥ मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायाविन्ब्रह्मशाश्वतम् ॥ अभिन्नंतद्वपुर्ज्ञात्वामुच्यतेभववंधनादिति ॥ अंतर्मुखाशक्तिरेवविद्येतिशैवागमाच्च ॥ ५० ॥ शाब्दिकमिति । शब्दश्रवणमात्रेणजायमानंपरोक्षमित्यर्थः ॥ ५१ ॥ तत्रमतिकल्पितावितर्काःसंशयविपर्यासादिरूपावहवोजायंतइतिनतज्ज्ञानंमोक्षदायकमित्यर्थः ॥ अनुभवाख्यमिति ॥ अपरोक्षमित्यर्थः ॥ ५२ ॥ तत्तदेति ॥ तदपरोक्षज्ञानंयदावेत्तुरनुभवितुःसंगोभवेत्तदैवभवेदित्यर्थः ॥ ५३ ॥ संभवत्यतिमानुषमिति ॥ सहजतयानसंभवति किंतु महताऽऽयासेनेतिभावः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ इदमेतावत्पर्यंतमप्रकृतंकिमर्थमुक्तंतत्राह । विद्ययेति ॥ ५७ ॥ कामादिशत्रुनाशसाधनमुक्तामित्यर्थः ॥ ५८ ॥ तथाचनिमेस्तादृशसाधनाभावेनमनोजयाभावात्क्रोधादेःसंभवान्निमिनामुनौक्षमानविहितेत्यर्थः ॥ ५९ ॥ कृताक्षमेतिशेषः ॥ यथाययातिनापूर्वंशुक्रेकृतागसिक्षमाकृतातथानिमिनानकृतेत्यर्थः । संक्षेपतस्तांकथामाह । भृगुपुत्रेणेति ॥ ६० ॥ ६१ ॥

निर्गुणःपरमात्माऽसौनिर्लेपःपरमोऽव्ययः ॥ अलक्ष्यःसर्वसत्त्वानामप्रमेयःसनातनः ॥ ४७ ॥ तथैवपरमाशक्तिर्निर्गुणाब्रह्मसंस्थिता ॥ दुर्ज्ञेयाचाऽल्पमतिभिःसर्वभूतव्यवस्थितिः ॥ ४८ ॥ परात्मनस्तथाशक्तेस्तयोरैक्यंसदैवहि ॥ अभिन्नंतद्वपुर्ज्ञात्वामुच्यतेसर्वदोषतः ॥ ४९ ॥ तज्ज्ञानादेवमोक्षःस्यादितिवेदांतडिंडिमः ॥ योवेदसविमुक्तोऽस्मिन्संसारेत्रिगुणात्मके ॥ ५० ॥ ज्ञानंतुद्विविधंप्रोक्तंशाब्दिकंप्रथमंस्मृतम् ॥ वेदशास्त्रार्थविज्ञानात्तद्भवेद्बुद्धियोगतः ॥ ५१ ॥ विकल्पास्तत्रबहवोभवंतिमतिकल्पिताः ॥ "कुतर्ककल्पिताःकेचित्सुतर्ककल्पिताःपरे ॥ वितर्कैर्विभ्रमोत्पत्तिर्विभ्रमाद्बुद्धिभ्रंशता ॥ बुद्धिभ्रंशाज्ज्ञाननाशःप्राणिनांपरिकीर्तितः॥"अनुभवाख्यंद्वितीयंतुज्ञानंतद्दुर्लभंनृप ॥५२॥ तत्तदाप्राप्यतेतस्यवेत्तुःसंगोयदाभवेत् ॥ शब्दज्ञानान्नकार्यस्यसिद्धिर्भवतिभारत ॥५३॥ तस्मान्नानुभवज्ञानंसंभवत्यतिमानुषम् ॥ अंतर्गतंतमश्छेत्तुंशाब्दबोधोहिनक्षमः ॥५४॥ यथाननश्यतितमःकृतयादीपवार्तया ॥ तत्कर्मयन्नबंधायसाविद्यायाविमुक्तये ॥ ५५ ॥ आयासायापरंकर्मविद्याऽन्याशिल्पनैपुणम् ॥ शीलंपरहितत्वंचकोपाभावःक्षमाधृतिः ॥ ५६ ॥ संतोषश्चेतिविद्यायाःपरिपाकोज्ज्वलंफलम् ॥ विद्ययातपसावाऽपियोगाभ्यासेनभूपते ॥ ५७ ॥ विनाकामादिशत्रूणां नैवनाशःकदाचन ॥ "मनस्तुचंचलंराजन्स्वभावादतिदुर्ग्रहम् ॥ तद्वशःसर्वथाप्राणीत्रिविधोभुवनत्रये ॥" कामक्रोधादयोभावाश्चित्तजाःपरिकीर्तिताः ॥ ५८ ॥ तेतदानभवंत्येवयदावैनिर्जितंमनः ॥ तस्मात्तुनिमिनाराजन्नक्षमाविहितामुनौ ॥ ५९ ॥ यथाययातिनापूर्वंकृताशुक्रेकृतागसि ॥ भृगुपुत्रेणशप्तोपिययातिर्नृपसत्तमः ॥ ६० ॥ नशशापमुनिंक्रोधाज्जरांराजागृहीतवान् ॥ कश्चित्सौम्योभवेत्कश्चित्क्रूरोभवतिपार्थिवः ॥ ६१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कश्चित्सौम्यइत्यत्रययातिदृष्टांतः कश्चित्क्रूरतरइत्यत्रहैहयदृष्टांतइत्याह। हैहयाइति ॥ ६२ ॥ पातकंपृष्ठतःकृत्वातदगणयित्वेत्यर्थः ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेपंचदशो ध्यायः ॥ १५ ॥ एकाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथतुहैहयैः ॥ भार्गवानिहतालोभाद्ब्राह्मणाइतिकथ्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायांते हैहयाभार्गवान्पूर्वंधनलोभात्पुरोहितानितिश्रुत्वाराजापृच्छाति कुलेकस्येति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ अन्य थामहत्कारणाभावे ॥ बाहुजाःक्षत्रियाः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ पारिक्षितेइतिसंबोधनमार्षःप्रयोगः ॥ ७ ॥ ८ ॥ हरेरिवहरेरेवेत्यर्थः ॥ निपाता

स्वभावभेदान्नृपतेकस्यदोषोऽत्रकल्प्यते ॥ हैहयाभार्गवान्पूर्वंधनलोभात्पुरोहितान् ॥ ६२ ॥ ब्राह्मणान्मूलतःसर्वांश्चिच्छिदुःक्रोधमूर्च्छिताः ॥ पातकं पृष्ठतःकृत्वाब्रह्महत्यासमुद्भवम् ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ कुलेकस्यसमुत्पन्नाः क्षत्रियाहैहयाश्चये ॥ ब्रह्महत्यामनादृत्यनिजघ्नुर्भार्गवांश्चये ॥ १ ॥ वैरस्यकारणंतेषांकिमेब्रूहिपितामह ॥ निमित्तेनविनाक्रोधंकथंकुर्वंतिसत्तमाः ॥ २॥ वैरंपुरोहितैःसार्धंकस्मात्तेषामजायत ॥ नाऽल्पहेतोर्हितद्वैरंक्षत्रियाणांभविष्यति ॥ ३ ॥ अन्यथाब्राह्मणान्पूज्यान्कथंजघ्नुरनागसः ॥ बाहुजाबलवं तोपिपापभीताःकथंनते ॥ ४ ॥ स्वल्पेपराधेकोहन्याद्वाडवान्क्षत्रियर्षभः ॥ संदेहोमेमुनिश्रेष्ठकारणंवक्तुमर्हसि ॥ ५ ॥ सूतउवाच ॥ इतिपृष्टस्तदातेनरा ज्ञासत्यवतीसुतः ॥ उवाचपरमप्रीतःकथांसंस्मृत्यचेतसा ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुपारिक्षितेवार्तांक्षत्रियाणांपुरातनीम् ॥ आश्चर्यकारिणींसम्यग्विदि तांचपुरामया ॥ ७ ॥ कार्तवीर्येतिनाम्नाभूद्धैहयःपृथिवीपतिः ॥ सहस्रबाहुर्बलवानर्जुनोधर्मतत्परः ॥ ८ ॥ दत्तात्रेयस्यशिष्योभूदवतारोहरेरिव ॥ सिद्धः सर्वार्थदःशाक्तोभृगूणांयाज्यएवसः ॥९॥ यज्वापरमधर्मिष्ठःसदादानपरायणः ॥ ददौवित्तंभृगुभ्योऽसौकृत्वायज्ञाननेकशः ॥ १० ॥ धनिनस्तेद्विजाजाता भृगवोनृपदानतः ॥ हयरत्नसमृद्ध्याढ्याःसंजाताःप्रथिताभुवि॥ ११॥स्वर्यातेनृपशार्दूलेकार्तवीर्यार्जुनेपुनः ॥हैहयानिर्धनाजाताःकालेनमहतानृप ॥१२॥ धनकार्यसमुत्पन्नेहैहयानांकदाचन ॥ याचिष्णवोऽभिजग्मुस्तान्भृगूंस्तेहैहयानृप ॥१३ ॥ विनयंक्षत्रियाःकृत्वाऽप्ययाचंतधनंबहु ॥ नददुस्तेऽतिलोभा र्तानास्तिनास्तीतिवादिनः ॥ १४ ॥ भूमौचनिदधुःकेचिद्भृगवोधनमुत्तमम् ॥ ददुःकेचिद्द्विजातिभ्योज्ञात्वाक्षत्रियतोभयम् ॥ १५ ॥ कृत्वास्थानांतरेद्र व्यंब्राह्मणाभयविह्वलाः ॥ त्यक्त्वाऽऽश्रमान्ययुःसर्वेभृगवस्तृष्णयाऽन्विताः ॥ १६ ॥ याज्यांश्चदुःखितान्दृष्ट्वानददुर्लोभमोहिताः ॥ पलायित्वागताःसर्वे गिरिदुर्गानुपाश्रिताः ॥ १७ ॥ ततस्तेहैहयास्तातदुःखिताःकार्यगौरवात् ॥ भृगूणामाश्रमाञ्जग्मुर्द्रव्यार्थंक्षत्रियर्षभाः ॥ १८ ॥ भृगूंस्तुनिर्गतान्वीक्ष्य शून्यांस्त्यक्त्वागृहानथ॥चखनुर्भूतलंतत्रद्रव्यार्थंहैहयाभृशम्॥ १९॥खनताऽधिगतंवित्तंकेनचिद्भृगुवेश्मनि॥ददृशुःक्षत्रियाःसर्वेतद्वित्तंश्रमकर्शिताः ॥२०॥

नामनेकार्थत्वात् ॥ शाक्तःपराशक्तेरुपासकः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ आश्रमान्गृहाणिययुः ॥ पर्वतादिषु ॥ १६ ॥ याज्यान्यजमानान् ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ १९ ॥ खनताखननकर्त्रांकेनचित्पुरुषेण ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





यत्रतत्रेति ॥ अन्येष्वपिस्थलेषुखननादुत्पन्नंभूरिद्रव्यमित्यर्थः ॥ २१ ॥ निर्भिद्यखनित्वेत्यर्थः ॥ २२ ॥ अतिचिन्वत्सुअतिशयेनाऽन्वेषणंकुर्वत्सु ॥ निजघ्नुरिति ॥ युष्माकंनिकटेद्रव्ये सतिनास्तिद्रव्यमितिभवद्भिःकथमुक्तमित्यपराधेनेत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४॥२५॥ एवमुत्पाट्यमानेषुनश्यमानेषुब्राह्मणेषुपश्चाद्गर्भान्हन्युरित्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥२८॥२९॥ ३० ॥ पाप

यत्रतत्रसमुत्पन्नंभूरिद्रव्यंमहीतलात् ॥ तदातेपार्श्वभोगस्थब्राह्मणानांगृहाण्यपि ॥ २१ ॥ निर्भिद्यहैहयाद्रव्यंददृशुर्धनलिप्सया ॥ ब्राह्मणाश्चुक्रुशुःसर्वेभी ताश्चशरणंगताः ॥ २२ ॥ अतिचिन्वत्सुविप्राणांभवनान्निःसृतंबहु ॥ निजघ्नुस्ताञ्छरैःकोपाद्वाडवाञ्छरणागतान् ॥ २३ ॥ ययुस्तेगिरिदुर्गाश्चयत्रवैभृग वःस्थिताः ॥ आगर्भादनुकृंतंतश्चेरुश्चैवमहीमिमाम् ॥२४॥ प्राप्तान्प्राप्तान्भृगून्सर्वान्निजघ्नुर्निशितैःशरैः ॥ आबालवृद्धानपरानवमन्यचपातकम् ॥ २५ ॥ एवमुत्पाट्यमानेषुभार्गवेषुयतस्ततः ॥ हन्युर्गर्भांश्चनारीणांगृहीत्वाहैहयाभृशम् ॥ २६ ॥ रुरुदुस्ताःस्त्रियःकामंकुररयइवदुःखिताः ॥ गर्भांश्चकृंतितायासांक्षत्रियैःपापनिश्चयैः ॥ २७ ॥ अन्येऽप्याहुश्चतान्दृष्टान्मुनयस्तीर्थवासिनः ॥ मुंचंतुक्षत्रियाःक्रोधंब्राह्मणेषुभयावहम् ॥ २८ ॥ अयुक्तमेतदारब्धंभव द्भिःकर्मगर्हितम् ॥ यद्गर्भान्भृगुपत्नीनांनिहन्युःक्षत्रियर्षभाः ॥ २९ ॥ अत्युग्रपुण्यपापानामिहैवफलमाप्नुयात् ॥ तस्माज्जुगुप्सितंकर्मत्यक्तव्यंभूतिमि च्छता ॥ ३० ॥ तानाहुर्हैहयाःक्रुद्धामुनीनथदयापरान् ॥ भवंतःसाधवःसर्वेनाऽर्थज्ञाःपापकर्मणाम् ॥ ३१ ॥ एभिर्हृतंधनंसर्वंपूर्वजानांमहात्मनाम् ॥ वंचयित्वाछलाभिज्ञैर्मार्गेपाटच्चरैरिव ॥ ३२ ॥ एतेप्रतारकादंभास्तादृशाबकवृत्तयः ॥ उत्पन्नेचमहाकार्येप्रार्थिताविनयेनते ॥ ३३ ॥ नददुःप्रार्थितंवि प्राःपादवृद्ध्याऽपियाचिताः ॥ नास्तीतिवादिनःस्तब्धादुःखितान्वीक्ष्ययाज्यकान् ॥३४॥ धनंप्राप्तंकार्तवीर्याद्रक्षितंकेनहेतुना ॥ नकृताःक्रतवःकिंतैर्दा नंचाऽर्थिषुभूरिशः ॥ ३५ ॥ नसंचितव्यंविप्रैस्तुधनंक्वापिकदाचन ॥ यष्टव्यंविधिवद्देयंभोक्तव्यंचयथासुखम् ॥ ३६॥ द्रव्येचौरभयंप्रोक्तंतथाराजभयंद्वि जाः ॥ वह्नेर्भयंमहाघोरंतथाधूर्तभयंमहत् ॥ ३७ ॥ येनकेनाऽप्युपायेनधनंत्यजतिरक्षकम् ॥ अथवाऽसौमृतोयातिद्रव्यंत्यक्त्वाह्यसद्गतिम् ॥ ३८॥ पा दवृद्ध्यातथाऽस्माभिःप्रार्थितंविनयान्वितैः ॥ तथापिलोभसंदिग्धैर्नददत्तंनःपुरोहितैः ॥ ३९ ॥ दानंभोगस्तथानाशोधनस्यगतिरीदृशी॥दानभोगौकृती नांचनाशःपापात्मनांकिल ॥ ४० ॥ नदातानचयोभोक्ताकृपणोगुप्तितत्परः ॥ राज्ञाऽसौसर्वथादंड्योवंचकोदुःखभाङ्नरः ॥ ४१ ॥ तस्माद्वयंगुरूनेतान्वं चकान्ब्राह्मणाधमान् ॥ हंतुंसमुद्यताःसर्वेनक्रोद्धव्यंमहात्मभिः ॥ ४२ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाहेतुमद्वाक्येतानाश्वास्यमुनीनथ ॥ विचेरुश्चविचि न्वानाभृगुदाराननेकशः ॥ ४३ ॥ भयार्ताभृगुपत्न्यस्तुहिमवंतंधराधरम् ॥ प्रपेदिरेरुदंत्यश्चवेपमानाःकृशाभृशम् ॥ ४४ ॥

कारिणामर्थज्ञाअभिप्रायज्ञाभवंतोनेत्यर्थः ॥ ३१ ॥ पाटच्चरैश्चोरैरिवेत्यर्थः ॥३२॥३३॥ पादवृद्ध्याऽपीति ॥ एकमुद्रिकायाःसपादमुद्रिकांदास्यामइतिपादवृद्ध्येत्यर्थः ॥ याज्यकान्स्वा र्थेकप्रत्ययोयाज्यानित्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४५ ॥ कथंहैहयैर्धार्मिकैःस्वगुरवोहिंसिताइतियत्पृष्टंराज्ञातत्समाधानमाह । लोभएवेत्यादिना ॥ ४६ ॥४७॥ ४८ ॥ ४९ ॥ तथाक्रोधात्कामादहंकारात्किंनकुर्यादित्यन्वयः॥५०॥ ॥ ५१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ एकोनसप्ततिश्लोकैःश्रीदेवीकृपयाततः ॥ भृगुवंशस्थितिंप्रोच्यहैहयोत्पत्तिरुच्यते ॥ १ ॥ भृगूणांपत्न्योगिरिदुर्गा दिषुगताइतिपूर्वाध्यायेउक्तंतदुत्तरंजातंवृत्तंराजा पृच्छति । कथंताश्चेति ॥ कथंमुक्ताइत्यन्वयः ॥ किंचतेषांब्राह्मणानामनंतरंवंशःकथंस्थिरोऽभवत् प्रचलितइत्यर्थः ॥ १ ॥ किंच हैहयैर

एवंतेहहैयैर्विप्राःपीडिताधनकामुकैः ॥ निहताश्चयथाकामंसंरब्धैःपापकर्मभिः ॥ ४५ ॥ लोभएवमनुष्याणांदेहसंस्थोमहारिपुः ॥ सर्वदुःखाकरःप्रोक्तो दुःखदःप्राणनाशकः ॥ ४६ ॥ सर्वपापस्यमूलंहिसर्वदातृष्णयान्वितः ॥ विरोधकृत्त्रिवर्णानांसर्वार्तेःकारणंतथा ॥ ४७ ॥ लोभात्त्यजंतिधर्मंवैकुलधर्मंत थैवहि ॥ मातरंभ्रातरंहंतिपितरंबांधवंतथा ॥४८॥ गुरुंमित्रंतथाभामंपुत्रंचभागिनींतथा ॥ लोभाविष्टोनकिंकुर्यादकृत्यंपापमोहितः ॥४९॥ क्रोधात्कामा दहंकाराल्लोभएवमहारिपुः ॥ प्राणांस्त्यजतिलोभेनकिंपुनःस्यादनावृतम् ॥५०॥ पूर्वजास्तेमहाराजधर्मज्ञाःसत्पथेस्थिताः ॥ पांडवाःकौरवाश्चैवलोभेन निधनंगताः ॥५१॥ यत्रभीष्मश्चद्रोणश्चकृपःकर्णश्चबाल्हिकः॥भीमसेनोधर्मपुत्रस्तथैवाऽर्जुनकेशवौ ॥५२॥ तथापियुद्धमत्युग्रंकृतंतैश्चपरस्परम् ॥ कुटुं बकदनंभूरिकृतंलोभातुरैरिह॥५३॥हतोद्रोणोहतोभीष्मस्तथैवपांडवात्मजाः॥भ्रातरःपितरःपुत्राःसर्वेवैनिहतारणे ॥५४॥ तस्माल्लोभाभिभूतस्तुकिंनकुर्या न्नरःकिल ॥ हैहयैर्निहताःसर्वेभृगवःपापबुद्धिभिः ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥१६॥ ७ ॥ जनमेजयउवाच ॥ क थंताश्चस्त्रियःसर्वाभृगूणांदुःखसागरात् ॥ मुक्तावंशःपुनस्तेषांब्राह्मणानांस्थिरोऽभवत् ॥ १ ॥ हैहयैःकिंकृतंकार्यंहत्वातान्ब्राह्मणानपि ॥ क्षत्रियैर्लोभसंयु क्तैःपापाचारैर्वदस्वतत् ॥२॥ नतृप्तिरस्तिमेब्रह्मन्पिबतस्तेकथामृतम् ॥ पावनंसुखदंनृणांपरलोकेफलप्रदम् ॥३॥व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिक थांपापप्रणाशिनीम् ॥ यथास्त्रियस्तुतामुक्तादुःखात्तस्माद्दुरत्ययात् ॥४॥ भृगुपत्न्योयदाराजन्हिमवंतंगिरिंगताः ॥ भयत्रस्तानिभ ग्राशाहैहयैःपीडिताभृ शम्॥५॥गौरींतत्रतुसंस्थाप्यमृन्मयींसरितस्तटे॥उपोषणपराश्चक्रुर्निश्चयंमरणंप्रति ॥६॥ स्वप्नेगत्वातदादेवीप्राहताःप्रमदोत्तमाः ॥ युष्मासुमध्येकस्या श्चिद्भविताचोरुजःपुमान् ॥७॥ मदंशशक्तिसंभिन्नःसवःकार्यंविधास्यति ॥ इत्यादिश्यपरांवासापश्चादंतर्हिताभवत् ॥८॥ जागृतास्तुततःसर्वामुदमापुर्वरां गनाः॥काचित्तासांभयोद्विग्नाकामिनीचतुराभृशम् ॥९॥ दधारचोरुणैकेनगर्भेसाकुलवृद्धये ॥ पलायनपरादृष्टाक्षत्रियैर्ब्राह्मणीयदा ॥ १० ॥ विह्वलाते जसायुक्तातदातेदुद्रुवुर्भृशम् ॥ गृह्यतांवध्यतांनारीसगर्भायातिसत्वरा ॥ ११ ॥

प्यनंतरंकिंकृतमितिपृच्छति । हैहयैरिति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥५॥६॥ ७ ॥ योयुष्मासुमध्येकस्याश्चित्स्त्रियः ऊरुंभित्त्वापुमान्भाविष्यतिसमदंशोभवतीतिभगवतीप्राहेत्याह । मदंशइति ॥ शक्तिसंभिन्नोमच्छक्तियुक्तइत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ दधारेति ॥ इयमपिशक्तिस्तस्याःश्रीभगवत्यनुग्रहादेवलब्धेतिबोध्यम् ॥ १० ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ मुष्णन्नपहरन्पराशक्त्यंशत्वात् विलोचनाअंधाः ॥ १६ ॥ सांप्रतमस्मिन्कालेकिमेतदित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ वाचेतिवद्धलंताट्टाप् ॥ ३२ ॥ अघ्नन्निति पुरुषव्यत्ययआर्षः ॥ भृगूणांघ्नथपुत्रकाइतिपाठःपुस्तकांतरे ॥ हे पुत्रकाहे

इतिब्रुवंतःसंप्राप्ताःकामिनींखड्गपाणयः ॥ साभयार्तातुतान्दृष्ट्वारुरोदसमुपागतान् ॥ १२ ॥ गर्भस्यरक्षणार्थंसाचुक्रोशाऽतिभयातुरा ॥ रुदतींमातरंश्रुत्वादीनांत्राणविवर्जिताम् ॥ १३ ॥ निराधारांक्रंदमानांक्षत्रियैर्भृशतापिताम् ॥ गृहीतामिवसिंहेनसगर्भांहरिणींतथा ॥ १४ ॥ साश्रुनेत्रांवेपमानांसंक्रुध्यबालकस्तदा ॥ भित्त्वोरुंनिर्जगामाऽऽशुगर्भःसूर्यइवाऽपरः ॥ १५ ॥ मुष्णन्दृष्टीःक्षत्रियाणांतेजसाबालकःशुभः ॥ दर्शनाद्बालकस्याऽऽशुसर्वेजाताविलोचनाः ॥ १६ ॥ वभ्रमुर्गिरिदुर्गेषुजन्मांधाइवक्षत्रियाः ॥ चिंतितंमनसासर्वैःकिमेतदितिसांप्रतम् ॥ १७ ॥ सर्वेचक्षुर्विहीनायज्जाताःस्मबालदर्शनात् ॥ ब्राह्मण्यास्तुप्रभावोऽयंसतीव्रतबलंमहत् ॥ १८ ॥ क्षणाद्वामोघसंकल्पाःकिंकरिष्यंतिदुःखिताः ॥ इतिसंचिंत्यमनसानेत्रहीनानिराश्रयाः ॥ १९ ॥ ब्राह्मणींशरणंजग्मुर्हैहयागतचेतसः ॥ प्रणेमुस्तांभयत्रस्तांकृतांजलिपुटाश्चते ॥ २० ॥ ऊचुश्चैनांभयोद्विग्नांदृष्ट्यर्थंक्षत्रियर्षभाः ॥ प्रसीदसुभगेमातःसेवकास्तेवयंकिल ॥ २१ ॥ कृतापराधारंभोरुक्षत्रियाःपापबुद्धयः ॥ दर्शनात्तवतन्वंगिजाताःसर्वेविलोचनाः ॥ २२ ॥ मुखंतेनैवपश्यामोजन्मांधाइवभामिनि ॥ अद्भुतंतेतपोवीर्यंकिंकुर्मःपापकारिणः ॥ २३ ॥ शरणंतेप्रपन्नाःस्मदेहिचक्षूंषिमानदे ॥ अंधत्वंमरणादुग्रंकृपांकर्तुंत्वमर्हसि ॥ २४ ॥ पुनर्दृष्टिप्रदानेनसेवकान्क्षत्रियान्कुरु ॥ उपरम्यचगच्छेमसहिताःपापकर्मणः ॥ २५ ॥ अतःपरंनकर्तव्यमीदृशंकर्मकर्हिचित् ॥ भार्गवाणांतुसर्वेषांसेवकाःस्मवयंकिल ॥ २६ ॥ अज्ञानाद्यत्कृतंपापंक्षंतव्यंतत्त्वयाऽधुना ॥ वैरंनातःपरंक्वाऽपिभृगुभिःक्षत्रियैःसह ॥ २७ ॥ कर्तव्यंशपथैःसम्यग्वर्तितव्यंतुहैहयैः ॥ सपुत्राभवसुश्रोणि प्रणताःस्मवयंचते ॥ २८ ॥ प्रसादंकुरुकल्याणिनाद्विष्यामःकदाचन ॥ व्यासउवाच ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वाब्राह्मणीविस्मयान्विता ॥ २९ ॥ तानाहप्रणतान्दुःस्थानाश्वास्यगतलोचनान् ॥ गृहीतानमयादृष्टिर्युष्माकंक्षत्रियाःकिल ॥ ३० ॥ नाऽहंरुषान्वितासत्यंकारणंशृणुताऽद्ययत् ॥ अयंचभार्गवोनूनमूरुजःकुपितोऽद्यवः ॥ ३१ ॥ चक्षूंषितेनयुष्माकंस्तंभितानिरुषावता ॥ स्वबंधून्निहताञ्ज्ञात्वागर्भस्थानपिक्षत्रियैः ॥ ३२ ॥ अनागसोधर्मपरांस्तापसान्धनकाम्यया ॥ गर्भानपियदायूयंभृगूनघ्नंस्तुपुत्रकाः ॥ ३३ ॥ तदायमूरुणागर्भोमयावर्षशतंधृतः ॥ षडंगश्चाखिलोवेदोगृहीतोनेनचांजसा ॥ ३४ ॥ गर्भस्थेनाऽपिबालेनभृगुवंशविवृद्धये ॥ सोपिपितृवधान्नूनंक्रोधेद्रोहंतुमिच्छति ॥ ३५ ॥ भगवत्याःप्रसादेनजातोऽयंममबालकः ॥ तेजसायस्यदिव्येनचक्षूंषिमुषितानिच ॥ ३६ ॥ तस्मादौर्वंसुतंमेऽद्ययाचध्वंविनयान्विताः ॥ प्रणिपातेनतुष्टोऽसौदृष्टिंवःप्रतिमोक्ष्यति ॥ ३७ ॥

राजानः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ गर्भस्थेनानेनेत्यर्थः ॥ ३५ ॥ कुतःप्रतापोऽयंबालकस्येतिचेत्तत्राह । भगवत्याइति ॥ ३६ ॥ और्वमूरुभवम् ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३८ ॥ ममाख्यानकृतंवचःममाख्यानेनकृतंलब्धमिदंवक्ष्यमाणंवचनमित्यर्थः ॥ तद्वैराग्यार्थेपठध्वामित्याभिप्रायः ॥ ३९ ॥ किंतद्वचनंतदाह । अवश्यंभाविभावाइति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ स्मरतेजस्तनुःस्मरवत्तेजोयस्याःसातनुर्यस्येत्यर्थः ॥ स्मरस्तेतनुजःकान्तेइतिपा

व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्याहैहयास्तुष्टुवुश्चतम् ॥ प्रणेमुर्विनयोपेताऊरुजंमुनिसत्तमम् ॥ ३८ ॥ ससंतुष्टोबभूवाऽथतानुवाचविचक्षुषः ॥ गच्छध्वं स्वगृहान्भूपाममाख्यानकृतंवचः ॥ ३९ ॥ अवश्यंभाविभावास्तेभवंतिदेवनिर्मिताः ॥ नाऽत्रशोकस्तुकर्तव्यःपुरुषेणविजानता ॥ ४० ॥ पूर्ववद्दृषयःस र्वेप्राप्नुवंतुयथासुखम् ॥ व्रजंतुविगतक्रोधाभवनानियथासुखम् ॥ ४१ ॥ इतितेनसमादिष्टाहैहयाःप्राप्तलोचनाः ॥ और्वमामंत्र्यजग्मुस्तेसदनानियथारु चि ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणीतंसुतंदिव्यंगृहीत्वास्वाश्रमंगता ॥ पालयामासभूपालंतेजस्विनमतंद्रिता ॥ ४३ ॥ एवंतेकथितंराजन्भृगूणांतुविनाशनम् ॥ लोभा विष्टैःक्षत्रियैश्चयत्कृतंपातकंकिल ॥ ४४ ॥ जनमेजयउवाच ॥ श्रुतंमयामहत्कर्मक्षत्रियाणांचदारुणम् ॥ कारणंलोभएवाऽत्रदुःखदश्चोभयोस्तुसः ॥ ॥ ४५ ॥ किंचित्प्रष्टुमिहेच्छामिसंशयंवासवीसुत ॥ हैहयास्तेकथंनाम्नाख्याताभुविनृपात्मजाः ॥४६॥यदोस्तुयादवाःकामंभरताद्भारतास्तथा॥हैहयःको ऽपिराजाभूत्तेषांवंशेप्रतिष्ठितः ॥ ४७॥ तदहंश्रोतुमिच्छामिकारणंकरुणानिधे ॥ हैहयास्तेकथंजाताःक्षत्रियाःकेनकर्मणा ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच॥ हैहया नांसमुत्पत्तिंशृणुभूपसविस्तराम् ॥ पुरातनांसुपुण्यांचकथांपापप्रणाशिनीम् ॥ ४९ ॥ कस्मिंश्चित्समयेभूपसूर्यपुत्रःसुशोभनः ॥ रेवंतेतिचविख्यातोरू पवानमितप्रभः ॥ ५० ॥ उच्चैःश्रवसमारुह्यहयरत्नंमनोहरम् ॥ जगामविष्णुसदनंवैकुंठंभास्करात्मजः ॥ ५१ ॥ भगवद्दर्शनाकांक्षीहयारूढोयदागतः ॥ हयस्थस्तुतदादृष्टोलक्ष्म्याऽसौरविनंदनः ॥ ५२ ॥ रमांवीक्ष्यहयंदिव्यंभ्रातरंसागरोद्भवम् ॥ रूपेणविस्मितातस्यतस्थौस्तंभितलोचना ॥ ५३ ॥ भगवा नपितंदृष्ट्वाहयारूढंमनोहरम् ॥ आगच्छंतंरमांविष्णुःपप्रच्छप्रणयात्प्रभुः ॥५४॥ कोऽयमायातिचार्वंगिहयारूढइवाऽपरः ॥ स्मरतेजस्तनुःकांतेमोहयन् भुवनत्रयम् ॥ ५५ ॥ प्रेक्षमाणातदालक्ष्मीस्तच्चित्तादैवयोगतः ॥ नोवाचवचनंकिंचित्पृष्टाऽपिचपुनःपुनः ॥ ५६ ॥ व्यासउवाच ॥ अश्वासक्तमतिंवीक्ष्य कामिनीमतिमोहिताम् ॥ पश्यंतींपरमप्रेम्णाचंचलाक्षींचचंचलाम् ॥ ५७ ॥ तामाहभगवान्क्रुद्धःकिंपश्यसिसुलोचने ॥ मोहिताचहरिंदृष्ट्वापृष्टानैवाऽभि भाषसे ॥ ५८ ॥ सर्वत्ररमसेयस्माद्रमातस्माद्भविष्यसि ॥ चंचलत्वाच्चलेत्येवंसर्वथैवनसंशयः ॥ ५९ ॥ प्राकृताचयथानारीनूनंभवतिचंचला ॥ तथात्व मपिकल्याणिस्थिरानैवकदाचन ॥ ६० ॥ त्वंहयंमत्समीपस्थासमीक्ष्ययदिमोहिता ॥ वडवाभववामोरुमर्त्यलोकेऽतिदारुणे ॥ ६१ ॥ इतिशप्तारमादेवी हरिणादैवयोगतः॥रुरोदवेपमानासाभयभीताऽतिदुःखिता॥६२॥ तमुवाचरमानाथंशंकिताचारुहासिनी ॥ प्रणम्यशिरसादेवंस्वपतिंविनयान्विता ॥६३॥

ठाऽन्यत्रपुस्तके ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ हरिमश्वंदृष्ट्वा ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ७ ॥ द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुहैहयस्यकथोच्यते ॥ भगवत्याःप्रसादेनवंशोऽयमितिकीर्त्यते ॥१॥ भगवतालक्ष्म्यांशप्तायामनंतरंकिंवृत्तंजातमितिपृच्छाति । इतिशप्तेइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ कर्णेकर्णयोरित्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ रेवंतकथां

देवदेवजगन्नाथकरुणाकरकेशव ॥ स्वल्पेऽपराधेगोविंदकस्माच्छापंददासिमे ॥ ६४ ॥ नकदाचिन्मयादृष्टःक्रोधस्तेहीदृशःप्रभो॥क्वगतस्तेमयिस्नेहःसहजोनतुनश्वरः ॥ ६५ ॥ वज्रपातस्तुशत्रौवैकर्तव्योनसुहृज्जने ॥ सदाऽहंवरयोग्यातेशापयोग्याकथंकृता ॥६६॥ प्राणांस्त्यक्ष्यामिगोविंदपश्यतोऽद्यतवाऽग्रतः ॥ कथंजीवेत्वयाहीनाविरहानलतापिता ॥ ६७ ॥ प्रसादंकुरुदेवेशशापादस्मात्सुदारुणात् ॥ कदामुक्तासमीपंतेप्राप्नोमिसुखदंविभो ॥ ६८ ॥ हरिरुवाच ॥ यदातेभवितापुत्रःपृथिव्यांमत्समःप्रिये ॥ तदामांप्राप्यतन्वंगिसुखितात्वंभविष्यसि ॥ ६९ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥ ॥७॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ इतिशप्ताभगवतासिंधुजाकोपयोगतः॥कथंसावडवाजातारेवंतेनचकिंकृतम् ॥१॥ कस्मिन्देशेऽब्धिजादेवीवडवारूपधारिणी ॥ संस्थितैकाकिनीबालापरोषित्पतिकायथा ॥२॥ कालंकियंतमायुष्मन्वियुक्तापतिनारमा॥संस्थिताविजनेरण्येकिंकृतंचतयापुनः ॥ ३ ॥ समागमंकदाप्राप्तावासुदेवस्यसिंधुजा॥पुत्रःकथंतयाप्राप्तोनारायणवियुक्तया ॥४॥ एतद्वृत्तांतमार्येशकथयस्वसविस्तरम् ॥ श्रोतुकामोऽस्मिविप्रेंद्रकथाख्यानमनुत्तमम् ॥५॥ सूतउवाच ॥ इतिपृष्टस्तदाव्यासः परिक्षित्तनयेनवै ॥ कथयामासभोविप्राःकथामेतांसुविस्तराम् ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिकथांपौराणिकींशुभाम् ॥ पावनींसुखदांकर्णेविशदाक्षरसंयुताम् ॥७॥ रेवंतस्तुरमांदृष्ट्वाशप्तांदेवेनकामिनीम् ॥ भयार्तःप्रययौदूरात्प्रणम्यजगतांपतिम् ॥ ८ ॥ पितुःसकाशंत्वरितोवीक्ष्यकोपंजगत्पतेः ॥ निवेदयामासकथांभास्करायसशापजाम् ॥९॥ दुःखितासारमादेवीप्रणम्यजगदीश्वरम् ॥ आज्ञप्तामानुषंलोकंप्राप्ताकमललोचना ॥ १० ॥ सूर्यपत्न्यातपस्तप्तंयत्रपूर्वंसुदारुणम् ॥ तत्रैवसाययावाशुवडवारूपधारिणी ॥ ११ ॥ कालिंदीतमसासंगेसुपर्णाक्षस्यचोत्तरे ॥ सर्वकामप्रदेस्थानेसुरम्यवनमंडिते ॥१२॥ तत्रस्थितामहादेवंशंकरंवांछितप्रदम् ॥ दध्यौचैकेनमनसाशूलिनंचंद्रशेखरम् ॥ १३ ॥ पंचाननंदशभुजंगौरीदेहार्धधारिणम् ॥ कर्पूरगौरदेहाभंनीलकंठंत्रिलोचनम् ॥ १४ ॥ व्याघ्राजिनधरंदेवंगजचर्मोत्तरीयकम्॥कपालमालाकलितंनागयज्ञोपवीतिनम्॥१५॥सागरस्यसुताकृत्वाहयीरूपंमनोहरम् ॥ तस्मिंस्तीर्थेरमादेवीचकारदुश्चरंतपः ॥ १६ ॥ ध्यायमानापरंदेवंवैराग्यंसमुपाश्रिता॥ दिव्यंवर्षसहस्रंतुगतंतत्रमहीपते ॥ १७ ॥ ततस्तुष्टोमहादेवोवृषारूढस्त्रिलोचनः ॥ प्रत्यक्षोऽभून्महेशानःपार्वतीसहितःप्रभुः ॥ १८ ॥

समाप्यरमायाःकथामाह । दुःखितेति ॥ १० ॥ सूर्यपत्न्याछायया ॥ ११ ॥ तदेवस्थलमाह । कालिंदीतमसेति ॥ तमसानाम्नीनदी ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ परंदेवंमहादेवम् ॥ १७ ॥ १८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अश्विनीवडवा ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ यादृशस्तादृशइति ॥ यादृशोऽस्तिसाधुर्वाऽसाधुर्वातादृशःसेव्यइत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ आशुतोषशीघ्रंप्रसादकर ॥ २५ ॥ तदोक्त
मितियदाशापोदत्तस्तदामया प्रार्थितेनविष्णुनोक्तमित्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ वामांस्त्रियमनागसमनपराधिनीम् ॥ २९ ॥ ३० ॥ यस्त्वंसोऽसौविष्णुःयोऽसौविष्णुः स त्वमि

तत्रैत्यसगणःशंभुस्तामाहहरिवल्लभाम् ॥ तपस्यंतींमहाभागामश्विनीरूपधारिणीम् ॥ १९ ॥ किंतपस्यसिकल्याणिजगन्मातर्वदस्वमे ॥ सर्वार्थदःपति
स्तेऽस्तिसर्वलोकविधायकः ॥ २० ॥ हरिंत्यक्त्वाऽद्यमांकस्मात्स्तौषिदेविजगत्पतिम्॥वासुदेवंजगन्नाथंभुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ २१ ॥ वेदोक्तंवचनंका
र्यंनारीणांदेवतापतिः ॥ नाऽन्यस्मिन्त्सर्वथाभावःकर्तव्यःकर्हिचित्क्वचित् ॥ २२ ॥ पतिशुश्रूषणंस्त्रीणांधर्मएवसनातनः॥यादृशस्तादृशःसेव्यःसर्वथाशु
भकाम्यया ॥२३॥ नारायणस्तुसर्वेषां सेव्योयोग्यःसदैवहि ॥ तंत्यक्त्वादेवदेवेशंकिंमांध्यायसिसिंधुजे ॥२४॥ लक्ष्मीरुवाच ॥ आशुतोषमहेशानशप्ता
ऽहंपतिनाशिव ॥ मांसमुद्धरदेवेशशापादस्माद्दयानिधे ॥२५॥ तदोक्तंहरिणाशंभोशापानुग्रहकारणम् ॥ विज्ञप्तेनमयाकामंदयायुक्तेनविष्णुना ॥ २६ ॥
यदातेभवितापुत्रस्तदाशापस्यमोक्षणम् ॥ भविष्यतिचवैकुंठवासस्तेकमलालये ॥२७॥ इत्युक्ताऽहंतपस्तप्तुमागताऽस्मितपोवने ॥ आराधितोमयादेव
त्वंसर्वार्थप्रदायकः ॥ २८ ॥ पतिसंगंविनापुत्रंदेवदेवलभेकथम् ॥ सतुतिष्ठतिवैकुंठेत्यक्त्वावामामनागसम्॥२९॥ वरंमेदेहिदेवेशयदितुष्टोऽसिशंकर॥ त
वतस्याद्विधाभावोनास्तिनूनंकदाचन॥३०॥मयैतद्गिरिजाकांतज्ञातंपत्युःपुरोहर ॥ यस्त्वंसोऽसौपुनर्योऽसौसत्वंनास्त्यत्रसंशयः ॥३१॥ एकत्वंचमयाज्ञा
त्वामयातेस्मरणंकृतम् ॥ अन्यथाममदोषस्त्वामाश्रयंत्याभवेच्छिव ॥३२॥ शिवउवाच ॥ कथंज्ञातस्त्वयादेविममतस्यचसुंदरि॥ऐक्यभावोहरेर्नूनंसत्यं
मेवदसिंधुजे॥३३॥एकत्वंचनजानंतिदेवाश्चमुनयस्तथा ॥ ज्ञानिनोवेदतत्त्वज्ञाःकुतर्कोपहताःकिल ॥३४॥ मद्भक्तावासुदेवस्यनिंदकावहवस्तथा॥विष्णु
भक्तास्तुवहवोममनिंदापरायणाः ॥३५॥ भवंतिकालभेदेनकलौदेविविशेषतः ॥ कथंज्ञातस्त्वयाभद्रेदुर्ज्ञेयोह्यकृतात्मभिः ॥३६॥ सर्वथात्वैक्यभावस्तुह
रेर्ममचदुर्लभः ॥ व्यासउवाच ॥इतिसाशंभुनापृष्टातुष्टेनहरिवल्लभा॥३७॥वृत्तांतंतस्यविज्ञातंप्रवक्तुमुपचक्रमे॥शिवंप्रतिरमातत्रप्रसन्नवदनाभृशम्॥३८॥
लक्ष्मीरुवाच ॥ एकदादेवदेवेशविष्णुर्ध्यानपरोरहः॥ दृष्टोमयातपःकुर्वन्पद्मासनगतोयदा ॥ ३९ ॥ तदाऽहंविस्मितादेवंतमपृच्छंपतिंकिल ॥ प्रबुद्धंसुप्रस
न्नंचज्ञात्वाविनयपूर्वकम् ॥ ४० ॥ देवदेवजगन्नाथयदाऽहंनिर्गताऽर्णवात् ॥ मथ्यमानात्सुरैर्दैत्यैःसर्वैर्ब्रह्मादिभिःप्रभो ॥ ४१ ॥ वीक्षिताश्चमयासर्वेपतिका
मनयातदा ॥ वृतस्त्वंसर्वदेवेभ्यःश्रेष्ठोऽसीतिविनिश्चयात्॥४२॥ त्वंकंध्यायसिसर्वेशसंशयोऽयंमहान्मम ॥ प्रियोऽसिकैटभारेमेकथयस्वमनोगतम्॥४३॥

त्यर्थः ॥ ३१ ॥ अन्यथायुवयोःशिवविष्णवोर्भेदसत्त्वे ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ परंत्वेतत्कार्यसिद्ध्यर्थमहमेकंरहस्यंवदामितच्छृण्वित्याह । परंतुविस्मृतासित्व मिति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ अन्यथेति ॥ यदिसच्चिदानंदरूपिण्यांभगवत्यांतवचित्तमासक्तंस्यात्तर्हिहयोत्तमेसूर्यस्याग्रेकथंचित्तंगतंस्यात्तस्माद्भगवत्यांतवचित्तस्यासक्तिर्नास्तीत्यर्थः ॥

विष्णुरुवाच ॥ शृणुकांतेप्रवक्ष्यामियंध्यायामिसुरोत्तमम् ॥ आशुतोषंमहेशानंगिरिजावल्लभंहृदि ॥४४॥ कदाचिद्देवदेवोमांध्यायत्यमितविक्रमः ॥ ध्या याम्यहंचदेवेशंशंकरंत्रिपुरांतकम्॥४५॥शिवस्याऽहंप्रियःप्राणःशंकरस्तुतथामम ॥ उभयोरंतरंनास्तिमिथःसंसक्तचेतसोः ॥ ४६ ॥ नरकंयांतितेनूनंये द्विषंतिमहेश्वरम् ॥ भक्तामममविशालाक्षिसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥४७॥ इत्युक्तंदेवदेवेनविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ एकांतेकिलपृष्टेनमयाशैलसुताप्रिय ॥४८॥ तस्मांत्त्वांवल्लभंविष्णोर्ज्ञात्वाध्यातवतीह्यहम् ॥ तथाकुरुमहेशानयथामेप्रियसंगमः ॥ ४९ ॥ व्यासउवाच ॥इतिश्रियोवचःश्रुत्वाप्रत्युवाचमहेश्वरः॥ता माश्वास्यप्रियैर्वाक्यैर्यथार्थवाक्यकोविदः ॥५०॥ स्वस्थाभवपृथुश्रोणितुष्टोऽहंतपसातव ॥ समागमस्तेपतिनाभविष्यतिनसंशयः ॥५१॥ अत्रैवहयरूपे णभगवाञ्जगदीश्वरः ॥ आगमिष्यतितेकामंपूर्णकर्तुमयेरितः ॥ ५२ ॥ तथाऽहंप्रेरयिष्यामितंदेवंमधुसूदनम् ॥यथाऽसौहयरूपेणत्वामेष्यतिमदातुरः ॥ ॥ ५३ ॥ पुत्रस्तेभवितासुभ्रुनारायणसमःक्षितौ ॥ भविष्यतिसभूपालःसर्वलोकनमस्कृतः ॥५४॥ सुतंप्राप्यमहाभागेत्वंतेनपतिनासह ॥ गंतासिदिवि वैकुंठंप्रियातस्यभविष्यसि ॥ ५५ ॥ एकवीरेतिनाम्नाऽसौख्यातिंयास्यतितेसुतः ॥ तस्मात्तुहैहयोवंशोभुविविस्तारमेष्यति ॥ ५६ ॥ परंतुविस्मृताऽसि त्वंहृदिस्थांपरमेश्वरीम् ॥ मदांधामत्तचित्ताचतेनतेफलमीदृशम् ॥५७॥ अतस्तद्दोषशांत्यर्थंहृदिस्थांपरदेवताम् ॥ शरणंयाहिसर्वात्मभावेनजलधेःसु ते ॥ ५८ ॥ अन्यथातवचित्तंतुकथंगच्छेद्धयोत्तमे ॥ व्यासउवाच ॥ इतिदत्त्वावरंदेव्यैभगवाञ्छैलजापतिः ॥ ५९ ॥ अंतर्धानंगतःसाक्षादुमयासहितः शिवः ॥ सापितत्रैवचार्वंगीसंस्थिताकमलासना ॥ ६० ॥ ध्यायंतीचरणांभोजंदेव्याःपरमशोभनम् ॥ देवासुरशिरोरत्ननिघृष्टनखमंडलम् ॥६१॥ प्रेम गद्गदयावाचातुष्टावचमुहुर्मुहुः ॥ प्रतीक्षमाणाभर्तारंहयरूपधरंहरिम् ॥ ६२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे षष्ठस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ व्यासउवाच ॥ तस्यैदत्वावरंशंभुःकैलासंत्वरितोययौ॥ रम्यंदेवगणैर्जुष्टमप्सरोभिश्चमंडितम् ॥ १ ॥ तत्रगत्वाचित्ररूपंगणंकार्यविशारदम्॥प्रेषयामासवै कुंठेलक्ष्मीकार्यार्थसिद्धये ॥ २ ॥ शिवउवाच ॥ चित्ररूपहरिंगत्वाब्रूहित्वंवचनान्मम ॥ यथाऽसौदुःखितांपत्नींविशोकांचकरिष्यति ॥ ३ ॥ इत्युक्तश्चि त्ररूपोऽथनिर्जगामत्वरान्वितः ॥ वैकुंठंपरमंस्थानंवैष्णवैश्चगणैर्वृतम् ॥ ४ ॥

॥ ५९ ॥ ६० ॥ निघृष्टनखमंडलंचरणांभोजमित्यर्थः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इति श्रीदे० भा० षष्ठस्कंधेऽष्टादशोध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ पंचाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथहरेरजात् ॥ अश्विन्याम भवत्पुत्रइतिसम्यगिहोच्यते ॥ १ ॥ शंभुवरदानोत्तरंजातंवृत्तंव्यासआह। तस्यैवेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५ ॥ ६ ॥ चंपकालिश्चंपकपंक्तिः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ प्रज्ञातकारणःसर्वज्ञत्वात् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

नानाद्रुमगणाकीर्णवापीशतविराजितम् ॥ संजुष्टंहंसकारंडमयूरशुककोकिलैः ॥५॥ उच्चप्रासादसंयुक्तंपताकाभिरलंकृतम् ॥ नृत्यगीतकलापूर्णमंदारद्रुमसंयुतम् ॥ ६ ॥ बकुलाशोकतिलकचंपकालिविमंडितम् ॥ कूजितैर्विहगानांतुकर्णाह्लादकरैर्युतम् ॥ ७ ॥ संवीक्ष्यभवनंविष्णोर्द्वारस्थौप्राहप्रणम्यच ॥ जयविजयनामानौवेत्रपाणीस्थितावुभौ ॥ ८ ॥ चित्ररूपउवाच ॥ भोनिवेदयतंशीघ्रंहरयेपरमात्मने ॥ दूतंप्राप्तंहरस्याऽत्रप्रेरितंशूलपाणिना ॥ ९ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यजयःपरमबुद्धिमान् ॥ गत्वाहरिंप्रणम्याऽऽहकृतांजलिपुटःपुरः ॥ १० ॥ देवदेवरमाकांतकरुणाकरकेशव ॥ द्वारितिष्ठतिदूतोऽत्रशंकरस्यसमागतः ॥ ११ ॥ आज्ञापयप्रवेष्टव्योनवेतिगरुडध्वज ॥ चित्ररूपधरोऽप्यस्तिनजानेकार्यगौरवम् ॥१२॥ इत्याकर्ण्यहरिःप्राहजयंप्रज्ञातकारणः ॥ प्रवेशयाऽत्ररुद्रस्यभृत्यंसमयसंस्थितम् ॥ १३ ॥ इत्याकर्ण्यजयस्तूर्णंगत्वातंपरमाद्भुतम् ॥ एहीत्याकारयामासजयःशंकरसेवकम् ॥१४॥ प्रवेशितोजयेनाऽथचित्ररूपस्तथाकृतिः ॥ प्रणम्यदंडवद्विष्णुंकृतांजलिपुटःस्थितः ॥ १५ ॥ दृष्ट्वातंविस्मयंप्रापभगवान्गरुडध्वजः ॥ चित्ररूपधरंशंभोःसेवकंविनयान्वितम् ॥ १६ ॥ पप्रच्छतंस्मितंकृत्वाचित्ररूपंरमापतिः ॥ कुशलंदेवदेवस्यसकुटुंबस्यचाऽनघ ॥ १७ ॥ कस्मात्त्वंप्रेषितोऽस्यत्रब्रूहिकार्यंहरस्यकिम् ॥ अथवादेवतानांचकिंचित्कार्यंसमुत्थितम् ॥ १८ ॥ दूतउवाच ॥ किमज्ञातंतवाऽस्तीहसंसारेगरुडध्वज ॥ वर्तमानंत्रिकालज्ञयदहंप्रब्रवीमिवै ॥ १९ ॥ प्रेषितोऽस्मिभवेनाऽत्रविज्ञप्तुंत्वांजनार्दन ॥ हरस्यवचनाद्वाक्यंप्रब्रवीमित्वयिप्रभो ॥ २० ॥ तेनोक्तमेतद्देवेशभार्यातेकमलालया ॥ तपस्तपतिकालिंदीतमसासंगमेविभो ॥२१॥ हयीरूपधरादेवीसर्वार्थसिद्धिदायिनी ॥ ध्यातुंयोग्याऽमरगणैर्मानवैर्यक्षकिन्नरैः ॥२२॥ विनातयानरःकोपिसुखभागीभवेद्भुवि ॥ तांत्यक्त्वापुंडरीकाक्षप्राप्नोषिकिंसुखंहरे ॥ २३ ॥ दुर्बलोऽपिस्त्रियंपातिनिर्धनोऽपिजगत्पते ॥ विनाऽपराधंचविभोकिंत्यक्ताजगदीश्वरी ॥२४॥ दुःखंप्राप्नोतिसंसारेयस्यभार्याजगद्गुरो ॥ धिक्तस्यजीवितंलोकेनिंदितंत्वरिमंडले ॥२५॥ सकामारिपवस्तेऽद्यदृष्ट्वातांदुःखितांभृशम् ॥ त्वांवियुक्तंचरमयाहसिष्यंतिदिवानिशम् ॥ २६ ॥ रमांरमयदेवेशत्वदुत्संगगतांकुरु ॥ सर्वलक्षणसंपन्नांसुशीलांचसुरूपिणीम् ॥ २७ ॥ सुखितोभवतांप्राप्यवल्लभांचारुहासिनीम् ॥ कांताविरहजंदुःखंस्मराम्यहमनातुरः ॥ २८ ॥ ममभार्यामृताविष्णोदक्षयज्ञेसतीयदा ॥ तदाऽहंदुःसहंदुःखंभुक्तवानंबुजेक्षण ॥२९॥ संसारेऽस्मिन्नरःकोपिमाभून्मत्सदृशोपरः ॥ मनसाकरवंशोकंतस्याविरहपीडितः ॥३०॥ कालेनमहताप्राप्तामयागिरिसुतापुनः ॥ तपस्तप्त्वातिदुःसाध्यंयादग्धातुरुषाऽध्वरे ॥३१॥

॥२२॥२३ ॥ २४ ॥ अरिमंडलेशत्रुमंडलेनिंदितमित्यर्थः ॥२५॥ दुःस्थितांदुःखितामित्यर्थः ॥ रमयावियुक्तंत्वामित्यन्वयः ॥२६॥२७॥ स्मराम्यहमितिशिवोक्तिः ॥२८॥२९॥३०॥३१॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ वडवायाइदंवाडवम् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ सदयंममनःसुतंत्यक्त्वागंतुंकथंसमर्थंभवेदित्यन्वयः

हरेर्किंसुखमापन्नंत्वयासंत्यज्यकामिनीम् ॥ एकाकीतिष्ठताकालंसहस्रवत्सरात्मकम् ॥ ३२ ॥ गत्वाऽऽश्वास्यमहाभागांसमानयनिजालयम् ॥ माभूत्को ऽपीहसंसारेविमुक्तोरमयातया ॥ ३३ ॥ कृत्वातुरगरूपंत्वंभजतात्कमलालयाम् ॥ उत्पाद्यपुत्रमायुष्मंस्तामानयशुचिस्मिताम् ॥ ३४ ॥ व्यासउवाच॥ हरिराकर्ण्यतद्वाक्यंचित्ररूपस्यभारत ॥ तथेत्युक्त्वातुतंदूतंप्रेषयामासशंकरम्॥३५॥गतेदूतेथभगवान्वैकुंठात्कामसंयुतः ॥ जगामधृत्वातत्राऽऽशुवाजि रूपंमनोहरम् ॥३६॥ यत्रसावडवारूपंकृत्वातपतिसिंधुजा ॥ विष्णुस्तंदेशमासाद्यतामपश्यद्धयींस्थिताम् ॥३७॥ साऽपितंवीक्ष्यगोविंदंहयरूपधरंपति म् ॥ ज्ञात्वावीक्ष्यस्थितासाध्वीविस्मितासाश्रुलोचना ॥३८॥ तयोस्तुसंगमस्तत्रप्रवृत्तोमन्मथार्तयोः ॥ कालिंदीतमसासंगेपावनेलोकविश्रुते ॥ ३९ ॥ सगर्भासातदाजातावडवाहरिवल्लभा ॥ सुषुवेसुंदरंबालंतत्रैवसगुणोत्तरम् ॥ ४० ॥ तामाहभगवान्वाक्यंप्रहस्यसमयाश्रितम् ॥ त्यजाऽद्यवाडवंदेहंपूर्वदे हाभवाऽधुना ॥ ४१ ॥ गमिष्यावःस्ववैकुंठमावांकृत्वानिजंवपुः ॥ तिष्ठत्वत्रकुमारोऽयंत्वयाजातःसुलोचने ॥ ४२ ॥ लक्ष्मीरुवाच ॥स्वदेहसंभवंपुत्रंक थंहित्वाव्रजाम्यहम् ॥ स्नेहःसुदुस्त्यजःकामंस्वात्मजस्यसुरर्षभ ॥ ४३ ॥ कागतिःस्यादमेयात्मन्बालस्याऽस्यनदीतटे ॥ अनाथस्याऽसमर्थस्यविजने ऽल्पतनोरिह ॥४४॥ अनाश्रयंसुतंत्यक्त्वाकथंगंतुंमनोमम ॥ समर्थंसदयंस्वामिन्भवेदंबुजलोचन ॥४५॥ दिव्यदेहौततोजातौलक्ष्मीनारायणावुभौ ॥ वि मानवरसंविष्टौस्तूयमानौसुरैर्दिवि ॥ ४६ ॥ गंतुकामंपतिंप्राहकमलाकमलापतिम् ॥ गृहाणेमंसुतंनाथनाऽहंशक्ताऽस्मिहापितुम् ॥ ४७ ॥ प्राणप्रियो ऽस्तिमेपुत्रःकांत्यात्वत्सदृशःप्रभो ॥ गृहीत्वैनंगमिष्यावोवैकुंठंमधुसूदन ॥ ४८ ॥ हरिरुवाच ॥ माविषादंप्रियेकर्तुंत्वमर्हसिवरानने ॥ तिष्ठत्वयंसुखेना ऽत्ररक्षामेविहितात्विह ॥ ४९ ॥ कार्यंकिमपिवामोरुवर्ततेमहदद्भुतम् ॥ निबोधकथयाम्यद्यसुतस्याऽत्रविमोचने ॥ ५०॥ तुर्वसुर्नामविख्यातोययातित नुजोभुवि ॥ हरिवर्मेतिपित्राऽस्यकृतंनामसुविश्रुतम् ॥५१॥ सराजापुत्रकामोऽद्यतपस्तपतिपावने ॥ तीर्थेवर्षशतंजातंतस्यवैकुर्वतस्तपः ॥५२॥ तस्या ऽर्थेनिर्मितःपुत्रोमयाऽयंकमलालये ॥ तत्रगत्वानृपंसुभ्रुप्रेरयिष्यामिसांप्रतम् ॥ ५३ ॥ तस्मैदास्याम्यहंपुत्रंपुत्रकामस्यकामिनि ॥ गृहीत्वास्वगृहंराजा प्रापयिष्यतिबालकम् ॥ ५४ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याश्वास्यप्रियांपद्मांकृत्वारक्षांचबालके ॥ विमानवरमारुह्यप्रययौप्रिययासह ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदे वीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेएकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN .

चतुर्भिरधिकैः पंचाशद्भिःपद्यैःसुतस्यह॥ हरेः कथानकंसम्यग्धयीजातस्यचोच्यते ॥१॥ सुतमरण्येत्यक्त्वानारायणेगतेसतिसंशयितोराजापृच्छति। संशयोयमिति ॥१॥ नाऽतिवालक इति ॥ अतिवालकोव्याघ्रादिभिःकथंनभक्षितइत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५॥६॥७॥८॥ तन्व्याकृशांग्या ॥९॥१०॥ त्र्यंबकपाणिर्नात्र्यंबकंधनुस्त त्पाणौयस्यतेनशिवेन ॥११॥१२॥

जनमेजयउवाच ॥ संशयोऽयंमहानत्रजातमात्रःशिशुस्तथा ॥ मुक्तःकेनगृहीतोऽसावेकाकीविजनेवने ॥ १ ॥ कागतिस्तस्यवालस्यजातासत्यवतीसुत ॥ व्याघ्रसिंहादिभिर्हिंस्रैर्गृहीतोनाऽतिवालकः ॥ २ ॥ व्यासउवाच ॥ लक्ष्मीनारायणौतस्मात्स्थानाच्चचलितौयदा ॥ तदैवतत्रचंपाख्यः प्राप्तोविद्याधरःकिल ॥ ३ ॥ विमानवरमारूढःकामिन्यासहितोनृप ॥ मदनालसयाकामंक्रीडमानोयदृच्छया ॥ ४ ॥ विलोक्यतंशिशुंभूमावेकाकिनमनुत्तमम् ॥ देवपुत्रप्रतीकाशंरममाणंयथासुखम् ॥ ५ ॥ विमानात्तरसोत्तीर्यचंपकस्तंशिशुंजवात् ॥ जग्राहचमुदंप्रापनिधिंप्राप्ययथाऽधनः ॥ ६ ॥ गृहीत्वाचंपकः प्रादाद्देव्यैतंमदनोपमम् ॥ मदनालसायैतंबालंजातमात्रंमनोहरम् ॥ ७ ॥ सागृहीत्वाशिशुंप्रेम्णासरोमांचासविस्मया ॥ मुखंचुचुंबबालस्यकृत्वातुहृदये भृशम् ॥ ८ ॥ आलिंगितश्चुंबितश्चतयाऽसौप्रीतिपूर्वकम् ॥ उत्संगेचकृतस्तन्व्यापुत्रभावेनभारत ॥ ९ ॥ कृत्वांकेतौसमारूढौविमानंदंपतीमुदा ॥ पतिंपप्रच्छचार्वंगीप्रहस्यमदनालसा ॥ १० ॥ कस्याऽयंबालकःकांतत्यक्तःकेनचकानने ॥ पुत्रोऽयंममदेवेनदत्तस्त्र्यंबकपाणिना ॥ ११ ॥ चंपकउवाच ॥ प्रियेगत्वाऽद्यपृच्छेयंशक्रंसर्वज्ञमाशुवै ॥ देवोवादानवोवाऽपिगंधर्वोवाशिशुःकिल ॥ १२ ॥ तेनाऽऽज्ञप्तःकरिष्यामिपुत्रंप्राप्तंवनादमुम् ॥ अदृष्ट्वानैवकर्तव्यं कार्यंकिंचिन्मयाध्रुवम् ॥ १३ ॥ इत्युक्त्वातांगृहीत्वातंविमानेनाऽथचंपकः ॥ ययौशक्रपुरंतूर्णंहर्षेणोत्फुल्ललोचनः ॥ १४ ॥ प्रणम्यपादयोःप्रीत्याचंपकस्तुशचीपतिम् ॥ निवेद्यबालकंप्राहकृतांजलिपुटःस्थितः ॥१५॥ देवदेवमयालब्धस्तीर्थेपरमपावने ॥ कालिंदीतमसासंगेबालकोयंस्मरप्रभः ॥१६॥ कस्याऽयंबालकःकांतःकथंत्यक्तःशचीपते ॥ आज्ञाचेत्तवदेवेशकुर्वेऽहंबालकंसुतम् ॥ १७ ॥ अतीवसुंदरोबालःप्रियायावल्लभःसुतः ॥ कृत्रिमस्तुसुतः प्रोक्तोधर्मशास्त्रेषुसर्वथा ॥ १८ ॥ इंद्रउवाच ॥ पुत्रोऽयंवासुदेवस्यवाजिरूपधरस्यह ॥ हैहयोऽयंमहाभागलक्ष्म्यांजातःपरंतपः ॥ १९ ॥ उत्पादितोभगवताकार्यार्थंकिलवालकः ॥ दातुंनृपतयेनूनंययातितनयायच ॥ २० ॥ हरिणाप्रेरितःसोऽद्यराजापरमधार्मिकः ॥ आगमिष्यतिपुत्रार्थंतीर्थेतस्मिन्मनोरमे ॥ २१ ॥ तावत्त्वंगच्छतत्रैवगृहीत्वाबालकंशुभम् ॥ यावन्नयातिनृपतिर्ग्रहीतुंहरिणेरितः ॥ २२ ॥

अमुंपुत्रंकरिष्यामिवेदमंत्रेणेत्यर्थः ॥ १३ ॥ तांगृहीत्वातंचबालकंगृहीत्वेत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ कालिंदीतमसासंगे संगमे ॥ १६ ॥ १७ ॥ कृत्रिमस्तुसुतइति ॥ तथाचमनुःसदृशंतु प्रकुर्याद्यंगुणदोषविचक्षणः ॥ पुत्रंपुत्रगुणैर्युक्तंस विज्ञेयश्चकृत्रिमइति ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





वरेतिसंबोधनम् ॥ २३ ॥ एकवीरोति ॥ इदंद्वितीयंनाम ॥ एकवीरेतिबाहुलकात्साधु ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ अनुद्धातरथेन अप्रतिहतगतिमतारथेनेत्यर्थः ॥ निशम्येति ॥ जनार्दनस्येति ॥ इतिपूर्वोक्तप्रकारकम् ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ नेत्रांबुनाऽश्रुजलेनाऽवरुद्धकंठः ॥

गत्वातत्रविमुंचैनंविलंबंमाकृथावर ॥ अदृष्ट्वाबालकंराजादुःखितश्चभविष्यति ॥ २३ ॥ तस्माच्चंपकमुंचैनंराजाप्राप्नोतुपुत्रकम् ॥ एकवीरेतिनाम्नाऽयंख्यातःस्यात्पृथिवीतले ॥ २४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचः श्रुत्वाचंपकस्त्वरयान्वितः ॥ जगामपुत्रमादायस्थलेतस्मिन्महीपते ॥ २५ ॥ मुमोचबालकंतत्रयत्रपूर्वंस्थितोह्यभूत् ॥ आरुह्यस्वविमानंतुययौस्वाश्रममंडलम् ॥ २६ ॥ तदैवकमलाकांतोलक्ष्म्यासहजगद्गुरुः ॥ विमानवरमारूढोजगामनृपतिंप्रति ॥ २७ ॥ दृष्टस्तदातेननृपेणविष्णुः समुत्तरंस्तत्रविमानमुख्यात् ॥ जहर्षराजाहरिदर्शनेनपपातभूमौखलुदंडवच्च ॥ २८ ॥ उत्तिष्ठवत्सेतिहरिःपतंतमाश्वासयद्भूमिगतंस्वभक्तम् ॥ सोऽप्युत्सुकोवासुदेवंपुरःस्थंतुष्टावभक्त्यामुखरीकृतोऽथ ॥ २९ ॥ देवाधिदेवाऽखिललोकनाथकृपानिधेलोकगुरोरमेश ॥ मंदस्यमेतेकिलदर्शनंयत्सुदुर्लभंयोगिजनैरलभ्यम् ॥ ३० ॥ येनिःस्पृहास्तेविषयैरपेतास्तेषांत्वदीयंखलुदर्शनंस्यात् ॥ आशापरोऽहंभगवन्ननंतयोग्योनतेदर्शनेदेवदेव ॥ ३१ ॥ इतिस्तुतस्तेननृपेणविष्णुस्तमाहवाक्येनसुधामयेन ॥ वृणीष्वराजन्मनसेप्सितंतेददामितुष्टस्तपसातवेति ॥ ३२ ॥ ततोनृपस्तंप्रणिपत्यपादयोःप्रोवाचविष्णुंपुरतःस्थितंच ॥ तपस्तुतप्तंहिमयासुतार्थेपुत्रंददस्वात्मसमंमुरारे ॥ ३३ ॥ श्रुत्वानृपप्रार्थितमादिदेवस्तमाहराजानममोघवाक्यम् ॥ ययातिसूनोव्रजतत्रतीर्थेकलिंदकन्यातमसाप्रसंगे ॥ ३४ ॥ मयाऽद्यपुत्रस्तुयथेप्सितस्तेतत्रैवमुक्तोऽस्त्यमितप्रभावः ॥ लक्ष्म्याःप्रसूतोममवीर्यजश्चकृतस्तवाऽर्थेऽथगृहाणराजन् ॥ ३५ ॥ श्रुत्वाहरेर्वाक्यमतीवमृष्टंसंतुष्टचित्तःप्रबभूवराजा ॥ हरिस्तुदत्त्वेतिवरंजगामवैकुंठलोकंरमयायुतश्च ॥ ॥ ३६ ॥ गतेहरौसोऽथययातिसूनुर्ययावनुद्धातरथेनराजा ॥ प्रेमान्वितस्तत्रसुतोऽस्तियत्रवचोनिशम्येतिजनार्दनस्य ॥ ३७ ॥ सतत्रगत्वाऽतिमनोहरंतंददर्शबालंभुविखेलमानम् ॥ मुखेनिवेश्यैककरेणकृत्वाश्लक्ष्णंपदांगुष्ठमनन्यसत्त्वः ॥ ३८ ॥ तंवीक्ष्यपुत्रंमदनस्वरूपंनारायणांशंकमलाप्रसूतम् ॥ हरिप्रभावंहरिवर्मनामाहर्षप्रफुल्लाननपंकजोऽभूत् ॥ ३९ ॥ गृह्णन्सुवेगात्करपंकजाभ्यांबभूवप्रेमार्णवमग्नदेहः ॥ मूर्धन्युपाघ्रायमुदान्वितोऽसौनंदराजासुतमालिलिंग ॥ ४० ॥ मुखंसमीक्ष्याऽतिमनोहरंतमुवाचनेत्रांबुनिरुद्धकंठः ॥ दत्तोऽसिदेवेनजनार्दनेनमांत्राहिपुत्राऽवमदुःखभीतेः ॥ ४१ ॥ तप्तंमयापुत्रतपस्तवार्थेसुदुष्करंवर्षशतंचपूर्णम् ॥ तेनैवतुष्टेनरमाप्रियेणदत्तोऽसिसंसारसुखोदयाय ॥ ४२ ॥

अवमदुःखंनीचदुःखंनरकपातजन्यंतद्भीतिरित्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ गायनकाःगायकाः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेविंशोऽध्यायः॥ २० ॥
अर्धाधिकैकषष्ट्यातुश्लोकानामभिषेचने ॥ एकवीरस्यचकृतेऽनंतरंवृत्तमुच्यते ॥ १ ॥ राज्ञःपुत्रप्राप्त्युत्तरंजातंवृत्तमाह । जातकर्मादीति ॥ १ ॥ मेनेमानितवान् ॥ २ ॥ षष्ठेमासीत्यन्वय;

मातारमात्वांतनुजंमदर्थेत्यक्त्वागतासाहरिणासमेता ॥ धन्यातुसायाप्रहसंतमेकेकृत्वासुतंत्वांमुदिताननास्यात् ॥ ४३ ॥ त्वमेवसंसारसमुद्रनौकारूपःकृतःपुत्रलक्ष्मीधरेण ॥ इत्येवमुक्त्वानृपतिःसुतंतंमुदासमादाययथौगृहाय ॥ ४४ ॥ पुरीसमीपेनृपमागतंतमाकर्ण्यसर्वेसचिवास्तुराज्ञः ॥ ययुःसमीपंनृपतेश्चलोकाःसोपायनास्तेसपुरोहिताश्च ॥ ४५ ॥ वंदीजनागायनकाश्चसूताःसमाययुःसंमुखमाशुराज्ञः ॥ नृपःपुरंप्राप्यपुरःसमागतंजनंसमाश्वास्यवाक्यैश्चदृष्ट्या ॥ ४६ ॥ सपूजितःपौरजनेनराजाविवेशपुत्रेणयुतोनगर्याम् ॥ मार्गेषुलाजैःकुसुमैःसमंताद्विकीर्यमाणोनृपतिर्जगाम ॥ ४७ ॥ गृहंसमृद्धंसचिवैःसमेतःसुतंसमादायमुदाकराभ्याम् ॥ राज्ञ्यैददौचाऽथसुतंमनोज्ञंसद्यःप्रसूतंचमनोभवाभम् ॥ ४८ ॥ राज्ञीगृहीत्वाऽभिनवंतनूजंपप्रच्छराजानमनिंदितासा ॥ राजन्कुतश्चैषसुतःसुजन्माप्राप्तस्त्वयामन्मथतुल्यरूपः ॥ ४९ ॥ केनैषदत्तःकथयाऽऽशुकांतचेतोमदीयंप्रहृतंसुतेन ॥ नृपस्तदोवाचमुदान्वितोऽसौप्रियेरमेशेनसुतोहिमह्यम् ॥ ५० ॥ लोलाक्षिदत्तःकमलासमुत्थोजनार्दनांशोऽयमहीनसत्त्वः ॥ सातंगृहीत्वामुदमापराज्ञीराजाचकारोत्सवमद्भुतंच ॥ ५१ ॥ ददौचदानंकिलयाचकेभ्योगीतानिवाद्यानिवहूनिनेदुः ॥ कृत्वोत्सवंभूपतिरात्मजस्यनामैकवीरेतिचकारविश्रुतम् ॥ ५२ ॥ सुखंचसंप्राप्यमुदान्वितोऽसौनंददेवाधिपतुल्यवीर्यः ॥ पुत्रंहरेरूपगुणानुरूपंसंप्राप्यवंशस्यऋणाच्चमुक्तः ॥ ५३ ॥ इतिसकलसुराणामीश्वरेणाऽर्पितंतंसकलगुणगणाढ्यंपुत्रमासाद्यराजा॥विविधसुखविनोदैर्भार्ययासेव्यमानोव्यहरतनिजगेहेशक्रतुल्यप्रतापः ॥५४॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥२०॥छ॥

॥ व्यासउवाच ॥ जातकर्मादिसंस्कारांश्चकारनृपतिस्तदा ॥ दिनेदिनेजगामाशुवृद्धिंबालःसुलालितः ॥ १ ॥ नृपःसंसारजंप्राप्यसुखंपुत्रसमुद्भवम् ॥ ऋणत्रयविमोक्षंचमेनेतेनमहात्मना ॥ २ ॥ षष्ठेन्नप्राशनंतस्यकृत्वामासियथाविधि ॥ तृतीयेऽथतथावर्षेचूडाकरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥ चकारब्राह्मणान्द्रव्यैःसंपूज्यविविधैर्धनैः ॥ गोभिश्चविविधैर्दानैर्याचकानितरानपि ॥ ४ ॥ वर्षेचैकादशेतस्यमौंजीबंधनकर्मवै ॥ कारयित्वाधनुर्वेदमध्यापयतपार्थिवः ॥ ५ ॥ अधीतवेदंपुत्रंतंराजधर्मविशारदम् ॥ दृष्ट्वातस्याऽभिषेकायमतिंचक्रेजनाधिपः ॥ ६ ॥ पुष्यार्कयोगसंयुक्तेदिवसेनृपसत्तमः ॥ कारयामाससंभारानाभिषेकार्थमादरात् ॥ ७ ॥ द्विजानाहूयवेदज्ञान्सर्वशास्त्रविचक्षणान् ॥ अभिषेकंचकाराऽसौविधिवत्स्वात्मजस्यह ॥ ८ ॥

॥ ३ ॥ याचकानितरानपिमूकांधादीन्संपूज्यचूडाकरणंचकारेत्यन्वयः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ पार्वतींभगवतींचिंतयामासेत्यर्थः ॥ १२ ॥ दिष्टांतेप्रारब्धकर्मसमाप्तावित्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ होमधूमेनाऽऽवृतआकाशोयेषुते आश्रमाइत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ किंचित्समुद्यत्सुपयोधराम् अंकुरितयौवनामित्यर्थः ॥ २४ ॥ तांसखींवक्ष्यमाणाम् ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ अराल

जलमानीयतीर्थेभ्यःसागरेभ्यश्चपार्थिवः ॥ स्वयंचकारविधिवदभिषेकंशुभेदिने ॥९॥धनंदत्त्वाऽथविप्रेभ्योराज्यंपुत्रेनिवेश्यसः ॥ जगामवनमेवाऽऽशुस्व
र्गकामःसभूपतिः ॥ १० ॥ एकवीरंनृपंकृत्वासंमान्यसचिवानथ ॥ भार्ययासहभूपालःप्रविवेशवनंवशी ॥ ११ ॥ मैनाकशिखरेराजाकृत्वातार्तीयमा
श्रमम् ॥ नित्यंपत्रफलाहारश्चितयामासपार्वतीम् ॥ १२ ॥ एवंसनृपतिःकृत्वादिष्टांतेसहभार्यया ॥ मृतोऽसौवासवंलोकंगतःपुण्येनकर्मणा ॥ १३ ॥ इं
द्रलोकंपिताप्राप्तइतिश्रुत्वाऽथहैहयः॥चकारवेदनिर्दिष्टंकर्मचैवौर्ध्वदेहिकम्॥१४॥कृत्वोत्तराःक्रियाःसर्वाःपितुःपार्थिवनंदनः॥राज्यंचकारमेधावीपित्रादत्तं
सुसंमतम् ॥ १५ ॥ एकवीरोऽथधर्मज्ञःप्राप्यराज्यमनुत्तमम् ॥ बुभुजेविविधान्भोगान्सचिवैश्चसुमानितः ॥ १६ ॥ एकस्मिन्दिवसेराजामंत्रिपुत्रैःसम
न्वितः ॥ जगामजाह्नवीतीरेहयारूढःप्रतापवान् ॥ १७ ॥ संपश्यन्पादपान्रम्यान्कोकिलालापसंयुतान् ॥ पुष्पितान्फलसंयुक्तान्षट्पदालिविराजिता
न् ॥ १८ ॥ मुनीनामाश्रमान्दिव्यान्वेदध्वनिनिनादितान् ॥ होमधूमावृताकाशान्मृगशावसमावृतान् ॥ १९ ॥ केदाराञ्छालिसंपक्वान्गोपिकाभिःसु
रक्षितान् ॥ प्रफुल्लपंकजारामान्निकुंजांश्चमनोरमान् ॥ २० ॥ प्रेक्षमाणःप्रियालांस्तुचंपकान्पनसद्रुमान् ॥ बकुलांस्तिलकान्नीपान्मंदारांश्चप्रफुल्लितान्
॥ २१ ॥ शालांस्तालतमालांश्चजंबुचूतकदंबकान् ॥ सगच्छञ्जाह्नवीतोयेप्रफुल्लंशतपत्रकम् ॥ २२ ॥ पंकजंचाऽतिगंधाढ्यमपश्यदवनीपतिः ॥ दक्षि
णेजलजस्याऽथपार्श्वेकमललोचनाम् ॥ २३ ॥ कनकाभांसुकेशींचकंबुग्रीवांकृशोदरीम्॥बिंबोष्ठींसुंदरींकिंचित्समुद्यत्सुपयोधराम् ॥ २४ ॥ सुनासांचा
रुसर्वांगीमपश्यत्कन्यकांनृपः ॥ रुदतींतांसखींत्यक्त्वाविह्वलांदुःखपीडिताम्॥ २५ ॥ साश्रुनेत्रांक्रंदमानांविजनेकुररीमिव ॥ संवीक्ष्यराजापप्रच्छकन्य
कांशोककारणम् ॥ २६ ॥ सुनसेब्रूहिकाऽसित्वंकस्यपुत्रीशुभानने ॥ गंधर्वीदेवकन्याऽथकथंरोदिषिसुंदरि ॥ २७॥ कथमेकाकिनीबालेत्यक्ताकेनापिक
स्वरे ॥ पतिस्तेक्वगतःकांतेपितावाब्रूहिसांप्रतम् ॥ २८ ॥ किंतेदुःखमरालभ्रुकथयाऽद्यममांतिके ॥ करोमिदुःखनाशंतेसर्वथैवकृशोदरि ॥ २९ ॥ नरा
ज्यंसमतन्वंगिपीडांकोऽपिकरोत्यलम् ॥ नभयंचौरजंकांतेनराक्षसभयंतथा ॥ ३० ॥ मयिशासतिभूपालेनोत्पातादारुणाभुवि ॥ भयंनव्याघ्रसिंहे
भ्योनभयंकस्यचिद्भवेत् ॥ ३१ ॥ वदवामोरुकस्मात्त्वंविलापंजाह्नवीतटे ॥ करोषित्राणहीनाऽत्रकिंतेदुःखंवदस्वमे ॥ ३२ ॥

भ्रुकुटिलभ्रुइतितस्याःसंबोधनम् ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दैवंचमानुषं दैवंमानुषमुभयमपीत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ विपत्तिरहितइति ॥ विपत्तिहीनःकथंरुदतिनैवरोदितीत्यर्थः । रुदतीत्यार्षम् । तस्माद्रोदनेनविपत्त्यनुमानंकुर्वित्यर्थः ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ एकावलीवमुक्तामालेव ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ हेसुभगेसुतांगृहाणेत्येवमाभाष्येत्यर्थः ॥ ४९ ॥

हन्म्यहंदुःखमत्युग्रंप्राणिनांपृथिवीतले ॥ दैवंचमानुषंकांतेव्रतमेतन्ममाऽद्भुतम् ॥३३॥ विशाललोचनेब्रूहिकरोमितवचितितम् ॥ इत्युक्तेवचनेराज्ञाश्रु त्वोवाचमृदुस्वना ॥ ३४ ॥ शृणुराजेंद्रवक्ष्यामिममशोकस्यकारणम् ॥ विपत्तिरहितःप्राणीकथंरुदतिभूपते ॥ ३५ ॥ प्रब्रवीमिमहाबाहोयदर्थंरुदतीत्वह म् ॥ तवराज्यादन्यदेशेराजापरमधार्मिकः ॥ ३६ ॥ रभ्योनाममहाराजःसंतानरहितोभृशम् ॥ तस्यभार्यासुविख्यातारुक्मरेखेतिनामतः ॥ ३७॥ सुरू पाचतुरासाध्वीसर्वलक्षणसंयुता ॥ अपुत्रादुःखिताकांतमित्युवाचपुनःपुनः ॥ ३८ ॥ किंजीवितेनमेनाथधिग्वृथाजीवितंमम ॥ वंध्यायाःसुखहीनायाह्य पुत्रायाधरातले ॥ ३९ ॥ इत्येवंभार्ययाभूपःप्रेरितोमखमुत्तमम् ॥ चकारब्राह्मणांस्तज्ज्ञानाहूयविधिवत्तदा ॥ ४० ॥ पुत्रकामोधनंभूरिददावथयथोदि तम् ॥ हूयमानेघृतेऽत्यर्थंपावकादतिसुप्रभात् ॥ ४१ ॥ आविर्बभूवचार्वंगीकन्यकाशुभलक्षणा ॥ बिंबोष्ठीसुदतीसुभ्रूःपूर्णचंद्रनिभानना ॥ ४२ ॥ कन काभासुकेशांतारक्तपाणितलामृदुः ॥ सुरक्तनयनातन्वीरक्तपादतलाभृशम् ॥ ४३ ॥ हुताशनात्समुद्भूताहोत्रासास्वीकृतातदा ॥ होताप्रोवाचराजानंगृ हीत्वातांसुमध्यमाम् ॥ ४४ ॥ राजन्पुत्रींगृहाणेमांसर्वलक्षणसंयुताम् ॥ एकावलीवसंभूताहूयमानाद्धुताशनात् ॥ ४५ ॥ नाम्नाचैकावलीलोकेख्याता पुत्रीभविष्यति ॥ सुखितोभवभूपालपुत्र्यापुत्रसमानया ॥ ४६ ॥ संतोषंकुरुराजेंद्रदत्तादेवेनविष्णुना ॥ होतुर्वाक्यंनृपःश्रुत्वादृष्ट्वातांकन्यकांशुभाम् ॥ ॥ ४७ ॥ जग्राहपरमप्रीतोहोत्रादत्तांसुसंमताम् ॥ गृहीत्वानृपतिस्तांतुददौपत्न्यैवराननाम् ॥ ४८ ॥ आभाष्यरुक्मरेखायैगृहाणसुभगेसुताम् ॥ सा तांकमलपत्राक्षींप्राप्यकन्यांमनोरमाम् ॥ ४९ ॥ जहर्षमुदिताराज्ञीपुत्रंप्राप्ययथासुखम् ॥ चकारमंगलंकर्मजातकर्मादिकंशुभम् ॥ ५० ॥ पुत्रजन्मसमु त्थंयत्तत्सर्वंविधिवत्ततः ॥ समाप्यचमखंराजाद्विजेभ्योदक्षिणांशुभाम् ॥ ५१ ॥ दत्वाविसृज्यविप्रेंद्रान्मुदंप्रापमहीपतिः ॥ दिनेदिनेऽसितापांगीपुत्रवृ द्ध्याभृशंवभौ ॥ ५२ ॥ मुदंचपरमांप्रापनृपभार्यासुतान्विता ॥ उत्सवस्तद्दिनेतस्यप्रवृत्तःसुतजन्मजः ॥५३॥ पुत्रीपुत्रसमाऽत्यर्थंबभूववल्लभाकिल ॥ राज्ञोमंत्रिसुताचाऽहंसुबुद्धेमन्मथाकृते ॥ ५४ ॥ यशोवतीचमेनामसमानंवयआवयोः ॥ वयस्याऽहंकृताराज्ञाक्रीडनायतयासह ॥ ५५ ॥

॥ ५० ॥ ५१ ॥ पुत्रवृद्ध्यापुत्रवर्धनसमानवर्धनेनेत्यर्थः ॥ ५२ ॥ पुत्रींसुतस्थानीयांमत्वासुतजन्मनिजायमानउत्सवःतस्यराज्ञोगृहेतद्दिनेसंप्रवृत्तः ॥ ५३ ॥ सुबुद्धेमन्मथाकृतेइतिराज्ञः संबोधनम् ॥ तेनचत्वयिसमासक्तिर्वर्ततइतियशोवत्यावोधितम् ॥ ५४ ॥ आवयोःराजकन्यायाःममचेत्यर्थः ॥ वयस्यासखी ॥ ५५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एकावल्याःस्वभावमाह । गंधवंतीति ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ तस्यास्तत्कर्मजाह्नवीतीरदूरदेशस्थकमलग्रहणरूपंमयाराज्ञेनिवेदितं कंथनिवेदितंतत्राह । राजन्निति ॥ ५८ ॥ निर्जनेवनेतथाचक स्मिंश्चिद्दिवसेव्याघ्रादिभिरुपद्रुतास्यादितिभावः ॥ इत्थंमयानिवेदितेसतिगृहेजलाशयान्कृत्वातत्रपुष्पितान्भ्रमरावृतान्कमलान् । पुंस्त्वमार्षम् ॥ वापयित्वारोपयित्वाऽसौकन्यापित्राऽ थजान्हवीतीरंगंतुंनिवारितातथाऽपीत्युत्तरश्लोकेनान्वयः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ पंचषष्टिश्लोकवर्यैरेकावल्याः

सदासहचरीजाताप्रेमयुक्तादिवानिशम् ॥ एकावलीगंधवंतियत्रपद्मानिपश्यति ॥ ५६ ॥ तत्रसारमतेबालानान्यत्रसुखमाप्नुयात् ॥ सुदूरेजाह्नवीतीरेभ वंतिकमलान्यपि ॥ ५७ ॥ रममाणातत्रयातामत्समेतासखीयुता ॥ मयानिवेदितंराजन्पुत्रीतेकमलाकरान् ॥ ५८ ॥ प्रेक्षमाणाऽतिदूरेसाप्रयातिनिर्जने वने ॥ निषेधिताऽथपित्राऽसौगृहेकृत्वाजलाशयान् ॥ ५९ ॥ कमलान्वापयित्वाऽथपुष्पितान्भ्रमरावृतान् ॥ तथापिनिर्ययौबालाकमलासक्तचेतना ॥ ६० ॥ तदाराज्ञारक्षपालाःप्रेरिताःशस्त्रपाणयः ॥ एवंरक्षायुतातन्वीमत्समेतासखीयुता ॥६१॥ क्रीडार्थंजान्हवीतोयेनित्यमायातियातिच ॥ इतिश्री देवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ छ ॥ यशोवत्युवाच ॥ प्रातरुत्थायतन्वंगीचलिताचसखीयुता ॥ चामरैर्वीज्यमानासार क्षितावहुराक्षिभिः ॥ १ ॥ सायुधैश्चाऽतिसन्नद्धैःसहितावरवर्णिनी ॥ क्रीडार्थमत्रराजेंद्रसंप्राप्तानलिनींशुभाम् ॥ २ ॥ अहमप्यनयासार्धंगंगातीरेसमागता॥ अप्सरोभिःसमेताचकमलैःक्रीडमानया ॥ ३ ॥ एकावलीतथाचाऽहंजातेक्रीडापरेयदा ॥ सहसैवतदायातोदानवोबलसंयुतः ॥ ४ ॥ कालकेतुरितिख्या तोराक्षसैर्बहुभिर्युतः ॥ परिघासिगदाचापबाणतोमरपाणिभिः ॥ ५ ॥ दृष्टाचैकावलीतेनरूपयौवनशालिनी ॥ द्वितीयाकामपत्नीवक्रीडमानासुपंकजैः ॥ ॥ ६ ॥ मयोक्तैकावलीराजन्कोऽयंदैत्यःसमागतः ॥ गच्छावोरक्षपालानांमध्येपंकजलोचने ॥ ७ ॥ विमृश्यैवंसखीचाऽहंत्वरयैवगतेभयात् ॥ मध्येवैसै निकानांतुसायुधानांनृपात्मज ॥ ८ ॥ कालकेतुस्तुतांदृष्ट्वामोहिनींमदनातुरः ॥ गदांगुर्वींगृहीत्वातुधावमानःसमागतः ॥ ९ ॥ रक्षकान्दूरतःकृत्वाजग्रा हांबुजलोचनाम् ॥ त्रस्तांवेपथुसंयुक्तांक्रंदमानांकृशोदरीम् ॥ १० ॥ त्यजैनांमांगृहाणेतिमयाचोक्तोपिदानवः ॥ नमांजग्राहकामार्तस्तांगृहीत्वाविनिः सृतः ॥११॥ तिष्ठतिष्ठेतिभाषंतोरक्षकास्तंमहाबलम् ॥ प्रतिषिध्यतुसंग्रामंचक्रुर्विस्मयकारकम् ॥ १२ ॥ तस्याऽपिराक्षसाःक्रूराःसर्वतःशस्त्रपाणयः ॥ युयुधूरक्षकैःसार्धंस्वामिकार्येकृतोद्यमाः ॥ १३ ॥ संग्रामस्तुतदाजातःकालकेतोस्तथारणे ॥ निहत्यरक्षकान्सर्वान्गृहीत्वैनांमहाबलः ॥ १४ ॥

कथानकम् ॥ यशोवतीप्राहराज्ञेइतिसम्यगिहोच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायोक्तवृत्तोत्तरंयशोवतीवृत्तंकथयति । प्रातरुत्थायेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ रक्षपालानांमध्येगच्छा वइतिमयातदैकावल्युक्ता ॥ ७ ॥ तदनंतरंतयैवंविमृश्याऽहंसासखीएकावलीचोभेसैनिकानांमध्येदैत्यभयात्त्वरयैवगतेइत्यन्वयः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ एनामेकावलींत्यज मांगृहाण इतिमयोक्तोऽपीत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ रत्याक्रीडयाऽहं तवदासोऽस्मिकस्मात्क्रंदसिरोदिषीतिसखींकथयेत्युत्तरेणान्वयः ॥ २० ॥ हेसुलोचने स्वस्थाभवेत्यापिकथयेत्यन्वयः ॥२१॥
॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ अप्रियमितिच्छेदः ॥ २६ ॥ इत्युक्तेइति ॥ इतिमयावचनेउक्तेसतीत्यर्थः ॥ २७ ॥ मंत्रोवशीकरणइत्यर्थः ॥ अनेनचत्वय्यहमत्यंतंमोहितोऽस्मीति

युक्तोराक्षससैन्येननिर्जगामपुरंप्रति ॥ वीक्ष्यतांरुदतींबालांगृहीतांदानवेनतु ॥ १५ ॥ पृष्ठतोऽहंगतातत्रयत्रनीतासखीमम ॥ विक्रोशंतीयथासामांपश्ये
दितिपदानुगा ॥ १६ ॥ साऽपिमामागतांवीक्ष्यकिंचित्स्वस्थाऽभवत्तदा ॥ गताऽहंतत्समीपेतुतामाभाष्यपुनःपुनः ॥ १७ ॥ सामांप्राप्याऽतिदुःखार्ता
स्तंभस्वेदसमाकुला ॥ कंठेगृहीत्वामांभूपरुरोदभृशदुःखिता ॥१८॥ समामाहकालकेतुःप्रीतिपूर्वमिदंवचः ॥ समाश्वासयभीतांत्वंसखींचंचललोचनाम् ॥
॥ १९ ॥ प्राप्तंममाऽद्यनगरंदेवलोकसमंप्रिये ॥ दासोऽस्मितवरत्याहिकस्मात्क्रंदसिकातरा ॥२०॥ कथयैनांसखींतेऽद्यस्वस्थाभवसुलोचने॥इत्युक्त्वा
मांसखीपार्श्वेसमारोप्यरथोत्तमे ॥ २१ ॥ जगामतरसादुष्टःपुरेस्वस्यमनोहरे ॥ सैन्येनमहतायुक्तःप्रफुल्लवदनांबुजः ॥ २२ ॥ एकावलींतथामांचसंस्था
प्यधवलेगृहे ॥ राक्षसान्गृहरक्षार्थंकल्पयामासकोटिशः ॥ २३ ॥ द्वितीयेदिवसेसोऽथमामुवाचरहोनृपः ॥ प्रबोधयसखींबालांशोचंतींविरहातुराम् ॥
॥ २४ ॥ पत्नीमेभवसुश्रोणिसुखंभुंक्ष्वयथेप्सितम् ॥ राज्यंत्वदीयंचंद्रास्येसेवकोऽहंसदातव ॥ २५ ॥ पुनरुक्तंमयावाक्यंश्रुत्वातद्भाषितंखरम् ॥ नाऽहंक्ष
माऽप्रियंवक्तुंत्वमेनांकथयप्रभो ॥ २६ ॥ इत्युक्तेवचनेदुष्टोमदनक्षतमानसः ॥ उवाचविनयादेनांसखींक्षामोदरींप्रियाम् ॥ २७ ॥ कृशोदरित्वयामंत्रोनि
क्षिप्तोऽस्तिममोपरि ॥ तेनमेहृदयंकांतेहृतंतेवशतांगतम् ॥ २८ ॥ तेनाऽहंतवदासोऽद्यकृतोऽस्मीतिविनिश्चयः ॥ भजमांकामबाणेनपीडितंविवशंभृश
म् ॥ २९ ॥ यौवनंयातिरंभोरुचंचलंदुर्लभंतथा ॥ सफलंकुरुकल्याणिपतिंमांपरिरभ्यच ॥ ३० ॥ एकावल्युवाच ॥ पित्राऽहंकल्पितापूर्वंदातुंराजसुता
यवै ॥ हैहयस्तुमहाभागसमयामनसावृतः ॥ ३१ ॥ कथमन्यंभजेकांतंत्यक्त्वाधर्मंसनातनम् ॥ कन्याधर्मंविहायाऽद्यवेत्सिशास्त्रविनिश्चयम् ॥ ३२ ॥
यस्मैदद्यात्पिताकामंकन्यातंपतिमाप्नुयात् ॥ परतंत्रासदाकन्यानस्वातंत्र्यंकदाचन ॥ ३३ ॥ इत्युक्तोऽपितयापापीविररामनमोहितः ॥ नमुमोचविशा
लाक्षींमांचपार्श्वेस्थितांतथा ॥ ३४ ॥ पातालविवरेतस्यपुरंपरमसंकटे ॥ राक्षसैरक्षितंदुर्गमंडितंपरिखावृतम् ॥ ३५ ॥ तत्रतिष्ठतिदुःखार्तासखीमेप्राण
वल्लभा ॥ तेनाऽहंविरहेणाऽत्ररारटीमिसुदुःखिता ॥ ३६ ॥ एकवीरउवाच ॥ कथंत्वमत्रसंप्राप्तापुरात्तस्यदुरात्मनः ॥ विस्मयोमेमहानत्रतत्त्वंब्रूहिवरानने
॥ ३७ ॥ त्वयाचकथितंवाक्यंसंदिग्धंभातिभामिनि ॥ हैहयार्थेकल्पितासापित्रेतिममसांप्रतम् ॥ ३८ ॥

बोध्यते ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ राजसुतायदातुंपित्राकल्पितेत्यर्थः ॥ मयाचमनसाहैहयएववृतइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ रारटीमिवल्गनांकरोमीत्यर्थः॥ ३६॥
॥ ३७ ॥ सांप्रतमस्मिन्काले ॥ ३८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





हैहयइति ॥ यद्यपिहय्याअपत्यमित्यर्थेस्त्रीभ्योढगितिढकिहयेयइत्येवरूपंसिध्यति तथापिपृषोदरादित्वाद्धैहयपदस्यसाधुत्वंबोध्यम् ॥ यद्वाहेशब्देननामैकदेशेननामग्रहणमितिन्यायाद्धेषाशब्दस्यग्रहणम् ॥ तथाचहेशब्देनहेषाशब्देनतंशब्दंकुर्वन्हयतिगच्छतीतिहेहयोऽश्वस्तस्याऽयंहैहयइति ॥ यद्वाहेभक्तइत्युच्चार्यहयतिगच्छतीतिहेहयोविष्णुस्तस्याऽयंहैहयइतिव्युत्पत्त्यासाधुत्वंबोध्यम् ॥ मदर्थेकथितासाकिमिति ॥ यदिमदर्थेसाकथितातर्हिममैवसास्त्रीसंकटेपतितेत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ इदंवर्तमानंराज्ञेनिवेदितंकिंवानेतिवदेतिशेषः ॥ ४१ ॥

हैहयोनामराजाऽहंनान्योऽस्तिपृथिवीपतिः ॥ मदर्थेकथितासाकिंसखीतवसुलोचना ॥ ३९ ॥ एतन्मेसंशयंसुभ्रुच्छेत्तुमर्हसिभामिनि ॥ अहंतामानयिष्यामितंहत्वाराक्षसाधमम् ॥ ४० ॥ स्थानंदर्शयमेतस्ययदिजानासिसुव्रते ॥ राज्ञेनिवेदितंकिंवातत्पित्रेचाऽतिदुःखिता ॥ ४१ ॥ यस्यैषावल्लभापुत्रीनकिंजानातितांहृताम् ॥ नोद्यमःकिंकृतस्तेनततोमोचनहेतवे ॥४२॥ वंदीकृतांसुतांज्ञात्वाकथंतिष्ठतिसुस्थिरः ॥ असमर्थोनृपःकिंवाकारणंब्रूहिसत्वरम् ॥ ॥ ४३ ॥ त्वयामेऽपहृतंचेतोगुणानुक्त्वाह्यमानुषान् ॥ सख्याःपंकजपत्राक्षिकृतःकामवशोभृशम् ॥ ४४ ॥ कदापश्यामितांकांतांमोचयित्वाऽतिसंकटात् ॥ इतिमेहृदयंचाऽद्यकरोत्यतिमनोरथम् ॥ ४५ ॥ ब्रूहिमेगमनोपायंपुरेतस्याऽतिदुर्गमे ॥ कथंत्वमागतातस्मात्संकटादत्रतद्वद ॥ ४६ ॥ यशोवत्युवाच ॥ बालभावान्मयामंत्रोभगवत्याविशांपते ॥ प्राप्तोऽस्तिब्राह्मणात्सिद्धात्सबीजध्यानपूर्वकः ॥ ४७ ॥ तत्राऽवस्थितयाराजन्मयाचित्तेविचारितम् ॥ आराधयामिसततंचंडिकांचंडविक्रमाम् ॥ ४८ ॥ सादेवीसेविताकामंबंधमोक्षंकरिष्यति ॥ भक्तानुकंपिनीशक्तिःसमर्थासर्वसाधने ॥ ४९ ॥ याविश्वंसृजतेशक्त्यापालयत्येवसापुनः ॥ कल्पांतेसंहरत्येवनिराकारानिराश्रया ॥५० ॥ इतिसंचिंत्यमनसादेवींविश्वेश्वरींशिवाम् ॥ ध्यात्वारक्तांबरांसौम्यांसुरक्तनयनांहृदि ॥ ५१ ॥ संस्मृत्यमनसारूपंमंत्रजाप्यपराऽभवम् ॥ उपासितामयादेवीमासमेकंसमाधिना ॥ ५२ ॥ स्वप्नेममसमायाताभक्तिभावेनतोषिता ॥ मामाहाऽमृतयावाचाकिंसुप्तासीतिचंडिका ॥ ५३ ॥ उत्तिष्ठयाहितरसागंगातीरंमनोहरम् ॥ आगमिष्यतितत्राऽसौहैहयोनृपपुंगवः ॥ ५४ ॥ एकवीरोमहाबाहुःसर्वशत्रुविमर्दनः ॥ दत्तात्रेयेणमन्मंत्रोमहाविद्याभिधःपरः ॥ ५५ ॥ दत्तोऽस्मैसोऽपिसततंमामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ मय्यासक्तमतिर्नित्यंममपूजापरायणः ॥ ५६ ॥ मामेवसर्वभूतेषुध्यायन्नास्तेचमत्परः ॥ सतेदुःखविनाशंवैकरिष्यतिमहामतिः ॥ ५७ ॥ मासुतोविहरंस्तत्रतवत्राताभविष्यति ॥ हत्वातंराक्षसंघोरंमोचयिष्यतिमानिनीम् ॥ ५८ ॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ महाविद्याभिधःश्रीविद्यामंत्रइत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ मामेवसर्वभूतेष्विति ॥ सर्वमदात्मकंपश्यतीत्यर्थः ॥ ५७ ॥ मासुतोलक्ष्मीसुतइत्यर्थः ॥ ५८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ तस्माज्जायमानात्स्वप्नादुपसरणंगमनंयुक्तमितिमत्वेत्यर्थः ॥ ६३ ॥ महादेवीप्रसादतोमार्गज्ञानंशीघ्रगतिर्मयाप्राप्तेत्यन्वयः ॥ ६४ ॥ कस्त्वंकस्येति ॥ यद्यपिहैहयोनामराजाहंनाऽन्योस्तिपृथिवीपतिरित्यनेनराजवाक्येनसंदेहस्यनिवृत्तत्वात्कस्त्वमितिप्रश्नोनयुक्तस्तथाऽपिएकावलीलोभार्थमिदंराज्ञोक्तंवामुख्यत्वेनसराजाऽयमेवास्तीतितद्वशादुक्तमिति ॥ संदेहाविष्टायशोवतीपुनःपृच्छति । कस्त्वंकस्येति ॥ यथातथासत्यंवदेत्यर्थः ॥ ६५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठ०द्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥ अर्धाधिकैश्चषट्षष्टि

एकावलीमेकवीरःसर्वशास्त्रविशारदः ॥ पश्चात्सैवपतिःकार्यस्त्वयाराजसुतःशुभः ॥ ५९ ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेदेवीप्रबुद्धाऽहंतदैवहि ॥ कथितंस्वप्नवृत्तांतंदेव्याश्चाऽऽराधनंतथा ॥ ६० ॥ प्रसन्नवदनाजाताश्रुत्वासाकमलेक्षणा ॥ विशेषेणचसंतुष्टामामुवाचशुचिस्मिता ॥ ६१ ॥ गच्छतत्रत्वरायुक्ताकुरुकार्यममप्रिये ॥ सत्यवाक्याभगवतीसाऽऽवांमोक्षंविधास्यति ॥६२॥ इत्याज्ञप्तातयाचाऽहंसख्यावैप्रेमयुक्तया ॥ मत्वोपसरणंयुक्तंतस्मात्स्थानात्तदानृप ॥६३॥ चलिताऽहंततःशीघ्रंमहादेवीप्रसादतः ॥ मार्गज्ञानंशीघ्रगतिर्मयाप्राप्तानृपात्मज ॥ ६४ ॥ इत्येतत्कथितंसर्वंकारणंममदुःखजम् ॥ कस्त्वंकस्यसुतश्चेतिवदवीरयथातथा ॥ ६५ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥७॥ व्यासउवाच ॥ तस्यास्तुवचनंश्रुत्वारमापुत्रःप्रतापवान् ॥ प्रफुल्लवदनांभोजस्तामुवाचविशांपते ॥१॥ राजोवाच ॥ रंभोरुयस्त्वयापृष्टोवृत्तांतोविशदाक्षरः ॥ हैहयोऽहंचैकवीरनाम्नासिंधुसुतासुतः॥२॥ मनोमेयत्त्वयानूनंपरतंत्रंकृतंकिल ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिविरहेणाऽतिपीडितः ॥ ३ ॥ प्रथमंरूपमाख्यातंसर्वलोकातिगंत्वया ॥ तेनमेविह्वलंजातंकामबाणाहतंमनः ॥४॥ ततस्तस्यागुणाःप्रोक्तास्तैस्तुचित्तंहृतंपुनः ॥ यत्त्वयोक्तंपुनर्वाक्यंतेनमेविस्मयोऽभवत् ॥५॥ एकावल्यावचःप्रोक्तंदानवाग्रेमयावृतः॥ हैहयस्तंविनानाऽन्यंवृणोमीतिविनिश्चयः ॥ ६ ॥ तेनवाक्येनतन्वंगिभृत्योऽहमधुनाकृतः ॥ त्वयातस्याःसुकेशांतेब्रूहिकिंकरवाणिवाम् ॥ ७॥ स्थानंतस्यनजानामिराक्षसस्यदुरात्मनः ॥ गतिर्मेनास्तिगमनेपुरेतस्मिन्सुलोचने ॥ ८॥ वदमांत्वंविशालाक्षितत्रप्रापयितुंक्षमा ॥ प्रापयाशुसखीतेसायत्रतिष्ठतिसुंदरी ॥९॥ हत्वातंराक्षसंक्रूरंमोचयिष्यामिसांप्रतम् ॥ विवशांशोकसंतप्तांराजपुत्रींतवप्रियाम् ॥ १० ॥ विमुक्तदुःखांकृत्वाऽऽशुप्रापयिष्यामितेपुरम्॥पित्रेचाऽस्याःप्रदास्यामिकन्यामेकावलीमहम् ॥ ११ ॥ पश्चाद्विवाहंकर्ताऽसौराजापुत्र्याःपरंतपः ॥ एवंतेमनसःकामोममचापिप्रियंवदे ॥ १२ ॥

श्लोकैर्हैहयभूभृता ॥ कालकेतोर्महायुद्धंजातामित्येतदुच्यते ॥ १ ॥ यशोवतीवाक्यंश्रुत्वाराजोवाचेत्याह । तस्यास्त्विति ॥ १ ॥ त्वयायःपृष्टोवृत्तांतोमद्विषयकस्तंशृण्विवातिशेषः ॥२॥ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ किंतद्वाक्यंतदाह । एकावल्यावचइति ॥ मयाहैहयोवृतस्तंहैहयंविनाऽन्यंनवृणोमीतिनिश्चयइतिदानवाग्रेवचएकावल्याप्रोक्तमित्यन्वयः ॥ ६ ॥ तेनवाक्येनेति ॥ श्रावितेनेतिशेषः ॥ वां युवयोः ॥ ७ ॥ ८ ॥ वदमामिति ॥ उपायमितिशेषः ॥ प्रापयितुंक्षमेतियतस्तस्मात्स्थलात्त्वमागताऽसिततस्तदुपायाभिज्ञाऽसीत्यर्थः ॥९॥ १० ॥११॥१२॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १३ ॥ यथाहन्मिहनिष्यामितथाकुर्वित्यर्थः ॥ इत्येतत्प्रियंकर्तुंत्वंशक्ताऽसि तवदेवीभक्तियुक्तत्वात् ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ दत्तात्रेयाद्दैवयोगात्प्राप्तादिति ॥ दैवयोगात्काकतालीयन्यायेनप्राप्तादित्यर्थः ॥ योगेश्वरीमहामंत्रमिति ॥ त्रिलोक्यास्तिलकवद्भूषणभूतत्वात्त्रिलोकीतिलकइत्यभिधायस्यसः ॥ तथाविधंमंत्रंह्रींगौरिरुद्रदायि

भविष्यतिससंपूर्णःसाधनेनतवाऽधुना ॥ दर्शयाऽऽशुपुरंतस्यपश्यमेत्वंपराक्रमम् ॥ १३ ॥ यथाहन्मिदुराचारंपरदारापहारकम् ॥ तथाकुरुप्रियंकर्तुंशक्ताऽसिवरवर्णिनि ॥ १४ ॥ मार्गंदर्शयतस्याऽऽद्यपुरस्यदुर्गमस्यच ॥ व्यासउवाच ॥ तन्निशम्यप्रियंवाक्यंमुदिताचयशोवती ॥ १५ ॥ तमुवाचरमापुत्रं गमनोपायमादरात् ॥ मंत्रंगृहाणराजेंद्रभगवत्यास्तुसिद्धिदम् ॥ १६ ॥ दर्शयिष्यामितस्याऽद्यपुरंराक्षसपालितम् ॥ सज्जोभवमहाभागगमनायमयासह ॥ १७ ॥ सैन्येनमहतायुक्तस्तत्रयुद्धंभविष्यति ॥ कालकेतुर्महावीरोराक्षसैर्बलिभिर्वृतः ॥ १८ ॥ तस्मान्मंत्रंगृहीत्वात्वंव्रजतत्रमयासह॥दर्शयिष्यामितेमार्गंपुरस्याऽस्यदुरात्मनः ॥ १९ ॥ हत्वातंपापकर्माणंमोचयाऽऽशुसखींमम ॥ श्रुत्वातद्वचनंवीरोमंत्रंजग्राहसत्वरः ॥२०॥ दत्तात्रेयाद्दैवयोगात्प्राप्ताज्ज्ञानिवराच्छुभात् ॥ योगेश्वरीमहामंत्रंत्रिलोकीतिलकाभिधम् ॥२१॥ तेनसर्वज्ञताजातासर्वांतश्चारितातथा ॥ तयासहजगामाऽऽशुपुरंतस्यसुदुर्गमम् ॥ ॥ २२ ॥ रक्षितंराक्षसैर्घोरैःपातालमिवपन्नगैः ॥ यशोवत्याचसैन्येनमहतासंयुतोनृपः ॥२३॥ तमायांतंसमालोक्यदूतास्तस्यभयातुराः ॥ क्रोशंतोऽभिययुःपार्श्वंकालकेतोस्तरस्विनः ॥ २४ ॥ तमूचुःसहसामत्वाराक्षसंकाममोहितम् ॥ एकावलीसमीपस्थंकुर्वंतंविनयान्बहून् ॥ २५ ॥ दूताऊचुः ॥ राजन्यशोवतीनारीकामिन्याःसहचारिणी ॥ आयातिसहसैन्येनराजपुत्रेणसंयुता ॥ २६ ॥ जयंतोवामहाराजकार्तिकेयोऽथवानुकिम् ॥ आगच्छतिबलोन्मत्तोवाहिनीसहितःकिल ॥ २७ ॥ संयत्तोभवराजेंद्रसंग्रामःसमुपस्थितः ॥ देवपुत्रणयुध्यस्वत्यजवाकमलेक्षणाम् ॥ २८॥ इतोदूरेऽस्तिसैन्यंतद्योजनत्रयमात्रतः ॥ सज्जोभवमहीपालदुंदुभिघोषयाऽऽशुवै ॥ २९ ॥ व्यासउवाच ॥ तेषांतद्वचनंश्रुत्वाराक्षसःक्रोधमूर्च्छितः ॥ राक्षसान्प्रेरयामाससायुधान्सबलान्बहून् ॥ ३० ॥ गच्छध्वंराक्षसाःसर्वेसम्मुखाःशस्त्रपाणयः ॥ तानाज्ञाप्यकालकेतुःपप्रच्छप्रणयान्वितः ॥३१॥ एकावलींसमीपस्थांविवशांभृशदुःखिताम् ॥ कोऽयमायातितन्वंगिपितातेवापरःपुमान् ॥ ३२ ॥ त्वदर्थेसैन्यसंयुक्तोब्रूहिसत्यंकृशोदरि ॥ पितातेयदिसंप्राप्तोनेतुंत्वांविरहातुरः ॥ ३३ ॥ ज्ञात्वातेपितरंसम्यक्संग्रामंनकरोम्यहम् ॥ आनयित्वागृहेपूजांरत्नैर्वस्त्रैर्हयैःशुभैः ॥ ३४ ॥

तयोगेश्वरिहुंफट्स्वाहेत्येतद्रूपंयोगेश्वरीमंत्रंजग्राहेत्यर्थः ॥ अयंमंत्रोगौरीतंत्रादिषुप्रसिद्धः ॥ न्यासादिकंशारदातिलकटीकायामुक्तंनवमपटलेघटार्गलयंत्रविधाने ॥ २१ ॥ सर्वांतश्चारितेति ॥ तेनमंत्रप्रभावेनपृथिव्यादिभूतभेदनशक्तिश्चजातेत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ जयंतोवेति ॥ इंद्रपुत्रइत्यर्थः ॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ एवंवदंत्यमीइति ॥ तेयशोवतीवयस्यासखीतंवीरंसमानीयकृतोद्यमाऽऽस्तेतिष्ठतीत्येवममीदूतावदंतीत्यन्वयः ॥ ३९ ॥ तथाचसासखीत्वयैवप्रेषिता स्यात्साक्तत्वयाप्रेषितेतिवदेत्याह । क्वगतेति ॥ ४० ॥ त्वत्कृतएवाऽयंशत्रुरस्तिनाऽन्यइत्याह नान्यइति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ स्कंधा वारेग्रामप्रांतभागे ॥ स्कंधावारःपुरांतःस्यादितिकोशः ॥ स्कंधावारःसेनावा ॥ स्कंधावारस्तुकटकइतित्रिकांडशेषः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ कथितेति ॥ तस्याऽग्रेत्वंमयाकाथितातेनहेतुनाऽ

करोमितस्यचाऽऽतिथ्यंगृहेप्राप्तस्यसर्वथा ॥ अन्यश्चेद्यदिसंप्राप्तस्तंहन्मिनिशितैःशरैः ॥३५॥ आनीतःकिलकालेनमरणायमहात्मना ॥ तस्माद्वदविशा लाक्षिकोयमायातिमंदधीः ॥ ३६ ॥ अज्ञात्वामांदुराधर्षंकालरूपंमहाबलम् ॥ एकावल्युवाच ॥ नजानेऽहंमहाभागकोऽयमायातिसत्वरः ॥३७॥ नमे ऽस्तिविदितःकोऽपिस्थितायास्तवबंधने ॥ नाऽयंपितामेनभ्राताकोऽप्यन्योऽस्तिमहाबलः ॥ ३८ ॥ किमर्थमिहचायातिनाऽहंवेदविनिश्चयम् ॥ दैत्यउ वाच ॥ एवंवदंत्यमीदूतावयस्यातेयशोवती ॥ ३९ ॥ समानीयचतंवीरमागतेतिकृतोद्यमा ॥ क्वगतासासखीकांतेविदग्धाकार्यनिश्चये ॥ ४० ॥ नाऽन्यः कोऽपिममारातिर्योमेप्रतिबलोभवेत् ॥ व्यासउवाच ॥ एतस्मिन्नंतरेदूतास्तत्राऽन्येवैसमागताः ॥४१॥ तेहोचुस्त्वरिताभीताःकालकेतुंगृहेस्थितम् ॥ किं स्वस्थोऽसिमहाराजसमीपेसैन्यमागतम् ॥ ४२ ॥ निर्गच्छनगरात्तूर्णंसैन्येनमहतावृतः ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वाकालकेतुर्महाबलः ॥ ४३ ॥ रथमारुह्य त्वरितोनिर्ययौस्वपुराद्बहिः ॥ एकवीरोऽपिसहसाहयारूढःप्रतापवान् ॥ ४४ ॥ आगतस्तत्रकामिन्याविरहेणसमाकुलः ॥ युद्धंतयोरभूत्तत्रवृत्रवासवयोरि व ॥ ४५ ॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधामुक्तैरादीपितदिगंतरम् ॥ वर्तमानेतदायुद्धेकातराणांभयावहे ॥४६॥ गदयाताडयामासदैत्यंसिंधुसुतासुतः ॥ सगतासुःपपा तोर्व्यांवज्राहतइवाऽचलः ॥ ४७ ॥ पलायित्वागताःसर्वेराक्षसाभयपीडिताः ॥ यशोवतीततोगत्वावेगादेकावलींतदा ॥ ४८ ॥ उवाचमधुरांवाणींविस्मि तांमुदिताभृशम् ॥ एह्यालिनृपपुत्रेणदानवोऽसौनिपातितः ॥ ४९ ॥ एकवीरेणधीरेणयुद्धंकृत्वासुदारुणम् ॥ स्कंधावारेऽप्यसौराजातिष्ठत्यद्यश्रमातुरः ॥ ५० ॥ दर्शनंकांक्षमाणस्तेश्रुतरूपगुणस्तव ॥ पश्यतंकुटिलापांगिमनोभवसमंनृपम् ॥ ५१ ॥ कथितात्वंमयापूर्वंतस्याऽग्रेजान्हवीतटे ॥ पूर्णानुरागः संजातस्तेनाऽसौविरहातुरः ॥ ५२ ॥ वांछतित्वांचारुरूपांद्रष्टुंनृपतिनंदनः ॥ सातस्यावचनंश्रुत्वागमनायमनोदधे ॥ ५३ ॥ लज्जमानाभृशंभीत्याकौ मारप्राप्तयातया ॥ कथंतस्यमुखंद्रक्ष्येकुमारीह्यवशाभृशम् ॥ ५४ ॥ समांगृह्णातिकामार्तइतिचिंताकुलासती ॥ यशोवत्यायुतातत्रनरयानास्थितायया ॥ ॥ ५५ ॥ स्कंधावारेऽतिमलिनामलिनांबरधारिणी ॥ तामागतांविशालाक्षींदृष्ट्वाराजसुतोऽब्रवीत् ॥ ५६ ॥

सौत्वयिपूर्णानुरागःपरिपूर्णप्रेमाजातइत्यर्थः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ कौमारप्राप्तयेति ॥ कौमारेणवयसाप्राप्तायाभीतिस्तयाभीत्यालज्जमानेत्यन्वयः ॥ कौमारात्कथंभीत्युद्भवस्तदाह । कथंत स्येति ॥ बलात्कारेणमांग्रहीष्यतीतिहेतोरित्यर्थः ॥ ५४ ॥ तदेवाह । समांगृह्णातीति ॥ ग्रहीष्यतीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५७ ॥ ५८ ॥ भवितेति ॥ विवाहोत्तरंसंगमोभविष्यतीत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ यशोवत्यासमन्वितामिति ॥ तस्मैयशोवत्यपिदत्तेत्यर्थः ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ इतिश्रीदे०भा०तिलकेषष्ठस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ छ ॥ एकषष्टिश्लोकवर्यैर्ज्ञानिप्रारब्धवेगतः ॥ विक्षेपशक्तिकार्यंतुतिष्ठत्येवेतिचोच्यते ॥ १ ॥ हैहयकथां श्रुत्वासंशयितोराजापृच्छाति। भगवंस्त्वन्मुखांभोजादित्यादिना ॥ १ ॥ २ ॥ कोऽसौविस्मयस्तमाह । परंकौतूहलंमेऽत्रेति ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ अयंभावः विष्ण्वादयःकिंज्ञानिनउताऽज्ञानिनस्तदातेषांमाययाअविवेकस्यचनाशात्कथमेतदविवेकजन्यंहयरूपधारणादिकमाचरणम् ॥ अथयद्यज्ञानिनस्तर्हिसंसारेकेऽपिज्ञानिनोनसंतीतिविवेकोपदेशप्रतिपादकंशास्त्रंकर्मोपासनाप्रतिपादकंशास्त्रंचव्यर्थंस्यात् ॥ तद्धिचित्तशुद्धिसंपादनद्वाराज्ञानेउपयुज्यतेयदितुज्ञानमेवदुर्लभंतदातदुपयोगार्थंतदाचरणस्याऽऽनर्थक्यमेवेतिशृणुराजन्निति ॥ अत्रसमाधानकर्तुरयम

दर्शनंदेहितन्वंगितृषितेनयनेमम ॥ कामातुरंचतंवीक्ष्यतांचलज्जाभरावृताम् ॥ ५७ ॥ नीतिज्ञाशिष्टमार्गज्ञातमुवाचयशोवती ॥ राजपुत्रपिताऽप्यस्यास्त्वामेनांदातुमिच्छति ॥ ५८ ॥ एषाऽपित्वद्वशानूनंभवितासंगमस्तव ॥ कालंप्रतीक्ष्यराजेंद्रनयैनांपितुरंतिकम् ॥ ५९ ॥ सविवाहविधिंकृत्वादास्यतीतिविनिश्चयः ॥ सतस्यावचनंतथ्यंमत्वासैन्यसमन्वितः ॥ ६० ॥ समेतःकामिनीभ्यांतुययौतत्पितुराश्रमम् ॥ राजपुत्रींतथायातांश्रुत्वाप्रेमसमन्वितः ॥ ६१ ॥ प्रययौसम्मुखस्तूर्णंसचिवैःपरिवेष्टितः ॥ बहुभिर्दिवसैर्दृष्टापुत्रीसामालिनांबरा ॥ ६२ ॥ यशोवत्यातुवृत्तांतःकथितोविस्तरात्पुनः ॥ एकवीरांमिलित्वाऽसौगृहमानीयचादरात् ॥ ६३ ॥ पुण्येऽह्निकारयामासविवाहंविधिपूर्वकम् ॥ पारिबर्हंततोदत्वासंपूज्यविधिवत्तदा ॥ ६४ ॥ पुत्रींविसर्जयामासयशोवत्यासमन्विताम् ॥ एवंविवाहेसंवृत्तेरमापुत्रोमुदान्वितः ॥ ६५ ॥ गृहंप्राप्यबहून्भोगान्बुभुजेप्रिययासमम् ॥ बभूवतस्यांपुत्रस्तुकृतवीर्याभिधःकिल ॥ ६६ ॥ तत्सुतःकार्तवीर्यस्तुवंशोऽयंकथितोमया ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०षष्ठस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ राजोवाच ॥ भगवंस्त्वन्मुखांभोजाच्च्युतंदिव्यकथारसम् ॥ नतृप्तिमधिगच्छामिपिबंस्तुसुधयासमम् ॥ १ ॥ विचित्रमिदमाख्यानंकथितंभवतामम ॥ हैहयानांसमुत्पत्तिर्विस्तराद्विस्मयप्रदा ॥ २ ॥ परंकौतूहलंमेऽत्रयद्विष्णुःकमलापतिः ॥ देवदेवोजगन्नाथःसृष्टिस्थित्यंतकारकः ॥३॥ सोऽप्यश्वभावमापन्नोभगवान्हरिरच्युतः ॥ परतंत्रःकथंजातःस्वतंत्रःपुरुषोत्तमः॥४॥एतन्मेसंशयंब्रह्मञ्छेत्तुमर्हसिसांप्रतम् ॥ सर्वज्ञस्त्वंमुनिश्रेष्ठब्रूहिवृत्तांतमद्भुतम् ॥५॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिसंदेहस्याऽस्यनिर्णयम् ॥ यथाश्रुतंमयापूर्वंनारदान्मुनिसत्तमात् ॥ ६ ॥

भिप्रायः ॥ विष्ण्वादयोमहांतोज्ञानिनएव परंतुमायायाःशक्तिद्वयमस्ति एकमावरणशक्त्यात्मकंरूपमपरंविक्षेपशक्त्यात्मकंरूपम् । तत्रज्ञानेनतेषामावरणशक्तिरूपेनष्टेपिविक्षेपशक्तिरूपंयावत्कालपर्यंतंप्रारब्धकर्मणादेहस्तिष्ठतितावत्कालपर्यंतंतिष्ठत्येव ॥ तथाचतेषांज्ञानित्वेपिप्रारब्धकर्मप्रेरितविक्षेपशक्त्याहयरूपधारणादिकंपरतंत्रतादिकंचसर्वंसंभवत्येवेतिनज्ञानिपुरुषोच्छेदोनवाकर्मोपासनाज्ञानकांडानांवैयर्थ्यम् ॥ तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येथसंपत्स्येइतिश्रुत्यातदावरणशक्तिनाशमात्रेणजीवन्मुक्तेर्विदेहमोक्षस्यचसंभवादिति ॥ एतदर्थोपष्टंभार्थमेवाऽयंसर्वोऽपिस्कंधसमाप्तिपर्यंतोग्रंथोवेदितव्यः ॥ तदुक्तंवाराहे ॥ ज्ञानेनाऽऽवरणेनष्टेविक्षेपस्तत्वशिष्यतइति ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ निवासंस्थानभूतम् ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ तमपृच्छमहमिति ॥ त्वयायःप्रश्नःकृतस्तत्रममाऽप्यज्ञानंपूर्वंस्थितमितिभावः ॥ १३ ॥ कुत्रचित्क्वचिदिति ॥ तथा चसुखाभावेकिमर्थंमहांतोऽपिसंसारमोहिताःकर्माणिकुर्वंतीतिभावः ॥ १४ ॥ ननुसंसारेसुखंनास्तीतित्वयाकथंनिश्चितमितिचेत्स्वानुभवेनैवेत्याह। द्वीपेजातइति ॥ १५ ॥ १६ ॥ वेदानां

ब्रह्मणोमानसःपुत्रोनारदोनामतापसः ॥ सर्वज्ञःसर्वगःशांतःसर्वलोकप्रियःकविः ॥ ७ ॥ सचैकदामुनिश्रेष्ठोविचरन्पृथिवीमिमाम् ॥ वादयन्महतींवीणां स्वरतानसमन्विताम् ॥ ८ ॥ बृहद्रथंतरादीनांसाम्नांभेदाननेकशः ॥ गायन्गायत्रममृतंसंप्राप्तोऽथममाऽऽश्रमम् ॥ ९ ॥ शम्याप्रासंमहातीर्थंसरस्वत्याः सुपावनम् ॥ निवासंमुनिमुख्यानांशर्मदंज्ञानदंतथा ॥ १० ॥ तमागतमहंप्रेक्ष्यब्रह्मपुत्रंमहाद्युतिम् ॥ अभ्युत्थानादिकंसर्वंकृतवानर्चनादिकम् ॥ ११ ॥ अर्घ्यपाद्यविधिंकृत्वातस्याऽऽसनस्थितस्यच ॥ उपविष्टःसमीपेऽहंमुनेरमिततेजसः ॥ १२ ॥ दृष्ट्वाविश्रमिणंशांतंनारदंज्ञानपारदम् ॥ तमपृच्छमहंराजन्यत्पृष्टोऽहंत्वयाऽधुना ॥ १३ ॥ असारेऽस्मिंस्तुसंसारेप्राणिनांकिंसुखंमुने ॥ नपश्यामिविनिश्चित्यकदाचित्कुत्रचित्क्वचित् ॥१४॥ द्वीपेजातोजनन्याहंसंत्यक्तस्तत्क्षणादपि ॥ अनाश्रयोवनेवृद्धिंप्राप्तःकर्मानुसारतः ॥१५॥ तपस्तप्तंमयाचोग्रंपर्वतेबहुवार्षिकम्॥पुत्रकामेनदेवर्षेशंकरःसमुपासितः ॥१६॥ ततोमयाशुकःप्राप्तःपुत्रोज्ञानवतांवरः ॥ पाठितस्तुमयासम्यग्वेदानांसारआदितः ॥ १७ ॥ सत्यक्त्वामांगतःक्वाऽपिरुदंतंविरहातुरम्॥ लोकाल्लोकांतरंसाधोवचनात्तवबोधितः ॥ १८॥ ततोऽहंपुत्रसंतप्तस्त्यक्त्वामेरुंमहागिरिम् ॥ मातरंमनसाकृत्वासंप्राप्तःकुरुजांगलम् ॥ १९॥ पुत्रस्नेहादतितरांकृशांगः शोकसंयुतः ॥ जानन्मिथ्येतिसंसारंमायापाशनियंत्रितः ॥२०॥ ततोराज्ञावृतांज्ञात्वामातरंवासवींशुभाम् ॥ स्थितोऽत्रैवाऽऽश्रमंकृत्वासरस्वत्यास्तटेशुभे ॥ २१ ॥ शंतनुःस्वर्गतिंप्राप्तोविधुराजननीस्थिता ॥ पुत्रद्वययुतासाध्वीभीष्मेणप्रतिपालिता ॥ २२ ॥ चित्रांगदःकृतोराजागंगापुत्रेणधीमता ॥ कालेनसोऽपिमेभ्रातामृतःकामसमद्युतिः ॥ २३ ॥ ततःसत्यवतीमातानिमग्नाशोकसागरे ॥ चित्रांगदंमृतंपुत्रंरुरोदभृशमातुरा ॥ २४ ॥ संप्राप्तोऽहंमहाभागज्ञात्वातांदुःखितांसतीम् ॥ आश्वासितामयात्यर्थंभीष्मेणचमहात्मना ॥ २५ ॥ विचित्रवीर्यस्त्वपरोवीर्यवान्पृथिवीपतिः ॥ कृतोभीष्मेणभ्रातावैस्त्रीराज्यविमुखेनह ॥ २६ ॥ काशिराजसुतेरम्येविजित्यपृथिवीपतीन् ॥ भीष्मेणाऽऽनीयस्वबलात्कन्यकेद्वेसमर्पिते ॥ २७ ॥ सत्यवत्यैशुभेकालेविवाहःपरिकल्पितः ॥ भ्रातुर्विचित्रवीर्यस्यतदाऽहंसुखितोभवम् ॥ २८ ॥

सारःश्रीदेवीभागवतम् ॥ आदितःप्रथमतःआरंभतइत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ कृत्वाचिंतयित्वेत्यर्थः ॥ १९ ॥ मिथ्येतिजानन्नपिमायापाशेननियंत्रितोबद्धः ॥ २० ॥ राज्ञाशंतनुना ॥ २१ ॥ २२ ॥ गंगापुत्रेणभीष्मेण ॥ २३ ॥ २४ ॥ स्त्रीराज्यविमुखेनेति ॥ स्त्रीविमुखेनराज्यविमुखेनचभीष्मेणेत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ २९ ॥ ३० ॥ तेकाशिराजसुतेऊचतुः ॥३१॥ श्वश्रुइतिसंबोधनं संयुतेमिलितेसपत्न्यौ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

पुनःसोपिमृतोभ्रातायक्ष्मणापीडितोभृशम् ॥ अनपत्योयुवाधन्वीमातामेदुःखिताऽभवत् ॥ २९ ॥ काशिराजसुतेद्वेतुमृतंदृष्ट्वापतिंतदा ॥ पतिव्रताधर्मपरेभगिन्यौसंबभूवतुः ॥ ३० ॥ तेऊचतुःसतींश्वश्रूंरुदतींभृशदुःखिताम् ॥ पतिनासहगामिन्यौभविष्यावोहुताशने ॥ ३१ ॥ पुत्रेणसहतेश्वश्रुस्वर्गेगत्वाऽथनंदने ॥ सुखेनविहरिष्यावःपतिनासहसंयुते ॥३२॥ निवारितेतदामात्रावध्वौतस्मान्महोद्यमात् ॥ स्नेहभावंसमाश्रित्यभीष्मस्यवचनात्तदा ॥ ३३ ॥ गांगेयेनचमात्रामेसंमंत्र्यचपरस्परम् ॥ कृत्वौर्ध्वदेहिकंसर्वंसंस्मृतोऽहंगजाह्वये ॥ ३४ ॥ स्मृतमात्रस्तुमात्रावैज्ञात्वाभावंमनोगतम् ॥ तरसैवाऽऽगतश्चाऽहंनगरंनागसाह्वयम् ॥ ३५ ॥ प्रणम्यमातरंमूर्ध्नासंस्थितोऽथकृतांजलिः ॥ तामब्रुवंसुतप्तांगींपुत्रशोकेनकर्शिताम् ॥ ३६ ॥ मातस्त्वयाकिमाहूतोमनसाऽहंतपस्विनि ॥ आज्ञापयमहत्कार्यंदासोऽस्मिकरवाणिकिम् ॥३७॥ त्वंमेतीर्थंपरंमातर्देवश्चप्रथितःपरः ॥ आगतश्चितितश्चाऽत्रब्रूहिकृत्यंतवप्रियम्॥३८॥

॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाऽहंस्थितस्तत्रमातुरग्रेयदामुने ॥ तदासामामुवाचेदंपश्यंतीभीष्ममंतिके ॥ ३९ ॥ पुत्रतेऽद्यमृतोभ्रातापीडितोराजयक्ष्मणा ॥ तेनाऽहंदुःखिताजातावंशच्छेदभयादिह ॥ ४० ॥ तस्मात्त्वमद्यमेधाविन्मयाऽऽहूतःसमाधिना ॥ गांगेयस्यमतेनात्रपाराशर्यार्थसिद्धये ॥ ४१ ॥ कुलंस्थापयनष्टंत्वंशंतनोर्नामकारणात् ॥ रक्षमांदुःखतःकृष्णवंशच्छेदोद्भवाद्भुतम् ॥ ४२ ॥ काशिराजसुतेभार्येभ्रातुस्तवयवीयसः ॥ साधोर्विचित्रवीर्यस्यरूपयौवनभूषिते ॥ ४३ ॥ ताभ्यांसंगम्यमेधाविन्पुत्रोत्पादनकंकुरु ॥ रक्षस्वभारतंवंशंनात्रदोषोऽस्तिकर्हिचित् ॥ ४४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिमातुर्वचःश्रुत्वाजातश्चितातुरोह्यहम् ॥ लज्जयाऽऽकुलचित्तस्तामब्रुवंविनयानतः ॥ ४५ ॥ मातःपापाधिकंकर्मपरदाराभिमर्शनम् ॥ ज्ञात्वाधर्मपथंसम्यक्करोमिकथमादरात् ॥४६॥ तथायवीयसोभ्रातुर्वधूःकन्याप्रकीर्तिता ॥ व्यभिचारंकथंकुर्यामधीत्यनिगमानहम् ॥ ४७ ॥ अन्यायेननकर्तव्यंसर्वथाकुलरक्षणम् ॥ नतरंतिहिसंसारात्पितरःपापकारिणः ॥ ४८ ॥ लोकानामुपदेष्टायःपुराणानांप्रवर्तकः ॥ सकथंकुत्सितंकर्मज्ञात्वाकुर्यान्महाद्भुतम् ॥ ४९ ॥ पुनरुक्तोह्यहंमात्रारुदत्याभृशमंतिके ॥ पुत्रशोकातितप्तायावंशरक्षणकाम्यया ॥ ५० ॥ पाराशर्यनतेदोषोवचनान्ममपुत्रक ॥ गुरूणांवचनंतथ्यंसदोषमपिमानवैः ॥ ५१ ॥ कर्तव्यमविचार्यैवशिष्टाचारप्रमाणतः ॥ वचनंकुरुमेपुत्रनतेदोषोऽस्तिमानद ॥५२॥ पुत्रस्यजननंकृत्वासुखिनींकुरुमातरम् ॥ विशेषेणतुसंतप्तांमग्नांशोकार्णवेसुत ॥ ५३ ॥ इतितांब्रुवतींश्रुत्वातदासुरनदीसुतः ॥ मामुवाचविशेषज्ञःसूक्ष्मधर्मस्यनिर्णये ॥ ५४ ॥

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ यापुत्रशोकातितप्तातयामात्रेत्यन्वयः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५५ ॥ ५६ ॥५७॥ ५८ ॥ भविष्यतिसुतःपुत्रेति ॥ हेपुत्र सुतोभविष्यतिकिमित्यर्थः ॥ रात्रौगर्भधारणमनयाकृतंनवेतिप्रश्नार्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ कथंपुत्रेति ॥ हेपुत्र व्यास तपु त्रोंधोभविष्यतीतिकथंत्वयाशापोदत्तोनेदमुचितंकृतमितिभावः ॥६१॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ छ ॥ ॥ त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुस्वमोहमुपपादयन् ॥ व्यासोज्ञानिवराणांचमोहेपृच्छातिकारणम् ॥१॥ पुनरपिव्यासः स्वमोहंस्वदुःखमुपपादयति । वासवीचकितेति ॥ दाशेयीदाशा दाशपत्नीतस्याः कन्यासत्यवती ॥ स्त्रीभ्योढागितिढक् ॥

द्वैपायनविचारोऽत्रनकर्तव्यस्त्वयाऽनघ ॥ मातुर्वचनमादायविहरस्वयथासुखम् ॥ ५५ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वामातुश्चप्रार्थनंतथा ॥ निः शंकोऽहंतदाजातःकार्येतस्मिञ्जुगुप्सिते ॥ ५६ ॥ अंबिकायांप्रवृत्तोऽहमृतुमत्यांमुदानिशि ॥ मयिविमनसायांतुतापसेकुत्सितेभृशम् ॥ ५७ ॥ शप्ता मयासामुश्रोणीप्रसंगेप्रथमेतदा ॥ अंधस्तेभवितापुत्रोयतोनेत्रेनिमीलिते ॥५८॥ द्वितीयेह्निमुनिश्रेष्ठपृष्टोमात्रारहःपुनः ॥ भविष्यतिसुतःपुत्रकाशिराजसु तोदरे ॥५९॥ मयोक्ताजननीतत्रव्रीडानम्रमुखेनह ॥ विनेत्रोभवितापुत्रोमातःशापान्ममैवहि ॥६०॥ तयानिर्भर्सितस्तत्रकठोरवचसामुने ॥ कथंपुत्रत्वयाशप्ता पुत्रस्तेंधोभविष्यति ॥६१॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ वासवीचकिताजाताश्रुत्वामे वाक्यमीदृशम् ॥ दाशेयीमामुवाचेदंपुत्रार्थेभृशमातुरा ॥ १ ॥ अंबालिकावधूर्धन्याकाशिराजसुतासुत ॥ भार्याविचित्रवीर्यस्यविधवाशोकसंयुता ॥ २ ॥ सर्वलक्षणसंपन्नारूपयौवनशालिनी ॥ तस्यांजनयसंगंत्वंकृत्वापुत्रंसुसंमतम् ॥ ३ ॥ नांधोराजाधिकारीस्यात्तस्मात्पुत्रंमनोहरम् ॥ उत्पादयराज पुत्र्यांवचनान्ममममानद ॥ ४ ॥ इत्युक्तोऽहंतदामात्रास्थितस्तत्रगजाह्वये ॥ यावदृतुमतीजाताकाशिराजसुतामुने ॥ ५ ॥ एकांतेशयनागारेप्राप्तासामम सन्निधौ ॥ लज्जमानासुकेशांतास्वश्वश्रूवचनात्तदा ॥ ६ ॥ दृष्ट्वामांजटिलंदांतंतापसंरसवर्जितम् ॥ सास्वेदवदनाजातापांडुराविमनाभृशम् ॥ ७ ॥ कुपि तोऽहंतदादृष्ट्वाकामिनींनिशिसंगताम् ॥ वेपमानांस्थितांपार्श्वेह्यब्रवंतामहंरुषा ॥ ८ ॥ दृष्ट्वामांयदिगर्वेणपांडुवर्णासमावृता ॥ अतस्तेतनयःपांडुर्भवि ष्यतिसुमध्यमे ॥ ९ ॥ इत्युक्त्वानिशितत्रैवस्थितोंबालिकयायुतः ॥ भुक्त्वातांनिशिनिर्यातःस्थानमापृच्छ्यमातरम् ॥ १० ॥ ततस्ताभ्यांसुतौकालेप्रसू तावंधपांडुरौ ॥ धृतराष्ट्रश्चपांडुश्चप्रथितौसंबभूवतुः ॥ ११ ॥ मातामेविमनाजातातादृशौवीक्ष्यतौसुतौ ॥ ततःसंवत्सरस्यांतेमामाहूयतदाब्रवीत् ॥ १२ ॥ द्वैपायनसुतौजातौराज्ययोग्यौनतादृशौ ॥ अन्यंमनोहरंपुत्रंसमुत्पादयमेप्रियम् ॥ १३ ॥

यद्यपिसामत्स्योदरेजातातथापिसादाशेनकन्यात्वेनस्वीकृतेतितत्पत्न्याअपिसाकन्याजातेति सत्यवतीदाशेयी ॥१॥२॥ संगंतस्यांकृत्वापुत्रंजनयेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ रुषेति ॥ कामातुरेमयिप्रीत्यकरणाद्रोषसंभवइत्यभिप्रायः ॥ ८ ॥ मामननुरूपंदृष्ट्वागर्वेणस्वसौंदर्याभिमानेनयादियतस्त्वंपांडुवर्णाजाताततइत्यर्थः ॥ ९ ॥ तांभुक्त्वानिर्या तइत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ मयाहेतुनात्रयःपुत्राअभवन्नित्यर्थः ॥ मायावृद्धिंगतेति ॥ परक्षेत्रोद्भवेपुत्रेऽन्यस्त्रीषुजायमानेपुत्रेममायावृद्धिंगतेत्यर्थः। ममपुत्राएतेइतिभावोजातइत्यर्थः ॥२२॥ तदेवाह। विस्मृतइति ॥ २३ ॥ २४ ॥ तयामाययाकिंकृतंतदाह। मातरिस्नेहेति ॥ संवृतमासक्तम् ॥ एतादृशंममचित्तंमाययामोहितंवनेशांतिंनागात् नप्राप्तवदित्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ ननुतवविवेकाभावान्मायामोहितत्वंयुक्तमेवेतिचोद्विवेकोऽप्यतिनिर्मलोऽस्ति ॥ तथापिमायामोहितत्वमस्तीत्याश्चर्यमित्याह। कदाचिदिति॥

तथेतिसामयाप्रोक्तामुदिताजननीतदा ॥ अंबिकांप्रार्थयामाससुतार्थेकालआगते ॥ १४ ॥ पुत्रिव्यासंसमालिंग्यपुत्रमुत्पादयाऽद्भुतम्॥कुरुवंशस्यकर्तारं राज्ययोग्यंवरानने ॥ १५ ॥ वधूर्लज्जान्विताकिंचिन्नोवाचवचनंतदा ॥ गतोऽहंशयनागारेमातुस्तद्वचनान्निशि ॥ १६॥ दासीविचित्रवीर्यस्यरूपयौवनसंयुता ॥ प्रेषितांबिकयात्वत्रविचित्राभरणांवरा ॥ १७ ॥ चंदनारक्तदेहासापुष्पमालाविभूषिता ॥ आयाताहावसंयुक्तासुकेशीहंसगामिनी ॥ १८॥ पर्यंकेमांसमावेश्यसंस्थिताप्रेमसंयुता ॥ प्रसन्नोऽहंतदातस्याविलासेनाऽभवंमुने ॥१९॥ रात्रौसंक्रीडितंप्रेम्णातयासहमयाभृशम् ॥ वरोदत्तःपुनस्तस्यैप्रसन्नेनतुनारद ॥ २० ॥ सुभगेभवितापुत्रःसर्वलक्षणसंयुतः ॥ सुरूपःसर्वधर्मज्ञःसत्यवादीशमेरतः ॥ २१ ॥ सतदाविदुरोजातस्त्रयःपुत्रामयाऽभवन्॥ मायावृद्धिंगतासाधोपरक्षेत्रोद्भवेमम ॥ २२ ॥ विस्मृतःशुकसंबंधीविरहःशोककारणम् ॥ दृष्ट्वात्रीन्स्वसुतान्कामंवीर्यवान्वीर्यसंमतान् ॥ २३ ॥ मायाबलवतीब्रह्मन्दुस्त्यजाह्यकृतात्मभिः ॥ अरूपाचनिरालंबाज्ञानिनामपिमोहिनी ॥ २४॥ मातरिस्नेहसंबद्धंतथापुत्रेषुसंवृतम् ॥ नमेचित्तंवनेशांतिमगान्मुनिवरोत्तम ॥ २५ ॥ दोलारूढंमनोजातंकदाचिद्धस्तिनापुरे ॥ पुनःसरस्वतीतीरेनचैकत्रव्यवस्थितिः ॥ २६ ॥ कदाचिच्चिंतयन्ज्ञानंमानसेप्रतिभातिवै ॥ केऽमीपुत्राःक्वमोहोऽयंनश्राद्धार्हामृतस्यमे ॥ २७ ॥ व्यभिचारोद्भवाःकिंमेसुखदाःस्युःसुताःकिल ॥ मायाबलवतीमोहंवितनोतिहिमानसे ॥ २८ ॥ जानन्मोहांधकूपेऽस्मिन्पतितोऽहंमृषामुने ॥ इत्यकुर्वंरहस्तापंकदाचित्सुसमाहितः ॥ २९ ॥ राज्यंप्रापततःपांडुर्बलवान्भीष्मसंमतः ॥ तदाममममनोजातंप्रसन्नंसुतकारणात् ॥ ३० ॥ कुंतीमाद्रीसुरूपेद्वेभार्येतस्यबभूवतुः ॥ शूरसेनसुताकुंतीमद्रराजसुतापरा॥३१॥ सशापंद्विजतःप्राप्यकामिनीद्वयसंयुतः॥पांडुर्निर्वेदमापन्नस्त्यक्त्वाराज्यंवनंगतः ॥ ३२ ॥ तदामामाविशच्छोकःश्रुत्वापुत्रंवनेस्थितम् ॥ गतोहंतत्रयत्राऽसौभार्याभ्यांसहसंस्थितः ॥३३॥ तमाश्वास्यवनेपांडुंपुनःप्राप्तोगजाह्वये ॥ धृतराष्ट्रंसमाभाष्यह्यगमंब्रह्मजातटे ॥ ३४ ॥

चिंतयन्विचारयन्स्थितोऽहंयदातदाकदाचिन्मममानसेइत्यर्थः ॥ केऽमीति ॥ अमीपुत्राःकेमेमृतस्यश्राद्धार्हाअपिन ॥ श्राद्धकारिणोऽपिनभवंति तथासतितेष्वयंमोहःक्वनिरर्थकस्तेषुमोहइतिज्ञानमित्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ तथाचज्ञानिनोऽपिमेमायाविमोहोनगच्छतिदुःखादिकंचजायतइतिदर्शितम् ॥ २९ ॥ यदापांडुर्नृपोराज्यंप्रापतदाममममनःप्रसन्नंजातमित्यर्थः ॥ इयमपिमायैव ॥ ३० ॥ ३१ ॥ सशापमिति ॥ स्त्रीसंभोगेकृतेसतितवमरणंभविष्यतीत्येवंरूपम् ॥ ३२ ॥ तदामामिति। इयमपिमायैवेतिभावः ॥३३॥ ब्रह्मजातटेसरस्वतीतटे ॥३४॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ पतिनासहाऽग्निंप्रविष्टेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ परात्मभिःपरदेहैःपीडितइयमपिमायेत्यर्थः ॥ भीष्मेणेति ॥ भीष्मेणविदुरेणधृतराष्ट्रेणतेपांडोःपुत्राः पालिताइतिविचिंत्यदुर्योधनादयस्तस्यधृतराष्ट्रस्यपुत्राविरोधंचक्रुरित्यन्वयः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ मग्नोऽहमिति ॥ इयमपिमायैवेत्यर्थः

क्षेत्रजान्पंचपुत्रान्ससमुत्पाद्यवनाश्रमे ॥ धर्मतोवायुतःशक्रादश्विभ्यांपंचपांडवान् ॥ ३५ ॥ युधिष्ठिरोभीमसेनस्तथैवाऽर्जुनइत्यपि ॥ कुंतीपुत्राःसमाख्याताधर्मानिलसुरेशजाः ॥ ३६ ॥ नकुलःसहदेवश्चमद्रराजसुतासुतौ ॥ कदाचित्तुरहोमाद्रींसमालिंग्यमहीपतिः ॥३७॥ मृतःशापात्तुमुनिभिःसंस्कृतो हुतभुङ्मुखे ॥ माद्रीतत्रसतीभूत्वाप्रविष्टापतिनासह ॥ ३८ ॥ स्थितापुत्रयुताकुंतीज्वलितेजातवेदसि ॥ मुनयःसुतसंयुक्तांशूरसेनसुतांतदा ॥३९ ॥ दुःखितांपतिहीनांतामानिन्युर्गजसाह्वये ॥ समर्पिताऽथभीष्मायविदुरायमहात्मने ॥ ४० ॥ श्रुत्वाऽहंसुखदुःखाभ्यांपीडितस्तुपरात्मभिः ॥ भीष्मेणपालिताःपुत्राःपांडोरितिविचिंत्यते ॥ ४१ ॥ विदुरेणतथाप्रीत्याधृतराष्ट्रेणधीमता ॥ दुर्योधनादयस्तस्यपुत्रायेक्रूरमानसाः ॥ ४२ ॥ एकत्रस्थितिमापन्नाविरोधंचक्रुरद्भुतम् ॥ द्रोणाचार्यस्तुसंप्राप्तस्तत्रभीष्मेणमानितः ॥४३॥ अध्यापनायपुत्राणांपुरेतस्मिन्निवासितः ॥ कर्णःकुंत्यापरित्यक्तोजातमात्रःशिशुर्यदा ॥ ४४ ॥ सूतेनपालितोनद्यांप्राप्तश्चाऽधिरथेनह ॥ दुर्योधनप्रियश्चाऽभूत्कर्णःशूरतमस्तथा ॥ ४५ ॥ परस्परंविरोधोभूद्भीमदुर्योधनादिषु ॥ धृतराष्ट्रस्तुसींचत्येकेशंपुत्रेषुतेषुच ॥ ४६ ॥ निवासंकल्पयामासपांडवानांमहात्मनाम् ॥ विरोधशमनायैवनगरेवारणावते ॥४७॥ दुर्योधनेनतत्रैवद्रोहाज्जतुगृहाणिवै ॥ कारितानिचदिव्यानिप्रेष्यमित्रंपुरोचनम् ॥ ४८ ॥ श्रुत्वाजतुगृहेदग्धान्पांडवान्पृथयायुतान् ॥ पौत्रभावान्मुनिश्रेष्ठमग्नोऽहंव्यसनार्णवे ॥ ॥ ४९ ॥ शोकातुरोभृशंशून्येवनेपश्यन्नहर्निशम् ॥ दृष्टामयैकचक्रायांपांडवादुःखकर्शिताः ॥५० ॥ ततस्तुष्टमनाश्चाऽहंजातःपार्थान्विलोक्यच ॥ प्रेरितास्तेमयातूर्णंद्रुपदस्यपुरंप्रति ॥ ५१ ॥ तेगतास्तत्रदुःखार्ताविप्रवेषधराःकृशाः ॥ मृगचर्मपरीधानाःसभायांसंस्थितास्तदा ॥ ५२ ॥ कृत्वापराक्रमंजिष्णुःसजित्वाद्रुपदात्मजाम् ॥ चक्रुर्विवाहंमानिन्याःपंचैवमातृवाक्यतः ॥ ५३ ॥ दृष्ट्वाविवाहंतेषांतुमुदितोऽहंभृशंतदा ॥ ततोनागाह्वयेप्राप्ताःपांचालीसहितामुने ॥ ५४ ॥ निवासंखांडवप्रस्थंधृतराष्ट्रेणकल्पितम् ॥ पांडवानांद्विजश्रेष्ठवसुदेवसुतेनवै ॥ ५५ ॥ तर्पितःपावकस्तत्रविष्णुनासहजिष्णुना ॥ राजसूयःकृतोयज्ञस्तदाहंमुदितोभवम् ॥ ५६ ॥ दृष्ट्वाथविभवंतेषांतथामयकृतांसभाम् ॥ दुर्योधनोतिसंतप्तोदुरोदरमथाकरोत् ॥ ५७ ॥ दुर्द्यूतवेदीशकुनिरनक्षज्ञश्चधर्मजः ॥ हृतंराज्यंधनंसर्वंयाज्ञसेनीचक्लेशिता ॥५८॥ वनेद्वादशवर्षाणिपांडवास्तेविवासिताः ॥ पांचालीसहितास्तेनदुःखंमेजनितंभृशम् ॥५९॥

॥ ४९ ॥ वनेपश्यन्नन्वेषमाणइत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





जानन्धर्मसनातनमिति ॥ ब्रह्मविद्यांतत्साधनंचसर्वंजानन्नित्यर्थः ॥ ६० ॥ ज्ञानिनोऽपिममकथमनेकेषुपूर्वोक्तेषुस्थलेषुमायामोहसुखदुःखादिकंचजातमित्यर्थः ॥ मोहादीनामनेकेषुदश नार्थमेवैतावत्पर्यंतंप्रसिद्धकथायाउपन्यासः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ सप्ताधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथतुनारदः ॥ स्वमोह स्यैवमाहात्म्यंनिजगादेतिचोच्यते ॥ १ ॥ इतिमेइति ॥ इतिमेपूर्वोक्तवाक्यंश्रुत्वामांनारदआहेत्यन्वयः ॥ १ ॥ संसारेऽस्मिन्निति ॥ अयंभावः ॥ ज्ञानिनोऽपिममकथंमायामोहदुः खादिकंजायतइतित्वयापृष्टंतत्रनाऽयंज्ञानमहिमायेनविक्षेपरूपसंसारोच्छेदोभवेत् ॥ किंतुमायायाःशक्तिद्वयमस्ति ॥ एकाऽऽवरणशक्तिरपराविक्षेपरूपा तत्रज्ञानेसत्यावरणरूपशक्तेर्नाशेऽ पिविक्षेपशक्तिःप्रारब्धकर्मक्षयपर्यंतंतथैवतिष्ठति तयाचपूर्ववदेवकदाचिन्मोहादिकंजायते ॥ तस्मात्कथंममविचारवतोऽपिमोहादिकमितिनाश्चर्यंकिंतुदेहवतःस्वभावएवाऽयमिति ॥ २ ॥

एवंनारदसंसारेसुखदुःखात्मकेभृशम् ॥ निमग्नोऽहंभ्रमेणैवजानन्धर्मसनातनम् ॥ ६० ॥ कोऽहंकस्यसुतास्तेऽमीकामातार्किंसुखंपुनः ॥ येनमेहृदयंमो हाद्भ्रमतीतिदिवानिशम् ॥ ६१ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिसंतोषोनाऽधिगच्छति ॥ दोलारूढंमनोमेऽत्रचंचलंनस्थिरंभवेत् ॥ ६२ ॥ सर्वज्ञोऽसिमुनिश्रेष्ठसं देहंमेनिवर्तय ॥ तथाकुरुयथाऽहंस्यांसुखितोविगतज्वरः ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ व्यासउवा च ॥ इतिमेवचनंश्रुत्वानारदःपरमार्थवित् ॥ मामाहचस्मितंकृत्वापृच्छंतंमोहकारणम् ॥ १ ॥ नारदउवाच ॥ पाराशर्यपुराणज्ञकिंपृच्छसिमुनिश्चयम्॥ संसारेऽस्मिन्विनामोहंकोऽपिनास्तिशरीरवान् ॥ २ ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रःसनकःकपिलस्तथा ॥ माययावेष्टिताःसर्वेभ्रमंतिभववर्त्मनि ॥ ३ ॥ ज्ञानि नंमांजनोवेत्तिभ्रांतोऽहंसर्वलोकवत् ॥ शृणुमेपूर्ववृत्तांतंप्रब्रवीमिमुनिश्चितम् ॥ ४ ॥ दुःखंमयायथापूर्वमनुभूतंमहत्तरम् ॥ स्वकृतेनचमोहेनभार्यार्थेवा सवीसुत ॥ ५ ॥ एकदापर्वतश्चाऽहंदेवलोकान्महीतलम् ॥ प्राप्तौविलोकनार्थायभारतंखंडमुत्तमम् ॥ ६ ॥ भ्रमंतौसहितावुर्व्यांपश्यंतौतीर्थमंडलम् ॥ पावनानिचस्थानानिमुनीनामाश्रमाञ्छुभान् ॥ ७ ॥ शपथंदेवलोकात्तुकृत्वापूर्वंपरस्परम् ॥ चलितौसमयंचेमंसंमंत्र्यनिश्चयेनवै ॥ ८ ॥ चित्तवृत्तिस्तुव क्तव्यायादृशीयस्यजायते ॥ शुभावाऽप्यशुभावाऽपिनगोप्तव्याकदाचन् ॥ ९ ॥ भोजनेच्छाधनेच्छाऽपिरतीच्छावाभवेदपि ॥ यादृशीयस्यचित्तेतुकथ नीयापरस्परम् ॥ १० ॥ इत्यावांसमयंकृत्वास्वर्गाद्भूलोकमागतौ ॥ एकचित्तौमुनीभूतौविचरंतौयथेच्छया ॥ ११ ॥

नकेवलंजीवानामेवमोहादिकंजायतेइतिमंतव्यं किंत्वीश्वराणामपीत्याह । ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रइति ॥ तेषांमोहःप्रथमस्कंधमारभ्यबहुषुस्थलेषुपूर्वमुपपादितएव ॥ माययावेष्टिताइतिवेष्टित त्वात् ज्ञानिनामपितेषांविक्षेपशक्तिर्वर्ततएव ॥ अतएवतेभववर्त्मनिभ्रमंतिनीचमत्स्यादियोनिषु ॥ यतोदेवादीनामपीदृशीदशाततोमनुष्याणांकिंविचार्यमितिभावः ॥ ३ ॥ किंच हेव्यास मांजनोज्ञानिनंवेत्तितत्राऽहमपिज्ञानीसन्नपिसर्वलोकवत्पामरजनवद्भ्रांतएवकस्मादितिचेच्छृणु ममलोकातीतांदुर्दशामित्याह । शृण्विति॥ ४॥ ५ ॥ पर्वतश्चाऽहंपर्वतनामाममभागि नेयोमुनिरहंचेत्यर्थः ॥ ननुब्रह्मपुत्रस्यनारदस्यकथंपर्वतोभागिनेयइतिचेत्सप्तमस्कंधेदक्षान्नारदस्यद्वितीयजन्मनोवक्ष्यमाणत्वेनाद्वितीयजन्मस्थोऽयंभागिनेयइत्यभिप्रायेणाऽस्याउक्तेःसत्त्वात् ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ चित्तवृत्तिस्तुवक्तव्येति ॥ भूतलेनानाविधंवस्तुदृष्ट्वायस्ययादृशीजायेतचित्तवृत्तिःसातेनवक्तव्येत्यर्थः ॥ अयमेवोभाभ्यांसंकेतःकृतः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

एवंभ्रमंतौलोकेऽस्मिन्ग्रीष्मांतेसमुपागते ॥ संजयस्यपुरंरम्यंसंप्राप्तौनृपतेःपुनः ॥ १२ ॥ तेनसंपूजितौभक्त्याराज्ञासंमानितौभृशम् ॥ स्थितौतत्रगृहे तस्यचातुर्मास्यंमहात्मनः ॥ १३ ॥ वार्षिकाश्चतुरोमासादुर्गमाःपथिसर्वदा॥तस्मादेकत्रविबुधैःस्थातव्यमितिनिश्चयः ॥१४॥ अष्टौमासांस्तुप्रवसेत्स दाकार्यवशाद्द्विजः ॥ वर्षाकालेनगंतव्यंप्रवासेसुखमिच्छता ॥ १५ ॥ इतिसंचिंत्यमनसासंजयस्यगृहेतदा॥संस्थितौमानितौराज्ञाकृतातिथ्यौमहात्मना ॥ १६ ॥ दमयंतीतिविख्यातातस्यपुत्रीमहीपतेः ॥ आज्ञप्तापरिचर्यार्थंसुदतीसुंदरीभृशम् ॥ १७ ॥ विवेकज्ञाविशालाक्षीराजपुत्रीकृतोद्यमा ॥ सेवनंस र्वकालेचव्यदधादुभयोरपि ॥ १८ ॥ स्नानार्थमुदकंकालेभोजनंमृष्टमायतम् ॥ मुखवासंतथाचाऽन्यंयदिष्टंतद्ददातिसा ॥ १९ ॥ मनोभिलषितान्कामानु भयोरपिकन्यका ॥ व्यजनासनशय्यादीन्वांछितानप्यकल्पयत् ॥ २० ॥ एवंसंसेव्यमानौतुस्थितौराज्ञोगृहेकिल ॥ वेदाध्ययनसंशीलावावां वेदव्रतेर तौ ॥ २१ ॥ अहंवीणांकरेकृत्वासाधयित्वास्वरोत्तमम् ॥ गायत्रंसामसुस्वादमगांकर्णरसायनम् ॥ २२ ॥ राजपुत्रीतुतच्छ्रुत्वासामगानंमनोहरम् ॥ बभू वमयिरागाढ्याप्रीतियुक्ताविशारदा ॥ २३ ॥ दिनेदिनेनुरागोऽस्यामयिवृद्धिंगतःपरः ॥ ममाऽपिप्रीतियुक्तायांमनोजातंस्पृहापरम् ॥ २४ ॥ ममतस्यच साकन्याभोजनादिषुकर्हिचित् ॥ अकरोदंतरंकिंचित्सेवाभेदंरसान्विता ॥ २५ ॥ स्नानायोष्णजलंमह्यंपर्वतायचशीतलम् ॥ दधिमह्यंतथातक्रंपर्वताया ऽप्यकल्पयत् ॥ २६ ॥ शयनास्तरणंशुभ्रंमदर्थेपर्यकल्पयत् ॥ प्रीत्यापरमयायद्वत्पर्वतायनतादृशम् ॥ २७ ॥ विलोकयतिमांप्रेम्णासुंदरीनचपर्वतम्॥ ततोऽस्यास्तादृशंदृष्ट्वापर्वतःप्रेमकारणम् ॥ २८ ॥ मनसाचिंतयामासकिमेतदितिविस्मितः ॥ पप्रच्छमांरहःसम्यग्ब्रूहिनारदसर्वथा ॥ २९ ॥ राजपुत्री त्वयिप्रेमकरोतिमुदिताभृशम्॥ददातिभक्षभोज्यानिस्नेहयुक्तासमंततः ॥ ३० ॥ नतथामयिभेदोऽत्रसंदेहंजनयत्यसौ ॥ मन्यतेत्वांपतिंकर्तुंसर्वथासंजया त्मजा ॥ ३१ ॥ तवाऽपितादृशंभावंजानामिलक्षणैरहम् ॥ नेत्रवक्त्रविकारैश्चज्ञायतेप्रीतिकारणम् ॥ ३२ ॥ सत्यंवदनतेमिथ्यावक्तव्यंवचनंमुने॥स्वर्गतः समयंकृत्वाचलितौसंस्मराऽधुना ॥ ३३ ॥ नारदउवाच ॥ पृष्टोऽहंपर्वतेनेदंकारणंतुहठाद्यदा ॥ तदाऽहंह्रीसमाक्रांतःसंजातश्चाऽब्रुवंपुनः ॥ ३४ ॥ पर्व तैषाविशालाक्षीपतिंमांकर्तुमुद्यता ॥ ममाऽपिमानसोभावोवर्ततेऽस्यांविशेषतः ॥ ३५ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंसत्यंपर्वतःकोपसंयुतः ॥ मामुवाचमुनिर्वाक्यंधि ग्धिगितिपुनःपुनः ॥ ३६ ॥ प्रथमंशपथान्कृत्वावंचितोऽहंत्वयायतः ॥ भववानरवक्त्रस्त्वंशापाच्चममामित्रध्रुक् ॥ ३७ ॥ इतिशप्तस्तुतेनाऽहंकुपितेनम हात्मना ॥ सहसाह्यभवंक्रूरःशाखामृगमुखस्तदा ॥ ३८ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ शाखामृगोमर्कटः ॥ ३८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ तिमिंगिलविवर्जितेसुखविघातकपदार्थ रहितेनादसिंधावित्यर्थः ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ षट्पंचाशत्पद्यवर्यैर्विवाहोनारदस्यह ॥ प्रोच्यतेयत्रमोहस्यमहिमाऽतीववर्ण्यते ॥ १ ॥

मयाऽपिन्कृतातस्मिन्क्षमातुभागिनीसुते ॥ सोऽपिशप्तोऽतिकोपाद्वैमास्वर्गेतेगतिःकिल ॥ ३९ ॥ स्वल्पेऽपराधेयस्मान्मांशप्तवानसिपर्वत ॥ तस्मात्तवा पिमंदात्मन्मृत्युलोकेस्थितिःकिल ॥ ४० ॥ पर्वतस्तुगतस्तस्मान्नगराद्विमनाभृशम् ॥ अहंवानरवक्त्रस्तुसंजातस्तत्क्षणादपि ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वामांवानरंक्रूरं राजपुत्रीविलक्षणा ॥ विमनाऽतीवसंजातावीणाश्रवणलालसा ॥ ४२ ॥ व्यासउवाच ॥ ततःकिमभवद्ब्रह्मन्कथंशापान्निवर्तितः ॥ मानुषास्यःपुनर्जातो भवान्ब्रूहियथाविधि ॥ ४३ ॥ पर्वतःक्वगतोभूयःसंगमोयुवयोरभूत् ॥ कदाकुत्रकथंसर्वंविस्तरेणवदस्वह ॥ ४४ ॥ नारदउवाच ॥ किंब्रवीमिमहाभागमा यायाश्चरितंमहत् ॥ दुःखितोऽहंभृशंतत्रपर्वतेरुषितेगते ॥ ४५ ॥ पुनःसेवापरात्यर्थंराजपुत्रीममाऽभवत् ॥ गतेऽथपर्वतेकामंस्थितस्तत्रैवसद्मनि ॥४६॥ अहंदुःखान्वितोदीनस्तथावानरवन्मुखः ॥ विशेषेणतुचिंतार्तःकिंमेस्यादितिचिंतयन् ॥ ४७ ॥ संजयोऽथसुतांदृष्ट्वाकिंचित्प्रकटयौवनाम् ॥ विवाहार्थंरा जसुतामपृच्छत्सचिवंतदा ॥ ४८ ॥ विवाहकालःसंप्राप्तःसुतायाममसांप्रतम् ॥ योग्यंवरंममब्रूहिराजपुत्रंसुसंमतम् ॥ ४९ ॥ रूपौदार्यगुणैर्युक्तंशूरंसुकुल संभवम् ॥ विवाहंविधिवत्पुत्र्याःकरोमिकिलसांप्रतम् ॥ ५० ॥ प्रधानस्त्वब्रवीद्राजन्राजपुत्राह्यनेकशः ॥ वर्ततेभुविपुत्र्यास्तेयोग्याःसर्वगुणान्विताः ॥ ॥ ५१ ॥ यस्मिन्रुचिस्तेराजेंद्रतमाहूयनृपात्मजम् ॥ देहिकन्यांधनंभूरिहस्त्यश्वरथसंयुतम् ॥ ५२ ॥ नारदउवाच ॥ पितुश्चिकीर्षितंज्ञात्वादमयंतीतदा नृपम् ॥ धात्र्यामुखेनवाक्यज्ञातमुवाचरहःस्थितम् ॥ ५३ ॥ धात्र्युवाच ॥ दमयंतीमहाराजपुत्रीतेमामथाऽब्रवीत् ॥ पितरंब्रूहिधात्रेयिवचनान्मेसुखा न्वितम् ॥ ५४ ॥ मयावृतोऽथमेधावीनारदोमहतीयुतः ॥ नादमोहितयाकामंनाऽन्यःकोऽपिप्रियोमम ॥ ५५ ॥ कुरुमेवांछितंतातविवाहंमुनिनासह ॥ नाऽन्यंवरिष्येधर्मज्ञनारदंतुपतिंविना ॥ ५६ ॥ मग्नाऽहंनादसिंधौवैनक्रहीनेरसात्मके ॥ अक्षोरसुखसंपूर्णेतिमिंगिलविवर्जिते ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभाग वतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ तत्पुत्र्यावचनंश्रुत्वाराजाधात्रीमुखात्ततः ॥ भार्यांप्रोवाचकैकेयींसमीपस्थां सुलोचनाम् ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ यदुक्तंवचनंकांतेधात्र्यातत्तुत्वयाश्रुतम् ॥ वृतोऽयंनारदःकामंमुनिर्वानरवक्त्रभाक् ॥ २ ॥ किमिदंचिंतितंपुत्र्याबुद्धिही नंविचेष्टितम् ॥ कथमस्मैमयादेयाकन्याहरिमुखायसा ॥ ३ ॥ क्वाऽसौभिक्षुःकुरूपःक्वदमयंतीममाऽऽत्मजा ॥ विपरीतमिदंकार्यंनविधेयंकदाचन ॥ ४ ॥

पूर्वाध्यायेदमयंतीस्वाभिप्रायंधात्र्यैप्रोवाचेत्युक्तंतदुत्तरंजातंवृत्तमाह । तत्पुत्र्यावचनमिति ॥ १ ॥ २ ॥ बुद्धिहीनंयथास्यात्तथाविचेष्टितमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

हेसुकेशांतेशास्त्रवृद्धानुसारयायुक्त्यामुनिरतांमुग्धांनिवारयेत्यन्वयः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ बुबूलवृक्षःकंटकवृक्षः ॥ १० ॥ दासेरकायदास्याःपुत्रोदासेरः ॥ क्षुद्राभ्योवेतिपक्षे ढ्रक्सएवदासेरकः ॥ उष्ट्रोवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ अमुनानारदेन ॥ १३ ॥ १४ ॥ अस्यरसमार्गाविदोविदग्धस्यमूर्खस्यमुखेनरूपेणधनेनचाकिंफलमित्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

तामेकांतेसुकेशांतेनिवारयहठात्सुताम् ॥ युक्त्यामुनिरतांमुग्धांशास्त्रवृद्धानुसारया ॥ ५ ॥ इतिभर्तृवचःश्रुत्वाजननीतामथाऽब्रवीत् ॥ क्वतेरूपंमुनिः क्वाऽसौवानरास्योऽधनःपुनः ॥ ६ ॥ कथंमोहमवाप्ताऽसिभिक्षुकेचतुरापुनः ॥ लताकोमलदेहात्वंभस्मरूक्षतनुस्त्वयम् ॥ ७ ॥ वार्तावानरवक्त्रेणकथंयुक्तातवाऽनघे ॥ काप्रीतिःकुत्सितेपुंसिभविष्यतिशुचिस्मिते ॥८॥ वरस्तेराजपुत्रोऽस्तुमाकुरुत्वंवृथाहठम् ॥ पितातेदुःखमाप्नोतिश्रुत्वाधात्रीमुखाद्वचः ॥ ॥ ९ ॥ लग्नांबुबूलवृक्षेणकोमलांमालतीलताम् ॥ दृष्ट्वाकस्यमनःखेदंचतुरस्यनगच्छति ॥ १० ॥ दासेरकायतांबूलीदलानिकोमलानिकः ॥ ददातिभक्षणार्थायमूर्खोऽपिधरणीतले ॥ ११ ॥ वीक्ष्यत्वांकरसंलग्नांनारदस्यसमीपतः ॥ विवाहेवर्तमानेतुकस्यचेतोनदह्यति ॥ १२ ॥ कुमुखेनसमंवार्तानरुचिंजनयत्यतः ॥ आमरणात्तुकथंकालःक्षपितव्यस्त्वयाऽमुना ॥ १३ ॥ नारदउवाच ॥ इतिमातुर्वचःश्रुत्वादमयंतीभृशातुरा ॥ मातरंप्राहतन्वंगीमयिसाकृतनिश्चया ॥ १४ ॥ किंमुखेनचरूपेणमूर्खस्यचधनेनकिम् ॥ किंराज्येनाऽविदग्धस्यरसमार्गाविदोऽस्यच ॥ १५ ॥ हरिण्योऽपिवनेधन्यायानादेनविमोहिताः ॥ मातःप्राणान्प्रयच्छंतिधिङ्मूर्खान्मानुषान्भुवि ॥ १६ ॥ नारदोवेत्तियांविद्यांमातःसप्तस्वरात्मिकाम् ॥ तृतीयःकोऽपिनोवेदशिवादन्यःपुमान्किल ॥ १७ ॥ मूर्खेणसहसंवासोमरणंतत्क्षणेक्षणे ॥ रूपवान्धनवांस्त्याज्योगुणहीनोनरःसदा ॥ १८ ॥ धिङ्मैत्रींमूर्खभूपालेवृथागर्वसमन्विते ॥ गुणज्ञेभिक्षुकेश्रेष्ठावचनात्सुखदायिनी ॥ १९ ॥ स्वरज्ञोग्रामवित्कामंमूर्छनाज्ञानभेदभाक् ॥ दुर्लभःपुरुषश्चाष्टरसज्ञोदुर्बलोऽपिवै ॥ २० ॥ यथानयतिकैलासंगंगाचैवसरस्वती ॥ तथानयतिकैलासंस्वरज्ञानविशारदः ॥ २१ ॥ स्वरमानंतुयोवेदसदेवोमानुषोपिसन् ॥ सप्तभेदंनयोवेदसपशुःसुरराडपि ॥२२॥ मूर्छनातानमार्गंतुश्रुत्वामोदंनयातियः ॥ सपशुःसर्वथाज्ञेयोहरिणाःपशवोनहि ॥ २३ ॥ वरंविषधरःसर्पःश्रुत्वानादंमनोहरम् ॥ अश्रोत्रोऽपिमुदंयातिधिक्सकर्णांश्चमानवान् ॥२४॥ बालोऽपिसुस्वरंगेयंश्रुत्वामुदितमानसः॥जायतेकिंतुतेवृद्धानजानंतिधिगस्तुतान्॥२५॥पितामेकिंनजानातिनारदस्यगुणान्बहून् ॥ द्वितीयःसामगोनास्तित्रिषुलोकेषुतत्समः॥२६॥तस्मादसौमयानूनंवृतःपूर्वंसमागमात्॥पश्चाच्छापवशाज्जातोवानरास्योगुणाकरः ॥२७॥ किन्नरानाप्रियाःकस्यभवंतितुरगाननाः॥गानविद्यासमायुक्ताःकिंमुखेनवरेणह॥२८॥पितरंब्रूहिमेमातर्वृतोऽयंमुनिसत्तमः॥तस्मात्त्वमाग्रहंत्यक्त्वादेहितस्मैचमांमुदा२९॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ सप्तभेदंषड्जादिसप्तभेदसहितंगानमित्यर्थः ॥ २२ ॥ हरिणाःपशवोनहि तेषांगानलुब्धत्वस्यसत्त्वात् ॥ २३ ॥ सकर्णांश्चेति ॥ यतोमुदंनयांतीतिशेषः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ वानरास्योऽहंतत्रैवस्थितइत्यर्थः ॥ ३३ ॥ यतोवानराननस्ततोदुःखसंतप्तइत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ अस्यभाषितंशापोद्धाररूपंश्रुत्वाचित्तंप्रवणंकृत्वाअनुग्रहःकृतइत्यन्वयः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातमिति ॥ ज्ञानिनोऽपिममममायामोहेसुखदुःखादिकंविक्षेपरूपमस्त्ये

॥ नारदउवाच ॥ इतिपुत्र्यावचःश्रुत्वाराज्ञीराज्ञेन्यवेदयत् ॥ आग्रहंसुंदरीज्ञात्वासुतायानारदेमुने ॥ ३० ॥ विवाहंकुरुराजेंद्रदमयंत्याःशुभेदिने ॥ मुनिनासचसर्वज्ञोवृतोऽसौमनसाऽनया ॥ ३१ ॥ नारदउवाच ॥ इतिसंचोदितोराज्ञासंजयःपृथिवीपतिः ॥ चकारविधिवत्सर्वंविधिंवैवाहिकंततः ॥३२॥ एवंदारग्रहंकृत्वावानरास्यःपरंतप ॥ स्थितस्तत्रैवमनसादह्यमानेनचान्वहम् ॥ ३३ ॥ यदागच्छद्राजसुतासेवार्थंममसन्निधौ ॥ अभवंदुःखसंतप्तस्तदाऽहंवाननः ॥ ३४ ॥ दमयंतीतुमांवीक्ष्यप्रफुल्लवदनांबुजा ॥ शोकंवानरवक्त्रत्वान्नचकारकदाचन ॥३५॥ एवंगच्छतिकालेतुसहसापर्वतोमुनिः ॥ कुर्वंस्तीर्थान्यनेकानिद्रष्टुंमांसमुपागतः ॥३६॥ मयाऽतिमानितःप्रेम्णापूजितश्चयथाविधि ॥ आसीनआसनेदिव्येवीक्ष्यमांदुःखितोह्यभूत् ॥ ३७ ॥ कृतदारंवानरास्यंदीनंचिंतातुरंभृशम् ॥ दयावान्मामुवाचेदंपर्वतोमातुलंकृशम् ॥ ३८ ॥ मयानारदकोपात्त्वंशप्तोऽसिमुनिसत्तम ॥ निष्कृतिंतस्यशापस्यकरोम्यद्यनिशामय ॥ ३९ ॥ भवत्वंचारुवदनोममपुण्येननारद ॥ दृष्ट्वाराजसुतांचित्तेकृपाजाताममाऽधुना ॥ ४० ॥ नारदउवाच ॥ मयाऽपिप्रवणंचित्तंकृत्वाश्रुत्वाऽस्यभाषितम् ॥ अनुग्रहःकृतःसद्यस्तस्यशापस्यतत्क्षणात् ॥४१॥ भागिनेयतवाप्यस्तुगमनंसुरसद्मनि ॥ शापस्याऽनुग्रहःकामंकृतोऽयंपर्वताऽधुना ॥ ॥४२॥नारदउवाच ॥ जातोऽहंचारुवदनोवचनात्तस्यपश्यतः॥राजपुत्रीतुसंतुष्टामातरंप्राहसत्वरम् ॥ ४३ ॥ मातस्तेसुमुखोजातोजामाताचमहाद्युतिः॥ वचनात्पर्वतस्याऽद्यमुक्तशापोमुनेरभूत् ॥ ४४ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञाकथितंतत्तुराजनि ॥ ययौद्रष्टुंमुनिंतत्रसंजयःप्रीतिमांस्तदा ॥ ४५ ॥ धनंसमर्पितंराज्ञासंतुष्टेनतदामहत् ॥ मह्यंचभागिनेयायपारिबर्हंमहात्मना ॥ ४६ ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंवर्तनंयत्पुरातनम् ॥ मायायावलमाहात्म्यंह्यनुभूतंयथामया ॥ ४७ ॥ संसारेऽस्मिन्महाभागमायागुणकृतेनृते ॥ तनुभृत्सुखीनास्तिनभूतोनभविष्यति ॥ ४८ ॥ कामक्रोधौतथालोभोमत्सरोममतातथा ॥ अहंकारोमदःकेनजिताःसर्वेमहाबलाः ॥ ४९ ॥ सत्त्वंरजस्तमश्चैवगुणास्त्रयइमेकिल ॥ कारणंप्राणिनां देहसंभवेसर्वथामुने ॥५०॥ कस्मिंचित्समयेव्यासवनेऽहंविष्णुनासह ॥ गच्छन्हास्यविनोदेनस्त्रीभावंगमितःक्षणात् ॥ ५१ ॥

वेत्येतदाख्यातंकथितमित्यर्थः ॥ ४७ ॥ यावत्कालपर्यंतंगुणत्रयजन्योदेहस्तिष्ठतितावत्कालपर्यंतंमायामोहसुखदुःखादिकंविक्षेपजातंसर्वस्याऽपिभविष्यत्येव नतत्रप्रतीकारोस्तीत्याह। संसारेऽस्मिन्निति ॥ ४८ ॥४९॥ सर्वथामुनेइति ॥ तथाचगुणत्रयवैषम्येनियमेनभविष्यत्येव ततश्चमोहादिकंभविष्यत्येवेति ॥५०॥ स्वस्यमायामोहादिकंप्रदर्शयितुमेकांकथामुपपाद्यद्वितीयामुपपादयति । कस्मिंश्चित्समयइति ॥ ५१ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेसप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥ ॥ छ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चतुःपंचाशत्पद्यैर्नारदःपुनः ॥ स्वकथांवदतिप्राज्ञइत्येतत्स म्यगीर्यते ॥ १॥ पूर्वाध्यायांतेराजप्रश्नकथनोत्तरंजातंवृत्तमाह । निशामयेति ॥ मुनिभिरपिमायाबलंसुदुर्ज्ञेयमित्यन्वयः ॥१॥ तदेवविशदयति । मायामोहितमिति॥२॥३॥गायत्रंसामेत्य

राजपत्नीत्वमापन्नोमायाबलविमोहितः ॥ पुत्राःप्रसूताबहवोगेहेतस्यनृपस्यह ॥ ५२ ॥ व्यासउवाच ॥ संशयोऽयंमहान्साधोश्रुत्वातेवचनंकिल ॥ क थंनारीत्वमापन्नस्त्वंमुनेज्ञानवान्भृशम् ॥ ५३ ॥ कथंचपुरुषोजातोब्रूहिसर्वमशेषतः ॥ कथंपुत्रास्त्वयाजाताःकस्यराज्ञोगृहेऽञ्जसा ॥ ५४ ॥ एतदाख्या हिचरितंमायायामहदद्भुतम् ॥ मोहितंचययासर्वमिदंस्थावरजंगमम् ॥५५॥ नतृप्तिमधिगच्छामिशृण्वंस्तवकथामृतम् ॥ सर्वग्रंथार्थतत्त्वंचसर्वसंशयना शनम् ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ छ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ निशामयमुनिश्रेष्ठगदतोममसत्कथाम् ॥ मायाबलंसुदुर्ज्ञेयंमुनिभिर्योगवित्तमैः ॥ १ ॥ माययामोहितंसर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ ब्रह्मादिस्तंबपर्यंतमजयादुर्विभाव्यया ॥ २ ॥ कदाचित्सत्यलो काद्वैश्वेतद्वीपेमनोहरे ॥ गतोऽहंदर्शनाकांक्षीहरेरद्भुतकर्मणः ॥३॥ वादयन्महतींवीणांस्वरतानविभूषिताम् ॥ गायत्रंगायमानस्तुसामसप्तस्वरान्वितम्॥ ॥ ४ ॥ दृष्टोमयादेवदेवश्चक्रपाणिर्गदाधरः ॥ कौस्तुभोद्भासितोरस्कोमेघश्यामश्चतुर्भुजः ॥ ५ ॥ पीतांबरपरीधानोमुकुटांगदराजितः ॥ लक्ष्म्यासहवि लासिन्याक्रीडमानोमुदायुतः ॥ ६ ॥ वीक्ष्यमांकमलादेवीगतांतर्धानमंतिकात् ॥ सर्वलक्षणसंपन्नासर्वभूषणभूषिता ॥ ७ ॥ नारीणांप्रवराकांतारूपयौ वनगर्विता ॥ सुप्रियावासुदेवस्यवरचामीकरप्रभा ॥ ८॥ अंतर्गृहंगतांदृष्ट्वासिंधुजांव्यंजनान्विताम् ॥ मयापृष्टोदेवदेवोवनमालीजगत्प्रभुः ॥ ९ ॥ भगव न्देवदेवेशपद्मनाभमुरारिहन् ॥ कथंचमागतादृष्ट्वामामागच्छंतमंतिकात् ॥ १० ॥ नाऽहंविटोनवाधूर्तोतापसोऽहंजगद्गुरो॥जितेंद्रियोजितक्रोधोजितमा योजनार्दन ॥ ११ ॥ नारदउवाच ॥ निशम्यवचनंकिंचिद्गर्वयुक्तंजनार्दनः ॥ उवाचमांस्मितंकृत्वावीणावन्मधुरांगिरम् ॥ १२ ॥ विष्णुरुवाच ॥ नारदैवं विधानोतिर्नस्थातव्यंकदाचन ॥ पतिंविनाऽन्यसान्निध्येकस्यचिद्योषयाक्वचित् ॥ १३ ॥ मायासुदुर्जयाविद्वन्योगिभिर्जितमारुतैः ॥ सांख्यविद्भिर्निराहा रैस्तापसैश्चजितेंद्रियैः ॥ १४ ॥ देवैश्चमुनिशार्दूलयत्त्वयोक्तंवचोऽधुना ॥ जितमायोऽस्मिगीतज्ञनैवंवाच्यंकदाचन ॥ १५ ॥ नाऽहंशिवोनवाब्रह्माजेतुंतां प्रभवोऽप्यजाम् ॥ मुनयःसनकाद्याश्चकस्त्वंकेऽन्येक्षमाजये ॥ १६ ॥

न्वयः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ अंतर्धानंगताअदृश्यतांगतांतर्गृहेगतेत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ व्यंजनान्वितांवस्त्रांतर्व्यंजितस्तनीमित्यर्थः ॥ ९ ॥ मांदृष्ट्वामालक्ष्मीःकथंगताकिमर्थंगतेत्यर्थः ॥ १०॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ देवैश्चदुर्ज्ञेयैत्यन्वयः ॥ एवंसातियत्त्वयोक्तमहंजितमायोऽस्मीतितदेवंवाक्यंत्वयाकदाऽपिनवक्तव्यमित्याह । यत्त्वयोक्तमिति ॥ १४ ॥ १५ ॥ यतःशिवादयोऽ पितामजांमायांजेतुंनसमर्थास्तस्मादित्याह । नाऽहंशिवइति ॥ कस्त्वमिति ॥ यतएवंतस्मात्कस्त्वंपामरस्तस्याजयेक्षमस्तथान्येवाकेक्षमानकेऽपीत्यर्थः ॥ १६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





देहंधारयन्मायांजयतीतिकथंसंभवेत् ॥ मायाजयेदेहस्याऽप्यसंभवःस्यात्कारणाभावेकार्यस्यानवस्थितेरित्याह । देवदेहमिति ॥१७॥ ननुमायाजितैवज्ञानिभिरावरणाभावात्केवलंविक्षेपश क्तिरेवावशिष्टास्तीतिचेत्सैवविक्षेपशक्तिर्मायातयाबद्धत्वंतदधीनमोहसुखदुःखादिमत्त्वंचसंभवत्यवेत्याह। त्रियुतस्तामिति ॥ त्रियुतोगुणत्रययुतइत्यर्थः ॥ कथंजेतुंशक्तइत्यन्वयः ॥ विक्षेप शक्तिस्तुस्थास्यत्येवेतिभावः ॥ १८ ॥ ननुजगतोमायाधीनत्वेकालाधीनत्वंकथंलोकैरुच्यतइतिचेत्कालोऽपिमायायाएवरूपमित्यभिप्रायेणेत्याह । कालोपितस्यारूपंहीति ॥ आत्मातिरि

देवदेहंनृदेहंवातिर्यग्देहमथाऽपिवा ॥ बिभृयाद्यःशरीरंचसकथंतांजयेदजाम् ॥ १७ ॥ त्रियुतस्तांकथंमायांजेतुंशक्तःपुमान्भवेत् ॥ वेदविद्योगविद्वाऽपि सर्वज्ञोविजितेंद्रियः ॥१८॥ कालोऽपितस्यारूपंहिरूपहीनःस्वरूपकृत् ॥ तद्वशेवर्ततेदेहीविद्वान्मूर्खोऽथमध्यमः ॥ १९ ॥ कालःकरोतिधर्मज्ञंकदाचि द्विकलंपुनः ॥ स्वभावात्कर्मतोवाऽपिदुर्ज्ञेयंतस्यचेष्टितम् ॥ २० ॥ नारदउवाच ॥ इत्युक्त्वाविरतोविष्णुरहंविस्मयमानसः ॥ तमब्रुवंजगन्नाथंवासुदेवंस नातनम् ॥ २१ ॥ रमापतेकथंरूपामायासाकीदृशीपुनः ॥ कियद्बलाकसंस्थानाकस्याधारावदस्वमे॥२२॥द्रष्टुकामोऽस्मितांमायांदर्शयाऽऽशुमहीधर॥ ज्ञातुमिच्छामितांसम्यक्प्रसादंकुरुमापते ॥ २३ ॥ विष्णुरुवाच ॥ त्रिगुणासाऽखिलाधारासर्वज्ञासर्वसंमता ॥ अजेयानेकरूपाचसर्वव्याप्यस्थिताजग त् ॥ २४ ॥ दिदृक्षायदितेचित्तेनारदारोहणंकुरु ॥ गरुडेमत्समेतोऽद्यगच्छावोऽन्यत्रसांप्रतम् ॥२५॥ दर्शयिष्यामितेमायांदुर्जयामजितात्मभिः ॥ दृष्ट्वा तांब्रह्मपुत्रत्वंमाविषादेमनःकृथाः ॥२६॥ इत्युक्त्वादेवदेवोमांसस्मारविनतासुतम् ॥ स्मृतमात्रस्तुगरुडस्तदागाद्धरिसन्निधौ ॥२७॥ आगतंगरुडंवीक्ष्य आरुरोहजनार्दनः ॥ समारोप्यचमांपृष्ठेगमनायकृतादरः ॥ २८ ॥ चलितोविनतापुत्रोवैकुंठाद्वायुवेगवान् ॥ प्रेरितोयत्रकृष्णेनगंतुकामेनकाननम्॥२९॥ महावनानिदिव्यानिसरांसिसरितस्तथा ॥ पुरग्रामाकरादींश्चखेटखर्वटगोव्रजान् ॥ ३० ॥ मुनीनामाश्रमान्रम्यान्वापीश्चसुमनोहराः ॥ पल्वलानि विशालानिह्रदान्पंकजभूषितान् ॥ ३१ ॥ मृगाणांचवराहाणांवृंदान्यप्यवलोक्यच ॥ गतावावांकान्यकुब्जसमीपंगरुडासनौ ॥ ३२ ॥ तत्ररम्यंसरोदिव्यं दृष्टंपंकजमंडितम् ॥ हंसकारंडवाकीर्णंचक्रवाकोपशोभितम्॥३३॥नानावर्णैःप्रफुल्लैश्चपंकजैरुपरंजितम् ॥ शुचिमिष्टजलंभृंगयूथनादविराजितम्॥३४॥ मामाहभगवान्वीक्ष्यतडागंपरमाद्भुतम् ॥ स्पर्धंकंचोदधेःक्षीरंमिष्टंवारिविशेषतः ॥ ३५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ पश्यनारदगंभीरसरःसारसनादितम् ॥ स र्वत्रपंकजैश्छन्नंस्वच्छनीरप्रपूरितम् ॥ ३६ ॥ अत्रस्नात्वागमिष्यावःकान्यकुब्जंपुरोत्तमम् ॥ इत्युक्त्वागरुडादाशुमामुत्तार्यव्यतारयत् ॥ ३७ ॥

क्तस्यमायामयत्वादित्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ प्रसादंकुर्विति ॥ मायावैभवंवदेत्यर्थः ॥२३॥ तत्रकथंरूपेत्यस्योत्तरंत्रिगुणासेति ॥ कस्याधारेत्यस्योत्तरमखिलाधारोति ॥ कियद्बलेत्यस्योत्तरमजेयेति ॥ सर्वतोबलवतीत्यर्थः ॥ कीदृशीत्यस्योत्तरंसर्वज्ञेति ॥ कसंस्थानेत्यस्योत्तरंसर्वव्याप्यसंस्थितेति ॥ प्रश्नवाक्येसुप्सुपेतिसमासः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ उदधेःस्पर्धकंस्पर्धाकरम् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ व्यतारयत्गमितवान् ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेषष्ठस्कंधेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ षट्षष्टिश्लोकवर्यैस्तुस्त्रीभावंगमितस्यच ॥ नारदस्यपुनःसम्यक्पुरुषप्राप्तिरुच्यते ॥ १ ॥ तालध्वजसमागमानंतरंजातंवृत्तमाह । इत्युक्तइति ॥ १ ॥ २ ॥ सुकृतं

विहस्यभगवांस्तत्रजग्राहममतर्जनीम् ॥ स्तुवन्सरोवरंभूयस्तीरेमामनयत्प्रभुः ॥ ३८ ॥ विश्रम्यतटभागेतुस्निग्धच्छायेमनोहरे ॥ मामुवाचमुनेस्नानंकुरुत्वंविमलेजले ॥ ३९ ॥ पश्चादहंकरिष्यामितडागेऽस्मिन्सुपावने ॥ साधूनामिवचेतांसिजलानिनिर्मलानिच ॥ ४० ॥ सुरभीणिपरागैस्तुपंकजानांविशेषतः ॥ इत्युक्तोऽहंभगवतामुक्त्वावीणांमृगाजिनम् ॥ ४१ ॥ स्नानायकृतधीस्तीरेगतःप्रेमसमन्वितः ॥ पादौप्रक्षाल्यहस्तौचशिखांबद्धाकुशग्रहम् ॥ ४२ ॥ कृत्वाचम्यशुचिस्तोयेस्नातवानस्मितज्जले ॥ यदातस्मिञ्जलेरम्येस्नातोऽहंपश्यतोहरेः ॥ ४३ ॥ विहायपौरुषंरूपंप्राप्तःस्त्रीत्वमनुत्तमम् ॥ हरिर्गृहीत्वावीणांमेतथाकृष्णाजिनंशुभम् ॥ ४४ ॥ आरुह्यगगनंतूर्णंजगामस्वगृहंक्षणात् ॥ ततोऽहंस्त्रीत्वमापन्नश्चारुभूषणभूषितः ॥ ४५ ॥ तत्क्षणान्मनसाजातापूर्वदेहस्यविस्मृतिः ॥ विस्मृतोसौजगन्नाथोमहतीविस्मृतापुनः ॥ ४६ ॥ संप्राप्यमोहिनीरूपंतडागान्निर्गतोबहिः ॥ अपश्यंनलिनीजुष्टंसरस्तद्विमलोदकम् ॥ ४७ ॥ किमेतदितिमनसाऽकरवंविस्मयंमुहुः ॥ एवंचिंतयमानस्यनारीरूपधरस्यमे ॥ ४८ ॥ सहसादृक्पथंप्राप्तस्तत्रतालध्वजोनृपः ॥ गजाश्वरथवृंदैश्चसंवृतोरथसंस्थितः ॥ ४९ ॥ युवाभूषणसंवीतोदेहवानिवमन्मथः ॥ वीक्ष्यमांभूपतिस्तत्रदिव्यभूषणभूषिताम् ॥ ५० ॥ राकाचंद्रमुखींयोषांविस्मयंपरमंगतः ॥ पप्रच्छकाऽसिकल्याणिकस्यपुत्रीसुरस्यवा ॥ ५१ ॥ मानुषस्यचवाकांतेगंधर्वस्योरगस्यच ॥ एकाकिनीकथंबालारूपयौवनभूषिता ॥ ५२ ॥ विवाहिताऽथकन्यावासत्यंवदसुलोचने ॥ किंपश्यसिसुकेशां तेतडागेऽस्मिन्सुमध्यमे ॥ ५३ ॥ चिकीर्षितंपिकालापेब्रूहिमन्मथमोहिनि ॥ भुंक्ष्वभोगान्मरालाक्षिमयासहकृशोदरि ॥ वांछितान्मनसानूनंकृत्वामांपतिमुत्तमम् ॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ छ ॥ नारदउवाच ॥ इत्युक्तोऽहंतदातेनराज्ञातालध्वजेनच ॥ विमृश्यमनसात्यर्थंतमुवाचविशांपते ॥ १ ॥ राजन्नाहंविजानामिपुत्रीकस्येतिनिश्चयम् ॥ पितरौक्वचमेकेनस्थापिताचसरोवरे ॥ २ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिकथंमेसुकृतंभवेत् ॥ निराधाराऽस्मिराजेंद्रचिंतयामिचिकीर्षितम् ॥ ३ ॥ दैवमेवपरंराजन्नास्त्यत्रपौरुषंमम ॥ धर्मज्ञोसिमहीपालयथेच्छसितथाकुरु ॥ ४ ॥ तवाऽधीनास्म्यहंभूपनमेकोप्यस्तिपालकः ॥ नपितानचमाताचनस्थानंनचबांधवाः ॥ ५ ॥ इत्युक्तोऽसौमयाराजाबभूवमदनातुरः ॥ मांनिरीक्ष्यविशालाक्षींसेवकानित्युवाचह ॥ ६ ॥ नरयानमानयध्वंचतुर्वाह्यंमनोहरम् ॥ आरोहणार्थमस्यास्तुकौशेयांबरवेष्टितम् ॥ ७ ॥ मृद्वास्तरणसंयुक्तंमुक्ताजालविभूषितम् ॥ चतुरस्रंविशालंचसुवर्णरचितंशुभम् ॥ ८ ॥

कल्याणम् ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ पूर्वदेहंपुंभावंमुनिजन्मचनस्मृतवानित्यर्थः ॥ १७ ॥ पत्नीष्वस्यान्यपत्नीषुमध्येप्रियासत्यहमेवाऽस्ययोषानान्येत्यर्थः ॥ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ब्रह्मविज्ञानमिति ॥ अनेनचब्रह्मविज्ञानेजातेऽपिपुनःसंस्काररूपेणदग्धबीजवत्स्थितस्याऽऽवरणशक्तिरूपस्याज्ञानस्यमायाबलात्प्रादुर्भावोऽस्मिन्नेवजन्मनिभवतीतिबोधितम् ॥ एतादृशमहोमायाबलमितिभावः ॥ ननुब्रह्मज्ञानेजातेऽपिपुनरज्ञानस्योद्भवेब्रह्मज्ञानंनिरर्थकमेवेतिचेन्न ॥ सकृद्ब्रह्मज्ञानेनदग्धस्याऽज्ञानस्यसंस्काररूपेणदग्धबीजवत्स्थितस्यतस्मि

तस्यतद्वचनंश्रुत्वाभृत्याःसत्वरगामिनः ॥ आनिन्युःशिबिकांदिव्यांमदर्थेवस्त्रवेष्टिताम् ॥ ९ ॥ आरूढाऽहंतदातस्यांतस्यप्रियचिकीर्षया ॥ मुदितोऽसौगृहेनीत्वामांतदापृथिवीपतिः ॥ १० ॥ विवाहविधिनाराजाशुभेलग्नेशुभेदिने ॥ उपयेमेचमांतत्रहुतभुक्सन्निधौततः ॥ ११ ॥ तस्याऽहंवल्लभाजाताप्राणेभ्योऽपिगरीयसी ॥ सौभाग्यसुंदरीत्येवंनामतत्रकृतंमम ॥ १२ ॥ रममाणोमयासार्धंसुखमापमहीपतिः ॥ नानाभोगविलासैश्चकामशास्त्रोदितैस्तथा ॥ ॥ १३ ॥ राजकार्याणिसंत्यज्यक्रीडासक्तोदिवानिशम् ॥ नाऽसौविवेदगच्छंतंकालंकामकलारतः ॥ १४ ॥ उद्यानेषुचरम्येषुवापीषुचगृहेषुच ॥ हर्म्येषुवरशैलेषुदीर्घिकासुवरासुच ॥ १५ ॥ वारुणीमदमत्तोऽसौविहरन्काननेशुभे ॥ विसृज्यसर्वकार्याणिमदधीनोबभूवह ॥ १६ ॥ व्यासाऽहंतेनसंसक्ताक्रीडारसवशीकृता ॥ स्मृतवान्पूर्वदेहंनपुंभावंमुनिजन्मच ॥ १७ ॥ ममैवाऽयंपतिर्योषाऽहंपत्नीषुप्रियासती ॥ पट्टराज्ञीविलासज्ञासफलंजीवितंमम ॥ १८ ॥ इतिचिंतयतीतस्मिन्प्रेमबद्धादिवानिशम् ॥ क्रीडासक्तासुखेलुब्धातंस्थितावशवर्तिनी ॥ १९ ॥ विस्मृतंब्रह्मविज्ञानंब्रह्मज्ञानंचशाश्वतम् ॥ धर्मशास्त्रपरिज्ञानंतदासक्तमनाःस्थिता ॥ २० ॥ एवंविहरतस्तत्रवर्षाणिद्वादशैवतु ॥ गतानिक्षणवत्कामक्रीडासक्तस्यमेमुने ॥ २१ ॥ जातागर्भवतीचाऽहंमुदंप्राप नृपस्तदा ॥ कारयामासविधिवद्गर्भसंस्कारकर्मच ॥ २२ ॥ अपृच्छद्दोहदंराजाप्रीणयन्मांपुनःपुनः ॥ नाऽब्रुवंलज्जमानाऽहंनृपंप्रीतमनाभृशम् ॥ २३ ॥ संपूर्णेदशमेमासिपुत्रोजातस्ततोमम ॥ शुभेह्निग्रहनक्षत्रलग्नताराबलान्विते ॥ २४ ॥ बभूवनृपतेर्गेहेपुत्रजन्ममहोत्सवः ॥ राजापरमसंतुष्टोबभूवसुतजन्मतः ॥ २५ ॥ सूतकांतेसुतंवीक्ष्यराजामुदमवापह ॥ अहंभूमिपतेश्चासंप्रियाभार्यापरंतप ॥ २६ ॥ ततोवर्षद्वयांतेवैपुनर्गर्भोमयाधृतः ॥ द्वितीयस्तुसुतोजातःसर्वलक्षणसंयुतः ॥ २७ ॥ सुधन्वेतिसुतस्याऽथनामचक्रेनृपस्तदा ॥ वीरवर्मेतिज्येष्ठस्यब्राह्मणैःप्रेरितस्त्वयम् ॥ २८ ॥ एवंद्वादशपुत्राश्चप्रसूताभूपसंमताः ॥ मोहितोऽहंतदातेषांप्रीत्यापालनलालने ॥ २९ ॥

त्रेवदेहप्रादुर्भावेपि तस्यजन्मांतरदायकत्वाभावाद्ब्रह्मज्ञानसार्थकत्वासिद्धेः ॥ तीर्थेश्वपचगृहेवानष्टस्मृतिरापित्यजन्प्राणान् ॥ ज्ञानसमकालमेवकैवल्यंयाति हतशोकः ॥ इतिपरमार्थसारे पतंजल्युक्तेरिति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ दोहदंगर्भिणीमनोरथम् ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ अहंनारदोभगवतामाययावंचितोऽस्मीतिमयामनसानकदापिचिंतितमेतादृशंमायावलंप्रबलमितिभावः ॥ ३९ ॥

पुनरष्टसुताःकालेकालेजाताःस्वरूपिणः ॥ गार्हस्थ्यंमेततःपूर्णंसंपन्नंसुखसाधनम् ॥ ३० ॥ तेषांदारक्रियाःकालेकृताराज्ञायथोचिताः ॥ स्नुषाभिश्चतथा पुत्रैःपरिवारोमहानभूत् ॥ ३१ ॥ ततःपौत्रादिसंभूतास्तेपिक्रीडारसान्विताः ॥ आसन्नानारसोपेतामोहवृद्धिकराभृशम् ॥ ३२ ॥ कदाचित्सुखमैश्वर्यंक दाचिद्दुःखमद्भुतम् ॥ पुत्रेषुरोगजनितंदेहसंतापकारकम् ॥ ३३ ॥ परस्परंकदाचित्तुविरोधोभूत्सुदारुणः ॥ पुत्राणांवावधूनांचतेनसंतापसंभवः ॥ ३४ ॥ सुखदुःखात्मकेघोरेमिथ्याचारकरेभृशम् ॥ संकल्पजनितेक्षुद्रेमग्नोऽहंमुनिसत्तम ॥ ३५ ॥ विस्मृतंपूर्वविज्ञानंशास्त्रज्ञानंतथागतम् ॥ योषाभावेविलीनो ऽहंगृहकार्येषुसर्वथा ॥ ३६ ॥ अहंकारस्तुसंजातोभृशंमोहविवर्धकः ॥ एतेमेबलिनःपुत्राःस्नुषाःस्वकुलसंभवाः ॥ ३७ ॥ एतेपुत्राःसुसन्नद्धाःक्रीडंतिमम वेश्मसु ॥ धन्याऽहंखलुनारीणांसंसारेऽस्मिन्नहोभृशम् ॥ ३८॥ नारदोऽहंभगवतोवंचितोमाययाकिल ॥ नकदाचिन्मयाप्येवंचिंतितंमनसाकिल॥ ३९ ॥ राजपत्नीशुभाचाराबहुपुत्रापतिव्रता ॥ धन्याऽहंकिलसंसारेकृष्णेवंमोहितस्त्वहम् ॥ ४० ॥ अथकश्चिन्नृपःकामंदूरदेशाधिपोमहान् ॥ अरातिभावमाप न्नःपतिनासहमानद ॥ ४१ ॥ कृत्वासैन्यसमायोगंरथैश्चवारणैर्युतम् ॥ आजगामकान्यकुब्जेपुरेयुद्धमचिंतयत् ॥ ४२ ॥ वेष्टितंनगरंतेनराज्ञासैन्ययुतेन च ॥ ममपुत्राश्चपौत्राश्चनिर्गतानगरात्तदा ॥ ४३ ॥ संग्रामस्तुमुलस्तत्रकृतस्तैस्तेनपुत्रकैः ॥ हतारणेसुताःसर्वेवैरिणाकालयोगतः ॥ ४४ ॥ राजाभग्नस्तु संग्रामादागतःस्वगृहंपुनः ॥ श्रुतंमयामृताःपुत्राःसंग्रामेभृशदारुणे ॥ ४५ ॥ सहत्वामेसुतान्पौत्रान्गतोराजाबलान्वितः ॥ क्रंदमानाह्यहंतत्रगतासमरमं डले ॥ ४६ ॥ दृष्ट्वातान्पतितान्पुत्रान्पौत्रांश्चदुःखपीडिता ॥ विललापाहमायुष्मञ्छोकसागरसंप्लवे ॥ ४७ ॥ हापुत्राःक्वगतामेऽद्यहाहतास्मिदुरात्म ना ॥ दैवेनाऽतिबलिष्ठेनदुर्वारेणाऽतितापिना ॥ ४८ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रभगवान्मधुसूदनः ॥ कृत्वारूपंद्विजस्याऽगाद्वृद्धःपरमशोभनः ॥ ४९ ॥ सुवासा वेदवित्कामंमत्समीपंसमागतः ॥ मामुवाचाऽतिदीनांसक्रंदमानांरणाजिरे ॥ ५० ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ किंविषीदसितन्वंगिभ्रमोऽयंप्रकटीकृतः ॥ मोहेन कोकिलालापेपतिपुत्रगृहात्मके ॥ ५१ ॥ कात्वंकस्याःसुताःकेऽमीचिंतयाऽऽत्मगतिंपराम् ॥ उत्तिष्ठरोदनंत्यक्त्वास्वस्थाभवसुलोचने ॥ ५२ ॥ स्नानंच तिलदानंचपुत्राणांकुरुकामिनि ॥ परलोकगतानांचमर्यादारक्षणायवै ॥ ५३ ॥ कर्तव्यंसर्वथातीर्थेस्नानंतुनगृहेक्वचित् ॥ मृतानांकिलबंधूनांधर्मशास्त्रस्य निर्णयः ॥ ५४ ॥ नारदउवाच ॥ इत्युक्त्वातेनविप्रेणवृद्धेनप्रतिबोधिता ॥ उत्थिताऽहंनृपेणाऽथयुक्ताबंधुभिरावृता ॥ ५५ ॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ५६ ॥ ५७ ॥ शोकंनिरर्थकंत्यज त्वयंपुत्राणांक्रियाकालोऽस्तीत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ केनहेतुनेतिविस्मृतइत्यर्थः ॥ ६६ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेषष्ठस्कंधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ ॥ ॥ त्र्यधिकैश्चैवपंचाशत्पद्यैरथहरिःस्वयम् ॥ नारदायमहामायामहिमानंवदत्यपि ॥ १ ॥ नारदस्यपुरुषभाव प्राप्त्युत्तरंजातंवृत्तमाह । मांदृष्ट्वेति ॥१॥ २ ॥ ३ ॥ तवविरहेणयदिप्राणावहिर्निर्गच्छंतितदपिवरम् परंतुतेऽपिवहिर्नानिर्गच्छंतीत्याह । नप्राणाइति॥ प्राणधारणात्प्राणधारणंव्याप्यया

अग्रतेद्विजरूपेणभगवान्भूतभावनः ॥ चलिताऽहंततस्तूर्णंतीर्थंपरमपावनम् ॥ ५६ ॥ हरिर्मांकृपयातत्रपुंतीर्थेसरसिप्रभुः ॥ नीत्वाऽऽहभगवान्विष्णुर्द्विजरूपीजनार्दनः ॥५७॥ स्नानंकुरुतडागेऽस्मिन्पावनेगजगामिनि ॥ त्यजशोकंक्रियाकालःपुत्राणांचनिरर्थकम् ॥ ५८ ॥ कोटिशस्तेमृताःपुत्राजन्मजन्मसमुद्भवाः ॥ पितरःपतयश्चैवभ्रातरोजामयस्तथा ॥ ५९ ॥ केषांदुःखंत्वयाकार्यंभ्रमेऽस्मिन्मानसोद्भवे ॥ वितथेस्वप्नसदृशेतापदेदेहिनामिह ॥६०॥ नारदउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वातीर्थेपुरुषसंज्ञके ॥ प्रविष्टास्नातुकामाऽहंप्रेरितातत्रविष्णुना ॥ ६१ ॥ मज्जनादेवतीर्थेषुपुमाञ्जातःक्षणादपि ॥ हरिर्वीणांकरेकृत्वास्थितस्तीरेस्वदेहवान् ॥ ६२ ॥ उन्मज्ज्यचमयातीरेदृष्टःकमललोचनः॥प्रत्यभिज्ञातदाजातामचित्तेद्विजोत्तम ॥६३॥ संचिंतितंमयातत्र नारदोऽहमिहाऽऽगतः ॥ हरिणासहस्त्रीभावंप्राप्तोमायाविमोहितः ॥ ६४ ॥ इतिचिंतापरश्चाऽहंयदाजातस्तदाहरिः ॥ मामाहनारदागच्छकिंकरोषिजलेस्थितः ॥ ६५ ॥ विस्मितोऽहंतदास्मृत्वास्त्रीभावंदारुणंभृशम्॥ पुनःपुरुषभावश्चसंपन्नःकेनहेतुना ॥ ६६ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ छ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ मांदृष्ट्वानारदंविप्रंविस्मितोऽसौमहीपतिः ॥ क्वगताममभार्यासाकुतोऽयंमुनिसत्तमः ॥ १ ॥ विललापनृपस्तत्रहाप्रियेतिमुहुर्मुहुः ॥ क्वगतामांपरित्यज्यविलपंतंवियोगिनम् ॥२॥ विनात्वांविपुलश्रोणिवृथामेजीवितंगृहम् ॥ राज्यंकमलपत्राक्षिकिंकरोमिशुचिस्मिते ॥ ३ ॥ नप्राणामेबहिर्यांतिविरहेणतवाऽधुना ॥ गतोवैप्रीतिधर्मस्तुत्वामृतेप्राणधारणात् ॥ ४ ॥ विलपामिविशालाक्षिदेहिप्रत्युत्तरंप्रियम् ॥ क्वगतासामयिप्रीतिर्याभूत्प्रथमसंगमे ॥ ५ ॥ विमग्नाकिंजलेसुभ्रूर्भक्षितामत्स्यकच्छपैः ॥ गृहीतावरुणेनाशुममदौर्भाग्ययोगतः ॥ ६ ॥ धन्यासु चारुसर्वांगियात्वंपुत्रैःसमागता ॥ अकृत्रिमस्तुपुत्रेषुस्नेहस्तेऽमृतभाषिणि ॥७॥ नयुक्तमधुनायन्मांविहायत्रिदिवंगता ॥ विलपंतंपतिंदीनंपुत्रस्नेहेनयंत्रिता ॥ ८ ॥ उभयंमेगतंकांतेपुत्रास्त्वंप्राणवल्लभा ॥ तथापिमरणंनास्तिदुःखितस्यभृशंप्रिये ॥९॥ किंकरोमिक्वगच्छामिरामोनास्तिमहीतले ॥ रामाविरहजंदुःखंजानातिरघुनंदनः ॥ १० ॥ विधिनानिष्ठुरेणाऽत्रविपरीतंकृतंभुवि ॥ दंपत्योर्मरणंभिन्नंसर्वथासमचित्तयोः ॥ ११ ॥

वज्जीवमित्यर्थः ॥ त्वामृतेप्रीतिधर्मोगतउच्छिन्नइत्यर्थः ॥ इतःपरंयावज्जीवंकुत्राऽपिप्रीतिर्नस्थास्यतीत्यर्थः ॥ ४ ॥ मयियातवप्रीतिः स्थितासाऽधुनाक्वगतेत्यन्वयः ॥ ५ ॥ ६ ॥ पुत्रैःसहसमागतामृतेत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पतिनासहोति ॥ तथापुरुषस्याऽपिस्त्रियासहज्वलनंकुतोनकृतमितिभावः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ यद्भूतंयदुत्पन्नंतद्यथोत्पन्नंतथागतंततत्रखेदोनुचितइतिभावः ॥ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ दायादेपुत्रे न्यस्यस्थापयित्वेत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६½॥ मायेयमिति ॥ भगवत्याःसच्चिदानंदरूपिण्याःदेव्याइयंदृश्यमानासर्वा

उपकारस्तुनारीणांमुनिभिर्विहितःकिल ॥ यदुक्तंधर्मशास्त्रेषुज्वलनंपतिनासह ॥ १२ ॥ एवंविलपमानंतंराजानंभगवान्हरिः ॥ निवारयामासतदावचनै र्युक्तियोजितैः ॥१३॥ श्रीभगवानुवाच ॥ किंविषीदसिराजेंद्रकगतातेप्रियांगना ॥ नश्रुतंकिंत्वयाशास्त्रंनकृतोऽसौबुधाश्रयः॥१४॥कासाकस्त्वंकसंयोगो वियोगःकीदृशस्तव ॥ प्रवाहरूपसंसारेनृणांनौतरतामिव ॥१५॥ गृहेगच्छनृपश्रेष्ठवृथातेरुदितेनकिम् ॥ संयोगश्चवियोगश्चदैवाधीनःसदानृणाम्॥१६॥ अनयासहतेराजन्संयोगस्त्विहसंवृतः ॥ भुक्तात्वयाविशालाक्षीसुंदरीतनुमध्यमा ॥१७॥ नदृष्टौपितरावस्यास्त्वयाप्राप्तासरोवरे ॥ काकतालीप्रसंगेनय द्भूतंतत्तथागतम् ॥ १८ ॥ माशोकंकुरुराजेंद्रकालोहिदुरतिक्रमः ॥ कालयोगंसमासाद्यभुंक्ष्वभोगान्गृहेयथा ॥ १९ ॥ यथागतागतासातुतथैववरवर्णि नी ॥ यथापूर्वंतथातत्रगच्छकार्यंकुरुप्रभो ॥ २० ॥ रुदितेनतवाऽद्यैवनागमिष्यतिकामिनी ॥ वृथाशोचसिपृथ्वीशयोगयुक्तोभवाऽधुना ॥ २१ ॥ भोगः कालवशादेतितथैवप्रतियातिच ॥ नात्रशोकस्तुकर्तव्योनिष्फलेभववर्त्मनि ॥ २२ ॥ नैकत्रसुखसंयोगोदुःखयोगस्तुनैकतः॥घटिकायंत्रवत्कामंभ्रमणं सुखदुःखयोः ॥ २३ ॥ मनःकृत्वास्थिरंभूपकुरुराज्यंयथासुखम् ॥ अथवान्यस्यदायादेवनंसेवयसांप्रतम् ॥ २४ ॥ दुर्लभोमानुषोदेहःप्राणिनांक्षणभंगु रः ॥ तस्मिन्प्राप्तेतुकर्तव्यंसर्वथैवात्मसाधनम् ॥ २५ ॥ जिह्वोपस्थरसोराजन्पशुयोनिषुवर्तते ॥ ज्ञानंमानुषदेहेवैनान्यासुचकुयोनिषु ॥ २६ ॥ तस्माद्ग च्छगृहंत्यक्त्वाशोकंकांतासमुद्भवम् ॥ मायेयंभगवत्यास्तुययासंमोहितंजगत् ॥ २७ ॥ नारदउवाच ॥ इत्युक्तोहरिणाराजाप्रणम्यकमलापतिम्॥कृत्वा स्नानविधिंसम्यग्जगामनिजमंदिरम् ॥ २८ ॥ दत्त्वाराज्यंस्वपौत्रायप्राप्यनिर्वेदमद्भुतम् ॥ वनंजगामभूपालस्तत्त्वज्ञानमवापच ॥ २९ ॥ गतेराजन्यहं वीक्ष्यभगवंतमधोक्षजम् ॥ तमब्रुवंजगन्नाथंहसंतंमांपुनःपुनः ॥ ३० ॥ वंचितोऽहंत्वयादेवज्ञातंमायाबलंमहत् ॥ स्मरामिचरितंसर्वंस्त्रीदेहेयत्कृतंमया ॥ ॥ ३१ ॥ ब्रूहिमेदेवदेवेशप्रविष्टोऽहंसरोवरे॥विगतंपूर्वविज्ञानंस्नानादेवकथंहरे ॥ ३२ ॥ योषिद्देहंसमासाद्यमोहितोऽहंजगद्गुरो ॥ पतिंप्राप्यनृपश्रेष्ठंपुलो मीवासवंयथा ॥ ३३ ॥ मनस्तदेवतच्चित्तंदेहःसचपुरातनः ॥ लिंगंतदेवदेवेशस्मृतेर्नाशःकथंहरे ॥ ३४ ॥

मायाभवति ॥ कासामायाययाजगत्सर्वंसदेवासुरमानुषंसंमोहितंभवति तथाचमायामयत्वात्सर्वस्यमिथ्यात्वमुक्तंभवति मिथ्यात्वादेवमिथ्यापदार्थस्याधिष्ठानज्ञानमंतरानाशाभावादाधि ष्ठानरूपसच्चिदानंदात्मिकायाभगवत्याःसाक्षात्कारोऽवश्यंसंपादनीयोमायामयप्रपंचनाशनार्थमितिभावः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ यत्त्वयोक्तंविविक्तमधुनायथाजानामितथातदास्त्रीभावसमयेविवेकःक्वगतइति तत्रनैवंसंदेहंकुरु ॥ सर्पभ्रमस्थलेविवेकज्ञानस्यकुत्राऽप्यसत्त्वादित्याह । पश्यनारदोति ॥ ननुभ्रमस्थलेकुतोनविवेकस्तिष्ठतीतिचेन्मायाविविलासादित्याह । मायावीविलासोयमिति॥तत्रानुभवंप्रसिद्धमाह।दशाभेदाइति॥तादशाआह। जाग्रदिति ॥ एताश्चतस्रो दशायद्यपिभ्रमरूपाआत्मनितिष्ठंतितथापितद्दशानुभवसमयेउपदेशमंतरानकस्यापिभ्रमोऽयमितिविवेकज्ञानंभवति ॥ यथाऽयंदृष्टांतस्तथात्वयिदेहांतरप्राप्तेसतिभ्रमोऽयमितिनत्वयाज्ञातम तोदृष्टांतानुरोधेनपुनःकीदृशःसंदेहोऽत्रसंदेहस्थलंनैतदित्यर्थः ॥ नहिरज्जुसर्पादिभ्रमस्थलेसदुपदेशंविनाविवेकज्ञानंभवतिमायाविनोविलासएवाऽयंयःस्वमाययासत्यमपिसत्यमिवदर्शय तीति ॥ ३९ ॥ इदमेवाऽनेकदृष्टांतोपपादनेनाविशदयाति ॥ सुप्तोनरइति ॥ यथासुप्तोनरःसुप्तिसमयेसुप्तिरितिनजानातिप्रबुद्धस्तुसुप्तोऽहमेतावंतंकालमितिजानातितथेतिशेषः ॥ तथासर्वं

विस्मयोऽयंमहान्मेत्रज्ञाननाशंप्रतिप्रभो ॥ कथयाऽद्यरमाकांतकारणंपरमंचयत्॥३५॥नारीदेहंमयाप्राप्यभुक्ताभोगाह्यनेकशः॥ सुरापानंकृतंनित्यंविधि हीनंचभोजनम् ॥ ३६ ॥ मयातदेवनज्ञातंनारदोहमितिस्फुटम् ॥ जानाम्यद्ययथासर्वंविविक्तंनतथातदा ॥ ३७ ॥ विष्णुरुवाच ॥ पश्यनारदमायावी विलासोऽयंमहामते ॥ देहेषुसर्वजंतूनांदशाभेदाह्यनेकशः ॥ ३८ ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिश्चतुरीयादेहिनांदशा॥तथादेहांतरेप्राप्तेसंदेहःकीदृशःपुनः ॥३९ ॥ सुप्तोनरोनजानातिनशृणोतिवदत्यपि ॥ पुनःप्रबुद्धोजानातिसर्वंज्ञानमशेषतः ॥ ४० ॥ निद्रयाचाल्यतेचित्तंभवंतिस्वप्नसंभवाः ॥ नानाविधामनोभेदा मनोभावाह्यनेकशः ॥ ४१ ॥ गजोमांहंतुमायातिनशक्तोऽस्मिपलायने ॥ किंकरोमिनमेस्थानंयत्रगच्छामिसत्वरः ॥ ४२॥ मृतंपितामहंस्वप्नेपश्यतिस्व गृहागतम् ॥ संयोगस्तेनवार्ताचभोजनंसहमन्यते ॥ ४३ ॥ प्रबुद्धःखलुजानातिस्वप्नेदृष्टंसुखासुखम् ॥ स्मृत्वासर्वंजनेभ्यस्तुविस्तरात्प्रवदत्यपि ॥४४॥ स्वप्नेकोऽपिनजानातिभ्रमोऽयमितिनिश्चयः ॥ यथातथैवविभवोमायायादुर्गमःकिल ॥ ४५ ॥ नाऽहंनारदजानामिपारंपरमदुर्घटम् ॥ गुणानांकिलमा यायानैवशंभुर्नपद्मजः ॥ ४६ ॥ कोऽन्योज्ञातुंसमर्थोभून्मानतोमंदधीःपुनः ॥ मायागुणपरिज्ञानंनकस्याऽपिभवेदिह ॥ ४७ ॥ गुणत्रयकृतंसर्वंजगत्स्था वरजंगमम् ॥ विनागुणैर्नसंसारोवर्ततेकिंचिदप्यदः ॥ ४८ ॥ अहंसत्त्वप्रधानोऽस्मिरजस्तमःसमन्वितः ॥ नकदाचित्त्रिभिर्हीनोभवामिभुवनेश्वरः ॥ ४९॥ तथाब्रह्मापितातेऽत्ररजोमुख्यःप्रकीर्तितः ॥ तमःसत्त्वसमायुक्तोनताभ्यामुज्झितःकिल ॥ ५० ॥

ज्ञानंभ्रमस्थलेऽस्तीत्यर्थः ॥ तस्मिन्समयेतस्यतत्त्वंनजानातीत्यर्थः ॥ ४० ॥ स्वप्नदृष्टांतमस्मिन्नेवार्थेआह । निद्रयेति ॥ ४१ ॥ तानेवनानाविधमनोभावानाह ॥ गजोमामिति ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ जानातिस्मरतीत्यर्थः ॥ ४४ ॥ उपसंहरति । यथातथैवेति ॥ ४५ ॥ ननुमायायाएवमघटितघटनापटीयस्त्वंकीदृशमितिचेत्तन्नकोऽपिजानातीत्याह। नाऽहंनारदेति॥ गुणानां पारमित्यन्वयः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ येनज्ञेयंसगुणत्रयांतर्गतोवातदतीतोवा ॥ यदितदतीतस्तदासपरमात्मैवाऽस्तिनिर्विकारोनान्यस्तस्यचनिर्विकारत्वादघटितघटनापटीयस्त्वंतेनज्ञातुमश क्यम् ॥ यदितुगुणत्रयांतर्गतस्तदापश्चाज्जायमानस्यार्वाचीनस्यकथंतज्ज्ञानंसंभवेन्नहिपुत्रस्यापितृकृतस्वजननव्यापारस्यज्ञानसंभवस्तस्मान्नकोपिमायायावैभवंजानातीत्याह । गुणत्रयकृतं सर्वमिति ॥ ४८ ॥ तदेवोपपादयति । अहंसत्त्वेति ॥ ४९ ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तथाचश्रुतिर्मायावैभवस्यदुर्ज्ञेयत्वंदर्शयति ॥ कोअद्धावेदकइहप्रवोचत्कुतआजाताकुतइयंविसृष्टिः ॥ अर्वाग्देवाअस्यविसर्जनेनाथाकोवेदयतआबभूव ॥ इयंविसृष्टिर्यतआबभूवयदिवादधे यदिवानवेद ॥ योअस्याध्यक्षःपरमेव्योमन्सोअंगवेदयदिवानवेदेति ॥५१॥ तर्हिकिंकर्तव्यमेतत्परिज्ञानायेतिचेत्तत्राह । तस्मादिति ॥ नकिंचिन्मायावैभवपरिज्ञानेफलमास्तिकिंतर्हिसंसारो मायामयोमिथ्याभूतोमायाविनिर्मितोदुर्घटोऽपारोऽसारभूतोस्तीतिज्ञात्वातस्मिन्मोहोनकर्तव्यः ॥ किंतुयेनमायाविनामायाविशिष्टब्रह्मणानिर्मितोयंसंसारस्तांमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीं भगवतींजपेद्ध्यायेन्नमेत्तन्निष्ठस्तत्परायणएवभवेदितिभावः ॥ तदुक्तंसूतसंहितायाम् ॥ ततःसर्वंसमुत्सृज्यपूर्णांपरमसंविदम् ॥ स्वात्मनैवानुसंधायपुनस्तच्चविसर्जयेत् ॥ स्वानुभूत्यास्वयं

शिवस्तथातमोमुख्योरजःसत्त्वसमावृतः ॥ गुणत्रयविहीनस्तुनैवकोऽपिमयाश्रुतः ॥ ५१ ॥तस्मान्मोहोनकर्तव्यःसंसारेऽस्मिन्मुनीश्वर ॥ मायाविनिर्मितेऽसारेऽपारेपरमदुर्घटे ॥ ५२ ॥ दृष्टामायात्वयाऽद्यैवभुक्ताभोगाह्यनेकशः ॥ किंपृच्छसिमहाभागतस्याश्चरितमद्भुतम् ॥५३॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम० षष्ठस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ निशामयमहाराजब्रवीमिविशदाक्षरम् ॥ माहात्म्यंखलुमायायानारदात्तुमयाश्रुतम् ॥ १ ॥ मयापुनर्मुनिःपृष्टोनारदःसर्ववित्तमः ॥ श्रुत्वाकथांमुनेस्तस्यनारदेहसमुद्भवाम् ॥२॥ ब्रूहिनारदपश्चात्किंकथितंहरिणातदा॥ क्वगतश्चजगन्नाथोभवतासहमाधवः ॥ ३॥ नारदउवाच॥ इत्युक्त्वाभगवांस्तस्मिंस्तडागेऽतिमनोहरे ॥ आरुह्यगरुडंगंतुंवैकुंठेचमनोदधे ॥४॥ मामुवाचरमाकांतोयथेष्टंगच्छनारद॥ एहिवाममलोकंस्वंयथारुचितथाकुरु ॥ ५ ॥ ब्रह्मलोकंगतश्चाऽहमापृच्छ्यमधुसूदनम् ॥ भगवानपिदेवेशस्तत्क्षणाद्गरुडासनः ॥६॥ वैकुंठमगमत्तूर्णमामादिश्ययथासुखम् ॥ ततोऽहंपितृसदनंगतोयातेजनार्दने ॥ ७ ॥ चिंतयन्सकलंदुःखंसुखंचपरमाद्भुतम् ॥ गत्वाप्रणम्यपितरंस्थितोयावत्पुरःपितुः ॥ ॥८॥ तावत्पृष्टोमुनेपित्रावीक्ष्यचिंतातुरंतुमाम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ क्वगतोऽसिमहाभागकस्माच्चिंतातुरःसुत ॥९॥ स्वस्थंनैवाऽद्यपश्यामिमनस्तेमुनिसत्तम॥ केनापिवंचितोऽसित्वंदृष्टंवाकिंचिदद्भुतम् ॥ १० ॥ विषण्णंगतविज्ञानंपश्यामित्वांकथंसुत ॥ नारदउवाच ॥ इतिपृष्टस्तदापित्राबृस्यांसमुपवेश्यच ॥ ॥ ११ ॥ तमब्रुवंस्ववृत्तांतंमायाबलसमुद्भवम् ॥ वंचितोऽहंपितःकामंविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ १२ ॥ स्त्रीभावंगमितःकामंवर्षाणिसुबहून्यपि ॥ अनुभूतंमहद्दुःखंपुत्रशोकसमुद्भवम् ॥१३॥ प्रबोधितोऽहंतेनैवमृदुवाक्यामृतेनच ॥ पुनःसरोवरेस्नात्वाजातोऽहंनारदःपुमान् ॥ १४ ॥किमेतत्कारणंब्रह्मन्यन्मोहमगमंतदा ॥ विस्मृतंपूर्वविज्ञानंतन्मयस्तरसाकृतः ॥ १५ ॥ एतन्मायाबलंब्रह्मन्नजानेऽहंदुरत्ययम् ॥ ज्ञानहानिकरंजातंमूलंमोहस्यविस्फुटम् ॥ १६॥

साक्षात्स्वात्मभूतांमहेश्वरीम् ॥ पूजयेदादरेणैवपूजासापुरुषार्थदेति ॥ ५२ ॥ उपसंहरति ।दृष्टेति ॥ ५३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेषष्ठस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ षष्टिश्लोकैर्महामायामहिमासंनिगद्यते ॥ तन्नाशनेभगवतीध्यानादिकमिहोच्यते ॥ १ ॥ विष्णुनानारदायोपदेशेकृतेऽनंतरंजातंवृत्तमाह ।निशामयेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६॥ ७ ॥ ८ ॥ चिंतातुरंमांवीक्ष्यस्थितेनपित्राऽहंदृष्टइत्यर्थः ॥ मुनेइतिव्याससंबोधनम् ॥ ९ ॥ १० ॥ बृस्यामासने ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३॥१४॥ अहंमोहमगमंगतवानित्यर्थः ॥ विस्मृतंमयेतिशेषः ॥ तन्मयोमोहमयोऽहंतरसावेगेनकृतः ॥ किमस्यकारणमित्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





हेतातताभेवाऽतिदुर्घटकारिणींमायांत्वंकथंजितवानित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ कालकर्मेति ॥ मायोपादानकारणंकालकर्मादिकंनिमित्तकारणंसाधनंसामग्रीभूतंतैर्निमित्तकारणैर्वृतायुक्तामायाऽस्तीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ कालस्वभावोनियतिर्यदृच्छाभूतानियोनिःपुरुषइतिचिन्त्येतिश्वेताश्वतरे ॥ तथाचाऽनेकसामग्रीविशिष्टामायाऽतिप्रबलायतएकैकसामग्रीनाशोऽपिकेनचित्कर्तुनशक्यते कुतः पुनःसकलसामग्रीसहितायास्तस्यानाशइति ॥ २१ ॥ वयंसर्वेविमोहिताइति ॥ अज्ञानिनआवरणशक्त्याविक्षेपशक्त्याचमोहिताःवयं ज्ञानिनस्तुविक्षेपशक्त्याविमोहिताःयावद्देहधारणपर्यंतमित्यर्थः ॥ २२ ॥ कौरवनाशजंपूर्वमध्यायद्वयेनत्वयोक्तंमोहम् ॥ सुखासीनः सुखेभूमानंदेसंविद्रूपिण्यांभगवत्यामासीनः ॥ स्थितस्तन्निष्ठोभूत्वेत्यर्थः ॥ २३ ॥ कालक्षयंकुरुनजगत्तन्मोहादिकंवाऽवलोकयजीवन्मुक्तिलाभार्थंभगवत्यांसमाधिनिष्ठोभवेत्यर्थः ॥ २४ ॥ यदिसमाधिमतोऽपिकदाचित्प्रारब्धवशेनाचित्तंव्यु

अनुभूतंमयासम्यग्ज्ञातंसर्वंशुभाशुभम् ॥ कथंत्वंजितवांस्तातततमुपायंवदस्वमे ॥ १७ ॥ नारदउवाच ॥ विज्ञप्तोऽसौमयाधाताप्रीतिपूर्वमतःपरम् ॥ मामुवाचस्मितंकृत्वापितामेवासवीसुत ॥ १८ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ दुर्जयैषासुरैःसर्वैर्मुनिभिश्चमहात्मभिः ॥ तापसैर्ज्ञानयुक्तैश्चयोगिभिःपवनाशनैः ॥ १९ ॥ नाहंतांसर्वथाज्ञातुंशक्तोमायांमहाबलाम् ॥ विष्णुर्ज्ञातुंनशक्तश्चतथाशंभुरुमापतिः ॥२०॥दुर्ज्ञेयासामहामायासृष्टिस्थित्यंतकारिणी ॥कालकर्मस्वभावाद्यैर्निमित्तकारणैर्वृता॥२१॥शोकंमाकुरुमेधाविंस्तत्रमायामहाबले ॥ नचैवविस्मयःकार्योवयंसर्वेविमोहिताः ॥ २२ ॥ नारदउवाच ॥ पित्रेत्युक्तस्तदाव्यासतमापृच्छ्यगतस्मयः ॥ आगतोऽस्म्यत्रपश्यन्वैतीर्थानिचवराणिच ॥ २३ ॥ तस्मात्त्वमपिसंत्यज्यमोहंकौरवनाशजम् ॥ कालक्षयंसुखासीनःस्थानेऽस्मिन्कुरुसत्तम ॥ २४ ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ निश्चयंहृदयेकृत्वाविचरस्वयथासुखम् ॥ २५ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वानारदोराजन्गतोमांप्रतिबोध्यच ॥ अहंतच्चिंतयन्वाक्यंयदुक्तंमुनिनातदा ॥ २६ ॥ स्थितःसरस्वतीतीरेकल्पेसारस्वतेवरे ॥ कालातिवाहनायैतत्कृतंभागवतंमया ॥ ॥ २७ ॥ पुराणमुत्तमंभूपसर्वसंशयनाशनम् ॥ नानाख्यानसमायुक्तंवेदप्रामाण्यसंश्रितम् ॥ २८ ॥ संदेहोऽत्रनकर्तव्यःसर्वथानृपसत्तम ॥ यथेंद्रजालिकःकश्चित्पांचालींदारवींकरे ॥ २९ ॥ कृत्वानर्तयतेकामंस्वेच्छयावशवर्तिनीम् ॥ तथानर्तयतेमायाजगत्स्थावरजंगमम् ॥ ३० ॥ ब्रह्मादिस्तंबपर्यंतंसदेवासुरमानुषम् ॥ पंचेंद्रियसमायुक्तंमनश्चित्तानुवर्तनम् ॥ ३१ ॥ गुणास्तुकारणंराजन्सर्वेषांसर्वथात्रयः ॥ कार्यकारणसंयुक्तंभवतीतिविनिश्चयः ॥ ॥ ३२ ॥ भिन्नभिन्नस्वभावास्तेगुणामायासमुद्भवाः ॥ शांतोघोरस्तथामूढस्त्रयस्तुविविधायतः ॥ ३३ ॥

त्थितंभवेत्तदाविक्षेपोभोक्तव्यएवनतत्रोपायोस्तीत्याह । अवश्यमेवेति ॥ २५ ॥ २६ ॥ कल्पेसारस्वतेवरइति ॥ सारस्वतकल्पेजायमानाःयाःकथादेव्याविर्भावादिकास्ताःगृहीत्वामयैतद्देवीभागवतंकृतमित्यर्थः ॥ यद्वा सारस्वतकल्पेएवमयैतद्भागवतंकृतमित्यर्थः ॥ कालातिवाहनेति ॥ समाधेर्व्युत्थितस्यचित्तस्यविक्षेपबाधामाभूत्किंतुभगवतीगुणानुवर्णनेनकालोगच्छतुतदर्थमित्यर्थः ॥ तदुक्तंमात्स्ये ॥ सारस्वतस्यकल्पस्यमध्येयेस्युर्नरामराः ॥ तद्वृत्तांतोद्भवंलोकेतद्भागवतमिष्यतइति ॥ २७ ॥ २८ ॥ मायैवैतेषांसर्वभावानांकारणंसर्वस्यदृश्यमात्रस्यापिसर्वकारणमित्यत्रसंदेहःकर्तव्यइत्याह । संदेहोऽत्रनकर्तव्यइति ॥ पांचालींपुत्तलींदारवींदारुनिर्मिताम् ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ गुणास्त्विति ॥ मायागुणाएवेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ विविधास्त्रयोगुणाः ॥ प्रस्तारेकृतेत्रयाणांनवभेदाभवंतिपुनर्नवानांप्रस्तारेपुनस्तावतांप्रस्तारेएवंक्रमेणाऽनंताभेदागुणानांभवंतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एवंगुणानामनंतत्वंप्रसाध्यतेषांव्याप्त्यामायाव्याप्तिमाह । तत्समेतइति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ माधवोविष्णुरपितथैवेत्याह । माधवोऽपीति ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ मन्वादयोऽपितथैवेत्याह। सूर्यवंशोद्भवाइति ॥४५॥ यस्मादेवंतस्मान्मायाव्याप्तंमायामयमेवसर्वमित्याह । मायाधीनमिति॥यस्मादिदंसर्वंमायाधीनंतस्माद्विष्णुः सर्वज्ञःसन्कथंहयरूपंधृतवानित्यादिःसंदेहोनकर्तव्यइत्याह । तस्माद्राजन्निति ॥ सर्वोपिदेहीमायाधीनइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ननुमायायाजडत्वात्कथंजगद्वशीकर्तुंसमर्थेतिचेत्तत्राह । साचमायेति ॥ संविद्रूपेसंविद्रूपिण्यांभगवत्यांतिष्ठतितदधीनासर्वदासंविद्रूपाधीनाऽस्ति तेनसंविद्रूपेणसर्वदाजीवेप्रेरिताचाऽस्ति ॥ तथाचसंविद्रूपिण्याभगवत्याश्चेतनत्वात्तत्प्रेरितमायाधीनत्वंजगतःसंभवतीत्यर्थः ॥ ननुप्रवर्तकत्वंचाऽप्यस्यमाययानस्वभावतइतिसूतसंहितोक्तेः प्रवर्तनाशक्तिरपिमायायाएवाऽस्तिचेत्सत्यम् ॥ चेतनाश्रितत्वमेवमायायानस्वातंत्र्येणावस्थानं

तत्समेतःपुमान्नित्यंतद्विहीनःकथंभवेत् ॥ नभवत्येवसंसारेरहितस्तंतुभिःपटः ॥ ३४ ॥ तथागुणैस्त्रिभिर्हीनोनदेहीतिविनिश्चयः ॥ देवदेहोमनुष्योवातिरश्चोवानराधिप ॥ ३५ ॥ गुणैर्विरहितोनस्यान्मृद्विहीनोघटोयथा ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रस्त्रयश्चामीगुणाश्रयाः ॥ ३६॥ कदाचित्प्रीतियुक्तास्तेतथाप्रीतियुताःपुनः ॥ तथाविषादयुक्तास्तेभवंतिगुणयोगतः ॥ ३७ ॥ ब्रह्माकदाचित्सत्त्वस्थस्तदाशांतःसमाधिमान् ॥ प्रीतियुक्तोभवेत्सर्वभूतेषुज्ञानसंयुतः ॥ ॥ ३८ ॥ पुनःसत्त्वविहीनस्तुरजोगुणसमावृतः ॥ तदाभवेद्घोररूपःसर्वत्राऽप्रीतिसंयुतः ॥ ३९ ॥ यदातमोगुणाविष्टोबाहुल्येनभवेद्विधिः ॥ तदाविषादसंपन्नोमूढोभवतिनाऽन्यथा ॥ ४० ॥ माधवोऽपिसदासत्त्वसंश्रितःसर्वथाभवेत् ॥ यदाशांतःप्रीतियुक्तोभवेज्ज्ञानसमन्वितः ॥ ४१ ॥ सएवरजआधिक्यादप्रीतिसंयुतोभवेत् ॥ घोरश्चसर्वभूतेषुगुणाधीनोरमापतिः ॥ ४२ ॥ रुद्रोऽपिसत्त्वसंयुक्तःप्रीतिमाञ्छांतिमान्भवेत् ॥ रजोनिमीलितःसोऽपिघोरःप्रीतिविवर्जितः ॥ ४३ ॥ तमोगुणयुतःसोऽपिमूढोविषादयुग्भवेत् ॥ एतेयदिगुणाधीनाब्रह्मविष्णुहरादयः ॥ ४४ ॥ सूर्यवंशोद्भवास्तद्वत्सोमवंशभवाअपि॥ मन्वादयश्चयेप्रोक्ताश्चतुर्दशयुगेयुगे ॥४५ ॥ अन्येषांचैवकावार्तासंसारेऽस्मिन्नृपोत्तम ॥ मायाधीनंजगत्सर्वंसदेवासुरमानुषम् ॥ ४६ ॥ तस्माद्राजन्नकर्तव्यःसंदेहोऽत्रकदाचन ॥ देहीमायापराधीनश्चेष्टतेतद्वशानुगः ॥४७॥ साचमायापरेतत्वेसंविद्रूपेऽस्तिसर्वदा ॥ तदधीनाप्रेरिताचतेनजीवेषुसर्वदा ॥ ४८॥ ततोमायाविशिष्टांतांसंविदंपरमेश्वरीम् ॥ मायेश्वरींभगवतींसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ ४९ ॥ ध्यायेत्तथाराधयेच्चप्रणमेच्चजपेदपि ॥ तेनसासदयाभूत्वामोचयत्येवदेहिनम् ॥ ५० ॥ स्वमायांसंहरत्येवस्वानुभूतिप्रदानतः ॥ भुवनंखलुमायास्यादीश्वरीतस्यनायिका ॥ ५१ ॥

मायायाअस्ति तत्संबंधादेवतस्याश्चेतनत्वमित्यत्रैवग्रंथस्यतात्पर्यात् ॥ तथाचश्रुतिःमैत्रायणीयानाम् ॥ तमोवाइदमग्रआसीदेकंतत्परेस्यात्तत्परेणेरितंविषमत्वंप्रयातीति ॥ ४८ ॥ नन्वेतादृशमायायानिवृत्तिःकेनभविष्यतीतिचेदधिष्ठानभूतसंविद्रूपभगवत्याराधनेनेत्याह । ततोमायाविशिष्टांतामिति ॥ मायेश्वरींमायायाअंतर्यामिभूतांमायायाअधिष्ठानभूतांसंविदंभगवतीमित्यर्थः ॥ ४९ ॥ ध्यायेदिति ॥ ध्यानादिनाकिंभविष्यतितदाह ॥ तेनसासदयेति ॥ योयंबध्नातितदाराधनेनसमुक्तोभवतीतिन्यायादितिभावः ॥ ५० ॥ ननुमायातोमोचनेऽपिकुत्रचिद्वर्तमानासामायाकालांतरेबाधिष्यतएवेतिचेत्तत्राह । स्वमायांसंहरत्येवेति ॥ मायायामिथ्यात्वान्मिथ्यापदार्थस्याऽधिष्ठानेकल्पितत्वादधिष्ठानज्ञानेनरज्जुसर्पादेःकल्पितस्यनिःशेषंनाशदर्श

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नान्मायाधिष्ठानभूतस्यसंविद्रूपस्यानुभूतिः साक्षात्कारस्तत्प्रदानतः ॥ प्रदानेनानिःशेषांस्वमायांसंहरत्येवेत्यर्थः ॥ तथाचानिःशेषनाशात्कालांतरेवाधशंकानाऽस्तीतिभावः ॥ तदुक्तं सूतसंहितायाम् ॥ अधिष्ठानावशेषोहिनाशःकल्पितवस्तुनइति ॥ मायेश्वरीत्वादेवभगवत्याभुवनेश्वरीतिनामेत्याह । भुवनंखलुमायास्यादिति ॥ ५१ ॥ ननुतस्याअनुग्रहोऽप्यतिप्रयत्नसाध्योदुर्घटएवेतिचेत्तत्राह । तद्रूपेति ॥ तस्याअनुग्रहोस्तुवामावातस्याःसंविद्रूपेयदिचित्तंसक्तंतदातत्स्वरूपस्वभावेनैवसदसद्भूतयासदसद्विलक्षणयामाययाकिंभवेन्नकिमपीत्यर्थः ॥ नहिवन्हिसान्निध्येशैत्यबाधाभवति ॥ नचवन्हेस्तस्मिन्पुरुषेऽनुग्रहोऽस्ति ॥ किंतुवन्हिस्वभावएवाऽयंतद्वदत्राऽपीतिभावः ॥ ५२ ॥ ननुब्रह्मविष्ण्वादिदेवतानुग्रहेणाऽपिमायानाशोभविष्यतीतिचेत्तत्राह ॥ नान्यद्वैदेवतांतरमिति ॥ नहिरज्जुसर्पोहरिहरादिदेवताराधनेनतदनुग्रहेणाश्वमेधादिकर्मणावाकदाचिदपिनश्यतिकिंत्वधिष्ठानभूतरज्जुज्ञानादेव ॥ तद्वदत्रापिरज्जुसर्पवद्भासमानायामायायानहरिहराद्युपासनयानाशोनवाश्वमेधादिकर्मभिर्नाशः किंतुमायाधिष्ठानभूतसंविद्रूपभगवत्याराधनानुभवेनैवेतिभावः ॥ ५३ ॥ तत्रैवयुक्त्यंतरमाह । तमोराशिमिति ॥ यथातमोनाशयितुंनाद्वितीयंतमःशक्तंसमर्थंभवेत्किंतुभानुप्रभाचंद्रप्रभाविद्युत्प्रभावान्हिप्रभाएवसमर्थाभवंति तद्वदत्रापिमायांधकारनाशेमायांधकाररूपामायामयाहरिहरादयोनमायांनाशयितुंसमर्थाः किंतुस्वप्रकाशसंविद्रूपिण्येवभगवतीतिभावः ॥ ५४ ॥ यस्मादेवंतस्मात्सैवसच्चिदानंदरूपिणीभगवतीसमाराध्येत्याह । तस्मादिति ॥ ५५ ॥ उपसंहरति । सम्यगिति ॥५६॥ पूर्वार्धोऽयंपुराणस्येति ॥ तेनचपूर्वार्धोत्तरार्धभेदेनभागद्वयवादिदंपुराणमस्तीतिबोधितम् ॥ तेनचततोभागवतंप्रोक्तंभागद्वयविभूषितमित्यादित्यपुराणवचनमपिदेवीभागवतपरमेव नाविष्णुभागवतपरं ॥ विष्णुभागवतदशमस्कंधस्यपूर्वार्धोत्तरार्धभेदेनभागद्वयवत्त्वेऽपिसर्वपुराणस्यभागद्वयवत्त्वाभावात् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ग्रंथपाठफलंवदति । इदमखिलकथानामिति ॥ ६० ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्याऽस्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यांयःकृतवान्सम्यग्विशदार्थांतुनिर्मलाम् ॥ २ ॥ तिलकाख्यांतुतस्यास्तुपूर्वार्धोत्तमगाच्छुभः ॥ षष्ठस्कंधःसमाप्तोऽत्रतेनतुष्यतुपार्वती ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजश्रीलक्ष्मीगर्भजनीलकंठकृतेदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधेएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥ ॥ श्रीजगदंबार्पणमस्तु ॥

भुवनेशीततःप्रोक्तादेवीत्रैलोक्यसुंदरी ॥ तद्रूपेयदिसक्तंस्याच्चित्तंभूमिपतेसदा ॥ ५२ ॥ माययाकिंभवेत्तत्रसदसद्भूतयानृप ॥ तस्मान्मायानिरासार्थंनान्यद्वैदेवतांतरम् ॥ ५३ ॥ समर्थंतुविनादेवींसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ तमोराशिंनाशयितुंशक्तंनैवतमोभवेत् ॥ ५४॥ किंतुभानुप्रभाचंद्रविद्युद्वह्निप्रभादयः ॥ तस्मान्मायेश्वरीमंबांस्वप्रकाशांतुसंविदम् ॥ ५५ ॥ आराधयेदतिप्रीत्यामायागुणनिवृत्तये ॥ इतिसम्यग्मयाख्यातंवृत्रासुरवधादिकम् ॥५६ ॥ यत्पृष्टंराजशार्दूलकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ पूर्वार्धोऽयंपुराणस्यकथितस्तवसुव्रत ॥५७॥ यत्रदेव्यास्तुमहिमाविस्तरेणोपपादितः ॥ एतद्रहस्यंश्रीमातुर्नदेयंयस्यकस्यचित् ॥ ५८ ॥ देयंभक्तायशांतायदेवीभक्तिरतायच ॥ शिष्यायज्येष्ठपुत्रायगुरुभक्तियुतायच ॥५९॥ इदमखिलकथानांसारभूतंपुराणंनिखिलनिगमतुल्यंसत्प्रामाणानुविद्धम् ॥ पठतिपरमभावाद्यःशृणोतीहभक्त्यासभवतिधनवान्वैज्ञानवान्मानवोऽत्र ॥६०॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेषष्ठस्कंधेभगवतीमाहात्म्येएकत्रिंशोऽध्यायः॥३१॥वेदाष्टवसुभूसंख्यैः(१८८४)पद्यैर्व्यासकृतैःशुभैः॥देवीभागवतस्याऽस्यषष्ठस्कंधःसमाप्तवान् ॥१॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८,
शके १८२३, सन् १९०१ ई०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे षष्ठस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ अनंतकोटिब्रह्मांडजननीपदपंकजम् ॥ नमामियन्नतेर्नश्येद्भयंसंसारपंकजम् ॥ १ ॥ अर्धश्लोकाधिकैरष्टत्रिंशच्छ्लोकैरतः परम् ॥ सूर्यसोमोद्भवानांचकथाप्रारभ्यतेऽधुना ॥ २ ॥ पूर्वाध्यायेसूर्यवंशोद्भवास्तद्वत्सोमवंशोद्भवाअपीत्युक्तम् तत्रतामेवकथांराजापृष्टवानितिसूतआह ॥ श्रुत्वैतामिति ॥ तापसाइतिमुनिसंबोधनम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ननुकाकदंतपरीक्षावन्निरर्थकंतेषांराज्ञांचरितकथनेकिंफलमितिचेत्तत्राह । तेहिसर्वेपराशक्तीति ॥ कोऽस्तिविरक्तिभाक् नकोपीत्यर्थः ॥ देवीचरितकथनापेक्षयाऽपिदेवीभक्तचरितकथनं देव्याअतिप्रियंभवति ॥ तस्माद्धेतोर्देवीभक्तानांराज्ञांवंशयोःकथांकथयेत्यर्थः ॥ तदुक्तंदेवीपुराणे ॥ मद्भक्त्यपेक्षयाभक्तेममभक्तिस्तुसिद्धिदेति ॥ ४ ॥ ५ ॥ तथाऽन्येषामिति ॥ तत्प्र

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीभगवत्यैनमः ॥ सूतउवाच ॥ श्रुत्वैतांतापसादिव्यांकथांराजामुदान्वितः ॥ व्यासंपप्रच्छधर्मात्मापरिक्षितसुतःपुनः ॥ १ ॥ जनमेजयउवाच ॥ स्वामिन्सूर्यान्वयानांचराज्ञांवंशस्यविस्तरम् ॥ तथासोमान्वयानांचश्रोतुकामोऽस्मिसर्वथा ॥ २ ॥ कथयाऽनघसर्वज्ञकथांपापप्रणाशिनीम् ॥ चरितंभूपतीनांचविस्तराद्वंशयोर्द्वयोः ॥ ३ ॥ तेहिसर्वेपराशक्तिभक्ताइतिमयाश्रुतम् ॥ देवीभक्तस्यचरितंशृण्वन्कोऽस्तिविरक्तिभाक् ॥ ४॥ इतिराजर्षिणापृष्टोव्यासःसत्यवतीसुतः ॥ तमुवाचमुनिश्रेष्ठःप्रसन्नवदनोमुनिः ॥ ५ ॥ व्यासउवाच ॥ निशामयमहाराजविस्तराद्वदतोमम ॥ सोमसूर्यान्वयानांचतथाऽन्येषांसमुद्भवम् ॥ ६ ॥ विष्णोर्नाभिसरोजाद्वैब्रह्माऽभूच्चतुराननः ॥ तपस्तप्त्वासमाराध्यमहादेवींसुदुर्गमाम् ॥ ७ ॥ तयादत्तवरोधाताजगत्कर्तुंसमुद्यतः ॥ नाशकन्मानुषींसृष्टिंकर्तुंलोकपितामहः ॥८॥ विचिंत्यबहुधाचित्तेसृष्ट्यर्थंचतुराननः ॥ नविस्तारंजगामाऽऽशुरचितापिमहात्मना ॥ ९ ॥ "ससर्जमानसान्पुत्रान्सप्तसंख्यान्प्रजापतिः"॥ मरीचिरंगिराऽत्रिश्चवसिष्ठःपुलहःक्रतुः ॥ पुलस्त्यश्चेतिविख्याताःसप्तैतेमानसाःसुताः ॥ १० ॥ रुद्रोरोषात्समुत्पन्नोऽप्युत्संगान्नारदोऽभवत् ॥ दक्षोंगुष्ठात्तथाऽन्येपिमानसाःसनकादयः ॥ ११ ॥ वामांगुष्ठाद्दक्षपत्नीजातासर्वांगसुंदरी ॥ वीरिणीनामविख्यातापुराणेषुमहीपते ॥ १२ ॥ असिक्नीतिचनाम्नासायस्यांजातोऽथनारदः ॥ देवर्षिप्रवरःकामंब्रह्मणोमानसःसुतः ॥ १३ ॥ जनमेजयउवाच ॥ अत्रमेसंशयोब्रह्मन्यदुक्तंभवतावचः ॥ वीरिण्यांनारदोजातोदक्षादितिमहातपाः ॥१४ ॥ कथंदक्षस्यपत्न्यांतुवीरिण्यांनारदोमुनिः ॥ जातोहिब्रह्मणःपुत्रोधर्मज्ञस्तापसोत्तमः ॥ १५ ॥ विचित्रमिदमाख्यातंभवतानारदस्यच ॥ दक्षाज्जन्माऽस्यभार्यायांतद्वदस्वसविस्तरम् ॥ १६ ॥ पूर्वदेहःकथंमुक्तःशापात्कस्यमहात्मना ॥ नारदेनबहुज्ञेनकस्माज्जन्मकृतंमुने ॥ १७ ॥

संगेनाऽन्येषामपिराज्ञामित्यर्थः ॥ ६ ॥ महादेवींसुदुर्गमामिति ॥ मायाबीजंजजापेत्यर्थः ॥ तदुक्तमुमासंहितायाम् ॥ सृष्ट्यर्थंभगवान्ब्रह्मामायाबीजंपरात्परम् ॥ जजापयत्प्रसादेनसृष्टिकर्ताभवद्विभुरिति ॥ ७ ॥ ८ ॥ महात्मनाबहुधाविचिंत्यराचितासृष्टिस्तथापिचतुराननःतस्याविस्तारंनजगामेत्यन्वयः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ मानसःसुतइति ॥ यद्यप्युत्संगान्नारदोऽभवदितिपूर्वमुक्तंतथापिनारदस्यकस्मिंश्चित्कल्पेमनसोप्युद्भवात्तदभिप्रायेणमानसत्वोक्तिरितिबोध्यम् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ जन्मद्वितीयंकृतं गृहीतमित्यर्थः ॥ कस्यशापादित्यन्वयः ॥ १७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





वृद्धिहेतोर्जगतइत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ हास्यतामिति ॥ युष्मान्दृष्ट्वालोकाहसिष्यंतीत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ बालिशाइति । स्थलाभावेप्रजाःक्वस्थास्यंतीतिभावः ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ प्रजार्थमुद्यमंकर्तुमुद्यताइत्यन्वयः ॥ २८ ॥ यद्वचनंपूर्वमुक्तंतदेवप्राहेत्यन्वयः ॥ तदेववाक्यमाह । बालिशाइति ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

व्यासउवाच ॥ ब्रह्मणाऽसौसमादिष्टोदक्षःसृष्टचर्थमादितः ॥ प्रजाःसृजेतिसुभृशंवृद्धिहेतोःस्वयंभुवा ॥ १८ ॥ ततःपंचसहस्रांश्चजनयामासवीर्यवान् ॥ दक्षःप्रजापतिःपुत्रान्वीरिण्यांबलवत्तरान् ॥ १९ ॥ दृष्ट्वातान्नारदःपुत्रान्सर्वान्वर्धयिषून्प्रजाः ॥ उवाचप्रहसन्वाचंदेवर्षिःकालनोदितः ॥ २० ॥ भुवःप्रमाणमज्ञात्वासृष्टुकामाःप्रजाःकथम् ॥ लोकानांहास्यतांयूयंगमिष्यथनसंशयः ॥ २१ ॥ पृथिव्यावैप्रमाणंतुज्ञात्वाकार्यःसमुद्यमः ॥ कृतोऽसौसिद्धिमायातिनाऽन्यथेतिविनिश्चयः ॥ २२ ॥ बालिशावतयूयंवैयदज्ञात्वाभुवस्तलम् ॥ समुद्यताःप्रजाःकर्तुंकथंसिद्धिर्भविष्यति ॥ २३ ॥ व्यासउवाच ॥ नारदेनैवमुक्तास्तेहर्यश्वादैवयोगतः ॥ अन्योन्यमूचुःसहसासम्यगाहमुनिःकिल ॥ २४ ॥ ज्ञात्वाप्रमाणमुर्व्यास्तुसुखंस्रक्ष्यामहेप्रजाः ॥ इतिसंचिंत्यतेसर्वेप्रयाताःप्रेक्षितुंभुवः ॥ २५ ॥ तलंसर्वेपरिज्ञातुंवचनान्नारदस्यच ॥ प्राच्यांकेचिद्गताःकामंदक्षिणस्यांतथापरे ॥ २६ ॥ प्रतीच्यामुत्तरस्यांतुकृतोत्साहाःसमंततः ॥ दक्षःपुत्रान्गतान्दृष्ट्वापीडितस्तुशुचाभृशम् ॥ २७ ॥ अन्यानुत्पादयामासप्रजार्थंकृतनिश्चयः ॥ तेऽपितत्रोद्यताःकर्तुंप्रजार्थमुद्यमंसुताः ॥ २८ ॥ नारदःप्राहतान्दृष्ट्वापूर्वंयद्वचनंमुनिः ॥ बालिशावतयूयंवैयदज्ञात्वाभुवःकिल ॥ २९ ॥ प्रमाणंतुप्रजाःकर्तुंप्रवृत्ताःकेनहेतुना ॥ श्रुत्वावाक्यंमुनेस्तेऽपिमत्वासत्यंविमोहिताः ॥ ३० ॥ जग्मुःसर्वेयथापूर्वंभ्रातरश्चलितास्तथा ॥ तान्सुतान्प्रस्थितान्दृष्ट्वादक्षःकोपसमन्वितः ॥ ३१ ॥ शशापनारदंरोषात्पुत्रशोकसमुद्भवात् ॥ दक्षउवाच ॥ नाशितामेसुतायस्मात्तस्मान्नाशमवाप्नुहि ॥ ३२ ॥ पापेनाऽनेनदुर्बुद्धेगर्भवासंव्रजेतिच ॥ पुत्रोमेभवकामंत्वंयतोमेभ्रंशिताःसुताः ॥ ३३ ॥ इतिशप्तस्ततोजातोवीरिण्यांनारदोमुनिः ॥ षष्टिर्भूयोऽसृजत्कन्यावीरिण्यामितिनःश्रुतम् ॥ ३४ ॥ शोकंविहायपुत्राणांदक्षःपरमधर्मवित् ॥ तासांत्रयोदशप्रादात्कश्यपायमहात्मने ॥ ३५ ॥ दशधर्मायसोमायसप्तविंशतिभूपते ॥ द्वेचैवभृगवेप्रादाच्चतस्रोऽरिष्टनेमिने ॥ ३६ ॥ द्वेचैवांगिरसेकन्येतथैवांगिरसेपुनः ॥ तासांपुत्राश्चपौत्राश्चदेवाश्चदानवास्तथा ॥ ३७ ॥ जाताबलसमायुक्ताःपरस्परविरोधकाः ॥ रागद्वेषान्विताःसर्वेपरस्परविरोधिनः ॥ सर्वेमोहावृताःशूराह्यभवन्नतिमायिनः ॥ ३८ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ द्वेकन्येअंगिरसेकृशाश्वायददावित्यर्थः ॥ तथैवांगिरसेपुनरिति ॥ पुनर्द्वेअवशिष्टेकन्येअंगिरसेतन्नाम्नेमुनयेददौ ॥ तदुक्तंकूर्मपुराणे ॥ सप्तविंशतिसोमायचतस्रोऽरिष्टनेमिने ॥ द्वेचैवभृगुपुत्रायद्वेकृशाश्वायधीमते ॥ द्वेचैवांगिरसेतद्वत्तेषांवक्ष्येऽथविस्तरमिति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पंचषष्टिश्लोकवर्यैःसूर्यसोमान्वयस्यच ॥ विस्तारोवर्ण्यतेसम्यग्देवीभक्तियुतस्यच ॥ १ ॥ सूर्यसोमवंशविस्तारं राजापृच्छाति । ममाख्याहीति ॥ १ ॥ २ ॥ ममाऽऽश्रमेआजगामेतिव्यासोक्तिः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सप्तमेऽस्मिन्मनोःकुलेइति ॥ वैवस्वतमनोरित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ समासव्यासौ संक्षेपविस्तारौ कुत्रचित्संक्षेपःकुत्रचिद्विस्तारः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ इक्ष्वाकुःपूर्वजातोयेषांनवानांतेनवपुत्रास्तस्यमनोर्वैवस्वतस्याऽभवन् ॥ १७ ॥ तेषांनामान्याह । तेषामिति ॥ १८ ॥ प्रांशोरेवपुराणां

जनमेजयउवाच ॥ ममाऽऽख्याहिमहाभागराज्ञांवंशंसुविस्तरम् ॥ सूर्यान्वयप्रसूतानांधर्मज्ञानांविशेषतः ॥ १ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुभारतवक्ष्यामिरविवंशस्यविस्तरम् ॥ यथाश्रुतंमयापूर्वंनारदाद्दृषिसत्तमात् ॥ २ ॥ एकदानारदःश्रीमान्सरस्वत्यास्तटेशुभे ॥ आजगामाऽऽश्रमेपुण्येविचरन्स्वेच्छयामुनिः ॥ ३ ॥ प्रणम्यशिरसापादौतस्याऽग्रेसंस्थितस्तदा ॥ ततस्तस्याऽऽसनंदत्वाकृत्वाऽर्हणमथाऽऽदरात् ॥ ४ ॥ विधिवत्पूजयित्वातमुक्तवान्वचनंत्विदम् ॥ पावितोहंमुनिश्रेष्ठपूज्यस्यागमनेनवै ॥ ५ ॥ कथांकथयसर्वज्ञराज्ञांचरितसंयुताम् ॥ राजानोयेसमाख्याताःसप्तमेऽस्मिन्मनोःकुले ॥ ६ ॥ तेषामुत्पत्तिरतुलाचरितंपरमाद्भुतम् ॥ श्रोतुकामोऽस्म्यहंब्रह्मन्सूर्यवंशस्यविस्तरम् ॥ ७ ॥ समाख्याहिमुनिश्रेष्ठसमासव्यासपूर्वकम् ॥ इतिपृष्टोमयाराजन्नारदःपरमार्थवित् ॥ ८ ॥ उवाचप्रहसन्प्रीतःसमाभाष्यमुदाऽन्वयम् ॥ नारदउवाच ॥ शृणुसत्यवतीसूनोराज्ञांवंशमनुत्तमम् ॥ ९ ॥ पावनंकर्णसुखदंधर्मज्ञानादिभिर्युतम् ॥ ब्रह्मापूर्वंजगत्कर्तानाभिपंकजसंभवः ॥ १० ॥ विष्णोरितिपुराणेषुप्रसिद्धःपरिकीर्तितः ॥ सर्वज्ञःसर्वकर्तासौस्वयंभूःसर्वशक्तिमान् ॥ ११ ॥ तपस्तप्त्वासविश्वात्मावर्षाणामयुतंपुरा ॥ सृष्टिकामःशिवांध्यात्वाप्राप्यशक्तिमनुत्तमाम् ॥ १२ ॥ पुत्रानुत्पादयामासमानसाञ्छुभलक्षणान् ॥ मरीचिःप्रथितस्तेषामभवत्सृष्टिकर्मणि ॥ १३ ॥ तस्यपुत्रोऽतिविख्यातःकश्यपःसर्वसंमतः ॥ त्रयोदशैवतस्याऽऽसन्भार्यादक्षसुताःकिल ॥ १४ ॥ देवाःसर्वेसमुत्पन्नादैत्यायक्षाश्चपन्नगाः ॥ पशवःपक्षिणश्चैवतस्मात्सृष्टिस्तुकाश्यपी ॥ १५ ॥ देवानांप्रथितःसूर्योविवस्वान्नामतस्यतु ॥ तस्यपुत्रःसविख्यातोवैवस्वतमनुर्नृपः ॥ १६ ॥ तस्यपुत्रस्तथेक्ष्वाकुःसूर्यवंशविवर्धनः ॥ नवाऽभवन्सुतास्तस्यमनोरिक्ष्वाकुपूर्वजाः ॥ १७ ॥ तेषांनामानिराजेंद्रशृणुष्वैकमनाःपुनः ॥ इक्ष्वाकुरथनाभागोधृष्टःशर्यातिरेवच ॥ १८ ॥ नरिष्यंतस्तथाप्रांशुर्नृगोदिष्टश्चसप्तमः ॥ करूषश्चपृषध्रश्चनवैतेमानवाःस्मृताः ॥ १९ ॥ इक्ष्वाकुस्तुमनोःपुत्रःप्रथमःसमजायत ॥ तस्यपुत्रशतंचाऽऽसीज्ज्येष्ठोविकुक्षिरात्मवान् ॥ २० ॥ नवानांवंशविस्तारंसंक्षेपेणनिशामय ॥ शूराणांमनुपुत्राणांमनोरंतरजन्मनाम् ॥ २१ ॥ नाभागस्यतुपुत्रोभूदंबरीषःप्रतापवान् ॥ धर्मज्ञःसत्यसंधश्चप्रजापालनतत्परः ॥ २२ ॥ धृष्टात्तुधार्ष्टकंक्षत्रंब्रह्मभूतमजायत ॥ संग्रामकातरंसम्यग्ब्रह्मकर्मरतंतथा ॥ २३ ॥

तरकेविरितिसंज्ञा ॥ नवैतइति ॥ इक्ष्वाकुरहितानव तत्सहितास्तुदशैवेतिबोध्यम् ॥ कूर्मपुराणेतुनवैवोक्ताः ॥ १९ ॥ पुत्रशतमध्येज्येष्ठपुत्रोविकुक्षिरित्यर्थः ॥ २० ॥ नवानामिति ॥ नवानांपुत्राणांमध्येकेषांचिदित्यर्थः ॥ सर्वेषांवंशाकथनात् ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २४ ॥ २५ ॥ रविपुत्राभ्यामिति ॥ अश्विनीकुमाराभ्यांविहितोनेत्रयुक्तःकृतइत्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ परिग्रहाःपरिगृहीताविवाहिताइत्यर्थः ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ दात्यूहःकालकंठकः ॥ पुष्कराह्वस्तुसारसइत्यमरः ॥ चंचरीकोभ्रमरः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ क्रमुकःपूगवृक्षः ॥ कांचनद्रुमोभाषयाकचनारइतिप्रसिद्धोऽ

शर्यातेस्तनयश्चाऽभूदानर्तोनामविश्रुतः ॥ सुकन्याचतथापुत्रीरूपलावण्यसंयुता ॥ २४ ॥ च्यवनायसुतादत्ताराज्ञाप्यंधायसुंदरी ॥ मुनिःसुलोचनो
जातस्तस्याःशीलगुणेनह ॥ २५ ॥ विहितोरविपुत्राभ्यामश्विभ्यामितिनःश्रुतम् ॥ जनमेजयउवाच ॥ संदेहोऽयंमहान्ब्रह्मन्कथायांकथितस्त्वया ॥
॥ २६ ॥ यद्राज्ञामुनयेंधायदत्तापुत्रीसुलोचना ॥ कुरूपागुणहीनावानारीलक्षणवर्जिता ॥ २७ ॥ पुत्रीयदाभवेद्राजातदांधायप्रयच्छति ॥ ज्ञात्वांधंसुमु
खींकस्माद्दत्तवान्नृपसत्तमः ॥ २८ ॥ कारणंब्रूहिमेब्रह्मन्ननुग्राह्योऽस्मिसर्वदा ॥ सूतउवाच ॥ इतिराज्ञोवचःश्रुत्वापरिक्षितसुतस्यवै ॥ २९ ॥ द्वैपायनःप्र
सन्नात्मातमुवाचहसन्निव ॥ व्यासउवाच ॥ वैवस्वतसुतःश्रीमाञ्छर्यातिर्नामपार्थिवः ॥ ३० ॥ तस्यस्त्रीणांसहस्राणिचत्वार्यासन्परिग्रहाः ॥ राजपुत्र्यः
सरूपाश्चसर्वलक्षणसंयुताः ॥ ३१ ॥ पत्न्यःप्रेमयुताःसर्वाःप्रियाराज्ञःसुसंमताः ॥ एकापुत्रीतुतासां वैसुकन्यानामसुंदरी ॥ ३२ ॥ पितुःप्रियाचमातॄणां
सर्वासांचारुहासिनी ॥ नगरान्नातिदूरेभूत्सरोमानससन्निभम् ॥३३॥ बद्धसोपानमार्गंचस्वच्छपानीयपूरितम् ॥ हंसकारंडवाकीर्णंचक्रवाकोपशोभितम्॥
॥ ३४ ॥ दात्यूहसारसाकीर्णंसर्वपक्षिगणावृतम् ॥ पंचधाकमलोपेतंचंचरीकसुसेवितम् ॥ ३५ ॥ पार्श्वतश्चद्रुमाकीर्णंवेष्टितंपादपैःशुभैः ॥ सालैस्तमाले
सरलैःपुन्नागाशोकमंडितम् ॥ ३६ ॥ वटाश्वत्थकदंबैश्चकदलीखंडराजितम् ॥ जंबीरैर्बीजपूरैश्चखर्जूरैःपनसैस्तथा ॥ ३७ ॥ क्रमुकैर्नारिकेलैश्चकेतकैः
कांचनद्रुमैः ॥ यूथिकाजालकैःशुभ्रैःसंवृतंमल्लिकागणैः ॥ ३८ ॥ जंब्वाम्रतिंतिणीभिश्चकरंजकुटकावृतम् ॥ पलाशैर्निंबखदिरबिल्वामलकमंडितम् ॥
॥ ३९ ॥ बभूवकोकिलारावकेकास्वनविराजितम् ॥ तत्समीपेशुभेदेशेपादपानांगणावृते ॥४० ॥ भार्गवश्च्यावनःशांतस्तापसःसंस्थितोमुनिः ॥ ज्ञात्वा
ऽसौविजनंस्थानंतपस्तेपेसमाहितः ॥ ४१ ॥ कृत्वादृढासनंमौनमाधायजितमारुतः ॥ इंद्रियाणिचसंयम्यत्यक्ताहारस्तपोनिधिः ॥ ४२ ॥ जलपानादि
रहितोध्यायन्नास्तेपरांबिकाम् ॥ सवल्मीकोभवद्राजँल्लताभिःपरिवेष्टितः ॥ ४३ ॥ कालेनमहताराजन्समाकीर्णःपिपीलिकैः ॥ तथाससंवृतोधीमान्मृ
त्पिंडइवसर्वतः ॥ ४४ ॥ कदाचित्समहीपालःकामिनीगणसंवृतः ॥ आजगामसरोराजन्विहर्तुमिदमुत्तमम् ॥ ४५ ॥ शर्यातिःसुंदरीवृंदसंयुतःसलिले
ऽमले ॥ क्रीडासक्तोमहीपालोबभूवकमलाकरे ॥ ४६ ॥ सुकन्यावनमासाद्यविजहारसखीवृता ॥ सुमनांसिविचिन्वंतीचञ्चलाचंचलोपमा ॥ ४७ ॥

स्ति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ भार्गवोभृगुपुत्रः ॥ ४१ ॥४२॥ परांबिकांसच्चिदानंदरूपिणींभगवतींध्यायन्नास्तेइत्यर्थः ॥ तस्यैवंभगवतींध्यायतःशरीरोपरिवल्मीकमभवदित्याह । सव
ल्मीकइति ॥ ४३ ॥ मृत्पिंडइवाऽऽसेत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ चंचलोपमाविद्युत्समाना ॥ ४७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

चंक्रममाणागमनंकुर्वती ॥ समासदत्प्राप्तवती ॥ ४८ ॥ ज्योतिषीनेत्रस्थे ॥ समाधिकालेनेत्रयोरुन्मीलनस्यसत्त्वात् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ मुनिनातस्मिन्नेवकालेसमाधेर्व्युत्थितेनमुनिने त्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः

सर्वाभरणसंयुक्तारणच्चरणनूपुरा ॥ चंक्रममाणावल्मीकंच्यवनस्यसमासदत् ॥ ४८ ॥ क्रीडासक्तोपविष्टासावल्मीकस्यसमीपतः ॥ ददर्शचाऽस्यरंध्रेवैख द्योतइवज्योतिषी ॥ ४९ ॥ किमेतदितिसंचिंत्यसमुद्धर्तुमनोदधे ॥ गृहीत्वाकंटकंतीक्ष्णंत्वरमाणाकृशोदरी ॥ ५० ॥ सादृष्टामुनिनावालासमीपस्थाकृ तोद्यमा ॥ विचरंतीसुकेशांतामन्मथस्येवकामिनी ॥५१॥ तांवीक्ष्यसुदतींतत्रक्षामकंठस्तपोनिधिः ॥ तामभाषतकल्याणींकिमेतदितिभार्गवः ॥ ५२ ॥ दूरंगच्छविशालाक्षितापसोऽहंवरानने ॥ माभिंदस्वाद्यवल्मीकंकंटकेनकृशोदरि ॥ ५३ ॥ तेनेदंप्रोच्यमानाऽपिसाचाऽस्यनशृणोतिवै ॥ किमुखल्विद मित्युक्त्वानिर्विभेदाऽस्यलोचने ॥ ५४ ॥ दैवेननोदिताभित्त्वाजगामनृपकन्यका ॥ क्रीडंतीशंकमानासाकिंकृतंतुमयेतिच ॥५५॥ चुक्रोधसतथाविद्धने त्रःपरममन्युमान् ॥ वेदनाभ्यर्दितःकामंपरितापंजगामह ॥ ५६ ॥ शकृन्मूत्रनिरोधोभूत्सैनिकानांतुतत्क्षणान् ॥ विशेषेणतुभूपस्यसामात्यस्यसमंततः ॥ ॥ ५७ ॥ गजोष्ट्रतुरगाणांचसर्वेषांप्राणिनांतदा॥ततोरुद्धेशकृन्मूत्रेशर्यातिर्दुःखितोऽभवत् ॥ ५८ ॥ सैनिकैःकथितंतस्मैशकृन्मूत्रनिरोधनम् ॥ चिंतया मासभूपालःकारणंदुःखसंभवे ॥ ५९ ॥ विचिंत्याऽऽहततोराजासैनिकान्स्वजनांस्तथा ॥ गृहमागत्यचिंतार्तःकेनेदंदुष्कृतंकृतम् ॥ ६० ॥ सरसःपश्चिमे भागेवनमध्येमहातपाः ॥ च्यवनस्तापसस्तत्रतपश्चरतिदुश्चरम् ॥ ६१ ॥ केनाऽप्यपकृतंतत्रतापसेऽग्निसमप्रभे ॥ तस्मात्पीडासमुत्पन्नासर्वेषामितिनिश्च यः ॥ ६२ ॥ तपोवृद्धस्यवृद्धस्यवरिष्ठस्यविशेषतः ॥ केनाप्यपकृतंमन्येभार्गवस्यमहात्मनः ॥६३॥ ज्ञातंवायदिवाऽज्ञातंतस्येदंफलमुत्तमम् ॥ कैश्चदु ष्टैः कृतंतस्यहेलनंतापसस्यह ॥ ६४ ॥ इतिपृष्टास्तमूचुस्तेसैनिकावेदनार्दिताः ॥ मनोवाक्कायजनितंनविद्मोऽपकृतंवयम् ॥ ६५ ॥ ॥इतिश्रीदेवीभागव तेमहापुराणेसप्तमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिपप्रच्छतान्सर्वान्राजाचिंताकुलस्तथा ॥ पर्यपृच्छत्सुहृद्वर्गंसाम्नाचोग्रत याऽपिच ॥ १ ॥ पीडयमानंजनंवीक्ष्यपितरंदुःखितंतथा॥विचिंत्यशूलभेदंसासुकन्याचेदमब्रवीत् ॥२॥ वनेमयापितस्तत्रवल्मीकोवीरुधावृतः ॥ क्रीडं त्यासुदृढोदृष्टश्छिद्रद्वयसमन्वितः ॥३॥ तत्रखद्योतवद्दीप्तज्योतिषीवीक्षितेमया ॥ सूच्याविद्धेमहाराजपुनःखद्योतशंकया ॥४॥ जलक्लिन्नातदासूचीमयादृ ष्टापितःकिल ॥ हाहेतिचश्रुतःशब्दोमंदोवल्मीकमध्यतः ॥५॥ तदाहंविस्मिताराजन्किमेतदितिशंकया ॥ नजानेकिंमयाविद्धंतस्मिन्वल्मीकमंडले॥६॥

॥ २ ॥ छ ॥ अर्धाधिकैश्चतुःषष्टिपद्यैःपुत्रीसुकन्यका ॥ च्यवनायमुदादत्तानृपेणेतितुकथ्यते ॥ १ ॥ तान्सैनिकान्राजापृष्ट्वाऽनंतरंसुहृद्वर्गंपप्रच्छेत्याह। इतिपप्रच्छेति ॥ साम्नाशांत्या उग्रतयाक्रोधेन ॥ १ ॥ वीरुधावृतोवृक्षौषध्यावृतः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ननुत्वयाशापोनदत्तस्तर्हिकिमित्येतादृशीनिष्कारणादशाजातेतिचेत्तत्राह । अपराधंपरंकृत्वेति ॥ शिवोऽपियदित्राताभवति तथापिदेवीभक्तस्याऽपराधंकृत्वाकोजनःसुखंलभेत नकोऽपीत्यर्थः ॥ देवीभक्तापराधस्यदुःखदातृत्वंस्वभावएव नतुकारणांतरंविद्यतइतिभावः ॥ तदुक्तंमुंडमालायाम् ॥ शाक्तान्हिंसांति

राजाश्रुत्वातुशर्यातिःसुकन्यावचनंमृदु ॥ मुनेस्तद्धेलनंज्ञात्वावल्मीकंक्षिप्रमभ्यगात् ॥ ७ ॥ तत्राऽपश्यत्तपोवृद्धंच्यवनंदुःखितंभृशम् ॥ स्फोटयामास वल्मीकंमुनिंदेहावृतंभृशम् ॥ ८ ॥ प्रणम्यदंडवद्भूमौराजातंभार्गवंप्रति ॥ तुष्टावविनयोपेतस्तमुवाचकृतांजलिः ॥ ९ ॥ पुत्र्याममहाभागक्रीडंत्यादुष्कृतं कृतम् ॥ अज्ञानाद्बालयाब्रह्मन्कृतंतत्क्षंतुमर्हसि ॥ १० ॥ अक्रोधनाहिमुनयोभवंतीतिमयाश्रुतम् ॥ तस्मात्त्वमपिबालायाःक्षंतुमर्हसिसाम्प्रतम्॥ ११ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यच्यवनोवाक्यमब्रवीत् ॥ विनयोपनतंदृष्ट्वाराजानंदुःखितंभृशम् ॥ १२ ॥ च्यवनउवाच ॥ राजन्नाऽहंकदाचिद्वैकरोमिक्रोधमण्वपि ॥ नमयाऽद्यैवशप्तस्त्वंदुहित्रापीडनेकृते ॥ १३ ॥ नेत्रेपीडासमुत्पन्नाममचाऽद्यनिरागसः ॥ तेनपापेनजानामिदुःखितस्त्वंमहीपते ॥ ॥ १४ ॥ अपराधंपरंकृत्वादेवीभक्तस्यकोजनः ॥ सुखंलभेतयदपिभवेत्राताशिवःस्वयम् ॥ १५ ॥ किंकरोमिमहीपालनेत्रहीनोजरावृतः ॥ अंधस्यपरिचर्याचकःकरिष्यतिपार्थिव ॥ १६ ॥ राजोवाच ॥ सेवकाबहवःसेवांकरिष्यंतितवाऽनिशम् ॥ क्षमस्वमुनिशार्दूलस्वल्पक्रोधाहितापसाः ॥ १७ ॥ च्यवनउवाच ॥ अंधोऽहंनिर्जनोराजंस्तपस्तप्तुंकथंक्षमः ॥ त्वदीयाःसेवकाःकिंतेकरिष्यंतिममप्रियम् ॥ १८ ॥ क्षमापयसिचेन्मांत्वंकुरुमेवचनंनृप ॥ देहिमेपरिचर्यार्थंकन्यांकमललोचनाम् ॥ १९ ॥ तुष्येऽनयामहाराजपुत्र्यातवमहामते ॥ करिष्यामितपश्चाऽहंसामेसेवांकरिष्यति ॥ २० ॥ एवंकृतेसुखंमेस्यात्तव चैवभविष्यति ॥ संतुष्टेमयिराजेंद्रसैनिकानांनसंशयः ॥ २१ ॥ विचिंत्यमनसाभूपकन्यादानंसमाचर ॥ नचाऽत्रदूषणंकिंचित्तापसोऽहंयतव्रतः ॥ २२ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ शर्यातिर्वचनंश्रुत्वामुनेश्चिंतातुरोऽभवत् ॥ नदास्येऽप्यथवादास्येकिंचिन्नोवाचभारत ॥ २३ ॥ कथमंधायवृद्धायकुरूपायसुतामिमाम् ॥ देवकन्योपमांदत्वासुखीस्यामात्मसंभवाम् ॥ २४ ॥ कोवाऽऽत्मनःसुखार्थायपुत्र्याःसंसारजंसुखम् ॥ हरतेऽल्पमतिःपापोजानन्नपिशुभाशुभम् ॥ ॥ २५ ॥ प्राप्यसाच्यवनंसुभ्रूःपंचबाणशरार्दिता ॥ अंधंवृद्धंपतिंप्राप्यकथंकालंनयिष्यति ॥ २६ ॥ यौवनेदुर्जयःकामोविशेषेणसुरूपया ॥ आत्मतुल्यंपतिंप्राप्यकिमुवृद्धंविलोचनम् ॥ २७ ॥ गौतमंतापसंप्राप्यरूपयौवनसंयुता ॥ अहल्यावासवेनाऽऽशुवंचितावरवर्णिनी ॥ २८ ॥ शप्ताचपतिनापश्चाज्ज्ञात्वाधर्मविपर्ययम् ॥ तस्माद्भवतुमेदुःखंनददामिसुकन्यकाम् ॥ २९ ॥ इतिसंचिंत्यशर्यातिर्विमनाःस्वगृहंययौ ॥ सचिवांश्चसमादायमंत्रंचक्रेऽतिदुःखितः ॥ ३० ॥

गर्जतिनिंदंतिवहुजल्पकाः ॥ छिनत्तितेषांदेवेशीशिरांसिहरवल्लभेति ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ यौवनेइति ॥ आत्मतुल्यमात्मानुरूपमपिपतिंप्राप्यकामोदुर्जयोऽस्तितदाविलोचनमंधंवृद्धंपतिंप्राप्य कामोदुर्जयोस्तीतिकिमुवक्तव्यं सर्वथैवदुर्जयइतिभावः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

भोमंत्रिणोब्रुवंत्वद्यकिंकर्तव्यंमयाऽधुना ॥ पुत्रीदेयाऽथविप्रायभोक्तव्यंदुःखमेववा ॥ ३१ ॥ विचारयध्वंमिलिताहितंस्यान्ममवैकथम् ॥ मंत्रिणऊचुः ॥ किंब्रूमोऽस्मिन्महाराजसंकटेऽतिदुरासदे ॥ ३२ ॥ दुर्भगायसुकन्यैषाकथंदेयाऽतिसुंदरी ॥ व्यासउवाच ॥ तदाचिंताकुलंवीक्ष्यपितरंमंत्रिणस्तदा ॥ ३३ ॥ सुकन्यात्विंगितंज्ञात्वाप्रहस्येदमुवाचह ॥ पितःकस्माद्भवानद्यचिंताव्याकुलितेंद्रियः ॥ ३४ ॥ मत्कृतेदुःखसंविग्नोविषण्णवदनोऽसिवै ॥ अहंगत्वामुनिंतत्रसमाश्वास्यभयार्दितम् ॥ ३५ ॥ करिष्यामिप्रसन्नंतमात्मदानेनवैपितः ॥ इतिराजावचःश्रुत्वाभाषितंयत्सुकन्यया ॥ ३६ ॥ तामुवाचप्रसन्नात्मासचिवानांचशृण्वताम् ॥ कथंपुत्रित्वमंधस्यपरिचर्यांवनेऽबला ॥ ३७ ॥ करिष्यसिजरार्तस्यक्रोधनस्यविशेषतः ॥ कथमंधायचानेनरूपेणरतिसन्निभाम् ॥ ३८ ॥ ददामिजरयाग्रस्तदेहायसुखवांछया ॥ पित्रापुत्रीप्रदातव्यावयोज्ञातिबलायच ॥ ३९ ॥ धनधान्यसमृद्धायनाऽधनायकदाचन ॥ क्वतेरूपंविशालाक्षिक्वाऽसौवृद्धोवनेचरः ॥ ४० ॥ कथंदेयामयापुत्रीतस्मैचाऽतिवरायच ॥ उटजेनियतंवासोयस्यनित्यंमनोहरे ॥ ४१ ॥ कथमंबुजपत्राक्षिकल्पनीयोमयातव ॥ मरणंमेवरंप्राप्तंसैनिकानांतथैवच ॥ ४२ ॥ नतेप्रदानमंधायरोचतेपिकभाषिणि ॥ भवितव्यंभवत्येवधैर्यंनैवत्यजाम्यहम् ॥ ४३ ॥ सुस्थिराभवसुश्रोणिनदास्येंधायकर्हिचित् ॥ राज्यंतिष्ठतुवायातुदेहोऽयंचतथैवमे ॥ ४४ ॥ नत्वांदास्याम्यहंतस्मैनेत्रहीनायबालिके ॥ सुकन्यातंतदाप्राहश्रुत्वातद्वचनंपितुः ॥ ४५ ॥ प्रसन्नवदनातीवस्नेहयुक्तमिदंवचः ॥ सुकन्योवाच ॥ नमेचिंतापितःकार्यादेहिमांमुनयेऽधुना ॥ ४६ ॥ सुखंभवतुसर्वेषांलोकानांमत्कृतेनहि ॥ सेवयिष्यामिसंतुष्टापतिंपरमपावनम् ॥ ४७ ॥ भक्त्यापरमयाचापिवृद्धंचविजनेवने ॥ सतीधर्मपराचाऽहंचरिष्यामिसुसंमतम् ॥ ४८ ॥ नभोगेच्छाऽस्तिमेतातस्वस्थंचित्तंममाऽनघ ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वाभाषितंतस्यामंत्रिणोविस्मयंगताः ॥ ४९ ॥ राजाचपरमप्रीतोजगाममुनिसन्निधौ ॥ गत्वाप्रणम्यशिरसातमुवाचतपोधनम् ॥ ५० ॥ स्वामिन्गृहाणपुत्रींमेसेवार्थंविधिवद्विभो ॥ इत्युक्त्वाऽस्मैददौपुत्रींविवाहविधिनानृपः ॥ ५१ ॥ प्रतिगृह्यमुनिःकन्यांप्रसन्नोभार्गवोऽभवत् ॥ पारिबर्हंनजग्राहदीयमानंनृपेणह ॥ ५२ ॥ कन्यामेवाऽग्रहीत्कामंपरिचर्यार्थमात्मनः ॥ प्रसन्नेऽस्मिन्मुनौजातंसैनिकानांसुखंतदा ॥ ५३ ॥ राज्ञश्चपरमाल्हादःसंजातस्तत्क्षणादपि ॥ दत्त्वापुत्रींयदाराजागमनायगृहंप्रति ॥ ५४ ॥ मतिंचकारतन्वंगीतदोवाचनृपंसुता ॥ सुकन्योवाच ॥ गृहाणममवासांसिभूषणानिचमेपितः ॥ ५५ ॥ वल्कलंपरिधानायप्रयच्छाजिनमुत्तमम् ॥ वेषंतुमुनिपत्नीनांकृत्वातपसिसेवनम् ॥ ५६ ॥

॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ५७ ॥ चरिष्यामिसेवांकरिष्यामिपत्युः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ७ ॥ अर्धाधिकैःपंच पंचाशद्भिःपद्यैरतःपरम् ॥ सुकन्यादेवभिषजोःसंवादश्चाऽत्रकथ्यते ॥ १ ॥ च्यवनायदत्तायाःसुकन्यायाःसमाचारमाह ॥ गतेराजनीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ बृस्यामासनेअग्रेप्रथमम्

करिष्यामितथातातयथातेकीर्तिरच्युता ॥ भविष्यतिभुवःपृष्ठेतथास्वर्गेरसातले ॥ ५७ ॥ परलोकसुखायाऽहंचरिष्यामिदिवानिशम् ॥ दत्त्वांधायचवृद्धायसुंदरींयुवतींतुमाम् ॥ ५८ ॥ चिंतात्वयानकर्तव्याशीलनाशसमुद्भवा ॥ अरुंधतीवसिष्ठस्यधर्मपत्नीयथाभुवि ॥ ५९ ॥ तथैवाऽहंभविष्यामिनाऽत्रकार्याविचारणा ॥ अनसूयायथासाध्वीभार्याऽत्रेःप्रथिताभुवि ॥ ६० ॥ तथैवाऽहंभविष्यामिपुत्रीकीर्तिकरीतव ॥ सुकन्यावचनंश्रुत्वाराजापरमधर्मवित् ॥ ६१ ॥ दत्त्वाऽजिनंरुरोदाऽऽशुवीक्ष्यतांचारुहासिनीम् ॥ त्यक्त्वाभूषणवासांसिमुनिवेषधरांसुताम् ॥ ६२ ॥ विवर्णवदनोभूत्वास्थितस्तत्रैवपार्थिवः ॥ राज्ञ्यःसर्वाः सुतांदृष्ट्वावल्कलाजिनधारिणीम् ॥ ६३ ॥ रुरुदुर्भृशशोकार्तावेपमानाइवाऽभवन् ॥ तामापृच्छ्यमहीपालोमंत्रिभिःपरिवारितः ॥ ययौस्वनगरंराजन्मुक्त्वापुत्रींशुचाऽर्पिताम् ॥ ६४ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ गतेराजनिसावालापतिसेवापरायणा ॥ बभूवचतथाऽग्नीनां सेवनेधर्मतत्परा ॥ १ ॥ फलान्यादायस्वादूनिमूलानिविविधानिच ॥ ददौसामुनयेबालापतिसेवापरायणा ॥ २ ॥ पतितप्तोदकेनाऽऽशुस्नापयित्वामृगत्वचा ॥ परिवेष्टयशुभायांतुबृस्यांस्थापितवत्यपि ॥ ३ ॥ तिलान्यवकुशानग्रेपरिकल्प्यकमंडलुम् ॥ तमुवाचनित्यकर्मकुरुष्वमुनिसत्तम ॥ ४ ॥ तमुत्थाप्यकरेकृत्वासमाप्तेनित्यकर्मणि ॥ बृस्यांवासंस्तरेबालाभर्तारंसंन्यवेशयत् ॥ ५ ॥ पश्चादानीयपक्वानिफलानिचनृपात्मजा ॥ भोजयामासच्यवनंनीवारान्नंसुसंस्कृतम् ॥ ६ ॥ भुक्तवंतंपतितृप्तंदत्त्वाऽऽचमनमादरात् ॥ पश्चाच्चपूगंपत्राणिददौचाऽऽदरसंयुता ॥ ७ ॥ गृहीतमुखवासंतंसंवेश्यचशुभासने ॥ गृहीत्वाज्ञांशरीरस्यचकारसाधनंततः ॥ ८ ॥ फलाहारंस्वयंकृत्वापुनर्गत्वाचसन्निधौ ॥ प्रोवाचप्रणयोपेताकिमाज्ञापयसेप्रभो ॥ ९ ॥ पादसंवाहनंतेऽद्यकरोमियदिमन्यसे ॥ एवंसेवापरानित्यंबभूवपतितत्परा ॥ १० ॥ सायंहोमावसानेसाफलान्याहृत्यसुंदरी ॥ अर्पयामासमुनयेस्वादूनिचमृदूनिच ॥ ११ ॥ ततः शेषाणिबुभुजेप्रेमयुक्तातदाज्ञया ॥ सुस्पर्शास्तरणंकृत्वाशाययामासतंमुदा ॥ १२ ॥ सुप्तेसुखंप्रियेकांतापादसंवाहनंतदा ॥ चकारपृच्छतीधर्मंकुलस्त्रीणांकृशोदरी ॥ १३ ॥ पादसंवाहनंकृत्वानिशिभक्तिपरायणा ॥ निद्रितंचमुनिंज्ञात्वासुष्वापचरणांतिके ॥ १४ ॥ शुचौप्रतिष्ठितंवीक्ष्यतालवृंतेनभामिनी ॥ कुर्वाणाशीतलंवायुंसिषेवेस्वपतितदा ॥ १५ ॥

॥ ४ ॥ ५ ॥ भोजयामासेति ॥ भुजधातोःप्रत्यवसानार्थत्वाद्विकर्मकत्वम् ॥ ६ ॥ पूगंक्रमुकं पत्राणिनागवल्लीदलानि ॥ ७ ॥ शरीरस्यस्वशरीरस्य ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ रविजौसूर्यजौ ॥ २६ ॥ २७ ॥ नासत्यावश्विनौ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ अनावृतावनुपा

हेमंतेकाष्ठसंभारंकृत्वाऽग्निज्वलनंपुरः ॥ स्थापयित्वातथाऽपृच्छत्सुखंतेऽस्तीतिचाऽसकृत् ॥ १६ ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेचोत्थायजलंपात्रंचमृत्तिकाम् ॥ समर्पयि त्वाशौचार्थंसमुत्थाप्यपतिंप्रिया ॥ १७ ॥ स्थानाद्दूरेचसंस्थाप्यदूरंगत्वास्थिराऽभवत् ॥ कृतशौचंपतिंज्ञात्वागत्वाजग्राहतंपुनः ॥१८॥ आनीयाऽऽश्रम मव्यग्राचोपवेश्याऽऽसनेशुभे ॥ मृज्जलाभ्यांचप्रक्षाल्यपादावस्ययथाविधि ॥ १९ ॥ दत्त्वाचमनमात्रंतुदंतधावनमाहरत् ॥ समर्प्यदंतकाष्ठंचयथोक्तंनृपनं दिनी ॥ २० ॥ चकारोष्णंजलंशुद्धंसमानीतंसुपावनम् ॥ स्नानार्थंजलमाहृत्यपप्रच्छप्रणयान्विता ॥ २१ ॥ किमाज्ञापयसेब्रह्मन्कृतंवैदंतधावनम् ॥ उ ष्णोदकंसुसंपन्नंकुरुस्नानंसमंत्रकम् ॥ २२ ॥ वर्ततेहोमकालोऽयंसंध्यापूर्वाप्रवर्तते ॥ विधिवद्धवनंकृत्वादेवतापूजनंकुरु ॥२३॥ एवंकन्यापतिंलब्ध्वातप स्विनमनिंदिता ॥ नित्यंपर्यचरत्प्रीत्यातपसानियमेनच ॥ २४ ॥ अग्नीनामतिथीनांचशुश्रूषांकुर्वतीसदा॥आराधयामासमुदाच्यवनंसाशुभानना॥२५॥ कस्मिंश्चिदथकालेतुरविजावश्विनावुभौ ॥ च्यवनस्याऽऽश्रमाभ्याशेक्रीडमानौसमागतौ ॥ २६ ॥ जलेस्नात्वातुतांकन्यांनिवृत्तांस्वाश्रमंप्रति ॥ गच्छंतीं चारुसर्वांगींरविपुत्रावपश्यताम् ॥२७॥ तांदृष्ट्वादेवकन्याभांगत्वाचांतिकमादरात् ॥ ऊचतुःसमभिद्रुत्यनासत्यावतिमोहितौ ॥ २८ ॥ क्षणंतिष्ठवरारोहे प्रष्टुंत्वांगजगामिनि ॥ आवांदेवसुतौप्राप्तौब्रूहिसत्यंशुचिस्मिते ॥ २९ ॥ पुत्रीकस्यपतिःकस्तेकथमुद्यानमागता॥एकाकिनीतडागेऽस्मिन्स्नानार्थंचारुलो चने ॥ ३० ॥ द्वितीयाश्रीरिवाऽऽभासिकांत्याकमललोचने ॥ इच्छामस्तुवयंज्ञातुंतत्त्वमाख्याहिशोभने ॥ ३१ ॥ कोमलौचरणौकांतेस्थितौभूमावनावृ तौ ॥ हृदयेकुरुतःपीडांचलंतौचललोचने ॥ ३२ ॥ विमानार्हासितन्वंगिकथंपद्भ्यांव्रजस्यदः॥अनावृताऽत्रविपिनेकिमर्थंगमनंतव ॥ ३३ ॥ दासीशत समायुक्ताकथंनत्वंविनिर्गता ॥ राजपुत्र्यप्सरावाऽसिवदसत्यंवरानने ॥३४॥ धन्यामातायतोजाताधन्योऽसौजनकस्तव ॥ वक्तुंत्वां नैवशक्तौचभर्तुर्भाग्यं तवाऽनघे ॥ ३५ ॥ देवलोकाधिकाभूमिरियंचैवसुलोचने ॥ प्रचलंश्चरणस्तेऽद्यसंपावयतिभूतलम् ॥ ३६ ॥ सौभाग्याश्चमृगाःकामंयेत्वांपश्यंतिवैवने ॥ येचाऽन्येपक्षिणःसर्वेभूरियंचाऽतिपावना ॥ ३७ ॥ स्तुत्याऽलंतवचाऽत्यर्थंसत्यंब्रूहिसुलोचने ॥ पिताकस्तेपतिःकाऽसौद्रष्टुमिच्छाऽस्तिसादरम् ॥३८॥ व्यासउवाच ॥ तयोरितिवचःश्रुत्वाराजकन्याऽतिसुंदरी ॥ तावुवाचत्रपाक्रांतादेवपुत्रौनृपात्मजा ॥ ३९ ॥ शर्यातितनयांमांवांवित्तंभार्यांमुनेरिह ॥ च्यवनस्यसतींकांतांपित्रादत्तांयदृच्छया ॥ ४० ॥

नत्कौ ॥ चललोचनेइतिकन्यासंबोधनम् ॥ ३२ ॥ अनावृता उत्तरीयमहापट्टवस्त्ररहिता ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ नैवशक्तावावामित्यर्थः ॥ ३५ ॥ यतस्तेचरणोभूतलंसंपावयतिपवित्रीकरोति ॥ ३६ ॥ सौभाग्याः ॥ अर्शआद्यजंतम् ॥ सौभाग्यवंतइत्यर्थः ॥ येचाऽन्येपक्षिणस्तेऽपिसौभाग्यवंतइत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ सौदामनीति ॥ विद्युतोविशेषणंतद्देशस्थाविद्युदतिचंचलाभवतीति ॥ तवतुल्यादेवेष्वपिनदृष्टेत्यर्थः ॥ ४४ ॥ वरूथःसमूहः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ वृथावृतस्त्वया यमंधइत्यन्वयः ॥ तेनांधेनत्वंनशोभसे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ उभयोरावयोरित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ यत्रवनेनवंवयस्तेऽस्तिसेवाचांधस्यवर्ततेतत्रकिंसुखमि

पतिरंधोऽस्तिमेदेवौवृद्धश्चाऽतीवतापसः ॥ तस्यसेवामहोरात्रंकरोमिप्रीतमानसा ॥ ४१ ॥ कौयुवांकिमिहाऽऽयातौपतिस्तिष्ठतिचाऽऽश्रमे ॥ तत्राऽऽगत्यप्रकुरुतमाश्रमंचाऽद्यपावनम् ॥ ४२ ॥ तदाकर्ण्यवचोदस्रावूचतुस्तांनराधिप ॥ कथंत्वमपिकल्याणिपित्रादत्तातपस्विने ॥ ४३ ॥ भ्राजसेऽस्मिन्वनोद्देशेविद्युत्सौदामनीयथा ॥ नदेवेष्वपितुल्याहितवदृष्टाऽस्तिभामिनी ॥ ४४ ॥ त्वंदिव्यांबरयोग्याऽसिशोभसेनाऽजिनैर्वृता ॥ सर्वाभरणसंयुक्तानीलालकवरूथिनी ॥ ४५ ॥ अहोविधेर्दुष्कलितंविचेष्टितंयदत्ररंभोरुवनेविषीदसि ॥ विशालनेत्रेंधमिमंपतिंप्रियेमुनिंसमासाद्यजरातुरंभृशम् ॥ ४६ ॥ वृथावृतस्तेनभृशंनशोभसेनवंवयःप्राप्यसुनृत्यपंडिते ॥ मनोभवेनाऽऽशुशराःसुसंधिताःपतंतिकस्मिन्पतिरीदृशस्तव ॥ ४७ ॥ त्वमंधभार्यानवयौवनान्विताकृताऽसिधात्राननुमंदबुद्धिना ॥ नचैनमर्हस्यसितायतेक्षणेपतिंत्वमन्यंकुरुचारुलोचने ॥ ४८ ॥ वृथैवतेजीवितमंबुजेक्षणेपतिंचसंप्राप्यमुनिंगतेक्षणम् ॥ वनेनिवासंचतथाऽजिनांबरप्रधारणंयोग्यतरंनमन्महे ॥ ४९ ॥ अतोऽनवद्यांग्युभयोस्त्वमेककंवरंकुरुष्वावहितासुलोचने ॥ किंयौवनंमानिनिसंकरोषिवृथामुनिंसुंदरिसेवमाना ॥ ५० ॥ किंसेवसेभाग्यविवर्जितंतंसमुज्झितंपोषणरक्षणाभ्याम् ॥ त्यक्त्वामुनिंसर्वसुखापवर्जितंभजाऽनवद्यांग्युभयोस्त्वमेकम् ॥ ५१ ॥ त्वंनंदनेचैत्ररथेवनेचकुरुष्वकांतेप्रथितंविहारम् ॥ अंधेनवृद्धेनकथंहिकालंविनेष्यसेमानिनिमानहीनम् ॥ ५२ ॥ भूपात्मजात्वंशुभलक्षणाचजानासिसंसारविहारभावम् ॥ भाग्येनहीनाविजनेवनेऽत्रकालंकथंवाहयसेवृथाच ॥ ५३ ॥ तस्माद्भजस्वपिकभाषिणिचारुवक्त्रेएकंद्वयोस्तवसुखायविशालनेत्रे ॥ देवालयेषुचकृशोदरिभुंक्ष्वभोगांस्त्यक्त्वामुनिंजरठमाशुनृपेंद्रपुत्रि ॥ ५४ ॥ किंतेसुखंयत्रवनेसुकेशिवृद्धेनसार्धंविजनेमृगाक्षि ॥ सेवातथांधस्यनवंवयश्चकिंतेमतंभूपतिपुत्रिदुःखम् ॥ ५५ ॥ शशिमुखित्वमतीवसुकोमलाफलजलाहरणंतवनोचितम् ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ तयोस्तद्भाषितंश्रुत्वावेपमानानृपात्मजा ॥ धैर्यमालंब्यतौतत्रबभाषेमितभाषिणी ॥ १ ॥ देवौवांरविपुत्रौचसर्वज्ञौसुरसंमतौ ॥ सतींमांधर्मशीलांचनैवंवदितुमर्हथ ॥ २ ॥ पित्रादत्तासुरश्रेष्ठौमुनयेयोगधर्मिणे ॥ कथंगच्छामितंमार्गंपुंश्चलीगणसेवितम् ॥ ३ ॥ द्रष्टाऽयंसर्वलोकस्यकर्मसाक्षीदिवाकरः ॥ कश्यपाच्चैवसंभूतौनैवंभाषितुमर्हथः ॥ ४ ॥

त्यन्वयः ॥ किंतेमतमिति ॥ हेभूपतिपुत्रि ॥ तेकिंदुःखंमतमभिमतमस्तीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ अर्धाधिकैरष्टपंचाशद्भिःश्लोकैरथोच्यते ॥ च्यवनस्ययुवावस्थारविपुत्रप्रसादजा ॥ १ ॥ अश्विनीकुमारभाषणानंतरंजातंवृत्तमाह । तयोस्तद्भाषितमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

जानंताविति रविपुत्रयोः संबोधनम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ चातुर्यपंडितेइतिसंबोधनम् ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ एतेनसमयेनेतिपूर्वान्वयि ॥ कोऽसौसमर्थस्तत्राऽह ॥ तंशृणुत्वमिति ॥ मयोदितंवक्ष्यमाणंतंसमयंशृणुइत्यर्थः ॥ १४ ॥ समावयवरूपंचाऽस्मत्सदृशावयवरूपवंतमित्यर्थः ॥ तत्रत्रयाणामिति ॥ तदाऽस्मद्भाग्येयदित्वंलिखितास्यास्तदाऽ

कुलकन्यापतिंत्यक्त्वाकथमन्यंभजेन्नरम् ॥ असारेऽस्मिन्हिसंसारेजानंतौधर्मनिर्णयम् ॥ ५ ॥ यथेच्छंगच्छतंदेवौशापंदास्यामिवाऽनघौ ॥ सुकन्याऽहंच शर्यातेःपतिभक्तिपरायणा ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यानासत्यौविस्मितौभृशम् ॥ तावब्रूतांपुनस्त्वेनांशंकमानौभयंमुनेः ॥ ७ ॥ राजपुत्रि प्रसन्नौतेधर्मेणवरवर्णिनि ॥ वरंवरयसुश्रोणिदास्यावःश्रेयसेतव ॥ ८ ॥ जानीहिप्रमदेनूनमावांदेवभिषग्वरौ ॥ युवानंरूपसंपन्नंप्रकुर्यावपतिंतव ॥ ९ ॥ तत स्त्रयाणामस्माकंपतिमेकतमंवृणु ॥ समानरूपदेहानांमध्येचातुर्यपंडिते ॥ १० ॥ सातयोर्वचनंश्रुत्वाविस्मितास्वपतिंतदा ॥ गत्वोवाचतयोर्वाक्यंता भ्यामुक्तंयदद्भुतम् ॥ ११ ॥ सुकन्योवाच ॥ स्वामिन्सूर्यसुतौदेवौसंप्राप्तौच्यवनाश्रमे ॥ दृष्टौमयादिव्यदेहौनासत्यौभृगुनंदन ॥ १२ ॥ वीक्ष्यमांचारुसर्वांगीं जातौकामातुरावुभौ ॥ कथितंवचनंस्वामिन्पतिंतेनवयौवनम् ॥ १३ ॥ दिव्यदेहंकरिष्यावश्चक्षुष्मंतंमुनिंकिल ॥ एतेनसमयेनाऽद्यतंशृणुत्वंमयोदितम् ॥ ॥ १४ ॥ समावयवरूपंचकरिष्यावःपतिंतव ॥ तत्रत्रयाणामस्माकंपतिमेकतमंवृणु ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वाऽहमिहाऽऽयाताप्रष्टुंत्वांकार्यमद्भुतम् ॥ किंकर्तव्यम तःसाधोब्रूह्यस्मिन्कार्यसंकटे ॥ १६ ॥ देवमायाऽपिदुर्ज्ञेयानजानेकपटंतयोः ॥ यदाज्ञापयसर्वज्ञतत्करोमितवेप्सितम् ॥ १७ ॥ च्यवनउवाच ॥ गच्छकां तेऽद्यनासत्यौवचनान्ममसुव्रते ॥ आनयस्वसमीपंमेशीघ्रंदेवभिषग्वरौ ॥ १८ ॥ क्रियतामाशुतद्वाक्यंनाऽत्रकार्याविचारणा ॥ व्यासउवाच ॥ एवंसासम नुज्ञातातत्रगत्वावचोऽब्रवीत् ॥ १९ ॥ क्रियतामाशुनासत्यौसमयेनसुरोत्तमौ ॥ तच्छ्रुत्वाचाऽश्विनौवाक्यंतस्यास्तौतत्रचाऽऽगतौ ॥ २० ॥ उचतूराजपुत्रीं तांपतिस्तवविशत्वपः ॥ रूपार्थंच्यवनस्तूर्णंततोंभःप्रविवेशह ॥ २१ ॥ अश्विनावपिपश्चात्तत्प्रविष्टौसरउत्तमम् ॥ ततस्तेनिःसृतास्तस्मात्सरसस्तत्क्षणा त्त्रयः ॥ २२ ॥ तुल्यरूपादिव्यदेहायुवानःसदृशाःकिल ॥ दिव्यकुंडलभूषाढ्याःसमानावयवास्तथा ॥ २३ ॥ तेब्रुवन्सहिताःसर्वेवृणीष्ववरवर्णिनि ॥ अस्मा कमीप्सितंभद्रेपतिंत्वममलानने ॥ २४ ॥ यस्मिन्वाप्यधिकाप्रीतिस्तंवृणुष्ववरानने ॥ व्यासउवाच ॥ सादृष्ट्वातुल्यरूपांस्तान्समानवयसस्तथा ॥ २५ ॥ एकस्वरांस्तुल्यवेषांस्त्रीन्वैदेवसुतोपमान् ॥ सातुसंशयमापन्नावीक्ष्यतान्सदृशाकृतीन् ॥ २६ ॥ अजानतीपतिंसम्यग्व्याकुलासमचिंतयत् ॥ किंकरोमि त्रयस्तुल्याःकंवृणोमिनवेद्म्यहम् ॥ २७ ॥ पतिंदेवसुताह्येतेसंशयेपतिताऽस्म्यहम् ॥ इंद्रजालमिदंसम्यग्देवाभ्यामिहकल्पितम् ॥ २८ ॥

स्माकमेवभविष्यसीतितयोरविपुत्रयोरभिप्रायः ॥ १५ ॥ १६ ॥ कपटंतयोरिति ॥ केनाऽभिप्रायेणेदंतैरुक्तमितितयोःकपटंनजानेऽहमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ क्रियतामिति ॥ समयेनपूर्वोक्तपणबंधेनयद्भवद्भ्यांकर्तव्यत्वेनाऽभिलषितंतत्क्रियतामित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ देवाभ्यामश्विनीकुमाराभ्यांकूटंकपटंचरितमाचरितमित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

कर्तव्यंकिंमयाचाऽत्रमरणंसमुपागतम् ॥ नमयापतिमुत्सृज्यवरणीयःकथंचन ॥२९॥ देवस्त्वाधुनिकःकश्चिदित्येषाममधारणा॥इतिसंचिंत्यमनसापरां विश्वेश्वरींशिवाम् ॥ ३० ॥ दध्यौभगवतींदेवींतुष्टावचकृशोदरी ॥ सुकन्योवाच ॥ शरणंत्वांजगन्मातःप्राप्ताऽस्मिभृशदुःखिता ॥३१॥रक्षमेऽद्यसतीधर्मं नमामिचरणौतव ॥ नमःपद्मोद्भवेदेविनमःशंकरवल्लभे ॥ ३२ ॥ विष्णुप्रियेनमोलक्ष्मिवेदमातःसरस्वति ॥ इदंजगत्त्वयासृष्टंसर्वंस्थावरजंगमम् ॥३३॥ पासित्वमिदमव्यग्रातथाऽत्सिलोकशांतये ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानांजननीत्वंसुसंमता ॥ ३४ ॥ बुद्धिदाऽसित्वमज्ञानांज्ञानिनांमोक्षदासदा ॥ आद्यात्वंप्रकृतिःपूर्णापुरुषप्रियदर्शना ॥ ३५ ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदाऽसित्वंप्राणिनांविशदात्मनाम् ॥ अज्ञानांदुःखदाकामंसत्त्वानांसुखसाधना ॥३६॥ सिद्धिदायोगिनामं वजयदाकीर्तिदापुनः ॥ शरणंत्वांप्रपन्नाऽस्मिविस्मयंपरमंगता ॥ ३७ ॥ पतिंदर्शयमेमातर्मग्नाऽस्मिश्छोकसागरे ॥ देवाभ्यांचरितंकूटंकंवृणोमिविमोहिता ॥ ३८ ॥ पतिंदर्शयसर्वज्ञेविदित्वामेसतीव्रतम् ॥ व्यासउवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवीतथात्रिपुरसुंदरी ॥३९॥ हृदयेऽस्यास्तदाज्ञानंददावाशुसुखोदयम् ॥ निश्चित्यमनसातुल्यवयोरूपधरान्सती ॥ ४० ॥ प्रसमीक्ष्यतुतान्सर्वान्वव्रेबालास्वकंपतिम्॥वृतेऽथच्यवनेदेवौसंतुष्टौतौबभूवतुः ॥४१॥ सतीधर्मस मालोक्यसंप्रीतौददतुर्वरम् ॥ भगवत्याःप्रसादेनप्रसन्नौतौसुरोत्तमौ ॥४२॥ मुनिमामंत्र्यतरसागमनायोद्यतावुभौ ॥ लब्ध्वातुच्यवनोरूपंनेत्रेभार्याचयौवनम् ॥ ४३ ॥ हृष्टोऽब्रवीन्महातेजास्तौनासत्याविदंवचः ॥ उपकारःकृतोऽयंमेयुवाभ्यांसुरसत्तमौ ॥४४॥ किंब्रवीमिसुखंप्राप्तंसंसारेऽस्मिन्ननुत्तमे॥प्राप्य भार्यांसुकेशांतांदुःखंमेऽभवदन्वहम् ॥ ४५ ॥ अंधस्यचाऽतिवृद्धस्यभोगहीनस्यकानने ॥ युवाभ्यांनयनेदत्तेयौवनंरूपमद्भुतम्॥४६॥संपादितंततःकिंचिदुपकर्तुमहंब्रुवे ॥ उपकारिणिमित्रेयोनोपकुर्यात्कथंचन ॥४७॥ तंधिगस्तुनरंदेवौभवेच्चऋणवान्भुवि॥तस्माद्वांवांछितंकिंचिद्दातुमिच्छामिसांप्रतम् ॥ ॥ ४८ ॥ आत्मनोऽऋणमोक्षायदेवेशौनूतनस्यच॥प्रार्थितंवांप्रदास्यामियदलभ्यंसुरासुरैः॥४९॥ब्रुवाथांवांमनोदिष्टंप्रीतोस्मिसुकृतेनवाम्॥श्रुत्वातौतुमुनेर्वाक्यमभिमंत्र्यपरस्परम्॥५०॥तमूचतुर्मुनिश्रेष्ठंसुकन्यासहितंस्थितम्॥मुनेपितुःप्रसादेनसर्वंनोमनसेप्सितम् ॥५१॥ उत्कंठासोमपानस्यवर्ततेनौसुरैःसह॥भिषजाविदितेवेननिषिद्धौचमसग्रहे॥५२॥शक्रेणविततेयज्ञेब्रह्मणःकनकाचले॥तस्मात्त्वमपिधर्मज्ञयदिशक्तोसितापस॥५३॥कार्यमेतद्धिकर्तव्यंवांछितंनौसुसंमतम्॥एतद्विज्ञायवाब्रह्मन्कुरुवांसोमपायिनौ॥५४॥पिपासाऽस्तिसुदुष्प्रापात्वत्तःसमुपयास्यति॥च्यवनस्तुतयोःप्राहतच्छ्रुत्वावचनंमृदु ॥ ५५॥

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥५०॥५१॥ चमसग्रहे ग्रहःसोमाधारःपात्रविशेषस्तस्मिन्निषिद्धौ ग्रहणे सोमपानमनयोर्नास्तीतिनिषिद्धावित्यर्थः॥५२॥५३॥५४॥५५॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ ॥ एकषष्टिश्लोकवर्यैश्च्यवनेनमहात्मना ॥ शर्यातिःप्रेरितोयज्ञंचकारेतिनिगद्यते ॥ १ ॥ अश्विनीकुमारगमनानंतरंजातंवृत्तंराजापृच्छाति । च्यवनेनेति ॥ १ ॥ २ ॥ धर्मनिष्ठेतिव्याससंबोधनम् ॥ ३ ॥ शर्यातेर्मखेच्यवनस्यचरितमित्यन्वयः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

यदहंरूपसंपन्नोवयसाचसमन्वितः ॥ कृतोभवद्भ्यांवृद्धःसन्भार्याचप्राप्तवानिति ॥ ५६ ॥ तस्माद्युवांकरिष्यामिप्रीत्याऽहंसोमपायिनौ ॥ मिषतोदेवराजस्यसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥ ५७ ॥ राज्ञस्तुविततेयज्ञेशर्यातेरमितद्युतेः ॥ इत्याकर्ण्यवचोहृष्टौतौदिवंप्रतिजग्मतुः ॥ ५८ ॥ च्यवनस्तांगृहीत्वातुजगामाश्रममंडलम् ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०सप्तमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ जनमेजयउवाच॥च्यवनेनकथंवैद्यौतौकृतौसोमपायिनौ॥वचनंचकथंसत्यंजातंतस्यमहात्मनः ॥ १ ॥ मानुषस्यबलंकीदृग्देवराजबलंप्रति ॥ निषिद्धौभिषजौतेनकृतौतौसोमपायिनौ ॥२॥ धर्मनिष्ठौतदाश्चर्यंविस्तरेणवदप्रभो ॥ चरितंच्यवनस्याऽद्यश्रोतुकामोऽस्मिसर्वथा ॥३॥ व्यासउवाच॥निशामयमहाराजचरितंपरमाद्भुतम् ॥ च्यवनस्यमखेतस्मिञ्छर्यातेर्भुविभारत ॥ ४ ॥ सुकन्यांसुंदरींप्राप्यच्यवनःसुरसन्निभः ॥ विजहारप्रसन्नात्मादेवकन्यामिवाऽमरः ॥ ५ ॥ कदाचिदथशर्यातिभार्याचिंतातुराभृशम्॥पतिंप्राहवेपमानावचनंरुदतीप्रिया ॥ ६ ॥ राजन्पुत्रीत्वयादत्तामुनयेंधायकानने ॥ मृताजीवतिवासातुद्रष्टव्यासर्वथात्वया ॥ ७ ॥ गच्छनाथमुनेस्तावदाश्रमंद्रष्टुमादरात् ॥ किंकरोतिसुकन्यासाप्राप्यनाथंतथाविधम् ॥ ८ ॥ पुत्रीदुःखेनराजर्षेदग्धास्मिसर्वथाहृदि ॥ तामानयविशालाक्षींतपःक्षामांमदंतिके ॥ ९ ॥ पश्यामिसर्वथापुत्रींकृशांगींवल्कलावृताम् ॥ अंधंपतिंसमासाद्यदुःखभाजंकृशोदरीम् ॥ १० ॥ शर्यातिरुवाच ॥ गच्छामोऽद्यविशालाक्षिसुकन्यांद्रष्टुमादरात् ॥ प्रियपुत्रींवरारोहेमुनिंतंसंशितव्रतम् ॥११॥ व्यासउवाच॥एवमुक्त्वातुशर्यातिःकामिनींशोकसंकुलाम् ॥ जगामरथमारुह्यत्वरितश्चाऽऽश्रमंमुनेः ॥ १२ ॥ गत्वाऽऽश्रमसमीपेतुतमपश्यन्महीपतिः ॥ नवयौवनसंपन्नंदेवपुत्रोपमंमुनिम् ॥ १३ ॥ तंविलोक्याऽमराकारंविस्मयंनृपतिर्गतः ॥ किंकृतंकुत्सितंकर्मपुत्र्यालोकविगर्हितम् ॥ १४ ॥ निहतोऽसौमुनिर्वृद्धस्त्वनयान्यःपतिःकृतः ॥ कामपीडितयाकामंप्रशांतोऽप्यतिनिर्धनः ॥ १५ ॥ दुःसहोऽयंपुष्पधन्वाविशेषेणचयौवने ॥ कुलेकलंकःसुमहाननयामानवेकृतः ॥१६॥ धिक्तस्यजीवितंलोकेयस्यपुत्रीहिकुत्सिता॥सर्वपापैस्तुदुःखायपुत्रीभवतिदेहिनाम् ॥ १७ ॥ मयात्वनुचितंकर्मकृतंस्वार्थस्यसिद्धये ॥ वृद्धायांधाययादत्तापुत्रीसर्वात्मनाकिल ॥१८॥ कन्यायोग्यायदातव्यापित्रासर्वात्मनाकिल ॥ तादृशंहिफलंप्राप्तंयादृशंवैकृतंमया ॥ १९ ॥ हन्मिचेदद्यतनयांदुःशीलांपापकारिणीम् ॥ स्त्रीहत्यादुस्तरास्यान्मेतथापुत्र्याविशेषतः ॥ २० ॥

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ मुनिमापिद्रष्टुमित्यन्वयः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ मानवेमनोःसंबंधिनिकुलेइत्यन्वयः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ पुत्र्याविशेषतः कन्याहत्यास्त्रीहत्याचेत्युभयमत्रस्यादित्यर्थः ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किंचहंतुमापि नशक्नोमि यतोदुस्त्याज्यास्नेहशृंखलाभवतीत्याह । दुस्त्याज्येति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ पुरःस्थाम् अग्रस्थाम् ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ दुराचार

मनुवंशस्तुविख्यातःसकलंकःकृतोमया ॥ लोकापवादोबलवान्दुस्त्याज्यास्नेहशृंखला ॥ २१ ॥ किंकरोमीतिचिंताब्धौयदामग्नःसपार्थिवः॥सुकन्यया तदादेवादृष्ट्वाश्चिताकुलःपिता ॥ २२ ॥ सादृष्ट्वातंजगामाऽऽशुसुकन्यापितुरंतिके ॥ गत्वापप्रच्छभूपालंप्रेमपूरितमानसा ॥ २३ ॥ किंविचारयसेराजंश्चि ताव्याकुलिताननः ॥ उपविष्टंमुनिंवीक्ष्ययुवानमंबुजेक्षणम् ॥२४॥ एह्येहिपुरुषव्याघ्रप्रणमस्वपतिंमम ॥ माविषादंनृपश्रेष्ठसांप्रतंकुरुमानव ॥२५॥ व्या सउवाच ॥ इतिपुत्र्यावचःश्रुत्वाशर्यातिःक्रोधपीडितः॥प्रोवाचवचनंराजापुरःस्थांतनयांततः॥२६॥ राजोवाच॥क्वमुनिश्च्यवनःपुत्रिवृद्धोंधस्तापसोत्तमः॥ कोयंयुवामदोन्मत्तःसंदेहोत्रमहान्मम ॥ २७ ॥ मुनिःकिंनिहतःपापेत्वयादुष्कृतकारिणि ॥ नूतनोऽसौपतिःकामात्कृतःकुलविनाशिनि ॥ २८ ॥ सो ऽहींचतातुरस्तंनपश्याम्याश्रमसंस्थितम् ॥ किंकृतंदुष्कृतंकर्मकुलटाचरितंकिल ॥ २९ ॥ निमग्नोऽहंदुराचारेशोकाब्धौत्वत्कृतेऽधुना ॥ दृष्ट्वैनंपुरुषंदि व्यमदृष्ट्वाच्यवनंमुनिम् ॥ ३० ॥ विहस्यतमुवाचाऽऽशुसाश्रुत्वावचनंपितुः ॥ गृहीत्वाऽऽनीयपितरंभर्तुरंतिकमादरात् ॥ ३१ ॥ च्यवनोऽसौमुनिस्तात जामातातेनसंशयः ॥ अश्विभ्यामीदृशःकांतःकृतःकमललोचनः ॥३२॥ यदृच्छयाऽत्रसंप्राप्तौनासत्यावाश्रमेमम ॥ ताभ्यांकरुणयानूनंच्यवनस्तादृशः कृतः ॥ ३३ ॥ नाहंतवसुतातातततथास्यांपापकारिणी ॥ यथात्वंमन्यसेराजन्विमूढोरूपसंशये ॥ ३४ ॥ प्रणमत्वंमुनिंराजन्भार्गवंच्यवनंपितः ॥ आ पृच्छकारणंसर्वंकथयिष्यतिविस्तरम् ॥ ३५ ॥ इतिश्रुत्वावचःपुत्र्याः शर्यातिस्त्वरितस्तदा ॥ प्रणनाममुनिंतत्रगत्वापप्रच्छसादरम् ॥३६॥राजोवाच॥ कथयस्वस्ववृत्तांतंभार्गवाऽऽशुयथोचितम् ॥ नयनेचकथंप्राप्तेक्वगतातेजरापुनः॥३७॥संशयोऽयंमहान्मेऽस्तिरूपंदृष्ट्वाऽतिसुंदरम् ॥ वदविस्तरतोब्रह्मञ्छु त्वाऽहंसुखमाप्नुयाम् ॥३८॥ च्यवनउवाच ॥ नासत्यावत्रसंप्राप्तौदेवानांभिषजावुभौ ॥ उपकारःकृतस्ताभ्यांकृपयानृपसत्तम ॥ ३९ ॥ मयाताभ्यांवरा दत्तउपकारस्यहेतवे ॥ करिष्यामिमखेराज्ञोभवंतौसोमपायिनौ ॥ ४० ॥ एवंमयावयःप्राप्तंलोचनेविमलेतथा॥स्वस्थोभवमहाराजसंविशस्वाऽऽसनेशुभे ॥४१॥इत्युक्तःसतुविप्रेणसभार्यःपृथिवीपतिः॥सुखोपविष्टःकल्याणीःकथाश्चक्रेमहात्मना॥४२॥अथैनंभार्गवःप्राहराजानंपरिसांत्वयन्॥याजयिष्यामिरा जंस्त्वांसंभारानुपकल्पय॥४३॥मयाप्रतिश्रुतंताभ्यांकर्तव्यौसोमपौयुवाम्॥तत्कर्तव्यंनृपश्रेष्ठतवयज्ञेऽतिविस्तरे ॥४४ ॥ इंद्रंनिवारयिष्यामिक्रुद्धंतेजोब लेनवै ॥ पाययिष्यामिराजेंद्रसोमंसोममखेतव ॥ ४५ ॥ ततःपरमसंतुष्टःशर्यातिःपृथिवीपतिः ॥ च्यवनस्यमहाराजतद्वाक्यंप्रत्यपूजयत् ॥ ४६ ॥

इतिकन्यासंबोधनम् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ उपकारोमंत्रकृतउपायः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ सोममखे अग्निष्टोमयज्ञे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ एतयोरश्विनोर्ग्रहंसोमपूरितंपात्रंमागृहाण ॥ यज्ञेतयोर्निषिद्धत्वादित्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभा०सप्तमस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ द्विपंचाशच्छ्लोकवर्यैःशर्यातेस्तुमहामखे ॥ अश्विनौसोमपानेनसंतुष्टाविति कीर्त्यते ॥ १ ॥ अश्विभ्यांग्रहपात्र

संमान्यच्यवनंराजाजगामनगरंप्रति ॥ सभार्यश्चाऽतिसंतुष्टःकुर्वन्वार्तांमुनेःकिल ॥ ४७॥ प्रशस्तेऽहनियज्ञीयेसर्वकामसमृद्धिमान् ॥ कारयामासशर्याति र्यज्ञायतनमुत्तमम् ॥ ४८ ॥ समानीयमुनीन्पूज्यान्वसिष्ठप्रमुखानसौ ॥ भार्गवोयाजयामासच्यवनःपृथिवीपतिम् ॥ ४९ ॥ विततेतुतथायज्ञेदेवाःसर्वे सवासवाः ॥ आजग्मुश्चाऽश्विनौतत्रसोमार्थमुपजग्मतुः ॥ ५० ॥ इंद्रस्तुशंकितस्तत्रवीक्ष्यतावश्विनावुभौ ॥ पप्रच्छचसुरान्सर्वान्किमेतौसमुपागतौ ॥ ॥ ५१ ॥ चिकित्सकौनसोमार्हौकेनाऽनीताविहेतिच ॥ नाऽब्रुवन्नमरास्तत्रराज्ञस्तुविततेमखे ॥ ५२ ॥ अगृह्णाच्च्यवनःसोममश्विनोर्देवयोस्तदा ॥ शक्रस्तंवारयामासमागृहाणैतयोर्ग्रहम् ॥ ५३ ॥ तमाहच्यवनस्तत्रकथमेतौरवेःसुतौ ॥ नग्रहार्हौचनासत्यौब्रूहिसत्यंशचीपते ॥ ५४ ॥ नसंकरौसमुत्प न्नौधर्मपत्नीसुतौरवेः ॥ केनदोषेणदेवेंद्रनार्हौसोमंभिषग्वरौ ॥ ५५ ॥ निर्णयोऽत्रमखेशक्रकर्तव्यःसर्वदैवतैः ॥ ग्राहयिष्याम्यहंसोमंकृतौतौसोमपौमया ॥ ॥ ५६ ॥ प्रेरितोऽसौमयाराजामखायमघवन्किल ॥ एतदर्थंकरिष्यामिसत्यंमेवचनंविभो ॥ ५७ ॥ आभ्यामुपकृतंशक्रतथादत्तंनवंवयः ॥ तस्मात्प्रत्यु पकारस्तुकर्तव्यःसर्वथामया ॥ ५८ ॥ इंद्रउवाच ॥ चिकित्सकौकृतावेतौनासत्यौनिंदितौसुरैः ॥ उभावेतौनसोमार्हौमागृहाणैतयोर्ग्रहम् ॥५९॥ च्य वनउवाच ॥ अहल्याजारसंयच्छकोपंचाऽद्यनिरर्थकम् ॥ वृत्रघ्नकिंहितौसत्यौनसोमार्हौसुरात्मजौ ॥ ६० ॥ एवंविवादेसमुपास्थितेचनकोऽपिवाचंतमुवा चभूप ॥ ग्रहंतयोर्भार्गवतिग्मतेजाः संग्राहयामासतपोबलेन ॥ ६१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेस०षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥व्यासउवाच॥ दत्तेग्रहेतुराजेंद्रवासवःकुपितोभृशम् ॥ प्रोवाचच्यवनंतत्रदर्शयन्बलमात्मनः ॥ १ ॥ माब्रह्मबंधोमर्यादामिमांत्वंकर्तुमर्हसि ॥ वधिष्यामिद्विषंतंत्वां विश्वरूपमिवाऽपरम् ॥ २ ॥ च्यवनउवाच ॥ मावमंस्थामहात्मानौरूपद्रविणवर्चसा ॥ यौचक्रतुर्मामघवन्वृंदारकमिवाऽपरम् ॥ ३ ॥ ऋतेत्वांविबुधा श्चाऽन्येकथंवाऽऽददतेग्रहम् ॥ अश्विनावपिदेवेंद्रदेवौविद्धिपरंतपौ ॥ ४ ॥ इंद्रउवाच॥ ॥भिषजौनाऽर्हतःकामंग्रहंयज्ञेकथंचन ॥ यदिदित्ससिमंदात्मन् शिरश्छेत्स्यामिसांप्रतम् ॥ ५ ॥ व्यासउवाच ॥ अनादृत्यतुतद्वाक्यंवासवस्यचभार्गवः ॥ ग्रहंतुग्राहयामासभर्त्सयन्निवतंभृशम् ॥ ६ ॥ सोमपात्रंयदा ताभ्यांगृहीतंतुपिपासया ॥ समीक्ष्यबलभिद्देवइदंवचनमब्रवीत् ॥ ७ ॥

दानानंतरंजातंवृत्तमाह। दत्तेग्रहेत्विति ॥ १ ॥ विश्वरूपमिति ॥ विश्वरूपस्त्वाष्ट्रस्तस्यकथाषष्ठस्कंधेउक्ता ॥ २ ॥ ३ ॥ ऋतेत्वामिति ॥ त्वांविनात्वत्तोभिन्नायथाऽन्येदेवाग्रहमाददते गृह्णंतितथाऽश्विनावपिदेवौविद्धि ततस्तयोःकुतोनाऽधिकारइत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





आभ्यामितितृतीयांतम् ॥ अर्थायस्वस्यप्रयोजनाय ॥ ८ ॥ जग्राह अंतर्भावितण्यर्थोऽत्रग्रेहः ॥ ग्राहयामासेत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ स्तंभयामासेति ॥ स्वशरीरेनप्राप्तंयावत्तावदित्यर्थ ॥ ११ ॥ शृतंपक्वम् ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ननिवारयितुमिति ॥

आभ्यामर्थायसोमंत्वंग्राहयिष्यसिचेत्स्वयम् ॥ वज्रंतुप्रहरिष्यामिविश्वरूपमिवाऽपरम् ॥ ८ ॥ वासवेनैवमुक्तस्तुभार्गवश्चाऽतिगर्वितः ॥ जग्राहविधिवत्सोममश्विभ्यामतिमन्युमान् ॥ ९ ॥ इंद्रोऽपिप्राक्षिपत्कोपाद्वज्रमस्मैस्वमायुधम् ॥ पश्यतांसर्वदेवानांसूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ १० ॥ प्रेरितंचाऽशनिंप्रेक्ष्यच्यवनस्तपसाततः ॥ स्तंभयामासवज्रंसशक्रस्याऽमिततेजसः ॥ ११ ॥ कृत्ययासमहाबाहुरिंद्रंहंतुमिहोद्यतः ॥ जुहावाऽग्नौशृतंहव्यंमंत्रेणमुनिसत्तमः ॥ १२ ॥ तत्रकृत्यासमुत्पन्नाच्यवनस्यतपोबलात् ॥ प्रबलःपुरुषःक्रूरोबृहत्कायोमहासुरः ॥ १३ ॥ मदोनाममहाघोरोभयदःप्राणिनामिह ॥ शरीरेपर्वताकारस्तीक्ष्णदंष्ट्रोभयानकः ॥ १४ ॥ चतस्रश्चाऽऽयतादंष्ट्रायोजनानांशतंशतम् ॥ इतरेत्वस्यदशनाबभूवुर्दशयोजनाः ॥ १५ ॥ बाहूपर्वतसंकाशावायतौक्रूरदर्शनौ ॥ जिह्वातुभीषणाक्रूरालेलिहानानभस्तलम् ॥ १६ ॥ ग्रीवातुगिरिशृंगाभाकठिनाभीषणाभृशम् ॥ नखाव्याघ्रनखप्रख्याःकेशाश्चाऽतीवभीषणाः ॥ १७ ॥ शरीरंकज्जलाभंचतस्यचाऽऽस्यंभयानकम् ॥ नेत्रेदावानलप्रख्येभीषणेऽतिभयानके ॥ १८ ॥ हनुरेकास्थितातस्यभ्रूमावेकादिवंगता ॥ एवंविधःसमुत्पन्नोमदोनामबृहत्तनुः ॥ १९ ॥ तंविलोक्यसुराःसर्वेभयमाजग्मुरंहसा ॥ इंद्रोपिभयसंत्रस्तोयुद्धायनमनोदधे ॥ २० ॥ दैत्योऽपिवदनेकामंवज्रमादायसंस्थितः ॥ व्यात्तंनभोघोरदृष्टिर्ग्रसन्निवजगत्त्रयम् ॥ २१ ॥ सभक्षयिष्यन्संक्रुद्धःशतक्रतुमुपाद्रवत् ॥ चुक्रुशुश्चसुराःसर्वेहाहताःस्मेतिसंस्थिताः ॥ २२ ॥ इंद्रःस्तंभितबाहुस्तुमुमुक्षुर्वज्रमंतिकात् ॥ नशशाकपर्वितस्मिन्प्रहर्तुंपाकशासनः ॥ २३ ॥ वज्रहस्तःसुरेशानस्तंवीक्ष्यकालसन्निभम् ॥ सस्मारमनसातत्रगुरुंसमयकोविदम् ॥ २४ ॥ स्मरणादाजगामाशुबृहस्पतिरुदारधीः ॥ गुरुस्तत्समयंदृष्ट्वाविपत्तिसदृशंमहत् ॥ ॥ २५ ॥ विचार्यमनसाकृत्यंतमुवाचशचीपतिम् ॥ दुःसाध्योऽयंमहामंत्रैस्त्वयंवज्रेणवासव ॥ २६ ॥ असुरोमदसंज्ञस्तुयज्ञकुंडात्समुत्थितः ॥ तपोबलमृषेःसम्यक्च्यवनस्यमहाबलः ॥ २७ ॥ अनिवार्योह्ययंशत्रुस्त्वयादेवैस्तथामया ॥ शरणंयाहिदेवेशच्यवनस्यमहात्मनः ॥ २८ ॥ सनिवारयितानूनंकृत्यामात्मकृतांकिल ॥ ननिवारयितुंशक्ताःशक्तिभक्तरुषंकचित् ॥ २९ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तोगुरुणाशक्रस्तदागच्छन्मुनिंप्रति ॥ प्रणम्यशिरसानम्रस्तमुवाचभयान्वितः ॥ ३० ॥ क्षमस्वमुनिशार्दूलशमयाऽसुरमुद्यतम् ॥ प्रसन्नोभवसर्वज्ञवचनंतेकरोम्यहम् ॥ ३१ ॥

शक्तिभक्तस्यपराशक्तिभक्तस्यरोषंकोपंब्रह्माऽपिनिवारयितुंनशक्तःकःपुनरन्यःस्यात् ॥ च्यवनस्तुमहाशक्तिभक्तस्ततोदुःसाध्यइतिभावः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ शाक्तानांसर्वोत्तरोमहिमास्तीत्यवांतरतात्पर्यम् ॥ तदुक्तंमुंडमालायाम् ॥ स्वर्गेमर्त्येचपातालेनास्तिशाक्तात्पराक्रमी ॥ सौराणांगाणपत्यानांवैष्णवानांतथैवच ॥ तदंतेचैवशाक्ताःस्युःक्रमशःक्रमशःप्रिये ॥ शृणुदेविवरारोहेनास्तिशाक्तात्परोजनः ॥ शाक्तोहिशंकरःसाक्षात्परब्रह्मस्वरूपभागिति ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ॥ षट्पंचाश

सोमाहावश्विनावेतावद्यप्रभृतिभार्गव ॥ भविष्यतःसत्यमेतद्वचोविप्रप्रसीदमे ॥ ३२ ॥ मिथ्यातेनोद्यमोह्येषभवत्वेवतपोधन ॥ जानेत्वमपिधर्मज्ञमिथ्यानैवकरिष्यसि ॥ ३३ ॥ सोमपावश्विनावेतौत्वत्कृतौचसदैवहि ॥ भविष्यतश्चशर्यातेःकीर्तिस्तुविपुलाभवेत् ॥ ३४ ॥ मयायद्धिकृतंकर्मसर्वथामुनिसत्तम ॥ परीक्षार्थंतुविज्ञेयंतववीर्यप्रकाशनम् ॥ ३५ ॥ प्रसादंकुरुमेब्रह्मन्मदंसंहरचोत्थितम् ॥ कल्याणंसर्वदेवानांतथाभूयोविधीयताम् ॥ ३६ ॥ एवमुक्तस्तुशक्रेणच्यवनःपरमार्थवित् ॥ संजहारततःकोपंसमुत्पन्नंविरोधजम् ॥ ३७ ॥ देवमाश्वास्यसंविग्नंभार्गवस्तुमदंततः ॥ व्यभजत्स्त्रीषुपानेषुद्यूतेषुमृगयासुच ॥ ३८ ॥ मदंविभज्यदेवेंद्रमाश्वास्यचकितंभिया ॥ संस्थाप्यचसुरान्सर्वान्मखंतस्यन्यवर्तयत् ॥ ३९ ॥ ततस्तुसंस्कृतंसोमंवासवायमहात्मने ॥ अश्विभ्यांसर्वधर्मात्मापाययामासभार्गवः ॥ ४० ॥ एवंतौच्यवनेनाऽऽर्यावश्विनौरविपुत्रकौ ॥ विहितौसोमपौराजन्सर्वथातपसोबलात् ॥ ४१ ॥ सरस्तदपिविख्यातंजातंयूपविमंडितम् ॥ आश्रमस्तुमुनेःसम्यक्पृथिव्यांविश्रुतोऽभवत् ॥ ४२ ॥ शर्यातिरपिसंतुष्टोह्यभवत्तेनकर्मणा ॥ यज्ञंसमाप्यनगरेजगामसचिवैर्वृतः ॥ ४३ ॥ राज्यंचकारधर्मज्ञोमनुपुत्रःप्रतापवान् ॥ आनर्तस्तस्यपुत्रोभूदानर्ताद्रेवतोऽभवत् ॥ ४४ ॥ सोंऽतःसमुद्रेनगरींविनिर्मायकुशस्थलीम् ॥ आस्थितोऽभुंक्तविषयानानर्तादीनरिंदमः ॥ ४५ ॥ तस्यपुत्रशतंजज्ञेककुद्मिज्येष्ठमुत्तमम् ॥ पुत्रीचरेवतीनाम्नासुंदरीशुभलक्षणा ॥ ४६ ॥ वरयोग्यायदाजातातदाराजाचरेवतः ॥ चिंतयामासराजेंद्रोराजपुत्रान्कुलोद्भवान् ॥ ४७ ॥ रैवतंनामचगिरिमाश्रितःपृथिवीपतिः ॥ चकारराज्यंबलवानानर्तेषुनराधिपः ॥ ४८ ॥ विचिंत्यमनसाराजाकस्मैदेयामयासुता ॥ गत्वापृच्छामिब्रह्माणंसर्वज्ञंसुरपूजितम् ॥ ४९ ॥ इतिसंचिंत्यभूपालःसुतामादायरेवतीम् ॥ ब्रह्मलोकंजगामाऽऽशुप्रष्टुकामःपितामहम् ॥ ५० ॥ यत्रदेवाश्चयज्ञाश्चछंदांसिपर्वतास्तथा ॥ अब्धयःसरितश्चाऽपिदिव्यरूपधराःस्थिताः ॥ ५१ ॥ ऋषयःसिद्धगंधर्वाःपन्नगाश्चारणास्तथा ॥ तस्थुःप्रांजलयःसर्वेस्तुवंतश्चपुरातनाः ॥ ५२ ॥ इति श्रीदे०म०सप्तस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ संशयोऽयंमहान्ब्रह्मन्वर्ततेममानसे ॥ ब्रह्मलोकंगतोराजारेवतीसंयुतःस्वयम् ॥ १ ॥ मयापूर्वंश्रुतंकृत्स्नंब्राह्मणेभ्यःकथांतरे ॥ ब्राह्मणोब्रह्मविच्छांतोब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ॥ २ ॥ राजाकथंगतस्तत्ररेवतीसंयुतःस्वयम् ॥ सत्यलोकेऽतिदुष्प्रापेभूर्लोकादितिसंशयः ॥ ३ ॥

न्महापद्मैरेवतस्यकथानकम् ॥ समाप्यवंशविस्तारःपुनाराज्ञांसमुच्यते ॥ १ ॥ ब्रह्मलोकंरेवतोगतइतिराजाश्रुत्वासंशयितःपृच्छति । संशयोऽयमिति ॥ ब्रह्मलोकंगतस्तद्विषयेसंशयइत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ पश्चात्पूर्वंस्वर्लोकगतयश्चासन्नित्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ यातौवसुंधरामितिइयंकथापूर्वमुक्ता ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

मृतःस्वर्गमवाप्नोतिसर्वशास्त्रेषुनिर्णयः " मानुषेणतुदेहेनब्रह्मलोकेगतिःकथम् ॥ " स्वर्गात्पुनःकथंलोकेमानुषेजायतेगतिः ॥ ४ ॥ एतन्मेसंशयंविद्वं
श्छेत्तुमर्हसिसांप्रतम् ॥ यथाराजागतस्तत्रप्रष्टुकामःप्रजापतिम्॥५॥व्यासउवाच ॥ मेरोस्तुशिखरेराजन्सर्वेलोकाःप्रतिष्ठिताः ॥ इंद्रलोकोवह्निलोकोया
चसंयमिनीपुरी ॥६॥ तथैवसत्यलोकश्चकैलासश्चतथापुनः ॥ वैकुंठश्चपुनस्तत्रवैष्णवंपदमुच्यते ॥ ७ ॥ यथाऽर्जुनःशक्रलोकेगतःपार्थोधनुर्धरः॥पंचव
र्षाणि कौंतेयःस्थितस्तत्रसुरालये ॥८॥ मानुषेणैवदेहेनवासवस्यचसन्निधौ ॥ तथैवाऽन्येऽपिभूपालाःककुत्स्थप्रमुखाःकिल ॥९॥ स्वर्लोकगतयःपश्चाद्दै
त्याश्चाऽपिमहाबलाः ॥ जित्वेंद्रसदनंप्राप्यसंस्थितास्तत्रकामतः ॥१०॥ महाभिषःपुराराजाब्रह्मलोकंगतःस्वराट् ॥आगच्छंतींनृपोगंगामपश्यच्चाऽतिसुं
दरीम् ॥ ११ ॥ वायुनांबरमस्यास्तुदेवादपहृतंनृप ॥ किंचिन्नग्नानृपेणाऽथदृष्टासासुंदरीतथा ॥१२॥ स्मितंचकारकामार्तःसाचकिंचिज्जहासवै॥ब्रह्मणा
तौतदादृष्टौशप्तौ यातौवसुंधराम्॥१३॥वैकुंठेऽपिसुराःसर्वेपीडितादैत्यदानवैः ॥ गत्वाहरिंजगन्नाथमस्तुवन्कमलापतिम् ॥ १४॥ संदेहोनाऽत्रकर्तव्यःसर्व
थानृपसत्तम ॥ गम्याःसर्वेऽपिलोकाःस्युर्मानवानांनराधिप ॥१५॥ अवश्यंकृतपुण्यानांतापसानांनराधिप ॥ पुण्यसद्भावएवाऽत्रगमनेकारणंनृप ॥१६॥
तथैवयजमानानांयज्ञेनभावितात्मनाम् ॥ जनमेजयउवाच ॥ रेवतोरेवतींकन्यांगृहीत्वाचारुलोचनाम् ॥ १७ ॥ ब्रह्मलोकंगतःपश्चात्किंकृतंतेनभूभुजा ॥
ब्रह्मणाकिंसमादिष्टंकस्मैदत्तासुतापुनः ॥१८॥ तत्सर्वंविस्तराद्ब्रह्मन्कथयत्वंममाऽधुना ॥ व्यासउवाच ॥ निशामयमहीपालराजारेवतकःकिल॥ १९ ॥
पुत्र्यावरंपरिप्रष्टुंब्रह्मलोकंगतोयदा ॥ आवर्तमानेगांधर्वेस्थितोलब्धक्षणःक्षणम् ॥२०॥ शृण्वन्नतृप्यद्धृष्टात्मासभायांतुसकन्यकः ॥ समाप्तेतत्रगांधर्वेप्रण
म्यपरमेश्वरम् ॥ २१ ॥ दर्शयित्वासुतांतस्मैस्वाभिप्रायंन्यवेदयत् ॥ राजोवाच ॥ वरंकथयदेवेशकन्येयंममपुत्रिका॥२२॥देयाकस्मैमयाब्रह्मन्प्रष्टुंत्वांस
मुपागतः ॥ बहवोराजपुत्रामेवीक्षिताःकुलसंभवाः ॥ २३ ॥ कस्मिंश्चिन्मेमनःकामंनोपतिष्ठतिचंचलम् ॥ तस्मात्त्वांदेवदेवेशप्रष्टुमत्रागतोऽस्म्यहम् ॥
॥ २४ ॥ तदाज्ञापयसर्वज्ञयोग्यंराजसुतंवरम् ॥ कुलीनंबलवंतंचसर्वलक्षणसंयुतम् ॥ २५ ॥ दातारंधर्मशीलंचराजपुत्रंसमादिश ॥ व्यासउवाच ॥
तदाकर्ण्यजगत्कर्तावचनंनृपतेस्तदा ॥ २६ ॥ तमुवाचहसन्वाक्यंदृष्ट्वाकालस्यपर्ययम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ राजपुत्रास्त्वयाराजन्वरायेहृदयेकृताः ॥ २७ ॥
ग्रस्ताःकालेनतेसर्वेसपितृपौत्रबांधवाः ॥ सप्तविंशतिमोऽद्यैवद्वापरस्तुप्रवर्तते ॥ २८ ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ गांधर्वेगानेप्रचलितेसतिलब्धक्षणोलब्धावकाशः क्षणंक्षणपरिमितलब्धावकाशइत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ संभवाउत्पन्नाः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥
॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ अस्याःकथायास्तात्पर्यंतुक्षणभंगुरःसंसारोऽस्तिनतत्राऽऽसक्तिःकर्तव्या किंतुपरमेश्वर्याआराधनमेवकर्तव्यमिति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ मेरुंगतस्यस्वर्गंगतस्यशर्यातेःमरणोत्तरमित्यर्थः ॥ ५० ॥ इत्थंशर्यातिकथांसमाप्येक्ष्वा

वंशजास्तेमृताःसर्वेपुरीदैत्यैर्विलुंठिता ॥ सोमवंशोद्भवस्तत्रराजाराज्यंप्रशास्तिहि ॥ २९ ॥ उग्रसेनइतिख्यातोमथुराधिपतिःकिल ॥ ययातिवंशसं भूतोराजामाथुरमंडले ॥ ३० ॥ उग्रसेनात्मजःकंसःसुरद्वेषीमहाबलः ॥ दैत्यांशःपितरंसोपिकारागारंन्यवेशयत् ॥३१॥ स्वयंराज्यंचकाराऽसौनृपाणां मदगर्वितः ॥ मेदिनीचातिभारार्ताब्रह्माणंशरणंगता ॥ ३२ ॥ दुष्टराजन्यसैन्यानांभारेणाऽतिसमाकुला ॥ अंशावतरणंतत्रगदितंसुरसत्तमैः ॥ ३३ ॥ वा सुदेवःसमुत्प न्नःकृष्णःकमललोचनः ॥ देवक्यांदेवरूपिण्यांयोऽसौनारायणोमुनिः ॥ ३४ ॥ तपश्चचारदुःसाध्यंधर्मपुत्रःसनातनः ॥ गंगातीरंनरसखः पुण्येबदरिकाश्रमे ॥ ३५ ॥ सोऽवतीर्णोयदुकुलेवासुदेवोऽतिविश्रुतः ॥ तेनाऽसौनिहतःपापःकंसःकृष्णेनसत्तम ॥ ३६ ॥ उग्रसेनायराज्यंवैदत्तंहत्वाख लंसुतम् ॥ कंसस्यश्वशुरःपापोजरासंधोमहाबलः ॥ ३७ ॥ आगत्यमथुरांक्रोधाच्चकारसंगरंमुदा ॥ कृष्णेनाऽऽसौजितःसंख्येजरासंधोमहाबलः ॥ ३८ ॥ प्रेषयामासयुद्धायसबलंयवनंततः ॥ श्रुत्वायातंमहाशूरंससैन्यंयवनाधिपम् ॥ ३९ ॥ " कृष्णस्तुमथुरांत्यक्त्वापुरींद्वारवतीमगात् ॥ प्रभग्नांतांपुरींकृष्णः शिल्पिभिःसहसंगतैः ॥ कारयामासदुर्गाढ्यांहट्टशालाविमंडिताम् ॥ जीर्णोद्धारंपुरःकृत्वावासुदेवःप्रतापवान् ॥ उग्रसेनंचराजानंचकारवशवर्तिनम् ॥ " यादवान्स्थापयामासद्वारवत्यांयदूत्तमः ॥ वासुदेवस्तुतत्राऽद्यवर्ततेबांधवैःसह ॥ ४० ॥ तस्याऽग्रजःसविख्यातोबलदेवोहलायुधः ॥ शेषांशोमु सलीवीरोवरोऽस्तुतवसंमतः ॥ ४१ ॥ संकर्षणायदेह्याशुकन्यांकमललोचनाम् ॥ रेवतींबलभद्रायविवाहविधिनाततः ॥ ४२ ॥ दत्त्वापुत्रींनृपश्रेष्ठगच्छ त्वंबदरिकाश्रमम् ॥ तपस्तप्तुंसुरारामंपावनंकामदंनृणाम् ॥ ४३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिराजासमादिष्टोब्रह्मणापद्मयोनिना ॥ जगामतरसाराजन्द्वारकां कन्ययाऽन्वितः ॥ ४४ ॥ ददौतांबलदेवायकन्यांवैशुभलक्षणाम् ॥ ततस्तस्वातपस्तीव्रंनृपतिःकालपर्यये ॥ ४५ ॥ जगामत्रिदशावासंत्यक्त्वादेहंसरि त्तटे ॥ राजोवाच ॥ भगवन्महदाश्चर्यंभवतासमुदाहृतम् ॥४६॥ रेवतस्तुस्थितस्तत्रब्रह्मलोकेसुतार्थतः॥युगानांतुगतंतत्रशतमष्टोत्तरंकिल॥४७॥कन्या वृद्धानसंजाताराजावाऽतितरांनुकिम् ॥ एतावंतंतथाकालमायुःपूर्णंतयोःकथम् ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच ॥ नजराक्षुत्पिपासावानमृत्युर्नभयंपुनः ॥ नतु ग्लानिःप्रभवतिब्रह्मलोकेसदाऽनघ ॥ ४९ ॥ मेरुंगतस्यशर्यातेःसंततीराक्षसैर्हता ॥ गताकुशस्थलींत्यक्त्वाभयभीताइतस्ततः ॥५०॥ मनोश्चक्षुवतःपुत्र उत्पन्नोवीर्यवत्तरः ॥ इक्ष्वाकुरितिविख्यातःसूर्यवंशकरस्तुसः ॥ ५१ ॥

केवंशमाह । मनोरिति ॥ क्षुवतइतिक्षुतंकुर्वतोवैवस्वतमनोर्घ्राणतउत्पन्नइत्यर्थः ॥ ५१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





देवींध्यात्वेति ॥ नारदोपदेशतोदीक्षांप्राप्यतन्मंत्रजपपुरःसरंदेवीध्यांत्वातपआतिष्ठादित्यन्वयः ॥ ५२ ॥ ततोदेवीप्रसादेनसूर्यवंशश्चालितइत्याह । तस्यपुत्रशतमिति ॥ अनेनचसर्वेऽपिसूर्यवंशीयाराजानोदेवीपदांबुजरताइतिबोधितम् ॥ मूलपुरुषस्यदेवीभक्तत्वात् ॥ ५३ ॥ पुत्रशतविभागमाह । अयोध्यायामिति ॥५४॥ उत्तरापथदेशस्येतिपूर्वदेशस्याप्युपलक्षणम्। दक्षिणस्यामितिपश्चिमायाउपलक्षणम् ॥ तदुक्तंभागवतेनवमस्कंधे ॥ ध्रुवतस्तुमनोर्जज्ञइक्ष्वाकुर्घ्राणतःसुतः ॥ तस्यपुत्रशतज्येष्ठाविकुक्षिनिमिदंडकाः ॥ तेषांपुरस्तादभवन्नार्यावर्तेनृपा नृप ॥ पंचविंशतिपश्चाच्चतयोर्मध्येपरेऽन्यतइति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ अर्धाधिकत्रिषष्ट्यातुपद्यानामुद्भवस्तथा ॥ ककुत्स्थस्य

वंशार्थंतपआतिष्ठद्देवींध्यात्वानिरंतरम् ॥ नारदस्योपदेशेनप्राप्यदीक्षामनुत्तमाम् ॥ ५२ ॥ तस्यपुत्रशतंराजन्निक्ष्वाकोरितिविश्रुतम् ॥ विकुक्षिःप्रथमस्तेषांबलवीर्यसमन्वितः ॥ ५३ ॥ अयोध्यायांस्थितोराजाइक्ष्वाकुरितिविश्रुतः ॥ शकुनिप्रमुखाःपुत्राःपंचाशद्बलवत्तराः ॥ ५४ ॥ उत्तरापथदेशस्यरक्षितारःकृताःकिल ॥ दक्षिणस्यांतथाराजन्नादिष्टास्तेनतेसुताः ॥५५॥ चत्वारिंशत्तथाऽष्टौचरक्षणार्थंमहात्मना ॥ अन्यौद्वौसंस्थितौपार्श्वेसेवार्थंतस्यभूपतेः ॥५६॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ व्यासउवाच ॥ कदाचिदष्टकाश्राद्धेविकुक्षिंपृथिवीपतिः ॥ आज्ञापयदसंमूढोमांसमानयसत्वरम् ॥ १ ॥ मेध्यंश्राद्धार्थमधुनावनेगत्वासुतादरात् ॥ इत्युक्तोऽसौतथेत्याशुजगामवनमस्त्रभृत् ॥ २ ॥ गत्वाजघानबाणैःसवराहान्सूकरान्मृगान् ॥ शशांश्चापिपरिश्रांतोबभूवाऽथबुभुक्षितः ॥ ३ ॥ विस्मृताचाऽष्टकातस्यशशंचाऽऽददसौवने ॥ शेषंनिवेदयामासपित्रेमांसमनुत्तमम् ॥ ॥ ४ ॥ प्रोक्षणायसमानीतंमांसंदृष्ट्वागुरुस्तदा ॥ अनर्हमितितज्ज्ञात्वाचुकोपमुनिसत्तमः ॥ ५ ॥ भुक्तशेषंतुनश्राद्धेप्रोक्षणीयमितिस्थितिः ॥ राज्ञेनिवेदयामासवसिष्ठःपाकदूषणम् ॥ ६ ॥ पुत्रस्यकर्मतज्ज्ञात्वाभूपतिर्गुरुणोदितम् ॥ चुकोपविधिलोपात्तंदेशान्निःसारयत्ततः ॥७॥ शशादइतिविख्यातोनाम्नाजातोनृपात्मजः ॥ गतोवनेशशादस्तुपितृकोपादसंभ्रमः ॥ ८ ॥ वन्येनवर्तयन्कालंनीतवान्धर्मतत्परः ॥ पितर्युपरतेराज्यंप्राप्तंतेनमहात्मना ॥ ९ ॥ शशादस्त्वकरोद्राज्यमयोध्यायाःपतिःस्वयम् ॥ यज्ञाननेकशःपूर्णांश्चकारसरयूतटे ॥ १० ॥ शशादस्याभवत्पुत्रःककुत्स्थइतिविश्रुतः ॥ तस्यैवनामभेदाद्वैइंद्रवाहःपुरंजयः ॥ ११ ॥ जनमेजयउवाच ॥ नामभेदःकथंजातोराजपुत्रस्यचाऽनघ ॥ कारणंब्रूहिमेसर्वंकर्मणायेनचाऽभवत् ॥१२॥ व्यासउवाच॥ शशादेस्वर्गतेराजाककुत्स्थइतिचाऽभवत् ॥ " राज्यंचकारधर्मज्ञःपितृपैतामहंबलात् ॥ " एतस्मिन्नंतरेदेवादैत्यैःसर्वेपराजिताः ॥ १३ ॥

प्रथमतस्ततोमांधातुरुच्यते ॥ १ ॥ इक्ष्वाकोश्चरितमाह । कदाचिदिति ॥ अष्टकाश्राद्धे पित्रादिमातृमध्यंचतथामातामहांतिमामित्युक्तलक्षणे॥पृथिवीपतिरिक्ष्वाकुः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ आदत्अभक्षयत् ॥ ४ ॥ गुरुर्वसिष्ठः ॥ ५ ॥ भुक्तशेषमिति ॥ श्राद्धोद्देशेनयदन्नंनिष्काशितंतन्मध्यात्किंचिदन्नंभक्षितंचेद्यदवशिष्टमन्नंतद्भुक्तशेषंजातमित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ शशभक्षणात्शशादोजातः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १४ ॥ १५ ॥ तस्यकस्मात्कारणादेतादृशंसामर्थ्यमितिचेत्तत्राह। पराशक्तेःप्रसादेनेति ॥ पराशक्त्युपासकस्यराज्ञस्तस्याएवप्रसादात्सामर्थ्यलाभइतिभावः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८॥
॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ श्रीभगवतीप्रसादेनतवनाकिंचिद्दुर्लभमित्याह । पराशक्तीति ॥ २२॥ पार्ष्णिग्राहःसंरक्षिता ॥ २३ ॥ देवकृतेदेवार्थम् ॥ २४ ॥ पत्रंवाहनम् ॥ २५ ॥ रुद्र

जग्मुस्त्रिलोकाधिपतिंविष्णुंशरणमव्ययम् ॥ तान्प्रोवाचमहाविष्णुस्तदादेवान्सनातनः ॥ १४ ॥ विष्णुरुवाच ॥ पार्ष्णिग्राहंमहीपालंप्रार्थयंतुशशादज
म् ॥ सहनिष्यतिवैदैत्यान्संग्रामेसुरसत्तमाः ॥ १५॥ आगमिष्यतिधर्मात्मासाहाय्यार्थेधनुर्धरः ॥ पराशक्तेःप्रसादेनसामर्थ्यंतस्यचाऽतुलम् ॥१६॥ हरेः
सुवचनादेवाययुःसर्वेसवासवाः ॥ अयोध्यायांमहाराजशशादतनयंप्रति ॥ १७ ॥ तानागतान्सुराञ्राजापूजयामासधर्मतः ॥ पप्रच्छागमनेराजाप्रयोजनम
तंद्रितः ॥१८॥ राजोवाच ॥ धन्योऽहंपावितश्चाऽस्मिजीवितंसफलंमम ॥ यदागत्यगृहेदेवाददुश्चदर्शनेमहत् ॥ १९ ॥ ब्रुवंतुकृत्यंदेवेशादुःसाध्यमपिमान
वैः॥करिष्यामिमहत्कार्यंसर्वथाभवतांमहत् ॥२०॥ देवाऊचुः॥साहाय्यंकुरुराजेंद्रसखाभवशचीपतेः ॥ संग्रामेजयदैत्येंद्रान्दुर्जयांस्त्रिदशैरपि ॥२१॥ परा
शक्तिप्रसादेनदुर्लभंनास्तितेक्वचित् ॥ विष्णुनाप्रेरिताश्चैवमागतास्तवसन्निधौ ॥ २२ ॥ राजोवाच ॥ पार्ष्णिग्राहोभवाम्यद्यदेवानांसुरसत्तमाः ॥ इंद्रोमे
वाहनंतत्रभवेद्यदिसुराधिपः ॥२३॥ संग्रामंतुकरिष्यामिदैत्यैर्देवकृतेऽधुना ॥ आरुह्येद्रंगमिष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥ २४॥ तदोचुर्वासवंदेवाःकर्तव्यं
कार्यमद्भुतम् ॥ पत्रंभवनरेंद्रस्यत्यक्त्वालज्जांशचीपते ॥२५॥ लज्जमानस्तदाशक्रःप्रेरितोहरिणाभृशम् ॥ बभूववृषभस्तूर्णंरुद्रस्येवाऽपरोमहान् ॥२६॥
तमारुरोहराजाऽसौसंग्रामगमनायवै ॥ स्थितःककुदियेनाऽस्यककुत्स्थस्तेनचाऽभवत् ॥ २७ ॥ इंद्रोवाहःकृतोयेनतेननाम्नेंद्रवाहकः ॥ पुरंजितंतुदैत्या
नांतेनाऽभूच्चपुरंजयः ॥ २८ ॥ जित्वादैत्यान्महाबाहुर्धनंतेषांप्रदत्तवान् ॥ पप्रच्छचैवंराजर्षेरितिसख्यंबभूवह ॥ २९ ॥ ककुत्स्थश्चाऽतिविख्यातोनृप
तिस्तस्यवंशजाः ॥ काकुत्स्थाभुविराजानोबभूवुर्बहुविश्रुताः ॥ ३० ॥ ककुत्स्थस्याऽभवत्पुत्रोधर्मपत्न्यांमहाबलः ॥ अनेनाविश्रुतस्तस्यपृथुःपुत्र
श्चवीर्यवान् ॥ ३१ ॥ विष्णोरंशःस्मृतःसाक्षात्पराशक्तिपदार्चकः ॥ विश्वरंधिस्तुविज्ञेयःपृथोःपुत्रोनराधिपः ॥३२॥ चंद्रस्तस्यसुतःश्रीमान्राजावंशकरः
स्मृतः ॥ तत्सुतोयुवनाश्वस्तुतेजस्वीबलवत्तरः ॥ ३३ ॥ शावंतोयुवनाश्वस्यजज्ञेपरमधार्मिकः ॥ शावंतीनिर्मितातेनपुरीशक्रपुरीसमा ॥ ३४ ॥ बृहद
श्वस्तुपूत्रोभूच्छावंतस्यमहात्मनः ॥ कुवलयाश्वःसुतस्तस्यबभूवपृथिवीपतिः ॥ ३५ ॥

स्ययथावृषभस्तथेत्यर्थः ॥ २६ ॥ येनास्येति ॥ येनकारणेनाऽस्येंद्रस्यवृषभरूपस्यककुदिस्थितस्तेनकारणेनेत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ तेषांदैत्यानांधनंदेवेभ्योदत्तवानित्यर्थः ॥ पप्र
च्छेति ॥ स्वनगरंगंतुंदेवानितिशेषः ॥ अनेनप्रकारेणराजर्षेरिंद्रस्यचसख्यंबभूवेत्याह। राजर्षेरिति ॥ २९ ॥३० ॥ अनेनाऽऽविश्रुतः काकुत्स्थनाम्नाविख्यातइत्यर्थः ॥ तस्यकाकुत्स्थस्य
पृथुःपुत्रः ॥ ३१ ॥ सचपृथुर्विष्णोरंशःपराशक्तेश्चपरमभक्तइत्याह । विष्णोरिति ॥ ३२ ॥३३॥ शावंतीति ॥ तदुक्तंकूर्मपुराणे॥शावंतीनिर्मितातेनगौडदेशेमहापुरीति ॥ ३४ ॥ ३५॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९॥ मांधातुःपराक्रमंवर्णयति । अष्टोत्तरसहस्रंत्विति ॥ येनमहातीर्थेषुकाश्यादिषुश्रीभगवतीतुष्ट्यर्थमष्टोत्तरसहस्रसंख्याकाभगवत्याःप्रासादानिर्मिताः ॥ एता दृशोऽयंपरमभगवतीभक्तइत्यर्थः ॥ ४० ॥ भगवत्यास्तुष्ट्यर्थमिति ॥ तदुक्तमुमासंहितायाम् ॥ त्रिलोकीस्थापनात्पुण्यंयद्भवेन्मुनिपुंगव ॥ तत्कोटिगुणितंपुण्यंश्रीदेवीस्थापनाद्भवेत् ॥ मध्येदेवींस्थापयित्वापंचायतनदेवताः ॥ चतुर्दिक्षुस्थापयेद्यस्तस्यपुण्यंनगण्यते ॥ विष्णोर्नाम्नांकोटिजपाद्ग्रहणेसूर्यचंद्रयोः ॥ यत्फलंलभ्यतेतस्माच्छतकोटिगुणोत्तरम् ॥ शिवनाम्नोज

धुंधुर्नामाहतोदैत्यस्तेनाऽसौपृथिवीतले ॥ धुंधुमारेतिविख्यातंनामप्रापाऽतिविश्रुतम् ॥ ३६ ॥ पुत्रस्तस्यदृढाश्वस्तुपालयामासमेदिनीम् ॥ दृढाश्वस्यसुतःश्रीमान्हर्यश्वइतिकीर्तितः ॥ ३७ ॥ निकुंभस्तत्सुतःप्रोक्तोबभूवपृथिवीपतिः ॥ बर्हणाश्वोनिकुंभस्यकृशाश्वस्तस्यवैसुतः ॥३८॥प्रसेनजित्कृशाश्वस्यबलवान्सत्यविक्रमः ॥ तस्यपुत्रोमहाभागोयौवनाश्वेतिविश्रुतः ॥ ३९ ॥ यौवनाश्वसुतःश्रीमान्मांधातेतिमहीपतिः ॥ अष्टोत्तरसहस्रंतुप्रासादायेननिर्मिताः ॥ ४० ॥ भगवत्यास्तुतुष्ट्यर्थंमहातीर्थेषुमानद ॥ मातृगर्भेनजातोऽसावुत्पन्नोजनकोदरे॥४१॥निःसारितस्ततःपुत्रःकुक्षिंभित्त्वापितुःपुनः ॥ ॥ राजोवाच ॥ नश्रुतंनचदृष्टंवाभवतातदुदाहृतम् ॥ ४२ ॥ असंभाव्यंमहाभागतस्यजन्मयथोदितम्॥विस्तरेणवदस्वाऽद्यमांधातुर्जन्मकारणम्॥४३॥ राजोदरेयथोत्पन्नःपुत्रःसर्वांगसुंदरः ॥ व्यासउवाच ॥ यौवनाश्वोनपत्योभूद्राजापरमधार्मिकः ॥ ४४ ॥ भार्याणांचशतंतस्यबभूवनृपतेर्नृप ॥ राजाचिंतापरःप्रायश्चितयामासनित्यशः ॥ ४५ ॥ अपत्यार्थेयौवनाश्वोदुःखितस्तुवनंगतः ॥ ऋषीणामाश्रमेपुण्येनिर्विण्णःसचपार्थिवः ॥ ४६ ॥ मुमोचदुःखितःश्वासांस्तापसानांचपश्यताम् ॥ दृष्ट्वातुदुःखितंविप्राबभूवुश्चकृपालवः ॥ ४७॥ तमूचुर्ब्राह्मणाराजन्कस्माच्छोचसिपार्थिव ॥ किंतेदुःखंमहाराजब्रूहिसत्यंमनोगतम् ॥ ४८ ॥ प्रतीकारंकरिष्यामोदुःखस्यतवसर्वथा ॥ यौवनाश्वउवाच ॥ राज्यंधनंसदश्वाश्चवर्ततेमुनयोमम ॥ ४९ ॥ भार्याणांचशतंशुद्धंवर्ततेविशदप्रभम् ॥ नाऽरातिस्त्रिषुलोकेषुकोऽप्यस्तिबलवान्मम ॥ ५० ॥ आज्ञाकरास्तुसामंतावर्ततेमंत्रिणस्तथा ॥ एकंसंतानजंदुःखंनाऽन्यत्पश्यामितापसाः ॥५१॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तिस्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्माच्छोचामिविप्रेंद्राःसंतानार्थंभृशंततः ॥५२॥ वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञास्तापसाश्चकृतश्रमाः ॥ इष्टिंसंतानकामस्ययुक्तांज्ञात्वादिशंतुमे ॥ ५३ ॥ कुर्वंतुममकार्यंवैकृपाचेदस्तितापसाः ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञःकृपयापूर्णमानसाः ॥५४॥ कारयामासुरव्यग्रास्तस्येष्टिमिंद्रदेवताम् ॥ कलशःस्थापितस्तत्रजलपूर्णस्तुवाडवैः ॥ ५५ ॥ मंत्रितोवेदमंत्रैश्चपुत्रार्थंतस्यभूपतेः॥राजातद्यज्ञसदनंप्रविष्टस्तृषितोनिशि ॥५६॥ विप्रान्दृष्ट्वाशयानान्सपपौमंत्रजलंस्वयम् ॥ भार्यार्थंसंस्कृतंविप्रैर्मंत्रितंविधिनोद्धृतम् ॥ ५७ ॥

पादेवतस्मात्कोटिगुणोत्तरम् ॥ श्रीदेवीनामजपात्ततःकोटिगुणोत्तरम् ॥ देव्याःप्रासादकरणात्पुण्यंतुसमवाप्यते ॥ स्थापितायेनसादेवीजगन्मातात्रयीमयी ॥ नतस्यदुर्लभंकिंचिच्छ्रीमातुःकरुणावशादिति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ कंधास्यतिकंपास्यतीत्यर्थः ॥ मातुरभावात्स्तनपानंकस्याशिशुःकरिष्यतीत्यर्थः ॥ ६२ ॥ मांधातेति ॥ तदातस्मिन्कालेइंद्रोदेशिनींतर्जनींशिशवे प्रादाद्दत्तवान्स्तनस्थाने ॥ अथचेंद्रोवदत किमिति मांधातेति मांपास्यतीत्यर्थः ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥७॥ अष्टाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथ तुसादरम् ॥ मांधातुश्चकथांप्रोच्यसत्यव्रतकथोच्यते ॥ १ ॥ मांधातुरुत्पत्त्यनंतरं तस्यवृत्तमाह । बभूवेति ॥ १ ॥ त्रस्तादस्यवोयस्मादितित्रसदस्युः ॥ पृषोदरादित्वात्साधुत्वम् ॥२ ॥

पीतंराज्ञातृषार्तेनतदज्ञानान्नृपोत्तम ॥ व्युदकंकलशंदृष्ट्वातदाविप्राविशंकिताः॥५८॥पप्रच्छुस्तेनृपंकेनपीतंजलमितिद्विजाः ॥ राज्ञापीतंविदित्वातेज्ञात्वा दैवबलंमहत् ॥ ५९ ॥ इष्टिंसमापयामासुर्गतास्तेमुनयोगृहान् ॥ गर्भंदधारनृपतिस्ततोमंत्रबलादथ ॥ ६० ॥ ततःकालेसउत्पन्नःकुक्षिंभित्त्वाऽस्यद क्षिणम् ॥ पुत्रंनिष्कासयामासुर्मंत्रिणस्तस्यभूपतेः ॥ ६१ ॥ देवानांकृपयातत्रनममारमहीपतिः ॥ कंधास्यतिकुमारोऽयंमंत्रिणश्चुक्रुशुर्भृशम् ॥ ६२ ॥ तदेंद्रोदेशिनींप्रादान्मांधातेत्यवदद्वचः ॥ सोभवद्बलवान्राजामांधातापृथिवीपतिः ॥ ६३ ॥ तदुत्पत्तिस्तुभूपालकथितातवविस्तरात् ॥ इतिश्रीदेवी भागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ बभूवचक्रवर्तीसनृपतिःसत्यसंगरः॥ मांधातापृथिवींसर्वामजयन्नृपतीश्वरः॥ १॥ दस्यवोऽस्यभयत्रस्तायर्युर्गिरिगुहासुच ॥ इंद्रेणाऽस्यकृतंनामत्रसदस्युरितिस्फुटम् ॥ २ ॥ तस्यांबिंदुमतीभार्याशशबिंदोःसुताऽभवत् ॥ पतिव्रतासुरू पाचसर्वलक्षणसंयुता ॥ ३ ॥ तस्यामुत्पादयामासमांधाताद्वौसुतौनृप ॥ पुरुकुत्संसुविख्यातंमुचुकुंदंतथाऽपरम् ॥ ४ ॥ पुरुकुत्साच्चतोरण्यःपुत्रःपर मधार्मिकः ॥ पितृभक्तिरतश्चाभूद्बृहदश्वस्तदात्मजः ॥ ५ ॥ हर्यश्वस्तस्यपुत्रोभूद्धार्मिकःपरमार्थवित् ॥ तस्याऽऽत्मजस्त्रिधन्वाभूदरुणस्तस्यचात्मजः ॥ ॥ ६ ॥ अरुणस्यसुतःश्रीमान्सत्यव्रतइतिश्रुतः ॥ सोऽभूदिच्छाचरःकामीमंदात्माह्यतिलोलुपः ॥ ७ ॥ सपापात्माविप्रभार्यांहृतवान्काममोहितः ॥ विवाहेतस्यविघ्नंसचकारनृपतेःसुतः ॥ ८ ॥ मिलिताब्राह्मणास्तत्रराजानमरुणंनृप ॥ ऊचुर्भृशंसुदुःखार्ताहाहताःस्मेतिचासकृत् ॥ ९ ॥ पप्रच्छरा जातान्विप्रान्दुःखितान्पुरवासिनः ॥ किंकृतंममपुत्रेणभवतामशुभंद्विजाः ॥ १० ॥ तन्निशम्यद्विजावाक्यंराज्ञोविनयपूर्वकम् ॥ तदोचुस्त्वरुणंविप्राः कृताशीर्वचनाभृशम् ॥ ११ ॥ ब्राह्मणाऊचुः ॥ राजंस्तवसुतेनाऽद्यविवाहेप्रहृताःकिल ॥ विवाहिताविप्रकन्याबलेनबलिनांवर ॥ १२ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वातेषांवचस्तथ्यंराजापरमधार्मिकः ॥ पुत्रमाहवृथानामकृतंतेदुष्टकर्मणा ॥ १३ ॥ गच्छदूरंसुमंदात्मन्दुराचारगृहान्मम ॥ नस्थातव्यंत्वया पापविषयेममसर्वथा ॥ १४ ॥ कुपितंपितरंप्राहक्वगच्छामीतिवैमुहुः ॥ अरुणस्तमथोवाचश्वपाकैःसहवर्तय ॥ १५ ॥

॥३॥४॥ ततोरण्यइतिनामैकदेशेननामग्रहणादनरण्यइत्यर्थः ॥ बृहदश्वइत्यनरण्यस्यविशेषणम् ॥ तदात्मजःपुरुकुत्सात्मजइत्यथः ॥ तदुक्तंपुराणांतरे ॥ त्रसद्दस्योःपौरुकुत्सोयोऽनरण्य स्यदेहकृत् ॥ हर्यश्वस्ततत्सुतस्तस्मादरुणोऽथोत्रिबंधनइति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १६ ॥ १७ ॥ १६ ॥ १९ ॥ प्रेरितोऽसाविति ॥ वसिष्ठेनारुणोमहीपतिरयंपुत्रोनिष्कासनीयइतिप्रेरितइत्यर्थः ॥ २० ॥ तस्मिन्वसिष्ठेनिवारणेपुत्रनिष्कासननिवारणेपराङ्मुखेवहिर्मुखे ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ कातराभयभीता ॥ २५ ॥ नीवारान्अरण्यभवश्यामाकान् ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

श्वपचस्यकृतंकर्मद्विजदारापहारणम् ॥ तस्मात्तैःसहसंसर्गंकृत्वातिष्ठयथासुखम् ॥ १६ ॥ नाऽहंपुत्रेणपुत्रार्थीत्वयाचकुलपांसन ॥ यथेष्टंव्रजदुष्टात्मन्कीर्तिनाशःकृतस्त्वया ॥ १७ ॥ सनिशम्यपितुर्वाक्यंकुपितस्यमहात्मनः ॥ निश्चक्रामपुरात्तस्मात्तरसाश्वपचान्ययौ ॥ १८ ॥ सत्यव्रतस्तदातत्रश्वपाकैःसहवर्तते ॥ धनुर्बाणधरःश्रीमान्कवचीकरुणालयः ॥ १९ ॥ यदानिष्कासितःपित्राकुपितेनमहात्मना ॥ गुरुणाऽथवसिष्ठेनप्रेरितोऽसौमहीपतिः ॥ २० ॥ तस्मात्सत्यव्रतस्तस्मिन्चभूवक्रोधसंयुतः ॥ वसिष्ठेधर्मशास्त्रज्ञेनिवारणपराङ्मुखे ॥ २१ ॥ केनचित्कारणेनाऽथपितातस्यमहीपतिः ॥ पुत्रार्थेऽसौतपस्तप्तुंपुरंत्यक्त्वावनंगतः ॥ २२ ॥ नववर्षतदातस्मिन्विषयेपाकशासनः ॥ समाद्वादशराजेंद्रतेनाऽधर्मेणसर्वथा ॥ २३ ॥ विश्वामित्रस्तदादारांस्तस्मिंस्तुविषयेनृप ॥ संन्यस्यकौशिकीतीरेचचारविपुलंतपः ॥ २४ ॥ कातरातत्रसंजाताभार्यावैकौशिकस्यह ॥ कुटुंबभरणार्थायदुःखितावरवर्णिनी ॥ २५ ॥ बालकान्क्षुधयाक्रांतान्रुदतःपश्यतीभृशम् ॥ याचमानांश्चनीवारान्कष्टमापपतिव्रता ॥ २६ ॥ चिंतयामासदुःखार्तातोकान्वीक्ष्यक्षुधातुरान् ॥ नृपोनास्तिपुरेह्यद्यकंयाचेवाकरोमिकिम् ॥ २७ ॥ नमेत्राताऽस्तिपुत्राणांपतिर्मेनास्तिसन्निधौ ॥ रुदंतिबालकाःकामंधिङ्मेजीवनमद्यवै ॥ २८ ॥ धनहीनांचमांत्यक्त्वातपस्तप्तुंगतःपतिः ॥ नजानातिसमर्थोपिदुःखितांधनवर्जिताम् ॥ २९ ॥ बालानांभरणंकेनकरोमिपतिनाविना ॥ मरिष्यंतिसुताःसर्वेक्षुधयापीडिताभृशम् ॥ ३० ॥ एकंसुतंतुविक्रीयद्रव्येणकियतापुनः ॥ पालयामिसुतानन्यानेषमेविहितोविधिः ॥ ३१ ॥ सर्वेषांमारणंनाद्धायुक्तंममविपर्यये ॥ कालस्यकलनायाऽहंविक्रीणामितथात्मजम् ॥ ३२ ॥ हृदयंकठिनंकृत्वासंचिंत्यमनसासती ॥ सादर्भरज्ज्वाबद्धाथगलेपुत्रंविनिर्गता ॥ ३३ ॥ मुनिपत्नीगलेबद्धामध्यमंपुत्रमौरसम् ॥ शेषस्यभरणार्थायगृहीत्वाचलितागृहात् ॥ ३४ ॥ दृष्टासत्यव्रतेनाऽऽर्तातापसीशोकसंयुता ॥ पप्रच्छनृपतिस्तांतुकिंचिकीर्षसिशोभने ॥ ॥ ३५ ॥ रुदंतंबालकंकंठेबद्धानयसिकाऽधुना ॥ किमर्थंचारुसर्वांगिसत्यंब्रूहिममाऽग्रतः ॥ ३६ ॥ ऋषिपत्न्युवाच ॥ विश्वामित्रस्यभार्याऽहंपुत्रोऽयंमेनृपात्मज ॥ विक्रेतुमौरसंकामंगमिष्येविषमेसुतम् ॥ ३७ ॥ अन्नंनास्तिपतिर्मुक्त्वागतस्तप्तुंनृपक्वचित् ॥ विक्रीणामिक्षुधार्तैनंशेषस्यभरणायवै ॥ ३८ ॥ ॥ राजोवाच ॥ पतिव्रतेरक्षपुत्रंदास्यामिभरणंतव ॥ तावदेवपतिस्तेऽत्रवनाच्चैवाऽऽगमिष्यति ॥ ३९ ॥

काऽधुनेति ॥ अधुनाकांत्वनयसीत्यन्वयः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ त्यज्यमानामिति ॥ धर्मिष्ठंपुत्रंत्यज्यमानंपित्राद्दृष्ट्वानिवारणकारणेसत्यपिवसिष्ठोननिवारयामास ततोहेतोस्तस्मिन्मन्युंधारयामासेत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ननुकिंतत्कारणंयस्मिन्सत्यपिवसिष्ठेननिवारितइत्युच्यतइतिचेत्तदाह । पाणिग्रहणेति ॥ सप्तमेपदेसप्तपदीकर्मयदास्यात्तदापाणिग्रहणमंत्राणांनिष्ठा समाप्तिर्भवति ॥ ततःपूर्वंकन्यापहारेतुनाऽन्यस्यपत्नीअपहृता ॥ किंतुकन्यैवापहृतेतिनसोऽपहारोदोषायेतिभावः ॥ इदंविप्रदाराणामपरिग्रहेअपहाराभावेकारणंधर्मात्माजानन्नपिवसिष्ठो

वृक्षेतवाऽऽश्रमाभ्याशेभक्ष्यंकिंचिन्निरंतरम् ॥ बंधयित्वागमिष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥ ४० ॥ इत्युक्तासातदातेनराज्ञाकौशिककामिनी ॥ विबंधंतनयंकृत्वाजगामाऽऽश्रममंडलम् ॥ ४१ ॥ सोऽभवद्बालवोनामगलबंधान्महातपाः ॥ सातुस्वस्याऽऽश्रमेगत्वामुमोदबालकैर्वृता ॥ ४२ ॥ सत्यव्रतस्तुभक्त्याचकृपयाचपरिप्लुतः ॥ विश्वामित्रस्यचमुनेःकलत्रंतद्बभारह ॥ ४३ ॥ वनेस्थितान्मृगान्हत्वावराहान्महिषांस्तथा ॥ विश्वामित्रवनाभ्याशेमांसंवृक्षेबबंधह ॥ ४४ ॥ ऋषिपत्नीगृहीत्वातन्मांसंपुत्रानदात्ततः ॥ निर्वृतिंपरमांप्रापप्राप्यभक्ष्यमनुत्तमम् ॥ ४५ ॥ अयोध्यांचैवराज्यंचतथैवांतःपुरंमुनिः ॥ गतेतद्गुंनृपेतस्मिन्वसिष्ठःपर्यरक्षत ॥ ४६ ॥ सत्यव्रतोऽपिधर्मात्माह्यतिष्ठन्नगराद्बहिः ॥ पितुराज्ञांसमास्थायपशुघ्नव्रतवान्वने ॥ ४७ ॥ सत्यव्रतोह्यकस्माच्चकस्यचित्कारणान्नृपः ॥ वसिष्ठेचाऽधिकंमन्युंधारयामासनित्यदा ॥ ४८ ॥ त्यज्यमानंवनेपित्राधर्मिष्ठंचप्रियंसुतम् ॥ नवारयामासमुनिर्वसिष्ठःकारणेनह ॥ ४९ ॥ पाणिग्रहणमंत्राणांनिष्ठास्यात्सप्तमेपदे ॥ जानन्नपिसधर्मात्माविप्रदारपरिग्रहे ॥ ५० ॥ कस्मिंश्चिद्दिवसेऽरण्येमृगाभावेमहीपतिः ॥ वसिष्ठस्यचगांदोग्ध्रीमपश्यद्वनमध्यगाम् ॥ ५१ ॥ तांजघानक्षुधार्तस्तुक्रोधान्मोहाच्चदस्युवत् ॥ वृक्षेबबंधतन्मांसंनीत्वास्वयमभक्षयत् ॥ ५२ ॥ ऋषिपत्नीसुतान्सर्वान्भोजयामासतत्तदा ॥ शंकमानामृगस्येतिनगोरितिचसुव्रत ॥ ५३ ॥ वसिष्ठस्तुहतांदोग्ध्रींज्ञात्वाक्रुद्धस्तमब्रवीत् ॥ दुरात्मन्किंकृतंपापंधेनुघातात्पिशाचवत् ॥ ५४ ॥ एवंतेशंकवःक्रूराःपतंतुत्वरितास्त्रयः ॥ गोवधाद्दारहरणात्पितुःक्रोधात्तथाभृशम् ॥ ५५ ॥ त्रिशंकुरितिनाम्नावैभुविख्यातोभविष्यसि ॥ पिशाचरूपमात्मानंदर्शयन्सर्वदेहिनाम् ॥ ५६ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंशप्तोवसिष्ठेनतदासत्यव्रतोनृपः ॥ चचारचतपस्तीव्रंतस्मिन्नेवाऽऽश्रमेस्थितः ॥ ५७ ॥ कस्माच्चिन्मुनिपुत्रात्तुप्राप्यमंत्रमनुत्तमम् ॥ ध्यायन्भगवतींदेवींप्रकृतिंपरमांशिवाम् ॥ ५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ छ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ वसिष्ठेनचशप्तोऽसौत्रिशंकुर्नृपतेःसुतः ॥ कथंशापाद्विनिर्मुक्तस्तन्मेब्रूहिमहामते ॥ १ ॥ व्यासउवाच ॥ सत्यव्रतस्तथाशप्तःपिशाचत्वमवाप्तवान् ॥ तस्मिन्नेवाऽऽश्रमेतस्थौदेवीभक्तिपरायणः ॥ २ ॥

ननिवारयामासेतितस्मिन्क्रुकोपेतिभावः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ वृक्षेबबंधविश्वामित्रपत्न्याभक्षणार्थम् ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ मस्तकेशंकवः पापचिन्हानिकुष्ठवत्पतंत्वित्यर्थः ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ छ ॥ ॥ त्रिपंचाशत्पद्यवर्यैस्त्रिशंकोस्तुकथानकम् ॥ प्रोच्यतेयत्रमहिमाभगवत्यास्तुवर्ण्यते ॥ १ ॥ वसिष्ठेनशप्तेत्रिशंकौपश्चाज्जातंवृत्तंपृच्छाति ॥ वसिष्ठेनचेति ॥ १ ॥ २ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ विज्ञानेश्रीदेव्याउपास

कदाचि न्नृपतिस्तत्रजस्वामं त्रंनवाक्षरम् ॥ होमार्थंब्राह्मणान्गत्वाप्रणम्योवाचभक्तितः ॥३॥भूमिदेवाःशृणुध्वंवैवचनंप्रणतस्यमे ॥ ऋत्विजोममसर्वेऽत्रभवंतःप्रभवंतुह ॥४॥ जपस्यचदशांशेनहोमःकार्योविधानतः ॥ भवद्भिःकार्यसिद्ध्यर्थंवेदविद्भिःकृपापरैः॥५॥सत्यव्रतोऽहंनृपतेःपुत्रोब्रह्मविदांवराः॥ कार्यंममविधातव्यंसर्वथासुखहेतवे ॥ ६ ॥ तच्छ्रुत्वाब्राह्मणास्तत्रतमूचुर्नृपतेःसुतम् ॥ शप्तस्त्वंगुरुणाप्राप्तंपिशाचत्वंत्वयाऽधुना ॥ ७ ॥ नयागाहोंऽसितस्मात्त्वंवेदेष्वनधिकारतः ॥ पिशाचत्वमनुप्राप्तंसर्वलोकेषुगर्हितम् ॥ ८ ॥ व्यासउवाच ॥ तन्निशम्यवचस्तेषांराजादुःखमवापह ॥ धिग्जीवितमिदंमेऽद्यकिंकरोमिवनेस्थितः ॥ ९ ॥ पित्राचाऽहंपरित्यक्तःशप्तश्चगुरुणाभृशम् ॥ राज्याद्भ्रष्टःपिशाचत्वमनुप्राप्तःकरोमिकिम् ॥ १० ॥ तदापृथुतरांकृत्वाचितां काष्ठैर्नृपात्मजः ॥ सस्मारचंडिकांदेवींप्रवेशमनुचिंतयन् ॥ ११ ॥ स्मृत्वादेवींमहामायांचितांप्रज्वलितांपुरः ॥ कृत्वास्नात्वाप्रवेशार्थंस्थितःप्रांजलिरग्रतः ॥ १२ ॥ ज्ञात्वाभगवतीतंतुमर्तुकामंमहीपतिम् ॥ आजगामतदाकाशंप्रत्यक्षंतस्यचाऽग्रतः ॥ १३ ॥ दत्त्वाऽथदर्शनंदेवीतमुवाचनृपात्मजम् ॥ सिंहारूढामहाराजमेघगंभीरयागिरा ॥ १४ ॥ देव्युवाच ॥ किंतेव्यवसितंसाधोहुताशेमातनुंत्यज ॥ स्थिरोभवमहाभागपितातेजरसान्वितः ॥ १५॥ राज्यंदत्त्वावनेतुभ्यंगंताऽस्तितपसेकिल ॥ विषादंत्यजहेवीरपरश्वोहनिभूपते ॥ १६ ॥ नेतुंत्वामागमिष्यंतिसचिवाश्चपितुस्तव ॥ मत्प्रसादात्पितांचत्वामभिषिच्यनृपासने ॥ १७ ॥ जित्वाकामंब्रह्मलोकंगमिष्यत्येषनिश्चयः ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वातंतदादेवीतत्रैवांतरधीयत ॥ १८ ॥ राजपुत्रोविरमितो मरणात्पावकात्ततः ॥ अयोध्यायांतदाऽऽगत्यनारदेनमहात्मना ॥ १९ ॥ वृत्तांतःकथितःसर्वोराज्ञेसत्वरमादितः ॥ श्रुत्वाराजाऽथपुत्रस्यतंतथामरणोद्यमम् ॥ २० ॥ खेदमाधायमनसिशुशोचबहुधानृपः ॥ सचिवानाहधर्मात्मापुत्रशोकपरिप्लुतः ॥२१॥ ज्ञातंभवद्भिरत्युग्रंपुत्रस्यममचेष्टितम् ॥ त्यक्तोमयावनेधीमान्पुत्रःसत्यव्रतोमम ॥ २२ ॥ आज्ञयाऽसौगतःसद्योराज्यार्हःपरमार्थवित् ॥ स्थितस्तत्रैवविज्ञानेधनहीनःक्षमान्वितः ॥ २३ ॥ वसिष्ठेनतथाशप्तःपिशाचसदृशःकृतः ॥ सोऽद्यदुःखेनसंतप्तःप्रवेष्टुंचहुताशनम् ॥ २४ ॥ उद्यतःश्रीमहादेव्यानिषिद्धःसंस्थितःपुनः ॥ तस्माद्गच्छंतुतंशीघ्रंज्येष्ठपुत्रंमहाबलम् ॥२५॥ आश्वास्यवचनैरत्रतरसैवानयंत्विह ॥ अभिषिच्यसुतंराज्येऔरसंपालनक्षमम् ॥२६॥ वनंयास्यामिशांतोऽहंतपसेकृतनिश्चयः ॥ इत्युक्त्वामंत्रिणःसर्वान्प्रेषयामासपार्थिवः ॥ २७ ॥ तस्यैवाऽऽनयनार्थंहिप्रीतिप्रवणमानसः ॥ तेगत्वातंसमाश्वास्यमंत्रिणःपार्थिवात्मजम् ॥२८॥

नेस्थितः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ मुखोद्भवाःब्राह्मणाः ॥ तथाचश्रुतिः॥ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीदिति ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८॥ ३९ ॥ ४० ॥ तेभ्योद्यूतादिभ्यः प्रजारक्षयेन्निवारयेत् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सुदीक्षितःगुरूपदेशेनगृहीतदेवीमंत्रइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ देवीचरणोदकमाहात्म्यमाह । सकृत्कृत्वेति ॥ अत्रह्येवंपुराणांतरेकथाश्रूयते ॥ कश्चिदृषिः प्रवासीकचित्सरसिस्नात्वादेवीपूजांविधायतत्तीर्थेबिल्वमूलेचिक्षेपतत्रचटकाः शुकाश्चागत्यतत्तीर्थेतृषिताःपपुः ॥ देहपातोत्तरंतेशुकादयःकल्पपर्यंतंस्वर्गभोगंभुक्त्वाकेचित्सुद्युम्नभूरिद्यु

अयोध्यायांमहात्मानंमानपूर्वंसमानयन् ॥ दृष्ट्वासत्यव्रतंराजादुर्बलंमलिनांबरम् ॥ २९ ॥ जटाजूटधरंक्रूरंचिंतातुरमचिंतयत् ॥ किंकृतंनिष्ठुरंकर्ममया पुत्रोविवासितः ॥ ३० ॥ राज्यार्हश्चातिमेधावीजानताधर्मनिश्चयम् ॥ इतिसंचिंत्यमनसातमालिंग्यमहीपतिः ॥ ३१ ॥ आसनेस्वसमीपस्थेसमाश्वास्यो पवेशयत् ॥ उपविष्टंसुतंराजाप्रेमपूर्वमुवाचह॥३२॥प्रेमगद्गदयावाचानीतिशास्त्रविशारदः ॥ राजोवाच ॥ पुत्रधर्मेमतिःकार्यामाननीयामुखोद्भवाः॥३३॥ न्यायागतंधनंग्राह्यंरक्षणीयाःसदाप्रजाः ॥ नासत्यंक्वाऽपिवक्तव्यंनाऽमार्गेगमनंक्वचित् ॥ ३४ ॥ शिष्टप्रोक्तंप्रकर्तव्यंपूजनीयास्तपस्विनः ॥ हंतव्यादस्य वःक्रूराइंद्रियाणांतथाजयः ॥ ३५ ॥ कर्त्तव्यःकार्यसिद्ध्यर्थंराज्ञापुत्रसदैवहि ॥ मंत्रस्तुसर्वथागोप्यःकर्तव्यःसचिवैःसह ॥ ३६ ॥ नोपेक्ष्योल्पोपिकृतिना रिपुःसर्वात्मनासुत ॥ नविश्वसेत्परासक्तंसचिवंचतथानतम् ॥ ३७ ॥ चाराःसर्वत्रयोक्तव्याःशत्रुमित्रेषुसर्वथा ॥ धर्मेमतिःसदाकार्यादानंदद्याच्चनित्यशः ॥ ३८ ॥ शुष्कवादोनकर्तव्योदुष्टसंगंचवर्जयेत् ॥ यष्टव्याविविधायज्ञाःपूजनीयामहर्षयः ॥३९ ॥ नविश्वसेत्स्त्रियंक्वाऽपिस्त्रैणंद्यूतरतंनरम् ॥ अत्यादरो नकर्तव्योमृगयायांकदाचन ॥ ४० ॥ द्यूतेमद्येतथागेयेनूनंवारवधूषुच ॥ स्वयंतद्विमुखोभूयात्प्रजास्तेभ्यश्चरक्षयेत् ॥ ४१ ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेकर्तव्यमुत्थानं सर्वथासदा ॥ स्नानादिकंसर्वविधिंविधायविधिवद्यथा ॥ ४२ ॥ पराशक्तेःपरांपूजांभक्त्याकुर्यात्सुदीक्षितः ॥ पुत्रैतज्जन्मसाफल्यंपराशक्तेःपदार्चनम् ॥ ॥ ४३ ॥ सकृत्कृत्वामहापूजांदेवीपादजलंपिबन् ॥ नजातुजननीगर्भेगच्छेदितिविनिश्चयः ॥ ४४ ॥ सर्वंदृश्यंमहादेवीद्रष्टासाक्षीचसैवहि ॥ इतितद्भाव भरितास्तिष्ठेन्निर्भयचेतसा ॥ ४५ ॥ कृत्वानित्यविधिंसम्यग्गंतव्यंसदासिद्धिजान् ॥ समाहूयचप्रष्टव्योधर्मशास्त्रविनिर्णयः ॥ ४६ ॥ संपूज्यब्राह्मणान्पू ज्यान्वेदवेदांतपारगान् ॥ गोभूहिरण्यादिकंचदेयंपात्रेषुसर्वदा ॥ ४७ ॥

स्त्रेंद्रद्युम्नकुवलयाश्वयौवनाश्वध्रुवयशोऽश्वपतिशशबिंदुहरिषादयोमैत्रायणीयश्रुतिप्रसिद्धाःपरमज्ञानिनोराजानोऽभूवन् ॥ केचित्खगाः कण्वजातूकर्ण्यकात्यायनाऽऽसुरिपंचाशिखवैशंपायनाप स्तंवहारीतादयोमुनयोज्ञानिवराअभूवन्निति ॥ ४४ ॥ द्रष्टाजीवः साक्षीईश्वरोदृश्यंसर्वजगदिदंसैवभगवतीत्यर्थः ॥ तदुक्तंमुंडमालायाम् ॥ भूतानिदुर्गाभुवनानिदुर्गानराःस्त्रियश्चापि सुरासुरादिकम् ॥ यद्यद्विदृश्यंखलुतच्चदुर्गादुर्गास्वरूपादपरंनकिंचित् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ तत्रप्रमाणमाह । अद्भ्योऽग्निरिति ॥ स्वासुयोनिषुस्वकारणेषुजलादिषुशाम्यतिनतत्रपराक्रमंदर्शयतीत्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलक सप्तमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ चतुःषष्टिश्लोकवर्यैर्विश्वामित्रप्रतापतः ॥ त्रिशंकोःस्वर्गवासश्चविस्तरेणोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ त्रिशंकोःपितुरुपदेशानंतरंजातंवृत्तमाह। एवंप्रबोधितइति

अविद्वान्ब्राह्मणःकोऽपिनैवपूज्यःकदाचन ॥ आहारादधिकंनैवदेयंमूर्खायकर्हिचित् ॥ ४८ ॥ नवालोभात्त्वयापुत्रकर्तव्यंधर्मलंघनम् ॥ अतःपरंनकर्तव्यंक्वचिद्विप्रावमाननम् ॥ ४९ ॥ ब्राह्मणाभूमिदेवाश्चमाननीयाःप्रयत्नतः ॥ कारणंक्षत्रियाणांचद्विजाएवनसंशयः ॥ ५० ॥ अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मणःक्षत्रमश्मनोलोहमुत्थितम् ॥ तेषांसर्वत्रगंतेजःस्वासुयोनिषुशाम्यति ॥ ५१ ॥ तस्माद्राज्ञाविशेषेणमाननीयामुखोद्भवाः ॥ दानेनविनयेनैवसर्वथाभूतिमिच्छता ॥ ५२ ॥ दंडनीतिःसदाकार्याधर्मशास्त्रानुसारतः ॥ कोशस्यसंग्रहःकार्योनूनंन्यायागतस्यह ॥ ५३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ एवंप्रबोधितःपित्रात्रिशंकुःप्रणतोनृपः ॥ तथेतिपितरंप्राहप्रेमगद्गदयागिरा ॥ १ ॥ विप्रानाहूयमंत्रज्ञान्वेदशास्त्रविशारदान् ॥ अभिषेकायसंभारान्कारयामाससत्वरम् ॥ २ ॥ सलिलंसर्वतीर्थानांसमानाय्यविशांपतिः ॥ प्रकृतीश्चसमाहूयसामंतान्भूपतींस्तथा ॥ ३ ॥ पुण्येह्निविधिवत्तस्मैददावासनमुत्तमम् ॥ अभिषिच्यसुतंराज्येत्रिशंकुंविधिवत्पिता ॥ ४ ॥ तृतीयमाश्रमंपुण्यंजग्राहभार्ययायुतः ॥ वनेत्रिपथगाकूलेचचारदुश्चरंतपः ॥ ५ ॥ कालेप्राप्तेययौस्वर्गंपूजितस्त्रिदशैरपि ॥ इंद्रासनसमीपस्थोरराजरविवत्सदा ॥ ६ ॥ राजोवाच ॥ पूर्वंभगवताप्रोक्तंकथायोगेनसांप्रतम् ॥ सत्यव्रतोवसिष्ठेनशप्तोदोग्ध्रीवधात्किल ॥ ७ ॥ कुपितेनपिशाचत्वंप्रापितोगुरुणाततः ॥ कथंमुक्तःपिशाचत्वादित्येतत्संशयःप्रभो ॥ ८ ॥ नसिंहासनयोग्योहिभवेच्छापसमन्वितः ॥ मुनिनामोचितःशापात्केनाऽन्येनचकर्मणा ॥ ९ ॥ एतन्मेब्रूहिविप्रर्षेशापमोक्षणकारणम् ॥ आनीतस्तुकथंपित्रास्वगृहेतादृशाकृतिः ॥ १० ॥ व्यासउवाच ॥ वसिष्ठेनचशप्तोऽसौसद्यःपैशाचतांगतः ॥ दुर्वेषश्चाऽतिदुर्धर्षःसर्वलोकभयंकरः ॥ ११ ॥ यदैवोपासितादेवीभक्त्यासत्यव्रतेनह ॥ तयाप्रसन्नयाराजन्दिव्यदेहःकृतःक्षणात् ॥ १२ ॥ पिशाचत्वंगतंतस्यपापंचैवक्षयंगतम् ॥ विपाप्माचाऽतितेजस्वीसंभूतस्तत्कृपामृतात् ॥ १३ ॥ वसिष्ठोऽपिप्रसन्नात्माजातःशक्तिप्रसादतः ॥ पिताऽपिचवभूवाऽस्यप्रेमयुक्तस्त्वनुग्रहात् ॥ १४ ॥ राज्यंशशासधर्मात्मामृतेपितरिपार्थिवः ॥ ईजेचविविधैर्यज्ञैर्देवदेवींसनातनीम् ॥ १५ ॥ तस्यपुत्रोबभूवाऽथहरिश्चंद्रःसुशोभनः ॥ लक्षणैःशास्त्रनिर्दिष्टैःसंयुतश्चाऽतिसुंदरः ॥ १६ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ केनाऽन्येनकर्मणापापाच्छापरूपान्मोचितोमुनिनेत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ देवीकृपयासर्वमेतत्संपन्नमित्याह । वसिष्ठेनचेति ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ईजेचेति ॥ विविधैर्नानाविधैरग्निष्टोमाद्यश्वमेधांतैर्यज्ञैःसनातनींनित्यांदेवींश्रीसच्चिदानंदरूपिणींभगवतीमीजे इयाजेत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ उच्छिन्नधर्ममार्गेतिसंबोधनम् ॥ उच्छिन्नोधर्ममार्गोयेनेत्यर्थः ॥ सुरभिवधदूषि तत्वंब्रह्मपत्नीहरत्वंचपूर्वमुपपादितम् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इदंफलंपराशक्त्युपासकवसिष्ठशापेनजातामित्याह ॥ शक्त्युपासकरोषेणेति ॥ ३४ ॥ तस्माच्छक्तिभक्तापराधं

युवराजंसुतंकृत्वात्रिशंकुःपृथिवीपतिः ॥ मानुषेणशरीरेणस्वर्गंभोक्तुंमनोदधे ॥ १७ ॥ वसिष्ठस्याऽऽश्रमंगत्वाप्रणम्यविधिवन्नृपः ॥ उवाचवचनंप्रीतःकृतांजलिपुटस्तदा ॥ १८ ॥ राजोवाच ॥ ब्रह्मपुत्रमहाभागसर्वमंत्रविशारद ॥ विज्ञप्तिंमेसुमनसाश्रोतुमर्हसितापस ॥ १९ ॥ इच्छामेऽद्यसमुत्पन्नास्वर्गलोकसुखायच ॥ अनेनैवशरीरेणभोगान्भोक्तुममानुषान् ॥ २० ॥ अप्सरोभिश्चसंवासःक्रीडितुंनंदनेवने ॥ देवगंधर्वगानंचश्रोतव्यंमधुरंकिल ॥ २१ ॥ याजयत्वंमखेनाऽश्रुतादृशेनमहामुने ॥ यथाऽनेनशरीरेणवसेलोकंत्रिविष्टपम् ॥ २२ ॥ समर्थोऽसिमुनिश्रेष्ठकुरुकार्यंममाऽऽधुना ॥ प्रापयाऽऽशुमखंकृत्वादेवलोकंदुरासदम् ॥ २३ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ राजन्मानुषदेहेनस्वर्गेवासःसुदुर्लभः ॥ मृतस्यहिध्रुवंस्वर्गःकथितःपुण्यकर्मणा ॥ २४ ॥ तस्माद्विभेमिसर्वज्ञदुर्लभाच्चमनोरथात् ॥ अप्सरोभिश्चसंवासोजीवमानस्यदुर्लभः ॥ २५ ॥ कुरुयज्ञान्महाभागमृतःस्वर्गमवाप्स्यसि ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यराजापरमदुर्मनाः ॥ २६ ॥ उवाचवचनंभूयोवसिष्ठंपूर्वरोषितम् ॥ नत्वंयाजयसेब्रह्मन्गर्वावेशाच्चमांयदि ॥ २७ ॥ अन्यंपुरोहितंकृत्वायक्ष्येऽहंकिलसांप्रतम् ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यवसिष्ठः कोपसंयुतः ॥ २८ ॥ शशापभूपतिंचेतिचांडालोभवदुर्मते ॥ अनेनत्वंशरीरेणश्वपचोभवसत्वरम् ॥ २९ ॥ स्वर्गकृंतनपापिष्ठसुरभीवधदूषित ॥ ब्रह्मपत्नीहरोच्छिन्नधर्ममार्गविदूषक ॥ ३० ॥ नतेस्वर्गगतिःपापमृतस्याऽपिकथंचन ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तोगुरुणाराजंस्त्रिशंकुस्तत्क्षणादपि ॥ ३१ ॥ तत्रतेनशरीरेणबभूवश्वपचाकृतिः ॥ कुंडलेऽश्ममयेवापिजातेतस्यचतत्क्षणात् ॥ ३२ ॥ देहेचंदनगंधश्चविङ्गंधोह्यभवत्तदा ॥ नीलवर्णेऽथसंजातेदिव्येपीतांबरेतनौ ॥ ३३ ॥ गजवर्णोभवद्देहःशापात्तस्यमहात्मनः ॥ शक्त्युपासकरोषेणफलमेतदभून्नृप ॥ ३४ ॥ तस्माच्छ्रीशक्तिभक्तोहिनाऽवमान्यःकदाचन ॥ गायत्रीजपनिष्ठोहिवसिष्ठोमुनिसत्तमः ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वानिंद्यंनिजंदेहंराजादुःखमवाप्तवान् ॥ नजगामगृहेदीनोवनमेवाऽभितोययौ ॥ ३६ ॥ चिंतयामासदुःखार्तस्त्रिशंकुःशोकविह्वलः ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिदेहोमेऽतीवनिंदितः ॥ ३७ ॥ कर्तव्यंनैवपश्यामियेनमेदुःखसंक्षयः ॥ गृहेगच्छामिचेत्पुत्रःपीडितोऽद्यभविष्यति ॥ ३८ ॥ भार्याऽपिश्वपचंदृष्ट्वानांगीकारंकरिष्यति ॥ सचिवानादरिष्यंतिवीक्ष्यमामीदृशंपुनः ॥ ३९ ॥ ज्ञातयोबंधुवर्गश्चसंगतोनभजिष्यति ॥ सर्वैस्त्यक्तस्यमेनूनंजीवितान्मरणंवरम् ॥ ४० ॥ विषंवाभक्षयित्वाऽद्यपतित्वावाजलाशये ॥ कृत्वावाकंठपाशंचदेहत्यागंकरोम्यहम् ॥ ४१ ॥

नकुर्यादित्याह ॥ तस्मादिति ॥ अयंचवसिष्ठोगायत्र्युपासकत्वात्पराशक्तिभक्तइत्याह ॥ गायत्रीति ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४२ ॥ यदिप्राणांस्त्यजामितदाऽऽत्महत्याभविष्यतीत्याह। आत्महत्येति॥तयाचकिंभविष्यतितत्राह। जन्मनिजन्मनीति ॥ प्रतिजन्मनिश्वपचत्वंभवेद्धत्यादोषात्पुनरप्येवंविधंशापादि कंचभवेदित्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ साधुसमागमइति ॥ सयदाभाग्ययोगाद्भविष्यतितदाममकार्यंस्यादित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ सचिवानिति ॥ स्वापेक्षया

अग्नौवाज्वलितेदेहंजुहोमिविधिवद्बलात् ॥ कृत्वावाऽनशनंप्राणांस्त्यजामिदूषितान्भृशम् ॥ ४२ ॥ आत्महत्याभवेन्नूनंपुनर्जन्मनिजन्मनि ॥ श्वपचत्वंचशापश्चहत्यादोषाद्भवेदपि ॥ ४३ ॥ पुनर्विचार्यभूपालश्चेतसासमचिंतयत् ॥ आत्महत्यानकर्तव्यासर्वथैवमयाऽधुना ॥ ४४ ॥ भोक्तव्यंस्वकृतंकर्मदेहेनाऽनेनकानने ॥ भोगेनाऽस्यविपाकस्यभवितासर्वथाक्षयः ॥ ४५ ॥ प्रारब्धकर्मणांभोगादन्यथानक्षयोभवेत् ॥ तस्मान्मयाऽत्रभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ ४६ ॥ कुर्वन्पुण्याश्रमाभ्याशेतीर्थानांसेवनंतथा ॥ स्मरणंचांबिकायास्तुसाधूनांसेवनंतथा ॥ ४७ ॥ एवंकर्मक्षयंनूनंकरिष्यामिवनेवसन् ॥ भाग्ययोगात्कदाचित्तुभवेत्साधुसमागमः ॥ ४८ ॥ इतिसंचिंत्यमनसात्यक्त्वास्वनगरंनृपः ॥ गंगातीरेगतःकामंशोचंस्तत्रैवसंस्थितः ॥ ४९ ॥ हरिश्चंद्रस्तदाज्ञात्वापितुःशापस्यकारणम् ॥ दुःखितःसचिवांस्तत्रप्रेषयामासपार्थिवः ॥ ५० ॥ सचिवास्तत्रगत्वाऽऽशुतमूचुःप्रश्रयान्विताः ॥ प्रणम्यश्वपचाकारंनिःश्वसंतंमुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ राजन्पुत्रेणतेनूनंप्रेषितान्समुपागतान् ॥ अवेहिसचिवांस्त्वन्नोहरिश्चंद्राज्ञयास्थितान् ॥ ५२ ॥ युवराजस्तुतःप्राहयत्तच्छृणुनराधिप ॥ आनयध्वंनृपंयूयंसंमान्यपितरंमम ॥ ५३ ॥ तस्माद्राजन्समागच्छराज्यंप्रतिगतव्यथः ॥ सेवांसर्वेकरिष्यंतिसचिवाश्चप्रजास्तथा ॥ ५४ ॥ गुरुंप्रसादयिष्यामःसयथातुदयेतवै ॥ प्रसन्नोऽसौमहातेजादुःखस्यांतंकरिष्यति ॥ ५५ ॥ इतिपुत्रेणतेराजन्कथितंबहुधाकिल ॥ तस्माद्गमनमेवाऽऽशुरोचतांनिजसद्मनि ॥ ५६ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितेषांनृपःश्रुत्वाभाषितंश्वपचाकृतिः ॥ स्वगृहंगमनायाऽसौनमतिंकृतवानदः ॥५७॥ तानुवाचतदावाक्यंव्रजंतुसचिवाःपुरम् ॥ गत्वापुत्रंमहाभागाब्रुवंतुवचनाच्चमे ॥ ५८ ॥ नागमिष्याम्यहंपुत्रकुरुराज्यमतंद्रितः ॥ मानयन्ब्राह्मणान्देवान्यजन्यज्ञैरनेकशः ॥ ५९ ॥ नाऽहंश्वपचवेषेणगर्हितेनमहात्मभिः ॥ आगमिष्याम्ययोध्यायांसर्वेगच्छंतुमाचिरम् ॥ ६० ॥ पुत्रंसिंहासनेस्थाप्यहरिश्चंद्रंमहाबलम् ॥ कुर्वंतुराज्यकर्माणियूयंतत्रममाज्ञया ॥ ६१ ॥ इत्यादिष्टास्ततस्तेतुरुरुदुश्चाऽऽतुराभृशम् ॥ सचिवानिर्ययुस्तूर्णंनत्वातंचवनाश्रमात् ॥ ६२ ॥ अयोध्यायामुपागत्यपुण्येऽह्निविधिपूर्वकम् ॥ अभिषेकंतदाचक्रुर्हरिश्चंद्रस्यमूर्धनि ॥ ६३ ॥ अभिषिक्तस्तुतेजस्वीसचिवाश्चनृपाज्ञया ॥ राज्यंचकारधर्मिष्ठःपितरंचिंतयन्भृशम् ॥ ६४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

ज्येष्ठान्राज्ञोप्यतिप्रियान् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

द्विषष्टिश्लोकवर्यैस्तुहरिश्चंद्रेनृपेसति ॥ त्रिशंकोःकौशिकस्याऽपिसमागमउदीर्यते ॥ १ ॥ हरिश्चंद्रस्यराज्याभिषेकेकृतेसत्यनंतरंवृत्तमाह । हरिश्चंद्रइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ अस्मिन् समयेतपश्चर्यार्थंबहुकालंगतोविश्वामित्रःस्वगृहमागतइत्याह । एवंगच्छतीति ॥ ५ ॥ ६ ॥ विश्वामित्रोदुर्भिक्षकालजंवृत्तांतंभार्यांपृच्छति । दुर्भिक्षेत्विति ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ इत्थंभार्या

॥ राजोवाच ॥ हरिश्चंद्रःकृतोराजासचिवैर्नृपशासनात् ॥ त्रिशंकुस्तुकथंमुक्तस्तस्माच्चांडालदेहतः ॥ १ ॥ मृतोवावनमध्येतुगंगातीरेपरिप्लुतः ॥ गुरुणावाकृपांकृत्वाशापात्तस्माद्विमोचितः ॥ २ ॥ एतद्वृत्तांतमखिलंकथयस्वममाग्रतः ॥ चरितंतस्यनृपतेःश्रोतुकामोऽस्मिसर्वथा ॥ ३ ॥ व्यासउवाच अभिषिक्तंसुतंकृत्वाराजासंतुष्टमानसः ॥ कालातिक्रमणंतत्रचकारचिंतयञ्छिवाम् ॥ ४ ॥ एवंगच्छतिकालेतुतपस्तप्त्वासमाहितः ॥ द्रष्टुंदारान्सुतादींश्चतदाऽगात्कौशिकोमुनिः ॥ ५ ॥ आगत्यस्वजनंदृष्ट्वासुस्थितंमुदमाप्तवान् ॥ भार्यांपप्रच्छमेधावीस्थितामग्रेसपर्यया ॥ ६ ॥ दुर्भिक्षेतुकथंकालस्त्वयानीतःसुलोचने ॥ अन्नंविनात्विमेबालाःपालिताःकेनतद्वद ॥ ७ ॥ अहंतपसिसंबद्धोनाऽऽगतःशृणुसुंदरि ॥ किंकृतंतुत्वयाकांतेविनाद्रव्येणशोभने ॥ ॥८॥ मयाचिंताकृतातत्रश्रुत्वादुर्भिक्षमद्भुतम् ॥ नागतोऽहंविचार्यैवंकिंकरिष्यामिनिर्धनः ॥ ९ ॥ अहमप्यतिवामोरुपीडितःक्षुधयावने ॥ प्रविष्टश्चौरभावेनकुत्रचिच्छ्वपचालेय ॥ १० ॥ श्वपचंनिद्रितंदृष्ट्वाक्षुधयापीडितोभृशम् ॥ महानसंपरिज्ञायभक्ष्यार्थंसमुपस्थितः ॥ ११ ॥ यदाभांडंसमुद्घाट्यपक्वंश्वतनुजामिषम् ॥ गृह्णामिभक्षणार्थायतदादृष्टस्तुतेनवै ॥ १२ ॥ पृष्टःकस्त्वंकथंप्राप्तोगृहेमेनिशिसादरम् ॥ ब्रूहिकार्यंकिमर्थंत्वमुद्घाटयसिभांडकम् ॥ १३ ॥ इत्युक्तःश्वपचेनाऽहंक्षुधयापीडितोभृशम् ॥ तमवोचंसुकेशांतेकामंगद्गदयागिरा ॥ १४ ॥ ब्राह्मणोऽहंमहाभागतापसःक्षुधयार्दितः ॥ चौरभावमनुप्राप्तोभक्ष्यंपश्यामिभांडके ॥ १५ ॥ चौरभावेनसंप्राप्तोऽस्म्यतिथिस्तेमहामते ॥ क्षुधितोऽस्मिददस्वाज्ञांमांसमग्निसुसंस्कृतम् ॥ १६॥ विश्वामित्रउवाच ॥ श्वपचस्तुवचःश्रुत्वामामुवाचसुनिश्चितम् ॥ भक्षंमाकुरुवर्णाग्र्यजानीहिश्वपचालयम् ॥ १७ ॥ दुर्लभंखलुमानुष्यंतत्राऽपिचद्विजन्मता ॥ द्विजत्वेब्राह्मणत्वंचदुर्लभंवेत्सिकिंनहि ॥ १८ ॥ दुष्टाहारोनकर्तव्यःसर्वथालोकमिच्छता ॥ अग्राह्यामनुनाप्रोक्ताःकर्मणासप्तचांत्यजाः ॥ १९ ॥ त्याज्योऽहंकर्मणाविप्रश्वपचोनाऽत्रसंशयः ॥ निवारयामिभक्ष्यात्त्वांनलोभेनांजसाद्विज ॥ २० ॥ वर्णसंकरदोषोऽयंमायातुत्वांद्विजोत्तम ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ सत्यंवदसिधर्मज्ञमतिस्तेविशदांत्यज ॥ २१ ॥ तथाऽप्यापदिधर्मस्यसूक्ष्ममार्गंब्रवीम्यहम् ॥ देहस्यरक्षणंकार्यंसर्वथायदिमानद ॥ २२ ॥ पापस्यांतेपुनःकार्यंप्रायश्चित्तंविशुद्धये ॥ दुर्गतिस्तुभवेत्पापादनापदिनचाऽऽपदि ॥ २३ ॥

वृत्तांतंपृष्ट्वास्ववृत्तांतमाह। अहमप्यतीति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ द्विजत्वेब्राह्मणत्वंचेति ॥ द्विजत्वेसत्यपिब्राह्मणत्वंदुर्लभमित्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ मायातुमागच्छतुमाशब्दोनिषेधार्थकः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





असदुपायेसत्यपियःक्षुधितःप्राणत्यागंकरोतिसनरकंप्राप्नोतीत्याह । मरणादिति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ नीवारार्थमरण्येभवाःश्यामाकानीवाराइति नीवाराश्चमेइतिरुद्रभाष्येमाधवः ॥ ३१ ॥ फलंनीवाररूपंकिंचिदुदरपूर्त्यपरिमितम् ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ आसुरित्यत्रछांदसोभूभावाभावः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ संधिरार्षः ॥ ३७ ॥ ३८॥

मरणात्क्षुधितस्याऽथनरकोनाऽत्रसंशयः ॥ तस्मात्क्षुधापहरणंकर्तव्यंशुभमिच्छता ॥ २४ ॥ तेनाऽहंचौर्यधर्मेणदेहंरक्षेऽप्यथांत्यज ॥ अवर्षणेचचौर्येणयत्पापंकथितंबुधैः ॥ २५ ॥ योनवर्षतिपर्जन्यंतत्तुतस्मैभविष्यति ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ इत्युक्तेवचनेकांतेपर्जन्यःसहसापतत् ॥ २६ ॥ गगनाद्धस्तिहस्ताभिर्धाराभिरभिकांक्षितः ॥ मुदितोऽहंघनंवीक्ष्यवर्षंतंविद्युतासह ॥ २७ ॥ तदाऽहंतद्गृहंत्यक्त्वानिःसृतःपरयामुदा ॥ कथयत्वंवरारोहेकालोनीतस्त्वयाकथम् ॥ २८ ॥ कांतारेपरमःक्रूरःक्षयकृत्प्राणिनामिह ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वापतिमाहप्रियंवदा ॥ २९ ॥ यथाशृणुमयानीतःकालःपरमदारुणः ॥ गतेत्वयिमुनिश्रेष्ठदुर्भिक्षंसमुपागतम् ॥ ३० ॥ अन्नार्थंपुत्रकाःसर्वेबभूवुश्चाऽतिदुःखिताः ॥ क्षुधितान्बालकान्वीक्ष्यनीवारार्थंवनेवने ॥ ३१ ॥ भ्रांताऽहंचिंतयाविष्टाकिंचित्प्राप्तंफलंतदा ॥ एवंचकतिचिन्मासानीवारेणाऽतिवाहिताः ॥ ३२ ॥ तदभावेमयाकांताचिंतितंमनसापुनः ॥ नभिक्षाकिलदुर्भिक्षेनीवारानाऽपिकानने ॥ ३३ ॥ नवृक्षेषुफलान्यासुर्नमूलानिधरातले ॥ क्षुधयापीडिताबालारुदंतिभृशमातुराः ॥ ३४ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिकिंब्रवीमिक्षुधार्दितान् ॥ एवंविचिंत्यमनसानिश्चयस्तुमयाकृतः ॥ ३५ ॥ पुत्रमेकंददाम्यद्यकस्मैचिद्धनिनेकिल ॥ गृहीत्वातस्यमौल्यंतुतेनद्रव्येणबालकान् ॥ ३६ ॥ पालयेऽहंक्षुधार्तांस्तुनाऽन्योपायोऽस्तिपालने ॥ इतिसंचिंत्यमनसापुत्रोऽयंप्रहितोमया ॥ ३७ ॥ विक्रयार्थंमहाभागक्रंदमानोभृशातुरः ॥ क्रंदमानंगृहीत्वैनंनिर्गताऽहंगतत्रपा ॥ ३८ ॥ तदासत्यव्रतोमार्गेमामुद्वीक्ष्यभृशातुराम् ॥ पप्रच्छसचराजर्षिःकस्माद्रोदितिबालकः ॥ ३९ ॥ तदाऽहंतमुवाचेदंवचनंमुनिसत्तम ॥ विक्रयार्थंनीयतेऽसौबालकोऽद्यमयानृप ॥ ४० ॥ श्रुत्वामेवचनंराजादयार्द्रहृदयस्ततः ॥ मामुवाचगृहंयाहिगृहीत्वैनंकुमारकम् ॥ ४१ ॥ भोजनार्थंकुमाराणामामिषंविहितंतव ॥ प्रापयिष्याम्यहंनित्यंयावन्मुनिसमागमः ॥ ४२ ॥ अहन्यहनिभूपालोवृक्षेऽस्मिन्मृगसूकरान् ॥ विन्यस्ययातिहत्वाऽसौप्रत्यहंदययान्वितः ॥ ४३ ॥ तेनैवबालकाःकांतपालितावृजिनार्णवात् ॥ वसिष्ठेनाऽथशप्तोऽसौभूपतिर्ममकारणात् ॥४४ ॥ कस्मिंश्चिद्दिवसेमांसंनप्राप्तंतेनकानने ॥ हतादोग्ध्रीवसिष्ठस्यतेनाऽसौकुपितोमुनिः ॥ ४५ ॥ त्रिशंकुरितिभूपस्यकृतंनाममहात्मना ॥ कुपितेनवधाद्धेतोश्चांडालश्चकृतोनृपः ॥ ४६॥ तेनाऽहंदुःखिताजातातस्यदुःखेनकौशिक ॥ श्वपचत्वमसौप्राप्तोमत्कृतेनृपनंदनः ॥ ४७ ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ तस्माद्रक्षेति ॥ तस्माच्छ्वपचत्वाद्रक्षणमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ कांतारात्संकटात् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ पक्कणेश्वप्रचग्रामेग्रामाद्बहिर्भूते ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेत्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ पंचाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैःस्वर्गगतेसति ॥ त्रिशंकौतुहरिश्चंद्रकथाप्रारभ्यतेऽ

येनकेनाऽप्युपायेनभवतानृपतेःकिल ॥ तस्माद्रक्षाप्रकर्तव्यातपसाप्रबलेनह ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिभार्यावचःश्रुत्वाकौशिकोमुनिसत्तमः ॥ ता
माहकामिनींदीनांसांत्वपूर्वमरिंदम ॥ ४९ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ मोचयिष्यामितंशापान्नृपंकमललोचने ॥ उपकारःकृतोयेनकांताराद्रक्षितासिवै ॥
॥ ५० ॥ विद्यातपोबलेनाऽहंकरिष्येदुःखसंक्षयम् ॥ इत्याश्वास्यप्रियांतत्रकौशिकःपरमार्थवित् ॥ ५१ ॥ चिंतयामासनृपतेःकथंस्याद्दुःखनाशनम् ॥
संविमृश्यमुनिस्तत्रजगामयत्रपार्थिवः ॥ ५२ ॥ त्रिशंकुःपक्कणेदीनःसंस्थितःश्वपचाकृतिः ॥ आगच्छंतंमुनिंदृष्ट्वाविस्मितोऽसौनराधिपः ॥ ५३ ॥ दंडवन्निप
पातोर्व्यांपादयोस्तरसामुनेः ॥ गृहीत्वातंकरेभूपंपतितंकौशिकस्तदा ॥ ५४ ॥ उत्थाप्योवाचवचनंसांत्वपूर्वंद्विजोत्तमः ॥ मत्कृतेत्वंमहीपालशप्तोऽसिमु
निनायतः ॥ ५५ ॥ वांछितंतेकरिष्यामिब्रूहिकिंकरवाण्यहम् ॥ राजोवाच ॥ मयासंप्रार्थितःपूर्ववसिष्ठोमखहेतवे ॥ ५६ ॥ मांयाजयमुनिश्रेष्ठकरोमि
मखमुत्तमम् ॥ यथेष्टंकुरुविप्रेंद्रयथास्वर्गंव्रजाम्यहम् ॥ ५७ ॥ अनेनैवशरीरेणशक्रलोकंसुखालयम् ॥ कोपंकृत्वावसिष्ठोऽसौमामाहेतिसुदुर्मते ॥
॥ ५८ ॥ मानुषेणहिदेहेनस्वर्गवासःकुतस्तव ॥ पुनर्मयोक्तोभगवान्स्वर्गलुब्धेनचाऽनघ ॥ ५९ ॥ अन्यंपुरोहितंकृत्वायक्ष्येऽहंयज्ञमुत्तमम् ॥ तदातेनैव
शप्तोऽहंचांडालोभवपामर ॥ ६० ॥ इत्येतत्कथितंसर्वंकारणंशापसंभवम् ॥ ममदुःखविनाशायसमर्थोऽसिमुनीश्वर ॥ ६१ ॥ इत्युक्त्वाविररामाऽसौ
राजादुःखरुजार्दितः ॥ कौशिकोपिनिराकर्तुंशापंतस्यव्यचिंतयत् ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेत्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ ॥
व्यासउवाच ॥ विचिंत्यमनसाकृत्यंगाधिसूनुर्महातपाः ॥ प्रकल्प्ययज्ञसंभारान्मुनीनामंत्रयत्तदा ॥ १ ॥ मुनयस्तंमखंज्ञात्वाविश्वामित्रनिमंत्रिताः ॥
नाऽगताःसर्वएवैतेवसिष्ठेननिवारिताः ॥ २ ॥ गाधिसूनुस्तदाज्ञायविमनाश्चाऽतिदुःखितः ॥ आजगामाऽऽश्रमंतत्रयत्राऽसौनृपतिःस्थितः ॥ ३ ॥ तमा
हकौशिकःक्रुद्धोवसिष्ठेननिवारिताः ॥ नागताब्राह्मणाःसर्वेयज्ञार्थंनृपसत्तम ॥ ४ ॥ पश्यमेतपसःसिद्धिंयथात्वांसुरसद्मनि ॥ प्रापयामिमहाराजवांछि
तंतेकरोम्यहम् ॥ ५ ॥ इत्युक्त्वाजलमादायहस्तेनमुनिसत्तमः ॥ ददौपुण्यंतदातस्मैगायत्रीजपसंभवम् ॥ ६ ॥ दत्त्वाऽथसुकृतंराज्ञेतमुवाचमहीपतिम् ॥
यथेष्टंगच्छराजर्षेत्रिविष्टपमतंद्रितः ॥ ७ ॥ पुण्येनममराजेंद्रबहुकालार्जितेनच ॥ याहिशक्रपुरींप्रीतःस्वस्तितेऽस्तुसुरालये ॥ ८ ॥

धुना ॥ १ ॥ त्रिशंकुवाक्यंश्रुत्वाविश्वामित्रःकिंकृतवांस्तदाह । विचिंत्येति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ वांछितं तेऽभिलषितंकरोमीत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ शीघ्रंभूमौयाहि ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ चलितोपिमुनेस्तपःप्रभावेणतत्रैवस्थितइत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ स्वंनिवासंस्वकीयं स्थानंनयस्वेत्यर्थः ॥ २१ ॥ ओवाचेत्यत्राऽऽङ्पूर्वकःप्रयोगः ॥ त्रिशंकोःस्वर्गवासश्चस्कांदेनागरखंडेप्युक्तः ॥ तत्रब्रह्माणंप्रतिदेववाक्यम् ॥ सृष्टिःसृष्टासुरश्रेष्ठविश्वामित्रेणसांप्रतम् ॥ तस्माद्वारयतंगत्वास्वयमेवपितामह ॥ तेषांतद्वचनंश्रुत्वातैरेवसहितोविधिः ॥ गत्वोवाचजगन्मित्रंविश्वामित्रंमुनीश्वरम् ॥ निवृत्तिंकुरुविप्रर्षेसांप्रतंवचनान्मम ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ अने

व्यासउवाच ॥ इत्युक्तवतिविप्रेंद्रेंत्रिशंकुस्तरसाततः ॥ उत्पपातयथापक्षीवेगवांस्तपसोबलात् ॥ ९ ॥ उत्पत्यगगनेराजागतःशक्रपुरींयदा ॥ दृष्टोदेव गणैस्तत्रक्रूरश्चांडालवेषभाक् ॥ १० ॥ कथितोऽसौसुरेंद्रायकोऽयमायातिसत्वरः ॥ गगनेदेववद्वायोदुर्दर्शःश्वपचाकृतिः ॥११॥ सहसोत्थायशक्रस्तम पश्यत्पुरुषाधमम् ॥ ज्ञात्वात्रिशंकुमपिसनिर्भत्स्यतरसाऽब्रवीत् ॥ १२ ॥ श्वपचक्रसमायासिदेवलोकेजुगुप्सितः ॥ याहिशीघ्रंततोभूमौनाऽत्रस्थातुंत्व योचितम् ॥ १३ ॥ इत्युक्तःस्खलितःस्वर्गाच्छक्रेणाऽमित्रकर्शन ॥ निपपाततदाराजाक्षीणपुण्योयथाऽमरः ॥१४॥ पुनश्चुक्रोशभूपालोविश्वामित्रेतिचा ऽसकृत् ॥ पतामिरक्षदुःखार्तस्वर्गाच्चलितमाशुगम् ॥ १५ ॥ तस्यतत्क्रंदितंराजन्पततःकौशिकोमुनिः ॥ श्रुत्वातिष्ठतिहोवाचपतंतंवीक्ष्यभूपतिम् ॥ ॥ १६ ॥ वचनात्तस्यतत्रैवस्थितोऽसौगगनेनृपः ॥ मुनेस्तपःप्रभावेणचलितोऽपिसुरालयात् ॥ १७ ॥ विश्वामित्रोप्यपःस्पृष्ट्वाचकारेष्टिंसुविस्तराम् ॥ विधातुंनूतनांसृष्टिंस्वर्गलोकंद्वितीयकम् ॥ १८ ॥ तस्योद्यमंतथाज्ञात्वात्वरितस्तुशचीपतिः ॥ तत्राऽऽजगामसहसामुनिंप्रतितुगाधिजम् ॥ १९ ॥ किं ब्रह्मन्क्रियतेसाधोकस्मात्कोपसमाकुलः ॥ अलंसृष्ट्यामुनिश्रेष्ठब्रूहिकिंकरवाणिते ॥ २० ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ स्वंनिवासंमहीपालंच्युतंत्वद्भुवनाद्विभो ॥ नयस्वप्रीतियोगेनत्रिशंकुंचाऽतिदुःखितम् ॥ २१ ॥ व्यासउवाच ॥ तस्यतंनिश्चयंज्ञात्वातुराषाडतिशंकितः ॥ तपोबलंविदित्वोग्रमोमित्योवाचवासवः ॥ २२ ॥ दिव्यदेहंनृपंकृत्वाविमानवरसंस्थितम् ॥ आपृच्छ्यकौशिकंशक्रोऽगमन्निजपुरींतदा ॥ २३ ॥ गतेशक्रेतुवैस्वर्गेत्रिशंकुसहितेततः ॥ विश्वामि त्रःसुखंप्राप्यस्वाश्रमेसुस्थिरोऽभवत् ॥ २४ ॥ हरिश्चंद्रोऽथतच्छ्रुत्वाविश्वामित्रोपकारकम् ॥ पितुःस्वर्गमनंकामंमुदितोराज्यमन्वशात् ॥ २५ ॥ अयोध्याधिपतिःक्रीडांचकारसहभार्यया ॥ रूपयौवनचातुर्ययुक्तयाप्रीतिसंयुतः ॥ २६ ॥ अतीतकालेयुवतीनसागर्भवतीह्यभूत् ॥ तदाचिंतातुरोराजाव भूवाऽतीवदुःखितः ॥ २७ ॥ वसिष्ठस्याऽऽश्रमंगत्वाप्रणम्यशिरसामुनिम् ॥ अनपत्यत्वजांचिंतांगुरवेसमवेदयत् ॥ २८ ॥ दैवज्ञोऽसिभवान्कामंमंत्र विद्याविशारदः ॥ उपायंकुरुधर्मज्ञसंततेर्मममानद ॥ २९ ॥

नैवशरीरेणात्रिशंकुर्देजसत्तम ॥ यदिगच्छतितेलोकेतत्सृष्टिंनकरोम्यहम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ एषगच्छतिभूपालोमयासहत्रिविष्टपम् ॥ अनेनैवशरीरेणमत्प्रसादान्मुनीश्वरेति ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३० ॥ ३१ ॥ निर्वेदमिश्रितंखेदमिश्रितम् ॥ ३२ ॥ अनपत्यत्वजंयद्दुःखंतथादुःखंसंसारेनविद्यतइत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ पशुवंधेनपशुपणेन ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ममाऽग्रेयद्ब्रवीषिपुत्रंदास्यामीतितद्वचनंसत्यंकार्यमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ शैव्याशिवेरपत्यंकन्या ॥ ५० ॥

अपुत्रस्यगतिर्नास्तिजानासिद्विजसत्तम ॥ कस्माद्दुपेक्षसेजानन्दुःखंममचशक्तिमान् ॥ ३० ॥ कलर्विकास्त्विमेधन्यायेशिशुंलालयंतिहि ॥ मंदभाग्योऽहमनिशंचिंतयामिदिवानिशम् ॥ ३१ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यमुनिस्तस्यनिर्वेदमिश्रितंवचः ॥ संचिंत्यमनसासम्यक्तमुवाचविधेःसुतः ॥ ३२ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ सत्यंब्रूषेमहाराजसंसारेऽस्मिन्नविद्यते ॥ अनपत्यत्वजंदुःखंयत्तथादुःखमद्भुतम् ॥३३॥ तस्मात्त्वमपिराजेंद्रवरुणंयादसांपतिम् ॥ समाराधययत्नेनसतेकार्यंकरिष्यति ॥ ३४ ॥ वरुणादधिकोनास्तिदेवःसंतानदायकः ॥ तमाराधयधर्मिष्ठकार्यसिद्धिर्भविष्यति ॥३५॥ दैवंपुरुषकारश्चमानवीयाविमौनृभिः ॥ उद्यमेनविनाकार्यसिद्धिःसंजायतेकथम् ॥ ३६ ॥ न्यायतस्तुनरैःकार्यउद्यमस्तत्वदर्शिभिः ॥ कृतेतस्मिन्भवेत्सिद्धिर्नाऽन्यथानृपसत्तम ॥ ३७ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वागुरोरमिततेजसः ॥ प्रणम्यनिर्ययौराजातपसेकृतनिश्चयः ॥३८॥ गंगातीरेशुभेस्थानेकृतपद्मासनोनृपः ॥ ध्यायन्पाशधरंचित्तेचचारदुश्चरंतपः ॥ ३९ ॥ एवंतपस्यतस्तस्यप्रचेतादृष्टिगोचरः ॥ कृपयाभून्महाराजप्रसन्नमुखपंकजः ॥ ४० ॥ हरिश्चंद्रमुवाचेदंवचनंयादसांपतिः ॥ वरंवरयधर्मज्ञतुष्टोऽस्मितपसातव ॥ ४१ ॥ राजोवाच ॥ अनपत्योऽस्मिदेवेशपुत्रंदेहिसुखप्रदम् ॥ ऋणत्रयापहारार्थमुद्यमोऽयंमयाकृतः ॥ ४२ ॥ नृपस्यवचनंश्रुत्वाप्रगल्भंदुःखितस्यच ॥ स्मितपूर्वंततःपाशीतमाहपुरतःस्थितम् ॥ ४३ ॥ वरुणउवाच ॥ पुत्रोयदिभवेद्राजन्गुणीमनसिवांछितः ॥ सिद्धेकार्येततःपश्चात्किंकरिष्यसिमेप्रियम् ॥ ४४ ॥ यदित्वंतेनपुत्रेणमांयजेथाविशंकितः ॥ पशुवंधेनतेनैवददामिनृपतेवरम् ॥ ४५ ॥ राजोवाच ॥ देवमेमास्तुवंध्यत्वंयजिष्येऽहंजलाधिपं ॥ पशुंकृत्वासुतंपुत्रंसत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ ४६ ॥ वंध्यत्वेपरमंदुःखमसह्यंभुविमानद ॥ शोकाग्निशमनंनृणांतस्माद्देहिसुतंशुभम् ॥ ४७ ॥ वरुणउवाच ॥ भविष्यतिसुतःकामंराजन्गच्छगृहायवै ॥ सत्यंतद्वचनंकार्यंयद्ब्रवीषिममाऽग्रतः ॥ ४८ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तोवरुणेनाऽसौहरिश्चंद्रोगृहंययौ ॥ भार्यायैकथयामासवृत्तांतंवरदानजम् ॥ ४९ ॥ तस्यभार्याशतंपूर्णंबभूवाऽतिमनोहरम् ॥ पट्टराज्ञीशुभाशैव्याधर्मपत्नीपतिव्रता ॥ ५० ॥ कालेगतेऽथसागर्भंदधारवरवर्णिनी ॥ बभूवमुदितोराजाश्रुत्वादोहदचेष्टितम् ॥ ५१ ॥ कारयामासविधिवत्संस्कारान्नृपतिस्तदा ॥ मासेऽथदशमेपूर्णेसुषुवेसाशुभेदिने॥५२॥ताराग्रहबलोपेतेपुत्रंदेवसुतोपमम्॥पुत्रेजातेनृपःस्नात्वाब्राह्मणैःपरिवेष्टितः ॥५३॥ चकारजातकर्माऽऽदौददौदानानिभूरिशः ॥ राज्ञश्चाऽतिप्रमोदोऽभूत्पुत्रजन्मसमुद्भवः ॥ ५४ ॥

दोहदोगर्भिणीमनोरथः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ आदौजातकर्मचकार ततोदानानिददावित्यर्थः ॥ ५४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ षट्षष्टिश्लोकवर्यैस्तुराज्ञःपुत्रोत्सवेसति ॥ वरुणस्यततोवृत्तंयथावदभिधीयते ॥ १ ॥ राज्ञःपुत्रोत्सवानंतरंजातंवृत्तमाह । प्रवृत्तेसदनेइति ॥ पाशीवरुणः ॥ १ ॥ यजाऽनेनेति ॥ नरमेधंकुर्वित्यर्थः ॥ २ ॥ ननुत्वदनुग्रहादेकएवममपुत्रोऽभूत्तस्मिंश्चदत्तेममपुत्रोनैवाऽस्ति ॥ तथाचैवंव्यर्थमेवत्वंमयाप्रार्थितइतिभवतीत्यतआह । वंध्यत्वमिति ॥ ममवंध्यत्वंगच्छत्वितिमनीषयैवत्वयाऽहंप्रार्थितोनपुनःपुत्रोममजीवत्विति ॥ तच्चकार्यंतवमयासंपादितम् ॥ ततश्चनममप्रार्थनाव्यर्थेतिभावः॥

बभूवपरमोदारोधनधान्यसमन्वितः ॥ विशेषदानसंयुक्तोगीतवादित्रसंकुलः ॥ ५५ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ ॥ १४ ॥ व्यासउवाच ॥ प्रवृत्तेसदनेतस्यराज्ञःपुत्रमहोत्सवे ॥ आजगामतदापाशीविप्रवेषधरःशुभः ॥ १ ॥ स्वस्तीत्युक्त्वानृपंप्राहवरुणोऽहंनिशामय॥ पुत्रोजातस्तवाधीशयजाऽनेननृपाऽऽशुमाम् ॥२॥ सत्यंकुरुवचोराजन्यत्प्रोक्तंभवतापुरा ॥ वंध्यत्वंतुगतंतेऽद्यवरदानेनमेकिल ॥ ३ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाराजाचिंतांचकारह ॥ कथंहन्मिसुतंजातंजलजेनसमाननम् ॥ ४ ॥ लोकपालःसमायातोविप्रवेषेणवीर्यवान् ॥ नदेवहेलनंकार्यंसर्वथाशुभमिच्छता ॥ ॥ ५ ॥ पुत्रस्नेहःसुदुश्छेद्यःसर्वथाप्राणिभिःसदा ॥ किंकरोमिकथंमेस्यात्सुखंसंततिसंभवम् ॥६॥धैर्यमालंब्यभूपालस्तंनत्वाप्रतिपूज्यच ॥ उवाचवचनंश्लक्ष्णंयुक्तंविनयपूर्वकम् ॥७॥ राजोवाच ॥ देवदेवतवाऽनुज्ञांकरोमिकरुणानिधे ॥ वेदोक्तेनविधानेनमखंचबहुदक्षिणम्॥८॥पुत्रेजातेदशाहेनकर्मयोग्योभवेत्पिता ॥ मासेनशुद्धचेज्जननीदंपतीतत्रकारणम् ॥९॥ सर्वज्ञोऽसिप्रचेतस्त्वंधर्मंजानासिशाश्वतम् ॥ कृपांकुरुत्वंवारीशक्षमस्वपरमेश्वर ॥१०॥व्यासउवाच ॥ इत्युक्तस्तुप्रचेतास्तंप्रत्युवाचजनाधिपम् ॥ स्वस्तितेस्तुगमिष्यामिकुरुकार्याणिपार्थिव ॥११॥ आगमिष्यामिमासांतेयष्टव्यंसर्वथात्वया ॥ कृत्वौत्थानिकमाचारंपुत्रस्यनृपसत्तम ॥ १२ ॥ इत्युक्त्वाश्लक्ष्णयावाचाराजानंयादसांपतिः ॥ हरिश्चंद्रोमुदंप्रापगतेपाशिनिपार्थिवः ॥१३॥कोटिशःप्रददौगास्तावटोध्रीर्हेमपूरिताः ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चतथैवातिलपर्वतान् ॥ १४ ॥ राजापुत्रमुखंदृष्ट्वासुखमापमहत्तरम् ॥ नामाऽस्यरोहितश्चेतिचकारविधिपूर्वकम् ॥ १५ ॥ पूर्णेमासेततःपाशीविप्रवेषेणभूपतेः ॥ आजगामगृहेसद्योयजस्वेतिब्रुवन्मुहुः ॥ १६ ॥ वीक्ष्यतंनृपतिर्दैवंनिमग्नःशोकसागरे ॥ प्रणिपत्यकृतातिथ्यंतमुवाचकृतांजलिः ॥ १७ ॥ दिष्ट्यादेवत्वमायातोगृहंमेपावितंप्रभो ॥ मखंकरोमिवारीशविधिवद्वांछितंतव ॥ १८ ॥

॥ ३ ॥ हन्मिहनिष्यामीत्यर्थः ॥ वर्तमानसामीप्येभविष्यतिलट् ॥ ४ ॥ कीदृशींचिंतांचकारेतितदाह । लोकपालइति ॥ पुत्रेनदत्तेदेवस्यहेलनंवंचनंभवति मोहाद्दातुंनशक्यते ततश्चकिंकर्तव्यमितिचिंतेत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥दशाहेनदशाहोत्तरमित्यर्थः ॥ दंपतीतत्रेति ॥ तत्रनरमेधकर्मणिदंपतीजायापतीकारणमाधिकारिणौ ततश्चमासपर्यंतमनधिकारात्कथंयज्ञःकर्तव्यइत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ कृत्वौत्थानिकमिति ॥ जातकर्मनामकरणादिकमित्यर्थः ॥ आचारंकृत्वायष्टव्यमित्यर्थः ॥ १२ ॥१३॥१४॥१५॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ यद्वच

अदंतोनपशुःश्लाघ्यइत्याहुर्वेदवादिनः ॥ तस्माद्दंतोद्भवेतेऽहंकरिष्यामिमहामखम् ॥ १९ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तस्तेनवरुणस्तथेत्युक्त्वाययावथ ॥ हरिश्चंद्रोमुदंप्राप्यविजहारगृहाश्रमे ॥ २० ॥ पुनर्दंतोद्भवंज्ञात्वाप्रचेतांद्विजरूपवान् ॥ आजगामगृहेतस्यकुरुकार्यमितिब्रुवन् ॥ २१ ॥ भूपालोऽपिजलाधीशंवीक्ष्यप्राप्तंद्विजाकृतिम् ॥ प्रणम्याऽऽसनसन्मानैःपूजयामाससादरम् ॥ २२ ॥ स्तुत्वाप्रोवाचवचनंविनयानतकंधरः ॥ करोमिविधिवत्कामंमखंप्रबलदक्षिणम् ॥ २३ ॥ बालोऽप्यकृतचौलोऽयंगर्भकेशोनसंमतः ॥ यज्ञार्थेपशुकरणेमयावृद्धमुखाच्छ्रुतम् ॥ २४ ॥ तावत्क्षमस्ववारीशविधिंजानासिशाश्वतम् ॥ कर्तव्यःसर्वथायज्ञोमुंडनांतेशिशोःकिल ॥ २५ ॥ तस्येतिवचनंश्रुत्वाप्रचेताःप्राहतंपुनः ॥ प्रतारयसिमांराजन्पुनःपुनरिदंब्रुवन् ॥ २६ ॥ अपितेसर्वसामग्रीवर्ततेनृपतेऽधुना ॥ पुत्रस्नेहनिबद्धस्त्वंवंचयस्येवसांप्रतम् ॥ २७ ॥ क्षौरकर्मविधिंकृत्वानकर्तासिमखंयदि ॥ तदाहंदारुणंशापंदास्येकोपसमन्वितः ॥ २८ ॥ अद्यगच्छामिराजेंद्रवचनात्तवमानद ॥ नमृषावचनंकार्यंत्वयेक्ष्वाकुकुलोद्भव ॥ २९ ॥ इत्याभाष्यययावाशुप्रचेतानृपतेर्गृहात् ॥ राजापरमसंतुष्टोननंदभवनेतदा ॥ ३० ॥ चूडाकरणकालेतुप्रवृत्तेपरमोत्सवे ॥ संप्राप्तस्तरसापाशीभवनंनृपतेःपुनः ॥ ३१ ॥ यदांकेसुतमादाय राज्ञीनृपतिसन्निधौ ॥ उपविष्टाक्रियाकालेतदैववरुणोऽभ्यगात् ॥ ३२ ॥ कुरुकर्मेतिविस्पष्टंवचनंकथयन्नृपम् ॥ विप्ररूपधरःश्रीमान्प्रत्यक्षइवपावकः ॥ ॥ ३३ ॥ नृपतिस्तंसमालोक्यबभूवाऽतीवविह्वलः ॥ नमश्चकारतंभीत्याकृतांजलिपुटःपुरः ॥ ३४ ॥ विधिवत्पूजयित्वातंराजोवाचविनीतवान् ॥ स्वामिन्कार्यंकरोम्यद्यमखस्यविधिपूर्वकम् ॥ ३५ ॥ वक्तव्यमस्तितत्राऽपिशृणुष्वैकमनाविभो ॥ युक्तंचेन्मन्यसेस्वामिंस्तद्ब्रवीमितवाऽग्रतः ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यस्त्रयोवर्णाद्विजातयः ॥ संस्कृताश्चाऽन्यथाशूद्राएवंवेदविदोविदुः ॥ ३७ ॥ तस्मादयंसुतोमेऽद्यशूद्रवद्वर्ततेशिशुः ॥ उपनीतःक्रियार्हःस्यादितिवेदेषुनिर्णयः ॥ ३८ ॥ राज्ञामेकादशेवर्षेसदोपनयनंस्मृतम् ॥ अष्टमेब्राह्मणानांचवैश्यानांद्वादशेकिल ॥ ३९ ॥ दयसेयदिदेवेशदीनंमांसेवकंतव ॥ तदोपनीयकर्ताऽस्मिपशुनायज्ञमुत्तमम् ॥ ४० ॥ लोकपालोऽसिधर्मज्ञसर्वशास्त्रविशारद ॥ मन्यसेयद्वचः सत्यंतद्वच्छभवनंविभो ॥ ४१ ॥ व्यास उवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादयावान्यादसांपतिः ॥ ओमित्युक्त्वाययावाशुप्रसन्नवदनोनृपः ॥ ४२ ॥ गतेऽथवरुणेराजाबभूवाऽतिमुदान्वितः ॥ सुखंप्राप्यसुतस्यैवंराजामुदमवापह ॥ ४३ ॥ चकारराजकार्याणिहरिश्चंद्रस्तदानृप ॥ कालेनव्रजतापुत्रोबभूवदशवार्षिकः ॥ ४४ ॥

सत्यमिति ॥ यच्छब्दोयद्यर्थकः ॥ यदिसत्यंमन्यसेइत्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ देवदत्तेति ॥ देवेतिवरुणसंबोधनम् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ आयुष्मन्नितिजन्मेजयसंबोधनम् ॥ ५६ ॥ नगरान्निर्गत्यवनमेवप्रययावित्यन्वयः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥

तस्योपवीतसामग्रींविभूतिसदृशींनृपः ॥ चकारब्राह्मणैःशिष्टैरन्वितःसचिवैस्तथा ॥ ४५ ॥ एकादशेसुतस्याऽब्देव्रतबंधविधौनृपः ॥ विदधेविधिवत्कार्यंचित्तेचिंतातुरःपुनः ॥ ४६ ॥ वर्तमानेतथाकार्येउपनीतेकुमारके ॥ आजगामाऽथवरुणोविप्रवेषधरस्तदा ॥ ४७ ॥ तंवीक्ष्यनृपतिस्तूर्णंप्रणम्ययुरतःस्थितः ॥ कृतांजलिपुटःप्रीतःप्रत्युवाचसुरोत्तमम् ॥ ४८ ॥ देवदत्तोपवीतोऽयंपशुयोग्योऽस्तिमेसुतः ॥ प्रसादात्तवमेशोकोगतोवंध्यापवादजः ॥ ४९ ॥ कर्तुमिच्छाम्यहंयज्ञंप्रभूतवरदक्षिणम् ॥ समयेशृणुधर्मज्ञसत्यमद्यब्रवीम्यहम् ॥ ५० ॥ समावर्तनकर्मातेकरिष्यामितवेप्सितम् ॥ ममोपरिदयांकृत्वातावत्त्वंक्षंतुमर्हसि ॥ ५१ ॥ वरुणउवाच ॥ प्रतारयसिमांराजन्पुत्रप्रेमाकुलोभृशम् ॥ मुहुर्मुहुर्मतिंकृत्वायुक्तियुक्तांमहामते ॥ ५२ ॥ गच्छाम्यद्यमहाराजवचसातवनोदितः॥आगमिष्यामिसमयेसमावर्तनकर्मणि ॥ ५३ ॥ इत्युक्त्वाप्रययौपाशीतमापृच्छ्यविशांपते ॥ राजाप्रमुदितःकार्यंचकारचयथोत्तरम् ॥ ५४ ॥ आगतंवरुणंदृष्ट्वाकुमारोतिविचक्षणः ॥ यज्ञस्यसमयंज्ञात्वातदाचिंतातुरोऽभवत्॥५५॥शोकस्यकारणंराज्ञःपर्यपृच्छदितस्ततः ॥ ज्ञात्वाऽत्मवधमायुष्मन्गमनायमतिंदधौ॥५६॥निश्चयंपरमंकृत्वासंमंत्र्यसचिवात्मजैः ॥ प्रययौनगरात्तस्मान्निर्गत्यवनमप्यसौ ॥५७॥ गतेपुत्रेनृपःकामंदुःखितोभृद्भृशंतदा ॥ प्रेरयामासदूतान्स्वांस्तस्यान्वेषणकाम्यया ॥ ५८ ॥ एवंगतेऽथकालेऽसौवरुणस्तद्गृहंगतः ॥ राजानंशोकसंतप्तंकुरुयज्ञमितिब्रुवन् ॥ ५९ ॥ राजाप्रणम्यतंप्राहदेवदेवकरोमिकिम् ॥ नजानेक्वाऽपिपुत्रोमेगतस्त्वद्यभयाकुलः ॥ ६० ॥ सर्वत्रगिरिदुर्गेषुमुनीनामाश्रमेषुच ॥ अन्वेषितोमेदूतैस्तुनप्राप्तोयादसांपते ॥ ६१ ॥ आज्ञापयमहाराजकिंकरोमिगतेसुते ॥ नमेदोषोऽत्रसर्वज्ञभाग्यदोषस्तुसर्वथा ॥ ६२ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिभूपवचःश्रुत्वाप्रचेताःकुपितोभृशम् ॥ शशापचनृपंक्रोधाद्वंचितस्तुपुनःपुनः ॥ ६३ ॥ नृपतेऽहंत्वयायस्माद्वचसाचप्रवंचितः ॥ तस्माज्जलोदरोव्याधिस्त्वांतुदत्वतिदारुणः ॥ ॥ ६४ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिशप्तोमहीपालःकुपितेनप्रचेतसा ॥ पीडितोऽभूत्तदाराजाव्याधिनादुःखदेनतु ॥ ६५ ॥ एवंशप्त्वानृपंपाशीजगामनिजमास्पदम् ॥ राजाप्राप्यमहाव्याधिंबभूवाऽतीवदुःखितः ॥ ६६ ॥ इतिश्रीदे०म०सप्तमस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ गतेऽथवरुणेराजारोगेणाऽतीवपीडितः ॥ दुःखाद्दुःखंपरंप्राप्यव्यथितोभूद्भृशंतदा ॥ १ ॥ कुमारोऽसौवनेश्रुत्वापितरंरोगपीडितम् ॥ गमनायमतिंराजंश्चकारस्नेहयंत्रितः॥२॥

एकोनषष्टिश्लोकैस्तुशुनःशेपवधाश्रया ॥ कथाप्रारभ्यतेयत्रविश्वामित्रेणवैरिता ॥ हरिश्चंद्रेणसंजातापरंप्रारब्धवेगतः ॥ १ ॥ वरुणशापदानानंतरंजातंवृत्तमाह। गतेथेति ॥ १ ॥ २॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तत्राऽऽजगामहेति ॥ यत्रपुत्रःस्थितस्तत्रेत्यर्थः ॥ ३ ॥ वारयामासेति ॥ केवलंदयावशादित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ तेतवपशुभूतस्यहोमंकारयिष्यतीत्यन्वयः ॥ ६ ॥ आत्माहिवल्लभ इति ॥ नवाअरेपत्युःकामायपतिःप्रियोभवत्यात्मनस्तुकामायपतिःप्रियोभवतीत्यादिनानवाअरेसर्वस्यकामायसर्वंप्रियंभवतीतिबृहदारण्यकश्रुतेरनुभवाच्च ॥ तदर्थेआत्मार्थइत्यर्थः ॥ ७ ॥

संवत्सरेव्यतीतेतुपितरंद्रष्टुमादरात् ॥ गंतुकामंतुतंज्ञात्वाशक्रस्तत्राऽऽजगामह ॥ ३ ॥ वासवस्तुतदारूपंकृत्वाविप्रस्यसत्वरः ॥ वारयामासयुक्त्यावै कुमारंगंतुमुद्यतम् ॥ ४ ॥ इंद्रउवाच ॥ राजपुत्रनजानासिराजनीतिंसुदुर्लभाम् ॥ अतःकरोषिमूढस्त्वंगमनायमतिंवृथा ॥ ५ ॥ पितातवमहाभाग ब्राह्मणैर्वेदपारगैः ॥ कारयिष्यतिहोमंतेज्वलितेऽथविभावसौ ॥ ६ ॥ आत्माहिवल्लभस्तातसर्वेषांप्राणिनांखलु ॥ तदर्थंवल्लभाःसंतिपुत्रदारधनादयः ॥ ॥ ७ ॥ आत्मनोदेहरक्षार्थंहत्वात्वांवल्लभंसुतम् ॥ हवनंकारयित्वाऽसौरोगमुक्तोभविष्यति ॥ ८ ॥ तस्मात्त्वयानगंतव्यंराजपुत्रपितुर्गृहे ॥ मृतेपितरि गंतव्यंराज्यार्थेसर्वथापुनः ॥ ९ ॥ एवंनिषेधितस्तत्रवासवेननृपात्मजः ॥ वनमध्येस्थितःकामंपुनःसंवत्सरंनृप ॥ १० ॥ अत्यंतंदुःखितंश्रुत्वाहरिश्चंद्रं तदात्मजः ॥ गमनायमतिंचक्रेमरणेकृतनिश्चयः ॥ ११ ॥ तुराषाड्द्विजरूपेणतत्राऽगत्यचरोहितम् ॥ निवारयामाससुतंयुक्तिवाक्यैःपुनःपुनः ॥ १२ ॥ हरिश्चंद्रोऽतिदुःखार्तोवसिष्ठंस्वपुरोहितम् ॥ पप्रच्छरोगनाशायतत्रोपायंसुनिश्चितम् ॥ १३ ॥ तमाहब्रह्मणःपुत्रोयज्ञंकुरुनृपोत्तम ॥ क्रयक्रीतेनपुत्रेण शापमोक्षोभविष्यति ॥ १४ ॥ पुत्रादशविधाःप्रोक्ताब्राह्मणैर्वेदपारगैः ॥ द्रव्येणाऽनीयतस्मात्त्वंपुत्रंकुरुनृपोत्तम ॥ १५ ॥ वरुणोऽपिप्रसन्नःसन्सुख कारीभविष्यति ॥ लोभात्कोऽपिद्विजःपुत्रंप्रदास्यतिस्वराष्ट्रजः ॥ १६ ॥ एवंप्रमोदितोराजावसिष्ठेनमहात्मना ॥ प्रधानंप्रेरयामासतदन्वेषणकाम्यया ॥ ॥ १७ ॥ अजीगर्तोद्विजःकश्चिद्विषयेतस्यभूपतेः ॥ तस्याऽऽसंश्चत्रयःपुत्रानिर्धनस्यविशेषतः ॥ १८ ॥ प्रधानेनाऽप्यसौपृष्टःपुत्रार्थंदुर्बलोद्विजः ॥ ग वांशतंददामीतिदेहिपुत्रंमखायवै ॥ १९ ॥ शुनःपुच्छःशुनःशेपःशुनोलांगूलइत्यमी ॥ तेषामेकतमंमेहिददामितुगवांशतम् ॥ २० ॥ अजीगर्तस्तु तच्छ्रुत्वाक्षुधयापीडितोभृशम् ॥ पुत्रंचैकतमंतेभ्योविक्रेतुंवैमनोदधे ॥ २१ ॥ कार्यादिकारिणंज्येष्ठंमत्वानासावदादमुम् ॥ कनिष्ठंनाप्यदान्मातामम्मैषइ तिवादिनी ॥ २२ ॥ मध्यमंचशुनःशेपंददौगवांशतेनच ॥ आनिनायपशुंचक्रेनरमेधेनराधिपः ॥ २३ ॥ रुदंतंदुःखितंदीनंवेपमानंभृशातुरम् ॥ यूपेब द्धंनिरीक्ष्याऽमुंचुक्रुशुर्मुनयस्तदा ॥ २४ ॥ शामित्रायपशुंचक्रेनरमेधेनराधिपः ॥ शामितानाददेशस्त्रंतमालंभयितुंशिशुम् ॥ २५ ॥ नाऽहंद्विजसुतंदी नंरुदंतंकरुणंभृशम् ॥ हनिष्यामिस्वलोभार्थमित्युवाचाप्यसौतदा ॥ २६ ॥ इत्युक्त्वाविरराम ऽसौकर्मणोदुष्करादथ ॥ राजासभासदःप्राहकिंकर्तव्य मितिद्विजाः ॥ २७ ॥ जातःकिलकिलाशब्दोजनानांक्रोशतांतदा ॥ क्रंदमानेशुनःशेपेसभायांभृशमद्भुतम् ॥ २८ ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ कार्याधिकारिणंमृतक्रियाधिकारिणम् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ शामित्रा यशमितुःकर्मवधरूपंशामित्रंतस्मैवधायकर्मणेपशुंचक्रेदत्तवानित्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अजीगर्तोलोभवशात्पुत्रवधंकर्तुंप्रवृत्तइत्याह । अजीगर्तइति ॥ २९ ॥ ३० ॥ सदाऽसूयेति ॥ पुत्रेऽपिद्वेषंबुद्धिरित्यर्थः ॥ प्रसूयतेउत्पद्यते ॥३१॥३२॥ शामित्रेवधकर्मणि । अनेनचलो भाविष्टस्यईदृशीगतिर्जायतेइतिबोधितम् ॥ तस्माल्लोभस्त्याज्यइत्यवांतरतात्पर्यम् ॥३३॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ नोदनेयंप्रेरणेयंविधिवाक्येनेत्यर्थः॥ नतुविधि वाक्यानामवश्यहिंसाकरणेतात्पर्यम् ॥ तदेतद्विचारयनिश्चिनुहीत्यर्थः ॥ किंतुहिंसानिवृत्तावेवतात्पर्यम् ॥ तदुक्तंभागवते ॥ लोकेव्यवायामिषमद्यसेवानित्यास्तुजंतोर्नहितत्रचोदना ॥

अजीगर्तस्तदोत्थायतमुवाचनृपोत्तमम् ॥ राजन्कार्यंकरिष्यामितवाऽहंसुस्थिरोभव ॥ २९ ॥ वेतनंद्विगुणंदेहिहनिष्यामिपशुंकिल ॥ कर्तव्यंमखकार्यंवै मयातेऽद्यधनार्थिना ॥ ३० ॥ दुःखितस्यधनार्थस्यसदाऽसूयाप्रसूयते ॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यहरिश्चंद्रोमुदान्वितः ॥ ३१ ॥ तमुवाचद दाम्यद्यगवांशतमनुत्तमम् ॥ तदाकर्ण्यपितातस्यपुत्रंहंतुंसमुद्यतः ॥ ३२ ॥ लोभेनाऽऽकुलचित्तोऽसौशामित्रेकृतनिश्चयः ॥ समुद्यतंचतंदृष्ट्वाजनाःसर्वेस भासदः ॥ ३३ ॥ चुक्रुशुर्भृशदुःखार्ताहाहेतिजगदुर्वचः ॥ पिशाचोऽयंमहापापीक्रूरकर्माद्विजाकृतिः ॥ ३४ ॥ यत्स्वयंस्वसुतंहंतुमुद्यतःकुलपांसनः॥धि क्चांडालकिमेतत्तेपापकर्मचिकीर्षितम् ॥ ३५ ॥ हत्वासुतंधनंप्राप्यकिंसुखंतेभविष्यति ॥ आत्मावैजायतेपुत्रअंगाद्वैवेदभाषितम्॥३६॥तत्कथंपापबुद्धे त्वमात्मानंहंतुमिच्छसि ॥ एवंकोलाहलेतत्रजातेकौशिकनंदनः ॥ ३७ ॥ समीपंनृपतेर्गत्वातमुवाचदयापरः ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ राजन्मुंचशुनःशे पंरुदंतंभृशदुःखितम् ॥ ३८ ॥ क्रतुस्तेभवितापूर्णोरोगनाशश्चसर्वथा ॥ दयासमंनास्तिपुण्यंपापंहिंसासमंनहि ॥ ३९ ॥ रागिणांरोचनार्थायनोदनेयंवि चारय ॥ आत्मदेहस्यरक्षार्थंपरदेहनिकृंतनम् ॥ ४० ॥ नकर्तव्यंमहाराजसर्वतःशुभमिच्छता ॥ दययासर्वभूतेषुसंतुष्टोयेनकेनच ॥ ४१ ॥ सर्वेंद्रियोप शांत्याचतुष्यत्याशुजगत्पतिः ॥ आत्मवत्सर्वभूतेषुचिंतनीयंनृपोत्तम ॥ ४२ ॥ जीवितव्यंप्रियंनूनंसर्वेषांसर्वदाकिल ॥ त्वमिच्छसिसुखंकर्तुंदेहेहत्वात्व मुंद्विजम् ॥ ४३ ॥ कथंनेच्छेदसौदेहंरक्षितुंस्वसुखास्पदम् ॥ पूर्वजन्मकृतंवैरंनाऽनेनसहतेनृप ॥ ४४ ॥ येनाऽमुंहंतुकामस्त्वंद्विजपुत्रंनिरागसम् ॥ यो यंहंतिविनावैरंस्वकामःसततंपुनः ॥ ४५ ॥ हंतारंहंतितंप्राप्यजननंजननांतरे ॥ जनकोऽस्यसुदुष्टात्मायेनाऽसौतेसमर्पितः ॥ ४६ ॥ स्वात्मजोधनलोभे नपापाचारःसदुर्मतिः ॥ एष्टव्यावहवःपुत्रायद्येकोऽपिगयांव्रजेत् ॥ ४७ ॥ यजेतचाऽश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥ देशमध्येचयःकश्चित्पापकर्मसमा चरेत् ॥ ४८ ॥ षष्ठांशस्तस्यपापस्यराजाभुंक्तेनसंशयः ॥ निषेधनीयोराज्ञाऽसौपापंकर्तुंसमुद्यतः ॥ ४९ ॥ ननिषिद्धस्त्वयाकस्मात्पुत्रंविक्रेतुमुद्यतः॥ सूर्यवंशेसमुत्पन्नस्त्रिशंकुतनयःशुभः ॥ ५० ॥ आर्यस्त्वनार्यवत्कर्मकर्तुमिच्छसिपार्थिव ॥ मोचनान्मुनिपुत्रस्यकरणाद्वचनस्यमे ॥ ५१ ॥

व्यवस्थितिस्तेषुविवाहयज्ञसुराग्रहैरासुनिवृत्तिरिष्टेति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ हंतारंहंतीति ॥ यंहंतिसजननंप्राप्यतंहंतारंपूर्वजन्मस्थंजननांतरेद्वितीयजन्मनिहं तीत्यन्वयः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ मेममवचनस्यकरणात्स्वीकरणादित्यर्थः ॥ ५१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ निग्रहःआग्रहः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ एकोनषष्टिश्लोकैस्तुविश्वा
मित्रेणमोचिते ॥ शुनःशेपेहरिश्चंद्रोरोगान्मुक्तइतीर्यते ॥ १ ॥ राजवाक्यंश्रुत्वाविश्वामित्रोयदकरोत्तदाह । रुदंतामिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ भीतेननरका

तवदेहेसुखंराजन्भविष्यत्यविचारणात् ॥ पितातेशापयोगेनचांडालत्वमुपागतः ॥५२॥ मयाऽसौतेनदेहेनस्वर्लोकंप्रापितःकिल ॥ तेनैवप्रीतियोगेनकुरु
मेवचनंनृप ॥ ५३ ॥ मुंचैनंबालकंदीनंरुदंतंभृशमातुरम् ॥ याचितोऽसिमयानूनंयज्ञेऽस्मिन्राजसूयके ॥ ५४ ॥ प्रार्थनाभंगजंदोषंकथंत्वंनाऽवबुध्यसे ॥
प्रार्थितंसर्वदादेयंमखेऽस्मिन्नृपसत्तम ॥ ५५ ॥ अन्यथापापमेवस्यात्तवराजन्नसंशयः ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाकौशिकस्यनृपोत्तमः॥५६॥
प्रत्युवाचमहाराजःकौशिकंमुनिसत्तमम् ॥ जलोदरेणगाधेयदुःखितोऽहंभृशंमुने ॥ ५७ ॥ तस्मान्नमोचयाम्येनमन्यत्प्रार्थयकौशिक ॥ नत्वयानिग्रहः
कार्यःकार्येऽस्मिन्ममसर्वथा ॥ ५८ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञोविश्वामित्रोऽतिकोपतः ॥ बभूवदुःखसंतप्तोवीक्ष्यदीनंद्विजात्मजम् ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभाग
वतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ रुदंतंबालकंवीक्ष्यविश्वामित्रोदयातुरः ॥ शुनःशेपमुवाचेदंगत्वापार्श्वेऽतिदुःखि
तम् ॥ १ ॥ मंत्रंप्रचेतसःपुत्रमयोक्तंमनसास्मरन् ॥ जपतस्तवकल्याणंभविष्यतिममाज्ञया ॥ २ ॥ विश्वामित्रवचःश्रुत्वाशुनःशेपःशुचाकुलः ॥ मंत्रंज
जापमनसाकौशिकोक्तंस्फुटाक्षरम् ॥ ३ ॥ जपतस्तत्रतस्याऽऽशुप्रचेतास्तुकृपाकरः ॥ प्रादुर्बभूवसहसाप्रसन्नोनृपबालके ॥ ४ ॥ दृष्ट्वातमागतंसर्वेविस्म
यंपरमंगताः ॥ तुष्टुवुर्वरुणंदेवंमुदितादर्शनेनते ॥ ५ ॥ राजाऽतिविस्मितःपादौप्रणनामरुजातुरः ॥ बद्धांजलिपुटोदेवंतुष्टावपुरतःस्थितम् ॥ ६ ॥
हरिश्चंद्रउवाच ॥ देवदेवकृपासिंधोपापात्माऽहंसुमंदधीः ॥ कृतापराधःकृपणःपावितःपरमेष्ठिना ॥ ७ ॥ मयातेपुत्रकामेनदुःखसंस्थेनहेलनम् ॥ कृतं
क्षमाप्यंप्रभुणाकोऽपराधःसुदुर्मतेः ॥ ८ ॥ अर्थीदोषंनजानातितस्मात्पुत्रार्थिनामया ॥ वंचितस्त्वंदेवदेवभीतेननरकाद्विभो ॥ ९ ॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्ति
स्वर्गोनैवचनैवच ॥ भीतोऽहंतेनवाक्येनतस्मात्तेहेलनंकृतम् ॥ १० ॥ नाऽज्ञस्यदूषणंचिंत्यंनूनंज्ञानवताविभो ॥ दुःखितोऽहंरुजाक्रांतोवंचितःस्वसु
तेनह ॥ ११ ॥ नजानेऽहंमहाराजपुत्रोमेक्वगतःप्रभो ॥ वंचयित्वावनेभीतोमरणान्मांकृपानिधे ॥ १२ ॥ प्रययौद्रविणंदत्वागृहीतोद्विजबालकः ॥ यज्ञो
ऽयंक्रीतपुत्रेणप्रारब्धस्तवतुष्टये ॥ १३ ॥ दर्शनंतवसंप्राप्यगतंदुःखंममाऽद्भुतम् ॥ जलोदरकृतंसर्वंप्रसन्नेत्वयिसांप्रतम् ॥१४॥ व्यासउवाच॥इतितस्यव
चःश्रुत्वाराज्ञोरोगातुरस्यच ॥ दयावान्देवदेवेशःप्रत्युवाचनृपोत्तमम् ॥ १५ ॥ वरुणउवाच ॥ मुंचराजञ्छुनःशेपंस्तुवंतंमांभृशातुरम् ॥ यज्ञोयंपरिपूर्ण
स्तेरोगमुक्तोभवाऽऽत्मना ॥ १६ ॥

दिति ॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तीतिशासनात्पुत्रेमृतेनरकंप्राप्स्यामीतिनरकात्भीतेनेत्यर्थः ॥ ९ ॥ तदेवाह । अपुत्रस्येति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





विरुजंरोगरहितम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ विद्याप्रदश्चेतिचकारेणजन्मदातापीत्येवंमिलिताःपंचेत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥२९॥

इत्युक्त्वावरुणस्तूर्णंराजानंविरुजंतथा॥चकारपश्यतांतत्रसदस्यानांसुसंस्थितम्॥१७॥विमुक्तोऽसौद्विजःपाशाद्वरुणेनमहात्मना ॥ जयशब्दस्ततस्तत्र संजातोमखमंडपे ॥ १८॥ राजाप्रमुदितःसद्योरोगान्मुक्तःसुदारुणात् ॥ यूपान्मुक्तःशुनःशेपोबभूवाऽतीवसंस्थितः ॥ १९ ॥ राजात्विमंमखंपूर्णंचकार विनयान्वितः ॥ शुनःशेपस्तदासभ्यानित्युवाचकृतांजलिः ॥ २० ॥ भोभोःसभ्याःसुधर्मज्ञाब्रुवंतुधर्मनिर्णयम् ॥ वेदशास्त्रानुसारेणयथार्थवादिनःकिल ॥ २१ ॥ पुत्रोऽहंकस्यसर्वज्ञाःपितामेकोऽग्रतःपरम् ॥ भवतांवचनात्तस्यशरणंप्रव्रजाम्यहम् ॥ २२ ॥ इत्युक्तेवचनेतत्रसभ्याःप्रोचुःपरस्परम् ॥ सभ्या ऊचुः ॥ अजीगर्तस्यपुत्रोऽयंकस्याऽन्यस्यभवेदसौ॥२३॥अंगादंगात्समुद्भूतःपालितस्तेनभक्तितः ॥ अन्यस्यकस्यपुत्रोऽसौप्रभवेदितिनिश्चयः ॥२४॥ तच्छ्रुत्वावामदेवस्तुतानुवाचसभासदः ॥ विक्रीतस्तेनतातेनद्रव्यलोभात्सुतःकिल ॥ २५ ॥ पुत्रोऽयंधनदातुश्चराज्ञस्तत्रनसंशयः॥अथवावरुणस्यैषपा शान्मुक्तोऽस्त्यनेनवै ॥ २६॥ अन्नदाताभयत्रातातथाविद्याप्रदश्चयः ॥ तथावित्तप्रदश्चैवपंचैतेपितरःस्मृताः ॥२७॥ तदाकेचित्पितुःप्राहुःकेचिद्राज्ञस्त थाऽपरे ॥ वरुणस्येतिसंवादेनिर्णयंनययुश्चते ॥ २८ ॥ इत्थंसंदेहमापन्नेवसिष्ठोवाक्यमब्रवीत् ॥ सभ्यान्विषदतस्तत्रसर्वज्ञःसर्वपूजितः ॥२९ ॥ शृणुध्वं भोमहाभागानिर्णयंश्रुतिसंमतम् ॥ निःस्नेहेनयदापित्राविक्रीतोऽयंसुतःशिशुः ॥ ३० ॥ संबंधस्तुगतस्तस्यतदैवधनसंग्रहात् ॥ हरिश्चंद्रस्यसंजातःपु त्रोऽसौक्रीतएवच ॥ ३१ ॥ यूपेबद्धोयदाराज्ञातदातस्यनवैसुतः ॥ वरुणस्तुस्तुतोऽनेनतेनतुष्टेनमोचितः ॥ ३२ ॥ तस्मान्नाऽयंमहाभागाह्यसौपुत्रःप्रचे तसः ॥ योयंस्तौतिमहामंत्रैःसोऽपितुष्टोददातिच ॥ ३३ ॥ धनंप्राणान्पशूत्राज्यंतथामोक्षंकिलेप्सितम् ॥ कौशिकस्यसुतश्चाऽयमरिष्टेयेनरक्षितः ॥ ॥ ३४ ॥ मंत्रंदत्वामहावीर्यैवरुणस्यातिसंकटे ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वावाक्यंवसिष्ठस्यबाढमूचुःसभासदः ॥ ३५ ॥ विश्वामित्रस्तुजग्राहतंकरेदक्षिणेत दा ॥ एहिपुत्रगृहंमेत्वमित्युक्त्वाप्रेमपूरितः ॥३६॥ शुनःशेपोजगामाऽऽशुतेनैवसहसत्वरः ॥ वरुणस्तुप्रसन्नात्माजगामचस्वमालयम् ॥ ३७ ॥ ऋत्विज श्चतथासभ्याःस्वगृहान्निर्ययुस्तदा॥राजाऽपिरोगनिर्मुक्तोबभूवाऽतिमुदान्वितः ॥ ३८ ॥ प्रजास्तुपालयामाससुप्रसन्नेनचेतसा ॥ रोहिताख्यस्तुतच्छ्रुत्वावृ त्तांतंवरुणस्यह ॥३९॥ आजगामगृहंप्रीतोदुर्गमाद्वनपर्वतात् ॥ दूताराजानमभ्येत्यप्रोचुःपुत्रंसमागतम् ॥ ४०॥ मुदितोऽसौजगामाऽऽशुसंमुखःकोसला धिपः ॥ दृष्ट्वापितरमायांतंप्रेमोद्रिक्तःसुसंभ्रमः ॥४१॥ दंडवत्पतितोभूमावश्रुपूर्णमुखःशुचा ॥ राजाऽपितंसमुत्थाप्यपरिरभ्यमुदान्वितः ॥ ४२ ॥

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ विश्वामित्रोऽतिकोपनइति ॥ त्रिशंकोःस्वपितुरुद्धारकस्यममशुनःशेपमोचनविषयकंवाक्यंनांगी चकारैतादृशस्याऽतिदुष्टहरिश्चंद्रस्यप्रशंसांमदग्रेकरोतीत्यसूयाकोपकारणम्॥५४॥५५॥ग्लहंपणम् ॥५६॥ अहंचेदिति॥त्वयाऽतिसंस्तुतंराजानंहरिश्चंद्रंतंप्रसिद्धमहमसत्यवादिनंनकरोमिनक रिष्यामिचेन्ममपुण्यंविनश्यतुअन्यथातुतंयद्यहमसत्यवादिनंकरिष्यामितदातवपुण्यमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥

समाघ्रायसुतंमूर्ध्निपप्रच्छकुशलंपुनः ॥ उत्संगेतंसमारोप्यमुदितोमेदिनीपतिः ॥ ४३ ॥ उष्णैर्नेत्रजलैःशीर्षण्यभिषेकमथाऽकरोत् ॥ राज्यंशशासतेना सौपुत्रेणाऽतिप्रियेणच ॥ ४४ ॥ वृत्तांतंनरमेधस्यकथयामासविस्तरात् ॥ राजसूयंक्रतुवरंचकारनृपसत्तमः ॥ ४५ ॥ वसिष्ठंपूजयित्वाऽथहोतारमकरोद्वि भुः ॥ समाप्तेत्वथयज्ञेशेवसिष्ठोऽतीवपूजितः ॥ ४६ ॥ शक्रस्यसदनंरम्यंजगाममुनिरादरात् ॥ विश्वामित्रोऽपितत्रैववसिष्ठेनचसंगतः ॥ ४७ ॥ मिलित्वा तौस्थितौदेवसदनेमुनिसत्तमौ ॥ विश्वामित्रोऽपिपप्रच्छवसिष्ठंप्रतिपूजितम् ॥ ४८ ॥ वीक्ष्यविस्मयचित्तस्तंसभायांतुशचीपतेः ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ केयंपूजात्वयाप्राप्तामहतीमुनिसत्तम ॥ ४९ ॥ कृताकेनमहाभागसत्यंब्रूहिममांतिके ॥ वसिष्ठउवाच ॥ यजमानोऽस्तिमेराजाहरिश्चंद्रःप्रतापवान् ॥५०॥ राजसूयःकृतस्तेनराज्ञाप्रवरदक्षिणः ॥ नेदृशोऽस्तिनृपश्चान्यःसत्यवादीधृतव्रतः॥५१॥दाताचधर्मशीलश्चप्रजारंजनतत्परः ॥ तस्ययज्ञेमयापूजाप्राप्ताकौ शिकनंदन ॥ ५२ ॥ "किंपृच्छसिपुनःसत्यंब्रवीम्यकृत्रिमंद्विज ॥" हरिश्चंद्रसमोराजानभूतोनभविष्यति ॥ सत्यवादीतथादाताशूरःपरमधार्मिकः ॥ ॥ ५३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाविश्वामित्रोऽतिकोपनः ॥ बभूवक्रोधसंरक्तलोचनोऽप्यब्रवीच्चतम् ॥ ५४ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ एवंस्तौषिनृ पंमिथ्यावादिनंकपटप्रियम् ॥ वंचितोवरुणोयेनप्रतिश्रुत्यवरंपुनः ॥ ५५ ॥ ममजन्मार्जितंपुण्यंतपसःपठितस्यच ॥ त्वदीयंवाऽतितपसोग्लहंकुरुमहा मते ॥ ५६ ॥ अहंचेत्तन्नृपंसद्योनकरोम्यतिसंस्तुतम् ॥ असत्यवादिनंकाममदातारंमहाखलम् ॥ ५७ ॥ आजन्मसंचितंसर्वंपुण्यंममविनश्यतु ॥ अन्य थात्वत्कृतंसर्वंपुण्यंत्वितिपणावहे ॥ ५८ ॥ ग्लहंकृत्वाततस्तौतुविवदंतौमुनीतदा ॥ स्वाश्रमंस्वर्गलोकाच्चगतौपरमकोपनौ ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागव तेमहापुराणेसप्तमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥ ॥ व्यासउवाच ॥ कदाचित्तुहरिश्चंद्रोमृगयार्थंवनंययौ ॥ अपश्यद्रुदतींबालांसुंदरींचारुलोचनाम् ॥ ॥ १ ॥ तामपृच्छन्महाराजःकामिनींकरुणापरः ॥ पद्मपत्रविशालाक्षिकिंरोदिषिवरानने ॥ २ ॥ केनाऽसिपीडिताऽत्यर्थंकिंतेदुःखंवदाऽऽशुमे ॥ काच त्वंविजनेघोरेकस्तेभर्तापिताऽथवा ॥ ३ ॥ नबाधतेचराज्येमेराक्षसोऽपिपरांगनाम् ॥ तंहन्मितरसाकांतेयस्त्वांसुंदरिबाधते ॥ ४ ॥

अष्टाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथनृपेणह ॥ विश्वामित्रमुनेर्वैरमभूदितितुकीर्त्यते ॥ १ ॥ वसिष्ठविश्वामित्रयोःपणानंतरंजातंवृत्तमाह ॥ कदाचिदिति ॥ अपश्यद्रुदतीमिति ॥ इयंविश्वा मित्रनिर्मितामाया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५ ॥ ६ ॥ मदर्थसिद्धिरूपिणीयाहमस्मितस्यैमत्प्रयोजनार्थमित्यर्थः ॥ अनेनचकात्वंकस्तेभर्तापिताऽथवेत्यस्योत्तरमर्थाद्दत्तंभवति सिद्धेःशास्त्रेप्रसिद्धत्वात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ तापपरायणं तपश्चर्यापरायणम् ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ इत्थंनिषिध्येति ॥ अनेनचसिद्ध्यर्थंतपःकर्तानिरंतरमेवविघ्नैरभिभूयतइत्युक्तंभवति ॥ तस्मान्निष्कामनयाश्रीभगवत्याआराधनं

ब्रूहिदुःखंवरारोहेस्वस्थाभवकृशोदरि ॥ विषयेममपापात्मानतिष्ठतिसुमध्यमे ॥ ५ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वानारीतमब्रवीन्नृपम् ॥ प्रमृज्याऽश्रूणिवदना द्धरिश्चंद्रंनृपोत्तमम् ॥ ६ ॥ नार्युवाच ॥ राजन्मांबाधतेऽत्यर्थंविश्वामित्रोमहामुनिः ॥ तपःकरोतियद्घोरंमदर्थंकौशिकोवने ॥ ७ ॥ तेनाऽहंदुःखितारा जन्विषयेतवसुव्रत ॥ विद्धिमांकमनांकांतांपीडितांमुनिनाभृशम् ॥ ८ ॥ राजोवाच ॥ स्वस्थाभवविशालाक्षिनतेदुःखंभविष्यति ॥ तमहंवारयिष्या मिमुनिंतापपरायणम् ॥ ९ ॥ इत्याश्वास्यस्त्रियंराजातरसामुनिसन्निधौ ॥ नत्वाप्रणम्याशिरसातमुवाचमहीपतिः॥१०॥स्वामिन्किंक्रियतेऽत्यर्थंतपसादेह पीडनम् ॥ किमर्थंतेसमारंभोब्रूहिसत्यंमहामते ॥ ११ ॥ वांछितंतवगाधेयकरोमिसफलंकिल ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठतरसातपसाऽलमतःपरम् ॥ १२ ॥ विष येममसर्वज्ञनकर्तव्यंसुदारुणम् ॥ लोकपीडाकरंघोरंतपःकेनाऽपिकर्हिचित् ॥ १३ ॥ इत्थंनिषिध्यतंराजाविश्वामित्रंगृहंययौ ॥ मनसाक्रोधमाधाय गतोऽसौकौशिकोमुनिः ॥ १४ ॥ सगत्वाचिंतयामासनृपकृत्यमसांप्रतम् ॥ वसिष्ठस्यचसंवादंतपसःप्रतिषेधनम् ॥ १५ ॥ कोपाविष्टेनमनसाप्रतीकार मथाकरोत् ॥ विचिंत्यबहुधाचित्तेदानवंघोरविग्रहम् ॥ १६ ॥ प्रेषयामासतद्देशंविधायसूकराकृतिम् ॥ सोऽतिकायोमहाकालःकुर्वन्नादंसुदारुणम् ॥ ॥ १७ ॥ राज्ञश्चोपवनेप्राप्तस्त्रासयन्रक्षकांस्तदा ॥ मालतीनांचखंडानिकदंबानांतथैवच ॥ १८ ॥ यूथिकानांचवृंदानिकंपयंश्चमुहुर्मुहुः ॥ दंतेनविलि खन्भूमिंसमुन्मूलयतेद्रुमान् ॥१९॥ चंपकान्केतकीखंडान्मल्लिकानांचपादपान् ॥ करवीरानुशीरांश्चनिचखानशुभान्मृदून् ॥२०॥ मुचुकुंदानशोकांश्च बकुलांस्तिलकांस्तथा ॥ उन्मूल्यकदनंतत्रचकारसूकरोवने॥२१॥वाटिकारक्षकाःसर्वेदुद्रुवुःशस्त्रपाणयः ॥ हाहेतिचुक्रुशुस्तत्रमालाकाराभृशातुराः ॥ ॥ २२ ॥ बाणैःसंताड्यमानोऽपियदात्रस्तोनवैमृगः ॥ रक्षकान्पीडयामासकोलःकालसमद्युतिः ॥ २३ ॥ तेतदाऽतिभयाक्रांताराजानंशरणंययुः ॥ त मूचुस्त्राहित्राहीतिवेपमानाभयाकुलाः ॥ २४ ॥ तानागतान्समालोक्यभयार्तान्भूपतिस्तदा ॥ पप्रच्छकिंभयंकस्मान्मांब्रुवंतुसमागताः ॥ २५ ॥ ना हंबिभेमिदेवेभ्योराक्षसेभ्यश्चरक्षकाः ॥ कस्माद्भयंसमुत्पन्नंतद्ब्रुवंतुममाग्रतः ॥ २६ ॥ हन्मिचैकेनबाणेनतंशत्रुंदुर्भगंकिल ॥ योमेऽरातिःसमुत्पन्नोलो केपापमतिःखलः ॥ २७ ॥ देवोवादानवोवाऽपितन्निहन्मिशरैःशितैः ॥ क्वतिष्ठतिकियद्रूपःकियद्बलसमन्वितः ॥ २८ ॥

कर्तव्यमित्यवांतरतात्पर्यम् ॥ १४ ॥ वसिष्ठस्यचसंवादमिति ॥ वसिष्ठेनाऽयंराजापरमधार्मिकइत्युक्तम् ॥ यद्ययंपरमधार्मिकस्तर्हिममतपसःकथमनेनप्रतिषेधनंकृतंकथंचवसिष्ठेनपणःकृत इतिप्रष्टव्योवसिष्ठोऽस्मिन्समयेइतिभावः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ वनेसूकरोवृक्षाणांकदनंचकारेत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥२६॥२७॥२८॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

मालाकाराऊचुः ॥ नदेवोनचदैत्योऽस्तिनयक्षोनचकिन्नरः ॥ कश्चित्कोलोमहाकायोराजंस्तिष्ठतिकानने ॥ २९ ॥ पुष्पवृक्षानतिमृदून्दंतेनोन्मूलयत्यसौ ॥ विदीर्णतद्वनंसर्वंसूकरेणाऽतिरंहसा ॥ ३० ॥ विशिखैस्ताडितोऽस्माभिर्दृषद्भिर्लकुटैस्तथा ॥ नबिभेतिमहाराजहंतुमस्मानुपाद्रवत् ॥ ३१ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तेषांराजाकोपसमाकुलः ॥ अश्वमारुह्यतरसाजगामोपवनंप्रति ॥ ३२ ॥ सैन्येनमहतायुक्तोगजाश्वरथसंयुतः ॥ पदातिवृंदसहितःप्रययौवनमुत्तमम् ॥ ३३ ॥ तत्राऽपश्यन्महाकोलंघुर्घुरंतंभयानकम् ॥ वनंभग्नंचसंवीक्ष्यराजाक्रोधयुतोऽभवत् ॥ ३४ ॥ चापेबाणंसमारोप्यविकृष्यचशरासनम् ॥ तंहंतुंसूकरंपापंतरसासमुपाक्रमत् ॥ ३५ ॥ समालोक्यचराजानंचापहस्तंरुषाकुलम् ॥ संमुखोऽभ्यद्रवत्तूर्णंकुर्वञ्छब्दंसुदारुणम् ॥ ३६ ॥ तमायांतंसमालोक्यवराहंविकृताननम् ॥ मुमोचविशिखंतस्मिन्हंतुकामोमहीपतिः ॥ ३७॥ वंचयित्वाऽथतद्बाणंसूकरस्तरसाबलात् ॥ निर्जगाममहावेगात्तमुल्लंघ्यनृपंतदा ॥ ३८ ॥ गच्छंतंतंसमालोक्यराजाकोपसमन्वितः ॥ मुमोचविशिखांस्तीक्ष्णांश्चापमाकृष्ययत्नतः ॥ ३९ ॥ क्षणंदृष्टिपथंराज्ञःक्षणंचाऽदर्शनंगतः ॥ कुर्वन्बहुविधारावंसूकरःसमुपाद्रवत् ॥ ४० ॥ हरिश्चंद्रोऽतिकुपितोमृगस्याऽनुजगामह ॥ अश्वेनवायुवेगेनविकृष्यचशरासनम् ॥ ४१ ॥ इतस्ततस्ततःसैन्यमगमच्चवनांतरम् ॥ एकाकीनृपतिःकोलंव्रजंतंसमुपाद्रवत् ॥ ४२ ॥ मध्याह्नसमयेराजासंप्राप्तोविजनेवने ॥तृषितःक्षुधितोऽत्यर्थंबभूवश्रांतवाहनः ॥४३॥ सूकरोऽदर्शनंप्राप्तोराजाचिंतातुरोऽभवत्॥ मार्गभ्रष्टोऽतिविपिनेदारुणेदीनवत्स्थितः ॥४४॥ किंकरोमिक्वगच्छामिनसहायोऽस्तिमेवने ॥ अज्ञातस्वपथःकुत्रव्रजामीतिव्यचिंतयत् ॥ ४५ ॥ एवंचिंतयतस्तत्रविपिनेजनवर्जिते ॥ राजाचिंतातुरोपश्यन्नदींसुविमलोदकाम् ॥ ४६ ॥ वीक्ष्यतांमुदितोराजापाययित्वातुरंगमम् ॥ अश्वादुत्तीर्यविमलंपपौपानीयमुत्तमम् ॥ ४७ ॥ जलंपीत्वानृपस्तत्रसुखमापमहीपतिः ॥ इयेपनगरंगंतुंदिग्भ्रमेणाऽतिमोहितः ॥ ४८ ॥ विश्वामित्रस्तुसंप्राप्तोवृद्धब्राह्मणरूपधृक् ॥ ननामवीक्ष्यराजातंप्रीतिपूर्वंद्विजोत्तमम् ॥ ४९ ॥ तमुवाचगाधिराजःप्रणमंतंनृपोत्तमम् ॥ स्वस्तितेऽस्तुमहाराजकिमर्थमिहचाऽऽगतः ॥ ५० ॥ एकाकीविजनेराजन्किंचिकीर्षितमत्रते ॥ ब्रूहिसर्वंस्थिरोभूत्वाकारणंनृपसत्तम ॥ ५१ ॥ राजोवाच ॥ सूकरोऽतिमहाकायोबलवान्पुष्पकाननम् ॥ समुपेत्यममर्दाऽऽशुकोमलान्पुष्पपादपान् ॥ ५२ ॥ तंनिवारयितुंदुष्टंकरेकृत्वाचकार्मुकम् ॥ ससैन्योऽहंस्वनगरान्निर्गतोमुनिसत्तम ॥ ५३ ॥ गतोऽसौदृक्पथात्पापोमायावीक्वापिवेगवान् ॥ पृष्ठतोऽहमपिप्राप्तःसैन्यंक्वापिगतंमम ॥ ५४ ॥ क्षुधितस्तृषितश्चाऽहंसैन्यभ्रष्टस्त्विहाऽऽगतः ॥ नजानेपुरमार्गंचतथासैन्यगतिंमुने ॥ ५५ ॥

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ छ ॥ ॥ त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुकौशिकेनमहात्मना ॥ हृतंराज्यंहरिश्चंद्रनृपतेरिदमुच्यते ॥१॥
राजवाक्यंश्रुत्वाकौशिकोयदकरोत्तदाह । इतितस्येति ॥ प्रहस्येति ॥ धार्मिकस्त्वमस्मिंस्तीर्थेनस्नात्वाकथंगंतुमिच्छसीत्यभिप्रायेणहास्यंचकार ॥ १ ॥ तदेवाह ॥ राजन्निति ॥ २ ॥

पंथानंदर्शयविभोव्रजामिनगरंप्रति ॥ ममाऽत्रभाग्ययोगेनप्राप्तस्त्वंविजनेवने ॥ ५६ ॥ अयोध्याधिपतिश्चाऽहंहरिश्चंद्रोऽतिविश्रुतः ॥ राजसूयस्यकर्ताच वांछितार्थप्रदःसदा ॥ ५७ ॥ धनेच्छायदितेब्रह्मन्यज्ञार्थंद्विजसत्तम ॥ आगंतव्यमयोध्यायांदास्यामिविपुलंधनम् ॥ ५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहा पुराणेसप्तमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाभूपतेःकौशिकोमुनिः ॥ प्रहस्यप्रत्युवाचेदंहरिश्चंद्रंत दानृप ॥ १ ॥ राजंस्तीर्थमिदंपुण्यंपावनंपापनाशनम् ॥ स्नानंकुरुमहाभागपितॄणांतर्पणंतथा ॥ २ ॥ कालःशुभतमोऽस्तीहतीर्थेस्नात्वाविशांपते ॥ दानंददस्वशक्त्याऽत्रपुण्यतीर्थेऽतिपावने ॥ ३ ॥ प्राप्यतीर्थंमहापुण्यमस्नात्वायस्तुगच्छति ॥ सभवेदात्महाभूयइतिस्वायंभुवोऽब्रवीत् ॥ ४ ॥ तस्मात्ती र्थवरेराजन्कुरुपुण्यंस्वशक्तितः ॥ दर्शयिष्यामिमार्गंतेगंतासिनगरंततः ॥ ५ ॥ आगमिष्याम्यहंमार्गदर्शनार्थंतवाऽनघ ॥ त्वयासहाऽद्यकाकुत्स्थतवदा नेनतोषितः ॥ ६ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजामुनेःकपटमंडितम् ॥ वासांस्युत्तार्यविधिवत्स्नातुमभ्याययौनदीम् ॥ ७ ॥ बंधयित्वाहयंवृक्षेमुनिवाक्येनमोहि तः॥अवश्यंभावियोगेनतद्वशस्तुतदाऽभवत् ॥ ८॥ राजास्नानविधिंकृत्वासंतर्प्यपितृदेवताः ॥ विश्वामित्रमुवाचेदंस्वामिन्दानंददामिते ॥ ९ ॥ यदिच्छसिम हाभागतत्तेदास्यामिसांप्रतम् ॥ गावोभूमिंहिरण्यंचगजाश्वरथवाहनम् ॥ १० ॥ नाऽदेयंमेकिमप्यस्तिकृतमेतद्व्रतंपुरा ॥ राजसूयेमखश्रेष्ठेमुनीनांसन्निधा वपि ॥ ११ ॥ तस्मात्त्वमिहसंप्राप्तस्तीर्थेऽस्मिन्प्रवरेमुने ॥ यत्तेऽस्तिवांछितंब्रूहिददामितववांछितम् ॥ १२ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ मयापूर्वंश्रुताराज न्कीर्तिस्तेविपुलाभुवि ॥ वसिष्ठेनचसंप्रोक्तादातानास्तिमहीतले ॥ १३ ॥ हरिश्चंद्रोनृपश्रेष्ठःसूर्यवंशेमहीपतिः ॥ तादृशोनृपतिर्दातानभूतोनभविष्यति ॥ १४ ॥ पृथिव्यांपरमोदारस्त्रिशंकुतनयोयथा ॥ अतस्त्वांप्रार्थयाम्यद्यविवाहोमेऽस्तिपार्थिव ॥ १५ ॥ पुत्रस्यचमहाभागतदर्थंदेहिमेधनम् ॥ राजोवाच॥ विवाहंकुरुविप्रेंद्रददामिप्रार्थितंतव ॥ १६ ॥ यदिच्छसिधनंकामंदातातस्याऽस्मिनिश्चितम् ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तःकौशिकस्तेनवंचनातत्परोमुनिः॥ ॥ १७ ॥ उद्भाव्यमायांगांधर्वींपार्थिवायाऽप्यदर्शयत् ॥ कुमारःसुकुमारश्चकन्याचदशवार्षिकी ॥ १८॥ एतयोःकार्यमप्यद्यकर्तव्यंनृपसत्तम ॥ राजसू याधिकंपुण्यंगृहस्थस्यविवाहतः ॥ १९ ॥ भविष्यतितवाऽद्यैवविप्रपुत्रविवाहतः ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराजामाययातस्यमोहितः ॥ २० ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ मुनीनांसन्निधौराजसूययज्ञेमयैतद्व्रतंकृतामित्यन्वयः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ मेपुत्रस्याविवाहोऽस्तीत्यन्वयः ॥१६॥
॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥२१॥२२॥ वेदीमध्यइति॥अग्निहोत्रशालायांराजातस्मिन्समयेस्थितः॥तथाचतस्मिन्वेदीमध्येअग्निहोत्रवेदीमध्ये दानंदेहीत्यन्वयः ॥ अयंभावः ॥ विवाहकार्यार्थंयद्धनंत्वयाप्रतिश्रुतंतत् अथचवरवध्वोःपोषणार्थंचयद्विपुलंधनंतद्दानंदेहि ॥ अन्यथात्वत्कृतेविवाहेवरवध्वोर्भिक्षाटनप्रसंगेतवाऽपकीर्तिःस्यादिति ॥ राजातुपोषणार्थंधनंब्राह्मणोऽयंयत्किंचित्प्रार्थयिष्यतितदेतस्मै देयमित्यभिप्रायेणाऽऽह । किंतेऽभीष्टमिति ॥ २३ ॥ २४ ॥ ब्राह्मणस्तुसर्वस्वहरणेच्छयावदति । राज्यंदेहीति ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७॥२८॥२९॥ ३० ॥३१॥ हेमभारद्वयंसार्धमिति ॥

तथेतिचप्रतिज्ञायनोवाचाऽल्पंवचस्तथा ॥ तेनदर्शितमार्गोऽसौनगरंप्रतिजग्मिवान् ॥ २१ ॥ विश्वाऽमित्रोऽपिराजानंवंचयित्वाऽऽश्रमंययौ ॥ कृतोद्वाहविधिस्तावद्विश्वामित्रोब्रवीन्नृपम् ॥ २२ ॥ वेदीमध्येनृपाऽद्यत्वंदेहिदानंयथेप्सितम् ॥ राजोवाच ॥ किंतेऽभीष्टंद्विजब्रूहिददामिवांछितंकिल ॥ २३ ॥ अदेयमपिसंसारेयशःकामोऽस्मिसांप्रतम् ॥ व्यर्थंहिजीवितंतस्यविभवंप्राप्ययेनवै ॥ २४ ॥ नोपार्जितंयशःशुद्धंपरलोकसुखप्रदम् ॥ विश्वामित्रउवाच॥ राज्यंदेहिमहाराजवरायसपरिच्छदम् ॥ २५ ॥ गजाश्वरथरत्नाढ्यंवेदीमध्येऽतिपावने ॥ व्यासउवाच ॥ मोहितोमाययातस्यश्रुत्वावाक्यंमुनेर्नृपः ॥ २६ ॥ दत्तमित्युक्तवान्राज्यमविचार्ययदृच्छया ॥ गृहीतमितितंप्राहविश्वामित्रोऽतिनिष्ठुरः ॥ २७ ॥ दक्षिणांदेहिराजेंद्रदानयोग्यांमहामते ॥ दक्षिणारहितंदानं निष्फलंमनुरब्रवीत् ॥ २८ ॥ तस्माद्दानफलायत्वंयथोक्तांदेहिदक्षिणाम् ॥ इत्युक्तस्तुतदाराजातमुवाचाऽतिविस्मितः ॥ २९ ॥ ब्रूहिकिंयद्धनंतुभ्यंदेयं स्वामिन्मयाधुना ॥ दक्षिणानिष्क्रयंसाधोवदयावत्प्रमाणकम् ॥ ३० ॥ दानपूर्त्यैप्रदास्यामिस्वस्थोभवतपोधन ॥ विश्वामित्रस्तुतच्छ्रुत्वातमाहमेदिनीपतिम् ॥ ३१ ॥ हेमभारद्वयंसार्धंदक्षिणांदेहिसांप्रतम् ॥ दास्यामीतिप्रतिश्रुत्यतस्मैराजातिविस्मितः ॥ ३२ ॥ तदैवसैनिकास्तस्यवीक्षमाणाःसमागताः॥ दृष्ट्वामहीपतिंव्यग्रंतुष्टुवुस्तेमुदान्विताः ॥ ३३ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वातेषांवचोराजानोक्त्वाकिंचिच्छुभाशुभम् ॥ चिंतयन्स्वकृतंकर्मययावंतःपुरेततः ॥ ३४ ॥ किंमयास्वीकृतंदानंसर्वस्वंयत्समर्पितम् ॥ वंचितोऽहंद्विजेनाऽत्रवनेपाटच्चरैरिव ॥ ३५ ॥ राज्यंसोपस्करंतस्मैमयासर्वंप्रतिश्रुतम् ॥ भारद्वयं सुवर्णस्यसार्धंचदक्षिणापुनः ॥ ३६ ॥ किंकरोमिमतिर्भ्रष्टानज्ञातंकपटंमुनेः ॥ प्रतारितोऽहंसहसाब्राह्मणेनतपस्विना ॥ ३७ ॥ नजानेदैवकार्यंवैहादैव किंभविष्यति ॥ इतिचिंतापरोराजागृहंप्राप्तोऽतिविह्वलः ॥३८॥ पतिंचिंतापरंदृष्ट्वाराज्ञीपप्रच्छकारणम् ॥ किंप्रभोविमनाभासिकाचिंताब्रूहिसांप्रतम् ॥ ॥ ३९ ॥ वनात्पुत्रःसमायातोराजसूयःकृतःपुरा ॥ कस्माच्छोचसिराजेंद्रशोकस्यकारणंवद ॥ ४० ॥

आचितस्यदशमोभागोभारस्तथाचार्धभारेणसहितभारद्वयपरिमाणांसुवर्णदक्षिणां देहीत्यर्थः ॥ राजादास्यामीत्युक्त्वास्वनिकटेधनाभावात्किमयेदंकृतमित्यतिविस्मितइत्यर्थः ॥ ३२ ॥ तदैवसैनिका इति ॥ येराज्ञासाकंवनेगतास्तेमार्गभ्रंशादितस्ततोगताइत्युक्तंतेसैनिकाराजानंवीक्षमाणाआगताइत्यर्थः ॥ ३३ ॥ अंतःपुरेरुयगारेगतः चिंताग्रस्तःसन् ॥ ३४ ॥ स्वकृत मनयंस्मराति । किंमयेति ॥ पाटच्चरैस्तस्करैः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ गृहंस्त्रीपुरम् ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ शुभाशुभंयथाकथंचिदित्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ विश्वामित्रोब्राह्मणवेषेणसमागतइत्यर्थः ॥ ४५ ॥ सुवर्णस्पृश दक्षिणात्वेनप्रतिज्ञातंदेहीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ दानंददामिराज्यदानमधुनाददामिदक्षिणांतुधनमाप्त्युत्तरंकालांतरेदास्यामीत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

नाऽरातिर्विद्यतेक्वाऽपिबलवान्दुर्बलोऽपिवा ॥ वरुणोऽपिसुसंतुष्टःकृतकृत्योऽसिभूतले ॥ ४१ ॥ चिंतयाक्षीयतेदेहोनास्तिचिंतासमामृतिः ॥ त्यज्यतांनृपशार्दूलस्वस्थोभवविचक्षण ॥ ४२ ॥ तन्निशम्यप्रियावाक्यंप्रीतिपूर्वंनराधिपः ॥ प्रोवाचकिंचिच्चिंतायाःकारणंचशुभाशुभम् ॥ ४३ ॥ भोजनंनचकाराऽसौचिंताविष्टस्तथानृपः ॥ सुस्वापिशयनेशुभ्रेलेभेनिद्रांनभूमिपः ॥ ४४ ॥ प्रातरुत्थायचिंतार्तोयावत्संध्यादिकाःक्रियाः ॥ करोतिनृपतिस्तावद्विश्वामित्रःसमागतः ॥ ४५ ॥ क्षत्रानिवेदितोराज्ञेमुनिःसर्वस्वहारकः ॥ आगत्योवाचराजानंप्रणमंतंपुनःपुनः ॥ ४६ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ राजंस्त्यजस्वराज्यंमेदेहिवाचाप्रतिश्रुतम् ॥ सुवर्णस्पृशराजेंद्रसत्यवाग्भवसांप्रतम् ॥ ४७ ॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥ स्वामिन्राज्यंतवेदंमेमयादत्तंकिलाधुना ॥ त्यक्त्वान्यत्रगमिष्यामिमाचिंतांकुरुकौशिक ॥ ४८ ॥ सर्वस्वंममतेब्रह्मन्गृहीतंविधिवद्विभो ॥ सुवर्णदक्षिणांदातुमशक्तोह्यधुनाद्विज ॥ ४९ ॥ दानंददामितेतावद्यावन्मेस्याद्धनागमः ॥ पुनश्चेत्कालयोगेनतदादास्यामिदक्षिणाम् ॥ ५० ॥ इत्युक्त्वानृपतिःप्राहपुत्रंभार्यांचमाधवीम् ॥ राज्यमस्मैप्रदत्तंवैमयावेद्यांसुविस्तरम् ॥५१॥ हस्त्यश्वरथसंयुक्तंरत्नहेमसमन्वितम् ॥ त्यक्त्वात्रीणिशरीराणिसर्वंचाऽस्मैसमर्पितम् ॥५२॥ त्यक्त्वाऽयोध्यांगमिष्यामिकुत्रचिद्वनगह्वरे ॥ गृह्णात्विदंमुनिःसम्यग्राज्यंसर्वसमृद्धिमत् ॥ ५३ ॥ इत्याभाष्यसुतंभार्यांहरिश्चंद्रःस्वमंदिरात् ॥ विनिर्गतःसुधर्मात्मामानयंस्तंद्विजोत्तमम् ॥५४॥ व्रजंतंभूपतिंवीक्ष्यभार्यापुत्रावुभावपि ॥ चिंतातुरौसुदीनास्यौजग्मतुःपृष्ठतस्तदा ॥ ५५ ॥ हाहाकारोमहानासीन्नगरेवीक्ष्यतांस्तथा ॥ चुक्रुशुःप्राणिनःसर्वेसाकेतपुरवासिनः ॥ ५६ ॥ हाराजन्किंकृतंकर्मकुतःक्लेशःसमागतः ॥ वंचितोऽसिमहाराजविधिनाऽपंडितेनह ॥ ५७ ॥ सर्वेवर्णास्तदादुःखमाप्नुयुस्तंमहीपतिम् ॥ विलोक्यभार्ययासार्धंपुत्रेणचमहात्मना ॥ ५८ ॥ निर्निंदुर्ब्राह्मणंतंतुदुराचारंपुरौकसः ॥ धूर्तोऽयमितिभाषंतोदुःखार्ताब्राह्मणादयः ॥ ५९ ॥ निर्गत्यनगरात्तस्माद्विश्वामित्रःक्षितीश्वरम् ॥ गच्छंतंतमुवाचेदंसमेत्यनिष्ठुरंवचः ॥ ६० ॥ दक्षिणायाःसुवर्णंमेदत्त्वागच्छनराधिप ॥ नाऽहंदास्यामिवाब्रूहिमयात्यक्तंसुवर्णकम् ॥ ६१ ॥ राज्यंगृहाणवासर्वंलोभश्चेद्धृदिवर्तते ॥ दत्तंचेन्मन्यसेराजन्देहियत्तत्प्रतिश्रुतम् ॥ ६२ ॥ एवंब्रुवंतंगाधेयंहरिश्चंद्रोमहीपतिः ॥ प्रणिपत्यसुदीनात्माकृतांजलिपुटोऽब्रवीत् ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अर्धाधिकैःपंचचत्वारिंशच्छ्लोकैरितःपरम् ॥ दक्षिणादानयत्नश्चराज्ञाकृतइतीर्यते ॥१॥ राजाविश्वामित्रब्राह्मणंप्रतिकिमुक्तवान्तदाह । अदत्त्वेति ॥ नकरिष्यामिभोजनमिति अन्नंत्यक्त्वा फलाहारादिनाकालंनेष्यामीत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ कंचित्कालमिति ॥ मासपरिमितंकालमित्यर्थः ॥ अग्रेमाससमाप्तावेवब्राह्मणस्याऽऽगमनात् ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ वदाऽधुनेति ॥ एवंराज्ञोक्तेमिथ्यावादीराजाजातइतिवसिष्ठंजेष्यामीतिब्राह्मणाभिप्रायः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ग्राहकमिति ॥ अस्यामयोध्यायांयदिकश्चिद्ग्राहकःस्यात्तर्हितंपश्य नोचेदहंवाराणस्यांगत्वासर्वान्मौल्येनदत्त्वादासभावंगमिष्यामितदात्वंकांचनंगृहाणाऽथचसंतुष्टोभवेतिपिंडितोर्थः ॥११॥ भूधरेतिब्राह्मणसंबोधनम् ॥१२॥ उमयापराशक्त्यासहितोयत्रकाश्यांशंकरस्तिष्ठ

हरिश्चंद्रउवाच ॥ अदत्त्वातेहिरण्यंवैनकरिष्यामिभोजनम् ॥ प्रतिज्ञामेमुनिश्रेष्ठविषादंत्यजसुव्रत ॥ १ ॥ सूर्यवंशसमुद्भूतःक्षत्रियोऽहंमहीपतिः॥राजसूयस्ययज्ञस्यकर्तावांछितदोनृषु ॥ २ ॥ कथंकरोमिनाकारंस्वामिन्दत्त्वायदृच्छया ॥ अवश्यमेवदातव्यमृणंमेद्विजसत्तम ॥ ३ ॥ स्वस्थोभवप्रदास्यामिसुवर्णमनसेप्सितम् ॥ कंचित्कालंप्रतीक्षस्वयावत्प्राप्स्याम्यहंधनम् ॥ ४ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ कुतस्तेभविताराजन्धनप्राप्तिरतःपरम् ॥ गतंराज्यंतथाकोशोबलंचैवाऽर्थसाधनम् ॥ ५ ॥ वृथाऽऽज्ञातेमहीपालधनार्थेकिंकरोम्यहम् ॥ निर्धनंत्वांचलोभेनपीडयामिकथंनृप ॥ ६ ॥ तस्मात्कथयभूपालनदास्यामीतिसांप्रतम् ॥ त्यक्त्वाऽऽशांमहतींकामंगच्छाम्यहमतःपरम् ॥ ७ ॥ यथेष्टंव्रजराजेन्द्रभार्यापुत्रसमन्वितः ॥ सुवर्णनास्तिकिंतुभ्यंददामीतिवदाधुना ॥ ८ ॥ व्यासउवाच ॥ गच्छन्वाक्यमिदंश्रुत्वाब्राह्मणस्यचभूपतिः ॥ प्रत्युवाचमुनिंब्रह्मन्धैर्यंकुरुददाम्यहम् ॥९॥ ममदेहोऽऽस्तिभार्यायाःपुत्रस्यचह्यनामयः ॥ क्रीत्वादेहंतुतंनूनमृणंदास्यामितेद्विज ॥ १० ॥ ग्राहकंपश्यविप्रेंद्रवाराणस्यांपुरिप्रभो ॥ दासभावंगमिष्यामिसदारोऽहंसपुत्रकः ॥ ॥ ११ ॥ गृहाणकांचनंपूर्णंसार्धभारद्वयंमुने ॥ मौल्येनदत्त्वासर्वान्नःसंतुष्टोभवभूधर ॥ १२ ॥ इतिब्रुवञ्जगामाऽथसहपत्न्यासुतान्वितः ॥ उमयाकांतयासार्धंयत्राऽस्तेशंकरःस्वयम् ॥ १३ ॥ तांदृष्ट्वाचपुरींरम्यांमनसोल्हादकारिणीम् ॥ उवाचसकृतार्थोऽस्मिपुरींपश्यन्सुवर्चसम् ॥ १४ ॥ ततोभागीरथींप्राप्यस्नात्वादेवादितर्पणम् ॥ देवार्चनंचनिर्वर्त्यकृतवान्दिग्विलोकनम् ॥ १५ ॥ प्रविश्यवसुधापालोदिव्यांवाराणसींपुरीम् ॥ नैषामनुष्यभुक्तेतिशूलपाणेःपरिग्रहः ॥ १६ ॥ जगामपद्भ्यांदुःखार्तःसहपत्न्यासमाकुलः ॥ पुरींप्रविश्यसनृपोविश्वासमकरोत्तदा ॥ १७ ॥ ददृशेऽथमुनिश्रेष्ठंब्राह्मणंदक्षिणार्थिनम् ॥ तंदृष्ट्वासमनुप्राप्तंविनयावनतोऽभवत् ॥ १८ ॥ प्राहचैवांजलिंकृत्वाहरिश्चंद्रोमहामुनिम् ॥ इमेप्राणाःसुतश्चाऽयंप्रियापत्नीमुनेमम ॥ १९ ॥ येनतेकृत्यमस्त्याशुगृहाणाऽद्यद्विजोत्तम ॥ यच्चान्यत्कार्यमस्माभिस्तन्ममाऽऽख्यातुमर्हसि ॥ २० ॥

तितस्यांकाश्यांजगामेत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ दिग्विलोकनंकेनमार्गेणगंतव्यमितिसमंतादवलोकितवानित्यर्थः ॥ १५ ॥ नैषामनुष्यभुक्तेति॥यदीयंपुरीमनुष्येणभुक्तापालितास्यात्तदामामकिंचित्करंमौल्यंदत्त्वाकोऽपिनग्रहीष्यतिपरंतुतथान किंतुशूलपाणेःसर्वेश्वरस्यशिवस्यपरिग्रहोऽस्तितेनपालिताऽस्तिततःसर्वेश्वरःशिवोमामकिंचित्करमपिमौल्यंदत्त्वाग्रहीष्यतीत्यभिप्रायेणकाश्यांजगामेतिभावः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पूर्णःसमासइति ॥ यस्त्वयादक्षिणादानेप्रतिज्ञातोमासोमासांतेदक्षिणांदास्यामीतिसमासःपूर्णइत्यर्थः ॥ तस्यनिमित्तंमासांतेदक्षिणांदास्यामीतिप्रतिज्ञारूपम् ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ कुतःपुष्टानिमित्राणीति ॥ येभ्योधनंगृहीत्वाऽस्मैब्राह्मणायदक्षिणांदास्यामितादृशानिपुष्टानिसंपन्नानिममामित्राणिअत्रकाश्यांकुतःसंतिनैवसंतीत्यर्थः ॥ २५ ॥ प्रतिग्रहःकुतोदुष्टस्तदाह । राज्ञांवृत्तित्रयमिति ॥ दानाध्ययनयजनरूपं नतुतत्रप्रतिग्रहोऽस्तिततस्मादित्यर्थः ॥ ननुद्रव्याभावेतथैवस्थीयतांयन्मुनिःकरिष्यतितत्करोत्वितिचेत्तथैवाऽवस्थानेयदिप्राणान्विमुंचामिममरणंस्यात्तदाब्रह्मस्वहरणात्पापात्कृमिर्भविष्याम्यथवाप्रेततांपिशाचत्वंयास्यामितदपेक्षयाऽऽत्मविक्रयःकर्तव्यःइदमेववरमित्याह यदिप्राणानिति ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ नातःपरतरमिति ॥ अश्वमेधसहस्राच्चसत्यमेकंविशिष्यतइतिस्मृतेः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ सत्यंपालनायाऽनृतंपातनायनरकपातनायेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ शताश्वमेधानिति ॥ पार्थिवो

विश्वामित्रउवाच ॥ पूर्णःसमासोभद्रंतेदीयतांममदक्षिणा ॥ पूर्वंतस्यनिमित्तंहिस्मर्यतेस्ववचोयदि ॥ २१ ॥ राजोवाच ॥ ब्रह्मन्नाऽद्याऽपिसंपूर्णोमासोज्ञानतपोबल ॥ तिष्ठत्येकदिनार्धंयत्तत्प्रतीक्षस्वनाऽपरम् ॥ २२ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ एवमस्तुमहाराजआगमिष्याम्यहंपुनः ॥ शापंतवप्रदास्यामिनचेदद्यप्रयच्छसि ॥ २३ ॥ इत्युक्त्वाऽथययौविप्रोराजाचाऽचिंतयत्तदा ॥ कथमस्मैप्रयच्छामिदक्षिणायाप्रतिश्रुता ॥ २४ ॥ कुतःपुष्टानिमित्राणिकुत्राऽर्थःसांप्रतंमम ॥ प्रतिग्रहःप्रदुष्टोमेतत्रयाञ्चाकथंभवेत् ॥ २५ ॥ राज्ञांवृत्तित्रयंप्रोक्तंधर्मशास्त्रेषुनिश्चितम् ॥ यदिप्राणान्विमुंचामिह्यप्रदायचदक्षिणाम् ॥ ॥ २६ ॥ ब्रह्मस्वहाकृमिःपापोभविष्याम्यधमाधमः ॥ अथवाप्रेततांयास्येवरएवाऽऽत्मविक्रयः ॥ २७ ॥ सूतउवाच ॥ राजानंव्याकुलंदीनंचिंतयानमधोमुखम् ॥ प्रत्युवाचतदापत्नीबाष्पगद्गदयागिरा ॥ २८ ॥ त्यजचिंतांमहाराजस्वधर्ममनुपालय ॥ प्रेतवद्वर्जनीयोहिनरःसत्यबहिष्कृतः ॥ २९ ॥ नातःपरतरंधर्मंवदंतिपुरुषस्यच ॥ यादृशंपुरुषव्याघ्रस्वसत्यस्याऽनुपालनम् ॥ ३० ॥ अग्निहोत्रमधीतंचदानाद्याःसकलाःक्रियाः ॥ भवंतितस्यवैफल्यंवाक्यंयस्याऽनृतंभवेत् ॥ ३१ ॥ सत्यमत्यंतमुदितंधर्मशास्त्रेषुधीमताम् ॥ तारणायाऽनृतंतद्वत्पतनायाऽकृतात्मनाम् ॥ ३२ ॥ शताश्वमेधानाहृत्यराजसूयंचपार्थिवः ॥ कृत्वाराजासकृत्स्वर्गादसत्यवचनाच्च्युतः ॥ ३३ ॥ राजोवाच ॥ वंशवृद्धिकरश्चाऽयंपुत्रस्तिष्ठतिबालकः ॥ उच्यतांवक्तुकामासियद्वाक्यंगजगामिनि ॥ ३४ ॥ पत्न्युवाच ॥ राजन्माभूदसत्यंतेपुंसांपुत्रफलाःस्त्रियः ॥ तन्मांप्रदायवित्तेनदेहिविप्रायदक्षिणाम् ॥ ३५ ॥ व्यासउवाच ॥ एतद्वाक्यमुपश्रुत्यययौमोहंमहीपतिः ॥ प्रतिलभ्यचसंज्ञांवैविललापातिदुःखितः ॥ ३६ ॥ महद्दुःखमिदंभद्रेयत्त्वमेवंब्रवीषिमे ॥ किंतवस्मितसंलापाममपापस्यविस्मृताः ॥ ३७ ॥

ययातिर्नृपःसकृदसत्यवचनादसत्यभाषणात्स्वर्गाच्च्युतःपतितइत्यन्वयः ॥ इयंकथापुराणेषुप्रसिद्धा ॥ ३३ ॥ वंशवृद्धिकरश्चाऽयमिति ॥ यत्त्वंमांबोधयसिदक्षिणादेयेति तत्रमदीयत्वेनप्राणिद्वयमेवाऽवशिष्टंपुत्रोभार्याचेति ॥ तत्रपुत्रोवंशवृद्धिकरत्वान्नदेयइतिशास्त्राज्ञाऽस्तितथैवभार्यापिनाविक्रेतव्येति ॥ ततश्चकिंकर्तव्यंमयाकथंवादक्षिणादेयेत्युच्यतांत्वयातद्वाक्यम् ॥ यतस्त्वंवक्तुकामासिबोधकवाक्यंवक्तुकामासिततइत्यर्थः ॥ इत्थंसंकटेकिंकर्तव्यंमयेतित्वमेववदेत्यभिप्रायः ॥ ३४ ॥ पुत्रफलाइति ॥ पुत्रेजातेस्त्रीणांफलंनास्तीत्यर्थः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ तवस्मितसंलापाःप्रेम्णाहास्यभाषणानिकिंममविस्मृतानिभवंति यत्त्वदुक्तमेतदहंकरिष्यामीतिमन्यसेइत्यर्थः ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ शरणोचितोमहास्तरणयुक्तगृहोचितः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हेदैवेतिविधेःसंबोधनम् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ अग्रेप्रांतभागेमेजिह्वाशुष्यतीत्यन्वयः ॥ इतिश्रीदे

हाहात्वयाकथंयोग्यंवक्तुमेतच्छुचिस्मिते ॥ दुर्वाच्यमेतद्वचनंकथंवदसिभामिनि ॥ ३८ ॥ इत्युक्त्वानृपतिःश्रेष्ठोनधीरोदारविक्रये ॥ निपपातमहीपृष्ठे मूर्च्छयाऽतिपरिप्लुतः ॥ ३९ ॥ शयानंभुवितंदृष्ट्वामूर्च्छयाऽपिमहीपतिम् ॥ उवाचेदंसुकरुणंराजपुत्रीसुदुःखिता ॥ ४० ॥ हामहाराजकस्येदमपथ्या नादुपागतम् ॥ यस्त्वंनिपतितोभूमौरंकवच्छरणोचितः ॥ ४१ ॥ येनैवकोटिशोवित्तंविप्राणामपवर्जितम् ॥ सएवपृथिवीनाथोभुविस्वपितिमेपतिः ॥ ॥ ४२ ॥ हाकष्टंकिंतवानेनकृतंदैवमहीक्षिता ॥ यदिंद्रोपेंद्रतुल्योऽयंनीतःपापामिमांदशाम् ॥ ४३ ॥ इत्युक्त्वासाऽपिसुश्रोणीमूर्च्छितानिपपातह ॥ भर्तुर्दुःखमहाभारेणाऽसह्येनाऽतिपीडिता ॥ ४४ ॥ शिशुर्दृष्ट्वाक्षुधाविष्टःप्राहवाक्यंसुदुःखितः ॥ तातताप्रदेह्यन्नंमातर्मेदेहिभोजनम् ॥ ४५ ॥ क्षुन्मेवलव तीजाताजिह्वाग्रेमेतिशुष्यति ॥ इतिश्रीदे०म०स०हरिश्चंद्रोपाख्यानेविंशोध्यायः ॥ २० ॥ ॥ एतस्मिन्नंतरेप्राप्तोविश्वामित्रोमहातपाः ॥ अंतकेनस मःक्रुद्धोधनंस्वंयाचितुंहृदा ॥ १ ॥ तमालोक्यहरिश्चंद्रःपपातभुविमूर्च्छितः ॥ सवारिणातमभ्युक्ष्यराजानमिदमब्रवीत् ॥ २ ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठराजेंद्रस्वांद दस्वेष्टदक्षिणाम् ॥ ऋणंधारयतांदुःखमहन्यहनिवर्धते ॥ ३ ॥ आप्यायमानःसतदाहिमशीतेनवारिणा ॥ अवाप्यचेतनांराजाविश्वामित्रमवेक्ष्यच ॥ ४ ॥ पुनर्मोहंसमापेदेह्यथक्रोधंययौमुनिः ॥ समाश्वास्यचराजानंवाक्यमाहद्विजोत्तमः ॥ ५ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ दीयतांदक्षिणासामेयदिधैर्यमवेक्षसे ॥ स त्येनार्कःप्रतपतिसत्येतिष्ठतिमेदिनी ॥ ६ ॥ सत्येचोक्तःपरोधर्मःस्वर्गःसत्येप्रतिष्ठितः ॥ अश्वमेधसहस्रंतुसत्यंचतुलयाधृतम् ॥ ७ ॥ अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेकंविशिष्यते ॥ अथवाकिंममैतेनप्रोक्तेनाऽस्तिप्रयोजनम् ॥ ८ ॥ मदीयांदक्षिणांराजन्नदास्यतिभवान्यदि ॥ अस्ताचलगतेह्यर्केशप्स्यामित्वामतो ध्रुवम् ॥ ९ ॥ इत्युक्त्वासययौविप्रोराजाचासीद्भयातुरः ॥ दुःखीभूतोऽवनेनिःस्वोनृशंसमुनिनार्दितः ॥ १० ॥ सूतउवाच ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रब्राह्मणोवेदपा रगः ॥ ब्राह्मणैर्बहुभिःसार्धंनिर्ययौस्वगृहाद्बहिः ॥ ११ ॥ ततोराज्ञीतुतंदृष्ट्वाआयांतंतापसंस्थितम् ॥ उवाचवाक्यंराजानंधर्मार्थसहितंतदा ॥ १२ ॥ त्रयाणामपिवर्णानांपिताब्राह्मणउच्यते ॥ पितृद्रव्यंहिपुत्रेणग्रहीतव्यंनसंशयः ॥ १३ ॥ तस्मादयंप्रार्थनीयोधनार्थमितिमेमतिः ॥ राजोवाच ॥ नाऽहंप्रतिग्रहंकांक्षेक्षत्रियोऽहंसुमध्यमे ॥ १४ ॥ याचनंखलुविप्राणांक्षत्रियाणांनविद्यते ॥ गुरुर्हिविप्रोवर्णानांपूजनीयोऽस्तिसर्वदा ॥ १५ ॥

वीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ सप्तविंशतिपद्यैस्तुहरिश्चंद्रेणभूभृता ॥ महाञ्छोकःकृतइतिकथानकमिहोच्यते ॥ १ ॥ इत्थंशिशुभार्याभाषणानंतरंजातंवृत्तमाह। एतस्मिन्नंतरेइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ अवनेदक्षिणादानेनसत्यरक्षणेदुःखीभूतइत्यन्वयः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥अ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ यदित्वयाराज्ञामित्थंधर्मइत्युच्यतेतर्हिब्राह्मणानामपिपरपीडाकरणाभावएवधर्मइत्यर्थादुक्तमेवभवति तथाचकालवशाद्ब्राह्मणैस्त्वदुपद्रवकर्तृभिर्यथास्वधर्मस्त्यक्तस्तथात्वयाकिमितिनत्यज्यतइत्याभिप्रायेणाह । कालःसमविषमकरइति ॥ न्यूनाधिककरइत्यर्थः ॥१९॥ तदेवोपपादयति । विप्रेणेति॥२०॥ नतुमानमिति॥मानंक्षत्रियोऽस्मीत्यभिमानम् ॥ यद्वा मानंशास्त्ररूपंप्रमाणम् ॥ भाषितंकरिष्यामीतिशेषः ॥ २१ ॥ ददामिवाऽहंददाम्येवाऽहंनतुगृह्णामीत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ नीचत्वमुपयास्यसीत्यतःपूर्वंनो

तस्माद्गुरुर्नयाच्यःस्यात्क्षत्रियाणांविशेषतः ॥ यजनाध्ययनंदानंक्षत्रियस्यविधीयते ॥ १६ ॥ शरणागतानामभयंप्रजानांप्रतिपालनम् ॥ नचाऽप्येवंतुवक्तव्यंदेहीतिकृपणंवचः ॥ १७ ॥ ददामीत्येवमेदेविहृदयेनिहितंवचः ॥ अर्जितंकुत्रचिद्द्रव्यंब्राह्मणायददाम्यहम् ॥ १८ ॥ पत्न्युवाच ॥ कालःसमविषमकरःपरिभवसन्मानमानदःकालः ॥ कालःकरोतिपुरुषंदातारंयाचितारंच ॥ १९ ॥ विप्रेणविदुषाराजाक्रुद्धेनाऽतिबलीयसा ॥ राज्यान्निरस्तःसौख्याच्चपश्यकालस्यचेष्टितम् ॥ २० ॥ राजोवाच ॥ असिनातीक्ष्णधारेणवरंजिह्वाद्विधाकृता ॥ नतुमानंपरित्यज्यदेहिदेहीतिभाषितम् ॥ २१ ॥ क्षत्रियोऽहंमहाभागेनयाचेकिंचिदप्यहम् ॥ ददामिवाऽहंनित्यंहिभुजवीर्यार्जितंधनम् ॥ २२ ॥ पत्न्युवाच ॥ यदितेहिमहाराजयाचितुंनक्षमंमनः ॥ अहंतुन्यायतोदत्तादेवैरपिसवासवैः ॥ २३ ॥ अहंशास्याचपत्याचरक्ष्याचैवमहाद्युते ॥ मन्मौल्यंसंगृहीत्वाथगुर्वर्थःसंप्रदीयताम् ॥ २४ ॥ एतद्वाक्यमुपश्रुत्यहरिश्चंद्रोमहीपतिः ॥ कष्टंकष्टमितिप्रोच्यविललापाऽतिदुःखितः ॥ २५ ॥ भार्याचभूयःप्राहेदंक्रियतांवचनंमम ॥ विप्रशापाग्निदग्धत्वान्नीचत्वमुपयास्यसि ॥ २६ ॥ नद्यूतहेतोर्नचमद्यहेतोर्नराज्यहेतोर्नचभोगहेतोः ॥ ददस्वगुर्वर्थमतोमयात्वंसत्यव्रतत्वंसफलंकुरुष्व ॥ २७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेहरिश्चंद्रोपाख्यानेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ छ ॥ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ सतयानोद्यमानस्तुराजापत्न्यापुनःपुनः ॥ प्राहभद्रेकरोम्येषविक्रयंतेसुनिर्घृणः ॥ १ ॥ नृशंसैरपियत्कर्तुंनशक्यंतत्करोम्यहम् ॥ यदितेभ्राजतेवाणीवक्तुमीदृक्सुनिष्ठुरम् ॥ २ ॥ एवमुक्त्वाततोराजागत्वानगरमातुरः ॥ अवतार्यतदारंगेतांभार्यांनृपसत्तमः ॥ ३ ॥ बाष्पगद्गदकंठस्तुततोवचनमब्रवीत् ॥ भोभोनागरिकाःसर्वेशृणुध्वंवचनंमम ॥ ४ ॥ कस्यचिद्यदिकार्यंस्याद्दास्याप्राणेष्टयामम ॥ सब्रवीतुत्वरायुक्तोयावत्स्वंधारयाम्यहम् ॥५॥ तेब्रुवन्पंडिताःकस्त्वंपत्नींविक्रेतुमागतः ॥ राजोवाच ॥ किंमांपृच्छथकस्त्वंभोनृशंसोऽहममानुषः ॥ ६ ॥ राक्षसोवाऽस्मिकठिनस्ततःपापंकरोम्यहम् ॥ व्यासउवाच ॥ तंशब्दंसहसाश्रुत्वाकौशिकोविप्ररूपधृक् ॥ ७ ॥

चेदितिशेषः ॥ २६ ॥ ब्राह्मणार्थमेतादृशायोग्यकरणेनिंदापिनभविष्यतीत्याह । नद्यूतहेतोरिति ॥ २७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेएकविंशोध्यायः ॥ २१॥ चतुर्भिरधिकैः पंचाशद्भिःपद्यैस्तुभूभृता ॥ विक्रीतानिजपत्नीतिकथानक्रमिहोच्यते ॥ १ ॥ इत्थंस्वविक्रयेभार्ययाप्रेर्यमाणोनृपःकिमकरोत्तदाह । सतयेति ॥ १ ॥ २ ॥ रंगेराजमार्गे ॥ ३ ॥ ४ ॥ यावदहंस्वंधनंधारयामिवदामितद्दातुंयस्यशक्तिःसब्रवीत्वित्यर्थः ॥ ५ ॥ भोःकस्त्वमितिकिंमांपृच्छथअहंनृशंसःक्रूरोस्मीत्यन्वयः ॥ ६ ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ८ ॥ अस्मात्कारणादित्यर्थः ॥ राजादुःखातुरोनवदतीत्यालोच्यस्वयमेवब्राह्मणआह । कर्मणश्चेति ॥ तवयोषितःकर्मणोवयोरूपशीलानांचाऽनुरूपमित्यन्वयः॥९॥१०॥११॥१२॥स्त्रियोमौल्यंसुवर्णस्यकोटिःपुंसस्तुसुवर्णस्याऽर्बुदंदशकोट्योमौल्यमित्यर्थः ॥ स्त्रियोद्वात्रिंशल्लक्षणानितुविराटपर्वणिद्रौपदीवर्णनेस्पष्टानि ॥ पुरुषस्यद्वात्रिंशल्लक्षणानितुकाशीखंडेएकादशाध्यायेस्पष्टानि ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ राज्ञीपुत्रंवदति।पश्येहोति ॥ मांमास्प्राक्षीःस्पर्शंमाकर्षीरित्यर्थः ॥ अहमधुनादास्यतांगतात्वयाराजपुत्रेणनस्पृश्याभवामीत्यर्थः ॥१७॥१८॥

वृद्धरूपंसमास्थायहरिश्चंद्रमभाषत ॥ समर्पयस्वमेदासीमहंक्रेताधनप्रदः ॥ ८ ॥ अस्तिमेवित्तमतुलंसुकुमारीचमेप्रिया ॥ गृहकर्मनशक्नोतिकर्तुमस्मात्प्रयच्छमे ॥ ९ ॥ अहंगृह्णामिदासींतुकतिदास्यामितेधनम् ॥ एवमुक्तेतुविप्रेणहरिश्चंद्रस्यभूपतेः ॥ १० ॥ विदीर्णेतुमनोदुःखान्नचैनांकिंचिदब्रवीत् ॥ विप्रउवाच ॥ कर्मणश्चवयोरूपशीलानांतवयोषितः ॥ ११ ॥ अनुरूपमिदंवित्तंगृहाणाऽर्पयमेऽबलाम् ॥ धर्मशास्त्रेषुयद्दृष्टंस्त्रियोमौल्यंनरस्यच ॥१२॥ द्वात्रिंशल्लक्षणोपेतादक्षाशीलगुणान्विता ॥ कोटिमौल्यंसुवर्णस्यास्त्रियःपुंसस्तथार्बुदम् ॥१३॥ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यहरिश्चंद्रोमहीपतिः ॥दुःखेनमहताविष्टोनचैनंकिंचिदब्रवीत् ॥ १४ ॥ ततःसविप्रोनृपतेःपुरतोवल्कलोपरि ॥ धनंनिधायकेशेषुधृत्वाराज्ञीमकर्षयत् ॥ १५ ॥ राज्ञ्युवाच ॥ मुंचमुंचाऽऽर्यमांसद्योयावत्पश्याम्यहंसुतम् ॥ दुर्लभंदर्शनंविप्रपुनरस्यभविष्यति ॥ १६ ॥ पश्येहपुत्रमामेवंमातरंदास्यतांगताम् ॥ मांमास्प्राक्षीराजपुत्रनस्पृश्याऽहंत्वयाऽधुना ॥ १७ ॥ ततःसबालःसहसादृष्ट्वाकष्टांतुमातरम् ॥ समभ्यधावदंबेतिवदन्साश्रुविलोचनः ॥ १८ ॥ हस्तेवस्त्रंसमाकर्षन्काकपक्षधरःस्खलन् ॥ तमागतंद्विजःक्रोधाद्बालमभ्याहनत्तदा॥१९॥वदंस्तथापिसोंबेतिनैवमुंचतिमातरम् ॥ राज्ञ्युवाच ॥ प्रसादंकुरुमेनाथक्रीणीष्वेमंहिबालकम् ॥२०॥ क्रीताऽपिनाऽहंभवितादिनैनंकार्यसाधिका ॥ इत्थंममाऽल्पभाग्यायाःप्रसादंकुरुमेप्रभो ॥ २१ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ गृह्यतांवित्तमेतत्तेदीयतांममबालकः ॥ स्त्रीपुंसोर्धर्मशास्त्रज्ञैःकृतमेवहिवेतनम् ॥ २२ ॥ शतंसहस्रंलक्षंचकोटिमौल्यंतथापरैः ॥ द्वात्रिंशल्लक्षणोपेतादक्षाशीलगुणान्विता ॥ २३ ॥ कोटिमौल्यंस्त्रियःप्रोक्तंपुरुषस्यतथाऽर्बुदम् ॥ सूतउवाच ॥ तथैवतस्यतद्वित्तंपुरःक्षिप्तंपटेपुनः ॥ २४ ॥ प्रगृह्यबालकंमात्रासहैकस्थमबंधयत् ॥ प्रतस्थेसगृहंक्षिप्रंतयासहमुदान्वितः ॥ २५ ॥ प्रदक्षिणांतुसाकृत्वाजानुभ्यांप्रणतास्थिता ॥ बाष्पपर्याकुलादीनात्विदंवचनमब्रवीत् ॥ २६ ॥ यदिदत्तंयदिहुतंब्राह्मणास्तर्पितायदि ॥ तेनपुण्येनमेभर्ताहरिश्चंद्रोऽस्तुवैपुनः ॥ २७ ॥ पादयोःपतितांदृष्ट्वाप्राणेभ्योऽपिगरीयसीम् ॥ हाहेतिचवदन्राजाविललापाऽऽकुलेंद्रियः ॥ २८ ॥ वियुक्तेयंकथंजातासत्यशीलगुणान्विता ॥ वृक्षच्छायाऽपिवृक्षंतंनजहातिकदाचन ॥ २९ ॥

काकपक्षधरःकर्णद्वयोपरिचूडाकाकपक्षः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ शतंसहस्रमितिगुणतारतम्येनमौल्यतारतम्यम् ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ वियुक्तेति॥ वृक्षस्यच्छायाजडाऽपितंवृक्षंनजहाति तथासति तद्वदियंनित्यसंयुक्ताममकथमद्यमयावियुक्ताजातेत्यर्थः ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





परस्परंमात्रासंवद्धंपुत्रमप्याह। एवंभार्यांवदित्वेति ॥ ३० ॥ पुत्रमुक्त्वाब्राह्मणंवदति । कांदिशमिति ॥ ३१ ॥ पुनर्भार्यांवदति ॥ सद्भर्तृभोग्याइति॥३२॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥३६॥ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४०॥४१॥ अत्रांतरेविश्वामित्रेणाऽऽगत्यदृष्टंपुत्रभार्याविक्रयेणराज्यदानदक्षिणात्वनेनराज्ञासंपादिता ततःपरंकेनोपायेनेमंराजानंधर्मात्प्रच्युतंकरिष्यामीति विमृश्ययदष्टमाध्यायांतेप्रथमंराज्ञोक्तं धनेच्छायदितेब्रह्मन्यज्ञार्थंद्विजसत्तम ॥ आगंतव्यमयोध्यायांदास्यामिविपुलंधनमितितद्वाक्यंस्मृत्वातांयज्ञस्यदक्षिणांराज्ञाप्रतिज्ञातांविश्वामित्रोयाचते या

एवंभार्यांवदित्वाऽथसुसंवद्धंपरस्परम् ॥ पुत्रंचतमुवाचेदंमांत्वंहित्वाक्वयास्यसि ॥३०॥ कांदिशंप्रतियास्यामिकोमेदुःखंनिवारयेत् ॥ राज्यत्यागेनमेदुःखंवनवासेनमेद्विज ॥ ३१ ॥ यत्पुत्रेणवियोगोमेएवमाहसभूपतिः ॥ सद्भर्तृभोग्याहिसदालोकेभार्याभवंतिहि ॥ ३२ ॥ मयात्यक्ताऽसिकल्याणिदुःखेनविनियोजिता ॥ इक्ष्वाकुवंशसंभूतंसर्वराज्यसुखोचितम् ॥ ३३ ॥ मामीदृशंपतिंप्राप्यदासीभावंगताह्यसि ॥ ईदृशेमज्जमानंमांसुमहच्छोकसागरे ॥ ३४ ॥ कोमामुद्धरतेदेविपौराणाख्यानविस्तरैः ॥ सूतउवाच ॥ पश्यतस्तस्यराजर्षेःकशाघातैःसुदारुणैः ॥ ३५ ॥ घातयित्वातुविप्रेशोनेतुंसमुपचक्रमे ॥ नीयमानौतुतौदृष्ट्वाभार्यापुत्रौसपार्थिवः ॥ ३६ ॥ विललापाऽतिदुःखार्तोनिश्वस्योष्णंपुनःपुनः ॥ यांनवायुर्नवाऽऽदित्योनचंद्रोनपृथग्जनाः ॥ ३७ ॥ दृष्टवंतःपुरापत्नींसेयंदासीत्वमागता ॥ सूर्यवंशप्रसूतोऽयंसुकुमारकरांगुलिः ॥ ३८ ॥ संप्राप्तोविक्रयंबालोधिङ्मामस्तुसुदुर्मतिम् ॥ हाप्रियेहाशिशोवत्समामाऽनार्यस्यदुर्नयः ॥ ३९ ॥ दैवाधीनदशांप्राप्तोनमृतोऽस्मितथापिधिक् ॥ व्यासउवाच ॥ एवंविलपतोराज्ञोऽग्रेविप्रोंतरधीयत ॥ ४० ॥ वृक्षगेहादिभिस्तुंगैस्तावादायत्वरान्वितः ॥ अत्रांतरेमुनिश्रेष्ठस्त्वाजगाममहातपाः ॥ ४१ ॥ सशिष्यःकौशिकेंद्रोऽसौनिष्ठुरःक्रूरदर्शनः ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ यात्वयोक्तापुराराजन्राजसूयस्यदक्षिणा ॥ ४२ ॥ तांददस्वमहाबाहोयदिसत्यंपुरस्कृतम् ॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥ नमस्करोमिराजर्षेगृहाणेमांस्वदक्षिणाम् ॥ ॥ ४३ ॥ राजसूयस्ययागस्ययामयोक्तापुराऽनघ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ कुतोलब्धमिदंद्रव्यंदक्षिणार्थेप्रदीयते ॥ ४४ ॥ एतदाचक्ष्वराजेंद्रयथाद्रव्यंत्वयार्जितम् ॥ राजोवाच ॥ किमनेनमहाभागकथितेनतवाऽनघ ॥ ४५ ॥ शोकस्तुवर्धतेविप्रश्रुतेनानेनसुव्रत ॥ ऋषिरुवाच ॥ अशस्तंनैवगृह्णामिशस्तमेवप्रयच्छमे ॥ ४६ ॥ द्रव्यस्याऽऽगमनंराजन्कथयस्वयथातथम् ॥ राजोवाच ॥ मयादेवीतुसाभार्याविक्रीताकोटिसम्मितैः ॥ ४७ ॥ निष्कैःपुत्रोरोहितास्योविक्रीतोर्बुदसंख्यया ॥ विप्रैकादशकोट्यस्त्वंसुवर्णस्यगृहाणमे ॥ ४८ ॥ सूतउवाच ॥ तद्वित्तंस्वल्पमालक्ष्यदारविक्रयसंभवम् ॥ शोकाभिभूतंराजानंकुपितःकौशिकोऽब्रवीत् ॥ ४९ ॥ ऋषिरुवाच ॥ राजसूयस्ययज्ञस्यनैषाभवतिदक्षिणा ॥ अन्यदुत्पादयक्षिप्रंसंपूर्णायेनसाभवेत् ॥ ५० ॥

त्वयोक्तेति ॥ तत्रयद्यपिराज्ञाराजसूयेतिनामनगृहीतंकिंतुसामान्ययज्ञस्यतथापिराजसूययज्ञस्यैवदक्षिणांग्रहीष्यामिसएवममाऽभिमतोनोचेत्सत्यंत्यजेतिब्राह्मणाभिमानः ॥४२॥ पुत्रभार्याविक्रयेणसार्धहेमभारद्वयाधिकंधनंयल्लब्धंतत्पुरस्कृत्यराजोवाच॥ गृहाणेमांदक्षिणामिति॥अस्मिन्द्रव्येराज्यदानदक्षिणांसार्धभारद्वयपरिमितांगृहाण अवशिष्टंद्रव्यंयज्ञस्यदक्षिणांगृहाणेत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ममयथाज्ञानंतपोवलंवर्ततेततथात्वंप्रथमंपश्यपश्चादुत्तमपात्रयोग्यांयज्ञदक्षिणांदेहि नेदृशीमल्पांदरिद्रकर्तृकयज्ञयोग्यांदक्षिणांग्रहीष्यामीत्यभिप्रायेणब्राह्मणआह। क्षत्रबंधोइति ॥५१ ॥५२॥ ॥ ५३ ॥ नोत्तरमितउत्तरंमर्यादानकर्तव्येत्यर्थः॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ अष्टत्रिंशन्महाश्लोकैर्हरिश्चंद्रोहिभूपतिः। चांडालेनक्रयक्रीतइतिसम्यक्कथोच्यते ॥ १ ॥ तदादायेति। राज्यदानदक्षिणाभूतंसार्धहेमभारद्वयपरिमितंधनंगृहीत्वाययावित्यन्वयः ॥ १ ॥ २ ॥ मयाप्रेतेनशवभूतेनाऽतिपापिनावित्तक्रीतेनधनेनक्रीतेनयस्यार्तिः पीडागच्छतिमयाक्रीतेनयस्योपकारोभवतिसपुरुषस्त्वरायुक्तोमममौल्यंब्रवीतु ॥ चतुर्थेयामेऽद्यापिभास्करस्तिष्ठति ततोभास्करास्तानंतरंममद्रव्यस्योपयोगाभावइतिभावः ॥३॥

क्षत्रबंधोममेमांत्वंसदृशींयदिदक्षिणाम् ॥ मन्यसेतर्हितत्क्षिप्रंपश्यत्वंमेपरंबलम् ॥ ५१ ॥ तपसोऽस्यसुतप्तस्यब्राह्मणस्याऽमलस्यच ॥ मत्प्रभावस्य चोग्रस्यशुद्धस्याऽध्ययनस्यच ॥ ५२ ॥ राजोवाच ॥ अन्यद्दास्यामिभगवन्कालःकश्चित्प्रतीक्ष्यताम् ॥ अधुनैवाऽस्तिविक्रीतापत्नीपुत्रश्चबालकः ॥ ॥५३॥ विश्वामित्रउवाच ॥ चतुर्भागःस्थितोयोयंदिवसस्यनराधिप ॥ एषएवप्रतीक्ष्योमेवक्तव्यंनोत्तरंत्वया॥५४॥ इतिश्रीदे०म०स०द्वाविंशोऽध्यायः॥ ॥ २२ ॥ व्यासउवाच ॥ तमेवमुक्त्वाराजानंनिर्घृणंनिष्ठुरंवचः ॥ तदादायधनंपूर्णंकुपितःकौशिकोययौ ॥ १ ॥ विश्वामित्रेगतेराजाततःशोकमुपागतः ॥ श्वासोच्छ्वासंमुहुःकृत्वाप्रोवाचोच्चैरधोमुखः ॥ २ ॥ वित्तक्रीतेनयस्यार्तिर्मयाप्रेतेनगच्छति ॥ सब्रवीतुत्वरायुक्तोयामेतिष्ठतिभास्करः ॥ ३ ॥ अथाजगामत्वरितोधर्मश्चांडालरूपधृक् ॥ दुर्गंधोविकृतोरस्कःश्मश्रुलोदंतुरोऽघृणी ॥ ४ ॥ कृष्णोलंबोदरःस्निग्धःकरालःपुरुषाधमः ॥ हस्तजर्जरयाष्टिश्चशवमाल्यैरलंकृतः ॥ ५ ॥ चांडालउवाच ॥ अहंगृह्णामिदासत्वेभृत्यार्थःसुमहान्मम ॥ क्षिप्रमाचक्ष्वमौल्यंकिमेतत्तेसंप्रदीयते ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ तंतादृशमथाऽऽलक्ष्यक्रूरदृष्टिंसुनिर्घृणम्॥ वदंतमतिदुःशीलंकस्त्वमित्याहपार्थिवः ॥ ७ ॥ चांडालउवाच ॥ चांडालोऽहमिहख्यातःप्रवीरेतिनृपोत्तम ॥ शासनेसर्वदातिष्ठमृतचैलापहारकः ॥ ८ ॥ एवमुक्तस्तदाराजावचनंचेदमब्रवीत् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवापिगृह्णात्वितिमतिर्मम ॥९॥ उत्तमस्योत्तमोधर्मोमध्यमस्यचमध्यमः ॥ अधमस्याधमश्चैवइतिप्राहुर्मनीषिणः ॥१०॥ चांडालउवाच ॥ एवमेवत्वयाधर्मःकथितोनृपसत्तम ॥ अविचार्यत्वयाराजन्नधुनोक्तंममाऽग्रतः ॥११॥ विचारयित्वायोब्रूतेसोऽभीष्टंलभतेनरः॥सामान्यमेवतत्प्रोक्तमविचार्यत्वयानघ ॥१२॥ यदिसत्यंप्रमाणंतेगृहीतोसिनसंशयः॥हरिश्चंद्रउवाच॥असत्यान्नरकेगच्छेत्सद्यःक्रूरेनराधमः॥१३॥ततश्चांडालतासाध्वीनवरामेह्यसत्यता॥व्यासउवाच॥तस्यैवंवदतःप्राप्तोविश्वामित्रस्तपोनिधिः ॥१४॥

धर्मइति ॥ हरिश्चंद्रपरीक्षार्थंचांडालरूपेणधर्मोप्यागतइत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ भृत्यार्थोभृत्यप्रयोजनंममसिद्धंभवतीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ प्रवीरेतिनाम्नाविख्यातः ॥ ८॥९॥ उत्तमस्येति ॥ तवाधमस्यगृहेममोत्तमस्यधर्मोनचालिष्यतीत्यर्थः ॥ १० ॥ एवमेवेति ॥ यद्येवंतवमनसिवर्ततेतर्हियोवाकोवामांगृह्णात्वितिसामान्यतःकिमित्यसत्यमुक्तंब्राह्मणएवमांगृह्णात्वितिकिंमितिनत्वयोक्तंतस्मादेवमेवाऽसत्यभाषणरूपएवाधर्मस्त्वयाकथितःकिमित्यर्थः ॥ ममाग्रतोऽविचार्यविचारमकृत्वैवकिमधुनोक्तंत्वयेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ यदिसत्यमिति ॥ यदिसत्यंप्रमाणंभवतितर्हिमयापूर्ववाक्येनैवत्वंगृहीतोसिनोचेत्सत्यंजहीत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ मृतवच्छ्रितजीवितःअर्धमृतवदाश्रितजीवनः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ इत्थंविश्वामित्रेणराजाविक्रीतस्ततोवि

क्रोधामर्षविवृत्ताक्षःप्राहचेदंनराधिपम् ॥ चांडालोऽयंमनस्थंतेदातुंवित्तमुपस्थितः ॥ १५ ॥ कस्मान्नदीयतेमह्यमशेषायज्ञदक्षिणा ॥ राजोवाच ॥ भगवन्सूर्यवंशोत्थमात्मानंवेद्मिकौशिक ॥ १६ ॥ कथंचांडालदासत्वंगमिष्येवित्तकामतः ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ यदिचांडालवित्तंत्वमात्मविक्रयजंमम ॥ ॥ १७ ॥ नप्रदास्यसिचेत्तर्हिशप्स्यामित्वामसंशयम् ॥ चांडालादथवाविप्राद्देहिमेदक्षिणाधनम् ॥ १८ ॥ विनाचांडालमधुनानाऽन्यःकश्चिद्धनप्रदः ॥ धनेनाऽहंविनाराजन्नयास्यामिनसंशयः ॥ १९ ॥ इदानीमेवमेवित्तंनप्रदास्यसिचेन्नृप ॥ दिनेऽर्धघटिकाशेषेतत्त्वांशापाग्निनादहे ॥ २० ॥ व्यासउवाच ॥ हरिश्चंद्रस्ततोराजामृतवच्छ्रितजीवितः ॥ प्रसीदेतिवदन्पादौऋषेर्जग्राहविह्वलः ॥२१॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥ दासोऽस्म्यार्तोऽस्मिदीनोऽस्मित्वद्भक्तश्चविशेषतः ॥ प्रसादंकुरुविप्रर्षेकष्टश्चांडालसंकरः ॥ २२ ॥ भवेयंवित्तशेषेणतवकर्मकरोवशः ॥ तवैवमुनिशार्दूलप्रेष्यश्चित्तानुवर्तकः ॥ २३ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ एवमस्तुमहाराजममैवभवकिंकरः ॥ किंतुमद्वचनंकार्यंसर्वदैवनराधिप ॥ २४ ॥ व्यासउवाच ॥ एवमुक्तेऽथवचनेराजाहर्षसमन्वितः ॥ अमन्यतपुनर्जातमात्मानंप्राहकौशिकम् ॥ २५ ॥ तवादेशंकरिष्यामिसदैवाऽहंनसंशयः ॥ आदेशयद्विजश्रेष्ठकिंकरोमितवाऽनघ ॥ २६ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ चांडालागच्छमद्दासमौल्यंकिंमेप्रयच्छसि ॥ गृहाणदासंमौल्येनमयादत्तंतवाऽधुना ॥ २७ ॥ नास्तिदासेनमेकार्यंवित्ताशावर्ततेमम ॥ व्यासउवाच ॥ एवमुक्तेतदातेनश्वपचोहृष्टमानसः ॥ २८ ॥ आगत्यसन्निधौतूर्णंविश्वामित्रमभाषत ॥ चांडालउवाच ॥ दशयोजनविस्तीर्णेप्रयागस्यचमंडले ॥ २९ ॥ भूमिंरत्नमयींकृत्वादास्येतेऽहंद्विजोत्तम ॥ अस्यविक्रयणेनेयमार्तिश्चप्रहतात्वया ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ ततोरत्नसहस्राणिसुवर्णमणिमौक्तिकैः ॥ चांडालेनप्रदत्तानिजग्राहद्विजसत्तमः ॥ ३१ ॥ हरिश्चंद्रस्तथाराजानिर्विकारमुखोऽभवत् ॥ अमन्यततथाधैर्याद्विश्वामित्रोहिमेपतिः ॥ ३२ ॥ तत्तदेवमयाकार्यंयदयंकारयिष्यति ॥ अथांतरिक्षेसहसावागुवाचाऽशरीरिणी ॥ ३३ ॥ अनृणोऽसिमहाभागदत्तासादक्षिणात्वया ॥ ततोदिवःपुष्पवृष्टिःपपातनृपमूर्धनि ॥ ३४ ॥ साधुसाध्वितितंदेवाःप्रोचुःसेंद्रामहौजसः ॥ हर्षेणमहताऽऽविष्टोराजाकौशिकमब्रवीत् ॥ ३५ ॥ राजोवाच ॥ त्वंहिमातापिताचैवत्वंहिबंधुर्महामते ॥ यदर्थमोचितोऽहंतेक्षणाच्चैवाऽनृणीकृतः ॥ ३६ ॥

श्वामित्रएवस्वदासंहरिश्चंद्रंद्रव्यंगृहीत्वाचांडालायार्पयतितदातत्रराज्ञोनकश्चिदुपायआसीदित्याह। चांडालाऽऽगच्छेति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ निर्विकारमुखइति ॥ ब्राह्मणोममस्वामीभवतिसयथाप्रेरयतितथाकरोमिनपुनर्धर्मपालनेममस्वातंत्र्यमस्तीत्यभिप्रायेणेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ हेमहाभागहरिश्चंद्र त्वमनृणोजातोसीत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३७ ॥ ३६॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३७ ॥ तदादायेति ॥ चंडालेनदत्तंधनंगृहीत्वाहरिश्चंद्रंतस्यहस्तेदत्त्वाययावित्यर्थः ॥ ३८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ त्रयस्त्रिंशन्महापद्यै श्चांडालगृहवर्तनम्॥ तदनुज्ञानकारित्वंहरिश्चंद्रस्यवर्ण्यते ॥ १ ॥ चांडालाधीनतांप्राप्तस्यहरिश्चंद्रस्यवृत्तमाह । ततःकिमकरोदिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ पक्कणेस्थाने ॥ ४ ॥ ५ ॥ शोकमे

किंकरोमिमहाबाहोश्रेयोमेवचनंतव ॥ एवमुक्तेतुवचनेनृपंमुनिरभाषत ॥ ३७ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ चांडालवचनंकार्यमद्यप्रभृतितेनृप ॥ स्वस्तिते स्त्वितितंप्रोच्यतदादायधनंययौ ॥ ३८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेहरिश्चंद्रोपाख्यानेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ शौ नकउवाच ॥ ततःकिमकरोद्राजाचांडालस्यगृहेगतः ॥ तद्ब्रूहिसूतवर्यत्वंपृच्छतःसत्वरंहिमे ॥१॥ सूतउवाच ॥ विश्वामित्रेगतेविप्रेश्वपचोहृष्टमानसः ॥ विश्वामित्रायतद्द्रव्यंदत्त्वाबद्धानरेश्वरम् ॥ २ ॥ असत्योयास्यसीत्युक्त्वादंडेनाऽताडयत्तदा ॥ दंडप्रहारसंभ्रांतमतीवव्याकुलेंद्रियम् ॥ ३ ॥ इष्टबंधु वियोगार्तमानीयनिजपक्कणे ॥ निगडेस्थापयित्वातंस्वयंसुष्वापविज्वरः ॥ ४ ॥ निगडस्थस्ततोराजावसंश्चांडालपक्कणे ॥ अन्नपानेपरित्यज्यसदावैतद शोचयत् ॥ ५ ॥ तन्वीदीनमुखींदृष्ट्वाबालंदीनमुखंपुरः ॥ मांस्मरत्यसुखाविष्टामोक्षयिष्यतिनौनृपः ॥ ६ ॥ उपात्तवित्तोविप्रायदत्त्वावित्तंप्रतिश्रुतम् ॥ रोदमानंसुतंवीक्ष्यमांचसंबोधयिष्यति ॥ ७ ॥ तातपार्श्वंव्रजामीतिरुदंतंबालकंपुनः ॥ ताततातेतिभाषंतंतथासंबोधयिष्यति ॥ ८ ॥ नसामांमृगशावा क्षीवेत्तिचांडालतांगतम् ॥ राज्यनाशःसुहृत्त्यागोभार्यातनयविक्रयः ॥ ९ ॥ ततश्चांडालताचेयमहोदुःखपरंपरा ॥ एवंसनिवसन्नित्यंस्मरंश्चदयितांसुत म् ॥ १० ॥ निनायदिवसान्राजाचतुरोविधिपीडितः ॥ अथाऽह्निपंचमेतेननिगडान्मोचितोनृपः ॥ ११ ॥ चांडालेनानुशिष्टश्चमृतचैलापहारणे ॥ क्रु द्धेनपरुषैर्वाक्यैर्निर्भर्त्स्यचपुनःपुनः ॥ १२ ॥ काश्याश्चदक्षिणेभागेश्मशानंविद्यतेमहत् ॥ तद्रक्षस्वयथान्यायंनत्याज्यंतत्त्वयाक्वचित् ॥ १३ ॥ इमंच जर्जरंदंडंगृहीत्वायाहिमाचिरम् ॥ वीरबाहोरयंदंडइतिघोषस्वसर्वतः ॥ १४ ॥ सूतउवाच ॥ कस्मिंश्चिदथकालेतुमृतचैलापहारकः ॥ हरिश्चंद्रोभवद्रा जाश्मशानेतद्वशानुगः ॥ १५ ॥ चांडालेनानुशिष्टस्तुमृतचैलापहारिणा ॥ राजातेनसमादिष्टोजगामशवमंदिरम् ॥ १६ ॥ पुर्यास्तुदक्षिणेदेशेविद्यमानं भयानकम् ॥ शवमाल्यसमाकीर्णंदुर्गंधबहुधूमकम् ॥ १७ ॥ श्मशानंघोरसन्नादंशिवाशतसमाकुलम् ॥ गृध्रगोमायुसंकीर्णंश्ववृंदपरिवारितम् ॥ १८ ॥ अस्थिसंघातसंकीर्णंमहादुर्गंधसंकुलम् ॥ अर्धदग्धशवास्यानिविकसद्दंतपंक्तिभिः ॥ १९ ॥

वाह तन्वीति ॥ बालंदृष्ट्वेत्यन्वयः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ वीरबाहोस्तन्नामकस्यचांडालस्याऽयंदंडस्तस्याऽहंदूतइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ शवमंदिरं स्मशानम् ॥१६॥१७॥१८॥ उत्प्रेक्षांकरोति ॥ अर्धदग्धेति ॥ विकसद्दंतपंक्तिभिरर्धदग्धशवास्यानिहसंतिकिमिति ॥ अग्निमध्यस्थकायस्यशरीरस्यैवंव्यवस्थितिर्दुर्दशाभवतीति ॥१९॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नानामृतानामनेकमृतानांसुहृदांरोदननादोयस्मिन्श्मशानेतत् ॥ २० ॥ हेमेप्रियाद्याऽहंत्वयाकथंहाप्यतेत्याज्यतइत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ शवानांदर्शनेशवान्वेषणे ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ नानाशवानांपिंडार्थंयेचौदनाःकृतास्तैर्भक्षितैर्याक्षुन्निवृत्तिस्तत्परायणः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेमहापुराणे सप्तमस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अर्धेनैकोननवतिश्लोकैरथतुभूभृतः ॥ पुत्रभार्याकथांसम्यक्कथयामासभूभृते ॥ १ ॥ चांडालेनहरिश्चंद्रेश्मशानकार्यार्थं

हसंतीवाऽग्निमध्यस्थकायस्यैवंव्यवस्थितिः ॥ नानामृतसुहृन्नादंमहाकोलाहलाकुलम् ॥ २० ॥ हापुत्रमित्रहाबंधोभ्रातर्वत्साप्रियाऽद्यमे ॥ हाप्यतेभागिनेयाऽर्हहामातुलपितामह ॥ २१ ॥ मातामहपितःपौत्रकगतोस्येहिबांधव ॥ इतिशब्दैःसमाकीर्णैर्भैरवैःसर्वदेहिनाम् ॥ २२ ॥ ज्वलन्मांसवसामेदच्छूमितिध्वनिसंकुलम् ॥ अग्नेश्चटचटाशब्दोभैरवोयत्रजायते ॥ २३ ॥ कल्पांतसदृशाकारंश्मशानंतत्सुदारुणम् ॥ सराजातत्रसंप्राप्तोदुःखादेवमशोचत ॥ ॥ २४ ॥ हाभृत्यामंत्रिणोयूयंकृतद्राज्यंकुलोचितम् ॥ हाप्रियेपुत्रमेबालमांत्यक्त्वामंदभाग्यकम् ॥ २५ ॥ ब्राह्मणस्यचकोपेनगतायूयंकदूरतः ॥ विनाधर्मंमनुष्याणांजायतेनशुभंक्वचित् ॥ २६ ॥ यत्नतोधारयेत्तस्मात्पुरुषोधर्ममेवहि ॥ इत्येवंचिंतयंस्तत्रचांडालोक्तंपुनःपुनः ॥ २७ ॥ मलेनदिग्धसर्वांगःशवानांदर्शनेव्रजन् ॥ लकुटाकारकल्पश्चधावंश्चापिततस्ततः ॥ २८ ॥ अस्मिञ्छवइदंमौल्यंशतंप्राप्स्यामिचाऽग्रतः ॥ इदंममइदंराज्ञइदंचांडालकस्यच ॥ २९ ॥ इत्येवंचिंतयन्राजाव्यवस्थांदुस्तरांगतः ॥ जीर्णैकपटसुग्रंथिकृतकंथापरिग्रहः ॥३०॥ चिताभस्मरजोलिप्तमुखबाहूदरांघ्रिकः ॥ नानामेदोवसामज्जालिप्तपाण्यंगुलिःश्वसन् ॥ ३१ ॥ नानाशवौदनकृतक्षुन्निवृत्तिपरायणः ॥ तदीयमाल्यसंश्लेषकृतमस्तकमंडलः ॥ ३२ ॥ नरात्रौनदिवाशेतेहाहेतिप्रवदन्मुहुः ॥ एवंद्वादशमासास्तुनीतावर्षशतोपमाः ॥ ३३ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ एकदातुगतोरंतुंबालकैःसहितोबहिः ॥ वाराणस्यानातिदूरेरोहिताख्यःकुमारकः ॥ १ ॥ क्रीडांकृत्वाततोदर्भान्ग्रहीतुमुपचक्रमे ॥ कोमलानल्पमूलांश्चसाग्राञ्छक्त्यनुसारतः ॥ २ ॥ आर्यप्रीत्यर्थमित्युक्त्वाहस्तयुग्मेनयत्नतः ॥ सलक्षणाश्चसमिधोबर्हिरिध्मंसलक्षणम् ॥ ३ ॥ पलाशकाष्ठान्यादायत्वग्निहोमार्थमादरात् ॥ मस्तकेभारकंकृत्वाखिद्यमानःपदेपदे ॥ ४ ॥ उदकस्थानमासाद्यतदाबालस्तृषान्वितः ॥ भुविभारंविनिक्षिप्यजलस्थानेतदाशिशुः ॥ ५ ॥ कामतःसलिलंपीत्वाविश्रम्यचमुहूर्तकम् ॥ वल्मीकोपरिविन्यस्तभारोहर्तुंप्रचक्रमे ॥ ६ ॥

नियुक्तसत्यनंतरंजातंवृत्तमाह । एकदात्विति॥ रंतुंक्रीडितुंनाऽतिदूरेनिकटेएव ॥ १ ॥ शक्त्यनुसारतोभारवहनेयावतीशक्तिःस्वस्यतदनुरोधतइत्यर्थः ॥ २ ॥ आर्यप्रीत्यर्थमिति ॥ वयस्यैःकिमर्थमिदंदर्भाहरणंक्रियतेइतिपृष्टेसतिआर्योममस्वामीब्राह्मणःतत्प्रीत्यर्थमिदंदर्भाहरणंमयाक्रियतइतितान्वयस्यानुक्त्वेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ बालारोहिताख्यस्यवयस्याः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ निशामुखेसायंकालेरोदनमलक्ष्मीकारकमितिनिषिद्धमित्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ धूसराधूलिभिर्मलिनेत्यर्थः ॥ १४ ॥
क्रयंमौल्यंगृह्यगृहीत्वेत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ धर्मसंकीर्त्तनेनकुतःकार्यंनास्तीतिचेत्तत्राहायस्त्विति ॥ ऊषरदेशेबीजमिवतद्वाक्यंधर्मशास्त्रोपदेशवा

विश्वामित्राज्ञयातावत्कृष्णसर्पोभयावहः ॥ महाविषोमहाघोरोवल्मीकान्निर्गतस्तदा ॥ ७ ॥ तेनाऽसौबालकोदष्टस्तदैवचपपातह ॥ रोहिताख्यंमृतंदृष्ट्वा ययुर्बालाद्द्विजालयम् ॥ ८ ॥ त्वरिताभयसंविग्नाःप्रोचुस्तन्मातुरग्रतः ॥ हेविप्रदासितेपुत्रःक्रीडांकर्तुंबहिर्गतः ॥ ९ ॥ अस्माभिःसहितस्तत्रसर्पदष्टोमृतस्ततः ॥ इतिसातद्वचःश्रुत्वावज्रपातोपमंतदा ॥ १० ॥ पपातमूर्च्छिताभूमौछिन्नेवकदलीयथा ॥ अथतांब्राह्मणोरुष्टःपानीयेनाऽभ्यषिंचत ॥ ११ ॥ मुहूर्ताच्चेतनांप्राप्ताब्राह्मणस्तामथाऽब्रवीत् ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ अलक्ष्मीकारकंनिंद्यंजानतीत्वंनिशामुखे ॥ १२ ॥ रोदनंकुरुषेदुष्टेलज्जातेहृदयेनकिम् ॥ ब्राह्मणेनैवमुक्तासानकिंचिद्वाक्यमब्रवीत् ॥ १३ ॥ रुरोदकरुणंदीनापुत्रशोकेनपीडिता ॥ अश्रुपूर्णमुखीदीनाधूसरामुक्तमूर्धजा ॥ १४ ॥ अथतांकुपितोविप्रोराजपत्नीमभाषत ॥ धिक्त्वांदुष्टेक्रयंगृह्यममकार्यंविलुंपसि ॥ १५ ॥ अशक्ताचेत्कथंतर्हिगृहीतंममतद्धनम् ॥ एवंनिर्भर्त्सितातेनक्रूरवाक्यैःपुनःपुनः ॥ १६ ॥ रुदिताकारणंप्राहविप्रंगद्गदयागिरा ॥ स्वामिन्ममसुतोबालःसर्पदष्टोमृतोबहिः ॥ १७ ॥ अनुज्ञांमेप्रयच्छस्वद्रष्टुंयास्यामिबालकम् ॥ दुर्लभंदर्शनंतेनसंजातंममसुव्रत ॥ १८ ॥ इत्युक्त्वाकरुणंबालापुनरेवरुरोदह ॥ पुनस्तांकुपितोविप्रोराजपत्नीमभाषत ॥ १९ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ शठेदुष्टसमाचारेकिंनजानासिपातकम् ॥ यःस्वामिवेतनंगृह्यतस्यकार्यंविलुंपति ॥ २० ॥ नरकेपच्यतेसोऽथमहारौरवपूर्वके ॥ उषित्वानरकेकल्पंततोऽसौकुक्कुटोभवेत् ॥ २१ ॥ किमनेनाऽथवाकार्यंधर्मसंकीर्तनेनमे ॥ यस्तुपापरतोमूर्खःक्रूरोनीचोऽनृतःशठः ॥ २२ ॥ तद्वाक्यंनिष्फलंतस्मिन्भवेद्बीजमिवोषरे ॥ एहितेविद्यतेकिंचित्परलोकभयंयदि ॥ २३ ॥ एवमुक्ताथसाविप्रंवेपमानाब्रवीद्वचः ॥ कारुण्यंकुरुमेनाथप्रसीदसुमुखोभव ॥२४॥ प्रस्थापयमुहूर्तंमांयावद्रक्ष्यामिबालकम् ॥ एवमुक्त्वाऽथसामूर्ध्नानिपत्यद्विजपादयोः ॥ २५ ॥ रुरोदकरुणंबालापुत्रशोकेनपीडिता॥अथाहकुपितोविप्रःक्रोधसंरक्तलोचनः ॥२६॥ विप्रउवाच ॥ किंतेपुत्रेणमेकार्यंगृहकर्मकुरुष्वमे ॥ किंनजानासिमेक्रोधंकशाघातफलप्रदम् ॥२७॥ एवमुक्तास्थिताधैर्याद्गृहकर्मचकारह ॥ अर्धरात्रोगतस्तस्याःपादाभ्यंगादिकर्मणा॥२८॥ब्राह्मणेनाऽथसाप्रोक्तापुत्रपार्श्वंव्रजाऽधुना ॥ तस्यदाहादिकंकृत्वापुनरागच्छसत्वरम् ॥२९॥ नलुप्येतयथाप्रातर्गृहकर्ममेतिच॥ततस्त्वेकाकिनीरात्रौविलपंतीजगामह॥३०॥दृष्ट्वामृतंनिजंपुत्रंभृशंशोकेनपीडिता॥यूथभ्रष्टाकुरंगीवविवत्सासौरभीयथा ॥३१॥

क्यंतस्मिन्मूर्खत्वादिधर्मवतिनिष्फलंयतस्ततइत्यर्थः ॥ २२ ॥ एहितेइति । एहिगृहकार्यार्थमित्यर्थः ॥२३॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ पादाभ्यंगादिकर्मणापादसंवाहनादिनेत्यर्थः ॥ २८ ॥ पादसंवाहनानंतरमित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ शिवानांशतस्यनिनादःसंजातोयस्मिंस्तादृशमित्यर्थः ॥ ४० ॥ अस्तादस्तमारभ्य ते तवमित्राणिवयस्याःगृहान्गता नितेषांमध्येत्वमेवैकःकुतोऽत्रस्थितइतिविलापवाक्यमेतत् ॥ ४१ ॥ प्रतिशब्दंप्रत्युत्तरम् ॥ ४२ ॥ पुत्रेतिसंबोधनम् ॥ ४३ ॥ यज्जीवामितत्त्वांकेवलंदृष्ट्वैवजीवामीत्यर्थः ॥ ४४ ॥४५ ॥

वाराणस्यावहिर्गत्वाक्षणाद्दृष्ट्वानिजंसुतम् ॥ शयानंरंकवद्भूमौकाष्ठदर्भतृणोपरि ॥ ३२ ॥ विललापाऽतिदुःखार्ताशब्दंकृत्वासुनिष्ठुरम् ॥ एहिमेसंमुखंक स्माद्रोषितोऽसिवदाऽधुना ॥ ३३ ॥ आयास्यभिमुखोनित्यमंवेत्युक्त्वापुनःपुनः ॥ गत्वास्खलत्पदातस्यपपातोपरिमूर्च्छिता ॥ ३४ ॥ पुनःसाचेतनांप्रा प्यदोर्भ्यामालिंग्यबालकम् ॥ तन्मुखेवदनंन्यस्यरुरोदाऽऽर्तस्वनैस्तदा ॥ ३५ ॥ कराभ्यांताडनंचक्रेमस्तकस्योदरस्यच ॥ हाबालहाशिशोवत्सहाकुमा रकसुंदर ॥ ३६ ॥ हाराजन्क्वगतोऽसित्वंपश्येमंबालकंनिजम् ॥ प्राणेभ्योऽपिगरीयांसंभूतलेपतितंमृतम् ॥ ३७ ॥ तथाऽपश्यन्मुखंतस्यभूयोजीवित शंकया ॥ निर्जीववदनंज्ञात्वामूर्च्छितानिपपातह ॥ ३८ ॥ हस्तेनवदनंगृह्यपुनरेवमभाषत ॥ शयनंत्यजहेबालशीघ्रंजागृहिभीषणम् ॥ ३९ ॥ निशार्धेव र्धतेचेदंशिवाशतनिनादितम् ॥ भूतप्रेतपिशाचादिडाकिनीयूथनादितम् ॥ ४० ॥ मित्राणितेगतान्यस्तात्त्वमेकस्तुकुतःस्थितः ॥ सूतउवाच ॥ एवमुक्त्वा पुनस्तन्वीकरुणंप्ररुरोदह ॥ ४१ ॥ हाशिशोबालहावत्सरोहिताख्यकुमारक ॥ रेपुत्रप्रतिशब्दंमेकस्मात्त्वंनप्रयच्छसि ॥ ४२ ॥ तवाऽहंजननीवत्सकिंन जानासिपश्यमाम् ॥ देशत्यागाद्राज्यनाशात्पुत्रभर्त्रास्वविक्रयात् ॥ ४३ ॥ यद्दासीत्वाच्चजीवामित्वांदृष्ट्वापुत्रकेवलम् ॥ तेजन्मसमयेविप्रैरादिष्टंयत्त्वनाग तम् ॥ ४४ ॥ दीर्घायुःपृथिवीराजःपुत्रपौत्रसमन्वितः ॥ शौर्यदानरतिःसत्त्वोगुरुदेवद्विजार्चकः ॥ ४५ ॥ मातापित्रोस्तुप्रियकृत्सत्यवादीजितेंद्रियः ॥ इ त्यादिसकलंजातमसत्यमधुनासुत ॥ ४६ ॥ चक्रमत्स्यावातपत्रश्रीवत्सस्वस्तिकध्वजाः ॥ तवपाणितलेपुत्रकलशश्चामरंतथा ॥ ४७ ॥ लक्षणानितथाऽ न्यानित्वद्धस्तेयानिसंतिच ॥ तानिसर्वाणिमोघानिसंजातान्यधुनासुत ॥ ४८ ॥ हाराजन्पृथिवीनाथक्वतेराज्यंक्वमंत्रिणः ॥ क्वतेसिंहासनंछत्रंक्वतेखड्गःक्व तद्धनम् ॥ ४९ ॥ क्वसाऽयोध्याक्वहर्म्याणिक्वगजाश्वरथप्रजाः ॥ सर्वमेतत्तथापुत्रमांत्यक्त्वाक्वगतोऽसिरे ॥ ५० ॥ हाकांतहानृपाऽऽगच्छपश्येमंस्वसुतंप्रि यम् ॥ येनतेरिंगतावक्षःकुंकुमेनाऽवलेपितम् ॥ ५१ ॥ स्वशरीररजःपंकैर्विशालंमलिनीकृतम् ॥ येनतेबालभावेनमृगनाभिविलेपितः ॥ ५२ ॥ भ्रंशितोभालतिलकस्तवांकस्थेनभूपते ॥ यस्यवक्त्रंमृदालिप्तंस्नेहाद्वैचुंबितंमया ॥ ५३ ॥ तन्मुखंमक्षिकालिंग्यंपश्येकीटैर्विदूषितम् ॥ हाराजन्पश्यतंपुत्रं भुविस्थंरंकवन्मृतम् ॥ ५४ ॥ हादेवकिंमयाकृत्यंकृतंपूर्वभवांतरे ॥ तस्यकर्मफलस्येहनपारमुपलक्षये ॥ ५५ ॥

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ मोघानिव्यर्थानि ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ रिंगताअतिबालावस्थाचलनवता ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ भूपतेइत्यंतंपूर्वान्वायि ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ बालघातिनीकाचिद्बालघातिनीराक्षसीयंभवतीत्यर्थः ॥ ६१ ॥ शुभाचेद्यदिराक्षसीनास्तीत्यर्थः ॥ यतएवंतस्मादाह । भक्षार्थमिति ॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ लोकडिंभानिलोकानांबालकानि ॥ ५६ ॥ पुण्यमर्जितमेतस्यावधेनेत्यर्थः ॥६६॥६७॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ अपरप्रेष्यंसेवकंदेहिसवधंकारि

हापुत्रहाशिशोवत्सहाकुमारकसुंदर ॥ एवंतस्याविलापंतेश्रुत्वानगरपालकाः ॥ ५६ ॥ जागृतास्त्वरितास्तस्याःपार्श्वमीयुःसुविस्मिताः ॥ जनाऊचुः ॥
कात्वंबालश्चकस्याऽयंपतिस्तेकुत्रतिष्ठति ॥ ५७ ॥ एकैवनिर्भयारात्रौकस्मात्त्वमिहरोदिषि ॥ एवमुक्ताऽथसातन्वीनकिंचिद्वाक्यमब्रवीत् ॥ ५८ ॥ भू
योऽपिपृष्टासातूष्णींस्तब्धीभूतावभूवह ॥ विललापाऽतिदुःखार्ताशोकाश्रुप्लुतलोचना ॥ ५९ ॥ अथतेशंकितास्तस्यांरोमांचिततनूरुहाः ॥ संत्रस्ताः
प्राहुरन्योन्यमुद्धृतायुधपाणयः ॥ ६० ॥ नूनंस्त्रीनभवत्येषायतःकिंचिन्नभाषते ॥ तस्माद्वध्याभवेदेषायत्नतोबालघातिनी ॥ ६१ ॥ शुभाचेत्तर्हिकिंह्य
त्रनिशीथतिष्ठतेबहिः ॥ भक्षार्थमनयानूनमानीतःकस्यचिच्छिशुः ॥ ६२ ॥ इत्युक्त्वातैर्गृहीतासागाढंकेशेषुसत्वरम् ॥ भुजयोरपरैश्चैवकैश्चाऽपिगलकेत
था ॥ ६३ ॥ खेचरीयास्यतीत्युक्तंबहुभिःशस्त्रपाणिभिः ॥ आकृष्यपक्वणेनीताचांडालायसमर्पिता ॥६४॥ हेचांडालबहिर्दृष्टाह्यस्माभिर्बालघातिनी ॥
वध्यतांवध्यतामेषाशीघ्रंनीत्वाबहिःस्थले ॥६५॥ चांडालःप्राहतांदृष्ट्वाज्ञातेयंलोकविश्रुता ॥ नदृष्टपूर्वाकेनाऽपिलोकडिंभान्यनेकधा ॥ ६६ ॥ भक्षितान्य
नयाभूरिभवद्भिःपुण्यमर्जितम् ॥ ख्यातिर्वःशाश्वतीलोकेगच्छध्वंचयथासुखम् ॥ ६७ ॥ द्विजस्त्रीबालगोघातीस्वर्णस्तेयीचयोनरः ॥ अग्निदोवर्त्मघाती
चमद्यपोगुरुतल्पगः ॥ ६८ ॥ महाजनविरोधीचतस्यपुण्यप्रदोवधः ॥ द्विजस्याऽपिस्त्रियोवाऽपिनदोषोविद्यतेवधे ॥ ६९ ॥ अस्यावधश्चमेयोग्यइत्युक्त्वा
गाढबंधनैः ॥ बद्ध्वाकेशेष्वथाऽऽकृष्यरज्जुभिस्तामताडयत् ॥ ७० ॥ हरिश्चंद्रमथोवाचवाचापरुषयातदा ॥ रेदासवध्यतामेषादुष्टात्मामाविचारय ॥७१॥
तद्वाक्यंभूपतिःश्रुत्वावज्रपातोपमंतदा ॥ वेपमानोऽथचांडालंप्राहस्त्रीवधशंकितः ॥ ७२ ॥ नशक्तोऽहमिदंकर्तुंप्रेष्यंदेहिममाऽऽपरम् ॥ असाध्यमपियत्क
र्मतत्करिष्येत्वयोदितम् ॥ ७३ ॥ श्रुत्वातदुक्तंवचनंश्वपचोवाक्यमब्रवीत् ॥ माभैषीस्त्वंगृहाणाऽसिंवधोऽस्याःपुण्यदोमतः ॥७४॥ बालानामेवभयदानेयंर
क्ष्याकदाचन ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यराजावचनमब्रवीत् ॥ ७५ ॥ स्त्रियोरक्ष्याःप्रयत्नेननहंतव्याःकदाचन ॥ स्त्रीवधेकीर्तितंपापंमुनिभिर्धर्मतत्परैः ॥
॥ ७६ ॥ पुरुषोयःस्त्रियंहन्याज्ज्ञानतोऽज्ञानतोऽपिवा ॥ नरकेपच्यतेसोऽथमहारौरवपूर्वके ॥ ७७ ॥ चांडालउवाच ॥ मावदाऽसिंगृहाणैनंतीक्ष्णविद्यु
त्समप्रभम् ॥ यत्रैकस्मिन्वधंनीतेबहूनांतुसुखंभवेत् ॥ ७८ ॥ तस्याहिंसाकृतानूनंबहुपुण्यप्रदाभवेत् ॥ भक्षितान्यनयाभूरिलोकेडिंभानिदुष्टया ॥७९॥
तत्क्षिप्रंवध्यतामेषालोकःस्वस्थोभविष्यति ॥ राजोवाच ॥ चांडालाधिपतेतीव्रंव्रतंस्त्रीवधवर्जनम् ॥ ८० ॥

ष्यतीत्यर्थः ॥ असाध्यमपीति ॥ एतद्भिन्नमित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ सार्धत्रिसहितैःसप्ततिश्लोकैरथभूभृता ॥ ज्ञातास्वकीयपत्नीतिशुशोचचततःपरम् ॥ १ ॥ चांडालेनराज्ञेस्त्रीवधायखड्गेसमर्पितेततःपरंजातंवृत्तमाह । ततोथेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ वस्त्रमस्याक्षिपत्तदे

आजन्मतस्ततोयत्नंनकुर्यांस्त्रीवधेतव ॥ चांडालउवाच ॥ स्वामिकार्यंविनादुष्टंकिंकार्यंविद्यतेपरम् ॥ ८१ ॥ गृहीत्वावेतनंमेऽद्यकस्मात्कार्यंविलुंपसि ॥ यःस्वामिवेतनंगृह्यस्वामिकार्यंविलुंपति ॥ ८२ ॥ नरकान्निष्कृतिस्तस्यनास्तिकल्पायुतैरपि ॥ राजोवाच ॥ चांडालनाथमेदेहिप्राप्यमन्यत्सुदारुणम् ॥ ८३ ॥ स्वशत्रुंब्रूहितंक्षिप्रंघातयिष्याम्यसंशयम् ॥ घातयित्वातुतंशत्रुंतवदास्यामिमेदिनीम् ॥ ८४ ॥ देवदेवोरगैःसिद्धैर्गंधर्वैरपिसंयुतम् ॥ देवेंद्रमपि जेष्यामिनिहत्यनिशितैःशरैः ॥ ८५ ॥ एतच्छ्रुत्वाततोवाक्यंहरिश्चंद्रस्यभूपतेः ॥ चांडालःकुपितःप्राहवेपमानंमहीपतिम् ॥ ८६ ॥ चांडालउवाच ॥ "नैतद्वाक्यंसुघटितंयद्वाक्यंदासकीर्तितम्॥" चांडालदासतांकृत्वासुराणांभाषसेवचः ॥ दासकिंबहुनानूनंशृणुमेगदतोवचः ॥ ८७ ॥ निर्लज्जतवचे दस्तिकिंचित्पापभयंहृदि ॥ किमर्थंदासतांयातश्चांडालस्यतुवेश्मनि ॥ ८८ ॥ गृहाणैनंततःखड्गमस्याश्छिंधिशिरोंबुजम् ॥ एवमुक्त्वाऽथचांडालोराज्ञे खड्गंन्यवेदयत् ॥ ८९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणे० हरिश्चंद्रोपाख्यानेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ सूतउवाच ॥ ततोऽथभूपतिःप्राहराज्ञीं स्थित्वाह्यधोमुखः ॥ अत्रोपविश्यतांबालेपापस्यपुरतोमम ॥ १ ॥ शिरस्तेच्छेदयिष्यामिहंतुंशक्नोतिचेत्करः ॥ एवमुक्त्वासमुद्यम्यखड्गंहंतुंगतोनृपः ॥ २ ॥ नजानातिनृपःपत्नींसानजानातिभूपतिम् ॥ अब्रवीद्दृशदुःखार्तास्वमृत्युमभिकांक्षती ॥ ३ ॥ रुयुवाच ॥ चांडालशृणुमेवाक्यंकिंचित्त्वंयदि मन्यसे ॥ मृतस्तिष्ठतिमेपुत्रोनाऽतिदूरेबहिःपुरात् ॥ ४ ॥ तंदहामिहतंयावदानयित्वातवांतिकम् ॥ तावत्प्रतीक्ष्यतांपश्चादसिनाघातयस्वमाम् ॥ ५ ॥ तेनाऽथवाढमित्युक्त्वाप्रेषिताबालकंप्रति ॥ साजगामाऽतिदुःखार्ताविलपंतीसुदारुणम् ॥६॥ भार्यातस्यनरेंद्रस्यसर्पदष्टंहिबालकम् ॥ हापुत्रहावत्साशि शोइत्येवंवदतीमुहुः ॥ ७ ॥ कृशाविवर्णामलिनापांसुध्वस्तशिरोरुहा ॥ श्मशानभूमिमागत्यबालंस्थाप्याऽविशद्भुवि ॥ ८ ॥ "राजन्नद्यस्वबालंतंपश्य सीहमहीतले ॥ रममाणंस्वसखिभिर्दष्टंदुष्टाहिनामृतम्॥" तस्याविलापशब्दंतमाकर्ण्यसनराधिपः ॥ शवसन्निधिमागत्यवस्त्रमस्याऽऽक्षिपत्तदा ॥ ९ ॥ तांतथारुदतींभार्यांनाभिजानातिभूमिपः ॥ चिरप्रवाससंतप्तांपुनर्जातामिवाऽबलाम् ॥ १० ॥ सापितंचारुकेशांतंपुरोदृष्ट्वाजटालकम् ॥ नाऽभ्यजानान्नृ पवरंशुष्कवृक्षत्वचोपमम् ॥ ११ ॥ भूमौनिपतितंबालंदृष्ट्वाशीविषपीडितम् ॥ नरेंद्रलक्षणोपेतमचिंतयदसौनृपः ॥ १२ ॥

ति ॥ अस्यपुत्रशवस्यमुखोपरियद्वस्त्रंस्थितंतदाक्षिपत्आकर्षितवानित्यर्थः ॥ कीदृशःपुत्रोऽस्तीतिपरिज्ञानार्थमितिभावः ॥ ९ ॥ भार्येतिनाभिजानाति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १३ ॥ तरंगिणःकुटिलानित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ स्मृतिमभ्यागतइतिममैवायंपुत्रइतिस्वपुत्रस्मृतिर्जातेत्यर्थः ॥ १८ ॥ तथास्थितःस्त्रियंप्रतिनकिंचिदुवाचेत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ यस्यापध्यानादापतितंतद्रूपमित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ स्थानच्युतोराज्यभ्रष्टः ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रत्यभिज्ञायेति ॥ पूर्वानुभूतचिह्नज्ञानेनेत्यर्थः ॥ २५ ॥

अस्यपूर्णेंदुवद्वक्त्रंशुभमुन्नसमव्रणम् ॥ दर्पणप्रतिमोत्तुंगंकपोलयुगशोभितम् ॥ १३ ॥ नीलान्केशान्कुंचिताग्रान्त्सान्द्रान्दीर्घांस्तरंगिणः ॥ राजीवसदृशेनेत्रेओष्ठौबिंबफलोपमौ ॥ १४ ॥ विशालवक्षादीर्घाक्षोदीर्घबाहून्नतांसकः ॥ विशालपादोगंभीरःसूक्ष्मांगुल्यवनीधरः ॥ १५ ॥ मृणालपादोगंभीरनाभिरुद्धतकंधरः ॥ अहोकष्टंनरेंद्रस्यकस्याऽप्येषकुलेशिशुः ॥ १६ ॥ जातोनीतःकृतांतेनकालपाशाद्दुरात्मना ॥ सूतउवाच ॥ एवंदृष्ट्वाऽथतंबालंमातुरंकेप्रसारितम् ॥ १७ ॥ स्मृतिमभ्यागतोराजाहाहेत्यश्रूण्यपातयत् ॥ सोप्युवाचचवत्सोमेदशामेतामुपागतः ॥ १८ ॥ नीतोयदिचघोरेणकृतांतेनाऽऽत्मनोवशम् ॥ विचारयित्वाराजाऽसौहरिश्चंद्रस्तथास्थितः ॥ १९ ॥ ततोराज्ञीमहादुःखावेशादिदमभाषत ॥ राज्ञ्युवाच ॥ हावत्सकस्यपापस्यत्वपध्यानादिदंमहत् ॥ २० ॥ दुःखमापतितंघोरंतद्रूपंनोपलभ्यते ॥ हानाथराजन्भवतामामपास्यसुदुःखिताम् ॥ २१ ॥ कस्मिन्संस्थीयतेस्थानेविश्रब्धंकेनहेतुना ॥ राज्यनाशःसुहृत्त्यागोभार्यातनयविक्रयः ॥ २२ ॥ हरिश्चंद्रस्यराजर्षेःकिंविधातःकृतंत्वया ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वाराजास्थानच्युतस्तदा ॥ ॥ २३ ॥ प्रत्यभिज्ञायदेवींतांपुत्रंचनिधनंगतम् ॥ कष्टंममैवपत्नीयंबालकश्चाऽपिमेसुतः ॥ २४ ॥ ज्ञात्वापपातसंतप्तोमूर्च्छामतिजगामह ॥ साचतंप्रत्यभिज्ञायतामवस्थामुपागतम् ॥ २५ ॥ मूर्च्छितानिपपातार्तानिश्चेष्टाधरणीतले ॥ चेतनांप्राप्यराजेंद्रोराजपत्नीचतौसमम् ॥ २६ ॥ विलेपतुःसुसंतप्तौशोकभारेणपीडितौ ॥ राजोवाच ॥ हावत्ससुकुमारंतेवदनंकुंचितालकम् ॥ २७ ॥ पश्यतोमेमुखंदीनंहृदयंकिंनदीर्यते ॥ तातताततिमधुरंब्रुवाणंस्वयमागतम् ॥ २८ ॥ उपगुह्यैकदावक्ष्येवत्सवत्सेतिसौहृदात् ॥ कस्यजानुप्रणीतेनपिंगेनाक्षितिरेणुना ॥ २९ ॥ ममोत्तरीयमुत्संगंतथांगंमलमेष्यति॥ नवाऽलंममसंभूतंमनोहृदयनंदनं ॥ ३० ॥ "मयासिपितृमान्पित्राविक्रीतोयेनवस्तुवत् ॥ " गतंराज्यमशेषंमेसबांधवधनंमहत् ॥ " हीनदैवान्नृशंसेनदृष्टोमेतनयस्ततः ॥ " अहंमहाहिदष्टस्यपुत्रस्याऽऽननपंकजम् ॥ ३१ ॥ निरीक्षन्नद्यघोरेणविषेणाऽधिकृतोऽधुना ॥ एवमुक्त्वातमादायबालकंबाष्पगद्गदः ॥ ३२ ॥ परिष्वज्यचनिश्चेष्टोमूर्च्छयानिपपातह ॥ ततस्तंपतितंदृष्ट्वाशैब्याचैवमचिंतयम् ॥ ३३ ॥ अयंसपुरुषव्याघ्रःस्वरेणैवोपलक्ष्यते ॥ विद्वज्जनमनश्चंद्रोहरिश्चंद्रो नसंशयः ॥ ३४ ॥ तथाऽस्यनासिकातुंगातिलपुष्पोपमाशुभा ॥ दंताश्चमुकुलप्रख्याःख्यातकीर्तेर्महात्मनः ॥ ३५ ॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ वक्ष्येकिमितिशेषः ॥ २९ ॥ पुत्रसुखमद्यापिममनाऽलंसंभूतमित्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ घोरेणविषेणसंतापरूपेण ॥ ३२ ॥ शैब्यातस्यपत्नी ॥३३॥ अयंसं इति ॥ पूर्वसंदिग्धंज्ञानंजातमधुनातुनिश्चितंजातमित्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३६ ॥ अपतदितिलुङोरूपं पतितवतीत्यर्थः ॥ ३७॥ ३८ ॥ ३९ ॥४०॥ यस्यास्येति ॥ पूर्वभृत्यतांगतराजानःस्वोत्तरीयैर्लंबायमानैर्भूमिस्पृशैर्वस्त्रैः पादचारिणोऽग्रेधावमानाविरजस्कंमहीतलंकुर्वंति एतादृशंयस्यैश्वर्यमित्यर्थः ॥ ४१ ॥ कपालसंलग्नेनरकपालयुक्ते ॥ घटीपटनिरंतरेशवसंस्कारार्थमानीताअल्पघटाघट्यः शवपटाश्चतैर्निरंतरे निरवकाशेइत्यर्थः ॥ ॥ ४२ ॥ मृतानांनिर्माल्यसूत्रंतत्कंठगतपुष्पमालासंबंधितदंतस्तन्मध्येलग्नायेशवकेशास्तैःसुदारुणेभयंकरे ॥ वसानिष्पंदेनयुक्तंसंशुष्कंसूर्यकिरणैरेतादृशंखरंयन्महापटलंभूमेस्तेनमंडिते ॥ ॥ ४३ ॥ भस्मचांगाराश्चार्धदग्धशवाश्चाऽस्थीनिचमज्जाचतेषांसंघट्टःसंमर्दस्तेनभीषणे ॥ गृध्रगोमायूनांनादैरार्तेयुक्ते पुष्टाःक्षुद्रविहंगमामांसभक्षिणःकाकादयोयस्मिन् ॥ ४४ ॥ चिताधू

श्मशानमागतःकस्माद्यद्येवंसनरेश्वरः ॥ विहायपुत्रशोकंसापश्यंतीपतितंपतिम् ॥ ३६ ॥ प्रहृष्टाविस्मितादीनाभर्तृपुत्रार्तिपीडिता ॥ वीक्षंतीसातदाऽपतन्मूर्च्छयाधरणीतले ॥ ३७ ॥ प्राप्यचेतश्चशनकैःसागद्गदमभाषत ॥ धिक्त्वां दैवह्यकरुणनिर्मर्यादजुगुप्सित ॥ ३८ ॥ येनाऽयममरप्रख्योनीतोराजाश्वपाकताम् ॥ राज्यनाशंसुहृत्त्यागंभार्यातनयविक्रयम् ॥ ३९ ॥ प्रापयित्वापियेनाऽद्यचांडालोऽयंकृतोनृपः ॥ नाऽद्यपश्यामितेछत्रंसिंहासनमथाऽपिवा ॥ ४० ॥ चामरव्यजनेवाऽपिकोऽयंविधिविपर्ययः ॥ यस्याऽस्यव्रजतःपूर्वराजानोभृत्यतांगताः ॥ ४१ ॥ स्वोत्तरीयैःप्रकुर्वंतिविरजस्कंमहीतलम् ॥ सोऽयंकपालसंलग्नघटीपटनिरंतरे ॥ ४२ ॥ मृतनिर्माल्यसूत्रांतर्लग्नकेशसुदारुणे ॥ वसानिष्पंदसंशुष्कमहापटलमंडिते ॥ ४३ ॥ भस्मांगारार्धदग्धास्थिमज्जासंघट्टभीषणे ॥ गृध्रगोमायुनादार्तेपुष्टक्षुद्रविहंगमे ॥४४॥ चिताधूमायतपटनीलीकृतदिगंतरे ॥ कुणपास्वादनमुदासंप्रकृष्टनिशाचरे ॥ ॥ ४५ ॥ चरत्यमेध्येराजेंद्रःश्मशानेदुःखपीडितः ॥ एवमुक्त्वाऽथसंश्लिष्यकंठेराज्ञोनृपात्मजा ॥ ४६ ॥ कष्टंशोकसमाविष्टाविललापार्तयागिरा ॥ राजन्स्वप्नोऽथतथ्यंवायदेतन्मन्यतेभवान् ॥ ४७ ॥ तत्कथ्यतांमहाभागमनोवैमुह्यतेमम ॥ यद्येतदेवंधर्मज्ञनास्तिधर्मेसहायता ॥ ४८ ॥ तथैवविप्रदेवादिपूजनेसत्यपालने ॥ नास्तिधर्मःकुतःसत्यंनाऽऽर्जवंनाऽनृतांशता ॥ ४९ ॥ यत्रत्वंधर्मपरमःस्वराज्यादवरोपितः ॥ सूतउवाच ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वानिःश्वस्योष्णंसगद्गदः ॥ ५० ॥ कथयामासतन्वंग्यैयथाप्राप्तःश्वपाकताम् ॥ रुदित्वासातुसुचिरंनिःश्वस्योष्णंसुदुःखिता ॥ ५१ ॥ स्वपुत्रमरणंभीरुर्यथावत्तंन्यवेदयत् ॥ श्रुत्वाराजातथावाक्यंनिपपातमहीतले ॥ ५२ ॥ मृतपुत्रंसमानीयजिह्वयाविलिहन्मुहुः ॥ हरिश्चंद्रमथोप्राहशैब्यागद्गदयागिरा ॥ ५३ ॥ कुरुष्वस्वामिनःप्रेष्यंछेदयित्वाशिरोमम ॥ स्वामिद्रोहोनतेस्त्वद्यमाऽसत्योभवभूपते ॥ ५४ ॥ माऽसत्यंतवराजेंद्रपरद्रोहस्तुपातकम् ॥ एतदाकर्ण्यराजातुपपातभुविमूर्च्छितः ॥ ५५ ॥ क्षणेनचेतनांप्राप्यविललापातिदुःखितः ॥ राजोवाच ॥ कथंप्रियेत्वयाप्रोक्तंवचनंत्वतिनिष्ठुरम् ॥५६॥

मएवाऽऽयतःपटस्तेननीलीकृतंदिगंतरंयस्य ॥ कुणपानांशवानांयदास्वादनंभक्षणंतन्मुदासंप्रकृष्टाःसंसक्तानिशाचराराक्षसायस्मिन् ॥४५॥४६॥ यदेतन्मन्यतेइति ॥ चांडालदासोहमस्मीतियद्भवान्मन्यतेतत्स्वप्नोवामिथ्यावाउततथ्यंवेत्यर्थः ॥ ४७ ॥ यद्येतदेवंयदिवास्तविकीचांडालदासतेत्यर्थः ॥ ४८ ॥ यदिधर्मएवनास्तितदासत्यंकुतस्तदपिनास्तितथार्जवंतथानृतांशतापिनास्तीत्यर्थः ॥ धर्माधर्मयोःफलभेदेहितद्विभागस्तदभावेतद्विभागस्याऽप्यभावइतिभावः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पूजितागौरीत्यनेनपराशक्तेरुपासिकेयमस्तीतिबोधितम् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ मयाऽशितुंभोक्तुमित्यर्थः ॥ ५९ ॥ नात्मायत्तःस्वाधीनांतःकरणोयतोऽहंनास्मीत्यर्थः ॥ अननुज्ञातोनाज्ञप्तः ॥ ॥ ६० ॥६१॥ बलीयसादैवानुयोगेनममैकोपिपुत्रोमृतोऽतःप्राणैर्वियोजनेममवरम् ॥ परंतुपरायत्तोस्मिचांडालायत्तोस्मि ततस्तस्यानुज्ञामंतरेणदेहत्यागेतस्यऋणस्यावशेषान्नरकदुःखंस्या दितिभावः ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इत्थंपूर्वंविमृश्यनरकदुःखादपिपुत्रशोकोदुःसहइतिमत्वापुनराह । तथापीति ॥ ६४ ॥ तदेवोपपादयति । त्रैलोक्येइति ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

यदशक्यंभवेद्भक्तुंतत्कर्मक्रियतेकथम् ॥ पत्न्युवाच ॥ मयाचपूजितागौरीदेवाविप्रास्तथैवच ॥ ५७ ॥ भविष्यसिपतिस्त्वंमेह्यन्यस्मिञ्जन्मनिप्रभो ॥ श्रुत्वाराजातदावाक्यंनिपपातमहीतले ॥ ५८ ॥ मृतस्यपुत्रस्यतदाचुचुंबदुःखितोमुखम् ॥ राजोवाच ॥ प्रियेनरोचतेदीर्घकालंक्लेशंमयाऽशितुम् ॥ ५९ ॥ नात्मायत्तोऽहंतन्वंगिपश्यमेमंदभाग्यताम् ॥ चांडालेनाऽननुज्ञातःप्रवेक्ष्येज्वलनंयदि ॥ ६० ॥ चांडालदासतांयास्येपुनरप्यन्यजन्मनि ॥ नरकंचवरंप्राप्यखेदंप्राप्स्यामिदारुणम् ॥ ६१ ॥ तापंप्राप्स्यामिसंप्राप्यमहारौरवरौरवे ॥ मग्नस्यदुःखजलधौवरंप्राणैर्वियोजनम् ॥ ६२ ॥ एकोऽपिबालकोयोऽयमासीद्वंशकरःसुतः ॥ ममदैवानुयोगेनमृतःसोऽपिबलीयसा ॥ ६३ ॥ कथंप्राणान्विमुंचामिपरायत्तोऽस्मिदुर्गतः ॥ तथापिदुःखबाहुल्यात्त्यक्ष्यामितुनिजांतनुम् ॥ ६४ ॥ त्रैलोक्येनाऽस्तितद्दुःखंनाऽसिपत्रवनेतथा ॥ वैतरिण्यांकुतस्तद्वद्यादृशंपुत्रविप्लवे ॥ ६५ ॥ सोऽहंसुतशरीरेणदीप्यमानेहुताशने ॥ निपतिष्यामितन्वंगिक्षंतव्यंतन्ममाऽधुना ॥ ६६ ॥ नवक्तव्यंत्वयाकिंचिदतःकमललोचने ॥ ममवाक्यंचतन्वंगिनिबोधाऽऽहतमानसा ॥६७॥ अनुज्ञाताऽथगच्छत्वंविप्रवेश्मशुचिस्मिते ॥ यदिदत्तंयदिहुतंगुरवोयदितोषिताः ॥ ६८॥ संगमःपरलोकेमेनिजपुत्रेणचत्वया ॥ इहलोकेकुतस्त्वेतद्भविष्यतिसमीप्सितम् ॥ ६९ ॥ यन्मयाहसतांकिंचिद्रहसित्वांशुचिस्मिते ॥ अशेषमुक्तंतत्सर्वंक्षंतव्यंममयास्यतः ॥ ७० ॥ राजपत्नीतिगर्वेणनाऽवज्ञेयःसमद्विजः ॥ सर्वयत्नेनतोष्यःस्यात्स्वामीदैवतवच्छुभे ॥ ७१ ॥ राज्ञ्युवाच ॥ अहमप्यत्रराजर्षेनिपतिष्येहुताशने ॥ दुःखभारासहादेवसहयास्यामिवैत्वया ॥ ७२ ॥ त्वयासहममश्रेयोगमनंनाऽन्यथाभवेत् ॥ सहस्वर्गंचनरकंत्वयाभोक्ष्यामिमानद ॥ ७३ ॥ श्रुत्वाराजातदोवाचएवमस्तुपतिव्रते ॥ इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणेसप्तमस्कंधेहरिश्चंद्रोपाख्यानेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥सूतउवाच ॥ ततःकृत्वाचितांराजाआरोप्यतनयंस्वकम् ॥ भार्ययासहितोराजावद्धांजलिपुटस्तदा ॥ १ ॥ चिंतयन्परमेशानींशताक्षींजगदीश्वरीम् ॥ पंचकोशांतरगतांपुच्छब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥ २ ॥ रक्तांबरपरीधानांकरुणारससागराम् ॥ नानायुधधरामंबांजगत्पालनतत्पराम् ॥ ३ ॥

॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेहरिश्चंद्रोपाख्यानेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ द्व्यधिकैश्चैवचत्वारिंशद्भिःपद्यैरतःपरम् ॥ हरिश्चंद्रस्वर्गवासोविस्तरेणोपवर्ण्यते ॥१॥ राज्ञास्वदेहदहननिश्चयेकृतेऽनंतरंजातंवृत्तमाह । ततःकृत्वेति ॥१॥ तस्मिन्समयेस्वेष्टदेवतांशताक्षींचिंतयामासेत्याह । चिंतयन्निति ॥ पुच्छब्रह्मस्वरूपिणींब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठेतितैत्तिरीयश्रुतिप्रतिपादितपुच्छब्रह्मरूपिणीमित्यर्थः ॥ २ ॥ नानायुधेति । तानिचायुधानिवक्ष्यमाणाध्यायेस्पष्टानि ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





धर्मधर्माभिमानिनींदेवताम् ॥ तस्यचिंतयमानस्येत्यनेनत्वरान्विताइत्यनेनचेदंबोधितंपरमेश्वरीभक्तस्यछलेकृतेशतधामूर्धच्छेदःस्यादितिशीघ्रंतस्यप्रसादःसंपादयितव्यइति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ॥६॥ विश्वामित्रशब्दार्थमाह । विश्वत्रयेणेति ॥ विश्वंमित्रंयस्यविश्वामित्रइत्यर्थः ॥ धार्मिकजनानांनित्यमित्रत्वमयमिच्छतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

तस्यचिंतयमानस्यसर्वेदेवाःसवासवाः ॥ धर्मप्रमुखतःकृत्वासमाजग्मुस्त्वरान्विताः ॥ ४ ॥ आगत्यसर्वेप्रोचुस्तेराजञ्छृणुमहाप्रभो ॥ अहंपितामहःसाक्षाद्धर्मश्चभगवान्स्वयम् ॥ ५ ॥ साध्याःसविश्वेमरुतोलोकपालाःसचारणाः ॥ नागाःसिद्धाःसगंधर्वारुद्राश्चैवतथाऽश्विनौ ॥ ६ ॥ एतेचाऽन्येऽथवहवोविश्वामित्रस्तथैवच ॥ विश्वत्रयेणयोमैत्रींकर्तुमिच्छतिधर्मतः ॥ ७ ॥ विश्वामित्रःसतेऽभीष्टमाहर्तुंसम्यगिच्छति ॥ धर्मउवाच ॥ माराजन्साहसंकार्षीर्धर्मोऽहंत्वामुपागतः ॥ ८ ॥ तितिक्षादमसत्त्वाद्यैस्त्वद्गुणैःपरितोषितः ॥ इंद्रउवाच ॥ हरिश्चंद्रमहाभागप्राप्तःशक्रोऽस्मितेंतिकम् ॥ ९ ॥ त्वयाऽद्यभार्यापुत्रेणजितालोकास्सनातनाः ॥ आरोहत्रिदिवंराजन्भार्यापुत्रसमन्वितः ॥ १० ॥ सुदुष्प्रापंनरैरन्यैर्जितमात्मीयकर्मभिः ॥ सूतउवाच ॥ ततोऽमृतमयंदर्षमपमृत्युविनाशनम् ॥ ११ ॥ इंद्रःप्रासृजदाकाशाच्चितामध्यगतेशिशौ ॥ पुष्पवृष्टिश्चमहतीदुंदुभिस्वनएवच ॥ १२ ॥ समुत्तस्थौमृतःपुत्रोराज्ञस्तस्यमहात्मनः ॥ सुकुमारतनुःस्वस्थःप्रसन्नःप्रीतमानसः ॥ १३ ॥ ततोराजाहरिश्चंद्रःपरिष्वज्यसुतंतदा ॥ सभार्यःस्वश्रियायुक्तोदिव्यमाल्यांबरावृतः ॥ ॥ १४ ॥ स्वस्थःसंपूर्णहृदयोमुदापरमयावृतः ॥ बभूवतत्क्षणादिंद्रोभूपंचैवमभाषत ॥ १५ ॥ सभार्यस्त्वंसपुत्रश्चस्वर्लोकंसद्गतिंपराम् ॥ समारोहमहाभागनिजानांकर्मणांफलम् ॥ १६ ॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥ देवराजाननुज्ञातःस्वामिनाश्वपचेनहि ॥ अकृत्वानिष्कृतिंतस्यनारोक्ष्येवैसुरालयम् ॥ १७ ॥ ॥ धर्मउवाच ॥ तवैवंभाविनंक्लेशमवगम्याऽऽत्ममायया ॥ आत्माश्वपाकतांनीतोदर्शितंतच्चपक्वणम् ॥ १८ ॥ इंद्रउवाच ॥ प्रार्थ्यतेयत्परंस्थानंसमस्तैर्मनुजैर्भुवि ॥ तदारोहहरिश्चंद्रस्थानंपुण्यकृतांनृणाम् ॥ १९ ॥ हरिश्चंद्रउवाच॥ देवराजनमस्तुभ्यंवाक्यंचेदंनिबोधमे ॥ मच्छोकमग्नमनसःकोसलेनगरेनराः ॥ २० ॥ तिष्ठंतितानपास्यैवंकथंयास्याम्यहंदिवम् ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंगोवधःस्त्रीवधस्तथा ॥ २१ ॥ तुल्यमेभिर्महत्पापंभक्तत्यागादुदाहृतम् ॥ भजंतंभक्तमत्याज्यंत्यजतःस्यात्कथंसुखम् ॥ २२ ॥ तैर्विनानप्रयास्यामितस्माच्छक्रदिवंव्रज ॥ यदितेसहिताःस्वर्गंमयायांतिसुरेश्वर ॥ २३ ॥ ततोऽहमपियास्यामिनरकंवापितैःसह ॥ इंद्रउवाच ॥ बहूनिपुण्यपापानितेषांभिन्नानिवैनृप ॥ २४ ॥

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ तवैवंभाविनमिति ॥ तवधर्मपरीक्षार्थंमयाधर्मेणात्ममाययास्वमाययास्वात्मैवश्वपाकतांनीतइत्यर्थः ॥ अहमेवचांडालोऽहमेवचसब्राह्मणःकृष्णसर्पश्चनमत्तोऽतिरिक्ताश्चांडालब्राह्मणसर्पाःसंतीतिभावः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

भुंक्तेशक्रेति॥ प्रकृतेःपौरवर्गस्य ॥ २५ ॥ तेषांप्रभावेनैवाऽयंममधर्मश्चलितोऽस्ति । तथाच तानुपदादान्राजद्रव्यदातॄन्नसंत्यक्ष्ये तैःसहैवस्वर्गंगमिष्यामीत्यर्थः ॥ २६ ॥ किंचतेषांलोकानांपुण्यंस्वर्गप्रापकंनास्तीतिवदसिचेन्मयायत्पुण्यंकृतंतदेतेषामस्त्वित्याह। तस्माद्यन्ममेति ॥ २७ ॥ ननुत्वयैकेनतत्पुण्यंभोक्ष्यतेचेद्बहुकालंभोगायभवति तैःसहभुज्यतेचेत्पुण्यस्यविभागादेकदिनंभोगायैवतद्भविष्यतीतिचेदिष्टापत्तिरित्याह । बहुकालोपेति ॥२८ ॥ २९ ॥ गत्वेति । तेसर्वेधर्मादयोयोध्यायांतस्मिन्नेवक्षणेकाशीतोगत्वानगरस्थान्लोकान्स्वर्गगमनायाऽऽह

कथंसंघातभोज्यंत्वंभूपस्वर्गमभीप्ससि ॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥ भुंक्तेशक्रनृपोराज्यंप्रभावात्प्रकृतेर्ध्रुवम् ॥ २५ ॥ यजतेचमहायज्ञैःकर्मपूर्तंकरोतिच ॥ तच्चतेषांप्रभावेणमयासर्वमनुष्ठितम् ॥ २६ ॥ उपदादान्नसंत्यक्ष्येतानहंस्वर्गलिप्सया ॥ तस्माद्यन्ममदेवेशकिंचिदस्तिसुचेष्टितम् ॥ २७ ॥ दत्तमिष्टमथोजप्तंसामान्यंतैस्तदस्तुनः ॥ बहुकालोपभोज्यंचफलंयन्ममकर्मगम् ॥ २८ ॥ तदस्तुदिनमप्येकंतैःसमंत्वत्प्रसादतः ॥ सूतउवाच ॥ एवंभविष्यतीत्युक्त्वाशक्रस्त्रिभुवनेश्वरः ॥२९॥ प्रसन्नचेताधर्मश्चविश्वामित्रश्चगाधिजः ॥ गत्वातुनगरंसर्वेचातुर्वर्ण्यसमाकुलम् ॥ ३० ॥ हरिश्चंद्रस्यनिकटेप्रोवाचविबुधाधिपः॥ आगच्छंतुजनाःशीघ्रंस्वर्गलोकंसुदुर्लभम् ॥ ३१ ॥ धर्मप्रसादात्संप्राप्तंसर्वैर्युष्माभिरेवतु ॥ हरिश्चंद्रोऽपितान्सर्वाञ्जनान्नगरवासिनः ॥ ३२ ॥ प्राहराजाधर्मपरोदिवमारुह्यतामिति ॥ सूतउवाच ॥ तदिंद्रस्यवचःश्रुत्वाप्रीतास्तस्यचभूपतेः ॥३३ ॥ येसंसारेषुनिर्विण्णास्तेधुरंस्वसुतेषुवै ॥ कृत्वाप्रहृष्टमनसोदिवमारुरुहुर्जनाः ॥ ३४ ॥ विमानवरमारूढाःसर्वेभास्वरविग्रहाः ॥ तदासंभूतहर्षास्तेहरिश्चंद्रश्चपार्थिवः ॥ ३५ ॥ राज्येऽभिषिच्यतनयंरोहिताख्यंमहामनाः ॥ अयोध्याख्येपुरेरम्येहृष्टपुष्टजनान्विते ॥३६॥ तनयंसुहृदश्चापिप्रतिपूज्याऽभिनंद्यच ॥ पुण्येनलभ्यांविपुलांदेवादीनांसुदुर्लभाम् ॥ ३७ ॥ संप्राप्यकीर्तिमतुलांविमानेसमहीपतिः ॥ आसांचक्रेकामगमेक्षुद्रघंटाविराजिते ॥ ३८ ॥ ततस्तर्हिसमालोक्यश्लोकमंत्रंतदाजगौ ॥ दैत्याचार्योमहाभागःसर्वशास्त्रार्थतत्ववित् ॥ ३९ ॥ शुक्रउवाच ॥ अहोतितिक्षामाहात्म्यमहोदानफलंमहत् ॥ यदागतोहरिश्चंद्रोमहेंद्रस्यसलोकताम् ॥ ४० ॥ सूतउवाच ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंहरिश्चंद्रस्यचेष्टितम् ॥ यःशृणोतिचदुःखार्तःससुखंलभतेऽन्वहम् ॥ ४१ ॥ स्वर्गार्थीप्राप्नुयात्स्वर्गंसुतार्थीसुतमाप्नुयात् ॥ भार्यार्थीप्राप्नुयाद्भार्यांराज्यार्थीराज्यमाप्नुयात् ॥ ४२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेहरिश्चंद्रोपाख्यानेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ जनमेजयउवाच ॥ विचित्रमिदमाख्यानंहरिश्चंद्रस्यकीर्तितम् ॥ शताक्षीपादभक्तस्यराजर्षेर्धार्मिकस्यच ॥ १ ॥

यामासुरितिशेषः ॥ दूतप्रेषणेविलंबःस्यादितितएवयोगिनोगताइतिभावः ॥ ३० ॥ योगशक्त्यैवतैर्नगरवासिनोप्यानीताइत्याह आगच्छंत्विति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥ त्र्यशीतिश्लोकवर्यैस्तुशताक्षीमहिमातुलः॥ कथ्यतेस्पष्टतायत्रवात्सल्यस्यमहेशितुः ॥ १ ॥ पूर्वोक्ताख्यानंसंस्तुत्य प्रष्टव्यंपृच्छति । विचित्रमिदमिति ॥ १ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





साशताक्षीकस्मात्कारणाज्जातेत्याह । शताक्षीसेति ॥ २ ॥ शुद्धधीरिति ॥ यद्यप्यशुद्धबुद्धिर्देवीगुणश्रवणेतृप्तिंयास्यतितथापिशुद्धधीस्तृप्तिंकोयास्यतिनकोपीत्यर्थः ॥ तदुक्तमुमासंहितायाम्॥कोविरज्येतमतिमान्गुणश्रवणकर्मणि॥श्रीमातुर्ज्ञानिनोनित्यंयंत्यजंतिकदापिनेति॥यस्याभगवत्यागुणश्रवणेमहाफलंभवतितस्यागुणश्रवणंकोनकुर्यादित्याह। पदेपदेइति ॥३॥४॥ ॥ ५ ॥ देवानांत्विति ॥ वेदेहिसातितदुक्तशस्त्रास्त्रैरस्मान्हिंसांतीकिंच तदुक्तमंत्रैर्मुनिभिर्होमादिकेक्रियमाणेतद्धविर्भक्षणेन्यदेवानांपुष्टिभवतीतिदेवानांबलंवेदइतियुक्तमेवेति ॥ विधेयेतावदवतदिति ॥ यतएवंतत्तस्मात्कारणाद्देवनाशार्थंतावदेववेदनाशपर्यंतमेवविधेयंनान्योपायांतरोपयोगोऽत्राऽस्तीत्यर्थः ॥६॥ इतिमनसिविमृश्यवेददातुराराधनादेतत्कार्यंभविष्यतीतितस्यारा

शताक्षीसाकुतोजातादेवीभगवतीशिवा ॥ तत्कारणंवदमुनेसार्थकंजन्ममेकुरु ॥ २ ॥ कोहिदेव्यागुणाञ्छृण्वंस्तृप्तिंयास्यतिशुद्धधीः ॥ पदेपदेऽश्वमेधस्य फलमक्षय्यमश्नुते ॥ ३ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिशताक्षीसंभवंशुभम् ॥ तवाऽवाच्यंनमेकिंचिद्देवीभक्तस्यविद्यते ॥ ४ ॥ दुर्गमाख्योमहादैत्यःपूर्वंपरमदारुणः ॥ हिरण्याक्षान्वयेजातोरुरुपुत्रोमहाखलः ॥ ५ ॥ देवानांतुबलंवेदोनाशितस्यसुराअपि ॥ नंक्ष्यंत्येवनसंदेहोविधेयंतावदेवतत् ॥ ॥ ६ ॥ विमृश्यैतत्तपश्चर्यांगतःकर्तुंहिमालये ॥ ब्रह्माणंमनसाध्यात्वावायुभक्षोव्यतिष्ठत ॥ ७ ॥ सहस्रवर्षपर्यंतंचकारपरमंतपः ॥ तेजसातस्यलोकास्तुसंतप्ताःससुरासुराः ॥ ८ ॥ ततःप्रसन्नोभगवान्हंसारूढश्चतुर्मुखः ॥ ययौतस्मैवरंदातुंप्रसन्नमुखपंकजः ॥ ९ ॥ समाधिस्थंमीलिताक्षंस्फुटमाहचतुर्मुखः ॥ वरंवरयभद्रंतेयस्तेमनसिवर्तते ॥ १० ॥ तवाऽद्यतपसातुष्टोवरदेशोऽहमागतः ॥ श्रुत्वाब्रह्ममुखाद्वाणींव्युत्थितःससमाहितः ॥ ११ ॥ पूजयित्वावरंवव्रेवेदान्देहिसुरेश्वर ॥ त्रिषुलोकेषुयेमंत्राब्राह्मणेषुसुरेष्वपि ॥ १२ ॥ विद्यंतेतेतुसान्निध्येममसंतुमहेश्वर ॥ बलंचदेहियेनस्याद्देवानांचपराजयः ॥ १३ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वातथाऽस्त्वितिवचोवदन् ॥ जगामसत्यलोकंतुचतुर्वेदेश्वरःपरः ॥ १४ ॥ ततःप्रभृतिविप्रैस्तुविस्मृतावेदराशयः ॥ स्नानसंध्यानित्यहोमश्राद्धयज्ञजपादयः ॥ १५ ॥ विलुप्ताधरणीपृष्ठेहाहाकारोमहानभूत् ॥ किमिदंकिमिदंचेतिविप्राऊचुःपरस्परम् ॥ १६ ॥ वेदाभावात्तदस्माभिःकर्तव्यंकिमतःपरम् ॥ इतिभूमौमहानर्थेजातेपरमदारुणे ॥ १७ ॥ निर्जराःसजराजाताहविर्भागाद्यभावतः ॥ रुरोधसतदादैत्योनगरीममरावतीम् ॥ १८ ॥ अशक्तास्तेनतेयोद्धुंवज्रदेहासुरेणच ॥ पलायनंतदाकृत्वानिर्गतानिर्जराःक्वचित् ॥ १९ ॥

धनंकर्तव्यमितिमत्वातदाराधनंकर्तुंगतइत्याह । विमृश्यैतादिति ॥७॥ ८ ॥ हंसारूढोययावित्यन्वयः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ सान्निध्येममसंत्विति ॥ ममैवनिकटेसर्वे वेदाःसंतु ॥ एकोऽपिवेदमंत्रोदेवब्राह्मणादीनांसमीपेमास्त्वित्यर्थः ॥ किंचबलमप्यतुलंदेहीत्याह । बलंचेति ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ किमिदमिति ॥ इदंकिंजातमिदंकिंजातमित्यर्थः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ निर्जरेषुदेवेषुसजरेषुनिर्बलेषुजातेषुसदैत्योनगरीममरावतींरुरोधेत्याह । निर्जराइति॥१८॥तेनदैत्येनतेदेवायोद्धुमशक्ताइत्यर्थः॥वज्रसदृशोऽभेद्योयस्यदेहस्तेनाऽसुरेणेत्यर्थः॥१९॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

रत्नसानुःसुमेरुः ॥ निलयंस्थानंसंस्थिताइत्यन्वयः ॥ २० ॥ वृष्ट्यभावइति ॥ अग्नौप्रास्ताहुतिःसम्यगादित्यमुपतिष्ठते ॥ आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाइतिस्मृतेर्वृष्टिकारणहोमाभावेवृष्टेरप्यभावइत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ गृहेगृहेइति ॥ येमनुष्यामृतास्तान्श्मशानंनेतुंमनुष्यानमिलंतिततःशवानिगृहेएवस्थितानीत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ देवींप्रार्थयंति । दयांकुर्विति ॥ नैतच्छ्लाघ्यमिति ॥ पामरेष्वेतादृशः कोपोनयुक्तइत्यर्थः ॥ २६ ॥ ननुयुष्माभिःपातकंकृतमतःक्रोधोममोत्पन्नइतिचेत्पातककर्त्रीकारयित्रीचत्वमेवनाऽस्माकमपराधोऽस्ति॥ यतस्त्वमंतर्यामिरूपिणीत्याह । त्वयेति ॥२७॥ त्वांसर्वेश्वरींविहायान्यागतिर्नास्तीत्याह ।नाऽन्येति॥ अन्येदेवादयोहोमजपाद्यनुष्ठानैरेवफलंप्रयच्छंति तदत्रमंत्राभावप्रयुक्तहोमजपाद्यभा

निलयंगिरिदुर्गेषुरत्नसानुगुहासुच ॥ संस्थिताःपरमांशक्तिंध्यायंतस्तेपरांबिकाम् ॥ २० ॥ अग्नौहोमाद्यभावात्तुवृष्ट्यभावोऽप्यभून्नृप ॥ वृष्टेरभावेसंशुष्कंनिर्जलंचापिभूतलम् ॥ २१ ॥ कूपवापीतडागाश्चसरितःशुष्कतांगताः ॥ अनावृष्टिरियंराजन्नभूच्चशतवार्षिकी ॥ २२ ॥ मृताःप्रजाश्चबहुधागोमहिष्यादयस्तथा ॥ गृहेगृहेमनुष्याणामभवच्छवसंग्रहः ॥ २३ ॥ अनर्थेत्वेवमुद्भूतेब्राह्मणाःशांतचेतसः ॥ गत्वाहिमवतःपार्श्वेरिराधयिषवःशिवाम् ॥ २४ ॥ समाधिध्यानपूजाभिर्देवींतुष्टुवुरन्वहम् ॥ निराहारास्तदासक्तास्तामेवशरणंययुः ॥ २५ ॥ दयांकुरुमहेशानिपामरेषुजनेषुहि ॥ सर्वापराधयुक्तेषुनैतच्छ्लाघ्यंतवांबिके ॥ २६ ॥ कोपंसंहरदेवेशिसर्वांतर्यामिरूपिणि ॥ त्वयायथाप्रेर्यतेयंकरोतिसतथाजनः ॥ २७ ॥ नाऽन्यागतिर्जनस्याऽस्त्यंबिकेपश्यसिपुनःपुनः ॥ यथेच्छसितथाकर्तुंसमर्थासिमहेश्वरि॥ २८॥समुद्धरमहेशानिसंकटात्परमोत्थितात् ॥ जीवनेनविनाऽस्माकंकथंस्यात्स्थितिरंबिके ॥ २९ ॥ प्रसीदत्वंमहेशानिप्रसीदजगदंबिके ॥ अनंतकोटिब्रह्मांडनायिकेतेनमोनमः ॥ ३० ॥ नमःकूटस्थरूपायैचिद्रूपायैनमोनमः ॥ नमोवेदांतवेद्यायैभुवनेश्यैनमोनमः ॥ ३१ ॥ नेतिनेतीतिवाक्यैर्यावोध्यतेसकलागमैः ॥ तांसर्वकारणांदेवींसर्वभावेनसन्नताः ॥ ३२ ॥ इतिसंप्रार्थितादेवीभुवनेशीमहेश्वरी ॥ अनंताक्षिमयंरूपंदर्शयामासपार्वती ॥ ३३ ॥ नीलांजनसमप्रख्यंनीलपद्मायतेक्षणम् ॥ सुकर्कशसमोत्तुंगवृत्तपीनघनस्तनम् ॥ ३४ ॥ बाणमुष्टिंचकमलंपुष्पपल्लवमूलकान् ॥ शाकादीन्फलसंयुक्ताननंतरससंयुतान् ॥ ३५ ॥ क्षुत्तृड्जरापहान्हस्तैर्बिभ्रतीचमहाधनुः ॥ सर्वसौंदर्यसारंतद्रूपंलावण्यशोभितम् ॥ ३६ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशंकरुणारससागरम् ॥ दर्शयित्वाजगद्धात्रीसानंतनयनोद्भवाः ॥ ३७ ॥

वात्तत्कृतानुग्रहस्याप्यसंभवः ॥ त्वंतुस्मरणमात्रेणैववालकेजननीवत्सर्वमातृत्वाद्दयांकरोषिततस्त्वदन्यागतिर्नास्तीतिभावः ॥ २८ ॥ जीवनेनाविनाजलेनाविनेत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ सकलागमैःसकलैर्वेदैर्नेतिनेतीतिसर्वनिषेधावधित्वेनयाबोध्यतइत्यर्थः ॥ ३२ ॥ इत्थंसंप्रार्थितामुवनेश्वरीबहून्यक्षीणिशरीरेकृत्वास्वरूपंदर्शयामासेत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ एकस्यांमुष्टौबाणानेकस्मिन्हस्तेकमलम् । एकस्मिन्हस्तेपुष्पादिकमेकस्मिन्धनुर्बिभर्तीत्यर्थः ॥ दक्षाधोहस्तादिवामाधोहस्तपर्यंतमायुधध्यानम्॥३५॥३६॥सादेवीअनंतनयनोद्भवाबहुनयनोद्भवावारिधारामोचयामासेत्यन्वयः ॥ ३७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३८ ॥ ननुनेत्रेभ्यःकुतोजलमागतमितिचेल्लोकान्दुःखितान्दृष्ट्वाजगन्मातुः कारुण्यवशाद्रोदनमागतंतद्वशादित्याह । दुःखितानिति ॥ नवरात्रपर्यंतंभगवत्यानेत्रेभ्योऽश्रूणिच्युतानिते भ्यःसर्वजगत्तप्तंसजलंजातमित्यहोकियत्पर्यंतंजनवात्सल्यंवर्णनीयंभगवत्याइतिभावः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ सुरसहिताविप्रामिलित्वेत्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ शताक्षीत्वमिति ॥ अद्याऽऽरभ्यशताक्षीतितवनामभवत्वित्यर्थः॥इत्थंभगवतीकृपयासजलेलोकेजातेपिवीजौषधीनांदग्धत्वात्भक्षणीयपदार्थाभावात्क्षुधाविष्टाःपुनःप्रार्थयंतेक्षुधयापीडिताइति ॥४४॥किंचवेदान पिदेहीत्याहुः । वेदानप्याहरेति॥४५॥मनुष्यभोज्यानिमनुष्येभ्यःपश्वादिभोज्यानिपश्वादिभ्योददावित्यर्थः॥४६॥कियत्कालपर्यंतंपूर्तिकरमन्नंश्रीभगवत्यापूरितमितिचेत्तत्राह । आनवीनो

मोचयामासलोकेषुवारिधाराःसहस्रशः॥ नवरात्रंमहावृष्टिरभून्नेत्रोद्भवैर्जलैः ॥ ३८ ॥ दुःखितान्वीक्ष्यसकलान्नेत्राश्रूणिविमुञ्चती ॥ तर्पितास्तेनतेलोका ओषध्यःसकलाअपि॥ ३९ ॥ नदीनदप्रवाहास्तैर्जलैःसमभवन्नृप ॥ निलीयसंस्थिताःपूर्वंसुरास्तेनिर्गतावहिः ॥ ४० ॥ मिलित्वाससुराविप्रादेवींसमभि तुष्टुवुः ॥ नमोवेदांतवेद्येतेनमोब्रह्मस्वरूपिणि ॥ ४१ ॥ स्वमाययासर्वजगद्विधात्र्यैतेनमोनमः ॥ भक्तकल्पद्रुमेदेविभक्तार्थदेहधारिणि ॥ ४२॥ नित्य तृप्तेनिरुपमेभुवनेश्वरितेनमः॥ अस्मच्छांत्यर्थमतुलंलोचनानांसहस्रकम् ॥ ४३ ॥ त्वयायतोधृतंदेविशताक्षीत्वंततोभव॥ क्षुधयापीडितामातःस्तोतुंश क्तिर्नचाऽस्तिनः ॥ ४४ ॥ कृपांकुरुमहेशानिवेदानप्याहरांबिके॥ व्यासउवाच ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वाशाकान्स्वकरसंस्थितान् ॥४५॥ स्वादूनिफलमू लानिभक्षणार्थंददौशिवा ॥ नानाविधानिचान्नानिपशुभोज्यानियानिच ॥ ४६ ॥ काम्यानंतरसैर्युक्तान्यानवीनोद्भवंददौ ॥ शाकंभरीतिनामाऽपितद्दिना त्समभून्नृप ॥ ४७ ॥ ततःकोलाहलेजातेदूतवाक्येनबोधितः ॥ ससैन्यःसायुधोयोद्धुंदुर्गमाख्योऽसुरोययौ ॥ ४८ ॥ सहस्राक्षौहिणीयुक्तःशरान्मुंचंस्त्व रान्वितः ॥ रुरोधदेवसैन्यंतद्यद्देव्यग्रेस्थितंपुरा ॥ ४९ ॥ तथाविप्रगणंचैवरोधयामाससर्वतः ॥ ततःकिलकिलाशब्दःसमभूद्देवमंडले ॥ ५० ॥ त्राहित्रा हीतिवाक्यानिप्रोचुःसर्वेद्विजामराः॥ ततस्तेजोमयंचक्रंदेवानांपरितःशिवा॥ ५१॥ चकाररक्षणार्थायस्वयंतस्माद्बहिःस्थिता॥ततःसमभवद्युद्धंदेव्यादैत्य स्यचोभयोः॥५२ ॥ शरवर्षसमाच्छन्नसूर्यमंडलमद्भुतम् ॥ परस्परशरोद्धर्षसमुद्भूताग्निसुप्रभम् ॥ ५३ ॥ कठोरज्याटणत्कारबधिरीकृतदिक्तटम्॥ततो देवीशरीरात्तुनिर्गतास्तीव्रशक्तयः ॥ ५४ ॥ कालिकातारिणीबालात्रिपुराभैरवीरमा ॥ बगलाचैवमातंगीतथात्रिपुरसुंदरी ॥ ५५ ॥

द्भवमिति ॥ वृष्ट्युत्तरंयावन्नवीनमन्नंभवतितावत्कालपर्यंतमित्यर्थः॥शाकैर्भरणात्पोषणाच्छाकंभरीतिनाम॥४७॥४८॥देव्यग्रस्थंदेवसैन्यंविप्रगणंचस्वसैन्येनरोधयामासेत्यर्थः॥४९॥५०॥ देवानांब्राह्मणानांचपरितः समंतात्तेजोमयंचक्रमग्निप्राकाररक्षणायचक्रेइत्यर्थः ॥ स्वयंतुतस्मादग्निप्राकाराद्बहिर्युद्धार्थंसंस्थिताऽऽसीत् ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ शरवर्षेणसमाच्छन्नंसूर्यमंडलंयास्मि न्परस्परं शराणांयउद्धर्षोवर्षणंतेनसमुद्भूतोयोग्निस्तेनसुप्रभम् शरवर्षेणसूर्येणआच्छादितेतदग्निप्रकाशेनैवयुद्धमभवदित्यर्थः ॥ ५३ ॥ कठोरःकर्कशोयोज्याटणत्कारस्तेनबधिरीकृतं दिक्तटंयस्मिन् ॥ ५४ ॥ ५५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दशसाहस्रबाहुकेतिगुह्यकाल्याविशेषणम् ॥ पंचसहस्रहस्तेषुवाणाःपंचसहस्रहस्तेषुधनूंषीत्यादिकंतस्याध्यानंमहाकालसंहितायांस्पष्टम् ॥ ५६ ॥ द्वात्रिंशच्छक्तयश्चतुःषष्टिशक्तयश्चप्रपंच सारेभुवनेश्वरीपटलेशारदायांचभूतलिपिपटलेस्पष्टाः ॥ ५७ ॥५८ ॥ ५९ ॥ रक्तवाहिनीनदी ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ तेषांवाणानांविभागमाह । चतुर्भिरिति ॥६५॥

कामाक्षीतुलजादेवीजंभिनीमोहिनीतथा ॥ छिन्नमस्तागुह्यकालीदशसाहस्रबाहुका ॥ ५६ ॥ द्वात्रिंशच्छक्तयश्चाऽन्याश्चतुःषष्टिमिताःपराः ॥ असंख्यातास्ततोदेव्यःसमुद्भूतास्तुसायुधाः ॥ ५७ ॥ मृदंगशंखवीणादिनादितंसंगरस्थलम् ॥ शक्तिभिर्दैत्यसैन्येतुनाशितेऽक्षौहिणीशते ॥ ५८ ॥ अग्रेसरः समभवद्दुर्गमोवाहिनीपतिः ॥ शक्तिभिःसहयुद्धंचचकारप्रथमंरिपुः ॥ ५९ ॥ महद्युद्धंसमभवद्यत्राऽभूद्रक्तवाहिनी ॥ अक्षौहिण्यस्तुताःसर्वाविनष्टादशभिर्दिनैः॥ ६० ॥ ततएकादशेप्राप्तेदिनेपरमदारुणे ॥ रक्तमाल्यांबरधरोरक्तगंधानुलेपनः ॥ ६१ ॥ कृत्वोत्सवंमहांतंतुयुद्धायरथसंस्थितः ॥ संरंभेणैव महताशक्तीःसर्वाविजित्यच ॥ ६२ ॥ महादेवीरथाग्रेतुस्वरथंसंन्यवेशयत् ॥ ततोऽभवन्महद्युद्धंदेव्यादैत्यस्यचोभयोः ॥ ६३ ॥ प्रहरद्वयपर्यंतंहृदयत्रासकारकम् ॥ ततःपंचदशाऽत्युग्रबाणान्देवीमुमोचह ॥ ६४ ॥ चतुर्भिश्चतुरोवाहान्बाणेनैकेनसारथिम् ॥ द्वाभ्यांनेत्रेभुजौद्वाभ्यांध्वजमेकेनपत्रिणा ॥ ॥ ६५ ॥ पंचभिर्हृदयंतस्यविव्याधजगदंबिका ॥ ततोवमन्सरुधिरंममारपुरईशितुः ॥ ६६ ॥ तस्यतेजस्तुनिर्गत्यदेवीरूपेविवेशह॥हतेतस्मिन्महावीर्येशांतमासीज्जगत्त्रयम् ॥ ६७ ॥ ततोब्रह्मादयःसर्वेतुष्टुवुर्जगदंबिकाम् ॥ पुरस्कृत्यहरीशानौभक्त्यागद्गदयागिरा ॥ ६८ ॥ देवाऊचुः ॥ जगद्भ्रमविवर्तैककारणेपरमेश्वरि॥ नमःशाकंभरिशिवेनमस्तेशतलोचने ॥६९॥ सर्वोपनिषदुद्घुष्टेदुर्गमासुरनाशिनि ॥ नमोमायेश्वरिशिवेपंचकोशांतरस्थिते ॥ ७० ॥ चेतसानिर्विकल्पेनयांध्यायंतिमुनीश्वराः ॥ प्रणवार्थस्वरूपांतांभजामोभुवनेश्वरीम् ॥ ७१ ॥ अनंतकोटिब्रह्मांडजननींदिव्यविग्रहाम् ॥ ब्रह्मविष्ण्वादिजननींसर्वभावैर्नतावयम् ॥७२॥ कःकुर्यात्पामरान्दृष्ट्वारोदनंसकलेश्वरः ॥ सदयांपरमेशानींशताक्षींमातरंविना ॥ ७३ ॥ व्यासउवाच॥इतिस्तुतासुरैर्देवीब्रह्मविष्ण्वादिभिर्वरैः ॥ पूजिताविविधैर्द्रव्यैःसंतुष्टाऽभूच्चतत्क्षणे॥ ७४॥ प्रसन्नासातदादेवीवेदानाहृत्यसाददौ ॥ ब्राह्मणेभ्योविशेषेणप्रोवाचपिकभाषिणी ॥ ७५ ॥ ममेयंतनुरुत्कृष्टापालनीयाविशेषतः ॥ ययाविनाऽनर्थएषजातोदृष्टोऽधुनैवहि ॥ ७६ ॥ पूज्याऽहंसर्वदासेव्यायुष्माभिःसर्वदैवहि ॥ नाऽतःपरतरंकिंचित्कल्याणायोपदिश्यते ॥ ७७ ॥ पठनीयंममैतद्धिमाहात्म्यंसर्वदोत्तमम् ॥ तेनतुष्टाभविष्यामिहरिष्यामितथाऽऽपदः ॥ ७८ ॥ दुर्गमासुरहंत्रीत्वाद्दुर्गेतिममनामयः ॥ गृह्णातिचशताक्षीतिमायांभित्त्वाव्रजत्यसौ ॥ ७९ ॥

ईशितुः श्रीपरमेश्वर्याःपुरोग्रेममारेत्यर्थः ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ जगद्भ्रमरूपोयोविवर्तोऽन्यथाभावस्तस्यमुख्यकारणरूपेइत्यर्थः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ अस्मान्पामरान्दुःखितान्दृष्ट्वायत्परमेश्वर्याभवत्यारोदनंकृतंतत्त्वांशताक्षींमातरंविनाकःकुर्यान्नकोपीत्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ययाममवेदरूपतन्वाविनामहाननर्थोऽयंजातोऽधुनैवभवद्भिर्दृष्टइत्यर्थः ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ अत्रशताक्षीशाकंभरीदुर्गादेवतानांजलदानान्नदानदैत्यवधकर्मभेदेननामभेदमात्रमेवकेवलंनत्ववतारभेदइतिबोध्यम् ॥ तदुक्तंवैकृतिकरहस्ये ॥ शाकंभरीशताक्षी सासैवदुर्गाप्रकीर्तितेति ॥ ८३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ चतुर्भिरर्धिकैश्चत्वारिंशच्छ्लोकैर्विहायच ॥ व्यासवाक्याद्राजवार्तापप्रच्छेशीकथानकम् ॥ १ ॥ अथवेदव्यासोराज्ञांकथायांजनमेजयचित्तमासक्तंज्ञात्वाततोपसृत्यदेवीकथाभिमुखंकर्तुमाह। इत्येवमिति ॥ नानाविधराज्ञांधर्मात्मनांनानाविधंचरितंमयाकियद्वर्णनीयंकालस्याल्पत्वादतोदेवीकथामेवपृच्छेतिगूढोभिसंधिः ॥ १ ॥ ननुकिमितिराज्ञामेतादृशोमहापराक्रमोजातइतिचेत्सर्वेऽपीमेराजानःश्रीदेवीभक्तास्तथाचदेवीप्रसादादेतादृशमहत्त्वंतेषामागतमित्याह । पराशक्तीति ॥ पराशक्तिप्रभावतएवमहत्त्वमितिनिश्चितंविद्धीत्यर्थः ॥ २ ॥३॥ कुठाराश्छेदकाअभवन् ॥४॥ पलालमिवतुषामिवपराशक्तिसेवनादन्यंत्यजेदित्यर्थः ॥ तथाच श्रुतिः॥पलालमिवधान्यार्थीत्यजेद्ग्रंथमशेषतइति ॥ ५ ॥ वेदरूपदुग्धाब्धिमथनेनेदंरत्नंपराशक्तिपदांभोजरूपंमयालब्धंततस्तल्लाभादहंकृतकृत्योस्मि सार्थकजन्माऽस्मीत्यर्थः ॥ तथाच श्रुतिरहस्यत्वंवर्णयाति॥बृहदारण्यकेगार्गिब्राह्मणेगार्गिमातिप्राक्षीर्मातेमूर्धाव्यपप्तत्॥अनतिप्रश्न्यांवैदेवतामतिपृच्छसीति ॥६॥ श्रीभगवत्याध्यानेनाऽपिसर्वोत्तमत्वंवर्णयाति॥ पंचब्रह्मेति ॥

किमुक्तेनाऽत्रबहुनासारंवक्ष्यामितत्त्वतः ॥ संसेव्याऽहंसदादेवाःसर्वैरपिसुरासुरैः ॥ ८० ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वांतर्हितादेवीदेवानांचैवपश्यताम् ॥ संतोषंजनयंत्येवंसच्चिदानंदरूपिणी ॥ ८१ ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंरहस्यंपरमंमहत् ॥ गोपनीयंप्रयत्नेनसर्वकल्याणकारकम् ॥ ८२ ॥ यइमंशृणुयान्नित्यमध्यायंभक्तितत्परः ॥ सर्वान्कामानवाप्नोतिदेवीलोकेमहीयते ॥ ८३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०सप्तमस्कंधेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्येवंसूर्यवंश्यानांराज्ञांचरितमुत्तमम् ॥ सोमवंशोद्भवानांचवर्णनीयंमयाकियत् ॥ १ ॥ पराशक्तिप्रसादेनमहत्त्वंप्रतिपेदिरे ॥ राजन्सुनिश्चितंविद्धिपराशक्तिप्रसादतः ॥ २ ॥ यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वंश्रीमदूर्जितमेववा ॥ तत्तदेवावगच्छत्वंपराशक्त्यंशसंभवम् ॥ ३ ॥ एतेचाऽन्येचराजानःपराशक्तेरुपासकाः ॥ संसारतरुमूलस्यकुठाराअभवन्नृप ॥ ४ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसंसेव्याभुवनेश्वरी ॥ पलालमिवधान्यार्थीत्यजेदन्यमशेषतः ॥ ५ ॥ आमथ्यवेददुग्धाब्धिप्राप्तंरत्नंमयानृप ॥ पराशक्तिपदांभोजंकृतकृत्योऽस्म्यहंततः ॥ ६ ॥ पंचब्रह्मासनारूढानाऽस्त्यन्याकाऽपिदेवता ॥ ततएवमहादेव्यापंचब्रह्मासनंकृतम् ॥ ७ ॥ पंचभ्यस्त्वधिकंवस्तुवेदेव्यक्तमितीर्यते ॥ यस्मिन्नोतंचप्रोतंचसैवश्रीभुवनेश्वरी ॥ ८ ॥

ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरामंचककोणखुरभूताःसदाशिवस्तुचतुर्णांमस्तकोपरिफलकस्थानीयः ॥ तथाचब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिवात्मकपंचब्रह्मात्मकंयदासनंतस्मिन्नारूढाभगवत्यतिरिक्ताकाऽन्यादेवताऽस्तिनकाऽपि ॥ ततःस्वस्योत्कर्षमूढानपिबोधयितुंमहादेव्यापंचब्रह्मासनंस्वस्यस्वीकृतमितीयमेवसर्वोत्कृष्टेतिभावः ॥ तथाचभुवनेश्वरीतंत्रेब्रह्मांडपुराणेललितोपाख्यानेच ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चईश्वरश्चसदाशिवः ।ऐतेपचमहोप्रताःपादमूलेव्यवस्थिताइति ॥७॥ ननुपंचब्रह्मातिरिक्तेतेभ्योऽधिकंवस्तुनाऽस्त्येवेतिचेत्तत्राह। पंचभ्यइति॥ब्रह्मादयःपंचभूम्यादिपंचभूताधिपतयस्तेषांपंचमहाभूतानामुत्पत्तिर्यस्माद्भवतितद्वस्तुवेदेव्यक्तमव्याकृतमित्यादिशब्दैरुच्यते ॥ अस्मिन्निदंसर्वंजगत्सूत्रेमणिगणाइवोतंप्रोतंचभवतीतिगार्गिब्राह्मणेइतिउक्तंतावताप्रकृतेकिमायातामितिचेत्तदाह । सैवश्रीभुवनेश्वरीति ॥ यद्वेदेपंचब्रह्मभ्योऽधिकमव्याकृतमित्युक्तंसाम्यावस्थमायोपाधिकंब्रह्मसैवाऽस्माकंभुवनेश्वरीभगवतीतिपंचब्रह्माधिकाऽस्त्येववेदेभगवतीतिभावः ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यदाचर्मेति ॥ आकाशंयदाचर्मवत्कृष्णाजिनवन्मानवावेष्टयिष्यंतितदाशिवांभुवनेश्वरीमाविज्ञाय नज्ञात्वाभुवनेश्वरीस्वरूपज्ञानंविनाऽपिदुःखस्यसंसारजन्यस्यनाशोभविष्यति ॥ नकदापि चर्मवदाकाशवेष्टनंभविष्यति नचकदापिभुवनेश्वरीरूपज्ञानंविनामोक्षोभविष्यति ततोऽवश्यमेवभुवनेश्वरीस्वरूपज्ञानेयत्नआस्थेयइतिभावः ॥ ९ ॥ अतएवश्वेताश्वतरेभगवतीध्या नमेवमोक्षसाधनत्वेनोक्तमित्याह । अतएवेति ॥ १० ॥ तामेवश्रुतिंपठति । तेध्यानेति ॥ ११ ॥ तन्निष्ठोभगवतीनिष्ठः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ तत्रसच्चिदानंदरूपायाभगवत्याध्या नाधिकारप्राप्त्यर्थमादावुपासनांतरमाह । विराड्रूपामिति ॥ सूत्ररूपांसमष्टिव्यष्टिलिंगरूपदेहाम् ॥ अंतर्यामिरूपिणींमायाशबलब्रह्मरूपिणीम् ॥ १५ ॥ इत्थंशुद्धेचेतसिजातेऽनंतरं निर्गुणब्रह्मस्वरूपिणींध्यायेदित्याह । सच्चिदानंदेति ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ इत्थंराजकथाश्रवणप्रश्नंविहायभगवतीकथाश्रवणप्रश्नःकर्तव्यइतिव्यासाभिप्रायंज्ञात्वाजनमेजयआह ।

तामविज्ञायराजेंद्रनैवमुक्तोभवेन्नरः ॥ यदाचर्मवदाकाशंवेष्टयिष्यंतिमानवाः ॥ ९ ॥ तदाशिवामविज्ञायदुःखस्यांतोभविष्यति ॥ अतएवश्रुतौप्राहुःश्वेता श्वतरशाखिनः ॥ १० ॥ तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनजन्मसाफल्यहेतवे ॥ ११ ॥ लज्जयावाभयेनाऽ पिभक्त्यावाप्रेमयुक्तया ॥ सर्वसंगंपरित्यज्यमनोहृदिनिरुध्यच ॥ १२ ॥ तन्निष्ठस्तत्परोभूयादितिवेदांतडिंडिमः ॥ येनकेनमिषेणाऽपिस्वपंस्तिष्ठन्व्रज न्नपि ॥ १३ ॥ कीर्तयेत्सततंदेवींसवैमुच्येतबंधनात् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनभजराजन्महेश्वरीम् ॥ १४ ॥ विराड्रूपांसूत्ररूपांतथांतर्यामिरूपिणीम् ॥ सो पानक्रमतःपूर्वंततःशुद्धेतुचेतसि ॥ १५ ॥ सच्चिदानंदलक्ष्यार्थरूपांतांब्रह्मरूपिणीम् ॥ आराधयपरांशक्तिंप्रपंचोल्लासवर्जिताम् ॥१६॥ तस्यांचित्तलयो यःसतस्याआराधनंस्मृतम् ॥ राजन्राज्ञांपराशक्तिभक्तानांचरितंमया ॥ १७ ॥ धार्मिकाणांसूर्यसोमवंशजानांमनस्विनाम् ॥ पावनंकीर्तिदंधर्मबुद्धिदंस द्गतिप्रदम् ॥ १८ ॥ कथितंपुण्यदंपश्चात्किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ जनमेजयउवाच ॥ गौरीलक्ष्मीसरस्वत्योदत्ताःपूर्वंपरांबया ॥ १९ ॥ हरायहरयेतद्व न्नाभिपद्मोद्भवायच ॥ तुषाराद्रेश्चदक्षस्यगौरीकन्येतिविश्रुतम् ॥ २० ॥ क्षीरोदधेश्चकन्येतिमहालक्ष्मीरितिस्मृतम् ॥ मूलदेव्युद्भवानांचकथंकन्यात्वम न्ययोः ॥ २१ ॥ असंभाव्यमिदंभातिसंशयोऽत्रमहामुने ॥ छिंधिज्ञानासिनातंत्वंसंशयच्छेदतत्पर ॥ २२ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिरह स्यंपरमाद्भुतम् ॥ देवीभक्तस्यतेकिंचिदवाच्यंनहिविद्यते ॥ २३ ॥ देवीत्रयंयदादेवत्रयायादात्परांबिका॥तदाप्रभृतितेदेवाःसृष्टिकार्याणिचक्रिरे ॥२४॥ कस्मिंश्चित्समयेराजन्दैत्याहालाहलाभिधाः ॥ महापराक्रमाजातास्त्रैलोक्यंतैर्जितंक्षणात् ॥ २५ ॥

गौरीति ॥ हेभगवंस्त्वयातृतीयस्कंधेषष्ठाध्याये विष्णवेऽथमहालक्ष्मीर्महाकालीशिवायच॥महासरस्वतीमह्यंस्थानात्तस्माद्विसर्जिताइतिवचनेनपूर्वमुक्तं किमितिगौरीलक्ष्मीसरस्वत्योदेवताः परांबयामणिद्वीपाधिवासिन्यादेव्याहरायहरयेपद्मजायचदत्ताइति ॥१९॥ लोकेत्वित्थंश्रुतामित्याह । तुषाराद्रेरिति॥ हिमालयस्यदक्षस्यचकन्यागौरी ॥ क्षीरोदधेःकन्यालक्ष्मीरितिश्रुतम् ॥ २० ॥ नन्वस्त्वेतत्किंतावतेतिचेत्तत्राह ॥ मूलदेव्युद्भवानांचेति ॥ मूलदेवीतउत्पन्नयोर्गौरीलक्ष्म्योरन्यकन्यात्वंकथमपिनघटतेविरोधादितिभावः ॥ २१ ॥ तमेवसंशयंछिं धीत्याह । छिंधीति ॥ २२ ॥ २३ ॥ देवीत्रयंगौरीलक्ष्मीसरस्वतीत्रयंदेवत्रयायरुद्रविष्णुब्रह्मभ्योऽदादत्तवतीपरांबिकामणिद्वीपाधिवासिनी ॥ २४ ॥ हालाहलविषवद्दुःसहत्वाद्धालाह लाभिधत्वंदैत्यानाम् ॥ २५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





रजताचलंकैलासम्॥२६॥२७॥२८॥ताभ्यांशिवविष्णुभ्याम्॥ यद्वशादिति॥ययोःशक्तयोर्निमित्तेनतेदैत्याहतास्तयोर्गौरीलक्ष्मीशक्तयोर्निकटेएवाऽस्माभिर्दैत्याहतावयमेतादृशाःपराक्रमिण इत्यभिमानंहरविष्णूचक्रतुरित्यर्थः ॥ २९ ॥ छलहास्यमिति ॥ अस्मत्प्रसादेनैवताभ्यांदैत्याजितास्तत्कथमस्मन्निकटएवाविक्षिप्तवदभिमानंकुर्वंतिइत्यभिप्रायेणकपटहास्यंतेशक्तीचक्रतुरि त्यर्थः ॥ तौहरविष्णूतयोःशक्तयोःकपटहास्यंदृष्ट्वा ॥ ३० ॥ अभिमानखंडननिमि तमतीवसंक्रुद्धावित्यर्थः ॥ नकेवलंसंक्रुद्धौकिंत्वनादिमाययामोहितौतत्प्रसादादेवजयेलब्धेऽपितदगणय्य किंमूर्खवच्छलहास्यंक्रियतइतिदुरुत्तरंचददतुरित्यर्थः ॥ ३१ ॥ तौहरविष्णूत्यक्त्वेत्यर्थः ॥ अतएवभगवत्यापूर्वमुक्तम् एताःशक्तयोमाननीयानाऽवमान्याःकदाचनेति ॥ ३२ ॥ ल्चि तनौविगतधिषणौयतोविक्षिप्तौ ॥३३॥ अमूहरिहरौकार्याक्षमौजगत्कार्यासमर्थौकथंजातावित्यर्थः ॥ ३४ ॥ अकांडेअकालेनिरागसोनिरपराधिनः ॥ सर्वकर्मक्षयाभावेऽपीतिशेषः ॥३५॥

ब्रह्मणोवरदानेनदर्पितारजताचलम् ॥ रुरुधुर्निजसेनाभिस्तथावैकुंठमेवच ॥ २६ ॥ कामारिःकैटभारिश्चयुद्धोद्योगंचचक्रतुः ॥ षष्टिवर्षसहस्राणामभूद्युद्धंम होत्कटम् ॥ २७ ॥ हाहाकारोमहानासीद्देवदानवसेनयोः ॥ महताऽथप्रयत्नेनताभ्यांतेदानवाहताः ॥ २८ ॥ स्वस्वस्थानेषुगत्वातावभिमानंचचक्रतुः ॥ स्वशक्तयोर्निकटेराजन्यद्वशादेवतेहताः ॥२९॥ अभिमानंतयोर्ज्ञात्वाच्छलहास्यंचचक्रतुः ॥ महालक्ष्मीश्चगौरीचहास्यंदृष्ट्वातयोस्तुतौ ॥ ३० ॥ देवावती वसंक्रुद्धौमोहितावादिमायया ॥ दुरुत्तरंचददतुरवमानपुरःसरम् ॥ ३१ ॥ ततस्तेदेवतेतस्मिन्क्षणेत्यक्त्वातुतौपुनः ॥ अंतर्हितेचाऽभवतांहाहाकारस्तदा ह्यभूत् ॥ ३२ ॥ निस्तेजस्कौचनिःशक्तीविक्षिप्तौचविचेतनौ ॥ अवमानात्तयोःशक्तयोर्जातौहरिहरौतदा ॥३३॥ ब्रह्माचिंतातुरोजातःकिमेतत्समुपस्थित म् ॥ प्रधानौदेवतामध्येकथंकार्याक्षमावमू ॥ ३४॥ अकांडेकिंनिमित्तेनसंकटंसमुपस्थितम् ॥ प्रलयोभवितार्किंवाजगतोऽस्यनिरागसः ॥ ३५ ॥ निमि त्तंनैवजानेऽहंकथंकार्याप्रतिक्रिया ॥ इतिचिंतातुरोऽत्यर्थंदध्यौमीलितलोचनः ॥ ३६ ॥ पराशक्तिप्रकोपात्तुजातमेतदितिस्मह ॥ जानंस्तदासावधानःप द्मजोभून्नृपोत्तम ॥ ३७ ॥ ततस्तयोश्चयत्कार्यंस्वयमेवाऽकरोत्तदा ॥ स्वशक्तेश्चप्रभावेणकियत्कालंतपोनिधिः ॥ ३८॥ ततस्तयोस्तुस्वस्त्यर्थमन्वादी न्स्वसुतानथ ॥ आह्वयामासधर्मात्मासनकादींश्चसत्वरः ॥ ३९ ॥ उवाचवचनंतेभ्यःसन्नतेभ्यस्तपोनिधिः ॥ कार्यासक्तोऽहमधुनातपःकर्तुंनचक्षमः ॥ ॥ ४० ॥ पराशक्तेस्तुतोषार्थंजगद्धारयुतोऽस्म्यहम् ॥ शिवविष्णूचविक्षिप्तौपराशक्तिप्रकोपतः ॥ ४१ ॥

प्रतिक्रियाप्रतीकारः कथंकर्तव्योनिमित्तज्ञानाभावे ॥ नहिरोगनिदानज्ञानाभावेचिकित्सकाउपायंकुर्वंतीति ॥ दध्यौनिमित्तज्ञानार्थंध्यानंकृतवानित्यर्थः ॥ ३६ ॥ जानन्निति ॥ पराश क्तिप्रकोपरूपंनिदानंजानन्नित्यर्थः ॥ सावधानोऽधुनोपायंकरिष्यामीतिविश्वासेनेत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ततआरभ्ययावद्धरिहरौस्वस्थौभविष्यतस्तावत्पर्यंतंतयोःकार्यपालनसंहाररूपंस्वयमे वब्रह्मास्वशक्तिप्रसादादकरोदित्याह । ततस्तयोरिति ॥३८॥ ३९ ॥ ४० ॥ किंतत्कार्यंतदाह । पराशक्तेरिति ॥ जगद्धारोजगतःसृष्टिस्थितिसंहाररूपः ॥ सचपराशक्तेरेवकार्यंभवती तिमयातत्तोषार्थमवश्यंकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ४१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४२ ॥ पूर्ववृत्तौपूर्वस्वभावौ ॥ ४३ ॥ किंचयस्यकुलेतयोःशक्त्योर्जन्मभविष्यतितत्कुलंजगतीतलंपावयेत्स्वयंचकृतकृत्यंभवेदित्याह । कुलेयस्येति ॥४४ ॥ ४५ ॥ इतिश्रीदेवीभाग
वततिलकेसप्तमस्कंधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ एकाधिकशतश्लोकैर्गौरीजन्मसदुच्यते ॥ नानापीठोद्भवस्तद्वच्छिवविभ्रांतिवर्णनम् ॥१॥ चतुर्मुखाज्ञयामुनयःससुराःसर्वेहिमालये
तपश्चर्यार्थंगताइत्युक्तंतदुत्तरंजातंवृत्तमाह । ततस्तेत्विति ॥ मायाबीजंश्रीभुवनेश्वरीमंत्रः ॥ १ ॥ २ ॥ पाशेति ॥ पाशांकुशाभयवरमुद्राहस्तेत्यर्थः ॥३॥ विश्वोव्यष्टिस्थूलदेहाभिमानी
वैश्वानरःसमष्टिस्थूलदेहाभिमानी॥४॥तैजसोव्यष्टिलिंगदेहाभिमानी ॥ सूत्रात्मासमष्टिलिंगदेहाभिमानी॥तदेवाह । यस्मिन्निति॥ओतप्रोताग्रथिताइत्यर्थः ॥५॥ प्राज्ञोव्यष्टिकारणदेहाभि

तस्मात्तांपरमांशक्तिंयूयंसंतोषयंत्वथ ॥ अत्यद्भुतंतपःकृत्वाभक्त्यापरमयायुताः ॥ ४२ ॥ यथातौपूर्ववृत्तौचस्यातांशक्तियुतावपि ॥ तथाकुरुतमत्पुत्राय
शोवृद्धिर्भवेद्दिवः ॥ ४३ ॥ कुलेयस्यभवेज्जन्मतयोःशक्त्योस्तुतत्कुलम् ॥ पावयेज्जगतींसर्वांकृतंकृत्यंस्वयंभवेत् ॥ ४४ ॥ व्यासउवाच ॥ पितामहव
चःश्रुत्वागताःसर्वेवनांतरे ॥ रिराधयिषवःसर्वेदक्षाद्याविमलांतराः ॥ ४५ ॥ ॥ इतिश्रीदे०म०स०एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ व्यासउवाच ॥ ततस्ते
तुवनोद्देशेहिमाचलतटाश्रयाः ॥ मायाबीजजपासक्तास्तपश्चेरुःसमाहिताः ॥ १ ॥ ध्यायतांपरमांशक्तिंलक्षवर्षाण्यभून्नृप ॥ ततःप्रसन्नादेवीसाप्रत्यक्षंदर्श
नंददौ ॥ २ ॥ पाशांकुशवराभीतिचतुर्बाहुस्त्रिलोचना ॥ करुणारससंपूर्णासच्चिदानंदरूपिणी ॥ ३ ॥ दृष्ट्वातांसर्वजननींतुष्टुवुर्मुनयोऽमलाः॥नमस्तेविश्वरू
पायैवैश्वानरसुमूर्तये ॥४॥ नमस्तैजसरूपायैसूत्रात्मवपुषेनमः ॥ यस्मिन्सर्वेलिंगदेहाओतप्रोताव्यवस्थिताः ॥ ५ ॥ नमःप्राज्ञस्वरूपायैनमोव्याकृतमू
र्तये ॥ नमःप्रत्यक्स्वरूपायैनमस्तेब्रह्ममूर्तये ॥ ६ ॥नमस्तेसर्वरूपायैसर्वलक्ष्यात्ममूर्तये ॥ इतिस्तुत्वाजगद्धात्रींभक्तिगद्गदयागिरा ॥ ७ ॥ प्रणेमुश्चरणां
भोजंदक्षाद्यामुनयोऽमलाः ॥ ततःप्रसन्नासादेवीप्रोवाचपिकभाषिणी ॥ ८ ॥ वरंब्रूतमहाभागावरदाऽहंसदामता ॥ तस्यास्तुवचनंश्रुत्वाहरविष्ण्वोस्तनोः
शमम् ॥ ९ ॥ तयोस्तच्छक्तिलाभंचवव्रिरेनृपसत्तम ॥ दक्षोऽथपुनरप्याहजन्मदेविकुलेमम ॥ १० ॥ भवेत्तवांबयेनाऽहंकृतकृत्योभवेइति ॥ जपंध्यानं
तथापूजांस्थानानिविविधानिच ॥ ११ ॥ वदमेपरमेशानिस्वमुखेनैवकेवलम् ॥ देव्युवाच ॥ मच्छक्त्योरवमानाच्चजातावस्थातयार्द्वयोः ॥ १२ ॥ नैता
दृशःप्रकर्तव्योमेऽपराधःकदाचन ॥ अधुनामत्कृपालेशाच्छरीरेस्वस्थतातयोः ॥ १३ ॥ भविष्यतिचतेशक्तीत्वद्गृहेक्षीरसागरे ॥ जनिष्यतस्तत्रताभ्यां
प्राप्स्यतःप्रेरितेमया ॥ १४ ॥ मायाबीजंहिमंत्रोमेमुख्यःप्रियकरःसदा ॥ ध्यानंविराट्स्वरूपंमेऽथवात्वत्पुरतःस्थितम् ॥ १५ ॥

मानी ॥ अव्याकृतःसमष्टिकारणदेहाभिमानी ॥ प्रत्यग्जीवाधिष्ठानंकूटस्थंब्रह्मब्रह्ममूर्तयेइत्यत्रतुसर्वाधिष्ठानंब्रह्मेतिविभागः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ तनोःशमंशांतिम् ॥ ९ ॥ तयोर्हरिहर
योस्तच्छक्तिलाभंगौरीलक्ष्मीशक्तिलाभम् ॥ १० ॥ ११ ॥ जातावस्थातयोरिति ॥ तयोरेतादृश्यवस्याजातेत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ एकाशक्तिस्त्वद्गृहेतवदक्षस्यगृहेऽपराशक्तिःक्षीरसा
गरेजानिष्यतः ॥ ताभ्यामितितादर्थ्येचतुर्थी ॥१४॥ जपध्यानादिकंयत्पृष्टंतत्रोत्तरमाह । मायाबीजंहीति ॥ सचभुवनेश्वरीमंत्रः त्वत्पुरतइतियदेतन्मयादर्शितंपाशांकुशाभयवरकरंध्या
नमित्यर्थः ॥ विराट्स्वरूपध्यानंत्वग्रेवक्ष्यति ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सच्चिदानंदरूपंवा ममध्यानमित्यर्थः ॥ तदुक्तंभुवनेश्वरीहृदयेस्त्रीरूपंवाथपुंरूपंनिष्फलंवामहेश्वरि॥ निष्कामनापरतयाजपेन्मंत्रंसमाहितइति॥ सर्वजगन्ममस्थानंभवतिममसर्वात्मकत्वादि तिस्थानप्रश्नस्योत्तरम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ शाक्तंमहःपराशक्तेस्तेजइत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ करकोणाहताइति ॥ ॥ दुंदुभिताडनार्थंयष्टिग्रहणेऽवकाशोनास्तीत्यतित्वरयाकर कोणेनैवाऽऽहताइत्यर्थः ॥ २१ ॥ मंगलायांमंगंभक्तानांजननमरणासर्पणंलातिगृह्णातिनाशयतिसामंगला ॥ २२ ॥ परसंविदोब्रह्मरूपिण्याः सत्यत्वात्तदवतारत्वादस्याःसतीतिनामचक्रे इत्यर्थः ॥ तस्यशक्तिरिति ॥ यापूर्वमियंशिवस्यशक्तिरासीत्सेयंशिवायैवदत्तेतिभावः ॥ २३ ॥ मनोर्दक्षस्यप्रजापतेः॥२४॥२५॥२६॥ जंबुरसेनोद्भूतायानदीयत्रजांबूनदंसुवर्णंभवति तस्ये

सच्चिदानंदरूपंवास्थानंसर्वजगन्मम ॥ युष्माभिःसर्वदाचाऽहंपूज्याध्येयाचसर्वदा॥१६॥व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेदेवीमणिद्वीपाधिवासिनी॥दक्षाद्या मुनयःसर्वेब्रह्माणंपुनरायय़ुः ॥ १७ ॥ ब्रह्मणेसर्ववृत्तांतंकथयामासुरादरात्॥हरोहरिश्चस्वस्थौतौस्वस्वकार्यक्षमौनृप ॥१८॥ जातौपरांवाकृपयागर्वेणरहि तौतदा ॥ कदाचिदथकालेतुमहःशाक्तमवातरत् ॥ १९॥ दक्षगेहेमहाराजत्रैलोक्येप्युत्सवोऽभवत् ॥ देवाःप्रमुदिताःसर्वेपुष्पवृष्टिंचचक्रिरे॥२०॥नेदुर्दुंदु भयःस्वर्गेकरकोणाहतानृप॥मनांस्यासन्प्रसन्नानिसाधूनाममलात्मनाम् ॥ २१ ॥ सरितोमार्गवाहिन्यःसुप्रभोभूद्दिवाकरः ॥ मंगलायांतुजातायांजातंसर्व त्रमंगलम्॥२२॥तस्यानामसतींचक्रेसत्यत्वात्परसंविदः ॥ ददौपुनःशिवायाऽथतस्यशक्तिस्तुयाऽभवत् ॥ २३ ॥ सापुनर्ज्वलनेदग्धादैवयोगान्मनोर्नृप॥ जनमेजयउवाच ॥ अनर्थकरमेतत्तेश्रावितंवचनंमुने ॥२४॥ एतादृशंमहद्वस्तुकथंदग्धंहुताशने ॥ यन्नामस्मरणान्नृणांसंसाराग्निभयंनहि ॥२५॥ केनकर्म विपाकेनमनोर्दग्धंतदेवहि ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्पुरावृत्तंसतीदाहस्यकारणम् ॥२६॥ कदाचिदथदुर्वासागतोजांबूनदेश्वरीम्॥ददर्शदेवींतत्राऽसौमा यावीजंजजापसः ॥ २७ ॥ ततःप्रसन्नादेवेशीनिजकंठगतांस्रजम् ॥ भ्रमद्भ्रमरसंसक्तांमकरंदमदाकुलाम्॥२८॥ददौप्रसादभूतांतांजग्राहशिरसामुनिः॥ततो निर्गत्यतरसाव्योममार्गेणतापसः॥२९॥आजगामसयत्राऽऽस्तेदक्षःसाक्षात्सतीपिता ॥ संदर्शनार्थमंबायाननामचसतीपदे ॥३०॥ पृष्टोदक्षेणसमुनिर्माला कस्याऽस्त्यलौकिकी॥कथंलब्धात्वयानाथदुर्लभाभुविमानवैः ॥३१॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यप्रोवाचाऽश्रुयुतेक्षणः ॥ देव्याःप्रसादमतुलंप्रेमसद्गदितांतरः ॥ ॥ ३२ ॥ प्रार्थयामासतांमालांतंमुनिंससतीपिता ॥ अदेयंशक्तिभक्तायनास्तित्रैलोक्यमंडले ॥३३॥ इतिबुद्ध्वातुतांमालांमनवेससमर्पयत् ॥ गृहीताशि रसामालामनुनानिजमंदिरे ॥ ३४ ॥ स्थापिताशयनंयत्रदंपत्योरतिसुंदरम् ॥ पशुकर्मरतोरात्रौमालागंधेनमोदितः ॥ ३५ ॥

श्वरींतत्स्थानस्थितांदेवींमित्यर्थः ॥ २७ ॥२८॥ मुनिर्दुर्वासाः ॥२९॥अंबायादक्षगृहेऽवतीर्णायाजगन्मातुर्दर्शनार्थमित्यर्थः ॥३०॥३१॥ देव्याःप्रसादमिति॥अश्रूपूर्णेक्षणोमुनिर्देवीप्रसाद लब्धेयंमालेतिप्रोवाचेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ शक्तिभक्तायपराशक्त्युपासकाय ॥ ३३ ॥ मनवेदक्षाय सदुर्वासाः ॥ ३४ ॥ तेनमालागंधेनमोदितोहर्षितः सन्रात्रौपशुकर्मरतो मैथुनासक्तोभवदित्यर्थः ॥ ३५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तेनपापेनभगवतीमालायाअपमानरूपापराधजन्यपापेनाशिवेदेव्यांचद्वेषबुद्धिरभवदित्यर्थः ॥ अनेनचदेवीसंबंधिपदार्थावहेलनेनएतादृशोमहाननर्थोजातस्तस्मात्तद्धेलनमज्ञानेनाऽपिनकर्तव्य मितिबोधितम् ॥३६॥ तेनाऽपराधेनशिवद्वेषरूपापराधेनतज्जन्यःशिवापराधिदक्षजन्यःसतीधर्मःपतिव्रताधर्मःपतिनिंदायामेतादृशंव्रतंपतिव्रताभिराचरणीयमितिदिदृक्षया॥३७॥ तंसतीदेहं त्यक्त्वापुनस्तदेवदेव्यामहोहिमवत्पृष्ठेप्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ भद्रकाल्याश्चशिवगणैश्चान्वितः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ एतादृशेसर्वस्वनाशेजातेकोऽपिदयांनकरिष्यतितथाऽपि शिवःकरुणानिधित्वाच्चकारेत्याह । जातेसर्वस्वेति ॥ बस्तवक्रेणछागवक्रेणतंमनुंदक्षमजीवयज्जीवयामासेत्यर्थः॥एतेनवीरभद्रेणयज्ञध्वंसःकृतोदक्षस्यचशिरश्छेदितमित्यनुक्तमप्यर्थाद्बोध्यम् ॥ ४२ ॥ यज्ञवाटंयज्ञस्थानम् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ भ्रांतचित्तोविक्षिप्तःसन्नित्यर्थः ॥ ४५ ॥ सत्यायत्रावयवाःपतिष्यंतितत्रमोहेनशिवःस्थास्यतिनोचेत्तांगृहीत्वाब्रह्मांडाद्बहिरपिगमिष्यती

अभवत्समहीपालस्तेनपापेनशंकरे ॥ शिवेद्वेषमतिर्जातोदेव्यांसत्यांतथानृप ॥ ३६ ॥ राजंस्तेनाऽपराधेनतज्जन्योदेहएवच ॥ सत्यायोगाग्निनादग्धःस तीधर्मदिदृक्षया ॥ ३७ ॥ पुनश्चहिमवत्पृष्ठेप्रादुरासीत्तुतन्महः ॥ जनमेजयउवाच ॥ दह्यमानेसतीदेहेजातेकिमकरोच्छिवः ॥ ३८ ॥ प्राणाधिकासतीत स्यतद्वियोगेनकातरः ॥ व्यासउवाच ॥ ततःपरंतुयज्जातंमयावक्तुंनशक्यते ॥ ३९ ॥ त्रैलोक्यप्रलयोजातःशिवकोपाग्निनानृप ॥ वीरभद्रःसमुत्पन्नोभद्र कालीगणान्वितः ॥ ४० ॥ त्रैलोक्यनाशनोद्युक्तोवीरभद्रोयदाऽभवत् ॥ ब्रह्मादयस्तदादेवाःशंकरंशरणंययुः ॥ ४१ ॥ जातेसर्वस्वनाशेऽपिकरुणानिधि रीश्वरः ॥ अभयंदत्तवांस्तेभ्योबस्तवक्रेणतंमनुम् ॥ ४२ ॥ अजीवयन्महात्माऽसौततःखिन्नोमहेश्वरः ॥ यज्ञवाटमुपागम्यरुरोदभृशदुःखितः ॥ ४३ ॥ अपश्यत्तांसतींवह्नौदह्यमानांतुचित्कलाम् ॥ स्कंधेऽप्यारोपयामासहासतीतिवदन्मुहुः ॥ ४४ ॥ बभ्रामभ्रांतचित्तःसन्नानादेशेषुशंकरः ॥ तदाब्रह्मादयो देवाश्चिंतामापुरनुत्तमाम् ॥ ४५ ॥ विष्णुस्तुत्वरयातत्रधनुरुद्यम्यमार्गणैः ॥ चिच्छेदावयवान्सत्यास्तत्तत्स्थानेषुतेपतन् ॥ ४६ ॥ तत्तत्स्थानेषुतत्रा ऽऽसीन्नानामूर्तिधरोहरः ॥ उवाचचततोदेवान्स्थानेष्वेतेषुयेशिवाम् ॥ ४७ ॥ भजंतिपरयाभक्त्यातेषांकिंचिन्नदुर्लभम् ॥ नित्यंसन्निहितायत्रनिजांगेषु परांबिका ॥ ४८ ॥ स्थानेष्वेतेषुयेमर्त्याःपुरश्चरणकर्मिणः॥तेषांमंत्राःप्रसिध्यंतिमायाबीजंविशेषतः॥४९॥इत्युक्त्वाशंकरस्तेषुस्थानेषुविरहातुरः॥का लंनिन्येनृपश्रेष्ठजपध्यानसमाधिभिः ॥ ५० ॥ जनमेजयउवाच ॥ कानिस्थानानितानिस्युःसिद्धपीठानिचानघ॥ कतिसंख्यानिनामानिकानितेषांचमेव द ॥ ५१ ॥ तत्रस्थितानांदेवीनांनामानिचकृपाकर ॥ कृतार्थोऽहंभवेयेनतद्वदाशुमहामुने ॥ ५२ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिदेवीपीठा निसांप्रतम् ॥ येषांश्रवणमात्रेणपापहीनोभवेन्नरः ॥ ५३ ॥

त्यभिप्रायेणसत्यादेव्याअवयवांश्चिच्छेदेत्याह । चिच्छेदेति ॥ तत्तत्स्थानेषुनानाविधेषुस्थानेषुतेवयवाश्छेदिताअपतन् ॥ ४६ ॥ यदर्थमवयवाश्छेदितास्तत्कार्यंतदाजातामित्याह । ना नामूर्तिधरोहरइति ॥ उवाचेति ॥ अत्रहरःकर्ता ॥ ४७ ॥ निजांगेषुनिजावयवेषुस्थानेषुपरांबिकादेवीनानारूपैःसंस्थितास्तीत्यर्थः ॥ ४८ ॥ मायाबीजंविशेषतइति ॥ देव्या मुख्योमंत्रोहिमायाबीजंतस्मिन्देव्याःप्रत्यासत्त्यतिशयात् ॥ तदुक्तंब्रह्मांडपुराणे ॥ ह्रींकारादर्शबिंबिकेति ॥ तथाचतस्यजपेनशीघ्रंसंतुष्टाभगवतीशीघ्रंसिद्धिंददातीत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५४ ॥ गौरीमुखनिवासिनीति ॥ वाराणस्यांगौरीमुखंपतितंतस्मिन्पीठेमुखरूपेयद्भगवत्यारूपंतस्यविशालाक्षीतिनामेत्यर्थः ॥ ५५ ॥ दक्षिणेमानसेकुमुदा ॥ उत्तरेमानसेविश्वकामप्रपूरिणीविश्वकामाख्याभगवतीतिष्ठतीत्यन्वयः ॥ ५६ ॥ गोमंतेपर्वते ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ पातालेपरमेश्वरीनाम्नी

येषुयेषुचपीठेषूपास्येयंसिद्धिकांक्षिभिः ॥ भूतिकामैरभिध्येयातानिवक्ष्यामितत्त्वतः ॥ ५४ ॥ वाराणस्यांविशालाक्षीगौरीमुखनिवासिनी ॥ क्षेत्रेवैनैमिषारण्येप्रोक्तासालिंगधारिणी ॥ ५५ ॥ प्रयागेललिताप्रोक्ताकामुकीगंधमादने ॥ मानसेकुमुदाप्रोक्तादक्षिणेचोत्तरेतथा ॥ ५६ ॥ विश्वकामाभगवतीविश्वकामप्रपूरिणी ॥ गोमंतेगोमतीदेवीमंदरेकामचारिणी ॥ ५७ ॥ मदोत्कटाचैत्ररथेजयंतीहस्तिनापुरे ॥ गौरीप्रोक्ताकान्यकुब्जेरंभातुमलयाचले ॥ ५८ ॥ एकाम्रपीठेसंप्रोक्तादेवीसाकीर्तिमत्यपि ॥ विश्वविश्वेश्वरींप्राहुःपुरुहूतांचपुष्करे ॥ ५९ ॥ केदारपीठेसंप्रोक्तादेवीसन्मार्गदायिनी ॥ मंदाहिमवतःपृष्ठेगोकर्णेभद्रकर्णिका ॥ ६० ॥ स्थानेश्वरीभवानीतुबिल्वकेबिल्वपत्रिका ॥ श्रीशैलेमाधवीप्रोक्ताभद्राभद्रेश्वरेतथा ॥ ६१ ॥ वराहशैलेतुजयाकमलाकमलालये ॥ रुद्राणीरुद्रकोट्यांतुकालीकालंजरेतथा ॥ ६२ ॥ शालग्रामेमहादेवीशिवलिंगेजलप्रिया ॥ महालिंगेतुकपिलामाकोटेमुकुटेश्वरी ॥ ६३ ॥ मायापुर्यांकुमारीस्यात्संतानेललितांबिका ॥ गयायांमंगलाप्रोक्ताविमलापुरुषोत्तमे ॥ ६४ ॥ उत्पलाक्षीसहस्राक्षेहिरण्याक्षेमहोत्पला ॥ विपाशायाममोघाक्षीपाडलापुंड्रवर्धने ॥ ६५ ॥ नारायणीसुपार्श्वेतुत्रिकूटेरुद्रसुंदरी ॥ विपुलेविपुलादेवीकल्याणीमलयाचले ॥ ६६ ॥ सह्याद्रावेकवीरातुहरिश्चंद्रेतुचंद्रिका ॥ रमणारामतीर्थेतुयमुनायांमृगावती ॥ ६७ ॥ कोटिवीकोटतीर्थेतुसुगंधामाधवेवने ॥ गोदावर्यांत्रिसंध्यातुगंगाद्वारेरतिप्रिया ॥ ६८ ॥ शिवकुंडेशुभानंदानंदिनीदेविकातटे ॥ रुक्मिणीद्वारवत्यांतुराधावृंदावनेवने ॥ ६९ ॥ देवकीमथुरायांतुपातालेपरमेश्वरी ॥ चित्रकूटेतथासीताविंध्येविंध्याधिवासिनी ॥ ७० ॥ करवीरेमहालक्ष्मीरुमादेवीविनायके ॥ आरोग्यावैद्यनाथेतुमहाकालेमहेश्वरी ॥ ७१ ॥ अभयेत्युष्णतीर्थेषुनितंबाविंध्यपर्वते ॥ मांडव्येमांडवीनामस्वाहामाहेश्वरीपुरे ॥ ७२ ॥ छगलंडेप्रचंडातुचंडिकाऽमरकंटके ॥ सोमेश्वरेवरारोहाप्रभासेपुष्करावती ॥ ७३ ॥ देवमातासरस्वत्यांपारावारातटेस्मृता ॥ महालयेमहाभागापयोष्ण्यांपिंगलेश्वरी ॥ ७४ ॥ सिंहिकाकृतशौचेतुकार्तिकेत्वतिशांकरी ॥ उत्पलावर्तकेलोलासुभद्राशोणसंगमे ॥ ७५ ॥ मातासिद्धवनेलक्ष्मीरनंगाभरताश्रमे ॥ जालंधरेविश्वमुखीताराकिष्किंधपर्वते ॥ ७६ ॥ देवदारुवनेपुष्टिर्मेधाकाश्मीरमंडले ॥ भीमादेवीहिमाद्रौतुतुष्टिर्विश्वेश्वरीतथा ॥ ७७ ॥ कपालमोचनेशुद्धिर्माताकायावरोहणे ॥ शंखोद्धारेधरानामधृतिःपिंडारकेतथा ॥ ७८ ॥

॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ उष्णतीर्थेष्वभयेति देवीविंध्यपर्वतेनितंबादेवी ॥ पूर्वोक्ताविंध्यवासिनीच ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ तटेसमुद्रतटेपारावारादेवी ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ विश्वेश्वरेक्षेत्रेतुष्टिर्देवी ॥ ७७ ॥ ७८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७९ ॥८०॥ वैश्रवणालयेकुबेरालयेनिधिनाम्नीदेवता ॥८१॥८२ ॥ तिलोत्तमेत्यंतमेवाष्टोत्तरशतनामसमाप्तिः ॥ चित्तेब्रह्मकलानामेत्यनेनतुसर्वासामुक्तानांदेवतानांमुख्यरूपमुच्यते ॥ याचित्तेब्रह्मकला याचसर्वशरीरिणांशक्तिःसैवैतद्देवतात्मिकेतिशेषः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ इमानिसर्वाणिस्थानानिनसतीदेव्यंगभूतानि किंतुकानिचिद्देव्यंगानियत्रपतितानितथाविधानि ॥ कानिचित्तु रामासुचतिलोत्तमेत्यादीनिप्रसंगेनोक्तानीत्याह । सतीदेव्यंगेति ॥ ८५ ॥ देवीलोकंमणिद्वीपम् ॥ ८६ ॥ यात्राविधानतःपुराणादिषुप्रोक्तेनयात्राविधानेनेत्यर्थः ॥ ८७ ॥

कलातुचंद्रभागायामच्छोदेशिवधारिणी ॥ वेणायाममृतानामवदर्यांमुर्वशीतथा ॥ ७९ ॥ औषधिश्चोत्तरकुरौकुशद्वीपेकुशोदका ॥ मन्मथाहेमकूटेतु कुमुदेसत्यवादिनी ॥ ८० ॥ अश्वत्थेवंदनीयातुनिधिर्वैश्रवणालये ॥ गायत्रीवेदवदनेपार्वतीशिवसन्निधौ ॥ ८१ ॥ देवलोकेतथेंद्राणीब्रह्मास्येषुसरस्वती ॥ सूर्यबिंबेप्रभानाममातॄणांवैष्णवीमता ॥ ८२ ॥ अरुंधतीसतीनांतुरामासुचतिलोत्तमा ॥ चित्तेब्रह्मकलानामशक्तिःसर्वशरीरिणाम् ॥ ८३ ॥ इमान्यष्टशतानिस्युःपीठानिजनमेजय ॥ तत्संख्याकास्तदीशान्योदेव्यश्चपरिकीर्तिताः ॥ ८४ ॥ सतीदेव्यंगभूतानिपीठानिकथितानिच ॥ अन्यान्यपिप्रसंगेनयानिमुख्यानिभूतले ॥ ८५ ॥ यःस्मरेच्छृणुयाद्वापिनामाष्टशतमुत्तमम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोदेवीलोकंपरंव्रजेत् ॥ ८६ ॥ एतेषुसर्वपीठेषुगच्छेद्यात्राविधानतः ॥ संतर्पयेच्चपित्रादीञ्छ्राद्धादीनिविधायच ॥ ८७ ॥ कुर्याच्चमहतींपूजांभगवत्याविधानतः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रींजगदंबांमुहुर्मुहुः ॥ ॥ ८८ ॥ कृतकृत्यंस्वमात्मानंजानीयाज्जनमेजय ॥ भक्ष्यभोज्यादिभिःसर्वान्ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ॥ ८९ ॥ सुवासिनीःकुमारीश्चवटुकादींस्तथानृप ॥ तस्मिन्क्षेत्रेस्थितायेतुचांडालाद्याअपिप्रभो ॥ ९० ॥ देवीरूपाःस्मृताःसर्वेपूजनीयास्ततोहिते ॥ प्रतिग्रहादिकंसर्वंतेषुक्षेत्रेषुवर्जयेत् ॥ ९१ ॥ यथाशक्तिपुरश्चर्यांकुर्यान्मंत्रस्यसत्तमः ॥ मायाबीजेनदेवेशींतत्तत्पीठाधिवासिनीम् ॥ ९२ ॥ पूजयेदनिशंराजन्पुरश्चरणकृद्भवेत् ॥ वित्तशाठ्यंनकुर्वीतदेवीभक्तिपरोनरः ॥ ९३ ॥ यएवंकुरुतेयात्रांश्रीदेव्याःप्रीतमानसः ॥ सहस्रकल्पपर्यंतंब्रह्मलोकेमहत्तरे ॥ ९४ ॥ वसंतिपितरस्तस्यसोऽपिदेवीपुरेतथा ॥ अंतेलब्ध्वापरंज्ञानंभवेन्मुक्तोभवांबुधेः ॥ ९५ ॥ नामाष्टशतजापेनबहवःसिद्धतांगताः ॥ यत्रैतल्लिखितंसाक्षात्पुस्तकेवापितिष्ठति ॥ ९६ ॥ ग्रहमारीभयादीनितत्रनैवभवंतिहि ॥ सौभाग्यंवर्धतेनित्यंयथापर्वणिवारिधिः ॥ ९७ ॥ नतस्यदुर्लभंकिंचिन्नामाष्टशतजापिनः ॥ कृतकृत्योभवेन्नूनंदेवीभक्तिपरायणः ॥ ९८ ॥ नमंतिदेवतास्तंवैदेवीरूपोहिसस्मृतः ॥ सर्वथापूज्यतेदेवैःकिंपुनर्मनुजोत्तमैः ॥ ९९ ॥ श्राद्धकालेपठेदेतन्नामाष्टशतमुत्तमम् ॥ तृप्तास्तत्पितरःसर्वेप्रयांतिपरमांगतिम् ॥ १०० ॥ इमानिमुक्तिक्षेत्राणिसाक्षात्संविन्मयानिच ॥ सिद्धपीठानिराजेंद्रसंश्रयेन्मतिमान्नरः ॥ १०१ ॥

॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ स्वयंदेवीपुरेमणिद्वीपेस्थित्वातत्रदेवीप्रसादाज्ज्ञानंलब्ध्वाभवांबुधेर्मुक्तोभवतीत्यर्थः ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ इमान्यष्टशतनामानिमस्त्यपुराणेऽपिस्पष्टानि ॥ १०१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १०२ ॥ इतिश्रीदे०ति०सप्तमस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥ श्रीलक्ष्मीमातरंरंगनाथाख्यंपितरंगुरुम् । नीलकंठःप्रकुरुतेनत्वागीताविमर्शिनीम् ॥ १ ॥ चतुःसप्ततिपद्यैस्तुपार्वत्याख्यंपरंमहः ॥ हिमालयेप्रादुरभूदितिसम्यगिहोच्यते ॥ २ ॥ पूर्वाध्याये पुनश्चाहिमवत्पृष्ठेप्रादुरासीत्तुतन्महइत्युक्तंतत्कथांपृच्छति । धराधराधीशेति ॥ धराधराःपर्वतास्तेषामधीशोहिमालयस्तस्य मौलावित्यर्थः ॥१॥ वक्तुरुत्साहार्थंकथाश्रवणेस्वोत्साहंदर्शयति । कोविरज्येतेति॥सुधामपिपिवताममराणांयोमृत्युः सदेवीकथामृतश्रवणवतोनैवभवेदित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सौभाग्यरहितमैश्वर्यरहितंतदापराशक्तेःपुण्यश्लोकायादेव्याःपालयित्र्याजगन्मातुरभावाज्जातामित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ग्रहाअपिविपरीतगतयःशास्तुःसत्यादेव्याअभावाज्जाताइत्यर्थः ॥८॥

पृष्टंयत्तत्त्वयाराजन्नुक्तंसर्वंमहेशितुः ॥ रहस्यातिरहस्यंचकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥१०२॥ इतिश्रीदे०म०सप्तमस्कंधेत्रिंशोध्यायः ॥ ३० ॥ जनमेजयउवाच ॥ धराधराधीशमौलावाविरासीत्परंमहः ॥ यदुक्तंभवतापूर्वंविस्तरात्तद्वदस्वमे ॥ १ ॥ कोविरज्येतमतिमान्पिबञ्छक्तिकथामृतम् ॥ सुधांतुपिवतांमृत्युःसनैतच्छृण्वतोभवेत् ॥२॥ व्यासउवाच ॥ धन्योऽसिकृतकृत्योऽसिशिक्षितोऽसिमहात्मभिः ॥ भाग्यवानसियद्देव्यांनिर्व्याजाभक्तिरस्तिते ॥ ३ ॥ शृणुराजन्पुरावृत्तंसतीदेहेग्निभर्जिते ॥ भ्रांतःशिवस्तुवभ्रामकाचिद्देशेस्थिरोभवत् ॥ ४ ॥ प्रपंचभानरहितःसमाधिगतमानसः ॥ ध्यायन्देवीस्वरूपंतुकालंनिन्येसआत्मवान् ॥ ५ ॥ सौभाग्यरहितंजातंत्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ शक्तिहीनंजगत्सर्वंसाब्धिद्वीपंसपर्वतम् ॥ ६ ॥ आनंदःशुष्कतांयातःसर्वेषांहृदयांतरे ॥ उदासीनाःसर्वलोकाश्चिंताजर्जरचेतसः ॥ ७ ॥ सदादुःखोदधौमग्नारोगग्रस्तास्तदाऽभवन् ॥ ग्रहाणांदेवतानांचवैपरीत्येनवर्तनम् ॥ ॥ ८ ॥ अधिभूताधिदैवानांसत्यभावानृपाऽभवन् ॥ अथाऽस्मिन्नेवकालेतुतारकाख्योमहासुरः ॥ ९ ॥ ब्रह्मदत्तवरोदैत्योऽभवत्त्रैलोक्यनायकः ॥ शिवौरसस्तुयःपुत्रःसतेहंताभविष्यति ॥ १० ॥ इतिकल्पितमृत्युःसदेवदेवैर्महासुरः ॥ शिवौरससुताभावाज्जगर्जचननंदच॥११॥ तेनचोपद्रुताःसर्वेस्वस्थानात्प्रच्युताःसुराः ॥ शिवौरससुताभावाच्चिंतामापुर्दुरत्ययाम् ॥ १२ ॥ नांगनाशंकरस्यास्तिकथंतत्सुतसंभवः ॥ अस्माकंभाग्यहीनानांकथंकार्यंभविष्यति ॥ १३ ॥ इतिचिंतातुराःसर्वेजग्मुर्वैकुंठमंडले ॥ शशंसुर्हरिमेकांतेसचोपायंजगादह ॥ १४ ॥ कुतश्चिंतातुराःसर्वेकामकल्पद्रुमाशिवा ॥ जागर्तिभुवनेशानीमणिद्वीपाधिवासिनी ॥ १५ ॥ अस्माकमनयादेवतदुपेक्षास्तिनान्यथा ॥ शिक्षैवेयंजगन्मात्राकृतास्मच्छिक्षणायच ॥ १६ ॥ लालनेताडनेमातुर्नाकारुण्यंयथार्भके॥तद्वद्देवजगन्मातुर्नियंत्रागुणदोषयोः॥१७॥ अपराधोभवत्येवतनयस्यपदेपदे ॥ कोपरःसहतेलोकेकेवलंमातरंविना ॥१८॥

॥ ९ ॥ ब्रह्मणादत्तोवरोयस्मैतादृशस्तस्मिन्नेवसंधौतारकासुरोऽभवदित्यर्थः ॥ कोऽसौब्रह्मणावरोदत्तस्तमाह । शिवौरसस्त्विति ॥१०॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ अस्माकमनयादपराधादेवभगवत्याउपेक्षाऽस्तिसाचोपेक्षानास्मन्नाशाय किंत्वेतादृशोममापराधोनकर्तव्यइतिशिक्षणायेत्यर्थः ॥ १६ ॥ तत्रदृष्टांतमाह ॥ लालनेति । अर्भकेबाले ॥ १७ ॥ यद्यप्यपराधिनोवयंतथापितांमातरंजगज्जननींविनाकोऽपरःसहेताऽस्मदपराधंपदेपदेजायमानमित्यर्थः ॥ १८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १९ ॥ स्वजाययालक्ष्म्यासहदेव्याआराधनार्थंविष्णुरपिदेवैःसहनिर्जगामेत्यर्थः ॥२०॥ २१ ॥ अंवाप्रीत्यर्थंयज्ञानानाविधास्तृतीयस्कंधोक्ताज्योतिष्टोमादयश्चतद्विधानज्ञाअंवायज्ञंचक्रिरेइत्यर्थः ॥ तृतीयादिव्रतानिहिमालयंप्रतिभगवत्यावक्ष्यमाणानि ॥ २२ ॥ नामपरायणाःदेवीनामजापिनइत्यर्थः ॥ सूक्तपराअहंरुद्रेभिरित्यादिदेवीसूक्तजापिनइत्यर्थः ॥ नामपारायणं तंत्रराजादितंत्रेषूक्तंनित्यकालपारायणंतस्मिन्नुत्सुकानिष्णाताःकेचिदित्यर्थः ॥ २३ ॥ मंत्रपारायणम् ॥ मायाकुंडलिनीक्रियामधुमतीशुद्धाचकालीकलामातंगीविजयाजयाभगवतीदेवीशिवाशांभवीतिश्लोकोक्तरीत्याभुवनेश्वरीपारिजातेस्पष्टीकृतंतत्परास्तान्निष्णाताःकेचिदित्यर्थः॥ कृच्छ्रादिव्रतंकृच्छ्रचांद्रायणादिकम् ॥ अंतर्यागःप्रपंचयागःप्राणाग्निहोत्रंचप्रपंचसारेउक्तंतत्पराःकेचिदित्यर्थः॥२४॥हृल्लेखयामायाबीजमंत्रेणभुवनेश्वरीमंत्रेणेत्यर्थः॥२५॥भृगोर्दिनेभृगुवासरे ॥ सतस्मिन्नेवाकाशेस्त्रियमाजगाम ॥ बहुशोभमानामुमांहैमवतीमित्यादिश्रुतिबोधि

तस्माद्यूयंपरांवांतांशरणंयातमाचिरम् ॥ निर्व्याजयाचित्रवृत्त्यासावःकार्यंविधास्यति ॥ १९ ॥ इत्यादिश्यसुरान्सर्वान्महाविष्णुःस्वजायया ॥ संयुतोनिर्जगामाऽऽशुदेवैःसहसुराधिपः ॥ २० ॥ आजगाममहाशैलंहिमवंतंनगाधिपम् ॥ अभवंश्चसुराःसर्वेपुरश्चरणकर्मिणः ॥ २१ ॥ अंवायज्ञविधानज्ञाअंवायज्ञंचचक्रिरे ॥ तृतीयादिव्रतान्याशुचक्रुःसर्वेसुरानृप ॥ २२ ॥ केचित्समाधिनिष्णाताःकेचिन्नामपरायणाः॥ केचित्सूक्तपराःकेचिन्नामपारायणोत्सुकाः ॥ २३ ॥ मंत्रपारायणपराःकेचित्कृच्छ्रादिकारिणः ॥ अंतर्यागपराःकेचित्केचिन्न्यासपरायणाः ॥२४॥ हृल्लेखयापराशक्तेःपूजांचक्रुरतंद्रिताः ॥ इत्येवंबहुवर्षाणिकालोगाज्जनमेजय ॥ २५ ॥ अकस्माच्चैत्रमासीयनवम्यांचभृगोर्दिने ॥ प्रादुर्बभूवपुरतस्तन्महःश्रुतिबोधितम् ॥ २६ ॥ चतुर्दिक्षुचतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुतम् ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशंचंद्रकोटिसुशीतलम् ॥ २७ ॥ विद्युत्कोटिसमानाभमरुणंतत्परंमहः ॥ नैवचोर्ध्वंनतिर्यक्चनमध्येपरिजग्रभत् ॥ २८ ॥ आद्यंतरहितंतत्तुनहस्ताद्यंगसंयुतम् ॥ नचस्त्रीरूपमथवानपुंरूपमथोभयम् ॥ २९ ॥ दीप्त्यापिधानंनेत्राणांतेषामासीन्महीपते ॥ पुनश्चधैर्यमालंब्ययावत्तेददृशुःसुराः ॥ ३० ॥ तावत्तदेवस्त्रीरूपेणाऽभाद्दिव्यंमनोहरम् ॥ अतीवरमणीयांगींकुमारींनवयौवनाम् ॥ ३१ ॥ उद्यत्पीनकुचद्वंद्वनिंदितांभोजकुड्मलाम् ॥ रणत्किंकिणिकाजालसिंजन्मंजीरमेखलाम् ॥ ३२ ॥ कनकांगदकेयूरग्रैवेयकविभूषिताम् ॥ अनर्घ्यमणिसंभिन्नगलबंधविराजिताम् ॥ ३३ ॥ तनुकेतकसंराजन्नीलभ्रमरकुंतलाम् ॥ नितंबबिंबसुभगांरोमराजिविराजिताम् ॥ ३४ ॥ कर्पूरशकलोन्मिश्रतांबूलपूरिताननाम् ॥ कनत्कनकताटंकविटंकवदनांबुजाम् ॥ ३५ ॥ अष्टमीचंद्रबिंबाभललाटामायतभ्रुवम् ॥ रक्तारविंदनयनामुन्नसांमधुराधराम् ॥ ३६ ॥

तंतन्महःशाक्तंप्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥२६॥ वेदचतुष्टयेनचतुर्दिक्षुस्थितेनसेवितामित्यर्थः ॥२७॥ अरुणमारक्तमनुग्रहार्थंस्वीकृतरजोगुणवत्त्वात् । एतद्रूपप्रतिपादितांश्रुतिंपठंतिनैवचोर्ध्वमिति ॥ परिजग्रभत्स्थानत्रयेपिनपरिच्छिन्नमित्यर्थः ॥ २८ ॥ अथोभयंनपुंसकमपिनेत्यर्थः ॥ २९ ॥ प्रथमतस्तस्यदीप्त्यानेत्रपिधानंजातंपश्चात्तदेवमहःस्त्रीरूपेणाऽऽभात्प्रकाशंप्रापेत्यर्थः ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ उद्यदाविर्भवद्यत्पीनंकुचद्वंद्वंतेननिंदितेकमलकुड्मलेयस्याः ॥ रणच्छब्दायमानंयत्किंकिणिकाजालंतेनसिंजंत्यौशब्दायमानेमंजीरमेखलेनूपुरकांचीभूषणेयस्याः ॥ ३२॥ गलबंधःकंठभूषणम् ॥ ३३ ॥ तनुकेतकेबालकेतकपत्रेतिश्वेतेसंराजन्योनीलभ्रमरस्तद्वदतिनीलौकुंतलौकर्णकपोलमध्यस्थौकेशौयस्याः ॥ ३४ ॥ कनंतौदीप्यमानौकनकताटंकौताभ्यांविटंकंसुंदरंवदनांबुजंयस्याः ॥ ३५ ॥ अष्टमीचंद्रोऽर्धचंद्रः ॥ उन्नसाम् । उन्नतनासिकाम् ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३७ ॥ निटिलंललाटम् ॥ ३८ ॥ त्रिलोचनामितिपुनरुक्तिर्लोचनानामतिसौंदर्यबोधनार्था ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ यतोवाष्पसंरुद्धनिःस्वनास्ततोवक्तुंनाऽशक्नुवन्नित्यर्थः ॥ इति कर्तव्यतायांमूढाःसर्वेविलोकनंकृतवंतएवस्थिताइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ नमोदेव्यैइतिवैदिकोमंत्रः ॥ प्रकृत्यैप्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टांतानुपरोधादितिसूत्रप्रतिपाद्यसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिण्यै ॥ भद्रायैसकलकल्याणगुणरत्नाकरायै ॥ नियताःसंयताः॥४४॥तामग्निवर्णामिति॥अयमपिऋङ्मंत्रः॥अग्निसमानारुणवर्णाम् ॥ तपसाज्ञानेनज्वलंतींदीप्यमानांसर्वज्ञामित्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः॥तपसाचीयतेब्रह्मेतिमुंडके॥वैरोचनींविशेषेणदीप्ताम्॥कर्मफलेषुनिमित्तेषुब्राह्मणादिभिर्जुष्टांसेविताम् । दुर्गामष्टांगयोगात्मकदुःखरूपायासेनप्राप्यांज्ञानेन ॥ सुतरासितरणयोग्येसंसारेतरसेतरणायतस्यैदुर्गायैनमोऽस्त्वित्यर्थः ॥ तस्यैइतिशेषः॥यद्वाअग्निशब्देनाग्निबीजंरेफोगृह्यते॥सरवर्णोयस्यामंत्रेऽस्तिताम् ॥ तपःशब्दोमायावाचकस्तेनतुरीयस्वरईकारोगृह्यते॥ तेनज्वलंतींतद्युक्तामित्यर्थः॥विरोचनःसूर्यस्तेनतद्बीजंहकारोगृह्यते सूर्यस्यविद्वात्मकपरमेश्वरत्वेनाविंदोश्चहकारात्मत्वेनप्रपंचसारेतृतीयचतुर्थपटलयोरुक्तत्वात् ॥ तेनहकारयुक्तामित्यर्थः ॥ तथाचमायाबीजरूपिणींदुर्गांशरणमहमित्यादिपूर्वेणसमानार्थम्॥ नारायणोपनिषद्भाष्येतुतांदुर्गांदेवींशरणमहंप्रपद्ये ॥ कीदृशीमग्निसमानवर्णांतपसास्वकीयसंतापेनज्वलंतीमस्मच्छत्रून्दहं

कुंदकुड्मलदंताग्रांमुक्ताहारविराजिताम् ॥ रत्नसंभिन्नमुकुटांचंद्ररेखावतंसिनीम् ॥ ३७ ॥ मल्लिकामालतीमालाकेशपाशविराजिताम् ॥ काश्मीरबिंदुनिटिलां नेत्रत्रयविलासिनीम् ॥ ३८ ॥ पाशांकुशवराभीतिचतुर्बाहुंत्रिलोचनाम् ॥ रक्तवस्त्रपरीधानांदाडिमीकुसुमप्रभाम् ॥ ३९ ॥ सर्वशृंगारवेषाढ्यांसर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वाशापूरिकांसर्वमातरंसर्वमोहिनीम् ॥ ४० ॥ प्रसादसुमुखीमंबांमंदस्मितमुखांबुजाम् ॥ अव्याजकरुणामूर्तिंददृशुःपुरतःसुराः ॥ ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वातांकरुणामूर्तिंप्रणेमुःसकलाःसुराः ॥ वक्तुंनाशक्नुवन्किंचिद्बाष्पसंरुद्धनिःस्वनाः ॥ ४२ ॥ कथंचित्स्थैर्यमालंब्यभक्त्याचानतकंधराः ॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयनास्तुष्टुवुर्जगदंबिकाम् ॥ ४३ ॥ देवाऊचुः ॥ नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततंनमः ॥ नमःप्रकृत्यैभद्रायैनियताःप्रणताःस्मताम् ॥ ४४ ॥ तामग्निवर्णांतपसाज्वलंतींवैरोचनींकर्मफलेषुजुष्टाम्॥दुर्गांदेवींशरणमहंप्रपद्येसुतरासितरसेनमः॥४५॥देवींवाचमजनयंतदेवास्तांविश्वरूपाःपशवोवदंति ॥ सानोमंद्रेषमूर्जंदुहानाधेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु॥४६॥कालरात्रींब्रह्मस्तुतां वैष्णवींस्कंदमातरम्॥सरस्वतीमदितिंदक्षदुहितरंनमामःपावनांशिवाम् ॥४७॥

तींविशेषेणरोचतेस्वयमेवप्रकाशतेइतिविरोचनः परमात्मातेनदृष्टत्वाद्वैरोचनींकर्मफलेषुस्वर्गपशुपुत्रादिषुनिमित्तभूतेषुजुष्टामुपासकैःसेविताम् ॥ हेसुतरासिसुष्ठुसंसारतरणहेतोहेदेवि ॥ तरसेतारयित्र्यैतुभ्यंनमोस्त्वित्यर्थइत्युक्तंमाधवाचार्यैः ॥ ४५ ॥ देवींवाचमिति ॥ देवाःप्राणाः यांदेवींद्योतमानांवाचंवैखरीरूपामजनयंतोत्पादितवंतस्तांविश्वरूपाबहुरूपाःपशवोऽस्मदादयोवदंति ॥ सर्वव्यवहारासिद्ध्यर्थंसेयंसर्वव्यवहारोपयोगिनीधेनुःकामदुघामंद्रामादयित्रीप्रतिष्ठामानदानादिना इष्टमूर्जंदुहानाऽन्नबलदात्रीवाग्रूपाभगवतीनोऽस्मान्सुष्टुतासतीउपैतुप्राप्नोत्वित्यर्थः ॥ अयमपिऋङ्मंत्रएव ॥ ४६ ॥ कालरात्रीमिति ॥ अयमपिदेव्यथर्वशिरःस्थोमंत्रः ॥ सर्वमारकस्यापिकालस्यरात्रीनाशिकेत्यर्थः ॥ प्रलयेकालस्यापिनाशात् ॥ ब्रह्मस्तुतांमधुकैटभवधस्यसमयेब्रह्मणास्तुतांब्रह्मणावेदेनवास्तुताम् ॥ वैष्णवींविष्णुशक्तिंलक्ष्मीम् ॥ स्कंदमातरंपार्वतींशिवशक्तिम् ॥ सरस्वतींब्रह्मशक्तिम् ॥ अदितिंदेवमातरंदक्षदुहितरम् ॥ सतीनाम्नीम् एतादृशींनानारूपधरांशिवांभुवनेश्वरींपावनांनमामइत्यर्थः ॥ ४७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

महालक्ष्म्यैचेति ॥ इयमपिदेव्यथर्वशिरःस्थागायत्री ॥ तत्रचतुर्थीद्वितीयार्थे ॥ महालक्ष्मींविद्महेजानीमइत्यर्थः ॥ तथासर्वशक्तिंधीमहिध्यायामइत्यर्थः ॥ तदितिलुप्तसप्तम्यंतम् ॥ तत्त्वज्ञानेध्यानेचनोऽस्मान्सादेवीप्रचोदयात्प्रेरयत्वित्यर्थः ॥ ४८ ॥ चतुष्पाद्ब्रह्मात्मिकांनमस्करोति । नमोविराडिति ॥ ४९ ॥ यदज्ञानाद्यत्स्वरूपस्यापरिज्ञानादित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ शिवांगजाच्छिवौरसपुत्रात् ॥ ६० ॥ सर्वज्ञपुरतइति ॥ सर्वज्ञायास्तवपुरतोऽस्माभिःपामरैर्जनैःकिंवक्तव्यंकिंनिवेदनीयं

महालक्ष्म्यैचविद्महेसर्वशक्त्यैचधीमहि ॥ तन्नोदेवीप्रचोदयात् ॥ ४८ ॥ नमोविराट्स्वरूपिण्यैनमःसूत्रात्ममूर्तये ॥ नमोव्याकृतरूपिण्यैनमःश्रीब्रह्ममूर्तये ॥ ४९ ॥ यदज्ञानाज्जगद्भातिरज्जुसर्पस्रगादिवत् ॥ यज्ज्ञानाल्लयमाप्नोतिनुमस्तांभुवनेश्वरीम् ॥ ५० ॥ नुमस्तत्पदलक्ष्यार्थांचिदेकरसरूपिणीम् ॥ अखंडानंदरूपांतांवेदतात्पर्यभूमिकाम् ॥ ५१ ॥ पंचकोशातिरिक्तांतामवस्थात्रयसाक्षिणीम् ॥ पुनस्त्वंपदलक्ष्यार्थांप्रत्यगात्मस्वरूपिणीम् ॥ ॥ ५२ ॥ नमःप्रणवरूपायैनमोह्रींकारमूर्तये ॥ नानामंत्रात्मिकायैतेकरुणायैनमोनमः ॥ ५३ ॥ इतिस्तुतातदादेवैर्मणिद्वीपाधिवासिनी ॥ प्राहवाचामधुरयामत्तकोकिलनिःस्वना ॥ ५४ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वदंतुविबुधाःकार्यंयदर्थमिहसंगताः ॥ वरदाहंसदाभक्तकामकल्पद्रुमाऽस्मिच ॥ ५५ ॥ तिष्ठंत्यांमयिकाचिंतायुष्माकंभक्तिशालिनाम् ॥ समुद्धरामिमद्भक्तान्दुःखसंसारसागरात् ॥ ५६ ॥ इतिप्रतिज्ञांमेसत्यांजानीथविबुधोत्तमाः ॥ इतिप्रेमाकुलांवाणींश्रुत्वासंतुष्टमानसाः ॥ ५७ ॥ निर्भयानिर्जराराजन्नूचुर्दुःखंस्वकीयकम् ॥ देवाऊचुः ॥ नाऽज्ञातंकिंचिदप्यत्रभवत्याऽस्तिजगत्त्रये ॥ ५८ ॥ सर्वज्ञयासर्वसाक्षिरूपिण्यापरमेश्वरि ॥ तारकेणाऽसुरेंद्रेणपीडिताःस्मोदिवानिशम् ॥ ५९ ॥ शिवांगजाद्वधस्तस्यनिर्मितोब्रह्मणाशिवे ॥ शिवांगनातुनैवास्तिजानासित्वंमहेश्वरि ॥ ६० ॥ सर्वज्ञपुरतःकिंवावक्तव्यंपामरैर्जनैः ॥ एतदुद्देशतःप्रोक्तमपरंतर्कयांबिके ॥ ६१ ॥ सर्वदाचरणांभोजेभक्तिःस्यात्तवनिश्चला ॥ प्रार्थनीयमिदंमुख्यमपरंदेहहेतवे ॥ ६२ ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वाप्रोवाचपरमेश्वरी ॥ ममशक्तिस्तुयागौरीभविष्यतिहिमालये ॥ ६३ ॥ शिवायसाप्रदेयास्यात्सावःकार्यंविधास्यति ॥ भक्तिर्यच्चरणांभोजेभूयाद्युष्माकमादरात् ॥ ६४ ॥ हिमालयोहिमनसामामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ ततस्तस्यगृहेजन्ममममप्रियकरंमतम् ॥ ६५ ॥ व्यासउवाच ॥ हिमालयोऽपितच्छ्रुत्वाऽत्यनुग्रहकरंवचः ॥ बाष्पैःसंरुद्धकंठाक्षोमहाराज्ञींवचोऽब्रवीत् ॥ ६६ ॥

त्वांकिंनजानासीत्यर्थः ॥ एतदुद्देशतइति ॥ इदंयदुक्तंतदुद्देशतोमुख्यत्वेनयत्स्थितंतदुक्तम् ॥ अपरमन्यतदुःखमस्माकंयदस्तितत्किंयत्पर्यंतंवक्तव्यंतत्त्वमेवसर्वज्ञातर्कयजानीहीत्यर्थः ॥ ॥ ६१ ॥ मुख्यमाभिलषितंप्रार्थयंति । सर्वदेति ॥ देहहेतवेदेहाभिमाननिमित्तमपरंप्रार्थनीयमित्यर्थः ॥६२॥ याहिमालयेअधुनाभविष्यतिसाशिवायदेया ॥ साशक्तिर्वःकार्यंस्वजन्यपुत्रद्वारातारकासुरवधरूपंकरिष्यतीत्यर्थः ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ननुहिमालयेकिमितिभवत्यावतारोगृह्यतेतत्राह । हिमालयोहीति ॥ ६५ ॥ महाराज्ञींसर्वेश्वरींभुवनेश्वरीम् ॥ ६६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मद्भक्त्यानुष्ठात्वंमद्गृहेऽवतारंगृह्णासीतिकेवलंमल्लालनार्थमेव वस्तुतस्तुयस्यानुग्रहमिच्छसितंपुरुषंमहत्तरंकुरुषेकेवलंस्वेच्छयैवेत्याह । महत्तरमिति॥तथाचश्रुतिः ॥ यंकामयेतंतमुग्रंकृणोमित ब्रह्माणंतमृषिंतंसुमेधामिति॥इत्थंयदिनास्तितर्हितत्राह । नोचेदिति॥क्तत्वमतिदूरामनोवाच ।मपिअगोचरासच्चिदानंदरूपिणी॥६७॥एतादृश्यास्तवापितृत्वंजनकत्वंममजन्मशतैरनंतजन्मभि रपिअसंभाव्यंसंभ ।वनाविषयोपिनभवतितत्त्वात्पितृत्वंत्वंददासितस्मात्त्वादिच्छैवकेवलंकारणंनतुममयोग्यतादिकमित्यथः ॥ तदेवाह । अश्वमेधेति ॥६८॥ अथस्वभाग्यंवर्णयति । अद्यप्रपंच इति ॥ अहोअस्यहिमालयस्यजगन्माता सुताकन्याऽभवत् ॥ धन्योऽसौभाग्यवानितिप्रपंचेअद्याऽद्यप्रभृतिकीर्तिःस्यादित्यन्वयः ॥ ६९ ॥ पराशक्त्यनुग्रहेणप्रेमपूर्णांतःकरणःस्वमुखेनैव स्वभाग्यंपुनर्वर्णयति । यस्यास्त्विति ॥ कोवास्यान्नकोपीत्यर्थः ॥ ७० ॥ येषांवंशेमादृशोभाग्यवानास्तितेषांकिंस्थानंब्रह्मलोकाद्यपेक्षयाऽधिकंकिंनिर्मितंस्यात्तन्नजानेइतिभावः ॥७१॥ पुनःप्रार्थयते । इदंयथेति ॥ इदमतिदुर्लभंत्वत्पितृत्वंयथा त्वयाकरुणयादत्तंतथेत्यन्वयः ॥ ७२ ॥ त्वमेवाहमिति ॥ तवममचाभेदोयेनस्यात्तदित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ॥ इतिश्री देवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ पंचाशद्भिरथश्लोकैरात्मतत्त्वनिरूपणम् ॥ करोतिजगदंबासास्वमुखेनेतिचोच्यते ॥ १ ॥ हिमालयंपुरस्कृत्यसर्वान्देवा

**महत्तरंतंकुरुषेयस्यानुग्रहमिच्छसि॥ नोचेत्काहंजडःस्थाणुःक्वत्वंसच्चित्स्वरूपिणी ॥६७॥ असंभाव्यंजन्मशतैस्त्वत्पितृत्वंममाऽनघे॥अश्वमेधादिपुण्यै र्वापुण्यैर्वातत्समाधिजैः॥६८॥अद्यप्रपंचेकीर्तिःस्याज्जगन्मातासुताऽभवत् ॥ अहोहिमालयस्यास्यधन्योसौभाग्यवानिति ॥६९ ॥ यस्यास्तुजठरेसंतिब्र ह्मांडानांचकोटयः॥सैवयस्यसुताजाताकोवास्यात्तत्समोभुवि ॥७०॥ नजानेस्मत्पितॄणांकिंस्थानंस्यान्निर्मितंपरम् ॥ एतादृशानांवासाययेषांवंशेस्तिमा दृशः ॥७१॥इदंयथाचदत्तंमेकृपयाप्रेमपूर्णया॥सर्ववेदांतसिद्धंचत्वद्रूपंब्रूहिमेतथा ॥७२॥ योगंचभक्तिसहितंज्ञानंचश्रुतिसंमतम् ॥ वदस्वपरमेशानित्वमे वाहंयतोभवेः ॥७३॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाप्रसन्नमुखपंकजा॥वक्तुमारभतांवासारहस्यंश्रुतिगूहितम्॥७४॥ इतिश्रीदे०म०सप्तमस्कंधेदेवी गीतायामेकत्रिंशोध्यायः॥३१॥ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ शृण्वंतुनिर्जराःसर्वेव्याहरंत्यावचोमम॥यस्यश्रवणमात्रेणमद्रूपत्वंप्रपद्यते॥ १॥ अहमेवाऽऽसपूर्वंतुना न्यत्किंचिन्नगाधिप॥तदात्मरूपंचित्संवित्परब्रह्मैकनामकम्॥२॥अप्रतर्क्यमनिर्देश्यमनौपम्यमनामयम् ॥ तस्यकाचित्स्वतःसिद्धाशक्तिर्मायेतिविश्रुता ३॥**

न्देवीवरवस्तूपदेशंकरोति । शृण्वंत्विति ॥ व्याहरंत्याःकथयंत्याः ॥ १ ॥ अहमेवेति ॥ पूर्वंतुसृष्टेस्तुपूर्वमहमात्मरूपिण्येवाऽसवभूव मत्तोन्यत्किंचिदपिनाससजातीयविजातीयस्वगतभे दशून्यमात्मतत्त्वमेवाऽऽसेत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्यत्किंचिदिति ॥ तदात्मरूपमिति ॥ तदेवात्मरूपंब्रह्मैकनामकंभवति ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मेत्यादि काजगत्कारणप्रतिपादकश्रुतिषुप्रतिपादिताःशब्दास्तस्यैवात्मस्वरूपस्यवाचकाःसंन्तीत्यर्थः ॥ २ ॥ तथाचसर्ववेदप्रतिपाद्यमात्मरूपमेवासेतिसमन्वयाध्यायोक्तःसर्वपदानांब्रह्मण्यात्मरूपे समन्वयउक्तोवेदितव्यइति ॥ कीदृक्तदात्मरूपमस्तीतिचेत्तत्राह ॥ अप्रतर्क्यमिति ॥ अनुमानाविषयश्रुत्यैकसमधिगम्यमित्यर्थः ॥ अनिर्देश्यंश्रुत्यापिजातिगुणक्रियासंज्ञाभिर्निर्देष्टुम शक्यमित्यर्थः ॥ अनौपम्यमिति ॥ यदितत्सदृशोद्वितीयः पदार्थोजगत्यांस्यात्तदातदुपमानेनसआत्मोपमेयःस्यान्नतुतदस्तितस्मादनौपम्यम् ॥ अनामयमिति ॥ जायतेवर्धतइत्यादिषड् भावविकारशून्यमित्यर्थः ॥ तेषांविकाराणांदेहोपाधिनिष्ठत्वादस्यचात्मनोदेहाभावात्तद्विकाररहितमनामयमेवैतदित्यर्थः ॥ एतादृशंनिर्गुणंकथंजगत्कारणमितिचेत्तत्राह । तस्येति॥काचिद निर्वचनीयातस्यममात्मरूपस्यस्वतःसिद्धानादिभूताशक्तिरस्ति ॥ यामायेत्यादिपदैःसर्वश्रुतौविश्रुताप्रसिद्धास्ति मायांतुप्रकृतिंविद्यात् मायावाएषानारसिंहीत्यादिषु ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

साकीदृशीवर्ततेतदाह । नसतीति ॥ अत्रविरोधतइत्यावृत्त्यास्थानत्रयेपियोज्यम् ॥ ब्रह्मवत्कालत्रयाबाध्यासतीन ब्रह्मज्ञानेनबाध्यत्वरूपविरोधात् ॥ नाऽपिवंध्यापुत्रवदसतीव्यावहारिक सत्तातत्त्वविरोधात् ॥ नाप्युभयात्मासत्त्वासत्त्वविशिष्टा ॥ विरुद्धधर्मयोःसत्त्वासत्त्वयोरेकत्रसहावस्थानविरोधादेतत्त्रयविलक्षणाकाचिदनिर्वचनीयावस्तुभूताऽस्तिसर्वदाअनादिःयावन्मोक्ष स्थायिन्यस्तीत्यर्थः ॥ तथाचतापनीयश्रुतिः ॥मायाचतमोरूपानुभूतेस्तदेतज्जडंमोहात्मकमनंतंतुच्छमिदंरूपस्यास्यव्यंजिकानित्यनिवृत्ताविमूढैरात्मैवदृष्टास्यसत्त्वमसत्त्वंचदर्शयतीति॥४॥ तत्रदृष्टांतमाह । पावकस्येति॥सहजानादिध्रुवायावन्मोक्षस्थायिनीमायाशक्तिर्ममास्तीत्यर्थः॥एतेनमायाशक्त्यासद्वितीयत्वंब्रह्मणोस्तीतिकथंजगत्सृष्टेःपूर्वंब्रह्मसजातीयविजातीयस्वगतभेदशू न्यमितिशंकापरास्ता ॥ शक्तेःशक्तानतिरेकात् ॥ नहिवह्निशक्तिर्वह्नेःपृथक्त्वेनक्वचित्कदाचिद्दृश्यते ॥ किंचद्वितीयःसत्यपदार्थोनास्तीत्येवैकमेवाद्वितीयंब्रह्मेतिश्रुतेरर्थः ॥ तथाचाऽ सत्यामाययासद्वितीयत्वेऽपिदोषाभावात् ॥ ५ ॥ नन्वेतादृश्याभुवनेश्वर्यास्तवोच्चनीचजीवसर्जनेवैषम्यनैर्घृण्यदोषआपतेदितिचेत्तत्राह । तस्यांकर्माणीति ॥ जीवाःकर्माणिकालश्च सर्वेअनादयस्तेचसुषुप्तौयथाप्रतिदिवसंव्यवहारोलीनोभवतितथासंचरेप्रलयकालेतस्यांमायायामभेदेनलीनाःस्युः ॥ तथाचयथायथायस्यजीवस्यकर्माणिभवंतितथामयाफलंदीयतइतिन ममवैषम्यनैर्घृण्यदोषगंधोपीतिभावः ॥ ६ ॥ तादृशीममशक्तिर्जीवकर्मकालाविशिष्टातयायुक्ताऽहंनिर्गुणाऽपिबीजात्मतांजगत्कारणतांगताऽस्मीत्याह । स्वशक्तेश्चेति ॥ ननुतवशक्तिर्य थात्वांनव्यामोहयतितथाजीवशक्तिरापिजीवंनव्यामोहयेत्तथाचमुक्ताएवजीवाइतिसृष्टिर्निरर्थिकेतिचेत्तत्राह । स्वाधारावरणादिति॥स्वंमायातस्याधारआत्मातस्यावरणादाच्छादनादस्यामा

**नस तीसानाऽसतीसानोभयात्माविरोधतः ॥ एतद्विलक्षणाकाचिद्वस्तुभूताऽस्तिसर्वदा ॥ ४ ॥ पावकस्योष्णतेवेयमुष्णांशोरिवदीधितिः ॥ चंद्रस्यचंद्रि केवेयंममे यंसहजाध्रुवा ॥ ५ ॥ तस्यांकर्माणिजीवानांजीवाःकालाश्चसंचरे ॥ अभेदेनविलीनाःस्युःसुषुप्तौव्यवहारवत् ॥ ६ ॥ स्वशक्तेश्चसमायोगादहं बीजात्मतांगता ॥ स्वाधारावरणात्तस्यादोषत्वंचसमागतम् ॥ ७ ॥ चैतन्यस्यसमायोगान्निमित्तत्वंचकथ्यते ॥ प्रपंचपरिणामाच्चसमवायित्वमुच्यते ॥ ॥ ८ ॥ केचित्तांतपइत्याहुस्तमःकेचिज्जडंपरे ॥ ज्ञानंमायांप्रधानंचप्रकृतिंशक्तिमप्यजाम् ॥ ९ ॥**

यायादोषत्वमप्यस्तीत्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ मायायारूपद्वयंमायाविद्यात्मकमस्ति मायाचविद्याचस्वयमेवभवतीतिश्रुतेः ॥ तत्रप्रथमायाममशक्तिर्मायातस्याःस्वाश्रयव्यामोहकारि त्वाभावेपिजीवाश्रिताविद्यारूपस्यद्वितीयमायास्वरूपस्यस्वाश्रयव्यामोहकारित्वमस्त्येवेतितज्जीवमोक्षार्थंसृष्टिः सार्थिकैवेति ॥ ७ ॥ ननुतथापिलोकेकार्यमात्रंप्रत्युपादानकारणानिमि त्तकार णयोरपेक्षास्तिघटादिषुदर्शनाज्जगतउत्पादनकर्त्रीत्वंत्वेकैवेतिकथमत्रकारणद्वयसद्भावइतिचेत्तत्राह । चैतन्यस्येति ॥ समायोगान्मायासमागमाच्चैतन्यस्यमायायांप्रतिबिंबितस्य चिदाभासस्यनिमित्तत्वंनिमित्तकारणत्वंकथ्यतइत्यर्थः ॥ प्रपंचेति ॥ प्रपंचरूपेणपरिणामात्समवायित्वमुपादानकारणत्वमुच्यतेमायायाइतिशेषः ॥ चिदाभासोनिमित्तकार णंमायोपादानकारणमितिविभागः ॥ अधिष्ठानभूतंशुद्धबिंबभूतंचैतन्यंतुविवर्तोपादानमित्यर्थात्सिद्धम् ॥ ८ ॥ तस्यामायायाःसद्भावप्रतिपादकानिवचनानिश्रुतिप्रोक्तानिकथयति । केचित्तामिति ॥ केचिच्छाखिनस्तांमायांतपइतिवदंतीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तपसाचीयतेब्रह्मेतिमुंडके ॥ तमःकेचिदिति । तथाचश्रुतिः ॥ नासदासीन्नोसदासीदित्यादि ॥ तमआसीत्तमसागूढमग्रेइति ॥ तदेतज्जडमितितापनीयेजडत्वमुक्तं सऐक्षत लोकानुसृजाइति श्रुतौज्ञानत्वमुक्तम् ॥ अजामायाप्रधानप्रकृतिशक्तिपरादयःशब्दाःश्वेताश्वतरशाखायां प्रसिद्धाः ॥ तथाचसर्ववेदसंमतेयंमायेतिभावः ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १० ॥ तदेवाह । एवमिति ॥ ननुमायायाजडत्वंमिथ्यात्वंचकुतइतिचेत्तत्राह । तस्याइति ॥ तस्यादृश्यत्वात्स्वाधिष्ठानज्ञाननाश्यत्वाच्चजडत्वंमिथ्यात्वंचेत्यर्थः ॥ यद्यद्दृश्यंतत्तज्जडंयथाघटादीत्यादिव्याप्तेः ॥ स्वाधिष्ठानज्ञाननाश्यत्वंमिथ्यात्वमितिमिथ्यात्वलक्षणात् ॥ ११ ॥ एवंमायायाजडत्वंमिथ्यात्वंचोपपाद्यआत्मनस्तदुभयत्वंनास्तीत्युपपादयति । चैतन्यस्येति ॥ यदिचैतन्यस्यदृश्यत्वंस्यात्तर्हितज्जडमेवभविष्यति ॥ यद्यद्दृश्यंतत्तज्जडमितिव्याप्तेः ॥ तथाचसर्वस्यजडत्वात्प्रकाशकाभावाज्जगदांध्यप्रसंगस्तस्मान्नतद्दृश्यमित्यर्थः ॥ ननुतस्यदुर्दृश्यत्वाभावेतदस्तित्वेप्रमाणाभावात्तदभावएवप्रसज्येतेतिचेत्तत्राह । स्वप्रकाशंचेति ॥ यदीदंचैतन्यंपरप्रकाशंस्यात्तर्हिसपरःकेनान्येनप्रकाशितःसोप्यन्यःकेनप्रकाशितइत्यनवस्थास्यात् ॥ नचस्वेनापिस्वंप्रकाशितमेकस्यैवकर्तृत्वकर्मत्वविरुद्धधर्मद्वयवत्त्वाभावात् । तस्मात् यथादीपःस्वयंप्रकाशःपरप्रकाशकश्चतद्वन्मदीयंचैतन्यमपि ॥ हेपर्वतस्वयंभासमानमन्येषांसूर्यादीनांभासकंविद्धीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ नतत्रसूर्योनचंद्रतारकेनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः ॥ तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभातीति येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धइतिच ॥ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥ यस्माद्धेतोर्नित्यत्वंसंविद्रूपस्योक्तंतमेवहेतुमुपपादयति ॥ जाग्रदिति ॥ अवस्थात्रयेपिदृश्यस्यपदार्थजातस्यव्यभिचारोयतस्तत्संविदोव्यभिचाराभावश्चयतस्तस्मात्संविदोनित्यत्वमित्यर्थः ॥ ननुसंविदोपिव्यभिचारोस्तुतत्राह । संविदइति ॥ योऽहंजागरितंपश्यामिसएवाहंस्वप्नंपश्यामिसएवाऽहंसुषुप्तंपश्यामीत्यनुभवेयथाऽवस्थात्रयस्याभावोनुभूय

**विमर्शइतितांप्राहुःशैवशास्त्रविशारदाः ॥ अविद्यामितरेप्राहुर्वेदतत्त्वार्थचिंतकाः ॥ १० ॥ एवंनानाविधानिस्युर्नामानिनिगमादिषु ॥ तस्याजडत्वंदृश्यत्वाज्ज्ञाननाशात्ततोसती ॥ ११ ॥ चैतन्यस्यनदृश्यत्वंदृश्यत्वेजडमेवतत् ॥ स्वप्रकाशंचचैतन्यंनपरेणप्रकाशितम् ॥ १२ ॥ अनवस्थादोषसत्त्वान्नस्वेनाऽपिप्रकाशितम् ॥ कर्मकर्त्रोर्विरोधःस्यात्तस्मात्तद्दीपवत्स्वयम् ॥ १३ ॥ प्रकाशमानमन्येषांभासकंविद्धिपर्वत ॥ अतएवचनित्यत्वंसिद्धंसंवित्तनोर्मम ॥ १४ ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादौदृश्यस्यव्यभिचारतः ॥ संविदोव्यभिचारश्चनानुभूतोऽस्तिकर्हिचित् ॥ १५ ॥ यदितस्याऽप्यनुभवस्तर्ह्ययंयेनसाक्षिणा ॥ अनुभूतःसएवाऽत्रशिष्टःसंविद्वपुःपुरा ॥ १६ ॥ अतएवचनित्यत्वंप्रोक्तंसच्छास्त्रकोविदैः ॥ आनंदरूपताचाऽस्याःपरप्रेमास्पदत्वतः ॥ १७ ॥ मानभूवंहिभूयासमितिप्रेमात्मनिस्थितम् ॥ सर्वस्याऽन्यस्यमिथ्यात्वादसंगत्वंस्फुटंमम ॥ १८ ॥**

तेनतथाकर्हिचित्कदापिसंविदोऽभावोनुभूयतेतस्मादनिच्छतापिसंविदोनित्यत्वमाश्रयणीयमित्यर्थः ॥ १५ ॥ ननुबौद्धैःसंविदोऽप्यभावोनुभूयतेअतएवतेबौद्धायत्सत्तत्क्षणिकमितिव्याप्त्यज्ञानस्याप्यनित्यत्वमिच्छंतीतिचेत्तत्राह । यदितस्यापीति ॥ यदितस्यसंविद्रूपाभावस्यानुभवस्तर्हियेनसाक्षिणातस्यसंविद्रूपस्याऽयमभावोनुभूतःसएवाऽत्रसाक्षीसंविद्वपुर्ज्ञानशरीरोवशिष्टइति ॥ साक्षिज्ञानंनित्यमेवसर्वैरंगीकर्तव्यमित्यर्थः ॥ १६ ॥ तत्रशास्त्रविदनुभवंप्रमाणयति ॥ अतएवेति ॥ अधुनात्मनःसुखरूपत्वमुपपादयति ॥ आनंदरूपतेति । अस्याःसंविदोयतःपरप्रेमास्पदत्वमनुभूयतेतस्मादस्याः संविदआनंदरूपतासुखरूपताऽस्तीत्यर्थः ॥ नह्यसुखंपरप्रेमास्पदंभवतीति ॥ तदुक्तंसूतसंहितायाम् ॥ असुखस्यनहिप्रेमास्पदत्वंपरिदृश्यते ॥ १७ ॥ तत्रानुभवंदर्शयति । मानभूवंहीति ॥ हियतोऽहंमाभूवमितिन ॥ किंतुभूयासमेवेति प्रेमसर्वलोकस्यात्मनिस्थितमस्ति ॥ नह्येतदात्मनः सुखरूपत्वाभावेसंभवति ॥ तस्मात्प्राणिमात्रस्याऽनुभवादानंदात्मतासंविदोऽस्त्येवेत्यर्थः ॥ आत्मनोऽसंगत्वमुपपादयति । सर्वस्येति ॥ सर्वप्रपंचस्यमायानिर्मितत्वेनमिथ्यात्वात् मिथ्यापदार्थस्यसर्पादेरज्ज्वादिस्वसंबंधइवात्मनोपिमिथ्याप्रपंचेनासंबंधादसंगत्वंस्पष्टमेवेत्यर्थः ॥ १८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सर्वस्यपरिच्छेदकस्यमिथ्यात्वादेवात्मनः परिच्छेदोऽपिनास्तीत्याह । अपरिच्छिन्नतेति ॥ अतएवसर्वस्यमिथ्यात्वादेवममात्मरूपिण्याअपरिच्छिन्नताऽपिमतेत्यर्थः ॥ अत्रकेचिज्ज्ञानस्वरूपोनात्मांकित्वात्मनोधर्मोज्ञानमितिवदंतितन्मतंखंडयति । तच्चज्ञानमिति ॥ यदिज्ञानमात्मधर्मःस्यात्तदात्मनोजडत्वापत्तिः ॥ ज्ञानातिरिक्तस्यजडत्वात्तस्माज्ज्ञानंनात्मनोधर्मइत्यर्थः ॥१९॥ किंचज्ञानस्यजडशेषत्वंघटादिष्वदर्शनान्नकुत्रापिदृष्टंनचसंभवति ॥ तमःप्रकाशयोस्तयोर्धर्मधर्मित्वमित्यर्थः ॥ नन्वात्मानजडः किंतुचिद्रूपएवेति तद्धर्मत्वंज्ञानस्यसंभवतीतिचेत्तत्राह । चिद्धर्मत्वमिति ॥ उभयोश्चितोरेकत्वादात्मनोज्ञानस्यचचिद्रूपस्यनधर्मिधर्मभावःसंभवतीत्यर्थः ॥ भेदेहिसतिधर्मधर्मिभावः ॥ यदिपुनर्ज्ञानमात्मनश्चिद्रूपाद्भिन्नंस्वीक्रियते तर्हितज्ज्ञानंचितोभिन्नमचिदेवस्यादिति ॥ तदुक्तंसूतसंहितायांयज्ञवैभवखंडे ॥ चितोऽन्यशेषताभावाच्चितोचिच्छेषतानहि ॥ शरावादिपदार्थानांचेतनत्वप्रसक्तितः ॥ चिच्छेषत्वंचनास्त्येवचिताश्चिन्नाहिभिद्यते ॥ भिद्यतेचेदचिच्चित्स्याच्चितोचित्त्वंविरुध्यते ॥ तथाचिच्चेतनस्यापिनशेषत्वमवाप्नुयात् ॥ शेषत्वेसतितत्सिद्धिस्तत्सिद्धौशेषताचितः ॥ अतोन्यशेषतालोकेचितोभ्रांत्याप्रतीयत इति ॥ २० ॥ उपसंहरति । तस्मादिति ॥ तस्मादात्माज्ञानरूपएवेत्यर्थः ॥ २१ ॥ इत्थंसृष्टेःपूर्वंसशक्तिकस्यात्मरूपस्यस्थितिमुक्त्वाऽनंतरंतस्मादात्मनःसृष्टिमाह । सपुनरिति ॥ सआत्मापुनःकामइच्छाकर्मादृष्टमनेकविधम् ॥ आदिनाजीवास्तद्युक्तायामायाशक्तिस्तया ॥ पूर्वंयोजगतोऽनुभवस्तज्जन्योयः संस्कारस्तस्माद्धेतोःकालेनकृतोयःकर्मणांविपाकोनामपरिपाकः ॥

**अपरिच्छिन्नताप्येवमतएवमताममम ॥ तच्चज्ञानंनात्मधर्मोधर्मत्वेजडतात्मनः ॥ १९ ॥ ज्ञानस्यजडशेषत्वंनदृष्टंनचसंभवि ॥ चिद्धर्मत्वंतथानास्तिचितश्चिन्नाहिभिद्यते ॥ २० ॥ तस्मादात्माज्ञानरूपः सुखरूपश्चसर्वदा ॥ सत्यःपूर्णोप्यसंगश्चद्वैतजालविवर्जितः ॥ २१ ॥ सपुनःकामकर्मादियुक्तयास्वीयमायया ॥ पूर्वानुभूतसंस्कारात्कालकर्मविपाकतः ॥ २२ ॥ अविवेकाच्चतत्त्वस्यसिसृक्षावान्प्रजायते ॥ अबुद्धिपूर्वःसर्गोऽयंकथितस्तेनगाधिप॥ २३॥ एतद्धियन्मयाप्रोक्तंममरूपमलौकिकम् ॥ अव्याकृतंतदव्यक्तंमायाशबलमित्यपि ॥ २४ ॥ प्रोच्यतेसर्वशास्त्रेषुसर्वकारणकारणम् ॥ तत्त्वानामादिभूतंचसच्चिदानंदविग्रहम् ॥ २५ ॥ सर्वकर्मघनीभूतमिच्छाज्ञानक्रियाश्रयम् ॥ ह्रींकारमंत्रवाच्यंतदादितत्त्वंतदुच्यते ॥ २६ ॥**

फलदानायोन्मुखरूपस्तस्माच्चहेतोरित्यर्थः ॥ २२ ॥ तत्त्वस्यचतुर्विंशतितत्वात्मकस्याऽविवेकाच्चतस्यतत्त्वस्यपृथक्करणार्थमितितात्पर्यम् ॥ सिसृक्षावान्सर्जनेच्छावाञ्जायतइत्यर्थः ॥ यथाबीजमुच्छूनंभवतितथैवपरमात्मापिकालकर्मफलभोगसमयेप्राप्तेजगत्सर्जनेच्छावान्भवतियथाचसुप्तःपुरुषःपूर्वसंस्कारवशेनजागर्ति तद्वत्परमात्मापिप्रलयरूपस्वापावस्थातोजागर्ति ॥ प्रलयोहिपरमेश्वरस्यस्वापः ॥ अबुद्धिपूर्वइति ॥ साचेयंस्वापाज्जागरणरूपावस्थानबुद्धिकृता ॥ तदानींबुद्धेरभावात् ॥ किंतुप्राणिकर्मसंस्कारकृतेति ॥ अयंयःसर्गोजागरणरूपस्योत्पत्तिः ॥ सबुद्धिकृतोज्ञेयः संस्कारकृतोज्ञेयइत्यर्थः ॥२३॥ एतत्स्वरूपस्यसर्वोत्तमत्वमाह । एतद्धियदिति ॥ ममममुख्यमलौकिकंलोकातीतंरूपमित्यर्थः ॥ तस्यनामांतराणिवेदोक्तान्याह । अव्याकृतमिति ॥ २४ ॥ २५ ॥ सर्वप्राणिनांकर्माणिघनीभूतानियस्मिन्सर्वकर्मसाक्षीत्यर्थः ॥ इच्छाज्ञानक्रियाश्रयमिति ॥ तथाचश्रुतिःश्वेताश्वतरे ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते ॥ परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलंक्रियाचेति ॥ पुराणांतरेपि ॥ इच्छाज्ञानक्रियाचैवरौद्रीब्राह्मीतुवैष्णवी ॥ त्रिधाशक्तिःस्थितायत्रतत्परं ज्योतिरोमिति ॥ ह्रींकारमंत्रस्येदमेवतत्त्वंवाच्यमित्याह । ह्रींकारेति ॥ २६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एवमादितत्त्वस्यस्वस्यमहिमानमुपवर्ण्यतस्मादादितत्त्वात्ह्रींकारवाच्यादात्मनआकाशःसंभूतइत्यादिक्रमेणऽपंचीकृतभूतसृष्टिमाह । तस्मादाकाशइति ॥ अपंचीकृतआकाशउत्पन्नइत्यर्थः ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥२९ ॥ अधुनालिंगदेहोत्पत्तिमाह । तेभ्यइति ॥ तेभ्यःसूक्ष्मभूतेभ्योमहद्व्यापकंसूत्रमभवत् यत्सूत्रंलिंगमितिपरिचक्षते लिंगशब्देनोच्यतइत्यर्थः ॥ तेभ्योभूतेभ्योवक्ष्यमाणक्रमेणलिंगदेहउत्पन्नइत्यर्थः ॥ ३० ॥ तत्रसूत्रशब्देनवायुर्गृह्यते ॥ वायुर्वैसूत्रंवायुनावैसूत्रेणसर्वाणिभूतानिसंदब्धानीतिश्रुतेः ॥ तत्सूत्रंसर्वात्मकंसर्वप्राणात्मकंभवति ॥ तत्सूत्रंपरमात्मनः सूक्ष्मदेहइत्यर्थः ॥ यत्पूर्वमव्यक्तमित्युक्तंतत्परमात्मनः कारणदेहइत्याह । अव्यक्तंकारणोदेहइति ॥ ३१ ॥ यस्मिन्जगद्बीजरूपंस्थितंयस्माच्चलिंगदेहोद्भवस्तदव्यक्तमितिपूर्वेणान्वयः ॥ इत्थंपरमात्मनःसकाशादपंचीकृतभूतोत्पत्तिमुक्त्वामध्येकारणलिंगदेहस्वरूपंसूक्ष्मंसूक्ष्मभूतोत्पत्तिप्रसंगेनोक्त्वाऽथपंचीकृतभूतोत्पत्तिमाह । ततःस्थूलानीति ॥ ततोपंचीकृतभूतोत्पत्त्यनंतरमित्यर्थः ॥ ३२ ॥ पंचीकरणप्रकारमेवाह । पूर्वोक्तानीति ॥ यान्यपंचीकृतभूतानिपूर्वमुक्तानितन्मध्येएकैकंभूतंद्विधाविभजेत्तत्राप्येकैकभूतस्ययोर्धोभागस्तंचतुर्धाविभजेत् ॥

तस्मादाकाशउत्पन्नःशब्दतन्मात्ररूपकः ॥ भवेत्स्पर्शात्मकोवायुस्तेजोरूपात्मकंपुनः ॥२७॥ जलंरसात्मकंपश्चात्ततोगंधात्मिकाधरा ॥ शब्दैकगुणआकाशोवायुःस्पर्शरवान्वितः ॥ २८ ॥ शब्दस्पर्शरूपगुणंतेजइत्युच्यतेबुधैः ॥ शब्दस्पर्शरूपरसैरापोवेदगुणाःस्मृताः ॥ २९ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधैःपंचगुणाधरा ॥ तेभ्योऽभवन्महत्सूत्रंयल्लिंगंपरिचक्षते ॥ ३० ॥ सर्वात्मकंतत्संप्रोक्तंसूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥ अव्यक्तंकारणोदेहःसचोक्तःपूर्वमेवहि ॥ ॥ ३१ ॥ यस्मिञ्जगद्बीजरूपंस्थितंलिंगोद्भवोयतः ॥ ततःस्थूलानिभूतानिपंचीकरणमार्गतः ॥ ३२ ॥ पंचसंख्यानिजायंतेतत्प्रकारस्त्वथोच्यते ॥ पूर्वोक्तानिचभूतानिप्रत्येकंविभजेद्द्विधा ॥३३॥ एकैकंभागमेकस्यचतुर्धाविभजेद्द्विरे ॥ स्वस्वेतरद्वितीयांशेयोजनात्पंचपंचते ॥३४॥ तत्कार्यंचविराड्देहःस्थूलदेहोऽयमात्मनः ॥ पंचभूतस्थसत्त्वांशैःश्रोत्रादीनांसमुद्भवः ॥ ३५ ॥ ज्ञानेंद्रियाणांराजेंद्रप्रत्येकंमिलितैस्तुतैः ॥ अंतःकरणमेकंस्याद्वृत्तिभेदाच्चतुर्विधम् ॥ ३६ ॥ यदातुसंकल्पविकल्पकृत्यंतदाभवेत्तन्मनइत्यभिख्यम् ॥ स्याद्बुद्धिसंज्ञंचयदाप्रवेत्तिसुनिश्चितंसंशयहीनरूपम् ॥ ३७ ॥ अनुसंधानरूपंतच्चित्तंचपरिकीर्तितम् ॥ अहंकृत्यात्मवृत्त्यातुतदहंकारतांगतम् ॥ ३८ ॥

विभज्यस्वस्मात्स्वस्मादितरद्यद्भूतंतस्ययोद्वितीयोंशोर्धभागात्मकस्तस्मिन्योजनात्तेसर्वेपंचपदार्थाःपंचावयवाभवंतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ एवंपंचीकृतभूतानांयत्कार्यंतत्कार्यंविराड्देहोभवतीत्यर्थः ॥ सविराड्देहःपरमेश्वरस्यस्थूलदेहोभवतीत्याह । स्थूलदेहोयमात्मनइति ॥ आत्मनोममेत्यर्थः ॥ अथेंद्रियांतःकरणप्राणानांपूर्वोक्तलिंगदेहांतर्गतानामुत्पत्तिमाह । पंचभूतस्थेति ॥ पंचभूतानांयेसत्वांशास्तैःप्रत्येकंज्ञानेंद्रियाणिपंचभवंति ॥३५॥ मिलितैःसत्त्वांशैरंतःकरणंभवतीत्याह । मिलितैरिति ॥३६ ॥ वृत्तिभेदस्वरूपमाह । यदात्विति ॥ संकल्पविकल्पकृत्यंयदांतःकरणंकरोतितदातदंतःकरणंमनइत्यभिख्यंमनःसंज्ञकंभवतीत्यर्थः ॥ यदासंशयहीनंयथास्यात्तथासुनिश्चितंवस्तुतदंतःकरणंप्रवेत्तितदातद्बुद्धिसंज्ञकंभवतीत्यर्थः ॥ ३७ ॥ यदानुसंधानवृत्तिर्भवतितदांतःकरणस्याचित्तमितिसंज्ञेत्यर्थः॥अहंकृत्यात्मवृत्त्येति॥आत्मशब्दःस्वरूपपरः॥अहंकृतिस्वरूपवृत्त्यातुतदंतःकरणमहंकारतांगतमहंकारसंज्ञांलभतइत्यर्थः ॥३८॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अथकर्मेंद्रियाणामुत्पत्तिमाह । तेषामिति ॥ तेषांपंचभूतानांप्रत्येकंरजोंशैःकर्मेंद्रियाणिपंचोत्पद्यंते ॥ तैर्मिलितैस्तुरजोंशैःप्राणापानादिपंचवृत्त्यात्मकःप्राणोभवतीत्यर्थः॥३९॥ तेषांवायूनां वृत्तिभेदात्तेषांस्थानानिनामानिचाह । हृदिप्राणइति॥४०॥अधुनापूर्वोक्तलिंगदेहस्ययावत्स्वरूपमुच्यते । ज्ञानेंद्रियाणीति॥ धियाचसहितंमनइति । मनोबुद्धिश्चेत्यर्थः॥४१॥एतत्सप्तदशा वयवकंसूक्ष्मशरीरंमम यल्लिंगसंज्ञकंभवतितदित्याह । एतत्सूक्ष्ममिति ॥ इत्थंदेहत्रयस्वरूपमुक्त्वाजीवेश्वरविभागकारणमाह ॥ तत्रयाप्रकृतिरिति ॥ तत्रैकाशुद्धसत्त्वाभिधानासामाया द्वितीयामलिनसत्त्वप्रधानासाऽविद्येतिमायाविद्ययोर्भेदः ॥४२॥ तत्रयास्वाश्रयंरक्षेन्नावृणुयात्सामायेतिनिगद्यते ॥ ४३॥ तस्यामिति ॥ तस्यांस्वाश्रयाव्यामोहकारिण्यांशुद्धसत्त्वप्रधानायां मायायामीशितुः परमात्मनोयत्प्रतिबिंबंपतातितत्प्रतिबिंबमीश्वरः समाख्यातः ॥ सचेश्वरः स्वाश्रयंव्यापकंब्रह्मतज्ज्ञानवान्भवति ॥ माययातदाधारब्रह्मणोऽनावरणात् ॥ ४४ ॥ किं चतस्यव्यापकत्वात्कुत्रापितज्ज्ञानस्यावरणाभावात्ससर्वज्ञोभवति अचिंत्यमायाशक्तिमत्त्वात्सर्वकर्ताचसर्वानुग्रहकर्ताचभवतीत्यर्थः ॥ अविद्यायामिति ॥ मालिनसत्त्वप्रधानायामविद्यायांय त्प्रतिबिंबंतज्जीवसंज्ञंभवतीत्युत्तरेणान्वयः ॥४५॥ तज्जीवसंज्ञंमलिनसत्त्वप्रधानाऽविद्ययातदाश्रयस्यस्वरूपभूतानंदस्यावरणात्सर्वदुःखाश्रयमसर्वज्ञमव्यापकंचभवतीत्यर्थः ॥ द्वयोरपीति ॥

तेषांरजोंशैर्जातानिक्रमात्कर्मेंद्रियाणिच ॥ प्रत्येकंमिलितैस्तैस्तुप्राणोभवतिपंचधा ॥ ३९ ॥ हृदिप्राणोगुदेपानोनाभिस्थस्तुसमानकः ॥ कंठदेशेप्युदा नःस्याद्व्यानःसर्वशरीरगः ॥ ४० ॥ ज्ञानेंद्रियाणिपंचैवपंचकर्मेंद्रियाणिच ॥ प्राणादिपंचकंचैवधियाचसहितंमनः ॥ ४१ ॥ एतत्सूक्ष्मशरीरंस्यान्मम लिंगंयदुच्यते ॥ तत्रयाप्रकृतिःप्रोक्तासाराजन्द्विविधास्मृता ॥ ४२ ॥ सत्त्वात्मिकातुमायास्यादविद्यागुणमिश्रिता ॥ स्वाश्रयंयातुसंरक्षेत्सामायेतिनि गद्यते ॥ ४३ ॥ तस्यांयत्प्रतिबिंबंस्याद्बिंबभूतस्यचेशितुः ॥ सईश्वरःसमाख्यातःस्वाश्रयज्ञानवान्परः ॥ ४४ ॥ सर्वज्ञःसर्वकर्ताचसर्वानुग्रहकारकः ॥ अविद्यायांतुयत्किंचित्प्रतिबिंबंनगाधिप ॥ ४५ ॥ तदेवजीवसंज्ञंस्यात्सर्वदुःखाश्रयंपुनः ॥ द्वयोरपीहसंप्रोक्तंदेहत्रयमविद्यया ॥ ४६ ॥ देहत्रयाभि मानाच्चाप्यभून्नामत्रयंपुनः ॥ प्राज्ञस्तुकारणात्मास्यात्सूक्ष्मदेहीतुतैजसः ॥ ४७ ॥ स्थूलदेहीतुविश्वाख्यस्त्रिविधःपरिकीर्तितः ॥ एवमीशोपिसंप्रोक्तई शसूत्रविराट्पदैः ॥ ४८ ॥ प्रथमोव्यष्टिरूपस्तुसमष्ट्यात्मापरःस्मृतः ॥ सहिसर्वेश्वरःसाक्षाज्जीवानुग्रहकाम्यया ॥ ४९ ॥ करोतिविविधंविश्वंनाना भोगाश्रयंपुनः ॥ मच्छक्तिप्रेरितोनित्यंमयिराजन्प्रकल्पितः ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

द्वयोरपीश्वरजीवयोर्देहत्रयंपूर्वोक्तंभवति ॥ ईश्वरस्यावरणाभावेपिविक्षेपस्यसत्त्वात्॥अत्राऽविद्ययेत्यनेनमायाविद्ययोरुभयोरपिग्रहणम् ॥ ४६ ॥ देहत्रयाभिमानेति॥उभयोरपिदेहत्रयाभिमा नान्नामत्रयंभवतीत्यर्थः ॥ तत्रजीवस्यनामत्रयंवदति । प्राज्ञस्त्विति ॥ कारणदेहाभिमानीयःसप्राज्ञःसूक्ष्मदेहाभिमानीतुतैजसः॥४७॥स्थूलदेहीति॥स्थूलदेहाभिमानीतुविश्वसंज्ञकइत्यर्थः ॥ एवमीश्वरोपिदेहत्रयाभिमानादीशसूत्रविराट्पदैःसंप्रोक्तःकथितइत्यर्थः ॥ ४८ ॥ प्रथमइति ॥ प्रथमोजीवोव्यष्टिरूपोव्यष्टिदेहत्रयाभिमानीत्यर्थः ॥ परईश्वरस्तुसमष्टिदेहाभिमानी त्यर्थः ॥ ईश्वरस्यमहिमानंवर्णयति । सहिसर्वेश्वरइति ॥ तस्यस्वानुभवानंदेननिरंतरंनित्यतृप्तत्वेपिकेवलंजीवानुग्रहकाम्ययाजीवानांमोक्षोभवत्वितीच्छयानानाविधंविश्वंनानाभोगाश्रयंरचयती तिकरुणासमुद्रईश्वरइत्यर्थः ॥ ४९ ॥ सोपीति ॥ हेराजन्सोपीश्वरोममब्रह्मरूपिण्यामायाशक्तिस्तयाप्रेरितएवसर्वंकरोति यतःसईश्वरोमयिब्रह्मरूपिण्यांरज्जुसर्पवदेवकल्पितस्ततोमच्छ क्त्यधीनएवेत्यर्थः ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





षट्पंचाशन्महापद्यैरपवादपुरःसरम् ॥ महाघोरंविश्वरूपंदर्शितंचेतिकथ्यते ॥ १ ॥ इत्थमध्यारोपमुक्त्वापवादमाह । मन्मायेति ॥ हेपर्वत ययामन्मायाशक्त्याचराचरंसर्वंजगत्क्लृप्तंसापि मायामत्तोमत्स्वरूपात्पृथङ्नास्ति तस्यामायिकल्पितत्वेनमिथ्यात्वात् ॥ मिथ्यापदार्थस्यचाऽधिष्ठानसत्त्वाद्विरिक्तसत्ताभावात् ॥ तस्मादहमेवाऽस्मिपरमार्थतोनान्यत्किंचिद्वस्त्वंतरमस्ती त्यर्थः ॥ १ ॥ ननुसर्वथाद्वैताभावेजगत्कथंभासतेइतिचेत्तत्राह ॥ व्यवहारेति ॥ अनाद्यविद्याभ्रांतानांयोव्यवहारस्तद्दृशातद्दृष्ट्यामायाविद्येतिविश्रुताभवति ॥ तत्त्वदृष्ट्यातुब्रह्मदृष्ट्यातुसा नैवास्ति किंतुतत्त्वमेवकेवलमस्तीत्यर्थः ॥ नहिभ्रांतदृष्ट्यारज्जुसर्पवत्कारणाज्ञानसत्त्वेपिरज्जुदृष्ट्याकिंचिदपितद्वर्ततइतिभावः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ ननिरोधोनचोत्पत्तिर्नबद्धोनचसाधकः ॥ नमुमुक्षुर्नवैमुक्तइत्येषापरमार्थतेति ॥ तापनीयेच असत्त्वमरजस्कमतमस्कममायामितिब्रह्मवर्णितम्॥२॥ ननुयदिप्रपंचोमिथ्यातर्हितदंतःपातीजीवोपिमिथ्येतिवक्तव्यम् ॥ तथाचजीवस्यमि थ्यात्वेमोक्षदशायांतस्यावस्थानाभावेनस्वनाशार्थंकदापिजीवोनयत्नंकुर्यादितिमोक्षशास्त्रंव्यर्थमेवेतिचेत्तत्राह।साहमिति॥ हेगिरेमायाचाविद्याकर्माणितत्तत्प्राणिनाम् आदिनानानासंस्काराश्च तैःसहिताऽहमेवकूटस्थब्रह्मरूपासर्वंजगत्प्रथमतः सृष्ट्वातदंतस्तन्मध्येघटेआकाशवदादर्शेप्रतिबिंबवद्वाचिदाभासरूपेणप्रविशामि॥तत्रापिप्राणपुरःसराप्राणमग्रतःकृत्वाप्रविशामि॥३॥किमर्थ मितिचेत्तत्राह । लोकांतरगतिरीति ॥ यद्यहंप्राणंपुरःसरंकृत्वाप्राणाभिमानंकृत्वानप्रवेक्ष्यामितर्हिममव्यापकत्वाल्लोकांतरगमनादिकंजननमरणादिव्यवहारश्चकथंस्यात् ॥ नहिव्यापकस्यग

देव्युवाच ॥ मन्मायाशक्तिसंकृप्तंजगत्सर्वंचराचरम् ॥ सापिमत्तःपृथङ्नायानास्त्येवपरमार्थतः ॥ १ ॥ व्यवहारदृशासेयंविद्यामायेतिविश्रुता ॥ तत्त्वदृ ष्ट्यातुनास्त्येवतत्त्वमेवास्तिकेवलम् ॥ २ ॥ साऽहंसर्वंजगत्सृष्ट्वातदंतःप्रविशाम्यहम् ॥ मायाकर्मादिसहितागिरेप्राणपुरःसरा ॥ ३ ॥ लोकांतरगतिर्नो चेत्कथंस्यादितिहेतुना ॥ यथायथाभवंत्येवमायाभेदास्तथातथा ॥ ४ ॥ उपाधिभेदाद्भिन्नाऽहंघटाकाशादयोयथा ॥ उच्चनीचादिवस्तूनिभासयन्भा स्करःसदा ॥ ५ ॥ नदुष्यतितथैवाऽहंदोषैर्लिप्ताकदापिन ॥ मयिबुद्ध्यादिकर्तृत्वमध्यस्यैवाऽपरेजनाः ॥ ६ ॥

मनागमनंदेहसंबंधोदेहत्यागश्चसंभवति इतिहेतुनातद्धेत्वर्थंप्राणपुरःसरंप्रविशामि ॥ तस्मिंश्चप्राणेस्वीकृतेसतितस्यदेहांतरप्रवेशेजन्मतत्त्यागेमरणंतथैवलोकांतरगतिश्चेतिसर्वंसिध्यतीति ॥ अयंभावः ॥ नकेवलंजीवत्वंचिदाभासस्यैव येनपूर्वोक्तंदूषणंभवेत् ॥ किंतर्हिअहंकूटस्थरूपिणीतथांतःकरणंतदाश्रयभूताविद्याचिदाभासश्चेतिचतुष्टयंमिलित्वाजीवत्वम् ॥ यथाचज्ञानेन विद्यांतःकरणचिदाभासानांनाशेपिकूटस्थब्रह्मांशस्यमुक्ताववशेषान्नजीवस्यमोक्षार्थमप्रवृत्तिर्नवामोक्षशास्त्रानर्थक्यमिति॥ननुतर्हितवैकत्वाज्जीवस्याप्येकत्वंस्यादितिचेत्तत्राह । यथायथेति॥ ननुतर्हियथाव्यापकएकएवाकाशोघटाद्युपाधिभेदेनयथाभिद्यते तथाविधानेकत्वस्वीकारेणाऽविद्यानामंतःकरणानांचभेदात्कूटस्थोपिभिद्यतइतिजीववहुत्वमप्युपपन्नमेवेत्यर्थः ॥ तथाचश्रु तिः इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयतेयुक्ताह्यस्यहरयःशतादशेति ॥ ४ ॥ तवजगदंतःपातित्वेनतद्दोषेणदुष्टत्वमपिस्यात्तत्राह । उच्चनीचादिवस्तूनीति ॥ यथासूर्यःसर्वाण्युच्चनीचा दिवस्तूनिभासयन्नपिनदुष्यति तथैवाऽहंकदापिदोषैर्दुष्टानास्मीत्यर्थः ॥ ५ ॥ ननुसूर्यःसाक्षिभूतोनदुष्यतीतियुक्तम् ॥ त्वंतुसकलकार्यकर्त्रीतिकर्तुर्दोषलेपोभविष्यत्येवेतिचेत्तत्राह। मयिबु द्ध्यादीति ॥ विमूढाबुद्ध्यादिनिष्ठंकर्तृत्वमाविवेकेनमय्यात्मन्यध्यस्यात्माकर्तेतिवदन्तिनसुबुद्धयोविवेकिनः ॥ तथाचसूर्यवदहमपिसाक्षिण्येवनकर्त्रीतिभावः ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अज्ञानभेदतइति ॥ जीववहुत्ववदीश्वरमूर्तिवहुत्वमपिमायायाभेदान्मायाकल्पितब्रह्मविष्ण्वाद्याकारभेदाद्भवतीतिजीवेश्वरसिद्धिमुपसंहरति । जीवेश्वरविभागश्चेति ॥ अज्ञानभेदाज्जीवसिद्धि
र्मायाभेदादीश्वरसिद्धिरित्यर्थः ॥ ७ ॥ तत्रदृष्टांतमाह । घटाकाशेति ॥ ८ ॥ ईश्वरवहुत्वंब्रह्मविष्ण्वादिरूपेश्वरवहुत्वमित्यर्थः ॥ ९ ॥ जीवभेदहेतुंविशदयति । देहेंद्रियादीति ॥ १० ॥
हेधराधरपर्वत।गुणानांयेवासनाभेदाःसात्त्विकाराजसास्तामसाश्चतैर्भेदितायामायासापरभेदस्यब्रह्मविष्ण्वादीश्वरभेदस्यहेतुर्नान्यइत्यर्थः ॥ इदंसूतसंहितांतर्गतसूतगीतायांस्पष्टम् व्याख्यातं
चतत्रमाधवाचार्यैः ॥ ११ ॥ यतएकमेवचैतन्यंसर्वात्मकंततोऽहंसर्वात्मिकास्मीत्याह । मयीति ॥ ओतंप्रोतंग्रथितमित्यर्थः ॥ १२ ॥ ईश्वरःकारणदेहाभिमानी ॥ लिंगदेहाभिमानीसूत्रा

वदंतिचाऽऽत्माकर्मेतिविमूढानसुबुद्धयः ॥ अज्ञानभेदतस्तद्वन्मायायाभेदतस्तथा ॥ ७ ॥ जीवेश्वरविभागश्चकल्पितोमाययैवतु ॥ घटाकाशमहाकाश
विभागःकल्पितोयथा ॥ ८ ॥ तथैवकल्पितोभेदोजीवात्मपरमात्मनोः ॥ यथाजीववहुत्वंचमाययैवनचस्वतः ॥ ९ ॥ तथेश्वरवहुत्वंचमाययानस्वभा
वतः ॥ देहेंद्रियादिसंघातवासनाभेदभेदिता ॥ १० ॥ अविद्याजीवभेदस्यहेतुर्नान्यःप्रकीर्तितः ॥ गुणानांवासनाभेदभेदितायाधराधर ॥ ११ ॥ माया
सापरभेदस्यहेतुर्नान्यःकदाचन ॥ मयिसर्वमिदंप्रोतमोतंचधरणीधर ॥ १२ ॥ ईश्वरोऽहंचसूत्रात्माविराडात्माऽहमस्मिच ॥ ब्रह्माऽहंविष्णुरुद्रौचगौरी
ब्राह्मीचवैष्णवी ॥ १३ ॥ सूर्योऽहंतारकाश्चाऽहंतारकेशस्तथाऽस्म्यहम् ॥ पशुपक्षिस्वरूपाऽहंचांडालोऽहंचतस्करः ॥ १४ ॥ व्याधोऽहंक्रूरकर्माऽहंस
त्कर्माऽहंमहाजनः ॥ स्त्रीपुन्नपुंसकाकारोऽप्यहमेवनसंशयः ॥ १५ ॥ यच्चकिंचित्क्वचिद्वस्तुदृश्यतेश्रूयतेऽपिवा ॥ अंतर्वहिश्चतत्सर्वंव्याप्याऽहंसर्वदा
स्थिता ॥१६॥ नतदस्तिमयात्यक्तंवस्तुकिंचिच्चराचरम् ॥ यद्यस्तिचेत्तच्छून्यंस्याद्वंध्यापुत्रोपमंहितत् ॥१७॥ रज्जुर्यथासर्पमालाभेदैरेकाविभातिहि ॥
तथैवेशादिरूपेणभाम्यहंनात्रसंशयः ॥ १८॥ अधिष्ठानातिरेकेणकल्पितंतन्नभासते ॥ तस्मान्मत्सत्तयैवैतत्सत्तावन्नान्यथाभवेत्॥१९॥हिमालयउवाच॥
यथावदसिदेवेशिसमष्ट्यात्मवपुस्त्विदम् ॥ तथैवद्रष्टुमिच्छामियदिदेविकृपामयि ॥२० ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वासर्वेदेवाःसविष्णवः ॥ ननं
दुर्मुदितात्मानः पूजयंतश्चतद्वचः ॥२१॥ अथदेवमतंज्ञात्वाभक्तकामदुघाशिवा ॥ अदर्शयन्निजंरूपंभक्तकामप्रपूरिणी॥२२॥अपश्यंस्तेमहादेव्याविराड्
रूपंपरात्परम्॥द्यौर्मस्तकंभवेद्यस्यचंद्रसूर्यौचचक्षुषी॥२३॥दिशःश्रोत्रेवचोवेदाःप्राणोवायुःप्रकीर्तितः ॥ विश्वंहृदयमित्याहुःपृथिवीजघनंस्मृतम् ॥२४॥

त्माहिरण्यगर्भः ॥ विराट्स्थूलदेहाभिमानी ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ शून्यंस्यादिति ॥ मयासद्रूपयात्यक्तंशून्यमसदेवस्यादित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ अधिष्ठानातिरेकेणेति ॥
अधिष्ठानसत्तातिरेकेणेत्यर्थः ॥ यतएतत्कल्पितंजगत्तस्मान्मत्सत्तयैवसत्तावद्भवेन्नान्यथेत्यर्थः ॥ १९ ॥ समष्ट्यात्मेति ॥ सर्वाभिमानीविराट्स्वरूपंयथावदसीत्यर्थः ॥ २० ॥ पूजयंत
श्चेति ॥ सवपांभगवतीविराट्स्वरूपदर्शनोत्सुकत्वात्स्वाभीष्टसंपादनेप्रवृत्तस्यहिमालयस्यतद्वचःसाधुसाध्वितिपूजयंतइत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ द्यौर्मस्तकमिति ॥ अत्रद्यौःशब्देनसर्वोर्ध्वः
सत्यलोकोगृह्यते ॥ २३ ॥ वायुरेवैतस्यप्राणाः विश्वंसर्वात्मकमव्यक्तमित्यर्थः ॥ तदस्यरूपस्यहृदयम् ॥ २४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नभस्तलंभुवर्लोकः ॥ २५ ॥ सत्यलोकादधःस्थितस्तपोलोकोरराटिर्ललाटमित्यर्थः ॥ शब्दःश्रोत्रमिति ॥ योऽस्माकंश्रोत्रविषयःशब्दःसतस्यरूपस्यश्रोत्रंश्रोत्रेंद्रियंभवतीत्यर्थः ॥ पूर्वत्र दिशःश्रोत्रेइत्यत्रतुश्रोत्रशब्देनश्रोत्रेंद्रियाधारोगृह्यतइतिनपुनरुक्तिः ॥ २६ ॥ नासत्यदस्रौअश्विनीकुमारौतावस्यरूपस्यनासेनासापुटेस्तः ॥ गंधस्तुघ्राणंघ्राणेंद्रियमित्यर्थः ॥ २७ ॥ ब्रह्मस्थानंप्रजापतिचतुर्मुखस्थानंतदस्यभ्रूविजृंभोभ्रूविकासः ॥ आपोजलानितुतालुःरसनेंद्रियाधारोभवति ॥ तद्गतोरसस्तुजिह्वाभवति ॥ रसनेंद्रियंभवतीत्यर्थः ॥ २८ ॥ स्नेहकलाः स्त्रीपुत्रादिस्नेहलेशाः ॥ सर्गःसृष्टिरेवाऽपांगमोक्षःकटाक्षइत्यर्थः ॥ २९ ॥ अधर्ममार्गस्तुपृष्ठभागइत्यर्थः ॥ ३० ॥ महेशितुर्महेश्वर्यादेव्यागिरयःपर्वताअस्थीनीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ कौमारेति। त्रिविधंवयोगतिरित्यर्थः ॥ ३२ ॥ चंद्रमास्त्विति। तुशब्दोमनइत्यत्रयोज्यः ॥ हेराजन्जनमेजय श्रीजगदंबायाश्चंद्रोमनोपिस्मृतइत्यर्थः ॥ तेनपूर्वोक्तनेत्रमध्येगणितस्यचंद्रमसोमनस्त्वम

नभस्तलंनाभिसरोज्योतिश्चक्रमुरःस्थलम् ॥ महर्लोकस्तुग्रीवास्याज्जनोलोकोमुखंस्मृतम् ॥२५॥ तपोलोकोरराटिस्तुसत्यलोकादधःस्थितः ॥इंद्रादयो बाहवःस्युःशब्दःश्रोत्रंमहेशितुः ॥ २६ ॥ नासत्यदस्रौनासेस्तोगंधोघ्राणंस्मृतोबुधैः ॥ मुखमग्निःसमाख्यातोदिवारात्रीचपक्ष्मणी ॥ २७ ॥ ब्रह्मस्थानं भ्रूविजृंभोऽप्यापस्तालुःप्रकीर्तिताः ॥ रसोजिह्वासमाख्यातायमोदंष्ट्राःप्रकीर्तिताः ॥ २८ ॥ दंताःस्नेहकलायस्यहासोमायाप्रकीर्तिता ॥ सर्गस्त्वपांगमो क्षःस्याद्व्रीडोर्ध्वोष्ठोमहेशितुः ॥ २९ ॥ लोभःस्यादधरोष्ठोऽस्याधर्ममार्गस्तुपृष्ठभूः ॥ प्रजापतिश्चमेढ्रंस्याद्यःस्रष्टाजगतीतले ॥ ३० ॥ कुक्षिःसमुद्रागिर योऽस्थीनिदेव्यामहेशितुः ॥ नद्योनाड्यःसमाख्यातावृक्षाःकेशाःप्रकीर्तिताः ॥ ३१ ॥ कौमारयौवनजरावयोऽस्यगतिरुत्तमा ॥ बलाहकास्तुकेशाःस्युः संध्यंतेवाससीविभोः ॥ ३२ ॥ राजञ्छ्रीजगदंबायाश्चंद्रमास्तुमनःस्मृतः ॥ विज्ञानशक्तिस्तुहरीरुद्रोंतःकरणंस्मृतम् ॥ ३३ ॥ अश्वाहिजातयःसर्वाः श्रोणिदेशेस्थिताविभोः ॥ अतलादिमहालोकाःकट्यधोभागतांगताः ॥ ३४ ॥ एतादृशंमहारूपंददृशुःसुरपुंगवाः ॥ ज्वालामालासहस्राढ्यंलेलिहानंच जिह्वया ॥ ३५ ॥ दंष्ट्राकटकटारावंवमंतंवह्निमक्षिभिः ॥ नानायुधधरंवीरंब्रह्मक्षत्रौदनंचयत् ॥ ३६ ॥ सहस्रशीर्षनयनंसहस्रचरणंतथा ॥ कोटिसू र्यप्रतीकाशंविद्युत्कोटिसमप्रभम् ॥ ३७ ॥ भयंकरंमहाघोरंहृदक्ष्णोस्त्रासकारकम् ॥ ददृशुस्तेसुराःसर्वेहाहाकारंचचक्रिरे॥३८॥विकंपमानहृदयामूर्च्छा मापुर्दुरत्ययाम् ॥ स्मरणंचगतंतेषांजगदंबेयमित्यपि ॥ ३९ ॥

पिबोधितमितिबोध्यम् ॥ विज्ञानशक्तिर्बुद्धिःसाहरिः ॥ ३३ ॥ अतलादीति ॥ अतलादिपातालांतालोकायथायोग्यंकट्यधोभागतांगताः ॥ कटिमारभ्यपादमूलपर्यंतंव्यवस्थिताइत्यर्थः॥ तथाचश्रुतिः ॥ अग्निर्मूर्धाचक्षुषीचंद्रसूर्यौदिशःश्रोत्रेवाग्विवृताश्चवेदाः ॥ वायुःप्राणोहृदयंविश्वमस्यपद्भ्यांपृथिवीह्येषसर्वभूतांतरात्मेति ॥ ३४ ॥ जिह्वयासर्वंजगल्लेलिहानंस्वादयंतम् ॥ ३५ ॥ दंष्ट्रासुकटकटारावःकटकटेतिशब्दोयस्य ॥ ब्रह्मक्षत्रेओदनोयस्य ॥ यस्यब्रह्मक्षत्रंचोभेभवतओदनोमृत्युर्यस्योपसेचनमितिश्रुतेः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ हाहाकारंभयेनभीतत्वाच्च क्रिरेइत्यर्थः ॥ ३८ ॥ स्मरणंचगतमिति ॥ इयंजगदंबाऽस्माकंपालयित्रीतिस्मरणमपितेषांगतंनष्टमित्यर्थः ॥ ३९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अथतइति ॥ विभोर्देव्याश्चतुर्दिक्षुयेमूर्तिमंतोवेदाःस्थितास्तेमूर्छितान्देवान्मूर्छीतोबोधयामासुर्व्युत्थापयामासुरित्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सभयाजाताःस्मइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ स्वस्याप्यज्ञेयइति ॥ यावान्यत्परिमाणवान्यश्चयादृशस्तवस्वपराक्रमःसतवस्वस्याप्यज्ञेयएवैतादृशोसौतवपराक्रमोऽस्माकंतदर्वाक्जायमानानांकथंसविषयोभवेन्नकथमपीत्यर्थः ॥ तथाच श्रुतिः ॥ अर्वाग्देवाअस्यविसर्जनेनाथाःकोवेदयतआबभूवेति ॥ योअस्याध्यक्षःपरमेव्योमन्सोअंगवेदयदिवानवेदेति ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ यस्मात्संभूतोविधिरितिकर्तव्यतारूपस्तस्मैनमइत्यन्वयः ॥ ४८ ॥ ससप्तप्राणार्चिषइति ॥ प्राणाश्चार्चिषश्चेतिद्वंद्वः ॥ सप्तशीर्षण्याःप्राणास्तस्मादेवभवंतीत्यर्थः ॥ तेषांचसप्तार्चिषोदीप्तयःस्वस्वविषयावद्योतनानि ॥

अथतेयेस्थितावेदाश्चतुर्दिक्षुमहाविभोः ॥ बोधयामासुरत्युग्रंमूर्च्छितोमूर्च्छितान्सुरान् ॥ ४० ॥ अथतेधैर्यमालंब्यलब्ध्वाचश्रुतिमुत्तमाम् ॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयनारुद्धकंठास्तुनिर्जराः ॥ ४१ ॥ बाष्पगद्गदयावाचास्तोतुंसमुपचक्रिरे ॥ देवाऊचुः ॥ अपराधंक्षमस्वांबपाहिदीनांस्त्वदुद्भवान् ॥ ४२ ॥ कोपंसंहरदेवेशिसभयारूपदर्शनात् ॥ कातेस्तुतिःप्रकर्तव्यापामरैर्निर्जरैरिह ॥ ४३ ॥ स्वस्याप्यज्ञेयएवाऽसौयावान्यश्चस्वविक्रमः ॥ तदर्वाग्जायमानानांकथंसविषयोभवेत् ॥ ४४ ॥ नमस्तेभुवनेशानिनमस्तेप्रणवात्मिके ॥ सर्ववेदांतसंसिद्धेनमोह्रींकारमूर्तये ॥४५॥ यस्मादग्निःसमुत्पन्नोयस्मात्सूर्यश्चचंद्रमाः ॥ यस्मादोषधयःसर्वास्तस्मैसर्वात्मनेनमः ॥ ४६ ॥ यस्माच्चदेवाःसंभूताःसाध्याःपक्षिणएवच ॥ पशवश्चमनुष्याश्चतस्मैसर्वात्मनेनमः ॥ ४७ ॥ प्राणापानौव्रीहियवौतपःश्रद्धाऋतंतथा ॥ ब्रह्मचर्यंविधिश्चैवयस्मात्तस्मैनमोनमः ॥ ४८ ॥ सप्तप्राणार्चिषोयस्मात्समिधःसप्तएवच ॥ होमाःसप्ततथा लोकास्तस्मैसर्वात्मनेनमः ॥ ४९ ॥ यस्मात्समुद्रागिरयःसिंधवःप्रचरंतिच ॥ यस्मादोषधयःसर्वारसास्तस्मैनमोनमः ॥ ५० ॥ यस्माद्यज्ञःसमुद्भूतोदीक्षायूपश्चदक्षिणाः ॥ ऋचोयजूंषिसामानितस्मैसर्वात्मनेनमः ॥ ५१ ॥ नमःपुरस्तात्पृष्ठेचनमस्तेपार्श्वयोर्द्वयोः ॥ अधऊर्ध्वंचतुर्दिक्षुमातर्भूयोनमोनमः ॥५२॥ उपसंहरदेवेशिरूपमेतदलौकिकम् ॥ तदेवदर्शयाऽस्माकंरूपंसुंदरसुंदरम् ॥५३॥ व्यासउवाच ॥ इतिभीतान्सुरान्दृष्ट्वाजगदंबाकृपार्णवा ॥ संहृत्यरूपंघोरंतद्दर्शयामाससुंदरम् ॥५४॥ पाशांकुशवराभीतिधरंसर्वांगकोमलम्॥करुणापूर्णनयनंमंदस्मितमुखांबुजम् ॥ ५५ ॥ दृष्ट्वातत्सुंदरंरूपंतदाभीतिविवर्जिताः॥शांतचित्ताःप्रणेमुस्तेहर्षगद्गदनिःस्वनाः ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

तथासप्तसमिधः ॥ सप्तविषयाःविषयैर्हिप्राणाःसमिध्यंते ॥ सप्तहोमास्तद्विषयविज्ञानानि ॥ यदस्यविज्ञानंतज्जुहोतीतिश्रुत्यंतरात् ॥ तथासप्तलोकाइंद्रियस्थानानि ॥ एतेयस्माज्जातास्तस्मैसर्वात्मनेनमः ॥ तथाचश्रुतिर्मुंडके ॥ यस्मादग्निःसमिधोयस्यसूर्यः ॥ सोमात्पर्जन्यओषधयःप्रजानामित्यादि तस्माद्दचःसामयजूंषिदीक्षायज्ञाश्चसर्वेक्रतवोदक्षिणाश्च संवत्सरोयजमानश्चलोकाःसोमोयत्रपवतेयत्रसूर्यइति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पंचाशत्पद्यवर्यैस्तुवैराग्यकथनोत्तरम्॥ज्ञानमेवतुसंपाद्यंमोक्षार्थमितिकथ्यते॥१॥दर्शितंविश्वरूपमनायासेनलब्धमस्माभिरितिसहजमस्तीतिनमंतव्यमितिदेवान्प्रतिभगवतीमाह। क्रयूयमिति ॥१॥२॥ प्रकृतमिति॥ब्रह्मविद्योपदेशप्रकरणंहिप्रचलितं पूर्वमध्येदेवैर्विश्वरूपदर्शनार्थंप्रार्थितासतीविश्वरूपंदर्शयामास ॥ उपसंहृतेतुविश्वरूपेपुनःप्रकृतंयदुपदेशप्रकरणंतच्छृण्वितिहिमाल यंप्रतिभगवतीवदतीतिबोध्यम् ॥ परमात्मात्रजीवतामिति ॥ अमूढोमूढइवव्यवहरन्नास्तेमाययैवेतिश्रुतेरित्यर्थः॥३॥ वैराग्यार्थमाह। क्रियाःकरोतीति॥४॥ तत्संस्कृतिःसुखदुःखसंस्कारः ॥५॥ एतस्येति ॥ एतस्यजन्ममरणप्रबंधरूपस्यसंसारस्यविरामःसमाप्तिःकदापिनास्ति ॥ अद्यपर्यंतमनंतसृष्टिप्रलयेषुजातेष्वपिजीवसंसारस्यविद्यमानत्वात् ॥ इत्थंसंसारस्याऽनादिकाल प्रवृत्तत्वमुपपाद्यतन्नाशोपायप्रदर्शनार्थंतन्निदानमाह॥अज्ञानमेवेति॥ततःकामोऽविद्यातइच्छेत्यर्थः। इच्छातःक्रियाभवतीत्यर्थः॥६॥यस्मादज्ञानमेवमूलंतस्मादित्यर्थः॥ एतद्धिजन्मेति॥ तथाच श्रुतिः॥योह्यविदित्वात्मानमस्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणइति॥७॥अज्ञाननाशनसाधनमाह॥ विद्यैवेति ॥ ८ ॥ तज्जमज्ञानजंकर्मनपटीयइत्यर्थः॥तत्रहेतुमाह।विरोधाभावतइति॥नह्यंधकारोंधकारंना शयति तद्वदज्ञानजन्यकर्मणोप्यज्ञानरूपत्वान्नतेनाऽज्ञानेनकर्मणाविरोधइत्यर्थः।कर्मणाज्ञाननाशेआशानैवभाव्यतांनैवकर्तव्येत्यर्थः ॥ ९ ॥ कर्मणिदोषंवदति। अनर्थदानीति ॥१०॥ अत्रसमु

श्रीदेव्युवाच ॥ क्रयूयंमंदभाग्यावैकेदंरूपंमहाद्भुतम् ॥ तथापिभक्तवात्सल्यादीदृशंदर्शितंमया ॥ १ ॥ नवेदाध्ययनैर्योगैर्नदानैस्तपसेज्यया ॥ रूपंद्रष्टुमि दंशक्यंकेवलंमत्कृपांविना ॥२॥ प्रकृतंशृणुराजेंद्रपरमात्माऽत्रजीवताम् ॥ उपाधियोगात्संप्राप्तःकर्तृत्वादिकमप्युत ॥३॥ क्रियाःकरोतिविविधाधर्माधर्मै कहेतवः ॥ नानायोनीस्ततःप्राप्यसुखदुःखैश्चयुज्यते॥४॥पुनस्तत्संस्कृतिवशान्नानाकर्मरतःसदा ॥ नानादेहान्समाप्नोतिसुखदुःखैश्चयुज्यते ॥ ५ ॥ घटीयं त्रवदेतस्यनविरामःकदापिहि॥अज्ञानमेवमूलंस्यात्ततःकामःक्रियास्ततः ॥६॥ तस्मादज्ञाननाशाययतेतनियतंनरः॥एतद्धिजन्मसाफल्यंयदज्ञानस्यना शनम् ॥७॥ पुरुषार्थसमाप्तिश्चजीवन्मुक्तदशापिच ॥ अज्ञाननाशनेशक्ताविद्यैवतुपटीयसी ॥ ८ ॥ नकर्मतज्जंनोपास्तिर्विरोधाभावतोगिरे ॥ प्रत्युताशा ज्ञाननाशेकर्मणानैवभाव्यताम्॥९॥अनर्थदानिकर्माणिपुनःपुनरुशंतिहि ॥ ततोरागस्ततोदोषस्ततोनर्थोमहान्भवेत् ॥१०॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनज्ञानंसंपा दयेन्नरः ॥ कुर्वन्नेवेहकर्माणीत्यतःकर्माप्यवश्यकम् ॥ ११ ॥ज्ञानादेवहिकैवल्यमतःस्यात्तत्समुच्चयः ॥ सहायतांव्रजेत्कर्मज्ञानस्यहितकारिच॥१२॥इति केचिद्वदंत्यत्रतद्विरोधान्नसंभवेत् ॥ ज्ञानाद्धृद्ग्रंथिभेदःस्याद्धृद्ग्रंथौकर्मसंभवः ॥ १३ ॥

च्चयवादिमतमुत्थापयति ॥ कुर्वन्नेवेहेति ॥ कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतंसमाइतिश्रुत्यायावज्जीवंकर्मविहितम् ॥ ज्ञानादेवहिकैवल्यमितिश्रुत्याज्ञानमपिसंपाद्यत्वेनोक्तं तत्रयावज्जीवश्रुतेः संकोचेप्रमाणाभावाज्ज्ञानंकर्मचसमुच्चयेनयावज्जीवंपुरुषेणाश्रयणीयमित्यर्थः ॥ ११ ॥ नन्वज्ञाननाशेज्ञानस्यैवोपयोगात्कर्मकिंकरिष्यतीतिचेत्तत्राह। सहायतामिति ॥ ज्ञानस्यसहायंभवि ष्यतिकर्मेत्यर्थः ॥ १२ ॥ तस्माद्यावज्जीवंकर्मज्ञानंचाऽऽश्रयणीयमितिमतंकेचिदाहुरित्याह। इतिकेचिदिति ॥ तत्खंडयति। तद्विरोधादिति यदिज्ञानोत्तरंकर्मसंभवेत्तदाज्ञानकर्मणोःसमुच्चयो वक्तव्यः ॥ सतुनैवसंभवति ॥ तस्माद्यावज्जीवश्रुतेःसंकोचोज्ञानेनसहावस्थानविरोधाद्गलेपतितइत्यर्थः ॥ ननुकिमितिकर्मणोज्ञानेनसहावस्थानंसंभवतितत्राह। ज्ञानाद्धृद्ग्रंथीति ॥ हृदयस्यग्रं थिरंतःकरणात्मदेहतादात्म्यरूपः ॥ तस्याज्ञानेनात्मसाक्षात्करिणभेदोनाशःस्यात्तस्मिंश्चहृद्ग्रंथौमनुष्योऽहंब्राह्मणोहंपरलोकेच्छावानहमित्यादिरूपेसत्येवकर्मसंभवः तादृशमधिकारिणमुद्दि श्यैवकर्मविधानात् ॥ तस्मात्तयोर्नैकत्रावस्थानंसंभवतीत्यर्थः ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तदेवदृष्टांतपुरःसरंस्पष्टयति । यौगपद्यमिति ॥ ततस्तस्माद्धेतोस्तयोर्ज्ञानकर्मणोस्तमःप्रकाशयोरिवविरोधाद्यौगपद्यंनसंभवतीतियावज्जीवश्रुतिरज्ञानिविषयिकैवेतिभावः ॥१४॥ तर्हिकिंय त्पर्यंतंवैदिककर्ममर्यादेतिचेत्तत्राह । तस्मात्सर्वाणीति॥यथाज्ञानेनसहविरोधाद्यावज्जीवश्रुतेःसंकोचस्तथाज्ञानांगेनसहाऽपिविरोधात्तस्याःश्रुतेर्यावद्वैराग्यादिप्राप्तिपर्यंतमितिसंकोचःकर्तव्यः॥ तथाचचित्तशुद्ध्यंतमेवकर्माणि हेमहामते सिद्धानि तानिप्रयत्नतोऽतियत्नेनश्रद्धादिपुरःसरंचित्तशुद्धिपर्यंतंकुर्यादित्यर्थः ॥ १५ ॥ तस्यैवमर्यादामाह। शमइति ॥ शमोंतरिंद्रियनिग्रहः ॥ दमोबाह्येंद्रियनिग्रहः ॥ तितिक्षाशीतोष्णादिसहिष्णुत्वम् ॥ वैराग्यमिहाऽमुत्रफलभोगविरागः ॥ सत्त्वसंभवोंतःकरणगतसत्त्वस्यशुद्धिः ॥ एतत्सिद्धिपर्यंतमेवकर्माणिनततःपरमित्यर्थः ॥ ॥ १६ ॥ तदंतेकर्मत्यागस्तुसंन्यासेनैवकर्तव्योनान्यथेत्याह । तदंतेचैवेति ॥ संन्यस्यसंन्यासाश्रमंगृहीत्वेत्यर्थः ॥ विधिनासंपादितकर्मणोविधिनैवत्यागस्ययुक्तत्वादितिभावः ॥ संन्य स्यश्रवणंकुर्यादितिवाक्यात्संन्यासोत्तरंश्रवणार्थंगुरुमाश्रयेत् ॥ आत्मवान्स्वाधीनांतःकरणइत्यर्थः ॥ श्रोत्रियमधीतवेदवेदार्थम् ॥ ब्रह्मनिष्ठंब्रह्मानुभविनम् ॥ निर्व्याजयानिष्कपटयाभ क्त्या ॥ तथाचश्रुतिः ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनइति ॥ १७ ॥ गुरुमाश्रित्यवेदांतश्रवणंनित्यमतंद्रितोनामालस्यादिदोषशून्यःकुर्या दित्याह । वेदांतश्रवणमिति ॥ १८ ॥ किंतद्वाक्यविचारेणफलंभवतितत्राह । तत्त्वमस्यादीति ॥ मद्रूपोहीति ॥ ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवतीतिश्रुतेरित्यर्थः ॥१९॥ कथंवाक्यंविचारणीयमितिचे

**यौगपद्यंनसंभाव्यंविरोधात्तुततस्तयोः ॥ तमःप्रकाशयोर्यद्वद्यौगपद्यंनसंभवि ॥ १४ ॥ तस्मात्सर्वाणिकर्माणिवैदिकानिमहामते ॥ चित्तशुद्ध्यंतमेवस्यु स्तानिकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ १५ ॥ शमोदमस्तितिक्षाचवैराग्यंसत्त्वसंभवः ॥ तावत्पर्यंतमेवस्युःकर्माणिनततःपरम् ॥ १६ ॥ तदंतेचैवसंन्यस्यसंश्रयेद्गुरु मात्मवान् ॥ श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठंचभक्त्यानिर्व्याजयापुनः ॥१७॥ वेदांतश्रवणंकुर्यान्नित्यमेवमतंद्रितः ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यस्यनित्यमर्थंविचारयेत् ॥१८॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यंतुजीवब्रह्मैक्यबोधकम् ॥ ऐक्येज्ञातेनिर्भयस्तुमद्रूपोहिप्रजायते ॥ १९ ॥ पदार्थावगतिःपूर्वंवाक्यार्थावगतिस्ततः ॥ तत्पदस्यचवाक्या र्थोगिरेऽहंपरिकीर्तितः ॥ २० ॥ त्वंपदस्यचवाच्यार्थोजीवएवनसंशयः ॥ उभयोरैक्यमसिनापदेनप्रोच्यतेबुधैः ॥ २१ ॥ वाच्यार्थयोर्विरुद्धत्वादैक्यंनै वघटेतह॥लक्षणाऽतःप्रकर्तव्यातत्त्वमोःश्रुतिसंस्थयोः॥२२॥चिन्मात्रंतुतयोर्लक्ष्यंतयोरैक्यस्यसंभवः ॥ तयोरैक्यंतथाज्ञात्वास्वाभेदेनाद्वयोभवेत्॥२३॥**

त्तत्राह । पदार्थावगतिरिति ॥ वाक्यार्थज्ञानंप्रतिपदार्थज्ञानस्यकारणत्वात्पूर्वंपदपदार्थंज्ञात्वावाक्यार्थंविचारयेदित्यर्थः ॥ तर्हिकोऽसावत्रपदार्थस्तत्राह । तत्पदस्येति ॥ हेगिरे पर्वतत त्त्वमसीतिवाक्यस्थंयत्तत्पदंतस्यार्थोऽहंसर्वेश्वरीपरिकीर्तितः॥तत्पदंभुवनेश्वर्याःषड्गुणैश्वर्यसंपन्नायाममवाचकमित्यर्थः॥२०॥त्वंपदंतुजीववाचकमित्याह । त्वंपदस्येति॥ उभयोर्जीवेश्वरयो रैक्यमसिपदेनोच्यतइत्याह । उभयोरिति॥२१॥ननुजीवेश्वरयोरत्यंतविरुद्धधर्मवतोःकथंश्रुत्याऽभेदःप्रतिपाद्यतेइतिचेद्भागलक्षणयेत्याह ।वाच्यार्थयोरिति॥वाच्यार्थयोर्जीवेश्वरयोर्विरुद्धधर्म वत्त्वादित्यर्थः ॥ जीवस्यासर्वज्ञत्वपरिच्छिन्नत्वादयोनिकृष्टधर्माः ईश्वरस्यसर्वज्ञत्वव्यापकत्वादयउत्कृष्टधर्माः ॥ तथाचविरुद्धधर्मविशिष्टयोस्तयोरैक्यमभेदोनैवघटेतहइदंसत्यमित्यर्थः ॥ तर्हि कथमभेदःप्रतिपाद्यतइतिचेत्तत्राह । लक्षणातइति ॥ यतोविरुद्धयोरैक्यंनघटतेतस्माच्छ्रुतिस्थयोस्तत्त्वमोस्तत्त्वंपदयोर्लक्षणाकर्तव्येत्यर्थः ॥२२॥ ननुकस्मिन्नर्थेलक्षणाकर्तव्यातत्राह । चि न्मात्रंत्विति ॥ सर्वज्ञत्वादिविशिष्टंब्रह्मचैतन्यमीश्वरः ॥ असर्वज्ञत्वादिविशिष्टंब्रह्मचैतन्यंजीवः ॥ तत्रधर्मद्वयंविहायचिन्मात्रमेवभागत्यागलक्षणयाग्राह्यम् ॥ तस्मिन्गृहीतेतयोर्लक्ष णार्थयोरैक्यस्यसंभवोऽस्तीत्यर्थः ॥ ननुतादृशाभेदज्ञानेनकिंभविष्यतितत्राह । तयोरिति ॥ स्वाभेदेनतयोरैक्यंज्ञात्वाऽद्वयोभवेदिदंमहाफलमस्तीतिभावः ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ननुलोकेभागत्यागलक्षणाकदृष्टेतिचेत्तत्राह । देवदत्तःसएवेति ॥ सोऽयंदेवदत्तइत्यत्रतत्कालविशिष्टदेवदत्तस्यैतत्कालविशिष्टदेवदत्तस्यभेदेपितत्कालवैशिष्टचैतत्कालवैशिष्टचरूपधर्मद्वयत्यागे नाऽविरुद्धांव्यक्तिभागत्यागलक्षणयागृहीत्वाभेदप्रत्यभिज्ञाक्रियतेइतितत्रलक्षणास्मृताऽदृष्टेत्यर्थः ॥ अनेनानुभवेनस्थूलादिदेहत्रयरहितोभवतीत्याह । स्थूलादीति ॥ २४ ॥ देहत्रयंस्पष्ट यति। पंचीकृतेति ॥ २५ ॥ मिथ्यात्वेहेतुः।मायामयत्वतइति ॥ २६ ॥ २७ ॥ अंतःकरणेसुखदुःखादेरवबोधकइत्युक्तम् ॥ २८ ॥ २९ ॥ देहत्रयइति ॥ स्थूलसूक्ष्मकारणदेहत्रयमध्ये एवंपंचकोशाअन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयानंदमयाख्याअंतर्भूताभवंतीत्यर्थः ॥ ३० ॥ ततश्चदेहत्रयत्यागेनपंचकोशत्यागेसतिब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठेतिश्रुत्युक्तंवस्तुलभ्यतइत्यर्थः ॥ तदेवब्रह्मनेतिनेतीत्यादिवाक्यैःसर्वनिषेधावधित्वेनोच्यतइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ इदंयद्ब्रह्मरूपंतन्नजायतेनोत्पद्यते ॥ नवाम्रियते तथाऽयमात्माभूत्वानवभूव ॥ किंतुअनुत्पन्नोनिरंतरंबभूवेवे त्यर्थः ॥ तत्रहेतुरजोनित्यइत्यादिः ॥ विकारत्रयनिषेधेनषड्भावविकाराअपिप्रत्याख्यातावेदितव्याः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ अणोरिति ॥ अणुतोप्यणुतरः ॥ महतोव्योमादेरपिमहत्तरः ॥

देवदत्तःसएवाऽयमितिवल्लक्षणास्मृता ॥ स्थूलादिदेहरहितोब्रह्मसंपद्यतेनरः ॥ २४ ॥ पंचीकृतमहाभूतसंभूतःस्थूलदेहकः ॥ भोगालयोजराव्याधिसं युतःसर्वकर्मणाम् ॥ २५ ॥ मिथ्याभूतोऽयमाभातिस्फुटंमायामयत्वतः ॥ सोऽयंस्थूलउपाधिःस्यादात्मनोमेनगेश्वर ॥ २६ ॥ ज्ञानकर्मेंद्रिययुतंप्रा णपंचकसंयुतम् ॥ मनोबुद्धियुतंचैतत्सूक्ष्मंतत्कवयोविदुः ॥ २७ ॥ अपंचीकृतभूतोत्थंसूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥ द्वितीयोऽयमुपाधिःस्यात्सुखादेरवबो धकः ॥ २८ ॥ अनाद्यनिर्वाच्यमिदमज्ञानंतुतृतीयकः ॥ देहोऽयमात्मनोभातिकारणात्मानगेश्वर ॥ २९ ॥ उपाधिविलयेजातेकेवलात्मावशिष्यते ॥ देहत्रयेपंचकोशाअंतःस्थाःसंतिसर्वदा ॥ ३० ॥ पंचकोशपरित्यागेब्रह्मपुच्छंहिलभ्यते ॥ नेतिनेतीत्यादिवाक्यैर्ममरूपंयदुच्यते ॥ ३१ ॥ नजाय तेम्रियतेतत्कदाचिन्नाऽयंभूत्वानवभूवकश्चित् ॥ अजोनित्यःशाश्वतोऽयंपुराणोनहन्यतेहन्यमानेशरीरे ॥ ३२ ॥ हतंचेन्मन्यतेहंतुंहतश्चेन्मन्यतेहतम् ॥ उभौतौनविजानीतोनाऽयंहंतिनहन्यते ॥ ३३ ॥ अणोरणीयान्महतोमहीयानात्मास्यजंतोर्निहितोगुहायाम् ॥ तमक्रतुःपश्यतिवीतशोकोधातुप्रसादा न्महिमानमस्य ॥ ३४ ॥ आत्मानंरथिनंविद्धिशरीरंरथमेवतु ॥ बुद्धिंतुसारथिंविद्धिमनःप्रग्रहमेवच ॥ ३५ ॥ इंद्रियाणिहयानाहुर्विषयांस्तेषुगोचरान् ॥ आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ ३६ ॥ यस्त्वविद्वान्भवतिचाऽमनस्कश्चसदाऽशुचिः ॥ नतत्पदमवाप्नोतिसंसारंचाधिगच्छति ॥ ३७ ॥

गुहायांबुद्धौनिहितःस्थापितस्तत्राऽनुभवात् ॥ अस्यात्मनोमहिमानंतंधातुप्रसादाच्चित्तप्रसादादक्रतुःसंकल्पविकल्परहितःपश्यति ॥ ततोवीतशोकोभवतीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ अथकठव ल्ल्युक्तरथरूपकल्पनामाह । आत्मानमिति ॥ रथिनंरथस्वामिनमात्मानंविद्धि शरीरमेवरथंविद्धिमनःप्रग्रहमश्वाकर्षणरज्जुभूतंविद्धि ॥ ३५ ॥ इंद्रियाण्येवहयास्तस्मिन्रथेविद्वांसआहुः ॥ गोचरान्गंतव्यमार्गान्विषयानाहुर्विषयेष्वेवनिरंतरमस्यगमनात् ॥ रथिनःपूर्वोक्तस्यविशिष्टरूपमाह । आत्मेन्द्रियेति ॥ आत्माचिदाभासःइंद्रियाणिमनश्चेत्येतत्त्रितयविशिष्टंकूटस्थमिती शेषः ॥ अर्थात्तंतादृशंकूटस्थंभोक्तेत्याहुर्भोक्तारंरथिनमाहुरित्यर्थः ॥ इतिशब्देनकर्मत्वस्याभिधानाद्द्वितीयाभावः ॥ ३६ ॥ एवंसतियस्तुपुरुषोऽविद्वानविवेकीभवति अमनस्कोऽस्वाधीन मनाश्चभवतिसदाऽशुचिश्चसत्कर्मरहितइत्यर्थः ॥ सपुरुषोनतत्पदंपरमात्मपदंप्राप्नोति किंतर्हिसंसारंचाऽधिगच्छतिसंसारंप्रत्येवगच्छतीत्यर्थः ॥ ३७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यस्तुतद्विपरीतोभवतितत्राह । यस्त्विति॥यस्माद्भूयोनजायतेतत्पदमित्यर्थः ॥ ३८ ॥ किंतत्पदंतदाह । विज्ञानसारथिरिति॥ मदीयंयत्परमंपदम् ॥ पद्यतेज्ञानिभिःप्राप्यतेयन्मदीयंपरमं रूपंसच्चिदानंदघनंतत्परमंपदमित्यर्थः ॥ ३९ ॥ उपसंहरति । इत्थमिति ॥ श्रुत्यावेदांतश्रवणेन ॥ मत्याश्रुतस्यमननेननिश्चित्यसंशयविपर्यासरहितंपरोक्षतोज्ञात्वासाक्षात्कारार्थमात्मनांतः करणेनाऽऽत्मरूपांमांनिदिध्यासनतएकाग्रचित्तवृत्त्याभावयेदित्यन्वयः ॥ ४० ॥ इत्थंनिदिध्यासनाभ्यासेनयदासमाधियोग्यताचित्तस्यभवतितदासमाधेःपूर्वमित्थंध्यानंकृत्वासमाधिंकु र्यादित्याह । योगवृत्तेरिति ॥ समाधिवृत्तेः पुरापूर्वंस्वस्मिन्स्वशरीरेदेवीप्रणवसंज्ञस्यमायाबीजमंत्रस्याऽक्षरत्रयंवक्ष्यमाणंभावयेत् मंत्रवाच्ययोर्मायाबीजमंत्रार्थयोःसमष्टिव्यष्ट्योर्ध्यानार्थ मित्यर्थः ॥ ४१ ॥ तदेवाक्षरत्रयंतद्देवताभावनास्थानानिचाह । हकारइति ॥ कारणात्माकारणदेहरूपईकारइत्यर्थः ॥ ह्रींकारोऽहंतुरीयकम् ॥ अहंयत्तुरीयकंतद्ह्रींकारवाच्यमित्यर्थइ तिदेवीवाक्यमेतत् ॥ तुरीयस्यवाचकोह्रींकारइतियावत् ॥ ४२ ॥ यथाव्यष्टिदेहेऽक्षरत्रयभावनाकृतातथैवसमष्टिदेहेऽपिकर्तव्येत्याह । एवंसमष्टीति ॥ अक्षरत्रयभावनांकृत्वासमष्टिव्य

यस्तुविज्ञानवान्भवतिसमनस्कःसदाशुचिः ॥ सतुतत्पदमाप्नोतियस्माद्भूयोनजायते ॥ ३८ ॥ विज्ञानसारथिर्यस्तुमनःप्रग्रहवान्नरः ॥ सोऽध्वनःपारमाप्नो तिमदीयंयत्परंपदम् ॥ ३९ ॥ इत्थंश्रुत्याचमत्याचनिश्चित्यात्मानमात्मना ॥ भावयेन्मामात्मरूपांनिदिध्यासनतोपिच ॥ ४० ॥ योगवृत्तेःपुरास्वस्मि न्भावयेदक्षरत्रयम् ॥ देवीप्रणवसंज्ञस्यध्यानार्थंमंत्रवाच्ययोः ॥ ४१ ॥ हकारःस्थूलदेहःस्याद्रकारःसूक्ष्मदेहकः ॥ ईकारःकारणात्मासौह्रींकारोऽहंतु रीयकम् ॥ ४२ ॥ एवंसमष्टिदेहेऽपिज्ञात्वाबीजत्रयंक्रमात् ॥ समष्टिव्यष्ट्योरेकत्वंभावयेन्मतिमान्नरः ॥ ४३ ॥ समाधिकालात्पूर्वंतुभावयित्वैवमादृतः॥ ततोध्यायेन्निलीनाक्षोदेवींमांजगदीश्वरीम् ॥ ४४ ॥ प्राणापानौसमौकृत्वानासाभ्यंतरचारिणौ ॥ निवृत्तविषयाकांक्षोवीतदोषोविमत्सरः ॥ ४५ ॥ भक्त्यानिर्व्याजयायुक्तोगुहायांनिःस्वनेस्थले ॥ हकारंविश्वमात्मानंरकारेप्रविलापयेत् ॥ ४६ ॥ रकारंतैजसंदेवमीकारेप्रविलापयेत् ॥ ईकारंप्राज्ञमात्मा नंह्रींकारेप्रविलापयेत् ॥ ४७ ॥ वाच्यवाचकताहीनंद्वैतभावविवर्जितम् ॥ अखंडसच्चिदानंदंभावयेत्तच्छिखांतरे ॥ ४८ ॥ इतिध्यानेनमांराजन्साक्षा त्कृत्यनरोत्तमः ॥ मद्रूपएवभवतिद्वयोरप्येकतायतः ॥ ४९ ॥ योगयुक्त्याऽनयादृष्ट्वामामात्मानंपरात्परम् ॥ अज्ञानस्यसकार्यस्यतत्क्षणेनाशकोभवे त् ॥ ५० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

ष्ट्योःपिंडब्रह्मांडयोरेकत्वन्यायेनैकत्वंभावयेदित्याह । समष्टिव्यष्ट्योरिति ॥ ४३ ॥ इत्थंप्रथमतोभावनांकृत्वाततोदेवींध्यायेदित्याह । समाधीति ॥ ४४ ॥ समाधिसामग्रीमाह । प्राणापानाविति ॥ समौकृत्वाप्राणायामाभ्यासेनेत्यर्थः ॥ ४५ ॥ विलापनप्रकारमाह । हकारंविश्वमिति । विश्वंवैश्वानरात्मकमित्यर्थः ॥ विश्वशब्दस्यवैश्वानरोपलक्षणत्वात् ॥ एवमु त्तरत्रापि ॥ रकारेइति ॥ रकारवाच्यसूक्ष्मदेहेहकारवाच्यंस्थूलदेहंविलापयेदित्यर्थः ॥ ४६ ॥ ईकारेतद्वाच्येकारणदेहेसूक्ष्मदेहंविलापयेदित्यर्थः ॥ ह्रींकारेह्रींकारवाच्येब्रह्मणिईकारवा च्यंकारणदेहंविलापयेदित्यर्थः ॥ ४७ ॥ तच्छिखांतरेचैतन्याग्निदीपशिखांतरेइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तस्याःशिखायामध्येपरमात्माव्यवस्थितइति ॥ ४८ ॥ एवंध्यानेनसाक्षात्का रोभवतितेनचमद्रूपएवभवतीत्याह । इतिध्यानेनेति ॥ ४९ ॥ दृष्ट्वानाशकोभवेदित्यन्वयः ॥ विस्तरस्तुमत्कृतदेवीगीताबृहट्टीकायांद्रष्टव्यः ॥५०॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधे चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अर्धाधिकद्विषष्ट्यातुश्लोकानामत्रसादरम् ॥ योगस्यमंत्रसिद्धेश्चसाधनंसम्यगुच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायांतेयोगयुक्तयाऽनयादृष्ट्वामामात्मानंपरात्परामितिवाक्येनात्मदर्शनेयोगस्यसाधनत्वमुक्तं तत्रकीदृशोयोगइतिपृच्छति । योगंवदेति ॥ संवित्प्रदायकंब्रह्माकारसंवित्साधनमित्यर्थः ॥ १ ॥ ऐक्यमिति ॥ जीवात्मनोरैक्यमभेदविषयकवृत्तिर्यासायोगशब्देनोच्यतइत्यर्थः ॥ २ ॥ तत्प्रत्यूहास्तस्यावृत्तेःशत्रवःकेतेषट्तदाह । कामक्रोधाविति । एतेपदार्थाःप्रसिद्धाएव ॥ ३ ॥ यागांगेरिति ॥ योगांगैर्यमनियमादिभिर्वक्ष्यमाणैःप्रथमतस्ताञ्छत्रून्भित्त्वानाशयित्वानंतरं योगिनोयोगंतांवृत्तिंप्राप्नुयुरित्यर्थः ॥ योगांगान्याह । यममिति ॥ ४ ॥ ५ ॥ अष्टस्वंगेषुप्रथमांगस्ययमस्यस्वरूपमाह । अहिंसेति ॥ अहिंसापरपीडनाभावः । सत्यंसत्यभाषणम् ॥ अस्तेयंचौर्यमात्रस्याऽभावः ॥ ब्रह्मचर्यम् दर्शनंस्पर्शनंकेलिःकीर्तनंगुह्यभाषणम् ॥ संकल्पोऽध्यवसायश्चक्रियानिर्वृत्तिरेवचेत्यष्टविधमैथुनत्यागः॥दया भूतेषुकरुणा ॥ आर्जवंऋजुता सर्वापेक्षयास्वस्याल्पत्वज्ञानम् ॥ क्षमा अपमानादिसहनशीलत्वंपृथिवीवत् ॥ धृतिःसर्वनाशेपिधीरता ॥ मिताहारः द्वौभागौपूरयेदन्नैस्तोयेनैकंप्रपूरयेत् ॥ मारुतस्यप्रचारार्थंचतुर्थमवशेषयेदि

हिमालयउवाच ॥ योगंवदमहेशानिसांगंसंवित्प्रदायकम् ॥ कृतेनयेनयोग्योऽहंभवेयंतत्त्वदर्शने ॥ १ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ नयोगोनभसःपृष्ठेनभूमौनरसातले ॥ ऐक्यंजीवात्मनोराहुर्योगंयोगविशारदाः ॥ २ ॥ तत्प्रत्यूहाःषडाख्यातायोगविघ्नकरानघ॥कामक्रोधौलोभमोहौमदमात्सर्यसंज्ञकौ॥३॥योगांगैरेवभित्त्वातान्योगिनोयोगमाप्नुयुः ॥ यमंनियममासनप्राणायामौततःपरम् ॥ ४ ॥ प्रत्याहारंधारणाख्यंध्यानंसार्धंसमाधिना ॥ अष्टांगान्याहुरेतानियोगिनांयोगसाधने ॥ ५ ॥ अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यंदयार्जवम् ॥ क्षमाधृतिर्मिताहारःशौचंचेतियमादश ॥ ६ ॥ तपःसंतोषआस्तिक्यंदानंदेवस्यपूजनम् ॥ सिद्धांतश्रवणंचैवह्रीर्मतिश्चजपोहुतम् ॥ ७ ॥ दशैतेनियमाःप्रोक्तामयापर्वतनायक ॥ पद्मासनंस्वस्तिकंचभद्रंवज्रासनंतथा ॥ ८ ॥ वीरासनमितिप्रोक्तंक्रमादासनपंचकम् ॥ ऊर्वोरुपरिविन्यस्यसम्यक्पादतलेशुभे ॥ ९ ॥ अंगुष्ठौचनिबध्नीयाद्धस्ताभ्यांव्युत्क्रमात्ततः ॥ पद्मासनमितिप्रोक्तंयोगिनांहृदयंगमम् ॥ १० ॥ जानूर्वोरंतरेसम्यक्कृत्वापादतलेशुभे ॥ ऋजुकायोविशेद्योगीस्वस्तिकंतत्प्रचक्षते ११ ॥ सीवन्याःपार्श्वयोर्न्यस्यगुल्फयुग्मंसुनिश्चितम् ॥ वृषणाधःपादपार्ष्णीपार्ष्णिभ्यांपरिबंधयेत् ॥ १२ ॥

तिरीत्याऽल्पाऽहारः ॥शौचंबाह्याभ्यंतरशुद्धिः ॥ इतिदशसंख्यायमाइत्यर्थः ॥ ६ ॥ नियमस्वरूपमाह । तपइति ॥ तपोविध्युक्तानुष्ठानं नकृच्छ्रादि ॥ तस्यशरीरक्लेशकारित्वेनयोगोपकारकत्वाभावात् ॥ संतोषोनामप्रारब्धेनयदुपस्थापितंतेनैवचेतसस्तृप्तिः ॥ आस्तिक्यं वेददेवद्विजगुरुविश्वासः ॥ दानं यथाशक्तिसत्पात्रेद्रव्यत्यागः ॥ देवस्यपरमेश्वरस्यपूजनम् ॥ सिद्धांतश्रवणंवेदांतश्रवणम् ॥ ह्रीः अकार्यकरणेलज्जा ॥ मतिःसत्कर्मसच्छास्त्रविषयेज्ञानम् ॥ जपोगायत्रीप्रणवभुवनेश्वरीमंत्रप्रभृतिमंत्राणाम्॥ हुतं नित्यहोमादि ॥ ७ ॥ आसनान्याह । पद्मासनमिति ॥ ८ ॥ ९ ॥ व्युत्क्रमादिति ॥ पृष्ठदेशाद्धस्तद्वयंपरिवर्त्याऽऽनीयदक्षिणहस्तेनदक्षिणपादांगुष्ठंवामहस्तेनवामपादांगुष्ठंबध्नीयादित्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ सीवन्याइति ॥ सीवनीअंडाधःस्थाशिरा ॥ गुल्फौवृषणाधःस्थितौयौपादयोः पार्ष्णिभागौतौहस्ताभ्यांबंधयेत् ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥१३॥१४॥ इडयावामनासापुटेनषोडशमात्रयाषोडशप्रणवोच्चारणेनवाह्यंवायुमाकर्षयेत् ॥ यद्यपिमात्राऽत्रयोगशास्त्रोक्तापारिभाषिकीउक्ता तथापितस्याअपिवायुपरिच्छेदेएवतात्पर्या
द्येनवायुपरिच्छेदोभवतितद्बाह्यमित्यत्रतात्पर्यात्॥१५॥धारयेत् चतुःषष्टिसंख्यप्रणवोच्चारणपर्यंतंकुंभकंकुर्यादित्यर्थः।पुनर्द्वात्रिंशत्प्रणवोच्चारणेनदक्षनासापुटेनविरेचयेदित्यर्थः॥१६॥१७॥
भूयोभूयः पुनःपुनःतस्यइडापिंगलादेःपुनरिडापिंगलादेःपुनःपिंगलेडादेःक्रमात् बाह्यंवायुमेवंसमाचरेत् गृह्णीयात्त्यजेच्चेत्यर्थः ॥ मात्राणांप्रणवसंख्यानामप्युत्तरोत्तरंवृद्धिःकर्तव्यातथाप्राणा
यामानामपिप्रथमतोद्वादशतदुत्तरंकतिचित्कालानंतरंषोडशेत्येवंक्रमेणवृद्धिःकर्तव्येत्यर्थः॥१८॥सगर्भविगर्भभेदेनप्राणायामस्यद्वैविध्यमाह । जपध्यानादिभिरिति ॥ स्वेष्टमंत्रजपध्यानसहि
तःप्राणायामःसगर्भः ॥ तदपेतस्तद्रहितोविगर्भःइत्यर्थः॥१९॥कनिष्ठमध्यमोत्तमभेदेनप्राणायामलक्षणमाह । क्रमादभ्यस्यतइति ॥ प्राणायामेप्रथमतःस्वेदोद्गमोभवतिसोऽधमःप्राणायामः॥
कंपसंयुक्तोमध्यमः ॥ भूमित्यागोभवतियस्मिन्प्राणायामे सउत्तमः ॥ भूमिंत्यक्त्वाऽऽसनमुपर्येवतिष्ठतियदातदासभूमित्यागइतिसंप्रदायः ॥तदुक्तम्।भूमित्यागंतनोस्तनोतिपरइति॥२०॥

भद्रासनमितिप्रोक्तंयोगिभिःपरिपूजितम् ॥ ऊर्वोःपादौक्रमान्न्यस्यजान्वोःप्रत्यङ्मुखांगुली॥१३॥करौविदध्यादाख्यातंवज्रासनमनुत्तमम् ॥ एकंपादम
धःकृत्वाविन्यस्योरुंतथोत्तरे ॥१४॥ ऋजुकायोविशेद्योगीवीरासनमितीरितम् ॥ इडयाकर्षयेद्वायुंबाह्यंषोडशमात्रया ॥ १५॥ धारयेत्पूरितंयोगीचतुःष
ष्ट्यातुमात्रया ॥ सुषुम्नामध्यगंसम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रयाशनैः ॥ १६ ॥ नाड्यापिंगलयाचैवरेचयेद्योगवित्तमः ॥ प्राणायाममिमंप्राहुर्योगशास्त्रविशारदाः
॥ १७ ॥ भूयोभूयःक्रमात्तस्यबाह्यमेवंसमाचरेत् ॥ मात्रावृद्धिःक्रमेणैवसम्यग्द्वादशषोडश ॥ १८ ॥ जपध्यानादिभिःसार्धंसगर्भंतंविदुर्बुधाः ॥ तदपेतं
विगर्भंचप्राणायामंपरेविदुः ॥ १९ ॥ क्रमादभ्यस्यतःपुंसोदेहस्वेदोद्गमोधमः ॥मध्यमःकंपसंयुक्तोभूमित्यागःपरोमतः॥२०॥उत्तमस्यगुणावाप्तिर्यावच्छी
लनमिष्यते ॥ इंद्रियाणांविचरतांविषयेषुनिरर्गलम् ॥ २१ ॥ बलादाहरणंतेभ्यःप्रत्याहारोभिधीयते ॥ अंगुष्ठगुल्फजानूरुमूलाधारलिंगनाभिषु॥२२॥हृ
द्ग्रीवाकंठदेशेषुलंबिकायांततोनसि ॥ भ्रूमध्येमस्तकेमूर्ध्निद्वादशांतेयथाविधि ॥ २३ ॥ धारणंप्राणमरुतोधारणेतिनिगद्यते ॥ समाहितेनमनसाचैतन्यां
तरवर्तिना ॥ २४ ॥ आत्मन्यभीष्टदेवानांध्यानंध्यानमिहोच्यते ॥ समत्वभावनानित्यंजीवात्मपरमात्मनोः ॥ २५ ॥ समाधिमाहुर्मुनयःप्रोक्तमष्टांग
लक्षणम् ॥ इदानींकथयेतेऽहंमंत्रयोगमनुत्तमम् ॥ २६ ॥

उत्तमप्राणायामसिद्धिपर्यंतंप्राणायामेकृतेसतिफलमाह । उत्तमस्येति ॥ गुणावाप्तिःवपुःप्रकाशोज्वलनस्यदीप्तिरल्पाशिताचैवतनोर्लघुत्वमित्यादिगुणानामवाप्तिर्भवति ॥ यावत्पर्यंतंशी
लनमभ्यासइष्यतेतावत्पर्यंतमुत्तरोत्तरंगुणवृद्धिरेवभवतीत्यर्थः ॥ प्रत्याहारमाह । इंद्रियाणामिति ॥ विषयेषुविचरतामिंद्रियाणांतेभ्योनिरर्गलंनिर्विघ्नंयदाहरणंसप्रत्याहारः ॥ २१ ॥ धार
णामाह । अंगुष्ठेति ॥ २२ ॥ २३ ॥ धारणमिति ॥ अंगुष्ठाद्यवयवेषुयत्प्राणवायोर्धारणंनिरोधःसा धारणेत्यर्थः ॥ एतादृशोवायुःस्वाधीनोपेक्षितइतिभावः ॥ ध्यानमाह । समाहीति ॥
अंतःकरणंचैतन्यांतर्वर्तिध्यानेन कृत्वातस्मिन्नात्मनिअभीष्टदेवानांयद्ध्यानंतद्ध्यानशब्देनाऽत्रोच्यतइत्यर्थः ॥ २४ ॥ समत्वभावनाद्वयोरैक्यभावनासंप्रज्ञातसमाधिनैवभवतीतिसमत्वभाव
नाशब्देनसंप्रज्ञातसमाधिरुच्यते ॥ अतएवयोगसूत्रेतद्भाष्येचसंप्रज्ञातसमाधेरेवाष्टसुयोगांगेषुग्रहणंनिर्विकल्पकसमाधिस्त्वंगभिवतीत्युक्तम् ॥ २५ ॥ इत्थमष्टांगयोगमभिधायाऽधुनाशरीरे
नाडीस्थानानिआधारचक्रस्वरूपाणितद्ध्यानफलानिचोपदिशति । इदानींकथयेतेऽहमिति ॥ मंत्रयोगंमंत्राणांशारदातिलकोक्तच्छिन्नादिदोषदुष्टानांमंत्राणांसिद्धिप्रदंयोगमित्यर्थः॥२६॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





विश्वंशरीरमितिं ॥ पिंडब्रह्मांडयोरेकत्वाच्छरीरमिदंविश्वमेवभवतिब्रह्मांडमेवभवति ॥ तदपिपंचभूतात्मकंचंद्रसूर्याग्निभिर्युक्तंजीवब्रह्मैक्यरूपकंयथाभवतितथेदमप्यस्तीत्याह । पंचभूतेति ॥ २७ ॥ तदर्धेनकोट्यर्धेनसार्धत्रिकोट्यइत्यर्थः ॥ २८ ॥ प्रधानासुषुम्नानाडीमेरुदंडेपृष्ठस्थवंशेस्थितामूलाधारमारभ्यपृष्ठवंशमार्गेणब्रह्मरंध्रपर्यंतंगतेत्यर्थः ॥ तस्यावामेइडादक्षिणे पिंगलाऽस्तीत्याह । इडावामेइति ॥ २९ ॥ शक्तिरूपाप्रकृतिरूपा ॥ ३० ॥ तस्यामध्येसुषुम्नायामध्येविचित्राख्येचित्राख्यनाड्यामित्यर्थः ॥ सुषुम्नामूलदेशेचित्रानाड्यस्तीति ॥ तस्यामध्येतुचित्राख्यानाडीसूक्ष्मातुवर्ततइतिवचनेनतंत्रांतरेउक्तम् ॥ ३१ ॥ मध्येइति ॥ चित्रानाडीमध्येइत्यर्थः ॥ हरात्माविंदुनादकमूआत्मामायाहकाररेफईकारविंदुनादात्मकमित्यर्थः ॥ ३२ ॥ शिखाकारादीपाशिखाकारा ॥ ३३ ॥ हेमरूपाभंपीतवर्णं ॥ वादिसांतचतुर्दलम् ॥ चतुर्दलेषुवशषसइतिचत्वारोवर्णाभवंतीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ वादिलांतेति ॥ वकारा

विश्वंशरीरमित्युक्तंपंचभूतात्मकंनग॥चंद्रसूर्याग्नितेजोभिर्जीवब्रह्मैक्यरूपकम् ॥ २७ ॥ तिस्रःकोट्यस्तदर्धेनशरीरेनाडयोमताः ॥ तासुमुख्यादशप्रोक्तास्ताभ्यस्तिस्रोव्यवस्थिताः ॥२८॥ प्रधानामेरुदंडेऽत्रचंद्रसूर्याग्निरूपिणी॥इडावामेस्थितानाडीशुभ्रातुचंद्ररूपिणी ॥२९॥ शक्तिरूपातुसानाडीसाक्षादमृतविग्रहा ॥ दक्षिणेयापिंगलाख्यापुंरूपासूर्यविग्रहा ॥ ३० ॥ सर्वतेजोमयीसातुसुषुम्नावह्निरूपिणी ॥ तस्यामध्येविचित्राख्येइच्छाज्ञानक्रियात्मकम् ॥ ॥ ३१ ॥ मध्येस्वयंभूर्लिंगंतुकोटिसूर्यसमप्रभम्॥तदूर्ध्वेमायाबीजंतुहरात्माविंदुनादकम् ॥ ३२ ॥ तदूर्ध्वेतुशिखाकाराकुंडलीरक्तविग्रहा ॥ देव्यात्मिकातुसाप्रोक्तामदभिन्नानगाधिप॥३३॥तद्बाह्येहेमरूपाभंवादिसांतचतुर्दलम् ॥ द्रुतहेमसमप्रख्यंपद्मंतत्रविचिंतयेत् ॥ ३४॥ तदूर्ध्वेत्वनलप्रख्यंषड्दलंहीरकप्रभम् ॥ बादिलांतषड्वर्णैर्नस्वाधिष्ठानमनुत्तमम् ॥३५॥ मूलमाधारषट्कोणंमूलाधारंततोविदुः॥स्वशब्देनपरंलिंगंस्वाधिष्ठानंततोविदुः ॥ ३६ ॥ तदूर्ध्वेनाभिदेशेतु मणिपूरमहाप्रभम् ॥ मेघाभंविद्युदाभंचबहुतेजोमयंततः ॥३७॥ मणिवद्भिन्नंतत्पद्मंमणिपद्मंतथोच्यते ॥ दशभिश्चदलैर्युक्तंडादिफांताक्षरान्वितम् ॥ ३८ ॥ विष्णुनाधिष्ठितंपद्मंविष्ण्वालोकनकारणम्॥तदूर्ध्वेनाहतंपद्ममुद्यदादित्यसन्निभम् ॥३९॥ कादिठांतदलैरर्कपत्रैश्चसमधिष्ठितम् ॥ तन्मध्येबाणलिंगंतुसूर्यायुतसमप्रभम् ॥ ४०॥ शब्दब्रह्ममयंशब्दानाहतंतत्रदृश्यते॥अनाहताख्यंतत्पद्मंमुनिभिःपरिकीर्तितम्॥४१॥आनंदसदनंतत्तुपुरुषाधिष्ठितंपरम्॥तदूर्ध्वंभुविशुद्धाख्यंदलषोडशपंकजम्॥४२॥स्वरैःषोडशभिर्युक्तंधूम्रवर्णंमहाप्रभम्॥विशुद्धंतनुतेयस्माज्जीवस्यहंसलोकनात् ॥४३॥ विशुद्धंपद्ममाख्यातमाकाशाख्यंमहाद्भुतम् ॥ आज्ञाचक्रंतदूर्ध्वेतुआत्मनाधिष्ठितंपरम् ॥ ४४ ॥

दिलकारांतषड्वर्णैर्युक्तमित्यर्थः ॥ ३५ ॥ स्वशब्देनपरंलिंगंतस्याधिष्ठानंयतस्तस्मात्स्वाधिष्ठानमित्युच्यतइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ भिन्नंविकसितम् ॥ डादिफांताक्षरैर्युक्तमित्यर्थः ॥ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ अर्कपत्रैर्द्वादशपत्रैर्युक्तं ककारादिठकारांतानिद्वादशाक्षराणिदलेषुज्ञेयानि ॥ ४० ॥ शब्दानाहतम् अनाहतोनामताडनंविनापिजायमानःशब्दःसोऽनाहतःशब्दोयस्मिंस्तच्छब्दानाहतम् ॥ वाहिताग्न्यादित्वात्साधुः ॥ ४१ ॥ पुरुषाधिष्ठितंरुद्राधिष्ठितमित्यर्थः ॥ ४२ ॥ स्वरैःषोडशभिरिति ॥ षोडशपत्रेषुषोडशस्वराइत्यर्थः ॥ जीवस्यहंसस्यपरमात्मनोवलोकनाज्जीवंयस्माद्विशुद्धंतनुतेततोविशुद्धमित्यन्वयः ॥ तत्राऽनाहतंचक्रंहृदयेविशुद्धिचक्रंकंठेआज्ञाचक्रं भ्रूमध्येइतितुग्रंथांतरादवसेयम् ॥ अनाहतशब्दोमध्यमवाणीरूपोज्ञेयः ॥ ४३ ॥ तदूर्ध्वेतुभ्रूमध्येइत्यर्थः ॥ ४४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

आज्ञासंक्रमणमिति ॥ तस्मिन्स्थलेनिहितचित्तस्यपुरुषस्यसर्वपदार्थसाक्षात्कारेणैवंभूतमेवंवर्ततेएवंभविष्यतीतिज्ञानेनाज्ञायाइतःपरंत्वयैवंकर्तव्यमितिपरमेश्वराज्ञायाःसंक्रमणंभवति तेनहेतुनातदाज्ञाचक्रमितिकीर्तितमित्यर्थः ॥ हक्षवर्णद्वयसंयुतंपत्रद्वययुक्तमित्यर्थः ॥४५॥ तदूर्ध्वंकैलासचक्रंतदूर्ध्वंरोधिनीचक्रमित्यर्थः ॥ अनयोःस्वरूपंमत्कृतदेवीगीताबृहट्टीकायांद्रष्टव्यम् । ॥ ४६ ॥ सर्वोपरिविद्यमानंसहस्रारंचक्रमाह । सहस्रारेति ॥ बिंदुस्थानंपरमात्मस्थानमित्यर्थः ॥ इत्येतदिति ॥ पूर्वोक्तप्रकारेणैतत्सर्वंज्ञात्वेतिशेषः ॥ ४७ ॥ ज्ञात्वाकिंकर्तव्यंतत्राह । आदाविति ॥ प्रथमतःपूरकयोगेनबाह्यंवायुमाकृष्यकुंभकंकृत्वास्वमनोवायुसहितंमूलाधारेयोजयेन्नयेदित्यर्थः ॥ अनंतरंगुदस्यमेढ्रस्यलिंगस्यांतरेमध्येमूलाधारचक्रेइत्यर्थः ॥ विद्यमानास्थितायाशक्तिःकुंडलिनीतामाकुंच्यमूलाधारगतवायुनापीडयित्वाप्रबोधयेत्उत्थापयेदित्यर्थः॥४८॥ लिंगभेदेति ॥ तामुत्थाप्यलिंगभेदक्रमेणपूर्वोक्तचक्रगततत्तेजोमयस्वयंभ्वादिलिंगानांभेदोभेदनंतन्मार्गेणनयनंतत्क्रमेणैवतांकुंडलिनींशक्तिंबिंदुचक्रंसहस्रारंतत्प्रापयेत् ॥ शंभुनेति ॥ सहस्रारपद्मस्थितेनशंभुनातांकुंडलिनीमेकीभूतांसंगतांविभावयेदित्यर्थः ॥४९॥ तत्रोत्थि

आज्ञासंक्रमणंतत्रतेनाज्ञेतिप्रकीर्तितम् ॥ द्विदलंहक्षसंयुक्तंपद्मंतत्सुमनोहरम् ॥४५॥ कैलासाख्यंतदूर्ध्वंतुरोधिनीतुतदूर्ध्वतः॥एवंत्वाधारचक्राणिप्रोक्तानितवसुव्रत ॥४६॥ सहस्रारयुतंबिंदुस्थानंतदूर्ध्वमीरितम् ॥ इत्येतत्कथितंसर्वंयोगमार्गमनुत्तमम् ॥४७॥ आदौपूरकयोगेनाप्याधारेयोजयेन्मनः॥गुदमेढ्रांतरेशक्तिस्तामाकुंच्यप्रबोधयेत् ॥४८॥ लिंगभेदक्रमेणैवबिंदुचक्रंचप्रापयेत् ॥ शंभुनातांपराशक्तिमेकीभूतांविचिंतयेत् ॥४९॥ तत्रोत्थितामृतंयत्तुद्रुतलाक्षारसोपमम् ॥ पाययित्वातुतांशक्तिमायाख्यांयोगसिद्धिदाम् ॥५०॥ षट्चक्रदेवतास्तत्रसंतर्प्यामृतधारया ॥ आनयेत्तेनमार्गेणमूलाधारंततःसुधीः ॥ ५१ ॥ एवमभ्यस्यमानस्याऽप्यहन्यहनिनिश्चितम् ॥ पूर्वोक्तदूषितामंत्राःसर्वेसिध्यंतिनान्यथा ॥ ५२ ॥ जरामरणदुःखाद्यैर्मुच्यतेभवबंधनात् ॥ येगुणाःसंतिदेव्यामेजगन्मातुर्यथातथा ॥ ५३ ॥ तेगुणाःसाधकवरेभवंत्येवनचान्यथा ॥ इत्येवंकथितंतातवायुधारणमुत्तमम् ॥ ५४ ॥ इदानींधारणाख्यंतुशृणुष्वावहितोमम ॥ दिक्कालाद्यनवच्छिन्नदेव्यांचेतोविधायच ॥ ५५ ॥ तन्मयोभवतिक्षिप्रंजीवब्रह्मैक्ययोजनात् ॥ अथवासमलंचेतोयदिक्षिप्रंनसिद्ध्यति ॥ ५६ ॥ तदावयवयोगेनयोगीयोगान्समभ्यसेत् ॥ मदीयहस्तपादादावंगेतुमधुरेनग ॥ ५७ ॥ चित्तंसंस्थापयेन्मंत्रीस्थानस्थानजयात्पुनः ॥ विशुद्धचित्तःसर्वस्मिन्रूपेसंस्थापयेन्मनः ॥ ५८ ॥ यावन्मनोलयंयातिदेव्यांसंविदिपर्वत ॥ तावदिष्टमनुंमंत्रीजपहोमैःसमभ्यसेत् ॥ ५९ ॥ मंत्राभ्यासेनयोगेनज्ञेयज्ञानायकल्पते ॥ नयोगेनविनामंत्रोनमंत्रेणविनाहिसः ॥ ६० ॥

तेति ॥ तत्रशिवशक्त्योःसंगमेयदुत्थितममृतंद्रुतलाक्षासमानवर्णंतदमृतंतांकुंडलिनींपाययित्वातेनामृतेनआनंदरसरूपेणतांतृप्तांकृत्वेत्यर्थः ॥ ५० ॥ षट्चक्रेति ॥ पूर्वोक्तानियानिषट्चक्राणितच्चक्रस्थितादेवतालिंगरूपाअमृतधारयाशिवशक्तिसमागमोत्थानंदरसरूपामृतवृष्ट्यासंतर्प्यपुनर्येनैवमार्गेणमस्तकंनीताकुंडलिनी तेनैवमार्गेणमूलाधारंतांकुंडलिनीमानयेदित्यर्थः ॥ ५१ ॥ पूर्वोक्तेति ॥ छिन्नादिदोषदूषितामंत्राअनेनयोगेनसिद्ध्यंतीत्यर्थः ॥ तदुक्तंशारदातिलके ॥ इत्यादिदोषदुष्टांस्तान्मंत्रानात्मनियोजयेत् ॥ शोधयेद्रुद्धपवनोबद्धयायोनिमुद्रयेति ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ प्रसंगेनधारणास्वरूपंपूर्वमुक्तमेवविषयभेदेनविशदयति ॥ इदानीमिति ॥ पूर्वमष्टांगयोगनिरूपणेवायुधारणोक्ता अत्रतुचित्तस्यधारणोच्यतेइत्यर्थः ॥ अर्थःस्पष्टएव ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इत्थंध्यानयोगकरणेयस्ययावद्योग्यतानास्तितावत्पर्यंतंतेनपुरुषेणकिंकर्तव्यमितिचेत्तत्राह । यावन्मनइति ॥ ५९ ॥ ६० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६१ ॥ ६२ ॥ विस्तरस्तुमत्कृतदेवीगीताबृहट्टीकायांद्रष्टव्यः ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेपंचत्रिंशोध्यायः ॥ ३५ ॥ ॥ त्रिंशच्छ्लोकैर्मुख्यतत्त्वंब्रह्मरूपंतुवर्ण्यते ॥ ब्रह्मावि
द्यादुर्लभेतियथावदभिधीयते ॥ १ ॥ अत्रार्धश्लोकोप्याधिकः ॥ एतादृशंयोगंसाधयित्वायद्वस्तुध्येयंतद्वर्णयति ॥ श्रीदेव्युवाचेति ॥ १ ॥ अत्राविःसन्निहितमित्यादिब्रह्मैवेदंविश्वंवरिष्ठामि
त्यंताःश्रुतयोमुंडकोपनिषदिअन्यूनानातिरिक्ताःसंति ताश्चश्रुतयोभगवत्पादैःश्रीमच्छंकराचार्यैर्व्याख्याताएवमुंडकोपनिषद्भाष्येततस्तासांव्याख्यानंसंक्षेपेणैवक्रियते ॥ आविरिति ॥
आविःशब्दोनिपातःप्रकाशवाची ब्रह्मविश्वोपलब्ध्यात्मनाप्रकाशमानमेवसदेतिभावयेदित्यर्थः ॥ सन्निहितमतिसमीपवर्ति गुहायांबुद्धौचरतितत्रोपलभ्यतेसर्वव्यापकमपीतिगुहाचरंनाम ॥
पद्यतेसर्वैर्मुनिभिर्योगादिसाधनैःप्राप्यतेइतिपदंमहच्चतत्पदं चेतिमहत्पदम् ॥ अत्राऽस्मिन्ब्रह्मणिसर्वमाकाशादिसमर्पितंस्थापितंकल्पितमित्यर्थः ॥ ततस्तस्यमिथ्यात्वादिदमेवसर्वैः
प्राप्यमित्यर्थः॥किंकिमत्रसमर्पितंतदाह । एजदिति॥एजच्चलत्पक्ष्यादि॥प्राणत्प्राणितीतिप्राणन्मनुष्यादि॥निमिषच्चयन्निमेषादिक्रियावत्॥यच्चनिमिषम् ॥ चशब्दात्तत्सर्वंब्रह्मण्येवसमर्पित
मित्यर्थः ॥ २ ॥ एतज्जानथेति भगवतीवदति ॥ हेदेवाएतन्मद्रूपंब्रह्मजानथाऽवगच्छथ ॥ सदसद्वरेण्यं सत्कारणंमाया असत्कार्यंजगत् तदुभयापेक्षयावरेण्यंश्रेष्ठम् ॥ प्रजानांलोकानांवि
ज्ञानात्परंतज्ज्ञानाविषयइत्यर्थः ॥ यतोवरिष्ठंश्रेष्ठंततोनसर्वबुद्धिगम्यमित्यर्थः ॥ यदर्चिमत्सूर्यादितेजसामपिप्रकाशकम् ॥ यतस्ततोऽतिशयदीप्तिमादित्यर्थः ॥ यस्मिन्भूरादयोलोकास्तन्नि

**द्वयोरभ्यासयोगोहिब्रह्मसंसिद्धिकारणम् ॥ तमःपरिवृतेगेहेघटोदीपेनदृश्यते ॥ ६१ ॥ एवंमायावृतोह्यात्मामनुनागोचरीकृतः ॥ इतियोगविधिःकृत्स्नः
सांगः प्रोक्तोमयाऽधुना ॥ ६२ ॥ गुरूपदेशतोज्ञेयोनान्यथाशास्त्रकोटिभिः ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे पंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥
देव्युवाच ॥ इत्यादियोगयुक्तात्माध्यायेन्मांब्रह्मरूपिणीम् ॥ भक्त्यानिर्व्याजयाराजन्नासनेसमुपस्थितः ॥ १ ॥ आविःसन्निहितंगुहावरंनाममहत्पदम् ॥
अत्रैतत्सर्वमर्पितमेजत्प्राणन्निमिषच्चयत् ॥ २ ॥ एतज्जानथसदसद्वरेण्यंपरंविज्ञानाद्यद्वरिष्ठंप्रजानाम् ॥ यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणुचयस्मिँल्लोकानिहितालोकि
नश्च ॥ ३ ॥ तदेतदक्षरंब्रह्मसप्राणस्तदुवाङ्मनः ॥ तदेतत्सत्यममृतंतद्वेद्धव्यंसौम्यविद्धि ॥ ४ ॥ धनुर्गृहीत्वौपनिषदंमहास्त्रंशरंह्युपासानिशितंसंधयीत ॥
आयम्यतद्भावगतेनचेतसालक्ष्यंतदेवाक्षरंसौम्यविद्धि ॥ ५ ॥ प्रणवोधनुःशरोह्यात्माब्रह्मतल्लक्ष्यमुच्यते ॥ अप्रमत्तेनवेद्धव्यंशरवत्तन्मयोभवेत् ॥ ६ ॥**

वासिजनालोकिनश्चनिहिताःस्थापिताःकल्पिताइत्यर्थः ॥ ३ ॥ तदेतदिति ॥ तदेतत्सर्वाश्रयमक्षरंब्रह्मसप्राणस्तदुतदेववाङ्मनोपितदेतत्सत्यमवितथमतोमृतंतद्वेद्धव्यंमनसाशरेणताडयित
व्यंमनःसमाधानंतत्रकर्तव्यमित्यर्थः ॥४॥ कथंवेद्धव्यंतदुच्यते । धनुरिति ॥ औपनिषदमुपनिषद्भिर्बोधितम् ॥ महास्त्रंमहच्चतदस्त्रंचेतिमहास्त्रंधनुर्गृहीत्वाऽऽदायतथोपासाभिर्निशितंसंतता
भिध्यानेनतनूकृतंशरंतस्मिन्धनुषिसंधयीतयोजयेत् ॥ शरंसंधायसंस्थाप्यानंतरमायम्याकृष्यसेंद्रियमंतःकरणंस्वविषयाद्विनिवर्त्यलक्ष्येएवस्थापयित्वेत्यर्थः ॥ तद्भावगतेनतस्मिन्ब्रह्मण्यक्षरे
लक्ष्येभावनाभावस्तद्गतेनचेतसालक्ष्यंतदेवयथोक्तलक्षणमक्षरं ॥ सौम्यहेपर्वतराज विद्धिताडयेत्यर्थः ॥५॥ यदुक्तंधनुरादितदुच्यते। प्रणवइति ॥ प्रणवओंकारोदेवीप्रणवोवाधनुर्यथेष्वासनं
लक्ष्येशरस्यप्रवेशकारणंतथाचित्तशरस्याऽक्षरेलक्ष्येप्रवेशकारणंप्रणवः प्रणवेनह्यभ्यस्यमानेनसंस्क्रियमाणःतदालवतोऽप्रतिबंधेनाऽक्षरेवतिष्ठते ॥ यथाधनुषाप्रक्षिप्तइषुर्लक्ष्येऽतःप्रणवोधनुरि
वधनुः शरोह्यात्मांतःकरणंहिशरःशरसदृशलक्ष्यवेधनाच्छरइवशरः ॥ अत्रलक्ष्यंतुतद्ब्रह्मैवोच्यतइत्याह । ब्रह्मतल्लक्ष्यमुच्यतइति ॥ अप्रमत्तेनैकाग्रचेतसातल्लक्ष्यंब्रह्मवेद्धव्यंयथाशरोलक्ष्यै
कात्मतांप्राप्नोति तथादेहाद्यात्मप्रत्ययतिरस्कारेणाऽक्षरैक्यात्म्यंफलमापादयेदित्यर्थः ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अक्षरस्यदुर्लक्ष्यत्वात्पुनःपुनर्वचनंसुलक्षणार्थम्। यस्मिन्निति ॥ यस्मिन्नक्षरेद्यौःपृथिवीचांतरिक्षंचप्राणैःसहमनश्चसमर्पितंतमेवैकमात्मानंजानथजानीथ ॥ हेदेवायंज्ञात्वाचाऽन्यवाचोपराविद्या रूपाविमुंचथविमुंचतपरित्यजत ॥ यतोऽमृतस्यमोक्षस्यप्राप्तयेयंसेतुरिवसेतुः ॥ संसारमहोदधेस्तरणहेतुरित्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तमेवविदित्वातिमृत्युमेति नाऽन्यःपंथाविद्यतेऽयना येति ॥७॥ किंच अराइवेति ॥ यथारथनाभौसमर्पिताअराइवसंहताःसंप्रविष्टाएवंयत्रयस्मिन्हृदयेनाड्यस्तस्मिन्हृदयेबुद्धिप्रत्ययसाक्षिभूतःसएषप्रकृतआत्मांतर्मध्येचरतेचरतिवर्ततेबुद्ध्यादि प्रत्ययैर्जायमानइवजायमानोंतःकरणोपाध्यनुविधायित्वाद्वर्तितलौकिकाःहृष्टोजातःक्रुद्धोजातइति ॥ ८ ॥ तमात्मानमोमित्येवोंकारालंबनाःसंतोयथोक्तकल्पनयाध्यायथचिंतयत ॥ तेषां कल्याणार्थमाशीर्वचनंभगवतीकरुणानिधिर्वदति ॥ स्वस्तिनिर्विघ्नमस्तुवोयुष्माकंपारायपरकूलप्राप्तये ॥ तमसोऽविद्यातःपरस्तादविद्यारहितब्रह्मात्मस्वरूपगमनायेत्यर्थः ॥ सआत्माक्व र्ततेतत्राह । यःसर्वज्ञोयश्चसर्वविद्यस्यैषमहिमाविभूतिर्जगत्सर्जनादिरूपोभुविप्रसिद्धःसदिव्येद्योतनवतिब्रह्मपुरेहृदयपुंडरीकेतत्रतस्यप्रकाशमानत्वात्तस्मिन्हृत्कमलेयद्व्योमाकाशस्तस्मिन् प्रतिष्ठितइवोपलभ्यते॥९॥सह्यात्मामनोवृत्तिभिरेवविभाव्यतइतिमनोमयः ॥ प्राणश्चशरीरंचतयोरयंनेता ॥ शरीराच्छरीरांतरंप्रतिप्रतिष्ठितोवस्थितोऽन्नेऽन्नपरिणामेपिंडेहृदयेबुद्धिंसंनिधाय समवस्थाप्यतद्विज्ञानेनतत्साक्षात्कारेणपरिपश्यंतिसर्वतःपूर्णंपश्यंतिधीराविवेकिनः ॥ आनंदरूपंदुःखासंस्पृष्टममृतंयद्विभातिसर्वदातदित्यर्थः ॥ १० ॥ अस्यात्मज्ञानस्यफलमभिधीयते ।

**यस्मिन्द्यौश्चपृथिवीचांतरिक्षमोतंमनःसहप्राणैश्चसर्वैः ॥ तमेवैकंजानथात्मानमन्यावाचोविमुंचथामृतस्यैषसेतुः ॥ ७ ॥ अराइवरथनाभौसंहतायत्र नाड्यः ॥ सएषोंतश्चरतेबहुधाजायमानः ॥ ८ ॥ ओमित्येवंध्यायथात्मानंस्वस्तिवःपारायतमसःपरस्तात् ॥ दिव्येब्रह्मपुरेव्योम्निआत्मासंप्रतिष्ठितः ॥ ॥ ९ ॥ मनोमयःप्राणशरीरनेताप्रतिष्ठितोऽन्नेहृदयंसन्निधाय ॥ तद्विज्ञानेनपरिपश्यंतिधीराआनंदरूपममृतंयद्विभाति ॥ १० ॥ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यं तेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचाऽस्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ ११ ॥ हिरण्मयेपरेकोशेविरजंब्रह्मनिष्कलम् ॥ तच्छुभ्रंज्योतिषांज्योतिस्तद्यदात्मविदोवि दुः ॥ १२ ॥ नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोऽयमग्निः ॥ तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति ॥ १३ ॥ ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्मपश्चाद्ब्रह्मदक्षिणतश्चोत्तरेण ॥ अधश्चोर्ध्वंचप्रसृतंब्रह्मैवेदंविश्वंवरिष्ठम् ॥ १४ ॥**

भिद्यते इति॥हृदयग्रंथिः चिदहंकारतादात्म्यरूपोभिद्यतेनश्यति॥छिद्यंतेसर्वज्ञेयविषयाःसंशयाःसर्वेषांमिथ्यात्वनिश्चयात्॥क्षीयंतेनश्यंतिचकर्माणिप्रारब्धातिरिक्तानिसर्वाणितस्मिन्परमा त्मनिदृष्टेसाक्षात्कृतेइत्यर्थः ॥११॥ उक्तस्यैवार्थस्यसंक्षेपाभिधायकाउत्तरेत्रयोपिमंत्राः ॥ हिरण्मयेज्योतिर्मयेपरेकोशेआनंदमयेकोशेविरजम्। उपलक्षणतयागुणत्रयरहितंब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठेति श्रुत्युक्तंब्रह्मनिष्कलंमायारहितमसत्त्वमरजस्कमतमस्कममायमितिश्रुत्यंतरात् ॥ अतएवशुभ्रंस्वच्छम् ॥ ज्योतिषांसर्वप्रकाशकसूर्यादीनामपिज्योतिःप्रकाशकमित्यर्थः ॥ यदाऽऽत्मविदो ज्ञानिनोमहतायासेनविदुस्तद्धिरण्मयेपरेकोशेतिष्ठतीत्यन्वयः ॥ १२ ॥ कथंतज्ज्योतिषांज्योतिस्तदुच्यते । नतत्रेति ॥ तत्रतस्मिन्नात्मभूतेब्रह्मणिनसूर्योभातिसूर्योपितद्ब्रह्मनप्रकाशयती त्यर्थः ॥ तथाचंद्रतारकम् इमाविद्युतोऽपिनभांतिनप्रकाशयंति ॥ कुतोऽयमग्निःपूर्वापेक्षयास्वल्पज्योतिःप्रकाशयतिनैवप्रकाशयतीत्यर्थः ॥ किंबहुनायदिदंजगद्भातितत्तमेवाऽऽत्मानंस्वप्रका शत्वाद्भांतंप्रकाशितमनुभात्यनुदीप्यतेतस्यैवभासासर्वमिदंसूर्यादिजगद्विभातीत्यर्थः ॥ १३ ॥ यन्मयोक्तंब्रह्मतदेवसत्यंरज्जुस्थानीयंनान्यज्जगत्सर्पस्थानीयंमृषात्वात् ॥ तस्मादिदमेवा ऽऽश्रयणीयमित्यभिप्रायेणनिगमनस्थानीयेनमंत्रेणोपसंहराति । ब्रह्मैवेदमिति॥ ब्रह्मैवोक्तलक्षणमिदंयत्पुरस्तादग्रेब्रह्मैवाऽविद्यादृष्टीनांप्रत्यवभासमानंतथापश्चाद्ब्रह्मतथादक्षिणतश्चतथोत्तरेण तथैवाधस्तादूर्ध्वंचकिंबहुनाब्रह्मैवेदंविश्वंसमस्तंवरिष्ठमिदंजगत् ॥ अब्रह्मप्रत्ययःसर्वोऽविद्यामात्रोरज्ज्वामिवसर्पप्रत्ययोब्रह्मैवेदंपरमार्थसत्यमितिवेदानुशासनमित्यर्थः ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एतादृशानुभववतः कृतार्थत्वमाह । एतादृगिति ॥१५॥ द्वितीयादिति ॥ तदभावात्द्वितीयस्यभयकारणस्याऽभावात्ब्रह्मविन्नबिभेतीत्यर्थः ॥ तेनममकदापिवियोगोनास्तीत्याह । नतद्वियोगइति ॥ १६ ॥ अहमेवेति ॥ अहंयाऽस्मिसासज्ञान्यस्तीत्यर्थः ॥ सज्ञानीयोऽस्तिसोहमेवास्मीत्यर्थः ॥ व्यतिहारेणदृढाभेदोदर्शितः ॥१७॥ अहंज्ञानिहृदयेएवतिष्ठामीत्याह । नाहंतीर्थेइति ॥ १८ ॥ कृतकृत्यका ॥ स्वार्थेकन्प्रत्ययः॥१९॥यस्यपुरुषस्यचेतसिश्रितपरमात्मानिलयोजातस्तेनपुरुषेणविश्वंभरापृथिवीपुण्यवतीत्यर्थः॥२०॥नातोवक्तव्यमस्तीति ॥ इतःपरमधिकोवक्तव्यांशोनास्तीत्यर्थः॥ विद्योपदेशपात्रमुपादिशति । इदंज्येष्ठायेति॥२१॥यथोक्तायशास्त्रोक्तलक्षणयुक्ताय॥गुरुप्रसादंविनापरमेश्वरप्रसादंविनाकदापिब्रह्मज्ञाविद्यानभवतीत्याह । यस्यदेवेइति ॥ श्रुतिरियम् ॥२२॥ विद्येयमिति ॥ ब्रह्मविद्येत्यर्थः ॥२३॥ सुकृतमुपकारंतस्यगुरोःकर्तुमयंशिष्योयतोऽसमर्थस्ततोऽयंशिष्यस्तस्यगुरोर्यावज्जीवपर्यंतंऋणीत्यर्थः॥ ब्रह्मजन्मब्रह्मरूपेणजन्म ॥ २४ ॥ पितृजातंजन्ममरणेसतिनष्टंभवेन्नेत्थंब्रह्मरूपेणजातंकदाचिदपिनष्टंभवेत्ततइत्यर्थः ॥ अतएवतस्मैनद्रुह्येत्कृतमस्यजानन्निति श्रुतिरपीममेवार्थंवक्तीत्याह । तस्मै

एतादृगनुभवोयस्यसकृतार्थोनरोत्तमः ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति ॥ १५ ॥ द्वितीयाद्वैभयंराजंस्तदभावाद्बिभेतिन ॥ नतद्वियोगोमेप्यस्तिमद्वियोगोपितस्यन ॥ १६ ॥ अहमेवससोऽहंवैनिश्चितंविद्धिपर्वत ॥ मद्दर्शनंतुतत्रस्याद्यत्रज्ञानीस्थितोमम ॥ १७ ॥ नाऽहंतीर्थेनकैलासेवैकुंठेवानकर्हिचित् ॥ वसामिकिंतुमज्ज्ञानिहृदयांभोजमध्यमे ॥ १८ ॥ मत्पूजाकोटिफलदंसकृन्मज्ज्ञानिनोऽर्चनम् ॥ कुलंपवित्रंतस्याऽस्तिजननीकृतकृत्यका ॥ १९ ॥ विश्वंभरापुण्यवतीचिल्लयोयस्यचेतसः ॥ ब्रह्मज्ञानंतुयत्पृष्टंत्वयापर्वतसत्तम ॥ २० ॥ कथितंतन्मयासर्वंनाऽतोवक्तव्यमस्तिहि ॥ इदंज्येष्ठायपुत्रायभक्तियुक्तायशीलिने ॥ २१ ॥ शिष्यायचयथोक्तायवक्तव्यंनाऽन्यथाक्वचित् ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ २२ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥ येनोपदिष्टाविद्येयंसएवपरमेश्वरः ॥ २३ ॥ यस्यायंसुकृतंकर्तुमसमर्थस्ततोऽऋणी ॥ पित्रोरप्यधिकःप्रोक्तोब्रह्मजन्मप्रदायकः ॥ २४ ॥ पितृजातंजन्मनष्टंनेत्थंजातंकदाचन ॥ तस्मैनद्रुह्येदित्यादिनिगमोप्यवदन्नग ॥ २५ ॥ तस्माच्छास्त्रस्यसिद्धांतोब्रह्मदातागुरुःपरः ॥ शिवेरुष्टेगुरुस्त्रातागुरौरुष्टेनशंकरः ॥ २६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रीगुरुंतोषयेन्नग ॥ कायेनमनसावाचासर्वदातत्परोभवेत् ॥२७॥ अन्यथातुकृतघ्नःस्यात्कृतघ्नेनास्तिनिष्कृतिः ॥ इंद्रेणाऽथर्वणायोक्ताशिरश्छेदप्रतिज्ञया ॥ २८ ॥

नद्रुह्येदिति ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ कृतघ्नेनास्तिनिष्कृतिरितिकृतघ्नेप्रायश्चित्तंनास्तीत्यर्थः ॥ इंद्रेणाऽथर्वणायोक्तेति ॥ अत्रेदंबोध्यम् ॥ दध्यङ्नामाऽऽथर्वणोमुनिः सइंद्रंप्रतिब्रह्मविद्यांप्रार्थितवांस्तस्माइंद्रोब्रह्मविद्यांप्रोवाचाऽनंतरमुक्तवानिंद्रोयदीमांब्रह्मविद्यामन्यस्मैवदसितदैवतेशिरश्छेत्स्यामीति ॥ ततःकियताकालेनदध्यञ्चंमुनिंप्रत्यागत्याऽश्विनीकुमारौब्रह्मविद्यांप्रार्थितवंतौ ताभ्यांमुनिरुवाच यद्यहंब्रह्मविद्यांवक्ष्यामितर्हींद्रोमेशिरश्छेत्स्यतीति तच्छ्रुत्वातौवैद्यावूचतुस्तवेदंशिरश्छित्त्वाऽस्माभिरन्यत्रस्थाप्यतेअश्वीयंमस्तकंतवदेहेसंयोज्यतेतेनब्रह्मविद्यामस्मभ्यमुपदिश ॥ यदेंद्रआगत्यतच्छिरश्छेत्स्यतितदावयंपूर्वस्थापितंमुख्यंशिरस्तवदेहेसंयोजयावस्तदनंतरंमुख्यमुखेनैवमुख्यशिरसाब्रह्मविद्यांवदेतितदनंतरंसमुनिरपितथैवचकारेति कथासर्ववेदेषुप्रसिद्धा ॥ तांकथांब्रह्मविद्यांस्तोतुंस्मारयति । इंद्रेणाऽथर्वणायोक्तेति ॥ २८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २९ ॥ इतिसंकटेति ॥ एतादृश्यतिदुर्लभाब्रह्मविद्यायेनलब्धासधन्यइत्यन्वयः ॥ ३० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ पंचाधिकैश्चचत्वारिंशत्पद्यैरथसादरम् ॥ भक्तिस्वरूपमहिमायथावदनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ पूर्वंयस्यदेवेपराभक्तिरित्युक्तंतत्रभक्तिस्वरूपंपृच्छति । स्वीयांभक्तिमिति ॥ मध्यमस्यमध्यमाधिकारिणोविरागिणोभक्तिरहितस्यापिदुर्लभंज्ञानंयेनभक्तिहेतुनाजायेततांभक्तिंवदेत्यर्थः ॥ १ ॥ मोक्षप्राप्तौत्रयोमार्गाःकर्मोपासनाज्ञानभेदेनत्रिविधाः ॥ तत्रज्ञानमार्गः साक्षान्मोक्षसाधनमितरौचित्तशुद्धिद्वारेतिविवेकः ॥ तानेवमार्गान्दर्शयति । कर्मयोगइति ॥ भक्तियोगउपासनायोगइत्यर्थः ॥ २ ॥ त्रयाणामपिमार्गाणांमध्येतन्मार्गगामिनांत्रयाणामपिपुरुषाणामयंभक्तियोगः कर्तुंयोग्यःशक्यश्चभवति ॥ कुतइतिचेदस्यभक्तियोगस्यान्यापेक्षयासुलभत्वान्मानसत्वात्द्रव्यव्ययशरीरायासमंतरेणकेवलंमनोवृत्त्यैवसंपाद्यत्वात् ॥ यस्मिन्भक्तियोगेकायचित्तद्रव्यव्ययादिपीडनाभावोभवतितस्मादित्यर्थः ॥ तस्मात्सर्वैरप्ययंभक्तियोगोनियमेनाश्रयितव्यइत्यर्थः ॥ ३ ॥ तत्रभक्तेस्त्रैविध्यमुपदिशति। गुणभेदादिति ॥ मनुष्याणांमनुष्यसंबंधिनांगुणानां

अश्विभ्यांकथनेतस्याशिरश्छिन्नंचवज्रिणा ॥ अश्वीयंतच्छिरोनष्टंदृष्ट्वावैद्यौसुरोत्तमौ ॥ २९ ॥ पुनःसंयोजितंस्वीयंताभ्यांमुनिशिरस्तदा ॥ इतिसंकटसंपाद्याब्रह्मविद्यानगाधिप ॥ ३० ॥ लब्धायेनसधन्यःस्यात्कृतकृत्यश्चभूधर ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ हिमालयउवाच ॥ स्वीयांभक्तिंवदस्वांबयेनज्ञानंसुखेनहि ॥ जायेतमनुजस्याऽस्यमध्यमस्याऽविरागिणः ॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ मार्गास्त्रयोमेविख्यातामोक्षप्राप्तौनगाधिप ॥ कर्मयोगोज्ञानयोगोभक्तियोगश्चसत्तम ॥ २ ॥ त्रयाणामप्ययंयोग्यःकर्तुंशक्योऽस्तिसर्वथा ॥ सुलभत्वान्मानसत्वात्कायचित्ताद्यपीडनात् ॥ ३ ॥ गुणभेदान्मनुष्याणांसाभक्तिस्त्रिविधामता ॥ परपीडांसमुद्दिश्यदंभंकृत्वापुरःसरम् ॥ ४ ॥ मात्सर्यक्रोधयुक्तोयस्तस्यभक्तिस्तुतामसी ॥ परपीडादिरहितःस्वकल्याणार्थमेवच ॥ ५ ॥ नित्यंसकामोहृदयेयशोर्थीभोगलोलुपः ॥ तत्तत्फलसमावाप्त्यैमामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ ६ ॥ भेदबुद्ध्यातुमांस्वस्मादन्यांजानातिपामरः ॥ तस्यभक्तिःसमाख्यातानगाधिपतुराजसी ॥ ७ ॥ परमेशार्पणंकर्मपापसंक्षालनायच ॥ वेदोक्तत्वादवश्यंतत्कर्तव्यंतुमयाऽनिशम् ॥ ८ ॥ इतिनिश्चितबुद्धिस्तुभेदबुद्धिमुपाश्रितः ॥ करोतिप्रीतयेकर्मभक्तिःसानगसात्त्विकी ॥ ९ ॥ परभक्तेःप्रापिकेयंभेदबुद्ध्यवलंबनात् ॥ पूर्वप्रोक्तेह्युभेभक्तीनपरप्रापिकेमते ॥ १० ॥

सत्त्वरजस्तमोरूपाणांभेदात्भक्तिरपित्रिविधा ॥ सात्विकराजसतामसभेदेनत्रिविधाभवतीत्यर्थः ॥ त्रिविधभक्तिस्वरूपमाह । परपीडामिति ॥ अन्यनाशार्थमित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ भेदबुद्ध्याजीवेश्वरयोर्भेदबुद्ध्यामांसर्वेश्वरींस्वस्मादन्यांभिन्नांजानातियतःपामरः ॥ ७ ॥ ८ ॥ भेदबुद्धिमुपाश्रितइति ॥ अयमपिसात्विकःपुरुषोभेदबुद्धिंजीवेश्वरयोःपृथक्त्वबुद्धिमाश्रित्यैवभक्तिंकरोतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ त्रिविधभक्तिस्वरूपमुपदिश्यतिसृणांभक्तीनांमध्येद्वयोर्हेयत्वमेकस्याग्राह्यत्वमाह । परभक्तेरिति ॥ सापरानुरक्तिरीश्वरेइतिलक्षणलक्षितायाःपरभक्तेः परप्रेमरूपाया इयंसात्त्विकीभक्तिः प्रापिकाभवति ॥ ततइयमाश्रयणीयेतिभावः ॥ नन्वियंपरभक्तिःकुतोनेतिचेत्तत्राह । भेदबुद्ध्यवलंबनादिति ॥ अस्यांभेदबुद्धिर्वर्ततइत्यात्मसदृशप्रेम्णोऽत्रासंभवान्नेयंपराभक्तिरित्यर्थः ॥ परप्रेमात्वात्मन्येवसंभवतितदेतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयोवित्तात्प्रेयः सर्वस्माद्यदंतरतरमित्यादिश्रुतिभ्यः ॥ पूर्वप्रोक्तेइति ॥ पूर्वप्रोक्तेद्वेभक्तीतुनपरभक्तिप्रापिके ततस्तेउभेअपित्याज्येइत्यर्थः ॥ १० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





परभक्तिस्वरूपमाह । अधुनेति ॥ ११ ॥ तैलधारायथाव्युच्छिन्नानभवतितद्वदिदमपिचेतोध्यानमध्येविषयेषुनगच्छतीत्यर्थः ॥१२॥ हेतुरिति ॥ एतादृशध्यानेहेतुःफलंकोवापिकोपिकदाचिदपिनैवभवेत् किंतुकेवलंमत्प्रीत्यर्थमयिपरमानुरागेणैवचेतसोनुवर्तनंकरोतीत्यर्थः॥सामीप्यादिलोकेच्छयापिनमदाराधनंकरोति किंतुप्रेम्णैवेत्याह।सामीप्योति ॥१३॥ सेव्यसेवकतेति ॥ ल्यब्लोपेपंचमी ॥ सेव्यसेवकभावंविहायेत्यर्थः ॥ मदाराधनमेवेच्छतिनमोक्षमित्यर्थः ॥ १४ ॥ स्वाभेदेनैवेति ॥ अहमेवसच्चिदानंदरूपिणीभगवत्यस्मीतिभावनयेत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ईश्वरहेपर्वतराज भेदवर्जनात्सर्वत्रचैतन्यरूपैकैवभगवत्यस्तिनद्वितीयेतिभेदनिरासादित्यर्थः ॥ १८ ॥ मत्स्थानेति ॥ तानिचवक्ष्यमाणानिपूर्वोक्तानिचस्थानानि ॥ मच्छास्त्रं

अधुनापरभक्तिंतुप्रोच्यमानांनिबोधमे ॥ मद्गुणश्रवणंनित्यंममनामानुकीर्तनम् ॥ ११ ॥ कल्याणगुणरत्नानामाकरायांमयिस्थिरम् ॥ चेतसोवर्तनंचैवतैलधारासमंसदा ॥ १२ ॥ हेतुस्तुतत्रकोवापिनकदाचिद्भवेदपि ॥ सामीप्यसार्ष्टिसायुज्यसालोक्यानांनचैषणा ॥ १३ ॥ मत्सेवातोऽधिकंकिंचिन्नैवजानातिकर्हिचित् ॥ सेव्यसेवकताभावात्तत्रमोक्षंनवांछति ॥ १४ ॥ परानुरक्त्यामामेवचिंतयेद्योह्यतद्रितः ॥ स्वाभेदेनैवमांनित्यंजानातिनविभेदतः ॥ ॥ १५ ॥ मद्रूपत्वेनजीवानांचिंतनंकुरुतेतुयः ॥ यथास्वस्यात्मनिप्रीतिस्तथैवचपरात्मनि ॥१६॥ चैतन्यस्यसमानत्वान्नभेदंकुरुतेतुयः॥सर्वत्रवर्तमानांमांसर्वरूपांचसर्वदा॥१७॥नमतेयजतेचैवाप्याचांडालांतमीश्वर॥नकुत्रापिद्रोहबुद्धिंकुरुतेभेदवर्जनात् ॥१८॥ मत्स्थानदर्शनश्रद्धामद्भक्तदर्शनेतथा ॥ मच्छास्त्रश्रवणेश्रद्धामंत्रतंत्रादिषुप्रभो॥१९॥मयिप्रेमाकुलमतीरोमांचिततनुःसदा ॥ प्रेमाश्रुजलपूर्णाक्षःकंठगद्गदनिस्वनः॥२०॥अनन्येनैवभावेनपूजयेद्योनगाधिप ॥ मामीश्वरींजगद्योनिंसर्वकारणकारणम् ॥२१॥ व्रतानिममदिव्यानिनित्यनैमित्तिकान्यपि ॥ नित्यंयःकुरुतेभक्त्यावित्तशाठ्यविवर्जितः ॥२२॥ मदुत्सवदिदृक्षाचमदुत्सवकृतिस्तथा ॥ जायतेयस्यनियतंस्वभावादेवभूधर ॥ २३ ॥ उच्चैर्गायंश्चनामानिममैवखलुनृत्यति ॥ अहंकारादिरहितोदेहतादात्म्यवर्जितः ॥ २४ ॥ प्रारब्धेनयथायच्चक्रियतेतत्तथाभवेत् ॥ नमेचिंतास्तितत्रापिदेहसंरक्षणादिषु ॥२५॥ इतिभक्तिस्तुयाप्रोक्तापरभक्तिस्तुसास्मृता॥ यस्यांदेव्यतिरिक्तंतुनकिंचिदपिभाव्यते॥२६॥इत्थंजातापराभक्तिर्यस्यभूधरतत्त्वतः ॥ तदैवतस्यचिन्मात्रेमद्रूपेविलयोभवेत्॥२७॥भक्तेस्तुयापराकाष्ठासैवज्ञानंप्रकीर्तितम् ॥ वैराग्यस्यचसीमासाज्ञानेतदुभयंयतः॥२८॥भक्तौकृतायांयस्यापिप्रारब्धवशतोनग ॥ नजायतेममज्ञानंमणिद्वीपंसगच्छति॥२९॥

शक्तिदर्शनंतथादेवीभागवतंवेदांतंच ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ व्रतानीति ॥ तानिवक्ष्यमाणानि ॥ २२ ॥ मदुत्सवेति ॥ तेचोत्सवावक्ष्यमाणाः ॥ अन्यकृतोत्सवदर्शनेच्छाचेत्यर्थः ॥ स्वतोपिमदुत्सवकृतिर्मदुत्सवकरणमित्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रारब्धेनेति ॥ प्रारब्धाधीनंसर्वंज्ञात्वाकामपिमत्स्वरूपचिंतातिरिक्तांचिंतांनकरोतीत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ इत्थंपरभक्त्यास्वस्वरूपेचित्तलययोग्यताभवतीत्याह । तदैवेति ॥ २७ ॥ भक्तेस्त्विति ॥ यतोज्ञानेसतिभक्तिवैराग्येसांगेसंपूर्णेसिध्यतस्तस्माद्भक्तेर्वैराग्यस्यचयापराकाष्ठासाज्ञानमित्यर्थः ॥ तदुक्तंविष्णुभागवते ॥ भक्तिःपरेशानुभवोविरक्तिरन्यत्रचैषत्रिकएककालइति ॥ २८ ॥ मणिद्वीपंपूर्वोक्तंद्वादशस्कंधेवक्ष्यमाणंच ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ऋच्छतिप्राप्नोतीत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ संवित्परतनोरितिप्रत्यगात्मविशेषणम् ॥ तस्यप्राणाइति ॥ नतस्यप्राणाउत्क्रामंतीतिश्रुतेः ॥ ३२ ॥ कंठचामीकरेति ॥ यथाकंठग तं विद्यमानमेवचामीकरंसुवर्णमज्ञानेनसुवर्णंतिरोभूतंज्ञानेनाज्ञाननाशेसतितदेवप्राप्यतेनान्यत्तद्वदेवविद्यमानमेवात्मरूपमज्ञानेनतिरोभूतंपश्चाज्ज्ञानेनाज्ञाननाशेसतितदेवप्राप्यतेनान्यदित्यर्थः ॥ ॥ ३३ ॥ विदिताविदितादिति ॥ विदितंकार्यंघटादि ॥ अविदितंकारणंमायारूपंतस्मादन्यदित्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ अन्यदेवतद्विदितादथोअविदितादधीति ॥ एतदर्थस्तुमत्कृतेके नोपनिषद्भाष्यव्याख्यानेद्रष्टव्यः ॥ यथादर्शेप्रतिबिंबंपततितद्वदात्मन्यस्मिन्देहेनुभवोभवतीत्यर्थः ॥ यथाजलेप्रतिबिंबंपूर्वापेक्षयाविविक्तंतथापितृलोकेनुभवोभवतीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ मम लोकेमणिद्वीपे ॥ छायातपयोरिवात्यंतविविक्तानुभवइत्यर्थः॥३५॥३६॥३७॥३८॥नोचेन्महान्विनाशइति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ इहचेदवेदीदथसत्यमस्तिनचेदिहावेदीन्महतीविनष्टिरिति॥

तत्रगत्वाऽखिलान्भोगाननिच्छन्नपिचर्च्छति ॥ तदंतेममचिद्रूपज्ञानंसम्यग्भवेन्नग ॥ ३० ॥ तेनमुक्तःसदैवस्याज्ज्ञानान्मुक्तिर्नचान्यथा ॥ इहैवयस्यज्ञानं स्याद्धृतप्रत्यगात्मनः ॥ ३१ ॥ ममसंवित्परतनोस्तस्यप्राणाव्रजंतिन ॥ ब्रह्मैवसंस्तदाप्नोतिब्रह्मैवब्रह्मवेदयः ॥ ३२ ॥ कंठचामीकरसममज्ञानात्तुतिरो हितम् ॥ ज्ञानादज्ञाननाशेनलब्धमेवाहिलभ्यते ॥ ३३ ॥ विदिताविदितादन्यन्नगोत्तमवपुर्मम ॥ यथादर्शेतथाऽऽत्मनियथाजलेतथापितृलोके ॥ ३४ ॥ छायातपौयथास्वच्छौविविक्तौतद्वदेवहि ॥ ममलोकेभवेज्ज्ञानंद्वैतभानविवर्जितम् ॥ ३५ ॥ यस्तुवैराग्यवानेवज्ञानहीनोम्रियेतचेत् ॥ ब्रह्मलोकेवसे न्नित्यंयावत्कल्पंततःपरम् ॥ ३६ ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेभवेत्तस्यजनिःपुनः ॥ करोतिसाधनंपश्चात्ततोज्ञानंहिजायते ॥ ३७ ॥ अनेकजन्मभीराजञ्ज्ञा नंस्यान्नैकजन्मना ॥ ततःसर्वप्रयत्नेनज्ञानार्थंयत्नमाश्रयेत् ॥ ३८ ॥ नोचेन्महान्विनाशःस्याज्जन्मैतद्दुर्लभंपुनः ॥ तत्राऽपिप्रथमेवर्णेवेदेप्राप्तिश्चदुर्लभा ॥ ॥ ३९ ॥ शमादिषट्कसंपत्तिर्योगसिद्धिस्तथैवच ॥ तथोत्तमगुरुप्राप्तिःसर्वमेवाऽत्रदुर्लभम् ॥४०॥ तथेंद्रियाणांपटुतासंस्कृतत्वंतनोस्तथा ॥ अनेकजन्म पुण्यैस्तुमोक्षेच्छाजायतेततः ॥ ४१ ॥ साधनेसफलेऽप्येवंजायमानेऽपियोनरः ॥ ज्ञानार्थंनैवयततेतस्यजन्मनिरर्थकम् ॥ ४२ ॥ तस्माद्राजन्यथाश क्त्याज्ञानार्थंयत्नमाश्रयेत् ॥ पदेपदेऽश्वमेधस्यफलमाप्नोतिनिश्चितम् ॥ ४३ ॥ घृतमिवपयसिनिगूढंभूतेभूतेचवसतिविज्ञानम् ॥ सततंमंथयितव्यंम नसामंथानभूतेन ॥ ४४ ॥ ज्ञानंलब्ध्वाकृतार्थःस्यादितिवेदांतडिंडिमः ॥ सर्वमुक्तंसमासेनकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४५ ॥ ॥ इतिश्रीदे० म० सप्तम स्कंधेदेवीगीतायांसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥ ॥ हिमालयउवाच ॥ कतिस्थानानिदेवेशिद्रष्टव्यानिमहीतले॥मुख्यानिचपवित्राणिदेवीप्रियतमानिच ॥ १॥

प्रथमेवर्णेब्राह्मणवर्णेतत्रापिजन्मदुर्लभंतत्रापिवेदप्राप्तिर्दुर्लभा॥३९॥४०॥संस्कृतत्वंवेदोक्तसंस्कारसंस्कृतत्वम् ॥४१॥४२॥श्रवणादिषुप्रवृत्तस्यक्षणेक्षणेऽश्वमेधफलंभवतीत्याह । पदेपदेइति क्षणेक्षणेइत्यर्थः॥४३॥उपदेशसारंभगवतीवदति।घृतमिवेति॥पयसिदुग्धेघृतमिवभूतेभूतेसर्वदेहेष्वित्यर्थः॥ विज्ञानंब्रह्मवसतितिरोहितंतन्मनसामंथानभूतेनमंथयितव्यंमंथनेनपयसःसकाशात घृतमिवपृथक्कुर्यादित्यर्थः ॥ इयमपिश्रुतिरेवकंठरवेणोपात्ता ॥४४॥ उपसंहरति । सर्वमुक्तमिति ॥४५॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥ पंचाशद्भिरथार्घोनैः पद्यैरत्रमहोत्सवाः ॥ व्रतानिदेव्याःस्थानानिकीर्त्यंतेसंग्रहेणतु ॥ १ ॥ पूर्वमत्स्थानदर्शनश्रद्धेत्युक्तंतथाव्रतानिममदिव्यानीत्युक्तंतथामदुत्सवदिदृक्षाचमदुत्सवकृतिस्तथेत्युक्तम् ॥ तत्रता निकानिस्थानानिव्रतानिचकानिकेतेउत्सवाइत्येतत्सर्वंपृच्छति । कतिस्थानानीति ॥ १ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २ ॥ यस्मादहंसर्वरूपिणीतस्मात्सर्वंदृश्यमात्रंममसंविद्रूपिण्याःसर्वाधिष्ठानभूतायाःस्थानंसर्वस्यमयिकल्पितत्वात् ॥ तथासर्वेऽपिकालाव्रतात्मकाः यस्मिन्कालेयद्यत्क्रियतेमत्प्रीत्यर्थं तत्सर्वंममव्रतमेवममसर्वकालात्मकत्वात् ॥ तथाऽउत्सवाअपीत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ कोलापुरंदक्षिणदेशे ॥ मातुःपुरंसह्याद्रिपर्वते ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ चंद्रलानामदेवीकर्णाटदेशेवर्तते ॥ ९ ॥ १० ॥ चिंदंबरेहालास्यस्थाने ॥ ११ ॥ एकांवरंस्थानंभुवनेश्वरइतिनाम्नापुरुषोत्तमक्षेत्रसन्निधौवर्तते ॥ एरशक्त्याभुवनेश्वर्याप्रतिष्ठितंतत्स्थानंतस्मिन्स्थानेपिभुवनेश्वर्यहंतिष्ठा

व्रतान्यपितथायानितुष्टिदान्युत्सवाअपि ॥ तत्सर्वंवदमेमातःकृतकृत्योयतोनरः॥२॥ श्रीदेव्युवाच ॥ सर्वंदृश्यंममस्थानंसर्वेकालाव्रतात्मकाः ॥ उत्सवाः सर्वकालेषुयतोऽहंसर्वरूपिणी॥३॥तथापिभक्तवात्सल्यात्किंचित्किंचिदथोच्यते ॥ शृणुष्वाऽवहितोभूत्वानगराजवचोमम ॥४॥ कोलापुरंमहास्थानंयत्र लक्ष्मीःसदास्थिता ॥ मातुःपुरंद्वितीयंचरेणुकाधिष्ठितंपरम् ॥५॥ तुलजापुरंतृतीयंस्यात्सप्तशृंगंतथैवच ॥ हिंगुलायामहास्थानंज्वालामुख्यास्तथैवच ॥ ॥६॥ शाकंभर्याःपरंस्थानंभ्रामर्याःस्थानमुत्तमं॥श्रीरक्तदंतिकास्थानंदुर्गास्थानंतथैवच॥७॥विंध्याचलनिवासिन्याःस्थानंसर्वोत्तमोत्तमम्॥अन्नपूर्णामहा स्थानंकांचीपुरमनुत्तमम्॥८॥भीमादेव्याःपरंस्थानंविमलास्थानमेवच॥श्रीचंद्रलामहास्थानंकौशिकीस्थानमेवच ॥९॥ नीलांबायाःपरंस्थानंनीलपर्वत मस्तके ॥ जांबूनदेश्वरीस्थानंतथाश्रीनगरंशुभम् ॥१०॥ गुह्यकाल्यामहास्थानंनेपालेयत्प्रतिष्ठितम् ॥ मीनाक्ष्याःपरमंस्थानंयच्चप्रोक्तंचिदंबरे॥११॥ वे दारण्यंमहास्थानंसुंदर्याःसमधिष्ठितम्॥एकांबरंमहास्थानंपरशक्त्याप्रतिष्ठितम् ॥१२॥ महालसापरंस्थानंयोगेश्वर्यास्तथैवच॥तथानीलसरस्वत्याःस्था नंचीनेषुविश्रुतम् ॥ १३ ॥ वैद्यनाथेतुबगलास्थानंसर्वोत्तमंमतम् ॥ श्रीमच्छ्रीभुवनेश्वर्यामणिद्वीपंममस्मृतम् ॥१४॥ श्रीमत्रिपुरभैरव्याःकामाख्यायोनि मंडलम् ॥ भूमंडलेक्षेत्ररत्नंमहामायाधिवासितम् ॥१५॥ नातःपरतरंस्थानंक्वचिदस्तिधरातले ॥ प्रतिमासंभवेद्देवीयत्रसाक्षाद्रजस्वला॥१६॥ तत्रत्यादे वताःसर्वाःपर्वतात्मकतांगताः॥पर्वतेषुवसंत्येवमहत्योदेवताअपि॥१७॥तत्रत्यापृथिवीसर्वादेवीरूपास्मृताबुधैः॥ नातःपरतरंस्थानंकामाख्यायोनिमंडला त् ॥ १८ ॥ गायत्र्याश्चपरंस्थानंश्रीमत्पुष्करमीरितम् ॥ अमरेशेचंडिकास्यात्प्रभासेपुष्करेक्षिणी ॥ १९ ॥ नैमिषेतुमहास्थानेदेवीसालिङ्गधारिणी ॥ पुरुहूतापुष्कराक्षेअषाढौचरतिस्तथा ॥ २० ॥ चंडमुंडीमहास्थानेदंडिनीपरमेश्वरी ॥ भारभूतौभवेद्भूतिर्नाकुलेनकुलेश्वरी ॥ २१ ॥

मीत्यर्थः ॥ १२ ॥ महालसास्थानंदक्षिणदेशेमल्लारिस्थानमितिप्रसिद्धंतदस्ति योगेश्वरीस्थानंवराटदेशेऽस्ति ॥ चीनेषुचीनदेशेषु ॥ १३ ॥ मणिद्वीपंतृतीयस्कंधेवर्णितंतन्ममभुवनेश्वर्या स्मृतमित्यर्थः ॥ १४ ॥ कामाख्यायामहादेव्याःसतीदेहेनावतीर्णायायोनिमंडलंयत्रपतितंकामरुदेशेकालिकापुराणेयस्यमहद्वर्णनंतत्कामाख्यायोनिमंडलंत्रिपुरभैरव्याःस्थानमित्यर्थः ॥ तस्यमहिमानंवर्णयति । भूमंडलेइति ॥१५॥ रजस्वलारजोवतीएतादृशंतज्जागृतंस्थानमित्यर्थः॥१६॥पर्वतात्मकतांगताइति॥कालिकापुराणेसर्वमेतत्स्पष्टम् ॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २२ ॥ महाकालेउज्जयिन्याम् ॥ मध्यमाभिधेमध्यमेश्वरस्थाने ॥ २३ ॥ नाकुलेस्थानेस्वायंभुवीदेवीवर्ततेइत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ छगलंडके इदंस्थानंदक्षिणदेशे समुद्रसन्निधौतिष्ठति ॥ २८ ॥ २९ ॥ हृल्लेखापदव्युत्पत्तिर्यामलेभुवनेश्वरीरहस्ये ॥ हृदिलेखेवजागर्तिप्राणशक्तिरियंपरा । हृल्लेखाकथ्यतेतस्मादिति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ व्रतमनंततृतीयाख्यमिति ॥ इमानितृतीयाव्रतानिमत्स्यपुराणेप्रसिद्धानि ॥ तद्विधिश्चतत्रैवोक्तः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ यत्रग्रदोषकाले ॥ ३९ ॥ निशामुखेरजनी

चंद्रिकातुहरिश्चंद्रेश्रीगिरौशांकरीस्मृता ॥ जप्येश्वरेत्रिशूलास्यात्सूक्ष्माचाम्रातकेश्वरे ॥२२॥ शांकरीतुमहाकालेशर्वाणीमध्यमाभिधे ॥ केदाराख्येमहाक्षेत्रेदेवीसामार्गदायिनि ॥ २३ ॥ भैरवाख्येभैरवीसागयायांमंगलास्मृता ॥ स्थाणुप्रियाकुरुक्षेत्रेस्वायंभुव्यपिनाकुले ॥ २४ ॥ कनखलेभवेदुग्राविश्वेशाविमलेश्वरे ॥ अट्टहासेमहानंदामहेंद्रेतुमहांतका ॥ २५ ॥ भीमेभीमेश्वरीप्रोक्तास्थानेवस्त्रापथेपुनः ॥ भवानीशांकरीप्रोक्तारुद्राणीत्वर्धकोटिके ॥ २६ ॥ अविमुक्तेविशालाक्षीमहाभागामहालये ॥ गोकर्णेभद्रकर्णीस्याद्भद्रास्याद्भद्रकर्णके ॥ २७ ॥ उत्पलाक्षीसुवर्णाक्षेस्थाण्वीशास्थाणुसंज्ञिके ॥ कमलालयेतुकमलाप्रचंडाछगलंडके ॥ २८ ॥ कुरंडलेत्रिसंध्यास्यान्माकोटेमुकुटेश्वरी ॥ मंडलेशेशांडकीस्यात्कालीकालंजरेपुनः ॥२९॥ शंकुकर्णेध्वनिःप्रोक्तास्थूलास्यात्स्थूलकेश्वरे ॥ ज्ञानिनांहृदयांभोजेहृल्लेखापरमेश्वरी ॥३०॥ प्रोक्तानीमानिस्थानानिदेव्याःप्रियतमानिच ॥ तत्तत्क्षेत्रस्यमाहात्म्यंश्रुत्वापूर्वंनगोत्तम ॥३१॥ तदुक्तेनविधानेनपश्चाद्देवींप्रपूजयेत् ॥ अथवासर्वक्षेत्राणिकाश्यांसंतिनगोत्तम ॥३२॥ तत्रनित्यंवसेन्नित्यंदेवीभक्तिपरायणः ॥ तानिस्थानानिसंपश्यञ्जपन्देवींनिरंतरम् ॥३३॥ ध्यायंस्तच्चरणांभोजंमुक्तोभवतिबंधनात् ॥ इमानिदेवीनामानिप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥३४॥ भस्मीभवंतिपापानितत्क्षणान्नगसत्वरम् ॥ श्राद्धकालेपठेदेतान्यमलानिद्विजाग्रतः ॥३५॥ मुक्तास्तत्पितरःसर्वेप्रयांतिपरमांगतिम् ॥ अधुनाकथयिष्यामिव्रतानितवसुव्रत ॥३६॥ नारीभिश्चनरैश्चैवकर्तव्यानिप्रयत्नतः ॥ व्रतमनंततृतीयाख्यंरसकल्याणिनीव्रतम् ॥३७॥ आर्द्रानंदकरंनाम्नातृतीयायाव्रतंचयत् ॥ शुक्रवारव्रतंचैवतथाकृष्णचतुर्दशी ॥३८॥ भौमवारव्रतंचैवप्रदोषव्रतमेवच ॥ यत्रदेवोमहादेवोदेवींसंस्थाप्यविष्टरे ॥३९॥ नृत्यंकरोतिपुरतःसार्धंदेवैर्निशामुखे ॥ तत्रोपोष्यरजन्यादौप्रदोषेपूजयेच्छिवाम् ॥४०॥ प्रतिपक्षंविशेषेणतद्देवीप्रीतिकारकम् ॥ सोमवारव्रतंचैवममाऽतिप्रियकृन्नग ॥४१॥ तत्रापिदेवींसंपूज्यरात्रौभोजनमाचरेत् ॥ नवरात्रद्वयंचैवव्रतंप्रीतिकरंमम ॥ ४२ ॥ एवमन्यान्यपिविभोनित्यनैमित्तिकानिच ॥ व्रतानिकुरुतेयोवैमत्प्रीत्यर्थंविमत्सरः ॥ ४३॥ प्राप्नोतिममसायुज्यंसमेभक्तःसमेप्रियः ॥ उत्सवानपिकुर्वीतदोलोत्सवमुखान्विभो ॥ ४४ ॥

मुखे ॥ तस्मात्प्रदोषव्रतंदेव्याःशिवस्यचसिद्धम् ॥ ४० ॥ ४१ ॥ नवरात्रद्वयंचैवेति ॥ तच्चशारदंवासंतिकंच ॥ चकारेणपूर्वोक्तमपिमाघाषाढस्थंनवरात्रद्वयंग्राह्यम् ॥ ४२ ॥ एवमन्यान्यपीति ॥ अन्यान्यप्युपांगललिताव्रतादीनिव्रतानि पुराणांतरेषुतंत्रांतरेष्वप्युक्तानीत्यर्थः ॥ ४३ ॥ दोलोत्सवमुखानिति ॥ तद्विधिश्चतत्रैवोक्तः ॥ देवीपुराणे चैत्रशुक्लतृतीयायांकुर्याद्दोलोत्सवंबुधः ॥ तृतीयायांयजेद्देवींशंकरेणसमन्विताम् ॥ कुंकुमागुरुकर्पूरमणिवस्त्रसुगंधकैः ॥ स्रग्गंधधूपदीपैश्चदमनेनाविशेषतः ॥ आंदोलयेत्ततोवत्साशिवोमातुष्टयेसदेति ॥ ४४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





शयनोत्सवमिति ॥ तत्कालश्चवामनपुराणेउक्तः ॥ आषाढेपौर्णमासीतउत्तरायातृतीयातद्रूपः ॥ तथाजागरणोत्सवकालश्चकार्तिकपौर्णमासीतउत्तरायातृतीयातद्रूपः ॥ शयनोत्सवविधि
र्जागरणोत्सवविधिश्चसर्वदेवतासुसमानः ॥ देवताभेदेनतुकालभेदएवकेवलंभिन्नः ॥ सर्वंचेदंवामनपुराणेस्पष्टम् ॥ रथोत्सवमिति ॥ तद्विधिश्चोमासंहितायांशिवपुराणे ॥ आषाढशुक्ल
पक्षीयतृतीयायांरथोत्सवम् ॥ देव्याःप्रियतमंकुर्याद्यथावित्तानुसारतः ॥ रथंपृथ्वींविजानीयाद्रथांगेचंद्रभास्करौ ॥ वेदानश्वान्विजानीयात्सारथिंपद्मसंभवम्॥ नानामणिगणाकीर्णपुष्पमा
लाविराजितम् ॥ एवंरथंकल्पयित्वातस्मिन्संस्थापयेच्छिवाम् ॥ लोकसंरक्षणार्थायलोकान्द्रष्टुंपरांबिका ॥ रथमध्येसंस्थितेतिभावयेन्मतिमान्नरः ॥ रथेप्रचलितेमंदंजयशब्दमुदीरयेत् ॥
पाहिदेविजनानस्मान्प्रपन्नान्दीनवत्सले ॥ इतिवाक्यैस्तोषयेच्चनानावादित्रनिःस्वनैः ॥ सीमांतेतुरथंनीत्वातत्रसंपूजयेद्रथे ॥ नानास्तोत्रैस्ततःस्तुत्वाप्यानयेत्तांस्ववेश्मनीति ॥ दमनोत्सव
श्चैत्रपौर्णमास्याम् ॥ तद्विधिश्चधर्मशास्त्रेतंत्रेषुचप्रसिद्धएव ॥ ४५ ॥ पवित्रोत्सवमिति ॥ सचश्रावणपौर्णमास्याम् ॥ तद्विधिश्चधर्मशास्त्रेतंत्रेचप्रसिद्धएव ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ सुमादिभिःकु
सुमादिभिरेतान्कुमारीवटुकब्राह्मणान्पूजयेदित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायामष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ सप्ताधिकैश्चचत्वारिं

**शयनोत्सवं यथाकुर्यात्तथाजागरणोत्सवम् ॥ रथोत्सवंचमेकुर्याद्दमनोत्सवमेवच ॥ ४५ ॥ पवित्रोत्सवमेवापिश्रावणेप्रीतिकारकम् ॥ ममभक्तःसदाकुर्या
देवमन्यान्महोत्सवान् ॥ ४६ ॥ मद्भक्तान्भोजयेत्प्रीत्यातथाचैवसुवासिनीः ॥ कुमारीर्वटुकांश्चापिमद्बुद्ध्याचतद्गतांतरः ॥ ४७ ॥ वित्तशाठ्येनरहितो
यजेदेतान्सुमादिभिः ॥ यएवंकुरुतेभक्त्याप्रतिवर्षमतंद्रितः ॥ ४८ ॥ सधन्यःकृतकृत्योऽसौमत्प्रीतेःपात्रमंजसा ॥ सर्वमुक्तंसमासेनममप्रीतिप्रदायकम् ॥
॥ ४९ ॥ नाऽशिष्यायप्रदातव्यंनाऽभक्तायकदाचन ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेस०देवीगीतायामष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ ॥ हिमालयउ
वाच ॥ देवदेविमहेशानिकरुणासागरेंबिके ॥ ब्रूहिपूजाविधिंसम्यग्यथावदधुनानिजम् ॥ १ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वक्ष्येपूजाविधिंराजन्नंबिकायायथाप्रि
यम् ॥ अत्यंतश्रद्धयासार्धंशृणुपर्वतपुंगव ॥ २ ॥ द्विविधाममपूजास्याद्बाह्याचाऽऽभ्यंतराऽपिच ॥ बाह्याऽपिद्विविधाप्रोक्तावैदिकीतांत्रिकीतथा ॥ ३ ॥
वैदिक्यर्चाऽपिद्विविधामूर्तिभेदेनभूधर ॥ वैदिकीवैदिकैःकार्यावेददीक्षासमन्वितैः ॥ ४ ॥ तंत्रोक्तदीक्षावद्भिस्तुतांत्रिकीसंश्रिताभवेत् ॥ इत्थंपूजारह
स्यंचनज्ञात्वाविपरीतकम् ॥ ५ ॥**

शत्पद्यैरथपूजनम् ॥ भगवत्याःकथ्यतेत्रयेनदेवीप्रसीदति ॥१॥ पूर्वंबहुषुस्थलेषुपूजायामहिमानंश्रुत्वापूजाविधिंपृच्छति । देवदेवीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मूर्तिभेदेनवक्ष्यमाणेन ॥ वेदो
क्तदीक्षासमन्वितैर्वैदिकैः वैदिकीवेदोक्तप्रकारापूजाकर्तव्येत्यर्थः ॥ साचविराट्स्वरूपस्यपूर्वंदेव्यादर्शितस्यध्यानरूपाप्रथमा ॥ द्वितीयातुकरचरणादिविशिष्टांसुकुमारांभगवतीमूर्तिंध्या
त्वावेदोक्तमंत्रैरावाहनादिविसर्जनांतंकुर्यादितिद्वितीयापूजा ॥ इत्येवंमूर्तिभेदेनवैदिकीपूजाद्विविधेत्यर्थः ॥ ४ ॥ तांत्रिक्याअधिकारिणमाह ॥ तंत्रोक्तेति ॥ कुंडमंडपादिपुरःसरंतांत्रिक
मंत्रैर्दीक्षांकुर्वद्भिस्तांत्रिकीतंत्रोक्तविधिनापूजाकर्तव्येत्यर्थः ॥ नज्ञात्वेति ॥ यस्ययस्यांपूजायामधिकारस्तत्रतंनज्ञात्वेत्यर्थः ॥ विपरीतकंवैदिकस्तांत्रिकंकरोतितांत्रिकोवैदिकंकरोतीत्येवं
रूपंयःकरोतिमूढःसपतत्येवनरकादिष्वितिशेषः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ योवैस्वांदेवतामतियजतेनस्वायैदेवतायैच्यवतेनपरांप्राप्नोतिपापीयान्भवतीति ॥ अतियजतेत्यजति ॥ च्यवतेगृह्णाति॥
स्वांदेवतामिति स्वोचितमार्गोपलक्षणम् ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तत्रवैदिक्यर्चायाएवस्वरूपंप्राशस्त्यंचवदति । तत्रयावैदिकीति ॥ प्रथमामिति ॥ वैदिकीतांत्रिकीतथेतिवाक्योक्तांप्रथमांवैदिकीमित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ शांत्यादियुक्तोवैदिकींपूजां कुर्यादित्याह । शांतःसमाहितइति ॥ ९ ॥ तत्परस्तन्ममविराट्स्वरूपमेवपरमुत्कृष्टंयस्यसतत्परः ॥ १० ॥ मामेवविराट्स्वरूपाम् ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३॥ ननुतर्हिकेवलंकर्मनिरर्थकमि तिचेन्नेत्याह ॥ धर्मात्संजायतेभक्तिरिति ॥ यदिकर्मनाचरितंतदापापक्षयाभावाद्भक्तिरेवदुर्लभास्यात् ॥ भक्तेरभावाच्चपरंब्रह्माप्यत्यंतंदुर्लभंस्यादितिकर्माचरणंसार्थकमेवेतिभावः ॥ पर मिति ॥ ज्ञानमित्यर्थः ॥ १४ ॥ तच्चकर्मनान्यशास्त्रोदितम् किंतुवेदोक्तमेवेत्याह । श्रुतिस्मृतिभ्यामुदितमिति ॥ यदुदितंकर्मसधर्मइत्यर्थः ॥ १५ ॥ किमितिवेदोक्तएवधर्मोनान्यशास्त्रो दितइतिचेत्तत्राह । सर्वज्ञादिति ॥ सर्वज्ञात्सर्वशक्तेर्मत्तोमत्स्वरूपाद्वेदःसमुत्थितःतदाममाज्ञानाभावाद्यन्मयोक्तंतत्सत्यमेवेतिश्रुतिर्नाऽप्रमाणम् ॥ वेदातिरिक्तशास्त्राणित्वज्ञपुरुषबुद्धिकल्पि

करोतियोनरोमूढःसपतत्येवसर्वथा ॥ तत्रयावैदिकीप्रोक्ताप्रथमातांवदाम्यहम् ॥६॥ यन्मेसाक्षात्परंरूपंदृष्टवानसिभूधर ॥ अनंतशीर्षनयनमनंतचरणंम हत् ॥ ७ ॥ सर्वशक्तिसमायुक्तंप्रेरकंयत्परात्परम् ॥ तदेवपूजयेन्नित्यंनमेद्ध्यायेत्स्मरेदपि ॥ ८ ॥ इत्येतत्प्रथमार्चायाःस्वरूपंकथितंनग ॥ शांतःसमा हितमनादंभाहंकारवर्जितः ॥ ९ ॥ तत्परोभवतद्याजीतदेवशरणंव्रज ॥ तदेवचेतसापश्यजपध्यायस्वसर्वदा ॥ १० ॥ अनन्ययाप्रेमयुक्तभक्त्यामद्भा वमाश्रितः ॥ यज्ञैर्यजतपोदानैर्मामेवपरितोषय ॥ ११ ॥ इत्थंममाऽनुग्रहतोमोक्ष्यसेभवबंधनात् ॥ मत्परायेमदासक्तचित्ताभक्तवरामताः ॥ १२ ॥ प्र तिजानेभवादस्मादुद्धराम्यचिरेणतु ॥ ध्यानेनकर्मयुक्तेनभक्तिज्ञानेनवापुनः ॥१३॥ प्राप्याऽहंसर्वथाराजन्नतुकेवलकर्मभिः ॥ धर्मात्संजायतेभक्तिर्भक्त्या संजायतेपरम् ॥ १४ ॥ श्रुतिस्मृतिभ्यामुदितंयत्सधर्मःप्रकीर्तितः ॥ अन्यशास्त्रेणयःप्रोक्तोधर्माभासःसउच्यते ॥ १५ ॥ सर्वज्ञात्सर्वशक्तेश्चमत्तोवेदः समुत्थितः ॥ अज्ञानस्यममाऽभावादप्रमाणानचश्रुतिः ॥ १६ ॥ स्मृतयश्चश्रुतेरर्थंगृहीत्वैवचनिर्गताः ॥ मन्वादीनांश्रुतीनांचततःप्रामाण्यमिष्यते ॥ ॥ १७ ॥ क्वचित्कदाचित्तंत्रार्थकटाक्षेणपरोदितम् ॥ धर्मंवदंतिसोंशस्तुनैवग्राह्योऽस्तिवैदिकैः ॥ १८ ॥ अन्येषांशास्त्रकर्तॄणामज्ञानप्रभवत्वतः ॥ अ ज्ञानदोषदुष्टत्वात्तदुक्तेर्नप्रमाणता ॥ १९ ॥ तस्मान्मुमुक्षुर्धर्मार्थंसर्वथावेदमाश्रयेत् ॥ राजाज्ञाचयथालोकेहन्यतेनकदाचन ॥ २० ॥ सर्वेशान्याममा ज्ञासाश्रुतिस्त्याज्याकथंनृभिः ॥ मदाज्ञारक्षणार्थंतुब्रह्मक्षत्रियजातयः ॥ २१ ॥

तानिततश्चाज्ञप्रणीतत्वादप्रमाणान्येवेतितदुक्तोधर्मोधर्माभासः वेदोक्तएवतुधर्मइत्यर्थः ॥ १६ ॥ ननुमन्वादिस्मृतीनामप्येवंरीत्याप्रामाण्याभावआगतइतिचेत्तत्राह । स्मृतयश्चेति ॥ श्रुत्यर्थएवतुस्मृतिभिरुच्यतेततोमूलभूतश्रुतेःप्रामाण्यात्तन्मूलकस्मृतीनामपिप्रामाण्यमव्याहतमेवेत्यर्थः ॥ १७ ॥ ननुमन्वादिस्मृतीनांपुराणानांचसप्रमाणत्वेतप्तमुद्राविधानवामाचारादिवेद विरुद्धाचारस्यचपुराणस्मृतिषुसत्त्वात्ग्राह्यत्वंस्यादितिचेत्तत्राह । क्वचित्कदाचिदिति ॥ तंत्रार्थकटाक्षेणतंत्रतंत्रार्थावलोकनेनपरोदितंवेदातिरिक्तशास्त्रोदितमपिधर्मंवदंति सधर्मःप्रत्यक्षश्रु तिविरुद्धत्वात्तैरुक्तोपिनवैदिकैर्ग्राह्यइत्यर्थः ॥ १८ ॥ तत्रहेतुमाह । अन्येषांशास्त्रकर्तॄणामिति ॥ १९ ॥ २० ॥ सर्वेशान्याःसर्वेश्वर्याममसाश्रुतिराज्ञास्तिसानृभिःकथंत्याज्येत्यर्थः ॥ तथाचकूर्मपुराणेदेवीवाक्यंद्वादशाध्याये॥ममैवाज्ञापराशक्तिर्वेदसंज्ञापुरातनी॥ऋग्यजुःसामरूपेणसर्गादौसंप्रवर्ततइति ममाज्ञाभूतश्रुतिरक्षणार्थंमयामहान्यत्नःकृतोस्तीत्याह॥मदाज्ञेति१२॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ततस्तस्माद्धेतोर्ज्ञेयंश्रुतेर्वचोमेममरहस्यमस्तीति ॥ २२ ॥ वेषान्शाकंभर्यादिरामकृष्णाद्यवतारान् ॥ अतएवेति ॥ वेदसंरक्षकादेवास्तन्नाशकादैत्याइतिविभागोवेदसद्भावादेवजातइत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ननुतर्हिकिमर्थंतंत्राणिशिवेनप्रणीतानीतिचेत्तत्राह । अन्यानियानीति ॥ २६ ॥ तेषांनामान्याह । वामंकापालिकमिति ॥ २७ ॥ पापिनांवेदधर्माचरणेसद्गतिः स्यादितिकर्मवैचित्र्याभावात्प्रपंचवैचित्र्यं नस्यादितितेषांनानाफलप्रदर्शनेनतत्रप्रवृत्तयेमोहार्थमेववेदश्रद्धामच्युत्यर्थंचतंत्राणिप्रणीतानीत्यर्थः ॥ किंचशापदग्धानांवेदबहिष्कृतानां ब्राह्मणानांसोपानक्रमेणजन्मांतरेवेदाधिकारप्राप्त्यर्थंकिंचित्परमेश्वरोपासनंवक्तव्यमितितदनुग्रहार्थंचतंत्राणिप्रणीतानीत्याह । दक्षशापादिति ॥ शापकथाचकूर्मपुराणेसूतसंहितायामस्मिन्द्वादशस्कंधेचप्रसिद्धापुराणांतरेषुच ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ननुतर्हितंत्राणिसर्वथात्याज्यानीतिपर्यवसन्नमितिचेन्नेत्याह । तत्रवेदाविरुद्धोंशइति ॥ तंत्रेषुद्विविधोंशोस्ति ॥ एको

मयासृष्टास्ततोज्ञेयंरहस्यंमेश्रुतेर्वचः ॥ यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभूधर ॥ २२ ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्यतदावेषान्बिभर्म्यहम् ॥ देवदैत्यविभागश्चाऽप्यतएवाऽभवन्नृप ॥ २३ ॥ येनकुर्वंतितद्धर्मंतच्छिक्षार्थंमयासदा ॥ संपादितास्तुनरकास्त्रासोयच्छ्रवणाद्भवेत् ॥ २४ ॥ योवेदधर्मंमुज्झित्यधर्मंमन्यंसमाश्रयेत् ॥ राजाप्रवासयेद्देशान्निजादेतानधर्मिणः ॥ २५ ॥ ब्राह्मणैर्नचसंभाष्याःपंक्तिग्राह्यानचद्विजैः ॥ अन्यानियानिशास्त्राणिलोकेस्मिन्विविधानिच ॥ २६ ॥ श्रुतिस्मृतिविरुद्धानितामसान्येवसर्वशः ॥ वामंकापालकंचैवकौलकंभैरवागमः ॥ २७ ॥ शिवेनमोहनार्थायप्रणीतोनान्यहेतुकः ॥ दक्षशापाद्भृगोःशापाद्दधीचस्यचशापतः ॥ २८ ॥ दग्धायेब्राह्मणवरावेदमार्गबहिष्कृताः ॥ तेषामुद्धरणार्थायसोपानक्रमतःसदा ॥ २९ ॥ शैवाश्चवैष्णवाश्चैवसौराःशाक्तास्तथैवच ॥ गाणपत्याआगमाश्चप्रणीताःशंकरेणतु ॥३०॥ तत्रवेदाविरुद्धोंशोप्युक्तएवक्वचित्क्वचित्॥वैदिकैस्तद्ग्रहेदोषोनभवत्येवकर्हिचित् ॥ ३१ ॥ सर्वथावेदभिन्नार्थेनाधिकारीद्विजोभवेत् ॥ वेदाधिकारहीनस्तुभवेत्तत्राधिकारवान् ॥ ३२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवैदिकोवेदमाश्रयेत् ॥ धर्मेणसहितंज्ञानंपरंब्रह्मप्रकाशयेत् ॥ ३३ ॥ सर्वैषणाःपरित्यज्यमामेवशरणंगताः ॥ सर्वभूतदयावंतोमानाहंकारवर्जिताः ॥ ३४ ॥ मच्चित्तामद्गतप्राणामत्स्थानकथनेरताः ॥ संन्यासिनोवनस्थाश्चगृहस्थाब्रह्मचारिणः ॥ ३५ ॥ उपासंतेसदाभक्त्यायोगमैश्वरसंज्ञितम् ॥ तेषांनित्याभियुक्तानामहमज्ञानजंतमः ॥ ३६ ॥ ज्ञानसूर्यप्रकाशेननाशयामिनसंशयः ॥ इत्थंवैदिकपूजायाःप्रथमायानगाधिप ॥ ३७ ॥

वेदविरुद्धोद्वितीयोवेदाविरुद्धः ॥ तत्रवैदिकैर्वेदविरुद्धांशस्त्याज्योवेदाविरुद्धांशस्तुग्राह्यइत्यर्थः ॥ तदुक्तंवायुसंहितायाम् ॥ शैवागमोपिद्विविधःश्रौताश्रौतश्चतन्मयः ॥ श्रुतिसारमयःश्रौतःस्वतंत्रइतरोमतइत्यादि ॥ श्रौतोग्राह्यस्तुवैदिकैरितिसूतसंहितायाम् ॥ तथापियोंशोमार्गाणां वेदेनविरुद्धचते ॥ सोंशः प्रमाणमित्युक्तमिति ॥ इत्थमेतावत्पर्यंतं वैदिकंमतमुपपादितम् ॥ तंत्राणांस्वतःप्रामाण्यमंगीकुर्वतांतांत्रिकाणांमतंत्वन्यदेवेतिदिक् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ यस्माद्वेदोक्तएवधर्मस्तस्माद्वेदमेवाश्रयेदित्याह । तस्मादिति ॥ धर्मेणवेदोक्तेन ॥ ३३ ॥ पुनर्विराट्स्वरूपोपासकस्यनिष्ठामाह । सर्वैषणाइति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ऐश्वरसंज्ञितंविराट्स्वरूपोपासनाभिधम् ॥ ३६ ॥ प्रथमवैदिकपूजास्वरूपकथनमुपसंहरति । इत्थमिति ॥३७॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वेदमार्गेणकरचरणादिविशिष्टसुकुमारमूर्तिपूजारूपायाद्वितीयवैदिकपूजायाःस्वरूपमाह । द्वितीयायाइति ॥ ३८ ॥ महापटेवस्त्रे ॥ ३९ ॥ सुकुमारांमूर्तिमाह । सगुणामिति ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इत्थंबाह्यपूजाकियत्कालपर्यंतंकर्तव्येतिचेत्तत्राह । यावदांतरेति ॥ आंतरपूजायामधिकारिजातेइत्यर्थः ॥ तदुक्तंसूतसंहितायांपंचमाध्यायेशक्तिपूजाप्रकरणे ॥ अथाभ्यंतरपूजायामधिकारोभवेद्यदि ॥ त्यक्त्वाबाह्यामिमांपूजामाश्रयेदपरांबुधइति ॥ ४३ ॥ आंतरपूजास्वरूपमाह । आभ्यंतरेति ॥ संविदिज्ञानरूपेब्रह्मणिमयियच्चेतसोलयस्तद्रूपेइत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ निर्मनस्केननिर्विकल्पेन ॥ योगयुक्तेनभक्तियोगयुक्तेन ॥ ४६ ॥ इयंयामूर्तौपूजासंक्षेपेणोक्तातांविस्तरेणवक्तुंप्रतिजानीते । अतःपरमिति ॥४७॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्त०देवीगीतायामेकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ ॥ पंचाधिकैश्चचत्वारिंशद्भिःपद्यैरतःपरम् ॥ बाह्यपूजाविधानंचयथावदभिधीयते ॥ १ ॥ बाह्यपूजांवक्तुमुपक्रमते प्रात

स्वरूपमुक्तंसंक्षेपाद्वितीयायाअथोब्रुवे ॥ मूर्तौवास्थंडिलेवापितथासूर्येंदुमंडले ॥३८॥ जलेऽथवाबाणलिंगेयंत्रेवाऽपिमहापटे ॥ तथाश्रीहृदयांभोजेध्यात्वादेवींपरात्पराम् ॥३९॥ सगुणांकरुणापूर्णांतरुणीमरुणारुणाम् ॥ सौंदर्यसारसीमांतांसर्वावयवसुंदराम् ॥४०॥ शृंगाररससंपूर्णांसदाभक्तार्तिकातराम् ॥ प्रसादसुमुखींमंबांचंद्रखंडशिखंडिनीम् ॥ ४१ ॥ पाशांकुशवराभीतिधरामानंदरूपिणीम् ॥ पूजयेदुपचारैश्चयथावित्तानुसारतः ॥ ४२॥ यावदांतरपूजायामधिकारोभवेन्नहि ॥ तावद्बाह्यामिमांपूजांश्रयेज्जातेतुतांत्यजेत् ॥४३॥ आभ्यंतरातुयापूजासातुसंविल्लयःस्मृतः ॥ संविदेवपरंरूपमुपाधिरहितंमम ॥४४॥ अतःसंविदिमद्रूपेचेतःस्थाप्यंनिराश्रयम् ॥ संविद्रूपातिरिक्तंतुमिथ्यामायामयंजगत् ॥४५॥ अतःसंसारनाशायसाक्षिणीमात्मरूपिणीम् ॥ भावयेन्निर्मनस्केनयोगयुक्तेनचेतसा ॥ ४६ ॥ अतःपरंबाह्यपूजाविस्तारःकथ्यतेमया ॥ सावधानेनमनसाशृणुपर्वतसत्तम ॥ ४७ ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीतायामेकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ प्रातरुत्थायशिरसिसंस्मरेत्पद्ममुज्ज्वलम् ॥ कर्पूराभंस्मरेत्तत्रश्रीगुरुंनिजरूपिणम् ॥ १ ॥ सुप्रसन्नंलसद्भूषाभूषितंशक्तिसंयुतम् ॥ नमस्कृत्यततोदेवींकुंडलींसंस्मरेद्बुधः ॥२॥ प्रकाशमानांप्रथमेप्रयाणेप्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमानाम् ॥ अंतःपदव्यामनुसंचरंतीमानंदरूपामबलांप्रपद्ये ॥ ३ ॥ ध्यात्वैवंतच्छिखामध्येसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ मांध्यायेदथशौचादिक्रियाःसर्वाःसमापयेत् ॥ ४ ॥ अग्निहोत्रंततोहुत्वामत्प्रीत्यर्थंद्विजोत्तमः ॥ होमांतेस्वासनेस्थित्वापूजासंकल्पमाचरेत् ॥ ५ ॥

रुत्थायेति ॥ अष्टपंचभवेत्प्रातरितिधर्मशास्त्रोक्तप्रातःकालेइत्यर्थः ॥ शिरसिस्वमस्तके ब्रह्मरंध्रे पद्मंसहस्रारम् ॥ तत्रतस्मिन्पद्मेनिजरूपिणंनिजगुरुसमानाकारमित्यर्थः ॥ १ ॥ शक्तिसंयुतंस्वपत्नीसंयुतम् ॥ माताएवगुरुश्चेत्तांपतिसंयुतांध्यायेत् ॥ २ ॥ प्रकाशमानामिति ॥ प्रथमेप्रयाणेब्रह्मरंध्रगमनरूपेप्रकाशमानांचिद्रूपत्वेनभासमानांप्रतिप्रयाणेब्रह्मरंध्रान्मूलाधारंपुनरागमनेअमृतायमानाम् आनंदामृतभरिताम् ॥ अंतःपदव्यांसुषुम्नायामनुसंचरंतींगमनागमनेकुर्वतीमबलांपरांशक्तिंप्रपद्येशरणंगतोस्मीत्यर्थः ॥ नविद्यतेबलंयस्याःसकाशादन्यत्रेत्यबला ॥ इत्थंयोगिभिःकुंडलिनीसाक्षात्कर्तव्या योगाभावेभावनावाकर्तव्या ॥ ३ ॥ तच्छिखामध्येसायाशिखामूलाधारस्थचिदग्नेःशिखाकुंडलिनीतस्याःशिखायामध्येपरमात्माव्यवस्थितइतितैत्तिरीयश्रुत्युक्तातन्मध्येमांसच्चिदानंदरूपिणींध्यायेदित्यर्थः ॥ सर्वाःक्रियाःसंध्यावंदनांताः ॥ ४ ॥ होमांतेमत्प्रीत्यर्थमग्निहोत्रहोमांतेइत्यर्थः ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





भूतशुद्धिमातृकान्यासौप्रसिद्धौगौरवान्नलिख्येते ॥ हृल्लेखामातृकेति ॥ हृल्लेखामायाबीजंप्रत्यक्षरंमायाबीजंपूर्वंदत्त्वामातृकान्यासोयःकर्तव्यःसहृल्लेखामातृकान्यासः ॥ शारदायांदश विधमातृकान्यासेषुप्रसिद्धः ॥ ६ ॥ ७ ॥ धर्मादिभिरिति ॥ धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्यान्विदिक्षुपीठखुरत्वेनभावयेत् ॥ अधर्माज्ञानावैराग्यानैश्वर्यान्पूर्वादिचतुर्दिक्षुपाठमात्रत्वेनभावयेत् ॥ तत्पी ठोपरि मध्येऽनंतायनमः ॥ पद्मायनमः ॥ अंसूर्यमंडलायनमः ॥ मंवह्निमंडलायनमः ॥ संसत्त्वायनमः ॥ रंरजसेनमः ॥ तंतमसेनमः ॥ पूर्वादिदिक्षु ॥ आंआत्मनेनमः ॥ अंअंतरात्मने नमः ॥ पंपरमात्मनेनमः ॥ ह्रींज्ञानात्मनेनमः ॥ ततःपद्मस्यपूर्वादिदले ॥ जयायैनमः ॥ विजयायैनमः ॥ अपराजितायैनमः ॥ नित्यायैनमः ॥ विलासिन्यैनमः ॥ दोग्ध्र्यैनमः ॥ अघोरायैनमः ॥ मध्येमंगलायैनमः ॥ इतिपीठशक्तीःपूजयेत् ॥ इदंशारदायांस्पष्टम् ॥ ८ ॥ ततःप्राणायामैर्विकसितेहृत्पद्मेपंचप्रेतासनेदेवींध्यायेदित्याह । ततोध्यायेदिति ॥ ९ ॥ पंचप्रेतानाह । ब्रह्माविष्णुश्चेति ॥ १० ॥ किमर्थमेतेत्वदासनतांगताइतितत्राह । पंचभूतात्मकाह्येतेइति ॥ भूम्यादिपंचभूतानामेतेऽधिपतयोऽहंतुदेवीतेषामुत्पादकंयदव्यक्तंमायाविशि

भूतशुद्धिंपुराकृत्वामातृकान्यासमेवच ॥ हृल्लेखामातृकान्यासंनित्यमेवसमाचरेत् ॥ ६ ॥ मूलाधारेहकारंचहृदयेचरकारकम् ॥ भ्रूमध्येतद्वदीकारंह्रीं कारंमस्तकेन्यसेत् ॥ ७ ॥ तत्तन्मंत्रोदितानन्यान्न्यासान्सर्वान्समाचरेत् ॥ कल्पयेत्स्वात्मनोदेहेपीठंधर्मादिभिःपुनः ॥ ८ ॥ ततोध्यायेन्महादेवींप्राणा यामैर्विजृंभिते ॥ हृदंभोजेममस्थानेपंचप्रेतासनेबुधः ॥९॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चईश्वरश्चसदाशिवः ॥ एतेपंचमहाप्रेताःपादमूलेममस्थिताः ॥ १० ॥ पंच भूतात्मकाह्येतेपंचावस्थात्मकाअपि ॥ अहंत्वव्यक्तचिद्रूपातदतीताऽऽस्मिसर्वथा ॥ ११ ॥ ततोविष्टरतांयाताःशक्तितंत्रेषुसर्वदा ॥ ध्यात्वैवंमानसैर्भोगैःपू जयेन्मांजपेदपि ॥ १२ ॥ जपंसमर्प्यश्रीदेव्यैततोऽर्घ्यस्थापनंचरेत्॥पात्रासादनकंकृत्वापूजाद्रव्याणिशोधयेत् ॥ १३ ॥ जलेनतेनमनुनाचास्त्रमंत्रेणदे शिकः ॥ दिग्बंधंचपुराकृत्वागुरून्नत्वाततःपरम् ॥१४॥ तदनुज्ञांसमादायबाह्यपीठेततःपरम् ॥ हृदिस्थांभावितांमूर्तिंममदिव्यांमनोहराम् ॥ १५ ॥ आ वाहयेत्ततःपीठेप्राणस्थापनविद्यया ॥ आसनावाहनेचाऽर्घ्यपाद्याद्याचमनंतथा ॥ १६ ॥ स्नानंवासोद्वयंचैवभूषणानिचसर्वशः ॥ गंधपुष्पंयथायोग्यं दत्त्वादेव्यैस्वभक्तितः ॥ १७ ॥ यंत्रस्थानामावृतीनांपूजनंसम्यगाचरेत् ॥ प्रतिवारमशक्तानांशुक्रवारोनियम्यते ॥ १८ ॥

ष्टंब्रह्मतद्रूपिणीतिभ्योऽधिका तथातेब्रह्मादयोजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यातीतरूपपंचावस्थाधिपतयोऽहंतुदेवीतुर्यातीतावस्थातोऽप्यधिकंयद्ब्रह्मतद्रूपिणी तस्मात्तेममाऽऽसनतांगताइत्यर्थः ॥११॥ तत्रब्रह्मादयश्चत्वारोमंचकखुराः ॥ सदाशिवस्तुफलकस्थानीयःकल्पनीयइतिबोध्यम् ॥ एवंहृदयेप्रथमतोमानसोपचारैःपूजयित्वायथाशक्तिमूलमंत्रंजपित्वाजपंदेव्यैसमर्प्यबाह्यपूजार्थ मर्घ्यस्थापनंचरेदित्याह ॥ ध्यात्वैवमिति ॥ १२ ॥ अर्घ्यस्थापनप्रकारःशारदायांद्रष्टव्योगौरवान्नेहोच्यते ॥ १३ ॥ अस्त्रमंत्रेणफट्मंत्राभ्युक्षितजलेनपूजाद्रव्याणिशोधयेदित्यर्थः ॥ दिग्बंधमिति ॥ फट्मंत्रेणस्वपरितोऽग्निप्राकारंभावयेदित्यर्थः ॥ १४ ॥ बाह्यपीठेपूर्वोक्तेयंत्रादौ ॥ १५ ॥ प्राणस्थापनविद्ययाप्राणप्रतिष्ठामंत्रेण ॥ १६ ॥ १७ ॥ पुष्पांतंपूजांकृत्वायंत्र स्थानामावृतीनामावरणदेवतानांपूजनंकुर्यादित्याह।यंत्रस्थानामिति॥ताश्चदेवतास्तत्तन्मूर्तिकल्पोक्ताग्राह्याः॥प्रतिदिनमावरणदेवतापूजनंकर्तुमशक्तश्चेच्छुक्रवारेऽवश्यंकुर्यादित्यर्थः ॥१८॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

आवरणदेवतासुभावनामाह । मूलदेवीति ॥ १९ ॥ पुनरावृत्तीति ॥ इत्थमावरणदेवतायथास्थानेषुस्थिताध्यात्वासंपूज्यपुनःसावरणांसायुधांसशक्तिकांश्रीभुवनेश्वरींगंधादिदाक्षिणांतै रुपचारैः पूजयेदित्यर्थः ॥ २० ॥ त्वत्कृतेनेति ॥ त्वयाहिमालयेनकृतंयत्सहस्रनामस्तोत्रंममतेनमांतोषयेदित्यर्थः ॥ अनेनैवज्ञापकेनहिमालयेन देवीदर्शनेजातेसहस्रनामस्तोत्रेणदेवीस्तुते तिबोधितम् । तच्चसहस्रनामस्तोत्रंयद्यप्यस्मिन्पुराणेनास्ति तथापिकूर्मपुराणेद्वादशाध्यायेवर्ततेतद्ग्राह्यम् ॥ तत्राऽप्येतत्प्रसंगेनैवसहस्रनामकथनात् ॥ चकारेणनित्यमूलमंत्रजपंकृत्वापश्चा त्सहस्रनामस्तोत्रंपठेदित्यर्थः ॥ २१ ॥ कवचेनतंत्रादिषुप्रोक्तेन अहंरुद्रेभिरितिदेवीसूक्तेनेत्यन्वयः ॥ देव्यथर्वशिरोनामसर्वेवैदेवादेवीमुपतस्थुरित्यादिकंहृल्लेखोपनिषत् ॥ भुवनेश्वर्याऽउप

मूलदेवीप्रभारूपाःस्मर्तव्याअंगदेवताः ॥ तत्प्रभापटलव्याप्तैस्त्रैलोक्यंचविचिंतयेत् ॥ १९ ॥ पुनरावृत्तिसहितांमूलदेवींचपूजयेत् ॥ गंधादिभिःसुगंधैस्तुत थापुष्पैःसुवासितैः ॥ २० ॥ नैवेद्यैस्तर्पणैश्चैवतांबूलैर्दक्षिणादिभिः ॥ तोषयेन्मांत्वत्कृतेननाम्नांसाहस्रकेणच ॥ २१ ॥ कवचेनचसूक्तेनाऽहंरुद्रेभिरिति प्रभो ॥ देव्यथर्वशिरोमंत्रैर्हृल्लेखोपनिषद्भवैः ॥ २२ ॥ महाविद्यामहामंत्रैस्तोषयेन्मांमुहुर्मुहुः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रींप्रेमार्द्रहृदयोनरः ॥ २३ ॥ पुल कांकितसर्वांगैर्बाष्परुद्धाक्षिनिःस्वनः ॥ नृत्यगीतादिघोषेणतोषयेन्मांमुहुर्मुहुः ॥२४॥ वेदपारायणैश्चैवपुराणैःसकलैरपि ॥ प्रतिपाद्यायतोऽहंवैतस्मात्ते स्तोषयेत्तुमाम् ॥ २५ ॥ निजंसर्वस्वमपिमेसदेहंनित्यशोऽर्पयेत् ॥ नित्यहोमंततःकुर्याद्ब्राह्मणांश्चसुवासिनीः ॥ २६ ॥ बटुकान्पामरानन्यान्देवीबुद्ध्यातु भोजयेत् ॥ नत्वापुनःस्वहृदयेव्युत्क्रमेणविसर्जयेत् ॥२७॥ सर्वंहृल्लेखयाकुर्यात्पूजनंममसुव्रत ॥ हृल्लेखासर्वमंत्राणांनायिकापरमास्मृता ॥ २८ ॥ हृल्ले खादर्पणेनित्यमहंतुप्रतिबिंबिता ॥ तस्माद्धृल्लेखयादत्तंसर्वमंत्रैःसमर्पितम् ॥ २९ ॥ गुरुंसंपूज्यभूषाद्यैःकृतकृत्यत्वमावहेत् ॥ यएवंपूजयेद्देवींश्रीमद्भुवनसुं दरीम् ॥ ३० ॥ नतस्यदुर्लभंकिंचित्कदाचित्क्वचिदस्तिहि ॥ देहांतेतुमणिद्वीपंममयात्येवसर्वथा ॥ ३१ ॥ ज्ञेयोदेवीस्वरूपोऽसौदेवानित्यंनमंतितम् ॥ इतितेकथितंराजन्महादेव्याःप्रपूजनम् ॥ ३२ ॥ विमृश्यैतदशेषेणाप्यधिकारानुरूपतः॥कुरुमेपूजनंतेनकृतार्थस्त्वंभविष्यसि ॥ ३३ ॥ इदंतुगीताशास्त्रं मेनाऽशिष्यायवदेत्क्वचित् ॥ नाऽभक्तायप्रदातव्यंनधूर्तायचदुर्हृदे ॥३४॥ एतत्प्रकाशनंमातुरुद्घाटनमुरोजयोः ॥ तस्मादवश्यंयत्नेनगोपनीयमिदंसदा ॥३५॥ देयंभक्तायशिष्यायज्येष्ठपुत्रायचैवहि ॥ सुशीलायसुवेषायदेवीभक्तियुतायच ॥ ३६ ॥ श्राद्धकालेपठेदेतद्ब्राह्मणानांसमीपतः ॥ तृप्तास्तत्पितरः सर्वेप्रयांतिपरमंपदम् ॥ ३७ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वासाभगवतीतत्रैवांतरधीयत ॥ देवाश्चमुदिताःसर्वेदेवीदर्शनतोऽभवन् ॥ ३८ ॥

निषत् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ सर्वस्वमपीति ॥ स्वदेहसहितंसर्वस्वंदेव्यैसमर्पयेदित्यर्थः ॥ २६ ॥ व्युत्क्रमेणसंहारमुद्रया ॥ २७ ॥ पूर्वपूजायांयेऽपचारादेयास्तेसर्वेमाया बीजमंत्रमुच्चार्यदेयाइत्याह । सर्वंहृल्लेखयेति ॥ २८ ॥ कुतःसर्वमंत्राणांनायिकेतिचेन्ममतस्मिन्मंत्रेप्रत्यासत्त्यतिशयादित्याह । हृल्लेखादर्पणेइति ॥ तथाचब्रह्मांडपुराणे ॥ ह्रींकारादर्श विंबिकेति ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ उरोजयोःस्तनयोः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ततोदेवीवरप्रदानानंतरम् ॥ इयंचगौर्याउत्पत्तिर्ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यामभवत् ॥ तदुक्तंकृत्यरत्नावल्याम् ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यांतुजातापूर्वमुमासती ॥ तस्मात्सातत्रसंपूज्यासर्वैःसौभाग्यहेतवे ॥ उपहारैश्चविविधैर्गीतनृत्योत्सवादिभिः ॥ होमैःपयोभिर्वस्त्रैश्चपत्रपुष्पैःसुगंधिभिरिति ॥ साचोत्पत्तिररुणोदयवेलायाम् ॥ तदुक्तंमात्स्येतारकासुरयुद्धप्रस्तावे॥ ततोजगत्परित्राणहेतुंहिमगिरेःप्रिया ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेसुभगेप्रासूयतगुहारणिमिति ॥३९॥ इत्थंगौर्याउत्पत्तितस्याःशिवस्यप्राप्तिंचसविस्तरामुपवर्ण्यलक्ष्म्युत्पत्तितस्याविष्णुप्राप्तिंचसंक्षेपेणवदति । समुद्रमंथनेइति ॥ रत्नान्यासूरत्नान्युत्पन्नानीत्यर्थः ॥ ४० ॥ तत्रेति ॥ तस्मिन्नपिसमयेदेवैर्देवीपरमाशक्तिःस्तुता किमर्थंलक्ष्मीप्राप्त्यर्थम् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ विस्तरस्तुमत्कृतदेवीगीताबृह

व्यासउवाच ॥ ततोहिमालयेजज्ञेदेवीहैमवतीतुसा ॥ यागौरीतिप्रसिद्धाऽसीद्दत्तासाशंकरायच ॥ ३९ ॥ ततःस्कंदःसमुद्भूतस्तारकस्तेनपातितः ॥ समुद्रमंथनेपूर्वंरत्नान्यासुर्नराधिप ॥ ४० ॥ तत्रदेवैःस्तुतादेवीलक्ष्मीप्राप्त्यर्थमादरात् ॥ तेषामनुग्रहार्थायनिर्गतातुरमाततः ॥ ४१ ॥ वैकुंठायसुरैर्दत्तातेनतस्यशमोभवत् ॥ इतितेकथितंराजन्देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४२ ॥ गौरीलक्ष्म्योःसमुद्भूतिविषयंसर्वकामदम् ॥ नवाच्यंत्वेतदन्यस्मैरहस्यंकथितंयतः ॥ ४३ ॥ गीतारहस्यभूतेयंगोपनीयाप्रयत्नतः ॥ सर्वमुक्तंसमासेनयत्पृष्टंतत्त्वयाऽनघ ॥ ४४ ॥ पवित्रंपावनंदिव्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४०॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥ ७ ॥

खशरद्व्यश्वि ( २२५० ) पद्यैस्तुद्वैपायनमुखच्युतैः ॥ श्रीमद्भागवतस्याऽस्यसप्तमस्कंधईरितः ॥ १ ॥

टीकायांद्रष्टव्यः ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्याऽस्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यांयःकृतवान्सम्यक्तिलकाख्यांमहत्तराम् ॥ २ ॥ सप्तमस्कंधएतस्याःसमाप्तोभूच्छुभार्थदः ॥ प्रीयतांतेनमेऽनंतकोटिब्रह्मांडनायिका ॥ ३ ॥ इतिश्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भजनीलकंठकृतेश्रीमद्देवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ ॥ छ ॥ ॥ ॥ स्कंधश्चायं समाप्तः ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८,
शके १८२३, सन् १९०१ ई०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे अष्टमस्कंधः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





जगतःकार्यरूपस्यरज्जुसर्पसदृशस्यतत्त्वंकारणमुपादानंनिमित्तंविवर्तरूपंचसर्पस्यरज्ज्वज्ञानादिवत्येनज्ञातेनतत्त्वेनजगद्रूपे भ्रमे नजायते ॥ ज्ञातेनरज्ज्वादिनासर्पादिभ्रमइवपुनर्भ्रमोनभवतीतितात्पर्यम् ॥ १५ ॥ देवीप्रोक्तेति ॥ साम्यावस्थमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीदेवीत्यर्थः ॥ तत्रमायोपादानकारणंमायायांचित्प्रतिबिंबोनिमित्तकारणंब्रह्मविवर्तकारणमितिविवेकः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ पद्मपुत्रःपद्मसंभवब्रह्मपुत्रइत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ मायांमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीम् ॥ २३ ॥ जगत्कारणंहिरण्यगर्भस्तस्यांपिकारणंइत्यर्थः ॥ नारायणहृदाश्रितेइदंचवैष्णव्याः शक्तेःस्वरूपंशंखचक्रगदापद्महस्तंध्यानार्थमुपन्यस्तम् ॥ २४ ॥ कारणंमायातस्याःस्थानंब्रह्मतद्रूपिणीत्यर्थः ॥ वेदत्रयरूपप्रमाणज्ञेसर्वज्ञइत्यर्थः ॥

॥नारायणउवाच ॥ शृणुदेवर्षिवर्याऽत्रजगतस्तत्वमुत्तमम् ॥ येनज्ञातेनमर्त्योहिजायतेनजगद्भ्रमे ॥ १५ ॥ जगतस्तत्त्वमित्येवदेवीप्रोक्तामयापिहि ॥ ऋषिभिर्देवगंधर्वैरन्यैश्चापिमनीषिभिः ॥१६॥ साजगत्सृजतेदेवीतयाचप्रतिपाल्यते ॥ तयाचनाश्यतेसर्वमितिप्रोक्तंगुणत्रयात्॥१७॥तस्याः स्वरूपंवक्ष्यामिदेव्याःसिद्धर्षिपूजितम् ॥ स्मरतांसर्वपापघ्नंकामदंमोक्षदंतथा ॥ १८ ॥ मनुःस्वायंभुवस्त्वाद्यःपद्मपुत्रःप्रतापवान् ॥ शतरूपापतिःश्रीमान्सर्वमन्वंतराधिपः ॥ १९ ॥ समनुःपितरंदेवंप्रजापतिमकल्मषम् ॥ भक्त्यापर्यचरत्पूर्वंतमुवाचाऽऽत्मभूःसुतम् ॥ २० ॥ पुत्रपुत्रत्वयाकार्यंदेव्याराधनमुत्तमम् ॥ तत्प्रसादेनतेतातप्रजासर्गःप्रसिद्ध्यति ॥ २१ ॥ एवमुक्तःप्रजास्रष्टामनुःस्वायंभुवोविराट् ॥ जगद्योनिंतदादेवींतपसातर्पयद्विभुः ॥ २२ ॥ तुष्टावदेवींदेवेशींसमाहितमतिःकिल॥आद्यांमायांसर्वशक्तिंसर्वकारणकारणाम् ॥२३॥ मनुरुवाच ॥ नमोनमस्तेदेवेशिजगत्कारणकारणे ॥ शंखचक्रगदाहस्तेनारायणहृदाश्रिते ॥ २४ ॥ वेदमूर्तेजगन्मातःकारणस्थानरूपिणि ॥ वेदत्रयप्रमाणज्ञेसर्वदेवनुतेशिवे ॥ २५ ॥ माहेश्वरिमहाभागेमहामायेमहोदये ॥ महादेवप्रियावासेमहादेवप्रियंकरि ॥ २६ ॥ गोपेंद्रस्यप्रियेज्येष्ठेमहानंदेमहोत्सवे ॥ महामारीभयहरेनमोदेवादिपूजिते ॥ २७ ॥ सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ॥ शरण्येत्र्यंबकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥ २८ ॥ यतश्चेदंययाविश्वमोतंप्रोतंचसर्वदा ॥ चैतन्यमेकमाद्यंतरहितंतेजसांनिधिम् ॥ २९ ॥ ब्रह्मायदीक्षणात्सर्वंकरोतिचहरिःसदा ॥ पालयत्यपिविश्वेशःसंहर्तायदनुग्रहात् ॥ ३० ॥ मधुकैटभसंभूतभयार्तःपद्मसंभवः ॥ यस्याःस्तवेनमुमुचेघोरदैत्यभवांबुधेः ॥ ३१ ॥त्वंह्रीःकीर्तिःस्मृतिःकांतिःकमलागिरिजासती ॥ दाक्षायणीवेदगर्भाबुद्धिदात्रीसदाभया ॥ ३२ ॥ स्तोष्येत्वांचनमस्यामिपूजयामिजपामिच॥ ध्यायामिभावयेवीक्षेश्रोष्येदेविप्रसीदमे ॥ ३३ ॥ ब्रह्मावेदनिधिःकृष्णोलक्ष्म्यावासः पुरंदरः ॥ त्रिलोकाधिपतिःपाशीयादसांपतिरुत्तमः ॥ ३४ ॥

॥ २५ ॥ महादेवस्यप्रियआवासोवसतिरर्धांगवासोयस्याःसा ॥ २६ ॥ गोपेंद्रोनंदस्तस्यप्रियेविंध्यवासिनीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ यतश्चेदमिति ॥ इदंजगद्यतोयस्याःसकाशादभूदित्यर्थः ॥ ययाश्रीदेव्याजगदोतंप्रोतंचव्याप्तंग्रथितमित्यर्थः ॥ तद्रूपंयच्चैतन्यमेकमाद्यंतरहितंतेजसांनिधिंसर्वतस्तेजस्वीत्यर्थः ॥ तस्मैनमोस्त्वितिशेषः ॥ २९ ॥ यदीक्षणाद्यस्याःकृपावलोकनादित्यर्थः ॥ तस्मैनमोस्तुतेइत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ब्रह्मावेदनिधिरिति ॥ यस्याः प्रसादाद्ब्रह्मावेदनिधिर्जातः ॥ कृष्णस्तुलक्ष्म्यावासोलक्ष्मीपतिर्जातः ॥ पुरंदरोवज्रीत्रिलोकाधिपतिर्जातः ॥ इतियथायोग्ययोजनीयम् ॥ पाशीवरुणः ॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ तरुणेंदुमौलितरुणीमरुणांकरुणारसेनपरिपूर्णाम् ॥ गुरुणाभरेणकुचयोर्नमितांनमतांभवेद्भवेनभवः ॥ १ ॥ अष्टाधिकैश्चचत्वारिंशत्पद्यैरथसादरम् ॥ मनवेवरदानंच देव्यादत्तमितीर्यते ॥ १ ॥ जनमेजयोराजासूर्यसोमोद्भवानांराज्ञांचरितंश्रुत्वातदनंतरंदेवीगीताश्रवणंकृतवान् ॥ तस्यांचगीतायांदेव्याविराट्स्वरूपमुपवर्णितम् ॥ तस्यविस्तारोनवर्णित स्तद्भुभुत्सुरथचमन्वंतरेषुयेनयेनरूपेणपूज्यतेतद्भुभुत्सुश्च तथाइलावृत्तादिवर्षरूपेषुयेषुस्थानेषुयेनयेनकर्मणापूज्यतेतद्भुभुत्सुश्चपृच्छति । सूर्यचंद्रेति ॥ १ ॥ मन्वंतरेष्विति ॥ सर्वमन्वंतरे षुमनुभिर्मनुवंशजैश्चयेनयेनरूपेणपूज्यतेतद्वदेत्यन्वयः ॥२॥ किंच यस्मिंश्चेति ॥ यस्मिन्यस्मिन्निलावृत्तादिवर्षेषुखंडेषुस्थानविशेषेषुयेनयेनकर्मणाव्यापारेणचकाराद्येनसदाचारेणचपूज्यते तत्कर्मतंसदाचारंचवदेत्यन्वयः॥किंचदेव्याइति । देव्याविराट्स्वरूपंयत्पूर्वमुक्तम् तस्यवर्णनमपियथातथंयथावर्ततेतथेत्यर्थः।तदपितत्सर्वंवदेत्यन्वयः॥३॥ननुविराट्स्वरूपवर्णनस्यक्वोपयो गइतिचेत्तत्राह । येनेति॥स्थूलरूपध्यानेनहि चित्तस्यैकाग्रतायांसाधितायांदेव्याःसूक्ष्मरूपेमतेर्बुद्धेर्गतिर्गमनंस्यान्नान्यथेतिस्थूलरूपध्यानार्थंस्थूलरूपसन्निवेशज्ञानमपेक्षितमित्यर्थः ॥ ४॥

श्रीगणेशायनमः ॥ जनमेजयउवाच ॥ सूर्यचंद्रान्वयोत्थानांनृपाणांसत्कथाश्रितम् ॥ चरितंभवताप्रोक्तंश्रुतंतदमृतास्पदम् ॥ १ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छा मिसादेवीजगदंबिका ॥ मन्वंतरेषुसर्वेषुयद्यद्रूपेणपूज्यते ॥२॥ यस्मिन्यस्मिंश्चवैस्थानेयेनयेनचकर्मणा ॥ "शरीरेणचदेवेशीपूजनीयाफलप्रदा ॥ येनैव मंत्रबीजेनयत्रयत्रचपूज्यते ॥" देव्याविराट्स्वरूपस्यवर्णनंचयथातथम् ॥३॥ येनध्यानेनतत्सूक्ष्मेस्वरूपेस्यान्मतेर्गतिः ॥ तत्सर्वंवदविप्रर्षेयेनश्रेयोहमा प्नुयाम् ॥ ४ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिदेव्याराधनमुत्तमम् ॥ यत्कृतेनश्रुतेनाऽपिनरःश्रेयोऽत्रविंदते ॥ ५ ॥ एवमेतन्नारदेनपृष्टोनारायणःपु रा ॥ तस्मैयदुक्तवान्देवोयोगचर्याप्रवर्तकः ॥ ६ ॥ एकदानारदःश्रीमान्पर्यटन्पृथिवीमिमाम् ॥ नारायणाश्रमंप्राप्तोगतखेदश्चतस्थिवान् ॥ ७ ॥ तस्मैयो गात्मनेनत्वाब्रह्मदेवतनूद्भवः ॥ पर्यपृच्छदिमंचाऽर्थंयत्पृष्टोभवताऽनघ ॥ ८ ॥ नारदउवाच ॥ देवदेवमहादेवपुराणपुरुषोत्तम ॥ जगदाधारसर्वज्ञश्लाघ नीयोरुसद्गुण ॥९॥ जगतस्तत्त्वमाद्यंयत्तन्मेवदयथेप्सितम् ॥ जायतेकुतएवेदंकुतश्चेदंप्रतिष्ठितम् ॥१०॥कुतोंतंप्राप्नुयात्कालेकुत्रसर्वफलोदयः ॥ केनज्ञा तेनमायैषामोहभूर्नाशमाप्नुयात्॥११॥ कयाऽर्चयाकिंजपेनकिंध्यानेनात्महृत्कजे ॥ प्रकाशोजायतेदेवतमस्यर्कोदयोयथा॥१२॥एतत्प्रश्नोत्तरंदेवब्रूहिस र्वमशेषतः॥यथालोकस्तरेदंधतमसंत्वंजसैवहि॥१३॥व्यासउवाच॥एवंदेवर्षिणापृष्टःप्राचीनोमुनिसत्तमः॥नारायणोमहायोगीप्रतिनंद्यवचोब्रवीत् ॥ १४॥

तत्रमन्वंतरेषुसर्वेष्वित्यस्योत्तरंदशमस्कंधेवक्ष्यति ॥ प्रथमतोत्रतृतीयप्रश्नस्योत्तरंवक्तुमारभते । शृणुराजन्निति ॥ देव्याराधनमिति ॥ यद्यपिराज्ञातृतीयप्रश्नेविराट्स्वरूपसन्निवेशएवपृष्टो नत्वाराधनं तथापितत्स्वरूपसंनिवेशज्ञानफलमाराधनमेवेतिमनसिनिधायोक्तमाराधनमितिबोध्यम् ॥ देव्याविराट्स्वरूपायाआराधनमित्यर्थः ॥ ५ ॥ तत्रेदंकथानकंनारदायनारायणेन पूर्वमुक्तम् तदेवमयोच्यतेनान्यादित्याह । एवमेतन्नारदेनेति ॥ ६ ॥ पूर्वकथामाह । एकदेति ॥ ७ ॥ योगात्मनेयोगमूर्तयेपर्यपृच्छदिमंचार्थमिति ॥ भवताऽहंयत्पृष्टःइमंचार्थंविराट्स्व रूपसन्निवेशकथनरूपमर्थमन्यदपितस्यमनसियद्यत्स्थितंतंचार्थंपर्यपृच्छदित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ कुतश्चेदंप्रतिष्ठितम् ॥ एतस्यपालयिताकइत्यर्थः ॥ १० ॥ अंतंनाशम् ॥ एतस्यनाश कर्ताकइत्यर्थः ॥ सर्वकर्मणांफलोदयःकुत्रकस्मिन्सतिभवतीत्यर्थः ॥ ११ ॥ आत्महृत्कजेआत्मनोहृदयकमलेइत्यर्थः ॥ प्रकाशआत्मनइत्यर्थः ॥ १२ ॥ अंधतमसमज्ञानरूपमंधकारम् ॥ १३ ॥ प्रतिनंद्यतद्वचःसाधुसाध्वितिस्तुत्वेत्यर्थः ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





जगतःकार्यरूपस्यरज्जुसर्पसदृशस्यतत्त्वंकारणमुपादानंनिमित्तंविवर्तरूपंचसर्पस्यरज्ज्वज्ञानादिवत्येनज्ञातेनतत्त्वेनजगद्रूपे भ्रमे नजायते ॥ ज्ञातेनरज्ज्वादिनासर्पादिभ्रमइवपुनर्भ्रमोनभवतीतितात्पर्यम् ॥ १५ ॥ देवीप्रोक्तेति ॥ साम्यावस्थमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीदेवीत्यर्थः ॥ तत्रमायोपादानकारणंमायायांचित्प्रतिबिंबोनिमित्तकारणंब्रह्मविवर्तकारणमितिविवेकः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ पद्मपुत्रःपद्मसंभवब्रह्मपुत्रइत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ मायांमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीम् ॥ २३ ॥ जगत्कारणंहिरण्यगर्भस्तस्यापिकारणंइत्यर्थः ॥ नारायणहृदाश्रितेइदंचवैष्णव्याः शक्तेःस्वरूपंशंखचक्रगदापद्महस्तंध्यानार्थमुपन्यस्तम् ॥ २४ ॥ कारणंमायातस्याःस्थानंब्रह्मतद्रूपिणीत्यर्थः ॥ वेदत्रयरूपप्रमाणज्ञेसर्वज्ञइत्यर्थः ॥

॥नारायणउवाच ॥ शृणुदेवर्षिवर्याऽत्रजगतस्तत्वमुत्तमम् ॥ येनज्ञातेनमर्त्योहिजायतेनजगद्भ्रमे ॥ १५ ॥ जगतस्तत्त्वमित्येवदेवीप्रोक्तामयापिहि ॥ ऋषिभिर्देवगंधर्वैरन्यैश्चापिमनीषिभिः ॥१६॥ साजगत्सृजतेदेवीतयाचप्रतिपाल्यते ॥ तयाचनाश्यतेसर्वमितिप्रोक्तंगुणत्रयात्॥१७॥तस्याः स्वरूपंवक्ष्यामिदेव्याःसिद्धर्षिपूजितम् ॥ स्मरतांसर्वपापघ्नंकामदंमोक्षदंतथा ॥ १८ ॥ मनुःस्वायंभुवस्त्वाद्यःपद्मपुत्रःप्रतापवान् ॥ शतरूपापतिःश्रीमान्सर्वमन्वंतराधिपः ॥ १९ ॥ समनुःपितरंदेवंप्रजापतिमकल्मषम् ॥ भक्त्यापर्यचरत्पूर्वंतमुवाचाऽऽत्मभूःसुतम् ॥ २० ॥ पुत्रपुत्रत्वयाकार्यंदेव्याराधनमुत्तमम् ॥ तत्प्रसादेनतेतातप्रजासर्गःप्रसिद्ध्यति ॥ २१ ॥ एवमुक्तःप्रजास्रष्टामनुःस्वायंभुवोविराट् ॥ जगद्योनिंतदादेवींतपसातर्पयद्विभुः ॥ २२ ॥ तुष्टावदेवींदेवेशींसमाहितमतिःकिल॥आद्यांमायांसर्वशक्तिंसर्वकारणकारणाम् ॥२३॥ मनुरुवाच ॥ नमोनमस्तेदेवेशिजगत्कारणकारणे ॥ शंखचक्रगदाहस्तेनारायणहृदाश्रिते ॥ २४ ॥ वेदमूर्तेजगन्मातःकारणस्थानरूपिणि ॥ वेदत्रयप्रमाणज्ञेसर्वदेवनुतेशिवे ॥ २५ ॥ माहेश्वरिमहाभागेमहामायेमहोदये॥ महादेवप्रियावासेमहादेवप्रियंकरि ॥ २६ ॥ गोपेंद्रस्यप्रियेज्येष्ठेमहानंदेमहोत्सवे ॥ महामारीभयहरेनमोदेवादिपूजिते ॥ २७॥ सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ॥ शरण्येत्र्यंबकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥ २८ ॥ यतश्चेदंययाविश्वमोतंप्रोतंचसर्वदा ॥ चैतन्यमेकमाद्यंतरहितंतेजसांनिधिम् ॥ २९॥ ब्रह्मायदीक्षणात्सर्वंकरोतिचहरिःसदा ॥ पालयत्यपिविश्वेशःसंहर्तायदनुग्रहात् ॥ ३० ॥ मधुकैटभसंभूतभयार्तःपद्मसंभवः ॥ यस्याःस्तवेनमुमुचेघोरदैत्यभवांबुधेः ॥ ३१ ॥त्वंह्रीःकीर्तिःस्मृतिःकांतिःकमलागिरिजासती ॥ दाक्षायणीवेदगर्भाबुद्धिदात्रीसदाभया ॥ ३२ ॥ स्तोष्येत्वांचनमस्यामिपूजयामिजपामिच॥ ध्यायामिभावयेवीक्षेश्रोष्येदेविप्रसीदमे ॥ ३३ ॥ ब्रह्मावेदनिधिःकृष्णोलक्ष्म्यावासः पुरंदरः ॥ त्रिलोकाधिपतिःपाशीयादसांपतिरुत्तमः ॥ ३४ ॥

॥ २५ ॥ महादेवस्यप्रियआवासोवसतिर्यागवासोयस्याःसा ॥ २६ ॥ गोपेंद्रोनंदस्तस्यप्रियोविंध्यवासिनीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ यतश्चेदमिति ॥ इदंजगद्यतोयस्याःसकाशादभूदित्यर्थः ॥ ययाश्रीदेव्याजगदोतंप्रोतंचव्याप्तंग्रथितमित्यर्थः ॥ तद्रूपंयच्चैतन्यमेकमाद्यंतरहितंतेजसांनिधिंसर्वतस्तेजस्वीत्यर्थः ॥ तस्मैनमोस्त्वितिशेषः ॥ २९ ॥ यदीक्षणाद्यस्याःकृपावलोकनादित्यर्थः ॥ तस्मैनमोस्तुतेइत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ब्रह्मावेदनिधिरिति ॥ यस्याः प्रसादाद्ब्रह्मावेदनिधिर्जातः ॥ कृष्णस्तुलक्ष्म्यावासोलक्ष्मीपतिर्जातः ॥ पुरंदरोवज्रीत्रिलोकाधिपतिर्जातः ॥ इतियथायोग्यंयोजनीयम् ॥ पाशीवरुणः ॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेअष्टमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ अष्टत्रिंश न्महापद्मैर्वराहेणधरातलम् ॥ जलादुद्धृतमित्येतत्कथानकामिहोच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेइदंमच्चिंतितंकार्यंभगवानादिपूरुषःकरिष्यतीतिप्रोक्तेनवाक्येनपद्मयोनेर्निश्चयंज्ञात्वाभगवान्वराह रूपेणप्रादुरभूदित्याह ॥ एवंमीमांसतइति ॥ ननुनारदेनजगतस्तत्त्वमेवपृष्टंतच्चनारायणेनाऽभिहितंपुनस्तदुत्तरकथानकस्यनारदेनाऽपृष्टस्यकथनेनोपयोगइतिचेन्न अत्रापृष्टकथनाऽन्यथानुप पत्त्यैवनारदेनैवतत्पृष्टमस्तीत्यर्थस्यापिकल्पनात् ॥ अतएवाग्रेविराट्स्वरूपसन्निवेशप्रश्नस्यनारदकृतस्याभावेपिप्रथमाध्यायस्थं तस्मैयोगात्मनेनत्वाब्रह्मदेवतनूद्भवः ॥ पर्यपृच्छादिमंचार्थ

कुबेरोनिधिनाथोऽभूद्यमोजातःपरेतराट् ॥ नैर्ऋतोरक्षसांनाथःसोमोजातोह्यपोमयः ॥ ३५ ॥ त्रिलोकवंद्योलोकेशिमहामांगल्यरूपिणि ॥ नमस्तेस्तुपु नर्भूयोजगन्मातर्नमोनमः ॥ ३६ ॥ नारायणउवाच ॥ एवंस्तुताभगवतीदुर्गानारायणीपरा ॥ प्रसन्नाप्राहदेवर्षेब्रह्मपुत्रमिदंवचः ॥ ३७ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वरंवरयराजेंद्रब्रह्मपुत्रयदिच्छसि ॥ प्रसन्नाऽहंस्तवेनाऽत्रभक्त्याऽऽचाराधनेनच ॥ ३८ ॥ मनुरुवाच ॥ यदिदेविप्रसन्नासिभक्त्याकारुणिकोत्तमे ॥ तदा निर्विघ्नतःसृष्टिःप्रजायाःस्यात्तवाऽऽज्ञया ॥३९॥ श्रीदेव्युवाच ॥ प्रजासर्गःप्रभवतुममाऽनुग्रहतःकिल ॥ निर्विघ्नेनचराजेंद्रवृद्धिश्चाप्युत्तरोत्तरम् ॥ ४० ॥ यःकश्चित्पठतेस्तोत्रंमद्भक्त्यात्वत्कृतंसदा ॥ तेषांविद्याप्रजासिद्धिःकीर्तिःकांत्युदयःखलु ॥४१॥ जायंतेधनधान्यानिशक्तिरप्रहतानृणाम्॥सर्वत्रविजयो राजन्सुखंशत्रुपरिक्षयः ॥ ४२ ॥ नारायणउवाच ॥ एवंदत्त्वावरान्देवीमनवेब्रह्मसूनवे ॥ अंतर्धानंगताचासीत्पश्यतस्तस्यधीमतः ॥ ४३ ॥ अथलब्धव रोराजाब्रह्मपुत्रःप्रतापवान् ॥ ब्रह्माणमब्रवीत्तातस्थानंमेदीयतांरहः ॥ ४४ ॥ यत्राऽहंसमधिष्ठायप्रजाःस्रक्ष्यामिपुष्कलाः ॥ यक्ष्यामियज्ञैर्देवेशंतत्समादि शमाचिरम् ॥४५॥ इतिपुत्रवचःश्रुत्वाप्रजापतिपतिर्विभुः ॥ चिंतयामाससुचिरंकथंकार्यंभवेदिदम् ॥ ४६ ॥ सृजतोमेगतःकालोविपुलोऽनंतसंख्यकः ॥ धरावार्भिःप्लुतामग्नारसंयाताऽखिलाश्रया ॥४७॥ इदंमच्चिंतितंकार्यंभगवानादिपूरुषः ॥ करिष्यतिसहायोमेयदादेशेऽहमाश्रितः॥४८॥इतिश्री०दे०भा० महा०अष्टमस्कंधेभुवनकोशोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ नारायणउवाच ॥ एवंमीमांसतस्तस्यपद्मयोनेःपरंतप ॥ मन्वादिभिर्मुनिवरैर्मरीच्याद्यैःस मंततः॥ १ ॥ ध्यायतस्तस्यनासाग्राद्विरंचेःसहसाऽनघ॥ वराहपोतोनिरगादेकांगुलप्रमाणतः॥२॥तस्यैवपश्यतःखस्थःक्षणेनकिलनारद ॥ करिमात्रंप्र ववृधेतदद्भुततमंह्यभूत् ॥ ३ ॥ मरीचिमुख्यैर्विप्रेंद्रैःसनकाद्यैश्चनारद ॥ तद्दृष्ट्वासौकरंरूपंतर्कयामासपद्मभूः ॥ ४ ॥ किमेतत्सौकरव्याजंदिव्यंसत्त्वमव स्थितम् ॥ अत्याश्चर्यमिदंजातंनासिकायाविनिःसृतम् ॥ ५ ॥ दृष्टोंगुष्ठशिरोमात्रःक्षणाच्छैलेंद्रसन्निभः ॥ आहोस्विद्भगवान्किंवायज्ञोमेखेदयन्मनः ॥६॥

यत्पृष्टोभवताऽनघेतिजनमेजयंप्रतिव्यासवाक्यंसंगच्छतेइति ॥ समंततस्तैर्मन्वादिभिः ॥ परिवेष्टितस्येतिशेषः ॥ १ ॥ ध्यायतःपद्मयोनेरित्यन्वयः ॥ २ ॥ तस्यैवविरंचेरेवखस्थःपृथि व्यभावादाकाशस्थोवराहः ॥ ३ ॥ मरीचिमुख्यैःसहितोविरंचिस्तंदृष्ट्वेत्यर्थः ॥ ४ ॥ सत्त्वंमहाभूतमित्यर्थः ॥ ५ ॥ दृष्टोंगुष्ठशिरोमात्रइति ॥ यःपूर्वमंगुष्ठशिरोमात्रोंगुष्ठमात्रपरिमितो दृष्टःसःक्षणात्पर्वतसन्निभोजातइत्यर्थः ॥ ६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ब्रह्मणःपरमात्मनोऽग्रेइतिशेषः ॥ ७ ॥ संहतान्मिलितान् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ अपःजलानि ॥ आविशत्प्रविवेश ॥ ११ ॥ क्रूरसटाघातः कठोरशरीरकेशाघातः ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ पद्मिनींकमलिनींशुंडाग्रेणोद्धृत्यदिग्गजोयथाशुशुभे ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ उद्धृतमंबुजंयेनैतादृशंशुंडाग्रंयस्यसयःकरींद्रस्तस्यतनुसन्निभम् ॥ २० ॥

इतितर्कयतस्तस्यब्रह्मणःपरमात्मनः ॥ वराहरूपोभगवाञ्जगर्जाऽचलसन्निभः ॥ ७ ॥ विरंचिंहर्षयामाससंहतांश्चद्विजोत्तमान् ॥ स्वगर्जशब्दमात्रेणदिक्प्रांतमनुनादयन् ॥ ८ ॥ तेनिशम्यस्वखेदस्यक्षयिष्णुंवुर्वुरस्वनम् ॥ जनस्तपःसत्यलोकवासिनोमरवर्यकाः ॥ ९ ॥ छंदोमयैःस्तोत्रवरैर्ऋक्सामाथर्वसंभवैः ॥ वचोभिःपुरुषंत्वाद्यंद्विजेंद्राःपर्यवाकिरन् ॥ १० ॥ तेषांस्तोत्रंनिशम्याऽऽद्योभगवान्हरिरीश्वरः ॥ कृपावलोकमात्रेणाऽनुगृहीत्वाऽपआविशत् ॥ ॥ ११ ॥ तस्यांतर्विशतःक्रूरसटाघातप्रपीडितः ॥ समुद्रोऽथाऽब्रवीद्देवरक्षमांशरणार्तिहन् ॥ १२ ॥ इत्याकर्ण्यसमुद्रोक्तंवचनंहरिरीश्वरः ॥ विदारयञ्जलचराञ्जगामांतर्जलेविभुः ॥ १३ ॥ इतस्ततोऽभिधावन्सन्विचिन्वन्पृथिवींधराम् ॥ आघ्रायाघ्रायसर्वेशोधरामासादयच्छनैः ॥ १४ ॥ अंतर्जलगतांभूमिंसर्वसत्त्वाश्रयांतदा ॥ भूमिंसदेवदेवेशोदंष्ट्रयोदाजहारताम् ॥ १५ ॥ तांसमुद्धृत्यदंष्ट्राग्रेयज्ञेशोयज्ञपूरुषः ॥ शुशुभेदिग्गजोयद्वदुद्धृत्याऽथसुपद्मिनीम्॥ ॥ १६ ॥ तंदृष्ट्वादेवदेवेशोविरंचिःसमनुःस्वराट् ॥ तुष्टाववाग्भिर्देवेशंदंष्ट्रोद्धृतवसुंधरम् ॥ १७ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ जितंतेपुंडरीकाक्षभक्तानामार्तिनाशन॥ खर्वीकृतसुराधारसर्वकामफलप्रद ॥ १८ ॥ इयंचधरणीदेवशोभतेवसुधातव ॥ पद्मिनीवसुपत्राढ्यामतंगजकरोद्धृता ॥ १९ ॥ इदंचतेशरीरंवैशोभतेभूमिसंगमात् ॥ उद्धृतांबुजशुंडाग्रकरींद्रतनुसन्निभम् ॥ २० ॥ नमोनमस्तेदेवेशसृष्टिसंहारकारक ॥ दानवानांविनाशायकृतनानाकृतेप्रभो ॥ २१ ॥ अग्रतश्चनमस्तेस्तुपृष्ठतश्चनमोनमः ॥ सर्वाधाराधारभूतबृहद्धामनमोस्तुते ॥२२॥ त्वयाहंचप्रजासर्गेनियुक्तःशक्तिबृंहितः ॥ त्वदाज्ञावशतःसर्गंकरोमिविकरोमिच ॥ २३ ॥ त्वत्सहायेनदेवेशाअमराश्चपुराहरे ॥ सुधांविभेजिरेसर्वेयथाकालंयथाबलम् ॥ २४ ॥ इंद्रस्त्रिलोकीसाम्राज्यंलब्धवांस्त्वन्निदेशतः ॥ भुनक्तिलक्ष्मींबहुलांसुरसंघप्रपूजितः ॥ २५ ॥ वह्निःपावकतांलब्ध्वाजाठरादिविभेदतः ॥ देवासुरमनुष्याणांकरोत्याप्यायनंतथा ॥ २६ ॥ धर्मराजोऽथपितॄणामधिपःसर्वकर्मदृक् ॥ कर्मणांफलदाताऽसौत्वन्नियोगादधीश्वरः ॥ २७ ॥ नैर्ऋतोरक्षसामीशोयक्षोविघ्नविनाशनः ॥ सर्वेषांप्राणिनांकर्मसाक्षीत्वत्तःप्रजायते ॥ २८ ॥ वरुणोयादसामीशोलोकपालोजलाधिपः ॥ त्वदाज्ञावलमाश्रित्यलोकपालत्वमागतः ॥ २९ ॥ वायुर्गंधवहःसर्वभूतप्राणनकारणम् ॥ जातस्तवनिदेशेनलोकपालोजगद्गुरुः ॥ ३० ॥ कुबेरःकिन्नरादीनांयक्षाणांजीवनाश्रयः ॥ त्वदाज्ञांतर्गतःसर्वलोकपेषुचमान्यभूः ॥ ३१ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ लोकपेषुलोकपालेषुमान्यभूःपूज्यः ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेऽष्टमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ छ ॥ त्रयोविंशतिपद्यैस्तुमनोःस्वायंभुवस्यतु ॥ वंशस्यवर्णनंस म्यग्यथावदनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ धरोद्धारानंतरंजातंकृत्यमाह । महींदेवइति ॥ देवोवराहः ॥ स्वमात्मजंस्वायंभुवमनुम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

ईशानःसर्वरुद्राणामीश्वरांतकरःप्रभुः ॥ जातोलोकेशवंद्योऽसौसर्वदेवाधिपालकः ॥ ३२ ॥ नमस्तुभ्यंभगवतेजगदीशायकुर्महे ॥ यस्यांशभागाःसर्वेहि जातादेवाःसहस्रशः ॥ ३३ ॥ नारदउवाच ॥ एवंस्तुतोविश्वसृजाभगवानादिपूरुषः ॥ लीलावलोकमात्रेणाऽप्यनुग्रहमवाऽसृजत् ॥ ३४ ॥ तत्रैवाऽभ्या गतंदैत्यंहिरण्याक्षंमहाऽसुरम् ॥ रुंधानमध्वनोभीमंगदयाताडयद्धरिः ॥३५॥ तद्रक्तपंकदिग्धांगोभगवानादिपूरुषः॥उद्धृत्यधरणींदेवोदंष्ट्रयालीलयाप्सु ताम् ॥ ३६ ॥ निवेश्यलोकनाथेशोजगामस्थानमात्मनः ॥ एतद्भगवतश्चित्रंधरण्युद्धरणंपरम् ॥३७ ॥ शृणुयाद्यःपुमान्यश्चपठेच्चरितमुत्तमम् ॥ सर्वपा पविनिर्मुक्तोवैष्णवींगतिमाप्नुयात् ॥ ३८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टमस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥ ॥ छ ॥ नारायणउवाच ॥ महींदेवःप्र तिष्ठाप्ययथास्थानेचनारद ॥ वैकुंठलोकमगमद्ब्रह्मोवाचस्वमात्मजम् ॥ १ ॥ स्वायंभुवमहाबाहोपुत्रतेजस्विनांवर ॥ स्थानेमहीमयेतिष्ठप्रजाःसृजयथो चितम् ॥ २ ॥ देशकालविभागेनयज्ञेशंपुरुषंयज ॥ उच्चावचपदार्थैश्चयज्ञसाधनकैर्विभो ॥ ३ ॥ धर्ममाचरशास्त्रोक्तंवर्णाश्रमनिबंधनम् ॥ एतेनक्रमयोगे नप्रजावृद्धिर्भविष्यति ॥ ४ ॥ पुत्रानुत्पाद्यगुणतःकीर्त्याकांत्याऽऽत्मरूपिणः ॥ विद्याविनयसंपन्नान्सदाचारवतांवरान् ॥ ५ ॥ कन्याश्चदत्त्वागुणवद्यशो वद्भ्यःसमाहितः ॥ मनःसम्यक्समाधायप्रधानपुरुषेपरे ॥ ६ ॥ भक्तिसाधनयोगेनभगवत्परिचर्यया ॥ गतिमिष्टांसदावंद्यांयोगिनांगमिताभवान् ॥ ७ ॥ इत्याश्वास्यमनुंपुत्रंपद्मयोनिःप्रजापतिः ॥ प्रजासर्गेनियम्याऽमुंस्वधामप्रत्यपद्यत ॥ ८ ॥ प्रजाःसृजतपुत्रेतिपितुराज्ञांसमादधत् ॥ स्वायंभुवःप्रजासर्गम करोत्पृथिवीपतिः ॥ ९ ॥ प्रियव्रतोत्तानपादौमनुपुत्रौमहौजसौ ॥ कन्यास्तिस्रःप्रसूताश्चतासांनामानिमेशृणु ॥ १० ॥ आकूतिःप्रथमाकन्याद्वितीयादे वहूतिका ॥ तृतीयाचप्रसूतिर्हिविख्यातालोकपाविनी ॥ ११ ॥ आकूतिंरुचयेप्रादात्कर्दमायचमध्यमाम् ॥ दक्षायाऽदात्प्रसूतिंचयासांलोकइमाःप्रजाः ॥ १२ ॥ रुचेःप्रजज्ञेभगवान्यज्ञोनामाऽऽदिपूरुषः ॥ आकूत्यांदेवहूत्यांचकपिलोऽसौचकर्दमात् ॥ १३ ॥ सांख्याचार्यःसर्वलोकेविख्यातःकपिलोविभुः॥ दक्षात्प्रसूत्यांकन्याश्चबहुशोजज्ञिरेप्रजाः ॥ १४ ॥ यासांसंतानसंभूतादेवतिर्यङ्नरादयः ॥ प्रसूतालोकविख्याताःसर्वेसर्गप्रवर्तकाः ॥ १५ ॥ यज्ञश्चभगवा न्स्वायंभुवमन्वंतरेविभुः ॥ मनुंररक्षरक्षोभ्योयामैर्देवगणैर्वृतः ॥ १६ ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ आकूत्यामितिपूर्वेणान्वयः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ यज्ञश्चेति ॥ रुचेःपुत्रोयज्ञोनामपुरुषःकस्मिंश्चित्समयेरक्षोभिरुपद्रुतंस्वायंभुवंमनुंयामैस्तन्नामकैर्देवगणैर्वृतःसंस्ते भ्योरक्षोभ्योमनुंररक्षेतिकथापुराणांतरेप्रसिद्धा ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अष्टाविंशतिभिःश्लोकैःप्रियव्रतकथानकम् ॥ यत्र द्वीपोद्भवःप्रोक्तस्तदेतत्सम्यगीर्यते ॥ १ ॥ मनुकन्यावंशकथनोत्तरंमनोःपुत्राणांवंशमाह । मनोःस्वायंभुवस्येति ॥ १ ॥ विश्वकर्मणःप्रजापतेरित्यन्वयः ॥ २ ॥ दशपुत्रान्गुणैरन्विता न्यवीयसींदशपुत्रेभ्यःकनिष्ठामूर्जस्वतींनाम ॥ ३ ॥ रुक्मशुक्रोहिरण्यरेतोनामकः ॥ ४ ॥ वह्नेर्नामानियेषां नत्वेतएववह्नयइतिभ्रमितव्यम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ आत्मविद्येति ॥ तेआत्मविद्या

कपिलोऽपिमहायोगीभगवान्स्वाश्रमेस्थितः ॥ देवहूत्यैपरंज्ञानंसर्वाऽविद्यानिवर्तकम् ॥१७॥ सविशेषंध्यानयोगमध्यात्मज्ञाननिश्चयम् ॥ कापिलंशास्त्र माख्यातंसर्वाज्ञानविनाशनम् ॥ १८ ॥ उपदिश्यमहायोगीसययौपुलहाश्रमम् ॥ अद्यापिर्वततेदेवःसांख्याचार्योमहाशयः ॥ १९ ॥ यन्नामस्मरणेनाऽपि सांख्ययोगश्चसिद्ध्यति ॥ तंवंदेकपिलंयोगाचार्यंसर्ववरप्रदम् ॥ २० ॥ एवमुक्तंमनोःकन्यावंशवर्णनमुत्तमम् ॥ पठतांशृण्वतांचाऽपिसर्वपापविनाशनम् ॥ २१ ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिमनुपुत्रान्वयंशुभम् ॥ यदाकर्णनमात्रेणपरंपदमवाप्नुयात् ॥ २२ ॥ द्वीपवर्षसमुद्रादिव्यवस्थायत्सुतैःकृता ॥ व्यवहारप्रसि द्ध्यर्थंसर्वभूतसुखाप्तये ॥२३॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेभुवनकोशेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नारायणउवाच॥मनोःस्वा यंभुवस्याऽऽसीज्ज्येष्ठःपुत्रःप्रियव्रतः ॥ पितुःसेवापरोनित्यंसत्यधर्मपरायणः ॥ १ ॥ प्रजापतेर्दुहितरंसुरूपांविश्वकर्मणः ॥ बर्हिष्मतींचोपयेमेसमानांशी लकर्मभिः ॥ २ ॥ तस्यांपुत्रान्दशगुणैरन्वितान्भावितात्मनः ॥ जनयामासकन्यांचोर्जस्वतींचयवीयसीम् ॥ ३ ॥ आग्नीध्रश्चेध्मजिह्वश्चयज्ञबाहुस्तृतीय कः ॥ महावीरश्चतुर्थस्तुपंचमोरुक्मशुक्रकः ॥ ४ ॥ घृतपृष्ठश्चसवनोमेधातिथिरथाऽष्टमः ॥ वीतिहोत्रःकविश्चेतिदशैतेवह्निनामकाः ॥५॥ एतेषांदशपु त्राणांत्रयोऽप्यासन्विरागिणः ॥ कविश्चसवनश्चैवमहावीरइतित्रयः ॥ ६ ॥ आत्मविद्यापरिष्णाताःसर्वेतेह्यूर्ध्वरेतसः ॥ आश्रमेपरहंसाख्येनिःस्पृहाह्यभव न्मुदा॥७॥अपरस्यांचजायायांत्रयःपुत्राश्चजज्ञिरे ॥ उत्तमस्तामसश्चैवरैवतश्चेतिविश्रुताः ॥ ८ ॥ मन्वंतराधिपतयएतेपुत्रामहौजसः ॥ प्रियव्रतःसराजेंद्रो बुभुजेजगतीमिमाम् ॥ ९ ॥ एकादशार्बुदाब्दानामव्याहतबलेंद्रियः ॥ यदासूर्यःपृथिव्याश्चविभागेप्रथमेऽतपत् ॥ १० ॥ भागेद्वितीयेतत्राऽऽसीदंधकारो दयःकिल ॥ एवंव्यतिकरंराजाविलोक्यमनसाचिरम् ॥ ११ ॥ प्रशास्तिमयिभूम्यांचतमःप्रादुर्भवेत्कथम् ॥ एवंनिवारयिष्यामिभूमौयोगबलेनच ॥ ॥ १२ ॥ एवंव्यवसितोराजापुत्रःस्वायंभुवस्यसः ॥ रथेनाऽऽदित्यवर्णेनसप्तकृत्वःप्रकाशयन् ॥ १३ ॥

यामर्भकभावादारभ्यकृतपरिचयाःपारमहंस्यमेवाश्रममभजन् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ दशकोटिभिरेकमर्बुदमेतादृशानिवर्षाणामेकादशार्बुदानिजगतींबुभुजेइत्यन्वयः ॥ विभागेप्रथमेइति ॥ यदेकस्मिन्भागेऽतपत्तदाद्वितीयभागेऽर्थादंधकारआसीदित्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ योगबलेनतपोबलेन ॥ १२ ॥ जगत्प्रकाशयन्सप्तकृत्वःप्रदक्षिणांचकार ॥ एवंकुर्वाणंप्रियव्रतमागत्य चतुराननःतवाधिकारोऽयंनास्तीतिनिवारयामासेतिपुराणांतरेप्रसिद्धम् ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

रथनेमयःसप्तकृत्वःप्रदक्षिणासमयेयस्मिन्भूप्रदेशेरथनेमयःपतितास्तत्रसप्तमहागर्ताजातास्तेसप्तसमुद्राइत्युच्यंते ॥ १४ ॥ प्रदेशाइति ॥ द्वयोर्द्वयोःसमुद्रयोर्मध्येभूप्रदेशास्तेषट्संख्यामध्यस्थभूप्रदेशश्चसप्तमइतिसप्तद्वीपाइत्यर्थः ॥ तदेवविशदयति । रथनेमीति ॥ १५ ॥ यतःसप्तसिंधवआसंस्ततोद्वयोःसमुद्रयोर्मध्येयाःषट् भुवोमध्यस्थाचैकाभूस्तेसप्तद्वीपाःस्मृताइत्यर्थः ॥ १६ ॥ द्विगुणंचोत्तरोत्तरम् पूर्वस्ययद्विस्तारमानम् उत्तरस्तद्विगुणेनमानेनेत्येवंसिंधुभ्योबहिःसमंततःसप्तद्वीपाःपूर्वोक्तभागक्रमेणसंतीत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ द्वीपेक्षुरसेत्यार्षप्रयोगः ॥ प्रैयव्रतःप्रियव्रतस्याऽपत्यमित्यर्थः ॥ इध्मादिजिह्वकः इध्मजिह्वः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽ

तस्याऽपिगच्छतोराज्ञोभूमौयद्रथनेमयः ॥ पतितास्तेसमुद्राख्यांभेजिरेलोकहेतवे॥१४॥जाताःप्रदेशास्तेसप्तद्वीपाभूमौविभागशः ॥ रथनेमिसमुत्थास्तेपरिखाःसप्तसिंधवः॥१५॥यतआसंस्ततःसप्तभुवोद्वीपाहितेस्मृताः॥जंबुद्वीपःप्लक्षद्वीपःशाल्मलीद्वीपसंज्ञकः ॥ १६॥ कुशद्वीपःक्रौंचद्वीपःशाकद्वीपश्चपुष्करः ॥ तेषांचपरिमाणंतुद्विगुणंचोत्तरोत्तरम् ॥ १७ ॥ समंततश्चोपकृतंबहिर्भागक्रमेणच ॥ क्षारोदेक्षुरसोदौचसुरोदश्चघृतोदकः ॥१८॥ क्षीरोदोदधिमंडोदःशुद्धोदश्चेतितेस्मृताः ॥ सप्तैतेप्रतिविख्याताःपृथिव्यांसिंधवस्तदा ॥ १९ ॥ प्रथमोजंबुद्वीपाख्योयःक्षारोदेनवेष्टितः ॥ तत्पतिंविदधेराजापुत्रमाग्नीध्रसंज्ञकम् ॥ २० ॥ प्लक्षद्वीपेद्वितीयेऽस्मिन्द्वीपेक्षुरससंप्लुते ॥ जातस्तदधिपःप्रैयव्रतइध्मादिजिह्वकः ॥ २१ ॥ शाल्मलीद्वीपएतस्मिन्सुरोदधिपरिप्लुते ॥ यज्ञबाहुंतदधिपंकरोतिस्मप्रियव्रतः ॥ २२ ॥ कुशद्वीपेऽतिरम्येचघृतोदेनोपवेष्टिते ॥ हिरण्यरेताराजाभूत्प्रियव्रततनूजनिः ॥ २३ ॥ क्रौंचद्वीपेपंचमेतुक्षीरोदपरिसंप्लुते ॥ प्रैयव्रतोघृतपृष्ठःपतिरासीन्महाबलः ॥ २४ ॥ शाकद्वीपेचारुतरेदधिमंडोदसंकुले ॥ मेधातिथिरभूद्राजाप्रियव्रतसुतोवरः ॥२५॥ पुष्करद्वीपकेशुद्धोदकासिंधुसमाकुले ॥ वीतिहोत्रोबभूवाऽसौराजाजनकसंमतः ॥ २६ ॥ कन्यामूर्जस्वतीनाम्नींददावुशनसेविभुः ॥ आसीत्तस्यां देवयानीकन्याकाव्यस्यविश्रुता ॥ २७॥ एवंविभज्यपुत्रेभ्यःसप्तद्वीपान्प्रियव्रतः ॥ विवेकवशगोभूत्वायोगमार्गाश्रितोऽभवत् ॥२८॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टमस्कंधे भुवनकोशेचतुर्थोऽध्यायः ॥४॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ देवर्षेशृणुविस्तारंद्वीपवर्षविभेदतः ॥ भूमंडलस्यसर्वस्ययथादेवप्रकल्पितम् ॥ १ ॥ समासात्संप्रवक्ष्यामिनाऽलंविस्तरतःक्वचित् ॥ जंबुद्वीपःप्रथमतःप्रमाणेलक्षयोजनः ॥ २ ॥

ष्टमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चात्रिंशद्भिःपद्यैरथसविस्तरम् ॥ भूमंडलस्यविस्तारोयथावदनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ अधुनाभुवनकोशविस्तारमाह ॥ देवर्षेइति ॥ अत्राऽपिनारदस्यभुवनकोशविस्तारविषयकःप्रश्नोऽनुमेयः ॥ अन्यथाऽपृष्टविषयकोत्तरप्रदानस्याऽसंगत्यापत्तेः ॥ द्वीपवर्षविभेदतःद्वीपानिपूर्वोक्तानि ॥ वर्षाणिजंबुद्वीपनवखंडानि ॥ तेषांविभेदेनेत्यर्थः ॥ देवेनपरमेश्वरेणकल्पितम् ॥ १ ॥ जंबुद्वीपइति ॥ लक्षयोजनोविस्तीर्णः ॥ जंबूःस्त्रीजंबुजांववमितिकोशाज्जंबुशब्दोह्रस्वांतोपि ॥ कमलस्यकर्णिकावदस्तीत्यर्थः ॥ पूर्वापरायतंसूत्रमपिलक्षयोजनंदक्षिणोत्तरायतमपिसूत्रंलक्षयोजनम् ॥ २ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नववर्षाणि ॥ तदयंसन्निवेशप्रकारः ॥ पूर्वापरायतदक्षिणोत्तरायतमध्यसूत्रद्वयपातोत्तरंसमंवर्तुलंकृत्वापूर्वापररेखायाउत्तरभागेपूर्वापरायतंसमांशंरेखात्रयंदद्यात् ॥ एवंदक्षिणभागेऽपिसमांशंरेखात्रयंदद्यात् ॥ तथादक्षिणोत्तररेखायाउत्तरभागेसमांशभागेनैकांरेखांदक्षिणभागेपिसमांशेनैकांरेखांदद्यात् ॥ पूर्वापरायतंमध्यंसूत्रंदक्षिणोत्तरायतंमध्यंसूत्रंचमार्जयेदेवंकृतेनवकोष्ठानि संपद्यंतेतानिनववर्षाणियाश्चाष्टौरेखाःपूर्वापरायताःषट् दक्षिणोत्तरायतेचद्वेरेखे ॥ ताअष्टौमर्यादापर्वताः ॥ तानिवर्षाणिआयामैर्विस्तारैर्नवसहस्रयोजनैःपरिसंख्यानिज्ञेयानीत्यर्थः ॥ एकैकवर्षस्यनवसहस्रयोजनोविस्तारइत्यर्थः ॥ एतच्चभद्राश्वकेतुमालव्यतिरेकेणद्रष्टव्यम् ॥ तयोश्चतुस्त्रिंशद्योजनसहस्रायामत्वात् ॥ मध्यस्थगिरीनाह । गिरिभिरिति ॥ दीर्घरूपैःसमुद्रपर्यंतंगामिभिरष्टमर्यादापर्वतैस्तानिवर्षाणिप्रविभक्तानीत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ जंबुद्वीपस्यसंनिवेशंस्वयमेवाह । धनुर्वत्संस्थितेइति ॥ दक्षिणोत्तरे ॥ अंतिमेद्वेवर्षे चत्वारिचतुरस्रेलावृतधनुराकारवर्षद्वयमध्यस्थानीत्यर्थः ॥ चतुरस्रमिति ॥ यदिलावृत्तंतच्चतुरस्रंभवतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ इलावृतवर्षमध्येमेरुसंस्थामाह इलावृतमिति ॥ नाभ्यांमध्ये ॥ ६ ॥ भूगोलरूपकमल

विशालोवर्तुलाकारोयथाऽब्जस्यचकर्णिका ॥ नववर्षाणियस्मिंश्चनवसाहस्रयोजनैः ॥ ३ ॥ आयामैःपरिसंख्यानिगिरिभिःपरितःश्रितैः ॥ अष्टभिर्दीर्घरूपैश्चसुविभक्तानिसर्वतः ॥ ४ ॥ धनुर्वत्संस्थितेज्ञेयेद्वेवर्षेदक्षिणोत्तरे ॥ दीर्घाणितत्रचत्वारिचतुरस्रमिलावृतम् ॥ ५ ॥ इलावृतंमध्यवर्षंयन्नाभ्यांसुप्रतिष्ठितः ॥ सौवर्णोगिरिराजोऽयंलक्षयोजनमुच्छ्रितः ॥ ६ ॥ कर्णिकारूपएवाऽयंभूगोलकमलस्यच ॥ मूर्ध्निद्वात्रिंशत्सहस्रयोजनैर्विततस्त्वयम् ॥ ७ ॥ मूलेषोडशसाहस्रस्तावतांतर्गतःक्षितौ॥इलावृतस्योत्तरतोनीलःश्वेतश्चशृंगवान् ॥ ८ ॥ त्रयोवैगिरयःप्रोक्तामर्यादावधयस्त्रिषु ॥ रम्यकारुयेतथावर्षेद्वितीयेच हिरण्मये ॥९॥ कुरुवर्षेतृतीयेतुमर्यादांव्यंजयंतिते ॥प्रागायताउभयतःक्षारोदावधयस्तथा॥१०॥द्विसहस्रपृथुतरास्तथाएकैकशःक्रमात् ॥ पूर्वात्पूर्वाच्चोत्तरस्यांदशांशादधिकांशतः ॥११॥ दैर्घ्यएवह्रसंतीमेनानानदनदीयुताः ॥ इलावृताद्दक्षिणतोनिषधोहेमकूटकः ॥ १२ ॥ हिमालयश्चेतित्रयःप्राग्विस्तीर्णाःसुशोभनाः ॥ अयुतोत्सेधभाजस्तेयोजनैःपरिकीर्तिताः ॥ १३ ॥ हरिवर्षंकिंपुरुषंभारतंचयथातथम् ॥ विभागात्कथयंत्येतेमर्यादागिरयस्त्रयः ॥१४॥

स्यायंकर्णिकास्थानोमेरुरित्यर्थः ॥ मूर्ध्निमस्तकेविततोविस्तीर्णः ॥ ७ ॥ मूलेऽधोभागेषोडशसहस्रःषोडशसहस्रयोजनपरिमितिविस्तृतिरित्यर्थः ॥ तावतषोडशसहस्रयोजनमानेनचतुरशीतियोजनसहस्रमानेनबहिर्दृश्यते एवंलक्षयोजनोन्नाहः ॥ मर्यादापर्वतनामान्याह । इलावृतस्येति ॥ उत्तरतःउत्तरस्यांदिशि ॥८॥ मर्यादावधयः ॥ त्रिषुवक्ष्यमाणवर्षेषुप्रोक्ताइत्यर्थः॥ तेषांत्रयाणांनामान्याह । रम्यकेति ॥ ९ ॥ प्रागायताःपूर्वतोदीर्घाः ॥ उभयतोमूलेऽग्रभागेच ॥ क्षारोदएवाऽवधिर्येषांतेतथोक्ताः ॥ १० ॥ द्विसहस्रपृथुतराःद्विसहस्रयोजनविस्तीर्णाः ॥ एकैकशःएकस्मादेकस्मात्पूर्वात्पूर्वादुत्तरस्यांदिशिदशांशादीषदधिकोयोंशस्तेनदैर्घ्येएवह्रसंति नतूच्चत्वेपृथुत्वेवा ॥ तदुक्तंविष्णुपुराणे ॥ लक्षप्रमाणौद्वौमध्येदशहीनास्तथापरे इति ॥ एतदपिस्थूलदृष्ट्यैवोक्तम् ॥ तयोरपियथावन्मध्यत्वाभावेनलक्षप्रमाणत्वाभावात् ॥ ११ ॥ दक्षिणतोदक्षिणस्यांदिशि ॥ १२ ॥ प्राग्विस्तीर्णाःप्रागायताः ॥ अयुतोत्सेधभाजः ॥ अयुतयोजनउत्सेधउच्छ्रयोयेषाम् अयंचोत्सेधोनीलादिपर्वतानामपिबोध्यः ॥ नीलादिपृथुत्वंचैषामपिद्रष्टव्यम् ॥ १३ ॥ हरिवर्षादीनांत्रयाणामेतेमर्यादागिरयइत्याह । हरिवर्षमिति ॥ एतेत्रयोगिरयोवर्षत्रयस्यमर्यादांकथयंतिबोधयंतीत्यर्थः ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पश्चिमतःपश्चिमभागेमाल्यवान्पर्वतः ॥ पूर्वेणपूर्वभागेगंधमादनः ॥ १५ ॥ अनयोर्दैर्घ्यमर्यादामाह ॥ आनीलनिषधंत्वेताविति ॥ उभावपिनीलनिषधपर्यंतंदीर्घावित्यर्थः ॥ अनयोर्विस्तारमाह । द्विसहस्रतःद्विसहस्रयोजनैःपृथुतांविस्तारतांप्राप्तावित्यर्थः ॥ तावेवकेतुमालभद्राश्ववर्षयोर्मर्यादाकारकौ ॥ १६ ॥ नन्वेवंसतिपूर्वापररेखायामिलावृतवेष्टितोमेरुर्मध्ये ततः पूर्वापरतोगिरिद्वयंवर्षद्वयंचनातःपरमस्ति ॥ दक्षिणोत्तरतोरेखायांतुतथैवेलावृतवेष्टितोमध्येमेरुरुभयतस्त्रीणित्रीणिवर्षाणिगिरयश्चपूर्वोक्तपरिमाणाःसंति तत्कथंसर्वतोलक्षप्रमाणत्वंजंबुद्वीपस्येतिचेदत्रोच्यते ॥ मेरोःषोडशसहस्राणिसर्वतःस्थितत्वादिलावृत्तस्याष्टादश अन्येषांवर्षाणांचतुःपंचाशद्गिरीणांषण्णांद्वादशेत्येवंदक्षिणोत्तररेखायांतावल्लक्षंपूर्वापररेखायामपिसुमेरोरिलावृतस्यचतुस्त्रिंशद्गिरयोश्चत्वारिंशेषाणिद्विषष्टिसहस्राणि पूर्वापरवर्षयोर्दैर्घ्येद्रष्टव्यानि ॥ ततोनपूर्वापरविरोधइतिश्रीधरस्वामिनः । मेरोरवष्टंभगिरीनाह । मंदरश्चेति ॥ १७ ॥ मेरुपा

इलावृतात्पश्चिमतोमाल्यवान्नामपर्वतः ॥ पूर्वेणचततःश्रीमान्गंधमादनपर्वतः ॥ १५ ॥ आनीलनिषधंत्वेतौचायतौद्विसहस्रतः ॥ योजनैःपृथुतांयातौ मर्यादाकारकौगिरी ॥ १६ ॥ केतुमालाख्यभद्राश्ववर्षयोःप्रथितौचतौ ॥ मंदरश्चतथामेरुमंदरश्चसुपार्श्वकः ॥ १७ ॥ कुमुदश्चेतिविख्यातागिरयोमेरुपादकाः ॥ योजनायुतविस्तारोन्नाहामेरोश्चतुर्दिशम् ॥ १८ ॥ अवष्टंभकरास्तेतुसर्वतोऽभिविराजिताः ॥ एतेषुगिरिषुप्राप्ताःपादपाश्चूतजंबुनी ॥१९॥ कदंबन्यग्रोधइतिचत्वारःपर्वताःस्थिताः ॥ केतवोगिरिराजेषुएकादशशतोच्छ्रयाः ॥ २० ॥ तावद्विटपविस्ताराःशताख्यपरिणाहिनः ॥ चत्वारश्चह्रदास्तेषुपयोमध्विक्षुसज्जलाः ॥ २१ ॥ यदुपस्पर्शिनोदेवायोगैश्वर्याणिविंदते ॥ देवोद्यानानिचत्वारिभवंतिललनासुखाः ॥ २२ ॥ नंदनंचैत्ररथकंवैभ्राजंसर्वभद्रकम् ॥ येषुस्थित्वाऽमरगणाललनायूथसंयुताः ॥ २३ ॥ उपदेवगणैर्गीतमहिमानोमहाशयाः ॥ विहरंतिस्वतंत्रास्तेयथाकामंयथासुखम् ॥ २४ ॥ मंदरोत्संगसंस्थस्यदेवचूतस्यमस्तकात् ॥ एकादशशतोच्छ्रायात्फलान्यमृतभांजिच ॥ २५ ॥ गिरिकूटप्रमाणानिसुस्वादूनिमृदूनिच ॥ तेषांविशीर्यमाणानांफलानांसुरसेनच ॥२६॥ अरुणोदसवर्णेनअरुणोदाप्रवर्तते ॥ नदीरम्यजलादेवदैत्यराजप्रपूजिता ॥२७॥ अरुणाख्यामहाराजवर्ततेपापहारिणी ॥ पूजयंतिचतां देवींसर्वकामफलप्रदाम् ॥ २८ ॥

दकामेरोःपादाइत्यर्थः ॥ योजनायुतेति ॥ अयुतयोजनप्रमाणौविस्तारोन्नाहौयेषांविस्तीर्णमूर्ध्नोमेरोरवष्टंभत्वादेतेअवष्टंभकाइत्युच्यंतेइत्यर्थः ॥ १८ ॥ पूर्वपश्चिमौगिरीदक्षिणोत्तरावि स्तारौ दक्षिणोत्तरौचपूर्वापरविस्तारौद्रष्टव्यौ ॥ सर्वतोदशयोजनसहस्रांगीकारेत्विलावृतलोपात्पूर्वेणेलावृतमुपप्लावयंतीत्यादिविरोधःस्यात् ॥ १९ ॥ कदंबसहितोन्यग्रोधइतिविग्रहः ॥ गिरिराजेषुचतुर्ष्वेतेपादपाःकेतवोध्वजरूपाइत्यर्थः ॥ एकादशशतोच्छ्रयाः एकादशशतयोजनोन्नताः ॥ २० ॥ तावत्प्रमाणाविटपविस्तारायेषांशताख्यपरिणाहिनःशतयोजनःपरिणाहो विस्तारोयेषाम् इदमुत्तरत्राऽन्वेति ॥ तेष्वेवपर्वतेषुह्रदचतुष्टयमाह । पयोमध्विति ॥ पयोह्रदोमधुह्रदइक्षुरसह्रदःसज्जलःमधुरजलह्रदइत्यर्थः ॥२१॥ यदुपस्पर्शिनोयत्सेविनः ॥ तेष्वेवपर्वतेषुदेवोद्यानान्याह । देवोद्यानानीति ॥ ललनासुखाःपुंस्त्वमार्षम् ॥ स्त्रीसुखकारीणीत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥२६॥ सुरसेनशोभनरसेनाऽरुणोदसमानवर्णेनाऽरुणोदानामनदीप्रादुर्भूतेत्यर्थः ॥ २७ ॥ तत्रत्याःसर्वेदेवाःसललनास्तत्पर्वतास्थितांश्रीभगवतीमरुणाभिधांसर्वभावेनसर्वदोपासयंतीत्याह । अरुणाख्येति ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कल्मषघ्नीचासावभयप्रदाचेतिकर्मधारयः ॥ २९ ॥ यैर्नामभिः पूजयंतितानिनामानिप्राह आद्याब्रह्मरूपिणीमायातद्विशिष्टा ईश्वरमालतेशोभयतितच्छीला ॥३० ॥ एतस्याःपूजाप्रभावेण जांबूनदंसुवर्णमुदावहन्निर्गतामित्यर्थः ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेअष्टमस्कंधेपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ द्वात्रिंशद्भिर्महापद्मैरितरद्रुमवर्णनम् ॥ देवीनांवर्णनंसर्वजनोपास्तिश्चवर्ण्यते ॥ ॥ १ ॥ अरुणोदाअरुणोयआम्रफलरसः सएवोदकंयस्याःसाअरुणोदा ॥ पूर्वेणेलावृतमिलावृतस्यपूर्वभागेप्लवेत्गच्छेदित्यर्थः ॥ १ ॥ तस्मिन्निलावृतपूर्वभागेपरमेश्वरेणक्रीडंत्याभवान्याअनुचरीणां यज्जोषणाद्यस्यरसस्यसेवनादित्यर्थः ॥२॥ एवमेवजंबूवृक्षस्यफलानिपतंतीत्याह । एवंजंबूफलेति ॥३॥ अनस्थीनामिति । सूक्ष्मबीजानाम् ॥ मेर्वाख्यमंदरान्मेरुमंदरपर्व

नानोपहारबलिभिःकल्मषघ्न्यभयप्रदाम् ॥ तस्याःकृपावलोकेनक्षेमारोग्यंव्रजंतिते ॥ २९ ॥ आद्यामायातुलानंतापुष्टिरीश्वरमालिनी॥ दुष्टनाशकरीकांतिदायिनीतिस्मृताभुवि ॥ ३० ॥ अस्याःपूजाप्रभावेणजांबूनदमुदावहत् ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टमस्कंधे भुवनलोकवर्णनंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ छ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अरुणोदानदीयातुमयाप्रोक्ताचनारद ॥ मंदरान्निपतंतीसापूर्वेणेलावृतंप्लवेत् ॥ १ ॥ यज्जोषणाद्भवान्याश्चाऽनुचरीणांस्त्रियामपि ॥ यक्षगंधर्वपत्नीनांदेहगंधवहोनिलः ॥ २ ॥ वासयत्यभितोभूमिंदशयोजनसंख्यया ॥ एवंजंबूफलानांचतुंगदेशनिपातनात् ॥ ३ ॥ विशीर्यतामनस्थीनांकुंजरांगप्रमाणिनाम् ॥ रसेनचनदीजंबूनाम्नीमेर्वाख्यमंदरात् ॥ ४ ॥ पतंतीभूमिभागेचदक्षिणेलावृतंगता ॥ देवीजंबूफलास्वादतुष्टा जंब्वादिनीस्मृता ॥ ५ ॥ तत्रत्यानांचलोकानांदेवनागर्षिरक्षसाम् ॥ पूजनीयपदामान्यासर्वभूतदयाकरी ॥ ६ ॥ पावनीपापिनांरोगनाशनीस्मरतामपि ॥ कीर्तितविघ्नसंहर्त्रीमाननीयादिवौकसाम् ॥ ७ ॥ कोकिलाक्षीकामकलाकरुणाकामपूजिता ॥ कठोरविग्रहाधन्यानाकिमान्यागभस्तिनी ॥ ८ ॥ एभिर्नामपदैःकामंजपनीयासदानृणाम् ॥ जंबूनदीरोधसोर्यामृत्तिकातीरवर्तिनी ॥ ९ ॥ जंबूरसेनानुविद्धयमानावाय्वर्कयोगतः ॥ विद्याधरामरस्त्रीणांभूषणंविविधंमहत् ॥ १० ॥ जांबूनदसुवर्णंचप्रोक्तंदेवविनिर्मितम् ॥ यत्सुवर्णंचविबुधायोषिद्भिःकामुकाःसदा ॥ ११ ॥ मुकुटंकटिसूत्रंचकेयूरादीन्प्रकुर्वते ॥ महाकदंबःसंप्रोक्तःसुपार्श्वगिरिसंस्थितः ॥ १२ ॥ तस्यकोटरदेशेभ्यःपंचधाराश्चयाःस्मृताः ॥ सुपार्श्वगिरिमूर्ध्नीहपतंत्येताभुवंगताः ॥ १३ ॥ मधुधारापंचतास्तुपश्चिमेलावृतंप्लुताः ॥ याश्चोपभुज्यमानानांदेवानांमुखगंधभृत् ॥ १४ ॥ वायुःसमंततोगच्छञ्छतयोजनवासनः ॥ धारेश्वरीमहादेवीभक्तानांकार्यकारिणी ॥ १५ ॥ देवपूज्यामहोत्साहाकालरूपामहानना ॥ वसतेकर्मफलदाकांतारग्रहणेश्वरी ॥ १६ ॥ करालदेहाकालांगीकामकोटिप्रवर्तिनी ॥ इत्येतैर्नामभिःपूज्यादेवीसर्वसुरेश्वरी ॥ १७ ॥

तादित्यर्थः ॥ ४ ॥ इलावृतस्यदक्षिणभागेगतेत्यर्थः । तत्रत्याःसर्वेऽमरास्तत्रस्थितांजंबूफलादनंभक्षणंकर्त्रींतच्छीलांजंब्वादिनीनाम्नींदेवींभगवतीमुपासतेइत्याह । देवीजंबूफलेति ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ७ ॥ नाकिमान्यानाकिनोदेवास्तेषांमान्यापूज्या ॥ ८ ॥ रोधसोरुभयतटयोः ॥ ९ ॥ वाय्वर्कयोगतोवाय्वर्कयोगजन्यपरिपाकेनसुवर्णभूताविविधंभूषणंसृजतीत्यर्थः ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पश्चिमेलावृतं ॥ छांदसःप्रयोगः ॥ इलावृतस्यपश्चिमदेशेगताइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कुमुदरूढः कुमुदपर्वतस्थः ॥ तत्स्कंधेभ्यः पंचनदाः कुमुदपर्वतमूर्धनिपतंतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ आभरणैर्युक्ताः पंचनदाइत्यर्थः ॥ १९ ॥ इलावृतस्योत्तरभागेतेगच्छंतीत्यर्थः ॥ तत्रत्या मरैरुपास्यामीनाक्षीभगवतीतत्रवर्ततइत्याह । मीनाक्षीति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ जरामययोर्भृतिर्भरणम् ॥ मुखोपप्लवोमुखरोगः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ मूलविभागकेमूलदेशेकेसरीभूयकमलकेसरसदृशाः अल्पपरिमाणाविंशतिर्गिरयः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेष्टमस्कंधेषष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥ सप्ताधिकैश्च

एवंकुमुदरूढोयोनाम्नाशतबलोघटः ॥ तत्स्कंधेभ्योऽधोमुखाश्चनदाःकुमुदमूर्धतः ॥ १८ ॥ पयोदधिमधुघृतगुडान्नाद्यंबरादिभिः ॥ शय्यासनाद्याभरणः सर्वेकामदुघाश्चते ॥ १९ ॥ उत्तरेणेलावृतंतेप्लावयंतिसमंततः ॥ मीनाक्षीतत्तलेदेवीदेवासुरनिषेविता ॥ २० ॥ नीलांबरारौद्रमुखीनीलालकयुताचसा ॥ नाकिनांदेवसंघानांफलदावरदाचसा ॥ २१ ॥ अतिमान्याऽतिपूज्याचमत्तमातंगगामिनी ॥ मदनोन्मादिनीमानप्रियामानप्रियांतरा ॥ २२ ॥ मारवेग धरामारपूजितामारमादिनी ॥ मयूरवरशोभाढ्याशिखिवाहनगर्भभूः ॥ २३ ॥ एभिर्नामपदैर्वेद्यादेवीसामीनलोचना ॥ जपतांस्मरतांमानदात्रीचेश्वरसं गिनी ॥ २४ ॥ तेषांनदानांपानीयपानानुगतचेतसाम् ॥ प्रजानांनकदाचित्स्याद्वलीपलितलक्षणम् ॥ २५ ॥ क्लमस्वेदादिदौर्गंध्यंजरामयभृतिभ्रमाः ॥ शीतोष्णवातवैवर्ण्यमुखोपप्लवसंचयाः ॥ २६ ॥ नापदश्चैवजायंतेयावज्जीवंसुखंभवेत् ॥ नैरंतर्येणतत्स्याद्वैसुखंनिरतिशायकम् ॥२७॥ ततऊर्ध्वंप्रवक्ष्या मिसंनिवेशंचतद्गिरेः ॥ सुवर्णमयनाम्नोवैसुमेरोःपर्वताःपृथक् ॥ २८ ॥ गिरयोविंशतिपराःकर्णिकायाइवेहते ॥ केसरीभूयसर्वेपिमेरोर्मूलविभागके ॥२९॥ परितश्चोपक्लृप्तास्तेतेषांनामानिशृण्वतः ॥ कुरंगः कुरगश्चैवकुशुंभोऽथोविकंकतः ॥३०॥ त्रिकूटःशिशिरश्चैवपतंगोरुचकस्तथा ॥ निषधश्चशितीवासःक पिलःशंखएवच ॥ ३१ ॥ वैदूर्यश्चारुधिश्चैवहंसोऋषभएवच ॥ नागःकालंजरश्चैवनारदश्चेतिविंशतिः ॥ ३२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टम स्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ गिरीमेरुंचपूर्वेणद्वौचाष्टादशयोजनैः ॥ सहस्रैरायतौचोदग्द्विसहस्रंपृथूच्चकौ ॥ १ ॥ जठरो देवकूटश्चतावेतौगिरिवर्यकौ ॥ मेरोःपश्चिमतोऽद्रीद्वौपवमानस्तथापरः ॥ २ ॥ पारियात्रश्चतौतावद्विख्यातौतुंगविस्तरौ ॥ मेरोर्दक्षिणतःख्यातौकैलास करवीरकौ ॥ ३ ॥ प्रागायतौपूर्ववत्तौमहापर्वतराजकौ ॥ एवंचोत्तरतोमेरोस्त्रिशृंगमकरौगिरी ॥ ४ ॥ एतैश्चाद्रिवरैरष्टसंख्यैःपरिवृतोगिरिः॥सुमेरुःकांच नगिरिःपरिभ्राजत्रविर्यथा ॥ ५ ॥ मेरोर्मूर्धनिधातुर्हिपुरीपंकजजन्मनः ॥ मध्यतश्चोपक्लृप्तेयंदशसाहस्रयोजनैः ॥ ६ ॥

त्रिंशद्भिर्महापद्मैरतःपरम् ॥ मूलादूर्ध्वंमहामेरोर्वर्णनंसम्यगुच्यते ॥ १ ॥ मेरुंपूर्वेणमेरोःपूर्वभागेद्वौगिरी ॥ अष्टादशयोजनैःसहस्रैःसहस्रात्मकैरष्टादशसहस्रयोजनमित्यर्थः ॥ उदक उदगायतौतावेवद्विसहस्रंपृथूच्चकौपृथुतुंगौभवतइत्यर्थः ॥ चतुर्दिक्षुमेरुमूलाद्योजनसहस्रंत्यक्त्वावन्हेःपरिधयइवजठरदेवकूटादयास्तिष्ठंतिअतोष्टादशयोजनसहस्रंपरिमाणमत्रोक्तम् ॥ वैष्ण वादिपुराणेषुपरिमाणादियत्पुनरन्यथावर्णितं तत्तुकल्पभेदाद्यपेक्षया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ प्रागायतौपूर्वदिशिदीर्घौ ॥ ४ ॥ ५ ॥ पंकजजन्मनश्चतुराननस्य ॥ ६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ७ ॥ तांपुरीमनुलक्षीकृत्याऽष्टानांलोकानामीशिषामष्टलोकेश्वराणांपराभिन्नाःपुर्यःयथादिशंप्राच्यादिदिक्षु ॥ ८ ॥ यथारूपंयस्यादिक्पालस्ययथाशरीरवर्णस्तत्समानवर्णाः ॥ सार्धने त्रसहस्रप्रमिताःसार्धद्विसहस्रप्रमाणेनपरिच्छिन्नाः ॥ तासांनामान्याह । मेरौनवपुराणीति ॥ अष्टदिक्पालानामष्टौब्रह्मणश्चैकमितिनवेत्यर्थः ॥९ ॥ १० ॥ गंगासन्निवेशमाह । तत्रैवेति॥ मेरोर्मूर्धनीत्यर्थः ॥ यज्ञलिंगस्यबलेर्यज्ञेलिंगंत्रिविक्रममूर्तिर्यस्य ॥ ११ ॥ विष्णोर्वामपादांगुष्ठनखेननिर्भिन्नोयोंडकटाहस्तस्योर्ध्वभागस्तेनपतितंयद्रंध्रंतस्यरंध्रस्यमध्यात्संविशंत्यंतःप्रवि ष्टादिवोमूर्धन्यवततारेयंगंगा ॥ १२ ॥ संविशंतीसहस्रवंती ॥१३॥ युगसाहस्रकेणकालेनबहुकालेनेत्यर्थः ॥ १४ ॥ आगत्यस्थितेत्यर्थः ॥ कोऽसौदिवोमूर्धातदाह । यत्तद्विष्णुपदमिति॥ ॥ १५ ॥ उत्तानपादस्याऽपत्यम् ॥ १६ ॥ गंगाप्रथमतोबहुकालेनध्रुवमंडलमागतेत्यर्थः ॥ तत्रध्रुवमंडलेयेसप्तर्षयःप्रदक्षिणांकुर्वंतितेतस्यगंगाप्रवाहस्यप्रभावज्ञाआत्यंतिकीमोक्षसिद्धिरियं

समानचतुरस्रांचशातकौंभमयींपुरीम् ॥ वर्णयंतिमहात्मानःपरावरविदोबुधाः ॥ ७ ॥ तांपुरीमनुलोकानामष्टानामीशिषांपराः ॥ पुर्यःप्रख्यातसौवर्णरूपास्ताश्चयथादिशम् ॥ ८ ॥ यथारूपंसार्धनेत्रसहस्रप्रमिताःकृताः ॥ मेरौनवपुराणिस्युर्मनोवत्यमरावती ॥ ९ ॥ तेजोवतीसंयमनीतथाकृष्णांगनापरा॥ श्रद्धावतीगंधवतीतथाचान्यामहोदया ॥ १० ॥ यशोवतीचब्रह्मेंद्रवन्ह्यादीनांयथाक्रमम् ॥ तत्रैवयज्ञलिंगस्यविष्णोर्भगवतोविभोः ॥ ११ ॥ वामपादांगुष्ठनखनिर्भिन्नस्यचनारद ॥ अंडोर्ध्वभागरंध्रस्यमध्यात्संविशतीदिवः ॥ १२ ॥ मूर्धन्यवततारेयंगंगासंविशतीविभोः ॥ लोकानामखिलानांचपापहारिजलाकुला ॥ १३ ॥ इयंचसाक्षाद्भगवत्पदीलोकेषुविश्रुता ॥ कालेनमहतासातुयुगसाहस्रकेणतु ॥ १४ ॥ दिवोमूर्धानमागत्यदेवीदेवनदीश्वरी ॥ यत्तद्विष्णुपदंनामस्थानंत्रैलोक्यविश्रुतम् ॥ १५ ॥ औत्तानपादिर्यत्रास्तेध्रुवःपरमपावनः ॥ भगवत्पादयुगलंपद्मकोशरजोदधत्॥१६॥ अद्याप्यास्तेसराजर्षिःपदवीमचलांश्रितः ॥ तत्रसप्तर्षयस्तस्यप्रभावज्ञामहाशयाः ॥ १७ ॥ प्रदक्षिणंप्रक्रमंतिसर्वलोकाहितेप्सवः ॥ आत्यंतिकीसिद्धिरियंतपतांसिद्धिदायिनी॥ ॥ १८ ॥ आद्रियंतेचशिरसाजटाजूटोषितेनच ॥ ततोविष्णुपदाद्देवीनैकसाहस्रकोटिभिः ॥ १९ ॥ विमानैराकुलेदेवयानेऽवतरतीचसा ॥ चंद्रमंडलमाप्लाव्यपतंतीब्रह्मसद्मनि ॥ २० ॥ चतुर्धाभिद्यमानासाब्रह्मलोकेचनारद ॥ चतुर्भिर्नामभिर्देवीचतुर्दिशमभिसृता ॥ २१ ॥ सरितांचनदीनांचपतिमेवाऽन्वपद्यत ॥ सीताचालकनंदाचचतुर्भद्रेतिनामभिः ॥ २२ ॥ सीताचब्रह्मसदनाच्छिखरेभ्यःक्षमाभृताम् ॥ केसराभिधनाम्नाचप्रस्रवंतीचस्वर्णदी ॥ ॥ २३ ॥ गंधमादनमूर्ध्नीहपतितापापहारिणी ॥ अंतरेणतुभद्राश्ववर्षप्राच्यांसमागता ॥ २४ ॥

तपतांतपस्विनांभवतिसिद्धिदायिनीतिमत्वाजटाजूटैरुषितेनयुक्तेनशिरसातांगंगामाद्रियंतेनित्यंस्नानंकुर्वंतीत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥२०॥ चंद्रमंडलात्ब्रह्मलोकेपतनसमयेचत्वारःप्रवाहाजाताइत्याह । चतुर्धेति॥ अभिसृतागता॥२१॥तस्मात्पतितायेचत्वारःप्रवाहास्तेषांचत्वारिनामान्यभवन्॥सर्वेप्रवाहाःसमुद्रंगताइत्याह । सरितांचेति॥नामान्याह।सीताचेति॥२२॥ सीतानाम्नीगंगाब्रह्मसदनान्निर्गतापूर्वंप्रोक्तायेक्षमाभृतः पर्वताःकेसराभिधनामानःसुमेरुकर्णिकाकेसरभूतास्तेषांशिखरेभ्यःप्रस्रवंतीगंधमादनपर्वतमूर्धनिपतितेत्यन्वयः ॥ केसराचलानांसमानोच्छ्रायत्वात्प्रथमंतेषामादिशिखरेषुमुख्यशृंगेषुपतति ॥ तेभ्योधोऽधःप्रस्रवतासता ॥ २३ ॥ भद्राश्ववर्षस्यांतरेणमध्यतइत्यर्थः ॥ २४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ अब्जभूर्ब्रह्मा तस्यपदात्सदनादित्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ स्नानायस्नानार्थंसरतांगच्छताम् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ समुद्रमुत्तरसमुद्रम् ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ भौमस्वर्गप्रदानिचेत्यस्यार्थंस्वयमेवाह । स्वर्गिणामिति ॥ तत्रत्यंभोगमाह । पुरुषाणामिति ॥३५॥ दशभिर्नागसहस्रैः समवलेनपरिकल्पिताः ॥ दशसहस्रनागबलाइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ एकवर्षोनेति ॥ आयुषिएकेनवर्षेणोनेन्यूनेसतिआप्तगर्भागर्भवत्यःस्त्रियोभवंतितावत्पर्यंतंयुवतयइत्यर्थः ॥ ३७ ॥ इतिश्रीदे०तिलकेअष्टमस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ त्रिंशद्भिरेकेनोनैस्तुपद्यैरथसविस्तरम् ॥ इलावृतसमाचारःकथ्यतेभक्तिवृद्धये ॥ १ ॥ सर्वेषुवर्षेषुविद्यमानादेवादयःश्रीदेवीमुपासंतेइत्याह । तेषुवर्षेष्विति ॥ देवेशास्तत्तद्वर्षेतत्तद्वीपस्थिताविष्णुरुद्रसंकर्ष

क्षारोदधिंगतासातुद्युनदीदेवपूजिता ॥ ततोमाल्यवतःशृंगाद्वितीयापरिनिर्गता ॥ २५ ॥ ततोवेगवतीभूत्वाकेतुमालंसमागता ॥ चक्षुर्नाम्नीदेवनदीप्रतीच्यांदिश्युपागता ॥ २६ ॥ सरितांपतिमाविष्टासागंगादेववंदिता ॥ ततस्तृतीयाधारातुनाम्नाख्याताचनारद ॥ २७ ॥ पुण्याचालकनंदावैदक्षिणेनाब्जभूपदात् ॥ वनानिगिरिकूटानिसमतिक्रम्यचागता ॥ २८ ॥ हेमकूटंगिरिवरंप्राप्ताऽतोऽपीहनिर्गता ॥ अतिवेगवतीभूत्वाभारतंचागतापरा ॥२९॥ दक्षिणंजलधिंप्राप्तातृतीयासासरिद्वरा ॥ यस्याःस्नानायसरतांमनुजानांपदेपदे ॥ ३० ॥ राजसूयाश्वमेधादिफलंतुनहिदुर्लभम् ॥ ततश्चतुर्थीधारातुशृंगवत्पर्वतात्पुनः ॥३१॥ भद्राभिधासंस्रवंतीकुरून्संतर्प्यचोत्तरान् ॥ समुद्रंसमनुप्राप्तागंगात्रैलोक्यपावनी ॥३२॥ अन्येनदाश्चनद्यश्चवर्षेवर्षेऽपिसंतिहि ॥ बहुशोमेरुमंदारप्रसूताश्चैवनारद ॥ ३३ ॥ तत्राऽपिभारतंवर्षंकर्मक्षेत्रमुशंतिहि ॥ अन्यानिचाऽष्टवर्षाणिभौमस्वर्गप्रदानिच ॥३४॥ स्वर्गिणांपुण्यशेषस्यभोगस्थानानिनारद ॥ पुरुषाणांचायुतायुर्वज्रांगादेवसन्निभाः ॥३५॥ पुरुषानागसाहस्रैर्दशभिःपरिकल्पिताः ॥ महासौरतसंतुष्टाःकलत्राढ्याःसुखान्विताः ॥ ॥ ३६ ॥ एकवर्षोनकेचायुष्याप्तगर्भाःस्त्रियोऽपिहि ॥ त्रेतायुगसमःकालोवर्ततेसर्वदैवहि ॥ ३७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेसप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ तेषुवर्षेषुदेवेशाः पूर्वोक्तैः स्तवनैः सदा ॥ पूजयंतिमहादेवींजपध्यानसमाधिभिः ॥ १ ॥ सर्वर्तुकुसुमश्रेणीशोभितावनराजयः ॥ फलानांपल्लवानांचयत्रशोभानिरंतरम् ॥ २ ॥ तेषुकाननवर्षेषुवर्षपर्वतसानुषु ॥ गिरिद्रोणीषुसर्वासुनिर्मलोदकराशिषु ॥ ३ ॥ विकचोत्पलमालासुहंससारससंचयैः ॥ विमिश्रितेषुतेष्वेवपक्षिभिःकूजितेषुच ॥ ४ ॥ जलक्रीडादिभिश्चित्रविनोदैःक्रीडयंतिच ॥ सुंदरीललितभ्रूणांविलासायतनेषुच ॥ ५ ॥ तत्रत्याविहरंत्यत्रस्वैरंयुवतिभिःसह ॥ नवस्वपिचवर्षेषुभगवानादिपूरुषः ॥६॥ "नारायणाख्योलोकानामनुग्रहरतैकदृक् ॥" देवीमाराधयन्नास्तेसचसर्वैश्चपूज्यते ॥ आत्मव्यूहेनेज्ययासौसन्निधत्तेसमाहितः ॥ ७ ॥

णारन्यादयोदेवावक्ष्यमाणाःपूर्वोक्तैःस्तवनैररुणाजंब्वादिनीधारेश्वरीमीनाक्षीणांकथितैःस्तोत्रैर्जपध्यानसमाधिभिश्चश्रीभगवतींसर्वेउपासंतेइत्यन्वयः ॥ १ ॥ तत्रत्यवनवर्णनमाह । सर्वर्तुकुसुमोति ॥ २ ॥ वर्षपर्वताःपूर्वोक्तावर्षमर्यादाकारकाःपर्वतास्तेषांसानुषुशिखरेषु ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सर्ववर्षेषुभिन्नाभिन्नरूपेणाविष्णुरापिपूज्यतइत्याह । नवस्वपिचवर्षेष्विति ॥६॥ आत्मव्यूहेनस्वमूर्तिभेदेन ॥ इज्यालोकैःक्रियमाणापूजातद्धेतुनेत्यर्थः ॥ सन्निधत्तेतेषुवर्षेषुसन्निधानंकरोतीत्यर्थः ॥ ७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पद्मजोब्रह्मा तस्याक्षिलक्षणयाभ्रूमध्यंतस्मात्समुद्भवउत्पत्तिर्यस्यसमुख्यशिवांशभूतोरुद्रोनतुमुख्यः ॥ ८ ॥ अपरोर्वाचीनःकुतोनप्रविशतितत्राह । भवान्याइति ॥ यतोरुद्रशक्तेर्भवान्याः शापतस्तत्रतस्मिन्क्षेत्रेस्फुटंपुमान्पुरुषःप्रवेशमा त्रेणस्त्रीभवातिततइत्यर्थः ॥ ९ ॥ भवानीरुद्राणीनाथोयेषांगणकोटीनांतैः ॥ संकर्षणंभजन्उपधावतेइत्यन्वयः ॥ १० ॥ आत्मनःप्रकृति कारणंपितामहम् ॥ ११ ॥ उपासनामंत्रमाह । ॐनमइति सर्वेषांगुणानांसंख्यानांप्रकाशोयस्मात्स्वयंत्वव्यक्तायाऽप्रमेयाय ॥ १२ ॥ भजेभजन्येति ॥ हेभजन्यभजनीयत्वात्वांपरमेश्वरं भजेइत्यन्वयः ॥ अरणंशरणंपादपंकजंयस्य ॥ कृत्स्नस्यभगस्यैश्वर्यादिषड्गुणस्यपरमयनमाश्रयः ॥ भक्तेषुचालमत्यर्थंभावितंप्रकटितंभूतभावनस्वरूपंयेन ॥ भवापहंसंसारहरम् ॥ भक्तेष्वित्यनुषंगः ॥ भवंसंसारंभावयतीतितथा तमर्थादभक्तेष्वितिद्रष्टव्यम् ॥ १३ ॥ इश्वरत्वमुपपादयंस्तामसत्वेनप्रसक्तमनादरंवारयति । नयस्येति ॥ निरीक्षमाणस्यापिदृष्टिर्मायागुणै र्विषयैश्चित्तवृत्तिभिः करणैश्च अण्वपीषदपिनाज्यतेनलिप्यते ॥ किमर्थंनिरीक्षमाणस्यईशेईशनायानियमनाय ॥ ईशनमीट् ॥ संपदादित्वाद्भावेक्विप् ॥ अत्रवैधर्म्येदृष्टांतः ॥ यथा जितक्रोधवेगानामस्माकंदृष्टिरज्यतेनतथेति ॥ अतआत्मनइंद्रियाणिजिगीषुर्जेतुमिच्छुर्मुमुक्षुस्तंकोनमन्येतनाद्रियेत ॥ १४ ॥ ननुसुरामद्याभ्यांमत्तस्यकुतोदृष्टिर्नाज्यतेतत्राह । असदृशोय

इलावृतेतुभगवान्पद्मजाक्षिसमुद्भवः ॥ एकएवभवोदेवोनित्यंवसतिसांगनः ॥ ८ ॥ तत्क्षेत्रेनापरःकश्चित्प्रवेशंवितनोतिच ॥ भवान्याःशापतस्तत्रपुमा न्स्त्रीभवतिस्फुटम् ॥ ९ ॥ भवानीनाथकैःस्त्रीणामसंख्यैर्गणकोटिभिः ॥ संरुध्यमानोदेवेशोदेवंसंकर्षणंभजन् ॥ १० ॥ आत्मनाध्यानयोगेनसर्वभूतहिते च्छया ॥ तांतामसींतुरीयांचमूर्तिंप्रकृतिमात्मनः ॥ ११ ॥ उपधावतेचैकाग्रमनसाभगवानजः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॐनमोभगवतेमहापुरुषायसर्वगुण संख्यानायाऽनंतायाऽव्यक्तायनमइति ॥ १२ ॥ भजेभजन्यारणपादपंकजंभगस्यकृत्स्नस्यपरंपरायणम् ॥ भक्तेष्वलंभावितभूतभावनंभवापहंत्वाभवभा वमीश्वरम् ॥ १३ ॥ नयस्यमायागुणकर्मवृत्तिभिर्निरीक्षितोह्यण्वपिदृष्टिरज्यते ॥ ईशेयथानोजितमन्युरंहसाकस्तंनमन्येतजिगीषुरात्मनः ॥ १४ ॥ अ सदृशोयःप्रतिभातिमाययाक्षीवेवमध्वासवताम्रलोचनः ॥ ननागवध्वोर्हणईशिरेह्रियायत्पादयोःस्पर्शनधर्षितेंद्रियाः ॥ १५ ॥ यमाहुरस्यस्थितिजन्मसं यमंत्रिभिर्विहीनंयमनंतमृषयः ॥ नवेदसिद्धार्थमिवक्वचित्स्थितंभूमंडलंमूर्धसहस्रधामसु ॥ १६ ॥ यस्याऽद्यआसीद्गुणविग्रहोमहान्विज्ञानधिष्ण्योभग वानजःकिल ॥ यत्संवृतोहंत्रिवृतास्वतेजसावैकारिकंतामसमैंद्रियंसृजे ॥ १७ ॥

इति । असतीदृक्दृष्टिर्यस्यतस्य ॥ स्वमाययाक्षीवोमत्तइवयोभयंकरःप्रतिभातिमध्वासवाभ्यामाताम्रलोचनइवचनागवधूविमोहेनतथातथाप्रतिभानंयुक्तामित्याह । नेति ॥ पादार्चनेयस्यपाद योःस्पर्शनेनधर्षितंमोहितम् इंद्रियंमनोयासांताह्रियालज्जयाभुजाद्यर्हणेनईशिरेनशेकुः ॥ कस्तंनमन्येतेतिपूर्वेणान्वयः ॥१५॥ यमाहुरिति ॥ अस्यविश्वस्यस्थितिजन्मसंयमहेतुंयमाहुः ॥ अतएवत्रिभिःस्थित्यादिभिर्विहीनम् ॥ अनंतंचयमाहुः ॥ ऋषयोमंत्राः ॥ छंदोनुरोधेनदीर्घपाठेऋकारोदेवमातालक्ष्मीःसचऋषयश्चेत्यर्थः ॥ अनंतत्वं दर्शयति ॥ मूर्धसहस्रमेवधामानि स्थानानितेषुक्वचिदेकदेशेस्थितंभूमंडलंयोनवेद सिद्धार्थंसर्षपमिव तस्मैनमइतिचतुर्थेनान्वयः ॥ १६॥ तत्रजन्महेतुत्वंमहदादिद्वारेणप्रपंचयति । यस्याद्यइति ॥ यस्यगुणनिमित्तोमहान्नाम विग्रहआसीत् ॥ विज्ञानंसत्त्वंधिष्ण्यमाश्रयोयस्यसः ॥ तस्याचित्तरूपत्वेनसत्त्वप्रधानत्वात्सएवकिलाधिदैवेवासुदेवाभेदविवक्षयाभवान् ॥ अतोब्रह्मायत्संभवः ॥ यस्माद्ब्रह्मणःसंभूतोऽहं रुद्रःत्रिवृतागुणेनस्वतेजसाविभूतिरूपेणाऽहंकारेणवैकारिकंदेवतावर्गम् ॥ तामसंभूतवर्गम् ॥ ऐंद्रियमिंद्रियवर्गंच सृजामि ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

किंचैतेवयंमहदादयः सर्वेयस्यानुग्रहादिदंब्रह्माण्डंसृजाम ॥ कथंभूताः यस्यमहात्मनोवशेस्थिताःसंतोयतःसूत्रेणक्रियाशक्त्यायंत्रिताः प्रोताःशकुंताःपक्षिणइवलौकिकेनसूत्रेणवयामित्युक्तम् ॥ तानाह महानहंकारश्चवैकृतादयःपूर्वोक्तावर्गाश्च ॥ १८ ॥ स्थितिलयहेतुत्वंदर्शयन्प्रणमाति । यदिति ॥ येननिर्मितामेतांमायामेवायंजनोंजसावेद नतुतान्निस्तारणयोगमुपायं कर्हिचिदपिवेदेति ॥ स्थितिहेतुत्वंदर्शयति । कीदृशींकर्माण्येवपर्वाणिग्रंथयस्तानिनयतिप्रापयतीतितथातां ॥ प्रलयहेतुत्वमाह । विलीयतेस्मिन्निति विलयः उदेत्यस्मादित्युदयः विलयश्चोदयश्चात्मास्वरूपंयस्यतस्मैनमः ॥ नन्वत्रत्यश्लोकानुपूर्व्याविष्णुभागवतोक्तश्लोकानुपूर्व्याश्चैकत्वंकथंसिद्ध्यतीतिचेन्न ॥ एतद्ग्रंथस्याऽत्रत्यविष्णुभागवतग्रंथस्याऽपितत्तद्वर्षस्थितदेवादिभिकृतोपासनामंत्राणांतैःकृतस्तोत्राणांचाऽनुवादकत्वादनुवाद्यसमानानुपूर्विकत्वस्यापेक्षितत्वात् ॥ किंचक्वचित्क्वचित्पुराणांतरेश्लोकानुपूर्विकत्वस्यपुराणांतरेदृष्टत्वात् ॥ यथानारदपुराणीयमंत्रखंडस्यतंत्रराजस्थयामलस्थश्लोकानुपूर्विकत्वम् ॥ शिवरहस्यस्थप्रदोषाध्यायस्यब्रह्मोत्तरखंडस्थप्रदोषाध्यायसमानानुपूर्विकत्वं तथाब्रह्मवैवर्तीयप्रकृतिखंडस्यदेवीभागवतनवमस्कंधसमानानुपूर्विकत्वमित्याद्यूह्यम् ॥ तंत्रेष्वपिबहुषुतंत्रांतरसमानानुपूर्विकत्वमुपलभ्यतएवेति ॥१९॥२०॥ अथभद्राश्ववर्षीयसेव्यसेवकभावमुपवर्णयति । तथैवेति ॥ भद्रश्रवानामधर्मपुत्रोवर्षपतिः ॥ तत्कुलस्यापिपतयस्तास्मिन्कुलेजायमानाःपुरुषाः कथंभूताः भद्रस्यभद्रनाम्नोवर्षपतेःसेवकास्तेचेत्यर्थः ॥ २१ ॥ हयमूर्तिभिदाहयग्रीवमूर्तिभेदेनविश्रुतांतांनुतांचहयग्री

एतेवयंयस्यवशेमहात्मनःस्थिताःशकुंताइवसूत्रयंत्रिताः॥महानहंवैकृततामसेंद्रियाःसृजामसर्वेयदनुग्रहादिदम् ॥१८॥ यन्निर्मितांकर्ह्यपिकर्मपर्वणींमायांजनोऽयंगुरुसर्गमोहितः ॥ नवेदनिस्तारणयोगमंजसातस्मैनमस्तेविलयोदयात्मने॥१९॥नारायणउवाच ॥ एवंसभगवान्रुद्रोदेवंसंकर्षणंप्रभुम् ॥ इलावृतमुपासीतदेवीगणसमाहितः॥२०॥तथैवधर्मपुत्रोऽसौनाम्नाभद्रश्रवाइति ॥ तत्कुलस्याऽपिपतयःपुरुषाभद्रसेवकाः ॥२१॥ भद्राश्ववर्षेतांमूर्तिंवासुदेवस्यविश्रुताम् ॥ हयमूर्तिभिदातांतुहयग्रीवपदांकिताम्॥२२॥परमेणसमाध्यन्यवारकेणनियंत्रिताम्॥एवमेवचतांमूर्तिंगृणंतउपयांतिच ॥२३॥ भद्रश्रवसऊचुः ॥ ॐनमोभगवतेधर्मायात्मविशोधनायनमइति ॥ अहोविचित्रंभगवद्विचेष्टितंघ्नंतंजनोयंहिमिषन्नपश्यति॥ध्यायन्नसद्यर्हिविकर्मसेवितुंनिर्हृत्यपुत्रंपितरंजिजीविषुः ॥ २४ ॥ वदंतिविश्वंकवयःस्मनश्वरंपश्यंतिचाऽध्यात्मविदोविपश्चितः॥तथापिमुह्यंतितवाऽजमाययासुविस्मितंकृत्यमजंनतोऽस्मितम् ॥ २५॥ विश्वोद्भवस्थाननिरोधकर्मतेह्यकर्तुरंगीकृतमप्यपावृतः ॥ युक्तंनचित्रंत्वयिकार्यकारणेसर्वात्मनिव्यतिरिक्तेचवस्तुतः ॥ २६ ॥

वपदांकितांहयग्रीवनाम्नीम् ॥ २२ ॥ समाध्यन्यवारकेणेति ॥ समाधेरन्यद्बाह्यव्यापारादि तद्वारकेणतन्निवारकेणपरमेणपूजनेनानिरंतरंसमाधिनैवनियंत्रितांबद्धांविषयीकृतामित्यर्थः ॥ गृणंतःस्तुवंतः ॥ उपयांतिचसिद्धिंमूर्तिंवा ॥२३॥ भद्रश्रवसऊचुरिति ॥ प्राणभृतउपदधातीतिवद्गुणलक्षणतयातद्योगाद्गुणिषुलिंगसमवायन्यायेनबहुवचनम् ॥ अहोविचित्रमिति ॥ अयंजनोमिषन्नपिपश्यन्नपिघ्नंतंहिंसंतंमृत्युंनपश्यतीतिभगवद्विचेष्टितमेव ॥ तच्चविचित्रम् ॥ अदर्शनेलिंगंपुत्रंवापितरंचवृद्धंमृतंनिर्हृत्यदग्ध्वास्वयंतदुभयधनैर्जिजीविषुर्जीवितुमिच्छतीत्यर्थः ॥ किंधर्मार्थंन यर्हियतोऽसत्तुच्छंविषयसुखंसेवितुंविकर्मपापमेवध्यायन् ॥ २४ ॥ नन्वविद्वान्नपश्यतिकिमत्रचित्रंतत्राह । वदंतीति ॥ नश्वरंवदंतिस्मशास्त्रंतः ॥ पश्यंतिचसमाधौहेअज तथापिमुह्यंति एतच्चतवकृत्यंचेष्टितम् सुविस्मितंअतिविचित्रम्॥ अतःशास्त्रादिश्रमंविहायतंत्वाम् अजंनतोस्मि॥२५॥इदमपरंचित्रवत्प्रतीयमानमपित्वयिनचित्रमित्याह। विश्वोद्भवेति॥विश्वोद्भवादिकर्मकर्तुरपिअपगताआवृत्आवरणंयस्मात्तादृशस्यापितेअंगीकृतंवेदेनत्वयितन्नचित्रम् ॥ यतोमाययासर्वात्मनिकार्यस्यकारणेस्रष्टरिकर्मयुक्तम् ॥ वस्तुतः सर्वव्यतिरिक्तेनिरुपाधावनावृतत्वमकर्तृत्वंचयुक्तम् ॥ २६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





परमेश्वरत्वेनस्तुत्वाप्रस्तुतावतारचरितमाह । वेदानिति ॥ तमसादैत्येनातिरस्कृतानपनीतान्॥नाचतुरंगश्चनृतुरंगौतद्रूपोविग्रहोयस्य ॥ कवयेब्रह्मणेतदर्थम् जीवतथोहितायसत्यसंकल्पाय ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ देवीलोकेमणिद्वीपे ॥ २९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥ ॥ त्रयोविंशतिभिःपद्यैर्मत्रहीनैरतःपरम् ॥ वर्षातिगतसंसेव्यसेवकत्वमिहोच्यते ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ असुरः प्रह्लादः ॥ २ ॥ तेजसामापितेजसे ॥ आविराविः अतिप्रकटोभव । वीप्सावा ॥ कर्माशयान्कर्मवासनाः ॥ कर्माश्रयानितिपाठेरागादीन् ॥ रंधयनिर्दह ॥ भूयिष्ठाःभूयः ॥ स्वस्त्यास्त्विति ॥ विश्वस्यस्वस्तिप्रार्थनेखलस्याऽपिभवेत् तच्चसाधुपीडांविनानस्यात् अन्योन्यममंगलंध्यायतांचभूतानामन्योन्यघातनंविनानभवेदित्याशंक्याह । खलः प्रसीदतु क्रौर्यंत्यजतु ॥ भूतानिचमिथः शिवमेवध्यायंतु तेषांमनश्चभद्रमुपशमादिकंभजतु ॥ नोस्माकमापिमतिः अपिशब्दाद्भूतानांचमतिःअहैतुकीनिष्कामासती ॥ ३ ॥ माऽगारेति ॥ नःसंगः क्वापिमास्यात् यदिकथंचित्स्यात्तर्हिअगारादिषुमास्यात् किंतुभगवत्प्रियेष्वेव ॥ अगारादिसंगेदोषमाह । यइति ॥ इंद्रियप्रियोगृहेष्वासक्तः ॥४॥ भगवत्प्रियसंगेगुणमाह । य

वेदान्युगांतेतमसातिरस्कृताव्रसातलाद्योनृतुरंगविग्रहः ॥ प्रत्याददेवैकवयेऽभियाचतेतस्मैनमस्तेवितथेहितायते ॥ २७ ॥ एवंस्तुवंतिदेवेशंहयशीर्षंहरिं चते ॥ भद्रश्रवसनामानोवर्णयंतिचतद्गुणान् ॥२८॥ एषांचरितमेतद्धियः पठेच्छ्रावयेच्चयः ॥ पापकंचुकमुत्सृज्यदेवीलोकंव्रजेच्चसः ॥२९॥ इति श्रीदेवी भागवते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे ऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥छ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ हरिवर्षेचभगवान्नृहरिःपापनाशनः ॥ वर्ततेयोगयुक्तात्माभक्ता नुग्रहकारकः ॥ १ ॥ तस्यतद्दयितंरूपंमहाभागवतोसुरः ॥ पश्यन्भक्तिसमायुक्तःस्तौतितद्गुणतत्त्ववित् ॥ २ ॥ प्रह्लादउवाच ॥ ॐनमोभगवतेनरसिंहा यनमस्तेजस्तेजसेआविराविर्भववज्रदंष्ट्रकर्माशयान्रंधयरंधयतमोग्रसग्रसॐस्वाहा॥अभयंममात्मनिभूयिष्ठाः॥ ॐक्ष्रौं॥स्वस्त्यस्तुविश्वस्यखलःप्रसीदतां ध्यायंतुभूतानिशिवंमिथोधिया ॥ मनश्चभद्रंभजतादधोक्षजेआवेश्यतांनोमतिरप्यहैतुकी ॥ ३ ॥ माऽगारदारात्मजवित्तबंधुषुसंगोयदिस्याद्भगवत्प्रियेषु नः ॥ यःप्राणवृत्त्यापरितुष्टआत्मवान्सिद्ध्यत्यदूरान्नतथेंद्रियप्रियः ॥ ४ ॥ यत्संगलब्धंनिजवीर्यवैभवंतीर्थंमुहुःसंस्पृशतांहिमानसम् ॥ हरत्यजोंतःश्रुति भिर्गतोगजंकोवैनसेवेतमुकुंदविक्रमम्॥५॥यस्याऽस्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचनासर्वैर्गुणैस्तत्रसमासतेसुराः ॥ हरावभक्तस्यकुतोमहद्गुणामनोरथेनासतिधाव तोबहिः ॥ ६ ॥ हरिर्हिसाक्षाद्भगवाञ्छरीरिणामात्माझषाणामिवतोयमीप्सितम् ॥ हित्वामहांस्तंयदिसज्जतेगृहेतदामहत्त्वंवयसादंपतीनाम् ॥ ७ ॥

त्संगेति ॥ येषांभगवत्प्रियाणांसंगाल्लब्धंमुकुंदविक्रमंश्रुतिभिःश्रवणादिभिःसंस्पृशतांसंसेवमानानांपुंसामंतर्गतोऽजोमानसंमलंहरति ॥ कथंभूतंविक्रमम् निजमसाधारणंवीर्यंवैभवंप्रभावाति शयोयस्य ॥ तीर्थंतुगंगादिमुहुःसंस्पृशतामंगजंमलंकेवलंहरति ॥ तान्कोवैनसेवेतेत्यन्वयः ॥ ५ ॥ मानसमलापगमेफलमाह । यस्येति ॥ अकिंचनानिष्कामामनःशुद्धौहरेर्भक्तिर्भवति॥ ततश्चतत्प्रसादेसतिसर्वेदेवाःसर्वैर्गुणैर्धर्मज्ञानादिभिःसहतत्रसम्यगासतेनित्यंवसंति गृहाद्यासक्तस्यतुहरिभक्त्यसंभवात्कुतोमहतांगुणाज्ञानवैराग्यादयोभवंति ॥ असति विषयसुखेमनोरथेन बहिर्धावतः ॥६॥ ननुहरिविमुखस्याऽपिगृहाद्यासक्तस्यलोकेमहत्त्वंदृश्यते ॥ सत्यंतत्तूपहासास्पदमितिसहेतुकमाह । हरिर्हीति ॥ यथाझषाणांमीनानामीप्सितंतोयमेवात्मा ॥ तेनविनाजी वनाभावात् ॥ महानतिप्रसिद्धोऽपिगृहेयदिसज्जतेतदादंपतीनांमिथुनानांशूद्रादिष्वपिप्रसिद्धंवयसैवकेवलंयन्महत्त्वंतदेवतस्यभवति ॥ नतुज्ञानादिनामिथुनेषुतेषुपूज्यमानेषुस्त्रीभ्यःपुंसांमहत्त्व म् ॥ बालमिथुनेभ्यश्चवृद्धामिथुनानांमहत्त्वंयथेत्यर्थः ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यस्मादेवंतस्मात्गृहंहित्वाऽकुतोभयंनृसिंहपादंभजतेत्यसुरानुपादिशति । तस्मादिति ॥ कीदृशंगृहम् रजस्तृष्णा रागोऽभिनिवेशः रजआदीनांमूलंकारणम्॥अतएवसंसृतीनांजन्ममरणादीनाम् चक्रवालंमंडलमविच्छेदोयस्मात् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ सर्वैर्गुणविशेषैःश्रेष्ठवस्तुभिर्विलक्षितोलक्षीकृतआत्मायस्य ॥ आकूतीनांक्रियाणां चित्तीनांज्ञानानां चेतसांसंकल्पाध्यवसायादीनां विशेषाणांतद्विषयाणाम् ॥ षोडशकलाअंशाएकादशेंद्रियपंचविषयलक्षणायस्य ॥ छंदोमयायवेदोक्तकर्मप्राप्याय ॥ अन्नमयायान्नेनोपष्टभ्यत्वात् ॥ अमृतमयायपरमानंदाविष्कारत्वात् ॥ सर्वमयायसर्वविषयत्वात् ॥ सहसेओजसेबलायतद्धेतुत्वात् ॥ त्वत्कामेनैवत्वत्सेवकत्वादहंकृतार्थास्मि ॥ अन्यकामनयातुत्वामर्चयंत्योनपारिपूर्णमनोरथाःस्युरित्याह। स्त्रियइति ॥ स्वतएवहृषीकाणामीश्वरंपतिंसंतंत्वामाराध्य याःस्त्रियोऽन्यंपतिंप्रार्थयंते ॥ पतिकामानांहिकामाराधनंव्रतेषुप्रसिद्धम् ॥ तासामपत्यादीनितेपतयोनपातुंशक्ताः ॥ १२ ॥ अतस्तेपतयएवनभवंतीत्याह । सवाइति ॥ सचैवंभूतःपतिर्भवानेकएवनाऽन्यः ॥ योभवानात्मलाभात्परमन्यदधिकंनमन्यतेइतरथान्याधीनसुखस्यनस्वतंत्रता ॥ स्वतंत्रनानात्वेचमंडले

तस्माद्रजोरागविषादमन्युमानस्पृहाभयदैन्याधिमूलम् ॥ हित्वागृहंसंसृतिचक्रवालंनृसिंहपादंभजतांकुतोभयम् ॥ ८॥ एवंदैत्यपतिःसोऽपिभक्त्याऽनुदिनमीडते ॥ नृहरिंपापमातंगहरिंहृत्पद्मवासिनम् ॥ ९ ॥ केतुमालेचवर्षेहिभगवान्स्मररूपधृक् ॥ आस्तेतद्वर्षनाथानांपूजनीयश्चसर्वदा ॥ १० ॥ एतेनोपासतेस्तोत्रजालेनचरमाब्धिजा ॥ तद्वर्षनाथासततंमहतांमानदायिका ॥११॥ रमोवाच ॥ ॐह्रींह्रींह्रूंॐनमोभगवतेहृषीकेशायसर्वगुणाविशेषैर्विलक्षितात्मनेआकूतीनांचित्तीनांचेतसांविशेषाणांचाधिपतयेषोडशकलायच्छंदोमयायान्नमयायामृतमयायसर्वमयायसहसेओजसेबलायकांतायकामायनमस्तेउभयत्रभूयात् ॥ स्त्रियोव्रतैस्त्वांहृषीकेश्वरंस्वतोह्याराध्यलोकेपतिमाशासतेन्यम् ॥ तासांनतेवैपरिपांत्यपत्यंप्रियंधनायूंषियतोऽस्वतंत्राः ॥ १२ ॥ सवैपतिःस्यादकुतोभयःस्वतःसमंततःपातिभयातुरंजनम् ॥ सएकएवेतरथामिथोभयंनैवात्मलाभादधिमन्यतेपरम् ॥ १३॥ यातस्यतेपादसरोरुहार्हणंनकामयेत्साखिलकामलंपटा ॥ तदेवरासीप्सितमीप्सितोर्चितोयद्भग्नयाञ्चाभगवन्प्रतप्यते ॥ १४ ॥ मत्प्राप्तयेऽजेशसुरासुरादयस्तप्यंतउग्रंतपऐंद्रियेधियः ॥ ऋतेभवत्पादपरायणान्नमांविदंत्यहंत्वद्धृदयायतोऽजित ॥ १५ ॥ सत्वंममाऽप्यच्युतशीर्ष्णिवंदितंकरांबुजंयत्त्वदधायिसात्वताम् ॥ बिभर्षिमांलक्ष्मवरेण्यमाययाकईश्वरस्येहितमूहितुंविभुः ॥ १६ ॥

श्वराणामिवमिथोभयंस्यादित्यर्थः ॥ १३ ॥ किंचनिष्कामभजनेअप्रार्थिताएवसर्वेकामाभवंति सकामभजनेतुकामितमात्रमनित्यंचेत्याह । यातस्यतेइति ॥ यास्त्रीतस्योक्तलक्षणस्यतेपादसरोरुहस्यार्हणंपूजामेवकामयेन्नफलांतरम् साखिलेषुकामेषुलंपटासर्वान्कामान्प्राप्नोतीत्यर्थः ॥ ईप्सितमीप्सितःफलांतरंप्राप्तुमपेक्षितःसन्अर्चितश्चेत्तर्हितदेवतदेकं रासिददासि ॥ किंच यद्यतःफलभोगानंतरंभग्नायाञ्चावंचितोर्थोयस्याःसाप्रतप्यतेदुःखंप्राप्नोति तदेवरासिनतुनित्यम् ॥ १४ ॥ ननुममार्हणेकुतःसर्वकामप्राप्तिस्त्वमेवहिकामार्थिभिःसेव्यसेतत्राह । मत्प्राप्तयेइति ॥ मत्प्राप्तयेब्रह्मादयस्तपस्तप्यंतेकुर्वंति ॥ कथंभूताःऐंद्रियेसुखेधीर्येषाम् ॥ अलुक्समासः ॥ तथापिभगवत्पादपरायणादृतेमांनविंदंतिमत्कटाक्षविलसिताविभूतीर्नलभंतेइत्यर्थः ॥ यतस्त्वय्येवंहृदयंयस्याःसाऽहंत्वत्परतंत्रत्वात्त्वदनुवर्तिनंविलोकयामिनान्यमित्यर्थः ॥ १५ ॥ इदानींत्वत्कृपांप्रार्थयते। सत्वमिति ॥ यद्भजनंविनानकश्चित्पुरुषार्थः ॥ सत्वंत्वदितित्वंयावत्करांबुजंसात्वतांभक्तानांशीर्ष्णिअधायिकृपयान्यस्तंतन्ममापिशीर्ष्णिनिधेहीतिशेषः ॥ कथंभूतंवंदितंसर्वकामवर्षित्वेनसद्भिःस्तुतं ॥ नचमयितवाऽनादरः ॥ यतोहेवरेण्य मांवक्षसिलक्ष्मबिभर्षि ॥ अहोचित्रमेतन्मयिकेवलमादरमात्रं भक्तेषुतुपरमाकृपा ॥ अतईश्वरस्यतवयन्माययाईहितंतत्कोवितर्कयितुंसमर्थः ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥१७॥१८॥ सत्त्वायसत्त्वप्रधानाय॥प्राणायसूत्रात्मने॥उरुस्वनोवेदात्मकोनादोयस्य॥यइदंविश्वंब्राह्मणादिनाम्नाविधिनिषेधालंबनभूतेन वशेअनयत्नियमितवान् सत्वमीश्वरः ॥ तथाचश्रुतिः॥तस्यवाक्तंतिर्नामानीति ॥१९॥ नन्विंद्रादयोवशंनयांतिकुतोऽहंतत्राऽह। यमिति॥मत्सरएवज्वरोयेषांते ॥ यंहित्वाद्विपदचतुष्पदः सरीसृपंजंगमंस्थावरंच यदत्रदृश्यतेतत्किंचिदपिपातुंनशक्ताः ॥ सत्वमेवप्राणरूपेणपालकईश्वरश्चेत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः॥ताअहिंसताहमुक्थमस्म्यहमुक्थमित्यादि॥२०॥अवतारचरित्रमाह । भवानिति॥भवानिमांक्षोणींमियामनुनासहमत्सहितांधृत्वेत्यध्याहारः ॥ ऊर्मिमालिनिप्रलयाणेव ओजसाउरुक्रमतेविचरति ॥ यद्वा पातुमित्यस्याऽनुषंगः ॥ क्षोणींपातुंक्रमतेउत्सहतेइत्यर्थः ॥ यतःअजः ॥ कीदृशीमौषधीनांवीरुधांचनिधिम् आश्रयभूताम् ॥ जगतोयःप्राणगणस्तस्यात्मनेनियंत्रे ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अर्धोनयैकविंशन्या

एवंकामंस्तुवंत्येवलोकबंधुस्वरूपिणम् ॥ प्रजापतिमुखावर्षनाथाःकामस्यसिद्धये ॥ १७ ॥ रम्यकेनामवर्षेचमूर्तिंभगवतःपराम् ॥ मात्स्यांदेवासुरैर्वंद्यां मनुःस्तौतिनिरंतरम् ॥ १८ ॥ मनुरुवाच ॥ ॐनमोमुख्यतमायनमःसत्त्वायप्राणायौजसेबलायमहामत्स्यायनमः ॥ अंतर्बहिश्चाखिललोकपालकैरदृष्टरूपोविचरस्युरुस्वनः ॥ सईश्वरस्त्वंयइदंवशेनयन्नाम्नायथादारुमयींनरःस्त्रियम् ॥ १९॥ यंलोकपालाःकिलमत्सरज्वराहित्वायतंतोपिपृथक्समेत्यच॥ पातुंनशेकुर्द्विपदश्चतुष्पदःसरीसृपंस्थाणुयदत्रदृश्यते ॥ २० ॥ भवान्युगांतार्णवऊर्मिमालिनिक्षोणीमिमामोषधिवीरुधांनिधिम् ॥ मयासहोरुक्रमतेज ओजसातस्मैजगत्प्राणगणात्मनेनमः ॥ २१ ॥ एवंस्तौतिचदेवेशंमनुःपार्थिवसत्तमः ॥ मत्स्यावतारंदेवेशंसंशयच्छेदकारणम् ॥ २२ ॥ ध्यानयोगेनदेवस्यनिर्धूताशेषकल्मषः ॥ आस्तेपरिचरन्भक्त्यामहाभागवतोत्तमः ॥ २३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अ०भुवनकोशवर्णनेनवमोऽध्यायः॥९॥

श्रीनारायणउवाच ॥ हिरण्मयेनामवर्षेभगवान्कूर्मरूपधृक् ॥ आस्तेयोगपतिःसोऽयमर्यम्णापूज्यईड्यते ॥ १ ॥ अर्यमोवाच ॥ ॐनमोभगवतेअकूपारायसर्वसत्त्वगुणविशेषणायनोपलक्षितस्थानायनमोवर्ष्मणेनमोभूम्नेनमोऽवस्थानायनमस्ते ॥ यद्रूपमेतन्निजमाययार्पितमर्थस्वरूपंबहुरूपरूपितम् ॥ संख्यानयस्यास्त्ययथोपलंभनात्तस्मैनमस्तेऽव्यपदेशरूपिणे ॥ २ ॥ जरायुजंस्वेदजमंडजोद्भिदंचराचरंदेवर्षिपितृभूतमैंद्रियम् ॥ द्यौःखंक्षितिःशैलसरित्समुद्रंद्वीपग्रहर्क्षेत्यभिधेयएकः ॥ ३ ॥

प्यन्यवर्षांतरेष्वपि ॥ सेव्यसेवकरूपाणांवर्णनंसम्यगीर्यते ॥ १ ॥ अर्यमापितृगणाधिपतिः ॥ १ ॥ अकूपारायकूर्मायसर्वःसंपूर्णःसत्त्वगुणविशेषणं यस्यनोपलक्षितस्थानंयस्यवारिचरत्वात् ॥ वर्ष्मणेवर्षीयसेकालानवच्छिन्नाय ॥ भूम्नेसर्वगतायअवस्थानाय आधाराय । यद्रूपमिति ॥ निजमाययार्पितंप्रकाशितमेतदर्थस्वरूपंदृश्यंपृथिव्यादियस्यैवंरूपम् यतः पृथक् नास्ति ॥ कथंभूतम् बहुभीरूपैरूपितंनिरूपितं यस्यचसंख्यानास्ति ॥ कुतः अयथामिथ्यैवोपलंभात् ॥ नाहिमरीचिजलमेतावदितिसंख्यातुंशक्यते ॥ अव्यपदेशरूपिणे अनिरुक्तप्रपंचाकाराय ॥ २ ॥ बहुरूपत्वंदर्शयंस्तस्येश्वरादव्यतिरेकमाह । जरायुजमिति ॥ द्वीपग्रहर्क्षमित्यभिधेयस्त्वमैवैकः नत्वद्व्यतिरिक्तोऽस्ति ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्मेत्यादिश्रुतिभिरित्यर्थः ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सप्रपंचतामनूद्यतन्निरासेनप्रणमति । यस्मिन्निति ॥ असंख्येयाअनंताविशेषायेषांतानिनामानिरूपाण्याकृतयश्चयस्यतादृशेयस्मिन्त्वायिकविभिःकपिलादिभिरियंचतुर्विंशत्यादिसंख्याकल्पितासतीययातत्त्वदृशायेनतत्त्वज्ञानेनाऽपनीयते तस्मैतेसांख्यसिद्धांतरूपायनमः ॥ परमार्थरूपायेतिवा ॥४॥५॥६॥७॥ मंत्रैस्तत्त्वेनलिंग्यतेइतितथातस्मै ॥ यज्ञाअयूपाःक्रतवःसयूपास्तद्रूपायअतएवमहांतोऽध्वराअवयवभूतायस्य॥कर्मणाशुक्लायशुद्धाययज्ञानुष्ठात्रे त्रियुगाय कृतयुगेयज्ञाभावात् यद्वाकलियुगेछिन्नत्वात्॥८॥कवयोविद्वांसःविपश्चितोनिपुणाः॥गुणेषुदेहेंद्रियादिषुमथ्नंतिविचिन्वंति ॥ मथ्नाविवेकसाधनेनमनसा ॥ क्रियार्थैःकर्मभिस्तत्फलैश्चगूढम् अप्रकाशमानं दिदृक्षवः ॥ एवंमंथनेईरितःप्रकटितआत्मास्वरूपंयस्यतस्मैनमः ॥ ९ ॥ मंथनमेव दर्शयन्नाह । द्रव्यक्रियेति ॥ द्रव्यं विषयः ॥ क्रियाइंद्रियव्यापारः ॥ हेतुर्देवता ॥ अयनंदेहः ईशःकालः कर्ताअहंकारः ॥ एतैर्मायागुणैः ॥ कार्यैरुपलक्षणैर्वस्तुत्वेनानिरीक्षितोयआत्मातस्मै अन्वीक्षयाविचारेणअंगैर्यमनियमादिभिरतिशयात्मानिश्चयवतीबुद्धिर्येषांतैः ॥ निरस्तामायानिर्मिताआकृतिर्यस्मात्तस्मै ॥ १० ॥ तदेवंनिर्गुणरूपेणनत्वापरमेश्वररूपेणप्रणमति।

यस्मिन्नसंख्येयविशेषनामरूपाकृतौकविभिःकल्पितेयम् ॥ संख्याययातत्त्वदृशापनीयतेतस्मैनमःसांख्यनिदर्शनायते ॥ ४ ॥ एवंस्तुवतिदेवेशमर्यमासहवर्षपैः ॥ गीयतेचाऽपिभजतेसर्वभूतभवंप्रभुम् ॥ ५ ॥ ततोत्तरेषुकुरुषुभगवान्यज्ञपूरुषः ॥ आदिवाराहरूपोऽसौधरण्यापूज्यतेसदा ॥ ६ ॥ संपूज्यविधिवद्देवंतद्भक्त्याऽऽर्द्राऽऽर्द्रहृत्कजा ॥ भूमिःस्तौतिहरिंयज्ञवाराहंदैत्यमर्दनम् ॥ ७ ॥ भूरुवाच ॥ ॐनमोभगवतेमंत्रतत्त्वलिंगाययज्ञक्रतवेमहाध्वरावयवायमहावराहायनमःकर्मशुक्लायत्रियुगायनमस्ते ॥८॥ यस्यस्वरूपंकवयोविपश्चितोगुणेषुदारुष्विवजातवेदसम् ॥ मथ्नंतिमथ्नामनसादिदृक्षवोगूढंक्रियार्थैर्नमईरितात्मने ॥ ९ ॥ द्रव्यक्रियाहेत्वयनेशकर्तृभिर्मायागुणैर्वस्तुभिरीक्षितात्मने ॥ अन्वीक्षयांगातिशयात्मबुद्धिभिर्निरस्तमायाकृतयेनमोऽस्तुते ॥ ॥ १० ॥ करोतिविश्वस्थितिसंयमोदयंयस्येप्सितंनेप्सितुमीक्षितुर्गुणैः ॥ मायायथायोभ्रमतेतदाश्रयंग्राव्णोनमस्तेगुणकर्मसाक्षिणे ॥ ११ ॥ प्रमथ्यदैत्यंप्रतिवारणंमृधेयोमांरसायाजगदादिसूकरः ॥ कृत्वाऽग्रदंष्ट्रेनिरगादुदन्वतःक्रीडन्निवेभःप्रणताऽस्मितंविभुम् ॥ १२ ॥ किंपुरुषेवर्षेऽस्मिन्भगवंतंदाशरथिंचसर्वेशम् ॥ सीतारामंदेवंश्रीहनुमानादिपूरुषंस्तौति ॥ १३ ॥ हनुमानुवाच ॥ ओंनमोभगवतेउत्तमश्लोकायनमइति ॥ आर्यलक्षणशीलव्रतायनमउपशिक्षितात्मनेउपासितलोकायनमः ॥ साधुवादनिकषणायनमोब्रह्मण्यदेवायमहापुरुषायमहाभागायनमइति ॥ यत्तद्विशुद्धानुभवात्ममेकंस्वतेजसाध्वस्तगुणव्यवस्थम् ॥ प्रत्यक्प्रशांतंसुधियोपलंभनंह्यनामरूपंनिरहंप्रपद्ये॥ १४ ॥

करोतीति ॥ यस्येक्षितुर्जीवार्थमीप्सितमत्यंतानिच्छायामीक्षणायोगात् ॥ स्वार्थंतुनेप्सितम् ॥ विश्वस्थित्यादिस्वगुणैर्मायाकरोति ॥ तस्याजडत्वेपिपरमेश्वरसन्निधानात्प्रवृत्तिंदृष्टांतेनाऽऽह । यथाऽयोलोहंग्राव्णोऽयस्कांतादिनिमित्तात् भ्रमति ॥ तदाश्रयंतदभिमुखम् ॥ सद्गुणानांकर्मणांजीवादृष्टानांचसाक्षिणेतस्मैनमः ॥११ ॥ अवतारचरित्रमाह । प्रमथ्येति । योजगतामादिःकारणभूतःसूकरःमांपृथ्वीमग्रदंष्ट्रेदंष्ट्राग्रेकृत्वारसातलादारभ्यउदन्वतःप्रलयार्णवात्इभोगजइवनिरगात् ॥ ततश्चप्रतिगजतुल्यंदैत्यंप्रमथ्य यःक्रीडन्स्थितःतंविभुंप्रणतास्मीत्यन्वयः ॥ १२ ॥ किंपुरुषेइत्यार्याच्छंदः ॥ १३ ॥ आर्याणिलक्षणानिशीलंव्रतंचयस्मिन् ॥ उपशिक्षितात्मनेसंयतचित्ताय उपासितोनुसृतोलोकोयेन ॥ साधुवादः साधुत्वप्रसिद्धिस्तस्यानिकपणायानिकषाश्मवन्निर्धारणस्थानाय परमसीम्नेइत्यर्थः ॥ श्रीरामंपरमार्थरूपेणप्रणमति । यत्तादिति ॥ यदेकंवेदांतेषुप्रसिद्धंतत्त्वंतत्प्रपद्ये ॥ कथंभूतं विशुद्धश्चासावनु

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





भवश्चसएवआत्मास्वरूपंयस्य ॥ विशुद्धत्वेहेतुः प्रशांतम् ॥ तत्रापिहेतुः स्वतेजसास्वरूपप्रकाशेनध्वस्तागुणानांविविधाजाग्रदाद्यवस्थायस्मिन् ॥ अनुभवमात्रत्वेहेतुः प्रत्यग्दृश्यादन्यतत्तत्कुतःअनामरूपम् ॥ १४ ॥ ननुएवंभूतस्याऽपिजीवस्योक्तसर्वविपर्ययोदृश्यतेतत्राऽह । मर्त्येति ॥ विभोर्मर्त्यावतारस्तुरक्षसोरावणस्यवधाय तस्यमनुष्यादन्यतोऽवध्यत्वात् ॥ नकेवलमेतावदेव किंतु इहसंसारेस्त्रीसंगादिकृतंदुःखंदुर्वारमितिमर्त्यानांशिक्षणंचशिक्षार्थमपीत्यर्थः ॥ अन्यथास्वेस्वरूपेरममाणस्येश्वरस्यसीताविरहकृतानिव्यसनानिकुतःस्युः ॥ १५ ॥ विषयासक्त्यभावेनव्यसनानर्हत्वमुपपादयति । नेति॥नवैसभगवांस्त्रिलोक्यांकापिसक्तः ॥ यतआत्मवतांधीराणामात्मासुहृत्तमश्च अतोनस्त्रीकृतंमोहंप्राप्नुयात्॥ नलक्ष्मणंच ॥ देवदूतेनश्रीरामंमंत्रयताविज्ञापितमत्रागतस्त्वयावध्यइतितदैवद्वारिस्थितंलक्ष्मणंदुर्वाससमागतंविज्ञापयितुंप्रविष्टंहंतुमुद्यतोवसिष्ठवाक्यात्तत्याज तच्चनयुज्येतेत्यर्थः ॥ १६ ॥ अतःश्रीरामएवसर्वैःसेव्यइतिवक्तुंनतस्यतोषहेतुःसत्कुलजन्मादि किंतुभक्तिरेवेत्याह । नजन्मेति ॥ महतःपुरुषाज्जन्ममहतःश्रीरामचंद्रस्येतिवा सौभगंसौन्दर्यम् आकृतिर्जातिः॥यद्यस्मात्तैर्जन्मादिभिर्विसृष्टान्

मर्त्यावतारस्त्विहमर्त्यशिक्षणंरक्षोवधायैवनकेवलंविभोः ॥ कुतोऽन्यथास्याद्रमतःस्वआत्मनःसीताकृतानिव्यसनानीश्वरस्य ॥ १५ ॥ नवैसआत्मात्मवतांसुहृत्तमःसक्तस्त्रिलोक्यांभगवान्वासुदेवः ॥ नस्त्रीकृतंकश्मलमश्नुवीतनलक्ष्मणंचापिविहातुमर्हति ॥ १६ ॥ नजन्मनूनंमहतोनसौभगंनवाङ्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः ॥ तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौकसश्चकारसख्येवतलक्ष्मणाग्रजः ॥ १७ ॥ सुरोऽसुरोवाप्यथवानरोनरःसर्वात्मनायःसुकृतज्ञमुत्तमम् ॥ भजेतरामंमनुजाकृतिंहरिंयउत्तराननयत्कोसलान्दिवम् ॥ १८ ॥ नारायणउवाच ॥ एवंकिंपुरुषेवर्षेसत्यसंधंदृढव्रतम् ॥ रामंराजीवपत्राक्षंहनुमान्वानरोत्तमः ॥१९॥ स्तौतिगायतिभक्त्याचसंपूजयतिसर्वशः ॥ यएतच्छृणुयाच्चित्रंरामचंद्रकथानकम् ॥ २० ॥ सर्वपापविशुद्धात्मायातिरामसलोकताम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेदशमोध्यायः ॥ १० ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ भारताख्येचवर्षेऽस्मिन्नहमादिजपूरुषः ॥ तिष्ठामिभवताचैवस्तवनंक्रियतेऽनिशम् ॥१॥नारदउवाच ॥ ॐनमोभगवतेउपशमशीलायोपरतानात्म्यायनमोऽकिंचनवित्तायऋषिऋषभायनरनारायणायपरमहंसपरमगुरवे आत्मारामाधिपतयेनमोनमइति॥कर्तास्यसर्गादिषुयोनबध्यतेनहन्यतेदेहगतोपिदैहिकैः॥द्रष्टुर्नदृग्यस्यगुणैर्विदूष्यतेतस्मैनमोऽसक्तविविक्तसाक्षिणे ॥२॥

त्यक्तानपिनोवनेचरान्वताहोलक्ष्मणस्याग्रजोपिसखित्वेकृतवान् ॥ १७ ॥ तस्मात्सुरोवान्योवायःकोपिश्रीराममेवसर्वप्रकारेणभजेत ॥ सुकृतज्ञम् अल्पीयस्यापिभजनेबहुमानिनम् ॥ उत्तरान्कोसलानयोध्यावासिनः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चद्वात्रिंशत्पद्यैरथयथातथम् ॥ अन्यवर्षेक्रमप्राप्तासेव्यसेवकतोच्यते ॥ १ ॥ अहंनारायणएव आदिजेतिनारदसंबोधनंकर्मधारयोवा ॥ अहंतिष्ठामि ॥ भवताममस्तवनंक्रियतइत्यन्वयः ॥ १ ॥ नारदस्तोत्रमाहॐनमइति मंत्रमिमंजपतिनारदइत्यर्थः ॥ उपरतानात्म्यायनिरहंकारायेत्यर्थः ॥ असक्तश्चासौविविक्तश्चसाक्षीतस्मैनमः ॥ असक्तत्वंदर्शयति ॥ अस्यविश्वस्यसर्गादिषुकर्तापियोनबध्यते अहंकर्तेतिनमन्यते ॥ विविक्तत्वमाह ॥ देहगतोपिदैहिकैःक्षुत्पिपासादिभिर्योनहन्यतेनाभिभूयते ॥ साक्षित्वमाहे । यस्यद्रष्टुरपिसतादृष्टिर्गुणैर्दृश्यैर्नदूष्यतेनाविक्रियते ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

योगकौशलंनिरूपयन्योगंप्रार्थयते इदमितिंत्रिभिः । हेयोगेश्वराहिरण्यगर्भोयेद्योगनैपुणंजगादइदमेवतत्किंजन्मप्रभृतिभक्त्यांतकालेपुमांस्त्वयिमनोधारयेदितियत् ॥ कथंभूतःसन्नुज्झितं दुष्कलेवरंतदभिमानोयेन ॥ ३ ॥ अन्यथातस्यशास्त्राभ्यासादिश्रमोव्यर्थइत्याह । यथेति ॥ ऐहिकामुष्मिककामेषुलंपटोमूर्खः सुतादिषुयोगक्षेमंविचिंतयन्कुत्सितस्यकलेवरस्यात्ययात्मृत्योर्यथाशंकेत तथाविद्वानपिसन्यःशंकेततस्ययत्नःश्रमएव ॥ ४ ॥ यस्माद्विदुषोपीयमेवदशातत्तस्माद्धेप्रभोअधोक्षज त्वमेवनोयोगंविधेहि ॥ कीदृशं त्वयिस्वभावंसहजवासनारूपंयेन

इदंहियोगेश्वरयोगनैपुणंहिरण्यगर्भोभगवाञ्जगादयत् ॥ यदंतकालेत्वयिनिर्गुणेमनोभक्त्यादधीतोज्झितदुष्कलेवरः ॥ ३ ॥ यथैहिकामुष्मिककामलंपटःसुतेषुदारेषुधनेषुचिंतयन् ॥ शंकेतविद्वान्कुकलेवरात्ययाद्यस्तस्ययत्नःश्रमएवकेवलम् ॥ ४ ॥ तन्नःप्रभोत्वंकुकलेवरार्पितांत्वंमाययाहंममतामधोक्षज ॥ भिंद्यामयेनाशुवयंसुदुर्भिदांविधेहियोगंत्वयिनः स्वभावम् ॥ ५ ॥ एवंस्तौतिसदादेवंनारायणमनामयम् ॥ नारदोमुनिशार्दूलःप्रज्ञाताखिलसारदृक् ॥ ६ ॥ अस्मिन्वैभारतेवर्षेसरिच्छैलास्तुसंतिहि ॥ तान्प्रवक्ष्यामिदेवर्षेशृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ ७ ॥ मलयोमंगलप्रस्थोमैनाकश्चत्रिकूटकः ॥ ऋषभःकुटकःकोल्लःसह्योदेवगिरिस्तथा ॥८॥ ऋष्यमूकश्चश्रीशैलोव्यंकटाद्रिर्महेंद्रकः ॥ वारिधारश्चविंध्यश्चभुक्तिमानृक्षपर्वतः॥९॥पारियात्रस्तथाद्रोणश्चित्रकूटगिरिस्तथा ॥ गोवर्धनोरैवतकःककुभोनीलपर्वतः ॥ १० ॥ गौरमुखश्चेंद्रकीलोगिरिःकामगिरिस्तथा ॥ एतेचान्येप्यसंख्यातागिरयोबहुपुण्यदाः ॥ ॥११॥ एतदुत्पन्नसरितःशतशोथसहस्रशः ॥ पानावगाहनस्नानदर्शनोत्कीर्तनैरपि ॥ १२ ॥ नाशयंतिचपापानित्रिविधानिशरीरिणाम्॥ ताम्रपर्णीचंद्रवशाकृतमालावटोदका ॥ १३ ॥ वैहायसीचकावेरीवेणाचैवपयस्विनी ॥ तुंगभद्राकृष्णवेणाशर्करावर्तकातथा॥१४॥गोदावरीभीमरथीनिर्विंध्याचपयोष्णिका ॥ तापीरेवाचसुरसानर्मदाचसरस्वती ॥ १५ ॥ चर्मण्वतीचसिंधुश्चअंधशोणौमहानदौ ॥ ऋषिकुल्यात्रिसामाचवेदस्मृतिमहानदी ॥ १६ ॥ कौशिकीयमुनाचैवमंदाकिनीदृषद्वती ॥ गोमतीसरयूरोधवतीसप्तवतीतथा ॥ १७ ॥ सुषोमाचशतद्रुश्चचंद्रभागामरुद्वृधा ॥ वितस्ताचअसिक्नीचविश्वाचेतिप्रकीर्तिताः ॥ १८ ॥ अस्मिन्वर्षेलब्धजन्मपुरुषैःस्वस्वकर्मभिः ॥ शुक्ललोहितकृष्णाख्यैर्दिव्यमानुषनारकाः ॥ १९ ॥ भवंतिविविधाभोगाःसर्वेषांचनिवासिनाम् ॥ यथावर्णविधानेनाऽपवर्गोभवतिस्फुटम् ॥ २० ॥

योगेनवयंत्वन्मायया नःकुकलेवरेअर्पितामहंममतांशीघ्रंभिंद्यामत्यजेम ॥ सुदुर्भिदामुपायांतरैःसर्वथात्यक्तुमशक्याम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ १५ ॥ वेदस्मृतिश्चमहानदीचेतिद्वंद्वः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ शुक्ललोहितकृष्णाख्यैःसात्त्विकराजसतामसैःस्वकर्मभिर्यथाक्रमंदिव्यमानुषनारकाभोगाभवंतीत्युत्तरेणान्वयः ॥ ॥ १९ ॥ एवमेवसर्वेषांचनिवासिनांकर्मवैचित्र्यादनुभूयमानाविविधाभोगाभवंतीत्यर्थः ॥ यथावर्णेति ॥ यस्यवर्णस्ययद्विधानंमोक्षप्रकारः ॥ संन्यासवानप्रस्थादितदनतिक्रमेणाऽस्मिन्नेवंवषनृणामपवर्गश्चभवति ॥ एतच्चकर्मादिबहुसाधनसंभवाभिप्रायेणोक्तम् ॥ नत्वन्यत्रापवर्गाभावेन तदुपर्यपिबादरायणः संभवादितिदेवानामपिमोक्षस्यसूचितत्वात् ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एतदेवप्राधान्यमस्यवर्षस्य ॥ किंतत् ॥ कार्यस्यसिद्धितः । सार्वविभक्तिकस्तसिः । अनायासेनेश्वरप्रसादरूपकार्यसिद्धिस्वरूपमित्यर्थः ॥ अनेनाहिसर्वलोकापेक्षयाऽयंलोकःप्रधानइति स्वर्गवासिनोपिवदंति ॥२१॥ किंस्वर्गवासिनोपिवदंतितत्राह । अहोइति । अमीषामेभिःउतस्वित्अथवास्वयमेवसाधनंविनैवहरिरेषांप्रसन्नोभूत् ॥ एवंभूतस्यपुण्यस्यदुष्करत्वात् ॥ भारता जिरेभारतांगणे नःकेवलंस्पृहैव यत्रतन्मुकुंदसेवोपयोगिजन्मनृषुलब्धम् ॥ २२ ॥ स्पृहामेवाह किमित्यादिसप्तभिः ॥ दुष्करैः क्रत्वादिभिर्नः फल्गुनातुच्छेनद्युजयेनस्वर्गप्राप्त्याकिं नाकिं चित्फलम् ॥ कुतः यत्रनारायणपादपंकजस्मृतिर्नास्ति ॥ प्रत्युत अतिशयितादिंद्रियोत्सवाद्रागात्प्रमुष्टाऽभूत् ॥ २३ ॥ क्षणमल्पमेवायुर्येषां वरत्वेहेतुः ॥ मर्त्येनापिदेहेनक्षणेनैवकाले नकृतंकर्मसंन्यस्यहरेःपदंसम्यग्यांति ॥ २४ ॥ अतोयत्रवैकुंठकथामृतनद्योनसंति तदाश्रयाःकथापगाश्रयाःमहांतोनृत्याद्युत्सवायेषुतादृशायज्ञेशस्यमखाश्चपूजाः ससुरेशस्यब्रह्मणोपिलो कोनसेव्यताम् ॥२५॥ अमुमुक्षून्नरान्निंदति । प्राप्ताइति ॥ ज्ञानंचतदर्थाःक्रियाश्चतदर्थानिद्रव्याणिचतेषांकलापेनसंभृतांसंपूर्णाम् ॥ अपुनर्भवायमोक्षायवनौकाइववनौकसः ॥ पक्षिणो

एतदेवचवर्षस्यप्राधान्यंकार्यसिद्धितः ॥ वदंतिमुनयोवेदवादिनःस्वर्गवासिनः ॥ २१ ॥ अहोअमीषांकिमकारिशोभनंप्रसन्नएषांस्विदुतस्वयंहरिः ॥ यैर्ज न्मलब्धंनृषुभारताजिरेमुकुंदसेवौपयिकंस्पृहाहिनः॥२२॥किंदुष्करैर्नःक्रतुभिस्तपोव्रतैर्दानादिभिर्वाद्युजयेनफल्गुना ॥ नयत्रनारायणपादपंकजस्मृतिः प्रमुष्टातिशयेंद्रियोत्सवात्॥२३॥कल्पायुषांस्थानजयात्पुनर्भवात्क्षणायुषांभारतभूजयोवरम्॥क्षणेनमर्त्येनकृतंमनस्विनःसंन्यस्यसंयांत्यभयंपदंहरेः ॥ ॥ २४ ॥ नयत्रवैकुंठकथासुधापगानसाधवोभागवतास्तदाश्रयाः ॥ नयत्रयज्ञेशमखामहोत्सवाःसुरेशलोकोपिनवैससेव्यताम् ॥ २५ ॥ प्राप्तानृजातिं त्विहयेचजंतवोज्ञानक्रियाद्रव्यकलापसंभृताम् ॥ नवैयतेरन्नपुनर्भवायतेभूयोवनौकाइवयांतिबंधनम् ॥ २६ ॥ यैःश्रद्धयाबर्हिषिभागशोहविर्निरुप्तमिष्टं विधिमंत्रवस्तुतः ॥ एकःपृथङ्नामभिराहुतोमुदागृह्णातिपूर्णःस्वयमाशिषांप्रभुः ॥ २७ ॥ सत्यंदिशत्यर्थितमर्थितोनृणांनैवार्थदोयत्पुनरर्थितायतः ॥ स्व यंविधत्तेभजतामनिच्छतामिच्छापिधानंनिजपादपल्लवम् ॥ २८ ॥ "यद्यत्रनःस्वर्गसुखावशेषितंस्विष्टस्यपूर्तस्यकृतस्यशोभनम् ॥ तेनाऽजनाभे स्मृतिमज्जन्मनःस्याद्वर्षेहरिर्भजतांशंतनोति॥१॥" नारायणउवाच ॥ एवंस्वर्गगतादेवाःसिद्धाश्चपरमर्षयः ॥ प्रवदंतिचमाहात्म्यंभारतस्यसुशोभनम् ॥ ॥२९॥ जंबुद्वीपस्यचाऽष्टौहिउपद्वीपाःस्मृताःपरे ॥ हयमार्गान्विशोधद्भिःसागरैःपरिकल्पिताः ॥ ३० ॥ स्वर्णप्रस्थश्चंद्रशुक्रआवर्तनरमाणकौ ॥ मंदरो पाख्यहरिणौपांचजन्यस्तथैवच ॥ ३१ ॥

यथालुब्धकात्मुक्ताअपिपुनर्यदियस्मिन्नेववृक्षेप्रसक्ताविहरंतितर्हियथावध्यंतेतद्वत् ॥ २६ ॥ अहोभारतवासिनांभाग्यमित्याहुः । यैरिति ॥ अग्नयेजुष्टंनिर्वपामिइंद्रायजुष्टंनिर्वपामि इत्येवंभा गशोनिरुप्तंपृथक्कृतम् ॥ कथम् विधानप्रकारेणमंत्रेण वस्तुतश्चपुरोडाशादिभेदेनइष्टंदेवतामुद्दिश्यत्यक्तंनिरुप्तंचममेदमितिस्वीकृत्यत्यागानंतरमश्नातीत्यर्थः ॥ पृथक्इंद्रादिनामभिराहुत आहूतः ॥ आशिषांप्रभुःस्वयंपूर्णोपिहरिः ॥ २७ ॥ तत्रापिनिष्कामाःकृतार्थाइत्याहुः । सत्यमिति ॥ प्रार्थितःसन्नर्थितंददातीतिसत्यम् ॥ अथापिपरमार्थदोनभवत्येव ॥ यद्यस्माद्यतो दत्तानंतरंपुनरप्यर्थिताभवति ॥ ननुनार्थितश्चेत्किमपिनदद्यादित्याशंक्याह । अनिच्छतांनिष्कामानांतुइच्छानांपिधानमाच्छादकम् ॥ सर्वकामपरिपूरकंनिजपादपल्लवंस्वयमेवसंपादयति ॥ २८ ॥ २९ ॥ हयमार्गानपहृताश्वमार्गान्विशोधद्भिरन्वेषमाणैः ॥ ३० ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेऽष्टमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चसप्तत्रिंशद्भिःपद्यैरतःपरम् ॥ द्वीपांतरसमाचारोयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ तावतालक्षावि
स्तारेण ॥ १ ॥ जंबुद्वीपेनयथामेरुर्वेष्टितस्तथाद्विगुणविस्तारेणविशालेनप्लक्षद्वीपेनक्षारोदधिर्वेष्टितः ॥ २ ॥ यथापरिखाबाह्योपवनेनवेष्टयतेतद्वत् ॥ तस्मिन्प्लक्षाख्येद्वीपेप्लक्षाख्यःप्लक्षना
मकोवृक्षोजंबुद्वीपस्थजंबूवृक्षप्रमाणेनसमानोन्नाहविस्तारःस्वयंतिष्ठति ॥ कथंभूतोहिरण्मयोहिरण्यकांतिः ॥ द्वीपरूपंनामतद्धारयतिद्वीपाख्याकारः ॥ तन्नाम्नैवहितद्वीपंप्रसिद्धमित्यर्थः ॥
द्वीपशब्दोनपुंसकोपि ॥ ३ ॥ तत्रैवतद्वृक्षाधएवाग्निर्मूर्तिमांस्तिष्ठति ॥ लोकानांदेवीधर्मानुपदिशन्स्वयंचदेव्याराधनंकुर्वन्नित्यनुक्तमपिपूर्वग्रंथानुरोधेनोन्नेयम् ॥ कोसावग्निस्तत्राह । सप्तजि
ह्वइतिस्मृतोयःसोग्निरित्यर्थः ॥ प्रियव्रतात्मजइत्यस्यतुतदुत्तरश्लोकस्थेनेध्मजिह्वइत्यनेनान्वयः ॥ तदुक्तंविष्णुभागवते ॥ यत्राग्निरुपास्तेसप्तजिह्वस्तस्याधिपतिःप्रियव्रतात्मजइध्मजिह्वइति
॥ ४ ॥ सःतद्वीपाधिपतिरिध्मजिह्वःस्वंद्वीपंसप्तधाविभज्यतानिसप्तवर्षाणिसप्तखंडानिस्वपुत्रेभ्योवक्ष्यमाणेभ्योददौ ॥ ५ ॥ भगवंतंपरब्रह्मात्मकमुपागतःप्राप्तइत्यर्थः ॥ ६ ॥ तत्रयान्येव

सिंहलश्चैवलंकेतिउपद्वीपाष्टकंस्मृतम् ॥ जंबुद्वीपस्यमानंहिकीर्तितंविस्तरेणच ॥ ३२ ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिप्लक्षादिद्वीपषट्कम् ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभाग
वतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ जंबुद्वीपोयथाचाऽयंयत्प्रमाणेनकीर्तितः॥तावतासर्वतःक्षारोदधिना
परिवेष्टितः ॥ १ ॥ जंब्वाख्येनयथामेरुस्तथाक्षारोदकेनच ॥ क्षारोदधिस्तुद्विगुणप्लक्षाख्येनोपवेष्टितः ॥ २ ॥ यथैवपरिखाबाह्योपवनेनहिवेष्टयते ॥ प्ल
क्षाख्यश्चस्वयंजंबुप्रमाणोद्वीपरूपधृत् ॥ ३ ॥ हिरण्मयोऽग्निस्तत्रैवतिष्ठतीतिविनिश्चयः ॥ प्रियव्रतात्मजस्तत्रसप्तजिह्वइतिस्मृतः ॥४॥ अग्निस्तदधिप
स्त्विध्मजिह्वःस्वंद्वीपमेवच ॥ विभज्यसप्तवर्षाणिस्वपुत्रेभ्योददौविभुः ॥५॥ स्वयमात्मविदांमान्यांयोगचर्यांसमाश्रितः॥तेनैवचाऽऽत्मयोगेनभगवंतमुपा
गतः ॥ ६ ॥ शिवंचयवसंभद्रंशांतंक्षेमामृतेतथा ॥ अभयंचेतिसप्तैवतद्वर्षाणिसदेक्षताम् ॥७॥ तेषुप्रोक्तानदीःसप्तगिरयःसप्तचैवहि॥अरुणानृम्णांगिरसी
सावित्रीसुप्रभातिका॥८॥ऋतंभरासत्यंभराइतिनद्यःप्रकीर्तिताः ॥ मणिकूटोवज्रकूटइंद्रसेनस्तथैवच ॥९॥ ज्योतिष्मान्वैसुपर्णश्चहिरण्यष्ठीवएवच ॥ मे
घमालइतिख्याताःप्लक्षद्वीपस्यपर्वताः॥१०॥नदीनांजलमात्रेणदर्शनस्पर्शनादिभिः॥निर्धूताशेषरजसोनिस्तमस्काःप्रजास्तथा॥११॥हंसश्चैवपतंगश्चऊ
र्ध्वायनइतीवच ॥ सत्यांगसंज्ञाश्चत्वारोवर्णाःप्लक्षस्यद्वीपके ॥ १२ ॥ सहस्रायुःप्रमाणाश्चविविधोपमदर्शनाः ॥ स्वर्गद्वारंत्रयीविद्याविधिनाकैयजंतिते
॥ १३ ॥ प्रत्नस्यविष्णोरूपंचसत्यर्तस्यचब्रह्मणः ॥ अमृतस्यचमृत्योश्चसूर्यमात्मानमीमहि ॥ १४ ॥

तत्पुत्रनामानितान्येवतद्वर्षनामानिबोध्यानीत्याभिप्रायेणवर्षनामान्याह । शिवमिति ॥ भद्रंसुभद्रम् ॥ क्षेमामृतेक्षेमममृतंचेत्यर्थः ॥ ७ ॥ नदीरित्यत्रवाछंदसीतिपूर्वसवर्णदीर्घः ॥ सुप्रभा
तिकासुप्रभाता ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ हंसादयोब्राह्मणादिस्थानीयावर्णाः ॥ १२ ॥ मानसोत्तरस्यमंडलाकारत्वोक्तेः एतेप्लक्षादिपंचद्वीपेषुवर्षाद्रयास्तिर्यग्रेखाकाराउभयतोब्धिस्पृ
शंतइतिगम्यते ॥ अन्यथासप्तभिः सप्तवर्षविभागासंभवात् ॥ वैष्णवे वर्षाणांपूर्वादिक्रमोक्तेश्च ॥ स्वर्गद्वारंतन्नामकम् त्रयीविद्याविधानेनवैदिकमार्गेण ॥ १३ ॥ प्रत्नस्येति ॥ प्रत्नस्य
पुराणस्यपुरुषस्यविष्णोर्यद्रूपंतंसूर्यमीमहिशरणंव्रजेम ॥ कथंभूतंसत्यादीनामात्मभूतमधिष्ठातारम् ॥ तत्रसत्यमनुष्ठीयमानोधर्मःऋतंप्रतीयमानोधर्मः ॥ ब्रह्मणस्तद्बोधकस्यधर्मस्या
मृतस्यशुभफलस्यमृत्योरशुभफलस्य ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १५ ॥ औत्पत्तिकीस्वाभाविकी ॥ १६ ॥ अस्मात्प्लक्षद्वीपात्तद्द्विगुणविस्तारः ॥ १७ ॥ समानेनशाल्मलीद्वीपसमानेनमानेनशाल्मलीवृक्षः प्लक्षसमानमानः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ श्रुतधरादयश्चत्वारोब्राह्मणादिस्थानीयावर्णाः ॥ २५ ॥ स्वगोभिः स्वरश्मिभिः ॥ अन्नमितिशेषः ॥ कृष्णशुक्लयोःपक्षयोःपितृदेवेभ्योविभजन्नित्य

प्लक्षादिषुचसर्वेषुपंचद्वीपेषुनारद ॥ आयुरिंद्रियमोजश्चबलंबुद्धिःसहोऽपिच॥१५॥विक्रमःसर्वलोकानांसिद्धिरौत्पत्तिकीसदा ॥ प्लक्षद्वीपात्परंचेक्षुरसोदः सरितांपतिः ॥ १६ ॥ प्लक्षद्वीपंसमग्रंचपरिवार्यावतिष्ठते ॥ शाल्मलाख्यस्ततोद्वीपश्चाऽस्माद्द्विगुणविस्तरः॥१७॥समानेनसुरोदेनसिंधुनापरिवेष्टितः ॥ यत्रवैशाल्मलीवृक्षःप्लक्षायामःप्रकीर्तितः ॥ १८ ॥ स्थानंतत्पक्षिराजस्यगरुडस्यमहात्मनः ॥ तस्यद्वीपस्यनाथोहियज्ञबाहुःप्रियव्रतात् ॥ १९ ॥ जातः सएवसप्तभ्यःस्वपुत्रेभ्योददौधराम् ॥ तद्वर्षाणांचनामानिकथितानिनिबोधत ॥२०॥ सुरोचनंसौमनस्यंरमणंदेववर्षकम् ॥ पारिभद्रंतथाचाऽप्यायनंवि ज्ञातनामकम् ॥२१॥ तेषुवर्षाद्रयःसप्तसप्तैवसरितःस्मृताः ॥ सरसःशतशृंगश्चवामदेवश्चकंदकः ॥२२॥ कुमुदःपुष्पवर्षश्चसहस्रश्रुतिरेवच॥एतेचपर्वताः सप्तनदीनामानिचोच्यते ॥ २३ ॥ अनुमतिःसिनीवालीसरस्वतीकुहूस्तथा ॥ रजनीचैवनंदाचराकेतिपरिकीर्तिताः ॥२४॥ तद्वर्षपुरुषाःसर्वेचातुर्वर्ण्यस माह्वयाः ॥ श्रुतधरोवीर्यधरोवसुंधरइषुंधरः ॥ २५ ॥ भगवंतंवेदमयंयजंतेसोममीश्वरम् ॥ स्वगोभिःपितृदेवेभ्योविभजन्कृष्णशुक्लयोः ॥२६॥ सर्वासां चप्रजानांचराजासोमःप्रसीदतु ॥ एवंसुरोदाद्द्विगुणःस्वमानेनप्रकीर्तितः ॥ २७ ॥ घृतोदेनावृतःसोऽयंकुशद्वीपःप्रकाशते ॥ यस्मिन्नास्तेकुशस्तंबोद्वीपा ख्याकारणोज्वलन्॥२८॥स्वशष्परोचिषाकाष्ठाभासयन्परितिष्ठते ॥ हिरण्यरेतास्तद्वीपपतिःप्रियव्रतःस्वराट् ॥ २९ ॥ स्वपुत्रेभ्यश्चसप्तभ्यस्तंद्वीपंसप्त धाऽभजत् ॥ वसुश्चवसुदानश्चतथादृढरुचिःपरः ॥ ३० ॥ नाभिगुप्तस्तुत्यव्रतौविविक्तभामदेवकौ ॥ तेषांवर्षेषुसप्तैवसीमागिरिवराःस्मृताः ॥३१॥ नद्यः सप्तैवसंतीहतन्नामानिनिबोधत ॥ चक्रस्तथाचतुःशृंगःकपिलश्चित्रकूटकः ॥ ३२ ॥ देवानीकश्चोर्ध्वरोमाद्रविणःसप्तपर्वताः ॥ रसकुल्यामधुकुल्यामित्र विंदातथैवच ॥ ३३ ॥ श्रुतविंदादेवगर्भाघृतच्युन्मंदमालिके ॥ यत्पयोभिःकुशद्वीपवासिनःसर्वएवते ॥ ३४ ॥ कुशलःकोविदश्चैवाऽप्यभियुक्तस्त थवच ॥ कुलकश्चेतिसंज्ञाभिश्चतुर्वर्णाःप्रकीर्तिताः ॥ ३५ ॥ जातवेदसरूपंतंदेवंकर्मजकौशलैः ॥ यजंतेदेववर्याभाःसर्वेसर्वविदोजनाः ॥ ३६ ॥

न्वयः ॥ २६ ॥ सुरोदादनंतरमित्यर्थः ॥ द्विगुणः पूर्वद्वीपापेक्षयासुरोदाद्द्विगुणइतिवा ॥ २७ ॥ कुशस्तंबःदेवेनकृतः ॥ २८ ॥ स्वशष्परोचिषास्वशष्पाणिस्वकोमलशिखास्तेषांरो चिषा ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ कुशलादयश्चत्वारोब्राह्मणादिस्थानीयावर्णाः ॥ ३५ ॥ कर्मजकौशलैःकुशलकर्मभिः ॥ ३६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

हेजातवेदः ॥ त्वंसाक्षात्परस्यब्रह्मणोहव्यवाडसि अतोदेवानांयज्ञेनपरमेश्वरमेवयज ॥ अंगानांनाम्नादत्तमंगिनेसमर्पयेत्यर्थः ॥ ३७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चषट्त्रिंशन्महापद्मैरनंतरम् ॥ शिष्टद्वीपसमाचारोयथावदनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ शिष्टद्वीपेति ॥ १ ॥ द्विगुणःपूर्वद्वीपापेक्षया ॥ २ ॥ नामनिर्वर्तकः ॥ स्वनाम्नाद्वीपनामोत्पादकः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ पुरुषादयोब्राह्मणादिस्थानीयावर्णाः ॥ ११ ॥ १२ ॥ आपइति ॥ हेआपःपुरुषवीर्याईश्वराल्लब्धवीर्याः स्थ भवथ

परस्यब्रह्मणःसाक्षाज्जातवेदोऽसिहव्यवाट् ॥ देवानांपुरुषांगानांयज्ञेनपुरुषंयज ॥३७॥ एवंयजंतेज्वलनंसर्वेद्वीपाधिवासिनः ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥७॥ नारदउवाच ॥ शिष्टद्वीपप्रमाणंचवदसर्वार्थदर्शन ॥ येनविज्ञातमात्रेणपरानंदमयोभवेत् ॥ १ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ कुशद्वीपस्यपरितोघृतोदावरणंमहत् ॥ ततोबहिः क्रौंचद्वीपोद्विगुणःस्यात्स्वमानतः॥२॥क्षीरोदेनावृतोभातियस्मिंन्क्रौंचाद्रिरस्ति च ॥ नामनिर्वर्तकःसोऽयंद्वीपस्यपरिवर्तते ॥ ३ ॥ योऽसौगुहस्यशक्त्याचभिन्नकुक्षिःपुराऽभवत् ॥ क्षीरोदेनासिच्यमानोवरुणेनचरक्षितः ॥ ४ ॥ घृतपृष्ठोनामयस्यविभातिकिलनायकः ॥ प्रियव्रतात्मजःश्रीमान्सर्वलोकनमस्कृतः ॥ ५ ॥ स्वद्वीपंतुविभज्यैवसप्तधास्वात्मजान्ददौ ॥ पुत्रनामसुवर्षेषुवर्षपान्सन्निवेशयन् ॥ ६ ॥ स्वयंभगवतस्तस्यशरणंसंजगामह ॥ आमोमधुरुहश्चैवमेघपृष्ठःसुधामकः ॥७॥ भ्राजिष्ठोलोहितार्णश्चवनस्पतिरितीवच ॥ नगानद्यश्चसप्तैवविख्याताभुविसर्वतः ॥ ८ ॥ शुक्लोवैवर्धमानश्चभोजनश्चोपबर्हणः ॥ नंदश्चनंदनःसर्वतोभद्रइतिकीर्तिताः ॥ ९ ॥ अभयाअमृतौघाचार्यकातीर्थवतीतिच ॥ वृत्तिरूपवतीशुक्लापवित्रवतिकातथा ॥ १० ॥ एतासामुदकंपुण्यंचातुर्वर्ण्यैनपीयते ॥ पुरुषऋषभौतद्वद्रविणाख्यश्चदेवकः ॥११॥ एतेचतुर्वर्णजाताःपुरुषानिवसंतिहि ॥ तत्रत्याःपुरुषाआपोमयंदेवमपांपतिम् ॥ १२ ॥ पूर्णेनांजलिनाभक्त्यायजंतेविविधाक्रियाः ॥ आपःपुरुषवीर्याःस्थपुनंतीर्भूर्भुवःस्वरः ॥ १३ ॥ तानःपुनीताऽमीवघ्नीःस्पृशतामात्मनाभुवः ॥ इतिमंत्रजपांतेचस्तुवंतिविविधैःस्तवैः ॥ १४ ॥ एवंपरस्तात्क्षीरोदात्परितश्चोपवेशितः ॥ द्वात्रिंशल्लक्षसंख्याकयोजनायाममाश्रितः ॥ १५ ॥ स्वमानेनचद्वीपोऽयंदधिमंडोदकेनच॥शाकद्वीपोविशिष्टोयंयस्मिञ्छाकोमहीरुहः ॥१६॥ स्वक्षेत्रव्यपदेशस्यकारणंसहिनारद ॥ प्रियव्रतोधिपस्तस्यमेधातिथिरितिस्मृतः ॥१७॥ विभज्यसप्तवर्षाणिपुत्रनामानितेषुच ॥ सप्तपुत्रान्निजान्स्थाप्यस्वयंयोगगतिंगतः ॥१८॥ पुरोजवोमनःपूर्वजवोऽथपवमानकः ॥ धूम्रानीकश्चित्ररेफोबहुरूपोऽथविश्वधृक् ॥१९॥ मर्यादागिरयःसप्तनद्यःसप्तैवकीर्तिताः ॥ ईशानउरुशृंगोऽथबलभद्रःशतकेसरः ॥ २० ॥ सहस्रस्रोतकोदेवपालोऽप्यंतेमहाशनः ॥ एतेऽद्रयःसप्तचोक्ताःसरिन्नामानिसप्तच ॥ २१ ॥

॥ अतएवभूर्भुवःस्वः त्रैलोक्यंपुनंत्यः ताभवंत्योनोऽस्माकंस्पृशतांस्पर्शनंकुर्वतांभुवःशरीराणिपुनंतु ॥ यतः आत्मनःस्वरूपेणैव अमीवघ्नीः पापहंत्र्यः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ आत्मकेतुभिःप्राणादिवृत्तिभिः ॥ २५ ॥ २६ ॥ शाकद्वीपद्विसंगुणः शाकद्वीपद्विगुणपरिमाणइत्यर्थः ॥ २७ ॥ ज्वलनशिखावदमलानांकनकपत्राणामयुता नामयुतानियस्मिंस्तत् ॥ २८ ॥ २९ ॥ तस्मिन्द्वीपेएकएवपर्वतःखंडद्वयंचेत्याह । तद्वीपेएकएवेति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ देवाहोरात्रतः देवानामहोरात्राभ्यामुत्तरदक्षिणायनाभ्यामि त्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ब्रह्मरूपिणंकमलासनमूर्तिम् ॥ ३५ ॥ सकर्मकेनब्रह्मसालोक्यादिसाधनेन कर्ममयंकर्मफलरूपम् ॥ ब्रह्मलिंग्यतेयस्मात् ॥ ३६ ॥ एकस्मिन्नेवपरमेश्वरेंतोनि ष्ठायस्यतत् ॥ अतएववस्तुतोऽद्वैतम् ॥ इ० दे० भा० तिलकेऽष्टमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ त्रिंशद्भिरेकेनोनैस्तुपद्यैरथततःपरम् ॥ लोकालोकगिरेःसम्यग्व्यवस्थास्पष्टमुच्य ते ॥ १ ॥ ततःपरस्तादिति । ततः शुद्धोदात्परस्तात् ॥ लोकःसूर्याद्यालोकवान्देशः ॥ अलोकस्तद्रहितस्तयोरंतरालेमध्ये तयोर्विभागार्थंयःकल्पितः सलोकालोकाचलोऽस्तीत्यर्थः ॥

अनघाप्रथमायुर्दाउभयस्पृष्टिरेवच॥अपराजितापंचपदीसहस्रश्रुतिरेवच ॥२२॥ ततोनिजधृतिश्चोक्ताःसप्तनद्योमहोज्ज्वलाः॥तद्वर्षपुरुषाःसर्वेसत्यव्रतक्र तुव्रतौ ॥ २३ ॥ दानव्रतानुव्रतौचचतुर्वर्णाउदीरिताः ॥ भगवंतंप्राणवायुंप्राणायामेनसंयुताः ॥२४॥ यजंतिनिर्धूतरजस्तमसःपरमंहरिम् ॥ अंतःप्रविश्य भूतानियोबिभर्त्यात्मकेतुभिः॥२५॥अंतर्यामीश्वरःसाक्षात्पातुनोयद्वशेइदम् ॥ परस्तादधिमंडोदात्ततस्तुबहुविस्तरः॥२६॥पुष्करद्वीपनामाऽयंशाकद्वी पद्विसंगुणः॥स्वसमानेनस्वादूदकेनाऽयंपरिवेष्टितः॥२७॥यत्राऽस्तेपुष्करंभ्राजदग्निचूडानिभानिच॥पत्राणिविंशदानीहस्वर्णपत्रायुतायुतम् ॥ २८॥ श्री मद्भगवतश्चेदमासनंपरमेष्ठिनः ॥ कल्पितंलोकगुरुणासर्वलोकसिसृक्षया॥२९॥तद्वीपएकएवाऽयंमानसोत्तरनामकः ॥ अर्वाचीनपराचीनवर्षयोरवधिर्गि रिः॥३०॥ उच्छ्रयायामयोःसंख्याऽयुतयोजनसंमिता ॥ यत्रदिक्षुचचत्वारिचतसृषुपुराणिह ॥ ३१ ॥ इंद्रादिलोकपालानांयदुपर्यर्कनिर्गमः॥मेरुंप्रदक्षि णीकुर्वन्भानुःपर्येतियत्रहि॥३२॥संवत्सरात्मकंचक्रंदेवाहोरात्रतोभ्रमन् ॥ प्रैयव्रतोधिपोवीतिहोत्रःस्वात्मजकद्वयम् ॥ ३३ ॥ वर्षद्वयेपरिस्थाप्यवर्षनाम धरंक्रमात् ॥ रमणोधातकिश्चैवतत्तद्वर्षपतीउभौ ॥३४॥ कृताःस्वयंपूर्वजवद्भगवद्भक्तितत्पराः ॥ तद्वर्षपुरुषाब्रह्मरूपिणंपरमेश्वरम्॥३५॥सकर्मकेनयोगे नयजंतिपरिशीलिताः ॥ यत्तत्कर्ममयंलिंगंब्रह्मलिंगंजनोऽर्चयेत् ॥ ३६ ॥ एकांतमद्वयंशांतंतस्मैभगवतेनमः ॥ इतिश्रीदे०भा० महापुराणेऽष्टमस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ ॥ ततःपरस्तादचलोलोकालोकेतिनामकः ॥ अंतरालेचलोकालोकयोर्यःपरिकल्पितः ॥ १ ॥ यावदस्तिचदेवर्षेह्यंतरंमानसोत्तरात् ॥ सुमेरोस्तावतीशुद्धाकांचनीभूमिरस्तिहि ॥ २ ॥

॥ १ ॥ ततःपरस्तादित्युक्तंतदेतत्कियतांतरेणेत्यपेक्षायांतदंतर्वर्तिनींभूमिमाह।यावदस्तीति ॥ यावन्मानसोत्तरमेर्वोरंतरंसार्धसप्तलक्षोत्तरसार्धकोटिपरिमितम् ॥ तावतीभूः शुद्धोदात्परतो ऽस्ति ॥ तत्रचप्राणिनोऽपिसंति ॥ कांचनीभूरित्यत्रपूर्वोक्तभूमेरन्येतिशेषः ॥ एवंचततःपूर्वोक्तभूमेरन्याकांचनीभूमिरस्तीत्यर्थः ॥ साचैकोनचत्वारिंशल्लक्षोत्तरकोट्यष्टकपरिमिताज्ञेया अर्धपुष्करद्वीपेनसहशुद्धोदःषण्णवतिलक्षाणि ॥ एवंहिसतिमेरुलोकालोकयोरंतरंसार्धद्वादशकोटिपरिमितंवक्ष्यमाणमुपपन्नंभवति ॥ एतदेवशैवतंत्रेषूक्तम् ॥ कोटिद्वयंत्रिपंचाशल्लक्षा णिचततःपरम् ॥ पंचाशच्चसहस्राणिसप्तद्वीपाःसमागताः॥ततोहेममयीभूमिर्दशकोटिर्वरानने॥देवानांक्रीडनार्थायलोकालोकस्ततःपरमिति॥अत्रचदशकोटित्वंपूर्वोक्तभूम्यासहद्रष्टव्यम् ॥२॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सर्वप्राणिविवर्जितेतिदेवव्यतिरेकेणेतिविज्ञेयम् ॥ देवानांक्रीडनार्थायेत्युक्तत्वात् ॥ प्रत्युदीयते प्रत्युपलभ्यते सुवर्णमेवभवतीत्यर्थः ॥३॥ यतःसुवर्णमेवभवतिनतुतृणौषधिधान्यादिकंततो ऽन्यप्राणिनिवासयोग्यस्थानाभावादन्यप्राणिनोदेवादिव्यतिरिक्तानसंतीत्याह।अतइति ॥४॥ लोकालोकइतिव्याख्यायदत्रपरिकल्पिता॥पूर्वंतस्यकारणंशृण्वित्याह।लोकालोकांतरेचेति ॥ लोकवद्देशलोकाभाववद्देशयोरंतरेयतोऽस्यपर्वतस्यस्थितिर्वर्तेततइत्यर्थः ॥ केनैतस्यस्थितिःकल्पितातत्राह । ईश्वरेणेति॥अंतगःलोकत्रयस्यांतेपरितोमर्यादारूपोविहितः ॥ ५ ॥ तन्निमित्तमाह। यस्मात्प्रतिबंधकात्सूर्यआदिर्येषाम् ध्रुवोंतोयेषाम् ॥ आतन्वानाःसमंतात्प्रकाशयंतःपरतोगंतुंनशक्नुवंतितावदुन्नहनमुत्सेधस्तदनुरूपआयामश्चविस्तारोयस्य ॥ ध्रुवादप्युच्छ्रितत्वात्त्रिलोकीमर्यादाभूतइत्यर्थः॥६॥७॥एतावानितिसंस्थाकारःकथितः॥कविभिर्मयावा ॥ लोकालोकाचलस्यपरिमाणमाह । सत्वेति॥सोऽयंतुलोकालोकाचलश्चतुर्थांशसार्धद्वादशकोट्योमेरोरेकतइतिद्रष्टव्यम्॥८॥तस्योपरिपर्वतोपरि ॥९॥१०॥ तेषांचेति॥तेषांदिग्गजानाम्॥स्वविभूतीनांस्वांशभूतानांमहेंद्रादीनांचविविधवीर्योपबृंहणायसकललोकस्वस्तयेचभगवांस्तस्मिन्नास्ते

दर्पणोदरतुल्यासासर्वप्राणिविवर्जिता ॥ यस्यांपदार्थःप्रहितोनकिंचिप्रत्युदीयते ॥ ३ ॥ अतःसर्वप्राणिसंवरहितासाचनारद ॥ लोकालोकइतिव्याख्या यदत्रपरिकल्पिता ॥ ४ ॥ लोकालोकांतरेचास्यवर्ततेसर्वदास्थितिः ॥ ईश्वरेणसलोकानांत्रयाणामंतगःकृतः ॥५॥ सूर्यादीनांध्रुवांतानांरश्मयोयद्वशादिह ॥ अर्वाचीनाश्चत्रींल्लोकानातन्वानाःकदापिहि ॥ ६ ॥ पराचीनत्वभाजोहिनभवंतिचनारद ॥ तावदुन्नहनायामःपर्वतेंद्रोमहोदयः ॥ ७ ॥ एतावाँल्लोकविन्यासोयंसंस्थामानसक्षणैः ॥ कविभिःसतुपंचाशत्कोटिभिर्गणितस्यच ॥ ८ ॥ भूगोलस्यचतुर्थांशोलोकालोकाचलोमुने ॥ तस्योपरिचतुर्दिक्षु ब्रह्मणाचात्मयोनिना ॥ ९ ॥ निवेशितादिग्गजायेतन्नामानिनिबोधत॥ऋषभःपुष्पचूडोऽथवामनोऽथाऽपराजितः ॥१०॥ एतेसमस्तलोकस्यस्थितिहेतवईरिताः ॥ तेषांचस्वविभूतीनांबहुवीर्योपबृंहणम्॥११॥विशुद्धसत्त्वंचैश्वर्यवर्धयन्भगवान्हरिः ॥ आस्तेसिद्ध्यष्टकोपेतोविष्वक्सेनादिसंवृतः ॥ १२ ॥ निजायुधैःपरिवृतोभुजदंडैःसमंततः ॥ आस्तेसकललोकस्यस्वस्तयेपरमेश्वरः॥१३॥आकल्पमेवंवेषंसगतोविष्णुःसनातनः॥स्वमायारचितस्याऽस्यगोपीथायात्मसाधनः ॥ १४ ॥ योंतर्विस्तारएतेनह्यलोकपरिमाणकम्॥व्याख्यातंयद्बहिर्लोकालोकाचलइतीरणात् ॥१५॥ ततःपरस्ताद्योगेशगतिंशुद्धांवदंतिहि ॥ अंडमध्यगतःसूर्योद्यावाभूम्योर्यदंतरम् ॥१६॥ सूर्याडगोलयोर्मध्येकोट्यःस्युःपंचविंशतिः॥मृतेंडएषएतस्मिञ्जातोमार्तंडशब्दभाक् ॥ १७ ॥

इत्यन्वयः ॥ किंकुर्वन्आत्मनःस्वस्ययद्विशुद्धंसत्त्वंतत्संधारयमाणःआविष्कुर्वन् ॥ कीदृशंसत्त्वंधर्मज्ञानादीन्यष्टमहासिद्ध्यश्चोपलक्षणंयस्यतत् ॥ दोर्दंडैरुपलक्षितःसमहाविभूतेः परमैश्वर्यस्यपतित्वादेकयैवमूर्त्याआत्मनोयोगमाययारचितस्याऽस्यलोकस्यगोपीथायरक्षणायैषभगवानेवंभूतआकल्पवेषंगतइतिसार्धत्रिश्लोकानामर्थः ॥ इयंव्याख्यामूलंचकिंचिद्विषमम् ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ योंतरिति ॥ योऽयमंतरविस्तारआख्यातः ॥ एतेनालोकपरिमाणंमेरोरेकतःसार्धद्वादशकोट्योव्याख्यातंभवति ॥ यद्यस्मादेतस्माद्बहिर्लोकालोकाचलोभवतीतिकथितंतस्मादित्यर्थः ॥ १५ ॥ ततःपरस्ताल्लोकालोकाचलात् ॥ अलोकाद्वापरस्तात्तुविशुद्धांद्विजपुत्रानयनेऽर्जुनस्यश्रीकृष्णेनदर्शितां विस्तरेणोक्तंब्रह्मांडमानंसर्वतोऽपिनिरूपयति । अंडमध्यगतइति ॥ अंडमध्यगतः किंतन्मध्यंतदाह ॥ द्यावाभूम्योःपूर्वोत्तरकपालयोर्यदंतरंमध्यंस्थानम् ॥ १६ ॥ सर्वतःपंचविंशतिकोट्यःअंडमध्यावस्थानेकारणंतन्नामनिर्वचनेनाह । मृतेअचेतने एषवैराजरूपेणयस्मात्प्रविष्टस्ततइत्यर्थः ॥ १७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





किंचसूर्येणैवविभज्यंतेदिशः ॥ खमंतरिक्षम् ॥ भिदाअन्योऽपिविभागः ॥ स्वर्गापवर्गौभोगमोक्षदेशौ ॥ रसौकांसिअतलादीनि ॥ १८ ॥ उपासनार्थमाह ॥ देवेति ॥ देवादीनांसूर्य आत्मादृगीश्वरोनेत्राधिष्ठाताच ॥ १९ ॥ भूमंडलसन्निवेशकथनमुपसंहरति। एतावानिति ॥ विस्तारेणपंचाशत्कोट्यः ॥ उत्सेधेनपंचविंशतिः ॥२०॥ एतत्परिमाणंदिवोद्युलोकस्येत्य त्रदृष्टांतोद्विदलयोर्मध्येयथैकस्यमानेनापरस्यमानमुपदिश्यतेतद्वत् ॥ २१ ॥ तयोर्द्विदलयोर्मध्येयदंतरम् ॥ किंतत्राह । तदुभयसंधितंताभ्यामुभयतःसंलग्नम् ॥ यन्मध्यगोयस्यांतरिक्षस्य मध्यगइत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ उत्तरायणंगत्वाकिमितिगतिमांद्यंकरोतितेनचकिंभवतितदाह ॥ आरोहणस्थानमुच्चस्थानम् ॥ पर्वतमारोहतियस्तस्यगतिमांद्यंप्रसिद्धमेव तथाऽत्रापिउ त्तरायणकालेआरोहणस्थानेनगच्छतितेनचाहोदैर्घ्यंदिवसदैर्घ्यंभवतीत्यर्थः ॥ एवमेवाऽवरोहस्थानेननीचमार्गेणगमनेगतिशैघ्र्यंदिवसाल्पत्वंचभवतीत्याह । दक्षिणायनेति ॥ २४ ॥ एव

हिरण्यगर्भइतियद्धिरण्यांडसमुद्भवः ॥ सूर्येणहिविभज्यंतेदिशःखंद्यौर्महीभिदा ॥ १८॥ स्वर्गापवर्गौनरकारसौकांसिचसर्वशः ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याणांस रीसृपसवीरुधाम् ॥१९॥ सर्वजीवनिकायानांसूर्यआत्मादृगीश्वरः ॥ एतावान्भूमंडलस्यसन्निवेशउदाहृतः ॥२०॥ एतेनहिदिवोमानंवर्णयंतिचताद्धियः ॥ द्विदलानांचनिष्पावादीनांचदलयोर्यथा ॥ २१ ॥ अंतरेणतयोरंतरिक्षंतदुभयसंधितम् ॥ यन्मध्यगश्चभगवान्भानुर्वैतपतांवरः ॥ २२ ॥ आतपेनत्रि लोकींचप्रतपत्येवभासयन् ॥ उत्तरायणमासाद्यगतिमांद्यंवितन्वते ॥ २३ ॥ आरोहणस्थानमसौगत्वाहोदैर्घ्यमाचरेत् ॥ दक्षिणायनमासाद्यगतिशैघ्र्यंवि तन्वते ॥ २४ ॥ अवरोहस्थानमसौगच्छन्ह्रस्वंदिनंचरेत् ॥ विषुवत्संज्ञमासाद्यगतिसाम्यंवितन्वते ॥२५॥ समस्थानमथाऽऽसाद्यदिनसाम्यंकरोतिच ॥ यदाचमेषतुलयोःसंचरेद्धिदिवाकरः ॥ २६ ॥ समानानित्वहोरात्राण्यातनोतित्रयीमयः ॥ वृषादिपंचसुयदाराशिष्वर्कोविरोचते ॥ २७ ॥ तदाहानि चवर्धंतेरात्रयोऽपिह्रसंतिच ॥ वृश्चिकादिषुसूर्योहियदासंचरतेरविः ॥ २८ ॥ तदाऽपीमान्यहोरात्राणिभवंतिविपर्ययात् ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेम हापुराणेऽष्टमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिभानोर्गमनमुत्तमम् ॥ शीघ्रमंदादिगतिभिस्त्रिविधंग मनंरवेः ॥ १ ॥ सर्वग्रहाणांत्रीण्येवस्थानानिसुरसत्तम ॥ स्थानंजारद्भवंमध्यंतथैरावतमुत्तरम् ॥ २ ॥ वैश्वानरंदक्षिणतोनिर्दिष्टमितितत्वतः ॥ अश्विनी कृत्तिकायाम्यानागवीथीतिशब्दिता ॥३॥ रोहिण्यार्द्रामृगशिरोगजवीथ्यभिधीयते ॥ पुष्याश्लेषातथादित्यावीथीचैरावतीस्मृता ॥ ४ ॥ एतास्तुवीथ यस्तिस्रउत्तरोमार्गउच्यते ॥ तथाद्वेचाऽपिफल्गुन्यौमघाचैवार्षभीमता ॥ ५ ॥

मेवसाम्यमार्गेणगच्छतःसाम्यंभवतीत्याह । विषुवदिति ॥ २५ ॥ तदेवप्रपंचयति । यदेति ॥ २६ ॥ समानानीति ॥ अत्यंतवैषम्याभावात्समानानीत्युक्तम् ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ पंचाधिकैश्चचत्वारिंशत्पद्यैरथविस्तरात् ॥ रवेर्गमनमांद्यादिप्रकारःसम्यगुच्यते ॥ १ ॥ १ ॥ मध्यंगति स्थानंजारद्भवसंज्ञकमुत्तरमैरावतंदक्षिणं वैश्वानरमित्यर्थः ॥ तत्रैकैकंस्थानंवीथीत्रयात्मकमस्तीत्याह । अश्विनीति ॥ याम्याभरणी ॥ आदित्याअदितिदेवताकापुनर्वसुः ॥ तथाचत्रिभि स्त्रिभिरश्विन्यादिनक्षत्रैर्नागवीथीगजवीथीऐरावतीचेत्युत्तरमार्गेणवीथीत्रयंसंपन्नम् ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ पूर्वाफाल्गुनीउत्तराफाल्गुनीमघाचेतिनक्षत्रत्रयात्मिकाआर्षभीवीथी ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तथाचत्रिभिस्त्रिभिः पूर्वाफाल्गुन्यादिनक्षत्रैरार्षभीगोवीथी ॥ जारद्गवीचेतिवैषुवतेमध्यममार्गेवीथीत्रयंसंपन्नम् ॥ ६ ॥ मूलेति ॥ मूलनक्षत्रम् ॥ आषाढापूर्वाषाढेत्यर्थः ॥ ७ ॥ मार्गी मृगवीथीत्यर्थः ॥ तथाचत्रिभिस्त्रिभिर्मूलादिनक्षत्रैरजवीथीमृगवीथीवैश्वानरीचेतिदक्षिणमार्गेवीथीत्रयंसंपन्नम् ॥ ८ ॥ उत्तरायणमिति ॥ युगाक्षांतर्निबद्धयोःपाशयोरित्यन्वयः ॥ वायुवद्धयोरेतादृशयोः पाशयोर्यत्कर्षणंतदेवरोहणंस्मृतमित्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ ध्रुवेणयुगाक्षकोटिनिबद्धवायुपाशद्वयाकर्षणेरथस्यारोहणंतदाभ्यंतरमंडलप्रवेशोगतिमांद्यंचेतिदिनवृद्धीरात्रिह्रासश्च ॥ दक्षिणायनेचपाशप्रेरणादवरोहणेवहिर्मंडलप्रवेशोगतिशैघ्र्यंचेत्यहोरात्रयोर्विपर्ययः ॥ वैषुवतेतुपाशसाम्यात्समावस्थानेमध्यममंडलप्रवेशेगतिसाम्यंचेत्यहोरात्रयोःसाम्यमिति ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ एतदेवस्पष्टयति।आकृष्येतेइति ॥ तौवायुपाशावित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ तृतीयकोटिस्त्वर्थादुक्तेतिवोध्यम् ॥ अथोदयास्तादिकंवक्तुमु

हस्तश्चित्रातथास्वातीगोवीथीतितुशब्दिता ॥ ज्येष्ठाविशाखानुराधावीथीजारद्गवीमता ॥ ६ ॥ एतास्तुवीथयस्तिस्रोमध्यमोमार्गउच्यते ॥ मूलाषाढोत्तराषाढाअजवीथ्यभिशब्दिता ॥ ७ ॥ श्रवणंचधनिष्ठाचमार्गीशतभिषक्तथा ॥ वैश्वानरीभाद्रपदेरेवतीचैवकीर्तिता ॥ ८ ॥ एतास्तुवीथयस्तिस्रोदक्षिणोमार्गउच्यते ॥ उत्तरायणमासाद्ययुगाक्षांतर्निबद्धयोः ॥ ९ ॥ कर्षणंपाशयोर्वायुबद्धयोरोहणंस्मृतम् ॥ तदाभ्यंतरगान्मंडलाद्रथस्यगतेर्भवेत् ॥१० ॥ मांद्यंदिवसवृद्धिश्चजायतेसुरसत्तम ॥ रात्रिह्रासश्चभवतिसौम्यायनक्रमोह्ययम् ॥ ११ ॥ दक्षिणायनकेपाशेप्रेरणादवरोहणम् ॥ वहिर्मंडलवेशेनगतिशैघ्र्यंतदाभवेत् ॥ १२ ॥ तदादिनाल्पतारात्रिवृद्धिश्चपरिकीर्तिता ॥ वैषुवेपाशसाम्यात्तुसमावस्थानतोरवेः ॥ १३ ॥ मध्यमंडलवेशश्चसाम्यंरात्रिदिनादिके ॥ आकृष्येतेयदातौतुध्रुवेणसमधिष्ठितौ ॥ १४ ॥ तदाभ्यंतरतःसूर्योभ्रमतेमंडलानिच ॥ ध्रुवेणमुच्यमानेनपुनाराश्मियुगेनतु ॥ १५ ॥ तथैववाह्यतःसूर्योभ्रमतेमंडलानिच ॥ तस्मिन्मेरौपूर्वभागेपुर्यैंद्रीदेवधानिका ॥ १६ ॥ दक्षिणेवैसंयमनीनामयाम्यामहापुरी ॥ पश्चान्निम्लोचनीनामवारुणीवैमहापुरी ॥ १७ ॥ तदुत्तरेपुरीसौम्याप्रोक्तानामविभावरी ॥ ऐंद्रपुर्यांरवेःप्रोक्तउदयोब्रह्मवादिभिः ॥ १८ ॥ संयमन्यांचमध्याह्नोनिम्लोचन्यांविमीलनम् ॥ विभावर्यांनिशीथःस्यात्तिग्मांशोःसुरपूजितः ॥ १९ ॥ प्रवृत्तेश्चनिमितानिभूतानांतानिसर्वशः ॥ मेरोश्चतुर्दिशंभानोःकीर्तितानिमयामुने ॥ ॥ २० ॥ मेरुस्थानांसदामध्यंगतएवविभातिहि ॥ सव्यंगच्छन्दक्षिणेनकरोतिस्वर्णपर्वतम् ॥ २१ ॥

पक्रमते । तस्मिन्मेरावीति ॥ पूर्वमेरावष्टपुर्योभिहितास्तास्वैंद्रीपुरीपूर्वभागेवर्ततइत्यर्थः ॥ एवमुत्तरत्र ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ प्रवृत्तेश्चनिमित्तानिगमनानीतिशेषः ॥ चतुर्दिशमित्यनेनयेमेरोर्दक्षिणेदेशेतेषामैंद्रीमारभ्यपूर्वादयः ॥ येपश्चिमेदेशेतेषांयाम्यामारभ्य येउत्तरेतेषांवारुणीमारभ्य येपूर्वेतेषांसौम्यामारभ्येत्युक्तम् ॥ २० ॥ सव्यंगच्छन्निति ॥ नक्षत्राभिमुखतयास्वगत्यामेरुंवामतःकुर्वन्नपिप्रदक्षिणावर्तप्रवहाख्यवायुभ्राम्यमाणज्योतिश्चक्रवशात्प्रत्यहंदक्षिणंकरोति ॥ अतश्चक्रगतिवशादतिदूरतोभूसंलग्नस्येवदर्शनमुदयः ॥ आकाशमारूढस्येवदर्शनंमध्याह्नः ॥ भूमिप्रविष्टस्येवदर्शनमस्तमयः ॥ ततोतीवदूरगमनेनिशीथइतिसमुद्रतीरस्थदृष्ट्याच ॥ अद्भ्योवाएषप्रातरुदेत्यपःसायंप्रविशतीतिश्रुतिव्यवहारोनवस्तुतः ॥ इदंसर्वंमनसिनिधायाह । दक्षिणेनकरोतीत्यादिना ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ शक्रादीनामिति ॥ यदाशक्रपुर्यांतिष्ठतितदापुरत्रयम्।इद्रपुरंयमपुरंसौम्यपुरंविकर्णौईशानकोणवह्निकोणौस्पृशति ॥ अन्यपुरेषुविकर्णेषुचस्पर्शाभावोमेरुणाव्यवधानात् ॥ एवंविकर्णस्थोवह्निपुरनिष्ठोयदाभवतितदात्रिकोणान्वह्निकोणनिर्ऋतिकोणेशानकोणान्द्वेपुरेइंद्रपुरंयमपुरंचस्पृशतिनान्यदुक्तयुक्तेरितिभावः ॥ एवंयाम्यादिपुरस्थस्यापिबोध्यम् ॥ २५ ॥ २६ ॥ यदाचैंद्र्याःसकाशात्पंचदशघटिकाभिर्याम्यांप्रचलतेतदायोजनानांसपादकोटिद्वयंसार्धद्वादशलक्षाणि पंचनेत्रसहस्रकंनेत्रशब्देनद्वौ अंकानांवामतोगतिः ॥ पंचविंशतिसहस्रंगच्छतीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ नक्षत्रैःसहेति ॥ यद्यपिवस्तुतःसूर्यस्यापिनक्षत्रैःसहैवोदयास्तमयौतथापितस्यतत्साहित्यादर्शनात्सोमादीनामिवतत्साहित्यमुक्तम् ॥ ३१ ॥ त्रयीमयइत्याद्युपासनार्थम् ॥ प्रवहाख्यात्समीरणाद्वायोरित्यर्थः ॥ ३२ ॥ कालचक्रंसंवत्सरात्मकम् ॥ द्वादशमासाअरायस्य ॥ त्रीणिचातुर्मास्यानिनाभयोयस्य

उदयास्तमयेचैवसर्वकालंतुसन्मुखे ॥ दिशास्वशेषासुतथासुरर्षेविदिशासुच ॥२२॥ यैर्यत्रदृश्यतेभास्वान्सतेषामुदयःस्मृतः ॥ तिरोभावंचयत्रैतितत्रैवास्तमनंरवेः ॥ २३ ॥ नैवास्तमनमर्कस्यनोदयःसर्वदासतः ॥ उदयास्तमनाख्यंहिदर्शनादर्शनंरवेः ॥२४॥ शक्रादीनांपुरेतिष्ठन्स्पृशत्येषपुरत्रयम् ॥ विकर्णौद्वौविकर्णस्थस्त्रीन्कोणान्द्वेपुरेतथा॥२५॥सर्वेषांद्वीपवर्षाणांमेरुरुत्तरतःस्थितः ॥ यैर्यत्रदृश्यतेभानुःसैवप्राचीतिचोच्यते॥२६॥तद्वामभागतोमेरुर्वर्ततेतिविनिर्णयः ॥ यदिचैंद्र्याःप्रचलतेघटिकादशपंचभिः॥२७॥याम्यांतदायोजनानांसपादंकोटियुग्मकम्॥सार्धद्वादशलक्षाणिपंचनेत्रसहस्रकम् ॥२८॥ प्रक्रामतिसहस्रांशुःकालमार्गप्रदर्शकः ॥ एवंततोवारुणींचसौम्यामैंद्रींसहस्रदृक् ॥ २९ ॥ पर्येतिकालचक्रात्माद्युमणिःकालबुद्धये॥तथाचाऽन्येग्रहाःसोमादयोयेदिविचारिणः ॥ ३०॥ नक्षत्रैःसहचोद्यंतिसहचास्तंव्रजंतिते ॥ एवंमुहूर्तेनरथोभानोरष्टशताधिकम् ॥३१॥ योजनानांचतुस्त्रिंशल्लक्षाणिभ्रमतिप्रभुः ॥ त्रयीमयश्चतुर्दिक्षुपुरीषुचसमीरणात् ॥३२॥ प्रवहाख्यात्सदाकालचक्रंपर्येतिभानुमान् ॥ यस्यचक्रंरथस्यैकंद्वादशारंत्रिनाभिकम् ॥३३॥षण्नेमिकवयस्तंचवत्सरात्मिकमूचिरे ॥ मेरुमूर्धनितस्याऽक्षोमानसोत्तरपर्वते॥३४॥कृतेतरविभागोयःप्रोतंतत्ररथांगकम्॥तैलकारकयंत्रेणचक्रसाम्यंपरिभ्रमन् ॥३५॥मानसोत्तरनाम्नीहगिरौपर्येतिचांशुमान् ॥ तस्मिन्नक्षेकृतंमूलंद्वितीयोऽक्षोध्रुवेकृतः ॥ ३६ ॥ तुर्यमानेनतैलस्ययंत्राक्षवदितीरितः ॥ कृतोपरितनोभागःसूर्यस्यजगतांपतेः॥३७॥रथनीडस्तुषट्त्रिंशल्लक्षयोजनमायतः ॥ तत्तुर्यभागतःसोऽयंपरिणाहेनकीर्तितः॥३८॥तावानर्करथस्याऽत्रयुगस्तस्मिन्हयाःशुभाः ॥ सप्तच्छंदोभिधानाश्चसूरसूतेनयोजिताः॥३९॥वहंतिदेवमादित्यंलोकानांसुखहेतवे ॥ पुरस्तात्सवितुःसूतोऽरुणःपश्चान्नियोजितः॥४०॥

॥ ३३ ॥ षड्ऋतवोनेमयोयस्य मानसोत्तरपर्वतेलक्षार्धादुपरिवायुवद्धभूमाविति द्रष्टव्यम् ॥ चक्रंवातावदुच्छ्रितमितिमंतव्यम् ॥ अन्यथायुतमात्रोच्छ्रायत्वान्मानसोत्तरस्यमेरोश्चतुरशीत्युच्छ्रायत्वादक्षस्यसाम्यानुपपत्तेः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ तस्मिन्नक्षेचक्रप्रांतेकृतंमूलंनिबद्धपूर्वभागःप्रथमोऽक्षोमेरुमानसोत्तरायतःसार्धसप्तलक्षाधिकसार्धकोटिप्रमाणः ॥ तस्यतुर्यमानेनसार्धसप्तत्रिंशत्सहस्राधिकैकोनचत्वारिंशल्लक्षमानेनध्रुवेकृतोवायुपाशेनानिबद्धउपरिभागोयस्यतादृशःकृतः ॥ ३६ ॥ उपरितनोभागइतिविभक्त्यलोपश्छांदसः ॥ ३७ ॥ नीडउपवेशस्थानम् ॥ परिणाहोदैर्घ्यम् ॥ ३८ ॥ युगइत्यस्यपरिणाहेनकीर्तितइत्यनेनान्वयः ॥ सप्तच्छंदोभिधानाः गायत्र्यादिच्छंदोनामानः ॥ सूरसूतेनारुणेनसारथिना ॥ ३९ ॥ पुरस्तात्सवितुरिति ॥ पुरस्तात्स्थितोऽपिपश्चात्प्रत्यङ्मुखआस्ते ॥ यद्वा यत्सूर्यस्यपुरस्तात्तस्यैवपश्चिमत्वात्पश्चादित्युक्तम् ॥ ४० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४१ ॥ सूक्तवाक्यैर्वेदमंत्रैःसुभाषितैर्वा ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ एकैकशश्चतुर्दश द्वंद्वशः सप्त गुणाःसंतोमासिमास्युपासतइत्यन्वयः ॥ ४४ ॥ गव्यूतिःक्रोशयुगं सगव्यूत्युत्तरंयथाभवति तथा ॥ ४५ ॥ इतिश्रीदे०भा०तिलकेऽष्टमस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ सप्तत्रिंशच्छ्लोकवर्यैःसोमादीनामथोत्तरम् ॥ स्थानंगत्यनुसारेणविविधंफलमुच्यते ॥ १ ॥ गमादिकंगमनस्थानादिकमित्यर्थः ॥ शुभाशुभनिदर्शनात्तयोःप्राप्तिस्तद्गत्यनुसृतासोमादिगत्यनुरोधेननृणांभवतीत्यर्थः ॥ १ ॥ ननुमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वतआदित्यस्यराशीनामभिमुखमप्रदक्षिणंगमनमुपवर्णितंनतद्बुद्ध्यारूढंदृष्टांतेनविनाभवतीत्याशंकांश्रोतुर्मनसिजायमानांनिराकरोति । यथाकुलालेति ॥ कीटादिनामितिदीर्घाभावआर्षः ॥ २ ॥ ३ ॥४॥ चक्रवशात्स्वतश्चगतिद्वयमविरुद्ध

सौत्येकर्मणिसंयुक्तोवर्ततेगरुडाग्रजः ॥ तथैववालखिल्याख्याऋषयोगुष्ठपर्वकाः ॥ ४१ ॥ प्रमाणेनपरिख्याताःषष्टिसाहस्रसंख्यकाः॥स्तुवंतिपुरतःसूर्यं सूक्तवाक्यैःसुशोभनैः ॥ ४२ ॥ तथाचाऽन्येचऋषयोगंधर्वाअप्सरोरगाः ॥ ग्रामण्योयातुधानाश्चदेवाःसर्वेपरेश्वरम् ॥ ४३ ॥ एकैकशःसप्तसप्तमासिमासिविरोचनम् ॥ सार्धलक्षोत्तरंकोटिनवकंभूमिमंडलम् ॥ ४४ ॥ द्विसहस्रंयोजनानांसगव्यूत्युत्तरंक्षणात् ॥ पर्येतिदेवदेवेशोविश्वव्यापीनिरंतरम् ॥ ४५॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ छ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अथातःश्रूयतांचित्रंसोमादीनांगमादिकम् ॥ तद्गत्यनुसृतानृणांशुभाशुभनिदर्शना ॥ १ ॥ यथाकुलालचक्रेणभ्रमताभ्रमतांसह ॥ तदाश्रयाणांचगतिरन्याकीटादिनांभवेत् ॥ २ ॥ एवंहिराशिवृंदेनकालचक्रेणतेनच ॥ मेरुंधुरंचसरतांप्रादक्षिण्येनसर्वदा ॥ ३ ॥ ग्रहाणांभानुमुख्यानांगतिरन्येवदृश्यते ॥ नक्षत्रांतरगामित्वाद्भांतरेगमनंतथा ॥ ४ ॥ गतिद्वयंचाऽविरुद्धंसर्वत्रैषाविनिर्णयः॥सएवभगवानादिपुरुषोलोकभावनः ॥ ५ ॥ नारायणोऽखिलाधारोलोकानांस्वस्तयेभ्रमन् ॥ कर्मशुद्धिनिमित्तंतुआत्मानंवैत्रयीमयम् ॥६॥ कविभिश्चैववेदेनविजिज्ञास्योऽर्कधाऽभवत् ॥ षट्सुक्रमेणऋतुषुवसंतादिषुचस्वयम् ॥ ७ ॥ यथोपजोषमृतुजान्गुणान्वैविदधातिच ॥ तमेनंपुरुषाःसर्वेत्रय्याचविद्ययासदा ॥ ८ ॥ वर्णाश्रमाचारपथातथाऽम्नातैश्चकर्मभिः ॥ उच्चावचैःश्रद्धयाचयोगानांचवितानकैः ॥ ९ ॥ अंजसाचयजंतेयेश्रेयोविंदंतितेमतम् ॥ अथैषआत्मालोकानांद्यावाभूम्यंतरेणच ॥ १० ॥ कालचक्रगतोभुंक्तेमासान्द्वादशराशिभिः ॥ संवत्सरस्यावयवान्मासःपक्षद्वयंदिवा ॥ ११ ॥ नक्तंचेतिसपादर्क्षद्वयमित्युपदिश्यते ॥ यावतायष्ठमंशंसभुंजीतऋतुरुच्यते ॥ १२ ॥ संवत्सरस्याऽवयवःकविभिश्चोपवर्णितः ॥ यावतायेनचाऽऽकाशवीथ्यांप्रचरतेरविः ॥ १३ ॥

मितिपरिहारार्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ विजिज्ञास्योवितर्क्यमाणः ॥ अर्कधाद्वादशधा ॥ ७ ॥ यथोपजोषंयथाकर्मभोगम् ॥ ऋतुजान्गुणान्शीतोष्णादीन् ॥ ८ ॥ ९ ॥ मतमभीष्टम् ॥ सएषएवस्वगत्यामासादिव्यवहारकारणमित्याह । अथैषइति ॥ एषलोकानामात्माद्यावापृथिव्योरंतरेणमध्येयदंतरिक्षंतस्यमध्येयत्कालचक्रंतद्गतमेषादिद्वादशराशिभिः संज्ञायेषांद्वादशमासानांतान्मासान्भुंक्तेइत्यर्थः ॥ चैत्रादिसंज्ञास्तुचांद्रमासानाम् ॥ १० ॥ संवत्सरस्यावयवांनितिपूर्वेणान्वयः ॥ मासमाह । पक्षद्वयंमासइति ॥ इदंचांद्रेणमानेन ॥ सपादंऋक्षद्वयंसौरेण ॥ दिवानक्तंचाऽहोरात्रमितिपित्र्येण ॥ ११ ॥ षष्ठमंशंराशिद्वयंसऋतुरित्यर्थः ॥ १२ ॥ यावताधेनऋतुत्रयात्मकेन ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तंकालमयनमितिप्राक्तनावर्णयंति । अथयावदिति॥सहद्यावापृथिव्योर्मंडलाभ्यामितिशेषः ॥ ताभ्यांमंडलाभ्यांसहगच्छतिससूर्यः ॥ १४ ॥ यंकालंकात्स्न्येनषड्ऋतुभिर्द्वादशराशिभि र्वाभुंजीततंकालंवत्सरंविदुरित्यर्थः ॥ सचसंवत्सरःपंचधाभिन्नइत्याह । संवत्सरंपरिवत्सरमिति ॥ १५ ॥ भानोरिति ॥ अयंभावः ॥ यदाशुक्लप्रतिपदिसंक्रांतिस्तदासौरचांद्रयोर्मासयो र्युगपदुपक्रमोभवतिससंवत्सरः ॥ ततःसौरमानेनवर्षेषट्दिनानिवर्धंते चांद्रमानेनषट्हसंतीतिद्वादशदिनव्यवधानादुभयोरग्रपश्चाद्भावोभवति ॥ एवंपंचवर्षाणिगच्छंतितन्मध्येद्वौमलमासौ भवतः ॥ ततःपुनःसंवत्सरोभवति ॥ तदेवमतांतरभेदेनसंवत्सरादिपंचकंभानोर्मांद्यशैघ्र्यसमगतिभिर्भवतीति ॥ १६ ॥ सोमादीनामपिस्थानंकार्यंचाह । एवंचंद्रइति ॥ अर्करश्मिभ्योमं डलरूपेभ्यः ॥ १७ ॥ मित्रस्यसूर्यस्यसंवत्सरभुक्तिंपक्षाभ्यांभुंक्तेमित्रस्यमासभुक्तिंसपादभाभ्याम् ॥ भशब्दऋक्षवाची ॥ सपाददिनद्वयेनभुंक्ते ॥ मित्रस्यपक्षभुजिंपक्षभुक्तिंदिवसभुक्तिं

तंप्राक्तनावर्णयंतिअयनंमुनिपूजिताः ॥ अथयावन्नभोमंडलंसहप्रतिगच्छति ॥ १४ ॥ कात्स्न्येनसहभुंजीतकालंतंवत्सरंविदुः ॥ संवत्सरंपरिवत्सर मिडावत्सरमेवच ॥१५॥ अनुवत्सरमिद्वत्सरमितिपंचकमीरितम् ॥ भानोर्मांद्यशैघ्र्यसमगतिभिःकालवित्तमैः ॥ १६ ॥ एवंभानोर्गतिःप्रोक्ताचंद्रादीनांनि बोधत ॥ एवंचंद्रोर्करश्मिभ्योलक्षयोजनमूर्ध्वतः ॥ १७ ॥ उपलभ्यमानोमित्रस्यसंवत्सरभुजिंचसः ॥ पक्षाभ्यांचौषधीनाथोभुंक्तेमासभुजिंचसः ॥ ॥ १८ ॥ सपादभाभ्यांदिवसभुक्तिंपक्षभुजिंचरेत् ॥ एवंशीघ्रगतिःसोमोभुंक्तेनूनंभचक्रकम् ॥ १९ ॥ पूर्यमाणकलाभिश्चाऽमराणांप्रीतिमावहन् ॥ क्षीय माणकलाभिश्चपितॄणांचित्तरंजकः ॥ २० ॥ अहोरात्राणितन्वानःपूर्वापरसुघस्रकैः ॥ सर्वजीवनिकायस्यप्राणोजीवःसएवहि ॥ २१ ॥ भुंक्तेचैकैकनक्ष त्रंमुहूर्तांत्रिंशताविभुः ॥ सएवषोडशकलःपुरुषोऽनादिरुत्तमः ॥ २२ ॥ मनोमयोप्यन्नमयोमृतधामासुधाकरः ॥ देवपितृमनुष्यादिसरीसृपसवीरुधाम् ॥ ॥ २३ ॥ प्राणाप्यायनशीलत्वात्ससर्वमयउच्यते ॥ ततोभचक्रंभ्रमतियोजनानांत्रिलक्षतः ॥ २४ ॥ मेरुप्रदक्षिणेनैवयोजितंचेश्वरेणतु ॥ अष्टाविंशतिसं ख्यानिगणितानिसहाऽभिजित् ॥ २५ ॥ ततःशुक्रोद्विलक्षेणयोजनानामथोपरि ॥ पुरःपश्चात्सहैवासावर्कस्यपरिवर्तते॥२६॥शीघ्रमंदसमानाभिर्गतिभि र्विचरन्विभुः ॥ लोकानामनुकूलोऽयंप्रायःप्रोक्तःशुभावहः ॥ २७ ॥ वृष्टिविष्टंभशमनोभार्गवःसर्वदामुने ॥ शुक्राद्बुधःसमाख्यातोयोजनानांद्विलक्षतः ॥ ॥ २८ ॥ शीघ्रमंदसमानाभिर्गतिभिःशुक्रवत्सदा ॥ यदाऽर्काद्व्यतिरिच्येतसौम्यःप्रायेणतत्रतु ॥ २९ ॥ अतिवाताभ्रपातानावृष्ट्यादिभयसूचकः ॥ उप रिष्टात्ततोभौमोयोजनानांद्विलक्षतः ॥ ३० ॥

चरेत् ॥ एकदिनेनैवभुनक्तीत्यर्थः ॥ एवंद्रुततरगमनश्चंद्रमाभवतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ पूर्वापरसुघस्रकैःपूर्वपक्षापरपक्षाभ्यामहोरात्राणिवितन्वानइत्यर्थः ॥ सर्वेषांजीवनिवहा नांप्राणोन्नमयत्वादमृतमयत्वाच्च ॥ अतएवजीवनहेतुत्वाज्जीवश्च ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रदक्षिणेनैवनतुतेषांपृथगन्यागतिरस्तीत्यर्थः ॥ योजितंकालचक्रेईश्वरेणैवयोजितमि त्यर्थः ॥ सहाभिजित्विभक्तिलोपआर्षः ॥ उत्तराषाढाश्रवणसंधावभिजिन्नामनक्षत्रंफलविशेषेपृथक्कल्पितंतेनसहेत्यर्थः ॥ २५ ॥ पुरःपश्चादिति ॥ पुरतःसूर्येणभोक्ष्यमाणेनक्षत्रेपश्चा द्भुंक्ते ॥ सहैवभुज्यमाने ॥ २६ ॥ २७ ॥ वृष्टेर्विष्टंभःस्तंभनंयस्मात्ग्रहात्तमुपशमयतीतितथा ॥ २८ ॥ शुक्रवदिति ॥ पुरतःपश्चात्सहैववासूर्यस्यचरतीत्यर्थः ॥ कंचिद्विशेषंचाह । यदार्केति ॥ सौम्योबुधः ॥ २९ ॥ ३० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यदिवक्रइति ॥ यदिनवक्रेणाभिवर्ततेतर्हित्रिभिस्त्रिभिःपक्षैः ॥ ३१ ॥ अघानांदुःखानाम् ॥ ३२ ॥ यदिवक्रोभवेन्नैवेति ॥ यदिनवक्रःस्यात्तर्हिपरिवत्सरमित्यर्थः ॥ ३३ ॥ त्रिंशन्मासैरिति ॥ एकैकस्मिन्राशौत्रिंशन्मासान्विलंबमानःसर्वानेवाऽनुपर्येतिनावद्भिरनुवत्सरैःप्रायेणहिसर्वेषामशांतिकरः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ दक्षिणंक्रमतेचतेइति ॥ प्रदक्षिणंप्रक्रमंतीत्यर्थः ॥ ३७ ॥ इ०दे०तिलकेष्टमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ त्रिंशद्भिरेकेनोनैस्तुपद्यैरथसविस्तरम् ॥ ध्रुवमंडलसंस्थानंयथावदनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ वैष्णवंपरमंपदमस्तीत्यर्थः ॥ १ ॥ यत्रवैष्णवेपदेमहाभागवतोध्रुवोऽस्तीत्यर्थः ॥ २ ॥ समकालमेवयुज्यतेइतितथा ॥ तेननक्षत्रगणेनसहितइत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ कालेनेति ॥ सहिध्रुवःसर्वेषांज्योतिर्गणानां ग्रहनक्षत्रभादिनां ह्रस्वआर्षः ॥ अव्यक्तरंहसाऽस्पष्टवेगेनानिमिषेणकालेनभ्राम्यतांभ्राम्यमाणानांस्थाणुरिवाऽवष्टंभःपरमेश्वरेणविहितइत्यन्वयः ॥ ५ ॥ मेढिस्तंभेइति ॥ मेढिस्तं

पक्षैस्त्रिभिस्त्रिःभिसोऽयंभुंक्तेराशीनथैकशः ॥ द्वादशाऽपिचदेवर्षेयदिवक्रोनजायते ॥३१॥ प्रायेणाऽशुभकृत्सोऽयंग्रहौघानांचसूचकः ॥ ततोद्विलक्षमानेन योजनानांचगीष्पतिः॥३२॥एकैकस्मिन्नथोराशौभुंक्तेसंवत्सरंचरन् ॥ यदिवक्रोभवेन्नैवाऽनुकूलोब्रह्मवादिनाम् ॥ ३३ ॥ ततःशनैश्चरोघोरोलक्षद्वयपरोमितः ॥ योजनैःसूर्यपुत्रोयंत्रिंशन्मासैःपरिभ्रमन् ॥३४॥ एकैकराशौपर्येतिसर्वान्राशीन्महाग्रहः ॥ सर्वेषामशुभोमंदःप्रोक्तःकालविदांवरैः ॥३५॥ ततउत्तरतःप्रोक्तमेकादशसुलक्षकैः ॥ योजनैःपरिसंख्यातंसप्तर्षीणांचमंडलम् ॥३६॥ लोकानांशंभावयंतोमुनयःसप्ततेमुने ॥यत्तद्विष्णुपदंस्थानंदक्षिणंक्रमतेचते ॥३७॥इतिश्रीदे०म०अष्टमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अथर्षिमंडलादूर्ध्वंयोजनानांप्रमाणतः ॥ लक्षैस्त्रयोदशमितैःपरमंवैष्णवंपदम् ॥ १ ॥ महाभागवतःश्रीमान्वर्ततेलोकवंदितः ॥ औत्तानपादिरिंद्रेणवह्निनाकश्यपेनच ॥ २ ॥ धर्मेणसहचैवास्तेसमकालयुजाध्रुवः ॥ बहुमानंदक्षिणतःकुर्वद्भिःप्रेक्षकैःसदा ॥ ३ ॥ आजीव्यःकल्पजीविनामुपास्तेभगवत्पदम् ॥ ज्योतिर्गणानांसर्वेषांग्रहनक्षत्रभादिनाम् ॥ ४ ॥ कालेनानिमिषेणायंभ्राम्यतांव्यक्तरंहसा ॥ अवष्टंभस्थाणुरिवविहितश्चेश्वरेणसः ॥ ५ ॥ भासतेभासयन्भासास्वीययादेवपूजितः ॥ मेढिस्तंभेयथायुक्ताःपशवःकर्षणार्थकाः ॥ ६ ॥ मंडलानिचरंतीमेसवनत्रितयेनच ॥ एवंग्रहादयःसर्वेभगणाद्यायथाक्रमम् ॥ ७ ॥ अंतर्बहिर्विभागेनकालचक्रेनियोजिताः ॥ ध्रुवमेवाऽवलंब्याशुवायुनोदीरिताश्चरन् ॥८॥ आकल्पांतंचक्रमंतिखेश्येनाद्याःखगाइव ॥ कर्मसारथयोवायुवशगाःसर्वएवते ॥९॥ एवंज्योतिर्गणाःसर्वेप्रकृतेःपुरुषस्यच॥ संयोगानुगृहीतास्तेभूमौननिपतंतिच ॥ १० ॥ ज्योतिश्चक्रंकेचिदेताच्छिशुमारस्वरूपकम् ॥ सोपयोगंभगवतोयोगधारणकर्मणि ॥ ११ ॥

भेयुक्तावद्धाःपशवोवलीवर्दाः ॥ ६ ॥ सवनत्रितयेन त्रिकालम् ॥ ७ ॥ ध्रुवमेवमेढिस्थानापन्नंचरन्चरंतइत्यर्थः ॥ ८ ॥ खेआकाशेश्येनाद्याःखगाःपक्षिणोयथाक्रमंतिगच्छंतितद्वदित्यर्थः ॥ कर्म सारथिःसहायोयेषाम् ॥ ९ ॥ नन्वेतेज्योतिर्गणानिराधाराःकुतोभुविनपतंतितत्राह । एवमिति । प्रकृतेःपुरुषस्यचयःसंयोगोऽत्यंतस्तेनाऽनुगृहीतामायाशवलब्रह्मरूपभगवत्यनुगृहीतानपतंतीत्यर्थः ॥ १० ॥ ईश्वराधारत्वात्पतनशंकैवनास्तीतिवक्तुंमतांतरमाह । केचिदिति ॥ एतस्याऽपि शिशुमारचक्रस्यपरिच्छिन्नत्वादेतस्याऽपि कआधारइत्याकांक्षायां सर्वव्यापकमायाशवलब्रह्मरूपिणीभगवत्येवाऽऽधारइतिवक्तव्यम् ॥ तस्मात्प्रथमंमतमेवमुख्यमितिकेचित्पदेनसूचितम् ॥ योगधारणकर्मणियोगधारणायांस्थितमितिशेषः ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १२ ॥ लांगूलेअग्रादधोभागे ॥ १३ ॥ १४ ॥ उत्तरायणभानिअभिजिदादीनिपुनर्वस्वंतानिचतुर्दशनक्षत्राणि ॥ दक्षिणपार्श्वेदक्षिणायनभानिपुष्यादीन्युत्तराषाढांतानिचतुर्दश वामपार्श्वे ॥ १५॥१६॥ आकाशसरित्आकाशगंगाऔदरेउदरेइत्यर्थः ॥ तदेवस्थानविशेषेणाविभज्यदर्शयाति । पुनर्वसुश्चेति ॥ दक्षिणवामयोः श्रोण्यावित्यर्थः ॥ १७॥ दक्षिणवामयोः पश्चिमयोःपादयोरार्द्राश्लेषेइत्यन्वयः ॥ १८ ॥ श्रुतिःश्रवणनक्षत्रंजलभंपूर्वाषाढानक्षत्रम् ॥ इमेदशवामनेत्रयोःकल्पितेइत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ वामपार्श्वीयवंक्रिषुवामपार्श्वास्थिषु॥२१॥

यस्याऽर्वाक्शिरसःकुंडलीभूतवपुषोमुने ॥ पुच्छाग्रेकल्पितोयोऽयंध्रुवउत्तानपादजः ॥ १२ ॥ लांगूलेऽस्यचसंप्रोक्तःप्रजापतिरकल्मषः॥ अग्निरिंद्रश्चधर्मश्चतिष्ठंतेसुरपूजिताः ॥ १३ ॥ धाताविधातापुच्छांतेकट्यांसप्तर्षयस्ततः ॥ दक्षिणावर्तभोगेनकुंडलाकारमीयुषः ॥ १४ ॥ उत्तरायणभानीहदक्षपार्श्वेऽर्पितानिच ॥ दक्षिणायनभानीहसव्येपार्श्वेऽर्पितानिच ॥ १५ ॥ कुंडलाभोगवेशस्यपार्श्वयोरुभयोरपि॥समसंख्याश्चावयवाभवंतिकजनंदन ॥ १६ ॥ अजवीथीपृष्ठभागेआकाशसरिदौदरे ॥ पुनर्वसुश्चपुष्यश्चश्रोण्यौदक्षिणवामयोः ॥ १७ ॥ आर्द्राश्लेषेपश्चिमयोःपादयोर्दक्षवामयोः ॥ अभिजिच्चोत्तराषाढानासयोर्दक्षवामयोः ॥ १८ ॥ यथासंख्यंचदेवर्षेश्रुतिश्चजलभंतथा ॥ कल्पितेकल्पनाविद्भिर्नेत्रयोर्दक्षवामयोः ॥१९॥ धनिष्ठाचैवमूलंचकर्णयोर्दक्षवामयोः ॥ मघादीन्यष्टभानीहदक्षिणायनगानिच ॥ २० ॥ युंजीतवामपार्श्वीयवंक्रिषुक्रमतोमुने ॥ तथैवमृगशीर्षादीन्युदग्भानिचयानिहि ॥ २१ ॥ दक्षपार्श्वेवंक्रिकेषुप्रातिलोम्येनयोजयेत् ॥ शततारातथाज्येष्ठास्कंधयोर्दक्षवामयोः ॥ २२॥ अगस्तिश्चोत्तरहनावधरायांहनौयमः ॥ मुखेष्वंगारकःप्रोक्तोमंदःप्रोक्तउपस्थके ॥ २३ ॥ बृहस्पतिश्चककुदिवक्षस्यर्कोग्रहाधिपः ॥ नारायणश्चहृदयेचंद्रोमनसितिष्ठति ॥२४॥ स्तनयोरश्विनौनाभ्यामुशनाःपरिकीर्तितः ॥ बुधःप्राणापानयोश्चगलेराहुश्चकेतवः ॥ २५ ॥ सर्वांगेषुतथारोमकूपेतारागणाःस्मृताः ॥ एतद्भगवतोविष्णोःसर्वदेवमयंवपुः ॥ २६ ॥ संध्यायांप्रत्यहंध्यायेत्प्रयतोवाग्यतोमुनिः ॥ निरीक्षमाणश्चोत्तिष्ठेन्मंत्रेणानेनधीधरः ॥ २७ ॥ नमोज्योतिर्लोकायकालायाऽनिमिषांपतयेमहापुरुषायाऽभिधीमहीति ॥ २८ ॥ ग्रहर्क्षतारामयमाधिदैविकंपापापहंमंत्रकृतांत्रिकालम् ॥ नमस्यतःस्मरतोवात्रिकालंनश्येततत्कालजमाशुपापम् ॥ २९ ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अधस्तात्सवितुःप्रोक्तमयुतंराहुमंडलम् ॥ नक्षत्रवच्चरतिचसैंहिकेयोऽतदर्हणः ॥ १ ॥ सूर्याचंद्रमसोरेवमर्दनःसिंहिकासुतः ॥ अमरत्वंचखेटत्वंलेभेयोविष्वनुग्रहात् ॥ २ ॥

दक्षपार्श्वेविद्यमानेषुप्रातिलोम्येनपूर्वाभाद्रपदांतानि ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ चतुस्त्रिंशच्छ्लोकवर्यैराहुमंडलमुच्यते ॥ सूर्याधःसंस्थितंयेनग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ॥ १ ॥ सूर्यमारभ्यध्रुवांतंसन्निवेशंनिरूप्येदानींसूर्याधस्तान्निरूपयति । अधस्तात्सवितुरिति ॥ सैंहिकेयःसिंहिकायाःसुतोराहुः॥ १ ॥ खेटत्वंनक्षत्रत्वम् ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ग्रह-.वक्तुमाह । यददस्तरणेरिति ॥ योजनायुतंतरणेर्बिंबमित्यन्वयः ॥ अर्कसहस्रविस्तरंद्वादशसाहस्रयोजनाविस्तारंसोमस्यमंडलमित्यन्वयः ॥ त्रयोदशसहस्रंतुत्रयोदशसहस्रयोजनपरिमाणंतुआच्छादकोग्रहोराहुर्वर्ततेसतच्छादकस्तयोःसूर्यसोममंडलयोराच्छादकोभवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥ कदाच्छादकस्तदाह । पर्वसमयेइति ॥ अमावास्यापूर्णिमारूपेकालेयश्छादकोभवेदित्यन्वयः ॥ वैरानुबंधी अमृतपानसमयेसूर्याचंद्रमसोर्मध्येप्रविष्टस्यताभ्यांविष्णवेकथनात्तयोर्वैरमनुबध्नाति ॥ ततोहेतोःसूर्याचंद्रमसोर्दूराच्छादनकारकोभवेदित्यन्वयः ॥ ४ ॥ तर्हिसूर्याचंद्रमसौकुतोनभक्षयतितत्राह।तन्निशम्येति ॥५॥ समंतात्परिवारितंचक्रमित्यन्वयः॥६॥दुःसहेनतत्तेजसामुहूर्तोद्विजमानोमुहूर्तोखिद्यमानश्चकितहृदयः सन्नारात्दूरादेवनिवर्ततेसोऽयमुपरा

यददस्तरणेर्बिंबंतपतोयोजनायुतम् ॥ तच्छादकोऽसुरोज्ञेयोऽप्यर्कसाहस्रविस्तरम् ॥ ३ ॥ त्रयोदशसहस्रंतुसोमस्याच्छादकोग्रहः ॥ यःपर्वसमयेवैरानुबंधीछादकोऽभवत् ॥ ४ ॥ सूर्याचंद्रमसोर्दूराद्भवेच्छादनकारकः ॥ तन्निशम्योभयत्रापिविष्णुनाप्रेरितंस्वकम् ॥ ५ ॥ चक्रंसुदर्शनंनामज्वालामालातिभीषणम् ॥ तत्तेजसादुःसहेनसमंतात्परिवारितम् ॥ ६ ॥ मुहूर्तोद्विजमानस्तुदूराच्चकितमानसः ॥ आरान्निवर्ततेसोऽयमुपरागइतीदह ॥ ७ ॥ उच्यतेलोकमध्येतुदेवर्षेअवबुध्यताम् ॥ ततोऽधस्तात्समाख्यातालोकाः परमपावनाः ॥ ८ ॥ सिद्धानांचारणानांचविद्याधराणांचसत्तम ॥ योजनायुतविख्यातालोकाःपुण्यानिषेविताः ॥ ९ ॥ ततोऽप्यधस्ताद्देवर्षेयक्षाणांचसरक्षसाम् ॥ पिशाचप्रेतभूतानांविहाराजिरमुत्तमम् ॥ १० ॥ अंतरिक्षंचतत्प्रोक्तंयावद्वायुःप्रवातिहि ॥ यावन्मेघास्तथोद्यंतितत्प्रोक्तंज्ञानकोविदैः ॥ ११ ॥ ततोऽधस्ताद्योजनानांशतंयावद्द्विजोत्तम ॥ पृथिवीपरिसंख्यातासुपर्णश्येनसारसाः ॥ ॥ १२ ॥ हंसादयःप्रोत्पतंतिपार्थिवाःपृथिवीभवाः ॥ भूसन्निवेशावस्थानंयथावदुपवर्णितम् ॥ १३ ॥ अधस्तादवनेःसप्तदेवर्षेविवराःस्मृताः ॥ एकैकशोयोजनानामायामोच्छ्रायतःपुनः ॥ १४ ॥ अयुतांतरविख्याताःसर्वेतुसुखदायकाः ॥ अतलंप्रथमंप्रोक्तंद्वितीयंवितलंतथा ॥ १५ ॥ तृतीयंसुतलंप्रोक्तंचतुर्थंवैतलातलम् ॥ महातलंपंचमंचषष्ठंप्रोक्तंरसातलम् ॥ १६ ॥ सप्तमंविप्रपातालंसप्तैतेविवराःस्मृताः ॥ एतेषुबिलस्वर्गेषुदिवोप्यधिकमेवच ॥ १७ ॥ कामभोगैश्वर्यसुखसमृद्धभुवनेषुच ॥ नित्योद्यानविहारेषुसुखास्वादःप्रवर्तते ॥१८॥ दैत्याश्चकाद्रवेयाश्चदानवाबलशालिनः ॥ नित्यंप्रमुदितारक्ताःकलत्रापत्यबंधुभिः ॥ १९ ॥ सुहृद्भिरनुजीवाद्यैःसंयुताश्चगृहेश्वराः ॥ ईश्वरादप्रतिहतकामामायाविनश्चते ॥ २० ॥

गइतिलोकेप्रोच्यतेइत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ विद्याधराणांविद्याधराणाम् ॥ अधस्तादित्युक्तंतन्मर्यादामाह । योजनायुतेइति ॥ राहुमंडलादधस्ताद्योजनायुतपरिमितेदेशेसिद्धादीनांलोकाःसंतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ विहाराजिरंवासस्थानम् ॥१०॥ अंतरिक्षंग्रहहीनम् । तस्यावधिमाह । यावद्वायुःप्रवातितीव्रोवाति । तस्याप्यवधिमाह । यावन्मेघाइति ॥ ११ ॥१२॥ पृथिव्याउपरिभूर्लोकावधिमाह । हंसादयइति ॥ पार्थिवाः पृथिवीविकाराः ॥ १३ ॥ एकैकशोयोजनानामिति ॥ योजनायुतांतरेणप्रत्येकमुच्छ्रिताः ॥ आयामोयोप्यंडकटाहस्यतद्विस्तारेण ॥१४॥ अयुतमंतरमेकैकस्याविवरस्य ॥ १५ ॥ १६ ॥ विप्रेतिसंबोधनम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ काद्रवेयाःसर्पाः ॥१९॥अनुजीवाद्यैरनुचरादिभिः॥ईश्वरादपिअप्रतिहतः कामोयेषाम् ॥२०॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मायाविभुनामायास्वामिनामायाविनेत्यर्थः ॥ २१ ॥ प्रकामशोयथेच्छंभक्ताविभक्ताःकृताइत्यर्थः ॥ मणिप्रवरशालिनइतिउत्तरत्रान्वेति ॥ २२ ॥२३॥२४॥२५॥ स्वच्छार्णेनस्वच्छज
लेनपूरिताह्रदायेषुतैः ॥ पाठीनामत्स्याः ॥ २६ ॥ नीरजातैःकमलैः ॥ २७ ॥ २८ । २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ जीर्णत्वंजरावैवर्ण्यंदेहस्यवयोवस्थासहिताएतेनबाधंतेइत्यन्वयः ॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥ यस्मिन्भगवत्तेजसिप्रविष्टे ॥ ३४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ ॥ ॥ द्वात्रिंशत्पद्यकैःपश्चादतलादेश्चवर्णनम् ॥ क्रियतेयत्रभोगानां

निवसंतिसदाहृष्टाःसर्वर्तुसुखसंयुताः ॥ मयेनमायाविभुनायेषुयेषुचनिर्मिताः ॥२१॥ पुरःप्रकामशोभक्तामणिप्रवरशालिनः ॥ विचित्रभवनाट्टालगोपुरा
द्याःसहस्रशः ॥२२॥ सभाचत्वरचैत्यादिशोभाढ्याःसुरदुर्लभाः ॥ नागासुराणांमिथुनैःसपारावतसारिकैः ॥२३॥ कीर्णकृत्रिमभूमिश्चविवरेशगृहोत्तमैः ॥
अलंकृताश्चकासंतिउद्यानानिमहांतिच ॥ २४ ॥ मनःप्रसन्नकारीणिफलपुष्पविशालिभिः ॥ ललनानांविलासार्हस्थानैःशोभितभांजिच ॥ २५ ॥ ना
नाविहंगमव्रातसंयुक्तजलराशिभिः ॥ स्वच्छार्णपूरितह्रदैःपाठीनसमलंकृतैः ॥ २६ ॥ जलजंतुक्षुब्धनीरनीरजातैरनेकशः ॥ कुमुदोत्पलकह्लारनीलरक्तो
त्पलैस्तथा ॥ २७ ॥ तेषुकृतनिकेतानांविहारैःसंकुलानिच ॥ इंद्रियोत्सवकारैश्चतथैवविविधैःस्वरैः ॥ २८ ॥ अमराणांचपरमांश्रियंचाऽतिशयंतिच ॥
यत्रनैवभयंक्वापिकालगैर्दिनरात्रिभिः ॥ २९ ॥ यत्राऽहिप्रवराणांचशिरःस्थैर्मणिरश्मिभिः ॥ नित्यंतमःप्रबाध्येतसदाप्रस्फुटकांतिभिः ॥३०॥ नवाएतेषु
वसतांदिव्यौषधिरसायनैः ॥ रसान्नपानस्नानाद्यैर्नाऽऽधयोनचव्याधयः ॥ ३१ ॥ वलीपलितजीर्णत्ववैवर्ण्यस्वेदगंधताः ॥ अनुत्साहवयोवस्थानबाधंतेक
दाचन ॥ ३२ ॥ कल्याणानांसदातेषांनचमृत्युभयंकुतः ॥ भगवत्तेजसोऽन्यत्रचक्राच्चैवसुदर्शनात् ॥३३॥ यस्मिन्प्रविष्टेदैतेयवधूनांगर्भराशयः ॥ प्रा
योभयात्पतंत्येवस्रवंतिब्रह्मपुत्रक ॥३४॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कन्धेऽष्टादशोऽध्यायः॥१८॥ ॥छ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ प्रथमेविवरे
विप्रअतलाख्येमनोरमे ॥ मयपुत्रोबलोनामवर्ततेऽखर्वगर्वकृत् ॥१॥ षण्णवत्योयेनसृष्टामायाःसर्वार्थसाधिकाः ॥ मायाविनोयाश्चसद्योधारयंतिचकाश्चन
॥२॥ जृंभमाणस्ययस्यैवबलस्यबलशालिनः ॥ स्त्रीगणाउपपद्यंतेत्रयोलोकविमोहनाः ॥ ३ ॥ पुंश्चल्यश्चैवस्वैरिण्यःकामिन्यश्चेतिविश्रुताः ॥ यावैविला
यनंप्रेष्ठंप्रविष्टंपुरुषंरहः ॥ ४ ॥ रसेनहाटकाख्येनसाधयित्वाप्रयत्नतः ॥ स्वविलासावलोकानुरागस्मितविगूहनैः ॥ ५॥ संलापविभ्रमाद्यैश्चरमयंत्यपिताः
स्त्रियः ॥ यस्मिन्नुपयुक्तेजनोमनुतेबहुधास्वयम् ॥ ६ ॥ ईश्वरोऽहमहंसिद्धोनागायुतबलोमहान् ॥ आत्मानंमन्यमानःसन्मदांधइवकथ्यते ॥ ७ ॥ एवंप्रो
क्तास्थितिश्चाऽत्रअतलस्यचनारद ॥ द्वितीयविवरस्याऽत्रवितलस्यनिबोधत ॥ ८ ॥

पराकाष्ठास्फुटाभवेत् ॥ १ ॥ अखर्वोमहान्योगर्वस्तंकरोतिसतथा ॥ १ ॥ षण्णवतिमायामध्येकाश्चनधारयंतिनसर्वाः ॥ दुःसंपाद्यत्वात् ॥ २ ॥ उपपद्यंतउत्पन्नाः ॥ ३ ॥
सवर्णेरताः स्वैरिण्यः ॥ कामिन्यस्त्वसवर्णे ॥ तत्राप्यतिचंचलाः पुंश्चल्यः ॥ विलायनंविलायतनम् ॥ ४ ॥ साधयित्वासंभोगसमर्थंकृत्वास्वस्मिन्नसाधारणाविलासास्तत्पूर्वकोवलो
कस्तेनाऽनुरागयुक्तंस्मितंतेनविगूहनमुपगूहनमालिंगनंतदादिभिः ॥ ५ ॥ यस्मिन्रसेऽपयुक्तेसेवितेइत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ९ ॥ १० ॥ मरुतासमीरणेनसमिद्धोदीप्तः ॥ ११ ॥ तन्निष्ठ्यूतमिति । तेनवह्निनानिष्ठ्यूतंथूत्कृत्यत्यक्तम् ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ अस्माननुजग्राहेतिनारायणोक्तिः ॥ २१ ॥ सर्वक्लेशादिहेतुमित्यैश्वर्यविशेषणम् ॥ आत्मानुस्मृतेर्मोषणमपहारकम् ॥ २२ ॥ २३ ॥ गिरिदर्यामवमुच्यस्थितस्तद्वारेईश्वरस्तद्दुःखंभक्तिप्रे

भूतलाधस्तलेचैववितलेभगवान्भवः ॥ हाटकेश्वरनामाऽयंस्वपार्षदगणैर्वृतः ॥ ९ ॥ प्रजापतिकृतस्यापिसर्गस्यबृंहणायच ॥ भवान्यामिथुनीभूयआस्तेदेवाधिपूजितः ॥ १० ॥ भवयोर्वीर्यसंभूताहाटकीसरिदुत्तमा ॥ समिद्धोमरुतावह्निरोजसापिवतीवहि ॥ ११ ॥ तन्निष्ठ्यूतंहाटकाख्यंसुवर्णंदैत्यवल्लभम् ॥ दैत्यांगनाभूषणार्हंसदासंधारयंतिहि ॥ १२ ॥ तद्विलाधस्तलात्प्रोक्तंसुतलाख्यंबिलेश्वरम् ॥ पुण्यश्लोकोबलिर्नामाआस्तेवैरोचनिर्मुने ॥ १३ ॥ महेंद्रस्यचदेवस्यचिकीर्षुःप्रियमुत्तमम् ॥ त्रिविक्रमोऽपिभगवान्सुतलेबलिमानयत् ॥ १४ ॥ त्रैलोक्यलक्ष्मीमाक्षिप्यस्थापितःकिलदैत्यराट् ॥ इंद्रादिष्वप्यलब्धायासाश्रीस्तमनुवर्तते ॥ १५ ॥ तमेवदेवदेवेशमाराधयतिभक्तितः ॥ व्यपेतसाध्वसोऽद्यापिवर्ततेसुतलाधिपः ॥ १६ ॥ भूमिदानफलंह्येतत्पात्रभूतेऽखिलेश्वरे ॥ वर्णयंतिमहात्मानोनैतद्युक्तंचनारद ॥ १७ ॥ वासुदेवेभगवतिपुरुषार्थप्रदेहरौ ॥ एतद्दानफलंविप्रसर्वथानहियुज्यते ॥ १८ ॥ यस्यैवदेवदेवस्यनामाऽपिविवशोगृणन् ॥ स्वकीयकर्मबंधीयगुणान्विधुनुतेंजसा ॥ १९ ॥ यत्क्लेशबंधहानायसांख्ययोगादिसाधनम् ॥ कुर्वंतेयतयोनित्यंभगवत्यखिलेश्वरे ॥ २० ॥ नचाऽयंभगवानस्माननुजग्राहनारद ॥ मायामयंचभोगानामैश्वर्यंव्यतनोत्परम् ॥ २१ ॥ सर्वक्लेशाधिहेतुंतदात्मानुस्मृतिमोषणम् ॥ यंसाक्षाद्भगवान्विष्णुःसर्वोपायविदीश्वरः ॥ २२ ॥ याञ्चाछलेनाऽपहृतंसर्वस्वंदेहशेषकम् ॥ अप्राप्तान्योपायईशःपाशैर्वारुणसंभवैः ॥ २३ ॥ बंधयित्वाऽवमुच्यापिगिरिदर्यामिवाऽब्रवीत् ॥ असाविंद्रोमहामूढोयस्यमंत्रीबृहस्पतिः ॥२४॥ प्रसन्नमिममत्यर्थमयाचल्लोकसंपदम् ॥ त्रैलोक्यमिदमैश्वर्यंकियदेवातितुच्छकम् ॥२५॥ आशिषांप्रभवंमुक्त्वायोमूढोलोकसंपदि ॥ अस्मत्पितामहःश्रीमान्प्रह्लादोभगवत्प्रियः ॥२६॥ दास्यंवव्रेविभोस्तस्यसर्वलोकोपकारकः ॥ पित्र्यमैश्वर्यमतुलंदीयमानंचविष्णुना ॥ २७ ॥ पितर्युपरतेवीरेनैवैच्छद्भगवत्प्रियः ॥ तस्याऽतुलानुभावस्यसर्वलोकोपधीमतः ॥ २८ ॥ अस्मद्विधोनाल्पपक्वेतरदोषोवगच्छति ॥ एवंदैत्यपतिःसोऽयंबलिःपरमपूजितः ॥ २९ ॥ सुतलेवर्ततेयस्यद्वारपालोहरिःस्वयम् ॥ एकदादिग्विजयेराजारावणोलोकरावणः ॥ ३० ॥ प्रविशन्सुतलेयेनभक्तानुग्रहकारिणा ॥ पादांगुष्ठेनप्रक्षिप्तोयोजनायुतमत्रहि ॥ ३१ ॥

म्णालेशतोप्यगणय्यबलिर्वक्ष्यमाणमब्रवीदित्यर्थः ॥ २४ ॥ प्रसन्नंविष्णुलोकसंपदंलोकस्वामित्वमयाचत ॥ २५ ॥ लोकसंपदिआसक्तइतिशेषः ॥ इदमिंद्रेणाऽत्यंतमनुचितंकृतामितिभावः ॥ २६ ॥ प्रह्लादंवर्णयति। अस्मादिति ॥२७ ॥ सर्वलोकोपधीमतःसर्वलोकोपाधियुक्तस्यविष्णोरतुलप्रभावस्यांतमितिशेषः ॥ २८ ॥ पक्वेभ्यःपरिपक्वेभ्यइतरेअपरिपक्वायेऽनल्पावहवोदोषास्तेयस्यसंतिसोस्मद्विधोमत्सदृशोदुष्टःकोऽवगच्छति नकोपीत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ सप्तत्रिंशन्महापद्मैरर्धश्लोकेनचाधिकैः ॥ तलातलस्थितिःसम्यग्विचारेणोपपाद्यते ॥ १ ॥ त्रिपुराधिपतिस्त्रिपुरस्वामी ॥ १ ॥ त्रिलोक्याःशंकरेणकल्याणकरेणशिवेनदग्धंपुरत्रयंयस्यसदग्धपूस्त्रयोमयासुरोमहादेवभक्तोऽयंपालितोरक्षितोदेवदेवस्याशिवस्यप्रसादेनतत्रास्तेइत्यर्थः ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ४ ॥ अनेकाशिरसांमध्येप्रधानान् ॥ ५ ॥ पतत्रिराजोगरुडः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रत्यनीकाः शत्रवोहविर्भुजांदेवानाम् ॥ ९ ॥ १० ॥ सरमयाशक्रदूत्येति ॥ इंद्रदूत्याप्रयु

एवंभूतानुभावोयंबलिःसर्वसुखैकभुक् ॥ आस्तेसुतलराज्यस्थोदेवदेवप्रसादतः ॥ ३२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेएकोनविंशोध्यायः ॥ ॥ १९ ॥ छ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ ततोधस्ताद्विवरकंतलातलमुदीरितम् ॥ दानवेंद्रोमयोनामत्रिपुराधिपतिर्महान् ॥ १ ॥ त्रिलोक्याःशंकरेणाऽयं पालितोदग्धपूस्त्रयः ॥ देवदेवप्रसादात्तुलब्धराज्यसुखास्पदः ॥ २ ॥ आचार्योमायिनांसोऽयंनानामायाविशारदः ॥ पूज्यतेराक्षसैर्वीरैःसर्वकार्यसमृद्धये ॥ ३ ॥ ततोधस्तात्सुविख्यातंमहातलमितिस्फुटम् ॥ सर्पाणांकाद्रवेयाणांगणःक्रोधवशोमहान् ॥ ४ ॥ अनेकशिरसांविप्रप्रधानान्कीर्तयामिते ॥कुहकस्तक्षकश्चैवसुषेणःकालियस्तथा ॥ ५ ॥ महाभोगामहासत्त्वाःक्रूराःक्रूरस्वजातयः ॥ पतत्रिराजाधिपतेरुद्विग्नाःसर्वएवते ॥ ६ ॥ स्वकलत्रापत्यसुहृत्कुटुंबस्यचसंगताः ॥ प्रमत्ताविहरंत्येवनानाक्रीडाविशारदाः ॥ ७ ॥ ततोधस्ताच्चविवरेरसातलसमाह्वये ॥ दैतेयानिवसंत्येवपणयोदानवाश्चये ॥८॥ निवातकवचानामहिरण्यपुरवासिनः ॥ कालेयाइतिचप्रोक्ताःप्रत्यनीकाहविर्भुजाम् ॥ ९ ॥ महौजसश्चोत्पत्त्यैवमहासाहसिनस्तथा ॥ सकलेशस्यचहरेस्तेजसा हतविक्रमाः ॥ १० ॥ बिलेशयाइवसदाविवरेनिवसंतिहि ॥ येवैवाग्भिःसरमयाशक्रदूत्यानिरंतरम् ॥ ११ ॥ मंत्रवर्णाभिरसुरास्ताडिताबिभ्यतिस्मह ॥ ततोप्यधस्तात्पातालेनागलोकाधिपालकाः ॥ १२ ॥ वासुकिप्रमुखाःशंखःकुलिकःश्वेतएवच ॥ धनंजयोमहाशंखोधृतराष्ट्रस्तथैवच ॥ १३ ॥ शंखचूडःकंबलाश्वतरोदेवोपदत्तकः ॥ महामर्षामहाभोगानिवसंतिविषोल्बणाः ॥ १४ ॥ पंचमस्तकवंतश्चफणासप्तकभूषिताः ॥ केचिद्दशफणाःकेचिच्छतशीर्षास्तथापरे ॥ १५ ॥ सहस्रशिरसःकेपिरोचिष्णुमणिधारकाः ॥ पातालरंध्रतिमिरनिकरंस्वमरीचिभिः ॥ १६ ॥ विधमंतिचदेवर्षेसदासंजातमन्यवः ॥ अस्यमूलप्रदेशेहित्रिंशत्साहस्रकेंतरे ॥ १७ ॥ योजनैःपरिसंख्यातेतामसीभगवत्कला ॥ अनंताख्यासमास्तेहिसर्वदेवप्रपूजिता ॥१८॥ अहमित्यभिमानस्यलक्षणंयंप्रचक्षते ॥ संकर्षणंसात्वतीयाःकर्षणंद्रष्टृदृश्ययोः ॥१९॥ इदंभूमंडलंयस्यसहस्रशिरसःप्रभोः ॥अनंतमूर्तेःशेषस्याध्रियमाणंचशीर्षके ॥२०॥

क्ताभिर्मंत्ररूपाभिर्वाग्भिः ॥ एवंहिवैदिकमाख्यानं पणिभिरसुरैर्निगूढांगामन्वेष्टुंसरमांदेवशुनीमिंद्रेणप्राहितांसंधिमिच्छंतःपणयःप्राहुः ॥ किमिच्छंतीसरमेत्यादि ॥ साचसंधिमनिच्छंतींद्रस्तुतिपूर्वकंतान्प्रतिपरुषमाह ॥ हताइंद्रेणपणयःशयध्वमित्यादि ॥ तेचतच्छ्रुत्वाबिभ्यतीति ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ संकर्षणनाम्नोनिरुक्तिमाह । अहमित्यभिमानस्येति ॥ द्रष्टृदृश्ययोःसम्यक्कर्षणमेकीकरणंयेनतत्कृतोऽहमित्यभिमानोलक्षणंचिह्नमधिष्ठातुर्यस्याऽहंकाराधिष्ठानेनचद्रष्टृदृश्यसंकर्षणात्संकर्षणइत्यर्थः ॥ १९॥२० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सिद्धार्थःसर्षपः ॥ २१ ॥ व्यूहैकादशशोभितः ॥ एकादशरुद्रमूर्तिरूपेण ॥ २२ ॥ २३ ॥ नखमंडलेइतिजात्येकवचनंमंडलेष्वित्यर्थः ॥ विराजन्मणिमंडलेष्वित्यनुरोधात् ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ मतंगमोहस्तीयथाकांचनींस्वर्णमयींवरत्रांकक्षांयद्वद्भिर्तितथैवायंकांचनींकक्षांविभर्तीत्यर्थः ॥ उमासंहितायां ध्रुवमंडलमारभ्यशेषलोकांतमीश्वरि ॥ नानालोकाःसमाख्यातास्तत्रतल्लोकवासिनः ॥ नानारत्नमयींमूर्तिंनानाधातुमयींतथा ॥ स्थापयित्वापूजयंति नानास्वच्छोपचारकैः ॥ कैलासेचैववैकुंठेब्रह्मलोकेतथैवच ॥ नवरत्नमयींमूर्तिंभगवत्यानिरंतरम् ॥ शिवद्रुहिणवैकुंठाःपूजयंतिविधानतः ॥ नानावर्षेषुवर्षाधिपतयश्चतथैवच ॥ नकाश्चित्रिषुलोके

पृथ्वीगोलमशेषंहिसिद्धार्थइवलक्ष्यते ॥ यस्यकालेनदेवस्यसंजिहीर्षोःसमंविभोः ॥ २१ ॥ चराचरंध्रुवोरंतार्विवरादुदपद्यत ॥ सांकर्षणोनामरुद्रोव्यूहैकादशशोभितः ॥२२॥ त्रिलोचनश्चत्रिशिखंशूलमुत्तंभयन्स्वयम् ॥ उदतिष्ठन्महासत्त्वोमहाभूतक्षयंकरः ॥२३॥ यस्यांघ्रिकमलद्वंद्वशोणाच्छनखमंडले॥ विराजन्मणिबिंबेषुमहाहिपतयोनिशम् ॥ २४ ॥ एकांतभक्तियोगेनसहसात्त्वतपुंगवैः ॥ प्रणमंतःस्वमूर्ध्नातेस्वमुखानिसमीक्षते ॥ २५ ॥ स्फुरत्कुंडलमाणिक्यप्रभामंडलभांज्यपि ॥ सुकपोलानिचारूणिगंडस्थलद्युमंतिच ॥ २६ ॥ नागराजकुमार्योपिचार्वंगविलसत्त्विषः ॥ विशदैर्विपुलैस्तद्वद्धवलैःसुभगैस्तथा ॥२७॥ रुचिरैर्भुजदंडैश्चशोभमानाइतस्ततः ॥ चंदनागुरुकाश्मीरपंकलेपेनभूषिताः ॥ २८ ॥ तदभिमर्षसंजातकामवेशसमायुताः ॥ ललितस्मितसंयुक्ताःसव्रीडंलोकयंतिच ॥ २९ ॥ अनुरागमदोन्मत्तविघूर्णारुणलोचनम् ॥ करुणावलोकनेत्रंचआशासानास्तथाशिषः ॥३०॥ सोऽनंतोभगवान्देवोनंतसत्त्वोमहाशयः ॥ अनंतगुणवार्धिश्चआदिदेवोमहाद्युतिः ॥३१॥ संहृतामर्षरोषादिवेगोलोकशुभायच ॥ आस्तेमहासत्त्वनिधिःसर्वदेवप्रपूजितः ॥३२॥ध्यायमानःसुरैःसिद्धैरसुरैश्चोरगैस्तथा ॥ विद्याधरैश्चगंधर्वैर्मुनिसंघैश्चनित्यशः ॥३३॥ अनारतमदोन्मत्तलोकविह्वललोचनः ॥ वाक्यामृतेनविबुधान्स्वपार्षदगणानपि ॥३४॥ आप्यायमानःसविभुर्वैजयंतींस्रजंदधत् ॥ अम्लानाभिनवैःस्वच्छैस्तुलसीदलसंचयैः ॥ ३५ ॥ माद्यन्मधुकरव्रातघोषश्रीसंयुतांसदा॥नीलवासादेवदेवएककुंडलभूषितः॥३६॥हलस्यककुदिन्यस्तसुपीवरभुजोव्ययां॥महेंद्रःकांचनींयद्वद्वरत्रांचमतंगमः ॥ ३७॥ उदारलीलोदेवेशोवर्णितःसात्त्वतर्षभैः॥इ०दे०भा०म०ऽष्टमस्कंधेविंशोऽध्यायः॥२०॥नारायणउवाच ॥ तस्यानुभावंभगवान्ब्रह्मपुत्रःसनातनः॥ सभायांब्रह्मदेवस्यगायमानउपासते॥१॥उत्पत्तिस्थितिलयहेतवोस्यकल्पाःसत्त्वाद्याःप्रकृतिगुणायदीक्षयासन्॥यद्रूपंध्रुवमकृतंयदेकमात्मन्नानाधात्कथमुहवेदतस्यवर्त्म॥२॥

पुलोकएवंविधःक्वचित् ॥ यत्रदेव्याःपदार्चानतथातस्याःस्मृतिःपरेति ॥ ३७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेऽष्टमस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ अष्टाविंशतिभिःश्लोकैःशेषस्तुतिपुरसरम् ॥ नरकाणांस्वरूपंचयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ तस्येति ॥ तस्यअनंतस्य ॥ १ ॥ उत्पत्तीति ॥ अस्यजगतउत्पत्त्यादिहेतवोगुणायस्य ॥ यस्येक्षयाकल्पाःसमर्थाःस्वस्वकार्येआसन् ॥ यस्यतुरूपंध्रुवमनंतमकृतमनादि ॥ तत्रहेतुःयदेकमेवसत् आत्मन्नात्मनिनानाकार्यप्रपंचमधात् तस्यब्रह्मस्वरूपस्यवर्त्मतत्त्वंजनःकथमुहवेदनवेदैवेत्यर्थः ॥ २ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तर्हिकथमसौमुमुक्षुभिःसेव्यतेतत्राह । मूर्तिमिति । यत्रेदंसदसद्विभातिसनोऽस्माकंभक्तानांपुरुकृपयाबहुकृपयासंशुद्धंसत्त्वंमूर्तिंबभार ॥ स्वजनानांमनांस्यादातुंवशीकर्तुंयस्यलीलांमृगपतिः सिंहःआददेआशिक्षयत् ॥ यतउदाराणिवीर्याणियस्य ॥ तस्मादन्यंमुमुक्षुःकमाश्रयेदित्युत्तरेणान्वयः ॥ ३ ॥ प्रलंभनाद्वापरिहासात् ॥ ४ ॥ सत्त्वानिप्राणिनः ॥ सहस्रजिह्वोऽपिको गणयेत् ॥ ५ ॥ ६ ॥ एतावत्यएवेहकामान्कामयमानैर्नृभिरुपगंतव्यागतयइत्यन्वयः ॥ ७ ॥ यथोपदेशंयथाशास्त्रंकामान्कामयमानकैःकामयमानैरित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ कर्मणांसर्व

मूर्तिंनःपुरुकृपयाबभारसत्वंसंशुद्धंसदसदिदंविभातियत्र ॥ यल्लीलांमृगपतिराददेनवद्यामादातुंस्वजनमनांस्युदारवीर्यः ॥ ३ ॥ यन्नामश्रुतमनुकीर्तयेदकस्मादार्त्तोवायदिपतितःप्रलंभनाद्वा ॥ हंत्यंहःसपदिनृणामशेषमन्यंकंशेषाद्भगवतआश्रयेन्मुमुक्षुः ॥ ४ ॥ मूर्धन्यार्पितमणुवत्सहस्रमूर्ध्नोभूगोलंसगिरिसरित्समुद्रसत्त्वम् ॥ आनंत्यादनमितविक्रमस्यभूम्नःकोवीर्याण्यधिगणयेत्सहस्रजिह्वः ॥ ५ ॥ एवंप्रभावोभगवाननंतोदुरंतवीर्योरुगुणानुभावः ॥ मूलेरसायाःस्थितआत्मतंत्रोयोलीलयाक्ष्मांस्थितयेबिभर्ति ॥ ६ ॥ एताह्येवेहतृभिर्गतयोमुनिसत्तम ॥ गंतव्याबहुशोयद्वद्यथाकर्मविनिर्मिताः ॥ ७ ॥ यथोपदेशंचकामान्सदाकामयमानकैः ॥ एतावतीर्हिराजेंद्रमनुष्यमृगपक्षिषु ॥ ८ ॥ विपाकगतयःप्रोक्ताधर्मस्यवशगास्तथा ॥ उच्चावचाविसदृशायथाप्रश्नंनिबोधत ॥ ९ ॥ नारदउवाच ॥ वैचित्र्यमेतल्लोकस्यकथंभगवताकृतम् ॥ समानत्वेकर्मणांचतन्नोब्रूहियथातथम् ॥ १० ॥ नारायणउवाच ॥ कर्तुःश्रद्धावशादेवगतयोऽपिपृथग्विधाः ॥ त्रिगुणत्वात्सदातासांफलंविसदृशंत्विह ॥ ११ ॥ सात्त्विक्याश्रद्धयाकर्तुःसुखित्वंजायतेसदा ॥ दुःखित्वंचतथाकर्तूराजस्याश्रद्धयाभवेत् ॥ १२ ॥ दुःखित्वंचैवमूढत्वंतामस्याश्रद्धयोदितम् ॥ तारतम्यात्तुश्रद्धानांफलवैचित्र्यमीरितम् ॥ १३ ॥ अनाद्यविद्याविहितकर्मणांपरिणामजाः ॥ सहस्रशःप्रवृत्तास्तुगतयोद्विजपुंगव ॥ १४ ॥ तद्भेदान्वर्णयिष्यामिप्राचुर्येणद्विजोत्तम ॥ त्रिजगत्याअंतरालेदक्षिणस्यांदिशीहवै ॥ १५ ॥ भूमेरधस्तादुपरित्वतलस्यचनारद ॥ अग्निष्वात्ताःपितृगणावर्ततेपितरश्चह ॥ १६ ॥ वसंतियस्यांस्वीयानां गोत्राणांपरमाशिषः ॥ सत्याःसमाधिनाशीघ्रंत्वाशासानाःपरेणवै ॥ १७ ॥ पितृराजोऽपिभगवान्संपरेतेषुजंतुषु ॥ विषयंप्रापितेष्वेषुस्वकीयैःपुरुषैरिह ॥ १८ ॥ सगणोभगवत्प्रोक्ताज्ञापरोदमधारकः ॥ यथाकर्मयथादोषंविदधातिविचारदृक् ॥ १९ ॥ स्वान्गणान्धर्मतत्त्वज्ञान्सर्वानाज्ञाप्रवर्तकान् ॥ सदाप्रेरयतिप्राज्ञोयथादेशनियोजितान् ॥ २० ॥ नरकानेकविंशत्यासंख्ययावर्णयंतिहि ॥ अष्टाविंशमितान्केचित्ताननुक्रमतोब्रुवे ॥ २१ ॥

प्राणिकर्मणांसमानत्वेवैषम्यनैर्घृण्यरहितेनमायाशबलब्रह्मणाकथमेतस्यवैचित्र्यंकृतमितियथातथंतन्नोब्रूहीत्यन्वयः ॥ १० ॥ कर्मणांसमानत्वमेवनास्तिकर्मकर्तॄणांत्रिगुणमायाशक्तिसंबद्धत्वात् ॥ तयामायाशक्त्यापूर्वपूर्वकर्मवशाद्यथायथासात्त्विकादिकर्मसुप्रेर्यतेतथातथाकरोति ॥ तदनुरूपफलोपभोगायचलोकभोगफलवैचित्र्यंकृतमित्याह । कर्तुःश्रद्धावशादेवेति ॥ तासांश्रद्धानांत्रिगुणत्वात्सात्त्विकादिभेदेनगुणत्रयात्मकत्वाद्विसदृशमसमानंफलमित्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ तस्मान्मायाशक्तिशबलब्रह्मरूपभगवत्याएवाराधनंकर्तव्यमितिगूढोभिसंधिः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ विषयंयमलोकरूपंदेशम् ॥ १८ ॥ दमधारकोदंडधारकोविदधातिदंडमितिशेषः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २२ ॥ २३ ॥ वज्रकंटकशाल्मलीत्येकोनरकः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ द्विपंचाशत्पद्यकैर्यात
नाकारकाणिच ॥ पातकानिसमासेनप्रोच्यंतेसंग्रहेणतु ॥ १ ॥ कर्मभेदायातनाभिभूमयोयातनाकारकाः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ यःपतिमिति ॥ यांस्त्रियंगच्छतितस्याःपतिंवंचयि

तामिस्रअंधतामिस्रोरौरवोऽपितृतीयकः ॥ महारौरवनामाचकुंभीपाकोपरोमतः ॥ २२ ॥ कालसूत्रंतथाचाऽसिपत्रारण्यमुदाहृतम् ॥ सूकरस्यमुखंचांध
कूपोऽथकृमिभोजनः ॥ २३ ॥ संदंशस्तप्तमूर्तिश्चवज्रकंटकएवच ॥ शाल्मलीचाऽथदेवर्षेनाम्नावैतरणीतथा ॥ २४ ॥ पूयोदःप्राणरोधश्चतथाविशसनंम
तम् ॥ लालाभक्षःसारमेयादनमुक्तमतःपरम् ॥ २५ ॥ अवीचिरप्ययःपानंक्षारकर्दमएवच ॥ रक्षोगणाख्यसंभोजःशूलप्रोतोप्यतःपरम् ॥ २६ ॥ दंदशू
कोवटारोधःपर्यावर्तनकःपरम् ॥ सूचीमुखमितिप्रोक्ताअष्टाविंशतिनारकाः ॥ २७ ॥ इत्येतेनारकानामयातनाभूमयःपराः॥कर्मभिश्चापिभूतानांगम्याःप
द्मजसंभव ॥ २८ ॥ इतिश्रीदे०महापु०अष्टमस्कंधे एकविंशोऽध्यायः ॥२१॥ ॥ नारदउवाच॥कर्मभेदाःकतिविधाःसनातनमुनेमम॥श्रोतव्याःसर्वथैवैते
यातनाप्राप्तिभूमयः ॥ १ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ योवैपरस्यवित्तानिदारापत्यानिचैवहि ॥ हरतेसहिदुष्टात्मायमानुचरगोचरः॥२॥कालपाशेनसंबद्धोया
म्यैरतिभयानकैः ॥ तामिस्रनामनरकेपात्यतेयातनास्पदे ॥ ३ ॥ ताडनंदंडनंचैवसंतर्जनमतःपरम् ॥ याम्याःकुर्वंतिपाशाढ्याःकश्मलंयातिचैवहि ॥४॥
मूर्च्छामायातिविवशोनारकीपद्मभूसुत ॥ यःपतिंवंचयित्वातुदारादीनुपभुज्यति ॥ ५ ॥ अंधतामिस्रनरकेपात्यतेयमकिंकरैः ॥ पात्यमानोयत्रजंतुर्वेदना
परवान्भवेत् ॥ ६ ॥ नष्टदृष्टिर्नष्टमतिर्भवत्येवाऽविलंबतः ॥ वनस्पतिर्भज्यमानमूलोयद्वद्भवेदिह ॥ ७ ॥ तस्मादप्यंधतामिस्रनाम्नाप्रोक्तःपुरातनैः ॥ एत
न्ममाहमितियोभूतद्रोहेणकेवलम् ॥ ८ ॥ पुष्णातिप्रत्यहंस्वीयकुटुंबंकार्यलंपटः ॥ एतद्विहायचाऽत्रैवस्वाशुभेनपतेदिह ॥ ९ ॥ रौरवेनामनरकेसर्वसत्त्व
भयावहे ॥ इहलोकेऽमुनायेतुर्हिंसिताजंतवःपुरा ॥ १० ॥ तएवरुरवोभूत्वापरत्रपीडयंतितम् ॥ तस्माद्रौरवमित्याहुःपुराणज्ञामनीषिणः ॥ ११ ॥ रुरुः
सर्पादतिक्रूरोजंतुरुक्तःपुरातनैः ॥ एवंमहारौरवाख्योनरकोयत्रपूरुषः ॥ १२ ॥ यातनांप्राप्यमाणोहियःपरंदेहसंभवः ॥ क्रव्यादानामरुरवस्तंक्रव्येघातयं
तिच ॥ १३ ॥ यउग्रःपुरुषःक्रूरःपशुपक्षिगणानपि ॥ उपरंधयतेमूढोयाम्यास्तंरंधयंतिच ॥ १४ ॥ कुंभीपाकेतप्ततैलेउपर्यपिचनारद ॥ यावंतिपशुरोमा
णितावद्वर्षसहस्रकम् ॥ १५ ॥ पितृविप्रब्राह्मणध्रुक्कालसूत्रेसनारके ॥ अग्न्यर्काभ्यांतप्यमानेनारकीविनिवेशितः ॥ १६ ॥ क्षुत्पिपासादह्यमानोंतःशरी
रस्तथाबहिः ॥ आस्तेशेतेचेष्टतेचाऽवतिष्ठतिचधावति ॥ १७ ॥

त्वेत्यर्थः ॥ उपभुज्यतिसेवतेइत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ एतन्मामहमितिएतदहमितिममाहमितिभूतद्रोहेणेत्यर्थः ॥ ८ ॥ यत्कुटुंबार्थमेवंकरोतितदेतदत्रैवविहायस्वाशुभेनकर्मणाइह
रौरवेपतेदित्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ क्रव्येमांसेघातयंति ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पाखंडमिति ॥ तदुक्तंपुराणांतरे ॥ यानिरूपाणिजगृहेइंद्रोहयजिहीर्षया ॥ तानिपापस्यखंडानिलिंगंखंडमिहोच्यतेइति ॥१८॥ पाशब्देनतुवेदार्थःपाखंडास्तस्यखंडकाइतिच ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ धारभिरार्षप्रयोगोधाराभिरित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ विविक्तपरपीडइति। ईश्वरेणोपकल्पितारक्तपानादिलक्षणावृत्तिर्येषांमत्कुणादीनाम् ॥ नाविविक्ता विज्ञातापरव्यथायैरविवेकिभिस्तेषाम् ॥ द्वितीयाषष्ठ्यर्थे ॥ ब्राह्मणादिभावेनविधिनिषेधपूर्वकमुपकल्पितावृत्तिर्यस्यविविक्ताविज्ञातापरव्यथायेनाविवेकिनासयदितादृशानांव्यथामाचरते

निजवेदपथाद्योवैपाखंडंचोपयातिच ॥ अनापद्यपिदेवर्षेतंपापंपुरुषंभटाः ॥ १८ ॥ असिपत्रवनंनामनरकंवेशयंतिच॥कशयाप्रहरंत्येवनारकीतद्गतस्तदा ॥ १९ ॥ इतस्ततोधावमानउत्तालमतिवेगितः ॥ असिपत्रैश्छिद्यमानउभयत्रचधाराभिः ॥२० ॥ संछिद्यमानसर्वांगोहाहतोऽस्मीतिमूर्च्छितः ॥वेदनांपर मांप्राप्तःपतत्येवपदेपदे ॥ २१ ॥ स्वधर्मानुगतंभुंक्तेपाखंडफलमल्पधीः ॥ योराजाराजपुरुषोदंडयेद्वैत्वधर्मतः ॥२२॥ द्विजेशरीरदंडंचपापीयान्नारकीच सः ॥ नरकेसूकरमुखेपात्यतेयमकिंकरैः ॥२३॥ विनिष्पिष्टावयवकोबलवद्भिस्तथेक्षुवत्॥आर्तस्वरेणस्वनयन्मूर्च्छितःकश्मलंगतः॥२४॥सपीड्यमानो बहुधावेदनांयात्यतीवहि ॥ विविक्तपरपीडोयोप्यविविक्तपरव्यथाम् ॥ २५ ॥ ईश्वरांकितवृत्तीनांव्यथामाचरतेस्वयम्॥ सचांधकूपेपततितदभिद्रोहयंत्रि ते ॥ २६॥ तत्राऽसौजंतुभिःक्रूरैःपशुभिर्मृगपक्षिभिः ॥ सरीसृपैश्चमशकैर्यूकामत्कुणजातिभिः ॥२७॥ मक्षिकाभिश्चतमसिदंदशूकैश्चपीड्यते ॥ परिक्राम तिचैवाऽत्रकुशरीरेचजंतुवत् ॥ २८ ॥ यस्तुसंविहितैःपंचयज्ञैःकाकैश्चसंस्तुतः ॥ अश्नातिचाऽसंविभज्ययत्किंचिदुपपद्यते॥२९॥ सपापपुरुषःक्रूरैर्याम्यै श्चकृमिभोजने ॥ नरकाधमकेदुष्टकर्मणापरिपात्यते ॥ ३० ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णेकृमिकुंडेभयंकरे ॥ कृमिरूपंसमासाद्यभक्ष्यमाणश्चतैःस्वयम्॥३१॥ अप्रत्ताप्रहुतादोयःपातमाप्नोतितत्रवै ॥ यस्तुस्तेयेनचबलाद्धिरण्यंरत्नमेवच ॥ ३२ ॥ ब्राह्मणस्याऽपहरतिअन्यस्यापिचकस्यचित् ॥ अनापदिचदेवर्षेत मसुत्रयमानुगाः ॥ ३३ ॥ अयस्मयैरग्निपिंडैःसदृशैर्निष्कुषंतिच ॥ योऽगम्यांयोषितंगच्छेदगम्यंपुरुषंचया ॥ ३४ ॥ तावमुत्रापिकशयाताडयंतोयमानु गाः ॥ तिग्मयालोहमय्याचसूर्म्याप्यालिंगयंतितम् ॥ ३५ ॥ तांचापियोषितंसूर्म्यालिंगयंतियमानुगाः ॥ यस्तुसर्वाभिगमनःपुरुषःपापसंचयी ॥ ३६ ॥ निरयेऽमुत्रतंयाम्याःशाल्मलींरोपयंतितम् ॥ वज्रकंटकसंयुक्तांशाल्मलींतामयस्मयीम् ॥ ३७ ॥ राजन्याराजपुरुषायेवापाखंडवर्तिनः ॥ धर्मसेतुंविभिं दंतितेपरेत्यगतानराः ॥ ३८ ॥ वैतरण्यांपतंत्येवभिन्नमर्यादपातकाः ॥ नद्यांनिरयदुर्गस्यपरिखायांचनारद ॥ ३९ ॥

सोंधकूपेपततीत्यन्वयः ॥ २५॥२६॥२७॥ अत्राऽस्मिल्लोके ॥२८॥ यस्त्विति ॥ यत्किंचिद्धनान्नादिकमुपपद्यतेप्राप्तंभवतितत्संविहितैः शास्त्रेणविहितैः पंचमहायज्ञैर्देवताभ्योऽसंविभज्य नदत्त्वाअश्नातियःपुरुषः ॥ कथंभूतःकाकैःसंस्तुतः ॥ समत्वेनवर्णितइत्यन्वयः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ अप्रत्तमसंविभक्तमतिथिभ्योप्रहुतंचात्तीतिसः अप्रत्ताप्रहुतादोयोभव तिसपातमाप्नोतीत्यर्थः ॥३२॥३३॥ निष्कुषंतित्वचिच्छिंदंति ॥३४॥ तिग्मयासूर्म्याप्रतिमया ॥३५॥ सूर्म्यापुरुषप्रतिमयातप्तयासर्वाभिगमनःपश्चाद्युपसंगतः ॥ ३६॥३७॥३८॥३९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

नात्मनोदेहेनवियुजंतिवियोगंप्राप्नुवंति ॥ " असुभिःप्राणैरुह्यमानाऊर्ध्वोच्छ्वासवंतइत्यर्थः । इदंविष्णुभागवते" ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पशुचर्यास्वेच्छाचारः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ सप्तशत्येति ॥ विंशत्यधिकसप्तशतसंख्याःसारमेयाइत्यन्वयः ॥ ५२ ॥ इ० दे० भा० तिलकेऽष्टमस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ ॥ २२ ॥ एकत्रिंशन्महापद्यैःशिष्टास्तुनरकाभिधाः ॥ वर्णनंक्रियतेतेषां वैराग्यंलभ्यतेयतः ॥ १ ॥ येनराइति ॥ १ ॥ २ ॥ अनाकाशेनिरालंबेइत्यर्थः ॥ ३ ॥ वीचिस्तरंगस्तद्वद्वीचि

यादोगणैःसमंतात्तुभक्ष्यमाणाइतस्ततः ॥ नात्मनावियुजंत्येवनाऽसुभिश्चापिनारद ॥ ४० ॥ स्वीयेनकर्मपाकेनोपतपंतिचसर्वतः ॥ विण्मूत्रपूयरक्तैश्चकेशास्थिनखमांसकैः ॥ ४१ ॥ मेदोवसासंयुतायांनद्यामुपपतंतिते ॥ वृषलीपतयोयेचनष्टशौचागतत्रपाः ॥ ४२ ॥ आचारनियमैस्त्यक्ताःपशुचर्यापरायणाः ॥ तेऽत्रानुकष्टगतयोविण्मूत्रश्लेष्मरक्तकैः ॥ ४३ ॥ श्लेष्ममलसमापूर्णेनिपतंतिदुराग्रहाः ॥ तदेवखादयंत्येतान्यमानुचरवर्गकाः ॥ ४४ ॥ येश्वानगर्दभादीनांपतयोवैद्विजातयः ॥ मृगयारसिकानित्यमतीर्थेमृगघातकाः ॥ ४५ ॥ परेतांस्तान्यमभटालक्षीभूतान्नराधमान् ॥ इषुभिश्चविभिंदंतितांस्तान्दुर्नयमागतान् ॥ ४६ ॥ येदंभादंभयज्ञेषुपशून्घ्नंतिनराधमाः ॥ तानमुष्मिन्यमभटानरकेवैशसेतदा ॥ ४७ ॥ निपात्यपीडयंत्येवकशाघातैर्दुरासदैः॥योभार्यांचसवर्णांवैद्विजोमदनमोहितः ॥ ४८ ॥ रेतःपातयतेमूढोऽमुत्रतंयमकिंकराः ॥ रेतःकुंडेपातयंतिरेतःसंपाययंतिच ॥ ४९॥ येदस्यवोऽग्निदाश्चैवगरदाःसार्थघातकाः ॥ ग्रामान्सार्थान्विलुंपंतिराजानोराजपूरुषाः ॥ ५० ॥ तान्परेतान्यमभटानयंतिश्वानकादनम् ॥ विंशत्यधिकसंख्याताःसारमेयामहाद्भुताः ॥ ५१ ॥ सप्तशत्यासमाख्यातारभसंखादयंतिते ॥ सारमेयादनंनामनरकंदारुणंमुने ॥ ५२ ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिअवीचिप्रमुखान्मुने ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०ऽष्टमस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ येनराःसर्वदासाक्ष्येअनृतंभाषयंतिच ॥ दानेविनिमयेऽर्थस्यदेवर्षेपापबुद्धयः ॥ १ ॥ तेप्रेत्याऽमुत्रनरके अवीच्याख्येऽतिदारुणे ॥ योजनानांशतोच्छ्रायाद्गिरिमूर्ध्नःपतंतिहि ॥२॥ अनाकाशेऽधःशिरसस्तदवीचीतिनामके ॥ यत्रस्थलंदृश्यतेचजलवद्वीचिसंयुतम् ॥ ३ ॥ अवीचिमत्ततस्तत्रतिलशश्छिन्नविग्रहः ॥ म्रियतेनैवदेवर्षेपुनरेवावरोप्यते ॥ ४ ॥ योवाद्विजोवाराजन्योवैश्योवाब्रह्मसंभव ॥ सोमपीथस्तत्कलत्रंसुरांवापिबतीवहि ॥५॥ प्रमादतस्तुतेषांवैनिरयेपरिपातनम् ॥ कुर्वंतियमदूतास्तेपानंकार्ष्णायसोमुने ॥६॥ वह्निनाद्रवमाणस्यनितरांब्रह्मसंभव ॥ संभावनेनस्वस्यैवयोऽधमोपिनराधमः ॥ ७ ॥ विद्याजन्मतपोवर्णाश्रमाचारवतोनरान् ॥ वरीयसोपिनबहुमन्यतेपुरुषाधमः ॥ ८ ॥ सनीयतेयमभटैःक्षारकर्दमनामके ॥ निरयेऽर्वाक्शिराघोरादुरंतयातनाश्नुते ॥ ९ ॥

मत्नवीचिमदवीचिमत् ॥ ततोहेतोस्तत्स्थलमवीचिमदवीचिसंज्ञकमित्यर्थः ॥ ४ ॥ अन्योपिवाव्रतस्थःसन्राजन्योवावैश्योवा ॥ सोमपीथःकृतसोमपानइत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ वह्निनाद्रवमाणस्यकार्ष्णायसोलोहस्यपानंकारयंतीतिशेषः ॥ संभावनेनात्मसंभावनयेत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ यातनाश्नुतेअत्रविभक्तिलोपआर्षः ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





यजंतिअन्यंदेवम् ॥ भैरवादीन्नरमेधेननरपशुना ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ वैश्रंभकैर्विश्वासोपायैः ॥ विश्रंभय्यविश्वासंकारयित्वा ॥ १३ ॥ क्रीडनोत्कारकान्क्रीडासाधनानीवविद्यमानान्घातयंतिविश्वासघातिनइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ आत्मशमलमात्मनाकृतंपापम् ॥ उद्वेजयंतिकठोरभाषणादिभिर्भयंददाति ॥ उल्बणवृत्तयःक्रूरस्वभावाः ॥ १६ ॥ यथासपादिकाः क्रूराउद्वेजयंतितथा ॥ १७ ॥ पंचाननाःसप्तमुखाः सर्पाःबिलेशयामूषकान्यथाग्रसंतितथा ॥ १८ ॥ अवटेषुअंधकूपेषु ॥ कुसूलादिषुनिष्प्रकाशगृहादिषुगुहादिषुचांधकारयुक्तासुनि

येवैनरायजंत्यन्यंनरमेधेनमोहिताः ॥ स्त्रियोपिवानरपशुंखादंत्यत्रमहामुने ॥ १० ॥ पशवोनिहितास्तेतुयमसद्मनिसंगताः ॥ सौनिकाइवतेसर्वेविदार्यंसितधारया ॥ ११ ॥ असृक्पिबंतिनृत्यंतिगायंतिबहुधामुने ॥ यथेहमांसभोक्तारःपुरुषादादुरासदाः ॥ १२ ॥ अनागसोपियोरण्येग्रामेवाब्रह्मपुत्रक ॥ वैश्रंभकैरुपसृतान्विश्रंभय्यजिजीविषून् ॥ १३ ॥ शूलसूत्रादिषुप्रोतान्क्रीडनोत्कारकानिव ॥ पातयंतिचतेप्रेत्यशूलपातेपतंतिह ॥ १४ ॥ शूलादिषुप्रोतदेहाःक्षुत्तृड्भ्यांचातिपीडिताः ॥ तिग्मतुंडैःकंकबकैरितश्चेतश्चताडिताः ॥ १५ ॥ पीडिताआत्मशमलंबहुधासंस्मरंतिहि ॥ येभूतानुद्वेजयंतिनराउल्बणवृत्तयः ॥ १६ ॥ यथासर्पादिकास्तेपिनरकेनिपतंतिहि ॥ दंदशूकाभिधानेचयत्रोत्तिष्ठंतिसर्वतः ॥ १७ ॥ पंचाननाःसप्तमुखाग्रसंतिनरकागतान् ॥ यथाबिलेशयाविप्रक्रूरबुद्धिसमन्विताः ॥ १८ ॥ येऽवटेषुकुसूलादिगुहादिषुनिरुंधते ॥ तानमुत्रोद्यतकराःकीनाशपरिसेवकाः ॥ १९ ॥ तेष्वेवोपविशित्वाचसगरेणचवह्निना ॥ धूमेनचनिरुंधंतिपापकर्मरतान्नरान् ॥ २० ॥ योऽतिथीन्समयप्राप्तान्दिधक्षुरिवचक्षुषा ॥ पापेनेहालोकयेच्चस्वयंगृहपतिर्द्विजः ॥ २१ ॥ तस्यापिपापदृष्टेर्हिनिरयेयमकिंकराः ॥ अक्षिणीवज्रतुंडायेकंकाःकाकवटादयः ॥ २२ ॥ गृध्राःक्रूरतराश्चापिप्रसह्योत्पाटयंतिहि ॥ यआढ्याभिमतिर्यातिअहंकृत्यातिगर्वितः ॥ २३ ॥ तिर्यक्प्रेक्षणएवाऽत्राऽभिविशंकीनराधमः ॥ चिंतयाऽर्थस्यसर्वत्रायतिव्ययस्वरूपया ॥ २४ ॥ शुष्यद्धृदयवक्रश्चनिर्वृतिंनैवगच्छति ॥ ग्रहवद्रक्षतेचार्थंसप्रेतोयमकिंकरैः ॥ २५ ॥ सूचीमुखेचनरकेपात्यतेनिजकर्मणा ॥ वित्तग्रहंचपुरुषंवायकाइवयाम्यकाः ॥ २६ ॥ किंकराःसर्वतोंगेषुसूत्रैःपरिवयंतिहि ॥ एतेबहुविधावित्तनरकाःपापकर्मणाम् ॥ २७ ॥ नराणांशतशःसंतियातनास्थानभूमयः ॥ सहस्रशोऽपिदेवर्षेउक्तानुक्तास्तथापिहि ॥ २८ ॥ विशंतिनरकानेतान्यातनाबहुलान्मुने ॥ तथाधर्मपराश्चापिलोकान्यांतिसुखोद्गतान् ॥ २९ ॥

रुंधतेजीवान्रोधयंति ॥ १९ ॥ तेष्वेवस्थानेषुउपविशित्वास्थापयित्वा ॥ सगरेणसविषेण ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ आढ्याभिमतिर्धनगर्वितः ॥ अहंकृत्यातिगर्वितः ॥ २३ ॥ तिर्यक्प्रेक्षणंयस्यअभिविशंकीगुर्वादिरापिधनंचोरयिष्यतीतिविशंकमानः ॥ अर्थस्यधनस्यायतिः प्राप्तिर्व्ययश्चतत्स्वरूपयाताद्विषयया ॥ २४ ॥ शुष्यमाणंहृदयंवक्रंचयस्यग्रहवद्ब्रह्मपिशाचवदर्थंरक्षतेयः ॥ २५ ॥ वित्तग्रहंवित्तरक्षकंब्रह्मराक्षसंतंपुरुषंयाम्यकायमसंबंधिनःकिंकरावायकाइवपरिवयंतिसूत्रप्रोतान्कुर्वंति ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तत्रयद्यपिउत्तमलोकप्रापकोपिधर्मोबहुधागीतःकथितस्तथापिसर्वधर्मेषुश्रीभगवतीचरणसपर्याधर्मएवमुख्यइत्याह । स्वधर्मइति ॥ यथातवबहुधागीतोऽष्टमस्कंधेप्रथमाध्यायेजंब्वादिनीधारेश्वरीमीनाक्ष्यरुणामाहात्म्यप्रसंगेनचध्यानपूजादिलक्षणःकथितः सएवदेवीपूजनरूपोदेव्याराधनलक्षणोमुख्योधर्मइत्यर्थः ॥ तत्रदेवीपूजनरूपेत्यनेनस्थूलमूर्तेर्ग्रहणम् ॥ देव्याराधनलक्षणइत्यनेनाविराट्स्वरूपभगवत्यादेवीपदेनग्रहणमितिविवेकः ॥ ३० ॥ कुतःस्वधर्मोमुख्यइतिचेत्तत्राह । येनेति ॥ नरकंनैवभजेत् ॥ किंचसादेवीति ॥ एकैकगुणोपाधिब्रह्मविष्णुरुद्रापेक्षयासाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिण्याभगवत्याःस्वतंत्रत्वात्सर्वोत्कृष्टत्वाच्चसैवदेवीभवपाथोधेर्भवसमुद्रादुद्धर्त्रीतितत्पूजनरूपोधर्मएवमुख्यइत्यर्थः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रास्तुतत्प्रेरिताएवफलंप्रयच्छंतिनस्वातंत्र्येण ॥ तस्मात्सैवदेवीपूज्येतिभावः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ अहमेवस्वयमिदंवदामिजुष्टंदेवेभिरुतमानुषेभिः ॥ यंकामयेतंतमुग्रंकृणोमितंब्रह्माणंतमृषिंतंसुमेधामिति ॥३१॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ ॥ एकोनसप्ततिश्लोकैर्देव्याराधनमुच्यते ॥ नानाविधोपचारैश्चभुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ १ ॥ प्रथमतोनारदेनवेद

स्वधर्मोबहुधागीतोयथातवमहामुने ॥ देवीपूजनरूपोहिदेव्याराधनलक्षणः ॥ ३० ॥ येनाऽनुष्ठितमात्रेणनरोननरकंव्रजेत् ॥ सादेवीभवपाथोधेरुद्धर्त्रीपूजितानृणाम् ॥ ३१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ छ ॥ नारदउवाच ॥ धर्मश्चकीदृशस्तातदेव्याराधनलक्षणः ॥ कथमाराधितादेवीसाददातिपरंपदम् ॥ १ ॥ आराधनविधिःकोवाकथमाराधिताकदा ॥ केनसादुर्गनरकाद्दुर्गात्राणप्रदाभवेत् ॥ २ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ देवर्षेशृणुचित्तैकाग्र्येणमेविदुषांवर॥यथाप्रसीदतेदेवीधर्माराधनतःस्वयम् ॥ ३ ॥ स्वधर्मोयादृशःप्रोक्तस्तंचमेशृणुनारद ॥ अनादाविहसंसारेदेवीसंपूजितास्वयम् ॥ ४ ॥ परिपालयतेघोरसंकटादिषुसामुने ॥ सादेवीपूज्यतेलोकैर्यथावत्तद्विधिंशृणु ॥ ५ ॥ प्रतिपत्तिथिमासाद्यदेवीमाज्येनपूजयेत् ॥ घृतंदद्याद्ब्राह्मणायरोगहीनोभवेत्सदा ॥ ६ ॥ द्वितीयायांशर्करयापूजयेज्जगदंबिकाम् ॥ शर्करांप्रददद्विप्रेदीर्घायुर्जायतेनरः ॥ ७ ॥ तृतीयादिवसेदेव्यैदुग्धंपूजनकर्मणि ॥ क्षीरंदत्त्वाद्विजाग्र्यायसर्वदुःखातिगोभवेत् ॥ ८ ॥ चतुर्थ्यांपूजनेपूपादेयादेव्यैद्विजायच ॥ अपूपाएवदातव्यानविघ्नैरभिभूयते ॥ ९ ॥ पंचम्यांकदलीजातंफलंदेव्यैनिवेदयेत् ॥ तदेवब्राह्मणेदेयंमेधावान्पुरुषोभवेत् ॥ १० ॥ षष्ठीतिथौमधुप्रोक्तंदेवीपूजनकर्मणि ॥ ब्राह्मणायचदातव्यंमधुकांतिर्यतोभवेत् ॥ ११ ॥ सप्तम्यांगुडनैवेद्यंदेव्यैदत्त्वाद्विजायच ॥ गुडंदत्त्वाशोकहीनोजायतेद्विजसत्तम ॥ १२ ॥

शास्त्रप्रतिपाद्यंजगतस्तत्त्वंपृष्टंतत्रनारायणेनमायाशक्तिशवलब्रह्मात्मकंश्रीभगवतीरूपमेवसर्ववेदसर्वशास्त्रसारभूतंजगतस्तत्त्वंप्रतिपाद्यतस्यध्यानोपयोगिस्वरूपंविराडात्मकंप्रतिपादितम् ॥ तदनंतरंचतस्यादेव्याआराधनमेवसर्वधर्मेषुवरिष्ठोधर्मःसचभोगमोक्षदायकइत्युक्तम् ॥ तच्छ्रुत्वातदाराधनविधेर्विशेषतोजिज्ञासुर्नारदःपृच्छति ॥ धर्मश्चेति ॥ १ ॥ कथमाराधितेतिस्थानप्रश्नाभिप्रायेणोच्यते ॥ कदेतिकालप्रश्नः ॥ केनेतिस्तोत्रप्रश्नः ॥ २ ॥ ३ ॥ प्राणिमात्रस्यनान्यःस्वधर्मःकिंतु श्रीदेव्याराधनलक्षणएव ॥ अतएववर्णत्रयस्यश्रीगायत्र्युपासनमेवानित्यत्वेनविहितम् ॥ नान्यदेवतोपासनंतथेत्यभिप्रायेणाह । स्वधर्मोयादृशइति ॥ ४ ॥ संकटादिषुसंसारसंकटादिषु ॥ ५ ॥ तत्रपंचदशतिथिषुपूजनमाह । आज्येनआज्यनैवेद्येन ॥ तच्चाज्यंगोघृतम् ॥ गोघृतेनचपूजयेदित्यरुणाचलमाहात्म्येकथनात् ॥ तत्रषोडशोपचारेषुमुख्योपचारस्तुनैवेद्यएव ॥ तस्यग्रहणेनषोडशोपचाराअप्याक्षिप्तावेदितव्याः ॥ ब्राह्मणायघृतदानंसदक्षिणंकार्यम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ मधुकांतिः सुंदरकांतिः ॥ ११ ॥ १२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १३ ॥ १४ ॥ १५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥ अमावस्यायांतुपरिशेषात्पूर्णिमानैवेद्यएवग्राह्यः ॥ हवनमिति ॥ नित्यहोमोयःपूजापटलेउक्तःसइत्यर्थः ॥२१॥ वारपूजनमाह । रविवारेइति ॥ अत्रवारतिथिकरणयोगादीनांपूजात्वेकैवनैवेद्याएवतुपृथग्देयाः ॥ २२ ॥ गुरुवासरेशर्करारक्तादेया सैवसिताशर्कराशुक्रवारे ॥ २३ ॥ एतेषांद्रव्याणामपिनित्यहोमःकर्तव्यः ॥ २४ ॥ किलाटकंदुग्धमलयीतिभाषया ॥ दधिकूर्चीलोकेदधिमलयीतिप्रसिद्धा ॥ केचित्तुशर्करायुक्तंमथितंदधि दधिकूर्चीशब्देनोच्यतेइत्याहुः ॥ तथाचकोशः ॥ कूर्चिकाक्षीरविकृतिःस्याद्रसालातुमार्जितेति ॥ फेणिकामहाराष्ट्रभाषायांतारफेणीतिप्रसिद्धा ॥ घृतमंडकंशक्करपाराइतिप्रसिद्धम् ॥ २५ ॥ कंसारमिति गोधूमपिष्टगुडनिर्मितंगुर्जरभाषायांप्रसिद्धम् ।

नारिकेलमथाष्टम्यां देव्यैनैवेद्यमर्पयेत् ॥ ब्राह्मणायप्रदातव्यंतापहीनोभवेन्नरः ॥ १३ ॥ नवम्यांलाजमंबायैचार्पयित्वाद्विजायच ॥ दत्त्वासुखाधिकोभूयादिहलोकेपरत्रच ॥ १४ ॥ दशम्यामर्पयित्वातुदेव्यैकृष्णतिलान्मुने ॥ ब्राह्मणायप्रदत्त्वातुयमलोकाद्भयंनहि ॥ १५ ॥ एकादश्यांदधितथादेव्यैचार्पयतेतुयः ॥ ददातिब्राह्मणायैतद्देवीप्रियतमोभवेत् ॥ १६ ॥ द्वादश्यांपृथुकान्देव्यैदत्त्वाचार्याययोददेत् ॥ तानेवचमुनिश्रेष्ठसदेवीप्रियतांव्रजेत् ॥ १७ ॥ त्रयोदश्यांचदुर्गायैचणकान्प्रददातिच ॥ तानेवदत्त्वाविप्रायप्रजासंततिमान्भवेत् ॥ १८ ॥ चतुर्दश्यांचदेवर्षेदेव्यैसक्तून्प्रयच्छति॥तानेवदद्याद्विप्रायशिवस्यदयितोभवेत् ॥ १९ ॥ पायसंपूर्णिमातिथ्यामपर्णायैप्रयच्छति ॥ ददातिचद्विजाग्र्यायपितॄनुद्धरतेऽखिलान् ॥ २० ॥ तत्तिथौहवनंप्रोक्तंदेवीप्रीत्यैमहामुने ॥ तत्तत्तिथ्युक्तवस्तूनामशेषारिष्टनाशनम् ॥ २१ ॥ रविवारेपायसंचनैवेद्यंपरिकीर्तितम् ॥ सोमवारेपयःप्रोक्तंभौमेचकदलीफलम् ॥ २२ ॥ बुधवारेचसंप्रोक्तंनवनीतंनवंद्विज ॥ गुरुवारेशर्करांचसितांभार्गववासरे ॥ २३ ॥ शनिवारेघृतंगव्यंनैवेद्यंपरिकीर्तितम् ॥ सप्तविंशतिनक्षत्रनैवेद्यंश्रूयतांमुने ॥ २४ ॥ घृतंतिलंशर्करांचदधिदुग्धंकिलाटकम् ॥ दधिकूर्चीमोदकंचफेणिकांघृतमंडकम् ॥२५॥ कंसारंवटपत्रंचघृतपूरमतःपरम् ॥वटकंकोकरसकंपूरणंमधुसूरणम् ॥२६॥ गुडंपृथुकद्राक्षेचखर्जूरंचैवचारकम् ॥ अपूपंनवनीतंचमुद्गंमोदकएवच ॥२७॥ मातुलिंगमितिप्रोक्तंभनैवेद्यंचनारद ॥ विष्कंभादियुगेषुप्रवक्ष्यामिनिवेदनम् ॥२८॥ पदार्थानांकृतेष्वेषुप्रीणातिजगदंबिका ॥ गुडंमधुघृतंदुग्धंदधितक्रंत्वपूपकम् ॥२९॥ नवनीतंकर्कटींचकूष्मांडंचापिमोदकम् ॥ पनसंकदलंजंबुफलमाम्रफलंतिलम् ॥ ३० ॥ नारंगंदाडिमंचैवबदरीफलमेवच ॥ धात्रीफलंपायसंचपृथुकंचणकंतथा ॥ ३१ ॥

महाराष्ट्रभाषायांसांजाइति ॥ वटपत्रंपापडइतिप्रसिद्धम् ॥ घृतपूरं घीवरइतिप्रसिद्धम् ॥ वटकंप्रसिद्धम् ॥ कोकरसकम् ॥ कोकश्चक्रेवृकेज्येष्ठ्यांखर्जूरीद्रुमदर्दुरेइतिमेदिनीकोशात्खर्जूररसइत्यर्थः ॥ पूरणंचणकपिष्टगुडनिर्मितंमहाराष्ट्रभाषायांप्रसिद्धम् ॥ मधुमाक्षिकम् ॥ सूरणंप्रसिद्धम् ॥ तच्चघृतपक्वंशर्करामिश्रितंग्राह्यम् ॥ अन्यत्सर्वंप्रसिद्धम् ॥ २६ ॥ २७ ॥ भनैवेद्यंनक्षत्रनैवेद्यमित्यर्थः ॥ २८ ॥ कृतेषुदत्तेष्वित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

जंभफलम् ॥ जंभोदैत्यविशेषेस्याद्दंतेजंबीरभक्षयोरितिमेदिनीकोशाज्जंभफलशब्देनजंबीरफलम् ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ कंसारादयःपूर्वमुक्ताएव ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ मधूकवृक्षमिति ॥ मधूक वृक्षेवक्ष्यमाणतत्तन्मासनामभिर्मंगलावैष्णवीमायेत्यादिभिः श्रीदेवीमावाह्यमूजयेदित्यर्थः ॥ मधूकवृक्षोमधुद्रुमःभाषायांमहुवाइतिप्रसिद्धः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ मासभेदेननैवेद्यभेदमाह ।

नारिकेलंजंभफलंकसेरुंसूरणंतथा ॥ एतानिक्रमशोविप्रनैवेद्यानिशुभानिच ॥ ३२ ॥ विष्कंभादिषुयोगेषुनिर्णीतानिमनीषिभिः ॥ अथनैवेद्यमाख्या स्येकरणानांपृथङ्मुने ॥ ३३ ॥ कंसारंमंडकंफेणीमोदकंवटपत्रकम् ॥ लड्डुकंघृतपूरंचतिलंदधिघृतंमधु ॥ ३४ ॥ करणानामिदंप्रोक्तंदेवीनैवेद्यमा दरात् ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिदेवीप्रीतिकरंपरम् ॥ ३५ ॥ विधानंनारदमुनेशृणुतत्सर्वमादृतः ॥ चैत्रशुद्धतृतीयायांनरोमधुकवृक्षकम् ॥३६॥ पूजयेत्पं चखाद्यंचनैवेद्यमुपकल्पयेत् ॥ एवंद्वादशमासेषुतृतीयातिथिषुक्रमात् ॥ ३७ ॥ शुक्लपक्षेविधानेननैवेद्यमभिदध्महे ॥ वैशाखमासेनैवेद्यंगुडयुक्तंचनारद ॥ ३८ ॥ ज्येष्ठमासेमधुप्रोक्तंदेवीप्रीत्यर्थमेवतु ॥ आषाढेनवनीतंचमधूकस्यनिवेदनम् ॥ ३९ ॥ श्रावणेदधिनैवेद्यंभाद्रमासेचशर्करा ॥ आश्विनेपायसं प्रोक्तंकार्त्तिकेपयउत्तमम् ॥ ४० ॥ मार्गेफेण्युत्तमाप्रोक्ताःपौषेचदधिकूर्चिका ॥ माघेमासिचनैवेद्यंघृतंगव्यंसमाहरेत् ॥ ४१ ॥ नारिकेलंचनैवेद्यंफाल्गु नेपरिकीर्तितम् ॥ एवंद्वादशनैवेद्यैर्मासेचक्रमतोऽर्चयेत् ॥ ४२ ॥ मंगलावैष्णवीमायाकालरात्रिर्दुरत्यया ॥ महामायामतंगीचकालीकमलवासिनी ॥ ॥ ४३ ॥ शिवासहस्रचरणासर्वमंगलरूपिणी ॥ एभिर्नामपदैर्देवींमधूकेपरिपूजयेत् ॥ ४४ ॥ ततःस्तुवीतदेवेशींमधूकस्थांमहेश्वरीम् ॥ सर्वकामसमृद्ध्य र्थंव्रतपूर्णत्वसिद्धये ॥ ४५ ॥ नमःपुष्करनेत्रायैजगद्धात्र्यैनमोस्तुते ॥ माहेश्वर्यैमहादेव्यैमहामंगलमूर्तये ॥ ४६ ॥ परमापापहंत्रीचपरमार्गप्रदायिनी ॥ परमेश्वरीप्रजोत्पत्तिःपरब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ४७ ॥

वैशाखमासइति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ मार्गेमार्गशीर्षे ॥ फेणीपूर्वोक्ता ॥ दधिकूर्चिकापूर्वोक्ता ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ द्वादशमासेषुभगवत्याद्वादशनामान्याह । मंगलेति ॥ मतंगीमा तंगी ॥ ४३ ॥ नामपदैरिति ॥ एकैकमासेक्रमेणैकैकनाम्ना ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ प्रजायाविश्वस्योत्पत्तिर्यस्याःसकाशात्साप्रजोत्पत्तिः ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मार्तंडसहचारिणीसूर्यमंडलवर्तिनी ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ मधुरस्वरःप्रणवस्तेनपूजिता ॥ ५२ ॥ महामंत्रोमायाबीजादिरूपस्तद्वतीवाच्यवाचकतासंबंधेन ॥ मंत्रेणैवगम्याप्राप्यामंत्रजपेनप्रसन्नैवप्राप्यतेयतः ॥ मंत्रएकांतविचारोनिदिध्यासनरूपःसप्रियंकरोयस्याः ॥ एतादृशीसर्वोत्कृष्टाऽपिपामरमनुष्यमानसेनगम्यतेप्राप्यतेसामनु

मददात्रीमदोन्मत्तामानगम्यामहोन्नता ॥ मनस्विनीमुनिध्येयामार्तंडसहचारिणी ॥ ४८ ॥ जयलोकेश्वरिप्राज्ञेप्रलयांबुदसन्निभे ॥ महामोहविनाशार्थंपूजिताऽसिसुराऽसुरैः ॥ ४९ ॥ यमलोकाभावकर्त्रीयमपूज्यायमाग्रजा ॥ यमनिग्रहरूपाचयजनीयेनमोनमः ॥ ५० ॥ समस्वभावासर्वेशीसर्वसंगविवर्जिता ॥ संगनाशकरीकाम्यरूपाकारुण्यविग्रहा॥५१॥कंकालकूराकामाक्षीमीनाक्षीमर्मभेदिनी ॥ माधुर्यरूपशीलाचमधुरस्वरपूजिता॥५२॥ महामंत्रवतीमंत्रगम्यामंत्रप्रियंकरी ॥ मनुष्यमानसगमामन्मथारिप्रियंकरी ॥ ५३ ॥ अश्वत्थवटनिंबाम्रकपित्थबदरीगते ॥ पनसार्ककरीरादिक्षीरवृक्षस्वरूपिणि ॥५४॥ दुग्धवल्लीनिवासार्हेदयनीयेदयाधिके ॥ दाक्षिण्यकरुणारूपेजयसर्वज्ञवल्लभे ॥५५॥ एवंस्तवेनदेवेशींपूजनांतेस्तुवीतताम् ॥ व्रतस्यसकलंपुण्यंलभतेसर्वदानरः ॥ ५६ ॥ नित्यंयःपठतेस्तोत्रंदेवीप्रीतिकरंनरः ॥ आधिव्याधिभयंनास्तिरिपुभीतिर्नतस्यहि ॥ ५७ ॥ अर्थार्थीचार्थमाप्नोतिधर्मार्थीधर्ममाप्नुयात् ॥ कामानवाप्नुयात्कामीमोक्षार्थीमोक्षमाप्नुयात् ॥ ५८ ॥ ब्राह्मणोवेदसंपन्नोविजयीक्षत्रियोभवेत् ॥ वैश्यश्चधनधान्याढ्योभवेच्छूद्रःसुखाधिकः ॥ ५९ ॥ स्तोत्रमेतच्छ्राद्धकालेयःपठेत्प्रयतोनरः ॥ पितॄणामक्षयातृप्तिर्जायतेकल्पवार्तिनी ॥६०॥ एवमाराधनंदेव्याःसमुक्तंसुरपूजितम् ॥ यःकरोतिनरोभक्त्यासदेवीलोकभाग्भवेत् ॥ ६१ ॥ देवीपूजनतोविप्रसर्वेकामाभवंतिहि ॥ सर्वपापहतिःशुद्धामतिरंतेप्रजायते ॥ ६२ ॥ यत्रतत्रभवेत्पूज्योमान्योमानधनेषुच ॥ जायतेजगदंबायाःप्रसादेनविरंचिज ॥ ६३ ॥ नरकाणांनतस्याऽस्तिभयंस्वप्नेऽपिकुत्रचित् ॥ महामायाप्रसादेनपुत्रपौत्रादिवर्धनः ॥ ६४ ॥ देवीभक्तोभवत्येवनाऽत्रकार्याविचारणा ॥ इत्येवंतेसमाख्यातंनरकोद्धारलक्षणम् ॥ ६५ ॥

ष्यमानसगमाएतादृश्यतिकरुणावतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ अश्वत्थेत्यादिनामधूकवृक्षपूजावत्अश्वत्थादिवृक्षेष्वपिपूजनमस्तीतिसूचितम् ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ वेदसंपन्नोभवेदित्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तद्वच्चैत्रवत् ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ एवंमधूकपूजांसंसारहारिणीमुक्त्वाधारेश्वरीमीनाक्ष्यरुणाजंब्वादिनीमधूकेश्वरीपंचकवदन्यदपिप्रकृतेःपंचकंवक्ष्यमाणंशृण्वित्याह । अथान्यादिति॥ परंत्वेतावान्विशेषः ॥ प्रथमंपंचकंस्वतंत्रमूलदेवीतएवोत्पन्नम् ॥ द्वितीयंपंचकंतुविष्णुशरीरस्थितायाः श्रीभगवत्याःशक्तिस्तस्याःसकाशादुत्पन्नमिति ॥६८॥ ६९ ॥ अत्राऽष्टमस्कंधारंभेमन्वादिभिः कथंपूज्यतेइत्येकःप्रश्नःकृतः ॥ केषुस्थानेषुकेनरूपेणपूज्यतेइतिद्वितीयःप्रश्नः ॥ सदाचारविषयकस्तृतीयः ॥ विराट्स्वरूपस्ययथावद्वर्णनंकुर्वितिचतुर्थःप्रश्नः ॥ तत्रव्यासेननारदनारा

पूजनंहिमहादेव्याःसर्वमंगलकारकम् ॥ मधूकपूजनंतद्वन्मासानांक्रमतोमुने ॥ ६६ ॥ सर्वंसमाचरेद्यस्तुपूजनंमधुकाह्वयम् ॥ नतस्यरोगबाधादिभयमुद्भवतेऽनघ ॥६७॥ अथाऽन्यदपिवक्ष्यामिप्रकृतेःपंचकंपरम् ॥ नाम्नारूपेणचोत्पत्त्याजगदानंददायकम् ॥६८॥ साख्यानंचसमाहात्म्यंप्रकृतेःपंचकंमुने ॥ कुतूहलकरंचैवशृणुमुक्तिविधायकम् ॥ ६९ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांसमाराधनविधानेऽष्टमस्कंधे देवीपूजननिरूपणंनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ ॥ स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥ ८ ॥ ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

नंदाग्निवसुभिः ( ८३९ ) पद्यैर्द्वैपायनमुखच्युतैः ॥ देवीभागवतस्याऽस्याष्टमःस्कंधउदीरितः ॥ १ ॥

यणयोःसंवादमिषेणचतुर्थप्रश्नस्योत्तरंदत्तम् ॥ द्वितीयप्रश्नस्यापितत्संवादमिषेणकिंचिदुत्तरंदत्तम् ॥ नवमस्कंधेनतुसर्वमुत्तरंदास्यति ॥ दशमस्कंधेनतुप्रथमप्रश्नस्योत्तरंदास्यतीतिबोध्यम् ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्याऽस्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यांयःकृतवान्सम्यक्तिलकाख्यांमहत्तराम् ॥ ॥ २ ॥ अष्टमस्कंधएतस्याःसमाप्तोभूच्छुभार्थदः ॥ प्रीयतांतेनमेनंतकोटिब्रह्मांडनायिका ॥ ३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८,
शके १८२३, सन् १९०१ ई०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे सटीकेऽष्टमस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे सटीके नवमस्कंधः प्रारभ्यते ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीदेव्यैनमः ॥ काश्मीरबिंदुभालांकरुणाशृंगारसारसीमांताम् ॥ सीमंतबद्धचंद्रामुन्निद्रांभोरुहाननांवंदे ॥ १ ॥ स्कंधेऽस्मिन्नवमेपंचप्रकृतीनांप्रपंचनम् ॥ तत्प्रसंगे नचान्यासांक्रियतेविस्तरेणच ॥ २ ॥ अर्धाधिकाष्टपंचाशत्संयुतैःशतपद्यकैः ॥ संक्षेपेणचशक्तीनांवर्णनंतावदुच्यते ॥ ३ ॥ ननुसर्वोऽप्ययंनवमस्कंधोऽध्यायतोग्रंथानुपूर्वीतश्चब्रह्मवैवर्तो तर्गतप्रकृतिखंडेनसमानएव ॥ क्वचित्क्वचिद्भेदोपिप्रायशःकथंजातइतिचेत्सत्यं किंतावदत्राश्चर्यंकारणं कुत्रचिदेतादृशंसमानानुपूर्वीकत्वेननदृष्टमितिचेत्तदसत ॥ शिवरहस्योक्तप्रदोष पूजाध्यायस्यब्रह्मोत्तरखंडस्थप्रदोषपूजाध्यायेनसमानानुपूर्वीकत्वदर्शनात् ॥ तथानारदपुराणीयमंत्रखंडस्थवचनानांतंत्रराजस्थवचनैःसमानत्वात् ॥ तथातंत्रेषुवहुषुतंत्रांतरस्थपटलानां समानानामुपलंभात् तथावेदेपिरुद्राध्यायस्यशतशाखासुसमानत्वात् ॥ पुरुषसूक्तादिसूक्तानांचशाखांतरेषुसमानानुपूर्वीकत्वस्यस्पष्टमुपलभ्यमानत्वात् ॥ तथाचयथासर्वत्रसमानानुपूर्वी कत्वमन्यत्रदृष्टंतथादेवीभागवतेऽपिनवमस्कंधस्यप्रकृतिखंडसमानानुपूर्वीकत्वमस्तु किमाश्चर्यम् ॥ ननुतथाप्यत्रपूर्वापरविरोधःस्पष्टएव ॥ तथाहि ॥ पूर्वत्रतृतीयस्कंधेब्रह्मविष्णुरुद्राणां साम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मणोभगवतीपदवाच्यादुत्पत्तिरभिहिता ॥ तथागौरीलक्ष्मीसरस्वतीनांचभगवतीसकाशादेवोत्पत्तिरुक्ता ॥ भगवत्यैवैताःशक्तयस्तेभ्योदत्ताइत्युक्तम् ॥ नवम स्कंधेतुगोपालसुंदरीरूपश्रीकृष्णमूर्तेर्ब्रह्मादीनामुत्पत्तिस्तथागौर्यादीनामुत्पत्तिस्ताश्चशक्तयोब्रह्मादिभ्योदत्ताःश्रीकृष्णेनैवेत्यादिकमुक्तम् ॥ अन्यच्च क्वचिदस्मिन्स्कंधेपूर्वविरुद्धमेवोक्तम् ॥ तथाचपूर्वापरविरोधःस्पष्टएवेतिचेन्न ॥ भिन्नवक्तृकत्वात् ॥ पूर्वग्रंथस्यवक्ताव्यासोनवमस्कंधस्यवक्तानारायणइतिभिन्नवक्तृकत्वात् कल्पभेदेनोभयमप्युपपद्यते ॥ यथापुराणेषुक्वचिच्छि वाद्ब्रह्मविष्ण्वोरुत्पत्तिः क्वचित्तुब्रह्मणःसकाशाच्छिवविष्ण्वोः क्वचिद्गणेशादेतेषांत्रयाणाम् ॥ तथासूर्यादेतेषांत्रयाणांकल्पभेदेनोत्पत्तिरभिहिता ॥ तथैवाऽत्राऽपिकल्पभेदेनउभयार्थस्या ऽपिसंभवात् ॥ ननुपुराणभेदेनतत्राभिन्नाभिन्नासृष्टिप्रक्रियाअभिहिता ॥ अत्रत्वेकस्मिन्नेवपुराणेभिन्नाप्रक्रियाभिहितेतिजनमेजयस्यैकस्यश्रोतुर्व्यामोहःस्यादितिचेन्न ॥ महाभारतेशिवमा हात्म्यप्रकरणेशिवस्यब्रह्मविष्णुकारणत्वम् ॥ विष्णुमाहात्म्यप्रकरणेविष्णोरेवब्रह्मरुद्रकारणत्वमितिमर्यादायाएकस्मिन्नपिपुराणेदृष्टत्वात् ॥ एवमेवकूर्मपुराणादिषुकल्पभेदेनसृष्टिभेदस्यै

## श्रीगणेशायनमः॥ श्रीनारायणउवाच ॥ गणेशजननीदुर्गाराधालक्ष्मीःसरस्वती ॥ सावित्रीचसृष्टिविधौप्रकृतिःपंचधास्मृता ॥ १ ॥

कपुराणेएवदृष्टत्वाच्च ॥ ननुतथापिश्रोतुर्व्यामोहःकथंनभवतीतिचेन्न ॥ उभयोर्विरुद्धयोःप्रतिपादनेनसृष्टेर्मायिकत्वेनामिथ्यात्वान्मिथ्यापदार्थे श्रुतेःपुराणादीनांचनाग्रहइतिश्रोतुर्बोधसं भवात् ॥ यथेंद्रजालंकस्मादुत्पन्नमितिविमर्शे नतत्रकिंचित्कारणंमायातिरिक्तंलभ्यते ॥ तथाऽत्राऽपिसृष्टौमायैवमुख्यंकारणमितिबोधनार्थमेवव्यासेनतथोक्तत्वाच्च ॥ यद्येकाविधैवसृष्टिः तस्याश्चकारणमेकविधमेवप्रतिपाद्येत तदाजगतःसत्यत्वशंकाऽपिस्यात् सामाभवतु किंत्वनिर्वचनीयमेवजगद्भवतीत्यनिर्वचनीयत्वज्ञानार्थंविविधसृष्टिप्रतिपादनस्यविविधकारणप्रतिपादन स्यावश्यकत्वाच्च ॥ तदुक्तंगौडपादाचार्यैः ॥ मृल्लोहविस्फुलिंगाद्यैः सृष्टिर्याचोदितान्यथा ॥ उपायःसोवतारायनास्तिभेदःकथंचनेति ॥ व्याख्यातंचभगवद्भिर्भाष्यकारैर्मृल्लोहविस्फुलिं गादिदृष्टांतोपन्यासैः सृष्टिर्याचोदिताप्रकाशिताऽन्यथाऽन्यथाचसर्वसृष्टिप्रकारोजीवपरमात्मैकत्वबुद्ध्यवतारायोपायोऽस्माकम् ॥ यथाप्राणसंवादेवागाद्यासुरपाप्मवेदाख्यायिकाक ल्पिताप्राणमुख्यत्वबोधनाय ॥ तदप्यसिद्धमितिचेन्न ॥ शाखाभेदेष्वन्यथाऽन्यथाचप्राणादिसंवादश्रवणात् ॥ यदिसंवादःपरमार्थएवाऽभूदेकरूपएवसंवादःसर्वशाखास्वश्रोष्यद्विरुद्धानेक प्रकारेणनाश्रोष्यत् ॥ श्रूयतेतुतस्मान्नतादर्थ्यसंवादश्रुतीनांतथोत्पत्तिवाक्यानिप्रत्येतव्यानीति ॥ तत्राऽष्टमस्कंधांतेनारायणेनअथाऽन्यदपिवक्ष्यामिप्रकृतेःपंचकंपरमितिप्रतिज्ञातंप्रकृति पंचकंनिर्दिशति ॥ नारायणउवाच गणेशजननीदुर्गेति ॥ गणेशजननीदुर्गेत्येकादेवता ॥ प्रकृतिःपंचधेतिगुणत्रयसाम्यावस्थात्मकमायाशबलब्रह्मरूपाप्रकृतिः ॥ प्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टांता नुरोधादितिब्रह्मसूत्रप्रतिपादिता ॥ अपरेयमितस्त्वन्यांविद्धिमेप्रकृतिंपराम् ॥ जीवरूपांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगदितिस्मृतिप्रतिपाद्याच ॥ सैवपंचधापंचविधदुर्गादिविग्रहरूपेणस्मृता ॥ एकस्याभगवत्यामूलप्रकृतेरेवतेदुर्गादयःपंचावताराइत्यर्थः ॥ सृष्टिविधौसृष्टिविधानेसृष्टिसमयेइत्यर्थः ॥ सृष्ट्युपकारार्थमितिवार्थःतथाचैतासांपूजनेऽपिमूलप्रकृतेःश्रीभुवनेश्वर्याएवपूजा जायतइतिबोद्धव्यम् ॥ १ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रकृतिपंचकनामश्रवणमात्रेणसंजातहर्षोनारदः पृच्छाति ॥ नारदउवाच आविर्बभूवेति ॥ केनानिमित्तेनसापंचधाआविर्भूतायाचाऽऽविर्भूतासाकावाजडावाचेतनावा ॥ जडायामाया यात्रह्मणश्चप्रकृतित्वस्यशास्त्रेश्रवणादाशंकायुक्तैव ॥ यदिजडायदिवाचेतनाकिंवातस्याळक्षणंज्ञापकम् ॥ साचपंचधाकथंकेनप्रकारेणवभूव ॥ साक्षादेवपंचावतारागृहीताउतरूपांतरद्वा रेणेतिप्रश्नार्थः ॥ तदेतत्संशयचतुष्टयंव्याख्यातुमर्हसीत्यर्थः ॥ २ ॥ किंचसर्वासांदुर्गादीनांचरितमवतारचरितंपूजाविधानंपूजाप्रकारःईप्सितोगुणोयस्यादेवतायाउपासनेयोयोगुणः फलंभवतिसगुणः कस्याअवतारःकुत्रकैलासेवावैकुंठेवातिष्ठति ॥ तच्चव्याख्यातुमर्हसीत्यर्थः ॥ ३ ॥ उत्तरमाह । नारायणउवाच प्रकृतेरिति ॥ क्षमोभवेत्तस्याअनादित्वादनिर्वचनीय त्वात्तदुत्तरंजायमानानांपरिच्छिन्नानामस्माकमल्पपरिच्छिन्नबुद्धेरविषयत्वाच्चेत्तस्यालक्षणंयथावद्वक्तुंनकोऽपिसमर्थइत्यर्थः ॥ ४ ॥ तत्रप्रथमतस्तटस्थलक्षणामाह । प्रकृष्टवाचकइति ॥ प्रापूरणइतिधातोःपचाद्यचिनिष्पन्नःप्रशब्दः ॥ कृतिशब्दस्यव्यापारसामान्यार्थकत्वात्सृष्टिव्यापारार्थकत्वम् ॥ तथाचप्राप्रकृष्टामुख्याकृतौसृष्टौयासाप्रकृतिरितिव्यधिकरणपदवहुव्री हिणात्वेतस्यार्थस्यलाभः ॥ पृषोदरादित्वात्प्राशब्दस्यह्रस्वत्वम् ॥ तथाचमुख्यत्वेनसृष्टिकर्त्रीयासाप्रकृतिरित्यर्थः ॥ ५ ॥ स्वरूपलक्षणामाह । गुणेसत्त्वेइति ॥ प्रकृष्टेसत्त्वेगुणेप्रशब्दो

नारदउवाच ॥ आविर्बभूवसाकेनकावासाज्ञानिनांवर ॥ किंवातल्लक्षणंसाधोबभूवपंचधाकथम् ॥ २ ॥ सर्वासांचरितंपूजाविधानंगुणईप्सितः ॥ अवतारःकुत्रकस्यास्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥३॥ श्रीनारायणउवाच ॥ प्रकृतेर्लक्षणंवत्सकोवावक्तुंक्षमोभवेत् ॥ किंचित्तथापिवक्ष्यामियच्छ्रुतंधर्मवक्त्रतः ॥ ४ ॥ प्रकृष्टवाचकःप्रश्चकृतिश्चसृष्टिवाचकः ॥ सृष्टौप्रकृष्टायादेवीप्रकृतिःसाप्रकीर्तिता ॥ ५ ॥ गुणेसत्त्वेप्रकृष्टेचप्रशब्दोवर्ततेश्रुतः ॥ मध्यमेरजसिकृ श्चतिशब्दस्तमसिस्मृतः ॥ ६ ॥ त्रिगुणात्मकस्वरूपायासाचशक्तिसमन्विता ॥ प्रधानासृष्टिकरणेप्रकृतिस्तेनकथ्यते ॥७॥ प्रथमेवर्ततेप्रश्चकृतिश्चसृ ष्टिवाचकः ॥ सृष्टेरादौचयादेवीप्रकृतिःसाप्रकीर्तिता ॥८॥ योगेनात्मासृष्टिविधौद्विधारूपोबभूवसः ॥ पुमांश्चदक्षिणार्धांगोवामार्धाप्रकृतिःस्मृता ॥ ९ ॥

वर्तते ॥ व्युत्पत्तिस्तुपूर्ववदेव ॥ मध्यमेरजसिमध्यमःकृशब्दोवर्ततेमध्यमत्वसादृश्यात् ॥ तमसितमोगुणेचरमेचरमस्तिशब्दोवर्ततेचरमत्वादित्वसादृश्यादित्यर्थः ॥ ६ ॥ पदार्थ मुक्त्वाविशिष्टार्थमाह । त्रिगुणात्मेति ॥ निरतिशयावरणविक्षेपादिशक्तिरहितागुणत्रयसाम्यावस्थात्मिकासृष्टिकरणेप्रधानायासाप्रकृतिशब्देनोच्यतइत्यर्थः ॥ तथाचप्रसंयुक्तःकृः प्रकृः सत्त्वेनगुणेनसहितोरजोगुणइत्यर्थः शाकपार्थिवादित्वात्संयुक्तपदलोपः ॥ पुनःप्रकृयुक्तस्तिः सत्त्वगुणरजोगुणेनयुक्तास्तिस्तमोगुणोयस्यांवर्ततेइतिवहुव्रीहिणागुणत्रयात्मिकेत्यर्थः। पृषोदरादित्वात्साधुत्वम् ॥ ७ ॥ पुनर्लक्षणांतरमाह । प्रथमेवर्ततइति ॥ प्रशब्दव्युत्पत्तिःपूर्ववत् ॥ तथाचप्राप्रथमासृष्टेर्यासाप्रकृतिःसृष्टेरादिभूतेत्यर्थः ॥ व्यधिकरणवहुव्रीहिःपृषोदरा दित्वात्साधुत्वम् ॥ ८ ॥ एतेनकिंवातल्लक्षणंसाधोइतिप्रश्नस्योत्तरमुक्तम् ॥ गुणत्रयसाम्यावस्थात्मिकावर्ततइतिलक्षणेनजडावर्ततइत्युक्तम् ॥ तेनकावासेद्विप्रश्नस्योत्तरमुक्तम् ॥ इतः परमाविर्बभूव साकेनवभूवपंचधाकथमित्यस्योत्तरमाह । योगेनात्मेति ॥ सृष्टिविधौसृष्टिविधाननिमित्तं योगेनमायाशक्त्यापूर्वोक्तलक्षणयाप्रकृत्यायुक्तआत्मापरमात्माद्विधारूपोऽर्धनारी श्वररूपोबभूवेत्यर्थः ॥ तस्मिन्देहेपुरुषभागस्त्रीभागयोर्देशमाह । पुमांश्चेति ॥ मायाशबलब्रह्मणोभगवतीपदवाच्यादर्धनारीश्वरःकृष्णःसमुत्पन्नइतिवक्ष्यमाणग्रंथादवसेयम् ॥ ९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ननुमायाशक्तिर्जडानिर्विकारापरमात्मापिनिर्विकारइत्यनयोर्विभिन्नयोर्निर्विकारयोर्योगःकथंघटेतेत्याशंक्याह । साचब्रह्मस्वरूपाचेति ॥ यथावह्नेर्दाहिकाशक्तिर्नवह्नेर्भिन्नातिष्ठति किंतु वन्ह्यभेदेनैवातिष्ठति ॥ तथेयमपिब्रह्मशक्तिर्नततोभिन्नातिष्ठति किंतु ब्रह्मस्वरूपाब्रह्माभेदेनैवतिष्ठतीत्यर्थः ॥ तथानित्यसंबद्धत्वादुभयोर्योगःकथंघटेतेतिनशंकनीयम् ॥ शक्तेःकेवलायाजडत्वान्निर्विकारत्वेपिचैतन्यरूढायास्तस्याःसविकारत्वस्यसर्वश्रुतिष्वभ्युपगमाल्लोहचुंबकवद्दृष्टांतसंभवाच्चमायाशक्तेर्निर्विकारत्वंनसंभावनीयमितिभावः ॥ नित्यामोक्षपर्यंतस्थायिनी ॥ सनातनीअनादिरित्यर्थः ॥ तेनचानादिसांतेतिबोधितम् ॥ यस्मादनयोर्नित्यसंबंधस्तस्मादात्मोपासनायांशक्तेरुपासनायांशक्तेरुपासनाजातैव ॥ तथाशक्त्युपासनयाप्यात्मपूजाजातैवेतियथात्मनोमहिमासर्वोत्तरस्तथैवतच्छक्तेरपीत्याह । यथात्माचतथाशक्तिरिति । यथावह्नौहोमेवह्निशक्तौहोमोऽर्थसिद्धोभवति ॥ तथावह्निशक्तौहोमेपिवह्नौहोमोर्थसिद्धइतिशक्तिशक्तिमतोरीषदपिनकिंचिद्भेदकमस्तीतिभावः ॥ १० ॥ अतएवेति ॥ यतःशक्तेःशक्तिमतश्चनभेदोऽतएवयोर्गींद्रैर्विवेकिभिःस्त्रीपुंभेदइयंस्त्रीअयंपुमानितिभेदोनमन्यते ॥ किंतुस्त्रीवापुरुषोवाद्वयमपिमायाविशिष्टंब्रह्मैवास्तीतिमन्यतइत्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ मायाविशिष्टंब्रह्मैवब्रह्मविष्ण्वादिपुरुषरूपेणगौरीलक्ष्म्यादिस्त्रीरूपेणचभासते ॥ तथाचोभयोरपिमायाविशिष्टब्रह्मात्मकत्वमविशिष्टमितिनतेषांस्त्रीपुरुषत्वेपितत्वतःकश्चिद्भेदइत्यर्थः ॥ एतेनगौरीलक्ष्म्यादिशक्तीनामुपासनायांकेवलमायाशक्तेरेवोपास्यत्वंब्रह्मविष्ण्वाद्युपासनायांतुमायाविशिष्टब्रह्मणउपास्यत्वमितिवदंतःपरास्ताः॥शक्त्युपासनायामपिशक्तेर्ब्रह्मानतिरेकात्केवलायाउपासनायाअसंभवेनमायाविशिष्टब्रह्मणएवतत्रोपास्यत्वात् ॥ तदेवाह । सर्वंब्रह्ममयमिति॥ मायाविशिष्टब्रह्ममयमित्यर्थः॥ब्रह्मन्निति संबोधनम् ॥११॥ केननिमित्तेनपंचधाजातातत्राह । स्वेच्छामयस्येति ॥ स्वंप्रकृतिस्तस्यायाइच्छासैवेच्छापरमात्मनोऽपिभवत्युभयोरभिन्नत्वात् ॥ ततःस्वेच्छामयस्यश्रीकृष्णस्यपर

**साचब्रह्मस्वरूपाचानित्यासाचसनातनी ॥ यथात्माचतथाशक्तिर्यथाग्नौदाहिकास्थिता ॥ १० ॥ अतएवहियोगींद्रैःस्त्रीपुंभेदोनमन्यते ॥ सर्वंब्रह्ममयंब्रह्मञ्छ्वत्सदपिनारद ॥ ११ ॥ स्वेच्छामयस्येच्छयाचश्रीकृष्णस्यसिसृक्षया ॥ साऽऽविर्बभूवसहसामूलप्रकृतिरीश्वरी॥ १२॥ तदाज्ञयापंचविधासृष्टिकर्मविभेदिका ॥ अथभक्तानुरोधाद्वाभक्तानुग्रहविग्रहा ॥१३॥ गणेशमातादुर्गायाशिवरूपाशिवप्रिया ॥नारायणीविष्णुमायापूर्णब्रह्मस्वरूपिणी॥१४॥**

मात्मनइच्छया ॥ किमात्मिकया सिसृक्षयासर्जनेइच्छात्मिकया ॥ सापराशक्तिःपंचमहाभूतोत्पत्त्यनंतरंपंचभूतांशान्गृहीत्वाप्रथमंकृष्णरूपेणाविर्बभूवेत्यर्थः ॥ नहिपंचभूतोत्पत्तिंविनादेहधारणंसंभवति । तस्मात्तदुत्पत्त्यनंतरमेवकृष्णस्योत्पत्तिःश्रीभगवत्याकृतेतिबोध्यम् ॥ अयंचोत्पन्नःकृष्णोगोपालसुंदरीरूपइतिवक्ष्यति ॥ ततोन वैष्णवमतप्रवेशइतिबोध्यम् ॥ ननुश्रीकृष्णपदंयोगरूढ्यागोलोकवासिदेवतापरमास्ति । तत्कथंश्रीकृष्णस्यसिसृक्षयेत्यत्रपरमात्मपरंजातमितिचेन्न ॥ केवलयोगस्यतत्रस्वीकारात् ॥ योगेनतुसर्वेशब्दाःपरमात्मपराःसंभवंतीतिदोषाभावात् ॥ यद्वास्वेच्छामयस्यपरमात्मनइच्छयेत्यन्वयः ॥ किमात्मिकयाश्रीकृष्णस्यसिसृक्षयाश्रीकृष्णकर्मकसर्जनात्मिकयेत्यर्थः ॥ १२ ॥ अनंतरंतदाज्ञयापरमात्माज्ञयाश्रीकृष्णस्यस्वेनगृहीतावतारस्यशरीरात्पंचविधापंचप्रकारादुर्गादिभेदेनसृष्टिकर्मविभेदिकातत्कर्मणोनानाभेदेनकर्त्रीप्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥ श्रीकृष्णशरीरेयःस्वकीयांश स्थितस्तमंशंसृष्ट्युपयोगार्थंपंचधादुर्गादिभेदेनाकरोदितिपिंडितोर्थः ॥ तत्रविकल्पमाह । अथभक्तानुरोधाद्वेति ॥ भक्तकार्यार्थंवापंचविधाजातेत्यर्थः ॥ अत्रयद्यपिस्वाज्ञयैवस्वयंप्रकृतिःपंचधाजातानतुपरमात्माज्ञया तस्यनिर्विकारत्वात् ॥ तथापिसास्वकीयाज्ञेवपरमात्मनोऽपिभवति । द्वयोरप्येकत्वात्तस्मात् तदाज्ञयेत्युक्तम् । तत्रपंचविधरूपधारणेस्वेच्छारूपंनिमित्तंभक्तानुग्रहविधावतारमनिमित्तंसृष्ट्युपयोगरूपंनिमित्तंचोक्तंभवति ॥ कृष्णावतारद्वारापंचविधाजातेत्यनेनवभूवपंचधाकथमितिप्रश्नस्योत्तरंचोक्तंभवति ॥ १३ ॥ पंचमध्येदुर्गावतारमहिमानमाह । गणेशमातेति ॥ कृष्णोगणेशरूपेणजनितस्तस्यमातापूर्णब्रह्मरूपिणी ॥ मायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्यादुर्गायाःस्वस्वरूपावरणाभावात्पूर्णत्वम् ॥ १४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १५ ॥ धर्मसत्या धर्मःप्रजापालनादिरूपः सत्योव्यभिचाररहितोयस्याःसा ॥ १६ ॥ तदधिष्ठातृदेवता तच्छब्देनकृष्णस्यअंतःकरणरूपंतेजोगृह्यतेतस्याधिष्ठात्रीदेवता ॥ तदुक्तमुत्तर त्रद्वितीयाध्याये ॥ बुद्ध्यधिष्ठातृदेवीसाकृष्णस्यपरमात्मनइति ॥ तत्रापिबुद्धिशब्देनांतःकरणम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ सर्वशक्तिस्वरूपेति ॥ बुद्धेःसर्वशक्तिमत्त्वात्कृष्णस्यबुद्धेराधि ष्ठात्र्यादुर्गायाःसर्वशक्तिरूपत्वंयुक्तमेव ॥ २० ॥ उक्तःश्रुतौश्रुतगुणइति ॥ श्रुतौवेदेयःश्रुतगुणःप्रसिद्धोगुणोऽस्ति दुर्गायाः सगुणोयथागममागमानतिक्रम्यातिस्वल्पोमयोक्तः वेदो क्तागुणाःसर्वेमयानोक्ताइत्यर्थः ॥ कुतइतिचेद्दुर्गायाअनंतगुणवत्त्वस्यवेदेप्रतिपादनात् ॥ तावद्गुणप्रतिपादनेशक्त्यभावादित्याह । गुणोस्त्यनंतइति ॥ गुणइतिजात्यैकवचनम् ॥ अपरामितिपंचप्रकृत्यवतारमध्येएकोवतारउक्तोद्वितीयावतारंनिशामयशृण्वित्यर्थः ॥ २१ ॥ शुद्धसत्त्वेति ॥ याशुद्धसत्त्वस्वरूपापद्मालक्ष्मीः सापरात्मनोद्वितीयाशक्तिःद्वितीयशक्त्यवता

ब्रह्मादिदेवैर्मुनिभिर्मनुभिः पूजितास्तुता ॥ सर्वाधिष्ठात्रीदेवीसाशर्वरूपासनातनी ॥ १५ ॥ धर्मसत्यापुण्यकीर्तिर्यशोमंगलदायिनी ॥ सुखमोक्षहर्षदा त्रीशोकार्तिदुःखनाशिनी ॥ १६ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणा ॥ तेजःस्वरूपापरमातदधिष्ठातृदेवता ॥ १७ ॥ सर्वशक्तिस्वरूपाचशक्तिरीश स्यसंततम् ॥ सिद्धेश्वरीसिद्धिरूपासिद्धिदासिद्धिरीश्वरी ॥ १८ ॥ बुद्धिर्निद्राक्षुत्पिपासाछायातंद्रादयास्मृतिः ॥ जातिःक्षांतिश्चभ्रांतिश्चशांतिःकांतिश्च चेतना ॥ १९ ॥ तुष्टिःपुष्टिस्तथालक्ष्मीर्धृतिर्मायातथैवच ॥ सर्वशक्तिस्वरूपासाकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ २० ॥ उक्तःश्रुतौश्रुतगुणश्चातिस्वल्पोयथा गमम् ॥ गुणोऽस्त्यनंतोऽनंतायाअपरांचनिशामय ॥ २१ ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपायापद्मासापरमात्मनः ॥ सर्वसंपत्स्वरूपासातदधिष्ठातृदेवता ॥ २२ ॥ कांताऽतिदांताशांताचसुशीलासर्वमंगला ॥ लोभमोहकामरोषमदाहंकारवर्जिता ॥ २३ ॥ भक्तानुरक्तापत्युश्चसर्वाभ्यश्चपतिव्रता ॥ प्राणतुल्याभग वतःप्रेमपात्रंप्रियंवदा ॥ २४ ॥ सर्वसस्यात्मिकादेवीजीवनोपायरूपिणी ॥ महालक्ष्मीश्चवैकुंठेपतिसेवारतासती॥२५॥स्वर्गेचस्वर्गलक्ष्मीश्चराजलक्ष्मी श्चराजसु ॥ गृहेषुगृहलक्ष्मीश्चमर्त्यानांगृहिणांतथा ॥ २६ ॥ सर्वप्राणिषुद्रव्येषुशोभारूपामनोहरा ॥ कीर्तिरूपापुण्यवतांप्रभारूपानृपेषुच ॥२७॥ वा णिज्यरूपावणिजांपापिनांकलहांकुरा । हयारूपाचकथितावेदोक्तासर्वसंमता ॥ २८ ॥ सर्वपूज्यासर्ववंद्याचाऽन्यांमत्तोनिशामय ॥ वाग्बुद्धिविद्याज्ञा नाधिष्ठात्रीचपरमात्मनः ॥ २९ ॥ सर्वविद्यास्वरूपायासाचदेवीसरस्वती ॥ साबुद्धिःकवितामेधाप्रतिभास्मृतिदानृणाम् ॥ ३० ॥

रूपासर्वसंपत्स्वरूपातदधिष्ठातृदेवतापरमेश्वरसंपत्तेरधिष्ठात्रीत्यर्थः ॥ इदमप्यग्रेवक्ष्यति ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ सर्वसस्यात्मिकासर्वधान्यात्मिकेत्यर्थः ॥ सर्वशस्तात्मिकेतिपाठेसर्व प्रशस्तपदार्थरूपेत्यर्थः ॥ वैकुंठेइति ॥ इयंवैकुंठवासिनीत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ सैवलक्ष्मीःपुण्यवतांधर्मायभवति पापिनांतुपापायभवतीत्याह । पापिनामिति ॥ २८ ॥ अन्यांपंचसुमध्येतृतीयांज्ञानाधिष्ठात्रीं तच्चज्ञानंपरमात्मनः परमेश्वरस्यबुद्धिवृत्तिरूपंगृह्यते ॥ सरस्वत्याविद्याधिष्ठातृत्वात् ॥ २९ ॥ तदेवाह । सर्वविद्यास्वरूपेति ॥ कवितापदरचना रूपकविताकारिणी कवितारूपावा ॥ मेधाग्रंथधारणसामर्थ्यम् ॥ प्रतिभाविषयस्फुरणम् ॥ ३० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

नानाप्रकारायेसिद्धांतभेदास्तेषांयेऽर्थाविषयास्तेषांकलनाआकलनरूपेत्यर्थः ॥ ३१ ॥ स्वराःसप्तस्वराःषड्जादयस्तद्विशिष्टंसंगीतंगानंतस्यसंधानेनानुसंधानेनयस्तालस्तस्यकारणंतत्प्रति पादकंशास्त्रंतस्यकारिणीम् ॥ ३२ ॥ विषयज्ञानरूपावाग्रूपाचेत्यर्थः ॥ प्रतिविश्वोपजीविनी सर्वजीवसंजीविनीत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ब्रह्मणः प्रियेत्यनेनगायत्रीब्रह्मलोकवासिनीत्युक्तम् ॥ ४० ॥ ४१ ॥ तदधिष्ठातृदेवताब्रह्मतेजोजीवरूपश्चिदाभासस्तदधिष्ठात्रीत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ पंचप्राणाधिदेवीराधा ॥ पंचप्राणाधि

नानाप्रकारसिद्धांतभेदार्थकलनामता ॥ व्याख्यावोधस्वरूपाचसर्वसंदेहभंजिनी ॥३१॥ विचारकारिणीग्रंथकारिणीशक्तिरूपिणी॥स्वरसंगीतसंधानता लकारणरूपिणी ॥३२॥ विषयज्ञानवाग्रूपाप्रतिविश्वोपजीविनी ॥ व्याख्यावादकरीशांतावीणापुस्तकधारिणी ॥३३॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपाचसुशीलाश्रीह रिप्रिया ॥ हिमचंदनकुंदेंदुकुमुदांभोजसन्निभा ॥३४॥ यजंतीपरमात्मानंश्रीकृष्णंरत्नमालया ॥ तपःस्वरूपातपसांफलदात्रीतपस्विनाम् ॥३५॥ सिद्धि विद्यास्वरूपाचसर्वसिद्धिप्रदासदा ॥ ययाविनातुविप्रौघोमूकोमृतसमःसदा॥३६॥देवीतृतीयागदिताश्रुत्युक्ताजगदंबिका ॥ यथागमंयथाकिंचिदपरांत्वंनि वोधमे ॥३७॥ माताचतुर्णांवर्णानांवेदांगानांचछंदसाम् ॥ संध्यावंदनमंत्राणांतंत्राणांचविचक्षण ॥३८॥ द्विजातिजातिरूपाचजपरूपातपस्विनी ॥ ब्रह्म ण्यतेजोरूपाचसर्वसंस्काररूपिणी ॥३९॥ पवित्ररूपासावित्रीगायत्रीब्रह्मणःप्रिया॥तीर्थानियस्याःसंस्पर्शैर्वांछंतिह्यात्मशुद्धये ॥४०॥ शुद्धस्फटिकसंका शाशुद्धसत्त्वस्वरूपिणी ॥ परमानंदरूपाचपरमाचसनातनी ॥४१॥परब्रह्मस्वरूपाचनिर्वाणपददायिनी ॥ ब्रह्मतेजोमयीशक्तिस्तदधिष्ठातृदेवता ॥४२॥ यत्पादरजसापूतंजगत्सर्वंचनारद ॥ देवीचतुर्थीकथितापंचमींवर्णयामिते ॥४३॥ पंचप्राणाधिदेवीयापंचप्राणस्वरूपिणी ॥ प्राणाधिकप्रियतमासर्वाभ्यः सुंदरीपरा॥४४॥सर्वयुक्ताचसौभाग्यमानिनीगौरवान्विता ॥ वामांगार्धस्वरूपाचगुणेनतेजसासमा ॥४५॥ परावरासारभूतापरमाद्यासनातनी ॥ परमानं दरूपाचधन्यामान्याचपूजिता ॥४६॥ रासक्रीडाधिदेवीश्रीकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ रासमंडलसंभूतारासमंडलमंडिता॥४७॥रासेश्वरीसुरसिकारासावास निवासिनी ॥ गोलोकवासिनीदेवीगोपीवेषविधायिका ॥४८॥ परमाह्लादरूपाचसंतोषहर्षरूपिणी॥निर्गुणाचनिराकारानिर्लिप्ताऽऽत्मस्वरूपिणी ॥४९॥ निरीहानिरहंकाराभक्तानुग्रहविग्रहा ॥ वेदानुसारिध्यानेनविज्ञातासाविचक्षणैः ॥५०॥ दृष्टिदृष्टानसाचेशैःसुरेंद्रैर्मुनिपुंगवैः ॥ वह्निशुद्धांशुकधरानानालं कारभूषिता ॥५१॥ कोटिचंद्रप्रभापुष्टसर्वश्रीयुक्तविग्रहा ॥ श्रीकृष्णभक्तिदास्यैककराचसर्वसंपदाम् ॥ ५२ ॥

ष्ठात्रीत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ गोपीवेषविधायिका गोपिकारूपाणांजनयित्रीत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ वेदानुसारिध्यानेनवेदोक्तध्यानेनविज्ञाताध्यातेत्यर्थः ॥ ५० ॥ दृष्टिदृष्टेति॥ईशैरीश्वरैरपिसुरेंद्रैर्मुनिपुंगवैश्चसादृष्टिदृष्टाचक्षुषादृष्टानभवतीत्यर्थः ॥ वह्निशुद्धांशुकधरा वह्नौत्यक्तमपिनदग्धंभवत्येतादृशंयत्तंतुविशेषस्यांशुकंवस्त्रंतद्वद्विशुद्धांशुकमित्युच्यते तत्प रिधानकर्त्रीत्यर्थः ॥ ५१ ॥ पुष्टापूर्णायासर्वश्रीः ॥ श्रीकृष्णस्ययेभक्तिदास्येतयोः करा संपदांचकराकर्त्रीत्यर्थः ॥ ५२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अवतारेचवाराहेइति ॥ वराहावतारेवाराहकल्पेइत्यर्थः ॥ तस्मिन्कल्पेवृषभानुर्व्रजस्थःकश्चनगोपस्तस्यसुताचयाभवतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ याब्रह्मादिभिरप्यदृष्टासासर्वैर्भारतेखंडेवृंदावनेदृष्टे त्यर्थः ॥५४॥ यथांबरेइति ॥ अंबरेविद्यमानोयोनवघनस्तरुणघनोनिविडघनस्तस्मिन्यासौदामनीविद्युल्लतातद्वच्छोभतेइत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ अयंभावः ॥ मूलप्रकृतिस्तावत्सर्वेश्वरी मायाविशिष्टब्रह्मरूपिणी ॥ यथासमष्टिव्यष्टींद्रियाणामधिष्ठात्रींदेवतादिग्वातार्कप्रचेतोश्विवन्हींद्रोपेंद्रमित्ररूपाविनिर्ममे ॥ तथैवसमष्टिव्यष्टयंतःकरणानामधिष्ठात्रींदुर्गांसमष्टिव्यष्टिसंप त्त्यधिष्ठात्रींलक्ष्मींसमष्टिव्यष्टिबुद्ध्यधिष्ठात्रींज्ञानाधिष्ठात्रीं सरस्वतींसमष्टिव्यष्ट्यात्मब्रह्मतेजोरूपजीवाधिष्ठात्रींसावित्रींतथैवपंचप्राणाधिष्ठात्रींराधांचश्रीकृष्णस्वरूपंधृत्वातत्स्वरूपस्थितश क्तितोनिर्ममे ॥ आसांचपंचदेवीनांमूलप्रकृत्यवतारत्वात्सर्वव्यापकत्वंमूलप्रकृतिसमानमहिमत्वंचास्तीति ॥ मूलप्रकृतेर्मायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्याअधिष्ठातृरूपंतुश्रीभुवनेश्वरीतितृतीयस्कंधे उक्तंनविस्मर्तव्यम् ॥ यद्यपिपदार्थमात्रस्यमूलप्रकृतिरूपत्वात्ब्रह्मविष्ण्वादिपुरुषाअपिमूलप्रकृतिरूपास्तदंशाएव ॥ तथापिस्त्रीषुप्रसवधर्मित्वरूपस्यविशेषगुणस्याधिकस्यसत्त्वादतएव स्त्रीलिंगप्रयोगस्यतत्रैवसत्त्वाच्चस्त्रीष्वेवतदंशव्यवस्थितिरुक्ता ॥ परमार्थतस्तुपुरुषाअपिमूलप्रकृत्यंशरूपाएव ॥ तदुक्तमाचार्यैःप्रपंचसारेप्रथमपटले ॥ पुन्नपुंसकयोस्तुल्याप्यंगनासुवि

**अवतारेचवाराहेवृषभानुसुताचया ॥ यत्पादपद्मसंस्पर्शपवित्राचवसुंधरा ॥५३॥ ब्रह्मादिभिरदृष्टायासर्वैर्दृष्टाचभारते ॥ स्त्रीरत्नसारसंभूताकृष्णवक्षस्थ लेस्थिता ॥५४॥ यथांबरेनवघनेलोलासौदामनीमुने ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिप्रतप्तंब्रह्मणापुरा ॥ ५५ ॥ यत्पादपद्मनखरदृष्टयेचात्मशुद्धये ॥ नचदृष्टं चस्वप्नेपिप्रत्यक्षस्यापिकाकथा ॥५६॥ तेनैवतपसादृष्टाभुविवृंदावनेवने ॥ कथितापंचमीदेवीसाराधाचप्रकीर्तिता ॥ ५७ ॥ अंशरूपाःकलारूपाःकलां शांशांशसंभवाः ॥ प्रकृतेःप्रतिविश्वेषुदेव्यश्चसर्वयोषितः ॥ ५८ ॥ परिपूर्णतमाःपंचविद्यादेव्यःप्रकीर्तिताः ॥ यायाःप्रधानांशरूपावर्णयामिनिशामय ॥ ५९ ॥ प्रधानांशस्वरूपासागंगाभुवनपावनी ॥ विष्णुविग्रहसंभूताद्रवरूपासनातनी ॥ ६० ॥ पापिपापेध्मदाहायज्वलदग्निस्वरूपिणी ॥ सुखस्प र्शास्नानपानैर्निर्वाणपददायिनी ॥ ६१ ॥ गोलोकस्थानप्रस्थानसुखसोपानरूपिणी ॥ पवित्ररूपातीर्थानांसरितांचपरावरा ॥ ६२ ॥ शंभुमौलिजटामे रुमुक्तापंक्तिस्वरूपिणी ॥ तपःसंपादिनीसद्योभारतेषुतपस्विनाम् ॥ ६३ ॥**

शिष्यतेइति ॥ सर्वंदेवीमयंजगदितिच ॥ श्रुतिश्च ॥ मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥ तयोर्विभूतिलेशोवैजगदेतच्चराचरमिति ॥ ५७ ॥ ननुकिमेतावत्यएवदेव्योनेत्याह । अंशरूपाइति ॥ काश्चिद्देवताआभ्योऽन्याःप्रकृतेरंशभूताअर्धांशभूतावह्वयःसंति ॥ तथाकाश्चित्कलारूपाअर्धांशार्धांशरूपाः ॥ तथाकाश्चित्कलांशरूपाः काश्चित् कलांशांशरूपाः ॥ काश्चित्कलांशांशांशरूपावह्वयःसंतीत्यर्थः ॥ ताःकसंतीतिचेत्प्रतिविश्वेषुसर्वलोकेषुयादेव्योयाश्चसर्वयोषितस्तद्रूपेणसंतीत्यर्थः ॥ ५८ ॥ तर्हिपंचैवेतिकथमुक्तमितिचेत्पंचदेव्यःप्रकृतेः पूर्णाअवताराःसंतीत्यभिप्रायेणोक्तमित्याह । परिपूर्णतमाइति ॥ पंचदेव्योदुर्गादयः ॥ तत्रकाश्चिदंशरूपादेवीर्दर्शयति । प्रधानांशेति । प्रधानंमूलप्रकृतिस्तदंशभूतायायास्तावर्णयामी त्यर्थः ॥ ५९ ॥ प्रधानांशेति ॥ अत्रप्रधानशब्देनमूलप्रकृतिस्तदंशभूतागंगेत्यर्थः ॥ याप्रधानांशसंभूतासाप्रधानाभिन्नविष्णुविग्रहसंभूताजातैवेत्यभिप्रायेणाह । विष्णुविग्रहेति ॥ अनेन चसर्वदेवतानांनकेवलशक्तिरूपत्वं किंतु शक्तिविशिष्टब्रह्मरूपत्वमितिस्पष्टमेवोक्तमितिबोध्यम् ॥६०॥ पापरूपकाष्ठदाहंकर्तुंज्वलदग्निरेवेत्यर्थः ॥६१॥ प्रस्थानंगमनं सोपानंनिश्रेणिका ॥ परंभिन्नंतीर्थमवरंकनिष्ठंयस्याः ॥ ६२ ॥ जटारूपोमेरुः ॥ मुक्तापंक्तिस्वरूपिणीश्वेतवर्णत्वात् ॥ ६३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६४ ॥ प्रधानांशसंभूतांतुलसीमाह । प्रधानांशेति ॥ इयंचतुलसीवृक्षाधिष्ठात्रीस्त्रीमूर्तिर्वर्तते एवंगंगापिस्त्रीमूर्तिरस्तीतिबोध्यम् ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ प्रधानांशसंभूतांमनसादेवींवर्णयति।मनसाकश्यपात्मजेति ॥ शंकरस्यप्रियशिष्यभूतेत्यर्थः ॥ शंकरेणोपदेशोमनसादेव्यैदत्तइत्यर्थः ॥ अतएवमहाज्ञानविशारदा ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ कृष्णांशस्यजरत्कारुमुनेःपत्नीत्यर्थः ॥ इयंकथापूर्वमुक्तासर्पसत्रप्रसंगे ॥७७॥ प्रधानांशसंभूतांदेवसेनांवर्णयति । प्रधानांशेति ॥ ७८ ॥ षष्ठीनाम्नोहेतुमाह । षष्ठांशरूपाप्रकृतेरिति ॥ देवसेनेतिषष्ठीतिचनामद्वयमस्याइत्यर्थः ॥ ७९ ॥ वृद्धरूपानतुतरुणी ॥ पूजाद्वादशमासेष्विति ॥ प्रसूतिकालमारभ्यद्वादशमासपर्यंतंप्रतिमासामित्यर्थः॥८०॥

चंद्रपद्मक्षीरनिभाशुद्धसत्त्वस्वरूपिणी ॥ निर्मलानिरहंकारासाध्वीनारायणप्रिया ॥ ६४ ॥ प्रधानांशस्वरूपाचतुलसीविष्णुकामिनी ॥ विष्णुभूषणरूपाचविष्णुपादस्थितासती ॥ ६५ ॥ तपःसंकल्पपूजादिसंघसंपादिनीमुने ॥ सारभूताचपुष्पाणांपवित्रापुण्यदासदा ॥ ६६ ॥ दर्शनस्पर्शनाभ्यांच सद्योनिर्वाणदायिनी ॥ कलौकलुषशुष्केध्मदहनायाग्निरूपिणी ॥ ६७ ॥ यत्पादपद्मसंस्पर्शात्सद्यःपूतावसुंधरा ॥ यत्स्पर्शदर्शनेचैवेच्छंतितीर्थानिशुद्धये ॥ ६८ ॥ ययाविनाचविश्वेषुसर्वकर्मचनिष्फलम् ॥ मोक्षदायामुमुक्षूणांकामिनीसर्वकामदा ॥ ६९ ॥ कल्पवृक्षस्वरूपायाभारतेवृक्षरूपिणी ॥ भारतीनांप्रीणनायजातायापरदेवता ॥७०॥ प्रधानांशस्वरूपायामनसाकश्यपात्मजा ॥ शंकरप्रियशिष्याचमहाज्ञानविशारदा ॥७१॥ नागेश्वरस्यानंतस्यभगिनीनागपूजिता ॥ नागेश्वरीनागमातासुंदरीनागवाहिनी ॥ ७२ ॥ नागेंद्रगणसंयुक्तानागभूषणभूषिता ॥ नागेंद्रवंदितासिद्धायोगिनीनागशायिनी ॥ ७३ ॥ विष्णुरूपाविष्णुभक्ताविष्णुपूजापरायणा ॥ तपःस्वरूपातपसांफलदात्रीतपस्विनी ॥ ७४ ॥ दिव्यंत्रिलक्षवर्षंचतपस्तप्त्वाचयाहरेः ॥ तपस्विनीषुपूज्याचतपस्विषुचभारते ॥७५॥ सर्वमंत्राधिदेवीचज्वलंतीब्रह्मतेजसा ॥ ब्रह्मस्वरूपापरमाब्रह्मभावनतत्परा ॥ ७६ ॥ जरत्कारुमुनेःपत्नीकृष्णांशस्यपतिव्रता ॥ आस्तीकस्यमुनेर्माताप्रवरस्यतपस्विनाम् ॥७७॥ प्रधानांशस्वरूपायादेवसेनाचनारद ॥ मातृकासुपूज्यतमासाषष्ठीचप्रकीर्तिता ॥ ७८ ॥ पुत्रपौत्रादिदात्रीचधात्रीत्रिजगतांसती ॥ षष्ठांशरूपाप्रकृतेस्तेनषष्ठीप्रकीर्तिता ॥ ७९ ॥ स्थानेशिशूनांपरमावृद्धरूपाचयोगिनी ॥ पूजाद्वादशमासेषुयस्याविश्वेषुसंततम् ॥ ८० ॥ पूजाचसूतिकागारेपुराषष्ठदिनेशिशोः ॥ एकविंशतिमेचैवपूजाकल्याणहेतुकी ॥ ८१ ॥ मुनिभिर्नमिताचैषानित्यकामाप्यतःपरा ॥ मातृकाचदयारूपाशश्वद्रक्षणकारिणी ॥ ८२ ॥ जलेस्थलेचांतरिक्षेशिशूनांसद्मगोचरे॥ प्रधानांशस्वरूपाचदेवीमंगलचंडिका ॥ ८३ ॥ प्रकृतेर्मुखसंभूतासर्वमंगलदासदा ॥ सृष्टौमंगलरूपाचसंहारेकोपरूपिणी ॥ ८४ ॥

अत्राशक्तंप्रत्याह । षष्ठदिनेशिशोरिति ॥ तत्राप्यसंभवेआह । एकविंशतिमेइति ॥८१॥ ८२ ॥ सद्मगोचरेगृहस्थानेप्रधानांशभूतांमंगलचंडिकांवर्णयति । प्रधानांशेति ॥८३॥ प्रकृतेर्मुखसंभूतेति ॥ प्रकृतेर्व्यापिकायामुखस्यासंभवेऽपिप्रकृतेःपूर्णावतारभूतायादुर्गायामुखंग्राह्यम् ॥ मंगलचंडीनामनिरुक्तिमाह।सृष्टाविति ॥ चंडिकोपइत्यस्यचंडीतिरूपम् ॥ सृष्टिसमयेमंगलरूपत्वादतिशान्तरूपत्वात् संहारकालेकोपनत्वात् मंगलचंडीतिनाम मंगलाचासौचंडीचमंगलचंडी ॥ ८४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८५ ॥ ८६ ॥ प्रधानांशसंभूतांकालींवर्णयति । कालीति ॥ ८७ ॥ दुर्गाललाटेति ॥ यथाब्रह्मणोललाटाद्रुद्रउत्पन्नस्तथादुर्गाललाटात्प्रधानमूलप्रकृत्यंशभूताकालीउत्पन्नेत्यर्थः ॥ दुर्गार्धांशेति ॥ दुर्गायाःपूर्णावतारत्वात्तस्याअर्धांशत्वोक्तौमूलप्रकृत्याअपिअर्धांशत्वमुक्तमितिबोध्यम् ॥ दुर्गायागुणेनतेजसाचेत्यन्वयः ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ परमायागरूपिणीत्यत्रपरमा सिद्धयोगिनीत्यपिपाठः ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ननुनिश्वासमात्रेणयदिब्रह्मांडसंहर्त्रीतदापामरैर्दैत्यैःसहकिमर्थंयुद्धंकृतवतीतिचेत्तत्राह । रणमिति ॥ लोकशिक्षयेत्यत्रलोकरंजयेत्यपिपाठः ॥ लोकरंजनार्थंयुद्धंदैत्यैःसमंकृतवतीत्यर्थः ॥ ९२ ॥ प्रधानांशस्वरूपांवसुंधरांवर्णयति । वसुंधरेति ॥ ९३ ॥ सर्वशस्यप्रसूतिकेत्यपिपाठः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ अथप्रकृतेःकलावतारानाह ।

तेनमंगलचंडीसापंडितैःपरिकीर्तिता ॥ प्रतिमंगलवारेषुप्रतिविश्वेषुपूजिता ॥ ८५ ॥ पुत्रपौत्रधनैश्वर्ययशोमंगलदायिनी ॥ परितुष्टासर्ववांछाप्रदात्रीसर्वयोषिताम् ॥ ८६ ॥ रुष्टाक्षणेनसंहर्तुंशक्ताविश्वंमहेश्वरी ॥ प्रधानांशस्वरूपासाकालीकमललोचना ॥ ८७ ॥ दुर्गाललाटसंभूतारणेशुंभनिशुंभयोः ॥ दुर्गार्धांशस्वरूपासागुणेनतेजसासमा ॥ ८८ ॥ कोटिसूर्यसमाजुष्टपुष्टजाज्वलविग्रहा ॥ प्रधानासर्वशक्तीनांबलाबलवतीपरा ॥ ८९ ॥ सर्वसिद्धिप्रदादेवीपरमायोगरूपिणी ॥ कृष्णभक्ताकृष्णतुल्यातेजसाविक्रमैर्गुणैः ॥ ९० ॥ कृष्णभावनयाशश्वत्कृष्णवर्णासनातनी ॥ संहर्तुंसर्वब्रह्माण्डंशक्तानिश्वासमात्रतः ॥ ९१ ॥ रणेदैत्यैःसमंतस्याःक्रीडयालोकशिक्षया ॥ धर्मार्थकाममोक्षांश्चदातुंशक्ताचपूजिता ॥ ९२ ॥ ब्रह्मादिभिःस्तूयमानामुनिभिर्मनुभिर्नरैः ॥ प्रधानांशस्वरूपासाप्रकृतेश्चवसुंधरा ॥ ९३ ॥ आधाररूपासर्वेषांसर्वसस्याप्रकीर्तिता ॥ रत्नाकररत्नगर्भासर्वरत्नाकराश्रया ॥ ९४ ॥ प्रजाभिश्चप्रजेशैश्चपूजितावंदितासदा ॥ सर्वोपजीव्यरूपाचसर्वसंपद्विधायिनी ॥ ९५ ॥ ययाविनाजगत्सर्वंनिराधारंचराचरम् ॥ प्रकृतेश्चकलायायास्तानिबोधमुनीश्वर ॥ ९६ ॥ यस्ययस्यचयापत्नीतत्सर्ववर्णयामिते॥स्वाहादेवीवह्निपत्नीप्रतिविश्वेषुपूजिता ॥ ९७॥ ययाविनाहविर्दानंनग्रहीतुंसुराःक्षमाः ॥ दक्षिणायज्ञपत्नीचदीक्षासर्वत्रपूजिता ॥ ९८ ॥ ययाविनाहिविश्वेषुसर्वकर्महिनिष्फलम् ॥ स्वधापितॄणांपत्नीचमुनिभिर्मनुभिर्नरैः ॥ ९९ ॥ पूजितापितृदानंहिनिष्फलंचययाविना ॥ स्वस्तिदेवीवायुपत्नीप्रतिविश्वेषुपूजिता ॥ १०० ॥ आदानंचप्रदानंचनिष्फलंचययाविना॥पुष्टिर्गणपतेःपत्नीपूजिताजगतीतले ॥ १०१ ॥ ययाविनापरिक्षीणाःपुमांसोयोषितोऽपिच ॥ अनंतपत्नीतुष्टिश्चपूजितावंदिताभवेत् ॥ २ ॥ ययाविनानसंतुष्टाःसर्वलोकाश्चसर्वतः ॥ ईशानपत्नीसंपत्तिःपूजिताचसुरैर्नरैः ॥ ३ ॥ सर्वैर्लोकादरिद्राश्चविश्वेषुचययाविना ॥ धृतिःकपिलपत्नीचसर्वैःसर्वत्रपूजिता ॥ १०४ ॥

कलायायाइति ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ दीयतेविमलंज्ञानंक्षीयतेकर्मवासना ॥ तेनदीक्षेतिसाप्रोक्तेत्युक्तलक्षणादीक्षापदवाच्यासायज्ञस्यपत्नीत्यर्थः ॥ दक्षिणायज्ञपत्नीतिश्रुतेर्दक्षिणादीक्षाचयज्ञपत्नीत्यर्थः ॥ यज्ञपूरुषोमूर्तिमान्दक्षिणाचमूर्तिमतीतिबोध्यम् ॥ एवमेवसर्वत्र ॥ ९८ ॥ ९९ ॥१००॥ आदानंप्रतिग्रहः प्रदानंद्रव्यस्यदानम् उभेअपिस्वस्तीत्युक्तेसफलेभवतइत्यर्थः ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १०५ ॥ यत्रसत्यशक्तिर्नास्तितत्राविश्वासान्मनुष्यःस्नेहंनकरोतीतिबंधुतारहितोभवतीतियुक्तमेव ॥ मोहपत्नीति ॥ यत्रमोहोस्तितत्रदयायाःसत्त्वाद्दयामोहपत्नी ॥ ६ ॥ ७ ॥ जीवन्मृतसमंप्रतिष्ठाभावेजीवतोपिमृतप्रायत्वात् ॥८॥ उद्योगोयत्नः ॥ ९ ॥ विधिहीनंक्रियाभावेतत्स्वरूपाविधेरप्यभावः ॥ १० ॥ विधिनिर्मितम् ईश्वरानिर्मितंसर्वजगद्धूर्तसमुदायरूप मुच्छिन्नंभवति ॥ मिथ्याभाषणाभावेधूर्तत्वस्याभावात् ॥ मिथ्यावक्ताहिधूर्तः ॥ युगभेदेनास्याःस्थितिमाह । सत्यइति ॥ ११ ॥ १२ ॥ इयंमिथ्याकपटेनभ्रात्रासहिताप्रतिगृहंभ्रमती त्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ धर्मपत्नीमूर्तिःसाचकांतिरूपाशोभारूपेत्यर्थः ॥ १५ ॥ शोभांविनापरमात्मापिनिराधारोनिरर्थकोभवतीत्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ रात्रिषुयोगेनसंबंधेनसंध्यारा

सर्वेलोकाअधैर्याश्चजगत्सुचययाविना ॥ सत्यपत्नीसतीमुक्तैःपूजिताजगतीप्रिया ॥१०५॥ ययाविनाभवेल्लोकोबंधुतारहितःसदा॥मोहपत्नीदयासाध्वीपू जिताचजगत्प्रिया ॥ ६ ॥ सर्वेलोकाश्चसर्वत्रनिष्फलाश्चययाविना ॥ पुण्यपत्नीप्रतिष्ठासापूजितापुण्यदासदा ॥ ७ ॥ ययाविनाजगत्सर्वंजीवन्मृतसमं मुने ॥ सुकर्मपत्नीसंसिद्धाकीर्तिर्धन्यैश्चपूजिता ॥ ८ ॥ ययाविनाजगत्सर्वंयशोहीनंमृतंयथा ॥ क्रियातूद्योगपत्नीचपूजितासर्वसंमता ॥ ९ ॥ ययावि नाजगत्सर्वंविधिहीनंचनारद ॥ अधर्मपत्नीमिथ्यासासर्वधूर्तैश्चपूजिता ॥ १० ॥ ययाविनाजगत्सर्वमुच्छिन्नंविधिनिर्मितम् ॥ सत्येअदर्शनायाचत्रेता यांसूक्ष्मरूपिणी ॥ ११ ॥ अर्धावयवरूपाचद्वापरेचैवसंवृता ॥ कलौमहाप्रगल्भाचसर्वत्रव्यापिकाबलात् ॥ १२ ॥ कपटेनसमंभ्रात्राभ्रमतेचगृहेगृहे ॥ शांतिर्लज्जाचभार्येद्वेसुशीलस्यचपूजिते ॥ १३ ॥ याभ्यांविनाजगत्सर्वमुन्मत्तमिवनारद ॥ ज्ञानस्यतिस्रोभार्याश्चबुद्धिर्मेधाधृतिस्तथा ॥ १४ ॥ याभि र्विनाजगत्सर्वंमूढंमत्तसमंसदा ॥ मूर्तिश्चधर्मपत्नीसाकांतिरूपामनोहरा ॥ १५ ॥ परमात्माचविश्वौघोनिराधारोययाविना ॥ सर्वत्रशोभारूपाचल क्ष्मीर्मूर्तिमतीसती ॥ १६ ॥ श्रीरूपामूर्तिरूपाचमान्याधन्याऽतिपूजिता ॥ कालाग्नीरुद्रपत्नीचनिद्रासासिद्धयोगिनी ॥ १७ ॥ सर्वेलोकाःसमाच्छन्ना ययायोगेनरात्रिषु ॥ कालस्यतिस्रोभार्याश्चसंध्यारात्रिदिनानिच ॥ १८ ॥ याभिर्विनाविधाताचसंख्यांकर्तुंनशक्यते ॥ क्षुत्पिपासेलोभभार्येधन्येमान्ये चपूजिते ॥ १९ ॥ याभ्यांव्याप्तंजगत्सर्वंनित्यंचिंतातुरंभवेत् ॥ प्रभाचदाहिकाचैवद्वेभार्येतेजसस्तथा ॥ १२० ॥ याभ्यांविनाजगत्स्रष्टुंविधातुंचनहीश्व रः ॥ कालकन्येमृत्युजरेप्रज्वारस्यप्रियाप्रिये ॥ २१ ॥ याभ्यांजगत्समुच्छिन्नंविधात्रानिर्मितंविधौ ॥ निद्राकन्याचतंद्रासाप्रीतिरन्यासुखाप्रिये ॥ २२ ॥ याभ्यांव्याप्तंजगत्सर्वंविधिपुत्रविधेर्विधौ ॥ वैराग्यस्यचद्वेभार्येश्रद्धाभक्तिश्चपूजिते ॥ २३ ॥ याभ्यांशश्वज्जगत्सर्वंयज्जीवन्मुक्तिमन्मुने ॥ अदितिर्देवमा ताचसुरभीचगवांप्रसूः ॥ २४ ॥ दितिश्चदैत्यजननीकद्रूश्चविनतादनुः ॥ उपयुक्ताःसृष्टिविधौएतास्तुकीर्तिताःकलाः ॥ १२५ ॥

त्रिवद्दिनानामपिकालाधीनत्वात् ॥ स्त्रीसदृशत्वात्स्त्रीत्वम् ॥ १८ ॥ १९ ॥ चिंतातुरंक्षुत्पिपासानाशकान्नजलचिंतातुरमित्यर्थः ॥ १२० ॥ जरावन्मृत्योरपिकालादुत्पन्नत्वात्कन्यास दृशत्वात्कन्यात्वम् ॥ तेमृत्युजरेकालस्यकन्ये ॥ प्रज्वारस्यप्रकृष्टज्वरस्यप्रियाप्रियेपत्न्यौभवतःप्रियातोऽपिप्रियेअतिशयितप्रियेइत्यर्थः ॥ २१ ॥ समुच्छिन्नंनष्टम् ॥ निद्राकन्येति ॥ निद्रायाःकन्याएकातंद्रा अन्याद्वितीयाकन्याप्रीतिः ॥ उभेअपिसुखस्यपुरुषस्थानीयस्यप्रियेपत्न्यौभवतः॥२२॥२३॥२४॥उपयुक्ताइति ॥ एताःकलाःसृष्टावुपयुक्ताइत्यर्थः ॥ १२५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥१२६॥२७॥२८॥ अंबिकाप्रसूःपार्वतीमातामेनका ॥२९॥३०॥ वृषभानोःपत्नीराधायामाता ॥३१॥३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ भृगोःपरशुरामस्य ॥ रामोबलरामस्तस्यमाता ॥ १३५॥ कृष्णभगिनीदुर्गाविंध्यवासिनीत्यर्थः ॥ एकनंदाचसैवएकनंदाचकाचिदन्यावा ॥ एवमन्याअपिकलाःसंतीत्याहबह्वयइति ॥ ३६ ॥ एवंकलावतारदेवतास्वरूपमुक्त्वाकलांशांशावतारदेवतास्वरूपमाह प्रतिविश्वेषुयोषितइति ॥ प्रतिलोकेषुयाःस्त्रियःसंतिताइत्यर्थः ॥ ३७ ॥ यस्मात्सर्वाअपिस्त्रियःप्रकृत्यंशभूतास्तस्मात्तासामवमानेप्रकृतेरेवावमानइत्याह। योषितामवमानेइति ॥ पराभवोऽवमानः ॥ तासांपूजनेप्रकृतेःपूजाभवतीत्याह। ब्राह्मणीति ॥ ३८ ॥३९॥१४०॥ सत्त्वांशानांलक्षणंपतिव्रताइति ॥ रजोंशानांलक्षणंभोग्याइति ॥ विषयास

कलाअन्याःसंतिबह्वयस्तासुकाश्चिन्निबोधमे ॥ रोहिणीचंद्रपत्नीचसंज्ञासूर्यस्यकामिनी ॥ १२६ ॥ शतरूपामनोर्भार्याशचींद्रस्यचरोहिणी ॥ ताराबृहस्पतेर्भार्यावसिष्ठस्याऽप्यरुंधती ॥ २७ ॥ अहल्यागौतमस्त्रीसाऽप्यनुसूयाऽत्रिकामिनी ॥ देवहूतीकर्दमस्यप्रसूतिर्दक्षकामिनी ॥ २८ ॥ पितृणांमानसीकन्यामेनकासांऽबिकाप्रसूः ॥ लोपामुद्रातथाकुंतीकुबेरकामिनीतथा ॥ २९ ॥ वरुणानीप्रसिद्धाचबलेर्विंध्यावलिस्तथा ॥ कांताचदमयंतीचयशोदादेवकीतथा ॥ १३० ॥ गांधारीद्रौपदीशैब्यासाचसत्यवतीप्रिया ॥ वृषभानुप्रियासाध्वीराधामाताकुलोद्वहा ॥३१॥ मंदोदरीचकौसल्यासुभद्राकौरवीतथा ॥ रेवतीसत्यभामाचकालिंदीलक्ष्मणातथा ॥ ३२ ॥ जांबवतीनाग्नजितिर्मित्रविंदातथापरा ॥ लक्ष्मणारुक्मिणीसीतास्वयंलक्ष्मीःप्रकीर्तिता ॥३३॥ कालीयोजनगंधाचव्यासमातामहासती ॥ बाणपुत्रीतथोषाचचित्रलेखाचतत्सखी ॥ ३४ ॥ प्रभावतीभानुमतीतथामायावतीसती ॥ रेणुकाचभृगोर्मातारामममाताचरोहिणी ॥ १३५ ॥ एकनंदाचदुर्गासाश्रीकृष्णभगिनीसती ॥ बह्वयःसत्यःकलाश्चैवप्रकृतेरेवभारते ॥ ३६ ॥ यायाश्चग्रामदेव्यःस्युस्ताःसर्वाःप्रकृतेःकलाः ॥ कलांशांशसमुद्भूताःप्रतिविश्वेषुयोषितः ॥ ३७ ॥ योषितामवमानेनप्रकृतेश्चपराभवः ॥ ब्राह्मणीपूजितायेनपतिपुत्रवतीसती ॥ ॥ ३८ ॥ प्रकृतिःपूजितातेनवस्त्रालंकारचंदनैः ॥ कुमारीचाष्टवर्षायावस्त्रालंकारचंदनैः ॥ ३९ ॥ पूजितायेनविप्रस्यप्रकृतिस्तेनपूजिता ॥ सर्वाःप्रकृतिसंभूताउत्तमाधममध्यमाः ॥ १४० ॥ सत्त्वांशाश्चोत्तमाज्ञेयाःसुशीलाश्चपतिव्रताः ॥ मध्यमारजसश्चांशास्ताश्चभोग्याःप्रकीर्तिताः ॥ ४१ ॥ सुखसंभोगवश्याश्चस्वकार्यतत्पराःसदा ॥ अधमास्तमसश्चांशाअज्ञातकुलसंभवाः ॥ ४२ ॥ दुर्मुखाःकुलहाधूर्ताःस्वतंत्राःकलहप्रियाः ॥ पृथिव्यांकुलटायाश्चस्वर्गेचाप्सरसांगणाः ॥ ४३ ॥ प्रकृतेस्तमसश्चांशाःपुंश्चल्यःपरिकीर्तिताः ॥ एवंनिगदितंसर्वंप्रकृतेरूपवर्णनम् ॥ ४४ ॥ ताःसर्वाःपूजिताःपृथ्व्यांपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ पूजितासुरथेनादौदुर्गादुर्गार्तिनाशिनी ॥ १४५ ॥

क्ताइत्यर्थः ॥ ४१ ॥ ताःपूजयानवश्याःस्युःकिंतुभोगेनैवेत्याह। सुखसंभोगेति ॥ अज्ञातकुलसंभवास्ताश्चाधमाइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ कुलहाःकुलहंत्र्यः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ एवंत्रैविध्येऽपिपूजार्हाएवताः सर्वाइतिफलतारतम्यंतुसात्त्विक्यादिपूजायामस्त्येव ॥ अधुनापंचप्रकृतीनांसर्वैःपूज्यत्वमाह । पूजितेति ॥ पृथ्व्यांसुरथेनादौपूजितातेनदेवादिभिर्देवलोकेनिरंतरंकृतायांपूजायामपिनदोषः ॥ सुरथोनामराजा ॥ १४५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १४६ ॥ दुर्गैवदक्षकन्यारूपेणोत्पन्नेत्याह । जातादाविति ॥ ४७ ॥ स्वयंकृष्णइति ॥ श्रीकृष्णएवपूर्णावतारःपार्वत्याःपुत्रोगणेशरूपेणजातः ॥ स्कंदस्तुविष्णुकलोद्भवः ॥ विष्ण्वंश जन्योनतुपूर्णावतारः ॥ ४८ ॥ मंगलभूपेनमंगलाभिधराज्ञा ॥४९॥ अश्वपतिनाराज्ञा ॥ क्वचित्सावित्रीचसरस्वत्याइत्यपिपाठः ॥ १५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ प्रथमंदेवीति ॥ भूतलेप्रथमंराधादेवीसुयज्ञेनराज्ञापूजितेत्यर्थः ॥ ५५ ॥ उपदिष्टेनविधिनेतिशेषः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ १५८ ॥ यस्मादेवंतस्मादेतादेवतानियमेनपूज्याइतितात्पर्यम् ॥ इतिश्रीदेवीभागव ततिलकेनवमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ अष्टाशीतिमहापद्यैःपंचप्रकृतिसंभवः ॥ प्रोच्यतेविस्तरेणैवतद्भर्तॄणांचसंभवः ॥ १ ॥ पृष्टवतेनारदायसर्वोऽपिनवमस्कंधोक्तोर्थः संक्षेपेणसूत्रभूत

ततःश्रीरामचंद्रेणरावणस्यवधार्थिना ॥ तत्पश्चाज्जगतांमातात्रिषुलोकेषुपूजिता ॥ १४६ ॥ जातादौदक्षकन्यायानिहत्यदैत्यदानवान् ॥ ततोदेहंपरित्य ज्ययज्ञेभर्तुश्चनिंदया ॥ ४७ ॥ जज्ञेहिमवतःपत्न्यांलेभेपशुपतिंपतिम् ॥ गणेशश्चस्वयंकृष्णःस्कंदोविष्णुकलोद्भवः ॥ ४८ ॥ बभूवतुस्तौतनयौपश्चात्त स्याश्चनारद ॥ लक्ष्मीर्मंगलभूपेनप्रथमंपरिपूजिता ॥ ४९ ॥ त्रिषुलोकेषुतत्पश्चाद्देवतामुनिमानवैः ॥ सावित्रीचाऽश्वपतिनाप्रथमंपरिपूजिता ॥ १५० ॥ तत्पश्चात्रिषुलोकेषुदेवतामुनिपुंगवैः ॥ आदौसरस्वतीदेवीब्रह्मणापरिपूजिता ॥ ५१ ॥ तत्पश्चात्रिषुलोकेषुदेवतामुनिपुंगवैः ॥ प्रथमंपूजिताराधागोलो केरासमंडले ॥ ५२ ॥ पौर्णमास्यांकार्तिकस्यकृष्णेनपरमात्मना ॥ गोपिकाभिश्चगोपैश्चबालिकाभिश्चबालकैः ॥ ५३ ॥ गवांगणैःसुरभ्याचतत्पश्चा दाज्ञयाहरेः ॥ तदाब्रह्मादिभिर्देवैर्मुनिभिःपरयामुदा ॥ ५४ ॥ पुष्पधूपादिभिर्भक्त्यापूजितावंदितासदा ॥ पृथिव्यांप्रथमंदेवीसुयज्ञेनैवपूजिता॥५५॥शंक रेणोपदिष्टेनपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ त्रिषुलोकेषुतत्पश्चादाज्ञयापरमात्मनः ॥ १५६ ॥ पुष्पधूपादिभिर्भक्त्यापूजितामुनिभिःसदा ॥ कलायायाःसमुद्भूताः पूजितास्ताश्चभारते ॥ ५७ ॥ पूजिताग्रामदेव्यश्चग्रामेचनगरेमुने ॥ एवंतेकथितंसर्वंप्रकृतेश्चरितंशुभम्॥१५८॥ यथागमंलक्षणंचकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ समासेनश्रुतंसर्वंदेवीनांचरितंप्रभो ॥ विबोधनायबोधस्यव्यासे नवक्तुमर्हसि ॥ १ ॥ सृष्टेराद्यासृष्टिविधौकथमाविर्बभूवह ॥ कथंवापंचधाभूतावदवेदविदांवर ॥ २ ॥ भूताययांशकलयातयात्रिगुणयाभवे ॥ व्यासेन तासांचरितंश्रोतुमिच्छामिसांप्रतम् ॥ ३ ॥ तासांजन्मानुकथनंपूजाध्यानविधिंबुध ॥ स्तोत्रंकवचमैश्वर्यंशौर्यंवर्णयमंगलम् ॥ ४ ॥

वाक्यैर्भगवतावर्णितस्तमर्थंसामान्यरूपेणज्ञातंविशेषाकारेणज्ञातुंपुनर्नारदःपृच्छति । नारदउवाच समासेनेति ॥ समासेनसंक्षेपेणबोधस्यसामान्याकारेणबोधविषयस्यपूर्वोक्तार्थस्यविबोधना यविशेषाकारेणबोधनायव्यासेनविस्तारेण ॥१॥ विशेषार्थविषयंप्रश्नंस्वयमेवकरोति । सृष्टेरिति ॥ सृष्टेर्द्वैतप्रपंचस्यकार्यभूतस्याद्याकारणरूपामूलप्रकृतिर्मायाशक्तिपरादिशब्दवाच्यासृष्टिवि धौसृष्टिक्रियायांप्रथमतःकथमाविर्बभूवोत्पन्ना ॥ पश्चाच्चकथंपंचधाभूतापंचधापंचप्रकारेणदुर्गादिरूपेणाभिन्नाकथंवाजातातद्वदेत्यर्थः ॥ २ ॥ किंचभूतेति ॥ भवेसंसारेतयात्रिगुणया प्रकृतेरंशकलयायाभूतासंभूताशक्तिगंगातुलस्यादिरूपिणीतासांचरितमित्यर्थः ॥ ३ ॥ किंचतासामिति ॥ तासांतुलस्यादीनाम् ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नारायणः प्रथमंप्रकृतेःस्वरूपमाह । नारायणउवाच नित्यइति ॥ नित्यआत्मायथातथाप्रकृतिर्नित्येत्यर्थः ॥ आत्माऽत्रचिदाभासोजीवः ॥ अस्यमोक्षपर्यंतमवस्थानान्नित्यत्वम् ॥ नत्वत्रात्मशब्देनपरमात्मा । तस्यग्रहणेतस्मिन्परमात्मनित्रिकालावाध्यत्वरूपनित्यत्वस्यसत्त्वात्तदेवनित्यत्वंमायायांबोधितंभवेत्।तच्चमायायांनसंभवति॥असत्त्वमरजस्कमतमस्कममायमिति तापनीयश्रुत्यामोक्षदशायांमायायानाशाभ्युपगमात्। तस्माज्जीवएवात्मशब्देनग्राह्यः ॥ तदग्रहणेतस्यमोक्षपर्यंतमवस्थानान्मायायाश्चमोक्षपर्यंतमवस्थानादुभयोःसमानयोगक्षेमंनित्यत्वंसिध्यतीति नभःकालदिशादीनामपिप्राकृतप्रलयपर्यंतमवस्थानान्नित्यत्वमापेक्षिकमेववोद्धव्यम् ॥ विश्वानांभूरादिलोकानांगोलकंब्रह्मांडमित्यर्थः ॥ ५ ॥ तदेकदेशइति ॥ तदेकदेशोगोलोकैकदेशःनम्रभागानुसारकोगोलोकान्नम्रदेशेस्थितोवैकुंठइत्यर्थः ॥ परमार्थतोनित्यस्तुपरमात्मैव ॥ एकमेवाद्वितीयंब्रह्म नेहनानास्तिकिंचनेत्यादिश्रुतेः ॥ ६ ॥ ननुसाप्रकृतिःसांख्यशास्त्रोक्तप्रधानवदात्मनोभिन्नास्वतंत्रावास्तिकिंतत्राह । यथाग्नौदाहिकेति ॥ यथावह्नौदाहिकाशक्तिःशश्वन्निरंतरंयुक्तासंयुक्तैववह्निनानभिन्नावह्नेःकदाचिदपि॥यथावाचंद्रेपद्मेचशोभानित्यंसमवेतैवनभिन्ना ॥ यथावारवौप्रभातदभिन्नैवनभिन्नाकदाचिदपि ॥ तथैवेयंशक्तिःपरात्मनितदभेदेनैवतिष्ठति ॥ शक्तेःशक्तव्यतिरेकेणाऽदर्शनात् ॥ तथाचश्वेताश्वतरश्रुतिः ॥ परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाचेति ॥ तंत्रेष्वपिशक्तिश्चशक्तिमद्रूपाद्व्यतिरेकंनवांछति ॥ तादात्म्यमनयोर्नित्यंवह्निदाहिकयोरिवेति ॥ तस्मान्नभिन्नाजडास्वतंत्रा ॥ किंतुचे

**श्रीनारायणउवाच॥नित्यआत्मानभोनित्यंकालोनित्योदिशोयथा॥विश्वानांगोलकंनित्यंनित्योगोलोकएवच॥५॥तदेकदेशोवैकुंठोनम्रभागानुसारकः ॥ तथैवप्रकृतिर्नित्याब्रह्मलीलासनातनी ॥ ६ ॥ यथाग्नौदाहिकाचंद्रेपद्मेशोभाप्रभारवौ ॥ शश्वद्युक्तानभिन्नासातयाप्रकृतिरात्मनि ॥ ७ ॥ विनास्वर्णंस्वर्णकारःकुंडलंकर्तुमक्षमः ॥ विनामृदाघटंकर्तुंकुलालोहिनहीश्वरः ॥८॥ नहिक्षमस्तथात्माचसृष्टिस्रष्टुंतयाविना ॥ सर्वशक्तिस्वरूपासाययाचशक्तिमान्सदा॥९॥ऐश्वर्यवचनःशश्चक्तिःपराक्रमएवच ॥तत्स्वरूपातयोर्दात्रीसाशक्तिःपरिकीर्तिता॥१०॥ज्ञानंसमृद्धिःसंपत्तिर्यशश्चैववलंभगः॥तेनशक्तिर्भगवतीभगरूपाचसासदा ॥ ११ ॥ तयायुक्तःसदात्माचभगवांस्तेनकथ्यते ॥ सचस्वेच्छामयोदेवःसाकारश्चनिराकृतिः ॥ १२ ॥**

तनाधिष्ठिता ॥ चेतनेवभवतीतिभावः ॥ तदुक्तम् ॥ चिच्छायावेशतःशक्तिश्चेतनेवविभातिसेतिसूतसंहितायाम् ॥ ७ ॥ ननुसाशक्तिर्यदिपरमात्मनोनभिन्नाकिंतुतदभिन्नातदापरमात्मैवजगत्करोतु किमर्थंशक्तिस्तदेतिचेत्तदाह ॥ विनास्वर्णमिति ॥ ८ ॥ नहिक्षमइति ॥ शक्तिरहितस्यनिर्गुणस्यनिर्विकारस्यनिरवयवस्याऽऽत्मनोनजगत्कर्तृत्वमुपपद्यते ॥ तस्मात्सर्वजनकर्त्रीसाऽपेक्षितैवेतिभावः ॥ ९ ॥ शक्तिशब्दस्यनिर्वचनमाह । ऐश्वर्येति ॥ शशब्दोमंगलवाचकत्वादैश्वर्यवचनः ॥ कृतिशब्दस्यपृषोदरादित्वादकारलोपेक्तिशब्दः पराक्रमवाचकः ॥ शयुक्ताक्तिर्यस्यामितिव्युत्पत्त्याशक्तिशब्दः । प्रकृतिवाचकः ॥ पृषोदरादित्वाद्युक्तापदलोपः ॥ तत्फलितमाह । तत्स्वरूपेति ॥१०॥ भगवतीपदव्युत्पत्तिमाह । ज्ञानमिति ॥ ज्ञानादिवलांतानांपदार्थानांवाचकोभगशब्दःतेनकारणेनशक्तिर्भगवतीपदेनोच्यतइत्यर्थः ॥ भगाःसंत्यस्यामितिव्युत्पत्तेः ॥ ननुभगाःपराशक्तेर्भिन्नाःकस्मादागतास्तत्राह । भगरूपाचसेति ॥ भगाअपितस्याएवविकाराइत्यर्थः ॥ ११ ॥ ननुतर्हिपरमात्माकथंभगवच्छब्देनोच्यतेइतिचेत्तादृशभगवतीशक्तियोगादेवेत्याह । तयायुक्तइति ॥ तस्यागुणाएवपरमात्मनोगुणाभवंतिपरस्पराध्यासादित्यर्थः ॥ इत्थंपराशक्तिंवर्णयित्वातदवच्छिन्नंचैतन्यरूपंपरमात्मानंवर्णयति ॥ सचस्वेच्छामयइति ॥ प्रकृतेरिच्छैवैतस्येच्छानभिन्नेति प्रकृतीच्छयैवस्वेच्छामयइत्युच्यते । अयंपरमात्मानिराकारःसाकारश्चभवतीत्यर्थः ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

निराकारस्वरूपंवर्णयति । तेजोरूपमिति ॥ चिद्रूपंस्वप्रकाशंतेजोरूपमित्यर्थः ॥ इदमेवपरंब्रह्मेतिवदंति ॥ १३ ॥ इत्थंनिराकारंपरमात्मरूपंयोगिनोज्ञानिनोवेदांताश्चयद्यपिवदंति तथा पितद्रूपंवैष्णवाःस्थूलमूर्त्यभिमानिनोनमन्वते इत्यरुचिपूर्वकमाह । वैष्णवास्तन्नमन्वतइति ॥ १४ ॥ तेकिंवदंतितत्राह ॥ वदंतीति ॥ भवद्भिर्यत्तेजःस्वीक्रियतेतत्तेजस्तेजस्विनाविना कस्यसंभवेत् नकस्यापि ॥ नहिचंद्रिकाप्रभादीनिचंद्रसूर्याद्याश्रयरहितानिक्वचिदुपलभ्यंते ॥ ततोऽन्यथाऽनुपपत्त्याकाचननित्यासावयवामूर्तिःस्वीकर्तव्येतितेवदंतीत्यर्थः ॥ कीदृशी मूर्तिः स्वीकर्तव्येतितांदर्शयति ॥ तेजोमंडलेति ॥ १५ ॥ १६ ॥ किशोरोबालः ॥ १७ ॥ शोभायामोचनेनाशनेलोचनेयस्य ॥ मुक्ताछविर्विनिंद्यायया एतादृशीयाएकाऽविरला मध्येव्यवधानरहितादंतपंक्तिस्तयामनोरमम् ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ निमेषोनेत्रमीलनम् ॥ २३ ॥ कृष्णपदंनिर्वक्ति। कृषिस्तद्भक्तीति ॥ कृषधातोर्भजनवाचकाद्भावेक्ति प्प्रत्ययेकृष्शब्दोनिष्पन्नः । सःतद्भक्तिवचनःकृष्णभक्तिवाचकइत्यर्थः ॥ णमधातोरपिप्रह्ववाचकाद्भावेडप्रत्ययेकृष्णदास्यवाचकोनशब्दः॥तथाचकृट्चनंचकृष्णे तेदातृत्वेनवर्तेतेयस्मिन्नि

तेजोरूपंनिराकारंध्यायंतेयोगिनःसदा ॥ वदंतिचपरंब्रह्मपरमानंदमीश्वरम् ॥ १३ ॥ अदृश्यंसर्वद्रष्टारंसर्वज्ञंसर्वकारणम् ॥ सर्वदंसर्वरूपंतंवैष्णवास्तन्न मन्वते॥१४॥वदंतिचैवतेकस्यतेजस्तेजस्विनाविना ॥ तेजोमंडलमध्यस्थंब्रह्मतेजस्विनंपरम् ॥१५॥ स्वेच्छामयंसर्वरूपंसर्वकारणकारणम् ॥ अतीवसुं दरंरूपंबिभ्रतंसुमनोहरम् ॥ १६ ॥ किशोरवयसंशांतंसर्वकांतंपरात्परम् ॥ नवीननीरदाभासधामैकंश्यामविग्रहम् ॥ १७ ॥ शरन्मध्याह्नपद्मौघशो भामोचनलोचनम् ॥ मुक्ताच्छविविनिंद्यैकदंतपंक्तिमनोरमम् ॥ १८ ॥ मयूरपिच्छचूडंचमालतीमाल्यमंडितम् ॥ सुनसंसस्मितंकांतंभक्तानुग्रहकारण म् ॥ १९ ॥ ज्वलदग्निविशुद्धैकपीतांशुकसुशोभितम् ॥ द्विभुजंमरलीहस्तंरत्नभूषणभूषितम् ॥ २० ॥ सर्वाधारंचसर्वेशंसर्वशक्तियुतंविभुम् ॥ सर्वै श्वर्यप्रदंसर्वस्वतंत्रंसर्वमंगलम् ॥ २१ ॥ परिपूर्णतमंसिद्धंसिद्धेशंसिद्धिकारकम् ॥ ध्यायंतेवैष्णवाःशश्वद्देवदेवंसनातनम् ॥ २२ ॥ जन्ममृत्युजराव्या धिशोकभीतिहरंपरम् ॥ ब्रह्मणोवयसायस्यनिमेषउपचर्यते ॥ २३ ॥ सचाऽऽत्मासपरंब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयते ॥ कृषिस्तद्भक्तिवचनोनश्चतद्दास्यवाचकः ॥२४॥ भक्तिदास्यप्रदातायःसचकृष्णःप्रकीर्तितः ॥ कृषिश्चसर्ववचनोनकारोबीजमेवच ॥ २५ ॥ सकृष्णःसर्वस्रष्टाऽऽदौसिसृक्षन्नेकएवच ॥ सृष्ट्युन्मु खस्तदंशेनकालेनप्रेरितःप्रभुः ॥ २६ ॥

त्यर्थेऽर्शआद्यच् । पृषोदरादित्वात्षकारश्रवणम् ॥ २४ ॥ तत्फलितमाह । भक्तिदास्येति ॥ व्युत्पत्त्यंतरमाह । कृषिश्चेति ॥ कृष्यतेआकृष्यतेकारणादुत्पत्तिकालेइतिकृट्सर्वंजगत् ॥ कर्मणिक्विप् । बाहुलकात् णीञ्प्रापणेइत्यस्मात्डप्रत्ययेनयतिकार्यात्मतांप्रापयतिसनोबीजंकारणमित्यर्थः ॥ कृषःसर्वकार्यप्रपंचस्यनःबीजमित्यर्थः ॥२५॥ फलितमाह । सकृष्णइति ॥ सकृष्णइत्यभिधीयतइतिशेषः ॥ एतावत्पर्यंतं वैष्णवंमतमुपपादितम् ॥ तत्रवैष्णवास्तन्नमन्वतइत्यनेनबोधितयाऽरुच्यैवमततिरस्कारोदर्शितः ॥ तत्रयुक्तिस्त्वित्थम् ॥ नह्यस्माभिश्चंद्रसूर्य तेजोवद्ब्रह्मतेजःस्वीक्रियते । येनतदाश्रयस्याकांक्षास्यात् ॥ किंतुशुद्धत्वात्तेजःसदृशंस्वयंप्रकाशंज्ञानरूपमेवतेजःपदेनोच्यते ॥ नहितस्यसर्वाधारस्याधारापेक्षास्ति ॥ अनवस्थापत्तेः ॥ सभ गवःकस्मिन्प्रतिष्ठितः स्वेमहिम्नीतिश्रुत्याचनिराधारस्यैवात्मनःप्रतिपादनात्॥किंचयामूर्तिःसावयवाभवद्भिःस्वीक्रियते तस्यानित्यत्वंनस्यात् यद्यत्सावयवंतत्तन्नश्वरमितिव्याप्तेः ॥ किंचा याभवतामभिमतामूर्तिः साकिंपांचभौतिकीवातद्रहितावा ॥ यदिपांचभौतिकीतदाऽनित्यत्वप्रसंगः । यदितद्रहितातर्हितस्यादृश्यत्वाभावःस्यात् ॥ तथाचतस्याःसत्त्वेप्रमाणाभावः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नचवेदएवकृष्णभूर्तेर्ब्रह्मत्वप्रतिपादकःप्रमाणमितिचेन्न ॥ कृष्णमूर्त्यंतर्गतब्रह्मरूपप्रतिपादकत्वेनाऽपिवेदवाक्यस्यविषयलाभेनचारितार्थ्यात् ॥ अतएवसर्वंखल्विदंब्रह्मेतिसामानाधिकरण्य
प्रतिपादकश्रुतिश्चरितार्था ॥ किंचभवद्भिःकृष्णमूर्तिप्रतिपादिकायाश्रुतिरुच्यते साकिमुपासनाकांडस्थावाज्ञानकांडस्था । यद्युपासनाकांडस्थातर्हिसर्वश्रुतीनामुपक्रमोपसंहारादिषड्विधतात्प
र्यलिंगेनाऽद्वैतेब्रह्मणिसमन्वयान्निर्गुणब्रह्मप्रतिपादकश्रुतिभ्योह्युपासनाकांडस्थश्रुतीनांदुर्बलत्वात्तन्मूर्त्यंतर्गतब्रह्मवर्णनप्रतिपादनेनापितासांश्रुतीनांसार्थक्याच्चनतदुक्तार्थेप्रामाण्यम् ॥ यदि
ज्ञानकांडस्थातदपिनसंभवति । नहिज्ञानकांडेब्रह्मरूपंनिर्गुणंविहायक्वचिदपिसगुणंरूपंसावयवंपरिच्छिन्नंप्रतिपादितमस्ति ॥ तस्मान्मूलप्रकृतेर्हिरण्यगर्भोत्पत्तिद्वारापंचमहाभूतसृष्ट्युत्तरं
पंचमहाभूतांशमादायहिरण्यगर्भरूपाभगवतीनानारूपाणिधारयामासेत्येवसर्वश्रुतिसिद्धांतः ॥ तदुक्तंनृसिंहतापनीयेतिमेखंडे ॥ उपद्रष्टाऽनुमंतैषआत्मासिंहश्चिद्रूपएवाऽविकारोह्युपलब्धा
सर्वत्रनह्यस्तिद्वैतसिद्धिरात्मैवसिद्धोद्वितीयोमाययाह्यन्यदिवसवाएषआत्मापरएवैषसर्वंतथाहिप्राज्ञेसैषाविद्याजगत्सर्वमात्मापरमात्मैवस्वप्रकाशोप्यविषयज्ञानत्वाज्जानन्नेवह्यत्रनाविजानात्यनुभू
तेर्मायाचतमोरूपानुभूतोरित्यादि ॥ एवमेवैषामायास्वाऽव्यतिरिक्तानिक्षेत्राणिदर्शयित्वा जीवेशावाभासेनकरोति । मायाचाऽविद्याचस्वयमेवभवति।सैषाचित्रासुदृढावह्नंकुरागुणभिन्नांकुरेष्व
पिगुणभिन्नासर्वत्रब्रह्मविष्णुशिवरूपिणीचैतन्यदीप्ता । तस्मादात्मनएवत्रैविध्यंसर्वत्रयोनित्वमप्यभिमंताजीवोनियंतेश्वरः ॥ सर्वाऽहंमानीहिरण्यगर्भस्त्रिरूपईश्वरवत्व्यक्तचैतन्यःसर्वगोह्येषई
श्वरः ॥ क्रियाज्ञानात्मासर्वंसर्वमयंसर्वेजीवाःसर्वमयाः सर्वावस्थासुतथाऽप्यल्पाःसवाएषभूतानींद्रियाणिविराजंदेवताःकोशांश्चसृष्ट्वाप्रविश्यामूढोमूढइवव्यहरन्नास्ते माययैव । तस्मादद्वयएवा
त्मेति ॥ ननुतर्हिप्रथमाध्याये स्वेच्छामयस्येच्छयाचश्रीकृष्णस्यसिसृक्षया ॥ साविर्वभूवसहसामूलप्रकृतिरीश्वरीतिवाक्येश्रीकृष्णस्येच्छयेतिकथमुक्तम् ॥ परमात्मनइच्छयेतिवक्तव्य
मितिचेच्छृणु ॥ कृष्णशब्दोहियोगरूढ्यागोलोकवासिदेवतायांरूढः ॥ केवलयोगार्थमादायतुपरमात्मनिप्रयुक्तः ॥ एवमेवसर्वेऽपिशब्दायोगरूढ्यातत्तद्विशेषपदार्थवाचकाअपियोगार्थ
मादायसर्वेब्रह्मवाचकाअपिभवंतीतिनदोषः ॥ ननुतर्हिसाम्यावस्थमायोपाधिकसर्वकारणब्रह्मणःकिंमुख्यंयोगरूढंनामेतिचेदुच्यते ॥ केवलब्रह्मणोनिर्गुणब्रह्मप्रतिपादकश्रुतिषुसत्यंज्ञानमनं
तंब्रह्मेत्यादिवाक्येषुप्रतिपादितानिसत्यंज्ञानमित्यादीनिनामानिमुख्यानि।तदतिरिक्तनामानिशिवविष्णुब्रह्मेत्यादीनियौगिकानि । तेषांतत्तद्गुणोपाधिचैतन्येरूढत्वेनैकत्रक्लृप्तशक्त्यानिर्वाहेऽन्य
त्रशक्तिकल्पनेप्रमाणाभावाद्गौरवाच्च॥तत्तद्गुणरूपोपाधिषुशिवविष्वादिनाम्नांशक्तिस्तुमैत्रायणीयश्रुतावभिहिता॥योहखलुवावास्यसात्त्विकोंशः साविष्णुर्योहखलुवावास्यतामसोंशःसयोयंरुद्र
इत्यादिवाक्यैः ॥ कृष्णादिशब्दास्तुरूढ्याविष्णुतत्त्वस्यैववाचकाः ॥ तत्तदुपनिषत्सुतथैवप्रतिपादनात् ॥ सगुणशबलकारणब्रह्मणःसाम्यावस्थमायांतःप्रविष्टस्यतुमुख्याःशब्दामायाश
क्तिप्रकृतिपराभगवतीदेवीत्यादयः ॥ यथागजादिशरीरेप्रविष्टस्यचैतन्यस्यगजादिसंज्ञामुख्यास्तद्वत् ॥ तदुक्तंश्वेताश्वतरे । देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढामिति ॥ आत्मरूपांशक्तिमित्यर्थः ॥
सूतसंहितायांसौरसंहितायांकूर्मपुराणेच ॥ चिन्मात्राश्रयमायायाःशक्त्याकारेद्विजोत्तमाः ॥ अनुप्रविष्टायासंविन्निर्विकल्पास्वयंप्रभा ॥ साशिवापरमादेवीशिवाभिन्नाशिवंकरीति ॥
तस्मात्कारणब्रह्मणोऽपिमायाशक्त्यादिसंज्ञाएवमुख्याः । ब्रह्मविष्णवादिसंज्ञास्तुगौणाः ॥ तत्तद्गुणोपाधिषुतेषांशक्तेःक्लृप्तत्वेनान्यत्रशक्तिकल्पनेप्रमाणाभावाद्गौरवाच्च ॥ तस्मात्कारणब्रह्मो
पासकेनमायाशक्तिपरामूलप्रकृतिभगवतीदेवीत्यादिमुख्यशब्दैरेवकारणंब्रह्मोपास्यम् । नतुब्रह्मविष्णवादिशब्दैरित्येवतत्त्वम् ॥ अतएवकारणब्रह्मणः शक्तितत्त्वमितिसंज्ञाशैवसिद्धांतेप्रसि
द्धा शाक्तदर्शनेचेत्यलमप्रसक्तानुप्रसक्त्या ॥ वस्तुतस्तुपूर्वत्रपरमात्मनइच्छयेत्येवपूर्ववचनार्थः ॥ श्रीकृष्णस्येत्यस्यसिसृक्षयेत्यनेनान्वयइतिपूर्वव्याख्यातंतदानकोपिदोषः ॥ इत्थंवैष्ण
वमतमरुच्याविनिंद्याऽधिष्ठातृदेवीनांदेवानां च साकारमूर्तीनांनिराकारब्रह्मणोमायाविशिष्टादुत्पत्तिमाह । सर्वस्रष्टाऽऽदाविति ॥ आदौप्रथमंसर्वस्रष्टामायाशबलःपरमेश्वरोऽपंचीकृतभूतात्म
कहिरण्यगर्भोत्पत्तिद्वारापंचमहाभूतात्मकब्रह्मांडोत्पत्त्यनंतरमित्यर्थाद्बोध्यम्॥सिसृक्षन्सृष्टानांपदार्थानामधिष्ठातृदेवताः स्रष्टुमिच्छन्परमात्मनोंशइवतस्मिन्विद्यमानेनकालेनप्रेरितःसन् २६॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

स्वेच्छामयोयतोभवतिततोहेतोःस्वेच्छयाशक्त्याऽर्धनारीश्वररूपेणद्विधाबभूवेत्यर्थः ॥ तत्रस्वेच्छामयःस्वेच्छयेतिपदद्वयेनद्विधाभवनंप्रकृतेरेवकार्यम् ॥ तत्प्रकृतेःकार्यमात्मन्यारोपेणभासत इत्युक्तंभवति ॥ तथाचाऽर्धनारीश्वररूपेणमूलप्रकृतिरेवपरिणामंप्राप्ताइत्यर्थः ॥ साचप्रकृतिश्चैतन्यरहितानैवतिष्ठतीतितदधिष्ठानंविवर्तकारणंसर्वत्राऽनुगतमेव ॥ २७ ॥ उत्पत्त्यनंतरंवृत्त माह । तांददर्शेति ॥ २८ ॥ चंद्रबिंबविनिंद्यंयस्यताद्दशमेकंमिलितंनितंबयुगुलंयस्याः ॥ कदलीस्तंभोनिंदितोयतायाश्रोण्यालक्षणयाश्रोण्यधोभागेनसुंदरी ॥ २९ ॥ श्रीफलंबिल्व फलम् ॥ मौलौपुष्पैर्जुष्टांसेविताम् ॥ ३० ॥ वक्रलोचनांकटाक्षवतीम् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ कस्तूरीबिंदुनेति ॥ सीमंतसन्निधौसिंदूरबिंदुस्तदधःकाश्मीरचंदनबिंदुस्तदधःकस्तुरीतिफलि तोर्थः ॥ ३३ ॥ वक्रिमंकुटिलम् ॥ कवरीकेशसन्निवेशः ॥ ३४ ॥ पुष्टशोभापूर्णशोभा ॥ राजहंसगजयोर्गर्वस्यगमनाभिमानस्यविनाशिनीम् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ शृंगारंकुर्वन्निति शेषः ॥

स्वेच्छामयःस्वेच्छयाचद्विधारूपोबभूवह ॥ स्त्रीरूपोवामभागांशोदक्षिणांशःपुमान्स्मृतः ॥ २७ ॥ तांददर्शमहाकामीकामाधारांसनातनः ॥ अतीवकम नीयांचचारुपंकजसन्निभाम् ॥ २८ ॥ चंद्रबिंबविनिंद्यैकनितंबयुगुलांपराम् ॥ सुचारुकदलीस्तंभनिंदितश्रोणिसुंदरीम् ॥ २९ ॥ श्रीयुक्तश्रीफला कारस्तनयुग्ममनोरमाम् ॥ पुष्पजुष्टांसुवलितांमध्यक्षीणांमनोहराम् ॥ ३० ॥ अतीवसुंदरींशांतांसस्मितांवक्रलोचनाम् ॥ वह्निशुद्धांशुकाधारांरत्नभू षणभूषिताम् ॥ ३१ ॥ शश्वच्चक्षुश्चकोराभ्यांपिबंतींसततंमुदा ॥ कृष्णस्यमुखचंद्रंचचंद्रकोटिविनिंदितम् ॥ ३२ ॥ कस्तूरीबिंदुनासार्धमधश्चंदनबिं दुना ॥ समंसिंदूरबिंदुंचभालमध्येचबिभ्रतीम् ॥ ३३ ॥ वक्रिमंकबरीभारंमालतीमाल्यभूषितम् ॥ रत्नेंद्रसारहारंचदधतींकांतकामुकीम् ॥ ३४ ॥ को टिचंद्रप्रभामृष्टपुष्टशोभासमन्विताम् ॥ गमनेनराजहंसगजगर्वविनाशिनीम् ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वातांतुतयासार्धंरासेशोरासमंडले ॥ रासोल्लासेसुरसिकोरासक्री डांचकारह ॥ ३६ ॥ नानाप्रकारशृंगारंशृंगारोमूर्तिमानिव ॥ चकारसुखसंभोगंयावद्ब्रह्मणोदिनम् ॥ ३७ ॥ ततःसचपरिश्रांतस्तस्यायोनौजगत्पिता॥ चकारवीर्याधानंचनित्यानंदेशुभक्षणे ॥ ३८ ॥ गात्रतोयोषितस्तस्याःसुरतांतेचसुव्रत ॥ निःससारश्रमजलंश्रांतायास्तेजसाहरेः॥३९॥महाक्रमणक्लिष्टा यानिःश्वासश्चबभूवह ॥ तदावक्त्रेश्रमजलंतत्सर्वंविश्वगोलकम् ॥ ४० ॥ सचनिःश्वासवायुश्चसर्वाधारोबभूवह ॥ निःश्वासवायुःसर्वेषांजीविनांचभवेषुच ॥ ॥ ४१ ॥ बभूवमूर्तिमद्वायोर्वामांगात्प्राणवल्लभा ॥ तत्पत्नीसाचतत्पुत्राःप्राणाःपंचचजीविनाम् ॥ ४२ ॥ प्राणोपानःसमानश्चोदानव्यानौचवायवः ॥ बभूवुरेवतत्पुत्राअधःप्राणाश्चपंचच ॥ ४३ ॥ घर्मतोयाधिदेवश्चबभूववरुणोमहान् ॥ तद्वामांगाच्चतत्पत्नीवरुणानीबभूवसा ॥ ४४ ॥

आब्रह्मणोदिनपरिमितकालपर्यंतम् ॥ ३७ ॥ शुभक्षणेशुभकाले ॥ ३८ ॥ श्रमजलंघर्मजलम् ॥३९॥ महाक्रमणंमहालिंगनंपंचीकृतपंचमहाभूतात्मकंविश्वगोलकंपूर्वमेवजातम् । तत्सर्वं श्रमजलंवक्त्रेआवृणोदित्यर्थः ॥ अतोपिज्ञापकात्पंचमहाभूतोत्पत्त्यनंतरमेवेयमधिष्ठातृदेवतानामुत्पत्तिरितिबोध्यम् ॥ ४० ॥ जीविनांप्राणिनाम् ॥ ४१ ॥ मूर्तिमद्वायोरित्यनेनतस्मिन्ने वसमयेप्रकृत्यासर्वप्राणिनांनिःश्वासवायोरधिष्ठात्रीमूर्तिरपिप्रकटीकृतेतिबोध्यम् ॥ पत्नीचमूर्तिमती प्राणाःपंचपुत्राअपिपंचप्राणानामधिदेवामूर्तिरूपाएव ॥ ४२ ॥ अधःप्राणाःकनिष्ठा । येप्राणाः नागादयःपंचतेषामप्यधिदेवाःपंचतदैवोत्पादिताइत्याह । बभूवुरेवेति ॥ एतेदशप्राणाधिदेवावायुपत्नीतउत्पन्नाइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ घर्मस्यतोयस्यचाधिदेवोवरुणोबभूव प्रकृत्या उत्पादितइत्यर्थः ॥ ४४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४५ ॥ ४६ ॥ डिंभंबालकम् ॥ ४७ ॥ व्यदूयतभयंकरंमहांतंबालकंदृष्ट्वाहृदयेनांतःकरणावच्छेदेनचकंपेइत्यर्थः ॥ यथाऽभिलषितसुकुमारबालकाभावप्रयुक्तसंजातकोपेनब्रह्मांडगोलकेयज्जलंतस्मिन्नुत्ससर्ज ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥५१॥ जिह्वाग्रात्कृष्णवधूजिह्वाग्रादित्यर्थः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ साचेति ॥ कृष्णस्त्रीत्यर्थः ॥ ५४॥५५ ॥ वाणींजिह्वाग्राज्जातां । कृष्णोद्विभुजः ॥ अस्यचतुर्भुजनारायणस्य मानिनीराधाअत्रैवमन्निकटेएवस्थास्यति ममपत्नीभविष्यतीत्यर्थः ॥ यतोमानिनीततस्तवैतस्याश्चैकपतित्वेसामानाधिकरण्यंनसंभवेदित्यर्थः ॥ ॥ ५६ ॥ ताभ्यांलक्ष्मीसरस्वतीभ्याम् ॥ ५७ ॥ अनपत्येपूर्वोक्तशापाद्यतोराधांशसंभवेततः ॥ नारायणांगाद्वैकुंठाधिपतेश्चतुर्भुजात् ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ गोलोकनाथस्याद्विभुजकृष्णस्य

अथसाकृष्णाचिच्छक्तिःकृष्णगर्भंदधारह ॥ शतमन्वंतरंयावज्ज्वलंतीब्रह्मतेजसा ॥४५॥ कृष्णप्राणाहिदेवीसाकृष्णप्राणाधिकप्रिया॥कृष्णस्यसंगिनीशश्वत्कृष्णवक्षःस्थलस्थिता ॥४६॥ शतमन्वंतरांतेचकालेतीतेतुसुंदरी ॥ सुषावडिंभंस्वर्णाभंविश्वाधारालयंपरम् ॥ ४७॥ दृष्ट्वाडिंभंचसादेवीहृदयेनव्यदूयत॥उत्ससर्जचकोपेनब्रह्मांडगोलकेजले ॥४८॥ दृष्ट्वाकृष्णश्चतत्त्यागंहाहाकारंचकारह ॥ शशापदेवींदेवेशस्तत्क्षणंचयथोचितम् ॥४९॥यतोऽपत्यंत्वयात्यक्तंकोपशीलेचनिष्ठुरे ॥ भवत्वमनपत्याऽपिचाद्यप्रभृतिनिश्चितम् ॥ ५० ॥ यायास्त्वदंशरूपाश्चभविष्यंतिसुरस्त्रियः ॥ अनपत्याश्चताःसर्वास्त्वत्समानित्ययौवनाः ॥५१ ॥ एतस्मिन्नंतरेदेवीजिह्वाग्रात्सहसाततः ॥ आविर्बभूवकन्यैकाशुक्लवर्णामनोहरा ॥ ५२ ॥ श्वेतवस्त्रपरीधानावीणापुस्तकधारिणी ॥ रत्नभूषणभूषाढ्यासर्वशास्त्राधिदेवता ॥ ५३ ॥ अथकालांतरेसाचद्विधारूपाबभूवह ॥ वामार्धांगाच्चकमलादक्षिणार्धाच्चराधिका ॥ ५४ ॥ एतस्मिन्नंतरेकृष्णोद्विधारूपोबभूवसः ॥ दक्षिणार्धश्चद्विभुजोवामार्धश्चचतुर्भुजः ॥ ५५ ॥ उवाचवाणींकृष्णस्तांत्वमस्यकामिनीभव ॥ अत्रैवमानिनीराधातवभद्रंभविष्यति ॥ ५६ ॥ एवंलक्ष्मींचप्रददौतुष्टोनारायणायच ॥ सजगामचवैकुंठेताभ्यांसार्धंजगत्पतिः ॥ ५७ ॥ अनपत्येचतेद्वेचजातेराधांशसंभवे ॥ भूतानारायणांगाच्चपार्षदाश्चचतुर्भुजाः ॥ ५८ ॥ तेजसावयसारूपगुणाभ्यांचसमाहरेः ॥ बभूवुःकमलांगाच्चदासीकोट्यश्चतत्समाः ॥ ५९ ॥ अथगोलोकनाथस्यलोम्नांविवरतोमुने ॥ भूताश्चाऽसंख्यगोपाश्चवयसातेजसासमाः ॥ ६० ॥ रूपेणचगुणेनैवबलेनविक्रमेणच ॥ प्राणतुल्याप्रियाःसर्वेबभूवुःपार्षदाविभोः ॥ ६१ ॥ राधांगलोमकूपेभ्योबभूवुर्गोपकन्यकाः ॥ राधातुल्याश्चताःसर्वाराधादास्यःप्रियंवदाः ॥ ६२ ॥ रत्नभूषणभूषाढ्याःशश्वत्सुस्थिरयौवनाः ॥ अनपत्याश्चताःसर्वाःपुंसःशापेनसंततम् ॥ ६३ ॥ एतस्मिन्नंतरेविप्रसहसाकृष्णदेवता ॥ आविर्बभूवदुर्गासाविष्णुमायासनातनी ॥ ६४ ॥

भूताजाताः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ एतस्मिन्नंतरइति ॥ राधाकृष्णशरीराविभागसमयेविष्णोःपरमात्मनोमायाशक्तिर्दुर्गारूपेणप्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥ यथालक्ष्मीसरस्वत्यौराधावतारौतथादुर्गानराधावतारः ॥ किंतुमूलप्रकृतेरेवसाक्षादवतारइतिभावः॥लक्ष्मीसरस्वत्यौराधावतारावपिमूलप्रकृतेःपूर्णावतारावेव प्रथमाध्यायस्थवचनात्॥साक्षान्मूलप्रकृतेर्दुर्गा। राधातस्तुलक्ष्मीसरस्वत्यावित्येतावानेवविशेषः ॥ ६४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

साक्षादवतारत्वेनाधिकंमहिमानंदुर्गायावर्णयति। देवीत्यादिना ॥ नारायणीलक्ष्मीस्तत्स्वरूपत्वादियमपिनारायणी ॥ बुद्ध्यधिष्ठात्री अत्रबुद्धिशब्देनांतःकरणंपरमात्मनोगृह्यते ॥ सरस्वत्याः पृथग्बुद्ध्यधिष्ठातृत्वेनाभिधानात्परमात्मनइत्युपलक्षणंव्याष्टिजीवानामपि ॥ तथाचसमष्टिव्यष्टयंतःकरणाधिष्ठात्रीदुर्गेत्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥६८॥ लोकाःब्रह्मादयः मायया यस्यामाययेत्यर्थः ॥ तेनमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीयमितिस्पष्टमेवोक्तंभवति ॥ ६९ ॥ कृष्णभक्तिप्रदात्रीकृष्णशब्दोयौगिकार्थेनपरमात्मवाचकः ॥ तथाचस्वस्वरूपभूतपरमात्मनोभक्ते

देवीनारायणीशानासर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥ बुद्ध्यधिष्ठात्रीदेवीसाकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ ६५ ॥ देवीनांबीजरूपाचमूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ परिपूर्णतमातेजः स्वरूपात्रिगुणात्मिका ॥ ६६ ॥ तप्तकांचनवर्णाभाकोटिसूर्यसमप्रभा ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यासहस्रभुजसंयुता ॥६७॥ नानाशस्त्रास्त्र निकरंबिभ्रतीसात्रिलोचना ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानारत्नभूषणभूषिता ॥६८॥ यस्याश्चांशांशकलयाबभूवुःसर्वयोषितः ॥ सर्वेविश्वस्थितालोकामोहिताःस्युश्चमायया ॥६९॥ सर्वैश्वर्यप्रदात्रीचकामिनांगृहवासिनाम् ॥ कृष्णभक्तिप्रदायाचवैष्णवानांचवैष्णवी ॥ ७० ॥ मुमुक्षूणांमोक्षदात्रीसुखिनांसुखदायिनी ॥ स्वर्गेषुस्वर्गलक्ष्मीश्चगृहलक्ष्मीर्गृहेषुच ॥ ७१ ॥ तपस्विषुतपस्याचश्रीरूपातुनृपेषुच ॥ यावह्नौदाहिकारूपाप्रभारूपाचभास्करे ॥ ७२॥ शोभारूपाचचंद्रेचसापद्मेषुचशोभना ॥ सर्वशक्तिस्वरूपायाश्रीकृष्णेपरमात्मनि॥७३॥ययाचशक्तिमानात्माययाचशक्तिमज्जगत्॥ययाविनाजगत्सर्वंजीवन्मृतमिवस्थितम् ॥७४॥ याचसंसारवृक्षस्यबीजरूपासनातनी ॥ स्थितिरूपाबुद्धिरूपाफलरूपाचनारद॥७५॥क्षुत्पिपासादयारूपानिद्रातंद्राक्षमाधृतिः ॥ शांतिलज्जातुष्टिपुष्टिभ्रांतिकांत्यादिरूपिणी ॥ ७६ ॥ साचसंस्तूयसर्वेशंतत्पुरःसमुवासह ॥ रत्नसिंहासनंतस्यैप्रददौराधिकेश्वरः॥ ७७॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रसस्त्रीकश्चचतुर्मुखः ॥ पद्मनाभेर्नाभिपद्मान्निस्ससारमहामुने ॥ ७८ ॥ कमंडलुधरःश्रीमांस्तपस्वीज्ञानिनांवरः ॥ चतुर्मुखैस्तंतुष्टावप्रज्वलन्ब्रह्मतेजसा ॥ ७९ ॥ सातदासुंदरीसृष्टाशतचंद्रसमप्रभा ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानारत्नभूषणभूषणा ॥ ८० ॥रत्नसिंहासनेरम्येसंस्तूयसर्वकारणम् ॥ उवासस्वामिनासार्धंकृष्णस्यपुरतोमुदा॥ ॥ ८१ ॥ एतस्मिन्नंतरेकृष्णोद्विधारूपोबभूवसः ॥ वामार्धांगोमहादेवोदक्षिणेगोपिकापतिः ॥ ८२ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशःशतकोटिरविप्रभः ॥ त्रिशूलपट्टिशधरोव्याघ्रचर्मांबरोहरः ॥ ८३ ॥ तप्तकांचनवर्णाभोजटाभारधरःपरः ॥ भस्मभूषितगात्रश्चसस्मितश्चंद्रशेखरः ॥ ८४ ॥ दिगंबरोनीलकंठःसर्पभूषणभूषितः ॥ बिभ्रद्दक्षिणहस्तेनरत्नमालांसुसंस्कृताम् ॥ ८५ ॥

दात्रीत्यर्थः ॥ वैष्णवानामुपास्यावैष्णवीलक्ष्मीस्तद्रूपेत्यर्थः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ सर्वेशंमूलप्रकृतेःपूर्णावतारंस्वस्मात्प्रथमतःप्रादुर्भूतंवयसाधिकंश्रीकृष्णंसंस्तूयेत्यर्थः ॥ ७७ ॥ निःससारेतिसस्त्रीकःसावित्रीस्त्रियासहितउत्पन्नइत्यर्थः ॥ ७८ ॥ तंस्वापेक्षयावयसाज्ञानेनचाधिकंश्रीकृष्णंतुष्टावेत्यर्थः ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ एकएवकृष्णोद्विधाभूतइत्यर्थः ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ रत्नमालांरत्ननिर्मितांजपोपयोगिनीमक्षमालांसुसंस्कृतांमालासंस्कारोदितविधिनासुसंस्कृतांदक्षिणहस्तेनबिभ्रत् ॥ ८५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ब्रह्मज्योतिर्मायाशबलसर्वकारणमूलप्रकृत्यात्मकब्रह्मज्योतिर्मैत्रंप्रणवमायाबीजादिरूपंजपन्नित्यर्थः ॥ सत्यस्वरूपंश्रीकृष्णंसंस्तूयेत्यन्वयः ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ यतःश्रीकृष्णोमृत्योरपि मृत्युर्मारकस्ततस्तदभिन्नस्यशिवस्यापिमृत्युंजयेतिसंज्ञाइत्यर्थः ॥ अत्रदुर्गास्त्रीत्वेनमहादेवायदत्ताश्रीकृष्णेनेत्येतदनुक्तमपिनारदपुराणादवगंतव्यम् ॥ ८८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ छ ॥ ॥ द्विषष्टिश्लोकवर्यैश्चसृष्टंयद्देवतादिकम् ॥ व्यवस्थितिस्तस्यसम्यग्यथावदभिधीयते ॥ १ ॥ अथडिंभइति ॥ डिंभोऽपिबालिशेबाले इतिमेदिनीकोशात् ॥ डिंभोबालोयोराधयापूर्वंस्वस्माज्जातोजलेप्रक्षिप्तः सयावद्ब्रह्मणोवयस्तावत्परिमितकालपर्यंतंजलेतिष्ठन् ततःसबालकःकालेपरिपूर्णसमयेजातेसतिद्विधाभूतोबभूव ॥ तदंडंनिर्भिद्यबहिर्निर्गतइत्यर्थः ॥ अनेनचग्रंथेनपूर्वंराधायाउदरात्पक्ष्यंडवदंडरूपेणनिर्गतः ॥ सचबृहदंडरूपोभयात्तयाजलेक्षिप्तस्तदंडंबहुनाकालेनपुनर्भिन्नंसद्विधाजातंतन्मध्येपुरुषोबालकरूपोऽयंस्थितइतिप्रतिभाति॥पुराणांतरेतदंडमुदकेशयमित्यादिनातथैवप्रतिपादनाच्च॥१॥तदेवाऽऽह । तन्मध्येशिशुरेकश्चेति ॥स्तनांधइतिस्तनावेवांधोभक्ष्यमन्नंयस्यसस्तनांधः मात्रा

प्रजपन्पंचवक्त्रेणब्रह्मज्योतिःसनातनम् ॥ सत्यस्वरूपंश्रीकृष्णंपरमात्मानमीश्वरम् ॥ ८६ ॥ कारणंकारणानांचसर्वमंगलमंगलम् ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिशोकभीतिहरंपरम्॥८७॥संस्तूयमृत्योर्मृत्युंतंयतोमृत्युंजयाभिधः॥ रत्नसिंहासनेरम्येसमुवासहरःपुरः ॥८८॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अथडिंभोजलेतिष्ठन्यावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ ततःसकालेसहसाद्विधाभूतोबभूवह ॥ १ ॥ तन्मध्येशिशुरेकश्चशतकोटिरविप्रभः ॥ क्षणंरोरूयमाणश्चस्तनांधःपीडितःक्षुधा ॥ २ ॥ पित्रामात्रापरित्यक्तोजलमध्येनिराश्रयः ॥ ब्रह्मांडासंख्यनाथोयोददर्शोर्ध्वमनाथवत् ॥ ३ ॥ स्थूलात्स्थूलतमःसोऽपिनाम्नादेवोमहाविराट् ॥ परमाणुर्यथासूक्ष्मात्परःस्थूलात्तथाऽप्यसौ ॥ ४ ॥ तेजसाषोडशांशोऽयंकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ आधारःसर्वविश्वानांमहाविष्णुश्चप्राकृतः ॥ ५ ॥ प्रत्येकंलोमकूपेषुविश्वानिनिखिलानिच ॥ अस्याऽपितेषांसंख्यांचकृष्णोवक्तुंनाहिक्षमः ॥ ६ ॥ संख्याचेद्रजसामस्तिविश्वानांनकदाचन ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनांतथासंख्यानविद्यते ॥ ७ ॥ प्रतिविश्वेषुसंत्येवंब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ पातालाद्ब्रह्मलोकांतंब्रह्मांडंपरिकीर्तितम् ॥ ८ ॥ ततऊर्ध्वंचवैकुंठोब्रह्मांडाद्बहिरेवसः ॥ ततऊर्ध्वंचगोलोकःपंचाशत्कोटियोजनः ॥ ९ ॥

त्यक्तत्वात्स्तनपानरहितः ॥ क्षुधाक्षुधयापीडितोरोरूयमाणः पुनःपुनःरोदनकर्ताभवदित्यर्थः ॥ २ ॥ अनाथवदितिसर्वेश्वरादुत्पन्नःस्वयमसंख्यब्रह्मांडनाथःसन्नपिएतादृशींदुर्दशांप्राप्तवांस्तदाऽन्यरक्षकाकथाऽस्मिन्संसारे ॥ तस्माद्विगर्यंसंसारइतिसंसाराद्विरज्येतेत्युक्तंभवति ॥ ऊर्ध्वंददर्शकोममपालयितास्यादित्याभिप्रायेण ॥ ३ ॥ परमाणुरिति ॥ यथापरमाणुःसूक्ष्मादपिपरःसूक्ष्मस्तद्वदयंस्थूलात्स्थूलइत्यर्थः ॥ ४ ॥ अयंविराट्कृष्णस्यषोडशांशोभवतीत्याह । तेजसेति ॥ शक्त्येत्यर्थःप्राकृतःराधाप्रकृतेरुत्पन्नः ॥ ५ ॥ विराजंवर्णयति ॥ प्रत्येकमिति ॥ सर्वस्यस्थूलसमष्टिप्रपंचस्याधिपतित्वादेतद्वर्णनंयुक्तमेव ॥ ६ ॥ संख्याचेदिति ॥ चेदितिनिपातोयथाशब्दार्थकः ॥ यथाविश्वानांविश्वसंबंधिरजसांयथासंख्यानकदाचनास्ति॥ तथाऽस्यशरीरविद्यमानानांब्रह्मविष्णुशिवादीनांसंख्यानविद्यतइत्यर्थः ॥ ७ ॥ प्रतिविश्वेषुप्रतिब्रह्मांडेषुयतःसंतिततस्तेषांसंख्यानंनविद्यतइत्यभिप्रायः ॥ प्रसंगेनब्रह्मांडस्वरूपमाह ॥ पातालादीत ॥ ८ ॥ ९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तथाऽप्ययंतथैवाऽयम् ॥ प्राकृतप्रलयपर्यंतमेतस्यावस्थानान्नित्यत्वंनतुपरमार्थतोनित्यत्वम् ॥ एकमेवाद्वितीयंब्रह्मेतिश्रुतिविरोधात् ॥ ब्रह्मांडस्वरूपंविशदयति । सप्तद्वीपोति ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ तद्विनाशेब्रह्मांडविनाशेजलबुद्बुदवन्मायिकत्वात् ॥ १५ ॥ नित्याविति ॥ प्रलयपर्यंतमवस्थितत्वात् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ चराचराः ॥ एतत्स र्वब्रह्मांडांतर्गतमेवाऽस्तीत्यर्थः ॥ १९ ॥ ऊर्ध्वंदृष्ट्वाडिंभस्यांतरेअंडस्यांतरेमध्येशून्यमेवददर्शद्वितीयंकिंचननददर्शेत्यर्थः ॥ २० ॥ ज्ञानंप्राप्येति ॥ पूर्वकल्पस्थएवकश्चिज्जीवोज्ञानकर्मव

नित्यःसत्यस्वरूपश्चयथाकृष्णस्तथाऽप्ययम् ॥ सप्तद्वीपमितापृथ्वीसप्तसागरसंयुता ॥ १०॥ ऊनपंचाशदुपद्वीपासंख्यशैलवनान्विता॥ऊर्ध्वंसप्तस्वर्गलो काब्रह्मलोकसमन्विताः ॥ ११ ॥ पातालानिचसप्ताधश्चैवंब्रह्मांडमेवच ॥ ऊर्ध्वंधरायाभूर्लोकोभुवर्लोकस्ततःपरम् ॥ १२ ॥ ततःपरश्चस्वर्लोकोजनलोक स्तथापरः ॥ ततःपरस्तपोलोकस्सत्यलोकस्ततःपरः ॥ १३ ॥ ततःपरंब्रह्मालोकस्तप्तकांचनसन्निभः ॥ एवंसर्वंकृत्रिमंचबाह्याभ्यंतरमेवच ॥१४॥ तद्वि नाशेविनाशश्चसर्वेषामेवनारद ॥ जलबुद्बुदवत्सर्वंविश्वसंघमनित्यकम् ॥ १५ ॥ नित्यौगोलोकवैकुंठौप्रोक्तौशश्वदकृत्रिमौ ॥ प्रत्येकंलोमकूपेषुब्रह्मांडंपरि निश्चितम् ॥ १६ ॥ एषांसंख्यांनजानातिकृष्णोऽन्यस्याऽपिकाकथा ॥ प्रत्येकंप्रतिब्रह्मांडंब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ १७ ॥ तिस्रःकोट्यःसुराणांचसंख्यास र्वत्रपुत्रक ॥ दिगीशाश्चैवदिक्पालानक्षत्राणिग्रहादयः ॥ १८॥ भुविवर्णाश्चचत्वारोऽप्यधोनागाश्चराचराः॥अथकालेत्रसविराडूर्ध्वंदृष्ट्वापुनःपुनः ॥ १९॥ डिंभांतरेचशून्यंचनाद्वितीयंचकिंचन ॥ चिंतामवापक्षुद्युक्तोरुरोदचपुनःपुनः ॥ २० ॥ ज्ञानंप्राप्यतदादध्यौकृष्णंपरमपूरुषम् ॥ ततोददर्शतत्रैवब्रह्मज्यो तिःसनातनम् ॥२१॥ नवीनजलदश्यामंद्विभुजंपीतवाससम् ॥ सस्मितंमुरलीहस्तंभक्तानुग्रहकातरम् ॥२२॥ जहासबालकस्तुष्टोदृष्ट्वाजनकमीश्वरम्॥ वरंतदाददौतस्मैवरेशःसमयोचितम् ॥ २३ ॥ मत्समोज्ञानयुक्तश्चक्षुत्पिपासादिवर्जितः ॥ ब्रह्मांडासंख्यनिलयोभववत्सलयावधि ॥ २४ ॥ निष्कामो निर्भयश्चैवसर्वेषांवरदोभव ॥ जराम्रृत्युरोगशोकपीडादिवर्जितोभव॥२५॥इत्युक्त्वातस्यकर्णेसमहामंत्रंषडक्षरम्॥ त्रिःकृत्वश्चप्रजजापवेदांगप्रवरंपरम् ॥ ॥ २६ ॥ प्रणवादिचतुर्थ्यंतंकृष्णइत्यक्षरद्वयम् ॥ वह्निजायांतमिष्टंचसर्वविघ्नहरंपरम् ॥ २७ ॥ मंत्रंदत्वातदाहारंकल्पयामासवैविभुः ॥ श्रूयतांतद्ब्रह्म पुत्रनिबोधकथयामिते ॥ २८ ॥ प्रतिविश्वंयन्नैवेद्यंददातिवैष्णवोजनः ॥ तत्षोडशांशोविषयिणोविष्णोःपंचदशाऽस्यवै ॥ २९ ॥

शात्प्रजापतिभावमापद्यतइति सोबिभेत्सनैवरेमेइत्यादिनाबृहदारण्यकेप्रतिपादितम् ॥ तथाचसजीवोबालकःपूर्वंकृतश्रवणपरिपाकेनतत्संस्कारवशादस्तिकश्चिदीश्वरइतिस्मृत्वातंद ध्यौध्यातवानित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ प्रणवादीति ॥ वह्निजायास्वाहाॐकृष्णायस्वाहेत्येवंमंत्रः ॥ २७ ॥ २८ ॥ प्रतिविश्वमिति ॥ प्रतिविश्वंप्रतिब्रह्मां डंयोवैष्णवोजनोनैवेद्यंददातितस्यषोडशांशोविषयिणोविषयोवैकुंठरूपोदेशस्तद्वतस्तत्पतेर्विष्णोः कल्पितइतिशेषः ॥ पंचदशभागाअस्यविराट्पुरुषस्यकल्पिताइतिशेषः ॥ २९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





स्वस्यानित्यतृप्तत्वान्नस्वार्थंनैवेद्यंकल्पितमित्याह । निर्गुणस्येति ॥ ३०॥ सचेति । सचलक्ष्मीनाथोवैकुंठपतिर्विष्णुर्विराट्चेत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ येनात्मनाऽयंजीवोजीवितस्तमेवात्मानंनाहिमन्यतेयस्तस्यजीवितंकृतघ्नस्येवव्यर्थमित्यर्थः॥३७॥आत्मनांजीवितत्वमेवोपपादयति।यावदात्मेति ॥ ३८ ॥ सचत्वंचेति ॥ हेकृष्णसचात्मात्वमेवासीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ब्रह्मणोसंख्यपातेचेति ॥ अनेकब्रह्मदेवपातेनाशेपितवनाशोनभविष्यतीत्यर्थः ॥ अनेकब्रह्मांडाभिप्रायेणेयमुक्तिः ॥ ४१ ॥ अंशेनेति ॥ त्वंस्वांशेनप्रतिब्रह्मांडंक्षुद्रविराडल्पोविराड्भव । प्रतिब्रह्मांडंभिन्नोभिन्नोविराड्रूपोभवेत्यर्थः ॥ तेनचायंविराडनेककोटिब्रह्मांडांतर्गतविराड्रूपाणांसमष्टिरधिपतिरस्तीतिबोधितम् ॥ ४२॥ ४३ ॥ तेषुएका

निर्गुणस्यात्मनश्चैवपरिपूर्णतमस्यच ॥ नैवेद्येचैवकृष्णस्यनहिकिंचित्प्रयोजनम् ॥ ३० ॥ यद्यद्ददातिनैवेद्यंतस्मैदेवाययोजनः ॥ सचखादतितत्सर्वंलक्ष्मीनाथौविराट्तथा ॥ ३१ ॥ तंचमंत्रवरंदत्त्वातमुवाचपुनर्विभुः ॥ वरमन्यंकिमिष्टंतेतन्मेब्रूहिददामिच ॥ ३२ ॥ कृष्णस्यवचनंश्रुत्वातमुवाचविराड्विभुः ॥ कृष्णंतंबालकस्तावद्वचनंसमयोचितम् ॥ ३३ ॥ बालकउवाच ॥ वरोमेत्वत्पदांभोजेभक्तिर्भवतुनिश्चला ॥ सततंयावदायुर्मेक्षणंवासुचिरंचवा ॥ ३४ ॥ त्वद्भक्तियुक्तोलोकेऽस्मिञ्जीवन्मुक्तश्चसंततम् ॥ त्वद्भक्तिहीनोमूर्खश्चजीवन्नपिमृतोहिसः ॥ ३५ ॥ किंतज्जपेनतपसायज्ञेनपूजनेनच ॥ व्रतेनचोपवासेनपुण्येनतीर्थसेवया ॥ ३६ ॥ कृष्णभक्तिविहीनस्यमूर्खस्यजीवनंवृथा ॥ येनात्मनाजीवितश्चतमेवनहिमन्यते ॥ ३७ ॥ यावदात्माशरीरेऽस्तितावत्सशक्तिसंयुतः ॥ पश्चाद्यांतिगतेतस्मिन्स्वतंत्राःसर्वशक्तयः ॥ ३८ ॥ सचत्वंचमहाभागसर्वात्माप्रकृतेःपरः ॥ स्वेच्छामयश्चसर्वाद्योब्रह्मज्योतिःसनातनः ॥ ३९ ॥ इत्युक्त्वाबालकस्तत्रविरराम्चनारद ॥ उवाचकृष्णःप्रत्युक्तिंमधुरांश्रुतिसुंदरीम् ॥ ४० ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ सुचिरंसुस्थिरंतिष्ठयथाऽहंत्वंतथाभव ॥ ब्रह्मणोऽसंख्यपातेचपातस्तेनभविष्यति ॥४१॥ अंशेनप्रतिब्रह्मांडेत्वंचक्षुद्रविराड्भव ॥ त्वन्नाभिपद्माद्ब्रह्माचविश्वस्रष्टाभविष्यति॥४२॥ललाटेब्रह्मणश्चैवरुद्राश्चैकादशैवते ॥ शिवांशेनभविष्यंतिसृष्टिसंहरणायवै ॥४३॥ कालाग्निरुद्रस्तेष्वेकोविश्वसंहारकारकः ॥ पाताविष्णुश्चविषयीक्षुद्रांशेनभविष्यति ॥ ४४ ॥ मद्भक्तियुक्तःसततंभविष्यसिवरेणमे ॥ ध्यानेनकमनीयंमांनित्यंद्रक्ष्यसिनिश्चितम् ॥ ४५॥ मातरंकमनीयांचममवक्षःस्थलस्थिताम् ॥ यामिलोकंतिष्ठवत्सेत्युक्त्वासोंतरधीयत ॥ ४६ ॥ गत्वास्वलोकंब्रह्माणंशंकरंसमुवाचह ॥ स्रष्टारंस्रष्टुमीशंचसंहर्तुंचैवतत्क्षणम्॥४७॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सृष्टिंस्रष्टुंगच्छवत्सनाभिपद्मोद्भवोभव ॥ महाविराड्लोमकूपेक्षुद्रस्यचविधेशृणु ॥ ४८ ॥

दशरुद्रेषुएकःकालाग्निरुद्रइत्यर्थः ॥ विषयीविषयभोगवान् ॥ क्षुद्रांशेनअल्पांशेन ॥ ४४॥४५॥ यामीति ॥ हेवत्सत्वमत्रातिष्ठ अहंलोकंस्वलोकंगोलोकंयामिगच्छामीत्युक्त्वासकृष्णोंतरधीयतांतर्धानंगतवानित्यर्थः ॥४६॥ स्वलोकंगत्वास्रष्टारंब्रह्माणंस्रष्टुंशंकरमीशंसहर्तुंचोवाचेत्यर्थः ॥ इमौब्रह्मशंकरौयौपूर्वंकृष्णशरीरान्निर्गतौतावितिबोध्यम् ॥४७॥ किमुवाचतदाह।सृष्टिंस्रष्टुमिति ॥ प्रतिब्रह्मांडंयेविराट्पुरुषाअसंख्याः संतितेषांनाभिपद्मोद्भवोभवानाभिपद्मादुत्पन्नोभव ॥ किमर्थं । सृष्टिंस्रष्टुमुत्पादयितुम् ॥ तेविराट्पुरुषाःकसंतितत्राह महाविराडिति ॥ सर्वविराड्रूपाणांसमष्टिभूतोयोमहाविराट्तस्यलोमकूपेषुयान्यनेकानिब्रह्मांडानितत्रयोयः क्षुद्रविराट्तस्यनाभिपद्मेंशेनहेविधेत्वंभवइदंमद्वचनंत्वंशृण्वित्यर्थः ॥ ४८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

शिवंप्रत्याह । गच्छेति ॥ हेशिववत्सअनेकब्रह्मांडांतर्गतानेकब्रह्मदेवललाटात्त्वमंशेनजगत्संहर्तुमुत्पान्नोभव ॥ स्वयंचत्वंसुचिरंबहुकालंतप तपश्चर्याचकुर्वित्यर्थः ॥४९॥ विधेःसुत हेनारद ॥५०॥ इदंब्रह्मरुद्रौप्रतियथोक्तवांस्तथाचतुर्भुजमपिविष्णुंपालनार्थमुक्तवानेवेदंचानुक्तमप्यर्थाद्बोध्यम् ॥ पूर्वंविराजंप्रतितथैवप्रतिज्ञानात् ॥ तदुक्तमधुनैवपाताविष्णुश्चविषयीक्षुद्रांशेनभविष्यतीति ॥ ब्रह्म रुद्रौयावत्कालपर्यंतंतत्रनगतौततःपूर्वमेवमहाविराट्क्षुद्रविराड्रूपेणप्रतिब्रह्मांडंभिन्नोभिन्नोबभूवेत्याह । महाविराडिति॥विराडंशेनस्वांशेनेत्यर्थः ॥५१॥ तस्यरूपमाह ॥ श्यामइति ॥ ५२ ॥ बभ्राममूलशोधनार्थम् ॥ ५३ ॥ पितातवेतिनारदंप्रत्युक्तिः॥५४॥क्षुद्रंविराजम् ॥५५॥ महाविराजं तंचतत्परमीश्वरंक्षुद्रंविराजंचददर्शेत्यर्थः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८॥ क्षुद्रस्यवामपार्श्वतः क्षुद्रविराजोवामभागादित्यर्थः ॥ सवामभागान्निर्गतोविष्णुः श्वेतद्वीपेऽवसन्निवासंकृतवानित्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ क्षुद्रविराडल्पविराट् ॥ ६१ ॥ अत्रेदंबोध्यम् ॥ प्रथमस्कंधे तस्यास्तुसात्त्विकीशक्तीराजसीतामसीतथा ॥ महाकालीमहालक्ष्मीर्महासरस्वतीतिताःस्त्रियः ॥ तासांतिसृणांशक्तीनांदेहांगीकारलक्षणः ॥ सृष्ट्यर्थंचसमाख्यातःसर्गःशास्त्र

गच्छवत्सम हादेवब्रह्मभालोद्भवोभव ॥ अंशेनचमहाभागस्वयंचसुचिरंतप ॥ ४९ ॥ इत्युक्त्वाजगतांनाथोविररामविधेःसुत ॥ जगामब्रह्मातंनत्वाशिवश्च शिवदायकः ॥ ५० ॥ महाविराड्लोमकूपेब्रह्मांडगोलकेजले ॥ बभूवचविराट्क्षुद्रोविराडंशेनसांप्रतम् ॥ ५१ ॥ श्यामोयुवापीतवासाःशयानोजलत ल्पके ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्योविश्वव्यापीजनार्दनः ॥ ५२ ॥ तन्नाभिकमलेब्रह्मावभूवकमलोद्भवः ॥ संभूयपद्मदंडेचबभ्राम्ययुगलक्षकम् ॥ ५३ ॥ नांतंज गामदंडस्यपद्मनालस्यपद्मजः ॥ नाभिजस्यचपद्मस्यचिंतामापपितातव ॥ ५४ ॥ स्वस्थानंपुनरागम्यदध्यौकृष्णपदांबुजम् ॥ ततोददर्शक्षुद्रंतंध्या नेन दिव्यचक्षुषा ॥ ५५ ॥ शयानंजलतल्पेचब्रह्मांडगोलकाद्भुते ॥ यल्लोमकूपेब्रह्मांडंतंचतत्परमीश्वरम् ॥ ५६ ॥ श्रीकृष्णंचाऽपिगोलोकंगोपगोपीस मन्वितम् ॥ तंसंस्तूयवरंप्रापततःसृष्टिंचकारसः ॥ ५७ ॥ बभूवुर्ब्रह्मणःपुत्रामानसाःसनकादयः ॥ ततोरुद्रकलाश्चाऽपिशिवस्यैकादशस्मृताः ॥ ५८ ॥ बभूवपाताविष्णुश्चक्षुद्रस्यवामपार्श्वतः ॥ चतुर्भुजश्चभगवान्श्वेतद्वीपेसचाऽवसत् ॥ ५९ ॥ क्षुद्रस्यनाभिपद्मेचब्रह्माविश्वंससर्जह ॥ स्वर्गमर्त्यंचपाता लंत्रिलोकींसचराचराम् ॥ ६० ॥ एवंसर्वलोमकूपेविश्वंप्रत्येकमेवच ॥ प्रीतिविश्वेक्षुद्रविराड्ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ ६१ ॥ इत्येवंकथितंब्रह्मन्कृष्णसंकी र्तनंशुभम् ॥ सुखदंमोक्षदंब्रह्मन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराराणेनवमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

विशारदैः ॥ हरिर्हिणरुद्राणामुत्पत्तिस्तुततःस्मृता ॥ पालनोत्पत्तिनाशार्थंप्रतिसर्गःस्मृतोहिसइत्यनेनप्रतिज्ञातोयःसर्गश्चप्रथमस्कंधेपंचमस्कंधेचमधुकैटभवधमहिषासुरशुंभनिशुंभवधप्रसं गेनमहाकाल्याद्युत्पत्तिकथनेन तथातृतीयस्कंधेगुणत्रयेणसमस्तजगतोऽपंचीकृतभूतमहाभूतसृष्टिकथनोत्तरंब्रह्मविष्ण्वाद्युत्पत्तिकथनेनतेषांसृष्टिस्थितिसंहृतिव्यापारेआज्ञाकरणेनचप्रतिपा दितः ॥ पुनश्चसएवसर्गःप्रतिसर्गश्चकल्पांतरभेदेनभिन्नःप्रकारांतरेणनवमस्कंधेउच्यते ॥ तान्निष्कर्षस्त्वित्थंप्रथमंमूलप्रकृतिर्मायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीस्वतंत्रास्वेच्छयाप्राणिकर्मवशेनापंचीकृ तपंचभूतोत्पत्त्यनंतरंपंचमहाभूतोत्पत्तितृतीयस्कंधोक्तप्रकारेणेंद्रियप्राणांतःकरणानामुत्पत्तिंपंचमहाभूतांशान्गृहीत्वाऽनंतकोटिब्रह्मांडोत्पत्तिंचप्रथमंचकार ॥ ततस्तेषांब्रह्मांडानामाधिप त्याकांक्षायांपंचमहाभूतांशान्गृहीत्वास्वयमेवप्रकृतिःसर्वाधिपत्यर्धनारीश्वरश्रीकृष्णरूपेणप्रादुर्बभूव । यांगोपालसुंदरींवदंति ॥ एवंसर्वाधिपतिः श्रीकृष्णोऽर्धनारीश्वरउत्पा

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





दितः ॥ तदनंतरंचतयाऽर्धनार्याकृष्णोमिथुनीभूयस्वषोडशांशेनाऽनंतकोटिब्रह्मांडानियस्यरोमकूपेषुस्थास्यंतितादृशंसर्वब्रह्मांडानामधिपतिंमहाविराजंश्रीमूलप्रकृतिप्रेरणयैवजनयमास ॥ ततः श्रीकृष्णार्धभागिनीपराशक्तिःसमष्टिव्यष्टिज्ञानाधिष्ठात्रींसरस्वतींस्वजिह्वाग्राज्जनयामास ॥ ततः कालांतरेकृष्णार्धभागिनीशक्तिर्द्विधावभूववामभागेनलक्ष्मीरूपेणदक्षिणभागेनराधारूपेण ॥ तत्रलक्ष्मीः समष्टिव्यष्टिसंपत्त्याधिष्ठातृत्वेनकल्पिता ॥ राधातुसमष्टिव्यष्टिप्राणाधिष्ठातृत्वेनकल्पिता ॥ मूलप्रकृतिप्रेरणयैव ततोऽर्धभागरूपः श्रीकृष्णोऽपिमूलप्रकृतीच्छयैववामभागेनविष्णुरूपेणदक्षिणभागेनश्रीकृष्णरूपेणद्विधाजातः ॥ तदनंतरंवाणींलक्ष्मींचचतुर्भुजायाविष्णवेस्त्रीत्वेनददौ ॥ राधांतुस्त्रीत्वेनस्वयमेवकृष्णोजग्राह ॥ ततोमूलप्रकृतेः सकाशात्सहस्रभुजादुर्गादेवतासमष्टिव्यष्टयंतःकरणाधिष्ठात्रीसमुत्पन्ना । ततःपद्मनाभेश्चतुर्भुजस्यविष्णोर्नाभिकमलात्सावित्रीस्त्रीसहितोब्रह्मदेवःसमुत्पन्नोमूलप्रकृतिरूपएव ॥ तत्रसावित्रीसर्वजीवात्माधिष्ठात्रीदेवता ॥ ततः श्रीकृष्णोद्विभुजोऽपिपुनर्वामभागेनमहादेवरूपेणदक्षिणभागेनश्रीकृष्णरूपेणाद्विधाजातः।ततःसादुर्गामहादेवतामहादेवायस्त्रीत्वेनदत्तेत्येतदत्राऽनुक्तमपिनारदपुराणादवगंतव्यम्॥एतेसर्वेकृष्णादयःपुरुषाः दुर्गादयः पंचप्रकृतयश्चमूलप्रकृतेःपूर्णावताराएव॥ततःश्रीकृष्णाज्ञयामहाविराट् प्रतिब्रह्मांडंभिन्नभिन्नविराड्रूपे णवभूव । ततः श्रीकृष्णाज्ञयामूलभूतश्चतुर्मुखोब्रह्मासस्त्रीकोभिन्नभिन्नरूपैस्तत्तद्ब्रह्मांडांतर्गतविराट्पुरुषनाभिकमलात्प्रादुर्बभूव।महादेवोऽपिश्रीकृष्णाज्ञयातत्तद्ब्रह्मांडांतर्गतचतुर्मुखललाटा

**नारदउवाच ॥ श्रुतंसर्वंमयापूर्वंत्वत्प्रसादात्सुधोपमम् ॥ अधुनाप्रकृतीनांचव्यस्तंवर्णयपूजनम् ॥ १ ॥ कस्याःपूजाकृताकेनकथंमर्त्येप्रचारिता ॥ केनवापूजिताकावाकेनकावास्तुताप्रभो ॥ २ ॥ तासांस्तोत्रंचध्यानंचप्रभावंचरितंशुभम् ॥ काभिःकेभ्योवरोदत्तस्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ३ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ गणेशजननीदुर्गाराधालक्ष्मीःसरस्वती ॥ सावित्रीचसृष्टिविधौप्रकृतिःपंचधास्मृता ॥ ४ ॥ आसांपूजाप्रसिद्धाचप्रभावःपरमाद्भुतः ॥ सुधोपमंचचरितंसर्वमंगलकारणम् ॥ ५ ॥ प्रकृत्यंशाःकलायाश्चतासांचचरितंशुभम् ॥ सर्ववक्ष्यामितेब्रह्मन्सावधानोनिशामय ॥ ६ ॥ कालीवसुंधरागंगाषष्ठीमंगलचंडिका ॥ तुलसीमनसानिद्रास्वधास्वाहाचदक्षिणा ॥ ७ ॥**

द्भिन्नभिन्नरूपैःप्रादुर्बभूव ॥ ततःश्रीकृष्णाज्ञयाचतुर्भुजोविष्णुरपितत्तद्ब्रह्मांडांतर्गतविराट्पुरुषवामभागाद्भिन्नरूपैःप्रादुर्बभूव ॥ तदेवंप्रकारेणप्रतिब्रह्मांडंब्रह्मविष्णुमहेश्वराःसस्त्रीकाःसृष्टिस्थित्यंतकारिणोभिन्नाः॥ विराट्पुरुषोऽपिभिन्नः।मूलभूताविराट्ब्रह्मविष्णुमहेश्वरास्तुसकलब्रह्मांडांतर्गताविराट्चतुर्मुखविष्णुरुद्राणामाधिपतयः। तेषांसर्वेषामधिपतिर्वक्ष्यमाणरीत्यागोपालसुंदररूपश्रीकृष्णस्तस्याऽप्यधिपतिः ॥ सकलमूलभूतामूलप्रकृतिर्मायाशबलब्रह्मरूपिणी।तदभिमानिनीदेवतातुश्रीभुवनेश्वरीतितुतृतीयस्कंधेभिहितम् ॥ ताःपंचप्रकृतयस्तेकृष्णब्रह्मादिपुरुषाश्चपरस्परमभिन्नाएव नतत्रन्यूनाधिकभावःकैनाचित्कर्तव्यः ॥ न्युनाधिकभावेननरकपातश्रवणात् ॥ तदेवंप्रकारेणसर्वस्त्रीपुरुषात्मकंचजगन्मूलप्रकृतिमयंमूलप्रकृत्यधीनंचेतिसैवमूलप्रकृतिःसर्वदासर्वैःसर्वरूपोपास्येतितत्त्वमिति ॥ ६२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः॥३॥एकाधिकैश्चनवतिश्लोकैरथसमासतः ॥ सरस्वतीस्तोत्रपूजाकवचादिकमुच्यते ॥१॥

अधुनानारदःपूर्वोक्तानांदेवतानांपूजादिकंपृच्छति । नारदउवाच श्रुतंसर्वमिति ॥ व्यस्तंभिन्नंभिन्नम् ॥ १ ॥ कस्याःपूजाकेनपुरुषेणकृतामर्त्यलोकेकथंकेनप्रकारेणतस्यादेवतायाःपूजाप्रचारितासंचारिताकेनवामंत्रेणकादेवतापूजिताकेनवास्तोत्रेणकादेवतास्तुतातत्सर्वंवदेत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ आसांपूजेति ॥ आसांपंचदेवतानांपूजास्तोत्रमंत्रचरित्रादिकंसर्वंप्रसिद्धमेवसर्वत्रवेदपुराणतंत्रादिषुविद्यते।अतस्तन्मयानोच्यते ॥ किंतु याःप्रकृत्यंशभूताःकलास्तासांपूजादिकंचसर्वंवक्ष्यामीत्याह।प्रकृत्यंशाइति॥५॥६॥कास्ताःकलास्तदाह।कालीवसुंधरेति॥७॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

संक्षिप्तमासामिति ॥ आसामेतादृशीनांदेवतानांचरितंप्रसंगेनजीवकर्मविपाकंचवैराग्यार्थंवक्ष्यामीत्यर्थः ॥ ८ ॥ किंचदुर्गायाइति ॥ चरितमनुष्ठानविधिंसंक्षेपतःपश्चादंतेप्रवक्ष्यामीत्यन्वयः ॥ ९ ॥ १० ॥ कृष्णयोषितोराधायाः ॥ देवीसरस्वती ॥ वक्रतोजिह्वाग्रात् ॥ इयंकथापूर्वमुक्ता ॥ इयेषकृष्णमिति । पतित्वेनकृष्णमियेषेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ कांते हेसरस्वति ॥ ममराधापत्नीत्वत्तोवलवत्यधिकामानिनीभवत्यतस्तवमत्पत्नीत्वेसपत्नीजन्यदुःखेनभद्रंनभविष्यतीत्यर्थः ॥ १५ ॥ ननुतांपत्नींशिक्षयेतिचेत्तत्राह । योयस्मादिति ॥ हेवाणि ॥ यःपुरुषोयस्मान्निर्बलाद्बलवान्भवति तस्मान्निर्बलात्सकाशाद्रक्षितुमन्यंससबलःक्षमोभवति ॥ नाहंराधातोवलवांस्ततश्चराधातोरक्षितुंत्वांनक्षमोऽस्मीत्यर्थः ॥ कथंक्षमोनकथमपीत्यर्थः ॥ तत्रप्रसिद्धंन्यायमाह । कथमिति ॥ साधयतिरक्षति ॥ १६ ॥ सर्वशास्ताऽहंयद्यपीत्यर्थः ॥ १७ ॥ प्राणतोऽपीति ॥ केषामपिपुरुषाणांकश्चनकोऽपिपुत्रःप्राणतोऽपिकिं

संक्षिप्तमासांचरितंपुण्यदंश्रुतिसुंदरम् ॥ जीवकर्मविपाकंचतच्चवक्ष्यामिसुंदरम् ॥ ८ ॥ दुर्गायाश्चैवराधायाविस्तीर्णंचरितंमहत् ॥ तद्वत्पश्चात्प्रवक्ष्यामिसंक्षेपक्रमतःशृणु ॥ ९ ॥ आदौसरस्वतीपूजाश्रीकृष्णेनविनिर्मिता ॥ यत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठमूर्खोभवतिपंडितः ॥ १० ॥ आविर्भूतायथादेवीवक्रतःकृष्णयोषितः ॥ इयेषकृष्णंकामेनकामुकीकामरूपिणी ॥ ११ ॥ सचविज्ञायतद्भावंसर्वज्ञःसर्वमातरम् ॥ तामुवाचहितंसत्यंपरिणामेसुखावहम् ॥१२॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ भजनारायणंसाध्विमदंशंचचतुर्भुजम् ॥ युवानंसुंदरंसर्वगुणयुक्तंचमत्समम् ॥ १३ ॥ कामज्ञंकामिनीनांचतासांचकामपूरकम् ॥ कोटिकंदर्पलावण्यंलीलालंकृतमीश्वरम् ॥ १४ ॥ कांतेकांतंचमांकृत्वायदिस्थातुमिहेच्छसि ॥ त्वत्तोबलवतीराधानभद्रंतेभविष्यति ॥१५॥ योयस्माद्बलवान्वाणिततोऽन्यंरक्षितुंक्षमः ॥ कथंपरान्साधयतियदिस्वयमनीश्वरः ॥ १६ ॥ सर्वेशःसर्वशास्ताऽहंराधांबाधितुमक्षमः ॥ तेजसामत्समासाचरूपेणचगुणेनच ॥ १७ ॥ प्राणाधिष्ठातृदेवीसाप्राणांस्त्यक्तुंचकःक्षमः ॥ प्राणतोपिप्रियःपुत्रःकेषांवास्तिचकश्चन ॥ १८ ॥ त्वंभद्रेगच्छवैकुंठंतवभद्रंभविष्यति ॥ पतिंतमीश्वरंकृत्वामोदस्वसुचिरंसुखम् ॥ १९ ॥ लोभमोहकामक्रोधमानहिंसाविवर्जिता ॥ तेजसात्वत्समालक्ष्मीरूपेणचगुणेनच ॥ २० ॥ तयासार्धंतवप्रीत्याशश्वत्कालःप्रयास्यति ॥ गौरवंचहरिस्तुल्यंकरिष्यतिद्वयोरपि ॥ २१ ॥ प्रतिविश्वेषुतांपूजांमहतींगौरवान्विताम् ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यांविद्यारंभेचसुंदरि ॥ २२ ॥ मानवामनवोदेवामुनींद्राश्चमुमुक्षवः ॥ वसवोयोगिनःसिद्धानागागंधर्वराक्षसाः ॥२३॥ मद्वरेणकरिष्यंतिकल्पेकल्पेलयावधि ॥ भक्तियुक्ताश्चदत्वावैचोपचाराणिषोडश॥२४॥ कण्वशाखोक्तविधिनाध्यानेनस्तवनेनच ॥ जितेंद्रियाःसंयताश्चघटेचपुस्तकेऽपिच ॥ २५ ॥

प्रियोऽस्तिनास्तीत्यर्थः ॥ तथाचपुत्रेभ्योऽपिप्रियःप्राणस्तत्प्राणरूपांराधांत्यक्तुंकथमहंक्षमइत्यर्थः ॥ १८ ॥ तर्हिममकागतिस्तत्राह । त्वंभद्रेइति ॥ १९ ॥ ननुतत्रापिलक्ष्मीःसपत्नीवर्ततइतिचेन्नसालक्ष्मीराधासदृशीमानिनी किंत्वतिशांताऽस्तीत्याह । लोभेति ॥ २० ॥ २१ ॥ प्रतिविश्वेषुप्रतिब्रह्मांडम् ॥ तांपूजामित्यस्यकरिष्यंतीत्यनेनान्वयः ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यामित्यनेनतद्दिनेसरस्वत्यामहोत्सवोबोधितः ॥ तद्दिनस्यविद्यारंभइतिविशेषणंतुशास्त्रेतद्दिनेविद्यायाआरंभःकर्तव्यइतिश्रवणात् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ कण्वशाखोक्तेति ॥ यद्यपिसविधिरधुनोपलब्धशाखायांनास्ति तथाप्युच्छिन्नशाखासुवर्ततइतिबोध्यम् ॥ घटेपुस्तकेवाआवाह्येत्यर्थः ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सुवर्णगुटिकामिति ॥ भूर्जपत्रेकवचमष्टगंधेनसंलिख्यस्वर्णगुटिकायांधारयत्तांचगुटिकांकंठादिषुधारयेदित्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ समयंसंकेतम् ॥ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ अभीष्टांसरस्वतीम् ॥३५॥३६॥३७॥ इक्षुसंपूर्णखंडंवा ॥ स्वस्तिकामिति।स्वस्तिकोमंगलद्रव्यचतुष्कगृहभेदयोरितिमेदिनीकोशान्मंगलद्रव्यंयद्यत्तत्सर्वंग्राह्यम् ॥३८॥

कृत्वासुवर्णगुटिकांगंधचंदनचर्चिताम् ॥ कवचंतेग्रहीष्यंतिकंठेवादक्षिणेभुजे ॥ २६ ॥ पठिष्यंतिचविद्वांसःपूजाकालेचपूजिते ॥ इत्युक्त्वापूजयामास तांदेवींसर्वपूजिताम् ॥ २७ ॥ ततस्तत्पूजनंचक्रुर्ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ अनंतश्चाऽपिधर्मश्चमुनींद्राःसनकादयः ॥ २८ ॥ सर्वेदेवाश्चमुनयोनृपाश्चमानवादयः ॥ बभूवपूजितानित्यासर्वलोकैःसरस्वती ॥ २९ ॥ नारदउवाच ॥ पूजाविधानंकवचंध्यानंचापिनिरंतरम् ॥ पूजोपयुक्तंनैवेद्यंपुष्पंचचंदनादिकम् ॥ ३० ॥ वदवेदविदांश्रेष्ठश्रोतुंकौतूहलंमम ॥ वर्ततेहृदयेशश्वत्किमिदंश्रुतिसुंदरम् ॥ ३१ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिकण्वशाखोक्तपद्धतिम् ॥ जगन्मातुःसरस्वत्याःपूजाविधिसमन्विताम् ॥ ३२ ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यांविद्यारंभदिनेऽपिच ॥ पूर्वेऽह्निसमयंकृत्वातत्राऽह्निसंयतःशुचिः ॥ ३३ ॥ स्नात्वानित्यक्रियाःकृत्वाघटंसंस्थाप्यभक्तितः ॥ स्वशाखोक्तविधानेनतांत्रिकेणाऽथवापुनः ॥३४॥ गणेशंपूर्वमभ्यर्च्यततोऽभीष्टांप्रपूजयेत् ॥ ध्यानेनवक्ष्यमाणेनध्यात्वावाह्यघटेध्रुवम् ॥ ३५ ॥ ध्यात्वापुनःषोडशोपचारेणपूजयेद्व्रती ॥ पूजोपयुक्तंनैवेद्यंयच्चवेदनिरूपितम् ॥ ३६ ॥ वक्ष्यामिसौम्यतत्किंचिद्यथाधीतंयथागमम् ॥ नवनीतंदधिक्षीरंलाजांश्चतिलतंडुलम् ॥ ३७ ॥ इक्षुमिक्षुरसंशुक्लवर्णपक्वगुडंमधु ॥ स्वस्तिकंशर्कराशुक्लधान्यस्याऽक्षतमक्षतम् ॥ ३८ ॥ अस्विन्नशुक्लधान्यस्यपृथुकंशुक्लमोदकम् ॥ घृतसैंधवसंयुक्तंहविष्यान्नंयथोदितम् ॥ ३९ ॥ यवगोधूमचूर्णानांपिष्टकंघृतसंयुतम् ॥ पिष्टकंस्वतिकस्याऽपिपक्वरंभाफलस्यच ॥ ४० ॥ परमान्नंचसघृतंमिष्टान्नंचसुधोपमम् ॥ नारिकेलंतदुदकंकसेरुंमूलमार्द्रकम् ॥ ४१ ॥ पक्वरंभाफलंचारुश्रीफलंबदरीफलम् ॥ कालदेशोद्भवंचारुफलंशुक्लंचसंस्कृतम् ॥ ४२ ॥ सुगंधंशुक्लपुष्पंचसुगंधंशुक्लचंदनम् ॥ नवीनंशुक्लवस्त्रंचशंखंचसुंदरंमुने ॥ ४३ ॥ माल्यंचशुक्लपुष्पाणांशुक्लहारंचभूषणम् ॥ यादृशंचश्रुतौध्यानंप्रशस्यंश्रुतिसुंदरम् ॥ ४४ ॥ तन्निबोधमहाभागभ्रमभंजनकारणम् ॥ सरस्वतींशुक्लवर्णांसस्मितांसुमनोहराम् ॥ ४५ ॥ कोटिचंद्रप्रभामुष्टपुष्टश्रीयुक्तविग्रहाम् ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानांवीणापुस्तकधारिणीम् ॥ ४६ ॥ रत्नसारेंद्रनिर्माणनवभूषणभूषिताम् ॥ सुपूजितांसुरगणैर्ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ ४७ ॥

॥ ३९ ॥ स्वस्तिकस्यापियस्यकस्यापिमंगलद्रव्यस्यपिष्टकंघृतसंयुतमित्यर्थः ॥ पक्वरंभाफलस्यशुष्कस्यपिष्टकमित्यर्थः ॥ ४० ॥ परमान्नंपायसम् ॥ कसेरुः प्रसिद्धः ॥ मूलंमूलकम् ॥ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ कोटिचंद्रप्रभामुष्टाऽपहृतायेनतादृशः ॥ पुष्टश्रीःपूर्णश्रीस्तयायुक्तःयुतोविग्रहोयस्याः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४८ ॥ नित्याक्रियेति ॥ सर्वेषांजनानांविद्यारंभेवर्षांतेपंचमीदिनेमाघशुक्लपंचम्यामियंक्रियानित्यावश्यंकर्तव्येत्यर्थः ॥ ४९ ॥ मूलंचसर्वस्यमूलभूतमित्यर्थः ॥ ५० ॥ येषांपुरुषाणां येनहेतुनोपदेशोजातस्तेनहेतुनातेषांसमंत्रएवंसर्वस्यमूलोमूलभूतइत्यर्थः ॥ ५१ ॥ मंत्रोयमिति ॥ श्रींह्रींसरस्वत्यैस्वाहेतिवैदिकोमंत्रः कल्पवृक्षइत्यर्थः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥५५॥५६॥

वंदेभक्त्यावंदितांचमुनींद्रमनुमानवैः ॥ एवंध्यात्वाचमूलेनसर्वंदत्वाविचक्षणः ॥ ४८ ॥ संस्तूयकवचंधृत्वाप्रणमेद्दंडवद्भुवि ॥ येषांचेयमिष्टदेवीतेषांनित्याक्रियामुने ॥ ४९ ॥ विद्यारंभेचवर्षांतेसर्वेषांपंचमीदिने ॥ सर्वोपयुक्तोमूलंचवैदिकाष्टाक्षरःपरः ॥ ५० ॥ येषांयेनोपदेशोवातेषांसमूलएवच ॥ सरस्वतीचतुर्थ्यंतंवह्निजायांतमेवच ॥ ५१ ॥ लक्ष्मीमायादिकंचैवमंत्रोऽयंकल्पपादपः ॥ पुरानारायणश्चेमंवाल्मीकायकृपानिधिः ॥ ५२ ॥ प्रददौजाह्नवीतीरेपुण्येक्षेत्रेचभारते ॥ भृगुर्ददौचशुक्रायपुष्करेसूर्यपर्वणि ॥ ५३ ॥ चंद्रपर्वणिमारीचोददौवाक्पतयेमुदा ॥ भृगोश्चैवददौतुष्टोब्रह्मावदरिकाश्रमे ॥ ॥ ५४ ॥ आस्तिकस्यजरत्कारुर्ददौक्षीरोदसन्निधौ ॥ विभांडकोददौमेरौऋष्यशृंगायधीमते ॥ ५५ ॥ शिवःकणादमुनयेगौतमायददौमुदा ॥ सूर्यश्चयाज्ञवल्यायतथाकात्यायनायच ॥ ५६ ॥ शेषःपाणिनयेचैवभारद्वाजायधीमते ॥ ददौशाकटायनायसुतलेबलिसंसदि ॥ ५७ ॥ चतुर्लक्षजपेनैवमंत्रःसिद्धोभवेन्नृणाम् ॥ यदिस्यान्मंत्रसिद्धोहिबृहस्पतिसमोभवेत् ॥ ५८ ॥ कवचंशृणुविप्रेंद्रयद्दत्तंब्रह्मणापुरा ॥ विश्वस्रष्ट्राविश्वजयंभृगवेगंधमादने ॥ ५९ ॥ भृगुरुवाच ॥ ब्रह्मन्ब्रह्मविदांश्रेष्ठब्रह्मज्ञानविशारद ॥ सर्वज्ञसर्वजनकसर्वेशसर्वपूजित ॥ ६० ॥ सरस्वत्याश्चकवचंब्रूहिविश्वजयंप्रभो ॥ अयातयामंमंत्राणांसमूहसंयुतंपरम् ॥ ६१ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणुवत्सप्रवक्ष्यामिकवचंसर्वकामदम् ॥ श्रुतिसारंश्रुतिसुखंश्रुत्युक्तंश्रुतिपूजितम् ॥ ६२ ॥ उक्तंकृष्णेनगोलोकेमह्यंवृंदावनेवने ॥ रासेश्वरेणविभुनारासेवैरासमंडले ॥ ६३ ॥ अतीवगोपनीयंचकल्पवृक्षसमंपरम् ॥ अश्रुताद्भुतमंत्राणांसमूहैश्चसमन्वितम् ॥ ६४ ॥ यद्धृत्वाभगवाञ्छुक्रःसर्वदैत्येषुपूजितः ॥ यद्धृत्वापठनाद्ब्रह्मन्बुद्धिमांश्चबृहस्पतिः ॥ ६५ ॥ पठनाद्धारणाद्वाग्मीकवींद्रोवाल्मिकोमुनिः ॥ स्वायंभुवोमनुश्चैवयद्धृत्वासर्वपूजितः ॥६६॥ कणादोगौतमःकण्वःपाणिनिःशाकटायनः॥ग्रंथंचकारयद्धृत्वादक्षःकात्यायनःस्वयम् ॥ ६७॥ धृत्वावेदविभागंचपुराणान्यखिलानिच ॥ चकारलीलामात्रेणकृष्णद्वैपायनःस्वयम् ॥ ६८ ॥ शातातपश्चसंवर्तोवसिष्ठश्चपराशरः ॥ यद्धृत्वापठनाद्ग्रंथंयाज्ञवल्क्यश्चकारसः ॥ ६९ ॥ ऋष्यशृंगोभरद्वाजश्चास्तिकोदेवलस्तथा ॥ जैगीषव्योययातिश्चधृत्वासर्वत्रपूजिताः ॥ ७० ॥ कवचस्याऽस्यविप्रेंद्रऋषिरेवप्रजापतिः ॥ स्वयंछंदश्चबृहतीदेवताशारदांबिका ॥ ७१ ॥ सर्वतत्त्वपरिज्ञानसर्वार्थसाधनेषुच ॥ कवितासुचसर्वासुविनियोगःप्रकीर्तितः ॥ ७२ ॥

बलिसंसदिबलिसभायाम् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ विश्वजयंतन्नामकम् ॥ ५९ ॥ ६० ॥ अयातयामंनिर्दोषम् ॥ ६१ ॥ श्रुतिसुखंकर्णमधुरम् ॥ ६२ ॥ मह्यंब्रह्मणे ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ शारदा शारंशीर्णंशरीरसमूहंद्यतिखंडयतिसाशारदादेवता ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रथममंत्रेश्रीबीजंमायाबीजंक्रमेणाऽऽदौवर्ततेश्रीबीजाद्योद्वितीयः ॥ ७३ ॥ तारमायाद्यस्तृतीयः ॥ तारश्रीमायाद्यश्चतुर्थकः ॥ ७४ ॥ वाग्भवमायाद्यःपंचमः ॥ तारमायाद्यःषष्ठः ॥ ७५ ॥ तारश्रीमायाद्यःसप्तमः ॥ वाग्भवाद्योऽष्टमः ॥ ७६ ॥ तारश्रीमायाद्योनवमः ॥ श्रीबीजाद्योदशमः ॥ तारमायाद्योमंत्रएकादशः ॥ ७७ ॥ तारमायाद्योद्वादशः ॥ तारमायाकामबीजाद्यस्त्रयोदशः ॥ ७८ ॥ तारमायाद्यौचतुर्दशपंचदशौ ॥ ७९ ॥ ताराद्यौषोडशसप्तदशौ ॥ ८० ॥ तारवाग्भवमायाश्रीकामबीजाद्योऽष्टादशः ॥ ८१ ॥ वाग्भवमायाश्री

श्रींह्रींसरस्वत्यैस्वाहाशिरोमेपातुसर्वतः ॥ श्रींवाग्देवतायैस्वाहाभालंमेसर्वदाऽवतु ॥ ७३ ॥ ॐह्रींसरस्वत्यैस्वाहेतिश्रोत्रेपातुनिरंतरम् ॥ ॐश्रींह्रींभगवत्यैसरस्वत्यैस्वाहानेत्रयुग्मंसदाऽवतु ॥ ७४ ॥ ऐंह्रींवाग्वादिन्यैस्वाहानासांमेसर्वदाऽवतु ॥ ह्रींविद्याधिष्ठातृदेव्यैस्वाहाचोष्ठंसदाऽवतु ॥ ७५ ॥ ॐश्रींह्रींब्राह्म्यैस्वाहेतिदंतपंक्तिंसदाऽवतु ॥ ऐमित्येकाक्षरोमंत्रोममकंठंसदाऽवतु ॥ ७६ ॥ ॐश्रींह्रींपातुमेग्रीवांस्कंधौमेश्रींसदावतु ॥ ॐह्रींविद्याधिष्ठातृदेव्यैस्वाहावक्षःसदाऽवतु ॥७७॥ ॐह्रींविद्याधिस्वरूपायैस्वाहामेपातुनाभिकाम् ॥ ॐह्रींक्लींवाण्यैस्वाहेतिममहस्तौसदाऽवतु ॥ ७८ ॥ ॐसर्ववर्णात्मिकायैपादयुग्मंसदाऽवतु ॥ ॐवागधिष्ठातृदेव्यैस्वाहासर्वंसदाऽवतु ॥ ७९ ॥ ॐसर्वकंठवासिन्यैस्वाहाप्राच्यांसदाऽवतु ॥ ॐसर्वजिह्वाग्रवासिन्यैस्वाहाऽग्निदिशिरक्षतु ॥ ८० ॥ ॐऐंह्रींक्लींसरस्वत्यैबुधजनन्यैस्वाहा ॥ सततंमंत्रराजोऽयंदक्षिणेमांसदाऽवतु ॥ ८१ ॥ ऐंह्रींश्रींत्र्यक्षरोमंत्रोनैर्ऋत्यांसर्वदाऽवतु ॥ ॐऐंजिह्वाग्रवासिन्यैस्वाहामांवारुणेऽवतु ॥ ८२ ॥ ॐसर्वांबिकायैस्वाहावायव्येमांसदाऽवतु ॥ ॐऐंश्रींक्लींगद्यवासिन्यैस्वाहामामुत्तरेऽवतु ॥ ८३ ॥ ऐंसर्वशास्त्रवासिन्यैस्वाहैशान्यांसदाऽवतु ॥ ॐह्रींसर्वपूजितायैस्वाहाचोर्ध्वंसदाऽवतु ॥ ८४ ॥ ह्रींपुस्तकंवासिन्यैस्वाहाऽधोमांसदाऽवतु ॥ ॐग्रंथबीजस्वरूपायैस्वाहामांसर्वतोऽवतु ॥ ८५ ॥ इतितेकथितंविप्रब्रह्ममंत्रौघविग्रहम् ॥ इदंविश्वजयंनामकवचंब्रह्मरूपकम् ॥ ८६ ॥ पुराश्रुतंधर्मवक्त्रात्पर्वतेगंधमादने ॥ तवस्नेहान्मयाख्यातंप्रवक्तव्यंनकस्यचित् ॥ ८७ ॥ गुरुमभ्यर्च्यविधिवद्वस्त्रालंकारचंदनैः ॥ प्रणत्यदंडवद्भूमौकवचंधारयेत्सुधीः ॥ ८८ ॥ पंचलक्षजपेनैवसिद्धंतुकवचंभवेत् ॥ यदिस्यात्सिद्धकवचोबृहस्पतिसमोभवेत् ॥ ८९ ॥ महावाग्मीकवींद्रश्चत्रैलोक्यविजयीभवेत् ॥ शक्नोतिसर्वंजेतुंचकवचस्यप्रसादतः ॥ ९० ॥ इदंचकण्वशाखोक्तंकवचंकथितंमुने ॥ स्तोत्रपूजाविधानंचध्यानंचवंदनंशृणु ॥ ९१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ वाग्देवतायाःस्तवनंश्रूयतांसर्वकामदम् ॥ महामुनिर्याज्ञवल्क्योयेनतुष्टावतांपुरा ॥ १ गुरुशापाच्चसमुनिर्हतविद्योबभूवह ॥ तदाजगामदुःखार्तोरविस्थानंसुपुण्यदम् ॥ २ ॥ संप्राप्यतपसासूर्यंलोलार्कंदृष्टिगोचरे ॥ तुष्टावसूर्यंशोकेनरुरोदचमुहुर्मुहुः ॥ ३ ॥

बीजाद्यऊनविंशः ॥ तारवाग्भवाद्योविंशः ॥ ८२ ॥ ताराद्यएकाविंशः ॥ तारवाग्भवश्रीकामाद्योद्वाविंशः ॥ ८३ ॥ वाग्भवाद्यस्त्रयोविंशः ॥ तारमायाद्यश्चतुर्विंशः ॥ ८४ ॥ मायाद्यः पंचविंशः ॥ ताराद्यःषड्विंशः ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ इतिश्रीदे०नवमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चद्वात्रिंशत्पद्यैर्धर्मात्मजःपरम् ॥ सरस्वत्यामहास्तोत्रंनारदायोक्तवान्स्फुटम् ॥ १ ॥ नारायणउवाच वाग्देवतायाइति ॥ १ ॥ रविस्थानंलोलार्कम् ॥ २ ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सूर्यस्तामिति ॥ देवःसूर्यस्तंयाज्ञवल्क्यंवेदंवेदांगंचपाठयामासेत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ दुःखितंपाहीतिशेषः ॥ ६ ॥ सुशिष्यंप्रतिष्ठितंमह्यंदेहीत्यन्वयः ॥ ७ ॥ ८ ॥ तत्रदृष्टांतोयथाभस्मन्यप्यंकुरंदेवतासर्वेश्वरःकदाचित्करोतितद्वन्मयिसर्वंलुप्तंसाधयेत्यर्थः ॥ ९ ॥ विसर्गबिंदुमात्रास्विति ॥ विसर्गबिंदुमात्रासुयदधिष्ठानंसर्वाक्षरगणितदाश्रयाहिविसर्गबिंदुमात्राः ॥ तेषामक्षराणामधिष्ठात्रीत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ आजगामेतिच्छेदः ॥ १५ ॥ १६ ॥ सिद्धांतं ब्रह्मसिद्धांतम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ सस्मारवाल्मीकिः ॥ पुराण

सूर्यस्तंपाठयामासवेदंवेदांगमीश्वरः ॥ उवाचस्तौहिवाग्देवींभक्त्याचस्मृतिहेतवे ॥ ४ ॥ तमित्युक्त्वादीननाथोऽप्यंतर्धानंचकारसः ॥ मुनिःस्नात्वाचतुष्टावभक्तिनम्रात्मकंधरः ॥ ५ ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ कृपांकुरुजगन्मातर्ममेवंहततेजसम् ॥ गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टंविद्याहीनंचदुःखितम् ॥ ६ ॥ ज्ञानंदेहिस्मृतिंविद्यांशक्तिंशिष्यप्रबोधिनीम् ॥ ग्रंथकर्तृत्वशक्तिंचसुशिष्यंसुप्रतिष्ठितम् ॥ ७ ॥ प्रतिभांसत्सभायांचविचारक्षमतांशुभाम् ॥ लुप्तंसर्वंदैवयोगान्नवीभूतंपुनःकुरु ॥ ८ ॥ यथांकुरंभस्मनिचकरोतिदेवतापुनः ॥ ब्रह्मस्वरूपापरमाज्योतीरूपासनातनी ॥ ९ ॥ सर्वविद्याधिदेवीयातस्यैवाण्यैनमोनमः ॥ विसर्गबिंदुमात्रासुयदधिष्ठानमेवच ॥ १० ॥ तदधिष्ठात्रीयादेवीतस्यैनीत्यैनमोनमः ॥ व्याख्यास्वरूपासादेवीव्याख्याधिष्ठातृरूपिणी ॥ ११ ॥ ययाविनाप्रसंख्यावान्संख्यांकर्तुंनशक्यते ॥ कालसंख्यास्वरूपायातस्यैदेव्यैनमोनमः ॥ १२ ॥ भ्रमसिद्धांतरूपायातस्यैदेव्यैनमोनमः ॥ स्मृतिशक्तिज्ञानशक्तिबुद्धिशक्तिस्वरूपिणी ॥ १३ ॥ प्रतिभाकल्पनाशक्तिर्याचतस्यैनमोनमः ॥ सनत्कुमारोब्रह्माणंज्ञानंपप्रच्छयत्रवै ॥ १४ ॥ बभूवमूकवत्सोऽपिसिद्धांतंकर्तुमक्षमः ॥ तदाजगामभगवानात्माश्रीकृष्णईश्वरः ॥ १५ ॥ उवाचसचतांस्तौहिवाणीमिष्टांप्रजापते ॥ सचतुष्टावतांब्रह्माचाऽऽज्ञयापरमात्मनः ॥ १६ ॥ चकारतत्प्रसादेनतदासिद्धांतमुत्तमम् ॥ यदाप्यनंतंपप्रच्छज्ञानमेकंवसुंधरा ॥१७॥ बभूवमूकवत्सोऽपिसिद्धांतंकर्तुमक्षमः ॥ तदातांसचतुष्टावसंत्रस्तःकश्यपाज्ञया ॥ १८ ॥ ततश्चकारसिद्धांतंनिर्मलंभ्रमभंजनम् ॥ व्यासःपुराणसूत्रंचपप्रच्छवाल्मीकिंयदा ॥ १९ ॥ मौनीभूतश्चसस्मारतामेवजगदंबिकाम् ॥ तदाचकारसिद्धांतंतद्वरेणमुनीश्वरः ॥ २० ॥ संप्राप्यनिर्मलंज्ञानंभ्रमांध्यध्वंसदीपकम् ॥ पुराणसूत्रंश्रुत्वाचव्यासःकृष्णकलोद्भवः ॥ २१ ॥ तांशिवांवेददध्यौचशतवर्षंचपुष्करे ॥ तदात्वत्तोवरंप्राप्यसत्कवींद्रोबभूवह ॥ २२ ॥ तदावेदविभागंचपुराणंचचकारसः ॥ यदामहेंद्रःपप्रच्छतत्त्वज्ञानंसदाशिवम् ॥ २३ ॥ क्षणंतामेवसंचिंत्यतस्मैज्ञानंददौविभुः ॥ पप्रच्छशब्दशास्त्रंचमहेंद्रश्चबृहस्पतिम् ॥ २४ ॥

सूत्ररचनाशक्त्यर्थंस्मृतवानित्यर्थः ॥ हेदेवि त्वद्वरेणतदावाल्मीकिर्भ्रमरूपांधकारध्वंसदीपरूपंज्ञानंसंप्राप्यसिद्धांतंपुराणसूत्रभूतंचकार ॥ तत्पुराणसूत्रंव्यासःकृष्णकलोद्भवःकृष्णकलांशःश्रुत्वातदर्थंकवितारूपेणस्पष्टीकर्तुंत्वांशिवांवेददध्यौध्यातवांश्चेत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ सदाशिवंपप्रच्छ किंपप्रच्छतत्राह । तत्त्वज्ञानमिति ॥ २३ ॥ २४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सबृहस्पतिः ॥ २५ ॥ शब्दशास्त्रंव्याकरणंतस्यार्थंचोवाच ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥

अर्धाधिकैःसप्तषष्टिश्लोकैरथसमासतः ॥ लक्ष्मीगंगाभारतीनांशापाज्जन्मोच्यतेभुवि ॥ १ ॥ सरस्वतीतुवैकुंठेइति ॥ स्वयंपूर्णरूपेणवैकुंठेतिष्ठतीत्यर्थः ॥ पश्चाद्गंगायाःशापेनकलयांशेन भारतेखंडेसरित्सरस्वतीनाम्नीसरिज्जातेत्यर्थः ॥ १ ॥ यस्यास्तीरेपुण्यवतांस्थितिरित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ अक्षयायांतिथावक्षयनवम्याम् ॥ ६ ॥ अनुषंगेणाऽन्यकार्यार्थमागतो

दिव्यंवर्षसहस्रंचसत्वांदध्यौचपुष्करे ॥ तदात्वत्तोवरंप्राप्यदिव्यवर्षसहस्रकम् ॥ २५ ॥ उवाचशब्दशास्त्रंचतदर्थंचसुरेश्वरम् ॥ अध्यापिताश्चयेशिष्या यैरधीतंमुनीश्वरैः ॥ २६ ॥ तेचतांपरिसंचिंत्यप्रवर्तंतेसुरेश्वरीम् ॥ त्वंसंस्तुतापूजिताचमुनींद्रैर्मनुमानवैः ॥ २७ ॥ दैत्येंद्रैश्चसुरैश्चाऽपिब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ जडीभूतःसहस्रास्यःपंचवक्त्रश्चतुर्मुखः ॥ २८ ॥ यांस्तोतुंकिमहंस्तौमितामेकास्येनमानवः ॥ इत्युक्त्वायाज्ञवल्क्यश्चभक्तिनम्रात्मकंधरः ॥ २९ ॥ प्रणनामनिराहारोरुरोदचमुहुर्मुहुः ॥ ज्योतीरूपामहामायातेनदृष्टाऽप्युवाचतम् ॥ ३० ॥ सुकवींद्रोभवेत्युक्त्वावैकुंठंचजगामह ॥ याज्ञवल्क्यकृतंवाणीस्तोत्रमेतत्तुयःपठेत् ॥ ३१ ॥ सकवींद्रोमहावाग्मीबृहस्पतिसमोभवेत् ॥ महामूर्खश्चदुर्बुद्धिर्वर्षमेकंयदापठेत् ॥ ३२ ॥ सपंडितश्चमेधावीसुकवींद्रोभवेध्रुवम् ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥

सरस्वतीतुवैकुंठेस्वयंनारायणांतिके ॥ गंगाशापेनकलहात्कलयाभारतेसरित् ॥ १ ॥ पुण्यदापुण्यरूपाचपुण्यतीर्थस्वरूपिणी ॥ पुण्यवद्भिर्निषेव्याचस्थितिःपुण्यवतांमुने ॥ २ ॥ तपस्विनांतपोरूपातपसःफलरूपिणी ॥ कृतपापध्मदाहायज्वलदग्निस्वरूपिणी ॥ ३ ॥ ज्ञानात्सरस्वतीतोयेमृतायेमानवाभुवि ॥ तेषांस्थितिश्चवैकुंठेसुचिरंहरिसंसदि ॥ ४ ॥ भारतेकृतपापश्चस्नात्वातत्रचलीलया ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकेवसेच्चिरम् ॥ ५ ॥ चातुर्मास्यांपौर्णमास्यामक्षयायांदिनक्षये ॥ व्यतीपातेचग्रहणेऽन्यस्मिन्पुण्यदिनेऽपिच ॥ ६ ॥ अनुषंगेणयःस्नातोहेतुनाश्रद्धयाऽपिवा ॥ सारूप्यंलभतेनूनंवैकुंठेसहेररपि ॥ ७ ॥ सरस्वतीमनुंतत्रमासमेकंचयोजपेत् ॥ महामूर्खःकवींद्रश्चसभवेन्नाऽत्रसंशयः ॥ ८ ॥ नित्यंसरस्वतीतोयेयःस्नायान्मुंडयन्नरः ॥ नगर्भवासंकुरुतेपुनरेवसमानवः ॥ ९ ॥ इत्येवंकथितंकिंचिद्भारतेगुणकीर्तनम् ॥ सुखदंकामदंसारंभूयःकिंश्रोतुमिच्छसि ॥ १० ॥ सूतउवाच ॥ नारायणवचःश्रुत्वानारदोमुनिसत्तमः ॥ पुनःपप्रच्छसंदेहमिमंशौनकसत्वरम् ॥ ११ ॥ नारदउवाच ॥ कथंसरस्वतीदेवीगंगाशापेनभारते ॥ कलयाकलहेनैवबभूवपुण्यदासरित् ॥ १२ ॥ श्रवणेश्रुतिसाराणांवर्धतेकौतुकंमम ॥ कथामृतेनमेतृप्तिःकेनश्रेयसितृप्यते ॥ १३ ॥

मध्येतीर्थपतितमस्तीतिस्नानमपिकर्तव्यमितिबुद्ध्याहेतुनाऽन्येनवाकारणेनद्रव्यग्रहणरूपेणअश्रद्धयाऽपीतिच्छेदः ॥ ७ ॥ तत्रसरस्वतीतीरे ॥ ८ ॥ मुंडयन्नेकवारंप्रथमतोमुंडनंकुर्वन् ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ श्रुतेःसाराणांसारभूतानांकथानांश्रवणेइत्यन्वयः ॥ मेतृप्तिःकथामृतेनैवास्ति ॥ केनश्रेयसितृप्यते नकेनाऽपीत्यर्थः ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ तद्दृष्ट्वाविष्णोर्हास्यंदृष्ट्वालक्ष्मीःक्षमांचकार नक्रोधम् ॥ सरस्वतीतुनक्षमांचकार किंतु क्रोधम् ॥ १९ ॥ तांक्रुद्धांसरस्वतीम् ॥ २० ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ सौभाग्यंप्रेमा ॥ गंगालक्ष्म्योस्तवप्रेमाऽस्ति मयिनास्तीत्यर्थः ॥ २३ ॥ गंगायाइति ॥ यदिलक्ष्म्यांगंगातुल्यातवप्रीतिर्नस्यात्ततोगंगयासार्धंलक्ष्म्याः प्रीतिर्नैवभवेत् ॥ प्रीतिस्तुवर्ततेयतस्तेनहेतुनाप्रीतिसद्भावहेतुनाविपरीतमिदंसपत्नीहास्यंतवदृष्ट्वाक्षमांचकारहरिप्रिया तस्मात्क्षमयातयोः प्रीतिर्निश्चीयते ॥ तयाप्रीत्याचतयोःसमःप्रेमातवनिश्चीयतइत्यर्थः ॥ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ मध्यदेशंतयोर्मध्यभागेगत्वा ॥ ३१ ॥ शशापवाणीतांपद्मांसपत्नीपक्षपातिनीयमितिमत्वातांपद्मांवृक्षरूपाभविष्यसिसरिद्रूपाच

कथंशशापसागंगापूजितांतांसरस्वतीम् ॥ सातुसत्त्वस्वरूपायापुण्यदाशुभदासदा ॥१४॥ तेजस्विनोर्द्वयोर्वादकारणंश्रुतिसुंदरम्॥सुदुर्लभंपुराणेषुतन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥१५॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिकथामेतांपुरातनीम् ॥ यस्याःश्रवणमात्रेणसर्वपापात्प्रमुच्यते ॥१६॥ लक्ष्मीःसरस्वतीगंगातिस्रोभार्याहरेरपि ॥ प्रेम्णासमास्तास्तिष्ठंतिसततंहरिसन्निधौ ॥१७॥ चकारसैकदागंगाविष्णोर्मुखनिरीक्षणम्॥सस्मिताचसकामाचसकटाक्षंपुनःपुनः ॥१८॥ विभुर्जहासतद्वक्त्रंनिरीक्ष्यचक्षणंतदा ॥ क्षमांचकारतद्दृष्ट्वालक्ष्मीर्नैवसरस्वती ॥ १९ ॥ बोधयामासपद्मातांसत्त्वरूपाचसस्मिता॥क्रोधाविष्टाचसावाणीनचशांताबभूवह ॥२०॥ उवाचवाणीभर्तारंरक्तास्यारक्तलोचना॥कंपिताकामवेगेनशश्वत्प्रस्फुरिताधरा ॥२१॥ सरस्वत्युवाच॥सर्वत्रसमताबुद्धिःसद्भर्तुःकामिनींप्रति ॥ धर्मिष्ठस्यवरिष्ठस्यविपरीताखलस्यच ॥२२॥ ज्ञातंसौभाग्यमधिकंगंगायांतिगदाधर॥कमलायांचतत्तुल्यंनचकिंचिन्मयिप्रभो ॥ २३ ॥ गंगायाःपद्मयासार्धंप्रीतिश्चाऽस्तिसुसंमता ॥ क्षमांचकारतेनेदंविपरीतंहरिप्रिया ॥२४॥ किंजीवनेनमेऽत्रैवदुर्भगायाश्चसांप्रतम् ॥ निष्फलंजीवनंतस्यायापत्युःप्रेमवंचिता ॥२५॥ त्वांसर्वेसत्त्वरूपंचयेवदंतिमनीषिणः ॥ तेचमूर्खानवेदज्ञानजानंतिमतिंतव ॥ २६ ॥ सरस्वतीवचःश्रुत्वादृष्ट्वातांकोपसंयुताम् ॥ मनसाचसमालोच्यसजगामबहिःसभाम् ॥ २७ ॥ गतेनारायणेगंगामुवाचनिर्भयंरुषा ॥ वागधिष्ठातृदेवीसावाक्यंश्रवणदुष्करम् ॥ ॥ २८ ॥ हेनिर्लज्जेहेसकामेस्वामिगर्वंकरोषिकिम् ॥ अधिकंस्वामिसौभाग्यंविज्ञापयितुमिच्छसि ॥ २९॥ मानचूर्णंकरिष्यामितवाऽद्यहरिसन्निधौ ॥ किंकरिष्यतितेकांतोममैवंकांतवल्लभे ॥ ३० ॥ इत्येवमुक्त्वागंगायाःकेशंग्रहीतुमुद्यता ॥ वारयामासतांपद्मामध्यदेशंसमाश्रिता ॥ ३१ ॥ शशापवाणीतांपद्मांमहाबलवतीसती ॥ वृक्षरूपासरिद्रूपाभविष्यसिनसंशयः ॥३२॥ विपरीतंततोदृष्ट्वाकिंचिन्नोवक्तुमर्हसि ॥ संतिष्ठतिसभामध्येयथावृक्षोयथासरित् ॥ ३३ ॥ शापंश्रुत्वातुसादेवीनशशापचुकोपह ॥ तत्रैवदुःखितातस्थौवाणींधृत्वाकरेणच ॥ ३४ ॥

भविष्यसीतिशशापेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ विपरीतमिति ॥ यतःकारणाद्यथासभामध्येवादेप्राप्तेवृक्षःसरिद्वाजडत्वान्नकिंचिद्वदति किंतु केवलंतिष्ठत्येव ॥ तथात्वंविपरीतमन्याय्यंगंगायादृष्ट्वाकिंचिदपिवक्तुंजडवन्नार्हसिनयोग्याऽसि तस्माज्जडात्मकवृक्षसरिद्रूपा भवेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ नशशापनचुकोपचेत्यर्थः ॥ शांतत्वादितिभावः ॥ वाणींधृत्वेति ॥ परस्परताडनानिवारणार्थंकरेणवाणींधृत्वातस्थावित्यर्थः ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अत्युन्नतामत्युन्मत्तांतांवाणीम् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ स्ववलमिति ॥ यद्यस्मात्कारणात्स्ववलंममवलंचेयंज्ञातुमिच्छतितस्मान्मुंचेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ सादेवीगंगा ॥ ३९ ॥ यासरस्वतीत्वांपद्मांशशाप ॥ सासरस्वतीसरिद्भवत्वित्यर्थः ॥ ४० ॥ तांगंगाम् ॥ ४१ ॥ लभिष्यसिलप्स्यसे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ सामयिकींसमयोचितां धर्मध्वजोराजा कलयांशेन ॥ ४५ ॥ भूमौस्थिताभूमेरुत्पन्नेत्यर्थः ॥४६ ॥ शंखचूडस्यकामिनीपत्नी ॥ ४७ ॥ तुलसीतिनाम्नापश्चान्ममपत्नीभविष्यसीत्यन्वयः ॥ कलयांशेनसरिदपिभव ॥ ४८ ॥ पद्मामुक्त्वागं

अत्युन्नतांतुतांदृष्ट्वाकोपप्रस्फुरिताधराम् ॥ उवाचगंगातांदेवींपद्मांचारक्तलोचनाम् ॥ ३५ ॥ श्रीगंगोवाच ॥ त्वमुत्सृजमहोग्रांचपद्मेकिंमेकरिष्यति ॥ दुःशीलामुखरानष्टानित्यंवाचालरूपिणी ॥ ३६ ॥ वागधिष्ठात्रीदेवीयंसततंकलहप्रिया ॥ यावतीयोग्यताचास्यायावतीशक्तिरेवच ॥ ३७ ॥ तथाकरोतुवादंचमयासार्धंचदुर्मुखी ॥ स्ववलंयन्ममवलंविज्ञापयितुमिच्छति ॥ ३८ ॥ जानंतुसर्वेह्युभयोःप्रभावंविक्रमंसति ॥ इत्येवमुक्त्वासादेवीवाण्यैशापंददाविति ॥ ३९ ॥ सरित्स्वरूपाभवतुसायात्वांचशशापह ॥ अधोमर्त्यंसाप्रयातुसंतियत्रैवपापिनः ॥ ४० ॥ कलौतेषांचपापानिग्रहीष्यतिनसंशयः ॥ इत्येवंवचनंश्रुत्वातांशशापसरस्वती ॥ ४१ ॥ त्वमेवयास्यसिमहींपापिपापंलभिष्यसि ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रभगवानाजगामह ॥ ४२ ॥ चतुर्भुजश्चतुर्भिश्चपार्षदैश्चचतुर्भुजैः ॥ सरस्वतींकरेधृत्वावासयामासवक्षसि ॥ ४३ ॥ बोधयामाससर्वज्ञःसर्वज्ञानंपुरातनम् ॥ श्रुत्वारहस्यंतासांचशापस्यकलहस्यच ॥ ४४ ॥ उवाचदुःखितास्ताश्चवाचंसामयिकींविभुः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ लक्ष्मित्वंकलयागच्छधर्मध्वजगृहंशुभे ॥ ४५ ॥ अयोनिसंभवाभूमौतस्यकन्याभविष्यसि ॥ तत्रैवदैवदोषेणवृक्षत्वंचलभिष्यसि ॥ ४६ ॥ मदंशस्याऽसुरस्यैवशंखचूडस्यकामिनी ॥ भूत्वापश्चाच्चमत्पत्नीभविष्यसिनसंशयः ॥ ४७ ॥ त्रैलोक्यपावनीनाम्नातुलसीतिचभारते ॥ कलयाचसरिद्भावंशीघ्रंगच्छवरानने ॥ ४८ ॥ भारतंभारतीशापान्नाम्नापद्मावतीभव ॥ गंगेयास्यसिपश्चात्त्वमंशेनविश्वपावनी ॥ ४९ ॥ भारतंभारतीशापात्पापदाहायपापिनाम् ॥ भगीरथस्यतपसातेननीतासुकल्पिते ॥ ५० ॥ नाम्नाभागीरथीपूताभविष्यसिमहीतले ॥ मदंशस्यसमुद्रस्यजायाजायेर्ममाज्ञया ॥ ५१ ॥ मत्कलांशस्यभूपस्यशंतनोश्चसुरेश्वरि ॥ गंगाशापेनकलयाभारतंगच्छभारति ॥ ५२ ॥ कलहस्यफलंभुंक्ष्वसपत्नीभ्यांसहाऽच्युते ॥ स्वयंचब्रह्मसदनेब्रह्मणःकामिनीभव ॥ ५३ ॥ गंगायातुशिवस्थानमत्रपद्मैवतिष्ठतुशांताचक्रोधरहितामद्भक्तासत्त्वरूपिणी ॥ ५४ ॥ महासाध्वीमहाभागासुशीलाधर्मचारिणी ॥ यदंशकलयासर्वाधर्मिष्ठाश्चपतिव्रताः ॥ ५५ ॥ शांतरूपाःसुशीलाश्चप्रतिविश्वेषुपूजिताः ॥ तिस्रोभार्यास्त्रिशीलाश्चत्रयोभृत्याश्चबांधवाः ॥ ५६ ॥

गामाह ॥ गंगेइति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ जायेःभवेः ॥ यद्वा हेजाये समुद्रस्यजायाभवेत्यर्थः ॥ ५१ ॥ शंतनोश्चकारणवशाज्जायाभवेत्यर्थः ॥ सरस्वतीमाह । गंगाशापेनेति ॥ ५२ ॥ सपत्नीभ्यांसहकलहस्येत्यन्वयः ॥ स्वयंचेति ॥ अंशेनभारतेसरिद्भवस्वयंचपूर्णरूपेणब्रह्मलोकेब्रह्मणःपत्नीभवेत्यर्थः ॥ ५३ ॥ गंगायातिवति ॥ गंगाप्यंशेनसरिद्भवतु पूर्णरूपेणतुशिवस्थानंयातुतस्यपत्नीभवतु ॥ अत्रमन्निकटेतुपद्मैवतिष्ठतु यतःशांतेत्याह । शांताचेति ॥५४॥५५॥ स्वंखेदंवर्णयति। तिस्रइति ॥ त्रिशीलाभिन्नस्वभावाः ॥ त्रिशीलेतिसर्वत्रान्वेति॥५६॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एतेत्रयोवेदविरुद्धावेदानुमत्यविषयाः ॥ येषांगृहेपुंवत्पुरुषवत्प्रधानास्त्रीभवतीत्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ भस्मांतंमरणांतंशौचंपवित्रता अध्रुवंनभवतीत्यर्थः ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ अर्धाधिकैश्चतुःपंचाशद्भिःपद्यैरतःपरम् ॥ शापोद्धारप्रकारश्चतिमृणांसम्यगुच्यते ॥ ॥ १ ॥ विररामचनारदेति नारदंप्रतिनारायणोक्तिः ॥ १ ॥ २ ॥ प्रथमंसरस्वतीप्रार्थनांकरोति । विशापामिति ॥ ३ ॥ अत्युन्मत्ततायाःफलंमयालब्धमित्याह । अत्युन्नतोहीति ॥४॥

ध्रुवंवेदविरुद्धाश्चनह्येतेमंगलप्रदाः ॥ स्त्रीपुंवच्चगृहेयेषांगृहिणांस्त्रीवशःपुमान् ॥ ५७ ॥ निष्फलंचजन्मतेषामशुभंचपदेपदे ॥ मुखेदुष्टायोनिदुष्टायस्य स्त्रीकलहप्रिया ॥ ५८ ॥ अरण्यंतेनगंतव्यंमहारण्यंगृहाद्वरम् ॥ जलानांचस्थलानांचफलानांप्राप्तिरेवच ॥ ५९ ॥ सततंसुलभातत्रनतेषांगृहएवच ॥ वरमग्नौस्थितिर्हिस्त्रजंतूनांसन्निधौसुखम् ॥ ६० ॥ ततोऽपिदुःखंपुंसांचदुष्टस्त्रीसन्निधौध्रुवम् ॥ व्याधिज्वालाविषज्वालावरंपुंसांवरानने ॥ ६१ ॥ दुष्टस्त्रीणांमुखज्वालामरणादतिरिच्यते ॥ पुंसांचस्त्रीजितांचैवभस्मांतंशौचमध्रुवम् ॥ ६२ ॥ यदाह्निकुरुतेकर्मनतस्यफलभाग्भवेत् ॥ निंदितोऽत्रपरत्रैवसर्वत्रनरकंव्रजेत् ॥ ६३ ॥ यशःकीर्तिविहीनोयोजीवन्नपिमृतोहिसः ॥ बह्वीनांचसपत्नीनांनैकत्रश्रेयसेस्थितिः ॥ ६४ ॥ एकभार्यःसुखीनैवबहुभार्यःकदाचन ॥ गच्छगंगेशिवस्थानंब्रह्मस्थानंसरस्वति ॥ ६५ ॥ अत्रतिष्ठतुमद्गेहेसुशीलाकमलालया ॥ सुसाध्यायस्यपत्नीचसुशीलाचपतिव्रता ॥ ॥ ६६ ॥ इहस्वर्गेसुखंतस्यधर्मोमोक्षःपरत्रच ॥ पतिव्रतायस्यपत्नीसचमुक्तःशुचिःसुखी ॥ ६७ ॥ जीवन्मृतोशुचिर्दुःखीदुःशीलापतिरेवच ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ इत्युक्त्वाजगतांनाथोविररामचनारद ॥ अतीवरुरुदुर्देव्यः समालिंग्यपरस्परम् ॥ १ ॥ ताश्चसर्वाःसमालोक्यक्रमेणोचुस्तदेश्वरम् ॥ कंपिताःसाश्रुनेत्राश्चशोकेनचभयेनच ॥ २ ॥ सरस्वत्युवाच ॥ विशापंदेहिनाथदुष्टमाजन्मशोचनम् ॥ सत्स्वामिनापरित्यक्ताःकुतोजीवंतिताःस्त्रियः ॥ ३ ॥ देहत्यागंकरिष्यामियोगेनभारतेध्रुवम् ॥ अत्युन्नतोहिनियतंपातुमर्हतिनिश्चितम् ॥ ४ ॥ गंगोवाच ॥ अहंकेनाऽपराधेनत्वयात्यक्ताजगत्पते ॥ देहत्यागंकरिष्यामिनिर्दोषायावधंलभ ॥ ५ ॥ निर्दोषकामिनीत्यागंकरोतियोनरोभुवि ॥ सयातिनरकंघोरंकिंतुसर्वेश्वरोऽपिवा ॥ ६ ॥ पद्मोवाच ॥ नाथसत्त्वस्वरूपस्त्वंकोपःकथमहोतव ॥ प्रसादंकुरुभार्यैद्वेसदीशस्य क्षमावरा ॥ ७ ॥ भारतेभारतीशापाद्यास्यामिकलयाह्यहम् ॥ कियत्कालंस्थितिस्तत्रकदाद्रक्ष्यामितेपदम् ॥ ८ ॥ दास्यंतिपापिनःपापंसद्यःस्नानावगाहनात् ॥ केनतेनविमुक्ताऽहमागमिष्यामितेपदम् ॥ ९ ॥ कलयातुलसीरूपंधर्मध्वजसुतासती ॥ भुक्त्वाकदालभिष्यामित्वत्पादांबुजमच्युत ॥ ॥ १० ॥ वृक्षरूपाभविष्यामित्वदधिष्ठातृदेवता ॥ समुद्धरिष्यसिकदातन्मेब्रूहिकृपानिधे ॥ ११ ॥

तदनंतरंगंगोवाच । अहंकेनेति ॥ सरस्वत्याअपराधःकृतोमयातुनकृतइतिभावः ॥ तेनकारणेननिर्दोषायास्त्वंवधंलभ लभस्वेत्यर्थः ॥ ५ ॥ सर्वेश्वरोऽपियदिस्यात्तथापि ॥ ६ ॥ द्वेभार्येप्रतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ भारतीकलयैकांशेननदीभवतुअर्धांशेनब्रह्मसदनंगच्छतु पूर्णांशेनवैकुंठेतिष्ठतु ॥ तथैवगंगाऽपितेनममवाक्यमापिसत्यंजातंवैकुंठवासेनातिसृणांसमताचजाताभविष्यतीति ॥ १७ ॥ १८ ॥ तत्रैवेति ॥ एकांशावतारेएवेत्यर्थः ॥ नतुतस्याःसरस्वतीवदर्धांशावतारइत्यर्थः ॥ तदपेक्षयाऽस्यान्यूनापराधत्वात् ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

गंगासरस्वतीशापाद्यदियास्यतिभारते ॥ शापेनमुक्तापापाच्चकदात्वांचलभिष्यति ॥ १२ ॥ गंगाशापेनवावाणीयदियास्यतिभारतम् ॥ कदाशापाद्विनिर्मुच्यलभिष्यतिपदंतव ॥ १३ ॥ तांवाणींब्रह्मसदनंगंगांवाशिवमंदिरम् ॥ गंतुंवदसिहेनाथतत्क्षमस्वचतेवचः ॥ १४ ॥ इत्युक्त्वाकमलाकांतपादंधृत्वाननामसा ॥ स्वकेशैर्वेष्टनंकृत्वारुरोदचपुनःपुनः॥१५॥ "उवाचपद्मनाभस्तांपद्मांकृत्वास्ववक्षसि॥ईषद्धास्यप्रसन्नास्योभक्तानुग्रहकातरः ॥ १ ॥" ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वद्वाक्यमाचरिष्यामिस्ववाक्यंचसुरेश्वरि ॥ समतांचकरिष्यामिशृणुत्वंकमलेक्षणे ॥ १६ ॥ भारतीयातुकलयासरिद्रूपाचभारते ॥ अर्धासाब्रह्मसदनंस्वयंतिष्ठतुमद्गृहे ॥ १७ ॥ भगीरथेनसानीतागंगायास्यतिभारते ॥ पूतंकर्तुंत्रिभुवनंस्वयंतिष्ठतुमद्गृहे ॥ १८ ॥ तत्रैवचंद्रमौलेश्चमौलिंप्राप्स्यतिदुर्लभम् ॥ ततःस्वभावतःपूताऽप्यतिपूताभविष्यति ॥ १९ ॥ कलांशांशेनगच्छत्वंभारतेवामलोचने ॥ पद्मावतीसरिद्रूपातुलसीवृक्षरूपिणी ॥ २० ॥ कलेःपंचसहस्रेचगतेवर्षेचमोक्षणम् ॥ युष्माकंसरितांचैवमद्गेहेचागमिष्यथ ॥ २१ ॥ संपदाहेतुभूताचविपत्तिःसर्वदेहिनाम् ॥ विनाविपत्तेर्महिमाकेषांपद्मभवेभवे ॥ २२ ॥ मन्मंत्रोपासकानांचसतांस्नानावगाहनात् ॥ युष्माकंमोक्षणंपापाद्दर्शनात्स्पर्शनात्तथा ॥ २३ ॥ पृथिव्यांयानितीर्थानिसंत्यसंख्यानिसुंदरि ॥ भविष्यंतिचपूतानिमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २४ ॥ मन्मंत्रोपासकाभक्ताविश्रमंतिचभारते ॥ पूतंकर्तुंतारितुंचसुपवित्रांवसुंधराम् ॥ २५ ॥ मद्भक्तायत्रतिष्ठंतिपादंप्रक्षालयंतिच ॥ तत्स्थानंचमहातीर्थंसुपवित्रंभवेद्ध्रुवम् ॥ २६ ॥ स्त्रीघ्नोगोघ्नःकृतघ्नश्चब्रह्मघ्नोगुरुतल्पगः ॥ जीवन्मुक्तोभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २७ ॥ एकादशीविहीनश्चसंध्याहीनोऽथनास्तिकः ॥ नरघातीभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २८ ॥ असिजीवीमसीजीवीधावकोग्रामयाचकः ॥ वृषवाहोभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २९ ॥ विश्वासघातीमित्रघ्नोमिथ्यासाक्ष्यस्यदायकः ॥ स्थाप्यहारीभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३० ॥ अत्युग्रवाग्दूषकश्चजारकःपुंश्चलीपतिः ॥ पूतश्चपुंश्चलीपुत्रोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३१ ॥ शूद्राणांसूपकारश्चदेवलोग्रामयाजकः ॥ अदीक्षितोभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३२ ॥ पितरंमातरंभार्याभ्रातरंतनयंसुताम् ॥ गुरोःकुलंचभगिनींचक्षुर्हीनंचबांधवम् ॥ ३३ ॥ श्वश्रूंचश्वशुरंचैवयोनपुष्णातिसुंदरि ॥ समहापातकीपूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३४ ॥

हेपद्मभवे ॥ २२ ॥ मन्मंत्रोपासकानामिति ॥ इदमुपलक्षणं ब्रह्मनिष्ठशैवशाक्तगाणेशसौराणांभक्तानामपि तेषामपिपुराणांतरेषुतीर्थादिपावकत्वस्यश्रवणात् ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ धावकइति ॥ रजककर्मकर्ताब्राह्मणइत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ पूतश्चभवतीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ सूपकारःपाककर्ता ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ कीदृशानराधमास्तानाह। हरिभक्तीति ॥ ३९ ॥ कीदृशावैष्णवास्तानाह । पुनंतीति ॥ क्षणादहोइत्येतत्पर्यंतंलक्ष्मीप्रश्नः ॥ ४० ॥४१ ॥ अम्मयानि जलमयानीत्यर्थः ॥४२॥ श्रेष्ठोपचक्रमेइत्यत्रश्रेष्ठेतिलुप्तप्रथमांतम् आर्षत्वात् ॥ श्रेष्ठउपचक्रमेइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ विष्णुमंत्रइति ॥ इदमुपलक्षणं शिवशक्तिगणेशसूर्यमंत्रा णामपि ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ स्वात्मास्वदेहोभक्तिवशतयाविस्मृतोयेन ॥ वाहितान्यादिषुइत्यनेनसाधुत्वम् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ श्राव्यगानैमर्धुरगानैः ॥ ५३ ॥

अश्वत्थनाशकश्चैवमद्भक्तनिंदकस्तथा ॥ शूद्रान्नभोजीविप्रश्चपूतोमद्भक्तदर्शनात् ॥ ३५ ॥ देवद्रव्यापहारीचविप्रद्रव्यापहारकः ॥ लाक्षालोहरसानांच विक्रेतादुहितुस्तथा ॥ ३६ ॥ महापातकिनश्चैवशूद्राणांशवदाहकः ॥ भवेयुरेतेपूताश्चमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३७ ॥ श्रीमहालक्ष्मीरुवाच ॥ भक्तानां लक्षणंब्रूहिभक्तानुग्रहकातर ॥ येषांतुदर्शनस्पर्शात्सद्यःपूतानराधमाः ॥ ३८ ॥ हरिभक्तिविहीनाश्चमहाहंकारसंयुताः ॥ स्वप्रशंसारताधूर्ताःशठाश्च साधुनिंदकाः॥३९॥पुनंतिसर्वतीर्थानियेषांस्नानावगाहनात् ॥ येषांचपादरजसापूतापादोदकान्मही ॥ ४० ॥ येषांसंदर्शनंस्पर्शंयेवावांछंतिभारते ॥ स र्वेषांपरमोलाभोवैष्णवानांसमागमः ॥ ४१ ॥ नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः ॥ तेपुनंत्यपिकालेनविष्णुभक्ताःक्षणादहो ॥ ४२ ॥ सूतउ वाच ॥ महालक्ष्मीवचःश्रुत्वालक्ष्मीकांतश्चसस्मितः ॥ निगूढतत्त्वंकथितुमपिश्रेष्ठोपचक्रमे ॥ ४३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भक्तानांलक्षणंलक्ष्मिगूढंश्रुति पुराणयोः ॥ पुण्यस्वरूपंपापघ्नंसुखदंभुक्तिमुक्तिदम् ॥ ४४ ॥ सारभूतंगोपनीयंनवक्तव्यंखलेषुच ॥ त्वांपवित्रांप्राणतुल्यांकथयामिनिशामय ॥ ४५ ॥ गुरुवक्त्राद्विष्णुमंत्रोयस्यकर्णेपतिष्यति ॥ वदंतिवेदास्तंचाऽपिपवित्रंचनरोत्तमम् ॥ ४६ ॥ पुरुषाणांशतंपूर्वंतथातज्जन्ममात्रतः ॥ स्वर्गस्थंनरकस्थंवामु क्तिमाप्नोतितत्क्षणात् ॥ ४७ ॥ यैःकैश्चिद्यत्रवाजन्मलब्धंयेषुचजंतुषु ॥ जीवन्मुक्तास्तुतेपूतायांतिकालेहरेःपदम् ॥ ४८ ॥ मद्भक्तियुक्तोमर्त्यश्चसमुक्तोम द्गुणान्वितः ॥ मद्गुणाधीनवृत्तिर्यःकथाविष्टश्चसंततम् ॥ ४९ ॥ मद्गुणश्रुतिमात्रेणसानंदःपुलकान्वितः ॥ सगद्गदःसाश्रुनेत्रःस्वात्मविस्मृतएवच ॥५०॥ नवांछतिसुखंमुक्तिंसालोक्यादिचतुष्टयम् ॥ ब्रह्मत्वममरत्वंवातद्वांछाममसेवने ॥ ५१ ॥ इंद्रत्वंचमनुत्वंचब्रह्मत्वंचसुदुर्लभम् ॥ स्वर्गराज्यादिभोगंचस्वप्ने ऽपिचनवांछति ॥ ५२ ॥ भ्रमंतिभारतेभक्तास्तादृग्जन्मसुदुर्लभम् ॥ मद्गुणश्रवणाःश्राव्यागानैर्नित्यंमुदान्विताः ॥ ५३ ॥ तेयांतिचमहींपूत्वानरंती र्थंममाऽऽलयम् ॥ इत्येवंकथितंसर्वंपद्मेकुरुयथोचितम् ॥ ५४ ॥ तदाज्ञयातास्तच्चक्रुर्हरिस्तस्थौसुखासने ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनव मस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ सरस्वतीपुण्यक्षेत्रमाजगामचभारते ॥ गंगाशापेनकलयास्वयंतस्थौहरेःपदे ॥ १ ॥

॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ दशोत्तरशतैःपद्यैर्गंगादीनांचभारते ॥ कथयित्वासमुत्पत्तिंकलौवर्तनमुच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेतदाज्ञयाता स्तच्चक्रुरित्यनेनसरस्वत्यादयोनदीरूपाअभवन्नित्युक्तं तदेवस्पष्टयति । नारायणउवाच सरस्वतीति ॥ गंगायाःशापेनसरस्वतीकलयांशेनभारतेखंडेआजगाम ॥ स्वयंपूर्णरूपेणहरेःपदे वैकुंठेतस्थौस्थितवतीत्यर्थः ॥ १ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सरस्वतीनाम्नांनिरुक्तिमाह । भारतीति ॥ भारतखंडेनदीरूपेणाऽऽगमनाद्भारतीत्वम्।अर्शआद्यजंताद्गौरादिपाठात्ङीष् ॥ ब्रह्मणःप्रियत्वाद्ब्राह्मी ब्रह्मणइयमित्यस्मिन्नर्थेऽणिब्राह्मोजातावि तिनिपातनाट्टिलोपेकृतेऽण्णंतत्वान्ङीप् ॥ वाण्यधिष्ठात्रीति ॥ वाण्याअधिष्ठातृत्वाल्लक्षणयावाणीतिनाम ॥ २ ॥ सरोवाप्यामिति ॥ हियतःसरसिवाप्यांस्रोतस्सुअन्यत्राऽपिसर्वत्रदेशेह रिर्दृश्यतेसर्वत्रव्यापकत्वात् तेनहेतुनासरसिविद्यमानत्वाद्धरिःसरस्वान्भवति ॥ तस्येयंशक्तिः यतस्तेनहेतुनानाम्नासरस्वतीयंकथ्यतइत्यर्थः ॥ सरस्वच्छब्दस्यलक्षणयासरस्वत्संबंधिनीश क्तिरित्यर्थेऽगितश्चेतिङीपिसरस्वतीशब्दःसिद्धः ॥ ३ ॥ ४ ॥ सरस्वत्युत्पत्त्यनंतरंगंगोत्पत्तिमाह ॥ पश्चादिति ॥ वाणीशापेनकलयांशेनजगाम ॥ ५ ॥ तत्रैवेति ॥ ऊर्ध्वदेशादधःपतन समयेएवतस्याधारायावेगमसहमानायाभुवःसमर्थनयावेगंसोढुंशक्तःसमर्थःशिवःशिरसातांगंगांदधारेत्यर्थः ॥ ६ ॥ पद्मेति ॥ यापद्माकलयाजगामसापद्मावतीनाम्नानदीअभवदित्यर्थः ॥ स्वयंपूर्णरूपेणहरेःपदेवैकुंठेतस्थाविति पूर्ववत् ॥७॥ ततोऽन्ययेति॥एकांशेनयथानदीजातातद्वत्तदनंतरम्अन्ययाकलयाद्वितीययाकलयाभारतेखंडेजन्मलेभे॥ तज्जन्म धर्मध्वजोदरेजातामिति

भारतीभारतंगत्वाब्राह्मीचब्रह्मणःप्रिया ॥ वाण्यधिष्ठातृदेवीसातेनवाणीप्रकीर्तिता ॥ २ ॥ सरोवाप्यांचस्रोतस्सुसर्वत्रैवहिदृश्यते ॥ हरिःसरस्वांस्तस्येयं तेननाम्नासरस्वती ॥ ३ ॥ सरस्वतीनदीसाचतीर्थरूपाऽतिपावनी ॥ पापिनांपापदाहायज्वलदग्निस्वरूपिणी ॥ ४ ॥ पश्चाद्भागीरथीनीतामहींभगीरथे नच ॥ सावैजगामकलयावाणीशापेननारद ॥ ५ ॥ तत्रैवसमयेतांचदधारशिरसाशिवः ॥ वेगंसोढुमयंशक्तोभुवःप्रार्थनयाविभुः ॥ ६ ॥ पद्माजगाम कलयासाचपद्मावतीनदी ॥ भारतंभारतीशापात्स्वयंतस्थौहरेःपदे ॥ ७ ॥ ततोऽन्ययासाकलयालेभेजन्मचभारते ॥ धर्मध्वजसुतालक्ष्मीर्विख्यातातुल सीतिच ॥८॥ पुरासरस्वतीशापात्पश्चाच्चहरिशापतः॥बभूववृक्षरूपासाकलयाविश्वपावनी ॥९॥ कलेःपंचसहस्रंचवर्षंस्थित्वाचभारते ॥ जग्मुस्ताश्चसरि द्रूपंविहायश्रीहरेःपदम् ॥ १० ॥ यानिसर्वाणितीर्थानिकाशींवृंदावनंविना ॥ यास्यंतिसार्धंताभिश्चवैकुंठमाज्ञयाहरेः ॥ ११ ॥ शालग्रामःशक्तिशिवौ जगन्नाथश्चभारतम् ॥ कलेर्दशसहस्रांतेत्यक्त्वायांतिनिजंपदम्॥१२॥साधवश्चपुराणानिशंखानिश्राद्धतर्पणे ॥ वेदोक्तानिचकर्माणिययुस्तैःसार्धमेवच ॥ ॥ १३ ॥ देवपूजादेवनामतत्कीर्तिगुणकीर्तनम् ॥ वेदांगानिचशास्त्राणिययुस्तैःसार्धमेवच ॥ १४ ॥ संतश्चसत्यधर्मश्चवेदाश्चग्रामदेवताः ॥ व्रतंतपश्चा ऽनशनंययुस्तैःसार्धमेवच ॥ १५ ॥ वामाचाररताःसर्वेमिथ्याकपटसंयुताः ॥ तुलसीरहितापूजाभविष्यतिततःपरम् ॥ १६ ॥

धर्मध्वजसुतेतितथालक्ष्म्यंशत्वाल्लक्ष्मीति॥तथातुलसीतिचनाम्नाविख्याताऽभवदित्यर्थः ॥८॥ पुरेति॥ सालक्ष्मीःपुरापूर्वंयःसरस्वतीशापउपपादितस्तस्मात पश्चाच्चहरिशापोजातस्तस्माच्च मनुष्यरूपिणीतुलसीतिनाम्नास्थिताऽपिवृक्षरूपावभूवेत्यर्थः॥तवकेशसमूहश्चपुण्यवृक्षोभविष्यतीतिचतुर्विंशाध्यायेवक्ष्यमाणोहरिशापः॥९॥एतानद्यःकियत्पर्यंतमत्रस्थास्यंतीतिचेत्तत्राऽऽह कलेरिति ॥ जग्मुर्गमिष्यंतीत्यर्थः ॥ हरेःपदंवैकुंठम् ॥ १० ॥ काशींवृंदावनंविनेति ॥ इदंक्षेत्रद्वयंतुप्रलयपर्यंतंलोकोद्धारायभूमावेवस्थास्यतीतिभावः ॥ ११ ॥ जगन्नाथःपुरुषोत्तमः ॥ शक्तिशिवौशक्तिशिवमूर्तिस्थापनानस्यादित्यर्थः ॥ भारतंभारतखंडंत्यक्त्वेत्यन्वयः ॥ निजंपदंस्वस्थानम् ॥ १२ ॥ साधवश्चेति ॥ शाक्तशैववैष्णवाद्याःसाधवः ॥ शंखानिक्लीवत्वमार्ष म् ॥ ययुर्यास्यंतीत्यर्थः ॥ १३ ॥ देवपूजादेवादीनांपूजा तेषामेवनामतेषामेवकीर्तीनांगुणानांचकीर्तनम् ॥ १४ ॥ अनशनंव्रतम् ॥ १५ ॥ वामाचारोमद्यमांसनिषेवणादिः ॥ कामाचा ररताइत्यपिपाठः ॥ यथेष्टाचाररताइतितत्पक्षेर्थः ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥१७॥ पुंसांपरस्परंभेदोमित्रत्वाभावइत्यर्थः ॥ यद्वा स्त्रीपुंसभेदएवकेवलंस्थास्यतिनतुजातिभेदइत्यर्थः ॥ अतएव जातिभेदाभावाद्विवाहःसर्वस्त्रीभिःसहसर्वपुरुषाणांनिर्भयःस्यादित्यर्थः ॥ स्वस्वामिभेदइति ॥ पितुर्वस्तुपितुरेव पुत्रस्यवस्तुपुत्रस्यैव नपरस्परंदास्यंतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ भृत्याधिकोभृत्यापेक्षयाऽप्यधिकोऽधमोगृहीगृहस्वामीत्यर्थः ॥ वध्वाःस्नुषायाःश्वश्रूः चेटसिमादासीसमा श्वशुरश्चदाससमःस्यादित्यर्थः ॥२०॥ योनिसंबंधिनोस्त्रीसम्बंधिनोबांधवागृहेषुकर्तारोनस्वबांधवाः ॥ विद्यासंबंधिभिःसतीर्थ्यैः ॥२१॥ यथापरिचितेति ॥ पुंसोगृहस्वामिनोबांधवायथापरिचयरहितालोकास्तथाभविष्यंतीत्यर्थः ॥ सर्वकर्माक्षमाःसर्वकर्माणिकर्तुमक्षमाअसमर्थाः ॥ २२ ॥ जात्याचारविवर्जितास्तेतेवर्णाइत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ सूप

शठाःक्रूरादांभिकाश्चमहाहंकारसंयुताः ॥ चोराश्चहिंसकाःसर्वेभविष्यंतिततःपरम् ॥ १७ ॥ पुंसोभेदस्त्रीविभेदोविवाहोवाऽपिनिर्भयः ॥ स्वस्वामिभेदोवस्तूनांभविष्यतिततःपरम् ॥ १८ ॥ सर्वेस्त्रीवशगाःपुंसःपुंश्चल्यश्चगृहेगृहे ॥ तर्जनैर्भर्त्सनैःशश्वत्स्वामिनंताडयंतिच ॥ १९ ॥ गृहेश्वरीचगृहिणी गृहीभृत्याधिकोऽधमः ॥ चेटीदाससमौवध्वाःश्वश्रूश्चश्वशुरस्तथा ॥ २० ॥ कर्तारोबलिनोगेहेयोनिसंबंधिबांधवाः ॥ विद्यासंबंधिभिःसार्धंसंभाषापिनविद्यते ॥ २१ ॥ यथाऽपरिचितालोकास्तथापुंसश्चबांधवाः ॥ सर्वकर्माक्षमाःपुंसोयोषितामाज्ञयाविना ॥ २२ ॥ ब्रह्मक्षत्रविशःशूद्राः । जात्याचारविवर्जिताः ॥ संध्याचयज्ञसूत्रंचभवेल्लुप्तंनसंशयः ॥ २३ ॥ म्लेच्छाचाराभविष्यंतिवर्णाश्चत्वारएवच ॥ म्लेच्छशास्त्रंपठिष्यंतिस्वशास्त्राणिविहाय च ॥ २४ ॥ ब्रह्मक्षत्रविशांवंशाःशूद्राणांसेवकाःकलौ ॥ सूपकाराधावकाश्चवृषवाहाश्चसर्वशः ॥ २५ ॥ सत्यहीनाजनाःसर्वेसस्यहीनाचमेदिनी ॥ फलहीनाश्चतरवोऽपत्यहीनाश्चयोषितः ॥ २६ ॥ क्षीरहीनास्तथागावःक्षीरंसर्पिर्विवर्जितम् ॥ दंपतीप्रीतिहीनौचगृहिणःसत्यवर्जिताः ॥ २७ ॥ प्रतापहीनाभूपाश्चप्रजाश्चकरपीडिताः॥ जलहीनामहानद्योदीर्घिकाकंदरादयः ॥ २८ ॥ धर्महीनाःपुण्यहीनावर्णाश्चत्वारएवच ॥ लक्षेषुपुण्यवान्कोऽपिनतिष्ठतिततःपरम् ॥ २९ ॥ कुत्सिताविकृताकारानरानार्यश्चबालकाः ॥ कुवार्ताकुत्सितःशब्दोभविष्यतिततःपरम् ॥ ३० ॥ केचिद्ग्रामाश्चनगरानरशून्याभयानकाः ॥ केचित्स्वल्पकुटीरेणनरेणचसमन्विताः ॥ ३१ ॥ अरण्यानिभविष्यंतिग्रामेषुनगरेषुच ॥ अरण्यवासिनःसर्वेजनाश्चकरपीडिताः ॥ ॥ ३२ ॥ सस्यानिचभविष्यंतितडागेषुनदीषुच ॥ प्रकृष्टवंशजाहीनाभविष्यंतिकलौयुगे ॥ ३३ ॥ अलीकवादिनोधूर्ताःशठाश्चाऽसत्यवादिनः ॥ प्रकृष्टानिचक्षेत्राणिसस्यहीनानिनारद ॥ ३४ ॥ हीनाःप्रकृष्टाधनिनोदेवभक्ताश्चनास्तिकाः ॥ हिंसकाश्चदयाहीनाःपौराश्चनरघातिनः ॥ ३५ ॥ वामनाव्याधियुक्ताश्चनरानार्यश्चसर्वतः ॥ स्वल्पायुषोगदायुक्तायौवनैरहिताःकलौ ॥ ३६ ॥

काराःशूद्राणामन्नपाचकाइत्यर्थः ॥ तेषामेवधावकावस्त्रक्षालकाः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ दीर्घिकाअल्पनद्यः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ह्रस्वकुटीकुटीरः ॥ ३१ ॥ करपीडिताः राजग्राह्योभागःकरः ॥३२॥ तडागेषुअन्यत्रवृष्ट्यभावात्तेषुभविष्यंति । प्रकृष्टवंशजाःकुलीनाहीनानीचाभविष्यंति ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ येदेवभक्तास्तेनास्तिकाभविष्यंति ॥ अदेवभक्ताइतिवाछेदः ॥ ३५ ॥ गदैरोगैरायुक्ताःसंबद्धाः ॥ ३६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३७ ॥ ३८ ॥ वधूःस्नुषाएतासांजारैरुपेतानिदत्तान्यन्नानितेषांभक्षकाः ॥ ३९ ॥ हरेर्नामजापित्वातज्जन्यंपुण्यं द्रव्यंगृहीत्वाविक्रेष्यंतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ स्वयमुत्सृज्येति ॥ प्रथमतो दानंकीर्त्यर्थंकरिष्यतिनत्वीश्वरप्रीत्यर्थम् । ततःपश्चादनंतरंयद्दत्तंगवादिदानंतत्स्वयमुल्लंघयिष्यति ॥ मयानब्राह्मणायदत्तमित्युक्त्वाब्राह्मणादपहरिष्यंति ॥ ४१ ॥ देववृत्तिंदेवजीविकाम् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ पत्नीनामिति ॥ कस्यकापत्नी तस्याःकोवाभर्तेतिननिर्णयः ॥ सर्वेषांपरस्परंपत्नीभर्तृभावात् ॥ वस्तूनांचविशेषतोननिर्णयइत्यर्थः ॥ ४६ ॥

पलिताः षोडशेवर्षेमहावृद्धाश्चविंशतौ ॥ अष्टवर्षाचयुवतीरजोयुक्ताचगर्भिणी ॥ ३७ ॥ वत्सरांतप्रसूतास्त्रीषोडशेचजरान्विता ॥ पतिपुत्रवतीकाचित्सर्वावंध्याःकलौयुगे ॥ ३८ ॥ कन्याविक्रयिणःसर्वेवर्णाश्चत्वारएवच ॥ मातृजायावधूनांचजारोपेतान्नभक्षकाः ॥ ३९ ॥ कन्यानांभगिनीनांवाजारोपात्तान्नजीविनः ॥ हरेर्नाम्नांविक्रयिणोभविष्यंतिकलौयुगे ॥ ४० ॥ स्वयमुत्सृज्यदानंचकीर्तिवर्धनहेतवे ॥ ततःपश्चात्स्वदानंचस्वयमुल्लंघयिष्यति ॥ ४१ ॥ देववृत्तिंब्रह्मवृत्तिंवृत्तिंगुरुकुलस्यच ॥ स्वदत्तांपरदत्तांवासर्वमुल्लंघयिष्यति ॥ ४२ ॥ कन्यकागामिनः केचित्केचिच्चश्वश्रुगामिनः ॥ केचिद्वधूगामिनश्चकेचिद्वैसर्वगामिनः ॥ ४३ ॥ भगिनीगामिनःकेचित्सपत्नीमातृगामिनः ॥ भ्रातृजायागामिनश्चभविष्यंतिकलौयुगे ॥ ४४ ॥ अगम्यागमनंचैवकरिष्यंतिगृहेगृहे ॥ मातृयोनिंपरित्यज्यविहरिष्यंतिसर्वतः ॥ ४५ ॥ पत्नीनांनिर्णयोनास्तिभर्तृणांचकलौयुगे ॥ प्रजानांचैवग्रामाणांवस्तूनांचविशेषतः ॥ ४६ ॥ अलीकवादिनःसर्वेसर्वेचौराश्चलंपटाः ॥ परस्परंहिंसकाश्चसर्वेचनरघातिनः ॥ ४७ ॥ ब्रह्मक्षत्रविशांवंशाभविष्यंतिचपापिनः ॥ लाक्षालोहरसानांचव्यापारंलवणस्यच ॥ ४८ ॥ वृषवाहाविप्रवंशाःशूद्राणांशवदाहिनः ॥ शूद्रान्नभोजिनःसर्वेसर्वेचवृषलीरताः ॥ ४९ ॥ पंचयज्ञविहीनाश्चकुहूरात्रौचभोजिनः ॥ यज्ञसूत्रविहीनाश्चसंध्याशौचविहीनकाः ॥ ५० ॥ पुंश्चलीवार्धुषाजीवाकुट्टनीचरजस्वला ॥ विप्राणांरंधनागारेभविष्यतिचपाचिका ॥ ५१ ॥ अन्नानांनियमोनास्तियोनीनांचविशेषतः ॥ आश्रमाणांजनानांचसर्वेम्लेच्छाःकलौयुगे ॥ ५२ ॥ एवंकलौसंप्रवृत्तेसर्वेम्लेच्छमयंभवेत् ॥ हस्तप्रमाणेवृक्षेचअंगुष्ठेचैवमानवे ॥ ५३ ॥ विप्रस्यविष्णुयशसःपुत्रःकल्किर्भविष्यति ॥ नारायणकलांशश्चभगवान्बलिनांवरः ॥ ५४ ॥ दीर्घेणकरवालेनदीर्घघोटकवाहनः ॥ म्लेच्छशून्यांचपृथिवींत्रिरात्रेणकरिष्यति ॥ ५५ ॥ निर्म्लेच्छांवसुधांकृत्वाचांतर्धानंकरिष्यति ॥ अराजकाचवसुधादस्युग्रस्ताभविष्यति ॥ ५६ ॥

॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ कुहूरात्रिरमावास्यारात्रिः ॥ ५० ॥ कुट्टनीत्यत्रकुट्टिनीत्यपिकाचित्पाठः तदाकुष्ठवतीत्यर्थः ॥ रंधनागारेपाकशालायाम् ॥ ५१ ॥ योनीनांस्त्रीणांजनानामाश्रमाणांचननियमइत्यर्थः ॥ ५२ ॥ मानवेमनुष्येंगुष्ठेंगुष्ठप्रमाणे वृक्षेचहस्तप्रमाणेजातेसति । कलियुगशेषेवृक्षमनुष्याएतत्प्रमाणाभविष्यंतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ विष्णुयशानामकश्चिद्ब्राह्मणः ॥ ५४ ॥ घोटकोऽश्वः ॥ ५५ ॥ कल्केरंतर्धानोत्तरंवृत्तमाह । अराजकेति ॥ ५६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

स्थूलास्थूलरूपामही अप्रमाणावहुविस्तीर्णेत्यर्थः ॥ षड्रात्रमत्यंतसंयोगेद्वितीया ॥ षड्रात्रव्यापकवर्षधाराभिराप्लुतासतीलोकशून्येत्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इत्थंकलेरवसानेजातेपश्चात्पु
नःकृतयुगंप्रवर्ततेइत्याह॥ कलौगतेइति ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ सर्वेऽपिकृतयुगेदेवीभक्ताःसर्वकारणमूलप्रकृतिभक्ताःभविष्यंतीत्यर्थः ॥ देवीमंत्रामायावीजादयस्तेषुनिरताः ॥
तथादेवीध्यानंतृतीयस्कंधादिषूक्तंतत्परायणाः ॥ तच्चानेकविधम् ॥ तदुक्तंयामले ॥ स्त्रीरूपांचिंतयेद्देवींपुंरूपांवाविचिंतयेत् ॥ अथवानिष्कलंध्यायेत्सच्चिदानंदविग्रहमिति ॥ पुंरूपांवि
राड्रूपामित्यर्थः ॥ ६३ ॥ पूर्णोधर्मःकृतयुगेधर्मःपूर्णश्चतुष्पादित्यर्थः ॥ ६४ ॥ उत्तरोत्तरमेकैकपादह्रासइत्याह । धर्मस्त्रिपादिति ॥ ६५ ॥ अधुनाकालस्वरूपमाह । वाराःसप्तेति ॥
वारशब्दोरव्यादिवासरपरः ॥ ६६ ॥ पक्षौशुक्लकृष्णाख्यौ दक्षिणायनमुत्तरायणम् ॥६७॥ वर्षंपंचविधम् । तच्चाऽष्टमस्कंधेउक्तम् ॥ संवत्सरपरिवत्सरेडावत्सरादिभेदैः ॥ यथाचाऽऽयांति

स्थूलाऽप्रमाणाषड्रात्रंवर्षधाराप्लुतामही॥लोकशून्यावृक्षशून्यागृहशून्याभविष्यति ॥५७॥ ततश्चद्वादशादित्याःकरिष्यंत्युदयंमुने॥प्राप्नोतिशुष्कतांपृथ्वी
समातेपांचतेजसा ॥ ५८ ॥ कलौगतेचदुर्धर्षेप्रवृत्तेचकृतेयुगे॥तपःसत्त्वसमायुक्तोधर्मःपूर्णोभविष्यति ॥ ५९ ॥ तपस्विनश्चधर्मिष्ठावेदज्ञाब्राह्मणाभुवि ॥
पतिव्रताश्चधर्मिष्ठायोषितश्चगृहेगृहे ॥ ६० ॥ राजानःक्षत्रियाःसर्वेविप्रभक्तामनस्विनः ॥ प्रतापवंतोधर्मिष्ठाःपुण्यकर्मरताःसदा ॥ ६१ ॥ वैश्यावाणिज्य
निरताविप्रभक्ताश्चधार्मिकाः ॥ शूद्राश्चपुण्यशीलाश्चधर्मिष्ठाविप्रसेविनः ॥ ६२ ॥ विप्रक्षत्रविशांवंशादेवीभक्तिपरायणाः ॥ देवीमंत्ररताःसर्वेदेवीध्यान
परायणाः ॥६३॥ श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञाःपुमांसऋतुगामिनः॥लेशोनास्तिह्यधर्मस्यपूर्णोधर्मःकृतेयुगे ॥६४॥ धर्मस्त्रिपाच्चत्रेतायांद्विपाच्चद्वापरेततः॥कलौवृ
त्तेचैकपाच्चसर्वलुप्तिस्ततः परम् ॥६५॥ वाराःसप्ततथाविप्रतिथयःषोडशस्मृताः ॥ तथाद्वादशमासाश्चऋतवश्चषडेवच ॥ ६६ ॥ द्वौपक्षौऽचायनेद्वेचचतु
र्भिःप्रहरैर्दिनम् ॥ चतुर्भिःप्रहरैरात्रिर्मासस्त्रिंशद्दिनैस्तथा ॥ ६७ ॥ वर्षंपंचविधंज्ञेयंकालसंख्याविधिक्रमे ॥ यथाचाऽऽयांतियांत्येवयथायुगचतुष्टयम् ॥
॥ ६८ ॥ वर्षेपूर्णेनराणांचदेवानांचदिवानिशम् ॥ शतत्रयेषष्ट्यधिकेनराणांचयुगेगते ॥ ६९ ॥ देवानांचयुगंज्ञेयंकालसंख्याविदांमतम् ॥ मन्वंतरं
तुदिव्यानांयुगानामेकसप्ततिः ॥ ७० ॥ मन्वंतरसमंज्ञेयमायुष्यंचशचीपतेः ॥ अष्टाविंशतिमेचेंद्रेगतेब्रह्मदिवानिशम् ॥ ७१ ॥ अष्टोत्तरशतेवर्षेगतेपा
तश्चब्रह्मणः ॥ प्रलयःप्राकृतोज्ञेयस्तत्राऽदृष्टावसुंधरा ॥ ७२ ॥

यांत्येवेति ॥ यथादिनान्यायांतियांतिच तथादिनात्मकत्वाद्युगानांतान्यप्यायांतियांतिचेत्यर्थः ॥ ६८ ॥ मनुष्यदिनादीनांस्वरूपमुक्त्वादेवदिनादिस्वरूपमाह । वर्षेपूर्णेइति ॥ मनु
ष्यवर्षमेवदेवानामेकदिनंभवति ॥ नाराणांषष्टियुगाधिकशतत्रययुगविशिष्टेयुगेयुगसमूहात्मकेकालेगतेसतीत्यर्थः ॥ तावत्कालोदेवानामेकंयुगंज्ञेयम् ॥ ६९ ॥ देवानामेकसप्ततियुगात्मकः
कालएकंमन्वंतरमित्युच्यते ॥ ७० ॥ एवमष्टाविंशतिमेशचीपतौगतेसतितावत्परिमितःकालोब्रह्मणोहिरण्यगर्भस्यैकंदिनंभवतीत्यर्थः ॥ ७१ ॥ एवमष्टोत्तरशतवर्षात्मकेकालेगतेब्रह्मापत
ति ।तदाप्राकृतःप्रलयोभवतीत्यर्थः ॥ तत्रक्रममाह॥तत्राऽदृष्टेति ॥ भुवंजलेजलंवह्नौवह्निंवायौनभस्यमुम् ॥ विलाप्यखमहंकारेमहत्तत्त्वेऽप्यहंकृतिम् ॥ महांतंप्रकृतौमायामात्मानिप्रविलापये
दित्येवंक्रमेणोत्तरोत्तरभूतेषुपूर्वपूर्वभूतानांलयोभवति ॥ तथाचजलेधरायानिमग्नत्वाल्लीनत्वात्तत्रतास्मन्कालेवसुंधराऽदृष्टाज्ञानविषयोनभवतीत्यर्थः ॥ ७२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कवसुंधरालीनेतिचेत्तत्राह ॥ जलप्लुतानीति॥विश्वानिब्रह्मांडानिसर्वाणिवसुंधरासहितानिजलेलीनानीत्यर्थः ॥ तदुत्तरंजलमपिवह्नौलीनमित्यनुक्तमप्यर्थाद्बोध्यम् ॥ ब्रह्मादयस्तुज्ञानित्वा च्चिदात्मनिलीनाभवंतीत्याह । ब्रह्मविष्णिवति ॥ ७३ ॥ तत्रैवेति ॥ चिदात्मन्येवप्रकृतिर्लीनातदभेदेनैवतिष्ठतीत्यर्थः ॥ तत्रतस्मिन्कालेसलयःप्राकृतइत्युच्यते ॥ प्रकृतेरपिब्रह्मणिलीन त्वात् ॥ ७४ ॥ अयंप्राकृतप्रलयपर्यंतंसर्वोऽपिकालःपरमेश्वर्यामूलप्रकृतेर्निमेषमात्रमुच्यतइत्याह । निमेषमात्रमिति ॥ श्रीदेव्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्यामूलप्रकृतेः ॥ ७५॥ पुनर्निमेषमा त्रेणश्रीमूलप्रकृतेर्निमेषमात्रेणसृष्टिक्रमेणाऽनंतानिब्रह्मांडानिभवंतीत्यत्रगणनासृष्टिप्रलयानांनास्तीत्याह । निमेषांतरकालेनेति॥ तदुक्तमुमासंहितायाम् ॥ निमेषमात्रतोयस्याब्रह्मांडानांच कोटयः ॥ जायंतेऽपिचनश्यंतिसैषाभगवतीशिवेति ॥ ७६ ॥ गतायाताआदौगताःपश्चादायाताइत्यर्थः ॥ ७७ ॥ ब्रह्मांडेइतिजातावेकवचनम् ॥ अनंतब्रह्मांडेष्वनंतब्रह्मविष्णवादीनां

जलप्लुतानिविश्वानिब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ ऋषयोज्ञानिनःसर्वेलीनाःसत्येचिदात्मनि ॥ ७३ ॥ तत्रैवप्रकृतिर्लीनातत्रप्राकृतिकोलयः ॥ लयेप्राकृतिके जातेपातेचब्रह्मणोमुने ॥ ७४ ॥ निमेषमात्रंकालश्चश्रीदेव्याःप्रोच्यतेमुने ॥ एवंनश्यंतिसर्वाणिब्रह्माण्डन्यखिलानिच ॥ ७५ ॥ निमेषांतरकालेनपुनः सृष्टिक्रमेणच ॥ एवंकतिविधासृष्टिर्लयःकतिविधोऽपिवा ॥ ७६ ॥ कतिकल्पागतायाताःसंख्यांजानातिकःपुमाम् ॥ सृष्टीनांचलयानांचब्रह्मांडानांचना रद ॥ ७७ ॥ ब्रह्मादीनांचब्रह्मांडेसंख्यांजानातिकःपुमान् ॥ ब्रह्मांडानांचसर्वेषामीश्वरश्चैकएवसः ॥ ७८ ॥ सर्वेषांपरमात्माचसच्चिदानंचरूपधृक् ॥ ब्रह्मादयश्चतस्यांशास्तस्यांशश्चमहाविराट् ॥ ७९ ॥ तस्यांशश्चविराट्क्षुद्रःसैवेयंप्रकृतिःपरा ॥ तस्याःसकाशात्संजातोऽप्यर्धनारीश्वरस्ततः ॥ ८० ॥ सैवकृष्णोद्विधाभूतोद्विभुजश्चचतुर्भुजः ॥ चतुर्भुजश्चवैकुंठेगोलोकेद्विभुजःस्वयम् ॥ ८१ ॥ ब्रह्मादितृणपर्यंतंसर्वंप्राकृतिकंभवेत् ॥ यद्यत्प्राकृतिकंसृष्टंस र्वंनश्वरमेवच ॥ ८२ ॥ एवंविधंसृष्टिहेतुंसत्यंनित्यंसनातनम् ॥ स्वेच्छामयंपरंब्रह्मनिर्गुणंप्रकृतेःपरम् ॥ ८३॥ निरुपाधिनिराकारंभक्तानुग्रहकातरम् ॥ करोतिब्रह्माब्रह्मांडंयज्ज्ञानात्कमलोद्भवः ॥ ८४ ॥ शिवोमृत्युंजयश्चैवसंहर्तासर्वसत्त्ववित् ॥ यज्ज्ञानाद्यस्यतपसासर्वेशस्तुतपोमहान् ॥ ८५ ॥ महा विभूतियुक्तश्चसर्वज्ञःसर्वदर्शनः ॥ सर्वव्यापीसर्वपाताप्रदातासर्वसंपदाम् ॥ ८६ ॥

सत्त्वान्नतेषांसंख्याऽस्तीत्यर्थः॥ तर्हिसर्वेषामपीश्वरःकस्तत्राह। ब्रह्मांडानांचेति॥७८॥महाविराडिति॥अनेकब्रह्मांडांतर्गतक्षुद्रविराड्रूपाणांपूर्वोक्तानांसमष्टिभूतोमहाविराडपिपरमात्मनोंश इत्यर्थः ॥७९॥ ननुपूर्वंमूलप्रकृतेःकारणत्वमुक्तमधुनापरमात्मनःकारणत्वंकथमुच्यतेतत्राह । सैवेयंप्रकृतिःपरेति॥नकेवलंनिर्गुणस्यात्मनःकारणत्वंसंभवति किंतुमायाविशिष्टस्यैव ॥ तथा चयथागजशरीरेप्रविष्टंचैतन्यंगजइत्युच्यते । तथैवमूलप्रकृतौप्रविष्टंप्रथमतश्चैतन्यंमूलप्रकृतिरित्युच्यतेइतिनतयोर्भेदइत्यर्थः ॥ तस्याइति ॥ तस्याःमूलप्रकृतेःसकाशाच्छ्रुत्युक्तप्रकारेण पंचमहाभूतोत्पत्त्यनंतरंपांचभौतिकोर्धनारीश्वरोगोपालसुंदरीसंज्ञकःश्रीकृष्णोजातइत्यर्थः ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ तस्मात्कृष्णाद्ब्रह्मादयोदेवाउत्पन्नाइतिपूर्वमुक्तमेव ॥ तदेवंप्रकारेण सर्वंजगद्ब्रह्मरूपेणसत्यमस्तीत्याह । सत्यंनित्यमिति ॥ ८३ ॥ तस्यैवमूलप्रकृतेःस्वरूपस्यमहिमानमाह । करोतीति ॥ ८४ ॥ तपश्चर्यां शिवश्चकारेतिशेषः ॥ ८५ ॥ ८६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ८७ ॥ ८८ ॥ पूर्वोक्ताःपंचप्रकृतयोऽपिमूलप्रकृत्याराधनादेवमहत्त्वंप्रापुरित्याह । सावित्रीति ॥ वेदज्ञाजातेत्यर्थः ॥ ८९ ॥ सर्वविद्याधिदेवीसरस्वतीपूज्याजातेत्यर्थः ॥ यत्सेवया यस्यामूलप्रकृतेःसेवया ॥ एवंयज्ज्ञानाद्यत्तपसेत्यत्राऽपिसर्वत्रबोध्यम् ॥ ९० ॥ सर्वसंपत्प्रदायिनीलक्ष्मीःयज्ज्ञानाद्यत्तपसासर्ववंद्याजातेत्यर्थः ॥ ९१ ॥ दुर्गासर्वसंस्तुतायत्सेवयाजातेत्यर्थः ॥ यत्सेवयाराधिकाऽप्येवंगुणविशिष्टाजातेत्याह । कृष्णवामांसेति ॥९२॥ शक्तिसेवयामूलप्रकृतिसेवयेत्यर्थः ॥९३॥ कदाकुत्रवाराधिकयामूलप्रकृतेःसेवाकृतातदाह । तपश्चकारेति ॥९४॥किमर्थंतपश्चकारतदाहपतिप्राप्त्यर्थमेवचेति ॥ गोपालसुंदरीरूपःश्रीकृष्णोमेपतिर्भवत्वित्येतदर्थमित्यर्थः॥ततःशक्तेःप्रसादेजातेश्रीकृष्णःपतिरभवदित्याह।दृष्ट्वाचंद्रकलोपमामिति ॥

विष्णुःसर्वेश्वरःश्रीमान्यद्भक्त्यातस्यसेवया ॥ महामायाचप्रकृतिःसर्वशक्तिमयीश्वरी ॥ ८७ ॥ सैवप्रोक्ताभगवतीसच्चिदानंदरूपिणी ॥ यज्ज्ञानाद्यस्यतपसायद्भक्त्यायस्यसेवया ॥ ८८ ॥ सावित्रीदेवमाताचवेदाधिष्ठातृदेवता ॥ पूज्याद्विजानांवेदज्ञायज्ज्ञानाद्यस्यसेवया ॥ ८९ ॥ सर्वविद्याधिदेवी सापूज्याचविदुषांपरा ॥ यत्सेवयायत्तपसासर्वविश्वेषुपूजिता ॥ ९० ॥ सर्वग्रामाधिदेवीसासर्वसंपत्प्रदायिनी ॥ सर्वेश्वरीसर्ववंद्यासर्वेषांपुत्रदायिनी ॥ ॥ ९१ ॥ सर्वस्तुताचसर्वज्ञासर्वदुर्गार्तिनाशिनी ॥ कृष्णवामांससंभूताकृष्णप्राणाधिदेवता ॥ ९२ ॥ कृष्णप्राणाधिकाप्रेम्णाराधिकाशक्तिसेवया ॥ सर्वाधिकंचरूपंचसौभाग्यंमानगौरवे ॥ ९३ ॥ कृष्णवक्षःस्थलस्थानंपत्नीत्वेप्रापसेवया ॥ तपश्चकारसापूर्वंशतशृंगेचपर्वते ॥ ९४ ॥ दिव्यवर्षसहस्रंचपतिप्राप्त्यर्थमेवच ॥ जातेशक्तिप्रसादेतुदृष्ट्वाचंद्रकलोपमाम् ॥ ९५ ॥ कृष्णोवक्षःस्थलेकृत्वारुरोदकृपयाविभुः ॥ वरंतस्यैददौसारंसर्वेषामपिदुर्लभम् ॥९६॥ ममवक्षःस्थलेतिष्ठममभक्ताचशाश्वता ॥ सौभाग्येनचमानेनप्रेम्णाथोगौरवेणच ॥ ९७ ॥ त्वंमेश्रेष्ठाचज्येष्ठाचप्रेयसीसर्वयोषिताम् ॥ वरिष्ठाचगरिष्ठाचसंस्तुतापूजितामया ॥ ९८ ॥ सततंतवसाध्योऽहंवश्यश्चप्राणवल्लभे ॥ इत्युक्त्वाचजगन्नाथश्चकारललनांततः ॥ ९९ ॥ सपत्नीरहितांतांचचकारप्राणवल्लभाम् ॥ अन्यायायाश्चतादेव्यःपूजिताःशक्तिसेवया ॥ १०० ॥ तपस्तुयादृशंयासांतादृक्तादृक्फलंमुने ॥ दिव्यंवर्षसहस्रंचतपस्तप्त्वाहिमाचले ॥ ॥ १०१ ॥ दुर्गाचतत्पदंध्यात्वासर्वपूज्याबभूवह ॥ सरस्वतीतपस्तप्त्वापर्वतेगंधमादने ॥ २ ॥ लक्षवर्षंचदिव्यंचसर्ववंद्याबभूवसा ॥ लक्ष्मीर्युगशतंदिव्यंतपस्तप्त्वाचपुष्करे ॥ ३ ॥ सर्वसंपत्प्रदात्रीचजातादेवीनिषेवणात् ॥ सावित्रीमलयेतप्त्वापूज्यावंद्याबभूवसा ॥४॥ षष्टिवर्षसहस्रंचदिव्यंध्यात्वाचतत्पदम् ॥ शतमन्वंतरंतप्तंशंकरेणपुराविभो ॥ ५ ॥ शतमन्वंतरंचेदंब्रह्माशक्तिंजजापह ॥ शतमन्वंतरंविष्णुस्तप्त्वापाताबभूवह ॥ १०६ ॥

॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ अन्यायायाइति ॥ पंचप्रकृतिव्यतिरिक्तायायादेव्यःपूर्वंकलारूपाःकलांशांशरूपावोक्तास्ताःसर्वाअपिशक्तिसेवयामूलप्रकृतिसेवयैवपूजिताजाताइत्यर्थः ॥ १०० ॥ कयाकतिवर्षपर्यंततपःकृतंतदाह।दिव्यंवर्षसहस्रमिति ॥ १०१ ॥ तत्पदंमूलप्रकृतिपदम् ॥ २ ॥ दिव्यंदेवानांलक्षवर्षमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ पंचप्रकृतिवद्ब्रह्मादिभिरपिमूलप्रकृत्याराधनादेवतत्तत्पदंलब्धमित्याह । शतमन्वंतरमिति ॥ ५ ॥ १०६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १०७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ एवंप्रकारासर्वोत्तमासर्ववंद्यासर्वकारणंमूलप्रकृतिर्भवतीत्यर्थः ॥ ११० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ७ ॥ त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुशक्त्युत्पत्तिप्रसंगतः ॥ भूमिशक्तेःससुत्पत्तिर्यथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ अग्रेप्रश्नार्थपूर्वाध्यायोक्तार्थसंक्षेपेणानुवदति । देव्यानिमेषेति ॥ १ ॥ अदृष्टाजलेलीनेत्यर्थः ॥ २ ॥ कथंपुनरिति ॥ जलेलीनापुनः कथमुत्पन्नेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ तत्रप्रसंगादसदुत्पत्तिवादंखंडयन्सदुत्पत्तिवादमवलंब्योत्तरयति ॥ सर्वादिसृष्टाविति ॥ इतिश्रुतिरिति ॥ मायावाएषानारसिंहीसर्वमिदंसृजतीत्यादि ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेपरास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेइत्यादि ॥ सर्वेवैदेवीमुपतस्थुः कासित्वंमहादेवीसाब्रवीदहंब्रह्मरूपिणीमत्तःप्रकृतिपुरुषात्मकंजगदित्यादिश्रुतयऊह्याः ॥ तत्रोत्पत्तिर्नामनाऽपूर्वोद्भवोवंध्यापुत्रादेरप्युत्पत्तिप्रसंगात् ॥ किंतुसतांमूलप्रकृत्याऽऽत्मनाविद्यमानानामेवाविर्भावउत्पत्तिस्तिरोभावोनाशइत्यभिप्रायेणाऽऽह । आविर्भावइति ॥ ५ ॥ ६ ॥ भूजन्मविषयेपरमतमुपन्यस्यखंडयति ॥ अहोकेचिदिति ॥ मधुकैटभयोर्मरणेतयोःशरीरान्मेदउत्पन्नंजलोपरिस्थितमेवसूर्यकिरणैर्घनीभूतंमेदिनीपदवाच्यंभवतीर्थः ॥ तन्मतमतोवक्ष्यमाणात्कार

दशमन्वंतरंतस्वाश्रीकृष्णःपरमंतपः ॥ गोलोकंप्राप्तवान्दिव्यंमोदतेऽद्याऽऽपियत्रहि ॥ १०७ ॥ दशमन्वंतरंधर्मस्तत्वावैभक्तिसंयुतः ॥ सर्वप्राणःसर्वपूज्यःसर्वाधारोबभूवसः ॥ ८ ॥ एवंदेव्याश्चतपसासर्वेदेवाश्चपूजिताः ॥ मुनयोमनवोभूपाब्राह्मणाश्चैवपूजिताः ॥ ९ ॥ एवंतेकथितंसर्वंपुराणंसयथागमम् ॥ गुरुवक्त्राद्यथाज्ञातंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ११० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम० नवमस्कंधेशक्तिप्रादुर्भावेनारदनारायणसंवादेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥

नारदउवाच ॥ देव्यानिमेषमात्रेणब्रह्मणःपातएवच ॥ तस्यपातःप्राकृतिकःप्रलयःपरिकीर्तितः ॥ १ ॥ प्रलयेप्राकृतेचोक्तातत्राऽदृष्टावसुंधरा ॥ जलप्लुतानिविश्वानिसर्वेलीनाःपरात्मनि ॥ २ ॥ वसुंधरातिरोभूताकुत्रवासाचतिष्ठति ॥ सृष्टेर्विधानसमयेसाऽऽविर्भूताकथंपुनः ॥ ३ ॥ कथंबभूवसाधन्यामान्यासर्वाश्रयाजया ॥ तस्याश्चजन्मकथनंवदमंगलकारणम् ॥ ४ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ सर्वादिसृष्टौसर्वेषांजन्मदेव्याइतिश्रुतिः ॥ आविर्भावस्तिरोभावःसर्वेषुप्रलयेषुच ॥ ५ ॥ श्रूयतांवसुधाजन्मसर्वमंगलकारणम् ॥ विघ्ननिघ्नकरंपापनाशनंपुण्यवर्धनम् ॥ ६ ॥ अहोकेचिद्वदंतीतिमधुकैटभमेदसा ॥ बभूववसुधाधन्यातद्विरुद्धमतःशृणु ॥ ७ ॥ ऊचतुस्तौपुराविष्णुंतुष्टौयुद्धेनतेजसा ॥ आवांवधोनयत्रोर्वीपाथसासंवृतेतिच ॥ ८ ॥ तयोर्जीवनकालेनप्रत्यक्षासाऽभवत्स्फुटम् ॥ ततोबभूवमेदश्चमरणानंतरंतयोः ॥ ९ ॥ मेदिनीतिचविख्यातेत्युक्तमेतन्मतंशृणु ॥ जलधौताकृतापूर्ववर्धितामेदसायतः ॥ १० ॥

ग्याद्विरुद्धंभवति । किंतत्कारणंतर्हिशृणु ॥ ७ ॥ ऊचतुरिति ॥ हेविष्णोतवयुद्धेनतेजसाऽऽवांतुष्टौस्वोवरंवृणु ॥ ततोमत्तोभवतोर्मरणंभवत्वितिविष्णुनावृतेयत्रोर्वीपाथसाजलेननसंवृतानयुक्तातत्राक्योर्वधस्त्वयाकार्यइतिताबूचतुरित्यर्थः ॥ यदितयोर्मरणात्पूर्वमुर्वीनास्तितदानयत्रोर्वीतिकथनमसंगतमेवस्यात् ॥ किंचमेदसोरसत्त्वेनजलसंबंधेसूर्यशतैरापितस्यशुष्कताऽपादनस्यासंभवश्चस्यादितिभावः ॥ ८ ॥ तस्मात्पूर्वोक्तंमतंनयुक्तं किंत्वेतदित्याह । तयोर्जीवनेति ॥ तयोर्जीवनकालेमेदिनीजलेनिमग्नास्थितातताभ्यांज्ञाताचसाप्रत्यक्षातुनासीत् । तज्ज्ञात्वाताभ्यामुर्व्यभावान्मरणंनभविष्यतीतिविचिंत्यनयत्रोर्वीपाथसासंवृतेतिवाक्यमुक्तम् ॥ तदनंतरंजघनरूपायामुर्व्यांतयोर्नाशेकृतेमेदउत्पन्नंतज्जलोपरिस्थितम् । पश्चाद्वराहेणधरोद्धारेजलात्कृतेसातिमेदःसंबंधोधरायांजातस्ततोमेदोयुक्तत्वान्मेदिनीतिनामाऽभवदित्यर्थः ॥ ९ ॥ एतन्मतमेवमुख्यंसंग्रहेणोच्यते तच्छृण्वित्याह । ममतंशृण्विति ॥ संग्रहवाक्यंवदति । जलधौतेति ॥ यतोजलान्निष्कासनानंतरंमेदसावर्धिताततएवमेदिनीजातेतिशेषः ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इत्थंस्वमतमुपपाद्यधरोत्पत्तिमाह।कथयामीति ॥ सार्थकंसप्रयोजनम् ॥११॥ महाविराजःपूर्वोक्तस्य मनःसर्वांगव्यापकंबभूव ॥ ततस्तन्मनोलोम्नांविवरेषुंप्रविष्टमास ॥ ततःपंचीकरणसमय
यामहापृथ्वीजातातस्याअनेकान्खंडान्कृत्वालोमविवरेषुजलमध्येखंडशःपृथ्वीस्थापिता ॥ सामृष्टिकालेआविर्भूताभवतिजलात् ॥ प्रलयकालेतिरोभूताजलेएवभवतीर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥
॥ १४ ॥ १५ ॥ प्रतिब्रह्मांडंविद्यमानांवसुधांवर्णयति । प्रतिविश्वेष्विति ॥ १६ ॥१७ ॥ १८ ॥ पातालसप्तंपातालसप्तकमित्यर्थः ॥ १९ ॥ विश्वानिलोकाइत्यर्थः ॥ कृत्रिमाणिमिथ्या
भूतानीत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ नित्यौ प्रवाहरूपेणनित्यौनतुपरमार्थनित्यौस्थितिप्रलयौ ॥ नित्याधिष्ठात्रीति ॥ नित्याप्रवाहरूपेण नित्यापृथिवीतस्याअधिष्ठात्रीदेवीमूर्तिमतीवाराहे

कथयामितेतज्जन्मसार्थकंसर्वमंगलम् ॥ पुराश्रुतंयच्छ्रुत्युक्तंधर्मवक्त्राच्चपुष्करे ॥ ११ ॥ महाविराट्छरीरस्यजलस्थस्यचिरंस्फुटम् ॥ मनोबभूवकालेनस
र्वांगव्यापकंध्रुवम् ॥ १२ ॥ तच्चप्रविष्टंसर्वेषांतल्लोम्नांविवरेषुच ॥ कालेनमहतापश्चाद्बभूववसुधामुने ॥ १३ ॥ प्रत्येकंप्रतिलोम्नांचकूपेषुसंस्थितासदा ॥
आविर्भूतातिरोभूतासजलाचपुनःपुनः ॥ १४ ॥ आविर्भूतासृष्टिकालेतज्जलोपर्युपास्थिता ॥ प्रलयेचतिरोभूताजलस्याऽभ्यंतरेस्थिता ॥ १५ ॥ प्र
तिविश्वेषुवसुधाशैलकाननसंयुता ॥ सप्तसागरसंयुक्तासप्तद्वीपसमन्विता ॥ १६ ॥ हेमाद्रिमेरुसंयुक्ताग्रहचंद्रार्कसंयुता ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाद्यैश्चसुरैर्लो
कैस्तदाज्ञया ॥ १७ ॥ पुण्यतीर्थसमायुक्तापुण्यभारतसंयुता ॥ कांचनीभूमिसंयुक्तासप्तस्वर्गसमन्विता ॥ १८ ॥ पातालसप्तंतदधस्तदूर्ध्वंब्रह्मलोक
कः ॥ ध्रुवलोकश्चतत्रैवसर्वंविश्वंचतत्रवै ॥ १९ ॥ एवंसर्वाणिविश्वानिपृथिव्यांनिर्मितानिच ॥ नश्वराणिचविश्वानिसर्वाणिकृत्रिमाणिवै ॥ २० ॥ प्रल
येप्राकृतेचैवब्रह्मणश्चनिपातने ॥ महाविराडादिसृष्टौसृष्टःकृष्णेनचाऽऽत्मना ॥ २१ ॥ नित्यौचस्थितिप्रलयौकाष्ठाकालेश्वरैःसह ॥ नित्याधिष्ठातृदेवीसा
वाराहेपूजितासुरैः ॥ २२ ॥ मुनिभिर्मनुभिर्विप्रैर्गंधर्वादिभिरेवच ॥ विष्णोर्वराहरूपस्यपत्नीसाश्रुतिसंमता ॥ २३ ॥ तत्पुत्रोमंगलोज्ञेयोघटेशोमंगला
त्मजः ॥ नारदउवाच ॥ पूजिताकेनरूपेणवाराहेचसुरैर्मही ॥ २४ ॥ वाराहेचैववाराहीसर्वैःसर्वाश्रयासती ॥ मूलप्रकृतिसंभूतापंचीकरणमार्गतः॥२५॥
तस्याःपूजाविधानंचाऽप्यधश्चोर्ध्वमनेकशः ॥ मंगलंमंगलस्याऽपिजन्मव्यासंवदप्रभो ॥ २६ ॥ नारायणउवाच ॥ वाराहेचवराहश्चब्रह्मणासंस्तुतःपुरा॥
उद्दधारमहींहत्वाहिरण्याक्षंरसातलात् ॥२७॥ जलेतांस्थापयामासपद्मपत्रंयथाह्रदे॥तत्रैवनिर्ममेब्रह्माविश्वंसर्वमनोहरम् ॥२८॥ दृष्ट्वातदधिदेवींचसकामां
कामुकोहरिः ॥ वाराहरूपीभगवान्कोटिसूर्यसमप्रभः ॥२९॥ कृत्वारतिकलांसर्वांमूर्तिंचसुमनोहराम् ॥ क्रीडांचकाररहसिदिव्यवर्षमहर्निशम् ॥ ३० ॥

वाराहकल्पेभूम्युद्धारानंतरंपूजितेत्यर्थः ॥ २२ ॥ साधरामूर्तिर्वराहस्यविष्णोःपत्नीत्यर्थः ॥ २३ ॥ तत्पुत्रोवराहात्पृथ्वीदेवतायागर्भेजातोमंगलस्तत्पुत्रोघटेशइत्यर्थः ॥ २४ ॥ वारा
हीपृथ्वी ॥ पृथ्व्याविशेषणंमूलप्रकृतिसंभूतेति ॥ केनप्रकारेणमूलप्रकृतिःसंभूतातत्राह । पंचीकरणमार्गतइति ॥ २५ ॥ अधः पृथ्व्यामूर्ध्वंस्वर्लोकेयथापूजाविधानंभवतितद्व्यासं
विस्तारेणयथास्यात्तथाकथय जन्माऽपिकथयेत्यर्थः ॥ २६ ॥ हिरण्याक्षंहत्वेत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ अधिदेवींपृथ्वीस्वामिनीं सुंदरींस्त्रियम् ॥ २९ ॥ मूर्तिमिति ॥ वराहोराति
योग्यांस्वमूर्तिंकृतवानित्यर्थः ॥ ३० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





विदग्धायाविरहिण्याः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ वराहरूपंधृत्वातेनरूपेणतांदेवींध्यात्वापूजांचकारेत्यर्थः ॥३३॥३४॥३५ ॥ अंबुवाचीत्यागेति॥आर्द्रानक्षत्राद्यपादावच्छेदेनपृथिवींऋतुमतीतिष्ठाति तस्यारजस्वलायाःपृथ्व्याअंबुवाचीतिसंज्ञातत्त्यागदिनेतद्भिन्नदिनेतवपूजांकरिष्यंतीत्यन्वयः ॥ तद्दिनस्यनिषिद्धत्वंकृत्यतत्त्वेज्योतिःशास्त्रेउक्तम्॥मृगशिरसिनिपातेरौद्रपादेंऽबुवाचीऋतुमती खलुपृथ्वीवर्जयेत्त्रीण्यहानि ॥ नस्वाध्यायोवषट्कारोनदेवपितृपूजनम् ॥ नाऽपिपाठोवीजवापोनवाभूखननादिकमित्यादि ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ अहंरूपेणस्वरूपेणेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ अर्चीप्रति

सुखसंभोगसंस्पर्शान्मूर्च्छांसंप्रापसुंदरी ॥ विदग्धायाविदग्धेनसंगमोऽतिसुखप्रदः ॥ ३१ ॥ विष्णुस्तदंगसंश्लेषाद्बुबुधेनदिवानिशम् ॥ वर्षांतेचेतनांप्राप्यकामीतत्याजकामुकीम् ॥ ३२ ॥ पूर्वरूपंवराहंचदधारसचलीलया ॥ पूजांचकारतांदेवींध्यात्वाचधरणींसतीम् ॥ ३३ ॥ धूपैर्दीपैश्चनैवेद्यैःसिंदूरैरनुलेपनैः ॥ वस्त्रैःपुष्पैश्चबलिभिःसंपूज्योवाचतांहरिः ॥ ३४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सर्वाधाराभवशुभेसर्वैःसंपूजितासुखम् ॥ मुनिभिर्मनुभिर्देवैःसिद्धैश्चदानवादिभिः ॥ ३५ ॥ अंबुवाचीत्यागदिनेगृहारंभेप्रवेशने ॥ वापीतडागारंभेचगृहेचकृषिकर्मणि ॥ ३६ ॥ तवपूजांकरिष्यंतिमद्वरेणसुरादयः ॥ मूढायेनकरिष्यंतियास्यंतिनरकंचते ॥ ३७ ॥ वसुधोवाच ॥ वहामिसर्ववाराहरूपेणाऽहंतवाऽऽज्ञया ॥ लीलामात्रेणभगवन्विश्वंचसचराचरम् ॥ ३८ ॥ मुक्तांशुक्तिंहरेरर्चांशिवलिंगंशिवांतथा ॥ शंखंप्रदीपंयंत्रंचमाणिक्यंहीरकंतथा ॥ ३९ ॥ यज्ञसूत्रंचपुष्पंचपुस्तकंतुलसीदलम् ॥ जपमालांपुष्पमालांकर्पूरंचसुवर्णकम् ॥ ४० ॥ गोरोचनंचंदनंचशालग्रामजलंतथा ॥ एतान्वोढुमशक्ताऽहंक्लिष्टाचभगवञ्छृणु ॥ ४१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ द्रव्याण्येतानियेमूढाअर्पयिष्यंतिसुंदरि ॥ यास्यंतिकालसूत्रंतेदिव्यंवर्षशतंत्वयि ॥ ४२ ॥ इत्येवमुक्त्वाभगवान्विररामचनारद ॥ बभूवतेनगर्भेणतेजस्वीमंगलग्रहः॥ ॥ ४३ ॥ पूजांचक्रुःपृथिव्याश्चतेसर्वेचाऽऽज्ञयाहरेः ॥ कण्वशाखोक्तध्यानेनतुष्टुवुश्चस्तवेनते ॥ ४४ ॥ ददुर्मूलेनमंत्रेणनैवेद्यादिकमेवच ॥ संस्तुतात्रिषुलोकेषुपूजितासावभूवह ॥ ४५ ॥ नारदउवाच ॥ किंध्यानंस्तवनंतस्यामूलमंत्रंचकिंवद ॥ गूढंसर्वपुराणेषुश्रोतुंकौतूहलंमम ॥ ४६ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ आदौचपृथिवीदेवीवराहेणचपूजिता ॥ ततोहिब्रह्मणापश्चात्पूजितापृथिवीतदा ॥ ४७ ॥ ततःसर्वैर्मुनींद्रैश्चमनुभिर्मानवादिभिः ॥ ध्यानंचस्तवनंमंत्रंशृणुवक्ष्यामिनारद ॥ ४८ ॥ ॐह्रींश्रींक्लींवसुधायैस्वाहेत्यनेनमंत्रेणविष्णुनापूजितापुरा ॥ श्वेतपंकजवर्णाभांशरच्चंद्रनिभाननाम् ॥ ४९ ॥ चंदनोत्क्षिप्तसर्वांगींरत्नभूषणभूषिताम् ॥ रत्नाधारांरत्नगर्भांरत्नाकरसमन्विताम् ॥ ५० ॥ वन्हिशुद्धांशुकाधानांसस्मितांवंदितांभजे ॥ ध्यानेनाऽनेनसादेवीसर्वैश्चपूजिताऽभवत् ॥ ५१ ॥ स्तवनंशृणुविप्रेंद्रकण्वशाखोक्तमेवच ॥ श्रीनारायणउवाच जयजयेजलाधारेजलशीलेजयप्रदे ॥ ५२ ॥

मांशालग्रामंच ॥ शिवांदेवीप्रतिमाम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ प्रणवमायाश्रीकामबीजपूर्वकोवसुधायैस्वाहेतिमंत्रः ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ भूमिदानहरणात्पापादित्यर्थः ॥ अंबुवाचीभूकरणेति ॥ अंबुवाचीपूर्वोक्तलक्षणारजस्वलाभूः पृथिवी । तस्याःकरणात्खननादि न्यर्थः ॥ ६० ॥ अन्यकूपेइति ॥ अन्येनकृतेनिर्जलेकूपेतस्याज्ञांऽऽविनातस्यकूपस्यखननजन्यात्पापादित्यर्थः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेनवमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ त्रिंशत्पद्यैर्धरादेव्याअपराधेकृतेसति ॥ नरकादिफलप्राप्तिर्जायतेचेतिकथ्यते ॥ १ ॥ भूमिदानोति ॥ १ ॥ २ ॥ पापफलंतत्प्रतीकारंचवदेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ उभौदा

यज्ञसूकरजायेत्वंजयंदेहिजयावहे ॥ मंगलेमंगलाधारेमांगल्येमंगलप्रदे ॥ ५३ ॥ मंगलार्थंमंगलेशेमंगलंदेहिमेभवे ॥ सर्वाधारेचसर्वज्ञेसर्वशक्तिसमन्विते ॥ ५४ ॥ सर्वकामप्रदेदेविसर्वेष्टंदेहिमेभवे ॥ पुण्यस्वरूपेपुण्यानांबीजरूपेसनातनि ॥ ५५ ॥ पुण्याश्रयेपुण्यवतामालयेपुण्यदेभवे ॥ सर्वसस्यालयेसर्वसस्याढ्येसर्वसस्यदे ॥ ५६ ॥ सर्वसस्यहरेकालेसर्वसस्यात्मिकेभवे ॥ भूमेभूमिपसर्वस्वेभूमिपालपरायणे ॥ ५७ ॥ भूमिपानांसुखकरेभूमिंदेहिचभूमिदे ॥ इदंस्तोत्रंमहापुण्यंप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ ५८ ॥ कोटिजन्मसुसभवेद्बलवान्भूमिपेश्वरः ॥ भूमिदानकृतंपुण्यंलभ्यतेपठनाज्जनैः ॥ ५९ ॥ भूमिदानहरात्पापान्मुच्यतेनाऽत्रसंशयः ॥ अंबुवाचीभूकरणपापात्समुच्यतेध्रुवम् ॥ ६० ॥ अन्यकूपेकूपखननपापात्समुच्यतेध्रुवम् ॥ परभूमिहरात्पापान्मुच्यतेनाऽत्रसंशयः ॥ ६१ ॥ भूमौवीर्यत्यागपापाद्भूमौदीपादिस्थापनात् ॥ पापेनमुच्यतेसोऽपिस्तोत्रस्यपठनान्मुने ॥ ६२ ॥ अश्वमेधशतंपुण्यंलभतेनाऽत्रसंशयः ॥ भूमिदेव्यामहास्तोत्रंसर्वकल्याणकारकम् ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नारदउवाच ॥ भूमिदानकृतंपुण्यंपापंतद्धरणेनच ॥ परभूहरणात्पापंकूपेकूपखननेतथा ॥ १ ॥ अंबुवाच्यांभूखननेवीर्यस्यत्यागएवच ॥ दीपादिस्थापनात्पापंश्रोतुमिच्छामियत्नतः ॥ २ ॥ अन्यद्वापृथिवीजन्यंपापंयत्पृच्छतेपरम् ॥ यदस्तितत्प्रतीकारंवदवेदविदांवर ॥ ३ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ वितस्तिमात्रभूमिंचयोददातिचभारते ॥ संध्यापूतायविप्रायसयातिशिवमंदिरम् ॥ ४ ॥ भूमिंचसर्वसस्याढ्यांब्राह्मणायददातिच ॥ भूमिरेणुप्रमाणाब्दमंतेविष्णुपदेस्थितिः ॥ ५ ॥ ग्रामंभूमिंचधान्यंचब्राह्मणायददातियः ॥ सर्वपापाद्विनिर्मुक्तौचोभौदेवीपुरस्थितौ ॥ ६ ॥ भूमिदानंचतत्कालेयःसाधुश्चाऽनुमोदते ॥ सचप्रयातिवैकुंठेमित्रगोत्रसमन्वितः ॥ ७ ॥ स्वदत्तांपरदत्तांवाब्रह्मवृत्तिंहरेत्तुयः ॥ स्रतिष्ठतिकालसूत्रेयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ८ ॥ तत्पुत्रपौत्रप्रभृतिर्भूमिहीनःश्रियाहतः ॥ पुत्रहीनोदरिद्रश्चघोरंयातिचरौरवम् ॥ ९ ॥ गवांमार्गंविनिष्कृष्ययश्चसस्यंददातिच ॥ दिव्यंवर्षशतंचैवकुंभीपाकेचतिष्ठति ॥ १० ॥

तप्रातिगृहीतारौदेवीपुरस्थितौदेवीलोकवासिनौभवतइत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ वृत्तिंवेतनम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ गवांमार्गंविनिष्कृष्येति ॥ धर्मशास्त्रेग्रामाद्बहिर्गोप्रचारदेशंविहायसस्यक्षेत्रंकर्तव्यामितिनियमस्तत्रयःपुरुषस्तंगवांमार्गंगोप्रचारदेशंविनिष्कृष्यगृहीत्वातस्मिन्देशेसस्यंकृत्वातत्सस्यंधान्यंक्षेत्रंब्राह्मणायददातीत्यर्थः ॥ १० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





गोष्ठंतडागमिति ॥ यत्रदेशेगावोवर्षातपादिनिवृत्त्यर्थं वर्षातपादिबाधारहितेदेशेतिष्ठंतिसदेशोगोष्ठम् ॥ तंदेशं तथातडागंचानिष्कृष्याऽऽकृष्योपमृद्यतस्मिन्मार्गेस्थानेसस्यंकृत्वाददाती त्यर्थः ॥ ११ ॥ पंचपिंडान्मृत्तिकायाः ॥ परकूपे इदमुपलक्षणंतडागादेः ॥ १२ ॥ वर्षमिति। जात्येकवचनंवर्षाणीत्यर्थः ॥१३॥ अंबुवाचीपूर्वोक्तलक्षणारजस्वलापृथिवीतस्यांभूकरणा द्भूखननादित्यर्थः ॥ १४ ॥ कूपंमूढइति ॥ तत्कूपस्वामिनआज्ञांविनेत्यर्थः ॥ तदाज्ञयाकरणेतुजीर्णोद्धारफलस्यसत्त्वान्नदोषः ॥ तथैवलुप्तायांपुष्करिण्यांतत्स्वामिनआज्ञांविनापुष्करि णींकृत्वेत्यर्थः ॥ तदाज्ञयाकरणेतुपुण्यमेव ॥ १५ ॥ १६ ॥ पंकमुद्धृत्योन्मृजेत्स्नायात् ॥ १७ ॥ पिंडंपित्रेइति ॥ पिंडमित्युपलक्षणंकिंचिद्द्रव्यंयथासंभवंभूमिभर्तरिजीवतितत्पित्रादेस्त

गोष्ठंतडागंनिष्कृष्यमार्गेसस्यंददातियः ॥ सतिष्ठत्यसिपत्रेचयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥११॥ पंचपिंडाननुद्धृत्यपरकूपेचस्नातियः ॥ प्राप्नोतिनरकंचैवस्नानंनि ष्फलमेवच ॥ १२ ॥ कामीभूमौचरहसिवीर्यत्यागंकरोतियः ॥ भूमिरेणुप्रमाणंचवर्षंतिष्ठतिरौरवे ॥ १३ ॥ अंबुवाच्यांभूकरणंयःकरोतिचमानवः ॥ स यातिकृमिदंशंचस्थितिस्तत्रचतुर्युगम् ॥ १४ ॥ परकीयेलुप्तकूपेकूपंमूढःकरोतियः ॥ पुष्करिण्यांचलुप्तायांपुष्करिणींददातियः ॥ १५ ॥ सर्वंफलंपरस्यै वतप्तकुंडंव्रजेच्चसः ॥ तत्रतिष्ठतिसंतप्तोयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ १६ ॥ परकीयेतडागेचपंकमुद्धृत्यचोन्मृजेत् ॥ रेणुप्रमाणवर्षंचब्रह्मलोकेवसेन्नरः ॥ १७ ॥ पिंडंपित्रेभूमिभर्तुर्नप्रदायचमानवः ॥ श्राद्धंकरोतियोमूढोनरकंयातिनिश्चितम् ॥ १८ ॥ भूमौदीपंयोऽर्पयतिसचांधःसप्तजन्मसु ॥ भूमौशंखंचसंस्थाप्य कुष्ठंजन्मांतरेलभेत् ॥ १९ ॥ मुक्तांमाणिक्यहीरौचसुवर्णंचमणिंतथा ॥ पंचसंस्थापयेद्भूमौसचांधःसप्तजन्मसु ॥ २० ॥ शिवलिंगंशिवामर्चांयश्चाऽर्पय तिभूतले ॥ शतमन्वंतरंयावत्कृमिभक्षस्सतिष्ठति ॥ २१ ॥ शंखंयंत्रंशिलातोयंपुष्पंचतुलसीदलम् ॥ यश्चार्पयतिभूमौचसातिष्ठेन्नरकेध्रुवम् ॥ २२ ॥ जपमालांपुष्पमालांकर्पूरंरोचनंतथा ॥ योमूढश्चाऽर्पयेद्भूमौसयातिनरकंध्रुवम् ॥ २३ ॥ भूमौचंदनकाष्ठंचरुद्राक्षंकुशमूलकम् ॥ संस्थाप्यभूमौनरकेव सेन्मन्वंतरावधि ॥ २४ ॥ पुस्तकंयज्ञसूत्रंचभूमौसंस्थापयेन्नरः ॥ नभवेद्विप्रयोनौचतस्यजन्मांतरेजनिः ॥ २५ ॥ ब्रह्महत्यासमंपापमिहवैलभतेध्रुवम् ॥ ग्रंथियुक्तंयज्ञसूत्रंपूज्यंचसर्ववर्णकैः॥२६॥ यज्ञंकृत्वातुयोभूमिंक्षीरेणनहिसिंचति ॥ सयातितप्तभूमिंचसंतप्तःसप्तजन्मसु ॥ २७ ॥ भूकंपेग्रहणेयोहिकरो तिखननंभुवः ॥ जन्मांतरेमहापापोह्यंगहीनोभवेध्रुवम् ॥२८॥ भवनंयत्रसर्वेषांभूमिस्तेनप्रकीर्तिता ॥ काश्यपीकश्यपस्येयमचलास्थिररूपतः ॥२९॥ विश्वंभराधारणाच्चाऽनंतानंतस्वरूपतः॥पृथिवीपृथुकन्यात्वाद्विस्तृतत्वान्महामुने॥३०॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनममस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥१०॥

स्मिन्मृतेसतितत्सहितस्यश्राद्धोद्देशेनब्राह्मणायनप्रदायश्राद्धंकरोतीत्यर्थः ॥ इदंयन्मौल्येनगृहंनगृहीतंताद्विषयम्। मौल्येनगृहीतेतुनतत्रतदुद्देशेनतद्देयमिति ॥१८॥१९॥ ॥ मणिंमाणिक्या दिकम् ॥२०॥ शिवांदेवीमूर्तिम् ॥ अर्चांशालग्रामम् ॥ २१ ॥ शंखादीनांपुनरुपादानमतिनिषिद्धत्वावबोधनार्थम् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ सर्ववर्णकैःसर्ववर्णैः ॥ पूज्यंनकेना ऽप्यवमानःकर्तव्यइतिप्रसंगादुक्तम् ॥ यद्वा यतःपूज्यंततोभूमौयःस्थापयेदितिपूर्वेणान्वयः ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ भूम्यादिपदानांनिरुक्तिमाह। भवनमिति ॥२९॥ पृथोराज्ञःकन्यात्वा द्विस्तृतत्वाद्वापृथिवीत्यर्थः ॥ पृषोदरादित्वात्साधुत्वम् ॥ ३० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ पंचसप्ततिपद्यैस्तुगंगोत्पत्तिःसमुच्यते ॥ यस्यास्तुश्रवणेनैवचित्तशुद्धोभवेन्नरः ॥१॥ पृथिव्युपाख्यानानंतरंगंगोपाख्यानंपृच्छति । नारदउवाच ॥ श्रुतंपृथिव्युपाख्यानमिति ॥ १ ॥ भारतीशापात्पूर्वमुपपादितात् ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ शैब्यायांशिवेरपत्यकन्यायाम् ॥ असमंजस्तन्नामकःपुत्रोजातः ॥ ५ ॥ अन्यावैदर्भीनाम्नीराजकामिनी ॥ ६ ॥ रुरोदेति ॥ किमिदंत्वयाफलंदत्तमित्यभिप्रायेण ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ कपिलस्येति ॥ सगरेअश्वमेधार्थंप्रवृत्तेतंयज्ञीयमश्वमपहृत्येंद्रोध्यानानिष्ठस्यकपिलस्यपृष्ठदेशेववंध।पश्चाद्राजपुत्राःसागराअश्वान्वेषणेचलितास्तत्रदेशेकपिलसंनिधावश्वंदृष्टवंतस्ततोऽयमेवाऽश्वहर्ताचोरोऽस्तीत्यूचुः। ततोमुनिनाशापेनभस्मीकृताइतिकथापुराणांतरेप्रसिद्धा ॥ १० ॥ असमंजोद्वितीयोराजपुत्रः सापत्नभ्रातॄणां

नारदउवाच ॥ श्रुतंपृथिव्युपाख्यानमतीवसुमनोहरम् ॥ गंगोपाख्यानमधुनावदवेदविदांवर ॥ १ ॥ भारतेभारतीशापात्साजगामसुरेश्वरी ॥ विष्णुस्वरूपापरमास्वयंविष्णुपदीतिच ॥ २ ॥ कथंकुत्रयुगेकेनप्रार्थिताप्रेरितापुरा ॥ तत्क्रमंश्रोतुमिच्छामिपापघ्नंपुण्यदंशुभम् ॥ ३ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ राजराजेश्वरःश्रीन्मान्सगरःसूर्यवंशजः ॥ तस्यभार्याचवैदर्भीशैब्याचद्वेमनोहरे ॥४॥ तत्पत्न्यामेकपुत्रश्चबभूवसुमनोहरः ॥ असमंजइतिख्यातःशैब्यायांकुलवर्धनः ॥ ५ ॥ अन्याचाऽऽराधयामासशंकरंपुत्रकामुकी ॥ बभूवगर्भस्तस्याश्चहरस्यचवरेणह ॥ ६ ॥ गतेशताब्देपूर्णेचमांसपिंडंसुषावसा ॥ तंदृष्ट्वासाशिवंध्यात्वारुरोदोच्चैःपुनःपुनः ॥ ७ ॥ शंभुर्ब्राह्मणरूपेणतत्समीपंजगामह ॥ चकारसंविभज्यैतत्पिंडंषष्टिसहस्रधा ॥ ८॥ सर्वेबभूवुःपुत्राश्चमहाबलपराक्रमाः ॥ ग्रीष्ममध्याह्नमार्तंडप्रभामुष्टकलेवराः ॥ ९ ॥ कपिलस्यमुनेःशापाद्बभूवुर्भस्मसाच्चते ॥ राजारुरोदतच्छ्रुत्वाजगामगहनेवने ॥ १० ॥ तपश्चकाराऽसमंजोगंगानयनकारणात् ॥ लक्षवर्षंतपस्तप्त्वाममारकालयोगतः ॥ ११ ॥ अंशुमांस्तस्यतनयोगंगानयनकारणात् ॥ तपःकृत्वालक्षवर्षंममारकालयोगतः ॥१२॥ भगीरथस्तस्यपुत्रोमहाभागवतःसुधीः ॥ वैष्णवोविष्णुभक्तश्चगुणवानजरामरः ॥१३॥ तपःकृत्वालक्षवर्षंगंगानयनकारणात् ॥ ददर्शकृष्णंग्रीष्मस्थसूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ १४ ॥ द्विभुजंमुरलीहस्तंकिशोरंगोपवेषिणम्॥गोपालसुंदरीरूपंभक्तानुग्रहरूपिणम् ॥ १५ ॥स्वेच्छामयंपरंब्रह्मपरिपूर्णतमंप्रभुम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाद्यैश्चस्तुतंमुनिगणैर्नुतम् ॥१६॥ निर्लिप्तंसाक्षिरूपंचनिर्गुणंप्रकृतेःपरम् ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यंभक्तानुग्रहकारणम् ॥ १७ ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानंरत्नभूषणभूषितम् ॥ तुष्टावदृष्ट्वानृपतिःप्रणम्यचपुनःपुनः ॥१८॥ लीलयाचवरंप्रापवांछितंवंशतारणम् ॥ कृत्वाचस्तवनंदिव्यंपुलकांकितविग्रहः ॥ १९ ॥

शापदग्धानामुद्धारार्थंगंगानयनोद्देशेनतपश्चकारेत्यर्थः ॥ ११ ॥ तत्पुत्रोंशुमानप्येवंममारेत्याह । अंशुमानिति ॥१२॥ १३ ॥ १४ ॥ गोपालसुंदरीरूपमिति ॥ कदाचिदाद्याललितापुंरूपाकृष्णविग्रहेतितंत्रराजेऽस्याऽवतारस्यस्पष्टत्वात् ॥ ध्यानंचतंत्रांतरेस्पष्टमेव ॥ गोपालसुंदर्याःरूपम् । गोलोकेअधिष्ठात्रीदेवतामुख्यत्वेनगोपालसुंदर्येवसृष्टेरादौमूलप्रकृतेर्गोपालसुंदरीउत्पन्ना ॥ ततोन्याःशक्तयतंतएवाऽस्मिन्भागवतेगोपालसुंदरीरूपश्रीकृष्णस्यपुनःपुनर्महिमाप्रोच्यतेइतिबोध्यम् ॥ सखीविषधारीश्रीकृष्णोगोपालसुंदरी ॥ १५ ॥ १६ ॥ प्रकृतेःपरमितिवास्तविकात्मरूपेणवर्णनम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ दर्शनोत्तरंस्तवनंकृत्वावांछितंवंशतारणंवरंत्वत्पूर्वजोद्धारार्थंगंगांददामीत्येवंरूपंप्रापेत्यन्वयः ॥ १९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





इत्यंगोपालसुदरीरूपःश्रीकृष्णोवरंदत्त्वागंगांयदुक्तवांस्तदाह ॥ श्रीभगवानुवाच भारतंभारतीशापादिति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥२६ ॥ किंचिदिति ॥ पुण्याह दिवसस्नानजंफलंवेदायत्किंचिदेवबुद्धेरविषयत्वाद्वदंतीत्यर्थः ॥ २७ ॥ संकल्पंस्नानसंकल्पजन्यंफलमित्यर्थः ॥ २८ ॥ संकल्परहितमुसलस्नानतोयत्फलंपूर्वोक्तंतस्माद्दशगुणंसंकल्पपुरःसर स्नानतोभवतीत्यर्थः ॥२९॥३०॥ अक्षयायामक्षय्यनवम्याम्॥ ३१॥स्नानफलमुक्त्वादानफलमाह।सामान्यदिवसेति॥शतगुणोपेतम्॥सामान्यदिवसस्नानाच्छतगुणंगंगातीरेदानात्फलंभवती

श्रीभगवानुवाच ॥ भारतंभारतीशापाद्गच्छशीघ्रंसुरेश्वरि॥सगरस्यसुतान्सर्वान्पूतान्कुरुममाऽऽज्ञया ॥२०॥ त्वत्स्पर्शवायुनापूतायास्यंतिमममंदिरम् ॥ विभ्रतोममसूर्तीश्चदिव्यस्यंदनगामिनः ॥ २१ ॥ मत्पार्षदाभविष्यंतिसर्वकालंनिरामयाः ॥ समुच्छिद्यकर्मभोगान्कृताञ्जन्मनिजन्मनि ॥ २२ ॥ कोटि जन्मार्जितंपापंभारतेयत्कृतंनृभिः ॥ गंगायावातस्पर्शेननश्यतीतिश्रुतौश्रुतम् ॥२३॥ स्पर्शनाद्दर्शनाद्देव्याःपुण्यंदशगुणंततः ॥ मौसलस्नानमात्रेणसामा न्यदिवसेनृणाम् ॥२४॥ शतकोटिजन्मपापंनश्यतीतिश्रुतौश्रुतम्॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच ॥ २५ ॥ जन्मसंख्यार्जितान्येवकामतोऽपि कृतानिच ॥ तानिसर्वाणिनश्यंतिमौसलस्नानतोनृणाम् ॥२६॥ पुण्याहस्नानतःपुण्यंवेदानैववदंतिच॥किंचिद्वदंतितेविप्रफलमेवयथागमम् ॥ २७ ॥ ब्रह्म विष्णुशिवाद्याश्चसर्वेनैववदंतिच ॥ सामान्यदिवसस्नानसंकल्पंशृणुसुंदरि॥२८॥पुण्यंदशगुणंचैवमौसलस्नानतःपरम्॥ ततस्त्रिंशद्गुणंपुण्यंरविसंक्रमणेदिने ॥ २९ ॥ अमायांचाऽपितत्तुल्यंद्विगुणंदक्षिणायने ॥ ततोदशगुणंपुण्यंनराणामुत्तरायणे ॥३०॥चातुर्मास्यांपौर्णमास्यामनंतंपुण्यमेवच॥अक्षयायांचत त्तुल्यं चैतद्वेदेनिरूपितम् ॥३१॥ असंख्यपुण्यफलदमेतेषुस्नानदानकम्॥सामान्यदिवसस्नानाद्दानाच्छतगुणंफलम् ॥ ३२ ॥ मन्वंतराद्यायांतिथौयुगाद्या यांतथैवच ॥ माघस्यसितसप्तम्यांभीष्माष्टम्यांतथैवच ॥३३॥ अथाप्यशोकाष्टम्यांचनवम्यांचतथाहरेः॥ततोऽपिद्विगुणंपुण्यंनंदायांतवदुर्लभम्॥ ३४॥ दशहरादशम्यांतुयुगाद्यादिसमंफलम्॥नंदासमंचवारुण्यांमहत्पूर्वेचतुर्गुणम् ॥३५॥ ततश्चतुर्गुणंपुण्यंद्विमहत्पूर्वकेसति ॥ पुण्यंकोटिगुणंचैवसामान्यस्ना नतोऽपियत् ॥३६॥ चंद्रोपरागसमयेसूर्येदशगुणंततः ॥ पुण्यमर्धोदयेकालेततःशतगुणंफलम्॥३७॥इत्येवमुक्त्वादेवेशोविरिरामतयोःपुरः॥तमुवाचततो गंगाभक्तिनम्रात्मकंधरा ॥३८॥ गंगोवाच॥यामिचेद्भारतंनाथभारतीशापतःपुरा ॥ तवाऽऽज्ञयाचराजेंद्रतपसाचैवसांप्रतम् ॥ ३९ ॥ दास्यंतिपापिनोमह्यं पापानियानिकानिच ॥ तानिमेकेननश्यंतितमुपायंवदप्रभो॥४०॥कतिकालंपरिमितंस्थितिर्मेतत्रभारते॥कदायास्यामिदेवेशतद्विष्णोःपरमंपदम्॥४१॥

त्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ हरेर्नवम्यांरामनवम्यां नंदायांवोति तवदशहरायांयानंदाप्रतिपत्तिथिस्तस्यामित्यर्थः ॥ ३४ ॥ नंदापूर्वोक्तामहत्पूर्वेपुंलिंगमार्षम् ॥ महावारुण्यामित्यर्थः ॥ ॥ ३५ ॥ द्विमहत्पूर्वकेसतीति ॥ द्विमहच्छब्दपूर्वकत्वेवारुणीशब्दस्यसतीत्यर्थः ॥ तेनमहामहावारुणीतिसिद्धम् ॥ ३६ ॥ चंद्रोपरागसमयेसामान्यस्नानफलात्पूर्वोक्तात्कोटिगुणंफलंभ वतीत्यर्थः ॥ सूर्येसूर्यग्रहेचंद्रग्रहणाद्दशगुणमित्यर्थः ॥ ततःसूर्यग्रहफलात् ॥ ३७ ॥ तयोर्गंगाभगीरथयोः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ममान्यद्वांछितमिति ॥ भूतलेममपतिःकोवाभविष्यतीत्येतद्रूपंवाछितंलज्जयावक्तुंनशक्नोमीतिभावः ॥४२॥४३॥ विदग्धायाविरहिण्याः ॥ ४४ ॥ सौभाग्यामुख्येत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ प्रकृतेर्मूलप्रकृतेर्भुवनेश्वर्याभक्तस्यसंस्पर्शादित्यर्थः ॥५१॥ पापिनांसहस्राणांशवानांस्पर्शेनचयत्पापंत्वयिभविष्यतितदपितन्मंत्रोपासकस्नानात्तस्यामूलप्रकृतेर्भुवनेश्वर्यामंत्रामायावजिप्रभृतयस्तदुपासकस्यस्नानात्तद्घंनंक्ष्यतीत्यर्थः।तदुक्तंमुंडमालायां ॥ मदंशाश्चैवयेभूतास्तेशैवानात्रसंशयः ॥ त्वदंशाश्चैवशाक्ताश्चसत्यंवैगिरिनंदिनीति॥५२॥

ममाऽन्यद्वांछितंयद्यत्सर्वंजानासिसर्ववित् ॥ सर्वांतरात्मन्सर्वज्ञतदुपायंवदप्रभो ॥ ४२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ जानामिवांछितंगंगेतवसर्वंसुरेश्वरि॥पतिस्तेद्रवरूपायालवणोदोभविष्यति ॥४३॥ सममांशस्वरूपश्चत्वंचलक्ष्मीस्वरूपिणी ॥ विदग्धायाविदग्धेनसंगमोगुणवान्भुवि॥४४॥ यावत्यःसंतिनद्यश्चभारत्याद्याश्चभारते ॥ सौभाग्यात्वंचतास्वेवलवणोदस्यसौरते॥४५॥अद्यप्रभृतिदेवेशिकलेःपंचसहस्रकम्॥वर्षंस्थितिस्तेभारत्याःशापेनभारतेभुवि॥४६॥ नित्यंत्वमब्धिनासार्धंकरिष्यसिरहोरतिम् ॥ त्वमेवरासिकादेविरसिकेंद्रेणसंयुता ॥ ४७ ॥ त्वांस्तोष्यंतिचस्तोत्रेणभगीरथकृतेनच ॥ भारतस्थाजनाःसर्वेपूजयिष्यंतिभक्तितः ॥ ४८ ॥ कण्वशाखोक्तध्यानेनध्यात्वात्वांपूजयिष्यति ॥ यःस्तौतिप्रणमेन्नित्यंसोऽश्वमेधफलंलभेत् ॥ ४९ ॥ गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति ॥ ५० ॥ सहस्रपापिनांस्नानाद्यत्पापंतेभविष्यति ॥ प्रकृतेर्भक्तसंस्पर्शादेवताद्विविनंक्ष्यति ॥५१॥ पापिनांतुसहस्राणांशवस्पर्शेनयत्त्वयि ॥ तन्मंत्रोपासकस्नानात्तद्घंचविनंक्ष्यति ॥५२॥ तत्रैवत्वमधिष्ठानंकरिष्यस्यघमोचनम् ॥ साधंसरिद्भिःश्रेष्ठाभिःसरस्वत्यादिभिःशुभे ॥ ५३ ॥ तत्तुतीर्थंभवेत्सद्योयत्रतद्गुणकीर्तनम् ॥ त्वद्रेणुस्पर्शमात्रेणपूतोभवतिपातकी ॥ ५४ ॥ रेणुप्रमाणवर्षंचदेवीलोकेवसेद्ध्रुवम् ॥ ज्ञानेनत्वयियेभक्त्यामन्नामस्मृतिपूर्वकम् ॥५५॥ समुत्सृजंतिप्राणांश्चतेगच्छंतिहरेःपदम् ॥ पार्षदप्रवरास्तेचभविष्यंतिहरेश्चिरम् ॥ ५६ ॥ लयंप्राकृतिकंतेचद्रक्ष्यंतिचाऽप्यसंख्यकम् ॥ मृतस्यबहुपुण्येनतच्छवंत्वयिविन्यसेत् ॥५७॥ प्रयातिसचवैकुंठंयावदह्नःस्थितिस्त्वयि ॥ कायव्यूहंततःकृत्वाभोजयित्वास्वकर्मकम् ॥ ५८ ॥ तस्मैददामिसारूप्यंकरोमितंचपार्षदम् ॥ अज्ञानीत्वज्जलस्पर्शाद्यदिप्राणान्समुत्सृजेत् ॥ ॥ ५९ ॥तस्मैददामिसालोक्यंकरोमितंचपार्षदम् ॥ अन्यत्रवात्यजेत्प्राणांस्त्वन्नामस्मृतिपूर्वकम् ॥ ६० ॥ तस्मैददामिसालोक्यंयावद्ब्रह्मणोवयः ॥ अन्यत्रवात्यजेत्प्राणांस्त्वन्नामस्मृतिपूर्वकम् ॥ ६१ ॥ तस्मैददामिसारूप्यमसंख्यंप्राकृतंलयम् ॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणयानेनसहपार्षदैः ॥ ६२ ॥ सद्यःप्रयातिगोलोकंममतुल्योभवेद्ध्रुवम् ॥ तीर्थेप्यतीर्थेमरणेविशेषोनास्तिकश्चन ॥ ६३ ॥

॥ ५३ ॥ तद्गुणकीर्तनंमूलप्रकृतिगुणकीर्तनमित्यर्थः ॥ ५४ ॥ देवीलोकेमणिद्वीपेतृतीयस्कंधोक्ते ॥५५॥५६॥५७॥ कायव्यूहमनेकंदेहम् ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ पूर्वत्रनामस्मृतिर्यथाकथंचित् ॥ द्वितीयवचनेतुभक्तिपूर्विकाततोविशेषः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ मन्मंत्रोपासकानांतुतवनोपयोगःकिंतु तेस्वयमेवपूताअतएवपापिसंबंधजन्यंत्वयिविद्यमानंपापंतेऽपहरंतीतिपूर्वमुक्तंनविस्मर्तव्यमित्यभिप्रायेणाऽऽह । तीर्थेऽप्यतीर्थेइति ॥ ६३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मन्मंत्रोपासकानामितिगोपालसुंदरीमंत्रोपासकानामित्यर्थः ॥ इदमुपलक्षणंशैवशाक्तब्रह्मनिष्ठगाणपत्यसौरभक्तानामपि॥तदुक्तंमुंडमालायाम् ॥ राजानमाश्रितानांतुचौराद्यावशगायथा॥ तथैवदेवीभक्तानांकामक्रोधादिशत्रवः ॥ राजचिह्नांकितंदृष्ट्वासामंताःपर्युपासते ॥ देवीभक्त्यंकितंदृष्ट्वाब्रह्माद्याःसमुपासते ॥ यमेनाऽपिस्वदूतास्तुशप्ताअतिभयेनच ॥ शाक्तेषुदेवीभक्तेषुन वोदृष्टिःपतत्विति ॥ शाक्तास्तुसर्वतीर्थानिपुनंतिनिजवैभवादिति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ कौथुमोक्तेनकौथुमिशाखोक्तेन ॥ ६९ ॥ ७० ॥७१ ॥ वह्निमग्निहोत्रस्थितम् ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ शौचायशुद्ध्यर्थमित्यर्थः । लक्ष्मीप्राप्त्यर्थंविष्णुंपूजयेदित्यर्थः ॥ मुक्तिसिद्ध्येमोक्षार्थंशिवांमूलप्रकृतिंदेवींपूजयेदित्यर्थः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलके

मन्मंत्रोपासकानांतुनित्यंनैवेद्यभोजिनाम् ॥ पूतंकर्तुंसशक्तोहिलीलयाभुवनत्रयम् ॥ ६४ ॥ रत्नेंद्रसारयानेनगोलोकंसंप्रयांतिच ॥ मद्भक्तावांधवायेषांते ऽपिपश्चादयोपिहि ॥ ६५ ॥ प्रयांतिरत्नयानेनगोलोकंचाऽतिदुर्लभम् ॥ यत्रयत्रस्मृतास्तेचज्ञानेनज्ञानिनःसति ॥ ६६ ॥ जीवन्मुक्ताश्चतेपूतामद्भक्तेः संविधानतः ॥ इत्युक्त्वाश्रीहरिस्तांचप्रत्युवाचभगीरथम् ॥ ६७ ॥ स्तुहिगंगामिमांभक्त्यापूजांचकुरुसांप्रतम् ॥ भगीरथस्तांतुष्टावपूजयामासभक्तितः ॥ ६८ ॥ कौथुमोक्तेनध्यानेनस्तोत्रेणाऽपिपुनःपुनः ॥ प्रणनामचश्रीकृष्णंपरमात्मानमीश्वरम् ॥ ६९ ॥ भगीरथश्चगंगाचसोंऽतर्धानंचकारह ॥ नारदउवाच ॥ केनध्यानेनस्तोत्रेणकेनपूजाक्रमेणच ॥ ७० ॥ पूजांचकारनृपतिर्वदवेदविदांवर ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ स्नात्वानित्यक्रियांकृत्वाधृ त्वाधौतेचवाससी ॥ ७१ ॥ संपूज्यदेवषट्कंचसंयतोभक्तिपूर्वकम् ॥ गणेशंचदिनेशंचवह्निंविष्णुंशिवंशिवाम् ॥ ७२ ॥ संपूज्यदेवषट्कंचसोऽधिकारी चपूजने ॥ गणेशंविघ्ननाशायआरोग्यायदिवाकरम् ॥ ७३ ॥ वह्निंशौचायविष्णुंचलक्ष्म्यर्थंपूजयेन्नरः ॥ शिवंज्ञानायज्ञानेशंशिवांचमुक्तिसिद्धये ॥ ॥ ७४ ॥ संपूज्यैतांल्लभेत्प्राज्ञोविपरीतमतोऽन्यथा ॥ दध्यावनेनध्यानेनतद्ध्यानंशृणुनारद ॥ ७५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेएकादशो ऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ ध्यानंचकण्वशाखोक्तंसर्वपापप्रणाशनम्॥ श्वेतपंकजवर्णाभांगंगांपापप्रणाशिनीम् ॥ १ ॥ कृष्णविग्रहसं भूतांकृष्णतुल्यांपरांसतीम् ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानांरत्नभूषणभूषिताम् ॥ २ ॥ शरत्पूर्णेंदुशतकमृष्टशोभाकरांपराम् ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांशश्वत्सुस्थि रयौवनाम् ॥ ३ ॥ नारायणप्रियांशांतांतत्सौभाग्यसमन्विताम् ॥ बिभ्रतींकबरीभारंमालतीमाल्यसंयुतम् ॥ ४ ॥ सिंदूरबिंदुललितंसार्धंचंदनबिंदु भिः ॥ कस्तूरीपत्रकंगंडेनानाचित्रसमन्वितम् ॥ ५ ॥ पक्वबिंबविनिंद्याच्छचार्वोष्ठपुटमुत्तमम् ॥ मुक्तापंक्तिप्रभामुष्टदंतपंक्तिमनोरमम् ॥ ६ ॥

नवमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ एकोनाशीतिपद्यैस्तुराधाकृष्णांगसंभवा ॥ गोलोकेप्रथमंगंगासमुद्भूतेतिचोच्यते ॥ १ ॥ नारायणोगंगायाध्यानंवदति । नारायणउवाच ध्यानामि ति ॥ १ ॥ कृष्णविग्रहसंभूतांकृष्णशरीरोद्भवाम् ॥ इयंकथावक्ष्यमाणाध्यायेस्पष्टा ॥ २ ॥ इंदुशतकस्यमृष्टाशुद्धायाप्रभातस्याआकरांखनिम् ॥ ३ ॥ ४ ॥ नानाचित्रसमन्वित बिभ्रतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ बिंबफलंविनिंद्यंयस्यैतादृशमच्छंचार्वोष्ठपुटंबिभ्रतीत्यर्थः ॥ मुक्तापंक्तिप्रभामुष्टाऽपहृताययादंतपंक्त्या ॥ ६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७ ॥ रंभास्तंभोविनिंदितोयथास्वकीयोरुद्वयशोभयेतिशेषः ॥ पदपद्मयुगंवरंवस्त्रंतत्पर्यंतंबिभ्रतीतिशेषः ॥ ८ ॥ रत्नपादुकेत्यारभ्यसर्वभोगदमित्येतत्पर्यंतंपादपद्मस्यविशेषणानि ॥ यावकंपादभूषणंतत्सहितम् ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ उपचाराणिदत्त्वेत्यन्वयः ॥ नपुंसकत्वमार्षम् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ शिवसंगीतेति ॥ इदंसर्वमनुपदोक्तकथायांस्पष्टीभविष्यति ॥ शिवसंगीतेनसंमुग्धोमोहितोयःश्रीकृष्णस्तस्यांगसमुद्भवांराधांगद्रवेणसंयुतांराधांगजलेनसंयुताम् ॥ १८ ॥ १९ ॥ कार्तिक्यांपौर्णमास्यांराधामहोत्सवेय

सुचारुवक्त्रनयनंसकटाक्षंमनोहरम् ॥ कठिनंश्रीफलाकारंस्तनयुग्मंचबिभ्रतीम् ॥ ७ ॥ बृहच्छ्रोणिंसुकठिनांरंभास्तंभविनिंदिताम् ॥ स्थलपद्मप्रभामुष्टपदपद्मयुगंवरम् ॥ ८ ॥ रत्नपादुकसंयुक्तंकुंकुमाक्तंसयावकम् ॥ देवेंद्रमौलिमंदारमकरंदकणारुणम् ॥ ९ ॥ सुरसिद्धमुनींद्रैश्चदत्तार्घसंयुतंसदा ॥ तपस्विमौलिनिकरभ्रमरश्रेणिसंयुतम् ॥ १० ॥ मुक्तिप्रदंमुमुक्षूणांकामिनांसर्वभोगदम् ॥ वरांवरेण्यांवरदांभक्तानुग्रहकारिणीम् ॥ ११ ॥ श्रीविष्णोःपददात्रींचभजेविष्णुपदींसतीम् ॥ इत्यनेनैवध्यानेनध्यात्वात्रिपथगांशुभाम् ॥ १२ ॥ दत्त्वासंपूजयेद्ब्रह्मन्नुपचाराणिषोडश ॥ आसनंपाद्यमर्घंचस्नानीयंचाऽनुलेपनम् ॥ १३ ॥ धूपंदीपंचनैवेद्यंतांबूलंशीतलंजलम् ॥ वसनंभूषणंमाल्यंगंधमाचमनीयकम् ॥ १४ ॥ मनोहरंसुतल्पंचदेयान्येतानिषोडश ॥ दत्त्वाभक्त्याचप्रणमेत्संस्तूयसंपुटांजलिः ॥ १५ ॥ संपूज्यैवंप्रकारेणसोऽश्वमेधफलंलभेत् ॥ नारदउवाच ॥ श्रोतुमिच्छामिदेवेशलक्ष्मीकांतजगत्पते ॥ १६ ॥ विष्णोर्विष्णुपदीस्तोत्रंपापघ्नंपुण्यकारकम् ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिपापघ्नंपुण्यकारणम् ॥ १७ ॥ शिवसंगीतसंमुग्धश्रीकृष्णांगसमुद्भवाम् ॥ राधांगद्रवसंयुक्तांतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ १८ ॥ यज्जन्मसृष्टेरादौचगोलोकेरासमंडले ॥ सन्निधानेशंकरस्यतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ १९ ॥ गोपैर्गोपीभिराकीर्णेशुभेराधामहोत्सवे ॥ कार्तिकीपूर्णिमायांचतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २० ॥ कोटियोजनविस्तीर्णादैर्घ्येलक्षगुणाततः ॥ समावृतायागोलोकंतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २१ ॥ षष्टिलक्षयोजनायाततोदैर्घ्येचतुर्गुणा ॥ समावृतायावैकुंठेतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २२ ॥ त्रिंशल्लक्षयोजनायादैर्घ्येपंचगुणाततः ॥ आवृताब्रह्मलोकेयातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २३ ॥ त्रिंशल्लक्षयोजनायादैर्घ्येचतुर्गुणाततः ॥ आवृताशिवलोकेयातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २४ ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णादैर्घ्येसप्तगुणाततः ॥ आवृताध्रुवलोकेयातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥२५॥ लक्षयोजनविस्तीर्णादैर्घ्येपंचगुणाततः ॥ आवृताचंद्रलोकेयातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २६ ॥ षष्टिसहस्रयोजनायादैर्घ्येदशगुणाततः ॥ आवृतासूर्यलोकेयातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २७ ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णादैर्घ्येपंचगुणाततः ॥ आवृतायातपोलोकेतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २८ ॥

जन्मप्रथमतोऽभूदितिपूर्वानुवृत्त्यायोजनीयम् ॥ २० ॥ कोटियोजनेति ॥ अतिदीर्घातिविस्तृतेत्येवतात्पर्यंबोध्यम् ॥ नतुतावद्योजनदीर्घविस्तृतत्वे असंभवात् ॥ एवमेवोत्तरत्राऽपि ॥ ग्रंथार्थस्तुस्पष्टएव ॥ २१ ॥ आयामेनषष्टिलक्षयोजनेत्यर्थः ॥ एवमुत्तरत्रबोध्यम् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४॥ अथनारायणेउपरतेप्रथमंगंगायाजन्मगोलोकेकार्तिक्यांपूर्णिमायांश्रीगोपालसुंदरीरूपकृष्णशरीरात्कथंजातामित्यादिकंपृच्छाति । नारदउवाच ॥ कथंगंगात्रिपथगेति ॥ ४५ ॥ तत्रस्थास्तल्लोकस्थाः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ऊषुःसंपूज्यस्थि

सहस्रयोजनायामादैर्घ्येदशगुणाततः ॥ आवृताजनलोकेयातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ २९ ॥ दशलक्षयोजनायादैर्घ्येपंचगुणाततः ॥ आवृतायामहर्लोकेतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ ३० ॥ सहस्रयोजनायामादैर्घ्येशतगुणाततः ॥ आवृतायाचकैलासेतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ ३१ ॥ शतयोजनविस्तीर्णादैर्घ्येदशगुणाततः ॥ मंदाकिनीयेंद्रलोकेतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ ३२ ॥ पातालेभोगवतीचैवविस्तीर्णादशयोजना ॥ ततोदशगुणादैर्घ्येतांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ ३३ ॥ क्रोशैकमात्रविस्तीर्णाततःक्षीणाचकुत्रचित् ॥ क्षितौचाऽलकनंदायातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ ३४ ॥ सत्येयाक्षीरवर्णाचत्रेतायामिंदुसन्निभा ॥ द्वापरेचंदनाभायातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ ३५ ॥ जलप्रभाकलौयाचनाऽन्यत्रपृथिवीतले ॥ स्वर्गेचनित्यंक्षीराभातांगंगांप्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ३६ ॥ यत्तोयकणिकास्पर्शेपापिनांज्ञानसंभवः ॥ ब्रह्महत्यादिकंपापंकोटिजन्मार्जितंदहेत् ॥ ३७ ॥ इत्येवंकथिताब्रह्मन्गंगापद्यैकविंशतिः ॥ स्तोत्ररूपंचपरमंपापघ्नंपुण्यजीवनम् ॥ ३८ ॥ नित्यंयोहिपठेद्भक्त्यासंपूज्यचसुरेश्वरीम् ॥ सोऽश्वमेधफलंनित्यंलभतेनाऽत्रसंशयः ॥ ३९ ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंभार्याहीनोलभेत्स्त्रियम् ॥ रोगात्प्रमुच्यतेरोगीबंधान्मुक्तोभवेद्ध्रुवम् ॥४०॥ अस्पष्टकीर्तिःसुयशामूर्खोभवतिपंडितः ॥ यःपठेत्प्रातरुत्थायगंगास्तोत्रमिदंशुभम् ॥ ४१ ॥ शुभंभवेच्चदुःस्वप्नेगंगास्नानफलंलभेत् ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ स्तोत्रेणाऽनेनगंगांचस्तुत्वाचैवभगीरथः ॥ ४२ ॥ जगामतांगृहीत्वाचयत्रनष्टाश्चसागराः ॥ वैकुंठंतेययुस्तूर्णंगंगायाःस्पर्शवायुना ॥ ४३ ॥ भगीरथेनसानीतातेनभागीरथीस्मृता ॥ इत्येवंकथितंसर्वंगंगोपाख्यानमुत्तमम् ॥ ४४ ॥ पुण्यदंमोक्षदंसारंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ नारदउवाच ॥ कथंगंगात्रिपथगाजाताभुवनपावनी ॥ ४५ ॥ कुत्रवाकेनविधिनातत्सर्वंवदमेप्रभो ॥ तत्रस्थाश्चजनायेयेतेचकिंचकुरुत्तमम् ॥ ४६ ॥ एतत्सर्वंतुविस्तीर्णंकृत्वावक्तुमिहाऽर्हसि ॥ नारायणउवाच ॥ कार्तिक्यांपूर्णिमायांतुराधायाःसुमहोत्सवः ॥४७॥ कृष्णःसंपूज्यतांराधामुवासरासमंडले ॥ कृष्णेनपूजितांतांतुसंपूज्यहृष्टमानसाः ॥ ४८ ॥ ऊषुर्ब्रह्मादयःसर्वेऋषयःशौनकादयः ॥ एतस्मिन्नंतरेकृष्णसंगीताचसरस्वती ॥ ४९ ॥ जगौसुंदरतालेनवीणयाचमनोहरम्॥तुष्टोब्रह्माददौतस्यैरत्नेंद्रसारहारकम् ॥५०॥शिवोमणींद्रसारंतुसर्वब्रह्मांडदुर्लभम्॥कृष्णःकौस्तुभरत्नंचसर्वरत्नात्परंवरम्॥५१॥अमूल्यरत्ननिर्माणंहारसारंचराधिका॥नारायणश्चभगवान्ददौमालांमनोहराम् ॥५२॥

ताइत्यर्थः ॥ कृष्णसंगीताकृष्णसंबंधिनीसंगीतशास्त्राधिष्ठात्रीत्यर्थः ॥ ४९ ॥ हारकंरत्नहारमित्यर्थः ॥ ५० ॥ मणिसारंसर्वोत्तममणिम् ॥ ५१ ॥ हारसारंहारश्रेष्ठम् ॥ ५२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

विष्णुमायाब्रह्ममायामूलप्रकृतिर्मूलप्रकृतेःसाक्षादुद्भवान्मूलप्रकृतित्वम् ॥ ५३ ॥ ब्रह्मभक्तिंपरमात्मभक्तिंभवेप्रपंचे ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कृष्णसंगीतंरासोल्लासस्यवर्णनंयस्मिंस्तादृशंगोपालसुंदर्यात्मककृष्णोद्देश्यकंसंगीतंगानामित्यर्थः ॥ एतस्यकृष्णस्यगोपालसुंदर्यात्मकत्वेनपूर्वमभिधानान्नवमस्कंधेसर्वत्रकृष्णशब्देनगोपालसुंदर्यात्मककृष्णस्यैवाऽत्रग्रहणमितिबोध्यम् ॥ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ सर्वतीर्थमिति ॥ लोकोद्धारार्थंराधाकृष्णस्तीर्थरूपोजातइत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ अयमेववांछितोवरइत्यर्थः ॥ ६० ॥ सर्वात्माऽहमिति ॥ अहंसर्वात्मासर्वव्यापकोऽस्म्येव नकदाचिन्ममभवतांचवियोगोऽस्तितथेयंराधिकाशक्तिरपिसर्वव्यापिकाऽस्त्येवेतिनतयाऽपिभवतांवियोगोऽस्ति केवलमावयोर्देहेनैवभवतांवियोगोजातस्तत्रमिथ्यादेहेनकिंकर्तव्यंभवतामास्ति नकिंचिदपीत्यर्थः ॥ ६१ ॥ अथाऽपिममभक्तानांदर्शनार्थंमन्मूर्तिरपेक्षितेतीच्छथयादि तदायन्मयोच्यतेतत्कर्तव्यमित्याह । मनवइति ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ स्वयंविधातरिति ॥

अमूल्यरत्ननिर्माणंलक्ष्मीःकनककुंडलम् ॥ विष्णुमायाभगवतीमूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ ५३ ॥ दुर्गानारायणीशानाब्रह्मभक्तिंसुदुर्लभाम् ॥ धर्मबुद्धिंचधर्मश्चयशश्चविपुलंभवे ॥ ५४ ॥ वह्निशुद्धांशुकंवह्निर्वायुश्चमणिनूपुरान् ॥ एतस्मिन्नंतरेशंभुर्ब्रह्मणाप्रेरितोमुहुः ॥ ५५ ॥ जगौश्रीकृष्णसंगीतंरासोल्लाससमन्वितम् ॥ मूर्छांप्रापुःसुराःसर्वेचित्रपुत्तलिकायथा ॥ ५६ ॥ कष्टेनचेतनांप्राप्यददृशूरासमंडले ॥ स्थलंसर्वंजलाकीर्णंराधाकृष्णविहीनकम् ॥ ५७ ॥ अत्युच्चैरुरुदुःसर्वेगोपागोप्यःसुराद्विजाः ॥ ध्यानेनब्रह्माबुबुधेसर्वतीर्थमभीप्सितम् ॥ ५८ ॥ गतश्चराधयासार्धंश्रीकृष्णोद्रवतामिति ॥ ततोब्रह्मादयःसर्वेतुष्टुवुःपरमेश्वरम् ॥ ५९ ॥ स्वमूर्तिंदर्शयविभोवांछितंवरमेवनः ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रवाग्बभूवाऽशरीरिणी ॥ ६० ॥ तामेवशुश्रुवुःसर्वेसुव्यक्तांमधुरान्विताम् ॥ सर्वात्माऽहमियंशक्तिर्भक्तानुग्रहविग्रहा ॥ ६१ ॥ ममाऽप्यस्याश्चदेहेनकर्तव्यंचकिमावयोः ॥ मनवोमानवाःसर्वेमुनयश्चैववैष्णवाः ॥ ६२ ॥ मन्मंत्रपूतामांद्रष्टुमागमिष्यंतिमत्पदम् ॥ मूर्तिंद्रष्टुंचसुव्यक्तांयदीच्छथसुरेश्वराः ॥ ६३ ॥ करोतुशंभुस्तत्रैवंमदीयंवाक्यपालनम् ॥ स्वयंविधातस्त्वंब्रह्मन्नाज्ञांकुरुजगद्गुरुम् ॥ ६४ ॥ कर्तुंशास्त्रविशेषंचवेदांगंसुमनोहरम् ॥ अपूर्वमंत्रनिकरैःसर्वाभीष्टफलप्रदैः ॥ ६५ ॥ स्तोत्रैश्चनिकरैर्ध्यानैर्युतंपूजाविधिक्रमैः ॥ मन्मंत्रकवचस्तोत्रंकृत्वायत्नेनगोपनम् ॥ ६६ ॥ भवंतिविमुखायेनजनामांतत्करिष्यति ॥ सहस्रेषुशतेष्वेकोमन्मंत्रोपासकोभवेत् ॥ ६७ ॥ जनामन्मंत्रपूताश्चगमिष्यंतिचमत्पदम् ॥ अन्यथानभविष्यंतिसर्वेगोलोकवासिनः ॥ ६८ ॥ निष्फलंभवितासर्वंब्रह्मांडंचैवब्रह्मणः ॥ जनाःपंचप्रकाराश्चयुक्ताःस्रष्टुंभवेभवे ॥ ६९ ॥

हेविधातस्त्वंजगद्गुरुंशिवंप्रत्याज्ञांकुरु ॥ ६४ ॥ किंविषयामितिचेत्तत्राह । कर्तुमिति ॥ शास्त्रंसात्वतंतंत्रमित्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ भवंतीति ॥ येनगोपनेनजनाःपापिष्ठामयिविमुखाभविष्यंतितद्गोपनंकरिष्यतिकरोत्वित्यर्थः ॥ सर्वथागोपनेशास्त्रप्रणयनंव्यर्थमेवस्यादितिचेत्पुण्यवतांसाधूनामग्रेप्रकाशंकरोत्वित्यभिप्रायेणाह । सहस्रेष्विति ॥ ६७ ॥ अन्यथाममशास्त्राभावे ॥ ६८ ॥ ननुकेषांचिदग्रेप्रकाशनेऽपिपरंपरयासर्वत्रप्रकाशोभविष्यतिततश्चसर्वेऽपिगोलोकवासिनोभविष्यंतितदाब्रह्मांडंनिष्फलंप्राणिनामभावात्स्यादितिचेत्त्वंहेब्रह्मन्पंचप्रकारान्सात्विकादिभेदेननानाविधाञ्जनान्कुरु ॥ कर्मवशात्तदातेजनाःपापबाहुल्यात्प्रकाशमानमपितंत्रंनग्रहीष्यंति ततश्चनब्रह्मांडांतर्गतलोकानामभावेनब्रह्मांडंनिष्फलंस्यादित्यभिप्रायेणाह । निष्फलंचेति ॥ ६९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





हेब्रह्मन्निदंमच्छास्त्रंकर्तुंशिवोयदिप्रतिज्ञांकरिष्यतिततोमन्मूर्तिंदर्शनंस्यादित्याह । इदंकर्तुमिति ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२॥ स्वीकारमिति। गंगाजलंहस्तेगृहीत्वाशपथपुरःसरंप्रतिज्ञांकृतवानित्यर्थः ॥ प्रतिज्ञास्वरूपमाह। संयुक्तमिति ॥ विष्णुमायायाराधायामत्रौघैःसहितंशास्त्रंविष्णुमंत्रविषयंवेदसारंवेदाविरुद्धंकरिष्यामीत्यर्थः ॥७३॥ गंगाजलेनशपथंकृत्वातत्कार्याकरणेमहाननर्थइतिदर्शयितुंशिवेनगंगाजलंगृहीतमित्यभिप्रायेणाऽह। गंगातोयमिति ॥ ७४ ॥ हेब्रह्मन्हेनारदेतिनारायणोक्तिः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ मुक्तिदीपंमुक्तिप्रकाशकंसात्वतंतंत्रमित्यर्थः ॥ ॥ ७७ ॥ सएवश्रीकृष्णएवद्रवरूपागंगेत्युच्यतइत्यर्थः ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ इतिश्रीदेवीभा०तिलकेनवमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ षट्त्रिंशदधिकैःपद्यैःशतसंख्यैस्तुजाह्नवी ॥ नाराय

पृथिवीवासिनःकेचित्केचित्स्वर्गनिवासिनः ॥ इदंकर्तुंमहादेवःकरोतिदेवसंसदि ॥७०॥ प्रतिज्ञांसुदृढांसद्यस्ततोमूर्तिंचद्रक्ष्यति ॥ इत्येवमुक्त्वागगनेविरराममसनातनः ॥ ७१ ॥ तच्छ्रुत्वाजगतांधातातमुवाचशिवंमुदा ॥ ब्रह्मणोवचनंश्रुत्वाज्ञानेशोज्ञानिनांवरः ॥ ७२ ॥ गंगातोयंकरेकृत्वास्वीकारंचचकारसः ॥ संयुक्तंविष्णुमायायामंत्रौघैःशास्त्रमुत्तमम् ॥७३॥ वेदसारंकरिष्यामिप्रतिज्ञापालनायच ॥ गंगातोयमुपस्पृश्यमिथ्यायदिवदेज्जनः ॥ ७४ ॥ सयातिकालसूत्रंचयावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ इत्युक्तेशंकरेब्रह्मन्गोलोकेसुरसंसदि॥ ७५ ॥आविर्बभूवश्रीकृष्णोराधयासहितस्ततः ॥ तंसुदृष्ट्वाचसंहृष्टास्तुष्टुवुःपुरुषोत्तमम् ॥ ७६ ॥ परमानंदपूर्णाश्चचक्रुश्चपुनरुत्सवम् ॥ कालेनशंभुर्भगवान्मुक्तिदीपंचकारसः ॥ ७७ ॥ इत्येवंकथितंतत्वंसुगोप्यंचसुदुर्लभम् ॥ सएवद्रवरूपासागंगागोलोकसंभवा॥७८॥राधाकृष्णांगसंभूताभुक्तिमुक्तिफलप्रदा॥स्थानेस्थानेस्थापितासाकृष्णेनचपरात्मना॥७९॥ कृष्णस्वरूपापरमासर्वब्रह्मांडपूजिता ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥१२॥ ॥ नारदउवाच ॥ कलेःपंचसहस्राब्देसमतीतेसुरेश्वर ॥ क्वगतासामहाभागतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ नारायणउवाच ॥ भारतंभारतीशापात्समागत्येश्वरेच्छया ॥ जगामतत्रवैकुंठेशापांतेपुनरेवसा ॥ २ ॥ भारतीभारतंत्यक्त्वातज्जगामहरेःपदम् ॥ पद्मावतीचशापांतेगंगासाचैवनारद ॥ ३॥ गंगासरस्वतीलक्ष्मीश्चैतास्तिस्रःप्रियाहरेः ॥ तुलसीसहिताब्रह्मंश्चतस्रःकीर्तिताःश्रुतौ॥४॥नारदउवाच॥केनोपायेनसादेवीविष्णुपादाब्जसंभवा ॥ ब्रह्मकमंडलुस्थाचश्रुताशिवप्रियाचसा ॥५॥बभूवसामुनिश्रेष्ठगंगानारायणप्रिया ॥ अहोकेनप्रकारेणतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥६॥ श्रीनारायणउवाच ॥पुराबभूवगोलोकेसागंगाद्रवरूपिणी ॥ राधाकृष्णांगसंभूतातदंशातत्स्वरूपिणी ॥ ७ ॥

णप्रियाजाताविस्तरादेतदुच्यते ॥ १ ॥ कलेःपंचसहस्रांतेभुवंत्यक्त्वावैकुंठेगंगागामिष्यतीत्युक्तंतत्रगोलोकोद्भवागंगागोलोकंविहायकिमितिवैकुंठेगामिष्यतीत्यभिप्रायेणपृच्छति। नारदउवाच कलेरिति ॥ क्वगतेति ॥ वैकुंठेइतिपूर्वमुक्तमपितन्मोषणंकृत्वेयमुक्तिः ॥ १ ॥ २ ॥ पद्मावतीगंगाचोभेनद्यौवैकुंठेगतेइत्यर्थः ॥ ३ ॥ ननुगोलोकंविहायकिमितिवैकुंठंगताइतिचेद्वैकुंठवासिनोनारायणस्ययतएताश्चतस्रःस्त्रियोभवंतिततइत्याह । गंगेति ॥ ४ ॥ तत्रगंगाकथंविष्णुपदाब्जान्निर्गताकथंवानारायणस्त्रीजाताब्रह्मणाकथंकमंडलौस्थापिताशिवेनकथंमस्तकेधृतातत्सर्ववर्णयेत्याह । नारदउवाच केनोपायेनेति ॥ शिवप्रियाशिववधूःकथंजाता ॥ ५ ॥ ६ ॥ तदंशाराधाकृष्णांशा ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

द्रवोजलंतत्स्वामिनी ॥ ८ ॥ तप्तकांचनेति ॥ पूर्वंस्फटिकरूपत्वेनवर्णनंत्वतिशुद्धत्वाभिप्रायेण ॥ ९ ॥ सुपीनाकठिनाश्रोणिर्यस्याः ॥ सुनितंबयुगंवरंवस्त्रंयस्याः ॥ १० ॥ अथद्वितीयां तानांपदानांविभ्रतीत्यनेनाऽन्वयः ॥ वंक्रिमंवामम् ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ द्रवरूपिणीगंगा मूर्तिंधृत्वाकृष्णसान्निधौकामातुरास्थितेतिसमुदायार्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

द्रवाधिष्ठातृदेवीयारूपेणाऽप्रतिमाभुवि ॥ नवयौवनसंपन्नासर्वाभरणभूषिता ॥ ८ ॥ शरन्मध्याह्नपद्मास्यासस्मितासुमनोहरा ॥ तप्तकांचनवर्णाभाशरच्चंद्रसमप्रभा ॥ ९ ॥ स्निग्धप्रभाऽतिसुस्निग्धाशुद्धसत्त्वस्वरूपिणी ॥ सुपीनकठिनश्रोणिःसुनितंबयुगंवरा ॥ १० ॥ पीनोन्नतंसुकठिनंस्तनयुग्मंसुवर्तुलम् ॥ सुचारुनेत्रयुगलंसुकटाक्षंसुवंक्रिमम् ॥ ११ ॥ वंक्रिमंकबरीभारंमालतीमाल्यसंयुतम् ॥ सिंदूरबिंदुललितंसार्धंचंदनबिंदुभिः ॥ १२ ॥ कस्तूरीपत्रिकायुक्तंगंडयुग्मंमनोरमम् ॥ बंधूककुसुमाकारमधरोष्ठंचसुंदरम् ॥ १३ ॥ पक्वदाडिमबीजाभदंतपंक्तिसमुज्ज्वलम् ॥ वाससीवह्निशुद्धेचनीवीयुक्तेच बिभ्रती ॥ १४ ॥ सासकामाकृष्णपार्श्वेसमुवाससमुलज्जिता ॥ वाससामुखमाच्छाद्यलोचनाभ्यांविभोर्मुखम् ॥ १५ ॥ निमेषरहिताभ्यांचपिबंतीसततंमुदा ॥ प्रफुल्लवदनाहर्षान्नवसंगमलालसा ॥ १६ ॥ मूर्छिताप्रभुरूपेणपुलकांकितविग्रहा ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रविद्यमानाचराधिका ॥१७॥ गोपीत्रिंशत्कोटियुक्ताकोटिचंद्रसमप्रभा॥कोपेनारक्तपद्मास्यारक्तपंकजलोचना॥१८॥पीतचंपकवर्णाभागजेंद्रमंदगामिनी॥अमूल्यरत्ननिर्माणनानाभूषणभूषिता॥१९॥ अमूल्यरत्नखचितममूल्यंवह्निशौचकम् ॥ पीतवस्त्रस्ययुगलंनीवीयुक्तंचबिभ्रती ॥ २० ॥ स्थलपद्मप्रभामुष्टंकोमलंचसुरंजितम् ॥ कृष्णदत्तार्घ्यसंयुक्तंविन्यसंतीपदांबुजम् ॥ २१ ॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणविमानादवरुह्यसा ॥ सेव्यमानाचऋषिभिःश्वेतचामरवायुना ॥ २२ ॥ कस्तूरीबिंदुभिर्युक्तंचंदनेन समन्वितम् ॥ दीप्तदीपप्रभाकारंसिंदूरंबिंदुशोभितम् ॥ २३ ॥ दधतीभालमध्येचसीमंताधःस्थलोज्ज्वले ॥ पारिजातप्रसूनानांमालायुक्तंसुवंक्रिमम् ॥ ॥ २४ ॥ सुचारुकबरीभारंकंपयंतीसुकंपिता ॥ सुचारुरागसंयुक्तमोष्ठंकंपयतीरुषा ॥ २५ ॥ गत्वोवासकृष्णपार्श्वेरत्नसिंहासनेशुभे ॥ सखीनांचसमूहैश्चपरिपूर्णाविभोःप्रिया ॥ २६ ॥ तांदृष्ट्वाचसमुत्तस्थौकृष्णःसादरपूर्वकम् ॥ संभाष्यमधुरालापैःसस्मितश्चससंभ्रमः ॥ २७॥ प्रणेमुरतिसंत्रस्तागोपानभ्रात्मकंधराः ॥ तुष्टुवुस्तेचभक्त्याचतुष्टावपरमेश्वरः ॥ २८ ॥ उत्थायगंगासहसास्तुतिंबहुचकारसा ॥ कुशलंपरिपप्रच्छभीताऽतिविनयेनच ॥ २९ ॥ नम्रभागस्थितात्रस्ताशुष्ककंठोष्ठतालुका॥ध्यानेनशरणायत्ताश्रीकृष्णचरणांबुजे ॥३०॥ तांदृष्ट्वपद्मस्थितांकृष्णोभीतायैचाऽभयंददौ ॥ बभूवस्थिरचित्तासासर्वेश्वरवरेणच ॥ ३१ ॥ ऊर्ध्वंसिंहासनस्थांचराधांगंगाददर्शसा ॥ सुस्निग्धांसुखदृश्यांचज्वलंतींब्रह्मतेजसा ॥ ३२ ॥

गंगांपत्नीमवलोक्यराधाकोपिताजातेत्याह । कोपेनेति ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ नम्रभागोनीचस्थानम् ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





द्वादशवर्षवयोवतीकन्याचासावभिनवयौवनाचेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ महालक्ष्मींराधाम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ कृष्णेनपूर्वकृतानपराधाननुवदाति । दृष्टस्त्वमिति ॥ विरजानाम्नीकाचिद्गोपी ॥ ४६ ॥ देहंतत्याजेति ॥ राधात्रासादित्यर्थः ॥ ४७ ॥ कोटियोजनेति ॥ इयमुक्तिरतिशयदीर्घविस्तृतत्वे

असंख्यब्रह्मणःकर्त्रीमादिसृष्टेःसनातनीम् ॥ सदाद्वादशवर्षीयांकन्याभिनवयौवनाम् ॥ ३३ ॥ विश्ववृंदेनिरुपमांरूपेणचगुणेनच ॥ शांतांकांतामनंतांतामाद्यंतरहितांसतीम् ॥ ३४ ॥ शुभांसुभद्रांसुभगांस्वामिसौभाग्यसंयुताम् ॥ सौंदर्यसुंदरींश्रेष्ठांसर्वासुसुंदरीषुच ॥ ३५ ॥ कृष्णार्धांगांकृष्णसमांतेजसावयसात्विषा ॥ पूजितांचमहालक्ष्मींलक्ष्म्यालक्ष्मीश्वरेणच ॥ ३६ ॥ प्रच्छाद्यमानांप्रभयासभामीशस्यसुप्रभाम् ॥ सखीदत्तंचतांबूलंभुक्तवतींचदुर्लभम् ॥ ३७ ॥ अजन्यांसर्वजननींधन्यांमान्यांचमानिनीम् ॥ कृष्णप्राणाधिदेवींचप्राणप्रियतमांरमाम् ॥ ३८ ॥ दृष्ट्वाराकेश्वरींतृप्तिंनजगामसुरेश्वरी ॥ निमेषरहिताभ्यांचलोचनाभ्यांपपौचताम् ॥ ३९ ॥ एतस्मिन्नंतरेराधाजगदीशमुवाचसा ॥ वाचामधुरयाशांताविनीतासस्मितामुने ॥ ४० ॥ राधोवाच ॥ केयंप्राणेशकल्याणीसस्मितात्वन्मुखांबुजम् ॥ पश्यंतीसस्मितंपार्श्वेसकामावक्रलोचना ॥ ४१ ॥ मूर्च्छांप्राप्नोतिरूपेणपुलकांकितविग्रहा ॥ वस्त्रेणमुखमाच्छाद्यनिरीक्षंतीपुनःपुनः ॥ ४२ ॥ त्वंचाऽपितांसंनिरीक्ष्यसकामःसस्मितःसदा ॥ मयिजीवतिगोलोकेभूतादुर्वृत्तिरीदृशी ॥ ४३ ॥ त्वमेवचैवदुर्वृत्तंवारंवारंकरोपिच ॥ क्षमांकरोमिप्रेम्णाचस्त्रीजातिःस्निग्धमानसा ॥ ४४ ॥ संगृह्येमांप्रियामिष्टांगोलोकाद्गच्छलंपट ॥ अन्यथानहितेभद्रंभविष्यतिव्रजेश्वर ॥ ॥ ४५ ॥ दृष्टस्त्वंविरजायुक्तोमयाचंदनकानने ॥ क्षमाकृतामयापूर्वंसखीनांवचनादहो ॥ ४६ ॥ त्वयामच्छन्दमात्रेणतिरोधानंकृतंपुरा ॥ देहंतत्याजविरजानदीरूपावभूवसा ॥ ४७ ॥ कोटियोजनविस्तीर्णाततोदैर्घ्येचतुर्गुणा ॥ अद्याऽपिविद्यमानासातवसत्कीर्तिरूपिणी ॥ ४८ ॥ गृहंमयिगतायांचपुनर्गत्वातदंतिके ॥ उच्चैरुरोदविरजेविरजेचेतिसंस्मरन् ॥ ४९ ॥ तदातोयात्समुत्थायसायोगात्सिद्धयोगिनी ॥ सालंकारामूर्तिमतीददौतुभ्यंचदर्शनम् ॥ ५० ॥ ततस्तांचसमाक्षिप्यवीर्याधानंकृतंत्वया ॥ ततोबभूवुस्तस्यांचसमुद्राःसप्तएवच ॥ ५१ ॥ दृष्टस्त्वंशोभयागोप्यायुक्तश्चंपककानने ॥ सद्योमच्छन्दमात्रेणतिरोधानंकृतंत्वया ॥ ५२ ॥ शोभादेहंपरित्यज्यजगामचंद्रमंडले ॥ ततस्तस्याःशरीरंचस्निग्धंतेजोबभूवह ॥ ५३ ॥ संविभज्यत्वयादत्तंहृदयेनविदूयता ॥ रत्नायकिंचित्स्वर्णायकिंचिन्मणिवरायच ॥ ५४ ॥ किंचित्स्त्रीणांमुखाब्जेभ्यःकिंचिद्राज्ञेचकिंचन ॥ किंचित्किसलयेभ्यश्चपुष्पेभ्यश्चाऽपिकिंचन ॥ ५५ ॥ किंचित्फलेभ्यःपक्वेभ्यःसस्येभ्यश्चाऽपिकिंचन ॥ नृपदेवगृहेभ्यश्चसंस्कृतेभ्यश्चकिंचन ॥ ५६ ॥

एव ननुतावत्प्रमाणदीर्घविस्तृतत्वेतात्पर्यम् ॥ ४८ ॥ तदंतिकेविरजानदीसमीपेत्वंपुनर्गत्वेत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ समाक्षिप्यआकृष्यमिथुनीभूय ॥ सप्तसमुद्रास्तदधिष्ठातारःपुरुषाः ॥ ५१ ॥ द्वितीयमपराधमाह । दृष्टस्त्वमिति ॥ ५२ ॥ स्निग्धंशीतलंकोमलंवा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तृतीयमपराधमाह। दृष्टस्त्वमिति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ चतुर्थमपराधमाह। शांतीति ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥६७॥ मयिराधिकायाम् ॥६८॥६९॥
पंचममपराधमाह। मयापूर्वमिति ॥ ७० ॥ ७१ ॥ इतिपूर्वजातंसत्यंवानवेतिस्मर ॥ ७२ ॥ गृहीतंमयेतिशेषः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ स्वजलंपूर्वमुत्प

किंचिन्नूतनपत्रेभ्योऽ[illegible]भ्यश्चाऽपिकिंचन ॥ दृष्टस्त्वंप्रभयागोप्यायुक्तोवृंदावनेवने ॥ ५७॥ सद्योमच्छब्दमात्रेणतिरोधानंकृतंत्वया ॥ प्रभादेहंपरित्यज्य जगामसूर्यमंडले ॥५८॥ ततस्तस्याःशरीरंचतीव्रंतेजोबभूवह ॥ संविभज्यत्वयादत्तंप्रेम्णाप्ररुदतापुरा ॥ ५९ ॥ विसृष्टंचक्षुषोःकृष्णलज्जयामद्भयेनच ॥ हुताशनायकिंचिच्चयक्षेभ्यश्चाऽपिकिंचन ॥ ६० ॥ किंचित्पुरुषसिंहेभ्योदेवेभ्यश्चाऽपिकिंचन ॥ किंचिद्विष्णुजनेभ्यश्चनागेभ्योऽपिचकिंचन ॥६१॥ ब्राह्मणेभ्योमुनिभ्यश्चतपस्विभ्यश्चकिंचन ॥ स्त्रीभ्यःसौभाग्ययुक्ताभ्योयशस्विभ्यश्चकिंचन ॥६२॥ तत्तुदत्त्वाचसर्वेभ्यःपूर्वंप्ररुदितंत्वया ॥ शांतिगोप्यायुतस्त्वंचदृष्टोऽसिरासमंडले ॥ ६३ ॥वसंतेपुष्पशय्यायांमाल्यवांश्चंदनोक्षितः ॥ रत्नप्रदीपैर्युक्तेचरत्ननिर्माणमंदिरे ॥ ६४ ॥ रत्नभूषणभूषाढ्योरत्नभूषितया सह ॥ तयादत्तंचतांबूलंभुक्तवांश्चपुराविभो ॥६५॥ सद्योमच्छब्दमात्रेणतिरोधानंकृतंत्वया ॥ शांतिर्देहंपरित्यज्यभियालीनात्वयिप्रभो ॥ ६६ ॥ ततस्तस्याःशरीरंचगुणश्रेष्ठंबभूवह ॥ संविभज्यत्वयादत्तंप्रेम्णाप्ररुदतापुरा ॥ ६७॥ विश्वेतुविपिनेकिंचिद्ब्रह्मणेचमयिप्रभो ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपायैकिंचिल्लक्ष्म्यै पुराविभो ॥६८॥ त्वन्मंत्रोपासकेभ्यश्चशाक्तेभ्यश्चाऽपिकिंचन ॥ तपस्विभ्यश्चधर्मायधर्मिष्ठेभ्यश्चकिंचन ॥६९॥ मयापूर्वंचत्वंदृष्टोगोप्याचक्षमयासह॥ सुवेषयुक्तोमालावान्गंधचंदनचर्चितः ॥७० ॥ रत्नभूषितयागंधचंदनोक्षितयासह ॥ सुखेनमूर्छितस्तल्पेपुष्पचंदनचर्चिते ॥ ७१ ॥ श्लिष्टोनिद्रितयासद्यः सुखेननवसंगमात् ॥ मयाप्रबोधितासाचभवांश्चस्मरणंकुरु ॥ ७२ ॥ गृहीतंपीतवस्त्रंचमुरलीचमनोहरा ॥ वनमालाकौस्तुभश्चाऽप्यमूल्यंरत्नकुंडलम् ॥ ७३ ॥ पश्चात्प्रदत्तंप्रेम्णाचसखीनांवचनादहो ॥ लज्जयाकृष्णवर्णोभूद्भवान्पापेनयःप्रभो ॥ ७४ ॥ क्षमादेहंपरित्यज्यलज्जयापृथिवींगता ॥ ततस्तस्याःशरीरंचगुणश्रेष्ठंबभूवह ॥७५॥ संविभज्यत्वयादत्तंप्रेम्णाप्ररुदतापुनः ॥ किंचिद्दत्तंविष्णवेचवैष्णवेभ्यश्चकिंचन ॥ ७६ ॥ धार्मिकेभ्यश्चधर्मायदुर्बलेभ्यश्चकिंचन ॥ तपस्विभ्योऽपिदेवेभ्यःपंडितेभ्यश्चकिंचन ॥७७॥ एततेकथितंसर्वंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ त्वद्गुणंचैववहुशोनजानामिपरंप्रभो ॥७८॥ इत्येवमुक्त्वासाराधारक्तपंकजलोचना ॥ गंगांवक्तुंसमारेभेनम्रास्यांलज्जितांसतीम् ॥ ७९ ॥ गंगारहस्यंविज्ञाययोगेनसिद्धयोगिनी ॥ तिरोभूयसभामध्ये स्वजलंप्रविवेशसा ॥ ८० ॥ राधायोगेनविज्ञायसर्वत्राऽवस्थितांचताम् ॥ पानंकर्तुंसमारेभेगंडूषात्सिद्धयोगिनी ॥ ८१ ॥ गंगारहस्यंविज्ञाययोगेनसिद्धयोगिनी ॥ श्रीकृष्णचरणांभोजेविवेशशरणंययौ ॥ ८२ ॥ गोलोकेसाचवैकुंठेब्रह्मलोकादिकेतथा ॥ ददर्शराधासर्वत्रनैवगंगांददर्शसा ॥ ८३ ॥

न्नम् ॥ ८० ॥ ८१ ॥८२ ॥ ८३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





जलशून्यंचेति । गंगाजलस्यकृष्णेलीनत्वात् ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ किंसेव्यंसेवकंकिंवेति ॥ सर्वेषांतत्रत्यानांभगवत्समानरूपैश्वर्यवत्त्वात्दुर्ज्ञेयत्वमितिभावः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ कलत्रकंराधाकृष्णरूपेत्यर्थः ॥ एतेनप्रकृतिपुरुषयो

सर्वत्रजलशून्यंचशुष्कपंकंचगोलकम् ॥ जलजंतुसमूहैश्चमृतदेहैःसमन्वितम् ॥ ८४ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवानंतधर्मेंद्रेंदुदिवाकराः ॥ मनवोमुनयःसर्वेदेवासिद्धतपस्विनः ॥ ८५ ॥ गोलोकंचसमाजग्मुःशुष्ककंठोष्ठतालुकाः ॥ सर्वेप्रणेमुर्गोविंदंसर्वेशंप्रकृतेःपरम् ॥८६॥ वरंवरेण्यंवरदंवरिष्ठंवरकारणम् ॥ गोपिकागोपवृंदानांसर्वेषांप्रवरंप्रभुम् ॥ ८७ ॥ निरीहंचनिराकारंनिर्लिप्तंचनिराश्रयम् ॥ निर्गुणंचनिरुत्साहंनिर्विकारंनिरंजनम् ॥ ८८ ॥ स्वेच्छामयंचसाकारंभक्तानुग्रहकारकम्॥सत्वस्वरूपंसत्येशंसाक्षिरूपंसनातनम् ॥८९॥ परंपरेशंपरमंपरमात्मानमीश्वरम् ॥ प्रणम्यतुष्टुवुःसर्वेभक्तिनम्रात्मकंधराः ॥ ९० ॥ सगद्गदाःसाश्रुनेत्राःपुलकांकितविग्रहाः ॥ सर्वेसंस्तूयसर्वेशंभगवंतंपरात्परम् ॥ ९१ ॥ ज्योतिर्मयंपरंब्रह्मसर्वकारणकारणम् ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणचित्रसिंहासनस्थितम् ॥ ९२ ॥ सेव्यमानंचगोपालैःश्वेतचामरवायुना ॥ गोपालिकानृत्यगीतंपश्यंतंसस्मितंमुदा ॥ ९३ ॥ प्राणाधिकप्रियतमराधावक्षःस्थलस्थितम् ॥ तयाप्रदत्तंतांबूलंभुक्तवंतंसुवासितम् ॥ ९४ ॥ परिपूर्णतमंरासेददृशुश्चसुरेश्वरम् ॥ मुनयोमानवाःसिद्धास्तपसाचतपस्विनः ॥ ९५ ॥ प्रहृष्टमनसःसर्वेजग्मुःपरमविस्मयम् ॥ परस्परंसमालोक्यप्रोचुस्तेचचतुर्मुखम् ॥ ९६ ॥ निवेदितुंजगन्नाथंस्वाभिप्रायमभीप्सितम् ॥ ब्रह्मातद्वचनंश्रुत्वाविष्णुंकृत्वास्वदक्षिणे ॥ ९७ ॥ वामतोवामदेवंचजगामकृष्णसंनिधिम् ॥ परमानंदयुक्तंचपरमानंदरूपिणम् ॥ ९८ ॥ सर्वंकृष्णमयंधाताददर्शरासमंडले ॥ सर्वसमानवेषंचसमानासनसंस्थितम् ॥ ९९ ॥ द्विभुजंमुरलीहस्तंवनमालाविभूषितम् ॥ मयूरपिच्छचूडंचकौस्तुभेनविराजितम् ॥ १०० ॥ अतीवकमनीयंचसुंदरंशांतविग्रहम् ॥ गुणभूषणरूपेणतेजसावयसात्विषा ॥ १ ॥ परिपूर्णतमंसर्वंसर्वैश्वर्यसमन्वितम् ॥ किंसेव्यंसेवकंकिंवादृष्ट्वानिर्वक्तुमक्षमः ॥२॥ क्षणंतेजःस्वरूपंचरूपंतत्रस्थितंक्षणम् ॥ निराकारंचसाकारंददर्शद्विविधंक्षणम् ॥३॥ एकमेवक्षणंकृष्णंराधयारहितंपरम् ॥ प्रत्येकासनसंस्थंचतयासार्धंचतत्क्षणम् ॥ ४ ॥ राधारूपधरंकृष्णंकृष्णरूपंकलत्रकम् ॥ किंस्त्रीरूपंचपुरुषंविधाताध्यातुमक्षमः ॥५॥ हृत्पद्मस्थंचश्रीकृष्णंध्यात्वाध्यानेनचक्षुषा ॥ चकारस्तवनंभक्त्यापरिहारमनेकधा ॥ ६ ॥ ततःस्वचक्षुरुन्मील्यपुनश्चतदनुज्ञया ॥ ददर्शकृष्णमेकंचराधावक्षःस्थलस्थितम् ॥ ७ ॥ स्वपार्षदैःपरिवृतंगोपीमंडलमंडितम्॥पुनःप्रणेमुस्तंदृष्ट्वातुष्टुवुःपरमेश्वरम् ॥८॥ तदभिप्रायमाज्ञायतानुवाचरमेश्वरः ॥ सर्वात्मासचसर्वज्ञःसर्वेशःसर्वभावनः ॥ १०९ ॥

रत्यंताभेदःसूचितः ॥ ५ ॥ परिहारमपराधक्षमापनम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ १०९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ११० ॥ ११ ॥ राधाइमामितिच्छेदः ॥ यूयमिमांगंगांराधाप्रार्थनयानिर्भयांकुरुत ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ मुग्धयोर्मोहितयोः ॥ १५ ॥ १६ ॥ कलयाभूस्थायाइत्यन्वयः ॥१७ ॥ तदंबिकातस्यागंगायामातात्वमित्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ १२० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ यत्पृष्टंगंगाकृष्णशरीरान्निर्गतासापदांबुजात्कथंजाताब्रह्मकमंडलौकथंगताशिवशिरसिकथंगतानारायणप्रियाकथंजातेतितत्सर्वंविस्तरेणवर्णितंतदुपसंहरति । लक्ष्मीःसरस्वतीति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६॥२७॥ कल्पक्षयोऽधुनेति । खंडप्रलयःकेषांचिद्ब्रह्मांडानांजातइत्यर्थः ॥ २८ ॥ तदेवाऽऽह ॥ ब्रह्माद्याइति ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १३२ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ आगच्छकुशलंब्रह्मन्नागच्छकमलापते ॥ इहागच्छमहादेवशश्वत्कुशलमस्तुवः ॥ ११० ॥ आगताहिमहाभागागंगानयनकारणात् ॥ गंगाचचरणांभोजेभयेनशरणंगता॥११॥राधेमांपातुमिच्छंतीदृष्ट्वामत्सन्निधानतः॥ दास्यामीमांचभवतांयूयंकुरुतनिर्भयाम् ॥ १२ ॥ श्रीकृष्णस्यवचः श्रुत्वासस्मितःकमलोद्भवः ॥ तुष्टावराधामाराध्यांश्रीकृष्णपरिपूजिताम् ॥ १३ ॥ वक्त्रैश्चतुर्भिःसंस्तूयभक्तिनम्रात्मकंधरः ॥ धाताचतुर्णांवेदानामुवाचचतुराननः॥१४॥चतुराननउवाच ॥ गंगात्वदंगसंभूताप्रभोश्चरासमंडले ॥ युवयोर्द्रवरूपासामुग्धयोःशंकरस्वनात् ॥१५॥ कृष्णांशाचत्वदंशाचत्वत्कन्यासदृशीप्रिया ॥ त्वन्मंत्रग्रहणंकृत्वाकरोतुतवपूजनम् ॥ १६ ॥ भविष्यतिपतिस्तस्यावैकुंठेशश्चतुर्भुजः ॥ भूस्थायाःकलयातस्याःपतिर्लवणवारिधिः ॥ ॥ १७ ॥ गोलोकस्थाचयागंगासर्वत्रस्थातथांबिके ॥ तदंबिकात्वंदेवेशीसर्वदासात्वदात्मजा ॥ १८ ॥ ब्रह्मणोवचनंश्रुत्वास्वीचकारचसस्मिता ॥ बहिर्बभूवसाकृष्णपादांगुष्ठनखाग्रतः ॥ १९ ॥ तत्रैवसत्कृताशांतातस्थौतेषांचमध्यतः ॥ उवासतोयादुत्थायतदधिष्ठातृदेवता ॥ १२० ॥ ततोयंब्रह्मणाकिंचित्स्थापितंचकमंडलौ ॥ किंचिद्धारशिरसिचंद्रार्धकृतशेखरः ॥ २१ ॥ गंगायैराधिकामंत्रंप्रददौकमलोद्भवः ॥ तत्स्तोत्रंकवचंपूजांविधानंध्यानमेवच ॥ २२ ॥ सर्वंतत्सामवेदोक्तंपुरश्चर्याक्रमंतथा ॥ गंगातामेवसंपूज्यवैकुंठंप्रययौसह ॥ २३ ॥ लक्ष्मीःसरस्वतीगंगातुलसीविश्वपावनी ॥ एतानारायणस्यैवचतस्रोयोषितोमुने ॥ २४ ॥ अथतंसस्मितःकृष्णोब्रह्माणंसमुवाचसः ॥ सर्वकालस्यवृत्तांतंदुर्बोधमविपश्चिताम् ॥ २५ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ गृहाणगंगांहेब्रह्मन्हेविष्णोहेमहेश्वर ॥ शृणुकालस्यवृत्तांतंमत्तोब्रह्मन्निशामय ॥ २६ ॥ यूयंचयेऽन्येदेवाश्चमुनयोमनवस्तथा ॥ सिद्धायशस्विनश्चैवयेयेऽत्रैवसमागताः ॥ २७ ॥ एतेजीवंतिगोलोकेकालचक्रविवर्जिते ॥ जलप्लुतंसर्वविश्वंजातंकल्पक्षयोऽधुना ॥ २८ ॥ ब्रह्माद्यायेन्यविश्वस्थास्तेविलीनाऽधुनामयि ॥ वैकुंठंचविनासर्वंजलमग्नंचपद्मज ॥ २९ ॥ गत्वासृष्टिंकुरुपुनर्ब्रह्मलोकादिकंभवम् ॥ स्वंब्रह्मांडंविरचयपश्चाद्गंगाप्रयास्यति ॥ १३० ॥ एवमन्येषुविश्वेषुसृष्टौब्रह्मादिकंपुनः ॥ करोम्यहंपुनःसृष्टिंगच्छशीघ्रंसुरैःसह ॥ ३१ ॥ गतोबहुतरःकालोयुष्माकंचचतुर्मुखाः ॥ गताःकतिविधास्तेचभविष्यंतिचवेधसः ॥ १३२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ त्रयोविंशतिभिःपद्यैर्गंगाविष्णवोःपरस्परम् ॥ संबंधस्तुकृतःकेनेत्येतदत्राभिधीयते ॥ ॥ १ ॥ पूर्वोक्तमनूद्यनारदःपृच्छति । नारदउवाच लक्ष्मीःसरस्वतीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ राधाकृष्णांगयोःसंभूता ॥ ४ ॥ तदंगसंभवाकृष्णांगसंभवातंकृष्णंविनानान्यंपतिंवृणोतीत्यर्थः ॥५॥ तर्ह्यत्रकिमर्थमागतेतिचेच्छृणु । तत्रातीति ॥ इमांगंगांपातुंभक्षितुंसमुद्युक्तायदातदेयंभीतासतीकृष्णस्यचरणेविवेशगुप्तावभूव ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ रसिकेत्वयि ॥

इत्युक्त्वाराधिकानाथोजगामांतःपुरेमुने ॥ देवागत्वापुनःसृष्टिंचक्रुरेवप्रयत्नतः ॥३३॥ गोलोकेचस्थितागंगावैकुंठेशिवलोकके ॥ ब्रह्मलोकेस्थिताऽन्यत्र यत्रयत्रपुरःस्थिता ॥ ३४ ॥ तत्रैवसागतागंगाचाऽऽज्ञयापरमात्मनः ॥ निर्गताविष्णुपादाब्जात्तेनविष्णुपदीस्मृता ॥ ३५ ॥ इत्येवंकथितंब्रह्मन्गंगोपाख्यानमुत्तमम् ॥ सुखदंमोक्षदंसारंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेगंगोपाख्यानंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ ॥ १३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ लक्ष्मीःसरस्वतीगंगातुलसीविश्वपावनी॥एतानारायणस्यैवचतस्रश्चप्रियाइति॥१॥गंगाजगामवैकुंठमिदमेवश्रुतंमया॥ कथंसातस्यपत्नीचवभूवेतिचनश्रुतम् ॥ २ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ गंगाजगामवैकुंठंतत्पश्चाज्जगतांविधिः ॥ गत्वोवाचतयासार्धंप्रणम्यजगदीश्वरम् ॥ ॥ ३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ राधाकृष्णांगसंभूतायादेवीद्रवरूपिणी ॥ नवयौवनसंपन्नासुशीलासुंदरीवरा ॥ ४ ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपाचक्रोधाहंकारवर्जिता ॥ तदंगसंभवानाऽन्यंवृणोतीयंचतंविना ॥ ५ ॥ तत्राऽतिमानिनीराधासाचतेजस्विनीवरा ॥ समुद्युक्तापातुमिमांभीतेयंबुद्धिपूर्वकम्॥६॥विवेशचरणांभोजे कृष्णस्यपरमात्मनः ॥ सर्वत्रगोलकंशुष्कंदृष्ट्वाऽहमगमंतदा ॥ ७ ॥ गोलोकेयत्रकृष्णश्चसर्ववृत्तांतप्राप्तये ॥ सर्वांतरात्मासर्वेषांज्ञात्वाऽभिप्रायमेवच ॥ ॥ ८ ॥ बहिश्चकारगंगाचपादांगुष्ठनखाग्रतः ॥ दत्त्वाऽस्यैराधिकामंत्रंपूरयित्वाचगोलकान् ॥९॥ प्रणम्यतांचराधेशंगृहीत्वाऽत्राऽगमंप्रभो ॥ गांधर्वेणविवाहेनगृहाणेमांसुरेश्वरीम् ॥ १० ॥ सुरेश्वरेषुरसिकेरसिकेयंसमागता ॥ त्वंरत्नंपुंसुदेवेशस्त्रीरत्नंस्त्रीष्वियंसती ॥ ११ ॥ विदग्धायाविदग्धेनसंगमोगुणवान्भवेत् ॥ उपस्थितांस्वयंकन्यांनगृह्णातीहयःपुमान् ॥ १२ ॥ तंविहायमहालक्ष्मीरुष्टायातिनसंशयः ॥ योभवेत्पंडितःसोऽपिप्रकृतिंनावमन्यते ॥ ॥ १३ ॥ सर्वेप्राकृतिकाःपुंसःकामिन्यःप्रकृतेःकलाः ॥ त्वमेवभगवान्नाथोनिर्गुणःप्रकृतेःपरः ॥ १४ ॥ अर्धांगंद्विभुजःकृष्णोयोऽर्धांगेनचतुर्भुजः ॥ कृष्णवामांगसंभूतावभूवराधिकापुरा ॥ १५ ॥ दक्षिणांशःस्वयंसाचवामांशःकमलातथा ॥ तेनेयंत्वांवृणोत्येवयतस्त्वद्देहसंभवा ॥१६॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ प्राकृतिकामूलप्रकृतेरुद्भूताःकामिन्योपिप्रकृतेःकलाःमूलप्रकृतेरेवोद्भूताःअतःपरस्परमेकत्वादवमानोनकर्तव्यइत्यर्थः ॥ तदुक्तंपुराणांतरे ॥ स्त्रियस्तुष्टाःस्त्रियोरुष्टास्तुष्टारुष्टाश्चदेवताः ॥ वर्धयंतिकुलंतुष्टानाशयंत्यपमानिताइति ॥ ननुकृष्णासक्तेयंकथंमांवरितुमागतेतिचेद्युवयोः कृष्णनारायणयोः पूर्वोक्तोत्पत्त्यनुसारेणैकत्वादित्याह । त्वमेवेति ॥ ॥ १४ ॥ १५ ॥ साचराधिकादक्षिणांशः ॥ वामांशःकमला ॥ येनकारणेनैवंरीत्योभयोःकृष्णनारायणयोरभेदस्तेनकारणेनेत्यर्थः ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यथामूलप्रकृतियुक्तःपुरुषःपरमात्माएकस्तथास्त्रीपुंसोरेकांगमेवभवतीत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ उपसंहरति । गंगेति ॥ एवंप्रकारेणपृथ्वींगता पुनःस्वस्थांनवैकुंठंगता ॥ १९ ॥ २० ॥ वर्जितानिवारिताऽपितांगंगांवाणीसरस्वतीनित्यमीर्ष्यतिद्वेष्टि ॥ गंगातुनचसरस्वतींद्वेष्टि सर्वोऽयंपूर्वोक्तकथोपसंहारः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ अर्धाधिकैकपंचाशत्पद्यैरथतुनारदः ॥ ज्ञातुंतुलस्युपाख्यानंपप्रच्छेतिचवर्ण्यते ॥ १ ॥ तुलस्युपाख्यानंपृच्छति । नारदउवाच नारायणप्रियेति ॥ १ ॥ प्रकृतेःपरंवि

एकांगंचैवस्त्रीपुंसोर्यथाप्रकृतिपूरुषौ ॥ इत्येवमुक्त्वाधातातांतंसमर्प्यजगामसः ॥ १७ ॥ गांधर्वेणविवाहेनतांजग्राहहरिःस्वयम् ॥ नारायणःकरंधृत्वा पुष्पचंदनचर्चितम् ॥ १८ ॥ रेमेरमापतिस्तत्रगंगयासहितोमुदा ॥ गंगापृथ्वींगतायासास्वस्थानंपुनरागता ॥ १९ ॥ निर्गताविष्णुपादाब्जात्तेनविष्णुपदीतिच ॥ मूर्च्छांसंप्रापसादेवीनवसंगमलीलया ॥ २० ॥ रसिकासुखसंभोगाद्रसिकेश्वरसंयुता ॥ तांदृष्ट्वादुःखितावाणीपद्मयावर्जिताऽपिच ॥ २१ ॥ नित्यमीर्ष्यतितांवाणीनचगंगासरस्वतीम् ॥ गंगाशशापकोपेनभारतेचहरिप्रिया ॥२२॥ गंगयासहतस्यैवतिस्रोभार्यारमापतेः ॥ सार्धंतुलस्यापश्चाच्चच तस्रश्चाऽभवन्मुने ॥ २३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ नारायणप्रियासाध्वीकथंसाचबभूवह ॥ तुलसीकुत्रसंभूताकावासापूर्वजन्मनि ॥ १ ॥ कस्यवासाकुलेजाताकस्यकन्याकुलेसती ॥ केनवातपसासाचसंप्राप्ताप्रकृतेःपरम् ॥ २ ॥ निर्विकारंनिरीहंचसर्वविश्वस्वरूपकम् ॥ नारायणंपरंब्रह्मपरमेश्वरमीश्वरम् ॥ ३ ॥ सर्वाराध्यंचसर्वेशंसर्वज्ञंसर्वकारणम् ॥ सर्वाधारंसर्वरूपंसर्वेषांपरिपालकम् ॥ ॥ ४ ॥ कथमेतादृशीदेवीवृक्षत्वंसमवापह ॥ कथंसाऽप्यसुरग्रस्तासंबभूवतपस्विनी ॥ ५ ॥ सुस्निग्धंमेमनोलोलंप्रेरयन्मांमुहुर्मुहुः ॥ छेत्तुमर्हसिसंदेहंसर्वसंदेहभंजन ॥ ६ ॥ नारायणउवाच ॥ मनुश्चदक्षसावर्णिःपुण्यवान्वैष्णवःशुचिः ॥ यशस्वीकीर्तिमांश्चैवविष्णोरंशसमुद्भवः ॥ ७ ॥ तत्पुत्रोब्रह्मसावर्णिर्धर्मिष्ठोवैष्णवःशुचिः ॥ तत्पुत्रोधर्मसावर्णिर्वैष्णवश्चजितेंद्रियः ॥ ८ ॥ तत्पुत्रोरुद्रसावर्णिर्भक्तिमान्विजितेंद्रियः ॥ तत्पुत्रोदेवसावर्णिर्विष्णुव्रतपरायणः ॥ ९ ॥ तत्पुत्रइंद्रसावर्णिर्महाविष्णुपरायणः ॥ वृषध्वजश्चतत्पुत्रोवृषध्वजपरायणः ॥ १० ॥ यस्याऽश्रमेस्वयंशंभुरासीद्देवयुगत्रयम् ॥ पुत्रादपिपरःस्नेहोनृपेतस्मिञ्छिवस्यच॥ ११ ॥ नचनारायणंमेनेनलक्ष्मींनसरस्वतीम् ॥ पूजांचसर्वदेवानांदूरीभूतांचकारसः ॥ १२ ॥ भाद्रेमासिमहालक्ष्मीपूजांमत्तोबभंजह॥तथामाघीयपंचम्यांविस्तृतांसर्वदैवतैः॥१३॥पापःसरस्वतीपूजांदूरीभूतांचकारसः॥यज्ञंचविष्णुपूजांचनिंदंतंतंदिवाकरः ॥१४॥

ष्णुंकेनतपसाप्राप्तेत्यन्वयः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ एतादृशीमहाविष्णुप्रियासत्यपीत्यर्थः ॥ असुरग्रस्तारावणेनपीडितेत्यर्थः ॥ ५ ॥ प्रेरयन्मांकथाश्रवणेप्रवर्तयत्सात्तिष्ठतीत्यर्थः ॥ अतश्छेत्तुमर्हसिसंदेहमित्याह । छेत्तुमिति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ वृषध्वजपरायणःशिवभक्तः ॥ १० ॥ देवानांयुगत्रयम् ॥ ११ ॥ १२ ॥ बभंजह नकृतवान् ॥ १३ ॥ सरस्वतीपूजांमाघपचम्याम् ॥ यज्ञमग्निहोत्रादिकम् ॥ निंदंतंसर्वदेवान्निंदंतंवृषध्वजंराजानंदिवाकरश्चुकोपेत्यन्वयः ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





शिवकारणात्सर्वव्यापकस्यसर्वदेवतामयस्यशिवस्यपरिच्छेदंकृत्वाद्वैतभावेनपूजनादित्यर्थः ॥ एतेनैकंदेवंपरिच्छिन्नतयाज्ञात्वातमेवसंपूज्याऽन्यदेवतापूजनत्यागेमहाननर्थोभवति ॥ किंतु स्वेष्टदेवंसर्वात्मकत्वेनज्ञात्वासर्वदेवतास्वरूपस्वेष्टदेवमभेदबुद्ध्यावेदोक्तानुष्ठानप्रकारेणतत्तत्कालेतत्तद्देवतारूपेणपूजयेदित्युक्तंभवतीतिबोध्यम् ॥ १५ ॥ अथावच्छंकरइति ॥ इमामेववेदोक्तांमर्यादांस्थापयितुमेतादृशभक्तस्यस्वेष्टदेवतयाऽपिकल्याणंकर्तुंनशक्यतइतिबोधनार्थंसूर्येणममाऽभिलषितंकृतमितिजानन्नपिसर्वज्ञःशिवोऽभिनिवेशेनसूर्यंप्रत्यधावत्गतवानितिभावः ॥

चुकोपदेवोभूपेंद्रंशशापशिवकारणात् ॥ भ्रष्टश्रीस्त्वंचभवेतितंशशापदिवाकरः ॥ १५ ॥ शूलंगृहीत्वातंसूर्यमधावच्छंकरःस्वयम् ॥ पित्रासार्धंदिनेशश्चब्रह्माणंशरणंययौ ॥ १६ ॥ शिवस्त्रिशूलहस्तश्चब्रह्मलोकंययौक्रुधा ॥ ब्रह्मासूर्यपुरस्कृत्यवैकुंठंचययौभिया ॥ १७ ॥ ब्रह्मकश्यपमार्तंडाःसंत्रस्ताःशुष्कतालुकाः ॥ नारायणंचसर्वेशंतेययुःशरणंभिया ॥ १८ ॥ मूर्ध्नाप्रणेमुस्तेगत्वातुष्टुवुश्चपुनःपुनः ॥ सर्वंनिवेदनंचक्रुर्भयस्यकारणंहरौ ॥ १९ ॥ नारायणश्चकृपयातेभ्यश्चह्यभयंददौ ॥ स्थिराभवतहेभीताभयंकिंचमयिस्थिते ॥ २० ॥ स्मरंतियेयत्रतत्रमांविपत्तौभयान्विताः ॥ तांस्तत्रगत्वारक्षामिचक्रहस्तस्त्वरान्वितः ॥ २१ ॥ पाताऽहंजगतांदेवाःकर्ताचसततंसदा ॥ स्रष्टाचब्रह्मरूपेणसंहर्ताशिवरूपतः ॥ २२ ॥ शिवोऽहंत्वमहंचाऽपिसूर्योऽहंत्रिगुणात्मकः ॥ विधायनानारूपंचकरोमिसृष्टिपालनम् ॥ २३ ॥ यूयंगच्छतभद्रंवोभविष्यतिभयंकुतः ॥ अद्यप्रभृतिमद्वरेणभयंवोनास्तिशंकरात् ॥ २४ ॥ सर्वेशोवैसभगवाञ्छंकरश्चसतांपतिः ॥ भक्ताधीनश्चभक्तानांभक्तात्माभक्तवत्सलः ॥ २५ ॥ सुदर्शनःशिवश्चैवममप्राणाधिकःप्रियः ॥ ब्रह्मांडेषुनतेजस्वीहेब्रह्मन्ननयोःपरः ॥ २६ ॥ शक्तःस्रष्टुंमहादेवःसूर्यकोटिंचलीलया ॥ कोटिंचब्रह्मणामेवंनाऽसाध्यंशूलिनःप्रभोः ॥ २७ ॥ बाह्यज्ञानंनैवकिंचिद्ध्यायतेमांदिवानिशम् ॥ मन्मंत्रान्मद्गुणान्भक्त्यापंचवक्त्रेणगायति ॥ २८ ॥ अहमेवंचिंतयामितत्कल्याणंदिवानिशम् ॥ यथाचमांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ २९ ॥ शिवस्वरूपोभगवाञ्छिवाधिष्ठातृदेवता ॥ शिवंभवतितस्माच्चशिवंतेनविदुर्बुधाः ॥ ३० ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रजगामशंकरःस्थितः ॥ शूलहस्तोवृषारूढोरक्तपंकजलोचनः ॥ ३१ ॥ अवरुह्यवृषाच्चूर्णभक्तिनम्रात्मकंधरः ॥ ननामभक्त्यातंशांतंलक्ष्मीकांतंपरात्परम् ॥ ३२ ॥ रत्नसिंहासनस्थंचरत्नालंकारभूषितम् ॥ किरीटिनंकुंडलिनंचक्रिणंवनमालिनम् ॥ ३३ ॥ नवीननीरदश्यामंसुंदरंचचतुर्भुजम् ॥ चतुर्भुजैःसेवितंचश्वेतचामरवायुना ॥ ३४ ॥ चंदनोक्षितसर्वांगंभूषितंपीतवाससम् ॥ लक्ष्मीप्रदत्ततांबूलंभुक्तवंतंचनारद ॥ ३५ ॥ विद्याधरीनृत्यगीतंपश्यंतंसस्मितंसदा ॥ ईश्वरंपरमात्मानंभक्तानुग्रहविग्रहम् ॥ ३६ ॥

पित्राकश्यपेन ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ मयिस्थितेकिंभयंनकिमपीत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ त्वंब्रह्माऽप्यहमेव ॥ २३ ॥ २४ ॥ विष्णुःशंकरस्यपूर्वोक्ताभिप्रायंमनसिज्ञात्वासम्यक्शंकरेणकृतमित्यभिप्रायेणशंकरंस्तौति । सर्वेशइति ॥ २५ ॥ सुदर्शनःसूर्यः ॥ २६ ॥ २७ ॥ बाह्यज्ञानंतस्यनकिंचिदप्यस्ति किंतुनिरंतरंमामेवध्यायतीत्यर्थः ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ शिवस्यमोक्षस्याऽधिष्ठाता ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ कमलातपसालक्ष्म्युद्देश्यकतपस्ययायुक्तौ ॥ कलयांशेनलक्ष्मीर्भविष्यति अवतरिष्यति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुअर्धश्लोकेनचाऽधिकैः ॥ महालक्ष्म्याराजगृहेजन्मसम्यगथोच्यते

तंननाममहादेवोब्रह्मणानमितश्चसः ॥ ननामसूर्योभक्त्याचसंत्रस्तश्चंद्रशेखरम् ॥ ३७ ॥ कश्यपश्चमहाभक्त्यातुष्टावचननामच ॥ शिवःसंस्तूयसर्वेशंसमुवाससुखासने ॥ ३८ ॥ सुखासनेसुखासीनंविश्रांतंचंद्रशेखरम् ॥ श्वेतचामरवातेनसेवितंविष्णुपार्षदैः ॥ ३९ ॥ पीयूषतुल्यंमधुरंवचनंसुमनोहरम् ॥ विष्णुरुवाच ॥ आगतोऽसिकथंचाऽत्रवदकोपस्यकारणम् ॥ ४० ॥ महादेवउवाच ॥ वृषध्वजंचमद्भक्तंममप्राणाधिकंप्रियम् ॥ सूर्यःशशापइतिमेप्रकोपस्यतुकारणम् ॥ ४१ ॥ पुत्रवत्सलशोकेनसूर्यंहंतुंसमुद्यतः ॥ सब्रह्माणंप्रपन्नश्चसूर्यश्चसविधिस्त्वयि ॥ ४२ ॥ त्वयियेशरणापन्नाध्यानेनवचसाऽपिवा ॥ निरापदोविशंकास्तेजरामृत्युश्चतैर्जितः ॥ ४३ ॥ प्रत्यक्षंशरणापन्नास्तत्फलंकिंवदामिभोः ॥ हरिस्मृतिश्चाऽभयदासर्वमंगलदासदा ॥ ४४ ॥ किंमेभक्तस्यभवितातन्मेब्रूहिजगत्प्रभो ॥ श्रीहतस्याऽस्यमूढस्यसूर्यशापेनहेतुना ॥ ४५ ॥ विष्णुरुवाच ॥ कालोऽतियातोदैवेनयुगानामेकविंशतिः ॥ वैकुंठेवटिकार्धेनशीघ्रंगच्छत्वमालयम् ॥ ४६ ॥ वृषध्वजोमृतःकालाद्दुर्निवार्यात्सुदारुणात् ॥ रथध्वजश्चतत्पुत्रोमृतःसोऽपिश्रियाहतः ॥४७॥ तत्पुत्रौचमहाभागौधर्मध्वजकुशध्वजौ ॥ हृतश्रियौसूर्यशापात्स्मृतौपरमवैष्णवौ ॥ ४८ ॥ राज्यभ्रष्टौश्रियाभ्रष्टौकमलातपसारतौ ॥ तयोश्चभार्ययोर्लक्ष्मीःकलयाचभविष्यति ॥ ४९ ॥ संपद्युक्तौतदातौचनृपश्रेष्ठौभविष्यतः ॥ मृतस्तेसेवकःशंभोगच्छयूयंचगच्छत ॥ ५० ॥ इत्युक्त्वाचसलक्ष्मीकःसभातोऽभ्यंतरंगतः ॥ देवाजग्मुःसंप्रहृष्टाःस्वाश्रमंपरमंमुदा ॥५१॥ शिवश्चतपसेशीघ्रंपरिपूर्णतमोययौ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेनारायणनारदसंवादेशक्तिप्रादुर्भावेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ लक्ष्मींतौचसमाराध्यचोग्रेणतपसामुने ॥ वरमिष्टंचप्रत्येकंसंप्रापतुरभीप्सितम् ॥ १ ॥ महालक्ष्मीवरेणैवतौपृथ्वीशौबभूवतुः ॥ पुण्यवंतौपुत्रवंतौधर्मध्वजकुशध्वजौ ॥ २ ॥ कुशध्वजस्यपत्नीचदेवीमालावतीसती ॥ सासुषावचकालेनकमलांशांसुतांसतीम् ॥ ३ ॥ साचभूयिष्ठकालेनज्ञानयुक्ताबभूवह ॥ कृत्वावेदध्वनिंस्पष्टमुत्तस्थौसूतिकागृहात् ॥ ४ ॥ वेदध्वनिंसाचकारजातमात्रेणकन्यका ॥ तस्मात्तांचवेदवतींप्रवदंतिमनीषिणः ॥ ५ ॥ जातमात्रेणसुस्नाताजगामतपसेवनम् ॥ सर्वैर्निषिद्धायत्नेननारायणपरायणा ॥ ६ ॥ एकमन्वंतरंचैवपुष्करेचतपस्विनी ॥ अत्युग्रांचतपस्यांचलीलयाहिचकारसा ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ नारायणस्तदुत्तरंजातंवृत्तांतमाह। लक्ष्मींतौचेति ॥ १ ॥ २ ॥ कमलांशांलक्ष्म्यंशांभूयिष्ठकालेनबहुकालेनसुतांकन्यांसासुषावेत्यन्वयः ॥ ३ ॥ साचजन्मनैवज्ञानयुक्तालक्ष्म्यंशत्वाद्बभूवह ॥ ४ ॥ ५ ॥ जातमात्रेणजन्ममात्रेण ॥ ६ ॥ ७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सुवाचंदेववाचम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ शृंगारंमैथुनम् ॥ १५ ॥ १६ ॥ तस्यरावणस्यस्तवनंसुकृतंपरलोकप्रदानेनसफलंचकारेत्यर्थः ॥ नहिपराशक्तेः स्तवनंव्यर्थंभविष्यतीति ॥ १७ ॥ इदंममवाचोबलंसामर्थ्यंविलोकय ॥ १८ ॥ देहत्यागामिति ॥ परपुरुषेणस्पृष्टदेहस्यदुष्टत्वात्तत्त्यागएवोचितइतिसतीधर्ममर्यादाबोधिता ॥ १९ ॥

तथाऽपिपुष्टानक्लिष्टानवयौवनसंयुता ॥ शुश्रावसाचसहसासुवाचमशरीरिणीम् ॥ ८ ॥ जन्मांतरेचतेभर्ताभविष्यतिहरिःस्वयम् ॥ ब्रह्मादिभिर्दुराराध्यं पतिंलप्स्यासिसुंदरि ॥ ९ ॥ इतिश्रुत्वाचसाहृष्टाचकारहपुनस्तपः ॥ अतीवनिर्जनस्थानेपर्वतेगंधमादने ॥ १० ॥ तत्रैवसुचिरंतप्त्वाविश्वस्यसमुवाससा॥ ददर्शपुरतस्तत्रराव णंदुर्निवारणम् ॥ ११ ॥ दृष्ट्वासाऽतिथिभक्त्याचपाद्यंतस्मैददौकिल ॥ सुस्वादभूतंचफलंजलंचाऽपिसुशीतलम् ॥१२॥ तच्चभुक्त्वा सपापिष्टश्चोवासतत्समीपतः ॥ चकारप्रश्नमितितांकात्वंकल्याणिवर्तसे ॥ १३ ॥ तांदृष्ट्वासवरारोहांपीनश्रोणिपयोधराम् ॥ शरत्पद्मोत्सवास्यांचसस्मि तांसुदतींसतीम् ॥ १४ ॥ मूर्छामवापकृपणःकामवाणप्रपीडितः ॥ सकरेणसमाकृष्यशृंगारंकर्तुमुद्यतः ॥ १५ ॥ सतीचुकोपदृष्ट्वातंस्तंभितंचचकार ह ॥ सजडोहस्तपादैश्चकिंचिद्वक्तुंनचक्षमः ॥ १६ ॥ तुष्टावमनसादेवींप्रययौपद्मलोचनाम् ॥ सातुष्टातस्यस्तवनंसुकृतंचचकारह ॥ १७ ॥ सा शशापमदर्थेत्वंविनंक्ष्यसिसबांधवः ॥ स्पृष्टाऽहंचत्वयाकामाद्बलंचाऽप्यवलोकय ॥ १८ ॥ इत्युक्त्वासाचयोगेनदेहत्यागंचकारसा ॥ गंगायांतांचसंन्य स्यस्वगृहंरावणोययौ ॥ १९ ॥ अहोकिमद्भुतंदृष्टंकिंकृतंवानयाऽधुना ॥ इतिसंचिंत्यसंचिंत्यविललापपुनःपुनः ॥ २० ॥ साचकालांतरेसाध्वीबभूव जनकात्मजा ॥ सीतादेवीतिविख्यातायदर्थेरावणोहतः ॥ २१ ॥ महातपस्विनीसाचतपसापूर्वजन्मतः ॥ लेभेरामंचभर्तारंपरिपूर्णतमंहरिम् ॥ २२ ॥ संप्रापतपसाराध्यंदुराराध्यंजगत्पतिम् ॥ सारमासुचिरंरेमेरामेणसहसुंदरी ॥ २३ ॥ जातिस्मरानस्मरतितपसश्चक्लमंपुरा ॥ सुखेनतज्जहौसर्वंदुःखंचाऽ पिसुखंफले ॥ २४ ॥ नानाप्रकारविभवंचकारसुचिरंसती ॥ संप्राप्यसुकुमारंतमतीवनवयौवना ॥ २५ ॥ गुणिनंरसिकंशांतंकांतंदेवमनुत्तमम् ॥ स्त्री णांमनोज्ञंरुचिरंतथालेभेयथेप्सितम् ॥ २६ ॥ पितुःसत्यपालनार्थंसत्यसंधोरघूद्वहः ॥ जगामकाननंपश्चात्कालेनचबलीयसा ॥ २७ ॥ तस्थौसमुद्रनि कटेसीतयालक्ष्मणेनच ॥ ददर्शतत्रवह्निंचविप्ररूपधरंहरिः ॥२८॥ रामंचदुःखितंदृष्ट्वासचदुःखीबभूवह ॥ उवाचकिंचित्सत्येष्टंसत्यंसत्यपरायणः॥२९॥ द्विजउवाच ॥ भगवञ्छ्रूयतांरामकालोऽयंयदुपस्थितः ॥ सीताहरणकालोऽयंतवैवसमुपस्थितः ॥ ३० ॥ दैवंचदुर्निवार्यंचनचदैवात्परोबली ॥ जगत्प्र सूंमयिन्यस्यछायांरक्षांतिकेऽधुना ॥ ३१ ॥

विललापरावणः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ तपसःक्लमंखेदम् ॥ दुःखंचाऽपिसुखंफलेइति ॥ परिणामेउत्तमफलेसति दुःखमपिसुखमेवभवतीत्यर्थः ॥ २४ ॥ तंरामम् ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ जगत्प्रसूंसीताम् ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

विप्रोनाऽहं किंतुहुताशनः ॥ ३२ ॥ लक्ष्मणंप्रतितमर्थंनप्रकाश्यनप्रकटीकृत्य ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ इदंगोप्यंवस्तुकस्मैचिद्वक्तुंनिषिध्यसीतांगृहीत्वासोऽग्निर्ययौ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ पूर्वद्वारपालयोःकिंकरआसीत्सकारणवशाद्राक्षसोऽभूत्सपुनरपिरामबाणेनहतोवैकुंठेद्वारपालयोःसमीपेजगामेत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

दास्यामिसीतांतुभ्यंचपरीक्षासमयेपुनः ॥ देवैःप्रस्थापितोऽहंचनचविप्रोहुताशनः ॥ ३२ ॥ रामस्तद्वचनंश्रुत्वानप्रकाश्यचलक्ष्मणम् ॥ स्वीकारंवचसश्चक्रेहृदयेनविदूयता ॥ ३३ ॥ वह्निर्योगेनसीतायामायासीतांचकारह ॥ तत्तुल्यगुणसर्वांगांददौरामायनारद ॥ ३४ ॥ सीतांगृहीत्वासययौगोप्यंवक्तुंनिषिध्यच ॥ लक्ष्मणोनैवबुबुधेगोप्यमन्यस्यकाकथा ॥ ३५ ॥ .एतस्मिन्नंतरेरामोददर्शकानकंमृगम् ॥ सीतातंप्रेरयामासतदर्थंयत्नपूर्वकम् ॥ ३६ ॥ संन्यस्यलक्ष्मणंरामोजानक्यारक्षणेवने ॥ स्वयंजगामतूर्णंतंविव्याधसायकेनच ॥ ३७ ॥ लक्ष्मणेतिचशब्दंसकृत्वाचमाययामृगः ॥ प्राणांस्तत्याजसहसापुरोदृष्ट्वाहरिंस्मरन् ॥ ३८ ॥ मृगदेहंपरित्यज्यादिव्यरूपंविधायच ॥ रत्ननिर्माणयानेनवैकुंठंसजगामह ॥ ३९ ॥ वैकुंठलोकद्वार्यासीत्किंकरोद्वारपालयोः ॥ पुनर्जगामतद्वारमादेशाद्वारपालयोः ॥ ४० ॥ अथशब्दंचसाश्रुत्वालक्ष्मणेतिचविक्लवम् ॥ तांहिसाप्रेरयामासलक्ष्मणंरामसन्निधौ ॥ ४१ ॥ गतेचलक्ष्मणेरामंरावणोदुर्निवारणः ॥ सीतांगृहीत्वाप्रययौलंकामेवस्वलीलया ॥ ४२ ॥ विषसादचरामश्चवनंदृष्ट्वाचलक्ष्मणम् ॥ तूर्णंचस्वाश्रमंगत्वासीतांनैवददर्शसः ॥ ४३ ॥ मूर्च्छांसंप्रापसुचिरंविललापभृशंपुनः ॥ पुनःपुनश्चबभ्रामतदन्वेषणपूर्वकम् ॥ ४४ ॥ कालेनप्राप्यतद्वार्तांगोदावरीनदीतटे ॥ सहायान्वानरान्कृत्वाबबंधसागरंहरिः ॥ ४५ ॥ लंकांगत्वारघुश्रेष्ठोजघानसायकेनच ॥ कालेनप्राप्यतंहत्वारावणंबांधवैःसह ॥ ४६ ॥ तांचवह्निपरीक्षांचकारयामाससत्वरम् ॥ हुताशस्तत्रकालेतुवास्तवींजानकींददौ ॥ ४७ ॥ उवाचछायावह्निंचरामंचविनयान्विता॥ करिष्यामीतिकिमहंतदुपायंवदस्वमे ॥ ४८ ॥ श्रीरामाग्नीऊचतुः ॥ त्वंगच्छतपसेदेविपुष्करंचसुपुण्यदम् ॥ कृत्वातपस्यांतत्रैवस्वर्गलक्ष्मीर्भविष्यसि ॥ ४९ ॥ साचतद्वचनंश्रुत्वाप्रतप्यपुष्करेतपः ॥ दिव्यंत्रिलक्षवर्षंचस्वर्गलक्ष्मीर्बभूवह ॥ ५० ॥ साचकालेनतपसायज्ञकुंडसमुद्भवा ॥ कामिनीपांडवानांचद्रौपदीद्रुपदात्मजा ॥ ५१ ॥ कृतेयुगेवेदवतीकुशध्वजसुताशुभा ॥ त्रेतायांरामपत्नीचसीतेतिजनकात्मजा ॥ ५२ ॥ तच्छायाद्रौपदीदेवीद्वापरेद्रुपदात्मजा ॥ त्रिहायणीचसाप्रोक्ताविद्यमानायुगत्रये ॥ ५३ ॥ नारदउवाच ॥ प्रियाःपंचकथंतस्यावभूवुर्मुनिपुंगव ॥ इतिमच्चित्तसंदेहंभंजसंदेहभंजन ॥ ५४ ॥ नारायणउवाच ॥ लंकायांवास्तवीसीतारामंसंप्रापनारद ॥ रूपयौवनसंपन्नाछायाचबहुचिंतया ॥ ५५ ॥

॥ ४६ ॥ तांसीतांवह्निपरीक्षांदिव्यम् ॥ ४७ ॥ वह्निरामंचछायासीताइतःपरंकिमहंकरिष्यामिकिंमयाकर्तव्यमित्युपायंवदस्वेत्युवाच ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ साचेति ॥ स्वर्गलक्ष्मीः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ यतोयुगत्रयेवर्तमानाततस्त्रिहायणीतिनाम ॥ हायनशब्दोऽत्रयुगपरः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेनव०षोडशोध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ अष्टाधिकश्चचत्वारिंशत्पद्यैस्तुसविस्तरम् ॥ धर्मध्वजसुतायास्तुतुलस्याश्चकथोच्यते ॥ १ ॥ तुलसीकथायांप्रवृत्तायांप्रसंगागतांकुशध्वजसुताकथां समाप्यधर्मध्वजसुतायास्तुलस्याः कथामाह । श्रीनारायणउवाच धर्मध्वजस्येति ॥ साआरामे इतिच्छेदः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५॥६॥७॥ सितवारे शुक्रवारेपाद्मज पद्माज्जातोब्रह्मापाद्मस्तस्माज्जातोनारदःपाद्मजः ॥८॥९॥१०॥ न्यग्रोधसटावल्लंबायमानंकेशपरिमंडलंयस्याः

रामाभ्योराज्ञयातमुमुपास्तेशंकरंपरम् ॥ कामातुरापतिव्यग्राप्रार्थयंतीपुनःपुनः ॥५६॥ पतिंदेहिपतिंदेहिपतिंदेहित्रिलोचन ॥ पतिंदेहिपतिंदेहिपंचवारंचकारसा ॥ ५७ ॥ शिवस्तत्प्रार्थनांश्रुत्वाप्रहस्यरसिकेश्वरः ॥ प्रियेतवप्रियाःपंचभविष्यंतिवरंददौ ॥ ५८ ॥ तेनसापांडवानांचबभूवकामिनीप्रिया ॥ इतितेकथितंसर्वंप्रस्तावंवास्तवंशृणु॥५९॥अथसंप्राप्यलंकायांसीतांरामोमनोहराम्॥ बिभीषणायतांलंकांदत्त्वाऽयोध्यांययौपुनः॥६०॥एकादशसहस्राब्दंकृत्वाराज्यंचभारते ॥ जगामसर्वैर्लोकैश्चसार्धंवैकुंठमेवच ॥ ६१ ॥ कमलांशावेदवतीकमलायांविवेशसा ॥ कथितंपुण्यमाख्यानंपुण्यदंपापनाशनम् ॥ ६२ ॥ सततंमूर्तिमंतश्चवेदाश्चत्वारएवच ॥ संतियस्याश्चजिह्वाग्रेसाचवेदवतीश्रुता ॥ ६३ ॥ धर्मध्वजसुताख्यानंनिबोधकथयामिते ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहा०नवमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ धर्मध्वजस्यपत्नीचमाधवीतिचविश्रुता ॥ नृपेणसार्धंसाऽऽरामेरेमेचगंधमादने ॥ १ ॥ शय्यांरतिकरींकृत्वापुष्पचंदनचर्चिताम् ॥ चंदनालिप्तसर्वांगीपुष्पचंदनवायना ॥ २ ॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वंगीरत्नभूषणभूषिता ॥ कामुकीरसिकासृष्टारसिकेनचसंयुता ॥ ३ ॥ सुरतेविरतिर्नास्तितयोःसुरतिविज्ञयोः ॥ गतंदेववर्षशतंनज्ञातंचदिवानिशम् ॥ ४ ॥ ततोराजामतिंप्राप्यसुरताद्विररामच ॥ कामुकीसुंदरीकिंचिन्नचतृप्तिंजगामसा ॥ ५ ॥ दधारगर्भंसासद्योदैवादब्दशतंसती ॥ श्रीगर्भाश्रीयुतासाचसंबभूवदिनेदिने ॥ ६ ॥ शुभेक्षणेशुभदिनेशुभयोगेचसंयुते ॥ शुभलग्नेशुभांशेचशुभस्वामिग्रहान्विते ॥ ७ ॥ कार्तिकीपूर्णिमायांतुसितवारेचपाद्मज ॥ सुषावसाचपद्मांशांपद्मिनींतांमनोहराम् ॥ ८ ॥ शरत्पार्वणचंद्रास्यांशरत्पंकजलोचनाम् ॥ पक्वबिंबाधरौष्ठींचपश्यंतींसस्मितांगृहम् ॥ ९ ॥ हस्तपादतलारक्तांनिम्ननाभिमनोरमाम् ॥ तदधस्त्रिवलीयुक्तांनितंबयुगवर्तुलाम् ॥ १० ॥ शीतेसुखोष्णसर्वांगींग्रीष्मेचसुखशीतलाम् ॥ श्यामांसुकेशींरुचिरांन्यग्रोधपरिमंडलाम् ॥ ११ पीतचंपकवर्णाभांसुंदरीष्वेवसुंदरीम् ॥ नरानार्यश्चतांदृष्ट्वातुलनांदातुमक्षमाः ॥ १२ ॥ तेननाम्नाचतुलसींतांवदंतिमनीषिणः ॥ साचभूमिष्ठमात्रेणयोग्यास्त्रीप्रकृतिर्यथा ॥ १३ ॥ सर्वैर्निषिद्धातपसेजगामबदरीवनम् ॥ तत्रदेवाब्दलक्षंचचकारपरमंतपः ॥ १४ ॥

सा ॥ ११ ॥ १२ ॥ तुलसीमिति ॥ तुलामुपमामस्यतिक्षिपतिसातुलसी ॥ असुक्षेपणेइतिधातोःपचाद्यचिशकंध्वादित्वात्पररूपेगौरादिपाठान्ङीष् ॥ भूमिष्ठमात्रेणभूमौपतनमात्रेणेत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तोयवस्त्रा तोयमेववस्त्रंयस्याः जलस्थेत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ राधिकाशापादिति ॥ सचशापोवक्ष्यमाणः ॥ २९ ॥ ३० ॥ विलंभितुंत्वामालिंगितुम् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ वृक्षाधिदेवीति ॥ तुलसीवृक्षस्ययाऽधिदेव्यधिदेवतास्त्रीमूर्तिमतीतद्रूपेणेत्यर्थः ॥ ३६ ॥

मनसानारायणःस्वामीभवितेतिचनिश्चिता ॥ ग्रीष्मेपंचतपाःशीतेतोयवस्त्राचप्रावृषि ॥ १५ ॥ आसनस्थावृष्टिधाराःसहंतीतिदिवानिशम् ॥ विंशत्सहस्रवर्षंचफलतोयाशनाचसा ॥ १६ ॥ त्रिंशत्सहस्रवर्षंचपत्राहारातपस्विनी ॥ चत्वारिंशत्सहस्राब्दंवाय्वाहाराकृशोदरी ॥ १७ ॥ ततोदशसहस्राब्दंनिराहारावभूवसा ॥ निर्लक्षांचैकपादस्थांदृष्ट्वातांकमलोद्भवः ॥ १८ ॥ समाययौवरंदातुंपरंवदरिकाश्रमम् ॥ चतुर्मुखंचसादृष्ट्वाननामहंसवाहनम् ॥ ॥ १९ ॥ तामुवाचजगत्कर्तांविधाताजगतामपि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ वरंवृणीष्वतुलसियत्तेमनसिवांछितम् ॥ २० ॥ हरिभक्तिंहरेर्दास्यमजरामरतामपि ॥ तुलस्युवाच ॥ शृणुतातप्रवक्ष्यामियन्मेमनसिवांछितम् ॥ २१ ॥ सर्वज्ञस्याऽपिपुरतःकालज्ञाममसांप्रतम् ॥ अहंतुतुलसीगोपीगोलोकेऽहंस्थितापुरा ॥ २२ ॥ कृष्णप्रियाकिंकरीचतदंशातत्सखीप्रिया ॥ गोविंदरतिसंभुक्तामतृप्तांमांचमूर्च्छिताम् ॥२३॥ रासेश्वरीसमागत्यददर्शरासमंडले ॥ गोविंदंभर्त्सयामासमांशशापरुषान्विता ॥ २४ ॥ याहित्वंमानवींयोनिमित्येवंचशशापह ॥ मामुवाचसगोविंदोमदंशंचचतुर्भुजम् ॥ २५ ॥ लभिष्यसितपस्तत्वाभारतेब्रह्मणोवरात् ॥ इत्येवमुक्त्वादेवेशोप्यंतर्धानंचकारसः ॥२६॥ दिव्याभियातनुंत्यक्त्वाप्राप्तंजन्मगुरोभुवि॥अहंनारायणंकांतंशांतंसुंदरविग्रहम् ॥२७॥ सांप्रतंतंपतिंलब्धुंवरयेत्वंचदेहिमे ॥ ब्रह्मदेवउवाच ॥ सुदामानामगोपश्चश्रीकृष्णांगसमुद्भवः॥२८॥तदंशश्चाऽतितेजस्वीलेभेजन्मचभारते॥ सांप्रतंराधिकाशापादनुवंशसमुद्भवः ॥२९॥ शंखचूडेतिविख्यातस्त्रैलोक्येनचतत्समः ॥ गोलोकेत्वांपुरादृष्ट्वाकामोन्मथितमानसः ॥ ३० ॥ विलंभितुंनशशाकराधिकायाःप्रभावतः ॥ सचजातिस्मरस्तस्मात्सुदामाभूच्चसागरे॥३१॥जातिस्मरात्वमपिसासर्वंजानासिसुंदरि ॥अधुनातस्यपत्नीत्वंसंभविष्यसिशोभने ॥ ३२ ॥ पश्चान्नारायणंशांतंकांतमेववरिष्यसि ॥ शापान्नारायणस्यैवकलयादैवयोगतः ॥ ३३ ॥ भविष्यसिवृक्षरूपात्वंपूताविश्वपाविनी ॥ प्रधानासर्वपुष्पेषुविष्णुप्राणाधिकाभवेः ॥ ३४ ॥ त्वयाविनाचसर्वेषांपूजाचविफलाभवेत् ॥ वृंदावनेवृक्षरूपानाम्नावृंदावनीतिच ॥ ३५ ॥ त्वत्पत्रैर्गोपिगोपाश्चपूजयिष्यंतिमाधवम् ॥ वृक्षाधिदेवीरूपेणसार्धंकृष्णेनसंततम्॥३६॥विहरिष्यसिगोपेनस्वच्छंदंमद्धरेणच ॥ इत्येवंवचनंश्रुत्वासस्मिताहृष्टमानसा ॥ ३७ ॥ प्रणनामचब्रह्माणंतंचकिंचिदुवाचसा ॥ तुलस्युवाच ॥ यथामेद्विभुजेकृष्णेवांछाचश्यामसुंदरे ॥ ३८ ॥ सत्यंब्रवीमिहेतातनतथाचचतुर्भुजे ॥ अतृप्ताऽहंचगोविंदेदैवाच्छृंगारभंगतः ॥ ३९ ॥ गोविंदस्यैववचनात्प्रार्थयामिचतुर्भुजम् ॥ त्वत्प्रसादेनगोविंदंपुनरेवसुदुर्लभम् ॥ ४० ॥

॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ एकाधिकैःशतश्लोकैःशंखचूडेनसंगतिः ॥ जातातुलस्याःसंवादोप्यभूत्तेनेतिकथ्यते ॥ १ ॥ तपश्चर्यातस्तुलस्यामुपरतायामनंतरंजातंवृत्तमाह । तुलसीपरितुष्टाचेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ विषण्णतांखिन्नतांनिकटंतल्पनिकटम्

ध्रुवमेवलभिष्यामिराधाभीतिंप्रमोचय ॥ ब्रह्मदेवउवाच ॥ गृहाणराधिकामंत्रंददामिषोडशाक्षरम् ॥ ४१ ॥ तस्याश्चप्राणतुल्यात्वंमद्वरेणभविष्यसि ॥ शृंगारंयुवयोर्गोप्यंनज्ञास्यतिचराधिका ॥ ४२ ॥ राधासमात्वंसुभगेगोविंदस्यभविष्यसि ॥ इत्येवमुक्त्वादत्त्वाचदेव्यावैषोडशाक्षरम् ॥ ४३ ॥ मंत्रंचैवजगद्धातास्तोत्रंचकवचंपरम् ॥ सर्वपूजाविधानंचपुरश्चर्याविधिक्रमम् ॥ ४४ ॥ परांशुभाशिषंचैवपूजांचैवचकारसा ॥ बभूवसिद्धासादेवीतत्प्रसादाद्रमायथा ॥ ४५ ॥ सिद्धमंत्रेणतुलसीवरंप्रापयथोदितम् ॥ बुभुजेचमहाभोगंयद्विश्वेषुचदुर्लभम् ॥ ४६ ॥ प्रसन्नमनसादेवीतत्याजतपसःक्रमम् ॥ सिद्धेफलेनराणांचदुःखंचसुखमुत्तमम् ॥ ४७ ॥ भुक्त्वापीत्वाचसंतुष्टाशयनंचचकारसा ॥ तल्पेमनोरमेतत्रपुष्पचंदनचर्चिते ॥ ४८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेतुलस्युपाख्यानेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ तुलसीपरितुष्टाचसुष्वापहृष्टमानसा ॥ नवयौवनसंपन्नावृषध्वजवरांगना ॥ १ ॥ चिक्षेपपंचबाणश्चपंचबाणांश्चतांप्रति ॥ पुष्पायुधेनसादग्धापुष्पचंदनचर्चिता ॥ २ ॥ पुलकांचितसर्वांगीकंपितारक्तलोचना ॥ क्षणंसाशुष्कतांप्रापक्षणंमूर्छामवापह ॥ ३ ॥ क्षणमुद्विग्नतांप्रापक्षणंतंद्रांसुखावहाम् ॥ क्षणंचदहनंप्रापक्षणंप्रापप्रसन्नताम् ॥ ४ ॥ क्षणंसाचेतनांप्रापक्षणंप्रापविषण्णताम् ॥ उत्तिष्ठंतीक्षणंतल्पाद्गच्छंतीनिकटेक्षणम् ॥ ५ ॥ भ्रमंतीक्षणमुद्वेगान्निवसंतीक्षणंपुनः ॥ क्षणमेवसमुद्वेगात्सुष्वापपुनरेवसा ॥ ६ ॥ पुष्पचंदनतल्पंचतद्बभूवाऽतिकंटकम् ॥ विषहारिसुखंदिव्यंसुंदरंचफलंजलम् ॥ ७ ॥ निलयंचविलाकारंसूक्ष्मवस्त्रंहुताशनः ॥ सिंदूरपत्रकंचैवव्रणतुल्यंचदुःखदम् ॥ ८ ॥ क्षणंददर्शतंद्रायांसुवेषंपुरुषंसती ॥ सुंदरंचयुवानंचसस्मितंरसिकेश्वरम् ॥ ९ ॥ चंदनोक्षितसर्वांगंरत्नभूषणभूषितम् ॥ आगच्छंतंमाल्यवंतंपिबंतंतन्मुखांबुजम् ॥ १० ॥ कथयंतंरतिकथांब्रुवंतंमधुरंमुहुः ॥ संभुक्तवंतंतल्पेचसमाश्लिष्यंतमीप्सितम् ॥ ११ ॥ पुनरेवतुगच्छंतमार्गच्छंतचसन्निधौ ॥ यांतंक्वयासिप्राणेशतिष्ठेत्येवमुवाचसा ॥ १२ ॥ पुनश्चचेतनांप्राप्यविललापपुनःपुनः ॥ एवंसायौवनंप्राप्यतस्थौतत्रैवनारद ॥ १३ ॥ शंखचूडोमहायोगीजैगीषव्यान्मनोहरम् ॥ कृष्णमंत्रंचसंप्राप्यकृत्वासिद्धंतुपुष्करे ॥ १४ ॥ कवचंचगलेबद्धासर्वमंगलमंगलम् ॥ ब्रह्मणश्चवरंप्राप्ययत्तेमनसिवांछितम् ॥ १५ ॥ आज्ञयाब्रह्मणःसोपिबदरींचसमाययौ ॥ आगच्छंतंशंखचूडंददर्शतुलसीमुने ॥ १६ ॥

॥ ५ ॥ ६ ॥ सुंदरंसुखंसुखकरंफलंजलंच ॥ विषहारिविषोपमम् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ यत्तेमनसिवांछितंतद्भवत्वितिवरंप्राप्यबदरींचसमाययावित्यन्वयः ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ यावकंपादभूषणंतस्याऽऽवलिःपंक्तिः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ तपस्यायांतिष्ठामीत्यन्वयः ॥ ३० ॥ कुलेजातःकुलीनोनपृच्छतीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ कीदृशःपुरुषस्तर्हिकामिनींपृच्छातितत्राह । लंपटइति ॥ ३२ ॥ कीदृशींकामिनींतत्राह ॥ आपातरमणीयामित्यादिप्रसन्नवदनेक्षणामित्यं

नवयौवनसंपन्नंकामदेवसमप्रभम् ॥ श्वेतचंपकवर्णाभंरत्नभूषणभूषितम् ॥ १७ ॥ शरत्पार्वणचंद्रास्यंशरत्पंकजलोचनम् ॥ रत्नसारविनिर्माणविमानस्थं मनोहरम् ॥ १८ ॥ रत्नकुंडलयुग्मेनगंडस्थलविराजितम् ॥ पारिजातप्रसूनानांमालावंतंचसुस्मितम् ॥ १९ ॥ कस्तूरीकुंकुमायुक्तंसुगंधिचंदनान्वितम् ॥ साहृष्टासन्निधावेनंमुखमाच्छाद्यवाससा ॥ २० ॥ सस्मितातंनिरीक्षंतीसकटाक्षंपुनःपुनः ॥ बभूवाऽतिनम्रमुखीनवसंगमलज्जिता ॥ २१ ॥ शरदिंदुविनिंद्यैकस्वमुखेंदुविराजिता ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणयावकावलिसंयुता ॥ २२ ॥ मणींद्रसारनिर्माणक्वणन्मंजीररंजिता ॥ दधतीकवरीभारंमालतीमाल्यसंयुतम् ॥ २३ ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणमकराकृतिकुंडला ॥ चित्रकुंडलयुग्मेनगंडस्थलविराजिता ॥ २४ ॥ रत्नेंद्रसारहारेणस्तनमध्यस्थलोज्ज्वला ॥ रत्नकंकणकेयूरशंखभूषणभूषिता ॥ २५ ॥ रत्नांगुलीयकैर्दिव्यैरंगुल्यावलिराजिता ॥ दृष्ट्वातांललितांरम्यांसुशीलांसुंदरींसतीम् ॥ २६ ॥ उवाससतत्समीपेतुमधुरंतामुवाचसः ॥ शंखचूडउवाच ॥ कात्वंकस्यचकन्याचधन्यामान्याचयोषिताम् ॥ २७ ॥ कात्वंमानिनिकल्याणिसर्वकल्याणदायिनी ॥ मौनीभूतेकिंकरेमांसंभाषांकुरुसुंदरि ॥ २८ ॥ इत्येवंवचनंश्रुत्वासकामावामलोचना ॥ सस्मितानम्रवदनासकामंतमुवाचसा ॥ २९ ॥ तुलस्युवाच ॥ धर्मध्वजसुताहंचतपस्यायांतपोवने ॥ तपस्विन्यहंतिष्ठामिकस्त्वंगच्छयथासुखम् ॥ ३० ॥ कामिनींकुलजातांचरहस्येकाकिनींसतीम् ॥ नपृच्छतिकुलेजातइत्येवंमेश्रुतौश्रुतम् ॥ ३१ ॥ लंपटोऽसत्कुलेजातोधर्मशास्त्रार्थवर्जितः ॥ येनाऽश्रुतःश्रुतेरर्थःसकामीच्छतिकामिनीम् ॥ ३२ ॥ आपातमधुरांमत्तामंतकांपुरुषस्यताम् ॥ विषकुंभाकाररूपाममृतास्यांचसंततम् ॥ ३३ ॥ हृदयेक्षुरधाराभांशश्वन्मधुरभाषिणीम् ॥ स्वकार्यपरिनिष्पत्त्यैतत्परांसततंचताम् ॥ ३४ ॥ कार्यार्थेस्वामिवशगामन्यथैवाऽवशांसदा ॥ स्वांतर्मलिनरूपांचप्रसन्नवदनेक्षणाम् ॥ ३५ ॥ श्रुतौपुराणेयासांचचरित्रमतिदूषितम् ॥ तासुकोविश्वसेत्प्राज्ञःप्रज्ञावांश्चदुराशयः ॥ ३६ ॥ तासांकोवारिपुर्मित्रंप्रार्थयंतिनवंनवम् ॥ दृष्ट्वासुवेषंपुरुषमिच्छंतिहृदयेसदा ॥ ३७ ॥ बाह्येस्वार्थंसतीत्वंचज्ञापयंतीप्रयत्नतः ॥ शश्वत्कामाचरामाचकामाधारामनोहरा ॥ ३८ ॥ बाह्येच्छलात्खेदयंतीस्वांतमैथुनमानसा ॥ कांतंहसंतीरहसिचाह्येतीवसुलज्जिता ॥ ३९ ॥ मानिनीमैथुनाभावेकोपनाकलहांकुरा ॥ सुप्रीताभूरिसंभोगात्स्वल्पमैथुनदुःखिता ॥ ४० ॥

तम् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ दुराशयोनयइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ कोवारिपुःकोवामित्रंनकोऽपिरिपुर्मित्रंवेत्यर्थः ॥ स्वार्थपराएवकेवलम् ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ खेदयंतीपुरुषामित्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ तपोमार्गार्गला तपोमार्गप्रतिबंधिका ॥ ४५ ॥ भक्तिव्यवहिताभक्तिराहिता ॥ अधोगंयोनिरूपम् ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ रक्तेनारक्तम् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ लक्ष्मीःसरस्वतीति ॥ लक्ष्म्यादीनांपूर्णावताराणांगंगादीनामंशावतारणांतथाकलाकलांशानांचस्वरूपंप्रशस्यमन्यदप्रशस्यामित्यर्थः ॥ सृष्टिसूत्रस्वरूपाचसृष्टि

सुमिष्टान्नाच्छीततोयादाकांक्षंतीचमानसे ॥ सुंदरंरसिकंकांतंयुवानंगुणिनंसदा ॥ ४१ ॥ सुतात्परमभिस्नेहंकुर्वंतीरसिकोपरि ॥ प्राणाधिकंप्रियतमंसं भोगकुशलंप्रियम् ॥ ४२ ॥ पश्यंतीरिपुतुल्यंचवृद्धंवामैथुनाक्षमम् ॥ कलहंकुर्वतीशश्वत्तेनसार्धंसुकोपना ॥ ४३ ॥ वाचयाभक्षयंतीतंसर्पआखुमि वोल्बणम् ॥ दुःसाहसस्वरूपाचसर्वदोषाश्रयासदा ॥ ४४ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनांदुःसाध्यामोहरूपिणी ॥ तपोमार्गार्गलाशश्वन्मोक्षद्वारकपाटिका ॥ ४५ ॥ हरेर्भक्तिव्यवहितासर्वमायाकरंडिका ॥ संसारकारागारेचशश्वन्निगडरूपिणी ॥ ४६ ॥ इंद्रजालस्वरूपाचमिथ्याचस्वप्नरूपिणी ॥ बिभ्रती बाह्यसौंदर्यमधोगमतिकुत्सितम् ॥ ४७ ॥ नानाविण्मूत्रपूयानामाधारंमलसंयुतम् ॥ दुर्गंधिदोषसंयुक्तंरक्तारक्तमसंस्कृतम् ॥ ४८ ॥ मायारूपामायि नांचविधिनानिर्मितापुरा ॥ विषरूपामुमुक्षूणामदृश्याऽप्यभिवांछताम् ॥ ४९ ॥ इत्युक्त्वातुलसीतंचविरराम चनारद ॥ सस्मितःशंखचूडश्चप्रवक्तुमुपच क्रमे ॥ ५० ॥ शंखचूडउवाच ॥ त्वयायत्कथितंदेविनचसर्वमलीककम् ॥ किंचित्सत्यमलीकंचकिंचिन्मत्तोनिशामय ॥ ५१ ॥ निर्मितंद्विविधंधात्रा स्त्रीरूपंसर्वमोहनम् ॥ कृत्वारूपंवास्तवंचप्रशस्यंचाऽप्रशंसितम् ॥ ५२ ॥ लक्ष्मीःसरस्वतीदुर्गासावित्रीराधिकादिका ॥ सृष्टिसूत्रस्वरूपाचआद्यासृष्टि र्विनिर्मिता ॥ ५३ ॥ एतासामंशरूपंचस्त्रीरूपंवास्तवंस्मृतम् ॥ तत्प्रशस्यंयशोरूपंसर्वमंगलकारकम् ॥ ५४ ॥ शतरूपादेवहूतीस्वधास्वाहाचदक्षिणा ॥ छायावतीरोहिणीचवरुणानीशचीतथा ॥ ५५ ॥ कुबेरस्यचपत्नीयाऽप्यदितिश्चदितिस्तथा ॥ लोपामुद्रानसूयाचकोटभीतुलसीतथा ॥ ५६ ॥ अ हल्याऽरुंधतीमेनातारामंदोदरीतथा ॥ दमयंतीवेदवतीगंगाचमनसातथा ॥ ५७ ॥ पुष्टिस्तुष्टिःस्मृतिर्मेधाकालिकाचवसुंधरा ॥ षष्ठीमंगलचंडीचमूर्तिश्च धर्मकामिनी ॥ ५८ ॥ स्वस्तिश्रद्धाचशांतिश्चकांतिःक्षांतिस्तथापरा॥निद्रातंद्राक्षुत्पिपासासंध्यारात्रिदिनानिच ॥५९॥ संपत्तिर्धृतिकीर्तीचक्रियाशोभा प्रभाशिवा ॥ यत्स्त्रीरूपंचसंभूतमुत्तमंतुयुगेयुगे ॥ ६० ॥ कलाकलांशरूपंचस्वर्वेश्यादिकमेवच ॥ तदप्रशस्यंविश्वेषुपुंश्चलीरूपमेवच ॥ ६१ ॥ सत्त्व प्रधानंयद्रूपंतद्युक्तंचप्रभावतः ॥ तदुत्तमंचविश्वेषुसाध्वीरूपंप्रशंसितम् ॥ ६२ ॥ तद्वास्तवंचविज्ञेयंप्रवदंतिमनीषिणः ॥ रजोरूपंतमोरूपंकलासुविविधं स्मृतम् ॥ ६३ ॥ मध्यमारजसश्चांशास्तास्तुभोगेषुलोलुपाः ॥ सुखसंभोगवश्याश्चस्वकार्येनिरताःसदा ॥ ६४ ॥

मूलभूतेत्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ कलांशस्वरूपंचोत्तममित्यर्थः ॥ स्वर्वेश्यादिकमेवचेत्यस्यतदप्रशस्यमित्युत्तरेणान्वयः ॥ ६१ ॥ साध्वीरूपमुत्तममित्याह । सत्त्वप्रधानमिति ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यतएतामध्यमाएतादृशदोषविशिष्टाअतोरजोरूपस्यस्त्रीवस्तुनःसाध्वीत्वंनैवोपजायतइत्यर्थः ॥ ६५ ॥ तमोरूपंतुदुर्निवार्यत्वादधममेवेत्यर्थः ॥ ६६ ॥ तथाचतवलक्ष्म्यंशत्वात्तवरूपंत्वदु
क्तरीत्यानिंद्यंनकिंत्वतिप्रशस्तमेवभवतीतिममत्वयीच्छाजातायुक्तेतिभावः ॥ यदुक्तंत्वयाकुलीनःपरस्त्रियंनपश्यतितत्तथैवतथाऽप्यहंब्रह्मणआज्ञयात्वत्समीपमागतोस्मीत्याभिप्रायेणाह ।
नपृच्छतीति ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ दनुवंशेजातःपुरापूर्वंहरेःसखासुदामाऽहम् ॥ अधुनातुशापाद्दनोर्वंशेजातइत्यर्थः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ पूर्वकथांस्मारयति । जातिस्मरोऽहमिति ॥ ७१ ॥ संभो

कपटामोहकारिण्योधर्मार्थविमुखाः सदा ॥ रजोरूपस्यसाध्वीत्वमतोनैवोपजायते ॥ ६५ ॥ इदंमध्यमरूपंचप्रवदंतिमनीषिणः ॥ तमोरूपंदुर्निवार्यम
धमंतद्विदुर्बुधाः ॥ ६६ ॥ नपृच्छतिकुलेजातःपंडितश्चपरस्त्रियम् ॥ निर्जनेनिर्जलेवाऽपिरहस्यपिपरस्त्रियम् ॥ ६७ ॥ आगच्छामित्वत्समीपमाज्ञयाब्र
ह्मणोऽधुना ॥ गांधर्वेणविवाहेनत्वांग्रहीष्यामिशोभने ॥ ६८ ॥ अहमेवशंखचूडोदेवविद्रावकारकः ॥ दनुवंश्योविशेषेणसुदामाऽहंहरेःपुरा ॥ ६९ ॥
अहमष्टसुगोपेषुगोपोऽपिपार्षदेषुच ॥ अधुनादानवेंद्रोऽहंराधिकायाश्चशापतः ॥ ७० ॥ जातिस्मरोऽहंजानामिकृष्णमंत्रप्रभावतः ॥ जातिस्मरात्वंतुल
सीसंभुक्ताहरिणापुरा ॥ ७१ ॥ त्वमेवराधिकाकोपाज्जाताऽसिभारतेभुवि ॥ त्वांसंभोक्तुमुत्सुकोऽहंनाऽलंराधाभयात्ततः ॥ ७२ ॥ इत्येवमुक्त्वासपुमा
न्विरराममहामुने ॥ सस्मितंतुलसीतुष्टाप्रवक्तुमुपचक्रमे ॥ ७३ ॥ तुलस्युवाच ॥ एवंविधोबुधोनित्यंविश्वेषुचप्रशंसितः ॥ कांतमेवंविधंकांताशश्वदि
च्छतिकामतः ॥७४॥ त्वयाऽहमधुनासत्यंविचारेणपराजिता ॥ सनिंदितश्चाऽप्यशुचिर्यःपुमांश्चस्त्रियाजितः ॥ ७५ ॥ निंदंतिपितरोदेवाबांधवाःस्त्रीजि
तंनरम् ॥ स्त्रीजितंमनसामातापिताभ्राताचानिंदति ॥ ७६ ॥ शुद्धोविप्रोदशाहेनजातकेमृतकेयथा ॥ भूमिपोद्वादशाहेनवैश्यःपंचदशाहतः ॥ ७७ ॥ शू
द्रोमासेनवेदेषुमातृवद्धीनसंकरः॥अशुचिःस्त्रीजितःशुद्ध्येच्चितादहनकालतः ॥७८॥ नगृह्णंतीच्छयातस्यापितरःपिंडतर्पणम् ॥ नगृह्णंतीवदेवाश्चतस्यपु
ष्पजलादिकम्॥७९॥किंवाज्ञानेनतपसाजपहोमप्रपूजनैः ॥ किंविद्ययाचयशसास्त्रीभिर्यस्यमनोहृतम् ॥८०॥ विद्याप्रभावज्ञानार्थमयात्वंचपरीक्षितः ॥
कृत्वापरीक्षांकांतस्यवृणोतिकामिनीवरम्॥८१॥वरायगुणहीनायवृद्धायाऽज्ञानिनेतथा॥दरिद्रायचमूर्खायरोगिणेकुत्सितायच ॥८२॥ अत्यंतकोपयुक्ताय
वाऽत्यंतदुर्मुखायच॥पंगवेचांगहीनायचांधायबधिरायच॥८३॥जडायचैवमूकायक्लीबतुल्यायपापिने॥ब्रह्महत्यांलभेत्सोपिस्वकन्यांप्रददातियः ॥ ८४ ॥

क्तुंनालंसमर्थोराधाभयादित्यन्वयः ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ एवंविधोवक्ष्यमाणस्त्रीजितादन्यइत्यर्थः ॥ विश्वेषुलोकेषु ॥ ७४ ॥ त्वयाऽहंविचारेणपूर्वोक्तवादेनाजिताऽस्मि नमयात्वंजितइतित्वं
स्त्रीजितोनाऽसीत्यर्थः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ एषुवर्णसंकरश्चेत्समातृवत्तयज्जातीयामातातज्जात्युक्तसूतकपरिपालनेनशुध्येदित्यर्थः ॥ स्त्रीजितस्यतुदेहांतप्रायश्चित्तेनैवशुद्धिरित्याह ।
अशुचिरिति ॥ एतादृशोऽतिनीचोऽयमितिभावः ॥ ७८ ॥ तदेवाह । नगृह्णंतीति ॥ ७९ ॥ ८० ॥ मयातुतवविद्यापरीक्षाकृतेत्याह । विद्याप्रभावेति ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रब्रह्माऽगत्योवाचेत्यर्थाद्वोध्यंकिमुवाचतदाह । ब्रह्मोवाच किंकरोषीति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेनवमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ चतुर्नवतिपद्यैस्तुतुलसीशंखचूडयोः ॥ विवाहानंतरंदेवावैकुंठंजग्मुरुत्तमम्

शांतायगुणिनेचैवयूनेचविदुषेऽपिच ॥ साधवेचसुतांदत्वादशयज्ञफलंलभेत् ॥ ८५ ॥ यःकन्यापालनंकृत्वाकरोतियदिविक्रयम् ॥ विक्रेताधनलोभे नकुंभीपाकंसगच्छति ॥ ८६ ॥ कन्यामूत्रंपुरीषंचतत्रभक्षतिपातकी ॥ कृमिभिर्दंशितःकाकैर्यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ८७ ॥ तदंतेव्याधिसंयुक्तःसलभेज्ज न्मनिश्चितम् ॥ विक्रीणातिमांसभारंवहत्येवदिवानिशम् ॥ ८८ ॥ इत्येवमुक्त्वातुलसीविररामतपोनिधे ॥ ब्रह्मोवाच॥किंकरोषिशंखचूडसंवादमनयास ह ॥ ८९ ॥ गांधर्वेणविवाहेनत्वंचाऽस्याग्रहणंकुरु ॥ पुरुषेष्वसिरत्नंत्वंस्त्रीषुरत्नंत्वियंसती ॥ ९० ॥ विदग्धायाविदग्धेनसंगमोगुणवान्भवेत् ॥ निर्वि रोधसुखंराजन्कोवात्यजतिदुर्लभम् ॥ ९१ ॥ योऽविरोधसुखत्यागीसपशुर्नाऽत्रसंशयः ॥ किंपरीक्षसित्वंकांतमीदृशंगुणिनंसति ॥ ९२ ॥ देवानामसु राणांचदानवानांविमर्दकम् ॥ यथालक्ष्मीश्चलक्ष्मीशेयथाकृष्णेचराधिका ॥ ९३ ॥ यथामयिचसावित्रीभवानीचभवेयथा ॥ यथाधरावराहेचदक्षिणा चयथाऽध्वरे ॥ ९४ ॥ यथाऽत्रेरनसूयाचदमयंतीयथानले ॥ रोहिणीचयथाचंद्रेयथाकामेरतिःसती ॥ ९५ ॥ यथादितिःकश्यपेचवसिष्ठेरुंधतीसखी ॥ यथाऽहल्यागौतमेचदेवहूतिश्चकर्दमे ॥ ९६ ॥ यथाबृहस्पतौताराशतरूपामनौयथा ॥ यथाचदक्षिणायज्ञेयथास्वाहाहुताशने ॥ ९७ ॥ यथाशचीम हेंद्रेचयथापुष्टिर्गणेश्वरे ॥ देवसेनायथास्कंदेधर्मेमूर्तिर्यथासती ॥ ९८ ॥ सौभाग्यासुप्रियात्वंचशंखचूडेतथाभव ॥ अनेनसार्धंसुचिरंसुंदरेणचसुंदरि ॥ ॥ ९९ ॥ स्थानेस्थानेविहारंचयथेच्छंकुरुसंततम् ॥ पश्चात्प्राप्स्यसिगोलोकेश्रीकृष्णंपुनरेवच॥१००॥चतुर्भुजंचवैकुंठेशंखचूडेमृतेसति ॥ इतिश्रीदेवी भागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ ॥नारदउवाच॥विचित्रमिदमाख्यानंभवतासमुदाहृतम् ॥ श्रुतेनयेनमेतृप्तिर्नकदाऽपिहिजायते ॥ १ ॥ ततःपरंतुयज्जातंतत्त्वंवदमहामते ॥ नारायणउवाच ॥ इत्येवमाशिषंदत्वास्वालयंचययौविधिः ॥ २ ॥ गांधर्वेणविवाहेनजगृहेतांचदानवः ॥ स्वर्गेदुंदुभिवाद्यंचपुष्पवृष्टिर्बभूवह ॥ ३ ॥ सरेमेरामयासार्धंवासगेहेमनोरमे ॥ मूर्च्छांसाप्रापतुलसीनवसंगमसंगता ॥ ४ ॥ निमग्नानिर्जलेसाध्वीसंभो गसुखसागरे ॥ चतुःषष्टिकलामानंचतुःषष्टिविधंसुखम् ॥ ५ ॥ कामशास्त्रेयन्निरुक्तंरसिकानांयथेप्सितम्॥अंगप्रत्यंगसंश्लेषपूर्वकंस्त्रीमनोहरम् ॥६॥ तत्स र्वंरसशृंगारंचकाररसिकेश्वरः ॥ अतीवरम्यदेशेचसर्वजंतुविवर्जिते ॥७॥ पुष्पचंदनतल्पेचपुष्पचंदनवायुना ॥ पुष्पोद्यानेनदीतीरेपुष्पचंदनचर्चिते ॥८॥

॥ १ ॥ इत्थंब्रह्मणातौबोधितावित्युक्तंततःपरंकिंजातामितिपृच्छाति । नारदउवाच विचित्रमिदमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ चतुःषष्टिशृंगारकलाभिर्मीयतेपरिच्छिद्यतेतत्तादृशंचतुः षष्टिविधंसुखंताःकलाश्चरसालोकेस्पष्टीकृताः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ जहारपरस्परशरीरावयवमर्दनेन ॥ १२ ॥ १३ ॥ तद्रदनदंशनंचतुर्गुणंप्रददौ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥
स्वाहायावह्नेर्यदाहृतम् ॥ छायायाःसूर्यपत्न्याःरोहिण्याश्चंद्रपत्न्याः ॥ २४ ॥ २५ ॥ विचित्राणांपद्मकानांपद्मरागमणीनांश्रेणयोयस्यांशय्यायाम् ॥ २६ ॥ पत्रकंचंदनवल्लीरूपम् ॥

गृहीत्वारसिकोरासेपुष्पचंदनचर्चिताम् ॥ भूषितोभूषणेनैवरत्नभूषणभूषिताम् ॥ ९ ॥ सुरतेविरतिर्नास्तितयोःसुरतिविज्ञयोः ॥ जहारमानसंभर्तुर्लोलयालीलयासती ॥ १० ॥ चेतनांरसिकायाश्चजहाररसभावित् ॥ वक्षसश्चंदनंराज्ञस्तिलकंविजहारसा ॥ ११ ॥ सचजहारतस्याश्चसिंदूरंबिंदुपत्रकम् ॥ सतद्वक्षस्युरोजेचनखरेखांददौमुदा ॥ १२ ॥ साददौतद्वामपार्श्वेकरभूषणलक्षणम् ॥ राजातदोष्ठपुटकेददौरदनदंशनम् ॥ १३ ॥ तद्गंडयुगलेसाचप्रददौतच्चतुर्गुणम् ॥ आलिंगनंचुंबनंचजंघादिमर्दनंतथा ॥१४॥ एवंपरस्परंक्रीडांचक्रतुस्तौविजानतौ ॥ सुरतेविरतेतौचसमुत्थायपरस्परम् ॥ १५ ॥ सुवेषंचक्रतुस्तत्रयद्यन्मनसिवांछितम् ॥ चंदनैःकुंकुमारक्तैःसातस्यतिलकंददौ ॥ १६ ॥ सर्वांगेसुंदरेरम्येचकारचाऽनुलेपनम् ॥ सुवासंचैवतांबूलंवह्निशुद्धेचवाससी ॥ १७ ॥ पारिजातस्यकुसुमंजरारोगहरंपरम् ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणमंगुलीयकमुत्तमम् ॥ १८ ॥ सुंदरंचमणिवरंत्रिषुलोकेषुदुर्लभम् ॥ दासीतवाऽहमित्येवंसमुच्चार्यपुनःपुनः ॥ १९ ॥ ननामपरयाभक्त्यास्वामिनंगुणशालिनम् ॥ सस्मितातन्मुखांभोजंलोचनाभ्यांपुनःपुनः ॥ २० ॥ निमेषरहिताभ्यांचाऽप्यपश्यत्कामसुंदरम् ॥ सचतांचसमाकृष्यचकारवक्षसिप्रियाम् ॥ २१ ॥ सस्मितंवाससाच्छन्नंददर्शमुखपंकजम् ॥ चुचुंबकठिनेगंडेबिंबोष्ठौपुनरेवच ॥ २२ ॥ ददौतस्यैवस्त्रयुग्मंवरुणादाहृतंचयत् ॥ तदाहृतांरत्नमालांत्रिषुलोकेषुदुर्लभाम् ॥ २३ ॥ ददौमंजीरयुग्मंचस्वाहायाआहृतंचयत् ॥ केयूरयुग्मंछायायारोहिण्याश्चैवकुंडलम् ॥ २४ ॥ अंगुलीयकरत्नानिरत्याश्चकरभूषणम् ॥ शंखंचरुचिरंचित्रंयद्दत्तंविश्वकर्मणा॥२५॥ विचित्रपद्मकश्रेणींशय्यांचाऽपिसुदुर्लभाम् ॥ भूषणानिचदत्वाचभूपोहासंचकारह ॥ २६ ॥ निर्ममेकवरीभारेतस्यामांगल्यभूषणम् ॥ सुचित्रंपत्रकंगंडमंडलेऽस्याःसमंतथा॥२७॥चंद्रलेखात्रिभिर्युक्तंचंदनेनसुगंधिना॥परीतंपरितश्चित्रैःसार्धंकुंकुमबिंदुभिः॥२८॥ज्वलत्प्रदीपाकारंचसिंदूरतिलकंददौ ॥ तत्पादपद्मयुगुलेस्थलपद्मविनिंदिते॥२९॥चित्रालक्तकरागंचनखरेषुददौमुदा ॥ स्ववक्षसिमुहुर्न्यस्यसरागंचरणांबुजम् ॥३०॥ हेदेवितवदासोऽहमित्युच्चार्यपुनःपुनः॥रत्नभूषितहस्तेनतांचकृत्वास्ववक्षसि॥३१॥तपोवनंपरित्यज्यराजास्थानांतरंययौ॥मलयेदेवनिलयेशैलेशैलेतपोवने॥३२॥स्थानेस्थानेऽतिरम्येचपुष्पोद्यानेचनिर्जने ॥ कंदरेकंदरेसिंधुतीरेचैवातिसुंदरे ॥ ३३ ॥ पुष्पभद्रानदीतीरेनीरवातमनोहरे॥पुलिनेपुलिनेदिव्येनद्यांनद्यांनदेनदे ॥३४॥

॥ २७ ॥ तिसृभिःकर्पूरलेखाभिर्युक्तम् ॥ त्रिशब्दस्यपरनिपाताद्यार्षम् ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





विस्पंदनेतन्नाम्निवनेतथैवसुरसननाम्निवने ॥ ३५ ॥ माधवेवसंतेमाधवीनांवासंतीमाधवीलतेत्यमराद्वासंतीलतानांवनेइत्युत्तरेणान्वयः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ पुंस्कोकिलरुतंश्रुतंप्रसिद्धंयस्मिंस्तस्मिन्वने ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ आश्रमाणांलोकानांस्थानानाम् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

मधौमधुकराणांचमधुरध्वनिनादिते ॥ विस्पंदनेसुरसनेनंदनेगंधमादने ॥ ३५ ॥ देवोद्यानेनंदनेचचित्रचंदनकानने ॥ चंपकानांकेतकीनांमाधवीनांच माधवे ॥ ३६ ॥ कुंदानांमालतीनांचकुमुदांभोजकानने ॥ कल्पवृक्षेकल्पवृक्षेपारिजातवनेवने ॥ ३७ ॥ निर्जनेकांचनेस्थानेधन्येकांचनपर्वते ॥ कांचीवनेकिंजलकेकंचुकेकांचनाकरे ॥ ३८ ॥ पुष्पचंदनतल्पेषुपुंस्कोकिलरुतश्रुते ॥ पुष्पचंदनसंयुक्तःपुष्पचंदनवायुना ॥ ३९ ॥ कामुक्याकामुकःकामात्सरेमेरामयासह ॥ नहितृप्तोदानवेंद्रस्तृप्तिंनैवजगामसा ॥ ४० ॥ हविषाकृष्णवर्त्मेववववृधेमदनस्तयोः ॥ तयासहसमागत्यस्वाश्रमंदानवस्ततः ॥ ॥ ४१ ॥ रम्यंक्रीडालयंगत्वाविजहारपुनःपुनः ॥ एवंसबुभुजेराज्यंशंखचूडःप्रतापवान् ॥ ४२ ॥ एकमन्वंतरंपूर्णराजराजेश्वरोमहान् ॥ देवानामसुराणांचदानवानांचसंततम् ॥ ४३ ॥ गंधर्वाणांकिन्नराणांराक्षसानांचशांतिदः ॥ हृताधिकारादेवाश्चचरंतिभिक्षुकायथा ॥ ४४ ॥ तेसर्वेऽतिविषण्णाश्चप्रजग्मुर्ब्रह्मणःसभाम् ॥ वृत्तांतंकथयामासूरुरुदुश्चभृशंमुहुः ॥४५॥ तदाब्रह्मासुरैःसार्धंजगामशंकरालयम् ॥ सर्वंशंकथयामासविधाताचंद्रशेखरम् ॥ ४६ ॥ ब्रह्माशिवश्चतैःसार्धंवैकुंठंचजगामह ॥ दुर्लभंपरमंधामजरामृत्युहरंपरम् ॥ ४७ ॥ संप्रापचवरंद्वारमाश्रमाणांहरेरहो ॥ ददर्शद्वारपालांश्चरत्नसिंहासनस्थितान् ॥ ४८ ॥ शोभितान्पीतवस्त्रैश्चरत्नभूषणभूषितान् ॥ वनमालान्वितान्सर्वांश्श्यामसुंदरविग्रहान् ॥ ४९ ॥ शंखचक्रगदापद्मधरांश्चैवचतुर्भुजान् ॥ सस्मितान्स्मेरवक्त्रास्यान्पद्मनेत्रान्मनोहरान् ॥ ५० ॥ ब्रह्मातान्कथयामासवृत्तांतंगमनार्थकम् ॥ तेऽनुज्ञांचददुस्तस्मैप्रविवेशतदाज्ञया ॥५१॥ एवंषोडशद्वाराणिनिरीक्ष्यकमलोद्भवः ॥ देवैःसार्धंतानतीत्यप्रविवेशहरेःसभाम्॥५२॥देवर्षिभिःपरिवृतांपार्षदैश्चचतुर्भुजैः ॥ नारायणस्वरूपैश्चसर्वैःकौस्तुभभूषितैः ॥ ५३ ॥ नवेंदुमंडलाकारांचतुरस्रांमनोहराम् ॥ मणींद्रहारनिर्माणांहीरासारसुशोभिताम् ॥ ५४ ॥ अमूल्यरत्नखचितांरचितांस्वेच्छयाहरेः ॥ माणिक्यमालाजालाभांमुक्तापंक्तिविभूषिताम् ॥५५ ॥ मंडितांमंडलाकारैरत्नदर्पणकोटिभिः ॥ विचित्रैश्चित्ररेखाभिर्नानाचित्रविचित्रिताम् ॥ ॥ ५६ ॥ पद्मरागेंद्ररचितांरुचिरांमणिपंकजैः ॥ सोपानशतकैर्युक्तांस्यमंतकविनिर्मितैः ॥ ५७ ॥ पट्टसूत्रग्रंथियुक्तैश्चारुचंदनपल्लवैः ॥ इंद्रनीलस्तंभवर्यैर्वेष्टितांसुमनोहराम् ॥ ५८ ॥ तद्रत्नपूर्णकुंभानांसमूहैश्चसमन्विताम् ॥ पारिजातप्रसूनानांमालाजालैर्विराजिताम् ॥५९॥ कस्तूरीकुंकुमारक्तैःसुगंधिचंदनद्रुमैः ॥ सुसंस्कृतांतुसर्वत्रवासितांगंधवायुना ॥ ६० ॥ विद्याधरीसमूहानांनृत्यजालैर्विराजिताम् ॥ सहस्रयोजनायामांपरिपूर्णांचकिंकरैः ॥ ६१ ॥ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ शापमाह । तत्रैकदेति ॥ विरजांकांचनगोपीम् ॥ प्राणाधिकाराधा ॥ ७४ ॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ तत्ताडनंतेनशंखचूडेनकृतेतासांसखीनांताडनंश्रुत्वेत्यर्थः ॥ ८१ ॥ मांप्रणम्यगच्छंतंशंखचूडंतुष्टासावारयामासेत्यन्वयः ॥ ८२ ॥ विक्लवं

ददर्शश्रीहरिंब्रह्माशंकरश्चसुरैःसह ॥ वसंतंतन्मध्यदेशेयथेंदुंतारकावृतम् ॥ ६२ ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणचित्रसिंहासनेस्थितम् ॥ किरीटिनंकुंडलिनंवनमालाविभूषितम् ॥ ६३ ॥ चंदनोक्षितसर्वांगंबिभ्रतंकेलिपंकजम् ॥ पुरतोनृत्यगीतंचपश्यंतंसस्मितंमुदा ॥ ६४ ॥ शांतंसरस्वतीकांतंलक्ष्मीधृतपदांबुजम् ॥ लक्ष्म्याप्रदत्ततांबूलंभुक्तवंतंसुवासितम् ॥ ६५ ॥ गंगयापरयाभक्त्यासेवितंश्वेतचामरैः ॥ सर्वैश्चस्तूयमानंचभक्तिनम्रात्मकंधरैः ॥ ६६ ॥ एवंविशिष्टंतंदृष्ट्वापरिपूर्णतमंप्रभुम् ॥ ब्रह्मादयःसुराःसर्वेप्रणम्यतुष्टुवुस्तदा ॥ ६७ ॥ पुलकांचितसर्वांगाःसाश्रुनेत्राश्चगद्गदाः ॥ भक्ताश्चपरयाभक्त्याभीतानम्रात्मकंधराः ॥ ६८ ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वाविधाताजगतामपि ॥ वृत्तांतंकथयामासविनयेनहरेःपुरः ॥ ६९ ॥ हरिस्तद्वचनंश्रुत्वासर्वज्ञःसर्वभाववित् ॥ प्रहस्योवाचब्रह्माणंरहस्यंचमनोहरम् ॥ ७० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शंखचूडस्यवृत्तांतंसर्वंजानामिपद्मज ॥ मद्भक्तस्यचगोपस्यमहातेजस्विनःपुरा ॥७१॥ शृणुतत्सर्ववृत्तांतमितिहासंपुरातनम् ॥ गोलोकस्यैवचरितंपापघ्नंपुण्यकारकम् ॥ ७२ ॥ सुदामानामगोपश्चपार्षदप्रवरोमम ॥ सप्रापदानवींयोनिंराधाशापात्सुदारुणात् ॥ ७३ ॥ तत्रैकदाऽहमगमंस्वालयाद्रासमंडलम् ॥ विरजामपिनीत्वाचममप्राणाधिकापरा ॥ ७४ ॥ सामांविरजयासार्धंविज्ञायकिंकरीमुखात् ॥ पश्चात्क्रुद्धासाजगामनददर्शचतत्रमाम् ॥ ७५ ॥ विरजांचनदीरूपांमांज्ञात्वाचतिरोहितम् ॥ पुनर्जगामसादृष्ट्वास्वालयंसखिभिःसह ॥ ७६ ॥ मांदृष्ट्वामंदिरेदेवीसुदाम्नासहितंपुरा ॥ भृशंसाभर्त्सयामासमौनीभूतंचसुस्थिरम् ॥ ७७ ॥ तच्छ्रुत्वाऽसहमानश्चसुदामातांचुकोपह ॥ सचतांभर्त्सयामासकोपेनममसन्निधौ ॥ ७८ ॥ तच्छ्रुत्वाकोपयुक्तासारक्तपंकजलोचना ॥ बहिष्कर्तुंचकाराऽऽज्ञांसंत्रस्तंममसंसदि ॥ ७९ ॥ सखीलक्षंसमुत्तस्थौदुर्वारंतेजसोल्वणम् ॥ बहिश्चकारतंतूर्णंजल्पंतंचपुनःपुनः ॥ ८० ॥ साचतत्ताडनंतासांश्रुत्वारुष्टाशशापह ॥ याहिरेदानवींयोनिमित्येवंदारुणंवचः ॥ ८१ ॥ तंगच्छंतंशपंतंचरुदंतंमांप्रणम्यच ॥ वारयामासतुष्टासारुदतीकृपयापुनः ॥ ८२ ॥ हेवत्सतिष्ठमागच्छक्वयासीतिपुनःपुनः ॥ समुच्चार्यचतत्पश्चाज्जगामसाचविक्लवम् ॥ ८३ ॥ गोप्यश्चरुरुदुःसर्वागोपाश्चाऽपिसुदुःखिताः ॥ तेसर्वेराधिकाचाऽपितत्पश्चाद्बोधितामया ॥ ८४ ॥ आयास्यतिक्षणार्धेनकृत्वाशापस्यपालनम् ॥ सुदामंस्त्वमिहागच्छेत्युक्त्वासाचनिवारिता ॥ ८५ ॥ गोलोकस्यक्षणार्धेनचैकंमन्वंतरंभवेत् ॥ पृथिव्याजगतांधातरित्येववचनंध्रुवम् ॥ ८६ ॥ इत्येवंशंखचूडश्चपुनस्तत्रैवयास्यति ॥ महाबलिष्ठोयोगेशःसर्वमायाविशारदः ॥ ८७ ॥

खेदम् ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





रक्षसःदानवस्य ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ पश्चात्सेति ॥ तत्पत्नीत्यर्थः ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ इतिश्रीदेवी०तिलकेनवमस्कंधेएकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ चतुरशीति पद्यैस्तुशंखचूडासुरस्यच ॥ देवानांचैवसंग्रामोयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ भारतेदेवागमनोत्तरंजातंवृत्तमाह । ब्रह्माशिवमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ महेंद्रनगरादुत्कृष्टम् ॥ ४ ॥ ५ ॥

ममशूलंगृहीत्वाचशीघ्रंगच्छतभारतम् ॥ शिवःकरोतुसंहारंममशूलेनरक्षसः ॥ ८८ ॥ ममैवकवचंकंठेसर्वमंगलकारकम् ॥ बिभर्तिदानवःशश्वत्संसारेविजयीततः ॥ ८९ ॥ तस्मिन्ब्रह्मन्स्थितेचैवनकोऽपिहिंसितुंक्षमः ॥ तद्याचनांकरिष्यामिविप्ररूपोऽहमेवच ॥ ९० ॥ सतीत्वहानिस्तत्पत्न्यायत्रकालेभविष्यति ॥ तत्रैवकालेतन्मृत्युरितिदत्तोवरस्त्वया ॥९१॥ तत्पत्न्याश्चोदरेवीर्यमर्पयिष्यामिनिश्चितम् ॥ तत्क्षणेचैवतन्मृत्युर्भविष्यतिनसंशयः॥९२॥पश्चात्सादेहमुत्सृज्यभविष्यतिममप्रिया ॥ इत्युक्त्वाजगतांनाथोददौशूलंहरायच ॥९३॥ शूलंदत्वाययौशीघ्रंहरिरभ्यंतरेमुदा ॥ भारतंचययुर्देवाब्रह्मरुद्रपुरोगमाः ॥ ९४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहा०नवमस्कंधेएकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ ब्रह्माशिवंसंनियोज्यसंहारेदानवस्यच ॥ जगामस्वालयंतूर्णंयथास्थानंसुरोत्तमाः॥१॥चंद्रभागानदीतीरेवटमूलेमनोहरे॥तत्रतस्थौमहादेवोदेवविस्तारहेतवे ॥२॥दूतंकृत्वाचित्ररथंगंधर्वेश्वरमीप्सितम् ॥ शीघ्रंप्रस्थापयामासशंखचूडांतिकंमुदा ॥ ३ ॥ सर्वेश्वराज्ञयाशीघ्रंययौतन्नगरंपरम् ॥ महेंद्रनगरोत्कृष्टंकुबेरभवनाधिकम् ॥ ४ ॥ पंचयोजनविस्तीर्णंदैर्घ्येतद्द्विगुणंभवेत् ॥ स्फटिकाकारमणिभिर्निर्मितंयानवेष्टितम् ॥ ५ ॥ सप्तभिःपरिखाभिश्चदुर्गमाभिःसमन्वितम् ॥ ज्वलदग्निनिभैःशश्वत्कल्पितंरत्नकोटिभिः ॥६॥ युक्तंचवीथीशतकैर्मणिवेदिविचित्रितैः ॥ परितोवणिजांसौधैर्नानावस्तुविराजितैः ॥ ७ ॥ सिंदूराकारमणिभिर्निर्मितैश्चविचित्रितैः ॥ भूषितंभूषितैर्दिव्यैराश्रमैःशतकोटिभिः ॥ ८ ॥ गत्वाददर्शतन्मध्येशंखचूडालयंपरम् ॥ अतीववलयाकारंयथापूर्णेंदुमंडलम् ॥ ९ ॥ ज्वलदग्निशिखाक्ताभिःपरिखाभिश्चतसृभिः ॥ तद्दुर्गमंचशत्रूणामन्येषांसुगमंसुखम् ॥ १० ॥ अत्युच्चैर्गगनस्पर्शिमणिशृंगविराजितम् ॥ राजितंद्वादशद्वारैर्द्वारपालसमन्वितम् ॥ ११ ॥ मणींद्रसारनिर्माणैःशोभितंलक्षमंदिरैः ॥ शोभितंरत्नसोपानैरत्नस्तंभविराजितम् ॥ १२ ॥ तद्दृष्ट्वापुष्पदंतोऽपिवरंद्वारंददर्शसः॥द्वारेनियुक्तंपुरुषंशूलहस्तंचसस्मितम् ॥ १३ ॥ तिष्ठंतंपिंगलाक्षंचताम्रवर्णंभयंकरम् ॥ कथयामासवृत्तांतंजगामतदनुज्ञया ॥ १४ ॥ अतिक्रम्यचतद्द्वारंजगामाभ्यंतरंपुनः ॥ नकोऽपिरक्षतिश्रुत्वादूतरूपंरणस्यच ॥ १५ ॥

॥ ६ ॥ वणिजांमहाजनानांवैश्यानाम् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ अत्युच्चैश्चतानिगगनस्पर्शीनिमणिशृंगाणितैर्विराजितम् ॥ ११ ॥ १२ ॥ पुष्पदंतइति चित्ररथगंधर्वस्यैवनामांतरं पुष्पदंतइति ॥ १३ ॥ १४ ॥ रणस्यरणसंबंधिनंयुद्धाह्वानार्थमागतंदूतरूपंपुरुषंश्रुत्वानकोऽपिरक्षतितस्यप्रतिबंधोनक्रियतइत्यर्थः ॥ एतादृशःशंखचूडःशूरइतिभावः ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

रणस्यसववृत्तांतंराजानंप्रतिशीघ्रंविज्ञापयतइत्युवाच ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ माल्येनसहितंलेपनंदधतमित्यन्वयः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ पुष्पभद्रेति ॥ चंद्रभागायानामांतरम् ॥ विषयंस्वदेशम् ॥ तेषांदेवानाम् ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ अभयासारिपुंरिप

गत्वासोऽभ्यंतरद्वारंद्वारपालमुवाचह ॥ रणस्यसर्ववृत्तांतंविज्ञापयतमाचिरम् ॥ १६ ॥ सचतंकथयित्वाचदूतोगंतुमुवाचह ॥ सगत्वाशंखचूडंतंददर्शसुमनोहरम् ॥ १७ ॥ राजमंडलमध्यस्थंस्वर्णसिंहासनेस्थितम् ॥ मणीन्द्ररचितंदिव्यंरत्नदंडसमन्वितम् ॥ १८ ॥ रत्नकृत्रिमपुष्पैश्चप्रशस्तैःशोभितंसदा ॥ भृत्येनमस्तकन्यस्तंस्वर्णच्छत्रंमनोहरम् ॥ १९ ॥ सेवितंपार्षदगणैरुचिरैःश्वेतचामरैः ॥ सुवेषंसुंदरंरम्यंरत्नभूषणभूषितम् ॥२०॥ माल्येनलेपनंसूक्ष्मंसुवस्त्रंदधतंमुने ॥ दानवेंद्रैःपरिवृतंसुवेषैश्चत्रिकोटिभिः ॥ २१ ॥ शतकोटिभिरन्यैश्चभ्रमद्भिरस्त्रपाणिभिः ॥ एवंभूतंचतंदृष्ट्वापुष्पदंतःसविस्मयः ॥ ॥ २२ ॥ उवाचसचवृत्तांतंयदुक्तंशंकरेणच ॥ पुष्पदंतउवाच ॥ राजेंद्रशिवभृत्योऽहंपुष्पदंताभिधःप्रभो ॥ २३ ॥ यदुक्तंशंकरेणैवतद्ब्रवीमिनिशामय ॥ राज्यंदेहिचदेवानामधिकारंचसांप्रतम् ॥ २४ ॥ देवाश्चशरणापन्नादेवेशंश्रीहरिंपरम् ॥ हरिर्दत्त्वाऽस्यशूलंचतेनप्रस्थापितःशिवः ॥ २५ ॥ पुष्पभद्रानदीतीरेवटमूलेत्रिलोचनः ॥ विषयंदेहितेषांचयुद्धंवाकुरुनिश्चितम् ॥ २६ ॥ गत्वावक्ष्यामिकिंशंभुमथतद्वदमामपि ॥ दूतस्यवचनंश्रुत्वाशंखचूडःप्रहस्यच ॥ २७ ॥ प्रभातेऽहंगमिष्यामित्वंचगच्छेत्युवाचह ॥ सागत्वोवाचतंतूर्णंवटमूलस्थमीश्वरम् ॥ २८ ॥ शंखचूडस्यवचनंतदीयंतन्मुखोदितम् ॥ एतस्मिन्नंतरेस्कंदआजगामशिवांतिकम् ॥ २९ ॥ वीरभद्रश्चनंदीचमहाकालःसुभद्रकः ॥ विशालाक्षश्चबाणश्चपिंगलाक्षोविकंपनः ॥ ३० ॥ विरूपोविकृतिश्चैवमणिभद्रश्चबाष्कलः ॥ कपिलाख्योदीर्घदंष्ट्रोविकटस्ताम्रलोचनः ॥ ३१ ॥ कालकंठोबलीभद्रःकालजिह्वःकुटीचरः ॥ बलोन्मत्तोरणश्लाघीदुर्जयोदुर्गमस्तथा ॥ ३२ ॥ अष्टौचभैरवारौद्रारुद्राश्चैकादशस्मृताः॥वसवोष्टौवासवश्चआदित्याद्वादशस्मृताः ॥ ३३ ॥ हुताशनश्चचंद्रश्चविश्वकर्माश्विनौचतौ ॥ कुबेरश्चयमश्चैवजयंतोनलकूबरः ॥ ३४ ॥ वायुश्चवरुणश्चैवबुधश्चमंगलस्तथा ॥ धर्मश्चशनिरीशानःकामदेवश्चवीर्यवान् ॥ ३५ ॥ उग्रदंष्ट्राचोग्रचंडाकोटराकैटभीतथा ॥ स्वयंचाष्टभुजादेवीभद्रकालीभयंकरी ॥३६॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणविमानोपरिसंस्थिता॥रक्तवस्त्रपरीधानारक्तमाल्यानुलेपना ॥ ३७ ॥ नृत्यंतीचहसंतीचगायंतीसुस्वरंमुदा ॥ अभयंददातिभक्तेभ्योऽभयासाचभयंरिपुम् ॥ ३८ ॥ बिभ्रतीविकटांजिह्वांसुलोलांयोजनायताम् ॥ शंखचक्रगदापद्मखड्गचर्मधनुःशरान् ॥ ३९ ॥ खर्परंवर्तुलाकारंगंभीरंयोजनायतम् ॥ त्रिशूलंगगनस्पर्शिशक्तिंचयोजनायताम् ॥ ४० ॥

वेभयंददातीत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ मनसिवांछितंरतिक्रीडाम् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ यापराप्रकृतिःसैव ब्रह्मादीनामीश्वरइत्यर्थः ॥ ५७ ॥ सप्रकृतिरूपएवेश्वरः ॥ पातासंहर्तास्रष्टाचभवतिसएवात्माभवतिसएवकालस्यापिनर्तकः ॥ ५८ ॥ सएवसृष्टिकालेस्वाभिन्नांप्रकृतिंमायाख्यांनिर्मायपृथक्कृ

मुद्गरंमुसलंवज्रंखेटंफलकमुज्ज्वलम् ॥ वैष्णवास्त्रंवारुणास्त्रंवाह्नेयंनागपाशकम् ॥ ४१ ॥ नारायणास्त्रंगांधर्वंब्रह्मास्त्रंगारुडंतथा ॥ पर्जन्यास्त्रंपाशुपतंजृंभणास्त्रंचपार्वतम् ॥ ४२ ॥ माहेश्वरास्त्रंवायव्यंदंडंसंमोहनंतथा ॥ अव्यर्थमस्त्रकंदिव्यंदिव्यास्त्रशतकंपरम् ॥ ४३ ॥ आगत्यतत्रतस्थौचयोगिनीनांत्रिकोटिभिः ॥ सार्धंचडाकिनीनांचविकटानांत्रिकोटिभिः ॥४४॥ भूतप्रेतपिशाचाश्चकूष्मांडाब्रह्मराक्षसाः ॥ वेतालाराक्षसाश्चैवयक्षाश्चैवतुकिन्नराः॥४५॥ ताभिश्चैवसहस्कंदःप्रणम्यचंद्रशेखरम् ॥ पितुःपार्श्वेसहायार्थंसमुवासतदाज्ञया ॥४६॥ अथदूतेगतेतत्रशंखचूडःप्रतापवान् ॥ उवाचतुलसींवार्तांगत्वाऽभ्यंतरमेवच ॥ ४७ ॥ रणवार्तांचसाश्रुत्वाशुष्ककंठोष्ठतालुका ॥ उवाचमधुरंसाध्वीहृदयेनविदूयता ॥ ४८ ॥ तुलस्युवाच ॥ हेप्राणबंधोहेनाथतिष्ठमेवक्षसिक्षणम् ॥ हेप्राणाधिष्ठातृदेवरक्षमेजीवितंक्षणम् ॥४९॥ भुंक्ष्वजन्मसमासाद्ययन्मेमनसिवांछितम् ॥ पश्यामित्वांक्षणंकिंचिल्लोचनाभ्यांचसादरम् ॥ ५० ॥ आंदोलयंतेप्राणामेमनोदग्धंचसंततम् ॥ दुःस्वप्नश्चमयादृष्टश्चाद्यैवचरमेनिशि ॥५१॥ तुलसीवचनंश्रुत्वाभुक्त्वापीत्वानृपेश्वरः॥उवाचवचनंप्राज्ञोहितंसत्यंयथोचितम् ॥५२॥ शंखचूडउवाच ॥ कालेनयोजितंसर्वंकर्मभोगनिबंधनम् ॥ शुभंहर्षःसुखंदुःखंभयंशोकश्चमंगलम् ॥५३॥कालेभवंतिवृक्षाश्चस्कंधवंतश्चकालतः ॥ क्रमेणपुष्पवंतश्चफलवंतश्चकालतः॥५४॥तेषांफलानिपक्वानिप्रभवंत्येवकालतः ॥ तेसर्वेफलिताःकालेपातंयांतिचकालतः ॥ ५५ ॥ कालेभवंतिविश्वानिकालेनश्यंतिसुंदरि ॥ कालात्स्रष्टाचसृजतिपातापातिचकालतः ॥५६॥ संहर्तासंहरेत्कालेक्रमेणसंचरंतिते ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनामीश्वरःप्रकृतिःपरा ॥ ५७ ॥ स्रष्टापाताचसंहर्तासचात्माकालनर्तकः ॥ कालेसएवप्रकृतिंस्वाभिन्नांस्वेच्छयाप्रभुः ॥ ५८ ॥ निर्मायकृतवान्सर्वान्विश्वस्थांश्चराचरान् ॥ सर्वेशःसर्वरूपश्चसर्वात्मापरमेश्वरः॥५९॥जनंजनेनजनिताजनंपातिजनेनयः ॥ जनंजनेनहरतेतंदेवंभजसांप्रतम् ॥ ६० ॥ यस्याऽऽज्ञयावातिवातःशीघ्रगामीचसांप्रतम् ॥ यस्याऽऽज्ञयाचतपनस्तपत्येवयथाक्षणम् ॥६१॥ यथाक्षणंवर्षतींद्रोमृत्युश्चरतिजंतुषु ॥ यथाक्षणंदहत्यग्निश्चंद्रोभ्रमतिशीतवान् ॥ ६२ ॥ मृत्योर्मृत्युंकालकालंयमस्यचयमंपरम् ॥ विभुंस्रष्टुश्चस्रष्टारंमातुश्चपातृकंभवे ॥ ६३ ॥

त्यचराचरंचकृतवानित्यर्थः ॥ ५९ ॥ सएवजनेनजनंजनिताजनयितेत्यर्थः ॥ तथाजनेनजनंपातिरक्षति ॥ तथाजनेनजनंहरति ॥ यस्मादेवंमूलप्रकृत्यात्मकईश्वरएवकरोतिसर्वंतस्मात्तादृशस्येच्छांकोनिवारयितुंसमर्थस्तर्हिकिंकर्तव्यमितिचेत्तमेवशरणंगंतव्यमित्याह । तंदेवमिति ॥ ६० ॥ ६१ ॥ मृत्युश्चरतिजंतुष्विति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ भीषास्माद्वातःपवते ॥ भीषोदेतिसूर्यः ॥ भीषास्मादग्निश्चेंद्रश्च ॥ मृत्युर्धावतिपंचमइति ॥ ६२ ॥ ६३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ गोलोकेभांडीरेस्थाने ॥ तत्त्वंज्ञानम् ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ छ ॥ ॥ द्व्यशीतिपद्यवर्यैस्तुशंखचूडमहेशयोः ॥ युद्धंमहात्रासकरंयथावदभिवर्ण्यते ॥१॥

संहर्तारंचसंहर्तुस्तंदेवंशरणंव्रज ॥ कोवाबंधुश्चकेषांवासर्वबंधुंभजाप्रिये ॥ ६४ ॥ अहंकोवाचत्वंकावाविधिनायोजितःपुरा॥त्वयासार्धंकर्मणाचपुनस्तेन वियोजितः ॥६५॥ अज्ञानीकातरःशोकेविपत्तौनचपंडितः ॥ सुखेदुःखेभ्रमत्येवकालनेमिक्रमेणच ॥६६॥ नारायणंतंसर्वेशंकांतंयास्यसिनिश्चितम् ॥ तपःकृतंयदर्थंचपुरावदरिकाश्रमे ॥६७॥ मयात्वंतपसालब्धाब्रह्मणस्तुवरेणच ॥ हर्यर्थंयत्तवतपोहरिंप्राप्स्यसिकामिनि ॥६८॥ वृंदावनेचगोविंदंगोलो केत्वंलभिष्यसि॥अहंयास्यामितल्लोकंतनुंत्यक्त्वाचदानवीम्॥६९॥तत्रद्रक्ष्यसिमांत्वंचद्रक्ष्यामित्वांचसांप्रतम् ॥ अगमंराधिकाशापाद्भारतंचसुदुर्लभम् ॥७०॥पुनर्यास्यामितत्रैवकःशोकोमेशृणुप्रिये ॥ त्वंचदेहंपरित्यज्यादिव्यरूपंविधायच॥७१॥तत्कालंप्राप्स्यसिहरिंमाकांतेकातराभव॥ इत्युक्त्वाचदि नांतेचतयासार्धंमनोहरम् ॥ ७२ ॥ सुष्वापशोभनेतल्पेपुष्पचंदनचर्चिते ॥ नानाप्रकारविभवंचकाररत्नमंदिरे ॥७३॥ रत्नप्रदीपसंयुक्तेस्त्रीरत्नंप्राप्यसुंदरी म्॥ निनायरजनींराजाक्रीडाकौतुकमंगलैः ॥७४॥ कृत्वावक्षसितांकांतांरुदतीमतिदुःखिताम्॥ कृशोदरींनिराहारांनिमग्नांशोकसागरे ॥७५॥ पुनस्तां बोधयामासदिव्यज्ञानेनज्ञानवित् ॥ पुराकृष्णेनयद्दत्तंभांडीरेतत्त्वमुत्तमम् ॥ ७६ ॥ सचतस्यैददौसर्वंसर्वशोकहरंपरम्॥ज्ञानंसंप्राप्यसादेवीप्रसन्नवदनेक्ष णा ॥७७॥ क्रीडां चकारहर्षेणसर्वमत्वेतिनश्वरम् ॥ तौदंपतीचक्रीडंतौनिमग्नौसुखसागरे॥ ७८॥ पुलकांचितसर्वांगौमूर्छितौनिर्जनेमुने ॥ अंगप्रत्यंगसंयु क्तौसुप्रीतौसुरतोत्सुकौ ॥ ७९॥ एकांगौचतथातौद्वौचाऽर्धनारीश्वरोयथा॥ प्राणेश्वरंचतुलसीमेनेप्राणाधिकंपरम् ॥८०॥ प्राणाधिकांचतांमेनेराजाप्राणे श्वरींसतीम्॥ तौस्थितौसुखसुप्तौचतंद्रितौसुंदरौसमौ ॥ ८१ ॥ सुवेषौसुखसंभोगादचेष्टौसुमनोहरौ ॥ क्षणंसुचेतनौतौचकथयंतौरसाश्रयात् ॥ ८२ ॥ कथांमनोरमांदिव्यांहसंतौचक्षणंपुनः ॥ क्षणंचकेलिसंयुक्तौरसभावसमन्वितौ ॥ ८३ ॥ सुरतेविरतिर्नास्तितौतद्विषयपंडितौ ॥ सततंजययुक्तौद्वौक्षणंनैव पराजितौ ॥८४॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेशक्तिप्रादुर्भावेविंशोऽध्यायः ॥२०॥ ॥ श्रीनारायणउवाच॥श्री कृष्णंमनसाध्यात्वारक्षःकृष्णपरायणः ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेउत्थायपुष्पतल्पान्मनोहरात् ॥ १ ॥ रात्रिवासःपरित्यज्यस्नात्वामंगलवारिणा ॥ धौतेचवाससीधृ त्वाकृत्वातिलकमुज्ज्वलम् ॥ २ ॥ चकाराह्निकमावश्यमभीष्टदेववंदनम् ॥ दध्याज्यमधुलाजांश्चददर्शवस्तुमंगलम् ॥ ३ ॥

रात्र्युत्तरंजातंवृत्तमाह । श्रीकृष्णमिति ॥ रक्षोराक्षसः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नित्यंनित्यदानम् ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ स्वस्यमरणंनिश्चितंज्ञात्वाभांडाराणिददावित्याह ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ धानुष्काणांधनुर्धराणाम् ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ भांडौघंद्रव्यसमू

रत्नश्रेष्ठंमणिश्रेष्ठंवस्त्रश्रेष्ठंचकांचनम्॥ब्राह्मणेभ्योददौभक्त्यायथानित्यंचनारद ॥४॥ अमूल्यरत्नंयत्किंचिन्मुक्तामाणिक्यहीरकम् ॥ ददौविप्रायगुरवेया त्रामंगलहेतवे ॥ ५ ॥ गजरत्नमश्वरत्नंधनरत्नंमनोहरम् ॥ ददौसर्वेदरिद्रायविप्रायमंगलायच ॥ ६ ॥ भांडाराणांसहस्राणिनगराणांद्विलक्षकम् ॥ ग्रा माणांशतकोटिंचब्राह्मणायददौमुदा ॥ ७ ॥ पुत्रंकृत्वातुराजेंद्रंसर्वेषुदानवेषुच ॥ पुत्रेसमर्प्यभार्यांतांराज्यंचसर्वसंपदम् ॥ ८ ॥ प्रजानुचरसंघंचभांडा रंवाहनादिकम् ॥ स्वयंसन्नाहयुक्तश्चधनुष्पाणिर्बभूवह ॥ ९ ॥ भृत्यद्वाराक्रमेणैवचकारसैन्यसंचयम् ॥ अश्वानांचत्रिलक्षेणलक्षेणवरहस्तिनाम् ॥ ॥ १० ॥ रथानामयुतेनैवधानुष्काणांत्रिकोटिभिः ॥ त्रिकोटिभिर्वर्मिणांचशूलिनांचत्रिकोटिभिः ॥ ११ ॥ कृतासेनापरिमितादानवेंद्रेणनारद ॥ त स्यांसेनापतिश्चैवयुद्धशास्त्रविशारदः ॥ १२ ॥ महारथःसविज्ञेयोरथिनांप्रवरोरणे ॥ त्रिलक्षाऽक्षौहिणीसेनापतिंकृत्वानराधिपः ॥ १३ ॥ त्रिंशदक्षौ हिणीबाधंभांडौघंचचकारह ॥ बहिर्बभूवशिविरान्मनसाश्रीहरिंस्मरन् ॥ १४ ॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणविमानमारुरोहसः ॥ गुरुवर्गान्पुरस्कृत्यप्रययौशंक रांतिकम् ॥ १५ ॥ पुष्पभद्रानदीतीरेयत्राक्षयवटःशुभः ॥ सिद्धाश्रमंचसिद्धानांसिद्धिक्षेत्रंचनारद ॥ १६ ॥ कपिलस्यतपःस्थानंपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ पश्चिमोदधिपूर्वेचमलयस्यचपश्चिमे ॥ १७ ॥ श्रीशैलोत्तरभागेचगंधमादनदक्षिणे ॥ पंचयोजनविस्तीर्णादैर्घ्येशतगुणातथा ॥ १८ ॥ शुद्धस्फटिक संकाशाभारतेचसुपुण्यदा ॥ शाश्वतीजलपूर्णाचपुष्पभद्रानदीशुभा ॥ १९ ॥ लवणाब्धिप्रियाभार्याशश्वत्सौभाग्यसंयुता ॥ शरावतीमिश्रि चनिर्ग तासाहिमालयात् ॥ २० ॥ गोमतींवामतःकृत्वाप्रविष्टापश्चिमोदधौ ॥ तत्रगत्वाशंखचूडोददर्शचंद्रशेखरम् ॥ २१ ॥ वटमूलेसमासीनंसूर्यकोटि समप्रभम् ॥ कृत्वायोगासनंदृष्ट्वामुद्रायुक्तंचसस्मितम् ॥ २२ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशंज्वलंतंब्रह्मतेजसा ॥ त्रिशूलपट्टिशधरंव्याघ्रचर्मांबरंवरम् ॥ २३ ॥ भक्तमृत्युहरंशांतंगौरीकांतंमनोहरम् ॥ तपसांफलदातारंदातारंसर्वसंपदाम् ॥ २४ ॥ आशुतोषंप्रसन्नास्यंभक्तानुग्रहकातरम् ॥ विश्वनाथंविश्ववी जंविश्वरूपंचविश्वजम् ॥ २५ ॥ विश्वंभरंविश्ववरंविश्वसंहारकारकम् ॥ कारणंकारणानांचनरकार्णवतारणम् ॥ २६ ॥ ज्ञानप्रदंज्ञानबीजंज्ञानानंदं सनातनम् ॥ अवरुह्यविमानाच्चतंदृष्ट्वादानवेश्वरः ॥ २७ ॥ सर्वैःसार्धंभक्तियुक्तःशिरसाप्रणनामसः ॥ वामतोभद्रकालींचस्कंदंचतत्पुरःस्थितम् ॥ २८ ॥ आशिषंचददौतस्मैकालीस्कंदश्चशंकरः ॥ उत्तस्थुरागतंदृष्ट्वासर्वेनंदीश्वरादयः ॥ २९ ॥

हंत्रिंशदक्षौहिणीबाधंपीडितंचकाररक्षितंत्रिंशदक्षौहिणीभिश्चकारेत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ देवानांभ्रमेविषयेमिथ्यारूपेदेशेतवाकिंवाफलंनाकिमपीत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सर्वेयूयंदेवासुराःकश्यपवंशोत्पन्नावंधवोऽतोनपरस्परंद्रोहोयुक्तइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ देवेभ्योराज्येदत्तेममसंपदोहानिःस्यात्तत्राऽऽह । स्वसंपदामिति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ब्रह्मणोन्यूनत्वंकालवशादुपपाद्यधर्म

परस्परंचभाषांतेचक्रुस्तत्रचसांप्रतम् ॥ राजाकृत्वाचसंभाषामुवासशिवसंनिधौ ॥ ३० ॥ प्रसन्नात्मामहादेवोभगवांस्तमुवाचह ॥ महादेवउवाच ॥ विधाताजगतांब्रह्मापिताधर्मस्यधर्मवित् ॥ ३१ ॥ मरीचिस्तस्यपुत्रश्चवैष्णवश्चाऽपिधार्मिकः ॥ कश्यपश्चाऽपितत्पुत्रोधर्मिष्ठश्चप्रजापतिः ॥ ३२ ॥ दक्षः प्रीत्याददौतस्मैभक्त्याकन्यास्त्रयोदश ॥ तास्वेकाचदनुःसाध्वीतत्सौभाग्यविवर्धिता ॥ ३३ ॥ चत्वारिंशद्दनोःपुत्रादानवास्तेजसोल्वणाः ॥ तेष्वेकोविप्रचित्तिश्चमहाबलपराक्रमः ॥ ३४ ॥ तत्पुत्रोधार्मिकोदंभोविष्णुभक्तोजितेंद्रियः ॥ जजापपरमंमंत्रंपुष्करेलक्षवत्सरम् ॥ ३५ ॥ शुक्राचार्यंगुरुंकृत्वाकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ तदात्वांतनयंप्राप्तपरंकृष्णपरायणम् ॥ ३६ ॥ पुरात्वंपार्षदोगोपोगोपेष्वपिसुधार्मिकः ॥ अधुनाराधिकाशापाद्भारतेदानवेश्वरः ॥ ३७ ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतंतुच्छंमेनेचवैष्णवः ॥ सालोक्यसार्ष्टिसायुज्यसामीप्यंचहरेरपि ॥ ३८ ॥ दीयमानंनगृह्णंतिवैष्णवाःसेवनंविना ॥ ब्रह्मत्वममरत्वंवातुच्छंमेनेचवैष्णवः ॥ ३९ ॥ इंद्रत्वंवामनुत्वंवानमेनेगणनासुच ॥ कृष्णभक्तस्यतेकिंवादेवानांविषयेभ्रमे ॥ ४० ॥ देहिराज्यंचदेवानांमत्प्रीतिंरक्षभूमिप ॥ सुखंस्वराज्येत्वंतिष्ठदेवास्तिष्ठंतुवैपदे ॥ ४१ ॥ अलंभूतविरोधेनसर्वेकश्यपवंशजाः ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच ॥ ॥ ४२ ॥ ज्ञातिद्रोहस्यपापानिकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ स्वसंपदांचहानिंचयदिराजेंद्रमन्यसे ॥ ४३ ॥ सर्वावस्थाचसमतांकेषांयातिचसर्वदा ॥ ब्रह्मणश्चतिरोभावोलयेप्राकृतिकेसदा ॥ ४४ ॥ आविर्भावःपुनस्तस्यप्रभावादीश्वरेच्छया ॥ ज्ञानवृद्धिश्चतपसास्मृतिलोपश्चनिश्चितम् ॥ ४५ ॥ करोतिसृष्टिंज्ञानेनस्रष्टासोऽपिक्रमेणच॥परिपूर्णतमोधर्मःसत्येसत्याश्रयेसदा ॥४६॥ त्रिभागःसोऽपित्रेतायांद्विभागोद्वापरेस्मृतः ॥ एकभागःकलौपूर्वंतदंशश्चक्रमेणच ॥४७॥कलामात्रंकलेःशेषेकुह्वांचंद्रकलायथा॥यादृक्तेजोरवेर्ग्रीष्मेनतादृक्छिशिरेपुनः॥४८॥ दिनेषुयादृङ्मध्याह्नेसायंप्रातर्नतत्समम्॥उदयंयातिकालेनवालतांचक्रमेणच॥४९॥ प्रकांडतांचतत्पश्चात्कालेऽस्तंपुनरेतिसः॥दिनेप्रच्छन्नतांयातिकालेनदुर्दिनेघने ॥५०॥ राहुग्रस्तेकंपितश्चपुनरेवप्रसन्नताम्॥परिपूर्णतमश्चंद्रःपूर्णिमायांचजायते ॥५१॥तादृशोनभवेन्नित्यंक्षयंयातिदिनेदिने॥ पुनश्चपुष्टिमायातिपरंकुह्वादिनेदिने॥५२॥ संपद्युक्तःशुक्लपक्षेकृष्णेम्लानश्चयक्ष्मणा ॥ राहुग्रस्तेदिनेम्लानोदुर्दिनेनविरोचते ॥५३॥कालेचंद्रोभवेच्छुक्लोभ्रष्टश्रीःकालभेदतः ॥ भविष्यतिबलिश्चेंद्रोभ्रष्टश्रीःसुतलेऽधुना ॥५४॥

स्याऽपिन्यूनत्वमाह । धर्मःसत्येइति । सत्येसत्ययुगेपूर्णोधर्मइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ कुह्वामुअमावास्यायाम् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ प्रकांडतांप्रचंडताम् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५५ ॥ ५६ ॥ यथैतेकालेननश्यंतितत्रनदुःखंतथातवसंपदस्त्वंचनंक्ष्यासितत्रकिंदुःखमित्यर्थः ॥ तर्हिन्यूनत्वादिदोषाभाववान्कस्तत्राह । ईश्वरस्यैवेति ॥ यस्मात्परमात्मनोनुग्रहादहमृं त्युंजयोजातोऽथचप्राकृतंलयंपश्यामिकारणात्मनाभिन्नःसन्सईश्वरइत्यर्थः ॥ सएवेश्वरोमायाविशिष्टत्वान्मायाशक्तिप्रकृतिपुरुषइत्यादिशब्दैर्व्यवह्रियते ॥ गजशरीरेप्रविष्टचैतन्यस्यगजइति व्यवहारवत् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ अतोजन्ममरणादिभयमवश्यभावित्वात्त्याज्यमेवतर्हिकिंकर्तव्यमितिचेत्सर्वभावेनमूलप्रकृतिरूपःसएवाराधनीयइत्याह । तन्नामेति ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ गृहीत्वेति ॥ धर्मवद्भिर्भवद्भिर्बलिर्धनंगृहीत्वाकुतःप्रस्थापितस्तत्रकिंनज्ञातिद्रोहोस्तीतितस्मात्परोपदेशेकुशलाएवयूयमितिप्रतिभातीत्य

कालेनपृथ्वीसस्याढ्यासर्वाधारावसुंधरा ॥ कालेजलेनिमग्नासातिरोभूतांबुविप्लुता ॥ ५५ ॥ कालेनश्यंतिविश्वानिप्रभवंत्येवकालतः ॥ चराचराश्चकाले ननश्यंतिप्रभवंतिच ॥ ५६ ॥ ईश्वरस्यैवसमतात्रह्मणःपरमात्मनः ॥अहंमृत्युंजयोयस्मादसंख्यंप्राकृतंलयम् ॥५७॥ अदर्शंचापिद्रक्ष्यामिवारंवारंपुनःपु नः ॥ सचप्रकृतिरूपंचसएवपुरुषःस्मृतः ॥ ५८ ॥ सचात्मासचजीवश्चनानारूपधरःपरः ॥करोतिसततंयोहितन्नामगुणकीर्तनम्॥५९॥कालेमृत्युंसजय तिजन्मरोगंभयंजराम् ॥ स्रष्टाकृतोविधिस्तेनपाताविष्णुःकृतोभवेत् ॥ ६० ॥ अहंकृतश्चसंहर्तावयंविषयिणःकृताः ॥ कालाग्निरुद्रसंहारेनियोज्यविषये नृप ॥ ६१ ॥ अहंकरोमिसततंतन्नामगुणकीर्तनम् ॥ तेनमृत्युंजयोऽहंचज्ञानेनाऽनेननिर्भयः ॥ ६२ ॥ मृत्युर्मृत्युभयाद्यातिवैनतेयादिवोरगाः ॥ इत्यु क्त्वासचसर्वेशःसर्वभावनतत्परः ॥ ६३ ॥ विररामचशंभुश्चसभामध्येचनारद ॥ राजातद्वचनंश्रुत्वाप्रशशंसपुनःपुनः ॥६४॥ उवाचमधुरंदेवंपरंविनय पूर्वकम् ॥ शंखचूडउवाच ॥ त्वयायत्कथितंदेवनाऽन्यथावचनंस्मृतम् ॥ ६५ ॥ तथापिकिंचिद्यथार्थंश्रूयतांमन्निवेदनम् ॥ ज्ञातिद्रोहेमहत्पापंत्वयोक्त मधुनाचयत् ॥ ६६ ॥ गृहीत्वातस्यसर्वस्वंकुतःप्रस्थापितोबलिः ॥ मयासमुद्धृतंसर्वमूर्ध्वमैश्वर्यमीश्वर ॥ ६७ ॥ सुतलाच्चसमुद्धर्तुंनालंतत्रगदाधरः ॥ सभ्रातृकोहिरण्याक्षःकथंदेवैश्चहिंसितः ॥ ६८ ॥ शुंभादयश्चासुराश्चकथंदेवैर्निपातिताः ॥ पुरासमुद्रमथनेपीयूषंभक्षितुंसुरैः ॥ ६९ ॥ क्लेशभाजोवयं तत्रतेसर्वेफलभोगिनः ॥ क्रीडाभांडमिदंविश्वंप्रकृतेःपरमात्मनः ॥ ७० ॥ यस्मैयत्रसददातितस्यैश्वर्यंभवेत्तदा॥देवदानवयोर्वादःशश्वन्नैमित्तिकःसदा ॥ ॥ ७१ ॥ पराजयोजयस्तेषांकालेऽस्माकंक्रमेणच ॥ तदाऽऽवयोर्विरोधेवागमनंनिष्फलंपरम् ॥ ७२ ॥

भिप्रायः ॥ तत्पातालेगतमैश्वर्यमधुनामयोर्ध्वंसमुद्धृतंतत्कथंजीवन्दास्यामीतिभावः ॥ ६७ ॥ तर्हिबलिस्त्वयाकुतोनोद्धृतइतिचेत्सामर्थ्याभावादित्याह ॥ सुतलाच्चेति ॥ समुद्धर्तुंबलि मितिशेषः ॥ कुतःसामर्थ्याभावोयतस्तत्रबलिद्वारिगदाधरस्तिष्ठतिततइत्यर्थः ॥ तथाऽनेकेपराधाभवतांसंतीत्याह । सभ्रातृकइति ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ तेसर्वेदेवाःप्रकृतेर्मूलप्रकृतिसंज्ञस्यपर मात्मनइत्यर्थः॥७०॥७१॥पराजयोजयइति॥कदाचित्तेषांजयपराजयौकदाचिदस्माकामित्यर्थः॥इदंत्वाधिकामित्याह।तदावयोरिति॥आवयोर्देवासुरयोर्विरोधेतवागमनंनिष्फलम् ॥ ७२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कुतइतिचेत्तवदेवासुरयोःसमत्वादित्याह । समसंबंधिनइति ॥ समसंबंधिनोबंधोर्देवासुरमित्रस्यतवाऽत्रागमनंनोचितमितिभावः ॥ किंचइयंतेइति ॥ अस्माभिःसहयुद्धेतवमहतीलज्जा अस्मासुनांचत्वात्त्वयिमहत्त्वात् ॥ ७३ ॥ किंचजयेइति ॥ अस्माकंजयेअस्माकमेवाऽधिकाकीर्तिस्तवजयेतुनतादृशी ॥ नहिसिंहःसृगालंहत्वाकीर्तिलभते ॥ तवपराजयेतुतवमहतीहानिर्न तथाऽस्माकंसाभवतीतिविशेषइति ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ कालज्जेति ॥ अस्माकंदेवतानांदैत्यैःसहयुद्धंकर्तव्यमित्येवसनातनोधर्मश्चलितोऽस्ति ततोनकापिल

समसंबंधिनोबंधोरीश्वरस्यमहात्मनः ॥ इयंतेमहतीलज्जायुद्धेऽस्माभिःसहाऽधुना ॥ ७३ ॥ जयेततोऽधिकाकीर्तिर्हानिश्चैवपराजये ॥ इत्येतद्वचनंश्रुत्वाप्रहस्यचत्रिलोचनः ॥ ७४ ॥ यथोचितमुत्तरंतमुवाचदानवेश्वरम् ॥ महादेवउवाच ॥ युष्माभिःसहयुद्धेमेब्रह्मवंशसमुद्भवैः ॥ ७५ ॥ कालज्जामहतीराजन्नकीर्तिर्वापराजये ॥ युद्धमादौहरेरेवमधुनाकैटभेनच ॥ ७६ ॥ हिरण्यकशिपोश्चैवसहतेनात्मनानृप ॥ हिरण्याक्षस्ययुद्धंचपुनस्तेनगदाभृता ॥ ७७ ॥ त्रिपुरैःसहयुद्धंचमयापिचपुराकृतम् ॥ सर्वैश्वर्याःसर्वमातुःप्रकृत्याश्चवभूवह ॥ ७८ ॥ सहशुंभादिभिःपूर्वंसमरःपरमाद्भुतः ॥ पार्षदप्रवरस्त्वंचकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ ७९ ॥ येयेहताश्चदैतेयानहिकेऽपित्वयासमाः ॥ कालज्जामहतीराजन्ममयुद्धेत्वयासह ॥ ८० ॥ सुराणांशरणस्यैवप्रेषितश्चहरेरहो ॥ देहिराज्यंचदेवानामितिमेनिश्चितंवचः ॥ ८१ ॥ "युद्धंवाकुरुमत्सार्धंवाग्व्ययेकिंप्रयोजनम् ॥" इत्युक्त्वाशंकरस्तत्रविरराम्चनारद ॥ उत्तस्थौशंखचूडश्चह्यमात्यैःसहसत्वरम् ॥८२॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम॰नवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शिवंप्रणम्यशिरसादानवेंद्रःप्रतापवान् ॥ समारुरोहयानंचसहामात्यैःससत्वरः ॥ १ ॥ शिवःस्वसैन्यंदेवांश्चप्रेरयामाससत्वरम् ॥ दानवेंद्रःससैन्यश्चयुद्धारंभेबभूवह ॥ २ ॥ स्वयंमहेंद्रोयुयुधेसार्धंचवृषपर्वणा ॥ भास्करोयुयुधेविप्रचित्तिनासहसत्वरः ॥ ३ ॥ दंभेनसहचंद्रश्चचकारपरमंरणम् ॥ कालस्वरेणकालश्चगोकर्णेनहुताशनः ॥४॥ कुबेरःकालकेयेनविश्वकर्मामयेनच॥भयंकरेणमृत्युश्चसंहारेणमयस्तथा ॥ ५ ॥ विकंकणेनवरुणश्चंचलेनसमीरणः ॥ बुधश्चघृतपृष्ठेनरक्ताक्षेणशनैश्चरः॥६॥जयंतोरत्नसारेणवसवोवर्चसांगणैः ॥ अश्विनौचदीप्तिमताधूम्रेणनलकूबरः ॥७॥ धुरंधरेणधर्मश्चउषाक्षेणचमंगलः ॥ शोभाकरेणवैभानुःपिठरेणचमन्मथः ॥ ८ ॥ गोधामुखेनचूर्णेनखड्गेनचध्वजेनच ॥ कांचीमुखेनपिंडेनधूम्रेणसहनंदिना ॥ ९ ॥

ज्जेत्यर्थः ॥ ८० ॥ शरणस्याश्रयस्यप्रेषितस्तेनप्रेषितइत्यर्थः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ पंचसप्ततिपद्यैस्तुयुद्धारंभः सचोच्यते ॥ यत्रदेवासुराणांचपराक्रमउदीर्यते ॥ १ ॥ शंखचूडोयुद्धार्थमुत्थितवानित्युक्तंतदुत्तरंजातंवृत्तमाह । शिवंप्रणम्येति ॥ १ ॥ २ ॥ केनसाकंकस्ययुद्धंजातंतदाह । स्वयंमहेंद्रइति ॥ ३ ॥ अत्रतृतीयांतादैत्याःप्रथमांतादेवाः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





गोघामुखादिभिरादित्याद्यायुयुधुः ॥ एकादशरुद्राएकादशभयंकरैर्दैत्यैर्युयुधुः ॥ १० ॥ महामारीदैत्यपक्षीया ॥ उग्रचंडादयोदेवताः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ राजाशंखचूडः ॥ २४ ॥ वन्ह्यत्थानंपरस्परशस्त्रवर्षणात् ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ वक्षस्यवक्षसइत्यर्थः॥३०॥

विश्वेनचपलाशेनादित्याद्यायुयुधुःपरे ॥ एकादशचरुद्रावैएकादशभयंकरैः ॥ १० ॥ महामारीचयुयुधेचोग्रचंडादिभिःसह ॥ नंदीश्वरादयःसर्वेदानवानांगणैःसह ॥ ११ ॥ युयुधुश्चमहायुद्धेप्रलयेऽपिभयंकरे ॥ वटमूलेचशंभुश्चतस्थौकाल्यासुतेनच ॥ १२ ॥ सर्वेचयुयुधुःसैन्यसमूहाःसततंमुने ॥ रत्नसिंहासनेरम्येकोटिभिर्दानवैःसह ॥ १३ ॥ उवासशंखचूडश्चरत्नभूषणभूषितः ॥ शंकरस्यचयेयोधादानवैश्चपराजिताः ॥ १४ ॥ देवाश्चदुद्रुवुःसर्वेभीताश्चक्षतविग्रहाः ॥ चकारकोपंस्कंदश्चदेवेभ्यश्चाभयंददौ ॥ १५ ॥ बलंचस्वगणानांचवर्धयामासतेजसा ॥ सोऽयमेकश्चयुयुधेदानवानांगणैःसह ॥ ॥ १६ ॥ अक्षौहिणीनांशतकंसमरेचजघानसः ॥ असुरान्पातयामासकालीकमललोचना ॥ १७ ॥ पपौरक्तंदानवानामतिक्रुद्धाततःपरम् ॥ दशलक्षंगजेंद्राणांशतलक्षंचकोटिशः ॥ १८ ॥ समादायैकहस्तेनमुखेचिक्षेपलीलया ॥ कबंधानांसहस्रंचननर्तसमरेमुने ॥ १९ ॥ स्कंदस्यशरजालेनदानवाःक्षतविग्रहाः ॥ भीताश्चदुद्रुवुःसर्वेमहारणपराक्रमाः ॥ २० ॥ वृषपर्वाविप्रचित्तिर्दंभश्चापिविकंकणः ॥ स्कंदेनसार्धंयुयुधुस्तेसर्वेविक्रमेणच ॥ २१ ॥ महामारीचयुयुधेनवभूवपराङ्मुखी ॥ बभूवुस्तेचसंक्षुब्धाःस्कंदस्यशक्तिपीडिताः ॥ २२ ॥ नदुद्रुवुर्भयात्स्वर्गेपुष्पवृष्टिर्बभूवह ॥ स्कंदस्यसमरंदृष्ट्वामहारुद्रंसमुल्बणम् ॥ २३ ॥ दानवानांक्षयकरंयथाप्राकृतिकोलयः ॥ राजाविमानमारुह्यचकारबाणवर्षणम् ॥२४॥ नृपस्यशरवृष्टिश्चघनस्यवर्षणंयथा॥ महाघोरांधकारश्चवन्ह्युत्थानंबभूवच॥२५॥देवाःप्रदुद्रुवुःसर्वेऽप्यन्येनंदीश्वरादयः ॥ एकएवकार्तिकेयस्तस्थौसमरमूर्धनि॥२६॥ पर्वतानांचसर्पाणांशिलानांशाखिनांतथा ॥ नृपश्चकारवृष्टिंचदुर्वारांचभयंकरीम्॥२७॥नृपस्यशरवृष्टयाचप्रहितःशिवनंदनः ॥ नीहारेणचसांद्रेणप्रहितोभास्करोयथा॥२८॥धनुश्चिच्छेदस्कंदस्यदुर्वहंचभयंकरः॥बभंजचरथंदिव्यंचिच्छेदरथपीठकान्॥२९॥मयूरंजर्जरीभूतंदिव्यास्त्रेणचकारसः॥शक्तिंचिक्षेपसूर्याभांतस्यवक्षस्यघातिनीम् ॥३०॥ क्षणंमूर्छांचसंप्रापबभूवचेतनःपुनः ॥ गृहीत्वातद्धनुर्दिव्यंयद्दत्तंविष्णुनापुरा ॥ ३१॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणंयानमारुह्यकार्तिकः॥शस्त्रास्त्रंचगृहीत्वाचचकाररणमुल्बणम् ॥३२॥ सर्पांश्चपर्वतांश्चैववृक्षांश्चप्रस्तरांस्तथा ॥ सर्वांश्चिच्छेदकोपेनदिव्यास्त्रेणशिवात्मजः ॥३३॥ वह्निंनिर्वापयामासपार्जन्येनप्रतापवान्॥रथंधनुश्चचिच्छेदशंखचूडस्यलीलया॥३४॥सन्नाहंसारथिंचैवकिरीटंमुकुटोज्ज्वलम् ॥ चिक्षेपशक्तिंशुक्लाभांदानवेंद्रस्यवक्षसि ॥ ३५ ॥

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ कार्तिकस्यस्कंदस्यसमरंरक्षितुम् ॥ ४२ ॥ वाद्यभांडः समुदायः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

मूर्छांसंप्राप्यराजाचचेतनश्चबभूवह ॥ आरुरोहयानमन्यद्धनुर्जग्राहसत्वरः ॥ ३६ ॥ चकारशरजालंचमाययामायिनांवरः ॥ गुहंचच्छादसमरेशरजाले ननारद ॥ ३७ ॥ जग्राहशक्तिमव्यग्रांशतसूर्यसमप्रभाम् ॥ प्रलयाग्निशिखारूपांविष्णोश्चतेजसावृताम् ॥ ३८ ॥ चिक्षेपतांचकोपेनमहावेगेनकार्तिके ॥ पपातशक्तिस्तद्गात्रेवह्निराशिरिवोज्वला ॥ ३९ ॥ मूर्छांसंप्रापशक्त्याचकार्तिकेयोमहाबलः ॥ कालीगृहीत्वातंक्रोडेनिनायाशिवसन्निधौ ॥ ४० ॥ शिवस्तंचाऽपिज्ञानेनजीवयामासलीलया ॥ ददौबलमनंतंचसमुत्तस्थौप्रतापवान् ॥ ४१ ॥ कालीजगामसमरंरक्षितुंकार्तिकस्यया ॥ वीरास्तामनुजग्मुश्चतेचनंदीश्वरादयः ॥ ४२ ॥ सर्वेदेवाश्चगंधर्वायक्षराक्षसकिन्नराः ॥ वाद्यभांडश्चबहुशःशतशोमधुवाहकाः ॥ ४३ ॥ साचगत्वाऽथसंग्रामंसिंहनादंचकारच ॥ देव्याश्चसिंहनादेनप्रापुर्मूर्छांचदानवाः ॥ ४४ ॥ अट्टाट्टहासमशिवंचकारचपुनःपुनः ॥ दृष्ट्वापपौचमाध्वीकंननर्तरणमूर्धनि ॥ ४५ ॥ उग्रदंष्ट्राचोग्रदंडाकोटकीचपपौमधु ॥ योगिनीडाकिनीनांचगणाःसुरगणादयः ॥ ४६ ॥ दृष्ट्वाकालींशंखचूडःशीघ्रमाजौसमाययौ ॥ दानवाश्चभयंप्रापूराजातेभ्योऽभयंददौ ॥ ४७ ॥ कालीचिक्षेपवह्निंचप्रलयाग्निशिखोपमम् ॥ राजानिर्वापयामासपार्जन्येनचलीलया ॥ ४८ ॥ चिक्षेपवारुणंसाचतीव्रंचमहद्द्रुतम् ॥ गांधर्वेणचचिच्छेददानवेंद्रश्चलीलया॥४९॥माहेश्वरंप्रचिक्षेपकालीवह्निशिखोपमम् ॥ राजाजघानतंशीघ्रंवैष्णवेनचलीलया ॥ ५० ॥ नारायणास्त्रंसादेवीचिक्षेपमंत्रपूर्वकम् ॥ राजाननामतद्दृष्ट्वाचावरुह्यरथादसौ ॥५१॥ ऊर्ध्वंजगामतच्चास्त्रंप्रलयाग्निशिखोपमम्॥पपातशंखचूडश्चभक्त्यातंदंडवद्भुवि ॥ ५२ ॥ ब्रह्मास्त्रंसाचचिक्षेपयत्नतोमंत्रपूर्वकम् ॥ ब्रह्मास्त्रेणमहाराजोनिर्वापंचचकारसः ॥५३॥ तदाचिक्षेपदिव्यास्त्रंसादेवीमंत्रपूर्वकम् ॥ राजादिव्यास्त्रजालेनतन्निर्वाणंचकारच ॥ ५४ ॥ देवीचिक्षेपशक्तिंचयत्नतोयोजनायताम्॥ राजादिव्यास्त्रजालेनशतखंडांचकारह॥५५॥जग्राहमंत्रपूतंचदेवीपाशुपतंरुषा ॥ निक्षेपणंनिरोद्धुंचवाग्बभूवाऽशरीरिणी॥५६॥मृत्युःपाशुपतेनास्तिनृपस्यचमहात्मनः ॥ यावदस्तिचमंत्रस्यकवचंचहरेरिति ॥ ५७ ॥ यावत्सतीत्वमस्त्येवसत्याश्चनृपयोषितः ॥ तावदस्यजरामृत्युर्नास्तीतिब्रह्मणोवचः ॥५८॥ इत्याकर्ण्यभद्रकालीनतच्चिक्षेपशस्त्रकम् ॥ शतलक्षंदानवानांजग्रासलीलयाक्षुधा ॥५९॥ ग्रस्तुंजगामवेगेनशंखचूडंभयंकरी ॥ दिव्यास्त्रेणसुतीक्ष्णेनवारयामासदानवः ॥ ६० ॥ खड्गंचिक्षेपसादेवीग्रीष्मसूर्योपमंयथा ॥ दिव्यास्त्रेणदानवेंद्रःशतखंडंचकारसः ॥ ६१ ॥ पुनर्ग्रस्तुंमहादेवीवेगेनचजगामतम् ॥ सर्वसिद्धेश्वरःश्रीमान्ववृधेदानवेश्वरः ॥ ६२ ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ पाशुपतास्त्रत्यागंनिरोद्धुमाकाशवाणीबभूवेत्यर्थः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ग्रस्तुंग्रसितुम् ॥ ६२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ देव्यासहबाहुयुद्धंनचकार किंतु तदाननाम ॥ किंचदेव्याअस्त्रंस्वयंचिच्छेद नतुतस्याउपरिस्वयंचिक्षेप ॥ स्वतेजसाअस्त्रंजग्राहचकुतोनाऽस्त्रंचिक्षेपयतोवैष्णव स्ततोमातृबुद्ध्यानाऽस्त्रंचिक्षेप ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ क्षतजंरक्तम् ॥ क्षुधाक्षुधयापपौ ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ पाशुपतेनहंतुमुद्युक्तेत्यर्थः ॥ तदेतिशेषः ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ इतिश्रीदेवी०तिलकेनवमस्कंधेद्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चत्रिंशद्भिःपद्यैरथजनार्दनः ॥ शंखचूडस्यकवचंजहारेतिचवर्ण्यते ॥ १ ॥ भद्रकालीवाक्यश्रवणोत्तरं

वेगेनमुष्टिनाकालीकोपयुक्ताभयंकरी ॥ बभंजचरथंतस्यजघानसारथिंसती ॥ ६३ ॥ साचशूलंचचिक्षेपप्रलयाग्निशिखोपमम् ॥ वामहस्तेनजग्राहशंख चूडःस्वलीलया ॥ ६४ ॥ मुष्ट्याजघानतंदेवीमहाकोपेनवेगतः ॥ बभ्रामचतयादैत्यःक्षणंमूर्छामवापच ॥६५॥ क्षणेनचेतनांप्राप्यसमुत्तस्थौप्रतापवान् ॥ नचकारबाहुयुद्धंदेव्यासहननामताम् ॥ ६६ ॥ देव्याश्चास्त्रंसचिच्छेदजग्राहचस्वतेजसा ॥ नास्त्रंचिक्षेपतांभक्तोमातृभक्त्यातुवैष्णवः ॥ ६७ ॥ गृहीत्वा दानवंदेवीभ्रामयित्वापुनःपुनः ॥ ऊर्ध्वंचप्रापयामासमहावेगेनकोपिता ॥ ६८ ॥ ऊर्ध्वात्पपातवेगेनशंखचूडःप्रतापवान् ॥ निपत्यचसमुत्तस्थौप्रणम्यभद्र कालिकाम् ॥६९॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणंविमानंसुमनोहरम् ॥ आरुरोहहर्षयुक्तोनविश्रांतोमहारणे ॥ ७० ॥ दानवानांचक्षतजंसादेवीचपपौक्षुधा ॥ पीत्वाभु क्त्वाभद्रकालीजगामशंकरांतिकम् ॥ ७१ ॥ उवाचरणवृत्तांतंपौर्वापर्ययथाक्रमम् ॥ श्रुत्वाजहासशंभुश्चदानवानांविनाशनम् ॥७२॥ लक्षंचदानवेंद्राणा मवशिष्टंरणेऽधुना ॥ भुंजंत्यानिर्गतंवक्त्रात्तदन्यंभुक्तमीश्वर ॥७३॥ संग्रामेदानवेंद्रंचहंतुंपाशुपतेनवै ॥ अवध्यस्तवराजेतिवाग्बभूवाशरीरिणी ॥७४॥ राजें द्रश्चमहाज्ञानीमहाबलपराक्रमः ॥ नचचिक्षेपमय्यस्त्रंचिच्छेदममसायकम् ॥७५॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेन०नारदनारायणसंवादेद्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शिवस्तत्त्वंसमाकर्ण्यतत्त्वज्ञानविशारदः ॥ ययौस्वयंचसमेरस्वगणैःसहनारद ॥१॥ शंखचूडःशिवंदृष्ट्वाविमानाद वरुह्यच ॥ ननामपरयाभक्त्याशिरसादंडवद्भुवि ॥२॥ तंप्रणम्यचवेगेनविमानमारुरोहसः ॥ तूर्णंचकारसन्नाहंधनुर्जग्राहदुर्वहम् ॥३॥ शिवदानवयोर्युद्धंपू र्णमब्दशतंपरा ॥ नवभूवतुरन्योन्यंब्रह्मअयपराजयौ ॥४॥ न्यस्तशस्त्रश्चभगवान्न्यस्तशस्त्रश्चदानवः ॥ रथस्थःशंखचूडश्चवृषस्थोवृषभध्वजः ॥५॥ दानवा नांचशतकमुद्धृतंचबभूवह ॥ रणेयेयेमृताःशंभुर्जीवयामासतान्विभुः ॥ ६ ॥ एतस्मिन्नंतरेवृद्धब्राह्मणःपरमातुरः ॥ आगत्यचरणस्थानमुवाचदानवेश्वरम् ॥७॥ वृद्धब्राह्मणउवाच ॥ देहिभिक्षांचराजेंद्रमह्यंविप्रायसांप्रतम् ॥ त्वंसर्वसंपदांदातायन्मेमनसिवांछितम् ॥८॥ निरीहायचवृद्धायतृषितायचसांप्रतम् ॥ पश्चात्त्वांकथयिष्यामिपुरःसत्यंचकुर्विति ॥ ९ ॥ ओमित्युवाचराजेंद्रःप्रसन्नवदनेक्षणः ॥ कवचार्थीजनश्चाऽहमित्युवाचातिमायया ॥ १० ॥

शिवोयच्चकारतदाह । शिवस्तत्वमिति ॥ युद्धवृत्तांतरूपंतत्त्वमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ तंप्रणम्येति ॥ एतादृशोऽयंभगवद्भक्तइतिभावः ॥ सन्नाहंयुद्धोद्योगम् ॥ ३ ॥ अब्दशतमभूदिति शेषः ॥ ४ ॥ ५ ॥ उद्धृतम्मथितंदानवानांशतकमनेकेदानवाइत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ पश्चात्त्वामिति ॥ मत्पुरःप्रथमतोऽतिसत्यंकुरुदास्यामीतिशपथंकुरुपश्चात्त्वांयन्मदभिलषितंत त्कथयिष्यामीत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कवचंभूर्जपत्रेविलिख्यस्वर्णपेटिकायांस्थापयित्वाकंठेयद्धृतंतादित्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ शिवकेशवयोरन्येनताभ्यामन्येनपुरुषेणदुर्वहामित्यर्थः ॥ १४ ॥ प्रस्थेनाविस्तारेणसजीवं चेतनयासहितमित्यर्थः ॥ नित्यरूपमित्याद्यतिशयोक्तिः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ तंचेति ॥ श्रीकृष्णंप्रतीत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ शंभुनाविनेत्यनेनशिवोपरिशंखजलंनदेयमितिभावः ॥ २५ ॥ २६ ॥ स्त्रीणांचेति ॥ स्त्रीशूद्रैःशंखध्वनिर्नकर्तव्यइत्यर्थः ॥ २७ ॥ विपक्षेबाधकमाह । यातीति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इति

त च्छ्रुत्वाकवचंदिव्यंजग्राहहरिरेवच ॥ शंखचूडस्यरूपेणजगामतुलसींप्रति ॥ ११ ॥ गत्वातस्यांमाययाचवीर्याधानंचकारच ॥ अथशंभुर्हरेःशूलंजग्राह दानवंप्रति ॥ १२ ॥ ग्रीष्ममध्याह्नमार्तंडप्रलयाग्निशिखोपमम् ॥ दुर्निवार्यंचदुर्धर्षमव्यर्थंवैरिघातकम् ॥ १३ ॥ तेजसाचक्रतुल्यंचसर्वशस्त्रास्त्रसारकम् ॥ शिवकेशवयोरन्यदुर्वहंचभयंकरम् ॥ १४ ॥ धनुःसहस्रंदैर्घ्येणप्रस्थेनशतहस्तकम् ॥ सजीवंब्रह्मरूपंचनित्यरूपमनिर्दिशम् ॥ १५ ॥ संहर्तुंसर्वब्रह्मांडमलंयत्स्वीयलीलया ॥ चिक्षेपतोलनंकृत्वाशंखचूडेचनारद ॥ १६ ॥ राजाचापंपरित्यज्यश्रीकृष्णचरणांबुजम् ॥ ध्यानेचकारभक्त्याचकृत्वा योगासनंधिया ॥ १७ ॥ शूलंचभ्रमणंकृत्वापपातदानवोपरि ॥ चकारभस्मसात्तंचसरथंचाऽथलीलया ॥ १८ ॥ राजाधृत्वादिव्यरूपंकिशोरंगोपवेषकम् ॥ द्विभुजंमुरलीहस्तंरत्नभूषणभूषितम् ॥ १९ ॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणंवेष्टितंगोपकोटिभिः ॥ गोलोकादागतंयानमारुरोहपुरंययौ ॥ २० ॥ गत्वाननामशिरसासराधाकृष्णयोर्मुने ॥ भक्त्याचचरणांभोजंरासेवृंदावनेवने ॥ २१ ॥ सुदामानंचतौदृष्ट्वाप्रसन्नवदनेक्षणौ ॥ क्रोडेचक्रतुरत्यंतंप्रेम्णाऽतिपरिसंयुतौ ॥ २२ ॥ अथशूलंचवेगेनप्रययौतंचसादरम् ॥ अस्थिभिःशंखचूडस्यशंखजातिर्बभूवह ॥२३॥ नानाप्रकाररूपेणशश्वत्पूतासुरार्चने ॥ प्रशस्तंशंखतोयंचदेवानांप्रीतिदंपरम् ॥२४॥ तीर्थतोयस्वरूपंचपवित्रंशंभुनाविना ॥ शंखशब्दोभवेद्यत्रतत्रलक्ष्मीःसुसंस्थिरा ॥२५॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुयःस्नातःशंखवारिणा ॥ शंखोहेररधिष्ठानंयत्रशंखस्ततोहरिः ॥ २६ ॥ तत्रैववसतेलक्ष्मीर्दूरीभूतममंगलम् ॥ स्त्रीणांचशंखध्वनिभिःशूद्राणांचविशेषतः ॥ २७ ॥ भीतारुष्टायातिलक्ष्मीस्तत्स्थलादन्यदेशतः ॥ शिवोऽपिदानवंहत्वाशिवलोकंजगामह॥२८॥ प्रहृष्टोवृषभारूढःस्वगणैश्चसमावृतः॥सुराःस्वविषयंप्रापुः परमानंदसंयुताः ॥ २९ ॥ नेदुर्दुंदुभयःस्वर्गेजगुर्गंधर्वकिन्नराः ॥ बभूवपुष्पवृष्टिश्चशिवस्योपरिसंततम् ॥ ३० ॥ प्रशशंसुःसुरास्तंचमुनींद्रप्रवरादयः ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ नारायणश्चभगवान्वीर्याधानंचकारह ॥ तुलस्यांकेनरूपेणतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ नारायणश्चभगवान्देवानांसाधनेषुच ॥ शंखचूडस्यकवचंगृहीत्वाविष्णुमायया ॥ २ ॥

श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेत्रयोविंशोध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ एकाधिकशतश्लोकैस्तुलसीसंगवर्णनम् ॥ कृत्वातदुत्तरंतस्यामाहात्म्यमपिचोच्यते ॥ १ ॥ नारायणस्तुलसीसंगंकथंकृतवानितिकथांपृच्छतिनारदः। नारदउवाच नारायणश्चेति ॥ १ ॥ साधनेषुसाधननिमित्तमित्यर्थः ॥ २ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तस्यास्तुलस्याःपातिव्रत्यनाशेनतत्पतेःशंखचूडस्यहननेच्छयेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ परमानंदेति ॥ मत्पतिर्जयंसंपाद्याऽऽगतइतिहेतोरित्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ कांतंसुंदरम् ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ असंख्यविश्वसंहर्त्राशिवेन ॥ १२ ॥ १३ ॥ अब्दमब्दशतमित्यर्थः ॥ पूर्वंशतवर्षंयुद्धस्योक्तत्वात् ॥ १४ ॥ आवयोःशिवस्यममचप्रीतिंस्नेहम् ॥ १५ ॥ १६ ॥

पुनर्विधायतद्रूपंजगामतत्सतीगृहम् ॥ पातिव्रत्यस्यनाशेनशंखचूडजिघांसया ॥ ३ ॥ दुंदुभिंवादयामासतुलसीद्वारसन्निधौ ॥ जयशब्दंचतद्द्वारेबोध यामाससुंदरीम् ॥ ४ ॥ तच्छ्रुत्वाचरवंसाध्वीपरमानंदसंयुता ॥ राजमार्गंगवाक्षेणददर्शपरमादरात् ॥ ५ ॥ ब्राह्मणेभ्योधनंदत्त्वाकारयामासमंगलम् ॥ वंदिभ्योभिक्षुकेभ्यश्चवाचिभ्यश्चधनंददौ ॥ ६ ॥ अवरुह्यरथाद्देवोदेव्याश्चभवनंययौ ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणंसुंदरंसुमनोहरम् ॥ ७ ॥ दृष्ट्वाचपुरतःकांतं सातंकांतंमुदान्विता ॥ तत्पादंक्षालयामासननामचरुरोदच ॥ ८ ॥ रत्नसिंहासनेरम्येवासयामासकामुकी ॥ तांबूलंचददौतस्मैकर्पूरादिसुवासितम् ॥ ॥ ९ ॥ अद्यमेसफलंजन्मजीवनंचबभूवह ॥ रणेगतंचप्राणेशंपश्यंत्याश्चपुनर्गृहे ॥ १० ॥ सस्मितासकटाक्षंचसकामापुलकांकिता ॥ प्रपच्छरणवृत्तांतं कांतंमधुरयागिरा ॥ ११ ॥ तुलस्युवाच ॥ असंख्यविश्वसंहर्त्रासार्धंमाजौतवप्रभो ॥ कथंबभूवविजयस्तन्मेब्रूहिकृपानिधे ॥ १२ ॥ तुलसीवचनंश्रुत्वाप्रहस्य कमलापतिः ॥ शंखचूडस्यरूपेणतामुवाचाऽमृतंवचः ॥ १३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आवयोःसमरःकांतेपूर्णमब्दंबभूवह ॥ नाशोवभूवसर्वेषांदानवा नांचकामिनि ॥ १४ ॥ प्रीतिंचकारयामासब्रह्माचस्वयमावयोः ॥ देवानामधिकारश्चप्रदत्तोब्रह्मणोज्ञया ॥ १५ ॥ मयागतंस्वभवनंशिवलोकंशिवोग तः ॥ इत्युक्त्वाजगतांनाथःशयनंचचकारह ॥ १६ ॥ रेमेरमापतिस्तत्रराम्यासहनारद ॥ सासाध्वीसुखसंभोगादाकर्षणव्यतिक्रमात् ॥ १७ ॥ सर्वेवित र्कयामासकस्त्वमेवेत्युवाचसा ॥ तुलस्युवाच ॥ कोवात्वंवदमायेशभुक्ताऽहंमाययात्वया ॥ १८ ॥ दूरीकृतंमत्सतीत्वंयदतस्त्वांशपामिहे ॥ तुलसीवच नंश्रुत्वाहरिःशापभयेनच ॥ १९ ॥ दधारलीलयाब्रह्मन्सुमूर्तिंसुमनोहराम् ॥ ददर्शपुरतोदेवीदेवदेवंसनातनम् ॥ २० ॥ नवीननीरदश्यामंशरत्पंकज लोचनम् ॥ कोटिकंदर्पलीलाभंरत्नभूषणभूषितम् ॥ २१ ॥ ईषद्धास्यंप्रसन्नास्यंशोभितंपीतवाससम् ॥ तंदृष्ट्वाकामिनीकामंमूर्च्छांसंप्रापलीलया ॥ २२ ॥ पुनश्चचेतनांप्राप्यपुनःसातमुवाचह ॥ तुलस्युवाच ॥ हेनाथतेदयानास्तिपाषाणसदृशस्यच ॥ २३ ॥ छलेनधर्मभंगेनममस्वामीत्वयाहतः ॥ पाषाणहृदयस्त्वं हिदयाहीनोयतःप्रभो ॥ २४ ॥ तस्मात्पाषाणरूपस्त्वंभवेदेवभवाऽधुना ॥ येवदंतिचसाधुंत्वांतेभ्रांताहिनसंशयः ॥ २५ ॥ भक्तोविनापराधेनपरार्थेचकथंहतः ॥ भृशंरुरोदशोकार्तोविललापमुहुर्मुहुः ॥ २६ ॥ ततश्चकरुणांदृष्ट्वाकरुणारससागरः ॥ नयेनतांबोधयितुमुवाचकमलापतिः ॥ २७ ॥

व्यतिक्रमात्पूर्वपातिसंगमाकर्षणापेक्षयाभेदात् ॥ १७ ॥ नाऽयंपतिःकिंतुपतिवेषधारीकश्चिदितिमत्वाह । कस्त्वमिति ॥ १८ ॥ यद्यस्मात् ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ भवेप्रपंचे ॥ २५ ॥ भक्तःशंखचूडः ॥ परार्थेदेवार्थम् ॥ २६ ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

मदर्थेमत्प्रयोजनायममपतिःकृष्णोभवत्वितीच्छयेत्यर्थः ॥ २८ ॥ तेनतपश्चर्यात्वदर्थंकृतातस्यफलंतेनभुक्तम् ॥ अधुनात्वयायदर्थंतपस्तप्तंतस्यफलंदातुमुचितमितिकृत्वामयैतादृशंकृतमित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ तस्यपुण्यवृक्षस्यतुलसीकेशसंभूतत्वात्तुलसीतिसंज्ञास्यादित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ मस्तकेतुलसीपत्रपतनप्राप्तयेइत्यर्थः

श्रीभगवानुवाच ॥ तपस्त्वयाकृतंभद्रेमदर्थेभारतेचिरम् ॥ त्वदर्थेशंखचूडश्चचकारसुचिरंतपः ॥ २८ ॥ कृत्वात्वांकामिनींसोऽपिविजहारचतत्क्षणात् ॥ अधुनादातुमुचितंतवैवतपसःफलम् ॥ २९ ॥ इदंशरीरंत्यक्त्वाचदिव्यदेहंविधायच ॥ रामेरममयासार्धंत्वंरमास्वदृशीभव ॥ ३० ॥ इयंतनुर्नदीरूपागंडकीतिचविश्रुता ॥ पूतासुपुण्यदानृणांपुण्येभवतुभारते ॥ ३१ ॥ तवकेशसमूहश्चपुण्यवृक्षोभविष्यति ॥ तुलसीकेशसंभूतातुलसीतिचविश्रुता ॥ ३२ ॥ त्रिषुलोकेषुपुष्पाणांपत्राणांदेवपूजने ॥ प्रधानरूपातुलसीभविष्यतिवरानने ॥ ३३ ॥ स्वर्गेमर्त्येचपातालेगोलोकेममसन्निधौ ॥ भवत्वंतुलसीवृक्षवरापुष्पेषुसुंदरी ॥ ३४ ॥ गोलोकेविरजातीरेरासेवृंदावनेवने ॥ भांडीरेचंपकवनेरम्येचंदनकानने ॥ ३५ ॥ माधवीकेतकीकुंदमालिकामालतीवने ॥ वासस्तेऽत्रैवभवतुपुण्यस्थानेषुपुण्यदः ॥ ३६ ॥ तुलसीतरुमूलेषुपुण्यदेशेषुपुण्यदम् ॥ अधिष्ठानंचतीर्थानांसर्वेषांचभविष्यति ॥ ३७ ॥ तत्रैवसर्वदेवानांममाऽधिष्ठानमेवच ॥ तुलसीपत्रपतनप्राप्तयेचवरानने ॥ ३८ ॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः ॥ तुलसीपत्रतोयेनयोऽभिषेकंसमाचरेत् ॥ ३९ ॥ सुधाघटसहस्राणांयातुष्टिस्तुभवेद्धरेः ॥ साचतुष्टिर्भवेन्नूनंतुलसीपत्रदानतः ॥ ४० ॥ गवामयुतदानेनयत्फलंतत्फलंभवेत् ॥ तुलसीपत्रदानेनतत्फलंकार्तिकेसति ॥ ४१ ॥ तुलसीपत्रतोयंचमृत्युकालेचयोलभेत् ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकेमहीयते ॥ ४२ ॥ नित्यंयस्तुलसीतोयंभुंक्तेभक्त्याचमानवः ॥ लक्षाश्वमेधजंपुण्यंसंप्राप्नोतिसमानवः ॥ ४३ ॥ तुलसींस्वकरेकृत्वाधृत्वादेहेचमानवः ॥ प्राणांस्त्यजतितीर्थेषुविष्णुलोकंसगच्छति ॥ ४४ ॥ तुलसीकाष्ठनिर्माणमालांगृह्णातियोनरः ॥ पदेपदेऽश्वमेधस्यलभतेनिश्चितंफलम् ॥ ४५ ॥ तुलसींस्वकरेकृत्वास्वीकारंयोनरक्षति ॥ सयातिकालसूत्रंचयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ४६ ॥ करोतिमिथ्याशपथंतुलस्यांयोऽत्रमानवः ॥ सयातिकुंभीपाकंचयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ४७ ॥ तुलसीतोयकणिकांमृत्युंकालेचयोलभेत् ॥ रत्नयानंसमारुह्यवैकुंठेप्राप्यतेध्रुवम् ॥ ४८ ॥ पूर्णिमायाममायांचद्वादश्यांरविसंक्रमे ॥ तैलाभ्यंगंचकृत्वाचमध्याह्नेनिशिसंध्ययोः ॥ ४९ ॥ आशौचेऽशुचिकालेयेरात्रिवासान्वितानराः ॥ तुलसींयेविचिन्वंतितेछिंदंतिहरेःशिरः ॥ ५० ॥ त्रिरात्रंतुलसीपत्रंशुद्धंपर्युषितंसति ॥ श्राद्धेव्रतेचदानेचप्रतिष्ठायांसुरार्चने ॥ ५१ ॥ भूगतंतोयपतितंयद्दत्तंविष्णवेसति ॥ शुद्धंचतुलसीपत्रंक्षालनादन्यकर्मणि ॥ ५२ ॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ स्वीकारम् इतःपरमिदंकरिष्यामीत्येवंरूपम् ॥ तुलसींस्वकरेकृत्वाधृत्वाकृतंस्वीकारंयोनरक्षतीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एवंवृक्षरूपेणत्वंपृथिव्यांस्थास्यसितदधिष्ठातृमूर्तिरूपेणतुगोलोकेमत्सन्निधौस्थास्यसीत्याह ॥ ५३ ॥ नद्यधिष्ठात्रीगंडक्यधिष्ठात्री ॥ ५४ ॥ त्वंचस्वयंपूर्णरूपेणेत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ मदीयकंचक्रंसुदर्शनम् ॥ ५७ ॥ वनमालाशिलोपरिमालाकारारेखा लक्ष्मीनारायणाभिधंरूपमितिशेषः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ गोष्पदंप्रसिद्धम् ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ बाणविक्षतंशर प्रहारचिह्नांकितमित्यर्थः ॥ शरतूणसमन्वितंशरचिह्नसमन्वितंतूणोनिषंगस्तत्समन्वितमित्यर्थः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ चक्राकारंसश्रीकंवामांकेलक्ष्मीचिह्नसहितमितिराघवभट्टः ॥ मध्यमंम

वृक्षाधिष्ठातृदेवीयागोलोकेचनिरामये ॥ कृष्णेनसार्धंनित्यंचनित्यंक्रीडांकरिष्यसि ॥ ५३ ॥ नद्यधिष्ठातृदेवीयाभारतेचसुपुण्यदा ॥ लवणोदस्यसापत्नीमदंशस्यभविष्यति ॥ ५४ ॥ त्वंचस्वयंमहासाध्वीवैकुंठेममसन्निधौ ॥ रमासमाचरामाचभविष्यसिनसंशयः ॥ ५५ ॥ अहंचशैलरूपेणगंडकीतीरसन्निधौ ॥ अधिष्ठानंकरिष्यामिभारतेतवशापतः ॥ ५६ ॥ कोटिसंख्यास्तत्रकीटास्तीक्ष्णदंष्ट्रावरायुधैः ॥ तच्छिलाकुहरेचक्रंकरिष्यंतिमदीयकम् ॥ ॥ ५७ ॥ एकद्वारंचतुश्चक्रंवनमालाविभूषितम् ॥ नवीननीरदाकारंलक्ष्मीनारायणाभिधम् ॥ ५८ ॥ एकद्वारंचतुश्चक्रंनवीननीरदोपमम् ॥ लक्ष्मीजनार्दनोज्ञेयोरहितोवनमालया ॥ ५९ ॥ द्वारद्वयेचतुश्चक्रंगोष्पदेनविराजितम् ॥ रघुनाथाभिधंज्ञेयंरहितंवनमालया ॥ ६० ॥ अतिक्षुद्रंद्विचक्रंचनवीनजलदप्रभम् ॥ तद्वामनाभिधंज्ञेयंरहितंवनमालया ॥ ६१ ॥ अतिक्षुद्रंद्विचक्रंचवनमालाविभूषितम् ॥ विज्ञेयंश्रीधरंरूपंश्रीप्रदंगृहिणांसदा ॥ ६२ ॥ स्थूलंचवर्तुलाकारंरहितंवनमालया ॥ द्विचक्रंस्फुटमत्यंतंज्ञेयंदामोदराभिधम् ॥ ६३ ॥ मध्यमंवर्तुलाकारंद्विचक्रंबाणविक्षतम् ॥ रणरामाभिधंज्ञेयंशरतूणसमन्वितम् ॥ ६४ ॥ मध्यमंसप्तचक्रंचछत्रभूषणभूषितम् ॥ राजराजेश्वरंज्ञेयंराजसंपत्प्रदंनृणाम् ॥ ६५ ॥ द्विसप्तचक्रंस्थूलंचनवनीरदसुप्रभम्॥ अनंताख्यंचविज्ञेयंचतर्वर्गफलप्रदम् ॥ ६६ ॥ चक्राकारंद्विचक्रंचसश्रीकंजलदप्रभम् ॥ सगोष्पदंमध्यमंचविज्ञेयंमधुसूदनम् ॥ ६७ ॥ सुदर्शनंचैकचक्रंगुप्तचक्रंगदाधरम् ॥ द्विचक्रंहयवक्राभंहयग्रीवंप्रकीर्तितम् ॥६८॥ अतीवविस्तृतास्यंचद्विचक्रंविकटंसति ॥ नरसिंहंसुविज्ञेयंसद्योवैराग्यदंनृणाम् ॥ ॥ ६९ ॥ द्विचक्रंविस्तृतास्यंचवनमालासमन्वितम् ॥ लक्ष्मीनृसिंहंविज्ञेयंगृहिणांचसुखप्रदम् ॥ ७० ॥ द्वारदेशेद्विचक्रंचसश्रीकंचसमंस्फुटम् ॥ वासुदेवंतुविज्ञेयंसर्वकामफलप्रदम् ॥ ७१ ॥ प्रद्युम्नंसूक्ष्मचक्रंचनवीननीरदप्रभम् ॥ सुषिरच्छिद्रबहुलंगृहिणांचसुखप्रदम् ॥७२॥ द्वेचक्रेचैकलग्नेचपृष्ठंयत्रतुपुष्कलम् ॥ संकर्षणंसुविज्ञेयंसुखदंगृहिणांसदा ॥ ७३ ॥ अनिरुद्धंतुपीताभंवर्तुलंचाऽतिशोभनम् ॥ सुखप्रदंगृहस्थानांप्रवदंतिमनीषिणः ॥ ७४ ॥

ध्यमपरिणाममित्यर्थः ॥ ६७ ॥ हयवक्राभहयमुखाकारम् ॥ ६८ ॥ विकटंभयंकरम् ॥ ६९ ॥ ७० ॥ द्वारदेशेद्वारस्थानेएवनतुमध्यतः ॥ समंवक्राभिन्नम् ॥ ७१ ॥ सुषिरेमहामुखांतःसूक्ष्मच्छिद्राणिबहुलानियस्मिन् ॥ ७२ ॥ द्वयोश्चक्रयोर्मुखंपरस्परंसंलग्नंयत्रतथातयोःचक्रयोःपृष्ठंपुष्कलंविशालंयत्रतथारूपमित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७५ ॥ ७६ ॥ छत्राकारेरूपे ॥ शूलाकारंयस्याग्रम् ॥ ७७ ॥ विदीर्णेस्फुटिते ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ पत्रावि

शालग्रामशिलायत्रतत्रसन्निहितोहरिः ॥ तत्रैवलक्ष्मीर्वसतिसर्वतीर्थसमन्विता ॥ ७५ ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच ॥ तानिसर्वाणिनश्यं तिशालग्रामशिलार्चनात् ॥ ७६ ॥ छत्राकारेभवेद्राज्यंवर्तुलेचमहाश्रियः ॥ दुःखंचशकटाकारेशूलाग्रेमरणंध्रुवम् ॥ ७७ ॥ विकृतास्येचदारिद्र्यंपिंगले हानिरेवच ॥ भग्नचक्रेभवेद्व्याधिर्विदीर्णेमरणंध्रुवम् ॥ ७८ ॥ व्रतंदानंप्रतिष्ठाचश्राद्धंचदेवपूजनम् ॥ शालग्रामस्यसान्निध्यात्प्रशस्तंतद्भवेदिति ॥ ७९ ॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः ॥ सर्वयज्ञेषुतीर्थेषुव्रतेषुचतपःसुच ॥ ८० ॥ पाठेचतुर्णांवेदानांतपसांकरणेसति ॥ तत्पुण्यंलभतेनूनंशालग्रामशि लार्चनात् ॥ ८१ ॥ "शालग्रामशिलातोयैर्योऽभिषेकंसदाचरेत् ॥ सर्वदानेषुयत्पुण्यंप्रदक्षिणंभुवोयथा ॥" शालग्रामशिलातोयंनित्यंभुंक्तेचयोनरः ॥ सुरेप्सितंप्रसादंचलभतेनात्रसंशयः ॥ ८२ ॥ तस्यस्पर्शंचवांछंतितीर्थानिनिखिलानिच ॥ जीवन्मुक्तोमहापूतोऽप्यंतेयातिहरेःपदम् ॥ ८३ ॥ तत्रैवहरि णासार्धमसंख्यंप्राकृतंलयम् ॥ यास्यत्येवहिदास्येचनियुक्तोदास्यकर्मणि ॥ ८४ ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच ॥ तंदृष्ट्वाचपलायंतेवैनतेया दिवोरगाः ॥ ८५ ॥ तत्पादरजसादेवीसद्यःपूतावसुंधरा ॥ पुंसांलक्षंतत्पितॄणांनिस्तरेत्तस्यजन्मतः ॥ ८६ ॥ शालग्रामशिलातोयंमृत्युकालेच योलभेत् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकंसगच्छति ॥ ८७ ॥ निर्वाणमुक्तिंलभतेकर्मभोगात्प्रमुच्यते ॥ विष्णोःपदेप्रलीनश्चभविष्यतिनसंशयः ॥ ॥ ८८ ॥ शालग्रामशिलांधृत्वामिथ्यावाक्यंवदेत्तुयः ॥ सयातिकुंभीपाकेचयावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ ८९ ॥ शालग्रामशिलांधृत्वास्वीकारंयोनपालयेत् ॥ सप्रयात्यसिपत्रंचलक्षमन्वंतरावधि ॥ ९० ॥ तुलसीपत्रविच्छेदंशालग्रामेकरोतियः ॥ तस्यजन्मांतरेकांतेस्त्रीविच्छेदोभविष्यति ॥ ९१ ॥ तुलसीपत्र विच्छेदंशंखेयोहिकरोतिच ॥ भार्याहीनोभवेत्सोऽपिरोगीचसप्तजन्मसु॥९२॥शालग्रामंचतुलसींशंखंचैकत्रएवच ॥ योरक्षतिमहाज्ञानीसभवेच्छ्रीहरेःप्रियः ॥९३॥ सकृदेवहियोयस्यांवीर्याधानंकरोतिच ॥ तद्विच्छेदेतस्यदुःखंभवेदेवपरस्परम् ॥९४॥ त्वंप्रियाशंखचूडस्यचैकमन्वंतरावधि॥शंखेनसार्धंत्वद्भेदः केवलंदुःखदस्तथा॥९५॥इत्युक्त्वाश्रीहरिस्तांचविररामचनारद॥साचदेहंपरित्यज्यदिव्यरूपंविधायच॥९६॥यथाश्रीश्चतथासाचाऽप्युवासहरिवक्षसि॥ सजगामतयासार्धंवैकुंठंकमलापतिः ॥९७॥लक्ष्मीःसरस्वतीगंगातुलसीचापिनारद॥हरेःप्रियाश्चतस्रश्चबभूवुरीश्वरस्यच ॥९८॥ सद्यस्तद्देहजाताचबभूव गंडकीनदी॥ईश्वरःसोपिशैलश्चतत्तीरेपुण्यदोनृणाम् ॥९९॥ कुर्वंतितत्रकीटाश्चशिलांबहुविधांमुने ॥ जलेपतंतियायाश्चफलदास्ताश्चनिश्चितम् ॥१००॥

च्छेदंवियोगम् ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





रवेरुपतापात्पिंगलाभवंति ताःस्थलस्थानपूज्याइतिपूर्वमुक्तम् नदीजलस्थाःपूज्याः ॥ १०१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ चतुर्भिरधिकैश्चत्वारिंशत्पद्यैस्तुपूजनम् ॥ तुलस्याश्चमहामंत्रसहितंतावदुच्यते ॥ १ ॥ अथतुलसीपूजाविधाननंनारदःपृच्छति । तुलसीचेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सातुलसीअंतर्धानंचकार ॥६॥

स्थलस्थाःपिंगलाज्ञेयाश्चोपतापाद्रवेरिति ॥ इत्येवंकथितंसर्वंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १०१ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेचतुर्विंशोध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ तुलसीचयदापूज्याकृतानारायणप्रिया ॥ अस्याःपूजाविधानंचस्तोत्रंचवदसांप्रतम् ॥ १ ॥ केनपूजाकृताकेनस्तुताप्रथमतोमुने ॥ तत्रपूज्यासाबभूवकेनवावदमामहो ॥ २ ॥ सूतउवाच ॥ नारदस्यवचःश्रुत्वाप्रहस्यमुनिपुंगवः ॥ कथांकथितुमारेभेपुण्यांपापहरांपराम् ॥ ३ ॥ नारायणउवाच ॥ हरिःसंपूज्यतुलसींरेमेचरमयासह ॥ रमासमानसौभाग्यांचकारगौरवेणच ॥ ४ ॥ सेहेचलक्ष्मीर्गगाचतस्याश्चनवसंगमम् ॥ सौभाग्यगौरवंकोपात्तंनसेहेसरस्वती ॥ ५ ॥ सातांजघानकलहेमानिनीहरिसन्निधौ ॥ व्रीडयाचाऽपमानेनसांतर्धानंचकारह ॥ ६ ॥ सर्वसिद्धेश्वरीदेवीज्ञानिनांसिद्धियोगिनी ॥ जगामाऽदर्शनंकोपात्सर्वत्रचहरेरहो ॥ ७ ॥ हरिर्नदृष्ट्वातुलसींबोधयित्वासरस्वतीम् ॥ तदनुज्ञांगृहीत्वाचजगामतुलसीवनम् ॥ ८ ॥ तत्रगत्वाचसुस्नातोहरिःसतुलसींसतीम् ॥ पूजयामासतांध्यात्वास्तोत्रंभक्त्याचकारह ॥ ९ ॥ लक्ष्मीमायाकामवाणीबीजपूर्वंदशाक्षरम् ॥ वृंदावनीतिङेन्तंचवह्निजायांतमेवच ॥१०॥ अनेनकल्पतरुणामंत्रराजेननारद॥पूजयेद्योविधानेनसर्वंसिद्धिंलभेद्ध्रुवम्॥११॥घृतदीपेनधूपेनसिंदूरचंदनेनच ॥ नैवेद्येनचपुष्पेणचोपचारेणनारद ॥ १२ ॥ हरिस्तोत्रेणतुष्टासाचाऽऽविर्भूतामहीरुहात् ॥ प्रसन्नाचरणांभोजेजगामशरणंशुभा ॥ १३ ॥ वरंतस्यैददौविष्णुःसर्वपूज्याभवेरिति॥अहंत्वांधारयिष्यामिसुरूपांमूर्ध्निवक्षसि ॥ १४॥ सर्वेत्वांधारयिष्यंतिस्वमूर्ध्निचसुरादयः ॥ इत्युक्त्वातांगृहीत्वाचप्रययौस्वालयंविभुः ॥ १५ ॥ नारदउवाच ॥ किंध्यानंस्तवनंकिंवाकिंवापूजाविधानकम् ॥ तुलस्याश्चमहाभागतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ॥ १६ ॥ नारायणउवाच ॥ अंतर्हितायांतस्यांचहरिर्वृंदावनेतदा ॥ तस्याश्चक्रेस्तुतिंगत्वातुलसींविरहातुरः ॥ १७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वृंदरूपाश्चवृक्षाश्चयदैकत्रभवंतिच ॥ विदुर्बुधास्तेनवृंदांमत्प्रियांतांभजाम्यहम् ॥ १८ ॥ पुराबभूवयादेवीत्वादौवृंदावनेवने ॥ तेनवृंदावनाख्यातासौभाग्यांतांभजाम्यहम् ॥ १९ ॥

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ लक्ष्मीःश्रीबीजम् ॥ मायाभुवनेश्वरीबीजम् ॥ कामोमन्मथबीजम् ॥ वाणीवाग्भवबीजम् ॥ एतद्बीजचतुष्टयपूर्वकंवृंदावनीतिङेंतंतेनवृंदावन्यैइतिसिद्धम् ॥ ङेंतंचतुर्थ्यंतम् ॥ वह्निजायास्वाहा ॥ तथाचदशाक्षरोमंत्रःसंपन्नः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वृन्दावन्यैस्वाहा इतिमन्त्रः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

असंख्येषुचविश्वेषुपूजितायानिरंतरम् ॥ तेनविश्वपूजिताख्यापूजितांचभजाम्यहम् ॥ २० ॥ असंख्यानिचविश्वानिपवित्राणित्वयासदा ॥ तांविश्वपाविनींदेवींविरहेणस्मराम्यहम् ॥ २१ ॥ देवानतुष्टाःपुष्पाणांसमूहेनययाविना ॥ तांपुष्पसारांशुद्धांचद्रष्टुमिच्छामिशोकतः ॥ २२ ॥ विश्वेयत्प्राप्तिमात्रेणभक्तानंदोभवेद्ध्रुवम् ॥ नंदिनीतेनविख्यातासाप्रीताभवतादिह ॥ २३ ॥ यस्यादेव्यास्तुलानास्तिविश्वेषुनिखिलेषुच ॥ तुलसीतेनविख्यातातांयामिशरणंप्रियाम् ॥२४॥ कृष्णजीवनरूपासाशश्वत्प्रियतमासती ॥ तेनकृष्णजीवनीसासामेरक्षतुजीवनम् ॥२५॥ इत्येवंस्तवनंकृत्वातस्थौतत्ररमापतिः ॥ ददर्शतुलसींसाक्षात्पादपद्मनतांसतीम् ॥ २६ ॥ रुदतीमवमानेनमानिनींमानपूजिताम् ॥ प्रियांदृष्ट्वाप्रियःशीघ्रंवासयामासवक्षसि ॥ २७ ॥ भारत्याज्ञांगृहीत्वाचस्वालयंचययौहरिः ॥ भारत्यासहतत्प्रीतिंकारयामाससत्वरम् ॥ २८ ॥ वरंविष्णुर्ददौतस्यैसर्वपूज्याभवेरिति ॥ शिरोधार्याचसर्वेषांवंद्यामान्याममेतिच ॥ २९ ॥ विष्णोर्वरेणसादेवीपरितुष्टाबभूवच ॥ सरस्वतीतामाकृष्यवासयामाससन्निधौ ॥ ३० ॥ लक्ष्मीर्गंगासस्मिताचतांसमाकृष्यनारद ॥ गृहंप्रवेशयामासविनयेनसतींसदा ॥ ३१ ॥ वृंदावृंदावनीविश्वपूजिताविश्वपाविनी ॥ पुष्पसारानंदनीचतुलसीकृष्णजीवनी ॥ ३२ ॥ एतन्नामाष्टकंचैवस्तोत्रंनामार्थसंयुतम् ॥ यःपठेत्तांचसंपूज्यसोऽश्वमेधफलंलभेत् ॥ ३३ ॥ कार्तिक्यांपूर्णिमायांचतुलस्याजन्ममंगलम् ॥ तत्रतस्याश्चपूजाचविहिताहरिणापुरा ॥ ३४ ॥ तस्यांयः पूजयेत्तांचभक्त्याचविश्वपावनीम् ॥ सर्वपापाद्विनिर्मुक्तोविष्णुलोकंसगच्छति ॥ ३५ ॥ कार्तिकेतुलसीपत्रंयोददातिचवैष्णवे ॥ गवामयुतदानस्यफलंप्राप्नोतिनिश्चितम्॥३६॥अपुत्रोलभतेपुत्रंप्रियाहीनोलभेत्प्रियाम्॥बंधुहीनोलभेद्बंधून्स्तोत्रश्रवणमात्रतः ॥३७॥ रोगीप्रमुच्यतेरोगाद्बद्धोमुच्येतबंधनात्॥भयान्मुच्येतभीतस्तुपापान्मुच्येतपातकी ॥३८॥ इत्येवंकथितंस्तोत्रंध्यानंपूजाविधिंशृणु॥त्वमेववेदेजानासिकण्वशाखोक्तमेवच॥३९॥तद्वृक्षेपूजयेत्तांचभक्त्याचावाहनंविना ॥ तांध्यात्वाचोपचारेणध्यानंपातकनाशनम् ॥४०॥ तुलसींपुष्पसारांचसतींपूतांमनोहराम्॥कृतपापेध्मदाहायज्वलदग्निशिखोपमाम् ॥ ४१ ॥ पुष्पेषुतुलनायस्यानास्तिवेदेषुभाषितम् ॥ पवित्ररूपासर्वासुतुलसीसाचकीर्तिता ॥ ४२ ॥ शिरोधार्याचसर्वेषामीप्सिताविश्वपावनी ॥ जीवन्मुक्तांमुक्तिदांचभजेतांहरिभक्तिदाम् ॥ ४३ ॥ इतिध्यात्वाचसंपूज्यस्तुत्वाचप्रणमेत्सुधीः ॥ उक्तंतुलस्युपाख्यानंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ सप्ताशीतिमहापद्यैरर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ सावित्र्याःसर्ववेदेषुश्रुतमाख्यानमुच्यते ॥ १ ॥ सावित्र्युपाख्यानंनारदःपृच्छति । नारदउवाच तुलस्युपाख्यानमिति ॥ १ ॥ पुराकेनेति ॥ सासावित्रीश्रुतेर्वेदस्यप्रसूर्जननीभवतितादृशीयंमहतीदेवीवेदोत्पादकत्वरूपब्रह्मलिंगान्नित्यैवभवतितथाऽपितयामनुष्यदेहधारणंतुकृतमास्तितत्केनानिमित्तेनकृतमितितन्निमित्तरूपंवदेतितात्पर्यम् ॥ किंचसोत्पन्नाप्रथमेप्रथमकालेप्रथममित्यर्थः ॥ तथापरेकालेअनंतरीमित्यर्थः ॥ केनपूजितातदपिवदेत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिर्गोपथब्राह्मणे ॥ तत्सवितुर्वरेण्यमितिसावित्र्याःप्रथमःपादः ॥ पृथिव्यर्चंसमदधादृचाग्निमग्निनाश्रियमित्यादिना ॥ तथाभर्गोदेवस्यधीमहीतिसावित्र्याद्वितीयःपादोंऽतरिक्षेणयजुःसमदधादित्यादिपूर्ववत् ॥ तथाधियोयोनःप्रचोदयादितिसावित्र्यास्तृतीयःपादोदिवासामसमदधात्साम्नादित्यमित्यादिपूर्ववत् ॥ अनयाचश्रुत्यासावित्रीपादत्रयाद्वेदत्रयलोकत्रयाग्न्यादितेजस्त्रयपूर्वकसर्वब्रह्मांडसृष्टिःसावित्रीतएवोक्ता तथासर्ववेदे

॥ नारदउवाच ॥ तुलस्युपाख्यानमिदंश्रुतंचाऽतिसुधोपमम् ॥ ततंसावित्र्युपाख्यानंतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ पुराकेनसमुद्भूतासाश्रुताचश्रुतेःप्रसूः ॥ केनवापूजितालोकेप्रथमेकैश्चवापरे ॥ २ ॥ नारायणउवाच ॥ ब्रह्मणावेदजननीप्रथमेपूजितामुने ॥ द्वितीयेचवेदगणैस्तत्पश्चाद्विदुषांगणैः ॥ ॥ ३ ॥ तदाचाऽश्वपतिर्भूपःपूजयामासभारते ॥ तत्पश्चात्पूजयामासुर्वर्णाश्चत्वारएवच ॥ ४ ॥ नारदउवाच ॥ कोवासोऽश्वपतिर्ब्रह्मन्केनवातेनपूजिता ॥ सर्वपूज्याचसादेवीप्रथमेकैश्चवापरे ॥ ५ ॥ ॥ नारायणउवाच ॥ ॥ मद्रदेशेमहाराजोबभूवाऽश्वपतिर्मुने ॥ वैरिणांबलहर्ताचमित्राणांदुःखनाशनः ॥ ६ ॥ आसीत्तस्यमहाराज्ञीमाहिषीधर्मचारिणी ॥ मालतीतिसमाख्यातायथालक्ष्मीर्गदाभृतः ॥ ७ ॥ साचराज्ञीचवंध्याचवसिष्ठस्योपदेशतः ॥ चकाराऽऽराधनंभक्त्यासावित्र्याश्चैवनारद ॥ ८ ॥ प्रत्यादेशंनसाप्राप्तामाहिषीनददर्शताम् ॥ गृहंजगामदुःखार्ताहृदयेनविदूयता ॥ ९ ॥ राजातांदुःखितांदृष्ट्वाबोधयित्वानयेनवै ॥ सावित्र्यास्तपसेभक्त्याजगामपुष्करंतदा ॥ १० ॥ तपश्चकारतत्रैवसंयतःशतवत्सरम् ॥ नददर्शचसावित्र्याःप्रत्यादेशोबभूवच ॥ ११ ॥ शुश्रावाऽऽकाशवाणींचनृपेंद्रश्चाऽशरीरिणीम् ॥ गायत्र्यादशलक्षंचजपंत्वंकुरुनारद ॥ १२ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रआजगामपराशरः ॥ प्रणनामततस्तंचमुनिर्नृपमुवाचच ॥ १३ ॥ मुनिरुवाच ॥ सकृज्जपश्चगायत्र्याःपापंदिनभवंहरेत् ॥ दशवारंजपेनैवनश्येत्पापंदिवानिशम् ॥ १४ ॥ शतवारंजपश्चैवपापंमासार्जितंहरेत् ॥ सहस्रधाजपश्चैवकल्मषंवत्सरार्जितम् ॥ १५ ॥

षुपुराणेषुच ॥ २ ॥ तत्रप्रथमप्रश्नोत्तरमग्रेदास्यति ॥ द्वितीयप्रश्नोत्तरंतुसंप्रतिवदति ॥ ब्रह्मणेति ॥ याब्रह्मणासहोत्पन्नेतिपूर्वमुक्तंसाप्रथमेकालेप्रथमामित्यर्थः ॥ द्वितीयेद्वितीयकालेअनंतरमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रत्यादेशमिति ॥ तयाबहुकालंतपश्चर्याकृतातथाऽपिसाराज्ञीभगवत्याःसावित्र्याःप्रत्यादेशंप्रत्युत्तरंवरंनप्राप्तानतांदेवींददर्शच ॥ ततस्त्वस्तागृहंजगाम ॥ ९ ॥ १० ॥ तदाराजादेवींतुनददर्शपरंतुतस्याः प्रत्यादेशआज्ञारूपोबभूव ॥ ११ ॥ कोऽसौतदाह । शुश्रावेति ॥ दशलक्षमिति ॥ ननुशतसंवत्सरमनुष्ठानस्यकृतत्वेनदशलक्षजपोजातएवेतिचेन्न ॥ गायत्र्यतिरिक्तमंत्रेणैवशतसंवत्सरमनुष्ठानंकृतमित्याशयात् ॥ हेनारद इतिआकाशवाणींशुश्रावेत्यन्वयः ॥ १२ ॥ तत्रराजसमीपे ॥ तंपराशरम् ॥ १३ ॥ मुनिर्जपमाहिमानंवदाति ॥ सकृज्जपइति ॥ दिवानिशंरात्रिदिवसकृतमित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

लक्षोजपोहरेदितिशेषः ॥ १६ ॥ मुक्तिंज्ञानप्राप्तिद्वारा ॥ दशगुणोदशकोटिःजपकालेदक्षिणहस्तमुद्रामाह । करमिति ॥ रंध्रमंगुलिच्छिद्रंमुद्रितंयस्यतमूर्ध्वांगुल्यग्रमधोमुग्रमचलंयस्यताद्दशंकरंहृदयेकृत्वाजपेदित्यर्थः ॥ १७ ॥ करमालामाह । अनामिकेति ॥ अवामक्रमेणदक्षावर्तक्रमेणेत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ मालासंस्कारमाह । संस्थाप्येति ॥ अश्वत्थपत्रंचपद्मपत्रंवा ॥ २० ॥ २१ ॥ स्नात्वास्नापयित्वेत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ कर्मसत्कर्म ॥ २५ ॥ पूर्वांप्रातःसंध्याम् ॥ पश्चिमांसायंसंध्याम् ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ततस्तस्मात्पुरुषात्

लक्षोजन्मकृतंपापंदशलक्षोऽन्यजन्मजम् ॥ सर्वजन्मकृतंपापंशतलक्षाद्विनश्यति ॥ १६ ॥ करोतिमुक्तिंविप्राणांजपोदशगुणस्ततः ॥ करंसर्पफणाकारंकृत्वातद्रंध्रमुद्रितम् ॥ १७ ॥ आनम्रमूर्ध्वमचलंप्रजपेत्प्राङ्मुखोद्विजः ॥ अनामिकामध्यदेशादधोऽवामक्रमेणच॥१८॥तर्जनीमूलपर्यंतंजपस्यैवंक्रमःकरे॥ श्वेतपंकजबीजानांस्फटिकानांचसंस्कृताम् ॥ १९ ॥ कृत्वावामालिकांराजञ्जपेत्तीर्थेसुरालये ॥ संस्थाप्यमालामश्वत्थपत्रेपद्मेचसंयतः ॥ २० ॥ कृत्वा गोरोचनाक्तांचगायत्र्यास्नापयेत्सुधीः ॥ गायत्रीशतकंतस्यांजपेच्चविधिपूर्वकम् ॥ २१ ॥ अथवापंचगव्येनस्नात्वामालांसुसंस्कृताम् ॥ अथगंगोदकेनैव स्नात्वावाऽतिसुसंस्कृताम् ॥ २२ ॥ एवंक्रमेणराजर्षेदशलक्षंजपंकुरु ॥ साक्षाद्द्रक्ष्यसिसावित्रींत्रिजन्मपातकक्षयात् ॥ २३ ॥ नित्यंसंध्यांचहेराजन्करिष्यसिदिनेदिने ॥ मध्याह्नेचापिसायाह्नेप्रातरेवशुचिःसदा ॥ २४ ॥ संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हःसर्वकर्मसु ॥ यदन्हाकुरुतेकर्मनतस्यफलभाग्भवेत् ॥ २५ ॥ नोपतिष्ठतियःपूर्वांनोपास्तेयस्तुपश्चिमाम् ॥ सशूद्रवद्बहिष्कार्यःसर्वस्माद्द्विजकर्मणः ॥ २६ ॥ यावज्जीवनपर्यंतंत्रिःसंध्यांयःकरोतिच ॥ सच सूर्यसमोविप्रस्तेजसातपसासदा ॥ २७ ॥ तत्पादपद्मरजसासद्यःपूतावसुंधरा ॥ जीवन्मुक्तःसतेजस्वीसंध्यापूतोहियोद्विजः ॥ २८ ॥ तीर्थानिचपवित्राणितस्यसंस्पर्शमात्रतः ॥ ततःपापानियांत्येववैनतेयादिवोरगाः॥२९॥नगृह्णंतिसुराःपूजांपितरःपिंडतर्पणम् ॥ स्वेच्छयाचद्विजातेश्चत्रिसंध्यारहितस्यच ॥३०॥ मूलप्रकृत्यभक्तोयस्तन्मंत्रस्याप्यनर्चकः ॥ तदुत्सवविहीनश्चविषहीनोयथोरगः ॥३१॥ विष्णुमंत्रविहीनश्चत्रिसंध्यारहितोद्विजः ॥ एकादशीविहीनश्चविषहीनोयथोरगः ॥ ३२ ॥ हरेरनैवेद्यभोजीधावकोवृषवाहकः ॥ शूद्रान्नभोजीयोविप्रोविषहीनोयथोरगः ॥ ३३ ॥ शूद्राणांशवदाहीयःसविप्रोवृषलीपतिः॥शूद्राणांसूपकारश्चविषहीनोयथोरगः ॥३४॥ शूद्राणांचप्रतिग्राहीशूद्रयाजीचयोद्विजः॥मसिजीवीअसिजीवीविषहीनोयथोरगः॥३५॥यःकन्याविक्रयीविप्रोयोहरेर्नामविक्रयी ॥ योविप्रोऽवीरान्नभोजीऋतुस्नातान्नभोजकः ॥३६॥ भगजीवीवार्धुषिकोविषहीनोयथोरगः ॥ योविद्याविक्रयीविप्रोविषहीनोयथोरगः ॥ ३७ ॥ सूर्योदयेस्वपेद्योहिमत्स्यभोजीचयोद्विजः ॥ शिवापूजादिरहितोविषहीनोयथोरगः ॥ ३८ ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ तन्मंत्रस्यमूलप्रकृतिमंत्रस्यमायाबीजस्येत्यर्थः ॥ तदुत्सवोमूलप्रकृतेरुत्सवः ॥ सचसप्तमस्कंधेउक्तः ॥ विषहीनःउरगःसर्पोऽजगरइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ विप्रस्याऽवीरापतिपुत्ररहिताब्राह्मणीत्यर्थः ॥ ऋतुस्नाताचतुर्थादिवसेइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ भगजीवीकुट्टनः ॥ वार्धुषिकोवृद्ध्याजीवति ॥ विद्याविक्रयीद्रव्यंगृहीत्वाविद्यांददाति ॥ ३७ ॥ शिवापूजादेवीपूजा ॥ ३८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मुनिश्रेष्ठःपराशरः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यामथवाशुद्धेकालेचतुर्दश्यामित्यन्वयः ॥ यद्वा ज्येष्ठकृष्णस्थमेवतिथिद्वयंग्राह्यम् ॥ तथाचज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यामथवाज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांवक्ष्यमाणप्रकारेणव्रतंकर्तव्यमित्यर्थः ॥ पक्षद्वयस्थस्याप्येतत्त्रिरात्रस्यसावित्रीव्रतपरत्वेनोक्तत्वात् ॥ धर्मशास्त्रग्रंथेस्फुटमेतत् ॥ ४४ ॥ द्विसप्तफलसंयुतंचतुर्दशफलसंयुतंचतुर्दशफलानिदेव्यैसमर्पणीयानीत्यर्थः ॥ तथानैवेद्याश्चतुर्दशैवेत्याह । दत्वेति ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ आवाहितेघटेइष्टंपूजयेत्सावित्रींघटेआवाह्यपूजयेदित्यर्थः ॥ ४७ ॥

इत्युक्त्वाचमुनिश्रेष्ठःसर्वपूजाविधिक्रमम् ॥ तमुवाचचसावित्र्याध्यानादिकमभीप्सितम् ॥ ३९ ॥ दत्त्वासर्वंनृपेंद्राययययौचस्वाश्रमेमुने ॥ राजासंपूज्यसावित्रींददर्शवरमापच ॥ ४० ॥ नारदउवाच ॥ किंवाध्यानंचसावित्र्याःकिंवापूजाविधानकम् ॥ स्तोत्रंमंत्रंचकिंदत्वाप्रययौसपराशरः ॥ ४१ ॥ नृपःकेनविधानेनसंपूज्यश्रुतिमातरम् ॥ वरंचकंवासंप्रापसंपूज्यतुविधानतः ॥ ४२ ॥ तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिसावित्र्याःपरमंमहत् ॥ रहस्याऽतिरहस्यंचश्रुतिसिद्धंसमासतः ॥ ४३ ॥ नारायणउवाच ॥ ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यांशुद्धकालेचयत्नतः ॥ व्रतमेवंचतुर्दश्यांव्रतीभक्त्यासमाचरेत् ॥ ४४ ॥ व्रतंचतुर्दशाब्दंचद्विसप्तफलसंयुतम्॥दत्त्वाद्विसप्तनैवेद्यंपुष्पधूपादिकंचरेत्॥४५॥वस्त्रंयज्ञोपवीतंचभोजनंविधिपूर्वकम् ॥ संस्थाप्यमंगलघटंफलशाखासमन्वितम् ॥ ४६ ॥ गणेशंचदिनेशंचवह्निंविष्णुंशिवंशिवाम् ॥ संपूज्यपूजयेदिष्टंघटेआवाहितेद्विजः ॥ ४७ ॥ शृणुध्यानंचसावित्र्याश्चोक्तंमाध्यंदिनेचयत् ॥ स्तोत्रंपूजाविधानंचमंत्रंचसर्वकामदम्॥४८॥तप्तकांचनवर्णाभांज्वलंतींब्रह्मतेजसा ॥ ग्रीष्ममध्याह्नमार्तंडसहस्रसंमितप्रभाम्॥४९॥ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांरत्नभूषणभूषिताम्॥वह्निशुद्धांशुकाधानांभक्तानुग्रहविग्रहाम् ॥५०॥ सुखदांमुक्तिदांशांतांकांतांचजगतांविधेः॥ सर्वसंपत्स्वरूपांचप्रदात्रींसर्वसंपदाम्॥ ॥५१॥वेदाधिष्ठातृदेवींचवेदशास्त्रस्वरूपिणीम्॥वेदबीजस्वरूपांचभजेतांवेदमातरम्॥५२॥ ध्यात्वाध्यानेननैवेद्यंदत्वापाणिंस्वमूर्धनि॥पुनर्ध्यात्वाघटेभक्त्यादेवीमावाहयेद्व्रती॥५३॥दत्वाषोडशोपचारंवेदोक्तंमंत्रपूर्वकम्॥संपूज्यस्तुत्वाप्रणमेद्देवदेवींविधानतः ॥ ५४ ॥ आसनंपाद्यमर्घ्यंचस्नानीयंचानुलेपनम्॥धूपंदीपंचनैवेद्यंतांबूलंशीतलंजलम् ॥५५॥ वसनंभूषणंमाल्यंगंधमाचमनीयकम्॥मनोहरंसुतल्पंचदेयान्येतानिषोडश ॥ ५६ ॥ दारुसारविकारंचहेमादिनिर्मितंचवा ॥ देवाधारंपुण्यदंचमयातुभ्यंनिवेदितम् ॥५७॥ तीर्थोदकंचपाद्यंचपुण्यदंप्रीतिदंमहत् ॥ पूजांगभूतंशुद्धंचमयातुभ्यंनिवेदितम् ॥५८॥

माध्यंदिनेतच्छाखायाम् ॥ ४८ ॥ तप्तकांचनेति ॥ रक्तवर्णामित्यर्थः ॥ पूर्वोक्तंस्फटिकवर्णत्वंतुस्वच्छताभिप्रायेणबोध्यम् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ वेदबीजंप्रणवः ॥ ५२ ॥ स्वमूर्धनिपाणिमंजलिंदत्वानमस्कुर्यादित्यर्थः ॥ इत्थंप्रथमतोहृदयेध्यात्वानैवेद्यंदत्वा नैवेद्यमित्युपलक्षणंषोडशोपचारान्मनसादत्वानमस्कृत्यपश्चात्घटेआवाहयेत्पूजयेदित्याह । पुनर्ध्यात्वेति ॥५३॥५४॥उपचारानाह । आसनमिति॥५५॥५६॥आसनादीनांस्वरूपंमंत्रस्वरूपदर्शनेनैवदर्शयति।दारुसारेति । दारुसारंचंदनमितिराघवभट्टः॥तान्निर्मितंपीठमासनमित्यर्थः॥५७॥५८॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५९ ॥ ६० ॥ गंधद्रव्यंकुंकुमादि तदुद्भवम् ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ कृमिजंपट्टवस्त्रम् ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ माल्यमापादलंबिनींमालाम् ॥
॥७१॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ लक्ष्मीबीजंश्रीबीजंमायाबीजंभुवनेश्वरीबीजं कामोमन्मथबीजम् ॥ एतद्बीजत्रयपूर्वकःसाविञ्यैस्वाहेतिमंत्रोऽष्टाक्षरः ॥ एतन्मंत्रपूर्वकपूर्वमंत्रैरुपचारा

पवित्ररूपमर्घंचदूर्वापुष्पदलान्वितम् ॥ पुण्यदंशंखतोयाक्तंमयातुभ्यंनिवेदितम् ॥ ५९ ॥ सुगंधंगंधतोयंचस्नेहंसौगंधकारकम् ॥ मयानिवेदितंभक्त्या स्नानीयंप्रतिगृह्यताम् ॥ ६० ॥ गंधद्रव्योद्भवंपुण्यंप्रीतिदंदिव्यगंधदम् ॥ मयानिवेदितंभक्त्यागंधतोयंतवांबिके ॥ ६१ ॥ सर्वमंगलरूपंचसर्वंचमंगल प्रदम् ॥ पुण्यदंचसुधूपंतंगृहाणपरमेश्वरि ॥ ६२ ॥ सुगंधयुक्तंसुखदंमयातुभ्यंनिवेदितम् ॥ जगतांदर्शनार्थायप्रदीपंदीप्तिकारकम् ॥ ६३ ॥ अंधका रध्वंसबीजंमयातुभ्यंनिवेदितम् ॥ तुष्टिदंपुष्टिदंचैवप्रीतिदंक्षुद्विनाशनम् ॥ ६४ ॥ पुण्यदंस्वादुरूपंचनैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥ तांबूलप्रवरंरम्यंकर्पूरादिसु वासितम् ॥ ६५ ॥ तुष्टिदंपुष्टिदंचैवमयातुभ्यंनिवेदितम् ॥ सुशीतलंवारिशीतंपिपासानाशकारणम् ॥ ६६ ॥ जगतांजीवरूपंचजीवनंप्रतिगृह्यताम् ॥ देहशोभास्वरूपंचसभाशोभाविवर्धनम् ॥ ६७ ॥ कार्पासजंचकृमिजंवसनंप्रतिगृह्यताम् ॥ कांचनादिविनिर्माणंश्रीकरंश्रीयुतंसदा ॥ ६८ ॥ सुखदं पुण्यदंरत्नभूषणंप्रतिगृह्यताम् ॥ नानावृक्षसमुद्भूतंनानारूपसमन्वितम् ॥ ६९ ॥ फलस्वरूपंफलदंफलंचप्रतिगृह्यताम् ॥ सर्वमंगलरूपंचसर्वमंगलमंग लम् ॥ ७० ॥ नानापुष्पविनिर्माणंबहुशोभासमन्वितम् ॥ प्रीतिदंपुण्यदंचैवमाल्यंचप्रतिगृह्यताम् ॥ ७१ ॥ पुण्यदंचसुगंधाढ्यंगंधंचदेविगृह्यताम् ॥ सिंदूरंचवरंरम्यंभालशोभाविवर्धनम् ॥ ७२ ॥ भूषणानांचप्रवरंसिंदूरंप्रतिगृह्यताम् ॥ विशुद्धग्रंथिसंयुक्तंपुण्यसूत्रविनिर्मितम् ॥ ७३ ॥ पवित्रंवेदमं त्रेणयज्ञसूत्रंचगृह्यताम् ॥ द्रव्याण्येतानिमूलेनदत्वास्तोत्रंपठेत्सुधीः ॥ ७४ ॥ ततोविप्रायभक्त्याचव्रतीदद्याच्चदक्षिणाम् ॥ सावित्रीतिचतुर्थ्यंतंवह्नि जायांतमेवच ॥ ७५ ॥ लक्ष्मीमायाकामपूर्वमंत्रमष्टाक्षरंविदुः ॥ माध्यंदिनोक्तंस्तोत्रंचसर्वकामफलप्रदम् ॥ ७६ ॥ विप्रजीवनरूपंचनिबोधकथया मिते ॥ कृष्णेनदत्तांसावित्रींगोलोकेब्रह्मणेपुरा ॥ ७७ ॥ नायातिसातेनसार्धंब्रह्मलोकेचनारद ॥ ब्रह्माकृष्णाज्ञयाभक्त्यातुष्टाववेदमातरम् ॥ ७८ ॥ तदासापरितुष्टाचब्रह्माणंचकमेपतिम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सच्चिदानंदरूपेत्वंमूलप्रकृतिरूपिणि ॥ ७९ ॥ हिरण्यगर्भरूपेत्वंप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ तेजःस्वरू पेपरमेपरमानंदरूपिणि ॥ ८० ॥ द्विजातीनांजातिरूपेप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ नित्येनित्यप्रियेदेविनित्यानंदस्वरूपिणि ॥ ८१ ॥ सर्वमंगलरूपेचप्रसन्नाभ वसुंदरि ॥ सर्वस्वरूपेविप्राणांमंत्रसोरपरात्परे ॥ ८२ ॥ सुखदेमोक्षदेदेविप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ विप्रपापेध्मदाहायज्वलदग्निशिखोपमे ॥ ८३ ॥ ब्रह्मतेजः प्रदेदेविप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ कायेनमनसावाचायत्पापंकुरुतेनरः ॥ ८४ ॥

देयाः स्वाहारहितोनमोंतस्तुस्त्रीणांजपेऽपि ॥ ७६ ॥ कृष्णेनगोपालसुंदरीरूपेण ॥ ७७ ॥ नाऽऽयातिनाऽऽगच्छातिततःकारणात्तुष्टावेत्यर्थः॥७८॥७९॥८०॥८१॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ पंचविंशतिपद्यैस्तुजन्मराजोदरेततः ॥ सावित्र्याःकलयाजातमितिसम्यगथोच्यते ॥ १ ॥ सावित्रीदर्शनादिकं वर्णयति ॥ स्तुत्वेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ कमलापराकमलासदृशीसुंदरीत्यर्थः ॥ सावित्रीतदंशत्वात् ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ वृक्षात्पतित्वासमरेत्यर्थः ॥ ११ ॥ अंगुष्ठसममिति ॥ तदुक्तंमहाभारते । अथसत्यवतःकायात्पाशबद्धंवशंगतम् ॥ अंगुष्ठमात्रंपुरुषंनिश्चकर्षयमोबलादिति ॥ प्रययौसतीति ॥ यदिपतिदर्शनंनस्यात्तदादेहस्त्याज्यः ॥ पतिस्तुयमहस्तेदृश्यतएवेतिनदेहंतत्याजकिंतुतत्पश्चादेवययौ ॥ ननुयदायमोदेहात्पींतिनिश्चकर्षतदासावित्र्यापतिव्रतयाकथंननिवारितोयमोनहिकाचित्पतिव्रतापतिमरणमिच्छंतीदृष्टा ॥ ननुनिवारितएवेतिचेत्सकथंपतिव्रतावचनमुल्लंघ्यतंगृहीत्वागतः ॥ नन्वीश्वराणांसामर्थ्यातिशयान्नपतिव्रतादीनांभयमस्तीतिचेत्तर्हिस्वयमेवकिमर्थमत्रागतोनहि

तत्त्वत्स्मरणमात्रेणभस्मीभूतंभविष्यति॥इत्युक्त्वाजगतांधातातस्थौतत्रचसंसदि ॥ ८५ ॥ सावित्रीब्रह्मणासार्धंब्रह्मलोकंजगामसा ॥ अनेनस्तवराजेनसंस्तूयाऽश्वपतिर्नृपः ॥ ८६ ॥ ददर्शतांचसावित्रींवरंप्रापमनोगतम् ॥ स्तवराजमिमंपुण्यंसंध्यांकृत्वाचयःपठेम् ॥ ८७ ॥ पाठेचतुर्णांवेदानांयत्फलंलभतेचतत् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ स्तुत्वाऽनेनसोऽश्वपतिःसंपूज्यविधिपूर्वकम् ॥ ददर्शतत्रतांदेवींसहस्रार्कसमप्रभाम् ॥ १ ॥ उवाचसाचराजानंप्रसन्नासस्मितासती ॥ यथामातास्वपुत्रंचद्योतयंतीदिशस्त्विषा ॥ २ ॥ सावित्र्युवाच ॥ जानाम्यहंमहाराजयत्तेमनसिवांछितम् ॥ वांछितंतवपत्न्याश्चसर्वंदास्यामिनिश्चितम् ॥ ३ ॥ साध्वीकन्याभिलाषंचकरोतितवकामिनी ॥ त्वंप्रार्थयसिपुत्रंचभविष्यतिक्रमेणच ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वासातदादेवीब्रह्मलोकंजगामह ॥ राजाजगामस्वगृहंतत्कन्याऽऽदौबभूवह ॥ ५ ॥ आराधनाच्चसावित्र्याबभूवकमलापरा ॥ सावित्रीतिचतन्नामचकाराऽश्वपतिर्नृपः ॥ ६ ॥ कालेनसावर्धमानाबभूवचदिनेदिने ॥ रूपयौवनसंपन्नाशुक्लेचंद्रकलायथा ॥ ७ ॥ सावरंवरयामासद्युमत्सेनात्मजंसदा ॥ सत्यवंतंसत्यशीलंनानागुणसमन्वितम् ॥ ८ ॥ राजातस्मैददौतांचरत्नभूषणभूषिताम् ॥ सोऽपिसार्धंकौतुकेनतांगृहीत्वागृहंययौ ॥ ९ ॥ सचसंवत्सरेऽतीतेसत्यवान्सत्यविक्रमः ॥ जगामफलकाष्ठार्थंप्रहर्षंपितुराज्ञया ॥ १० ॥ जगामसाध्वीतत्पश्चात्सावित्रीदैवयोगतः ॥ निपत्यवृक्षाद्दैवेनप्राणांस्तत्याजसत्यवान् ॥ ११ ॥ यमस्तंपुरुषंदृष्ट्वाबद्धांगुष्ठसमंमुने ॥ गृहीत्वागमनंचक्रेतत्पश्चात्प्रययौसती ॥ १२ ॥

कुत्रचिद्यमःस्वयंगच्छति ॥ किंतर्हिस्वसत्तयैवसर्वंकार्यंकरोति ॥ तथाप्यस्याःपातिव्रत्यसामर्थ्याद्भयान्नस्वसत्तयादूतादिनावाकार्यंभवेदितिमनीषयाहिस्वयमागतस्तथाचानयातादृशसामर्थ्यवत्यासर्वथानिरोद्धव्यइतिचेन्न ॥ अन्याशयात् ॥ सावित्र्याअयमभिप्रायः ॥ नहिकुत्रचिद्यमोमहानुभावःपरमेश्वरःस्वयंगच्छति नचगत्वापापिनांमादृशानांचक्षुर्गोचरोभवतिकेवलंमय्यनुग्रहेणैवतुममदृष्टिगोचरोजातस्ततस्तादृशस्यपरमेश्वरस्यमत्साश्रमेऽतिथिरूपेणागतस्यकथमभिलषितंनसंपादनीयम् ॥ नचपतिवियोगभयात्तत्संपादनंपतिव्रतानामावश्यकमित्यस्यविषयोऽस्ति मयैतत्सहैवगमनेपतिवियोगस्यैवाभावात् ॥ नचयमलोकेमनुष्यदेहोनगमिष्यतीतिसहगमनमपिकेनाभिप्रायेणभविष्यतीतिवाच्यम् ॥ परमेश्वरदर्शननसदेहानामपिपूर्वराजशूराणांस्वर्गादिगमनस्यजातस्यश्रुतत्वेनममापिपरमेश्वरस्यैतस्यदर्शनस्यजातत्वेनसहगमनंभविष्यतीत्यभिप्रायस्यसत्त्वादिति ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यमस्तुतंगृहीत्वाऽतिसामर्थ्यवतीयंनिरोद्धुंसमर्थाऽपिकिमितिनपतिनयनेनिरोधंकृतवतीकिंचिदस्यामनसिकिमप्यन्यत्कर्तव्यमस्तीतिभियापृष्ठतोददर्श ॥ तत्रचसुदतींतांददर्श ॥ दंतवर्णने नेषद्धास्यवतींददर्शेत्यर्थः ॥ तादृशानर्थेहास्यकारणंत्वित्थम् ॥ ममसामर्थ्येसत्यप्येतादृशमहानुभावस्येश्वरस्यातिथ्यार्थंसंतोषार्थंप्राणाधिकमपिपतिंदत्तवतीतदेतदौदार्यंममदृष्ट्वाकथंनदेव स्तुतोष ॥ किंचिद्भाषणमपिनकृतवान्किंचैतादृशदर्शनेकल्याणमेवभवतीतिदर्शनस्वभावः ॥ तत्कथमयंदयालुःसर्वज्ञःसन्स्वंस्वभावंनजानातिज्ञात्वाचकथमबलायाममपतिंनयतीत्याश्चर्यमे वेति ॥ यमोऽपितदभिप्रायेणहास्यंज्ञात्वालज्जितोमधुरंप्रोवाच ॥ नन्वतिक्रूरःकिमित्युवाचेत्यत्राऽऽह ॥ साधूनांप्रवरइति ॥ दुष्टानांक्रूरोभासतेस्वतस्तुसाधुरेवेतिभावः ॥ १३ ॥ अहोक्र यासीति ॥ यद्यपितवमल्लोकगमनेसामर्थ्यमस्तितथाऽपिसाधुभिरीश्वरमर्यादोल्लंघनंकर्तुमनुचितमितिभावः ॥ १४ ॥ ईश्वरमर्यादामेवदर्शयति ॥ गंतुमिति ॥ १५ ॥ तवभर्तामयानी तइतिमदपराधंकदापिनजानीहिकिंचत्वमपिपतिवियोगजन्यंखेदंमाकुरुप्राणिमात्रस्यकर्माधीनत्वादितिदर्शयितुंतवमर्यादयातुष्टोऽहंब्रह्मविद्यांदास्यामीतिस्वौदार्यंसावित्र्यौदार्यापेक्षयाऽधिक मितिचदर्शयितुमाह ॥ भर्तुस्तेपूर्णकालइति ॥ १६ ॥ प्राणिमात्रस्यकर्माधीनत्वंवर्णयति । कर्मणेत्यादिविररामसवैयमइत्यंतम् ॥ तथाचयदितवमदर्शनफलमपेक्षितंतदातवपतिव्यतिरि

पश्चात्तांसुदतींदृष्ट्वायमःसंयमनीपतिः ॥ उवाचमधुरंसाध्वींसाधूनांप्रवरोमहान् ॥ १३ ॥ धर्मराजउवाच ॥ अहोक्रयासिसावित्रिगृहीत्वामानुषींतनुम् ॥ यदि यास्यसिकांतेनसार्धंदेहंतदात्यज ॥ १४ ॥ गंतुंमर्त्योनशक्नोतिगृहीत्वापांचभौतिकम् ॥ देहंचममलोकंचनश्वरंनश्वरःसदा ॥ १५ ॥ भर्तुस्तेपूर्णकालोवैबभूव भारतेसति ॥ स्वकर्मफलभोगार्थंसत्यवान्यातिमद्गृहम् ॥ १६ ॥ कर्मणाजायतेजंतुःकर्मणैवप्रलीयते ॥ सुखंदुःखंभयंशोकःकर्मणैवप्रणीयते ॥ १७ ॥ कर्मणेंद्रोभ वेज्जीवोब्रह्मपुत्रःस्वकर्मणा ॥ स्वकर्मणाहरेर्दासोजन्मादिरहितोभवेत् ॥ १८ ॥ स्वकर्मणासर्वसिद्धिममरत्वंलभेद्ध्रुवम् ॥ लभेत्स्वकर्मणाविष्णोःसालोक्या दिचतुष्टयम् ॥ १९ ॥ सुरत्वंचमनुत्वंचराजेंद्रत्वंलभेन्नरः ॥ कर्मणाचशिवत्वंचगणेशत्वंतथैवच ॥ २० ॥ कर्मणाचमुनींद्रत्वंतपस्वित्वंस्वकर्मणा ॥ स्वकर्मणाक्ष त्रियत्वंवैश्यत्वंचस्वकर्मणा ॥ २१ ॥ कर्मणैवचम्लेच्छत्वंलभतेनात्रसंशयः ॥ स्वकर्मणाजंगमत्वंशैलत्वंचस्वकर्मणा ॥ २२ ॥ कर्मणाराक्षसत्वंचकिन्नरत्वंस्वक र्मणा ॥ कर्मणैवाधिपत्यंचवृक्षत्वंचस्वकर्मणा ॥ २३ ॥ कर्मणैवपशुत्वंचवनजीवीस्वकर्मणा ॥ कर्मणाक्षुद्रजंतुत्वंकृमित्वंचस्वकर्मणा ॥ २४ ॥ दैतेयत्वंदानवत्व मसुरत्वंस्वकर्मणा ॥ इत्येतदुक्त्वासावित्रींविररामसवैयमः ॥ २५ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ यमस्यवचनंश्रुत्वासावित्रीचपतिव्रता ॥ तुष्टावपरयाभक्त्यातमुवाचमनस्विनी ॥ १ ॥

क्तंयद्यदपेक्षितंतद्दास्यामिपतिंतुनैवदास्यामीतिगूढोऽभिसंधिः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतीतलेकनवमस्कंधेसप्तविंशो ऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चत्रिंशद्भिःपद्यैरध्यात्ममेवच ॥ पप्रच्छदेवीसंक्षेपात्तादिदानीमथोच्यते ॥ १ ॥ सावित्रीतुकर्मणाबद्धंसर्वंभवतीनकाश्चित्प्रपंचेस्वतंत्रोऽस्ति ॥ ब्रह्म विष्णुरुद्रादयोऽपिकर्मणैवजाताः कर्मणैववद्धाश्चेतियमधर्मवाक्यंश्रुत्वाऽतिशुद्धांतःकरणासंसाराद्विरक्तासतीपतिनिष्कासनोपायंदेवसंतोषणैवपश्चात्कीरष्यामिप्रथमंत्वयंवक्तुमुद्युक्तो देवोब्रह्मनिष्ठोऽस्मिन्समयेदुर्लभाब्रह्मविद्याऽपिपृच्छयतेचेन्मयिसंतोषाद्वक्ष्यतीतिभासतेनैतादृशज्ञानिप्रवरस्यसमागमोममदुर्भगायाःकदाचिदपिस्यात् ॥ ततःसर्वसारभूताब्रह्मविद्याप्रष्टव्ये त्यभिप्रायेणतत्कर्मनाशायकर्मस्वरूपतन्निमित्तकारणंयःकर्मणाबद्धोदेहीसकइत्यादिकंसर्वंपृच्छति । यमस्येति तुष्टावेति ॥ हेदेवदेवत्वंममाद्यारभ्यगुरुः ॥ त्वयायदुच्यतेतत्सत्यमेवेत्या दिवाक्यैस्तुष्टावेत्यर्थः ॥ १ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तथाऽपितत्रकश्चिन्ममप्रष्टव्यांशोवर्ततेतंदयांकृत्वावदेत्यभिप्रायेणपृच्छति ॥ किंकर्मेति ॥ कर्मस्वरूपंकीदृशंकेनकीदृशेननिमित्तेनतत्कर्मभवेत् ॥ किंचतस्यकर्मणोहेतुरुपादानभूतःकः ॥ तेनकर्मणाबद्धोदेहीकः ॥ देहश्चकः ॥ कर्मकारकः कर्मकर्ताचकः ॥ २ ॥ येनज्ञानेनमुक्तिर्भवतीतितच्चज्ञानंकीदृशंबुद्धिश्चकाकीदृशी ॥ तेषामिंद्रियाणांलक्षणंकिंतेषांदेवताश्चकाः ॥ ॥ ३ ॥ कश्चभोक्ताऽस्मिन्देहेभोजयितावाकः ॥ कश्चभोगः ॥ तस्यास्यसंसारस्यनिष्कृतिर्नाशश्चकीदृशःकोजीवःकश्चपरमात्मातदेतत्सर्वंवद ॥ यदिपतिवियोगेनसंतप्तायाममचित्तशांतिं कर्तुमिच्छसीत्यर्थः ॥ ४ ॥ तत्रप्रथमतःकर्मस्वरूपमाह । वेदेति ॥ द्विविधंहिकर्मशुद्धमशुद्धंशुभमशुभंच ॥ तत्रवेदोक्तं कर्मशुभंतारकंवेदानुक्तंतुकर्माशुभंनरकादिप्रदमित्यर्थः ॥ वेदस्यसर्व मूलप्रकृतिप्रणीतत्वेनतस्मिन्भ्रांतवाक्यत्वाभावादितरेषांशास्त्राणांत्वसर्वज्ञाज्ञानविशिष्टकर्तृप्रणीतत्वेनतेषांभ्रांतवाक्यत्वादितिभावः ॥ ५ ॥ ननुवेदोक्तशुभकर्मणामपिस्वर्गकामोयजेते त्यादिवाक्यैरनित्यफलमेवभवतीतिकथंतस्यतारकत्वं किंचैतादृशशुभाशुभकर्मतुभोगप्रवाहपतितस्यनरस्यनकेनाऽपिप्रकारेणनिष्कासनोपायोदृश्यतइतिचेत्तत्राऽऽह ॥ अहैतुकीति ॥ हेतुःफलंतद्रहिता ॥ किंचसंकल्पःफलवासनातद्रहिताचयादेवसेवादेवप्रीत्यर्थंसेवासाकर्मनिर्मूलनंयावत्कर्माभावस्तद्रूपातस्यकर्त्रीचित्तशुद्धिदायिनीत्यर्थः ॥ अयंभावः । वेदोक्तमेवकर्मपरमेश्व

सावित्र्युवाच ॥ किंकर्मतद्भवेत्केनकोवातद्धेतुरेवच ॥ कोवादेहीचदेहःकःकोवाऽत्रकर्मकारकः ॥ २ ॥ किंवाज्ञानंचबुद्धिःकाकोवाप्राणःशरीरिणाम् ॥ कानींद्रियाणिकिंतेषांलक्षणंदेवताश्चकाः ॥ ३ ॥ भोक्ताभोजयिताकोवाकोवाभोगश्चनिष्कृतिः ॥ कोजीवःपरमात्माकस्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ४ ॥ धर्मउवाच ॥ वेदप्रणिहितोधर्मःकर्मयन्मंगलंपरम् ॥ अवैदिकंतुयत्कर्मतदेवाशुभमेवच ॥ ५ ॥ अहैतुकीदेवसेवासंकल्परहितासती ॥ कर्मनिर्मूलरूपाचसा एवपरभक्तिदा ॥ ६ ॥ कोवाकर्मफलंभुंक्तेकोवानिर्लिप्तएवच ॥ ब्रह्मभक्तोयोनरश्चसचमुक्तःश्रुतःश्रुतौ ॥ ७ ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिशोकभीतिविवर्जितः ॥ भक्तिश्चद्विविधासाध्विश्रुत्युक्तासर्वसंमता ॥ ८ ॥ निर्वाणपददात्रीचहरिरूपप्रदानृणाम् ॥ हरिरूपस्वरूपांचभक्तिंवांछंतिवैष्णवाः ॥ ९ ॥ अन्येनिर्वाणमिच्छंतियोगिनोब्रह्मवित्तमाः ॥ कर्मणोबीजरूपश्चसततंतत्फलप्रदः ॥ १० ॥

रप्रीत्यर्थंनिष्कामनयाक्रियमाणंचित्तशुद्धिद्वारापरात्मनिपरानुरक्तिरूपपरभक्त्युत्पादनद्वाराज्ञानप्राप्तयेभवतीतितारकमेवतत्कर्मेत्यर्थइति ॥ ६ ॥ कोवाकर्मेति । इत्थंपरभक्तिंयःप्राप्तः सब्रह्मभक्तःसर्वतोनिर्लिप्तश्चकोवाकर्मकरोतीतिशेषः ॥ तथाकोवाफलंकर्मणोभुंक्तेनकोप्येतादृशोब्रह्मभक्तःकर्मकरोतिनचतत्फलंभुंक्तेकिंतुश्रुतौसएवनरोमुक्तइतिश्रुतइत्यर्थः ॥ नचै तादृशस्यकर्मफलभोगप्रवाहपतितत्वंसंभवतीतिभावः ॥ ७ ॥ मुक्तस्वरूपंवर्णयाति । जन्ममृत्युजरेति ॥ तत्रभक्तिःकिंनिर्गुणेस्थापनीयोतसगुणेइतिविशेषमाह । द्विविधेति ॥ ८ ॥ निर्वाणेति ॥ एकानिर्वाणपददात्रीकैवल्यपददात्री ॥ निर्गुणात्मविषयिणीत्यर्थः ॥ द्वितीयाहरिरूपप्रदा ॥ हरिरित्युपलक्षणंसगुणब्रह्मणः ॥ तथाचसगुणब्रह्मसरूपप्रदात्रीस गुणब्रह्मविषयिणीद्वितीयाभक्तिरित्यर्थः ॥ तत्रद्विविधयोर्भक्त्योरधिकारिणमाह । हरिरूपस्वरूपांचेति ॥ हरिपदमुपलक्षणंसगुणब्रह्मणोवैष्णवपदमुपलक्षणंसाधकानाम् ॥ तथाचसाधका मध्यमाधिकारिणःउत्तमाधिकारप्राप्त्यर्थंहरिरूपस्वरूपांसगुणब्रह्मविषयिणींभक्तिंवांछंति ॥९॥ अन्येइति ॥ ब्रह्मवित्तमायोगिनोनिर्वाणमिच्छंति ॥ अर्थान्निर्गुणभक्तिंवांछंतीत्यर्थः ॥ कर्म णउपादानकारणस्वरूपमाह । कर्मणोबीजरूपश्चेति ॥ यः परमात्माकर्मणोबीजरूपस्तत्फलप्रदः कर्मफलप्रदाताच ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कर्मरूपश्चसृष्टिस्थितिसंहारात्मकस्तत्कर्ताचयः ॥ प्रकृतिः परामूलप्रकृतिरूपःसोऽपिसएवतद्धेतुरूपश्चकर्मणउपादानकारणमित्यर्थः ॥ मायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीमूलप्रकृतिः कमर्णउपादानकारणंविवर्तकारणंनिमित्तकारणंचेतिभावः ॥ तत्राविद्योपादानमाविद्यायांचित्प्रतिबिंबोनिमित्तकारणंब्रह्मविवर्तकारणमितिविभागः॥अविद्यातः कामः कामतः कर्मेतिसिद्धांतात् ॥ एतेन निमित्तकारणमदृष्टरूपमकथितमप्यर्थाद्वेदितव्यम् ॥ देहःकइत्यस्योत्तरमाह । नश्वरएवेति॥योऽत्रमृतस्यनश्वरःपतातिसदेहइत्यर्थः॥११॥सचपांचभौतिकइत्याह।पृथिवीवायुरिति॥सूत्ररूपाणिमणिषुसूत्रवत्सर्वदेहव्यापकानिएतानिपंचभूतानीत्यर्थः ॥ सतोब्रह्मणः सृष्टिरूपविधौदेहादिसृष्टिविधावेतानिसूत्राणिपंचभूतानीत्यर्थः ॥ ततश्चपांचभौतिकोदेहइतिसिद्धम् ॥१२॥ कर्मकर्तेति ॥ यःकर्मकर्ताजीवःसएवदेहीनान्यइत्यर्थः ॥ अनेनप्रश्नद्वयोत्तरंदत्तंभवति ॥ देहीचेतिचकारेणभोक्ताऽपिसएवेतिबोध्यम् ॥ आत्माभोजयितेति ॥ अंतर्यामीभोजयिताप्रेरकइत्यर्थः ॥ विभवभेदः सुखदुःखसाक्षात्काररूपोभोगशब्देनोच्यतइत्यर्थः ॥ निष्कृतिर्मुक्तिः॥ आत्मस्वरूपावस्थानरूपामुक्तिर्निष्कृतिपदवाच्येत्यर्थः॥१३॥ सदसद्भेदबीजंचेति॥सदात्माऽसन्मायादिकंतयोर्भेदोविवेकस्तस्यबीजंकारणंयत्तज्ज्ञानशब्देनोच्यते॥अपरोक्षात्मवस्तुविषयंयद्ब्रह्मविद्यारूपंतज्ज्ञानशब्देनोच्यतइत्यर्थः ॥ नानाविधमिति।नानाविधंघटपटादिविषयकंतथाविषयाणांयेपरस्परविभागास्तेषांभेदिभेदकंयद्बीजंसर्ववासनानांकीर्तितम् ॥१४॥ सासर्वविवेचनरूपानिश्चयरूपाबुद्धिपदेनोच्यतइतिसाचबुद्धिःपूर्वोक्तस्याऽनुभवात्मकस्यज्ञानस्यबीजंभवति॥ एकैवबुद्धिरं

**कर्मरूपश्चभगवान्परात्माप्रकृतिःपरा ॥ सोऽपितद्धेतुरूपश्चदेहोनश्वरएवच ॥ ११ ॥ पृथिवीवायुराकाशोजलंतेजस्तथैवच ॥ एतानिसूत्ररूपाणिसृष्टिरूपविधौसतः ॥ १२ ॥ कर्मकर्ताचदेहीचआत्माभोजयितासदा ॥ भोगोविभवभेदश्चनिष्कृतिर्मुक्तिरेवच ॥ १३ ॥ सदसद्भेदबीजंचज्ञानंनानाविधंभवेत् ॥ विषयाणांविभागानांभेदिबीजंचकीर्तितम् ॥ १४ ॥ बुद्धिर्विवेचनासाचज्ञानबीजंश्रुतौश्रुतम् ॥ वायुभेदाश्चप्राणाश्चबलरूपाश्चदेहिनाम् ॥ १५ ॥ इंद्रियाणांचप्रवरमीश्वरांशमनूहकम् ॥ प्रेरकंकर्मणांचैवदुर्निवार्यंचदेहिनाम् ॥ १६ ॥ अनिरूप्यमदृश्यंचज्ञानभेदोमनःस्मृतम् ॥ लोचनंश्रवणंघ्राणंत्वक्चरसनमिंद्रियम्॥१७॥अंगिनामंगरूपंचप्रेरकंसर्वकर्मणाम् ॥ रिपुरूपंमित्ररूपंसुखरूपंचदुःखदम् ॥ १८ ॥ सूर्योवायुश्चपृथिवीब्रह्माद्यादेवताःस्मृताः ॥ प्राणदेहादिभृद्योहिसजीवःपरिकीर्तितः ॥ १९ ॥ परमंव्यापकंब्रह्मनिर्गुणःप्रकृतेःपरः ॥ कारणंकारणानांचपरमात्मासउच्यते ॥ २० ॥**

तर्मुखतयाविलसंतीज्ञानब्रह्मविद्येत्यादिपदैर्बहिर्मुखतयाविलसंतीबुद्ध्यादिपदैरुच्यतइत्यर्थः ॥ वायुभेदाऊर्ध्वाधोभेदेनयेहृदयादिषुप्रसिद्धास्तेऽत्रप्राणपदेनोच्यंतइत्यर्थः॥ तएवबलरूपाइतिविशेषरूपप्रदर्शनार्थम् ॥१५॥ बुद्धेर्निश्चयात्मकंरूपमुक्त्वासंकल्पविकल्पात्मकंमनसःस्वरूपमाह । इंद्रियाणांप्रवरमिति ॥ तेषांश्रेष्ठमीश्वरस्यपरमात्मनोबिंबभूतस्यांशः अंशइवअंशः प्रतिबिंबरूपोयास्मिन्नंतःकरणरूपेमनसितादृशम् ॥ अनूहकम् ऊहस्तर्कोनिश्चयात्मकस्तदभाववत्संशयात्मकमित्यर्थः ॥ कर्मणामिंद्रियव्यापाराणांप्रेरकंदुर्निवार्यस्वाधीनंकर्तुमशक्यमतिचंचलमित्यर्थः ॥१६॥ अनिरूप्यमेतादृशमितिनिरूपयितुमशक्यम् ॥ ज्ञानभेदोबुद्धिभेदोयत्तदेवमनइत्यर्थः ॥ बुद्धेरेवैतौद्वौभेदावित्यर्थः ॥ ज्ञानेंद्रियाण्याह । लोचनमिति॥१७॥ अंगिनामवयविनामंगरूपमवयवरूपंसर्वकर्मणांसर्वकर्मेंद्रियव्यापाराणांप्रेरकमित्यर्थः ॥ रिपुरूपमेतदेवेंद्रियंविषयेष्वासक्तंरिपुरूपंदुःखदंभवति ॥ तदेवसद्विषयेष्वासक्तंमित्ररूपंसुखदंभवतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ इंद्रियाणांदेवताआह। सूर्यइति ॥ अत्रसंग्रहेणोक्ताः ॥ अन्यत्रतुदिग्वातार्कप्रचेतोश्विवह्नींद्रोपेंद्रमित्रकाइतिविशेषेणोक्ताः ॥ जीवस्वरूपमाह प्राणदेहादीति ॥ यःप्राणदेहादीनांधारकोंतःकरणेप्रतिबिंबरूपःसोत्रजीवशब्देनोच्यतइत्यर्थः ॥ १९ ॥ परमात्मस्वरूपमाह । परममिति ॥ स्पष्टोऽर्थः ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





इत्येवमिति ॥ हेवत्सेममतनयेयत्त्वयापृष्टमभष्टव्यमपियदर्थमिंद्रादयोऽपिशतसंवत्सरंगुरुशुश्रूषांकृतवंतस्तत्सर्वंयथागममौपनिषदंतत्त्वंकथितंकेवलंत्वत्सौजन्यवशादिदमेवज्ञानिनांज्ञानरूपम् एतज्ज्ञानेनैवज्ञानिनःकृतकृत्याःसनकादयोजीवन्मुक्ताःसंतोमुक्तिंप्रापुस्तदेतन्मयोक्तंहृदिनिश्चित्यपतिवियोगजन्यंखेदंमाकार्षीःअकृत्वाचखेदंयथासुखंस्वस्थानंप्रतिगच्छेत्यर्थः ॥ अत्रसावित्र्याःसौजन्यंपरमास्तिकतांस्वोपदिष्टातिसूक्ष्मतत्त्वग्राहकतांस्वस्मिन्मुखचर्याभाषणादिभिर्निर्व्याजभक्तिंचज्ञात्वाऽतिगद्गदांतःकरणोझटितिवत्सेइत्युवाचेतिबोध्यम् ॥ २१ ॥ सावित्रीतुमांप्रतिदेवदेवेनस्वमुखेनैववत्सेइत्युक्तंततएतस्याग्रेयथेष्टभाषणेकोदोषइत्यभिप्रायेणवदतित्यक्त्वेति ॥ हेदेवकांतंपतिंत्यक्त्वाक्वयामियास्यामिनक्वचिद्गंतुंस्थलमस्तीत्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ यावत्पर्यंतमहंसामान्यास्थितातावत्पर्यंतंसर्वोऽपिदेशोममगंतव्यएवस्थितोऽधुनातुत्वयावत्सेइत्युक्तंततोनाहंसामान्याकिंतुतवकन्याऽस्मिततोयमकन्येयंविधवालोकेव्यवहरतीतितवायशःकर्तुंकथंलोकेगमिष्यामीति ॥ किंचस्त्रियाःप्रथमंपतिःसंरक्षकस्तदभावेपुत्रस्तत्रममद्वयोरभावस्तदापित्रैवसापालनीयाततश्चत्वांपितरंज्ञानार्णवंहित्वाक्वयामिनक्वचिदपिनस्त्रीस्वातंत्र्यमर्हतीतिनिय

इत्येवंकथितंसर्वंत्वयापृष्टंयथागमम् ॥ ज्ञानिनांज्ञानरूपंचगच्छवत्सेयथासुखम् ॥२१॥ सावित्र्युवाच ॥ त्यक्त्वाक्वयामिकांतंवात्वांवाज्ञानार्णवंध्रुवम्॥ यद्यत्करोमिप्रश्नंचतद्भवान्वक्तुमर्हति ॥ २२ ॥ कांकांयोनिंयातिजीवःकर्मणाकेनवापुनः ॥ केनवाकर्मणास्वर्गंकेनवानरकंपितः ॥ २३ ॥ केनवाकर्मणामुक्तिःकेनभक्तिर्भवेद्धरौ ॥ केनवाकर्मणायोगीरोगीवाकेनकर्मणा ॥ २४ ॥ केनवादीर्घजीवीचकेनाल्पायुश्चकर्मणा ॥ केनवाकर्मणादुःखीसुखीवाकेनकर्मणा ॥ २५ ॥ अंगहीनःकाणश्चबधिरःकेनकर्मणा ॥ अंधोवापंगुरपिवाप्रमत्तःकेनकर्मणा ॥ २६ ॥ क्षिप्तोऽतिलुब्धकश्चौरःकेनवाकर्मणाभवेत् ॥ केनसिद्धिमवाप्नोतिसालोक्यादिचतुष्टयम् ॥ २७ ॥ केनवाब्राह्मणत्वंचतपस्वित्वंचकेनवा ॥ स्वर्गभोगादिकंकेनवैकुंठंकेनकर्मणा ॥ २८ ॥ गोलोकंकेनवाब्रह्मन्सर्वोत्कृष्टोनिरामयः ॥ नरकोवाकतिविधःकिंसंख्योनामकिंचवा ॥ २९ ॥ कोवाकंनरकंयातिकियंतंतेषुतिष्ठति ॥ पापिनांकर्मणाकेनकोवाव्याधिःप्रजायते ॥ ३० ॥ यद्यत्प्रियंमयापृष्टंतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ सावित्रीवचनंश्रुत्वाजगामाविस्मयंयमः ॥ प्रहस्यवक्तुमारेभेकर्मपाकंतुजीविनाम् ॥ १ ॥

मादित्याह। त्वांवाज्ञानार्णवमिति ॥ यद्यपिश्वशुरःपालकोऽस्तितथाऽपित्वंपिताब्रह्मविद्योपदेष्टागुरुश्चभवसिततस्त्वांहित्वाकथंयास्यामिनहिब्रह्मदातृगुरोर्वियोगःकस्यापिसोढव्योभवतीतिज्ञानार्णवपदेनसूचितम् ॥ ननुगुरोःसन्निधौकिंतवप्रष्टव्यमस्तीतिचेद्बहुप्रष्टव्यमस्तीत्याह । यद्यत्करोमीति ॥ २२ ॥ ननुकेतेप्रश्नाइतिचेत्तत्राऽह । कांकांयोनिमिति॥ तेनयमराजेनवत्सेइत्युक्तेसतिसावित्रीपितृपदेनसंबोधयति । पितरिति ॥ २३ ॥ भवेद्धरौसर्वजनकपरमात्मनीत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ गोलोकंकेनवायातीत्यन्वयः ॥२९॥ कियंतंकालमित्यर्थः तेषुनरकेष्वित्यर्थः ॥ ३० ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ ॥ सप्ततिश्लोकवर्यैश्चाप्यर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ दानधर्मफलंसर्वंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ अथधर्मराजोममसुखाद्वत्सेइतिपदंनिःसृतंतावन्मात्रेणानयाबद्धोऽहंनकिंचित्कर्तुंशक्नोमीतिमनसिविस्मितःसंस्तस्यागुणभक्तितत्त्वज्ञानश्रद्धावलोकनतोऽतिसंतुष्टहृदयोनकिंचिदस्याअदेयमस्तीत्यभिप्रायेणाऽऽह । सावित्रीति ॥ अनेनसावित्रीविषयेऽतिप्रेमाकुलंनिष्कपटंचित्तंजातमितिबोधितम् ॥ १ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

प्रथमतःप्रसन्नःसंस्तांवदति॥कन्याद्वादशेति॥हेवत्सेयद्यपित्वंवयसाद्वादशवर्षीयाद्वादशवर्षवतीसुकुमारीअसितथापितेज्ञानंनतादृशवयोनुरूपंकिंतुपूर्वविदुषांसनकादीनांपरंपरिपाकदशायांजा यमानंज्ञानंतद्भवतिअतिप्रौढज्ञानवतीत्यर्थः ॥२॥ त्वमेतादृशंस्वरूपंनजानासिपरंत्वहंजानामितत्किमितिचेत्तत्राह।सावित्रीवरदानेनेति॥भूभृतातवापित्रातपसापुराकृतेनतेनचजायमानेनसावि त्र्यावरदानेनतत्समासावित्रीकलासावित्र्याअंशरूपासीत्यर्थः ॥ ३ ॥ अतःप्रथममेकंवरमहंदास्यामितच्छृण्वित्याह।यथाश्रीरिति ॥ यथैतेषांदेवानामेताःस्त्रियोऽखंडितसौभाग्यास्तथात्वंसत्य वतःसौभाग्याऽखंडसौभाग्यवतीप्रियाभवेतिसमुदायार्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ अयमेकोवरोमयादत्तोन्यच्चयद्यत्तवापेक्षितंतत्सर्वंवृण्वित्याह । अयंतुभ्यमिति ॥ ८ ॥ सावित्रीस्वाभिल षितंवृणोति। सत्यवतइति ॥ ९ ॥ श्वशुरस्यांधस्यराज्यलाभः शत्रुणापहृतस्यराज्यस्यलाभः ॥ नेत्रादिलाभः ॥ १० ॥ समतीतेलक्षवर्षेलक्षवर्षानंतरमंतेसत्यवतापत्यासहैवेत्यर्थः ॥११॥

धर्मउवाच ॥ कन्याद्वादशवर्षीयावत्सेत्वंवयसाऽधुना ॥ ज्ञानंतेपूर्वविदुषांज्ञानिनांयोगिनांपरम् ॥ २ ॥ सावित्रीवरदानेनत्वंसावित्रीकलासती ॥ प्राप्ता पुराभूभृताचतपसातत्समासुते ॥ ३ ॥ यथाश्रीःश्रीपतेःक्रोडेभवानीचभवोरसि ॥ यथाऽदितिःकश्यपेचयथाऽहल्याचगौतमे ॥ ४ ॥ यथाशचीमहेंद्रे चयथाचंद्रेचरोहिणी ॥ यथारतिःकामदेवेयथास्वाहाहुताशने ॥५॥ यथास्वधाचपितृषुयथासंज्ञादिवाकरे ॥ वरुणानीचवरुणेयज्ञेचदक्षिणायथा ॥६॥य थावराहेपृथिवीदेवसेनाचकार्तिके ॥ सौभाग्यासुप्रियात्वंचतथासत्यवतःप्रिये ॥ ७ ॥ अयंतुभ्यंवरोदत्तोप्यपरंचयथेप्सितम् ॥ वृणुदेविमहाभागेददा मिसकलेप्सितम् ॥ ८ ॥ सावित्र्युवाच ॥ सत्यवतऔरसानांपुत्राणांशतकंमम ॥ भविष्यतिमहाभागवरमेतन्मदीप्सितम् ॥ ९ ॥ मत्पितुःपुत्रशतकंश्व शुरस्यचचक्षुषी ॥ राज्यलाभोभवत्वेवंवरमेतन्मदीप्सितम् ॥ १० ॥ अंतेसत्यवतासार्धंयास्यामिहरिमंदिरम् ॥ समतीतेलक्षवर्षेदेहीदंमेजगत्प्रभो ॥ ॥ ११ ॥ जीवकर्मविपाकंचश्रोतुंकौतूहलंमम ॥ विश्वनिस्तारबीजंचतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १२ ॥ धर्मराजउवाच ॥ भविष्यतिमहासाध्विसर्वमा नासिकंतव ॥ जीवकर्मविपाकंचकथयामिनिशामय ॥ १३ ॥ शुभानामशुभानांचकर्मणांजन्मभारते ॥ पुण्यक्षेत्रेचनाऽन्यत्रसर्वेचभुंजतेजनाः ॥ १४ ॥ सुरादैत्यादानवाश्चगंधर्वाराक्षसादयः ॥ नराश्चकर्मजनकानसर्वेजीविनःसति ॥ १५ ॥ विशिष्टजीविनःकर्मभुंजतेसर्वयोनिषु ॥ शुभाशुभंचसर्वत्रस्वर्गेषु नरकेषुच ॥ १६ ॥ विशेषतोजीविनश्चभ्रमंतेसर्वयोनिषु ॥ शुभाशुभंभुंजतेचकर्मपूर्वार्जितंपरम् ॥ १७ ॥ शुभेनकर्मणायातिस्वर्लोकादिकमेवच ॥ कर्मणाचाऽशुभेनैवभ्रमंतिनरकेषुच ॥ १८॥ कर्मनिर्मूलनेभक्तिःसाचोक्ताद्विविधासति ॥ निर्वाणरूपाभक्तिश्चब्रह्मणःप्रकृतेरिह ॥ १९ ॥ रोगीकुकर्मणाजी वश्चाऽरोगीशुभकर्मणा ॥ दीर्घजीवीचक्षीणायुःसुखीदुःखीचकर्मणा ॥ २० ॥

तन्मेव्याख्यातुमिति इत्थंवरंदत्वातदपिवदेत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ नाऽन्यत्रेति ॥ अन्यत्रभारतखंडादितरत्रनोभयंशुभाशुभंभुंजते किंतु स्वर्गादौशुभमेवनरकादावशुभमेवभुंजतेइत्यर्थः ॥ ॥१४॥ कर्मजनकाएतेसर्वेकर्मजनकाः कर्मकारिणोनसर्वेजीविनःपश्चादयइतिकर्माधिकारिणोदर्शिताः ॥१५॥ विशिष्टजीविनोमुख्यजीविनःकर्माधिकृतामनुष्यादयःपूर्वोक्ताइत्यर्थः ॥१६॥ पूर्वार्जितंपूर्वसंपादितम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ निर्वाणरूपेति ॥ एकानिर्गुणभक्तिः ॥ द्वितीयाब्रह्मणःप्रकृतेर्मायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्यामूलप्रकृतेरित्यर्थः ॥ उभयोरपिभक्तिःकर्मनिर्मूलनेकर्मना शनेक्षमेत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





इदंसर्वपूर्वोक्तैकैकप्रश्नानामुत्तरंभवतीतिबोध्यम् ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ येस्वधर्माचारवंतःसकामाःपंचायतनदेवोपासकास्तेतत्तद्देवतालोकंगत्वापुनरायांति ॥ ये निष्कामाःसंतःस्वधर्माचारवंतःपंचदेवतोपासकास्तेतत्तद्देवतालोकंगत्वातत्रज्ञानंलब्ध्वामुक्ताभवंतिनपुनरावर्ततेइतिसमुदायार्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ मणिद्वीपंतृतीयस्कंधोक्तंदेवीलोकम् ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अन्येदेवेज्याःपंचायतनदेवेभ्योऽन्यदेवोपासकाइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ देवान्यसेवनादेवसेवारहिताइत्यर्थः ॥ ३८ ॥

अंधादयश्चांगहीनाःकर्मणाकुत्सितेनच ॥ सिद्ध्यादिकमवाप्नोतिसर्वोत्कृष्टेनकर्मणा ॥ २१ ॥ सामान्यंकथितंदेविविशेषंशृणुसुंदरि ॥ सुदुर्लभंसुगोप्यंचपुराणेषुस्मृतिष्वपि ॥ २२ ॥ दुर्लभामानुषीजातिःसर्वजातिषुभारते ॥ सर्वेभ्योब्राह्मणःश्रेष्ठःप्रशस्तःसर्वमर्मसु ॥ २३ ॥ ब्रह्मनिष्ठोद्विजश्चैवगरीयान्भारतेसति ॥ निष्कामश्चसकामश्चब्राह्मणोद्विविधःसति ॥ २४ ॥ सकामाच्चप्रधानश्चनिष्कामोभक्तएवच ॥ कर्मभोगीसकामश्चनिष्कामोनिरुपद्रवः ॥ ॥ २५ ॥ सयातिदेहंत्यक्त्वाचपदंयत्तन्निरामयम् ॥ पुनरागमनंनास्तितेषांनिष्कामिणनांसति ॥२६॥ सेवंतेद्विभुजंकृष्णंपरमात्मानमीश्वरम् ॥ गोलोकंप्रतितेभक्तादिव्यरूपविधारिणः ॥ २७ ॥ सकामिनोवैष्णवाश्चगत्वावैकुंठमेवच ॥ भारतंपुनरायांतितेषांजन्मद्विजातिषु ॥२८॥ कालेनतेचनिष्कामाभवंत्येवक्रमेणच ॥ भक्तिंचनिर्मलांतेभ्योदास्यामिनिश्चितंपुनः ॥ २९ ॥ ब्राह्मणावैष्णवाश्चैवसकामाःसर्वजन्मसु ॥ नतेषांनिर्मलाबुद्धिर्विष्णुभक्तिविवर्जिताः ॥ ३० ॥ तीर्थाश्रिताद्विजायेचतपस्यानिरताःसति ॥ तेयांतिब्रह्मलोकंचपुनरायांतिभारते ॥३१॥ स्वधर्मनिरतायेचतीर्थान्यत्रनिवासिनः॥व्रजंतितेसत्यलोकंपुनरायांतिभारते ॥३२॥ स्वधर्मनिरताविप्राःसूर्यभक्ताश्चभारते ॥ व्रजंतितेसूर्यलोकंपुनरायांतिभारते ॥३३॥ मूलप्रकृतिभक्तायेनिष्कामाधर्मचारिणः ॥ मणिद्वीपंप्रयांत्येवपुनरावृत्तिवर्जितम् ॥ ३४ ॥ स्वधर्मेनिरताभक्ताःशैवाःशाक्ताश्चगाणपाः ॥ तेयांतिशिवलोकंचपुनरायांतिभारते ॥३५॥ येविप्राअन्यदेवेज्याःस्वधर्मनिरताःसति॥तेयांतिसर्वलोकंचपुनरायांतिभारते॥३६॥हरिभक्ताश्चनिष्कामाःस्वधर्मनिरताद्विजाः॥तेचयांतिहरेर्लोकंक्रमाद्भक्तिबलादहो॥३७॥स्वधर्मरहिताविप्रादेवान्यसेवनाःसदा ॥ भ्रष्टाचाराश्चकामाश्चतेयांतिनरकंध्रुवम् ॥ ३८ ॥ स्वधर्मनिरताएववर्णाश्चत्वारएवच ॥ भवंत्येवशुभस्यैवकर्मणःफलभोगिनः ॥३९॥ स्वकर्मरहितायेचनरकंयांतितेध्रुवम् ॥ भारतेनभवंत्येवकर्मणःफलभोगिनः ॥४०॥ स्वधर्मनिरताएववर्णाश्चत्वारएवच ॥ स्वधर्मनिरताविप्राःस्वधर्मनिरतायच ॥ ४१ ॥ कन्यांददतिविप्रायचंद्रलोकंप्रयांतिते ॥ वसंतितत्रतेसाध्वियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ४२ ॥

स्वधर्मेति ॥ स्वधर्मनिरताःशुभकर्मफलभोगिनः ॥ ३९ ॥ तद्रहितानरकगामिनस्तेचनकदाऽपिभारतेखंडेसाम्यकर्मफलभोगिनोभवंतिनरकात्तेषामनुद्धारादित्यर्थः ॥ ४० ॥ तस्मात्स्वधर्मनिरतत्वमेवचतुर्भिर्वर्णैःसंपादनीयमित्याह । स्वधर्मनिरताइति ॥ इदानींविशेषकर्मणांविशेषफलंदर्शयति । स्वधर्मनिरताविप्राइति ॥ ४१ ॥ ददतिप्रयच्छंति ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

सकामाइति ॥ यदितल्लोकप्राप्तीच्छयाकन्यांप्रयच्छंतितदातल्लोकंयांति यदितुनिष्कामतयेश्वरप्रीत्यर्थंकन्यांप्रयच्छंतितदाचित्तशुद्धिरेवफलमितिबोध्यम् ॥ ४३ ॥ ततश्चित्तेशुद्धेज्ञानंभवति प्रतिबंधकसत्त्वेनज्ञानाभावेतुविष्ण्वादीनांस्वेष्टदेवतानांयेलोकास्तान्प्रतिगच्छंतीत्याह ॥ तेप्रयांतीति ॥ विष्णुपदमुपलक्षणंस्वेष्टदेवतानाम् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ सुवर्णाःशोभनवर्णाः ॥ ४६॥ ब्राह्मणायददतीत्यन्वयः ॥ ४७ ॥ विपुलेविस्तीर्णेलोके ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ विपुलंबहुकालम् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ यस्मैयस्मैचेति ॥ यद्यद्देवप्रीत्यर्थमित्यर्थः ॥ ५२ ॥ सौवराजसदनेदेवा यब्राह्मणायवादत्तेगृहापेक्षयाचतुर्गुणमित्यर्थः ॥ ५३ ॥ प्रकृष्टेमहत्तरेदेशेइत्यर्थः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ वापीलक्षणमाह । धनुश्चतुःसहस्रेणेति ॥ धनुःप्रमाणमुक्तंमार्कंडेयपुराणे ॥ चतुर्हस्तोध

सालंकृतायादानेनद्विगुणंफलमुच्यते ॥ सकामायांतितल्लोकंननिष्कामाश्चसाधवः ॥ ४३॥ तेप्रयांतिविष्णुलोकंफलसंघातवर्जिताः ॥ गव्यंचरजतंस्वर्ण वस्त्रंसर्पिःफलंजलम् ॥ ४४ ॥ येददत्येवविप्रेभ्यश्चंद्रलोकंप्रयांतिते ॥ वसंतितेचतल्लोकेयावन्मन्वंतरंसति ॥ ४५ ॥ सुचिरात्सुचिरंवासंकुर्वंतितेनतेज नाः ॥ येददतिसुवर्णाश्चगाश्चताम्रादिकंसति ॥ ४६ ॥ तेयांतिसूर्यलोकंचशुचयेब्राह्मणायच ॥ वसंतितेतत्रलोकेवर्षाणामयुतंसति ॥ ४७ ॥ विपुलेसुचि रंवासंकुर्वंतिचनिरामयाः ॥ ददातिभूमिंविप्रेभ्योधनानिविपुलानिच ॥ ४८ ॥ सयातिविष्णुलोकंचश्वेतद्वीपंमनोहरम् ॥ तत्रैवनिवसत्येवयावच्चंद्रदिवाक रौ ॥ ४९ ॥ विपुलेविपुलंवासंकरोतिपुण्यवान्मुने ॥ गृहंददतिविप्राययेजनाभक्तिपूर्वकम् ॥ ५० ॥ तेयांतिविष्णुलोकंचसुचिरंसुखदायकम् ॥ गृहरे णुप्रमाणंचविष्णुलोकेमहत्तमे ॥ ५१ ॥ विपुलेविपुलंवासंकुर्वंतिमानवाःसति ॥ यस्मैयस्मैचदेवाययोददातिगृहंनरः ॥ ५२ ॥ सयातितस्यलोकंचरे णुमानाब्दमेवच ॥ सौधेचतुर्गुणंपुण्यंदेशेशतगुणंफलम् ॥ ५३ ॥ प्रकृष्टेद्विगुणंतस्मादित्याहकमलोद्भवः ॥ योददातितडागंचसर्वपापापनुत्तये ॥५४॥ सयातिजनलोकंचरेणुमानाब्दमेवच ॥ वाप्यांफलंदशगुणंप्राप्नोतिमानवःसदा ॥ ५५ ॥ सतुवापीप्रदानेनतडागस्यफलंलभेत् ॥ धनुश्चतुःसहस्रेणदैर्घ्यं मानेननिश्चितम् ॥५६ ॥ न्यूनावातावतीप्रस्थेसावापीपरिकीर्तिता ॥ दशवापीसमाकन्यायदिपात्रेप्रदीयते ॥ ५७ ॥ फलंददातिद्विगुणंयदिसाऽलंकृ ताभवेत् ॥ यत्फलंचतडागेचतदुद्धारेचतत्फलम् ॥५८॥ वाप्याश्चपंकोद्धरणेवापीतुल्यफलंलभेत् ॥ अश्वत्थवृक्षमारोप्यप्रतिष्ठांयःकरोतिच ॥ ५९ ॥ सप्रयातितपोलोकंवर्षाणामयुतंसति ॥ पुष्पोद्यानंयोददातिसावित्रिसर्वभूतये ॥ ६० ॥ सवसेद्ध्रुवलोकंचवर्षाणामयुतंध्रुवम् ॥ योददातिविमानंचवि ष्णवेभारतेसति ॥ ६१ ॥ विष्णुलोकेवसेत्सोऽपियावन्मन्वंतरंपरम् ॥ चित्रयुक्तेचविपुलेफलंतस्यचतुर्गुणम् ॥ ६२ ॥

नुर्दंडोनालिकातद्युगेनतु ॥ क्रोशोधनुःसहस्रेद्वेगव्यूतिश्चचतुर्गुणेति ॥ धनुश्चतुःसहस्रदैर्घ्यवतीत्यर्थः ॥ ५६ ॥ प्रस्थेविस्तारवतीधनुश्चतुःसहस्रप्रमाणवतीत्यर्थः ॥ न्यूनावेति ॥ अथवा विस्तारेप्रमाणनियमोनास्तीत्यर्थः ॥ देवीपुराणेतु वापीदंडमयादूर्ध्वंदशवर्गान्नयोत्तमैरितिवचनाच्चत्वारिंशद्धस्तावाप्युक्ता ॥ चतुर्हस्तोदंडस्तदादिदशवर्गाःदशगुणदंडावधिचत्वारिंशद्धस्तपर्य तमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ पंकोद्धारेतडागपंकोद्धारेइत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ चित्रयुक्तेविचित्रेविमानेदत्तेइत्यर्थः ॥ विपुलेविस्तीर्णेइत्यर्थः ॥ ६२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





दोलमंदिरंदोलस्थानयोग्यंतद्युक्तंवामंदिरम् ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ब्राह्मणत्वमातिदुर्लभंनैतत्तपसालभ्यतेकिंतुजन्मनैवेत्याह । क्षत्रियोवेति ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ शताधिकैश्चचत्वारिंशत्संख्यैःपद्यकैरथ ॥ नानादानफलंसम्यक्स्वर्गादिप्रदमुच्यते ॥ १ ॥ अथनाना
विधदानानिस्वर्गादिफलप्रदानिपृच्छाति । प्रयांतीति ॥ १ ॥ अन्नप्रमाणवर्षम्अन्नस्ययेरेणवस्तत्प्रमाणवर्षमित्यर्थः ॥ शिवलोकेकैलासे ॥ २ ॥ अन्येभ्योब्राह्मणातिरिक्तेभ्यः ॥ ३ ॥

तस्यार्धंशिविकादानेफलमेवलभेद्ध्रुवम् ॥ योददातिभक्तियुक्तोहरयेदोलमंदिरम् ॥६३॥ विष्णुलोकेवसेत्सोऽपियावन्मन्वंतरंशतम् ॥ राजमार्गसौधयुक्तं
यःकरोतिपतिव्रते ॥६४॥ वर्षाणामयुतंसोऽपिशक्रलोकेमहीयते ॥ ब्राह्मणेभ्योऽथदेवेभ्योदानेसमफलंलभेत् ॥६५॥ यद्धिदत्तंचतद्भुक्तेनदत्तंनोपतिष्ठते ॥
भुक्त्वास्वर्गादिजंसौख्यंपुण्यवाञ्जन्मभारते ॥६६॥ लभेद्विप्रकुलेष्वेवक्रमेणैवोत्तमादिषु ॥ भारतेपुण्यवान्विप्रोभुक्त्वास्वर्गादिकंफलम् ॥६७॥ पुनःसो
ऽपिभवेद्विप्रश्चैवंचक्षत्रियादयः ॥ क्षत्रियोवाऽथवैश्योवाकल्पकोटिशतेनच ॥ ६८ ॥ तपसाब्राह्मणत्वंचनप्राप्नोतिश्रुतौश्रुतम् ॥नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पको
टिशतैरपि ॥६९॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ दैवतीर्थसहायेनकायव्यूहेनशुद्ध्यति ॥७०॥ एतत्तेकथितंकिंचित्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि॥
इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ सावित्र्युवाच ॥ प्रयांतिस्वर्गमन्यंच
येनैवकर्मणायम ॥ मानवाःपुण्यवंतश्चतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ धर्मराजउवाच ॥ अन्नदानंचविप्राययःकरोतिचभारते ॥ अन्नप्रमाणवर्षंचशिवलो
केमहीयते ॥ २ ॥ अन्नदानंमहादानमन्येभ्योऽपिकरोतियः ॥ अन्नदानप्रमाणंचशिवलोकेमहीयते ॥ ३ ॥ अन्नदानात्परंदानंनभूतंनभविष्यति ॥ ना
ऽत्रपात्रपरीक्षास्यान्नकालनियमःक्वचित् ॥ ४ ॥ देवेभ्योब्राह्मणेभ्योवाददातिचाऽऽसनंयदि ॥ महीयतेविष्णुलोकेवर्षाणामयुतंसति ॥ ५ ॥ योददातिच
विप्रायदिव्यांधेनुंपयस्विनीम् ॥ तल्लोममानवर्षंचविष्णुलोकेमहीयते ॥ ६ ॥ चतुर्गुणंपुण्यदिनेतीर्थेशतगुणंफलम् ॥ दानंनारायणक्षेत्रेफलंकोटिगुणंभवे
त् ॥ ७ ॥ गांयोददातिविप्रायभारतेभक्तिपूर्वकम् ॥ वर्षाणामयुतंचैवचंद्रलोकेमहीयते ॥८॥ यश्चोभयमुखीदानंकरोतिब्राह्मणायच ॥ तल्लोममानवर्षंचवि
ष्णुलोकेमहीयते ॥ ९ ॥ योददातिब्राह्मणायश्वेतच्छत्रंमनोहरम् ॥ वर्षाणामयुतंसोऽपिमोदतेवरुणालये ॥ १० ॥ विप्रायपीडितांगायवस्त्रयुग्मंददाति
च॥ महीयतेवायुलोकेवर्षाणामयुतंसति॥ ११॥योददातिब्राह्मणायशालग्रामंसवस्त्रकम् ॥ महीयतेसवैकुंठेयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥१२॥ योददातिब्राह्मणायदि
व्यांशय्यांमनोहराम्॥महीयतेचंद्रलोकेयावच्चंद्रदिवाकरौ॥१३॥योददातिप्रदीपंचदेवेभ्योब्राह्मणायच ॥ यावन्मन्वंतरंसोऽपिवह्निलोकेमहीयते ॥ १४ ॥

॥ ४ ॥ आसनमुपवेशनाय ॥ ५ ॥ ६ ॥ नारायणक्षेत्रइति ॥ तच्चक्षेत्रंगंगाप्रवाहसन्निधचतुर्हस्तपरिमितदेशात्मकमग्रेवक्ष्यमाणम् ॥ ७ ॥ गांयइति ॥ वृषभोत्रगोशब्देनेतिनपुनरुक्ति
॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ हरेर्नामेति इदमुपलक्षणं शिवदेवीगणेशसूर्यनाम्नामपि ॥ २१ ॥ दोलनंसर्वदेवानांपूर्णिमारात्रेश्चरमभागे ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥
॥ २५ ॥ २६ ॥ इदंस्त्रीदानंप्रथमतःकृत्वापश्चात्स्त्रीभारपरिमितंसुवर्णंब्राह्मणायदत्वातांस्त्रियंस्वयंगृह्णीयादितिपतिव्रतापदेनसूचितम् ॥ अन्यथादातृप्रतिग्रहीत्रोरुभयोर्नरकःस्यादितिस्प

करोतिगजदानंचयदिविप्रायभारते ॥ यावदिंद्रोनरस्तावदिंद्रस्याऽर्धासनेवसेत् ॥ १५ ॥ भारतेयोऽश्वदानंचकरोतिब्राह्मणायच ॥ मोदतेवारुणेलोके
यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ १६ ॥ प्रकृष्टांशिबिकांयोहिददातिब्राह्मणायच ॥ मोदतेवारुणेलोकेयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ १७ ॥ प्रकृष्टांवाटिकांयोहिददातिब्राह्म
णायच ॥ महीयतेवायुलोकेयावन्मन्वंतरंसति ॥ १८ ॥ योददातिचविप्रायव्यजनंश्वेतचामरम् ॥ महीयतेवायुलोकेवर्षाणामयुतंध्रुवम् ॥ १९ ॥ धा
न्यंरत्नंयोददातिचिरजीवीभवेत्सुधीः ॥ दाताग्रहीतातौद्वौचध्रुवंवैकुंठगामिनौ ॥ २० ॥ सततंश्रीहरेर्नामभारतेयोजपेन्नरः ॥ सएवचिरजीवीचततोमृत्युः
पलायते ॥ २१ ॥ योनरोभारतेवर्षेदोलनंकारयेत्सुधीः ॥ पूर्णिमारजनीशेषेजीवन्मुक्तोभवेन्नरः ॥ २२ ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वायात्यंतेविष्णुमंदिरम् ॥
निश्चितंनिवसेत्तत्रशतमन्वंतरावधि ॥ २३ ॥ फलमुत्तरफल्गुन्यांततोऽपिद्विगुणंभवेत् ॥ कल्पांतजीवीसभवेदित्याहकमलोद्भवः ॥ २४ ॥ तिलदानं
ब्राह्मणाययःकरोतिचभारते॥तिलप्रमाणवर्षंचमोदतेशिवमंदिरे ॥२५॥ ततःसुयोनिंसंप्राप्यचिरजीवीभवेत्सुखी॥ताम्रपात्रस्यदानेनद्विगुणंचफलंलभेत्॥
॥ २६ ॥ सालंकृतांचभोग्यांचसवस्त्रांसुंदरींप्रियाम् ॥ योददातिब्राह्मणायभारतेचपतिव्रताम् ॥ २७ ॥ महीयतेचंद्रलोकेयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ तत्रस्व
र्वेश्ययासार्धंमोदतेचदिवानिशम् ॥ २८ ॥ ततोगंधर्वलोकेचवर्षाणामयुतंध्रुवम् ॥ दिवानिशंकौतुकेनचोर्वश्यासहमोदते ॥ २९ ॥ ततोजन्मसहस्रंच
प्राप्नोतिसुंदरींप्रियाम् ॥ सतींसौभाग्ययुक्तांचकोमलांप्रियवादिनीम् ॥ ३० ॥ प्रददातिफलंचारुब्राह्मणायचयोनरः ॥ फलप्रमाणवर्षंचशक्रलोकेमहीय
ते ॥ ३१ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यलभतेसुतमुत्तमम् ॥ सफलानांचवृक्षाणांसहस्रंचप्रशंसितम् ॥ ३२ ॥ केवलंफलदानंवाब्राह्मणायददातिच ॥ सुचिरं
स्वर्गवासंचकृत्वायातिचभारते ॥ ३३ ॥ नानाद्रव्यसमायुक्तंनानासस्यसमन्वितम् ॥ ददातियश्चविप्रायभारतेविपुलंगृहम् ॥ ३४ ॥ सुरलोकेवसेत्सोऽ
पियावन्मन्वंतरंशतम् ॥ ततःसुयोनिंसंप्राप्यसमहाधनवान्भवेत् ॥ ३५ ॥ योनरःसस्यसंयुक्तांभूमिंचसुचिरांसति ॥ ददातिभक्त्याविप्रायपुण्यक्षेत्रे
चभारते ॥ ३६ ॥ महीयतेचवैकुंठेमन्वंतरशतंध्रुवम् ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यमहांश्चभूमिपोभवेत् ॥ ३७ ॥ तंनत्यजतिभूमिश्चजन्मनाशतकंपरम् ॥ श्री
मांश्चधनवांश्चैवपुत्रवांश्चप्रजेश्वरः ॥ ३८ ॥ सव्रजंचप्रकृष्टंचग्रामंदद्याद्द्विजायच ॥ लक्षमन्वंतरंचैववैकुंठेसमहीयते ॥ ३९ ॥

टमन्यपुराणे ॥ तदुक्तंस्कांदे स्त्रियंदत्वाततस्तांतुक्रीणीयात्कांचनादिनेति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ स्वाधिकारंस्वकृतराजामात्याद्यधिकारम् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ सर्वाण्यपीमानिदानानितथासर्वांस्तपश्चर्यांस्तथा सर्वमन्यत्पुण्यकर्मदेवीभक्तेस्तुलनांनार्हतीत्याह । जंबुद्वीपमहीदातुरिति ॥ ५१ ॥ महेशितुर्मूलप्रकृतेर्भक्तस्येत्यर्थः ॥ ५२ ॥ तेदेव्याभक्ताभुवनेशितुःभुवनेश्वर्यामणिद्वीपेनिवसंति तत्र

पुनःसुयोनिंसंप्राप्यग्रामलक्षसमन्वितम् ॥ नजहातिचतंपृथ्वीजन्मनांलक्षमेवच ॥४०॥ सुप्रजंचप्रकृष्टंचपक्वसस्यसमन्वितम् ॥नानापुष्करिणीवृक्षफलवल्ली समन्वितम्॥४१॥नगरंयश्चविप्रायददातिभारतेभुवि॥महीयतेसकैलासेदशलक्षेंद्रकालकम्॥४२॥पुनःसुयोनिंसंप्राप्यराजेंद्रोभारतेभवेत्॥ नगराणांचनियुतंसलभेन्नाऽत्रसंशयः॥४३॥धरातंनजहात्येवजन्मनामयुतंध्रुवम् ॥ परमैश्वर्यनियुतोभवेदेवमहीतले ॥४४॥ नगराणांचशतकंदेशंयोहिद्विजातये ॥सुप्रकृष्टं मध्यकृष्टंप्रजायुक्तंददातिच ॥ ४५ ॥ वापीतड़ागसंयुक्तंनानावृक्षसमन्वितम् ॥ महीयतेसवैकुंठेकोटिमन्वंतरावधि ॥ ४६ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यजंबुद्वीप पतिर्भवेत् ॥ परमैश्वर्यसंयुक्तोयथाशक्रस्तथाभुवि ॥ ४७ ॥ महीतंनजहात्येवजन्मनांकोटिमेवच ॥ कल्पांतजीवीसभवेद्राजराजेश्वरोमहान् ॥ ४८ ॥ स्वाधिकारंसमग्रंचयोददातिद्विजातये ॥ चतुर्गुणंफलंचांतेभवेत्तस्यनसंशयः ॥ ४९ ॥ जंबुद्वीपंयोददातिब्राह्मणायतपस्विने ॥ फलंशतगुणंचांतेभवेत्तस्य नसंशयः ॥ ५० ॥ जंबुद्वीपमहीदातुःसर्वतीर्थानिसेवितुः ॥ सर्वेषांतपसांकर्तुस्सर्वेषांवासकारिणः ॥ ५१ ॥ सर्वदानप्रदातुश्चसर्वसिद्धेश्वरस्यच ॥ अस्त्येवपुनरावृत्तिर्नभक्तस्यमहेशितुः ॥ ५२ ॥ असंख्यब्रह्मणांपातंपश्यंतिभुवनेशितुः ॥ निवसंतिमणिद्वीपेश्रीदेव्याःपरमेपदे ॥ ५३ ॥ देवीमंत्रोपासका श्चविहायमानवींतनुम् ॥ विभूतिंदिव्यरूपंचजन्ममृत्युजराहरम् ॥ ५४ ॥ लब्ध्वादेव्याश्चसारूप्यंदेवीसेवांचकुर्वते ॥ पश्यंतितेमणिद्वीपेसखंडंलोकसं क्षयम् ॥ ५५ ॥ नश्यंतिदेवाःसिद्धाश्चविश्वानिनिखिलानिच ॥ देवीभक्ताननश्यंतिजन्ममृत्युजराहराः ॥ ५६ ॥ कार्तिकेतुलसीदानंकरोतिहरयेचयः ॥ युगत्रयप्रमाणंचमोदतेहरिमंदिरे ॥ ५७ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यहरिभक्तिंलभेद्ध्रुवम् ॥ जितेंद्रियाणांप्रवरःसभवेद्भारतेभुवि ॥ ५८ ॥ मध्येयः स्नातिगंगायामरुणोदयकालतः ॥ युगषष्टिसहस्राणिमोदतेहरिमंदिरे ॥ ५९ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यविष्णुमंत्रंलभेद्ध्रुवम् ॥ त्यक्त्वाचमानुषंदेहंपुन र्यातिहरेःपदम् ॥ ६० ॥ नास्तितत्पुनरावृत्तिर्वैकुंठाच्चमहीतले ॥ करोतिहरिदास्यंचतथासारूप्यमेवच ॥ ६१ ॥ नित्यस्नायीचगंगायांसपूतःसूर्यवद्भु वि ॥ पदेपदेऽश्वमेधस्यलभतेनिश्चितंफलम् ॥ ६२ ॥ तस्यैवपादरजसासद्यःपूतावसुंधरा ॥ मोदतेसचवैकुंठेयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ६३ ॥ पुनःसुयोनिं संप्राप्यहरिभक्तिंलभेद्ध्रुवम् ॥ जीवन्मुक्तोऽतितेजस्वीतपस्विप्रवरोभवेत् ॥ ६४ ॥

स्थित्वाअसंख्यब्रह्मणांपातंपश्यंति तावत्कालपर्यंतंवसंतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ तदेवस्पष्टयति ॥ देवीमंत्रोपासकाश्चेति ॥ ५४ ॥ लोकसंक्षयंप्रलयंसखंडंकल्पप्रलयमित्यर्थः॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

यदाभास्करस्तपतितदेत्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ महिषैश्छागलैरितिब्राह्मणातिरिक्तविषयं कालि

स्वधर्मनिरतःशुद्धोविद्वांश्चसजितेंद्रियः ॥ मीनकर्कटयोर्मध्येगाढंतपतिभास्करः ॥६५॥ भारतेयोददात्येवजलमेवसुवासितम्॥समोदतेचकैलासेयावदिंद्रा
श्चतुर्दश ॥६६॥पुनःसुयोनिंसंप्राप्यरूपवांश्चसुखीभवेत् ॥ शिवभक्तश्चतेजस्वीवेदवेदांगपारगः ॥६७॥ वैशाखेसक्तुदानंचयःकरोतिद्विजातये॥सक्तुरेणुप्र
माणाब्दंमोदतेशिवमंदिरे ॥ ६८॥ करोतिभारतेयोहिकृष्णजन्माष्टमीव्रतम्॥शतजन्मकृतंपापंमुच्यतेनाऽत्रसंशयः॥६९॥वैकुंठेमोदतेसोऽपियावदिंद्राश्च
तुर्दश॥पुनःसुयोनिंसंप्राप्यकृष्णेभक्तिंलभेद्ध्रुवम्॥७०॥इहैवभारतेवर्षेशिवरात्रिंकरोतियः॥मोदतेशिवलोकेससप्तमन्वंतरावधि ॥७१॥ शिवायशिवरात्रौ
चविल्वपत्रंददातिच ॥ पत्रमानयुगंतत्रमोदतेशिवमंदिरे॥७२॥पुनःसुयोनिंसंप्राप्यशिवभक्तिंलभेद्ध्रुवम् ॥ विद्यावान्पुत्रवाञ्छ्रीमान्प्रजावान्भूमिमान्भवेत्
॥७३॥ चैत्रमासेऽथवामाघेशंकरंयोऽर्चयेद्व्रती ॥ करोतिनर्तनंभक्त्यावेत्रपाणिर्दिवानिशम् ॥७४॥ मासंवाऽप्यर्धमासंवादशसप्तदिनानिच ॥दिनमानयु
गंसोऽपिशिवलोकेमहीयते ॥७५॥ श्रीरामनवमींयोहिकरोतिभारतेपुमान् ॥ सप्तमन्वंतरंयावन्मोदतेविष्णुमंदिरे ॥७६॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यरामभक्तिंल
भेद्ध्रुवम् ॥ जितेंद्रियाणांप्रवरोमहांश्चधनवान्भवेत्॥७७॥शारदीयांमहापूजांप्रकृतेर्यःकरोतिच ॥ महिषैश्छागलैर्मेषैःखड्गैर्भेकादिभिःसति ॥७८॥ नै
वेद्यैरुपहारैश्चधूपदीपादिभिस्तथा ॥ नृत्यगीतादिभिर्वाद्यैर्नानाकौतुकमंगलम् ॥ ७९ ॥ शिवलोकेवसेत्सोऽपिसप्तमन्वन्तरावधि ॥ पुनःसुयोनिंसं
प्राप्यनरोबुद्धिंचनिर्मलाम् ॥ ८० ॥ अतुलांश्रियमाप्नोतिपुत्रपौत्रविवर्धनम् ॥ महाप्रभावयुक्तश्चगजवाजिसमन्वितः ॥ ८१ ॥ राजराजेश्वरःसोऽपि
भवेदेवनसंशयः ॥ ततःशुक्लाष्टमींप्राप्यमहालक्ष्मींचयोऽर्चयेत् ॥ ८२ ॥ नित्यंभक्त्यापक्षमेकंपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ दत्वातस्यैप्रकृष्टानिचोपचाराणिषोडश
॥ ८३ ॥ गोलोकेचवसेत्सोऽपियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यराजराजेश्वरोभवेत् ॥ ८४ ॥ कार्तिकीपूर्णिमायांतुकृत्वातुरासमंडलम् ॥
गोपानांशतकंकृत्वागोपीनांशतकंतथा ॥ ८५ ॥ शिलायांप्रतिमायांचश्रीकृष्णंराधयासह ॥ भारतेपूजयेद्भक्त्याचोपहाराणिषोडश ॥ ८६ ॥
गोलोकेवसतेसोऽपियावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ भारतंपुनरागत्यकृष्णेभक्तिंलभेद्दृढाम् ॥ ८७ ॥ क्रमेणसुदृढांभक्तिंलब्ध्वामंत्रंहरेरहो ॥ देहंत्यक्त्वाचगोलोकं
पुनरेवप्रयातिसः ॥ ८८ ॥ ततःकृष्णस्यसारूप्यंपार्षदप्रवरोभवेत् ॥ पुनस्तत्पतनंनास्तिजरामृत्युहरोभवेत् ॥ ८९ ॥ शुक्लांवाऽप्यथवाकृष्णांकरोत्ये
कादशींचयः ॥ वैकुंठेमोदतेसोऽपियावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ ९० ॥ भारतंपुनरागत्यकृष्णभक्तिंलभेद्ध्रुवम् ॥ क्रमेणभक्तिंसुदृढांकरोत्येकांहरेरहो ॥ ९१ ॥

कापुराणादिपुतथाविधबलिदानेब्राह्मणस्यनिषेधात् ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ गांसुवर्णादिकमिति ॥ इदंनित्यंप्रतिदिनंक्रियमाणंदानम् ॥ पूर्वोक्तंगोस्वर्णादिकंदानंतुनैमित्तिकमितिशेषः ॥१००॥

देहंत्यक्त्वाचगोलोकंपुनरेवप्रयातिसः ॥ ततःकृष्णस्यसारूप्यंसंप्राप्यपार्षदोभवेत् ॥ ९२ ॥ पुनस्तत्पतनंनास्तिजरामृत्युहरोभवेत् ॥ भाद्रेचशुक्लद्वादश्यांयःशक्रंपूजयेन्नरः ॥ ९३ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिशक्रलोकेमहीयते ॥ रविवारेचसंक्रांत्यांसप्तम्यांशुक्लपक्षके ॥ ९४ ॥ संपूज्याऽर्कंहविष्यान्नंयः करोतिचभारते ॥ महीयतेसोऽर्कलोकेयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥९५॥ भारतंपुनरागत्यचारोगीश्रीयुतोभवेत् ॥ ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यांसावित्रींयोहिपूजयेत् ॥ ९६ ॥ महीयतेब्रह्मलोकेसप्तमन्वंतरावधि ॥ पुनर्महींसमागत्यश्रीमानतुलविक्रमः ॥ ९७ ॥ चिरजीवीभवेत्सोऽपिज्ञानवान्संपदायुतः ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यां पूजयेद्यःसरस्वतीम् ॥ ९८ ॥ संयतोभक्तितोदत्वाचोपचाराणिषोडश ॥ महीयतेमणिद्वीपेयावद्ब्रह्मदिवानिशम् ॥ ९९ ॥ संप्राप्यचपुनर्जन्मसभवेत्कविपंडितः ॥ गांसुवर्णादिकंयोहिब्राह्मणायददातिच ॥ १०० ॥ नित्यंजीवनपर्यंतंभक्तियुक्तश्चभारते ॥ गवांलोमप्रमाणाब्दंद्विगुणंविष्णुमंदिरे ॥ ॥ १०१ ॥ मोदतेहरिणासार्धंक्रीडाकौतुकमंगलैः ॥ तदंतेपुनरागत्यराजराजेश्वरोभवेत् ॥ २ ॥ श्रीमांश्चपुत्रवान्विद्वाञ्ज्ञानवान्सर्वतःसुखी ॥ भोजयेद्योऽपिमिष्टान्नंब्राह्मणेभ्यश्चभारते ॥ ३ ॥ विप्रलोमप्रमाणाब्दंमोदतेविष्णुमंदिरे ॥ ततःपुनरिहाऽऽगत्यसुखीचधनवान्भवेत् ॥ ४ ॥ विद्वान्सुचिरजीवीचश्रीमानतुलविक्रमः ॥ योवक्तिवाददात्येवहरेर्नामानिभारते ॥ ५ ॥ युगंनामप्रमाणंचविष्णुलोकेमहीयते ॥ ततःपुनरिहागत्यससुखीधनवान्भवेत् ॥ ६ ॥ यदिनारायणक्षेत्रेफलंकोटिगुणंभवेत् ॥ नाम्नांकोटिंहरेर्योहिक्षेत्रेनारायणेजपेत् ॥ ७ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोजीवन्मुक्तोभवेद्ध्रुवम् ॥ नलभेत्सपुनर्जन्मवैकुंठेसमहीयते ॥ ८ ॥ लभेद्विष्णोश्चसारूप्यंनतस्यपतनंभवेत् ॥ विष्णुभक्तिंलभेत्सोऽपिविष्णुसारूप्यमाप्नुयात् ॥ ९ ॥ शिवंयःपूजयेन्नित्यंकृत्वालिंगंचपार्थिवम् ॥ यावज्जीवनपर्यंतंसयातिशिवमंदिरम् ॥ ११० ॥ मृदोरेणुप्रमाणाब्दंशिवलोकेमहीयते ॥ ततःपुनरिहागत्यराजेंद्रोभारतेभवेत् ॥ ११ ॥ शिलांचपूजयेन्नित्यंशिलातोयंचभक्षति ॥ महीयतेचवैकुंठेयावद्वैब्रह्मणःशतम् ॥ १२ ॥ ततोलब्ध्वापुनर्जन्महरिभक्तिंचदुर्लभाम् ॥ महीयतेविष्णुलोकेनतस्यपतनंभवेत् ॥ १३ ॥ तपांसिचैवसर्वाणिव्रतानिनिखिलानिच ॥ कृत्वातिष्ठतिवैकुंठेयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ १४ ॥ ततोलब्ध्वापुनर्जन्मराजेंद्रोभारतेभवेत् ॥ ततोमुक्तोभवेत्पश्चात्पुनर्जन्मनविद्यते ॥ ११५ ॥ यःस्नात्वासर्वतीर्थेषुभुवःकृत्वाप्रदक्षिणाम् ॥ सतुनिर्वाणतांयातिनतुजन्मभवेद्भुवि ॥ १६ ॥ पुण्यक्षेत्रेभारतेचयोऽश्वमेधंकरोतिच ॥ अश्वलोममिताब्दंचशक्रस्याऽर्धासनंभजेत् ॥ ११७ ॥

॥ १०१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ११० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अथसर्वयज्ञापेक्षयादेवीयज्ञस्यसर्वोत्कृष्टत्वमाह । सर्वेभ्योऽपीति ॥ देवीभूलप्रकृतिः श्रीभुवनेश्वरीतत्प्रीत्यर्थंयद्यदनुष्ठानंज्योतिष्टोमाद्यश्वमेधांतंतथाकोटिहोमादिकंनवरात्रोत्सवादिकंत त्सर्वंदेवीमखशब्देनोच्यते ॥ सदेवीमखोदेवीप्रीत्यर्थंक्रियमाणोयज्ञःसर्वेभ्योऽपिमखेभ्यस्तत्तद्देवतोद्देशेनकृतेभ्यःसर्वयज्ञेभ्यःपरःश्रेष्ठोभवतीत्यर्थः ॥ मूलप्रकृत्युद्देशेनकृतत्वादितिभावः ॥ ११८ ॥ सचयज्ञःपूर्वंविष्णवादिभिःकृतइत्याह । विष्णुनाचेति ॥ साचकथातृतीयस्कंधेउक्ता ॥ त्रिपुरासुरजयार्थंशिवेनकृतइत्यर्थः ॥ १९ ॥ १२० ॥ दक्षेणतुयदायंदेवीमखःकृतस्त दामहाननर्थोजातइत्याह । दक्षेणचेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ दक्षप्रभृतयःसर्वेऽपिदेवीमखकर्तारोभवंतीत्याह । धर्मश्चकश्यपश्चेति ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

चतुर्गुणंराजसूयफलमाप्नोतिमानवः ॥ सर्वेभ्योऽपिमखेभ्योहिपरोदेवीमखःस्मृतः ॥ ११८ ॥ विष्णुनाचकृतःपूर्वंब्रह्मणाचवरानने ॥ शंकरेणमहे शेनत्रिपुरासुरनाशने ॥ १९ ॥ शक्तियज्ञःप्रधानश्चसर्वयज्ञेषुसुंदरि ॥ नाऽनेनसदृशोयज्ञस्त्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ १२० ॥ दक्षेणचकृतःपूर्वंमहान्संभारसं युतः ॥ बभूवकलहोयत्रदक्षशंकरयोःसति ॥ २१ ॥ शेषुश्चनंदिनंविप्रानंदीविप्रांश्चकोपतः ॥ यद्धेतोर्दक्षयज्ञंचबभंजचंद्रशेखरः ॥ २२ ॥ चकारदेवी यज्ञंसपुरादक्षःप्रजापतिः ॥ धर्मश्चकश्यपश्चैवशेषश्चाऽपिचकर्दमः ॥ २३ ॥ स्वायंभुवोमनुश्चैवतत्पुत्रश्चप्रियव्रतः ॥ शिवःसनत्कुमारश्चकपिलश्चध्रुव स्तथा ॥ २४ ॥ राजसूयसहस्राणांफलमाप्नोतिनिश्चितम् ॥ देवीयज्ञात्परोयज्ञोनास्तिवेदेफलप्रदः ॥ १२५ ॥ वर्षाणांशतजीवीचजीवन्मुक्तोभवेद्ध्रुवम् ॥ ज्ञानेनतेजसाचैवविष्णुतुल्योभवेदिह ॥ २६ ॥ देवानांचयथाविष्णुर्वैष्णवानांचनारदः ॥ शास्त्राणांचयथावेदावर्णानांब्राह्मणोयथा ॥ २७ ॥ तीर्थानां चयथागंगापवित्राणांशिवोयथा ॥ एकादशीव्रतानांचपुष्पाणांतुलसीयथा ॥ २८ ॥ नक्षत्राणांयथाचंद्रःपक्षिणांगरुडोयथा ॥ यथास्त्रीणांचप्रकृतीरा धावाणीवसुंधरा ॥ २९ ॥ शीघ्राणांचेंद्रियाणांचचंचलानांमनोयथा ॥ प्रजापतीनांब्रह्माचप्रजानांचप्रजापतिः ॥ १३० ॥ वृंदावनंवनानांचवर्षाणां भारतंतथा ॥ श्रीमतांचयथाश्रीश्चविदुषांचसरस्वती ॥ ३१ ॥ पतिव्रतानांदुर्गाचसौभाग्यानांचराधिका ॥ देवीयज्ञस्तथावत्सेसर्वयज्ञेषुभामिनि ॥ ३२ ॥ अश्वमेधशतेनैवशक्रत्वंचलभेद्ध्रुवम् ॥ सहस्रेणविष्णुपदंसंप्राप्तःपृथुरेवच ॥ ३३ ॥ स्नानंचसर्वतीर्थानांसर्वयज्ञेषुदीक्षणम् ॥ सर्वेषांचव्रतानांचतपसांफलमे वच ॥ ३४ ॥ पाठेचतुर्णांवेदानांप्रादक्षिण्यंभुवस्तथा ॥ फलभूतमिदंसर्वंमुक्तिदंशक्तिसेवनम् ॥ १३५ ॥ पुराणेषुचवेदेषुचेतिहासेषुसर्वतः ॥ निरूपितंसारभूतंदेवी पादांबुजार्चनम् ॥ ३६ ॥ तद्वर्णनंचतद्ध्यानंतन्नामगुणकीर्तनम् ॥ तत्स्तोत्रस्मरणंचैववंदनंजपमेवच ॥ १३७ ॥

॥ १३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ अश्वमेधस्यकामनापरत्वमप्याह । अश्वमेधेति ॥ पृथुः पूर्वजातोराजा ॥ ३३ ॥ इतःपरंसर्वकामापेक्षयाश्रीदेवीसेवनंसर्वोत्कृष्टमित्याह । स्नानंचसर्वतीर्थाना मिति ॥ ३४ ॥ फलभूतमिति ॥ एतैःसर्वैःपुण्यैर्जायमानैरेवश्रीशक्तिसेवनंमुक्तिप्रदंलभ्यतेनान्यथेत्यर्थः ॥ तस्मात्सर्वोत्कृष्टंश्रीमूलप्रकृतिसेवनमितिभावः ॥ ३५ ॥ अतएवसर्वशास्त्रेषु पुराणादिषुमूलप्रकृतिसेवनमेवसर्वोत्कृष्टत्वेनवर्णितामित्याह । पुराणेषुचेति ॥ ३६ ॥ तद्वर्णनमित्यादौतत्पदेनमूलप्रकृतिः ॥ १३७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १३८ ॥ यस्मादेवंतस्मान्मूलप्रकृतिंभजेत्याह । भजानित्यमिति ॥ परंब्रह्मनिर्गुणंप्रकृतिंपरांमायाविशिष्टब्रह्मरूपिणींमूलप्रकृतिमित्यर्थः ॥ ३९ ॥ १४० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ अर्धाधिकैःसप्तदशश्लोकैरथमहाविभोः ॥ मूलशक्तेर्महामंत्रंसावित्र्यैदत्तवान्यमः ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेमूलप्रकृतेःसर्वोत्कृष्टत्वेनप्रतिपादनंश्रुत्वातन्मंत्रग्रहणेच्छयासावित्रीयमंप्रत्याहेतिनारायणआह । शक्तेरुत्कीर्तनामिति ॥ शक्तेर्मूलशक्तेरुत्कीर्तनंसर्वोत्कृष्टत्वेनप्रतिपादनमित्यर्थः ॥ १ ॥ सावित्रीकिमाहेतिचेत्तत्राऽऽह । सावित्र्युवाच शक्तेरुत्कीर्तनामिति ॥ मूलप्रकृतेरुत्कीर्तनंसर्वोत्कृष्टत्वेनवर्णनंसकलोद्धारकंभवतितथाजन्ममृत्युजराहरंभवति ॥ २ ॥ तथातपसांपरमंस्थानंभवति ॥ तथाविभोःशक्तेःकीर्तनंयोगानांवेदानांचसेवनं

तत्पादोदकनैवेद्यंभक्षणंनित्यमेवच ॥ सर्वसम्मतमित्येवंसर्वेप्सितमिदंसति ॥ १३८ ॥ भजनित्यंपरंब्रह्मनिर्गुणंप्रकृतिंपराम् ॥ गृहाणस्वामिनंवत्सेसुखंवसचमंदिरे ॥ ३९ ॥ अयंतेकथितःकर्मविपाकोमंगलोनृणाम् ॥ सर्वेप्सितःसर्वमतस्तत्त्वज्ञानप्रदःपरः ॥१४०॥ ॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहा०नवमस्कंधेत्रिंशोध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शक्तेरुत्कीर्तनंश्रुत्वासावित्रीयमवक्रतः ॥ साश्रुनेत्रासपुलकायमंपुनरुवाचसा ॥१॥ सावित्र्युवाच ॥ शक्तेरुत्कीर्तनंधर्मसकलोद्धारकारणम् ॥ श्रोतॄणांचैववक्तॄणांजन्ममृत्युजराहरम् ॥ २ ॥ दानवानांचसिद्धानांतपसांचपरंपदम् ॥ योगानांचैववेदानांकीर्तनंसेवनंविभोः ॥ ३ ॥ मुक्तित्वममरत्वंचसर्वसिद्धित्वमेवच ॥ श्रीशक्तिसेवकस्यैवकलांनार्हतिषोडशीम् ॥ ४ ॥ भजामिकेनविधिनावदवेदविदांवर॥ शुभकर्मविपाकंचश्रुतंनृणांमनोहरम् ॥ ५ ॥ कर्माशुभविपाकंचतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ इत्युक्त्वाचसतीब्रह्मन्भक्तिनम्रात्मकंधरा ॥ ६ ॥ तुष्टावधर्मराजंचवेदोक्तेनस्तवेनच ॥ सावित्र्युवाच ॥ तपसाधर्ममाराध्यपुष्करेभास्करःपुरा ॥७॥ धर्मसूर्यःसुतंप्रापधर्मराजंनमाम्यहम् ॥ समतासर्वभूतेषुयस्यसर्वस्यसाक्षिणः ॥ ८ ॥ अतोयन्नामशमनमितितंप्रणमाम्यहम् ॥ येनांतश्चकृतोविश्वसर्वेषांजीविनांपरम् ॥९॥ कामानुरूपंकालेनतंकृतांतंनमाम्यहम् ॥ विभर्तिदंडंदंडायपापिनांशुद्धिहेतवे ॥ १० ॥ नमामितंदंडधरंयःशास्तासर्वजीविनाम् ॥ विश्वंचकलयत्येवयःसर्वेषुचसंततम् ॥ ११ ॥ अतीवदुर्निवार्यंचतंकालंप्रणमाम्यहम् ॥ तपस्वीब्रह्मनिष्ठोयःसंयमीसंजितेंद्रियः ॥ १२ ॥ जीवानांकर्मफलदस्तंयमंप्रणमाम्यहम् ॥ स्वात्मारामश्चसर्वज्ञोमित्रंपुण्यकृतांभवेत् ॥ १३ ॥ पापिनांक्लेशदोयस्तंपुण्यमित्रंनमाम्यहम् ॥ यज्जन्मब्रह्मणोंऽशेनज्वलंतंब्रह्मतेजसा ॥ १४ ॥

भवति ॥ ३ ॥ मुक्तित्वादिफलमर्पितेनैवकीर्तनेनासिध्यतीत्याह । मुक्तित्वमिति ॥ किंबहुनाशक्तिसेवकतुल्यःकोऽपिनास्तीत्याह । श्रीशक्तिसेवकस्यैवेति ॥ ४ ॥ यस्मादेवंतस्मात्केनाविधिनाभजामितंविधिंशुभकर्मविपाककथनंवदशुभकर्मविपाकंचवदेत्याह । भजामीति ॥ ५ ॥ ६ ॥ तुष्टावेति ॥ गुरुप्रसन्नतयालब्धाविद्याफलायभवतिनाऽन्यथेत्यभिप्रायेणयमंगुरुंतुष्टावेत्यर्थः॥ तथाचश्रुतिः यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनइति ॥ धर्मधर्ममूर्तिंदेवम् ॥ ७ ॥ सूर्योधर्मधर्मांशंसुतंप्राप ॥ तंसूर्यसुतंधर्मांशंधर्मराजसंज्ञकंनमामीत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ दंडायदंडनायशिक्षणायेत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १५ ॥ ततएतत्स्तोत्रेणस्तुतोयमस्तस्यैसावित्र्यैशक्तिभजनंमूलप्रकृतिमंत्रमशुभकर्मविपाकंचोवाचेत्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनव०एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ अष्टाविंशतिपद्यैश्चपातकानांस्थलानिच । नानाविधानिकुंडानिप्रोच्यंतेदुःखदानिच ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेयमस्तांशक्तिभजनंकर्मपाकमुवाचहेत्युक्तम् ॥ तत्कीदृशंशक्तिभजनंकथंवाकर्मविपाकउक्तस्तत्स्पष्टीकर्तुमाह ॥ नारायणउवाच ॥ मायाबीजंमहामंत्रमिति॥मूलप्रकृतेर्भुवनेश्वर्यामंत्रंदत्वेत्यर्थः ॥ तथाचश्रीभुवनेश्वर्युपासनरूपंशक्तिभजनमुक्तवानित्यर्थः ॥ विधिपूर्वकंचाक्षुषदीक्षाविधिनेत्यर्थः ॥ रवेःसुतोयमःअशुभकर्मविपाकंचोक्तवानित्यर्थः ॥ १ ॥ शुभकर्मेति ॥ शुभकर्मणांवेदोक्तकर्मणांविपाकान्नरकंकदापिनयातीत्यर्थः ॥ कर्माशुभेति ॥ कर्मणोवेदावेरुद्धकर्मणोऽशुभविपाकादेवनरकंयातितंकर्माशुभविपाकंकथयामीत्यर्थः ॥ २ ॥ तत्रशुभकर्मणांफलानिस्वर्गानानाविधाःसंतीतिप्रसंगादाह । नानापुराणेति ॥ नानाभेदेनविशिष्टंनानाप्रकार

योध्यायतिपरंब्रह्मतमीशंप्रणमाम्यहम् ॥ इत्युक्त्वासाचसावित्रीप्रणनामयमंमुने ॥ १५ ॥ यमस्तांशक्तिभजनंकर्मपाकमुवाचह ॥ इदंयमाष्टकंनित्यंप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ १६ ॥ यमात्तस्यभयंनास्तिसर्वपापात्प्रमुच्यते ॥ महापापीयदिपठेन्नित्यंभक्तिसमन्वितः ॥ १७ ॥ यमःकरोतिसंशुद्धंकायव्यूहेननिश्चितम् ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ मायाबीजंमहामंत्रंप्रदत्वाविधिपूर्वकम् ॥ कर्माशुभविपाकंचतामुवाचरवेःसुतः ॥ १ ॥ धर्मराजउवाच ॥ शुभकर्मविपाकान्ननरकंयातिमानवः ॥ कर्माशुभविपाकंचकथयामिनिशामय ॥ २ ॥ नानापुराणभेदेननामभेदेनभामिनि ॥ नानाप्रकारंस्वर्गंचयातिजीवःस्वकर्मभिः ॥ ३ ॥ शुभकर्मविपाकान्ननरकंयातिकर्मभिः ॥ कुकर्मणाचनरकंयातिनानाविधंनरः ॥ ४ ॥ नरकाणांचकुंडानिसंतिनानाविधानिच ॥ नानाशास्त्रप्रमाणेनकर्मभेदेनयानिच ॥ ५ ॥ विस्तृतानिचगर्तानिक्लेशदानिचदुःखिनाम् ॥ भयंकराणिघोराणिहेवत्सेकुत्सितानिच ॥ ६ ॥ षडशीतिचकुंडानिएवमन्यानिसंतिच ॥ निबोधतेषांनामानिप्रसिद्धानिश्रुतौसति ॥ ७ ॥ वह्निकुंडंतप्तकुंडंक्षारकुंडंभयानकम् ॥ विट्कुंडंमूत्रकुंडंचश्लेष्मकुंडंचदुःसहम् ॥ ८ ॥ गरकुंडंदूषिकुंडंवसाकुंडंतथैवच ॥ शुक्रकुंडमसृक्कुंडमश्रुकुंडंचकुत्सितम् ॥ ९ ॥ कुंडंगात्रमलानांचकर्णविट्कुंडमेवच ॥ मज्जाकुंडंमांसकुंडंनक्रकुंडंचदुस्तरम् ॥१०॥ लोमकुंडंकेशकुंडमस्थिकुंडंचदुस्तरम् ॥ ताम्रकुंडंलोहकुंडंप्रतप्तंक्लेशदंमहत् ॥ ११ ॥ चर्मकुंडंतप्तसुराकुंडंचपरिकीर्तितम् ॥ तीक्ष्णकंटककुंडंचविषोदंविषकुंडकम् ॥१२॥ प्रतप्तकुंडंतैलस्यकुंतकुंडंचदुर्वहम् ॥ कृमिकुंडंपूयकुंडंसर्पकुंडंदुरंतकम् ॥ १३ ॥

कंस्वर्गमित्यन्वयः ॥ ३ ॥ सर्वथाशुभकर्मणाननरकःकिंत्वशुभकर्मणैवेत्याह । शुभकर्मेति ॥४॥५॥६॥ तत्रषडशीतिकुंडानिमुख्यानितदन्यानितूपकुंडानिसंतीत्याह । षडशीतीति ॥७॥ तत्रचतुर्दशभिःश्लोकैःकुंडनामान्याह ॥ वह्निकुंडमिति ॥ अत्रोत्तराध्यायद्वयेनक्रमेणकुंडानिकथितानितेनैवक्रमेणात्रापिकथितानिनामानिसंतीतिबोध्यम्॥भयानकमितिस्वतंत्रंकुंडंचतुर्थकम्॥दुःसहमितिश्लेष्मकुंडविशेषणम् ॥८॥ दूषिकाकुंडंनेत्रमलकुंडम् ॥ शुक्रकुंडंबीजकुंडम् ॥ असृक्कुंडंरक्तकुंडम् ॥ अश्रुकुंडंनेत्राश्रुकुंडंकुत्सितमितिविशेषणम् ॥ ९ ॥ १० ॥ दुस्तरमितिपदद्वयंविशेषणं ॥ नतुस्वतंत्रंकुंडं ॥ प्रतप्तंक्लेशदंमहदितिलोहकुंडविशेषणम् ॥ ११ ॥ विषोदमितिविषकुंडविशेषणम् ॥१२॥ कुंतकुंडंनानाविधायुधकुंडंदुर्वहमितिविशेषणम् ॥ दुरंतकमितिसर्पकुंडविशेषणम् ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मशकुंडमशकानांकुंडम् ॥ वृश्चिकानांकुंडमितिशेषः ॥ १४ ॥ शुचास्पदमितिविशेषणम् ॥ १५ ॥ मंथानकुंडमंथानोजीवविशेषःतस्यकुंडं ॥ बीजकुंडंबीजोजीवविशेषः ॥ दुःसहमितिविशेषणम् ॥ १६ ॥ महोल्वणमितिविशेषणम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ गोकामुखंनक्रमुखंनक्राकारंमुखंयस्यतत्पूर्वोक्तंनक्रकुंडंतुनक्रसमूहघटितत्वान्नक्रकुंडं ॥ कृमिकंतुकमुएतस्यवक्ष्यमाणाध्यायद्वयेऽरुंतुदमितिसंज्ञा ॥ १९ ॥ २० ॥ कषंकषनामकंकुंडं ॥ शूर्पशूर्पाकारंकुंडम् ॥ २१ ॥ नियुतैरनेकैरित्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ आसन्नमृत्युभिःपापिभिः ॥ दृष्टैर्दूतैरित्यन्वयः ॥ २५ ॥ पुण्यकृद्भिरदृश्यैरित्यन्वयः ॥ २६ ॥ स्वतंत्रकैर्ज्ञानिभिःस्वप्नदृष्टदेवरूपैःपुरुषैरदृश्यायमदूताइत्यर्थः ॥ इत्थंपापिस्थानमुक्त्वा तच्छ्रुत्वापुण्यवतांभयंस्यादितितद्भयनिरासार्थमाह । येषांनिवासइति ॥ तान्कथयामीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ इतिश्रीदेवी०तिलकेनवमस्कंधेद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ ॥ षड्विंशत्यधिकैःश्लोकैःशतसंख्यैरतःपरम् ॥

मशकुंडंदंशकुंडंभीमंगरलकुंडकम् ॥ कुंडंचवज्रदंष्ट्राणांवृश्चिकानांचसुव्रते ॥ १४॥ शरकुंडंशूलकुंडंखड्गकुंडंचभीषणम् ॥ गोलकुंडंनक्रकुंडंकाककुंडंशुचास्पदम् ॥ १५ ॥ मंथानकुंडंवीजकुंडंवज्रकुंडंचदुःसहम् ॥ तप्तपाषाणकुंडंचतीक्ष्णपाषाणकुंडकम् ॥ १६ ॥ लालाकुंडंमसीकुंडंचूर्णकुंडंतथैवच ॥ चक्रकुंडंवक्रकुंडंकूर्मकुंडंमहोल्वणम् ॥ १७ ॥ ज्वालाकुंडंभस्मकुंडंदग्धकुंडंशुचिस्मिते ॥ तप्तसूचीमसिपत्रंक्षुरधारंसूचीमुखम् ॥ १८ ॥ गोकामुखंनक्रमुखंगजदंशंचगोमुखम् ॥ कुंभीपाकंकालसूत्रंमत्स्योदंकृमिकंतुकम् ॥ १९ ॥ पांसुभोज्यंपाशवेष्टंशूलप्रोतंप्रकंपनम् ॥ उल्कामुखमंधकूपंवेधनंताडनंतथा ॥ २० ॥ जालरंध्रंदेहचूर्णदलनंशोषणंकषम् ॥ शूर्पज्वालमुखंचैवधूमांधंनागवेष्टनम् ॥ २१ ॥ कुंडान्येतानिसावित्रिपापिनांक्लेशदानिच ॥ नियुतैःकिंकरगणैरक्षितानिचसंततम् ॥ २२ ॥ दंडहस्तैःपाशहस्तैर्मदमत्तैर्भयंकरैः ॥ शक्तिहस्तैर्गदाहस्तैरसिहस्तैःसुदारुणैः॥२३॥ तमोयुक्तैर्दयाहीनैर्निर्वायैश्चनसर्वतः ॥ तेजस्विभिश्चनिःशंकैराताम्रपिंगलोचनैः ॥२४॥ योगयुक्तैःसिद्धियुक्तैर्नानारूपधरैर्भटैः ॥ आसन्नमृत्युभिर्दृष्टैःपापिभिःसर्वजीविभिः ॥ ॥२५॥स्वकर्मनिरतैःसर्वैःशाक्तैःसौरैश्चगाणपैः॥अदृश्यैःपुण्यकृद्भिश्चसिद्धैर्योगिभिरेवच॥२६॥ स्वधर्मनिरतैर्वापिवितैर्वास्वतंत्रकैः॥बलवद्भिश्चनिःशंकैःस्वप्नदृष्टैश्चवैष्णवैः ॥ २७ ॥ एतत्तेकथितंसाध्विकुंडसंख्यानिरूपणम् ॥ येषांनिवासोयत्कुंडेनिबोधकथयामिते ॥ २८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेद्वात्रिंशोध्यायः ॥ ३२ ॥ ॥ धर्मराजउवाच ॥ हरिसेवारतःशुद्धोयोगसिद्धोव्रतीसति ॥ तपस्वीब्रह्मचारीचनयातिनरकंध्रुवम् ॥ १ ॥ कटुवाचावांधवांश्चबललेपेनयोनरः ॥ दग्धान्करोतिबलवान्वह्निकुंडंप्रयातिसः ॥ २ ॥ स्वगात्रलोममानाब्दंतत्रस्थित्वाहुताशने ॥ पशुयोनिमवाप्नोतिरौद्रदग्धांत्रिजन्मनि ॥ ३ ॥

कुंडेषुयेपतंत्येवंतेषांलक्षणमुच्यते ॥ १ ॥ पुण्यवंतःकदापिनरकंनगच्छंतीतिनिश्चयार्थंपुनराह । हरिसेवेति ॥ हरिपदंदेवतांतरस्याप्युपलक्षणम् ॥ सतीतिसंबोधनम् ॥ १ ॥ तर्हिकेतेषुकुंडेषुगच्छंतीतितान्पूर्वोक्तकुंडक्रमानुरोधेनप्रत्येककुंडगामिनःपापिनआह । कटुवाचेति ॥ कटुवाचाअप्रियवाचावांधवांश्चचकारेणतदतिरिक्ताअपिजनाः ॥ बललेपेनशरीरसामर्थ्यधनविद्यादिरूपबलगर्वेणदग्धान्संतप्तान् ॥ २ ॥ कियत्कालपर्यंतंतत्रतिष्ठतितत्राह । स्वगात्रेति ॥ वह्निकुंडभोगोत्तरंपुनःक्वगच्छंतितत्राह ॥ पशुयोनिमिति ॥ रौद्रदग्धांवनेत्युष्णेनसूर्यसंतापेनदग्धांछायारहितवनेएवपशुजन्मत्रयंभवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अथद्वितीयतप्तकुंडगामिनआह ॥ ब्राह्मणमिति ॥ ४ ॥ तल्लोममानंब्राह्मणलोममानंवर्षतावंतिवर्षाणीत्यर्थः ॥ अन्यत्सर्वंपूर्ववत् ॥ ५ ॥ क्षारकुंडमाह । रविवारेचेति ॥ क्षारसंयोगंमलनिष्कासनार्थंरजकैःक्षारोदीयते स क्षारः ॥ ६ ॥ ७ ॥ भयानककुंडाधिकारिणआह । मूलप्रकृतीति ॥ मूलप्रकृतिःसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणी शास्त्रनिंदांस्मृतिरूपधर्मशास्त्रनिंदाम् ॥ ८ ॥ शिवादीत्यादिपदेनगणेशसूर्यादयः ॥ वाण्यादीत्यादिपदेनगायत्रीलक्ष्म्यादयः ॥ ९ ॥ भयानककुंडस्यसर्वकुंडापेक्षयाऽतिदुःखप्रदत्वमाह ॥ नातःपरमिति ॥ तस्मान्नैतेषांनिंदाकदापिकर्तव्येतिभावः ॥ १० ॥ तत्रब्रह्मादिदेवानांनिंदायांप्रायश्चित्तंस्यात्सर्वकारणमूलप्रकृतिनिंदारूपापराधस्यतुप्रायश्चित्तमेवनास्तीत्याह ॥ देवीनिंदेति ॥ ११ ॥ विट्कुंडमाह ॥ स्वदत्तामिति ॥ वृत्तियोहरेदितिशेषः ॥ १२ ॥ तावंत्येवषष्टिवर्षसहस्राण्येव ॥ १३ ॥ मूत्रकुंडमाह । परकीयेति ॥ परकीयेतडागेशुष्कजलेतदनुज्ञांविनायस्तडागंकरोति

ब्राह्मणंतृषितंतप्तंक्षुधितंगृहमागतम् ॥ नभोजयतियोमूढस्तप्तकुंडंप्रयातिसः ॥ ४ ॥ तत्रतल्लोममानंचवर्षंस्थित्वाचदुःखदे ॥ तप्तस्थलेवह्नितल्पेपक्षीचसप्तजन्मसु ॥ ५ ॥ रविवारेचसंक्रांत्याममायांश्राद्धवासरे ॥ वस्त्राणांक्षारसंयोगंकरोतिकेवलंनरः ॥ ६ ॥ सयातिक्षारकुंडंचसूत्रमानाब्दमेवच ॥ सव्रजेद्रजकींयोनिंसप्तजन्मसुभारते ॥ ७ ॥ मूलप्रकृतिंनिंदांयःकुरुतेमानवाधमः ॥ वेदनिंदांशास्त्रनिंदांपुराणानांतथैवच ॥ ८ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनांतथानिंदापरोजनः ॥ गौरीवाण्यादिदेवीनांतथानिंदापरोजनः ॥ ९ ॥ तेसर्वेनिरयेयांतितस्मिन्कुंडेभयानके ॥ नातःपरतरंकुंडंदुःखदंतुभविष्यति ॥ १० ॥ तत्रस्थित्वाऽनेककल्पंसर्पयोनिंव्रजेत्पुनः॥देवीनिंदापराधस्यप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥११॥ स्वदत्तांपरदत्तांवावृत्तिंचसुरविप्रयोः ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविट्कुंडंचप्रयातिसः॥१२॥तावंत्येवचवर्षाणिविड्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविट्कृमिश्चपुनर्भुवि ॥१३॥ परकीयतडागेचतडागंयःकरोतिच ॥उत्सृजेद्दैवदोषेणमूत्रकुंडंप्रयातिसः ॥१४॥ तद्रेणुमानवर्षंचतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ पुनःपूर्णशताब्दंचसवृषोभारतेभवेत् ॥१५॥ एकाकीमिष्टमश्नातिश्लेष्मकुंडंप्रयातिच ॥ पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥१६॥ ततःपूर्णशताब्दंचसप्रेतोभारतेभवेत् ॥ श्लेष्ममूत्रपरंचैवपूयंभुंक्तेततःशुचिः ॥ १७॥ पितरंमातरंचैवगुरुंभार्यांसुतंसुताम् ॥ योनपुष्णात्यनाथंचगरकुंडंप्रयातिसः ॥१८॥ पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ततोव्रजेद्भूतयोनिंशतवर्षंततःशुचिः ॥ १९ ॥ दृष्ट्वातिथिंवक्रचक्षुःकरोतियोहिमानवः ॥ पितृदेवास्तस्यजलंनगृह्णंतिचपापिनः ॥२०॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच ॥ इहैवलभतेचांतेदूषिकाकुंडमाव्रजेत् ॥२१॥ पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ततोव्रजेद्भूतयोनिं शतवर्षंततःशुचिः ॥ २२ ॥ दत्वाद्रव्यंचविप्रायचान्यस्मैदीयतेयदि ॥ सतिष्ठतिवसाकुंडेतद्भोजीशतवत्सरम् ॥ २३ ॥

अथचसजलेतडागेदेवदोषेणमूत्रंयद्युत्सृजेत्तर्हिसमूत्रकुंडंप्रयातीत्यर्थः ॥ केचित्तुपरकीयतडागसमर्पियस्तडागंकरोतीत्यर्थइतिवदंति ॥ १४ ॥ तद्रेणुमानंतडागरेणुमानम् ॥ तद्भोजीमूत्रभोजीशताब्दंचेति ॥ शतसंवत्सरपर्यंतंपुनःपुनर्वृषोभवतीत्यर्थः ॥ १५ ॥ श्लेष्मकुंडमाह । एकाकीति ॥ १६ ॥ भुंक्तेप्रेतयोनावित्यर्थः ॥ १७ ॥ गरकुंडमाह । पितरामिति ॥ अनाथंकंचनान्यम् ॥ १८ ॥ १९ ॥ दूषिकाकुंडमाह । दृष्ट्वेति ॥ वक्रचक्षुः क्रोधेनकुटिलचक्षुः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ वसाकुंडमाह । दत्त्वेति ॥ तदेवद्रव्यमन्यस्मैयदिदीयतेइत्यर्थः ॥ द्रव्यमित्युपलक्षणंदानमात्रस्य ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कृकलासःसरटः ॥ २४ ॥ शुक्रकुंडमाह ॥ पुमांसमिति ॥ शुक्रंपाययतिकामानुरागादिनेत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ असृक्कुंडमाह । संताड्येति ॥ २७ ॥ २८ ॥ अश्रुकुंडमाह ॥ योऽश्रुतत्याजोति ॥ योनरोदेवमुद्दिश्यसगद्गदंयथास्यात्तथादेवगुणान्गायंतंभक्तंदृष्ट्वातदसहमानोऽश्रुतत्याजप्रेमाश्रुयस्यनागतामित्यर्थः ॥ यद्वातादृशंभक्तंदृष्ट्वातज्जन्यंगायनजन्यंचहर्षसुखमकृत्वातस्मिन्समयेस्वसंसारजन्यदुःखेनाश्रुतत्याजरोदितितथाश्रीकृष्णगुणसंगीतेकृष्णेत्युपलक्षणंदेवगुणसंगीतेदेवगुणगानेप्रचलितेसतियोनरोविनोदादिनाहसतिसोश्रुकुंडेवसेदित्यर्थः ॥

कृकलासोभवेत्सोऽपिभारतेसप्तजन्मसु ॥ ततोभवेन्महारौद्रोदरिद्रोऽल्पायुरेवच ॥ २४ ॥ पुमांसंकामिनीवापिकामिनींवापुमानथ ॥ यःशुक्रंपाययत्येवशुक्रकुंडंप्रयातिसः ॥ २५ ॥ पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ कृमियोनिंशताब्दंचव्रजेद्भूत्वाततःशुचिः ॥ २६ ॥ संताड्यचगुरुंविप्रंरक्तपातंचकारयेत् ॥ सचतिष्ठत्यसृक्कुंडेतद्भोजीशतवत्सरम् ॥ २७ ॥ ततोलभेद्व्याघ्रजन्मसप्तजन्मसुभारते ॥ ततःशुद्धिमवाप्नोतिमानवश्चक्रमेणह ॥२८॥योऽश्रुतत्याजगायंतंभक्तंदृष्ट्वासगद्गदम् ॥ श्रीकृष्णगुणसंगीतेहसत्येवहियोनरः ॥२९॥ सवसेदश्रुकुंडेचतद्भोजीशतवर्षकम् ॥ ततोभवेच्चचंडालस्त्रिजन्मनिततःशुचिः ॥ ३० ॥ करोतिशठतांतद्वन्नित्यंसुहृदियोनरः ॥ कुंडंगात्रमलानांचसप्रयातिशताब्दकम् ॥ ३१ ॥ ततःसगर्दभींयोनिमवाप्नोतित्रिजन्मनि॥त्रिजन्मनिचसार्गालींततःशुद्धोभवेद्ध्रुवम् ॥ ३२ ॥ बधिरंयोहसत्येवनिंदत्येवाभिमानतः ॥ सवसेत्कर्णविट्कुंडेतद्भोजीशतवत्सरम् ॥ ३३ ॥ ततोभवेत्सबधिरोदरिद्रःसप्तजन्मसु ॥ सप्तजन्मन्यंगहीनस्ततःशुद्धिंलभेद्ध्रुवम्॥३४॥लोभात्स्वभरणार्थायजीविनंहंतियोनरः ॥ मज्जाकुंडेवसेत्सोऽपितद्भोजीलक्षवत्सरम् ॥ ॥ ३५ ॥ ततोभवेच्चशशकोमीनश्चसप्तजन्मसु ॥ त्रिजन्मानिवराहश्चकुक्कुटःसप्तजन्मसु ॥३६॥ एणादयश्चकर्मभ्यस्ततःशुद्धिंलभेद्ध्रुवम् ॥ स्वकन्यापालनंकृत्वाविक्रीणातिचयोनरः ॥ ३७ ॥ अर्थलोभान्महामूढोमांसकुंडंप्रयातिसः ॥ कन्यालोमप्रमाणाब्दंतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ३८ ॥ तस्यदंडप्रहारंचकुर्वंतिममकिंकराः ॥ मांसभारंमूर्ध्निकृत्वारक्तभारांलिहेत्क्षुधा ॥ ३९ ॥ ततोहिभारतेपापीकन्याविट्कृमिगोभवेत् ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिव्याधश्चसप्तजन्मसु ॥ ॥ ४० ॥ त्रिजन्मनिवराहश्चकुक्कुटःसप्तजन्मसु ॥ मंडूकोहिजलौकाश्चसप्तजन्मसुभारते ॥ ४१ ॥ सप्तजन्मसुकाकश्चततःशुद्धिंलभेद्ध्रुवम् ॥ व्रतानामुपवासानांश्राद्धादीनांचसंगमे ॥४२॥ करोतियःक्षौरकर्मसोऽशुचिःसर्वकर्मसु ॥ सचतिष्ठतिकुंडंचनखादीनांचसुंदरि ॥ ४३ ॥ तद्दैवदिनमानाब्दंतद्भोजीदंडताडितः ॥ सकेशंपार्थिवंलिंगंयोवाऽर्चयतिभारते ॥ ४४ ॥ सतिष्ठतिकेशकुंडेमृद्रेणुमानवर्षकम् ॥ तदंतेयावनींयोनिंप्रयातिहरकोपतः ॥ ४५ ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ गात्रमलकुंडमाह । करोतीति ॥ शठतांधूर्तताम् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ कन्याविट्कृमिगस्तत्कीटोदरेजन्मभवतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ अथनखकुंडलोमकुंडकेशकुंडास्थिकुंडचतुष्टयस्यसमुच्चित्यपृथक्चाधिकारिणमाह । व्रतानामिति ॥ संगमेप्राप्तेतद्दिनेइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ देवदिनमानाब्दंदेववर्षपरिमितकालमित्यर्थः ॥ ४४ ॥ मृद्रेणुमानवर्षकंमृद्रेणुप्रमाणवर्षाणीत्यर्थः ॥ ४५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

शताब्दपर्यंततोराक्षसोभवतीत्याह । शताब्दादिति ॥ विष्णुपदेगयास्थिते ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ताम्रकुंडमाह । यः सेवतइति ॥ ४८ ॥ तप्तलोहकुंडमाह । अवीरान्नंचेति अवीरापति पुत्रहीनाविधवा ॥ ऋतुस्नातासुवासिनीचतुर्थदिवसेसुवासिनीतयास्पृष्टमन्नमित्यर्थः ॥ ४९ ॥ तप्तकेलोहकुंडेइत्यन्वयः ॥ ५० ॥ चर्मकुंडमाह । योहीति ॥ चर्माक्तहस्तेनचर्मस्पर्शिहस्तेनाधौतेन ॥ ५१ ॥ तप्तसुराकुंडमाह । यःशूद्रेणेति ॥ अभ्यनुज्ञातोनिमंत्रितः ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ तीक्ष्णकंटककुंडमाह । वाग्दुष्टइति ॥ कटुकःकटुभाषी ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ततो नरकभोगानंतरंसप्तजन्मसूच्चैःश्रवाअश्वोभवतीत्यर्थः ॥ विषकुंडमाह । विषेणेति ॥ ५६ ॥ नृघातीभिल्लोव्रणीव्रणवान् ॥ ५७ ॥ प्रतप्ततैलकुंडमाह । दंडेनेति ॥ ५८ ॥ स्वतंत्रःस्वयमे

शताब्दाच्छुद्धिमाप्नोतिराक्षसःसभवेद्ध्रुवम् ॥ पितॄणांयोविष्णुपदेपिंडंनैवददातिच ॥ ४६ ॥ सचतिष्ठत्यस्थिकुंडेस्वलोमाब्दंमहोल्बणे ॥ ततःसुयोनिंसंप्राप्यकुखंजःसप्तजन्मसु ॥ ४७ ॥ भवेन्महादरिद्रश्चततःशुद्धोहिदेहतः ॥ यःसेवतेमहामूढोगुर्विणींचस्वकामिनीम् ॥ ४८ ॥ प्रतप्तेताम्रकुंडेचशतवर्षसतिष्ठति ॥ अवीरान्नंचयोभुंक्तेऋतुस्नातान्नमेवच ॥ ४९ ॥ लोहकुंडेशताब्दंचसचतिष्ठतितप्तके ॥ सव्रजेद्रजकींयोनिंकाकानांसप्तजन्मसु ॥५०॥ महाव्रणीदरिद्रश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ योहिचर्माक्तहस्तेनदेवद्रव्यमुपस्पृशेत् ॥५१॥ शतवर्षप्रमाणंचचर्मकुंडेसतिष्ठति ॥ यःशूद्रेणाऽभ्यनुज्ञातोभुंक्तेशूद्रान्नमेवच ॥ ॥ ५२ ॥ सचतप्तसुराकुंडेशताब्दंतिष्ठतिद्विजः ॥ ततोभवेच्छूद्रयाजीब्राह्मणःसप्तजन्मसु ॥५३॥ शूद्रश्राद्धान्नभोजीचततःशुद्धोभवेद्ध्रुवम्॥वाग्दुष्टः कटुकोवाचाताडयेत्स्वामिनंसदा ॥५४॥ तीक्ष्णकंटककुंडेसतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ताडितोयमदूतेनदण्डेनचचतुर्गुणम् ॥५५॥ ततउच्चैःश्रवाःसप्तजन्मस्वेव ततःशुचिः ॥ विषेणजीवनंहंतिनिर्दयोयोहिमानवः ॥ ५६ ॥ विषकुंडेचतद्भोजीसहस्राब्दंचतिष्ठति ॥ ततोभवेन्नृघातीचव्रणीचशतजन्मसु ॥ ५७ ॥ सप्तजन्मसुकुष्ठीचततःशुद्धोभवेद्ध्रुवम् ॥ दंडेनताडयेद्गांहिवृषंचवृषवाहकः ॥५८॥ भृत्यद्वारास्वतंत्रोवापुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ प्रतप्तेतैलकुंडेऽग्नौतिष्ठतिस्मचतुर्युगम् ॥ ५९ ॥ गवांलोमप्रमाणाब्दंवृषोभवतितत्परम् ॥ कुंतेनहंतियोजीवंवह्निलोहेनहेलया ॥ ६० ॥ कुंतकुंडेवसेत्सोऽपिवर्षाणामयुतंसति ॥ ततःसुयोनिंसंप्राप्यचोदरेव्याधिसंयुतः ॥ ६१ ॥ जन्मनैकेनक्लेशेनततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ योभुंक्तेचवृथामांसंमांसलोभीद्विजाधमः ॥ ६२ ॥ हरेरनैवेद्यभोजीकृमिकुंडंप्रयातिसः ॥ स्वलोममानवर्षंचतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ६३ ॥ ततोभवेन्म्लेच्छजातिस्त्रिजन्मानिततोद्विजः ॥ ब्राह्मणःशूद्रयाजीचशूद्रश्राद्धान्नभोजकः ॥ ६४ ॥ शूद्राणांशवदाहीचपूयकुंडेवसेद्ध्रुवम् ॥ यावल्लोमप्रमाणाब्दंयमदंडेनसुव्रते ॥ ६५ ॥ ताडितोयमदूतेनतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ततोभारतमागत्यसशूद्रःसप्तजन्मसु ॥ ६६ ॥ महारोगीदरिद्रश्चबधिरोमूकएवच ॥ कृष्णंपद्मंचकेयस्यतंसर्पंहंतियोनरः ॥ ६७ ॥

वपुण्यक्षेत्रेचकारादन्यत्रापि ॥५९॥ कुंतकुंडमाह । कुंतेनेति ॥ वह्निलोहेनवह्निनातप्तेनलोहरूपेणकुंतशस्त्रेणेत्यर्थः ॥ हेलयाऽपीत्यर्थः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ कृमिकुंडमाह । योभुंक्तेचेति ॥ वृथामांसंयज्ञातिरिक्तम् ॥ ६२ ॥ तथाहरेरित्युपलक्षणं देवतांतरस्याऽपि ॥ तद्भोजीमांसभोजी ॥ ६३ ॥ पूयकुंडमाह । ब्राह्मणइति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ सर्पकुंडमाह । कृष्णमिति ॥ कृष्णंसर्पतथायस्य के मस्तकेपद्मकंपद्माकारंचिह्नमस्तितंचसर्पमित्यर्थः ॥ इदमुपलक्षणंसर्पजातिमात्रस्य ॥ ६७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६८ ॥ ६९ ॥ सर्पेणभक्षितात्सर्पेणकृतेनभक्षणेनैवतस्यमृत्युर्भवतीत्यर्थः ॥ दंशमशयोःकुंडद्वयंसमुच्चित्याह । विधिप्रदत्तेति ॥ विधिनादैवेनप्रदत्ताउपजीव्यावृत्तिर्येषामेतादृशायेऽनाथाः क्षुद्रजंतवः ॥ ७० ॥ शब्दवान्हाहेतिशब्दंकुर्वाणः ॥ ७१ ॥ क्षुद्रजंतुजन्मोत्तरंयावनीयवनजातिर्भवेदित्यर्थः ॥ ७२ ॥ गरलकुंडमाह । योमूढइति ॥ मधुमाक्षिकम् ॥ ७३ ॥ गारलेगरलाम धुमीक्षकास्तत्पूणकुंडे ॥ ७४ ॥ वज्रदंष्ट्रकुंडमाह । दंडंकरोतीति ॥ अदंड्येऽपराधरहितेविप्रेचसापराधेअयोग्यंदंडंयःकरोतीत्यर्थः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ शब्दकृतहाहादिशब्दकृत् ॥

स्वलोममानर्वषचसर्पकुंडंप्रयातिसः ॥ सर्पेणभक्षितःसोऽथममदूतेनताडितः ॥ ६८ ॥ वसेच्चसर्पविड्भोजीततःसर्पोभवेद्ध्रुवम् ॥ ततोभवेन्मानवश्चस्वल्पायुर्दद्रुसंयुतः ॥ ६९ ॥ महाक्लेशेनतन्मृत्युःसर्पेणभक्षिताद्ध्रुवम् ॥ विधिप्रदत्तजीव्यांश्चक्षुद्रजंतूंश्चहंतियः ॥ ७० ॥ सदंशमशयोःकुंडेजंतुमानाब्दमेवच ॥ दिवानिशंभक्षितस्तैरनाहारश्चशब्दवान् ॥ ७१ ॥ हस्तपादादिबद्धश्चयमदूतेनताडितः ॥ ततोभवेत्क्षुद्रजंतुर्जातिश्चयावनीभवेत् ॥ ७२ ॥ ततोभवेन्मानवश्चसोंऽगहीनस्ततःशुचिः ॥ योमूढोमधुमश्नातिहत्वाचमधुमक्षिकाः ॥ ७३ ॥ सएवगारलेकुंडेजीवमानाब्दकंवसेत् ॥ भक्षितोगरलैर्दग्धोममदूते नताडितः ॥७४॥ ततोहिमक्षिकाजातिस्ततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ दंडंकरोत्यदंड्येचविप्रेदंडंकरोतिच ॥७५॥ सकुंडंवज्रदंष्ट्राणांकीटानांयातिसत्वरम् ॥स तल्लोमप्रमाणाब्दंतत्रतिष्ठत्यहर्निशम् ॥ ७६ ॥ शब्दकृद्भक्षितस्तैस्तुममदूतेनताडितः ॥ करोतिरोदनंभद्रेहाहाकारंक्षणेक्षणे ॥ ७७ ॥ पुनःसूकरयोनौच जायतेसप्तजन्मसु॥त्रिजन्मनिकाकयोनौततःशुद्धोभवेन्नरः॥७८॥अर्थलोभेनयोमूढःप्रजादंडंकरोतिसः ॥वृश्चिकानांचकुंडंचतल्लोमाब्दंवसेद्ध्रुवम् ॥७९॥ ततोवृश्चिकजातिश्चसप्तजन्मसुभारते ॥ ततोनरश्चांगहीनोव्याधिशुद्धोभवेद्ध्रुवम् ॥ ८० ॥ ब्राह्मणःशस्त्रधारीयोह्यन्येषांधावकोभवेत् ॥ संध्याहीनश्चयोविप्रोहरिभक्तिविहीनकः ॥ ८१ ॥ सतिष्ठतिस्वलोमाब्दंकुंडेषुचशरादिषु ॥ विद्धःशरादिभिःशश्वततःशुद्धोभवेन्नरः ॥८२॥कारागारेसांधकारेप्रणिहंतिप्रजाश्चयः ॥ प्रमत्तःस्वस्यदोषेणगोलकुंडंप्रयातिसः ॥८३॥ सपंकतततोयातंसांधकारंभयंकरम् ॥ तीक्ष्णदंष्ट्रैश्चकीटैश्चसंयुक्तंगोलकुंडकम् ॥ ८४ ॥ कीटैर्विद्धोवसेत्तत्रप्रजालोमाब्दमेवच ॥ ततोभवेत्प्रजाभृत्यस्ततःशुद्धोभवेत्क्रमात् ॥८५॥ सरोवरादुत्थितांश्चनक्रादीन्हंतियोनरः ॥ नक्रकंटकमानाब्दंनक्रकुंडंप्रयातिसः ॥ ८६ ॥ ततोनक्रादिजातीयोभवेन्नक्रादिषुध्रुवम् ॥ ततःसद्योविशुद्धोहिदंडेनैवपुनःपुनः॥८७॥वक्षःश्रोणीस्तनास्यंचयःपश्यतिपरस्त्रियाः ॥ कामेनकामुकोयोहिपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ ८८ ॥

॥ ७७ ॥ ७८ ॥ वृश्चिककुंडमाह । अर्थलोभेनेति ॥ तल्लोमाब्दंप्रजालोमाब्दम् ॥ ७९ ॥८० ॥ अथशरकुंडशूलकुंडखड्गकुंडानिसमुच्चित्याऽऽह । ब्राह्मणइति ॥ धावकोवस्त्रक्षालकः ॥ हरिपदमन्यदेवस्याऽप्युपलक्षणम् ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ गोलकुंडमाह । कारागारेइति ॥ ८३॥८४॥ ८५ ॥ नक्रकुंडमाह । सरोवरादिति । आदिनामत्स्यादीन् ॥८६॥८७॥ काककुंडमाह । वक्षःश्रोणीति ॥ पुण्यक्षेत्रेचकारादन्यत्रच ॥ ८८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दग्धोऽग्यादिना ॥ ८९ ॥ मंथानकुंडमाह । स्वर्णस्तेयीति ॥ ९० ॥ मंथानैर्मंथानदंडैः ॥ तद्विट् मंथानकीटविशेषस्तस्यविट्तस्यमलइत्यर्थः ॥ ९१ ॥ स्वर्णकारोत्तरंस्वर्णवणिक्स्वर्णविक्रेताभवतीत्यर्थः ॥९२॥ बीजकुंडमाह। योभारतेइति॥बीजकुंडेअत्रबीजशब्देनाऽष्टमोधातुरोजोगृह्यतेनतुशुक्रम् तत्कुंडस्यपूर्वमुक्तत्वात्॥यद्वा बीजोजीवविशेषः॥९३॥बीजरूपविड्भोजीजीवपक्षेतेषांविड्भोजी ॥ ९४ ॥ वज्रकुंडमाह। भारतेदेवचोरश्चेति ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ तप्तपाषाणकुंडमाह । रौप्यगव्येति ॥ ९७ ॥ कंसः कूर्मः श्वेतरूपःकुष्ठीश्वेतचिह्नःकुष्ठचिह्नः ॥ श्वेतप

सवसेत्काकतुंडेचकाकैःसंचूर्णलोचनः ॥ ततःस्वलोममानाब्दंभवेद्दग्धस्त्रिजन्मनि॥८९॥स्वर्णस्तेयीचयोमूढोभारतेसुरविप्रयोः ॥सचमंथानकुंडेवैस्वलोमाब्दंवसेद्ध्रुवम्॥९०॥ताडितोयमदूतेनमंथानैश्छन्नलोचनः॥तद्विड्भोजीचतत्रैवततश्चांधस्त्रिजन्मनि॥९१॥सप्तजन्मदरिद्रश्चमहाक्रूरश्चपातकी॥भारतेस्वर्णकारश्चसचस्वर्णवणिक्कृतः ॥ ९२ ॥ योभारतेताम्रचौरोलोहचौरश्चसुंदरि ॥ सचस्वलोममानाब्दंबीजकुंडंप्रयातिसः ॥ ९३॥ तत्रैवबीजविड्भोजीबीजैश्छन्नलोचनः ॥ ताडितोयमदूतेनततःशुद्धोभवेन्नरः ॥९४॥ भारतेदेवचोरश्चदेवद्रव्यापहारकः ॥ सदुस्तरेवज्रकुंडेस्वलोमाब्दंवसेद्ध्रुवम् ॥ ९५ ॥ देहदग्धोऽपितद्वज्रैरनाहारश्चशब्दकृत् ॥ ताडितोयमदूतैश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ ९६ ॥ रौप्यगव्यांशुकानांचयश्चौरःसुरविप्रयोः ॥ तप्तपाषाणकुंडेचस्वलोमाब्दंवसेद्ध्रुवम् ॥ ९७ ॥ त्रिजन्मनिचकंसोऽपिश्वेतरूपस्त्रिजन्मनि ॥ जन्मैकंश्वेतचिह्नश्चततोऽन्येश्वेतपक्षिणः ॥ ९८ ॥ ततोरक्तविकारीचशूलीवैमानवोभवेत् ॥ सप्तजन्मसुचाऽल्पायुस्ततःशुद्धोभवेन्नरः ॥९९॥ रैतंकांस्यमयंपात्रंयोहरेद्देवविप्रयोः ॥ तीक्ष्णपाषाणकुंडेचस्वलोमाब्दंवसेन्नरः॥१००॥सभवेदश्वजातिश्चभारतेसप्तजन्मसु ॥ ततोऽधिकांगजातिश्चपादरोगीततःशुचिः ॥ १ ॥ पुंश्चल्यन्नंचयोभुंक्तेपुंश्चलीजीव्यजीविनः ॥ स्वलोममानवर्षंचलालाकुंडेवसेद्ध्रुवम् ॥ २ ॥ ताडितोयमदूतेनतद्भोजीतत्रदुःखितः ॥ ततश्चक्षुःशूलरोगीततःशुद्धःक्रमेणसः ॥ ३ ॥ म्लेच्छसेवीमसीजीवीयोविप्रोभारतेभुवि ॥ वसेत्स्वलोममानाब्दंमसीकुंडेसदुःखभाक् ॥४॥ ताडितोयमदूतेनतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ततस्त्रिजन्मनिभवेत्कृष्णवर्णःपशुःसति ॥१०५॥ त्रिजन्मनिभवेच्छागःकृष्णवर्णस्त्रिजन्मनि ॥ ततःसतालवृक्षश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ ६ ॥ धान्यादिशस्यंतांबूलंयोहरेत्सुरविप्रयोः ॥ आसनंचतथातल्पंचूर्णकुंडेप्रयातिसः ॥ ७ ॥ शताब्दंतत्रनिवसेद्यमदूतेनताडितः ॥ ततोभवेन्मेषजातिःकुक्कुटश्चत्रिजन्मनि ॥ ८ ॥ ततोभवेद्वानरश्चकासव्याधियुतोभुवि ॥ वंशहीनोदरिद्रश्चअल्पायुश्चततःशुचिः ॥ १०९ ॥

क्षिणोयावंतस्तेषांयोनिंप्रथमंप्राप्नोति ॥ ततोमनुष्यजन्मनिकुष्ठीभवतीतिबोध्यम् ॥९८॥९९॥ तीक्ष्णपाषाणकुंडमाह । रैतमिति । रैतंपित्तलनिर्मितम् ॥१००॥ अधिकांगजातिःअंडवृद्ध्यादिरोगवान् ॥ १०१ ॥ लालाकुंडमाह ॥ पुंश्चल्यन्नंचेति ॥ २ ॥ ३ ॥ मसीकुंडमाह । म्लेच्छसेवीति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ चूर्णकुंडमाह । धान्यादीति ॥ शस्यंप्रशस्तंकिंचिद्वस्तु ॥ ७ ॥ ८ ॥ १०९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





चक्रकुंडमाह । करोतीति ॥ विप्राणांद्रव्यंहृत्वायश्चक्रंचक्रपूजांकरोति ॥ मंत्रशास्त्रेप्रसिद्धाचक्रपूजा ॥ यद्वाचक्रंकुलालादिचक्रंयःकरोतीत्यर्थः ॥ ११० ॥ ११ ॥ वक्रकुंडमाह । गोधने ष्विति ॥ वक्रतांकुटिलदृष्टिम् ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ कूर्मकुंडमाह । निषिद्धमिति ॥ १५ ॥ १६ ॥ ज्वालाकुंडंभस्मकुंडंचसमुच्चित्याऽऽह । घृतमिति ॥ १७॥१८ ॥ दग्धकुंडमाह । सुगंधीति ॥ धात्रीमामलकचूर्णम् ॥ १९ ॥ १२० ॥ २१ ॥ तप्तसूचीकुंडमाह । बलेनैवेति ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेत्रयस्त्रिंशो

करोतिचक्रंविप्राणांहृत्वाद्रव्यंचयोजनः ॥ सवसेच्चक्रकुंडेचशताब्दंदंडताडितः ॥ ११० ॥ ततोभवेन्मानवश्चैतैलकारस्त्रिजन्मनि ॥ व्याधियुक्तोभवेद्रोगी वंशहीनस्ततःशुचिः ॥ ११ ॥ गोधनेषुचविप्रेषुकरोतिवक्रतांपुमान् ॥ प्रयातिवक्रकुंडंसतिष्ठेद्युगशतंसति ॥ १२ ॥ ततोभवेत्सवक्रांगोहीनांगःसप्तजन्म नि ॥ दरिद्रोवंशहीनश्चभार्याहीनस्ततःशुचिः ॥ १३ ॥ ततोभवेद्गृध्रजन्मात्रिजन्मनिचसूकरः ॥ त्रिजन्मनिविडालश्चमयूरश्चत्रिजन्मनि ॥ १४ ॥ नि षिद्धंकूर्ममांसंचब्राह्मणोयोहिभक्षति ॥ कूर्मकुंडेवसेत्सोऽपिशताब्दंकूर्मभक्षितः ॥ १५ ॥ ततोभवेत्कूर्मजन्मात्रिजन्मनिचसूकरः ॥ त्रिजन्मनिविडालश्च मयूरश्चततःशुचिः॥१६॥घृतंतैलादिकंचैवयोहरेत्सुरविप्रयोः॥सयातिज्वालाकुंडंचभस्मकुंडंचपातकी॥१७॥तत्रस्थित्वाशताब्दंचसभवेत्तैलपाचितः॥ सप्तजन्मनिमत्स्यश्चमूषकश्चततःशुचिः ॥ १८ ॥ सुगंधितैलंधात्रींवागंधद्रव्यान्यदेववा ॥ भारतेपुण्यवर्षेचयोहरेत्सुरविप्रयोः ॥ १९ ॥ सवसेद्दग्धकुं डेचभवेद्दग्धोदिवानिशम् ॥ स्वलोममानवर्षंचततोदुर्गंधिकोभवेत् ॥ १२० ॥ दुर्गंधिकःसप्तजन्ममृगनाभिस्त्रिजन्मनि ॥ सप्तजन्मसुमंथानस्ततोहि मानवोभवेत् ॥ २१ ॥ बलेनैवच्छलेनैवहिंसारूपेणवासति ॥ बलिष्ठश्चहरेद्भूमिंभारतेपरपैतृकीम् ॥ २२ ॥ सवसेत्तप्तसूचिंचभवेत्तापीदिवानिश म् ॥ तप्ततैलेयथाजीवोदग्धोभवतिसंततम् ॥ २३ ॥ भस्मसान्नभवत्येवभोगेदेहीननश्यति ॥ सप्तमन्वंतरंपापीसंतप्तस्तत्रतिष्ठति ॥ २४ ॥ शब्दंक रोत्यनाहारोयमदूतेनताडितः ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविट्कृमिश्चभवेत्ततः ॥ २५ ॥ ततोभवेद्भूमिहीनोदरिद्रश्चततःशुचिः ॥ ततःस्वयोनिंसंप्राप्यशुभक र्माचरेत्पुनः ॥ १२६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेत्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥ छ ॥ यमधर्मउवाच ॥ छिनत्तिजीवं खड्गेनदयाहीनःसुदारुणः ॥ नरघातीहंतिनरमर्थलोभेनभारते ॥ १ ॥ असिपत्रेवसेत्सोऽपियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ तेषुयोब्राह्मणान्हंतिशतमन्वंतरंवसे त् ॥ २ ॥ छिन्नांगःसंवसेत्सोऽपिखड्गधारेणसंततम् ॥ अनाहारःशब्दमुच्चैर्यमदूतेनताडितः ॥ ३ ॥ मंथानःशतजन्मानिशतजन्मानिसूकरः ॥ कुक्कु टःसप्तजन्मानिसृगालःसप्तजन्मसु ॥ ४ ॥ व्याघ्रश्चसप्तजन्मानिवृकश्चैवत्रिजन्मसु ॥ सप्तजन्मसुमंडूकोयमदूतेनताडितः ॥ ५ ॥

ऽध्यायः ॥३३॥ ॥ अर्धाधिकैकनवतिश्लोकैरथसविस्तरम् ॥ कुंडानामवशिष्टानांकथ्यंतेह्यधिकारिणः ॥ १ ॥ क्रमप्राप्तमसिपत्रकुंडमाह । छिनत्तीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मंथानोजीव विशेषः ॥ ४ ॥ ५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

क्षुरधारंकुंडमाह ॥ ग्रामाणामिति ॥ ६ ॥ वह्निवक्त्रोनित्यंप्रज्वलद्वक्त्रइत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ सूचीमुखकुंडमाह । परकर्णेइति ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ गोकामुखंकुंडमाह । गृहिणांहीति ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ नक्रमुखकुंडमाह । सामान्येति ॥ नक्रमुखंनक्राकारंमुखंयस्य ॥ पूर्वोक्तनक्रकुंडंतुनक्रजंतुघटितत्वान्नक्रकुंडम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ गजदंशकुंडमाह ।

सभवेद्भारतेवर्षेमहिषश्चततःशुचिः ॥ ग्रामाणांनगराणांवादहनंयःकरोतिच ॥६॥ क्षुरधारेवसेत्सोऽपिच्छिन्नांगस्त्रियुगंसति ॥ ततःप्रेतोभवेत्सद्योवह्निवक्त्रो भ्रमन्महीम् ॥ ७ ॥ सप्तजन्मामेध्यभोजीकपोतःसप्तजन्मसु ॥ ततोभवेन्महाशूलीमानवःसप्तजन्मनि ॥ ८ ॥ सप्तजन्मगलत्कुष्ठीततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ प रकर्णेमुखंदत्त्वापरनिंदांकरोतियः ॥ ९ ॥ परदोषमहाश्लाघीदेवब्राह्मणनिंदकः ॥ सूचीमुखेवसेत्सोऽपिसूचीविद्धोयुगत्रयम् ॥ १० ॥ ततोभवेद्वृश्चिकश्च सर्पश्चसप्तजन्मसु ॥ वज्रकीटःसप्तजन्मभस्मकीटस्ततःपरम् ॥ ११ ॥ ततोभवेन्मानवश्चमहाव्याधिस्ततःशुचिः ॥ गृहिणांहिगृहंभित्त्वावस्तुस्तेयंक रोतियः ॥ १२ ॥ गाश्चच्छागांश्चमेषांश्चयातिगोकामुखेचसः ॥ ताडितोयमदूतेनवसेत्तत्रयुगत्रयम् ॥ १३ ॥ ततोभवेत्सप्तजन्मगोजातिर्व्याधिसंयुतः ॥ त्रिजन्मनिमेषजातिश्छागजातिस्त्रिजन्मनि ॥ १४ ॥ ततोभवेन्मानवश्चनित्यरोगीदरिद्रकः ॥ भार्याहीनोबंधुहीनःसंतापीचततःशुचिः ॥ १५ ॥ सा मान्यद्रव्यचौरश्चयातिनक्रमुखंचसः ॥ ताडितोयमदूतेनवसेत्तत्राऽब्दकत्रयम् ॥ १६ ॥ ततोभवेत्सप्तजन्मगोपतिर्व्याधिसंयुतः ॥ ततोभवेन्मानवश्चमहा रोगीततःशुचिः ॥ १७ ॥ हंतिगाश्चगजांश्चैवतुरगांश्चनगांस्तथा ॥ सयातिगजदंशंचमहापापीयुगत्रयम् ॥ १८ ॥ ताडितोयमदूतेननागदंतेनसंततम् ॥ सभवेद्गजजातिश्चतुरगश्चत्रिजन्मनि ॥ १९ ॥ गोजातिर्म्लेच्छजातिश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ जलंपिबंतींतृषितांगांवारयतियःपुमान् ॥ २० ॥ नरकंगो मुखाकारंकृमितप्तोदकान्वितम् ॥ तत्रतिष्ठतिसंतप्तोयावन्मन्वंतरावधि ॥ २१ ॥ ततोनरोऽपिगोहीनोमहारोगीदरिद्रकः ॥ सप्तजन्मांत्यजातिश्चततःशुद्धो भवेन्नरः ॥ २२ ॥ गोहत्यांब्रह्महत्यांचकरोतिह्यातिदेशिकीम् ॥ योहिगच्छत्यगम्यांचयःस्त्रीहत्यांकरोतिच ॥ २३ ॥ भिक्षुहत्यांमहापापीभ्रूणहत्यांच भारते ॥ कुंभीपाकेवसेत्सोऽपियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ २४ ॥ ताडितोयमदूतेनचूर्ण्यमानश्चसंततम् ॥ क्षणंपततिवह्नौचक्षणंपततिकंटके ॥ २५ ॥ क्षणंपते त्तप्ततैलतप्तोयेनक्षणंक्षणम् ॥ क्षणंचतप्तलोहेचक्षणंचतप्तताम्रके ॥२६॥ गृध्रोजन्मसहस्राणिशतजन्मानिसूकरः ॥ काकश्चसप्तजन्मानिसर्पश्चसप्तजन्मसु ॥ २७ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविष्ठायांजायतेकृमिः ॥ नानाजन्मसुसवृषस्ततःकुष्ठीदरिद्रकः ॥ २८ ॥

हंतीति ॥ नगान्वृक्षान् ॥ १८ ॥ १९ ॥ गोमुखकुंडमाह । जलंपिबंतीमिति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ कुंभीपाककुंडमाह । गोहत्यामिति ॥ आतिदेशिकींशास्त्रवचनोक्ताम् ॥ अग म्यांस्त्रियंवक्ष्यमाणांयोनरोगच्छति ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अधुनागोहत्यांब्रह्महत्यांचयःकरोत्यातिदेशिकीमितिधर्मवाक्यंश्रुत्वाऽतिदेशिकीगोहत्याब्रह्महत्याचकीदृशीभवतिकिंवातस्यालक्षणमितिसावित्रीपृच्छति ॥ सावित्र्युवाच विप्रहत्येति ॥ किंचाऽगम्यायागम्यायाश्चलक्षणंवद तथासंध्याविहीनस्याऽदीक्षितस्यतीर्थप्रतिग्राहिणश्चलक्षणंतथाग्रामयाजिदेवलयोश्चलक्षणंवदेत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ तदर्चायांकृष्णप्रतिमायांतथाअन्येषांदेवानांचप्रकृतौप्रतिमायांसूर्यमणौसूर्यकांते॥३२॥ तथागणेशेतत्प्रतिमायांतथादुर्गायांतत्प्रतिमायांचएतेषुदेवेषुपरस्परंभेदबुद्धिंयःकरोतितथैतेषांप्रतिमादिषुभेदबुद्धिंयःकरोतिसइत्यर्थः ॥ इयंवचनबोधितत्वादातिदेशिकीब्रह्महत्यासाक्षाद्ब्रह्महत्यासमफलैवेत्यर्थः ॥ एवमुत्तरत्राऽपिसर्वत्रबोद्धव्यम् ॥ ३३ ॥ स्वगुराविति॥ इष्टदेवगुरुपितृजननीषुपरस्परंयोभेदबु

॥ सावित्र्युवाच ॥ विप्रहत्याचगोहत्याकिंविधाचाऽऽतिदेशिकी ॥ कावानृणामगम्याचकोवासंध्याविहीनकः ॥२९॥ अदीक्षितःपुमान्कोवाकोवातीर्थप्रतिग्रही ॥ द्विजःकोवाग्रामयाजीकोवाविप्रोऽथदेवलः ॥ ३० ॥ शूद्राणांसूपकारश्चप्रमत्तोवृषलीपतिः ॥ एतेषांलक्षणंसर्वंवदवेदविदांवर ॥ ३१ ॥ धर्मराजउवाच ॥ श्रीकृष्णेचतदर्चायामन्येषांप्रकृतौसति ॥ शिवेचशिवलिंगेचसूर्येसूर्यमणौतथा॥३२॥गणेशेवाथदुर्गायामेवंसर्वत्रसुंदरि ॥ यःकरोतिभेदबुद्धिंब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥ ३३ ॥ स्वगुरौस्वेष्टदेवेचजन्मदातरिमातरि ॥ करोतिभेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥ ३४ ॥ वैष्णवेषुचभक्तेषुब्राह्मणेष्वितरेषुच ॥ करोतिभेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥ ३५ ॥ विप्रपादोदकेचैवशालग्रामोदकेतथा ॥ करोतिभेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥ ३६ ॥ शिवनैवेद्यकेचैवहरिनैवेद्यकेतथा ॥ करोतिभेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥ ३७॥ सर्वेश्वरेश्वरेकृष्णेसर्वकारणकारणे ॥ सर्वाद्येसर्वदेवानांसेव्येसर्वांतरात्मनि ॥ ॥ ३८ ॥ माययाऽनेकरूपेवाप्येकएवहिनिर्गुणे ॥ करोतीशेनभेदंयोब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥ ३९ ॥ शक्तिभक्तेद्वेषबुद्धिंशक्तिशास्त्रेतथैवच ॥ द्वेषंयःकुरुतेमर्त्योब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥ ४० ॥ पितृदेवार्चनंयोवात्यजेद्वेदनिरूपितम् ॥ यःकरोतिनिषिद्धंचब्रह्महत्यांलभेत्तुसः ॥४१॥ योनिंदतिहृषीकेशंतन्मंत्रोपासकंतथा ॥ पवित्राणांपवित्रंचज्ञानानंदंसनातनम्॥४२॥ प्रधानंवैष्णवानांचदेवानांसेव्यमीश्वरम् ॥ येनार्चयंतिनिन्दंतिब्रह्महत्यांलभंतिते॥४३॥येनिंदंतिमहादेवींकारणब्रह्मरूपिणीम्॥सर्वशक्तिस्वरूपांचप्रकृतिंसर्वमातरम् ॥४४॥ सर्वदेवस्वरूपांचसर्वेषांवंदितांसदा॥ सर्वकारणरूपांचब्रह्महत्यांलभंतिते॥४५॥

द्धिंकरोतीत्यर्थः ॥ तदुक्तम् ॥ गुरौमनुष्यबुद्धिंचमन्त्रेचाक्षरबुद्धिताम् ॥ प्रतिमासुशिलाबुद्धिंकुर्वाणोनरकंव्रजेदिति ॥३४॥ वैष्णवेष्विति ॥ इदंदेवतांतरभक्तानामप्युलक्षणम् ॥३५॥३६॥ शिवनैवेद्यकेइति ॥ यथाशिवनैवेद्यमहिमातथैवविष्णुनैवेद्यमहिमानाऽत्रतरतमभावःकर्तव्योयदिकरोतितर्हिब्रह्महत्यांलभेदेवेत्यर्थः॥ शिवमंत्रदीक्षितानांशिवनैवेद्यभक्षणस्याऽवश्यंविहितत्वात् ॥ शिवनैवेद्यभक्षणनिषेधवाक्यानित्वदीक्षितविषयाणीतिह्यप्पय्यदीक्षितग्रंथेषुस्पष्टम् ॥ ३७ ॥ कृष्णेगोपालसुंदरीरूपे ॥ ३८ ॥ निर्गुणेब्रह्मणिकृष्णेनयोभेददृष्टिंबुद्धिंकरोतीत्यर्थः ॥ अथवाईशेनमहादेवेनकृष्णस्यचभेदबुद्धिंयः करोतीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ कारणब्रह्मरूपिणींमूलप्रकृतिश्रीभुवनेश्वरीमित्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ६६ ॥ उपसंहरति ॥ गोहत्येति ॥ अधुनागम्यामगम्यांचस्त्रियंवदति ॥ गम्यामिति ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ अतिशयेनागम्याआह । अत्यगम्याहीति ॥ ६९ ॥७०॥ कुंभीपाकेउभाव पिशूद्रब्राह्मणपत्न्यौगच्छतइत्यर्थः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ सुरापीतिरिति ॥ सुरापस्तथाविड्भोजीतथावृषलीपतिस्तथातप्तमुद्राभिर्दग्धोदेहोयस्यसतप्तमुद्राधारीवैष्णवस्तथा तप्तशूलधारीशैवोहरिवासरभोजीएकादशीव्रतेष्वन्नभुक्एतेकुंभीपाकेव्रजंतीत्यर्थः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ सगर्भांकांचनास्त्रियम् ॥ यद्वासगर्भांसोदरांभगिनीमित्यन्वयः ॥ ७७ ॥ तत्स्वसारंमा

नददात्याशिषंकोपात्प्रणतायचयोद्विजः ॥ विद्यार्थिनेचविद्यांचसगोहत्यांलभेद्ध्रुवम् ॥ ६६ ॥ गोहत्याविप्रहत्याचकथिताचाऽऽतिदेशिकी ॥ गम्यांस्त्रियंनृणामेवनिबोधकथयामिते ॥ ६७ ॥ स्वस्त्रीगम्याचसर्वेषामितिवेदानुशासनम् ॥ अगम्याचतदन्यायाचेतिवेदविदोविदुः ॥ ६८ ॥ सामान्यंकथितं सर्वविशेषंशृणुसुंदरि ॥ अत्यगम्याहियायाश्चनिबोधकथयामिताः ॥ ६९ ॥ शूद्राणांविप्रपत्नीचविप्राणांशूद्रकामिनी ॥ अत्यगम्याचनिंद्याचलोकेवेदे पतिव्रते ॥ ७० ॥ शूद्रश्चब्राह्मणींगत्वाब्रह्महत्याशतंलभेत् ॥ तत्समंब्राह्मणीचापिकुंभीपाकंलभेद्ध्रुवम् ॥ ७१ ॥ शूद्राणांविप्रपत्नीचविप्राणांशूद्राकामि नी ॥ यदिशूद्रांव्रजेद्विप्रोवृषलीपतिरेवसः ॥ ७२ ॥ सभ्रष्टोविप्रजातेश्चचांडालात्सोऽधमःस्मृतः ॥ विष्ठासमश्चतत्पिंडोमूत्रंतस्यचतर्पणम् ॥ ७३ ॥ न पितॄणांसुराणांचतद्दत्तमुपतिष्ठति ॥ कोटिजन्मार्जितंपुण्यंतस्यार्चातपसाऽर्जितम् ॥ ७४ ॥ द्विजस्यवृषलीलोभान्नश्यत्येवनसंशयः ॥ ब्राह्मणश्चसुरापी तिर्विड्भोजीवृषलीपतिः ॥ ७५ ॥ तप्तमुद्रादग्धदेहस्तप्तशूलांकितस्तथा ॥ हरिवासरभोजीचकुंभीपाकंव्रजेद्द्विजः ॥ ७६ ॥ गुरुपत्नींराजपत्नींसपत्नीमा तरंध्रुवम् ॥ सुतांपुत्रवधूंश्वश्रूंसगर्भांभगिनींसतीम् ॥ ७७ ॥ सोदरभ्रातृजायांचमातुलानींपितुःप्रसूम् ॥ मातुःप्रसूंतत्स्वसारंभगिनीभ्रातृकन्यकाम् ॥ ॥ ७८ ॥ शिष्यांशिष्यस्यपत्नींचभागिनेयस्यकामिनीम् ॥ भ्रातुःपुत्रप्रियांचैवाऽत्यगम्याआहपद्मजः ॥ ७९ ॥ एताःकामेनकांतायोव्रजेद्वैमान वाधमः ॥ समातृगामीवेदेषुब्रह्महत्याशतंव्रजेत् ॥ ८० ॥ अकर्मार्होऽप्यसंस्पृश्योलोकेवेदेचनिंदितः ॥ सयातिकुंभीपाकेचमहापापीसुदुष्करे ॥ ८१ ॥ ॥ करोत्यशुद्धांसंध्यांवानसंध्यांवाकरोतिच ॥ त्रिसंध्यंवर्जयेद्योवासंध्याहीनश्चसद्विजः ॥ ८२ ॥ वैष्णवंचतथाशैवंशाक्तंसौरंचगाणपम् ॥ योहंका रान्नगृह्णातिमंत्रंसोऽदीक्षितःस्मृतः ॥ ८३ ॥ प्रवाहमवधिंकृत्वायावद्धस्तचतुष्टयम् ॥ तत्रनारायणःस्वामीगंगागर्भांतरेवसेत् ॥ ८४ ॥ तत्रनारा यणक्षेत्रमृतोयातिहरेःपदम् ॥ वाराणस्यांबदर्यांचगंगासागरसंगमे ॥ ८५ ॥

तृप्रसूस्वसारमित्यर्थः ॥ भगिनीभ्रात्रोःकन्यकामित्यर्थः ॥ ७८ ॥ एताअत्यगम्याःस्त्रियइत्यर्थः ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ संध्याहीनमाह । करोत्यशुद्धामिति ॥ अशुद्धांशास्त्रोक्तप्रकार रहितांतिसृणांसंध्यानांसमाहारःत्रिसंध्यमेवंप्रकारेणसंध्यारहितोयः ॥ ससंध्याहीनइत्यर्थः ॥ ८२ ॥ अथाऽदीक्षितमाह । वैष्णवमिति ॥ ८३ ॥ तीर्थप्रतिग्राहिणमाह । प्रवाहमवधिमिति ॥ ८४ ॥ तत्रनारायणक्षेत्रेकाश्यादिस्थानेषुचयःप्रतिग्राहीसतीर्थप्रतिग्राहीतिसमुदायार्थः ॥ ८५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

हरिहरक्षेत्रेत्र्यंबके ॥ मातृपुरंमातापुरसंज्ञकंश्रीरेणुकास्थानम् ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ कामतइच्छातोनत्वनुपपत्तितः ॥ ८८ ॥ ग्रामयाज्यादीनांलक्षणान्याह । शूद्रसेवीति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ अर्धाधिकैकोनषष्टिश्लोकैरथसविस्तरम् ॥ कुंडानामवशिष्टानांकथ्यंतेह्यधिकारिणः ॥ १ ॥ एतादृशनानाविधदुःखनिवृत्तिरीश्वरसेवांविनानभवतीतिधैर्यार्थमाह । धर्मराजउवाच देवसेवामिति ॥ सुकर्मणातुसुकर्मवर्धतेनतुतस्यकर्मणोनिकृंतनमित्याह । शुद्धकर्मेति ॥ शुद्धबीजंशुद्धकर्मबीजंचेत्यर्थः ॥ कुकर्मणातुनरकश्चकारात्कुकर्मचभवतीत्यर्थः ॥ १ ॥ कालसूत्रकुंडमाह ॥ पुंश्चल्यन्नमिति ॥ २ ॥ तत्रजन्मनिकालसूत्रभोगोत्तरजन्मनीत्यर्थः ॥ ३ ॥ मत्स्योदकुंडगामिनआह ।

पुष्करेहरिहरक्षेत्रेप्रभासेकामरूस्थले ॥ हरिद्वारेचकेदारेतथामातृपुरेऽपिच ॥ ८६ ॥ सरस्वतीनदीतीरेपुण्येवृंदावनेवने ॥ गोदावर्यांचकौशिक्यांत्रिवेण्यांचहिमाचले ॥ ८७ ॥ एषुतीर्थेषुयोदानंप्रतिगृह्णातिकामतः ॥ सचतीर्थप्रतिग्राहीकुंभीपाकेप्रयातिसः ॥ ८८ ॥ शूद्रसेवीशूद्रयाजीग्रामयाजीतिकीर्तितः ॥ तथादेवोपजीवीचदेवलःपरिकीर्तितः ॥८९॥ शूद्रपाकोपजीवीयःसूपकारइतिस्मृतः ॥ संध्यापूजनहीनश्चप्रमत्तःपतितःस्मृतः ॥ ९० ॥ उक्तंसर्वंमयाभद्रेलक्षणंवृषलीपतेः ॥ एतेमहापातकिनःकुंभीपाकंप्रयांतिते ॥ ९१ ॥ कुंडान्यन्यानियेयांतिनिबोधकथयामिते ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ धर्मराजउवाच ॥ देवसेवांविनासाध्विनभवेत्कर्मकृंतनम् ॥ शुद्धकर्मशुद्धबीजंनरकश्चकुकर्मणा ॥१॥ पुंश्चल्यन्नंचयोभुंक्तेयोऽस्यांगच्छेत्पतिव्रते ॥ सद्विजःकालसूत्रंचमृतोयातिसुदुर्गमम् ॥२॥ शतवर्षंकालसूत्रेस्थिरीभूतोभवेद्ध्रुवम् ॥ तत्रजन्मनिरोगीचततःशुद्धोभवेद्द्विजः ॥ ३ ॥ पतिव्रताचैकपत्नीद्वितीयेकुलटास्मृता ॥ तृतीयेधर्षिणीज्ञेयाचतुर्थेपुंश्चलीत्यपि ॥ ४ ॥ वेश्याचपंचमेषष्ठेपुंगीचसप्तमेऽष्टमे ॥ ततऊर्ध्वंमहावेश्यासाऽस्पृश्यासर्वजातिषु ॥ ५ ॥ योद्विजःकुलटांगच्छेद्धर्षिणींपुंश्चलीमपि ॥ पुंगींवेश्यांमहावेश्यांमत्स्योदेयातिनिश्चितम् ॥ ६ ॥ शताब्दंकुलटागामीधृष्टागामीचतुर्गुणम् ॥ षड्गुणंपुंश्चलीगामीवेश्यागामीगुणाष्टकम् ॥ ७ ॥ पुंगीगामीदशगुणंवसेत्तत्रनसंशयः ॥ महावेश्याकामुकश्चततोदशगुणंवसेत् ॥८॥ तत्रैवयातनांभुंक्तेयमदूतेनताडितः ॥ तित्तिरिः कुलटागामीधृष्टागामीचवायसः ॥ ९ ॥ कोकिलःपुंश्चलीगामीवेश्यागामीवृकःस्मृतः ॥ पुंगीगामीसूकरश्चसप्तजन्मनिभारते ॥१०॥ महावेश्याप्रगामीचजायतेशाल्मलीतरुः ॥ योभुंक्तेज्ञानहीनश्चग्रहणेचंद्रसूर्ययोः ॥ ११ ॥ अरुंतुदंसयात्येवाऽप्यन्नमानाब्दमेवच ॥ ततोभवेन्मानवश्चाऽप्युदरेरोगपीडितः ॥ १२ ॥

पतिव्रताचैकपतावेति ॥ द्वितीयेपत्यौसंतिकुलटा ॥ एवंसर्वत्रज्ञेयम् ॥ ४ ॥ पंचमेषष्ठेचपत्यौवेश्येत्यन्वयः ॥ सप्तमेऽष्टमेचपत्यौपुंगीभवतीत्यन्वयः ॥ साअस्पृश्येतिच्छेदः ॥ ५ ॥ ६॥ चतुर्गुणंचतुःशताब्दंएवंसर्वत्रज्ञेयम् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ कृमिकंतुककुंडमाह । योभुंक्तेइति ॥ ११ ॥ अरुंतुदस्तुमर्मस्पृक्कीटविशेषः तस्यकुंडम् ॥ अन्नमानाब्दंयावंतोऽन्नस्यावयवास्तावंतिवर्षाणीत्यर्थः ॥ १२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पांसुभोज्यंकुंडमाह ॥ वाक्प्रदत्तामिति ॥१३॥ पांसुवेष्टंकुंडमाह ॥ तद्द्रव्यहारीति ॥ कन्याविक्रेतेत्यर्थः ॥ १४ ॥ शूलप्रोतंकुंडमाह । भक्त्येति ॥ १५ ॥ १६ ॥ प्रकंपनंकुंडमाह ॥ करोतीति ॥ कुंठितंकुतर्केण ॥ १७ ॥ उल्कामुखंकुंडमाह॥ प्रकोपेति॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ अंधकूपकुंडमाह याब्राह्मणीशूद्रभोग्येति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ वेधनं कुंडमाह ॥ निवसेदिति ॥ ताडनादिपंचकुंडान्याह॥ पुंगीचेति ॥ २६॥२७॥२८॥ कषायकुंडमाह ॥ ब्राह्मणइति ॥२९॥ परदारैस्सहेत्यर्थःकषायं। यांतितयासहेत्यपिपाठः ॥ ३० ॥

गुल्मयुक्तश्चकाणश्चदंतहीनस्ततःशुचिः ॥ वाक्प्रदत्तांस्वकन्यांचयोऽन्यस्मैप्रददातिच॥१३॥ सवसेत्पांसुकुंडेचतद्भोजीशतवत्सरम् ॥ तद्द्रव्यहारीयःसा प्विपांसुवेष्टेशताब्दकम् ॥ १४ ॥ निवसेच्छरशय्यायांममदूतेनताडितः ॥ भक्त्यानपूजयेद्विप्रःशिवलिंगंचपार्थिवम् ॥१५॥ सयातिशूलिनःपापाच्छूल प्रोतंसुदारुणम् ॥ स्थित्वाशताब्दंतत्रैवश्वापदःसप्तजन्मसु ॥१६॥ ततोभवेद्देवलश्चसप्तजन्मततःशुचिः ॥ करोतिकुंठितंविप्रंयद्धियाकंपतेद्विजः ॥ १७ ॥ प्रकंपनेवसेत्सोऽपिविप्रलोमाब्दमेवच ॥ प्रकोपवदनाकोपात्स्वामिनंयाचपश्यति ॥१८॥ कटूक्तिंतंप्रवदतिसोल्मुकंसंप्रयातिहि ॥ उल्कांददातितद्वक्त्रेस ततंममकिंकरः ॥ १९ ॥ दंडेनताडयेन्मूर्ध्नितल्लोमाब्दप्रमाणकम् ॥ ततोभवेन्मानवीचविधवासप्तजन्मसु ॥ २० ॥ साभुक्त्वाचैववैधव्यंव्याधियुक्तातत: शुचिः ॥ याब्राह्मणीशूद्रभोग्याचांधकूपेप्रयातिसा ॥२१॥ तप्तशौचोदकेध्वांतेतदाहारीदिवानिशम् ॥ निवसेदतिसंतप्तामममदूतेनताडिता ॥२२॥ शौचो दकेनिमग्नासायावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ काकीजन्मसहस्राणिशतजन्मानिसूकरी ॥ २३ ॥ सृगालीशतजन्मानिशतजन्मानिकुक्कुटी ॥ पारावतीसप्तजन्मवान रीसप्तजन्मसु ॥ २४ ॥ ततोभवेत्साचांडालीसर्वभोग्याचभारते ॥ ततोभवेच्चरजकीयक्ष्मग्रस्ताचपुंश्चली ॥२५॥ ततःकुष्ठयुतातैलकारीशुद्धाभवेत्ततः॥ निवसेद्वेधनेवेश्यापुंगीचदंडताडने ॥ २६ ॥ जलरंध्रेवसेद्वेश्याकुलटादेहचूर्णके ॥ स्वैरिणीदलनेचैवधृष्टाचशोषणेतथा ॥ २७ ॥ निवसेद्यातनायुक्ता ममदूतेनताडिता ॥ विण्मूत्रभक्षासततंयावन्मन्वंतरंसति ॥ २८॥ ततोभवेद्विट्कृमिश्चलक्षवर्षंततःशुचिः ॥ ब्राह्मणोब्राह्मणींगच्छेत्क्षत्रियांवाऽपिक्षत्रियः ॥२९॥वैश्योवैश्यांचशूद्रांवाशूद्रश्चाऽपित्रजेद्यदि॥सवर्णपरदारैश्चकषायंयांतितेजनाः ॥३०॥ भुक्त्वाकषायंतप्तोदंनिवसेद्वाशताब्दकम्॥ततोविप्रोभवेच्छु द्धस्ततोवैक्षत्रियादयः॥३१॥योषितश्चापिशुद्ध्यंतीत्येवमाहपितामहः॥क्षत्रियोब्राह्मणींगच्छेद्वैश्योवाऽपिपतिव्रते॥३२॥ मातृगामीभवेत्सोऽपिशूर्पेचनरके वसेत्॥शूर्पाकारैश्चकृमिभिर्ब्राह्मण्यासहभक्षितः ॥३३॥ प्रतप्तमूत्रभोजीचममदूतेनताडितः॥तत्रैवयातनांभुंक्तेयावदिंद्राश्चतुर्दश॥३४॥सप्तजन्मवराहश्चछा गलश्चततःशुचिः॥करेधृत्वातुतुलसींप्रतिज्ञांयोनपालयेत्॥३५॥मिथ्यावाशपथंकुर्यात्सचज्वालामुखंव्रजेत्॥गंगातोयंकरेकृत्वाप्रतिज्ञांयोनपालयेत्॥३६॥

॥ ३१ ॥ शूर्पकुंडमाह । क्षत्रियोब्राह्मणीमिति ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ज्वालामुखंकुंडमाह । करेधृत्वेति ॥ तुलसींकरेधृत्वाकृतांप्रतिज्ञांयोनपालयेदित्यर्थः ॥ ३५ ॥ तथैवगंगा तोयेऽपिज्ञेयम् ॥ ३६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

शिलांशालग्रामशिलांदेवप्रतिमांवाकरेकृत्वाकृतांप्रतिज्ञांयोनपालयेदित्यर्थः ॥ तथास्वदक्षिणहस्तंतस्यहस्तोपरिदत्त्वाकृतांप्रतिज्ञामित्यर्थः ॥ ३७ ॥ स्थित्वेति ॥ देवगृहेस्थित्वाकृतांप्रतिज्ञांयोनपालयेदितिशेषः ॥ तथाब्राह्मणंगांचाऽऽस्पृश्यस्पर्शंकृत्वाकृतांप्रतिज्ञामित्यर्थः ॥ ३८ ॥ नपालयेदिति ॥ पूर्वोक्तंशपथमकृत्वाऽपिकृतांप्रतिज्ञांयोनपालयेत्सोऽपीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ एतेशपथकारिणोज्वालामुखेवसंति ॥ ज्वालामुखभोगोत्तरंकःशपथकारीकिंजन्मप्राप्नोतीतितदुच्यते ॥ चांडालइति ॥ तुलसींस्पृष्ट्वायेनकृताप्रतिज्ञानपालितासज्वालामुखभोगोत्तरंसप्तजन्मसुचांडालोभवतीत्येवंसर्वत्रज्ञेयम् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ब्रह्मकृमिर्ब्राह्मणगृहस्थःकृमिः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ गंडकइति ॥ गंडकःपुंसिखड्गेस्यात्संध्याविद्याप्रभेदयोः ॥ अव

शिलांवादेवप्रतिमांसचज्वालामुखंव्रजेत् ॥ दत्त्वादक्षिणहस्तंचप्रतिज्ञांयोनपालयेत् ॥ ३७ ॥ स्थित्वादेवगृहेवाऽपिसचज्वालामुखंव्रजेत् ॥ आस्पृश्य ब्राह्मणंगांचज्वालावह्निंव्रजेद्द्विजः ॥ ३८ ॥ नपालयेत्प्रतिज्ञांचसचज्वालामुखंव्रजेत् ॥ मित्रद्रोहीकृतघ्नश्चयश्चविश्वासघातकः ॥ ३९ ॥ मिथ्यासाक्ष्यप्रदश्चैवसचज्वालामुखंव्रजेत् ॥ एतेतत्रवसंत्येवयावर्दिद्राश्चतुर्दश ॥ ४० ॥ तथांगारप्रदग्धाश्चयमदूतेनताडिताः ॥ चांडालस्तुलसींस्पृष्ट्वासप्तजन्मततःशुचिः ॥ ४१ ॥ म्लेच्छोगंगाजलस्पर्शीपंचजन्मततःशुचिः ॥ शिलास्पर्शीविट्कृमिश्चसप्तजन्मसुसुंदरि ॥ ४२ ॥ अर्चास्पर्शीब्रह्मकृमिःसप्तजन्मततःशुचिः ॥ दक्षहस्तप्रदाताचसर्पश्चसप्तजन्मसु ॥ ४३ ॥ ततोभवेद्ब्रह्महीनोमानवश्चततःशुचिः ॥ मिथ्यावादीदेवगृहेदेवलःसप्तजन्मसु ॥ ४४ ॥ विप्रादिस्पर्शकारीचव्याघ्रजातिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ततोभवेच्चमूकःसवधिरश्चत्रिजन्मनि ॥ ४५ ॥ भार्याहीनोबंधुहीनोवंशहीनस्ततःशुचिः ॥ मित्रद्रोहीचनकुलःकृतघ्नश्चाऽपिगंडकः ॥ ४६ ॥ विश्वासघातीव्याघ्रश्चसप्तजन्मसुभारते ॥ मिथ्यासाक्षीचवक्तव्येमंडूकःसप्तजन्मसु ॥ ४७ ॥ पूर्वान्सप्ताऽपरान्सप्तपुरुषान्हंतिचाऽऽत्मनः ॥ नित्यक्रियाविहीनश्चजडत्वेनयुतोद्विजः ॥ ४८ ॥ यस्याऽनास्थावेदवाक्येमंदंहसतिसंततम् ॥ व्रतोपवासहीनश्चसद्वाक्यपरनिंदकः ॥ ४९ ॥ धूम्रांधेचवसेत्सोऽपिशताब्दंधूम्रभक्षकः ॥ जलजंतुर्भवेत्सोऽपिशतजन्मक्रमेणच ॥ ५० ॥ ततोनानाप्रकारश्चमत्स्यजातिस्ततःशुचिः॥यःकरोत्युपहासंचदेवब्राह्मणयोर्धने ॥ ५१ ॥ पातयित्वासपुरुषान्दशपूर्वान्दशाऽपरान् ॥ सोऽयंयातिचधूम्रांधंधूमध्वांतसमन्वितम् ॥ ५२ ॥ धूम्रक्लिष्टोधूम्रभोजीवसेत्तत्रचतुर्गुणम् ॥ ततोमूषकजातिश्चसप्तजन्मसुभारते ॥ ५३ ॥ ततोनानाविधाःपक्षिजातयःकृमिजातिभिः ॥ततोनानाविधावृक्षाःपशवश्चततोनरः ॥ ५४ ॥ विप्रोदैवज्ञजीवीचवैद्यजीवीचिकित्सकः ॥ लाक्षालोहादिव्यापारीरसादिविक्रयीचयः ॥ ५५ ॥ सयातिनागवेष्टंचनागैर्वेष्टितमेवच ॥ वसेत्सलोममानाब्दंतत्रैवनागपाशितः ॥ ५६ ॥

च्छेदंतरायेचेतिमेदिनीकोशाल्लक्षणयांतरायकर्ताविघ्नकर्ताभवतीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ मंडूकःसप्तजन्मसु ॥ भल्लूकइत्यपिपाठः ॥ ४७ ॥ एतेषांसवर्षांचतुर्दशपुरुषाअप्यधःपतंतीत्याह ॥ पूर्वान्सप्तेति ॥ धूम्रांधकुंडमाह । नित्यक्रियेति ॥ ४८ ॥ मंदंहसतिकपटेन ॥ ४९ ॥ ५० ॥ उपहास्यंइदमतिनिंद्यंभवतीत्यभिप्रायेण ॥ धनमित्युपलक्षणंतद्वस्तुमात्रस्य ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ चतुर्गुणमिति ॥ शताब्दंधूम्रभक्षकइतिपूर्वमुक्तंतदपेक्षयाऽर्थाच्चतुर्गुणंग्राह्यम् ॥ चतुर्युगमितित्यपिपाठः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ नागवेष्टनंकुंडमाह ॥ विप्रोदैवज्ञइति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ ॥ छ ॥ अर्धाधिकैस्त्रयस्त्रिंशत्पद्यैर्यमपुरीभयम् ॥ देवभक्त्यानश्यतीतिविस्तरेणोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ नरककुंडवर्णनंतदधिकारिणस्तद्यातनाश्चश्रुत्वाकोहिनरोभूत्वातेषुपातकेष्वेकमपिपातकंनकुर्यात्ततश्चकथंगतिर्भविष्यतीतिभीतासावित्रीपृच्छति ॥ धर्मराजेति ॥ यत्सारंसंसारोद्धारकारकमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ सर्वप्रदंसर्वंब्रह्मतत्प्रदम् ॥ ३ ॥ ४ ॥ किंचप्रश्नांतरमाह । किमाकाराणीति ॥ ५ ॥ प्रश्नांतरमाह । स्वदेहेइति ॥ देहेभस्मानिजातेकेनदेहेन

ततोनानाविधाःपक्षिजातयश्चततोनरः ॥ ततोभवेत्सगणकोवैद्यश्चसप्तजन्मसु ॥ ५७ ॥ गोपश्चकर्मकारश्चरंगकारस्ततःशुचिः ॥ प्रसिद्धानिचकुंडानिकथितानिपतिव्रते ॥ ५८ ॥ अन्यानिचाऽप्रसिद्धानिक्षुद्राणिसंतितत्रवै ॥ संतिपातकिनस्तेषुस्वकर्मफलभोगिनः ॥ ५९ ॥ भ्रमंतिनानायोनिंचकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेपंचत्रिंशोध्यायः ॥ ३५ ॥ ॥ सावित्र्युवाच ॥ धर्मराजमहाभागवेदवेदांगपारग ॥ नानापुराणेतिहासेयत्सारंतत्प्रदर्शय ॥ १ ॥ सर्वेषुसारभूतंयत्सर्वेष्टंसर्वसंमतम् ॥ कर्मच्छेदवीजरूपंप्रशस्तंसुखदंनृणाम् ॥ २ ॥ सर्वप्रदंचसर्वेषांसर्वमंगलकारणम् ॥ भयंदुःखंनपश्यंतियेनवैसर्वमानवाः ॥ ३ ॥ कुंडानितेनपश्यंतितेपुनैवपतंतिच ॥ नभवेद्येनजन्मादितत्कर्मवदसांप्रतम् ॥ ४ ॥ किमाकाराणिकुंडानितानिवानिर्मितानिच ॥ केचकेनैवरूपेणतत्रतिष्ठंतिपापिनः ॥ ५ ॥ स्वदेहेभस्मसाद्भूतेयातिलोकांतरंनरः ॥ केनदेहेनवाभोगंकरोतिचशुभाशुभम् ॥ ६ ॥ सुचिरंक्लेशभोगेनकथंदेहोननश्यति ॥ देहोवाकिंविधोब्रह्मंस्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ७ ॥ नारायणउवाच ॥ सावित्रीवचनंश्रुत्वाधर्मराजोहरिंस्मरन् ॥ कथांकथितुमारेभेकर्मबंधनिकृंतनीम् ॥ ८ ॥ धर्मराजउवाच ॥ वत्सेचतुर्षुवेदेषुधर्मेषुसंहितासुच ॥ पुराणेष्वितिहासेषुपांचरात्रादिकेषुच ॥ ९ ॥ अन्येषुधर्मशास्त्रेषुवेदांगेषुचसुव्रते ॥ सर्वेष्टंसारभूतंचपंचदेवानुसेवनम् ॥ १० ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिशोकसंतापनाशनम् ॥ सर्वमंगलरूपंचपरमानंदकारणम् ॥ ११ ॥ कारणंसर्वसिद्धीनांनरकार्णवतारणम् ॥ भक्तिवृक्षांकुरकरंकर्मवृक्षनिकृंतनम् ॥ १२ ॥ विमोक्षसोपानमिदमविनाशपदंस्मृतम् ॥ सालोक्यसार्ष्टिसारूप्यसामीप्यादिप्रदंशुभम् ॥ १३ ॥ कुंडानियमदूतैश्चरक्षितानिसदाशुभे ॥ नहिपश्यंतिस्वप्नेचपंचदेवार्चकानराः ॥ ॥ १४ ॥ देवीभक्तिंविहीनायेतेपश्यंतिमामाऽऽलयम् ॥ यांतियेहरितीर्थंवाश्रयंतिहरिवासरम् ॥ १५ ॥ प्रणमंतिहरिंनित्यंहर्यर्चांकलयंतिच ॥ नयांतितेऽपिघोरांचममसंयमिनींपुरीम् ॥ १६ ॥ त्रिसंधिपूताविप्राश्चशुद्धाचारसमन्विताः ॥ निवृत्तिंनैवलप्स्यंतिदेवीसेवांविनानराः ॥ १७ ॥

परंलोकेशुभाशुभंभोगंकरोतीत्यर्थः ॥ ६ ॥ किंचप्रश्नांतरमाह । सुचिरमिति ॥ क्षणमात्रंवह्नौपतितंवस्तुदग्धंभवति । अनेकवर्षंवन्ह्यादिकुंडेषुपतितोदेहःकथंननष्टोभवतीत्यर्थः ॥ तस्माद्विलक्षणोदेहःस्यात्सचकीदृशइतिवदेत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ पंचदेवाःशिवशक्तिविष्णुगणेशसूर्याः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

स्वधर्मनिरतोति ॥ स्वधर्मेनिरतोवाह्यआचारोयेषां तथास्वधर्मेनिरतमंतःकरणंयेषांतेस्वधर्मनिरताः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ नाम्नामज्ञानाच्चित्रगुप्तेनलिखितानाम् ॥ २१ ॥ लोकंगच्छतीति ॥ मणिद्वीपसंज्ञकंदेवीलोकंगच्छंतीत्यर्थः ॥ २२ ॥२३॥ यथाचप्रज्वलद्वह्नाविति ॥ पूर्वान्वयि। मोहोऽपिसंमोहंप्राप्नोति । तान्प्रतिमोहोनगच्छतीत्यर्थः ॥२४॥ ततस्तस्मात्पुरुषाल्लोभक्रोधौगच्छतइत्यर्थः ॥ २५ ॥ येयेनयांतीति ॥ पंचदेवोपासकाइत्यर्थः ॥ २६ ॥ अधुनाद्वितीयप्रश्नोत्तरंविस्तरेणाग्रेवक्तव्यमस्तीतिताद्विहायाऽन्यप्रश्नानामुत्तराण्याह । शृण्विति ॥ पंचभूतात्मकेदेहेदग्धेऽप्यंगुष्ठपरिमितोलिंगदेहोमोक्षपर्यंतंकथमपिवन्ह्यादिकुंडेषुपतितोऽपिननश्यतीतितेनदेहेनभोगःसंभवतीतिसमुदायार्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

स्वधर्मनिरताचाराःस्वधर्मनिरतास्तथा ॥ गच्छंतोमृत्युलोकंचदुर्दृशाममकिंकराः ॥ १८ ॥ भीताःशिवोपासकेभ्योवैनतेयादिवोरगाः ॥ स्वदूतंपाशहस्तंचगच्छंतंवारयाम्यहम् ॥ १९ ॥ यास्यंतितेचसर्वत्रहरिदासाश्रयंविना ॥ कृष्णमंत्रोपासकाच्चवैनतेयादिवोरगाः ॥ २० ॥ देवीमंत्रोपासकानांनाम्नांचैवनिकृंनतम् ॥ करोतिनखलेखन्याचित्रगुप्तश्चभीतवत् ॥ २१ ॥ मधुपर्कादिकंतेषांकुरुतेचपुनःपुनः ॥ विलंघ्यब्रह्मलोकंचलोकंगच्छंतितेसति ॥ ॥ २२ ॥ दुरितानिचनश्यंतियेषांसंस्पर्शमात्रतः ॥ तेमहाभाग्यवंतोहिसहस्रकुलपावनाः ॥ २३ ॥ यथाचप्रज्वलद्वह्नौशुष्काणिचतृणानिच ॥ प्राप्नोतिमोहःसंमोहंतांश्चदृष्ट्वाचभीतवत् ॥२४॥ कामश्चकामिनंयातिलोभक्रोधौततःसति॥मृत्युःप्रलीयतेरोगोजराशोकोभयंतथा ॥२५॥ कालःशुभाशुभंकर्महर्षोभोगस्तथैवच ॥ येयेनयांतितांपीडांकथितास्तेमयासति ॥ २६ ॥ शृणुदेहविवरणंकथयामियथागमम् ॥ पृथिवीवायुराकाशस्तेजस्तोयमितिस्फुटम् ॥ २७ ॥ देहिनांदेहबीजंचस्रष्टृसृष्टिविधौपरम् ॥ पृथिव्यादिपंचभूतैर्योदेहोनिर्मितोभवेत् ॥ २८ ॥ सकृत्रिमोनश्वरश्चभस्मसाच्चभवेदिह ॥ बद्धोंगुष्ठप्रमाणश्चयोजीवःपुरुषःकृतः ॥ २९ ॥ बिभर्तिसूक्ष्मंदेहंतंतद्रूपंभोगहेतवे ॥ सदेहोनभवेद्भस्मज्वलदग्नौममालये ॥ ३० ॥ जलेननष्टोदेहीवाप्रहारेसुचिरंकृते ॥ नशस्त्रेणनवाऽस्त्रेणसुतीक्ष्णकंटकेतथा ॥ ३१ ॥ तप्तद्रवेतप्तलोहेतप्तपाषाणएवच ॥ प्रतप्तप्रतिमाश्लेषेयत्पूर्वपतनेऽपिच ॥ ३२ ॥ नदग्धोनचभग्नःसभुंक्तेसंतापमेवच ॥ कथितोदेहवृत्तांतःकारणंचयथागमम् ॥ ३३ ॥ कुंडानांलक्षणंसर्वंबोधायकथयामिते ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ धर्मराजउवाच ॥ पूर्णेंदुमंडलाकारंसर्वंकुंडंचवर्तुलम् ॥ निम्नंपाषाणभेदैश्चपाचितंबहुभिःसति ॥ १ ॥ ननश्वरंचाऽऽप्रलयंनिर्मितंचेश्वरेच्छया ॥ क्लेशदंपातकानांचनानारूपंतदालयम् ॥ २ ॥ ज्वलदंगाररूपंचशतहस्तशिखान्वितम् ॥ परितःक्रोशमानंचवह्निकुंडंप्रकीर्तितम् ॥ ३ ॥

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ एकोनविंशत्यधिकैःशतश्लोकैःसविस्तरम् ॥ कुंडानांलक्षणंसम्यग्यथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ अथकुंडाकारविषयकस्यसावित्र्याकृतप्रश्नस्योत्तरमाह । पूर्णेंदुमंडलेति ॥ अतिनिम्नमित्यपिपाठः ॥ पाषाणभेदैर्विलक्षणपाषाणरूपांगारैःपाचितंज्वलितमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ऊर्ध्वंशतहस्तपरिमिताःशिखाज्वालास्ताभिः समन्वितम् ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४ ॥ तप्तकुंडाकारमाह । प्रतप्तोदकेति ॥ काकुशब्दंतत्रास्थितानांप्राणिनांशब्दस्याऽनुकरणंकाकुइति ॥ ५ ॥ तद्दूतैरित्यत्रतदितिपूर्वान्वयि ॥ तप्तक्षारोदकमाह । तप्तक्षारेति ॥ पुन काकैश्चसंकुलम् । नक्रैश्चसंकुलमित्यपिपाठः ॥ ६ ॥ भयानककुंडमाह । संकुलंपापिभिरिति ॥ ७ ॥ विट्कुंडमाह । विड्भिरिति ॥ ८ ॥ ९ ॥ मूत्रकुंडमाह ॥ तप्तमूत्रेति ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ श्लेष्मकुंडमाह । श्लेष्मपूर्णमिति ॥ १२ ॥ वेष्टितैःश्लेष्मणेतिशेषः ॥ गरकुंडमाह ॥ क्रोशार्धमिति ॥ १३ ॥ १४ ॥ दूषिकाकुंडमाह । नेत्रयोरिति ॥ १५ ॥ वसाकुंड

महाशब्दंप्रकुर्वद्भिःपापिभिःपरिपूरितम् ॥ रक्षितंममदूतैश्चताडितैश्चाऽपिसंततम् ॥ ४ ॥ प्रतप्तोदकपूर्णंचहिंस्रजंतुसमन्वितम् ॥ महाघोरंकाकुशब्दंप्र हारेणदृढेनच ॥ ५ ॥ क्रोशार्धमानंतद्दूतैस्ताडितैर्ममपार्षदैः ॥ तप्तक्षारोदकैःपूर्णंपुनःकाकैश्चसंकुलम् ॥ ६ ॥ संकुलंपापिभिश्चैवक्रोशमानंभयानकम् ॥ त्राहीतिशब्दंकुर्वद्भिर्ममदूतैश्चताडितैः ॥ ७ ॥ प्रचलद्भिरनाहारैःशुष्ककंठोष्ठतालुकैः ॥ विड्भिरेवकृतंपूर्णंक्रोशमानंचकुत्सितम् ॥ ८ ॥ अतिदुर्गंधिसंस क्तंव्याप्तंपापिभिरन्वहम् ॥ ताडितैर्ममदूतैश्चतदाहारैःसुदारुणैः ॥ ९ ॥ रक्षेतिशब्दंकुर्वद्भिस्तत्कीटैरेवभक्षितैः ॥ तप्तमूत्रद्रवैःपूर्णंमूत्रकीटैश्चसंकुलम् ॥ १० ॥ युक्तंमहापातकिभिस्तत्कीटैर्भक्षितैःसदा ॥ गव्यूतिमानंध्वांताक्तंशब्दकृद्भिश्चसंततम् ॥ ११ ॥ मदूतैस्ताडितैर्घोरैःशुष्ककंठोष्ठतालुकैः ॥ श्लेष्मपूर्णप्रश मितंतत्कीटैःपूरितंतदा ॥ १२ ॥ तद्भोजिभिःपापिभिश्चवेष्टितंवेष्टितैःसदा ॥ क्रोशार्धंगरकुंडंचगरभोजिभिरन्वितम् ॥ १३ ॥ गरकीटैर्भक्षितैश्चपापिभिः पूर्णमेवच ॥ ताडितैर्ममदूतैश्चशब्दकृद्भिश्चकंपितैः ॥ १४ ॥ सर्पाकारैर्वज्रदंष्ट्रैःशुष्ककंठैःसुदारुणैः ॥ नेत्रयोर्मलपूर्णंचक्रोशार्धंकीटसंयुतम् ॥ १५ ॥ पा पिभिःसंकुलंशश्वद्भ्रमद्भिःकीटभक्षितैः ॥ वसारसेनसंपूर्णंक्रोशतुर्यंसुदुःसहम् ॥ १६ ॥ तद्भोजिभिःपातकिभिर्ममदूतैश्चताडितैः ॥ शुक्रकुंडंक्रोशमितंशुक्र कीटैश्चसंयुतम् ॥ १७ ॥ पापिभिःसंकुलंशश्वद्द्रवद्भिःकीटभक्षितैः ॥ दुर्गंधिरक्तपूर्णंचवापीमानंगभीरकम् ॥ १८ ॥ तद्भोजिभिःपापिभिश्चसंकुलंकीट भक्षितम् ॥ पूर्णनेत्राश्रुभिस्तप्तंबहुपापिभिरन्वितम् ॥ १९ ॥ वापीतुर्यप्रमाणंचरुदद्भिःकीटभक्षितैः ॥ नृणांगात्रमलैर्युक्तंतद्भक्षैःपापिभिर्युतम् ॥ २० ॥ ताडितैर्ममदूतैश्चव्यग्रैश्चकीटभक्षितैः ॥ कर्णविट्परिपूर्णंचतद्भक्षैःपापिभिर्वृतम् ॥ २१ ॥ वापीतुर्यप्रमाणंचब्रुवद्भिःकीटभक्षितैः ॥ मज्जापूर्णंनराणांचम हादुर्गंधिसंयुतम् ॥ २२ ॥ महापातकिभिर्युक्तंवापीतुर्यप्रमाणकम् ॥ परिपूर्णंस्निग्धमांसैर्ममदूतैश्चताडितैः ॥ २३ ॥

माह । वसारसेनेति ॥ क्रोशतुर्यंक्रोशचतुर्थांशमानमित्यर्थः ॥ १६ ॥ शुक्रकुंडमाह । शुक्रेति । द्रवद्भिर्धावद्भिः ॥ रक्तकुंडमाह । दुर्गंधीति ॥ वापीमानंप्रमाणम् । पूर्वमुक्तंतन्मानम् ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ कीटभक्षितैःपापिभिःसंकुलमित्यन्वयः ॥ अश्रुकुंडमाह । पूर्णनेत्राश्रुभिरिति ॥ १९ ॥ वापीतुर्येति ॥ पूर्वोक्तवापीमानचतुर्थांशमानमित्यर्थः ॥ गात्रमलकुंडमाह ॥ नृणा मिति ॥ २० ॥ कर्णविट्कुंडमाह । कर्णविडिति ॥ २१ ॥ ब्रुवद्भिर्हाहितिशब्दंकुर्वाणैः ॥ मज्जाकुंडमाह । मज्जापूर्णमिति ॥ २२ ॥ मांसकुंडमाह । परिपूर्णमिति ॥ २३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २४ ॥ नखादिकुंडचतुष्टयमाह । वापीतुर्येति ॥ चतुष्टयंनखकुंडलोमकुंडास्थिकुंडाद्यात्मकमित्यर्थः ॥ २५ ॥ प्रतप्तताम्रकुंडमाह ॥ प्रतप्तेति ॥ २६ ॥ २७ ॥ गव्यूतिःस्त्रीक्रोशयुगम् ॥ लोहकुंडमाह । प्रतप्तेति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ चर्मकुंडमाह । चर्मकुंडमिति ॥ तप्तसुराकुंडमाह । तप्तसुरेति ॥ ३१ ॥ कंटककुंडमाह । अतःशाल्मलीति ॥ ३२ ॥ धनुर्मानैर्हस्तचतुष्टयपरिमितैःकंटकैरित्यर्थः ॥ ३३ ॥ वृक्षाग्राच्छाल्मलीवृक्षाग्रान्निपतद्भिःकंटकैरित्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ तत्रदृष्टांतोयथेति ॥ विषोदकुंडमाह । विषोदैरिति ॥ ३६ ॥

पापिभिःसंकुलंचैववापीमानंभयानकैः ॥ कन्याविक्रयिभिश्चैवतद्भक्ष्यैःकीटभक्षितैः ॥२४॥ पाहीतिशब्दंकुर्वद्भिस्त्रासितैश्चभयानकैः ॥ वापीतुर्यप्रमाणंच नखादिकचतुष्टयम् ॥२५॥ पापिभिःसंयुतंशश्वन्ममदूतैश्चताडितैः ॥ प्रतप्तताम्रकुंडंचताम्रोपर्युल्मुकान्वितम् ॥२६॥ ताम्राणांप्रतिमालक्षैःप्रतप्तैर्व्याप्तं सदा॥प्रत्येकंप्रतिमाश्लिष्टैरुदद्भिःपापिभिर्युतम् ॥२७॥ गव्यूतिमानंविस्तीर्णंममदूतैश्चताडितैः॥प्रतप्तलोहधारंचज्वलदंगारसंयुतम् ॥२८॥ लोहानांप्रतिमाश्लिष्टैरुदद्भिःपापिभिर्युतम्॥प्रत्येकंप्रतिमाश्लिष्टैःशश्वत्प्रज्वलितैर्भिया॥२९॥ रक्षरक्षेतिशब्दंचकुर्वद्भिर्दूतताडितैः ॥ महापातकिभिर्युक्तंद्विगव्यूतिप्रमाणकम् ॥३०॥ भयानकंध्वांतयुक्तंलोहकुंडंप्रकीर्तितम् ॥ चर्मकुंडंतप्तसुराकुंडंवाप्यर्धमेवच॥३१॥तद्भोजिपापिभिर्व्याप्तंममदूतैश्चताडितैः ॥ अतःशाल्मलीकुंडंचवृक्षकंटकशोभितम् ॥३२॥ लक्षपौरुषमानंचक्रोशमानंचदुःखदम् ॥ धनुर्मानैःकंटकैश्चसुतीक्ष्णैःपरिवेष्टितम्॥३३॥ प्रत्येकंविद्धगात्रैश्चमहापातकिभिर्युतम् ॥ वृक्षाग्रान्निपतद्भिश्चममदूतैश्चपातितैः॥३४॥जलंदेहीतिशब्दंचकुर्वद्भिःशुष्कतालुकैः ॥ महाभियाऽतिव्यग्रैश्चदंडैःसंभग्नमस्तकैः ॥ ३५॥ प्रचलद्भिर्यथातप्ततैलजीविभिरेवच ॥ विषोदैस्तक्षकाणांचपूर्वंचक्रोशमानकम् ॥ ३६ ॥ तद्भक्षैःपापिभिर्युक्तंममदूतैश्चताडितैः॥प्रतप्ततैलपूर्णंचकीटादिपरिवर्जितम् ॥३७॥ महापातकिभिर्युक्तंदग्धांगारैश्चवेष्टितम् ॥ काकुशब्दंप्रकुर्वद्भिश्चलद्भिर्दूतपीडितैः ॥३८॥ध्वांतयुक्तंक्रोशमानंक्लेशदंचभयानकम् ॥शूलाकारैःसुतीक्ष्णाग्रैर्लोहशस्त्रैश्चवेष्टितम् ॥३९॥शस्त्रतल्पस्वरूपंचक्रोशतुर्यप्रमाणकम् ॥ वेष्टितंतत्पातकिभिःकुंतविद्धैश्चवेष्टितैः ॥४०॥ ताडितैर्ममदूतैश्चशुष्ककंठोष्ठतालुकैः॥कीटैश्चशंकुप्रमितैःसर्पमानैर्भयंकरैः॥४१॥तीक्ष्णदंतैश्चविकृतैर्व्याप्तंध्वांतयुतंसति॥महापातकिभिर्युक्तंममदूतैश्चताडितैः ॥४२ ॥ द्विगव्यूतिप्रमाणंचपूयकुंडंप्रचक्षते ॥ तद्भक्ष्यैःप्राणिभिर्युक्तंममदूतैश्चताडितैः ॥४३॥ तालवृक्षप्रमाणैश्चसर्पकोटिभिरावृतम् ॥ सर्पवेष्टितगात्रैश्चपापिभिःसर्पभक्षितैः ॥ ४४ ॥ संकुलंशब्दकृद्भिश्चममदूतैश्चताडितैः ॥ कुंडत्रयंमशादीनांपूर्णंचमशकादिभिः ॥ ४५ ॥ सर्वंक्रोशार्धमानंचमहापातकिभिर्युतम् ॥ हस्तपादादिबद्धैश्चक्षतजौघेनलोहितैः ॥ ४६ ॥ हाहेतिशब्दंकुर्वद्भिस्ताडितैर्ममपार्षदैः ॥ वज्रवृश्चिकयोःकुंडंताभ्यांचपरिपूरितम् ॥ ४७ ॥

प्रतप्ततैलकुंडमाह । प्रतप्तेति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ कुंतकुंडमाह । शूलाकारैरिति ॥ ३९ ॥ तल्पमास्तरणम् ॥ कुंतंशस्त्रविशेषः ॥ ४० ॥ कृमिकुंडमाह । कीटैरिति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पूयकुंडमाह । द्विगव्यूतीति ॥ ४३ ॥ सर्पकुंडमाह । तालेति ॥४४॥ मशककुंडदंशकुंडगरलकुंडान्याह । कुंडत्रयमिति ॥४५॥४६॥वज्रदंष्ट्रकुंडवृश्चिककुंडद्वयमाह ॥ वज्रेति ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





दंशितैर्दष्टैरित्यर्थः ॥ शरकुंडशूलकुंडखड्गकुंडान्याह । कुंडत्रयमिति ॥ ४८ ॥ वाप्यर्धमानंकुंडत्रयम् । गोलकुंडमाह । तप्ततोयोदकैरीति ॥ ४९ ॥५० ॥ ५१ ॥ नक्रकुंडमाह । दारुणैरिति ॥ ५२ ॥ काककुंडमाह ॥ विण्मूत्रेति ॥ ५३ ॥ मंथानकुंडमाह । मंथानेति ॥ वीजकुंडमाह । वीजेति ॥ मंथानबीजौकीटविशेषौ ॥ ५४॥ वज्रकुंडमाह । धनुःशतमिति । जीवयुक्तंवज्राकारदंष्ट्रान्वितजीवयुक्तमित्यर्थः ॥५५॥ तप्तपाषाणकुंडमाह । वापीद्विगुणोति ॥५६॥ तीक्ष्णपाषाणकुंडमाह ॥ क्षुरधारोपमैरिति ॥ परंतीक्ष्णपाषाणकुंडमित्यर्थः ॥५७॥ लालाकुंडमाह । लालाकुंडंचलोहितैरीति ॥ लोहितयुक्तैःप्राणिभिरान्वितमित्यर्थः ॥ मसीकुंडमाह । तप्तांजनेति ॥ तप्तोयोंजनाचलस्तदाकारैःपाषाणैरन्वितमित्यर्थः ॥ ५८ ॥ यमदू

वाप्यर्धपापिभिर्युक्तंवज्रवृश्चिकदंशितैः ॥ कुंडत्रयंशरादीनांतैरेवपरिपूरितम् ॥ ४८ ॥ तैर्विद्धैःपापिभिर्युक्तंवाप्यर्धरक्तलोहितैः ॥ तप्ततोयोदकैःपूर्णसध्वांतंगोलकुंडकम् ॥ ४९ ॥ कीटैःसंकुलमानैश्चभक्षितैःपापिभिर्युतम् ॥ वाप्यर्धमानंभीतैश्चपापिभिःकीटभक्षितैः ॥ ५० ॥ रुदद्भिःक्रोशमानैश्चममदूतैश्चताडितैः ॥ अतिदुर्गंधिसंयुक्तंदुःखदंपापिनांसदा ॥ ५१ ॥ दारुणैर्विकृताकारैर्भक्षितंपापिभिर्युतम् ॥ वाप्यर्धपरिपूर्णंचजलस्थैर्नक्रकोटिभिः ॥५२॥ विण्मूत्रश्लेष्मभक्षैश्चसंयुतंशतकोटिभिः ॥ काकैश्चविकृताकारैर्भक्षितैःपापिभिर्युतम् ॥ ५३ ॥ मंथानकुंडंवीजकुंडंताभ्यांपूर्णंधनुःशतम् ॥ भक्षितैःपापिभिर्युक्तंशब्दकृद्भिश्चसंततम् ॥ ५४ ॥ धनुःशतंजीवयुक्तंपापिभिःसंकुलंसदा ॥ शब्दकृद्भिर्वज्रदंष्ट्रैःसांद्रध्वांतमयंपरम् ॥ ५५ ॥ वापीद्विगुणमानंचतप्तप्रस्तरनिर्मितम् ॥ ज्वलदंगारसदृशंचलद्भिःपापिभिर्युतम् ॥ ५६ ॥ क्षुरधारोपमैस्तीक्ष्णैःपाषाणैर्निर्मितंपरम् ॥ महापातकिभिर्युक्तंलालाकुंडंचलोहितैः ॥ ५७ ॥ क्रोशमात्रंचगंभीरंममदूतैश्चताडितैः ॥ तप्तांजनाचलाकारैःपरिपूर्णंधनुःशतम् ॥ ५८ ॥ चलद्भिःपापिभिर्युक्तंममदूतैश्चताडितैः ॥ पूर्णंचूर्णद्रवैःक्रोशमानंपापिभिरन्वितम् ॥ ५९ ॥ तद्भोजिभिःप्रदग्धैश्चममदूतैश्चताडितैः ॥ कुंडंकुलालचक्रंचघूर्णमानंचसंततम् ॥ ६० ॥ सुतीक्ष्णंषोडशारंचचूर्णितैःपापिभिर्युतम् ॥ अतीववक्रंनिम्नंचद्विगव्यूतिप्रमाणकम् ॥ ६१ ॥ कंदराकारनिर्माणंतप्तोदैश्चसमन्वितम् ॥ महापातकिभिर्युक्तंभक्षितैर्जलजंतुभिः ॥ ६२ ॥ ज्वलद्भिःशब्दकृद्भिश्चध्वांतयुक्तंभयानकम् ॥ कोटिभिर्विकृताकारैःकच्छपैश्चसुदारुणैः ॥ ६३ ॥ जलस्थैःसंयुतंतैश्चभक्षितैःपापिभिर्युतम् ॥ ज्वालाकलापैस्तेजोभिर्निर्मितंक्रोशमानकम् ॥ ६४ ॥ शब्दकृद्भिःपातकिभिःसंयुतंक्लेशदंसदा ॥ क्रोशमानंचगंभीरंतप्तभस्मभिरन्वितम् ॥ ६५ ॥ शश्वज्ज्वलद्भिःसंयुक्तंपापिभिर्भस्मभक्षितैः ॥ तप्तपाषाणलोहानांसमूहैःपरिपूरितैः ॥ ६६ ॥

तैश्चताडितैर्महापातकिभिर्युक्तमित्यनुक्तस्थलेसर्वत्रबोध्यम् ॥ चूर्णकुंडमाह ।पूर्णंचूर्णेति । तप्तचूर्णरेणुभिरित्यर्थः ॥ ५९ ॥ चक्रकुंडमाह । कुलालेति ॥ घूर्णमानंभ्रममाणम् ॥ ६० ॥ वक्रकुंडमाह॥अतीववक्रमिति ॥ ६१ ॥ कंदरादरीः ॥ ६२ ॥ कूर्मकुंडमाह । कोटिभिरिति ॥६३॥ जलस्थैःकच्छपैःसंयुतंतैःकच्छपैर्भक्षितैः पापिभिर्युतमित्यन्वयः ॥ ज्वालाकुंडमाह । ज्वालाकलापैरिति॥६४॥भस्मकुंडमाह ॥ क्रोशमानमिति ॥ ६५ ॥ ६६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दग्धकुंडमाह । क्रोशमानंध्वांतयुक्तामिति ॥ क्रोशमानंपापिभिःशब्दायमानम् ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ तप्तसूचीकुंडमाह । प्रतप्तसूचीति ॥ असिपत्रकुंडमाह । असीवेति ॥ तस्यतालतरोःपत्रस्यधाराअसीवासिलताधारेवभवति ॥ तस्यतालतरोःक्रोशार्धमानाधोदेशेपतत्तालसमन्वितंतदसीपत्रकुंडंभवतीत्यर्थः॥दीर्घस्तुच्छांदसः ॥ क्षुरधारकुंडमाह ॥ धनुःशतेति ॥७१॥ ७२ ॥ ७३ ॥७४॥ सूचीमुखकुंडमाह । सूचीमुखेति ॥७५॥ गोकामुखकुंडमाह । कस्यचिदिति ॥ गोकाख्यस्यगोकानामकस्यकस्यचिज्जंतुविशेषस्यमुखस्येवमुखंयस्यतद्गो

पापिभिर्दग्धगात्रैश्चयुक्तंचशुष्कतालुकैः ॥ क्रोशमानंध्वांतयुक्तंगंभीरमतिदारुणम् ॥ ६७ ॥ ताडितैश्चप्रदग्धैश्चदग्धकुंडंप्रकीर्तितम् ॥ अतीवोर्मियुतंतोयंप्रतप्तक्षारसंयुतम् ॥ ६८ ॥ नानाप्रकारैर्विरुतैर्जलजंतुभिरन्वितम् ॥ द्विगव्यूतिप्रमाणंचगंभीरंध्वांतसंयुतम् ॥ ६९ ॥ तद्भक्ष्यैःपापिभिर्युक्तंदंशितैर्जलजंतुभिः ॥ ज्वलद्भिःशब्दकृद्भिश्चनपश्यद्भिःपरस्परम् ॥७०॥ प्रतप्तसूचीकुंडंचकीर्तितंचभयानकम् ॥ असीवधारापत्रस्याऽप्युच्चैस्तालतरोरधः ॥७१ ॥ क्रोशार्धमानंकुंडंचपतत्पत्रसमन्वितम् ॥ पापिनांरक्तपूर्णंचवृक्षाग्रात्पततांध्रुवम् ॥ ७२ ॥ परित्राहीतिशब्दंचकुर्वतामसतामपि ॥ गंभीरंध्वांतयुक्तंचरक्तकीटसमन्वितम् ॥ ७३ ॥ तदसीपत्रकुंडंचकीर्तितंचभयानकम् ॥ धनुःशतप्रमाणंचक्षुरधारास्त्रसंयुतम् ॥७४॥ पापिनांरक्तपूर्णंचक्षुरधारंभयानकम् ॥ सूचीमुखास्त्रसंयुक्तंपापिरक्तौघपूरितम् ॥ ७५ ॥ पंचाशद्धनुरायामंक्लेशदंचसूचीमुखम् ॥ कस्यचिज्जंतुभेदस्यगोकाख्यस्यमुखाकृति ॥७६॥ कूपरूपंगभीरंचधनुर्विंशत्प्रमाणकम् ॥ महापातकिनांचैवमहत्क्लेशप्रदंपरम् ॥ ७७ ॥ तत्कीटभक्षितानांचनम्रास्यानांचसंततम् ॥ कुंडंनक्रमुखाकारंधनुःषोडशमानकम् ॥ ७८ ॥ गंभीरंकूपरूपंचपापिनांसंकुलंसदा ॥ धनुःशतप्रमाणंचकीर्तितंगजदंशनम् ॥ ७९ ॥ धनुस्त्रिंशत्प्रमाणंचकुंडंचगोमुखाकृति ॥ पापिनांक्लेशदंशश्वद्गोमुखंपरिकीर्तितम् ॥ ८० ॥ कालचक्रेणसंयुक्तंभ्रममाणंभयानकम् ॥ कुंभाकारंध्वांतयुक्तंद्विगव्यूतिप्रमाणकम् ॥ ८१ ॥ लक्षपौरुषमानंचगंभीरंविस्तृतंसति ॥ कुत्रचित्तप्ततैलंचताम्रादिकुंडमेवच ॥ ८२ ॥ पापिनांचप्रधानैश्चमूर्छितैःकृमिभिर्युतम् ॥ परस्परंचनश्यद्भिःशब्दकृद्भिश्चसंततम् ॥ ८३ ॥ ताडितैर्यमदूतैश्चमुसलैर्मुद्गरैस्तथा ॥ घूर्णमानैःपतद्भिश्चमूर्छितैश्चक्षणंक्षणम् ॥ ८४ ॥ पातितैर्यमदूतैश्चरुदंत्यस्मात्क्षणंपुनः ॥ यावंतःपापिनःसंतिसर्वकुंडेषुसुंदरि ॥ ८५ ॥

कामुखमित्यभिप्रायः ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ तत्कीटभक्षितानांगोकामुखकीटभक्षितानांपातकिनामित्यर्थः ॥ नक्रमुखाकारकुंडमाह । कुंडंनक्रेति ॥७८ ॥ गजदंशकुंडमाह । धनुःशतमिति॥ पापिभिःसंयुतमित्यादिकमत्राऽप्युदाहार्यम् ॥ ७९ ॥ गोमुखाकारंकुंडमाह । धनुस्त्रिंशदिति ॥८०॥ कुंभीपाककुंडमाह । कालचक्रेणेति ॥ कालाकारभयकरचक्रेणेत्यर्थः ॥ ८१ ॥ तस्मिन्कुंभीपाकेऽन्यानिकुंडान्यप्यंतर्भूतानिसंतीत्याह । कुत्रचित्तप्ततैलमिति ॥ ८२ ॥ मूर्छितैःपापिनांप्रधानैःकृमिभिश्चयुतमित्यर्थः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८६ ॥ कालसूत्रकुंडमाह । कालनिर्मितेति ॥ कालेननिर्मितमतिकर्कशंसूत्रमित्यर्थः ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ मत्स्योदकुंडमाह । अवटइति ॥ सएवमत्स्योदइत्यर्थः ॥ तल्लक्षण माह । प्रतप्तेति ॥ चतुर्विंशद्धनुःप्रमाणकंविस्तरेणेत्यर्थः ॥ ९०॥९१॥ धनुःशतेतत्प्रमाणेगर्तेइत्यर्थः ॥९२॥ कृमिकंतुकंकुंडमाह । अरुंतुदेति । अरुंतुदंकृमिकंतुकम् ॥ ९३ ॥ पांसुभो ज्यंकुंडमाह । तप्तपांसुभिरिति ॥ ९४ ॥ पाशवेष्टनंकुंडमाह । पातमात्रेणेति ॥ पतनमात्रेणेत्यर्थः ॥ ९५ ॥ शूलप्रोतमाह । पातमात्रेणेति ॥ ९६ ॥ प्रकंपनंकुंडमाह । पततामिति ॥

ततश्चतुर्गुणाःसंतिकुंभीपाकेचदुःखदे ॥ सुचिरंवध्यमानास्तेभोगदेहाननश्वराः ॥ ८६ ॥ सर्वकंडप्रधानंचकुंभीपाकंप्रकीर्तितम् ॥ कालनिर्मितसूत्रेण निबद्धायत्रपापिनः ॥ ८७ ॥ उत्थापिताश्चदूतैश्चक्षणमेवनिमज्जिताः ॥ निश्वासबद्धाःसुचिरंतथामोहंगताःपुनः ॥ ८८ ॥ अतीवक्लेशसंयुक्तादेहभोगे नसुंदरि ॥ प्रतप्ततोययुक्तंचकालसूत्रंप्रकीर्तितम् ॥ ८९ ॥ अवटःकूपभेदश्चमत्स्योदःसउदाहृतः ॥ प्रतप्ततोयपूर्णंचचतुर्विंशत्प्रमाणकम् ॥ ९० ॥ व्या प्तंमहापातकिभिर्व्यादग्धांगैश्चसंततम् ॥ महूतैस्ताडितैःशश्वदवटोदंप्रकीर्तितम् ॥ ९१ ॥ यत्रोदस्पर्शमात्रेणसर्वव्याधिश्चपापिनाम् ॥ भवेदकस्मा त्पततांयस्मिन्कुंडेधनुःशते ॥ ९२ ॥ अरुंतुदैर्भक्षितैस्तुप्राणिभिर्यच्चसंकुलम् ॥ हाहेतिशब्दंकुर्वद्भिस्तदेवारुंतुदंविदुः ॥ ९३ ॥ तप्तपांसुभिराकीर्णंज्वल द्भिस्तुषदग्धकैः ॥ तद्भक्षैःपापिभिर्युक्तंपांसुभोजैर्धनुःशतम् ॥ ९४ ॥ पातमात्रेणपापीचपाशेनवेष्टितोभवेत् ॥ क्रोशमात्रेणकुंडंचतत्पाशवेष्टनंविदुः ॥ ॥ ९५ ॥ पातमात्रेणपापीचशूलेनवेष्टितोभवेत् ॥ धनुर्विंशत्प्रमाणंचशूलप्रोतंप्रकीर्तितम् ॥ ९६ ॥ पततांपापिनांयत्रभवेदेवप्रकंपनम् ॥ अतीवहिम तोयाक्तंक्रोशार्धंचप्रकंपनम् ॥ ९७ ॥ ददत्येवहिमेदूतायत्रोल्काःपापिनांमुखे ॥ धनुर्विंशत्प्रमाणंतदुल्काभिश्चसुसंकुलम् ॥ ९८ ॥ लक्षपौरुषमानं चगंभीरंचधनुःशतम् ॥ नानाप्रकारकृमिभिःसंयुक्तंचभयानकम् ॥ ९९ ॥ अत्यंधकारव्याप्तंचकूपाकारंचवर्तुलम् ॥ तद्भक्ष्यैःपापिभिर्युक्तंप्रणश्याद्भिः परस्परम् ॥ १०० ॥ तप्ततोयप्रदग्धैश्चज्वलद्भिःकीटभक्षितैः ॥ ध्वांतेनचक्षुषाचांधैरंधकूपःप्रकीर्तितः ॥ १ ॥ नानाप्रकारशस्त्रौघैर्यत्रविद्धाश्चपापिनः ॥ धनुर्विंशत्प्रमाणंचवेधनंतत्प्रकीर्तितम् ॥ २ ॥ दंडेनताडितायत्रममदूतैश्चपापिनः ॥ धनुःषोडशमानंचतत्कुंडंदंडताडनम् ॥ ३ ॥ निरुद्धाश्चमहा जालैर्यथामीनाश्चपापिनः ॥ धनुर्विंशत्प्रमाणंचजालरंध्रंप्रकीर्तितम् ॥ ४ ॥ पततांपापिनांकुंडेदेहश्चूर्णोभवेदिह ॥ लोहबंदीनिबद्धानांकोटिपौरुषमानक म् ॥ ५ ॥ गंभीरंध्वांतसंयुक्तंधनुर्विंशत्प्रमाणकम् ॥ मूर्छितानांजडानांचदेहचूर्णप्रकीर्तितम् ॥ १०६ ॥

॥ ९७ ॥ उल्कामुखंकुंडमाह । ददत्येवहीति उल्काज्वलत्काष्ठानि ॥ ९८ ॥ अंधकूपमाह । लक्षपौरुषमानंचेति ॥ गंभीरमदइत्यर्थः ॥ धनुःशतंविस्तीर्णम् ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ वेधनंकुंडमाह । नानाप्रकारेति ॥ २ ॥ ताडनंकुंडमाह । दंडेनेति ॥ ३ ॥ जालरंध्रकुंडमाह । निरुद्धाइति ॥ ४ ॥ देहचूर्णकुंडमाह । पततांपापिनामिति ॥ लोहबंदीलोहबेडीति भाषया ॥ ५ ॥ धनुर्विंशत्प्रमाणंविस्तृत्या ॥ १०६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दलनकुंडमाह । दलिताइति ॥ १०७ ॥ शोषणंकुंडमाह । पतनेनैवेति ॥ ८ ॥ ९ ॥ कषंकुंडमाह । नानाचर्मेति ॥ १० ॥ शूर्पकुंडमाह । शूर्पाकारमुखमिति ॥ ११ ॥ १२ ॥ ज्वालामुखंकुंडमाह । प्रतप्तवालुकेति ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ धूम्रांधंकुंडमाह । तप्तेष्टकाभ्यंतरितमिति ॥ १६ ॥ नागवेष्टनंकुंडमाह । पातमात्राद्यत्रेति ॥ १७ ॥ १८ ॥ इतिश्री देवीभागवततिलकेनवमस्कंधेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ नवतिश्लोकवर्यैश्चषट्पद्यैःसंयुतैस्तथा ॥ देव्याःकृत्वामहोत्कर्षभक्तिरूपंचवर्ण्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेनानायातनाप्रदानिकुंडानि श्रुत्वाऽतिभीतासावित्रीदेवीभक्त्यासर्वमिदंभयादिकंनश्यतीतिधर्मराजवदनात्पूर्वंश्रुत्वाययाभक्त्यासर्वमिदंनश्यद्विसाभक्तिरेवप्रथमंगुरुप्रसादंविनादुर्लभेत्यभिप्रायेणधर्मराजंगुरुंप्रतिदेवीभक्ति मेवयाचते । देवीभक्तिंदेहीति ॥ गुरुप्रसादमंतरासादुर्लभाऽस्तीतित्वमेवप्रसादंकृत्वादेहीत्यभिप्रायः ॥ भक्तिमेववर्णयति । पुंसामिति ॥ द्वारबीजंभक्तिरूपंवस्त्विवतिशेषः ॥ नपुंसकप्रयो

दलिताःपापिनोयत्रममदूतैश्चताडिताः॥धनुःषोडशमानंचतत्कुंडंदलनंस्मृतम् ॥१०७॥ पतनेनैवपापीचशुष्ककंठोष्ठतालुकः॥वालुकासुचतप्तासुधनुस्त्रिंशत्प्रमाणकम् ॥८॥ शतपौरुषमानंचगंभीरंध्वांतसंयुतम् ॥ षोषणंकुंडमेतद्धिपापिनांपरदुःखदम् ॥ ९ ॥ नानाचर्मकषायोदपरिपूर्णंधनुःशतम् ॥ दुर्गंधियुक्तंतद्भक्ष्यैःप्राणिभिःसंकुलंकषम् ॥ ११० ॥ शूर्पाकारमुखंकुंडंधनुर्द्वादशमानकम् ॥ तप्तलोहवालुकाभिःपूर्णंपाताकिसंयुतम् ॥११ ॥ दुर्गंधियुक्तंतद्भक्ष्यैःपापिभिःसंकलंसति ॥ शूर्पाकारमुखंकुंडंधनुर्द्वादशमात्रकम् ॥ १२ ॥ प्रतप्तवालुकापूर्णंमहापाताकिभिर्युतम् ॥ अंतरग्निशिखानांचज्वालाव्याप्तमुखंसदा ॥ १३ ॥ धनुर्विंशतिमात्रंचप्रमाणंयस्यसुंदरि ॥ ज्वालाभिर्दग्धगात्रैश्चपापिभिर्व्याप्तमेवच ॥ १४ ॥ तन्महाक्लेशदेशश्चत्कुंडेज्वालामुखेस्मृतम् ॥ पातमात्राद्यत्रपापीमूर्छितोवैनरोभवेत् ॥१५॥ तप्तेष्टकाभ्यंतरितंवाप्यर्धंजिह्मकुंडकम् ॥ धूम्रांधकारसंयुक्तंधूम्रांधैःपापिभिर्युतम् ॥१६॥ धनुःशतंश्वासरंध्रैर्धूम्रांधंपरिकीर्तितम् ॥ पातमात्राद्यत्रपापीनागैश्चवेष्टितोभवेत् ॥ १७ ॥ धनुःशतंनागपूर्णंतन्नागैर्वेष्टितंभवेत् ॥ षडशीतिचकुंडानिमयोक्तानिनिशामय ॥ १८ ॥ लक्षणंचाऽपितेषांचकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ इतिश्रीदे०म०न० नारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ सावित्र्युवाच ॥ देवीभक्तिंदेहिमह्यंसाराणांचैवसारकम् ॥ पुंसांमुक्तिद्वारबीजंनरकार्णवतारकम् ॥१॥ कारणंमुक्तिसाराणांसर्वाशुभविनाशनम् ॥ दारकंकर्मवृक्षाणांकृतपापौघहारणम् ॥२॥ मुक्तिश्चकतिधाप्यस्तिकिंवातासांचलक्षणम् ॥ देवीभक्तिंभक्तिभेदंनिषेकस्याऽपिखंडनम् ॥ ३ ॥ तत्त्वज्ञानविहीनाचस्त्रीजातिर्विधिनिर्मिता ॥ किंचिज्ज्ञानंसारभूतंवदवेदविदांवर ॥ ४ ॥

गात् ॥ १ ॥ २ ॥ किंचमुक्तयःकतिविधाःसंतितासांलक्षणंचकिंतथाभक्तेःस्वरूपंकितद्भेदाश्चकतिसंतितथानिषेकःकृतकर्मणांभोगोवक्ष्यमाणलक्षणस्तस्यखंडनंनाशनंचकेनभवतितदेतत्सर्वंवदेत्यभिप्रायेणपृच्छति । मुक्तिश्चेति ॥३ ॥ ननुत्वमेववुद्ध्याजानीहीतिचेत्तत्राऽऽह । तत्वज्ञानोति ॥ विधिनादैवेनस्त्रीजातिर्वेदशास्त्रानधिकारिण्यतिमूढानिर्मिता ॥ तथाचतादृशीसा कथमतिसूक्ष्मंवस्तुस्ववुद्ध्याज्ञातुंसमर्थेतिभावः ॥ ननुतादृश्यामूढयामयापिकिंवक्तव्यमितिचेत्तत्राऽऽह । किंचिज्ज्ञानमिति ॥ केवलंसारभूतंवस्तुगुर्वनुग्रहवशान्मूढेनापिज्ञातुंशक्यते तर्कादिकमेवतुवुद्धिसाध्यंतन्नास्तिचेन्मास्त्विवतिभावः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनइति ॥ वेदविदांवरेत्यनेननचिकेतसेवालकायत्वयैवकृपयाब्रह्मविद्योपदिष्टा तयाचसज्ञानिप्रवरोजातइतिकठवल्ल्युक्ताकथासूचिता ॥ ४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मादृश्याःपामरायाअनाथायाउद्धारेमहतीधर्मवृद्धिस्तवस्यादित्याह । सर्वदानंचेति ॥ अनेनचोपदेश्यवस्तुनःसर्वसारभूतत्वंस्वस्यचतास्मिन्नातुरतासूचिता ॥ ५ ॥ ननुतवपरमेश्वरेयद्यपि प्रेमाऽस्तितथापिगुरौनास्तीतिचेत्तत्राऽऽह । पितुःशतगुणेति ॥ मनसात्वयिप्रेमानिरतिशयएवममाऽस्ति बाह्यंसेवादिकंतुतवपरमेश्वरस्यमयाकिंकर्तुंशक्यतइतिभावः ॥ ६ ॥ इत्थंसावित्री वाक्यंश्रुत्वाहृदयेसगद्गदोधर्मराजआह । धर्मराजउवाच पूर्वंसर्वइति ॥ हेवत्से यत्त्वयाज्ञानंप्रार्थ्यतेसवांछितस्तेमनसिविद्यमानोवरोमयापूर्वमेवदत्तोनाऽतःपरमधिकंज्ञानमस्ति तत्रैवविश्वासं कुर्वितिभावः ॥ यस्याभगवत्याःप्रसादेनतत्त्वज्ञानंजायतेतद्भक्तिरधुनाप्रार्थ्यतेचेत्साऽपिमद्वरप्रसादाद्भवत्वित्याह । अधुनाशक्तिभक्तिस्तेइति ॥ ७ ॥ अथयदिमूलप्रकृतेर्जगन्मातुर्गुणश्रव णेतववांछाऽस्तिचेत्तत्राह । श्रोतुमिच्छसीति ॥ ८ ॥ तस्यागुणवर्णनंतुमहतामपिदुःशकमित्याह । शेषोवक्त्रसहस्रेणेति ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ यद्गुणानांयस्याभगवत्यागुणानामित्यर्थः

सर्वदानंचयज्ञश्चतीर्थस्नानंव्रतंतपः ॥ अज्ञानिज्ञानदानस्यकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ ५ ॥ पितुःशतगुणामातागौरवेचेतिनिश्चितम् ॥ मातुःशतगुणःपू ज्योज्ञानदातागुरुःप्रभो ॥ ६ ॥ धर्मराजउवाच ॥ पूर्वंसर्वोवरोदत्तोयस्तेमनसिवांछितः ॥ अधुनाशक्तिभक्तिस्तेवत्सेभवतुमद्वरात् ॥ ७ ॥ श्रोतुमि च्छसिकल्याणिश्रीदेवीगुणकीर्तनम् ॥ वक्तॄणांपृच्छकानांचश्रोतॄणांकुलतारणम् ॥८॥ शेषोवक्त्रसहस्रेणनहियद्वक्तुमीश्वरः॥मृत्युंजयोनक्षमश्चवक्तुंपंचमु खेनच ॥ ९ ॥ धाताचतुर्णांवेदानांविधाताजगतामपि ॥ ब्रह्माचतुर्मुखेनैवनाऽलंविष्णुश्चसर्ववित् ॥ १० ॥ कार्तिकेयःषण्मुखेननाऽपिवक्तुमलं ध्रुवम् ॥ नगणेशःसमर्थश्चयोगींद्राणांगुरोर्गुरुः ॥ ११ ॥ सारभूताश्चशास्त्राणांवेदाश्चत्वारएवच ॥ कलामात्रंयद्गुणानांनविदंतिबुधाश्चये ॥१२॥ सरस्व तीजडीभूतानाऽलंतद्गुणवर्णने ॥ सनत्कुमारोधर्मश्चसनंदनश्चसनातनः ॥ १३ ॥ सनकःकपिलःसूर्योयेऽन्येचब्रह्मणःसुताः ॥ विचक्षणानयद्वक्तुंकिंचा न्येजडबुद्धयः ॥ १४ ॥ नयद्वक्तुंक्षमाःसिद्धामुनींद्रायोगिनस्तथा ॥ केचाऽन्येचवयंकेवाश्रीदेव्यागुणवर्णने ॥ १५ ॥ ध्यायंतेयत्पदांभोजंब्रह्मविष्णुशि वादयः ॥ अतिसाध्यंस्वभक्तानांतदन्येषांसुदुर्लभम् ॥ १६ ॥ कश्चित्किंचिद्विजानातितद्गुणोत्कीर्तनंशुभम् ॥ अतिरिक्तंविजानातिब्रह्माब्रह्मविशार दः ॥ १७ ॥ ततोऽतिरिक्तंजानातिगणेशोज्ञानिनांगुरुः ॥ सर्वातिरिक्तंजानातिसर्वज्ञःशंभुरेवसः ॥ १८ ॥ तस्मैदत्तंपुराज्ञानंकृष्णेनपरमात्मना ॥ अतीवनिर्जनेऽरण्येगोलोकेरासमंडले ॥ १९ ॥ तत्रैवकथितंकिंचित्तद्गुणोत्कीर्तनंशुभम् ॥ धर्मंचकथयामासशिवलोकेशिवःस्वयम् ॥ २० ॥ धर्मस्तु कथयामासभास्वतेपृच्छतेतथा ॥ यामाराध्यमत्पिताऽपिसंप्रापतपसासति ॥ २१ ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ लोकेषुकश्चिन्मनुष्यःकिंचिद्विजानातितदपेक्षयाऽतिरिक्तमधिकंतुब्रह्माविजानातीत्याह । कश्चिदिति ॥ १७ ॥ तदपेक्षयाऽधिकंगणेशोजानाती त्याह । ततोऽतिरिक्तामिति ॥ १८ ॥ १९ ॥ तत्रैवगोलोकेएवतद्गुणोत्कीर्तनंभगवतीगुणोत्कीर्तनंश्रीकृष्णेनशिवंप्रतिकथितमित्यर्थः ॥ धर्मंचेति ॥ तच्छ्रुत्वातस्याःदेव्याःप्रापकंधर्मंतं त्रादिपुशिवःशिवलोकमागत्यकथयामासेत्यर्थः ॥ २० ॥ तमेवधर्मंपृच्छतेभास्वतेसूर्यायधर्ममूर्तिर्भगवान्कथयामासेत्याह । धर्मस्त्विति ॥ यांभगवतीमाराध्यमत्पितासूर्यस्तपसाप्रापभग वतीस्वरूपामितिशेषः ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

स्वंविषयंयमलोकाधिपत्यंदेवैर्दीयमानंनगृह्णामिनगृहीतवान् ॥ कृतोयतोऽहंवैराग्ययुक्तस्ततोलोकानांपीडाकरमधिकारंकथंग्रहीष्यामि किंतु तपसेगंतुमिच्छामिइच्छांकृतवान् ॥ २२ ॥ तदामामिति ॥ यदैवमिच्छांकृतवांस्तदामत्पितासूर्यस्तस्याभगवत्यागुणकीर्तनंस्वरूपानुभवोयेनभवतितथातत्कृतवांस्तदाऽहंभगवतीस्वरूपज्ञानेनानिर्भयभूत्वाऽधिकारंयमलोकस्यकृतवानित्यर्थः ॥ तदेवमत्पित्रोपदिष्टंत्वांप्रतिकथयामीत्याह । यथागममिति ॥ २३ ॥ तद्गुणमिति ॥ सैवस्वयंभगवतीस्वस्यगुणंनजानातितदन्यस्यतुकाकथा तथापियथामतिवक्ष्यामीतिभावः ॥ तत्रदृष्टांतमाह । यथाऽऽकाशइति ॥ २४ ॥ मायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्याभगवत्याःस्वरूपंप्रथमतःसकलकारणकारणंवर्णयति सर्वात्मेति ॥ २५ ॥ नित्योदेहःस्वरूपंयस्य ॥ २६ ॥ सएव परमात्मामायाविशिष्टः प्रकृतिर्मूलप्रकृतिर्भगवतीत्यर्थः ॥ यथागजशरीरेप्रविष्टचैतन्यस्यगजेतिसंज्ञातथामायाशरीरेप्रविष्टचैतन्यस्यमायाप्रकृतिरितिसंज्ञेइतिभावः ॥ तस्याविकाराःप्राकृत

पूर्वंस्वंविषयंचाऽहंनगृह्णामिप्रयत्नतः ॥ वैराग्ययुक्तस्तपसेगंतुमिच्छामिसुव्रते ॥ २२ ॥ तदामांकथयामासपितातद्गुणकीर्तनम् ॥ यथागमंतद्वदामिनिबोधाऽतीवदुर्गमम् ॥ २३ ॥ तद्गुणंसानजानातितदन्यस्यचकाकथा ॥ यथाकाशोनजानातिस्वांतमेववरानने ॥ २४ ॥ सर्वात्मासर्वभगवान्सर्वकारणकारणः ॥ सर्वेश्वरश्चसर्वाद्यःसर्ववित्परिपालकः ॥ २५ ॥ नित्यरूपीनित्यदेहीनित्यानंदोनिराकृतिः ॥ निरंकुशोनिराशंकोनिर्गुणश्चनिरामयः ॥ २६ ॥ निर्लिप्तःसर्वसाक्षीचसर्वाधारःपरात्परः ॥ मायाविशिष्टःप्रकृतिस्तद्विकाराश्चप्राकृताः ॥ २७ ॥ स्वयंपुमांश्चप्रकृतिस्तावभिन्नौपरस्परम् ॥ यथावह्नेस्तस्यशक्तिर्नभिन्नाऽस्त्येवकुत्रचित् ॥ २८ ॥ सेयंशक्तिर्महामायासच्चिदानंदरूपिणी ॥ रूपंबिभर्त्यरूपाचभक्तानुग्रहहेतवे ॥ २९ ॥ गोपालसुंदरीरूपंप्रथमंसाससर्जह ॥ अतीवकमनीयंचसुंदरंसुमनोहरम् ॥ ३० ॥ नवीननीरदश्यामंकिशोरंगोपवेषकम् ॥ कंदर्पकोटिलावण्यंलीलाधाममनोहरम् ॥ ३१ ॥ शरन्मध्याह्नपद्मानांशोभामोचनलोचनम् ॥ शरत्पार्वणकोटींदुशोभाप्रच्छादनाननम् ॥ ३२ ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणनानाभूषणभूषितम् ॥ सस्मितंशोभितंशश्वदमूल्यपीतवाससा ॥ ३३ ॥ परब्रह्मस्वरूपंचज्वलंतंब्रह्मतेजसा ॥ सुखदृश्यंचशांतंचराधाकांतमनंतकम् ॥ ३४ ॥ गोपीभिर्वीक्ष्यमाणंचसस्मिताभिश्चसंततम् ॥ रासमंडलमध्यस्थंरत्नसिंहासनस्थितम् ॥ ३५ ॥ वंशींक्वणंतंद्विभुजंवनमालाविभूषितम् ॥ कौस्तुभेंद्रमणींद्रेणशश्वद्वक्षःस्थलोज्ज्वलम् ॥ ३६ ॥

पदवाच्याःसर्वेभवंतीत्यर्थः ॥ २७ ॥ तदेवोपपादयति ॥ स्वयंपुमांश्चेति ॥ स्वयमेवाऽऽत्माप्रकृतियोगात्प्रकृतिशब्दवाच्यइत्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ सासर्वकारणभूतामूलप्रकृतिःसृष्टिसमयेभूतोत्पत्तिक्रमेणब्रह्मांडंसृष्ट्वाभक्तानुग्रहार्थंनानारूपाणिबभार तत्रकस्मिंश्चित्कल्पेगोपालसुंदरीरूपमेवप्रथमतोबभारेत्याह । गोपालसुंदरीति ॥ तदुक्तंतंत्रराजे ॥ कदाचिदाद्यालितापुंरूपाकृष्णविग्रहेति ॥ कूर्मपुराणेऽपि प्रकृत्याःप्रथमोभागउमादेवीयशस्विनी ॥ व्यक्तःसर्वमयोविष्णुःस्त्रीसंज्ञोलोकभावनइति ॥ गोपालसुंदरीसखीवेषधारीश्रीकृष्णः ॥ कृष्णध्यानमाह । अतीवेति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ इंद्रायुश्चेति ॥ तदुक्तंप्रपंचसारे ॥ युगानामेकसप्तत्यामन्वंतरमिहोच्यते ॥ ब्रह्मणोदिवसेप्रोक्तामनवस्तुचतुर्दश ॥ तावतीतस्यरात्रिश्चकथिताकालवेदिभिः ॥ तथाविधंतदब्दानांशतंत्वमपिजीवसीत्यंतम् ॥ ५० ॥ वयःस्मृतमिति ॥ एवंशतवर्षपरिमितमितिशेषः

कुंकुमागुरुकस्तूरीचंदनार्चितविग्रहम् ॥ चारुचंपकमालाक्तंमालतीमाल्यमंडितम् ॥ ३७ ॥ चारुचंद्रकशोभाढ्यंचूडावंक्रिमराजितम् ॥ एवंभूतंचध्यायं तभक्ताभक्तिपरिप्लुताः ॥ ३८ ॥ यद्भयाज्जगतांधाताविधत्तेसृष्टिमेवच ॥ कर्मानुसाराल्लिखितंकरोतिसर्वकर्मणाम् ॥ ३९ ॥ तपसांफलदाताचकर्मणां चयदाज्ञया ॥ विष्णुःपाताचसर्वेषांयद्भयात्पातिसंततम् ॥४०॥ कालाग्निरुद्रःसंहर्तासर्वविश्वेषुयद्भयात् ॥ शिवोमृत्युंजयश्चैवज्ञानिनांचगुरोर्गुरुः ॥ ४१ ॥ यज्ज्ञानाज्ज्ञानवानस्तियोगीशोज्ञानवित्प्रभुः ॥ परमानंदयुक्तश्चभक्तिवैराग्यसंयुतः ॥ ४२ ॥ यद्भयाद्वातिपवनःप्रवरःशीघ्रगामिनाम् ॥ तपनश्चप्र तपतियद्भयात्संततंसति ॥ ४३ ॥ यदाज्ञयावर्षतींद्रोमृत्युश्चरतिजंतुषु ॥ यदाज्ञयादहेद्वह्निर्जलमेवंसुशीतलम् ॥ ४४ ॥ दिशोरक्षंतिदिक्पालामहाभी तायदाज्ञया ॥ भ्रमंतिराशिचक्राणिग्रहाश्चयद्भयेनच ॥ ४५ ॥ भयात्फलंतिवृक्षाश्चपुष्यंत्यपिचयद्भयात् ॥ यदाज्ञांतुपुरस्कृत्यकालःकालेहरेद्भयात् ॥ ॥ ४६ ॥ तथाजलस्थलस्थाश्चनजीवंतियदाज्ञया ॥ अकालेनाहरेद्विद्धंरणेषुविषमेषुच ॥ ४७ ॥ धत्तेवायुस्तोयराशिंतोयंकूर्मतदाज्ञया ॥ कूर्मोनंतं सचक्षोणींसमुद्रान्साचपर्वतान् ॥ ४८ ॥ सर्वांचैवक्षमारूपानानारत्नंबिभर्तिया ॥ यतःसर्वाणिभूतानिस्थीयंतेहंतितत्रहि ॥ ४९ ॥ इंद्रायुश्चैवदिव्या नांयुगानामेकसप्ततिः ॥ अष्टाविंशेशक्रपातेब्रह्मणश्चदिवानिशम् ॥ ५० ॥ एवंत्रिंशद्दिनैर्मासोद्वाभ्यामाभ्यामृतुःस्मृतः ॥ ऋतुभिःषड्भिरेवाब्दंब्रह्म णोवैवयःस्मृतम् ॥ ५१ ॥ ब्रह्मणश्चनिपातेचचक्षुरुन्मीलनंहरेः ॥ चक्षुरुन्मीलनेतस्यलयंप्राकृतिकंविदुः ॥ ५२ ॥ प्रलयेप्राकृतेसर्वेदेवाद्याश्चचरा चराः ॥ लीनाधाताविधाताचश्रीकृष्णनाभिपंकजे ॥ ५३ ॥ विष्णुःक्षीरोदशायीचवैकुंठेयश्चतुर्भुजः ॥ विलीनोवामपार्श्वेचकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ ॥ ५४ ॥ यस्यज्ञानेशिवोलीनोज्ञानाधीशःसनातनः ॥ दुर्गायांविष्णुमायायांविलीनाःसर्वशक्तयः ॥ ५५ ॥ साचकृष्णस्यबुद्धौचबुद्ध्यधिष्ठातृदेवता ॥ नारायणांशःस्कंदश्चलीनोवक्षसितस्यच ॥ ५६ ॥ श्रीकृष्णांशश्चतद्वाहौदेवाधीशोगणेश्वरः ॥ पद्मांशाश्चैवपद्मायांसाराधायांचसुव्रते ॥ ५७ ॥ गोप्यश्चाऽपिचतस्यांचसर्वाश्चदेवयोषितः ॥ कृष्णप्राणाधिदेवीसातस्यप्राणेषुसंस्थिता ॥ ५८ ॥ सावित्रीचसरस्वत्यांवेदाःशास्त्राणियानिच ॥ स्थिता वाणीचजिह्वायांतस्यैवपरमात्मनः ॥ ५९ ॥ गोलोकस्यचगोपाश्चविलीनास्तस्यलोमसु ॥ तत्प्राणेषुचसर्वेषांप्राणवाताहुताशनाः ॥ ६० ॥ जठराग्नौ विलीनाश्चजलंतद्रसनाग्रतः ॥ वैष्णवाश्चरणांभोजेपरमानंदसंयुताः ॥ ६१ ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

विराडंशाश्चमहतीति ॥ क्षुद्रविराड्रूपाणिमहतिमहाविराड्रूपेलीनानीत्यर्थः ॥ अत्रनवमस्कंधेप्रथमाऽध्यायेयस्माद्यस्माद्यस्योत्पत्तिरुक्तातस्मिन्नेवतस्यलयउक्तइतिबोध्यम् ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ एतादृशंमहावैभववान्कृष्णस्तयामूलप्रकृत्यासृष्टिसमयेप्रथममुत्पादितः ॥ सप्रलयसमयेतस्यामेवविलीनोभवतीत्याह । सकृष्णइति ॥ ६७ ॥ तत्रश्रुतिंप्रमाणयति । सदेवेदमिति ॥ ६८ ॥६९॥ एतादृश्यामूलप्रकृत्यागुणकीर्तनंकर्तुंकःसमर्थोनकोऽपीत्याह । तद्गुणोत्कीर्तनमिति ॥ अधुनासावित्र्यापृष्टान्मुक्तिभेदानाह । मुक्तयश्चेति ॥७०॥ मुक्त्यपेक्षयाभक्तिर्गरीयसीतिभक्तौश्रद्धोत्पादनार्थमुक्त्वामुक्तिभेदानाह । तत्प्रधानेति ॥ मुक्त्यपेक्षयाप्रधानेत्यर्थः ॥ ७१ ॥ विभोर्मूलप्रकृतेःसेवनंविनेत्यर्थः ॥ ७२ ॥ शिवत्वादीन्यपि

सारात्सारतराभक्तिरसपीयूषपायिनः ॥ विराडंशाश्चमहतिलीनाःकृष्णेमहाविराट् ॥ ६२ ॥ यस्यैवलोमकूपेषुविश्वानिनिखिलानिच ॥ यस्यचक्षुषउन्मेषेप्राकृतःप्रलयोभवेत् ॥ ६३ ॥ चक्षुरुन्मीलनेसृष्टिर्यस्यैवपुनरेवसः ॥ यावत्कालोनिमेषेणतावदुन्मीलनेनच ॥ ६४ ॥ ब्रह्मणश्चशताब्देचसृष्टेःसूत्रलयःपुनः ॥ ब्रह्मसृष्टिलयानांचसंख्यानास्त्येवसुव्रते ॥ ६५ ॥ यथाभूरजसांचैवसंख्यानंनैवविद्यते ॥ चक्षुर्निमेषेप्रलयोयस्यसर्वांतरात्मनः ॥ ६६ ॥ उन्मीलनेपुनःसृष्टिर्भवेदेवेश्वरेच्छया॥सकृष्णःप्रलयेतस्यांप्रकृतौलीनएवहि॥६७॥एकैवचपराशक्तिर्निर्गुणःपरमःपुमान् ॥ सदेवेदमग्रआसीदितिवेदविदोविदुः ॥ ६८ ॥ मूलप्रकृतिरव्यक्ताऽप्यव्याकृतपदाभिधा ॥ चिदभिन्नत्वमापन्नाप्रलयेसैवतिष्ठति ॥ ६९ ॥ तद्गुणोत्कीर्तनंवक्तुंब्रह्मांडेषुचकःक्षमः॥मुक्तयश्चचतुर्वेदैर्निरुक्ताश्चचतुर्विधाः॥७०॥तत्प्रधानादेवभक्तिर्मुक्तेरपिगरीयसी ॥ सालोक्यदाभवेदेकातथासारूप्यदापरा॥७१॥सामीप्यदाऽथनिर्वाणप्रदामुक्तिश्चतुर्विधा ॥ भक्तास्तानहिवांछंतिविनातत्सेवनंविभोः ॥ ७२ ॥ शिवत्वममरत्वंचब्रह्मत्वंचाऽवहेलया ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिभयशोकादिकंधनम् ॥ ७३ ॥ दिव्यरूपधारणंचनिर्वाणंमोक्षणंविदुः ॥ मुक्तिश्चसेवारहिताभक्तिःसेवाविवर्धिनी ॥७४॥ भक्तिमुक्त्योरयंभेदोनिषेकखंडनंशृणु॥विदुर्बुधानिषेकंचभोगंचकृतकर्मणाम्॥७५॥तत्खंडनंचशुभदंश्रीविभोःसेवनंपरम्॥तत्त्वज्ञानमिदंसाध्विस्थिरंचलोकवेदयोः॥७६॥निर्विघ्नंशुभदंचोक्तंगच्छवत्सेयथासुखम्॥इत्युक्त्वासूर्यपुत्रश्चजीवयित्वाचतत्पतिम्॥७७॥तस्यैशुभाशिषंदत्वागमनंकर्तुमुद्यतः॥दृष्ट्वायमंचगच्छंतंसासावित्रीप्रणम्यच।७८।रुरोदचरणौधृत्वासाधुच्छेदेनदुःखिता॥सावित्रीरोदनंश्रुत्वायमश्चैवकृपानिधिः॥७९॥तामित्युवाचसंतुष्टःस्वयंचैवरुरोदह॥धर्मउवाच॥लक्षवर्षंसुखंभुक्त्वापुण्यक्षेत्रेचभारते ॥८० ॥

निर्वाणमोक्षांतानिस्थानानिभक्तास्तुच्छतयाविदुरित्याह ॥ शिवत्वमिति ॥ ७३ ॥ विदुस्तुच्छतयेतिशेषः ॥ कुतोभक्तानांमुक्त्यपेक्षयाभक्तौनिर्भरइतिचेत्तत्रहेतुमाह ॥ मुक्तिश्चेति ॥ अत्रयतइतिशेषः ॥ ७४ ॥ निषेकखंडनस्यस्वरूपंसावित्र्यापृष्टंवक्तुंप्रथमतोनिषेकस्वरूपंवक्ति ॥ विदुर्बुधाइति ॥ ७५ ॥ श्रीविभोर्मूलप्रकृतेःसेवनंसर्वकृतकर्मणांनिषेकपदवाच्यानांखंडनंनाशनमित्यर्थः ॥ तस्मात्तदेवसर्वैराश्रयणीयमितिभावः ॥ उपसंहरति । तत्त्वज्ञानमिति ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ साधुच्छेदेनसाधुवियोगेन ॥ ७९ ॥ एतादृशींसुशीलांकन्यांपुनःकदाऽहंद्रक्ष्यामीतिकन्यावियोगजन्यदुःखेनयमोऽपिरोदनंकृतवानित्याह । स्वयंचैवरुरोदहेति ॥ तदुक्तम् ॥ पुत्रात्प्रियतरःशिष्योयदियोग्यगुणोभवेदिति ॥ ८० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तल्लोकंदेवीलोकंमणिद्वीपसंज्ञकम् ॥ इतःपरंत्वंगृहंगत्वाऽन्यत्सर्वंहित्वादेवीव्रतानिकुर्वित्याह । गत्वेति ॥ देवीव्रतान्याह । सावित्र्याश्चेति ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ विभोःपदंमूलप्रकृतेः स्थानम् ॥ मंगलदायिनींमंगलचंडिकाम् ॥ ८४ ॥ षष्ठींदेवसेनाभिधाम् ॥ ८५ ॥ कार्तिक्यांकार्तिकपौर्णमास्यांराधाम् ॥ शुक्लाष्टम्यामितिदुर्गाव्रतम् ॥ तदुक्तमीशानसंहितायाम् ॥ एकादशीकोटिसहस्रतुल्याजन्माष्टमीपर्वतराजपुत्र्याः ॥ ततोऽपिशुक्लागुणिताशतेनपराशरव्यासवसिष्ठमुख्यैरिति ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ एतादेवतास्तदुक्तदिनेषुयंत्रेषुप्रतिमासुवायानारीपूजयेदितिसर्वत्राद्वितीयांतपदानामत्राऽन्वयः ॥ ८८ ॥ विभोःपदंमूलप्रकृतेःस्थानम् ॥ ८९ ॥ इत्थंव्रतानिकुर्वंतीसर्वकालंमूलप्रकृतिंश्रीभुवनेश्वरींभजेत्याह । सर्वकालमिति ॥ नातःपरतरमिति ॥ देवीभजनादधिकंकृतकृत्यत्वदायकंनैवाऽस्तिततस्तत्कृत्वावत्सेतिष्ठ शांताभव ॥ अहंगुरुस्त्वद्धृदयेचैतन्यरूपेणतिष्ठामिततोमद्वियोगजन्यखेदेनरोदनंमाकुर्वितिभावः ॥ ९० ॥

अंतेयास्यसितल्लोकंयत्रदेवीविराजते ॥ गत्वाचस्वगृहंभद्रेसावित्र्याश्चव्रतंकुरु ॥ ८१ ॥ द्विसप्तवर्षपर्यंतंनारीणांमोक्षकारणम् ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांसावित्र्याश्चव्रतंशुभम् ॥ ८२ ॥ शुक्लाष्टम्यांभाद्रपदेमहालक्ष्म्यायथाव्रतम् ॥ द्व्यष्टवर्षंव्रतंचैवप्रत्यादेयंशुचिस्मिते ॥ ८३ ॥ करोतिभक्त्यायानारीसायातिचविभोःपदम् ॥ प्रतिमंगलवारेचदेवींमंगलदायिनीम् ॥ ८४ ॥ प्रतिमासंशुक्लषष्ठ्यांषष्ठींमंगलदायिनीम् ॥ तथाचाऽऽषाढसंक्रांत्यांमनसांसर्वसिद्धिदाम् ॥ ८५ ॥ राधांरासेचकार्तिक्यांकृष्णप्राणाधिकप्रियाम् ॥ उपोष्यशुक्लाष्टम्यांचप्रतिमासंवरप्रदाम् ॥ ८६ ॥ विष्णुमायांभगवतींदुर्गांदुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ प्रकृतिंजगदंबांचपतिपुत्रवतीषुच ॥ ८७ ॥ पतिव्रतासुशुद्धासुयंत्रेषुप्रतिमासुच ॥ यानारीपूजयेद्भक्त्याधनसंतानेहतवे ॥ ८८ ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वायात्यंतेश्रीविभोःपदम् ॥ एवंदेव्याविभूतीश्चपूजयेत्साधकोऽनिशम् ॥ ८९ ॥ सर्वकालंसर्वरूपासंसेव्यापरमेश्वरी ॥ नातःपरतरंकिंचित्कृतकृत्यत्वदायकम् ॥ ९० ॥ इत्युक्त्वातांधर्मराजोजगामनिजमंदिरम् ॥ गृहीत्वास्वामिनंसाचसावित्रीचनिजालयम् ॥ ९१ ॥ सावित्रीसत्यवांश्चैवप्रययौचयथागमम् ॥ अन्यांश्चकथयामासस्ववृत्तांतंहिनारद ॥ ९२ ॥ सावित्रीजनकःपुत्रान्संप्राप्तःप्रक्रमेणच ॥ श्वशुरश्चक्षुषीराज्यंसाचपुत्रान्वरेणच ॥ ९३ ॥ लक्षवर्षंसुखंभुक्त्वापुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ जगामस्वामिनासार्धंदेवीलोकंपतिव्रता ॥ ९४ ॥ सवितुश्चाधिदेवीयामंत्राधिष्ठातृदेवता ॥ सावित्रीह्यपिवेदानांसावित्रीतेनकीर्तिता ॥ ९५ ॥ इत्येवंकथितंवत्ससावित्र्याख्यानमुत्तमम् ॥ जीवकर्मविपाकंचकिंपुनःश्रोतुमिच्छसि ॥ ९६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेअष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

॥ ९१ ॥ अन्यान्स्वबांधवान् ॥ ९२ ॥ जनकःपितासाचसावित्री ॥ ९३ ॥ देवीलोकंमणिद्वीपम् ॥ ९४ ॥ सावित्रीपदनिरुक्तिमाह । सवितुश्चेति ॥ सूर्यमंडलात्मकसवितुराधिदेवी तदंतर्यामिब्रह्मरूपिणी मंत्रःसूर्यांतर्गतब्रह्मप्रतिपादकोगायत्रीरूपस्तदधिष्ठात्रीचदेवतायतस्ततोभगवत्यागायत्र्याःसावित्रीनामेत्यर्थः ॥ सवितुरियंसावित्रीतिव्युत्पत्तेः ॥ किंचवेदानांसावित्रीजननीतेषामुत्पादनकर्त्रीभवतिततोऽपिसावित्रीनामेत्याह । सावित्रीह्यपीति ॥ सूयतेप्राणिप्रसवंकरोतीतिसासावित्रीतिव्युत्पत्तेः ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलके नवमस्कंधेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अर्धाधिकैस्त्रयस्त्रिंशत्पद्यैरथसविस्तरम् ॥ महालक्ष्म्याउपाख्यानंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ सावित्र्युपाख्यानानंतरंमहालक्ष्म्याउपाख्यानंपृच्छति । श्रीमूलप्रकृतेरिति ॥ मूलप्रकृतेर्गायत्र्याश्चयशःश्रुतमित्यन्वयः ॥ १ ॥ २ ॥ केनकर्त्राकिंभूताकिंस्वरूपाकेनमंत्रेणस्तोत्रेणचेत्यर्थः ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तंवृत्तंकथयति ॥ सृष्टेरादाविति ॥ देवीराधावामांसः कृष्णस्यवामांशइत्यपि पाठः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ यथैवराधायागुणास्तथैवलक्ष्म्याअपिगुणाइत्याह । स्वीयरूपेणेति ॥ ८ ॥ ९ ॥ चकमेद्विभुजमित्यर्थः ॥ १० ॥ तद्गौरवेणराधायागौरवेण ॥ ११ ॥

नारदउवाच ॥ श्रीमूलप्रकृतेर्देव्यागायत्र्यास्तुनिराकृतेः ॥ सावित्रीयमसंवादेश्रुतंवैनिर्मलंयशः ॥ १ ॥ तद्गुणोत्कीर्तनंसत्यंमंगलानांचमंगलम् ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिलक्ष्म्युपाख्यानमीश्वर ॥२॥ केनाऽऽदौपूजितासाऽपिकिंभूताकेनवापुरा ॥ तद्गुणोत्कीर्तनंमह्यंवदवेदविदांवर ॥ ३ ॥ नारायणउवाच॥ सृष्टेरादौपुराब्रह्मन्कृष्णस्यपरमात्मनः ॥ देवीवामांससंभूताबभूवरासमंडले ॥ ४ ॥ अतीवसुंदरीश्यामान्यग्रोधपरिमंडिता ॥ यथाद्वादशवर्षीयाशश्वत्सुस्थिरयौवना ॥ ५ ॥ श्वेतचंपकवर्णाभासुखदृश्यामनोहरा ॥ शरत्पार्वणकोटींदुप्रभाप्रच्छादनानना ॥ ६ ॥ शरन्मध्यान्हपद्मानांशोभामोचनलोचना ॥ सादेवीद्विविधाभूतासहसैवेश्वरेच्छया ॥ ७ ॥ स्वीयरूपेणवर्णेनतेजसावयसात्विषा ॥ यशसावाससाकृत्याभूषणेनगुणेनच ॥ ८ ॥ स्मितेनवीक्षणेनैवप्रेम्णावाऽनुनयेनच ॥ तद्वामांसान्महालक्ष्मीर्दक्षिणांसाच्चराधिका ॥ ९ ॥ राधाऽऽदौवरयामासद्विभुजंचपरात्परम् ॥ महालक्ष्मीश्चतत्पश्चाच्चकमेकमनीयकम् ॥ १० ॥ कृष्णस्तद्गौरवेणैवद्विधारूपोबभूवह ॥ दक्षिणांसश्चद्विभुजोवामांसश्चचतुर्भुजः ॥११॥ चतुर्भुजायद्विभुजोमहालक्ष्मींददौपुरा ॥ लक्ष्यतेदृश्यतेविश्वंस्निग्धदृष्ट्यायथानिशम् ॥ १२ ॥ देवीभूताचमहतीमहालक्ष्मीश्चसास्मृता ॥ राधाकांतश्चद्विभुजोलक्ष्मीकांतश्चतुर्भुजः ॥१३॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपाचगोपैर्गोपीभिरावृता ॥ चतुर्भुजश्चवैकुंठंप्रययौपद्मयासह ॥ १४ ॥ सर्वांशेनसमौतौद्वौकृष्णनारायणौपरौ ॥ महालक्ष्मीश्चयोगेननानारूपाबभूवसा ॥ १५ ॥ वैकुंठेचमहालक्ष्मीःपरिपूर्णतमारमा ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपाचसर्वसौभाग्यसंयुता ॥ १६ ॥ प्रेम्णासाचप्रधानाचसर्वासुरमणीषुच॥स्वर्गेषुस्वर्गलक्ष्मीश्चशक्रसंपत्स्वरूपिणी ॥ १७ ॥ पातालेनागलक्ष्मीश्चराजलक्ष्मीश्चराजसु ॥ गृहलक्ष्मीर्गृहेष्वेवगृहिणांचकलांशतः ॥ १८ ॥ संपत्स्वरूपागृहिणांसर्वमंगलमंगला ॥ गवांप्रसूतिः सासुरभिर्दक्षिणायज्ञकामिनी ॥ १९ ॥ क्षीरोदसिंधुकन्यासाश्रीरूपापद्मिनीषुच ॥ शोभास्वरूपाचंद्रेचसूर्यमंडलमंडिता ॥ २० ॥ विभूषणेषुरत्नेषुफलेषुचजलेषुच ॥ नृपेषुनृपपत्नीषुदिव्यस्त्रीषुगृहेषुच ॥ २१ ॥ सर्वसस्येषुवस्त्रेषुस्थानेषुसंस्कृतेषुच ॥ प्रतिमासुचदेवानांमंगलेषुघटेषुच ॥ २२ ॥ माणिक्येषुचमुक्तासुमाल्येषुचमनोहरा ॥ मणींद्रेषुचहीरेषुक्षीरेषुचंदनेषुच ॥ २३ ॥

महालक्ष्मीपदनिरुक्तिमाह । लक्ष्यतेइति ॥ लक्ष्यतेदृश्यतेययासालक्ष्मीरित्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ योगेनशक्त्या ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ कलांशतइति ॥ एतानिरूपाण्यंशरूपाणीत्यर्थः ॥ पूर्णांशस्तुवैकुंठेएवास्तीत्यर्थः ॥ १८ ॥ सुरभ्यादयोऽपिलक्ष्म्यंशभूताइत्याह । गवांप्रसूतिरिति ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





एतेषुसर्वेषुलक्ष्म्यंशाःसंतीत्यर्थः ॥ किंभूतेत्यस्योत्तरमुक्त्वाकेनादौपूजितेत्यस्योत्तरमाह । वैकुंठेपूजितेति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ततःपरंकेनकेनकस्मिन्कालेपूजितेत्यत्राह । शुक्लाष्टम्यामिति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ मंगलेनराज्ञा ॥ ३० ॥ केदारनीलादयोराजानः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

वृक्षशाखासुरम्यासुनवमेषेषुवस्तुषु ॥ वैकुंठेपूजितासाऽऽदौदेवीनारायणेनच ॥ २४ ॥ द्वितीयेब्रह्मणाभक्त्यातृतीयेशंकरेणच ॥ विष्णुनापूजिता साचक्षीरोदेभारतेमुने ॥ २५ ॥ स्वायंभुवेनमनुनामानवेंद्रैश्चसर्वतः ॥ ऋषींद्रैश्चमुनींद्रैश्चसद्भिश्चगृहिभिर्भवे ॥ २६ ॥ गंधर्वैश्चैवनागाद्यैःपातालेषुचपूजिता ॥ शुक्लाष्टम्यांभाद्रपदेकृतापूजाचब्रह्मणा ॥ २७ ॥ भक्त्याचपक्षपर्यंतंत्रिषुलोकेषुनारद ॥ चैत्रेपौषेचभाद्रेचपुण्येमंगलवासरे ॥ २८ ॥ विष्णुनापूजितासाचत्रिषुलोकेषुभक्तितः ॥ वर्षांतेपौषसंक्रांत्यांमाघ्यामावाह्यमंगले ॥ २९ ॥ मनुस्तांपूजयामाससाभूताभुवनत्रये ॥ पूजितासामहेंद्रेणमंगलेनैवमंगला ॥ ३० ॥ केदारेणैवनीलेनसुबलेननलेनच ॥ ध्रुवेणोत्तानपादेनशक्रेणबलिनातथा ॥ ३१ ॥ कश्यपेनचदक्षेणकर्दमेनविवस्वता ॥ प्रियव्रतेनचंद्रेणकुबेरेणैववायुना ॥ ३२ ॥ यमेनवह्निनाचैववरुणेनैवपूजिता ॥ एवंसर्वत्रसर्वेषुपूजितावंदितासदा ॥ ३३ ॥ सर्वैश्वर्याधिदेवीसासर्वसंपत्स्वरूपिणी ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ नारायणप्रियासाचवरावैकुंठवासिनी ॥ वैकुंठाधिष्ठातृदेवीमहालक्ष्मीःसनातनी ॥ १ ॥ कथंबभूवसादेवीपृथिव्यांसिंधुकन्यका ॥ पुराकेनस्तुताऽऽदौसातन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ २ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ पुरादुर्वाससःशापाद्भ्रष्टश्रीश्चपुरंदरः ॥ बभूवदेवसंघश्चमर्त्यलोकेचनारद ॥३॥ लक्ष्मीःस्वर्गादिकंत्यक्त्वारुष्टापरमदुःखिता ॥ गत्वालीनाचवैकुंठेमहालक्ष्मीश्चनारद ॥ ४ ॥ तदाशोकाद्ययुःसर्वेदुःखिताब्रह्मणःसभाम् ॥ ब्रह्माणंचपुरस्कृत्यययुर्वैकुंठमेवच ॥ ५ ॥ वैकुंठेशरणापन्नादेवानारायणेपरे ॥ अतीवदैन्ययुक्ताश्चशुष्ककंठोष्ठतालुकाः॥६॥ तदालक्ष्मीश्चकलयापुराणपुरुषाज्ञया ॥ बभूवसिंधुकन्यासासर्वसंपत्स्वरूपिणी ॥ ७ ॥ तथामथित्वाक्षीरोदंदेवादैत्यगणैःसह ॥ संप्राप्ताश्चमहालक्ष्मींविष्णुस्तांचददर्शह ॥ ८ ॥ सुरादिभ्योवरंदत्वावनमालांचविष्णवे ॥ ददौप्रसन्नवदनातुष्टाक्षीरोदशायिने ॥९॥ देवाश्चाऽप्यसुरग्रस्तंराज्यंप्रापुश्चनारद॥तांसंपूज्यचसंभूयसर्वत्रचनिरापदः॥१०॥नारदउवाच॥कथंशशापदुर्वासामुनिश्रेष्ठःकदाचन॥केनदोषेणवाब्रह्मन्ब्रह्मिष्ठस्तत्त्ववित्पुरा ॥११॥ ममंथुःकेनरूपेणजलधिंतेसुरादयः ॥ केनस्तोत्रेणवादेवीशक्रंसाक्षाद्बभूवसा ॥ १२ ॥

॥ ३९ ॥ ॥ द्व्यधिकैर्नवतिश्लोकैर्नारदायसविस्तरम् ॥ लक्ष्मीजन्मनिमित्तंचप्रोच्यतेभक्तिशालिने ॥ १ ॥ नारदोलक्ष्म्युत्पत्तिंपृच्छति । नारायणेति ॥ १ ॥ केनस्तुतासतीसिंधुकन्यकाजातेत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ कलयांऽशेन ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तयोःशक्रदुर्वाससोः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

कोवातयोश्चसंवादोबभूवतद्वदप्रभो ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ मधुपानप्रमत्तश्चत्रैलोक्याधिपतिःपुरा ॥ १३ ॥ क्रीडांचकाररहसिरंभयासहकामुकः ॥ कृत्वाक्रीडांतयासार्धंकामुक्याहृतमानसः ॥ १४ ॥ तस्यौतत्रमहारण्येकामोन्मथितमानसः ॥ कैलासशिखरेयांतंवैकुंठादृषिसत्तमम् ॥ १५ ॥ दुर्वाससंददर्शेंद्रोज्वलंतंब्रह्मतेजसा ॥ ग्रीष्ममध्यान्हमार्तंडसहस्रप्रभमीश्वरम् ॥१६॥ प्रतप्तकांचनाकारंजटाभारमहोज्वलम् ॥ शुक्लयज्ञोपवीतंचचीरदंडोकमंडलुम् ॥ १७ ॥ महोज्वलंचतिलकंबिभ्रतंचेंदुसन्निभम् ॥ समन्वितंशिष्यलक्षैर्वेदवेदांगपारगैः ॥ १८ ॥ दृष्ट्वाननामशिरसासंप्रमत्तःपुरंदरः ॥ शिष्यवर्गतदाभक्त्यातुष्टावचमुदान्वितम् ॥ १९ ॥ मुनिनाचसशिष्येणदत्तास्तस्मैशुभाशिषः ॥ विष्णुदत्तंपारिजातपुष्पंचसुमनोहरम् ॥ २० ॥ तज्जरारोगमृत्युघ्नंशोकघ्नंमोक्षकारकम् ॥ शक्रःपुष्पंगृहीत्वाचप्रमत्तोराज्यसंपदा ॥२१॥ पुष्पंसन्यस्तयामासतदैवकरिमस्तके ॥ हस्तीतत्स्पर्शमात्रेणरूपेणचगुणेनच ॥ २२ ॥ तेजसावयसाऽकस्माद्विष्णुतुल्योबभूवह ॥ त्यक्त्वाशक्रंगजेंद्रश्चजगामघोरकाननम् ॥ २३ ॥ नशशाकमहेंद्रस्तंरक्षितुंतेजसामुने ॥ तत्पुष्पंत्यक्तवंतंचदृष्ट्वाशक्रंमुनीश्वरः ॥ २४ ॥ तमुवाचमहारुष्टःशशापचरुषान्वितः ॥ मुनिरुवाच ॥ अरेश्रियाप्रमत्तस्त्वंकथंमामवमन्यसे ॥ २५ ॥ मद्दत्तपुष्पंदत्तंचगर्वेणकरिमस्तके ॥ विष्णोर्निवेदितंचैवनैवेद्यंवाफलंजलम् ॥ २६ ॥ प्राप्तिमात्रेणभोक्तव्यंत्यागेनब्रह्महाभवेत् ॥ भ्रष्टश्रीर्भ्रष्टबुद्धिश्चपुरभ्रष्टोभवेत्तुसः ॥ २७ ॥ यस्त्यजेद्विष्णुनैवेद्यंभाग्येनोपस्थितंशुभम् ॥ प्राप्तिमात्रेणयोभुंक्तेभक्तोविष्णुनिवेदितम् ॥ २८ ॥ पुंसांशतंसमुद्धृत्यजीवन्मुक्तःस्वयंभवेत् ॥ नैवेद्यभोजनंकृत्वानित्यंयःप्रणमेद्धरिम् ॥ २९ ॥ पूजयेत्स्तौतिवाभक्त्यासविष्णुसदृशोभवेत् ॥ तत्स्पर्शवायुनासद्यस्तीर्थौघश्चविशुध्यति ॥ ३० ॥ तत्पादरजसामूढसद्यःपूतावसुंधरा ॥ पुंश्चल्यन्नमवीरान्नंशूद्रश्राद्धान्नमेवच ॥ ३१ ॥ यद्धरेरनिवेद्यंचवृथामांसस्यभक्षणम् ॥ शिवलिंगप्रदान्नंचयद्दत्तंशूद्रयाजिना ॥ ३२ ॥ चिकित्सकद्विजान्नंचदेवलान्नंतथैवच ॥ कन्याविक्रयिणामन्नंयदन्नंयोनिजीविनाम् ॥ ३३ ॥ उच्छिष्टान्नंपर्युषितंसर्वभक्षावशेषितम् ॥ शूद्रापतिद्विजानांचवृषवाहद्विजान्नकम् ॥ ३४ ॥ अदीक्षितद्विजानांचयदन्नंशवदाहिनाम् ॥ अगम्यागामिनांचैवद्विजानामन्नमेवच ॥ ॥३५॥ मित्रद्रुहांकृतघ्नानामन्नंविश्वासघातिनाम् ॥ मिथ्यासाक्ष्यप्रदान्नंचब्राह्मणान्नंतथैवच ॥३६॥ एतेसर्वेविशुध्यंतिविष्णोर्नैवेद्यभक्षणात् ॥ श्वपचश्चेद्विष्णुसेवीवंशानांकोटिमुद्धरेत् ॥ ३७ ॥ हरेरभक्तोमनुजःस्वंचरक्षितुमक्षमः ॥ अज्ञानाद्यदिगृह्णातिविष्णोर्निर्माल्यमेवच ॥ ३८ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ब्राह्मणान्नंतीर्थप्रतिग्राहिणांब्राह्मणानामन्नमित्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ मायापहःप्रभोइत्यत्र मह्यंमत्तायहेप्रभोइत्यपिपाठः ॥ मायापहोमोहनाशकइत्यर्थः ॥ किमेवंप्रार्थनयालक्ष्मीप्राप्तिमिच्छसि नेत्याह हृतांनयाचेइति ॥ तर्हिकिंप्रार्थ्यतेतत्राह । किंचिज्ज्ञानमिति ॥ संसारोद्धारकंज्ञानंदेहीत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ऐश्वर्यंकुतोनप्रार्थ्यते इतिचेत्तत्राह । ऐश्वर्यमिति ॥ महादोषकरत्वात्तस्यप्रार्थना नाक्रियतइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ इंद्रेणसंपत्तावुक्तंदोषंमुनिरंगीकृत्यत दुक्तंदोषमेवविशदयति जन्ममृत्युजरोति ॥ बीजांकुरंलक्ष्मीरूपम् ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ प्रवृत्तिल

सप्तजन्मार्जितात्पापान्मुच्यतेनाऽत्रसंशयः ॥ ज्ञात्वाभक्त्याचगृह्णातिविष्णोर्नैवेद्यमेवच ॥ ३९ ॥ कोटिजन्मार्जितात्पापान्मुच्यतेनिश्चितंहरे ॥ यस्मात्संस्थापितंपुष्पंगर्वेणकरिमस्तके ॥ ४० ॥ तस्माद्युष्मान्परित्यज्ययातुलक्ष्मीर्हरेःपदम् ॥ नारायणस्यभक्तोऽहंनबिभेमिसुराद्विधेः ॥ ४१ ॥ कालान्मृत्योर्जरातश्चकानन्यान्गणयामिच ॥ किंकरिष्यतितेतातःकश्यपश्चप्रजापतिः ॥ ४२ ॥ बृहस्पतिर्गुरुश्चैवनिःशंकस्यचमेहरे ॥ इदंपुष्पंयस्य मूर्ध्नितस्यैवपूजनंपरम् ॥४३॥ इतिश्रुत्वामहेंद्रश्चधृत्वासचरणंमुनेः ॥ उच्चैरुरोदशोकार्तस्तमुवाचभयाकुलः ॥४४॥ महेंद्रउवाच ॥ दत्तःसमुचितःशापोम ह्यंमायापहःप्रभो ॥ हृतांनयाचेसंपत्तिंकिंचिज्ज्ञानंचदेहिमे ॥ ४५ ॥ ऐश्वर्यंविपदांबीजंज्ञानप्रच्छन्नकारणम् ॥ मुक्तिमार्गकुठारश्चभक्तेश्चव्यवधायक म् ॥ ४६ ॥ मुनिरुवाच ॥ जन्ममृत्युजराशोकरागबीजांकुरंपरम् ॥ संपत्तितिमिरांधश्चमुक्तिमार्गंनपश्यति ॥ ४७ ॥ संपन्मत्तोविमूढश्चसुरामत्तःस एवच ॥ बांधवैर्वेष्टितःसोऽपिबंधत्वेनैवहेहरे ॥ ४८ ॥ संपत्तिमदमत्तश्चविषयांधश्चविह्वलः ॥ महाकामीराजसिकःसत्त्वमार्गंनपश्यति ॥ ४९ ॥ द्वि विधोविषयांधश्चराजसस्तामसःस्मृतः ॥ अशास्त्रज्ञस्तामसश्चशास्त्रज्ञोराजसःस्मृतः ॥ ५० ॥ शास्त्रंचद्विविधंमार्गंदर्शयेत्सुरपुंगव ॥ प्रवृत्तिबीजमेकंच निवृत्तेःकारणंपरम् ॥ ५१ ॥ चरंतिजीविनश्चादौप्रवृत्तेर्दुःखवर्त्मनि ॥ स्वच्छंदंचप्रसन्नंचनिर्विरोधंचसंततम् ॥ ५२ ॥ आयांतिमधुनोलोभात्क्लेशेनसु खमानितः ॥ परिणामेनाशबीजेजन्ममृत्युजराकरे ॥ ५३ ॥ अनेकजन्मपर्यंतंकृत्वाचभ्रमणंमुदा ॥ स्वकर्मविहितायांचनानायोन्यांक्रमेणच ॥ ५४ ॥ ततश्चेशानुग्रहाच्चसत्संगंलभतेचसः ॥ सहस्रेषुशतेष्वेकोभवाब्धिपारकारणम् ॥ ५५ ॥ साधुस्तत्त्वप्रदीपेनमुक्तिमार्गंप्रदर्शयेत् ॥ तदाकरोतियत्नंचजी वोबंधनखंडने ॥ ५६ ॥ अनेकजन्मयोगेनतपसाऽनशनेनच ॥ तदालभेन्मुक्तिमार्गंनिर्विघ्नंसुखदंपरम् ॥ ५७ ॥ इदंश्रुतंगुरोर्वक्त्राद्यत्पृच्छसिपु रंदर ॥ मुनेस्तद्वचनंश्रुत्वावीतरागोबभूवसः ॥ ५८ ॥

क्षणधर्मेयत्फलंतदाह । चरंतीति ॥ निर्विरोधमुन्मत्तवदित्यर्थः ॥ ५२ ॥ आयातीति । यथामधुनोलोभाद्भ्रमरआयातिकमलेतस्मिन्मुकुलितेस्वयंबद्धोभवतीति नजानातितथायंप्राणीक्ले शेदुःखरूपेसंसारेसुखमानितःसुखबुद्धिःसन्नायाति ॥ नाशबीजेजन्ममृत्युजरास्थानेसंसारेइतिभावः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ यस्मात्प्रवृत्तिमार्गोनमुक्तिदस्तस्मात्प्रवृत्ति मार्गंविहायसद्गुरुमाश्रित्यज्ञानाभ्यासनमुक्तोभवेदीतयत्त्वयापृष्टंज्ञानंतन्मयोक्तमितिभावः ॥ ५८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वर्धयामास णिच्प्रयोगआर्षः ॥ ववृधेइत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ साश्रुनेत्रमूईश्वरेपूर्णप्रेम्णोलक्षणमेतत् ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ पुनरनंतरंवरोपलब्धिज्ञानप्राप्ति रूपांमुनेःसकाशाज्जातांचकथयामासेत्यर्थः ॥ ६७ ॥ सुरेश्वरःकथयामासेत्यन्वयः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ विपत्तावपिनीतिज्ञोधैर्यंत्यक्त्वाकातरोनभवतीत्यर्थः ॥ नीतिमेवाह । संपत्तिर्वेति ॥ ॥ ७० ॥ पूर्वेति ॥ यतःसासंपत्तिर्वाविपत्तिर्वापूर्वजन्मनिकृतस्वकर्मायत्तातदधीनाभवातिततस्तयोःकर्ताऽपिस्वयमेवभवतितस्मात्कर्मानुरूपंफलंभविष्यत्येवनकातरतयातन्नाशोभविष्यती

वैराग्यंवर्धयामासतस्यब्रह्मन्दिनेदिने ॥ मुनेःस्थानाद्गृहंगत्वासददर्शाऽमरावतीम् ॥ ५९ ॥ दैत्यैरसुरसंघैश्चसमाकीर्णाभयाकुलाम् ॥ विषमोपप्लवांकुत्र बंधुहीनांचकुत्रचित्॥ ६०॥पितृमातृकलत्रादिविहीनामतिचंचलाम् ॥ शत्रुग्रस्तांचतांदृष्ट्वाजगामवाक्पतिंप्रति॥६१॥ शक्रोमंदाकिनीतीरेददर्शगुरुमीश्व रम् ॥ ध्यायमानंपरंब्रह्मगंगातोयेस्थितंपरम्॥ ६२ ॥ सूर्याभिसंमुखंपूर्वमुखंचविश्वतोमुखम् ॥ साश्रुनेत्रंपुलकिनंपरमानंदसंयुतम् ॥ ६३ ॥ वरिष्ठंचगरि ष्ठंचधर्मिष्ठंश्रेष्ठसेवितम् ॥ प्रेष्ठंचबंधुवर्गाणामतिश्रेष्ठंचज्ञानिनाम् ॥ ६४ ॥ ज्येष्ठंचभ्रातृवर्गाणामनिष्टंसुरवैरिणाम् ॥ दृष्ट्वागुरुंजपंतंचतत्रतस्थौसुरेश्वरः ॥ ॥ ६५ ॥ प्रहरांतेगुरुंदृष्ट्वाचोत्थितंप्रणनामसः ॥ प्रणम्यचरणांभोजेरुरोदोच्चैर्मुहुर्मुहुः ॥६६॥ वृत्तांतंकथयामासब्रह्मशापादिकंतथा ॥ पुनर्वरोपलब्धिंच ज्ञानप्राप्तिंसुदुर्लभाम् ॥ ६७ ॥ वैरिग्रस्तांचस्वपुरींक्रमेणैवसुरेश्वरः ॥ शिष्यस्यवचनंश्रुत्वासुबुद्धिर्वदतांवरः ॥ ६८ ॥ बृहस्पतिरुवाचेदंकोपसंरक्तलोच नः ॥ गुरुरुवाच ॥ श्रुतंसर्वंसुरश्रेष्ठमारोदीर्वचनंशृणु ॥ ६९ ॥ नकातरोहिनीतिज्ञोविपत्तौचकदाचन ॥ संपत्तिर्वाविपत्तिर्वानश्वराश्रमरूपिणी ॥ ७० ॥ पूर्वस्यकर्मायत्ताचस्वयंकर्तातयोरपि ॥ सर्वेषांचभवत्येवशश्वज्जन्मनिजन्मनि ॥७१॥ चक्रनेमिक्रमेणैवतत्रकापरिदेवना ॥ उक्तंहिस्वकृतंकर्मभुज्यतेऽखि लभारते ॥ ७२ ॥ शुभाशुभंचयत्किंचित्स्वकर्मफलभुक्पुमान् ॥ नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ॥ ७३ ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभ म् ॥ इत्येवमुक्तंवेदेचकृष्णेनपरमात्मना ॥ ७४ ॥ सामवेदोक्तशाखायांसंबोध्यकमलोद्भवम् ॥ जन्मभोगावशेषेचसर्वेषांकृतकर्मणाम् ॥७५॥ अनुरूपंहि तेषांचभारतेऽन्यत्रचैवहि ॥ कर्मणाब्रह्मशापंचकर्मणाचशुभाशिषम् ॥ ७६ ॥ कर्मणाचमहालक्ष्मींलभेद्दैन्यंचकर्मणा ॥ कोटिजन्मार्जितंकर्मजीविनाम नुगच्छति ॥ ७७ ॥ नहित्यजेद्विनाभोगंतच्छायेवपुरंदर ॥ कालभेदेदेशभेदेपात्रभेदेचकर्मणाम् ॥ ७८ ॥ न्यूनताधिकभावोऽपिभवेदेवहिकर्मणा ॥ वस्तुदानेनवस्तूनांसमंपुण्यंदिनेदिने ॥ ७९ ॥ दिनभेदेकोटिगुणमसंख्यंवाततोधिकम् ॥ समेदेशेचवस्तूनांदानेपुण्यंसमंसुर ॥ ८० ॥

त्यर्थः ॥ एतादृशंदुःखंसर्वेषांभवतीत्याह । सर्वेषांचेति ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ कमलोद्भवंब्रह्माणंसंबोध्यतंप्रत्युक्तंकृष्णेनेत्यर्थः ॥ जन्मेति । कृतकर्मणांभोगावशेषेतेषांकर्मणा नुरूपंजन्मभारतेऽन्यत्रवाभवतीत्यन्वयः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ देशकालपात्रभेदेनकृतानांकर्मणांफलतारतम्यंभवतीतिसविस्तरंवर्णयति ॥ दिनभेदेइति ॥ ८० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८१ ॥ ८२ ॥ यथाकर्षकाणांक्षेत्रभेदेसस्यानिन्यूनान्यधिकानिवाफलंतितद्वदित्यर्थः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ अक्षयायांनवम्याम् ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ एवंकर्माधीनत्वेंसातित न्निवृत्तिःकेनभवतितत्राह । यस्याज्ञयेति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ इष्टमिष्टदेवम् ॥ ९२ ॥ इतिश्रीदेवी०तिलकेनवमस्कंधेचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ ॥ एकोनषष्टिश्लोकैस्तुशक्रः सुरगणैःसह ॥ निवेदितुंनिजंदुःखंगतोब्रह्माणमीश्वरम् ॥ १ ॥ बृहस्पतिवाक्योत्तरंशक्रोयत्कृतवांस्तदाह । हरिंध्यात्वेति ॥ हरिरिंद्रः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ कथंसोऽहमिति ॥

देशभेदेकोटिगुणमसंख्यंवाततोऽधिकम् ॥ समेपात्रेसमंपुण्यंवस्तूनांकर्तुरेवच ॥ ८१ ॥ पात्रभेदेशतगुणमसंख्यंवाततोऽधिकम् ॥ यथाफलंतिसस्यानि न्यूनान्यप्यधिकानिच ॥ ८२ ॥ कर्षकाणांक्षेत्रभेदेपात्रभेदेफलंतथा ॥ सामान्यदिवसेविप्रदानंसमफलंभवेत् ॥ ८३ ॥ अमायांरविसंक्रांत्यांफलंशतगुणं भवेत् ॥ चातुर्मास्यांपौर्णमास्यामनंतंफलमेवच ॥ ८४ ॥ ग्रहणेशशिनःकोटिगुणंचफलमेवच ॥ सूर्यस्यग्रहणेवाऽपिततोदशगुणंभवेत् ॥ ८५ ॥ अक्षया यामक्षयंतदसंख्यंफलमुच्यते ॥ एवमन्यत्रपुण्याहेफलाधिक्यंभवेदिति ॥ ८६ ॥ यथादानेतथास्नानेजपेऽन्यपुण्यकर्मसु ॥ एवंसर्वत्रबोद्धव्यंनराणांकर्म णांफलम् ॥ ८७ ॥ यथादंडेनचक्रेणशरावेणभ्रमेणच ॥ कुंभंनिर्मातिनिर्माताकुंभकारोमृदाभुवि ॥ ८८ ॥ तथैवकर्मसूत्रेणफलंधाताददातिच॥यस्याज्ञ यासृष्टमिदंतंचनारायणंभज ॥ ८९ ॥ सविधाताविधातुश्चपातुःपाताजगत्त्रये ॥ स्रष्टुःस्रष्टाचसंहर्तुःसंहर्ताकालकालकः ॥ ९० ॥ महाविपत्तौसंसारेयःस्म रेन्मधुसूदनम् ॥ विपत्तौतस्यसंपत्तिर्भवेदित्याहशंकरः ॥ ९१ ॥ इत्येवमुक्त्वातत्त्वज्ञःसमालिंग्यसुरेश्वरम् ॥ दत्त्वाशुभाशिषंचेष्टंबोधयामासनारद ॥ ॥ ९२ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ ॥ ॥ नारायणउवाच ॥ हरिंध्यात्वाहरिर्ब्रह्मन्जगामब्रह्म णःसभाम् ॥ बृहस्पतिंपुरस्कृत्यसर्वैःसुरगणैःसह ॥ १ ॥ शीघ्रंगत्वाब्रह्मलोकंदृष्ट्वाचकमलोद्भवम् ॥ प्रणेमुर्देवताःसर्वाःसहेंद्रागुरुणासह ॥ २ ॥ वृत्तां तंकथयामाससुराचार्योविधिंप्रति ॥ प्रहस्योवाचतच्छ्रुत्वामहेंद्रंकमलासनः ॥ ३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ वत्समद्वंशजातोऽसिप्रपौत्रोमेविचक्षणः ॥ बृहस्पतेश्च शिष्यस्त्वंसुराणामधिपःस्वयम् ॥ ४ ॥ मातामहश्चदक्षस्तेविष्णुभक्तःप्रतापवान् ॥ कुलत्रयंयस्यशुद्धंकथंसोऽहंकृतोभवेत् ॥ ५ ॥ मातापतिव्रताय स्यपिताशुद्धोजितेंद्रियः ॥ मातामहोमातुलश्चकथंसोऽहंकृतोभवेत् ॥ ६ ॥ जनःपैतृकदोषेणदोषान्मातामहस्यच ॥ गुरुदोषात्त्रिभिर्दोषैर्हरिदोषीभवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥ सर्वांतरात्माभगवान्सर्वदेहेष्ववस्थितः ॥ यस्यदेहात्सप्रयातिसशवस्तत्क्षणेभवेत् ॥ ८ ॥ मनोहमिंद्रियेशंचज्ञानरूपोहिशंकरः ॥ विष्णु प्राणाचप्रकृतिर्बुद्धिर्भगवतीसती ॥ ९ ॥

कथमेतादृशोऽहंकृतोऽहंकारयुक्तोभवेदथापित्वंजातस्तदेतदाश्चर्यमितिभावः ॥ ५ ॥ ६ ॥ हरिदोषीदेवापराधवान्भवतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ सदेवआत्मरूपोदेहाद्यस्यप्रयातीत्यन्वयः ॥ ८ ॥ देहनगरस्थितस्याऽऽत्मनोराज्ञःसेवकानाह । मनोहमिति ॥ अहं ब्रह्माइंद्रियेशंमनोभवामीत्यर्थः ॥ प्रकृतिर्विष्णोरात्मनःप्राणस्वरूपाराधारूपाप्रकृतिर्भवतीत्यर्थः ॥ बुद्धिस्तुसतीभगवती दुर्गाभवतीत्यर्थः ॥ ९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

निद्राक्षु धादयस्तुतस्यैवाऽऽत्मनःशक्तेःकलाभवंतीत्यर्थः ॥ आत्मनोयोबुद्धौप्रतिबिंबरूपःसजीवोभोगशरीरभृद्भवतीत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ तत्पुष्पंतादृशमाहिमावतःश्रीगोपालसुंदररूप श्रीकृष्णस्यपुष्पंनिर्माल्यभूतंत्वयान्यक्कृतंतिरस्कृतंसएषमहानपराधस्त्वयाकृतइतिभावः ॥ १२ ॥ १३ ॥ सुराणांमध्येइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

निद्रादयःशक्तयश्चताःसर्वाःप्रकृतेःकलाः ॥ आत्मनःप्रतिबिंबश्चजीवोभोगशरीरभृत् ॥ १० ॥ आत्मनीशेगतेदेहात्सर्वेयांतिससंभ्रमाः ॥ यथावर्त्मनि गच्छंतंनरदेवमिवाऽनुगाः ॥ ११ ॥ अहंशिवश्चशेषश्चविष्णुर्धर्मोमहाविराट् ॥ यूयंयदंशाभक्ताश्चतत्पुष्पंन्यक्कृतंत्वया ॥ १२ ॥ शिवेनपूजितंपादपद्मंपु ष्पेणयेनच ॥ तत्रदुर्वाससादत्तंदैवेनन्यक्कृतंत्वया ॥ १३ ॥ तत्पुष्पंमस्तकेयस्यकृष्णपादाब्जप्रच्युतम् ॥ सर्वेषांचसुराणांचतत्पूजापुरतोभवेत् ॥ १४ ॥ दैवेनवंचितस्त्वंहिदैवंचबलवत्तरम् ॥ भाग्यहीनंजनंमूढंकोवारक्षितुमीश्वरः ॥ १५ ॥ साश्रीर्गताऽधुनाकोपात्कृष्णनिर्माल्यवर्जनात् ॥ अधुनागच्छवै कुंठंमयाचगुरुणासह ॥ १६ ॥ निषेव्यतत्रश्रीनाथंश्रियंप्राप्स्यसिमद्वरात् ॥ एवमुक्त्वाचसब्रह्मासर्वैःसुरगणैःसह ॥ १७ ॥ तत्रगत्वापरंब्रह्मभगवंतंसना तनम् ॥ दृष्ट्वातेजःस्वरूपंतंप्रज्वलंतंस्वतेजसा ॥ १८ ॥ ग्रीष्ममध्याह्नमार्तंडशतकोटिसमप्रभम् ॥ शांतमनादिमध्यांतंलक्ष्मीकांतमनंतकम् ॥ १९ ॥ चतुर्भुजैःपार्षदैश्चसरस्वत्यायुतंप्रभुम् ॥ भक्त्याचतुर्भिर्वेदैश्चगंगयापरिवेष्टितम् ॥ २० ॥ तंप्रणेमुःसुराःसर्वेमूर्ध्नाब्रह्मपुरोगमाः ॥ भक्तिनम्राःसाश्रुनेत्रा स्तुष्टुवुःपरमेश्वरम् ॥२१॥ वृत्तांतंकथयामासस्वयंब्रह्माकृतांजलिः ॥ रुरुदुर्देवताःसर्वाःस्वाधिकाराच्च्युताश्चताः ॥२२॥ सददर्शसुरगणंविपद्रस्तंभया कुलम् ॥ रत्नभूषणशून्यंचवाहनादिविवर्जितम् ॥ २३ ॥ शोभाशून्यंहतश्रीकंनिष्प्रभंसभयंपरम् ॥ उवाचकातरंदृष्ट्वाभयभीतिविभंजनः ॥ २४ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ माभैर्ब्रह्मन्हेसुराश्चभयंकिंवोमयिस्थिते ॥ दास्यामिलक्ष्मीमचलांपरमैश्वर्यवर्धिनीम् ॥ २५ ॥ किंचमद्वचनंकिंचिच्छ्रूयतांसमयोचि तम् ॥ हितंसत्यंसारभूतंपरिणामसुखावहम् ॥ २६ ॥ जनाश्चाऽसंख्यविश्वस्थामदधीनाश्चसंततम् ॥ यथातथाऽहंमद्भक्तपराधीनोऽस्वतंत्रकः ॥ २७ ॥ यंयंरुष्टोहिमद्भक्तोमत्परोहिनिरंकुशः ॥ तद्गृहेऽहंनतिष्ठामिपद्मयासहनिश्चितम् ॥२८॥ दुर्वासाःशंकरांशश्चवैष्णवोमत्परायणः ॥ तच्छापादागतोऽहंचस लक्ष्मीकोहिवोगृहात् ॥ २९ ॥ यत्रशंखध्वनिर्नास्तितुलसीनशिवार्चनम् ॥ नभोजनंचविप्राणांनपद्मातत्रतिष्ठति ॥ ३० ॥ मद्भक्तानांचमेनिंदायत्र ब्रह्मन्भवेत्सुराः ॥ महारुष्टामहालक्ष्मीस्ततोयातिपराभवम् ॥ ३१ ॥ मद्भक्तिहीनोयोमूढोभुंक्तेयोहरिवासरे ॥ ममजन्मदिनेवापियातिश्रीस्तद्गृहादपि ॥ ॥ ३२ ॥ मन्नामविक्रयीयश्चविक्रीणातिस्वकन्यकाम् ॥ यत्राऽतिथिर्नभुंक्तेचमत्प्रियायातितद्गृहात् ॥ ३३ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ यंयंरुष्टोयंयंपुरुषंप्रतिरुष्टइत्यर्थः ॥ २८ ॥२९॥ शिवार्चनंशिवस्यशिवायाश्चाऽर्चनमित्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ वाचालोऽसद्बहुभाषणवान् ॥ ४२ ॥ योऽन्यांगंपुरुषांतरस्यांगामत्यथः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ एतेषुस्थलेषुनतिष्ठतिचेत्कुत्रतिष्ठतितत्राह । यत्रयत्रेति ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ कलयस्वीकुरु ॥ ५१ ॥ ५२ ॥५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ब्रह्मशापेति ॥ देवामर्यादाहेतोर्हिब्रह्मणः

योविप्रःपुंश्चलीपुत्रोमहापापीचतत्पतिः ॥ पापिनोयोगृहंयातिशूद्रश्राद्धान्नभोजकः ॥ ३४ ॥ महारुष्टाततोयातिमंदिरात्कमलालया ॥ शूद्राणांशवदाहीचभाग्यहीनोद्विजाधमः ॥ ३५ ॥ यातिरुष्टातद्गृहाच्चदेवाःकमलवासिनी ॥ शूद्राणांसूपकारीयोब्राह्मणोवृषवाहकः ॥ ३६ ॥ तत्तोयपानभीताचकमलायातितद्गृहात् ॥ अशुद्धहृदयःक्रूरोहिंसकोनिंदकोद्विजः ॥ ३७ ॥ ब्राह्मणःशूद्रयाजीचयातिदेवीचतद्गृहात् ॥ अवीरान्नंचयोभुंक्तेतस्माद्यातिजगत्प्रसूः ॥ ३८ ॥ तृणंछिनत्तिनखैरस्तैर्वायोविलिखेन्महीम् ॥ निराशोब्राह्मणोयत्रतद्गृहाद्यातिमत्प्रिया ॥ ३९ ॥ सूर्योदयेद्विजोभुंक्तेदिवास्वापीचब्राह्मणः ॥ दिवामैथुनकारीचयस्तस्माद्यातिमत्प्रिया ॥ ४० ॥ आचारहीनोविप्रोयोयश्चशूद्रप्रतिग्रही ॥ अदीक्षितोहियोमूढस्तस्माद्वैयातिमत्प्रिया ॥ ४१ ॥ स्निग्धपादश्चनग्नोहियःशेतेज्ञानदुर्बलः ॥ शश्वद्ददतिवाचालोयातिसातद्गृहात्सती ॥४२॥ शिरःस्नातस्तुतैलेनयोऽन्यांगंसमुपस्पृशेत् ॥ स्वांगेचवादयेद्वाद्यंरुष्टासायातितद्गृहात् ॥ ४३ ॥ व्रतोपवासहीनोयःसंध्याहीनोऽशुचिर्द्विजः ॥ विष्णुभक्तिविहीनस्तुतस्माद्यातिचमत्प्रिया ॥ ४४ ॥ ब्राह्मणंनिंदयेद्योहितंचयोद्वेष्टिसंततम् ॥ जीवहिंसोदयाहीनोयातिसर्वप्रसूस्ततः ॥ ४५ ॥ यत्रयत्रहरेरर्चाहरेरुत्कीर्तनंतथा ॥ तत्रतिष्ठतिसादेवीसर्वमंगलमंगला ॥ ४६ ॥ यत्रप्रशंसाकृष्णस्यतद्भक्तस्यापितामह ॥ साचकृष्णप्रियादेवीतत्रतिष्ठतिसंततम् ॥ ४७ ॥ यत्रशंखध्वनिःशंखःशिलाचतुलसीदलम् ॥ तत्सेवावंदनंध्यानंतत्रसापरितिष्ठति ॥४८॥ शिवलिंगार्चनंयत्रतस्यचोत्कीर्तनंशुभम् ॥ दुर्गार्चनंतद्गुणाश्चतत्रपद्मनिवासिनी ॥ ४९ ॥ विप्राणांसेवनंयत्रतेषांचभोजनंशुभम् ॥ अर्चनंसर्वदेवानांतत्रपद्ममुखीसती ॥५०॥ इत्युक्त्वाचसुरान्सर्वान्रमामाहरमापतिः॥क्षीरोदसागरेजन्मकलयाऽऽकलयेतिच ॥५१॥ इत्युक्त्वातांजगन्नाथोब्रह्माणंपुनराहच ॥ मथित्वासागरंलक्ष्मींदेवेभ्योदेहिपद्मज ॥ ५२ ॥ इत्युक्त्वाकमलाकांतोजगामांतःपुरंमुने ॥ देवाश्चिरेणकालेनययुःक्षीरोदसागरम् ॥ ५३ ॥ मंथानंमंदरंकृत्वाकूर्मंकृत्वाचभाजनम् ॥ कृत्वाशेषंमंथपाशंममंथुरसुराःसुराः ॥ ५४ ॥ धन्वंतरिंचपीयूषमुच्चैःश्रवसमीप्सितम् ॥ नानारत्नंहस्तिरत्नंप्रापुर्लक्ष्मींसुदर्शनम् ॥ ५५ ॥ वनमालांददौसाचक्षीरोदशायिनेमुने ॥ सर्वेश्वरायरम्यायाविष्णवेवैष्णवीसती ॥५६॥ देवैःस्तुतापूजिताचब्रह्मणाशंकरेणच ॥ ददौदृष्टसुरगृहेब्रह्मशापविमोचनात् ॥ ५७ ॥ प्रापुर्देवाःस्वविषयंदैत्यग्रस्तंभयंकरम् ॥ महालक्ष्मीप्रसादेनवरदानेननारद॥५८॥

शापस्तदभावेतुतस्यशापस्यनाशनमभूदित्यर्थः ॥ ५७ ॥ स्वविषयंस्वस्थानम् ॥ वरदानेनब्रह्मणःश्रियंप्राप्स्यसिमद्वरादितिपूर्वोक्तवाक्येनकृतेन ॥ ५८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥ पंचसप्ततिपद्यैस्तुमहालक्ष्म्यर्चनक्रमम् ॥ मंत्रस्तोत्रादिकंचैवयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ अथनारदोल
क्ष्म्याध्यानादिकंपृच्छाति। हरेरुत्कीर्तनमिति। हरेरुत्कीर्तनंगुणानुवर्णनम् ॥ लक्ष्म्याउपाख्यानंचश्रुतमधुनाध्यानंस्तोत्रंपूजादिकंचवदेत्यर्थः ॥ १ ॥ तत्रनारायणःप्रथमतःपूजाविधिक्रमेणै
वसर्वमाह । स्नात्वेति ॥ क्षीरोदक्षीरसमुद्रेषड्देवान्वक्ष्यमाणान् पूजितवान् तेषांपूजांविनाऽन्यकर्मण्यनधिकारात् ॥ २ ॥ षड्देवानाह । गणेशंचेति ॥ वह्निमग्निहोत्रहोमम् ॥ ३ ॥

इत्येवंकथितंसर्वंलक्ष्म्युपाख्यानमुत्तमम् ॥ सुखदंसारभूतंचकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेएकचत्वारिंशो
ध्यायः ॥ ४१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ हरेरुत्कीर्तनंभद्रंश्रुतंतज्ज्ञानमुत्तमम् ॥ ईप्सितंलक्ष्म्युपाख्यानंध्यानंस्तोत्रंवदप्रभो ॥ १ ॥ नारायणउवाच ॥ स्ना
त्वातीर्थेपुराशक्रोधृत्वाधौतेचवाससी ॥ घटंसंस्थाप्यक्षीरोदेषड्देवान्पर्यपूजयत् ॥ २ ॥ गणेशंचदिनेशंचवह्निंविष्णुंशिवंशिवाम् ॥ एतान्भक्त्यास
मभ्यर्च्यपुष्पगंधादिभिस्तदा ॥ ३॥ आवाह्यचमहालक्ष्मींपरमैश्वर्यरूपिणीम् ॥ पूजांचकारदेवेशोब्रह्मणाचपुरोधसा ॥ ४ ॥ पुरःस्थितेषुमुनिषुब्राह्म
णेषुगुरौहरौ ॥ देवादिषुसुदेशेचज्ञानानंदेशिवेमुने ॥ ५ ॥ पारिजातस्यपुष्पंचगृहीत्वाचंदनोक्षितम् ॥ ध्यात्वादेवींमहालक्ष्मींपूजयामासनारद ॥ ६ ॥
ध्यानंचसामवेदोक्तंयद्दत्तंब्रह्मणेपुरा ॥ हरिणातेनध्यानेनतन्निबोधवदामिते ॥ ७ ॥ सहस्रदलपद्मस्थकर्णिकावासिनींपराम् ॥ शरत्पार्वणकोटींदुप्रभामु
ष्टिकरांपराम् ॥ ८ ॥ स्वतेजसाप्रज्वलंतींसुखदृश्यांमनोहराम् ॥ प्रतप्तकांचननिभशोभांमूर्तिमतींसतीम् ॥ ९ ॥ रत्नभूषणभूषाढ्यांशोभितांपीतवास
सा ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम् ॥ १० ॥ सर्वसंपत्प्रदात्रींचमहालक्ष्मींभजेशुभाम् ॥ ध्यानेनाऽनेनतांध्यात्वानानागुणसमन्विताम् ॥
॥ ११ ॥ संपूज्यब्रह्मवाक्येनचोपचाराणिषोडश ॥ ददौभक्त्याविधानेनप्रत्येकंमंत्रपूर्वकम् ॥ १२ ॥ प्रशस्तानिप्रकृष्टानिवराणिविविधानिच ॥ अमूल्य
रत्नसारंचनिर्मितंविश्वकर्मणा ॥ १३ ॥ आसनंचविचित्रंचमहालक्ष्मिप्रगृह्यताम् ॥ शुद्धंगंगोदकमिदंसर्ववंदितमीप्सितम् ॥ १४ ॥ पापेध्मवह्नि
रूपंचगृह्यतांकमलालये ॥ पुष्पचंदनदूर्वादिसंयुतंजाह्नवीजलम् ॥ १५ ॥ शंखगर्भस्थितंस्वर्घ्यंगृह्यतांपद्मवासिनि ॥ सुगंधिपुष्पतैलंचसुगंधामल
कीफलम् ॥ १६॥ देहसौंदर्यबीजंचगृह्यतांश्रीहरेःप्रिये ॥ कार्पासजंचकृमिजंवसनंदेविगृह्यताम् ॥ १७ ॥ रत्नस्वर्णविकारंचदेहभूषाविवर्धनम् ॥ शोभायै
श्रीकरंरत्नंभूषणंदेविगृह्यताम् ॥ १८ ॥ सर्वसौंदर्यबीजंचसद्यःशोभाकरंपरम् ॥ वृक्षनिर्यासरूपंचगंधद्रव्यादिसंयुतम् ॥ १९ ॥

पुरोधसावोधितइतिशेषः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ध्यानंचेति ॥ हरिणासामवेदोक्तंध्यानंयद्ब्रह्मणेदत्तंतेनध्यानेनध्यात्वेत्यर्थः ॥ ७ ॥ मुष्टिश्चौर्यम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥
प्रशस्तानीत्युपचारवस्तूनामुपलक्षणम् ॥ आसनादिमंत्रानाह । अमूल्येति ॥ अत्रमंत्राएवसंगृह्यंतेपूजोपचारक्रमस्तुप्रसिद्धएवग्राह्यइतिबोध्यम् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ आमलकीफल
चूर्णमित्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सुगंधियुक्तमिति ॥ पूर्वोक्तंकार्पासजंचेत्यर्धश्लोकावेवमंत्रौ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ स्वास्तिकंपक्वान्नविशेषः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ सस्यानांमुद्गादिधान्यानाम् ॥ ॥ २८ ॥ मिष्टान्नंलड्डुकम् ॥ सस्यचूर्णोद्भवंमुद्गादिधान्यचूर्णोद्भवम् ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अत्रकेचिन्मत्राःपुनःपठ्यंतेतदभिप्रायस्त्वित्थम् ॥

श्रीकृष्णकांतेधूपंचपवित्रंप्रतिगृह्यताम् ॥ सुगंधियुक्तंसुखदंचंदनंदेविगृह्यताम् ॥२०॥ जगच्चक्षुःस्वरूपंचपवित्रंतिमिरापहम् ॥ प्रदीपंसुखरूपंचगृह्यतांचसुरेश्वरि ॥२१॥ नानोपहाररूपंचनानारससमन्विम् ॥ अतिस्वादुकरंचैवनैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥२२॥ अन्नंब्रह्मस्वरूपंचप्राणरक्षणकारणम् ॥ तुष्टिदंपुष्टिदंचैवदेव्यन्नंप्रतिगृह्यताम्॥२३॥शाल्यन्नजंसुपक्वंचशर्करागव्यसंयुतम् ॥ स्वादुयुक्तंमहालक्ष्मीःपरमान्नंप्रगृह्यताम्॥२४॥शर्करागव्यपक्वंचसुस्वादुसुमनोहरम्॥मयानिवेदितंभक्त्यास्वस्तिकंप्रतिगृह्यताम् ॥२५॥ नानाविधानिरम्याणिपक्वान्नानिफलानिच ॥ सुरभिस्तनसंत्यक्तंसुस्वादुसुमनोहरम्॥२६॥मर्त्यामृतंसुगव्यंचगृह्यतामच्युतप्रिये ॥ सुस्वादुरससंयुक्तमिक्षुवृक्षसमुद्भवम् ॥२७॥ अग्निपक्वमतिस्वादुगुडंचप्रतिगृह्यताम् ॥ यवगोधूमसस्यानांचूर्णरेणुसमुद्भवम् ॥२८॥ सुपक्वंगुडगव्याक्तंमिष्टान्नंदेविगृह्यताम् ॥ सस्यचूर्णोद्भवंपक्वंस्वस्तिकादिसमन्वितम् ॥२९॥ मयानिवेदितंभक्त्यानैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥ शीतवायुप्रदंचैवदाहेचसुखदंपरम् ॥३०॥ कमलेगृह्यतांचेदंव्यजनंश्वेतचामरम् ॥ तांबूलंचवरंरम्यंकर्पूरादिसुवासितम् ॥३१॥ जिह्वाजाड्यच्छेदकरंतांबूलंप्रतिगृह्यताम् ॥ सुवासितंसुशीतंचपिपासानाशकारणम् ॥३२॥ जगज्जीवनरूपंचजीवनंदेविगृह्यताम् ॥ देहसौंदर्यबीजंचसदाशोभाविवर्धनम् ॥३३॥ कार्पासजंचकृमिजंवसनंदेविगृह्यताम् ॥ रत्नस्वर्णविकारंचदेहभूषादिवर्धनम् ॥ ३४॥ शोभाधारंश्रीकरंचभूषणंदेविगृह्यताम्॥ नानाऋतुषुनिर्माणंबहुशोभाश्रयंपरम् ॥ ३५ ॥ सुरभूपप्रियंशुद्धंमाल्यंदेविप्रगृह्यताम् ॥ शुद्धिदंशुद्धरूपंचसर्वमंगलमंगलम् ॥ ३६ ॥ गंधवस्तूद्भवंरम्यंगंधंदेविप्रगृह्यताम् ॥ पुण्यतीर्थोदकंचैवविशुद्धंशुद्धिदंसदा ॥ ३७ ॥ गृह्यतांकृष्णकांतेत्वंरम्यमाचमनीयकम् ॥ रत्नसारादिनिर्माणंपुष्पचंदनचर्चितम् ॥ ३८ ॥ वस्त्रभूषणभूषाढ्यंसुतल्पंदेविगृह्यताम् ॥ यद्यद्द्रव्यमपूर्वंचपृथिव्यामपिदुर्लभम् ॥ ३९ ॥ देवभूषार्हभोग्यंचतद्द्रव्यंदेविगृह्यताम् ॥ द्रव्याण्येतानिदत्त्वाचमूलेनदेवपुंगवः ॥ ४० ॥ मूलंजजापभक्त्याचदशलक्षंविधानतः ॥ जपेनदशलक्षेणमंत्रसिद्धिर्बभूवह ॥ ४१ ॥ मंत्रश्चब्रह्मणादत्तःकल्पवृक्षश्चसर्वतः ॥ लक्ष्मीर्मायाकामवाणीङेंताकमलवासिनी ॥ ४२ ॥ वैदिकोमंत्रराजोऽयंप्रसिद्धःस्वाहयाऽन्वितः ॥ कुबेरोऽनेनमंत्रेणपरमैश्वर्यमाप्तवान् ॥ ४३ ॥

यथाजनागृहेसामान्यानुपचारान्गृह्णंति ॥ सभायांतुविशेषविशिष्टांस्तथैवदेव्यैसामान्यविशेषभावेनोपचारादेयाइति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥३९॥४०॥४१॥ लक्ष्मीःश्रीबीजं मायाभुवनेश्वरीबीजं कामोमन्मथबीजं वाणीवाग्भवंङेंताचतुर्थ्यंताकमलवासिनीतदाकमलवासिन्यैइतिजातं ॥ स्वाहयान्वितः ॥ स्वाहांतइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥ अर्धाधिकैश्चतुष्पंचाशद्भिःपद्यैरनंतरम् ॥ स्वाहाशक्तरुपाख्यानयथावद भिवर्ण्यते ॥ १ ॥ एवमेतासांमहादेवतानामाख्यानंश्रुत्वानारदःपृच्छति । नारायणेति ॥ १ ॥ २ ॥ निगूढंगुप्तंरहस्यभूंतमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ प्रथम तोब्रह्मलोकंययुस्ततोब्रह्मसभामाजग्मुः ॥ १० ॥ ब्रह्माश्रुत्वेति ॥ देववाक्यंश्रुत्वाभवतांब्राह्मणैर्हविर्यद्दीयतेतस्यप्राप्त्याऽऽहारव्यवस्थांकरिष्यामीतिब्रह्माप्रतिज्ञायदेवकल्याणार्थंहरिंनिष

केशवायददौलक्ष्मीःसंतुष्टासुरसंसदि ॥ यंयुर्देवाश्चसंतुष्टाःस्वंस्वंस्थानंचनारद ॥ ७१ ॥ देवीययौहरेःस्थानंदृष्टाक्षीरोदशायिनः ॥ ययतुश्चैवस्वगृहंब्र ह्मेशानौचनारद ॥ ७२ ॥ दत्त्वाशुभाशिषंतौचदेवेभ्यःप्रीतिपूर्वकम् ॥ इदंस्तोत्रंमहापुण्यंत्रिसंध्यंयःपठेन्नरः ॥ ७३ ॥ कुबेरतुल्यःसभवेद्राजराजेश्वरो महान् ॥ पंचलक्षजपेनैवस्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥ ७४ ॥ सिद्धस्तोत्रंयदिपठेन्मासमेकंतुसंततम् ॥ महासुखीचराजेंद्रोभविष्यतिनसंशयः ॥ ७५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥ नारदउवाच ॥ नारायणमहाभागनारायणममप्रभो ॥ रूपेणैवगुणेनैवयश सातेजसात्विषा ॥ १ ॥ त्वमेवज्ञानिनांश्रेष्ठःसिद्धानांयोगिनांमुने ॥ तपस्विनांमुनीनांचपरोवेदविदांवरः ॥ २ ॥ महालक्ष्म्याउपाख्यानंविज्ञातंमहद द्भुतम् ॥ अन्यत्किंचिदुपाख्यानंनिगूढंवदसांप्रतम् ॥ ३ ॥ अतीवगोपनीयंयदुपयुक्तंचसर्वतः ॥ अप्रकाश्यंपुराणेषुवेदोक्तंधर्मसंयुतम् ॥ ४ ॥ नाराय णउवाच ॥ नानाप्रकारमाख्यानमप्रकाश्यंपुराणतः ॥ श्रुतंकतिविधंगूढमास्तेब्रह्मन्सुदुर्लभम् ॥ ५ ॥ तेषुयत्सारभूतंचश्रोतुंकिंवात्वमिच्छसि ॥ तन्मे ब्रूहिमहाभागपश्चाद्वक्ष्यामितत्पुनः ॥ ६ ॥ नारदउवाच ॥ स्वाहादेवीहविर्दानेप्रशस्तासर्वकर्मसु ॥ पितृदानेस्वधाशस्तादक्षिणासर्वतोवरा ॥ ७ ॥ ए तासांचरितंजन्मफलंप्राधान्यमेवच ॥ श्रोतुमिच्छामित्वद्वक्त्राद्वदवेदविदांवर ॥ ८ ॥ सूतउवाच ॥ नारदस्यवचःश्रुत्वाप्रहस्यमुनिसत्तम ॥ कथांकथि तुमारेभेपुराणोक्तांपुरातनीम् ॥ ९ ॥ नारायणउवाच ॥ सृष्टेःप्रथमतोदेवाःस्वाहारार्थंययुःपुरा ॥ ब्रह्मलोकंब्रह्मसभामाजग्मुःसुमनोहराम् ॥ १० ॥ ग त्वानिवेदनंचक्रुराहरहेतुकंमुने ॥ ब्रह्माश्रुत्वाप्रतिज्ञायनिषेवेश्रीहरिंपरम् ॥ ११ ॥ नारदउवाच ॥ यज्ञरूपोहिभगवान्कलयाचबभूवह ॥ यज्ञेयद्यद्ध विर्दानंदत्तंतेभ्यश्चब्राह्मणैः ॥ १२ ॥ नारायणउवाच ॥ हविर्ददतिविप्राश्चभक्त्याचक्षत्रियादयः ॥ सुरानैवप्राप्नुवंतितद्दानंमुनिपुंगव ॥ १३ ॥ देवाविषण्णा स्तेसर्वेतत्सभांचययुःपुनः ॥ गत्वानिवेदनंचक्रुराहाराभावहेतुकम् ॥ १४ ॥

वेअस्तौदित्यर्थः॥ ११ ॥ ननुयज्ञेब्राह्मणैर्हविर्दीयतेतेनकिंतेषांतृप्तिर्नभवतीत्याशंकतेनारदःउवाच यज्ञरूपोहीति॥परमात्मायज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः तस्मिन्यज्ञेयद्यद्ब्राह्मणैस्तेभ्योदेवेभ्योहविर्दी यतेतेनकिंतेषांतृप्तिर्नभवतीतिशेषः ॥ १२ ॥ नारायणः समाधत्ते । हविर्ददतीति ॥ सत्यंहविर्यज्ञेदीयतेतथाऽपितद्धविर्देवान्प्रतियदिप्राप्नुयात्तदातेनहविषादेवानांतृप्तिःस्यान्नचतस्यप्रापकः कश्चिदस्तिततोनदेवानांतृप्तिरित्यर्थः ॥ १३ ॥ यतएवंततोब्रह्मसभांप्रतिदेवाययुरित्याह । देवाविषण्णाइति ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ततोदेववाक्यंश्रुत्वाब्रह्मातत्कल्याणार्थंश्रीकृष्णंध्यानस्तोत्रादिनाशरणंययौ ततःश्रीकृष्णेनैतत्कार्यार्थंमूलप्रकृतिःसमाराधनीयेत्युक्तंतदाज्ञयामूलप्रकृतिमाराधितवानित्याह।पूजांचकारोति। ॥ १५ ॥ ततोमूलप्रकृतेरंशःस्वाहारूपेणप्रादुरभूदित्याह । प्रकृतेःकलयेति ॥ १६ ॥ १७ ॥ शक्तिःपत्नीचभवेत्यर्थः ॥ १८ ॥ किमर्थंशक्तिर्वभूवेतिचेत्तस्याग्नेर्दग्धुंशक्त्यभावादित्याह दग्धुमिति ॥ प्रकृतिशब्देनाहुतयस्तृप्तिकारणत्वात्पत्नीकिमर्थं। भवेतिचेद्देवेभ्योहुतहविःप्रापणार्थमित्याह । त्वन्नामोच्चार्येति ॥ १९ ॥ सुरेभ्योदास्यतीत्यन्वयः तद्धविःसुराःप्राप्नुवंतितथा कुर्वितिशेषः ॥ २० ॥ २१ ॥ स्वयंभुवंब्रह्माणंकृष्णोममपतिरभिलषितस्ततस्तपसाकृष्णंपतिंकरिष्यामीत्याह । अहंकृष्णमिति ॥ २२ ॥ ब्रह्मंस्तदन्यमिति ॥ तस्मात्कृष्णादन्यद्यत्किं

ब्रह्माश्रुत्वातुध्यानेनश्रीकृष्णंशरणंययौ ।। पूजांचकारप्रकृतेर्ध्यानेनैवतदाज्ञया ॥ १५ ॥ प्रकृतेःकलयाचैवसर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥ अतीवसुंदरीश्यामा रमणीयामनोहरा ॥ १६ ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्याभक्तानुग्रहकातरा ॥ उवाचेतिविधेरग्रेपद्मयोनेवरंवृणु ॥ १७ ॥ विधिस्तद्वचनंश्रुत्वासंभ्रमात्समुवाच ताम् ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ त्वमग्नेर्दाहिकाशक्तिर्भवयाऽतीवसुंदरी ॥ १८ ॥ दग्धुंनशक्तःप्रकृतीर्हुताशश्चत्वयाविना ॥ त्वन्नामोच्चार्यमंत्रांतेयोदास्यतिह विर्नरः ॥१९॥ सुरेभ्यस्तत्प्राप्नुवंतिसुराःसानंदपूर्वकम् ॥ अग्नेःसंपत्स्वरूपाचश्रीरूपासागृहेश्वरी ॥ २० ॥ देवानांपूजिताशश्वन्नरादीनांभवांबिके॥ब्रह्मण श्चवचःश्रुत्वासाविषण्णाबभूवह ॥ २१ ॥ तमुवाचततोदेवीस्वाभिप्रायंस्वयंभुवम् ॥ स्वाहोवाच ॥ अहंकृष्णंभजिष्यामितपसासुचिरेणच ॥ २२ ॥ ब्रह्मंस्तदन्यंयत्किंचित्स्वप्नवद्भ्रममेवच ॥ विधाताजगतस्त्वंचशंभुर्मृत्युंजयोविभुः ॥ २३ ॥ बिभर्तिशेषोविश्वंचधर्मःसाक्षीचधर्मिणाम् ॥ सर्वाद्यपूज्योदे वानांगणेषुचगणेश्वरः ॥ २४ ॥ प्रकृतिःसर्वसंपूज्यायत्प्रसादात्पुराऽभवत् ॥ ऋषयोमुनयश्चैवपूजितायन्निषेवया ॥ २५ ॥ तत्पादपद्मंनियतंभावेनचिंतया म्यहम् ॥ पद्मास्यापाद्ममित्युक्त्वापद्मनाभानुसारतः ॥ २६ ॥ जगामतपसेदेवीध्यात्वाकृष्णंनिरामयम् ॥ तपस्तेपेवर्षलक्षमेकपादेनपद्मजा ॥ २७ ॥ तदाददर्शश्रीकृष्णंनिर्गुणंप्रकृतेःपरम् ॥ अतीवकमनीयंचरूपंदृष्ट्वाचरूपिणी ॥ २८ ॥ मूर्च्छांसंप्रापकालेनकामेशस्यचकामुकी ॥ विज्ञायतदभिप्रायंसर्व ज्ञस्तामुवाचह ॥ २९ ॥ समुत्थाप्यचतांक्रोडेक्षीणांगींतपसाचिरम् ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वाराहेवैत्वमंशेनममपत्नीभविष्यसि ॥ ३० ॥ नाम्नानाग्नजि तीकन्याकांतेनग्नजितस्यच ॥ अधुनाऽग्नेर्दाहिकात्वंभवपत्नीचभामिनी ॥ ३१ ॥ मंत्रांगरूपापूज्याचमत्प्रसादाद्भविष्यसि ॥ वह्निस्त्वांभक्तिभावेनसंपूज्य चगृहेश्वरीम् ॥३२॥ रमिष्यतित्वयासार्धंरामयारमणीयया ॥ इत्युक्त्वांऽतर्दधेदेवोदेवींसंभाष्यनारद ॥ ३३ ॥ तत्राऽऽजगामसंत्रस्तोवह्निर्ब्रह्मनिदेशतः ॥ सामवेदोक्तध्यानेनध्यात्वातांजगदंबिकाम् ॥ ३४ ॥ संपूज्यपरितुष्टावपाणिंजग्राहमंत्रतः ॥ तदादिव्यंवर्षशतंसरेमेरामयासह ॥ ३५ ॥

चिद्वस्तुस्वप्नवद्भ्रमवच्चमिथ्याजानामीत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रकृतिर्दुर्गाराधादिरूपापूर्वोक्तपंचप्रकृतिप्रकारानतुमूलप्रकृतिस्तस्याःसर्वोत्तमत्वात् ॥ २५ ॥ पाद्मंपद्मसंभवंब्रह्माणमित्यु क्त्वापद्मनाभानुसारतस्तस्योद्देशेनजगामेत्यन्वयः ॥ २६ ॥ पद्मजालक्ष्म्यंशभूता ॥ २७ ॥ प्रकृतेःपरमितिकृष्णांतर्गतब्रह्माभिप्रायेण ॥ २८ ॥ २९ ॥ वाराहेकल्पे ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मंत्रांगरूपामंत्रांतेप्रयुज्यमानातदंगरूपा ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ संत्रस्तोमामियंवरिष्यातिनवेत्याभिप्रायेण ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ मंत्रमाह । ओमिति ॥ प्रणवमायाश्रीबीजाद्योमंत्रः ॥ ४९ ॥ स्तोत्रमाह । वह्निरुवाच ॥ स्वाहावह्निप्रियेति ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेत्रिचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४३ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चषट्त्रिंशत्पद्यैरथसमा

अतीवनिर्जनेदेशेसंभोगसुखदेसदा ॥ बभूवगर्भस्तस्यांचहुताशस्यचतेजसा ॥ ३६ ॥ तंदधारचसादेवीदिव्यंद्वादशवत्सरम् ॥ ततःसुषावपुत्रांश्चरमणीयान्मनोहरान् ॥ ३७ ॥ दक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयान्क्रमेणच ॥ ऋषयोमुनयश्चैवब्राह्मणाःक्षत्रियादयः ॥३८॥ स्वाहांतंमंत्रमुच्चार्यहविर्दानंचचक्रिरे ॥ स्वाहायुक्तंचमंत्रंचयोगृह्णातिप्रशस्तकम् ॥ ३९ ॥ सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्यमंत्रग्रहणमात्रतः ॥ विषहीनोयथासर्पोवेदहीनोयथाद्विजः ॥ ४० ॥ पतिसेवाविहीनास्त्रीविद्याहीनोयथापुमान् ॥ फलशाखाविहीनश्चयथावृक्षोहिनिंदितः ॥ ४१ ॥ स्वाहाहीनस्तथामंत्रोनहुतःफलदायकः ॥ परितुष्टाद्विजाःसर्वेदेवाःसंप्रापुराहुतीः ॥ ४२ ॥ स्वाहांतेनैवमंत्रेणसफलंसर्वमेवच ॥ इत्येवंकथितंसर्वंस्वाहोपाख्यानमुत्तमम् ॥ ४३ ॥ सुखदंमोक्षदंसारंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ नारदउवाच ॥ स्वाहापूजाविधानंचध्यानंस्तोत्रंमुनीश्वर ॥४४॥ संपूज्यवह्निस्तुष्टावयेनतद्वदमेप्रभो ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ ध्यानंचसामवेदोक्तंस्तोत्रंपूजाविधानकम् ॥ ४५ ॥ वदामिश्रूयतांब्रह्मन्सावधानोमुनीश्वर ॥ सर्वयज्ञारंभकालेशालग्रामेघटेऽथवा ॥ ४६ ॥ स्वाहांसंपूज्ययत्नेनयज्ञंकुर्यात्फलाप्तये॥स्वाहांमंत्रांगयुक्तांचमंत्रसिद्धिस्वरूपिणीम् ॥४७॥सिद्धांचसिद्धिदांनृणांकर्मणांफलदांशुभाम् ॥ इतिध्यात्वाचमूलेनदत्त्वापाद्यादिकंनरः ॥ ४८॥ सर्वसिद्धिंलभेत्स्तुत्वामूलमंत्रंमुनेशृणु ॥ ॐह्रींश्रींवह्निजायायैदेव्यैस्वाहेत्यनेनच ॥ ४९ ॥ यःपूजयेच्चतांभक्त्यासर्वेष्टंसंभवेद्ध्रुवम् ॥ वह्निरुवाच॥स्वाहावह्निप्रियावह्निजायासंतोषकारिणी ॥५०॥शक्तिःक्रियाकालदात्रीपरिपाककरीध्रुवा॥गतिःसदानराणांचदाहिकादहनक्षमा॥५१॥संसारसाररूपाचघोरसंसारतारिणी॥देवजीवनरूपाचदेवपोषणकारिणी॥५२॥षोडशैतातिनामानियःपठेद्भक्तिसंयुतः॥सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्यइहलोकेपरत्रच ॥५३॥नांगहीनंभवेत्तस्यसर्वकर्मसुशोभनम् ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंभार्याहीनोलभेत्प्रियाम् ॥ ५४ ॥ रंभोपमांस्वकांतांचसंप्राप्यसुखमाप्नुयात् ॥ इतिश्रीदे०म०नवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेस्वाहोपाख्यानेत्रिचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ नारदशृणुवक्ष्यामिस्वधोपाख्यानमुत्तमम् ॥ पितॄणांचतृप्तिकरंश्राद्धान्नफलवर्धनम् ॥१॥ सृष्टेरादौपितृगणान्ससर्जजगतांविधिः ॥ चतुरश्चमूर्तिमतस्त्रींश्चतेजःस्वरूपिणः ॥२॥ दृष्ट्वासप्तपितृगणानसुखरूपान्मनोहरान् ॥ आहारंससृजेतेषांश्राद्धंतर्पणपूर्वकम्॥३॥स्नानंतर्पणपर्यंतंश्राद्धंतुदेवपूजनम् ॥ आह्निकंचत्रिसंध्यांतंविप्राणांचश्रुतौश्रुतम् ॥ ४ ॥

सतः ॥ स्वधायाःसमुपाख्यानंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ स्वाहोपाख्यानानंतरंस्वधोपाख्यानंवदति । नारदशृण्विति ॥१॥ २ ॥ सप्तपितृगणान् कव्यवाहोनलःसोमोयमश्चैवार्यमातथा ॥ अग्निष्वात्तावर्हिषदःसोमपाःपितृदेवताइतिपुराणांतरप्रसिद्धान् ॥ ३ ॥ तर्पणपर्यंतंश्राद्धदेवपूजनंपंचायतनपूजनंत्रिसंध्यांतमाह्निकम् ॥ ४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वलिंवलिहरणम् ॥ ५ ॥ भस्मांतंमरणपर्यंततस्यसूतकमशुचित्वमित्यर्थः ॥ तदेवाऽऽह। नकर्मार्हश्चेति ॥ ६ ॥ स्वस्थानंजागामेत्यर्थः। नप्राप्नुवंतीति।पूर्ववत्प्रापकाभावात् ॥ ७ ॥ ८ ॥
॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ तारमायारमाकामवीजपूर्वोमंत्रः ॥ २५ ॥ २६ ॥

नित्यंनकुर्याद्योविप्रस्त्रिसंध्यंश्राद्धतर्पणम् ॥ वलिंवेदध्वनिंसोऽपिविषहीनोयथोरगः ॥ ५ ॥ देवीसेवाविहीनश्चश्रीहरेरानिवेद्यभुक् ॥ भस्मांतंसूतकंतस्यन
कर्मार्हश्चनारद ॥ ६ ॥ ब्रह्माश्राद्धादिकंसृष्ट्वाजगामपितृहेतवे ॥ नप्राप्नुवंतिपितरोददतिब्राह्मणादयः ॥ ७ ॥ सर्वेचजग्मुःक्षुधिताःखिन्नास्तुब्रह्मणःसभा
म् ॥ सर्वेनिवेदनंचक्रुस्तमेवजगतांविधिम् ॥ ८ ॥ ब्रह्माचमानसींकन्यांससृजेचमनोहराम् ॥ रूपयौवनसंपन्नांशतचंद्रनिभाननाम् ॥ ९ ॥ विद्यावतीं
गुणवतीमतिरूपवतींसतीम् ॥ श्वेतचंपकवर्णाभांरत्नभूषणभूषिताम् ॥ १० ॥ विशुद्धांप्रकृतेरंशांसस्मितांवरदांशुभाम् ॥ स्वधाभिधांचसुदतींलक्ष्मी
लक्षणसंयुताम् ॥ ११ ॥ शतपद्मपदन्यस्तपादपद्मंचविभ्रतीम् ॥ पत्नींपितॄणांपद्मास्यांपद्मजांपद्मलोचनाम् ॥ १२ ॥ पितृभ्यश्चददौब्रह्मातुष्टेभ्यस्तु
ष्टिरूपिणीम् ॥ ब्राह्मणानांचोपदेशंचकारगोपनीयकम् ॥ १३ ॥ स्वधांतमत्रमुच्चार्यपितृभ्योदेयमित्यपि ॥ क्रमेणतेनविप्राश्चपित्रेदानंददुःपुरा ॥ १४ ॥
स्वाहाशस्तादेवदानेपितृदानेस्वधास्मृता ॥ सर्वत्रदक्षिणाशस्ताहतंयज्ञमदक्षिणम् ॥ १५ ॥ पितरोदेवताविप्रामुनयोमनवस्तथा ॥ पूजांजक्रुःस्वधांशां
तांतुष्टुवुःपरमादरात् ॥ १६ ॥ देवादयश्चसंतुष्टाःपरिपूर्णमनोरथाः ॥ विप्रादयश्चपितरःस्वधादेवीवरेणच ॥ १७ ॥ इत्येवंकथितंसर्वंस्वधोपाख्यानमेव
च॥सर्वेषांचतुष्टिकरंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥१८॥ नारदउवाच ॥ स्वधापूजाविधानंचध्यानंस्तोत्रंमहामुने ॥ श्रोतुमिच्छामियत्नेनवदवेदविदांवर ॥१९॥
॥ नारायणउवाच ॥ ध्यानंचस्तवनंब्रह्मन्वेदोक्तंसर्वमंगलम् ॥ सर्वंजानासिचकथंज्ञातुमिच्छसिवृद्धये ॥ २० ॥ शरत्कृष्णत्रयोदश्यांमघायांश्राद्धवास
रे ॥ स्वधांसंपूज्ययत्नेनततःश्राद्धंसमाचरेत् ॥ २१ ॥ स्वधांनाभ्यर्च्ययोविप्रःश्राद्धंकुर्यादहंमतिः ॥ नभवेत्फलभाक्सत्यंश्राद्धस्यतर्पणस्यच ॥ २२॥
ब्रह्मणोमानसींकन्यांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम् ॥ पूज्यांवैपितृदेवानांश्राद्धानांफलदांभजे ॥ २३ ॥ इतिध्यात्वाशिलायांवाह्यथवामंगलेघटे ॥ दद्यात्पाद्या
दिकंतस्यैमूलेनेतिश्रुतौश्रुतम् ॥ २४ ॥ ॐह्रींश्रींक्लींस्वधादेव्यैस्वाहेतिचमहामुने ॥ समुच्चार्यचसंपूज्यस्तुत्वातांप्रणमेद्द्विजः ॥२५॥ स्तोत्रंशृणुमुनि
श्रेष्ठब्रह्मपुत्रविशारद ॥ सर्ववांछाप्रदंनृणांब्रह्मणायत्कृतंपुरा ॥ २६ ॥ नारायणउवाच ॥ स्वधोच्चारणमात्रेणतीर्थस्नायीभवेन्नरः ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योवा
जपेयफलंलभेत्॥२७॥स्वधास्वधास्वधेत्येवंयदिवारत्रयंस्मरेत् ॥ श्राद्धस्यफलमाप्नोतिवलेश्चतर्पणस्यच॥२८॥ श्राद्धकालेस्वधास्तोत्रंयःशृणोतिसमा
हितः ॥ सलभेच्छ्राद्धसंभूतंफलमेवनसंशयः ॥ २९ ॥ स्वधास्वधास्वधेत्येवंत्रिसंध्यंयःपठेन्नरः ॥ प्रियांविनीतांसलभेत्साध्वींपुत्रगुणान्विताम् ॥ ३० ॥
॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥ ॥ अष्टाधिकैश्चनवतिश्लोकैरथसाविस्तरम् ॥ दक्षिणायाउपाख्यानंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ दक्षिणाख्यानंवक्तुंप्रतिजानीते। उक्तमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ न्यग्रोधवृक्षवद्वटवृक्षवच्छोभिताशरीरशोभया ॥४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ अदक्षिणेक्रोडवामांके

पितॄणांप्राणतुल्यात्वंद्विजजीवनरूपिणी ॥ श्राद्धाधिष्ठातृदेवीचश्राद्धादीनांफलप्रदा ॥ ३१॥ नित्यात्वंसत्यरूपाऽसिपुण्यरूपासिसुव्रते ॥ आविर्भावतिरोभावौसृष्टौचप्रलयेतव ॥ ३२ ॥ ॐस्वस्तिश्चनमःस्वाहास्वधात्वंदक्षिणातथा ॥ निरूपिताश्चतुर्वेदैःप्रशस्ताःकर्मिणांपुनः ॥३३॥ कर्मपूर्त्यर्थमेवैताईश्वरेणविनिर्मिताः ॥ इत्येवमुक्त्वासब्रह्माब्रह्मलोकेस्वसंसदि ॥ ३४ ॥ तस्थौचसहसासद्यःस्वधासाऽविर्बभूवह ॥ तदापितृभ्यःप्रददौतामेवकमलाननाम् ॥ ॥ ३५ ॥ तांसंप्राप्यययुस्तेचपितरश्चप्रहर्षिताः ॥ स्वधास्तोत्रमिदंपुण्यंयःशृणोतिसमाहितः ॥ ३६ ॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुवांछितंफलमाप्नुयात् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेस्वधोपाख्यानेचतुश्चत्वारिंशोध्यायः ॥ ४४ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ उक्तंस्वाहास्वधाख्यानंप्रशस्तंमधुरंपरम् ॥ वक्ष्यामिदक्षिणाख्यानंसावधानोनिशामय ॥ १ ॥ गोपीसुशीलागोलोकेपुराऽसीत्प्रेयसीहरेः ॥ राधाप्रधानासश्रीचीधन्यामान्यामनोहरा ॥ २ ॥ अतीवसुंदरीरामासुभगासुदतीसती ॥ विद्यावतीगुणवतीचातिरूपवतीसती ॥ ३ ॥ कलावतीकोमलांगीकांताकमललोचना ॥ सुश्रोणीसुस्तनीश्यामान्यग्रोधपरिमंडिता ॥४॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यारत्नालंकारभूषिता ॥ श्वेतचंपकवर्णाभाबिंबोष्ठीमृगलोचना ॥ ५ ॥ कामशास्त्रेषुनिपुणाकामिनीहंसगामिनी ॥ भावानुरक्ताभावज्ञाकृष्णस्यप्रियभामिनी ॥ ६ ॥ रसज्ञारसिकारासेरासेशस्यरसोत्सुका ॥ उवासाऽदक्षिणेक्रोडेराधायाःपुरतःपुरा ॥ ॥ ७ ॥ संबभूवानम्रमुखोभयेनमधुमूदनः ॥ दृष्ट्वाराधांचपुरतोगोपीनांप्रवरोत्तमाम् ॥ ८ ॥ कामिनींरक्तवदनांरक्तपंकजलोचनाम् ॥ कोपेनकंपितांगींचकोपेनस्फुरिताधराम् ॥ ९ ॥ वेगेनतांतुगच्छंतींविज्ञायतदनंतरम् ॥ विरोधभीतोभगवानंतर्धानंचकारसः ॥ १० ॥ पलायंतंचकांतंचशांतंसत्त्वंसुविग्रहम् ॥ विलोक्यकंपितागोप्यःसुशीलाद्यास्ततोभिया॥ ११॥विलोक्यलंपटंतत्रगोपीनांलक्षकोटयः ॥ पुटांजलियुताभीताभक्तिनम्रात्मकंधराः ॥ १२ ॥ रक्षरक्षेत्युक्तवंत्योदेवीमितिपुनःपुनः ॥ ययुर्भयेनशरणंतस्याश्चरणपंकजे॥१३॥त्रिलक्षकोटयोगोपाःसुदामादयएवच ॥ ययुर्भयेनशरणंतत्पादाब्जेचनारद ॥१४॥ पलायंतंचकांतंचविज्ञायपरमेश्वरी ॥ पलायंतींसहचरींसुशीलांचशशापसा ॥ १५ ॥ अद्यप्रभृतिगोलोकंसाचेदायातिगोपिका ॥ सद्योगमनमात्रेणभस्मसाच्चभविष्यति ॥ १६ ॥ इत्येवमुक्त्वातत्रैवदेवदेवेश्वरीरुषा ॥ रासेश्वरीरासमध्येरासेशमाजुहावह ॥ १७ ॥

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ देवींराधांरक्षरक्षेत्युक्तवंत्यः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ गमनमात्रेणाऽगमनमात्रण ॥ १६ ॥ रासेशंकृष्णमाजुहावाऽऽकारितवती ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १८ ॥ १९ ॥ ननुत्वयागर्वःकिमर्थंकृतइतिचेत्त्वयाममसंमानस्तथैवकृतस्तस्मादित्याह । स्त्रीगर्वइति ॥ पतिसौभाग्यात्पतिकृतसंमानादित्यर्थः ॥ ननुतर्ह्यधुनागर्वएवपाल्यतांतत्राऽऽह । सुखंचेति ॥ त्वत्प्रीतौसत्यामेवगर्वात्सुखंभवतिनान्यथायस्मादेवंतस्मात्सुखार्थंधर्मेणपतिंसेवेदित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ बंधुषुस्त्रीणांभर्तुर्बंधोःसमोबंधुर्नेत्यन्वयः ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ २६ ॥ कुलजानांपतिव्रतानां यात्वसत्कुलप्रसूतासाकांतंविज्ञातुमक्षमाभवतीतिदूरतस्तस्यपुनःसेवादिकमित्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३०॥ ३१ ॥ ३२ ॥ तंकांतंसर्वापि

नालोक्यपुरतःकृष्णंराधाविरहकातरा॥युगकोटिसमंमेनेक्षणभेदेनसुव्रता॥१८॥हेकृष्णप्राणनाथेशाऽऽगच्छप्राणाधिकप्रिय॥प्राणाधिष्ठातृदेवेशप्राणायांतित्वयाविना॥१९॥स्त्रीगर्वःपतिसौभाग्याद्वर्धतेचदिनेदिने ॥ सुखंचविपुलंयस्मात्तंसेवेद्धर्मतःसदा ॥२०॥ पतिर्बंधुःकुलस्त्रीणामधिदेवःसदागतिः ॥ परसंपत्स्वरूपश्चमूर्तिमान्भोगदःसदा ॥ २१ ॥ धर्मदःसुखदःशश्वत्प्रीतिदःशांतिदःसदा ॥ सन्मानैर्दीप्यमानश्चमानदोमानखंडनः ॥ २२ ॥ सारात्सारतरःस्वामीबंधूनांबंधुवर्धनः ॥ नचभर्तुःसमोबंधुर्बंधोर्बंधुषुदृश्यते ॥ २३ ॥ भरणादेवभर्ताचपालनात्पतिरुच्यते ॥ शरीरेशाच्चसस्वामीकामदःकांतउच्यते ॥ २४ ॥ बंधुश्चसुखवृद्ध्याचप्रीतिदानात्प्रियःस्मृतः ॥ ऐश्वर्यदानादीशश्चप्राणेशात्प्राणनायकः ॥ २५ ॥ रतिदानाच्चरमणःप्रियोनास्तिप्रियात्परः ॥ पुत्रस्तुस्वामिनःशुक्राज्जायतेतेनसप्रियः ॥ २६ ॥ शतपुत्रात्परःस्वामीकुलजानांप्रियःसदा ॥ असत्कुलप्रसूतायाकांतंविज्ञातुमक्षमा ॥ २७ ॥ स्नानंचसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदक्षिणा॥प्रादक्षिण्यंपृथिव्याश्चसर्वाणिचतपांसिच॥२८॥सर्वाण्येवव्रतादीनिमहादानानियानिच॥ उपोषणानिपुण्यानियानियानिश्रुतानिच ॥२९॥ गुरुसेवाविप्रसेवावेदसेवादिकंचयत् ॥ स्वामिनःपादसेवायाःकलांनार्हतिषोडशीम् ॥ ३० ॥ गुरुर्विप्रेंद्रदेवेषुसर्वेभ्यश्चपतिर्गुरुः ॥ विद्यादातायथापुंसांकुलजानांतथाप्रियः ॥ ३१ ॥ गोपीनांलक्षकोटीनांगोपानांचतथैवच ॥ ब्रह्मांडानामसंख्यानांतत्रस्थानांतथैवच ॥ ३२ ॥ विश्वादिगोलकांतानामीश्वरीयत्प्रसादतः ॥ अहंनजानेतंकांतंस्त्रीस्वभावोदुरत्ययः॥३३॥इत्युक्त्वाराधिकाकृष्णंतत्रदध्यौस्वभक्तितः ॥ रुरोदप्रेम्णासाराधानाथनाथेतिचाऽब्रवीत् ॥ ३४ ॥ दर्शनंदेहिरमणदीनाविरहदुःखिता ॥ अथसादक्षिणादेवीध्वस्तागोलोकतोमुने ॥ ३५ ॥ सुचिरंचतपस्तप्त्वाविवेशकमलातनौ ॥ अथदेवादयःसर्वेयज्ञंकृत्वासुदुष्करम् ॥ ३६ ॥ नालभंस्तेफलंतेषांविषण्णाःप्रययुर्विधिम् ॥ विधिर्निवेदनंश्रुत्वादेवादीनांजगत्पतिम्॥३७॥दध्यौचसुचिरंभक्त्याप्रत्यादेशमवापसः ॥ नारायणश्चभगवान्महालक्ष्म्याश्चदेहतः॥३८॥विनिष्कृष्यमर्त्यलक्ष्मींब्रह्मणेदक्षिणांददौ ॥ ब्रह्मादददौतांयज्ञायपूरणार्थंचकर्मणाम् ॥ ३९ ॥ यज्ञःसंपूज्यविधिवत्तांतुष्टावतदामुदा ॥ तप्तकांचनवर्णाभांचंद्रकोटिसमप्रभाम् ॥ ४० ॥

क्षयासेव्यंनजाने यतःस्त्रीस्वभावोदुरत्ययोभवति ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ जगत्पतिंविष्णुंदध्यौचिंतितवान् प्रत्यादेशमुत्तरंतवकार्यंकरिष्यामीत्येवंरूपमवापप्राप्तवान् ॥ ३८॥ मर्त्यलक्ष्मींमनुष्याणांलक्ष्मींदक्षिणानाम्नींब्रह्मणेददौ यज्ञाययज्ञपुरुषाय ॥ ३९ ॥ ४० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ दक्षिणायांदीयमानायांफलस्यजायमानत्वेनकर्मफलंदक्षिणायाःपुत्रइत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ तत्पुत्ररूपंफलं दक्षिणायामुत्पन्नंसर्वेभ्योयजमानेभ्योददावित्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ यतएवंततोदक्षिणादानेविलंबोनकर्तव्यइत्याह । कृत्वाकर्मचेति ॥५३॥ ५४ ॥ ५५ ॥ तच्छतगुणा शतगुणादक्षिणाश तगुणितेत्यर्थः ॥ द्विगुणाशतगुणाशतगुणितादक्षिणाद्विगुणितेत्यर्थः ॥ एवमन्यत्रव्याख्येयम् ॥ एवंब्राह्मणानांदक्षिणावर्धतइत्यर्थः ॥ ५६ ॥ एवंदक्षिणायाअप्रदानेनिष्फलंकर्मभवे

अतीवकमनीयांचसुंदरींसुमनोहराम् ॥ कमलास्यांकोमलांगींकमलायतलोचनाम् ॥ ४१ ॥ कमलासनपूज्यांचकमलांगसमुद्भवाम् ॥ वह्निशुद्धांशु काधानांबिंबोष्ठींसुदतींसतीम् ॥ ४२ ॥ बिभ्रतींकबरीभारंमालतीमाल्यसंयुतम् ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांरत्नभूषणभूषिताम् ॥ ४३ ॥ सुवेषाढ्यांचसु स्नातांमुनिमानसमोहिनीम् ॥ कस्तुरीबिंदुभिःसार्धंसुगंधिचंदनेंदुभिः ॥ ४४ ॥ सिंदूरबिंदुनालेपेनाप्यलकाधःस्थलोज्ज्वलाम् ॥ सुप्रशस्तनितंबा ढ्यांबृहच्छ्रोणिपयोधराम् ॥ ४५ ॥ कामदेवाधाररूपांकामबाणप्रपीडिताम् ॥ तांदृष्ट्वारमणीयांचयज्ञोमूर्च्छामवापह ॥ ४६ ॥ पत्नींतामेवजग्राहवि धिबोधितपूर्वकम् ॥ दिव्यंवर्षशतंचैवतांगृहीत्वातुनिर्जने ॥ ४७ ॥ यज्ञोरेमेमुदायुक्तोरामेशोरमयासह ॥ गर्भंदधारसादेवीदिव्यंद्वादशवर्षकम् ॥ ४८ ॥ ततःसुषावपुत्रंचफलंवैसर्वकर्मणाम् ॥ परिपूर्णेकर्मणिचतत्पुत्रःफलदायकः ॥ ४९ ॥ यज्ञोदक्षिणयासार्धंपुत्रेणचफलेनच ॥ कर्मिणांफलदाताचेत्येवंवे दविदोविदुः ॥ ५० ॥ यज्ञश्चदक्षिणांप्राप्यपुत्रंचफलदायकम् ॥ फलंददौचसर्वेभ्यःकर्मणांचैवनारद ॥ ५१ ॥ तदादेवादयस्तुष्टाःपरिपूर्णमनोरथाः ॥ स्वस्थानेतेययुःसर्वेधर्मवक्त्रादिदंश्रुतम् ॥ ५२ ॥ कृत्वाकर्मचकर्ताचतूर्णंदद्याच्चदक्षिणाम् ॥ तत्क्षणंफलमाप्नोतिवेदैरुक्तमिदंमुने ॥ ५३ ॥ कर्मीकर्मणि पूर्णेचतत्क्षणेयदिदक्षिणाम् ॥ नदद्याद्ब्राह्मणेभ्यश्चदैवेनाज्ञानतोऽथवा ॥ ५४ ॥ मुहूर्तेसमतीतेतुद्विगुणासाभवेद्ध्रुवम् ॥ एकरात्रेव्यतीतेचभवेच्छतगु णाचसा ॥ ५५ ॥ त्रिरात्रेतच्छतगुणासप्ताहेद्विगुणाततः ॥ मासेलक्षगुणाप्रोक्ताब्राह्मणानांचवर्धते ॥ ५६ ॥ संवत्सरेव्यतीतेतुसात्रिकोटिगुणाभवेत् ॥ कर्मतद्यजमानानांसर्वेवैनिष्फलंभवेत् ॥ ५७ ॥ सचब्रह्मस्वहारीचनकर्मार्होशुचिर्नरः ॥ दरिद्रोव्याधियुक्तश्चतेनपापेनपातकी ॥ ५८ ॥ तद्गृहाद्याति लक्ष्मीश्चशापंदत्वासुदारुणम् ॥ पितरोनैवगृह्णंतितद्दत्तंश्राद्धतर्पणम् ॥ ५९ ॥ एवंसुराश्चतत्पूजांतद्दत्तामग्निराहुतिम् ॥ दत्तंनदीयतेदानंग्रहीतानैवया चते ॥ ६० ॥ उभौतौनरकेयातश्छिन्नरज्जौयथाघटः ॥ नार्पयेद्यजमानश्चेद्याचितश्चापिदक्षिणाम् ॥ ६१ ॥ भवेद्ब्रह्मस्वापहारीकुंभीपाकंव्रजेद्ध्रुवम् ॥ वर्षलक्षंवसेत्तत्रयमदूतेनताडितः ॥ ६२ ॥ ततोभवेत्सचांडालोव्याधियुक्तोदरिद्रकः ॥ पातयेत्पुरुषान्सप्तपूर्वांश्चसप्तजन्मतः ॥ ६३ ॥

दित्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ सुराःपूजांनगृह्णंतितद्दत्तामाहुतिंचाग्निर्नगृह्णातीत्यर्थः ॥ दत्तंचनदीयतइति कर्मसमयेदत्तंमनसासंकल्पितंदानंदक्षिणारूपंयजमानेनयादिनदीयतेतथाग्रहीता विप्रोयदितद्दक्षिणारूपंनयाचतेइत्यर्थः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६४ ॥ यज्ञपुरुषेणकृतंपूजाविधिमित्यर्थः ॥ कर्मणइति ॥ अदक्षिणस्ययज्ञस्यफलमेवनास्तितदातत्फलंकस्यभविष्यतीतिशंकावृथैवेतिभावः ॥ ६५ ॥ एवकारोभिन्नक्रमः ॥ कर्मण्येवेत्यर्थः ॥ फलमभ्युपेत्याऽऽह ॥ तद्भुंक्तेचबलिरिति ॥ ६६ ॥ चकारेणादक्षिणयज्ञफलमित्यर्थः ॥ ६७ ॥ असद्विजैर्व्यभिचारादिदोषदुष्टैः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

इत्येवंकथितंविप्रकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ नारदउवाच ॥ यत्कर्मदक्षिणाहीनंकोभुंक्तेतत्फलंमुने ॥ ६४ ॥ पूजाविधिंदक्षिणायाःपुरायज्ञकृतंवद ॥ नारायणउवाच ॥ कर्मणोऽदक्षिणस्यैवकुतएवफलंमुने ॥ ६५ ॥ सदक्षिणेकर्मणिचफलमेवप्रवर्तते ॥ अदक्षिणंचयत्कर्मतद्भुंक्तेचबलिर्मुने ॥ ६६ ॥ बलयेतत्प्रदत्तंचवामनेनपुरामुने ॥ अश्रोत्रियःश्राद्धद्रव्यमश्रद्धादानमेवच ॥ ६७ ॥ वृषलीपतिविप्राणांपूजाद्रव्यादिकंचयत् ॥ असद्विजैःकृतंयज्ञमशुचेःपूजनंचयत् ॥ ६८ ॥ गुरावभक्तस्यकर्मबलिर्भुंक्तेनसंशयः ॥ दक्षिणायाश्चयद्ध्यानंस्तोत्रंपूजाविधिक्रमम् ॥ ६९ ॥ तत्सर्वंकण्वशाखोक्तंप्रवक्ष्यामिनिशामय ॥ पुरासंप्राप्यतांयज्ञःकर्मदक्षांचदक्षिणाम् ॥ ७० ॥ मुमोहास्याःस्वरूपेणतुष्टावकामकातरः ॥ यज्ञउवाच ॥ पुरागोलोकगोपीत्वंगोपीनांप्रवरावरा ॥ ७१ ॥ राधासमातत्सखीचश्रीकृष्णप्रेयसीप्रिया ॥ कार्तिकीपूर्णिमायांतुरासेराधामहोत्सवे ॥ ७२ ॥ आविर्भूतादक्षिणांसाल्लक्ष्म्याश्चतेनदक्षिणा ॥ पुरात्वंचसुशीलाख्याख्याताशीलेनशोभने ॥ ७३ ॥ लक्ष्मीदक्षांसभागात्वंराधाशापाच्चदक्षिणा ॥ गोलोकात्त्वंपरिभ्रष्टाममभाग्यादुपस्थिता ॥ ॥ ७४ ॥ कृपांकुरुमहाभागेमामेवस्वामिनंकुरु ॥ कर्मिणांकर्मणांदेवीत्वमेवफलदासदा ॥ ७५ ॥ त्वयाविनाचसर्वेषांसर्वंकर्मचनिष्फलम् ॥ त्वयाविनातथाकर्मकर्मिणांचनशोभते ॥ ७६ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशाश्चदिक्पालादयएवच ॥ कर्मणश्चफलंदातुंनशक्ताश्चत्वयाविना ॥ ७७ ॥ कर्मरूपीस्वयंब्रह्माफलरूपीमहेश्वरः ॥ यज्ञरूपीविष्णुरहंत्वमेषांसाररूपिणी ॥ ७८ ॥ फलदातृपरंब्रह्मनिर्गुणाप्रकृतिःपरा ॥ स्वयंकृष्णश्चभगवान्सचशक्तस्त्वयासह ॥ ७९ ॥ त्वमेवशक्तिःकांतेमेशश्वज्जन्मनिजन्मनि ॥ सर्वकर्मणिशक्तोऽहंत्वयासहवरानने ॥ ८० ॥ इत्युक्त्वाचपुरस्तस्थौयज्ञाधिष्ठातृदेवता ॥ तुष्टावभूवसादेवीभेजेतंकमलाकला ॥ ८१ ॥ इदंचदक्षिणास्तोत्रंयज्ञकालेचयःपठेत् ॥ फलंचसर्वयज्ञानांप्राप्नोतिनात्रसंशयः ॥ ८२ ॥ राजसूयेवाजपेयेगोमेधेनरमेधके ॥ अश्वमेधेलांगलेचविष्णुयज्ञेयशस्करे ॥ ८३ ॥ धनदेभूमिदेपूर्तेफलदेगजमेधके ॥ लोहयज्ञेस्वर्णयज्ञेरत्नयज्ञेऽथताम्रके ॥ ८४ ॥ शिवयज्ञेरुद्रयज्ञेशक्रयज्ञेचबंधुके ॥ वृष्टौवरुणयागेचकंडकेवैरिमर्दने ॥ ८५ ॥ शुचियज्ञेधर्मयज्ञेऽध्वरेचपापमोचने ॥ ब्रह्माणीकर्मयागेचयोनियागेचभद्रके ॥ ८६ ॥

दक्षिणांसाद्दक्षिणस्कंधादित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ तंयज्ञपुरुषंपतिंभेजेसेवितवती ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ भद्रकेकल्याणकरे योनियागेमूलप्रकृतियागेअंबायज्ञेइत्यर्थः ॥ एतेचयागाः ॥ केचित्प्रसिद्धशाखायांप्रसिद्धाः केचिदप्रसिद्धशाखायामितिबोध्यम् ॥ ८६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ तारलक्ष्मीकाममायाबीजाद्योमंत्रः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ अंगहीनंनभवेत्सांगंभवेदित्यर्थः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ इतिश्रीदेवी भागवततिलकेनवमस्कंधेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ त्रिसप्ततिश्लोकवर्यैःषष्ठ्युपाख्यानमद्भुतम् ॥ पृच्छतेनारदायात्रयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ दक्षिणोपाख्यानंश्रुत्वान्यशक्त्युपाख्यानंपृच्छाति ॥ नारदउवाच अनेकानामिति ॥ सरस्वत्यादिदेवीनामित्यर्थः ॥ अन्यासांषष्ठ्यादिदेवीनामित्यर्थः ॥ १ ॥ वेदेषुसर्वदेवीनांपृथक्पृथगाख्यानमुपवार्णितमास्तितन्मयाकि

एतेषांचसमारंभेइदंस्तोत्रंचयःपठेत् ॥ निर्विघ्नेनचतत्कर्मसर्वंभवतिनिश्चितम् ॥ ८७ ॥ इदंस्तोत्रंचकथितंध्यानंपूजाविधिंशृणु ॥ शालग्रामेघटेवाऽपि दक्षिणांपूजयेत्सुधीः ॥ ८८ ॥ लक्ष्मीदक्षांससंभूतांदक्षिणांकमलाकलाम् ॥ सर्वकर्मसुदक्षांचफलदांसर्वकर्मणाम् ॥ ८९ ॥ विष्णोःशक्तिस्वरूपांचपूजितांवंदितांशुभाम् ॥ शुद्धिदांशुद्धिरूपांचसुशीलांशुभदांभजे ॥ ९० ॥ ध्यात्वाऽनेनैववरदांमूलेनपूजयेत्सुधीः ॥ दत्वापाद्यादिकंदेव्यैवेदोक्तेनैवनारद ॥ ९१ ॥ ॐश्रींक्लींह्रींदक्षिणायैस्वाहेतिचविचक्षणः ॥ पूजयेद्विधिवद्भक्त्यादक्षिणांसर्वपूजिताम् ॥ ९२ ॥ इत्येवंकथितंब्रह्मन्दक्षिणाख्यानमेवच ॥ सुखदंप्रीतिदंचैवफलदंसर्वकर्मणाम् ॥ ९३ ॥ इदंचदक्षिणाख्यानंयःशृणोतिसमाहितः ॥ अंगहीनंचतत्कर्मनभवेद्भारतेभुवि ॥ ९४ ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंनिश्चितंचगुणान्वितम् ॥ भार्याहीनोलभेद्भार्यांसुशीलांसुंदरींपराम् ॥ ९५ ॥ वरारोहांपुत्रवतींविनीतांप्रियवादिनीम् ॥ पतिव्रतांचशुद्धांचकुलजांचवधूंवराम् ॥ ९६ ॥ विद्याहीनोलभेद्विद्यांधनहीनोलभेद्धनम् ॥ भूमिहीनोलभेद्भूमिंप्रजाहीनोलभेत्प्रजाम् ॥ ९७ ॥ संकटेबंधुविच्छेदेविपत्तौवंधनेतथा ॥ मासमेकमिदंश्रुत्वामुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ९८ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम० नवमस्कंधे नारदनारायणसंवादेदक्षिणोपाख्यानेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ नारदउवाच ॥ अनेकानांचदेवीनांश्रुतमाख्यानमुत्तमम् ॥ अन्यासांचरितंब्रह्मन्वदवेदविदांवर ॥ १ ॥ नारायणउवाच ॥ सर्वासांचरितंविप्रवेदेषुचपृथक्पृथक् ॥ पूर्वोक्तानांचदेवीनांकासांश्रोतुमिहेच्छसि ॥ २ ॥ नारदउवाच ॥ षष्ठीमंगलचंडीचमनसाप्रकृतेःकला ॥ उत्पत्तिमासांचरितंश्रोतुमिच्छामितत्त्वतः ॥ ३ ॥ नारायणउवाच ॥ षष्ठांशाप्रकृतेर्याचसाचषष्ठीप्रकीर्तिता ॥ बालकानामधिष्ठात्रीविष्णुमायाचबालदा ॥ ॥ ४ ॥ मातृकासुचविख्यातादेवसेनाभिधाचया ॥ प्राणाधिकप्रियासाध्वीस्कंदभार्याचसुव्रता ॥ ५ ॥ आयुःप्रदाचबालानांधात्रीरक्षणकारिणी ॥ सततंशिशुपार्श्वस्थायोगिनसिद्धियोगिनी ॥ ६ ॥ तस्याःपूजाविधिंब्रह्मन्नितिहासमिदंशृणु ॥ यच्छ्रुतंधर्मवक्त्रेणसुखदंपुत्रदंपरम् ॥ ७ ॥

यत्पर्यंतंवक्तव्यंतन्मध्येयासांदेवीनामाख्यानंतवाभिलषितंतत्पृच्छेत्याह ॥ सर्वासामिति ॥ २ ॥ ३ ॥ तत्रतिसृणांमध्येषष्ठ्युपाख्यानमाह । षष्ठांशेति ॥ प्रकृतेर्मूलप्रकृतेःषष्ठांशत्वात्षष्ठीपदवाच्यत्वम् ॥ ४ ॥ देवसेनेति ॥ आयुष्यसूक्तेतुषष्ठींचयाभिद्रसेनेत्युतआहुस्तांविद्यामितिवाक्येनेंद्रसेनेतिनामोक्तंतथाचदेवसेनाइंद्रसेनेत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ चरुंभुक्त्वास्थितायाइतिशेषः ॥ दैवंदेवानांद्वादशवर्षाणीत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ज्ञानयोगंविवेकम् ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

राजाप्रियव्रतश्चासीत्स्वायंभुवमनोःसुतः ॥ योगींद्रोनोद्वहद्भार्यांतपस्यासुरतःसदा ॥ ८ ॥ ब्रह्माज्ञयाचयत्नेनकृतदारोबभूवह ॥ सुचिरंकृतदारश्च नलेभेतनयंमुने ॥ ९ ॥ पुत्रेष्टियज्ञंतंचापिकारयामासकश्यपः ॥ मालिन्यैतस्यकांतायैमुनिर्यज्ञचरुंददौ ॥ १० ॥ भुक्त्वाचतंचरुंतस्याःसद्योगर्भोबभूव ह ॥ दधारतंचसादेवीदैवंद्वादशवत्सरम् ॥ ११ ॥ ततःसुषावसाब्रह्मन्कुमारंकनकप्रभम् ॥ सर्वावयवसंपन्नंमृतमुत्तारलोचनम् ॥ १२ ॥ तंदृष्ट्वारुरुदुः सर्वानार्यश्चबांधवस्त्रियः ॥ मूर्च्छामवापतन्मातापुत्रशोकेनभूयसा ॥ १३ ॥ श्मशानंचययौराजागृहीत्वाबालकंमुने ॥ रुरोदतत्रकांतारेपुत्रंकृत्वास्ववक्ष सि ॥ १४ ॥ नोत्सृजद्बालकंराजाप्राणांस्त्यक्तुंसमुद्यतः ॥ ज्ञानयोगंविसस्मारपुत्रशोकात्सुदारुणात् ॥ १५ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रविमानंचददर्शसः ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशंमणिराजविनिर्मितम् ॥ १६ ॥ तेजसाज्वलितंशश्वच्छोभितंक्षौमवाससा ॥ नानाचित्रविचित्राढ्यंपुष्पमालाविराजितम् ॥ १७ ॥ ददर्शतत्रदेवींचकमनीयांमनोहराम् ॥ श्वेतचंपकवर्णाभांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम् ॥ १८ ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांरत्नभूषणभूषिताम् ॥ कृपामयींयोगसि द्धांभक्तानुग्रहकातराम् ॥ १९ ॥ दृष्ट्वातांपुरतोराजातुष्टावपरमादरम् ॥ चकारपूजंनतस्याविहायबालकंभुवि ॥ २० ॥ पप्रच्छराजातांतुष्टांग्रीष्मसूर्य समप्रभाम् ॥ तेजसाज्वलितांशांतांकांतांस्कंदस्यनारद ॥ २१ ॥ राजोवाच ॥ कात्वंसुशोभनेकांतेकस्यकांतासिसुव्रते ॥ कस्यकन्यावरारोहेधन्या मान्याचयोषिताम् ॥ २२ ॥ नृपेंद्रस्यवचःश्रुत्वाजगन्मंगलचंडिका ॥ उवाचदेवसेनासादेवानांरणकारिणी ॥ २३ ॥ देवानांदैत्यग्रस्तानांपुरासेनाबभूव सा ॥ जयंददौसातेभ्यश्चदेवसेनाचतेनसा ॥ २४ ॥ श्रीदेवसेनोवाच ॥ ब्रह्मणोमानसीकन्यादेवसेनाहमीश्वरी ॥ सृष्ट्वामांमनसाधाताददौस्कंदायभूमिप ॥ २५ ॥ मातृकासुचविख्यातास्कंदभार्याचसुव्रता ॥ विश्वेषष्ठीतिविख्याताषष्ठांशाप्रकृतेःपरा ॥ २६ ॥ अपुत्रायपुत्रदाऽहंप्रियादात्रीप्रियायच ॥ धनदाऽहंदरिद्रेभ्यःकर्मिभ्यश्चस्वकर्मदा ॥ २७ ॥ सुखंदुःखंभयंशोकोहर्षोमंगलमेवच ॥ संपत्तिश्चविपत्तिश्चसर्वंभवतिकर्मणा ॥ २८ ॥ कर्मणाबहुपुत्र श्चवंशहीनःस्वकर्मणा ॥ कर्मणामृतपुत्रश्चकर्मणाचिरजीवनः ॥ २९ ॥ कर्मणागुणवांश्चैवकर्मणाचांगहीनकः ॥ कर्मणाबहुभार्यश्चभार्याहीनश्चकर्मणा ॥ ३० ॥ कर्मणारूपवान्धर्मीरोगीशश्वत्स्वकर्मणा ॥ कर्मणाचभवेद्व्याधिःकर्मणाऽऽरोग्यमेवच ॥ ३१ ॥ तस्मात्कर्मपरंराजन्सर्वेभ्यश्चश्रुतौश्रुतम् ॥ इत्येवमुक्त्वासादेवीगृहीत्वाबालकंमुने ॥ ३२ ॥ महाज्ञानेनसादेवीजीवयामासलीलया ॥ राजाददर्शतंबालंसस्मितंकनकप्रभम् ॥ ३३ ॥

॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ परमुत्कृष्टंतादृशमहत्कर्मणोदात्र्यहमस्मीतिभावः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ षष्ठादिवसेऽथवाएकविंशतितेमवासरे ॥ ४७ ॥ वर्धयामासपूजामित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

देवसेनाचपश्यंतंनृपमापृच्छ्यसातदा ॥ गृहीत्वाबालकंदेवीगगनंगंतुमुद्यता ॥ ३४ ॥ पुनस्तुष्टावतांराजाशुष्ककंठोष्ठतालुकः ॥ नृपस्तोत्रेणसादेवीपरितुष्टावभूवह ॥ ३५ ॥ उवाचतंनृपंब्रह्मन्वेदोक्तंकर्मनिर्मितम् ॥ देव्युवाच ॥ त्रिषुलोकेषुत्वंराजास्वायंभुवमनोःसुतः ॥ ३६ ॥ ममपूजांचसर्वत्रकारयित्वास्वयंकुरु ॥ तदादास्यामिपुत्रंतेकुलपद्मंमनोहरम् ॥ ३७ ॥ सुव्रतंनामविख्यातंगुणवंतंसुपंडितम् ॥ जातिस्मरंचयोगींद्रंनारायणकलात्मकम् ॥ ॥ ३८ ॥ शतक्रतुकरंश्रेष्ठंक्षत्रियाणांचवंदितम् ॥ मत्तमातंगलक्षाणांधृतवंतंबलंशुभम् ॥ ३९ ॥ धनिनंगुणिनंशुद्धंविदुषांप्रियमेवच ॥ योगिनांज्ञानिनांचैवसिद्धिरूपंतपस्विनाम् ॥४०॥ यशस्विनंचलोकेषुदातारंसर्वसंपदाम् ॥ इत्येवमुक्त्वासादेवीतस्मैतद्बालकंददौ ॥४१॥ राजाचकारस्वीकारंपूजार्थंचप्रियव्रतः ॥ जगामदेवीस्वर्गंचदत्त्वातस्मैशुभंवरम् ॥ ४२ ॥ आजगामसहामात्यःस्वगृहंहृष्टमानसः ॥ आगत्यकथयामासवृत्तांतंपुत्रहेतुकम् ॥ ॥ ४३ ॥ श्रुत्वाबभूवुःसंतुष्टावरानार्थश्चनारद ॥ मंगलंकारयामाससर्वत्रपुत्रहेतुकम् ॥ ४४ ॥ देवींचपूजयामासब्राह्मणेभ्योधनंददौ ॥ राजाचप्रतिमासेषुशुक्लषष्ठ्यांमहोत्सवम् ॥ ४५ ॥ षष्ठ्यादेव्याश्चयत्नेनकारयामाससर्वतः ॥ बालानांसूतिकागारेषष्ठाहेयत्नपूर्वकम् ॥ ४६ ॥ तत्पूजांकारयामासचैकविंशतिवासरे ॥ बालानांशुभकार्येचशुभान्नप्राशनेतथा ॥ ४७ ॥ सर्वत्रवर्धयामासस्वयमेवचकारह ॥ ध्यानंपूजाविधानंचस्तोत्रंमत्तोनिशामय ॥ ॥ ४८ ॥ यच्छ्रुतंधर्मवक्त्रेणकौथुमोक्तंचसुव्रत ॥ शालग्रामेघटेवाऽथवटमूलेऽथवामुने ॥ ४९ ॥ भित्त्यांपुत्तलिकांकृत्वापूजयेद्धाविचक्षणः ॥ षष्ठांशांप्रकृतेःशुद्धांप्रतिष्ठाप्यचसुप्रभाम् ॥ ५० ॥ सुपुत्रदांचशुभदांदयारूपांजगत्प्रसूम् ॥ श्वेतचंपकवर्णाभांरत्नभूषणभूषिताम् ॥ ५१ ॥ पवित्ररूपांपरमां देवसेनांपरांभजे ॥ इतिध्यात्वास्वशिरसिपुष्पंदत्त्वाविचक्षणः ॥ ५२ ॥ पुनर्ध्यात्वाचमूलेनपूजयेत्सुव्रतांसतीम् ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयैश्चगंधपुष्पप्रदीपकैः ॥ ५३ ॥ नैवेद्यैर्विविधैश्चापिफलेनशोभनेनच॥ ॐह्रींषष्ठीदेव्यैस्वाहेतिविधिपूर्वकम् ॥ ५४ ॥ अष्टाक्षरंमहामंत्रंयथाशक्तिजपेन्नरः ॥ ततःस्तुत्वाचप्रणमेद्भक्तियुक्तःसमाहितः ॥ ५५ ॥ स्तोत्रंचसामवेदोक्तंवरंपुत्रफलप्रदम् ॥ अष्टाक्षरंमहामंत्रंलक्षधायोजपेत्ततः ॥ ५६ ॥ सुपुत्रंसलभेन्नूनमित्याहकमलोद्भवः ॥ स्तोत्रंशृणुमुनिश्रेष्ठसर्वकामशुभावहम् ॥ ५७ ॥ वांछाप्रदंचसर्वेषांगूढंवेदेषुनारद ॥ प्रियव्रतउवाच ॥ नमोदेव्यैमहादेव्यैसिद्ध्यैशांत्यैनमोनमः ॥ ५८ ॥ शुभायैदेवसेनायैषष्ठ्यैदेव्यैनमोनमः ॥ वरदायैपुत्रदायैधनदायैनमोनमः ॥ ५९ ॥

॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ प्रणवमायाबीजाद्योमंत्रः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतति०नवमस्कंधेषट्चत्वारिंशोध्यायः ॥ ४६ ॥ ॥ अष्टाधी
कैश्चपंचाशत्पद्यैरथसमासतः ॥ कथामंगलचंड्याश्चयथावदभिधीयते ॥ १ ॥ मंगलचंडयुपाख्यानमाह । कथितमिति ॥ १ ॥ २ ॥ मंगलचंडीनाम्नोनिरुक्तिमाह दक्षायाइति ॥ कल्याणेषु
कल्याणकरणेषुयादक्षाचंडीप्रतापवतीतथामंगलेषुतेषांमध्येयामंगलातेनमंगलचंडीतिनामेत्यर्थः ॥ मंगलाचासाचंडीचमंगलचंडीतिव्युत्पत्त्यामंगलचंडीतिनामसिद्धम् ॥ ३ ॥ व्युत्पत्त्यं

सुखदायैमोक्षदायैषष्ठ्यैदेव्यैनमोनमः ॥ सृष्ट्यैषष्ठांशरूपायैसिद्धायैचनमोनमः ॥ ६० ॥ मायायैसिद्धयोगिन्यैषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ सारायैशारदायैच
परादेव्यैनमोनमः ॥ ६१ ॥ बालाधिष्ठातृदेव्यैचषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ कल्याणदायैकल्याण्यैफलदायैचकर्मणाम् ॥ ६२ ॥ प्रत्यक्षायैस्वभक्तानांषष्ठ्यै
देव्यैनमोनमः ॥ पूज्यायैस्कंदकांतायैसर्वेषांसर्वकर्मसु ॥ ६३ ॥ देवरक्षणकारिण्यैषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपायैवंदितायैनृणांसदा ॥ ६४ ॥
हिंसाक्रोधवर्जितायैषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ धनंदेहिप्रियांदेहिपुत्रंदेहिसुरेश्वरि ॥ ६५ ॥ मानंदेहिजयंदेहिद्विषोजहिमहेश्वरि ॥ धर्मं देहियशोदेहिषष्ठीदेव्यै
नमोनमः ॥ ६६ ॥ देहिभूमिंप्रजां देहिविद्यांदेहिसुपूजिते ॥ कल्याणंचजयंदेहिषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ ६७ ॥ इतिदेवींचसंस्तूयलेभेपुत्रंप्रियव्रतः ॥ यश
स्विनंचराजेंद्रःषष्ठीदेव्याःप्रसादतः ॥ ६८ ॥ षष्ठीस्तोत्रमिदंब्रह्मन्यःशृणोतितुवत्सरम् ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंवरंसुचिरजीविनम् ॥ ६९ ॥ वर्षमेकंचयोभ
क्त्यासंपूज्येदंशृणोतिच ॥ सर्वपापाद्विनिर्मुक्तोमहावंध्याप्रसूयते ॥ ७० ॥ वीरंपुत्रंचगुणिनंविद्यावंतंयशस्विनम् ॥ सुचिरायुष्यवंतंचसूतेदेवीप्रसादतः
॥ ७१ ॥ काकवंध्याचयानारीमृतवत्साचयाभवेत् ॥ वर्षंश्रुत्वालभेत्पुत्रंषष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ ७२ ॥ रोगयुक्तेचबालेचपितामाताशृणोतिचेत् ॥ मासे
नमुच्यतेबालःषष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ ७३ ॥ इतिश्रीभागवतेम०नवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेषष्ठ्युपाख्यानेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥ ॥
श्रीनारायणउवाच ॥ कथितंषष्ठ्युपाख्यानंब्रह्मपुत्रयथागमम् ॥ देवीमंगलचंडीचतदाख्यानंनिशामय ॥ १ ॥ तस्याःपूजादिकंसर्वंधर्मवक्त्रेणयच्छ्रुतम् ॥
श्रुतिसंमतमेवेष्टंसर्वेषांविदुषामपि ॥ २ ॥ दक्षायावर्ततेचंडीकल्याणेषुचमंगला ॥ मंगलेषुचयादक्षासाचमंगलचंडिका ॥ ३ ॥ पूज्यायावर्ततेचंडी
मंगलोऽपिमहीसुतः ॥ मंगलाभीष्टदेवीयासावामंगलचंडिका ॥ ४ ॥ मंगलोमनुवंश्यश्चसप्तद्वीपधरापतिः ॥ तस्यपूज्याऽभीष्टदेवीतेनमंगलचंडिका॥५॥
मूर्तिभेदेनसादुर्गामूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ कृपारूपाऽतिप्रत्यक्षायोषितामिष्टदेवता ॥ ६ ॥ प्रथमेपूजितासाचशंकरेणपरात्परा ॥ त्रिपुरस्यवधेघोरेविष्णुना
प्रेरितेनच ॥ ७ ॥ ब्रह्मन्ब्रह्मोपदेशेनदुर्गतेनचसंकटे ॥ आकाशात्पतितेयानेदैत्येनपातितेरुषा ॥ ८ ॥

तरमाह । पूज्यायाइति ॥ मंगलोभूमिपुत्रस्तस्यपूज्यातदभीष्टदात्रीचयाचंडीसामंगलचंडीत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ दुर्गायारूपांतरमिदंभवतीत्याह । मूर्तिभेदेनेति ॥६॥ ७ ॥ संकटेदुर्गतेनप्राप्तेन
शिवेनेत्यर्थः ॥ किंसंकटंप्राप्तमितिचेत्तत्राऽऽह आकाशादिति ॥ दैत्येनकेनचिद्युद्धसमयेरुषापातितेआकाशाद्यानेपतितेसतीत्यर्थः ॥ ८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९ ॥ भयंनास्तीति ॥ अधुनानिर्भयंयुद्धंकुर्वितिभावः ॥ ननुममवाहनाभावात्कथंयुद्धंभविष्यतितत्राह । भगवानिति ॥ भगवान्विष्णुर्वृषरूपेणतेवाहनंभविष्यतीत्यर्थः ॥ १० ॥ मायात्मनामूलप्रकृत्यंशभूतेनहरिणेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ पिष्टकैःपूर्वोक्तलक्षणैःपक्वान्नविशेषैः ॥ १८ ॥ १९ ॥ प्रणवमायाश्रीकामबीजपूर्वो

ब्रह्मविष्णूपादिष्टश्चदुर्गांतुष्टावशंकरः ॥ साचमंगलचंडीयावभूवरूपभेदतः ॥ ९ ॥ उवाचपुरतःशंभोर्भयंनास्तीतितेप्रभो ॥ भगवान्वृषरूपश्चसर्वेशस्ते भविष्यति ॥ १० ॥ युद्धशक्तिस्वरूपाऽहंभविष्यामिनसंशयः ॥ मायात्मनाचहरिणासहायेनवृषध्वज ॥११॥ जहिदैत्यंस्वशत्रुंचसुराणांपदघातकम् ॥ इत्युक्त्वांतर्हितादेवीशंभोःशक्तिर्बभूवसा ॥ १२ ॥ विष्णुदत्तेनशस्त्रेणजघानतमुमापतिः ॥ मुनींद्रपतितदैत्येसर्वेदेवामहर्षयः ॥ १३ ॥ तुष्टुवुःशंकरंदे वंभक्तिनम्रात्मकंधराः ॥ सद्यःशिरसिशंभोश्चपुष्पवृष्टिर्बभूवह ॥ १४ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चसंतुष्टोददौतस्मैशुभाशिषम् ॥ ब्रह्मविष्णूपदिष्टश्चसुस्नातःशंकर स्तथा ॥ १५ ॥ पूजयामासतांभक्त्यादेवींमंगलचंडिकाम् ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयैश्चवस्त्रैश्चविविधैरपि ॥ १६ ॥ पुष्पचंदननैवेद्यैर्भक्त्यानानाविधैर्मुने ॥ छागैर्मेषैश्चमाहिषैर्गवयैःपक्षिभिस्तथा ॥ १७ ॥ वस्त्रालंकारमाल्यैश्चपायसैःपिष्टकैरपि ॥ मधुभिश्चसुधाभिश्चफलैर्नानाविधैरपि ॥ १८ ॥ संगीतैर्नर्त कैर्वाद्यैरुत्सवैर्नामकीर्तनैः ॥ ध्यात्वामाध्यंदिनोक्तेनध्यानेनभक्तिपूर्वकम् ॥ १९ ॥ ददौद्रव्याणिमूलेनमंत्रेणैवचनारद ॥ ॐह्रींश्रींक्लींसर्वपूज्येदेविमंग लचंडिके ॥ २० ॥ हूंहूंफट्स्वाहाप्येकविंशाक्षरोमनुः ॥ पूज्यःकल्पतरुश्चैवभक्तानांसर्वकामदः ॥ २१ ॥ दशलक्षजपेनैवमंत्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ध्या नंचश्रूयतांब्रह्मन्वेदोक्तंसर्वसंमतम् ॥ २२ ॥ देवींषोडशवर्षीयांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम् ॥ बिंबोष्ठींसुदतींशुद्धांशरत्पद्मनिभाननाम् ॥ २३ ॥ श्वेतचंपक वर्णाभांसुनीलोत्पललोचनाम् ॥ जगद्धात्रींचदात्रींचसर्वेभ्यःसर्वसंपदाम् ॥ २४ ॥ संसारसागरेघोरेज्योतीरूपांसदाभजे ॥ देव्याश्चध्यानमित्येवंस्तवनं श्रूयतांमुने ॥ २५ ॥ महादेवउवाच ॥ रक्षरक्षजगन्मातर्देविमंगलचंडिके ॥ हारिकेविपदांराशेर्हर्षमंगलकारिके ॥ २६ ॥ हर्षमंगलदक्षेचहर्षमंगलदा यिके ॥ शुभेमंगलदक्षेचशुभेमंगलचंडिके ॥ २७ ॥ मंगलेमंगालार्हेचसर्वमंगलमंगले ॥ सतांमंगलदेदेविसर्वेषांमंगलालये ॥ २८ ॥ पूज्येमंगलवारे चमंगलाभीष्टदेवते ॥ पूज्येमंगलभूपस्यमनुवंशस्यसंततम् ॥ २९ ॥ मंगलाधिष्ठातृदेविमंगलानांचमंगले ॥ संसारमंगलाधारेमोक्षमंगलदायिनि ॥ ॥ ३० ॥ सारेचमंगलाधारेपारेचसर्वकर्मणाम् ॥ प्रतिमंगलवारेचपूज्येमंगसुखप्रदे ॥ ३१ ॥

मंत्रः ॥ सर्वपूज्येइतिस्वरूपग्रहणंदेविमंगलचंडिकेइत्यपिस्वरूपग्रहणं ततोऽक्षरद्वयंकवचात्मकंततोऽस्त्रमंत्रस्ततोवह्निजायासर्वमेकीकृत्यैकविंशाक्षरोमंत्रः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ मंगसुखेति ॥ मंगसर्वतोविसर्पद्यत्सुखंबहुलंसुखमित्यर्थः ॥ तत्प्रदेइतिभावः ॥ मगिसर्पणइत्यस्यरूपम् ॥ ३१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ मंगलचंडयाउपाख्यानांसमाप्यमनसायाउपाख्यानमाह । उक्तमिति ॥ ३८ ॥ मनसापदस्यव्युत्पत्तिमाह । कन्येति ॥ मनोजन्यत्वान्मनसादेवनाद्वामनःशब्दादर्शआद्यचिकृतेमनसेतिसिद्धम् ॥ ३९ ॥ मनसाध्यायतेइति । मनःकरणकध्यानकर्तृत्वाद्वामनसेतिसिद्धमित्यर्थः ॥ अत्राप्यर्शआद्यजेव ॥ जनकत्वेनदेवनध्यानसाधनत्वेनवामनोस्तियस्याइतिव्युत्पत्तेः ॥ तेनयोगेनपरमात्मसमाधिरूपेणयतोदीव्यतिततइत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ जरत्कार्वतिजीर्णवस्त्रादिकंतद्वत्तपस्ययाक्षीणंशरीरंमनसाया

स्तोत्रेणानेनशंभुश्चस्तुत्वामंगलचंडिकाम् ॥ प्रतिमंगलवारेचपूजांदत्त्वागतःशिवः ॥ ३२ ॥ प्रथमेपूजितादेवीशिवेनसर्वमंगला ॥ द्वितीयेपूजितासाचमंगलेनग्रहेणच ॥ ३३ ॥ तृतीयेपूजिताभद्रामंगलेननृपेणच ॥ चतुर्थेमंगलेवारेसुंदरीभिःप्रपूजिता ॥ ३४ ॥ पंचमेमंगलाकांक्षिनरैर्मंगलचंडिका ॥ पूजिताप्रतिविश्वेषुविश्वेशपूजितासदा ॥ ३५ ॥ ततःसर्वत्रसंपूज्याबभूवपरमेश्वरी ॥ देवैश्चमुनिभिश्चैवमानवैर्मनुभिर्मुने ॥ ३६ ॥ देव्याश्चमंगलस्तोत्रंयःशृणोतिसमाहितः ॥ तन्मंगलंभवेत्तस्यनभवेत्तदमंगलम् ॥ वर्धतेपुत्रपौत्रैश्चमंगलंचदिनेदिने ॥ ३७ ॥ नारायणउवाच ॥ उक्तंद्वयोरुपाख्यानंब्रह्मपुत्रयथागमम् ॥ श्रूयतांमनसाख्यानंयच्छ्रुतंधर्मवक्त्रतः ॥३८॥ साचकन्याभगवतीकश्यपस्यचमानसी ॥ तेनैवमनसादेवीमनसायाचदीव्यति ॥ ३९ ॥ मनसाध्यायतेयाचपरमात्मानमीश्वरम् ॥ तेनसामनसादेवीतेनयोगेनदीव्यति ॥ ४० ॥ आत्मारामाचसादेवीवैष्णवीसिद्धयोगिनी ॥ त्रियुगंचतपस्तप्त्वाकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ ४१ ॥ जरत्कारुशरीरंचदृष्ट्वायत्क्षीणमीश्वरः ॥ गोपीपतिर्नामचक्रेजरत्कारुरितिप्रभुः ॥ ४२॥ वांछितंचददौतस्यैकृपयाचकृपानिधिः ॥ पूजां चकारयामासचकारचस्वयंप्रभुः ॥ ४३ ॥ स्वर्गेचनागलोकेचपृथिव्यांब्रह्मलोकतः ॥ भृशंजगत्सुगौरीसासुंदरीचमनोहरा ॥४४॥ जगद्गौरीतिविख्यातातेनसापूजितासती ॥ शिवशिष्याचसादेवीतेनशैवीप्रकीर्तिता ॥ ४५ ॥ विष्णुभक्ताऽतीवशश्वद्वैष्णवीतेनकीर्तिता ॥ नागानांप्राणरक्षित्रीयज्ञेपारिक्षितस्यच ॥ ४६ ॥ नागेश्वरीतिविख्यातासानागभगिनीतिच ॥ विषंसंहर्तुमीशायातेनविषहरीस्मृता ॥ ४७ ॥ सिद्धयोगंहरात्प्रापतेनसासिद्धयोगिनी ॥ महाज्ञानंचयोगंचमृतसंजीवनींपराम् ॥ ४८ ॥ महाज्ञानयुतांतांचप्रवदंतिमनीषिणः ॥ आस्तीकस्यमुनींद्रस्यमातासापितपस्विनी ॥ ॥ ४९ ॥ अस्तीकमाताविज्ञाताजगत्यांसुप्रतिष्ठिता ॥ प्रियामुनेर्जरत्कारोर्मुनींद्रस्यमहात्मनः ॥ ५० ॥ योगिनोविश्वपूज्यस्यजरत्कारुप्रियाततः ॥ जरत्कारूर्जगद्गौरीमनसासिद्धयोगिनी ॥ ५१ ॥

दृष्ट्वा ॥ यदाजरत्कारुमुनिवत्क्षीणंशरीरंदृष्ट्वाकृष्णोमनसायाजरत्कारुरितिनामचक्रेइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ मनसायानामांतराणिसनिमित्तकान्याह । भृशमिति ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ विषंसंहर्तुमीशास्वतंत्रेत्यर्थः ॥ ४७ ॥ महाज्ञानादिकंयतोहरात्प्रापततोमहाज्ञानयुतांवदंतीत्यन्वयः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ ॥ पंचश्लोकन्यूनसार्धशतश्लोकैरनंतरम् ॥ मनसायाःकथा स्तोत्रध्यानादिकमिहोच्यते ॥ १ ॥ मनसायाःपूजादिकंकथयति । मत्तइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मूलेनमूलमंत्रेणवक्ष्यमाणेनसर्वानुपचारान्दद्यादित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रणवमायाश्रीक



वैष्णवीनागभगिनीशैवीनागेश्वरीतथा ॥ जरत्कारुप्रियास्तीकमाताविषहरेतिच ॥ ५२ ॥ महाज्ञानयुताचैवसादेवीविश्वपूजिता ॥ द्वादशैतानिनामानिपूजाकालेतुयःपठेत् ॥ ५३ ॥ तस्यनागभयंनास्तितस्यवंशोद्भवस्यच ॥ नागभीतेचशयनेनागग्रस्तेचमंदिरे ॥ ५४ ॥ नागशोभेमहादुर्गेनागवेष्टितविग्रहे ॥ इदंस्तोत्रंपठित्वातुमुच्यतेनाऽत्रसंशयः ॥ ५५ ॥ नित्यंपठेद्यस्तंदृष्ट्वानागवर्गःपलायते ॥ दशलक्षजपेनैवस्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥ ५६ ॥ स्तोत्रसिद्धिर्भवेद्यस्यसविषंभोक्तुमीश्वरः ॥ नागैश्चभूषणंकृत्वासभवेन्नागवाहनः ॥ ५७ ॥ नागासनोनागतल्पोमहासिद्धोभवेन्नरः ॥ अंतेचविष्णुनासार्धंक्रीडत्येवदिवानिशम् ॥ ५८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ मत्तःपूजाविधानंचशृतयतांमुनिपुंगव ॥ ध्यानंचसामवेदोक्तंप्रोक्तंदेवीविधानकम् ॥ १ ॥ श्वेतचंपकवर्णाभांरत्नभूषणभूषिताम् ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानांनागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ २ ॥ महाज्ञानयुतांतांचप्रवरज्ञानिनांवराम् ॥ सिद्धाधिष्ठातृदेवींचसिद्धांसिद्धिप्रदांभजे ॥ ३ ॥ इतिध्यात्वाचतांदेवींमूलेनैवप्रपूजयेत् ॥ नैवेद्यैर्विविधैर्धूपैःपुष्पगंधानुलेपनैः ॥ ४ ॥ मूलमंत्रैश्चवेदोक्तैर्भक्तानांवांछितप्रदः ॥ मुनेकल्पतरुर्नामसुसिद्धोद्वादशाक्षरः ॥ ५ ॥ ॐह्रींश्रींक्लींऐंमनसादेव्यैस्वाहेतिकीर्तितः ॥ पंचलक्षजपेनैवमंत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥६॥ मंत्रसिद्धिर्भवेद्यस्यससिद्धोजगतीतले ॥ सुधासमंविषंतस्यधन्वंतरिसमोभवेत् ॥ ७ ॥ ब्रह्मन्स्नात्वातुसंक्रांत्यांगूढशालासुयत्नतः ॥ आवाह्यदेवीमीशानांपूजयेद्योऽतिभक्तितः ॥ ८ ॥ पंचम्यांमनसाध्यायन्देव्यैदद्याच्चयोवलिम् ॥ धनवान्पुत्रवांश्चैवकीर्तिमान्सभवेद्ध्रुवम् ॥ ९ ॥ पूजाविधानंकथितंतदाख्यानंनिशामय ॥ कथयामिमहाभागयच्छ्रुतंधर्मवक्त्रतः ॥ १० ॥ पुरानागभयाक्रांताबभूवुर्मानवाभुवि ॥ गतास्तेशरणंसर्वेकश्यपंमुनिपुंगवम् ॥ ११ ॥ मंत्रांश्चससृजेभीतःकश्यपोब्रह्मणान्वितः ॥ वेदबीजानुसारेणचोपदेशेनब्रह्मणः ॥ १२ ॥ मंत्राधिष्ठातृदेवींतांमनसाससृजेतथा ॥ तपसामनसातेनबभूवमनसाचसा ॥ १३ ॥ कुमारीसाचसंभूताजगामशंकरालयम् ॥ भक्त्यासंपूज्यकैलासेतुष्टावचंद्रशेखरम् ॥ १४ ॥

मवाणीबीजपूर्वकोमनसादेव्यैस्वाहेत्यंतोमंत्रः ॥ पंचलक्षजपःपुरश्चरणम् ॥ होमद्रव्यानुक्तत्वात्तिलैर्होमः ॥ ६ ॥ ७ ॥ प्रयोगमाह । ब्रह्मन्स्नात्वेति ॥ गूढशालासुगुप्तशालासु ॥ ८ ॥ साचसंक्रांतिः पंचम्यामपेक्षितेत्याह । पंचम्यामिति॥पंचम्यांवेत्यर्थः॥९॥१०॥११॥मंत्रांश्चसर्पादिविषहरान् ॥ १२ ॥ मंत्राधिष्ठातृदेवींसर्वविषहरमंत्राधिष्ठात्रीमित्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १५ ॥ १६ ॥ ङेंतंचतुर्थ्यंतंकृष्णपदंनमोंतोमंत्रः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ देव्यामनसायाजघनेशिरःस्थाप्येत्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥
चकारालोचनंविचारंकृतवतीत्यर्थः ॥ तमेवविचारमाह । अकृत्वेति ॥ द्विजन्मनांनित्याम् ॥ २८ ॥ लभिष्यतिलप्स्यति ॥ पूर्वांप्रातःसंध्याम्॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

दिव्यवर्षसहस्रंतांसिषेवेचमुनेःसुता ॥ आशुतोषोमहेशश्चतांचतुष्टोबभूवह ॥ १५ ॥ महाज्ञानंददौतस्यैपाठयामाससामच ॥ कृष्णमंत्रंकल्पतरुंददाव
ष्टाक्षरंमुने ॥ १६ ॥ लक्ष्मीमायाकामबीजंङेंतंकृष्णपदंततः ॥ त्रैलोक्यमंगलंनामकवचंपूजनक्रमम् ॥ १७ ॥ पुरश्चर्याक्रमंचाऽपिवेदोक्तंसर्वसंमतम् ॥
प्राप्यमृत्युंजयान्मंत्रंसासतीचमुनेःसुता ॥ १८ ॥ जगामतपसेसाध्वीपुष्करंशंकराज्ञया ॥ त्रियुगंचतपस्तप्त्वाकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ १९ ॥ सिद्धाव
भूवसादेवीददर्शपुरतःप्रभुम् ॥ दृष्ट्वाकृशांगींबालांचकृपयाचकृपानिधिः ॥ २० ॥ पूजांचकारयामासचकारचस्वयंहरिः ॥ वरंचप्रददौतस्यैपूजि
तात्वंभवेभव ॥ २१ ॥ वरंदत्त्वाचकल्याण्यैततश्चांतर्दधेहरिः ॥ प्रथमेपूजितासाचकृष्णेनपरमात्मना ॥ २२ ॥ द्वितीयेशंकरेणैवकश्यपेनसुरेणच ॥
मुनिनामनुनाचैवनागेनमानवादिभिः ॥ २३ ॥ बभूवपूजितासाचत्रिपुलोकेषुसुव्रता ॥ जरत्कारुमुनींद्रायकश्यपस्तांददौपुरा ॥ २४ ॥ अयाचितोमुनिश्रे
ष्ठोजग्राहब्राह्मणाज्ञया ॥ कृत्वोद्वाहंमहायोगीविश्रांतस्तपसाचिरम् ॥ २५ ॥ सुष्वापदेव्याजघनेवटमूलेचपुष्करे ॥ निद्रांजगामसमुनिःस्मृत्वानिद्रेश
मीश्वरम् ॥ २६ ॥ जगामास्तंदिनकरःसायंकालउपस्थिते ॥ संचिंत्यमनसासाध्वीमनसासापतिव्रता ॥ २७ ॥ धर्मलोपभयेनैवचकारालोचनंसती ॥
अकृत्वापश्चिमांसंध्यांनित्यांचैवद्विजन्मनाम् ॥ २८ ॥ ब्रह्महत्यादिकंपापंलभिष्यतिपतिर्मम ॥ नोपतिष्ठतियःपूर्वांनोपास्तेयस्तुपश्चिमाम् ॥ २९ ॥
ससर्वत्राऽशुचिर्नित्यंब्रह्महत्यादिकंलभेत् ॥ वेदोक्तमितिसंचिंत्यबोधयामाससुंदरी ॥ ३० ॥ सचबुद्धोमुनिश्रेष्ठस्तांचुकोपभृशंमुने ॥ मुनिरुवाच ॥
कथंमेसुखिनःसाध्विनिद्राभंगःकृतस्त्वया ॥ ३१ ॥ व्यर्थव्रतादिकंतस्यायभर्तुश्चाऽपकारिणी ॥ तपश्चाऽनशनंचैवव्रतंदानादिकंचयत् ॥ ३२ ॥ भर्तु
रप्रियकारिण्याःसर्वंभवतिनिष्फलम् ॥ ययाप्रियःपूजितश्चश्रीकृष्णःपूजितस्तया ॥ ३३ ॥ पतिव्रताव्रतार्थंचपतिरूपोहरिःस्वयम् ॥ सर्वदानंसर्वयज्ञः
सर्वतीर्थनिषेवणम् ॥ ३४ ॥ सर्वव्रतंतपःसर्वमुपवासादिकंचयत् ॥ सर्वधर्मश्चसत्यंचसर्वदेवप्रपूजनम् ॥ ३५ ॥ तत्सर्वंस्वामिसेवायाःकलांनार्हतिषो
डशीम् ॥ पुण्येचभारतेवर्षेपतिसेवांकरोतिया ॥ ३६ ॥ वैकुंठेस्वामिनासार्धंसायातिब्रह्मणःपदम् ॥ विप्रियंकुरुतेभर्तुर्विप्रियंवदतिप्रियम् ॥ ३७ ॥
असत्कुलेप्रसूताहितत्फलंश्रूयतांसति ॥ कुंभीपाकंव्रजेत्साचयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ३८ ॥ ततोभवतिचांडालीपतिपुत्रविवर्जिता ॥ इत्युक्त्वाचमुनिश्रेष्ठो
बभूवस्फुरिताधरः ॥ ३९ ॥ चकंपेतेनसासाध्वीभयेनोवाचतंपतिम् ॥ साध्व्युवाच ॥ संध्यालोपभयेनैवनिद्राभंगःकृतस्तव ॥ ४० ॥

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





शृंगारोरतिः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ शप्तुमुद्यतमिति ॥ मदर्घ्यदानंविनाकथमयमस्ताचलंप्राप्तइतिहेतोः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ यतोयस्मात्क्रोधात् ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ प्रतिज्ञापालनायचेति ॥ यदीयंममाज्ञांनपालयिष्यतितदैनांत्यक्ष्यामीतिविवाहसमयेकृताप्रतिज्ञेतितुपुराणांतरेप्रसिद्धंतस्याःपालनाय ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

कुरुशांतिंमहाभागदुष्टायाममसुव्रत ॥ शृंगाराहारनिद्राणांयश्चभंगंकरोतिवै ॥ ४१ ॥ सत्रजेत्कालसूत्रंवैयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ इत्युक्त्वामनसादेवीस्वामिनश्चरणांबुजे ॥ ४२ ॥ पपातभक्त्याभीताचरुरोदचपुनःपुनः ॥ कुपितंचमुनिंदृष्ट्वाश्रीसूर्यंशप्तुमुद्यतम् ॥ ४३ ॥ तत्राऽऽजगामभगवान्संध्ययासहनारद ॥ तत्राऽऽगत्यमुनिंसम्यगुवाचभास्करःस्वयम् ॥ ४४ ॥ विनयेनचभीतश्चतयासहयथोचितम् ॥ भास्करउवाच ॥ सूर्यास्तसमयंदृष्ट्वासाध्वीधर्मभयेनच ॥ ४५ ॥ ॥ बोधयामासत्वांविप्रशरणंत्वामहंगतः ॥ क्षमस्वभगवन्ब्रह्मन्मांशप्तुंनोचितंमुने ॥ ४६ ॥ ब्राह्मणानांचहृदयंनवनीतसमंसदा ॥ तेषांक्षणार्धंक्रोधश्चयतोभस्मभवेज्जगत् ॥ ४७ ॥ पुनःस्रष्टुंद्विजःशक्तोनतेजस्वीद्विजात्परः ॥ ब्राह्मणोब्रह्मणोवंशःप्रज्वलन्ब्रह्मतेजसा ॥ ४८ ॥ श्रीकृष्णंभावयेन्नित्यंब्रह्मज्योतिःसनातनम् ॥ सूर्यस्यवचनंश्रुत्वाद्विजस्तुष्टोबभूवह ॥ ४९ ॥ सूर्योजगामस्वस्थानंगृहीत्वाब्राह्मणाशिषम् ॥ तत्याजमनसांविप्रःप्रतिज्ञापालनायच ॥ ५० ॥ रुदतींशोकसंयुक्तांहृदयेनविदूयता ॥ सासस्मारगुरुंशंभुमिष्टदेवंविधिंहरिम् ॥ ५१ ॥ कश्यपंजन्मदातारंविपत्तौभयकर्शिता ॥ तत्राऽऽजगामगोपीशोभगवाञ्छंभुरेवच ॥ ५२ ॥ विधिश्चकश्यपश्चैवमनसापरिचिंतितः ॥ दृष्ट्वाविप्रोऽभीष्टदेवंनिर्गुणंप्रकृतेःपरम् ॥ ५३ ॥ तुष्टावपरयाभक्त्याप्रणनाममुहुर्मुहुः ॥ नमश्चकारशंभुंचब्रह्माणंकश्यपंतथा ॥ ५४ ॥ कथमागमनंदेवाइतिप्रश्नंचकारसः ॥ ब्रह्मातद्वचनंश्रुत्वासहसासमयोचितम् ॥ ५५ ॥ प्रत्युवाचनमस्कृत्यहृषीकेशपदांबुजम् ॥ यदित्यक्ताधर्मपत्नीधर्मिष्ठामनसासती ॥ ५६ ॥ कुरुष्वाऽस्यांसुतोत्पत्तिंस्वधर्मपालनायवै ॥ जायायांचसुतोत्पत्तिंकृत्वापश्चात्त्यजेन्मुने ॥ ५७ ॥ अकृत्वातुसुतोत्पत्तिंविरागीयस्त्यजेत्प्रियाम् ॥ स्रवतेतस्यपुण्यंचचालन्यांचयथाजलम् ॥ ॥ ५८ ॥ ब्रह्मणोवचनंश्रुत्वाजरत्कारुर्मुनीश्वरः ॥ चकारनाभिसंस्पर्शंयोगेनमंत्रपूर्वकम् ॥ ५९ ॥ मनसायामुनिश्रेष्ठमुनिश्रेष्ठउवाचताम् ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ गर्भेणानेनमनसेतवपुत्रोभविष्यति ॥ ६० ॥ जितेंद्रियाणांप्रवरोधार्मिकोब्राह्मणाग्रणीः ॥ तेजस्वीचतपस्वीचयशस्वीचगुणान्वितः ॥ ६१ ॥ वरोवेदविदांचैवज्ञानिनांयोगिनांतथा ॥ सचपुत्रोविष्णुभक्तोधार्मिकःकुलमुद्धरेत् ॥ ६२ ॥ नृत्यंतिपितरःसर्वेजन्ममात्रेणवैमुदा ॥ पतिव्रतासुशीलायासाप्रियप्रियवादिनी ॥ ६३ ॥ धर्मिष्ठापुत्रमाताचकुलस्त्रीकुलपालिका ॥ हरिभक्तिप्रदोबंधुर्नचाभीष्टसुखप्रदः ॥ ६४ ॥

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ एकंमुनिश्रेष्ठेतिनारदसंबोधनंद्वितीयंप्रथमांतंजरत्कारोर्नाम ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ प्रियस्यपत्युः प्रियवादिनी ॥ ६३ ॥ योबंधुःसहरिभक्तिप्रदश्चेदेवबंधुर्नकेवलमभीष्टसुखप्रदोबंधुरित्यर्थः ॥ एवंसर्वत्रयोज्यम् ॥ ६४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ किंवाज्ञानामिति ॥ किंशब्दःक्षेपे ॥ कृष्णःपरंब्रह्मतस्यभावनादन्यत्किंज्ञानमस्ति नकिमपीत्यर्थः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

योबंधुश्चेत्सचपिताहरिवर्मप्रदर्शकः ॥ सागर्भधारिणीयाचगर्भावासविमोचनी ॥ ६५ ॥ दयारूपाचभगिनीयमभीतिविमोचनी ॥ विष्णुमंत्रप्रदाताचस गुरुर्विष्णुभक्तिदः ॥ ६६ ॥ गुरुश्चज्ञानदोयोहियज्ज्ञानंकृष्णभावनम् ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतंयतोविश्वंचराचरम् ॥ ६७ ॥ आविर्भूतंतिरोभूतंकिंवाज्ञानंत दन्यतः ॥ वेदजंयज्ञजंयद्यत्तत्सारंहरिसेवनम् ॥ ६८ ॥ तत्त्वानांसारभूतंचहरेरन्यद्विडंबनम् ॥ दत्तंज्ञानंमयातुभ्यंसस्वामीज्ञानदोहियः ॥ ६९ ॥ ज्ञा नात्प्रमुच्यतेबंधात्सरिपुर्योहिबंधदः ॥ विष्णुभक्तियुतंज्ञानंनोददातिहियोगुरुः ॥ ७० ॥ सरिपुःशिष्यघातीचयतोबंधान्नमोचयेत् ॥ जननीगर्भजक्लेशाद्यमयातनयातथा ॥ ७१ ॥ नमोचयेद्यःसकथंगुरुस्तातोहिबांधवः ॥ परमानंदरूपंचकृष्णमार्गमनश्वरम् ॥ ७२ ॥ नदर्शयेद्यःसततंकीदृशोबांधवो नृणाम् ॥ भजसाध्विपरंब्रह्माच्युतंकृष्णंचनिर्गुणम् ॥ ७३ ॥ निर्मूलंचभवेत्पुंसांकर्मवैतस्यसेवया ॥ मयाच्छलेनत्वंत्यक्ताक्षमस्वैतन्ममप्रिये ॥ ७४ ॥ क्षमायुतानांसाध्वीनांसत्त्वात्क्रोधोनविद्यते ॥ पुष्करैतपसेयामिगच्छदेवियथासुखम् ॥ ७५ ॥ श्रीकृष्णचरणांभोजेनिःस्पृहाणांमनोरथाः ॥ जरत्कारुवचः श्रुत्वामनसाशोककातरा ॥ ७६ ॥ साश्रुनेत्राचविनयादुवाचप्राणवल्लभम् ॥ मनसोवाच ॥ दोषोनास्त्येवमेत्युक्तंनिद्राभंगेनतेप्रभो ॥ ७७ ॥ यत्रस्मरा मित्वांनित्यंतत्रमामागमिष्यसि ॥ बंधुभेदःक्लेशतमःपुत्रभेदस्ततःपरम् ॥ ७८ ॥ प्राणेशभेदःप्राणायथैनांविच्छेदात्सर्वतःपरः ॥ पतिःपतिव्रतानांतुशतपु त्राधिकंप्रियः ॥ ७९ ॥ सर्वस्मात्तुप्रियःस्त्रीणांप्रियस्तेनोच्यतेबुधैः ॥ पुत्रेयथैकपुत्राणांवैष्णवानांयथाहरौ ॥ ८० ॥ नेत्रेयथैकनेत्राणांतृषितानांयथा जले ॥ क्षुधितानांयथाऽन्नेचकामुकानांचमैथुने ॥ ८१ ॥ यथापरस्वेचौराणांयथाजारेकुयोषिताम् ॥ विदुषांचयथाशास्त्रेवाणिज्येवणिजांयथा ॥ ८२ ॥ तथाशश्वन्मनःकांतेसाध्वीनांयोषितांप्रभो ॥ इत्युक्त्वामनसादेवीपपातस्वामिनःपदे ॥ ८३ ॥ क्षणंचकारक्रोडेतांकृपयाचकृपानिधिः ॥ नेत्रोदकेनमन सांस्नापयामासतांमुनिः ॥ ८४ ॥ साश्रुनेत्रामुनेःक्रोडंसिषेचभेदकातरा ॥ तदाज्ञानेनतौद्वौचविशोकौसंबभूवतुः ॥ ८५ ॥ स्मारंस्मारंपदांभोजंकृष्ण स्यपरमात्मनः ॥ जगामतपसेविप्रःस्वकांतांसंप्रबोध्यच ॥ ८६ ॥ जगाममनसाशंभोःकैलासंमंदिरंगुरोः ॥ पार्वतीबोधयामासमनसांशोककर्शिताम् ॥ ॥ ८७ ॥ शिवश्चातीवज्ञानेनशिवेनचशिवालयः ॥ सुप्रशस्तेदिनेसाध्वीसुषुवेमंगलक्षणे ॥ ८८ ॥ नारायणांशंपुत्रंतंयोगिनांज्ञानिनांगुरुम् ॥ गर्भस्थि तोमहाज्ञानंश्रुत्वाशंकरवक्त्रतः ॥ ८९ ॥ संबभूवचयोगींद्रोयोगिनांज्ञानिनांगुरुः ॥ जातकंकारयामासवाचयामासमंगलम् ॥ ९० ॥

॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ यत्रस्मरामीति ॥ यदास्मरामितदामांप्रत्यागच्छेत्यर्थः ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥८४॥ क्रोडमंकम् ॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





शिशोःशिवाय ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ज्ञानमपरोक्षंसंजीविनींवा ॥ ९३ ॥ यस्याःमनसायाः ॥ आस्तीकशब्दोस्मिन्नर्थेपृषोदरादित्वात्साधुः ॥ ९४ ॥ महामंत्रंमूलप्रकृतेर्मंत्रम् ॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ २ ॥ तक्षकमिति ॥ नृपंभोक्तुंगच्छंतंतक्षकंधन्वंतरिर्ददर्शेत्यन्वयः ॥ ३ ॥ गामुकोगंतुकामः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

वेदांश्चपाठयामासशिवायचाशिवःशिशोः ॥ मणिरत्नकिरीटांश्चब्राह्मणेभ्योददौशिवः ॥ ९१ ॥ पार्वतीचगवांलक्षंरत्नानिविविधानिच ॥ शंभुश्चचतुरो
वेदान्वेदांगानितरांस्तथा ॥ ९२ ॥ बालकंपाठयामासज्ञानंमृत्युंजयंपरम् ॥ भक्तिरस्त्यधिकाकांतेऽभीष्टदेवेगुरौतथा ॥ ९३ ॥ यस्यास्तेनचतत्पुत्रोब
भूवाऽऽस्तीकएवच ॥ जगामतपसेविष्णोःपुष्करंशंकराज्ञया ॥९४॥ संप्राप्यचमहामंत्रंततश्चपरमात्मनः ॥ दिव्यंवर्षत्रिलक्षंचतपस्तप्त्वातपोधनः॥९५॥
आजगाममहायोगीनमस्कर्तुंशिवंप्रभुम् ॥ शंकरंचनमस्कृत्यस्थित्वातत्रैवबालकः॥९६॥साचाऽऽजगाममनसाकश्यपस्याऽऽश्रमंपितुः ॥ तांसपुत्रांसुतां
दृष्ट्वामुदंप्रापप्रजापतिः॥९७॥शतलक्षंचरत्नानांब्राह्मणेभ्योददौमुने॥ब्राह्मणान्भोजयामाससोऽसंख्यान्श्रेयसेशिशोः॥९८॥ अदितिश्चादितिश्चान्यामुदंप्रा
पपरंतप ॥ सासपुत्राचसुचिरंतस्थौतातालयेसदा ॥ ९९ ॥ तदीयंपुनराख्यानंवक्ष्यामितन्निशामय ॥ अथाभिमन्युतनयेब्रह्मशापःपरीक्षिते ॥१००॥ ब
भूवसहसाब्रह्मन्दैवदोषेणकर्मणा ॥ सप्ताहेसमतीतेतुतक्षकस्त्वांचधक्ष्यति ॥ १०१ ॥ शशापशृंगीतत्रैवकौशिक्याश्चजलेनवै ॥ राजाश्रुत्वातत्प्रवृत्तिं
निर्वातस्थानमागतः ॥ २ ॥ तत्रतस्थौचसप्ताहंदेहरक्षणतत्परः ॥ सप्ताहेसमतीतेतुगच्छंतंतक्षकंपथि ॥ ३ ॥ धन्वंतरिर्नृपंभोक्तुंददर्शगामुकःपथि ॥
तयोर्बभूवसंवादःसुप्रीतिश्चपरस्परम् ॥ ४ ॥ धन्वंतरिर्मणिंप्रापतक्षकःस्वेच्छयाददौ ॥ सययौतंगृहीत्वातुसंतुष्टोहृष्टमानसः ॥ ५ ॥ तक्षकोभक्षयामा
सनृपंतंमंचकेस्थितम् ॥ राजाजगामतरसादेहंत्यक्त्वापरत्रच ॥ ६ ॥ संस्कारंकारयामासपितुर्वैजनमेजयः ॥ राजाचकारयज्ञंचसर्पसत्रंततोमुने ॥ ७ ॥
प्राणांस्तत्याजसर्पाणांसमूहोब्रह्मतेजसा ॥ सतक्षकोवैभीतस्तुमहेंद्रंशरणंययौ ॥ ८ ॥ सेंद्रंचतक्षकंहंतुंविप्रवर्गःसमुद्यतः ॥ अथदेवाश्चसेंद्राश्चसंजग्मुर्म
नसांतिकम् ॥ ९ ॥ तांतुष्टावमहेंद्रश्चभयकातरविह्वलः ॥ ततआस्तीकआगत्ययज्ञंचमातुराज्ञया ॥ ११० ॥ महेंद्रतक्षकप्राणान्ययाचेभूमिपंपरम् ॥
ददौवरंनृपश्रेष्ठःकृपयाब्राह्मणाज्ञया ॥ ११ ॥ यज्ञंसमाप्यविप्रेभ्योदक्षिणांचददौमुदा ॥ विप्राश्चमुनयोदेवागत्वाचमनसांतिकम् ॥ १२ ॥ मनसांपू
जयामासुस्तुष्टुवुश्चपृथक्पृथक् ॥ शक्रःसंभृतसंभारोभक्तियुक्तःसदाशुचिः ॥ १३ ॥ मनसांपूजयामासतुष्टावपरमादरम् ॥ नत्वाषोडशोपचारैर्बलिंचत
त्प्रियंतदा ॥ १४ ॥ प्रददौपरितुष्टश्चब्रह्मविष्णुशिवाज्ञया ॥ संपूज्यमनसांदेवींप्रययुःस्वालयंचते ॥ १५ ॥ इत्येवंकथितंसर्वंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥
नारदउवाच ॥ केनस्तोत्रेणतुष्टावमहेंद्रोमनसांसतीम् ॥ १६ ॥
॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ १२० ॥ प्रणवमायाश्रीबीजाद्योमनसादेव्यैस्वाहेत्यंतोमंत्रः ॥ २१ ॥ दशाक्षरेणमूलमंत्रेण ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ नचशक्तइति ॥
तेनतवोत्तमस्वभावेनत्वांत्यक्तुंमुनिर्जरत्कारुर्नशक्तोयतोगमनायत्वांप्रतियाश्चांकृतवांस्तस्मात्त्वमुत्तमगुणाऽसीतिभावः ॥ २८ ॥ २९ ॥ १३० ॥ ३१ ॥ पंचम्यांमनसाख्यायामिति ॥

पूजाविधिक्रमंतस्याःश्रोतुमिच्छामितत्त्वतः ॥ नारायणउवाच ॥ सुस्नातःशुचिराचांतोधृत्वाधौतेचवाससी ॥ १७ ॥ रत्नसिंहासनेदेवींवासयामासभक्तितः ॥ स्वर्गंगायाजलेनैवरत्नकुंभस्थितेनच ॥ १८ ॥ स्नापयामासमनसांमहेंद्रोवेदमंत्रतः ॥ वाससीवासयामासवह्निशुद्धेमनोहरे ॥ १९ ॥ सर्वांगे चंदनंकृत्वापादार्घ्यंभक्तिसंयुतः ॥ गणेशंचदिनेशंचवह्निंविष्णुंशिवंशिवाम् ॥ १२० ॥ संपूज्याऽऽदौदेवषट्कंपूजयामासतांसतीम् ॥ ॐह्रींश्रींमनसा देव्यैस्वाहेत्येवंचमंत्रतः ॥ २१ ॥ दशाक्षरेणमूलेनददौसर्वंयथोचितम् ॥ दत्त्वाषोडशोपचारान्दुर्लभान्देवनायकः ॥ २२ ॥ पूजयामासभक्त्याचविष्णुनाप्रेरितोमुदा ॥ वाद्यंनानाप्रकारंचवादयामासतत्रवै ॥ २३ ॥ बभूवपुष्पवृष्टिश्चनभसोमनसोपरि ॥ देवप्रियाज्ञयातत्रब्रह्मविष्णुशिवाज्ञया ॥ २४ ॥ तुष्टावसाश्रुनेत्रश्चपुलकांकितविग्रहः ॥ पुरंदरउवाच ॥ देवित्वांस्तोतुमिच्छामिसाध्वीनांप्रवरांवराम् ॥ २५ ॥ परात्परांचपरमांनहिस्तोतुंक्षमोऽधुना ॥ स्तोत्राणांलक्षणंवेदेस्वभावाख्यानतत्परम् ॥ २६ ॥ नक्षमःप्रकृतेवक्तुंगुणानांगणनांतव ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपात्वंकोपहिंसाविवर्जिता ॥ २७ ॥ नचशक्तो मुनिस्तेनत्यक्तुंयाञ्चाकृतायतः ॥ त्वंमयापूजितासाध्वीजननीमेयथाऽदितिः ॥ २८ ॥ दयारूपाचभगिनीक्षमारूपायथाप्रसूः ॥ त्वयामेरक्षिताःप्राणाः पुत्रदाराःसुरेश्वरि ॥ २९ ॥ अहंकरोमित्वत्पूजांप्रीतिश्चवर्धतांसदा ॥ नित्यायद्यपिपूज्यात्वंसर्वत्रजगदंबिके ॥ १३० ॥ तथाऽपितवपूजांचवर्धयामि सुरेश्वरि ॥ येत्वामाषाढसंक्रांत्यांपूजयिष्यंतिभक्तितः ॥ ३१ ॥ पंचम्यांमनसाख्यायांमासांतेवादिनेदिने ॥ पुत्रपौत्रादयस्तेषांवर्धंतेचधनानिवै ॥ ३२ ॥ यशस्विनःकीर्तिमंतोविद्यावंतोगुणान्विताः ॥ येत्वांनपूजयिष्यंतिनिंदंत्यज्ञानतोजनाः ॥ ३३ ॥ लक्ष्मीहीनाभविष्यंतितेषांनागभयंसदा ॥ त्वंस्वयं सर्वलक्ष्मीश्चवैकुंठेकमलालया ॥ ३४ ॥ नारायणांशोभगवाञ्जरत्कारुर्मुनीश्वरः ॥ तपसातेजसात्वांचमनसाससृजेपिता ॥ ३५ ॥ अस्माकंरक्षणायैव तेनत्वंमनसाभिधा ॥ मनसादेविशक्त्यात्वंस्वात्मनासिद्धयोगिनी ॥ ३६ ॥ तेनत्वंमनसादेवीपूजितावंदिताभव ॥ येभक्त्यामनसांदेवाःपूजयंत्यनिशंभृशम् ॥ ३७ ॥ तेनत्वांमनसादेवींप्रवदंतिमनीषिणः ॥ सत्यस्वरूपादेवित्वंशश्वत्सत्यनिषेवणात् ॥ ३८ ॥ योहित्वांभावयेन्नित्यंसत्वांप्राप्नोतितत्परः ॥ इंद्रश्चमनसांस्तुत्वागृहीत्वाभगिनीवरम् ॥ ३९ ॥ प्रजगामस्वभवनंभूपयासपरिच्छदम् ॥ पुत्रेणसार्धंसादेवीचिरंतस्थौपितुर्गृहे ॥ १४० ॥

मनसेत्याख्यायस्याःसापंचमीनागपंचमीत्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ १४० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १४५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ त्रयस्त्रिंशन्महापद्यैःसुरभ्याख्यानमुच्यते ॥ गावोयस्याःसमुद्भूता याचगोनायिकास्मृता ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेसुरभ्यामहिमानंश्रुत्वापृच्छति । कावासेति ॥ १ ॥ समुद्भवेत्यर्शआद्यजंतंसमुद्भूतेत्यर्थः ॥ २ ॥ सर्वादिसृष्टेरिति ॥ सर्वगवामादावुत्पन्नायाइ

भ्रातृभिःपूजिताशश्वन्मान्यावंद्याचसर्वतः ॥ गोलोकात्सुरभिर्ब्रह्मन्तत्रागत्यसुपूजिताम् ॥ ४१ ॥ तांस्नापयित्वाक्षीरेणपूजयामाससादरम् ॥ ज्ञानंच कथयामासगोप्यंसर्वसुदुर्लभम् ॥ ४२ ॥ तयादेवैःपूचितासास्वर्लोकंचपुनर्ययौ ॥ इंद्रस्तोत्रंपुण्यबीजंमनसांपूजयेत्पठेत् ॥ ४३ ॥ तस्यनागभयं नास्तितस्यवंशोद्भवस्यच ॥ विषंभवेत्सुधातुल्यंसिद्धस्तोत्रोयदाभवेत् ॥ ४४ ॥ पंचलक्षजपेनैवसिद्धस्तोत्रोभवेन्नरः ॥ सर्पशायीभवेत्सोऽपिनिश्चितंस र्पवाहनः ॥ १४५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०नवमस्कंधेऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ कावासासुरभिर्देवीगोलोकादागताच या ॥ तज्जन्मचरितंब्रह्मञ्छ्रोतुमिच्छामियत्नतः ॥ १ ॥ नारायणउवाच ॥ गवामधिष्ठातृदेवीगवामाद्यागवांप्रसूः ॥ गवांप्रधानासुरभिर्गोलोकेसास मुद्भवा ॥ २ ॥ सर्वादिसृष्टेश्चरितंकथयामिनिशामय ॥ बभूवतेनतज्जन्मपुरावृंदावनेवने ॥ ३ ॥ एकदाराधिकानाथोराधयासहकौतुकी ॥ गोपांगना परिवृतोपुण्यंवृंदावनंययौ ॥ ४ ॥ सहसातत्ररहसिविजहारसकौतुकात् ॥ बभूवक्षीरपानेच्छातस्यस्वेच्छामयस्यच ॥५॥ ससृजेसुरभिंदेवींलीलयावामपा र्श्वतः ॥ वत्सयुक्तांदुग्धवंतीवत्सोनाममनोरथः ॥ ६ ॥ दृष्ट्वासवत्सांश्रीदामानवभांडेदुदोहच ॥ क्षीरंसुधातिरिक्तंचजन्ममृत्युजराहरम् ॥ ७ ॥ तदु त्थंचपयःस्वादुपपौगोपीपतिःस्वयम् ॥ सरोबभूवपयसांभांडविस्रंसनेनच ॥ ८ ॥ दीर्घंचविस्तृतंचैवपरितःशतयोजनम् ॥ गोलोकेऽयंप्रसिद्धश्चसो ऽपिक्षीरसरोवरः ॥ ९ ॥ गोपिकानांचराधायाःक्रीडावापीबभूवसा ॥ रत्नेंद्ररचितापूर्णभूताचाऽपीश्वरेच्छया ॥ १० ॥ बभूवकामधेनूनांसहसालक्षको टयः ॥ यावंतस्तत्रगोपाश्चसुरभ्यालोमकूपतः ॥ ११ ॥ तासांपुत्राश्चबहवःसंबभूवुरसंख्यकाः ॥ कथिताचगवांसृष्टिस्तयाचपूरितंजगत् ॥ १२ ॥ पूजांचकारभगवान्सुरभ्याश्चपुरामुने ॥ ततोबभूवतत्पूजात्रिषुलोकेषुदुर्लभा ॥ १३ ॥ दीपान्वितापरादिनेश्रीकृष्णस्याऽऽज्ञयाहरेः ॥ बभूवसुरभिःपू ज्याधर्मवक्त्रादिदंश्रुतम् ॥ १४ ॥ ध्यानंस्तोत्रंमूलमंत्रंयद्यत्पूजाविधिक्रमम् ॥ वेदोक्तंचमहाभागनिबोधकथयामिते ॥ १५ ॥ ॐसुरभ्यैनमइतिमंत्रस्त स्याःषडक्षरः ॥ सिद्धोलक्षजपेनैवभक्तानांकल्पपादपः ॥ १६ ॥

त्यर्थः ॥ तेनकारणेनेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ मनोरथोयथेष्टेच्छातद्रूपस्तस्याःसुरभ्यामनोरथोवत्सः ॥ ६ ॥ ७ ॥ भांडविस्रंसनेनहस्ताद्भांडस्यपतनेन ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ यावंतोगोलो केगोपाःसंतितेषांगृहेएकैका कामधेनुर्भवत्वितीच्छयाबभूवेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ दीपान्वितेति ॥ दीपान्विताआश्विनकृष्णामावस्या तस्याःपरादिनेइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ प्रणवादिर्मंत्रः ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ गवांबंधनस्तंभेइत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ वाराहेकल्पे ॥ चिंतिताश्चिंतायुक्ताः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ सुरस्यसुरसमूहस्य ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ ॥ राधायाश्चैवदुर्गायाविधानंसकलार्थदम् ॥ समासतःप्रोच्यतेऽत्रशतश्लोकैरतः

ध्यानंयजुर्वेदगीतंतस्याःपूजाचसर्वतः ॥ ऋद्धिदावृद्धिदाचैवमुक्तिदासर्वकामदा ॥ १७ ॥ लक्ष्मीस्वरूपांपरमांराधांसहचरींपराम् ॥ गवामधिष्ठातृदेवीं गवामाद्यांगवांप्रसूम् ॥ १८ ॥ पवित्ररूपांपूतांचभक्तानांसर्वकामदाम् ॥ ययापूतंसर्वविश्वंतांदेवींसुरभिंभजे ॥ १९ ॥ घटेवाधेनुशिरसिबंधस्तंभेगवामपि ॥ शालग्रामेजलाग्नौवासुरभिंपूजयेद्द्विजः ॥ २० ॥ दीपान्वितापरदिनेपूर्वाह्णेभक्तिसंयुतः ॥ यःपूजयेच्चसुरभिंसचपूज्योभवेद्भुवि ॥ २१ ॥ एकदात्रिषुलोकेषुवाराहेविष्णुमायया ॥ क्षीरंजहारसुरभिश्चिंतिताश्चसुरादयः ॥ २२ ॥ तेगत्वाब्रह्मलोकेचब्रह्माणंतुष्टुवुस्तदा ॥ तदाज्ञयाचसुरभिंतुष्टावपाकशासनः ॥ २३ ॥ पुरंदरउवाच ॥ नमोदेव्यैमहादेव्यैसुरभ्यैचनमोनमः ॥ गवांबीजस्वरूपायैनमस्तेजगदंबिके ॥ २४ ॥ नमोराधाप्रियायैचपद्मांशायैनमोनमः ॥ नमःकृष्णप्रियायैचगवांमात्रेनमोनमः ॥ २५ ॥ कल्पवृक्षस्वरूपायैसर्वेषांसततंपरे ॥ क्षीरदायैधनदायैबुद्धिदायैनमोनमः ॥ २६ ॥ शुभायैचसुभद्रायैगोप्रदायैनमोनमः ॥ यशोदायैकीर्तिदायैधर्मदायैनमोनमः ॥ २७ ॥ स्तोत्रश्रवणमात्रेणतुष्टाहृष्टाजगत्प्रसूः ॥ आविर्बभूवतत्रैवब्रह्मलोकेसनातनी ॥ २८ ॥ महेंद्रायवरंदत्त्वावांछितंचापिदुर्लभम् ॥ जगामसाचगोलोकंययुर्देवादयोगृहम् ॥ २९ ॥ बभूवविश्वंसहसादुग्धपूर्णंचनारद ॥ दुग्धंघृतंततोयज्ञस्ततःप्रीतिःसुरस्यच ॥ ३० ॥ इदंस्तोत्रंमहापुण्यंभक्तियुक्तश्चयःपठेत् ॥ सगोमान्धनवांश्चैवकीर्तिमान्पुत्रवांस्तथा ॥ ३१ ॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वायात्यंतेकृष्णमंदिरे ॥ ३२ ॥ सुचिरंनिवसेत्तत्रकरोतिकृष्णसेवनम् ॥ नपुनर्भवनंतत्रब्रह्मपुत्रोभवेत्ततः ॥ ३३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेनवमस्कंधेएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ नारदउवाच ॥ श्रुतंसर्वमुपाख्यानंप्रकृतीनांयथातथम् ॥ यच्छ्रुत्वामुच्यतेजंतुर्जन्मसंसारबंधनात् ॥ १ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिरहस्यंवेदगोपितम् ॥ राधायाश्चैवदुर्गायाविधानंश्रुतिचोदितम् ॥ २ ॥ महिमावर्णितोऽतीवभवतापरयोर्द्वयोः ॥ श्रुत्वातंतद्गतंचेतोनकस्यस्यान्मुनीश्वर ॥ ३ ॥ ययोरंशोजगत्सर्वंयन्नियम्यंचराचरम् ॥ ययोर्भक्त्याभवेन्मुक्तिस्तद्विधानंवदाऽधुना ॥ ४ ॥ नारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिरहस्यंश्रुतिचोदितम् ॥ यत्रकस्यापिचाऽऽख्यातंसारात्सारंपरात्परम् ॥ ५ ॥

परम् ॥ १ ॥ अत्रनवमस्कंधेतृतीयाध्यायेदुर्गायाश्चैवराधायाविस्तीर्णंचरितंमहत् ॥ तद्वत्पश्चात्प्रवक्ष्यामिसंक्षेपक्रमतःशृण्वित्युक्तंतत्पृच्छतिनारदः । श्रुतंसर्वमिति ॥ १ ॥ २ ॥ महिमातुतयोर्वर्णितएवेतिनसपृच्छतिइत्याह । महिमेति ॥ परयोराधादुर्गयोस्तंमहिमानम् ॥ ३ ॥ ययोराधादुर्गयोः जगत्सर्वंपूर्वोक्तरीत्यांशोभवतीत्यर्थः ॥ विधानंमंत्रानुष्ठानप्रकाररूपम् ॥ ४ ॥५॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मूलप्रकृतिरूपिण्याः परसंविदोभुवनेश्वर्याःसकाशाज्जगदुद्भवेसातिसमष्टिव्यष्टिप्राणानामधिदैवतंराधाशक्तिरूपंतथासमष्टिव्यष्टिबुद्धीनामधिदैवतंदुर्गारूपामितिशक्तियुग्मंप्रादुर्भूतामितिपूर्वकथा स्मारिता ॥ ६ ॥ ७ ॥ यतएतच्छक्तियुग्मंप्राणबुद्ध्यधिदैवतंततःसर्वंनियंतृभवतीत्याह । तदधीनामिति ॥ मोक्षोहीति ॥ बुद्धिप्राणसंयमनाधीनौहियोगविचारौतदधीनस्तुमोक्षः । तथाच बुद्धिप्राणाधिदेवताप्रसादमंतरासदुर्लभएवेत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ एतस्यमंत्रस्यादौमायाबीजंदत्त्वामंत्रोजप्तव्यइत्याह । मायाबीजेति ॥ ह्रींश्रीराधायैस्वाहेतिमंत्रः ॥ ११ ॥ १२ ॥ कृष्णायाऽऽकाशवाचामूलदेव्यैवोपदेशःकृतइत्याह । उपदेशादिति ॥ १३ ॥ तेनेत्यत्रोपदिष्टइत्यस्यानुवृत्तिः ॥ १४ ॥ अहमितिनारायणोक्तिः ॥ १५ ॥ राधामंत्रोपासनायाआवश्यक

श्रुत्वापरस्मैनोवाच्यंयतोऽतीवरहस्यकम् ॥ मूलप्रकृतिरूपिण्याःसंविदोजगदुद्भवे ॥ ६ ॥ प्रादुर्भूतंशक्तियुग्मंप्राणबुद्ध्यधिदैवतम् ॥ जीवानांचैवसर्वेषां नियंतृप्रेरकंसदा ॥ ७ ॥ तदधीनंजगत्सर्वंविराडादिचराचरम् ॥ यावत्तयोःप्रसादोनतावन्मोक्षोहिदुर्लभः ॥ ८ ॥ ततस्तयोःप्रसादार्थंनित्यंसेवेततद्द्वयम् ॥ तत्रादौराधिकामंत्रंशृणुनारदभक्तितः ॥ ९ ॥ ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्नित्यंसेवितोयःपरात्परः ॥ श्रीराधेतिचतुर्थ्यंतंवह्नेर्जायाततःपरम् ॥ १० ॥ षडक्षरोमहामंत्रोधर्माद्यर्थप्रकाशकः ॥ मायाबीजादिकश्चायंवांछाचिंतामणिःस्मृतः ॥ ११ ॥ वक्त्रकोटिसहस्रैस्तुजिह्वाकोटिशतैरपि ॥ एतन्मंत्रस्यमाहात्म्यंवर्णितुंनैवशक्यते ॥ १२ ॥ जग्राहप्रथममंत्रंश्रीकृष्णोभक्तितत्परः ॥ उपदेशान्मूलदेव्यागोलोकेरासमंडले ॥ १३ ॥ विष्णुस्तेनोपदिष्टस्तुतेनब्रह्माविराट्तथा ॥ तेनधर्मस्तेनचाऽहमित्येषाहिपरंपरा ॥ १४ ॥ अहंजपामितंमंत्रंतेनाऽहमृषिरीडितः ॥ ब्रह्माद्याःसकलादेवानित्यंध्यायंतितांमुदा ॥ १५ ॥ कृष्णार्चायांनाधिकारोयतोराधार्चनंविना ॥ वैष्णवैःसकलैस्तस्मात्कर्तव्यंराधिकार्चनम् ॥ १६ ॥ कृष्णप्राणाधिदेवीसातदधीनोविभुर्यतः ॥ रासेश्वरीतस्यनित्यंतयाहीनोनातिष्ठति ॥ १७ ॥ राध्नोतिसकलान्कामांस्तस्माद्राधेतिकीर्तिता ॥ अत्रोक्तानांमनूनांचऋषिरस्म्यहमेवच ॥ ॥ १८ ॥ छंदश्चदेवीगायत्रीदेवताऽत्रचराधिका ॥ तारोबीजंशक्तिबीजंशक्तिस्तुपरिकीर्तिता ॥ १९ ॥ मूलावृत्याषडंगानिकर्तव्यानीतरत्रच ॥ अथध्यायेन्महादेवींराधिकांरासनायिकाम् ॥ २० ॥ पूर्वोक्तरीत्यातुमुनेसामवेदेविगीतया ॥ श्वेतचंपकवर्णाभांशरदिंदुसमाननाम् ॥ २१ ॥ कोटिचंद्रप्रतीकाशांशरदंभोजलोचनाम् ॥ बिंबाधरांपृथुश्रोणींकांचीयुतनितंबिनीम् ॥ २२ ॥ कुंदपंक्तिसमानाभदंतपंक्तिविराजिताम् ॥ क्षौमांबरपरीधानांवह्निशुद्धांशुकान्विताम् ॥ २३ ॥

त्वमाह । कृष्णार्चायांपूजायांमित्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ राधापदव्युत्पत्तिमाह । राध्नोतीति ॥ साधयतीत्यर्थः ॥ अत्रोक्तानामिति ॥ दुर्गामंत्रव्यतिरिक्तायेऽस्मिन्नवमस्कंधेमंत्राउक्तास्तेषांसर्वेषामहमेवनारायणाख्योऋषिरित्यर्थः ॥ १८ ॥ अत्रचराधिकेति ॥ अत्रैवराधामंत्रेराधादेवताअन्यमंत्रेषुतुयादेवताउक्तासैवग्राह्येत्यर्थः ॥ तारोबीजामिति ॥ सर्वमंत्रेषुनारायणऋषिः ॥ देवीगायत्रीछंदः ॥ प्रणवोबीजम् ॥ भुवनेश्वरीशक्तिरित्यर्थः ॥ १९ ॥ सर्वमंत्रेषुषडंगमाह । मूलावृत्त्येति ॥ मूलमंत्रस्यषड्वारमावृत्त्याषडंगइत्यर्थः ॥ २० ॥ विगीतयाकथितयारीत्येत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ तत्रैवयंत्रेएवस्नानशालांतांभावयित्वातस्यांशालायांनयेदित्यर्थः ॥ ३१॥ वाससीप्रथमंदत्त्वाततोनानालंकारान्दत्त्वाचंदनंदद्यादित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ततोऽष्टदलेषुदेव्यग्रस्थितपत्रमारभ्यदक्षिणावर्तक्रमेणमालावत्याद्यष्टशक्तीःपूजयेदित्यर्थः ॥ वह्निकोणेइति ॥ नाऽत्रवह्निकोणःप्रसिद्धोग्राह्यः ॥ प्रादक्षिण्येत्यनेन

ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांकरिकुंभयुगस्तनीम् ॥ सदाद्वादशवर्षीयांरत्नभूषणभूषिताम् ॥ २४ ॥ शृंगारसिंधुलहरींभक्तानुग्रहकातराम् ॥ मल्लिकामालतीमालाकेशपाशविराजिताम् ॥ २५ ॥ सुकुमारांगलतिकांरासमंडलमध्यगाम् ॥ वराभयकरांशांतांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम् ॥ २६ ॥ रत्नसिंहासनासीनांगोपीमंडलनायिकाम् ॥ कृष्णप्राणाधिकांवेदबोधितांपरमेश्वरीम् ॥ २७ ॥ एवंध्यात्वाततोबाह्येशालग्रामेघटेऽथवा ॥ यंत्रेवाऽष्टदलेदेवींपूजयेत्तुविधानतः ॥ २८ ॥ आवाह्यदेवींतत्पश्चादासनादिप्रदीयताम् ॥ मूलमंत्रंसमुच्चार्यचाऽऽसनादीनिकल्पयेत् ॥ २९ ॥ पाद्यंतुपादयोर्दद्यान्मस्तकेऽर्घ्यंसमीरितम् ॥ मुखेत्वाचमनीयंस्यात्त्रिवारंमूलविद्यया ॥ ३० ॥ मधुपर्कंततोदद्यादेकांगांचपयस्विनीम् ॥ ततोनयेत्स्नानशालांतांचतत्रैवभावयेत् ॥ ३१ ॥ अभ्यंगादिस्नानविधिंकल्पयित्वाऽथवाससी ॥ ततश्चंदनंदद्यान्नानालंकारपूर्वकम् ॥ ३२ ॥ पुष्पमालाबहुविधास्तुलसीमंजरीयुताः ॥ पारिजातप्रसूनानिशतपत्रादिकानिच ॥ ३३ ॥ ततःकुर्यात्पवित्रंतत्परिवारार्चनंविभोः ॥ अग्नीशासुरवायव्यमध्येदिक्ष्वंगपूजनम् ॥ ३४ ॥ कृत्वापश्चादष्टदलेदक्षिणावर्ततोऽग्रतः ॥ मालावतीमग्रदलेवह्निकोणेचमाधवीम् ॥ ३५ ॥ रत्नमालांदक्षिणेचनैर्ऋत्येतुसुशीलकाम् ॥ पश्चाद्दलेशशिकलांपूजयेन्मतिमान्नरः ॥ ३६ ॥ मारुतेपारिजातांचाप्युत्तरेचपरावतीम् ॥ ईशानकोणेसंपूज्यासुंदरीप्रियकारिणी ॥ ३७ ॥ ब्राह्म्यादयस्तुतद्बाह्येप्याशापालांस्तुभूपुरे ॥ वज्रादिकान्यायुधानिदेवीमित्थंप्रपूजयेत् ॥ ३८ ॥ ततोदेवींसावरणांगंधाद्यैरुपचारकैः ॥ राजोपचारसहितैःपूजयेन्मतिमान्नरः ॥ ३९ ॥ ततस्तुवीतदेवेशींस्तोत्रैर्नामसहस्रकैः ॥ सहस्रसंख्यंचजपंनित्यंकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ४० ॥ यएवंपूजयेद्देवींराधांरासेश्वरींपराम् ॥ सभवेद्विष्णुतुल्यस्तुगोलोकंयातिसंततम् ॥ ४१ ॥ यःकार्तिक्यांपौर्णमास्यांराधाजन्मोत्सवंबुधः ॥ कुरुतेतस्यसान्निध्यंदद्याद्रासेश्वरीपरा ॥ ४२ ॥ केनचित्कारणेनैवराधावृंदावनेवने ॥ वृषभानुसुताजातागोलोकस्थायिनीसदा ॥ ४३ ॥ अत्रोक्तानांतुमंत्राणांवर्णसंख्याविधानतः ॥ पुरश्चरणकर्मोक्तंदशांशंहोममाचरेत् ॥ ४४ ॥ तिलैस्त्रिस्वादुसंयुक्तैर्जुहुयाद्भक्तिभावतः ॥ ॥ नारदउवाच ॥ स्तोत्रंवदमुनेसम्यग्येनदेवीप्रसीदति ॥ ४५ ॥ नारायणउवाच ॥ नमस्तेपरमेशानिरासमंडलवासिनी ॥ रासेश्वरिनमस्तेऽस्तुकृष्णप्राणाधिकप्रिये ॥ ४६ ॥

विरोधापत्तेः ॥ किंतुपूज्यपूजकयोर्मध्येप्राचीत्यनेनोक्तक्रमेणैवेतिबोध्यम् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अत्रोक्तानांसर्वमंत्राणामित्यर्थः ॥ ४४ ॥ त्रिस्वादुसंयुक्तैःपयोमधुघृतंचेतिसमंत्रिमधुरंस्मृतमितिवचनोक्तैर्घृतमधुपयोमिश्रितैस्तिलैर्जुहुयादित्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ शंभुवनिताभुवनेश्वरी ॥ ५७ ॥ चामुंडायैविच्चेइतिस्वरूपग्रहणम् ॥ ५८ ॥ अस्यमंत्रस्यऋषित्र यंछंदस्त्रयंदेवतात्रयंबीजत्रयंशक्तित्रयंचाऽस्तीत्याह । ब्रह्मविष्णुमहेशानाइति ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ स्तनयोरिति ॥ बीजत्रयंदक्षिणस्तने ॥ शक्तित्रयंवामस्तने ॥ ६२ ॥ चतुर्भिश्चा मुंडायैइत्यक्षरचतुष्टयेन ॥ द्वाभ्यांविच्चेइत्यक्षरद्वयेन ॥ सर्वेणसर्वमंत्रेण ॥ जातियुक्तानिनमःस्वाहावषट्हुंवौषट्फट्पदयुक्तानीत्यर्थः ॥ ६३ ॥ वर्णन्यासमाह । शिखायांलोचनेति ॥

नमस्त्रैलोक्यजननिप्रसीदकरुणार्णवे॥ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्दैवैर्वंद्यमानपदांबुजे ॥४७॥ नमःसरस्वतीरूपेनमःसावित्रिशंकरि ॥ गंगापद्मावतीरूपेषष्टिमंगल चंडिके ॥४८॥ नमस्तेतुलसीरूपेनमोलक्ष्मीस्वरूपिणि ॥ नमोदुर्गेभगवतिनमस्तेसर्वरूपिणि ॥४९॥ मूलप्रकृतिरूपांत्वांभजामःकरुणार्णवाम्॥संसार सागरादस्मानुद्धरांबदयांकुरु ॥५०॥ इदंस्तोत्रंत्रिसंध्यंयःपठेद्वाधांस्मरन्नरः ॥ नतस्यदुर्लभंकिंचित्कदाचिच्चभविष्यति॥५१॥देहांतेचवसेन्नित्यंगोलोके रासमंडले ॥ इदंरहस्यंपरमंनचाऽऽख्येयंतुकस्यचित् ॥५२॥ अधुनाशृणुविप्रेंद्रदुर्गादेव्याविधानकम् ॥ यस्याःस्मरणमात्रेणपलायंतेमहापदः॥५३॥ए नांनभजतेयोहिताद्दङ्नास्त्येवकुत्रचित् ॥ सर्वोपास्यासर्वमाताशैवीशक्तिर्महाद्भुता ॥५४॥ सर्वबुद्ध्यधिदेवीयमंतर्यामिस्वरूपिणी ॥ दुर्गसंकटहंत्रीतिदुर्गे तिप्रथिताभुवि ॥५५॥ वैष्णवानांचशैवानामुपास्येयंचनित्यशः ॥ मूलप्रकृतिरूपासासृष्टिस्थित्यंतकारिणी ॥५६॥ तस्यानवाक्षरंमंत्रंवक्ष्येमंत्रोत्तमोत्त मम् ॥ वाग्भवंशंभुवनिताकामबीजंततःपरम् ॥ ५७ ॥ चामुंडायैपदंपश्चाद्विच्चेइत्यक्षरद्वयम् ॥ नवाक्षरोमनुःप्रोक्तोभजतांकल्पपादपः ॥ ५८ ॥ ब्रह्मवि ष्णुमहेशानाऋषयोऽस्यप्रकीर्तिताः ॥ छंदांस्युक्तानिसततंगायत्र्युष्णिगनुष्टुभः ॥५९॥ महाकालीमहालक्ष्मीःसरस्वत्यपिदेवता॥स्याद्रक्तदंतिकाबीजंदु र्गाचभ्रामरीतथा ॥६०॥ नंदाशाकंभरीदेव्यौभीमाचशक्तयःस्मृताः ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगउदाहृतः॥६१॥ऋषिच्छंदोदैवतानिमौलौवक्त्रेहृदिन्य सेत् ॥ स्तनयोःशक्तिबीजानिन्यसेत्सर्वार्थसिद्धये ॥ ६२ ॥ बीजत्रयैश्चतुर्भिश्चद्वाभ्यांसर्वेणचैवहि ॥ षडंगानिमनोःकुर्याज्जातियुक्तानिदेशिकः॥६३॥शि खायांलोचनद्वंद्वश्रुतिनासाननेषुच ॥ गुदेन्यसेन्मंत्रवर्णान्सर्वेणव्यापकंचरेत् ॥ ६४ ॥ खड्गचक्रगदाबाणचापानिपरिघंतथा ॥शूलंभुशुंडींचशिरःशंखंसंद धतींकरैः ॥ ६५ ॥ महाकालींत्रिनयनांनानाभूषणभूषिताम् ॥ नीलांजनसमप्रख्यांदशपादाननांभजे॥६६॥मधुकैटभनाशार्थंयांतुष्टावांबुजासनः॥ एवं ध्यायेन्महाकालींकामबीजस्वरूपिणीम् ॥ ६७ ॥ अक्षमालांचपरशुंगदेषुकुलिशानिच ॥ पद्मंधनुष्कुंडिकांचदंडशक्तिमसिंतथा ॥ ६८ ॥ चर्मांबुजंत थाघंटांसुरापात्रंचशूलकम् ॥ पाशंसुदर्शनंचैवदधतीमरुणप्रभाम् ॥ ६९ ॥

लोचनद्वयंश्रुतिद्वयं नासाद्वयंचदक्षवामभेदेनसर्वेणसर्वमंत्रेण ॥ ६४ ॥ ध्यानमाह । खड्गेति ॥ ६५ ॥ दशपादांदशाननांचेत्यर्थः ॥ ६६ ॥ कामबीजस्वरूपिणींनवार्णमंत्रांतर्गतकाम बीजदेवतारूपिणीमित्यर्थः ॥ वाच्यवाचकयोरभेदात्कामबीजस्वरूपत्वम् ॥ ६७ ॥ महालक्ष्मीध्यानमाह । अक्षमालांचेति ॥ ६८ ॥ मायाबीजस्वरूपिणींनवार्णमंत्रांतर्गतमायाबीज देवतामित्यर्थः ॥ ६९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७० ॥ महासरस्वतीध्यानमाह । घंटाशूलेति ॥ ७१ ॥ वाणीबीजस्वरूपिणींनवार्णमंत्रांतर्गतवाग्भवबीजदेवतामित्यर्थः ॥ ७२ ॥ एतासांदेवतानांध्यानविशेषस्तुसप्तशतीरहस्यत्रयेऽस्ति। तद्व्याख्यानेचमयास्पष्टीकृतस्ततएवाऽवधार्यः ॥ यंत्रमाह । यंत्रमस्याइति ॥ त्र्यस्रंत्रिकोणमित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ जयादिशक्तीति ॥ जयायैनमः ॥ विजयायैनमः ॥ अजितायैनमः ॥ अपराजितायैनमः ॥ नित्यायैनमः ॥ विलासिन्यैनमः ॥ दोग्ध्र्यैनमः ॥ अघोरायैनमः ॥ मंगलायैनमः ॥ इत्येताःपीठशक्तयोनवमस्कंधोक्तसर्वदेवतानांबोध्याः ॥ पीठोनुक्तेशक्तिपीठमितिसामान्यपरिभाषोक्तत्वात् ॥ ७५ ॥ आवरणदेवताआह । पूर्वकोणेइतिः ॥ देव्यग्रकोणेइत्यर्थः ॥ सरस्वतीसहितायब्रह्मणेनमःइतिप्रयोगः ॥ एवमन्यत्रबोध्यम् ॥ ॥ ७६ ॥ उत्तरतोदक्षिणदेशेवामेवामभागे ॥ तदुक्तम् ॥ वामभागेततोदेव्याश्छिन्नशीर्षमहासुरम् ॥ पूजयेन्महिषंयेनप्राप्तंसायुज्यमीशयेति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ वसुदलेषु ॥ ७९ ॥

रक्तांबुजासनगतांमायाबीजस्वरूपिणीम् ॥ महालक्ष्मींभजेदेवंमहिषासुरमर्दिनीम् ॥ ७० ॥ घंटाशूलेहलंशंखंमुसलंचसुदर्शनम् ॥ धनुर्बाणान्हस्तपद्मैर्दधानांकुंदसन्निभाम् ॥ ७१ ॥ शुंभादिदैत्यसंहर्त्रींवाणीबीजस्वरूपिणीम् ॥ महासरस्वतींध्यायेत्सच्चिदानंदविग्रहाम् ॥ ७२ ॥ यंत्रमस्याःशृणुप्राज्ञत्र्यस्रंषट्कोणसंयुतम् ॥ ततोऽष्टदलपद्मंचचतुर्विंशतिपत्रकम् ॥ ७३ ॥ भूगृहेणसमायुक्तंयंत्रमेवंविचिंतयेत् ॥ शालग्रामेघटेवाऽपियंत्रेवाप्रतिमासुवा ॥ ७४ ॥ बाणलिंगेऽथवासूर्येयजेद्देवीमनन्यधीः ॥ जयादिशक्तिसंयुक्तेपीठेदेवींप्रपूजयेत् ॥ ७५ ॥ पूर्वकोणेसरस्वत्यासहितंपद्मजंयजेत् ॥ श्रियासहहरिंतत्रनैर्ऋतेकोणकेयजेत् ॥ ७६ ॥ पार्वत्यासहितंशंभुंवायुकोणेसमर्चयेत् ॥ देव्याउत्तरतःपूज्यःसिंहोवामेमहासुरम् ॥ ७७ ॥ महिषंपूजयेदंतेषट्कोणेषुयजेत्क्रमात् ॥ नंदजांरक्तदंतांचतथाशाकंभरींशिवाम् ॥ ७८ ॥ दुर्गांभीमांभ्रामरींचततोवसुदलेषुच ॥ ब्राह्मींमाहेश्वरींचैवकौमारींवैष्णवींतथा ॥ ७९ ॥ वाराहींनारसिंहींचऐंद्रींचामुंडकांतथा ॥ पूजयेच्चततःपश्चात्तत्त्वपत्रेषुपूर्वतः ॥ ८० ॥ विष्णुमायांचेतनांचबुद्धिंनिद्रांक्षुधांतथा ॥ छायाशक्तिंपरांतृष्णांशांतिंजातिंचलज्जया ॥ ८१ ॥ शांतिंश्रद्धांकीर्तिंलक्ष्म्यौधृतिंवृत्तिंश्रुतिंस्मृतिम् ॥ दयांतुष्टिंततःपुष्टिंमातृभ्रांतीइतिक्रमात् ॥ ८२ ॥ ततोभूपुरकोणेषुगणेशंक्षेत्रपालकम् ॥ वटुकंयोगिनीश्चापिपूजयेन्मतिमान्नरः ॥ ८३ ॥ इंद्राद्यानपितद्बाह्येवज्राद्यायुधसंयुतान् ॥ पूजयेदनयारीत्यादेवींसावरणांततः ॥ ८४ ॥ राजोपचारान्विविधान्दद्यादंबाप्रतुष्टये ॥ ततोजपेन्नवार्णंचमंत्रंमंत्रार्थपूर्वकम् ॥ ८५ ॥

तत्त्वपत्रेषुचतुर्विंशतिपत्रेषुपूर्वतोदेव्यग्रपत्रमारभ्य ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ तद्बाह्येभूपुरे ॥ ८४ ॥ मंत्रार्थपूर्वकमिति ॥ अयमत्रमंत्रार्थः ॥ मंत्रेबीजत्रयंक्रमेणमहासरस्वतीमहालक्ष्मीमहाकालीनांवाचकंविच्चेइत्यत्राऽपिवित्चइइतिपदत्रयंक्रमेणचित्सदानंदानांवाचकंतच्चसंबोधनांतंबीजत्रयस्यक्रमेणाविशेषणम् ॥ चामुंडापदंब्रह्मविद्यावाचकम् ॥ तादर्थ्येचतुर्थीअनुसंदध्महेइतिशेषः ॥ तथाचायमर्थः ॥ हेचिद्रूपिणिमहासरस्वतिहेसद्रूपिणिमहालक्ष्मिहेआनंदरूपिणिमहाकालित्वांचामुंडायैब्रह्मविद्याप्राप्त्यर्थमनुसंदध्महेध्यायामइत्यर्थः ॥ तदयंसंग्रहः॥ महासरस्वतिचितेमहालक्ष्मिसदात्मिके ॥ महाकाल्यानंदरूपेत्वत्तत्त्वज्ञानसिद्धये ॥ अनुसंदध्महेहेदेविवयंत्वांहृदयांबुजेइति । अयंचार्थःसप्तशतीगुप्तवतीटीकायांपदव्युत्पत्तिप्रदर्शनपूर्वकंभास्कराचार्यैःप्रदर्शितस्ततएवाऽवधार्यः ॥ ८५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सप्तशतीस्तोत्रंमार्कंडेयपुराणेप्रसिद्धम् ॥ ८६ ॥ अस्यमंत्रस्यचतुर्लक्षंपुरश्चरणम् ॥ पायसान्नेनदशांशहोमः ॥ तदुक्तंकात्यायनीतंत्रे ॥ जपंचतुर्लक्षमेनंपायसान्नेनहोमयेदिति ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ अस्यमंत्रस्यसर्वाराध्यत्वमाह । सर्वेदेवाइति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ उपसंहरति। तदेतदिति ॥ ९२ ॥ ग्रंथश्रवणफलमाह । श्रुत्वैतदिति ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ नित्यं पाठंनवमस्कंधस्यविधत्ते । नित्यमेकैकामिति ॥९६॥ अस्मिन्ग्रंथेनवमस्कंधात्मकेकार्यार्थंकर्तव्यांशकुनपरीक्षांविधत्ते । शकुनांश्चेति ॥ ताद्विधिमाह । कुमारीति ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ तयाकु

ततःसप्तशतीस्तोत्रंदेव्याअग्रेतुसंपठेत् ॥ नानेनसदृशंस्तोत्रंविद्यतेभुवनत्रये ॥ ८६ ॥ ततश्चाऽनेनदेवेशींतोषयेत्प्रत्यहंनरः ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणामालयंजायतेनरः ॥ ८७ ॥ इतितेकथितंविप्रश्रीदुर्गायाविधानकम् ॥ कृतार्थतायेनभवेत्तदेतत्कथितंतव ॥ ८८ ॥ सर्वेदेवाहरिब्रह्मप्रमुखामनवस्तथा ॥ मुनयोज्ञाननिष्ठाश्चयोगिनश्चाऽऽश्रमास्तथा ॥ ८९ ॥ लक्ष्म्यादयस्तथादेव्यःसर्वेध्यायंतितांशिवाम् ॥ तदैवजन्मसाफल्यंदुर्गास्मरणमस्तिचेत् ॥ ९० ॥ चतुर्दशाऽपिमनवोध्यात्वाचरणपंकजम् ॥ मनुत्वंप्राप्तवंतश्चदेवाःस्वंस्वंपदंतथा ॥ ९१ ॥ तदेतत्सर्वमाख्यातंरहस्यातिरहस्यकम् ॥ प्रकृतीनांपंचकस्यतदंशानांचवर्णनम् ॥ ९२ ॥ श्रुत्वैतन्मनुजोनित्यंपुरुषार्थचतुष्टयम् ॥ लभतेनाऽत्रसंदेहःसत्यंसत्यंमयोदितम् ॥ ९३ ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंविद्यार्थीप्राप्नुयाच्चताम् ॥ यंयंकामंस्मरेद्धापितंतंश्रुत्वासमाप्नुयात् ॥ ९४ ॥ नवरात्रेपठेदेतद्देव्यग्रेतुसमाहितः ॥ परितुष्टाजगद्धात्रीभवत्येवहिनिश्चितम् ॥ ९५ ॥ नित्यमेकैकमध्यायंपठेद्यःप्रत्यहंनरः ॥ तस्यवश्याभवेद्देवीदेवीप्रियकरोहिसः ॥ ९६ ॥ शकुनांश्चपरीक्षेतनित्यमस्मिन्यथाविधि ॥ कुमारीदिव्यहस्तेनयद्वावटुकरांबुजात् ॥ ९७ ॥ मनोरथंतुसंकल्प्यपुस्तकंपूजयेत्ततः ॥ देवींचजगदीशांनीप्रणमेच्चपुनः पुनः ॥ ९८ ॥ सुस्नातांकन्यकांतत्राऽऽनीयाऽभ्यर्च्ययथाविधि ॥ शलाकांरोपयेन्मध्येतयास्वर्णेनानिर्मिताम् ॥ ९९ ॥ शुभंवाऽप्यशुभंतत्रयदायातिचतद्भवेत् ॥ उदासीनेऽप्युदासीनंकार्यंभवतिनिश्चितम् ॥ १०० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेपंचाशत्तमोध्यायः ॥ ५० ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

बाणाक्षिरसरामैस्तुसार्धैः ( ३६२५ ) श्लोकैःसुविस्तरः ॥ देवीभागवतस्यास्यनवमस्कंधईरितः ॥

मार्या ॥ ९९ ॥ १०० ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोऽभिधानतः ॥ देवीभागवतस्याऽस्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यांयःकृतवान्सम्यक्तिलकाख्यांमहत्तराम् ॥ नवमस्कंधएतस्याःसमाप्तोऽभूच्छुभार्थदः ॥ तेनतुष्यतुसादेवीपंचप्रकृतिरूपिणी ॥ ॥ इतिश्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भसंभवनीलकंठकृतेदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधानेनवमस्कंधेपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥ छ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालये मुद्रितम्। संवत् १९५८,
शके १८२३, सन् १९०१ ई०

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते सटीके नवमस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते सटीके दशमस्कंधः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ देवेंद्रमौलिमंदारमकरंदकणारुणौ ॥ अरुणाचरणौवंदेकरुणावरुणालयौ ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिभिःपद्यैर्मनोःस्वायंभुवस्यच ॥ आख्यानंवर्ण्यतेसम्यगत्रदेव्याःकथानकम् ॥ २ ॥ तत्राष्टमस्कंधादौजनमेजयेनराज्ञाभगवत्याविराट्स्वरूपंपृष्टम् तथायस्मिन्यस्मिंश्चवैस्थानेयेनयेनचपूज्यते तत्सर्ववेदितिपृष्टोव्यासोनारदनारायणसंवादमुखेनसर्ववर्णयामासनवमस्कंधपर्यंतम् ॥ तथाऽष्टमस्कंधेएवान्यःप्रश्नःकृतोमन्वंतरेषुसर्वेषुयद्यद्रूपेणपूज्यते तत्सर्ववेदीततस्योत्तरंनारदनारायणसंवादमुखेनैवदशमस्कंधेवदति। तत्रनवमस्कंधांतेसर्वेमनवोभगवतीमे

श्रीगणेशायनमः ॥ नारदउवाच ॥ नारायणधराधारसर्वपालनकारण ॥ भवतोदीरितंदेवीचरितंपापनाशनम् ॥१॥ मन्वंतरेषुसर्वेषुसादेवीयत्स्वरूपिणी॥ यदाकारेणकुरुतेप्रादुर्भावंमहेश्वरी ॥ २ ॥ तान्नःसर्वान्समाख्याहिदेवीमाहात्म्यमिश्रितान् ॥ यथाचयेनयेनेहपूजितासंस्तुतापिहि ॥ ३ ॥ मनोरथान्पूरयतिभक्तानांभक्तवत्सला ॥ तन्नःशुश्रूषमाणानांदेवीचरितमुत्तमम् ॥ ४ ॥ वर्णयस्वकृपासिंधोयेनाप्नोतिसुखंमहत् ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ आकर्णयमहर्षेत्वंचरितंपापनाशनम् ॥ ५ ॥ भक्तानांभक्तिजननंमहासंपत्तिकारकम् ॥ जगद्योनिर्महातेजाब्रह्मालोकपितामहः ॥ ६ ॥ आविरासीन्नाभिपद्मादेवदेवस्यचक्रिणः ॥ सचतुर्मुखआसाद्यप्रादुर्भावंमहामते ॥ ७ ॥ मनुंस्वायंभुवंनामजनयामासमानसात् ॥ समानसोमनुःपुत्रोब्रह्मणःपरमेष्ठिनः ॥ ८ ॥ शतरूपांचतत्पत्नींजज्ञेधर्मस्वरूपिणीम् ॥ समनुःक्षीरसिंधोश्चतीरेपरमपावने ॥ ९ ॥ देवीमाराधयामासमहाभाग्यफलप्रदाम् ॥ मूर्तिंचमृन्मयींतस्याविधायपृथिवीपतिः ॥ १० ॥ उपासतेस्मतांदेवींवाग्भवंसजपन्रहः ॥ निराहारोजितश्वासोनियमव्रतकर्शितः ॥ ११ ॥ एकपादेनसंतिष्ठन्धरायामनिशंस्थिरः॥शतवर्षंजितःकामःक्रोधस्तेनमहात्मना॥१२॥भेजेस्थावरतांदेव्याश्चरणौचिंतयन्हृदि॥तस्यतत्तपसादेवीप्रादुर्भूताजगन्मयी॥१३॥उवाचवचनंदिव्यंवरंवरयभूमिप ॥ ततआनंदजनकंश्रुत्वावाक्यंमहीपतिः ॥ १४ ॥ वरयामासतान्हृत्स्थान्वरानमरदुर्लभान् ॥ मनुरुवाच ॥ जयदेविविशालाक्षिजयसर्वांतरस्थिते ॥ १५ ॥ मान्येपूज्येजगद्धात्रिसर्वमंगलमंगले ॥ त्वत्कटाक्षावलोकेनपद्मभूःसृजतेजगत् ॥ १६ ॥ वैकुंठःपालयत्येवहरःसंहरतेक्षणात् ॥ शचीपतिस्त्रिलोक्याश्चशासकोभवदाज्ञया ॥ १७ ॥ प्राणिनःशिक्षयत्येवदंडेनचपरेतराट् ॥ यादसामधिपःपाशीपालनंमादृशामपि ॥ ॥ १८ ॥ कुरुतेसकुबेरोऽपिनिधीनांपतिरव्ययः ॥ हुतभुङ्नैर्ऋतोवायुरीशानःशेषएवच ॥ १९ ॥ त्वदंशसंभवाएवत्वच्छक्तिपरिबृंहिताः ॥ अथापियदिमेदेविवरोदेयोऽस्तिसांप्रतम् ॥ २० ॥

वाराध्यतत्तत्पदंप्राप्युरीरितप्रश्नबीजमुपलभ्यनारदःपृच्छति। नारायणधराधारेति॥१॥२॥तान्नःसर्वानिति ॥ तान्सर्वानाकारानित्यर्थः॥ किंचयेनयेनमंत्रेणस्तोत्रेणवापूजितासतीमनोरथान्पूरयतितदपिवदेत्याह । यथाचयेनेति ॥ ३ ॥ शुश्रूषमाणानामितिबहुवचनंभक्तयतिशयेनगौरवद्योतनार्थं भक्त्यतिशयनद्योतनेएवपर्यवस्यति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ मानसादंतःकरणात् ॥ ८ ॥ जज्ञेउत्पादितवान् ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ मादृशामस्मदादीनाम् ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





प्रह्वाःनम्राः ॥ २१ ॥ २२ ॥ भवतांजायताम् ॥ २३ ॥ २४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ अष्टाविंशतिभिःपद्यैरर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ वरंदत्त्वाभगवतीविंध्याद्रिंचजगामह ॥ १ ॥ स्वायंभुवमनुस्तोत्रंश्रुत्वादेवीयदग्रेकृतवतीतदाह । श्रीदेव्युवाच भूमिपालेति ॥ १ ॥ २ ॥ सत्पदेब्रह्मपदे ॥ ३ ॥ ४ ॥ कुंभोद्भवोऽगस्तिः ॥

तदाप्रह्वाःसर्गकार्येविघ्नानश्यंतुमेशिवे ॥ वाग्भवस्याऽपिमंत्रस्ययेकेचिदुपसेविनः ॥ २१ ॥ तेषांसिद्धिःसत्वरापिकार्याणांजायतामपि ॥ येसंवादमिमंदेविपठंतिश्रावयंतिच ॥ २२ ॥ तेषांलोकेभुक्तिमुक्तीसुलभेभवतांशिवे ॥ जातिस्मरत्वंभवतुवक्तृत्वंसौष्ठवंतथा ॥ २३ ॥ ज्ञानसिद्धिःकर्ममार्गसंसिद्धिरपिचास्तुहि ॥ पुत्रपौत्रसमृद्धिश्चजायेदित्येवमेवचः ॥ २४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भूमिपालमहावाहोसर्वमेतद्भविष्यति ॥ यत्त्वयाप्रार्थितंतत्तेददामिमनुजाधिप ॥ १ ॥ अहंप्रसन्नादैत्येंद्रनाशनाऽमोघविक्रमा ॥ वाग्भवस्यजपेनैवतपसातेसुनिश्चितम् ॥ २ ॥ राज्यंनिष्कंटकंतेऽस्तुपुत्रावंशकराअपि ॥ मयिभक्तिर्दृढावत्समोक्षांतेसत्पदेभवेत् ॥ ३ ॥ एवंवरान्महादेवीतस्मैदत्त्वामहात्मने ॥ पश्यतस्तुमनोरेवजगामविंध्यपर्वतम् ॥ ४ ॥ योऽसौविंध्याचलारुद्धःकुंभोद्भवमहर्षिणा ॥ भानुमार्गावरोधार्थंप्रवृत्तोगगनंस्पृशन् ॥ ५ ॥ साविंध्यवासिनीविष्णोरनुजावरदेश्वरी ॥ बभूवपूज्यालोकानांसर्वेषांमुनिसत्तम ॥६॥ ऋषयऊचुः॥कोसौविंध्याचलःसूतकिमर्थंगगनंस्पृशन् ॥ भानुमार्गावरोधंचकिमर्थंकृतवानसौ ॥७॥ कथंचमैत्रावरुणिःपर्वतंतंमहोन्नतम् ॥ प्रकृतिस्थंचकारेतिसर्वंविस्तरतोवद ॥८॥ नहितृप्यामहेसाधोत्वदास्यगलितामृतम् ॥ देव्याश्चरित्ररूपाख्यंपीत्वातृष्णाप्रवर्धते ॥ ९ ॥ सूतउवाच ॥ असौविंध्याचलोनाममान्यःसर्वधराभृताम् ॥ महावनसमूहाढ्योमहापादपसंवृतः ॥ १० ॥ सुपुष्पितैरनेकैश्चलतागुल्मैस्तुसंवृतः ॥ मृगावराहामहिषाव्याघ्राःशार्दूलकाअपि ॥ ११ ॥ वानराःशशकाऋक्षाःशृगालाश्चसमंततः ॥ विचरंतिसदाहृष्टाःपुष्टाएवमहोद्यमाः ॥ १२ ॥ नदीनदजलक्रांतोदेवगंधर्वकिन्नरैः ॥ अप्सरोभिःकिंपुरुषैःसर्वकामफलद्रुमैः ॥ १३ ॥ एतादृशोविंध्यनगेकदाचित्पर्यटन्महीम् ॥ देवर्षिःपरमप्रीतोजगामस्वेच्छयामुनिः ॥ १४ ॥ तंदृष्ट्वासनगोमंक्षुतूर्णमुत्थायसंभ्रमात् ॥ पाद्यमर्घ्यंतथादत्त्वावरासनमथार्पयत् ॥ १५ ॥ सुखोपविष्टंदेवर्षिंप्रसन्नंनगऊचिवान् ॥ विंध्यउवाच ॥ देवर्षेकथ्यतांजातआगमःकुतउत्तमः ॥ १६ ॥ तवाऽऽगमनतोजातमनर्घ्यंममममंदिरम् ॥ तवचंक्रमणंदेवाऽभयार्थंहियथारवेः ॥१७॥ अपूर्वंयन्मनोवृत्तंतद्ब्रूहिममनारद ॥ नारदउवाच ॥ ममाऽऽगमनमिंद्रारेजातंस्वर्णगिरेरथ ॥ १८ ॥ तत्रदृष्टामयालोकाःशक्राग्नियमपाशिनाम् ॥ सर्वेषांलोकपालानांभवनानिसमंततः ॥ १९ ॥

गगनमंतरिक्षम् ॥ स्पृशन्व्यापयन् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ मैत्रावरुणिरगस्तिः ॥ प्रकृतिस्थंयथापूर्वस्वभावस्थम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ इंद्रोऽरिःशत्रुर्यस्यपर्वतपक्षच्छेदकत्वादिंद्रस्यपर्वतारित्वम् ॥ स्वर्णगिरेःसुमेरोः ॥ १८ ॥ १९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अग पर्वत ॥ इतिचोक्त्वेतिसूतवाक्यम् ॥ आविशत्त्यक्तवान् ॥ २० ॥ शैलराट्विंध्याद्रिः ॥ देवऋषेइत्यत्रऋत्यकइतिप्रकृतिभावः ॥ २१ ॥ उक्तंवचनम् ॥ २२ ॥ गुरुःपिता ॥ २३ ॥ आवसथोगृहम् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ एवंमानाभिमानंतमिति ॥ मानेनाभिमानोयस्यतम् ॥ नकैश्चिदपिप्रपंचेऽभिमानःकर्तव्यइतिशास्त्रमर्यादा तथापिसोभिमानं करोतीतितत्क्षणसंजाताश्चर्येणमयोच्छ्वासउज्झितस्त्यक्तइतिभावः ॥ तपोबलवतामस्माकम् ॥ २८ ॥ निजंगृहंब्रह्मलोकम् ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः

मयादृष्टानिविंध्यागनानाभोगप्रदानिच ॥ इतिचोक्त्वाब्रह्मयोनिःपुनरुच्छ्वासमाविशत् ॥ २० ॥ उच्छ्वसंतंमुनिंदृष्ट्वापुनःपप्रच्छशैलराट् ॥ उच्छ्वासकारणंकिंतद्ब्रूहिदेवऋषेमम ॥२१॥ इत्याकर्ण्यनगस्योक्तंदेवर्षिरमितद्युतिः ॥ अब्रवीच्छ्रूयतांवत्सममोच्छ्वासस्यकारणम् ॥२२॥ गौरीगुरुस्तुहिमवाञ्छिवस्यश्वशुरःकिल ॥ संबंधित्वात्पशुपतेःपूज्यआसीत्क्षमाभृताम् ॥ २३ ॥ एवमेवचकैलासःशिवस्यावसथःप्रभुः॥पूज्यःपृथ्वीभृतांजातोलोकेपापौघदारणः ॥ २४ ॥ निषधःपर्वतोनीलोगंधमादनएवच ॥ पूज्याःस्वस्थानमासाद्यसर्वएवक्षमाभृतः ॥२५॥ यंपर्येतिचविश्वात्मासहस्रकिरणःस्वराट् ॥ सग्रहर्क्षगणोपेतःसोयंकनकपर्वतः॥२६॥आत्मानंमनुतेश्रेष्ठंवरिष्ठंचधराभृताम्॥सर्वेषामहमेवाग्र्योनास्तिलोकेषुमत्समः॥२७॥ एवंमानाभिमानंतंस्मृत्वोच्छ्वासोमयोज्झितः ॥ अस्तुनैतावताकृत्यंतपोबलवतांनग ॥ २८ ॥ प्रसंगतोमयोक्तंतेगमिष्यामिनिजंगृहम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेद्वितीयोध्यायः ॥२॥ ॥ सूतउवाच ॥ एवंसमुपदिश्यायंदेवर्षिःपरमःस्वराट्॥जगामब्रह्मणोलोकंस्वैरचारीमहामुनिः ॥१॥गतेमुनिवरेविंध्यश्चिंतांलेभेनपायिनीम् ॥ नैवशांतिंसलेभेचसदांतःकृतशोचनः ॥२॥ कथंकिंत्वत्रमेकार्यंकथंमेरुंजयाम्यहम् ॥ नैवशांतिंलभेनाऽपिस्वास्थ्यंमेमानसेभवेत् ॥३॥ "धिगुत्साहंचमानंचधिङ्मेकीर्तिंचधिक्कुलम्॥"धिग्बलंमेपौरुषंधिक्स्मृतंपूर्वैर्महात्मभिः॥एवंचिंतयमानस्यविंध्यस्यमनसिस्फुटम् ॥४॥ प्रादुर्भूतामतिःकार्येकर्तव्येदोषकारिणी॥मेरुंप्रदक्षिणांकुर्वन्नित्यमेवदिवाकरः ॥५॥ सग्रहर्क्षगणोपेतःसदादृप्यत्ययंनगः ॥ तस्यमार्गस्यसंरोधंकरिष्यामिनिजैःकरैः ॥ ६ ॥ तदानिरुद्धोद्युमणिःपरिक्रामेत्कथंनगम् ॥ एवंमार्गेनिरुद्धेतुमयादिनकरस्यच ॥७॥ भग्नदर्पोदिव्यनगोभविष्यतिविनिश्चितम् ॥ एवंनिश्चित्यविंध्याद्रिःखंस्पृशन्ववृधेभुजैः ॥ ८ ॥ महोन्नतैःशृंगवरैःसर्वव्याप्यव्यवस्थितः ॥ कदोदेष्यतिभास्वांस्तंरोधयिष्याम्यहंकदा ॥ ९ ॥

॥ २ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ पंचविंशतिभिःश्लोकैरर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ भानुमार्गनिरोधश्चविंध्येनकृतउच्यते ॥ १ ॥ नारदगमनोत्तरंजातंवृत्तमाह । एवंसमुपदिश्येति ॥ १ ॥ चिंतांलेभेसजातीयस्यसुमेरोरभिमानासहिष्णुश्चिंतांप्राप्तवानित्यर्थः ॥ अंतरभ्यंतरेकृतंशोचनंशोकोयेनसः ॥ २ ॥ अत्रकिंकार्यंकथंवाकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ दोषकारिणीअपराधकारिणी ॥ ५ ॥ तेनकारणेनसदाऽयंनगोदृप्यातिगर्वंकरोतीत्यर्थः ॥ तथाचतस्यसूर्यस्यगतिनिरोधेमयाकृतेप्रदक्षिणासंभवादर्थात्तस्याभिमानोनष्टःस्यादित्यभिप्रायंविंध्यस्याह । तस्यमार्गस्येति । ॥ ६ ॥ ७ ॥ भुजैःशृंगैः ॥ ८ ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥१०॥११॥ नलिनीसूर्यविकासिनी ॥ कुमुद्वतीचंद्रविकासिनी ॥ १२ ॥ प्राह्णेति । प्राह्णापराह्णमध्याह्नविभागेनहव्यंकव्यंचवर्धयन्सन् ॥ एवंक्रमेणावियोगिनींविरहिणींप्राचींदिशंचतथाग्नेयींदिशंसमाश्वास्याथभास्करःकृशानोरग्नेर्दिशांविहाययाम्यांयमसंबंधिनींदक्षिणदिशंगंतुंप्रतस्थेप्रस्थानंकृतवानितिसमुदायार्थः ॥ कथंभूतांवियोगिनींचिरकालीनविरहात्कामिनीमिवज्वलंतीम् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ नशेकुरिति ॥ अश्वाइतिशेषः ॥ व्यजिज्ञपद्विज्ञापितवान् ॥ १६ ॥ त्वद्दत्तांप्रदक्षिणांप्रेप्सुस्तस्याइच्छावानित्यर्थः ॥ अनूरुररुणः ॥ १७ ॥ १८ ॥ दैवचरित्रमेवोपपादयति । राहुबाहुग्रहोति ॥ राहोर्बाहुभ्यांग्रहेणआकलनेननव्यग्रोपियःक्षणमात्रमपिनावातिष्ठतोस्थिरोभवतितादृशःसइत्यन्वयः ॥ किंकरोतिनकिंचित्कर्तुंसमर्थइत्यर्थः ॥

एवंसंचिंतयानस्यसाव्यतीयायशर्वरी ॥ प्रभातांविमलंजज्ञेदिशोवितिमिराःकरैः ॥ १० ॥ कुर्वन्सनिर्गतोभानुरुदयायोदयेगिरौ ॥ प्रकाशतेस्मविमलंनभोभानुकरैःशुभैः ॥ ११ ॥ विकासंनालिनीभिजेमीलनंचकुमुद्वती ॥ स्वानिकार्याणिसर्वेचलोकाःसमुपतस्थिरे ॥ १२ ॥ हव्यंकव्यंभूतबलिंदेवानांचप्रवर्धयन् ॥ प्राह्णापराह्णमध्याह्नविभागेनत्विषांपतिः ॥ १३ ॥ एवंप्राचींतथाग्नेयींसमाश्वास्यवियोगिनीम् ॥ ज्वलंतींचिरकालीनविरहादिवकामिनीम् ॥ १४ ॥ भास्करोऽथकृशानोश्चदिशंनूनंविहायच ॥ याम्यांगंतुंततस्तूर्णंप्रतस्थेकमलाकरः ॥ १५ ॥ नशेकुश्चाग्रतोगंतुंततोऽनूरुर्व्यजिज्ञपत् ॥ अनूरुरुवाच ॥ भानोमानोन्नतोविंध्योनिरुध्यगगनंस्थितः ॥ १६ ॥ स्पर्धतेमेरुणाप्रेप्सुस्त्वद्दत्तांचप्रदक्षिणाम् ॥ सूतउवाच ॥ अनूरुवाक्यमाकर्ण्यसविताह्यासंचिंतयन् ॥ १७ ॥ अहोगगनमार्गोऽपिरुध्यतेचाऽतिविस्मयः ॥ प्रायःशूरोनकिंकुर्यादुत्पथेवर्त्मनिस्थितः ॥ १८ ॥ निरुद्धोनोवाजिमार्गोदैवंहिबलवत्तरम् ॥ राहुबाहुग्रहव्यग्रोयःक्षणंनावतिष्ठते ॥ १९ ॥ सचिरंरुद्धमार्गोऽपिकिंकरोतिविधिर्बली ॥ एवंचमार्गेसंरुद्धेलोकाःसर्वेचसेश्वराः ॥ २० ॥ नान्वविंदंतशरणंकर्तव्यंनान्वपद्यत ॥ चित्रगुप्तादयःसर्वेकालंजानंतिसूर्यतः ॥ २१ ॥ सरुद्धोविंध्यगिरिणाअहोदैवविपर्ययः ॥ यदानिरुद्धःसवितागिरिणास्पर्धयातदा ॥ २२ ॥ नष्टःस्वाहास्वधाकारोनष्टप्रायमभूज्जगत् ॥ एवंचपाश्चिमालोकादाक्षिणात्यास्तथैवच ॥ २३ ॥ निद्रामीलितचक्षुष्कानिशामेवप्रपेदिरे ॥ प्रांचस्तथौत्तराहाश्चतीक्ष्णतापप्रतापिताः ॥ २४ ॥ मृतानष्टाश्चभग्नाश्चविनाशमभजन्प्रजाः ॥ हाहाभूतंजगत्सर्वंस्वधाकव्यविवर्जितम् ॥ २५ ॥ देवाःसेंद्राःसमुद्विग्नाःकिंकुर्मइतिवादिनः ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेदेवीमाहात्म्येतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ततःसर्वेसुरगणामहेंद्रप्रमुखास्तदा ॥ पद्मयोनिंपुरस्कृत्यरुद्रंशरणमन्वयुः ॥ १ ॥ उपतस्थुःप्रणतिभिःस्तोत्रैश्चारुविभूतिभिः ॥ देवदेवंगिरिशयंशशिलोलितशेखरम् ॥ २ ॥ देवाऊचुः ॥ जयदेवगणाध्यक्षउमालालितपत्कज ॥ अष्टसिद्धिविभूतीनांदात्रेभक्तजनायते ॥ ३ ॥

यतोविधिर्बलीभवति ॥ १९ ॥ २० ॥ कोपिकर्तव्यंनान्वपद्यतनप्राप्तवान् ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ एकोनविंशतिश्लोकैर्देवदेवंवृषध्वजम् ॥ स्तुत्वासर्वेस्ववृत्तांतंकथयामासुरादरात् ॥ १ ॥ एवंजगदुपद्रवेसतितदनंतरंजातंवृत्तमाह ॥ ततः सर्वेइति ॥ १ ॥२॥ पत्कजंकंजलंतस्माज्जातंकमलंकजंपच्छब्दःपदांघ्रिश्चरणोस्त्रियामितिकोशात्पादवाचीचरणकमलमित्यर्थः ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

सप्तविंशतिपद्यैर्वाप्यर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ देवादिभिःकृतंस्तोत्रंमहाविष्णोरितीर्यते ॥ १ ॥ शिववाक्यश्रवणोत्तरंदेवावैकुंठंगताइत्याह । तेगत्वेति ॥१॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ अकूपारदयास

महामायाविलसितस्थानायपरमात्मने ॥ वृषांकायामरेशायकैलासस्थितिशालिने ॥ ४ ॥ अहिर्बुध्न्यायमान्यायमनवेमानदायिने ॥ अजायबहुरूपा यस्वात्मारामायशंभवे ॥ ५ ॥ गणनाथायदेवायगिरिशायनमोस्तुते ॥ महाविभूतिदात्रेतेमहाविष्णुस्तुतायच ॥ ६ ॥ विष्णुहृत्कंजवासायमहायोगर तायच ॥ योगगम्याययोगाययोगिनांपतयेनमः ॥ ७ ॥ योगीशायनमस्तुभ्यंयोगानांफलदायिने ॥ दीनदानपरायापिदयासागरमूर्तये ॥ ८ ॥ आर्तिप्रशमनायोग्रवीर्यायगुणमूर्तये ॥ वृषध्वजायकालायकालकालायतेनमः ॥९॥ सूतउवाच ॥ एवंस्तुतःसदेवेशोयज्ञभुग्भिर्वृषध्वजः ॥ प्राहगंभीरया वाचाप्रहसन्विबुधर्षभान् ॥ १० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ प्रसन्नोऽहंदिविषदःस्तोत्रेणोत्तमपूरुषाः ॥ मनोरथंपूरयामिसर्वेषांदेवतर्षभाः ॥ ११ ॥ देवाऊचुः ॥ सर्वदेवेशगिरिशशशिमौलिविराजित ॥ आर्तानांशंकरस्त्वंचशंविधेहिमहाबल ॥ १२ ॥ पर्वतोविंध्यनामास्तिमेरुद्वेष्टामहोन्नतः ॥ भानुमार्गनिरोद्धा हिसर्वेषांदुःखदोऽनघ ॥ १३ ॥ तद्वृद्धिस्तंभयेशानसर्वकल्याणकृद्भव ॥ भानुसंचाररोधेनकालज्ञानंकथंभवेत् ॥ १४ ॥ नष्टस्वाहास्वधाकारेलोकेकः शरणंभवेत् ॥ अस्माकंचभयार्तानांभवानेवहिदृश्यते ॥ १५ ॥ दुःखनाशकरोदेवप्रसीदगिरिजापते ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नाऽस्माकंशक्तिरस्तीहतद्वृ द्धिस्तंभनेसुराः ॥ १६ ॥ इममेवचवंदामोभगवंतंरमाधवम् ॥ सोऽस्माकंप्रभुरात्माचपूज्यःकारणरूपधृक् ॥ १७ ॥ गोविंदोभगवान्विष्णुःसर्वकारण कारणः ॥ तंगत्वाकथयिष्यामःसदुःखांतोभविष्यति ॥ १८ ॥ इत्येवमाकर्ण्यगिरीशभाषितंदेवाश्चसेंद्राःसपयोजसंभवाः ॥ रुद्रंपुरस्कृत्यचवेपमानावै कुंठलोकंप्रतिजग्मुरंजसा ॥ १९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ तेगत्वादेवदेवेशंरमानाथंजगद्गुरु म् ॥ विष्णुंकमलपत्राक्षंददृशुःप्रभयान्वितम् ॥ १ ॥ स्तोत्रेण तुष्टुवुर्भक्त्यागद्गदस्वरसत्कृताः ॥ देवाऊचुः ॥ जयविष्णोरमेशाऽद्यमहापुरुषपूर्वज ॥ २ ॥ दैत्यारेकामजनकसर्वकामफलप्रद ॥ महावराहगोविंदमहायज्ञस्वरूपक ॥ ३ ॥ महाविष्णोध्रुवेशाऽऽद्यजगदुत्पत्तिकारण ॥ मत्स्यावतारेवेदानामुद्धा राधाररूपक ॥ ४ ॥ सत्यव्रतधराधीशमत्स्यरूपायतेनमः ॥ जयाऽकूपारदैत्यारेसुरकार्यसमर्पक ॥ ५ ॥ अमृतातिकरेशानकूर्मरूपायतेनमः ॥ जयाऽऽदिदैत्यनाशार्थमादिसूकररूपधृक् ॥ ६ ॥ मह्युद्धारकृतोद्योगकोलरूपायतेनमः ॥ नारसिंहंवपुःकृत्वामहादैत्यंददारयः ॥ ७ ॥

मुद्र कूर्मरूप ॥ ५ ॥ ६ ॥ कोलरूपायवराहरूपाय ॥ ७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





करजैर्नखैः ॥ ८ ॥ सहस्रकरःकार्तवीर्यः ॥ ९ ॥ जामदग्न्यायपरशुरामाय ॥ पौलस्त्योरावणः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ दुष्टयज्ञाअविधियज्ञाः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ नारीजलात्म सुयेनरूपंधृतमित्यन्वयः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ अणुमात्रमपिसंदेहोनास्तीत्यर्थः ॥ २७ ॥ वृषाकपिंविष्णुम् ॥

करजैर्वरदृप्तांगतस्मैनृहरयेनः ॥ वामनंरूपमास्थायत्रैलोक्यैश्वर्यमोहितम् ॥ ८ ॥ बलिंसंछलयामासतस्मैवामनरूपिणे ॥ दुष्टक्षत्रविनाशायसहस्र करशत्रवे ॥९॥ रेणुकागर्भजातायजामदग्न्यायतेनमः ॥ दुष्टराक्षसपौलस्त्यशिरश्छेदपटीयसे ॥१०॥श्रीमद्दाशरथेतुभ्यंनमोऽनंतक्रमायच ॥ कंसदुर्योध नाद्यैश्चदैत्यैःपृथ्वीशलांछनैः ॥ ११ ॥ भाराक्रांतांमहींयोसावुज्जहारमहाविभुः ॥ धर्मसंस्थापयामासपापंकृत्वासुदूरतः ॥ १२ ॥ तस्मैकृष्णायदेवाय नमोस्तुबहुधाविभो ॥ दुष्टयज्ञविघातायपशुहिंसानिवृत्तये ॥ १३ ॥ बौद्धरूपंदधौयोसौतस्मैदेवायतेनमः ॥ म्लेच्छप्रायेऽखिलेलोकेदुष्टराजन्यपी डिते ॥ १४ ॥ कल्किरूपंसमादध्यौदेवदेवायतेनमः॥दशावतारास्तेदेवभक्तानांरक्षणायवै ॥१५॥ दुष्टदैत्यविघातायतस्मात्त्वंसर्वदुःखहृत् ॥ जयभक्ता र्तिनाशायधृतंनारीजलात्मसु ॥ १६ ॥ रूपंयेनत्वयादेवकोऽन्यस्त्वत्तोदयानिधिः ॥ इत्येवंदेदेवेशस्तुत्वाश्रीपीतवाससम् ॥१७ ॥ प्रणेमुर्भक्तिसहिताः साष्टांगंविबुधर्षभाः ॥ तेषांस्तवंसमाकर्ण्यदेवःश्रीपुरुषोत्तमः ॥ १८ ॥ उवाचविबुधान्सर्वान्हर्षयञ्छ्रीगदाधरः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ प्रसन्नोऽस्मिस्त वेनाऽहंदेवास्तापंविमुंचथ ॥ १९ ॥ भवतांनाशयिष्यामिदुःखंपरमदुःसहम् ॥ वृणुध्वंचवरंमत्तोदेवाःपरमदुर्लभम् ॥ २० ॥ ददामिपरमप्रीतःस्तव स्याऽस्यप्रसादतः ॥ यएतत्पठतेस्तोत्रंकल्यउत्थायमानवः ॥२१॥ मायिभक्तिंपरांकृत्वानतंशोकःस्पृशेत्कदा ॥ अलक्ष्मीःकालकर्णीचनाक्रामेत्तद्गृहंसु राः ॥ २२ ॥ नोपसर्गानवेतालानग्रहाब्रह्मराक्षसाः ॥ नरोगावातिकाः पैत्ताःश्लेष्मसंभविनस्तथा ॥ २३ ॥ नाऽकालमरणंतस्यकदापिचभविष्यति ॥ संततिश्चिरकालस्थाभोगाःसर्वेसुखादयः ॥२४॥ संभविष्यंतितन्मर्त्यगृहेयस्तोत्रपाठकः ॥ किंपुनर्बहुनोक्तेनस्तोत्रंसर्वार्थसाधकम् ॥ २५ ॥ एतस्यपठ नान्नृणांभुक्तिमुक्तीनदूरतः ॥ देवाभवत्सुयद्दुःखंकथ्यतांतदसंशयम् ॥ २६ ॥ नाशयामिनसंदेहश्चाऽत्रकार्योऽणुरेवच ॥ एवंश्रीभगवद्वाक्यंश्रुत्वासर्वेदि वौकसः ॥ २७ ॥ प्रसन्नमनसःसर्वेपुनरूचुर्वृषाकपिम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ श्रीशस्यवच नाद्देवाःसंतुष्टाःसर्वएवहि ॥ प्रसन्नमनसोभूत्वापुनरेनंसमूचिरे ॥ १ ॥ देवाऊचुः ॥ देवदेवमहाविष्णोसृष्टिस्थित्यंतकारण ॥ विष्णोर्विंध्यनगोऽर्कस्यमा र्गरोधंकरोतिहि ॥ २ ॥ तेनभानुविरोधेनसर्वएवमहाविभो ॥ अलब्धभोगभागाहिकिंकुर्मःकुत्रयामहि ॥ ३ ॥

इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेदशमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ सप्तविंशतिपद्यैर्वाप्यर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ देवैःसंप्रार्थितोगस्तिर्विंध्याद्रेर्वृद्धिकुंठने ॥ १ ॥ विष्णुवाक्यश्रवणानंतरंजातंवृत्तमाह । श्रीशस्येति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पूजकः अतएवभगवत्याअगस्त्योपासितालोपामुद्रोपासितेतिनामब्रह्मांडपुराणेतंत्रेषुप्रसिद्धमेवैतत् ॥ ४ ॥ तत्तेजोवंचकोविंध्याद्रिवृद्धिखंडकः ॥ ५ ॥ निःश्रेयसौमोक्षस्यपदींस्थानम् ॥ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ यस्याऽगस्तिनक्षत्रस्योदये ॥ १५ ॥ काशपुष्पेति ॥ अगस्तिनक्षत्रस्योदयेकाशपुष्पंमुनिपुष्पम् ॥ भाषायांयस्याऽ

श्रीभगवानुवाच ॥ याकर्त्रीसर्वजगतामाद्याचकुलवर्धनी ॥ देवीभगवतीतस्याःपूजकःपरमद्युतिः ॥ ४ ॥ अगस्त्योमुनिवर्योऽसौवाराणस्यांसमासते ॥ तत्तेजोवंचकोऽगस्त्योभविष्यतिसुरोत्तमाः ॥ ५ ॥ तंप्रसाद्यद्विजवरमगस्त्यंपरमौजसम् ॥ याचध्वंविबुधाःकाशींगत्वानिःश्रेयसःपदीम् ॥ ६ ॥ सूतउवाच ॥ एवंसमुपदिष्टास्तेविष्णुनाविबुधोत्तमाः ॥ प्रतीताःप्रणताःसर्वेजग्मुर्वाराणसींपुरीम् ॥ ७ ॥ क्षणेनविबुधश्रेष्ठागत्वाकाशीपुरींशुभाम् ॥ मणिकर्णींसमाप्लुत्यसचैलंभक्तिसंयुताः ॥ ८ ॥ संतर्प्यदेवांश्चपितॄन्दत्त्वादानंविधानतः ॥ आगत्यमुनिवर्यस्यचाऽऽश्रमंपरमंमहत् ॥ ९ ॥ प्रशांतश्वापदाकीर्णंनानापादपसंकुलम् ॥ मयूरैःसारसैर्हंसैश्चक्रवाकैरुपाश्रितम् ॥ १० ॥ महावराहैःकोलैश्चव्याघ्रैःशार्दूलकैरपि ॥ मृगैरुरुभिरत्यर्थंखड्गैःशरभकैरपि ॥ ॥ ११ ॥ समाश्रितंपरमयालक्ष्म्यामुनिवरंतदा ॥ दंडवत्पतिताःसर्वेप्रणेमुश्चपुनःपुनः ॥१२॥ जयद्विजगणाधीशमान्यपूज्यधरासुर ॥ वातापीवलनाशायनमस्तेकुंभयोनये ॥ १३ ॥ लोपामुद्रापतेश्रीमन्मित्रावरुणसंभव ॥ सर्वविद्यानिधेऽगस्त्यशास्त्रयोनेनमोस्तुते ॥ १४ ॥ यस्योदयेप्रसन्नानिभवंत्युज्ज्वलभांज्यपि ॥ तोयानितोयराशीनांतस्मैतुभ्यंनमोऽस्तुते ॥ १५ ॥ काशपुष्पविकासायलंकावासप्रियायच ॥ जटामंडलयुक्तायसशिष्यायनमोस्तुते ॥ १६ ॥ जयसर्वामरस्तव्यगुणराशेमहामुने ॥ वरिष्ठायचपूज्यायसस्त्रीकायनमोऽस्तुते ॥ १७ ॥ प्रसादःक्रियतांस्वामिन्वयंत्वांशरणंगताः ॥ दुस्तराच्छैलजाद्दुःखात्पीडिताःपरमद्युते ॥१८॥ इत्येवंसंस्तुतोऽगस्त्योमुनिःपरमधार्मिकः ॥ प्राहप्रसन्नयावाचाविहसन्द्विजसत्तम ॥१९॥ मुनिरुवाच । भवंतःपरमश्रेष्ठादेवास्त्रिभुवनेश्वराः ॥ लोकपालमहात्मानोनिग्रहानुग्रहक्षमाः ॥ २० ॥ योऽमरावत्यधीशानःकुलिशंयस्यचाऽऽयुधम् ॥ सिद्धचष्टकंचयद्वारिसशक्रोमरुतांपतिः ॥ २१ ॥ वैश्वानरःकृशानुर्हिहव्यकव्यवहोऽनिशम् ॥ मुखंसर्वामराणांहिसोऽग्निःकिंतस्यदुष्करम् ॥ २२ ॥ रक्षोगणाधिपोभामःसर्वेषांकर्मसाक्षिकः ॥ दंडव्यग्रकरोदेवःकिंतस्याऽसुकरंसुराः ॥ २३ ॥ तथाऽपियदिदेवेशाःकार्यमच्छक्तिसिद्धिभृत् ॥ अस्तिचेदुच्यतांदेवाःकरिष्यामिनसंशयः ॥ २४ ॥ एवंमुनिवरेणोक्तंनिशम्यविबुधर्षभाः ॥ प्रतीताःप्रणयोद्विग्नाःकार्यंनिजगदुर्निजम् ॥ २५ ॥

गास्तिपुष्पामीतिसंज्ञाभवतितत्काशपुष्पं तस्यविकासोभवति ॥ ततोहेतोःकाशपुष्पविकासाय ॥ लंकायांवासेगमनमभिलषितंयस्यसरामचंद्रोलंकावासस्तस्यप्रियायगुरवेशिवगीतोपदेष्ट्रे शिवमंत्रोपदेशकर्त्रे ॥ शिवगीतायांस्पष्टमेतत ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ भामोदीप्तिमान् ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रतीताहृष्टाः ॥ २५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ २६ ॥ २७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ षड्विंशतिमहापद्यैरर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ मुनिनाविंध्यवृद्धेश्वकुंठनंकृतमुच्यते ॥ १ ॥ देववाक्यंश्रुत्वामुनिय त्कृतवांस्तदाह । सूतउवाच इतिवाक्यामिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ एतस्यविघ्नस्यकिंकारणमितिचेदधुनैवतत्कारणंस्मृतामित्याह । आज्ञातमिति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ कालराजंका लभैरवम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ तपएवयोगएवयानंयस्य ॥ योगश क्त्याक्षणार्धेनगतइत्यर्थः ॥ १५ ॥ किमर्थंखर्वतरोजातइतिचेत्तत्रोत्प्रेक्षामाह । विवक्षु

महर्षेर्विंध्यगिरिणानिरुद्धोऽर्कविनिर्गमः ॥ त्रैलोक्यंतेनसंविष्टंहाहाभूतमचेतनम् ॥ २६ ॥ तद्वृद्धिस्तंभयमुनेनिजयातपसः श्रिया ॥ भवतस्तेजसाऽग स्त्यनूनंनम्रोभविष्यति ॥ २७ ॥ एतदेवाऽस्मदीयंचकार्यंकर्तव्यमस्तिहि ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहा०दशमस्कंधेषष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ इतिवाक्यंसमाकर्ण्यविबुधानांद्विजोत्तमः ॥ करिष्येकार्यमेतद्वःप्रत्युवाचततोमुनिः ॥ १ ॥ अंगीकृतेतदाकार्येमुनिनाकुंभजन्मना ॥ देवाःप्रमुदिताःसर्वेबभू वुर्द्विजसत्तमाः ॥ २ ॥ तेदेवाःस्वानिधिष्ण्यानिभेजिरेमुनिवाक्यतः ॥ पत्नींमुनिवरःश्रीमानुवाचनृपकन्यकाम् ॥ ३ ॥ अयेनृपसुतेप्राप्तोविघ्नोऽनर्थस्य कारकः ॥ भानुमार्गनिरोधेनकृतोविंध्यमहीभृता ॥ ४ ॥ आज्ञातंकारणंतच्चस्मृतंवाक्यंपुरातनम् ॥ काशीमुद्दिश्ययद्गीतंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ५ ॥ अविमुक्तंनमोक्तव्यंसर्वथैवमुमुक्षुभिः ॥ किंतुविघ्नाभविष्यंतिकाश्यांनिवसतांसताम् ॥ ६ ॥ सोंतरायोमयाप्राप्तःकाश्यांनिवसताप्रिये ॥ इत्येवमु क्त्वाभार्यांतांमुनिःपरमतापनः ॥ ७ ॥ मणिकर्ण्यांसमाप्लुत्यदृष्ट्वाविश्वेश्वरंविभुम् ॥ दंडपाणिंसमभ्यर्च्यकालराजंसमागतः ॥ ८ ॥ कालराजमहाबाहो भक्तानांभयहारक ॥ कथंदूरयसेपुर्याःकाशीपुर्यास्त्वमीश्वरः ॥ ९ ॥ त्वंकाशीवासविघ्नानांनाशकोभक्तरक्षकः ॥ मांकिंदूरयसेस्वामिन्भक्तार्तिविनिवा रक ॥ १० ॥ परापवादोनोक्तोमेनपैशुन्यंनचानृतम् ॥ केनकर्मविपाकेनकाश्यादूरंकरोषिमाम् ॥ ११ ॥ एवंप्रार्थ्यचतंकालनाथंकुंभोद्भवोमुनिः ॥ जगा मसाक्षिविघ्नेशंसर्वविघ्ननिवारणम् ॥ १२ ॥ तंदृष्ट्वाऽभ्यर्च्यसंप्रार्थ्यततःपुर्याविनिर्गतः ॥ लोपामुद्रापतिःश्रीमानगस्त्योदक्षिणांदिशम् ॥ १३ ॥ काशीविर हसंतप्तोमहाभाग्यनिधिर्मुनिः ॥ संस्मृत्यानुक्षणंकाशींजगामसहभार्यया ॥ १४ ॥ तपोयानमिवाऽऽरुह्यनिमिषार्धेनवैमुनिः ॥ अग्रेददर्शतंविंध्यंरुद्धांबरम थोन्नतम् ॥ १५ ॥ चकंपेचाचलस्तूर्णंदृष्ट्वैवाग्रेस्थितंमुनिम् ॥ गिरिःखर्वतरोभूत्वाविवक्षुरवनीमिव ॥ १६ ॥ दंडवत्पतितोभूमौसाष्टांगंभक्तिभावितः ॥ तंदृष्ट्वा नम्रशिखरंविंध्यंनाममहागिरिम् ॥ १७ ॥ प्रसन्नवदनोऽगस्त्योमुनिर्विंध्यमथाऽब्रवीत् ॥ वत्सैवंतिष्ठतावत्त्वंयावदागम्यतेमया ॥ १८ ॥ अशक्तोऽहंगंडशैलारोह णेतवपुत्रक ॥ एवमुक्त्वामुनिर्याम्यदिशंप्रतिगमोत्सुकः ॥ १९ ॥ आरुह्यतस्यशिखराण्यवारुहदनुक्रमात् ॥ गतोयाम्यदिशंचापिश्रीशैलंप्रेक्ष्यवर्त्मनि ॥ २० ॥

रवनीमिवेति ॥ अवनींपृथिवींकिंचिद्रहस्यंकर्णेविवक्षुर्वक्तुमिच्छुरिव ॥ अतिशयेननम्रोजातइतितात्पर्यम् ॥ १६ ॥ तदेवाह ॥ दंडवादिति ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ अवारुहत्पृथिवीं प्रत्यवातरदित्यर्थः ॥ २० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इत्थंविंध्यकथांसमाप्यपूर्वसंबंधंयोजयति सापिदेवीति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ चतुर्विंशतिभिः पद्यैःस्वारोचिषमनोःकथाः ॥ अर्धश्लोकाधिकैरेवसंक्षेपात्प्रोच्यतेऽधुना ॥ १ ॥ स्वायंभुवमनोःकथाश्रवणानंतरंमनूनामन्येषामपिशौनकःकथांपृच्छति । आद्योमन्वंतरइति ॥ १ ॥ सूतस्तु यादृशंभवतापृच्छ्यतेतादृशमेवनारदेननारायणंप्रतिपृष्टामित्याह । एवमाद्यस्येति ॥ आद्यस्यादिभूतस्यस्वायंभुवमनोः ॥ परिपृच्छतिनारदइत्यन्वयः ॥ २ ॥ सनातनहेनारायण ॥ ३ ॥

मलयाचलमासाद्यतत्राऽऽश्रमपरोभवत् ॥ सापिदेवीतत्रविंध्यमागतामनुपूजिता ॥ २१ ॥ लोकेषुप्रथितांविंध्यवासिनीतिचशौनक ॥ सूतउवाच ॥ एतच्चरित्रंपरमंशत्रुनाशनमुत्तमम् ॥ २२ ॥ अगस्त्यविंध्यनगयोराख्यानंपापनाशनम् ॥ राज्ञांविजयदंतच्चद्विजानांज्ञानवर्धनम् ॥२३॥ वैश्यानांधान्यधनदंशूद्राणांसुखदंतथा ॥ धर्मार्थीधर्ममाप्नोतिधनार्थीधनमाप्नुयात् ॥ २४ ॥ कामानवाप्नुयात्कामीभक्त्याचास्यसकृच्छ्रवात् ॥ एवंस्वायंभुवमनुर्देवीमाराध्यभक्तितः ॥ २५ ॥ लेभेराज्यंधरायाश्चनिजमन्वंतराश्रयम् ॥ २६ ॥ इत्येतद्वर्णितंसौम्यमयामन्वंतराश्रितम् ॥ आद्यंचरित्रंश्रीदेव्याःकिंपुनःकथयामिते ॥ २७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहा०दशमस्कंधेसप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥ शौनकउवाच ॥ आद्योमन्वंतरःप्रोक्तोभवताचायमुत्तमः ॥ अन्येषामुद्भवंब्रूहि मनूनांदिव्यतेजसाम् ॥ १ ॥ सूतउवाच ॥ एवमाद्यस्यचोत्पत्तिंश्रुत्वास्वायंभुवस्यहि ॥ अन्येषांक्रमशस्तेषांसंभूतिंपरिपृच्छति ॥ २ ॥ नारदःपरमोज्ञानीदेवीतत्त्वार्थकोविदः ॥ नारदउवाच ॥ मेमनूनांसमाख्याहिसूत्पतिंचसनातन ॥ ३ ॥ नारायणउवाच ॥ प्रथमोऽयंमनुःस्वायंभुवउक्तोमहामुने ॥ देव्याराधनतोयेनप्राप्तंराज्यमकंटकम् ॥४॥ प्रियव्रतोत्तानपादौमनुपुत्रौमहौजसौ ॥राज्यपालनकर्तारौविख्यातौवसुधातले ॥ ५ ॥ द्वितीयश्चमनुःस्वारोचिषउक्तोमनीषिभिः॥प्रियव्रतसुतःश्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥६॥ सस्वारोचिषनामापिकालिंदीकूलतोमनुः॥ निवासंकल्पयामाससर्वसत्त्वप्रियंकरः ॥७॥ जीर्णपत्राशनोभूत्वातपःकर्तुमनुव्रतः ॥ देव्यामूर्तिंमृन्मयींचपूजयामासभक्तितः ॥ ८॥ एवंद्वादशवर्षाणिवनस्थस्यतपस्यतः ॥ देवीप्रादुरभूत्तातसहस्रार्कसमद्युतिः ॥९॥ ततःप्रसन्नादेवेशीस्तवराजेनसुव्रता ॥ ददौस्वारोचिषायैवसर्वमन्वतराश्रयम् ॥ १० ॥ आधिपत्यंजगद्धात्रीतारिणीतिप्रथामगात् ॥ एवंस्वारोचिषमनुस्तारिण्याराधनात्ततः ॥११॥ आधिपत्यंचलेभेससर्वारातिविवर्जितम् ॥ धर्मसंस्थाप्यविधिवद्राज्यंपुत्रैःसमंविभुः ॥१२॥ भुक्त्वाजगामस्वर्लोकंनिजमन्वंतराश्रयात् ॥ तृतीयउत्तमोनामप्रियव्रतसुतोमनुः ॥१३॥ गंगाकूलेतपस्तप्त्वावाग्भवंसंजपन्नहः ॥ वर्षाणित्रीण्युपवसन्देव्यनुग्रहमाविशत्॥१४॥ स्तुत्वादेवींस्तोत्रवरैर्भक्तिभावितमानसः ॥ राज्यंनिष्कंटकंलेभेसंततिंचिरकालिकीम् ॥ १५ ॥

॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ कूलतःकूले ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ तारिणीति ॥ यादृशमहाविद्यासुमध्येतारिणीतिप्रथामगात्सास्वारोचिषायमन्वंतराधिपत्यंददावित्यन्वयः ॥ तारामहाविद्योपासकोऽयमितिभावः ॥ ११ ॥ १२ ॥ तृतीयोमनुरित्यन्वयः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १६ ॥ चतुर्थोमनुरित्यन्वयः ॥ १७ ॥ कामराजकूटंकामबीजम् ॥ तच्चदक्षिणामूर्तिसंहितायांकामेश्वर्याउक्तमस्तीतिकामेश्वर्याअयमुपासकइतिभावः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ अंबरंपरलोकम् ॥ तामसानुजः पूर्वोक्तोयःप्रियव्रतसुतस्तामसस्तस्यानुजः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ एकोनत्रिंशत्प

राज्योत्थान्यानिसौख्यानिभुक्तत्वाधर्मान्युगस्यच ॥ सोप्याजगामपदवींराजर्षिवरभाविताम् ॥१६॥ चतुर्थस्तामसोनामप्रियव्रतसुतोमनुः ॥ नर्मदादक्षिणेकूलेसमाराध्यजगन्मयीम् ॥ १७ ॥ महेश्वरींकामराजकूटजापपरायणः ॥ वासंतेशारदेकालेनवरात्रसपर्यया ॥ १८ ॥ तोषयामासदेवेशींजलजाक्षींमनूपमाम् ॥ तस्याःप्रसादमासाद्यनत्वास्तोत्रैरनुत्तमैः ॥ १९ ॥ अकंटकंमहद्राज्यंबुभुजेगतसाध्वसः ॥ पुत्रान्बलोद्धताञ्छूरान्दशवीर्यनिकेतनान् ॥ ॥ २० ॥ उत्पाद्यनिजभार्यायांजगामांबरमुत्तमम् ॥ पंचमोमनुराख्यातोरैवतस्तामसानुजः ॥ २१ ॥ कालिंदीकूलमाश्रित्यजजापकामसंज्ञकम् ॥ बीजंपरमवाग्दर्पदायकंसाधकाश्रयम् ॥ २२ ॥ एतदाराधनादापस्वाराज्यर्द्धिमनुत्तमाम् ॥ बलमप्रहतंलोकेसर्वसिद्धिविधायकम् ॥ २३ ॥ संततिंचिरकालीनांपुत्रपौत्रमयींशुभाम् ॥ धर्मान्व्यस्यव्यवस्थाप्यविषयानुपभुज्यच ॥ २४ ॥ जगामाप्रतिमःशूरोमहेंद्रालयमुत्तमम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अथातःश्रूयतांचित्रंदेवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ अंगपुत्रेणमनुनायथाऽऽप्तंराज्यमुत्तमम् ॥ १ ॥ अंगस्यराज्ञःपुत्रोऽभूच्चाक्षुषोमनुरुत्तमः ॥ षष्ठःसुपुलहंनामब्रह्मर्षिंशरणंगतः ॥ २ ॥ ब्रह्मर्षेत्वामहंप्राप्तःशरणंप्रणतार्तिहन् ॥ शाधिमांकिंकरंस्वामिन्येनाऽहंप्राप्नुयांश्रियम् ॥ ३ ॥ मेदिन्याश्चाधिपत्यंमेस्याद्यथावदखंडितम् ॥ अव्याहतंभुजबलंशस्त्रास्त्रनिपुणंक्षमम् ॥ ४ ॥ संततिश्चिरकालीनाऽप्यखंडंवयउत्तमम् ॥ अंतेऽपवर्गलाभश्चस्यात्तथोपदिशाऽद्यमे ॥ ५ ॥ इत्येवंवचनंतस्यमनोःकर्णपथेऽभवत् ॥ प्रत्युवाचमुनिःश्रीमान्देव्याःसंराधनंपरम् ॥ ६ ॥ राजन्नाकर्णयवचोममश्रोत्रसुखंमहत् ॥ शिवामाराधयाऽद्यत्वंतत्प्रसादादिदंभवेत् ॥ ७ ॥ चाक्षुषउवाच ॥ कीदृगाराधनंदेव्यास्तस्याःपरमपावनम् ॥ केनाकारेणकर्तव्यंकारुण्याद्वक्तुमर्हसि ॥ ८ ॥ मुनिरुवाच ॥ राजन्नाकर्ण्यतांदेव्याःपूजनंपरमव्ययम् ॥ वाग्भवंबीजमव्यक्तंसंजप्यमनिशंतथा ॥ ९ ॥ त्रिकालंसंजपन्मर्त्योभुक्तिमुक्तीलभेत्तुहि ॥ नबीजंवाग्भवादन्यदस्तिराजन्यनंदन ॥ १० ॥ जपात्सिद्धिकरंवीर्यबलवृद्धिकरंपरम् ॥ एतस्यजापात्पाद्मोऽपिसृष्टिकर्तामहाबलः ॥ ११ ॥ विष्णुर्यज्जपतःसृष्टिपालकःपरिकीर्तितः ॥ महेश्वरोऽपिसंहर्तायज्जपादभवन्नृप ॥ १२ ॥ लोकपालास्तथाऽन्येऽपिनिग्रहानुग्रहक्षमाः ॥ यदाश्रयादभूवंस्तेबलवीर्यमदोद्धताः ॥ १३ ॥

द्वैस्तुचाक्षुषस्यमनोःकथा ॥ यथावद्वर्ण्यतेयत्रदेवीमाहात्म्यविस्तरः ॥ १ ॥ अवशिष्टषष्ठमनोःकथामाह अथातइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ अपवर्गलाभोमोक्षलाभोऽन्तेस्यादित्यथः ॥ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ वाग्भवंबीजंमहासरस्वतीदेवता ॥ १० ॥ पाद्मःपद्मसंभवोब्रह्मा ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ तृतीयेऽब्देतृतीयेवर्षे ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ईश्वरीमहासरस्वती ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ इतिश्री देवीभागवततिलकेदशस्मकंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥७॥ पंचविंशतिभिःश्लोकैरर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ मनोःसावर्णिसंज्ञस्यकथानकमिहोच्यते ॥ १ ॥ सप्तमाष्टममन्वोःकथामाह । सप्त

एवंत्वमपिराजन्यमहेशींजगदंबिकाम् ॥ समाराध्यमहर्द्धिंचलप्स्यसेऽचिरकालतः ॥ १४ ॥ एवंसमुनिवर्येणपुलहेनप्रबोधितः ॥ अंगपुत्रस्तपस्तप्तुंजगामविरजांनदीम् ॥ १५ ॥ सचतेपेतपस्तीव्रंवाग्भवस्यजपेरतः ॥ बीजस्यपृथिवीपालःशीर्णपर्णाशनोविभुः ॥ १६ ॥ प्रथमेऽब्देपल्लवाशोद्वितीयेतोयभक्षणः ॥ तृतीयेऽब्देपवनभुक्तस्थौस्थाणुरिवाचलः ॥ १७ ॥ एवंद्वादशवर्षाणित्यक्ताहारस्यभूभुजः ॥ वाग्भवंजपतोनित्यंमतिरासीच्छुभान्विता॥१८॥ तथाचदेव्याःपरमंमंत्रंसंजपतोरहः ॥ प्रादुरासीज्जगन्मातासाक्षाच्छ्रीपरमेश्वरी ॥ १९ ॥ तेजोमयीदुराधर्षासर्वदेवमयीश्वरी ॥ उवाचांगतनूजंतंप्रसन्नललिताक्षरम् ॥ २० ॥ देव्युवाच ॥ पृथिवीपालतेयत्स्याच्चिंतितंपरमंवरम् ॥ तद्ब्रूहिसंप्रदास्यामितपसातेसुतोषिता ॥ २१ ॥ चाक्षुषउवाच ॥ जानासिदेवदेवेशियत्प्रार्थ्यंमनसेप्सितम् ॥ अंतर्यामिस्वरूपेणतत्सर्वंदेवपूजिते ॥ २२ ॥ तथाऽपिममभाग्येनजातंयत्तवदर्शनम् ॥ ब्रवीमिदेविमेदेहिराज्यंमन्वंतराश्रितम् ॥ २३ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ दत्तंमन्वंतरस्याऽस्यराज्यंराजन्यसत्तम ॥ पुत्रामहाबलास्तेचभविष्यंतिगुणाधिकाः ॥ २४ ॥ राज्यंनिष्कंटकंभाविमोक्षोंऽतेचापिनिश्चितः ॥ एवंदत्त्वावरंदेवीमनवेवरमुत्तमम् ॥ २५ ॥ जगामाऽदर्शनंसद्यस्तेनभक्त्याचसंस्तुता ॥ सोऽपिराजामनुःषष्ठःप्रसादात्तुतदाश्रयात् ॥ २६ ॥ बभूवमनुमान्योऽसौसार्वभौमसुखैर्वृतः ॥ पुत्रास्तस्यबलोद्युक्ताःकार्यभारसहादृताः ॥ २७ ॥ देवीभक्ताश्चशूराश्चमहाबलपराक्रमाः ॥ अन्यत्रमाननीयाश्चमहाराज्यसुखास्पदाः ॥ २८ ॥ एवंचचाक्षुषमनुर्देव्याराधनतःप्रभुः ॥ बभूवमनुवर्योऽसौजगामांतेशिवापदम् ॥ २९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेदेवीचरित्रेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ सप्तमोमनुराख्यातोमनुर्वैवस्वतःप्रभुः ॥ श्राद्धदेवःपरानंदभोक्तामान्यस्तुभूभुजाम् ॥१॥ सचवैवस्वतमनुःपरदेव्याःप्रसादतः ॥ तथातत्तपसाचैवजातोमन्वंतराधिपः ॥ २ ॥ अष्टमोमनुराख्यातःसावर्णिःप्रथितःक्षितौ ॥ सजन्मांतरआराध्यदेवींतद्वरलाभतः ॥ ३ ॥ जातोमन्वंतरपतिःसर्वराजन्यपूजितः ॥ महापराक्रमीधीरोदेवीभक्तिपरायणः ॥ ४ ॥ नारदउवाच ॥ कथंजन्मांतरेतेनमनुनाऽऽराधनंकृतम् ॥ देव्याःपृथिव्युद्भवायास्तन्ममाख्यातुमर्हसि ॥ ५ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ चैत्रवंशसमुद्भूतोराजास्वारोचिषेंऽतरे ॥ सुरथोनामविख्यातोमहाबलपराक्रमः ॥ ६ ॥ गुणग्राहीधनुर्धारीमान्यःश्रेष्ठःकविःकृती ॥ धनसंग्रहकर्ताचदातायाचकमंडले ॥ ७ ॥

मइति॥१॥२॥३॥४॥पृथिव्युद्भवायामहीमयमूर्तेर्देव्याःकथमाराधनंकृतमित्यन्वयः॥५॥सुरथोनामेति ॥ ब्रह्मणः पुत्रोऽत्रिस्तस्यपुत्रोनिशाकरःसएवराजसूयंकृत्वाद्विजराजोऽभवत्तस्यपुत्रोबुधस्तस्यपुत्रश्चैत्रस्तस्यपुत्रोविरथःतस्यपुत्रःसुरथः ॥ तदुक्तंब्रह्मवैवर्तेप्रकृतिखंडेदुर्गोपाख्याने ॥ तस्यचैत्रस्यपुत्रश्चराजाविरथएवहि ॥ तस्यपुत्रश्चसुरथश्चक्रवर्तीबृहच्छ्रवाइति ॥६॥७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कोलाविध्वंसिनः ॥ कोलानाम्नीराज्ञोनगरीतस्याविध्वंसिनइत्यर्थः ॥ तदप्युक्तंप्रकृतिखंडेदुर्गामाहात्म्ये ॥ ध्रुवस्यपौत्रोबलवान्नंदिरुत्कुलनंदनः॥स्वायंभुवमनोर्वंशःसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ अक्षौहिणीनांशतकंगृहीत्वासैन्यमेवंच ॥ कोलांचवेष्टयामाससुरथस्यमहीपतेः ॥ युद्धंबभूवनियतंपूर्णमब्दंचनारद ॥ जिगायसुरथंराजाध्रुववंशोद्भवस्तदेति ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ब्रह्मविष्णुहराणामुद्भवोजन्मयस्याःसकाशादित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इति

अरीणांमर्दनोमानीसर्वास्त्रकुशलोबली ॥ तस्यैकदाबभूवुस्तेकोलाविध्वंसिनोनृपाः ॥ ८ ॥ शत्रवःसैन्यसहिताःपरिवार्यैनमूर्जिताः ॥ रुरुधुर्नगरींतस्य राज्ञोमानधनस्यहि ॥ ९ ॥ तदाससुरथोनामराजासैन्यसमावृतः ॥ निर्ययौनगरात्स्वीयात्सर्वशत्रुनिबर्हणः ॥ १० ॥ तदाससमरेराजासुरथःशत्रुभिर्जितः ॥ अमात्यैर्मंत्रिभिश्चैवतस्यकोशगतंधनम् ॥ ११ ॥ हृतंसर्वमशेषेणतदाऽतप्यतभूमिपः ॥ निष्काशितश्चनगरात्सराजापरमद्युतिः ॥१२॥ जगामाऽश्वमथाऽऽरुह्यमृगयामिषतोवनम् ॥ एकाकीविजनेऽरण्येबभ्रामोद्भ्रांतमानसः ॥ १३ ॥ मुनेःकस्यचिदागत्यस्वाश्रमंशांतमानसः ॥ प्रशांतजंतुसंयुक्तंमुनिःशिष्यगणैर्युतम् ॥ १४ ॥ उवासकंचित्कालंसराजापरमशोभने ॥ आश्रमेमुनिवर्यस्यदीर्घदृष्टेःसुमेधसः ॥ १५ ॥ एकदासमहीपालोमुनिंपूजावसानकें ॥ कालेगत्वाप्रणम्याऽशुपप्रच्छविनयान्वितः ॥ १६ ॥ मुनेममममनोदुःखंबाधतेचाधिसंभवम् ॥ ज्ञाततत्त्वस्यभूदेवानिष्प्रज्ञस्यचसंततम् ॥ १७ ॥ शत्रुभिर्निर्जितस्यापिहृतराज्यस्यसर्वशः ॥ तथापितेषुमनसिममत्वंजायतेस्फुटम् ॥१८॥ किंकरोमिक्वगच्छामिकथंशर्मलभेमुने ॥ त्वदनुग्रहमाशासेवदवेदविदांवर ॥ १९ ॥ मुनिरुवाच ॥ आकर्णयमहीपालमहाश्चर्यकरंपरम् ॥ देवीमाहात्म्यमतुलंसर्वकामप्रदंपरम् ॥ २० ॥ जगन्मयीमहामायाविष्णुब्रह्महरोद्भवा ॥ साबलादपहृत्यैवजंतूनांमानसानिहि ॥ २१ ॥ मोहायप्रतिसंयच्छेदितिजानीहिभूमिप ॥ सासृजत्यखिलंविश्वंसापालयतिसर्वदा ॥ ॥ २२ ॥ संहारेहररूपेणसंहरत्येवभूमिप ॥ कामदात्रीमहामायाकालरात्रिर्दुरत्यया ॥ २३ ॥ विश्वसंहारिणीकालीकमलाकमलालया ॥ तस्यांसर्वंजगज्जातंतस्यांविश्वंप्रतिष्ठितम् ॥ २४ ॥ लयमेष्यतितस्यांचतस्मात्सैवपरात्परा ॥ तस्यादेव्याःप्रसादश्चयस्योपरिभवेन्नृप ॥२५॥ सएवमोहमत्येतिनान्यथाधरणीपते ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ राजोवाच ॥ कासादेवीत्वयाप्रोक्ताब्रूहिकालविदांवर ॥ कामोहयतिसत्त्वानिकारणंकिंभवेद्द्विज ॥ १ ॥ कस्मादुत्पद्यतेदेवीकिंरूपासाकिमात्मिका ॥ सर्वमाख्याहिभूदेवकृपयाममसर्वतः ॥ २ ॥

श्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ छ ॥ ॥ चतुस्त्रिंशन्महापद्यैस्त्रैलोक्यक्षेमकारकम् ॥ महाकालीचरित्रंचसंक्षेपेणाऽत्रकथ्यते ॥ १ ॥ मुनिवाक्यंश्रुत्वाराजापृच्छति । कासादेवीति ॥ सत्वानिजीवान् ॥ कारणंकिंमोहनेइत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ निद्रांलक्षणयानिद्राधिष्ठात्रींमहाकालींभगवतींप्रथमचरित्रदेवताम् ॥ अतएवसर्वप्रसूतिकामितिविशेषणंसंगच्छते ॥ १० ॥ समुद्रशयने ॥ समुद्रवंत्यस्माद्भूतजातानीतिसमुद्रःपरमात्मा सशयनंवासस्थानंयस्याः ॥ ब्रह्मरूपिणीत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ एकाअद्वितीया ॥ एकस्वरूपाएकसंख्यारूपा ॥ सद्वितीयाद्वितीयमायावस्तुसहिता ॥ द्वयात्मिकाद्वित्वसंख्याविशिष्टपदार्थात्मिका ॥ १५ ॥ त्रयीवेदत्रयीतद्रूपागुणत्रयरूपावा ॥ त्रिवर्गाधर्मार्थकामाः ॥ तुर्यातुर्यावस्थारूपा ॥ तुर्यपदंब्रह्मत

मुनिरुवाच ॥ राजन्देव्याःस्वरूपंतेवर्णयामिनिशामय ॥ तथाचोत्पतितादेवीयेनवासाजगन्मयी ॥३॥ यदानारायणोदेवोविश्वंसंहृत्ययोगराट् ॥ आस्तीर्य शेषंभगवान्समुद्रोनिद्रितोऽभवत् ॥ ४ ॥ तदाप्रस्वापवशगोदेवदेवोजनार्दनः ॥ तत्कर्णमलसंजातौदानवौमधुकैटभौ ॥ ५ ॥ ब्रह्माणंहंतुमुद्युक्तौदानवौ घोररूपिणौ ॥ तदाकमलजोदेवोदृष्ट्वातौमधुकैटभौ ॥ ६ ॥ निद्रितंदेवदेवेशंचिंतामापदुरत्ययाम् ॥ निद्रितोभगवानीशोदानवौचदुरासदौ ॥७॥ किंकरो मिक्कगच्छामिकथंशर्मलभेह्यहम् ॥ एवंचिंतयतस्तस्यपद्मयोनेर्महात्मनः ॥ ८ ॥ बुद्धिःप्रादुरभूत्ततदाकार्यप्रसाधिनी ॥ यस्यावशंगतोदेवोनिद्रितोभ गवान्हरिः ॥ ९ ॥ तांदेवींशरणंयामिनिद्रांसर्वप्रसूतिकाम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ देवदेविजगद्धात्रिभक्ताभीष्टफलप्रदे ॥१०॥ जगन्मायेमहामायेसमुद्रशयने शिवे ॥ त्वदाज्ञावशगाःसर्वेस्वस्वकार्यविधायिनः ॥ ११ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्महारात्रिर्मदोत्कटा ॥ व्यापिनीवशगामान्यामहानंदैकशेवधिः ॥ १२ ॥ महनीयामहाराध्यामायामधुमतीमही ॥ परापराणांसर्वेषांपरमात्वंप्रकीर्तिता ॥१३॥ लज्जापुष्टिः क्षमाकीर्तिःकांतिःकारुण्यविग्रहा ॥ कमनीयाजगद्वंद्या जाग्रदादिस्वरूपिणी ॥ १४ ॥ परमापरमेशानीपरनंदापरायणा ॥ एकाऽप्येकस्वरूपाचसद्वितीयाद्वयात्मिका ॥ १५ ॥ त्रयीत्रिवर्गनिलयातुर्यातुर्यपदा त्मिका ॥ पंचमीपंचभूतेशीषष्ठीषष्ठेश्वरीतिच ॥ १६ ॥ सप्तमीसप्तवारेशीसप्तसप्तवरप्रदा ॥ अष्टमीवसुनाथाचनवग्रहमयीश्वरी ॥ १७ ॥ नवरागकलार म्यानवसंख्यानवेश्वरी ॥ दशमीदशदिक्पूज्यादशाशाव्यापिनीरमा ॥ १८ ॥ एकादशात्मिकाचैकादशरुद्रनिषेविता ॥ एकादशीतिथिप्रीताएकादश गणाधिपा ॥ १९ ॥ द्वादशीद्वादशभुजाद्वादशादित्यजन्मभूः ॥ त्रयोदशात्मिकादेवीत्रयोदशगणप्रिया ॥२०॥ त्रयोदशाभिधाभिन्नाविश्वेदेवाधिदेवता॥ चतुर्दशेंद्रवरदाचतुर्दशमनुप्रसूः ॥ २१ ॥ पंचाधिकदशीविद्यापंचाधिकदशीतिथिः ॥ षोडशीषोडशभुजाषोडशेंदुकलामयी ॥ २२ ॥ षोडशात्मकचंद्रां शुव्याप्तदिव्यकलेवरा ॥ एवंरूपाऽसिदेवेशिनिर्गुणेतामसोदये ॥ २३ ॥ त्वयागृहीतोभगवान्देवदेवोरमापतिः ॥ एतौदुरासदौदैत्यौविक्रांतौमधुकैटभौ ॥ ॥ २४ ॥ एतयोश्चवधार्थायदेवेशंप्रतिबोधय ॥ मुनिरुवाच ॥ एवंस्तुताभगवतीतामसीभगवत्प्रिया ॥ २५ ॥

दात्मिका ॥ यद्वा तुर्यातुरीयसंख्यारूपा ॥ एवमेकादिपदैरपिएकत्वादिसंख्याएवलक्षणयाग्राह्याः ॥ यद्वाप्रतिपदादितिथयोग्राह्याः ॥ पंचमीपंचत्वसंख्यारूपाषष्ठीषट्संख्यारूपाएवमेव षष्ठेश्वरीषष्ठःषण्णांपूरकःपदार्थस्तस्येश्वरी ॥ एवंसर्वत्रव्याख्येयम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ त्रयोदशात्मिकेति ॥ मलमासेनसहत्रयोदशमासात्मिकेत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ पंचाधिकदशीपंचदशीकामराजविद्यारूपात्रिपुरसुंदरीविद्यातयावेद्येत्यर्थः ॥ पंचाधिकदशीतिथिः पंचदशीतिथिरूपेत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१॥३२॥३३॥३४॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥११॥ ॥ त्र्यधिकैर्नवतिश्लोकैर्महालक्ष्म्याःकथानकम् । तथामहासरस्वत्याःसंक्षेपेणात्रवण्यते ॥ १ ॥ प्रतिज्ञातांमहालक्ष्म्याउत्पत्तिंवर्णयति ॥ महिषीगर्भेति । इयंकथापंचमस्कंधेविस्तरेणोक्ता ॥ १ ॥ २ ॥ लोकमुत्तममिति ॥ लोकस्तुभुवनेजनेइतिकोशात् भुवनंकात्यायनाश्रमरूपमित्यर्थः ॥ ३ ॥ यत्रोत्तमौदेवदेवाविति ॥ यत्रकात्यायनाश्रमेइत्यर्थः ॥ अतएवकालिकापुराणेकात्यायनाशिष्यंस्त्रीरूपेणमोहयंतंमहिषासुरंप्रतिकात्या

देवदेवंतदात्यक्त्वामोहयामासदानवौ ॥ तदैवभगवान्विष्णुःपरमात्माजगत्पतिः ॥२६॥ प्रबोधमापदेवेशोददृशेदानवोत्तमौ ॥ तदातौदानवौघोरौदृष्ट्वातंमधुसूदनम् ॥ २७ ॥ युद्धायकृतसंकल्पौजग्मतुःसन्निधिंहरेः ॥ युयुधेचततस्ताभ्यांभगवान्मधुसूदनः ॥ २८ ॥ पंचवर्षसहस्राणिबाहुप्रहरणोविभुः ॥ तौतदाऽतिबलोन्मत्तौजगन्मायाविमोहितौ ॥ २९ ॥ व्रियतांवरइत्येवमूचतुःपरमेश्वरम् ॥ एवंतयोर्वचःश्रुत्वाभगवानादिपूरुषः ॥ ३० ॥ वव्रेवध्यावुभौमेऽद्यभवेतामितिनिश्चितम् ॥ तौतदाऽतिबलौदेवंपुनरेवोचतुर्हरिम् ॥ ३१ ॥ आवांजहिनयत्रोर्वीपयसाचपरिप्लुता ॥ तथेत्युक्त्वाभगवतागदाशंखभृतानृप ॥ ३२ ॥ कृत्वाचक्रेणवैछिन्नेजघनेशिरसीतयोः ॥ एवंदेवीसमुत्पन्नाब्रह्मणासंस्तुतानृप ॥ ३३ ॥ महाकालीमहाराजसर्वयोगेश्वरेश्वरी ॥ महालक्ष्म्यास्तथोत्पत्तिंनिशामयमहीपते ॥ ३४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम० दशमस्कंधेदेवीमाहात्म्येएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ महिषीगर्भसंभूतोमहाबलपराक्रमः ॥ देवान्सर्वान्पराजित्यमहिषोऽभूज्जगत्प्रभुः ॥१॥ सर्वेषांलोकपालानामधिकारान्महासुरः ॥ बलान्निर्जित्यबुभुजेत्रैलोक्यैश्वर्यमद्भुतम् ॥ २ ॥ ततःपराजिताःसर्वेदेवाःस्वर्गपरिच्युताः ॥ ब्रह्माणंचपुरस्कृत्यतेजग्मुर्लोकमुत्तमम् ॥ ३ ॥ यत्रोत्तमौदेवदेवौसंस्थितौशंकराच्युतौ ॥ वृत्तांतंकथयामासुर्महिषस्यदुरात्मनः ॥ ४ ॥ देवानांचैवसर्वेषांस्थानानितरसाऽसुरः ॥ विनिर्जित्यस्वयंभुंक्तेबलवीर्यमदोद्धतः ॥ ५ ॥ महिषासुरनामाऽसौदुष्टदैत्योऽमरेश्वरौ ॥ वधोपायश्चतस्याऽऽशुचिंत्यतामसुरार्दनौ ॥ ६ ॥ एवंश्रुत्वासभगवान्देवानामार्तियुग्वचः ॥ चकारकोपंसुबहुंतथाशंकरपद्मजौ ॥ ७ ॥ एवंकोपयुतस्यास्यहरेरास्यान्महीपते ॥ तेजःप्रादुरभूद्दिव्यंसहस्रार्कसमद्युति ॥८॥ अथानुक्रमतस्तेजःसर्वेषांत्रिदिवौकसाम् ॥ शरीरादुद्भवंप्रापहर्षयद्विबुधाधिपान् ॥ ९ ॥ यदभूच्छंभुजंतेजोमुखमस्योदपद्यत ॥ केशावभूवुर्याम्येनवैष्णवेनचबाहवः ॥ १० ॥ सौम्येनचस्तनौजातौमाहेंद्रेणचमध्यमः ॥ वारुणेनततोभूपजंघोरूसंबभूवतुः ॥११॥ नितंबौतेजसाभूमेःपादौब्राह्मेणतेजसा ॥ पादांगुल्योभानवेनवासवेनकरांगुलीः ॥ १२ ॥

यनःशशापस्त्रीत्वांनिहनिष्यतीति ॥ तद्वचनसार्थक्यायदेव्यातदाश्रमएवावतारोगृहीतोऽतएवदेव्याःकात्यायनीतिनामेत्युक्तम् ॥ इत्थंवृत्तांतमवतारस्यहरिहरौज्ञात्वाप्रथमतएवकात्यायनाश्रमेगत्वास्थितवंताविति गम्यते ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९॥ १० ॥ ११ ॥ करांगुलीःकरांगुल्यः ॥ आर्षप्रयोगः ॥ १२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ रूपांतराणिगजादीनाम् ॥ ३१ ॥

कौवेरेणतथानासादंताःसंजज्ञिरेतदा ॥ प्राजापत्येनोत्तमेनतेजसावसुधाधिप ॥१३॥ पावकेनचसंजातंलोचनत्रितयंशुभम् ॥ सांध्येनतेजसाजातेभृकुट्यौ तेजसांनिधी ॥१४॥ कर्णौवायव्यतोजातौतेजसोमनुजाधिप ॥ सर्वेषांतेजसादेवीजातामहिषमर्दिनी ॥ १५ ॥ शूलंददौशिवोविष्णुश्चक्रंशंखंचपाशभृत् ॥ हुताशनोददौशक्तिंमारुतश्चापसायकौ ॥ १६ ॥ वज्रंमहेंद्रःप्रददौघंटांचैरावताद्गजात् ॥ कालदंडंयमोब्रह्माचाक्षमालाकमंडलू ॥१७॥ दिवाकरोरश्मिमालांरोमकूपेषुसंददौ ॥ कालःखड्गंतथाचर्मनिर्मलंवसुधाधिप॥१८॥समुद्रोनिर्मलंहारमजरेचांबरेनृप ॥ चूडामणिंकुंडलेचकटकानितथांगदे ॥ १९ ॥ अर्धचंद्रंनिर्मलंचनूपुराणितथाददौ॥ग्रैवेयकंभूषणंचतस्यैदेव्यैमुदान्वितः॥२०॥विश्वकर्माचोर्मिकाश्चददौतस्यैधरापते ॥ हिमवान्वाहनंसिंहंरत्नानिविविधानि च ॥२१॥ पानपात्रंसुरापूर्णंददौतस्यैधनाधिपः॥ शेषश्चभगवान्देवोनागहारंददौविभुः ॥२२॥ अन्यैरशेषविबुधैर्मानितासाजगन्मयी ॥ तांतुष्टुवुर्महादेवींदेवामहिषपीडिताः ॥२३॥ नानास्तोत्रैर्महेशानींजगदुद्भवकारिणीम् ॥ तेषांनिशम्यदेवेशीस्तोत्रंविबुधपूजिता ॥ २४ ॥ महिषस्यवधार्थायमहानादंचकारह ॥ तेननादेनमहिषश्चकितोभूद्धरापते ॥ २५ ॥ आससादजगद्धात्रींसर्वसैन्यसमावृतः ॥ ततःसयुयुधेदेव्यामहिषाख्योमहासुरः ॥२६॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधाक्षिप्तैःपूरयन्नंबरांतरम्॥चिक्षुरोग्रामणीःसेनापतिर्दुर्धरदुर्मुखौ॥२७॥बाष्कलस्ताम्रकश्चैवबिडालवदनोपरः॥एतैश्चान्यैरसंख्यातैःसंग्रामांतकसन्निभैः॥२८॥ योधैःपरिवृतोवीरोमहिषोदानवोत्तमः ॥ ततःसाकोपताम्राक्षीदेवीलोकविमोहिनी ॥ २९ ॥ जघानयोधान्समरेदेवीमहिषमाश्रितान् ॥ ततस्तेषुहतेष्वेवसदैत्योरोषमूर्छितः ॥ ३० ॥ आससादतदादेवींतूर्णंमायाविशारदः॥ रूपांतराणिसंभेजेमाययादानवेश्वरः ॥३१॥ तानितान्यस्यरूपाणिनाशयामाससातदा ॥ ततोंऽतेमाहिषंरूपंबिभ्राणममरार्दनम् ॥ ३२ ॥ पाशेनबद्धासुदृढंछित्त्वाखड्गेनतच्छिरः ॥ पातयामासमहिषंदेवीदेवगणांतकम्॥३३॥हाहाकृतंततःशेषसैन्यंभग्नंदिशोदश ॥ तुष्टुवुर्देवदेवेशींसर्वेदेवाःप्रमोदिताः ॥ ३४ ॥ एवंलक्ष्मीःसमुत्पन्नामहिषासुरमर्दिनी ॥ राजञ्छृणुसरस्वत्याःप्रादुर्भावोयथाऽभवत् ॥ ३५ ॥ एकदाशुंभनामाऽऽसीद्दैत्योमदबलोत्कटः ॥ निशुंभश्चापितद्भ्रातामहाबलपराक्रमः ॥ ३६ ॥ तेनसंपीडितादेवाःसर्वेभ्रष्टश्रियोनृप ॥ हिमवंतमथासाद्यदेवींतुष्टुवुरादरात् ॥ ३७ ॥ देवाऊचुः ॥ जयदेवेशिभक्तानामार्तिनाशनकोविदे ॥ दानवांतकरूपेत्वमजरामरणेऽनघे ॥ ३८ ॥ देवेशिभक्तिसुलभेमहाबलपराक्रमे ॥ विष्णुशंकरब्रह्मादिस्वरूपेऽनंतविक्रमे ॥ ३९ ॥

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ प्रथममदर्शनंगतांपुनर्हिमालयेसुंदररूपंधृत्वास्थितांचंडमुंडौदृष्टवंतावित्याह । चंडमुंडाविति ॥ अत्रपंचम

सृष्टिस्थितिकरेनाशकारिकेकांतिदायिनि ॥ महातांडवसुप्रीतेमोददायिनिमाधवि ॥ ४० ॥ प्रसीददेवदेवेशिप्रसीदकरुणानिधे ॥ निशुंभशुंभसंभूतभया पारांबुवारिधेः ॥ ४१ ॥ उद्धराऽस्मान्प्रपन्नार्तिनाशिकेशरणागतान् ॥ एवंसंस्तुवतांतेषांत्रिदशानांधरापते ॥ ४२ ॥ प्रसन्नागिरिजाप्राहब्रूतस्तवनका रणम् ॥ एतस्मिन्नंतरेतस्याःकोशरूपात्समुत्थिता ॥ ४३ ॥ कौशिकीसाजगत्पूज्यादेवान्प्रीत्येदमब्रवीत् ॥ प्रसन्नाऽहंसुरश्रेष्ठाःस्तवेनोत्तमरूपिणी ॥ ४४ ॥ त्रियतांवरइत्युक्तेदेवाःसंवत्रिरेवरम् ॥ शुंभनामावरोभ्रातानिशुंभस्तस्यविश्रुतः ॥ ४५ ॥ त्रैलोक्यमोजसाक्रांतंदैत्येनबलशालिना ॥ तद्वधश्चि त्यतांदेविदुरात्मादानवेश्वरः ॥ ४६ ॥ बाधतेसततंदेवितिरस्कृत्यनिजौजसा ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ देवशत्रुंपातयिष्येनिशुंभंशुंभमेवच ॥४७॥ स्वस्थास्ति ष्ठतभद्रंवःकंटकंनाशयामिवः ॥ इत्युक्त्वादेवदेवेशीदेवान्सेंद्रान्दयामयी ॥ ४८ ॥ जगामाऽदर्शनंसद्योमिषतांत्रिदिवौकसाम् ॥ देवाःसमागताहृष्टाःसु वर्णाद्रिगुहांशुभाम् ॥ ४९ ॥ चंडमुंडौपश्यतःस्मभृत्यौशुंभनिशुंभयोः ॥ दृष्ट्वातांचारुसर्वांगींदेवींलोकविमोहिनीम् ॥ ५० ॥ कथयामासतूराज्ञेभृत्यौ तौचंडमुंडकौ ॥ देवसर्वासुरश्रेष्ठरत्नभोगार्हमानद ॥ ५१ ॥ अपूर्वाकामिनीदृष्टाचावाभ्यांरिपुमर्दन ॥ तस्याःसंभोगयोग्यत्वमस्त्येवतवसांप्रतम् ॥ ॥ ५२ ॥ तांसमानयचार्वंगींभुंक्ष्वसौख्यसमन्वितः ॥ तादृशीनासुरीनारीनगंधर्वीनदानवी ॥ ५३ ॥ नमानवीनापिदेवीयादृशीसामनोहरा ॥ एवंभृ त्यवचःश्रुत्वाशुंभःपरबलार्दनः ॥ ५४ ॥ दूतंसंप्रेषयामाससुग्रीवंनामदानवम् ॥ सदूतस्त्वरितंगत्वादेव्याःसविधमादरात् ॥ ५५ ॥ वृत्तांतंकथयामास देव्यैशुंभस्ययद्वचः ॥ देविशुंभासुरोनामत्रैलोक्यविजयीप्रभुः ॥ ५६ ॥ सर्वेषांरत्नवस्तूनांभोक्तामान्योदिवौकसाम् ॥ तदुक्तंशृणुमेदेविरत्नभोक्ताऽहम व्ययः ॥ ५७ ॥ त्वंचापिरत्नभूताऽसिभजमांचारुलोचने ॥ सर्वेषुयानिरत्नानिदेवासुरनरेषुच ॥ ५८ ॥ तानिमय्येवसुभगेभजमांकामजैरसैः ॥ देव्यु वाच ॥ सत्यंवदसिहेदूतदैत्यराजप्रियंकरम् ॥ ५९ ॥ प्रतिज्ञायामयापूर्वंकृतासाप्यनृताकथम् ॥ भवेत्तांशृणुमेदूतयाप्रतिज्ञामयाकृता ॥ ६० ॥ यो मेदर्पंविधुनुतेयोमेबलमपोहति ॥ योमेप्रतिबलोभूयात्सएवममभोगभाक् ॥ ६१ ॥ ततएनांप्रतिज्ञांमेसत्यांकृत्वासुरेश्वरः ॥ गृह्णातुपाणिंतरसातस्या ऽशक्यंकिमत्रहि ॥ ६२ ॥ तस्माद्गच्छमहादूतस्वामिनंब्रूहिचादृतः ॥ प्रतिज्ञांचापिमेसत्यांविधास्यतिबलाधिकः ॥ ६३ ॥ एवंवाक्यंमहादेव्याःसमाकर्ण्य सदानवः ॥ कथयामासशुंभायदेव्यावृत्तांतमादितः ॥ ६४ ॥ तदप्रियंदूतवाक्यंशुंभःश्रुत्वामहाबलः ॥ कोपमाहारयामासमहांतंदनुजाधिपः ॥ ६५ ॥

स्कंधोक्तकथयाऽत्रत्योक्तकथयाचक्वचित्क्वचिद्विरोधोदृश्यतेसवक्तृभेदात्कल्पभेदाच्चपरिहार्यः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ वाहनेनासिंहेन ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

ततोधूम्राक्षनामानंदैत्यंदैत्यपतिःप्रभुः ॥ आदिदेशशृणुवचोधूम्राक्षममचाहतः ॥ ६६ ॥ तांदुष्टांकेशपाशेषुधृत्वाप्यानीयतांमम ॥ समीपमविलंबेन शीघ्रंगच्छस्वमेपुरः ॥ ६७ ॥ इत्यादेशंसमासाद्यदैत्येशोधूम्रलोचनः ॥ षष्ट्यासुराणांसहितःसहस्राणांमहाबलः ॥ ६८ ॥ तुहिनाचलमासाद्यदेव्याः सविधमेवसः ॥ उच्चैर्दैर्वीजगादाशुभजदैत्यपतिंशुभे ॥ ६९ ॥ शुंभंनाममहावीर्यंसर्वभोगानवाप्तुहि ॥ नोचेत्केशान्गृहीत्वात्वांनेष्येदैत्यपतिंप्रति ॥ ७० ॥ इत्युक्तासाततोदेवीदैत्येनत्रिदशारिणा ॥ उवाचदैत्ययद्रूपेतत्सत्यंतेमहाबल ॥ ७१ ॥ राजाशुंभासुरस्त्वंचकिंकरिष्यसितद्वद ॥ इत्युक्तोदैत्यपोऽधावत्तूर्णंशस्त्रसमन्वितः ॥ ७२ ॥ भस्मसात्तंचकाराशुहुंकारेणमहेश्वरी ॥ ततःसैन्यंवाहनेनदेव्याभग्नंमहीपते ॥ ७३ ॥ दिशोदशाभजच्छीघ्रंहाहाभूतमचेतनम् ॥ तद्वृत्तांतंसमाश्रुत्यसशुंभोदैत्यराड्विभुः ॥ ७४ ॥ चुकोपचमहाकोपाद्भ्रुकुटीकुटिलाननः ॥ ततःकोपपरीतात्मादैत्यराजःप्रतापवान् ॥ ७५ ॥ चंडंमुंडंरक्तबीजंक्रमतःप्रैषयद्विभुः ॥ तेचगत्वात्रयोदैत्याविक्रांतावहुविक्रमाः ॥ ७६ ॥ देवींग्रहीतुमारब्धयत्नास्तेह्यभवन्बलात् ॥ तानापततएवासौजगद्धात्रीमदोत्कटा ॥ ७७ ॥ शूलंगृहीत्वावेगेनपातयामासभूतले ॥ ससैन्यान्निहताञ्छ्रुत्वादैत्यांस्त्रीन्दानवेश्वरौ ॥ ७८ ॥ शुंभश्चैवनिशुंभश्चसमाजन्मतुरोजसा ॥ निशुंभश्चैवशुंभश्चकृत्वायुद्धंमहोत्कटम् ॥ ७९ ॥ देव्याश्चवशगौजातौनिहतौचतयासुरौ ॥ इतिदैत्यवरंशुंभंघातयित्वाजगन्मयी ॥ ८० ॥ विबुद्धैःसंस्तुतातद्वत्साक्षाद्वागीश्वरीपरा ॥ एवंतेवर्णितोराजन्प्रादुर्भावोऽतिरम्यकः ॥ ८१ ॥ काल्याश्चैवमहालक्ष्म्याःसरस्वत्याःक्रमेणच ॥ परापरेश्वरी देवीजगत्सर्गंकरोतिच ॥ ८२ ॥ पालनंचैवसंहारंसैवदेवीदधातिहि ॥ तांसमाश्रयदेवेशींजगन्मोहनिवारिणीम् ॥ ८३ ॥ महामायांपूज्यतमांसाकार्यंते विधास्यति ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ इतिराजावचःश्रुत्वामुनेःपरमशोभनम् ॥ ८४ ॥ देवींजगामशरणंसर्वकामफलप्रदाम् ॥ निराहारोयतात्माचतन्मनाश्चसमाहितः ॥ ८५ ॥ देवीमूर्तिंमृन्मयींचपूजयामासभक्तितः ॥ पूजनांतेबलिंतस्यैनिजगात्रासृजंददत् ॥८६॥ तदाप्रसन्नादेवेशीजगद्योनिःकृपावती ॥ प्रादुर्बभूवपुरतोवरंब्रूहीतिभाषिणी ॥ ८७ ॥ सराजानिजमोहस्यनाशनंज्ञानमुत्तमम् ॥ राज्यंनिष्कंटकंचैवयाचतिस्ममहेश्वरीम् ॥ ८८ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ राजन्निष्कंटकंराज्यंज्ञानंवैमोहनाशनम् ॥ भविष्यतिमयादत्तमस्मिन्नेवभवेतव ॥ ८९ ॥ अन्यच्चशृणुभूपालजन्मांतरविचेष्टितम् ॥ भानोर्जन्मसमासाद्यसावर्णिर्भविताभवान् ॥ ९० ॥ तत्रमन्वंतरस्यापिपतित्वंबहुविक्रमम् ॥ संततिंबहुलांचापिप्राप्स्यतेमद्वराद्भवान् ॥ ९१ ॥ एवंदत्त्वावरंदेवी जगामादर्शनंतदा ॥ सोपिदेव्याःप्रसादेनजातोमन्वंतराधिपः ॥ ९२ ॥

॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ सप्तविंशतियुक्तैश्चशतश्लोकैरतःपरम् ॥ मनूनामवशिष्टानांषण्णांवृत्तमुदीर्यते ॥ १ ॥ अष्टमनूनांवृत्तमभिधा यावशिष्टषण्मनूनांवृत्तंकीर्तयति । अथातइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ आत्मन्येवस्वात्मन्येवसर्वंजगद्दर्शनंजगामसर्वाधिष्ठानब्रह्मरूपदेव्याःसाक्षात्कारस्तेषांजातइति

एवंतेवर्णितंसाधोसावर्णेर्जन्मकर्मच ॥ एतत्पठंस्तथाशृण्वन्देव्यनुग्रहमाप्नुयात् ॥ ९३ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेदेवीमाहात्म्येद्वाद शोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अथातःश्रूयतांशेषमनूनांचित्रमुद्भवम् ॥ यस्यस्मरणमात्रेणदेवीभक्तिःप्रजायते॥१॥आसन्वैवस्वतमनोः पुत्राःषड्विमलोदयाः ॥ करूषश्चपृषध्रश्चनाभागोलिष्टएवच ॥ २ ॥ शर्यातिश्चत्रिशंकुश्चसर्वएवमहाबलाः ॥ ततःषडेवतेगत्वाकालिंद्यास्तीरमुत्तमम्॥३॥ निराहाराजितश्वासाःपूजांचक्रुस्ततःस्थिताः ॥ देव्यामहीमयींमूर्तिंविनिर्मायपृथक्पृथक् ॥ ४ ॥ विविधैरुपचारैस्तांपूजयामासुरादृताः॥ततश्चसर्वएवैते तपःसारामहाबलाः ॥ ५ ॥ जीर्णपर्णाशनावायुभक्षणास्तोयजीवनाः ॥ धूम्रपानरश्मिपानाःक्रमशश्चबहुश्रमाः ॥ ६ ॥ ततस्तेषामादरेणाऽऽराधनंकुर्व तांसदा ॥ विमलामतिरुत्पन्नासर्वमोहविनाशिनी ॥ ७ ॥ बभूवुर्मनुपुत्रास्तेदेवीपादैकचिंतनाः ॥ मत्याविमलयातेषामात्मन्येवाखिलंजगत् ॥ ८ ॥ दर्श नंसंजगामाशुतदद्भुतमिवाभवत् ॥ एवंद्वादशवर्षांतेतपसाजगदीश्वरी ॥९॥ प्रादुर्बभूवदेवेशीसहस्रार्कसमद्युतिः ॥ तांदृष्ट्वाविमलात्मानोराजपुत्राःषडेवते ॥ १० ॥ तुष्टुवुर्भक्तिनम्रांतःकरणाभावसंयुताः ॥ राजपुत्राऊचुः ॥ महेश्वरिजयेशानिपरमेकरुणालये ॥ ११ ॥ वाग्भवाराधनप्रीतेवाग्भवप्रतिपादिते ॥ क्लींकारविग्रहेदेविक्लींकारप्रीतिदायिनि ॥१२॥ कामराजमनोमोददायिनीश्वरतोषिणि ॥ महामायेमोदपरेमहासाम्राज्यदायिनि ॥ १३ ॥ विष्ण्वर्कहरश क्रादिस्वरूपेभोगवर्धिनि ॥ एवंस्तुताभगवतीराजपुत्रैर्महात्मभिः ॥ १४ ॥ प्रसादसुमुखीदेवीप्रोवाचवचनंशुभम् ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ राजपुत्रामहात्मानो भवंतस्तपसायुताः ॥ १५ ॥ निष्कल्मषाःशुद्धधियोजातावैमदुपासनात् ॥वरंमनोगतंसर्वंयाचध्वमविलंबितम् ॥ १६ ॥ प्रसन्नाऽहंप्रदास्यामियुष्माकं मनसिस्थितम् ॥ राजपुत्राऊचुः ॥ देविनिष्कंटकंराज्यंसंततिश्चिरजीविनी ॥ १७ ॥ भोगाअव्याहताःकामंयशस्तेजोमतिश्चह॥अकुंठितत्वंसर्वेषामेषएव वरोहितः ॥ १८ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ एवमस्तुचसर्वेषांभवतांयन्मनोगतम् ॥ अथान्यदपिमेवाक्यंश्रूयतामादरादिदम् ॥ १९ ॥ भवंतःसर्वएवैतेमन्वंतर पतीश्वराः ॥ संतत्यादीर्घयाभोगैरनेकैरपिसंगमः ॥ २० ॥ अखंडितबलैश्वर्ययशस्तेजोविभूतयः ॥ भवितारोमत्प्रसादाद्राजपुत्राःक्रमेणतु ॥ २१ ॥

भावः ॥ तथाचमनुः। सर्वभूतस्थमात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि ॥ संपश्यन्नात्मनाजीवैःस्वाराज्यमधिगच्छतीति ॥ ८ ॥ तदद्भुतमिवेति ॥ यद्योगादिभिरपिवस्तुनप्राप्यतेतत्केवलंभगवत्या राधनेनाऽऽत्मस्वरूपंलब्धमित्याश्चर्यंलोकानामभवदित्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ कामराजःकामेश्वरः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

भ्रामरीजगदंबिकेति ॥ अनेनचैतेषण्मनवोभ्रामर्यादेवतायाउपासकाइतिबोधितम् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ भ्रामर्यास्तुप्रसादत इतिश्रुत्वापृच्छति । नारदउवाच ॥ केयमिति ॥ ३३ ॥ अस्यश्रवणमात्रेणैवमृत्युर्नास्तीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ अरुणाख्यःअयंविप्रचित्तिवंशोद्भवइतिपुराणांतरेस्पष्टम् ॥ ३७ ॥

श्रीनारायणउवाच ॥ एवंतेभ्योवरान्दत्वाभ्रामरीजगदंबिका ॥ अंतर्धानंजगामाऽऽशुभक्त्यातैःसंस्तुतासती ॥ २२ ॥ तेराजपुत्राःसर्वेऽपितस्मिञ्जन्मन्यनुत्तमम् ॥ राज्यंमहीगतान्भोगान्बुभुजुश्चमहौजसः ॥ २३ ॥ संततिंचाऽखंडितांतेसमुत्पाद्यमहीतले ॥ वंशंसंस्थाप्यसर्वेऽपिमनूनांपतयोऽभवन् ॥ ॥ २४ ॥ भवांतरेक्रमेणैवसावर्णिपदभागिनः ॥ प्रथमोदक्षसावर्णिर्नवमोमनुरीरितः ॥२५॥ अव्याहतबलोदेव्याःप्रसादादभवद्विभुः ॥ द्वितीयोमेरुसावर्णिर्दशमोमनुरेवच ॥ २६ ॥ बभूवमन्वंतरपोमहादेवीप्रसादतः ॥ तृतीयोमनुराख्यातःसूर्यसावर्णिनामकः ॥ २७ ॥ एकादशोमहोत्साहस्तपसास्वेनभावितः ॥ चतुर्थश्चंद्रसावर्णिर्द्वादशोमनुराड्विभुः ॥ २८ ॥ देवीसमाराधनेनजातोमन्वंतरेश्वरः ॥ पंचमोरुद्रसावर्णिस्त्रयोदशमनुःस्मृतः ॥ २९ ॥ महाबलोमहासत्त्वोबभूवजगदीश्वरः ॥ षष्ठश्चविष्णुसावर्णिश्चतुर्दशमनुःकृती ॥ ३० ॥ बभूवदेवीवरतोजगतांप्रथितःप्रभुः ॥ चतुर्दशैतेमनवोमहातेजोबलैर्युताः ॥ ३१ ॥ देव्याराधनतःपूज्यावंद्यालोकेषुनित्यशः ॥ महाप्रतापिनःसर्वेभ्रामर्यास्तुप्रसादतः ॥ ३२ ॥ नारदउवाच ॥ केयंसाभ्रामरीदेवीकथंजाताकिमात्मिका ॥ तदाख्यानंवदप्राज्ञविचित्रंशोकनाशकम् ॥ ३३ ॥ नतृप्तिमधिगच्छामिपिबन्देवीकथामृतम् ॥ अमृतंपिबतांमृत्युर्नाऽस्यश्रवणतोयतः ॥ ३४ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिजगन्मातुर्विचेष्टितम् ॥ अचिंत्याव्यक्तरूपायाविचित्रंमोक्षदायकम् ॥ ३५ ॥ यद्यच्चरित्रंश्रीदेव्यास्तत्सर्वलोकहेतवे ॥ निर्व्याजयाकरुणयापुत्रेमातुर्यथातथा ॥ ३६ ॥ पूर्वंदैत्योमहानासीदरुणाख्योमहाबलः ॥ पातालेदैत्यसंस्थानेदेवद्वेषीमहाखलः ॥ ३७ ॥ सदेवाञ्जेतुकामश्चचकारपरमंतपः ॥ पद्मसंभवमुद्दिश्यसनस्त्राताभविष्यति ॥ ३८ ॥ गत्वाहिमवतःपार्श्वेगंगाजलसुशीतले ॥ पक्वपर्णाशनोयोगीसंनिरुध्यमरुद्गणम् ॥ ३९॥ गायत्रीजपसंसक्तःसकामस्तमसायुतः ॥ दशवर्षसहस्राणिततोवारिकणाशनः ॥ ४० ॥ दशवर्षसहस्राणिततःपवनभोजनः ॥ दशवर्षसहस्राणिनिराहारोऽभवत्ततः ॥ ४१ ॥ एवंतपस्यतस्तस्यशरीरादुत्थितोऽनलः ॥ ददाहजगतींसर्वांतदद्भुतमिवाभवत् ॥४२॥ किमिदंकिमिदंचेतिदेवाःसर्वेचकंपिरे ॥ संत्रस्ताःसकलालोकाब्रह्माणंशरणंययुः ॥ ४३ ॥ विज्ञापितंदेववरैःश्रुत्वातत्रचतुर्मुखः ॥ गायत्रीसहितोहंससमारूढोययौमुदा ॥ ४४ ॥ प्राणमात्रावशिष्टंतंधमनीशतसंकुलम् ॥ शुष्कोदरंक्षामगात्रंध्यानमीलितलोचनम् ॥ ४५ ॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ब्रह्मप्रणवंगायत्रींवाजपंतम् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ नपुंभ्योनापियोषितइति ॥ अत्रस्त्रीपुंशब्देनमनुष्याकारावेवस्त्रीपुमांसौगृह्येतेनपुरुषमात्रंनवास्त्रीलिंगमात्रम् ॥ अन्यथाद्विपाच्चतुष्पादादीनामपिस्त्रीपुंसोरेवांतर्भावात्तेषांपुनर्ग्रहणंव्यर्थमेवस्यादतएवदेव्याःस्त्रीपुंरूपैर्भ्रमरैर्दैत्यस्यवधेकृतेऽपिनदोषइतिबोध्यम् ॥ ५३॥ नोभयाद्विपाच्चतुष्पाद्रूपनार

ददर्शतेजसादीप्तंद्वितीयमिवपावकम् ॥ वरंवरयभद्रंतेवत्सयन्मनसिस्थितम् ॥ ४६ ॥ श्रुतिमात्रेणसंतोषकारकंवाक्यमूचिवान् ॥ श्रुत्वाब्रह्ममुखाद्वाणीं सुधाधारामिवारुणः ॥ ४७ ॥ उन्मीलिताक्षःपुरतोददर्शजलजोद्भवम् ॥ गायत्रीसहितंदेवंचतुर्वेदसमन्वितम् ॥ ४८ ॥ अक्षस्रक्कुंडिकाहस्तंजपंतंब्रह्मशाश्वतम् ॥ दृष्ट्वोत्थायननामाऽथस्तुत्वाचविविधैःस्तवैः ॥ ४९ ॥ वरंवव्रेस्वबुद्धिस्थंमाभवेन्मृत्युरित्यपि ॥ श्रुत्वाऽरुणवचोब्रह्मावोधयामाससादरम् ॥ ॥ ५० ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यामृत्युनाकवलीकृताः ॥ तदाऽन्येषांतुकावार्तामरणेदानवोत्तम ॥ ५१ ॥ वरंयोग्यंततोब्रूहिदातुंयःशक्यतेमया ॥ नाऽत्राऽऽग्रहंप्रकुर्वंतिबुद्धिमंतोजनाःक्वचित् ॥ ५२ ॥ इतिब्रह्मवचःश्रुत्वापुनःप्रोवाचसादरम् ॥ नयुद्धेनचशस्त्रास्त्रान्नपुंभ्योनापियोषितः ॥ ५३ ॥ द्विपाद्भ्योवाचतुष्पाद्भ्योनोभयाकारतस्तथा ॥ भवेन्मेमृत्युरित्येवंदेवदेहिवरंप्रभो ॥५४॥ बलंचविपुलंदेहियेनदेवजयोभवेत् ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वातथास्त्वितिवचोऽब्रवीत् ॥ ५५ ॥ दत्त्वावरंजगामाऽऽशुपद्मजःस्वंनिकेतनम् ॥ ततोरुणाख्योदैत्यस्तुपातालात्स्वाश्रयस्थितान् ॥ ५६ ॥ दैत्यानाकारयामासब्रह्मणोवरदर्पितः ॥ आगत्यतेऽसुराःसर्वेदैत्येशंतंप्रचक्रिरे ॥५७॥ दूतंचप्रेषयामासुर्युद्धार्थममरावतीम्॥दूतवाक्यंतदाश्रुत्वादेवराड्भयकंपितः ॥५८॥देवैःसार्धंजगामाऽऽशुब्रह्मणःसदनंप्रति॥ब्रह्मविष्णूपुरस्कृत्यजग्मुस्तेशंकरालयम् ॥५९॥ विचारंचक्रिरेतत्रवधार्थंतेसुरद्रुहाम्॥एतस्मिन्समयेतत्रदैत्यसेनासमावृतः ॥६०॥ अरुणाख्योदैत्यराजोजगामाऽऽशुत्रिविष्टपम् ॥ सूर्येंदुयमवह्नीनामधिकारान्पृथक्पृथक् ॥६१॥स्वयंचकारतपसानानारूपधरोमुने ॥ स्वस्वस्थानच्युताःसर्वेजग्मुःकैलासमंडलम् ॥६२॥ शशंसुःशंकरंदेवाःस्वस्वदुःखंपृथक्पृथक् ॥ महान्विचारस्तत्राऽऽसीत्किंकर्तव्यमतःपरम्॥६३॥ नयुद्धेनचशस्त्रास्त्रैर्नपुंभ्योनापियोषितः॥द्विपाद्भ्योवाचतुष्पाद्भ्योनोभयाकारतोऽपिवा॥६४॥मृत्युर्भवेदितिब्रह्माप्रोवाचवचनंयतः॥ इतिचिंतातुराःसर्वेकर्तुंकिंचिन्नचक्षमाः ॥६५॥ एतस्मिन्समयेतत्रवागभूदशरीरिणी ॥ भजध्वंभुवनेशानींसावःकार्यंविधास्यति ॥६६॥ गायत्रीजपसंसक्तोदैत्यराज्यदितांत्यजेत् ॥ मृत्युयोग्यस्तदाभूयादित्युच्चैस्तोषकारिणी ॥६७॥ श्रुत्वादैवींतथावाणींमंत्रयामासुराहताः ॥ बृहस्पतिंसमाहूयवचनंप्राहदेवराट्॥६८॥ गुरोगच्छसुराणांतुकार्यार्थमसुरंप्रति॥यथाभवेच्चगायत्रीत्यागस्तस्यतथाकुरु॥६९॥अस्माभिःपरमेशानीसेव्यतेध्यानयोगतः॥प्रसन्नासाभगवतीसाहाय्यंतेकरिष्यति॥७०॥

सिंहगजाननाद्युभयात्मकरूपान्नपुंसकरूपाच्चेत्यर्थः॥ भ्रमराणांषट्पदत्वान्नद्विपात्त्वंचतुष्पात्त्वंवा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

जांबूनदेश्वरीम् अष्टमस्कंधोक्तजंब्वादनेश्वरीमित्यर्थः ॥ ७१ ॥ देवीमखःपूर्वोक्तोदेवीयज्ञः ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ अरातिःशत्रुः ॥ तथाचशत्रुगृहेतवागमनमनुचितामितिभावः ॥७४॥ ७५ ॥७६॥ तत्याजेति ॥ ननुबृहस्पतिवाक्यश्रवणमात्रेणकथंतेनस्वेष्टदेवतागायत्रीत्यक्तोतिचेत्स्वेष्टदेवतात्यागोभवतुसर्वस्वनाशोवाभवतुतथाऽपिदेवपक्षपातित्वंनस्वीकारिष्यामीत्याशयात् ॥ इत्थंदेवद्वेषेऽपिकारणंतुमोहितोदेवमाययेतिमूलेएवोक्तम् ॥ देवसेवयाजांबूनदेश्वरीप्रसन्नादैत्यंमुमोहसचमोहितोदैत्यएवमभिमानेनगायत्रींतत्याजेतितदर्थः ॥ ननुदेव्यापिस्वोपासकोदैत्यः कथंमोहितइतिचेन्न ॥ सकामस्तमसायुतइतिपूर्वोक्तवचनेनतस्यनिष्कामोपासकत्वाभावात् ॥ निष्कामोपासकएवदेवानांप्रियोभवतिनान्यइतितुबृहदारण्यकेपुराणांतरेषुचस्पष्टम् ॥ ७७ ॥

इत्यादिश्यगुरुंसर्वेजग्मुर्जांबूनदेश्वरीम् ॥ सास्मान्दैत्यभयत्रस्तान्पालयिष्यतिशोभना ॥ ७१ ॥ तत्रगत्वातपश्चर्याचक्रुःसर्वेसुनिष्ठिताः ॥ मायाबीजजपासक्तादेवीमखपरायणाः ॥ ७२ ॥ बृहस्पतिस्ततःशीघ्रंजगामाऽसुरसन्निधौ ॥ आगतंमुनिवर्यंतंपप्रच्छाऽथसदैत्यराट् ॥ ७३ ॥ मुनेकुत्राऽगमःकस्मात्किमर्थमितिमेवद॥नाहंयुष्मत्पक्षपातीप्रत्युतारातिरेवच ॥७४॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाप्रोवाचमुनिनायकः ॥ अस्मत्सेव्याचयादेवीसात्वयापूज्यतेऽनिशम् ॥ ॥७५॥तस्मादस्मत्पक्षपातीनभवेस्त्वंकथंवद् ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वामोहितोदेवमाययां ॥ ७६ ॥ तत्याजपरममंत्रमभिमानेनसत्तम ॥ गायत्रीत्यागतोदैत्योनिस्तेजस्कोवभूवह ॥ ७७ ॥ कृतकार्योगुरुस्तस्मात्स्थानान्निर्गतवान्पुनः ॥ ततोवृत्तांतमखिलंकथयामासवाग्रिणे ॥ ७८ ॥ संतुष्टास्तेसुराःसर्वेभेजिरेपरमेश्वरीम् ॥ एवंबहुगतेकालेकस्मिंश्चित्समयेमुने ॥ ७९ ॥ प्रादुरासीज्जगन्माताजगन्मंगलकारिणी ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशाकोटिकंदर्पसुंदरा ॥ ॥ ८० ॥ चित्रानुलेपनादेवीचित्रवासोयुगान्विता ॥ विचित्रमाल्याभरणाचित्रभ्रमरमुष्टिका ॥ ८१ ॥ वराभयकराशांताकरुणामृतसागरा ॥ नानाभ्रमरसंयुक्तपुष्पमालाविराजिता ॥ ८२ ॥ भ्रमरीभिर्विचित्राभिरसंख्याभिःसमावृता ॥ भ्रमरैर्गायमानैश्चह्रींकारमनुमन्वहम् ॥ ८३ ॥ समंततःपरिवृताकोटिकोटिभिरंबिका ॥ सर्वशृंगारवेषाढ्यासर्ववेदप्रशंसिता ॥ ८४ ॥ सर्वात्मिकासर्वमयीसर्वमंगलरूपिणी ॥ सर्वज्ञासर्वजननीसर्वासर्वेश्वरीशिवा ॥८५॥ दृष्ट्वातांतरलात्मानोदेवाब्रह्मपुरोगमाः ॥ तुष्टुवुर्हृष्टमनसोविष्टरश्रवसंशिवाम् ॥ ८६ ॥ देवाऊचुः ॥ नमोदेविमहाविद्येसृष्टिस्थित्यंतकारिणि ॥ नमःकमलपत्राक्षिसर्वाधारेनमोऽस्तुते ॥ ८७ ॥ सविश्वतैजसप्राज्ञविराट्सूत्रात्मिकेनमः ॥ नमोव्याकृतरूपायैकूटस्थायैनमोनमः ॥ ८८ ॥ दुर्गेसर्गादिरहितेदुष्टसंरोधनार्गले ॥ निरर्गलप्रेमगम्येभर्गेदेविनमोऽस्तुते ॥ ८९ ॥ नमःश्रीकालिकेमातर्नमोनीलसरस्वति ॥ उग्रतारेमहोग्रेतेनित्यमेवनमोनमः ॥ ९० ॥ नमःपीतांबरेदेविनमस्त्रिपुरसुंदरि ॥ नमोभैरविमातंगिधूमावतिनमोनमः ॥ ९१ ॥

॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ चित्रभ्रमरामुष्टौयस्याःसा ॥ ८१ ॥ ८२ ॥८३ ॥ ह्रींकारमनुह्रींकारमंत्रंगायमानैर्भ्रमरैरित्यन्वयः ॥ एतेनसर्वेदेवीनिकटस्थाह्रींकारमंत्रजपशालिनोभवंतीतिबोधितम् ॥८४॥८५॥विष्टरश्रवसंविष्टरावेदास्तेषुश्रवःश्रवणंयस्याःसाविष्टरेभ्योवाश्रवोयस्याःसातांवेदप्रतिपाद्यामित्यर्थः॥८६॥८७॥८८॥अर्गलाशृंखला॥भर्गापापस्यभर्जनात्अविद्यादिभर्जना ॥ ८९ ॥ कालिकादयोदशमहाविद्यास्तंत्रेषुप्रसिद्धाः॥९०॥पीतांबरावगलामुखी ॥ ९१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ भ्रमरैर्वेष्टेतेति ॥ भ्रमराणामियंस्वामिनीभ्रामरीत्यर्थेतस्येदमित्यण्णंतान्ङीप् ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ जगतोरणेजगद्योने ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ मटचीयूथवदिति ॥ मटचीशब्देनशलभाश्छांदोग्यभाष्ये मटचीहतेषुकुरुष्वितिश्रुतौमटचीशब्देनकरकागृहीतास्तावामटचीशब्देनोच्यंते

छिन्नमस्तेनमस्तेऽस्तुक्षीरसागरकन्यके ॥ नमःशाकंभरिशिवेनमस्तेरक्तदंतिके ॥ ९२ ॥ निशुंभशुंभदलनिरक्तबीजविनाशिनि ॥ धूम्रलोचननिर्णाशेवृत्रासुरनिबर्हिणि ॥ ९३ ॥ चंडमुंडप्रमथिनिदानवांतकरेशिवे ॥ नमस्तेविजयेगंगेशारदेविकचानने ॥ ९४ ॥ पृथ्वीरूपेदयारूपेतेजोरूपेनमोनमः ॥ प्राणरूपेमहारूपेभूतरूपेनमोऽस्तुते ॥ ९५ ॥ विश्वमूर्तेदयामूर्तेधर्ममूर्तेनमोनमः ॥ देवमूर्तेज्योतिर्मूर्तेज्ञानमूर्तेनमोऽस्तुते ॥ ९६ ॥ गायत्रिवरदेदेविसावित्रिचसरस्वति ॥ नमःस्वाहेस्वधेमातर्दक्षिणेतेनमोनमः ॥ ९७ ॥ नेतिनेतीतिवाक्यैर्यांबोध्यतेसकलागमैः ॥ सर्वप्रत्यक्स्वरूपांतांभजामःपरदेवताम् ॥ ९८ ॥ भ्रमरैर्वेष्टितायस्माद्भ्रामरीयाततःस्मृता ॥ तस्यैदेव्यैनमोनित्यंनित्यमेवनमोनमः ॥ ९९ ॥ नमस्तेपार्श्वयोःपृष्ठेनमस्तेपुरतोऽबिके ॥ नमऊर्ध्वंनमश्चाधःसर्वत्रैवनमोनमः ॥ १०० ॥ कृपांकुरुमहादेविमणिद्वीपाधिवासिनि ॥ अनंतकोटिब्रह्मांडनायिकेजगदंबिके ॥ १ ॥ जयदेविजगन्मातर्जयदेविपरात्परे ॥ जयश्रीभुवनेशानिजयसर्वोत्तमोत्तमे ॥ २ ॥ कल्याणगुणरत्नानामाकरेभुवनेश्वरि ॥ प्रसीदपरमेशानिप्रसीदजगतोरणे ॥ ३ ॥ नारायणउवाच ॥ इतिदेववचःश्रुत्वाप्रगल्भंमधुरंवचः ॥ उवाचजगदंबासामत्तकोकिलभाषिणी ॥ ४ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ प्रसन्नाऽहंसदादेवावरदेशशिखामणिः ॥ ब्रुवंतुविबुधाःसर्वेयदेवस्याचिकीर्षितम् ॥ ५ ॥ देवीवाक्यंसुराःश्रुत्वाप्रोचुर्दुःखस्यकारणम् ॥ दुष्टदैत्यस्यचरितंजगद्बाधाकरंपरम् ॥ ६ ॥ देवब्राह्मणवेदानांहेलनंनाशनंतथा ॥ स्थानभ्रंशंसुराणांचकथयामासुरादृताः ॥ ७ ॥ ब्रह्मणोवरदानंचयथावत्तेसमूचिरे ॥ श्रुत्वादेवमुखाद्वाणींमहाभगवतीतदा ॥ ॥ ८ ॥ प्रेरयामासहस्तस्थान्भ्रमरान्भ्रामरीतदा ॥ पार्श्वस्थानग्रभागस्थान्नानारूपधरांस्तदा ॥ ९ ॥ जनयामासबहुशोयैर्व्याप्तंभुवनत्रयम् ॥ मटचीयूथवत्तेषांसमुदायस्तुनिर्गतः ॥ ११० ॥ तदांऽतरिक्षंतैर्व्याप्तमंधकारःक्षितावभूत् ॥ दिविपर्वतशृंगेषुद्रुमेषुविपिनेष्वपि ॥ ११ ॥ भ्रमराएवसंजातास्तद्द्भुतमिवाऽभवत् ॥ तेसर्वेदैत्यवक्षांसिदारयामासुरुद्धताः ॥ १२ ॥ नरंमधुहरंयद्वन्मक्षिकाःकोपसंयुताः ॥ उपायोनचशस्त्राणांतथाऽस्त्राणांतदाऽभवत् ॥ ॥ १३ ॥ नयुद्धंनचसंभाषाकेवलंमरणंखलु ॥ यस्मिन्यस्मिन्स्थलेयेयेस्थितादैत्यायथायथा ॥ १४ ॥ तत्रैवचतथासर्वेमरणंप्रापुरुत्स्मयाः ॥ परस्परंसमाचारोनकस्याप्यभवत्तदा ॥ १५ ॥ क्षणमात्रेणतेसर्वेविनष्टादैत्यपुंगवाः ॥ कृत्वेत्थंभ्रमराःकार्यंदेवीनिकटमाययुः ॥ ११६ ॥

॥ ११० ॥ ११ ॥ १२ ॥ मधुहरंमाक्षिकहरम् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ११६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ १२७ ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवी भागवतव्याख्यांतिलकाख्यांससर्जयाम् ॥ दशमस्कंधएतस्याःसमाप्तोऽभूच्छुभार्थदः ॥२॥ इतिश्रीशैवोपनामकरंगनाथभट्टसुतलक्ष्मीगर्भजनीलकंठभट्टकृतेदेवीभागवतव्याख्यानोतिलकाभिधे

आश्चर्यमेतदाश्चर्यमितिलोकाःसमूचिरे ॥ किंचित्रंजगदंबायायस्यामायेयमीदृशी ॥ १७ ॥ ततोदेवगणाःसर्वेब्रह्मविष्णुपुरोगमाः ॥ निमग्नाहर्षजलधौ पूजयामासुरंबिकाम् ॥ १८ ॥ नानोपचारैर्विविधैर्नानोपायनपाणयः ॥ जयशब्दंप्रकुर्वाणामुमुचुःसुमनांसिच ॥ १९ ॥ दिविदुंदुभयोनेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ पेठुर्वेदान्मुनिश्रेष्ठागंधर्वाद्याजगुस्तथा ॥ २० ॥ मृदंगमुरजावीणाढक्काडमरुनिःस्वनैः ॥ घंटाशंखनिनादैश्चव्याप्तमासीज्जगत्त्रयम् ॥ ॥ २१ ॥ नानास्तोत्रैस्तदास्तुत्वामूर्ध्वाधायांजलींस्तदा ॥ जयमातर्जयेशानीत्येवंसर्वेसमूचिरे ॥ २२ ॥ ततस्तुष्टामहादेवीवरान्दत्त्वापृथक्पृथक् ॥ स्वस्मिंश्चविपुलांभक्तिंप्रार्थितातैर्ददौचताम् ॥ २३ ॥ पश्यतामेवदेवानामंतर्धानंगताततः ॥ इतितेसर्वमाख्यातंभ्रामर्याश्चरितंमहत् ॥ २४ ॥ पठतांशृण्वतांचैवसर्वपापप्रणाशनम् ॥ श्रुतमाश्चर्यजनकंसंसारार्णवतारकम् ॥ २५ । एवंमनूनांसर्वेषांचरितंपापनाशनम् ॥ देवीमाहात्म्यसंयुक्तंपठन्शृण्वन्शुभप्रदम् ॥ २६ ॥ यश्चैतत्पठतेनित्यंशृणुयाद्योऽनिशंनरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोदेवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ १२७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणे दशमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ दशमस्कंधःसमाप्तः ॥ १० ॥

सार्धरुद्रैःपंचशत ( ५११ ) श्लोकैर्व्यासकृतैःशुभैः ॥ देवीभागवतस्यास्यदशमस्कंधईरितः ॥ १ ॥

दशमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ स्कंधश्चायंसमाप्तो दशमः ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालयेऽङ्कितम् ।
सं० १९५८, शके १८२३.

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते सटीके दशमस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते सटीके एकादशस्कन्धः प्रारभ्यते ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः ॥ असारेसंसारेकिमपिनाहिसारंभगवतीपदांभोजादन्यत्सुखकरमहोमोक्षजनकम् ॥ ततोहित्वासर्वंधनसुतकलत्रादिकमुमापदांभोजंशश्वन्नमतजपतध्यायतजनाः ॥ १ ॥ अर्धाधिकोनपंचाशत्संख्यैःपद्यैरतःपरम् ॥ सदाचारप्रसंगेनप्रातःकृत्यंसमुच्यते ॥ २ ॥ तत्राष्टमस्कंधे मन्वंतरेषुसर्वेषुयद्यद्रूपेणपूज्यते ॥ यस्मिन्यस्मिंश्चवैस्थानेयेन चकर्मणेतिजनमेजय प्रश्नवाक्ये चकारेणसदाचारस्यापिसंगृहीतत्वात्सदाचारस्यापिराज्ञःप्रश्नविषयत्वेनतंसदाचारमपिनारदायनारायणेनोक्तमेवकथयिष्यामीत्यभिप्रायेणैकादशद्वादशस्कंधावारभ्येते ॥ तत्र नारदोऽष्टमस्कंधनवमस्कंधदशमस्कंधोक्तप्रकारेणश्रीभगवत्यामहिमानंसर्वोत्तरंश्रीभगवत्याएवमुख्यत्वेनसर्वाराध्यत्वंचनारायणमुखाच्छ्रुत्वातदाराधनप्रकारंज्ञातुंपृच्छति ॥ नारदउवाच भगवन्भूतभव्येशेति ॥ आख्यातंअष्टमनवमदशमस्कंधोक्तप्रकारेण चरित्रमेवचारित्रम् ॥ १ ॥ प्रादुर्भावः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीभ्रामर्यादिदेवीनाम् ॥ असुरद्रुहांदेवानां अधिकारप्तिर्दैत्यैर्हृतस्यतत्तदधिकारस्याप्तिःप्राप्तिः॥यद्वा स्वयंभ्वादिमनूनांमन्वंतराधिकारस्याप्तिःप्राप्तिः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सत्कर्मकृदिति ॥ नहिकश्चित्क्षणमपिजातुष्ठित्यकर्मकृदितिन्यायेनव्यापाररहितत्वस्यासंभवेनाऽन्यव्यापारंविहायसव्यापारएवाश्रयणीयइत्यर्थः ॥ ६ ॥ ननुपित्रादिभिर्लालनहास्याविनोदेनकालःसुखेनगच्छतितदातद्विहायकिमितिधर्मआस्थेय

श्रीगणेशायणमः ॥ नारदउवाच ॥ भगवन्भूतभव्येशनारायणसनातन ॥ आख्यातंपरमाश्चर्यं देवीचारित्रमुत्तमम् ॥१॥ प्रादुर्भावःपरोमातुःकार्यार्थमसुरद्रुहाम् ॥ अधिकाराप्तिरुक्ताऽत्रदेवीपूर्णकृपावशात् ॥ २ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामियेनप्रीणातिसर्वदा ॥ स्वभक्तान्परिपुष्णातितमाचारंवदप्रभो ॥ ३ ॥ नारायणउवाच ॥ शृणुनारदतत्त्वज्ञसदाचारविधिक्रमम् ॥ यदनुष्ठानमात्रेणदेवीप्रीणातिसर्वदा ॥४॥ प्रातरुत्थायकर्तव्यंयद्द्विजेनदिनेदिने ॥ तदहंसंप्रवक्ष्यामिद्विजानामुपकारकम् ॥५॥ उदयास्तमयंयावद्द्विजःसत्कर्मकृद्भवेत् ॥ नित्यनैमित्तिकैर्युक्तःकाम्यैश्चान्यैरगर्हितैः ॥ ६॥ आत्मैवनसहायार्थंपितामाताचतिष्ठति ॥ नपुत्रदारानज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलम् ॥७॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थंनित्यंसंचिनुसाधनैः॥धर्मेणैवसहायात्तुतमस्तरतिदुस्तरम् ॥ ८ ॥ आचारःप्रथमोधर्मःश्रुत्युक्तःस्मार्तएवच ॥ तस्मादस्मिन्समायुक्तोनित्यंस्यादात्मनोद्विजः ॥९॥ आचाराल्लभतेचायुराचाराल्लभतेप्रजाः॥आचारादन्नमक्षय्यमाचारोहंतिपातकम् ॥ १० ॥ आचारःपरमोधर्मोनृणांकल्याणकारकः ॥ इहलोकेसुखीभूत्वापरत्रलभतेसुखम् ॥११॥ अज्ञानांधजनानांतुमोहितैर्भ्रामितात्मनाम् ॥ धर्मरूपोमहादीपोमुक्तिमार्गप्रदर्शकः ॥१२॥ आचारात्प्राप्यतेश्रेष्ठ्यमाचारात्कर्मलभ्यते॥कर्मणोजायतेज्ञानमितिवाक्यंमनोःस्मृतम्॥१३॥

इतिचेत्तत्राऽह । आत्मैवेति ॥ परलोकेनपित्रादयःसहायाभविष्यंति॥किंतुधर्मएव ॥ सचात्मनैवजायतेइतिआत्मैवस्वस्यसहायोनान्यइतिस्वेनैवस्वस्यधर्माचरणेनकल्याणंकर्तव्यमितिभावः । ॥ तदुक्तम् आत्मैवह्यात्मनोबंधुरात्मैवरिपुरात्मनइति ॥ ७ ॥ तदेवस्पष्टयति । तस्मादिति ॥ संचिनुगृहाण ॥ तमोदुःखमज्ञानंवा ॥ ८ ॥ तत्रधर्मस्यानेकविधत्वेपिमुख्यरूपस्यतस्याश्रयणेनापिनिर्वाहादवश्यंसविधेयइतिदर्शयन्धर्मस्यमुख्यंरूपमाह। आचारइति ॥ प्रथमोमुख्यःसचश्रुत्युक्तःस्मृत्युक्तश्च मान्यः ॥ आत्मनःसदाचारेद्विजोनित्यंसमायुक्तःस्यादित्यन्वयः ॥९॥ आचाररूपधर्मस्यमुख्यत्वंप्रतिपादयति । आचाराल्लभतेइति ॥ १० ॥ ११ ॥ तत्रहारीतस्मृतिमर्थतःपठति अज्ञानांधेति ॥ मोहितैर्भ्रांतैःपुरुषैः ॥ अज्ञानांतमसांधानांभ्रामितानांकुदृष्टिभिः ॥ धर्मशास्त्रप्रदीपोऽयंधार्योमार्गोपदेशकइतिहिहारीतवचः ॥ १२ ॥ अत्रैवमनुवचनमर्थतःपठति ॥ आचारात्प्राप्यतइति ॥ तथाचमनुः ॥ आचारात्परमोधर्मइत्यादि कर्मणोजायतेज्ञानंज्ञानान्मोक्षमवाप्यतइत्यंतम् ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १४ ॥ पराशरस्मृतिमर्थतःपठति ॥ यस्त्वाचारविहीनइति ॥ तथाचपराशरः ॥ आचारःपरमोधर्मइत्यादि सर्वधर्मबाह्यिष्कार्योयथाशूद्रस्तथैवसइत्यर्तम् ॥ १५ ॥ १६ ॥ नैवताँ लंघयेदिति ॥ तथाचगौतमः ॥ यद्यपिस्यात्स्वयंब्रह्मेत्यादि ॥ तथापिलौकिकाचारंमनसाऽपिनलंघयेदिति ॥ १७ ॥ सदाचारत्यागेदृष्टदोषमाह । दुराचारोहीति ॥ १८ ॥ ननुदुराचारत्यागेऽर्थकामावपित्यक्तौस्यातांनहिसदाचारासक्तस्याऽर्थकामसंपादनंसंभवति ॥ ततश्चपुरुषार्थचतुष्टयेधर्ममोक्षरूपार्थद्वयमेवसंपादितंस्यात्॥तथाचपुरुषार्थचतुष्टयावाप्तिःसदाचारिणां भवतीतिवचनानिविरुध्येरन्नित्यतआह ॥ परित्यजेदिति ॥ धर्मवर्जितावर्थकामौपरित्यजेदेवेत्यर्थः ॥ नहिपुरुषार्थचतुष्टयेधर्मविरुद्धावर्थकामौगृहीतौयेनताद्विरोधःस्यात् ॥ किंतु धर्माविरुद्धावर्थकामौसदाचारिणोऽनायासेनजायमानावेवगृहीताविति भावः ॥ ननुधर्मस्यगवालंभादिरूपस्यापिसत्त्वात्सोऽपिकर्तव्यइतिचेत्तत्राऽऽह । धर्ममप्यसुखोदर्कमिति ॥ असुखोदर्कंप्राणिनां पीडाकरंदुःखदायकंलोकेविद्विष्टंगवालंभादिकमपित्यजेदित्यर्थः ॥ नहिसनित्योधर्मोयदकरणेप्रत्यवायःस्यात्किंत्वभ्युदयार्थः ॥ सचाभ्युदयोबहुभिरन्यसाधनैःशास्त्रेषूक्तएवेतिनाभ्युदयार्थंप्राणिदुःखकरंलोकैर्विद्विष्टंधर्ममाचरेदितिभावः ॥ तथाचपाद्मे ॥ मधुपर्केगवालंभोलोकविदिष्टएवच ॥ सचनैवप्रकर्तव्योयतःसनियतोनहीति ॥ १९ ॥ तत्रधर्मस्यावश्यकर्तव्यतायां प्रतिपादितायांशास्त्रकारैर्धर्मस्वरूपस्यानेकधाप्रतिपादनात्तन्निश्चयस्यासंभवेनकथंतान्निश्चयंविनाधर्मःकर्तव्यइतिपृच्छाति । नारदउवाच बहुत्वादिहेति ॥ अनेकशास्त्रेषुधर्ममार्गविनिर्णयेधर्म

सर्वधर्मवरिष्ठोऽयमाचारःपरमंतपः ॥ तदेवज्ञानमुद्दिष्टंतेनसर्वंप्रसाध्यते ॥ १४ ॥ यस्त्वाचारविहीनोऽत्रवर्ततेद्विजसत्तमः ॥ सशूद्रवद्बहिष्कार्योयथाशूद्रस्तथैवसः ॥ १५ ॥ आचारोद्विविधःप्रोक्तःशास्त्रीयोलौकिकस्तथा ॥ उभावपिप्रकर्तव्यौनत्याज्यौशुभमिच्छता ॥१६॥ ग्रामधर्माजातिधर्मादेशधर्माःकुलोद्भवाः ॥ परिग्राह्यानृभिःसर्वैर्नैवताँल्लंघयेन्मुने ॥ १७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिंदितः ॥ दुःखभागीचसततंव्याधिनाव्याप्तएवच ॥ १८ ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातांधर्मवर्जितौ ॥ धर्ममप्यसुखोदर्कंलोकविद्विष्टमेवच ॥ १९ ॥ नारदउवाच ॥ बहुत्वादिहशास्त्राणांनिश्चयःस्यात्कथंमुने ॥ कियत्प्रमाणंतद्ब्रूहिधर्ममार्गविनिर्णये॥२०॥नारायणउवाच॥श्रुतिस्मृतीउभेनेत्रेपुराणंहृदयंस्मृतम् ॥ एतत्रयोक्तएवस्याद्धर्मोनान्यत्रकुत्रचित्॥२१॥विरोधोयत्रतुभवेत्रयाणांचपरस्परम्॥श्रुतिस्तत्रप्रमाणंस्याद्द्वयोर्द्वैधेस्मृतिर्वरा॥ २२ ॥श्रुतिर्द्वैधंभवेद्यत्रतत्रधर्मावुभौस्मृतौ ॥ स्मृतिर्द्वैधंतुयत्रस्याद्विषयःकल्प्यतांपृथक् ॥ २३ ॥ पुराणेषुक्वचिच्चैवतंत्रदृष्टंयथातथम् ॥ धर्मवदंतितंधर्मंगृह्णीयान्नकथंचन ॥ २४ ॥

निश्चयेकिंशास्त्रंप्रमाणंतद्ब्रूहीत्यर्थः ॥ २० ॥ उभेनेत्रेपरमेश्वरस्येत्यर्थः ॥ चक्षुर्वैसत्यमितिश्रुतेः ॥ परमेश्वरेणश्रुतिस्मृतिरूपचक्षुर्भ्यांदृष्टोधर्मःसत्यः ॥ चक्षुषादृष्टमेवमनसिनिश्चिनोतीति पुराणरूपहृदयेनाश्रितोधर्मोऽपिसत्यइत्यर्थः ॥ २१ ॥ ननुत्रयाणामपियत्रकुत्रचित्तप्तमुद्रादिविधौविरोधोदृश्यतेतत्रकिंवरामितिचेत्तत्राऽऽह । विरोधोयत्रत्विति ॥ श्रुतिस्तत्रेति ॥ स्मृतिपुराणापेक्षयाश्रुतिःप्रबलेत्यर्थः ॥ द्वयोरिति ॥ पुराणस्मृत्योःपरस्परंविरोधइत्यर्थः ॥ स्मृतिर्वरेति । पुराणापेक्षयास्मृतेर्वेदमूलकत्वात्प्रामाण्यमित्यर्थः ॥ २२ ॥ श्रुतिर्द्वैधंषोडशग्रिहणग्रहणादिषुधर्मावुभौनतत्रपरस्परंबाधः ॥ किंतुधर्मद्वयमपिसत्यमित्यर्थः ॥ विषयःकल्प्यतामिति ॥ भिन्नविषयकल्पनयाविरोधःपरिहरणीयइत्यर्थः ॥ २३ ॥ ननुयथास्मृतीनांवेदमूलकत्वात्प्रामाण्यंतथापुराणानामपिवेदमूलकत्वादेवप्रामाण्यंस्मृतिसमानमेवकिंनस्यादतआह । पुराणेष्विति ॥ नकेवलंपुराणानिवेदमूलकानि किंतुतंत्रमूलकान्यपिसंति ॥ तथाचपुराणापेक्षयाकेवलवेदमूलकत्वात्स्मृतीनांप्राबल्यमुक्तमव्याहतमेव ॥ तदुक्तंस्कांदेसूतसंहितायाम् ॥ क्वचित्कदाचित्तत्रार्थकटाक्षेणमुनीश्वराः ॥ संतितानिपुराणानिसोंशोग्राह्योनवैदिकैरिति ॥ २४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ननुतंत्राणामपिसाक्षादीश्वरप्रणीतत्वात्प्रामाण्यम्।तथाचतन्मूलकपुराणानामपिप्रामाण्यंकिंनस्यात्तत्राऽऽह । वेदाविरोधीति ॥ देहवताशिवेनप्रणीतस्याऽऽगमस्यनस्वतःप्राणाण्यंकिंतुवेदमूलकत्वादेव ॥ तथाचब्राह्मणस्यप्रत्यक्षश्रुतिविरुद्धतप्तमुद्राधारणादिप्रतिपादकतंत्रस्यनप्रामाण्यंकिंतुवेदाविरोध्यंशेएवप्रामाण्यमितिभावः ॥ श्रुतिरुद्धंश्रुतिविरुद्धमित्यर्थः ॥ तत्प्रमाणंभवेन्नचेति ॥ वैदिकस्येतिशेषः ॥ तथाचतंत्रार्थप्रतिपादकपुराणस्यप्रत्यक्षश्रुतिविरोधान्नप्रामाण्यमितिभावः ॥ तदुक्तंशिवेनैवमहाकालसंहितादिषु ॥ वेदाविरोधीयोंशस्तुसैवग्राह्योद्विजोत्तमैः ॥ अधिकारिबहुत्वाच्चाप्यनेकार्थःप्रकथ्यते ॥ अनेकाधिकारिणउद्दिश्यतंत्रंविधीयते।तथाचयस्ययत्राधिकारस्तत्तेनग्राह्यमितितदर्थः ॥ ब्राह्मणविषयकतप्तमुद्राधारणादिप्रतिपादकतंत्राणांवेदानधिकारिब्राह्मणविषयकत्वमितितुरहस्यम् ॥ अनेनचाधिकारिभेदेनसर्वेषांतंत्राणांप्रामाण्यंसमर्थितम् ॥ तथाचसूतसंहितायाम् ॥ तंत्रंप्रकृत्य अधिकारिविभेदेनप्रमाणंनात्रसंशयः ॥ मृषावादीकथंशिवइतिच ॥ तथाचतंत्राणामपिस्मृतिष्वेवांतर्भावाद्धर्मप्रतिपादकचतुर्दशविद्यासुसंग्रहोऽस्तीतिबोध्यम् ॥ २५ ॥ यस्मादेवंतस्मादाह । सर्वथावेदएवेति ॥ २६ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥२९॥ तादृग्वेदविरुद्धाचरणवंतःकेतान्दर्शयति । कामाचाराइति ॥ यथेष्टाचरणवंतइत्यर्थः ॥ लिंगधारिणइतिपाशुपताइत्यस्यविशेषणम् ॥ ३० ॥ वैखानसमतानुगाइतितप्त

वेदाविरोधिचेत्तंत्रंतत्प्रमाणंनसंशयः ॥ प्रत्यक्षश्रुतिरुद्धंयत्तत्प्रमाणंभवेन्नच ॥२५॥ सर्वथावेदएवासौधर्ममार्गप्रमाणकः ॥ तेनाविरुद्धंयत्किंचित्तत्प्रमाणंनचान्यथा ॥ २६ ॥ योवेदधर्ममुज्झित्यवर्ततेऽन्यप्रमाणतः ॥ कुंडानितस्यशिक्षार्थंयमलोकेवसंतिहि ॥२७॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवेदोक्तंधर्ममाश्रयेत् ॥ स्मृतिःपुराणमन्यद्वातंत्रंवाशास्त्रमेवच ॥ २८ ॥ तन्मूलत्वेप्रमाणंस्यान्नान्यथातुकदाचन ॥ येकुशास्त्राभियोगेनवर्तयंतीहमानवान् ॥ २९ ॥ अधोमुखोर्ध्वपादास्तेयास्यंतिनरकार्णवम् ॥ कामाचाराःपाशुपतास्तथावैलिंगधारिणः ॥ ३० ॥ तप्तमुद्रांकितायेचवैखानसमतानुगाः॥तेसर्वेनिरयंयांतिवेदमार्गबहिष्कृताः ॥ ३१ ॥ वेदोक्तमेवसद्धर्मंतस्मात्कुर्यान्नरःसदा ॥ उत्थायोत्थायबोद्धव्यंकिंमयाऽद्यकृतंकृतम् ॥ ३२ ॥ दत्तंवादापितंवापिवाक्येनापिचभाषितम् ॥ उपपापेषुसर्वेषुपातकेषुमहत्स्वपि ॥ ३३ ॥ अवाप्यरजनीयामंब्रह्मध्यानंसमाचरेत् ॥ ऊरुस्थोत्तानचरणःसव्येचोरौतथोत्तरम् ॥ ३४ ॥ उत्तानंकिंचिदुत्तानंमुखमवष्टभ्यचोरसा ॥ निमीलिताक्षःसत्त्वस्थोदंतैर्दंतान्नसंस्पृशेत् ॥३५॥ तालुस्थाचलजिह्वश्चसंवृतास्यःसुनिश्चलः॥सन्निरुद्धेंद्रियग्रामोनातिनिम्नस्थितासनः ॥ ३६ ॥ द्विगुणंत्रिगुणंवापिप्राणायाममुपक्रमेत् ॥ ततोध्येयःस्थितोयोऽसौहृदयेदीपवत्प्रभुः ॥ ३७॥

मुद्रांकिताइत्यस्यविशेषणम् ॥ ३१ ॥ उत्थायोत्थायेतिप्रतिदिनमितिशेषः ॥ कृतंसुकृतंकिंमयाऽद्यकृतमित्यन्वयः ॥ ३२ ॥ किमित्यस्यदत्तादिष्वन्वयः ॥ महत्स्वपिपातकेषुकिंमयापातकंकृतमितिविचार्यमितिभावः ॥ ३३ ॥ अथाह्निकमाह । अवाप्येति ॥ यामंचतुर्थम् ॥ तत्रध्यानमुद्रामाह । ऊरुस्थोत्तानचरणइति ॥ ऊरुस्थउत्तानचरणोयस्येत्यर्थः ॥ कस्मिन्नूरौकोवाउत्तानचरणस्तत्राऽऽह । सव्येचोराविति ॥ अत्रसव्यशब्देनसव्यंदक्षिणवामयोरितिकोशाद्वामो गृह्यते । तस्मिन्सव्येवामोरौइतरंदक्षिणंपादमुत्तानंविन्यस्येत्यर्थः ॥ तथाचवीरासनंसिद्धम् ॥ अग्रिमश्लोकस्थमुत्तानपदंपूर्वान्वयि ॥ ३४ ॥ किंचिदुत्तानंमुखंपृष्ठभागेकृत्वातन्मुखमुरसाऽवष्टभ्यहनुनाउरस्थलंस्पृशेदित्यर्थः ॥ ३५ ॥ तालुस्थेति ॥ जिह्वांपरावृत्यतच्छिद्रद्वारातालुनिनयेदित्यर्थः ॥ संवृतास्योऽविवृतास्यः ॥ नातिनिम्नेति ॥ चैलाजिनकुशोत्तरेआसनेआसीनइत्यर्थः ॥३६॥ प्रथमंप्राणायामंकृत्वापश्चादियंमुद्राकर्तव्या । तंप्राणायाममाह । द्विगुणमिति ॥ मुद्राबंधनोत्तरंप्राणायामस्यासंभवात्प्रथमतःप्राणायामंकृत्वामुद्राबंधःकर्तव्यस्ततोदेवोध्येयस्तदाह । ततोध्येयइति ॥ दीपवत्स्वप्रकाशइत्यर्थः । प्रभुरात्मा ॥३७॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तस्मिन्नात्मनिकिंचिद्धारणमाह। धारयेदिति ॥ आत्मानमंतःकरणम् ॥ इत्थंधारणांधारयेदित्यर्थः ॥ उक्तंप्राणायाममुत्तमादिभेदेनषड्विधंवर्णयति ।सधूमइति ॥ सधूमःश्वाससंयुक्तइतिल क्षणात्प्राणायामेप्रथमतोऽभ्यसनीयेझटितिप्राणउपरिआयातिसप्राणायामोऽतिलघुः ॥ पुनरतिशयाभ्यासेनसवायुरूर्ध्वमायातिसप्राणायामः पूर्वापेक्षयाश्रेष्ठः ॥ इमौद्वौकनिष्ठावेव ॥ चित्तव्याकुलतायाःसत्त्वात् ॥ पुनरतिशयाभ्यासेनचित्तेस्थिरीभूतेसतियःप्राणायामोभवतिसमध्यमः ॥ सोऽपिद्विविधः ॥ सगर्भोमंत्रजपसहितोऽगर्भस्तद्रहितः ॥ ३८ ॥ पुनरतिशयाभ्या सेनचित्तेस्थिरीभूतेसतियःप्राणायामःसउत्तमः ॥ सोऽपिद्विविधः ॥ सलक्ष्योलक्ष्यंदेवतातद्ध्यानसहितोऽलक्ष्योध्यानरहितइत्यर्थः ॥ प्राणयामेति।प्राणायामसमोयोगःप्राणायामएवनान्य इत्यर्थः ॥ ३९ ॥ रेचकादिभेदेनप्राणायामत्रैविध्यमाह ॥ प्राणायामइति ॥ रेचकादिषुक्रमेणप्रणववर्णत्रयंध्येयमित्याह ॥ वर्णत्रयात्मकाइति ॥ ४० ॥ सएवप्रसिद्धःपरमात्मैवप्रणवः प्रोक्तस्तदात्मकत्वादतःप्राणायामोऽपिवर्णत्रयात्मकत्वात्परमात्मरूपएवज्ञेयइतिप्राणायामेश्रद्धांवर्धयति ॥ प्राणायामप्रकारमाह । इडयेति ॥ इडावामेस्थितानाडीपिंगलादक्षिणेमतेतिवच नाद्वाभनासापुटेनद्वात्रिंशद्वारमकारमावृत्त्यवायुमारोप्याकृष्यपूरयित्वातादृशंपूरकंकृत्वापश्चाच्चतुःषष्टिवारमुकारमावर्तयन्नेवोदरेस्थितंकृत्वाकुंभकंकृत्वापुनर्दक्षिणनासापुटेनषोडशवारंमकार मावर्तयन्नेवरेचयेत्तंवायुमित्यर्थः ॥४१॥ अन्ययेति ॥ पिंगलयेत्यर्थः ॥ तदुक्तं द्वात्रिंशताचतुःषष्ट्याक्रमात्षोडशसंख्ययेति। इत्थंप्रथमंसधूमंप्राणायाममुपसंहरति।एवमिति ॥ एवमेवा धिकाभ्यासेनमध्यमोत्तमावपिकर्तव्यावित्यर्थादुक्तंभवति ॥ ४२ ॥ इत्थंप्राणायामेकृतेपश्चात्षट्चक्रभेदनक्रमेणकुंडलिनींब्रह्मरंध्रेनीत्वाहृदयेपूर्वोक्तंनिर्वातदीपसमानमात्मानंध्यायेदितियो

**धारयेत्तत्रचाऽऽत्मानंधारणांधारयेद्बुधः ॥ सधूमश्चविधूमश्चसगर्भश्चाप्यगर्भकः ॥ ३८ ॥ सलक्ष्यश्चाप्यलक्ष्यश्चप्राणायामस्तुषड्विधः ॥ प्राणायामसमो योगःप्राणायामइतीरितः ॥ ३९॥ प्राणायामइतिप्रोक्तोरेचपूरककुंभकैः ॥ वर्णत्रयात्मकाह्येतेरेचपूरककुंभकाः ॥ ४० ॥ सएवप्रणवःप्रोक्तःप्राणायामश्च तन्मयः ॥ इडयावायुमारोप्यपूरयित्वोदरेस्थितम्॥४१॥ शनैःषोडशमात्राभिरन्ययातंविरेचयेत् ॥ एवंसधूमःप्राणानामायामःकथितोमुने ॥ ४२ ॥ आ धारेलिंगनाभिप्रकटितहृदयेतालुमूलेललाटेद्वैपत्रेषोडशारेद्विदशदशदलद्वादशार्धेचतुष्के ॥ नासांतेबालमध्येधफकठसहितेकंठदेशेस्वराणांहंक्षंतत्त्वार्थ युक्तंसकलदलगतंवर्णरूपंनमामि ॥ ४३ ॥**

गमर्यादा।तदभिप्रायेणषट्चक्रस्वरूपमाह॥आधारेइति॥आधारोमूलाधारः॥तालुमूलंकंठःललाटंभ्रूमध्यम्॥लिंगंचनाभिश्चप्रकटितहृदयंचेतिसमाहारद्वंद्वेप्राण्यंगत्वादेकवद्भावः॥तथाचस्थानत्र यंविवक्षितम् ॥ इत्थंषट्चक्राणांषट्स्थानान्युक्त्वातेषांपत्रसंख्यांव्युत्क्रमेणाऽऽहाद्वैपत्रेइति ॥ द्वेपत्रेयस्यतद्द्विपत्रं द्विपत्रमेवद्वैपत्रम्।तथाचयोग्यत्वाल्ललाटेविद्यमानंयत्द्विपत्रंकमलंतस्मिन्विद्य मानंयत्तत्त्वार्थयुक्तंतत्त्वार्थवाचकंहंक्षंवर्णरूपंतंनमामीत्यर्थः ॥ एवमेवसर्वत्रान्वयःकर्तव्यः ॥ षोडशारेअरापत्रम्।तथाचतालुमूलेकंठदेशेविद्यमानंस्वराणांवर्णरूपंनमामीत्यर्थः ॥ तथाऽऽधारे विद्यमानेचतुष्केचतुष्पत्रयुक्तेकमले ॥ कथंभूतेवासांते ॥ वासांतशब्दोऽर्शआद्यजंतः ॥ वेत्यकारउच्चारणार्थः ॥ वसांतमेववासांतम् ॥ वसांतशब्देवशब्दोवादिपरस्तथाचवकारादिसका रांतवर्णचतुष्कयुक्तेइत्यर्थः ॥ तस्मिन्विद्यमानंयद्वर्णरूपंतन्नमामीत्यर्थः ॥ अथबालमध्येडफकठसहितेइत्यस्यसमुदायस्यलिंगनाभिप्रकटितहृदयेद्विदशदशदलद्वादशार्धेइतिसमुदायेनान्व यः ॥ पश्चात्पार्ष्णिकोयथायोग्यमन्ययः ॥ आद्यंतौटकितौजलपृथिव्योःस्नेहगंधावितिवत् ॥ तथाचलिंगेविद्यमानेद्वादशार्धेषड्दलकमलेबालमध्येआकारउच्चारणार्थः ॥ बकरादिल कारांतयुक्तेविद्यमानंयद्वर्णरूपंतन्नमामीत्यर्थः ॥ तथानाभौविद्यमानेदशदलकमलेडफसहितेडकारादिफकारांतदशवर्णयुक्तेविद्यमानंवर्णरूपंनमामीत्यर्थः ॥ तथाप्रकटितहृदयोविद्यमानोद्वि दशदलेद्वादशदलेकठसहितेककारादिठकारांतद्वादशवर्णसहितेविद्यमानंयद्वर्णरूपंतन्नमामीत्यर्थः ॥ अयंभावः ॥ मूलाधारलिंगनाभिहृदयकंठभ्रूमध्येषुचतुर्दलषड्दलदशदलद्वादशदलषोड



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

शदलद्विदलानिभावयित्वातेषुकमलपत्रेषुप्रादक्षिण्येनपूर्वोक्तान् वर्णान् भावयित्वानमेदिति ॥ इदंसर्वंतंत्रविदांस्पष्टम् ॥ एतानिषट्कमलानितद्गतावर्णाश्चसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांस्पष्टाः ॥ ॥४३॥ एवंषट्चक्रभावनोत्तरंकुंडलिनींध्यायेदित्याह । अरुणकमलेति । अरुणकमलंमूलाधारस्थंचतुर्दलकमलंतत्रसंस्थितारजःपुंजवर्णारजोगुणवतीत्यर्थः ॥ हरनियमितचिह्नामायाबीजावयवहकाररेफरूपंनियमितंचिह्नंयस्यांसामायाबीजवाच्येत्यर्थः॥पद्मतंतुर्विसतंतुस्तत्स्वरूपासूक्ष्मारविश्वमिश्रबिंदुः हुतवहोरक्तबिंदुःराकानायकश्चंद्रःश्वेतबिंदुस्तद्रूपमास्यंस्तनयुग्मंचतेनाव्या युक्ता ॥ तत्ररविबिंदुर्मुखमितरद्बिंदुद्वयंस्तनयुग्ममितिविवेकः ॥ इदंबिंदुत्रयंरहस्याम्नायेप्रकाशविमर्शसंवादेविस्तरेणनिर्णीतंततएवावधार्यम् ॥ अतिरहस्यत्वादत्रनस्पष्टीक्रियते ॥तदुक्तम् मिहिरबिंदुमुखींतदधोल्लसच्छशिहुताशनबिंदुयुगस्तनीम् ॥ सहहरार्धकलारसनास्पदांभजतसत्यमिमांपरदेवतामिति ॥ अयमर्थोगुरुमुखादेवावगंतव्यः ॥ एवंसकृदपिध्यानेनसाक्षात्कृतेजीवन्मुक्तएवभवतीत्याह।सकृदपीति ॥ ४४ ॥ इत्थंदेवींकुंडलिनींध्यात्वास्वहृदयेतयासहाऽऽत्मरूपिणींश्रीभगवतींध्यात्वाऽग्रेजायमानंसर्वकर्मत्वदर्चनस्थानीयमेवममभवत्विति देवीं प्रार्थयेदित्याह । स्थितिःसैवेति ॥ ४५ ॥ अनंतरमात्मानंदेवीरूपत्वेनकृतार्थंजानीयादित्याह । अहंदेवीति ॥ ४६ ॥ पुनरपिहर्षगद्गदचेतसादेवींकुंडलिनींभवायेदित्याह ॥ प्रकाशमाना

**अरुणकमलसंस्थातद्रजःपुंजवर्णाहरनियमितचिह्नापद्मतंतुस्वरूपा ॥ रविहुतवहराकानायकास्यस्तनाढ्यासकृदपियदिचित्तेसंवसेत्स्यात्समुक्तः॥४४॥ स्थितिःसैवागतिर्यात्रामतिश्चिंतास्तुतिर्वचः ॥ अहंसर्वात्मकोदेवस्तुतिःसर्वंत्वदर्चनम् ॥ ४५ ॥ अहंदेवीनचान्योऽस्मिब्रह्मैवाहंनशोकभाक् ॥ सच्चिदानंदरूपोऽहंस्वात्मानमितिचिंतयेत् ॥ ४६ ॥ प्रकाशमानांप्रथमेप्रयाणेप्रतिप्रयाणेप्यमृतायमानाम् ॥ अंतःपदव्यामनुसंचरंतीमानंदरूपामबलांप्रपद्ये॥ ॥ ४७ ॥ ततोनिजब्रह्मरंध्रेध्यायेत्तंगुरुमीश्वरम् ॥ उपचारैर्मानसैश्चपूजयेत्तंयथाविधि ॥ ४८ ॥ स्तुवीताऽनेनमंत्रेणसाधकोनियतात्मवान् ॥ गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवोमहेश्वरः ॥ गुरुरेवपरंब्रह्मतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥४९॥ ॥ इतिश्रीदेवीभा०म०एकादशस्कंधेप्रातश्चिंतनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥छ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ आचारहीनंनपुनन्तिवेदायदप्यधीताःसहषड्भिरंगैः ॥ छंदांस्येनंमृत्युकालेत्यजंतिनीडंशकुंताइवजातपक्षाः ॥ १ ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेचोत्थायतत्सर्वंसम्यगाचरेत् ॥ रात्रेरंतिमयामेतुवेदाभ्यासंचरेद्बुधः॥२॥किंचित्कालंततःकुर्यादिष्टदेवानुचिंतनम्॥योगीतुपूर्वमार्गेणब्रह्मध्यानंसमाचरेत् ॥३॥**

मिति ॥ प्रकाशमानांप्रथमेप्रयाणेब्रह्मरंध्रस्थानंप्रतिगमनेप्रकाशमानांविद्युदिवद्योतमानाम् ॥ प्रतिप्रयाणेपुनर्मूलाधारंप्रतिप्रत्यागमनेअमृतायमानाममृतलुलिताम् ॥ ब्रह्मरंध्रस्थामृतधारालुलितामित्यर्थः ॥ अतःपदव्यांसुषुम्नायामनुसंचरंतींगच्छंतीमबलांकुंडलिनींशरणंप्रपद्येइत्यर्थः ॥ ४७ ॥ इत्थमात्मानध्यात्वागुरुंध्यायेदित्याह । ततोनिजेति ॥ मानसैर्मनसाकल्पितैः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ छ ॥ द्व्यधिकैश्चैवचत्वारिंशत्पद्यैस्तुततःपरम् ॥ प्रातःकृत्योत्तरंसम्यक्शौचादिविधिरुच्यते ॥ १ ॥ तत्रप्रथमतआचाराभावेसर्वव्यर्थंभवतीत्याह । आचारहीनमिति ॥ नीडंगृहम् ॥ तस्मादाचारोवक्ष्यमाणोऽवश्यंकर्तव्यइत्यर्थः ॥ १ ॥ कस्मात्कालादारभ्यसदाचारःकर्तव्यस्तदाह । ब्राह्मेमुहूर्तइति ॥ उत्थायततःप्रभृतीत्यर्थः ॥ कोऽसौब्राह्मोमुहूर्तस्तत्राऽऽह। रात्रेरंतिमयामइति ॥ चतुर्थयामेउत्थायमुखप्रक्षालनादिकंकृत्वेत्यर्थाद्बोध्यम्॥२॥वेदाभ्यासमर्यादामाह । किंचित्कालमिति ॥ रात्रिपश्चिमयामतृतीयमुहूर्तपर्यंतमित्यर्थः ॥ तदुक्तंवायुपुराणे रात्रेःपश्चिमयामेतुघटिकाषट्कमेवहि ॥ वेदाभ्यासंद्विजःकुर्यात्सावेलापाठदायिनीति ॥ योगीत्विति ॥ तस्यवेदपाठाभावात्पूर्वमार्गेणपूर्वोक्तप्रकारेणब्रह्मध्यानमेवतावतघटिकाषट्कपर्यंतंकुर्यादित्यर्थः ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ४ ॥ अग्रिमश्लोकोक्तप्रातःशब्दार्थंकथयति । पंचपंचेति ॥ पंचपंचाशद्घटिकोत्तरमुषःकालः ॥ सप्तपंचशद्घटिकोत्तरमरुणोदयसंज्ञकःकालः ॥ अष्टपंचाशद्घटिकायांप्रातःकालः ॥ शेषःसूर्योदयसंज्ञकइत्यर्थः ॥ ५ ॥ प्रातःपदार्थमुक्त्वातस्मिन्कर्तव्यमाह । प्रातरिति ॥ यःकुर्यात्सनैर्ऋत्यांदिशिभुवःशयनस्थानादिषुविक्षेपपरिमितमधिकंवादेशमतीत्यकुर्यादित्यर्थः।इदं दूरदेशमात्रस्योपलक्षणम् ॥ तथाचमनुःदूरादावसथान्मूत्रंदूरात्पादावसेचनमिति ॥ नैर्ऋत्यामित्युपलक्षणंदक्षिणस्याः ॥ तथाचापस्तंबः ॥ दक्षिणांदिशंदक्षिणापरांवेति ॥ ६ ॥ प्रथमे आश्रमेब्रह्मचर्याश्रमेकर्णस्थंयज्ञसूत्रंकुर्यादित्यर्थः ॥ निवीतामिति ॥ यज्ञोपवीतंनिवीतंकृत्वापृष्ठतोलंबयेदित्यर्थः ॥ ७ ॥ तदेवस्पष्टयति।कृत्वायज्ञोपवीतामिति ॥ यज्ञोपवीतंपूर्ववचनान्निवीतरूपम् ॥ गृहीतिवानप्रस्थस्योपलक्षणम् ॥ ८ ॥ श्वासवर्जितोऽधिकश्वासवर्जितोधावन्शौचंनकुर्यादित्यर्थः ॥ ९ ॥ वल्मीकेसर्पस्थाने ॥ नशाद्वलेनहरिततृणे ॥ १० ॥ ससत्त्वेषु

जीवब्रह्मैक्यतायेनजायतेतुनिरंतरम् ॥ जीवन्मुक्तश्चभवतितत्क्षणादेवनारद ॥ ४ ॥ पंचपंचउषःकालःसप्तपंचाऽरुणोदयः ॥अष्टपंचभवेत्प्रातःशेषःसूर्योदयःस्मृतः ॥ ५ ॥ प्रातरुत्थाययःकुर्याद्विण्मूत्रंद्विजसत्तमः ॥ नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपमतीत्याभ्यधिकंभुवः ॥६॥ विण्मूत्रेपिचकर्णस्थआश्रमेप्रथमेद्विजः॥ निवीतंपृष्ठतःकुर्याद्वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ ७ ॥ कृत्वायज्ञोपवीतंतुपृष्ठतःकंठलंबितम् ॥ विण्मूत्रंतुगृहीकुर्यात्कर्णस्थंप्रथमाश्रमी ॥ ८ ॥ अंतर्धायतृणैर्भूमिंशिरःप्रावृत्यवाससा ॥ वाचंनियम्ययत्नेनष्ठीवनश्वासवर्जितः ॥९॥ नफालकृष्टेनजलेनाचितायांनपर्वते ॥ जीर्णदेवालयेकुर्यान्नवल्मीकेनशाद्वले॥१०॥ नससत्वेषुगर्तेषुनगच्छन्नपथिस्थितः ॥ संध्ययोरुभयोर्जप्येभोजनेदंतधावने॥११॥पितृकार्येचदैवेचतथामूत्रपुरीषयोः॥ उत्सारेमैथुनेवापितथावैगुरुसन्निधौ ॥ १२ ॥ यागेदानेब्रह्मयज्ञेद्विजोमौनंसमाचरेत् ॥ देवताऋषयःसर्वेपिशाचोरगराक्षसाः ॥ १३ ॥ इतोगच्छंतुभूतानिबहिर्भूमिंकरोम्यहम् ॥ इतिसंप्रार्थ्यपश्चात्तुकुर्याच्छौचंयथाविधि ॥ १४ ॥ वाय्वग्नीविप्रमार्दित्यमापःपश्यंस्तथैवगाः ॥ नकदाचनकुर्वीतविण्मूत्रस्यविसर्जनम् ॥१५॥ उदङ्मुखोदिवाकुर्याद्रात्रौचेद्दक्षिणामुखः ॥ ततआच्छाद्यविण्मूत्रंलोष्टपर्णतृणादिभिः ॥ १६ ॥ गृहीतलिंगउत्थायसगच्छेद्वारिसन्निधौ ॥ पात्रेजलंगृहीत्वातुगच्छेदन्यत्रचैवहि ॥ १७ ॥ गृहीत्वामृत्तिकांकूलाच्छ्वेतांब्राह्मणसत्तमः ॥ रक्तांपीतांतथाकृष्णांगृह्णीयुश्चान्यवर्णकाः ॥१८॥ अथवायायत्रदेशेसैवग्राह्याद्विजोत्तमैः ॥ अंतर्जलाद्देवगृहाद्वल्मीकान्मूषकोत्करात् ॥ १९ ॥ कृतशौचावशिष्टाच्चनग्राह्याःसप्तमृत्तिकाः ॥ मूत्रात्तुद्विगुणंशौचंमैथुनेत्रिगुणंस्मृतम्॥२०॥एकालिंगेकरेतिस्रउभयोर्मृद्वयंस्मृतम् ॥ मूत्रशौचंसमाख्यातंशौचेताद्विगुणंस्मृतम् ॥ २१ ॥

जीवसहितेषुगर्तेषु ॥ नपथिस्थितःलोकगंतव्यमार्गेस्थितोनकुर्यादित्यर्थः ॥ शौचादिसमयेमौनमाह । संध्ययोरिति ॥ जप्येजपकर्मणि ॥ ११ ॥ १२ ॥ तत्रशौचसमयेऽयंमंत्रःपठनीयइत्याह । देवताऋषयइति ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ तृणादिभिरित्यत्रादिनाखर्परादिना सूर्यकिरणस्पर्शाभावार्थमाच्छादनम् ॥ १६ ॥ अन्यत्रजलदूरदेशे ॥ १७ ॥ अन्यवर्णकाः क्षत्रियवैश्यशूद्राः ॥ १८ ॥ श्वेतादिमृत्तिकाभावेआह । अथवेति ॥ अग्राह्यमृत्तिकाआह । अंतर्जलादिति ॥ १९ ॥ २० ॥ मूत्रशौचज्ञानार्थमाह । एकालिंगइति ॥ एकाएकवारमित्यर्थः ॥ तिस्रःत्रिवारंउभयोर्हस्तयोर्द्विवारम् ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वि ट्शौचेमृत्तिकाविभागंस्पष्टमेवाऽह । विट्शौचेइति ॥ एकस्मिन्करेइत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ एकैकवारंग्राह्यमृत्तिकायाःप्रमाणमाह । आर्द्रामलकेति ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ गं धलेपनाशपर्यंतंमृत्तिकालेपनमर्यादेत्यत्रमनुसंमतिमाह । गंधलेपेति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ प्रायश्चित्तमाह । जलाहारइति ॥ जापाद्गायत्र्याः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ क्षीर वृक्षाःअश्वत्थोदुंबरप्लक्षन्यग्रोधाः ॥३५॥ पूर्वार्धेअग्रभागेपाषाणेनकुंचितंकृत्वाग्राह्यमित्यर्थः ॥३६॥ दंतधावनेमंत्रमाह । अन्नाद्यायेति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ प्रतिषिद्धदिनेषुचेति ॥ तानिदि

विट्शौचेलिंगदेशेतुप्रदद्यान्मृत्तिकाद्वयम् ॥ पंचाऽपानेदशैकस्मिन्नुभयोःसप्तमृत्तिकाः ॥२२॥ वामपादंपुरस्कृत्यपश्चाद्दक्षिणमेवच ॥ प्रत्येकंचचतुर्वारंमृत्तिकांलापयेत्सुधीः ॥२३॥ एवंशौचंगृहस्थस्यद्विगुणंब्रह्मचारिणः ॥ त्रिगुणंवानप्रस्थस्ययतीनांचचतुर्गुणम्॥२४॥आर्द्रामलकमानातुमृत्तिकाशौचकर्मणि ॥ प्रत्येकंतुसदाग्राह्यानातोन्यूनाकदाचन ॥ २५ ॥ एतद्दिवास्याद्विट्शौचंतदर्धंनिशिकीर्तितम्॥आतुरस्यतदर्धंतुमार्गस्थस्यतदर्धकम् ॥२६॥ स्त्रीशूद्राणामशक्तानांबालानांशौचकर्मणि ॥ यथागंधक्षयःस्यात्तुतथाकुर्यादसंख्यकम् ॥ २७ ॥ गंधलेपक्षयोयावत्तावच्छौचंविधीयते ॥ सर्वेषामेववर्णानामित्याहभगवान्मनुः ॥ २८ ॥ वामहस्तेनशौचंतुकुर्याद्वैदक्षिणेनन ॥ नाभेरधोवामहस्तोनाभेरूर्ध्वंतुदक्षिणः ॥ २९ ॥ शौचकर्मणिविज्ञेयोनान्यथाद्विजपुंगवैः ॥ जलपात्रंनगृह्णीयाद्विण्मूत्रोत्सर्जनेबुधः ॥ ३० ॥ गृह्णीयाद्यदिमोहेनप्रायश्चित्तंचरेत्ततः ॥ मोहाद्वाप्यथवाऽऽलस्यान्नकुर्याच्छौचमात्मनः॥३१॥ जलाहारस्त्रिरात्रःस्यात्ततोजापाच्चशुध्यति ॥ देशकालद्रव्यशक्तिस्वोपपत्तीश्चसर्वशः ॥३२॥ ज्ञात्वाशौचंप्रकर्तव्यमालस्यंनात्रधारयेत् ॥ पुरीषोत्सर्जनेकुर्याद्गंडूषान्द्वादशैवतु ॥ ३३ ॥ चतुरोमूत्रविक्षेपेनातोन्यूनान्कदाचन ॥ अधोमुखंनरःकृत्वात्यजेत्तंवामतःशनैः ॥ ३४ ॥ आचम्यचततःकुर्याद्दंतधावनमादरात् ॥ कंटकिक्षीरवृक्षोत्थंद्वादशांगुलमव्रणम् ॥ ३५ ॥ कनिष्ठिकाग्रवत्स्थूलंपूर्वार्धेकृतकूर्चकम् ॥ करंजोदुंबरौचूतःकदंबोलोध्रचंपकौ ॥ ३६ ॥ बदरीतिद्रुमाश्चेतिप्रोक्तादंतप्रधावने ॥ अन्नाद्यायव्यूहध्वंसेसोमोराजायमागमत् ॥ ३७ ॥ समेमुखंप्रक्षाल्यतेयशसाचभगेनच ॥ आयुर्बलंयशोवर्चःप्रजाःपशुवसूनिच ॥ ३८ ॥ ब्रह्मप्रज्ञांचमेधांचत्वन्नोदेहिवनस्पते ॥ अभावेदंतकाष्ठस्यप्रतिषिद्धदिनेषुच ॥ ३९ ॥ अपांद्वादशगंडूषैर्विदध्याद्दंतधावनम् ॥ सविताभक्षितस्तेनस्वकुलंतेनघातितम् ॥ ४० ॥ प्रतिपद्दर्शषष्ठीषुनवम्येकादशीरवौ ॥ दंतानांकाष्ठसंयोगाद्दहत्यासप्तमंकुलम् ॥ ४१ ॥

नान्यग्रेवक्ष्यति ॥३९॥ सविताभक्षितइति॥ अस्ययोदंतानांकाष्ठसंयोगंकरोतितेनेत्युत्तरेणान्वयः ॥४०॥ दिनान्याह । प्रतिपद्दर्शेति ॥ तथाचव्यासः॥प्रतिद्दर्शषष्ठीषुनवम्यांचैवभारत ॥ दंतानांकाष्ठसंयोगोदहत्यासप्तमंकुलमिति ॥ एवमन्येऽपिकालाग्रंथांतरादवसेयाः ॥ ४१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





दंतधावनोत्तरमाचमनमाह । कृत्वालामीति ॥ त्रिःपिबेत्केशवादित्रिनामभिः द्विर्विमृज्यवचनांतरानुमत्याआस्यमित्यर्थः ॥ यद्यपिवचनांतरादास्यस्यैकवारमेवोन्मार्जनंतथापिओष्ठोन्मार्जनस्यापिवचनांतरप्राप्तत्वेनतस्मिन्कृतेमुखस्यद्विरुन्मार्जनंजातमेवेत्यभिप्रायेणेयमुक्तिः ॥ अनंतरमंगुष्ठवत्यातर्जन्यांगुष्ठयुक्तयातर्जन्यानासिकारंध्रयुग्मंसजलंयथास्यात्तथाऽभिमृशेत्स्पृशेदित्यर्थः ॥ अनंतरमंगुष्ठानामिकाभ्यांनयनयुगयुतंकर्णयुग्मंनयनयुगंकर्णयुगंचाभिमृशेत्स्पृशेत् ॥ अनंतरंकनिष्ठांगुष्ठाभ्यांनाभिदेशेस्पृशेत् ॥ अत्रतलेनहस्ततलेनहृदयंस्पृशेत् ॥ अनंतरं सर्वाभिरंगुलीभिःशिरस्यभिमृशेदिति ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ अंतर्जानुःशुचौदेशेउपविष्टउदङ्मुखः ॥ प्राग्वाब्राह्मणतीर्थेनद्विजोनित्यमुपस्पृशेत् ॥ त्रिःप्राश्यापोद्विरुन्मृज्यखान्यद्भिः समुपस्पृशेदिति ॥४२॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेद्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ ॥ सप्तत्रिंशन्महापद्यैःस्नानादिविधिपूर्वकम् ॥ रुद्राक्षधारणस्यापिमहिमाऽतीवकथ्यते ॥ १ ॥

कृत्वाऽलंपादशौचंह्यमलमथजलंत्रिःपिबेद्विर्विमृज्यतर्जन्यांगुष्ठवत्यासजलमभिमृशेन्नासिकारंध्रयुग्मम् ॥ अंगुष्ठानामिकाभ्यांनयनयुगयुतंकर्णयुग्मंकनिष्ठांगुष्ठाभ्यांनाभिदेशेहृदयमथतलेनांगुलीभिःशिरांसि ॥ ४२ ॥ इतिश्रीदे०म०ए०द्वितीयोध्यायः ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ " शुद्धंस्मार्तंचाचमनंपौराणंवैदिकंतथा ॥ तांत्रिकंश्रौतमित्याहुःषड्विधंश्रुतिचोदितम् ॥ विण्मूत्रादिकशौचंचशुद्धंचपरिकीर्तितम् ॥ स्मार्तंपौराणिकंकर्मआचांतेविधिपूर्वकम् ॥ वैदिकंश्रौत्रमित्यादिब्रह्मयज्ञादिपूर्वकम् ॥ अस्त्रविद्यादिकंकर्मतांत्रिकोविधिरुच्यते ॥ " स्मृत्वाचोंकारगायत्रींनिबध्नीयाच्छिखांतथा ॥ पुनराचम्यहृदयंबाहूस्कंधौचसंस्पृशेत् ॥ १ ॥ क्षुतेनिष्ठीवनेचैवदंतोच्छिष्टेतथाऽनृते ॥ पतितानांचसंभाषेदक्षिणंश्रवणंस्पृशेत् ॥ २ ॥ अग्निरापश्चवेदाश्चसोमःसूर्योऽनिलस्तथा ॥ सर्वेनारदविप्रस्यकर्णेतिष्ठंतिदक्षिणे ॥ ३ ॥ ततस्तुगत्वानद्यादौप्रातःस्नानंविशोधनम् ॥ समाचरेन्मुनिश्रेष्ठदेहसंशुद्धिहेतवे ॥ ४ ॥ अत्यंतमलिनोदेहोनवद्वारैर्मलंवहन् ॥ सदाऽऽस्तेतच्छोधनायप्रातःस्नानंविधीयते ॥ ५ ॥ अगम्यागमनात्पापंयच्चपापंप्रतिग्रहात् ॥ रहस्याचरितंपापंमुच्यतेस्नानकर्मणा ॥ ६ ॥ अस्नातस्यक्रियाःसर्वाभवंतिविफलायतः ॥ तस्मात्प्रातश्चरेत्स्नानंनित्यमेवदिनेदिने ॥ ७ ॥ दर्भयुक्तश्चरेत्स्नानंतथासंध्याभिवंदनम् ॥ सप्ताहंप्रातरस्नायीसंध्याहीनस्त्रिभिर्दिनैः ॥ ८ ॥ द्वादशाहमनग्निःसन्द्विजःशूद्रत्वमाप्नुयात् ॥ अल्पत्वाद्धोमकालस्यबहुत्वात्स्नानकर्मणः ॥ ९ ॥ प्रातर्नतुतथास्नायाद्धोमकालेविगर्हितः ॥ गायत्र्यास्तुपरंनास्तिइहलोकेपरत्रच ॥ १० ॥ गायंतंत्रायतेयस्माद्गायत्रीत्यभिधीयते ॥ प्रणवेनतुसंयुक्तांव्याहृतित्रयसंयुताम् ॥ ११ ॥

आचमनोत्तरंशिखाबंधमाह । स्मृत्वेति ॥ ओंकारयुक्तांगायत्रीमित्यर्थः ॥ तदुक्तंवायुपुराणे ॥ ओंकारयुक्तगायत्रींसमुच्चार्यततोद्विजः ॥ शिखाबंधंप्रकुर्वीतयेनस्याद्विघ्नबंधनमिति ॥ शिखाबंधनोत्तरंपुनराचमनमाह । पुनराचम्येति ॥ १ ॥ प्रसंगाच्छ्रोत्राचमनमाह ॥ क्षुतेनिष्ठीवनइति ॥ २ ॥ दक्षिणकर्णस्पर्शेहेतुमाह । अग्निरापइति ॥ ३ ॥ अनंतरंस्नानमाह । ततस्त्विति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ स्नानादिविधेर्बाहुल्याद्धोमकालस्याल्पत्वात्तादृशस्नानाविधिंकृत्वासंध्यादिविधिंकुर्वतोहोमकालोनैवमिलति ॥ ततस्मात्प्रातःकालेतादृशाविधिनास्नानंनैवकर्तव्यम् किंतुसंक्षेपेण ॥ स्नानविधिस्तुमध्याह्नस्नानेचरितार्थइत्याह ॥ अल्पत्वादिति ॥ ९ ॥ किंतुसामान्यस्नानोत्तरमेतादृशप्राणायामेनैवस्नानविधिफलमायातीत्याह । गायत्र्यास्त्विति ॥ १० ॥ संयुतांपठन्निति शेषः ॥ ११ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वायुंप्राणवायुं वायावपानेवायौ जयेद्वशीकुर्यात्प्राणापानौसमौकुर्यादित्यर्थः ॥ प्राणायामादिसमयेब्राह्मणोवैदिकमंत्रमेवजपेदित्याह ॥ ब्राह्मणइति ॥१२॥ प्राणयामेनवायोरास्थिरीकरणे दोषमाह।गोशृंगइति गोशृंगेयावत्सर्षपास्तिष्ठाति । तावदपियेषांप्राणायामेनवायुःस्थिरोनेत्यर्थः॥तेनतारयंतमित्यन्वयः ॥१३॥तस्यैवद्वैविध्यमाह॥सगर्भेति ॥१४॥ स्नानांगतर्पणमिति ॥ तथाचकार्ष्णाजिनिः ॥ देवर्षिपितृणांचैवएकद्वित्रिक्रमेणच ॥ जलेदद्याज्जलंचात्रासंस्कृतानांतटेतथेति॥असंस्कृतानांमृतानामित्यर्थः ॥ असंस्कृतप्रमीतानामेकमेवतटेक्षिपेदितिबौधायनोक्तेः॥अत्रपितृशब्देनस्वपितरश्च ॥ तदुक्तंहेमाद्रौब्रह्मवैवर्ते॥नाभिमात्रेजलेस्थित्वाकुर्यात्स्नानंगतर्पणम् ॥ देवान्ऋषीन्पितृगणान्स्वपितृश्चापितर्पयेत्॥स्नानांगतर्पणंकृत्वायक्ष्मणेजलमाहरे

वायुंवायौजयेद्विप्रःप्राणसंयमनत्रयात् ॥ ब्राह्मणःश्रुतिसंपन्नःस्वधर्मनिरतःसदा ॥ १२ ॥ सवैदिकंजपेन्मंत्रंलौकिकंनकदाचन ॥ गोशृंगेसर्षपोयावत्तावद्येषांनसस्थिरः ॥ १३ ॥ नतारयंत्युभौपक्षौपितॄनेकोत्तरंशतम् ॥ सगर्भोजपसंयुक्तअगर्भोध्यानमात्रकः ॥ १४ ॥ स्नानांगतर्पणंकृत्वादेवर्षीपितृतोषकम् ॥ शुद्धेवस्त्रेपरीधायजलाद्बहिरुपागतः ॥ १५ ॥ विभूतिधारणंकार्यंरुद्राक्षाणांचधारणम् ॥ क्रमयोगेनकर्तव्यंसर्वदाजपसाधकैः ॥१६॥ रुद्राक्षान्कंठदेशेदशनपरिमितान्मस्तकेविंशतीद्वेषट्षट्कर्णप्रदेशेकरयुगलकृतेद्वादशद्वादशैव॥बाह्वोरिंदोःकलाभिर्नयनयुगकृतेत्वेकमेकंशिखायांवक्षस्यष्टाधिकंयःकलयतिशतकंसस्वयंनीलकंठः ॥ १७ ॥ बद्धास्वर्णेनरुद्राक्षंरजतेनाऽथवामुने ॥ शिखायांधारयेन्नित्यंकर्णयोर्वासमाहितः॥१८॥यज्ञोपवीतेहस्तेवाकंठेतुंदेऽथवानरः ॥ श्रीमत्पंचाक्षरेणैवप्रणवेनतथापिवा ॥ १९ ॥ निर्व्याजभक्त्यामेधावीरुद्राक्षंधारयेन्मुदा ॥ रुद्राक्षधारणंसाक्षाच्छिवज्ञानस्यसाधनम् ॥ ॥ २० ॥ रुद्राक्षंयच्छिखायांतत्तारतत्त्वमितिस्मरेत् ॥ कर्णयोरुभयोर्ब्रह्मन्देवंदेवींचभावयेत् ॥ २१ ॥ यज्ञोपवीतेवेदांश्चतथाहस्तेदिशःस्मरेत्॥कंठेसरस्वतींदेवींपावकंचापिभावयेत् ॥ २२ ॥ सर्वाश्रमाणांवर्णानांरुद्राक्षाणांचधारणम् ॥ कर्तव्यंमंत्रतःप्रोक्तंद्विजानांनान्यवर्णिनाम्॥२३॥रुद्राक्षधारणाद्रुद्रोभवत्येवनसंशयः ॥ पश्यन्नपिनिषिद्धांश्चतथाशृण्वन्नपिस्मरन् ॥ २४ ॥ जिघ्रन्नपितथाचाश्नन्प्रलपन्नपिसंततम्॥ कुर्वन्नपिसदागच्छन्विसृजन्नपिमानवः॥ ॥ २५ ॥ रुद्राक्षधारणादेवसर्वपापैर्नलिप्यते ॥ अनेनभुक्तंदेवेनभुक्तंयत्तुतथाभवेत् ॥ २६ ॥ पीतंरुद्रेणतत्पीतंघ्रातंघ्रातंशिवेनतत्॥रुद्राक्षधारणेलज्जायेषामस्तिमहामुने ॥२७॥ तेषांनास्तिविनिर्मोक्षःसंसाराज्जन्मकोटिभिः ॥ रुद्राक्षधारिणंदृष्ट्वापरिवादंकरोतियः ॥२८॥ उत्पत्तौतस्यसांकर्यमस्त्येवेतिविनिश्चयः ॥ रुद्राक्षधारणादेवरुद्रोरुद्रत्वमाप्नुयात् ॥ २९ ॥ मुनयःसत्यसंकल्पाब्रह्माब्रह्मत्वमागतः ॥ रुद्राक्षधारणाच्छ्रेष्ठंनकिंचिदपिविद्यते ॥ ३० ॥

दिति ॥ १५ ॥ १६ ॥ दशनपरिमितान्द्वात्रिंशत्संख्याकान् विंशतीद्वेविंशतिश्चर्विंशतिश्चविंशतीइत्येकशेषः ॥ द्वेविंशतीचत्वारिंशदित्यर्थः ॥ करयुगलकृतेकरयुगार्थंद्वादशद्वादशैवैकैकहस्तेद्वादशद्वादशेत्यर्थः ॥ इंदोःकलाभिःषोडशसंख्यैरित्यर्थः ॥ एकमेकंनयनेशिखायामेकमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ नान्यवर्णिनामिति ॥ अत्राद्विजशब्देनब्राह्मणक्षत्रियवैश्यास्तेषांमंत्रतोधारणम् ॥ शूद्रादीनांतुमंत्रतोनधारणंकिंत्वमंत्रकमेवेत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ चत्वारिंशन्महाश्लोकैरुद्राक्षोत्पत्तिपूर्वकम् ॥ रुद्राक्षाणांबहुविधंवर्णनंसमुदीर्यते ॥१ ॥ रुद्राक्षमाहिमानंश्रुत्वानारदःपृच्छति । नारदउवाच एवंभूतेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ कपिलाअनेकवर्णवंतः ॥ अतएवा

रुद्राक्षधारिणेभक्त्यावस्त्रंधान्यंददातियः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकंसगच्छति ॥ ३१॥ रुद्राक्षधारिणंश्राद्धेभोजयेतविमोदतः ॥ पितृलोकमवाप्नोति नात्रकार्याविचारणा ॥ ३२ ॥ रुद्राक्षधारिणःपादौप्रक्षाल्याद्भिःपिबेन्नरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःशिवलोकेमहीयते ॥ ३३ ॥ हारंवाकटकंवापिसुवर्णंवाद्विजोत्तमः ॥ रुद्राक्षसहितंभक्त्याधारयन्रुद्रतामियात् ॥ ३४ ॥ रुद्राक्षंकेवलंवापियत्रकुत्रमहामते ॥ समंत्रकंवामंत्रेणरहितंभाववर्जितम् ॥ ३५ ॥ योवाकोवानरोभक्त्याधारयेल्लज्जयाऽपिवा ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसम्यग्ज्ञानमवाप्नुयात् ॥ ३६ ॥ अहोरुद्राक्षमाहात्म्यंमयावक्तुंनशक्यते ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेननकुर्याद्रुद्राक्षधारणम् ॥ ३७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेसदाचारवर्णनेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ छ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ एवंभूतानुभावोऽयंरुद्राक्षोभवतानघ ॥ वर्णितोमहतांपूज्यःकारणंतत्रकिंवद ॥ १॥ नारायणउवाच ॥ एवमेवपुरापृष्टोभगवान्गिरिशःप्रभुः ॥ षण्मुखेनचरुद्रस्तंयदुवाचशृणुष्वतत् ॥ २ ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुषण्मुखतत्त्वेनकथयामिसमासतः ॥ त्रिपुरोनामदैत्यस्तुपुराऽसीत्सर्वदुर्जयः॥३॥हतास्तेनसुराःसर्वेब्रह्मविष्ण्वादिदेवताः ॥ सर्वैस्तुकथितेतस्मिंस्तदाऽहंत्रिपुरंप्रति ॥ ४ ॥ अचिंतयंमहाशस्त्रमघोराख्यंमनोहरम् ॥ सर्वदेवमयंदिव्यंज्वलंतंघोररूपियत् ॥ ५ ॥ त्रिपुरस्यवधार्थायदेवानांतारणायच ॥ सर्वविघ्नोपशमनमघोरास्त्रमचिंतयम् ॥ ६ ॥ दिव्यवर्षसहस्रंतुचक्षुरुन्मीलितंमया ॥ पश्चान्ममाकुलाक्षिभ्यःपतिताजलबिंदवः ॥ ७ ॥ तत्राश्रुबिंदुतोजातामहारुद्राक्षवृक्षकाः ॥ ममाऽऽज्ञयामहासेनसर्वेषांहितकाम्यया ॥ ८ ॥ बभूवुस्तेचरुद्राक्षाअष्टत्रिंशत्प्रभेदतः ॥ सूर्यनेत्रसमुद्भूताःकपिलाद्वादशस्मृताः॥९॥सोमनेत्रोत्थिताःश्वेतास्तेषोडशविधाःक्रमात् ॥ वह्निनेत्रोद्भवाःकृष्णादशभेदाभवंतिहि ॥ १० ॥ श्वेतवर्णश्चरुद्राक्षोजातितोब्राह्मउच्यते ॥ क्षात्रोरक्तस्तथामिश्रोवैश्यःकृष्णस्तुशूद्रकः ॥११॥ एकवक्त्रःशिवःसाक्षाद्ब्रह्महत्यांव्यपोहति॥द्विवाक्त्रोदेवदेव्यौस्याद्विविधंनाशयेदघम् ॥१२॥ त्रिवक्त्रस्त्वनलःसाक्षात्स्त्रीहत्यांदहतिक्षणात् ॥ चतुर्वक्त्रःस्वयंब्रह्मानरहत्यांव्यपोहति॥ १३॥ पंचवक्त्रःस्वयंरुद्रःकालाग्निर्नामनामतः॥अभक्ष्यभक्षणोद्भूतैरगम्यागमनोद्भवैः॥१४॥मुच्यतेसर्वपापैस्तुपंचवक्त्रस्यधारणात्॥षड्वक्त्रःकार्तिकेयस्तुसधार्योदक्षिणेकरे ॥१५॥ ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ सप्तवक्त्रोमहाभागोह्यनंगोनामनामतः ॥१६॥ तद्धारणान्मुच्यतेहिस्वर्णस्तेयादिपातकैः ॥ अष्टवक्त्रोमहासेनसाक्षाद्देवोविनायकः ॥१७॥

ग्रेरक्तोमिश्रश्चेतिवक्ष्यति ॥ ९ ॥ १० ॥ ब्राह्मउच्यते ॥ तथाचसब्राह्मणैर्धार्यइत्यर्थः ॥ एवमुत्तरत्र ॥ ११ ॥ एकवक्त्रादिरुद्राक्षाणांतत्तद्देवतारूपत्वमाह । एकवक्त्रइति ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ रुद्राक्षधारणेपूर्वापेक्षयापक्षांतरमाह । रुद्राक्षएकःशिरसीति ॥ ३६ ॥ एतेचपक्षाःशिवपुराणेप्रसिद्धाः ॥ प्रयोजनाभावात्तद्वचनानिनोदाह्रियंते ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेएकादशस्कंधेचतु

अन्नकूटंतूलकूटंस्वर्णकूटंतथैवच ॥ दुष्टान्वयस्त्रियंवाऽथसंस्पृशंश्चगुरुस्त्रियम् ॥ १८ ॥ एवमादीनिपापानिहंतिसर्वाणिधारणात् ॥ विघ्नास्तस्यप्रणश्यंति यातिचांतेपरंपदम् ॥१९॥ भवंत्येतेगुणाःसर्वेह्यष्टवक्रस्यधारणात् ॥ नववक्रोभैरवस्तुधारयेद्वामबाहुके ॥ २० ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदःप्रोक्तोममतुल्यबलोभवेत् ॥ भ्रूणहत्यासहस्राणिब्रह्महत्याशतानिच ॥ २१ ॥ सद्यःप्रलयमायांतिनववक्रस्यधारणात् ॥ दशवक्रस्तुदेवेशःसाक्षाद्देवोजनार्दनः ॥ २२ ॥ ग्रहाश्चैवपिशाचाश्चवेतालाब्रह्मराक्षसाः ॥ पन्नगाश्चोपशाम्यंतिदशवक्रस्यधारणात् ॥ २३ ॥ वक्रैकादशरुद्राक्षोरुद्रैकादशकंस्मृतम् ॥ शिखायांधारयेद्योवैतस्यपुण्यफलंशृणु ॥ २४ ॥ अश्वमेधसहस्रस्यवाजपेयशतस्यच ॥ गवांशतसहस्रस्यसम्यग्दत्तस्ययत्फलम् ॥२५ ॥ तत्फलंलभतेशीघ्रंवक्रैकादशधारणात् ॥ द्वादशास्यस्यरुद्राक्षस्यैवकर्णेतुधारणात्॥२६॥आदित्यास्तोषितानित्यंद्वादशास्येव्यवस्थिताः॥गोमेधेचाऽश्वमेधेचयत्फलंतदवाप्नुयात्॥२७॥ शृंगिणांशस्त्रिणांचैवव्याघ्रादीनांभयंनहि ॥ नचव्याधिभयंतस्यनैवचाधिःप्रकीर्तितः ॥२८॥ नचकिंचिद्भयंतस्यनचव्याधिःप्रवर्तते॥ नकुतश्चिद्भयंतस्य सुखीचैवेश्वरोभवेत् ॥ २९ ॥ हस्त्यश्वमृगमार्जारसर्पमूषकदर्दुरान् ॥ खरांश्चश्वशृगालांश्चहत्वाबहुविधानपि ॥ ३० ॥ मुच्यतेनात्रसंदेहोवक्रद्वादशधारणात् ॥ वक्रत्रयोदशोवत्सरुद्राक्षोयदिलभ्यते ॥ ३१ ॥ कार्तिकेयसमोज्ञेयःसर्वकामार्थसिद्धिदः ॥ रसोरसायनंचैवतस्यसर्वंप्रसिध्यति ॥३२॥ तस्यैवसर्वभोग्यानिनात्रकार्याविचारणा ॥ मातरंपितरंचैवभ्रातरंवानिहंतियः ॥ ३३॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योधारणात्तस्यषण्मुख ॥ चतुर्दशास्योरुद्राक्षोयदिलभ्येतपुत्रक ॥३४॥ धारयेत्सततंमूर्ध्नितस्यपिंडःशिवस्यतु ॥ किंमुनेबहुनोक्तेनवर्णनेनपुनःपुनः ॥३५ ॥ पूज्यतेसंततंदेवैःप्राप्यतेचपरागतिः ॥ रुद्राक्षएकःशिरसाधार्योभक्त्याद्विजोत्तमैः ॥ ३६ ॥ षड्विंशद्भिःशिरोमालापंचाशद्धृदयेनतु ॥ कलाक्षैर्बाहुवलयेअर्काक्षैर्मणिबंधनम् ॥३७॥ अष्टोत्तरशतेनापिपंचाशद्भिःषडानन ॥ अथवासप्तविंशत्याकृत्वारुद्राक्षमालिकाम्॥३८॥धारणाद्राजपाद्वापिह्यनंतंफलमश्नुते ॥ अष्टोत्तरशतैर्मालारुद्राक्षैर्धार्यतेयदि ॥ ३९ ॥ क्षणेक्षणेऽश्वमेधस्यफलंप्राप्नोतिषमुख ॥ त्रिःसप्तकुलमुद्धृत्यशिवलोकेमहीयते ॥ ४० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ॥ ४ ॥ छ ॥ ईश्वरइवाच ॥ लक्षणंजपमालायाःशृणुवक्ष्यामिषण्मुख ॥ रुद्राक्षस्यमुखंब्रह्माबिंदूरुद्रइतीरितः ॥ १ ॥

र्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ षट्त्रिंशद्भिरथश्लोकैर्जपमालाविधानकम् ॥ सम्यगुक्त्वापुनारुद्राक्षाणांतुमहिमोच्यते ॥ १ ॥ जपमालालक्षणमाह । लक्षणमिति ॥ रुद्राक्षेभावनीयदेवानाह । रुद्राक्षस्येति ॥ १ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पंचविंशतिमणिमालापक्षमाह । पंचविंशतिभिरिति ॥ २ ॥ विदर्भितैःग्रथितैः ॥ ३ ॥ गोपुच्छलक्षणमाह । वक्रंवक्रेणेति ॥ नागपाशकंग्रंथिरूपम् ॥ ४ ॥ ५ ॥ शिवांभसाशुद्धजलेन ॥ आक्षाल्येतिच्छदः ॥ शिवास्त्रेति ॥ शिवमत्रषडंगेयोस्त्रमंत्रस्तेनेत्यर्थः ॥ कवचेनेति ॥ कवचमंत्रोहुमिति ॥ अवगुंठयेदेकत्रकुर्यात् ॥ ६ ॥ मूलमंत्रंजप्यमंत्रम् ॥ इदमनुष्ठानंस्वयंकु

विष्णुःपुच्छंभवेच्चैवभोगमोक्षफलप्रदम् ॥ पंचविंशतिभिश्चाक्षैःपंचवक्त्रैःसकंटकैः ॥ २ ॥ रक्तवर्णैःसितैर्मिश्रैःकृतरंध्रविदर्भितैः ॥ अक्षसूत्रंप्रकर्तव्यंगोपुच्छवत्याकृति ॥ ३ ॥ वक्रंवक्रेणसंयोज्यपुच्छंपुच्छेनयोजयेत् ॥ मेरुमूर्ध्वमुखंकुर्यात्तदूर्ध्वंनागपाशकम् ॥ ४ ॥ एवंसंग्रथितांमालांमंत्रसिद्धिप्रदायिनीम् ॥ प्रक्षाल्यगंधतोयेनपंचगव्येनचोपरि ॥ ५ ॥ ततःशिवांभसाऽऽक्षाल्यततोमंत्रगणान्न्यसेत् ॥ स्पृष्ट्वाशिवास्त्रमंत्रेणकवचेनावगुंठयेत् ॥ ६ ॥ मूलमंत्रंन्यसेत्पश्चात्पूर्ववत्कारयेत्तथा ॥ सद्योजातादिभिःप्रोक्ष्ययावदष्टोत्तरंशतम् ॥ ७ ॥ मूलमंत्रंसमुच्चार्यशुद्धभूमौनिधायच ॥ तस्योपरिन्यसेत्सांबंशिवंपरमकारणम् ॥ ८ ॥ प्रतिष्ठिताभवेन्मालासर्वकामफलप्रदा ॥ यस्यदेवस्ययोमंत्रस्तांतेनैवाभिपूजयेत् ॥ ९ ॥ मूर्ध्निकंठेऽथवाकर्णेन्यसेद्वाजपमालिकाम् ॥ रुद्राक्षमालयाचैवंजप्तव्यंनियतात्मना ॥ १० ॥ कंठेमूर्ध्निहृदिप्रांतेकर्णेबाहुयुगेऽथवा ॥ रुद्राक्षधारणंनित्यंभक्त्यापरमयायुतः ॥११॥ किमत्रबहुनोक्तेनवर्णनेनपुनःपुनः ॥ रुद्राक्षधारणंनित्यंतस्मादेतत्प्रशस्यते ॥ १२ ॥ स्नानेदानेजपेहोमेवैश्वदेवेसुरार्चने॥प्रायश्चित्तेतथाश्राद्धेदीक्षाकालेविशेषतः ॥१३॥ अरुद्राक्षधरोभूत्वायत्किंचित्कर्मवैदिकम् ॥ कुर्वन्विप्रस्तुमोहेननरकेपतातिध्रुवम् ॥ १४ ॥ रुद्राक्षंधारयेन्मूर्ध्निकंठेसूत्रेकरेऽथवा ॥ सुवर्णमणिसंभिन्नंशुद्धंनान्यैर्धृतंशिवम् ॥ १५ ॥ नाशुचिर्धारयेदक्षंसदाभक्त्यैवधारयेत् ॥ रुद्राक्षतरुसंभूतवातोद्धूततृणान्यपि॥१६॥पुण्यलोकंगमिष्यंतिपुनरावृत्तिदुर्लभम्॥ रुद्राक्षंधारयन्पापंकुर्वन्नपिचमानवः ॥ १७ ॥ सर्वतरतिपाप्मानंजाबालश्रुतिराहहि ॥ पशवोहिचरुद्राक्षधारणाद्यांतिरुद्रताम् ॥१८॥ किमुयेधारयंतिस्मनरारुद्राक्षमालिकाम् ॥ रुद्राक्षःशिरसाह्येकोधार्योरुद्रपरैःसदा ॥१९॥ ध्वंसनंसर्वदुःखानांसर्वपापविमोचनम्॥व्याहरंतिचनामानियेशंभोःपरमात्मनः ॥ ॥ २० ॥ रुद्राक्षालंकृतायेचतेवैभागवतोत्तमाः ॥ रुद्राक्षधारणंकार्यंसर्वश्रेयोर्थिभिर्नृभिः ॥ २१ ॥ कर्णपाशेशिखायांचकंठेहस्तेतथोदरे ॥ महादेवश्चविष्णुश्चब्रह्मातेषांविभूतयः ॥ २२ ॥ देवाश्चान्येतथाभक्त्याखलुरुद्राक्षधारिणः ॥ गोत्रर्षयश्चसर्वेषांकूटस्थामूलरूपिणः ॥ २३ ॥ तेषांवंशप्रसूताश्चमुनयःसकलाअपि ॥ श्रौतधर्मपराःशुद्धाःखलुरुद्राक्षधारिणः ॥ २४ ॥ श्रद्धानजायतेसाक्षाद्वेदसिद्धेविमुक्तिदे ॥ बहूनांजन्मनामंतेमहादेवप्रसादतः ॥ २५ ॥ रुद्राक्षधारणेवांछास्वभावादेवजायते ॥ रुद्राक्षस्यतुमाहात्म्यंजाबालैरादरेणतु ॥ २६ ॥

र्यात्पूर्ववदथवाकारयेद्वागुरुहस्तेनेत्यर्थात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ भागवतोत्तमाः भगवतःशिवस्यभक्तेषूत्तमाः ॥ २१ ॥ २२ ॥ मूलरूपिणोमूलपुरुषाः ॥ २३॥ २४ ॥ विमुक्तिदेरुद्राक्षधारणेइतिशेषः ॥ २५ ॥ जाबालैर्जाबालशाखिभिः ॥ २६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २७ ॥ फलस्येति ॥ रुद्राक्षफलस्येत्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
॥ चतुर्भिरधिकैःपंचाशद्भिःपद्यैरनंतरम् ॥ रुद्राक्षमहिमाऽतीवप्रोच्यतेभक्तिवृद्धये ॥ १ ॥ अन्यमालानांनिंदामाह । महासेनेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

पठ्यतेमुनिभिःसर्वैर्मयापुत्रतथैवच ॥ रुद्राक्षस्यफलंचैवत्रिषुलोकेषुविश्रुतम् ॥२७॥ फलस्यदर्शनेपुण्यंस्पर्शात्कोटिगुणंभवेत् ॥ शतकोटिगुणंपुण्यंधारणाल्लभतेनरः ॥ २८ ॥ लक्षकोटिसहस्राणिलक्षकोटिशतानिच ॥ जपाच्चलभतेनित्यंनात्रकार्याविचारणा ॥ २९ ॥ हस्तेचोरसिकंठेचकर्णयोर्मस्तकेतथा ॥ रुद्राक्षंधारयेद्यस्तुसरुद्रोनात्रसंशयः ॥ ३० ॥ अवध्यःसर्वभूतानांरुद्रवद्विचरेद्भुवि ॥ सुराणामसुराणांचवंदनीयोयथाशिवः ॥ ३१ ॥ रुद्राक्षधारीसततंवंदनीयस्तथानरैः ॥ उच्छिष्टोवाविकर्मस्थोयुक्तोवासर्वपातकैः ॥ ३२ ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योरुद्राक्षस्यतुधारणात् ॥कंठेरुद्राक्षमाबध्यश्चापिवाम्रियतेयदि ॥ ३३ ॥ सोपिमुक्तिमवाप्नोतिकिंपुनर्मानुषोऽपिसः ॥ जपध्यानविहीनोपिरुद्राक्षंयदिधारयेत् ॥ ३४ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसयातिपरमांगतिम्॥ एकंवापिहिरुद्राक्षंकृत्वायत्नेनधारयेत् ॥ ३५ ॥ एकविंशतिमुद्धृत्यरुद्रलोकेमहीयते ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिरुद्राक्षस्यपुनर्विधिम् ॥ ३६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ ईश्वरउवाच ॥ महासेनकुशग्रंथिपुत्राजीवादयःपरे॥रुद्राक्षस्यतुनैकोऽपिकलामर्हतिषोडशीम् ॥ १ ॥ पुरुषाणांयथाविष्णुर्ग्रहाणांचयथारविः ॥ नदीनांतुयथागंगामुनीनांकश्यपोयथा ॥ २ ॥ उच्चैःश्रवायथाश्वानांदेवानामीश्वरोयथा ॥ देवीनांतुयथागौरीतद्वच्छ्रेष्ठमिदंभवेत् ॥ ३ ॥ नातःपरतरंस्तोत्रंनातःपरतरंव्रतम् ॥ अक्षय्येषुचदानेषुरुद्राक्षस्तुविशिष्यते॥४॥शिवभक्तायशांतायदद्याद्रुद्राक्षमुत्तमम् ॥ तस्यपुण्यफलस्यांतंनचाहंवक्तुमुत्सहे ॥ ५ ॥ धृतरुद्राक्षकंठाययस्त्वन्नंसंप्रयच्छति ॥ त्रिःसप्तकुलमुद्धृत्यरुद्रलोकंसगच्छति ॥ ६ ॥ यस्यभालेविभूतिर्ननांगेरुद्राक्षधारणम् ॥ नशंभोर्भवनेपूजासविप्रःश्वपचाधमः॥७॥खादन्मांसंपिबन्मद्यंसंगच्छन्नंत्यजानपि ॥ पातकेभ्योविमुच्येतरुद्राक्षेशिरसिस्थिते ॥ ८ ॥ सर्वयज्ञतपोदानवेदाभ्यासैश्चयत्फलम् ॥ तत्फलंलभतेसद्योरुद्राक्षस्यतुधारणात्॥९॥वेदैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यंपुराणपठनेनच॥यत्तीर्थसेवनेनैवसर्वविद्यादिभिस्तथा ॥१०॥ तत्पुण्यंलभतेसद्योरुद्राक्षस्यतुधारणात्॥प्रयाणकालेरुद्राक्षंबंधयित्वाम्रियेद्यदि॥११॥सरुद्रत्वमवाप्नोतिपुनर्जन्मनविद्यते ॥ रुद्राक्षंधारयेत्कंठेबाह्वोर्वाम्रियतेयदि ॥ १२ ॥ कुलैकविंशमुत्तार्यरुद्रलोकेवसेन्नरः ॥ ब्राह्मणोवापिचांडालोनिर्गुणःसगुणोपिच ॥ १३ ॥ भस्मरुद्राक्षधारीयःसदेवत्वंशिवंव्रजेत् ॥ शुचिर्वाप्यशुचिर्वापितथाऽभक्ष्यस्यभक्षकः ॥ १४ ॥ म्लेच्छोवाप्यथचांडालोयुतोवासर्वपातकैः ॥ रुद्राक्षधारणादेवसरुद्रोनात्रसंशयः ॥ १५ ॥ शिरसाधारितेकोटिःकर्णयोर्दशकोटयः ॥ शतकोटिर्गलेबद्धोमूर्ध्निकोटिसहस्रकम् ॥ १६ ॥
॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ १७ ॥ १८ ॥ भक्तिवर्जितःसोऽपीत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

अयुतंचोपवीतेतुलक्षकोटिर्भुजेस्थिते ॥ मणिबंधेतुरुद्राक्षोमोक्षसाधनकःपरः ॥१७॥ रुद्राक्षधारकोभूत्वायत्किंचित्कर्मवैदिकम् ॥ कुर्वन्विप्रःसदाभक्त्या महदाप्नोतितत्फलम् ॥ १८ ॥ रुद्राक्षमालिकांकंठेधारयेद्भक्तिवर्जितः ॥ पापकर्मातुयोनित्यंसमुक्तःसर्वबंधनात् ॥१९॥ रुद्राक्षार्पितचेतोयोरुद्राक्षस्तेन वैधृतः ॥ असौमाहेश्वरोलोकेनमस्यःसतुलिंगवत् ॥ २० ॥ अविद्योवासविद्योवारुद्राक्षस्यतुधारणात् ॥ शिवलोकंप्रपद्येतकीकटेगर्दभोयथा ॥ २१ ॥ ॥ स्कंदउवाच ॥ रुद्राक्षान्संदधेदेवगर्दभःकेनहेतुना॥कीकटेकेनवादत्तस्तद्ब्रूहिपरमेश्वर ॥२२॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुपुत्रपुरावृत्तंगर्दभोविंध्यपर्वते॥ धत्तेरुद्राक्षभारंतुवाहितःपथिकेनतु ॥ २३ ॥ श्रांतोऽसमर्थस्तद्भारंवोढुंपतितवान्भुवि ॥ प्राणैस्त्यक्तस्त्रिणेत्रस्तुशूलपाणिर्महेश्वरः ॥ २४ ॥ मत्प्रसादान्म हासेनमदंतिकमुपागतः ॥ यावद्भक्तस्यसंख्यानंरुद्राक्षाणांसुदुर्लभम् ॥ २५ ॥ तावद्युगसहस्राणिशिवलोकेमहीयते ॥ स्वशिष्येभ्यस्तुवक्तव्यंनाशिष्ये भ्यःकदाचन॥२६॥अभक्तेभ्योपिमूर्खेभ्यःकदाचिन्नप्रकाशयेत्॥अभक्तोवास्तुभक्तोवानीचोनीचतरोऽपिवा ॥२७॥रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तुमुच्यतेसर्वपातकैः रुद्राक्षधारणंपुण्यंकेनवासदृशंभवेत् ॥ २८ ॥ महाव्रतमिदंप्राहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः ॥ सहस्रंधारयेद्यस्तुरुद्राक्षाणांधृतव्रतः ॥ २९ ॥ तंनमंतिसुराःसर्वेय थारुद्रस्तथैवसः ॥ अभावेतुसहस्रस्यबाह्वोःषोडशषोडश ॥ ३० ॥ एकंशिखायांकरयोर्द्वादशद्वादशैवतु॥द्वात्रिंशत्कंठदेशेतुचत्वारिंशच्चमस्तके॥३१॥ एकैकंकर्णयोःषट्षट्वक्षस्यष्टोत्तरंशतम् ॥ योधारयतिरुद्राक्षान्रुद्रवत्सतुपूज्यते ॥३२ ॥ मुक्ताप्रवालस्फटिकरौप्यवैडूर्यकांचनैः ॥ समेतान्धारयेद्यस्तु रुद्राक्षान्सशिवोभवेत् ॥ ३३ ॥ केवलानपिरुद्राक्षान्यद्यालस्याद्बिभर्तियः ॥ तंनस्पृशंतिपापानितमांसीवविभावसुम् ॥ ३४ ॥ रुद्राक्षमालयामंत्रोजप्तो ऽनंतफलप्रदः ॥ यस्यांगेनास्तिरुद्राक्षएकोऽपिबहुपुण्यदः॥३५॥तस्यजन्मनिरर्थस्यात्रिपुंड्ररहितंयथा ॥ रुद्राक्षंमस्तकेधृत्वाशिरःस्नानंकरोतियः॥३६॥ गंगास्नानफलंतस्यजायतेनात्रसंशयः ॥ एकवक्त्रःपंचवक्त्रएकादशमुखाःपरे॥३७॥चतुर्दशमुखाःकेचिद्रुद्राक्षालोकपूजिताः॥भक्त्यासंपूज्यतेनित्यंरुद्राक्षः शंकरात्मकः ॥ ३८ ॥ दरिद्रंवापिपुरुषंराजानंकुरुतेभुवि ॥ अत्रतेकथयिष्यामिपुराणंमतमुत्तमम् ॥ ३९ ॥ कोसलेषुद्विजःकश्चिद्गिरिनाथइतिश्रुतः ॥ महाधनीचधर्मात्मावेदवेदांगपारगः ॥४०॥ यज्ञकृद्दीक्षितस्तस्यतनयःसुंदराकृतिः ॥ नाम्नागुणनिधिःख्यातस्तरुणःकामसुंदरः॥४१॥गुरोःसुधिषणस्या थपत्नींमुक्तावलीमथ ॥ मोहयामासरूपेणयौवनेनमदेनच ॥ ४२ ॥ संगतस्तुतयासार्धंकंचित्कालंततोभिया ॥विषंददौचगुरवेयेभेपश्चात्तुनिर्भयः॥४३॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सुधिषणनाम्नोगुरोःमुक्तावलीनाम्नीपत्नी ॥ ४२ ॥ पश्चाद्गुरौमृतेसतियेभेमैथुनंकृतवान् ॥ ४३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तद्विषात्तस्माद्विषात् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ अर्धाधिकैकचत्वारिंशत्पद्यैरथवर्णनम् ॥ एकवक्त्रादिकाक्षाणांक्रियतेभक्तिवृद्धये ॥ १ ॥ षड्वक्त्रःस्कंदः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ तज्जपात्तस्यमालयाजपादित्यर्थः ॥ ५ ॥ भद्राक्षधारणादिति ।

यदामातापिताकर्मकिंचिज्जानातितत्क्षणे ॥ मातरंपितरंचापिमारयामासतद्विषात् ॥ ४४ ॥ नानाविलासभोगैश्चजातेद्रव्यव्ययेततः ॥ ब्राह्मणानांगृहेचौर्यंचकारसतदाखलः ॥ ४५ ॥ सुरापानमदोन्मत्तस्तदाज्ञातिबहिष्कृतः ॥ ग्रामान्निष्कासितःसर्वैस्तदासोऽभूद्वनेचरः ॥ ४६ ॥ मुक्तावल्यातयासार्धंजगामगहनंवनम् ॥ मार्गेस्थितोद्रव्यलोभाज्जघानब्राह्मणान्बहून् ॥ ४७ ॥ एवंबहुगतेकालेममारसतदाऽधमः ॥ नेतुंतंयमदूताश्चसमाजग्मुःसहस्रशः ॥ ४८॥ शिवलोकाच्छिवगणास्तथैवचसमागताः ॥ तयोःपरस्परंवादोबभूवगिरिजासुत ॥ ४९ ॥ यमदूतास्तदाप्रोचुःपुण्यमस्यकिमस्तिहि ॥ ब्रुवंतुसेवकाःशंभोर्यद्येनंनेतुमिच्छथ ॥५०॥ शिवदूतास्तदाप्रोचुरयंयस्मिन्स्थलेमृतः ॥ दशहस्तादधोभूमेरुद्राक्षस्तत्रचास्तितिहि ॥५१॥ तत्प्रभावेनहेदूतानेष्यामःशिवसन्निधिम् ॥ ततोविमानमारुह्यदिव्यरूपधरोद्विजः ॥ ५२ ॥ गतोगुणनिधिर्दूतैःसहितःशंकरालयम् ॥ इतिरुद्राक्षमाहात्म्यंकथितंतवसुव्रत ॥५३॥ एवंरुद्राक्षमहिमासमासात्कथितोमया ॥ सर्वपापक्षयकरोमहापुण्यफलप्रदः ॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ श्रीनारायणउवाच ॥ एवंनारदषड्वक्त्रोगिरिशेनविबोधितः ॥ रुद्राक्षमहिमानंचज्ञात्वाऽसीत्सकृतार्थकः ॥ १ ॥ इत्थंभूतानुभावोयंरुद्राक्षोवर्णितोमया ॥ सदाचारप्रसंगेनशृणुचान्यत्समाहितः ॥ २ ॥ यथारुद्राक्षमहिमावर्णितोऽनंतपुण्यदः ॥ लक्षणंमंत्रविन्यासंतथाऽहंवर्णयामिते ॥ ३ ॥ लक्षंतुदर्शनात्पुण्यंकोटिस्तत्स्पर्शनाद्भवेत् ॥ तस्यकोटिगुणंपुण्यंलभतेधारणान्नरः ॥ ४ ॥ लक्षकोटिसहस्राणिलक्षकोटिशतानिच ॥ तज्जपाल्लभतेपुण्यंनरोरुद्राक्षधारणात् ॥ ५ ॥ रुद्राक्षाणांतुभद्राक्षधारणात्स्यान्महाफलम् ॥ धात्रीफलप्रमाणंयच्छ्रेष्ठमेतदुदाहृतम् ॥६॥ बदरीफलमात्रंतुप्रोच्यतेमध्यमंबुधैः ॥ अधमंचणमात्रंस्यात्प्रतिज्ञैषामयोदिता ॥ ७ ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चेतिशिवाज्ञया ॥ वृक्षाजाताःपृथिव्यांतुतज्जातीयाःशुभाक्षकाः ॥ ८ ॥ श्वेतास्तुब्राह्मणाज्ञेयाःक्षत्रियारक्तवर्णकाः ॥ पीतावैश्यास्तुविज्ञेयाःकृष्णाःशूद्राःप्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥ ब्राह्मणोबिभृयाच्छ्वेतान्रक्तान्राजातुधारयेत् ॥ पीतान्वैश्यस्तुबिभृयात्कृष्णाञ्छूद्रस्तुधारयेत् ॥ १० ॥ समाःस्निग्धादृढास्तद्वत्कंटकैःसंयुताःशुभाः ॥ कृमिदष्टाञ्छिन्नभिन्नान्कंटकैरहितांस्तथा ॥ ११ ॥ व्रणयुक्तानावृतांश्चषड्रुद्राक्षांस्तुवर्जयेत् ॥ स्वयमेवकृतद्वारोरुद्राक्षःस्यादिहोत्तमः ॥ १२ ॥

ल्यब्लोपेपंचमी ॥ भद्राक्षधारणमपेक्ष्यरुद्राक्षाणांमहाफलंभवतीत्यर्थः ॥ एतेनरुद्राक्षाभावेभद्राक्षधारणेऽनुमतिर्दर्शिता ॥ उत्तमादिभेदेनरुद्राक्षभेदमाह । धात्रीति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ १० ॥ छिन्नान्खंडितान्भिन्नान्विदीर्णान् ॥ ११ ॥ १२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कृतंद्वारमितिशेषः ॥ १३ ॥ सर्वगात्रेरुद्राक्षाणांसर्वावयवेषु ॥ समानातिविलक्षणाच ॥ निघर्षःसुवर्णपरीक्षापाषाणस्तत्रयाहेमलेखातत्समानासुवर्णलेखायत्रदृश्यतेइत्यर्थः ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ अघोरबीजमंत्रेण ॥ सच । हकारसकारौकारात्मकः ॥ वामदेवेनेति ॥ तेचमंत्राःसद्योजातादयःपंचब्रह्ममंत्राश्चतएव ॥ अंगैरंगमंत्रैः

यत्तुपौरुषयत्नेनकृतंतन्मध्यमंभवेत् ॥ समान्स्निग्धान्दृढान्वृत्तान्क्षौमसूत्रेणधारयेत् ॥ १३ ॥ सर्वगात्रेषुसाम्येनसमानाऽतिविलक्षणा ॥ निघर्षेहेमलेखा भायत्रलेखाप्रदृश्यते ॥ १४ ॥ तदक्षमुत्तमंविद्यात्सधार्यःशिवपूजकैः ॥ शिखायामेकरुद्राक्षंत्रिंशद्वैशिरसावहेत् ॥ १५॥ षट्त्रिंशच्चगलेधार्यावाह्वोःषोड शषोडश ॥ मणिबंधेद्वादशाक्षान्स्कंधेपंचाशतंभवेत् ॥ १६ ॥ अष्टोत्तरशतैर्मालोपवीतंचप्रकल्पयेत् ॥ द्विसरंत्रिसरंवापिबिभृयात्कंठदेशतः॥१७॥कुंड लेमुकुटेचैवकर्णिकाहारकेषुच ॥ केयूरेकटकेचैवकुक्षिवंशेतथैवच ॥१८॥ सुप्तेपीतेसर्वकालंरुद्राक्षंधारयेन्नरः॥त्रिशतंत्वधमंपंचशतंमध्यममुच्यते ॥१९॥ सहस्रमुत्तमंप्रोक्तंचैवंभेदेनधारयेत् ॥ शिरसीशानमंत्रेणकर्णेतत्पुरुषेणच ॥ २० ॥ अघोरेणललाटेतुतेनैवहृदयेऽपिच ॥ अघोरबीजमंत्रेणकरयोर्धारयेत्पु नः ॥ २१॥ पंचाशदक्षग्रथितांवामदेवेनचोदरे ॥ पंचब्रह्मभिरंगैश्चाप्येवंरुद्राक्षधारणम्॥२२॥ग्रथितान्मूलमंत्रेणसर्वानक्षांस्तुधारयेत्॥एकवक्त्रस्तुरुद्राक्षः परतत्त्वप्रकाशकः॥२३॥परतत्त्वधारणाच्चजायतेतत्प्रकाशनम्॥द्विवक्त्रस्तुमुनिश्रेष्ठअर्धनारीश्वरोभवेत्॥२४॥धारणादर्धनारीशःप्रीयतेतस्यनित्यशः ॥ त्रिवक्त्रस्त्वनलःसाक्षात्स्त्रीहत्यांदहतिक्षणात् ॥ २५ ॥ त्रिमुखश्चैवरुद्राक्षोप्यग्नित्रयस्वरूपकः ॥ तद्धारणाच्चहुतभुक्तस्यतुष्यतिनित्यशः॥२६॥चतुर्मुख स्तुरुद्राक्षःपितामहस्वरूपकः ॥ तद्धारणान्महाश्रीमान्महदारोग्यमुत्तमम् ॥ २७ ॥ महतीज्ञानसंपत्तिःशुद्धयेधारयेन्नरः ॥ पंचमुखस्तुरुद्राक्षःपंचब्रह्मस्व रूपकः ॥ २८ ॥ तस्यधारणमात्रेणसंतुष्यतिमहेश्वरः ॥ षड्वक्त्रश्चैवरुद्राक्षःकार्तिकेयाधिदैवतः ॥ २९ ॥ विनायकंचापिदेवंप्रवदंतिमनीषिणः ॥ सप्तवक्त्र स्तुरुद्राक्षःसप्तमात्राधिदैवतः ॥ ३० ॥ सप्ताश्वदैवतश्चैवमुनिसप्तकदैवतः ॥ तद्धारणान्महाश्रीःस्यान्महदारोग्यमुत्तमम्॥३१ ॥महतीज्ञानसंपत्तिःशुचिर्वै धारयेन्नरः ॥ अष्टवक्त्रस्तुरुद्राक्षोप्यष्टमात्राधिदैवतः ॥३२ ॥ वस्वष्टकप्रीतिकरोगंगाप्रीतिकरःशुभः ॥ तद्धारणादिमेप्रीताभवेयुःसत्यवादिनः॥३३॥नव वक्त्रस्तुरुद्राक्षोयमदेवउदाहृतः ॥ तद्धारणाद्यमभयंनभवत्येवसर्वथा॥३४॥दशवक्त्रस्तुरुद्राक्षोदशाशादैवतःस्मृतः॥दशाशाप्रीतिजनकोधारणेनात्रसंश यः ॥ ३५ ॥ एकादशमुखस्त्वक्षोरुद्रैकादशदैवतः ॥ तमिंद्रदैवतंचाहुःसदासौख्यविवर्धनम्॥३६॥रुद्राक्षोद्वादशमुखोमहाविष्णुस्वरूपकः॥ द्वादशादि त्यदैवश्चबिभर्त्येवहितत्परः ॥ ३७ ॥ त्रयोदशमुखश्चाक्षःकामदःसिद्धिदःशुभः ॥ तस्यधारणमात्रेणकामदेवःप्रसीदति ॥ ३८ ॥

॥ तेचमंत्राः शिवषडंगेषुप्रसिद्धाः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ अष्टमातरोब्राह्म्याद्याः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३९ ॥ रुद्राक्षधारणकर्तामद्यादिपदार्थान्नभक्षयेदित्याह । मद्यंमांसमिति ॥ शिग्रुशब्देनशोभांजनःभाषायांशेवा इतिप्रसिद्धः ॥ तथाचकोशः शोभांजनेशिग्रुतीक्ष्णगंधकाक्षीवमोचका इति ॥ विड्वराहोग्रामसूकरइतिमिताक्षरा ॥ ४० ॥ नित्यंरुद्राक्षधारणाभावेऽपिएतेषुदिनेषुनियतंधारयेदित्याह । ग्रहणेविषुवेचैवेति ॥ ४१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ एकविंशतिपद्यैस्तुभूतशुद्धिःसमुच्यते ॥ ययाविनानाधिकारोजपपूजादिकर्मणि ॥ १ ॥ प्रथमतोवस्त्रपरिधानानंतरमासनेउपविश्यभस्मधारणंकार्यंततोरुद्राक्ष धारणंकार्यंततोभूतशुद्धिःकर्तव्येत्याह । भूतशुद्धिप्रकारमिति ॥ मूलाधारादिति।कुंभकप्राणायामेनेत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ जीवब्रह्मसंयोजनानंतरंकृत्यमाह। पादादिमिति ॥ सवज्रकामिति ॥ कोणचतुष्टयेऽपित्रिषष्ट्यंकयुक्तामित्यर्थः ॥ वज्रस्यत्रिषष्ट्यंकाकारत्वात् ॥ तस्यमध्येलंबीजंध्यायेदेवमवनिमंडलंपृथ्वीमंडलंध्यायेदित्यर्थः ॥ ३ ॥ आनाभिनाभिपर्यंतंअर्धचंद्रस्याग्र

चतुर्दशमुखश्चाक्षोरुद्रनेत्रसमुद्भवः ॥ सर्वव्याधिहरश्चैवसर्वारोग्यप्रदायकः ॥ ३९ ॥ मद्यंमांसंचलशुनंपलांडुंशिग्रुमेवच ॥ श्लेष्मातकंविड्वराहंभक्षणेवर्ज येत्ततः ॥ ४० ॥ ग्रहणेविषुवेचैवसंक्रमेअयनेतथा ॥ दर्शेचपौर्णमासेचपुण्येषुदिवसेष्वपि ॥ ४१ ॥ रुद्राक्षधारणात्सद्यःसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ॥ इतिश्री देवीभागवतेमहापुराणेएकदशस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ भूतशुद्धिप्रकारंचकथयामिमहामुने ॥ मूलाधारात्समुत्था यकुंडलींपरदेवताम् ॥ १ ॥ सुषुम्नामार्गमाश्रित्यब्रह्मरंध्रगतांस्मरेत् ॥ जीवंब्रह्मणिसंयोज्यहंसमंत्रेणसाधकः ॥ २ ॥ पादादिजानुपर्यंतंचतुष्कोणंसवज्र कम् ॥ लंबीजाढ्यंस्वर्णवर्णंस्मरेदवनिमंडलम् ॥ ३ ॥ जान्वाद्यानाभिचंद्रार्धनिभंपद्मद्वयांकितम् ॥ वंबीजयुक्तंश्वेताभमंभसोमंडलंस्मरेत् ॥४॥ नाभेर्हृ दयपर्यन्तंत्रिकोणंस्वस्तिकान्वितम् ॥ रंबीजेनयुतंरक्तंस्मरेत्पावकमंडलम् ॥ ५ ॥ हृदोभ्रूमध्यपर्यंतंवृत्तंषड्बिंदुलांछितम् ॥ यंबीजयुक्तंधूम्राभंनभस्वन्मं डलंस्मरेत् ॥ ६ ॥ आब्रह्मरंध्रंभ्रूमध्याद्वृत्तंस्वच्छंमनोहरम् ॥ हंबीजयुक्तमाकाशमंडलंचविचिंतयेत् ॥ ७ ॥ एवंभूतानिसंचिंत्यप्रत्येकंसंविलापयेत् ॥ भुवंजलेजलंवह्नौवह्निंवायौनभस्यमुम् ॥ ८ ॥ विलाप्यखमहंकारेमहत्तत्त्वेप्यहंकृतिम् ॥ महांतंप्रकृतौमायामात्मनिप्रविलापयेत् ॥ ९ ॥ शुद्धसंविन्म योभूत्वाचिंतयेत्पापपूरुषम् ॥ वामकुक्षिस्थितंकृष्णमंगुष्ठपरिमाणकम् ॥ १० ॥ ब्रह्महत्याशिरोयुक्तंकनकस्तेयबाहुकम् ॥ मदिरापानहृदयंगुरुतल्पक टीयुतम् ॥ ११ ॥ तत्संसर्गिपदद्वंद्वमुपपातकमस्तकम् ॥ खड्गचर्मधरंकृष्णंमधोवक्त्रंसुदुःसहम् ॥ १२ ॥ वायुबीजंस्मरन्वायुंसंपूर्यैनंविशोषयेत् ॥ स्वशरीरयुतंमंत्रीवह्निबीजेननिर्दहेत् ॥ १३ ॥

द्वयेपद्मद्वयंध्यायेदित्यर्थः ॥ वंबीजंमध्ये ॥ ४ ॥ कोणत्रयाग्रेप्रसिद्धस्वस्तिकान्वितम् ॥ ५ ॥ षड्बिंदुलांछितमिति ॥ समभागेवृत्तस्पर्शिनःषड्बिंदवोध्येयाइत्यर्थः ॥ नभस्वन्मंडलं वायुमंडलंमध्येयंबीजयुक्तम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ भुवंजलेइति ॥ पृथ्वीमंडलंजलमंडलेविलापयेदित्यर्थः ॥ विलापनंनामकार्यस्यकारणरूपतापादनम् ॥ एवंपूर्वपूर्वकार्यस्योत्तरोत्तरकारणेवि लापोब्रह्मपर्यंतंकार्यः ॥ अमुंवायुंनभसिविलापयेदित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ भूतलयानंतरंस्वशरीरेपापपुरुषध्यानमाह । चिंतयेदिति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ वायुबीजंयमितिस्मरंस्तद्री जोद्भूतवायुनापूरकप्राणायामेनदेहंसंपूर्यैनंपापपुरुषंशोषयेतशुष्कंकुर्यादित्यर्थः ॥ पश्चात्स्वशरीरयुतंपापपुरुषंवह्निबीजेनरमितिबीजोच्चारणेनतद्रुत्थाग्निनादहेदित्यर्थः ॥ १३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कुंभकेपरिजप्तेनवह्निबीजेनेतिपूर्वेणान्वयः ॥ ततोवायुबीजमुच्चार्यपापनरोद्भवंपापपुरुषोद्भवंकेवलंभस्मबहिःस्वशरीराद्बहिःसमुत्सार्यरेचयेत्त्यजेदित्यर्थः ॥ इयंक्रियारेचकप्राणायामेनकर्तव्येत्यर्थः ॥ १४ ॥ अनंतरंस्वशरीरोद्भवंयद्भस्मतत्सुधाबीजेनामृतबीजेन वमित्युच्चारणेन तदुत्थामृतेनसंप्लावयेद्यथापिंडोभवति ॥ पश्चाद्भूबीजेनलमितिमंत्रेणतद्भस्मद्रवीभूतंघनीभूतंकुर्यादित्यर्थः ॥ तच्चकनकांडवद्भावयेत् ॥ १५ ॥ पुनर्विहायसआकाशस्यबीजंहमित्युच्चार्यतंपिंडंमुकुराकारंभावयेत् ॥ ततःकठिनपिंडस्यमूर्धादिनखांताअवयवामनसारचनीयाइत्यर्थः॥१६॥ पुनर्येनक्रमेणपंचभूतानांसंहारोब्रह्मणिकृतस्तेनैवक्रमेणसृष्टिमार्गेणाचितोब्रह्मणःसकाशादुत्पाद्ययथापूर्वस्थानंतानिभूतानिस्थापयेत् ॥ ततःसोहमितिमंत्रेणब्रह्मण्येकीभूतंजीवंस्वहृदयांबुजे आनयेदित्यर्थः ॥ १७ ॥ तत्रप्रकारमाह । कुंडलीति ॥ पूर्वंयथाकुंडलिन्याजीवोब्रह्मणिसंयोजितः सैवकुंडलीतांपरसंगात्परमात्मनःसंगात्सुधामयंजीवंहृदयांभोजेसंस्थाप्यमूलाधारगतां स्मरेदितिजीवानयनप्रकारइत्यर्थः ॥ तत्रप्राणस्थापनंपश्चात्कर्तव्यमित्यनुक्तमपिप्राणशक्तिध्यानकथनादर्थाद्बोध्यम् ॥ तदुक्तम् ॥ भूतशुद्धिंविधायेत्थंप्राणस्थापनमाचरेदिति ॥ तत्रप्रा

कुंभकेपरिजप्तेनततःपापनरोद्भवम् ॥ वहिर्भस्मसमुत्सार्यवायुबीजेनरेचयेत् ॥१४॥ सुधाबीजेनदेहोत्थंभस्मसंप्लावयेत्सुधीः ॥ भूबीजेनघनीकृत्यभस्म तत्कनकांडवत्॥१५॥विशुद्धमुकुराकारंजपन्बीजंविहायसः ॥ मूर्धादिपादपर्यंतान्यंगानिरचयेत्सुधीः ॥ १६ ॥ आकाशादीनिभूतानिपुनरुत्पादयेच्चितः ॥ सोऽहंमंत्रेणचात्मानमानयेद्धृदयांबुजे ॥ १७ ॥ कुंडलीजीवमादायपरसंगात्सुधामयम् ॥ संस्थाप्यहृदयांभोजेमूलाधारगतांस्मरेत् ॥ १८॥ रक्तांभोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढाकराब्जैःशूलंकोदंडमिक्षूद्भवमणिगुणमप्यंकुशंपंचबाणान्॥विभ्राणासृक्कपालंत्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्यादेवी बालार्कवर्णाभवतुसुखकरीप्राणशक्तिःपरानः ॥ १९ ॥ एवंध्यात्वाप्राणशक्तिंपरमात्मस्वरूपिणीम् ॥ विभूतिधारणंकार्यंसर्वाधिकृतिसिद्धये ॥ २०॥ विभूतेर्विस्तरंवक्ष्येधारणेचमहाफलम् ॥ श्रुतिस्मृतिप्रमाणोक्तंभस्मधारणमुत्तमम् ॥ २१ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेष्टमोऽध्यायः ॥ ८॥ ॥ श्रीनारायणउवाच॥इदंशिरोव्रतंचीर्णंविधिवद्यैर्द्विजातिभिः ॥ तेषामेवपरांविद्यांवदेदज्ञानबाधिकाम् ॥ १ ॥ विधिवच्छ्रद्धयासाधैनचीर्णयैःशिरोव्रतम् ॥ श्रौतस्मार्तसमाचारस्तेषामनुपकारकः ॥ २ ॥ शिरोव्रतसमाचारादेवब्रह्मादिदेवताः ॥ देवताअभवन्विद्वन्खलुनान्येनहेतुना ॥ ३ ॥ शिरोव्रतस्यमाहात्म्यंपूर्वैःपूर्वतरंकृतम् ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चदेवताःसकलाअपि ॥ ४ ॥

णप्रतिष्ठामंत्रःस्पष्टएवास्तीतिनात्रालिख्यते ॥ १८ ॥ प्राणशक्तिध्यानमाह । रक्तांभोधिस्थेति ॥ रक्तांभोधिःशोणसमुद्रस्तत्रस्थितःपोतोनौकातस्मिन्नुल्लसितंयदरुणसरोजंतस्मिन्नारूढाम् ॥ असृक्कपालंरक्तपूर्णकपालम् ॥ इक्षूद्भवंकोदंडमिक्षुधनुः ॥ मणिगुणंरत्नमयंपाशम् ॥ षड्हस्ताध्येया॥१९॥ध्यात्वाप्राणस्थापनमाचरेदितिशेषः॥सर्वाधिकृतिसिद्धयेयद्विभूतिधारणंकर्तव्यमित्युक्तंतस्यविधिःसिंहावलोकनन्यायेनाऽधुनाकथ्यतइतिशेषः ॥ २० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ त्र्यधिकैश्चैवचत्वारिंशत्पद्यैरथसादरम् ॥ शिरोव्रतविधानंचयथावदभिधीयते ॥ १ ॥ इदंवक्ष्यमाणम् ॥ विद्यांब्रह्मविद्याम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ सकलाअपिदेवताःशिरोव्रतंकुर्वंतीतिशेषः ॥ तदुक्तंसूतसंहितायाम् ॥ शिवेनाविष्णुनाचैवब्रह्मणावज्रिणातथा॥देवताभिर्धृतभस्मत्रिपुंड्रोद्धूलनात्मनात॥उमादेव्याचलक्ष्म्याचवाचाचान्याभिरास्तिकाः ॥सर्वस्त्रीभिर्धृतंभस्मत्रिपुंड्रोद्धूलनात्मनेति॥बृहज्जाबालेऽपिस्पष्टमेतत् ४॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥५॥ अथर्वणश्रुतेःशिरसिप्रोक्तत्वाच्छिरोव्रतमेतस्यनामेत्यर्थः ॥ ६ ॥ शाखाभेदेष्विति ॥ क्वचिच्छिरोव्रतमितिक्वचित्पाशुपतव्रतमितिक्वचिच्छिवव्रतमितिशाखाभेदेन संज्ञाभेदेप्येकमेव व्रतमिदंसर्वशाखास्वस्तीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ सर्वासुविद्यासुयद्यप्यधिकारीतथाऽपिधर्मवर्जितएवसज्ञेयइतिभावः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ अग्निरित्यादिभिरिति ॥ अग्निरितिभस्म ॥ जल मितिभस्म ॥ स्थलमितिभस्म ॥ वायुरितिभस्म ॥ व्योमेतिभस्म ॥ सर्वैहवाइदंभस्मेतिषड्भिरार्थवणप्रोक्तैर्मंत्रैर्भस्मनासर्वांगोद्धूलनंकुर्यादिदंशिरोव्रतमित्यर्थः ॥ १२ ॥ विद्योदयोब्रह्म विद्योदयः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ब्रह्मविद्यागुरुरिति ॥ ब्रह्मविद्याप्रदाताहिपरमकारुणिकोऽपेक्षितस्तथाचैतादृशशिरोव्रतकर्त्रेऽपियदितांनोपदिशेत्तर्हितस्यविद्याविनष्टास्यान्नप्रचरेदेवे त्यर्थः ॥ एतेनसकृज्जाताऽपिब्रह्मविद्यामोक्षदायिनीभवतीतिश्रुतिप्रावल्याद्विनष्टायामपिकोदोषइतिशंकापरास्ता ॥ ब्रह्मविद्याप्रचारस्याभिलषितत्वात्तस्यचनाशप्रसंगइतिदोषस्यसत्त्वात्

सर्वपातकयुक्तोऽपिमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ शिरोव्रतमिदंयेनचरितंविधिवद्बुध ॥ ५ ॥ शिरोव्रतमिदंनामशिरस्याथर्वणश्रुतेः॥यदुक्तंतद्धिनैवान्यत्तत्तुपुण्येनल भ्यते॥६॥शाखाभेदेषुनामानिव्रतस्यास्यविभेदतः ॥ पठ्यंतेमुनिशार्दूलशाखास्वेकव्रतंहितत् ॥७॥सर्वशाखासुवस्त्वेकंशिवाख्यंसत्यचिद्घनम् ॥ त थातद्विषयंज्ञानंतथैवचाशिरोव्रतम् ॥ ८ ॥ शिरोव्रतविहीनस्तुसर्वधर्मविवर्जितः ॥ अपिसर्वासुविद्यासुसोऽधिकारीनसंशयः॥९॥शिरोव्रतमिदंकार्यंपाप कांतारदाहकम् ॥ साधनंसर्वविद्यानांयतस्तत्सम्यगाचरेत् ॥१०॥ श्रुतिरार्थवणीसूक्ष्मासूक्ष्मार्थस्यप्रकाशिनी॥यदुवाचव्रतंप्रीत्यातन्नित्यंसम्यगाचरेत् ॥११॥ अग्निरित्यादिभिर्मंत्रैःषड्भिःशुद्धेनभस्मना ॥ सर्वांगोद्धूलनंकुर्याच्छिरोव्रतसमाह्वयम् ॥१२॥ एतच्छिरोव्रतंकुर्यात्संध्याकालेषुसादरम् ॥ यावद्वि द्योदयस्तावत्तस्यविद्याखलूत्तमा॥१३॥द्वादशाब्दमथाब्दंवातदर्धंचतदर्धकम् ॥ प्रकुर्याद्द्वादशाहंवासंकल्पेनशिरोव्रतम् ॥१४॥ शिरोव्रतेनयःस्नातस्तं तुनोपदिशेत्तुयः ॥ तस्यविद्याविनष्टास्यान्निर्घृणःसगुरुःखलु॥१५॥ब्रह्मविद्यागुरुःसाक्षान्मुनिःकारुणिकःखलु ॥ यथासर्वेश्वरःश्रीमान्मृदुःकारुणिकःख लु ॥ १६ ॥ जन्मांतरसहस्रेषुनरायेधर्मचारिणः ॥ तेषामेवखलुश्रद्धाजायतेनकदाचन॥१७॥प्रत्युताज्ञानबाहुल्याद्वेषएवविजायते ॥ अतःप्रद्वेषयुक्तस्य नभवेदात्मवेदनम् ॥१८॥ ब्रह्मविद्योपदेशस्यसाक्षादेवाधिकारिणः ॥ तएवनेतरेविद्वन्येतुस्नाताशिरोव्रतैः ॥ १९ ॥ व्रतंपाशुपतंचीर्णंयैर्द्विजैरादरेणतु ॥ तेषामेवोपदेष्टव्यमितिवेदानुशासनम् ॥२०॥ यःपशुस्तत्पशुत्वंचव्रतेनानेनसंत्यजेत् ॥ तान्हत्वानसपापीयान्भवेद्वेदांतनिश्चयः॥२१॥त्रिपुंड्रधारणंप्रोक्तं जाबालैरादरेणतु ॥ त्रियंबकेनमंत्रेणसतारेणशिवेनच ॥ २२ ॥ त्रिपुंड्रंधारयेन्नित्यंगृहस्थाश्रममाश्रितः ॥ ओंकारेणत्रिरुक्तेनसहंसेनत्रिपुंड्रकम् ॥ २३ ॥

॥ १६ ॥ नकदाचनेति ॥ अन्यथाकदाचनकदापिनेत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ तान्पशून्हत्वेत्यर्थः ॥ अतिशयोक्तिपरमिदंवाक्यम् ॥ २१ ॥ जाबालैरादरेणत्विति ॥ ब्राह्मणानामयमेवधर्मोऽयमेवधर्मइत्यादिवाक्यैरित्यर्थः ॥ जाबालश्रुतौस्पष्टमेतत् ॥ गृहस्थस्यभस्मलापनमंत्रानाह । त्रियंबकेनेति ॥ शिवेनपंचाक्षरमंत्रेणवा ॥ तथाजाबालश्रुतिः ॥ स्मरन्नमःशिवायेतिललाटेतुत्रिपुंड्रकमिति ॥ सूतसंहितायांतु ॥ त्रियंबकेनमंत्रेणसतारेणाशिवेनवा ॥ गृहस्थश्चवनस्थश्चधारयेच्चात्रिपुंड्रकामिति ॥ २२ ॥ सहंसेनहंसइतिमंत्रसहितेन ॥ इदमपिजाबालश्रुतौस्पष्टं सूतसहितायांच ॥ २३



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ २४ ॥ मेधावीत्यादिनेति ॥ इदमपिबृहज्जाबालेसूतसंहितायांचस्पष्टम् ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ आदिब्राह्मणभूतेनब्रह्मणेत्यर्थः ॥ २८ ॥ देहगुंठनंदेहोद्धूलनम् ॥ २९ ॥ पंचाक्षर मंत्रेणेत्येतावत्पर्यंतंगृहस्थविषयम् ॥ प्रणवेनेतितुसंन्यासविषयम् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ त्रियायुषंजमदग्नेरितिमंत्रेणेत्यर्थः॥ गौणेनभस्मनेति। अग्निहोत्रजंभस्ममुख्यंतदतिरिक्तंगौणमित्यर्थः॥ अतएवाग्रेवक्ष्यति–गौणंनानाविधंप्रोक्तमिति ॥ तथाचब्रह्मचारिणास्वाग्निजन्येनभस्मनागौणेनत्रिपुंड्रादिकंधार्यमित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ तत्त्वात्सर्वधर्मवरेण्यत्वादित्यर्थः ॥ ३५ ॥ शिरोव्रतविधिमाह । भस्माग्निहोत्रजामिति ॥ विरजाग्निसमुद्भवमग्रेवक्ष्यमाणम् ॥ ३६ ॥ पंचब्रह्ममंत्रैःसद्योजातंप्रपद्यामीत्यादिभिः ॥ ३७ ॥ अग्निरित्यादिमंत्रितम् अग्निरिति

धारयेद्भिक्षुकोनित्यमितिजाबालिकीश्रुतिः ॥ त्रियंबकेनमंत्रेणप्रणवेनशिवेनच ॥ २४ ॥ गृहस्थश्चवनस्थश्चधारयेच्चत्रिपुंड्रकम् ॥ मेधावीत्यादिनावाऽपि ब्रह्मचारीदिनेदिने ॥ २५ ॥ भस्मनासजलेनाऽपिधारयेच्चत्रिपुंड्रकम् ॥ ब्राह्मणोविधिनोत्पन्नस्त्रिपुंड्रंभस्मनैवतु ॥ २६ ॥ ललाटेधारयेन्नित्यंतिर्यग्भस्मावगुंठनम् ॥ "महादेवस्यसंबंधात्तद्धर्मेप्यस्तिसंगतिः ॥ " सम्यक्त्रिपुंड्रधर्मंचब्राह्मणोनित्यमाचरेत् ॥ २७ ॥ आदिब्राह्मणभूतेनत्रिपुंड्रंभस्मनाधृतम् ॥ यतोऽतएवविप्रस्तुत्रिपुंड्रंधारयेत्सदा ॥ २८ ॥ भस्मनावेदसिद्धेनत्रिपुंड्रंदेहगुंठनम् ॥ रुद्रलिंगार्चनंवाऽपिमोहतोऽपिचनत्यजेत् ॥ २९ ॥ त्रियंबकेनमंत्रेणसतारेणतथैवच ॥ पंचाक्षरेणमंत्रेणप्रणवेनतथैवच ॥ ३० ॥ ललाटेहृदयेचैवदोर्द्वंद्वेचमहामुने ॥ त्रिपुंड्रंधारयेन्नित्यंसंन्यासाश्रममाश्रितः ॥ ३१ ॥ त्रियायुषेणमंत्रेणमेधावीत्यादिनाऽथवा ॥ गौणेनभस्मनाधार्यंत्रिपुंड्रंब्रह्मचारिणा ॥ ३२ ॥ नमोंतेनशिवेनैवशूद्रःशुश्रूषणेरतः ॥ उद्धूलनंत्रिपुंड्रंचनित्यंभक्त्यासमाचरेत् ॥ ३३ ॥ अन्येषामपिसर्वेषांविनामंत्रेणसुव्रत ॥ उद्धूलनंत्रिपुंड्रंचकर्तव्यंभक्तितोमुने ॥ ३४ ॥ भूत्यैवोद्धूलनंतिर्यक्त्रिपुंड्रस्यचधारणम् ॥ वरेण्यंसर्वधर्मेभ्यस्तत्त्वान्नित्यंसमाचरेत् ॥ ३५ ॥ भस्माग्निहोत्रजंवाऽथविरजाग्निसमुद्भवम् ॥ आदरेणसमादायशुद्धेपात्रेनिधायतत् ॥३६॥ प्रक्षाल्यपादौहस्तौचद्विराचम्यसमाहितः ॥ गृहीत्वाभस्मतत्पंचब्रह्ममंत्रैःशनैःशनैः ॥ ३७ ॥ प्राणायामत्रयंकृत्वाअग्निरित्यादिमंत्रितम् ॥ तैरेवसप्तभिर्मंत्रैस्त्रिवारमभिमंत्रयेत् ॥ ३८ ॥ ओमापोज्योतिरित्युक्त्वाध्यात्वामंत्रानुदीरयेत् ॥ सितेनभस्मनापूर्वंसमुद्धूल्यशरीरकम् ॥३९॥ विपापोविरजोमर्त्योजायतेनात्रसंशयः ॥ ततोध्यात्वामहाविष्णुंजगन्नाथंजलाधिपम् ॥ ४० ॥ संयोज्यभस्मनातोयमग्निरित्यादिभिःपुनः ॥ विमृज्यसांबंध्यात्वाचसमुद्धूल्योर्ध्वमस्तकम् ॥ ४१ ॥ तेनभावनयाब्रह्मभूतेनसितभस्मना ॥ ललाटवक्षःस्कंधेषुस्वाश्रमोचितमंत्रतः ॥ ४२ ॥

भस्म ॥ जलमितिभस्म ॥ स्थलमितिभस्म ॥ वायुरितिभस्म ॥ व्योमेतिभस्म ॥ सर्वंहवाइदंभस्मेतिषड्भिराथर्वणप्रोक्तमंत्रैरभिमंत्रितामित्यर्थः ॥ एतैर्मंत्रैस्त्रिवारमभिमंत्रयेदित्यर्थः ॥ तैरेवसप्तभिरिति ॥ बृहज्जाबालेतेषामेवषण्मंत्राणांमध्येवायुरितिभस्मेत्यस्याग्रेतेजोभस्मेतिसप्तमोमंत्रःपठ्यते । तेनसहितैरेवसप्तभिर्मंत्रैरित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ध्यात्वेति ॥ महादेवंध्यात्वेत्यर्थः॥ मंत्रानग्निरितिभस्मेत्यादिकान् ॥ ३९ ॥ इत्थंशुष्कभस्मनोद्धूलनंकृत्वापश्चाज्जलमिश्रितेनकर्तव्यामित्याह ॥ ततोध्यात्वेति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ स्वाश्रमोचितमंत्रतः ॥ तेचमंत्रास्त्रियंबकमित्यादयःपूर्वमुक्ताः ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अनुलोमविलोमतःसव्यापसव्येन ॥ अंगुलीद्वयेनवामभागमारभ्यदक्षभागपर्यंतंरेखाद्वयंकृत्वांगुष्ठेनदक्षभागमारभ्यवामभागपर्यंतमेकांरेखांकुर्यादित्यर्थः ॥ ४३ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवत तिलकेएकादशस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ छ ॥ ॥त्रयस्त्रिंशत्पद्यवर्यैर्गौणभस्मानुवर्णनम् ॥ कीर्तायित्वाकथ्यतेताद्विरजानलसंभवम् ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेगौणेनभस्मनेत्युक्तंगौणंभस्मदर्श यति।आग्नेयमिति।गौणगुणमप्याग्नेयंभस्माज्ञानध्वंसकमित्यर्थः ॥ तच्चानेकविधमित्याह । गौणंनानेति ॥१॥ यथाग्निहोत्राग्निजंभस्मतद्वदेवसमानमाहात्म्यंविरजानलजमेकंभस्मास्तीत्यर्थः॥ औपासनसमुत्पन्नंस्मार्तंविवाहाग्निजन्यंगृहस्थानांसमिदग्निसमुद्भवंब्रह्मचारिणाम् ॥ २ ॥ दावानलजन्यमेतानिगौणभस्मानीत्यर्थः ॥ तत्रतत्तद्भस्मनामधिकारिभेदेनविभागमाह॥त्रैवर्णिका नामिति ॥ ३ ॥ उभयभस्माधिकारिणस्त्रैवर्णिकाइत्यर्थः।गृहस्थानांविधुररहितानामित्यर्थः।औपासनसमुत्पन्नंविवाहाग्निजंस्मार्तंभस्माप्यस्तीत्यर्थः ॥ तेनपूर्वोक्ताग्निहोत्रभस्मनोऽपिसंग्रहः

मध्यमानामिकांगुष्ठैरनुलोमविलोमतः ॥ त्रिपुंड्रंधारयेन्नित्यंत्रिकालेष्वपिभक्तितः ॥ ४३ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥छ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ आग्नेयंगौणमज्ञानध्वंसकंज्ञानसाधकम् ॥ गौणंनानाविधंविद्धिब्रह्मन्ब्रह्मविदांवर॥१॥अग्निहोत्राग्निजं तद्वद्विरजानलजंमुने ॥ औपासनसमुत्पन्नंसमिदग्निसमुद्भवम् ॥ २ ॥ पचनाग्निसमुत्पन्नंदावानलसमुद्भवम् ॥ त्रैवर्णिकानांसर्वेषामग्निहोत्रसमुद्भवम् ॥ ३ ॥ विरजानलजंचैवधार्यंभस्ममहामुने ॥ औपासनसमुत्पन्नंगृहस्थानांविशेषतः ॥ ४ ॥ समिदग्निसमुत्पन्नंधार्यंवैब्रह्मचारिणा ॥ शूद्राणांश्रोत्रियागार पचनाग्निसमुद्भवम् ॥ ५ ॥ अन्येषामपिसर्वेषांधार्यंदावानलोद्भवम् ॥ कालश्चित्रापौर्णमासीदेशःस्वीयःपरिग्रहः ॥६॥ क्षेत्रारामाद्यरण्यंवाप्रशस्तःशुभल क्षणः ॥ तत्रपूर्वत्रयोदश्यांसुस्नातःसुकृताग्निकः ॥ ७ ॥ अनुज्ञाप्यस्वमाचार्यंसंपूज्यप्रणिपत्यच ॥ पूजांवैशोषिकींकृत्वाशुक्लांबरधरःस्वयम् ॥ ८ ॥ शुद्ध यज्ञोपवीतीचशुक्लमाल्यानुलेपनः ॥ दर्भासनेसमासीनोदर्भमुष्टिंप्रगृह्यच ॥ ९ ॥ प्राणायामत्रयंकृत्वाप्राङ्मुखोवाप्युदङ्मुखः ॥ ध्यात्वादेवंचदेवींचतद्वि ज्ञापनवर्त्मना ॥ १० ॥ व्रतमेतत्करोमीतिभवेत्संकल्पदीक्षितः ॥ यावच्छरीरपातंवाद्वादशाब्दमथाऽपिवा ॥११॥ तदर्धंवातदर्धंवामासद्वादशकंतुवा ॥ तदर्धंवातदर्धंवामासमेकमथापिवा ॥ १२ ॥ दिनद्वादशकंवाऽपिदिनषट्कमथापिवा ॥ तदर्धंदिनमेकंवाव्रतसंकल्पनावधि ॥ १३ ॥ अग्निमाधायविधि वद्विरजाहोमकारणात् ॥ हुत्वाऽऽज्येनसमिद्भिश्चचरुणाचयथाविधि ॥ १४ ॥

॥ ४ ॥ ५ ॥ विरजानलभस्मनउत्पत्तिमाह । कालश्चित्रेति ॥ चित्रायुक्तापौर्णमासीमुख्यःकालस्तदलाभेऽन्योपिकालोबृहज्जावालेउक्तः ॥ उपोष्यचचतुर्दश्यांशुक्लेकृष्णेऽथवाव्रती ॥ परेद्युःप्रातरुत्थायशुचिर्भूत्वा समाहितइति ॥ स्वीयःपरिग्रहः यस्मिन्देशेस्वयंतिष्ठतिसएवदेशइत्यर्थः ॥ ६ ॥ पूर्वत्रयोदश्यांपौर्णमासीतःपूर्वत्रयोदश्यामित्यर्थः ॥ ७ ॥ वैशेषिकींविशि ष्टामित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ ताद्विज्ञापनवत्मनातयोरनुज्ञाजातेतिमनसातदनुज्ञांगृहीत्वेत्यर्थः ॥ १० ॥ तत्रव्रतकालमनेकविधमाह । यावच्छरीरपातमित्यादि ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ इत्थंसंकल्पंकृत्वापश्चात्स्वगृह्योक्तप्रकारेणाग्निस्थापनंकुर्यादित्याह । अग्निमाधायविधिवदिति ॥ स्वगृह्योक्तप्रकारेणेत्यर्थः ॥ तथाचबृहज्जावालश्रुतिः ॥ स्वगृह्योक्तप्रकारेणप्रतिष्ठाप्या ग्निमीजयोदिति ॥ वस्तुतस्तुतांत्रिकप्रकारस्याग्रेवक्ष्यमाणत्वात्तांत्रिकावीधिरेवात्रग्राह्यइति ॥ हुत्वाज्येनेति ॥ ततोग्निस्थापनानंतरमाज्येनवाचरुणावासमिद्भिर्वाजुहुयादित्यर्थः ॥१४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पूताहात्पुरतइति ॥ अयंचहोमःपूताहात्पौर्णमासीदिनात्पूर्वमेवममतत्त्वशुद्धिर्भवत्वित्युद्देशेनकार्यइत्यर्थः ॥ होमःकेनमंत्रेणकर्तव्यस्तदाह । जुहुयादिति ॥ मूलमंत्रेण ॥ संख्यानुक्तौ गजांतकसहस्रकमितिनियमादष्टोत्तरसहस्रंहोमः ॥ १५ ॥ तद्धोमानंतरंकृत्यमाह । पश्चादिति ॥ पृथ्वीतत्त्वंमेशुध्यतांज्योतिरहंविरजाविपाप्माभूयासंस्वाहेत्याद्यैर्मंत्रैर्वक्ष्यमाणैकैकतत्त्वना मोच्चारसहितैर्होमःकार्यइत्यर्थः ॥ तेषांपृथिव्यादितत्त्वानांनामान्याह । भूतादीति ॥ पंचमहाभूतानि तथापंचतन्मात्राः तथापंचकर्मेंद्रियाणि ॥ १६ ॥ ज्ञानकर्मेति ॥ पंचज्ञानेंद्रिया ण्यपिग्राह्याणीत्यर्थः ॥ १७ ॥ बुद्धिशब्देनाचित्तस्यापिसंग्रहः कर्तव्यः ॥ गुणाःसत्त्वादयः ॥ १८ ॥ १९ ॥ अथेति ॥ अभिमंत्र्यपंचाक्षरमंत्रेण ॥ २० ॥ न्यस्याग्नावित्यत्रतूष्णींकेवलं न्यासएवोक्तः ॥ वृहज्जावालेतु पंचानांत्वेतिमंत्रेणपिंडानांतुचतुर्दश–कुर्यादित्युक्त्वा–षडक्षरस्यमंत्रस्यव्यावृतस्यतथाक्षरैः ॥ स्वाहांतैर्जुहुयात्तत्रवर्णदेवायापिंडकाः ॥ होतव्याःपंचब्र ह्मणिनमोहिरण्यवाहवे–इतिसर्वाहुतीर्हुत्वेत्यनेनहोमएवोक्तः ॥ इत्थंपिंडमग्नौन्यस्यतंचाग्निंसंस्कृतंतस्मिन्दिनेसंरक्ष्यहविष्यभुग्भूयादित्याह । न्यस्येति ॥ कृत्वासर्वमिति ॥ चतुर्दश्यांनि

पूताहात्पुरतोभूयस्तत्त्वानांशुद्धिमुद्दिशन् ॥ जुहुयान्मूलमंत्रेणतैरेवसमिदादिभिः ॥ १५ ॥ तत्त्वान्येतानिमेदेहेशुध्यंतामित्यनुस्मरन् ॥ पश्चाद्भूतादित न्मात्राःपंचकर्मेंद्रियाणिच ॥ १६ ॥ ज्ञानकर्मविभेदेनपंचपंचविभागशः ॥ त्वगादिधातवःसप्तपंचप्राणादिवायवः ॥ १७ ॥ मनोबुद्धिरहंकारोगुणाःप्रकृति पूरुषौ ॥ रागोविद्याकलाचैवनियतिःकालएवच ॥ १८ ॥ मायाचशुद्धविद्याचमहेश्वरसदाशिवौ ॥ शक्तिश्चशिवतत्त्वंचतत्त्वानिक्रमशोविदुः ॥ १९ ॥ मंत्रैस्तुविरजैर्हुत्वाहोताऽसौविरजोभवेत् ॥ अथगोमयमादायपिंडीकृत्याभिमंत्र्यच ॥ २० ॥ न्यस्याग्नौतंचसंरक्ष्यदिनेतस्मिन्हविष्यभुक् ॥ प्रभातेचचतुर्द श्यांकृत्वासर्वंपुरोदितम् ॥ २१ ॥ तस्मिन्दिनेनिराहारःकालशेषंसमापयेत् ॥ प्रातःपर्वणिचाप्येवंकृत्वाहोमावसानतः ॥ २२ ॥ उपसंहृत्यरुद्राग्निंगृहीत्वाभ स्मयत्नतः ॥ ततश्चजटिलोमुंडःशिखैकजटएवच ॥ २३ ॥ भूत्वास्नात्वापुनर्वीतलज्जश्चेत्स्याद्दिगंबरः ॥ अन्यःकाषायवसनश्चर्मचीरांबरोऽथवा ॥ २४ ॥ एकांब रोवल्कलवान्भवेद्दंडीचमेखली ॥ प्रक्षाल्यचरणौपश्चाद्विराचम्याऽऽत्मनस्तनुम् ॥ २५ ॥ संकलीकृत्यतद्भस्मविरजानलसंभवम् ॥ अग्निरित्यादिभिर्मंत्रैः षड्भिराथर्वणैःक्रमात् ॥ २६ ॥ विमृज्यांगानिमूर्धादिचरणांतंचतैःस्पृशेत् ॥ ततस्तेनक्रमेणैवसमुद्धूल्यचभस्मना ॥ २७ ॥ सर्वांगोद्धूलनंकुर्यात्प्रणवेन शिवेनवा ॥ ततश्चपुंड्रंरचयेत्रियायुषसमाह्वयम् ॥ २८ ॥ शिवभावंसमागम्याशिवभावमथाचरेत् ॥ कुर्यात्रिसंध्यमप्येवमेतत्पाशुपतंव्रतम् ॥ २९ ॥

त्यकर्मसमाप्यनंतरंपूर्वोक्तरीत्यापंचाक्षरमंत्रेणहोमंतस्मिन्नेवाग्नौतद्दिनेऽपिकृत्वानिराहारःसन्कालशेषंसमापयेदित्यर्थः ॥ २१ ॥ प्रातःपर्वणीति ॥ तदनंतरंपर्वणिपूर्णिमायांप्रातनित्यकर्म समाप्यपुनस्तथैवपंचाक्षरमंत्रेणहोमंकृत्वाहोमांगंसमाप्याग्निंविसर्जयेदित्यर्थः ॥ २२ ॥ तदाह । उपसंहृत्यरुद्राग्निमिति ॥ रुद्राग्निमित्यनेनशैवमतोक्तोऽयंप्रकारोस्तीतिबोधितम् ॥ तेनवृहज्जावालोक्तप्रकारस्यैतत्प्रकारस्यचभेदेऽपिनाविरोधइति ॥ इत्थंभस्मसंपाद्यजटावान्वामुंडितशिखोवाएकजटोवाभूयादित्याह । ततश्चेति ॥ २३ ॥ इत्थंभूत्वापुनः स्नात्वावीतलज्जस्त्य क्तलज्जश्चेद्दिगंबरोभवेदन्यश्चेत्काषायवसनोभवेदित्याह । भूत्वेति ॥ २४ ॥ दंडधारीमेखलाधारीचभवेदित्याह । भवेद्दंडीति ॥ २५ ॥ संकलीकृत्यैकीकृत्य षड्भिःपूर्वोक्तैर्मंत्रैः ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ त्रियायुषसमाह्वयं यस्यत्रियायुषमितिसंज्ञाऽस्तिशास्त्रेतत्त्रिपुंड्रंवक्ष्यमाणप्रकारेणकुर्यादित्यर्थः ॥ २८ ॥ एतत्पाशुपतमिति ॥ इदंपाशुपतंव्रतंभवतीत्यर्थः ॥ २९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥१०॥ सप्तविंशतिपद्यैस्तुश्लोकार्धेनसमायुतैः ॥ त्रिविधत्वंकथ्यतेऽत्रमाहात्म्यंचविशेषतः ॥१॥ पूर्वाध्यायांते शांतिकंपौष्टिकंभस्मकामदंचत्रिधाभवेदितित्रिविधंभस्मश्रुत्वापृच्छति।त्रिविधत्वामिति ॥ १ ॥ २ ॥ ब्राह्मैमंत्रैः ॥ सद्योजातादिपंचब्रह्ममंत्रैः ॥ ३ ॥ षडंगेनषडक्षरमंत्रषडंगेन ॥ उभयत्रापिभूम्यस्पृष्टमंतरिक्षेएवग्राह्यंगोमयम् ॥ ४ ॥ प्रासादेनहौमितिमंत्रेण ॥ ५ ॥ गोमयग्रहणप्रकारमाह । प्रातरुत्थायेति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ हृदयेननमइतिमंत्रेण ॥ ९॥

भुक्तिमुक्तिप्रदंचैवपशुत्वंविनिवर्तयेत् ॥ तत्पशुत्वंपरित्यज्यकृत्वापाशुपतंव्रतम् ॥ ३० ॥ पूजनीयोमहादेवोलिंगमूर्तिःसदाशिवः ॥ भस्मस्नानंमहापुण्यं सर्वसौख्यकरंपरम् ॥ ३१ ॥ आयुष्यंबलमारोग्यंश्रीपुष्टिवर्धनंयतः ॥ रक्षार्थंमंगलार्थंचसर्वसंपत्समृद्धये ॥ ३२ ॥ भस्मस्निग्धमनुष्याणांमहामारीभयं नच ॥ शांतिकंपौष्टिकंभस्मकामदंचत्रिधाभवेत्॥३३॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नारदउवाच ॥ त्रिविधत्वं कथंचास्यभस्मनःपरिकीर्तितम् ॥ एतत्कथयमेदेवमहत्कौतूहलंमम ॥ १ ॥ नारायणउवाच ॥ त्रिविधत्वंप्रवक्ष्यामिदेवर्षेभस्मनःशृणु ॥ महापापक्षय करंमहाकीर्तिकरंपरम् ॥ २ ॥ गोमयंयोनिसंबद्धंतद्धस्तेनैवगृह्यते ॥ ब्राह्मैर्मंत्रैस्तुसंदग्धंतच्छांतिकादिहोच्यते ॥ ३ ॥ सावधानस्तुगृह्णीयान्नरोवैगोमयंतु यत् ॥ अंतरिक्षेगृहीत्वातत्षडंगेनदहेदतः॥४॥पौष्टिकंतत्समाख्यातंकामदंचततःशृणु ॥ प्रसादेनदहेदेतत्कामदंभस्मकीर्तितम् ॥ ५ ॥ प्रातरुत्थायदे वर्षेभस्मव्रतपरःशुचिः ॥ गवांगोष्ठेषुगत्वातुनमस्कृत्वातुगोकुलम् ॥ ६ ॥ गवांवर्णानुरूपाणांगृह्णीयाद्गोमयंशुभम् ॥ब्राह्मणस्यचगौःश्वेतारक्तागौःक्षत्रिय स्यच ॥ ७ ॥ पीतवर्णातुवैश्यस्यकृष्णाशूद्रस्यकथ्यते ॥ पौर्णमास्याममावास्यामष्टम्यांवाविशुद्धधीः ॥ ८ ॥ प्रासादेनतुमंत्रेणगृहीत्वागोमयंशुभम् ॥ हृदयेनतुमंत्रेणपिंडीकृत्यतुगोमयम् ॥ ९ ॥ रविरश्मिसुसंतप्तंशुचौदेशेमनोहरे ॥ तुषेणवाबुसैर्वापिप्रासादेनतुनिक्षिपेत् ॥ १० ॥ अरण्युद्भवमग्निंवाश्रो त्रियागारजंतुवा ॥ तदग्नौविन्यसेत्तंचशिवबीजेनमंत्रतः ॥ ११ ॥ गृह्णीयादथतत्राग्निकुंडाद्भस्मविचक्षणः ॥ नवपात्रंसमादायप्रसादेनतुनिक्षिपेत् ॥१२॥ केतकीपाटलीतद्वदुशीरंचंदनंतथा ॥ नानासुगंधिद्रव्याणिकाश्मीरप्रभृतीनिच ॥ १३ ॥ निक्षिपेत्तत्रपात्रेतुसद्योमंत्रेणशुद्धधीः ॥ जलस्नानंपुराकृत्वाभ स्मस्नानमतःपरम् ॥ १४ ॥ जलस्नानेत्वशक्तश्चभस्मस्नानंसमाचरेत्॥प्रक्षाल्यपादौहस्तौचशिरश्चेशानमंत्रतः ॥१५॥ सुमुद्धूल्यततःपश्चादाननंतत्पुरुषे णतु ॥ अघोरेणतुहृदयंनाभिंवामेनतत्परम् ॥ १६ ॥

रविरश्मीति ॥ तंगोमयपिंडंरविरश्मिसुसंतप्तंरविकिरणेनशुष्कंजातंतुषेणवाबुसैर्वापिवेष्टितंप्रासादमंत्रेणशुचौदेशेस्थापयेदित्यर्थः ॥ १० ॥ पश्चादग्निस्थापनंकृत्वातंपिंडंपूर्वोक्तरीत्याजुहु यादित्याह । अरण्युद्भवमिति ॥ अरण्युद्भवमग्निंश्रोत्रियागारजंवाग्निमानीयाविधिवत्संस्कृतेतदग्नौशिवबीजेनमंत्रतः ॥ शिवमंत्रेणतंपिंडंपूर्वोक्तरीत्यान्यसेज्जुहुयादित्यर्थः॥ ११ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ईशानमंत्रतः ॥ ईशानःसर्वाग्रविद्यनामितिमंत्रतः ॥ १५ ॥ १६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १७ ॥ १८ ॥ परतःसंध्यायाम् ॥ १९ ॥ न्यासस्थानंत्रिपुंड्रन्यासस्थानम् ॥ २० ॥ संक्षेपेणोक्तेत्रिपुंड्रविधानेअंगुलिनियममाह । पंचांगुलैर्न्यसेन्मूर्ध्नीति ॥ त्र्यंगुलैस्तर्जन्यानामिकामध्यैःपूर्वोक्तैः ॥ शिरोमंत्रेणस्वाहामंत्रेण ॥ अनेककल्पोक्तप्रकाराअत्रकथ्यंतेइतिपूर्वोक्तमंत्रापेक्षयाऽतिरिक्तमंत्रकथनेऽपिनदोषइतिबोध्यम् ॥ २१ ॥ २२ ॥ हृदयेनैवनमइतिमंत्रेणैव॥ शिखामंत्रेणवषण्मंत्रेण ॥ २३ ॥ कवचेनहुमितिमंत्रेण ॥ मध्येनमध्यमांगुल्येत्यर्थः ॥ इतिमंत्रतइति ॥ अयमप्येकःपक्षइत्यर्थः ॥ २४ ॥ स्थानभेदेनस्थितस्यत्रिपुंड्रस्यदेवताआह । ब्रह्माविष्णिवाति ॥ २५ ॥ एकांगुलेनेति ॥ एकांगुलेनयत्रभस्मलापनंमध्यमेनस्पृशेन्नाभ्यामित्यत्रतंत्रेश्वरोदेवइत्यर्थः ॥ २६ ॥ धूलनमुद्धूलनम् ॥ त्यजेन्नकुर्यादित्यर्थः ॥ २७ ॥ किंतु

सद्योमंत्रेणसर्वांगंसमुद्धूल्यविचक्षणः ॥ पूर्ववस्त्रंपरित्यज्यशुद्धवस्त्रंपरिग्रहेत् ॥ १७ ॥ प्रक्षाल्यपादौहस्तौचपश्चादाचमनंचरेत् ॥ भस्मनोद्धूलनाभावेत्रिपुंड्रंतुविधीयते ॥ १८ ॥ मध्याह्नात्प्राग्जलैर्युक्तंपरतोजलवर्जितम् ॥ तर्जन्यनामिकामध्यैस्त्रिपुंड्रंचसमाचरेत् ॥ १९ ॥ मूर्ध्निचैवललाटेचकर्णेकंठेतथैवच॥ हृदयेचैववाहोश्चन्यासस्थानंहिचोच्यते ॥ २० ॥ पंचांगुलैर्न्यसेन्मूर्ध्निप्रासादेनतुमंत्रतः ॥ त्र्यंगुलैर्विन्यसेद्भालेशिरोमंत्रेणदेशिकः ॥२१॥ सव्येनदक्षिणेकर्णेवामदेवेनवामतः ॥ अघोरेणतुकंठेचमध्यांगुल्यास्पृशेद्धृदम्॥२२॥हृदयंहृदयेनैवत्रिभिरंगुलिभिःस्पृशेत्॥विन्यसेद्दक्षिणेबाहौशिखामंत्रेणदेशिकः॥ ॥ २३ ॥ वामबाहौन्यसेद्धीमान्कवचेनत्रियंगुलैः ॥ मध्येनसंस्पृशेन्नाभ्यामीशानइतिमंत्रतः ॥ २४ ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशानास्तिस्रोरेखाइतिस्मृताः ॥ आद्योब्रह्माततोविष्णुस्तदूर्ध्वंतुमहेश्वरः ॥ २५ ॥ एकांगुलेनन्यस्तंयदीश्वरस्तत्रदेवता ॥ शिरोमध्येत्वयंब्रह्माईश्वरस्तुललाटके ॥ २६ ॥ कर्णयोरश्विनौदेवौ गणेशस्तुगलेतथा ॥ क्षत्रियश्चतथावैश्यःशूद्रश्चोद्धूलनंत्यजेत् ॥२७॥ सर्वेषामंत्यजातीनांमंत्रेणरहितंभवेत् ॥ "उदीक्षितंमनुष्याणामपिमंत्रंविनाभवेत्" ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच॥देवर्षेशृणुतत्सर्वंभस्मोद्धूलनजंफलम् ॥ सरहस्यविधानंचसर्वकामफलप्रदम् ॥ १ ॥ कपिलायाःशकृत्स्वच्छंगृहीत्वागगनेपतत् ॥ नक्लिन्नंनापिकठिनंनदुर्गंधंनचोषितम् ॥२॥ उपर्यधःपरित्यज्यगृह्णीयात्पतितंयदि ॥ पिंडीकृत्यशिवाग्न्यादौतत्क्षिपेन्मूलमंत्रितम् ॥ ३ ॥ आदायवाससाच्छाद्यभस्माधानेविनिक्षिपेत् ॥ सुकृतेसुदृढेशुद्धेक्षालितेप्रोक्षितेशुभे ॥ ॥ ४ ॥ विन्यस्यमंत्रीमंत्रेणपात्रेभस्मविनिक्षिपेत् ॥ तैजसंदारवंचाथमृन्मयंचैलमेवच॥५॥अन्यद्वाशोभनंशुद्धंभस्माधारंप्रकल्पयेत्॥क्षौमेचैवातिशुद्धेवा घनवद्भस्मनिक्षिपेत् ॥ ६ ॥ प्रस्थितोभस्मगृह्णीयात्स्वयंचानुचरोपिवा ॥ नचायुक्तकरेदद्यान्नचाशुचितलेक्षिपेत् ॥७॥ नसंस्पृशेत्तुनीचांगैर्नक्षिपेन्नचलंघयेत् ॥ तस्माद्भसितमादायविनियुंजीतमंत्रितम् ॥ ८ ॥ विभूतिधारणविधिःस्मृतिप्रोक्तोमयेरितः ॥ यदीयाचरणेनैवशिवतुल्योनसंशयः ॥ ९ ॥

मंत्रेणरहितंत्रिपुंड्रमेवकुर्यादित्यर्थः ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ ॥ अर्धाधिकैकचत्वारिंशत्पद्यैश्चसविस्तरम् ॥ कल्पांतरोक्तरीत्याऽपिभस्मधारणमुच्यते ॥ १ ॥ १ ॥ गगनेपतदेव नभूमौपतितमित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ आधानेभस्मस्थाने ॥ ४ ॥ भस्मधारणपात्राण्याह । तैजसमिति ॥ सुवर्णताम्रादिनिर्मितम्। चैलंवस्त्रंवा ॥ ५ ॥ क्षुमाअतसीतन्निर्मितेवस्त्रेवा ॥ ६ ॥ प्रस्थितोमार्गेगच्छन्नित्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वैदिकैःसंपादितंभस्मतांत्रिकैर्ग्राह्यं तांत्रिकैःसंपादितंतुवैदिकैर्नग्राह्यमित्याह । शैवैरिति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ अशिवाश्रयामशिवविषयाम् ॥ १८ ॥ कृशानुरहितोऽग्निहोत्ररहितोभूधरोब्राह्मणः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ सृष्टिस्थलमेवाऽऽह । ससर्जेति ॥ भस्मत्रिपुंड्रलापनयोग्यंतिर्यगेवससर्ज

शैवैःसंपादितंभस्मवैदिकैःशिवसन्निधौ ॥ भक्त्यापरमयाग्राह्यंप्रार्थयित्वातुपूजयेत् ॥ १० ॥ तंत्रोक्तवर्त्मनासिद्धंभस्मतांत्रिकपूजकैः ॥ यत्रकुत्रापिदत्तंचे त्तद्ग्राह्यंनैववैदिकैः ॥ ११ ॥ शूद्रैःकापालिकैर्वाथपाखंडैरपरैस्तुतत् ॥ त्रिपुंड्रंधारयेद्भक्त्यामनसाऽपिनलंघयेत् ॥१२॥ श्रुत्याविधीयतेयस्मात्तत्त्यागीप तितोभवेत् ॥ त्रिपुंड्रधारणंभक्त्यातथादेहावगुंठनम् ॥ १३ ॥ द्विजःकुर्याद्विमंत्रेणतत्त्यागीपतितोभवेत् ॥ उद्धूलनंत्रिपुंड्रंचभक्त्यानैवाचरंतिये ॥ १४॥ तेषांनास्तिविनिर्मोक्षःसंसाराज्जन्मकोटिभिः ॥ येनभस्मोक्तमार्गेणधृतंनमुनिपुंगव ॥ १५ ॥ तस्यविद्धिमुनेजन्मनिष्फलंसौकरंयथा ॥ येषांवपुर्मनुष्या णांत्रिपुंड्रेणविनास्थितम् ॥ १६ ॥ श्मशानसदृशंतत्स्यान्नप्रेक्ष्यंपुण्यकृज्जनैः ॥ धिग्भस्मरहितंभालंधिग्ग्राममशिवालयम् ॥१७॥ धिगनीशार्चनंजन्म धिग्विद्यामशिवाश्रयाम् ॥ त्रिपुंड्रंयेविनिंदंतिनिंदंतिशिवमेवते ॥१८॥ धारयंतिचयेभक्त्याधारयंतितमेवते ॥ यथाकृशानुरहितोभूधरोनविराजते ॥१९॥ अशेषसाधनेप्येवंभस्महीनंशिवार्चनम् ॥ उद्धूलनंत्रिपुंड्रंचश्रद्धयानाचरंतिये ॥ २० ॥ तैःपूर्वाचरितंसर्वंविपरीतंभवेदपि ॥ भस्मनावेदमंत्रेणत्रिपुंड्रस्यच धारणम् ॥ २१ ॥ विनावेदोचिताचारंस्मार्तस्यानर्थकारणम् ॥ कृतंस्यादकृतंतेनश्रुतमप्यश्रुतंभवेत् ॥ २२ ॥ अधीतमनधीतंचत्रिपुंड्रंयोनधारयेत्॥ वृ थावेदावृथायज्ञावृथादानंवृथातपः ॥ २३ ॥ वृथाव्रतोपवासेनत्रिपुंड्रंयोनधारयेत् ॥ भस्मधारणकंत्यक्त्वामुक्तिमिच्छतियःपुमाम् ॥ २४॥ विषपानेननि त्यत्वंकुरुतेह्यात्मनोहिसः ॥ स्रष्टासृष्टिच्छलेनाहत्रिपुंड्रस्यचधारणम् ॥ २५ ॥ ससर्जसललाटंहितिर्यगूर्ध्वंनवर्तुलम् ॥ तिर्यग्रेखाःप्रदृश्यंतेललाटेसर्वदेहि नाम् ॥ २६ ॥ तथापिमानवामूर्खानकुर्वंतित्रिपुंड्रकम् ॥ नतद्धचातंनतन्मोक्षंनतज्ज्ञानंनततत्तपः॥२७॥ विनातिर्यक्त्रिपुंड्रंचविप्रेणयदनुष्ठितम् ॥ वेदस्या ध्ययनेशूद्रोनाधिकारीयथाभवेत् ॥ २८ ॥ त्रिपुंड्रेणविनाविप्रोनाधिकारीशिवार्चने ॥ प्राङ्मुखश्चरणौहस्तौप्रक्षाल्याचम्यपूर्ववत् ॥ २९ ॥ प्राणानाय म्यसंकल्प्यभस्मस्नानंसमाचरेत् ॥ आदायभसितंशुद्धमग्निहोत्रसमुद्भवम्॥३०॥ईशानेनतुमंत्रेणस्वमूर्धनिविनिक्षिपेत् ॥ ततआदायतद्भस्ममुखेचपुरुषेण तु ॥ ३१ ॥ अघोराख्येणहृदयेगुह्येवामाह्वयेनच ॥ सद्योजाताभिधानेनभस्मपादद्वयेक्षिपेत् ॥ ३२ ॥ सर्वांगंप्रणवेनैवमंत्रेणोद्धूलनंततः ॥ एतदाग्नेयकं स्नानमुदितंपरमर्षिभिः ॥ ३३ ॥ सर्वकर्मसमृद्ध्यर्थंकुर्यादादाविदंबुधः ॥ ततःप्रक्षाल्यहस्तादीनुपस्पृश्ययथाविधि ॥ ३४ ॥

नोर्ध्वंनवावर्तुलंससर्जेत्यर्थः ॥ तेनचजगत्स्रष्टुर्मनसिसर्वैर्भस्मधारणंकर्तव्यमितिवर्ततइतिभावः ॥ तिर्यग्रेखास्त्रिपुंड्राकाराः ॥ २६ ॥ मोक्षमितिनपुंसकत्वमार्षम् ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ इदंसर्वंबृहज्जाबालेस्पष्टम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ अर्धाधिकैश्चपंचत्रिंशत्पद्यैरथसादरम्॥

तिर्यक्त्रिपुंड्रंविधिनाललाटेहृदयेगले॥पंचभिर्ब्रह्मभिर्वापिकृतेनभसितेनच ॥ ३५ ॥ धृतमेतत्त्रिपुंड्रंस्यात्सर्वकर्मसुपावनम् ॥ शूद्रैरंत्यजहस्तस्थंनधार्यं भस्मचक्वचित् ॥ ३६ ॥ भस्मनासाग्निहोत्रेणलिप्तःकर्मसमाचरेत् ॥ अन्यथासर्वकर्माणिनफलंतिकदाचन ॥३७॥ सत्यंशौचंजपोहोमस्तीर्थंदेवादिपूजनम् ॥ तस्यव्यर्थमिदंसर्वंयस्त्रिपुंड्रंनधारयेत् ॥ ३८ ॥ त्रिपुंड्रधृग्विप्रवरोयोरुद्राक्षधरःशुचिः ॥ सहंतिरोगदुरितव्याधिदुर्भिक्षतस्करान्॥३९॥समाप्नोति परंब्रह्मयतोनावर्ततेपुनः ॥ सपंक्तिपावनःश्राद्धेपूज्योविप्रैःसुरैरपि॥४०॥श्राद्धेयज्ञेजपेहोमेवैश्वदेवेसुरार्चने ॥ धृतत्रिपुंड्रःपूतात्मामृत्युंजयतिमानवः ॥ ॥ ४१ ॥ भस्मधारणमाहात्म्यंभूयोपिकथयामिते ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेद्वादशोऽध्यायः॥१२॥ ॥श्रीनारायणउवाच॥ महापातकसंघाश्चपातकान्यपराण्यपि ॥ नश्यंतिमुनिशार्दूलसत्यंसत्यंनचान्यथा ॥ १ ॥ एकंभस्मधृतंयेनतस्यपुण्यफलंशृणु ॥ यतीनांज्ञानदंप्रोक्तंवनस्थानांविरक्तिदम् ॥२॥ गृहस्थानांमुनेतद्वद्धर्मवृद्धिकरंतथा ॥ ब्रह्मचर्याश्रमस्थानांस्वाध्यायप्रदमेवच॥३॥शूद्राणांपुण्यदंनित्यमन्येषांपापनाशनम् ॥ भस्मनोद्धूलनंचैवतथातिर्यक्त्रिपुंड्रकम् ॥ ४ ॥ रक्षार्थंसर्वभूतानांविधत्तेवैदिकीश्रुतिः ॥ भस्मनोद्धूलनंचैवतथातिर्यक्त्रिपुंड्रकम् ॥ ५ ॥ यज्ञत्वेनैवसर्वेषांविधत्तेवैदिकीश्रुतिः ॥ भस्मनोद्धूलनंचैवतथातिर्यक्त्रिपुंड्रकम् ॥ ६ ॥ सर्वधर्मतयातेषांविधत्तेवैदिकीश्रुतिः ॥ भस्मनोद्धूलनंचैवतथातिर्यक्त्रिपुंड्रकम् ॥ ७ ॥ माहेश्वराणांलिंगार्थंविधत्तेवैदिकीश्रुतिः ॥ भस्मनोद्धूलनंचैवतथातिर्यक्त्रिपुंड्रकम् ॥ ८ ॥ विज्ञानार्थंचसर्वेषांविधत्तेवैदिकीश्रुतिः ॥ शिवेनविष्णुनाचैवब्रह्मणावज्रिणातथा ॥ ९ ॥ हिरण्यगर्भेणतदवतारैर्वरुणादिभिः ॥ देवताभिर्धृतंभस्मत्रिपुंड्रोद्धूलनात्मकम् ॥ १० ॥ उमादेव्याचलक्ष्म्याचवाचाचान्याभिरास्तिकैः ॥ सर्वस्त्रीभिर्धृतंभस्मत्रिपुंड्रोद्धूलनात्मना ॥११॥ यक्षराक्षसगंधर्वसिद्धविद्याधरादिभिः ॥ मुनिभिश्चधृतंभस्मत्रिपुंड्रोद्धूलनात्मना ॥ १२ ॥ ब्राह्मणैःक्षत्रियैर्वैश्यःशूद्रैरपिचसंकरैः ॥ अपभ्रंशैर्धृतंभस्मत्रिपुंड्रोद्धुलनात्मना ॥ १३ ॥ उद्धूलनंत्रिपुंड्रंचयैःसमाचरितंमुदा ॥तएवशिष्टाविद्वांसोनेतरेमुनिपुंगव॥१४॥शिवलिंगंमणिःसख्यंमंत्रःपंचाक्षरस्तथा ॥ विभूतिरौषधंपुंसांमुक्तिस्त्रीवश्यकर्मणि ॥१५॥ भुनक्तियत्रभस्मांगोमूर्खोवापंडितोऽपिवा ॥ तत्रभुंक्तेमहादेवःसपत्नीकोवृषध्वजः ॥१६॥ भस्मसंछन्नसर्वांगमनुगच्छतियःपुमान् ॥सर्वपातकयुक्तोऽपिपूजितोमानवोचिरात्॥१७॥

भस्मनोमहिमाऽतीवप्रोच्यतेविस्तरेणतु ॥ १ ॥ भस्मनोनानाफलप्रदत्वमाह ॥ महापातकेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ शिवलिंगमणिरिति । यथापरस्त्रीवश्यकर्मणिकंठेऽनर्घ्यमणिरेकंसाधनं द्वितीयंसाधनंसख्यं तृतीयंसाधनंवाजीकरणात्मकमौषधंवशीकरणगुटिकावा तथापुंसांमुक्तिरूपस्त्रीवश्यकर्मणि शिवलिंगमेवानर्घ्योमणिः ॥ पंचाक्षरमंत्रएवसख्यम् ॥ विभूतिरेवौषधमित्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ ममपुत्रोब्रह्मातद्वदितिनारायणवाक्ययेतत् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥
पंचशिवमंत्राःसद्योजातादयः ॥ ३५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ सप्ताधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथसविस्तरम् ॥ विभूतिधारणस्यैवमाहात्म्यम

भस्मसंछन्नसर्वांगंयःस्तौतिश्रद्धयासह ॥ सर्वपातकयुक्तोऽपिपूज्यतेमानवोचिरात् ॥ १८ ॥ त्रिपुंड्रधारिणेभिक्षाप्रदानेनहिकेवलम् ॥ तेनाऽधीतंश्रुतंते
नतेनसर्वमनुष्ठितम् ॥ १९ ॥ येनविप्रेणशिरसित्रिपुंड्रंभस्मनाकृतम् ॥ कीकटेष्वपिदेशेषुयत्रभूतिविभूषणः ॥२०॥ मानवस्तुवसेन्नित्यंकाशीक्षेत्रसमंहि
तत् ॥ दुःशीलःशीलयुक्तोवायोगयुक्तोप्यलक्षणः ॥ २१ ॥ भूतिशासनयुक्तोवासपूज्योममपुत्रवत् ॥ छद्मनापिचरेद्योहिभूतिशासनमैश्वरम् ॥२२॥ सो
ऽपियांगतिमाप्नोतिनतांयज्ञशतैरपि ॥ संपर्काल्लीलयावापिभयाद्वाधारयेत्तुयः ॥ २३ ॥ विधियुक्तोविभूतिंतुसचपूज्योयथाह्यहम्॥शिवस्यविष्णोर्देवानां
ब्रह्मणस्तृप्तिकारणम् ॥२४॥ पार्वत्याश्चमहालक्ष्म्याभारत्यास्तृप्तिकारणम् ॥ नदानेननयज्ञेननतपोभिःसुदुर्लभैः ॥२५॥ नतीर्थयात्रयापुण्यंत्रिपुंड्रेणच
लभ्यते ॥ दानंयज्ञाश्चधर्माश्चतीर्थयात्राश्चनारद ॥२६॥ ध्यानंतपास्त्रिपुंड्रस्यकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ यथाराजास्वचिह्नांकंस्वजनंमन्यतेसदा ॥ २७ ॥
तथाशिवस्त्रिपुंड्रांकंस्वकीयमिवमन्यते॥द्विजातिर्वाऽन्यजातिर्वाशुद्धचित्तेनभस्मना ॥२८॥धारयेद्यस्त्रिपुंड्रांकंरुद्रस्तेनवशीकृतः ॥ त्यक्तसर्वाश्रयाचारोलु
प्तसर्वक्रियोऽपिसः ॥२९॥ सकृत्तिर्यक्त्रिपुंड्रांकंधारयेत्सोऽपिमुच्यते॥नास्यज्ञानंपरीक्षेतनकुलंनव्रतंतथा ॥३०॥ त्रिपुंड्रांकितभालेनपूज्यएवहिनारद॥
शिवमंत्रात्परोमंत्रोनास्तितुल्यंशिवात्परम्॥३१॥ शिवार्चनात्परंपुण्यंनहितीर्थंचभस्मना ॥ रुद्राग्नेर्यत्परंतीर्थंतद्भस्मपरिकीर्तितम् ॥ ३२ ॥ ध्वंसनंस
र्वदुःखानांसर्वपापविशोधनम् ॥ अंत्यजोवाऽधमोवापिमूर्खोवापंडितोऽपिवा ॥ ३३ ॥ यस्मिन्देशेवसेन्नित्यंभूतिशासनसंयुतः ॥ तस्मिन्सदाशिवःसोमः
सर्वभूतगणैर्वृतः ॥ सर्वतीर्थैश्चसंयुक्तःसान्निध्यंकुरुतेसदा ॥ ३४ ॥ एतानिपंचशिवमंत्रपवित्रितानिभस्मानिकामदहनांगविभूषितानि ॥ त्रैपुंड्रकाणिरचि
तानिललाटपट्टेलुंपंतिदैवलिखितानिदुरक्षराणि॥३५॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ नारायणउवाच ॥
भस्मदिग्धशरीराययोददातिधनंमुदा ॥ तस्यसर्वाणिपापानिविनश्यंतिनसंशयः ॥ १ ॥ श्रुतयःस्मृतयःसर्वाःपुराणान्यखिलान्यपि ॥ वदंतिभूतिमाहा
त्म्यंतत्तस्माद्धारयेद्द्विजः ॥ २ ॥ सितेनभस्मनाकुर्यात्रिसंध्यंयस्त्रिपुंड्रकम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःशिवलोकेमहीयते ॥ ३ ॥ योगीसर्वांगकंस्नानमापादतल
मस्तकम् ॥ त्रिसंध्यमाचरेन्नित्यमाशुयोगमवाप्नुयात्॥४॥भस्मस्नानेनपुरुषःकुलस्योद्धारकोभवेत् ॥ भस्मस्नानंजलस्नानादसंख्येयगुणान्वितम् ॥ ५ ॥
सर्वतीर्थेषुयत्पुण्यंसर्वतीर्थेषुयत्फलम् ॥ तत्फलंलभतेसर्वंभस्मस्नानान्नसंशयः ॥ ६ ॥

नुवर्ण्यते ॥ १ ॥ भस्मदिग्धेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४॥१५॥ आर्द्रस्नानादिति ॥ आर्द्रजलस्नानाद्भस्मस्नानंवरंश्रेष्ठमित्यर्थ ॥ यतोभस्मस्नानादार्द्रस्यप्रकृतिरूपबंधनस्यवधोनाशोभवति तद्इत्यर्थः ॥ तदेवाह।आर्द्रत्विति ॥ अशुष्कधान्यवदशुष्ककर्मयुक्तत्वात्प्रकृतेरार्द्रत्वम् ॥ तांचप्रकृतिंबंधनंविदुरित्यन्वयः ॥ १६॥ १७ ॥ पुरासुरैःस्वीकृतंमितिशेषः ॥ प्रियेणशिवेनदे

महापातकयुक्तोवायुक्तोवाप्युपपातकैः ॥ भस्मस्नानेनतत्सर्वंदहत्यग्निरिवेंधनम् ॥ ७ ॥ भस्मस्नानात्परंस्नानंपवित्रंनैवविद्यते ॥ एवमुक्तंशिवेनादौतदास्नातःस्वयंशिवः ॥ ८ ॥ तदाप्रभृतिब्रह्माद्यामुनयश्चशिवार्थिनः ॥ सर्वकर्मसुयत्नेनभस्मस्नानंप्रचक्रिरे ॥ ९ ॥ तस्मादेताच्छिरस्नानमाग्नेयंयःसमाचरेत् ॥ अनेनैवशरीरेणसहिरुद्रोनसंशयः ॥१०॥ येभस्मधारिणंदृष्ट्वापारितृप्ताभवंतिते॥देवासुरमुनींद्रैश्चपूज्यानित्यंनसंशयः॥११॥भस्मसंच्छन्नसर्वांगंदृष्ट्वोत्तिष्ठतियःपुमान्॥तंदृष्ट्वादेवराजोऽपिदंडवत्प्रणमिष्यति॥१२॥अभक्ष्यभक्षणंयेषांभस्मधारणपूर्वकम् ॥तेषांतद्भक्ष्यमेवस्यान्मुनेनात्रविचारणा॥१३॥ यःस्नातिभस्मनानित्यंजलेस्नात्वाततःपरम् ॥ ब्रह्मचारीगृहस्थोवावानप्रस्थोऽथवादरात् ॥१४॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसयातिपरमांगतिम् ॥ आग्नेयंभस्मनास्नानंयतीनांचविशिष्यते ॥ १५ ॥ आर्द्रस्नानाद्वरंभस्मस्नानमार्द्रवधोध्रुवः ॥ आर्द्रंतुप्रकृतिंविद्यात्प्रकृतिंबंधनंविदुः ॥१६॥प्रकृतेस्तुप्रहाणायभस्मनास्नानमिष्यते ॥ भस्मनासदृशंब्रह्मन्नास्तिलोकत्रयेष्वपि॥१७॥रक्षार्थंमंगलार्थंचपवित्रार्थंपुरासुरैः॥भस्मदृष्ट्वामुनेपूर्वंदत्तंदेव्यैप्रियेणतु॥१८॥तस्मादेताच्छिरस्नानमाग्नेयंयःसमाचरेत् ॥ भवपाशैर्विनिर्मुक्तःशिवलोकेमहीयते ॥ १९ ॥ ज्वररक्षःपिशाचाश्चपूतनाकुष्ठगुल्मकाः ॥ भगंदराणिसर्वाणिचाऽशीतिर्वातरोगकाः ॥२०॥ चतुःषष्टिःपित्तरोगाःश्लेष्माःसप्तत्रिपंचकाः ॥ व्याघ्रचौरभयंचैवाप्यन्येदुष्टग्रहाअपि ॥ २१ ॥ भस्मस्नानेननश्यंतिसिंहेनेवयथागजाः॥शुद्धशीतजलेनैवभस्मनाचात्रिपुंड्रकम् ॥ २२ ॥ योधारयेत्परंब्रह्मसप्राप्नोतिनसंशयः ॥ "भस्मनाचत्रिपुंड्रंचयःकोपिधारयेत्परम्॥सब्रह्मलोकमाप्नोतिमुक्तपापोनसंशयः ॥" यथाविधिललाटेवैवह्निवीर्यप्रधारणात् ॥ २३ ॥ नाशयेल्लिखितांयामींललाटस्थांलिपिंध्रुवम् ॥ कंठेपरिकृतंपापंनाशयेत्तत्प्रधारणात्॥ ॥ २४ ॥ कंठेचधारणात्कंठभोगादिकृतपातकम् ॥ बाह्वोर्बाहुकृतंपापंवक्षसामनसाकृतम् ॥ २५ ॥ नाभ्यांशिश्नकृतंपापंगुदेगुदकृतंहरेत् ॥ पार्श्वयोर्धारणाद्ब्रह्मन्परस्त्र्यालिंगनादिकम् ॥ २६ ॥ तद्भस्मधारणंशस्तंसर्वत्रैवत्रिसिंगकम् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानांत्रय्यग्नीनांचधारणम् ॥ २७॥ गुणलोकत्रयाणांचधारणंतेनवैकृतम् ॥ भस्मच्छन्नोद्विजोविद्वान्महापातकसंभवैः ॥ २८ ॥ दोषैर्वियुज्यतेसद्योमुच्यतेचनसंशयः ॥ भस्मनिष्ठस्यदह्यंतेदोषाभस्माग्निसंगमात् ॥ २९ ॥ भस्मस्नानविशुद्धात्माआत्मनिष्ठइतिस्मृतः ॥ भस्मनादिग्धसर्वांगोभस्मदीप्तत्रिपुंड्रकः ॥ ३० ॥

व्यैदत्तमित्यन्वयः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ यामींलिपिम् ॥ २४ ॥ वक्षसा धारणादितिशेषः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ वनस्पतिगतेसोमइति।चंद्रेवनस्पतिगतेसतीत्यर्थः ॥ सचामावास्यायांगच्छतीतिप्रसिद्धंबृहदारण्यके—तस्यरात्रयएवपंचदशकला ध्रुवैवास्यषोडशीकलासरात्रिभिरेवाचपूर्यतेऽपचक्षीयतेसोमावास्यँरात्रिमेतयाषोडश्याकलयासर्वमिदंप्राणभृदनुप्रविश्यततःप्रातर्जायतइत्यादिना॥तथाचसोमवारस्यामावास्यायामित्यर्थः।

भस्मशायीचपुरुषोभस्मनिष्ठइतिस्मृतः ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्यारोगाश्चातीवदुःसहाः ॥३१॥ भस्मनिष्ठस्यसान्निध्याद्विद्रवंतिनसंशयः ॥भासनाद्भसितंप्रो क्तंभस्मकल्मषभक्षणात् ॥ ३२ ॥ भूतिर्भूतिकरीपुंसांरक्षारक्षाकरीपुरा ॥ त्रिपुंड्रधारणंदृष्ट्वाभूतप्रेतपुरःसराः ॥ ३३॥ भीताःप्रकंपिताःशीघ्रंनश्यंत्येवनसं शयः ॥ स्मरणादेवरुद्रस्ययथापापंप्रणश्यति ॥ ३४ ॥ अप्यकार्यसहस्राणिकृत्वायःस्नातिभस्मना ॥ तत्सर्वंदहतेभस्मयथाग्निस्तेजसावनम् ॥ ३५ ॥ कृत्वापिचातुलंपापंमृत्युकालेऽपियोद्विजः ॥ भस्मस्नायीभवेत्कश्चित्क्षिप्रंपापैःप्रमुच्यते ॥३६॥ भस्मस्नानाद्विशुद्धात्माजितक्रोधोजितेंद्रियः ॥ मत्समी पंसमागम्यनसभूयोऽभिवर्तते ॥ ३७ ॥ वनस्पतिगतेसोमेभस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ अर्चितंशंकरंदृष्ट्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३८ ॥ आयुष्कामोऽथवाविद्वा न्भूतिकामोऽथवानरः ॥ नित्यंवैधारयेद्भस्ममोक्षकामीचवैद्विजः ॥ ३९ ॥ त्रिपुंड्रंपरमंपुण्यंब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥येघोराराक्षसाःप्रेतायेचान्येक्षुद्रजंतवः ॥४०॥ त्रिपुंड्रधारणंदृष्ट्वापलायंतेनसंशयः ॥ कृत्वाशौचादिकंकर्मस्नात्वातुविमलेजले॥४१॥भस्मनोद्धूलनंकार्यमापादतलमस्तकम् ॥ केवलंवारुणंस्ना नंदेहबाह्यमलापहम् ॥ ४२ ॥ विभूतिस्नानमनघंबाह्यांतरमलापहम् ॥ त्यक्त्वापिवारुणंस्नानंतत्परःस्यान्नसंशयः ॥ ४३ ॥ कृतमप्यकृतंसत्यंभस्मस्नानं विनामुने ॥ भस्मस्नानंश्रुतिप्रोक्तमाग्नेयंस्नानमुच्यते ॥४४॥ अंतर्बहिश्चसंशुद्धंशिवपूजाफलंलभेत् ॥ यद्बाह्यमलमात्रस्यनाशकंस्नानमस्तितत् ॥ ४५ ॥ तन्नाशयतितीव्रेणप्राणिबाह्यांतरंमलम् ॥ कृत्वाऽपिकोटिशोनित्यंवारुणंस्नानमादरात् ॥ ४६ ॥ नभवत्येवपूतात्माभस्मस्नानंविनामुने ॥ यद्भस्मस्नानमा हात्म्यंतद्वेदोवेद तत्त्वतः ॥४७॥ यद्वावेदमहादेवःसर्वदेवशिखामणिः ॥ भस्मस्नानमकृत्वैवयःकुर्यात्कर्मवैदिकं ॥४८॥ सतत्कर्मकलार्धार्धमपिनाप्नोति श्रुतुतः ॥ यःकरिष्यतियत्नेनभस्मस्नानंयथाविधि ॥ ४९ ॥ सएवैकःसर्वकर्मस्वधिकारीश्रुतिश्रुतः ॥ पावनंपावनानांचभस्मस्नानंश्रुतिश्रुतम् ॥ ५० ॥ नकरिष्यतियोमोहात्समहापातकीभवेत् ॥ अनंतैर्वारुणैःस्नानैर्यत्पुण्यंप्राप्यतेद्विजैः ॥ ५१ ॥ ततोऽनंतगुणंपुण्यंभस्मस्नानादवाप्यते॥कालत्रयेपिकर्तव्यं भस्मस्नानंप्रयत्नतः ॥५२॥ भस्मस्नानंस्मृतंश्रौतंतत्त्यागीपतितोभवेत् ॥ मूत्राद्युत्सर्जनांतेतुभस्मस्नानंप्रयत्नतः॥५३॥कर्तव्यमन्यथापूतानभविष्यंति मानवाः॥ विधिवत्कृतशौचोऽपिभस्मस्नानंविनाद्विजः ॥५४॥ नभविष्यतिपूतात्मानाधिकार्यपिकर्मणि ॥ अपानवायुनिर्यातेजृंभणेस्कंदनेक्षुते ॥५५॥

॥३८॥३९॥ ०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ ॥ अष्टादशाधिकैःश्लोकैःशतसंख्यैरतःपरम् ॥ अर्धाधिकैस्त्रिपुंड्रोर्ध्वपुंड्रयोर्महिमोच्यते ॥१॥

श्लेष्मोद्भवः ऽऽपिकर्तव्यंभस्मस्नानंप्रयत्नतः ॥ श्रीभस्मस्नानमाहात्म्यस्यैकदेशोऽत्रवर्णितः ॥५६॥पुनश्चसंप्रवक्ष्यामिभस्मस्नानोत्थितंफलम् ॥ सावधानेन मनसाश्रोतव्यंमुनिपुंगव ॥ ५७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अग्निरित्यादिभिर्मंत्रैर्भस्मसंशोध्यसादरम् ॥ धारणीयंललाटादौत्रिपुंड्रंकेवलंद्विजैः॥१॥ब्रह्मक्षत्रियवैश्याश्चएतेसर्वेद्विजाःस्मृताः ॥ तस्माद्द्विजैःप्रयत्नेनत्रिपुंड्रंधार्यमन्वहम् ॥ २ ॥ यस्योपनयनंब्रह्मन्सएवद्विजउच्यते ॥ तस्माच्छ्रौतंद्विजैःकार्यंत्रिपुंड्रस्यचधारणम्॥३॥विभूतिधारणंत्यक्त्वायःसत्कर्मसमाचरेत् ॥ तत्कृतंचाऽकृतप्रायंभवत्येवनसंशयः ॥ ४ ॥ नगायत्र्युपदेशोपिभस्मनोधारणंविना ॥ ततोधृत्वैवभस्मांगेगायत्रीजपमाचरेत् ॥ ५ ॥ गायत्रींमूलमेवाहुर्ब्राह्मण्येमुनिपुंगव ॥ साभस्मधारणाभावेनकेनाप्युपदिश्यते ॥ ६ ॥ नतावदधिकारोऽस्तिगायत्रीग्रहणेमुने ॥ यावन्नभस्मभालादौधृतमाग्निसमुद्भवम् ॥ ७ ॥ भस्महीनललाटत्वंनब्राह्मण्यानुमापकम् ॥ एवमेवमयाब्रह्मन्हेतुरुक्तःसुपुण्यदः ॥ ८ ॥ मंत्रपूतंसितंभस्मललाटेपरिवर्तते॥सएवब्राह्मणोविद्वान्सत्यंसत्यंमयोच्यते ॥९॥ यस्यास्तिसहजाप्रीतिर्मणिवद्भस्मसंग्रहे ॥ सएवब्राह्मणोब्रह्मन्सत्यंसत्यमयोच्यते ॥१०॥ नयस्यसहजाप्रीतिर्मणिवद्भस्मसंग्रहे ॥ सचांडालइतिज्ञेयोजन्मजन्मांतरेध्रुवम् ॥ ११ ॥ नयस्यसहजाप्रीतिस्त्रिपुंड्रोद्धूलनादिषु ॥ सचांडालइतिज्ञेयःसत्यंसत्यंमयोच्यते ॥१२॥ येभस्मधारणंत्यक्त्वाभुंजंतेचफलादिकम् ॥ तेसर्वेनरकंघोरंप्राप्नुवंतिनसंशयः ॥ १३ ॥ "विभूतिधारणंत्यक्त्वायःशिवंपूजयिष्यति ॥ सदुर्भगःशिवद्वेष्टासद्वेषोनरकप्रदः ॥ सर्वकर्मबहिर्भूतोभस्मधारणवर्जितः ॥" विभूतिधारणंत्यक्त्वाकुर्वन्हेमतुलामपि ॥ नतत्फलमवाप्नोतिपतितोहिभवेद्द्विजः ॥ १४ ॥ यथोपवीतरहितैःसंध्यानक्रियतेद्विजैः तथासंध्यानकर्तव्याविभूतिरहितैरपि ॥ १५ ॥ गतोपवीतैःसंध्यायांकार्यःप्रतिनिधिःक्वचित् ॥ जपादिकंतुसावित्र्यास्तथैवोपोषणादिकम् ॥ १६ ॥ विभूतिधारणेत्वन्योनास्तिप्रतिनिधिःक्वचित् ॥ विभूतिधारणंत्यक्त्वायादिसंध्यांकरोतियः ॥ १७ ॥ प्रत्यवैत्यवयेनासौनाधिकारीतदाद्विजः ॥ यथाश्रुत्वांत्यजोवेदान्प्रत्यवैतितथाद्विजः ॥ १८ ॥ प्रत्यवैतिनसंदेहःसंध्याकृद्भस्मवर्जितः ॥ संपादनीयंयत्नेनश्रौतंभस्मसदाद्विजैः ॥ १९ ॥ स्मार्तंवातदभावेतुलौकिकंवासमाहितैः ॥ यादृशंतादृशंवास्तुपवित्रंभस्मसंततम् ॥ २० ॥ धारणीयःप्रयत्नेनाद्विजैःसंध्यादिकर्मसु ॥ नसंविशंतिपापानिभस्मनिष्ठेततःसदा ॥ २१ ॥ कर्तव्यमपियत्नेनब्राह्मणैर्भस्मधारणम् ॥ मध्यांगुलित्रयेणैवस्वदक्षिणकरस्यतु ॥ २२ ॥

अग्निरित्यादिभिरिति। तेचमंत्राःपूर्वमुक्ताः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८॥१९॥२०॥२१॥२२॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ अत्रेतिहासमाह । अत्रतेकथयामीति ॥ २६ ॥ २७ ॥ कव्यवाडादयइति ॥ तेच कव्यवाडनलःसोमोयमश्चैवार्यमातथा ॥ अग्निष्वात्तावर्हिषदःसोमपाः पितृदेवताइतिवचनोक्ताःपितृगणस्वामिनः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ षडशीतिरिति ॥ तानिकुंडानिनामतोरूपतश्चनवमस्कंधेसाविञ्युपाख्यानेकथि

षडंगुलायतंमानमपिचाधिकमानकम् ॥ नेत्रयुग्मप्रमाणेनभालेदीप्तंत्रिपुंड्रकम् ॥ २३ ॥ कदाचिद्रस्मनाकुर्यात्सरुद्रोनात्रसंशयः ॥ अकारोनामिकाप्रोक्तोउकारोमध्यमांगुलिः ॥ २४ ॥ मकारस्तर्जनीतस्मात्रिपुंड्रंत्रिगुणात्मकम् ॥ त्रिपुंड्रंमध्यमातर्जन्यनामाभिरनुलोमतः ॥२५॥ अत्रतेकथयाम्येनमितिहासंपुरातनम् ॥ कदाचिदथदुर्वासाःपितृलोकंगतोऽभवत् ॥ २६ ॥ भस्मसंदिग्धसर्वांगोरुद्राक्षाभरणान्वितः ॥ शिवशंकरसर्वात्मञ्छ्रीमातर्जगदंबिके ॥ ॥ २७ ॥ नामानीतिगृणन्नुच्चैस्तापसानांशिखामणिः ॥ कव्यवाडादयस्तेतुप्रत्युत्थानाभिवादनैः ॥ २८ ॥ आसनाद्युपचारैश्चसंमानंबहुचक्रिरे ॥ नानाकथाभिरन्योन्यसंभाषांचक्रिरेतदा॥२९॥तस्मिंस्तुसमयेकुंभीपाकस्थानांतुपापिनाम् ॥ घोरःसमभवच्छब्दोहाहताःस्मेतिवादिनाम् ॥ ३० ॥ मृताःस्मेतिवदंत्येकेदग्धाःस्मेतिपरेजगुः ॥ छिन्नाःस्मेतिविभिन्नाःस्मेत्येवंरोदनकारिणः ॥३१॥ श्रुत्वातंकरुणंशब्दंदुःखितोमुनिराड्हृदि ॥ पप्रच्छपितृनाथांस्तान्केषांशब्दोऽयमित्यपि ॥ ३२ ॥ तेसमूचुर्मुनेऽत्रैवपुरीसंयमनीपरा ॥ वर्ततेयमराडत्रपापिनांभोगदायकः ॥ ३३ ॥ नानादूतैःकालरूपैःकृष्णवर्णैर्भयंकरैः ॥ सहितोऽत्रैवतत्पुर्यानायकोविद्यतेऽनघ ॥ ३४ ॥ तत्रकुंडान्यनेकानिपापिनांभोगदानिच ॥ षडशीतिर्घोररूपैर्दूतैःपरिवृतानिच ॥ ३५ ॥ तत्रमुख्यतमंकुंडंकुंभीपाकाभिधंमहत् ॥ वर्ततेतद्गतानांचयातनानांतुवर्णनम् ॥ ३६ ॥ कर्तुंनशक्यतेकैश्चिदपिवर्षशतैरपि ॥ येशिवद्रोहिणःसंतितथादेवीविनिंदकाः ॥ ३७ ॥ येविष्णुद्रोहिणःसंतिपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ येवेदनिंदकाःसंतिसूर्यस्यचगणेशितुः ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणानांद्रोहिणोयेपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ कामाचाराश्चयेसंतितप्तमुद्रांकिताश्चये ॥३९॥ त्रिशूलधारिणोयेचपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ मातृपितृगुरुज्येष्ठपुराणस्मृतिनिंदकाः ॥४०॥ येधर्मदूषकाःसंतिपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ तेषामयंमहाघोरःशब्दःश्रवणदारुणः ॥ ४१ ॥ श्रूयतेऽस्माभिरनिशंवैराग्यंयच्छ्रुतेर्भवेत् ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वामुनिराट्तद्दिदृक्षया ॥ ४२ ॥ उत्थायचलितस्तूर्णंययौकुंडसमीपतः ॥ अवाङ्मुखोददर्शाऽधस्तस्मिन्नेवक्षणेमुने ॥ ४३ ॥ तत्रत्यानांपापिनांतुस्वर्गाधिकमभूत्सुखम् ॥ हसंतिकेचिद्गायंतिनृत्यंतिचतथापरे ॥ ४४ ॥ परस्परंरमंतेतेऽप्युन्मत्ताःसुखवर्धनात् ॥ मृदंगमुरजावीणाढक्कादुंदुभिनिस्वनाः ॥ ४५ ॥ समुद्भूतास्तुमधुराःपंचमस्वरभूषिताः ॥ वसंतवल्लीपुष्पाणांसुगंधमरुतोववुः ॥ ४६ ॥

तानि ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ केकेतस्मिन्कुंडेपतंतितानाह । येशिवद्रोहिणइति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ कामाचाराश्चेति ॥ यथेष्टाचरणवंतइत्यर्थः ॥ त्रिशूलधारिणइति ॥ तप्तत्रिशूलधारिणःशैवाइत्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ तत्रत्यानांकुंडस्थानाम् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





वेदिनेज्ञानवते ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ अमरावतीमिंद्रंप्रति ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ स्वस्यसंकल्पंकुंभीपाकस्थानांदुःखंभवत्वित्येवंरूपंसंकल्पमित्यर्थः ॥
वितथंमिथ्या ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ सचतुर्वेदंचतुर्वेदैःसहितांशिवामित्यर्थः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ निमित्तमाह । कुंभीपाकमिति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

मुनिस्तुचकितोदृष्ट्वायमदूताश्चविस्मिताः ॥ शीघ्रंतेकथयामासुर्धर्मराजायवेदिने ॥४७॥ महाराजमहाश्चर्यमधुनैवाभवद्विभो ॥ स्वर्गादप्यधिकंसौख्यंकुंभीपाकस्थपापिनाम् ॥ ४८ ॥ निमित्तंनैवजानीमःकस्मादिदमभूद्विभो ॥ चकिताःस्मवयंसर्वेप्राप्तादेवत्वदंतिकम् ॥४९॥ निशम्यदूतवाणींतांधर्मराट् शीघ्रमुत्थितः ॥ महामहिषमारूढोययौतेयत्रपापिनः ॥ ५० ॥ तांवार्तांप्रेषयामासदूतद्वाराऽमरावतीम् ॥ श्रुत्वातांदेवराजोपिप्राप्तोदेवगणैःसह ॥ ५१ ॥ ब्रह्मलोकात्पद्मजोपिवैकुंठाद्विष्टरश्रवाः ॥ तत्तल्लोकाच्चदिक्पालाःसमाजग्मुर्गणैःसह ॥ ५२ ॥ परिवार्यस्थिताःसर्वेकुंभीपाकमितस्ततः ॥ अपश्यंस्तद्गताञ्जीवान्स्वर्गाधिकसुखान्वितान् ॥ ५३ ॥ चकिताएवतेसर्वेनाविदुस्तस्यकारणम् ॥ अहोपापस्यभोगार्थंकुंडमेतद्विनिर्मितम्॥५४॥तत्रसौख्यंयदाजातंतदापापात्तुकिंभयम् ॥ उच्छिन्नावेदमर्यादापरमेशकृताकथम् ॥ ५५ ॥ भगवान्स्वस्यसंकल्पंवितथंकृतवान्कथम् ॥ आश्चर्यमेतदाश्चर्यमेतदित्येवभाषिणः ॥ ५६ ॥ तटस्थाअभवन्सर्वेनविदुस्तत्रकारणम् ॥ एतस्मिन्नंतरेशौरिःसमंत्र्यविबुधादिभिः ॥ ५७ ॥ ययौकैश्चित्सुरगणैःसहितःशंकरालयम् ॥ पार्वत्यासहितंदेवंकोटिकंदर्पसुंदरम् ॥ ५८ ॥ रमणीयतमांगंतंलावण्यखनिमद्भुतम् ॥ सदाषोडशवर्षीयंनानालंकारभूषितम् ॥ ५९ ॥ नानागणैःपरिवृतंलालयंतंपरांशिवाम् ॥ ददर्शचंद्रमौलिंसचतुर्वेदंननामह ॥ ६० ॥ वृत्तांतंकथयामासचमत्कृतमतिस्फुटम् ॥ एतस्यकारणंदेवनजानीमःकथंचन॥६१॥ वदतत्कारणंदेवसर्वज्ञोसियतःप्रभो ॥ विष्णुवाक्यंतदाश्रुत्वाप्रसन्नमुखपंकजः ॥६२॥ उवाचमधुरंवाक्यंमेघगंभीरयागिरा ॥ शृणुविष्णोतन्निमित्तंनाश्चर्यंत्वत्रविद्यते ॥ ६३ ॥ भस्मनोमहिमैवायंभस्मनाकिंभवेन्नहि ॥ कुंभीपाकंगतोद्रष्टुंदुर्वासाःशैवसंमतः ॥६४॥ अवाङ्मुखोददर्शाऽधस्तदावायुवशाद्धरे ॥ भालभस्मकणास्तत्रपतितादैवयोगतः ॥ ६५ ॥ तेनजातमिदंसर्वंभस्मनोमहिमात्वयम् ॥ इतःपरंतुतत्तीर्थंपितृलोकनिवासिनाम् ॥ ६६ ॥ भविष्यतिनसंदेहोयत्रस्नात्वासुखीभवेत् ॥ पितृतीर्थंतुतन्नाम्नाऽप्यतऊर्ध्वंभविष्यति ॥ ६७ ॥ मल्लिंगस्थापनंतत्रकार्यंदेव्याश्चसत्तम ॥ पूजयिष्यंतितेतत्रपितृलोकनिवासिनः ॥ ६८ ॥ त्रैलोक्येयानितीर्थानितत्रश्रेष्ठमिदंभवेत् ॥ पित्रीश्वरीपूजयातुत्रैलोक्यंपूजितंभवेत् ॥ ६९ ॥ नारायणउवाच ॥ इतिदेववचःश्रुत्वादेवंमूर्ध्नाप्रणम्यच ॥ तदनुज्ञांसमादाययौदेवांतिकंहरिः॥७०॥तत्सर्वंकथयामासकारणंशंकरोदितम् ॥ साधुसाध्वितितेप्रोचुरमरामौलिचालनैः ॥७१॥ शशंसुर्भस्ममाहात्म्यंहरिब्रह्मादयःसुराः ॥ पितरश्चैवसंतुष्टास्तीर्थलाभात्परंतप ॥ ७२ ॥

॥ ६८ ॥ पित्रीश्वरीति ॥ तस्मिंस्तीर्थेस्थापितादेवी ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ७३ ॥ ७४ ॥ तत्रकैलासे ॥ ७५ ॥ निरुद्धामिति ॥ यदितत्रापिशैवगमनंस्यात्तदापुनश्चकुंभीपाकोच्छेदएवस्यादितिभियाकुंभीपाकमार्गेशैवैर्नैवगंतव्यमितिनिरोधःकृतइत्यर्थः ॥ ७६ ॥ अथोर्ध्वपुंड्रविधिमाह । ऊर्ध्वपुंड्रविधिमिति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ श्याममूर्ध्वपुंड्रमित्यर्थः ॥ एवमुत्तरत्र ॥ ८१ ॥ अंगुलिनियममाह । अंगुष्ठइति ॥ ८२ ॥ ऊर्ध्वपुंड्राकारमाह । वर्तिदीपेति ॥ वर्तिवृत्तियोर्दीपस्तस्ययावलिः पंक्तिरूर्ध्वरेखारूपाअधःस्थूलांतेसूक्ष्मरूपातद्वत्कृतिराकृतिर्यस्येत्यर्थः ॥ ८३ ॥ एतेषांविनियोगोब्रह्मांडपुराणे ॥ ललाटेबाहुवक्षेवदंडवत्कर्णपल्लवे ॥ हृदयेकमलाकारमुदरेदीपवल्लिखेत् ॥ वेणुपत्रसमाकारंबाह्वोर्मध्येलिखेत्सुधीः ॥ अधःपृष्ठस्कंधदेशेन्यसेज्जंबूपलाशवदिति ॥ ८४ ॥ तत्रोत्तमंत्रिपुंड्रमं

तत्तीर्थतीरेलिंगंचदेव्यामूर्तियथाविधि ॥ स्थापयामासुरमराःपूजयामासुरन्वहम् ॥ ७३ ॥ तत्रयेप्राणिनोभूवन्पापभोगार्थमास्थिताः ॥ तेविमानंसमारुह्यगताःकैलासमंडलम् ॥७४॥ नाम्नाभद्रगणास्तेतुवसंत्यद्यापितत्रहि ॥ पुनश्चदूरदेशेतुकुंभीपाकोविनिर्मितः ॥७५॥ निरुद्धंशैवगमनंदेवैस्तत्रतुतद्दिनात् ॥ इतितेसर्वमाख्यातंभस्ममाहात्म्यमुत्तमम्॥७६॥नातःपरतरंकिंचिदधिकंविद्यतेमुने ॥ ऊर्ध्वपुंड्रविधिंचैवाऽप्याधिकारिविभेदतः ॥ ७७॥ प्रवक्ष्येमुनिशार्दूलवैष्णवागमलोकनात् ॥ ऊर्ध्वपुंड्रप्रमाणानिदिव्यान्यंगुलिभेदतः ॥ ७८ ॥ वर्णाभिमंत्रदेवांश्चप्रवक्ष्यामिफलानिच ॥ पर्वताग्रेनदीतीरेशिवक्षेत्रेविशेषतः ॥७९॥ सिंधुतीरेचवल्मीकेतुलसीमूलमाश्रिते ॥ मृदएतास्तुसंग्रह्यावर्जयेदन्यमृत्तिकाः ॥८०॥ श्यामंशांतिकरंप्रोक्तंरक्तंवश्यकरंभवेत् ॥ श्रीकरंपीतमित्याहुर्धर्मदंश्वेतमुच्यते॥८१॥अंगुष्ठःपुष्टिदःप्रोक्तोमध्यमायुष्करीभवेत् ॥ अनामिकान्नदानित्यंमुक्तिदाचप्रदेशिनी ॥ ८२॥ एतैरंगुलिभेदैस्तुकारयेन्नखैःस्पृशेत् ॥ वर्तिदीपावलिकृतिंवेणुपत्राकृतिंतथा ॥८३॥पद्मस्यमुकुलाकारंतथाकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ मत्स्यकूर्माकृतिंवापिशंखाकारंततःपरम् ॥ ८४ ॥ दशांगुलिप्रमाणंतुउत्तमोत्तममुच्यते ॥ नवांगुलंमध्यमंस्यादष्टांगुलमतःपरम् ॥ ८५॥ सप्तषट्पंचभिःपुंड्रंमध्यमंत्रिविधंस्मृतम् ॥ चतुस्त्रिद्व्यंगुलैःपुंड्रंकनिष्ठंत्रिविधंभवेत्॥८६॥ललाटेकेशवंविद्यान्नारायणमथोदरे ॥ माधवंहृदिविन्यस्यगोविंदंकंठकूपके ॥८७॥ उदरेदक्षिणेपार्श्वेविष्णुरित्यभिधीयते ॥ तत्पार्श्वेबाहुमध्येचमधुसूदनमेवच ॥ ८८ ॥ त्रिविक्रमंकर्णदेशेवामकुक्षौतुवामनम् ॥ श्रीधरंबाहुकेवामेहृषीकेशंतुकर्णके ॥८९॥ पृष्ठेचपद्मनाभंतुककुद्मोदरंस्मरेत् ॥ द्वादशैतानिनामानिवासुदेवेतिमूर्धनि ॥ ९० ॥ पूजाकालेचहोमेचसायंप्रातःसमाहितः ॥ नामान्युच्चार्यविधिनाधारयेदूर्ध्वपुंड्रकम् ॥ ९१ ॥ अशुचिर्वाप्यनाचारोमनसापापमाचरेत् ॥ शुचिरेवभवेन्नित्यंमूर्ध्निपुंड्रांकितोनरः ॥ ९२ ॥

गुलिप्रमाणभेदेनत्रिविधमाह । दशांगुलीति ॥ दशांगुलपमाणमुत्तमोत्तमम् ॥ उत्तमेत्रिपुंड्रेउत्तममित्यर्थः ॥ मध्यममुत्तमेत्रिपुंड्रेमध्यममित्यर्थः ॥ अधःपरमिति ॥ उत्तमेऊर्ध्वपुंड्रेऽधःकनिष्ठमित्यर्थः ॥ ८५ ॥ मध्यमोर्ध्वपुंड्रमपित्रिविधमाह । सप्तषट्पंचभिरिति ॥ ८६ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रेदेवताध्यानमाह । ललाटेकेशवमिति ॥ ८७ ॥ तत्पार्श्वेउदरस्यवामपार्श्वइत्यर्थः ॥ ८८ ॥ कर्णकेदक्षिणकर्णे ॥ ८९ ॥ ककुदितिलुप्तसप्तम्यंतम् ॥ ककुदीत्यर्थः ॥ ९० ॥ नामानीति ॥ तत्रशुक्लकृष्णपक्षभेदेननामभेदोब्रह्मांडपुराणेउक्तः ॥ संकर्षणादिभिःशुक्लेकृष्णेचेत्केशवादिभिरिति ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ९३ ॥ सांतरालान्रेखाद्वयमध्येऽवकाशसहितान् ॥ ९४ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रभेदमाह । हरिद्राचूर्णसंयुक्तानिति ॥ रामानुजसंप्रदायेस्पष्टमेतत् ॥ ९५ ॥ पद्मशब्देनपद्ममुकुलंगृह्यते ॥ पूर्वंत दुक्तत्वात् ॥ ९६ ॥ केवलवैष्णवाभागवताइत्यर्थः ॥ ९७ ॥ एकांतिनामेकांतभक्तानांवीरवैष्णवानांपरमैकांतिनामपि ॥ वीरवैष्णवेभ्योपिमहावीरवैष्णवानामित्यर्थः ॥ तेचसांप्रतंमाध्व रामानुजाश्चक्रमेणभवंति ॥ ९८ ॥ मध्येछिद्रमुभयोरेखयोर्मध्येऽवकाशंकुर्यादित्यर्थः ॥ नमोंतैःकेशवादिभिरितिपूर्वोक्तानुवादः ॥ ९९ ॥ तदेवस्पष्टयति विमलान्यूर्ध्वेति ॥ १०० ॥

ऊर्ध्वपुंड्रधरोमर्त्योम्रियतेयत्रकुत्रचित् ॥ श्वपाकोपिविमानस्थोममलोकेमहीयते ॥९३॥ एकांतिनोमहाभागामत्स्वरूपविदोऽमलाः ॥ सांतरालान्प्रकुर्वंतिपुंड्रान्विष्णुपदाकृतीन् ॥ ९४ ॥ परमैकांतिनोप्येवंमत्पादैकपरायणाः ॥ हरिद्राचूर्णसंयुक्ताञ्छूलाकारांस्तुवाऽमलान् ॥ ९५ ॥ अन्येतुवैष्णवाःपुंड्रानच्छिद्रानपिभक्तितः ॥ प्रकुर्वीरन्दीपपद्मवेणुपत्रोपमाकृतीन् ॥ ९६ ॥ अच्छिद्रानपिसच्छिद्रान्कुर्युःकेवलवैष्णवाः ॥ अच्छिद्रकरणेतेषांप्रत्यवायोनविद्यते॥९७॥एकांतिनांप्रपन्नानांपरमैकांतिनामपि ॥ अच्छिद्रपुंड्राकरणेप्रत्यवायोमहान्भवेत् ॥९८॥ ऊर्ध्वपुंड्रंतुयःकुर्याद्दंडाकारंतुशोभनम् ॥ मध्येच्छिद्रंवैष्णवश्चनमोन्तैःकेशवादिभिः ॥ ९९ ॥ विमलान्यूर्ध्वपुंड्राणिसांतरालानियोनरः ॥ करोतिविपुलंतत्रमंदिरंमेकरोतिसः ॥ १०० ॥ ऊर्ध्वपुंड्रस्यमध्येतु विशालेसुमनोहरे ॥ लक्ष्म्यासाकंसहासीनोरमतेविष्णुरव्ययः ॥ १ ॥ निरंतरालंयःकुर्याद्ऊर्ध्वपुंड्रंद्विजाधमः ॥ सहितत्रास्थितंविष्णुंश्रियंचैवव्यपोहति ॥ ॥२॥अच्छिद्रमूर्ध्वपुंड्रंतुयःकरोतिविमूढधीः ॥ सपर्यायेणतानेतिनरकानेकविंशतिम् ॥३॥ ऋजूनिस्फुटपार्श्वानिसांतरालानिविन्यसेत् ॥ ऊर्ध्वपुंड्राणि दंडाब्जदीपमत्स्याजनिभानिच ॥४॥ शिखोपवीतवद्धार्यमूर्ध्वपुंड्रंद्विजेनच ॥ विनाकृताश्चेद्विफलाःक्रियाःसर्वामहामुने ॥५॥ तस्मात्सर्वेषुकार्येषुकार्यंविप्रस्यधीमतः ॥ ऊर्ध्वपुंड्रंत्रिशूलंचवर्तुलंचतुरस्रकम् ॥६॥ अर्धचंद्रादिकंलिंगंवेदनिष्ठोनधारयेत्॥जन्मनालब्धजातिस्तुवेदपंथानमाश्रितः ॥७॥ पुंड्रांतरंभ्रमाद्वापिललाटेनैवधारयेत् ॥ ख्यातिकांत्यादिसिद्ध्यर्थंचापिविष्ण्वागमादिषु॥८॥ स्थितंपुंड्रांतरंनैवधारयेद्वैदिकोजनः ॥ तिर्यक्त्रिपुंड्रंसंत्यज्यश्रौतंकथमपिभ्रमात् ॥ ९ ॥ ललाटेभस्मनातिर्यक्त्रिपुंड्रस्यचधारणम् ॥ विनापुंड्रांतरंमोहाद्धारयन्नारकीभवेत् ॥ ११० ॥ वेदमार्गैकनिष्ठस्तुमोहेनाप्यंकितोयदि ॥ पतत्येवनसंदेहस्तथापुंड्रांतरादपि ॥ ११ ॥ नांकनंविग्रहेकुर्याद्वेदमार्गसमाश्रितः ॥ श्रौतधर्मैकनिष्ठानांलिंगंतुश्रौतमेवहि ॥१२॥ अश्रौतधर्मनिष्ठानामश्रौतंलिंगमीरितम् ॥ देवतावेदसिद्धायास्तासांलिंगंतुवैदिकम् ॥ १३ ॥ अश्रौततंत्रनिष्ठायास्तासामश्रौतमेवहि ॥ वेदसिद्धोमहादेवःसाक्षात्संसारमोचकः ॥ १४ ॥ भक्तानामुपकारायश्रौतंलिंगंदधातिच ॥ वेदसिद्धस्यविष्णोश्चश्रौतंलिंगंनचेतरत् ॥ १५ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ इतःपरमूर्ध्वपुंड्रादीनामधिकारिणआह । ऊर्ध्वपुंड्रमिति ॥ ६ ॥ वैदिकस्याधिकारोनास्ति वैदिकातिरिक्तएवाधिकारीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ श्रौतंतिर्यक् त्रिपुंड्रमित्यस्यपूर्वेणान्वयः ॥ ९ ॥ ११० ॥ अंकितस्तप्तमुद्रादिभिः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ नचेतरदिति वैदिकविष्णुभक्तस्यापिश्रौतंभस्मादिकमेवविधीयते ॥ तप्तमुद्रोर्ध्वपुंड्रादिकंतुतंत्रोक्तदीक्षावतांवैष्णवानांविधीयतइतिभावः ॥ १५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

प्रादुर्भावविशेषाणांरामकृष्णाद्यवताराणाम् ॥ तेषामुपासकैरपिभस्मोद्धूलनंभस्मत्रिपुंड्रादिकमेवधार्यमितिभावः ॥ १६ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रादिकमश्रौतमेवभवतिनातिर्यक्त्रिपुंड्रकमित्यन्वयः ॥ ॥ १७ ॥ तस्मात्तांत्रिकैरेवोर्ध्वपुंड्रंधार्यंनवैदिकैरित्युपसंहरति यस्त्विति ॥ ११८ ॥ इतिसर्वसूतसंहितापराशरोपपुराणकूर्मपुराणादिषुस्पष्टम् ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ शतश्लोकैःषडधिकैःसंध्योपासनमुत्तमम् ॥ द्विजानांकथ्यतेयेनजगदंबातुतुष्यति ॥ १ ॥ तिलकविधानानंतरंसंध्याविधिंकथयति । अथातइति ॥ संध्यायाः संध्याकालाधिष्ठात्र्यागायत्रीदेव्याउपासनमित्यर्थः ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ संधौसंध्यामुपासीतनोदितेनास्तगेरवाविति ॥ संध्याशब्दवाच्यांदेवीमाह ॥ संध्यात्रयंतुकर्तव्यमित्यत्रतुसं ध्याशब्दःसंध्याकालिककर्मपरः ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यवाक्येसंधाविति मध्याह्नस्याप्युपलक्षणम् ॥ पूर्वसंध्यातुगायत्रीसावित्रीमध्यमास्मृता ॥ याभवेत्पाश्चिमासंध्यासाविज्ञेयासरस्वती ॥ श्वेताभवतिगायत्रीसावित्रीरक्तवर्णिका ॥ कृष्णासरस्वतीज्ञेयासंध्यात्रयमुदाहृतामितितदुक्तेश्च ॥ अनेनैवक्रमेणब्रह्मरुद्रविष्णुसमानाकारत्वाद्गायत्र्यादीनांब्रह्मरुद्रविष्णुरूपत्वमुक्तंनत्वत्र ब्रह्मरुद्रविष्णूनांस्त्रीरूपत्वेनध्येयत्वमितिबोध्यम् ॥ ॥ तत्रोपासनंनामध्यानमात्रम् ॥ नभिन्नांप्रतिपद्येतगायत्रींब्रह्मणासह ॥ साहमस्मीत्युपासीतविधिनायेनकेनचिदितिव्यासवचनादि तिकेचित् ॥ परेतुध्यानपूर्वकोमंत्रजपएवात्रोपासनम् ॥ यासासंध्याजगत्सूतिर्मायातीताहिनिष्कला ॥ ईश्वरीकेवलाशक्तिस्तत्त्वत्रयसमुद्भवा ॥ ध्यात्वार्कमंडलगतांसावित्रींप्रजपेद्बुधइति

प्रादुर्भावविशेषाणामपितस्यतदेवहि ॥ श्रौतंलिंगंतुविज्ञेयंत्रिपुंड्रोद्धूलनादिकम् ॥ १६ ॥ अश्रौतमूर्ध्वपुंड्रादिनैवतिर्यक्त्रिपुंड्रकम् ॥ वेदमार्गैकनिष्ठानां वेदोक्तेनैववर्त्मना ॥ १७ ॥ ललाटेभस्मनातिर्यक्त्रिपुंड्रंधार्यमेवहि ॥ यस्तुनारायणंदेवप्रपन्नःपरमंपदम् ॥ ११८ ॥ धारयेत्सर्वदाशूलंललाटेगंधवा रिणा ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नारायणउवाच ॥ अथातःश्रूयतांपुण्यंसंध्योपासनमुत्त मम् ॥ भस्मधारणमाहात्म्यंकथितंचैवविस्तरात् ॥ १ ॥ प्रातःसंध्याविधानंचकथयिष्यामितेऽनघ ॥ प्रातःसंध्यांसनक्षत्रांमध्याह्नेमध्यभास्कराम् ॥२॥ ससूर्यांपश्चिमांसंध्यांतिस्रःसंध्याउपासते ॥ तद्भेदानपिवक्ष्यामिशृणुदेवर्षिसत्तम ॥ ३ ॥ उत्तमातारकोपेतामध्यमालुप्ततारका ॥ अधमासूर्यसहिता प्रातःसंध्यात्रिधामता ॥ ४ ॥ उत्तमासूर्यसहितामध्यमाऽस्तमितेरवौ ॥ अधमातारकोपेतासायंसंध्यात्रिधामता ॥ ५ ॥

कौर्मेणवचनेनध्यानस्यांगत्वप्रतिपादनात् ॥ देवतांध्यायञ्जपंकुर्यादितिशंखस्मृतेश्च ॥ एवंचनभिन्नामितिव्यासवाक्येंगभूतध्यानस्यैवोपासनात्वेनाभिध्यानम् ॥ नित्योदकःसंध्यामुपा सीतेत्युपक्रम्यगायत्रीजपस्यैवाश्वलायनेनाभिधानाच्च ॥ गायत्रीजपस्यैवप्राधान्यप्रतीतेः ॥ ऋषयोदीर्घसंध्यत्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुरिति ॥ मनुरपि गायत्रीजपपरतयैवब्रह्माभिन्नार्कोपस्था नादित्याहुः ॥ केचित्तुगायत्रीमंत्ररूपांतत्प्रतिपाद्यब्रह्माभिन्नत्वेनगृहीतांजपेनसाहमित्युपासीतेतिव्यासवाक्यार्थमाहुः ॥ सर्वथापिअत्रसंध्यापदेनस्त्रीरूपाणांब्रह्मरुद्रविष्णूनांसंध्याकालेन ग्रहणम् ॥ नवागायत्र्यतिरिक्तायाःकस्याश्चित्संध्याकालाधिष्ठात्र्यादेव्याग्रहणम् ॥ किंतु ब्रह्मणएवार्कमंडलांतर्गतचैतन्याभिन्नस्यगायत्र्यर्थभूतस्यसंध्यात्रयेगायत्र्याद्याकारधारिणोग्रह णम् ॥ तथाचैकैवगायत्रीसंध्यात्रयेआकारत्रयैरुपास्या ॥ संध्याकालातिरिक्तकालेजपेकर्तव्येतु मुक्ताविद्रुमहेमनीलित्यादिध्यानप्रकारेणोपास्येतिबोध्यम् ॥ एतेनसंध्यापदेनस्त्रीरूपाणां ब्रह्मरुद्रविष्णूनांग्रहणंगायत्र्यतिरिक्तस्यदेवतात्रयस्यकस्याचिद्ग्रहणम् ॥ गायत्रीजपेतुगायत्र्यामुक्ताविद्रुमेतिप्रोक्तध्यानायाएवग्रहणमितिप्रांचोक्तमपास्तम् ॥ १ ॥ संध्योपासनकाल माह । प्रातःसंध्यामिति ॥ २ ॥ उत्तमाधमभेदेनकालभेदमाह । तद्भेदानिति ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





संध्योपासनस्यावश्यकत्वमाह । विप्रोवृक्षइति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ प्रायश्चित्तमाह । कालातिक्रमणेइति ॥ अर्घ्यत्रयानंतरंप्रायश्चित्तार्थमर्घ्यांतरंदेयमित्यर्थः ॥ आदौप्रथमतःप्रायश्चित्तार्थंदेवींगायत्रींजप्त्वासंध्यांसमाचरेदित्यर्थः ॥ अल्पकालातिक्रमे चतुर्थोर्घ्योबहुकालातिक्रमेऽष्टशतंजपइतितुरहस्यम् ॥ १० ॥ ११ ॥ तदुत्तमाउत्तमातोप्युत्तमेत्यर्थः ॥ १२ ॥ तत्रहेतुमाह । यतोदेव्याइति ॥ गायत्रीदेव्याउपासनादेव्याःसमीपेएवकर्तव्येत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ संध्याक्रममाह । आचांतइति ॥ केशवादिकनामभिराचांतइत्यन्वयः ॥ प्रथमतआचांतःपश्चात्प्राणमायम्यसंकल्पंकुर्यादितिशेषः । सचेत्थंममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंप्रातःसंध्यामुपासिष्येइति॥केशवादिनामान्याह । केशवश्चेति

विप्रोवृक्षोमूलकान्यत्रसंध्यावेदःशाखाधर्मकर्माणिपत्रम् ॥ तस्मान्मूलंयत्नतोरक्षणीयंछिन्नेमूलेनैववृक्षोनशाखा ॥ ६ ॥ संध्यायेननविज्ञातासंध्यायेनानुपासिता ॥ जीवमानोभवेच्छूद्रोमृतःश्वाचैवजायते ॥७॥ तस्मान्नित्यंप्रकर्तव्यंसंध्योपासनमुत्तमम् ॥ तदभावेऽन्यकर्मादावधिकारीभवेन्नहि॥८॥ उदयास्तमयादूर्ध्वंयावत्स्याद्घटिकात्रयम् ॥ तावत्संध्यामुपासीतप्रायश्चित्तंततःपरम्॥९॥कालातिक्रमणेजातेचतुर्थार्घ्यंप्रदापयेत् ॥ अथवाष्टशतंदेवींजप्त्वाऽऽदौतांसमाचरेत्॥१०॥यस्मिन्कालेतुयत्कर्मतत्कालाधीश्वरींचताम् ॥ संध्यामुपास्यपश्चात्तुतत्कालीनंसमाचरेत् ॥११॥ गृहेसाधारणाप्रोक्तागोष्ठेवैमध्यमाभवेत् ॥ नदीतीरेचोत्तमास्याद्देवीगेहेतदुत्तमा ॥१२॥ यतोदेव्याउपासेयंततोदेव्यास्तुसन्निधौ ॥ संध्यात्रयंप्रकर्तव्यंतदानंत्यायकल्पते ॥ १३ ॥ एतस्याअपरंदैवंब्राह्मणानांनविद्यते ॥ नविष्णूपासनानित्यानाशिवोपासनातथा ॥१४॥ यथाभवेन्महादेव्यागायत्र्याःश्रुतिचोदिता॥सर्ववेदसारभूतागायत्र्यास्तुसमर्चना॥१५॥ब्रह्मादयोऽपिसंध्यायांतांध्यायंतिजपंतिच ॥ वेदाजपंतितांनित्यंवेदोपास्यातःस्मृता॥१६॥तस्मात्सर्वेद्विजाःशाक्तानशैवानचवैष्णवाः ॥ आदिशक्तिमुपासंतेगायत्रींवेदमातरम् ॥ १७ ॥ आचांतःप्राणमायम्यकेशवादिकनामभिः ॥ केशवश्चतथानारायणोमाधवएवच ॥ १८ ॥ गोविंदोविष्णुरेवाथमधुसूदनएवच ॥ त्रिविक्रमोवामनश्चश्रीधरोऽपिततःपरम् ॥१९॥ हृषीकेशःपद्मनाभोदामोदरअतःपरम् ॥ संकर्षणोवासुदेवःप्रद्युम्नोप्यनिरुद्धकः ॥ २० ॥ पुरुषोत्तमाधोक्षजौचनारसिंहोच्युतस्तथा ॥ जनार्दनउपेंद्रश्चहरिःकृष्णोऽतिमस्तथा ॥२१॥ ॐकारपूर्वकंनामचतुर्विंशतिसंख्यया ॥ स्वाहांतैःप्राशयेद्वारिनमोंतैःस्पर्शयेत्तथा॥२२॥केशवादित्रिभिःपीत्वाद्वाभ्यांप्रक्षालयेत्करौ ॥ मुखंप्रक्षालयेद्वाभ्यांद्वाभ्यामुन्मार्जनंतथा ॥ २३ ॥ एकेनपाणिंसंप्रोक्ष्यपादावपिशिरोऽपिच ॥ संकर्षणादिदेवानांद्वादशांगानिसंस्पृशेत् ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ स्वाहां तैर्नामभिराचमनंनमोंतैरंगस्पर्शःकार्यइत्यर्थः ॥ २२ ॥ तदेवाह । केशवादित्रिभिरिति ॥ २३ ॥ संकर्षणादिदेवानांनामभिरितिशेषः ॥ तत्रप्रकारः ॥ ॐकेशवायस्वाहेति ॥ एवंत्रिनामभिरपःपीत्वागोविंदायनमोविष्णवेनमइतिकरौप्रक्षाल्यमधुसूदनत्रिविक्रमेतिद्वाभ्यामंगुष्ठमूलेनोष्ठौसंमृज्यवामनश्रीधरेतिद्वाभ्यांतथैवमुखमुन्मार्ज्यहृषीकेशेतिवामकरंप्रोक्ष्यपद्मनाभेतिपादौसंप्रोक्ष्यदामोदरेतिमूर्धानंसंप्रोक्ष्यसंकर्षणेतिसंहतमध्यमांगुलित्रयेणास्यंसंस्पृश्यवासुदेवप्रद्युम्नेतिद्वाभ्यामंगुष्ठतर्जनीभ्यां नासापुटेसंस्पृश्यानिरुद्धपुरुषोत्तमेतिद्वाभ्यामंगुष्ठानामिकाभ्यांचक्षुषीसंस्पृश्याधोक्षजनारसिंहेतिद्वाभ्यांतथैवश्रोत्रेसंस्पृश्याच्युतेतिकनिष्ठांगुष्ठाभ्यांनाभिंसंस्पृश्यजनार्दनेतिपाणितलेनहृदयंसंस्पृश्योपेंद्रेतिशिरः संस्पृश्य



CSU Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

हरयेनमःकृष्णायनमइतिद्वाभ्यांदक्षिणवामबाहुमूलेस्पृशेदिति ॥ एतच्चाचाराद्विकेस्पष्टम् ॥ २४ ॥ उदकंपीत्वेति ॥ उदकपानसमयेवामेनहस्तेनदक्षिणंस्पृशेदित्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ आचमनमुद्रामाह । संहतांगुलिनेति ॥ मिलितांगुलिनेत्यर्थः ॥ २७ ॥ आचमनविधिमुक्त्वाप्राणायामविधिमाह । प्राणायाममिति ॥ तुरीयपदंतुर्यपादस्तत्सहितामित्यर्थः ॥ तांजपन्प्राणायामंकुर्यादित्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ पीडयेदिति ॥ दक्षनासापुटेअंगुष्ठंस्थापयेद्वामनासापुटेकनिष्ठानामिकेस्थापयेन्मध्यमांतर्जनींचबहिःप्रसारयेदित्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

दक्षिणेनोदकंपीत्वावामेनसंस्पृशेद्बुधः ॥ तावन्नशुध्यतेतोयंयावद्वामेननस्पृशेत् ॥ २५ ॥ गोकर्णाकृतिहस्तेनमाषमात्रंजलंपिबेत्॥ततोन्यूनाधिकंपीत्वा सुरापानीभवेद्द्विजः ॥ २६ ॥ संहतांगुलिनातोयंपाणिनादक्षिणेनतु ॥ मुक्तांगुष्ठकनिष्ठाभ्यांशेषेणाचमनंविदुः ॥२७॥ प्राणायामंततःकृत्वाप्रणवस्मृतिपूर्वकम् ॥ गायत्रींशिरसासार्धंतुरीयपदसंयुताम्॥२८॥ दक्षिणेरेचयेद्वायुंवामेनपूरितोदरम् ॥ कुंभेनधारयेन्नित्यंप्राणायामंविदुर्बुधाः ॥ २९॥ पीडयेद्दक्षिणानाडीमंगुष्ठेनतथोत्तराम् ॥ कनिष्ठानामिकाभ्यांतुमध्यमांतर्जनींत्यजेत् ॥ ३० ॥ रेचकःपूरकश्चैवप्राणायामोऽथकुंभकः॥ प्रोच्यतेसर्वशास्त्रेषुयोगिभिर्यतमानसैः ॥३१॥ रेचकःसृजतेवायुंपूरकःपूरयेत्तुतम् ॥ साम्येनसंस्थितिर्यत्तत्कुंभकःपरिकीर्तितः ॥ ३२॥ नीलोत्पलदलश्यामंनाभिमध्येप्रतिष्ठितम् ॥ चतुर्भुजंमहात्मानंपूरकेचिंतयेद्धरिम् ॥३३॥ कुंभकेतुहृदिस्थानेध्यायेत्तुकमलासनम् ॥ प्रजापतिंजगन्नाथंचतुर्वक्त्रंपितामहम् ॥३४॥ रेचकेशंकरंध्यायेल्ललाटस्थंमहेश्वरम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशंनिर्मलंपापनाशनम्॥३५॥पूरकेविष्णुसायुज्यंकुंभकेब्रह्मणोगतिम् ॥ रेचकेनतृतीयंतुप्राप्नुयादीश्वरंपरम् ॥ ॥ ३६ ॥ पौराणाचमनाद्यंचप्रोक्तंदेवर्षिसत्तम ॥ श्रौतमाचमनाद्यंचशृणुपापापहंमुने ॥ ३७॥ प्रणवंपूर्वमुच्चार्यगायत्रींतुतदित्यृचम् ॥ पादादौव्याहृतीस्तिस्रःश्रौताचमनमुच्यते ॥ ३८ ॥ गायत्रींशिरसासार्धंजपेद्व्याहृतिपूर्विकाम् ॥ प्रतिप्रणवसंयुक्तांत्रिरयंप्राणसंयमः ॥३९॥ "सलक्षणंतुप्राणानामायामंकीर्त्यतेऽधुना ॥ नानापापैकशमनंमहापुण्यफलप्रदम् ॥ " पंचांगुलीभिर्नासाग्रंपीडयेत्प्रणवेनतु॥सर्वपापहरामुद्रावानप्रस्थगृहस्थयोः॥४०॥कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्यतेश्चब्रह्मचारिणः ॥ आपोहिष्ठेतितिसृभिःप्रोक्षणंस्यात्कुशोदकैः॥४१॥ऋगंतेमार्जनंकुर्यात्पादांतेवासमाहितः ॥ नवप्रणवयुक्तेनआपोहिष्ठेत्यनेनतु॥४२॥नश्येदघंमार्जनेनसंवत्सरसमुद्भवम् ॥ ततआचमनंकृत्वासूर्यश्चेतिपिबेदपः ॥ ४३ ॥ अंतःकरणसंभिन्नंपापंतस्यविनश्यति ॥ प्रणवेनव्याहृतिभिर्गायत्र्याप्रणवाद्यया ॥ ४४ ॥ आपोहिष्ठेतिसूक्तेनमार्जनंचैवकारयेत् ॥ उद्धृत्यदक्षिणेहस्तेजलंगोकर्णवत्कृते ॥ ४५ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तदित्यृचंतत्सवितुरित्यादि ॥ ३८ ॥ प्रतिप्रणवेति ॥ प्रत्येकव्याहृतौप्रणवयोगःकर्तव्यइत्यर्थः ॥ ३९ ॥ प्राणायामेपक्षांतरेणमुद्रांतरमाह । पंचांगुलीभिरिति ॥ ४० ॥ मार्जनमाह । आपोहिष्ठेतीति ॥ तिसृभिर्ऋग्भिस्त्रिवारंप्रोक्षणम् ॥ यद्वातिसृणामृचांनवपादाभवंतितत्रपादादौप्रणवमुच्चार्यनवभिःपादैर्नववारंमार्जनंकुर्यादित्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सूर्यश्चेतीति ॥ सूर्यश्चमामन्युश्चेतिऋचा ॥ ४३ ॥ मार्जनांतरमाह । प्रणवेनेति ॥ सर्वंमिलित्वैकंमार्जनमित्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ऋतंचेति ॥ ऋतंचसत्यंचेत्यादिः ॥ ४६ ॥ द्रुपदाद्रुपदादिवमुमुचानइत्यादि ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ मध्याह्नेइति ॥ मध्याह्नेतुसकृदेवार्घ्यदानंसंध्ययोरुभयोस्तुत्रिवारमर्घ्यदान मित्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ अर्घ्यदानकारणमाह । उदकमिति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ तथाचतैत्तिरीयश्रुतिः ॥ ताआपोवज्रीभूतास्तानिरक्षांसिमंदेहारुणेद्वीपेप्रक्षिपंतीति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ आगच्छवरदेइति ॥ तूष्णींगायत्रीप्रार्थना ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इयंखेचरीमुद्राहठप्रदीपिकायांप्रसिद्धा ॥ ६४ ॥ घंटावन्नादवत्प्रणवोच्चारादि

नीत्वातंनासिकाग्रंतुवामकुक्षौस्मरेदघम् ॥ पुरुषंकृष्णवर्णंचऋतंचेतिपठेत्ततः ॥ ४६ ॥ द्रुपदावाऋचंपश्चाद्दक्षनासापुटेनच ॥ श्वासमार्गेणतंपापमानयेत्करवारिणि ॥ ४७ ॥ नावलोक्यैवतद्वारिवामभागेऽश्मनिक्षिपेत् ॥ निष्पापंतुशरीरंमेसंजातमितिभावयेत् ॥४८॥ उत्थायतुततःपादौद्वौसमौसन्नियोजयेत्॥जलांजलिंगृहीत्वातुतर्जन्यंगुष्ठवर्जितम्॥४९॥वीक्ष्यभानुंक्षिपेद्वारिगायत्र्याचाभिमंत्रितम् ॥ त्रिवारंमुनिशार्दूलविधिरेषोऽर्घ्यमोचने॥५०॥ ततःप्रदक्षिणांकुर्यादसावादित्यमंत्रतः ॥ मध्याह्नेसकृदेवस्यात्संध्ययोस्तुत्रिवारतः ॥५१॥ईषन्नम्रःप्रभातेतुमध्याह्नेदंडवत्स्थितः ॥ आसनेचोपविष्टस्तुद्विजःसायंक्षिपेदपः॥५२॥उदकंप्रक्षिपेद्यस्मात्तत्कारणमतःशृणु॥त्रिंशत्कोट्योमहावीरामंदेहानामराक्षसाः ॥५३॥ कृतघ्नादारुणाघोराःसूर्यमिच्छंतिखादितुम् ॥ ततोदेवगणाःसर्वेऋषयश्चतपोधनाः ॥ ५४ ॥ उपासतेमहासंध्यांप्रक्षिपंत्युदकांजलीन् ॥ दह्यंतेतेनदैत्यास्तेवज्रीभूतेनवारिणा ॥ ५५ ॥ एतस्मात्कारणाद्विप्राःसंध्यांनित्यमुपासते ॥ महापुण्यस्यजननंसंध्योपासनमीरितम् ॥ ५६॥ अर्घ्यांगभूतमंत्रोऽयंप्रोच्यतेशृणुनारद ॥ यदुच्चारणमात्रेणसांगंसंध्याफलंभवेत् ॥५७॥ सोहमर्कोस्म्यहंज्योतिरात्माज्योतिरहंशिवः ॥ आत्मज्योतिरहंशुक्रःसर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ॥ ५८ ॥ आगच्छवरदेदेविगायत्रिब्रह्मरूपिणि ॥ जपानुष्ठानसिद्ध्यर्थंप्रविश्यहृदयंमम॥५९॥उत्तिष्ठदेविगंतव्यंपुनरागमनायच॥अर्घ्येषुदेविगंतव्यंप्रविश्यहृदयंमम ॥६०॥ततःशुद्धःस्थलेनैजमासनंस्थापयेद्बुधः ॥ तत्रारुह्यजपेत्पश्चाद्गायत्रींवेदमातरम् ॥ ६१ ॥ अत्रैवखेचरीमुद्राप्राणायामोत्तरंमुने ॥ प्रातःसंध्याविधानेचकीर्तितामुनिपुंगव॥६२॥ तन्नामार्थंप्रवक्ष्यामिसादरंशृणुनारद ॥ चित्तंचरतिखेयस्माज्जिह्वाचरतिखेगता॥६३॥भ्रुवोरंतर्गतादृष्टिर्मुद्राभवतिखेचरी॥नचासनंसिद्धसमंनकुंभसदृशोऽनिलः॥६४॥नखेचरीसमामुद्रासत्यंसत्यंचनारद ॥ घंटावत्प्रणवोच्चाराद्वायुंनिर्जित्ययत्नतः॥६५॥स्थिरासनेस्थिरोभूत्वानिरहंकारनिर्ममः॥लक्षणंनारदमुनेशृणुसिद्धासनस्यच॥६६॥योनिस्थानकमंघ्रिमूलघटितंकृत्वादृढंविन्यसेन्मेढ्रेपादमथैकमेवहृदयंकृत्वासमंविग्रहम् ॥ स्थाणुःसंयमितेंद्रियोचलदृशापश्यन्भ्रुवोरंतरंतिष्ठत्येतदतीवयोगिसुखदंसिद्धासनंप्रोच्यते ॥६७॥ आयातुवरदादेवीअक्षरंब्रह्मसंमितम् ॥ गायत्रींछंदसांमातरिदंब्रह्मजुषस्वमे ॥ ६८ ॥

त्यर्थः ॥ प्लुतप्रणवोच्चारादितितात्पर्यम् ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ योनिस्थानकमिति ॥ एकंपादमूलंलिंगमूलेद्वितीयपादमूलंवृषणाधइत्यर्थः ॥ हृदयंसमंविग्रहंशरीरंचसमंदंडवदित्यर्थः ॥ ६७ ॥ ततआसनबंधानंतरंगायत्र्यावाहनमंत्रमाह । आयात्विति ॥ ६८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥६९॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥ न्यासात्पूर्वंपरमात्मनः स्मरणमाह । हृत्पद्ममध्येइति ॥७५॥७६॥ व्याहृतिन्यासमाह । भूरित्युक्त्वेति ॥ ॐभूःपादाभ्यांनमइत्येवंमंत्राऊह्याः॥७७॥ ७८॥ अंगुष्ठादिन्यासमाह । अंगुष्ठाभ्यामिति ॥ तत्सवितुरंगुष्ठाभ्यांनमइत्येवंमंत्राऊह्याः ॥७९॥८०॥ हृदयादिन्यासमाह । ब्रह्मात्मनेइति ॥ तत्सवितुर्ब्रह्मात्मनेहृदयायनमइत्येवंमंत्रा

यदह्नात्कुरुतेपापंतदह्नात्प्रतिमुच्यते ॥ यद्रात्र्यात्कुरुतेपापंतद्रात्र्यात्प्रतिमुच्यते ॥ ६९ ॥ सर्ववर्णेमहादेविसंध्याविद्येसरस्वति ॥ अजरेअमरेदेविसर्वदेविनमोस्तुते ॥ ७० ॥ तेजोसीत्यादिमंत्रेणदेवीमावाहयेत्ततः ॥ यत्कृतंत्वदनुष्ठानंतत्सर्वंपूर्णमस्तुमे ॥ ७१ ॥ ततःशापविमोक्षायविधानंसम्यगाचरेत् ॥ ब्रह्मशापस्ततोविश्वामित्रस्यचतथैवच ॥ ७२ ॥ वसिष्ठशापइत्येतद्विविधंशापलक्षणम् ॥ ब्रह्मणःस्मरणेनैवब्रह्मशापोनिवर्त्यते ॥७३॥ विश्वामित्रस्मरणतोविश्वामित्रस्यशापकः॥वसिष्ठस्मरणादेवतस्यशापोविनश्यति॥७४॥हृत्पद्ममध्येपुरुषंप्रमाणंसत्यात्मकंसर्वजगत्स्वरूपम्॥ ध्यायामिनित्यंपरमात्मसंज्ञंचिद्रूपमेकंवचसामगम्यम् ॥ ७५ ॥ अथन्यासविधिंवक्ष्येसंध्यायाअंगसंभवम् ॥ ॐकारंपूर्ववद्योज्यंततोमंत्रानुदीरयेत् ॥ ७६ ॥ भूरित्युक्त्वाचपादाभ्यांनमइत्येवचोच्चरेत् ॥ भुवःपूर्वंतुजानुभ्यांस्वःकटिभ्यांनमोवदेत्॥७७॥महर्नाभ्यैजनश्चैवहृदयायततस्तपः ॥कंठायचततःसत्यंललाटेपरिकीर्तयेत्॥७८॥अंगुष्ठाभ्यांतत्सवितुस्तर्जनीभ्यांवरेण्यकम्॥भर्गोदेवस्यमध्याभ्यांधीमहीत्येवकीर्तयेत्॥७९॥अनामाभ्यांकनिष्ठाभ्यांधियोयोनःपदंवदेत् ॥ प्रचोदयात्करपृष्ठतलयोर्विन्यसेत्सुधीः ॥ ८० ॥ ब्रह्मात्मनेतत्सवितुर्हृदयायनमस्तथा ॥ विष्ण्वात्मनेवरेण्यंचशिरसेनमइत्यपि ॥ ८१ ॥ भर्गोदेवस्यरुद्रात्मनेशिखायैप्रकीर्तितम् ॥ शक्त्यात्मनेधीमहीतिकवचायततःपरम् ॥८२॥ कालात्मनेधियोयोनोनेत्रत्रयउदीरितम् ॥ प्रचोदयाच्चसर्वात्मनेऽस्त्राय परिकीर्तितम् ॥ ८३ ॥ अक्षरन्यासमेवाग्रेकथयामिमहामुने ॥ गायत्रीवर्णसंभूतन्यासःपापहरःपरः ॥ ८४ ॥ प्रणवंपूर्वमुच्चार्यवर्णन्यासःप्रकीर्तितः ॥ तत्कारमादावुच्चार्यपादांगुष्ठद्वयेन्यसेत् ॥ ८५ ॥ सकारंगुल्फयोस्तद्वद्विकारंजंघयोर्न्यसेत् ॥ जान्वोस्तुकारंविन्यस्यऊर्वोश्चैववकारकम् ॥८६॥ रेकारंचगुदेन्यस्यणिकारंलिंगएवच॥कटयांयकारमेवात्रभकारंनाभिमंडले॥८७॥गोकारंहृदयेन्यस्यदेकारंस्तनयोर्द्वयोः ॥वकारंहृदिविन्यस्यस्यकारंकंठकूपके ॥ ८८ ॥ धीकारंमुखदेशेतुमकारंतालुदेशके ॥ हिकारंनासिकाग्रेतुधिकारंनेत्रमंडले ॥ ८९ ॥ भ्रूमध्येचैवयोकारंयोकारंचललाटके ॥ नकारंवैपूर्वमुखेप्रकारंदक्षिणेमुखे ॥ ९० ॥ चोकारंपश्चिममुखेदकारंचोत्तरेमुखे ॥ याकारंमूर्ध्निविन्यस्यतकारंव्यापकंन्यसेत्॥९१॥ एतन्न्यासविधिंकेचिन्नेच्छंतिजपतत्पराः ॥ ततोध्यायेन्महादेवींजगन्मातरमंबिकाम् ॥ ९२ ॥

ऊह्याः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ वर्णन्यासमाह । अक्षरन्यासेति ॥ ८४ ॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९० ॥ ९१ ॥ एतन्न्यासकथनेनऋषिच्छंदोन्यासोपिसूचितइत्यर्थाद्वेदितव्यम् ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तेचऋषिच्छंदोन्यासाग्रंथांतरेप्रसिद्धाएवसंतीतिगौरवभियानालिख्यंते ॥ एतंन्यासविधिंकेचिदिति ॥ तथाचगृह्यपरिशिष्टे शुचौदेशेदर्भाभसोक्षितेदर्भानास्तीर्यव्याहृतिभिरुपविश्यप्राणाया मत्रयंकृत्वात्मानंव्याहृतिभिरभ्युक्ष्यसाविञ्याऋषिदैवतच्छंदांस्यनुस्मृत्यषड्भिस्तदंगमंत्रैरित्यादिन्यसेदेषोंगन्यासएनमप्येकेनेच्छंतिसाहिविधिरवैदिकइत्युक्तम् ॥ अत्रैकेइतिपदेनाकरणेप्र त्यवायोनास्तिकृतेत्वभ्युदयइतिसूचितम् ॥ अन्यथाएकेइतिकथनस्यवैयर्थ्यापत्तेः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ चतुरास्यांचतुर्मुखाम् ॥ द्विनेत्रांप्रतिवक्त्रंनेत्रद्वयम् ॥ मालांजपमालाम् ॥ कुंडिकां कमंडलुम् ॥ ९४ ॥ ऋग्वेदाध्यायिनीमृग्वेदमुद्गिरंतीमृऋग्वेदोत्पादिकामित्यर्थः ॥ हंसपत्रांहंसवाहनांहंसोपरिरक्तांबुजंतदारूढामित्यर्थः ॥ ब्रह्मदेवतांब्रह्मणश्चतुर्मुखस्यदेवतांतदुपास्यामि त्यर्थः ॥ ९५ ॥ चतुष्पदामिति ॥ तदुक्तंगायत्रीहृदये ॥ ऋग्वेदोस्याःप्रथमःपादोभवति ॥ यजुर्वेदोद्वितीयःपादः ॥ सामवेदस्तृतीयःपादः ॥ अथर्ववेदश्चतुर्थःपादः ॥ पूर्वादिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति ॥ दक्षिणादिग्द्वितीयाकुक्षिर्भवति ॥ पश्चिमादिक्तृतीयाकुक्षिर्भवति ॥ उत्तरादिक्चतुर्थीकुक्षिर्भवति ॥ ऊर्ध्वदिक्पंचमीकुक्षिर्भवति ॥ अधरादिक्षष्ठीकुक्षिर्भवति ॥ अंतरिक्षादिक्सप्तमीकुक्षिर्भवति ॥ अवांतरादिगष्टमीकुक्षिर्भवति ॥ व्याकरणमस्याःप्रथमंशिरोभवति ॥ शिक्षाद्वितीयंशिरोभवति ॥ कल्पस्तृतीयंशिरोभवति ॥ निरुक्तंचतुर्थंशिरो भवति ॥ ज्योतिषंनयनमितिपंचमंशिरोभवति ॥ इतिहासपुराणानिषष्ठंशिरोभवति ॥ उपनिषदःसप्तमंशिरोभवतीति ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिमुद्रा

**भास्वज्जपाप्रसूनाभांकुमारींपरमेश्वरीम् ॥ रक्तांबुजासनारूढांरक्तगंधानुलेपनाम्॥९३॥रक्तमाल्यांबरधरांचतुरास्यांचतुर्भुजाम् ॥ द्विनेत्रांस्रुक्स्रुवौमालां कुंडिकांचैवबिभ्रतीम् ॥९४॥ सर्वाभरणसंदीप्तामृग्वेदाध्यायिनींपराम् ॥ हंसपत्रामाहवनीयमध्यस्थांब्रह्मदेवताम् ॥९५॥ चतुष्पदामष्टकुक्षिंसप्तशीर्षामहे श्वरीम् ॥ अग्निवक्त्रांरुद्रशिखांविष्णुचित्तांतुभावयेत्॥९६॥ब्रह्मातुकवचंयस्यागोत्रंसांख्यायनंस्मृतम्॥आदित्यमंडलांतस्थांध्यायेद्देवींमहेश्वरीम् ॥९७॥ एवंध्यात्वाविधानेनगायत्रींवेदमातरम् ॥ ततोमुद्राःप्रकुर्वीतदेव्याःप्रीतिकराःशुभाः ॥ ९८ ॥ संमुखंसंपुटंचैववाततंविस्तृतंतथा ॥ द्विमुखंत्रिमुखंचैवचतु ष्कंपंचकंतथा ॥ ९९ ॥ षण्मुखाधोमुखंचैवव्यापकांजलिकंतथा ॥ शकटंयमपाशंचग्रथितंसंमुखोन्मुखम् ॥ १०० ॥ विलंबंमुष्टिकंचैवमत्स्यंकूर्मंवराह कम् ॥ सिंहाक्रांतंमहाक्रांतंमुद्गरंपल्लवंतथा ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिमुद्राश्चगायत्र्याःसंप्रदर्शयेत् ॥ शताक्षरांचगायत्रींसकृदावर्तयेत्सुधीः ॥ २ ॥**

श्चेति ॥ आसांनामानिलक्षणानिचब्रह्मकल्पोक्तानिलिख्यंते ॥ अथातोदर्शयेन्मुद्राःसंमुखंसंपुटंतथा ॥ ततोविततविस्तीर्णेद्विमुखंत्रिमुखंतथा ॥ चतुर्मुखंपंचमुखंषण्मुखाधोमुखंततः ॥ व्यापकांजलिकंचैवशकटंतदनंतरम् ॥ यमपाशंतुग्रथितंततःस्यात्संमुखोन्मुखम् ॥ विलंबोमुष्टिकोमीनस्ततःकूर्मवराहकौ ॥ सिंहाक्रांतंमहाक्रांतंततोमुद्गरपल्लवे ॥ चतुर्विंशतिरित्येतागाय त्र्याःपरिकीर्तिताः ॥ जपकालेप्रयोक्तव्याअन्यथानिष्फलोजपः ॥ नजातुदर्शयेन्मुद्रामहाजनसमागमे ॥ क्षुभ्यंतिदेवतास्तस्यनिष्फलंचभवेदिति ॥ अथैतासांलक्षणमाह । संमुखंसंहतौ हस्तावुत्तानौकुंचितांगुली ॥ संपुटंपद्मकोशाभौकरावन्योन्यसंहतौ ॥ विततंसंहतौहस्तावुत्तानावायतांगुली ॥ विस्तीर्णंसंहतौपाणीमिथोमुक्तांगुलीयकौ ॥ संमुखंसक्तयोःपाण्योःकानि ष्ठाद्वययोगतः ॥ शेषांगुलीनांवैकल्येद्विमुखत्रिमुखादयः ॥ शेषांगुलीनांसंयोगात्पूर्वसंयोगनाशनम् ॥ तिर्यक्संयुज्यमानाग्रौसंयुक्तांगुलिमंडलौ॥हस्तौषण्मुखमित्युक्तामुद्रामुद्राविशारदैः॥ आकुंचिताग्रौसंयुक्तावर्वाग्घस्तावधोमुखौ ॥ उत्तानौतादृशावेवव्यापकंकुंचितौकरौ ॥ अधोमुखौतुमुक्ताग्रांगुष्ठकौशकटंकरौ ॥ बद्धमुष्टिकयोःपाण्योरुत्तानांनामतर्जनीम् ॥ कुंचिता न्यातुबध्नातितर्जनीयमपाशकम् ॥ उत्तानसंधिसंलीनबद्धांगुलिदलौकरौ ॥ संमुखीघटितौदीर्घांगुष्ठौग्रथितमुच्यते ॥ कुंचितोर्ध्वांगुलिर्वामोहस्तोदक्षेणतादृशा ॥ अधोमुखेनसंयुक्तःसंमु



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

खोन्मुखमुच्यते ॥ उत्तानोन्नतकोटीचविलंबःकथितःकरौ ॥ मुष्टीचान्योन्यसंयुक्तावुत्तानोमुष्टिकोभवेत् ॥ मीनस्तुसंमुखीभूतामुक्तानामाकनिष्ठिकौ ॥ ऊर्ध्वसंयुक्तवक्रौतुशेषांगुलिदलौ करौ ॥ अधोमुखःकरोवामस्तादृशोदक्षिणेनतु ॥ पृष्ठदेशेसमाक्रांतःकूर्मोनामाभिधीयते ॥ ऊर्ध्वमध्यंवामहस्तःकक्षायामाश्रयेत्करम् ॥ वराहःकथ्यतेकंठसमीपाश्रयकेकरे ॥ सिंहाक्रांतं समाक्रांतंकरौकर्णाश्रितावृजू ॥ किंचित्तुकुंचिताग्रौचमहाक्रांतंस्मृतंहितौ ॥ ऊर्ध्वौकिंचित्कृतौपाणीमुद्गरोवामतर्जनी ॥ ग्रस्तादक्षिणहस्तेनपल्लवोदक्षिणःकरः ॥ अधोमुखःस्थितोमूर्ध्नि मुद्राणामितिलक्षणम् ॥ शताक्षरगायत्रीस्वरूपमाह । शताक्षरामिति ॥ २ ॥ जातवेदसनाम्नीम् ॥ जातवेदसेसुनवामसोमामितिमंत्रः ॥ ३ ॥ त्र्यंबकस्यर्चंत्र्यंबकंयजामहेइतिमंत्रः ॥ एतत्त्रयंमिलित्वाशताक्षरागायत्रीभवति ॥ तदुक्तंनित्याह्निके ॥ गायत्रीजपतःपूर्वंसकृज्जप्याशताक्षरा ॥ तेनरक्षाभवेन्नूनंपरमात्माप्रसीदतीति ॥ ४ ॥ नित्यजपनीयगायत्रीस्वरूपमाह । ओंकारंपूर्वमुच्चार्येति ॥ एकप्रणवव्याहृतित्रययुक्तगायत्रीजपएवमुख्यःपक्षइत्यर्थः ॥ ५ ॥ १०६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ अर्धाधिकैःसप्त चत्वारिंशत्पद्यैरतःपरम् ॥ संध्यादिकृत्यंयत्किंचित्तत्त्रिभागांतमुच्यते ॥ १ ॥ भिन्नपादेति ॥ पादत्रयंभिन्नंपठेन्नतुसंलग्नंपठित्वाजपेदित्यर्थः ॥ तदुक्तंनित्याह्निके ॥ सावकाशतयावि

चतुर्विंशत्यक्षराणिगायत्र्याःकीर्तितानिहि ॥ जातवेदसनाम्नींचऋचमुच्चारयेदतः ॥ ३ ॥ त्र्यंबकस्यर्चमावृत्त्यगायत्रीशतवर्णका ॥ भवतीयंमहापुण्यास कृज्जप्याबुधैरियम् ॥ ४ ॥ ॐकारंपूर्वमुच्चार्यभूर्भुवःस्वस्तथैवच ॥ चतुर्विंशत्यक्षरांचगायत्रींप्रोच्चरेत्ततः ॥ ५ ॥ एवंनित्यंजपंकुर्याद्ब्राह्मणोविप्रपुंगवः ॥ ससमग्रंफलंप्राप्यसंध्यायाःसुखमेधते ॥ १०६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नारायणउवाच ॥ भिन्नपादातुगायत्रीब्रह्महत्याप्रणाशिनी ॥ अभिन्नपादागायत्रीब्रह्महत्यांप्रयच्छति ॥ १ ॥ अच्छिन्नपादागायत्रीजपंकुर्वंतियेद्विजाः ॥ अधोमुखाश्चतिष्ठंति कल्पकोटिशतानिच ॥ २ ॥ संपुटैकषडोंकारागायत्रीविविधामता ॥ धर्मशास्त्रपुराणेषुइतिहासेषुसुव्रत ॥ ३ ॥ पंचप्रणवसंयुक्तांजपेदित्यनुशासनम् ॥ जपसंख्याष्टभागांतेपादोजप्यस्तुरीयकः ॥४॥ सद्विजःपरमोज्ञेयःपरंसायुज्यमाप्नुयात् ॥ अन्यथाप्रजपेद्यस्तुसजपोविफलोभवेत् ॥५॥ संपुटैकाषडोंकारा भवेत्साऊर्ध्वरेतसाम् ॥ गृहस्थोब्रह्मचारीवामोक्षार्थीतुरीयांजपेत् ॥६॥ तुरीयपादोगायत्र्याःपरोरजसेसावदोम् ॥ ध्यानमस्यप्रवक्ष्यामिजपसांगफलप्रदम् ॥७॥हृदिविकसितपद्मंसार्कसोमाग्निबिंबंप्रणवमयमचिंत्यंयस्यपीठंप्रकल्प्यम्॥अचलपरमसूक्ष्मंज्योतिराकाशसारंभवतुममसुदेसौसच्चिदानंदरूपः ॥८॥

द्वान्भिन्नपादांजपेद्बुधः ॥ एकश्वासोच्चारणात्तुसंदिग्धंत्वक्षरंभवेदिति ॥ १ ॥ २ ॥ संपुटाप्रणवसंपुटा ॥ एकषडोंकाराएकोंकाराषडोंकाराचेत्यर्थः ॥ ३ ॥ पंचप्रणवेति ॥ अयमप्येकः पक्षोस्तीत्यर्थः ॥ गायत्रीजपेकिंचिद्विशेषमाह । जपसंख्येति ॥ यत्संख्ययाजपःकर्तव्यस्तत्संख्यायाअष्टभागांतइत्यर्थः ॥ तुरीयःपादःपरोरजसेत्यादिः ॥ तदुक्तंनित्याह्निके ॥ जपसं ख्याऽष्टभागांतेजपेत्पादंतुरीयकम् ॥ उन्मुखत्वंभवेत्तेनसच्चिदानंदरूपिणइति ॥ ४ ॥ ५ ॥ चतुर्विधगायत्र्याअधिकारिणआह । संपुटैकेति ॥ एकासंपुटा ॥ द्वितीयाषडोंकारा ॥ पंच प्रणवयुक्ताइदमुपलक्षणम् ॥ एतद्गायत्रीत्रितयमूर्ध्वरेतसःभवतीत्यर्थः ॥ अथचगृहस्थोब्रह्मचारीवातुरीयांपूर्वोक्तभेदचतुष्टयेतुरीयामेकप्रणवयुक्तांजपेदित्यर्थः ॥ तदुक्तंव्यासेन ॥ संपुटै काषडोंकारागायत्रीत्रिविधामता ॥ तत्रैकप्रणवाग्राह्यागृहस्थैर्ब्रह्मवादिभिः ॥ गृहस्थोब्रह्मचारीचप्रणवाद्यामिमांजपेत् ॥ अंतेयःप्रणवंकुर्यान्नासौवृद्धिमवाप्नुयात् ॥ संपुटांचषडोंकारां गायत्रींप्रजपेद्यतिरिति ॥ ६ ॥ पूर्वोक्तगायत्र्यास्तुरीयपादमाह । तुरीयपादइति ॥ ७ ॥ तुरीयपादजपेब्रह्मध्येयमित्याह।हृदिविकसितेति॥यस्यपीठमेतादृशंसच्चिदानंदरूपइत्यर्थः ॥८॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तुरीयगायत्र्यामुद्राआह । त्रिशूलेति ॥९॥१०॥ गायत्र्यामानसींपूजामाह । ध्यातस्यपूजामिति ॥ ध्यातस्यचिंतितस्यदेवस्येत्यर्थः ॥ ११॥१२॥१३॥ पंचभूतात्मनेपरमेश्वरायगायत्री स्वरूपायपंचभूतात्मकानेवोपचारानर्पयामीत्यर्थः ॥ मुद्राःपूर्वोक्ताः ॥ संमुखंसंपुटमित्यादयोस्मिन्समयेदर्शयेदित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ विधिनेति ॥ मंत्रार्थानुसंधानपुरःसरमित्यर्थः ॥ मंत्रार्थश्चविश्वामित्रकल्पेउक्तःदेवस्यसवितुस्तस्यधियोयोनःप्रचोदयात् ॥ भर्गोवरेण्यंतद्ब्रह्मधीमहीत्यतउच्यतइति ॥ इतोप्यधिकोमंत्रार्थःप्रपंचसारेश्रीमच्छंकरभगवत्पादैरुक्तोवेदितव्यः ॥ अन्यत्रसहस्रापरमामित्युक्तत्वात्सहस्रजपोमुख्यः ॥ परोगौणः ॥ १६ ॥ ततइति ॥ जपानंतरंगायत्रींगायत्र्यस्येकपदीद्विपदीत्रिपदीचतुष्पद्यपदसिनहिपद्यसेनमस्तेतुरीयायदार्शतायप दायपरोरजसेसावदोमाप्रापदितिबृहदारण्यकप्रोक्तोपस्थानेनतामुपस्थाप्यान्यस्मृतिप्राप्तमप्यंगकलापंसमाप्यउत्तरेशिखरेजातेइतिमंत्रेणतांनमस्कृत्यविसर्जयेदित्यर्थः ॥ गायत्रीजपोज

त्रिशूलयोनीसुरभिमक्षमालांचलिंगकम् ॥ अंबुजंचमहामुद्रामितिसप्तप्रदर्शयेत् ॥ ९ ॥ यासंध्यासैवगायत्रीसच्चिदानंदरूपिणी ॥ भक्त्यातांब्राह्मणोनि त्यंपूजयेच्चनमेत्ततः ॥ १० ॥ ध्यातस्यपूजांकुर्वीतपंचभिश्चोपचारकैः ॥ लंपृथिव्यात्मनेगंधमर्पयामिनमोनमः ॥ ११ ॥ हमाकाशात्मनेपुष्पंचार्पयामि नमोनमः ॥ यंचवाय्वात्मनेधूपंचार्पयामिततोवदेत् ॥ १२ ॥ रंचवन्ह्यात्मनेदीपमर्पयामिततोवदेत् ॥ वममृतात्मनेतस्मैनैवेद्यमपिचार्पयेत् ॥ १३ ॥ यं रंलंवंहमितिचपुष्पांजलिमथार्पयेत् ॥ एवंपूजांविधायाथचांतेमुद्राःप्रदर्शयेत् ॥ १४ ॥ ध्यायेत्तुमनसादेवींमंत्रमुच्चारयेच्छनैः ॥ नकंपयेच्छिरोग्रीवांदंता न्नैवप्रकाशयेत् ॥ १५ ॥ विधिनाष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेववा ॥ दशवारमशक्तौवानातोन्यूनंकदाचन ॥१६॥ ततउद्वासयेद्देवीमुत्तमेत्यनुवाकतः ॥ नगा यत्रींजपेद्विद्वाञ्जलमध्येकथंचन ॥ १७ ॥ यतःसाग्निमुखीप्रोक्तेत्याहुःकेचिन्महर्षयः ॥ सुरभिर्ज्ञानशूर्पंचकूर्मोयोनिश्चपंकजम् ॥ १८॥ लिंगंनिर्वाणकंचै वजपांतेऽष्टौप्रदर्शयेत् ॥ यदक्षरपदभ्रष्टंस्वरव्यंजनवर्जितम् ॥ १९ ॥ तत्सर्वंक्षम्यतांदेविकृपयाप्रियवादिनी ॥ गायत्रीतर्पणंचातःकरणीयंमहामुने ॥ ॥ २० ॥ गायत्रीछंदआख्यातंविश्वामित्रऋषिःस्मृतः ॥ सवितादेवताप्रोक्ताविनियोगश्चतर्पणे ॥२१ ॥ भूरित्युक्त्वाचऋग्वेदपुरुषंतर्पयामिच॥भुवइत्येत दुक्त्वाचयजुर्वेदमथोवदेत् ॥ २२ ॥ स्वर्व्याहृतिंसमुक्त्वाचसामवेदंसमुच्चरेत् ॥ महइत्येतदुक्त्वांतेऽथर्ववेदंचतर्पयेत् ॥२३॥ जनःपदांतइतिहासपुराण मितीरयेत् ॥ तपःसर्वागमंचैवपुरुषंतर्पयामिच ॥ २४ ॥ सत्यंचसत्यलोकाख्यपुरुषंतर्पयामिच ॥ ॐभूर्भूर्लोकपुरुषंतर्पयामिततोवदेत् ॥ २५ ॥

लेनकार्यइत्येकदेशिमतमतआह । नगायत्रींजपेदिति ॥ तथाचगोभिलः ॥ कदाचिदपिनोविद्वान्गायत्रीमुदकेजपेत् ॥ गायत्र्यग्निमुखीप्रोक्तातस्मादुत्थायतांजपेदिति ॥ उत्थायजलादित्य र्थात् ॥ अत्रकेचित्पदेनारुचिर्बोधिता ॥ साचेत्थम् ॥ निमज्याप्सुजपेन्मासंशतमिष्टमवाप्नुयात् ॥ एवंशतोत्तरंजस्त्वासहस्रंसर्वमाप्नुयात् ॥ तथाजानुदघ्नेजलेस्थित्वावीक्ष्यतोयगतंरविम् ॥ गायत्रींप्रजपेद्विद्वान्सर्वपापापनुत्तयेइतिविश्वामित्रकल्पवचनात् ॥ तथार्द्रवासाजलेकुर्यात्तर्पणाचमनंजपमितिहारीतवचनाच्चजलेपिगायत्रीजपोननिषिद्धइति ॥ तर्हिगोभिलवचनस्यकागति रितिचेदालस्यादिनाकश्चिदासनंविहायजलेजपंकरिष्यतितन्निषेधार्थंतद्वचनस्यसत्त्वादिति ॥ १७ ॥ जपानंतरंमुद्राअष्टौप्रदर्शयेदितिपूर्वमेववक्तव्यमत्राह । सुरभिर्ज्ञानेति ॥ १८ ॥ यद क्षरेतिप्रार्थनामंत्र. ॥ १९ ॥ संध्यांगतर्पणमाह । गायत्रीतर्पणामिति ॥ २० ॥ २१ ॥ भूरित्युक्त्वेतितर्पणमंत्राःस्पष्टाएव ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ पश्चादुषसींगायत्रीमित्यादिनामभिर्गायत्रींतर्पयेदित्यर्थः ॥ २९ ॥ जातवेदसमिति ॥ जातवेदसेसुनवामसोममितिमंत्रः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ एवमिति ॥ एतावत्पर्यंतंकर्मकृत्वापश्चाद्गायत्रींविसर्जयेदितितत्त्वम् ॥ संध्योत्तरंकृत्यमाह । संध्याकर्मेति ॥ ३४ ॥ होमोत्तरंपंचायतनपूजामाह । पंचायतनेति ॥ पंचायतनदेवताआह शिवामिति ॥ ३५ ॥ मूलमंत्रेणदेव्यामूलमंत्रेणमायाबीजाद्यात्मकेनेत्यर्थः ॥ द्वीश्चतइति ॥ तैत्तिरीयशाखोक्तद्वीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यौइतिमंत्रेणेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ देवीपंचायतनेस्थापनीय देवतास्थानान्याह । भवानीमिति ॥ भवानींभवानीमूर्तिंहीरकमाणिक्येंद्रनीलपद्मरागादिरत्ननिर्मितांसुवर्णरौप्यताम्रादिधातुनिर्मितांवापाषाणमृदादिनिर्मितांवामध्येस्थानेयजेत् ॥ अत्र

भुवश्चेतिभुवर्लोकपुरुषंतर्पयामिच ॥ स्वःस्वर्गलोकपुरुषंतर्पयामिततःपरम् ॥ २६ ॥ ॐभूरेकपदांनामगायत्रींतर्पयामिच ॥ भुवोद्विपदांगायत्रींतर्पयामीतिकीर्तयेत् ॥ २७ ॥ स्वश्चत्रिपदांगायत्रींतर्पयामिततोवदेत् ॥ ॐभूर्भुवःस्वश्चेतितथागायत्रींचचतुष्पदाम् ॥ २८ ॥ उषसींचैवगायत्रींसावित्रींचसरस्वतीम् ॥ वेदानांमातरंपृथ्वीमजांचैवतुकौशिकीम् ॥ २९ ॥ सांकृतिंवैसार्वजितिंगायत्रींतर्पणेवदेत् ॥ तर्पणांतेचशांत्यर्थंजातवेदसमीरयेत् ॥ ३० ॥ मानस्तोकेतिमंत्रेचशांत्यर्थंप्रजपेत्सुधीः ॥ ततोऽपित्र्यंबकोमंत्रःशांत्यर्थःपरिकीर्तितः ॥ ३१ ॥ तच्छंयोरितिमंत्रेचजपेच्छांत्यर्थमेवतु॥अतोदेवाइतिद्वाभ्यांसर्वांगस्पर्शनंचरेत् ॥ ३२ ॥ स्योनापृथिविमंत्रेणभूम्यैकुर्यात्प्रणामकम् ॥ यथाविधिचगोत्रादीनुच्चरेद्विजसत्तमः ॥ ३३ ॥ एवंविधानंसंध्यायाःप्रातःकालेप्रकीर्तितम् ॥ संध्याकर्मसमाप्यांतेऽप्यग्निहोत्रंस्वयंहुनेत् ॥ ३४ ॥ पंचायतनपूजांचततःकुर्यात्समाहितः ॥ शिवांशिवंगणपतिंसूर्यंविष्णुंतथाऽर्चयेत् ॥ ३५ ॥ पौरुषेणतुसूक्तेनव्याहृत्यावासमाहितः ॥ मूलमंत्रेणवाकुर्याद्वीश्चतेइतिमंत्रतः ॥ ३६ ॥ भवानींतुयजेन्मध्येतथेशान्यांतुमाधवम् ॥ आग्नेय्यांगिरिजानाथंगणेशंरक्षसांदिशि ॥ ३७ ॥ वायव्यामर्चयेत्सूर्यमितिदेवस्थितिक्रमः ॥ षोडशानुपचारांश्चषोडशर्गिर्भर्हरेन्नरः ॥३८॥ देवीमभ्यर्च्यपुरतोयजेदन्याननुक्रमात्॥नदेवीपूजनात्पुण्यमधिकंक्वचिदीक्ष्यते॥३९॥अतएवतुसंध्यासुसंध्योपास्तिःश्रुतीरिता॥नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुंनतुलस्यागणेश्वरम् ॥ ॥ ४० ॥ दूर्वाभिर्नार्चयेद्दुर्गांकेतकैर्नमहेश्वरम् ॥ मल्लिकाजातिकुसुमंकुटजंपनसंतथा ॥ ४१ ॥ किंशुकंबकुलंकुंदंलोध्रंतुकरवीरकम् ॥ शिंशपाऽपराजितापुष्पंबंधकागस्त्यपुष्पके ॥ ४२ ॥ मदंतांसिंदुवारंचपालाशकुसुमंतथा ॥ दूर्वांकुरंबिल्वदलंकुशमंजरिकातथा ॥४३॥ शल्लकीमाधवीपुष्पमर्कमंदारपुष्पकम् ॥ केतकींकर्णिकारंचकदंबकुसुमंतथा ॥ ४४ ॥ पुन्नागश्चंपकस्तद्वद्यूथिकातगरौतथा ॥ एवमादीनिपुष्पाणिदेवीप्रियकराणिच ॥ ४५ ॥

पूर्वादयः प्रसिद्धाएवग्राह्यानतुपूज्यपूजकयोःप्राचीत्यागमोक्ताइतिनिबंधकाराः ॥ ३७ ॥ हरेद्दद्यात् ॥ अयंपक्षःपुरुषसूक्तेनपूजापक्षे ॥३८॥ पुरतःप्रथमतोमुख्यांदेवींपूजयित्वानंतरंविष्ण्वादिपूजनंकर्तव्यमित्यर्थः ॥३९॥ ४० ॥ दूर्वाभिर्नार्चयेद्दुर्गामिति ॥ अयंनिषेधोदुर्गायाएवनत्वन्यदेवीविग्रहेषु ॥ अग्रेदेवीतुष्टिकरपुष्पेषुदूर्वायाग्रहणात् ॥ शमीदूर्वांकुराश्वत्थपल्लवैरित्यादिनादक्षिणामूर्तिसंहितायांदूर्वायाःपूजायांस्वीकाराच्च ॥ देवीप्रियकरपुष्पाण्याह । मल्लिकाजातीति ॥ सर्वपुष्पेषुकुंदपुष्पंप्रियकरंदेव्याइतितुवामनपुराणम् ॥४१॥४२॥ ४३॥४४॥ ४५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तिलतैलतइति ॥ घृतदीपोप्यपेक्षितः ॥ वामदक्षिणभागयोर्दीपद्वयंदेयमित्यर्थः ॥ ४६ ॥ इत्थंपूजांप्रथमदिवसभागेसमाप्यद्वितीयभागेवेदाभ्यासंकुर्यादित्याह । वेदाभ्यासमिति ॥ पोष्यवर्गास्तु मातापितृगुरुतत्पत्नीभार्यासुतानाथादयोधर्मशास्त्रेप्रसिद्धाः ॥ ४७ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ एकसप्ततिपद्यैस्तुपूजायांतुविशेषतः ॥ उपचाराःसमुच्यंतेकिंचिच्चैवकथानकम् ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेदिवसप्रथमभागकृत्यांतेपूजांसंक्षेपतःश्रुतांविशेषेणज्ञातुंपृच्छति । पूजाविशेषंश्रीदेव्याइति ॥ १ ॥ २ ॥ भूतशुद्ध्यादिकमिति ॥ तच्चपूर्वमुक्तमेव ॥ मातृकान्यासःप्रसिद्धएव ॥ षडंगन्यासोनामोपास्यदेवतामंत्रस्यषडंगन्यासः ॥ ३ ॥ शंखस्थापनमपिप्रसिद्धमेव ॥ सामान्यार्घ्यंकलशस्थापनरूपमपि

गुग्गुलस्यभवेद्धूपोदीपःस्यात्तिलतैलतः ॥ कृत्वेत्थंदेवतापूजांततोमूलमनुंजपेत् ॥ ४६ ॥ एवंपूजांसमाप्यैववेदाभ्यासंचरेद्बुधः ॥ ततःस्ववृत्त्याकुर्वीतपोष्यवर्गार्थसाधनम् ॥ ४७ ॥ तृतीयेदिनभागेतुनियमेनविचक्षणः ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ पूजाविशेषंश्रीदेव्याःश्रोतुमिच्छामिमानद ॥ येनाश्रितेनमनुजःकृतकृत्यत्वमावहेत्॥१॥श्रीनारायणउवाच॥ देवर्षेशृणुवक्ष्यामिश्रीमातुःपूजनक्रमम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदंसाक्षात्समस्तापन्निवारणम् ॥ २ ॥ आचम्यमौनीसंकल्प्यभूतशुद्ध्यादिकंचरेत् ॥ मातृकान्यासपूर्वंतुषडंगन्यासमाचरेत् ॥३॥शंखस्यस्थापनंकृत्वासामान्यार्घ्यंविधायच ॥ पूजाद्रव्याणिचास्त्रेणप्रोक्षयेन्मतिमान्नरः॥४॥गुरोरनुज्ञामादायततःपूजांसमारभेत् ॥ पीठपूजांपुराकृत्वोदेवींध्यायेत्ततःपरम् ॥ ५ ॥ आसनाद्युपचारैश्चभक्तिप्रेमयुतांसदा ॥ स्नापयेत्परदेवींतांपंचामृतरसादिभिः ॥६॥ पौंड्रेक्षुरसपूर्णैस्तुकलशैःशतसंख्यकैः ॥ स्नापयेद्योमहेशानींनसभूयोभिजायते॥७॥यश्चचूतरसैरेवंस्नापयेज्जगदंबिकाम् ॥ वेदपारायणंकृत्वारसेनेक्षूद्भवेनवा ॥८॥ तद्गेहंनत्यजेन्नित्यंरमाचैवसरस्वती ॥ यस्तुद्राक्षारसेनैववेदपारायणंचरन् ॥ ९ ॥ अभिषिंचेन्महेशानींसकुटुंबोनरोत्तमः ॥ रसेरेणुप्रमाणंचदेवीलोकेमहीयते॥१०॥कर्पूरागुरुकाश्मीरकस्तूरीपंकपंकिलैः ॥ सलिलैःस्नापयेद्देवींवेदपारायणंचरन्॥११॥भस्मीभवंतिपापानिशतजन्मार्जितानिच॥ योदुग्धकलशैर्देवींस्नापयेद्वेदपाठतः ॥१२॥आकल्पंसवसेन्नित्यंतस्मिन्वैक्षीरसागरे ॥ यस्तुदध्नाभिषिंचेत्तांदधिकुल्यापतिर्भवेत् ॥ १३ ॥ मधुनाचघृतेनैवतथाशर्करयापिच ॥ स्नापयेन्मधुकुल्यादिनदीनांसपतिर्भवेत् ॥१४॥ सहस्रकलशैर्देवींस्नापयन्भक्तितत्परः ॥ इहलोकेसुखीभूत्वाप्यन्यलोकेसुखीभवेत्॥१५॥क्षौमंवस्त्रद्वयंदत्त्वावायुलोकंसगच्छति ॥ रत्ननिर्मितभूषाणांदातानिधिपतिर्भवेत् ॥१६॥ काश्मीरचंदनंदत्त्वाकस्तूरीबिंदुभूषितम् ॥ तथासीमंतसिंदूरंचरणेऽलक्तपत्रकम् ॥१७॥

प्रसिद्धमेव ॥ अस्त्रेणअस्त्रजलेनफट्मंत्रजलेन ॥ ४ ॥ पीठपूजादेवतायाआसनपूजाएतेसर्वेप्रकाराःशारदातिलकादिनिबंधेषुस्पष्टास्ततएवबोदितव्याः ॥ ५ ॥ ६ ॥ रसादिभिरित्यत्रादिपदग्राह्यानाह । पौंड्रेक्षुरसेति ॥ ७ ॥ वेदपारायणमिति ॥ अनेकदिवससाध्यमनुष्ठानमेतत् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ मधुकुल्यादयोनद्योदेवलोकेसंतीतितैत्तिरीयशाखायामुक्तम् ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ चरणेऽलक्तपत्रकमिति । अलक्तकरसेनस्त्रियोलतादिरूपंशोभायमानंचरणेलिखंतितद्ग्राह्यम् ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १८ ॥ १९ ॥ बिल्वपत्रत्रयेइति ॥ बिल्वपत्रस्ययत्पर्णत्रयमस्तितस्मिन्पर्णत्रयेपिमायाबीजत्रयंरक्तचंदनेनालिखित्वाहंभिुवनेश्वर्यैनमइत्यादिकंमंत्रमुक्त्वातद्बिल्वपत्रंकोमलंदेव्यैसमर्पयेदित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ कुंदपुष्पैरिति ॥ तस्मिन्नपिपुष्पेऽष्टगंधेनमायाबीजंलिखेदित्यर्थः ॥ शाक्ताष्टगंधश्च--जटामांसीकापियुताशक्तिर्गंधाष्टकंविदुरित्यनेनशारदातिलकेउक्तः ॥ इमान्यनुष्ठानान्यनेकदिवससाध्यानि ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ कृतंहिरण्यगर्भेणेत्यर्थः ॥ २८ ॥ व्रजेद्गतइत्यर्थः ॥ हिरण्योदरतांहिरण्यगर्भतांब्रह्मविष्णुरुद्राद

इंद्रासनेसमारूढोभवेद्देवपतिःपरः ॥ पुष्पाणिविविधान्याहुःपूजाकर्मणिसाधवः ॥ १८ ॥ तानिदत्त्वायथालाभंकैलासंलभतेस्वयम् ॥ बिल्वपत्राण्यमोघानियोदद्यात्परशक्तये ॥ १९ ॥ तस्यदुःखंकदाचिच्चक्वचिच्चनभविष्यति ॥ बिल्वपत्रत्रयेरक्तचंदनेनतुसंलिखेत् ॥२०॥ मायाबीजत्रयंयत्नात्सुस्फुटंचातिसुंदरम् ॥ मायाबीजादिकंनामचतुर्थ्यंतंसमुच्चरेत् ॥२१॥ नमोंतंपरयाभक्त्यादेवीचरणपंकजे ॥ समर्पयेन्महादेव्यैकोमलंतच्चपत्रकम् ॥२२॥ यएवंकुरुतेभक्त्यामनुत्वंलभतेहिसः ॥ यस्तुकोटिदलैरेवंकोमलैरतिनिर्मलैः ॥२३॥ पूजयेद्भुवनेशानींब्रह्मांडाधिपतिर्भवेत् ॥ कुंदपुष्पैर्नवीनैस्तुलुलितैरष्टगंधतः॥ ॥ २४ ॥ कोटिसंख्यैः पूजयेत्तुप्राजापत्यंलभेद्ध्रुवम् ॥ मल्लिकामालतीपुष्पैरष्टगंधेनलोलितैः ॥ २५ ॥ कोटिसंख्यैःपूजयातुजायतेसचतुर्मुखः॥दशकोटिभिरप्येवंतैरेवकुसुमैर्मुने ॥ २६ ॥ विष्णुत्वंलभतेमर्त्योयत्सुरेष्वपिदुर्लभम् ॥ विष्णुनैतद्व्रतंपूर्वंकृतंस्वपदलब्धये ॥ २७॥ शतकोटिभिरप्येवंसूत्रात्मत्वंव्रजेद्ध्रुवम् ॥ व्रतमेतत्पुरासम्यक्कृतंभक्त्याप्रयत्नतः ॥२८॥ तेनव्रतप्रभावेनाहिरण्योदरतांव्रजेत् ॥ जपाकुसुमपुष्पस्यबंधूककुसुमस्यच॥२९॥दाडिमीकुसुमस्यापिविधिरेषउदीरितः ॥ एवमन्यानिपुष्पाणिश्रीदेव्यैविधिनार्पयेत् ॥३०॥ तस्यपुण्यफलस्यांतंनजानातीश्वरोपिसः ॥ तत्तद्वृक्षैःपुष्पैर्नामसाहस्रसंख्यया ॥३१॥ समर्पयेन्महादेव्यैप्रतिवर्षमतंद्रितः ॥ यएवंकुरुतेभक्त्यामहापातकसंयुतः॥३२॥उपपातकयुक्तोपिमुच्यतेसर्वपातकैः ॥देहांतेश्रीपदांभोजंदुर्लभंदेवसत्तमैः॥३३॥प्राप्नोतिसाधकवरोमुनेनास्त्यत्रसंशयः॥कृष्णागुरुंसकर्पूरंचंदनेनसमान्वितम्॥३४॥सिल्हकंचाज्यसंयुक्तंगुग्गुलेनसमान्वितम्॥ धूपंदद्यान्महादेव्यैयेनस्याद्धूपितंगृहम् ॥ ३५ ॥ तेनप्रसन्नादेवेशीददातिभुवनत्रयम् ॥ दीपंकर्पूरखंडैश्चदद्याद्देव्यैनिरंतरम् ॥ ३६॥ सूर्यलोकमवाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा ॥ शतदीपांस्तथादद्यात्सहस्रान्वासमाहितः॥३७॥नैवेद्यंपुरतोदेव्याःस्थापयेत्पर्वताकृतिम् ॥ लेह्यैश्चोष्यैस्तथापेयैःषड्रसैस्तुसमाहितैः ॥३८॥ नानाफलानिदिव्यानिस्वादूनिरसवंतिच ॥ स्वर्णपात्रस्थितान्नानिदद्याद्देव्यैनिरंतरम्॥३९॥तृप्तायांश्रीमहादेव्यांभवेत्तृप्तंजगत्त्रयम् ॥ यतस्तदात्मकंसर्वंरज्जौसर्पोयथातथा ॥ ४० ॥ ततःपानीयकंदद्याच्छुभंगंगाजलंमहत् ॥ कर्पूरवालासंयुक्तंशीतलंकलशस्थितम् ॥ ४१ ॥

याहिरण्यगर्भस्यांशाः ॥ सचहिरण्यगर्भःकश्चित्पूर्वजन्मनिजीवःस्थितः । सचकर्मोपासनयाद्वितीयजन्मानिहिरण्यगर्भोजातइतिबृहदारण्यकेस्पष्टम् । तद्व्याख्यायांचास्माभिःस्पष्टीकृतम्॥ तथाचैतादृशानुष्ठानेनएतैरेतत्पदंलब्धमित्युक्तं युक्तमेवेति ॥ २९ ॥ ३० ॥ नामसहस्रंद्वादशस्कंधेवक्ष्यमाणंकूर्मपुराणोक्तंललितोपाख्यानोक्तंवा ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ श्रीपदांभोजंदेवीपदांभोजम् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ बृहद्रथस्येति ॥ अयंचशाकायन्यमुनेः शिष्यइतिमैत्रायणीयोपनिषदिस्पष्टम् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ कणलोभाद्धान्यकणलोभात् ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ किंवदंतींजनश्रुतिम् ॥ ऊषुःस्थितवतः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ नित्याश्रुत्यैवचोदि

तांबूलंचततोदेव्यैकर्पूरशकलान्वितम् ॥ एलालवंगसंयुक्तंमुखसौगंध्यदायकम् ॥ ४२ ॥ दद्याद्देव्यैमहाभक्त्यायेनदेवीप्रसीदति ॥ मृदंगवीणामुरजढक्का दुंदुभिनिःस्वनैः ॥ ४३ ॥ तोषयेज्जगतांधात्रींगायनैरतिमोहनैः ॥ वेदपारायणैःस्तोत्रैःपुराणादिभिरप्युत ॥४४॥ छत्रंचचामरेद्वेचदद्याद्देव्यैसमाहितः ॥ राजोपचारान्श्रीदेव्यैनित्यमेवसमर्पयेत् ॥ ४५ ॥ प्रदक्षिणांनमस्कारंकुर्याद्देव्याअनेकधा ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रींजगदंबांमुहुर्मुहुः ॥४६॥ सकृत्स्मरणमात्रेणयत्रदेवीप्रसीदति ॥ एतादृशोपचारैश्चप्रसीदेदत्रकःस्मयः॥४७॥स्वभावतोभवेन्मातापुत्रेऽतिकरुणावती ॥ तेनभक्तौकृतायांतुवक्तव्यंकिंततःपरम् ॥ ॥ ४८ ॥ अत्रतेकथयिष्यामिपुरावृत्तंसनातनम् ॥ बृहद्रथस्यराजर्षेःप्रियंभक्तिप्रदायकम् ॥ ४९ ॥ चक्रवाकोभवेत्पक्षीकाचिद्देशेहिमालये ॥ भ्रमन्नानाविधान्देशान्ययौकाशीपुरंप्रति ॥ ५० ॥ अन्नपूर्णामहास्थानेप्रारब्धवशतोद्विजः ॥ जगामलीलयातत्रकणलोभादनाथवत् ॥ ५१ ॥ कृत्वाप्रदक्षिणामेकांजगामसविहायसा ॥ देशांतरंविहायैवपुरींमुक्तिप्रदायिनीम्॥५२॥ कालांतरेममारासौगतःस्वर्गपुरींप्रति ॥ बुभुजेविषयान्सर्वान्दिव्यरूपधरोयुवा ॥ ॥ ५३ ॥ कल्पद्वयंतथाभुक्त्वापुनःप्रापभुवंप्रति ॥ क्षत्रियाणांकुलेजन्मप्रापसर्वोत्तमोत्तमम् ॥ ५४ ॥ बृहद्रथेतिनाम्नाभूत्प्रसिद्धःक्षितिमंडले॥महायज्वाधार्मिकश्चसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ ५५ ॥ त्रिकालज्ञःसार्वभौमोयमीपरपुरंजयः ॥ पूर्वजन्मस्मृतिस्तस्यवर्ततेदुर्लभाभुवि ॥ ५६ ॥ इतिश्रुत्वाकिंवदंतींमुनयःसमुपागताः ॥ कृतातिथ्यानृपेंद्रेणविष्टरेषूषुरेवते ॥ ५७ ॥ पप्रच्छुर्मुनयःसर्वेसंशयोस्तिमहान्नृप ॥ केनपुण्यप्रभावेणपूर्वजन्मस्मृतिस्तव ॥५८॥ त्रिकालज्ञानमेवापिकेनपुण्यप्रभावतः ॥ ज्ञानंतवेतितज्ज्ञातुमागताःस्मतवांतिकम्॥५९॥वदनिर्व्याजयावृत्त्यातदस्माकंयथातथम्॥श्रीनारायणउवाच ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वाराजापरमधार्मिकः ॥ ६० ॥ उवाचसकलंब्रह्मंस्त्रिकालज्ञानकारणम् ॥ श्रूयतांमुनयःसर्वेममज्ञानस्यकारणम् ॥ ६१ ॥ चक्रवाकःस्थितःपूर्वंनीचयोनिगतोपिवा ॥ अज्ञानतोपिकृतवानन्नपूर्णांप्रदक्षिणाम् ॥ ६२ ॥ तेनपुण्यप्रभावेणस्वर्गेकल्पद्वयस्थितिः ॥ त्रिकालज्ञानताप्यस्मिन्नभूज्जन्मनिसुव्रताः ॥ ६३ ॥ कोवेदजगदंबायाःपदस्मृतिफलंकियत् ॥ स्मृत्वातन्माहिमानंतुपतंत्यश्रूणिमेनिशम् ॥ ६४ ॥ धिगस्तुजन्मतेषांवैकृतघ्नानांतुपापिनाम् ॥ येसर्वमातरंदेवींस्वोपास्यांनभजंतिहि ॥ ६५ ॥ नशिवोपासनानित्यानविष्णूपासनातथा ॥ नित्योपास्तिःपरादेव्यानित्याश्रुत्यैवचोदिता ॥ ६६ ॥ किंमयाबहुवक्तव्यंस्थानेसंशयवर्जिते ॥ सेवनीयंपदांभोजंभगवत्यानिरंतरम् ॥ ६७ ॥

तेति ॥ अहरहःसंध्यामुपासीतेतिश्रुत्यादेव्युपासनैवनित्याविहितेत्यर्थः ॥ ६६ ॥ ६७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ६८ ॥ गतामुनयः ॥ ६९ ॥ यदाऽज्ञानकृतप्रदक्षिणाप्राइदंफलंराजर्षेर्जातंतदाभक्त्यायःपूजांकरोतितस्यफलंनकेनचित्प्रष्टव्यंनकेनचिद्वक्तव्यमित्यर्थः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ चतुर्विंशतिभिःपद्यैरह्नोभागेचतुर्थके ॥ मध्याह्नसंध्याकरणंप्रोच्यतेऽत्रसमासतः ॥ १ ॥ दिवसस्यतृतीयभागकृत्यमुक्त्वाचतुर्थभागकृत्यमाह । अथातइति ॥ अथवृत्त्यापोष्यवर्गपोषणनिमित्तार्थसंपादनोत्तरमतःश्रुतिप्रोक्तत्वाद्धेतोरित्यर्थः ॥ अपूर्वतत्संज्ञकंफलमित्यर्थः ॥ १ ॥ अत्रसर्वमनुष्ठानंप्रातःसंध्यावदेवेतिध्यानएवविशेषमाह । सावित्रीमिति ॥ तत्राम्नींगायत्रीमित्यर्थः ॥ २ ॥ यजुर्वेदसंहितांयजुर्वेदमुद्गिरंतीमित्यर्थः ॥ रुद्रदेवतांरुद्रोपास्याम् ॥ ३ ॥ मायांशबलब्रह्मरूपिणीम् ॥ ४ ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वमर्घ्यंक्षिप्त्वाऽन्यत्सर्वंकृत्यंजपादिकंपूर्ववत्प्रतिपादयेत्साधयेदित्यर्थः ॥ ६ ॥ मध्याह्नसंध्यायांगायत्र्याअर्घ्यदानंप्राप्तंनिषेधति । मध्याह्नेइति ॥ असंप्रदायमिति

नातःपरतरंकिंचिदधिकंजगतीतले ॥ सेवनीयापरादेवीनिर्गुणासगुणाऽथवा॥६८॥नारायणउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाराजर्षेर्धार्मिकस्यच ॥ प्रसन्नहृदयाःसर्वेगताःस्वस्वनिकेतनम् ॥ ६९ ॥ एवंप्रभावासादेवीतत्पूजायाःफलंकियत् ॥ अस्तीतिकेनप्रष्टव्यंवक्तव्यंवानकेनचित् ॥७०॥येषांतुजन्मसाफल्यंतेषांश्रद्धातुजायते ॥ येषांतुजन्मसांकर्यंतेषांश्रद्धानजायते ॥ ७१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ ॥ नारायणउवाच ॥ अथातःश्रूयतांब्रह्मन्संध्यांमाध्याह्निकींशुभाम् ॥ यदनुष्ठानतोपूर्वंजायतेत्युत्तमंफलम् ॥ १ ॥ सावित्रींयुवतींश्वेतवर्णांचैवत्रिलोचनाम् ॥ वरदांचाक्षमालाढ्यांत्रिशूलाभयहस्तकाम् ॥२ ॥ वृषारूढांयजुर्वेदसंहितांरुद्रदेवताम् ॥ तमोगुणयुतांचैवभुवर्लोकव्यवस्थिताम्॥ ३ ॥ आदित्यमार्गसंचारकर्त्रींमायांनमाम्यहम् ॥ आदिदेवीमथध्यात्वाऽऽचमनादिचपूर्ववत् ॥ ४ ॥ अथचार्घ्यप्रकरणंपुष्पाणिचिनुयात्ततः ॥ तदलाभेबिल्वपत्रंतोयेनामिश्रयेत्ततः ॥५॥ ऊर्ध्वंचसूर्याभिमुखंक्षिप्त्वाऽर्घ्यंप्रतिपादयेत् ॥ प्रातःसंध्यादिवत्सर्वमुपसंहारपूर्वकम् ॥६॥ मध्याह्नेकेचिदिच्छंतिसावित्रींतुतदित्यृचम् ॥ असंप्रदायंतत्कर्मकार्यहानिस्तुजायते ॥७॥ कारणंसंध्ययोश्चात्रमंदेहानामराक्षसाः॥भक्षितुंसूर्यमिच्छंतिकारणंश्रुतिचोदितम्॥८॥अतस्तुकारणाद्विप्रःसंध्यांकुर्यात्प्रयत्नतः॥संध्ययोरुभयोर्नित्यंगायत्र्याप्रणवेनच ॥९॥ अंभस्तुप्रक्षिपेत्तेननान्यथाश्रुतिघातकः ॥ आकृष्णेनेतिमंत्रेणपुष्पैर्वाबुविमिश्रितम् ॥ १० ॥ अलाभेबिल्वदूर्वादिपत्रेणोक्तेनपूर्वकम् ॥ अर्घ्यंदद्यात्प्रयत्नेनसांगंसंध्याफलंलभेत् ॥ ११ ॥

॥ तस्मान्नकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ७ ॥ तत्रहेतुमाह । कारणमिति ॥ अयंभावः ॥ उभयोःसंध्ययोर्मंदेहानामराक्षसाःसूर्यभक्षितुमिच्छंतितेषांनाशनंनसामान्यमंत्रेणभवतीत्यमोघाप्रतिहतगायत्रीमंत्रेणैवार्घ्यदानंयुक्तम् ॥ तादृशसामर्थ्यवतोऽन्यमंत्रस्याभावात् ॥ मध्याह्नेतुनदैत्यगाशार्थमर्घ्यंप्रक्षिप्यते किंतु सूर्यप्रीत्यर्थमेव ॥ तत्रसूर्यमंत्रेणैवाऽऽकृष्णेनेत्यनेनहँसःशुचिषदित्यनेनवातस्यार्घ्यस्यप्रक्षेपेणनिर्वाहेऽमोघगायत्रीमंत्रस्यास्यानेविनियोजनेकार्यहानिरूपानर्थादिकंभवेदेवेति कारणंश्रुतिचोदितमित्यन्वयः ॥ ८ ॥ गायत्र्याप्रणवेनचेति ॥ प्रणवेनयुक्तयागायत्र्यासंध्ययोरुभयोःसंध्यानिमित्तमर्घ्यदानंकुर्यादित्यर्थः ॥ ९ ॥ अंभस्तुप्रक्षिपेदिति ॥ तेनहेतुनागायत्रीमंत्रेणैवसंध्ययोरर्घ्यंप्रक्षिपेदित्यर्थः ॥ आकृष्णेनेति ॥ अत्रमध्याह्नसंध्यायामितिशेषः ॥ १० ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





मध्याह्नसंध्यांगतर्पणमाह । अत्रैवेति ॥ अत्रापीत्यर्थः ॥ पुनर्भुवःपदादनंतरमित्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ पूरुषंतुतर्पयामीतिशेषः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २०॥ ॥ २१ ॥ त्रीणिजन्मानिजन्मत्रयोद्भवानीत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ अर्धाधिकैश्चतुःपंचाशत्पद्यैस्तु

अत्रैवतर्पणंवक्ष्येशृणुदेवर्षिसत्तम ॥ भुवःपुनःपूरुषंतुतर्पयामिनमोनमः ॥ १२ ॥ यजुर्वेदंतर्पयामिमंडलंतर्पयामिच ॥ हिरण्यगर्भंचतथांतरात्मानंतथैव च ॥ १३ ॥ सावित्रींचततोदेवमातरंसांकृतिंतथा ॥ संध्यांतथैवयुवतींरुद्राणींनीमृजांतथा ॥ १४ ॥ सर्वार्थानांसिद्धिकरींसर्वमंत्रार्थसिद्धिदाम् ॥ भूर्भुवः स्वःपूरुषंतुइतिमध्याह्नतर्पणम् ॥ १५ ॥ उदुत्यमितिसूक्तेनसूर्योपस्थानमेवच ॥ चित्रंदेवानामितिचसूर्योपस्थानमाचरेत् ॥१६॥ ततोजपंप्रकुर्वीतमंत्र साधनतत्परः ॥ जपस्यापिप्रकारंतुवक्ष्यामिशृणुनारद ॥ १७ ॥ कृत्वोत्तानौकरौप्रातःसायंचाऽधःकरौतथा ॥ मध्याह्नेहृदयस्थौतुकृत्वाजपमुदीरयेत्॥ ॥१८॥ पर्वद्वयमनामिक्याःकनिष्ठादिक्रमेणतु ॥ तर्जनीमूलपर्यंतंकरमालाप्रकीर्तिता ॥ १९ ॥ गोघ्नःपितृघ्नोमातृघ्नोभ्रूणहागुरुतल्पगः ॥ ब्रह्मस्वक्षेत्रहा रीचयश्चविप्रःसुरांपिबेत्॥२०॥सगायत्र्याःसहस्रेणपूतोभवतिमानवः ॥ मानसंवाचिकंपापंविषयेंद्रियसंगजम् ॥२१ ॥तत्किल्बिषंनाशयतित्रीणिजन्मानि मानवः ॥ गायत्रींयोनजानातिवृथातस्यपरिश्रमः ॥२२॥ पठेच्चचतुरोवेदान्गायत्रींचैकतोजपेत् ॥ वेदानांचावृतेस्तद्वद्गायत्रीजपउत्तमः ॥ २३ ॥ इतिम ध्याह्नसंध्यायाःप्रकारःकीर्तितोमया॥अतःपरंप्रवक्ष्यामिब्रह्मयज्ञविधिक्रमम् ॥२४॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ ॥१९॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ त्रिराचम्यद्विजःपूर्वंद्विर्मार्जनमथाचरेत् ॥ उपस्पृशेत्यसव्यपाणिंपादौचप्रोक्षयेत्ततः ॥ १ ॥ शिरसिचक्षुषितथानासा यांश्रोत्रदेशके ॥ हृदयेचतथामौलौप्रोक्षणंसम्यगाचरेत् ॥ २ ॥ देशकालौसमुच्चार्यब्रह्मयज्ञमथाचरेत् ॥ द्वौदर्भौदक्षिणेहस्तेवामेत्रीनासनेसकृत् ॥ ३ ॥ उपवीतेशिखायांचपादमूलेसकृत्सकृत् ॥ विमुक्तयेसर्वपापक्षयार्थंचैवमेवहि ॥ ४ ॥ सूत्रोक्तदेवताप्रीत्यैब्रह्मयज्ञंकरोम्यहम् ॥ गायत्रींत्रिर्जपेत्पूर्वंचा ग्निमीळेततःपरम् ॥५॥ यदंगेतिततःप्रोच्यअग्निर्वैइतिकीर्तयेत् ॥ अथमहाव्रतंचैवपंथाएतच्चकीर्तयेत् ॥ ६ ॥ अथातःसंहितायाश्चविदामघवदित्यपि ॥ महाव्रतस्येतितथाइषेत्वोर्जेइतीवहि ॥ ७ ॥ अग्नआयाहिचेत्येवंशन्नोदेवीरितीतिच ॥ अथतस्यसमाम्नायोवृद्धिरादैजितीवहि ॥ ८ ॥ अथशिक्षांप्रव क्ष्यामिपंचसंवत्सरेतिच ॥ मयरसतजभेत्येवगौर्माइत्येवकीर्तयेत् ॥ ९ ॥

ततःपरम् ॥ ब्रह्मयज्ञादिकंसर्वंमुच्यतेऽत्रसमासतः ॥ १ ॥ प्रतिज्ञातंब्रह्मयज्ञविधिमाह । त्रिराचम्येति ॥ १ ॥ २ ॥ त्रीन्दर्भानित्यर्थः ॥ ३ ॥ सकृत्सकृदेकैकोदर्भइत्यर्थः ॥ ४ ॥ सूत्रोक्तेति ॥ यस्ययस्ययत्सूत्रंतदुक्तदेवताप्रीत्यैइत्यर्थः ॥ ब्रह्मयज्ञेजप्यमंत्रानाह । गायत्रीमिति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अथातोब्रह्मइत्यपीति ॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासेतिसूत्रमित्यर्थः ॥ ब्रह्मणेनमइत्यपीति ॥ नमोब्रह्मणेनमोअस्त्वग्नयेनमःपृथिव्यैनमओषधीभ्यइत्यादिकोमंत्रइत्यर्थः ॥ एतेचमंत्राऋग्वेदिनां प्रसिद्धाएवेतिनाऽत्रगौरवाल्लिख्यंते ॥ अत्रयस्ययाशाखातस्याःक्रमेणाध्यायएकोद्वौवाअर्धाध्यायोवानिरंतरंपठनीयइतितुपुराणांतरात्स्मृत्यंतराच्चबोध्यम् ॥१०॥ तर्पणीयदेवताआहतर्पणं चैवदेवानामिति ॥ अत्रस्वस्वसूत्रोक्ताएवतर्पणीयदेवताग्राह्याः ॥ उदाहरणार्थंत्वत्राऽऽश्वलायनसूत्रोक्ताएवप्रदर्श्यंते॥११॥१२॥द्यावापृथिवीति॥एकदेवतास्थलेतृप्यत्विति द्विदेवतास्थले तृप्यतामितिबहुदेवतास्थलेतृप्यंत्वितिप्रयोगः ॥ तृपप्रीणनइत्यस्यधातोःपरस्मैपदित्वात् ॥ १३ ॥ क्षेत्रौषधिवनस्पतिगंधर्वाप्सरसस्तृप्यंत्वित्येकोमत्रः ॥ १४ ॥ एवमंतानितृप्यंत्वि

अथातोधर्मजिज्ञासाअथातोब्रह्मइत्यपि ॥ तच्छंयोरितिचप्रोच्यब्रह्मणेनमइत्यपि ॥ १० ॥ तर्पणंचैवदेवानांततःकुर्यात्प्रदक्षणम् ॥ प्रजापतिश्चब्रह्माचवेदादेवास्तथर्षयः ॥ ११ ॥ सर्वाणिचैवच्छंदांसितथोंकारस्तथैवच ॥ वषट्कारोव्याहृतयःसावित्रीचततःपरम् ॥१२ ॥ गायत्रीवैवयज्ञाश्चद्यावापृथिवीइत्यपि ॥ अंतरिक्षंत्वहोरात्राणिचसांख्याअतःपरम् ॥ १३ ॥ सिद्धाःसमुद्रानद्यश्चगिरयश्चततःपरम् ॥ क्षेत्रौषधिवनस्पत्योगंधर्वाप्सरसस्तथा ॥१४॥ नागावयांसिगावश्चसाध्याविप्रास्तथैवच ॥ यक्षारक्षांसिभूतानीत्येवमंतानिकीर्तयेत् ॥ १५ ॥ अथोनिवीतीभूत्वाचऋषीन्संतर्पयेदपि ॥ शतर्चिनोमाध्यमाश्चगृत्समदस्तथैवच ॥ १६ ॥ विश्वामित्रोवामदेवोऽत्रिर्भरद्वाजएवच ॥ वासिष्ठश्चप्रगाथश्चपावमान्यस्ततःपरम् ॥ १७ ॥ क्षुद्रसूक्तामहासूक्ताःसनकश्चसनंदनः ॥ सनातनस्तथैवाऽत्रसनत्कुमारएवच ॥ १८ ॥ कपिलासुरिनामानौवोहलिःपंचशीर्षकः ॥ प्राचीनावीतिनातच्चकर्तव्यमथतर्पणम् ॥१९॥ सुमंतुजैमिनिवैशंपायनःपैलसूत्रयुक् ॥ भाष्यभारतपूर्वंचमहाभारतइत्यपि ॥ २० ॥ धर्माचार्याइमेसर्वेतृप्यंत्वितिचकीर्तयेत् ॥ जानंतिबाहविगार्ग्यगौतमाश्चैवशाकलः ॥ २१ ॥ बाभ्रव्यमांडव्ययुतोमांडूकेयस्ततःपरम् ॥ गार्गीवाचक्नवीचैववडवाप्रातिथेयिका ॥ २२॥ सुलभायुक्तमैत्रेयीकहोलश्चततःपरम् ॥ कौषीतकंमहाकौषीतकंवैतर्पयेत्ततः॥ २३ ॥ भारद्वाजंचपैंग्यंचमहापैंग्यंसुयज्ञकम् ॥ सांख्यायनमैतरेयंमहैतरेयमेवच ॥ २४ ॥ बाष्कलंशाकलंचैवसुजातवक्रमेवच ॥ औदवाहिंचसौजामिंशौनकंचाश्वलायनम् ॥ २५ ॥ येचान्येसर्वआचार्यास्तेसर्वेतृप्तिमाप्नुयुः ॥ येकेचास्मत्कुलेजाताअपुत्रोगोत्रिणोमृताः ॥ २६ ॥ तेगृह्णंतुमयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥ एवंतेब्रह्मयज्ञस्यविधिरुक्तोमहामुने ॥ २७ ॥ यश्चायंकुरुतेब्रह्मयज्ञस्यविधिमुत्तमम् ॥ सर्ववेदांगपाठस्यफलमाप्नोतिसाधकः ॥ २८ ॥ वैश्वदेवंततःकुर्यान्नित्यश्राद्धंतथैवच ॥ अतिथिभ्योन्नदानंचनित्यमेवसमाचरेत् ॥ २९ ॥ गोग्रासंचततोदत्त्वाभुंजीतब्राह्मणैःसह ॥ अह्नस्तुपंचमेभागेप्रकुर्यादेतदुत्तमम् ॥ ३० ॥

त्येकोमंत्रः ॥१५॥१६॥१७॥ १८ ॥ १९ ॥ सुमंतुजैमिनिवैशंपायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्यास्तृप्यंत्वित्येकोमंत्रः ॥ सूत्राद्यनुरोधात् ॥ २० ॥ एवं जानंतिबाहविगार्ग्यगौतमशाकल्यबाभ्रव्यमांडव्यमांडूकेयास्तृप्यंत्वित्येकोमंत्रः ॥ २१ ॥ गर्गीवाचन्कवीतृप्यतु ॥ वडवाप्रातिथेयीतृप्यतु सुलभामैत्रेयीतृप्यतु ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ सूत्राणां बहुत्वान्मुनेश्चसर्वज्ञत्वादाश्वलायनसूत्रोक्तकतिचिद्देवतात्यागेऽन्यासांचग्रहणेपिनदोषः ॥२५॥ येकेचाऽस्मत्कुलेइत्यनेनैवापितृतर्पणंसूचितंतदपिकर्तव्यम् ॥२६॥२७॥२८॥२९ ॥ ३० ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





षष्ठसप्तमकावह्नोभागौ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ सायंसंध्याध्यानमाह॥ध्यानंप्रकुर्यादिति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ सामवेदेनसहितांसामवेदमुद्रिरंतीम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ अत्रयद्यपिध्यानंकृत्वासंकल्पःकर्तव्यइत्युक्तंतथापिपाठक्रमादर्थक्रमोबलवानितिन्यायेनप्रातःसंध्यावदेवसंकल्पादिकंकृत्वाध्यानंकर्तव्यमितिवोध्यम् ॥ सायंकाले अग्निश्चमाममन्युश्चेति मंत्रेणमार्जनानंतरमाचमनंकर्तव्यमित्याह। अग्निश्चेति ॥४१॥ ४२॥४३ ॥४४ ॥४५ ॥४६ ॥ अनंतरंजपंसमर्प्ययथाप्रातर्गायत्र्युपास्थानादिकमनुष्ठानंकृतंतथैवसायंकालेपिकुर्यादित्याह

इतिहासपुराणाद्यैःषष्ठसप्तमकौनयेत् ॥ अष्टमेलोकयात्रातुबहिःसंध्यांततःपुनः ॥ ३१ ॥ अथसायंतनींसंध्यांप्रवक्ष्यामिमहामुने ॥ यदनुष्ठानमात्रेणमहामायाप्रसीदति ॥ ३२ ॥ आचम्यप्राणानायम्यसाधकःस्थिरमानसः ॥ बद्धपद्मासनोयोगीसायंकालेस्थिरोभवेत् ॥ ३३ ॥ श्रुतिस्मृत्यादिकर्मादौसगर्भःप्राणसंयमः ॥ अगर्भोध्यानमात्रंतुसचामंत्रःप्रकीर्तितः ॥३४॥ भूतशुद्ध्यादिकंकृत्वानान्यथाकर्मकीर्तितम् ॥ सलक्षोदेवतांध्यात्वापूरकुंभकरेचकैः ॥ ॥ ३५ ॥ ध्यानंप्रकुर्यात्संध्ययां सायंकालेविचक्षणः ॥ वृद्धांसरस्वतींदेवींकृष्णांगींकृष्णवाससम् ॥३६॥ शंखचक्रगदापद्महस्तांगरुडवाहनाम् ॥ नानारत्नलसद्भूषांक्वणन्मंजीरमेखलाम् ॥ ३७ ॥ अनर्घ्यरत्नमुकुटांतारहारावलीयुताम् ॥ ताटंकबद्धमाणिक्यकांतिशोभिकपोलकाम् ॥ ३८ ॥ पीतांबरधरांदेवींसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ सामवेदेन सहितांसंयुतांसत्त्ववर्त्मना ॥३९॥ व्यवस्थितांचस्वर्लोकेआदित्यपथगामिनीम् ॥ आवाहयाम्यहंदेवीमायांतींसूर्यमंडलात् ॥४०॥ एवंध्यात्वाचतांदेवींसंध्यासंकल्पमारचरेत् ॥ आपोहिष्ठेतिमंत्रेणअग्निश्चेतितथैवच ॥ ४१ ॥ विदध्यादाचमनकंशेषंपूर्ववदीरितम् ॥ गायत्रीमंत्रमुच्चार्यश्रीनारायणप्रीतये ॥ ४२ ॥ अर्घ्यंदद्याच्चसूर्यायसाधकःशुद्धमानसः ॥ उभौपादौसमौकृत्वाहस्तेधृत्वाजलांजलिम् ॥ ४३ ॥ देवंध्यात्वामंडलस्थांक्षिपेदर्घ्यंततःक्रमात् ॥ अर्घ्यंदद्यात्तुयोनीरेमूढात्माज्ञानवर्जितः ॥ ४४ ॥ उल्लंघ्यस्मृतिमंत्रांश्चप्रायश्चित्तीभवेद्द्विजः ॥ ततःसूर्यमुपस्थायाप्यसावादित्यमंत्रतः ॥ ४५ ॥ गायत्र्याश्चजपंकुर्यादुपविश्यततोबृसीम् ॥ सहस्रांवातदर्धंवाश्रीदैवीध्यानपूर्वकम् ॥ ४६ ॥ यथाप्रातःपुनस्तद्वदुपस्थानादिकंचरेत् ॥ सायंसंध्यातर्पणेचक्रमेणपरिकीर्तयेत् ॥४७॥ वसिष्ठोऋषिरेवाऽत्रसरस्वत्याःप्रकीर्तितः ॥ देवताविष्णुरूपासाछंदश्चैवसरस्वती ॥४८॥ सायंकालीनसंध्यायास्तर्पणेविनियोगकः ॥ स्वरित्युक्त्वाचपुरुषंसामवेदंतथैवच ॥४९॥ मंडलंचेतिसंप्रोच्यहिरण्यगर्भकंतथा ॥ तथैवपरमात्मानंततोपिचसरस्वतीम् ॥ ५० ॥ वेदमातरमेवात्रसंकीर्तितद्वदेवच ॥ संध्यांवृद्धांतथाविष्णुरूपिणीमुषसींतथा ॥ ५१ ॥ निमृजींचतथासर्वसिद्धीनांकारिणींतथा ॥ सर्वमंत्राधिपतिकांभूर्भुवःस्वश्चपूरुषम् ॥ ५२ ॥ इत्येवंतर्पणंकार्यंसंध्यायाःश्रुतिसंमतम् ॥ सायंसंध्याविधानंचकथितंपापनाशनम् ॥ ५३ ॥

यथाप्रातरिति ॥ सायंसंध्यांगतर्पणमाह । सायंसंध्येति ॥४७॥ दैवतेति ॥ विष्णुरूपाविष्णुसमानाकारासरस्वतीदेवतेत्यन्वयः ॥४८॥ स्वरित्युक्त्वाचेति ॥ स्वःपुरुषंतर्पयामीतिवक्तव्यमित्यर्थः ॥ ४९ ॥ मंडलंचेतीति ॥ सूर्यमंडलंतर्पयामीतितर्पयेदित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ अर्धाधिकैःपंचपंचाशद्भिःपद्यैरतःपरम् ॥ पुरश्चरणंकर्मगायत्र्यासम्यगुच्यते ॥ १ ॥ गायत्रीपुरश्चरण माह । अथातइति ॥ अथसदाचारकथनानंतरमतःसदाचारकर्तुरेवात्राधिकारोयतस्ततः ॥ १ ॥२॥३॥ पुरश्चरणकर्माधिकारसिद्ध्यर्थंप्रायश्चित्तमाह । यस्यकस्यापीति । आरभेद्यदातदे तिशेषः ॥ ४ ॥ वैदिकंवेदमंत्राणांपुरश्चरणंकर्मनृसिंहार्कवराहणांतांत्रिकंपुरश्चरणंकर्मेत्यर्थः ॥ नृसिंहेत्याद्युपलक्षणंदेवतांतराणाम् ॥ ५ ॥ ननुकिमितिनिष्फलंभवेत्तत्राह । सर्वेशाक्ताइति यतःसर्वेषांद्विजानांमुख्यापरमेष्टभूतादेवतागायत्र्येवप्रथमतोवेदोनोपदिष्टा ॥ ततःस्वेष्टदेवतानुग्रहंविनातत्सर्वंकृतंनिष्फलंस्यादेवेत्यर्थः ॥ ६ ॥ मंत्रंसंशोध्येति ॥ इत्थमयुतजपेनमंत्रंपुरश्च रणेजप्यमंत्रंप्रथमतःसंशोध्यअथानंतरंपुरश्चरणतत्परोभवेदितिशेषः ॥ तत्रगायत्र्याअयुतजपरूपमंत्रसंशोधनस्यपूर्वांगंप्रथमतःसंपादनीयमात्मशोधनंदेहशोधनंभवति । तदर्थंत्रिलक्षमे

सर्वदुःखहरंव्याधिनाशकंमोक्षदंतथा ॥ सदाचारेषुसंध्यायाःप्राधान्यंमुनिपुंगव ॥ ५४ ॥ संध्याचरणतोदेवीभक्ताभीष्टंप्रयच्छति ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभाग वतेमहापुराणेएकादशस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥२०॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ अथातःश्रूयतांब्रह्मन्गायत्र्याःपापनाशनम् ॥ पुरश्चरणकंपुण्यंयथेष्टफल दायकम् ॥ १ ॥ पर्वताग्रेनदीतीरेबिल्वमूलेजलाशये ॥ गोष्ठेदेवालयेऽश्वत्थेउद्यानेतुलसीवने ॥ २ ॥ पुण्यक्षेत्रेगुरोःपार्श्वेचित्तैकाग्र्यस्थलेपिच ॥ पुरश्चरणकृन्मंत्रीसिध्यत्येवनसंशयः ॥ ३ ॥ यस्यकस्यापिमंत्रस्यपुरश्चरणमारभेत् ॥ व्याहृतित्रयसंयुक्तांगायत्रींचाऽऽयुतंजपेत् ॥४॥ नृसिंहार्कवराहा णांतांत्रिकंवैदिकंतथा ॥ विनाजप्त्वातुगायत्रींतत्सर्वंनिष्फलंभवेत् ॥ ५ ॥ सर्वेशाक्तद्विजाःप्रोक्तानशैवानचवैष्णवाः ॥ आदिशक्तिमुपासंतेगायत्रींवेद मातरम् ॥ ६ ॥ मंत्रंसंशोध्ययत्नेनपुरश्चरणतत्परः ॥ मंत्रशोधनपूर्वांगमात्मशोधनमुत्तमम् ॥ ७ ॥ आत्मतत्त्वशोधनायत्रिलक्षंप्रजपेद्बुधः ॥ अथ वाचैकलक्षंतुश्रुतिप्रोक्तेनवर्त्मना ॥ ८ ॥ आत्मशुद्धिंविनाकर्तुर्जपहोमादिकाःक्रियाः ॥ निष्फलास्तास्तुविज्ञेयाःकारणंश्रुतिचोदितम् ॥ ९ ॥ तपसाता पयेद्देहंपितॄन्देवांश्चतर्पयेत् ॥ तपसास्वर्गमाप्नोतितपसाविंदतेमहत् ॥ १० ॥ क्षत्रियोबाहुवीर्येणतरेदापदआत्मनः ॥ धनेनवैश्यःशूद्रस्तुजपहोमैर्द्विजो त्तमः ॥ ११ ॥ अतएवतुविप्रेंद्रतपःकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ शरीरशोषणंप्राहुस्तापसास्तपउत्तमम् ॥ १२ ॥ शोधयेद्विधिमार्गेणकृच्छ्रचांद्रायणादिभिः ॥ अ थान्नशुद्धिकरणंवक्ष्यामिशृणु रद ॥ १३ ॥ अयाचितोञ्छशुक्लाख्यभिक्षावृत्तिचतुष्टयम् ॥ तांत्रिकैर्वैदिकैश्चैवंप्रोक्तान्नस्यविशुद्धता ॥ १४ ॥ भिक्षा न्नंशुद्धमानीयकृत्वाभागचतुष्टयम् ॥ एकंभागंद्विजेभ्यस्तुगोग्रासस्तुद्वितीयकः ॥ १५ ॥

कलक्षंवाऽऽत्मतत्त्वशोधनायगायत्रींजपेदित्याह । मंत्रशोधनपूर्वांगमिति ॥ तदुक्तंपुरश्चरणभास्करे ॥ मंत्रशोधनतःपूर्वंदेहशुद्धिर्विधीयते ॥ तदर्थंतुजपंकुर्यात्त्रिलक्षंलक्षमेववेइति ॥ ७ ॥ प्रथमतोदेहशुद्ध्यर्थंलक्षत्रयमेकलक्षंवाजापित्वापश्चान्मंत्रसिद्ध्यर्थंगायत्र्याअयुतंजपेत् ततोभिलषितमंत्रस्यपुरश्चरणंकुर्यादितिभावः ॥ गायत्रीपुरश्चरणेप्येवमेवबोध्यम् ॥ ८ ॥ आत्मशुद्धेः पूर्वोक्तायाअवश्यकत्वमाह । आत्मशुद्धिमिति ॥ ९ ॥ साचात्मशुद्धिर्जपरूपावाकृच्छ्रचांद्रायणादिरूपावाऽनेकविधाभवतीत्याह । तपसोइति ॥ १० ॥ शूद्रस्त्विति ॥ शूद्रस्तुद्विजसेवये तिस्मरणाच्छूद्रस्तुद्विजसेवयाआपदंहरेदितिशेषः ॥ ११ ॥ १२ ॥ पुरश्चरणसमयेभक्षणीयमन्नंतच्छोधनंचाह । अथान्नेति ॥ १३ ॥ अयाचितेति ॥ अयाचितोञ्छशुक्लभिक्षारूपवृ त्तिचतुष्टयंमुख्यम् ॥ अनेनसंपादितस्यान्नस्याविशुद्धतातांत्रिकैर्वैदिकैश्चप्रोक्तेत्यर्थः ॥ १४ ॥ संपादितस्यान्नस्याविभागमाह । भिक्षान्नमिति ॥ १५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





स्वभार्ययोः स्वस्यभार्यायाश्चेत्यर्थः ॥ आश्रमस्येति ॥ यस्याश्रमस्ययथाग्रासविधिर्यत्संख्ययाग्रासविधिर्विहितस्तंविधिंक्रमात्ब्रह्मचारिप्रभृतिभिःकृत्वास्वीकृत्यतावत्परिमितमन्नंपात्रेगृहीत्वेत्यर्थः ॥ १६ ॥ आदाविति ॥ तस्मिन्नन्नेआदौगोमूत्रंक्षिप्त्वातदूर्ध्वंग्राससंख्यास्यात् ॥ ग्राससंख्याकर्तव्येत्यर्थः ॥ वानप्रस्थगृहस्थयोरित्यस्यकुक्कुटांडेत्यनेनान्वयः ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ अन्नस्य प्रोक्षणं गायत्रीमंत्रेणकियद्वारंकर्तव्यंतदाह । प्रोक्षणमिति ॥ १९ ॥ २० ॥ निषिद्धान्नमाह चौरोवेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ गायत्रीमंत्रपुरश्चरणसंख्यामाह।गायत्रीछंदो

अतिथिभ्यस्तृतीयस्तुततदूर्ध्वंतुस्वभार्ययोः ॥ आश्रमस्ययथायस्यकृत्वाग्रासविधिंक्रमात्॥१६॥आदौक्षिप्त्वातुगोमूत्रंयथाशक्तियथाक्रमम्॥ तदूर्ध्वंग्राससंख्यास्याद्वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ १७ ॥ कुक्कुटांडप्रमाणंग्रासमानतुंविधीयते ॥ अष्टौग्रासागृहस्थस्यवनस्थस्यतदर्धकम् ॥ १८ ॥ ब्रह्मचारीयथेष्टंचगोमूत्रविधिपूर्वकम् ॥ प्रोक्षणंनववारंचषड्वारंचत्रिवारकम् ॥ १९ ॥ निच्छिद्रंचकरंकृत्वासावित्रींचतदित्यृचम् ॥ मंत्रमुच्चार्यमनसाप्रोक्षणेविधिरुच्यते ॥ २० ॥ चौरोवायदिचांडालोवैश्यःक्षत्रस्तथैवच ॥ अन्नंदद्यात्तुयःकश्चिदधमोविधिरुच्यते ॥ २१ ॥ शूद्रान्नंशूद्रसंपर्कंशूद्रेणचसहाशनम् ॥ तेयांतिनरकंघोरंयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ २२ ॥ गायत्रीच्छंदोमंत्रस्ययथासंख्याक्षराणिच ॥ तावल्लक्षाणिकर्तव्यंपुरश्चरणकंतथा ॥२३॥ द्वात्रिंशल्लक्षमानंतुविश्वामित्रमतंतथा ॥ जीवहीनोयथादेहःसर्वकर्मसुनक्षमः ॥ २४ ॥ पुरश्चरणहीनस्तुतथामंत्रःप्रकीर्तितः ॥ ज्येष्ठाषाढौभाद्रपदंपौषंतुमलमासकम् ॥२५॥ अंगारंशनिवारंचव्यतीपातंचवैधृतिम् ॥ अष्टमींनवमींषष्ठींचतुर्थींचत्रयोदशीम् ॥ २६ ॥ चतुर्दशीममावास्यांप्रदोषंचतथानिशाम् ॥ यमाग्निरुद्रसर्पद्रवसुश्रवणजन्मभम् ॥ २७ ॥ मेषकर्कतुलाकुंभान्मकरंचैववर्जयेत् ॥ सर्वाण्येतानिवर्ज्यानिपुरश्चरणकर्मणि ॥ २८ ॥ चंद्रतारानुकूलेचशुक्लपक्षेविशेषतः ॥ पुरश्चरणकंकुर्यान्मंत्रसिद्धिःप्रजायते ॥ २९ ॥ स्वस्तिवाचनकंकुर्यान्नांदीश्राद्धंयथाविधि ॥ विप्रान्संतर्प्ययत्नेनभोजनाच्छादनादिभिः ॥ ३० ॥ आरभेत्ततःपश्चादनुज्ञानपुरःसरम् ॥ प्रत्यङ्मुखशिवस्थानेद्विजश्चान्यतमेजपेत् ॥३१॥ काशीपुरीचकेदारोमहाकालोऽथनासिकम् ॥ त्र्यंबकंचमहाक्षेत्रंपंचदीपाइमेभुवि ॥ ३२ ॥ सर्वत्रैवहिदीपस्तुकूर्मासनमितिस्मृतम् ॥ प्रारंभादिनमारभ्यसमाप्तिदिवसावधि ॥ ३३ ॥ नन्यूनंनातिरिक्तंचजपंकुर्याद्दिनेदिने ॥ नैरंतर्येणकुर्वंतिपुरश्चर्यांमुनीश्वराः ॥ ३४ ॥ प्रातरारभ्यविधिवज्जपेन्मध्यंदिनावधि ॥ मनःसंहरणंशौचंध्यानंमंत्रार्थचिंतनम् ॥ ३५ ॥ गायत्रीच्छंदोमंत्रस्ययथासंख्याक्षराणिच ॥ तावल्लक्षाणिकर्तव्यंपुरश्चणकंतथा ॥ ३६ ॥

मंत्रस्येति ॥ २३ ॥ २४ ॥ पुरश्चरणंनिषिद्धदिनेनारब्धव्यंतन्निषिद्धंदिनमाह ॥ ज्येष्ठेति ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ कुर्यात्प्रारभेदित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ प्रत्यङ्मुखाशिवस्थानेपश्चिमाभिमुखलिंगसन्निधावित्यर्थः ॥ अन्यतमेऽन्येवाशिवस्थानेइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ तानिस्थानान्याह । काशीपुरीति ॥ नासिकंक्षेत्रम् ॥ पंचदीपाःपंचसिद्धिस्थानानीत्यर्थः ॥ ३२ ॥ एतत्क्षेत्रातिरिक्तस्थलेतुकूर्मचक्रमेवदीपइत्याह । सर्वत्रैवहीति ॥ तच्चचक्रंशारदातिलके ॥ दीपस्थानंसमाश्रित्यकृतंकर्मशुभप्रदमित्यादिनाप्रसिद्धम् ॥ ३३ ॥ ३४॥३५॥३६॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

एतेपोष्याभवंति।एतदर्थमेवतृतीयभागेदिवसस्यान्नसंपादनंकर्तव्यामित्युक्तम् ॥ तस्मादेतेभ्योऽवश्यमन्नंदेयामित्यर्थः ॥ तदन्नदानाकरणेदोषमाह । एवंज्ञात्वेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ भोजन प्रकारमाह । अथप्राणेति ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ प्राणाग्निहोत्रसामग्रीमाह । हृत्पुंडरीकेति ॥ हृत्पुंडरीकशब्देनोदरंगृह्यतेतदरणिंभावयेत् ॥ मनोमंथनसंज्ञकंमंथानदंडरूपंभावयेत् ॥ ॥ २६॥ वायुरज्ज्वावायुंरज्जुंभावयेत् ॥ मथेदग्निमुदरस्थमग्निंमंथनजन्यंभावयेत् ॥ आत्मचक्षुषमध्वर्युंभावयेदितितात्पर्यम् ॥ तस्मिन्जाठराग्नौप्राणादिदेवतातृप्त्यर्थंहोमोविधेयः । स्तान् प्राणादिदेवतामंत्रांस्तत्रांगुलिनियमंचाह ॥ तर्जनीति ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ स्वाहांतानिति ॥ ॐप्राणायस्वाहेत्येवंमंत्राऊह्याः ॥ तत्रभोजनसमयेमूलाधारादारभ्यमुखपर्यंतं जाठराग्ने

अभ्यागतोतिथिश्चाग्निरेतेपोष्याउदाहृताः ॥ एवंज्ञात्वातुयोमोहान्नकरोतिगृहाश्रमम् ॥ २१ ॥ तस्यनायंतुनपरोलोकोभवतिधर्मतः ॥ यत्फलंसोमयागे नप्राप्नोतिधनवान्द्विजः ॥ २२ ॥ सम्यक्पंचमहायज्ञैर्दरिद्रस्तेनचाप्नुयात् ॥ अथप्राणाग्निहोत्रंतुवक्ष्यामिमुनिपुंगव ॥ २३ ॥ यज्ज्ञात्वामुच्यतेजंतुर्जन्म मृत्युजरादिभिः ॥ परिज्ञानेनमुच्यंतेनराःपातककिल्बिषैः ॥२४॥ विधिनाभुज्यतेयेनमुच्येतसऋणत्रयात् ॥ कुलान्युद्धरतेविप्रोनरकानेकविंशतिम् ॥ ॥ २५ ॥ सर्वयज्ञफलप्राप्तिःसर्वलोकेषुगच्छति ॥ हृत्पुंडरीकमरणिर्मनोमंथानसंज्ञकम् ॥२६॥ वायुरज्ज्वामथेदाग्निंचक्षुरध्वर्युरेवच॥तर्जनीमध्यमांगुष्ठैः प्राणस्यैवाहुतिंक्षिपेत् ॥ २७ ॥ मध्यमानामिकांगुष्ठैरपानस्याहुतिंक्षिपेत् ॥ कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्व्यानस्यतदनंतरम्॥२८॥कनिष्ठातर्जन्यंगुष्ठैरुदानस्या हुतिंक्षिपेत् ॥ सर्वांगुलैर्गृहीत्वान्नंसमानस्याहुतिंक्षिपेत् ॥२९॥ स्वाहांतान्प्रणवाद्यांश्चनाममंत्रांश्चवैपठेत् ॥ मुखेचाहवनीयस्तुहृदयेगार्हपत्यकः ॥३०॥ नाभौचदक्षिणाग्निःस्यादधःसभ्यावसथ्यकौ ॥ वाग्घोताप्राणउद्गाताचक्षुरध्वर्युरेवच ॥ ३१ ॥ मनोब्रह्माभवेच्छ्रोत्रमाग्नीध्रस्थानएवच॥अहंकारःपशुश्चा त्रप्रणवःपयईरितम् ॥३२॥ बुद्धिश्चपत्नीसंप्रोक्तायदधीनोगृहाश्रमी ॥ उरोवेदिस्तुरोमाणिदर्भाःस्युःस्रुक्स्रुवौकरौ ॥ ३३॥ प्राणमंत्रस्यचऋषीरुक्मवर्णः क्षुधाग्निकः ॥ देवतादित्यएवात्रगायत्रीच्छंदउच्यते ॥३४॥ प्राणायचतथास्वाहामंत्रांतेकीर्तयेदपि ॥ इदमादित्यदेवायनममेतिवदेदपि ॥३५॥अपानमंत्र स्यतथागोक्षीरधवलाकृतिः ॥ श्रद्धाग्निऋषिरेवात्रसोमोवैदेवतास्मृता ॥३६॥ उष्णिक्छंदस्तथाऽपानायस्वाहेत्यपिकीर्तयेत्॥सोमायेदंचनममेत्यत्रोहः परिकीर्तितः॥३७॥व्यानमंत्रस्यचाख्यातोंबुजवर्णहुताशनः ॥ ऋषिरुक्तोदेवताग्निरनुष्टुप्छंदईरितम् ॥ ३८॥ व्यानायचतथास्वाहाऽग्नयेदंनममेत्यपि ॥ उदानमंत्रस्यतथाशक्रगोपसवर्णकः॥३९॥ऋषिराग्निःसमाख्यातोवायुर्वैदेवतास्मृता॥ बृहतीच्छंदआख्यातमुदानायचपूर्ववत् ॥ ४०॥ वायवेचेदंनममएवं चैवोच्चरेद्द्विजः ॥ समानवायुमंत्रस्यविद्युद्वर्णोविरूपकः॥४१॥ऋषिराग्निःसमाख्यातःपर्जन्योदेवतामता॥पंक्तिश्छंदःसमाख्यातंसमानायचपूर्ववत् ॥ ४२ ॥

ज्वालास्तिष्ठंतितत्रस्थानभेदेनपंचाग्नीन्भावयेदित्याह । मुखेचाहवनीयस्त्विति ॥ ३० ॥ अधोनाभेरधोदेशेस्वाधिष्ठानसंज्ञकेसभ्याग्निंतदधोमूलाधारेआवसथ्याग्निंभावयेदित्यर्थः ॥ वाक्प्रा णादिषुऋत्विगादिकल्पनामाह । होताप्राणइति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ प्राणाहुतिमंत्राणामृषिश्छंदोदेवताआह । प्राणमंत्रस्येति ॥ रुक्मवर्णःसुवर्णकांतिः ॥ क्षुधाग्निर्ऋषिरित्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ पूर्ववदुदानायस्वाहेत्येवमित्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





पर्जन्यायेदंनममेत्युक्त्वाषष्ठीमाहुतिंवक्ष्यमाणमंत्रेणक्षिपेदित्यर्थः ॥४३॥ देवस्त्वात्मेति । ओंब्रह्मणेस्वाहेतिमंत्रप्रयोगः ॥ अत्रषष्ठमंत्रप्रयोगेसर्वंभक्षणीयमन्नमाहुतिस्थानेभावयेदित्याचार दर्पणेउक्तम् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएका०द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ त्रिषष्टिश्लोकवर्यैस्तुभोजनांतेचयद्भवेत् ॥ तदुक्त्वातप्तकृच्छ्रादिलक्षणांकिंचिदुच्यते ॥ १ ॥ भोजनांतेअमृतापिधानमसीतिमंत्रेणाचमनंकुर्यादित्याह । अमृतापिधानमिति ॥ उच्चार्याचामेदितिशेषः ॥ एतेनामृतोपस्तरणमसीतिप्रथमतआचमनंकर्तव्यमित्यनुक्तमप्यर्थात्सूचितम् ॥ अनंतरमुच्छिष्टभाग्भ्योन्नंदेयमित्याह । उच्छिष्टेति ॥ १ ॥ तत्रमंत्रमाह । येकेचास्मादिति ॥ तदुपरिजलमनेनमंत्रेणदेयमित्याह । रौरवेति ॥ २ ॥ ३ ॥ भोजनसमयेहस्तेविद्यमानं

पर्जन्यायेदमित्युक्त्वाषष्ठींचैवाहुतिंक्षिपेत् ॥ वैश्वानरोमहानग्निर्ऋषिर्वैपरिकीर्तितः ॥ ४३ ॥ गायत्रीच्छंदआख्यातंदेवस्त्वात्माभवेदपि ॥ स्वाहांतोमंत्र आख्यातःपरमात्मनउच्चरेत् ॥ ४४ ॥ इदंनममचेत्येवंजातंप्राणाग्निहोत्रकम् ॥ एतज्ज्ञात्वाविधिंकृत्वाब्रह्मभूयायकल्पते ॥ ४५ ॥ प्राणाग्निहोत्रविद्येयंसंक्षेपात्कथिताहिते ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ नारायणउवाच॥अमृतापिधानमित्येवमुच्चार्यसाधकोत्तमः ॥ उच्छिष्टभाग्भ्यःपात्रान्नंदद्यादंतेविचक्षणः ॥ १ ॥ येकेचास्मत्कुलेजातादासादास्योन्नकांक्षिणः ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुमयादत्तेनभूतले ॥२॥ रौरवेऽपुण्यनिलयेपद्मार्बुदनिवासिनाम् ॥ अर्थिनामुदकंदत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ ३ ॥ पवित्रग्रंथिमुत्सृज्यमंडलेभुविनिक्षिपेत् ॥ पात्रेतुनिक्षिपेद्यस्तुसविप्रःपंक्तिदूषकः ॥४॥ उच्छिष्टस्तेनसंस्पृष्टःशुनाशूद्रेणचद्विजः॥उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुध्यति ॥५॥ अनुच्छिष्टेनसंस्पृष्टैःस्नानमेवविधीयते ॥ एकाहुतिप्रदानेनकोटियज्ञफलंलभेत् ॥ ६ ॥ पंचभिःपंचकोटीनांतदनंतफलंस्मृतम् ॥ प्राणाग्निहोत्रवेत्रेयोह्यन्नदानंकरोतिच ॥ ७ ॥ दातुश्चैवतुयत्पुण्यंभोक्तुश्चैवतुयत्फलम् ॥ प्राप्नुतस्तौतदेवद्वावुभौतौस्वर्गगामिनौ॥८॥सपवित्रकरोभुंक्तेयस्तुविप्रोविधानतः ॥ ग्रासेग्रासेफलंतस्यपंचगव्यसमंभवेत् ॥ ९ ॥ पूजाकालत्रयेनित्यंजपस्तर्पणमेवच ॥ होमोब्राह्मणभुक्तिश्चपुरश्चरणमुच्यते ॥ १० ॥ अधःशयानोधर्मात्माजितक्रोधोजितेंद्रियः॥लघुमिष्टहिताशीचविनीतःशांतचेतसा ॥११॥ नित्यंत्रिषवणस्नायीनित्यंसशुभभाषणः॥स्त्रीशूद्रपतितव्रात्यनास्तिकोच्छिष्टभाषणम्॥१२॥चांडालभाषणंचैवनकुर्यान्मुनिसत्तम॥नत्वानैवचभाषेतजपहोमार्चनादिषु ॥१३॥मैथुनस्यतथालापंतद्गोष्ठीमपिवर्जयेत् ॥ कर्मणामनसावाचासर्वावस्थासुसर्वदा ॥१४॥ सर्वत्रमैथुनत्यागोब्रह्मचर्यंप्रचक्षते॥राज्ञश्चैवगृहस्थस्यब्रह्मचर्यमुदाहृतम्॥१५॥ऋतुस्नातेषुदारेषुसंगतिर्याविधानतः॥संस्कृतायांसवर्णायामृतुंदृष्ट्वाप्रयत्नतः॥१६॥

यत्पवित्रंतस्यग्रंथिंविसर्जयेदित्याह । पवित्रेति ॥ ४ ॥ तेनोच्छिष्टेनोच्छिष्टः पुरुषोयदिसंस्पृष्टइत्यर्थः ॥ उच्छिष्टेनपुरुषेणोच्छिष्टपुरुषस्पर्शोनकर्तव्यइत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ पंचभिःपंचप्राणाहुतिभिः ॥ पंचकोटीनांयज्ञानामित्यर्थः ॥ यस्मादेवंतस्मात्प्राणाहुतिप्रदानंतत्फलमित्यर्थः ॥ ७ ॥ एवंप्राणाग्निहोत्रविदेऽन्नदातुःफलमाह । दातुश्चैवत्विति ॥ यत्पुण्यंशास्त्रेप्रोक्तमित्यर्थः ॥८॥९॥ पुनःकिंचित्पुरश्चरणशेषमाह । पूजाकालत्रयेइति ॥ भुक्तिश्चेति ॥ चकारेणमार्जनमपिग्राह्यंतदापंचांगंपुरश्चरणंसंपन्नम् ॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ १७ ॥ १८ ॥ तेदेवानामिति ॥ तेद्विजादेवादीनामृणिनोभवंतीत्यर्थः ॥ १९ ॥ ऋणत्रयमोचनप्रकारमाह । ऋषिभ्यइति ॥ यस्मादेवंतस्मात्स्वाश्रमंधर्मंतदुचितंधर्ममाचरेदित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ तेषांपुरश्चरणकारिणाम् ॥ ३२ ॥ तानिशांत्यादिकर्माणिवक्ष्यामिअग्रिमाध्यायेइत्यर्थः ॥ परंतुतानिकर्माणिप्रथमतःपुरश्चरणंकृत्वाकर्तव्यानीत्याह ॥ पुरश्चरणमिति ॥ ३३ ॥ तच्चपुरश्चरणंप्राजापत्यादिप्रायश्चित्तानिकृत्वाकर्तव्यमित्याह । स्वाध्यायेति ॥ स्वाध्यायाभ्य

रात्रौतुगमनंकार्यंब्रह्मचर्यंहरेन्नतत् ॥ ऋणत्रयमसंशोध्यत्वनुत्पाद्यसुतानपि ॥ १७ ॥ तथायज्ञाननिष्ठाचमोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः ॥ अजागलस्ययज्जन्मत ज्जन्मश्रुतिचोदितम् ॥ १८ ॥ अतःकार्यंतुविप्रेंद्रऋणत्रयविशोधनम् ॥ तेदेवानामृषीणांचपितॄणामृणिनस्तथा ॥ १९ ॥ ऋषिभ्योब्रह्मचर्येणपितृभ्य स्तुतिलोदकैः ॥ मुच्येद्यज्ञेनदेवेभ्यःस्वाश्रमंधर्ममाचरेत् ॥ २० ॥ क्षीराहारीफलाशीवाशाकाशीवाहविष्यभुक् ॥ भिक्षाशीवाजपेद्विद्वान्कृच्छ्रचांद्रायणा दिकृत् ॥२१॥ लवणंक्षारमम्लंचगृंजनंकांस्यभोजनम् ॥ तांबूलंचद्विभुक्तंचदुष्टवासःप्रमत्तनम् ॥ २२ ॥ श्रुतिस्मृतिविरोधंचजपंरात्रौविवर्जयेत् ॥ वृ थानकालंगमयेत्द्यूतस्त्रीस्वापवादतः ॥ २३ ॥ गमयेद्देवतापूजास्तोत्रागमविलोकनैः ॥ भूशय्याब्रह्मचारित्वंमौनचर्यातथैवच॥२४॥नित्यंत्रिषवणस्नानं शूद्रकर्मविवर्जनम् ॥ नित्यपूजानित्यदानमानंदस्तुतिकीर्तनम् ॥२५॥नैमित्तिकार्चनंचैवविश्वासोगुरुदेवयोः ॥ जपनिष्ठस्यधर्मायेद्वादशैतेसुसिद्धिदाः ॥ ॥ २६ ॥ नित्यंसूर्यमुपस्थायतस्यचाभिमुखोजपेत् ॥ देवताप्रतिमादौवावह्नौवाऽभ्यर्च्यतन्मुखः ॥ २७ ॥ स्नानपूजाजपध्यानहोमतर्पणतत्परः ॥ नि ष्कामोदेवतायांचसर्वकर्मनिवेदकः ॥ २८ ॥ एवमादींश्चनियमान्पुरश्चरणकृच्चरेत् ॥ तस्माद्विजःप्रसन्नात्माजपहोमपरायणः ॥ २९ ॥ तपस्यध्ययनेयु क्तोभवेद्भूतानुकंपकः ॥ तपसास्वर्गप्राप्नोतितपसाविंदतेमहत्॥३०॥तपोयुक्तस्यासिद्ध्यंतिकर्माणिनियतात्मनः ॥ विद्वेषणंसंहरणंमारणंरोगनाशनम् ॥ ॥३१॥ येनयेनाथऋषिणायदर्थंदेवतास्तुताः॥ससकामःसमृद्ध्येततेषांतेषांतथातथा ॥३२॥ तानिकर्माणिवक्ष्यामिविधानानिचकर्मणाम् ॥ पुरश्चरणमा दौचकर्मणांसिद्धिकारकम् ॥ ३३ ॥ स्वाध्यायाभ्यसनस्यादौप्राजापत्यंचरेद्द्विजः ॥ केशश्मश्रुलोमनखान्वापयित्वाऽततःशुचिः ॥ ३४ ॥ तिष्ठेदहनि रात्रौतुशुचिरासीतवाग्यतः ॥ सत्यवादीपवित्राणिजपेद्व्याहृतयस्तथा ॥३५॥ ॐकाराद्यास्तुताजस्वासावित्रींचतदित्यृचम् ॥ आपोहिष्ठेतिसूक्तंचपवित्रं पापनाशनम् ॥ ३६ ॥ पुनंत्यःस्वस्तिमत्यश्चपावमान्यस्तथैवच ॥सर्वत्रैतत्प्रयोक्तव्यमादावंतेचकर्माणाम् ॥३७॥ आसहस्रादाशताद्वाप्यादशादथवाज पेत् ॥ ॐकारंव्याहृतीस्तिस्रःसावित्रीमथवाऽयुतम् ॥ ३८ ॥ तर्पयित्वाद्विराचार्यानृषींश्छंदांसिदेवताः ॥ अनार्षेणनभाषेतशूद्रेणापिनगर्हितैः ॥ ३९ ॥

सनंगायत्रीमंत्रपुरश्चरणरूपंतस्यादौप्राजापत्यादिकंचरेदित्यर्थः ॥ तच्चप्राजापत्यमपिकेशादीन्वापयित्वाशांत्यर्थंशुद्ध्यर्थंचवक्ष्यमाणान्मंत्रांश्चजपित्वाकर्तव्यमित्याह । कशश्मश्रुनखेति ॥ आप्लुतःस्नातः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ४० ॥ ४१ ॥ विधिश्चांद्रायणस्यचेति ॥ प्रोच्यतेइतिशेषः ॥ ४२ ॥ प्रथमतस्तेषांफलमाह । पंचभिरिति ॥ ४३ ॥ अष्टभिश्चांद्रायणैः ॥ ४४ ॥ दशभिश्चांद्रायणैः ॥ कृच्छ्रप्राजापत्यस्वरूपमाह । त्र्यहमिति ॥ त्र्यहंदिनत्रयम् ॥ प्रातरितिमध्याह्नस्योपलक्षणम् ॥ तस्मिन्भुंजीतेत्यर्थः ॥ तदुत्तरंदिनत्रयंसायंकालेभुंजीतेत्यर्थः ॥ तदुत्तरादिनत्रयेअयाचितमन्नमद्यादित्यर्थः ॥ तदुत्तरादिनत्रयंनाश्नीयादुपवसेदित्यर्थः ॥ इत्थंप्रकारेणप्राजापत्यंद्विजश्चरेदित्यर्थः ॥ तदुक्तंमनुना ॥ त्र्यहंप्रातस्त्र्यहंसायंत्र्यहमद्यादयाचितम् ॥ त्र्यहंपरंचनाश्नीयात्प्राजापत्यंचरन्द्विजइति ॥ ४५ ॥ सांतपनस्यस्वरूपमाह । गोमूत्रमिति ॥ पूर्वेद्युराहारांतरपरित्यागेनगोमूत्रादीनिगव्यानिपंचद्रव्याणिकुशोदकसहितानिसंयोज्यपीत्वापरेह्युरुपवसेदितिद्वैरात्रिकः सांतपनःकृच्छ्रः ॥ जाबालेनतुसप्ताहसाध्यंसांतपनमुक्तम् ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् ॥ एकैकंप्रत्यहंपीत्वात्वहोरात्रमभोजनम् ॥ कृच्छ्रःसांतपनोनामसर्वपापप्रणाशनइति

नापिचोदक्ययावध्वापतितैर्नात्यजैर्नृभिः ॥ नदेवब्राह्मणद्विष्टैर्नाचार्यगुरुनिंदकैः ॥ ४० ॥ नमातृपितृविद्विष्टैर्नावमन्येतकंचन ॥ कृच्छ्राणामेषसर्वेषांविधिरुक्तोनुपूर्वशः ॥ ४१ ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यतथासांतपनस्यच ॥ पराकस्यचकृच्छ्रस्यविधिश्चांद्रायणस्यच ॥४२॥ पंचभिःपातकैःसर्वैर्दुष्कृतैश्चप्रमुच्यते ॥ तप्तकृच्छ्रेणसर्वाणिपापानिदहतिक्षणात् ॥ ४३ ॥ त्रिभिश्चांद्रायणैःपूतोब्रह्मलोकंसमश्नुते॥अष्टभिर्देवताःसाक्षात्पश्येतवरदास्तदा ॥४४॥ छंदांसिदशभिर्ज्ञात्वासर्वान्कामान्समश्नुते ॥ त्र्यहंप्रातस्त्र्यहंसायंत्र्यहमद्यादयाचितम् ॥ ४५ ॥ त्र्यहंपरंचनाश्नीयात्प्राजापत्यंचरेद्द्विजः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् ॥ ४६ ॥ एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रंसांतपनंस्मृतम् ॥ एकैकंग्रासमश्नीयाद्दहानित्रीणिपूर्ववत् ॥ ४७ ॥ त्र्यहंचोपवसेदित्थमतिकृच्छ्रंचरेद्द्विजः ॥ एवमेवत्रिभिर्युक्तंमहासांतपनंस्मृतम् ॥ ४८ ॥ तप्तकृच्छ्रंचरन्विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् ॥ प्रतित्र्यहंपिबेदुष्णान्सकृत्स्नायीसमाहितः ॥ ४९ ॥ नियतस्तुपिबेदापःप्राजापत्यविधिःस्मृतः ॥ यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् ॥ ५० ॥ पराकोनामकृच्छ्रोयंसर्वपापप्रणोदनः ॥ एकैकंतुह्रसेत्पिंडंकृष्णेशुक्लेचवर्धयेत् ॥ ५१ ॥ अमावास्यांनभुंजीतएवंचांद्रायणेविधिः ॥ उपस्पृश्यत्रिषवणमेतच्चांद्रायणंस्मृतम् ॥५२॥ चतुरःप्रातरश्नीयाद्विप्रःपिंडान्कृताह्निकः ॥ चतुरोस्तमितेसूर्येशिशुचांद्रायणंस्मृतम् ॥ ५३ ॥ अष्टावष्टौसमश्नीयात्पिंडान्मध्यंदिनेस्थिते ॥ नियतात्माहविष्यस्ययतिचांद्रायणंव्रतम् ॥५४॥ एतद्रुद्रास्तथादित्यावसवश्चाचरंतिहि ॥ सर्वेकुशलिनोदेवामरुतश्चभुवासह ॥५५॥ एकैकंसप्तरात्रेणपुनातिविधिवत्कृतम् ॥ त्वगसृक्पिशितास्थीनिमेदोमज्जावसास्तथा ॥ ५६ ॥

॥ ४६ ॥ अतिकृच्छ्रंव्रतमाह । एकैकंग्रासमिति ॥ ४७ ॥ महासांतपनमिति ॥ इदंचयमेनपंचदशाहःसंपाद्यमुक्तम् ॥ त्र्यहंपिबेत्तुगोमूत्रंत्र्यहंवैगोमयंपिबेत् ॥ त्र्यहंदधित्र्यहंक्षीरंत्र्यहंसर्पिस्ततःशुचिः ॥ महासांतपनंह्येतत्सर्वपापप्रणाशनमिति ॥ तथाचत्रिभिर्युक्तमित्यस्यत्रिभिर्दिनैर्युक्तमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ तप्तकृच्छ्रमाह । तप्तकृच्छ्रमिति ॥ तथाचमनुनाद्वादशरात्रनिर्वर्त्योयमभिहितः ॥ तप्तकृच्छ्रंचरन्विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् ॥ प्रतित्र्यहंपिबेदुष्णंसकृत्स्नायीसमाहितइति ॥ ४९ ॥ पराककृच्छ्रमाह । नियतस्त्विति ॥ ५० ॥ चांद्रायणमाह । एकैकंतुग्रसेत्पिंडमिति ॥ पिंडंग्रासम् ॥ कृष्णपक्षेएकैकंग्रासंह्रसेन्न्यूनंकुर्याच्छुक्लेपक्षेत्वेकैकंग्रासंवर्धयेत् ॥ अमावास्यायांतूपोषणमित्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ एकैकमिति ॥ इदंव्रतंएकैकंधातुंसप्तरात्रेणपुनातिशोधयतीत्यर्थः ॥ तदेवाहात्वगसृगिति ॥ ५६ ॥





CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अतःपरंशतश्लोकैः काम्यकर्माणिसंग्रहात् ॥ प्रोच्यंतेलोकरक्षार्थंप्रायश्चित्तविधिस्तथा ॥ १ ॥ प्राजापत्यादीनिकृच्छ्राणिकृत्वादेहंसंशोध्यपुरश्चरणोत्तरंकाम्यकर्माणिकुर्यादित्युक्तंपूर्वाध्याये । तानिकाम्यकर्माणिवक्तुंप्रश्नमुत्थापयति । नारदउवाच नारायणमहाभागेति ॥ १ ॥ २ ॥ तत्रप्रथमतःशांतिकर्माह । अथशांतिरिति ॥ काभिःसमिद्भिस्तत्राह । शमीसमिद्भिरिति ॥ जुहुयादिति ॥ अत्रसंख्यानुक्तौ–अनुक्तसंख्ययोःसंख्यासहस्रंजपहोमयोः ॥ पलाशसमिधोऽनुक्तेइतिसामान्यपरिभाषोक्तासंख्याग्राह्या ॥ ३ ॥ क्षीरवृक्षस्येति ॥ अश्वत्थोदुंवरप्लक्षन्यग्रोधाःक्षीरद्रुमाः शारदातिलकेउक्तास्तदन्यतमस्यसमिद्भिरित्यर्थः ॥ शकलैर्वाक्षीरवृक्षखंडैर्वा ॥ होमस्तुगायत्रीमंत्रेणैवसर्वत्र ॥ ४ ॥ एतद्धोमादिकंतर्पणादिकंचानुष्ठानमेकोनपंचाशद्दिनपर्यंतंप्रत्यहंका

एकैकंसप्तरात्रेणशुद्ध्यत्येवनसंशयः ॥ एभिर्व्रतैर्विपूतात्माकर्मकुर्वीतनित्यशः॥५७॥एवंशुद्धस्यकर्माणिसिद्ध्यंत्येवनसंशयः॥शुद्धात्माकर्मकुर्वीतसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ ५८ ॥ इष्टान्कामांस्ततःसर्वान्संप्राप्नोतिनसंशयः ॥ त्रिरात्रमेवोपवसेद्गृहितःसर्वकर्मणा ॥ ५९ ॥ त्रीणिनक्तानिवाकुर्यात्ततःकर्मसमारभेत् ॥ एवंविधानंकथितंपुरश्चर्याफलप्रदम् ॥ ६० ॥ गायत्र्याश्चपुरश्चर्यासर्वकामप्रदायिनी ॥ कथितातवदेवर्षेमहापापविनाशिनी ॥ ६१ ॥ आदौकुर्याद्व्रतंमंत्रीदेहशोधनकारकम् ॥ पुरश्चर्यांततःकुर्यात्समस्तफलभाग्भवेत् ॥ ६२ ॥ इतितेकथितंगुह्यंपुरश्चर्याविधानकम् ॥ एतत्परस्मैनोवाच्यंश्रुतिसारंयतःस्मृतम् ॥ ६३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ नारायणमहाभागगायत्र्यास्तुसमासतः ॥ शांत्यादिकान्प्रयोगांस्तुवदस्वकरुणानिधे ॥ १ ॥ नारायणउवाच ॥ अतिगुह्यमिदंपृष्टंत्वयाब्रह्मतनूद्भव॥नकस्यापिचवक्तव्यंदुष्टायपिशुनायच ॥ २ ॥ अथशांतिःपयोक्ताभिःसमिद्भिर्जुहुयाद्द्विजः ॥ शमीसमिद्भिःशाम्यंतिभूतरोगग्रहादयः ॥ ३ ॥ आर्द्राभिःक्षीरवृक्षस्यसमिद्भिर्जुहुयाद्द्विजः ॥ जुहुयाच्छकलैर्वापिभूतरोगादिशांतये ॥ ४ ॥ जलेनतर्पयेत्सूर्यंपाणिभ्यांशांतिमाप्नुयात् ॥ जानुदघ्नेजलेजप्त्वासर्वान्दोषाञ्छमंनयेत् ॥ ५ ॥ कंठदघ्नेजलेजप्त्वामुच्येत्प्राणांतिकाद्भयात् ॥ सर्वेभ्यःशांतिकर्मभ्योनिमज्ज्याप्सुजपःस्मृतः ॥ ६ ॥ सौवर्णेराजतेवापिपात्रेताम्रमयेऽपिवा॥ क्षीरवृक्षमयेवापिनिर्व्रणेमृन्मयेऽपिवा ॥ ७ ॥ सहस्रंपंचगव्येनहुत्वासुज्वलितेनले ॥ क्षीरवृक्षमयैःकाष्ठैःशेषंसंपादयेच्छनैः ॥ ८ ॥ प्रत्याहुतिस्पृशञ्जप्त्वासहस्रंपात्रसंस्थितम् ॥ तेनतंप्रोक्षयेद्देशंकुशैर्मंत्रमनुस्मरन् ॥ ९ ॥

र्यम् ॥ सहस्रहोमोहोमस्थलेतर्पणंचतावत्संख्यंतर्पणस्थलेसामान्यकार्याविशेषकार्यानुरोधेनतर्पयेदिति ॥ शारदातिलकेसूर्यमंत्रप्रकरणेयोविधिरुक्तस्तेनविधिनागायत्रीमंत्रांतेसूर्यंतर्पयामिनमइतिमंत्रंपठित्वातर्पयेदित्यर्थः ॥ ५ ॥ सर्वेभ्यःशांतिकर्मभ्योधिकइतिशेषः ॥ इदमपिमंडलपर्यंतमेव ॥ ६ ॥ प्रयोगांतरमाह । सौवर्णेइति ॥ सौवर्णाद्यन्यतमेपात्रेपंचगव्यंस्थापयित्वेत्यर्थः ॥ ७ ॥ क्षीरवृक्षमयैरिति ॥ तस्मिन्होमेइंधनमन्यन्नग्राह्यंकिंतुपूर्वोक्तक्षीरवृक्षकाष्ठैरेवेंधनादिकार्यंकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ८ ॥ प्रत्याहुतीति ॥ प्रत्येकाहुतौपंचगव्यंस्पृशन्सन्हुत्वापश्चात्पात्रस्थपंचगव्यंगायत्रीमंत्रेणसहस्रंजप्त्वाऽभिमंत्र्यप्रोक्षयेदित्यन्वयः ॥ मंत्रंगायत्रीमंत्रम् ॥ ९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तस्मिन्देशेउपद्रवस्थलेवलिंचदद्यादित्यर्थः ॥ तेनपरकृताभिचारोनश्यतीत्यर्थः ॥ १० ॥ यद्येवंकुरुतेतदादेवभूतपिशाचाद्यान्वशेकुरुतइत्यन्वयः ॥ ११ ॥ निखनेइति ॥ वक्ष्यमाणशूलस्यचतुरस्रमंडलेलिखनेकृतेतस्यचभूमौनिखनेकृतेइत्यर्थः ॥ तेभ्यःपिशाचादिभ्यः ॥ तदेवाह ॥ मंडलेइति ॥ पूर्वोक्तेकृमिभूताद्युपद्रवरूपेसतीत्यर्थः ॥ मंडलेचतुरस्रमंडले शूलमष्टगंधेनालिख्यतच्छूलंगायत्र्यासहस्रवारमभिमंत्र्यभूमौनिखनेदित्यर्थः ॥१२॥ अभिषेकमाह ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ क्रांतांविष्णुक्रांताम् ॥ देवीसहदेवी क्षीरवृक्षाअश्वत्थोदुंबरप्लक्षन्यग्रोधाः ॥ १६ ॥ कुशकूर्चोति ॥ सप्तविंशतिदर्भाणांवेण्यग्रंग्रंथिभूषितमितिकूर्चलक्षणसहितंकुशकूर्चमित्यर्थः ॥ १७ ॥ एनंभूताद्युपद्रुतंपुरुषमभिषिंचयेत्गायत्रीमंत्रंपठन् ॥ पूर्वोक्तमभिमंत्रण

बलिंकिरंस्ततस्तस्मिन्ध्यायेत्तुपरदेवताम् ॥ अभिचारसमुत्पन्नाकृत्यापापंचनश्यति ॥ १० ॥ देवभूतपिशाचाद्यायद्येवंकुरुतेवशे ॥ गृहंग्रामंपुरंराष्ट्रंसर्वंतेभ्योविमुच्यते ॥ ११ ॥ निखनेमुच्यतेतेभ्योलिखनेमध्यतोऽपिच ॥ मंडलेशूलमालिख्यपूर्वोक्तेचक्रमेऽपिवा ॥१२॥ अभिमंत्र्यसहस्रंतन्निखनेत्सर्वशांतये ॥ सौवर्णराजतंवापिकुंभंताम्रमयंचवा ॥ १३ ॥ मृन्मयंवानवंदिव्यंसूत्रवेष्टितमव्रणम् ॥ स्थंडिलेसैकतेस्थाप्यपूरयेन्मंत्रविज्जलैः ॥ १४ ॥ दिग्भ्य आहृत्यतीर्थानिचतसृभ्योद्विजोत्तमैः ॥ एलाचंदनकर्पूरजातीपाटलमल्लिकाः ॥ १५ ॥ बिल्वपत्रंतथाक्रांतांदेवीव्रीहियवांस्तिलान् ॥ सर्षपान्क्षीरवृक्षाणांप्रवालानिचनिक्षिपेत् ॥ १६ ॥ सर्वाण्यभिविधायैवंकुशकूर्चसमन्वितम् ॥ स्नातःसमाहितोविप्रःसहस्रंमंत्रयेद्बुधः ॥ १७ ॥ दिक्षुसौरानधीयीरन्मंत्रान्विप्रास्त्रयीविदः ॥ प्रोक्षयेत्पाययेदेनंनीरंतेनाभिषिंचयेत् ॥ १८ ॥ भूतरोगाभिचारेभ्यःसनिर्मुक्तःसुखीभवेत् ॥ अभिषेकेणमुच्येतमृत्योरास्यगतोनरः ॥ १९ ॥ अवश्यंकारयेद्विद्वान्राजादीर्घंजिजीविषुः ॥ गावोदेयाश्चऋत्विग्भ्यअभिषेकेशतंमुने ॥ २० ॥ दक्षिणायेनवातुष्टिर्यथाशक्त्याऽथवाभवेत् ॥ जपेदश्वत्थमालभ्यमंदवारेशतंद्विजः ॥ २१ ॥ भूतरोगाभिचारेभ्योमुच्यतेमहतोभयात् ॥ गुडूच्याःपर्वविच्छिन्नाःपयोक्ताजुहुयाद्द्विजः ॥२२॥ एवंमृत्युंजयोहोमःसर्वव्याधिविनाशनः ॥आम्रस्यजुहुयात्पत्रैःपयोक्तैर्ज्वरशांतये ॥ २३ ॥ वचाभिःपयसाक्ताभिःक्षयंहुत्वाविनाशयेत् ॥ मधुत्रितयहोमेनराजयक्ष्माविनश्यति ॥ २४ ॥ निवेद्यभास्करायान्नंपायसंहोमपूर्वकम् ॥ राजयक्ष्माभिभूतंचप्राशयेच्छांतिमाप्नुयात् ॥ २५ ॥ लताःपर्वसुविच्छिद्यसोमस्यजुहुयाद्द्विजः ॥ सोमेसूर्येणसंयुक्तेपयोक्ताःक्षयशांतये॥२६॥कुसुमैःशंखवृक्षस्यहुत्वाकुष्ठंविनाशयेत् ॥ अपस्मारविनाशःस्यादपामार्गस्यतंडुलैः ॥ २७ ॥

मपिगायत्रीमंत्रेणैव ॥ अत्रकुंभस्थापनादिविधिःसर्वोपिशारदातिलकेदीक्षापटलेउक्तोग्राह्यः ॥ १८ ॥ १९ ॥ शतमिति ॥ शतंगावोदक्षिणाइत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ पर्वणिपर्वाणिविच्छिन्नाःसमिधइत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ हुत्वा क्षयं रोगंविनाशयेदित्यन्वयः ॥ मधुत्रितयंप्रसिद्धंपयोदधिघृतरूपम् ॥ २४ ॥ २५ ॥ सोमेसूर्येणसंयुक्तेअमावास्यायामित्यर्थः॥ २६ ॥ तंडुलैर्बीजैरित्यर्थः ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २८ ॥ मसूरिकांपादरोगविशेषम् ॥ २९ ॥ ३० ॥ पिपीलिमधुवल्मीकेइति ॥ पिपीलिकावल्मीके मधुवल्मीकेचेत्यर्थः ॥ मधुवल्मीकोमोहोलइतिप्रसिद्धः ॥ गृहेतयोरुपद्रवेजातेस तीत्यर्थः ॥ सर्पिर्युक्तशमीसमिद्भिः सर्पिर्युक्तान्नेनौदनेनप्रत्येककार्येशतद्वयंहोमः ॥ ३१ ॥ शेषैर्होमावशेषैः ॥ अतएवपूर्वद्रव्ययोःसमुच्चयोभवति ॥ नयथासंख्यम् । समिद्भिर्बलिदानासंभ वात् ॥ अभ्रस्तनितशब्देनविद्युल्लतापातोविवक्षितः ॥ वनवेतसःसमिधः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ बद्धस्यशत्रुभिःकारागृहेपातितस्यानुष्ठानसामग्र्यभावात्तत्कल्याणार्थमाह । मनसैवेति ॥ ३४ ॥

क्षीरवृक्षसमिद्धोमादुन्मादोऽपिविनश्यति ॥ औदुंबरसमिद्धोमादतिमेहःक्षयंव्रजेत् ॥ २८ ॥ प्रमेहंशमयेद्धुत्वामधुनेक्षुरसेनवा ॥ मधुत्रितयहोमेननयेच्छां तिंमसूरिकाम्॥२९॥कपिलासर्पिषाहुत्वानयेच्छांतिंमसूरिकाम् ॥ उदुंबरवटाश्वत्थैर्गोगजाश्वामयंहरेत् ॥३०॥ पिपीलिमधुवल्मीकेगृहेजातेशतंशतम् ॥ शमीसमिद्भिरन्नेनसर्पिषाजुहुयाद्द्विजः ॥ ३१ ॥ तदुत्थंशांतिमायातिशेषैस्तत्रबलिंहरेत् ॥ अभ्रस्तनितभूकंपालक्ष्यादौवनवेतसः ॥ ३२ ॥ सप्ताहंजुहुया देवंराष्ट्रराज्यंसुखीभवेत् ॥ यांदिशंशतजप्तेनलोष्टेनाभिप्रताडयेत् ॥३३॥ ततोऽग्निमारुतारिभ्योभयंतस्यविनश्यति॥ मनसैवजपेदेनांबद्धोमुच्येतबंधना त् ॥ ३४ ॥ भूतरोगविषादिभ्यःस्पृशञ्जप्त्वाविमोचयेत् ॥ भूतादिभ्योविमुच्येतजलंपीत्वाभिमंत्रितम् ॥३५॥ अभिमंत्र्यशतंभस्मन्यसेद्भूतादिशांतये ॥ शिरसाधारयेद्भस्ममंत्रयित्वातदित्यृचा ॥३६॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तःसुखीजीवेच्छतंसमाः ॥ अशक्तःकारयेच्छांतिंविप्रंदत्त्वातुदक्षिणाम् ॥ ३७ ॥ अथ पुष्टिंश्रियंलक्ष्मींपुष्पैर्हुत्वाप्नुयाद्द्विजः ॥ श्रीकामोजुहुयात्पद्मैरक्तैःश्रियमवाप्नुयात् ॥ ३८ ॥ हुत्वाश्रियमवाप्नोतिजातीपुष्पैर्नवैःशुभैः ॥ शालितंडुलहो मेनश्रियमाप्नोतिपुष्कलाम् ॥३९॥ समिद्भिर्बिल्ववृक्षस्यहुत्वाश्रियमवाप्नुयात् ॥ बिल्वस्यशकलैर्हुत्वापत्रैःपुष्पैःफलैरपि ॥ ४० ॥ श्रियमाप्नोतिपरमां मूलस्यशकलैरपि ॥ समिद्भिर्बिल्ववृक्षस्यपायसेनचसर्पिषा ॥ ४१ ॥ शतंशतंचसप्ताहंहुत्वाश्रियमवाप्नुयात् ॥ लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्होमेकन्यामवाप्नुया त् ॥ ४२ ॥ अनेनविधिनाकन्यावरमाप्नोतिवांछितम् ॥ रक्तोत्पलशतंहुत्वासप्ताहंहेमचाप्नुयात् ॥ ४३ ॥ सूर्यबिंबेजलंहुत्वाजलस्थंहेमचाप्नुयात् ॥ अ न्नंहुत्वाप्नुयादन्नंव्रीहीन्व्रीहिपतिर्भवेत् ॥ ४४ ॥ करीषचूर्णैर्वत्सस्यहुत्वापशुमवाप्नुयात् ॥ प्रियंगुपायसाज्यैश्चभवेद्धोमादिभिःप्रजा ॥ ४५ ॥ नि वेद्यभास्करायान्नंपायसंहोमपूर्वकम् ॥ भोजयेत्तद्दतुस्नातांपुत्रंपरमवाप्नुयात् ॥ ४६ ॥

स्पृशान्निति । दर्भेणेतिविशेषः ॥ तंत्रांतरानुरोधात् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ यदुक्तंपुष्पैर्हुत्वेतितदेवस्पष्टयति । श्रीकामइति ॥ रक्तैःपद्मैरपिश्रियमेवाप्नोतीत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ त्रिमधुरं । पयोदधिघृतंचेतिसमंत्रिमधुरंस्मृतमितिसिद्धांतशेखरे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ जलंहुत्वेति । जलेनतर्पयित्वेत्यर्थः ॥ जलस्थंहेमजलेगुप्तंहेमेत्यर्थः ॥ व्रीहीन्हुत्वेतिशेषः ॥ ४४ ॥ प्रियंगुपायसाज्यैश्चेति । बहुवचनाद्द्रव्यत्रयम् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सप्ररोहाभिरिति ॥ प्ररोहोऽग्रंतत्सहिताभिःपलाशसमिद्भिरित्यर्थः ॥ अनुक्तेपलाशसमिधइतिविश्वामित्रकल्पेसामान्यपरिभाषणात् ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ सप्ररोहाभिरितिक्षीरवृक्षसमिधोविशेषणम् ॥ सुवर्णकुड्मलंहेमकमलम् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ समूलफलपल्लवैसंपूर्णवृक्षमित्यर्थः ॥ ५४ ॥ यवागूंहुत्वेतिशेषः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

सप्ररोहाभिरार्द्राभिरायुर्हुत्वासमाप्नुयात् ॥ समिद्भिःक्षीरवृक्षस्यहुत्वाऽऽयुषमवाप्नुयात् ॥ ४७ ॥ सप्ररोहाभिरार्द्राभिरक्ताभिर्मधुरत्रयैः ॥ व्रीहीणांचशतंहुत्वाहेमचायुरवाप्नुयात् ॥ ४८ ॥ सुवर्णकुड्मलंहुत्वाशतमायुरवाप्नुयात् ॥ दूर्वाभिःपयसावापिमधुनासर्पिषापिवा ॥ ४९ ॥ शतंशतंचसप्ताहमपमृत्युंव्यपोहति ॥ शमीसमिद्भिरन्नेनपयसावाचसर्पिषा ॥ ५० ॥ शतंशतंचसप्ताहमपमृत्युंव्यपोहति ॥ न्यग्रोधसमिधोहुत्वापायसंहोमयेत्ततः ॥ ५१ ॥ शतंशतंचसप्ताहमपमृत्युंव्यपोहति ॥ क्षीराहारोजपेन्मृत्योःसप्ताहाद्विजयीभवेत् ॥५२॥ अनश्नन्वाग्यतोजप्त्वात्रिरात्रंमुच्यतेयमात्॥ निमज्ज्याप्सुजपेदेवसद्योमृत्योर्विमुच्यते ॥ ५३ ॥ जपेद्बिल्वंसमाश्रित्यमासंराज्यमवाप्नुयात् ॥ बिल्वंहुत्वाप्नुयाद्राज्यंसमूलफलपल्लवम् ॥ ५४ ॥ हुत्वापद्मशतंमासंराज्यमाप्नोत्यकंटकम् ॥ यवागूंग्राममाप्नोतिहुत्वाशालिसमन्वितम् ॥ ५५ ॥ अश्वत्थसमिधोहुत्वायुद्धादौजयमाप्नुयात् ॥ अर्कस्यसमिधोहुत्वासर्वत्रविजयीभवेत् ॥ ५६ ॥ संयुक्तैःपयसापत्रैःपुष्पैर्वावेतसस्यच ॥ पायसेनशतंहुत्वासप्ताहंवृष्टिमाप्नुयात् ॥५७॥ नाभिदघ्नेजलेजप्त्वासप्ताहंवृष्टिमाप्नुयात् ॥ जलेभस्मशतंहुत्वामहावृष्टिंनिवारयेत् ॥ ५८ ॥ पालाशीभिरवाप्नोतिसमिद्भिर्ब्रह्मवर्चसम् ॥ पलाशकुसुमैर्हुत्वासर्वमिष्टमवाप्नुयात् ॥ ५९ ॥ पयोहुत्वाप्नुयान्मेधामाज्यंबुद्धिमवाप्नुयात् ॥ अभिमंत्र्यपिबेद्ब्राह्मंरसंमेधामवाप्नुयात् ॥ ६० ॥ पुष्पहोमेभवेद्वासस्तंतुभिस्तद्विधंपटम् ॥ लवणंमधुसंमिश्रंहुत्वेष्टंवशमानयेत् ॥ ६१ ॥ नयेदिष्टंवशंहुत्वालक्ष्मीपुष्पैर्मधुप्लुतैः ॥ नित्यमंजलिनात्मानमभिषिंचेज्जलेस्थितः ॥६२॥ मतिमारोग्यमायुष्यमग्र्यंस्वास्थ्यमवाप्नुयात्॥ कुर्याद्विप्रोन्यमुद्दिश्यसोपिपुष्टिमवाप्नुयात् ॥ ६३ ॥ अथचारुविधिर्मासंसहस्रंप्रत्यहंजपेत् ॥ आयुष्कामःशुचौदेशेप्राप्नुयादायुरुत्तमम् ॥ ६४ ॥ आयुरारोग्यकामस्तुजपेन्मासद्वयंद्विजः ॥ भवेदायुष्यमारोग्यंश्रियैमासत्रयंजपेत् ॥ ६५ ॥ आयुःश्रीपुत्रदाराद्याश्चतुर्भिश्चयशोजपात् ॥ पुत्रदारायुरारोग्यंश्रियंविद्यांचपंचभिः ॥ ६६ ॥ एवमेवोत्तरान्कामान्मासैरेवोत्तरैर्जपेत् ॥ एकपादोजपेदूर्ध्वबाहुःस्थित्वानिराश्रयः ॥ ६७ ॥ मासंशतत्रयंविप्रःसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ एवंशतोत्तरंजप्त्वासहस्रंसर्वमाप्नुयात् ॥ ६८ ॥

॥ ६० ॥ ६१ ॥ लक्ष्मीपुष्पैःबिल्ववृक्षपुष्पैः ॥ ६२ ॥ एतान्यनुष्ठानान्यन्यमुद्दिश्यापिकुर्यादित्याह । कुर्यादिति ॥ ६३ ॥६४॥६५॥ चतुर्भिर्मासैः ॥ पंचभिर्मासैः॥६६॥६७॥६८।



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

परमभीष्टम् ॥ ६९ ॥ मासंशतंजपेदित्यन्वयः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ रुद्ध्वाप्राणमित्यर्थः ॥ अमोघासत्यवाग्भवेदित्यर्थः ॥ ७३ ॥ देवःसूर्यः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

रुद्धाप्राणमपानंचजपेन्मासंशतत्रयम् ॥ यदिच्छेत्तदवाप्नोतिसहस्रात्परमाप्नुयात् ॥ ६९ ॥ एकपादोजपेदूर्ध्वबाहूरुध्वानिलंवशः ॥ मासंशतमवाप्नोतियदिच्छेदितिकौशिकः ॥ ७० ॥ एवंशतत्रयंजप्त्वासहस्रंसर्वमाप्नुयात् ॥ निमज्ज्याप्सुजपेन्मासंशतमिष्टमवाप्नुयात् ॥ ७१ ॥ एवंशतत्रयंजप्त्वासहस्रं सर्वमाप्नुयात् ॥ एकपादोजपेदूर्ध्वबाहूरुद्धानिराश्रयः ॥७२॥ नक्तमश्नन्हविष्यान्नंवत्सरादृषितामियात् ॥ गीरमोघाभवेदेवंजप्त्वासंवत्सरद्वयम् ॥ ७३ ॥ त्रिवत्सरंजपेदेवंभवेत्त्रैकालदर्शनम् ॥ आयातिभगवान्देवश्चतुःसंवत्सरंजपेत् ॥ ७४ ॥ पंचभिर्वत्सरैरेवमणिमादिगुणोभवेत् ॥ एवंषड्वत्सरंजप्त्वाकामरूपित्वमाप्नुयात् ॥ ७५ ॥ सप्तभिर्वत्सरैरेवममरत्वमवाप्नुयात् ॥ मनुत्वंनवभिःसिद्धमिंद्रत्वंदशभिर्भवेत् ॥७६॥ एकादशभिराप्नोतिप्राजापत्यंतुवत्सरैः ॥ ब्रह्मत्वंप्राप्नुयादेवंजप्त्वाद्वादशवत्सरान् ॥ ७७ ॥ एतेनैवजितालोकास्तपसानारदादिभिः ॥ शाकमन्येपरेमूलंफलमन्येपयःपरे ॥७८॥ घृतमन्येपरेसोममपरेचरुवृत्तयः ॥ ऋषयःपक्षमश्नंतिकेचिद्भैक्ष्याशिनोऽहनि॥७९॥हविष्यमपरेऽश्नंतःकुर्वंत्येवपरंतपः॥अथशुद्धचैरहस्यानांत्रिसहस्रंजपेद्द्विजः ॥८०॥ मासंशुद्धोभवेत्स्तेयात्सुवर्णस्यद्विजोत्तमः ॥ जपेन्मासंत्रिसाहस्रंसुरापःशुद्धिमाप्नुयात् ॥ ८१ ॥ मासंजपेत्रिसाहस्रंशुचिःस्याद्गुरुतल्पगः ॥ त्रिसहस्रंजपेन्मासंकुटींकृत्वावनेवसन् ॥ ८२ ॥ ब्रह्महामुच्यतेपापादितिकौशिकभाषितम् ॥ द्वादशाहंनिमज्याप्सुसहस्रंप्रत्यहंजपेत् ॥ ८३ ॥ मुच्येरन्नंहसःसर्वेमहापातकिनोद्विजाः ॥ त्रिसाहस्रंजपेन्मासंप्राणानायम्यवाग्यतः ॥ ८४ ॥ महापातकयुक्तोवामुच्यतेमहतोभयात् ॥ प्राणायामसहस्रेणब्रह्महापिविशुध्यति ॥ ८५ ॥ षट्कृत्वस्त्वभ्यसेदूर्ध्वंप्राणापानौसमाहितः ॥ प्राणायामोभवेदेषसर्वपापप्रणाशनः ॥ ८६ ॥ सहस्रमभ्यसन्मासंक्षितिपःशुचितामियात् ॥ द्वादशाहंत्रिसाहस्रंजपेद्धिगोवधेद्विजः ॥ ८७ ॥ अगम्यागमनस्तेयहननाभक्ष्यभक्षणे ॥ दशसाहस्रमभ्यस्तागायत्रीशोधयेद्द्विजम् ॥८८॥ प्राणायामशतंकृत्वामुच्यतेसर्वकिल्बिषात् ॥ सर्वेषामेवपापानांसंकरेसतिशुद्धये ॥ ८९ ॥ सहस्रमभ्यसेन्मासंनित्यजापीवनेवसन् ॥ उपवाससमंजप्यंत्रिसहस्रंतदित्यृचम् ॥ ९० ॥ चतुर्विंशतिसाहस्रमभ्यस्ताकृच्छ्रसंज्ञिता ॥ चतुःषष्टिसहस्राणिचांद्रायणसमानितु ॥ ९१ ॥ शतकृत्वोभ्यसेन्नित्यंप्राणायम्यसंध्ययोः ॥ तदित्यृचमवाप्नोतिसर्वपापक्षयंपरम् ॥ ९२ ॥

॥ ७८ ॥ ७९ ॥ रहस्यानांपातकानामित्यर्थः ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्यास्य व्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यांयःकृतवान्सम्यक्तिलकाख्यांसमुज्ज्वलाम् ॥ २ ॥ स्कंधश्चैकादशस्तस्याःसमाप्तोऽभूच्छुभार्थदः ॥ प्रीयतांतेनमेदेवीगायत्रीपरमेश्वरी ॥ ३ ॥ इतिश्रीशे

निमज्याप्सुजपेन्नित्यंशतकृत्वस्तदित्यृचम् ॥ ध्यायन्देवींसूर्यरूपांसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥९३ ॥ इतितेसम्यगाख्याताःशांतिशुद्ध्यादिकल्पनाः ॥ रहस्यातिरहस्याश्चगोपनीयास्त्वयासदा ॥ ९४ ॥ इतिसंक्षेपतःप्रोक्तःसदाचारस्यसंग्रहः ॥ विधिनाचरणादस्यमायादुर्गाप्रसीदति॥९५॥नैमित्तिकंचनित्यंच काम्यंकर्मयथाविधि ॥ आचरेन्मनुजःसोयंभुक्तिमुक्तिफलाप्तिभाक् ॥ ९६ ॥ आचारःप्रथमोधर्मोधर्मस्यप्रभुरीश्वरी ॥ इत्युक्तंसर्वशास्त्रेषुसदाचारफलंमहत् ॥ ९७ ॥ आचारवान्सदापूतःसदैवाचारवान्सुखी ॥ आचारवान्सदाधन्यःसत्यंसत्यंचनारद ॥ ९८ ॥ देवीप्रसादजनकंसदाचारविधानकम् ॥ यदपिशृणुयान्मर्त्योमहासंपत्तिसौख्यभाक् ॥ ९९ ॥ सदाचारेणसिध्येच्चऐहिकामुष्मिकंसुखम् ॥ तदेवतेमयाप्रोक्तंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ १०० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेसदाचारनिरूपणंनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ एकादशःस्कंधःसमाप्तः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥ ॥

सार्धैरामाब्धिनेत्रेंदु ( १२४३ ) पद्यैर्व्यासकृतैःशुभैः ॥ देवीभागवतस्यास्यैकादशः । स्कंधईरितः ॥ १ ॥

वकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भजनीलकंठभट्टकृतेदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ स्कंधश्चायंसमाप्तः ॥ ११ ॥ श्रीजगदंबार्पणमस्तु ॥

---

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजेन क्षेमराजेन स्वकीये श्रीवेङ्कटेश्वर ( स्टीम् ) यन्त्रालयेऽङ्कयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९५८, शके १८२३.



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवते सटीके द्वादशस्कन्धः प्रारभ्यते ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

श्रीगणेशायनमः॥इच्छातुसर्वजगतामधिनाथतायांकर्बृत्वमंबतुपुनर्नरकप्रदंमे॥कोवादयालुरधुनामधुनाशकर्त्रित्वत्तोधिकोममममनोरथपूरकःस्यात् ॥ १ ॥ सप्तविंशतिपद्यैस्तुश्लोकार्धेनसमा युतैः ॥ ऋष्यादिकंतुगायत्र्यायथावदभिधीयते ॥ २ ॥ पूर्वाध्यायेगायत्रीविधानंसदाचारंचश्रुत्वातत्रपृच्छति। नारदउवाच सदाचारेति ॥ १ ॥ २ ॥ दुःखसाध्यानीति ॥ सदाचारवि धिस्त्वभिलषितएव ॥ किंतु कृच्छ्रादिव्रतानिदेहशुद्ध्यर्थंकथितान्यशक्तस्यनकर्तुंशक्यानितस्मात्तत्रकिंचिदुपायांतरमास्तिचेत्तत्कृपांकृत्वावदेत्येकःप्रश्नःश्लोकचतुष्टयपर्यंतम् ॥ ३ ॥ ४ ॥ द्वितीयंप्रश्नमाह । सदाचारेति ॥ मुख्यतममिति ॥ मूढस्यसोपिविधिर्दुर्घटएवास्तीतितदुपयोग्युपायांतरंविद्यतेचेत्तदपिवदेत्यर्थः ॥५॥ तृतीयंप्रश्नमाह । येगायत्रीति ॥ तत्त्वसंख्याश्चतुर्वि

श्रीगणेशायनमः ॥ नारदउवाच ॥ सदाचारविधिर्देवभवतावार्णितःप्रभो ॥ तस्याप्यतुलमाहात्म्यंसर्वपापविनाशनम् ॥ १ ॥ श्रुतंभवन्मुखांभोजच्युतं देवीकथामृतम् ॥ व्रतानियानिचोक्तानिचांद्रायणमुखानिते ॥ २ ॥ दुःखसाध्यानिजानीमःकर्त्रसाध्यानितानिच ॥ तदस्मात्सांप्रतंयत्तुसुखसाध्यंशरीरि णाम् ॥ ३ ॥ देवीप्रसादजनकंसुखानुष्ठानसिद्धिदम् ॥ तत्कर्मवदमेस्वामिन्कृपापूर्वंसुरेश्वर ॥४॥ सदाचारविधौयश्चगायत्रीविधिरीरितः ॥ तस्मिन्मुख्य तमंकिंस्यात्किंवापुण्याधिकप्रदम् ॥५॥ येगायत्रीगतावर्णास्तत्त्वसंख्यास्त्वयेरिताः ॥ तेषांकेऋषयःप्रोक्ताःकानिच्छंदांसिवैमुने ॥६॥ तेषांकादेवताःप्रो क्ताःसर्वंकथयमेप्रभो ॥ महत्कौतूहलंमेचमानसेपरिवर्तते ॥ ७ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यादनुष्ठानादिकंतथा ॥ गायत्रीमात्रनिष्ठस्तुकृत कृत्योभवेद्द्विजः ॥ ८ ॥ संध्यासुचार्घ्यदानंचगायत्रीजपमेवच ॥ सहस्रत्रितयंकुर्वन्सुरैःपूज्योभवेन्मुने ॥९॥ न्यासान्करोतुवामावागायत्रीमेवचाभ्यसेत् ॥ ध्यात्वानिर्व्याजयावृत्त्यासच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ १० ॥ यदक्षरैकसंसिद्धेःस्पर्धतेब्राह्मणोत्तमः ॥ हरिशंकरकंजोत्थसूर्यचंद्रहुताशनैः ॥११॥अथातःश्रूय तांब्रह्मन्वर्णऋष्यादिकांस्तथा ॥ छंदांसिदेवतास्तद्वत्क्रमात्तत्त्वानिचैवहि ॥१२॥ वामदेवोत्रिर्वसिष्ठःशुक्रःकण्वःपराशरः ॥ विश्वामित्रोमहातेजाःकपिलः शौनकोमहान् ॥१३॥ याज्ञवल्क्योभरद्वाजोजमदग्निस्तपोनिधिः ॥ गौतमोमुद्गलश्चैववेदव्यासश्चलोमशः ॥१४॥ अगस्त्यःकौशिकोवत्सःपुलस्त्योमां डुकस्तथा ॥ दुर्वासास्तपसांश्रेष्ठोनारदःकश्यपस्तथा ॥ १५ ॥ इत्येतेऋषयःप्रोक्तावर्णानांक्रमशोमुने ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्चबृहतीपंक्तिरेवच ॥१६॥ त्रिष्टुभंजगतीचैवतथाऽतिजगतीमता ॥ शक्वर्यतिशक्वरीचधृतिश्चातिधृतिस्तथा ॥ १७ ॥ विराट्प्रस्तारपंक्तिश्चकृतिःप्रकृतिराकृतिः ॥ विकृतिःसंकृतिश्चै वाक्षरपंक्तिस्तथैवच ॥ १८ ॥ भूर्भुवःस्वरितिच्छंदस्तथाज्योतिष्मतीस्मृतम् ॥ इत्येतानिचछंदांसिकीर्तितानिमहामुने ॥ १९ ॥

शतिसंख्याः ॥ ६ ॥ सर्वेतेषांतत्पदादिकम् ॥ ७ ॥ तत्रप्रथमप्रश्नोत्तरमाह कुर्यादिति ॥ अनुष्ठानादिकंदेहशुद्ध्यर्थंकृच्छ्रादिकंकरोतुवानकरोतुकेवलगायत्रीमात्रस्यनिर्व्याजयाभक्त्या निरंतरमभ्यासात्कृतकृत्योभवतिनान्यापेक्षास्तीत्यर्थः ॥ अतएवगायत्रीप्रकरणेपूर्वमुक्तमेतादृशजपेनकृच्छ्रादिकंभवतीति ॥ तदुक्तंकूर्मपुराणे॥एकतश्चतुरोवेदागायत्रीचैकतःपरेति ॥८॥ द्वितीयप्रश्नोत्तरमाह । संध्यास्विति ॥ संध्यात्रयेऽर्घ्यदानंसहस्रत्रयगायत्रीजपएवमुख्योऽन्यत्वाभ्युदयिकमितिभावः ॥ ९ ॥ तदेवाह । न्यासानिति ॥ १० ॥११॥ तृतीयप्रश्नोत्तरमाह। अथातइति ॥ १२ ॥ महातेजाइतिविश्वामित्रविशेषणम् ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





देवताआह । आग्नेयमिति ॥ अत्रपंचमषष्ठवर्णयोरेकआदित्यएवदेवतेत्युक्तम्।सप्तदशाष्टमाक्षरयोर्मैत्रावरुणदेवतात्वमेवोक्तम्। गायत्रीब्रह्मकल्पेतुभिन्नाएवदेवताउक्ताः॥तथाहिआद्योवर्णो
ग्निदेवःस्याद्वायुदेवोद्वितीयकः ॥ तृतीयःसूर्यदेवत्योधनदेवश्चतुर्थकः ॥ यमःपंचमवर्णस्यवारुणःषष्ठएवच ॥ सप्तमोबार्हस्पत्योहिपार्जन्योनारदाष्टमः ॥ वर्णस्यनवमस्येंद्रोगंधर्वादशमस्यच
॥ एकादशस्यवर्णस्यदेवताप्रोष्ठउच्यते ॥ द्वादशस्यतुवर्णस्यमित्रावरुणदेवता ॥ स्यात्तुत्तत्रयोदशोवर्णस्त्वाष्ट्रदैवतसंयुतः ॥ चतुर्दशस्यवर्णस्यदेवतावासवःस्मृतः ॥ मरुद्दैवतकोवर्णःपंच
दशकएवच ॥ सोमस्तुदेवताज्ञेयावर्णस्यषोडशस्यच ॥ सप्तदशस्यवर्णस्यदेवताअंगिराभवेत् ॥ अष्टादशस्यवर्णस्यविश्वेदेवाश्चदेवताः ॥ एकोनविंशतिकस्यवर्णस्यदेवताश्विनौ ॥ विंशति
कस्यवर्णस्यपूषादेवःप्रकीर्तितः ॥ रुद्रोदेवस्तुवर्णस्याप्येकाविंशतिकस्याहि ॥ द्वाविंशतितमोवर्णोविद्युद्देवःप्रकीर्तितः ॥ ब्रह्मदैवतकोवर्णस्त्रयोविंशतिकःस्मृतः ॥ चतुर्विंशतिकोवर्णोभवेद

दैवतानिशृणुप्राज्ञतेषामेवानुपूर्वशः ॥ आग्नेयंप्रथमंप्रोक्तंप्राजापत्यंद्वितीयकम् ॥ २० ॥ तृतीयंचतथासौम्यमीशानंचचतुर्थकम् ॥ सावित्रंपंचमंप्रोक्तंष
ष्ठमादित्यदैवतम् ॥ २१ ॥ बार्हस्पत्यंसप्तमंतुमैत्रावरुणमष्टमम् ॥ नवमंभगदैवत्यंदशमंचार्यमेश्वरम् ॥ २२ ॥ गणेशमेकादशकंत्वाष्ट्रंद्वादशकंस्मृत
म् ॥ पौष्णंत्रयोदशंप्रोक्तमैंद्राग्नंचचतुर्दशम्॥२३॥वायव्यंपंचदशकंवामदेव्यंचषोडशम् ॥ मैत्रावरुणिदेवत्यंप्रोक्तंसप्तदशाक्षरम्॥२४॥अष्टादशंवैश्वदेवमू
नविंशंतुमातृकम् ॥ वैष्णवंविंशतितमंवसुदैवतमीरितम् ॥ २५ ॥ एकविंशतिसंख्याकंद्वाविंशंरुद्रदैवतम् ॥ त्रयोविंशंचकौबेरमाश्विनंतत्त्वसंख्यकम्
॥ २६ ॥ चतुर्विंशतिवर्णानांदेवतानांचसंग्रहः ॥ कथितःपरमश्रेष्ठोमहापापैकशोधनः ॥२७॥ यदाकर्णनमात्रेणसांगंजाप्यफलंमुने ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभा
गवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेगायत्रीविचारोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ छ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ वर्णानांशक्तयःकाश्चताःशृणुष्वमहामुने॥वामदे
वीप्रियासत्याविश्वाभद्रविलासिनी ॥ १ ॥ प्रभावतीजयाशांताकांतादुर्गासरस्वती ॥ विद्रुमाचविशालेशाव्यापिनीविमलातथा ॥ २ ॥ तमोपहारिणीसू
क्ष्माविश्वयोनिर्जयावशा ॥ पद्मालयापराशोभाभद्राचत्रिपदास्मृता ॥ ३ ॥ चतुर्विंशतिवर्णानांशक्तयःसमुदाहृताः ॥ अतःपरंवर्णवर्णान्व्याहरामियथात
थम् ॥ ४ ॥ चंपकाअतसीपुष्पसन्निभंविद्रुमंतथा ॥ स्फटिकाकारकंचैवपद्मपुष्पसमप्रभम् ॥ ५ ॥ तरुणादित्यसंकाशंशंखकुंदेंदुसन्निभम्॥प्रवालपद्मप
त्राभंपद्मरागसमप्रभम् ॥ ६ ॥ इंद्रनीलमणिप्रख्यंमौक्तिकंकुंकुमप्रभम् ॥ अंजनाभंचरक्तंचवैदूर्यक्षौद्रसन्निभम् ॥ ७ ॥ हारिद्रंकुंददुग्धाभंरविकांतिसम
प्रभम् ॥ शुकपुच्छनिभंतद्वच्छतपत्रनिभंतथा ॥ ८ ॥ केतकीपुष्पसंकाशंमल्लिकाकुसुमप्रभम् ॥ करवीरश्चइत्येतेक्रमेणपरिकीर्तिताः॥९॥वर्णाःप्रोक्ता
श्चवर्णानांमहापापविशोधनाः ॥ पृथिव्यापस्तथातेजोवायुराकाशएवच ॥ १० ॥

दितिदैवतइति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ अत्रव्याहृतीनांदेवताऋष्यादयश्चप्रसिद्धत्वान्नोक्ताः ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेप्रथमो
ध्यायः ॥ १ ॥ ॥ अष्टादशश्लोकवर्यैर्वर्णानांशक्तयस्तथा ॥ श्वेतपीतादयोवर्णावर्णानामक्षरक्रमात् ॥ उच्यंतेचैवमुद्राश्चप्रोक्ताएवप्रसंगतः ॥ १ ॥ वर्णशक्तीराहवर्णानांशक्तयइति ॥
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ वर्णवर्णाश्चतुर्विंशतिवर्णानांश्वेतपीताकारान्वर्णानित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ वर्णतत्त्वान्याह । पृथिव्यापइति ॥ पूर्वोक्तेगायत्र्याअक्षरन्यासस्थ
लेइदंतत्त्वऋषिवर्णाद्यात्मकंप्रत्यक्षरंस्मृत्वावर्णान्न्यसेदितिरहस्ये ॥ १० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पायुपादंचेत्यत्रप्राण्यंगत्वादकवद्भावः ॥ क्वचित्पायुःपादौचेत्यपिपाठः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ तुर्यरूपाःगायत्र्याश्चतुर्थचरणस्येत्यर्थः ॥ १७ ॥१८ ॥ एता
मुद्राएकादशस्कंधेउक्ताएवप्रसंगादत्रकथिताइतिबोध्यम् ॥ जपसमयेसर्वेऋषयःसर्वाणिछंदांसिसर्वाःशक्तयःसर्वाणितत्त्वानिसर्वेवर्णवर्णाःस्मर्तव्यामुद्राश्चदर्शनीयाइतिसमुदायार्थः ॥ ॥
इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ पंचविंशतिभिःपद्यैर्जगन्मातुःपरात्परम् ॥ कवचंप्रोच्यतेसम्यक्सर्वमंगलकारकम् ॥ १ ॥ नारदःकवचंपृच्छति । स्वा
मिन्निति ॥ पातकात्केनपुण्येनमुच्येतेत्यन्वयः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ तद्बीजमिति ॥ तत्पदंबीजमित्यर्थः ॥ ७ ॥ प्रथमंचतुर्भिरक्षरैर्हृदयमित्यर्थः ॥ एवमुत्तरत्रबो

गंधोरसश्चरूपंचशब्दःस्पर्शस्तथैवच ॥ उपस्थंपायुपादंचपाणीवागपिचक्रमात् ॥११॥ प्राणंजिह्वाचचक्षुश्चत्वक्श्रोत्रंचततःपरम्॥ प्राणोपानस्तथाव्या
नःसमानश्चततःपरम् ॥ १२ ॥ तत्त्वान्येतानिवर्णानांक्रमशःकीर्तितानितु ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिवर्णमुद्राःक्रमेणतु ॥ १३ ॥ सुमुखंसंपुटंचैवविततंविस्तृ
तंतथा ॥ द्विमुखंत्रिमुखंचैवचतुःपंचमुखंतथा ॥ १४ ॥ षण्मुखाधोमुखंचैवव्यापकांजलिकंतथा ॥ शकटंयमपाशंचग्रथितंसंमुखोन्मुखम् ॥१५॥ विलं
बंमुष्टिकंचैवमत्स्यंकूर्मंवराहकम् ॥ सिंहाक्रांतंमहाक्रांतंमुद्गरंपल्लवंतथा॥१६॥त्रिशूलयोनीसुरभिश्चाक्षमालाचलिंगकम् ॥ अंबुजंचमहामुद्रास्तुर्यरूपाःप्र
कीर्तिताः ॥१७॥ इत्येताःकीर्तितामुद्रावर्णानांतेमहामुने ॥ महापापक्षयकराःकीर्तिदाःकांतिदामुने ॥ १८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०द्वादशस्कंधेद्वि
तीयोऽध्यायः ॥२॥ ॥ नारदउवाच ॥ स्वामिन्सर्वजगन्नाथसंशयोस्तिममप्रभो॥चतुःषष्टिकलाभिज्ञपातकाद्योगविद्वर ॥१॥ मुच्येतकेनपुण्येनब्रह्मरूपः
कथंभवेत् ॥ देहश्चदेवतारूपोमंत्ररूपोविशेषतः॥२॥ कर्मतच्छ्रोतुमिच्छामिन्यासंचविधिपूर्वकम् ॥ ऋषिश्छंदोधिदैवंचध्यानंचविधिवत्प्रभो॥३॥श्रीनारा
यणउवाच ॥ अस्त्येकंपरमंगुह्यंगायत्रीकवचंतथा॥पठनाद्धारणान्मर्त्यःसर्वपापैःप्रमुच्यते॥४॥सर्वान्कामानवाप्नोतिदेवीरूपश्चजायते॥ गायत्रीकवचस्या
स्यब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥५॥ ऋषयोऋग्यजुःसामाथर्वश्छंदांसिनारद ॥ ब्रह्मरूपादेवतोक्तागायत्रीपरमाकला ॥ ६ ॥ तद्बीजंभर्गइत्येषाशक्तिरुक्तामनीषि
भिः ॥ कीलकंचधियःप्रोक्तंमोक्षार्थेविनियोजनम् ॥७॥ चतुर्भिर्हृदयंप्रोक्तंत्रिभिर्वर्णैःशिरःस्मृतम्॥चतुर्भिःस्याच्छिखापश्चात्त्रिभिस्तुकवचंस्मृतम् ॥८॥
चतुर्भिर्नेत्रमुद्दिष्टंचतुर्भिःस्यात्तदस्त्रकम् ॥ अथध्यानंप्रवक्ष्यामिसाधकाभीष्टदायकम् ॥ ९ ॥ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनि
बद्धरत्नमुकुटांतत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रींवरदाभयांकुशकशाःशुभ्रंकपालंगुणंशंखंचक्रमथारविंदयुगलंहस्तैर्वहंतींभजे ॥ १० ॥ गायत्रीपूर्वतःपातुसा
वित्रीपातुदक्षिणे ॥ ब्रह्मसंध्यातुमेपश्चादुत्तरायांसरस्वती ॥ ११ ॥

ध्यम् ॥ ८ ॥ ९ ॥ ध्यानमाह । मुक्ताविद्रुमेति ॥ प्रत्येकमीक्षणत्रयवद्भिःपंचाभिर्मुखैर्युक्तामित्यर्थः ॥ तत्त्वार्थवर्णात्मिकामिति ॥ चतुर्विंशतितत्त्वान्यर्थोयेषांवर्णानांतत्सवितुरित्यादी
नांतदात्मिकामित्यर्थः ॥ दक्षाद्यूर्ध्वयोर्हस्तयोःकमलद्वयंतदधस्तनयोश्चक्रशंखौतदधस्तनयोःरज्जुकपालेतदधस्तनयोःपाशांकुशौतदधस्थयोरभयवरौ ॥ कशापाशः ॥ गुणोरज्जुरित्यायु
धध्यानम् ॥ १० ॥ ब्रह्मसंध्या–ब्रह्मणाराध्यासंध्याब्रह्मसंध्या ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १२ ॥ १३ ॥ हेब्रह्माणिभवतीमेऊर्ध्वंदेशंरक्षेदित्यन्वयः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अथश्रीजगदंबायागायत्र्याहृदयंपरम् ॥ अथवोक्तक्रमेणैवगाथारूपेणकथ्यते ॥ १ ॥ कवचश्रवणोत्तरंगायत्रीहृदयंपृच्छति ।

पार्वतीमेदिशंरक्षेत्पावकीजलशायिनी ॥ यातुधानीदिशंरक्षेद्यातुधानभयंकरी ॥ १२ ॥ पावमानीदिशंरक्षेत्पवमानविलासिनी ॥ दिशंरौद्रींचमेपातुरुद्राणीरुद्ररूपिणी ॥ १३ ॥ ऊर्ध्वंब्रह्माणिमेरक्षेदधस्ताद्वैष्णवीतथा ॥ एवंदशदिशोरक्षेत्सर्वांगंभुवनेश्वरी ॥ १४ ॥ तत्पदंपातुमेपादौजंघेमेसवितुःपदम् ॥ वरेण्यंकटिदेशेतुनाभिंभर्गस्तथैवच ॥ १५ ॥ देवस्यमेतद्धृदयंधीमहीतिचगल्लयोः ॥ धियःपदंचमेनेत्रेयःपदंमेललाटकम् ॥ १६ ॥ नःपातुमेपदंमूर्ध्निशिखायांमेप्रचोदयात् ॥ तत्पदंपातुमूर्धानंसकारःपातुभालकम् ॥ १७ ॥ चक्षुषीतुविकारार्णोतुकारस्तुकपोलयोः ॥ नासापुटंवकारार्णोरेकारस्तुमुखेतथा ॥ १८ ॥ णिकारऊर्ध्वमोष्ठंतुयकारस्त्वधरोष्ठकम् ॥ आस्यमध्येभकारार्णोर्गोकारश्चुबुकेतथा ॥ १९ ॥ देकारःकंठदेशेतुवकारःस्कंधदेशकम् ॥ स्यकारोदक्षिणंहस्तंधीकारोवामहस्तकम् ॥ २० ॥ मकारोहृदयंरक्षेद्धिकारउदरेतथा ॥ धिकारोनाभिदेशेतुयोकारस्तुकटितथा ॥ २१ ॥ गुह्यंरक्षतुयोकारऊरूद्वौनःपदाक्षरम् ॥ प्रकारोजानुनीरक्षेच्चोकारोजंघदेशकम् ॥ २२ ॥ दकारंगुल्फदेशेतुयाकारःपदयुग्मकम् ॥ तकारव्यंजनंचैवसर्वांगेमेसदाऽवतु ॥ २३ ॥ इदंतुकवचंदिव्यंबाधाशतविनाशनम् ॥ चतुःषष्टिकलाविद्यादायकंमोक्षकारकम् ॥ २४ ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्यःपरंब्रह्माधिगच्छति ॥ पठनाच्छ्रवणाद्वापिगोसहस्रफलंलभेत् ॥ २५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेगायत्रीमंत्रकवचंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ भगवन्देवदेवेशभूतभव्यजगत्प्रभो ॥ कवचंचश्रुतंदिव्यंगायत्रीमंत्रविग्रहम् ॥ १ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिगायत्रीहृदयंपरम् ॥ यद्धारणाद्भवेत्पुण्यंगायत्रीजपतोऽखिलम् ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ देव्याश्चहृदयंप्रोक्तंनारदाथर्वणेस्फुटम् ॥ तदेवाहंप्रवक्ष्यामिरहस्यातिरहस्यकम् ॥ ३ ॥ विराड्रूपांमहादेवींगायत्रींवेदमातरम् ॥ ध्यात्वातस्यास्त्वथांगेषुध्यायेदेताश्चदेवताः ॥ ४ ॥ पिंडब्रह्मांडयोरैक्याद्भावयेत्स्वतनौतथा ॥ देवीरूपेनिजेदेहेतन्मयत्वायसाधकः ॥ ५ ॥ नादेवोभ्यर्चयेद्देवमितिवेदविदोविदुः ॥ ततोऽभेदायकायेस्वेभावयेद्देवताइमाः ॥ ६ ॥ अथतत्संप्रवक्ष्यामितन्मयत्वमथोभवेत् ॥ गायत्रीहृदयस्याऽस्याऽप्यहमेवऋषिःस्मृतः ॥ ७ ॥ गायत्रीच्छंदउद्दिष्टंदेवतापरमेश्वरी ॥ पूर्वोक्तेनप्रकारेणकुर्यादंगानिषट्क्रमात् ॥ आसनेविजनेदेशेध्यायेदेकाग्रमानसः ॥ ८ ॥

भगवन्निति ॥ १ ॥ २ ॥ तदेवेति ॥ आनुपूर्वीक्रमेणैवेत्यर्थः ॥ ३ ॥ विराड्रूपामिति ॥ विराड्रूपांगायत्रींध्यात्वातस्याअंगस्थानीयावक्ष्यमाणदेवताभावयित्वापिंडब्रह्मांडयोरैक्यान्निजंदेहमपिश्रीगायत्रीरूपंविभाव्यतस्मिन्देहेवक्ष्यमाणदेवतान्यसेदित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ अहमेवनारायणऋषिरित्यर्थः ॥ परमेश्वरीगायत्रीदेवता ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

द्यौर्देवतंमूर्ध्निभावयेदित्यर्थः ॥ सर्वत्रएवंयथायोग्यमर्थऊहनीयः ॥ सवितुर्वरेण्यायश्रेष्ठायतेजसेइत्यर्थः । पूर्वाजयायपूर्वस्यांदिश्युदितायेतिफलितोर्थः ॥ प्रातरादित्येआदित्यमंडलेप्रतिष्ठा यस्यागायत्र्यास्तस्यैनमइत्यर्थः ॥ फलमाह । प्रातरधीयानइति ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेचतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ ॥७॥ ॥ एकोनत्रिंशताश्लोकैर्गायत्र्याःस्तोत्रमुच्यते । सिद्ध्यष्टकंभवेत्सिद्धंयेनतन्मयतापिच ॥ १ ॥ गायत्रीहृदयश्रवणोत्तरंनारदःपृच्छति । नारदउवाच भक्तानुकंपिन्निति ॥ १ ॥२॥ गायत्रीब्राह्मीब्रह्मणःसमानाकारत्वात्तेनाराध्यत्वाद्वा ।

अथार्थन्यासःद्यौर्मूर्ध्निदैवतम् ॥ दंतपंक्तावश्विनौ ॥ उभेसंध्येचोष्ठौ ॥ मुखमग्निः ॥ जिह्वासरस्वती ॥ ग्रीवायांतुबृहस्पतिः ॥ स्तनयोर्वसवोऽष्टौ ॥ बाह्वोर्मरुतः ॥ हृदयेपर्जन्यः ॥ आकाशमुदरम् ॥ नाभावंतरिक्षम् ॥ कट्योरिंद्राग्नी ॥ जघनेविज्ञानघनः।प्रजापतिःकैलासमलयेऊरू ॥ विश्वेदेवाजान्वोः ॥ जंघायांकौशिकः ॥ गुह्यमयने ॥ ऊरूपितरः ॥ पादौपृथिवी ॥ वनस्पतयोंगुलीषु ॥ ऋषयोरोमाणि ॥ नखानिमुहूर्तानि ॥ अस्थिषुग्रहाः ॥ असृङ्मांसमृतवः ॥ संवत्सरावैनिमिषम्ः ॥ अहोरात्रावादित्यश्चंद्रमाः ॥ प्रवरांदिव्यांगायत्रींसहस्रनेत्रांशरणमहंप्रपद्ये ॥ ॐतत्सवितुर्वरेण्यायनमः ॥ ॐतत्पूर्वाजयायनमः ॥ तत्प्रातरादित्यायनमः॥तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायैनमः॥प्रातरधीयानोरात्रिकृतंपापंनाशयति ॥ सायमधीयानोदिवसकृतंपापंनाशयति ॥ सायंप्रातरधीयानोअपापोभवति ॥ सर्वतीर्थेषुस्नातोभवति ॥ सर्वैर्देवैर्ज्ञातोभवति ॥ अवाच्यवचनात्पूतोभवति ॥ अभक्ष्यभक्षणात्पूतोभवति ॥ अभोज्यभोजनात्पूतोभवति ॥ अचोष्यचोषणात्पूतोभवति ॥ असाध्यसाधनात्पूतोभवति॥दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतोभवति॥सर्वप्रतिग्रहात्पूतोभवति ॥ पंक्तिदूषणात्पूतोभवति ॥ अनृतवचनात्पूतोभवति ॥ अथाऽब्रह्मचारीब्रह्मचारीभवति ॥ अनेनहृदयेनाधीतेनक्रतुसहस्रेणेष्टंभवति॥षष्टिशतसहस्रगायत्र्याजप्यानिफलानिभवंति ॥ अष्टौब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयेत् ॥ तस्यसिद्धिर्भवति ॥ यइदंनित्यमधीयानोब्राह्मणःप्रातःशुचिःसर्वपापैःप्रमुच्यतइति ॥ ब्रह्मलोकेमहीयते॥इत्याहभगवान्श्रीनारायणः॥इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेगायत्रीहृदयंनामचतुर्थोऽध्यायः॥४॥ नारदउवाच ॥ भक्तानुकंपिन्सर्वज्ञहृदयंपापनाशनम् ॥ गायत्र्याःकथितंतस्माद्गायत्र्याःस्तोत्रमीरय॥१॥श्रीनारायणउवाच॥आदिशक्तेजगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि ॥ सर्वत्रव्यापिकेऽनंतेश्रीसंध्येतेनमोऽस्तुते ॥ २ ॥ त्वमेवसंध्यागायत्रीसावित्रीचसरस्वती ॥ ब्राह्मीचवैष्णवीरौद्रीरक्ताश्वेतासितेतरा ॥ ३ ॥ प्रातर्बालाचमध्याह्नेयौवनस्थाभवेत्पुनः ॥ वृद्धासायंभगवतीचिंत्यतेमुनिभिःसदा ॥ ४ ॥ हंसस्थागरुडारूढातथावृषभवाहिनी ॥ ऋग्वेदाध्यायिनीभूमौदृश्यतेयातपस्विभिः ॥ ५ ॥

सावित्रीरौद्रीतत्समानाकारत्वात्तेनाराध्यत्वाद्वा ॥ सरस्वतीवैष्णवीविष्णुसमानाकारत्वात्तेनाराध्यत्वाद्वा ॥ गायत्रीरक्ता सावित्रीश्वेता सरस्वतीसितेतराकृष्णा ॥ ३ ॥ तिसृणांक्रमेणवयोवस्थामाह । प्रातरिति ॥ यार्चित्यतेतस्यैनमइतिशेषः ॥४॥ तिसृणांदेवतानांवाहनान्याह । हंसस्थेति ॥ हंसस्थाब्राह्मी ॥ गरुडारूढासरस्वती ॥ वृषभवाहिनीसावित्री ॥ देवतात्रयस्यक्रमेणवेदत्रयोत्पादकत्वमाहऋग्वेदेति ॥ ५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





भ्राम्यमाणेति ॥ भुविसर्वत्रविद्यमानापिरुद्रलोकंगतेत्यर्थः ॥ ६ ॥ रुद्रलोकंगतेति। देवतात्रयस्ययथायोग्यंलोकत्रयंयोजनीयम् ॥ अमर्त्यानुग्रहकारिणीतिछेदः ॥ एतादृशीतस्यैनमइति शेषः ॥ ७ ॥ शिवयोरिति ॥ शिवयोःशिवशक्त्योःकरनेत्रेभ्योऽवयवेभ्योयानिर्गतादशविधादशरूपादुर्गासापित्वमेवासीत्यर्थः ॥ इयंकथाकात्यायनीतंत्रादौप्रसिद्धा ॥ ८ ॥ दशविध दुर्गाणांनामान्याह । वरेण्येति ॥ ९ ॥ भोगमोक्षदेत्येका ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ तोया करतोया ॥ १९ ॥ गांधार्यादयःशरीरस्था नाड्यः ॥ २० ॥ स्वप्ननायिकेति ॥ कंठेस्वप्नइतिश्रुतेःकंठस्थायाःस्वप्नजनकत्वात् ॥ २१ ॥ बिंदुस्थाभ्रूमध्यस्था ॥ बिंदुमालिनीबिंदुरूपेणमालतेशोभतइत्यर्थः ॥ मूलेमूलाधारेकुंडली

यजुर्वेदंपठंतीचअंतरिक्षेविराजते ॥ सासामगापिसर्वेषुभ्राम्यमाणातथाभुवि ॥ ६ ॥ रुद्रलोकंगतात्वंहिविष्णुलोकनिवासिनी ॥ त्वमेवब्रह्मणोलोकेऽम र्त्यानुग्रहकारिणी ॥ ७ ॥ सप्तर्षिप्रीतिजननीमायाबहुवरप्रदा ॥ शिवयोःकरनेत्रोत्थाह्यश्रुस्वेदसमुद्भवा॥८॥आनंदजननीदुर्गादशधापरिपठ्यते॥वरेण्या वरदाचैववरिष्ठावरवर्णिनी ॥ ९ ॥ गरिष्ठाचवराहाचवरारोहाचसप्तमी ॥ नीलगंगातथासंध्यासर्वदाभोगमोक्षदा ॥ १० ॥ भागीरथीमर्त्यलोकेपातालेभो गवत्यपि ॥ त्रिलोकवाहिनीदेवीस्थानत्रयनिवासिनी ॥ ११ ॥ भूर्लोकस्थात्वमेवासिधरित्रीशोकधारिणी ॥ भुवोर्लोकेवायुशक्तिःस्वर्लोकेतेजसांनिधिः॥ ॥१२॥महर्लोकेमहासिद्धिर्जनलोकेजनेत्यपि ॥ तपस्विनीतपोलोकेसत्यलोकेतुसत्यवाक् ॥ १३ ॥ कमलाविष्णुलोकेचगायत्रीब्रह्मलोकदा ॥ रुद्रलो केस्थितागौरीहरार्धांगनिवासिनी ॥ १४ ॥ अहमोमहतश्चैवप्रकृतिस्त्वंहिगीयसे ॥ साम्यावस्थात्मिकात्वंहिशबलब्रह्मरूपिणी ॥ १५ ॥ ततःपरापरा शक्तिःपरमात्वंहिगीयसे ॥ इच्छाशक्तिःक्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा ॥ १६ ॥ गंगाचयमुनाचैवविपाशाचसरस्वती ॥ सरयूर्देविकासिंधुर्नर्मदेराव तीतथा ॥ १७ ॥ गौदावरीशतद्रूश्चकावेरीदेवलोकगा ॥ कौशिकीचंद्रभागाचवितस्ताचसरस्वती ॥१८॥ गंडकीतापिनीतोयागोमतीवेत्रवत्यपि ॥ इडा चपिंगलाचैवसुषुम्नाचतृतीयका ॥ १९ ॥ गांधारीहिस्तिजिह्वाचपूषापूषातथैवच ॥ अलंबुसाकुहूश्चैवशंखिनीप्राणवाहिनी ॥ २० ॥ नाडीचत्वंशरीर स्थागीयसेप्राक्तनैर्बुधैः ॥ हृत्पद्मस्थाप्राणशक्तिःकंठस्थास्वप्ननायिका ॥ २१ ॥ तालुस्थात्वंसदाधाराबिंदुस्थाबिंदुमालिनी ॥ मूलेतुकुंडलीशक्तिर्व्या पिनीकेशमूलगा ॥ २२ ॥ शिखामध्यासनात्वंहिशिखाग्रेतुमनोन्मनी ॥ किमन्यद्बहुनोक्तेनयत्किंचिज्जगतीत्रये ॥ २३ ॥ तत्सर्वंत्वंमहादेविश्रियेसं ध्येनमोस्तुते ॥ इतीतंकीर्तितंस्तोत्रंसंध्यायांबहुपुण्यदम्॥२४॥महापापप्रशमनंमहासिद्धिविधायकम्॥यइदंकीर्तयेत्स्तोत्रंसंध्याकालेसमाहितः ॥२५॥

॥ केशमूलगाचूडामूलपर्यंतंव्याप्ताव्यापिनी ॥ २२ ॥ शिखामध्यासना ॥ तस्याःशिखायामध्येपरमात्माव्यवस्थितइतिश्रुत्युक्ताशिखाज्ञानकलातस्यामध्येआसनंस्थितिर्यस्याःसापरमा त्मरूपिणीत्यर्थः ॥ शिखाग्रेतस्याएवशिखायाअग्रेब्रह्मरंध्रेमनसिगतेसतिमनोन्मनीशक्तिरेवावतिष्ठतेइतियोगप्रसिद्धम् ॥ २३ ॥ श्रियेमोक्षलक्ष्म्यर्थमित्यर्थः ॥ संध्येइत्येकवचनेनैकैवगाय त्रीसंध्यात्रयरूपेणध्येयेत्युक्तमितिबोध्यम् ॥ उपपादितंचैतदेकादशस्कंधे ॥ २४ ॥ २५ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ नारदेति । संबोधनम् ॥ संध्योक्तंसंध्योद्देशेनोक्तंस्तोत्रमित्यर्थः ॥ २९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ पंचषष्टिश्लोकवयै शतश्लोकाधिकैरथ ॥ गायत्र्याश्चमहादेव्यानाम्नांसाहस्रमुच्यते ॥ १ ॥ अथनारदःसर्वाभीष्टप्रदंसर्वानुष्ठानन्यूनतापूर्तिकरंगायत्रीसहस्रनामस्तोत्रंश्रोतुकामःपृच्छति । भगवन्सर्वधर्मज्ञइति ॥ १ ॥ विद्यावेदविद्या ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ भगवताब्रह्मणा ॥ ६ ॥ ७ ॥ मातृकाक्षरैरिति ॥ मातृकामंत्रषडंगमेवास्यषडंगमित्यर्थः ॥ ८ ॥ प्रातःकालिकगायत्रीसंध्यारूपाया देव्याध्यानमाह । रक्तेति ॥ रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्नानावर्णविशिष्टैर्मणिगणैर्युक्तामित्यर्थः ॥ प्रातःसंध्यायाश्चतुर्वक्त्रत्वात्पंचमुखत्वेनवर्णनंनयुक्तमितिमाणिगणैरित्यस्यैवविशेषणंयु क्तम् ॥ रक्तनवस्रजंरक्तपुष्पस्रजमित्यर्थः ॥ कुंडंकुंडिकामंबुजंचकरतलाभ्यांव्यानद्धंधृतंयया ॥ वरमिष्टम् ॥ स्रजमक्षमालाम् ॥ ९ ॥ अथमातृकाक्षरक्रमैणैवसहस्रनामान्युच्यंते ॥

अपुत्रःप्राप्नुयात्पुत्रंधनार्थीधनमाप्नुयात् ॥ सर्वतीर्थतपोदानयज्ञयोगफलंलभेत् ॥२६॥भोगान्भुक्त्वाचिरंकालमंतेमोक्षमवाप्नुयात् ॥ तपस्विभिःकृतंस्तो त्रंस्नानकालेतुयःपठेत् ॥२७॥ यत्रकुत्रजलेमग्नःसंध्यामज्जनजंफलम् ॥ लभतेनात्रसंदेहःसत्यंसत्यंचनारद ॥ २८ ॥ शृणुयाद्योपितद्भक्त्यासतुपापात्प्रमु च्यते ॥ पीयूषसदृशंवाक्यंसंध्योक्तंनारदेरितम् ॥२९॥ इतिश्रीदेवीभागवतेम०द्वादशस्कंधेगायत्रीस्तोत्रंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञसर्वशास्त्रविशारद॥श्रुतिस्मृतिपुराणानांरहस्यंत्वन्मुखाच्छ्रुतम् ॥ १ ॥ सर्वपापहरंदेवयेनविद्याप्रवर्तते ॥ केनवाब्रह्मविज्ञानंकिंतुवामोक्ष साधनम्॥२॥ब्राह्मणानांगतिःकेनकेनवामृत्युनाशनम् ॥ ऐहिकामुष्मिकफलंकेनवापद्मलोचन ॥३॥ वक्तुमर्हस्यशेषेणसर्वंनिखिलमादितः ॥ श्रीनाराय णउवाच ॥ साधुसाधुमहाप्राज्ञसम्यक्पृष्टंत्वयाऽनघ ॥४॥ शृणुवक्ष्यामियत्नेनगायत्र्यष्टसहस्रकम् ॥ नाम्नांशुभानांदिव्यानांसर्वपापविनाशनम् ॥ ५॥ सृ ष्ट्यादौयद्भगवतापूर्वंप्रोक्तंब्रवीमिते ॥ अष्टोत्तरसहस्रस्यऋषिर्ब्रह्माप्रकीर्तितः॥६॥छंदोनुष्टुप्तथादैवीगायत्रीदेवतास्मृता ॥ हलोबीजानितस्यैवस्वराःशक्त यईरिताः ॥ ७ ॥ अंगन्यासकरन्यासावुच्येतेमातृकाक्षरैः ॥ अथध्यानंप्रवक्ष्यामिसाधकानांहितायवै ॥८॥ रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तांत्रिनेत्रोज्वलां रक्तांरक्तनवस्रजंमणिगणैर्युक्तांकुमारीमिमाम् ॥ गायत्रींकमलासनांकरतलव्यानद्धकुंडांबुजांपद्माक्षींचवरस्रजंचदधतींहंसाधिरूढांभजे ॥९॥अचिंत्यलक्ष णाव्यक्ताप्यर्थमातृमहेश्वरी ॥ अमृतार्णवमध्यस्थाप्यजिताचापराजिता ॥ १० ॥ अणिमादिगुणाधाराप्यर्कमंडलसंस्थिता ॥ अजराऽजाऽपराऽधर्मा अक्षसूत्रधराऽधरा ॥ ११ ॥

तत्रप्रथमतोचिंत्यलक्षणेत्यारभ्यांत्यजार्चितेत्यंतान्यकारादीनिपंचत्रिंशन्नामान्याह । अचिंत्यलक्षणेति ॥ अबुद्धिगम्यलक्षणेत्यर्थः ॥ यतोवाचोनिवर्तंतेइतिश्रुतेः ॥ अव्यक्ताअस्पष्टाना मरूपरहितेत्यर्थः ॥ तद्धचेदंतर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नामरूपाभ्यांव्याक्रियतइतिश्रुतेः ॥ अर्थमातारः प्रपंचरूपार्थपरिच्छेदकाब्रह्मादयस्तेषांमहेश्वरीनियंत्री ॥ अपिशब्दःसंध्यभावायाऽसंदे हार्थः ॥ अजितानान्यैर्जिता ॥ अपराजितायुद्धेनपराजितानपराजयंप्राप्ता ॥ अजितापराजितेअष्टपीठशक्त्यंतर्गतेदेवतेवा ॥ १० ॥ अणिमादिगुणाअणिमादिसिद्धयस्तेषामाधाराआ श्रयभूता ॥ अजाअजामेकामितिश्रुतेः ॥ नपरोधिकोयस्याःसाऽपरा ॥ नधर्मोजात्यादिनिमित्तोयस्याःसाऽधर्मा ॥ अधरानिकृष्टरूपापीयमेव ॥ ११ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अकारआदिर्यस्याःक्षकारोंतेयस्याःसा ॥ मातृकारूपिणीत्यर्थः ॥ १२ ॥ अदितिर्देवमाता ॥ अजपागायत्री ॥ अविद्याजीवोपाधिस्तस्यध्वंसिनी ॥ १३ ॥ अजाछागी ॥ अजमुखं ब्रह्ममुखंतस्मिन्निवासोयस्याः ॥ अर्धमात्राअर्धमात्रास्थितानित्येत्युक्ता ॥ अर्थदानंपुरुषार्थचतुष्टयदानंतस्यज्ञा ज्ञात्रीत्यर्थः ॥१४॥ अंत्यजामातंगीरूपणीतयार्चितापूजिताआदिलक्ष्मीरित्यारभ्यांतरध्वांतनाशिनीत्यन्तान्याकारादीनिद्वाविंशतिनामानि॥आदिलक्ष्मीःसाम्यावस्थमायाशवलब्रह्ममूर्तिः॥तप्तकांचनवर्णाभातप्तकांचनभूषणेतिरहस्योक्तामहालक्ष्मीः॥ आदिशक्तिर्माया ॥ आकृतिराकाररूपिणी ॥ आयतंहास्येनविस्तृतमाननंयस्याः ॥ १५ ॥ आदित्यपदवीआदित्यमार्गस्तस्मिंश्चारश्चरणंयस्याः ॥ आदित्येनादितिपुत्रेणपरिसेविता ॥ आचार्या स्वयंव्याख्यात्री ॥ आवर्तनाजगद्वर्तयित्री ॥ आचारादक्षिणाचाराद्याचाररूपिणी ॥ आदिमूर्तिर्ब्रह्मतस्मिन्निवासशीला ॥ १६ ॥ आग्नेयीअग्निदेवताकाऋक्दिशावा ॥ आमरी अमराणामियंपुरीआमरी ॥ अमरावतीरूपिणीत्यर्थः ॥ आधारोमूलाधारःसनिलयोवासस्थानंयस्याःकुंडलिन्याःसाआधारासर्वाधाररूपिणी ॥ आकाशांतोहंकारतत्त्वंतस्मिन्नाकाशस्थलयात्तस्मिन्निवासशीला ॥ १७ ॥ अंतरदेहमध्येभवआकाशोदहराकाशस्तद्रूपिणी ॥ आंतरध्वांतमविद्यांधकारस्तस्यनाशिनी ॥ १८ ॥ इंदिरेत्यारभ्येंद्राक्षीत्यंतानित्रयोदशह्रस्वेकारादी

आकारादिक्षकारांताप्यरिषड्वर्गभेदिनी ॥ अंजनाद्रिप्रतीकाशाप्यंजनाद्रिनिवासिनी ॥१२॥ अदितिश्चाजपाविद्याप्यरविंदनिभेक्षणा ॥ अंतर्बहिःस्थिता विद्याध्वंसिनीचांतरात्मिका ॥ १३ ॥ अजाचाजमुखावासाप्यरविंदनिभानना ॥ अर्धमात्रार्थदानज्ञाप्यरिमंडलमर्दिनी ॥ १४ ॥ असुरघ्नीह्यमावास्याप्यलक्ष्मीश्चांत्यजार्चिता ॥ आदिलक्ष्मीश्चादिशक्तिराकृतिश्चायताननना ॥ १५ ॥ आदित्यपदवीचाराप्यादित्यपरिसेविता ॥ आचार्यावर्तनाचाराप्यादिमूर्तिनिवासिनी ॥ १६ ॥ आग्नेयीचामरीचाद्याचाराध्याचासनस्थिता ॥ आधारनिलयाधाराचाकाशांतनिवासिनी ॥ १७ ॥ आद्याक्षरसमायुक्ताचांतराकाशरूपिणी ॥ आदित्यमंडलगताचांतरध्वांतनाशिनी ॥ १८ ॥ इंदिराचेष्टदाचेष्टाचेंदीवरनिभेक्षणा ॥ इरावतीचेंद्रपदाचेंद्राणीचेंदुरूपिणी ॥ १९ ॥ इक्षुकोदंडसंयुक्ताचेषुसंधानकारिणी ॥ इंद्रनीलसमाकाराचेडापिंगलरूपिणी ॥ २० ॥ इंद्राक्षीचेश्वरीदेवीचेहात्रयविवर्जिता ॥ उमाचोषाह्युडुनिभाउर्वारुकफलानना ॥ २१ ॥ उडुप्रभाचोडुमतीह्युडुपाह्युडुमध्यगा ॥ ऊर्ध्वचाप्यूर्ध्वकेशीचाप्यूर्ध्वाधोगतिभेदिनी ॥ २२ ॥ ऊर्ध्वबाहुप्रियाचोर्मिमालावाग्ग्रंथदायिनी ॥ ऋतंचर्षिर्ऋतुमतीऋषिदेवनमस्कृता ॥ २३ ॥ ऋग्वेदाऋणहर्त्रीचऋषिमंडलचारिणी ॥ ऋद्धिदाऋजुमार्गस्थाऋजुधर्माऋतुप्रदा ॥ २४ ॥

निनामानि ॥ चकारःसंध्यभावार्थः ॥ इरावती इराभूवाकुसुरांबुष्वातिमोदिनीकिशोतभूवाकुसुरांबुमतीत्यर्थः ॥ १९ ॥ इक्षुकोदंडःपौंड्रेक्षुधनुस्तेनसंयुक्ता ॥ पौंड्रेक्षुपाशांकुशपुष्पबाणहस्ते नमस्तेजगदेकमातारितिललिताध्यानेउक्तत्वात ॥ २० ॥ इंद्राक्षीशताक्षीनाम्नीदेवता ॥ ईश्वरीदेवी ॥ ईहात्रयविवर्जितोतिनामद्वयंदीर्घेकारादिकम् ॥ ईश्वरीणांदेवीश्वरीदेवी ॥ ईहात्रयमेषणात्रयंतेनाविवर्जिता ॥ उमेत्यारभ्योडुमध्यगेत्यंतान्यष्टौह्रस्वोकारादीनिमानि ॥ उमाप्रसिद्धा ॥ उषारात्रिशेषरूपिणीबाणासुरसुतावा ॥ उषाबाणसुताराज्योरितिमोदिनी ॥ उडुनिभानक्षत्रसदृशी ॥ उर्वारुकंकर्कटी ॥ २१ ॥ उडुपापोतरूपिणीचंद्ररूपिणीवा ॥ ऊर्ध्वादीन्यूर्मिमालावाग्ग्रंथदायिनीत्यंतानिपंचदीर्घोकारादीनिनामानि ॥ ऊर्ध्वमूर्ध्वदेशरूपिणी॥ ऊर्ध्वाधोगतिरुच्चनीचगतिस्तस्याभेदिनी ॥ २२ ॥ ऊर्मिमालासमुद्रतरंगमालातद्वद्वाचाग्रंथःकवितारूपःकक्षारूपोवातस्यदायिनी ॥ ऋतामित्यादीनिऋज्वीत्यंतानित्रयोदशह्रस्वऋकारादीनिनामानि ॥ ऋतंसूनृतवाणीरूपाऋषिदेवरूपा ॥ ऋतुमतीरजस्वला ॥ २३ ॥ २४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

दीर्घऋकारादीनाम्नामप्रसिद्धत्वात्तानिनोक्तानि ॥ ऌकारादिनामान्यप्यप्रसिद्धानियद्यपितथापिऌकारेलकारस्यसत्त्वात्तदादिकमेवनामत्रयमुच्यते ॥ लूतारिवरसंभूता ॥ भुक्तेलूतातूर्णनाभपिपीलिकगदांतेरइतिमेदिनीकोशाल्लूतारोगविशेषस्तस्याऽरिवरःशत्रुश्रेष्ठस्तन्नाशकोमंत्रःससंभूतोयस्याःसा ॥ २५ ॥ एकाक्षरेत्यारभ्यनामचतुष्टयमेकारवर्णादिकमर्थस्तुस्पष्टएव ॥ एद्रीत्यादिनामत्रयमैकारादिकम् ॥ ऐहिकामुष्मिकफलस्यप्रदात्रीत्यर्थः ॥ २६ ॥ ओंकारेत्यादीनिचत्वारिनामान्योकारादीनि ॥ ओंकाराप्रणवरूपिणी ॥ ओतामणिषुसूत्रवत्सर्वाभ्यंतरेस्थिता ॥ कस्मिन्निदमोतंचेतिश्रुत्यापरमात्मनिसर्वजगदोतंचप्रोतंचास्तीति ॥ तस्मिन्नोतप्रोतेजगतिनिवसतितच्छीलाओतप्रोतनिवासिनीत्यर्थः॥और्वेत्यादिनामत्रयमौकारादिकम् ॥ उर्व्याभवाऔर्वा ॥२७॥ अनुस्वारादिकमेकंनाम ॥ विसर्गादिकमेकंनाम अंडमध्यस्थितानांशक्तीनांदेवीत्यर्थः ॥ अःकाररूपोविसर्गरूपोयोमंत्रस्तद्रूपिणी ॥ तंत्रराजेविसर्गस्यशक्त्यात्मकत्वेनवर्णनात् ॥ मायाशक्त्यभिधःसर्गःसर्वभूतात्मकःप्रभुरीतितंत्रांतरोक्तेश्च ॥ कात्यायनीत्यारभ्यकुक्षिस्थाखिलविष्टपेत्यंतानिएकोनसप्ततिककारादीनिनामानि ॥ २८ ॥ करवीरपुवा

ऋग्वेदनिलयाऋज्वीलुप्तधर्मप्रवर्तिनी ॥ लूतारिवरसंभूतालूतादिविषहारिणी ॥ २५ ॥ एकाक्षराचैकमात्राचैकाचैकैकनिष्ठिता ॥ ऐंद्रीह्यैरावतारूढाचैहिकामुष्मिकप्रदा ॥ २६ ॥ ओंकाराह्योषधीचोताचोतप्रोतनिवासिनी ॥ और्वाह्यौषधसंपन्नाऔपासनफलप्रदा ॥ २७ ॥ अंडमध्यस्थितादेवीचाःकारमनुरूपिणी ॥ कात्यायनीकालरात्रिःकामाक्षीकामसुंदरी ॥ २८ ॥ कमलाकामिनीकांताकामदाकालकंठिनी ॥ करिकुंभस्तनभराकरवीरसुवासिनी॥२९॥ कल्याणीकुंडलवतीकुरुक्षेत्रनिवासिनी ॥ कुरुविंददलाकाराकुंडलीकुमुदालया ॥३०॥ कालजिह्वाकरालास्याकालिकाकालरूपिणी ॥ कमनीयगुणाकांतिःकलाधाराकुमुद्वती ॥ ३१ ॥ कौशिकीकमलाकाराकामचारप्रभंजिनी ॥ कौमारीकरुणापांगीककुबंताकरिप्रिया ॥३२॥ केसरीकेशवनुताकदंबकुसुमप्रिया ॥ कालिंदीकालिकाकांचीकलशोद्भवसंस्तुता ॥ ३३ ॥ काममातात्रतुमतीकामरूपाकृपावती ॥ कुमारीकुंडनिलयाकिरातीकीरवाहना ॥३४॥ कैकेयीकोकिलालापाकेतकीकुसुमप्रिया ॥ कमंडलुधराकालीकर्मनिर्मूलकारिणी ॥३५॥ कलहंसगतिःकक्षाकृतकौतुकमंगला ॥ कस्तूरीतिलकाकम्राकरींद्रगमनाकुहूः ॥ ३६ ॥ कर्पूरलेपनाकृष्णाकपिलाकुहराश्रया ॥ कूटस्थाकुधराकम्राकुक्षिस्थाखिलविष्टपा ॥ ३७ ॥ खड्गखेटकराखर्वाखेचरीखगवाहना ॥ खट्वांगधारिणीख्याताखगराजोपरिस्थिता ॥ ३८ ॥

सिनी ॥ करवीरंकृपाणास्याद्दैत्यभेदाश्वमारयोरितिमेदिनीकोशात् ॥ करवीरोदैत्यविशेषस्तेनपूजितासुवासिनीत्यर्थः ॥ यद्वाकरवीरंमहालक्ष्मीक्षेत्रंतत्रनिवसनशीलेत्यर्थः ॥ २९ ॥ कुरुविंददलाकारा कुरुविंदरत्नभेदेमुस्ताकुल्माषयोःपुमानितिमेदिनीकोशान्मुस्तादलाकारेत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ कामचारोयथेष्टाचरणंतस्यनाशिनी ॥ ककुबंताककुभांदिशानामंताऽवसानरूपा ॥ ३२ ॥ केसरीसिंहरूपिणीत्यर्थः ॥ कलशोद्भवोऽगस्त्यस्तेनसंस्तुता ॥ ३३ ॥ कुंडमाग्निहोत्रकुंडंतन्निलया ॥ ३४ ॥ केतकीतिस्वतंत्रंनाम ॥ कुसुमप्रियेतिस्वतंत्रंनाम कालीत्यत्रक्रूरेत्यापिपाठः ॥ ३५ ॥ कक्षेत्यत्रकुब्जेत्यपिपाठः ॥ ३६ ॥ कृष्णेत्यत्रकृष्टेत्यापिपाठः ॥ कृष्टाअकृष्टा ॥ कम्रेतिपुनरुक्तंनाम ॥ तदर्थस्तुपूर्वत्रकम्रासुंदरी ॥ द्वितीयेकम्रानाम्नीकाचनदेवांगना ॥ कंप्रेतिपाठेनपुनरुक्तिः ॥ ३७ ॥ खड्गखेटकरेत्यारभ्यखंडेंद्वातिलकेत्यंतानिएकादश खकारादीनिनामानि ॥ खड्गखेटकरेतिएकंनामबोध्यम् ॥ ३८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





खंडाख्यानप्रदायिनी ॥ खंडःपानांतरभेदेइतिमेदिनीकोशात् खंडःपानशास्त्रंभेदशास्त्रंवातस्याख्यानदायिनी ॥ गंगेत्यारभ्यगुह्यमंडलवर्तिनीत्यंतानिषट्त्रिंशद्रकारादीनिनामानि ॥ गणेशगुहपूजितेत्येकंनाम ॥ ३९ ॥ गामिनीगमनशीला ॥ गाधाप्रतिष्ठारूपिणी ॥ गंधर्वाप्सरेत्यत्रसकारलोपआर्षः ॥ ४० ॥ गोत्रापृथ्वी ॥ गमी गमोनाक्षविवर्तेस्यादपर्यालोचने ध्वनीतिमेदिनीकोशाद्गमः। पर्यालोचनंतद्यस्यास्तीत्यर्थेऽर्शआद्यच् ॥ तस्यस्त्रीत्यर्थेपुंयोगादाख्यायामितिङीष् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ गोकर्णस्थानासक्ता ॥ घर्मदेत्यारभ्यघनवेगिनी त्यंतानिचतुर्दशघकारादीनिनामानि ॥ ४४ ॥ घृणिमंत्रःसूर्यमंत्रः॥ ४५ ॥ घनंनिबिडमरिमंडलंदैत्यरूपंयस्याःसा ॥ ङकारादिनाम्नोऽप्रसिद्धत्वाज्जञोर्योगेज्ञइत्यक्षरंनिष्पन्नंतस्यकाचि द्भाषायांङकाररूपेणोच्चारात्तदादिकमेकमेवनामज्ञानधातुमयीत्युच्यते ॥ ज्ञानधातुश्चिद्धातुस्तन्मयी ॥ चचेत्यारभ्यचारुहेतकीत्यंतानिचकारादीन्येकोनपंचाशन्नामानि ॥ चर्चापरिभाष णक्रियारूपा ॥ चर्चिताचंदनादिना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ चूलिकानाटकस्यांगेकर्णमूलेचहस्तिनामितिमेदिनी ॥ चंद्रमा कर्णकुंडलंयस्याःसाः ॥ चंद्रवदाह्लादकरोहासोयस्याः ॥ खड्गरू

**खलघ्नीखंडितजराखंडाख्यानप्रदायिनी ॥ खंडेंदुतिलकागंगागणेशगुहपूजिता ॥ ३९ ॥ गायत्रीगोमतीगीतागांधारीगानलोलुपा ॥ गौतमीगामिनीगा धागंधर्वाप्सरसेविता ॥ ४० ॥ गोविंदचरणाक्रांतागुणत्रयविभाविता ॥ गंधर्वीगह्वरीगोत्रागिरीशागहनागमी ॥ ४१ ॥ गुहावासागुणवतीगुरुपापप्रणा शिनी ॥ गुर्वीगुणवतीगुह्यागोप्तव्यागुणदायिनी ॥ ४२ ॥ गिरिजागुह्यमातंगीगरुडध्वजवल्लभा ॥ गर्वापहारिणीगोदागोकुलस्थागदाधरा ॥ ४३ ॥ गोकर्णनिलयासक्तागुह्यमंडलवर्तिनी ॥ घर्मदाघनदाघंटाघोरदानवमर्दिनी ॥ ४४ ॥ घृणिमंत्रमयीघोषाघनसंपातदायिनी ॥ घंटारवप्रियाघ्राणाघृणि संतुष्टकारिणी ॥ ४५ ॥ घनारिमंडलाघूर्णाघृताचीघनवेगिनी ॥ ज्ञानधातुमयीचर्चाचर्चिताचारुहासिनी ॥ ४६ ॥ चटुलाचंडिकाचित्राचित्रमाल्यविभू षिता ॥ चतुर्भुजाचारुदंताचातुरीचरितप्रदा ॥ ४७ ॥ चूलिकाचित्रवस्त्रांताचंद्रमःकर्णकुंडला ॥ चंद्रहासाचारुदात्रीचकोरीचंद्रहासिनी ॥ ४८ ॥ चं द्रिकाचंद्रधात्रीचचौरीचौराचचंडिका ॥ चंचद्वाग्वादिनीचंद्रचूडाचोरविनाशिनी ॥ ४९ ॥ चारुचंदनलिप्तांगीचंचच्चामरवीजिता ॥ चारुमध्याचारुग तिश्चंदिलाचंद्ररूपिणी ॥ ५० ॥ चारुहोमप्रियाचार्वाचरिताचक्रबाहुका ॥ चंद्रमंडलमध्यस्थाचंद्रमंडलदर्पणा ॥ ५१ ॥ चक्रवाकस्तनीचेष्टाचित्राचारु विलासिनी ॥ चित्स्वरूपाचंद्रवतीचंद्रमाश्चंदनप्रिया ॥ ५२ ॥ चोदयित्रीचिरप्रज्ञाचातकाचारुहेतुकी ॥ छत्रयाताछत्रधराछायाछंदःपरिच्छदा ॥ ५३ ॥ छायादेवीछिद्रनखाछन्नेंद्रियविसर्पिणी ॥ छंदोनुष्टुप्प्रतिष्ठांताछिद्रोपद्रवभेदिनी ॥ ५४ ॥**

पावा ॥ चंद्रस्यहासिनीहसनशीला ॥ चंद्रापेक्षयास्वस्यातिशयाह्लादजनकत्वात् ॥ ४८ ॥ चौरीचुराशीलमस्याःसा ॥ चौरा चौरःपाटच्चरेपिस्याच्चौरापुष्पौषधावपीतिमेदिनीकोशादौष धिविशेषरूपा ॥ ४९ ॥ चंदिलाकर्नाटदेशेप्रसिद्धादेवता ॥ चांद्रिकेत्यापिपाठः ॥ ५० ॥ चक्रंसुदर्शनंबाहौहस्तेयस्याःसा ॥ ५१ ॥ चंद्रमास्तत्स्वरूपा ॥ ५२ ॥ चोदयित्रीप्रेरयित्रीचा रुहेतुर्जगत्सर्जनेयस्याः ॥ गौरादिपाठात्साधुत्वम् ॥ छत्रयातेत्यारभ्यछेदनप्रियेत्यंतानिचतुर्दशछकारादीनिनामानि ॥ छंदःपरिच्छदा ॥ छंदोवशेप्यभिप्रायेइतिमेदिनीकोशात्कोपि च्छंदोग्राह्यः ॥ ५३ ॥ छायायादेवीस्वामिनी ॥ छिद्रनखा ॥ छिद्रंदूषणरंध्रयोरितिमेदिनीकोशात्रंध्रवंतिनखानियस्याः ॥ छन्नेंद्रियाउपसंहृतेंद्रियाःपुरुषायोगिनस्तेषुविसर्पतिगच्छाति तच्छीला ॥ छंदःसंज्ञकायाऽनुष्टुप्तस्याःप्रतिष्ठायाःस्थलस्यांतःसमाप्तिःअनुष्टुप्छंदस्कमंत्रवोध्येत्यर्थः ॥ छिद्रोपद्रवाःकपटोपद्रवास्तेषांभेदिनी ॥ ५४ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

जननीत्यारभ्यकुंडलेत्यंतानिचत्वारिंशज्जकारादीनिनामानि ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ जितेनजयेनाक्रांताःपुरुषास्तन्मयी ॥ ज्याघोषास्फोटोदिङ्मुखेयस्याःसाज्याघोषास्फोटदिङ्मुखा ॥ ज्याघोषव्याप्तदिगंतेत्यर्थः ॥ ५९ ॥ जंभिनी ॥ जंभोभक्ष्येचदंतेचेतिकोशाद्भक्ष्यवतीदंतवतीवेत्यर्थः ॥ झिंझिकेत्यारभ्यचत्वारिझकारादीनिनामानि ॥ झिंझिकापक्षिविशेषोयस्यभाषायांझिंगुरवाइतिप्रसिद्धिरस्ति ॥ झणइतिनिर्घोषोयस्याः ॥ झंझावातेतारवायावितिकोशात् ॥ झंझामारुतोभयंकरवातस्तद्वद्वेगोयस्याः ॥ ६० ॥ ञकारादिकंनामद्वयम् ॥ ञरूपा ॥ ञःपुमान्स्याद्भलीवर्देशुकेवाममतावपीतिकोशाद्भलीवर्दरूपा ॥ ञःशुकोभुजेहस्तेयस्याःसा श्यामलांगिका ॥ ञभुजाञवद्भलीवर्दवद्भुजौयस्याइतिवा ॥ टंकबाणेत्यादीनिषट्कारादीनिनामानि ॥ टंकःपरशुः ॥ ६१ ॥ टंकीगणवत्रुद्रगणवत्कृतआघोषोयस्याःसा ॥ टंकनीयंवर्णनीयंमहोरोयस्याःसा ॥ टंकारकारिणीनांटंकारशब्दंकुर्वतीनांदेवीनांदेवीस्वामिनी

छेदाछत्रेश्वरीछिन्नाछुरिकाछेदनप्रिया ॥ जननीजन्मरहिताजातवेदाजगन्मयी ॥ ५५ ॥ जाह्नवीजटिलाजेत्रीजरामरणवर्जिता ॥ जंबूद्वीपवतीज्वालाजयंतीजलशालिनी ॥ ५६ ॥ जितेंद्रियाजितक्रोधाजितामित्राजगत्प्रिया ॥ जातरूपमयीजिह्वाजानकीजगतीजरा ॥ ५७ ॥ जनित्रीजह्नुतनयाजगत्त्रयहितैषिणी ॥ ज्वालामुखीजपवतीज्वरघ्नीजिताविष्टपा ॥ ५८ ॥ जिताक्रांतमयीज्वालाजाग्रतीज्वरदेवता ॥ ज्वलंतीजलदाज्येष्ठाज्याघोषास्फोटदिङ्मुखी ॥ ॥ ५९ ॥ जंभिनीजृंभणाजृंभाज्वलन्माणिक्यकुंडला ॥ झिंझिकाझणनिर्घोषाझंझामारुतवेगिनी ॥ ६० ॥ झल्लरीवाद्यकुशलाभरूपाभुजास्मृता ॥ टंकबाणसमायुक्ताटंकिनीटंकभेदिनी ॥ ६१ ॥ टंकीगणकृताघोषाटंकनीयमहोरसा ॥ टंकारकारिणीदेवीठठशब्दनिनादिनी ॥ ६२ ॥ डामरीडाकिनीडिंभाडुंडुमारैकनिर्जिता ॥ डामरीतंत्रमार्गस्थाडमड्डमरुनादिनी ॥ ६३ ॥ डिंडीरवसहाडिंभलसत्क्रीडापरायणा ॥ ढुंढिविघ्नेशजननीढक्काहस्ताढिलित्रजा ॥ ६४ ॥ नित्यज्ञानानिरुपमानिर्गुणानर्मदानदी ॥ त्रिगुणात्रिपदातंत्रीतुलसीतरुणातरुः ॥ ६५ ॥ त्रिविक्रमपदाक्रांतातुरीयपदगामिनी ॥ तरुणादित्यसंकाशातामसीतुहिनातुरा ॥ ६६ ॥ त्रिकालज्ञानसंपन्नात्रिवलीचत्रिलोचना ॥ त्रिशक्तिस्त्रिपुरातुंगातुरंगवदनातथा ॥ ६७ ॥ तिमिंगिलगिलातीव्रात्रिस्रोतातामसादिनी ॥ तंत्रमंत्रविशेषज्ञातनुमध्यात्रिविष्टपा ॥ ६८ ॥ त्रिसंध्यात्रिस्तनीतोषासंस्थातालप्रतापिनी ॥ ताटंकिनीतुषाराभातुहिनाचलवासिनी ॥ ६९ ॥ तंतुजालसमायुक्तातारहारावलिप्रिया ॥ तिलहोमप्रियातीर्थातमालकुसुमाकृतिः ॥ ७० ॥ तारकात्रियुतातन्वीत्रिशंकुपरिवारिता ॥ तलोदरीतिलाभूषाताटंकप्रियवाहिनी ॥ ७१ ॥ त्रिजटातित्तिरीतृष्णात्रिविधातरुणाकृतिः ॥ तप्तकांचनसंकाशातप्तकांचनभूषणा ॥ ७२ ॥

त्यर्थः ॥ ठकारादिकमेकमेवनाम ॥ ६२ ॥ डकारादीन्यष्टौनामानि ॥ डिंभाबालरूपा ॥ डुंडुमारोराक्षसः ॥ ६३ ॥ डिंडीरवोवाद्यविशेषरवस्तस्यसहा सहनकर्त्री ॥ ढकारादीनित्रीणिनामानि ॥ ढुंढिविघ्नेशोढुंढिराजः ॥ ढिलिनामकागणाःशिवपुराणेप्रसिद्धास्तेषांव्रजःसमुदायोयस्याःसा ॥ ६४ ॥ णकारादिनाम्नोऽप्रसिद्धत्वात्तत्स्थानेनकारादिनामपंचकमाह । नित्यज्ञानेति ॥ त्रिगुणेत्यारभ्यतकारादीनिद्विषष्टिनामानि ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ त्रिस्तनीमलयध्वजराज्ञःकन्यापार्वतीहलास्यमाहात्म्येतटाकानाम्ना प्रसिद्धा ॥ तोषेसंतोषेआसंस्थासम्यक्स्थितिर्यस्याःसा ॥ ६९ ॥ ७० ॥ त्रिभिर्गुणैर्वेदत्रयेणवायुतायुक्ता ॥ तन्वीत्यत्रतंत्रीत्यापिपाठः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥७३॥ त्रिभंगी स्थानत्रयेवक्रतायुक्ता ॥ तनुस्तन्वीवल्लरीदेहलतायस्याःसा ॥ थकारादीनित्रीणिनामानि थात्कारीथादितिशब्दंकुर्वती ॥ थारवा थंरक्षणेमंगलेचसाध्वसेचनपुंसकम् ॥ शिलोच्चयेपुमानेवक्वचित्तुभयरक्षकेइतिमेदिनीकोशात्–भयरक्षकआरवःशब्दोयस्याःसा ॥ थांताथस्यमंगलस्यांतापर्यवसानभूमिः ॥ दोहिनीत्यारभ्यदकारादीनिसप्तविंशतिनामानि ॥ ॥ ७४ ॥ दिवायुक्तारात्रिर्दिवारात्रिः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ दंडिनीवाराहीललितोपाख्यानेप्रसिद्धा ॥ ७७ ॥ धात्रीत्यारभ्यधकारादीनिविंशतिनामानि ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ नंदेत्यारभ्यनकारादीनिपंचपंचाशन्नामानि ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ नृसिंहिनी नृसिंहउपासकोस्तियस्याःसा नृसिंहवेषवतीवा ॥ नृपनागविभूषितेतिएकंनाम ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ज्योतिर्ज्योतिःशास्त्रम्

त्रैयंबकात्रिवर्गाचत्रिकालज्ञानदायिनी ॥ तर्पणातृप्तिदातृप्ताताम्रसीतुंबुरुस्तुता ॥ ७३ ॥ ताक्ष्यस्थात्रिगुणाकारात्रिभंगीतनुवल्लरिः ॥ थात्कारीथारवाथांतादोहिनीदीनवत्सला ॥ ७४ ॥ दानवांतकरीदुर्गादुर्गासुरनिवर्हिणी ॥ देवरीतिर्दिवारात्रिर्द्रौपदीदुंदुभिस्वना ॥७५॥ देवयानीदुरावासादारिद्र्योद्भेदिनी दिवा ॥ दामोदरप्रियादीप्तादिग्वासादिग्विमोहिनी ॥ ७६ ॥ दंडकारण्यनिलयादंडिनीदेवपूजिता ॥ देववंद्यादिविषदाद्वेषिणीदानवाकृतिः ॥ ७७ ॥ दीनानाथस्तुतादीक्षादैवतादिस्वरूपिणी ॥ धात्रीधनुर्धराधेनुर्धारिणीधर्मचारिणी ॥ ७८ ॥ धुरंधराधराधाराधनदाधान्यदोहिनी ॥ धर्मशीलाधनाध्यक्षाधनुर्वेदविशारदा ॥ ७९ ॥ धृतिर्धन्याधृतपदाधर्मराजप्रियाध्रुवा ॥ धूमावतीधूमकेशीधर्मशास्त्रप्रकाशिनी ॥८०॥ नंदानंदप्रियानिद्रानृनुतानंदनात्मिका॥नर्मदानलिनीनीलानीलकंठसमाश्रया ॥ ८१ ॥ नारायणप्रियानित्यानिर्मलानिर्गुणानिधिः ॥ निराधारानिरुपमानित्यशुद्धानिरंजना ॥ ८२ ॥ नादबिंदुकलातीतानादबिंदुकलात्मिका ॥ नृसिंहिनीनगधरानृपनागविभूषिता ॥ ८३ ॥ नरकक्लेशशमनीनारायणपदोद्भवा ॥ निरवद्यानिराकारानारदप्रियकारिणी ॥ ८४ ॥ नानाज्योतिःसमाख्यातानिधिदानिर्मलात्मिका ॥ नवसूत्रधरानीतिर्निरुपद्रवकारिणी ॥ ८५ ॥ नंदजानवरत्नाढ्यानैमिषारण्यवासिनी ॥ नवनीतप्रियानारीनीलजीमूतनिःस्वना ॥ ८६ ॥ निमेषिणीनदीरूपानीलग्रीवानिशीश्वरी ॥ नामावलिर्निशुंभघ्नीनागलोकनिवासिनी ॥ ८७ ॥ नवजांबूनदप्रख्यानागलोकाधिदेवता ॥ नूपुराक्रांतचरणानरचित्तप्रमोदिनी॥८८॥निमग्नारक्तनयनानिर्घातसमनिःस्वना॥ नंदनोद्यानानिलयानिर्व्यूहोपरिचारिणी॥ ॥ ८९ ॥ पार्वतीपरमोदारापरब्रह्मात्मिकापरा ॥ पंचकोशविनिर्मुक्तापंचपातकनाशिनी ॥ ९० ॥ परचित्तविधानज्ञापंचिकापंचरूपिणी ॥ पूर्णिमापरमाप्रीतिःपरतेजःप्रकाशिनी ॥ ९१ ॥ पुराणीपौरुषीपुण्यापुंडरीकनिभेक्षणा ॥ पातालतलनिर्मग्नाप्रीताप्रीतिविवर्धिनी ॥ ९२ ॥

॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ पार्वतीत्यारभ्यपल्लवोदरीत्यंतानिपंचविंशत्यधिकशतनामानिपकारादीनि ॥ पंचब्रह्मात्मिकासद्योजातादिपंचब्रह्मात्मिका ॥ परब्रह्मात्मिकेत्यपिपाठः ॥ परेतिस्वतंत्रंनाम ॥ ९०॥ पंचिकाश्रीविद्यायांपंचपंचिकापूजनंदक्षिणामूर्तिसंहितादिषुवर्णितंतत्पंचिकादेवतारूपा ॥ पंचरूपिणीप्रपंचरूपिणी।परमाप्रीतिरीतिनामद्वयम् ॥ ॥ ९१ ॥ पौरुषीपुरुषसंबंधिनी ॥ ९२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

पादसहिताकिरणसाहिता ॥ प्रजापतिस्तद्रूपिणी ॥९३॥९४॥ पुरंध्रीत्येकंनाम ॥ पुरवासिनीमातापुरवासिनी॥९५॥ प्रज्ञावत्याःसुतेत्येकंनाम ॥ पुत्रपूज्यापुत्रेणपूज्येत्यर्थः ॥९६॥९७॥ पुंडरीकपुरंचिदंबरक्षेत्रम् ॥९८॥९९॥ प्रणवानांप्रस्तोत्रीणांदेवांगनानांगतिः॥पंचवाणीविस्तृतवाणी॥पंचिकाकाचिद्देवता ॥१००॥ परप्रीतिरित्येकंनाम ॥१॥२॥ पंचभक्षामकारपंचकभक्षाःवामाचारिणस्तेषांप्रियआचारोयस्याःसा ॥ पूतनेत्येकंनाम ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ पाटलीत्येकंनाम ॥ ६ ॥ प्रणवाप्रणवरूपिणी ॥ ७ ॥ फलिनीत्यादीनिसप्तफकारादीनिनामानि॥

पावनीपादसहितापेशलापवनाशिनी ॥ प्रजापतिःपरिश्रांतापर्वतस्तनमंडला ॥ ९३ ॥ पद्मप्रियापद्मसंस्थापद्माक्षीपद्मसंभवा ॥ पद्मपत्रापद्मपदापाद्मिनीप्रियभाषिणी ॥ ९४ ॥ पशुपाशविनिर्मुक्तापुरंध्रीपुरवासिनी ॥ पुष्कलापुरुषापर्वापारिजातसुमप्रिया ॥ ९५ ॥ पतिव्रतापवित्रांगीपुष्पहासपरायणा ॥ प्रज्ञावतीसुतापौत्रीपुत्रपूज्यापयस्विनी ॥ ९६ ॥ पट्टिपाशधरापंक्तिःपितृलोकप्रदायिनी ॥ पुराणीपुण्यशीलाचप्रणतार्तिविनाशिनी ॥ ९७ ॥ प्रद्युम्नजवनीपुष्टापितामहपरिग्रहा ॥ पुंडरीकपुरावासापुंडरीकसमानना ॥९८॥ पृथुजंघापृथुभुजापृथुपादापृथूदरी ॥ प्रवालशोभापिंगाक्षीपीतवासाः प्रचापला ॥ ९९ ॥ प्रसवापुष्टिदापुण्याप्रतिष्ठाप्रणवागतिः ॥ पंचवर्णापंचवाणीपंचिकापंजरस्थिता ॥ १०० ॥ परमायापरज्योतिःपरप्रीतिःपरागतिः॥ पराकाष्ठापरेशानीपाविनीपावकद्युतिः ॥ १ ॥ पुण्यभद्रापरिच्छेद्यापुष्पहासापृथूदरी ॥ पीतांगीपीतवसनापीतशय्यापिशाचिनी ॥२॥ पीतक्रियापिशाचघ्नीपाटलाक्षीपटुक्रिया ॥ पंचभक्षप्रियाचारापूतनाप्राणघातिनी ॥ ३ ॥ पुन्नागवनमध्यस्थापुण्यतीर्थनिषेविता ॥ पंचांगीचपराशक्तिःपरमाह्लादकारिणी ॥ ४ ॥ पुष्पकांडस्थितापूषापोषिताखिलविष्टपा ॥ पानप्रियापंचशिखापन्नगोपरिशायिनी ॥ ५ ॥ पंचमात्रात्मिकापृथ्वीपथिकापृथुदोहिनी ॥ पुराणन्यायमीमांसापाटलीपुष्पगंधिनी ॥ ६ ॥ पुण्यप्रजापारदात्रीपरमार्गैकगोचरा ॥ प्रवालशोभापूर्णाशाप्रणवापल्लवोदरी ॥ ७ ॥ फलिनीफलदाफल्गुःफूत्कारीफलकाकृतिः ॥ फणींद्रभोगशयनाफणिमंडलमंडिता ॥ ८ ॥ बालबालाबहुमताबालातपनिभांशुका ॥ बलभद्रप्रियावंद्यावडवाबुद्धिसंस्तुता ॥ ९ ॥ बंदीदेवीबिलवतीबडिशघ्नीबलिप्रिया ॥ बांधवीबोधिताबुद्धिर्बंधूककुसुमप्रिया ॥ ११० ॥ बालभानुप्रभाकाराब्राह्मीब्राह्मणदेवता ॥ बृहस्पतिस्तुतावृंदावृंदावनविहारिणी ॥ ११ ॥ बालाकिनीबिलाहाराबिलवासाबहूदका ॥ बहुनेत्राबहुपदाबहुकर्णावतंसिका ॥ १२ ॥

॥ ८ ॥ बालबालेत्यारभ्यब्रह्मकंकणसूत्रिणीत्यंतानिपंचाशद्बकारादीनिनामानि ॥ तत्रबवयोरभेदात्वकारादीनिनामान्यपिकानिचित्पवर्गीयादिनामसुपठ्यंते। बालबालाबालादपिबाला ॥ ९ ॥ बिलवतीबिलंकर्मछिद्रंतद्वतीतद्वष्टीत्यर्थः ॥ बडिशंकपटंतस्यहंत्रीत्यर्थः ॥ ११० ॥ ११ ॥ बालाकिनी ॥ बलाकानांबकपंक्तीनांसमूहोबालाकंतदस्तियस्याःसाबालाकिनी ॥ बिलाहाराकर्मछिद्रभक्षणकर्त्रीत्यर्थः ॥ बिलवासाबिलेगुहारूपेवासोयस्याः सा ॥ १२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ १३ ॥ बद्धगोधांगुलित्राणा ॥ गोधातलनिहाकयोरितिमेदिनीकोशात् गोधाहस्ततलस्तस्यत्राणमंगुलित्राणंचबद्धंयया सा ॥ वीरलक्षणमेतत् बद्धगोधांगुलित्राणाःकालिंदीमभितोययुरितिमहाभारतेविराटपर्वणिप्रसिद्धम् ॥ १४ ॥ १५ ॥ वडिस्था डलयोरभेदाद्वलिस्थेत्यर्थः ॥ बिंदुरव्यक्तमायात्मासादर्पणोयस्याःसा ॥ तत्रप्रतिबिंबितत्वात् ॥ मायायाबिंदुत्वंच नमस्तेसमस्तेशिबिंदुस्वरूपेइतिप्रपंचसारेस्पष्टम् ॥ वाणासनवतीधनुष्यहस्तेत्यर्थः ॥ १६ ॥ ब्रह्मकंकणसूत्रिणी ब्रह्मशब्देनब्रह्मविद्यादानंलक्षणयाताद्विषयकंयत्कंकणंसूत्रंतदस्तियस्याःसा ॥ ब्रह्मविद्याप्रचारेत्यर्थः ॥ भवानीत्यारभ्यभागधेयिनीत्यंतानिएकोनचत्वारिंशद्भकारादीनिनामानि ॥ १७ ॥ भारताशया भा स्वप्रकाशासंवित्तस्यांरतायेज्ञानिनस्तेषुआश

बहुवाहुयुतावीजरूपिणीवहुरूपिणी ॥ बिंदुनादकलातीताबिंदुनादस्वरूपिणी ॥ १३ ॥ बद्धगोधांगुलित्राणाबदर्याश्रमवासिनी ॥ वृंदारकाबृहत्स्कंधा बृहतीवाणतिनी ॥ १४ ॥ वृंदाध्यक्षाबहुनुतावनिताबहुविक्रमा ॥ बद्धपद्मासनासीनाबिल्वपत्रतलस्थिता ॥ १५ ॥ बोधिद्रुमनिजावासावडिस्थाबिंदुदर्पणा ॥ बालाबाणासनवतीवडवानलवेगिनी ॥ १६ ॥ ब्रह्मांडबहिरंतःस्थाब्रह्मकंकणसूत्रिणी ॥ भवानीभीषणवतीभाविनीभयहारिणी ॥ १७ ॥ भद्रकालीभुजंगाक्षीभारतीभारताशया ॥ भैरवीभीषणाकाराभूतिदाभूतिमालिनी ॥ १८ ॥ भामिनीभोगनिरताभद्रदाभूरिविक्रमा ॥ भूतवासाभृगुलताभार्गवीभूसुरार्चिता ॥ १९ ॥ भागीरथीभोगवतीभवनस्थाभिषग्वरा ॥ भामिनीभोगिनीभाषाभवानीभूरिदक्षिणा ॥ १२० ॥ भर्गात्मिकाभीमवतीभववंधविमोचिनी ॥ भजनीयाभूतधात्रीरंजिताभुवनेश्वरी ॥ २१ ॥ भुजंगवलयाभीमाभेरुंडाभागधेयिनी ॥ मातामायामधुमतीमधुजिह्वामधुप्रिया ॥ ॥ २२ ॥ महादेवीमहाभागामालिनीमीनलोचना ॥ मायातीतामधुमतीमधुमांसामधुद्रवा ॥ २३ ॥ मानवीमधुसंभूतामिथिलापुरवासिनी ॥ मधुकैटभसंहर्त्रीमेदिनीमेघमालिनी ॥ २४ ॥ मंदोदरीमहामायामैथिलीमसृणप्रिया ॥ महालक्ष्मीर्महाकालीमहाकन्यामहेश्वरी ॥ २५ ॥ माहेंद्रीमेरुतनयामंदारकुसुमार्चिता ॥ मंजुमंजीरचरणामोक्षदामंजुभाषिणी ॥ २६ ॥ मधुरद्राविणीमुद्रामलयामलयान्विता ॥ मेधामरकतश्यामामागधीमेनकात्मजा ॥ २७ ॥ महामारीमहावीरामहाश्यामामनुस्तुता ॥ मातृकामिहिराभासामुकुंदपदविक्रमा ॥ २८ ॥ मूलाधारस्थितामुग्धामणिपूरकवासिनी ॥ मृगाक्षीमहिषारूढामहिषासुरमर्दिनी ॥ २९ ॥ योगासनायोगगम्यायोगायौवनकाश्रया ॥ यौवनीयुद्धमध्यस्थायमुनायुगधारिणी ॥१३०॥ यक्षिणीयोगयुक्ताचयक्षराजप्रसूतिनी ॥ यात्रायानविधानज्ञायदुवंशसमुद्भवा ॥ ३१ ॥ यकारादिहकारांतायाजुषीयज्ञरूपिणी ॥ यामिनीयोगनिरतायातुधानभयंकरी ॥ ३२ ॥ रुक्मिणीरमणीरामारेवतीरेणुकारतिः ॥ रौद्रीरौद्रप्रियाकाराराममातारतिप्रिया ॥ ३३ ॥

योयस्याःसा ॥ १८ ॥ १९ ॥ १२० ॥ भूतधात्रीरंजितेत्येकंनाम ॥ २१ ॥ मातेत्यारभ्यमहिषासुरमर्दिनीत्यंतानिचतुःपंचाशन्मकारादीनिनामानि ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ योगासनेत्यारभ्ययातुधानभयंकरीत्यंतानियकारादीनिविंशतिनामानि ॥१३०॥ यक्षराजस्यप्रसूतिकाप्रसवित्री ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ रुक्मिणीत्यारभ्यरुक्मभूषणेत्यंतानिसप्तत्रिंशद्रेफादीनिनामानि ॥ ३३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ लज्जेत्यारभ्यलोकधारिणीत्यंतानित्रयोदशलकारादीनिनामानि ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ वरदेत्यारभ्यवाल्मीकिपरिसेवितेत्यंतानिसप्तत्रिंशद्वकारादीनिनामानि ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ शाकंभरीत्यारभ्यशर्वरीवंद्येत्यंतानिएकोनत्रिंशच्छकारादीनिनामानि ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ षड्भाषेत्यारभ्यषडंगरूपसुमतिसुरासुरनमस्कृतेत्यंतानिपंचषकारादीनिनामानि ॥ षडाधारामूलाधारप्रभृतयस्तत्रस्थितानांदेवीनांदेवीस्वामिनी ॥ षडंगरूपायेसुमतिसुरास्तैरसुरैश्चनमस्कृतेत्यर्थः ॥४९॥ सरस्वतीत्या

रोहिणीराज्यदारेवारमाराजीवलोचना ॥ राकेशीरूपसंपन्नारत्नसिंहासनस्थिता ॥ ३४ ॥ रक्तमाल्यांबरधरारक्तगंधानुलेपना ॥ राजहंससमारूढारंभारक्तबलिप्रिया ॥ ३५ ॥ रमणीययुगाधाराराजिताखिलभूतला ॥ रुरुचर्मपरीधानारथिनीरत्नमालिका ॥ ३६ ॥ रोगेशीरोगशमनीराविणीरोमहर्षिणी ॥ रामचंद्रपदाक्रांतारावणच्छेदकारिणी ॥ ३७ ॥ रत्नवस्त्रपरिच्छन्नारथस्थारुक्मभूषणा ॥ लज्जाधिदेवतालोलाललितालिंगधारिणी ॥ ३८ ॥ लक्ष्मीर्लोलालुप्तविषालोकिनीलोकविश्रुता ॥ लज्जालंबोदरीदेवीललनालोकधारिणी ॥ ३९ ॥ वरदावंदिताविद्यावैष्णवीविमलाकृतिः ॥ वाराहीविरजावर्षावरलक्ष्मीर्विलासिनी ॥ ४० ॥ विनताव्योममध्यस्थावारिजासनसंस्थिता ॥ वारुणीवेणुसंभूतावीतिहोत्राविरूपिणी ॥ ४१ ॥ वायुमंडलमध्यस्थाविष्णुरूपाविधिप्रिया ॥ विष्णुपत्नीविष्णुमतीविशालाक्षीवसुंधरा ॥ ४२ ॥ वामदेवप्रियावेलावज्रिणीवसुदोहिनी ॥ वेदाक्षरपरीतांगीवाजपेयफलप्रदा ॥ ४३ ॥ वासवीवामजननीवैकुंठनिलयावरा ॥ व्यासप्रियावर्मधरावाल्मीकिपरिसेविता ॥ ४४ ॥ शाकंभरीशिवाशांताशारदाशरणागतिः ॥ शातोदरीशुभाचाराशुंभासुरविमर्दिनी ॥ ४५ ॥ शोभावतीशिवाकाराशंकरार्धशरीरिणी ॥ शोणाशुभाशयाशुभ्राशिरःसंधानकारिणी ॥ ४६ ॥ शरावतीशरानंदाशरज्योत्स्नाशुभानना ॥ शरभाशूलिनीशुद्धशबरीशुकवाहना ॥ ४७ ॥ श्रीमतीश्रीधरानंदाश्रवणानंददायिनी ॥ शर्वाणीशर्वरीवंद्याषड्भाषाषड्ऋतुप्रिया ॥ ॥ ४८ ॥ षडाधारस्थितादेवीषण्मुखप्रियकारिणी ॥ षडंगरूपसुमतिसुरासुरनमस्कृता ॥ ४९ ॥ सरस्वतीसदाधारासर्वमंगलकारिणी ॥ सामगानप्रियासूक्ष्मासावित्रीसामसंभवा ॥ ५० ॥ सर्वावासासदानंदासुस्तनीसागरांबरा ॥ सर्वैश्वर्यप्रियासिद्धिःसाधुबंधुपराक्रमा ॥ ५१ ॥ सप्तर्षिमंडलगतासोममंडलवासिनी ॥ सर्वज्ञासांद्रकरुणासमानाधिकवर्जिता ॥ ५२ ॥ सर्वोत्तुंगासंगहीनासद्गुणासकलेष्टदा ॥ सरघासूर्यतनयासुकेशीसोमसंहतिः ॥ ५३ ॥ हिरण्यवर्णाहरिणीह्रींकारीहंसवाहिनी ॥ क्षौमवस्त्रपरीतांगीक्षीराब्धितनयाक्षमा ॥ ५४ ॥

रभ्यसोमसंहतिरित्यंतानिसप्तविंशतिसकारादीनिनामानि ॥ सावित्रीत्येकंनाम ॥ ५० ॥ साधुबंधुपदक्रमासाधूनांस्वभक्तानांयेबंधवोमित्राणितेषुपदक्रमःपदसंचारोयस्याःस्वभक्तभक्तेष्वपिदयावतीत्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ सरघामधुमक्षिका ॥ ५३ ॥ हिरण्यवर्णेत्यादीनिचत्वारिहकारादीनिनामानि ॥ ळलयोरभेदाल्लकारादिनामभिरेवळकारादिनामान्यापिसंगृहीतानीतिमन्यतेमुनिः ॥ क्षौमवस्त्रपरीतांगीत्यारभ्यत्रीणिनामानिक्षकारादीनि ॥ ५४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





गायत्र्यादीनिअष्टौनामानिमातृकाक्षरक्रमरहितानि ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ १६५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ पंचपंचादशधिकैःशतश्लोकैरतःपरम् ॥ दीक्षाविधिंसमासेनवक्तिनारायणोमुनिः ॥ १ ॥ अत्राधुनिकपुस्तकेषुअष्टावध्यायावैष्णवतंत्रस्थाःकेनचित्प्रक्षिप्तादृश्यंते ॥ तत्रशक्तिदीक्षाप्रकरणेतत्कथनस्यासंगतेः प्राचीनपुस्तकेषुतेषामदर्शनाच्चसोऽपपाठः ॥ ततः प्राचीनपुस्तकपाठमनुरुध्यैवव्याख्यायते ॥ सहस्रनामश्रवणोत्तरंनारदःपृच्छति । श्रुतंसहस्रनामेति ॥ १ ॥ दीक्षालक्षणंदीक्षाविधिस्वरूपमित्यर्थः ॥ ब्राह्मणानामित्यर्थस्यदेवीमंत्रेधिकारितेतिपूर्वेणान्वयः ॥ २ ॥ ३ ॥ ययाभवेदिति ॥ तदुक्तम् – अदीक्षितस्यमरणंरौरवाय

गायत्रीचैवसावित्रीपार्वतीचसरस्वती ॥ वेदगर्भावरारोहाश्रीगायत्रीपरांबिका ॥ ५५ ॥ इतिसाहस्रकंनाम्नांगायत्र्याश्चैवनारद ॥ पुण्यदंसर्वपापघ्नंमहासंपत्तिदायकम् ॥ ५६ ॥ एवंनामानिगायत्र्यास्तोषोत्पत्तिकराणिहि ॥ अष्टम्यांचविशेषेणपठितव्यंद्विजैःसह ॥५७॥ जपंकृत्वाहोमपूजाध्यानंकृत्वाविशेषतः ॥ यस्मैकस्मैनदातव्यंगायत्र्यास्तुविशेषतः ॥ ५८ ॥ सुभक्तायसुशिष्यायवक्तव्यंभूसुरायवै॥भ्रष्टेभ्यःसाधकेभ्यश्चबांधवेभ्योनदर्शयेत् ॥५९॥ यद्गूहेलिखितंशास्त्रंभयंतस्यनकस्यचित् ॥ चंचलापिस्थिराभूत्वाकमलातत्रतिष्ठति॥६०॥इदंरहस्यंपरमंगुह्याद्गुह्यतरंमहत् ॥ पुण्यप्रदंमनुष्याणांदरिद्राणांनिधिप्रदम् ॥ ६१ ॥ मोक्षप्रदंमुमुक्षूणांकामिनांसर्वकामदम् ॥ रोगाद्वैमुच्यतेरोगीबद्धोमुच्येतबंधनात् ॥६२ ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंसुवर्णस्तेयिनोनराः ॥ गुरुतल्पगतोवापिपातकान्मुच्यतेसकृत् ॥ ६३ ॥ असत्प्रतिग्रहाच्चैवाऽभक्ष्यभक्षाद्विशेषतः ॥ पाखंडानृतमुख्येभ्यःपठनादेवमुच्यते ॥६४॥ इदंरहस्यममलंमयोक्तंपद्मजोद्भव ॥ ब्रह्मसायुज्यदंनृणांसत्यंसत्यंनसंशयः ॥१६५॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेगायत्रीसहस्रनामस्तोत्रकथनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥६॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ श्रुतंसहस्रनामाख्यंश्रीगायत्र्याःफलप्रदम् ॥ स्तोत्रंमहोन्नतिकरंमहाभाग्यकरंपरम् ॥१॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिदीक्षालक्षणमुत्तमम् ॥ विनायेननसिध्येतदेवीमंत्रेधिकारिता ॥ २ ॥ ब्राह्मणानांक्षत्रियाणांविशांस्त्रीणांतथैवच ॥ सामान्यविधिनासर्वंविस्तरेणवदप्रभो ॥ ३ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुदीक्षांप्रवक्ष्यामिशिष्याणांभावितात्मनाम् ॥ देवाग्निगुरुपूजादावधिकारोययाभवेत् ॥ ४ ॥ दिव्यंज्ञानंहियादद्यात्कुर्यात्पापक्षयंतुया ॥ सैवदीक्षेतिसंप्रोक्तावेदतंत्रविशारदैः ॥५॥ अवश्यंसातुकर्तव्यायतोबहुफलामता ॥ गुरुशिष्यावुभावत्राप्यतिशुद्धावपेक्षितौ ॥ ॥ ६ ॥ गुरुस्तुविधिवत्प्रातःकृत्यंसर्वंविधायच ॥ स्नानसंध्यादिकंसर्वंयथाविधिविधायच ॥ ७ ॥ कमण्डलुकरोमौनीगृहंयायात्सरित्तटात् ॥ यागमंडपमासाद्यविशेत्तत्रासनेवरे ॥ ८ ॥

प्रकल्पते ॥ नपूजाद्यधिकारोस्तिविनादीक्षांवराननेइति ॥ ४ ॥ दीक्षापदार्थमाह । दिव्यंज्ञानमिति ॥ दाण्दानेक्षिक्षयेइतिधातुद्वयनिष्पन्नोदीक्षाशब्दइत्यर्थः ॥ यादीक्षाक्रिया ॥ ५ ॥ अतिशुद्धौमातृतःपितृतआचारतश्चेत्यर्थः ॥ तदुक्तंशारदाय-मातृतःपितृतःशुद्धइति ॥ं ६ ॥ विधिवदिति ॥ पूर्वोक्तप्रकारेण ॥७॥ यागमंडपंदीक्षास्थानम् ॥ मंडपशब्देनकुंडमंडपोक्तविधिनाषोडशहस्तपरिमितःकुंडमंडपःकर्तव्यइतिसूचितम् ॥ तदुक्तंपिंगलामते–कलाकरप्रमाणःस्यान्मंडपोमुख्यएवचेति ॥ तद्विधिश्चग्रंथान्तरादवसेयः ॥ ८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अस्त्रमंत्रेणेति ॥ अर्घ्यपात्रेजलंगृहीत्वागंधपुष्पेप्रक्षिप्यसप्तवारंफडित्यस्त्रमंत्रेणाभिमंत्रयेदित्यर्थः ॥ ९ ॥ अस्त्रमंत्रंफडितिमंत्रम् ॥ द्वारंमंडपद्वारम् ॥ द्वारमितिजात्येकवचनाच्चत्वारिमंडपद्वाराणीत्यर्थः ॥ १० ॥ ऊर्ध्वोदुंबरकेद्वारस्योर्ध्वफलकप्रथमप्रांतेगणनाथंमध्येलक्ष्मींद्वितीयप्रांतेसरस्वतींचपूजयेदित्यर्थः ॥ नाममंत्रैर्गणेशायनमइत्यादिभिः ॥ ११ ॥ गंगांप्रथमतःसंपूज्यतद्वामभागेविघ्नेशमर्चयेदित्यर्थः ॥ तथाक्षेत्रपालंप्रथमतस्तद्वामभागेसूर्यजांयमुनांपूजयेदित्यर्थः ॥ १२ ॥ देहल्यामधोदेहल्यामस्त्रमंत्रतः फडितिमंत्रतः ॥ अनंतरंमंडपमध्येसर्वदेवीमयमस्तीतिविभाव्योर्ध्वंपश्यन्दिविभवान्विघ्नानुत्सारयेदित्यर्थः ॥ १३ ॥ पादघातैस्त्रिभिर्भौमान्विघ्नानुत्सारयेदित्यर्थः ॥ १४ ॥ अनंतरमंतःस्थितविघ्ननिर्गमनार्थंमार्गंपरित्यज्यद्वारवामशाखांस्पृशन्दक्षिणांघ्रिमग्रेदत्त्वामंडपेप्रविशेदित्याह । वामशाखामिति ॥ अंतःस्थिताविघ्नानिर्गच्छंतिअहंत्वंतःप्रविशामीतिभावयन्प्रविशेदितितात्पर्यम् ॥ सामान्यार्घ्यंपूर्ववत् ॥ १५ ॥

आचम्यप्राणानायम्यगंधपुष्पाविमिश्रितम् ॥ सप्तवारास्त्रमंत्रेणजप्तंवारिसुसाधयेत् ॥ ९ ॥ वारिणातेनमतिमानस्त्रमंत्रंसमुच्चरन् ॥ प्रोक्षयेद्द्वारमखिलंततः पूजांसमाचरेत् ॥ १० ॥ ऊर्ध्वोदुंबरकेदेवंगणनाथंतथाश्रियम् ॥ सरस्वतींनाममंत्रैःपूजयेद्गंधपुष्पकैः ॥ ११ ॥ द्वारदक्षिणशाखायांगंगांविघ्नेशमर्चयेत् ॥ द्वारस्यवामशाखायांक्षेत्रपालंचसूर्यजाम् ॥ १२ ॥ देहल्यांपूजयेदस्त्रदेवतामस्त्रमंत्रतः ॥ सर्वंदेवीमयंदृश्यमितिसंचिंत्यसर्वतः ॥१३॥ दिव्यानुत्सारयेद्विघ्नानस्त्रमंत्रजपेनतु ॥ अंतरिक्षगतान्विघ्नान्पादघातैस्तुभूमिगान् ॥ १४ ॥ वामशाखांस्पृशन्पश्चात्प्रविशेद्दक्षिणांघ्रिणा ॥ प्रविश्यकुंभंसंस्थाप्यसामान्यार्घ्यंविधायच ॥ १५ ॥ तेनचाऽर्घ्यजलेनापिनैर्ऋत्यांदिशिपूजयेत् ॥ वास्तुनाथंपद्मयोनिंगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ १६ ॥ ततःकुर्यात्पंचगव्यंतेनचाऽर्घ्योदकेनच ॥ तोरणस्तंभपर्यंतंप्रोक्षयेन्मंडपंगुरुः ॥ १७ ॥ सर्वंदेवीमयंचेदंभावयेन्मनसाकिल ॥ मूलमंत्रंजपन्भक्त्याप्रोक्षणंस्याच्छराणुना ॥ १८ ॥ शरमंत्रंसमुच्चार्यताडयेन्मंडपक्षमाम् ॥ हुंमंत्रंतुसमुच्चार्यकुर्यादभ्युक्षणंततः ॥१९॥ धूपयेदंतरंधूपैर्विकिरान्विकिरेत्ततः ॥ मार्जयेत्तांस्तुमार्जन्याकुशानिर्मितयापुनः ॥ २० ॥ ईशानदिशितत्पुंजंकृत्वासंस्थापयेन्मुने ॥ पुण्याहवाचनंकृत्वादीनानाथांश्चतोषयेत् ॥ २१ ॥ विशेन्मृद्वासनेपश्चान्नमस्कृत्यगुरुंनिजम् ॥ प्राङ्मुखोविधिवद्ध्यात्वादेयमंत्रस्यदेवताम् ॥ २२ ॥ भूतशुद्ध्यादिकंकृत्वापूर्वोक्तेनैववर्त्मना ॥ ऋष्यादिन्यासकंकुर्याद्देयमंत्रस्यवैमुने ॥ २३ ॥ न्यसेन्मुनिंतुशिरसिमुखेछंदःसमीरितम् ॥ देवतांहृदयांभोजेगुह्येबीजंतुपादयोः॥२४॥शक्तिंविन्यस्यपश्चात्तुतालत्रयरवात्ततः ॥ दिग्बंधंकारयेत्पश्चाच्छोटिकाभिस्त्रिभिर्नरः ॥ २५ ॥ प्राणायामंततःकृत्वामूलमंत्रमनुस्मरन् ॥ मातृकांविन्यसेद्देहेतत्प्रकारस्तथोच्यते ॥ २६ ॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ शराणुनाऽस्त्रमंत्रेण ॥ १८ ॥ मंडपक्षमांमंडपभुवम् ॥ १९ ॥ विकिरानिति ॥ तदुक्तंचिद्वल्लीतंत्रे ॥ जलचंदनसिद्धार्थभस्मदूर्वांकुराक्षताः॥विकिराइतिसंदिष्टाःसर्वविघ्नौघनाशनाइति ॥ तान्विकिरानित्यर्थः ॥ २० ॥ तत्पुंजमिति ॥ तस्मिन्पुंजेऽग्रेवर्धनीस्थापनंवक्ष्यति ॥ २१ ॥ देयमंत्रस्येति ॥ शिष्यस्ययोदेयोमंत्रस्तस्यदेवतामित्यर्थः ॥२२॥ पूर्वोक्तेनैकादशस्कंधोक्तप्रकारेण ॥ २३ ॥ ऋष्यादिन्यासस्थानान्याह । न्यसेदिति ॥ २४ ॥ तालत्रयरवादिति ॥ तालत्रयशब्देनदिव्यांतरिक्षभौमाविघ्नानुत्सार्यछोटिकाभिर्दिग्बंधंकुर्यादित्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





ओंअंनमइतीति ॥ ॐअंनमः।ओंआंनमः ओंइंनमइत्यादिप्रकारेणशिरआदिस्थानेषुमातृकान्यासप्रकरणेप्रसिद्धेषुन्यसेदित्यर्थः ॥२७॥ मूलमंत्रोति ॥ देयमंत्रेत्यर्थः ॥ सचषडंगस्तत्तत्कल्पेप्रसिद्धः ॥ षडंगन्यासस्थानान्याह । अंगुष्ठादिष्विति ॥ २८ ॥ नमःस्वाहेति ॥ हृदयायनमः ॥ शिरसेस्वाहा ॥ शिखायैवषट् ॥ कवचायहुम् ॥ नेत्रत्रयायवौषट् ॥ अस्त्रायफडित्येवंरीत्येत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ततोनिजदेहेवक्ष्यमाणक्रमेणदेव्याआसनंकल्पयेदित्याह ॥ ततोनिजेइति ॥ तमेवक्रममाह । दक्षांसेइति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ नभादीनिति ॥ नभ्पूर्वानित्यर्थः ॥ तथाचाधर्मायनमः अज्ञानायनमः अवैराग्यायनमः अनैश्वर्यायनमइतिमंत्राःसंपन्नाः ॥ ३३ ॥ तस्मिन्कल्पितेआसनेपर्यंककल्पनामाह । पादाधर्मादयइति ॥ पादाःपर्यंकखुराधर्मादयोज्ञेयाइत्यर्थः ॥ अधर्मादयस्तुपर्यंकगात्राणीतिज्ञेयाइत्यर्थः ॥ ३४ ॥ मध्येऽनंतमिति ॥ तंचाऽनंतंमृद्वासनस्थलेमृदुतूलिकास्थानेभावयेदित्यर्थः ॥ तस्मिन्ननंतेप्रपंचपद्मंभावयेत्॥तस्मिन्कमलेसूर्येंदुपावकानुपर्युपरिन्यसेद्भावयेच्चेत्याह । प्रपंचपद्ममिति ॥ ३५ ॥ कलायुतानिमंडलानिन्यसेदित्याह । न्यसेत्कलायुतानिति ॥ कस्यकतिकलाःसंतीतितदाह । सूर्यस्यद्वाद

ॐअंनमइतिप्रोच्यन्यसेच्छिरसिमंत्रवित् ॥ एवमेवतुसर्वेषुन्यसेत्स्थानेषुवैमुने ॥ २७ ॥ मूलमंत्रषडंगंचन्यसेदंगेषुसत्तमः ॥ अंगुष्ठादिष्वंगुलीषुहृदयादिषुचक्रमात् ॥ २८ ॥ नमःस्वाहावषडयुक्तैर्हुंवौषट्फट्पदान्वितैः ॥ प्रणवादियुतैर्मंत्रैःषड्भिरेवंषडंगकम् ॥ २९ ॥ वर्णन्यासादिकंपश्चान्मूलमंत्रस्ययोजयेत् ॥ स्थानेषुतत्तत्कल्पोक्तेष्वितिन्यासविधिःस्मृतः ॥ ३० ॥ ततोनिजेशरीरेऽस्मिंश्चिंतयेदासनंशुभम्॥दक्षांसेचन्यसेद्धर्मंवामांसेज्ञानमेवच ॥३१॥ वामोरौचापिवैराग्यंदक्षोरावथविन्यसेत् ॥ ऐश्वर्यमुखदेशेतुमुनेध्यायेदधर्मकम् ॥ ३२ ॥ वामपार्श्वेनाभिदेशेदक्षपार्श्वेतथापुनः ॥ नभादींश्चापिज्ञानादीन्पूर्वोक्तानेवविन्यसेत् ॥ ३३ ॥ पादाधर्मादयःप्रोक्ताःपीठस्यमुनिसत्तम ॥ अधर्माद्यास्तुगात्राणिस्मृतानिमुनिपुंगवैः ॥ ३४ ॥ मध्येऽनंतंहृदिस्थानेन्यसेन्मृद्वासनेस्थले ॥ प्रपंचपद्मंविमलं तस्मिन्सूर्येंदुपावकान् ॥ ३५ ॥ न्यसेत्कलायुतान्मंत्रीसंक्षेपात्तावदाम्यहम् ॥ सूर्यस्यद्वादशकलास्ताइंदोःषोडशस्मृताः ॥ ३६ ॥ दशवह्नेःकलाःप्रोक्तास्ताभिर्युक्तांस्तुतान्स्मरेत् ॥ सत्त्वंरजस्तमश्चैवन्यसेत्तेषामथोपरि ॥३७॥ आत्मानमंतरात्मानंपरमात्मानमेवच॥ ज्ञानात्मानंन्यसेद्विद्वानित्थंपीठस्यकल्पना ॥३८॥ अमुकासनायनमइतिमंत्रेणसाधकः ॥ आसनंपूजयित्वातुतस्मिन्ध्यायेत्परांबिकाम्॥३९॥कल्पोक्तविधिनामंत्रीदेयमंत्रस्यदेवताम् ॥ मानसैरुपचारैश्चपूजयेत्तांयथाविधि ॥ ४० ॥ मुद्राःप्रदर्शयेद्विद्वान्कल्पोक्तामोदकारिकाः ॥ याभिर्विरचिताभिस्तुमोदोदेव्यास्तुजायते ॥ ४१ ॥ नारायणउवाच ॥ ततःस्ववामभागाग्रेषट्कोणोपरिवर्तुलम् ॥ चतुरस्रयुतंसम्यङ्मध्येमंडलमालिखेत् ॥ ४२ ॥

शेति ॥ ३६ ॥ तेचसूर्यादयःप्रणवस्यवर्णत्रयपूर्वकान्यस्तव्याइतितंत्रांतरेउक्तम् ॥ तथाचायंप्रयोगः ॥ अंसूर्यमंडलायद्वादशकलात्मनेनमः उंसोममंडलायषोडशकलात्मनेनमः मंवह्निमंडलायदशकलात्मनेनमः इतिप्रयोगंकृत्वान्यसेदित्यर्थः ॥ तदुपरिसत्त्वादिगुणत्रयंन्यसेदित्याह । सत्त्वंरजइति ॥ संसत्त्वायनमः रंरजसेनमः तंतमसेनमइतिप्रयोगः ॥ ३७ ॥ आत्मानमिति ॥ तांश्चचतुरआत्मनोदेवीस्थानात्पूर्वादिदिक्षुन्यसेदितितुचिद्वल्लीतंत्रादूह्यम् ॥ ३८ ॥ अमुकासनायनमइतीति ॥ अमुकशब्दस्थानेपूजनीयदेवतानामग्राह्यमित्यर्थः ॥ यथादुर्गासनायनमः गायत्र्यासनायनमइति ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ विशेषार्घ्यस्थापनमाह । ततःस्वेति ॥ प्रथमतःषट्कोणंकृत्वातदुपरिवर्तुलंकृत्वाचतुरस्रंकुर्यात्चंदनेनेत्यर्थः ॥ ४२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

मध्येषट्कोणमध्ये ॥ त्रिकोणमधोमुखंकुर्यादित्यर्थः ॥ षडंगानिदेयमंत्रस्यषडंगानि ॥ ४३ ॥ कांदिशमारभ्यषडंगानिपूजयेत्तत्राह । अग्न्यादिष्विति ॥ अत्रपूज्यपूजकयोर्मध्येप्राची ग्राह्यातदनुरोधेनाग्न्यादिकल्पनाकर्तव्या ॥ तदुक्तंदक्षिणामूर्तिसंहितायाम्—अग्नीशासुरवायव्यमध्येदिक्ष्वंगपूजनमिति ॥ ततःषडंगपूजनानंतरंकृत्यमाह । आधारपात्रमिति ॥ त्रिपादि कामित्यर्थः ॥ ४४ ॥ त्रिपादिकायांभावनापुरःसरंपूजामंत्रमाह । मंवह्निमंडलायेति ॥ मंवह्निमंडलायदशकलात्मनेदुर्गादेव्यर्घ्यपात्रस्थानायनमइतिमंत्रः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ पूर्वमारभ्यपूर्व दिशमारभ्यतस्यांत्रिपादिकायांवह्निमंडलसंयुतादशवह्निकलाःपूज्याइत्यर्थः ॥ ताश्चकलाःशारदातिलकादिषुस्पष्टाएव ॥ ४७ ॥ मूलमंत्रेणदेयमंत्रेण ॥ ४८ ॥ अंसूर्यमंडलायद्वादशक लात्मनेदुर्गादेव्यर्घ्यपात्रायनमइतिमंत्रः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ तपिन्याद्यास्तापिनीतापिनीधूम्राद्याःशारदातिलकादिषुस्पष्टाः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ सृणिमुद्रयांकुशमुद्रया ॥ ५३ ॥ हृदानमइति

मध्येत्रिकोणंसंलिख्यशंखमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ षडंगानिचषट्कोणेष्वर्चयेत्कुसुमादिभिः ॥ ४३ ॥ अग्न्यादिषुतुकोणेषुषडंगार्चनमाचरेत् ॥ आधारपात्रमा दायशंखस्यमुनिसत्तम ॥४४॥ अस्त्रमंत्रेणसंप्रोक्ष्यस्थापयेत्तत्रमंडले ॥ मंवह्निमंडलायोक्त्वाततोदशकलात्मने॥४५॥अमुकदेव्याअर्घ्यपात्रस्थानायन मइत्यपि ॥ मंत्रोयमुक्तःशंखस्याप्याधारस्थापनेबुधैः ॥४६॥ आधारेपूर्वमारभ्यप्रदक्षिणक्रमेणतु ॥ दशवह्निकलाःपूज्यावह्निमंडलसंस्थिताः ॥ ४७ ॥ ततोवैमूलमंत्रेणप्रोक्षितंशंखमुत्तमम् ॥ स्थापयेत्तत्रचाधारेमूलमंत्रमनुस्मरन्॥४८॥अंसूर्यमंडलायोक्त्वाद्वादशांतेकलात्मने ॥ अमुकदेव्यर्घ्यपात्रायनम इत्युच्चरेत्ततः ॥ ४९ ॥ शंशंखायपदंप्रोच्यनमइत्येतदुच्चरेत् ॥ प्रोक्षयेत्तेनतंशंखंतस्मिन्द्वादशपूजयेत् ॥५० ॥ सूर्यस्यद्वादशकलास्तापिन्याद्यायथाक्रम म् ॥ विलोममातृकांप्रोच्यमूलमंत्रंविलोमकम् ॥५१॥ जलैरापूरयेच्छंखंतत्रचेंदोःकलांन्यसेत् ॥ उंसोममंडलायोक्त्वांतेषोडशकलात्मने॥५२॥अमुका र्घ्यामृतायेतिहृन्मंत्रांतोमनुःस्मृतः ॥ पूजयेन्मनुनातेनजलंतुसृणिमुद्रया॥५३॥तीर्थान्यावाह्यतत्रैवाप्यष्टकृत्वोजपेन्मनुम् ॥ षडंगानिजलेन्यस्यहृदासं पूजयेदपः॥५४॥अष्टकृत्वोजपेन्मूलंछादयेन्मत्स्यमुद्रया ॥ ततोदक्षिणदिग्भागेशंखस्यप्रोक्षणींन्यसेत् ॥५५॥ शंखांबुकिंचिन्निक्षिप्यप्रोक्षयेत्तेनसर्वतः॥ पूजाद्रव्यंनिजात्मानंविशुद्धंभावयेत्ततः ॥ ५६ ॥ नारायणउवाच ॥ ततःस्वपुरतोवेद्यांसर्वतोभद्रमंडलम् ॥ संलिख्यकर्णिकामध्यंपूरयेच्छालितंडुलैः ॥ ॥५७॥ आस्तीर्यदर्भांस्तत्रैवन्यसेत्कूर्चंसलक्षणम् ॥ आधारशक्तिमारभ्यपीठमन्वंतमर्चयेत् ॥५८॥ निर्व्रणंकुंभमादायाप्यस्त्राद्भिःक्षालितांतरम् ॥ तंतु नावेष्टयेत्तंतुत्रिगुणेनारुणेनच ॥ ५९ ॥

मंत्रेण॥५४॥प्रोक्षणींसामान्यार्घ्यस्थानीयाम् ॥ शंखोदकेनविशेषार्घः प्रोक्षण्युदकेन सामान्यार्घः॥५५॥५६॥ अर्घ्यस्थापनोत्तरंकृत्यमाह । ततस्तुपुरतोवेद्यामिति ॥ चतुष्कोणैकहस्तावे दी । तस्यांसर्वतोभद्रमंडलंलिखेदित्यर्थः ॥ तन्मंडलस्यकर्णिकामध्येप्रथमतःशालिभिःपूरणंततस्तंडुलैःपूरणमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ कूर्चमिति ॥ सप्तविंशतिदर्भाणांवेण्यग्रंग्रंथिभूषितमित्युक्त लक्षणंकूर्चम् ॥ आधारशक्तिमिति ॥ आधारशक्तयेनमः मूलप्रकृत्यैनमः कूर्मायनमः शेषायनमः क्षमायैनमः सुधासिंधवेनमइत्यादिशारदातिलकचिद्वल्लीतंत्रोक्तप्रकारेण ॥ पीठ मन्वंतमिति ॥ दुर्गादेवीयोगपीठायनमइतिपीठमंत्रः ॥ ५८ ॥ अस्त्राद्भिःफट्मंत्राभिमंत्रितैर्जलैः ॥ त्रिगुणेत्यनेनतास्मिंस्त्रिवारवेष्टिततंतौसत्त्वगुणरजोगुणतमोगुणभावनाकार्येत्यर्थः ॥ अरुणेनरक्तवर्णेनतंतुनेत्यर्थः ॥ ५९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





कूर्चःपूर्वोक्तः ॥ तारमंत्रेणप्रणवोच्चारेण ॥ ६०॥ तत्रकुंभस्यपीठस्यचैकत्वंभावयेदित्याह । ऐक्यमिति ॥ प्रतिलोमंक्षकारमारभ्याकारपर्यंतंमातृकामंत्रमुच्चरंस्तीर्थोदकैःपूरयेदित्यन्वयः॥ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ छादयेदिति ॥ तेषुनवपल्लवेषुकल्पवृक्षभावनाकर्तव्येतितुशारदातिलकेउक्तम् ॥ वस्त्रयुग्मेनरक्तेनेतिबोध्यम् ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७॥ मनुनापुटितैरिति॥ ऱ्हीमंऱ्हींऱ्हीमांऱ्हीमिमित्यादिप्रकारेणदेयमंत्रेणपुटितैर्मातृकाक्षरैर्देवतायाअंगेषुमातृकाक्षरन्यासस्थानेषुशिरःप्रभृतिषुपुष्पैःपूजयेदित्यर्थः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ कुंदपुष्पादीति ॥ आदिनापूर्वमेकादशस्कंधोक्तानिग्राह्याणि ॥ पुरुगुग्गुलस्तस्यव्रातःसमुदायः ॥ अगरुगुग्गुलोशीरचंदनानांचूर्णंकृत्वाशर्करामधुभ्यांचमिश्रितंकृत्वागुटिकांकुर्यात्तस्यधूपोदेव्याअतिप्रियइत्यर्थः ॥

नवरत्नोदरंकूर्चयुतंगंधादिपूजितम् ॥ स्थापयेत्तत्रपीठेतुतारमंत्रेणदेशिकः ॥ ६० ॥ ऐक्यंकुंभस्यपीठस्यभावयेत्पूरयेत्ततः ॥ मातृकांप्रतिलोमेनजपंस्तीर्थोदकैर्मुने ॥ ६१ ॥ मूलमंत्रंचसंजप्यपूरयेद्देवताधिया ॥ अश्वत्थपनसाम्राणांकोमलैर्नवपल्लवैः ॥६२॥ छादयेत्कुंभवदनंचषकंसफलाक्षतम् ॥ संस्थापयेतमतिमान्वस्त्रयुग्मेनवेष्टयेत् ॥ ६३ ॥ प्राणस्थापनमंत्रेणप्राणस्थापनमाचरेत् ॥ आवाहनादिमुद्राभिर्मोदयेद्देवतांपराम् ॥ ६४ ॥ ध्यायेत्तांपरमेशानींकल्पोक्तेनप्रकारतः ॥ स्वागतंकुशलपश्नंदेव्याअग्रेसमुच्चरेत् ॥६५॥पाद्यंदद्यात्ततोप्यर्घ्यंततश्चाचमनीयकम्॥मधुपर्कंचसाभ्यंगंदेव्यैस्नानंनिवेदयेत्॥ ॥ ६६ ॥ वाससीचततोदद्याद्रक्तेक्षौमेसुनिर्मले ॥ नानामणिगणाकीर्णानाकल्पान्कल्पयेत्ततः ॥ ६७ ॥ मनुनापुटितैर्वर्णैर्मातृकायाविधानतः ॥ देव्याअंगेषुविन्यस्यचंदनाद्यैःसमर्चयेत् ॥६८॥ गंधःकालागरुभवःकर्पूरेणसमन्वितः ॥ काश्मीरंचंदनंचापिकस्तूरीसहितंमुने ॥ ६९ ॥ कुंदपुष्पादिपुष्पाणिपरदेव्यैसमर्पयेत् ॥ धूपोऽगरुपुरुव्रातोशीरचंदनशर्कराः ॥७०॥ मधुमिश्राःस्मृतादेव्याःप्रियाधूपात्मनासदा ॥ दीपाननेकान्दत्त्वाथनैवेद्यंदर्शयेत्सुधीः॥ ॥ ७१ ॥ प्रतिद्रव्यंजलंदद्यात्प्रोक्षणीस्थंनचान्यथा ॥ ततःकुर्यादंगपूजांकल्पोक्तावरणानिच॥७२॥ सांगां देवीमथाभ्यर्च्यवैश्वदेवंततश्चरेत् ॥ दक्षिणेस्थंडिलंकृत्वातत्राधायहुताशनम् ॥७३॥मूर्तिस्थांदेवतांतत्राऽऽवाह्यसंपूज्यचक्रमात् ॥ तारव्याहृतिभिर्हुत्वामूलमंत्रेणवैततः ॥७४॥ पंचविंशतिवारंतुपायसेनससर्पिषा ॥ हुनेत्पश्चाद्व्याहृतिभिःपुनश्चजुहुयान्मुने ॥ ७५ ॥ गंधाद्यैरर्चयित्वाचदेवींपीठेतुयोजयेत् ॥ वह्निंविसृज्यहविषापरितोविकिरेद्बलिम् ॥ ॥७६॥ देवतायाःपार्षदेभ्योगंधपुष्पादिसंयुतम् ॥ पंचोपचारान्दत्त्वाथतांबूलंछत्रचामरे ॥७७॥ दद्याद्देव्यैततोमंत्रंसहस्रावृत्तितोजपेत् ॥ जपंसमर्प्यचैशान्यांविकिरेदिशिसंस्थिते॥७८॥कर्करींस्थापयेत्तस्यांदुर्गामावाह्यपूजयेत् ॥ रक्षंरक्षेतिचोच्चार्य्यनालमुक्तेनवारिणा ॥७९॥ अस्त्रमंत्रंजपन्देशंसेचयेत्तुप्रदक्षिणम् ॥ कर्करींस्थापयेत्स्थानेपूजयेच्चास्त्रदेवताम् ॥ ८० ॥

॥ ७० ॥ ७१ ॥ प्रोक्षणीस्थंपूर्वोक्तसामान्यार्घ्यपात्रस्थम् ॥ तदुक्तंशारदायां–सर्वमेतत्प्रयुंजीतप्रोक्षणीस्थेनवारिणेति ॥ अंगपूजांदेवतायाःषडंगपूजाम् ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ मूर्तिस्थांकलशस्थाम् ॥ तारव्याहृतिभिरिति ॥ ओंस्वाहाभूःस्वाहेतिप्रकारेणप्रथमतोहुत्वापंचविंशतिवारंदेयमंत्रेणहुत्वापुनश्चपूर्ववत्तारव्याहृतिभिर्जुहुयादित्यर्थः ॥७४॥ ७५ ॥ हविषाहोमावशिष्टपायसेन॥७६॥७७॥ ऐशान्यांदिशीति॥ऐशान्यांदिशिपूर्वंसमार्जनंकृत्वासंस्थापितेविकिरेकर्करीमुभयमुखींस्थापयेदित्यर्थः॥७८॥७९॥ देशंमंडपस्थंदेशम् । अस्त्रदेवतांदुर्गाम्॥८०॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वेद्यांमंडपेएवनिद्रांकुर्यादित्यर्थः ॥ अयमधिवासनप्रकारः। सद्योधिवासनंवाकार्यम् ॥ स्पष्टंचेदंचिद्वल्लीतंत्रशारदातिलकयोः ॥ ८१ ॥ अधिवासनानंतरमग्निमुखमाह । ततःकुंडस्येति ॥ अत्रकुंडस्येतिपदेननवकुंडीविधानंसूचितम् ॥ तच्चाऽत्राऽनुक्तमपिशारदातिलकादिनिबंधोक्तरीत्याकार्यम् ॥ तदभावेआह । स्थंडिलस्यचोति ॥ ८२ ॥ मूलमंत्रंसमुच्चार्यकुंडंवीक्षयेदित्यर्थः ॥ तेनैवास्त्रमंत्रेणैवप्रोक्षणंदृढीकरणार्थंसमिदादिभिस्ताडनंचकार्यमित्यर्थः ॥ कवचेनहुमितिमंत्रेणाऽभ्युक्षणंचेत्यर्थः ॥ ८३ ॥ लिखेल्लेखाःसमिदादिभिः ॥ ८४ ॥ पीठमिति ॥ आधारशक्तयेनमइत्यारभ्याऽमुकदेवीयोगपीठायनमइत्येतत्पर्यंतंपीठंकुंडेपूजयेदित्यर्थः ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ क्रीडांरतिम् ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ सप्तवारंप्रणवेनाभिमंत्रयेदित्यन्वयः ॥

पश्चाद्गुरुस्तुशिष्येणसहभुंजीतवाग्यतः ॥ तस्यांरात्रौतुतद्वेद्यांनिद्रांकुर्यात्प्रयत्नतः॥८१॥नारायणउवाच ॥ ततःकुंडस्यसंस्कारंस्थंडिलस्यचवामुने ॥ प्रवक्ष्यामिसमासेनयथाविधिविधानतः ॥ ८२ ॥ मूलमंत्रंसमुच्चार्यवीक्षयेदस्त्रमंत्रतः ॥ प्रोक्षयेत्ताडनंकुर्यात्तेनैवकवचेनतु ॥ ८३ ॥ अभ्युक्षणंसमुद्दिष्टं तिस्रस्तिस्रस्ततःपरम् ॥ प्रागग्राउदगग्राश्चलिखेल्लेखाःसमंततः ॥८४॥ प्रणवेनसमभ्युक्ष्यपीठंदेव्याःसमर्चयेत् ॥ आधारशक्तिमारभ्यपीठमंत्रावसानकम् ॥ ८५ ॥ तस्मिन्पीठेसमावाह्यशिवौपरमकारणौ ॥गंधाद्यैरुपचारैश्चपूजयेत्तौसमाहितः ॥ ८६ ॥ देवींध्यायेद्दतुस्नातांसंसक्तांशंकरेणतु ॥ कामातुरांतयोःक्रीडांकिंचित्कालंविभावयेत् ॥ ८७ ॥ अथवह्निंसमादायपात्रेणपुरतोन्यसेत् ॥ क्रव्यादांशंपरित्यज्यपूर्वोक्तैर्वीक्षणादिभिः ॥ ८८ ॥ संस्कृत्यवह्निरंबीजमुच्चार्यतदनंतरम् ॥ चैतन्यंयोजयेत्तस्मिन्प्रणवेनाभिमंत्रयेत् ॥ ८९ ॥ सप्तवारंततोधेनुमुद्रांसंदर्शयेद्गुरुः ॥ शरेणरक्षितंकृत्वातनुत्रेणावगुंठयेत् ॥ ९० ॥ अर्चितंत्रिःपरिभ्राम्यप्रादक्षिण्येनसत्तमः ॥ कुंडोपरिजपंस्तारंजानुस्पृष्टमहीतलः ॥ ९१ ॥ शिवबीजधियादेव्यायोनौवह्निंविनिक्षिपेत् ॥ आचामयेत्ततोदेवंदेवींचजगदंबिकाम् ॥ ९२ ॥ चित्पिंगलहनदहपचयुग्मंततःपरम् ॥ सर्वज्ञाज्ञापयस्वाहामंत्रोयंवह्निदीपने ॥ ९३ ॥ अग्निंप्रज्वलितंवेदजातवेदंहुताशनम् ॥ सुवर्णवर्णममलंसमिद्धंविश्वतोमुखम् ॥ ९४ ॥ मंत्रेणानेनतंवह्निंस्तुवीतपरमादरात् ॥ ततोन्यसेद्वह्निमंत्रंषडंगंदेशिकोत्तमः ॥ ९५ ॥ सहस्रार्चिःस्वस्तिपूर्णउत्तिष्ठपुरुषःस्मृतः ॥ धूमव्यापीसप्तजिह्वोधनुर्धरइतिक्रमात् ॥ ९६ ॥ जातियुक्ताःषडंगाःस्युःपूर्वस्थानेषुविन्यसेत् ॥ ध्यायेद्वह्निंहेमवर्णंत्रिनेत्रंपद्मसंस्थितम् ॥ ९७ ॥ इष्टशक्तिस्वस्तिकाभीधारकंमंगलंपरम् ॥ परिषिंचेत्ततःकुंडंमेखलोपरिमंत्रवित् ॥ ९८ ॥

शरेणास्त्रमंत्रेण ॥ तनुत्रेणहुमितिमंत्रेण ॥ ९० ॥ अर्चितंचंदनादिभिः पूजितंवह्निंकुंडोपरित्रिस्त्रिवारंपरिभ्रामयित्वाजानुभ्यांस्पृष्टमहीतलःसन्तारमंत्रमुच्चरन्सन्शिवबीजधियाशिवबीर्याधियादेव्यायोनौवह्निंविनिक्षिपेदित्यन्वयः ॥ ९१ ॥ ततोदेवायदेव्यैचाचमनंदद्यादित्याह । आचामयेदिति ॥ ९२ ॥ हनदहपचयुग्ममिति ॥ हनहनदहदहपचपचेत्येवंरूपामित्यर्थः ॥ वह्निदीपनेइति ॥ अनेनमंत्रेणवह्निंप्रज्वालयेदित्यर्थः ॥ ९३ ॥ अग्न्युपस्थानमंत्रमाह । अग्निंप्रज्वलितमिति ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ जातियुक्ताःनमःस्वाहावषट्हुंवौषट्फट्पदैर्युक्ताइत्यर्थः ॥ ओंसहस्रार्चिषेहृदयायनमः ॥ स्वस्तिपूर्णायशिरसेस्वाहेत्यादयःषडंगमंत्राऊह्याइत्यर्थः ॥ पूर्वस्थानेषुहृदयादिषु ॥ ९७ ॥ इष्टंवरमुद्रा ॥ अभीरभयमुद्रा ॥ ९८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



त्रिकोणवृत्तेति ॥ त्रिकोणोपरिषट्कोणंततोवृत्तंततोऽष्टपत्रंततोभूपुरमित्येवंरीत्याऽग्निस्थापनात्पूर्वमेवयंत्रंलिखेदधुनैववाभावयेत् ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मूर्तीराह ॥ जातव दाइति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ताराग्नयेइति ॥ ओंअग्नयेजातवेदसेनमइत्यादिप्रयोगऊह्यः ॥ ६ ॥ वह्निपूजानंतरंकृत्यमाह । ततःस्रुक्स्रुवसंस्काराविति ॥ तेचसंस्काराःशारदातिलकादिनिबंधे षुस्पष्टाएवसंतीतिततएवावधार्याः ॥ पुराणेतेषामुपयोगाभावाद्गौरवाच्चनात्रलिख्यंते ॥ होमंततःकुर्यादिति ॥ ततःस्रुक्स्रुवसंस्कारानंतरंवक्ष्यमाणरीत्याहोमंकुर्यादित्यन्वयः ॥ ७ ॥ दक्षिणभागादिति ॥ आज्यस्थाल्यांदक्षिणवामभागकल्पनांकृत्वादक्षिणभागात्स्रुवेणाज्यमादायअग्नयेस्वाहाइतिमंत्रेणाग्नेर्दक्षिणलोचनेजुहुयात्तथैववामभागादादायसोमायस्वाहेतिवामलो

दर्भैःपरिस्तरेत्पश्चात्परिधीन्विन्यसेदथ ॥ त्रिकोणवृत्तषट्कोणंसाष्टपत्रंसभूपुरम् ॥ ९९ ॥ यंत्रंविभावयेद्वह्नेःपूर्ववासंलिखेदथ ॥ तन्मध्येपूजयेद्वह्निंमंत्रेणानेनवैमुने ॥ १०० ॥ वैश्वानरततोजातवेदःपश्चादिहावह ॥ लोहिताक्षपदंप्रोक्त्वासर्वकर्माणिसाधय ॥ १ ॥ वह्निजायांतकोमंत्रस्तेनवह्निंतुपूजयेत् ॥ मध्येषट्स्वपिकोणेषुहिरण्यागगनातथा ॥ २ ॥ रक्ताकृष्णासुप्रभाचबहुरूपातिरक्तिका ॥ पूजयेत्सप्तजिह्वास्ताःकेसरेष्वंगपूजनम् ॥ ३ ॥ दलेषुपूजयेन्मूर्तीःशक्तिस्वस्तिकधारिणीः ॥ जातवेदाःसप्तजिह्वोहव्यवाहनएवच ॥ ४ ॥ अश्वोदरजसंज्ञोन्यःपुनर्वैश्वानराह्वयः ॥ कौमारतेजाःस्याद्विश्वमुखोदेवमुखःस्मृतः ॥ ५ ॥ ताराग्नयेपदाद्याःस्युर्नत्यंतावह्निमूर्तयः ॥ लोकपालांश्चतुर्दिक्षुवज्राद्यायुधसंयुतान् ॥ ६ ॥ नारायणउवाच ॥ ततःस्रुक्स्रुवसंस्कारावाज्यसंस्कारएवच ॥ कृत्वाहोमंततःकुर्यात्स्रुवेणादायवैघृतत् ॥ ७ ॥ दक्षिणाद्घृतभागात्तुवह्नेर्दक्षिणलोचने ॥ जुहुयादग्नयेस्वाहेत्येवंवैवामतोऽन्यतः ॥ ८ ॥ सोमायस्वाहेतिमध्यात्तुघृतमादायसत्तम ॥ अग्नीषोमाभ्यांस्वाहेतिमध्यनेत्रेहुनेत्ततः ॥ ९ ॥ पुनर्दक्षिणभागात्तुघृतमादायवैमुखे ॥ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहेत्यनेनैवहुनेत्ततः ॥ १० ॥ सताराभिर्व्याहृतिभिर्जुहुयादथसाधकः ॥ जुहुयादग्निमंत्रेणत्रिवारंतुततःपरम् ॥ ११ ॥ ततस्तुप्रणवेनैवाऽप्यष्टावष्टौघृताहुतीः ॥ गर्भाधानादिसंस्कारकृतेतुजुहुयान्मुने ॥ १२ ॥ गर्भाधानंपुंसवनंसीमंतोन्नयनंततः ॥ जातकर्मनामकर्माप्युपनिष्क्रमणंतथा ॥ १३ ॥ अन्नाशनंतथाचूडाव्रतबंधस्तथैवच ॥ माहानाम्न्यंव्रतंपश्चात्तथौपनिषदंव्रतम् ॥ १४ ॥ गोदानोद्वाहकौप्रोक्ताःसंस्काराःश्रुतिचोदिताः ॥ ततःशिवंपार्वतींचपूजयित्वाविसर्जयेत् ॥ १५ ॥ जुहुयात्पंचसमिधोवह्निमुद्दिश्यसाधकः ॥ पश्चादावरणानांचाप्येकैकामाहुतिंहुनेत् ॥ १६ ॥ घृतंस्रुचिसमादायचतुर्वारंस्रुवेणच ॥ पिधायतांतुतेनैवमुनेतिष्ठन्निजासने ॥ १७ ॥ वौषडंतेनमनुनावह्नेस्तुजुहुयात्ततः ॥ महागणेशमंत्रेणजुहुयादाहुतीर्दश ॥ १८ ॥

चनेमध्यभागादादायाग्नीषोमाभ्यांस्वाहेतितृतीयलोचनेजुहुयादित्यर्थः ॥८॥९॥१०॥ सताराभिरिति ॥ ओंभूःस्वाहाओंभुवःस्वाहेत्येवंरीत्या ॥ अग्निमंत्रेणपूर्वोक्तेन ॥ ११ ॥ संस्कारकृते संस्कारार्थमष्टावष्टावाहुतीर्जुहुयादित्यर्थः ॥१२॥ गर्भाधानादिसंस्कारान्गणयतिगर्भाधानमिति ॥१३॥१४॥ एतत्संस्काराणांस्वरूपंधर्मशास्त्रेस्पष्टम् ॥ शिवंपार्वतींचेति ॥ वह्नेःपितृभूतौ देवावित्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥१७॥ वह्नेर्मनुनापूर्वोक्तेन॥महागणेशमंत्रेणेति ॥ ओंओंस्वाहा १ ओंश्रींस्वाहा २ ओंश्रींह्रींस्वाहा ३ ओंश्रींह्रींक्लींस्वाहा ४ ओंश्रींह्रींक्लींग्लौंस्वाहा ५ ओंश्रींह्रींक्लींग्लौंगंस्वाहा ६ ओंश्रींह्रींक्लींग्लौंगंगणपतयेइत्यंतंसप्तमः ७ वरवरदइत्यंतोऽष्टमः ८ सर्वजनंमेवशमित्यंतोनवमः ९ आनयस्वाहेत्यंतोदशमः १० इतिदशाहुतीर्जुहुयादित्यर्थः ॥ १८ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

वह्नौपीठमिति ॥ देयमंत्रदेवतायाःपीठंतत्तत्कल्पोक्तंवह्नौपूजयेदित्यर्थः ॥ तद्वक्रेदेवतायावक्रे ॥ १९ ॥ वक्रैकीकरणायचेति ॥ वह्निदेवतयोरेकवक्रतासंपादनार्थमित्यर्थः ॥ १२० ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ एकैकक्रमयोगेनेति ॥ एकांदेवतामुद्दिश्यैकामाहुतिंजुहुयादित्यर्थः ॥ २३ ॥ गजांतकसहस्रकम् अष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ तच्चैतन्यमिति ॥ शिष्यचैतन्यंनिजात्मनिप्रविष्टमितिभावयेदित्यर्थः ॥ अध्वनांवक्ष्यमाणानाम् ॥ २९ ॥ १३० ॥ षडध्वशोधनंकर्तव्यमित्युक्तंतत्रकेतेषडध्वानःकुत्रसंतीतिसर्वमाह । तनौध्यायेदिति ॥

वह्नौपीठंसमभ्यर्च्यदेयमंत्रस्यदेवताम् ॥ वह्नौध्यात्वातुतद्वक्रेपंचविंशतिसंख्यया ॥ १९ ॥ मूलमंत्रेणजुहुयाद्वक्रैकीकरणायच ॥ वह्निदेवतयोरैक्यंभावयन्नात्मनासह ॥ १२० ॥ एकीभूतंभावयेत्तुततस्तुसाधकोत्तमः ॥ षडंगंदेवतानांचजुहुयादाहुतीःपृथक् ॥ २१ ॥ एकादशैवजुहुयादाहुतीर्मुनिसत्तम ॥ एतेननाडीसंधानंवह्निदेवतयोर्मुने ॥ २२ ॥ एकैकक्रमयोगेनाप्यावृत्तीनांतथैवच ॥ एकैकक्रमयोगेनघृतेनजुहुयान्मुने ॥ २३ ॥ ततःकल्पोक्तद्रव्यैस्तुजुहुयादथवातिलैः ॥ देवतामूलमंत्रेणगजांतकसहस्रकम् ॥ २४ ॥ एवंहुत्वाततोदेवींसंतुष्टांभावयेन्मुने ॥ तथैवाऽऽवृतिदेवीश्चवह्न्याद्यादेवताअपि ॥ २५ ॥ ततःशिष्यंचसुस्नातंकृतसंध्यादिकक्रियम् ॥ वस्त्रद्वययुतंस्वर्णाभरणेनसमन्वितम् ॥ २६ ॥ कमंडलुकरंशुद्धंकुंडस्यांतिकमानयेत् ॥ नमस्कृत्यततःशिष्योगुरूनथसभासदः ॥ २७ ॥ कुलदेवंनमस्कृत्यविशेत्तत्राऽथविष्टरे ॥ गुरुस्ततस्तुतंशिष्यंकृपादृष्ट्याविलोकयेत् ॥ २८ ॥ तच्चैतन्यंनिजेदेहेभावयेत्संगतंत्विति ॥ ततःशिष्यतनुस्थानामध्वनांपरिशोधनम् ॥ २९ ॥ कुर्यात्तुहोमतोविद्वान्दिव्यदृष्ट्यवलोकनात् ॥ येनजायेतशुद्धात्मायोग्योदेवाद्यनुग्रहे ॥ १३० ॥ नारायणउवाच ॥ तनौध्यायेत्तुशिष्यस्यषडध्वनःक्रमेणतु ॥ पादयोस्तुकलाध्वानमंधौतत्त्वाध्वकंपुनः ॥ ३१ ॥ नाभौतुभुवनाध्वानंवर्णाध्वानंतथाहृदि ॥ पदाध्वानंतथाभालेमंत्राध्वानंतुमूर्धनि ॥ ३२ ॥ शिष्यंस्पृशंस्तुकूर्चेनतिलैराज्यपरिप्लुतैः ॥ शोधयाम्यमुमध्वानंस्वाहेतिमनुमुच्चरन् ॥ ३३ ॥ ताराद्यंजुहुयादष्टवारंप्रत्यध्वमेवहि ॥ षडध्वनस्ततस्तांस्तुलीनान्ब्रह्मणिभावयेत् ॥ ३४ ॥ पुनरुत्पादयेत्तस्मात्सृष्टिमार्गेणवैगुरुः ॥ आत्मस्थितंतच्चैतन्यंपुनःशिष्येतुयोजयेत् ॥ ३५ ॥ पूर्णाहुतिंततोहुत्वादेवतांकलशेनयेत् ॥ पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वावह्नेरंगाहुतीस्तथा ॥ ३६ ॥ एकैकशोगुरुर्दत्वाविसृजेद्वह्निमात्मनि ॥ ततःशिष्यस्यनेत्रेतुबध्नीयाद्वाससागुरुः ॥ ३७ ॥ नेत्रमंत्रेणतंशिष्यंकुंडतोमंडलंनयेत् ॥ पुष्पांजलिंमुख्यदेव्यांकारयेच्छिष्यहस्ततः ॥ ३८ ॥ नेत्रबंधंनिराकृत्यवेशयेत्कुशविष्टरे ॥ भूतशुद्धिंशिष्यदेहेकुर्यात्प्रोक्तेनवर्त्मना ॥ ३९ ॥ मंत्रोदितांस्तथान्यासान्कृत्वाशिष्यतनौततः ॥ मंडलेवेशयेच्छिष्यमन्यस्मिन्कुंभसंस्थितान् १४० ॥

अंधौलिंगेतत्त्वाध्वानंन्यसेदित्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ओंअस्यशिष्यस्यकलाध्वानंशोधयामिस्वाहेतिमंत्रेणाष्टवारंतंकलाध्वानंपादयोःस्थितंकूर्चेनवामहस्तेनस्पृशञ्जुहुयादेवंप्रत्यध्वमितराध्वसुकुर्यादित्यर्थः ॥ ३४ ॥ तस्माद्ब्रह्मणःआत्मस्थितमिति ॥ पूर्वंयत्स्वस्मिन्योजितंतदित्यर्थः ॥ ३५ ॥ देवतामिति ॥ होमार्थमग्नावावाहितांदेवतांकलशेनयेत्कलशेगतामितिभावयेद्विसर्जनमंत्रेणेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ नेत्रमंत्रेणवौषणमंत्रेणनेत्रबंधंकृत्वातंशिष्यंकुंडस्थलान्मंडलंकलशंप्रतिनयेदित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ मंत्रोदितान्देयमंत्रोदितान् ॥ १४० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥४१॥ वर्धनीयापूर्वमीशान्यांस्थापितातस्यांस्थितैर्जलैरभिषेकंकुर्यादित्यर्थः ॥ ४२ ॥४३॥ तयोःशिष्यदेवतयोरैक्यंभावयन्देवताबुद्ध्याशिष्यंपूजयेदित्यर्थः ॥४४॥ स्वहस्तंदक्षिणहस्तं शिष्यशिरसिअमृतमयंस्थापयेदित्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥४७॥ ४८ ॥ इतितेकथितइतिनारायणोनारदंप्रत्युपसंहारंकरोति ॥ ४९ ॥५० ॥ ५१ ॥ तत्तदुक्तेति ॥ वैदिकरीत्यास्वस्वगृह्योक्तरीत्यादीक्षितोवैदिकान्प्रयोगान्कुर्यात्कुंडमंडपादिपुरःसरतंत्रोक्तप्रकारेणदीक्षावांस्तांत्रिकान्प्रयोगान्कुर्यादित्यर्थः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ व्यासोजनमेजयंप्रतिनारायणनारदसंवादकथामुपसंहरति । व्यासउवाच इतिराजन्निति ॥ दध्यौनारायणइत्यर्थः ॥ ५४ ॥ १५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ अर्धाधिकैकनवतिश्लोकैरथसुविस्तृता ॥

पल्लवाञ्छिष्यशिरसिविन्यसेन्मातृकांजपेत् ॥ कलशस्थजलैःशिष्यंस्नापयेद्देवतात्मकैः ॥ ४१ ॥ वर्धनीजलसेकंचकुर्याद्रक्षार्थमंजसा ॥ ततःशिष्यःसमुत्थायवाससीपरिधायच ॥४२॥ कृतभस्मावलेपश्चसंविशेद्गुरुसन्निधौ ॥ ततोगुरुःस्वकीयात्तुहृदयान्निर्गतांशिवाम् ॥ ४३ ॥ प्रविष्टांशिष्यहृदयेभावयेत्करुणानिधिः ॥ पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैरैक्यंवैभावयंस्तयोः ॥४४॥ततस्त्रिशोदक्षकर्णेशिष्यस्योपदिशेद्गुरुः ॥ महामंत्रंमहादेव्याःस्वहस्तंशिरसिन्यसन् ॥४५॥ अष्टोत्तरशतंमंत्रंशिष्योपिप्रजपेन्मुने ॥ दंडवत्प्रणमेद्भूमौतंगुरुंदेवतात्मकम् ॥४६॥ सर्वस्वमर्पयेत्तस्मैयावज्जीवमनन्यधीः ॥ ऋत्विग्भ्योदक्षिणांदत्वाब्राह्मणांश्चापिभोजयेत् ॥४७॥ सुवासिनीःकुमारीश्चबटुकांश्चैवसर्वशः ॥ दीनानाथान्दरिद्रांश्चवित्तशाठ्यविवर्जितः ॥४८ ॥ कृतार्थतांस्वस्यबुद्ध्वानित्यमाराधयेन्मनुम् ॥ इतितेकथितःसम्यग्दीक्षाविधिरनुत्तमः ॥४९॥ विमृश्यैतदशेषेणभजदेवीपदांबुजम् ॥ नान्यस्तुपरमोधर्मोब्राह्मणस्याऽत्रविद्यते ॥१५०॥ वैदिकःस्वस्वगृह्योक्तक्रमेणोपदिशेन्मनुम् ॥ तांत्रिकस्तंत्ररीत्यातुस्थितिरेषासनातनी ॥५१॥ तत्तदुक्तप्रयोगांस्तेतेतेकुर्युर्नचान्यथा ॥ नारायणउवाच ॥ इतिसर्वमयाख्यातंयत्पृष्टंनारदत्वया ॥५२॥ अतःपरंपरांबायाभजनित्यंपदांबुजम् ॥ नित्यमाराध्यतच्चाहंनिर्वृतिंपरमांगतः ॥५३ ॥ व्यासउवाच ॥ इतिराजन्नारदायप्रोक्त्वासर्वमनुत्तमम् ॥ समाधिमीलिताक्षस्तुदध्यौदेवीपदांबुजम् ॥५४॥ नारायणस्तुभगवान्मुनिवर्यशिखामणिः ॥ नारदोपिततोनत्वागुरुंनारायणंपरम् ॥ जगामसद्यस्तपसेदेवीदर्शनलालसः ॥ १५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥७॥ जनमेजयउवाच ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञसर्वशास्त्रवतांवर ॥ द्विजातीनांतुसर्वेषांशक्त्युपास्तिःश्रुतीरिता ॥ १ ॥

केनोपनिषदुद्दिष्टाकथाप्रस्तूयतेऽधुना ॥ १ ॥ इत्थमेतावत्पर्यंतंसर्वदेवर्षिमानवानांश्रीदेव्याराधकत्वमुक्तंश्रुत्वाजगतिश्रीदेव्याउपासनांनित्यांविहायविष्णुशिवगणेशादिदेवतोपासकाञ्जनानालक्ष्यविस्मितोराजापृच्छति । जनमेजयउवाच भगवन्सर्वधर्मज्ञेति ॥ द्विजातीनामिति ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशांशक्त्युपास्तिःश्रीगायत्र्युपास्तिर्नित्याश्रुतिभिर्वेदचतुष्टयैरीरिताकथितेत्यर्थः॥ तथाचश्रुतिः ॥ अहरहःसंध्यामुपासीतेति ॥ तदकरणेप्रत्यवायःप्रायश्चित्तंचश्रुत्योक्तम् नैवंशिवविष्णूपासनायानित्यत्वप्रतिपादिकाश्रुतिरस्ति ॥ तस्माद्गायत्र्युपासनैवनित्येतिभावः ॥१॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कस्मिन्कालेतदाह । संध्याकालत्रयेति ॥ त्रिसंध्यंद्विजैर्नित्यंश्रीगायत्र्युपासनाकर्तव्या तदतिक्रमेश्रुतिस्मृत्यादिषुप्रायश्चित्तकथनात् ॥ यदाप्रथमतःश्रुत्यागायत्रीष्टदेवताद्विजानामुदिता धर्मकामार्थमोक्षदातदातांस्वेष्टदेवतांपराशक्तिंसंध्याकालातिरिक्तेऽन्यस्मिन्कालेनिरंतरंस्मरेदिदमपिश्रुत्यैवोक्तम् ॥ स्वेष्टदेवतास्मरणंविहायान्यदेवतास्मरणेप्रयोजनाभावात्॥तथाचश्रुतिः । योवैस्वांदेवतामतियजतेसस्वायैदेवतायैच्यवतेनपरांप्राप्नोतिपापीयान्भवतीति ॥ तथाचतादृशीमिष्टदेवतांपराशक्तिंविहायतांस्वीकृत्यवातदभिमानंविहायकस्मात्प्रयोजनादन्यदेवताउपा स्यत्वेनगृह्णीयुः ॥ नकिंचित्प्रयोजनमस्तीत्यर्थः ॥ श्रीगायत्र्याःसर्वार्थदातृत्वंचश्रुत्यैवाभिहितम् ॥ तथाचगोपथब्राह्मणेगायत्र्युपनिषदि ॥ ब्रह्महेदंश्रियंप्रतिष्ठामायतनमैक्षततत्तपस्वय दितद्व्रतेध्रियेततत्सत्येप्रत्यतिष्ठत् ॥ ससवितासावित्र्याब्राह्मणंसृष्ट्वातत्सावित्रींपर्यदधादित्यादि ॥ योहवाएवंवित्सब्रह्मवित्पुण्यांचकीर्तिंलभतेसुरभींश्चगंधान्सोपहतपाप्मानंतांश्रियमश्नुते यएवंवेद यश्चैवंविद्वानेवमेतांवेदानांमातरंसावित्रींसंपदमुपनिषदमुपास्तेइति ॥ तथासामविधिब्राह्मणे ॥ अथगायत्र्यंगानिव्याख्यास्यामः ॥ शिरोब्रह्मालललाटंद्यौश्चंद्रादित्यौचक्षुषीमुखम ग्निर्जिह्वासरस्वतीत्वष्टाग्रीवावसवश्चरुद्राश्चबाहूउरोवायुःपृष्ठमिंद्रोविष्णुर्नाभिःप्रजापतिर्जघनमूरूमरुतोवेदाःपादौस्मितंविद्युच्छ्वसितंवायुरस्थीनिपर्वताःसमुद्रावासांसिनक्षत्राण्यलंकारोयएवंवेद दुःष्टुतात्दुरुपयुक्तान्न्यूनाधिकाच्चसर्वस्मात्स्वस्तिदेवऋषिभ्यश्चब्रह्मसत्यंचपातुमांब्रह्मसत्यंचपातुमामिति ॥ तथाबृहदारण्यकोपनिषदि ॥ साहैषागयांस्तत्रेप्राणावैगयास्तत्प्राणांस्तत्रेतद्यद्ग यांस्तत्रेतस्माद्गायत्रीनामेति ॥ एवमेवचतुर्षुवेदेषुविद्यमानाःश्रुतयउदाहार्याः ॥ ननुविष्णुशिवगणपतिप्रभृतेदेवतानामपिपुराणागमादिषुगायत्रीप्रतिपाद्यत्वंप्रतिपादितम् ॥ तथाचमैत्रा यणीयश्रुतिः ॥ योहवाअमुष्मिन्नादित्येनिहितस्तारकोक्षिणिवैषभर्गाख्योभाभिर्गतिरस्यहीतिभर्गोभर्जयतीतिवैषभर्गइतिरुद्रइति ॥ अनयाचश्रुत्याशिवस्यगायत्रीप्रतिपाद्यत्वमुक्तम् ॥ तथाग्निपुराणेतंत्रेषुचनारायणस्यगायत्रीप्रतिपाद्यत्वंप्रतिपादितम् ॥ तथाचगायत्रीमंत्रस्यपराप्रकृतिरेवदेवतेतिनियमोनसिद्धइतिचेन्न ॥ गायत्रीमंत्रस्यांतर्यामिप्रतिपादकत्वेनांतर्यामिण

**संध्याकालत्रयेऽन्यस्मिन्कालेनित्यतयाविभो ॥ तांविहायद्विजाःकस्माद्गृह्णीयुश्चान्यदेवताः ॥ २ ॥**

श्चसर्वपदार्थजातांतर्यामित्वेनगायत्रीमंत्रस्यतद्देवताप्रतिपादकत्वकथनेपिमुख्यगायत्र्युपास्तौचतुर्षुवेदेषुस्त्रीत्वविशिष्टदेवतायाएव ॥ आयातुवरदादेवीअक्षरंब्रह्मसंमितम् ॥ गायत्रींछंदसां मातेइदंब्रह्मजुषस्वमे इत्यावाहनमंत्रे ॥ उत्तमेशिखरेजातेभूम्यांपर्वतमूर्धनि ॥ ब्राह्मणेभ्योभ्यनुज्ञातागच्छदेवियथासुखमितिविसर्जनमंत्रे ॥ तथाध्यानमंत्रेपि बालांबालादित्यमंडलमध्य स्थामित्यादिनाध्येयत्वेनस्त्रीत्वविशिष्टदेवतायाएवकथनात्पराचिच्छक्तिरेवगायत्रीमंत्रप्रतिपाद्येतिनियमात् ॥ अत्यल्पमिदमुच्यते ॥ शिवविष्णुगणेशानामेवगायत्रीप्रतिपाद्यत्वमितिगा यत्र्याब्रह्मप्रतिपादकत्वेनब्रह्मणश्चसर्वात्मकत्वेनसर्वपदार्थजातस्यैवगायत्रीप्रतिपाद्यत्वसंभवात् ॥ तथापिवेदेषूपासनासमयेयद्रूपंध्येयत्वेनोक्तंतदेवोपास्यमस्माकंद्विजानाम् ॥ तच्चस्त्रीत्वावि शिष्टमेववेदेषूक्तमिति ॥ तदेवपराशक्तिरूपमेवाऽऽस्माकमुपास्यंनाविष्ण्वादिरूपम् ॥ ननुवेदेपिगायत्र्यागायत्रीच्छंदोविश्वामित्रऋषिःसवितादेवताअग्निर्मुखंब्रह्माशिरोविष्णुर्हृदयंरुद्रःशिखाइ त्यनेनसवितृरूपमेवदेवतात्वेनोक्तमितिचेन्न ॥ नात्रसवितृशब्देनसूर्यमंडलाधिष्ठाताकश्चित्पुरुषोविवक्षितः ॥ किंतु तदंतर्गतोजगत्प्रसवकर्तापरमात्माविवक्षितस्तस्यचस्त्रीरूपत्वेनैवतस्मि न्नेवमंत्रेध्येयत्वोक्त्याविरोधाभावात् ॥ अन्यथागायत्रीमंत्रेणसवितुःसंबंधिवरेण्यंश्रेष्ठमंतर्यामिरूपंध्येयत्वेनस्वमुखेनसाक्षात्प्रतिपादितम् ॥ ब्राह्मणमंत्रेणतुसवितेवध्येयत्वेनोक्तइतिमहान्वि रोधःस्यात् ॥ अतएवमैत्रायणीयब्राह्मणेषष्ठप्रपाठकेपिसवितृमंडलाधिष्ठितपुरुषांतर्गतपरमात्मरूपमेवगायत्रीमंत्रप्रतिपाद्यत्वेनोक्तम्॥तथाचश्रुतिःमैत्रायणीयब्राह्मणे॥अथभर्गोदेवस्यधीमही तिसावितावैदेवस्ततोयोस्यभर्गाख्यस्तच्चिंतयामीत्याहुर्ब्रह्मवादिनइति॥अनेनचसवितुर्देवस्यसूर्यस्यसंबंधियदंतर्यामिभर्गाख्यंतेजस्तद्धीमहीत्यन्वयउक्तः ॥ अतएवपुराणांतरेपिसंध्येतिसूर्यगं ब्रह्मसंधानादविभागतइत्युक्तम्॥सूर्येणाविभागतःसंधानाद्वर्तनात्संध्योपास्तिंकरिष्येइत्यादौसंध्याशब्देनसूर्यगंब्रह्मोच्यतइतितदर्थः ॥ अस्तुवासूर्योदेवतातथापितस्यध्यानंस्त्रीलिंगविशिष्टमे

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





वकर्तव्यमितितस्मिन्नेवमंत्रेऽभिहितम् ॥ तथाचसमंत्रःसवितादेवताग्निर्मुखंब्रह्माशिरोविष्णुर्हृदयंरुद्रःशिखापृथिवीयोनिःप्राणापानव्यानोदानसमानासप्राणाश्वेतवर्णासांख्यायनसगोत्रागायत्रीचतुर्विंशत्यक्षरात्रिपदाषट्कुक्षिःपंचशीर्षोपनयनेविनियोगइति ॥ तथाचस्त्रीलिंगविशिष्टासूर्यरूपापराशक्तिरेवोपास्येतिसिध्यति ॥ किंचशिवविष्ण्वादीनांगायत्रीदेवतात्वेगायत्रीदेवतायाअंगेषुब्रह्माशिरोविष्णुर्हृदयंरुद्रःशिखेतिमंत्रेणशिवादीनांविन्यासोपवर्णनंसर्वथानसंगच्छते ॥तस्मात्स्त्रीत्वविशिष्टापराशक्तिर्गायत्रीदैवतैवगायत्रीमंत्रेणसर्वद्विजातिभिर्नित्यतयोपास्येतितांस्वेष्टदेवतांविहायाकिमित्यन्यदेवतांगृह्णंतीतियुक्तएवप्रश्नः॥२॥नन्वन्यदेवतोपासकाःकेसंतितान्दर्शयति।दृश्यंतेइति॥वयंवैष्णवाइतिकेचिद्वदंति॥परेवयंगाणपत्याइतिवदंति॥ केचित्तुकापालिकावयमितिवदंति॥चीनमार्गरताश्चीनदेशीयमार्गरताः॥३॥आदिनाशैवतंत्रानुयायिनः ॥ दृश्यंतइतिइमेवेदश्रद्धाविवर्जितागायत्र्युपास्तिनिष्ठारहिताश्चबहवोदृश्यंतेइत्यर्थः॥४॥नकेवलंमूढास्तन्मतेप्रवृत्ताः किंतुबुद्धिमंतोपीत्याह । बुद्धिमंतइति ॥५॥ स्वकल्याणंवेदादेवजायमानंनहिकश्चित्स्वबुद्ध्याऽन्यमतमवलंब्यवेदमार्गंहातुंत्यक्तुमर्हेच्छति ॥ नकोपीत्यर्थः ॥६॥ तथा

दृश्यंतेवैष्णवाःकेचिद्गाणपत्यास्तथापरे ॥ कापालिकाश्चीनमार्गरतावल्कलधारिणः॥३॥दिगंबरास्तथाबौद्धाश्चार्वाकाएवमादयः ॥ दृश्यंतेबहवोलोकेवेदश्रद्धाविवर्जिताः ॥४॥ किमत्रकारणंब्रह्मंस्तद्भवान्वक्तुमर्हति ॥ बुद्धिमंतःपंडिताश्चनानातर्कविचक्षणाः ॥५॥ अपिसंत्येववेदेषुश्रद्धयातुविवर्जिताः ॥ नहिकश्चित्स्वकल्याणंबुद्ध्याहातुमिहेच्छति॥६॥किमत्रकारणंतस्माद्वदवेदविदांवर ॥ मणिद्वीपस्यमहिमावर्णितोभवतापुरा ॥ ७ ॥ कीदृक्तदस्तियद्देव्याःपरंस्थानंमहत्तरम् ॥ तच्चापिवदभक्तायश्रद्दधानायमेऽनघ ॥८॥ प्रसन्नास्तुवदंत्येवगुरवोगुह्यमप्युत ॥ सूतउवाच ॥ इतिराज्ञोवचःश्रुत्वाभगवान्बादरायणः ॥ ९ ॥ निजगादततःसर्वंक्रमेणैवमुनीश्वराः ॥ यच्छ्रुत्वातुद्विजातीनांवेदश्रद्धाविवर्धते ॥ १० ॥ व्यासउवाच ॥ सम्यक्पृष्टंत्वयाराजन्समयेसमयोचितम् ॥ बुद्धिमानसिवेदेषुश्रद्धावांश्चैवलक्ष्यसे ॥ ११ ॥ पूर्वंमदोद्धतादैत्यादेवैर्युद्धंतुचक्रिरे ॥ शतवर्षंमहाराजमहाविस्मयकारकम् ॥१२॥ नानाशस्त्रप्रहरणंनानामायाविचित्रितम् ॥ जगत्क्षयकरंनूनंतेषांयुद्धमभून्नृप ॥ १३ ॥ पराशक्तिकृपावेशाद्देवैर्दैत्याजितायुधि ॥ भुवंस्वर्गंपरित्यज्यगताःपातालवेश्मनि ॥१४॥ ततःप्रहर्षितादेवाःस्वपराक्रमवर्णनम् ॥ चक्रुःपरस्परंमोहात्साभिमानाःसमंततः ॥१५॥ जयोऽस्माकंकुतोनस्यादस्माकंमहिमायतः ॥ सर्वोत्तरःकुत्रदैत्याःपामरानिष्पराक्रमाः ॥ १६ ॥ सृष्टिस्थितिक्षयकरावयंसर्वेयशस्विनः ॥ अस्मदग्रेपामराणांदैत्यानांचैवकाकथा ॥ १७ ॥

पितथाबहवोदृश्यंतेतस्मात्प्रबलंकिंचित्कारणंवेदत्यागेगायत्रीश्रद्धाभावेचवर्ततेतद्वदेत्याह । किमत्रकारणमिति ॥ किंचतृतीयस्कंधमारभ्यद्वादशस्कंधपर्यंतंमणिद्वीपस्यमहिमाबहुविधःश्रुतोस्तितत्स्थानंकीदृगस्तितदपिवदेत्याह । मणिद्वीपस्येति ॥७॥८॥९॥१०॥ जनमेजयवाक्यंश्रुत्वाव्यासउवाच।सम्यक्पृष्टमिति ॥११॥तत्रसत्ययुगेसर्वेद्विजागायत्रीरूपपराशक्तिनिष्णातावेदश्रद्धावंतश्चस्थिताः पश्चात्कारणवशात्तद्रहिताजाताइतिवदन्प्रथमतस्तत्प्रकारोपनिषदुक्तपराशक्तिमहिमानंकथयति । पूर्वंमदोद्धताइति ॥ १२ ॥ १३ ॥ पराशक्तिकृपावेशाद्देवैर्जितादैत्याभुवंस्वर्गंचपरित्यज्यपातालेगताइत्यन्वयः ॥ १४ ॥ स्वपराक्रमेति ॥ पराशक्तिप्रसादेनजयेलब्धेऽपितंप्रसादमुन्मादेनविस्मृत्यस्वपराक्रमवर्णनंचक्रुरित्यर्थः ॥१५॥ कथंचक्रुस्तदाह । जयोऽस्माकमिति ॥ १६ ॥ १७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

तथाचश्रुतिःतलवकारोपानिषादि ॥ ब्रह्महदेवेभ्योविजिग्येतेस्यहब्रह्मणोविजयदेवाअमहीयंततऐक्षंताऽस्माकमेवाऽयंविजयोस्माकमेवायंमहिमेति ॥ अनुग्रहंकर्तुंमहंकारेणाविमूढानुद्धर्तुमित्यर्थः ॥ अनेनचाप्रार्थिताऽपिदेवीनिजभक्तपरिपालनंकरोतीत्यहोभक्तवात्सल्यंश्रीभगवत्याइतिबोधितम् ॥ यतोदेवैरप्रार्थिताऽपितानुद्देधारेति ॥ १८ ॥ यक्षरूपेणेति ॥ यक्षंयजनीयं अतिपूज्यंतेजःपुंजरूपेणप्रादुरासीदित्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः तेद्वैषांविजज्ञौतेभ्योहप्रादुर्बभूवतन्नव्यजानंतकिमिदंयक्षमिति ॥ तेजोवर्णयति । कोटिसूर्येति ॥ १९ ॥ २० ॥ अहोकिमिदमपूर्वंयक्षंकिमिदमपूर्वंयक्षमितिप्राहुरित्यर्थः ॥ तैःकृताननेकांस्तर्कान्विशदयति । दैत्यानामिति ॥ २१ ॥ २२ ॥ प्रतिक्रियेति ॥ यद्ययंप्रबलःशत्रुस्तदापलायनंयदिसमबलस्तदायुद्धंयद्ययमीश्वरस्तदाभक्त्यातदनुसरणमेवंरूपाप्रतिक्रियेत्यर्थः ॥ २३ ॥ यतोऽसिमुखमुत्तमामिति ॥ अग्निर्वैदेवानामास्यमितिमुखादग्निरजायतेतिश्रुतेरित्यर्थः ॥ २४ ॥ यतस्त्वंमुखमस्माकंततस्त्वमेवमुखेभवत्वान्मुख्यस्ततस्त्वमेवैतद्विशिष्टंकार्यंकुरुष्वेत्याह । ततोगत्वेति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तेऽग्निमब्रुवन्जातवेदैतद्विजानीहिकिमेतद्यक्षमिति ॥ २५ ॥ वेगादिति ॥ तेनचवह्नेः

पराशक्तिप्रभावंतेनज्ञात्वामोहमागताः ॥ तेषामनुग्रहंकर्तुंतदैवजगदंबिका ॥ १८ ॥ प्रादुरासीत्कृपापूर्णायक्षरूपेणभूमिप ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशंचंद्रकोटिसुशीतलम् ॥ १९ ॥ विद्युत्कोटिसमानाभंहस्तपादादिवर्जितम् ॥ अदृष्टपूर्वंतद्दृष्ट्वातेजःपरमसुंदरम् ॥ २० ॥ सविस्मयास्तदाप्रोचुःकिमिदंकिमिदंत्विति ॥ दैत्यानांचेष्टितंकिंवामायाकाऽपिमहीयसी ॥ २१ ॥ केनचिन्निर्मितावाऽथदेवानांस्मयकारिणी ॥ संभूयतेतदासर्वेविचारंचक्रुरुत्तमम् ॥ २२ ॥ यक्षस्यनिकटेगत्वाप्रष्टव्यंकस्त्वमित्यपि ॥ बलाबलंततोज्ञात्वाकर्तव्यातुप्रतिक्रिया ॥ २३ ॥ ततोवह्निंसमाहूयप्रोवाचेंद्रःसुराधिपः ॥ गच्छवह्नेत्वमस्माकंयतोसिमुखमुत्तमम् ॥ २४ ॥ ततोगत्वातुजानीहिकिमिदंयक्षमित्यपि ॥ सहस्राक्षवचःश्रुत्वास्वपराक्रमगर्भितम् ॥ २५ ॥ वेगात्सनिर्गतोवह्निर्ययौयक्षस्यसंनिधौ ॥ तदाप्रोवाचयक्षस्तंत्वंकोऽसीतिहुताशनम् ॥ २६ ॥ वीर्यंचत्वयिकिंयत्तद्वदसर्वंममाग्रतः ॥ अग्निरस्मितथाजातवेदाअस्मीतिसोऽब्रवीत् ॥ २७ ॥ सर्वस्यदहनेशक्तिर्मयिविश्वस्यतिष्ठति ॥ तदायक्षंपरंतेजस्तदग्रेनिदधौतृणम् ॥ २८ ॥ दहैनंयदितेशक्तिर्विश्वस्यदहनेऽस्तिहि ॥ तदासर्वबलेनैवाऽकरोद्यत्नंहुताशनः ॥ २९ ॥ नशशाकतृणंदग्धुंलज्जितोऽगात्सुरान्प्रति ॥ पृष्टेदेवैस्तुवृत्तांतेसर्वंप्रोवाचहव्यभुक् ॥ ३० ॥ वृथाऽभिमानोह्यस्माकंसर्वेशत्वादिकेसुराः ॥ ततस्तुवृत्रहावायुंसमाहूयेदमब्रवीत् ॥ ३१ ॥ त्वयिप्रोतंजगत्सर्वंत्वच्चेष्टाभिस्तुचेष्टितम् ॥ त्वंप्राणरूपःसर्वेषांसर्वशक्तिविधारकः ॥ ३२ ॥

साहंकारत्वंबोधितम् ॥ यक्षस्यसन्निधौहुताशनेगतेसतितंहुताशनंतद्यक्षःकोऽसित्वामित्यपृच्छादित्याह । तदाप्रोवाचेति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तथेतितदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति ॥ २६ ॥ त्वयिकिंवीर्यमास्तितदपिवदेत्याह । वीर्यंचेति ॥ यक्षवाक्यंश्रुत्वायदग्निरवदत्तदाह । अग्निरस्मीति ॥ २७ ॥ स्ववीर्यमाह । सर्वस्येति ॥ सर्वविश्वदाहिकाशक्तिर्मयितिष्ठतीत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ अग्निर्वाअहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदावाअहमस्मीति ॥ तस्मिंस्त्वयिकिंवीर्यमित्यपीदंसर्वंदहेयंयदिदंपृथिव्यामितिसाभिमानाग्निवाक्यंश्रुत्वायद्येतादृशीशक्तिस्त्वयितिष्ठतितर्ह्येतत्तृणलेशंदग्ध्वादर्शयस्वशक्तिमितिवदद्यक्षंहुताशनस्याग्रेतृणंदधारेत्याह । तदग्रेनिदधौतृणमिति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ सर्वेशत्वादिकेताद्विषयेइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तस्मैतृणंनिदधावेतद्दहेतितदुपप्रेयायसर्वजवेनतन्नशशाकदग्धुंसततएवनिववृतेनैतदशकंविज्ञातुंयदेतद्यक्षमिति ॥ ३१ ॥ कार्योत्साहायवायुंस्तौति । त्वयिप्रोतमिति ॥ प्रोतंग्रथितम् ॥ तथाचश्रुतिः वायुर्वैगौतमतत्सूत्रंवायुनावैगौतमसूत्रेणसर्वाणिभूतानिसंदृब्धानीति ॥ ३२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ३३ ॥ ३४ ॥ यक्षंदृष्ट्वेति वायुंदृष्ट्वाकोऽसित्वंत्वयिचकाशक्तिरस्तीतिसर्वंममाग्रतोवदेतितद्यक्षंप्रोवाचेत्यन्वयः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ उद्योगमिति ॥ सवायुःसर्वशक्तियुतश्चालयितुंप्रवृत्तोऽपितत्तृणंस्वस्थानान्नचचालततोलज्जितःसन्वायुरपिजगामेत्यर्थः ॥ ४० ॥ गर्वनिर्वापोगर्वनाशः ॥ समर्थाःस्मवयंदेवाइतिशेषः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ अथवायुमब्रुवन्वायवेतद्विजानीहिकिमेतद्यक्षमिति ॥ तथेतितदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीतिवायुर्वाअहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वावाअहमस्मीतितस्मिंस्त्वयिकिंवीर्यमित्यपीदंसर्वमाददीयंयदिदंपृथिव्यामितितस्मैतृणंनिदधावेतदादत्स्वेतितदुपप्रेयायसर्वजवेनतन्नशशाकादातुंसततएवनिववृतेनैतदशकंविज्ञातुंयदेतद्यक्षमिति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ प्राद्रवच्चेति ॥ नकेवलंसामान्यतइंद्रः

त्वमेवगत्वाजानीहिकिमिदंयक्षमित्यपि ॥ नाऽन्यःकोऽपिसमर्थोऽस्तिज्ञातुंयक्षंपरंमहः ॥ ३३ ॥ सहस्राक्षवचःश्रुत्वागुणगौरवगुंफितम् ॥ साभिमानोजगामाऽऽशुयत्रयक्षंविराजते ॥ ३४ ॥ यक्षंदृष्ट्वाततोवायुंप्रोवाचमृदुभाषया ॥ कोसित्वंत्वयिकाशक्तिर्वदसर्वंममाग्रतः ॥ ३५ ॥ ततोयक्षवचःश्रुत्वागर्वेणमरुदब्रवीत् ॥ मातरिश्वाऽहमस्मीतिवायुरस्मीतिचाब्रवीत् ॥ ३६ ॥ वीर्यंतुमयिसर्वस्यचालनेग्रहणेऽस्तिहि ॥ मच्चेष्टयाजगत्सर्वंसर्वव्यापारवद्भवेत् ॥ ३७ ॥ इतिश्रुत्वावायुवाणींनिजगादपरंमहः ॥ तृणमेतत्तवाऽग्रेयत्तच्चालययथेप्सितम् ॥ ३८ ॥ नोचेद्गर्वंविहायैनंलज्जितोगच्छवासवम् ॥ श्रुत्वायक्षवचोवायुःसर्वशक्तिसमन्वितः ॥ ३९ ॥ उद्योगमकरोत्तच्चस्वस्थानान्नचचालह ॥ लज्जितोऽगाद्देवपार्श्वंहित्वागर्वंसचानिलः ॥ ४० ॥ वृत्तांतमवदत्सर्वंगर्वनिर्वापकारणम् ॥ नैतज्ज्ञातुंसमर्थाःस्ममिथ्यागर्वाभिमानिनः ॥ ४१ ॥ अलौकिकंभातियक्षंतेजःपरमदारुणम् ॥ ततःसर्वेसुरगणाःसहस्राक्षंसमूचिरे ॥ ४२ ॥ देवराडसियस्मात्त्वंयक्षंजानीहितत्त्वतः ॥ ततइंद्रोमहागर्वात्तद्यक्षंसमुपाद्रवत् ॥ ४३ ॥ प्राद्रवच्चपरंतेजोयक्षरूपंपरात्परम् ॥ अंतर्धानंततःप्रापतद्यक्षंवासवाग्रतः ॥ ४४ ॥ अतीवलज्जितोजातोवासवोदेवराडपि ॥ यक्षसंभाषणाभावाल्लघुत्वंप्रापचेतसि ॥ ४५ ॥ अतःपरंनगंतव्यंमयातुसुरसंसदि ॥ किंमयातत्रवक्तव्यंस्वलघुत्वंसुरान्प्रति ॥ ४६ ॥ देहत्यागोवरस्तस्मान्मानोहिमहतांधनम् ॥ मानेनहीजीवितंतुमृतितुल्यंनसंशयः ॥ ४७ ॥ इतिनिश्चित्यतत्रैवगर्वंहित्वासुरेश्वरः ॥ चरित्रमीदृशंयस्यतमेवशरणंगतः ॥ ४८ ॥ तस्मिन्नेवक्षणेजाताव्योमवाणीनभस्तले ॥ मायाबीजंसहस्राक्षजपतेनसुखीभव ॥ ४९ ॥ ततोजजापपरमंमायाबीजंपरात्परम् ॥ लक्षवर्षंनिराहारोध्यानमीलितलोचनः ॥ ५० ॥

समुपाजगाम किंतु वेगेनप्राद्रवच्चेति ॥ ततस्तत्तेजोमयंयक्षरूपंमहोंऽतर्धानंप्रापेत्यर्थः ॥ ४४ ॥ अतीवलज्जितइति ॥ मदपेक्षयान्यूनावग्निवायूतयोरनेनयक्षेणसंभाषणमभूदहंतदपेक्षयाऽधिकःसन्नपिमयासहयक्षेणभाषणमपिनकृतमतोलज्जितइत्यर्थः ॥ ४५ ॥ तत्रगत्वामयास्वलघुत्वंवक्तव्यंकिमित्यन्वयः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ नायंकश्चिच्छत्रुःस्यात्तर्हियुद्धार्थंप्रवृत्तःस्यात्तथाऽयंनप्रवृत्तः ॥ किंत्वंतर्हितस्तस्मादयमीश्वरएवेतिनिश्चित्यतमेवशरणंगतइत्याह । इतिनिश्चित्येति ॥ ४८ ॥ मायाबीजंसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मवाचकंभुवनेश्वरीबीजमित्यर्थः ॥ तेनसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मरूपिणीमूलप्रकृतिर्भुवनेश्वरीयंप्रादुर्भूतातिरोभूताचेतिबोधितम् ॥ ४९ ॥ लक्षवर्षंनिराहारइत्यनेनश्रीमूलप्रकृतिदर्शनंनाल्पपुण्येनलभ्यते किंतुबहुपुण्येनेतिबोधितम् ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अकस्मादिति ॥ चैत्रशुक्लनवम्यांमध्याह्नेइत्यर्थः ॥ यस्मिन्नेवस्थलेतेजस्तिरोभूतंतस्मिन्नेवस्थलेतदेवतेजःपुनराविरासीदित्यर्थः ॥ ५१ ॥ तस्मिंस्तेजोमंडलेकुमारींकांचिद्विलक्षणांददर्श तांवर्णयति । तेजोमंडलमध्येत्विति ॥ ५२ ॥ पाशांकुशेष्टाभयमुद्रायुक्तहस्तचतुष्टयसहितातिरमणीयांभुवनेश्वरीमूर्तिंददर्शेतिसमुदायार्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ पद्मरागीकृतक्षमांदंत च्छटाभिर्दाडिमीबीजसदृशदंतपंक्तिदीधितिभिःपद्मरागमणिसन्निभकृतभूतलाम् ॥ ५६ ॥ हैमवतींहैमकल्पिताभरणवतीम् ॥ हिमवतोदुहितरंवेतिपार्वत्यभेदादियमुक्तिः ॥ तथाचश्रुतिः अथेंद्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहिकिमेतद्यक्षमिति ॥ तथेतितदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे ॥ सतस्मिन्नेवाकाशेस्त्रियमाजगामबहुशोभमानामुमां हैमवतींतांहोवाचकिमेतद्यक्षमिति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ जगदीशितुःश्रीभुवनेश्वर्याः ॥५९॥ उवाचेति ॥ इदंयक्षंकिमस्ति ॥ ६० ॥ कस्माच्चकारणात्प्रादुर्भूतंतत्सर्ववेदेत्यर्थः ॥६१॥ रूपंमदीयमिति ॥ इदंयद्यक्षंतन्मदीयंमुख्यंरूपम् इदमेवब्रह्म

अकस्माच्चैत्रमासीयनवम्यांमध्यगेरवौ ॥ तदेवाऽऽविरभूत्तेजस्तस्मिन्नेवस्थलेपुनः ॥५१॥ तेजोमंडलमध्येतुकुमारींनवयौवनाम् ॥ भास्वज्जपाप्रसूनाभां बालकोटिरविप्रभाम् ॥ ५२ ॥ बालशीतांशुमुकुटांवस्त्रांतर्व्याजितस्तनीम् ॥ चतुर्भिर्वरहस्तैस्तुवरपाशांकुशाभयान् ॥ ५३ ॥ दधानांरमणीयांगींकोम लांगलतांशिवाम् ॥ भक्तकल्पद्रुमामंबांनानाभूषणभूषिताम् ॥ ५४ ॥ त्रिनेत्रांमल्लिकामालाकबरीजूटशोभिताम् ॥ चतुर्दिक्षुचतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुता म् ॥५५॥ दंतच्छटाभिरभितःपद्मरागीकृतक्षमाम् ॥ प्रसन्नस्मेरवदनांकोटिकंदर्पसुन्दराम् ॥५६॥ रक्तांबरपरीधानांरक्तचंदनचर्चिताम् ॥ उमाभिधानां पुरतोदेवीं हैमवतींशिवाम् ॥५७॥ निर्व्याजकरुणामूर्तिंसर्वकारणकारणाम् ॥ ददर्शवासवस्तत्रप्रेमसद्गदितांतरः ॥५८॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयनोरोमांचिततनु स्ततः ॥ दंडवत्प्रणनामाथपादयोर्जगदीशितुः॥५९॥तुष्टावविविधैःस्तोत्रैर्भक्तिसन्नतकंधरः ॥ उवाचपरमप्रीतःकिमिदंयक्षमित्यपि ॥६०॥ प्रादुर्भूतंच कस्मात्तद्वदसर्वंसुशोभने ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाप्रोवाचकरुणार्णवा ॥ ६१॥ रूपंमदीयंब्रह्मैतत्सर्वकारणकारणम् ॥ मायाधिष्ठानभूतंतुसर्वसाक्षिनिरामय म्॥६२॥सर्वेवेदायत्पदमामनंतितपांसिसर्वाणिचयद्वदंति ॥ यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंतितत्तेपदंसंग्रहेणब्रवीमि ॥ ६३ ॥ ओमित्येकाक्षरंब्रह्मतदेवाहुश्चह्रीं मयम्॥द्वेबीजेममममंत्रौस्तोमुख्यत्वेनसुरोत्तम ॥ ६४ ॥ भागद्वयवतीयस्मात्सृजामिसकलंजगत् ॥ तत्रैकभागःसंप्रोक्तःसच्चिदानंदनामकः ॥ ६५ ॥

सर्वकारणंभवतीत्यर्थः ॥ तदेवब्रह्मस्वरूपंवर्णयतिमायाधिष्ठानेति ॥ साम्यावस्थमायाधिष्ठानमित्यर्थः ॥ तद्विशिष्टमितिफलितम् ॥ ६२ ॥ सर्वेवेदप्रतिपाद्यत्वंतस्याऽऽह । सर्वेवेदाइति॥ यत्पदंपद्यतेप्राप्यतेज्ञानिभिरितिपदंतदेतत्पदंब्रह्मसर्वेवेदाआमनंतिप्रतिपादयंति ॥ तथासर्वाणितपांसिचाऽस्माभिराचीर्णैरिदमेवप्राप्यमितिवदंति॥तथायदिच्छंतोब्राह्मणाब्रह्मचर्यंगुरुकुल वासमष्टविधमैथुनत्यागंचचरंत्याचरंति ॥ तदेतद्वस्तुतेतुभ्यंसंग्रहेणनाम्नाब्रवीमिकथयामि ॥ सर्वोपासनाकर्मफलभूतमिदमेवेत्यर्थः ॥ ६३ ॥ किंतन्नामेतिचेत्तदाह । ॐमित्येकाक्षरंब्रह्मे ति ॥ सर्ववेदेष्वोमितिपदेनयदुद्घोष्यतेतद्ब्रह्मेत्यर्थः ॥ तस्यैवह्रींकारमंत्रोऽपिवाचकइत्याह ॥ तदेवाहुश्चह्रींमयमिति ॥ आहुर्वेदाइत्यर्थः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ ओमितिब्रह्मोते ॥ तथाह्रीं ब्रह्मेतिचाथर्वणे ॥ नन्वेकस्यैववस्तुनोद्वेबीजेकिमितिवाचकेजातेतत्रकारणमाह । द्वेबीजेइति ॥ ६४ ॥ भागद्वयवतीति ॥ यतोऽहंमायाभागब्रह्मभागरूपभागद्वयवतीमायाशबलब्रह्मरू पिणीसर्वंजगत्सृजामितस्मात्कारणान्ममभागद्वयत्वाद्बीजद्वयंवाचकमित्यर्थः । कौतौभागौतत्राह । तत्रैकभागइति ॥ ६५ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



ननुतर्हिब्रह्मभागस्यवाचकःप्रणवोमायाभागस्यवाचकंमायाबीजमितिपर्यवसन्नंतथाचप्रणवोपासनायामुपास्येब्रह्मणिशक्तेर्भागोऽनंतर्भूतस्तथामायाबीजोपासनायांब्रह्मभागोऽनंतर्भूतइतिप्राप्त मितिचेत्तत्राऽऽह । साचमायेति ॥ ६६ ॥ ममाभिन्नत्वमागतेति ॥ नहिशक्तिःशक्तिमतःपृथगुपलभ्यते ॥ वह्न्यादिशक्तिषुवह्न्यादेःशक्तेःपृथगनुपलंभात् ॥ किंतु ममशक्तिमतोमाया शक्तिर्मदभिन्नैवातिष्ठति ॥ तथाचाग्निशक्तौहोमेऽग्नौहोमोऽर्थसिद्धोयथावाऽग्नौहोमेऽग्निशक्त्यांहोमोऽर्थसिद्धस्तथाब्रह्मभागवाचकस्यप्रणवस्यशक्तिविशिष्टब्रह्मवाचकत्वंमायाशक्तिभागवाचक स्यमायाबीजस्यमायाविशिष्टब्रह्मवाचकत्वंबीजद्वयस्यापिविशिष्टवाचकत्वमतएवह्रींब्रह्मेतिसामानाधिकरण्यंश्रुत्युक्तंसंगच्छतेइतिभावः ॥ ६७ ॥ ननुप्रलयेमायालयात्कथंत्वदभिन्नासेति चेत्तत्राऽऽह । प्रलयइति ॥ प्रलयेमायानाशेउत्तरसर्गानुपपत्तिप्रसंगान्मायानाशःप्रलयेनास्ति किंतु प्रलयेमदभिन्नैवसातिष्ठतीत्यर्थः ॥ ननुतर्हिप्रलयेपिमायासत्त्वेनिरंतरंकारणसत्त्वात्कार्यं जगत्सर्जनादिरूपंनिरंतरमेवस्यादितिचेत्तत्राह । प्राणिकर्मेति ॥ नकेवलंमायासहायंकर्मादिकंविहायजगत्करोति किंतु तदपेक्षयैवकरोति तथाचप्रलयेसर्वकर्मणांपरिपक्वानांफलस्यदत्तत्वेना परिपक्वानांचकर्मणांफलदानसमयाभावेनपरिपक्वकर्मरूपसहायाभावात्प्रलयोभवति ॥ तदनंतरमवशिष्टप्राणिकर्मणांपरिपाकेसतिसैवव्यक्तरूपामायापरिपक्वकर्मरूपसहायसहिताव्यक्ती भावमुपैतीतिनकारणसत्त्वेपिकार्यस्यजगत्सर्जनरूपस्यनिरंतरमुत्पत्तिरितिभावः ॥ ६८ ॥ ननुतर्हिमायायाःप्रलयेपिविद्यमानत्वे तमआसीत्तमसागूळ्हमग्रेइति श्रुतौमायायाःकथमुत्पत्ति

**मायाप्रकृतिसंज्ञस्तुद्वितीयोभागईरितः ॥ साचमायापराशक्तिःशक्तिमत्यहमीश्वरी ॥६६॥ चंद्रस्यचंद्रिकेवेयंममाभिन्नत्वमागता ॥ साम्यावस्थात्मिका चैषामायाममसुरोत्तम ॥ ६७ ॥ प्रलयेसर्वजगतोमदभिन्नैवतिष्ठति ॥ प्राणिकर्मपरीपाकवशतःपुनरेवहि ॥ ६८ ॥ रूपंतदेवमव्यक्तंव्यक्तीभावमुपैतिच॥ अंतर्मुखातुयाऽवस्थासामायेत्यभिधीयते ॥ ६९ ॥ बहिर्मुखातुयामायातमःशब्देनसोच्यते ॥ बहिर्मुखात्तमोरूपाज्जायतेसत्त्वसंभवः ॥ ७० ॥ रजो गुणस्तदेवस्यात्सर्गादौसुरसत्तम ॥ गुणत्रयात्मकाःप्रोक्ताब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ७१ ॥ रजोगुणाधिकोब्रह्माविष्णुःसत्त्वाधिकोभवेत् ॥ तमोगुणाधिको रुद्रःसर्वकारणरूपधृक् ॥ ७२ ॥ स्थूलदेहोभवेद्ब्रह्मालिंगदेहोहरिःस्मृतः ॥ रुद्रस्तुकारणोदेहस्तुरीयात्वहमेवहि ॥ ७३ ॥ साम्यावस्थातुयाप्रोक्तासर्वा तर्यामिरूपिणी ॥ अतऊर्ध्वंपरंब्रह्ममद्रूपंरूपवर्जितम् ॥ ७४ ॥**

रुक्तेतिचेत्तत्राऽऽह । अंतर्मुखात्विति ॥ अयमर्थः ॥ अंतर्मुखायामायायाअवस्थागुणत्रयसाम्यावस्थारूपासानित्यानतस्याउत्पत्तिःश्रुतौश्रूयते किंतुतस्यागुणत्रयस्ययद्वैषम्यमुत्पद्यतेतदे वतमआसीदित्यादिनोत्पत्त्याश्रयत्वेनाभिधीयते ॥ तच्चोत्पद्यमानंतमोरूपंबहिर्मुखमायारूपमुच्यतइतिनमायायाउत्पत्तिःश्रुतावभिहिता किंतु मायागुणानामेवोत्पत्तिरिति ॥ ६९ ॥ तत्रप्रथमतःकोवागुणउत्पद्यतेतत्राऽऽह । बहिर्मुखादिति ॥ प्रथमतोऽव्यक्तात्तमोगुणउत्पद्यतेततःसत्त्वगुणस्ततोरजोगुणइत्यर्थः ॥ ७० ॥ एतद्गुणत्रयविशिष्टचैतन्यस्यनामांतराण्याह । गुणत्रयात्मकाइति ॥ गुणत्रयमध्येएकैकगुणाभिमानिनोब्रह्मादयइत्यर्थः ॥ ७१ ॥ विभागेनतदेवाह । रजोगुणाधिकइति ॥ यद्यपिगुणत्रयात्मकाएवब्रह्मादयःसर्वंजगच्च तथापियस्यय स्यगुणस्ययत्राधिक्यंतत्तद्गुणरूपत्वंतस्योच्यतेइतिबोधनार्थमधिकपदं सर्वकारणरूपधृगितितमोगुणादेवरजःसत्त्वगुणोद्भवस्योक्तत्वात्तमोगुणोपाधिकरुद्रस्यसर्वकारणरूपमुक्तंयुक्तमेव ॥ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ तवतुरीयरूपायाःकोवाउपाधिस्तत्राह । साम्यावस्थेति ॥ यागुणत्रयसाम्यावस्थांतर्मुखामायासामेतुरीयरूपस्योपाधिरित्यर्थः ॥ ननुतर्हितुरीयस्यमायाविशिष्टेऽतभावि निर्गुणंब्रह्मकिंभविष्यतीतिचेत्तुरीयातीतंभविष्यतत्याह । अतऊर्ध्वमिति ॥ मायारहितंतुतुरीयातीतंयत्तदेवनिर्गुणंब्रह्मभविष्यतीत्यर्थः ॥ इदमवस्थापंचकंतापनीयश्रुतौप्रसिद्धम् ॥७४॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

निर्गुणसगुणभेदेनतदेवस्वस्वरूपंविशदयति । निर्गुणमिति ॥ ७५॥ अंतर्यामिरूपाहमेवेत्याह । साऽऽहंसर्वमिति ॥ तथाचश्रुतिः ॥ तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशदिति ॥ यथायस्यकर्मतथा तंप्रेरयामीत्यर्थः ॥७६॥ तिरोधानेसंहारे कारणात्मकंकारणदेहाभिमानिनमित्यर्थः । तथाचमदाज्ञयातेब्रह्मादयःसृष्टिंकुर्वंतीतिमुख्यत्वेनसृष्टिस्थितिसंहारकर्त्रीअहमेवास्मीतिभावः ॥७७॥ नकेवलंब्रह्मादयएवमदधीनाःकिंतर्हिसर्वेदेवाइत्याह । मद्भयादिति ॥ इंद्राग्निमृत्यवस्तद्वन्मद्भयादेवव्यवहारंकुर्वंतीतिशेषः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ भीषास्माद्वातःपवते ॥ भीषोदेतिसूर्यः ॥ भीषास्मादग्निश्चेंद्रश्च ॥ मृत्युर्धावतिपंचमइति ॥ ७८ ॥ एतावत्पर्यंतंकिमिदंयक्षमित्यपीतिदेवेंद्रप्रश्नस्योत्तरंदत्तम् ॥ ततःपरंप्रादुर्भूतंचकस्मात्तदितिद्वितीयप्रश्नस्योत्तरमाह । मत्प्रसादा दिति ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ततःसर्वेइति ॥ तद्दिनादारभ्येतिशेषः ॥ ८५ ॥ गायत्रीजपतत्पराःपूर्वमपिसर्वेगायत्रीजपवंतएवस्थितास्तद्दिनादारभ्यतुगायत्री जपनिष्णाताजाताइत्यर्थः ॥ ८६ ॥ एवंसत्ययुगेसर्वद्विजदेवादयोगायत्रीप्रणवहृल्लेखामंत्राणामेवमूलप्रकृतिवाचकानामुपासकाःस्थिताइत्यर्थः ॥ ८७ ॥ यतोमूलप्रकृतिःसर्वेश्वरीसर्वोत्त

निर्गुणंसगुणंचेतिद्विधामद्रूपमुच्यते ॥ निर्गुणंमाययाहीनंसगुणंमाययायुतम् ॥ ७५ ॥ साऽहंसर्वंजगत्सृष्ट्वातदंतःसंप्रविश्यच ॥ प्रेरयाम्यनिशंजीवंयथाक र्मयथाश्रुतम् ॥७६॥ सृष्टिस्थितितिरोधानेप्रेरयाम्यहमेवहि ॥ ब्रह्माणंचतथाविष्णुंरुद्रंवैकारणात्मकम् ॥७७॥ मद्भयाद्वातिपवनोभीत्यासूर्यश्चगच्छति ॥ इंद्राग्निमृत्यवस्तद्वत्साऽहंसर्वोत्तमास्मृता ॥ ७८ ॥ मत्प्रसादाद्भवद्भिस्तुजयोलब्धोऽस्तिसर्वथा ॥ युष्मानहंनर्तयामिकाष्ठपुत्तलिकोपमान् ॥ ७९ ॥ क दाचिदेवविजयंदैत्यानांविजयंक्वचित् ॥ स्वतंत्रास्वेच्छयासर्वंकुर्वेकर्मानुरोधतः ॥ ८० ॥ तांमांसर्वात्मिकांयूयंविस्मृत्यनिजगर्वतः ॥ अहंकारावृतात्मानो मोहमाप्तादुरंतकम् ॥ ८१ ॥ अनुग्रहंततःकर्तुंयुष्मद्देहादनुत्तमम् ॥ निःसृतंसहसातेजोमदीयंयक्षमित्यपि ॥ ८२ ॥ अतःपरंसर्वभावैर्हित्वागर्वंतुदेहज म् ॥ मामेवशरणंयातसच्चिदानंदरूपिणीम्॥८३॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाचमहादेवीमूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ अंतर्धानंगतासद्योभक्त्यादेवैरभिष्टुता॥८४॥ ततःसर्वेस्त्वगर्वंतुविहायपदपंकजम् ॥ सम्यगाराधयामासुर्भगवत्याःपरात्परम् ॥ ८५ ॥ त्रिसंध्यंसर्वदासर्वेगायत्रीजपतत्पराः ॥ यज्ञभागादिभिःसर्वेदेवीं नित्यंसिषेविरे ॥ ८६ ॥ एवंसत्ययुगेसर्वेगायत्रीजपतत्पराः ॥ तारहृल्लेखयोश्चापिजपेनिष्णातमानसाः ॥ ८७ ॥ नविष्णूपासनानित्यावेदेनोक्तातुकुत्रचि त् ॥ नविष्णुदीक्षानित्याऽस्तिशिवस्यापितथैवच ॥ ८८ ॥ गायत्र्युपासनानित्यासर्ववेदैःसमीरिता ॥ ययाविनात्वधःपातोब्राह्मणस्यास्तिसर्वथा॥८९॥

माऽस्तितस्मादेवकारणात्तस्याएवगायत्रीरूपायादीक्षोपासनाचनित्यत्वेनसर्ववेदैःप्रतिपादितानशिवविष्णवादिदेवानामित्याह ॥ नविष्णूपासनेति ॥ अहरहःसंध्यामुपासीतेतिगायत्र्युपासन विधिवन्नकुत्रापिविष्णवादिदेवतोपासन विधिर्नित्यत्वेनद्विजानांश्रूयते ॥ तस्मान्नविष्णवादिदेवतानामुपासनादीक्षाचानित्या ॥ यदिचसानित्यास्यात्तदासर्वेशैवावैष्णवावाभवेयुः ॥ नचतथा दृश्यंते ॥ केचित्तुवैष्णवाःकेचिच्छैवाःकेचिद्गाणपत्याः ॥ तस्मात्तदुपासनाभ्युदयिकीकाम्यैवेतिभावः ॥ ८८ ॥ नित्योपासनातर्हिकाऽस्तीत्यत्राऽऽह । गायत्र्युपासनेति ॥ द्विजोयदिगा यत्रीदीक्षितोनस्यात्तदाऽधएवपतेत् नतथाविष्णुगणेशदीक्षाभावेऽधःपातोद्विजस्यकुत्राप्युक्तस्तथात्वेसर्वेशैवावैष्णवागाणपत्यावावभूवुर्नचकेचिच्छैवाःकेचिद्वैष्णवाःकेचिद्गाणपत्याइति ॥ गायत्रीदीक्षावंतस्तुसर्वेद्विजादृश्यंते ॥ तस्माद्गायत्रीदीक्षैवानित्येतिभावः ॥ ८९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





नन्वभ्युदयार्थमपिद्विजस्यशैववैष्णवादिदीक्षाऽपेक्षितेतिचेत्तत्राऽऽह । तावताकृतकृत्यत्वमिति ॥ गायत्र्युपासनायांयदिकश्चिदभ्युदयार्थोन्यूनःस्यात्तदातत्प्राप्त्यर्थमन्यदेवतोपास्तिर्द्विजस्यापेक्षितानतुतथाऽस्ति ॥ तावताकेवलगायत्रीमंत्रेणैवकृतकृत्यत्वंद्विजस्यश्रुतिर्ब्रवीतितस्माद्द्विजस्याभ्युदयार्थमपिनान्यदेवतोपास्तिरपेक्षितेतिभावः ॥ तथाचश्रुतिर्बृहदारण्यके॥अष्टाक्षरंवाएकंगायत्र्यैपदम् एतदुहास्याएतत्सयावदेतेषुलोकेषुतावद्धजयतियोस्याएतदेवंपदंवेदेति ॥ एतत्सयावतीयंत्रयीविद्यातावद्धजयतियोस्याएतदेवंपदंवेदएतत्सयावदिदंप्राणितावद्धजयतियोस्याएतदेवंपदंवेदेतितथासाहैषागयांस्तत्रेप्राणावैगयास्तत्प्राणांस्तत्रेतद्यद्गयांस्तत्रेतस्माद्गायत्रीनामेति ॥ तथागोपथब्राह्मणे योहवाएवंवित्सब्रह्मवित्पुण्यांचकीर्तिंलभतेसुरभींश्चगंधान्सोपहतपाप्मानंतांश्रियमश्नुतेयएवंवेदयश्चैवंविद्वानेवमेतांवेदानांमातरंसावित्रींसंपदमुपनिषदमुपास्तेइत्यादिसर्ववेदेषुश्रुतयोद्रष्टव्याः ॥ ननुतर्हिवेदेषुकिमित्यन्यदेवतोपास्तिरुक्तेतिचेदिच्छायावैचित्र्यात्स्वभावतइतरदेवताभक्तानामिच्छाविघाताभावायेतिब्रूमः ॥ ९० ॥ मनुरपिगायत्रीमंत्रेणैवद्विजस्यकृतकृत्यत्वमाहेत्याह । कुर्यादन्यन्नवेति ॥ तथाचमनुः कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मै

तावताकृतकृत्यत्वंनान्यापेक्षाद्विजस्यहि ॥ गायत्रीमात्रनिष्णातोद्विजोमोक्षमवाप्नुयात् ॥ ९० ॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यादितिप्राहमनुःस्वयम् ॥ विहायतांतुगायत्रींविष्णूपास्तिपरायणः ॥ ९१ ॥ शिवोपास्तिरतोविप्रोनरकंयातिसर्वथा ॥ तस्मादाद्ययुगेराजन्गायत्रीजपतत्पराः ॥ देवीपदांबुजरताआसन्सर्वेद्विजोत्तमाः ॥९२॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥छ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ कदाचिदथकालेतुदशपंचसमाविभो॥प्राणिनांकर्मवशतोनववर्षशतक्रतुः ॥ १ ॥ अनावृष्ट्याऽतिदुर्भिक्षमभवत्क्षयकारकम् ॥ गृहेगृहेशवानांतुसंख्यांकर्तुंनशक्यते ॥२॥ केचिदश्वान्वराहान्वाभक्षयंतिक्षुधार्दिताः ॥ शवानिचमनुष्याणांभक्षयंत्यपरेजनाः ॥ ३ ॥ बालकंबालजननीस्त्रियंपुरुषएवच ॥ भक्षितुंचलिताःसर्वेक्षुधयापीडितानराः॥ ४ ॥ ब्राह्मणावहवस्तत्रविचारंचक्रुरुत्तमम् ॥ तपोधनोगौतमोऽस्तिसनःखेदंहरिष्यति ॥ ५ ॥ सर्वैर्मिलित्वागंतव्यंगौतमस्याश्रमेऽधुना ॥ गायत्रीजपसंसक्तगौतमस्याश्रमेऽधुना ॥ ६ ॥ सुभिक्षंश्रूयतेतत्रप्राणिनोबहवोगताः ॥ एवंविमृश्यभूदेवाःसाग्निहोत्राःकुटुंबिनः ॥ ७ सगोधनाःसदासाश्चगौतमस्याऽऽश्रमंययुः ॥ पूर्वदेशाद्ययुःकेचित्केचिद्दक्षिणदेशतः ॥ ८ ॥ पाश्चात्त्याऔत्तराहाश्चनानादिग्भ्यःसमाययुः ॥ दृष्ट्वासमाजंविप्राणांप्रणनामसगौतमः ॥ ९ ॥

त्रोब्राह्मणउच्यतेइति ॥ महाभारतेपि शांतिपर्वणिजप्यमाहात्म्येगायत्रीमंत्रस्यैवप्राशस्त्यमुक्तम् ॥ किंचगायत्रीमंत्रमगृहीत्वाद्विजोविष्ण्वादिदेवतोपास्तिपरायणोनरकमेवंसर्वथायाति ॥ विष्ण्वादिदेवतामंत्रमगृहीत्वाकेवलगायत्रीमंत्रपरायणोमोक्षंयातितस्मात्पराशक्तेर्गायत्र्याएवोपास्तिर्नित्यासर्वोत्तमाचेत्याह । विहायतांतुगायत्रीमिति ॥ ९१ ॥ उपसंहरति । तस्मादिति॥ अतएवहेतोःसत्ययुगेसर्वेपराशक्तिगायत्रीपादांबुजरतादेवीभक्ताआसन्नित्यर्थः ॥ प्रथमतोद्विजातीनांवेदेनोपदिष्टगायत्र्युपासनयासकलेष्टसंभवेऽन्यदेवतोपासनायांप्रयोजनाभावएवेतिभावः ॥ ९२ ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ छ ॥ शतश्लोकैर्ब्राह्मणानांशापाद्गौतमसंभवात् ॥ अन्यदेवोपासनासुश्रद्धाजातोतिचोच्यते ॥ १ ॥ इत्थंसत्ययुगेपराशक्तिभक्तिपराशक्तिमहिमप्रकाशनपूर्वकमुपपाद्यानंतरमन्यदेवोपासनाश्रद्धायांनिमित्तंराज्ञापृष्टंकथयितुंपूर्ववृत्तमाह । व्यासउवाच कदाचिदथेति ॥ दशपंचसमाःपंचदशवर्षाणि ॥शतक्रतुरिंद्रः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ औत्तराहाउत्तरस्यांभवाः ॥ उत्तरादाहञितिसूत्रेणाहञ्प्रत्ययः ॥ ९ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

आगमकारणमागमनकारणम् ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ गायत्रींस्वेष्टदेवतांब्राह्मणकुटुंबपोषणार्थंप्रार्थयामासेत्यर्थः ॥ गायत्रीस्तोत्रमाह । नमोदेविमहाविद्येइति ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ तस्मात्पूर्णपात्रात् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ दारामुनीनामितिशेषः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

आसनाद्युपचारैश्चपूजयामासवाडवान् ॥ चकारकुशलप्रश्नंततश्चागमकारणम् ॥१०॥ तेसर्वेस्वस्ववृत्तांतंकथयामासुरुत्स्मयाः ॥ दृष्ट्वातान्दुःखितान्वि प्रानभयंदत्तवान्मुनिः ॥ ११ ॥ युष्माकमेतत्सदनंभवद्दासोऽस्मिसर्वथा ॥ कार्चिताभवतांविप्रामयिदासेविराजति ॥ १२ ॥ धन्योऽहमस्मिन्समयेयूयंस र्वेतपोधनाः ॥ येषां दर्शनमात्रेणदुष्कृतंसुकृतायते ॥ १३ ॥ तेसर्वेपादरजसापावयंतिगृहंमम ॥ कोमदन्योभवेद्धन्योभवतांसमनुग्रहात् ॥ १४ ॥ स्थेयं सर्वैःसुखेनैवसंध्याजपपरायणैः ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसर्वान्समाश्वास्यगौतमोमुनिराट्ततः ॥ १५ ॥ गायत्रींप्रार्थयामासभक्तिसन्नतकंधरः ॥ नमोदेविम हाविद्येवेदमातःपरात्परे ॥ १६ ॥ व्याहृत्यादिमहामंत्ररूपेप्रणवरूपिणि ॥ साम्यावस्थात्मिकेमातर्नमोह्रींकाररूपिणि ॥१७॥ स्वाहास्वधास्वरूपेत्वांन मामिसकलार्थदाम् ॥ भक्तकल्पलतांदेवीमवस्थात्रयसाक्षिणीम् ॥ १८ ॥ तुर्यातीतस्वरूपांचसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥ सर्ववेदांतसंवेद्यांसूर्यमंडलवासिनी म् ॥ १९ ॥ प्रातर्बालांरक्तवर्णांमध्याह्नेयुवतींपराम् ॥ सायाह्नेकृष्णवर्णांतांवृद्धांनित्यंनमाम्यहम् ॥ २० ॥ सर्वभूतारणेदेविक्षमस्वपरमेश्वरि ॥ इतिस्तु ताजगन्माताप्रत्यक्षंदर्शनंददौ ॥ २१ ॥ पूर्णपात्रंददौतस्मैयेनस्यात्सर्वपोषणम् ॥ उवाचमुनिमंवासायंयंकामंत्वमिच्छसि ॥ २२ ॥ तस्यपूर्तिकरंपात्रंमया दत्तंभविष्यति ॥ इत्युक्त्वांऽतर्दधेदेवीगायत्रीपरमाकला ॥ २३ ॥ अन्नानांराशयस्तस्मान्निर्गताःपर्वतोपमाः ॥ षड्रसाविविधाराजंस्तृणानिविविधानिच ॥ ॥ २४ ॥ भूषणानिचदिव्यानिक्षौमाणिवसनानिच ॥ यज्ञानांचसमारंभाःपात्राणिविविधानिच ॥ २५ ॥ यद्यदिष्टमभूद्राजन्मुनेस्तस्यमहात्मनः ॥ तत्स र्वंनिर्गतंतस्माद्गायत्रीपूर्णपात्रतः ॥ २६ ॥ अथाऽहूयमुनीन्सर्वान्मुनिराड्गौतमस्तदा ॥ धनंधान्यंभूषणानिवसनानिददौमुदा ॥ २७ ॥ गोमहिष्यादिप शवोनिर्गताःपूर्णपात्रतः ॥ निर्गतान्यज्ञसंभारान्सुक्स्रुवप्रभृतीन्ददौ ॥ २८ ॥ तेसर्वेमिलितायज्ञांश्चक्रिरेमुनिवाक्यतः ॥ स्थानंतदेवभूयिष्ठमभवत्स्वर्गस न्निभम् ॥ २९ ॥ यत्किंचित्त्रिषुलोकेषुसुंदरंवस्तुदृश्यते ॥ तत्सर्वंतत्रनिष्पन्नंगायत्रीदत्तपात्रतः ॥३०॥ देवांगनासमादाराःशोभंतेभूषणादिभिः ॥ मुनयोदे वसदृशावस्त्रचंदनभूषणैः ॥३१॥ नित्योत्सवःप्रववृतेमुनेराश्रममंडले ॥ नरोगादिभयंकिंचिन्नचदैत्यभयंक्वचित् ॥३२॥ समुनेराश्रमोजातःसमंताच्छतयो जनः ॥ अन्येचप्राणिनोयेऽपितेऽपितत्रसमागताः ॥ ३३ ॥ तांश्चसर्वान्पुपोषाऽयंदत्त्वाऽभयमथात्मवान् ॥ नानाविधैर्महायज्ञैर्विधिवत्कल्पितैःसुराः॥३४॥

शतयोजनपर्यंतमेकएवाऽतिविस्तीर्णोमुनेराश्रमोजातइत्यर्थः ॥ अन्येऽपिप्राणिनोब्राह्मणातिरिक्तानरागोमहिष्यादयश्च ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥३५॥तमेवश्लोकमाह अहोअयंनइति॥अहोअयमित्यत्रओदितिप्रगृह्यत्वेप्रकृतिभावः॥अयंगौतमोनोऽस्माकमस्मिन्कालेकल्पपादपःकल्पवृक्षोऽस्तीत्यर्थः।अकांडेअतिदुर्धरकाले ॥३६॥३७॥ गायत्र्याःपरमंस्थानंसर्वमुनीनांदेवीदर्शनार्थंचकारेत्यर्थः ॥३८॥ तत्रगायत्रीस्थानेऽद्यापिवर्तमानंचमत्कारमाह । अद्यापीति ॥३९॥ ४० ॥४१ ॥ ४२ ॥ नारदोगौतमंप्रतिदेवेंद्रसभायां जातंवृत्तांतंकथयति । ब्रह्मर्षेइति ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ कालेसमागतेइति ॥ सुभिक्षेकालेसमागतेयथाऽस्यगौतमस्याऽपकीर्तिःस्यात्तथाकृत्वागंतव्यमितिसर्वैर्निश्चितमि

संतोषंपरमंप्रापुर्मुनेश्चैवजगुर्यशः ॥ सभायांवृत्रहाभूयोजगौश्लोकंमहायशाः ॥ ३५ ॥ अहोअयंनःकिलकल्पपादपोमनोरथान्पूरयतिप्रतिष्ठितः ॥ नोचेद कांडेक्कहविर्वपावासुदुर्लभायत्रतुजीवनाशा ॥ ३६ ॥ इत्थंद्वादशवर्षाणिपुपोषमुनिपुंगवान् ॥ पुत्रवन्मुनिराङ्गर्वगंधेनपरिवर्जितः ॥ ३७ ॥ गायत्र्याःपर मंस्थानंचकारमुनिसत्तमः ॥ यत्रसर्वैर्मुनिवरैःपूज्यतेजगदंबिका ॥ ३८ ॥ त्रिकालंपरयाभक्त्यापुरश्चरणकर्मभिः ॥ अद्यापितत्रदेवीसाप्रातर्बालातुदृश्य ते ॥ ३९ ॥ मध्याह्नेयुवतीवृद्धासायंकालेतुदृश्यते ॥ तत्रैकदासमायातोनारदोमुनिसत्तमः ॥ ४० ॥ रणयन्महतींगायन्गायत्र्याःपरमान्गुणान् ॥ निष सादसभामध्येमुनीनांभावितात्मनाम् ॥४१॥ गौतमादिभिरत्युच्चैःपूजितःशांतमानसः ॥ कथाश्चकारविविधायशसोगौतमस्यच ॥ ४२ ॥ ब्रह्मर्षेदेवसद सिदेवराट्तवयद्यशः ॥ जगौबहुविधंस्वच्छंमुनिपोषणजंपरम् ॥४३॥ श्रुत्वाशचीपतेर्वाणींत्वांद्रष्टुमहमागतः ॥ धन्योऽसित्वंमुनिश्रेष्ठजगदंबाप्रसादतः ॥ ॥४४॥ इत्युक्त्वामुनिवर्यंतंगायत्रीसदनंययौ ॥ ददर्शजगदंबांतांप्रेमोत्फुल्लविलोचनः ॥ ४५ ॥ तुष्टावविधिवद्देवींजगामत्रिदिवंपुनः ॥ अथतत्रस्थिताये तेब्राह्मणामुनिपोषिताः ॥ ४६ ॥ उत्कर्षंतुमुनेःश्रुत्वाऽसूययाखेदमागताः ॥ यथाऽस्यनयशोभूयात्कर्तव्यंसर्वथैवहि ॥ ४७ ॥ कालेसमागतेपश्चांदितिस र्वैस्तुनिश्चितम् ॥ ततःकालेनकियताप्यभूद्वृष्टिर्धरातले ॥४८॥ सुभिक्षमभवत्सर्वदेशेषुनृपसत्तम ॥ श्रुत्वावार्तांसुभिक्षस्यमिलिताःसर्ववाडवाः ॥४९॥ गौतमंशप्तुमुद्योगंहाहाराजन्प्रचक्रिरे ॥ धन्यौतेषांचपितरौययोरुत्पत्तिरीदृशी ॥५०॥ कालस्यमहिमाराजन्वक्तुंकेनहिशक्यते ॥ गौर्निर्मितामाययैकामु मूर्षुर्जरतीनृप ॥५१॥ जगामसाचशालायांहोमकालेमुनेस्तदा॥हुंहुंशब्दैर्वारितासाप्राणांस्तत्याजतत्क्षणे॥५२॥गौर्हताऽनेनदुष्टेनेत्येवंतेचुक्रुशुर्द्विजाः ॥ होमंसमाप्यमुनिराड्विस्मयंपरमंगतः॥५३॥ समाधिमीलिताक्षःसंश्चिंतयाभासकारणम् ॥ कृतंसर्वैर्द्विजैरेतदितिज्ञात्वातदैवसः ॥५४॥दधारकोपंपरमंप्र लयेरुद्रकोपवत्॥शशापचऋषीन्सर्वान्कोपसंरक्तलोचनः ॥५५॥ वेदमातरिगायत्र्यांतद्ध्यानेतन्मनोर्जपे॥भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वथाब्राह्मणाधमाः॥५६॥

त्यर्थः ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ एतादृशमुपकारिणंगौतमंप्रतिमुनिभिःप्रत्युपकारएतादृशःकृतइतिस्वमुखेनव्यासोक्तिर्जनमेजयंप्रति हाहाराजन्प्रचक्रिरेइति।तमेवखेदंविशदयति ॥ धन्यौतेषांच पितराविति ॥ ययोःपित्रोरीदृशीकृतघ्नाउत्पत्तिःसंततिरस्तीत्यर्थः ॥ ५० ॥ तदनंतरंब्राह्मणैःकिंकृतंतदाह । गौर्निर्मितेति ॥ ५१ ॥ हुंहुंशब्दैर्गौतमेनवारितेत्यर्थः ॥५२॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ॥५५॥ अनुन्मुखाभवतेतिशशापइत्यर्थः ॥ अनुन्मुखास्त्यागिनः ॥ ५६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ प्रवचनस्वाध्यायपठने ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

वेदेवेदोक्तयज्ञेषुतद्वार्तासुतथैवच ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥५७॥ शिवेशिवस्यमंत्रेचशिवशास्त्रेतथैवच ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ५८ ॥ मूलप्रकृत्यःश्रीदेव्यांतद्वचानेतत्कथासुच ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ५९ ॥ देवीमंत्रेतथादेव्याःस्थानेऽनुष्ठानकर्मणि ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६० ॥ देव्युत्सवदिदृक्षायांदेवीनामानुकीर्तने ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६१ ॥ देवीभक्तस्यसान्निध्येदेवीभक्तार्चनेतथा ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६२ ॥ शिवोत्सवदिदृक्षायांशिवभक्तस्यपूजने ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६३ ॥ रुद्राक्षेबिल्वपत्रेचतथाशुद्धेचभस्मनि ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६४ ॥ श्रौतस्मार्तसदाचारेज्ञानमार्गेतथैवच ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६५ ॥ अद्वैतज्ञाननिष्ठायांशांतिदांत्यादिसाधने ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६६ ॥ नित्यकर्माद्यनुष्ठानेप्यग्निहोत्रादिसाधने ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६७ ॥ स्वाध्यायाध्ययनेचैवतथाप्रवचनेऽपिच ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६८ ॥ गोदानादिषुदानेषुपितृश्राद्धेषुचैवहि ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६९ ॥ कृच्छ्रचांद्रायणेचैवप्रायश्चित्तेतथैवच ॥ भवताऽनुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ७० ॥ श्रीदेवीभिन्नदेवेषुश्रद्धाभक्तिसमन्विताः ॥ शंखचक्राद्यंकिताश्चभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७१ ॥ कापालिकमतासक्ताबौद्धशास्त्ररताःसदा ॥ पाखंडाचारनिरताभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७२ ॥ पितृमातृसुतभ्रातृकन्याविक्रयिणस्तथा ॥ भार्याविक्रयिणस्तद्वद्भवतब्राह्मणाधमाः॥७३॥ वेदविक्रयिणस्तद्वत्तीर्थविक्रयिणस्तथा॥धर्मविक्रयिणस्तद्वद्भवतब्राह्मणाधमाः॥७४॥पांचरात्रेकामशास्त्रेतथाकापालिकेमते ॥ बौद्धेश्रद्धायुतायूयंभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७५ ॥ मातृकन्यागामिनश्चभगिनीगामिनस्तथा ॥ परस्त्रीलंपटाःसर्वेभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७६ ॥ युष्माकंवंशजाताश्चस्त्रियश्चपुरुषास्तथा ॥ मद्दत्तशापदग्धास्तेभविष्यंतिभवत्समाः ॥ ७७ ॥ किंमयाबहुनोक्तेनमूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ गायत्रीपरमाभूयाद्युष्माकंसुखलुकोपिता ॥ ७८ ॥ अंधकूपादिकुंडेषुयुष्माकंस्यात्सदास्थितिः ॥ व्यासउवाच ॥ वाग्दंडमीदृशंकृत्वाप्युपस्पृश्यजलंततः ॥ ७९ ॥ जगामदर्शनार्थंचगायत्र्याःपरमोत्सुकः ॥ प्रणनाममहादेवींसाऽपिदेवीपरात्परा ॥ ८० ॥ ब्राह्मणानांकृतिंदृष्ट्वास्मयंचित्तेचकारह॥ अद्यापितस्यावदनंस्मययुक्तंचदृश्यते ॥ ८१ ॥ उवाचमुनिवर्यंतंस्मयमानमुखांबुजा ॥ भुजंगायार्पितंदुग्धंविषायैवोपजायते ॥ ८२ ॥ शांतिंकुरुमहाभागकर्मणोगतिरीदृशी ॥ इतिदेवींप्रणम्याथततोऽगात्स्वाश्रमंप्रति ॥ ८३ ॥

॥ ७६ ॥ भवत्समाःभवद्विधाः ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ वाग्दंडंशापम् ॥ ७९ ॥ ८० ॥ कृतिंकृतघ्नतारूपाम् ॥ ८१ ॥ गायत्रीस्वमुखेनमुनिंसांत्वयति ॥ उवाचेति ॥ ८२ ॥ ८३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ शापमोक्षणमाह ॥ मच्छापस्येति ॥ ९० ॥९१॥ किमर्थमन्यदेवतोपास्तिंजनाःकुर्वंतीत्यस्योत्तरमेतत्पर्यंतमुक्तंनिगमयति । एतस्मा
दिति ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ नाविष्णूपासनेति । इदंपूर्वाध्यायेस्पष्टीकृतम् ॥ ९८ ॥ शक्तिर्गायत्र्याः ॥ ९९ ॥ अथमणिद्वीपवर्णनविषयकस्यद्वितीयप्रश्नस्यो
त्तरंवक्तुंप्रतिजानीते ॥ अतःपरमिति ॥ भवारणेर्भवयोनेः ॥ १०० ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अर्धाधिकशतश्लोकैर्मणिद्वीपस्य
वर्णनम् ॥ यथावत्क्रियतेयेनभक्तिर्देव्यांविवर्धते ॥१॥ पूर्वाध्यायेप्रतिज्ञातंमणिद्वीपस्यवर्णनंप्रस्तौति ॥ व्यासउवाचेति ॥ ननुमणिद्वीपंश्रुतौक्तप्रसिद्धंतत्राऽऽह । ब्रह्मलोकादिति ॥ सुवा

ततोविप्रैःशापदग्धैर्विस्मृतावेदराशयः ॥ गायत्रीविस्मृतासर्वैस्तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ ८४ ॥ तेसर्वेऽथमिलित्वातुपश्चात्तापयुतास्तथा ॥ प्रणेमुर्मुनिवर्यं
तंदंडवत्पतिताभुवि ॥ ८५ ॥ नोचुःकिंचनवाक्यंतुलज्जयाऽधोमुखाःस्थिताः ॥ प्रसीदेतिप्रसीदेतिप्रसीदेतिपुनःपुनः ॥ ८६ ॥ प्रार्थयामासुरभितःपरिवा
र्यमुनीश्वरम् ॥ करुणापूर्णहृदयोमुनिस्तान्समुवाचह ॥ ८७ ॥ कृष्णावतारपर्यंतंकुंभीपाकेभवेत्स्थितिः ॥ नमेवाक्यंमृषाभूयादितिजानीथसर्वथा ॥८८॥
ततःपरंकलियुगेभुविजन्मभवेद्धिवाम् ॥ मदुक्तंसर्वमेतत्तुभवेदेवनचान्यथा ॥ ८९ ॥ मच्छापस्यविमोक्षार्थंयुष्माकंस्याद्यदीषणा ॥ तर्हिसेव्यंसदासर्वैर्गा
यत्रीपदपंकजम् ॥ ९० ॥ व्यासउवाच ॥ इतिसर्वान्विसृज्याथगौतमोमुनिसत्तमः ॥ प्रारब्धमितिमत्वातुचित्तेशांतिंजगामह ॥ ९१ ॥ एतस्मात्कार
णाद्राजन्गतेकृष्णेतुधामनि ॥ कलौयुगेप्रवृत्तेतुकुंभीपाकात्तुनिर्गताः ॥ ९२ ॥ भुविजाताब्राह्मणाश्चशापदग्धाःपुरातुये ॥ संध्यात्रयविहीनाश्चगायत्री
भक्तिवर्जिताः ॥ ९३ ॥ वेदभक्तिविहीनाश्चपाखंडमतगामिनः ॥ अग्निहोत्रादिसत्कर्मस्वधास्वाहाविवर्जिताः ॥९४॥ मूलप्रकृतिमव्यक्तांनैवजानंतिकर्हि
चित् ॥ तत्तमुद्रांकिताःकेचित्कामाचाररताःपरे ॥ ९५ ॥ कापालिकाःकौलिकाश्चबौद्धाजैनास्तथापरे ॥ पंडिताअपितेसर्वेदुराचारप्रवर्तकाः ॥ ९६ ॥
लंपटाःपरदारेषुदुराचारपरायणाः ॥ कुंभीपाकंपुनःसर्वेयास्यंतिनिजकर्मभिः ॥ ९७ ॥ तस्मात्सर्वात्मनाराजन्संसेव्यापरमेश्वरी ॥ नविष्णूपासनानित्या
नशिवोपासनातथा ॥ ९८ ॥ नित्याचोपासनाशक्तेर्यांविनातुपतत्यधः ॥ सर्वमुक्तंसमासेनयत्पृष्टंतत्त्वयाऽनघ ॥ ९९ ॥ अतःपरंमणिद्वीपवर्णनंशृणुसुंद
रम् ॥ यत्परंस्थानमाद्यायाभुवनेश्याभवारणेः ॥१००॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणे अष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांद्वादशस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥९॥ छ॥
॥ व्यासउवाच ॥ ब्रह्मलोकादूर्ध्वभागेसर्वलोकोऽस्तियःश्रुतः ॥ मणिद्वीपःसएवास्तियत्रदेवीविराजते ॥ १ ॥

लोपनिषदि ब्रह्मलोकादूर्ध्वभागेयःसर्वलोकःश्रुतौश्रुतःप्रसिद्धोऽस्तिसएवनामांतरेणमणिद्वीपमित्युच्यते ॥ यत्रसाक्षाद्देवीमूलकारणभूताविराजतेइत्यर्थः ॥ तथासुबालोपनिषदि ॥ अथहै
नंरेक्वःपप्रच्छभगवन्कस्मिन्सर्वेप्रतिष्ठिताभवंतीतितस्मैसहोवाचरसातललोकेष्वितिहोवाचकस्मिन्रसातललोकाओताश्चप्रोताश्चेतिभूर्लोकेष्वितिहोवाचेत्यारभ्यसत्यलोकांतमुक्त्वाकास्मिन्स
त्यलोकाओताःप्रोताश्चेतिप्रजापतिलोकेष्वितिहोवाचकास्मिन्प्रजापतिलोकाओताःप्रोताश्चेतिब्रह्मलोकेष्वितिहोवाचकस्मिंश्चब्रह्मलोकाओताश्चप्रोताश्चेतिसर्वलोकेष्वितिहोवाचसर्वलोका
आत्मनिब्रह्मणिमणयइवौताश्चप्रोताश्चेति ॥ अत्रतस्यलोकस्यैकत्वेऽपितदंतर्गतप्राकाराणांबहुत्वात्सर्वलोकेष्वितिबहुवचनमुक्तम् ॥ १ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

ननुतस्यसर्वलोकइतीकिमितिसंज्ञातत्राऽऽह । सर्वस्मादधिकोयस्मादिति ॥ नन्वयंलोकःकेननिर्मितइतिचेत्तत्राऽऽह । पुरापरांबयैवायमिति ॥ श्रीभगवत्यैवनिजवासार्थंस्वेच्छयासर्गादौनिर्मितोऽयंलोकइत्यर्थः ॥ २ ॥ अयंचमणिद्वीपरूपोलोकोदेवीप्रार्थनयाशिवेनानिर्मितः । तदुक्तंशिवरहस्येद्वितीयेंऽशेष्टमाध्याये ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ देवदेवमहादेवलीलालालितविग्रह । विचित्रशक्तेभगवन्ममस्थानमनुत्तमम् ॥ सुंदरात्सुंदरंशंभोआनंदामृतसागरम् । नक्षुत्पिपासेनोग्लानिर्नतृष्णानजरादिकम् ॥ तत्रास्थितानांसर्वेषां कैलासादपि सुंदरम् । सृजविश्वेशदययाममैवापरकौतुकम् ॥ नसृष्टौनविधात्राऽपिविष्णुनावातथोत्तरम् । स्रष्टुंशक्यंत्वयादेवमनसैवमहेश्वर । त्वंसर्वमंगलाकारस्तस्मात्स्थानवरंमम ॥ लोकोत्तरंमहादेवविहारंचावयोःसदा ॥ सृजैवंमनसादेवमत्प्रियार्थंमहेश्वर । इतिदेव्यामहादेवःप्रार्थितःसतदामुदा ॥ जातहर्षःसशीर्ष्णातामोमित्यांदोलयन्मुदा । परमानंदसंदोहसागरांतर्निमग्नधीः ॥ क्षणंदध्यौमहादेवोलीलासृष्टिप्रवर्तकः । तत्क्षणाद्भास्वरंतेजःसमुत्तस्थौसुधांबुधेः ॥ कोटिभास्करसंकाशंपार्वणेंदुशताधिकम् । विद्युत्कोटिप्रतीकाशंचेंद्रचापायुतोत्तरम् ॥ वलक्षंभासिताकाशंज्योतिर्मयमनुत्तमम् । तत्प्रभाभासितालोकाभुवनानिचतुर्दशेति ॥ पश्चात्त्रयोदशाध्यायपर्यंतंसविस्तरंतदेवद्वीपमुपवर्णितम् ॥ चतुर्दशाध्यायेपुनरुक्तम् ॥ द्यावाभूम्योरंतरालेलोकजालेतथाभुवि । विष्णुब्रह्मेशभवनेदिक्पालानांपुरेतथा ॥ नागानामपिलोकेषुदैत्येंद्राणांपुरीष्वपि । कैलासेवामहादेविचिंतामणिगृहाधिकः ॥ ईदृक्संपत्तिसंभारोनकुत्रभुवनेश्वरीतिसर्वोत्तमसंपत्तिमत्त्वंचोपपाद्याग्रेतत्परिमाणंचोक्तम् ॥ पंचाशल्लक्षमानोऽयंद्वीपरत्नमिदंशिवेइति ॥ ब्रह्मांडपुराणेललितोपाख्यानेतुदेवाज्ञयासुमेरुमध्यशृंगेविश्वकर्मणानिर्मितोऽयंलोकः ॥

**सर्वस्मादधिकोयस्मात्सर्वलोकस्ततःस्मृतः ॥ पुरापरांबयैवायंकल्पितोमनसेच्छया ॥ २ ॥ सर्वादौनिजवासार्थंप्रकृत्यामूलभूतया ॥ कैलासादधिकोलोकोवैकुंठादपिचोत्तमः ॥ ३ ॥ गोलोकादपिसर्वस्मात्सर्वलोकोऽधिकःस्मृतः ॥ नैतत्समंत्रिलोक्यांतुसुंदरंविद्यतेक्वचित् ॥४॥ छत्रीभूतंत्रिजगतोभवसंतापनाशकम् ॥ छायाभूतंतदेवास्तिब्रह्मांडानांतुसत्तम ॥५॥ बहुयोजनविस्तीर्णोगंभीरस्तावदेवहि ॥ मणिद्वीपस्यपरितोवर्ततेतुसुधोदधिः ॥ ६ ॥ मरुत्संघट्टनोत्कीर्णतरंगशतसंकुलः ॥ रत्नाच्छवालुकायुक्तोझषशंखसमाकुलः ॥७॥ वीचिसंघर्षसंजातलहरीकणशीतलः ॥ नानाध्वजसमायुक्तानानापोतगतागतैः ॥८॥**

तदुक्तंललितोपाख्यानेसप्तविंशेऽध्याये ॥ भोविश्वकर्मञ्छिल्पज्ञभोभोमयमहोदय । युवाभ्यांललितादेव्यानित्यज्ञानमहोदधेः ॥ षोडशीक्षेत्रमध्येतुतत्क्षेत्रसमसंख्यया । कर्तव्याःश्रीनगर्योहिनानारत्नैरलंकृताः ॥ यत्रषोडशधाभिन्नाललितापरमेश्वरी । विश्वत्राणायसततंनिवासंरचयिष्यतीति ॥ तत्परिमाणंचदुर्वासोमुनिकृतस्तवरत्नेउक्तम् ॥ तत्रचतुःशतयोजनपरिणाहंदेवाशिल्पिनारचितम् ॥ नानासालमनोज्ञंनमाम्यहंनगरमादिविद्यायाइति ॥ इत्थंपुराणत्रयविरोधेकल्पभेदेनकेचिद्व्यवस्थामाहुः ॥ वयंतुब्रूमोललितोपाख्यानोक्तंशिवरहस्योक्तंचमणिद्वीपंश्रीत्रिपुरसुंदर्याधिष्ठितंभिन्नमेवदेवीभागवतोक्तंमाणिद्वीपंतुश्रीभुवनेश्वर्याधिष्ठितंसर्वलोकपदवाच्यंब्रह्मलोकाधिकंब्रह्मांडाद्बहिरेवविद्यमानंभिन्नमेवेति ॥ अतएवदेवीभागवतेप्रतिब्रह्मांडवर्तिनांब्रह्मविष्ण्वादिदेवानांनियंतारोब्रह्मादयःसमष्टिभूता अत्रवसंतीतिवक्ष्यमाणंसंगच्छते ॥ तदुक्तमागमे ॥ ब्रह्मलोकाधिकोलोकःसर्वलोकाभिधःपरः ॥ तत्रश्रीभुवनेशानीपराशक्तिर्विराजतेइति ॥ ३ ॥ ४ ॥ छत्रीभूतमिति ॥ सर्वब्रह्मांडोपर्येतस्याविद्यमानत्वाच्छत्रसाम्यम् ॥ ५ ॥ मणिद्वीपसंबंधिसुधासमुद्रंवर्णयति ॥ बहुयोजनविस्तीर्णइति ॥ चिंतामणिगृहस्यसर्वप्राकारमध्यस्थस्यपरिमाणमग्रेवक्ष्यति ॥ तत्प्राकाराणांचपूर्वस्मात्पूर्वस्मादुत्तरस्यपरिमाणंद्विगुणंवक्ष्यतितन्माननेनैवसर्ववेष्टनभूतसुधासिंधोरपिमानमुन्नेयम् ॥ मणिद्वीपस्यपरितआसमंतात् ॥ ६ ॥ संघट्टनंसंमर्दस्तेनोत्कीर्णाउच्छलंतोयेतरंगास्तेषांशतैःसंकुलः ॥ रत्नवालुकायुक्तः ॥ ७ ॥ महांतस्तरंगावीचयस्तेषांसंघर्षणसंजातालहर्योऽल्पतरंगास्तेषांकणैःशीतलः ॥ गतागतैरितस्ततोगमनागमनैः ॥ ८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तीरेरत्नसमानकांतयोद्रुमायस्य ॥ इत्थंसुधासमुद्रमुपवर्ण्यायोधातुनिर्मितंप्रथमंप्राकारंवर्णयति ॥ तदुत्तरमयोधातुनिर्मितइति ॥ गगनेगतोऽत्युच्चैर्विद्यमानइति ॥ ९ ॥ उच्चैस्त्वंवर्णयति ॥ सप्तयोजनविस्तीर्णइति ॥ विस्तीर्णउन्नतइत्यर्थः ॥ नत्वत्रविस्तारोविवक्षितोविस्तारस्यबहुप्रमाणस्यवक्ष्यमाणत्वात् ॥ तत्रत्यगणानाह ॥ नानाशस्त्रप्रहरणाइति ॥ १० ॥ ११ ॥ एतत्प्राकारस्यलोहमयस्यांतः प्रतिब्रह्मांडवर्तिनोयेब्रह्मादयोदेवाःश्रीजगदीशितुर्भुवनेश्वर्यादर्शनार्थमागतास्तेषांगणावाहनानिचतत्रानिवसंतीत्याह । दर्शनार्थंसमायांतीति ॥ १२ ॥ तत्रैवान्यब्रह्मांडस्थदेवानांविमानान्यप्यवतरंतीत्याह॥विमानशतेति । प्राकाराविशेषणम् ॥१३॥ हयहेषेति॥दर्शनार्थमागतानांदेवानांयेहयावाहनभूतास्तेषांहेषाभिः । शब्दैःखुराघातशब्दैश्चव

विराजमानःपरितस्तीररत्नद्रुमोमहान्॥तदुत्तरमयोधातुनिर्मितोगगनेततः ॥ ९॥ सप्तयोजनविस्तीर्णःप्राकारोवर्ततेमहान् ॥ नानाशस्त्रप्रहरणानानायुद्धविशारदाः ॥ १० ॥ रक्षकानिवसंत्यत्रमोदमानाःसमंततः ॥ चतुर्द्वारसमायुक्तोद्वारपालशतान्वितः ॥ ११ ॥ नानागणैःपरिवृतोदेवीभक्तियुतैर्नृप॥दर्शनार्थंसमायांतियेदेवाजगदीशितुः ॥ १२ ॥ तेषांगणावसंत्यत्रवाहनानिचतत्रहि ॥ विमानशतसंघर्षघंटास्वनसमाकुलः ॥ १३ ॥ हयहेषाखुराघातवधिरीकृतदिङ्मुखः ॥ गणैःकिलकिलारावैर्वेत्रहस्तैश्चताडिताः ॥ १४ ॥ सेवकादेवसंघानांभ्राजंतेतत्रभूमिप ॥ तस्मिन्कोलाहलेराजन्नशब्दःकेनचित्क्वचित् ॥ १५ ॥ कस्यचिच्छ्रूयतेऽत्यंतंनानाध्वनिसमाकुले ॥ पदेपदेमिष्टवारिपरिपूर्णसरांसिच ॥१६॥ वाटिकाविविधाराजन्रत्नद्रुमविराजिताः ॥ तदुत्तरंमहासारधातुनिर्मितमंडलः ॥ १७ ॥ सालोपरोमहानस्तिगगनस्पर्शियच्छिरः ॥ तेजसास्याच्छतगुणःपूर्वसालादयंपरः ॥ १८॥ गोपुरद्वारसहितोबहुवृक्षसमन्वितः ॥ यावृक्षजातयःसंतिसर्वास्तास्तत्रसंतिच ॥ १९ ॥ निरंतरंपुष्पयुताःसदाफलसमन्विताः ॥ नवपल्लवसंयुक्ताःपरसौरभसंकुलाः ॥ २० ॥ पनसावकुलालोध्राःकर्णिकाराश्चशिंशपाः ॥ देवदारुकांचनाराआम्राश्चैवसुमेरवः ॥ २१ ॥ लिकुचाहिंगुलाश्चैलालवंगाःकट्फलास्तथा ॥ पाटलामुचुकुंदाश्चफलिन्योजघनेफलाः ॥ २२ ॥ तालास्तमालाःसालाश्चकंकोलानागभद्रकाः ॥ पुन्नागाःपीलवःसाल्वकावैकर्पूरशाखिनः ॥ २३ ॥ अश्वकर्णाहस्तिकर्णास्तालपर्णाश्चदाडिमाः ॥ गणिकाबंधुजीवाश्चजंबीराश्चकुरंडकाः ॥ २४ ॥ चांपेयाबंधुजीवाश्चतथावैकनकद्रुमाः ॥ कालागुरुद्रुमाश्चैवतथाचंदनपादपाः ॥ २५ ॥ खर्जूरायूथिकास्तालपर्ण्यश्चैवतथेक्षवः ॥ क्षीरवृक्षाश्चखदिराश्चिंचाभल्लातकास्तथा ॥ २६ ॥ रुचकाःकुटजावृक्षाबिल्ववृक्षास्तथैवच ॥ तुलसीनांवनान्येवंमल्लिकानांतथैवच ॥ २७ ॥

धिरीकृतंदिङ्मुखंयस्मिन् ॥ देव्यागणैर्द्वारस्थैःकिलकिलारावैःकिलकिलशब्दंकुर्वद्भिर्वेत्रहस्तैरतिसंमर्देसतिताडिताअन्यदेवानांसेवकायत्रयस्मिन्प्राकारेभ्राजंतेइत्यन्वयः ॥ १४ ॥ देवगणकोलाहलंवर्णयति। तस्मिन्कोलाहलेइति ॥ १५ ॥ अयंसमारंभोऽद्यापिराजद्वारेषूपलभ्यते॥१६॥ इत्थंलोहप्राकारमुपवर्ण्यतदुत्तरंकांस्यप्राकारंवर्णयति । तदुत्तरंमहासारोति । महासारःकांस्यंतेननिर्मितोद्वितीयःप्राकारइत्यर्थः ॥ १७ ॥ तेजसास्याच्छतगुणइति ॥ शाणेनिशितस्यनिस्त्रिंशस्ययत्तेजस्तत्तेजोलोहप्राकारस्यततोऽपिशतगुणंतेजःकांस्यप्राकारस्येत्यर्थः ॥ अस्यप्राकारस्योच्चताऽपिपूर्वोक्तैवग्राह्याविशेषानुक्तेः ॥ सालःप्राकारः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ वृक्षनामान्याह । पनसाइति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ वातव्रातैश्चलंतोद्रुमायस्मिन्वनोत्तमेतत्तादृशम् ॥ इयमतिशयोक्तिर्बहुपक्षिसद्भावदर्शिका ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ नृत्यंतोयेबर्हिणोमयूरास्तेषांकदंबस्यसमूहस्यसंबंधिनोयेकेकारवास्तैर्नादितम् ॥ मधुस्रावि वृक्षमधुस्रावि ॥ ३३ ॥ एतत्प्राकारनिवासिनोनानाविधाःसिद्धाःसिद्धांगनाश्चज्ञेयाः ॥ अग्रिमप्राकारेगंधर्वादीनांवासस्योक्तत्वात् ॥ अतएवक्वचित्पुस्तकेतत्रसिद्धांगनाःसिद्धागायंतिसंततंगुणान् ॥ भगवत्यामहाराजजपंतिचरमंतिचेतिश्लोकोऽपिदृश्यते ॥ अथतृतीयंताम्रप्राकारमाह । कांस्यसालादुत्तरेत्विति ॥ चतुरस्रोऽयंसालः ॥ ३४ ॥ द्वयोस्तुसालयोर्मध्येइति ॥ एकस्ताम्रसालोद्वितीयःसीससालस्तयोर्मध्येइत्यर्थः ॥ कल्पवाटिकाकल्पवृक्षवाटिका ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ तत्सालाधिपतिमाह । तद्वनंरक्षि

इत्यादितरुजातीनांवनान्युपवनानिच ॥ नानावापीशतैर्युक्तान्येवंसंतिधराधिप ॥ २८ ॥ कोकिलारावसंयुक्तागुंजद्भ्रमरभूषिताः ॥ निर्यासस्राविणःसर्वेस्निग्धच्छायास्तरूत्तमाः ॥२९॥ नानाऋतुभवावृक्षानानापक्षिसमाकुलाः ॥ नानारसस्राविणीभिर्नदीभिरतिशोभिताः ॥३०॥ पारावतशुकव्रातसारिकापक्षमारुतैः ॥ हंसपक्षसमुद्भूतवातव्रातैश्चलद्द्रुमम् ॥३१॥ सुगंधग्राहिपवनपूरितंतद्वनोत्तमम् ॥ सहितंहरिणीयूथैर्धावमानैरितस्ततः ॥३२॥ नृत्यद्बर्हिकदंबस्यकेकारावैःसुखप्रदैः ॥ नादितंतद्वनंदिव्यंमधुस्राविसमंततः ॥ ३३ ॥ कांस्यसालादुत्तरेतुताम्रसालःप्रकीर्तितः ॥ चतुरस्रसमाकारउन्नत्यासप्तयोजनः॥ ॥३४॥ द्वयोस्तुसालयोर्मध्येसंप्रोक्ताकल्पवाटिका ॥ येषांतरूणांपुष्पाणिकांचनाभानिभूमिप ॥ ३५ ॥ पत्राणिकांचनाभानिरत्नबीजफलानिच ॥ दशयोजनगंधोहिप्रसर्पतिसमंततः ॥३६॥ तद्वनंरक्षितंराजन्वसंतेनर्तुनानिशम् ॥ पुष्पसिंहासनासीनःपुष्पच्छत्रविराजितः ॥ ३७ ॥ पुष्पभूषाभूषितश्चपुष्पासवविघूर्णितः॥मधुश्रीर्माधवश्रीश्चद्वेभार्येतस्यसंमते॥३८॥क्रीडतःस्मेरवदनेसुमस्तबककंदुकैः ॥ अतीवरम्यंविपिनंमधुस्राविसमंततः ॥ ३९ ॥ दशयोजनपर्यंतंकुसुमामोदवायुना ॥ पूरितंदिव्यगंधर्वैःसांगनैर्गानलोलुपैः ॥ ४० ॥ शोभितंतद्वनंदिव्यंमत्तकोकिलनादितम् ॥ वसंतलक्ष्मीसंयुक्तंकामिकामप्रवर्धनम् ॥४१॥ ताम्रसालादुत्तरत्रसीससालःप्रकीर्तितः ॥ समुच्छ्रायःस्मृतोप्यस्यसप्तयोजनसंख्यया ॥ ४२ ॥ संतानवाटिकामध्येसालयोस्तुद्वयोर्नृप॥ दशयोजनगंधस्तुप्रसूनानांसमंततः ॥४३॥ हिरण्याभानिकुसुमान्युत्फुल्लानिनिरंतरम् ॥ अमृतद्रवसंयुक्तफलानिमधुराणिच ॥ ४४॥ ग्रीष्मर्तुर्नायकस्तस्यावाटिकायानृपोत्तम ॥ शुक्रश्रीश्चशुचिश्रीश्चद्वेभार्येतस्यसंमते ॥ ४५ ॥ संतापत्रस्तलोकास्तुवृक्षमूलेषुसंस्थिताः ॥ नानासिद्धैःपरिवृतोनानादेवैःसमन्वितः ॥ ४६ ॥ विलासिनीनांवृंदैस्तुचंदनद्रवपंकिलैः ॥ पुष्पमालाभूषितैस्तुतालवृंतकरांबुजैः ॥ ४७ ॥

तंराजन्निति ॥ वसंतर्तुध्यानमाह । पुष्पसिंहासनासीनइति ॥ ३७ ॥ मधुश्रीश्चैत्रलक्ष्मीर्माधवश्रीर्वैशाखलक्ष्मीः ॥ एवमुत्तरत्रमातिमासलक्ष्म्यऊह्याः ॥ ३८ ॥ सुमस्तवकाःप्रसूनगुच्छाएवकंदुकास्तैः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ अथचतुर्थंसीससालमाह । ताम्रसालादुत्तरत्रेति ॥ अत्रापिपूर्वपूर्वसालादुत्तरोत्तरसालःशतगुणिततेजसायुक्तइतिबोध्यम् ॥ ४२ ॥ सालयोःसीससालपित्तलसालयोर्मध्येसंतानवृक्षवाटिकावर्ततइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ संतापत्रस्तलोकास्त्वित्यादिनाग्रीष्मर्तुलक्ष्मीवर्णनम् ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





अथपंचमंपित्तलप्राकारमाह । सीससालादुत्तरत्रेति ॥ आरकूटमयःपित्तलनिर्मितः ॥ ४८ ॥ तयोःपित्तलसालपंचलोहमयसालयोर्मध्ये ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ऐंद्रधनुश्चापंयस्य ॥ ५१ ॥ वर्षतोर्द्वादशांगनाआह । नभःश्रीश्चेति ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ययारागिणांविषयिणांचित्तानिकलुषितानितथासरोजलानीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ देवीप्रीत्यर्थंयेकर्मयज्ञादिकंकुर्वंतितथायै र्देवीप्रीत्यर्थंतडागवापीकूपाश्चसमर्पितास्तेजनास्तत्रवसंतीत्यर्थः ॥ ५६ ॥ अथषष्ठंपंचलोहमयप्राकारमाह । आरकूटमयादग्रेइति ॥ दैर्घ्यवानुच्चतावान् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ अथस

प्राकारःशोभितोराजच्छितलांबुनिषेविभिः ॥ सीससालादुत्तरत्राप्यारकूटमयःशुभः ॥ ४८ ॥ प्राकारोवर्ततेराजन्मुनियोजनदैर्घ्यवान् ॥ हरिचंदनवृक्षा णांवाटीमध्येतयोःस्मृता ॥ ४९ ॥ सालयोरधिनाथस्तुवर्षर्तुर्मेघवाहनः ॥ विद्युत्पिंगलनेत्रश्चजीमूतकवचःस्मृतः ॥ ५० ॥ वज्रनिर्घोषमुखरश्चेंद्रधन्वास मंततः ॥ सहस्रशोवारिधारामुंचन्नास्तेगणावृतः ॥५१॥ नभःश्रीश्चनभस्यश्रीःस्वरस्यारस्यमालिनी ॥ अंबादुलानिरत्निश्चाभ्रमंतीमेघयंतिका ॥५२॥ वर्षयंतीचिबुणिकावारिधाराचसंमताः ॥ वर्षर्तोर्द्वादशप्रोक्ताःशक्तयोमदविह्वलाः ॥ ५३ ॥ नवपल्लववृक्षाश्चनवीनलतिकान्विताः ॥ हरितानितृणान्येववे ष्टितायैर्धराऽखिला ॥५४॥ नदीनदप्रवाहाश्चप्रवहंतिचवेगतः ॥ सरांसिकलुषांबूनिरागिचित्तसमानिच ॥५५॥ वसंतिदेवाःसिद्धाश्चयेदेवीकर्मकारिणः ॥ वापीकूपतडागाश्चयैर्देव्यर्थंसमर्पिताः ॥५६॥ तेगणानिवसंत्यत्रसविलासाश्चसांगनाः ॥ आरकूटमयादग्रेसप्तयोजनदैर्घ्यवान् ॥५७॥ पंचलोहात्मकःसा लोमध्येमंदारवाटिका ॥ नानापुष्पलताकीर्णानानापल्लवशोभिता ॥५८॥ अधिष्ठाताऽत्रसंप्रोक्तःशरदृतुरनामयः ॥ इषलक्ष्मीरूर्जलक्ष्मीर्द्वेभार्येतस्यसंम ते ॥५९॥ नानासिद्धावसंत्यत्रसांगनाःसपरिच्छदाः ॥ पंचलोहमयादग्रेसप्तयोजनदैर्घ्यवान् ॥ ६० ॥ दीप्यमानोमहाशृंगैर्वर्ततेरौप्यसालकः॥पारिजाता टवीमध्येप्रसूनस्तवकान्विता ॥६१॥ दशयोजनगंधीनिकुसुमानिसमंततः ॥ मोदयंतिगणान्सर्वान्येदेवीकर्मकारिणः ॥ ६२ ॥ तत्राधिनाथःसंप्रोक्तोहेमं तर्तुर्महोज्ज्वलः ॥ सगणःसायुधःसर्वान्रागिणोरंजयन्नृप ॥ ६३ ॥ सहश्रीश्चसहस्यश्रीर्द्वेभार्येतस्यसंमते ॥ वसंतितत्रसिद्धाश्चयेदेवीव्रतकारिणः ॥६४॥ रौप्यसालमयादग्रेसप्तयोजनदैर्घ्यवान् ॥ सौवर्णसालःसंप्रोक्तस्तप्तहाटककल्पितः ॥६५॥ मध्येकदंबवाटीतुपुष्पपल्लवशोभिता ॥ कदंबमदिराधाराःप्रव र्ततेसहस्रशः ॥ ६६ ॥ याभिर्निपीतपीताभिर्निजानंदोनुभूयते ॥ तत्राधिनाथःसंप्रोक्तःशैशिरर्तुमहोदयः ॥६७॥ तपःश्रीश्चतपस्यश्रीर्द्वेभार्येतस्यसंमते॥ मोदमानःसहैताभ्यांवर्ततेशिशिराकृतिः ॥६८॥ नानाविलाससंयुक्तोनानागणसमावृतः ॥ निवसंतिमहासिद्धायेदेवीदानकारिणः ॥ ६९ ॥ नानाभोगसमु त्पन्नमहानंदसमन्विताः ॥ सांगनाःपरिवारैस्तुसंघशःपरिवारिताः ॥ ७० ॥

समंरौप्यप्राकारमाह । पंचलोहमयादग्रेइति ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ देवीव्रतकारिणोदेवीप्रीत्यर्थंकृच्छ्रादिव्रतकारिणः ॥ ६४ ॥ अथअष्टमंसुवर्णसालमाह । रौप्यसालमयाद ग्रेइति ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ निपीतपीताभिर्यथेष्टंपीताभिः ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ देवीदानकारिणः देवीप्रीत्यर्थंगोदानभूदानादिदानकारिणः ॥ ६९ ॥ ७० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

अथनवमंपुष्परागमयप्राकारमाह । स्वर्णसालमयादग्रेइति ॥ मुनियोजनानिसप्तयोजनानि ॥ ७१ ॥ रत्नाकारवृक्षाणामालवालाअपिपुष्परागमयाएव ॥ ७२ ॥ अथरत्नादिसालेषुसामान्यपरिभाषामाह । प्राकारोयस्यरत्नस्येति ॥ येनरत्नेनयःप्राकारोनिर्मितस्तस्मिन्प्राकारेयेद्रुमाःपक्षिणश्चान्यच्चयद्यत्सर्वंतत्प्राकारस्थंतत्सर्वंतद्रत्नखचितमेववोध्यम् ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ किंचपूर्वस्मात्पूर्वस्मात्सालादुत्तरोत्तरोरत्नप्राकारोलक्षगुणतेजसायुक्तःस्यादित्यर्थः ॥ ७५ ॥ अस्मिन्प्राकारेकेनिवसंतितत्राऽऽह । दिक्पालाइति ॥ प्रतिब्रह्मांडवर्तिनामिंद्रादिदिक्पालानांव्यष्टिभूतानांयेनायकाःसमष्टिभूताइंद्रादयोयेश्रीभुवनेश्वरीयंत्रेभूपुरेपूज्यंतेतएवात्रवसंतीत्यर्थः ॥ भुवनेश्वरीयंत्रदेवतानामेवाग्रेवक्ष्यमाणत्वात् ॥ ७६ ॥ तत्रप्रथमतःपूर्वदि

स्वर्णसालमयादग्रेमुनियोजनदैर्घ्यवान् ॥ पुष्परागमयःसालःकुंकुमारुणविग्रहः ॥ ७१ ॥ पुष्परागमयीभूमिर्वनान्युपवनानिच ॥ रत्नवृक्षालवालाश्चपुष्परागमयाःस्मृताः ॥ ७२ ॥ प्राकारोयस्यरत्नस्यतद्रत्नरचिताद्रुमाः ॥ वनभूःपक्षिणश्चैवरत्नवर्णजलानिच ॥ ७३ ॥ मंडपामंडपस्तंभाःसरांसिकमलानिच ॥ प्राकारेतत्रयद्यत्स्यात्तत्सर्वंतत्समंभवेत् ॥ ७४ ॥ परिभाषेयमुद्दिष्टारत्नसालादिषुप्रभो ॥ तेजसास्याल्लक्षगुणःपूर्वसालात्परोनृप ॥ ७५ ॥ दिक्पालानिवसंत्यत्रप्रतिब्रह्मांडवर्तिनाम् ॥ दिक्पालानांसमष्ट्यात्मरूपाःस्फूर्जद्वरायुधाः ॥७६॥ पूर्वाशायांसमुत्तुंगशृंगापूरमरावती ॥ नानोपवनसंयुक्तामहेंद्रस्तत्रराजते ॥ ७७ ॥ स्वर्गशोभाचयास्वर्गेयावतीस्यात्ततोऽधिका ॥ समष्टिशतनेत्रस्यसहस्रगुणतःस्मृता ॥७८॥ ऐरावतसमारूढोवज्रहस्तःप्रतापवान् ॥देवसेनापरिवृतोराजतेऽत्रशतक्रतुः ॥ ७९ ॥ देवांगनागणयुताशचीतत्रविराजते ॥ वह्निकोणेवह्निपुरीवह्निपूःसदृशीनृप ॥ ८० ॥ स्वाहास्वधासमायुक्तोवह्निस्तत्रविराजते ॥ निजवाहनभूषाढ्योनिजदेवगणैर्वृतः ॥ ८१ ॥ याम्याशायांयमपुरीतत्रदंडधरोमहान् ॥ स्वभटैर्वेष्टितोराजन्चित्रगुप्तपुरोगमैः ॥८२॥ निजशक्तियुतोभास्वत्तनयोस्तियमोमहान् ॥ नैर्ऋत्यांदिशिराक्षस्यांराक्षसैःपरिवारितः ॥८३॥खड्गधारीस्फुरन्नास्तेनिर्ऋतिर्निजशक्तियुक् ॥ वारुण्यांवरुणोराजापाशधारीप्रतापवान् ॥ ८४ ॥ महाझषसमारूढोवारुणीमधुविह्वलः ॥ निजशक्तिसमायुक्तोनिजयादोगणान्वितः ॥ ८५ ॥ समास्तेवारुणेलोकेवरुणानीरताकुलः ॥ वायुकोणेवायुलोकोवायुस्तत्राधितिष्ठति ॥ ८६ ॥ वायुसाधनसंसिद्धयोगिभिःपरिवारितः ॥ ध्वजहस्तोविशालाक्षोमृगवाहनसंस्थितः ॥ ८७ ॥ मरुद्गणैःपरिवृतोनिजशक्तिसमन्वितः ॥ उत्तरस्यांदिशिमहान्यक्षलोकोस्तिभूमिप ॥ ८८ ॥

शिसहस्राक्षंवज्रधरंवर्णयति । पूर्वाशायामिति ॥ समुत्तुंगानिशृंगाणियस्याःसापूर्नगरीअमरावतीतिष्ठतीत्यर्थः ॥ तस्यांनगर्यामिंद्रस्तिष्ठति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ देवांगनासहिताशचींद्राण्यपितत्रलोकेराजते ॥ वह्निपूःसदृशीति ॥ प्रतिब्रह्मांडवर्तिन्योयावह्निपुर्यस्तत्सदृशीतत्समानाकारेयंसमष्टिवह्नेःपुरोत्यर्थः ॥ एवंसर्वादिक्पतिपुरीषुबोध्यम् ॥ ८० ॥ निजदेवगणैर्वृतोऽग्निलोकस्थदेवगणैर्वृतः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ भास्वत्तनयःसूर्यपुत्रः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ झषोमत्स्यः ॥ यादोगणाजलाधिपतयः ॥ ८५ ॥ वरुणानीवरुणांगनातस्यारतेनाकुलः ॥ ८६ ॥ वायुसाधनंप्राणायामरूपम् ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





॥ ८९ ॥ यक्षसेनापतीनाह। मणिभद्रइति ॥ ९० ॥ इत्यादयोयेयक्षसेनान्योयक्षसेनापतयस्तत्सहितइत्यर्थः ॥ ९१ ॥ रुद्रोधिदैवतमिति ॥ योब्रह्मणोललाटात्सृष्टिसमयेउत्पन्नोरुद्रःसोऽत्रविवक्षितोनतुब्रह्मविष्णुरुद्रात्मकमूर्तित्रयांतर्गतःकारणभूतोरुद्रः ॥ तस्यसर्वेश्वरत्वेनादिक्पतित्वाभावात् ॥ तस्यकैलासवासित्वाच्च ॥ बद्धाःपृष्ठमहेषुधयोयेनसः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ १६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ ईशानएवचेति । ईशानरुद्रइत्येवंख्यातइत्यर्थः ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ छ:॥ दशाधिकशतश्लोकैःपद्मरागादिनिर्मिताः ॥ प्राकाराःसंप्रवक्ष्यंतेचिंतामणिगृहांतिकाः ॥ १ ॥ अथदशमंपद्मरागमणिमयंप्राकारमाह । पुष्परागमयादग्रेइति ॥ तादृशीपद्मरागमणिमयी ॥ १ ॥

यक्षाधिराजस्तत्राऽऽस्तेवृद्धिऋद्ध्यादिशक्तिभिः ॥ नवभिर्निधिभिर्युक्तस्तुंदिलोधननायकः ॥८९॥ मणिभद्रःपूर्णभद्रोमणिमान्मणिकंधरः ॥ मणिभूषोमणिस्रग्वीमणिकार्मुकधारकः ॥ ९० ॥ इत्यादियक्षसेनानीसहितोनिजशक्तियुक् ॥ ईशानकोणेसंप्रोक्तोरुद्रलोकोमहत्तरः ॥९१॥ अनर्घ्यरत्नखचितोयत्ररुद्रोऽधिदैवतम् ॥ मन्युमान्दीप्तनयनोबद्धपृष्ठमहेषुधिः ॥९२॥ स्फूर्जद्धनुर्वामहस्तोऽधिज्यधन्वभिरावृतः ॥ स्वसमानैरसंख्यातरुद्रैःशूलवरायुधैः ॥ ॥९३॥ विकृतास्यैःकरालास्यैर्वमद्वह्निभिरास्यतः॥दशहस्तैःशतकरैःसहस्रभुजसंयुतैः॥९४॥दशपादैर्दशग्रीवैस्त्रिनेत्रैरुग्रमूर्तिभिः॥ अंतरिक्षचरायेचयेचभूमिचराःस्मृताः ॥९५॥ रुद्राध्यायेस्मृतारुद्रास्तैःसर्वैश्चसमावृतः ॥ रुद्राणीकोटिसहितोभद्रकाल्यादिमातृभिः ॥९६॥ नानाशक्तिसमाविष्टडामर्यादिगणावृतः ॥ वीरभद्रादिसहितोरुद्रोराजन्विराजते॥९७॥मुंडमालाधरोनागवलयोनागकंधरः ॥ व्याघ्रचर्मपरीधानोगजचर्मोत्तरीयकः॥९८॥ चिताभस्मांगलिप्तांगःप्रमथादिगणावृतः ॥ निनदद्डमरुध्वानैर्बधिरीकृतदिङ्मुखः ॥९९॥ अट्टहासास्फोटशब्दैःसंत्रासितनभस्तलः ॥ भूतसंघसमाविष्टोभूतावासोमहेश्वरः ॥१००॥ ईशानादिक्पतिःसोऽयंनाम्नाचेशानएवच ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ पुष्परागमयादग्रेकुंकुमारुणविग्रहः॥पद्मरागमयःसालोमध्येभूश्चैवतादृशी ॥ १ ॥ दशयोजनवान्दैर्घ्येगोपुरद्वारसंयुतः ॥ तन्मणिस्तंभसंयुक्तामंडपाःशतशोनृप ॥२॥ मध्येभुविसमासीनाश्चतुःषष्टिमिताःकलाः ॥ नानायुधधरावीरारत्नभूषणभूषिताः ॥३॥ प्रत्येकलोकस्तासांतुतत्तल्लोकस्यनायकाः॥समंतात्पद्मरागस्यपरिवार्यस्थिताःसदा ॥४॥ स्वस्वलोकजनैर्जुष्टाःस्वस्ववाहनहेतिभिः ॥ तासांनामानिवक्ष्यामिशृणुत्वंजनमेजय ॥५॥ पिंगलाक्षीविशालाक्षीसमृद्धिर्वृद्धिरेवच॥श्रद्धास्वाहास्वधाभिख्यामायासंज्ञावसुंधरा ॥६॥ त्रिलोकधात्रीसावित्रीगायत्रीत्रिदशेश्वरी॥सुरूपाबहुरूपाचस्कंदमाताऽच्युतप्रिया॥७॥

दैर्घ्येऔन्नत्ये ॥ २ ॥ अस्मिन्स्थानेयाभुवनेश्वरीयंत्रेचतुःषष्टिकलाःप्रपंचसारादितंत्रेषूक्तास्ताःसंतीत्याह। मध्येभुवीति ॥३॥ चतुःषष्टिशक्तिषुएकैकस्याःशक्तेरेकैकलोकःस्वतंत्रस्तस्मिन्प्राकारेऽस्तीत्याह । प्रत्येकलोकस्तासांत्विति ॥ यथामध्यस्थंचिंतामणिगृहंवेष्टयित्वादशदिक्पाललोकाःस्थितास्तथाचिंतामणिगृहंवेष्टयित्वैवचतुःषष्टिशक्तीनांलोकाःस्थिताइत्याह । समंतात्पद्मरागस्येति ॥ परिवार्यमध्यगृहंवेष्टयित्वेत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६॥१७ ॥ तासांसेनावर्णनमाह । शताक्षौहिणिकासेनेति ॥ एकैकस्याःशक्तेःशताक्षौहिणिकासेनाविद्यते । एवंभूताश्चतुःषष्टिशक्तयस्तत्संख्याक्षौहिणीयुताःसंतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ तासांसामर्थ्यमाह । एकैकशक्तेरिति ॥ अक्षौहिण्यंतर्गतायाचैकैकशक्तिस्तस्यालक्षब्रह्मांडनाशनेसामर्थ्यंभवति ॥ एवंभूतशताक्षौहिणीयुक्ताचैकैकाशक्तिरित्यर्थः॥१९॥ यदैकैकस्याःशक्तिरिदंसामर्थ्यंतदासर्वापीयंसेनाकिंनकुर्यात्तन्नवक्तुंशक्यतइत्याह । किंनकुर्यादिति । इदंभगवत्याःसेनास्थानमस्तीत्याह । सर्वापियु

विमलाचामलातद्वदरुणीपुनरारुणी ॥ प्रकृतिर्विकृतिःसृष्टिःस्थितिःसंहृतिरेवच ॥ ८ ॥ संध्यामातासतीहंसीमर्दिकावाग्रिकापरा ॥ देवमाताभगवतीदेवकीकमलासना ॥९॥ त्रिमुखीसप्तमुख्यन्यासुरासुरविमर्दिनी ॥ लंबोष्ठीचोर्ध्वकेशीचबहुशीर्षावृकोदरी ॥१०॥ रथरेखाह्वयापश्चाच्छशिरेखातथापरा ॥ गगनवेगापवनवेगाचैवततःपरम् ॥ ११ ॥ अग्रेभुवनपालास्यात्तत्पश्चान्मदनातुरा ॥ अनंगानंगमथनातथैवानंगमेखला ॥ १२ ॥ अनंगकुसुमापश्चाद्विश्वरूपासुरादिका ॥ क्षयंकरीभवेच्छक्तिरक्षोभ्याचततःपरम् ॥ १३ ॥ सत्यवादिन्यथप्रोक्तावहुरूपाशुचिव्रता ॥ उदाराख्याचवागीशीचतुःषष्टिमिताःस्मृताः ॥ १४ ॥ ज्वलज्जिह्वाननाःसर्वावमंत्योवह्निमुल्बणम् ॥ जलंपिबामःसकलंसंहरामोविभावसुम् ॥ १५ ॥ पवनंस्तंभयामोद्यभक्षयामोऽखिलंजगत् ॥ इतिवाचंसंगिरंतेक्रोधसंरक्तलोचनाः ॥ १६ ॥ चापबाणधराःसर्वायुद्धायैवोत्सुकाःसदा ॥ दंष्ट्राकटकटारावैर्बधिरीकृतदिङ्मुखाः ॥ १७ ॥ पिंगोर्ध्वकेश्यःसंप्रोक्ताश्चापबाणधराःसदा ॥ शताक्षौहिणिकासेनाप्येकैकस्याःप्रकीर्तिता ॥१८॥ एकैकशक्तेःसामर्थ्यंलक्षब्रह्मांडनाशने ॥ शताक्षौहिणिकासेनातादृशीनृपसत्तम ॥ १९ ॥ किंनकुर्याज्जगत्यस्मिन्नशक्यंवक्तुमेवतत् ॥ सर्वापियुद्धसामग्रीतस्मिन्सालेस्थितामुने ॥ २० ॥ रथानांगणनानास्तिहयानांकरिणांतथा ॥ शस्त्राणांगणनातद्वद्गणानांगणनातथा ॥ २१ ॥ पद्मरागमयादग्रेगोमेदमणिनिर्मितः ॥ दशयोजनदैर्घ्येणप्राकारोवर्ततेमहान् ॥२२॥ भास्वज्जपाप्रसूनाभोमध्यभूस्तस्यतादृशी ॥ गोमेदकल्पितान्येवतद्वासिसदनानिच॥२३॥पक्षिणःस्तंभवर्याश्चवृक्षावाप्यःसरांसिच ॥गोमेदकल्पिताएवकुंकुमारुणविग्रहाः॥२४॥तन्मध्यस्थामहादेव्योद्वात्रिंशच्छक्तयःस्मृताः॥नानाशस्त्रप्रहरणागोमेदमणिभूषिताः॥२५॥प्रत्येकलोकवासिन्यःपरिवार्यसमंततः॥गोमेदसालेसन्नद्धापिशाचवदनानृप॥२६॥स्वलोकवासिभिर्नित्यंपूजिताश्चक्रबाहवः ॥ क्रोधरक्तेक्षणाभिंधिपचच्छिंधिदहेतिच ॥२७॥ वदंतिसततंवाचंयुद्धोत्सुकहृदंतराः॥एकैकस्यामहाशक्तेर्दशाक्षौहिणिकामता॥२८॥सेनातत्राप्येकशक्तिर्लक्षब्रह्मांडनाशिनी ॥ तादृशीनांमहासेनावर्णनीयाकथंनृप॥२९॥

द्धसामग्रीति ॥ २० ॥ २१ ॥ अथैकादशंगोमेदमणिप्राकारमाह । पद्मरागमयादिति ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ प्रत्येकलोकेति ॥ एकैकस्याःशक्तेर्दशाक्षौहिणिकासेनायुक्तोएकैकलोकः । एवंद्वात्रिंशल्लोकास्तस्मिन्प्राकारेचिन्तामणिगृहंसमंततःपरिवार्यस्थिताइत्यर्थः ॥ पिशाचवदनाअतिभयंकराइत्यर्थः ॥२६ ॥ स्वलोकवासिभिस्तत्तच्छक्तिलोकनिवासिभिः ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सर्वयुद्धेति ॥ इयमंतरंगासेनाजगदंबिकायाः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ इत्येवंशक्तयःस्मृताइति ॥ एताःशक्तयःश्रीभुवनेश्वर्याआवरणपूजायांदक्षिणामूर्तिसंहितादितंत्रे षूक्ताः ॥ ३५ ॥ अथद्वादशंवज्रमणिप्राकारमाह । गोमेदकमयादग्रेइति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ परिचारिकादास्यस्तावर्णयति ॥ एकैकालक्षदासीभिरिति ॥ लक्षदासी नांनायिकाएकादासी । एवमष्टलक्षदासीसहिताअष्टौदास्यःसमंततःसंतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ चषकानानापानकरसपरिपूरितानिविशेषपात्राणितद्युक्तकरांबुजाः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ चित्रकनिर्मात्र्यइति ॥ स्त्रीणांभालेचंदनेननिर्मितोऽलंकारविशेषश्चित्रकस्तथाचभगवत्याभालेचित्रकालंकारनिर्मात्र्योऽतिकुशलाइत्यर्थः ॥ पादसंवाहनेइति ॥ अत्रसर्वत्रभगवत्यांइतियो

रथानांनैवगणनावाहनानांतथैवच ॥ सर्वयुद्धसमारंभस्तत्रदेव्याविराजते ॥ ३० ॥ तासांनामानिवक्ष्यामिपापनाशकराणिच ॥ विद्याद्वीपुष्टयःप्रज्ञासि नीवालीकुहूस्तथा ॥ ३१ ॥ रुद्रावीर्याप्रभानंदापोषिणीऋद्धिदाशुभा ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्भद्रकालीकपर्दिनी ॥ ३२ ॥ विकृतिर्दंडिमुंडिन्यौसेंदुखंडा शिखंडिनी ॥ निशुंभशुंभमथिनीमहिषासुरमर्दिनी ॥ ३३ ॥ इंद्राणीचैवरुद्राणीशंकरार्धशरीरिणी ॥ नारीनारायणीचैवत्रिशूलिन्यपिपालिनी॥ ३४ ॥ अंबिकाह्लादिनीपश्चादित्येवंशक्तयःस्मृताः ॥ यद्येताःकुपितादेव्यस्तदाब्रह्मांडनाशनम् ॥ ३५ ॥ पराजयोनचैतासांकदाचित्क्वचिदस्तिहि ॥गोमेदकम यादग्रेसद्वज्रमणिनिर्मितः ॥ ३६ ॥ दशयोजनतुंगोऽसौगोपुरद्वारसंयुतः ॥ कपाटशृंखलाबद्धोनववृक्षसमुज्ज्वलः ॥ ३७ ॥ सालस्तन्मध्यभूम्यादिसर्वं हीरमयंस्मृतम् ॥ गृहाणिवीथयोरथ्यामहामार्गागणानिच ॥३८॥ वृक्षालवालतरवःसारंगाअपितादृशाः ॥ दीर्घिकाश्रेणयोवाप्यस्तडागाःकूपसंयुताः ॥ ॥ ३९ ॥ तत्रश्रीभुवनेश्वर्यावसंतिपरिचारिकाः ॥ एकैकालक्षदासीभिःसेवितामदगर्विता ॥ ४० ॥ तालवृंतधराःकाश्चिच्चषकाढ्यकरांबुजाः ॥ काश्चित्तां बूलपात्राणिधारयंत्योऽतिगर्विताः ॥४१॥ काश्चित्तच्छत्रधारिण्यश्चामराणांविधारिकाः ॥ नानावस्त्रधराःकाश्चित्काश्चित्पुष्पकरांबुजाः ॥ ४२ ॥ नाना दर्शकराःकाश्चित्काश्चित्कुंकुमलेपनम् ॥ धारयंत्यःकज्जलंचसिंदूरंचषकंपराः ॥४३॥ काश्चिच्चित्रकनिर्मात्र्यःपादसंवाहनेरताः ॥ काश्चित्तुभूषाकारिण्यो नानाभूषाधराःपराः ॥ ४४ ॥ पुष्पभूषणनिर्मात्र्यःपुष्पशृंगारकारिकाः ॥ नानाविलासचतुराबह्व्यएवंविधाःपराः ॥ ४५ ॥ निबद्धपरिधानीयायुवत्यः सकलाअपि ॥ देवीकृपालेशवशात्तुच्छीकृतजगत्त्रयाः ॥ ४६ ॥ एतादूत्यःस्मृतादेव्यःशृंगारमदगर्विताः ॥ तासांनामानिवक्ष्यामिशृणुमेनृपसत्तम ॥ ॥ ४७ ॥ अनंगरूपाप्रथमाप्यनंगमदनापरा ॥ तृतीयातुततःप्रोक्तासुंदरीमदनातुरा ॥ ४८ ॥ ततोभुवनवेगास्यात्तथाभुवनपालिका ॥ स्यात्सर्वशि शिरानंगवेदनानंगमेखला ॥ ४९ ॥ विद्युद्दामसमानांग्यःक्वणत्कांचीगुणान्विताः ॥ रणन्मंजीरचरणाबहिरंतरितस्ततः ॥ ५० ॥

ज्यम् ॥ भूषाकारिपयःभगवत्यायोग्यभूषाकारिण्यः ॥ भूषाधराभगवत्याभूषापूरितरत्नकरंडकधराः ॥ ४४ ॥४५ ॥ निबद्धपरिधानीयाइति ॥ परिकरबद्धाइत्यर्थः ॥ दासीनांस्वभावए वायम् ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ विद्युद्दामसमानांग्यइति ॥ तेजस्विन्योऽतिचंचलाइत्यर्थः ॥ बहिरंतरितस्ततइति ॥ बहिर्देशादंतरंतर्देशाद्बहिरेवंचतुर्दिक्षुधावमानाइत्यर्थः ॥ दूतीनांस्वभावएवायम् ॥ ५० ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५१ ॥ प्राकाराद्बहिर्वैदूर्यप्राकाराद्बहिरित्यर्थः ॥ एतादूत्यःशारदातिलकादितंत्रेषुभुवनेश्वर्यावरणेप्रसिद्धाः ॥ तदुक्तम् ॥ पद्माद्बहिःसमभ्यर्च्याःशक्तयःपरिचारिकाइति ॥ ५२ ॥ अथत्रयोदशंवैदूर्यमणिप्राकारमाह। वज्रसालादग्रभागेइति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ अस्मिन्प्राकारेऽष्टदिक्षुब्राह्म्याद्यष्टमातरःसंतीत्याह। तत्राष्टदिक्ष्विति ॥ ५६ ॥ प्रतिब्रह्मांडसंस्थानांब्राह्म्यादीनामेताब्राह्म्यादयः समष्टिभूताइत्याह।प्रतिब्रह्मांडेति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ यथाब्रह्मादिदेवानामाकारास्तथैवतेषांशक्तीनामप्याकारावोध्याइत्याह। ब्रह्मरुद्रादीति ॥ ५९ ॥ अस्मिन्सा

धावमानास्तुशोभंतेसर्वाविद्युल्लतोपमाः ॥ कुशलाःसर्वकार्येषुवेत्रहस्ताःसमंततः ॥ ५१ ॥ अष्टदिक्षुतथैतासांप्राकाराद्बहिरेवच ॥ सदनानिविराजंतेनाना वाहनहेतिभिः ॥ ५२ ॥ वज्रसालादग्रभागेसालोवैदूर्यनिर्मितः ॥ दशयोजनतुंगोऽसौगोपुरद्वारभूषितः ॥ ५३ ॥ वैदूर्यभूमिःसर्वापिगृहाणिविविधानिच ॥ वीथ्योरथ्यामहामार्गाःसर्वेवैदूर्यनिर्मिताः ॥ ५४ ॥ वापीकूपतडागाश्चस्रवंतीनांतटानिच ॥ वालुकाचैवसर्वाऽपिवैदूर्यमणिनिर्मिता ॥५५॥ तत्राष्टदिक्षुपरितोब्राह्म्यादीनांचमंडलम् ॥ निजैर्गणैःपरिवृतंभ्राजतेनृपसत्तम ॥५६॥ प्रतिब्रह्मांडमातॄणांताःसमष्टयइरिताः ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा॥ ॥ ५७ ॥ वाराहीचतथेंद्राणीचामुंडाःसप्तमातरः ॥ अष्टमीतुमहालक्ष्मीर्नाम्नाप्रोक्तास्तुमातरः ॥५८॥ ब्रह्मरुद्रादिदेवानांसमाकारास्तुताःस्मृताः॥जगत्कल्याणकारिण्यःस्वस्वसेनासमावृताः॥५९॥तत्सालस्यचतुर्द्वार्षुवाहनानिमहेशितुः ॥ सज्जानिनृपतेसंतिसालंकाराणिनित्यशः ॥६०॥दंतिनःकोटिशोवाहाःकोटिशःशिविकास्तथा ॥ हंसाःसिंहाश्चगरुडामयूरावृषभास्तथा ॥६१॥ तैर्युक्ताःस्यंदनास्तद्वत्कोटिशोनृपनंदन॥पार्ष्णिग्राहसमायुक्ताध्वजैराकाशचुंबिनः ॥६२॥ कोटिशस्तुविमानानिनानाचिह्नान्वितानिच ॥ नानावादित्रयुक्तानिमहाध्वजयुतानिच ॥६३॥वैदूर्यमणिसालस्याप्यग्रेसालःपरःस्मृतः॥ दशयोजनतुंगोऽसाविंद्रनीलाश्मनिर्मितः ॥६४॥ तन्मध्यभूस्तथावीथ्योमहामार्गागृहाणिच ॥ वापीकूपतडागाश्चसर्वेतन्मणिनिर्मिताः ॥६५॥ तत्रपद्मंतुसंप्रोक्तंबहुयोजनविस्तृतम् ॥ षोडशारंदीप्यमानंसुदर्शनमिवापरम् ॥६६॥तत्रषोडशशक्तीनांस्थानानिविविधानिच॥सर्वोपस्करयुक्तानिसमृद्धानिवसंतिहि ॥६७॥तासांनामानिवक्ष्यामिशृणुमेनृपसत्तम ॥ करालीविकरालीचतथोमाचसरस्वती ॥६८॥ श्रीदुर्गोषातथालक्ष्मीःश्रुतिश्चैवस्मृतिर्धृतिः॥श्रद्धामेधामतिःकांतिरार्याषोडशशक्तयः॥६९॥नीलजीमूतसंकाशाःकरवालकरांबुजाः॥ समाःखेटकधारिण्योयुद्धोपक्रांतमानसाः॥७०॥ सेनान्यःसकलाएताःश्रीदेव्याजगदीशितुः॥प्रतिब्रह्मांडसंस्थानांशक्तीनांनायिकाःस्मृताः॥७१॥ब्रह्मांडक्षोभकारिण्योदेवीशक्त्युपबृंहिताः ॥ नानारथसमारूढानानाशक्तिभिरन्विताः ॥ ७२ ॥

लेभगवत्यावाहनानिनानाविधानिवसंतीत्याह । तत्सालस्येति ॥६०॥६१॥ तैर्दंतिसिंहादिभिर्युक्ताःस्यंदनारथाइत्यर्थः॥६२॥६३॥अथचतुर्दशमिन्द्रनीलमणिप्राकारमाह । वैदूर्यमणीति ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ तस्मिन्प्राकारेषोडशदलंपद्मंदेवीयंत्रावयवंविद्यतेइत्याह । तत्रपद्मंत्विति ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ षोडशशक्तयइति । एताभुवनेश्वरीयंत्रपूजायांशारदातिलकादिषुस्पष्टाः ॥ तदुक्तंशारदायाम् ॥ खड्गखेटकधारिण्यःश्यामाःपूज्याश्चमातरः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN



अथपंचदशंमुक्ताप्राकारमाह । इंद्रनीलमहासालेति ॥ ७३ ॥ तस्मिन्प्राकारेभुवनेश्वरीयंत्रेविद्यमानमष्टदलंपद्मंविद्यतेइत्याह । तन्मध्येऽष्टदलांबुजमिति ॥ ७४ ॥ सकेसरमिति । पद्मावेश षणम् ॥ देवीसमाकारारक्तवर्णाःदेव्यायुधधराःपाशांकुशवराभयधारिण्यः ॥ ७५ ॥ जगद्वार्ताप्रबोधकाःएतद्ब्रह्मांडेइदंजातंतस्मिन्ब्रह्मांडेतज्जातमितिप्रतिब्रह्मांडसंबंधिवार्तानांबोधकाइ त्यर्थः॥अमात्यानांस्वभावएवायम् ॥ ७६ ॥ विदंतिजानंति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ अथषोडशंमरकतप्राकारमाह । मुक्तासालादग्रभागेइति ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ षट्को णमत्रेति।अस्मिन्प्राकारेभुवनेश्वरीयंत्रावयवंषट्कोणंवर्ततेइत्यर्थः ॥ तदुक्तंशारदायाम् ॥ पद्ममष्टदलंबाह्येवृतंषोडशभिर्दलैः ॥ विलिखेत्कर्णिकामध्येषट्कोणमतिसुंदरमिति ॥ ८४ ॥

एतत्पराक्रमंवक्तुंसहस्रास्योऽपिनक्षमः ॥ इंद्रनीलमहासालादग्रेतुबहुविस्तृतः ॥ ७३ ॥ मुक्ताप्राकारउदितोदशयोजनदैर्घ्यवान् ॥ मध्यभूःपूर्ववत्प्रोक्तात न्मध्येऽष्टदलांबुजम् ॥ ७४ ॥ मुक्तामणिगणाकीर्णेविस्तृतंतुसकेसरम् ॥ तत्रदेवीसमाकारादेव्यायुधधराःसदा ॥ ७५ ॥ संप्रोक्ताअष्टमंत्रिण्योजगद्वार्ताप्र बोधकाः॥ देवीसमानभोगास्ताइंगितज्ञास्तुपंडिताः ॥७६॥ कुशलाःसर्वकार्येषुस्वामिकार्यपरायणाः ॥ देव्यभिप्रायबोध्यस्ताश्चतुराअतिसुंदराः ॥७७॥ नानाशक्तिसमायुक्ताःप्रतिब्रह्मांडवर्तिनाम् ॥ प्राणिनांताःसमाचारंज्ञानशक्त्याविदंतिच ॥ ७८ ॥ तासांनामानिवक्ष्यामिमत्तःशृणुनृपोत्तम ॥ अनंगकु सुमाप्रोक्ताप्यनंगकुसुमातुरा ॥ ७९ ॥ अनंगमदनातद्वदनंगमदनातुरा ॥ भुवनपालागगनवेगाचैवततःपरम् ॥ ८० ॥ शशिरेखाचगगनरेखाचैवततःपर म् ॥ पाशांकुशवराभीतिधराअरुणविग्रहाः ॥ ८१ ॥ विश्वसंबंधिनींवार्तांबोधयंतिप्रतिक्षणम् ॥ मुक्तासालादग्रभागेमहामारकतोपरः ॥ ८२ ॥ सालोत्त मःसमुद्दिष्टोदशयोजनदैर्घ्यवान् ॥ नानासौभाग्यसंयुक्तोनानाभोगसमन्वितः ॥८३॥ मध्यभूस्तादृशीप्रोक्तासदनानितथैवच ॥ षट्कोणमत्रविस्तीर्णको णस्थादेवताःशृणु ॥ ८४ ॥ पूर्वकोणेचतुर्वक्त्रोगायत्रीसहितोविधिः ॥ कुंडिकाक्षगुणाभीतिदंडायुधधरःपरः ॥ ८५ ॥ तदायुधधरादेवीगायत्रीपरदेवता ॥ वेदाःसर्वेमूर्तिमंतःशास्त्राणिविविधानिच ॥८६॥ स्मृतयश्चपुराणानिमूर्तिमंतिवसंतिहि ॥ येब्रह्मविग्रहाःसंतिगायत्रीविग्रहाश्चये ॥ ८७ ॥ व्याहृतीनांविग्र हाश्चतेनित्यंतत्रसंतिहि ॥ रक्षःकोणेशंखचक्रगदांबुजकरांबुजा ॥ ८८ ॥ सावित्रीवर्ततेतत्रमहाविष्णुश्चतादृशः॥येविष्णुविग्रहाःसंतिमत्स्यकूर्मादयोऽखि लाः ॥ ८९ ॥ सावित्रीविग्रहायेचतेसर्वेतत्रसंतिहि ॥ वायुकोणेपरश्चक्षमालाभयवरान्वितः ॥ ९० ॥ महारुद्रोवर्ततेऽत्रसरस्वत्यपितादृशी॥येयेतुरुद्रभेदाः स्युर्दक्षिणास्यादयोनृप ॥ ९१ ॥ गौरीभेदाश्चयेसर्वेतेतत्रनिवसंतिहि ॥ चतुःषष्ट्यागमायेचयेचान्येप्यागमाःस्मृताः ॥ ९२ ॥

पूर्वकोणइति ॥ पूज्यपूजकयोर्मध्येप्राचीतिनियमाद्देव्यग्रभागस्थःकोणःपूर्वकोणशब्देनग्राह्यः ॥ तदनुरोधेनैवषट्कोणानांव्यवस्थाबोध्या ॥ तस्मिन्पूर्वकोणेगायत्रीसहितोब्रह्मावर्ततइ त्यर्थः ॥ कुंडिकाकमंडलुः ॥ अक्षगुणोऽक्षसूत्रम् ॥ अभीतिरभयम् ॥ ८५ ॥ तान्येवायुधानिगायत्र्याःसंतीत्याह । तदायुधधरेति ॥ तदुक्तंशारदायाम् ॥ इंद्रकोणेलसद्दंडकुंडिकाक्षगु णाभयाम् ॥ गायत्रींपूजयेन्मंत्रीब्रह्माणमपितादृशमिति ॥ ब्रह्मसन्निधौवेदामूर्तिमंतःसंतीत्याह ॥ वेदाःसर्वेइति ॥ ८६ ॥ ब्रह्मविग्रहाब्रह्मणोऽवताराः ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ दक्षिणास्यादयोदक्षिणामूर्तिप्रभृतयः ॥ ९१ ॥ गौरीभेदाःपार्वत्यवताराः ॥ ९२ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ९३ ॥ ९४ ॥ निधिपतिर्देव्याधनपतिः ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ अथसप्तदशंप्रवालप्राकारमाह । महामारकतस्याग्रइति ॥ १०० ॥ पंचभूतानांपृथिव्यादिपंचभूतानांनायिकाः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ अथाष्टादशंनवरत्नप्राकारमाह । प्रवालसालादग्रेइति ॥ ४ ॥ आम्नायदेवीनामिति ॥ पूर्वाम्नायपश्चिमाम्नायदक्षिणाम्नायोत्तराम्नायोर्ध्वाम्नायदेवता आगमेप्रसिद्धास्तासांदेवतानांस्थानानितत्रसंतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ श्रीभगवत्यायेऽवतारागृहीतादैत्यनाशार्थंभक्तानुग्रहार्थंचतेऽपितस्मिन्नेवप्राकारेसंतीत्याह । श्रीदेव्याइति ॥ तेचपाशांकुशेश्वरीभुवनेश्वरीभैरवीकपालभुवनेश्वरीअंकुशभुवनेश्वरीप्रसादभुवनेश्वरीश्रीक्रोधभुवनेश्वरीत्रिपुटाश्वारूढानित्यक्लिन्नान्नपूर्णात्वरितादयोभुवनेश्वर्यवताराभुवनेश्वरीसंहितायांप्रसिद्धाः ॥

तेसर्वेमूर्तिमंतश्चतत्रवैनिवसंतिहि ॥ अग्निकोणेरत्नकुंभंतथामणिकरंडकम् ॥९३॥ दधानोनिजहस्ताभ्यांकुबेरोधनदायकः ॥ नानावीथीसमायुक्तोमहालक्ष्मीसमन्वितः ॥९४॥ देव्यानिधिपतिस्त्वास्तेस्वगुणैःपरिवेष्टितः ॥ वारुणेतुमहाकोणेमदनोरतिसंयुतः ॥९५॥ पाशांकुशधनुर्बाणधरोनित्यंविराजते॥ शृंगारामूर्तिमंतस्तुतत्रसन्निहिताःसदा ॥९६॥ ईशानकोणेविघ्नेशोनित्यंपुष्टिसमान्वितः॥ पाशांकुशधरोवीरोविघ्नहर्ताविराजते ॥९७॥विभूतयोगणेशस्ययायाःसंतिनृपोत्तम ॥ ताःसर्वानिवसंत्यत्रमहैश्वर्यसमन्विताः ॥९८॥ प्रतिब्रह्मांडसंस्थानांब्रह्मादीनांसमष्टयः ॥ एतेब्रह्मादयःप्रोक्ताःसेवंतेजगदीश्वरीम्॥ ॥९९॥ महामारकतस्याग्रेशतयोजनदैर्घ्यवान् ॥ प्रवालसालोस्त्यपरःकुंकुमारुणविग्रहः ॥ १०० ॥ मध्यभूस्तादृशीप्रोक्तासदनानिचपूर्ववत्॥तन्मध्येपंचभूतानांस्वामिन्यःपंचसंतिच ॥ १ ॥ हृल्लेखागगनारक्ताचतुर्थीतुकरालिका ॥ महोच्छुष्मापंचमीचपंचभूतसमप्रभाः ॥ २ ॥ पाशांकुशवराभीतिधारिण्योमितभूषणाः ॥ देवीसमानवेषाढ्यानवयौवनगर्विताः ॥३॥ प्रवालसालादग्रेतुनवरत्नविनिर्मितः ॥ बहुयोजनविस्तीर्णोमहासालोऽस्तिभूमिप ॥४॥ तत्रचाम्नायदेवीनांसदनानिबहून्यपि ॥ नवरत्नमयान्येवतडागाश्चसरांसिच ॥ ५ ॥ श्रीदेव्यायेऽवताराःस्युस्तेतत्रनिवसंतिहि ॥ महाविद्यामहाभेदाःसंतित्रैवभूमिप ॥६॥ निजावरणदेवीभिर्निजभूषणवाहनैः ॥ सर्वदेव्योविराजंतेकोटिसूर्यसमप्रभाः ॥ ७ ॥ सप्तकोटिमहामंत्रदेवताःसंतितत्रहि ॥ नवरत्नमयादग्रेचिंतामणिगृहंमहत् ॥८॥ तत्रत्यंवस्तुमात्रंतुचिंतामणिविनिर्मितम् ॥ सूर्योद्गारोपलैस्तद्वच्चंद्रोद्गारोपलैस्तथा ॥९॥ विद्युत्प्रभोपलैःस्तंभाःकल्पितास्तुसहस्रशः ॥ येषांप्रभाभिरंतस्थंवस्तुकिंचिन्नदृश्यते ॥ ११० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

महाविद्यामहाभेदाइति ॥ कालीतारामहाविद्याषोडशीत्यादयोदशमहाविद्यास्तासांयेमहाभेदाअवतारास्तेऽपितत्रप्राकारेसंतीत्यर्थः ॥ दशमहाविद्यामहाविद्यावताराश्चसंतीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ अथमुख्यंदेवीसदनमाह । नवरत्नमयादग्रेइति ॥ ८ ॥ तत्रचिंतामणिगृहस्तंभानाह । सूर्योद्गारोपलैरिति ॥ सूर्यसमानकांतिमुद्गिरंतिवमंतितेसूर्योद्गारास्तादृशायेउपलाःपाषाणाःसूर्यसमानकांतयस्तैस्तथाचंद्रोद्गारोपलैश्चंद्रसमानकांतिपाषाणैस्तथाविद्युत्प्रभपाषाणैश्चचिंतामणिगृहेसहस्रशःस्तंभाःकल्पिताइत्यर्थः ॥ ९ ॥ वस्तुकिंचिन्नदृश्यतेइति ॥ एकाविद्युद्दर्शनेनेत्रांध्यंभवतिकिंपुनरनेकविद्युत्समकांतिसहस्रस्तंभदर्शनेइत्यर्थः ॥ ११० ॥ इतिश्रीदे०द्वा०एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





त्रिसप्ततिमहापद्मैश्चिंतामणिगृहस्याहि ॥ कृत्वातुवर्णनंसम्यग्देव्याध्यानमिहोच्यते ॥१॥ अथचिंतामणिगृहंवर्णयति।तदेवदेवीसदनमिति ॥ सर्वषोडशदलाष्टदलषट्कोणमध्येयच्चिंतामाणिगृहंविंदुस्थानभूतंतदेवदेवीसदनमूलप्रकृतेर्देव्यास्तदेवस्थानम्।तत्रचत्वारोमंडपाःसंतीत्याह।सहस्रस्तंभेति ॥१॥ मंडपनामान्याह॥शृंगारमंडपइति॥तत्रसहस्रस्तंभयुक्तएकोमंडपः।एवंचतुर्दिक्षुचत्वारोमंडपाः ॥ तत्रसहस्रशब्दोऽसंख्यपर्यायः ॥ असंख्यस्तंभाःसंतीत्यर्थः ॥ सभायाअतिविस्तीर्णत्वात् ॥ २ ॥ ३ ॥ तन्मंडपानामिति ॥ चतुर्णांमंडपानांपरितउभयतएकाकाश्मीरवनिकाद्वितीयामल्लिकावनिकातृतीयाकुंदवनिकाऽस्तीत्यर्थः ॥ ४ ॥ यासुवनिकासुवाटीषुअसंख्याताःपुष्कलकागंधमृगामृगमदपूरितास्तत्स्राविणश्चसंतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ मंडपचतुष्टयोभयभागेऽपिमहापद्माटवीवर्ततेतांवर्णयति।महापद्माटवीति ॥६॥ एतद्वनिकानांवाटिकानांसुगंधेनसर्वमपिमणिद्वीपंवासितमित्यर्थः॥७॥तत्रशृंगारमंडपस्थकृत्यमाह।शृंगारमंडपेदेव्यइति।शृंगारमंडपेदेवीमध्येसिंहासनेतिष्ठतिमणिद्वीपवासिनोदेववराः पूर्वोक्ताःसर्वेसभासदःसंतिदेव्योदेवांगनावशिन्यादयश्चसर्वाअप्सरसश्चदेवीपुरतोगायंतीत्यर्थः ॥ ८ ॥ मुक्तिमंडपेतुसर्वान्प्रतिब्रह्मांडवर्तिनोभक्तान्मोचयति ॥ चतुर्विधांमुक्तिंददातीत्याह।मुक्तिमंडपेति ॥ तृतीयमंडपेभक्तेभ्योज्ञानोपदेशंनिजब्रह्मरूपविषयकज्ञानोपदेशंकरोतीत्याह । ज्ञानोपदेशमिति ॥ ९ ॥

**॥ व्यासउवाच ॥ तदेवदेवीसदनंमध्यभागेविराजते॥सहस्रस्तंभसंयुक्ताश्चत्वारस्तेषुमंडपाः ॥१॥ शृंगारमंडपश्चैकोमुक्तिमंडपएवच ॥ ज्ञानमंडपसंज्ञस्तु तृतीयः परिकीर्तितः ॥२॥ एकांतमंडपश्चैवचतुर्थःपरिकीर्तितः ॥ नानावितानसंयुक्तानानाधूपैस्तुधूपिताः ॥ ३॥ कोटिसूर्यसमाःकांत्याभ्राजंतेमंडपाःशुभाः ॥ तन्मंडपानांपरितःकाश्मीरवनिकास्मृता॥४॥ मल्लिकाकुंदवनिकायत्रपुष्कलकाःस्थिताः ॥ असंख्यातामृगमदैःपूरितास्तत्स्रवानृप ॥५॥ महापद्माटवीतद्वद्रत्नसोपाननिर्मिता ॥ सुधारसेनसंपूर्णागुंजन्मत्तमधुव्रता ॥ ६ ॥ हंसकारंडवाकीर्णागंधपूरितदिक्तटा ॥ वनिकानांसुगंधैस्तुमणिद्वीपंसुवासितम् ॥७॥शृंगारमंडपेदेव्योगायंतिविविधैःस्वरैः ॥ सभासदोदेववशामध्येश्रीजगदंबिका ॥ ८ ॥ मुक्तिमंडपमध्येतुमोचयत्यनिशंशिवा ॥ज्ञानोपदेशंकुरुते तृतीयेनृपमंडपे॥९॥चतुर्थमंडपेचैवजगद्रक्षाविचिंतनम् ॥ मंत्रिणीसहितानित्यंकरोतिजगदंबिका ॥ १० ॥ चिंतामणिगृहेराजञ्छाक्तितत्त्वात्मकैःपरैः ॥ सोपानैर्दशभिर्युक्तोमंचकोप्यधिराजते ॥११॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चईश्वरश्चसदाशिवः ॥ एतेमंचखुराःप्रोक्ताःफलकस्तुसदाशिवः ॥ १२ ॥ तस्योपरिमहादेवोभुवनेशोविराजते ॥ यादेवीनिजलीलार्थंद्विधाभूताबभूवह ॥ १३ ॥**

चतुर्थमंडपस्थंकृत्यमाह । चतुर्थमंडपेचैवेति ॥ मंत्रिण्यःपूर्वोक्ताअनंगकुसुमाद्याअष्टदलस्थाःशक्तयस्ताभिःसहिताजगद्रक्षाविचिंतनंकरोतीत्यर्थः । महाराजस्वभावएवायम् ॥ १० ॥ मुख्यदेवीस्थानमाह । चिंतामणिगृहेइति ॥ शक्तितत्त्वात्मकैरिति ॥ शक्तितत्त्वानिमूलप्रकृतेर्भुवनेश्वर्यास्तत्त्वानिदशसंख्यानि ॥ तदुक्तंशारदायां-निवृत्त्याद्याःकलाःपंचततोविंदुकलापुनः ॥ नादःशक्तिःसदापूर्वःशिवश्चप्रकृतेर्विंदुरिति ॥ तानिचदशशक्तितत्त्वानिसोपानरूपाणिश्रेणीरूपाणिअत्युच्चमंचेऽधिरोहणार्थंस्थितानितैर्दशभिःसोपानैर्युक्तोमंचकोवक्ष्यमाणोविराजतइत्यर्थः ॥ ११ ॥ मंचकस्वरूपमाह । ब्रह्माविष्णुश्चेति ॥ ब्रह्मादयश्चत्वारोमंचकखुराः ॥ सदाशिवस्तुफलकस्थानीयइत्यर्थः ॥ १२ ॥ तस्मिन्मंचेभुवनेश्वरोमहादेवोविराजते ॥ कोऽसौभुवनेश्वरइतिचेत्तत्राह । यादेवीति ॥ निजलीलार्थंयोग्यानिजदेहानुरूपक्रीडार्थसृष्ट्यादौस्वयंभगवतीद्विधाभूताबभूवतद्दक्षिणार्धभागोऽयंभुवनेश्वरइत्यर्थः ॥ एकैवसाम्यावस्थमायाशवलब्रह्मरूपिणीभगवतीभुवनेश्वरीभुवनेश्वररूपेणप्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥ १३ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

कंदर्पस्ययःसौंदर्यदर्पस्तन्नाशनेउद्यंतउत्पन्नायेकोटिकंदर्पास्तद्वत्सुंदरोभुवनेश्वरइत्यर्थः ॥ अभूतोपमेयम् ॥ निरतिशयसौंदर्यवानित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ त्रिनेत्रइति ॥ प्रतिव क्रंत्रिनेत्रइत्यर्थः ॥ तस्यभुवनेश्वरस्यवामांकेश्रीभुवनेश्वरीविराजतेइत्याह । वामांकइति ॥ १७ ॥ तांवर्णयति। नवरत्नेति ॥ नवरत्नगणाकीर्णयत्कांचीदामकटिसूत्रंतेनान्विता ॥ तप्तकां चनेसन्नद्धाःखचितायेवैदूर्यमणयस्तद्युक्तमंगदंभूषणंबाहुभूषणंयस्याःसा ॥ १८ ॥ कनद्दीप्यमानंश्रीचक्रंतदाकारंयत्ताटंकंकर्णभूषणंतेनविटंकंसुंदरंवदनांबुजंयस्याःसा ॥ ललाटकांतिवि भवेनविजितोऽर्धसुधाकरोऽर्धचंद्रोयस्याःसा यथासेतिवा ॥ अष्टमीचंद्रबिंबसदृशललाटवतीत्यर्थः ॥ १९ ॥ बिंबकांतेस्तिरस्कारियद्रदच्छदमोष्ठपुटंतेनाविराजिता ॥ २० ॥ दिव्योयश्चू डामणिःशिरोभूषणंतस्मिन्स्फारौविस्तीर्णौचंचच्चंद्रकसूर्यकौयस्याः ॥ चंद्रकसूर्यकावित्यत्रैवेप्रतिकृतावितिकन् ॥ रत्ननिर्मितचंद्रसूर्यसंबद्धचूडामणिभूषणविराजितेत्यर्थः ॥ उद्यन्यः

सृष्ट्यादौतुसएवायंतदर्धांगोमहेश्वरः ॥ कंदर्पदर्पनाशोद्यत्कोटिकंदर्पसुंदरः ॥ १४ ॥ पंचवक्त्रस्त्रिनेत्रश्चमणिभूषणभूषितः ॥ हरिणाभीतिपरशून्वरंचनिज बाहुभिः ॥ १५ ॥ दधानःषोडशाब्दोऽसौदेवःसर्वेश्वरोमहान् ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशश्चंद्रकोटिसुशीतलः ॥ १६ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशस्त्रिनेत्रःशीतलद्यु तिः ॥ वामांकेसन्निषण्णाऽस्यदेवीश्रीभुवनेश्वरी ॥ १७ ॥ नवरत्नगणाकीर्णकांचीदामविराजिता ॥ तप्तकांचनसन्नद्धवैदूर्यांगदभूषणा ॥ १८ ॥ कनच्छ्री चक्रताटंकविटंकवदनांबुजा ॥ ललाटकांतिविभवविजितार्धसुधाकरा ॥१९॥ बिंबकांतितिरस्कारिरदच्छदविराजिता ॥ लसत्कुंकुमकस्तूरीतिलकोद्भा सितानना ॥२०॥ दिव्यचूडामणिस्फारचंचच्चंद्रकसूर्यका ॥ उद्यत्कविसमस्वच्छनासाभरणभासुरा ॥२१॥चिंताकलंबितस्वच्छमुक्तागुच्छविराजिता ॥ पटीरपंककर्पूरकुंकुमालंकृतस्तनी ॥ २२ ॥ विचित्रविविधाकल्पाकंबुसंकाशकंधरा ॥ दाडिमीफलबीजाभदंतपंक्तिविराजिता ॥ २३ ॥ अनर्घ्यरत्नघटि तमुकुटांचितमस्तका ॥ मत्तालिमालाविलसदलकाढ्यमुखांबुजा ॥२४ ॥ कलंककार्श्यनिर्मुक्तशरच्चंद्रनिभानना ॥ जाह्नवीसलिलावर्तशोभिनाभिविभू षिता ॥२५॥माणिक्यशकलाबद्धमुद्रिकांगुलिभूषिता ॥ पुंडरीकदलाकारनयनत्रयसुंदरी॥२६॥कल्पिताच्छमहारागपद्मरागोज्ज्वलप्रभा ॥ रत्नाकिंकि णिकायुक्तरत्नकंकणशोभिता ॥ २७ ॥ मणिमुक्तासरापारलसत्पदकसंततिः ॥ रत्नांगुलिप्रविततप्रभाजाललसत्करा ॥२८॥ कंचुकीगुंफितापारनानारत्न ततिद्युतिः ॥ मल्लिकामोदिधम्मिल्लमल्लिकालिसरावृता ॥२९॥ सुवृत्तनिबिडोत्तुंगकुचभारालसाशिवा ॥ वरपाशांकुशाभीतिलसद्बाहुचतुष्टया ॥ ३० ॥ सर्वशृंगारवेषाढ्यासुकुमारांगवल्लरी ॥ सौंदर्यधारासर्वस्वानिर्व्याजकरुणामयी ॥ ३१ ॥

कविःशुक्रनक्षत्रंतेनसमंस्वच्छंयन्नासाभरणंतेनभासुरा ॥ २१ ॥ चिंताकंकंठभूषणविशेषस्तस्मिंल्लंबितोयःस्वच्छमुक्तागुच्छस्तेनविराजिता ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ कलंककार्श्याभ्यां निर्मुक्तोयःशरच्चंद्रस्तन्निभमाननंयस्याः ॥ २५ ॥ २६ ॥ कल्पितःशाणघर्षणेनसंपादितोच्छमहारागोयस्यतादृशोयःपद्मरागस्तद्वदुज्ज्वलाप्रभायस्याःसा ॥ किंकिणिकाक्षुद्रघंटिका ॥ २७ ॥ मणिमुक्तासरेषुमणिमुक्तामालासुविद्यमानाअपाराअमौल्यालसत्पदकसंततिर्यस्याःसा ॥ २८ ॥ मल्लिकायाआमोदीयोधम्मिल्लस्तास्मिन्यामल्लिकामल्लिकामालातास्मिन्योलि सरोभ्रमरपंक्तिस्तेनान्विता ॥ २९ ॥ सुवृत्तनिबिडोत्तुंगकुचभारेणालसाखिन्ना ॥ ३० ॥ ३१ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





संलापोवाणीतस्यामाधुर्येणाविनिर्भर्त्सिताकच्छपीवीणायस्याययावासा ॥३२ ॥ ३३ ॥ इच्छाशक्त्योति ॥ इदंमूर्तिमच्छक्तित्रयंदेव्याःसन्निधावस्तीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ जयादिनवपीठश क्तयोऽपिमूर्तिमत्योदेवींस्तुवंतीत्याह । जयाचेति ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ देवीपार्श्वभागस्थौनिधीवर्णयति ॥ यस्यास्त्विति ॥ शंखनिधिःपद्मनिधिश्च ॥ ३७ ॥ निधिभ्यांनिधिसकाशाद्विनि र्गताइत्यर्थः ॥ तारत्नवहानद्यःसुधासिंध्वंतगामिन्यःसंतीत्यनेनमध्यस्थप्राकाराणांनदीनिर्गमनयोग्यानिद्वाराणिसंतीत्येतदुक्तंभवति ॥ ३८ ॥ एतादृशीयाभुवनेश्वरीसाभुवनेश्वरस्यां केतिष्ठतीत्याह । सादेवीति ॥ ३९ ॥ सहस्रयोजनायाममिति ॥ चिंतामणिगृहंसहस्रयोजनायामंतदुत्तरसालास्तु पूर्वस्मात्पूर्वस्माद्विगुणविस्ताराइत्यर्थः ॥ ४० ॥ इदंमणिद्वीपंनभूमि

निजसंलापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छपी ॥ कोटिकोटिरवींदूनांकांतिंयाबिभ्रतीपरा॥३२॥नानासखीभिर्दासीभिस्तथादेवांगनादिभिः ॥ सर्वाभिर्देवताभि स्तुसमंतात्परिवेष्टिता ॥ ३३॥ इच्छाशक्त्याज्ञानशक्त्याक्रियाशक्त्यासमन्विता॥लज्जातुष्टिस्तथापुष्टिःकीर्तिःकांतिःक्षमादया ॥३४॥ बुद्धिर्मेधास्मृति र्लक्ष्मीर्मूर्तिमत्योंगनाःस्मृताः ॥ जयाचविजयाचैवाप्यजिताचापराजिता ॥३५॥ नित्याविलासिनीदोग्ध्रीत्वघोरामंगलानवा ॥ पीठशक्तयएतास्तुसेवंते यांपरांबिकाम् ॥ ३६ ॥ यस्यास्तुपार्श्वभागेस्तोनिधीतौशंखपद्मकौ ॥ नवरत्नवहानद्यस्तथावैकांचनस्रवाः ॥ ३७॥ सप्तधातुवहानद्योनिधिभ्यांतुविनि र्गताः ॥ सुधासिंध्वंतगामिन्यस्ताःसर्वानृपसत्तम ॥३८॥ सादेवीभुवनेशानीतद्धामांकेविराजते ॥ सर्वेशत्वंमहेशस्ययत्संगादेवनान्यथा ॥३९॥ चिंताम णिगृहस्याऽस्यप्रमाणंशृणुभूमिप ॥ सहस्रयोजनायामंमहांतस्तत्प्रचक्षते ॥ ४० ॥ तदुत्तरेमहासालाःपूर्वस्माद्विगुणाःस्मृताः ॥ अंतरिक्षगतंत्वेतन्निराधा रंविराजते ॥ ४१ ॥ संकोचश्चविकासश्चजायतेऽस्यनिरंतरम् ॥ पटवत्कार्यवशतःप्रलयेसर्जनेतथा ॥४२॥ सालानांचैवसर्वेषांसर्वकांतिपरावधि ॥चिंता मणिगृहंप्रोक्तंयत्रदेवीमहोमयी ॥ ४३ ॥ येयेउपासकाःसंतिप्रतिब्रह्मांडवर्तिनः ॥ देवेषुनागलोकेषुमनुष्येष्वितरेषुच ॥ ४४॥ श्रीदेव्यास्तेचसर्वेऽपिव्रजं त्यत्रैवभूमिप॥देवीक्षेत्रेयेत्यजंतिप्राणान्देव्यर्चनेरताः ॥४५॥ तेसर्वेयांतितत्रैवयत्रदेवीमहोत्सवा ॥ घृतकुल्यादुग्धकुल्यादधिकुल्यामधुस्रवाः ॥ ४६ ॥ स्यंदंतिसरितःसर्वास्तथामृतवहाःपराः ॥ द्राक्षारसवहाःकाश्चिज्जंबूरसवहाःपराः ॥ ४७ ॥ आम्रेक्षुरसवाहिन्योनद्यस्तास्तुसहस्रशः ॥ मनोरथफलावृक्षा वाप्यःकूपास्तथैवच ॥ ४८ ॥ यथेष्टपानफलदानन्यूनंकिंचिदस्तिहि ॥ नरोगपलितंवापिजरावापिकदाचन ॥ ४९ ॥ नचिंतानचमात्सर्यंकामक्रोधादि कंतथा ॥ सर्वेयुवानःसस्त्रीकाःसहस्रादित्यवर्चसः ॥ ५० ॥ भजंतिसततंदेवींतत्रश्रीभुवनेश्वरीम् ॥ केचित्सलोकतापन्नाःकेचित्सामीप्यतांगताः ॥५१॥

ष्ठंकिंत्वंतरिक्षगतमिति ॥ ४१ ॥ किंचास्यमणिद्वीपस्यप्रलयेऽपिननाशस्तथासृष्टिसमयेनोत्पत्तिः ॥ किंतुप्रलयेपटवत्संकोचोभवतिसृष्टिसमयेविकासोभवति ॥ तथाचसंकोचविकासशा लिकमलवत्पटवच्चास्तीत्याह । संकोचश्चेति ॥ कार्यवशतइत्यनेनप्रतिब्रह्मांडवर्तिनांभक्तानांबहूनांसंघर्षेतथाप्रतिब्रह्मांडवर्तिनांदेवादीनांचसंघर्षेविकासोभवतिवृद्धिंगच्छति ॥ तदभावेसंको चोभवतीत्येतदुक्तंभवति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अस्मिन्मणिद्वीपेयेव्रजंतितानाह । येयेउपासकाःसंतीति ॥ ४४ ॥ श्रीदेव्याःपराशक्तेरुपासकाइत्यन्वयः ॥ देवीक्षेत्रेषुसप्तमस्कंधोक्तेषु ॥ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ ५२ ॥ समष्टयइति ॥ यायामणिद्वीपेदेवतास्ताःसर्वाःप्रतिब्रह्मांडवर्तिनांदेवानांसमष्टयःसंतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ मायाशवलविग्रहामुपासतेइत्यन्वयः ॥ ५४ ॥ समुदितंमणिद्वीपंवर्णयति । इत्थंराजन्निति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ रत्नशृंगिणोरत्नपर्वतास्तद्युक्तम् ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ऐश्वर्यादीनामुत्तमगुणानांसमाप्तिर त्रवर्ततइत्याह । ऐश्वर्यस्यसमग्रस्येति ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ तैत्तिरीयश्रुतौसार्वभौमानंदमारभ्यब्रह्मलोकपर्यंतमानंदभेदायेउक्तास्तेसर्वेप्यानंदाअत्रसंतीत्याह । राज्ञआनंदमारभ्येति ॥ ६९॥

सरूपतांगताःकेचित्सार्ष्टितांचपरेगताः ॥ यायास्तुदेवतास्तत्रप्रतिब्रह्मांडवर्तिनाम्॥५२॥समष्टयःस्थितास्तास्तुसेवंतेजगदीश्वरीम् ॥ सप्तकोटिमहामंत्रा मूर्तिमंतउपासते ॥ ५३ ॥ महाविद्याश्चसकलाःसाम्यावस्थात्मिकांशिवाम् ॥ कारणब्रह्मरूपांतांमायाशवलविग्रहाम् ॥ ५४ ॥ इत्थंराजन्मयाप्रोक्तंम णिद्वीपंमहत्तरम् ॥ नसूर्यचंद्रौनोविद्युत्कोटयोऽग्निस्तथैवच ॥५५॥ एतस्यभासाकोट्यंशकोट्यंशेनापितेसमाः ॥ क्वचिद्विद्रुमसंकाशंक्वचिन्मरकतच्छ वि ॥ ५६ ॥ विद्युद्भानुसमच्छायंमध्यसूर्यसमंक्वचित् ॥ विद्युत्कोटिमहाधारासारकांतिततंक्वचित्॥५७॥क्वचित्सिंदूरनीलेंद्रमाणिक्यसदृशच्छवि ॥ ही रसारमहागर्भधगद्धगितदिक्तटम् ॥५८॥ कांत्यादावानलसमंतप्तकांचनसन्निभम् ॥ क्वचिच्चंद्रोपलोद्गारंसूर्योद्गारंचकुत्रचित् ॥ ५९ ॥ रत्नशृंगिसमायुक्तंर त्नप्राकारगोपुरम् ॥ रत्नपत्रैरत्नफलैर्वृक्षैश्चपरिमंडितम् ॥६०॥ नृत्यन्मयूरसंघैश्चकपोतरणितोज्ज्वलम् ॥ कोकिलाकाकलीलापैःशुकलापैश्चशोभितम्॥ ॥ ६१ ॥ सुरम्यरमणीयांबुलक्षावधिसरोवृतम् ॥ तन्मध्यभागविलसद्विकचद्रत्नपंकजैः॥६२॥ सुगंधिभिःसमंतात्तुवासितंशतयोजनम् ॥ मंदमारुतसंभि न्नचलद्रुमसमाकुलम् ॥ ६३ ॥ चिंतामणिसमूहानांज्योतिषावितताबरम् ॥ रत्नप्रभाभिरभितोधगद्धगितदिक्तटम् ॥६४॥ वृक्षव्रातमहागंधवातव्रातसुपू रितम् ॥ धूपधूपायितंराजन्मणिदीपायुतोज्ज्वलम् ॥ ६५ ॥ मणिजालकसच्छिद्रतरलोदरकांतिभिः ॥ दिङ्मोहजनकंचैतद्दर्पणोदरसंयुतम् ॥६६॥ ऐ श्वर्यस्यसमग्रस्यशृंगारस्याखिलस्यच ॥ सर्वज्ञतायाःसर्वायास्तेजसश्चाखिलस्यच॥६७॥पराक्रमस्यसर्वस्यसर्वोत्तमगुणस्यच॥सकलायादयायाश्चसमा प्तिरिहभूपते॥६८॥राज्ञआनंदमारभ्यब्रह्मलोकांतभूमिषु ॥ आनंदायेस्थिताःसर्वेतेऽत्रैवांतर्भवंतिहि ॥ ६९ ॥ इतितेवर्णितंराजन्मणिद्वीपंमहत्तरम् ॥ म हादेव्याःपरंस्थानंसर्वलोकोत्तमोत्तमम् ॥ ७० ॥ एतस्यस्मरणात्सद्यःसर्वपापंविनश्यति ॥ प्राणोत्क्रमणसंधौतुस्मृत्वातत्रैवगच्छति॥७१॥अध्यायपंच कंत्वेतत्पठेन्नित्यंसमाहितः ॥ भूतप्रेतपिशाचादिबाधातत्रभवेन्नहि ॥७२॥ नवीनगृहनिर्माणेवास्तुस्तथैवच ॥ पठितव्यंप्रयत्नेनकल्याणंतेनजायते ॥ ॥ ७३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

मणिद्वीपवर्णनमुपसंहरति । इतितेवर्णितमिति ॥ ७० ॥ प्राणोत्क्रमणसंधौमरणसमयेएतन्मणिद्वीपंस्मृत्वामृतःप्राणीतत्रैवमणिद्वीपेएवगच्छतीत्यर्थः ॥ ७१ ॥ अष्टमाध्यायमारभ्यद्वाद शाध्यायपर्यंतंपंचाध्यायाःसंतितेषांपठनेयत्फलंतत्कथयति । अध्यायपंचकंत्वेतदिति ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ॥ इ०श्रीदे०भा०तिलकेद्वादशस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





त्रिंशत्पद्यैरर्धपद्यसहितैर्जनमेजयः ॥ देवीमखंचकारेतिकथेयमुपवर्ण्यते ॥१॥ एतावत्पर्यंतंश्रीदेवीभागवतपुराणंकथितंतदुपसंहरति । इतितेकथितंभूपेति ॥ यत्पृष्टंप्रथमस्कंधमारभ्यैताव त्पर्यंतंयद्यत्पृष्टंतन्मयोक्तंतत्राष्टमस्कंधारंभेयद्यत्त्वयापृष्टंतत्सर्वंनारायणनारदसंवादमुखेनमयैवप्रोक्तमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ अथयत्त्वयातृतीयस्कंधेउक्तंममपिताऽपमृत्युनामृतोदुर्गतिंगत स्तदुद्धारार्थंकिंचिद्वदेतितत्रतदुद्धारार्थंदेवीमखंकुर्वित्याह । कुरुचांवामखमिति ॥३॥ अथचस्वस्योद्धारायपित्रुद्धारायचदेव्यामहामंत्रंगृहाणेत्याह । गृहाणत्वमिति ॥ ४ ॥ देवीप्रणवसंज्ञ कमिति ॥ सचमायाबीजात्मकः श्रीभुवनेश्वर्यामंत्रस्तंजग्राहेत्यर्थः ॥ देवीप्रणवत्वादेवैतस्योपदेशःकाश्यामुक्तोरुद्रयामले॥काशीपुरीपरिसरेसुरसिंधुतीरेकर्णेजपत्यनुदिनंकिलदेहभाजाम्॥ मोक्षार्थमेवदययाशशिखंडमौलिःश्रीशक्तिबीजमनघंसुरसंघसेव्यमिति ॥ अन्यवचनान्यपिदुर्गाप्रदीपेद्रष्टव्यानि ॥ तत्रवैष्णवेभ्योराममंत्रस्यशैवेभ्यःपंचाक्षरस्यवृहज्जावालोक्त्याशाक्तेभ्यः

॥ व्यासउवाच ॥ इतितेकथितंभूपयद्यत्पृष्टंत्वयाऽनघ ॥ नारायणेनयत्प्रोक्तंनारदायमहात्मने ॥ १ ॥ श्रुत्वैतत्तुमहादेव्याःपुराणंपरमाद्भुतम्॥कृतकृत्यो भवेन्मर्त्योदेव्याःप्रियतमोहिसः ॥२॥ कुरुचांवामखंराजन्स्वपित्रुद्धरणायवै ॥ खिन्नोऽसियेनराजेंद्रपितुर्ज्ञात्वातुदुर्गतिम् ॥ ३ ॥ गृहाणत्वंमहादेव्यामंत्रं सर्वोत्तमोत्तमम् ॥ यथाविधिविधानेनजन्मसाफल्यदायकम् ॥ ४ ॥ सूतउवाच ॥ तच्छ्रुत्वानृपशार्दूलःप्रार्थयित्वामुनीश्वरम् ॥ तस्मादेवमहामंत्रंदेवीप्र णवसंज्ञकम् ॥ ५ ॥ दीक्षाविधिविधानेनजग्राहनृपसत्तमः ॥ ततआहूयधौम्यादीन्नवरात्रसमागमे ॥६॥ अंबायज्ञंचकाराशुवित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ ब्राह्म णैःपाठयामासपुराणंत्वेतदुत्तमम् ॥ ७ ॥ श्रीदेव्यग्रेंऽबिकाप्रीत्यैदेवीभागवतंपरम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयामासाप्यसंख्यातान्सुवासिनीः ॥ ८ ॥ कुमारीर्बटु कादींश्चदीनानाथांस्तथैवच॥द्रव्यप्रदानैस्तान्सर्वान्संतोष्यवसुधाधिपः ॥९॥ समाप्ययज्ञंसंस्थानेसंस्थितोयावदेवहि ॥ तावदेवहिचाकाशान्नारदःसमवा तरत् ॥ १० ॥ रणयन्महतींवीणांज्वलदग्निशिखोपमः ॥ ससंभ्रमःसमुत्थायदृष्ट्वातंनारदंमुनिम् ॥ ११ ॥ आसनाद्युपचारैश्चपूजयामासभूमिपः॥ कृत्वातु कुशलप्रश्नंपप्रच्छागमकारणम् ॥ १२ ॥ राजोवाच ॥ कुतआगमनंसाधोब्रूहिकिंकरवाणिते ॥ सनाथोऽहंकृतार्थोऽहंत्वदागमनकारणात् ॥१३॥ इतिरा ज्ञोवचःश्रुत्वाप्रोवाचमुनिसत्तमः ॥ अद्याऽऽश्चर्यंमयादृष्टंदेवलोकेनृपोत्तम ॥ १४ ॥ तन्निवेदयितुंप्राप्तस्त्वत्सकाशेसविस्मितः ॥ तेपितादुर्गतिंप्राप्तोनिज कर्मविपर्ययात् ॥ १५ ॥ सएवायंदिव्यरूपवपुर्भूत्वाऽधुनैवहि ॥ देवदेवैःस्तुतःसम्यगप्सरोभिःसमंततः ॥ १६ ॥

शक्तिबीजस्यभुवनेश्वरीमंत्रस्ययतिभ्यःप्रणवस्योपदेशइतिव्यवस्था॥५॥इत्थंदीक्षाविधानेनतस्मादेवव्यासाद्भुवनेश्वरीमंत्रंगृहीत्वादेवीमखसंपादनार्थंधौम्यादिऋषीनाहूतवानित्याह।ततआहूये ति॥नवरात्रसमागमेइत्यनेनकोटिहोमात्मकोदेवीमखःकृतइतिप्रतिभाति॥६॥तस्मिन्यज्ञेब्राह्मणैःकर्तृभिर्देवीभागवतंपुराणंपाठयामासेत्याह। ब्राह्मणैरिति॥ एतत्पुराणंश्रीदेवीभागवतंपुराण मित्यर्थः ॥ ७ ॥ श्रीदेव्यग्रेइति ॥ मंडपस्थलस्थापितश्रीदेव्याअग्रेइत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ यावदेवहीति ॥ यस्मिन्कालेराजादेवीमखंसमाप्यस्थितस्तस्मिन्नेवकालेइत्यर्थः ॥ १० ॥ ससं भ्रमःसहर्षोराजासमुत्थायेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ निजकर्मविपर्ययान्निजकर्मव्यत्यासेनब्राह्मणापराधलक्षणेनविष्णुभागवतश्रवणेनोद्धृतइतितुकल्पांतराभिप्रायेणविष्णुभा गवतेउक्तम् ॥ १५ ॥ १६ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

मणिद्वीपंतृतीयस्कंधोक्तंदेवीलोकम् ॥ केनपुण्यफलेनेदंजातंतत्राऽह।देवीभागवतस्यास्येति ॥ १७ ॥ तातःपिता ॥ १८ ॥ १९ ॥ इदंसर्वंदुर्घटंफलं व्यासगुरुप्रसादादेवमयालब्धामितितं व्यासंप्रणमति ।पपातेति ॥ २० ॥ नमस्काराद्दतेनमस्कारंविनाकिंमयाप्रतिकर्तव्यंतवोपकारस्यप्रत्युपकारोमयाकःकर्तव्योनकथमपीत्यर्थः ॥ २१ ॥२२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ हरिरुद्रौमुखे प्रथमंयेषांपुराणानांतानिचशिवपुराणविष्णुपुराणप्रभृतीनि ॥ २५ ॥२६॥ देवीभागवतस्यैवसर्वोत्कृष्टत्वेहेतुमाह ॥ मूलप्रकृतिरेवैषेति ॥ मूलप्रकृतिजन्याविष्णुब्रह्मप्रभृतीनामेकैकगुणोपा धिकानांप्रतिपादकानिपुराणान्यन्यानि ॥ देवीभागवतंतुगुणत्रयसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मरूपमूलप्रकृतिप्रतिपादकंसाक्षाद्भवति । तस्मादिदमेवसर्वोत्कृष्टमेतत्सदृशमन्यपुराणंकथंभविष्य तीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ त्रिंशच्छ्लोकैर्गतेव्यासेतूपसंहारउच्यते ॥ पुराणस्यस

विमानवरमारुह्यमणिद्वीपंगतोऽभवत् ॥ देवीभागवतस्यास्यश्रवणोत्थफलेनच ॥ १७ ॥ अंबामखफलेनापिपितातेसुगतिंगतः ॥ धन्योऽसिकृतकृत्यो ऽसिजीवितंसफलंतव ॥ १८ ॥ नरकादुद्धृतस्तातस्त्वयातुकुलभूषण ॥ देवलोकेस्फीतकीर्तिस्तवाद्यविपुलाऽभवत् ॥१९॥ सूतउवाच ॥ नारदोक्तंसमा कर्ण्यप्रेमगद्गदितांतरः ॥ पपातपादांबुजयोर्व्यासस्याद्भुतकर्मणः ॥ २० ॥ तवानुग्रहतोदेवकृतार्थोऽहंमहामुने ॥ किंमयाप्रतिकर्तव्यंनमस्काराद्दतेतव ॥ ॥ २१ ॥ अनुग्राह्यःसदैवाहमेवमेवत्वयामुने ॥ इतिराज्ञोवचःश्रुत्वाप्याशीर्भिरभिनन्द्यच ॥ २२ ॥ उवाचवचनंश्लक्ष्णंभगवान्बादरायणः ॥ राजन्सर्वप रित्यज्यभजदेवीपदांबुजम् ॥ २३ ॥ देवीभागवतंचैवपठनित्यंसमाहितः ॥ अंबामखंसदाभक्त्याकुरुनित्यमतंद्रितः ॥२४॥ अनायासेनतेनत्वंमोक्ष्यसे भवबंधनात् ॥ सन्त्यन्यानिपुराणानिहरिरुद्रमुखानिच ॥ २५ ॥ देवीभागवतस्यास्यकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ सारमेतत्पुराणानांवेदानांचैवसर्वशः ॥ ॥ २६ ॥ मूलप्रकृतिरेवैषायत्रतुप्रतिपाद्यते ॥ समंतेनपुराणंस्यात्कथमन्यन्नृपोत्तम ॥२७॥ पाठेवेदसमंपुण्यंयस्यस्याज्जनमेजय ॥ पठितव्यंप्रयत्नेनतदे वविबुधोत्तमैः ॥ २८ ॥ इत्युक्त्वानृपवर्यंतंजगाममुनिराट्ततः ॥ जग्मुश्चैवयथास्थानंधौम्यादिमुनयोमलाः ॥ २९ ॥ देवीभागवतस्यैवप्रशंसांचकुरुत्तमा म् ॥ राजाशशासधरणींततःसंतुष्टमानसः ॥ ३० ॥ देवीभागवतंचैवपठञ्छृण्वन्निरंतरम् ॥ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेत्रयोदशोऽध्या यः ॥ १३ ॥ सूतउवाच ॥ अर्धश्लोकात्मकंयत्तुदेवीवक्त्राब्जनिर्गतम् ॥ श्रीमद्भागवतंनामवेदसिद्धांतबोधकम् ॥१॥ उपदिष्टंविष्णवेयद्वटपत्रनिवासिने ॥ शतकोटिप्रविस्तीर्णंतत्कृतंब्रह्मणापुरा ॥ २ ॥ तत्सारमेकतःकृत्वाव्यासेनशुकहेतवे ॥ अष्टादशसहस्रंतुद्वादशस्कंधसंयुतम् ॥ ३ ॥

मग्रस्यफलदर्शनपूर्वकम् ॥ १ ॥ श्रीव्यासगमनोत्तरंशौनकादिऋषिभ्यःसूतोवदीत। सूतउवाच अर्धश्लोकेति ॥ तृतीयस्कंधेवटपत्रशयानायविष्णवेबालरूपिणे ॥ श्लोकार्धेनतदासर्वंभगव त्याखिलार्थदम् ॥ सर्वंखल्विदमेवाहंनान्यदस्तिसनातनमिति प्रोक्तवचनेयत्श्लोकार्धंश्रीभगवतीमुखांबुजान्निर्गतंश्रीमद्भागवतमर्धश्लोकात्मकंसूत्ररूपंदेवीभागवतमित्यर्थः ॥ वेदसिद्धांतबो धकंसर्वंखल्विदंब्रह्मेतिवेदसिद्धांतस्यबोधकमित्यर्थः ॥ १ ॥ तत्सूत्ररूपंदेवीभागवतमर्धश्लोकात्मकंपुरापूर्वंब्रह्मणाचतुर्मुखेनशतकोटिप्रविस्तीर्णंकृतंतस्यसूत्रभागवतस्यव्याख्यानरूपेणैता वान्विस्तारःकृतइत्यर्थः ॥ २ ॥ शुकहेतवेशुककल्याणार्थम् ॥ ३ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





तच्छतकोटिप्रविस्तीर्णंकास्तीतिचेत्तत्राऽऽह । अद्यापीति ॥ ४ ॥ एतस्यदेवीभागवतस्यैकैकपदस्यपाठेऽश्वमेधफलंभवतीत्याह । पदेपदेऽश्वमेधस्येति ॥५॥ पुराणस्यविधिमाह । पौराणि कमिति ॥ प्रथमतोदेवीभागवतंनिजहस्तेनलेखकहस्तेनवालिखित्वातदेवपुस्तकंव्यासायपौराणिकायदत्त्वातंभूषणादिभिःसंपूज्यव्यासबुद्ध्यातंमत्वातन्मुखादिदंभागवतंश्रुत्वासमाप्तिदिने प्रौष्ठपद्यांपौर्णमास्यांभाद्रपदपौर्णमास्यांदेवीतिथौहेमसिंहसमन्वितंदेवीवाहनांहिसिंहःपुराणंचदेवीस्वरूपंततोहेमसिंहेपुराणंदेवीभागवतंसंस्थाप्यपौराणिकायदद्यात् ॥ तदुपरिदक्षिणार्थंकापि लांगांदद्यादंतेपुराणदानसांगत्वाययावंतःपुराणस्याध्यायाअष्टादशाधिकत्रिशतसंख्याकास्तावतोब्राह्मणान्सुवासिनीःकुमारीश्चतावतीस्तावद्भटुकैःसहभोजयेत्पायसान्नेनेत्यर्थः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ एतादृशस्यपुराणदानस्यफलमाह । पुराणदानेनैतेनेति ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ काकवंध्यासकृत्प्रसववती ॥ तद्दोषाद्वंध्यत्वदोषात् ॥ १४ ॥ १५ ॥

देवीभागवतंनामपुराणंग्रथितंपुरा ॥ अद्यापिदेवलोकेतद्बहुविस्तीर्णमस्तिहि ॥४॥ नानेनसदृशंपुण्यंपवित्रंपापनाशनम् ॥ पदेपदेऽश्वमेधस्यफलमाप्नोति मानवः ॥ ५ ॥ पौराणिकंपूजयित्वावस्त्राद्याभरणादिभिः ॥ व्यासबुद्ध्यातन्मुखात्तुश्रुत्वैतत्समुपोषितः ॥ ६ ॥ लिखित्वानिजहस्तेनलेखकेनाऽथवामुने ॥ प्रौष्ठपद्यांपौर्णमास्यांहेमसिंहसमन्वितम् ॥ ७ ॥ दद्यात्पौराणिकायाऽथदक्षिणांचपयस्विनीम् ॥ सालंकृतांसवत्सांचकपिलांहेममालिनीम् ॥ ॥ ८ ॥ भोजयेद्ब्राह्मणानंतेप्यध्यायपरिसंमितान् ॥ सुवासिनीस्तावतीश्चकुमारीर्बटुकैःसह ॥ ९ ॥ देवीबुद्ध्यापूजयेत्तान्वसनाभरणादिभिः ॥ पायसान्नवरेणाऽपिगंधस्रक्कुसुमादिभिः ॥ १० ॥ पुराणदानेनैतेनभूदानस्यफलंलभेत् ॥ इहलोकेसुखीभूत्वाप्यंतेदेवीपुरंव्रजेत् ॥ ११ ॥ नित्यंयःशृणुयाद्भक्त्यादेवीभागवतंपरम् ॥ नतस्यदुर्लभंकिंचित्कदाचित्क्वचिदस्तिहि ॥ १२ ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रान्धनार्थीधनमाप्नुयात् ॥ विद्यार्थीप्राप्नुयाद्विद्यांकीर्तिमंडितभूतलः ॥ १३ ॥ वंध्यावाकाकवंध्यावामृतवंध्याचयांगना ॥ श्रवणादस्यतद्दोषान्निवर्तेतनसंशयः ॥ १४ ॥ यद्गेहेपुस्तकंचैतत्पूजितंयदितिष्ठति ॥ तद्गेहंनत्यजेन्नित्यंरमाचैवसरस्वती ॥ १५ ॥ नेक्षंतितत्रवेतालडाकिनीराक्षसादयः ॥ ज्वरितंतुनरंस्पृष्ट्वापठेदेतत्समाहितः ॥१६॥ मंडलान्नाशमाप्नोतिज्वरोदाहसमन्वितः ॥ शतावृत्त्याऽस्यपठनात्क्षयरोगोविनश्यति ॥ १७ ॥ प्रतिसंध्यंपठेद्यस्तुसंध्यांकृत्वासमाहितः ॥ एकैकमस्यचाध्यायंसनरोज्ञानवान्भवेत् ॥ ॥ १८ ॥ शकुनांश्चैववीक्षेतकार्याकार्येषुचैवहि ॥ तत्प्रकारःपुरस्तात्तुकथितोऽस्तिमयामुने ॥ १९ ॥ नवरात्रेपठेन्नित्यंशारदीयेऽतिभक्तितः ॥ तस्यांविकातुसंतुष्टाददातीच्छाधिकंफलम् ॥ २० ॥ वैष्णवैश्चैवशैवैश्चरमोमाप्रीतयेसदा ॥ सौरैश्चगाणपत्यैश्चस्वेष्टशक्तेश्चतुष्टये ॥ २१ ॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ प्रतिसंध्यमिति ॥ संध्यात्रयेऽपिसंध्योपासनंकृत्वाश्रीगायत्र्याअग्रेस्तोत्ररूपेणैतस्यैकैकमध्यायंपठेत्तेनज्ञानंमोक्षदायकंभवतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ शकुनांश्चैवेति ॥ कार्याकार्याविषयेसंकटेप्राप्तेनवमस्कंधोक्तप्रकारेणशकुनानीक्षेत ॥ ततःकार्यारंभंकुर्यादित्यर्थः ॥ इदंपद्मपुराणेशकुनपरीक्षायांचोक्तम् ॥ तद्वचनंचोपोद्घातेएवदर्शितम् ॥ १९ ॥ २० ॥ इदंचदेवीभागवतंपुराणंशैवैर्वैष्णवैर्गाणपत्यैःसौरैःशाक्तैर्वैदिकैःसर्वैश्चपठनीयमित्याह । वैष्णवैरिति ॥ स्वेष्टशक्तेश्चतुष्टयेइति ॥ स्वस्ययइष्टोदेवोविष्णुर्वाशिवोवागणेशोवासूर्योवातस्यशक्तिः पार्वतीराधालक्ष्मीःसिद्धिर्बुद्धिश्छायारूपावातस्यास्तुष्टयेइत्यर्थः ॥ २१ ॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

नवरात्रचतुष्टये।आषाढाश्विनमाघचैत्रशुक्लपक्षनवरात्रचतुष्टयेवैदिकैरपिस्वेष्टदेवतागायत्रीप्रीतयेनिरंतरमस्यपाठःकर्तव्यइत्याह । वैदिकैरिति ॥ २२ ॥ विरोधोनात्रेति ॥ अस्मिन्देवीभाग
वतेशैववैष्णवादीनांकेषांचिदपिविरोधोनास्तीत्यर्थः ॥ तत्रहेतुमाह। शक्तियुक्तास्तीति ॥ नहिकस्यापिवैष्णवस्यशैवस्यगाणपत्यस्यसौरस्यवाउपासनाशक्तिरहिताऽस्ति । किंतु शक्तिसहि
तैव ॥ राधाकृष्णलक्ष्मीनारायणसीतारामपार्वतीपरमेश्वरोपासनासुसर्वत्रशक्तिसहितायाएवोपासनायाःसत्त्वात् ॥ तस्मात्तत्तच्छक्तिसंतोषार्थंसर्वैरपिवैष्णवादिभिरेतत्पुराणंपठितव्यमि
त्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ग्रंथसमाप्तौसूतोगायत्रीपदघटितंमंगलंकरोति। सच्चिदानंदरूपांतामिति ॥ ह्रींमयींह्रींबीजवाच्याम् ॥ ह्रींब्रह्मेतिश्रुतेः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥
॥ ३० ॥ निर्जगामेति ॥ नैमिषारण्यक्षेत्रादन्यत्रगतवानित्यर्थः ॥ ३१ ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजःसुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवत
स्यास्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यांयःकृतवान्सम्यक्तिलकाख्यांमहत्तराम् ॥ २ ॥ द्वादशस्कंधएतस्याःसमाप्तोऽभूच्छुभार्थदः ॥ तेनतुष्यतुसादेवीपंचप्रकृतिरूपिणी ॥ ३ ॥
इतिश्रीशैवकुलोत्पन्नरंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भसंभवनीलकंठविराचितेदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधेद्वादशस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥ ॥ समाप्तमेतत् ॥ उत्तुंगपीवरपयोधरभारनम्रा

पठितव्यंप्रयत्नेननवरात्रचतुष्टये ॥ वैदिकैर्निजगायत्रीप्रीतयेनित्यशोमुने ॥२२॥ पठितव्यंप्रयत्नेनविरोधोनात्रकस्यचित् ॥ उपासनातुसर्वेषांशाक्तियुक्ता
ऽस्तिसर्वदा ॥२३॥ तच्छक्तेरेवतोषार्थंपठितव्यंसदाद्विजैः॥स्त्रीशूद्रोनपठेदेतत्कदापिचविमोहितः ॥२४॥ शृणुयाद्विजवक्त्राच्चनित्यमेवेतिचास्थितिः ॥किं
पुनर्बहुनोक्तेनसारंवक्ष्यामितत्त्वतः ॥ २५ ॥ वेदसारमिदंपुण्यंपुराणंद्विजसत्तमाः ॥ वेदपाठसमंपाठेश्रवणेचतथैवहि ॥२६॥ सच्चिदानंदरूपांतांगायत्रीप्र
तिपादिताम् ॥ नमामिह्रींमयींदेवींधियोयोनःप्रचोदयात् ॥ २७ ॥ इतिसूतवचःश्रुत्वानैमिषीयास्तपोधनाः ॥ पूजयामासुरत्युच्चैःसूतंपौराणिकोत्तमम् ॥
॥ २८ ॥ प्रसन्नहृदयाःसर्वेदेवीपादांबुजार्चकाः ॥ निवृत्तिंपरमांप्राप्ताःपुराणस्यप्रभावतः ॥ २९ ॥ नमश्चक्रुःपुनःसूतंक्षमाप्यचमुहुर्मुहुः ॥ संसारवारिधे
स्तातप्लवोऽस्माकंत्वमेवहि ॥ ३० ॥ इतिसमुनिवराणामग्रतःश्रावयित्वासकलनिगमगुह्यंदौर्गमेतत्पुराणम् ॥ नतमथमुनिसंघंवर्धयित्वाशिषांवाचरणक
मलभृंगोनिर्जगामाथसूतः ॥ ३१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांद्वादशस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ स्वस्ति ॐ ॥

रामषण्नंद ( ९६३ ) संख्यातैःपद्यैर्व्यासकृतैःशुभैः ॥ देवीभागवतस्यास्यद्वादशस्कंधईरितः ॥ १ ॥

द्विन्नेंद्रगोपशकलारुणदेहकांतेः ॥ कांतेंदुखंडशकलाभरणाभिरामादंतःपुरात्पुररिपोरपरंनविघ्नः ॥ १ ॥ प्रत्यध्यायंमूलसंख्याटीकायांसमुदाहृता ॥ अष्टादशसहस्रंतुसमग्रंमूलमीरितम्
॥ १ ॥ पंचाशच्छ्लोकसहितशतपंचकसंयुता ॥ सहस्रसंख्याटिप्पण्याःस्कंधेप्रथमकेस्मृता ॥ २ ॥ चतुस्त्रिंशच्छ्लोकयुतशतत्रयमितास्मृता ॥ द्वितीयस्कंधमध्यस्थाटीकामंगलकारिणी ॥
॥ ३ ॥ एकत्रिंशच्छ्लोकयुताचैकादशशतात्मिका ॥ तृतीयस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीमंगलप्रदा ॥ ४ ॥ पंचाशत्पद्यसंयुक्तशतसप्तकसंयुता ॥ चतुर्थस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥
॥ ५ ॥ पंचाशत्पद्यरहितसहस्रपरिसंमिता ॥ पंचमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ ६ ॥ अशीतिपद्यसहितशतसप्तकसंमिता ॥ षष्ठेस्कंधेसमुदिताटिप्पणीतिलकाभिधा ॥ ७ ॥
शतत्रयसमायुक्तसहस्रपरिसंमिता ॥ सप्तमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीतोषकारिणी ॥ ८ ॥ पंचत्रिंशत्पद्ययुतषट्शतश्लोकसंख्यया ॥ अष्टमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ ९ ॥ शतस
प्तकसंयुक्तसहस्रपरिसंमिता ॥ नवमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ १० ॥ चत्वारिंशत्पद्ययुतशतश्लोकमितापरा ॥ दशमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ १२ ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN





सप्ततिश्लोकसहितशतसप्तकसंमिता॥एकादशस्कंधगताटिप्पणीसमुदाहृता ॥ १२ ॥ सपादत्रिशतश्लोकयुक्सहस्रमितापरा ॥ द्वादशस्कंधगाज्ञेयाटिप्पणीतिलकाभिधा ॥ १३ ॥ श्रीमच्छैवकुलेशिवार्चनरतोजातोमयूरेश्वरःश्रीशंभोर्वरदानतोयमलभच्छैवोपनामोत्तमम् ॥ सूनुस्तस्यशिवार्चकःसमभवच्छ्रीनीलकंठाभिधस्तत्सूनुःकविराजराजिमुकुटःश्रीरंगनाथाभिधः ॥ १४॥ तत्सूनुःखलुनीलकंठइतियोनाम्नास्तिलक्ष्मीसुतोदेवीभागवताभिधोत्तमपुराणस्यस्फुटांटिप्पणीम् ॥ व्याख्याभीरहितस्यसोऽयमकृतश्रुत्यागमोद्ग्रंथितांसेयंश्रीतिलकाभिधाभवतुमेव्याख्याशिवातुष्टये ॥ १५ ॥ पतंजलिपराशरात्मजसरस्वतीसारसस्रवन्मधुसुधारसाकलनमोदमानांतराः ॥ कथंतवसरस्वतींशृणुयुरेतदस्तीवयत्तथापिभवतिस्पृहामतिमतांशिशोर्भाषणे ॥ १६ ॥ ततोव्यरचिटिप्पणीयदिनतेमुदंप्राप्नुयुस्तथापिजगतःप्रसूर्भुवननायिकातोक्ष्यति ॥ नमातुरुदरोद्भवेविमलवाचिवापामरेसुतेतरतमादयानचविभेदबुद्धिःक्वचित् ॥ १७ ॥ विविच्यसदसत्प्रकारकमिदंयथेष्टंबुधाविहायमतिमत्सरंकिलवदंतुयद्दषणम् ॥ नमूर्खजनदूषणैःकिमपिहीयतेमामकंदिनांधशतनिंदयानहिदिनेशखेदोभवेत् ॥ १८ ॥ सह्याद्रिपर्वतवरामरदेशभेदमातापुरांतरगताजमदग्निशंभोः ॥प्राणप्रियापरशुरामजनन्यभीष्टंदद्यादियंहिकुलदैवतमेकवीरा॥१९॥तवापांगालोकादमृतझरलोकाःक्वतिपयेनलोकालोकानामधिपतयआसन्भगवति ॥ गुणंदोषंदुष्टेमयिमनसिसंचिंतयसिचेत्तदाकातेकीर्तिर्निरवधिकृपावारिधिरिति ॥ २० ॥ सर्वात्मनातवपदांबुरुहावलंबंमातःकदंबवनवासिनितेनितंबः ॥ हस्तद्वयेनविधृतोस्तिमयाधुनामांहित्वागमिष्यसितदाऽपयशोवहुस्यात्॥२१॥यत्किंचिदारचितमंबसुतेनचित्रंमाताकरोतिकुतुकंखलुतस्यलोके॥अस्यांकृतौतुकुतुकंनतनोषिचेत्त्वंकोन्यस्तदाममकरिष्यतिमंदबुद्धेः॥२२॥उत्तुंगपीवरपयोधरभारनम्राद्ब्रह्मादिदेवपरिवंदितपादपद्मात् ॥ नेत्रत्रयभ्रमरशोभिमुखारविंदादंतःपुरात्पुररिपोरपरंनविघ्नः॥२३॥इतिश्रीशैवकुलोपन्नरंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भसंभवनीलकंठविरचितंदेवीभागवतव्याख्यानंतिलकाभिधंसमाप्तम् ॥ छ ॥ अत्र प्रथमस्कंधमारभ्यद्वादशस्कंधपर्यंतं प्रतिस्कंधांते पद्यरूपेणोक्ता या संख्या सा टीकाकारोक्तप्रत्यध्यायाद्यपद्यानुसारेणेतिबोध्यम् ॥ एवंचसमग्रा संख्या अर्धाधिकसप्तमुनिवेदवस्विदुमिता ( १८४७७॥ ) जाता ॥ एतत्संख्याद्वादशस्कंधांतोक्तेन "प्रत्यध्यायं मूलसंख्याटीकायांसमुदाहृता॥ अष्टादशसहस्रंतुसमग्रंमूलमीरितम्" इतिटीकास्थपद्येन सह विरोधआयातिससुधीभिर्विचारणीयः ॥ तथा प्रथमस्कंधे एकोनविंशत्यध्याये एकः श्लोकोऽधिकः, तृतीयस्कंधे षष्ठाध्यायेऽर्धन्यूनम्, अष्टमाध्यायेऽर्धमधिकम्, नवमाध्याये एकोन्यूनः, चतुर्थस्कंधे नवमाध्यायेऽर्धमधिकम्, षोडशाध्यायेऽर्धमधिकम्, पंचविंशाध्याये त्रयःश्लोकाअधिकाः, पंचमस्कंधेएकविंशाध्यायेऽर्धमधिकम्,षष्ठस्कंधेएकत्रिंशाध्यायेऽर्धन्यूनम्, सप्तमस्कंधे पंचविंशाध्यायेऽर्धमधिकम्, एकोनत्रिंशाध्यायेएकःश्लोकोऽधिकः, त्रिंशत्तमाध्याये एकःश्लोकोऽधिकः, षट्त्रिंशदध्यायेऽर्धमधिकम्, चत्वारिंशदध्यायेऽर्धन्यूनम्, अष्टमस्कंधे चतुर्दशाध्यायेऽर्धन्यूनम्, द्वाविंशत्यध्यायेऽर्धमधिकम्, नवमस्कंधे द्वादशाध्यायेऽर्धमधिकम्, एकोनावशाध्यायेऽर्धमधिकम्,सप्तत्रिंशाध्यायेऽर्धन्यूनम्, एकादशस्कंधे एकादशाध्यायेऽर्धमधिकम्,द्वादशस्कंधे सप्तमाध्यायेऽर्धमधिकम्,अष्टमाध्याये एकोऽधिकः,चतुर्दशाध्यायेएकोऽधिकः श्लोकोस्तीति अत्र क्षेपकश्लोकानां गणना न कृतास्तीति ज्ञेयम्॥श्रीः॥



CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन स्वकीये
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) मुद्रणालयेऽङ्कितम् ।
सं० १९५८, शके १८२३.

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

॥ इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे सटीके द्वादशस्कन्धः समाप्तः ॥

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

# अत्रेयमभ्यर्थना.

अस्माकं मुद्रालये वेद-वेदान्त-धर्मशास्त्र-प्रयोग-योग-सांख्य-ज्योतिष-पुराणेतिहास-वैद्य-मंत्र-स्तोत्र-कोश-काव्य-चम्पू-नाटकालंकार-संगीत-नीति-कथाग्रंथाः बहव स्त्रीणां चोपयुक्ता ग्रंथाः, बृहज्ज्योतिषार्णवनामा बहुविचित्रचित्रितोऽयमपूर्वग्रंथः; संस्कृतभाषया, हिन्दी-मार्वाड्यन्यतरभाषाग्रन्थास्तत्तच्छास्त्रार्थानुवादकाः, चित्राणि, पुस्तकमुद्रणोपयोगिन्योयावत्यस्सामग्र्यः, स्वस्वलौकिकव्यवहारोपयोगिचित्रचित्रितालिखितपत्रवत्पुस्तकानि च, मुद्रयित्वा प्रकाशन्ते सुलभेन मूल्येन विक्रयाय। येषां यत्राभिरुचिस्तत्तत्पुस्तकाद्युपलब्धये एवं नव्यतया स्वस्वपुस्तकानि मुमुद्रयिषुभिः सुलभयोग्यमौल्येन सीसकाक्षरैः स्वच्छोत्तमोत्तमपत्रेषु मुद्रिततत्पुस्तकानां स्वस्वसमयानुसारेणोपलब्धये च पत्रिकाद्वारातैःप्रेरणीयोऽस्मि। अधिकमस्मदीयसूचीपुस्तकानां भिन्नभिन्नविषयाणांप्रापणेन "श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" पत्रिकाप्रापणद्वारा च ज्ञेयमिति शम्।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष-मुम्बई.

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

इति श्रीमद्देवीभागवतं सटीकं समाहात्म्यम्।

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection

Digitization: HHFA(USA). Funding: Shastry Family, Mattur, Shivamogga KN

CSU-Jaipur Campus Collection